THE HOLY BIBLE *HINDI* O V
5,000 Copies/84

पुराने नियम की पुस्तकों का

सूचीपत्र

नये नियम की पुस्तकों का

सूचीपत्र

पुराना नियम

२० फिर परमेश्वर ने कहा, जल
जीवित प्राणियो से बहुत ही भर जाए,
और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के
अन्तर मे उडे। २१ इसलिये परमेश्वर ने
जाति जाति के बडे बडे जल-जन्तुओ की,
और उन सब जीवित प्राणियो की भी
सृष्टि की जो चलते फिरते है जिन से
जल बहुत ही भर गया और एक एक
जाति के उडनेवाले पक्षियो की भी सृष्टि
की और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
२२ और परमेश्वर ने यह कहके उनको
आशीष दी, कि फूलो-फलो, और समुद्र के
जल मे भर जाओ, और पक्षी पृथ्वी पर
बढे। २३ तथा साझ हुई फिर भोर हुआ।
इस प्रकार पाचवा दिन हो गया॥
२४ फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से
एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात्
घरेलू पशु, और रेगनेवाले जन्तु, और
पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार
उत्पन्न हो, और वैसा ही हो गया। २५ सो
परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति जाति के वन-
पशुओ को, और जाति जाति के घरेलू पशुओ
को, और जाति जाति के भूमि पर सब रेगने-
वाले जन्तुओ को बनाया और परमेश्वर
ने देखा कि अच्छा है। २६ फिर परमेश्वर
ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के
अनुसार अपनी समानता मे बनाए, और
वे समुद्र की मछलियो, और आकाश के
पक्षियो, और घरेलू पशुओ, और सारी
पृथ्वी पर, और सब रेगनेवाले जन्तुओ पर
जो पृथ्वी पर रेगते है, अधिकार रखे।
२७ तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने
स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही
स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको
उत्पन्न किया, नर और नारी करके उस ने
मनुष्यो की सृष्टि की। २८ और परमेश्वर
ने उनको आशीष दी और उन से कहा,
फूलो-फलो, और पृथ्वी मे भर जाओ, और
उसको अपने वश मे कर लो, और समुद्र
की मछलियो, तथा आकाश के पक्षियो,
और पृथ्वी पर रेगनेवाले सब जन्तुओ पर
अधिकार रखो। २९ फिर परमेश्वर ने
उन से कहा, सुनो, जितने बीजवाले
छोटे पेड सारी पृथ्वी के ऊपर है और जितने
वृक्षो मे बीजवाले फल होते है, वे सब मै
ने तुम को दिए है, वे तुम्हारे भोजन के
लिये है: ३० और जितने पृथ्वी के पशु,
और आकाश के पक्षी और पृथ्वी पर
रेगनेवाले जन्तु है, जिन मे जीवन के प्राण
है, उन सब के खाने के लिये मै ने सब
हरे छोटे पेड दिए है, और वैसा ही हो
गया। ३१ तब परमेश्वर ने जो कुछ
बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा,
कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा साझ हुई
फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवा दिन
हो गया॥

२ यो आकाश और पृथ्वी और उनकी
सारी सेना का बनाना समाप्त हो
गया। २ और परमेश्वर ने अपना काम
जिसे वह करता था सातवे दिन समाप्त
किया। और उस ने अपने किए हुए सारे
काम से सातवे दिन विश्राम किया।
३ और परमेश्वर ने सातवे दिन को
आशीष दी और पवित्र ठहराया, क्योंकि
उस मे उस ने अपनी सृष्टि की रचना के
सारे काम से विश्राम लिया॥

(मनुष्य की उत्पत्ति)

४ आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का
वृत्तान्त* यह है कि जब वे उत्पन्न हु[ए]

* मूल में—की वंशावली।

अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने
पृथ्वी और आकाश को बनाया ५ तब
मैदान का कोई पौधा भूमि पर न था, और
न मैदान का कोई छोटा पेड उगा था,
क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी पर जल
नही बरसाया था, और भूमि पर खेती
करने के लिये मनुष्य भी नही था,
६ तौभी कुहरा पृथ्वी से उठता था जिस से
सारी भूमि सिच जाती थी। ७ और
यहोवा परमेश्वर ने आदम * को भूमि की
मिट्टी से रचा और उसके नथनो में
जीवन का श्वास फूक दिया, और आदम *
जीवता प्राणी बन गया। ८ और यहोवा
परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश मे
एक बाटिका लगाई, और वहा आदम *
को जिसे उस ने रचा था, रख दिया।
९ और यहोवा परमेश्वर ने भूमि से
सब भाति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर
और जिनके फल खाने मे अच्छे हैं उगाए,
और बाटिका के बीच मे जीवन के वृक्ष
को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को
भी लगाया। १० और उस बाटिका को
सीचने के लिये एक महानदी अदन से
निकली और वहा से आगे बहकर चार
धारा † मे हो गई। ११ पहिली धारा का
नाम पीशोन् है, यह वही है जो हवीला
नाम के सारे देश को जहा सोना मिलता
है घेरे हुए है। १२ उस देश का सोना
चोखा होता है, वहा मोती और सुलैमानी
पत्थर भी मिलते है। १३ और दूसरी
नदी का नाम गीहोन् है, यह वही है जो
कूश् के सारे देश को घेरे हुए है। १४ और
तीसरी नदी का नाम हिद्देकेल् है, यह
वही है जो अश्शूर् के पूर्व की ओर बहती
है। और चौथी नदी का नाम फरात है।
१५ जब यहोवा परमेश्वर ने आदम * को
लेकर अदन की बाटिका मे रख दिया,
कि वह उस मे काम करे और उसकी रक्षा
करे, १६ तब यहोवा परमेश्वर ने आदम *
को यह आज्ञा दी, कि तू बाटिका के सब
वृक्षो का फल बिना खटके खा सकता है
१७ पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष
है, उसका फल तू कभी न खाना क्योंकि
जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन
अवश्य मर जाएगा॥

१८ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा,
आदम * का अकेला रहना अच्छा नही,
मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊगा
जो उस से मेल खाए। १९ और यहोवा
परमेश्वर भूमि मे से सब जाति के बनैले
पशुओ, और आकाश के सब भाति के
पक्षियो को रचकर आदम * के पास ले
आया कि देखे, कि वह उनका क्या क्या
नाम रखता है, और जिस जिस जीवित
प्राणी का जो जो नाम आदम * ने रखा
वही उसका नाम हो गया। २० सो
आदम * ने सब जाति के घरेलू पशुओ,
और आकाश के पक्षियो, और सब जाति
के बनैले पशुओ के नाम रखे, परन्तु
आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला
जो उस से मेल खा सके। २१ तब यहोवा
परमेश्वर ने आदम * को भारी नीन्द में
डाल दिया, और जब वह सो गया तब
उस ने उसकी एक पसुली निकालकर
उसकी सन्ती मास भर दिया। २२ और
यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो
उस ने आदम * में से निकाली थी, स्त्री
बना दिया, और उसको आदम के पास

* वा मनुष्य।
† मूल में—बंटके चार सिर।

* वा मनुष्य।

उत्पत्ति

(सृष्टि का वर्णन)

१ आदि में परमेश्वर ने आकाश और
पृथ्वी की सृष्टि की। २ और पृथ्वी
बेडौल और सुनसान पडी थी, और
गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था तथा
परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर
मण्डलाता था। ३ तब परमेश्वर ने कहा,
उजियाला हो तो उजियाला हो गया।
४ और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि
अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियाले को
अन्धियारे से अलग किया। ५ और पर-
मेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे
को रात कहा। तथा साझ हुई फिर भोर
हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया॥

६ फिर परमेश्वर ने कहा, जल के
बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो
भाग हो जाए। ७ तब परमेश्वर ने एक
अन्तर करके उसके नीचे के जल और
उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया,
और वैसा ही हो गया। ८ और परमेश्वर
ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा
साझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार
दूसरा दिन हो गया॥

९ फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के
नीचे का जल एक स्थान मे इकट्ठा हो
जाए और सूखी भूमि दिखाई दे, और वैसा
ही हो गया। १० और परमेश्वर ने सूखी
भूमि को पृथ्वी कहा, तथा जो जल
इकट्ठा हुआ उसको उस ने समुद्र कहा
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
११ फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी मे
हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड,
और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज
उन्ही मे एक एक की जाति के अनुसार
होते है पृथ्वी पर उगे, और वैसा ही हो
गया। १२ तो पृथ्वी से हरी घास, और
छोटे छोटे पेड जिन मे अपनी अपनी
जाति के अनुसार बीज होता है, और
फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक एक की
जाति के अनुसार उन्ही में होते है उगे
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
१३ तथा साझ हुई फिर भोर हुआ।
इस प्रकार तीसरा दिन हो गया॥

१४ फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को
रात से अलग करने के लिये आकाश के
अन्तर मे ज्योतिया हो, और वे चिन्हो, और
नियत समयो, और दिनो, और वर्षो के
कारण हो। १५ और वे ज्योतिया आकाश
के अन्तर मे पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी
ठहरे, और वैसा ही हो गया। १६ तब
परमेश्वर ने दो बडी ज्योतिया बनाई, उन
मे से बडी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने
के लिये, और छोटी ज्योति को रात पर
प्रभुता करने के लिये बनाया और तारागण
को भी बनाया। १७ परमेश्वर ने उनको
आकाश के अन्तर मे इसलिये रखा कि वे
पृथ्वी पर प्रकाश दे, १८ तथा दिन और
रात पर प्रभुता करें और उजियाले को
अन्धियारे से अलग करे और परमेश्वर ने
देखा कि अच्छा है। १९ तथा साझ हुई
फिर भोर हुआ। इस प्रकार चौथा दिन हो
गया॥

ले आया। २३ और आदम* ने कहा,
अब यह मेरी हड्डियो मे की हड्डी और
मेरे मास मे का मास है सो इसका
नाम नारी होगा, क्योकि यह नर मे से
निकाली गई है। २४ इस कारण पुरुष
अपने माता पिता को छोडकर अपनी पत्नी
से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने
रहेगे। २५ और आदम* और उसकी
पत्नी दोनो नङ्गे थे, पर लजाते न थे॥

(मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन)

३ यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले
पशु बनाए थे, उन सब मे सर्प धूर्त्त
था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच
है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस
वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?
२ स्त्री ने सर्प से कहा, इस वाटिका के
वृक्षों के फल हम खा सकते है। ३ पर
जो वृक्ष वाटिका के बीच मे है, उसके
फल के विषय मे परमेश्वर ने कहा है कि
न तो तुम उसको खाना और न उसको
छूना, नही तो मर जाओगे। ४ तब सर्प
ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,
५ वरन परमेश्वर आप जानता है, कि
जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी
दिन तुम्हारी आखें खुल जाएगी, और
तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के
तुल्य हो जाओगे। ६ सो जब स्त्री ने
देखा कि उस वृक्ष का फल खाने मे अच्छा,
और देखने मे मनभाऊ, और बुद्धि देने
के लिये चाहने योग्य भी है, तब उस ने
उस मे से तोडकर खाया, और अपने
पति को भी दिया, और उस ने भी खाया।
७ तब उन दोनो की आखें खुल गई,
और उनको मालूम हुआ कि वे नङ्गे

* वा मनुष्य।

है, सो उन्हो ने अंजीर के पत्ते जोड
जोड कर लंगोट बना लिये। ८ तब
यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय*
वाटिका मे फिरता था उसका शब्द
उनको सुनाई दिया। तब आदम और
उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षो के बीच
यहोवा परमेश्वर से छिप गए। ९ तब
यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से
पूछा, तू कहा है? १० उस ने कहा, मै
तेरा शब्द बारी मे सुनकर डर गया
क्योकि मै नङ्गा था, इसलिये छिप गया।
११ उस ने कहा, किस ने तुझे चिताया
कि तू नङ्गा है? जिस वृक्ष का फल
खाने को मै ने तुझे वर्जा था, क्या तू ने
उसका फल खाया है? १२ आदम ने कहा
जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को
दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे
दिया, और मै ने खाया। १३ तब यहोवा
परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या
किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे
बहका दिया तब मै ने खाया। १४ तब
यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, तू ने
जो यह किया है इसलिये तू सब घरेलू
पशुओ, और सब बनैले पशुओ से अधिक
शापित है, तू पेट के बल चला करेगा,
और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा
१५ और मै तेरे और इस स्त्री के बीच में,
और तेरे वंश और इसके वंश के बीच मे
बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल
डालेगा, और तू उसकी एडी को डसेगा।
१६ फिर स्त्री से उस ने कहा, मै तेरी
पीडा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को
बहुत बढाऊंगा, तू पीडित होकर बालक
उत्पन्न करेगी, और तेरी लालसा तेरे

* मूल में—दिन की वायु में।

पति की ओर होगी, और वह तुझ पर
प्रभुता करेगा। १७ और आदम से उस ने
कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी,
और जिस वृक्ष के फल के विषय में ने
तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना
उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे
कारण शापित है, तू उसकी उपज जीवन
भर दु ख के साथ खाया करेगा १८ और
वह तेरे लिये काटे और ऊटकटारे उगाएगी,
और तू खेत की उपज खाएगा, १९ और
अपने माथे के पसीने की रोटी खाया
करेगा, और अन्त मे मिट्टी मे मिल
जाएगा, क्योकि तू उसी मे से निकाला
गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही मे
फिर मिल जाएगा। २० और आदम ने
अपनी पत्नी का नाम हव्वा* रखा,
क्योकि जितने मनुष्य जीवित है उन सब की
आदिमाता वही हुई। २१ और यहोवा
परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के
लिये चमडे के अगरखे बनाकर उनको
पहिना दिए।

२२ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा,
मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम मे से
एक के समान हो गया है इसलिये अब
ऐसा न हो, कि वह हाथ बढाकर जीवन
के वृक्ष का फल भी तोड के खा ले और
सदा जीवित रहे। २३ तब यहोवा
परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका मे से
निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती
करे जिस मे से वह बनाया† गया था।
२४ इसलिये आदम को उस ने निकाल
दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का
पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के
पूर्व की ओर करूबो को, और चारो ओर
घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को भी
नियुक्त कर दिया॥

(आदम के पुत्रों का वर्णन)

४ जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के
पास गया तब उस ने गर्भवती
होकर कैन को जन्म दिया और कहा,
मै ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष
पाया है। २ फिर वह उसके भाई हाबिल
को भी जन्मी, और हाबिल तो भेड़-
बकरियो का चरवाहा बन गया, परन्तु
कैन भूमि की खेती करने वाला किसान
बना। ३ कुछ दिनो के पश्चात् कैन
यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ
भेट ले आया। ४ और हाबिल भी अपनी
भेड़-बकरियो के कई एक पहिलौठे बच्चे
भेट चढाने ले आया और उनकी चर्बी
भेंट चढाई, तब यहोवा ने हाबिल
और उसकी भेट को तो ग्रहण किया,
५ परन्तु कैन और उसकी भेट को उस ने
ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित
हुआ, और उसके मुह पर उदासी छा गई।
६ तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यो
क्रोधित हुआ? और तेरे मुह पर उदासी
क्यो छा गई है? ७ यदि तू भला करे,
तो क्या तेरी भेट ग्रहण न की जाएगी?
और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार
पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा
तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता
करेगा। ८ तब कैन ने अपने भाई
हाबिल से कुछ कहा और जब वे मैदान
मे थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर
चढकर उसे घात किया। ९ तब यहोवा
ने कैन से पूछा, तेरा भाई हाबिल कहा
है? उस ने कहा मालूम नही क्या मै
अपने भाई का रखवाला हू? १० उस ने

* अर्थात् जीवन।
† मूल में—लिया।

कहा, तू ने क्या किया है? तेरे भाई का
लोहू भूमि मे से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी
दोहाई दे रहा है। ११ इसलिये अब भूमि
जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से
पीने के लिये अपना मुह खोला है, उसकी
ओर से तू शापित है। १२ चाहे तू भूमि
पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज
फिर तुझे न मिलेगी,* और तू पृथ्वी पर
बहेतू और भगोडा होगा। १३ तब कैन ने
यहोवा से कहा, मेरा दण्ड सहने से†
बाहर है। १४ देख, तू ने आज के दिन
मुझे भूमि पर से निकाला है और मै
तेरी दृष्टि की आड मे रहूगा और पृथ्वी
पर बहेतू और भगोडा रहूगा, और जो
कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा।
१५ इस कारण यहोवा ने उस से कहा,
जो कोई कैन को घात करेगा उस से
सात गुणा पलटा लिया जाएगा। और
यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया
ऐसा न हो कि कोई उसे पाकर मार डाले॥

१६ तब कैन यहोवा के सम्मुख से
निकल गया, और नोद् नाम देश मे, जो
अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा।
१७ जब कैन अपनी पत्नी के पास गया
तब वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्मी,
फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस
नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर
हनोक रखा। १८ और हनोक से ईराद
उत्पन्न हुआ, और ईराद ने महूयाएल को
जन्म दिया, और महूयाएल ने मतूशाएल
को, और मतूशाएल ने लेमेक को जन्म
दिया। १९ और लेमेक ने दो स्त्रिया ब्याह
ली जिन मे से एक का नाम आदा, और
दूसरी का सिल्ला है। २० और आदा ने
याबाल को जन्म दिया। वह तम्बुओ मे
रहना और जानवरो का पालन इन दोनो
रीतियो का उत्पादक हुआ*। २१ और
उसके भाई का नाम यूबाल है वह वीणा
और बासुरी आदि बाजो के बजाने की
सारी रीति का उत्पादक हुआ†।
२२ और सिल्ला ने भी तूबल्कैन नाम एक
पुत्र को जन्म दिया वह पीतल और
लोहे के सब धारवाले हथियारो का गढने-
वाला हुआ और तूबल्कैन की बहिन नामा
थी। २३ और लेमेक ने अपनी पत्नियो से
कहा,

हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो,
हे लेमेक की पत्नियो, मेरी बात पर
कान लगाओ
मैने एक पुरुष को जो मेरे चोट
लगाता था,
अर्थात् एक जवान को जो मुझे
घायल करता था, घात किया है।
२४ जब कैन का पलटा सातगुणा लिया
जाएगा।
तो लेमेक का सतहत्तरगुणा लिया
जाएगा।

२५ और आदम अपनी पत्नी के पास
फिर गया, और उस ने एक पुत्र को जन्म
दिया और उसका नाम यह कह के शेत
रखा, कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल
की सन्ती, जिसको कैन ने घात किया,
एक और वश ठहरा दिया है। २६ और
शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और
उस ने उसका नाम एनोश रखा, उसी

---

* मूल मे—और तुझे फिर अपना बल न दे[illegible]

† [illegible] है।

* मूल में—तम्बू में रहनेहारों और ढोरों का पिता हुआ।

† मूल में—वीणा और बासुरी के सब बजानेवालो [illegible]

समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने
लगे॥

(आदम की वंशावली)

५ आदम की वंशावली यह है। जब
परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की
तब अपनी ही स्वरूप में उसको बनाया,
२ उस ने नर और नारी करके मनुष्यों
की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और
उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम*
रखा। ३ जब आदम एक सौ तीस वर्ष
का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता
में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक
पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम शेत रखा।
४ और शेत के जन्म के पश्चात् आदम
आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके
और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ५ और
आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की
हुई तत्पश्चात् वह मर गया॥
६ जब शेत एक सौ पांच वर्ष का हुआ,
तब उस ने एनोश को जन्म दिया।
७ और एनोश के जन्म के पश्चात् शेत
आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा, और उसके
और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ८ और
शेत की कुल अवस्था नौ सौ बारह वर्ष की
हुई तत्पश्चात् वह मर गया॥
९ जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब
उस ने केनान को जन्म दिया। १० और
केनान के जन्म के पश्चात् एनोश आठ सौ
पन्द्रह वर्ष जीवित रहा, और उसके और
भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ११ और
एनोश की कुल अवस्था नौ सौ पांच वर्ष की
हुई तत्पश्चात् वह मर गया॥
१२ जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ,
तब उस ने महललेल को जन्म दिया।

* वा मनुष्य।

१३ और महललेल के जन्म के पश्चात्
केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा,
और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न
हुईं। १४ और केनान की कुल अवस्था
नौ सौ दस वर्ष की हुई तत्पश्चात् वह
मर गया॥
१५ जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ,
तब उस ने येरेद को जन्म दिया। १६ और
येरेद के जन्म के पश्चात् महललेल आठ सौ
तीस वर्ष जीवित रहा, और उसके और
भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। १७ और
महललेल की कुल अवस्था आठ सौ पचानवे
वर्ष की हुई तत्पश्चात् वह मर गया॥
१८ जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का
हुआ, तब उस ने हनोक को जन्म दिया।
१९ और हनोक के जन्म के पश्चात् येरेद
आठ सौ वर्ष जीवित रहा, और उसके
और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २० और
येरेद की कुल अवस्था नौ सौ बासठ वर्ष की
हुई तत्पश्चात् वह मर गया॥
२१ जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब
उस ने मतूशेलह को जन्म दिया। २२ और
मतूशेलह के जन्म के पश्चात् हनोक तीन सौ
वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता
रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां
उत्पन्न हुईं। २३ और हनोक की कुल
अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई।
२४ और हनोक परमेश्वर के साथ साथ
चलता था, फिर वह लोप हो गया क्योंकि
परमेश्वर ने उसे उठा लिया।
२५ जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष
का हुआ, तब उस ने लेमेक को जन्म दिया।
२६ और लेमेक के जन्म के पश्चात्
मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा
और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न
हुईं। २७ और मतूशेलह की कुल अवस्था

नौ सौ उनहत्तर वर्ष की हुई तत्पश्चात् वह
मर गया ॥

२८ जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का
हुआ, तब उस ने एक पुत्र जन्म दिया।
२९ और यह कहकर उसका नाम नूह
रखा, कि यहोवा ने जो पृथ्वी को शाप
दिया है, उसके विषय यह लड़का हमारे
काम मे, और उस कठिन परिश्रम मे जो
हम करते है,* हम को शान्ति देगा।
३० और नूह के जन्म के पश्चात् लेमेक
पाच सौ पचानवे वर्ष जीवित रहा, और
उसके और भी बेटे बेटिया उत्पन्न हुई।
३१ और लेमेक की कुल अवस्था सात सौ
सतहत्तर वर्ष की हुई तत्पश्चात् वह मर
गया ॥

३२ और नूह पाच सौ वर्ष का हुआ,
और नूह ने शेम, और हाम, और येपेत को
जन्म दिया ॥

(जल प्रलय का वर्णन)

६ फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर
बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटिया
उत्पन्न हुई, २ तब परमेश्वर के पुत्रो ने
मनुष्य की पुत्रियो को देखा, कि वे सुन्दर
है, सो उन्हो ने जिस जिसको चाहा
उन से ब्याह कर लिया। ३ और यहोवा
ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लो
विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी
शरीर ही है†, उसकी आयु एक सौ
बीस वर्ष की होगी। ४ उन दिनो में पृथ्वी
पर दानव रहते थे, और इसके पश्चात्
जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियो
के पास गए तब उनके द्वारा जो सन्तान
उत्पन्न हुए, वे पुत्र शूरवीर होते थे,
जिनकी कीर्त्ति प्राचीनकाल मे प्रचलित है।
५ और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यो की
बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके
मन के विचार मे जो कुछ उत्पन्न होता है
सो निरन्तर बुरा ही होता है। ६ और
यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से
पछताया, और वह मन मे अति खेदित
हुआ। ७ तब यहोवा ने सोचा, कि मैं
मनुष्य को जिसकी मै ने सृष्टि की है
पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूगा, क्या मनुष्य,
क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश
के पक्षी, सब को मिटा दूगा क्योंकि मैं
उनके बनाने से पछताता हू। ८ परन्तु
यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी
रही ॥

९ नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी
पुरुष और अपने समय के लोगो मे खरा
था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ
चलता रहा। १० और नूह से, शेम,
और हाम, और येपेत नाम, तीन पुत्र
उत्पन्न हुए। ११ उस समय पृथ्वी परमेश्वर
की दृष्टि मे बिगड़ गई थी, और उपद्रव से
भर गई थी। १२ और परमेश्वर ने
पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि
वह बिगड़ी हुई है, क्योंकि सब प्राणियो
ने पृथ्वी पर अपनी अपनी चाल चलन
बिगाड़ ली थी ॥

१३ तब परमेश्वर ने नूह से कहा,
सब प्राणियो के अन्त करने का प्रश्न
मेरे साम्हने आ गया है*, क्योंकि उनके
कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है,
इसलिये मै उनको पृथ्वी समेत नाश कर
डालूगा। १४ इसलिये तू गोपेर वृक्ष की

* मूल मे—हमारे हाथ के कठिन परिश्रम से।

† वा, अपने भ्रम मे शरीर ही ठहरा।

* मूल में—अन्त मेरे साम्हने आ गया है।

लकडी का एक जहाज बना ले, उस मे
कोठरिया बनाना, और भीतर बाहर उस
पर राल लगाना। १५ और इस ढग से
उसको बनाना जहाज की लम्बाई तीन
सौ हाथ, चौडाई पचास हाथ, और
ऊचाई तीस हाथ की हो। १६ जहाज मे
एक खिडकी * बनाना, और इसके एक
हाथ ऊपर से उसकी छत बनाना, और
जहाज की एक अलग मे एक द्वार रखना,
और जहाज मे पहिला, दूसरा, तीसरा
खण्ड बनाना। १७ और सुन, मै आप
पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियो
को, जिन में जीवन की आत्मा है, आकाश
के नीचे से नाश करने पर हू और सब
जो पृथ्वी पर है मर जाएगे। १८ परन्तु
तेरे सग मे वाचा बान्धता हू इसलिये तू
अपने पुत्रो, स्त्री, और बहुओ समेत
जहाज मे प्रवेश करना। १९ और सब
जीवित प्राणियो में से, तू एक एक जाति
के दो दो, अर्थात् एक नर और एक मादा
जहाज मे ले जाकर, अपने साथ जीवित
रखना। २० एक एक जाति के पक्षी, और
एक एक जाति के पशु, और एक एक
जाति के भूमि पर रेगनेवाले, सब मे
से दो दो तेरे पास आएगे, कि तू उनको
जीवित रखे। २१ और भाति भाति का
भोज्य पदार्थ जो खाया जाता है, उनको
तू लेकर अपने पास इकट्ठा कर रखना,
सो तेरे और उनके भोजन के लिये होगा।
२२ परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार
नूह ने किया॥

७ और यहोवा ने नूह से कहा, तू
अपने सारे घराने समेत जहाज मे
जा, क्योकि मै ने इस समय के लोगो
में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि मे
धर्मी देखा है। २ सब जाति के शुद्ध
पशुओ मे से तो तू सात सात, अर्थात्
नर और मादा लेना पर जो पशु शुद्ध
नही है, उन मे से दो दो लेना, अर्थात्
नर और मादा ३ और आकाश के
पक्षियो मे से भी, सात सात, अर्थात् नर
और मादा लेना कि उनका वश बचकर
सारी पृथ्वी के ऊपर बना रहे। ४ क्योकि
अब सात दिन और बीतने पर मै पृथ्वी
पर चालीस दिन और चालीस रात तक
जल बरसाता रहूगा, और जितनी वस्तुए
मै ने बनाई है सब को भूमि के ऊपर से
मिटा दूगा। ५ यहोवा की इस आज्ञा के
अनुसार नूह ने किया।

६ नूह की अवस्था छ सौ वर्ष की
थी, जब जलप्रलय पृथ्वी पर आया।
७ नूह अपने पुत्रो, पत्नी, और बहुओ
समेत, जलप्रलय मे बचने के लिये
जहाज मे गया। ८ और शुद्ध, और अशुद्ध,
दोनो प्रकार के पशुओ मे से, पक्षियो,
९ और भूमि पर रेगनेवालो मे से भी,
दो दो, अर्थात् नर और मादा, जहाज में
नूह के पास गए, जिस प्रकार परमेश्वर ने
नूह का आज्ञा दी थी। १० सात दिन के
उपरान्त प्रलय का जल पृथ्वी पर आने
लगा। ११ जब नूह की अवस्था के छ
सौवे वर्ष के दूसरे महीने का सत्तरहवा
दिन आया, उसी दिन बडे गहिरे समुद्र
के सब सोते फूट निकले और आकाश के
झरोखे खुल गए। १२ और वर्षा चालीस
दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी
पर होती रही। १३ ठीक उसी दिन नूह
अपने पुत्र शेम हाम, और येपेत, और
अपनी पत्नी, और तीनो बहुओ समेत,
१४ और उनके सग एक एक जाति के

* मूल में—उजियाला।

सब बनैले पशु, और एक एक जाति के
सब घरेलू पशु, और एक एक जाति के
सब पृथ्वी पर रेंगनेवाले, और एक एक
जाति के सब उड़नेवाले पक्षी, जहाज़ में
गए। १५ जितने प्राणियों में जीवन की
आत्मा थी उनकी सब जातियों में से
दो दो नूह के पास जहाज़ में गए।
१६ और जो गए, वह परमेश्वर की आज्ञा
के अनुसार सब जाति के प्राणियों में से
नर और मादा गए। तब यहोवा ने
उसका द्वार बन्द कर दिया। १७ और
पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय होता
रहा, और पानी बहुत बढ़ता ही गया,
जिस से जहाज़ ऊपर को उठने लगा, और
वह पृथ्वी पर से ऊंचा उठ गया। १८ और
जल बढ़ते बढ़ते पृथ्वी पर बहुत ही बढ़
गया, और जहाज जल के ऊपर ऊपर
तैरता रहा। १९ और जल पृथ्वी पर
अत्यन्त बढ़ गया, यहां तक कि सारी
धरती पर* जितने बड़े बड़े पहाड़ थे,
सब डूब गए। २० जल तो पन्द्रह हाथ
ऊपर बढ़ गया, और पहाड़ भी डूब गए।
२१ और क्या पक्षी, क्या घरेलू पशु, क्या
बनैले पशु, और पृथ्वी पर सब चलनेवाले
प्राणी, और जितने जन्तु पृथ्वी में बहुतायत
से भर गए थे, वे सब, और सब मनुष्य
मर गए। २२ जो जो स्थल पर थे,
उन में से जितनों के नथनों में जीवन का
श्वास था, सब मर मिटे। २३ और क्या
मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या
आकाश के पक्षी, जो जो भूमि पर थे,
सो सब पृथ्वी पर से मिट गए, केवल
नूह, और जितने उसके संग जहाज में
थे, वे ही बच गए। २४ और जल
पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल
रहा॥

८ और परमेश्वर ने नूह की, और
जितने बनैले पशु, और घरेलू पशु
उसके संग जहाज में थे, उन सभों की
सुधि ली: और परमेश्वर ने पृथ्वी पर
पवन बहाई, और जल घटने लगा।
२ और गहिरे समुद्र के सोते और आकाश
के झरोखे बंद हो गए, और उस से
जो वर्षा होती थी सो भी थम गई।
३ और एक सौ पचास दिन के पश्चात्
जल पृथ्वी पर से लगातार घटने लगा।
४ सातवें महीने के सत्रहवें दिन को,
जहाज अरारात नाम पहाड़ पर टिक
गया। ५ और जल दसवें महीने तक
घटता चला गया, और दसवें महीने के
पहिले दिन को, पहाड़ों की चोटियां
दिखलाई दीं। ६ फिर ऐसा हुआ कि
चालीस दिन के पश्चात् नूह ने अपने बनाए
हुए जहाज की खिड़की को खोलकर, एक
कौआ उड़ा दिया: ७ वह जब तक जल
पृथ्वी पर से सूख न गया, तब तक इधर
उधर फिरता रहा। ८ फिर उस ने अपने
पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया,
कि देखें कि जल भूमि पर से घट गया
कि नहीं। ९ उस कबूतरी को अपने पैर
के तले टेकने के लिये कोई आधार न
मिला, सो वह उसके पास जहाज में
लौट आई: क्योंकि सारी पृथ्वी के ऊपर
जल ही जल छाया था तब उस ने हाथ
बढ़ाकर उसे अपने पास जहाज में ले
लिया। १० तब और सात दिन तक
ठहरकर, उस ने उसी कबूतरी को जहाज
में से फिर उड़ा दिया। ११ और कबूतरी
सांझ के समय उसके पास आ गई, तो

* मूल में—सारे आकाश के तले।

क्या देखा कि उसकी चोंच में जलपाई
का एक नया पत्ता है, इस से नूह ने
जान लिया, कि जल पृथ्वी पर घट गया
है। १२ फिर उस ने सात दिन और
ठहरकर उसी कबूतरी को उड़ा दिया,
और वह उसके पास फिर कभी लौटकर
न आई। १३ फिर ऐसा हुआ कि छः सौ
एक वर्ष के पहिले महीने के पहिले दिन
जल पृथ्वी पर से सूख गया। तब नूह ने
जहाज की छत खोलकर क्या देखा कि
धरती सूख गई है। १४ और दूसरे महीने
के सताईसवें दिन को पृथ्वी पूरी रीति से
सूख गई॥

१५ तब परमेश्वर ने, नूह से कहा,
१६ तू अपने पुत्रों, पत्नी, और बहुओं
समेत जहाज में से निकल आ। १७ क्या
पक्षी, क्या पशु, क्या सब भांति के रेंगने-
वाले जन्तु जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, जितने
शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग हैं, उन सब
को अपने साथ निकाल ले आ, कि पृथ्वी
पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न हों, और
वे फूले-फलें, और पृथ्वी पर फैल जाएं।
१८ तब नूह, और उसके पुत्र, और पत्नी,
और बहुएं, निकल आईं: १९ और सब
चौपाए, रेंगनेवाले जन्तु, और पक्षी, और
जितने जीवजन्तु पृथ्वी पर चलते फिरते
हैं, सो सब जाति जाति करके जहाज
में से निकल आए। २० तब नूह ने
यहोवा के लिये एक वेदी बनाई, और
सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों
में से, कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि
चढ़ाया। २१ इस पर यहोवा ने सुख-
दायक सुगन्ध पाकर सोचा: कि मनुष्य के
कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न
दूंगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से
जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता
है, तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को
अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न
मारूंगा। २२ अब से जब तक पृथ्वी
बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के
समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और
शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते
चले जाएंगे॥

९ फिर परमेश्वर ने नूह और उसके
पुत्रों को आशीष दी और उन से कहा
कि फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में
भर जाओ। २ और तुम्हारा डर और
भय पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के
सब पक्षियों, और भूमि पर के सब रेंगने-
वाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियों
पर बना रहेगा: वे सब तुम्हारे वश में कर
दिए जाते हैं। ३ सब चलनेवाले जन्तु
तुम्हारा आहार होंगे, जैसा तुम को हरे
हरे छोटे पेड़ दिए थे, वैसा ही अब सब
कुछ देता हूं। ४ पर मांस को प्राण समेत
अर्थात् लोहू समेत तुम न खाना। ५ और
निश्चय मैं तुम्हारा लोहू अर्थात् प्राण का
पलटा लूंगा: सब पशुओं, और मनुष्यों,
दोनों से मैं उसे लूंगा: मनुष्य के प्राण का
पलटा मैं एक एक के भाई बन्धु से लूंगा।
६ जो कोई मनुष्य का लोहू बहाएगा
उसका लोहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा
क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही
स्वरूप के अनुसार बनाया है। ७ और
तुम तो फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी
में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर
जाओ॥

८ फिर परमेश्वर ने नूह और उसके
पुत्रों से कहा, ९ सुनो, मैं तुम्हारे साथ
और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश
होगा, उसके साथ भी वाचा बान्धता हूं।

१० और सब जीवित प्राणियो से भी
जो तुम्हारे सग है क्या पक्षी क्या घरेलू
पशु, क्या पृथ्वी के सब बनैले पशु, पृथ्वी
के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले है,
सब के साथ भी मेरी यह वाचा बन्धती है
११ और मै तुम्हारे साथ अपनी इस
वाचा को पूरा करूगा, कि सब प्राणी
फिर जलप्रलय से नाश न होगे और
पृथ्वी के नाश करने के लिये फिर जल-
प्रलय न होगा। १२ फिर परमेश्वर ने
कहा, जो वाचा मै तुम्हारे साथ, और
जितने जीवित प्राणी तुम्हारे सग है उन
सब के साथ भी युग युग की पीढियो के
लिये बान्धता हू, उसका यह चिन्ह है
१३ कि मै ने बादल मे अपना धनुष रखा
है वह मेरे और पृथ्वी के बीच मे वाचा
का चिन्ह होगा। १४ और जब मै पृथ्वी
पर बादल फैलाऊ तब बादल मे धनुष
देख पडेगा। १५ तब मेरी जो वाचा
तुम्हारे और सब जीवित शरीरधारी
प्राणियो के साथ बन्धी है, उसको मै
स्मरण करूगा, तब ऐसा जलप्रलय फिर न
होगा जिस से सब प्राणियो का विनाश
हो। १६ बादल में जो धनुष होगा मै
उसे देख के यह सदा की वाचा स्मरण
करूगा जो परमेश्वर के और पृथ्वी पर
के सब जीवित शरीरधारी प्राणियो के
बीच बन्धी है। १७ फिर परमेश्वर ने
नूह से कहा जो वाचा मै ने पृथ्वी भर के
सब प्राणियो के साथ बान्धी है, उसका
चिन्ह यही है॥

१८ नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले,
वे शेम, हाम, और येपेत थे और हाम
तो कनान का पिता हुआ। १९ नूह के
तीन पुत्र ये ही है, और इनका वश सारी
पृथ्वी पर फैल गया।

२० और नूह किसानी करने लगा,
और उस ने दाख की बारी लगाई।
२१ और वह दाखमधु पीकर मतवाला
हुआ, और अपने तम्बू के भीतर नङ्गा
हो गया। २२ तब कनान के पिता हाम ने,
अपने पिता को नङ्गा देखा, और बाहर
आकर अपने दोनो भाइयो को बतला
दिया। २३ तब शेम और येपेत दोनो ने
कपडा लेकर अपने कन्धो पर रखा, और
पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के
नङ्गे तन को ढाँप दिया, और वे अपना मुख
पीछे किए हुए थे इसलिये उन्हो ने अपने
पिता को नङ्गा न देखा। २४ जब नूह का
नशा उतर गया, तब उस ने जान लिया कि
उसके छोटे पुत्र ने उस से क्या किया है।

२५ इसलिये उस ने कहा,
कनान शापित हो
वह अपने भाई बन्धुओ के दासो का
दास हो।
२६ फिर उस ने कहा,
शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है,
और कनान शेम * का दास होवे।
२७ परमेश्वर येपेत के वश को फैलाए,
और वह शेम के तम्बुओ मे बसे,
और कनान उसका दास होवे।

२८ जलप्रलय के पश्चात् नूह साढे तीन
सौ वर्ष जीवित रहा। २९ और नूह की
कुल अवस्था साढे नौ सौ वर्ष की हुई:
तत्पश्चात् वह मर गया॥

(नूह की वशावली)

१० नूह के पुत्र जो शेम, हाम, और
येपेत थे उनके पुत्र जलप्रलय के
पश्चात् उत्पन्न हुए उनकी वशावली
यह है॥

* मूल में—उस।

२ येपेत के पुत्र गोमेर, मागोग, मादै,
यावान, तूबल, मेशेक, और तीरास हुए।
३ और गोमेर के पुत्र अशकनज, रीपत,
और तोगर्मा हुए। ४ और यावान के
वंश में एलीशा, और तर्शीश, और कित्ती,
और दोदानी लोग हुए। ५ इनके वंश
अन्यजातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बंट
गए, कि वे भिन्न भिन्न भाषाओं, कुलों,
और जातियों के अनुसार अलग अलग
हो गए॥

६ फिर हाम के पुत्र कूश, और मिस्र,
और फूत और कनान हुए। ७ और कूश
के पुत्र सबा, हवीला, सबता, रामा, और
सबूतका हुए और रामा के पुत्र शबा,
और ददान हुए। ८ और कूश के वंश में
निम्रोद भी हुआ, पृथ्वी पर पहिला वीर
वही हुआ है। ९ वह यहोवा की दृष्टि में
पराक्रमी शिकार खेलनेवाला ठहरा, इस से
यह कहावत चली है, कि निम्रोद के समान
यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार
खेलनेवाला। १० और उसके राज्य का
आरम्भ शिनार देश में बाबुल, और अक्कद,
और कलने हुआ। ११ उस देश से वह
निकलकर अश्शूर को गया, और नीनवे,
रहोबोतीर, और कालह को, १२ और
नीनवे और कालह के बीच जो रेसेन है, उसे
भी बसाया, बड़ा नगर यही है। १३ और
मिस्र के वंश में लूदी, अनामी, लहाबी,
नप्तूही, १४ और पत्रूसी, कसलूही और
कप्तोरी लोग हुए, कसलूहियों में से तो
पलिश्ती लोग निकले॥

१५ फिर कनान के वंश में उसका
ज्येष्ठ सीदोन, तब हित्त, १६ और यबूसी,
एमोरी, गिर्गाशी, १७ हिव्वी, अर्की, सीनी,
१८ अर्वदी, समारी, और हमाती लोग भी
हुए फिर कनानियों के कुल भी फैल
गए। १९ और कनानियों का सिवाना
सीदोन से लेकर गरार के मार्ग से होकर
अज्जा तक और फिर सदोम और अमोरा
और अदमा और सबोयीम के मार्ग से
होकर लाशा तक हुआ। २० हाम के
वंश में ये ही हुए, और ये भिन्न भिन्न
कुलों, भाषाओं, देशों, और जातियों के
अनुसार अलग अलग हो गए॥

२१ फिर शेम, जो सब एबेरवंशियों
का मूलपुरुष हुआ, और जो येपेत का
ज्येष्ठ भाई था*, उसके भी पुत्र उत्पन्न
हुए। २२ शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर,
अर्पक्षद्, लूद और आराम हुए। २३ और
आराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और
मश हुए। २४ और अर्पक्षद् ने शेलह को,
और शेलह ने एबेर को जन्म दिया।
२५ और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए,
एक का नाम पेलेग इस कारण रखा
गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बंट गई,
और उसके भाई का नाम योक्तान है।
२६ और योक्तान ने अल्मोदाद, शेलेप,
हसर्मावेत, येरह, २७ यदोरवाम, ऊजाल,
दिक्ला, २८ ओबाल, अबीमाएल, शबा,
२९ ओपीर, हवीला और योबाब को जन्म
दिया ये ही सब योक्तान के पुत्र हुए।
३० इनके रहने का स्थान मेशा से लेकर
सपारा जो पूर्व में एक पहाड़ है, उसके मार्ग
तक हुआ। ३१ शेम के पुत्र ये ही हुए,
और ये भिन्न भिन्न कुलों, भाषाओं, देशों
और जातियों के अनुसार अलग अलग
हो गए॥

३२ नूह के पुत्रों के घराने ये ही हैं
और उनकी जातियों के अनुसार उनकी
वंशावलियां ये ही हैं, और जलप्रलय

* वा जिसका बड़ा भाई येपेत था।

के पश्चात् पृथ्वी भर की जातिया इन्ही
में से होकर बट गईं ॥

(मनुष्य की भाषाओं मे गडबड़ी
पड़ने का वर्णन)

११ सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा,
और एक ही बोली थी। २ उस
समय लोग पूर्व की ओर चलते चलते
शिनार देश मे एक मैदान पाकर उस मे
बस गए। ३ तब वे आपस मे कहने लगे,
कि आओ, हम ईंटे बना बना के भली
भाति आग मे पकाए, और उन्हो ने पत्थर
के स्थान मे ईंट से, और चूने के स्थान मे
मिट्टी के गारे से काम लिया। ४ फिर
उन्हो ने कहा, आओ, हम एक नगर और
एक गुम्मट बना ले, जिसकी चोटी आकाश
से बाते करे, इस प्रकार से हम अपना नाम
करे ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी
पर फैलना पडे। ५ जब लोग नगर और
गुम्मट बनाने लगे, तब इन्हे देखने के
लिये यहोवा उतर आया। ६ और यहोवा
ने कहा, मै क्या देखता हू, कि सब एक
ही दल के है, और भाषा भी उन सब की
एक ही है, और उन्हो ने ऐसा ही काम भी
आरम्भ किया, और अब जितना वे करने
का यत्न करेगे, उस मे से कुछ उनके
लिये अनहोना न होगा। ७ इसलिये
आओ, हम उतर के उनकी भाषा मे बडी
गडबडी डाले, कि वे एक दूसरे की बोली
को न समझ सके। ८ इस प्रकार यहोवा
ने उनको, वहा से सारी पृथ्वी के ऊपर
फैला दिया, और उन्हो ने उस नगर का
बनाना छोड दिया। ९ इस कारण उस
नगर का नाम बाबुल * पडा, क्योकि सारी
पृथ्वी की भाषा मे जो गडबडी है, सो
यहोवा ने वही डाली, और वही से यहोवा
ने मनुष्यो को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला
दिया ॥

(शेम की वंशावली)

१० शेम की वशावली यह है। जल-
प्रलय के दो वर्ष पश्चात् जब शेम एक सौ
वर्ष का हुआ, तब उस ने अर्पक्षद् को जन्म
दिया। ११ और अर्पक्षद् के जन्म के
पश्चात् शेम पाच सौ वर्ष जीवित रहा,
और उसके और भी बेटे बेटिया उत्पन्न
हुईं ॥

१२ जब अर्पक्षद् पैंतीस वर्ष का हुआ,
तब उस ने शेलह को जन्म दिया। १३ और
शेलह के जन्म के पश्चात् अर्पक्षद् चार सौ
तीन वर्ष और जीवित रहा, और उसके
और भी बेटे बेटिया उत्पन्न हुईं ॥

१४ जब शेलह तीस वर्ष का हुआ, तब
उसके द्वारा एबेर का जन्म हुआ।
१५ और एबेर के जन्म के पश्चात्
शेलह चार सौ तीन वर्ष और जीवित
रहा, और उसके और भी बेटे बेटिया
उत्पन्न हुईं ॥

१६ जब एबेर चौंतीस वर्ष का हुआ,
तब उसके द्वारा पेलेग का जन्म हुआ।
१७ और पेलेग के जन्म के पश्चात् एबेर
चार सौ तीस वर्ष और जीवित रहा, और
उसके और भी बेटे बेटिया उत्पन्न हुईं ॥

१८ जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, तब
उसके द्वारा रू का जन्म हुआ। १९ और
रू के जन्म के पश्चात् पेलेग दो सौ नौ
वर्ष और जीवित रहा, और उसके और
भी बेटे बेटिया उत्पन्न हुईं ॥

२० जब रू बत्तीस वर्ष का हुआ, तब
उसके द्वारा सरूग का जन्म हुआ।
२१ और सरूग के जन्म के पश्चात् रू दो

* अर्थात् गड़बड़।

सो सात वर्ष और जीवित रहा, और उसके
और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥

२२ जब सरूग तीस वर्ष का हुआ, तब
उसके द्वारा नाहोर का जन्म हुआ।
२३ और नाहोर के जन्म के पश्चात्
सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा, और
उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥

२४ जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ,
तब उसके द्वारा तेरह का जन्म हुआ।
२५ और तेरह के जन्म के पश्चात् नाहोर
एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा, और
उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥

२६ जब तक तेरह सत्तर वर्ष का हुआ,
तब तक उसके द्वारा अब्राम, और नाहोर,
और हारान उत्पन्न हुए॥

२७ तेरह की यह वंशावली है।
तेरह ने अब्राम, और नाहोर, और हारान
को जन्म दिया, और हारान ने लूत को
जन्म दिया। २८ और हारान अपने पिता
के साम्हने ही, कस्दियों के ऊर नाम
नगर में, जो उसकी जन्मभूमि थी, मर
गया। २९ अब्राम और नाहोर ने स्त्रियां
ब्याह लीं: अब्राम की पत्नी का नाम तो
सारै, और नाहोर की पत्नी का नाम
मिल्का था, यह उस हारान की बेटी थी,
जो मिल्का और यिस्का दोनों का पिता
था। ३० सारै तो बांझ थी, उसके
सन्तान न हुई। ३१ और तेरह अपना
पुत्र अब्राम, और अपना पोता लूत जो
हारान का पुत्र था, और अपनी बहू सारै,
जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी इन
सभों को लेकर कस्दियों के ऊर नगर से
निकल कनान देश जाने को चला, पर
हारान नाम देश में पहुंचकर वहीं रहने
लगा। ३२ जब तेरह दो सौ पांच वर्ष का
हुआ, तब वह हारान देश में मर गया॥

(परमेश्वर की ओर से इब्राहीम के बुलाए
जाने का वर्णन)

१२ यहोवा ने अब्राम से कहा,
अपने देश, और अपनी जन्मभूमि,
और अपने पिता के घर को छोड़कर उस
देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।
२ और मैं तुझ से एक बड़ी जाति
बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और
तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष
का मूल होगा। ३ और जो तुझे आशीर्वाद
दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा, और जो तुझे
कोसे, उसे मैं शाप दूंगा, और भूमण्डल के
सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।
४ यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम
चला, और लूत भी उसके संग चला,
और जब अब्राम हारान देश से निकला
उस समय वह पचहत्तर वर्ष का था।
५ सो अब्राम अपनी पत्नी सारै, और अपने
भतीजे लूत को, और जो धन उन्हों ने
इकट्ठा किया था, और जो प्राणी उन्हों ने
हारान में प्राप्त किए थे, सब को लेकर
कनान देश में जाने को निकल चला,
और वे कनान देश में आ भी गए। ६ उस
देश के बीच से जाते हुए अब्राम शकेम में,
जहां मोरे का बांज वृक्ष है, पहुंचा, उस
समय उस देश में कनानी लोग रहते थे।
७ तब यहोवा ने अब्राम को दर्शन देकर
कहा, यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा: और
उस ने वहां यहोवा के लिये जिस ने उसे
दर्शन दिया था, एक वेदी बनाई। ८ फिर
वहां से कूच करके, वह उस पहाड़ पर
आया, जो बेतेल के पूर्व की ओर है,
और अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया
जिसकी पच्छिम की ओर तो बेतेल, और
पूर्व की ओर ऐ है, और वहां भी उस ने
यहोवा के लिये एक वेदी बनाई: और

यहोवा से प्रार्थना की। ६ और अब्राम कूच
करके दक्खिन देश की ओर चला गया॥

१० और उस देश मे अकाल पडा
और अब्राम मिस्र देश को चला गया कि
वहा परदेशी होकर रहे—क्योकि देश मे
भयकर अकाल पडा था। ११ फिर ऐसा
हुआ कि मिस्र के निकट पहुचकर, उस ने
अपनी पत्नी सारै से कहा, सुन, मुझे मालूम
है, कि तू एक सुन्दर स्त्री है १२ इस
कारण जब मिस्री तुझे देखेगे, तब कहेगे,
यह उसकी पत्नी है, सो वे मुझ को तो
मार डालेगे, पर तुझ को जीती रख लेगे।
१३ सो यह कहना, कि मै उसकी बहिन
हू, जिस से तेरे कारण मेरा कल्याण हो,
और मेरा प्राण तेरे कारण बचे। १४ फिर
ऐसा हुआ कि जब अब्राम मिस्र मे आया,
तब मिस्रियो ने उसकी पत्नी को देखा कि
यह अति सुन्दर है। १५ और फिरौन के
हाकिमो ने उसको देखकर फिरौन के
साम्हने उसकी प्रशसा की सो वह स्त्री
फिरौन के घर मे रखी गई। १६ और
उस ने उसके कारण अब्राम की भलाई की,
सो उसको भेड-बकरी, गाय-बैल, दास-
दासिया, गदहे-गदहिया, और ऊट मिले।
१७ तब यहोवा ने फिरौन और उसके
घराने पर, अब्राम की पत्नी सारै के कारण
बडी बडी विपत्तिया डाली। १८ सो
फिरौन ने अब्राम को बुलवाकर कहा,
तू ने मुझ से क्या किया है? तू ने मुझे
क्यो नही बताया कि वह तेरी पत्नी है?
१९ तू ने क्यो कहा, कि वह तेरी बहिन
है? मै ने उसे अपनी ही पत्नी बनाने के
लिये लिया, परन्तु अब अपनी पत्नी को
लेकर यहा से चला जा। २० और
फिरौन ने अपने आदमियो को उसके
विषय मे आज्ञा दी और उन्हो ने उसको
और उसकी पत्नी को, सब सम्पत्ति समेत
जो उसका था, विदा कर दिया॥

(इब्राहीम और लूत के अलग होने का वर्णन)

१३ तब अब्राम अपनी पत्नी, और
अपनी सारी सम्पत्ति लेकर, लूत
को भी सग लिये हुए, मिस्र को छोडकर
कनान के दक्खिन देश मे आया। २ अब्राम
भेड-बकरी, गाय-बैल, और सोने-रूपे का
बडा धनी था। ३ फिर वह दक्खिन देश से
चलकर, बेतेल के पास, उसी स्थान को
पहुचा, जहा उसका तम्बू पहले पडा था,
जो बेतेल और ऐ के बीच मे है। ४ यह
स्थान उस वेदी का है, जिसे उस ने पहले
बनाई थी, और वहा अब्राम ने फिर
यहोवा से प्रार्थना की। ५ और लूत के
पास भी, जो अब्राम के साथ चलता था,
भेड-बकरी, गाय-बैल, और तम्बू थे।
६ सो उस देश मे उन दोनो की समाई
न हो सकी कि वे इकट्ठे रहे क्योकि
उनके पास बहुत धन था इसलिये वे
इकट्ठे न रह सके। ७ सो अब्राम, और
लूत की भेड-बकरी, और गाय-बैल के
चरवाहो मे झगडा हुआ और उस समय
कनानी, और परिज्जी लोग, उस देश मे
रहते थे। ८ तब अब्राम लूत से कहने
लगा, मेरे और तेरे बीच, और मेरे और
तेरे चरवाहो के बीच मे झगडा न होने
पाए, क्योकि हम लोग भाई बन्धु है।
९ क्या सारा देश तेरे साम्हने नही?
सो मुझ से अलग हो, यदि तू बाई ओर
जाए तो मै दहिनी ओर जाऊगा, और
यदि तू दहिनी ओर जाए, तो मै बाई
ओर जाऊगा। १० तब लूत ने आख
उठाकर, यरदन नदी के पास वाली सारी
तराई को देखा, कि वह सब सिची हुई है।

जब तक यहोवा ने सदोम और अमोरा को
नाश न किया था, तब तक सोअर के
मार्ग तक वह तराई यहोवा की वाटिका,
और मिस्र देश के समान उपजाऊ थी।
११ सो लूत अपने लिये यरदन की सारी
तराई को चुन के पूर्व की ओर चला,
और वे एक दूसरे से अलग हो गए।
१२ अब्राम तो कनान देश में रहा, पर लूत
उस तराई के नगरों में रहने लगा, और
अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया।
१३ सदोम के लोग यहोवा के लेखे में
बड़े दुष्ट और पापी थे। १४ जब लूत
अब्राम से अलग हो गया तब उसके पश्चात्
यहोवा ने अब्राम से कहा, आंख उठाकर
जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर-दक्खिन,
पूर्व-पच्छिम, चारों ओर दृष्टि कर।
१५ क्योंकि जितनी भूमि तुझे दिखाई देती
है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को
युग युग के लिये दूंगा। १६ और मैं तेरे
वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों की
नाईं बहुत करूंगा, यहां तक कि जो कोई
पृथ्वी की धूल के किनकों को गिन सकेगा
वही तेरा वंश भी गिन सकेगा। १७ उठ,
इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में चल
फिर, क्योंकि मैं उसे तुझी को दूंगा।
१८ इसके पश्चात् अब्राम अपना तम्बू
उखाड़कर, मम्रे के बांजों के बीच जो
हेब्रोन में थे जाकर रहने लगा, और वहां
भी यहोवा की एक वेदी बनाई॥

(इब्राहीम के विजय और मेल्कीसेदेक के दर्शन देने का वर्णन)

१४ शिनार के राजा अम्रापेल, और
एल्लासार के राजा अर्योक, और
एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, और गोयीम
के राजा तिदाल के दिनों में ऐसा हुआ,
२ कि उन्हों ने सदोम के राजा बेरा,
और अमोरा के राजा बिर्शा, और अद्मा
के राजा शिनाब, और सबोयीम के राजा
शेमेबेर, और बेला जो सोअर भी कहलाता
है, इन राजाओं के विरुद्ध युद्ध किया।
३ इन पांचों ने सिद्दीम नाम तराई में,
जो खारे ताल के पास है, एका किया।
४ बारह वर्ष तक तो ये कदोर्लाओमेर के
अधीन रहे, पर तेरहवें वर्ष में उसके
विरुद्ध उठे। ५ सो चौदहवें वर्ष में
कदोर्लाओमेर, और उसके संगी राजा आए,
और अशतरोत्कनैम में रपाइयों को, और
हाम में जूजियों को, और शावेकिर्यातैम में
एमियों को, ६ और सेईर नाम पहाड़ में
होरियों को, मारते मारते उस एल्पारान
तक जो जंगल के पास है पहुंच गए।
७ वहां से वे लौटकर एन्मिशपात को
आए, जो कादेश भी कहलाता है, और
अमालेकियों के सारे देश को, और उन
एमोरियों को भी जीत लिया, जो हससोन्ता-
मार में रहते थे। ८ तब सदोम, अमोरा,
अदमा, सबोयीम, और बेला, जो सोअर
भी कहलाता है, इनके राजा निकले,
और सिद्दीम नाम तराई में, उनके साथ
युद्ध के लिये पांति बान्धी। ९ अर्थात्
एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के
राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल,
और एल्लासार के राजा अर्योक, इन चारों
के विरुद्ध उन पांचों ने पांति बान्धी।
१० सिद्दीम नाम तराई में जहां लसार
मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे, सदोम और
अमोरा के राजा भागते भागते उन में गिर
पड़े, और जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए।
११ तब वे सदोम और अमोरा के सारे
धन और भोजन वस्तुओं को लूट लाट कर
चले गए। १२ और अब्राम का भतीजा

लूत, जो सदोम मे रहता था, उसको भी
धन समेत वे लेकर चले गए। १३ तब
एक जन जो भागकर बच निकला था
उस ने जाकर इब्री अब्राम को समाचार
दिया, अब्राम तो एमोरी मम्रे, जो
एश्कोल और आनेर का भाई था, उसके
बाज वृक्षो के बीच मे रहता था, और
ये लोग अब्राम के सग वाचा बान्धे हुए
थे। १४ यह सुनकर कि उसका भतीजा
बन्धुआई मे गया है, अब्राम ने अपने
तीन सौ अठारह शिक्षित, युद्ध कौशल मे
निपुण दासो को लेकर जो उसके कुटुम्ब मे
उत्पन्न हुए थे, अस्त्र शस्त्र धारण करके दान
तक उनका पीछा किया। १५ और अपने
दासो के अलग अलग दल बान्धकर रात
को उन पर चढाई करके उनको मार
लिया और होबा तक, जो दमिश्क की
उत्तर ओर है, उनका पीछा किया।
१६ और वह सारे धन को, और अपने
भतीजे लूत, और उसके धन को, और
स्त्रियो को, और सब बन्धुओ को, लौटा
ले आया। १७ जब वह कदोर्लाओमेर
और उसके साथी राजाओ को जीतकर
लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे
नाम तराई मे, जो राजा की भी कहलाती
है, उस से भेंट करने के लिये आया।
१८ तब शालेम का राजा मेल्कीसेदेक,
जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था,
रोटी और दाखमधु ले आया। १९ और
उस ने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि
परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश
और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।
२० और धन्य है परमप्रधान ईश्वर,
जिस ने तेरे द्रोहियो को तेरे वश मे कर
दिया है। तब अब्राम ने उसको सब का

ने अब्राम से कहा, प्राणियो को तो मुझे
दे, और धन को अपने पास रख।
२२ अब्राम ने सदोम के राजा से कहा,
परमप्रधान ईश्वर यहोवा, जो आकाश और
पृथ्वी का अधिकारी है, २३ उसकी मै
यह शपथ खाता हू, कि जो कुछ तेरा है
उस मे से न तो मै एक सूत, और न जूती
का बन्धन, न कोई और वस्तु लूगा, कि
तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम मेरे ही
कारण धनी हुआ। २४ पर जो कुछ इन
जवानो ने खा लिया है और उनका भाग
जो मेरे साथ गए थे अर्थात् आनेर,
एश्कोल, और मम्रे, मै नही लौटाऊगा वे
तो अपना अपना भाग रख ले॥

(इब्राहीम के साथ यहोवा के वाचा बान्धने
का वर्णन)

१५ इन बातो के पश्चात् यहोवा का
यह वचन दर्शन मे अब्राम के पास
पहुचा, कि हे अब्राम, मत डर, तेरी
ढाल और तेरा अत्यन्त बडा फल मै हू।
२ अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मै तो
निर्वंश हू, और मेरे घर का वारिस यह
दमिश्की एलीएजेर होगा, सो तू मुझे
क्या देगा? ३ और अब्राम ने कहा, मुझे
तो तू ने वश नही दिया, और क्या देखता
हू, कि मेरे घर मे उत्पन्न हुआ एक जन
मेरा वारिस होगा। ४ तब यहोवा का
यह वचन उसके पास पहुचा, कि यह तेरा
वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा,
वही तेरा वारिस होगा। ५ और उस ने
उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की
ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या
तू उनको गिन सकता है? फिर उस ने
उस से कहा, तेरा [illegible] ही होगा।

और यहोवा ने इस बात को उनके लेखे में
धर्म गिना। ७ और उस ने उस से
कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कस्दियों
के ऊर नगर से बाहर ले आया, कि तुझ
को इस देश का अधिकार दूं। ८ उस ने
कहा, हे प्रभु यहोवा मैं कैसे जानूं कि मैं
इसका अधिकारी हूंगा? ९ यहोवा ने
उस से कहा, मेरे लिये तीन वर्ष की एक
कलोर, और तीन वर्ष की एक बकरी,
और तीन वर्ष का एक मेंढा, और एक
पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले।
१० और इन सभों को लेकर, उस ने
बीच में दो टुकडे कर दिया, और टुकडों
को आम्हने-साम्हने रखा पर चिडियाओं
को उस ने टुकडे न किया। ११ और जब
मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे, तब
अब्राम ने उन्हें उडा दिया। १२ जब सूर्य
अस्त होने लगा, तब अब्राम को भारी
नींद आई, और देखो, अत्यन्त भय और
महा अन्धकार ने उसे छा लिया। १३ तब
यहोवा ने अब्राम से कहा, यह निश्चय
जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी
होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के
दास हो जाएंगे, और वे उनको चार सौ
वर्ष लों दुःख देंगे, १४ फिर जिस देश के
वे दास होंगे उसको मैं दण्ड दूंगा और
उसके पश्चात् वे बडा धन वहां से लेकर
निकल आएंगे। १५ तू तो अपने पितरों में
कुशल के साथ मिल जाएगा, तुझे पूरे
बुढापे में मिट्टी दी जाएगी। १६ पर वे
चौथी पीढी में यहां फिर आएंगे क्योंकि
अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं
हुआ। १७ और ऐसा हुआ कि जब सूर्य
अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा
गया, तब एक अंगेठी जिस में से धूआं
उठता था और एक जलता हुआ पलीता
देख पडा जो उन टुकडों के बीच में से
होकर निकल गया। १८ उसी दिन यहोवा
ने अब्राम के साथ यह वाचा बान्धी, कि
मिस्र के महानद से लेकर परात नाम बडे नद
तक जितना देश है, १९ अर्थात्, केनियों,
कनिज्जियों, कद्मोनियों, २० हित्तियों,
परीज्जियों, रपाइयों, २१ एमोरियों, कना-
नियों, गिर्गाशियों और यबूसियों का देश मैं
ने तेरे वंश को दिया है॥

(इश्माएल की उत्पत्ति का वर्णन)

१६ अब्राम की पत्नी सारै के कोई
सन्तान न थी और उसके
हाजिरा नाम की एक मिस्री लौंडी थी।
२ सो सारै ने अब्राम से कहा, देख,
यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है
सो मैं तुझ से विनती करती हूं कि तू
मेरी लौंडी के पास जा सम्भव है कि
मेरा घर उसके द्वारा बस जाए। ३ सो
सारै की यह बात अब्राम ने मान ली।
सो जब अब्राम को कनान देश में रहते दस
वर्ष बीत चुके तब उसकी स्त्री सारै ने
अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को लेकर
अपने पति अब्राम को दिया, कि वह
उसकी पत्नी हो। ४ और वह हाजिरा
के पास गया, और वह गर्भवती हुई
और जब उस ने जाना कि वह गर्भवती है,
तब वह अपनी स्वामिनी को अपनी दृष्टि में
तुच्छ समझने लगी। ५ तब सारै ने
अब्राम से कहा, जो मुझ पर उपद्रव हुआ
सो तेरे ही सिर पर हो मैं ने तो अपनी
लौंडी को तेरी पत्नी कर दिया, पर जब
उस ने जाना कि वह गर्भवती है, तब वह
मुझे तुच्छ समझने लगी, सो यहोवा मेरे
और तेरे बीच में न्याय करे। ६ अब्राम ने
सारै से कहा, देख तेरी लौंडी तेरे वश में

लूत, जो सदोम मे रहता था, उसको भी
धन समेत वे लेकर चले गए। १३ तब
एक जन जो भागकर बच निकला था
उस ने जाकर इब्री अब्राम को समाचार
दिया, अब्राम तो एमोरी मम्रे, जो
एश्कोल और आनेर का भाई था, उसके
बाज वृक्षो के बीच मे रहता था, और
ये लोग अब्राम के सग वाचा बान्धे हुए
थे। १४ यह सुनकर कि उसका भतीजा
बन्धुआई मे गया है, अब्राम ने अपने
तीन सौ अठारह शिक्षित, युद्ध कौशल मे
निपुण दासो को लेकर जो उसके कुटुम्ब मे
उत्पन्न हुए थे, अस्त्र शस्त्र धारण करके दान
तक उनका पीछा किया। १५ और अपने
दासो के अलग अलग दल बान्धकर रात
को उन पर चढाई करके उनको मार
लिया और होबा तक, जो दमिश्क की
उत्तर ओर है, उनका पीछा किया।
१६ और वह सारे धन को, और अपने
भतीजे लूत, और उसके धन को, और
स्त्रियो को, और सब बन्धुओ को, लौटा
ले आया। १७ जब वह कदोर्लाओमेर
और उसके साथी राजाओ को जीतकर
लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे
नाम तराई मे, जो राजा की भी कहलाती
है, उस से भेट करने के लिये आया।
१८ तब शालेम का राजा मेल्कीसेदेक,
जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था,
रोटी और दाखमधु ले आया। १९ और
उस ने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि
परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश
और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो।
२० और धन्य है परमप्रधान ईश्वर,
जिस ने तेरे द्रोहियो को तेरे वश में कर
दिया है। तब अब्राम ने उसको सब का
दशमांश दिया। २१ तब सदोम के राजा
ने अब्राम से कहा, प्राणियो को तो मुझे
दे, और धन को अपने पास रख।
२२ अब्राम ने सदोम के राजा से कहा,
परमप्रधान ईश्वर यहोवा, जो आकाश और
पृथ्वी का अधिकारी है, २३ उसकी मैं
यह शपथ खाता हू, कि जो कुछ तेरा है
उस मे से न तो मैं एक सूत, और न जूती
का बन्धन, न कोई और वस्तु लूगा, कि
तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम मेरे ही
कारण धनी हुआ। २४ पर जो कुछ इन
जवानो ने खा लिया है और उनका भाग
जो मेरे साथ गए थे अर्थात् आनेर,
एश्कोल, और मम्रे, मै नही लौटाऊगा वे
तो अपना अपना भाग रख ले॥

(इब्राहीम के साथ यहोवा के वाचा बान्धने का वर्णन)

१५ इन बातो के पश्चात् यहोवा का
यह वचन दर्शन मे अब्राम के पास
पहुचा, कि हे अब्राम, मत डर, तेरी
ढाल और तेरा अत्यन्त बडा फल मैं हू।
२ अब्राम ने कहा, हे प्रभु यहोवा मै तो
निर्वंश हू, और मेरे घर का वारिस यह
दमिश्की एलीएजेर होगा, सो तू मुझे
क्या देगा? ३ और अब्राम ने कहा, मुझे
तो तू ने वंश नही दिया, और क्या देखता
हू, कि मेरे घर मे उत्पन्न हुआ एक जन
मेरा वारिस होगा। ४ तब यहोवा का
यह वचन उसके पास पहुचा, कि यह तेरा
वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा,
वही तेरा वारिस होगा। ५ और उस ने
उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की
ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या
तू उनको गिन सकता है? फिर उस ने
उस से कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा।
६ उस ने यहोवा पर विश्वास किया,

और मैं उनका परमेश्वर रहूंगा। ९ फिर
परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तू भी मेरे
साथ बान्धी हुई वाचा का पालन करना,
तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी
अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे।
१० मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे
और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी
पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक
पुरुष का खतना हो। ११ तुम अपनी अपनी
खलड़ी का खतना करा लेना, जो वाचा
मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही
चिन्ह होगा। १२ पीढ़ी पीढ़ी में केवल
तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे
घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रूपा
देकर मोल लिये जाएं, ऐसे सब पुरुष भी
जब आठ दिन के हो जाएं, तब उनका
खतना किया जाए। १३ जो तेरे घर में
उत्पन्न हो, अथवा तेरे रूपे से मोल लिया
जाए, उसका खतना अवश्य ही किया
जाए, सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह
तुम्हारी देह में होगा वह युग युग रहेगी।
१४ जो पुरुष खतनारहित रहे, अर्थात्
जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह
प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए,
क्योंकि उस ने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा
को तोड़ दिया॥

१५ फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा,
तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब
सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।
१६ और मैं उसको आशीष दूंगा, और
तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा, और
मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, कि वह
जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी,
और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा
उत्पन्न होंगे। १७ तब इब्राहीम मुंह के
बल गिर पड़ा और हंसा, और अपने मन
ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरुष
के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो
नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी? १८ और
इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा, इश्माएल
तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है।
१९ तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी
पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न
होगा, और तू उसका नाम इसहाक
रखना और मैं उसके साथ ऐसी वाचा
बान्धूंगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के
लिये युग युग की वाचा होगी। २० और
इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी
है मैं उसको भी आशीष दूंगा, और
उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही
बढ़ा दूंगा, उस से बारह प्रधान उत्पन्न
होंगे, और मैं उस से एक बड़ी जाति
बनाऊंगा। २१ परन्तु मैं अपनी वाचा
इसहाक ही के साथ बान्धूंगा जो सारा
से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न
होगा। २२ तब परमेश्वर ने इब्राहीम से
बातें करनी बन्द की और उसके पास से
ऊपर चढ़ गया। २३ तब इब्राहीम ने
अपने पुत्र इश्माएल को, और उसके घर
में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके
रुपये से मोल लिये गए थे, निदान उसके
घर में जितने पुरुष थे, उन सभों को लेके
उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार
उनकी खलड़ी का खतना किया। २४ जब
इब्राहीम की खलड़ी का खतना हुआ तब
वह निन्नानवे वर्ष का था। २५ और जब
उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना
हुआ तब वह तेरह वर्ष का था।
२६ इब्राहीम और उसके पुत्र इश्माएल
दोनों का खतना एक ही दिन हुआ।
२७ और उसके घर में जितने पुरुष थे
जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों

है. जैसा तुझे भला लगे वैसा ही उसके
साथ कर। सो सारै उसको दु ख देने लगी
और वह उसके साम्हने से भाग गई।
७ तव यहोवा के दूत ने उसको जगल
मे शूर के मार्ग पर जल के एक सोते
के पास पाकर कहा, ८ हे सारै की लौडी
हाजिरा, तू कहा से आती और कहा को
जाती है? उस ने कहा, मै अपनी स्वामिनी
सारै के साम्हने से भाग आई हू। ९ यहोवा
के दूत ने उस से कहा, अपनी स्वामिनी
के पास लौट जा और उसके वश में रह।
१० और यहोवा के दूत ने उस से कहा,
मै तेरे वग को वहुत वढाऊंगा, यहा तक
कि वहुतायत के कारण उसकी गणना न
हो सकेगी। ११ और यहोवा के दूत ने
उस से कहा, देख, तू गर्भवती है, और पुत्र
जनेगी, सो उसका नाम इश्माएल* रखना,
क्योकि यहोवा ने तेरे दु.ख का हाल सुन
लिया है। १२ और वह मनुष्य वनैले
गदहे के समान होगा उसका हाथ सव के
विरुद्ध उठेगा, और सव के हाथ उसके
विरुद्ध उठेंगे, और वह अपने सव भाई
वन्धुओ के मध्य में वसा रहेगा। १३ तव
उस ने यहोवा का नाम जिस ने उस से
वातें की थी, अत्ताएलरोई† रखकर कहा,
कि, क्या मै यहा भी उसको जाते हुए
देखने‡ पाई जो मेरा देखनेहारा है?
१४ इस कारण उस कुएं का नाम
लहैरोई§ कुआं पड़ा, वह तो कादेग और
वेरेद के वीच में है। १५ सो हाजिरा
अव्राम के द्वारा एक पुत्र जनी. और
अव्राम ने अपने पुत्र का नाम, जिसे हाजिरा
जनी, इश्माएल रखा। १६ जव हाजिरा
ने अव्राम के द्वारा इश्माएल को जन्म
दिया उस समय अव्राम छियासी वर्ष का
था॥

(खतना की विधि के ठहरने का वर्णन और इसहाक की उत्पत्ति की प्रतिज्ञा)

१७ जव अव्राम निन्नानवे वर्ष का
हो गया, तव यहोवा ने उसको
दर्शन देकर कहा मै सर्वशक्तिमान् ईश्वर
हू, मेरी उपस्थिति मे चल* और सिद्ध
होता जा। २ और मै तेरे साथ वाचा
वान्धूगा, और तेरे वश को अत्यन्त ही
वढ़ाऊगा। ३ तव अव्राम मुह के वल
गिरा. और परमेश्वर उस से यो वाते
कहता गया, ४ देख, मेरी वाचा तेरे साथ
वन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियो के समूह
का मूलपिता हो जाएगा। ५ सो अव से
तेरा नाम अव्राम† न रहेगा परन्तु तेरा
नाम इव्राहीम‡ होगा क्योकि मै ने तुझे
जातियो के समूह का मूलपिता ठहरा दिया
है। ६ और मै तुझे अत्यन्त ही फुलाऊ
फलाऊगा, और तुझ को जाति जाति का
मूल वना दूगा, और तेरे वश मे राजा
उत्पन्न होगे। ७ और मै तेरे साथ, और
तेरे पश्चात् पीढ़ी पीढ़ी तक तेरे वग के
साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा
वान्धता हू, कि मै तेरा और तेरे पश्चात्
तेरे वश का भी परमेश्वर रहूगा। ८ और
मै तुझ को, और तेरे पश्चात् तेरे वश को
भी, यह सारा कनान देश, जिस में तू
परदेशी होकर रहता है, इस रीति दूगा
कि वह युग युग उनकी निज भूमि रहेगी,

* अर्थात् ईश्वर सुननेहारा।
† अर्थात् तू सर्व्वदर्शी ईश्वर है।

* मूल में—मेरे साम्हने चल।
† अर्थात उन्नत पिता।

और मै उनका परमेश्वर रहूंगा। ६ फिर
परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तू भी मेरे
साथ बान्धी हुई वाचा का पालन करना,
तू और तेरे पश्चात् तेरा वंश भी अपनी
अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे।
१० मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे
और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी
पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक
पुरुष का खतना हो। ११ तुम अपनी अपनी
खलड़ी का खतना करा लेना, जो वाचा
मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही
चिन्ह होगा। १२ पीढ़ी पीढ़ी में केवल
तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे
घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रूपा
देकर मोल लिये जाएं, ऐसे सब पुरुष भी
जब आठ दिन के हो जाएं, तब उनका
खतना किया जाए। १३ जो तेरे घर में
उत्पन्न हो, अथवा तेरे रुपे से मोल लिया
जाए, उसका खतना अवश्य ही किया
जाए, सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह
तुम्हारी देह में होगा वह युग युग रहेगी।
१४ जो पुरुष खतनारहित रहे, अर्थात्
जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह
प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए,
क्योंकि उस ने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा
को तोड़ दिया॥

१५ फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा,
तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब
सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।
१६ और मैं उसको आशीष दूंगा, और
तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा, और
मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, कि वह
जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी,
और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा
उत्पन्न होंगे। १७ तब इब्राहीम मुंह के
बल गिर पड़ा और हंसा, और अपने मन
ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरुष
के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो
नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी? १८ और
इब्राहीम ने परमेश्वर से कहा, इश्माएल
तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है।
१९ तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी
पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न
होगा, और तू उसका नाम इसहाक
रखना और मैं उसके साथ ऐसी वाचा
बान्धूंगा जो उसके पश्चात् उसके वंश के
लिये युग युग की वाचा होगी। २० और
इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी
है मैं उसको भी आशीष दूंगा, और
उसे फुलाऊं फलाऊंगा और अत्यन्त ही
बढ़ा दूंगा, उस से बारह प्रधान उत्पन्न
होंगे, और मैं उस से एक बड़ी जाति
बनाऊंगा। २१ परन्तु मैं अपनी वाचा
इसहाक ही के साथ बान्धूंगा जो सारा
से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न
होगा। २२ तब परमेश्वर ने इब्राहीम से
बातें करनी बन्द की और उसके पास से
ऊपर चढ़ गया। २३ तब इब्राहीम ने
अपने पुत्र इश्माएल को, और उसके घर
में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके
रुपये से मोल लिये गए थे, निदान उसके
घर में जितने पुरुष थे, उन सभों को लेके
उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार
उनकी खलड़ी का खतना किया। २४ जब
इब्राहीम की खलड़ी का खतना हुआ तब
वह निन्नानवे वर्ष का था। २५ और जब
उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना
हुआ तब वह तेरह वर्ष का था।
२६ इब्राहीम और उसके पुत्र इश्माएल
दोनों का खतना एक ही दिन हुआ।
२७ और उसके घर में जितने पुरुष थे
जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों

के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का ख़तना
उसके साथ ही हुआ ॥

१८ इब्राहीम मम्रे के बाजो के बीच
कडी धूप के समय तम्बू के द्वार
पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे
दर्शन दिया २ और उस ने आख उठाकर
दृष्टि की तो क्या देखा, कि तीन पुरुष
उसके साम्हने खडे है जब उस ने उन्हे
देखा तब वह उन से भेट करने के लिये
तम्बू के द्वार से दौडा, और भूमि पर
गिरकर दण्डवत् की और कहने लगा,
३ हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की
दृष्टि है तो मै बिनती करता हू, कि अपने
दास के पास से चले न जाना। ४ मै
थोडा सा जल लाता हू और आप अपने
पाव धोकर इस वृक्ष के तले विश्राम करे।
५ फिर मै एक टुकडा रोटी ले आऊ और
उस से आप अपने अपने जीव को तृप्त
करे, तब उसके पश्चात् आगे बढे
क्योकि आप अपने दास के पास इसी लिये
पधारे है। उन्हो ने कहा, जैसा तू कहता
है वैसा ही कर। ६ सो इब्राहीम ने
तम्बू मे सारा के पास फुर्ती से जाकर कहा,
तीन सआ * मैदा फुर्ती से गून्ध, और फुलके
बना। ७ फिर इब्राहीम गाय बैल के
झुण्ड मे दौडा, और एक कोमल और
अच्छा बछडा लेकर अपने सेवक को
दिया, और उस ने फुर्ती से उसको
पकाया। ८ तब उस ने मक्खन, और दूध,
और वह बछडा, जो उस ने पकवाया था,
लेकर उनके आगे परोस दिया, और
आप वृक्ष के तले उनके पास खडा रहा,
और वे खाने लगे। ९ उन्हो ने उस से
पूछा, तेरी पत्नी सारा कहा है? उस ने
कहा, वह तो तम्बू मे है। १० उस ने कहा
मै वसन्त ऋतु मे * निश्चय तेरे पास फिर
आऊगा, और तब तेरी पत्नी सारा के
एक पुत्र उत्पन्न होगा। और सारा तम्बू
के द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे था, सुन
रही थी। ११ इब्राहीम और सारा दोनो
बहुत बूढे थे, और सारा का स्त्रीधर्म बन्द
हो गया था। १२ सो सारा मन मे हस कर
कहने लगी, मै तो बूढी हू, और मेरा पति
भी बूढा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा?
१३ तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा, सारा
यह कहकर क्यो हसी, कि क्या मेरे, जो
ऐसी बुढिया हो गई हू, सचमुच एक पुत्र
उत्पन्न होगा? १४ क्या यहोवा के लिये
कोई काम कठिन है? नियत समय मे,
अर्थात् वसन्त ऋतु मे,* मै तेरे पास फिर
आऊगा, और सारा के पुत्र उत्पन्न होगा।
१५ तब सारा डर के मारे यह कहकर मुकर
गई, कि मै नही हसी। उस ने कहा, नही,
तू हसी तो थी ॥

(सदोम आदि नगरों के विनाश का वर्णन)

१६ फिर वे पुरुष वहा से चलकर,
सदोम की ओर ताकने लगे और इब्राहीम
उन्हे विदा करने के लिये उनके सग सग
चला। १७ तब यहोवा ने कहा, यह जो
मै करता हू सो क्या इब्राहीम से छिपा
रखू? १८ इब्राहीम से तो निश्चय एक
बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और
पृथ्वी की सारी जातिया उसके द्वारा आशीष
पाएगी। १९ क्योकि मै जानता हू, कि
वह अपने पुत्रो और परिवार को जो उसके
पीछे रह जाएगे आज्ञा देगा कि वे यहोवा
के मार्ग मे अटल बने रहे, और धर्म और
न्याय करते रहे, इसलिये कि जो कुछ

* यह नपुआ विशेष है।

* मूल में—जीवन के समय में।

यहोवा ने इब्राहीम के विषय मे कहा है
उसे पूरा करे। २० फिर यहोवा ने कहा,
सदोम और अमोरा की चिल्लाहट बढ गई
है, और उनका पाप बहुत भारी हो गया
है, २१ इसलिये मै उतरकर देखूगा, कि
उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक
पहुची है, उन्हो ने ठीक वैसा ही काम
किया है कि नही और न किया हो तो
मै उसे जान लूगा। २२ सो वे पुरुष
वहा से मुड के सदोम की ओर जाने लगे
पर इब्राहीम यहोवा के आगे खडा रह
गया। २३ तब इब्राहीम उसके समीप
जाकर कहने लगा, क्या तू सचमुच दुष्ट
के सग धर्मी को भी नाश करेगा?
२४ कदाचित् उस नगर मे पचास धर्मी हो
तो क्या तू सचमुच उस स्थान को नाश
करेगा और उन पचास धर्मियो के कारण
जो उस मे हो न छोडेगा? २५ इस प्रकार
का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के
सग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी
और दुष्ट दोनो की एक ही दशा हो।
यह तुझ से दूर रहे क्या सारी पृथ्वी का
न्यायी न्याय न करे? २६ यहोवा ने कहा,
यदि मुझे सदोम मे पचास धर्मी मिले, तो
उनके कारण उस सारे स्थान को छोडूगा।
२७ फिर इब्राहीम ने कहा, हे प्रभु, सुन,
म तो मिट्टी और राख हू, तौभी मै ने
इतनी ढिठाई की कि तुझ से बाते करू।
२८ कदाचित् उन पचास धर्मियो मे पाच
घट जाए तो क्या तू पाच ही के घटने
के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा?
उस ने कहा, यदि मुझे उस मे पैतालीस
भी मिले, तौभी उसका नाश न करूगा।
२९ फिर उस ने उस से यह भी कहा,
कदाचित् वहा चालीस मिले। उस ने कहा,
तो मै चालीस के कारण भी ऐसा न
करूगा। ३० फिर उस ने कहा, हे प्रभु,
क्रोध न कर, तो मै कुछ और कहू
कदाचित् वहा तीस मिले। उस ने कहा,
यदि मुझे वहा तीस भी मिले, तौभी ऐसा
न करूगा। ३१ फिर उस ने कहा, हे प्रभु,
सुन, मै ने इतनी ढिठाई तो की है कि
तुझ से बाते करू कदाचित् उस मे बीस
मिले। उस ने कहा, मै बीस के कारण
भी उसका नाश न करूगा। ३२ फिर
उस ने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, मै
एक ही बार और कहूगा कदाचित् उस मे
दस मिले। उस ने कहा, तो मै दस के
कारण भी उसका नाश न करूगा।
३३ जब यहोवा इब्राहीम से बाते कर चुका,
तब चला गया और इब्राहीम अपने घर
को लौट गया॥

१९ साझ को वे दो दूत सदोम के
पास आए और लूत सदोम के
फाटक के पास बैठा था सो उन-
को देखकर वह उन से भेंट करने के
लिये उठा, और मुह के बल झुककर
दण्डवत् कर कहा, २ हे मेरे प्रभुओ,
अपने दास के घर मे पधारिए, और रात
भर विश्राम कीजिए, और अपने पाव
धोइये, फिर भोर को उठकर अपने मार्ग
पर जाइए। उन्हो ने कहा, नही, हम
चौक ही म रात बिताएगे। ३ और उस ने
उन से बहुत बिनती करके उन्हे मनाया,
सो वे उसके साथ चलकर उसके घर मे
आए, और उस ने उनके लिये जेवनार
तैय्यार की, और बिना खमीर की रोटिया
बनाकर उनको खिलाई। ४ उनके सो
जाने से पहिले, उस सदोम नगर के
पुरुषो ने, जवानो से लेकर बूढा तक, वरन
चारो ओर के सब लोगो ने आकर उस

घर को घेर लिया, ५ और लूत को
पुकारकर कहने लगे, कि जो पुरुष आज
रात को तेरे पास आए है वे कहा है?
उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम
उन से भोग करे। ६ तब लूत उनके पास
द्वार के बाहर गया, और किवाड को अपने
पीछे बन्द करके कहा, ७ हे मेरे भाइयो,
ऐसी बुराई न करो। ८ सुनो, मेरी
दो बेटिया है जिन्हो ने अब लो पुरुष का
मुह नही देखा, इच्छा हो तो मै उन्हें
तुम्हारे पास बाहर ले आऊ, और तुम को
जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उन से
करो पर इन पुरुषो से कुछ न करो,
क्योकि ये मेरी छत के तले आए*
है। ९ उन्हो ने कहा, हट जा। फिर
वे कहने लगे, तू एक परदेशी होकर
यहा रहने के लिये आया पर अब
न्यायी भी बन बैठा है सो अब हम उन से
भी अधिक तेरे साथ बुराई करेगे। और
वे उस पुरुष लूत को बहुत दबाने लगे,
और किवाड तोडने के लिये निकट आए।
१० तब उन पाहुनो† ने हाथ बढाकर,
लूत को अपने पास घर मे खीच लिया,
और किवाड को बन्द कर दिया। ११ और
उन्हो ने क्या छोटे, क्या बडे, सब पुरुषो
को जो घर के द्वार पर थे अन्धा कर दिया,
सो वे द्वार को टटोलते टटोलते थक गए।
१२ फिर उन पाहुनो† ने लूत से पूछा,
यहा तेरे और कौन कौन है? दामाद,
बेटे, बेटिया, वा नगर मे तेरा जो कोई हो,
उन सभो को लेकर इस स्थान से निकल
जा। १३ क्योकि हम यह स्थान नाश
करने पर है, इसलिये कि इसकी चिल्लाहट
यहोवा के सम्मुख बढ गई है, और यहोवा
ने हमे इसका सत्यानाश करने के लिये
भेज दिया है। १४ तब लूत ने निकलकर
अपने दामादो को, जिनके साथ उसकी
बेटियो की सगाई हो गई थी, समझा के
कहा, उठो, इस स्थान से निकल चलो
क्योकि यहोवा इस नगर को नाश किया
चाहता है। पर वह अपने दामादो की
दृष्टि मे ठट्ठा करनेहारा सा जान पडा।
१५ जब पह फटने लगी, तब दूतो ने
लूत से फुर्ती कराई और कहा, कि उठ,
अपनी पत्नी और दोनो बेटियो को जो
यहा है ले जा नही तो तू भी इस नगर
के अधर्म मे भस्म हो जाएगा। १६ पर
वह विलम्ब करता रहा, इस से उन पुरुषो
ने उसका और उसकी पत्नी, और दोनो
बेटियो का हाथ पकड लिया, क्योकि
यहोवा की दया उस पर थी और उसको
निकालकर नगर के बाहर कर दिया।
१७ और ऐसा हुआ कि जब उन्हो ने
उनको बाहर निकाला, तब उस ने कहा,
अपना प्राण लेकर भाग जा, पीछे की
ओर न ताकना, और तराई भर मे न
ठहरना, उस पहाड पर भाग जाना, नही
तो तू भी भस्म हो जाएगा। १८ लूत
ने उन से कहा, हे प्रभु, ऐसा न कर:
१९ देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की
दृष्टि हुई है, और तू ने इस मे बडी कृपा
दिखाई, कि मेरे प्राण को बचाया है,
पर मै पहाड पर भाग नही सकता, कही
ऐसा न हो, कि कोई विपत्ति मुझ पर
आ पडे, और मै मर जाऊ २० देख,
वह नगर ऐसा निकट है कि मै वहा भाग
सकता हू, और वह छोटा भी है मुझे
वही भाग जाने दे, क्या वह छोटा नही
है? और मेरा प्राण बच जाएगा।
२१ उस ने उस से कहा, देख, मै ने इस

* मूल में—इसलिये आए।
† मूल में—मनुष्यों।

विषय मे भी तेरी विनती अंगीकार की है,
कि जिस नगर की चर्चा तू ने की है,
उसको मै नाश न करूगा। २२ फुर्ती से
वहा भाग जा, क्योकि जब तक तू वहा
न पहुचे तब तक मै कुछ न कर सकूगा।
इसी कारण उस नगर का नाम सोअर *
पडा। २३ लूत के सोअर के निकट
पहुचते ही सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ।
२४ तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम
और अमोरा पर आकाश से गन्धक और
आग बरसाई, २५ और उन नगरो को
और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरो
के सब निवासियो को, भूमि की सारी
उपज समेत नाश कर दिया। २६ लूत की
पत्नी ने जो उसके पीछे थी दृष्टि फेर के
पीछे की ओर देखा, और वह नमक का
खम्भा बन गई। २७ भोर को इब्राहीम
उठकर उस स्थान को गया, जहा वह
यहोवा के सम्मुख खडा था, २८ और
सदोम, और अमोरा, और उस तराई के
सारे देश की ओर आख उठाकर क्या देखा,
कि उस देश मे से धधकती हुई भट्ठी का सा
धूआ उठ रहा है। २९ और ऐसा हुआ,
कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरो
को, जिन में लूत रहता था, उलट पुलट
कर नाश किया, तब उस ने इब्राहीम को
याद करके लूत को उस घटना से बचा
लिया ॥

३० और लूत ने सोअर को छोड दिया,
और पहाड पर अपनी दोनो बेटियो समेत
रहने लगा, क्योकि वह सोअर में रहने से
डरता था इसलिये वह और उसकी
दोनो बेटिया वहा एक गुफा मे रहने लगे।
३१ तब बडी बेटी ने छोटी से कहा,
हमारा पिता बूढा है, और पृथ्वी * भर मे
कोई ऐसा पुरुष नही जो ससार की रीति
के अनुसार हमारे पास आए ३२ सो आ,
हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर,
उसके साथ सोए, जिस से कि हम अपने
पिता के वश को बचाए रखे। ३३ सो
उन्हो ने उसी दिन रात के समय अपने
पिता को दाखमधु पिलाया, तब बडी बेटी
जाकर अपने पिता के पास लेट गई, पर
उस ने न जाना, कि वह कब लेटी, और
कब उठ गई। ३४ और ऐसा हुआ कि
दूसरे दिन बडी ने छोटी से कहा, देख,
कल रात को मै अपने पिता के साथ सोई
सो आज भी रात को हम उसको दाख-
मधु पिलाए, तब तू जाकर उसके साथ
सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वश
उत्पन्न करें। ३५ सो उन्हो ने उस दिन
भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु
पिलाया और छोटी बेटी जाकर उसके
पास लेट गई पर उसको उसके भी सोने
और उठने के समय का ज्ञान न था।
३६ इस प्रकार से लूत की दोनो बेटिया
अपने पिता से गर्भवती हुई। ३७ और
बडी एक पुत्र जनी, और उसका नाम
मोआब † रखा वह मोआब नाम जाति
का जो आज तक है मूलपिता हुआ।
३८ और छोटी भी एक पुत्र जनी, और
उसका नाम बेनम्मी ‡ रखा, वह अम्मोन्-
वशियो का जो आज तक है मूलपिता हुआ ॥

(इसहाक की उत्पत्ति का वर्णन)

२० फिर इब्राहीम वहा से कूच कर
दक्खिन देश मे आकर कादेश

* अर्थात् छोटा।

* वा देश।
† अर्थात् पिता का वीर्य्य।
‡ अर्थात् मेरे कुटुम्बी का बेटा।

और शूर के बीच मे ठहरा, और गरार मे
रहने लगा। २ और इब्राहीम अपनी पत्नी
सारा के विषय मे कहने लगा, कि वह
मेरी बहिन है सो गरार के राजा अबी-
मेलेक ने दूत भेजकर सारा को बुलवा
लिया। ३ रात को परमेश्वर ने स्वप्न मे
अबीमेलेक के पास आकर कहा, सुन, जिस
स्त्री को तू ने रख लिया है, उसके कारण
तू मर जाएगा, क्योंकि वह सुहागिन है।
४ परन्तु अबीमेलेक तो उसके पास न गया
था सो उस ने कहा, हे प्रभु, क्या तू
निर्दोष जाति का भी घात करेगा?
५ क्या उसी ने स्वय मुझ से नही कहा,
कि वह मेरी बहिन है? और उस स्त्री ने
भी आप कहा, कि वह मेरा भाई है
मै ने तो अपने मन की खराई और अपने
व्यवहार की सच्चाई से * यह काम किया।
६ परमेश्वर ने उस से स्वप्न मे कहा,
हा, मै भी जानता हू कि अपने मन की
खराई से तू ने यह काम किया है, और
मै ने तुझे रोक भी रखा कि तू मेरे विरुद्ध
पाप न करे इसी कारण मै ने तुझ को
उसे छूने नही दिया। ७ सो अब उस पुरुष
की पत्नी को उसे फेर दे, क्योंकि वह
नबी है, और तेरे लिये प्रार्थना करेगा,
और तू जीता रहेगा पर यदि तू उसको
न फेर दे तो जान रख, कि तू, और तेरे
जितने लोग है, सब निश्चय मर जाएगे।
८ बिहान को अबीमेलेक ने तडके उठकर
अपने सब कर्मचारियो को बुलवाकर ये
सब बाते सुनाई और वे लोग बहुत डर
गए। ९ तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को
बुलवाकर कहा, तू ने हम से यह क्या
किया है? और मै ने तेरा क्या बिगाडा
था, कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर
ऐसा बडा पाप डाल दिया है? तू ने
मुझ से वह काम किया है जो उचित न
था। १० फिर अबीमेलेक ने इब्राहीम से
पूछा, तू ने क्या समझकर ऐसा काम
किया? ११ इब्राहीम ने कहा, मै ने यह
सोचा था, कि इस स्थान मे परमेश्वर का
कुछ भी भय न होगा, सो ये लोग मेरी
पत्नी के कारण मेरा घात करेगे।
१२ और फिर भी सचमुच वह मेरी
बहिन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है,
पर मेरी माता की बेटी नही, फिर वह
मेरी पत्नी हो गई। १३ और ऐसा हुआ
कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का
घर छोडकर निकलने की आज्ञा दी, तब
मै ने उस से कहा, इतनी कृपा तुझे मुझ पर
करनी होगी कि हम दोनो जहा जहा जाए
वहा वहा तू मेरे विषय मे कहना, कि
यह मेरा भाई है। १४ तब अबीमेलेक ने
भेड-बकरी, गाय-बैल, और दास-दासिया
लेकर इब्राहीम को दी, और उसकी पत्नी
सारा को भी उसे फेर दिया। १५ और
अबीमेलेक ने कहा, देख, मेरा देश तेरे
साम्हने है, जहा तुझे भावे वहा रह।
१६ और सारा से उस ने कहा, देख,
मै ने तेरे भाई को रुपे के एक हजार टुकडे
दिए है देख, तेरे सारे सगियो के साम्हने
वही तेरी आखो का पर्दा बनेगा, और
सभो के साम्हने तू ठीक होगी। १७ तब
इब्राहीम ने यहोवा से प्रार्थना की, और
यहोवा ने अबीमेलेक, और उसकी पत्नी,
और दासियो को चगा किया और
वे जनने लगी। १८ क्योंकि यहोवा ने
इब्राहीम की पत्नी सारा के कारण
अबीमेलेक के घर की सब स्त्रियो की कोखो
को पूरी रीति से बन्द कर दिया था॥

* मूल में—अपनी हथेलियों की निर्दो-
षता से।

२१ सो यहोवा ने जैसा कहा था
वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके
साथ अपने वचन के अनुसार किया।
२ सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती होकर
उसके बुढापे में उसी नियुक्त समय पर
जो परमेश्वर ने उस से ठहराया था एक
पुत्र उत्पन्न हुआ। ३ और इब्राहीम ने
अपने उस पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न
हुआ था इसहाक * रखा। ४ और जब
उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ,
तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार
उसका खतना किया। ५ और जब
इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब
वह एक सौ वर्ष का था। ६ और सारा ने
कहा, परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित कर
दिया है, इसलिये सब सुननेवाले भी मेरे
साथ प्रफुल्लित होगे। ७ फिर उस ने यह
भी कहा, कि क्या कोई कभी इब्राहीम से
कह सकता था, कि सारा लडको को दूध
पिलाएगी? पर देखो, मुझ से उसके
बुढापे मे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ८ और
वह लडका बढा और उसका दूध छुडाया
गया और इसहाक के दूध छुडाने के दिन
इब्राहीम ने बडी जेवनार की। ९ तब
सारा को मिस्री हाजिरा का पुत्र, जो
इब्राहीम से उत्पन्न हुआ था, हसी करता
हुआ देख पडा। १० सो इस कारण
उस ने इब्राहीम से कहा, इस दासी को
पुत्र सहित बरबस निकाल दे क्योकि इस
दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ
भागी न होगा। ११ यह बात इब्राहीम
को अपने पुत्र के कारण बहुत बुरी लगी।
१२ तब परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा,
उस लडके और अपनी दासी के कारण
तुझे बुरा न लगे, जो बात सारा तुझ से
कहे, उसे मान, क्योकि जो तेरा वश
कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा।
१३ दासी के पुत्र से भी मै एक जाति
उत्पन्न करूगा इसलिये कि वह तेरा वश
है। १४ सो इब्राहीम ने बिहान को
तडके उठकर रोटी और पानी से भरी
चमडे की थैली भी हाजिरा को दी, और
उसके कन्धे पर रखी, और उसके लडके
को भी उसे देकर उसको विदा किया
सो वह चली गई, और बेर्शेबा के जगल में
भ्रमण करने लगी। १५ जब थैली का
जल चुक गया, तब उस ने लडके को
एक झाडी के नीचे छोड दिया। १६ और
आप उस से तीर भर के टप्पे पर दूर
जाकर उसके साम्हने यह सोचकर बैठ
गई, कि मुझ को लडके की मृत्यु देखनी
न पडे। तब वह उसके साम्हने बैठी हुई
चिल्ला चिल्ला के रोने लगी। १७ और
परमेश्वर ने उस लडके की सुनी, और
उसके दूत ने स्वर्ग से हाजिरा को पुकार के
कहा, हे हाजिरा तुझे क्या हुआ? मत डर,
क्योकि जहा तेरा लडका है वहा से उसकी
आवाज परमेश्वर को सुन पडी है।
१८ उठ, अपने लडके को उठा और अपने
हाथ से सम्भाल क्योकि मै उसके द्वारा एक
बडी जाति बनाऊगा। १९ परमेश्वर ने
उसकी आखे खोल दी, और उसको एक
कुआ दिखाई पडा, सो उस ने जाकर थैली
को जल से भरकर लडके को पिलाया।
२० और परमेश्वर उस लडके के साथ
रहा, और जब वह बडा हुआ, तब जगल मे
रहते रहते धनुर्धारी बन गया। २१ वह
तो पारान नाम जगल मे रहा करता था
और उसकी माता ने उसके लिये मिस्र
देश से एक स्त्री मगवाई॥

* अर्थात् हसी।

२२ उन दिनो मे ऐसा हुआ कि
अबीमेलेक अपने सेनापति पीकोल को सग
लेकर इब्राहीम से कहने लगा, जो कुछ
तू करता है उस मे परमेश्वर तेरे सग
रहता है २३ सो अब मुझ से यहा इस
विषय मे परमेश्वर की किरिया खा, कि
तू न तो मुझ से छल करेगा, और न
कभी मेरे वश से करेगा, परन्तु जैसी करुणा
मैं ने तुझ पर की है, वैसी ही तू मुझ
पर और इस देश पर भी जिस मे तू
रहता है करेगा। २४ इब्राहीम ने कहा, मै
किरिया खाऊगा। २५ और इब्राहीम ने
अबीमेलेक को एक कुए के विषय मे, जो
अबीमेलेक के दासो ने बरीयाई से ले
लिया था, उलहना दिया। २६ तब अबी-
मेलेक ने कहा, मै नही जानता कि किस ने
यह काम किया और तू ने भी मुझे
नही बताया, और न मैं ने आज से पहिले
इसके विषय मे कुछ सुना। २७ तब
इब्राहीम ने भेड-बकरी, और गाय-बैल
लेकर अबीमेलेक को दिए, और उन
दोनो ने आपस मे वाचा बान्धी। २८ और
इब्राहीम ने भेड की सात बच्ची अलग कर
रखी। २९ तब अबीमेलेक ने इब्राहीम से
पूछा, इन सात बच्चियों का, जो तू ने
अलग कर रखी है, क्या प्रयोजन है?
३० उस ने कहा, तू इन सात बच्चियो को
इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से
ले, कि मैं ने यह कुआ खोदा है। ३१ उन
दोनो ने जो उस स्थान मे आपस मे
किरिया खाई, इसी कारण उसका नाम
बेर्शेबा* पडा। ३२ जब उन्हो ने बेर्शेबा मे
परस्पर वाचा बान्धी, तब अबीमेलेक,
और उसका सेनापति पीकोल उठकर
पलिश्तियो के देश मे लौट गए। ३३ और
इब्राहीम ने बेर्शेबा मे झाऊ का एक वृक्ष
लगाया, और वहा यहोवा, जो सनातन
ईश्वर है, उस से प्रार्थना की। ३४ और
इब्राहीम पलिश्तियो के देश मे बहुत दिनो
तक परदेशी होकर रहा॥

(इब्राहीम के परीक्षा मे पडने का वर्णन)

२२ इन बातो के पश्चात् ऐसा
हुआ कि परमेश्वर ने, इब्राहीम से
यह कहकर उसकी परीक्षा की, कि हे
इब्राहीम उस ने कहा, देख, मै यहा
हू*। २ उस ने कहा, अपने पुत्र को
अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को,
जिस से तू प्रेम रखता है, सग लेकर
मोरिय्याह देश मे चला जा; और वहा
उसको एक पहाड के ऊपर जो मै तुझे
बताऊगा होमबलि करके चढा। ३ सो
इब्राहीम बिहान को तडके उठा और अपने
गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवक,
और अपने पुत्र इसहाक को सग लिया,
और होमबलि के लिये लकडी चीर ली;
तब कूच करके उस स्थान की ओर चला,
जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उस से की
थी। ४ तीसरे दिन इब्राहीम ने आखे
उठाकर उस स्थान को दूर से देखा।
५ और उस ने अपने सेवको से कहा,
गदहे के पास यही ठहरे रहो, यह लडका
और मै वहा तक जाकर, और दण्डवत्
करके, फिर तुम्हारे पास लौट आऊगा।
६ सो इब्राहीम ने होमबलि की लकडी
ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और
आग और छुरी को अपने हाथ मे लिया,
और वे दोनो एक साथ चल पडे।
७ इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा,

* अर्थात् किरिया का कुआ।

* मूल में—मुझे देख।

हे मेरे पिता, उस ने कहा, हे मेरे पुत्र,
क्या बात है* उस ने कहा, देख, आग
और लकड़ी तो है, पर होमबलि के लिये
भेड़ कहा है? ८ इब्राहीम ने कहा, हे मेरे
पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय
आप ही करेगा। ९ सो वे दोनों संग
संग आगे चलते गए। और वे उस स्थान
को जिसे परमेश्वर ने उसको बताया था
पहुंचे, तब इब्राहीम ने वहां वेदी बनाकर
लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने
पुत्र इसहाक को बान्ध के वेदी पर की
लकड़ी के ऊपर रख दिया। १० और
इब्राहीम ने हाथ बढ़ाकर छुरी को ले
लिया कि अपने पुत्र को बलि करे।
११ तब यहोवा के दूत ने स्वर्ग से
उसको पुकार के कहा, हे इब्राहीम, हे
इब्राहीम, उस ने कहा, देख, मैं यहां
हूं*। १२ उस ने कहा, उस लड़के पर
हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर
क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन
अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख
छोड़ा, इस से मैं अब जान गया कि तू
परमेश्वर का भय मानता है। १३ तब
इब्राहीम ने आंखें उठाई, और क्या देखा,
कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से
एक झाड़ी में बझा हुआ है सो इब्राहीम ने
जाके उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र
की सन्ती होमबलि करके चढ़ाया।
१४ और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम
यहोवा यिरे† रखा इसके अनुसार
आज तक भी कहा जाता है, कि यहोवा
के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।
१५ फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार
स्वर्ग से इब्राहीम को पुकार के कहा,

* मूल में—मुझे देख।
† अर्थात् यहोवा उपाय करेगा।

१६ यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी
ही यह शपथ खाता हूं, कि तू ने जो यह
काम किया है कि अपने पुत्र, वरन अपने
एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा,
१७ इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष
दूंगा, और निश्चय तेरे वंश को आकाश के
तारागण, और समुद्र के तीर की बालू
के किनकों के समान अनगिनित करूंगा,
और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों* का
अधिकारी होगा १८ और पृथ्वी की सारी
जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य
मानेंगी क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।
१९ तब इब्राहीम अपने सेवकों के पास लौट
आया, और वे सब बेर्शेबा को संग संग गए,
और इब्राहीम बेर्शेबा मे रहता रहा॥

२० इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि
इब्राहीम को यह सन्देश मिला, कि मिल्का
के तेरे भाई नाहोर से सन्तान उत्पन्न हुए
हैं। २१ मिल्का के पुत्र तो ये हुए, अर्थात्
उसका जेठा ऊस, और ऊस का भाई बूज,
और कमूएल, जो अराम का पिता हुआ।
२२ फिर केसेद, हज़ो, पिल्दाश, यिद्लाप,
और बतूएल। २३ इन आठों को मिल्का
इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माए जनी।
और बतूएल ने रिबका को उत्पन्न किया।
२४ फिर नाहोर के रूमा नाम एक
रखेली भी थी, जिस से तेबह, गहम,
तहश, और माका, उत्पन्न हुए॥

(सारा की मृत्यु और अन्तक्रिया का वर्णन)

२३ सारा तो एक सौ सत्ताईस बरस
की अवस्था को पहुंची, और जब
सारा की इतनी अवस्था हुई, २ तब वह
किर्यतर्बा मे मर गई। यह तो कनान
देश मे है, और हेब्रोन भी कहलाता है

* मूल में—फाटक।

इब्राहीम से कहा, ६ हे हमारे प्रभु,
हमारी सुन; तू तो हमारे बीच मे बड़ा*
प्रधान है: सो हमारी कब्रों में से जिस को
तू चाहे उस मे अपने मुर्दे को गाड़,
हम मे से कोई तुझे अपनी कब्र के लेने से
न रोकेगा, कि तू अपने मुर्दे को उस
मे गाड़ने न पाए। ७ तब इब्राहीम
उठकर खड़ा हुआ, और हित्तियो के
सम्मुख, जो उस देश के निवासी थे, दण्डवत्
करके कहने लगा, ८ यदि तुम्हारी यह
इच्छा हो कि मै अपने मुर्दे को गाड़के
अपनी आख की ओट करू, तो मेरी
प्रार्थना है, कि सोहर के पुत्र एप्रोन से
मेरे लिये विनती करो, ९ कि वह अपनी
मकपेलावाली गुफा, जो उसकी भूमि की
सीमा पर है, उसका पूरा दाम लेकर
मुझे दे दे, कि वह तुम्हारे बीच कब्रिस्तान
के लिये मेरी निज भूमि हो जाए। १० और
एप्रोन तो हित्तियो के बीच वहा बैठा
हुआ था। सो जितने हित्ती उसके नगर
के फाटक से होकर भीतर जाते थे,
उन सभो के साम्हने उस ने इब्राहीम को
उत्तर दिया, ११ कि हे मेरे प्रभु, ऐसा
नही, मेरी सुन, वह भूमि मै तुझे देता
हू, और उस मे जो गुफा है, वह भी मै
तुझे देता हू, अपने जातिभाइयो के

* मूल में—परमेश्वर का।

गाड़ दे। १४ एप्रोन ने इब्राहीम को यह
उत्तर दिया, १५ कि, हे मेरे प्रभु, मेरी
बात सुन, उस भूमि का दाम तो चार सौ
शेकेल रूपा है, पर मेरे और तेरे बीच में
यह क्या है? अपने मुर्दे को कब्र में रख।
१६ इब्राहीम ने एप्रोन की मानकर
उसको उतना रूपा तौल दिया, जितना
उस ने हित्तियो के सुनते हुए कहा था,
अर्थात् चार सौ ऐसे शेकेल जो व्यापारियो
मे चलते थे। १७ सो एप्रोन की भूमि, जो
मम्रे के सम्मुख की मकपेला में थी, वह
गुफा समेत, और उन सब वृक्षो समेत भी
जो उस में और उसके चारो ओर सीमा पर
थे, १८ जितने हित्ती उसके नगर के फाटक
से होकर भीतर जाते थे, उन सभो के
साम्हने इब्राहीम के अधिकार मे पक्की रीति
से आ गई। १९ इसके पश्चात् इब्राहीम
ने अपनी पत्नी सारा को, उस मकपेला-
वाली भूमि की गुफा मे जो मम्रे के अर्थात्
हेब्रोन के साम्हने कनान देश मे है, मिट्टी
दी। २० और वह भूमि गुफा समेत, जो
उस मे थी, हित्तियो की ओर से कब्रिस्तान
के लिये इब्राहीम के अधिकार मे पक्की
रीति से आ गई॥

(इसहाक के विवाह का वर्णन)

२४ इब्राहीम वृद्ध था और उसकी
आयु बहुत थी और यहोवा ने सब

बातो में उसको आशीष दी थी। २ सो
इब्राहीम ने अपने उस दास से, जो उसके
घर मे पुरनिया और उसकी सारी सम्पत्ति
पर अधिकारी था, कहा, अपना हाथ
मेरी जाघ के नीचे रख ३ और मुझ से
आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा
की इस विषय मे शपथ खा, कि तू मेरे
पुत्र के लिये कनानियो की लडकियो मे से,
जिनके बीच मै रहता हू, किसी को न
ले आएगा। ४ परन्तु तू मेरे देश में
मेरे ही कुटुम्बियो के पास जाकर मेरे
पुत्र इसहाक के लिये एक पत्नी ले आएगा।
५ दास ने उस से कहा, कदाचित् वह
स्त्री इस देश में मेरे साथ आना न
चाहे, तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस
देश में जहा से तू आया है ले जाना पडेगा?
६ इब्राहीम ने उस से कहा, चौकस रह,
मेरे पुत्र को वहा कभी न ले जाना।
७ स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा, जिस ने
मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म-
भूमि से ले आकर मुझ से शपथ खाकर
कहा, कि मै यह देश तेरे वश को दूगा,
वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा, कि
तू मेरे पुत्र के लिये वहा से एक स्त्री ले
आए। ८ और यदि वह स्त्री तेरे साथ
आना न चाहे तब तो तू मेरी इस शपथ से
छूट जाएगा पर मेरे पुत्र को वहा न
ले जाना। ९ तब उस दास ने अपने
स्वामी इब्राहीम की जाघ के नीचे अपना
हाथ रखकर उस से इसी विषय की शपथ
खाई। १० तब वह दास अपने स्वामी
के ऊटो मे से दस ऊट छाटकर उसके
सब उत्तम उत्तम पदार्थों मे से कुछ कुछ
लेकर चला, और मसोपोटामिया * मे

* अर्थात् दोआब में का अराम।

नाहोर के नगर के पास पहुचा। ११ और
उस ने ऊटो को नगर के बाहर एक कुए
के पास बैठाया, वह सध्या का समय था,
जिस समय स्त्रिया जल भरने के लिये
निकलती है। १२ सो वह कहने लगा,
हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर, यहोवा,
आज मेरे कार्य को सिद्ध कर, और मेरे
स्वामी इब्राहीम पर करुणा कर। १३ देख,
मै जल के इस सोते के पास खडा हू,
और नगरवासियो की बेटिया जल भरने
के लिये निकली आती है १४ सो ऐसा
होने दे, कि जिस कन्या से मै कहू, कि
अपना घडा मेरी ओर झुका, कि मै पीऊ,
और वह कहे, कि ले, पी ले, पीछे मैं
तेरे ऊटो को भी पिलाऊगी सो वही हो
जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिये
ठहराया हो, इसी रीति मे जान लूगा कि
तू ने मेरे स्वामी पर करुणा की है।
१५ और ऐसा हुआ कि जब वह कह ही
रहा था कि रिबका, जो इब्राहीम के भाई
नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र, बतूएल
की बेटी थी, वह कन्धे पर घडा लिये हुए
आई। १६ वह अति सुन्दर, और कुमारी
थी, और किसी पुरुष का मुह न देखा
था वह कुए में सोते के पास उतर गई,
और अपना घडा भर के फिर ऊपर आई।
१७ तब वह दास उस से भेंट करने को
दौडा, और कहा, अपने घडे मे से थोडा
पानी मुझे पिला दे। १८ उस ने कहा,
हे मेरे प्रभु, ले, पी ले और उस ने फुर्ती से
घडा उतारकर हाथ मे लिये लिये उसको
पिला दिया। १९ जब वह उसको पिला
चुकी, तब कहा, मै तेरे ऊटो के लिये
भी तब तक पानी भर भर लाऊगी, जब
तक वे पी न चुके। २० तब वह फुर्ती से
अपने घडे का जल हौदे मे उण्डेलकर

फिर कुए पर भरने को दौड गई, और
उसके सब ऊटो के लिये पानी भर दिया।
२१ और वह पुरुष उसकी ओर चुपचाप
अचम्भे के साथ ताकता हुआ यह सोचता
था, कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सुफल
किया है कि नही। २२ जब ऊट पी चुके,
तब उस पुरुष ने आध तोले सोने का एक
नत्थ निकालकर उसको दिया, और दस
तोले सोने के कगन उसके हाथो मे पहिना
दिए, २३ और पूछा, तू किस की बेटी
है? यह मुझ को बता दे। क्या तेरे पिता
के घर मे हमारे टिकने के लिये स्थान
है? २४ उस ने उत्तर दिया, मै तो
नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल
की बेटी हू। २५ फिर उस ने उस से
कहा, हमारे वहा पुआल और चारा
बहुत है, और टिकने के लिये स्थान भी है।
२६ तब उस पुरुष ने सिर झुकाकर
यहोवा को दण्डवत् करके कहा, २७ धन्य
है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर
यहोवा, कि उस ने अपनी करुणा और
सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नही
लिया यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर
चलाकर मेरे स्वामी के भाईबन्धुओ के
घर पर पहुचा दिया है। २८ और उस
कन्या ने दौडकर अपनी माता के घर मे
यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। २९ तब
लाबान जो रिबका का भाई था, सो बाहर
कुए के निकट उस पुरुष के पास दौडा
गया। ३० और ऐसा हुआ कि जब उस ने
वह नत्थ और अपनी बहिन रिबका के
हाथो मे वे कगन भी देखे, और उसकी
यह बात भी सुनी, कि उस पुरुष ने मुझ से
ऐसी बाते कही, तब वह उस पुरुष के
पास गया, और क्या देखा, कि वह
सोते के निकट ऊटो के पास खडा है।
३१ उस ने कहा, हे यहोवा की ओर से
धन्य पुरुष भीतर आ तू क्यो बाहर
खडा है? मै ने घर को, और ऊटो के
लिये भी स्थान तैयार किया है। ३२ और
वह पुरुष घर मे गया; और लाबान ने
ऊटो की काठिया खोलकर पुआल और
चारा दिया, और उसके, और उसके सगी
जनो के पाव धोने को जल दिया। ३३ तब
इब्राहीम के दास के आगे जलपान के
लिये कुछ रखा गया पर उस ने कहा,
मै जब तक अपना प्रयोजन न कह दू,
तब तक कुछ न खाऊगा। लाबान ने कहा,
कह दे। ३४ तब उस ने कहा, मै तो
इब्राहीम का दास हू। ३५ और यहोवा ने
मेरे स्वामी को बडी आशीष दी है, सो
वह महान पुरुष हो गया है, और उस ने
उसको भेड-बकरी, गाय-बैल, सोना-रूपा,
दास-दासिया, ऊट और गदहे दिए है।
३६ और मेरे स्वामी की पत्नी सारा के
बुढापे मे उस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ है
और उस पुत्र को इब्राहीम ने अपना सब
कुछ दे दिया है। ३७ और मेरे स्वामी ने
मुझे यह शपथ खिलाई, कि मै उसके
पुत्र के लिये कनानियो की लड़कियो मे से,
जिन के देश मे वह रहता है, कोई स्त्री
न ले आऊगा। ३८ मै उसके पिता के
घर, और कुल के लोगो के पास जाकर
उसके पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊगा।
३९ तब मै ने अपने स्वामी से कहा,
कदाचित् वह स्त्री मेरे पीछे न आए।
४० तब उस ने मुझ से कहा, यहोवा,
जिसके साम्हने मै चलता आया हू,
वह तेरे सग अपने दूत को भेजकर तेरी
यात्रा को सुफल करेगा, सो तू मेरे कुल,
और मेरे पिता के घराने मे से मेरे
पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा।

४१ तू तब ही मेरी इस शपथ से छूटेगा,
जब तू मेरे कुल के लोगों के पास पहुंचेगा,
अर्थात् यदि वे मुझे कोई स्त्री न दें, तो
तू मेरी शपथ से छूटेगा। ४२ सो मैं आज
उस कुएं के निकट आकर कहने लगा, हे
मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा,
यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल करता
हो ४३ तो देख मैं जल के इस कुएं
के निकट खड़ा हूं, सो ऐसा हो, कि जो
कुमारी जल भरने के लिये निकल आए,
और मैं उस से कहूं, अपने घड़े में से
मुझे थोड़ा पानी पिला, ४४ और वह
मुझ से कहे, पी ले और मैं तेरे ऊंटों के
पीने के लिये भी पानी भर दूंगी वह
वही स्त्री हो जिसको तू ने मेरे स्वामी
के पुत्र के लिये ठहराया हो। ४५ मैं मन
ही मन यह कह ही रहा था, कि देख
रिबका कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकल
आई, फिर वह सोते के पास उतरके
भरने लगी और मैं ने उस से कहा,
मुझे पिला दे। ४६ और उस ने फुर्ती से
अपने घड़े को कन्धे पर से उतारके कहा,
ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी
पिलाऊंगी सो मैं ने पी लिया, और उस ने
ऊंटों को भी पिला दिया। ४७ तब मैं ने
उस से पूछा, कि तू किस की बेटी है?
और उस ने कहा, मैं तो नाहोर के जन्माए
मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं तब
मैं ने उसकी नाक में वह नत्थ, और
उसके हाथों में वे कंगन पहिना दिए।
४८ फिर मैं ने सिर झुकाकर यहोवा को
दण्डवत् किया, और अपने स्वामी इब्राहीम
के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा, क्योंकि
उस ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया कि मैं
अपने स्वामी के पुत्र के लिये उसकी
भतीजी को ले जाऊं। ४९ सो अब यदि
तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई
का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझ से
कहो और यदि नहीं चाहते हो, तौभी
मुझ से कह दो, ताकि मैं दाहिनी ओर,
वा बाईं ओर फिर जाऊं। ५० तब लाबान
और बतूएल ने उत्तर दिया, यह बात
यहोवा की ओर से हुई है सो हम लोग
तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा।
५१ देख, रिबका तेरे साम्हने है, उसको
ले जा, और वह यहोवा के वचन के
अनुसार, तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो
जाए। ५२ उनका यह वचन सुनकर,
इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिरके
यहोवा को दण्डवत् किया। ५३ फिर
उस दास ने सोने और रूपे के गहने, और
वस्त्र निकालकर रिबका को दिए और
उसके भाई और माता को भी उस ने
अनमोल अनमोल वस्तुएं दीं। ५४ तब
उस ने अपने संगी जनों समेत भोजन किया,
और रात वहीं बिताई और तड़के उठकर
कहा, मुझ को अपने स्वामी के पास
जाने के लिये विदा करो। ५५ रिबका
के भाई और माता ने कहा, कन्या को
हमारे पास कुछ दिन, अर्थात् कम से कम
दस दिन रहने दे, फिर उसके पश्चात्
वह चली जाएगी। ५६ उस ने उन से
कहा, यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल
किया है, सो तुम मुझे मत रोको अब
मुझे विदा कर दो, कि मैं अपने स्वामी
के पास जाऊं। ५७ उन्हों ने कहा, हम
कन्या को बुलाकर पूछते हैं, और देखेंगे,
कि वह क्या कहती है। ५८ सो उन्हों ने
रिबका को बुलाकर उस से पूछा, क्या तू
इस मनुष्य के संग जाएगी? उस ने कहा,
हां मैं जाऊंगी। ५९ तब उन्हों ने अपनी
बहिन रिबका, और उसकी धाय और

इब्राहीम के दास, और उसके साथी सभो
को विदा किया। ६० और उन्हो ने
रिबका को आशीर्वाद देके कहा, हे हमारी
बहिन, तू हजारो लाखो की आदिमाता
हो, और तेरा वश अपने वैरियो के
नगरो * का अधिकारी हो। ६१ इस पर
रिबका अपनी सहेलियो समेत चली,
और ऊट पर चढके उस पुरुष के पीछे हो
ली सो वह दास रिबका को साथ लेकर
चल दिया। ६२ इसहाक जो दक्खिन देश
मे रहता था, सो लहैरोई नाम कुए से
होकर चला आता था। ६३ और साझ के
समय वह मैदान मे ध्यान करने के लिये
निकला था और उस ने आखे उठाकर
क्या देखा, कि ऊट चले आ रहे है।
६४ और रिबका ने भी आख उठाकर
इसहाक को देखा, और देखते ही ऊट पर से
उतर पडी। ६५ तब उस ने दास से
पूछा, जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने
को चला आता है, सो कौन है? दास ने
कहा, वह तो मेरा स्वामी है। तब रिबका ने
घूघट लेकर अपने मुह को ढाप लिया।
६६ और दास ने इसहाक से अपना सारा
वृत्तान्त वर्णन किया। ६७ तब इसहाक
रिबका को अपनी माता सारा के तम्बू मे
ले आया, और उसको व्याहकर उस से
प्रेम किया और इसहाक को माता की
मृत्यु के पश्चात् † शान्ति हुई॥

(इब्राहीम के उत्तरचरित्र और
मृत्यु का वर्णन)

२५ तब इब्राहीम ने एक और पत्नी
व्याह ली जिसका नाम कतूरा
था। २ और उस से जिम्रान, योक्षान,

* मूल में—फाटक।
† मूल में—अपनी माता के पीछे।

मदना, मिद्यान, यिशबाक, और शूह उत्पन्न
हुए। ३ और योक्षान से शबा और ददान
उत्पन्न हुए। और ददान के वश मे अश्शूरी,
लतूशी, और लुम्मी लोग हुए। ४ और
मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा,
और एल्दा हुए, ये सब कतूरा के सन्तान
हुए। ५ इसहाक को तो इब्राहीम ने अपना
सब कुछ दिया। ६ पर अपनी रखेलियो के
पुत्रो को, कुछ कुछ देकर अपने जीते जी
अपने पुत्र इसहाक के पास से पूरब देश मे
भेज दिया। ७ इब्राहीम की सारी अवस्था
एक सौ पचहत्तर वर्ष की हुई। ८ और
इब्राहीम का दीर्घायु होने के कारण
अर्थात् पूरे बुढापे की अवस्था मे प्राण छूट
गया। और वह अपने लोगो मे जा मिला।
९ और उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल
ने, हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की मम्रे
के सम्मुखवाली भूमि मे, जो मकपेला की
गुफा थी, उस मे उसको मिट्टी दी;
१० अर्थात् जो भूमि इब्राहीम ने हित्तियो से
मोल ली थी उसी मे इब्राहीम, और उस
की पत्नी सारा, दोनो को मिट्टी दी गई।
११ इब्राहीम के मरने के पश्चात् परमेश्वर
ने उसके पुत्र इसहाक को जो लहैरोई
नाम कुए के पास रहता था आशीष दी॥

(इश्माएल की वशावली)

१२ इब्राहीम का पुत्र इश्माएल जो
सारा की लौडी हाजिरा मिस्री से उत्पन्न
हुआ था, उसकी यह वशावली है।
१३ इश्माएल के पुत्रो के नाम और वशा-
वली यह है अर्थात् इश्माएल का जेठा पुत्र
नबायोत, फिर केदार, अद्बेल, मिबसाम,
१४ मिश्मा, दूमा, मस्सा, १५ हदर, तेमा,
यतूर, नापीश, और केदमा। १६ इश्माएल
के पुत्र ये ही हुए, और इन्ही के नामो

के अनुसार इनके गावो, और छावनियो
के नाम भी पडे, और ये ही बारह अपने
अपने कुल के प्रधान * हुए। १७ इश्माएल
की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की
हुई तब उसके प्राण छूट गए, और वह
अपने लोगों में जा मिला। १८ और उसके
वंश हवीला से शूर तक, जो मिस्र के
सम्मुख अश्शूर के मार्ग में है, बस गए।
और उनका भाग उनके सब भाईबन्धुओ
के सम्मुख पडा॥

(इसहाक के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

१९ इब्राहीम के पुत्र इसहाक की
वंशावली यह है इब्राहीम से इसहाक
उत्पन्न हुआ। २० और इसहाक ने चालीस
वर्ष का होकर रिबका को, जो पद्दनराम †
के वासी, अरामी बतूएल की बेटी, और
अरामी लाबान की बहिन थी, ब्याह लिया।
२१ इसहाक की पत्नी तो बांझ थी, सो
उस ने उसके निमित्त यहोवा से बिनती
की और यहोवा ने उसकी बिनती सुनी,
सो उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई।
२२ और लडके उसके गर्भ मे आपस मे
लिपटके एक दूसरे को मारने लगे तब
उस ने कहा, मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी
तो मै क्योंकर जीवित रहूंगी? और वह
यहोवा की इच्छा पूछने को गई।
२३ तब यहोवा ने उस से कहा,
तेरे गर्भ मे दो जातिया है,
और तेरी कोख मे निकलते ही दो
राज्य के लोग अलग अलग होगे,
और एक राज्य के लोग दूसरे से
अधिक सामर्थी होगे और बडा
बेटा छोटे के अधीन होगा।

* मूल में—अनुसार।
† अर्थात् अराम का मैदान।

२४ जब उसके पुत्र उत्पन्न होने का
समय आया, तब क्या प्रगट हुआ, कि उसके
गर्भ में जुडवे बालक है। २५ और पहिला
जो उत्पन्न हुआ सो लाल निकला, और
उसका सारा शरीर कम्बल के समान
रोममय था, सो उसका नाम एसाव *
रखा गया। २६ पीछे उसका भाई अपने
हाथ से एसाव की एडी पकडे हुए उत्पन्न
हुआ, और उसका नाम याकूब † रखा
गया। और जब रिबका ने उनको जन्म
दिया तब इसहाक साठ वर्ष का था।
२७ फिर वे लडके बढने लगे और
एसाव तो वनवासी होकर चतुर शिकार
खेलनेवाला हो गया, पर याकूब सीधा
मनुष्य था, और तम्बुओ मे रहा करता
था। २८ और इसहाक तो एसाव के
अहेर का मास खाया करता था, इसलिये
वह उस से प्रीति रखता था पर रिबका
याकूब से प्रीति रखती थी॥
२९ याकूब भोजन के लिये कुछ दाल
पका रहा था और एसाव मैदान से थका
हुआ आया। ३० तब एसाव ने याकूब से
कहा, वह जो लाल वस्तु है, उसी लाल
वस्तु मे से मुझे कुछ खिला, क्योंकि मै
थका हू। इसी कारण उसका नाम
एदोम् ‡ भी पडा। ३१ याकूब ने कहा,
अपना पहिलौठे का अधिकार आज मेरे
हाथ बेच दे। ३२ एसाव ने कहा, देख,
मैं तो अभी मरने पर हू सो पहिलौठे
के अधिकार से मेरा क्या लाभ होगा?
३३ याकूब ने कहा, मुझ से अभी शपथ
खा सो उस ने उस से शपथ खाई
और अपना पहिलौठे का अधिकार याकूब

* अर्थात् रोंआर।
† अर्थात् अडङ्गा मारनेहारा।
‡ अर्थात् लाल।

के हाथ बेच डाला। ३४ इस पर याकूब ने
एसाव को रोटी और पकाई हुई मसूर की
दाल दी, और उस ने खाया पिया, तब
उठकर चला गया। यों एसाव ने अपना
पहिलौठे का अधिकार तुच्छ जाना॥

(इसहाक का वृत्तान्त)

२६ और उस देश मे अकाल पडा,
वह उस पहिले अकाल से अलग था
जो इब्राहीम के दिनो मे पडा था। सो
इसहाक गरार को पलिश्तियो के राजा
अबीमेलेक के पास गया। २ वहा यहोवा
ने उसको दर्शन देकर कहा, मिस्र मे
मत जा, जो देश मै तुझे बताऊ उसी मे
रह। ३ तू इसी देश मे रह, और मै तेरे
सग रहूगा, और तुझे आशीष दूगा,
और ये सब देश मै तुझ को, और तेरे
वश को दूगा, और जो शपथ मै ने तेरे
पिता इब्राहीम से खाई थी, उसे मै पूरी
करूगा। ४ और मै तेरे वश को आकाश
के तारागण के समान करूगा। और मै
तेरे वश को ये सब देश दूगा, और पृथ्वी
की सारी जातिया तेरे वश के कारण अपने
को धन्य मानेगी। ५ क्योकि इब्राहीम ने
मेरी मानी, और जो मै ने उसे सौपा था
उसको और मेरी आज्ञाओ विधियो, और
व्यवस्था का पालन किया। ६ सो इसहाक
गरार में रह गया। ७ जब उस स्थान के
लोगो ने उसकी पत्नी के विषय मे पूछा,
तब उस ने यह सोचकर कि यदि मै
उसको अपनी पत्नी कहू, तो यहा के लोग
रिबका के कारण जो परम सुन्दरी है
मुझ को मार डालेंगे, उत्तर दिया, वह तो
मेरी बहिन है। ८ जब उसको वहा
रहते बहुत दिन बीत गए, तब एक दिन
पलिश्तियो के राजा अबीमेलेक ने खिडकी
मे से झाकके क्या देखा, कि इसहाक
अपनी पत्नी रिबका के साथ क्रीडा कर रहा
है। ९ तब अबीमेलेक ने इसहाक को
बुलवाकर कहा, वह तो निश्चय तेरी पत्नी
है; फिर तू ने क्योकर उसको अपनी
बहिन कहा? इसहाक ने उत्तर दिया,
मै ने सोचा था, कि ऐसा न हो कि उसके
कारण मेरी मृत्यु हो। १० अबीमेलेक ने
कहा, तू ने हम से यह क्या किया? ऐसे
तो प्रजा मे से कोई तेरी पत्नी के साथ
सहज से कुकर्म कर सकता, और तू
हम को पाप मे फसाता। ११ और अबी-
मेलेक ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी,
कि जो कोई उस पुरुष को वा उस स्त्री
को छूएगा, सो निश्चय मार डाला जाएगा।
१२ फिर इसहाक ने उस देश मे जोता
बोया, और उसी वर्ष मे सौ गुणा फल
पाया और यहोवा ने उसको आशीष दी।
१३ और वह बढा, और उसकी उन्नति
होती चली गई, यहा तक कि वह अति
महान पुरुष हो गया। १४ जब उसके
भेड-बकरी, गाय-बैल, और बहुत से दास-
दासिया हुई, तब पलिश्ती उस से डाह
करने लगे। १५ सो जितने कुओ को
उसके पिता इब्राहीम के दासो ने इब्राहीम
के जीते जी खोदा था, उनको पलिश्तियो ने
मिट्टी से भर दिया। १६ तब अबीमेलेक ने
इसहाक से कहा, हमारे पास से चला जा,
क्योकि तू हम से बहुत सामर्थी हो गया
है। १७ सो इसहाक वहा से चला गया,
और गरार के नाले मे अपना तम्बू खडा
करके वहा रहने लगा। १८ तब जो कुए
उसके पिता इब्राहीम के दिनो मे खोदे
गए थे, और इब्राहीम के मरने के पीछे
पलिश्तियो ने भर दिए थे, उनको इसहाक
ने फिर से खुदवाया, और उनके वे ही

नाम रखे, जो उसके पिता ने रखे थे।
१९ फिर इसहाक के दासो को नाले मे
खोदते खोदते बहते जल का एक सोता
मिला। २० तब गरारी चरवाहो ने
इसहाक के चरवाहो से झगडा किया, और
कहा, कि यह जल हमारा है। सो उस ने
उस कुए का नाम एसेक * रखा, इसलिये
कि वे उस से झगडे थे। २१ फिर उन्हो ने
दूसरा कुआ खोदा, और उन्हो ने उसके लिये
भी झगडा किया, सो उस ने उसका नाम
सित्ना † रखा। २२ तब उस ने वहा से
कूच करके एक और कुआ खुदवाया, और
उसके लिये उन्हो ने झगडा न किया,
सो उस ने उसका नाम यह कहकर
रहोबोत ‡ रखा, कि अब तो यहोवा ने
हमारे लिये बहुत स्थान दिया है, और
हम इस देश मे फूले-फलेगे। २३ वहा से
वह बेर्शेबा को गया। २४ और उसी दिन
यहोवा ने रात को उसे दर्शन देकर कहा,
मै तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हू,
मत डर, क्योकि मै तेरे साथ हू, और
अपने दास इब्राहीम के कारण तुझे आशीष
दूगा, और तेरा वश बढाऊगा। २५ तब
उस ने वहा एक वेदी बनाई, और यहोवा से
प्रार्थना की, और अपना तम्बू वही खडा
किया, और वहा इसहाक के दासो ने एक
कुआ खोदा। २६ तब अबीमेलेक अपने
मित्र अहुज्जत, और अपने सेनापति पीकोल
को सग लेकर, गरार से उसके पास गया।
२७ इसहाक ने उन से कहा, तुम ने
मुझ से बैर करके अपने बीच से निकाल
दिया था, सो अब मेरे पास क्यो आए हो?
२८ उन्हो ने कहा, हम ने तो प्रत्यक्ष देखा

* अर्थात् झगड़ा।
† अर्थात् विरोध।
‡ अर्थात् चौड़ा स्थान।

है, कि यहोवा तेरे साथ रहता है सो
हम ने सोचा, कि तू तो यहोवा की ओर से
धन्य है, सो हमारे तेरे बीच में शपथ
खाई जाए, और हम तुझ से इस विषय
की वाचा बन्धाए, २९ कि जैसे हम ने
तुझे नही छूआ, वरन तेरे साथ निरी भलाई
की है, और तुझ को कुशल क्षेम से विदा
किया, उसके अनुसार तू भी हम से कोई
बुराई न करेगा। ३० तब उस ने उनकी
जेवनार की, और उन्हो ने खाया पिया।
३१ बिहान को उन सभो ने तडके उठकर
आपस मे शपथ खाई, तब इसहाक ने
उनको विदा किया, और वे कुशल क्षेम से
उसके पास से चले गए। ३२ उसी दिन
इसहाक के दासो ने आकर अपने उस खोदे
हुए कुए का वृत्तान्त सुना के कहा, कि
हम को जल का एक सोता मिला है।
३३ तब उस ने उसका नाम शिबा *
रखा इसी कारण उस नगर का नाम
आज लो बेर्शेबा † पडा है॥

३४ जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ,
तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत,
और हित्ती एलोन की बेटी बाशमत को
ब्याह लिया। ३५ और इन स्त्रियो के
कारण इसहाक और रिबका के मन को
खेद हुआ॥

(याकूब और एसाव को आशीर्वाद मिलने
का वर्णन)

२७ जब इसहाक बूढा हो गया,
और उसकी आखें ऐसी धुधली
पड गईं, कि उसको सूझता न था, तब
उस ने अपने जेठे पुत्र एसाव को बुलाकर
कहा, हे मेरे पुत्र, उस ने कहा, क्या

* अर्थात् शपथ।
† अर्थात् किरिया का कुआ।

आज्ञा। २ उस ने कहा, सुन, मै तो बूढा
हो गया हू, और नही जानता कि मेरी
मृत्यु का दिन कब होगा ३ सो अब तू
अपना तरकश और धनुष आदि हथियार
लेकर मैदान मे जा, और मेरे लिये हिरन
का अहेर कर ले आ। ४ तब मेरी रुचि
के अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाकर मेरे
पास ले आना, कि मै उसे खाकर मरने से
पहले तुझे जी भर के आशीर्वाद दू।
५ तब एसाव अहेर करने को मैदान मे
गया। जब इसहाक एसाव से यह बात
कह रहा था, तब रिबका सुन रही थी।
६ सो उस ने अपने पुत्र याकूब से कहा
सुन, मै ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव से
यह कहते सुना, ७ कि तू मेरे लिये
अहेर करके उसका स्वादिष्ट भोजन बना,
कि मै उसे खाकर तुझे यहोवा के आगे
मरने से पहिले आशीर्वाद दू। ८ सो अब,
हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और यह आज्ञा मान,
९ कि बकरियो के पास जाकर बकरियो के
दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ, और मै तेरे
पिता के लिये उसकी रुचि के अनुसार उन-
के मांस का स्वादिष्ट भोजन बनाऊगी।
१० तब तू उसको अपने पिता के पास
ले जाना, कि वह उसे खाकर मरने से
पहिले तुझ को आशीर्वाद दे। ११ याकूब
ने अपनी माता रिबका से कहा, सुन, मेरा
भाई एसाव तो रोआर पुरुष है, और मै
रोमहीन पुरुष हू। १२ कदाचित मेरा
पिता मुझे टटोलने लगे, तो मै उसकी
दृष्टि मे ठग ठहरूगा, और आशीष के
बदले शाप ही कमाऊगा। १३ उसकी
माता ने उस से कहा, हे मेरे पुत्र, शाप
तुझ पर नही* मुझी पर पडे, तू केवल
मेरी सुन, और जाकर वे बच्चे मेरे पास
ले आ। १४ तब याकूब जाकर उनको
अपनी माता के पास ले आया, और
माता ने उसके पिता की रुचि के अनुसार
स्वादिष्ट भोजन बना दिया। १५ तब
रिबका ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव के
सुन्दर वस्त्र, जो उसके पास घर मे थे,
लेकर अपने लहुरे पुत्र याकूब को पहिना
दिए। १६ और बकरियो के बच्चो की
खालो को उसके हाथो मे और उसके चिकने
गले मे लपेट दिया। १७ और वह
स्वादिष्ट भोजन और अपनी बनाई हुई
रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ मे
दे दी। १८ सो वह अपने पिता के पास
गया, और कहा, हे मेरे पिता उस ने कहा
क्या बात है*? हे मेरे पुत्र, तू कौन है?
१९ याकूब ने अपने पिता से कहा, मै
तेरा जेठा पुत्र एसाव हू। मै ने तेरी आज्ञा
के अनुसार किया है, सो उठ और बैठ-
कर मेरे अहेर के मास मे से खा, कि तू
जी से मुझे आशीर्वाद दे। २० इसहाक ने
अपने पुत्र से कहा, हे मेरे पुत्र, क्या कारण
है कि वह तुझे इतनी जल्दी मिल गया?
उस ने यह उत्तर दिया, कि तेरे परमेश्वर
यहोवा ने उसको मेरे साम्हने कर दिया।
२१ फिर इसहाक ने याकूब से कहा, हे
मेरे पुत्र, निकट आ, मै तुझे टटोलकर
जानू, कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है
वा नही। २२ तब याकूब अपने पिता
इसहाक के निकट गया, और उस ने
उसको टटोलकर कहा, बोल तो याकूब
का सा है, पर हाथ एसाव ही के से जान
पडते है। २३ और उस ने उसको नही
चीन्हा, क्योकि उसके हाथ उसके भाई

* मूल मे—मेरा शाप।

* मूल में—मुझे देख।

के से रोंआर थे। सो उस ने उसको
आशीर्वाद दिया। २४ और उस ने पूछा,
क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव है?
उस ने कहा, हां मैं हूं। २५ तब उस ने
कहा, भोजन को मेरे निकट ले आ, कि मैं,
अपने पुत्र के अहेर के मांस में से
खाकर, तुझे जी से आशीर्वाद दूं। तब वह
उसको उसके निकट ले आया, और उस ने
खाया, और वह उसके पास दाखमधु भी
लाया, और उस ने पिया। २६ तब उसके
पिता इसहाक ने उस से कहा, हे मेरे पुत्र,
निकट आकर मुझे चूम। २७ उस ने
निकट जाकर उसको चूमा। और उस ने
उसके वस्त्रों का सुगन्ध पाकर उसको
वह आशीर्वाद दिया, कि

देख, मेरे पुत्र का सुगन्ध जो
ऐसे खेत का सा है जिस पर यहोवा
ने आशीष दी हो
२८ सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस,
और भूमि की उत्तम से उत्तम
उपज,
और बहुत सा अनाज और नया
दाखमधु दे
२९ राज्य राज्य के लोग तेरे अधीन हों,
और देश देश के लोग तुझे दण्डवत्
करें
तू अपने भाइयों का स्वामी हो,
और तेरी माता के पुत्र तुझे
दण्डवत् करें
जो तुझे शाप दें सो आप ही
स्रापित हों,
और जो तुझे आशीर्वाद दें सो
आशीष पाएं॥

३० यह आशीर्वाद इसहाक याकूब को
दे ही चुका, और याकूब अपने पिता
इसहाक के साम्हने से निकला ही था, कि
एसाव अहेर लेकर आ पहुंचा। ३१ तब
वह भी स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपने
पिता के पास ले आया, और उस से कहा,
हे मेरे पिता, उठकर अपने पुत्र के अहेर का
मांस खा, ताकि मुझे जी से आशीर्वाद
दे। ३२ उसके पिता इसहाक ने पूछा, तू
कौन है? उस ने कहा, मैं तेरा जेठा पुत्र
एसाव हूं। ३३ तब इसहाक ने अत्यन्त
थरथर कांपते हुए कहा, फिर वह कौन था
जो अहेर करके मेरे पास ले आया था,
और मैं ने तेरे आने से पहिले सब में
से कुछ कुछ खा लिया और उसको
आशीर्वाद दिया? वरन उसको आशीष लगी
भी रहेगी। ३४ अपने पिता की यह बात
सुनते ही एसाव ने अत्यन्त ऊंचे और दुःख
भरे स्वर से चिल्लाकर अपने पिता से कहा,
हे मेरे पिता, मुझ को भी आशीर्वाद दे।
३५ उस ने कहा, तेरा भाई धूर्त्तता से
आया, और तेरे आशीर्वाद को लेके चला
गया। ३६ उस ने कहा, क्या उसका नाम
याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उस ने
मुझे दो बार अड़ङ्गा मारा, मेरा पहिलौठे
का अधिकार तो उस ने ले ही लिया था
और अब देख, उस ने मेरा आशीर्वाद भी
ले लिया है फिर उस ने कहा, क्या तू ने
मेरे लिये भी कोई आशीर्वाद नहीं सोच
रखा है? ३७ इसहाक ने एसाव को उत्तर
देकर कहा, सुन, मैं ने उसको तेरा स्वामी
ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके
अधीन कर दिया, और अनाज और नया
दाखमधु देकर उसको पुष्ट किया है
सो अब, हे मेरे पुत्र, मैं तेरे लिये क्या
करूं? ३८ एसाव ने अपने पिता से कहा,
हे मेरे पिता, क्या तेरे मन में एक ही
आशीर्वाद है? हे मेरे पिता, मुझ को भी
आशीर्वाद दे यों कहकर एसाव फूट

फूटके रोया। ३९ उसके पिता इसहाक ने
उस से कहा,

सुन, तेरा निवास उपजाऊ भूमि
पर हो,
और ऊपर से आकाश की ओस उस
पर पडे॥
४० और तू अपनी तलवार के बल से
जीवित रहे,
और अपने भाई के अधीन तो
होए,
पर जब तू स्वाधीन हो जाएगा,
तब उसके जूए को अपने कन्धे*
पर से तोड फेके।

४१ एसाव ने तो याकूब से अपने पिता
के दिए हुए आशीर्वाद के कारण बैर
रखा, सो उस ने सोचा, कि मेरे पिता के
अन्तकाल† का दिन निकट है, फिर मै
अपने भाई याकूब को घात करूगा।
४२ जब रिबका को अपने पहिलौठे पुत्र
एसाव की ये बाते बताई गई, तब उस ने
अपने लहुरे पुत्र याकूब को बुलाकर कहा,
सुन, तेरा भाई एसाव तुझे घात करने के
लिये अपने मन को धीरज दे रहा है।
४३ सो अब, हे मेरे पुत्र, मेरी सुन, और
हारान को मेरे भाई लाबान के पास भाग
जा, ४४ और थोडे दिन तक, अर्थात् जब
तक तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब
तक उसी के पास रहना। ४५ फिर जब
तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे,
और जो काम तू ने उस से किया है
उसको वह भूल जाए, तब मै तुझे वहा
से बुलवा भेजूगी ऐसा क्यो हो कि एक
ही दिन मे मुझे तुम दोनो से रहित होना
पडे?

* मूल में—अपनी गर्दन।
† मूल में—शोक।

४६ फिर रिबका ने इसहाक से कहा,
हित्ती लडकियो के कारण मै अपने प्राण से
घिन करती हू, सो यदि ऐसी हित्ती
लडकियो मे से, जैसी इस देश की लडकिया
है, याकूब भी एक को कही व्याह ले,
तो मेरे जीवन मे क्या लाभ होगा?

२८ तब इसहाक ने याकूब को बुला-
कर आशीर्वाद दिया, और आज्ञा
दी, कि तू किसी कनानी लडकी को न व्याह
लेना। २ पद्दनराम मे अपने नाना बतूएल
के घर जाकर वहा अपने मामा लाबान
की एक बेटी को व्याह लेना। ३ और
सर्वशक्तिमान ईश्वर तुझे आशीष दे,
और फुला-फलाकर बढाए, और तू राज्य
राज्य की मण्डली का मूल हो। ४ और
वह तुझे और तेरे वश को भी इब्राहीम
की सी आशीष दे, कि तू यह देश जिस मे
तू परदेशी होकर रहता है, और जिसे
परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया था, उसका
अधिकारी हो जाए। ५ और इसहाक ने
याकूब को विदा किया, और वह पद्दनराम
को अरामी बतूएल के उस पुत्र लाबान के
पास चला, जो याकूब और एसाव की
माता रिबका का भाई था। ६ जब
इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देकर
पद्दनराम भेज दिया, कि वह वही से पत्नी
व्याह लाए, और उसको आशीर्वाद देने
के समय यह आज्ञा भी दी, कि तू किसी
कनानी लडकी को व्याह न लेना, ७ और
याकूब माता पिता की मानकर पद्दनराम
को चल दिया, ८ तब एसाव यह सब
देख के और यह भी सोचकर, कि कनानी
लडकिया मेरे पिता इसहाक को बुरी
लगती है, ९ इब्राहीम के पुत्र इश्माएल के
पास गया, और इश्माएल की बेटी महलत

को, जो नवायोत की वहिन थी, व्याहकर
अपनी पत्नियो मे मिला लिया ॥

(याकूब के परदेश जाने का वर्णन)

१० सो याकूव वेर्शेवा से निकलकर
हारान की ओर चला। ११ और उस ने
किसी स्थान मे पहुचकर रात वही विताने
का विचार किया, क्योकि सूर्य अस्त हो
गया था, सो उस ने उस स्थान के पत्थरो
में से एक पत्थर ले अपना तकिया वनाकर
रखा, और उसी स्थान में सो गया।
१२ तव उस ने स्वप्न मे क्या देखा, कि
एक सीढी पृथ्वी पर खडी है, और उसका
सिरा स्वर्ग तक पहुचा है और परमेश्वर
के दूत उस पर से चढते उतरते है।
१३ और यहोवा उसके ऊपर खडा होकर
कहता है, कि मै यहोवा, तेरे दादा इब्राहीम
का परमेश्वर, और इसहाक का भी
परमेश्वर हू जिस भूमि पर तू पडा है,
उसे मै तुझ को और तेरे वश को दूगा।
१४ और तेरा वश भूमि की धूल के
किनकों के समान वहुत होगा, और पच्छिम,
पूरव, उत्तर, दक्खिन, चारो ओर
फैलता जाएगा. और तेरे और तेरे वश
के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएगे।
१५ और सुन, मै तेरे सग रहूगा, और
जहा कही तू जाए वहा तेरी रक्षा करूगा,
और तुझे इस देश में लौटा ले आऊगा
मै अपने कहे हुए को जव तक पूरा न
कर लू तव तक तुझ को न छोडूगा।
१६ तव याकूव जाग उठा, और कहने लगा,
निश्चय इस स्थान में यहोवा है, और मै
इस वात को न जानता था। १७ और
भय खाकर उस ने कहा, यह स्थान क्या
ही भयानक है! यह तो परमेश्वर के
भवन को छोड और कुछ नही हो सकता,
वरन यह स्वर्ग का फाटक ही होगा।
१८ भोर को याकूव तडके उठा, और
अपने तकिए का पत्थर लेकर उसका
खम्भा खडा किया, और उसके सिरे पर
तेल डाल दिया। १९ और उस ने उस
स्थान का नाम वेतेल* रखा, पर उस
नगर का नाम पहिले लूज था। २० और
याकूव ने यह मन्नत मानी, कि यदि
परमेश्वर मेरे सग रहकर इस यात्रा मे
मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये
रोटी, और पहिनने के लिये कपडा दे,
२१ और मै अपने पिता के घर मे कुशल
क्षेम से लौट आऊ तो यहोवा मेरा
परमेश्वर ठहरेगा। २२ और यह पत्थर,
जिसका मै ने खम्भा खडा किया है,
परमेश्वर का भवन ठहरेगा और जो
कुछ तू मुझे दे उसका दशमाश मै अवश्य
ही तुझे दिया करूगा ॥

(याकूब के विवाहों और उसके पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

२९ फिर याकूव ने अपना मार्ग
लिया, और पूर्वियो के देश मे
आया। २ और उस ने दृष्टि करके क्या
देखा, कि मैदान में एक कुआ है, और
उसके पास भेड-वकरियो के तीन झुण्ड
वैठे हुए है, क्योकि जो पत्थर उस कुए के
मुह पर धरा रहता था, जिस में से झुण्डो
को जल पिलाया जाता था, वह भारी था।
३ और जव सव झुण्ड वहा इकट्ठे हो जाते
तव चरवाहे उस पत्थर को कुए के मुह
पर से लुढकाकर भेड-वकरियो को पानी
पिलाते, और फिर पत्थर को कुए के मुह
पर ज्यो का त्यो रख देते थे। ४ सो
याकूव ने चरवाहो से पूछा, हे मेरे भाइयो,

* अर्थात् ईश्वर का भवन।

तुम कहा के हो? उन्हो ने कहा, हम
हारान के है। ५ तब उस ने उन से
पूछा, क्या तुम नाहोर के पोते लाबान को
जानते हो? उन्हो ने कहा, हा, हम उसे
जानते है। ६ फिर उस ने उन से पूछा,
क्या वह कुशल मे है? उन्हो ने कहा, हा,
कुशल से तो है और वह देख, उसकी
बेटी राहेल भेड-बकरियो को लिये हुए
चली आती है। ७ उस ने कहा, देखो,
अभी तो दिन बहुत है, पशुओ के इकट्ठे
होने का समय नही सो भेड-बकरियो को
जल पिलाकर फिर ले जाकर चराओ।
८ उन्हो ने कहा, हम अभी ऐसा नही कर
सकते, जब सब झुण्ड इकट्ठे होते है तब
पत्थर कुए के मुह पर से लुढकाया जाता
है, और तब हम भेड-बकरियो को पानी
पिलाते है। ९ उनकी यह बातचीत हो
ही रही थी, कि राहेल जो पशु चराया
करती थी, सो अपने पिता की भेड-
बकरियो को लिये हुए आ गई। १० अपने
मामा लाबान की बेटी राहेल को, और
उसकी भेड-बकरियो को भी देखकर
याकूब ने निकट जाकर कुए के मुह पर से
पत्थर को लुढकाकर अपने मामा लाबान
की भेड-बकरियो को पानी पिलाया।
११ तब याकूब ने राहेल को चूमा, और
ऊचे स्वर मे रोया। १२ और याकूब ने
राहेल को बता दिया, कि मै तेरा फुफेरा
भाई हू, अर्थात् रिबका का पुत्र हू तब
उस ने दौड के अपने पिता से कह दिया।
१३ अपने भानजे याकूब का समाचार
पाते ही लाबान उस मे भेट करने को
दौडा, और उसको गले लगाकर चूमा,
फिर अपने घर ले आया। और याकूब ने
लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया।
१४ तब लाबान ने याकूब से कहा, तू
तो सचमुच मेरी हड्डी और मास है।
सो याकूब एक महीना भर उसके साथ
रहा। १५ तब लाबान ने याकूब से कहा,
भाईबन्धु होने के कारण तुझ से सेतमेंत
सेवा कराना मुझे उचित नही है, सो कह
मै तुझे सेवा के बदले क्या दू? १६ लाबान
के दो बेटिया थी, जिन मे से बडी का
नाम लिआ, और छोटी का राहेल था।
१७ लिआ के तो धुन्धली आखे थी,
पर राहेल रूपवती और सुन्दर थी।
१८ सो याकूब ने, जो राहेल से प्रीति
रखता था, कहा, मै तेरी छोटी बेटी
राहेल के लिये सात बरस तेरी सेवा
करूगा। १९ लाबान ने कहा, उसे पराए
पुरुष को देने से तुझ को देना उत्तम होगा,
सो मेरे पास रह। २० सो याकूब ने
राहेल के लिये सात बरस सेवा की,
और वे उसको राहेल की प्रीति के कारण
थोडे ही दिनो के बराबर जान पड़े।
२१ तब याकूब ने लाबान से कहा, मेरी
पत्नी मुझे दे, और मै उसके पास जाऊगा,
क्योकि मेरा समय पूरा हो गया है।
२२ सो लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यो
को बुलाकर इकट्ठा किया, और उनकी
जेवनार की। २३ साझ के समय वह
अपनी बेटी लिआ को याकूब के पास ले
गया, और वह उसके पास गया। २४ और
लाबान ने अपनी बेटी लिआ को उसकी
लौडी होने के लिये अपनी लौडी जिल्पा
दी। २५ भोर को मालूम हुआ कि यह
तो लिआ है, सो उस ने लाबान से कहा,
यह तू ने मुझ से क्या किया है? मै ने
तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की, सो
क्या राहेल के लिये नही की? फिर तू ने
मुझ से क्यो ऐसा छल किया है?
२६ लाबान ने कहा, हमारे यहा ऐसी

रीति नही, कि जेठी से पहिले दूसरी का
विवाह कर दे। २७ इसका सप्ताह तो
पूरा कर, फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा
के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर
और सात वर्ष तक करेगा। २८ सो
याकूब ने ऐसा ही किया, और लिआ के
सप्ताह को पूरा किया, तब लाबान ने
उसे अपनी बेटी राहेल को भी दिया,
कि वह उसकी पत्नी हो। २९ और
लाबान ने अपनी बेटी राहेल की लौडी
होने के लिये अपनी लौडी बिल्हा को
दिया। ३० तब याकूब राहेल के पास भी
गया, और उसकी प्रीति लिआ से अधिक
उसी पर हुई, और उस ने लाबान के साथ
रहकर सात वर्ष और उसकी सेवा की॥
३१ जब यहोवा ने देखा, कि लिआ
अप्रिय हुई, तब उस ने उसकी कोख
खोली, पर राहेल बांझ रही। ३२ सो
लिआ गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र
उत्पन्न हुआ, और उस ने यह कहकर
उसका नाम रूबेन * रखा, कि यहोवा ने
मेरे दुःख पर दृष्टि की है सो अब मेरा
पति मुझ से प्रीति रखेगा। ३३ फिर वह
गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न
हुआ, तब उस ने यह कहा कि यह सुनके,
कि मैं अप्रिय हू, यहोवा ने मुझे यह भी
पुत्र दिया इसलिये उस ने उसका नाम
शिमोन † रखा। ३४ फिर वह गर्भवती
हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और
उस ने कहा, अब की बार तो मेरा पति
मुझ से मिल जाएगा, क्योंकि उस से मेरे
तीन पुत्र उत्पन्न हुए इसलिये उसका नाम
लेवी ‡ रखा गया। ३५ और फिर वह
गर्भवती हुई और उसके एक और पुत्र
उत्पन्न हुआ, और उस ने कहा, अब की
बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी,
इसलिये उस ने उसका नाम यहूदा * रखा,
तब उसकी कोख बन्द हो गई॥

३० जब राहेल ने देखा, कि याकूब
के लिये मुझ से कोई सन्तान नही
होता, तब वह अपनी बहिन से डाह करने
लगी और याकूब से कहा, मुझे भी
सन्तान दे, नही तो मर जाऊंगी। २ तब
याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा,
क्या मैं परमेश्वर हू? तेरी कोख तो
उसी ने बन्द कर रखी है। ३ राहेल ने
कहा, अच्छा, मेरी लौडी बिल्हा हाजिर है
उसी के पास जा, वह मेरे घुटनो पर
जनेगी, और उसके द्वारा मेरा भी घर
बसेगा। ४ तो उस ने उसे अपनी लौडी
बिल्हा को दिया, कि वह उसकी पत्नी हो,
और याकूब उसके पास गया। ५ और
बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब से उसके
एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ६ और राहेल ने
कहा, परमेश्वर ने मेरा न्याय चुकाया
और मेरी सुनकर मुझे एक पुत्र दिया
इसलिये उस ने उसका नाम दान † रखा।
७ और राहेल की लौडी बिल्हा फिर
गर्भवती हुई और याकूब से एक पुत्र और
उत्पन्न हुआ। ८ तब राहेल ने कहा,
मैं ने अपनी बहिन के साथ बडे बल से
लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत
गई सो उस ने उसका नाम नप्ताली ‡
रखा। ९ जब लिआ ने देखा कि मैं
जनने से रहित हो गई हू, तब उस ने

* अर्थात् देखो बेटा।
† अर्थात् सुन लेना।
‡ अर्थात् जुटना।

* अर्थात् जिसका धन्यवाद हुआ हो।
† अर्थात् न्यायी।
‡ अर्थात् मेरा मल्लयुद्ध।

अपनी लौंडी जिल्पा को लेकर याकूब की
पत्नी होने के लिये दे दिया। १० और
लिआ की लौंडी जिल्पा के भी याकूब से
एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ११ तब लिआ ने
कहा, अहो भाग्य! सो उस ने उसका नाम
गाद* रखा। १२ फिर लिआ की लौंडी
जिल्पा के याकूब से एक और पुत्र उत्पन्न
हुआ। १३ तब लिआ ने कहा, मैं धन्य
हूं, निश्चय स्त्रियां† मुझे धन्य कहेंगी
सो उस ने उसका नाम आशेर‡ रखा।
१४ गेहूं की कटनी के दिनों में रूबेन को
मैदान में दूदाफल मिले, और वह उनको
अपनी माता लिआ के पास ले गया, तब
राहेल ने लिआ से कहा, अपने पुत्र के
दूदाफलों में से कुछ मुझे दे। १५ उस ने
उस से कहा, तू ने जो मेरे पति को ले
लिया है सो क्या छोटी बात है? अब क्या
तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती
है? राहेल ने कहा, अच्छा, तेरे पुत्र के
दूदाफलों के बदले वह आज रात को तेरे
संग सोएगा। १६ सो सांझ को जब
याकूब मैदान से आ रहा था, तब लिआ
उस से भेंट करने को निकली, और कहा,
तुझे मेरे ही पास आना होगा, क्योंकि मैं ने
अपने पुत्र के दूदाफल देकर तुझे सचमुच
मोल लिया। तब वह उस रात को उसी
के संग सोया। १७ तब परमेश्वर ने
लिआ की सुनी, सो वह गर्भवती हुई और
याकूब से उसके पांचवां पुत्र उत्पन्न हुआ।
१८ तब लिआ ने कहा, मैं ने जो अपने
पति को अपनी लौंडी दी, इसलिये परमेश्वर
ने मुझे मेरी मजूरी दी है सो उस ने
उसका नाम इस्साकार§ रखा। १९ और
लिआ फिर गर्भवती हुई और याकूब से
उसके छठवां पुत्र उत्पन्न हुआ। २० तब
लिआ ने कहा, परमेश्वर ने मुझे अच्छा
दान दिया है, अब की बार मेरा पति
मेरे संग बना रहेगा, क्योंकि मेरे उस से
छः पुत्र उत्पन्न हो चुके हैं सो उस ने उसका
नाम जबूलून्* रखा। २१ तत्पश्चात्
उसके एक बेटी भी हुई, और उस ने
उसका नाम दीना रखा। २२ और पर-
मेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और
उसकी सुनकर उसकी कोख खोली।
२३ सो वह गर्भवती हुई और उसके एक
पुत्र उत्पन्न हुआ, सो उस ने कहा, परमेश्वर
ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है।
२४ सो उस ने यह कहकर उसका नाम
यूसुफ† रखा, कि परमेश्वर मुझे एक पुत्र
और भी देगा॥

२५ जब राहेल से यूसुफ उत्पन्न हुआ,
तब याकूब ने लाबान से कहा, मुझे विदा
कर, कि मैं अपने देश और स्थान को
जाऊं। २६ मेरी स्त्रियां और मेरे लड़के-
वाले, जिनके लिये मैं ने तेरी सेवा की है,
उन्हें मुझे दे, कि मैं चला जाऊं, तू तो
जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की है।
२७ लाबान ने उस से कहा, यदि तेरी
दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है, तो रह जा
क्योंकि मैं ने अनुभव से जान लिया है, कि
यहोवा ने तेरे कारण से मुझे आशीष दी
है। २८ फिर उस ने कहा, तू ठीक बता
कि मैं तुझ को क्या दूं, और मैं उसे
दूंगा। २९ उस ने उस से कहा तू जानता
है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा की, और तेरे
पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे। ३० मेरे

* अर्थात् सौभाग्य।
† मूल में—बेटियां। ‡ अर्थात् धन्य।
§ अर्थात् मजूरी में मिला।

* अर्थात् निवास।
† अर्थात् वह दूर करता है। वा वह और भी देगा।

आने से पहिले वे कितने थे, और अब
कितने हो गए है, और यहोवा ने मेरे
आने पर तुझे तो आशीष दी है पर मैं
अपने घर का काम कब करने पाऊंगा?
३१ उस ने फिर कहा, मैं तुझे क्या दू?
याकूब ने कहा, तू मुझे कुछ न दे, यदि
तू मेरे लिये एक काम करे, तो मैं फिर
तेरी भेड-बकरियो को चराऊंगा, और
उनकी रक्षा करूगा। ३२ मैं आज तेरी
सब भेड-बकरियो के बीच होकर निकलूंगा,
और जो भेड वा बकरी चित्तीवाली वा
चित्कबरी हो, और जो भेड काली हो,
और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली
हो, उन्हें मैं अलग कर रखूंगा और मेरी
मजदूरी में वे ही ठहरेंगी। ३३ और जब
आगे को मेरी मजदूरी की चर्चा तेरे
साम्हने चले, तब धर्म की यही साक्षी
होगी, अर्थात् बकरियो में से जो कोई न
चित्तीवाली न चित्कबरी हो, और भेडो
में से जो कोई काली न हो, सो यदि मेरे
पास निकलें, तो चोरी की ठहरेगी।
३४ तब लाबान ने कहा, तेरे कहने के
अनुसार हो। ३५ सो उस ने उसी दिन
सब धारीवाले और चित्कबरे बकरो, और
सब चित्तीवाली और चित्कबरी बकरियो
को, अर्थात् जिन मे कुछ उजलापन था,
उनको और सब काली भेडो को भी
अलग करके अपने पुत्रो के हाथ सौप
दिया। ३६ और उस ने अपने और याकूब
के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर
ठहराया सो याकूब लाबान की भेड-
बकरियो को चराने लगा। ३७ और
याकूब ने चनार, और बादाम, और अर्मोन
वृक्षो की हरी हरी छडिया लेकर, उनके
छिलके कही कही छीलके, उन्हे धारीदार
बना दिया, ऐसी कि उन छडियो की सफेदी
दिखाई देने लगी। ३८ और तब छीली
हुई छडियो को भेड-बकरियो के साम्हने
उनके पानी पीने के कठौतो में खडा
किया, और जब वे पानी पीने के लिये
आई तब गाभिन हो गई। ३९ और
छडियो के साम्हने गाभिन होकर, भेड-
बकरिया धारीवाले, चित्तीवाले और
चित्कबरे बच्चे जनी। ४० तब याकूब ने
भेडो के बच्चो को अलग अलग किया, और
लाबान की भेड-बकरियो के मुह को चित्ती-
वाले और सब काले बच्चो की ओर कर
दिया, और अपने झुण्डो को उन से
अलग रखा, और लाबान की भेड-बकरियो
से मिलने न दिया। ४१ और जब जब
बलवन्त भेड-बकरिया गाभिन होती थी,
तब तब याकूब उन छडियो को कठौतो में
उनके साम्हने रख देता था, जिस से वे
छडियो को देखती हुई गाभिन हो जाए।
४२ पर जब निर्बल भेड-बकरिया गाभिन
होती थी, तब वह उन्हे उनके आगे नही
रखता था। इस से निबल निर्बल लाबान
की रही, और बलवन्त बलवन्त याकूब
की हो गई। ४३ सो वह पुरुष अत्यन्त
धनाढ्य हो गया, और उसके बहुत सी
भेड-बकरिया, और लौडिया और दास,
और ऊंट और गदहे हो गए॥

(याकूब के घर जाने का वर्णन)

३१ फिर लाबान के पुत्रो की ये
बाते याकूब के सुनने मे आईं, कि
याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन
लिया है, और हमारे पिता के धन के
कारण उसकी यह प्रतिष्ठा है। २ और
याकूब ने लाबान के मुखडे पर दृष्टि की
और ताड लिया, कि वह उसके प्रति
पहिले के समान नही है। ३ तब यहोवा ने

याकूब से कहा, अपने पितरो के देश और
अपनी जन्मभूमि को लौट जा, और मैं
तेरे संग रहूगा। ४ तब याकूब ने राहेल
और लिआ को, मैदान मे अपनी भेड़-
बकरियो के पास, बुलवाकर कहा, ५ तुम्हारे
पिता के मुखड़े से मुझे समझ पड़ता है,
कि वह तो मुझे पहिले की नाई अब नही
देखता, पर मेरे पिता का परमेश्वर मेरे
संग है। ६ और तुम भी जानती हो,
कि मै ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति
भर की है। ७ और तुम्हारे पिता ने
मुझ से छल करके मेरी मजदूरी को दस
बार बदल दिया, परन्तु परमेश्वर ने
उसको मेरी हानि करने नही दिया।
८ जब उस ने कहा, कि चित्तीवाले बच्चे
तेरी मज़दूरी ठहरेंगे, तब सब भेड़-बकरिया
चित्तीवाले ही जनने लगी, और जब उस ने
कहा, कि धारीवाले बच्चे तेरी मजदूरी
ठहरेगे, तब सब भेड़-बकरिया धारीवाले
जनने लगी। ९ इस रीति से परमेश्वर ने
तुम्हारे पिता के पशु लेकर मुझ को दे दिए।
१० भेड़-बकरियो के गाभिन होने के समय
मैं ने स्वप्न मे क्या देखा, कि जो बकरे
बकरियो पर चढ़ रहे है, सो धारीवाले,
चित्तीवाले, और धब्बेवाले है। ११ और
परमेश्वर के दूत ने स्वप्न मे मुझ से कहा,
हे याकूब मैं ने कहा, क्या आज्ञा*।
१२ उस ने कहा, आखे उठाकर उन सब
बकरो को, जो बकरियो पर चढ़ रहे है,
देख, कि वे धारीवाले, चित्तीवाले, और
धब्बेवाले है, क्योकि जो कुछ लाबान
तुझ से करता है, सो मै ने देखा है।
१३ मै उस बेतेल का ईश्वर हू, जहा तू ने
एक खम्भे पर तेल डाल दिया, और मेरी
मन्नत मानी थी: अब चल, इस देश से
निकलकर अपनी जन्मभूमि को लौट जा।
१४ तब राहेल और लिआ ने उस से कहा,
क्या हमारे पिता के घर मे अब भी हमारा
कुछ भाग वा अंश बचा है? १५ क्या हम
उसकी दृष्टि मे पराये न ठहरीं? देख,
उस ने हम को तो बेच डाला, और हमारे
रूपे को खा बैठा है। १६ सो परमेश्वर ने
हमारे पिता का जितना धन ले लिया है,
सो हमारा, और हमारे लड़केवालो का है
अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है,
सो कर। १७ तब याकूब ने अपने लड़के-
वालो और स्त्रियो को ऊंटो पर चढ़ाया,
१८ और जितने पशुओ को वह पद्दनराम मे
इकट्ठा करके धनाढ्य हो गया था, सब को
कनान मे अपने पिता इसहाक के पास
जाने की मनसा से, साथ ले गया।
१९ लाबान तो अपनी भेड़ो का ऊन
कतरने के लिये चला गया था। और
राहेल अपने पिता के गृहदेवताओ को चुरा
ले गई। २० सो याकूब लाबान अरामी
के पास से चोरी से चला गया, उसको न
बताया कि मै भागा जाता हू। २१ वह
अपना सब कुछ लेकर भागा और महानद
के पार उतरकर अपना मुह गिलाद के
पहाड़ी देश की ओर किया॥

२२ तीसरे दिन लाबान को समाचार
मिला, कि याकूब भाग गया है। २३ सो
उस ने अपने भाइयो को साथ लेकर उसका
सात दिन तक पीछा किया, और गिलाद
के पहाड़ी देश मे उसको जा पकड़ा।
२४ तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में
अरामी लाबान के पास आकर कहा,
सावधान रह, तू याकूब से न तो भला
कहना और न बुरा। २५ और लाबान
याकूब के पास पहुच गया, याकूब तो अपना

* मूल में—मुझे देख।

तम्बू गिलाद नाम पहाडी देश में खडा
किए पडा था और लाबान ने भी अपने
भाइयो के साथ अपना तम्बू उसी पहाडी
देश मे खडा किया। २६ तब लाबान
याकूब से कहने लगा, तू ने यह क्या किया,
कि मेरे पास से चोरी से चला आया,
और मेरी बेटियो को ऐसा ले आया, जैसा
कोई तलवार के बल से बन्दी बनाए
गए? २७ तू क्यो चुपके से भाग आया,
और मुझ से बिना कुछ कहे मेरे
पास से चोरी से चला आया, नही तो मैं
तुझे आनन्द के साथ मृदग और वीणा
बजवाते, और गीत गवाते विदा करता?
२८ तू ने तो मुझे अपने बेटे बेटियो को
चूमने तक न दिया? तू ने मूर्खता की
है। २९ तुम लोगो की हानि करने की
शक्ति मेरे हाथ मे तो है, पर तुम्हारे
पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई
रात में कहा, सावधान रह, याकूब से न
तो भला कहना और न बुरा। ३० भला,
अब तू अपने पिता के घर का बडा अभिलाषी
होकर चला आया तो चला आया, पर
मेरे देवताओ को तू क्यो चुरा ले आया
है? ३१ याकूब ने लाबान को उत्तर दिया,
मैं यह सोचकर डर गया था कि कही
तू अपनी बेटियो को मुझ से छीन न ले।
३२ जिस किसी के पास तू अपने देवताओ
को पाए, सो जीता न बचेगा। मेरे पास
तेरा जो कुछ निकले, सो भाई-बन्धुओ के
साम्हने पहिचानकर ले ले। क्योकि याकूब
न जानता था कि राहेल गृहदेवताओ को
चुरा ले आई है। ३३ यह सुनकर लाबान,
याकूब और लिआ और दोनो दासियो के
तम्बुओ म गया, और कुछ न मिला।
तब लिआ के तम्बू में से निकलकर राहेल
के तम्बू में गया। ३४ राहेल तो गृह-
देवताओ को ऊट की काठी मे रखके उन
पर बैठी थी। सो लाबान ने उसके सारे
तम्बू में टटोलने पर भी उन्हे न पाया।
३५ राहेल ने अपने पिता से कहा, हे मेरे
प्रभु, इस से अप्रसन्न न हो, कि मैं तेरे
साम्हने नही उठी, क्योकि मै स्त्रीधर्म से
हू। सो उसके ढूढ ढाढ करने पर भी गृह-
देवता उसको न मिले। ३६ तब याकूब
क्रोधित होकर लाबान से झगडने लगा,
और कहा, मेरा क्या अपराध है? मेरा
क्या पाप है, कि तू ने इतना क्रोधित
होकर मेरा पीछा किया है? ३७ तू ने
जो मेरी सारी सामग्री को टटोलकर देखा,
सो तुझ को अपने घर की सारी सामग्री
मे से क्या मिला? कुछ मिला हो तो
उसको यहा अपने और मेरे भाइयो के
साम्हने रख दे, और वे हम दोनो के बीच
न्याय करे। ३८ इन बीस वर्षो से म तेरे
पास रहा, इन मे न तो तेरी भेड-बकरियो
के गभ गिरे, और न तेरे मेढो का मास
मैं ने कभी खाया। ३९ जिसे बनैले
जन्तुओ ने फाड डाला उसको मैं तेरे
पास न लाता था, उसकी हानि मैं ही
उठाता था, चाहे दिन को चोरी जाता
चाहे रात को, तू मुझ ही से उसको ले
लेता था। ४० मेरी तो यह दशा थी,
कि दिन को तो घाम और रात को पाला
मुझे खा गया, और नीन्द मेरी आखो से
भाग जाती थी। ४१ बीस वर्ष तक मैं
तेरे घर मे रहा, चौदह वर्ष तो मैं ने तेरी
दोनो बेटियो के लिये, और छ वर्ष तेरी
भेड-बकरियो के लिये सेवा की और
तू ने मेरी मजदूरी को दस बार बदल
डाला। ४२ मेरे पिता का परमेश्वर,
अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, जिसका

भय इसहाक भी मानता है, यदि मेरी ओर
न होता, तो निश्चय तू अब मुझे छूछे
हाथ जाने देता। मेरे दु:ख और मेरे हाथों
के परिश्रम को देखकर परमेश्वर ने बीती
हुई रात मे तुझे दपटा। ४३ लाबान ने
याकूब से कहा, ये बेटियां तो मेरी ही हैं,
और ये पुत्र भी मेरे ही हैं, और ये भेड़-
बकरियां भी मेरी ही हैं, और जो कुछ
तुझे देख पड़ता है सो सब मेरा ही है
और अब मैं अपनी इन बेटियों वा इनके
सन्तान से क्या कर सकता हूं? ४४ अब
आ मैं और तू दोनो आपस मे वाचा बान्धें,
और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी
रहे। ४५ तब याकूब ने एक पत्थर लेकर
उसका खम्भा खड़ा किया। ४६ तब
याकूब ने अपने भाई-बन्धुओं से कहा,
पत्थर इकट्ठा करो, यह सुनकर उन्हों ने
पत्थर इकट्ठा करके एक ढेर लगाया और
वहीं ढेर के पास उन्हों ने भोजन किया।
४७ उस ढेर का नाम लाबान ने तो यज्र
सहादुथा,* पर याकूब ने जिलियाद†
रखा। ४८ लाबान ने कहा, कि यह ढेर
आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा।
इस कारण उसका नाम जिलियाद रखा
गया, ४९ और मिजपा‡ भी, क्योंकि उस
ने कहा, कि जब हम एक दूसरे से दूर रहें
तब यहोवा मेरी और तेरी देखभाल करता
रहे। ५० यदि तू मेरी बेटियों को दु:ख दे,
वा उनके सिवाय और स्त्रियां ब्याह ले,
तो हमारे साथ कोई मनुष्य तो न रहेगा,
पर देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर साक्षी
रहेगा। ५१ फिर लाबान ने याकूब से
कहा, इस ढेर को देख और इस खम्भे को
भी देख, जिनको मैं ने अपने और तेरे
बीच में खड़ा किया है। ५२ यह ढेर और
यह खम्भा दोनों इस बात के साक्षी रहें,
कि हानि करने की मनसा से न तो मैं इस
ढेर को लांघकर तेरे पास जाऊंगा, न तू इस
ढेर और इस खम्भे को लांघकर मेरे पास
आएगा। ५३ इब्राहीम और नाहोर और
उनके पिता, तीनों का जो परमेश्वर है,
सो हम दोनो के बीच न्याय करे। तब
याकूब ने उसकी शपथ खाई जिसका
भय उसका पिता इसहाक मानता था।
५४ और याकूब ने उस पहाड़ पर मेल-
बलि चढ़ाया, और अपने भाई-बन्धुओं को
भोजन करने के लिये बुलाया, सो उन्हों ने
भोजन करके पहाड़ पर रात बिताई।
५५ बिहान को लाबान तड़के उठा, और
अपने बेटे बेटियों को चूमकर और
आशीर्वाद देकर चल दिया, और अपने
स्थान को लौट गया।

३२ और याकूब ने भी अपना मार्ग
लिया और परमेश्वर के दूत उसे
आ मिले। २ उनको देखते ही याकूब ने
कहा, यह तो परमेश्वर का दल है सो उस
ने उस स्थान का नाम महनैम* रखा॥

(याकूब के एसाव से मिलने और उसके इस्राएल नाम रखे जाने का वर्णन)

३ तब याकूब ने सेईर देश में, अर्थात्
एदोम देश में, अपने भाई एसाव के पास
अपने आगे दूत भेज दिए। ४ और उस ने
उन्हें यह आज्ञा दी, कि मेरे प्रभु एसाव से
यों कहना, कि तेरा दास याकूब तुझ से
यों कहता है, कि मैं लाबान के यहां परदेशी
होकर अब तक रहा; ५ और मेरे पास
गाय-बैल, गदहे, भेड़-बकरियां, और दास-

* अर्थात् अरामी भाषा में, साक्षी का ढेर।
† अर्थात् इब्रानी भाषा में, साक्षी का ढेर।
‡ अर्थात् ताकने का स्थान।

* अर्थात् दो दल।

दासिया है सो मैं ने अपने प्रभु के पास
इसलिये सदेशा भेजा है, कि तेरी अनुग्रह
की दृष्टि मुझ पर हो। ६ वे दूत याकूब
के पास लौटके कहने लगे, हम तेरे भाई
एसाव के पास गए थे, और वह भी
तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष सग
लिये हुए चला आता है। ७ तब याकूब
निपट डर गया, और सकट में पडा और
यह सोचकर, अपने सगवालो के, और भेड-
बकरियो, और गाय-बैलो, और ऊटो के
भी अलग अलग दो दल कर लिये, ८ कि
यदि एसाव आकर पहिले दल को मारने
लगे, तो दूसरा दल भागकर बच जाएगा।
९ फिर याकूब ने कहा, हे यहोवा, हे मेरे
दादा इब्राहीम के परमेश्वर, हे मेरे पिता
इसहाक के परमेश्वर, तू ने तो मुझ से
कहा, कि अपने देश और जन्मभूमि में
लौट जा, और मैं तेरी भलाई करूगा
१० तू ने जो जो काम अपनी करुणा और
सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं,
कि मै जो अपनी छडी ही लेकर इस यरदन
नदी के पार उतर आया, सो अब मेरे दो
दल हो गए हैं, तेरे ऐसे ऐसे कामो में से
मैं एक के भी योग्य तो नही हू। ११ मेरी
विनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के
हाथ से बचा मै तो उस से डरता हू,
कही ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और
मा समेत लडको को भी मार डाले।
१२ तू ने तो कहा है, कि मैं निश्चय तेरी
भलाई करूगा, और तेरे वश को समुद्र
की बालू के किनको के समान बहुत करूगा,
जो बहुतायत के मारे गिने नही जा
सकते। १३ और उस ने उस दिन की
रात वही बिताई, और जो कुछ उसके पास
था उस में से अपने भाई एसाव की भेंट के
लिये छाट छाटकर निकाला, १४ अर्थात्
दो सौ बकरिया, और बीस बकरे, और
दो सौ भेडें, और बीस मेढे, १५ और
बच्चो समेत दूध देनेवाली तीस ऊटनिया,
और चालीस गायें, और दस बैल, और
बीस गदहिया और उनके दस बच्चे।
१६ इनको उस ने झुण्ड झुण्ड करके,
अपने दासो को सौपकर उन से कहा, मेरे
आगे बढ जाओ, और झुण्डो के बीच बीच
में अन्तर रखो। १७ फिर उस ने अगले
झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दी, कि
जब मेरा भाई एसाव तुझे मिले, और
पूछने लगे, कि तू किस का दास है, और
कहा जाता है, और ये जो तेरे आगे आगे
है, सो किस के है? १८ तब कहना, कि
यह तेरे दास याकूब के हैं। हे मेरे प्रभु
एसाव, ये भेंट के लिये तेरे पास भेजे गए
है, और वह आप भी हमारे पीछे पीछे
आ रहा है। १९ और उस ने दूसरे और
तीसरे रखवालो को भी, वरन उन सभो
को जो झुण्डो के पीछे पीछे थे ऐसी ही
आज्ञा दी, कि जब एसाव तुम को मिले
तब इसी प्रकार उस से कहना। २० और
यह भी कहना, कि तेरा दास याकूब हमारे
पीछे पीछे आ रहा है। क्योकि उस ने यह
सोचा, कि यह भेट जो मेरे आगे आगे
जाती है, इसके द्वारा मै उसके क्रोध को
शान्त करके तब उसका दर्शन करूगा,
हो सकता है वह मुझ से प्रसन्न हो जाए।
२१ सो वह भेंट याकूब से पहिले पार
उतर गई, और वह आप उस रात को
छावनी मे रहा॥

२२ उसी रात को वह उठा और
अपनी दोनो स्त्रियो, और दोनो लौण्डियो,
और ग्यारहो लडको को सग लेकर घाट से
यब्बोक नदी के पार उतर गया। २३ और
उस ने उन्हे उस नदी के पार उतार दिया

बरन अपना सब कुछ पार उतार दिया।
२४ और याकूब आप अकेला रह गया;
तब कोई पुरुष आकर पह फटने तक
उस से मल्लयुद्ध करता रहा। २५ जब
उस ने देखा, कि मैं याकूब पर प्रबल नही
होता, तब उसकी जाघ की नस को
छूआ, सो याकूब की जाघ की नस उस से
मल्लयुद्ध करते ही करते चढ़ गई।
२६ तब उस ने कहा, मुझे जाने दे, क्योंकि
भोर हुआ चाहता है, याकूब ने कहा
जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक
मैं तुझे जाने न दूगा। २७ और उस ने
याकूब से पूछा, तेरा नाम क्या है?
उस ने कहा याकूब। २८ उस ने कहा,
तेरा नाम अब याकूब नही, परन्तु इस्राएल *
होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यो से
भी युद्ध करके प्रबल हुआ है। २९ याकूब
ने कहा, मैं बिनती करता हू, मुझे अपना
नाम बता। उस ने कहा, तू मेरा नाम क्यो
पूछता है? तब उस ने उसको वही
आशीर्वाद दिया। ३० तब याकूब ने यह
कहकर उस स्थान का नाम पनीएल †
रखा कि परमेश्वर को आम्हने-साम्हने
देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है।
३१ पनूएल के पास से चलते चलते सूर्य
उदय हो गया, और वह जाघ से लगड़ाता
था। ३२ इस्राएली जो पशुओ की जाघ
की जोडवाले जघानस को आज के दिन
तक नही खाते, इसका कारण यही है,
कि उस पुरुष ने याकूब की जाघ की जोड मे
जघानस को छूआ था॥

३३ और याकूब ने आखे उठाकर
यह देखा, कि एसाव चार सौ
पुरुष संग लिये हुए चला आता है।
तब उस ने लड़केवालो को अलग अलग
बांटकर लिआ, और राहेल, और दोनो
लौंडियो को सौंप दिया। २ और उस ने
सब के आगे लड़को समेत लौंडियो को
उसके पीछे लड़को समेत लिआ को, और
सब के पीछे राहेल और यूसुफ को रखा,
३ और आप उन सब के आगे बढ़ा, और
सात बार भूमि पर गिरके दण्डवत् की,
और अपने भाई के पास पहुचा। ४ तब
एसाव उस से भेंट करने को दौड़ा, और
उसको हृदय से लगाकर, गले से लिपटकर
चूमा: फिर वे दोनों रो पड़े। ५ तब
उस ने आखे उठाकर स्त्रियो और लड़के
वालो को देखा, और पूछा, ये जो तेरे
साथ है सो कौन है? उस ने कहा, ये तेरे
दास के लडके है, जिन्हे परमेश्वर ने अनुग्रह
करके मुझ को दिया है। ६ तब लडको
समेत लौंडियो ने निकट आकर दण्डवत्
की। ७ फिर लडको समेत लिआ निकट
आई, और उन्हो ने भी दण्डवत् की:
पीछे यूसुफ और राहेल ने भी निकट
आकर दण्डवत् की। ८ तब उस ने पूछा,
तेरा यह बडा दल जो मुझ को मिला,
उसका क्या प्रयोजन है? उस ने कहा, यह
कि मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर
हो। ९ एसाव ने कहा, हे मेरे भाई, मेरे
पास तो बहुत है, जो कुछ तेरा है सो
तेरा ही रहे। १० याकूब ने कहा, नही
नही, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर हो, तो
मेरी भेंट ग्रहण कर क्योंकि मै ने तेरा
दर्शन पाकर, मानो परमेश्वर का दर्शन
पाया है, और तू मुझ से प्रसन्न हुआ है।
११ सो यह भेंट, जो तुझे भेजी गई है,
ग्रहण कर क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर
अनुग्रह किया है, और मेरे पास बहुत है।

* अर्थात ईश्वर से युद्ध करनेहारा।
† अर्थात् ईश्वर का मुख।

जब उस ने उसको दबाया, तब उस ने
भेंट को ग्रहण किया। १२ फिर एसाव ने
कहा, आ, हम बढ चले और मैं तेरे आगे
आगे चलूगा। १३ याकूब ने कहा, हे मेरे
प्रभु, तू जानता ही है कि मेरे साथ सुकुमार
लडके, और दूध देनेहारी भेड-बकरिया
और गाये है, यदि ऐसे पशु एक दिन भी
अधिक हाके जाए, तो सब के सब मर
जाएगे। १४ सो मेरा प्रभु अपने दास के
आगे बढ जाए, और मैं इन पशुओ की
गति के अनुसार, जो मेरे आगे है, और
लडकेबालो की गति के अनुसार धीरे धीरे
चलकर सेईर मे अपने प्रभु के पास
पहुचूगा। १५ एसाव ने कहा, तो अपने
सगवालो मे से मैं कई एक तेरे साथ
छोड जाऊ। उस ने कहा, यह क्यो?
इतना ही बहुत है, कि मेरे प्रभु की अनुग्रह
की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। १६ तब
एसाव ने उसी दिन सेईर जाने को अपना
मार्ग लिया। १७ और याकूब वहा से
कूच करके सुक्कोत को गया, और वहा
अपने लिये एक घर, और पशुओ के लिये
झोपडे बनाए इसी कारण उस स्थान का
नाम सुक्कोत * पडा॥

१८ और याकूब जो पद्दनराम से आया
था, सो कनान देश के शकेम नगर के पास
कुशल क्षेम से पहुचकर नगर के साम्हने
डेरे खडे किए। १९ और भूमि के जिस
खण्ड पर उस ने अपना तम्बू खडा किया,
उसको उस ने शकेम के पिता हमोर के पुत्रो
के हाथ से एक सौ कसीतो † में मोल लिया।
२० और वहा उस ने एक वेदी बनाकर
उसका नाम एलेलोहे इस्राएल ‡ रखा॥

(दीना के भ्रष्ट किये जाने का वर्णन)

३४ और लिआ की बेटी दीना, जो
याकूब से उत्पन्न हुई थी, उस
देश की लडकियो से भेट करने को निकली।
२ तब उस देश के प्रधान हित्ती हमोर के
पुत्र शकेम ने उसे देखा, और उसे ले
जाकर उसके साथ कुकर्म करके उसको
भ्रष्ट कर डाला। ३ तब उसका मन
याकूब की बेटी दीना से लग गया, और
उस ने उस कन्या से प्रेम की बाते की,
और उस से प्रेम करने लगा। ४ और
शकेम ने अपने पिता हमोर से कहा, मुझे
इस लडकी को मेरी पत्नी होने के लिये
दिला दे। ५ और याकूब ने सुना, कि
शकेम ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर
डाला है, पर उसके पुत्र उस समय पशुओ
के सग मैदान मे थे, सो वह उनके आने
तक चुप रहा। ६ और शकेम का पिता
हमोर निकलकर याकूब से बातचीत करने
के लिये उसके पास गया। ७ और याकूब
के पुत्र सुनते ही मैदान से बहुत उदास
और क्रोधित होकर आए क्योकि शकेम ने
याकूब की बेटी के साथ कुकर्म करके
इस्राएल के घराने से मूर्खता का ऐसा काम
किया था, जिसका करना अनुचित था।
८ हमोर ने उन सब से कहा, मेरे पुत्र
शकेम का मन तुम्हारी बेटी पर बहुत लगा
है, सो उसे उसकी पत्नी होने के लिये
उसको दे दो। ९ और हमारे साथ ब्याह
किया करो, अपनी बेटिया हम को दिया
करो, और हमारी बेटियो को आप लिया
करो। १० और हमारे सग बसे रहो
और यह देश तुम्हारे सामने पडा है,
इस मे रहकर लेनदेन करो, और इसकी
भूमि को अपने लिये ले लो। ११ और
शकेम ने भी दीना के पिता और भाइयो से

* अर्थात् झोंपड़े।
† इनका मूल्य सदिग्ध है।
‡ अर्थात् ईश्वर इस्राएल का परमेश्वर।

कहा, यदि मुझ पर तुम लोगो की अनुग्रह
की दृष्टि हो, तो जो कुछ तुम मुझ से
कहो, सो मै दूगा। १२ तुम मुझ से
कितना ही मूल्य वा बदला क्यो न मागो,
तौभी मै तुम्हारे कहे के अनुसार दूगा
परन्तु उस कन्या को पत्नी होने के लिये
मुझे दो। १३ तब यह सोचकर, कि
शकेम ने हमारी बहिन दीना को अशुद्ध
किया है, याकूब के पुत्रो ने शकेम और
उसके पिता हमोर को छल के साथ यह
उत्तर दिया, १४ कि हम ऐसा काम नही
कर सकते, कि किसी खतनारहित पुरुष
को अपनी बहिन दे, क्योकि इस से
हमारी नामधराई होगी १५ इस बात
पर तो हम तुम्हारी मान लेगे, कि हमारी
नाई तुम मे से हर एक पुरुष का खतना
किया जाए। १६ तब हम अपनी बेटिया
तुम्हे ब्याह देगे, और तुम्हारी बेटिया ब्याह
लेगे, और तुम्हारे सग बसे भी रहेगे,
और हम दोनो एक ही समुदाय के मनुष्य
हो जाएगे। १७ पर यदि तुम हमारी बात
न मानकर अपना खतना न कराओगे, तो
हम अपनी लडकी को लेके यहा से चले
जाएगे। १८ उनकी इस बात पर हमोर
और उसका पुत्र शकेम प्रसन्न हुए।
१९ और वह जवान, जो याकूब की बेटी
को बहुत चाहता था, इस काम को करने मे
उस ने विलम्ब न किया। वह तो अपने
पिता के सारे घराने मे अधिक प्रतिष्ठित
था। २० सो हमोर और उसका पुत्र
शकेम अपने नगर के फाटक के निकट
जाकर नगरवासियो को यो समझाने लगे,
२१ कि वे मनुष्य तो हमारे सग मेल से
रहना चाहते है, सो उन्हे इस देश मे रहके
लेनदेन करने दो, देखो, यह देश उनके
लिये भी बहुत है, फिर हम लोग उनकी
बेटियो को ब्याह ले, और अपनी बेटियो
को उन्हे दिया करे। २२ वे लोग केवल
इस बात पर हमारे सग रहने और एक
ही समुदाय के मनुष्य हो जाने को प्रसन्न
है, कि उनकी नाई हमारे सब पुरुषो का
भी खतना किया जाए। २३ क्या उनकी
भेड-बकरिया, और गाय-बैल वरन उनके
सारे पशु और धन सम्पत्ति हमारी न हो
जाएगी? इतना ही करे कि हम लोग
उनकी बात मान ले, तो वे हमारे सग
रहेगे। २४ सो जितने उस नगर के
फाटक से निकलते थे, उन सभो ने हमोर
की और उसके पुत्र शकेम की बात मानी;
और हर एक पुरुष का खतना किया गया,
जितने उस नगर के फाटक से निकलते थे।
२५ तीसरे दिन, जब वे लोग पीडित
पडे थे, तब ऐसा हुआ कि शिमोन और
लेवी नाम याकूब के दो पुत्रो ने, जो दीना
के भाई थे, अपनी अपनी तलवार ले उस
नगर मे निधडक घुसकर सब पुरुषो को
घात किया। २६ और हमोर और उसके
पुत्र शकेम को उन्हो ने तलवार से मार
डाला, और दीना को शकेम के घर से
निकाल ले गए। २७ और याकूब के
पुत्रो ने घात कर डालने पर भी चढकर
नगर को इसलिये लूट लिया, कि उस
मे उनकी बहिन अशुद्ध की गई थी।
२८ उन्हो ने भेड-बकरी, और गाय-बैल,
और गदहे, और नगर और मैदान मे
जितना धन था ले लिया। २९ उस
सब को, और उनके बाल-बच्चो, और
स्त्रियो को भी हर ले गए, वरन घर घर मे
जो कुछ था, उसको भी उन्हो ने लूट
लिया। ३० तब याकूब ने शिमोन और
लेवी से कहा, तुम ने जो इस देश के
निवासी कनानियो और परिज्जियो के

मन में मेरी ओर घृणा उत्पन्न कराई है,*
इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है,
क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं,†
सो अब वे इकट्ठे होकर मुझ पर चढ़ेंगे,
और मुझे मार डालेंगे, सो मैं अपने घराने
समेत सत्यानाश हो जाऊंगा। ३१ उन्हों ने
कहा, क्या वह हमारी बहिन के साथ
वेश्या की नाईं वर्ताव करे?

(बिन्यामीन की उत्पत्ति और राहेल की मृत्यु का वर्णन)

३५ तब परमेश्वर ने याकूब से कहा,
यहां से कूच करके बेतेल को जा,
और वहीं रह और वहां ईश्वर के लिये
वेदी बना, जिस ने तुझे उस समय दर्शन
दिया, जब तू अपने भाई एसाव के डर से
भागा जाता था। २ तब याकूब ने अपने
घराने से, और उन सब से भी जो उसके
संग थे, कहा, तुम्हारे बीच में जो पराए
देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको, और अपने
अपने को शुद्ध करो, और अपने वस्त्र बदल
डालो, ३ और आओ, हम यहां से कूच
करके बेतेल को जाएं, वहां मैं ईश्वर के
लिये एक वेदी बनाऊंगा, जिस ने संकट के
दिन मेरी सुन ली, और जिस मार्ग से मैं
चलता था, उस में मेरे संग रहा। ४ सो
जितने पराए देवता उनके पास थे, और
जितने कुण्डल उनके कानों में थे, उन
सभों को उन्हों ने याकूब को दिया, और
उस ने उनको उस सिन्दूर वृक्ष के नीचे,
जो शकेम के पास है, गाड़ दिया। ५ तब
उन्हों ने कूच किया और उनके चारों
ओर के नगर निवासियों के मन में परमेश्वर
की ओर से ऐसा भय समा गया, कि
उन्हों ने याकूब के पुत्रों का पीछा न किया।
६ सो याकूब उन सब समेत, जो उसके
संग थे, कनान देश के लूज नगर को
आया। वह नगर बेतेल भी कहलाता है।
७ वहां उस ने एक वेदी बनाई, और
उस स्थान का नाम एलबेतेल* रखा,
क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से
भागा जाता था तब परमेश्वर उस पर
वहीं प्रगट हुआ था। ८ और रिबका की
दूध पिलानेहारी धाय दबोरा मर गई,
और बेतेल के नीचे सिन्दूर वृक्ष के तले
उसको मिट्टी दी गई, और उस सिन्दूर
वृक्ष का नाम अल्लोनबक्कूत† रखा गया॥
९ फिर याकूब के पद्दनराम से आने
के पश्चात् परमेश्वर ने दूसरी बार उसको
दर्शन देकर आशीष दी। १० और
परमेश्वर ने उस से कहा, अब तक तो तेरा
नाम याकूब रहा है, पर आगे को तेरा नाम
याकूब न रहेगा, तू इस्राएल कहलाएगा
सो उस ने उसका नाम इस्राएल रखा।
११ फिर परमेश्वर ने उस से कहा, मैं
सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं तू फूले-फले
और बढ़े, और तुझ से एक जाति वरन
जातियों की एक मण्डली भी उत्पन्न
होगी, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।
१२ और जो देश मैं ने इब्राहीम और
इसहाक को दिया है, वही देश तुझे देता
हूं, और तेरे पीछे तेरे वंश को भी दूंगा।
१३ तब परमेश्वर उस स्थान में, जहां
उस ने याकूब से बातें कीं, उसके पास से
ऊपर चढ़ गया। १४ और जिस स्थान में
परमेश्वर ने याकूब से बातें कीं, वहां
याकूब ने पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया,

* मूल में—परिज्जियों में मुझे दुर्गन्धित किया।

† मूल में—मैं थोड़े ही लोग हूं।

* अर्थात् बेतेल का ईश्वर।

† अर्थात् रुलाई का बांज।

और उस पर अर्घ देकर तेल डाल दिया।
१५ और जहा परमेश्वर ने याकूब से
बाते की, उस स्थान का नाम उस ने
बेतेल रखा। १६ फिर उन्हो ने बेतेल से
कूच किया, और एप्राता थोडी ही दूर
रह गया था, कि राहेल को बच्चा जनने
की बडी पीडा आने लगी। १७ जब
उसको बडी बडी पीडा उठती थी तब
धाय ने उस से कहा, मत डर, अब की
भी तेरे बेटा ही होगा। १८ तब ऐसा
हुआ, कि वह मर गई, और प्राण निकलते
निकलते उस ने उस बेटे का नाम बेनोनी *
रखा पर उसके पिता ने उसका नाम
बिन्यामीन † रखा। १९ यो राहेल मर
गई, और एप्राता, अर्थात् बेतेलहेम के
मार्ग मे, उसको मिट्टी दी गई। २० और
याकूब ने उसकी कब्र पर एक खम्भा
खडा किया राहेल की कब्र का वही खम्भा
आज तक बना है। २१ फिर इस्राएल ने
कूच किया, और एदेर नाम गुम्मट के
आगे बढकर अपना तम्बू खडा किया।
२२ जब इस्राएल उस देश मे बसा था,
तब एक दिन ऐसा हुआ, कि रूबेन ने
जाकर अपने पिता की रखेली बिल्हा के
साथ कुकर्म किया और यह बात इस्राएल
को मालूम हो गई॥

२३ याकूब के बारह पुत्र हुए। उन
में से लिआ के पुत्र ये थे, अर्थात् याकूब का
जेठा, रूबेन, फिर शिमोन, लेवी, यहूदा,
इस्साकार, और जबूलून। २४ और राहेल
के पुत्र ये थे, अर्थात् यूसुफ, और बिन्यामीन।
२५ और राहेल की लौन्डी बिल्हा के पुत्र
ये थे, अर्थात् दान, और नप्ताली।
२६ और लिआ की लौन्डी जिल्पा के
पुत्र ये थे अर्थात् गाद, और आशेर, याकूब
के ये ही पुत्र हुए, जो उस से पद्दनराम में
उत्पन्न हुए॥

२७ और याकूब मम्रे में, जो किर्यत-
अर्बा, अर्थात् हेब्रोन है, जहा इब्राहीम और
इसहाक परदेशी होकर रहे थे, अपने पिता
इसहाक के पास आया। २८ इसहाक की
अवस्था एक सौ अस्सी बरस की हुई।
२९ और इसहाक का प्राण छूट गया,
और वह मर गया, और वह बूढा और
पूरी आयु का होकर अपने लोगो मे जा
मिला और उसके पुत्र एसाव और याकूब
ने उसको मिट्टी दी॥

(एसाव की वंशावली)

३६ एसाव जो एदोम भी कहलाता
है, उसकी यह वंशावली है।
२ एसाव ने तो कनानी लडकिया ब्याह
ली, अर्थात् हित्ती एलोन की बेटी आदा
को, और ओहोलीबामा को जो अना
की बेटी, और हिव्वी सिबोन की नतिनी
थी। ३ फिर उस ने इश्माएल की बेटी
बासमत को भी, जो नबायोत की बहिन
थी, ब्याह लिया। ४ आदा ने तो एसाव के
जन्माए एलीपज को, और बासमत ने रूएल
को उत्पन्न किया। ५ और ओहोलीबामा ने
यूश, और यालाम, और कोरह को उत्पन्न
किया, एसाव के ये ही पुत्र कनान देश मे
उत्पन्न हुए। ६ और एसाव अपनी पत्नियो,
और बेटे-बेटियो, और घर के सब प्राणियो,
और अपनी भेड-बकरी, और गाय-बैल
आदि सब पशुओ, निदान अपनी सारी
सम्पत्ति को, जो उस ने कनान देश मे
संचय की थी, लेकर अपने भाई याकूब
के पास से दूसरे देश को चला गया।
७ क्योकि उनकी सम्पत्ति इतनी हो गई

* अर्थात् मेरा शोक मूल पुत्र।
† अर्थात् दहिने हाथ का पुत्र।

थी, कि वे इकट्ठे न रह सके, और पशुओ
की वहुतायत के मारे उस देश में, जहा वे
परदेशी होकर रहते थे, उनकी समाई न
रही। ८ एसाव जो एदोम भी कहलाता
है सो सेईर नाम पहाडी देश में रहने
लगा। ९ सेईर नाम पहाडी देश में
रहनेहारे एदोमियो के मूल पुरुष एसाव की
वशावली यह है १० एसाव के पुत्रो के
नाम ये है, अर्थात् एसाव की पत्नी आदा
का पुत्र एलीपज, और उसी एसाव की
पत्नी वासमत का पुत्र रूएल। ११ और
एलीपज के ये पुत्र हुए, अर्थात् तेमान,
ओमार, सपो, गाताम, और कनज।
१२ और एसाव के पुत्र एलीपज के तिम्ना
नाम एक सुरैतिन थी, जिस ने एलीपज के
जन्माए अमालेक को जन्म दिया एसाव
की पत्नी आदा के वश मे ये ही हुए।
१३ और रूएल के ये पुत्र हुए, अर्थात्
नहत, जेरह, शम्मा, और मिज्जा एसाव
की पत्नी वासमत के वश में ये ही हुए।
१४ और ओहोलीवामा जो एसाव की पत्नी,
और सिवोन की नतिनी और अना की
बेटी थी, उसके ये पुत्र हुए अर्थात् उस ने
एसाव के जन्माए यूश, यालाम और कोरह
को जन्म दिया। १५ एसाववशियो के
अधिपति ये हुए अर्थात् एसाव के जेठे
एलीपज के वश मे से तो तेमान अधिपति,
ओमार अधिपति, सपो अधिपति, कनज
अधिपति, १६ कोरह अधिपति, गाताम
अधिपति, अमालेख अधिपति एलीपज-
वशियो मे से, एदोम देश मे य ही अधिपति
हुए और ये ही आदा के वश मे हुए।
१७ और एसाव के पुत्र रूएल के वश में
ये हुए, अर्थात् नहत अधिपति, जेरह
अधिपति, शम्मा अधिपति, मिज्जा अधि-
पति रूएलवशियो में से, एदोम देश में
ये ही अधिपति हुए, और ये ही एसाव
की पत्नी वासमत के वश में हुए। १८ और
एसाव की पत्नी ओहोलीवामा के वश में ये
हुए, अर्थात् यूश अधिपति, यालाम
अधिपति, कोरह अधिपति, अना की वेटी
ओहोलीवामा जो एसाव की पत्नी थी उसके
वश में ये ही हुए। १९ एसाव जो
एदोम भी कहलाता है, उसके वश ये ही हैं,
और उनके अधिपति भी ये ही हुए॥

२० सेईर जो होरी नाम जाति का था,
उसके ये पुत्र उस देश में पहिले से रहते
थे, अर्थात् लोतान, शोबाल, शिवोन,
अना, २१ दीशोन, एसेर, और दीशान,
एदोम देश में सेईर के ये ही होरी
जातिवाले अधिपति हुए। २२ और लोतान
के पुत्र, होरी, और हेमाम हुए, और
लोतान की वहिन तिम्ना थी। २३ और
शोबाल के ये पुत्र हुए, अर्थात् आल्वान,
मानहत, एबाल, शपो, और ओनाम।
२४ और सिदोन के ये पुत्र हुए, अर्थात्
अय्या, और अना, यह वही अना है जिस
को जगल मे अपने पिता सिवोन के गदहो
को चराते चराते गरम पानी के झरने
मिले। २५ और अना के दीशोन नाम
पुत्र हुआ, और उसी अना के ओहोलीवामा
नाम बेटी हुई। २६ और दीशोन के ये
पुत्र हुए, अर्थात् हेमदान, एश्वान, यित्रान,
और करान। २७ एसेर के ये पुत्र हुए,
अर्थात् बिल्हान, जावान, और अकान।
२८ दीशान के ये पुत्र हुए, अर्थात् ऊस,
और अरान। २९ होरियो के अधिपति ये
हुए, अर्थात् लोतान अधिपति, शोबाल
अधिपति, शिवोन अधिपति, ३० अना
अधिपति, दीशोन अधिपति, एसेर अधिपति,
दीशान अधिपति, सेईर देश में होरी
जातिवाले ये ही अधिपति हुए॥

३१ फिर जब इस्राएलियो पर किसी
राजा ने राज्य न किया था, तब भी एदोम
के देश मे ये राजा हुए, ३२ अर्थात् बोर
के पुत्र बेला ने एदोम मे राज्य किया, और
उसकी राजधानी का नाम दिन्हाबा है।
३३ बेला के मरने पर, बोस्रानिवासी जेरह
का पुत्र योबाब उसके स्थान पर राजा
हुआ। ३४ और योबाब के मरने पर,
तेमानियो के देश का निवासी हूशाम उसके
स्थान पर राजा हुआ। ३५ फिर हूशाम
के मरने पर, बदद का पुत्र हदद उसके
स्थान पर राजा हुआ यह वही है जिस ने
मिद्यानियो को मोआब के देश मे मार लिया,
और उसकी राजधानी का नाम अवीत
है। ३६ और हदद के मरने पर, मस्रेका-
वासी सम्ला उसके स्थान पर राजा हुआ।
३७ फिर सम्ला के मरने पर, शाऊल जो
महानद के तटवाले रहोबोत नगर का था,
सो उसके स्थान पर राजा हुआ। ३८ और
शाऊल के मरने पर, अकबोर का पुत्र
बाल्हानान उसके स्थान पर राजा हुआ।
३९ और अकबोर के पुत्र बाल्हानान के
मरने पर, हदर उसके स्थान पर राजा
हुआ और उसकी राजधानी का नाम पाऊ
है, और उसकी पत्नी का नाम महेतबेल
है, जो मेजाहब की नतिनी और मत्रेद की
बेटी थी। ४० फिर एसावबशियो के अधि-
पतियो के कुलो, और स्थानो के अनुसार
उनके नाम ये है, अर्थात् तिम्ना अधिपति,
अल्वा अधिपति, यतेत अधिपति,
४१ ओहोलीबामा अधिपति, एला अधि-
पति, पीनोन अधिपति, ४२ कनज अधि-
पति, तेमान अधिपति, मिबसार अधिपति,
४३ मग्दीएल अधिपति, ईराम अधिपति:
एदोमवशियो ने जो देश अपना कर
लिया था, उसके निवासस्थानो मे उनके
ये ही अधिपति हुए। और एदोमी जाति
का मूलपुरुष एसाव है॥

(यूसुफ के बेचे जाने का वर्णन)

३७ याकूब तो कनान देश मे रहता
था, जहा उसका पिता परदेशी
होकर रहा था। २ और याकूब के वश का
वृत्तान्त * यह है कि यूसुफ सतरह वर्ष का
होकर अपने भाइयो के सग भेड-बकरियो को
चराता था, और वह लडका अपने पिता
की पत्नी बिल्हा, और जिल्पा के पुत्रो के
सग रहा करता था और उनकी बुराइयो
का समाचार अपने पिता के पास पहुचाया
करता था। ३ और इस्राएल अपने सब
पुत्रो से बढके यूसुफ से प्रीति रखता था,
क्योकि वह उसके बुढापे का पुत्र था: और
उस ने उसके लिये रगबिरगा अगरखा
बनवाया। ४ सो जब उसके भाइयो ने
देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयो से
अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उस से
बैर करने लगे और उसके साथ ठीक तौर से
बात भी नही करते थे। ५ और यूसुफ ने
एक स्वप्न देखा, और अपने भाइयो से उसका
वर्णन किया तब वे उस से और भी द्वेष
करने लगे। ६ और उस ने उन से कहा,
जो स्वप्न मै ने देखा है, सो सुनो ७ हम
लोग खेत मे पूले बान्ध रहे है, और क्या
देखता हू कि मेरा पूला उठकर सीधा खडा
हो गया, तब तुम्हारे पूलो ने मेरे पूले को
चारो तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत्
किया। ८ तब उसके भाइयो ने उस से
कहा, क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य
करेगा? वा सचमुच तू हम पर प्रभुता
करेगा? सो वे उसके स्वप्नो और उसकी
बातो के कारण उस से और भी अधिक बैर

* मूल में—याकूब की वशावली।

करने लगे। ९ फिर उस ने एक और स्वप्न
देखा, और अपने भाइयो से उसका भी यो
वर्णन किया, कि सुनो, मैं ने एक और स्वप्न
देखा है, कि सूर्य और चन्द्रमा, और ग्यारह
तारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं। १० यह
स्वप्न उस ने अपने पिता, और भाइयो से
वर्णन किया तब उसके पिता ने उसको
दपटके कहा, यह कैसा स्वप्न है जो तू ने
देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता
और तेरे भाई सब जाकर तेरे आगे भूमि
पर गिरके दण्डवत् करेंगे? ११ उसके
भाई तो उससे डाह करते थे, पर उसके
पिता ने उसके उस वचन को स्मरण रखा।
१२ और उसके भाई अपने पिता की भेड़-
बकरियो को चराने के लिये शकेम को गए।
१३ तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, तेरे भाई
तो शकेम ही मे भेड़-बकरी चरा रहे होंगे,
सो जा, मैं तुझे उनके पास भेजता हू।
उस ने उस से कहा जो आज्ञा * मैं हाजिर
हू। १४ उस ने उस से कहा, जा, अपने
भाइयो और भेड़-बकरियो का हाल देख
आ कि वे कुशल से तो है, फिर मेरे पास
समाचार ले आ। सो उस ने उसको हेब्रोन
की तराई मे विदा कर दिया, और वह
शकेम मे आया। १५ और किसी मनुष्य
ने उसको मैदान में इधर उधर भटकते हुए
पाकर उस से पूछा, तू क्या ढूढता है?
१६ उस ने कहा, मैं तो अपने भाइयो को
ढूढता हू कृपा कर मुझे बता, कि वे भेड़-
बकरियो को कहा चरा रहे हैं? १७ उस
मनुष्य ने कहा, वे तो यहा से चले गए है
और मैं ने उनको यह कहते सुना, कि आओ,
हम दोतान को चलें। सो यूसुफ अपने
भाइयो के पास चला, और उन्हे दोतान में
पाया। १८ और ज्योही उन्हो ने उसे दूर
से आते देखा, तो उसके निकट आने के
पहिले ही उसे मार डालने की युक्ति की।
१९ और वे आपस मे कहने लगे, देखो, वह
स्वप्न देखनेहारा आ रहा है। २० सो
आओ, हम उसको घात करके किसी गड्हे
में डाल दें, और यह कह देंगे, कि कोई दुष्ट
पशु उसको खा गया। फिर हम देखेगे कि
उसके स्वप्नो का क्या फल होगा। २१ यह
सुनके रूबेन ने उसको उनके हाथ से
बचाने की मनसा से कहा, हम उसको
प्राण से तो न मारे। २२ फिर रूबेन ने
उन से कहा, लोहू मत बहाओ, उसको
जगल के इस गड्हे मे डाल दो, और उस
पर हाथ मत उठाओ। वह उसको उनके
हाथ से छुडाकर पिता के पास फिर पहुचाना
चाहता था। २३ सो ऐसा हुआ, कि जब
यूसुफ अपने भाइयो के पास पहुचा तब उन्हो
ने उसका रगबिरगा अगरखा, जिसे वह पहिने
हुए था, उतार लिया २४ और यूसुफ को
उठाकर गड्हे में डाल दिया वह गड्हा
तो सूखा था और उस में कुछ जल न था।
२५ तब वे रोटी खाने को बैठ गए और
आखे उठाकर क्या देखा, कि इश्माएलियो
का एक दल ऊटो पर सुगन्धद्रव्य, बलसान,
और गन्धरस लादे हुए, गिलाद से मिस्र को
चला जा रहा है। २६ तब यहूदा ने अपने
भाइयो से कहा, अपने भाई को घात करने
और उसका खून छिपाने से क्या लाभ
होगा? २७ आओ, हम उसे इश्माएलियो
के हाथ बेच डाले, और अपना हाथ उस पर
न उठाए, क्योकि वह हमारा भाई और
हमारी ही हड्डी और मास है, सो उसके
भाइयो ने उसकी बात मान ली। तब
मिद्यानी व्यापारी उधर से होकर उनके
पास पहुचे २८ सो यूसुफ के भाइयों ने
उसको उस गड्हे में से खींचके बाहर

* मूल में—मुझे देख।

निकाला, और इश्माएलियो के हाथ चादी
के बीस टुकडो मे बेच दिया और वे यूसुफ
को मिस्र मे ले गए। २६ और रूबेन ने
गडहे पर लौटकर क्या देखा, कि यूसुफ
गडहे मे नही है, सो उस ने अपने वस्त्र
फाडे। ३० और अपने भाइयो के पास
लौटकर कहने लगा, कि लडका तो नही है;
अब मै किधर जाऊ? ३१ और तब उन्हो
ने यूसुफ का अगरखा लिया, और एक बकरे
को मारके उसके लोहू मे उसे डुबा दिया।
३२ और उन्हो ने उस रगबिरगे अगरखे को
अपने पिता के पास भेजकर कहला दिया,
कि यह हम को मिला है, सो देखकर पहिचान
ले, कि यह तेरे पुत्र का अगरखा है कि
नही। ३३ उस ने उसको पहिचान लिया,
और कहा, हा यह मेरे ही पुत्र का अगरखा
है; किसी दुष्ट पशु ने उसको खा लिया
है, नि सन्देह यूसुफ फाड डाला गया है।
३४ तब याकूब ने अपने वस्त्र फाडे और
कमर मे टाट लपेटा, और अपने पुत्र के लिये
बहुत दिनो तक विलाप करता रहा।
३५ और उसके सब बेटे-बेटियो ने उसको
शान्ति देने का यत्न किया, पर उसको
शान्ति न मिली, और वह यही कहता रहा,
मै तो विलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास
अधोलोक मे उतर जाऊगा। इस प्रकार
उसका पिता उसके लिये रोता ही रहा।
३६ और मिद्यानियो* ने यूसुफ को मिस्र
में ले जाकर पोतीपर नाम, फिरौन के एक
हाकिम, और जल्लादो के प्रधान, के हाथ
बेच डाला॥

(यहूदा के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन)

३८ उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि
यहूदा अपने भाइयों के पास से
चला गया, और हीरा नाम एक अदुल्लाम-
वासी पुरुष के पास डेरा किया। २ वहा
यहूदा ने शूआ नाम एक कनानी पुरुष की
बेटी को देखा, और उसको ब्याहकर उसके
पास गया। ३ वह गर्भवती हुई, और उसके
एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और यहूदा ने उसका
नाम एर रखा। ४ और वह फिर गर्भवती
हुई, और उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ,
और उसका नाम ओनान रखा गया।
५ फिर उसके एक पुत्र और उत्पन्न हुआ,
और उसका नाम शेला रखा गया और जिस
समय इसका जन्म हुआ उस समय यहूदा
कजीब मे रहता था। ६ और यहूदा ने
तामार नाम एक स्त्री से अपने जेठे एर का
विवाह कर दिया। ७ परन्तु यहूदा का वह
जेठा एर यहोवा के लेखे मे दुष्ट था, इसलिये
यहोवा ने उसको मार डाला। ८ तब
यहूदा ने ओनान से कहा, अपनी भौजाई के
पास जा, और उसके साथ देवर का धर्म
पूरा करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न
कर। ९ ओनान तो जानता था कि सन्तान
तो मेरी न ठहरेगी सो ऐसा हुआ, कि जब
वह अपनी भौजाई के पास गया, तब उस ने
भूमि पर वीर्य गिराकर नाश किया, जिस से
ऐसा न हो कि उसके भाई के नाम से वश
चले। १० यह काम जो उस ने किया
उस से यहोवा अप्रसन्न हुआ और उस ने
उसको भी मार डाला। ११ तब यहूदा ने
इस डर के मारे, कि कही ऐसा न हो कि
अपने भाइयो की नाई शेला भी मरे, अपनी
बहू तामार से कहा, जब तक मेरा पुत्र शेला
सियाना न हो तब तक अपने पिता के घर में
विधवा ही बैठी रह, सो तामार अपने पिता
के घर में जाकर रहने लगी। १२ बहुत
समय के बीतने पर यहूदा की पत्नी जो शूआ
की बेटी थी सो मर गई, फिर यहूदा शोक से

* मूल में—मदानियों।

छूटकर अपने मित्र हीरा अदुल्लामवासी
समेत अपनी भेड-बकरियो का ऊन कतरने-
वालो के पास तिम्नाथ को गया। १३ और
तामार को यह समाचार मिला, कि तेरा
ससुर अपनी भेड-बकरियो का ऊन कतराने
के लिये तिम्नाथ को जा रहा है। १४ तब
उस ने यह सोचकर, कि शेला सियाना तो
हो गया पर मै उसकी स्त्री नही होने पाई,
अपना विधवापन का पहिरावा उतारा, और
घूघट डालकर अपने को ढाप लिया, और
एनैम नगर के फाटक के पास, जो तिम्नाथ
के मार्ग में है, जा बैठी १५ जब यहूदा ने
उसको देखा, उस ने उस को वेश्या समझा,
क्योंकि वह अपना मुह ढापे हुए थी।
१६ और वह मार्ग से उसकी ओर फिरा,
और उस से कहने लगा, मुझे अपने पास
आने दे, (क्योंकि उसे यह मालूम न था कि
वह उसकी बहू है)। और वह कहने लगी,
कि यदि मै तुझे अपने पास आने दू, तो तू
मुझे क्या देगा? १७ उस ने कहा, मै अपनी
बकरियो मे से बकरी का एक बच्चा तेरे
पास भेज दूगा। तब उस ने कहा, भला
उसके भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ
रेहन रख जाएगा? १८ उस ने पूछा, मै
तेरे पास क्या रेहन रख जाऊ? उस ने कहा,
अपनी मुहर, और बाजूबन्द, और अपने हाथ
की छडी। तब उस ने उसको वे वस्तुए
दे दी, और उसके पास गया, और वह उस से
गर्भवती हुई। १९ तब वह उठकर चली
गई, और अपना घूघट उतारके अपना
विधवापन का पहिरावा फिर पहिन लिया।
२० तब यहूदा ने बकरी का एक बच्चा
अपने मित्र उस अदुल्लामवासी के हाथ
भेज दिया, कि वह रेहन रखी हुई वस्तुए
उस स्त्री के हाथ से छुडा ले आए, पर वह
स्त्री उसको न मिली। २१ तब उस ने
वहा के लोगो से पूछा, कि वह देवदासी जो
एनैम मे मार्ग की एक ओर बैठी थी, कहा
है? उन्हो ने कहा, यहा तो कोई देवदासी
न थी। २२ सो उस ने यहूदा के पास
लौटके कहा, मुझे वह नही मिली, और
उस स्थान के लोगो ने कहा, कि यहा तो
कोई देवदासी न थी। २३ तब यहूदा ने
कहा, अच्छा, वह बन्धक उसी के पास रहने
दे, नही तो हम लोग तुच्छ गिने जाएगे
देख, मै ने बकरी का यह बच्चा भेज दिया,
पर वह तुझे नही मिली। २४ और तीन
महीने के पीछे यहूदा को यह समाचार
मिला, कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया है,
वरन वह व्यभिचार से गर्भवती भी हो गई
है। तब यहूदा ने कहा, उसको बाहर ले
आओ, कि वह जलाई जाए। २५ जब उसे
बाहर निकाल रहे थे, तब उस ने अपने
ससुर के पास यह कहला भेजा, कि जिस
पुरुष की ये वस्तुए है, उसी से मै गर्भवती
हू, फिर उस ने यह भी कहलाया, कि
पहिचान तो सही, कि यह मुहर, और बाजू-
बन्द, और छडी किस की है। २६ यहूदा ने
उन्हे पहिचानकर कहा, वह तो मुझ से कम
दोषी है, क्योंकि मै ने उसे अपने पुत्र शेला
को न ब्याह दिया। और उस ने उस से
फिर कभी प्रसग न किया। २७ जब उसके
जनने का समय आया, तब यह जान पडा
कि उसके गर्भ में जुडवे बच्चे है। २८ और
जब वह जनने लगी तब एक बालक ने
अपना हाथ बढाया और धाय ने लाल
सूत लेकर उसके हाथ मे यह कहते हुये
बान्ध दिया, कि पहिले यही उत्पन्न हुआ।
२९ जब उस ने हाथ समेट लिया, तब
उसका भाई उत्पन्न हो गया तब उस धाय
ने कहा, तू क्यो बरबस निकल आया है?

इसलिये उसका नाम पेरेस* रखा गया।
३० पीछे उसका भाई जिसके हाथ में
लाल सूत बन्धा था उत्पन्न हुआ, और उसका
नाम जेरह रखा गया॥

(यूसुफ के बन्दीगृह में पड़ने और उस से
छूटने का वर्णन)

३९ जब यूसुफ मिस्र मे पहुचाया
गया, तब पोतीपर नाम एक मिस्री,
जो फिरौन का हाकिम, और जल्लादो का
प्रधान था, उस ने उसको इश्माएलियो के
हाथ से, जो उसे वहा ले गए थे, मोल लिया।
२ और यूसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में
रहता था, और यहोवा उसके सग था,
सो वह भाग्यवान् पुरुष हो गया। ३ और
यसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके
सग रहता है, और जो काम वह करता है
उसको यहोवा उसके हाथ से सुफल कर
देता है। ४ तव उसकी अनुग्रह की दृष्टि
उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल
करने के लिये नियुक्त किया गया फिर
उस ने उसको अपने घर का अधिकारी
वनाके अपना सव कुछ उसके हाथ मे सौप
दिया। ५ और जव से उस ने उसको
अपने घर का और अपनी सारी सम्पत्ति का
अधिकारी वनाया, तव से यहोवा यूसुफ के
कारण उस मिस्री के घर पर आशीष देने
लगा, और क्या घर मे, क्या मैदान मे,
उसका जो कुछ था, सव पर यहोवा की
आशीष होने लगी। ६ सो उस ने अपना
सव कुछ यूसुफ के हाथ मे यहा तक छोड
दिया कि अपने खाने की रोटी को छोड,
वह अपनी सम्पत्ति का हाल कुछ न जानता
था। और यूसुफ सुन्दर और रूपवान् था।
७ इन वातो के पश्चात् ऐसा हुआ, कि
उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर
आंख लगाई, और कहा, मेरे साथ सो।
८ पर उस ने अस्वीकार करते हुए अपने
स्वामी की पत्नी से कहा, सुन, जो कुछ इस
घर में है मेरे हाथ में है, उसे मेरा स्वामी
कुछ नही जानता, और उस ने अपना सव
कुछ मेरे हाथ मे सौप दिया है। ९ इस
घर मे मुझ से वडा कोई नही; और उस ने,
तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझ से
कुछ नही रख छोडा; सो भला, मै ऐसी वडी
दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यो-
कर वनू? १० और ऐसा हुआ, कि वह
प्रति दिन यूसुफ से वाते करती रही, पर
उस ने उसकी न मानी, कि उसके पास
लेटे वा उसके संग रहे। ११ एक दिन क्या
हुआ, कि यूसुफ अपना काम काज करने के
लिये घर में गया, और घर के सेवको मे से
कोई भी घर के अन्दर न था। १२ तव
उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकडकर कहा, मेरे
साथ सो, पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ मे
छोडकर भागा, और वाहर निकल गया।
१३ यह देखकर, कि वह अपना वस्त्र मेरे
हाथ मे छोडकर वाहर भाग गया, १४ उस
स्त्री ने अपने घर के सेवको को वुलाकर
कहा, देखो, वह एक इब्री मनुष्य को हमारा
तिरस्कार करने के लिये हमारे पास ले आया
है। वह तो मेरे साथ सोने के मतलव से
मेरे पास अन्दर आया था और मै ऊचे
स्वर से चिल्ला उठी। १५ और मेरी वडी
चिल्लाहट सुनकर वह अपना वस्त्र मेरे पास
छोडकर भागा, और वाहर निकल गया।
१६ और वह उसका वस्त्र उसके स्वामी के
घर आने तक अपने पास रखे रही।
१७ तव उस ने उस से इस प्रकार की वाते
कही, कि वह इब्री दास जिसको तू हमारे
पास ले आया है, सो मुझ से हसी करने के

* अर्थात् टूट पडना।

लिये मेरे पास आया था। १८ और जब मैं
ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी, तब वह अपना
वस्त्र मेरे पास छोड़कर बाहर भाग गया।
१९ अपनी पत्नी की ये बातें सुनकर, कि
तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया,
यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का।
२० और यूसुफ के स्वामी ने उसको पकड़-
कर बन्दीगृह में, जहां राजा के कैदी बन्द थे,
डलवा दिया सो वह उस बन्दीगृह में रहने
लगा। २१ पर यहोवा यूसुफ के संग संग
रहा, और उस पर करुणा की, और बन्दी-
गृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर
हुई। २२ सो बन्दीगृह के दारोगा ने उन
सब बन्धुओं को, जो कारागार में थे, यूसुफ
के हाथ में सौंप दिया, और जो जो काम
वे वहां करते थे, वही उसी की आज्ञा से
होता था। २३ बन्दीगृह के दारोगा के
वश में जो कुछ था, क्योंकि उस में से
उसको कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती
थी, इसलिये कि यहोवा यूसुफ के साथ
था, और जो कुछ वह करता था, यहोवा
उसको उस में सफलता देता था॥

४० इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ,
कि मिस्र के राजा के पिलानेहारे
और पकानेहारे ने अपने स्वामी का कुछ
अपराध किया। २ तब फिरौन ने अपने
उन दोनों हाकिमों पर, अर्थात् पिलानेहारों
के प्रधान, और पकानेहारों के प्रधान पर
क्रोधित होकर ३ उन्हें कैद कराके, जल्लादों
के प्रधान के घर के उसी बन्दीगृह में, जहां
यूसुफ बन्धुआ था, डलवा दिया। ४ तब
जल्लादों के प्रधान ने उनको यूसुफ के हाथ
सौंपा, और वह उनकी सेवा टहल करने
लगा सो वे कुछ दिन तक बन्दीगृह में रहे।
५ और मिस्र के राजा का पिलानेहारा और
पकानेहारा, जो बन्दीगृह में बन्द थे, उन
दोनों ने एक ही रात में, अपने अपने होन-
हार के अनुसार,* स्वप्न देखा। ६ बिहान
को जब यूसुफ उनके पास अन्दर गया, तब
उन पर उस ने जो दृष्टि की, तो क्या देखता
है, कि वे उदास हैं। ७ सो उस ने फिरौन
के उन हाकिमों से, जो उसके साथ उसके
स्वामी के घर के बन्दीगृह में थे, पूछा, कि
आज तुम्हारे मुंह क्यों उदास हैं? ८ उन्हों
ने उस से कहा, हम दोनों ने स्वप्न देखा है,
और उनके फल का बतानेवाला कोई भी
नहीं। यूसुफ ने उन से कहा, क्या स्वप्नों का
फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है?
मुझे अपना अपना स्वप्न बताओ। ९ तब
पिलानेहारों का प्रधान अपना स्वप्न यूसुफ
को यों बताने लगा कि मैं ने स्वप्न में
देखा, कि मेरे साम्हने एक दाखलता है,
१० और उस दाखलता में तीन डालियां
हैं और उस में मानो कलियां लगी हैं,
और वे फूलीं और उसके गुच्छों में दाख
लगकर पक गईं ११ और फिरौन का
कटोरा मेरे हाथ में था सो मैं ने उन
दाखों को लेकर फिरौन के कटोरे में
निचोड़ा, और कटोरे को फिरौन के हाथ
में दिया। १२ यूसुफ ने उस से कहा,
इसका फल यह है, कि तीन डालियों
का अर्थ तीन दिन है १३ सो अब से तीन
दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर ऊंचा
करेगा,† और फिर से तेरे पद पर तुझे
नियुक्त करेगा, और तू पहले की नाईं फिरौन
का पिलानेहारा होकर उसका कटोरा
उसके हाथ में फिर दिया करेगा। १४ सो
जब तेरा भला हो जाए तब मुझे स्मरण

* मूल में—अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार।

† मूल में—तेरा सिर उठाएगा।

करना, और मुझ पर कृपा करके, फिरौन
से मेरी चर्चा चलाना, और इस घर से
मुझे छुडवा देना। १५ क्योकि सचमुच
इब्रानियो के देश से मुझे चुरा कर ले आए
है, और यहा भी मै ने कोई ऐसा काम
नही किया, जिसके कारण मै इस कारागार
मे डाला जाऊ। १६ यह देखकर, कि उसके
स्वप्न का फल अच्छा निकला, पकानेहारो
के प्रधान ने यूसुफ से कहा, मै ने भी स्वप्न
देखा है, वह यह है मै ने देखा, कि मेरे
सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरिया है
१७ और ऊपर की टोकरी मे फिरौन के
लिये सब प्रकार की पकी पकाई वस्तुए है,
और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी मे से
उन वस्तुओ को खा रहे है। १८ यूसुफ ने
कहा, इसका फल यह है, कि तीन टोकरियो
का अर्थ तीन दिन है। १९ सो अब से तीन
दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाकर *
तुझे एक वृक्ष पर टगवा देगा, और पक्षी तेरे
मास को नोच नोच कर खाएगे। २० और
तीसरे दिन फिरौन का जन्मदिन था, उस ने
अपने सब कर्मचारियो की जेवनार की,
और उन मे से पिलानेहारो के प्रधान, और
पकानेहारो के प्रधान दोनो को बन्दीगृह से
निकलवाया †। २१ और पिलानेहारो के
प्रधान को तो पिलानेहारे के पद पर फिर से
नियुक्त किया, और वह फिरौन के हाथ मे
कटोरा देने लगा। २२ पर पकानेहारो के
प्रधान को उस ने टगवा दिया, जैसा कि
यूसुफ ने उनके स्वप्नो का फल उन से
कहा था। २३ फिर भी पिलानेहारो के
प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रखा, परन्तु
उसे भूल गया॥

* मूल में—तेरा सिर तुझ पर से उठाके।
† मूल में—दोनों के सिर उठाये।

४१ पूरे दो बरस के बीतने पर
फिरौन ने यह स्वप्न देखा, कि वह
नील नदी * के किनारे पर खडा है।
२ और उस नदी मे से सात सुन्दर और
मोटी मोटी गाये निकलकर कछार की घास
चरने लगी। ३ और, क्या देखा, कि उनके
पीछे और सात गाये, जो कुरूप और दुर्बल है,
नदी से निकली, और दूसरी गायो के निकट
नदी के तट पर जा खडी हुई। ४ तब ये
कुरूप और दुर्बल गाये उन सात सुन्दर
और मोटी मोटी गायो को खा गई। तब
फिरौन जाग उठा। ५ और वह फिर सो
गया और दूसरा स्वप्न देखा, कि एक डठी
मे से सात मोटी और अच्छी अच्छी बाले
निकली। ६ और, क्या देखा, कि उनके
पीछे सात बाले पतली और पुरवाई से
मुरझाई हुई निकली। ७ और इन पतली
बालो ने उन सातो मोटी और अन्न से भरी
हुई बालो को निगल लिया। तब फिरौन
जागा, और उसे मालूम हुआ कि यह स्वप्न
ही था। ८ भोर को फिरौन का मन
व्याकुल हुआ, और उस ने मिस्र के सब
ज्योतिषियो, और पण्डितो को बुलवा
भेजा, और उनको अपने स्वप्न बताए,
पर उन मे से कोई भी उनका फल फिरौन
से न कह सका। ९ तब पिलानेहारो का
प्रधान फिरौन से बोल उठा, कि मेरे अपराध
आज मुझे स्मरण आए १० जब फिरौन
अपने दासो से क्रोधित हुआ था, और मुझे
और पकानेहारो के प्रधान को कैद कराके
जल्लादो के प्रधान के घर के बन्दीगृह मे डाल
दिया था, ११ तब हम दोनो ने, एक ही
रात मे, अपने अपने होनहार के अनुसार,†

* मूल में—योर।
† मूल में—अपने अपने स्वप्न के फल कहने के अनुसार।

स्वप्न देखा, १२ और वहा हमारे साथ
एक इब्री जवान था, जो जल्लादो के
प्रधान का दास था, सो हम ने उसको
बताया, और उस ने हमारे स्वप्नो का
फल हम से कहा, हम में से एक एक
के स्वप्न का फल उस ने बता दिया।
१३ और जैसा जैसा फल उस ने हम
से कहा था, वैसा ही हुआ भी, अर्थात्
मुझ को तो मेरा पद फिर मिला, पर
वह फासी पर लटकाया गया। १४ तब
फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा। और
वह झटपट बन्दीगृह मे बाहर निकाला गया,
और बाल बनवाकर, और वस्त्र बदलकर
फिरौन के साम्हने आया। १५ फिरौन ने
यूसुफ से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और
उसके फल का बतानेवाला कोई भी नही,
और मैं ने तेरे विषय में सुना है, कि तू
स्वप्न सुनते ही उसका फल बता सकता है।
१६ यूसुफ ने फिरौन से कहा, मैं तो कुछ
नही जानता* परमेश्वर ही फिरौन के
लिये शुभ वचन देगा। १७ फिर फिरौन
यूसुफ से कहने लगा, मैं ने अपने स्वप्न में
देखा, कि मैं नील नदी के किनारे पर खडा
हू। १८ फिर, क्या देखा, कि नदी मे से
सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें
निकलकर कछार की घास चरने लगी।
१९ फिर, क्या देखा, कि उनके पीछे सात
और गायें निकली, जो दुबली, और बहुत
कुरूप, और दुर्बल हैं, मैं ने तो सारे मिस्र
देश में ऐसी कुडौल गाये कभी नही देखी।
२० और इन दुर्बल और कुडौल गायो ने
उन पहली सातो मोटी मोटी गायो को खा
लिया। २१ और जब वे उनको खा गई
तब यह मालूम नही होता था कि वे उनको
खा गई है, क्योकि वे पहिले की नाई जैसी
की तैसी कुडौल रही। तब मैं जाग उठा।
२२ फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा, कि एक
ही डंठी म सात अच्छी अच्छी और अन्न से
भरी हुई बालें निकली। २३ फिर, क्या
देखता हू, कि उनके पीछे और सात बालें
छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से
मुरझाई हुई निकली। २४ और इन पतली
बालो ने उन सात अच्छी अच्छी बालो को
निगल लिया। इसे मैं ने ज्योतिषियो को
बताया, पर इस का समझानेहारा कोई नही
मिला। २५ तब यूसुफ ने फिरौन से कहा,
फिरौन का स्वप्न एक ही है, परमेश्वर जो
काम किया चाहता है, उसको उस ने फिरौन
को जताया है। २६ वे सात अच्छी अच्छी
गायें सात वर्ष हैं, और वे सात अच्छी
अच्छी बालें भी सात वर्ष है, स्वप्न एक ही
है। २७ फिर उनके पीछे जो दुर्बल और
कुडौल गायें निकली, और जो सात छूछी
और पुरवाई से मुरझाई हुई बाले निकली,
वे अकाल के सात वर्ष होगे। २८ यह वही
बात है, जो मैं फिरौन से कह चुका हू, कि
परमेश्वर जो काम किया चाहता है, उसे
उस ने फिरौन को दिखाया है। २९ सुन,
सारे मिस्र देश मे सात वर्ष तो बहुतायत की
उपज के होगे। ३० उनके पश्चात् सात
वर्ष अकाल के आयेंगे, और सारे मिस्र देश
मे लोग इस सारी उपज को भूल जायेंगे,
और अकाल से देश का नाश होगा।
३१ और सुकाल (बहुतायत की उपज)
देश में फिर स्मरण न रहेगा क्योकि अकाल
अत्यन्त भयकर होगा। ३२ और फिरौन
ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है इसका
भेद यही है, कि यह बात परमेश्वर की ओर
से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे
शीघ्र ही पूरा करेगा। ३३ इसलिये अब

* मूल में—मेरे बिना।

फिरौन किसी समझदार और बुद्धिमान्
पुरुष को ढूढ करके उसे मिस्र देश पर प्रधान
मंत्री ठहराए। ३४ फिरौन यह करे, कि
देश पर अधिकारियो को नियुक्त करे, और
जब तक सुकाल के सात वर्ष रहे तब तक
वह मिस्र देश की उपज का पचमाश लिया
करे। ३५ और वे इन अच्छे वर्षो मे सब
प्रकार की भोजनवस्तु इकट्ठा करे, और
नगर नगर मे भण्डार घर भोजन के लिये
फिरौन के वश मे करके उसकी रक्षा करे।
३६ और वह भोजनवस्तु अकाल के उन
सात वर्षो के लिये, जो मिस्र देश मे आएगे,
देश के भोजन के निमित्त रखी रहे, जिस से
देश उस अकाल से सत्यानाश न हो जाए।
३७ यह बात फिरौन और उसके सारे कर्म-
चारियो को अच्छी लगी। ३८ सो फिरौन
ने अपने कर्मचारियो से कहा, कि क्या हम को
ऐसा पुरुष जैसा यह है, जिस मे परमेश्वर का
आत्मा रहता है, मिल सकता है? ३९ फिर
फिरौन ने यूसुफ से कहा, परमेश्वर ने जो
तुझे इतना ज्ञान दिया है, कि तेरे तुल्य कोई
समझदार और बुद्धिमान् नही, ४० इस
कारण तू मेरे घर का अधिकारी होगा, और
तेरी आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा
चलेगी, केवल राजगद्दी के विषय मे तुझ से
बडा ठहरूगा। ४१ फिर फिरौन ने यूसुफ
से कहा, सुन, मै तुझ को मिस्र के सारे देश
के ऊपर अधिकारी ठहरा देता हू। ४२ तब
फिरौन ने अपने हाथ से अगूठी निकालके
यूसुफ के हाथ मे पहिना दी, और उसको
बढिया मलमल के वस्त्र पहिनवा दिए, और
उसके गले में सोने की जजीर डाल दी,
४३ और उसको अपने दूसरे रथ पर
चढ़वाया, और लोग उसके आगे आगे यह
प्रचार करते चले, कि घुटने टेककर
दण्डवत् करो* और उस ने उसको मिस्र
के सारे देश के ऊपर प्रधान मंत्री ठहराया।
४४ फिर फिरौन ने यूसुफ से कहा, फिरौन
तो मै हू, और सारे मिस्र देश मे कोई भी
तेरी आज्ञा के बिना हाथ पाव न हिलाएगा।
४५ और फिरौन ने यूसुफ का नाम सापनत्-
पानेह† रखा। और ओन नगर के याजक
पोतीपेरा की बेटी आसनत से उसका ब्याह
करा दिया। और यूसुफ मिस्र के सारे देश मे
दौरा करने लगा। ४६ जब यूसुफ मिस्र के
राजा फिरौन के सम्मुख खडा हुआ, तब वह
तीस वर्ष का था। सो वह फिरौन के
सम्मुख से निकलकर मिस्र के सारे देश
मे दौरा करने लगा। ४७ सुकाल के सातो
वर्षो मे भूमि बहुतायत से अन्न‡ उपजाती
रही। ४८ और यूसुफ उन सातो वर्षों मे
सब प्रकार की भोजनवस्तुए, जो मिस्र देश मे
होती थी, जमा करके नगरो मे रखता गया,
और हर एक नगर के चारो ओर के खेतो
की भोजनवस्तुओ को वह उसी नगर मे
इकट्ठा करता गया। ४९ सो यूसुफ ने अन्न
को समुद्र की बालू के समान अत्यन्त
बहुतायत से राशि राशि करके रखा, यहा
तक कि उस ने उनका गिनना छोड दिया;
क्योकि वे असख्य हो गईं। ५० अकाल के
प्रथम वर्ष के आने से पहिले यूसुफ के दो
पुत्र, ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी
आसनत से जन्मे। ५१ और यूसुफ ने अपने
जेठे का नाम यह कहके मनश्शे§ रखा, कि
परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और
मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।

* मूल मे—अब्रेक। इस मिस्री शब्द का अर्थ निश्चित नहीं।
† इस मिस्री शब्द के अर्थ में सन्देह है।
‡ मूल में—मुट्ठी भर भरके।
§ अर्थात् बिसरवानेहारा।

५२ और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर
एप्रैम * रखा, कि मुझे दुःख भोगने के देश
में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है।
५३ और मिस्र देश के सुकाल के वे सात वर्ष
समाप्त हो गए। ५४ और यूसुफ के कहने
के अनुसार सात वर्षों के लिये अकाल
आरम्भ हो गया। और सब देशों में अकाल
पड़ने लगा, परन्तु सारे मिस्र देश में अन्न
था। ५५ जब मिस्र का सारा देश भूखों
मरने लगा, तब प्रजा फिरौन से चिल्ला
चिल्लाकर रोटी मांगने लगी और वह
सब मिस्रियों से कहा करता था, यूसुफ के
पास जाओ और जो कुछ वह तुम से कहे,
वही करो। ५६ सो जब अकाल सारी
पृथ्वी पर फैल गया, और मिस्र देश में काल
का भयंकर रूप हो गया, तब यूसुफ सब
भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ
अन्न बेचने लगा। ५७ सो सारी पृथ्वी के
लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिये यूसुफ
के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर
भयंकर अकाल था॥

(यूसुफ के भाइयों के उस से मिलने का वर्णन)

४२ जब याकूब ने सुना कि मिस्र में
अन्न है, तब उस ने अपने पुत्रों से
कहा, तुम एक दूसरे का मुंह क्यों देख रहे
हो। २ फिर उस ने कहा, मैं ने सुना है कि
मिस्र में अन्न है, इसलिये तुम लोग वहां
जाकर हमारे लिये अन्न मोल ले आओ,
जिस से हम न मरें, वरन जीवित रहें।
३ सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने के
लिये मिस्र को गए। ४ पर यूसुफ के भाई
बिन्यामीन को याकूब ने यह सोचकर भाइयों
के साथ न भेजा, कि कहीं ऐसा न हो कि

* अर्थात् अत्यन्त उपजाऊ।

उस पर कोई विपत्ति आ पड़े। ५ सो जो
लोग अन्न मोल लेने आए उनके साथ
इस्राएल के पुत्र भी आए, क्योंकि कनान देश
में भी भारी अकाल था। ६ यूसुफ तो
मिस्र देश का अधिकारी था, और उस देश के
सब लोगों के हाथ वही अन्न बेचता था,
इसलिये जब यूसुफ के भाई आए तब भूमि
पर मुंह के बल गिरके उसको दण्डवत्
किया। ७ उनको देखकर यूसुफ ने
पहिचान तो लिया, परन्तु उनके साम्हने
भोला बनके कठोरता के साथ उन से पूछा,
तुम कहां से आते हो? उन्हों ने कहा, हम तो
कनान देश से अन्न मोल लेने के लिये आए
हैं। ८ यूसुफ ने तो अपने भाइयों को
पहिचान लिया, परन्तु उन्हों ने उसको न
पहिचाना। ९ तब यूसुफ अपने उन स्वप्नों
को स्मरण करके जो उस ने उनके विषय में
देखे थे, उन से कहने लगा, तुम भेदिए हो,
इस देश की दुर्दशा * को देखने के लिये आए
हो। १० उन्हों ने उस से कहा, नहीं,
नहीं, हे प्रभु, तेरे दास भोजनवस्तु मोल
लेने के लिये आए हैं। ११ हम सब एक ही
पिता के पुत्र हैं, हम सीधे मनुष्य हैं, तेरे दास
भेदिए नहीं। १२ उस ने उन से कहा, नहीं
नहीं, तुम इस देश की दुर्दशा देखने ही को
आए हो। १३ उन्हों ने कहा, हम तेरे दास
बारह भाई हैं, और कनान देशवासी एक ही
पुरुष के पुत्र हैं, और छोटा इस समय हमारे
पिता के पास है, और एक जाता रहा।
१४ तब यूसुफ ने उन से कहा, मैं ने तो
तुम से कह दिया, कि तुम भेदिए हो,
१५ सो इसी रीति से तुम परखे जाओगे,
फिरौन के जीवन की शपथ, जब तक तुम्हारा
छोटा भाई यहां न आए तब तक तुम यहां से

* मूल में—नंगेपन।

न निकलने पाओगे। १६ सो अपने मे से
एक को भेज दो, कि वह तुम्हारे भाई को ले
आए, और तुम लोग बन्धुआई मे रहोगे,
इस प्रकार तुम्हारी वाते परखी जाएगी, कि
तुम मे सच्चाई है कि नही। यदि सच्चे न
ठहरे तव तो फिरौन के जीवन की शपथ
तुम निश्चय ही भेदिए समझे जाओगे।
१७ तव उस ने उनको तीन दिन तक बन्दी-
गृह मे रखा। १८ तीसरे दिन यूसुफ ने
उन से कहा, एक काम करो तव जीवित
रहोगे, क्योकि मै परमेश्वर का भय मानता
हू, १९ यदि तुम सीधे मनुष्य हो, तो तुम
सब भाइयो मे से एक जन इस बन्दीगृह मे
बन्धुआ रहे, और तुम अपने घरवालो की
भूख बुझाने के लिये अन्न ले जाओ।
२० और अपने छोटे भाई को मेरे पास ले
आओ, इस प्रकार तुम्हारी वाते सच्ची
ठहरेगी, और तुम मार डाले न जाओगे।
तव उन्हो ने वैसा ही किया। २१ उन्हो ने
आपस मे कहा, नि सन्देह हम अपने भाई के
विषय मे दोषी है, क्योकि जव उस ने हम से
गिडगिडाके विनती की, तौभी हम ने यह
देखकर, कि उसका जीवन कैसे सकट मे पडा
है, उसकी न सुनी, इसी कारण हम भी अव
इस सकट मे पड़े है। २२ रूबेन ने उन से
कहा, क्या मै ने तुम से न कहा था, कि
लडके के अपराधी मत बनो? परन्तु तुम ने
न सुना देखो, अव उसके लोहू का पलटा
दिया जाता है। २३ यूसुफ की और उनकी
वातचीत जो एक दुभाषिया के द्वारा होती
थी, इस मे उनको मालूम न हुआ कि वह
उनकी वोली समझता है। २४ तव वह
उनके पास से हटकर रोने लगा, फिर उनके
पास लौटकर और उन से वातचीत करके
उन मे से शिमोन को छाट निकाला और
उसके साम्हने बन्धुआ रखा। २५ तव
यूसुफ ने आज्ञा दी, कि उनके बोरे अन्न से
भरो और एक एक जन के वोरे मे उसके
रुपये को भी रख दो, फिर उनको मार्ग
के लिये सीधा दो सो उनके साथ ऐसा ही
किया गया। २६ तव वे अपना अन्न अपने
गदहो पर लादकर वहा से चल दिए।
२७ सराय मे जव एक ने अपने गदहे को
चारा देने के लिये अपना बोरा खोला, तव
उसका रुपया बोरे के मोहडे पर रखा हुआ
दिखलाई पडा। २८ तव उस ने अपने
भाइयो से कहा, मेरा रुपया तो फेर दिया
गया है, देखो, वह मेरे बोरे मे है, तव उनके
जी मे जी न रहा, और वे एक दूसरे की
ओर भय से ताकने लगे, और वोले, परमेश्वर
ने यह हम से क्या किया है? २९ और वे
कनान देश मे अपने पिता याकूब के पास
आए, और अपना सारा वृत्तान्त उस से इस
प्रकार वर्णन किया ३० कि जो पुरुष उस
देश का स्वामी है, उस ने हम से कठोरता
के साथ वाते की, और हम को देश के भेदिए
कहा। ३१ तव हम ने उस से कहा, हम
सीधे लोग है, भेदिए नही। ३२ हम वारह
भाई एक ही पिता के* पुत्र है, एक तो
जाता रहा, परन्तु छोटा इस समय कनान
देश मे हमारे पिता के पास है। ३३ तव
उस पुरुष ने, जो उस देश का स्वामी है, हम से
कहा, इस से मालूम हो जाएगा कि तुम सीधे
मनुष्य हो, तुम अपने मे से एक को मेरे
पास छोडके अपने घरवालो की भूख बुझाने
के लिये कुछ ले जाओ। ३४ और अपने
छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। तव मुझे
विश्वास हो जाएगा कि तुम भेदिए नही,
सीधे लोग हो। फिर मै तुम्हारे भाई को
तुम्हें सौप दूगा, और तुम इस देश मे लेन

* मूल में—अपने पिता के।

देन कर सकोगे। ३५ यह कहकर वे अपने
अपने बोरे से अन्न निकालने लगे, तब, क्या
देखा, कि एक एक जन के रुपये की थैली
उसी के बोरे में रखी है: तब रुपये की
थैलियों को देखकर वे और उनका पिता
बहुत डर गए। ३६ तब उनके पिता
याकूब ने उन से कहा, मुझ को तुम ने
निर्वंश कर दिया, देखो, यूसुफ नहीं रहा,
और शिमोन भी नहीं आया, और अब तुम
बिन्यामीन को भी ले जाना चाहते हो: ये
सब विपत्तियां मेरे ऊपर आ पड़ी हैं।
३७ रूबेन ने अपने पिता से कहा, यदि मैं
उसको तेरे पास न लाऊं, तो मेरे दोनों
पुत्रों को मार डालना, तू उसको मेरे हाथ में
सौंप दे, मैं उसे तेरे पास फिर पहुंचा दूंगा।
३८ उस ने कहा, मेरा पुत्र तुम्हारे संग न
जाएगा, क्योंकि उसका भाई मर गया है,
और वह अब अकेला रह गया: इसलिये
जिस मार्ग से तुम जाओगे, उस में यदि उस
पर कोई विपत्ति आ पड़े, तब तो तुम्हारे
कारण मैं इस बुढ़ापे की अवस्था में शोक के
साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा * ॥

४३ और अकाल देश में और भी
भयंकर होता गया। २ जब वह
अन्न जो वे मिस्र से ले आए थे समाप्त हो
गया तब उनके पिता ने उन से कहा, फिर
जाकर हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल
ले आओ। ३ तब यहूदा ने उस से कहा, उस
पुरुष ने हम को चितावनी देकर कहा, कि
यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आए,
तो तुम मेरे सम्मुख न आने पाओगे।
४ इसलिये यदि तू हमारे भाई को हमारे
संग भेजे, तब तो हम जाकर तेरे लिये
भोजनवस्तु मोल ले आएंगे, ५ परन्तु यदि
तू उसको न भेजे, तो हम न जाएंगे: क्योंकि
उस पुरुष ने हम से कहा, कि यदि तुम्हारा
भाई तुम्हारे संग न हो, तो तुम मेरे सम्मुख न
आने पाओगे। ६ तब इस्राएल ने कहा,
तुम ने उस पुरुष को यह बताकर, कि हमारा
एक और भाई है, क्यों मुझ से बुरा बर्ताव
किया? ७ उन्हों ने कहा, जब उस पुरुष ने
हमारी और हमारे कुटुम्बियों की दशा को
इस रीति पूछा, कि क्या तुम्हारा पिता अब
तक जीवित है? क्या तुम्हारे कोई और भाई
भी है? तब हम ने इन प्रश्नों के अनुसार
उस से वर्णन किया, फिर हम क्या जानते
थे कि वह कहेगा, कि अपने भाई को यहां ले
आओ। ८ फिर यहूदा ने अपने पिता इस्रा-
एल से कहा, उस लड़के को मेरे संग भेज
दे, कि हम चले जाएं, इस से हम, और तू,
और हमारे बालबच्चे मरने न पाएंगे, वरन
जीवित रहेंगे। ९ मैं उसका जामिन होता
हूं, मेरे ही हाथ से तू उसको फेर लेना: यदि
मैं उसको तेरे पास पहुंचाकर साम्हने न
खड़ा कर दूं, तब तो मैं सदा के लिये तेरा
अपराधी ठहरूंगा। १० यदि हम लोग
विलम्ब न करते, तो अब तक दूसरी बार
लौट आते। ११ तब उनके पिता इस्राएल
ने उन से कहा, यदि सचमुच ऐसी ही बात
है, तो यह करो, इस देश की उत्तम उत्तम
वस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस
पुरुष के लिये भेंट ले जाओ: जैसे थोड़ा सा
बलसान, और थोड़ा सा मधु, और
कुछ सुगन्ध द्रव्य, और गन्धरस, पिस्ते,
और बादाम। १२ फिर अपने अपने साथ
दूना रुपया ले जाओ, और जो रुपया
तुम्हारे बोरों के मुंह पर रखकर फेर दिया
गया था, उसको भी लेते जाओ, कदाचित्
यह भूल से हुआ हो। १३ और अपने भाई

* मूल में—तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक
में शोक के साथ उतारोगे।

को भी सग लेकर उस पुरुष के पास फिर
जाओ, १४ और सर्वशक्तिमान् ईश्वर उस
पुरुष को तुम पर दयालु करेगा, जिस से कि
वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन
को भी आने दे और यदि मै निर्वश हुआ
तो होने दो।
१५ तब उन मनुष्यो ने वह भेट, और
दूना रुपया, और बिन्यामीन को भी सग
लिया, और चल दिए और मिस्र मे पहुचकर
यूसुफ के साम्हने खडे हुए। १६ उनके
साथ बिन्यामीन को देखकर यूसुफ ने अपने
घर के अधिकारी से कहा, उन मनुष्यो को
घर मे पहुचा दो, और पशु मारके भोजन
तैयार करो, क्योकि वे लोग दोपहर को मेरे
सग भोजन करेगे। १७ तब वह अधिकारी
पुरुष यूसुफ के कहने के अनुसार उन पुरुषो
को यूसुफ के घर मे ले गया। १८ जब वे
यूसुफ के घर को पहुचाए गए तब वे आपस मे
डरकर कहने लगे, कि जो रुपया पहिली बार
हमारे बोरो मे फेर दिया गया था, उसी के
कारण हम भीतर पहुचाए गए है, जिस से
कि वह पुरुष हम पर टूट पडे, और हमे बश मे
करके अपने दास बनाए, और हमारे गदहो
को भी छीन ले। १९ तब वे यूसुफ के
घर के अधिकारी के निकट जाकर घर के
द्वार पर इस प्रकार कहने लगे, २० कि
हे हमारे प्रभु, जब हम पहिली बार अन्न
मोल लेने को आए थे, २१ तब हम ने
सराय मे पहुचकर अपने बोरो को खोला, तो
क्या देखा, कि एक एक जन का पूरा पूरा
रुपया उसके बोरे के मुह पर रखा है, इसलिये
हम उसको अपने साथ फिर लेते आए है।
२२ और दूसरा रुपया भी भोजनवस्तु मोल
लेने के लिये लाए है, हम नही जानते कि
हमारा रुपया हमारे बोरो मे किस ने रख
दिया था। २३ उस ने कहा, तुम्हारा
कुशल हो, मत डरो तुम्हारा परमेश्वर, जो
तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है, उसी ने
तुम को तुम्हारे बोरो मे धन दिया होगा,
तुम्हारा रुपया तो मुझ को मिल गया था
फिर उस ने शिमोन को निकालकर उनके
सग कर दिया। २४ तब उस जन ने उन
मनुष्यो को यूसुफ के घर मे ले जाकर जल
दिया, तब उन्हो ने अपने पावो को धोया;
फिर उस ने उनके गदहो के लिये चारा
दिया। २५ तब यह सुनकर, कि आज हम
को यही भोजन करना होगा, उन्हो ने यूसुफ
के आने के समय तक, अर्थात् दोपहर तक,
उस भेट को इकट्ठा कर रखा। २६ जब
यूसुफ घर आया तब वे उस भेट को, जो
उनके हाथ मे थी, उसके सम्मुख घर मे ले
गए, और भूमि पर गिरकर उसको दण्डवत्
किया। २७ उस ने उनका कुशल पूछा,
और कहा, क्या तुम्हारा वह बूढा पिता,
जिसकी तुम ने चर्चा की थी, कुशल से है?
क्या वह अब तक जीवित है? २८ उन्हो ने
कहा, हा, तेरा दास हमारा पिता कुशल से है
और अब तक जीवित है, तब उन्हो ने सिर
झुकाकर फिर दण्डवत् किया। २९ तब
उस ने आखे उठाकर और अपने सगे भाई
बिन्यामीन को देखकर पूछा, क्या तुम्हारा
वह छोटा भाई, जिसकी चर्चा तुम ने मुझ से
की थी, यही है? फिर उस ने कहा, हे मेरे
पुत्र, परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह करे।
३० तब अपने भाई के स्नेह से मन भर
आने के कारण और यह सोचकर, कि मै
कहा जाकर रोऊ, यूसुफ फुर्ती से अपनी
कोठरी मे गया, और वहा रो पडा।
३१ फिर अपना मुह धोकर निकल आया,
और अपने को शातकर कहा, भोजन
परोसो। ३२ तब उन्हो ने उसके लिये तो
अलग, और भाइयो के लिये भी अलग, और

जो मिस्री उसके सग खाते थे, उनके लिये
भी अलग, भोजन परोसा, इसलिये कि मिस्री
इब्रियो के साथ भोजन नही कर सकते, वरन
मिस्री ऐसा करना घृणा समझते थे।
३३ सो यूसुफ के भाई उसके साम्हने, वडे
वडे पहिले, और छोटे छोटे पीछे, अपनी अपनी
अवस्था के अनुसार, क्रम से बैठाए गए यह
देख वे विस्मित होकर एक दूसरे की ओर
देखने लगे। ३४ तब यूसुफ अपने साम्हने
से भोजन-वस्तुए उठा उठाके उनके पास
भेजने लगा, और बिन्यामीन को अपने
भाइयो से पचगुणी अधिक भोजनवस्तु
मिली। और उन्हो ने उसके सग मनमाना
खाया पिया॥

४४ तब उस ने अपने घर के
अधिकारी को आज्ञा दी, कि इन
मनुष्यो के बोरो मे जितनी भोजनवस्तु समा
सके उतनी भर दे, और एक एक जन के
रुपये को उसके बोरे के मुह पर रख दे।
२ और मेरा चादी का कटोरा छोटे के बोरे
के मुह पर उसके अन्न के रुपये के साथ रख
दे। यूसुफ की इस आज्ञा के अनुसार उस ने
किया। ३ बिहान को भोर होते ही वे
मनुष्य अपने गदहो समेत विदा किए गए।
४ वे नगर से निकले ही थे, और दूर न
जाने पाए थे, कि यूसुफ ने अपने घर के
अधिकारी से कहा, उन मनुष्यो का पीछा
कर, और उनको पाकर उन से कह, कि
तुम ने भलाई की सन्ती बुराई क्यो की है?
५ क्या यह वह वस्तु नही जिस मे मेरा
स्वामी पीता है, और जिस से वह शकुन भी
विचारा करता है? तुम ने यह जो किया है
सो बुरा किया। ६ तब उस ने उन्हें जा
लिया, और ऐसी ही बाते उन से कही।
७ उन्हो ने उस से कहा, हे हमारे प्रभु,
तू ऐसी बाते क्यो कहता है? ऐसा काम
करना तेरे दासो से दूर रहे। ८ देख,
जो रुपया हमारे बोरो के मुह पर निकला
था, जब हम ने उसको कनान देश से ले
आकर तुझे फेर दिया, तब, भला, तेरे स्वामी
के घर मे से हम कोई चादी वा सोने की
वस्तु क्योकर चुरा सकते है? ९ तेरे दासो
मे से जिस किसी के पास वह निकले, वह
मार डाला जाए, और हम भी अपने उस
प्रभु के दास हो जाए। १० उस ने कहा,
तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह
निकले सो मेरा दास होगा, और तुम लोग
निरपराध ठहरोगे। ११ इस पर वे फुर्ती
मे अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर
रखकर उन्हे खोलने लगे। १२ तब वह
ढूढने लगा, और बडे के बोरे से लेकर छोटे
के बोरे तक खोज की और कटोरा बिन्यामीन
के बोरे मे मिला। १३ तब उन्हो ने अपने
अपने वस्त्र फाडे, और अपना अपना गदहा
लादकर नगर को लौट गए। १४ जब
यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर पर
पहुचे, और यूसुफ वही था, तब वे उसके
साम्हने भूमि पर गिरे। १५ यूसुफ ने उन
से कहा, तुम लोगो ने यह कैसा काम किया
है? क्या तुम न जानते थे, कि मुझ सा
मनुष्य शकुन विचार सकता है? १६ यहूदा
ने कहा, हम लोग अपने प्रभु से क्या कहे?
हम क्या कहकर अपने को निर्दोषी ठहराए?
परमेश्वर ने तेरे दासो के अधर्म को पकड
लिया है हम, और जिसके पास कटोरा
निकला वह भी, हम सब के सब अपने प्रभु
के दास ही है। १७ उस ने कहा, ऐसा
करना मुझ से दूर रहे जिस जन के पास
कटोरा निकला है, वही मेरा दास होगा,
और तुम लोग अपने पिता के पास कुशल
क्षेम से चले जाओ॥

१८ तब यहूदा उसके पास जाकर कहने
लगा, हे मेरे प्रभु, तेरे दास को अपने प्रभु
से एक बात कहने की आज्ञा हो, और तेरा
कोप तेरे दास पर न भडके, तू तो फिरौन
के तुल्य है। १९ मेरे प्रभु ने अपने दासो से
पूछा था, कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई है ?
२० और हम ने अपने प्रभु से कहा, हा,
हमारा बूढा पिता तो है, और उसके बुढापे
का एक छोटा सा बालक भी है, परन्तु
उसका भाई मर गया है, इसलिये वह अब
अपनी माता का अकेला ही रह गया है,
और उसका पिता उस से स्नेह रखता है।
२१ तब तू ने अपने दासो से कहा था, कि
उसको मेरे पास ले आओ, जिस से मै
उसको देखू। २२ तब हम ने अपने प्रभु से
कहा था, कि वह लडका अपने पिता को नही
छोड सकता, नही तो उसका पिता मर
जाएगा। २३ और तू ने अपने दासो से
कहा, यदि तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे सग न
आए, तो तुम मेरे सम्मुख फिर न आने
पाओगे। २४ सो जब हम अपने पिता तेरे
दास के पास गए, तब हम ने उस से अपने
प्रभु की बाते कही। २५ तब हमारे पिता
ने कहा, फिर जाकर हमारे लिये थोडी सी
भोजनवस्तु मोल ले आओ। २६ हम ने
कहा, हम नही जा सकते, हा, यदि हमारा
छोटा भाई हमारे सग रहे, तब हम जाएगे
क्योकि यदि हमारा छोटा भाई हमारे सग
न रहे, तो हम उस पुरुष के सम्मुख न जाने
पाएगे। २७ तब तेरे दास मेरे पिता ने हम
से कहा, तुम तो जानते हो कि मेरी स्त्री से
दो पुत्र उत्पन्न हुए। २८ और उन मे से
एक तो मुझे छोड ही गया, और मै ने निश्चय
कर लिया, कि वह फाड डाला गया होगा;
और तब से मै उसका मुह न देख पाया।
२९ सो यदि तुम उसको भी मेरी आख की
आड मे ले जाओ, और कोई विपत्ति इस पर
पडे, तो तुम्हारे कारण मै इस पक्के बाल की
अवस्था मे दु ख के साथ अधोलोक मे उतर
जाऊगा *। ३० सो जब मै अपने पिता
तेरे दास के पास पहुचू, और यह लडका सग
न रहे, तब, उसका प्राण जो इसी पर अटका
रहता है, ३१ इस कारण, यह देखके कि
लडका नही है, वह तुरन्त ही मर जाएगा।
तब तेरे दासो के कारण तेरा दास हमारा
पिता, जो पक्के बालो की अवस्था का है,
शोक के साथ अधोलोक मे उतर जाएगा †।
३२ फिर तेरा दास अपने पिता के यहा यह
कहके इस लडके का जामिन हुआ है, कि
यदि मै इसको तेरे पास न पहुचा दू, तब
तो मै सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूगा।
३३ सो अब तेरा दास इस लडके की सन्ती
अपने प्रभु का दास होकर रहने की आज्ञा
पाए, और यह लडका अपने भाइयो के सग
जाने दिया-जाए। ३४ क्योकि लडके के
बिना सग रहे मै क्योकर अपने पिता के पास
जा सकूगा, ऐसा न हो कि मेरे पिता पर
जो दु ख पडेगा वह मुझे देखना पडे॥

४५ तब यूसुफ उन सब के साम्हने,
जो उसके आस पास खडे थे, अपने
को और रोक न सका, और पुकार के कहा,
मेरे आस पास से सब लोगो को बाहर कर
दो। भाइयो के साम्हने अपने को प्रगट
करने के समय यूसुफ के सग और कोई न
रहा। २ तब वह चिल्ला चिल्लाकर रोने
लगा और मिस्रियो ने सुना, और फिरौन
के घर के लोगो को भी इसका समाचार

---

* मूल में—तुम मेरे पक्के बाल अधोलोक में दु ख के साथ उतारोगे।

† मूल में—तेरे दास हमारे पिता के पक्के बाल शोक के साथ अधोलोक में उतारेंगे।

मिला। ३ तब यूसुफ अपने भाइयों से
कहने लगा, मैं यूसुफ हू, क्या मेरा पिता अब
तक जीवित है? इसका उत्तर उसके भाई
न दे सके, क्योंकि वे उसके साम्हने घबरा
गए थे। ४ फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से
कहा, मेरे निकट आओ। यह सुनकर वे
निकट गए। फिर उस ने कहा, मैं तुम्हारा
भाई यूसुफ हू, जिसको तुम ने मिस्र आनेहारों
के हाथ बेच डाला था। ५ अब तुम लोग
मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहा
बेच डाला, इस से उदास मत हो, क्योंकि
परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के
लिये मुझे आगे से भेज दिया है। ६ क्योंकि
अब दो वर्ष से इस देश मे अकाल है, और अब
पाच वर्ष और ऐसे ही होंगे, कि उन मे न
तो हल चलेगा और न अन्न काटा जाएगा।
७ सो परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे
इसी लिये भेजा, कि तुम पृथ्वी पर जीवित
रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा
वंश बढ़े। ८ इस रीति अब मुझ को यहा
पर भेजनेवाले तुम नही, परमेश्वर ही ठहरा
और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा, और
उसके सारे घर का स्वामी, और सारे मिस्र
देश का प्रभु ठहरा दिया है। ९ सो शीघ्र
मेरे पिता के पास जाकर कहो, तेरा पुत्र
यूसुफ इस प्रकार कहता है, कि परमेश्वर ने
मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है,
इसलिये तू मेरे पास बिना विलम्ब किए
चला आ। १० और तेरा निवास गोशेन
देश मे होगा, और तू, बेटे, पोतो, भेड़-
बकरियो, गाय-बैलो, और अपने सब कुछ
समेत मेरे निकट रहेगा। ११ और अकाल
के जो पाच वर्ष और होंगे, उन में मै वही
तेरा पालन पोषण करूगा, ऐसा न हो कि
तू, और तेरा घराना, वरन जितने तेरे है, सो
भूखो मरें*। १२ और तुम अपनी आखो
से देखते हो, और मेरा भाई बिन्यामीन भी
अपनी आखो से देखता है, कि जो हम से
बातें कर रहा है सो यूसुफ है। १३ और
तुम मेरे सब विभव का, जो मिस्र मे है और
जो कुछ तुम ने देखा है, उस सब का मेरे
पिता से वर्णन करना, और तुरन्त मेरे पिता
को यहा ले आना। १४ और वह अपने
भाई बिन्यामीन के गले से लिपटकर रोया,
और बिन्यामीन भी उसके गले से लिपटकर
रोया। १५ तब वह अपने सब भाइयो
को चूमकर उन से मिलकर रोया और
इसके पश्चात् उसके भाई उस से बातें करने
लगे॥

१६ इस बात की चर्चा, कि यूसुफ के
भाई आए है, फिरौन के भवन तक पहुच गई,
और इस से फिरौन और उसके कर्मचारी
प्रसन्न हुए। १७ सो फिरौन ने यूसुफ से
कहा, अपने भाइयो से कह, कि एक काम
करो, अपने पशुओ को लादकर कनान देश में
चले जाओ। १८ और अपने पिता और
अपने अपने घर के लोगो को लेकर मेरे पास
आओ, और मिस्र देश मे जो कुछ अच्छे से
अच्छा है वह मै तुम्हे दूगा, और तुम्हे देश
के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे।
१९ और तुझे आज्ञा मिली है, तुम एक काम
करो, कि मिस्र देश से अपने बालबच्चो और
स्त्रियो के लिये गाडिया ले जाओ, और अपने
पिता को ले आओ। २० और अपनी
सामग्री का मोह न करना, क्योंकि सारे
मिस्र देश मे जो कुछ अच्छे से अच्छा है सो
तुम्हारा है। २१ और इस्राएल के पुत्रो ने
वैसा ही किया। और यूसुफ ने फिरौन की
मानके उन्हे गाडिया दी, और मार्ग के लिये

* मूल में—निर्धन हो जाए।

सीधा भी दिया। २२ उन मे से एक एक
जन को तो उस ने एक एक जोडा वस्त्र भी
दिया, और बिन्यामीन को तीन सौ रूपे के
टुकडे और पाच जोडे वस्त्र दिए। २३ और
अपने पिता के पास उस ने जो भेजा वह
यह है, अर्थात् मिस्र की अच्छी वस्तुओ से
लदे हुए दस गदहे, और अन्न और रोटी और
उसके पिता के मार्ग के लिये भोजनवस्तु से
लदी हुई दस गदहिया। २४ और उस ने
अपने भाइयो को विदा किया, और वे चल
दिए और उस ने उन से कहा, मार्ग मे कही
झगडा न करना। २५ मिस्र से चलकर वे
कनान देश मे अपने पिता याकूब के पास
पहुचे। २६ और उस से यह वर्णन किया,
कि यूसुफ अब तक जीवित है, और सारे
मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है। पर उस
ने उनकी प्रतीत न की, और वह अपने आपे
में न रहा। २७ तब उन्हो ने अपने पिता
याकूब से यूसुफ की सारी बाते, जो उस ने
उन से कही थी, कह दी, जब उस ने उन
गाडियो को देखा, जो यूसुफ ने उसके ले
आने के लिये भेजी थी, तब उसका चित्त
स्थिर हो गया। २८ और इस्राएल ने
कहा, बस, मेरा पुत्र यूसुफ अब तक जीवित
है मैं अपनी मृत्यु से पहिले जाकर उसको
देखूगा॥

(याकूब के सारे परिवार समेत मिस्र में बस जाने का वर्णन)

४६ तब इस्राएल अपना सब कुछ
लेकर कूच करके बेर्शेबा को गया,
और वहा अपने पिता इसहाक के परमेश्वर
को बलिदान चढाए। २ तब परमेश्वर ने
इस्राएल से रात को दर्शन मे कहा, हे याकूब,
हे याकूब। उस ने कहा, क्या आज्ञा*।
३ उस ने कहा, मैं ईश्वर तेरे पिता का परमे-
श्वर हू, तू मिस्र मे जाने से मत डर, क्योकि
मै तुझ से वहा एक बडी जाति बनाऊगा।
४ मै तेरे सग सग मिस्र को चलता हू, और
मै तुझे वहा से फिर निश्चय ले आऊगा. और
यूसुफ अपना हाथ तेरी आखो पर लगाएगा।
५ तब याकूब बेर्शेबा से चला और इस्राएल
के पुत्र अपने पिता याकूब, और अपने बाल-
बच्चो, और स्त्रियो को उन गाडियो पर, जो
फिरौन ने उनके ले आने को भेजी थी,
चढाकर चल पडे। ६ और वे अपनी भेड-
बकरी, गाय-बैल, और कनान देश मे अपने
इकट्ठा किए हुए सारे धन को लेकर मिस्र मे
आए। ७ और याकूब अपने बेटे-बेटियो,
पोते-पोतियो, निदान अपने वश भर को
अपने सग मिस्र मे ले आया॥

८ याकूब के साथ जो इस्राएली, अर्थात्
उसके बेटे, पोते, आदि मिस्र मे आए, उनके
नाम ये है याकूब का जेठा तो रूबेन था।
९ और रूबेन के पुत्र, हनोक, पल्लू, हेस्रोन
और कर्म्मी थे। १० और शिमोन के पुत्र,
यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर,
और एक कनानी स्त्री से जन्मा हुआ शाऊल
भी था। ११ और लेवी के पुत्र, गेर्शोन,
कहात, और मरारी थे। १२ और यहूदा
के एर, ओनान, शेला, पेरेस, और जेरह
नाम पुत्र हुए तो थे, पर एर और ओनान
कनान देश मे मर गए थे। और पेरेस के
पुत्र, हेस्रोन और हामूल थे। १३ और
इस्साकार के पुत्र, तोला, पुव्वा, योब, और
शिम्रोन थे। १४ और जबूलून के पुत्र,
सेरेद, एलोन, और यहलेल थे। १५ लिआ
के पुत्र, जो याकूब से पद्दनराम मे उत्पन्न हुए
थे, उनके बेटे पोते ये ही थे, और इन से
अधिक उस ने उसके साथ एक बेटी दीना को
भी जन्म दिया यहा तक तो याकूब के सब

* मूल में—मुझे देख।

वंशवाले * तैंतीस प्राणी हुए। १६ फिर
गाद के पुत्र, सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन,
एरी, अरोदी, और अरेली थे। १७ और
आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, और
बरीआ थे, और उनकी बहिन सेरह थी
और बरीआ के पुत्र, हेबेर और मल्कीएल
थे। १८ जिल्पा, जिसे लाबान ने अपनी
बेटी लिआ को दिया था, उसके बेटे पोते
आदि ये ही थे, सो उसके द्वारा याकूब के
सोलह प्राणी उत्पन्न हुए॥

१९ फिर याकूब की पत्नी राहेल के पुत्र
यूसुफ और बिन्यामीन थे। २० और मिस्र
देश में ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी
आसनत से यूसुफ के ये पुत्र उत्पन्न हुए,
अर्थात् मनश्शे और एप्रैम। २१ और
बिन्यामीन के पुत्र, बेला, बेकेर, अश्बेल,
गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पीम, हुप्पीम,
और आर्द थे। २२ राहेल के पुत्र जो
याकूब से उत्पन्न हुए उनके ये ही पुत्र थे,
उसके ये सब बेटे पोते चौदह प्राणी हुए।
२३ फिर दान का पुत्र हूशीम था।
२४ और नप्ताली के पुत्र, यहसेल, गूनी,
येसेर, और शिल्लेम थे। २५ बिल्हा, जिसे
लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया, उस-
के बेटे पोते ये ही हैं, उसके द्वारा याकूब के
वंश में सात प्राणी हुए। २६ याकूब के
निज वंश के जो प्राणी मिस्र में आए, वे
उसकी बहुओं को छोड सब मिलकर छिया-
सठ प्राणी हुए। २७ और यूसुफ के पुत्र,
जो मिस्र में उस से उत्पन्न हुए, वे दो प्राणी
थे इस प्रकार याकूब के घराने के जो प्राणी
मिस्र में आए सो सब मिलकर सत्तर हुए॥

२८ फिर उस ने यहूदा को अपने आगे
यूसुफ के पास भेज दिया, कि वह उसको
गोशेन का मार्ग दिखाए, और वे गोशेन
देश में आए। २९ तब यूसुफ अपना रथ
जुतवाकर अपने पिता इस्राएल से भेंट करने
के लिये गोशेन देश को गया, और उस से
भेंट करके उसके गले से लिपटा, और कुछ
देर तक उसके गले से लिपटा हुआ रोता
रहा। ३० तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा,
मैं अब मरने से भी प्रसन्न हू, क्योंकि तुझे
जीवित पाया और तेरा मुह देख लिया।
३१ तब यूसुफ ने अपने भाइयों से और
अपने पिता के घराने से कहा, मैं जाकर
फिरौन को यह कहकर समाचार दूंगा, कि
मेरे भाई और मेरे पिता के सारे घराने के
लोग, जो कनान देश में रहते थे, वे मेरे पास
आ गए हैं। ३२ और वे लोग चरवाहे हैं,
क्योंकि वे पशुओं को पालते आए हैं, इस-
लिये वे अपनी भेड-बकरी, गाय-बैल, और
जो कुछ उनका है, सब ले आए हैं। ३३ जब
फिरौन तुम को बुलाके पूछे, कि तुम्हारा
उद्यम क्या है? ३४ तब यह कहना, कि तेरे
दास लडकपन से लेकर आज तक पशुओं को
पालते आए हैं, वरन हमारे पुरखा भी ऐसा
ही करते थे। इस से तुम गोशेन देश में
रहने पाओगे, क्योंकि सब चरवाहों से
मिस्री लोग घृणा करते हैं॥

४७ तब यूसुफ ने फिरौन के पास
जाकर यह समाचार दिया, कि मेरा
पिता और मेरे भाई, और उनकी भेड-
बकरियां, गाय-बैल, और जो कुछ उनका है,
सब कनान देश से आ गया है, और अभी तो
वे गोशेन देश में हैं। २ फिर उस ने अपने
भाइयों में से पांच जन लेकर फिरौन के
साम्हने खडे कर दिए। ३ फिरौन ने उसके
भाइयों से पूछा, तुम्हारा उद्यम क्या है?
उन्हों ने फिरौन से कहा, तेरे दास चरवाहे

* मूल में—बेटे बेटियां।

है, और हमारे पुरखा भी ऐसे ही रहे।
४ फिर उन्हो ने फिरौन से कहा, हम इस
देश मे परदेशी की भाति रहने के लिये आए
है, क्योकि कनान देश मे भारी अकाल होने
के कारण तेरे दासो को भेड-बकरियो के
लिये चारा न रहा सो अपने दासो को
गोशेन देश मे रहने की आज्ञा दे। ५ तब
फिरौन ने यूसुफ से कहा, तेरा पिता और तेरे
भाई तेरे पास आ गए है, ६ और मिस्र
देश तेरे साम्हने पडा है, इस देश का जो सब
से अच्छा भाग हो, उस मे अपने पिता और
भाइयो को बसा दे, अर्थात् वे गोशेन ही देश
मे रहे और यदि तू जानता हो, कि उन मे
से परिश्रमी पुरुष है, तो उन्हे मेरे पशुओ के
अधिकारी ठहरा दे। ७ तब यूसुफ ने अपने
पिता याकूब को ले आकर फिरौन के सम्मुख
खडा किया और याकूब ने फिरौन को
आशीर्वाद दिया। ८ तब फिरौन ने याकूब
से पूछा, तेरी अवस्था कितने दिन की हुई
है? ९ याकूब ने फिरौन से कहा, मै तो
एक सौ तीस वर्ष परदेशी होकर अपना
जीवन बिता चुका हू, मेरे जीवन के दिन
थोडे और दु ख से भरे हुए भी थे, और मेरे
बापदादे परदेशी होकर जितने दिन तक
जीवित रहे उतने दिन का मै अभी नही
हुआ। १० और याकूब फिरौन को आशी-
र्वाद देकर उसके सम्मुख से चला गया।
११ तब यूसुफ ने अपने पिता और भाइयो
को बसा दिया, और फिरौन की आज्ञा के
अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग मे,
अर्थात् राममेस नाम देश मे, भूमि देकर
उनको सौप दिया। १२ और यूसुफ अपने
पिता का, और अपने भाइयो का, और पिता
के सारे घराने का, एक एक के बालबच्चो के
घराने की गिनती के अनुसार, भोजन दिला
दिलाकर उनका पालन पोषण करने लगा॥

१३ और उस सारे देश में खाने को कुछ
न रहा, क्योकि अकाल बहुत भारी था, और
अकाल के कारण मिस्र और कनान दोनो
देश नाश हो गए। १४ और जितना रुपया
मिस्र और कनान देश मे था, सब को यूसुफ
ने उस अन्न की सन्ती जो उनके निवासी
मोल लेते थे इकट्ठा करके फिरौन के भवन मे
पहुचा दिया। १५ जब मिस्र और कनान
देश का रुपया चुक गया, तब सब मिस्री
यूसुफ के पास आ आकर कहने लगे, हम को
भोजनवस्तु दे, क्या हम रुपये के न रहने से
तेरे रहते हुए मर जाए? १६ यूसुफ ने
कहा, यदि रुपये न हो तो अपने पशु दे दो,
और मै उनकी सन्ती तुम्हे खाने को दूगा।
१७ तब वे अपने पशु यूसुफ के पास ले आए,
और यूसुफ उनको घोडो, भेड-बकरियो,
गाय-बैलो और गदहो की सन्ती खाने को
देने लगा उस वर्ष मे वह सब जाति के पशुओ
की सन्ती भोजन देकर उनका पालन पोषण
करता रहा। १८ वह वर्ष तो यो कट गया,
तब अगले वर्ष मे उन्हो ने उसके पास आकर
कहा, हम अपने प्रभु से यह बात छिपा न
रखेगे कि हमारा रुपया चुक गया है, और
हमारे सब प्रकार के पशु हमारे प्रभु के पास
आ चुके है, इसलिये अब हमारे प्रभु के
साम्हने हमारे शरीर और भूमि छोडकर
और कुछ नही रहा। १९ हम तेरे देखते
क्यो मरे, और हमारी भूमि क्यो उजड जाए?
हमको और हमारी भूमि को भोजन वस्तु की
सन्ती मोल ले, कि हम अपनी भूमि समेत
फिरौन के दास हो और हमको बीज दे,
कि हम मरने न पाए, वरन जीवित रहे, और
भूमि न उजडे*। २० तब यूसुफ ने मिस्र
की सारी भूमि को फिरौन के लिये मोल

* मूल में—हम और हमारी भूमि क्यों मरे।

लिया, क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से
मिस्रियों को अपना अपना खेत बेच डालना
पड़ा : इस प्रकार सारी भूमि फिरौन की हो
गई। २१ और एक छोर से लेकर दूसरे
छोर तक सारे मिस्र देश में जो प्रजा रहती
थी, उसको उस ने नगरों में लाकर बसा
दिया। २२ पर याजकों की भूमि तो उस ने
न मोल ली : क्योंकि याजकों के लिये फिरौन
की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था,
और नित्य जो भोजन फिरौन उनको देता
था वही वे खाते थे, इस कारण उनको
अपनी भूमि बेचनी न पड़ी। २३ तब यूसुफ
ने प्रजा के लोगों से कहा, सुनो, मैं ने आज
के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को भी
फिरौन के लिये मोल लिया है; देखो, तुम्हारे
लिये यहां बीज है, इसे भूमि में बोओ।
२४ और जो कुछ उपजे उसका पंचमांश
फिरौन को देना, बाकी चार अंश तुम्हारे
रहेंगे, कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ, और
अपने अपने बालबच्चों और घर के और
लोगों समेत खाया करो। २५ उन्हों ने
कहा, तू ने हमको बचा लिया है : हमारे प्रभु
के अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे, और
हम फिरौन के दास होकर रहेंगे। २६ सो
यूसुफ ने मिस्र की भूमि के विषय में ऐसा
नियम ठहराया, जो आज के दिन तक चला
आता है, कि पंचमांश फिरौन को मिला
करे; केवल याजकों ही की भूमि फिरौन की
नहीं हुई। २७ और इस्राएली मिस्र के
गोशेन देश में रहने लगे; और वहां की भूमि
को अपने वश में कर लिया, और फूले-फले,
और अत्यन्त बढ़ गए॥

(इस्राएल के आशीर्वादों और मृत्यु का वर्णन)

२८ मिस्र देश में याकूब सतरह वर्ष
जीवित रहा : इस प्रकार याकूब की सारी
आयु एक सौ सैंतालीस वर्ष की हुई।
२९ जब इस्राएल के मरने का दिन निकट
आ गया, तब उस ने अपने पुत्र यूसुफ को
बुलवाकर कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर
हो, तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रख-
कर शपथ खा, कि मैं तेरे साथ कृपा और
सच्चाई का यह काम करूंगा, कि तुझे मिस्र
में मिट्टी न दूंगा। ३० जब तू अपने बाप-
दादों के संग सो जाएगा, तब मैं तुझे मिस्र
से उठा ले जाकर उन्हीं के कबरिस्तान में
रखूंगा, तब यूसुफ ने कहा, मैं तेरे वचन
के अनुसार करूंगा। ३१ फिर उस ने कहा,
मुझ से शपथ खा : सो उस ने उस से शपथ
खाई। तब इस्राएल ने खाट के सिरहाने
की ओर सिर झुकाया॥

४८ इन बातों के पश्चात् किसी ने
यूसुफ से कहा, सुन, तेरा पिता
बीमार है; तब वह मनश्शे और एप्रैम नाम
अपने दोनों पुत्रों को संग लेकर उसके पास
चला। २ और किसी ने याकूब को बता
दिया, कि तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आ रहा
है; तब इस्राएल अपने को सम्भालकर खाट
पर बैठ गया। ३ और याकूब ने यूसुफ से
कहा, सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने कनान देश के
लूज नगर के पास मुझे दर्शन देकर आशीष
दी, ४ और कहा, सुन, मैं तुझे फुला-
फलाकर बढ़ाऊंगा, और तुझे राज्य राज्य
की मण्डली का मूल बनाऊंगा, और तेरे
पश्चात् तेरे वंश को यह देश दे दूंगा, जिस से
कि वह सदा तक उनकी निज भूमि बनी
रहे। ५ और अब तेरे दोनों पुत्र, जो मिस्र
में मेरे आने से पहिले उत्पन्न हुए हैं,
वे मेरे ही ठहरेंगे; अर्थात् जिस रीति
से रूबेन और शिमोन मेरे हैं, उसी रीति
से एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे।

६ और उनके पश्चात् जो सन्तान उत्पन्न
हो, वह तेरे तो ठहरेगे, परन्तु बटवारे
के समय वे अपने भाइयो ही के वश मे
गिने जाएगे*। ७ जब मै पद्दान† से आता
था, तब एप्राता पहुचने से थोडी ही दूर
पहिले राहेल कनान देश मे, मार्ग मे, मेरे
साम्हने मर गई और मै ने उसे वही,
अर्थात् एप्राता जो बेतलेहेम भी कहलाता है,
उसी के मार्ग मे मिट्टी दी। ८ तब इस्राएल
को यूसुफ के पुत्र देख पडे, और उस ने पूछा,
ये कौन है? ९ यूसुफ ने अपने पिता से
कहा, ये मेरे पुत्र है, जो परमेश्वर ने मुझे
यहा दिए है उस ने कहा, उनको मेरे
पास ले आ कि मै उन्हे आशीर्वाद दू।
१० इस्राएल की आखे बुढापे के कारण
धुन्धली हो गई थी, यहा तक कि उसे कम
सूझता था। तब यूसुफ उन्हे उनके पास ले
गया, और उस ने उन्हे चूमकर गले लगा
लिया। ११ तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा,
मुझे आशा न थी, कि मै तेरा मुख फिर
देखने पाऊगा परन्तु देख, परमेश्वर ने मुझे
तेरा वश भी दिखाया है। १२ तब यूसुफ ने
उन्हें अपने घुटनो के बीच से हटाकर और
अपने मुह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत्
की। १३ तब यूसुफ ने उन दोनो को लेकर,
अर्थात् एप्रैम को अपने दहिने हाथ से, कि
वह इस्राएल के बाए हाथ पडे, और मनश्शे
को अपने बाए हाथ से, कि इस्राएल के दहिने
हाथ पडे, उन्हें उसके पास ले गया।
१४ तब इस्राएल ने अपना दहिना हाथ
बढाकर एप्रैम के सिर पर जो छोटा था,
और अपना बाया हाथ बढाकर मनश्शे के
सिर पर रख दिया, उस ने तो जान बूझकर
ऐसा किया, नही तो जेठा मनश्शे ही था।

* मूल में—भाइयों के नाम पर कहाएंगे।
† अर्थात् पद्दनराम।

१५ फिर उस ने यूसुफ को आशीर्वाद देकर
कहा, परमेश्वर जिसके सम्मुख मेरे बाप-
दादे इब्राहीम और इसहाक (अपने को
जानकर*) चलते थे वही परमेश्वर मेरे
जन्म से लेकर आज के दिन तक मेरा
चरवाहा बना है, १६ और वही दूत मुझे
सारी बुराई से छुडाता आया है, वही अब
इन लडको को आशिष दे, और ये मेरे और
मेरे बापदादे इब्राहीम और इसहाक के
कहलाए, और पृथ्वी मे बहुतायत से बढे।
१७ जब यूसुफ ने देखा, कि मेरे पिता ने
अपना दहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रखा
है, तब यह बात उसको बुरी लगी सो उस
ने अपने पिता का हाथ इस मनसा से पकड़
लिया, कि एप्रैम के सिर पर से उठाकर
मनश्शे के सिर पर रख दे। १८ और
यूसुफ ने अपने पिता से कहा, हे पिता, ऐसा
नही क्योकि जेठा यही है, अपना दहिना
हाथ इसके सिर पर रख। १९ उसके
पिता ने कहा, नही, सुन, हे मेरे पुत्र, मै इस
बात को भली भाति जानता हू यद्यपि इस
से भी मनुष्यो की एक मण्डली उत्पन्न होगी,
और यह भी महान् हो जाएगा, तौभी इसका
छोटा भाई इस से अधिक महान् हो जाएगा,
और उसके वश से बहुत सी जातिया
निकलेगी। २० फिर उस ने उसी दिन यह
कहकर उनको आशीर्वाद दिया, कि
इस्राएली लोग तेरा नाम ले लेकर ऐसा
आशीर्वाद दिया करेगे, कि परमेश्वर तुझे
एप्रैम और मनश्शे के समान बना दे और
उस ने मनश्शे से पहिले एप्रैम का नाम
लिया। २१ तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा,
देख, मै तो मरने पर हू परन्तु परमेश्वर
तुम लोगो के सग रहेगा, और तुम को

* मूल में—जिसके साम्हने मेरे बापदादे
इब्राहीम और इसहाक चले।

तुम्हारे पितरो के देश में फिर पहुचा देगा।
२२ और मैं तुझ को तेरे भाइयो से अधिक
भूमि का एक भाग देता हू, जिसको मैं ने
एमोरियो के हाथ से अपनी तलवार और
धनुष के बल से ले लिया है॥

४९ फिर याकूब ने अपने पुत्रो को
यह कहकर बुलाया, कि इकट्ठे हो
जाओ, मैं तुम को बताऊगा, कि अन्त के
दिनो मे तुम पर क्या क्या बीतेगा। २ हे
याकूब के पुत्रो, इकट्ठे होकर सुनो, अपने
पिता इस्राएल की ओर कान लगाओ।

३ हे रूबेन, तू मेरा जेठा, मेरा बल,
और मेरे पौरुष का पहिला फल है,
प्रतिष्ठा का उत्तम भाग, और शक्ति का भी उत्तम भाग तू ही है।
४ तू जो जल की नाईं उबलनेवाला है, इसलिये औरो से श्रेष्ठ न ठहरेगा,
क्योकि तू अपने पिता की खाट पर चढा,
तब तू ने उसको अशुद्ध किया, वह मेरे बिछौने पर चढ गया॥
५ शिमोन और लेवी तो भाई भाई है,
उनकी तलवारे उपद्रव के हथियार है।
६ हे मेरे जीव, उनके मर्म मे न पड,
हे मेरी महिमा, उनकी सभा मे मत मिल,
क्योकि उन्हो ने कोप मे मनुष्यो को घात किया,
और अपनी ही इच्छा पर चलकर बैलो की पूछें काटी है॥
७ धिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था,
और उनके रोष को, जो निर्दय था,
मै उन्हें याकूब मे अलग अलग
और इस्राएल में तित्तर बित्तर कर दूगा॥
८ हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे,
तेरा हाथ तेरे शत्रुओ की गर्दन पर पडेगा,
तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे॥
९ यहूदा सिंह का डावरू है।
हे मेरे पुत्र, तू अहेर करके गुफा में गया है *
वह सिंह वा सिंहनी की नाईं दबकर बैठ गया,
फिर कौन उसको छेडेगा॥
१० जब तक शीलो न आए
तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा,
न उसके वंश से † व्यवस्था देनेवाला अलग होगा,
और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएगे॥
११ वह अपने जवान गदहे को दाखलता में,
और अपनी गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता में बान्धा करेगा,
उस ने अपने वस्त्र दाखमधु में,
और अपना पहिरावा दाखो के रस ‡ मे धोया है॥
१२ उसकी आखे दाखमधु से चमकीली,
और उसके दात दूध से श्वेत होगे॥

* मूल में—अहेर से चढ गया है।
† मूल में—उसके पैरों के बीच से।
‡ मूल में—लोहू।

१३ जबूलून समुद्र के तीर पर निवास करेगा, वह जहाजों के लिये बन्दरगाह का काम देगा,
और उसका परला भाग सीदोन के निकट पहुंचेगा॥
१४ इस्साकार एक बड़ा और बलवन्त गदहा है,
जो पशुओं के बाड़ों के बीच में दबका रहता है॥
१५ उस ने एक विश्रामस्थान देखकर, कि अच्छा है, और एक देश, कि मनोहर है,
अपने कन्धे को बोझ उठाने के लिये झुकाया,
और बेगारी में दास का सा काम करने लगा॥

२२ यूसुफ बलवन्त लता की एक शाखा* है,
वह सोते के पास लगी हुई फलवन्त लता की एक शाखा* है,
उसकी डालियां† भीत पर से चढ़कर फैल जाती हैं॥
२३ धनुर्धारियों ने उसको खेदित किया,
और उस पर तीर मारे, और उसके पीछे पड़े हैं॥
२४ पर उसका धनुष दृढ़ रहा,
और उसकी बांह और हाथ
याकूब के उसी शक्तिमान ईश्वर के हाथों के द्वारा फुर्तीले हुए,
जिसके पास से वह चरवाहा आएगा, जो इस्राएल का पत्थर

२७ विन्यामीन फाडनेहारा हुण्डार है,
सवेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा,
और साझ को लूट बाट लेगा ॥
२८ इस्राएल के बारहो गोत्र ये ही हैं
और उनके पिता ने जिस जिस वचन से
उनको आशीर्वाद दिया, सो ये ही हैं, एक
एक को उसके आशीर्वाद के अनुसार उस ने
आशीर्वाद दिया। २६ तब उस ने यह
कहकर उनको आज्ञा दी, कि मैं अपने
लोगो के साथ मिलने पर हू इसलिये मुझे
हित्ती एप्रोन की भूमिवाली गुफा मे मेरे
बापदादो के साथ मिट्टी देना, ३० अर्थात्
उसी गुफा मे जो कनान देश मे मम्रे के
साम्हनेवाली मकपेला की भूमि में है, उस
भूमि को तो इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ
से इसी निमित्त मोल लिया था, कि वह
कबरिस्तान के लिये उसकी निज भूमि हो।
३१ वहा इब्राहीम और उसकी पत्नी सारा
को मिट्टी दी गई, और वही इसहाक और
उसकी पत्नी रिबका को भी मिट्टी दी गई,
और वही मैं ने लिआ को भी मिट्टी दी।
३२ वह भूमि और उस मे की गुफा हित्तियो
के हाथ से मोल ली गई। ३३ यह आज्ञा
जब याकूब अपने पुत्रो को दे चुका, तब अपने
पाव खाट पर समेट प्राण छोडे, और अपने
लोगो मे जा मिला।

५० तब यूसुफ अपने पिता के मुह
पर गिरकर रोया और उसे
चूमा। २ और यूसुफ ने उन वैद्यो को,
जो उसके सेवक थे, आज्ञा दी, कि मेरे
पिता की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरो, तब
वैद्यो ने इस्राएल की लोथ मे सुगन्धद्रव्य
भर दिए। ३ और उसके चालीस दिन पूरे
हुए। क्योकि जिनकी लोथ में सुगन्धद्रव्य
भरे जाते हैं, उनको इतने ही दिन पूरे लगते
है और मिस्री लोग उसके लिये सत्तर दिन
तक विलाप करते रहे ॥
४ जब उसके विलाप के दिन बीत गए,
तब यूसुफ फिरौन के घराने के लोगो से
कहने लगा, यदि तुम्हारी अनुग्रह की दृष्टि
मुझ पर हो तो मेरी यह विनती फिरौन को
सुनाओ, ५ कि मेरे पिता ने यह कहकर, कि
देख मैं मरने पर हू, मुझे यह शपथ खिलाई,
कि जो कबर तू ने अपने लिये कनान देश मे
खुदवाई है उसी मे मैं तुझे मिट्टी दूगा।
इसलिये अब मुझे वहा जाकर अपने पिता
को मिट्टी देने की आज्ञा दे, तत्पश्चात् मैं
लौट आऊगा। ६ तब फिरौन ने कहा,
जाकर अपने पिता की खिलाई हुई शपथ के
अनुसार उनको मिट्टी दे। ७ सो यूसुफ
अपने पिता को मिट्टी देने के लिये चला, और
फिरौन के सब कर्मचारी, अर्थात् उसके भवन
के पुरनिये, और मिस्र देश के सब पुरनिये
उसके सग चले। ८ और यूसुफ के घर के
सब लोग, और उसके भाई, और उसके पिता
के घर के सब लोग भी सग गए पर वे अपने
बालबच्चो, और भेड-बकरियो, और गाय-
बैलो को गोशेन देश मे छोड गए। ९ और
उसके सग रथ और सवार गए, सो भीड
बहुत भारी हो गई। १० जब वे आताद
के खलिहान तक, जो यरदन नदी के पार है
पहुचे, तब वहा अत्यन्त भारी विलाप किया,
और यूसुफ ने अपने पिता के लिये सात दिन
का विलाप कराया। ११ आताद के
खलिहान मे के विलाप को देखकर उस देश
के निवासी कनानियो ने कहा, यह तो
मिस्रियो का कोई भारी विलाप होगा, इसी
कारण उस स्थान का नाम आबेलमिस्रैम *
पडा, और वह यरदन के पार है। १२ और

* अर्थात् मिस्रियों का विलाप।

इस्राएल के पुत्रो ने उस मे वही काम किया,
जिसकी उस ने उनको आज्ञा दी थी
१३ अर्थात् उन्हो ने उसको कनान देश मे
ले जाकर मकपेला की उस भूमिवाली गुफा
मे, जो मम्रे के साम्हने है, मिट्टी दी, जिसको
इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन के हाथ से इस
निमित्त मोल लिया था, कि वह कवरिस्तान
के लिये उसकी निज भूमि हो ॥

(यूसुफ का उत्तर चरित्र)

१४ अपने पिता को मिट्टी देकर यूसुफ
अपने भाइयो और उन सब समेत, जो उसके
पिता को मिट्टी देने के लिये उसके सग गए
थे, मिस्र मे लौट आया। १५ जब यूसुफ के
भाइयो ने देखा कि हमारा पिता मर गया है,
तब कहने लगे, कदाचित् यूसुफ अब हमारे
पीछे पडे, और जितनी बुराई हम ने उस
से की थी सब का पूरा पलटा हम से ले।
१६ इसलिये उन्हो ने यूसुफ के पास यह
कहला भेजा, कि तेरे पिता ने मरने से पहिले
हमें यह आज्ञा दी थी, १७ कि तुम लोग
यूसुफ से इस प्रकार कहना, कि हम विनती
करते है, कि तू अपने भाइयो के अपराध
और पाप को क्षमा कर, हम ने तुझ से
बुराई तो की थी, पर अब अपने पिता के
परमेश्वर के दासो का अपराध क्षमा कर।
उनकी ये बाते सुनकर यूसुफ रो पडा।
१८ और उसके भाई आप भी जाकर उसके
साम्हने गिर पडे, और कहा, देख, हम तेरे
दास है। १९ यूसुफ ने उन से कहा, मत
डरो, क्या मै परमेश्वर की जगह पर हू?
२० यद्यपि तुम लोगो ने मेरे लिये बुराई
का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने
उसी बात मे भलाई का विचार किया,
जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन
प्रगट है, कि बहुत से लोगो के प्राण बचे है।
२१ सो अब मत डरो मै तुम्हारा और
तुम्हारे बाल-बच्चो का पालन पोषण
करता रहूगा, इस प्रकार उस ने उनको
समझा बुझाकर शान्ति दी ॥

२२ और यूसुफ अपने पिता के घराने
समेत मिस्र मे रहता रहा, और यूसुफ एक
सौ दस वर्ष जीवित रहा। २३ और यूसुफ
एप्रैम के परपोतो तक देखने पाया और
मनश्शे के पोते, जो माकीर के पुत्र थे, वे
उत्पन्न होकर यूसुफ से गोद मे लिए गए *।
२४ और यूसुफ ने अपने भाइयो से कहा,
मै तो मरने पर हू, परन्तु परमेश्वर निश्चय
तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हे इस देश से
निकालकर उस देश मे पहुचा देगा, जिसके
देने की उस ने इब्राहीम, इसहाक, और
याकूब से शपथ खाई थी। २५ फिर
यूसुफ ने इस्राएलियो से यह कहकर, कि
परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा,
उनको इस विषय की शपथ खिलाई, कि
हम तेरी हड्डियो को वहा से उस देश में ले
जाएगे। २६ निदान यूसुफ एक सौ दस वर्ष
का होकर मर गया और उसकी लोथ मे
सुगन्धद्रव्य भरे गए, और वह लोथ मिस्र मे
एक सन्दूक मे रखी गई ॥

* मूल में—यूसुफ के घुटनों पर जन्मे।

निर्गमन नाम पुस्तक

(मिस्र में इस्राएलियों की दुर्दशा)

1 इस्राएल के पुत्रो के नाम, जो अपने
अपने घराने को लेकर याकूब के साथ
मिस्र देश में आए, ये हैं 2 अर्थात् रूबेन,
शिमोन, लेवी, यहूदा, 3 इस्साकर,
जबूलून, बिन्यामीन, 4 दान, नप्ताली, गाद
और आशेर। 5 और यूसुफ तो मिस्र मे
पहिले ही आ चुका था। याकूब के निज वंश
में जो उत्पन्न हुए वे सब सत्तर प्राणी थे।
6 और यूसुफ, और उसके सब भाई, और
उस पीढी के सब लोग मर मिटे। 7 और
इस्राएल की सन्तान फूलने फलने लगी,
और वे लोग अत्यन्त सामर्थी बनते चले
गए, और इतना अधिक बढ गए कि कुल
देश उन से भर गया॥

8 मिस्र में एक नया राजा गद्दी पर
बैठा जो यूसुफ को नही जानता था।
9 और उस ने अपनी प्रजा से कहा, देखो,
इस्राएली हम से गिनती और सामर्थ्य मे
अधिक बढ गए हैं। 10 इसलिये आओ,
हम उनके साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करे,
कही ऐसा न हो कि जब वे बहुत बढ जाए,
और यदि संग्राम का समय आ पडे, तो हमारे
बैरियो से मिलकर हम से लडे और इस
देश से निकल जाए। 11 इसलिये उन्हो ने
उन पर बेगारी करानेवालो को नियुक्त
किया कि वे उन पर भार डाल डालकर
उनको दु ख दिया करे, तब उन्हो ने फिरौन
के लिये पितोम और रामसेस नाम भण्डार-
वाले नगरो को बनाया। 12 पर ज्यो ज्यो
वे उनको दु ख देते गए त्यो त्यो वे बढते और
फैलते चले गए, इसलिये वे इस्राएलियो
से अत्यन्त डर गए। 13 तौभी मिस्रियो ने
इस्राएलियो से कठोरता के साथ सेवकाई
करवाई। 14 और उनके जीवन को
गारे, ईंट और खेती के भाति भाति के काम
की कठिन सेवा से दु खी* कर डाला,
जिस किसी काम में वे उन से सेवा करवाते
थे उस में वे कठोरता का व्यवहार करते थे॥

15 शिप्रा और पूआ नाम दो इब्री
धाइयो को मिस्र के राजा ने आज्ञा दी,
16 कि जब तुम इब्री स्त्रियो को बच्चा
उत्पन्न होने के समय जन्मने के पत्थरो पर
बैठी देखो, तब यदि बेटा हो, तो उसे मार
डालना, और बेटी हो, तो जीवित रहने
देना। 17 परन्तु वे धाइया परमेश्वर का
भय मानती थी, इसलिये मिस्र के राजा की
आज्ञा न मानकर लडको को भी जीवित
छोड देती थी। 18 तब मिस्र के राजा ने
उनको बुलवाकर पूछा, तुम जो लडको को
जीवित छोड देती हो, तो ऐसा क्यो करती
हो? 19 धाइयो ने फिरौन को उत्तर
दिया, कि इब्री स्त्रिया मिस्री स्त्रियो के
समान नही है, वे ऐसी फुर्तीली है कि
धाइयो के पहुचने से पहिले ही उनको
बच्चा उत्पन्न हो जाता है। 20 इसलिये
परमेश्वर ने धाइयो के साथ भलाई की,
और वे लोग बढकर बहुत सामर्थी हो गए।
21 और धाइया इसलिये कि वे परमेश्वर
का भय मानती थी उस ने उनके घर
बसाए†। 22 तब फिरौन ने अपनी सारी
प्रजा के लोगो को आज्ञा दी, कि इब्रियों के

---

* मूल में—कडुआ।

† मूल में—उनके लिये घर बनाए।

जितने बेटे उत्पन्न हो उन सभो को तुम
नील नदी * मे डाल देना, और सब बेटियो
को जीवित रख छोडना ॥

(मूसा की उत्पत्ति और आदि चरित्र)

२ लेवी के घराने के एक पुरुष ने एक
लेवी वश की स्त्री को व्याह लिया।
२ और वह स्त्री गर्भवती हुई और उसके
एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और यह देखकर कि
यह बालक सुन्दर है, उसे तीन महीने तक
छिपा रखा। ३ और जब वह उसे और
छिपा न सकी तब उसके लिये सरकडो की
एक टोकरी लेकर, उस पर चिकनी मिट्टी
और राल लगाकर, उस मे बालक को
रखकर नील नदी * के तीर पर कासो के
बीच छोड आई। ४ उस बालक की बहिन
दूर खडी रही, कि देखे इसका क्या हाल
होगा। ५ तब फिरौन की बेटी नहाने के
लिये नदी * के तीर आई, उसकी सखिया
नदी * के तीर तीर टहलने लगी, तब
उस ने कासो के बीच टोकरी को देखकर
अपनी दासी को उसे ले आने के लिये
भेजा। ६ तब उस ने उसे खोलकर देखा,
कि एक रोता हुआ बालक है, तब उसे
तरस आया और उस ने कहा, यह तो किसी
इब्री का बालक होगा। ७ तब बालक की
बहिन ने फिरौन की बेटी से कहा, क्या मै
जाकर इब्री स्त्रियो मे से किसी धाई को
तेरे पास बुला ले आऊ जो तेरे लिये बालक
को दूध पिलाया करे? ८ फिरौन की बेटी
ने कहा, जा। तब लडकी जाकर बालक
की माता को बुला ले आई। ९ फिरौन की
बेटी ने उस से कहा, तू इस बालक को ले
जाकर मेरे लिये दूध पिलाया कर, और
मै तुझे मजदूरी दूगी। तब वह स्त्री बालक
को ले जाकर दूध पिलाने लगी। १० जब
बालक कुछ बडा हुआ तब वह उसे फिरौन
की बेटी के पास ले गई, और वह उसका
बेटा ठहरा; और उस ने यह कहकर उसका
नाम मूसा * रखा, कि मै ने इसको जल से
निकाल लिया ॥

११ उन दिनो मे ऐसा हुआ कि जब
मूसा जवान हुआ, और बाहर अपने भाई
बन्धुओ के पास जाकर उनके दुखो पर
दृष्टि करने लगा, तब उस ने देखा, कि
कोई मिस्री जन मेरे एक इब्री भाई को मार
रहा है। १२ जब उस ने इधर उधर देखा
कि कोई नही है, तब उस मिस्री को मार
डाला और बालू मे छिपा दिया ॥

१३ फिर दूसरे दिन बाहर जाकर उस ने
देखा कि दो इब्री पुरुष आपस मे मारपीट
कर रहे है, उस ने अपराधी से कहा, तू
अपने भाई को क्यो मारता है? १४ उस ने
कहा, किस ने तुझे हम लोगो पर हाकिम
और न्यायी ठहराया? जिस भाति तू ने
मिस्री को घात किया क्या उसी भाति तू
मुझे भी घात करना चाहता है? तब मूसा
यह सोचकर डर गया, कि निश्चय वह बात
खुल गई है। १५ जब फिरौन ने यह बात
सुनी तब मूसा को घात करने की युक्ति की।
तब मूसा फिरौन के साम्हने से भागा, और
मिद्यान देश मे जाकर रहने लगा, और
वह वहा एक कुए के पास बैठ गया।
१६ मिद्यान के याजक की सात बेटिया थी,
और वे वहा आकर जल भरने लगी, कि
कठौतो मे भरके अपने पिता की भेड-
बकरियो को पिलाए। १७ तब चरवाहे
आकर उनको हटाने लगे, इस पर मूसा ने
खडा होकर उनकी सहायता की, और भेड-

* मूल मे—योर।

* अर्थात् जल से निकाला हुआ।

बकरियो को पानी पिलाया। १८ जब वे
अपने पिता रूएल के पास फिर आई, तब
उस ने उन से पूछा, क्या कारण है कि आज
तुम ऐसी फुर्ती से आई हो? १९ उन्हो ने
कहा, एक मिस्री पुरुष ने हम को चरवाहो
के हाथ से छुडाया, और हमारे लिये बहुत
जल भरके भेड-बकरियो को पिलाया।
२० तब उस ने अपनी बेटियो से कहा, वह
पुरुष कहा है? तुम उसको क्यो छोड आई
हो? उसको बुला ले आओ कि वह
भोजन करे। २१ और मूसा उस पुरुष के
साथ रहने को प्रसन्न हुआ, उस ने उसे
अपनी बेटी सिप्पोरा को ब्याह दिया।
२२ और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, तब
मूसा ने यह कहकर, कि मै अन्य देश मे
परदेशी हू, उसका नाम गेर्शोम * रखा॥

(यहोवा के मूसा को दर्शन देकर फिरौन के पास भेजने का वर्णन)

२३ बहुत दिनो के बीतने पर मिस्र का
राजा मर गया। और इस्राएली कठिन सेवा
के कारण लम्बी लम्बी सास लेकर आहे
भरने लगे, और पुकार उठे, और उनकी
दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह
परमेश्वर तक पहुची। २४ और परमेश्वर
ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा
को, जो उस ने इब्राहीम, और इसहाक, और
याकूब के साथ बान्धी थी, स्मरण किया।
२५ और परमेश्वर ने इस्राएलियो पर
दृष्टि करके उन पर चित्त लगाया॥

३ मूसा अपने ससुर यित्रो नाम
मिद्यान के याजक की भेड-बकरियो को
चराता था, और वह उन्हे जगल की परली
ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास
ले गया। २ और परमेश्वर के दूत ने एक
कटीली झाडी के बीच आग की लौ मे उसको
दर्शन दिया, और उस ने दृष्टि उठाकर
देखा कि झाडी जल रही है, पर भस्म नही
होती। ३ तब मूसा ने सोचा, कि मै उधर
फिरके इस बडे अचम्भे को देखूगा, कि वह
झाडी क्यो नही जल जाती। ४ जब
यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुडा
चला आता है, तब परमेश्वर ने झाडी के
बीच से उसको पुकारा, कि हे मूसा, हे
मूसा। मूसा ने कहा, क्या आज्ञा *।
५ उस ने कहा इधर पास मत आ, और
अपने पावो से जूतियो को उतार दे, क्योकि
जिस स्थान पर तू खडा है वह पवित्र भूमि
है। ६ फिर उस ने कहा, मै तेरे पिता का
परमेश्वर, और इब्राहीम का परमेश्वर,
इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का पर-
मेश्वर हू। तब मूसा ने जो परमेश्वर की
ओर निहारने से डरता था अपना मुह ढाप
लिया। ७ फिर यहोवा ने कहा, मै ने
अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र मे है उनके
दुःख को निश्चय देखा है, और उनकी जो
चिल्लाहट परिश्रम करानेवालो के कारण
होती है उसको भी मै ने सुना है, और
उनकी पीडा पर मै ने चित्त लगाया है,
८ इसलिये अब मै उतर आया हू कि उन्हे
मिस्रियो के वश से छुडाऊ, और उस देश से
निकालकर एक अच्छे और बडे देश मे
जिस मे दूध और मधु की धारा बहती है,
अर्थात् कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी,
हिव्वी, और यबूसी लोगो के स्थान मे
पहुचाऊ। ९ सो अब सुन, इस्राएलियो की
चिल्लाहट मुझे सुनाई पडी है, और मिस्रियो
का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई

* अर्थात् वहा परदेशी था, निकाल दिया जाना।

* मूल में—मुझे देख।

पड़ा है। १० इसलिये आ, मैं तुझे फिरौन
के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली
प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।
११ तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन
हूं जो फिरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियों
को मिस्र से निकाल ले आऊं? १२ उस ने
कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा, और इस
बात का कि तेरा भेजनेवाला मैं हूं, तेरे
लिये यह चिन्ह होगा, कि जब तू उन लोगों
को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी
पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे।
१३ मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब मैं
इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूं,
कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे
तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से
पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उनको
क्या बताऊं? १४ परमेश्वर ने मूसा से
कहा, मैं जो हूं सो हूं।* फिर उस ने कहा,
तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका
नाम मैं हूं † है उसी ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है। १५ फिर परमेश्वर ने मूसा से
यह भी कहा, कि तू इस्राएलियों से यह
कहना, कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर,
अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का
परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर, यहोवा,
उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख,
सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी
पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।
१६ इसलिये अब जाकर इस्राएली पुरनियों
को इकट्ठा कर, और उन से कह, कि तुम्हारे
पितर इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के
परमेश्वर, यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह
कहा है, कि मैं ने तुम पर और तुम से जो

* कितने टीकाकार कहते हैं, मैं जो हूं सो हूं।

† कितने टीकाकार कहते हैं, मैं हूं।

बर्ताव मिस्र में किया जाता है उस पर
चित्त लगाया है, १७ और मैं ने ठ
लिया है कि तुम को मिस्र के दुःखों में
निकालकर कनानी, हित्ती, एमोरी, परि
हिव्वी, और यबूसी लोगों के देश में
चलूंगा, जो ऐसा देश है कि जिस में
और मधु की धारा बहती है। १८ तब
तेरी मानेंगे, और तू इस्राएली पुरनियों
संग लेकर मिस्र के राजा के पास जा
उस से यों कहना, कि इब्रियों के परमेश्व
यहोवा ने हम लोगों को भेंट हुई है, इसलि
अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल
जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा
बलिदान चढ़ाएं। १९ मैं जानता हूं
मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा वर
बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने
देगा। २० इसलिये मैं हाथ बढ़ाकर उ
सब आश्चर्यकर्मों से जो मिस्र के बी
करूंगा उस देश को मारूंगा, और उस
पश्चात् वह तुम को जाने देगा। २१ त
मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनु
करवाऊंगा, और जब तुम निकलोगे त
छूछे हाथ न निकलोगे। २२ वरन तुम्हा
एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन, औ
अपने अपने घर की पाहुनी से सोने चांदी
गहने, और वस्त्र मांग लेगी, और तुम उ
अपने बेटों और बेटियों को पहिराना, इ
प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे॥

४ तब मूसा ने उत्तर दिया, कि
वे मेरी प्रतीति न करेंगे औ
न मेरी सुनेंगे, वरन कहेंगे, कि यहो
ने तुझ को दर्शन नहीं दिया। २ यहोव
ने उस से कहा, तेरे हाथ में वह क्य
है? वह बोला, लाठी। ३ उस ने कह
उसे भूमि पर डाल दे, जब उस ने उ

भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और
मूसा उसके साम्हने से भागा। ४ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, हाथ बढाकर उसकी
पूछ पकड ले कि वे लोग प्रतीति करें कि
तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात् इब्राहीम
के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और
याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को
दर्शन दिया है। ५ जब उस ने हाथ बढाकर
उसको पकडा तब वह उसके हाथ में फिर
लाठी बन गई। ६ फिर यहोवा ने उस से
यह भी कहा, कि अपना हाथ छाती पर रख-
कर ढाप। सो उस ने अपना हाथ छाती पर
रखकर ढाप लिया, फिर जब उसे निकाला
तब क्या देखा, कि उसका हाथ कोढ के
कारण हिम के समान श्वेत हो गया है।
७ तब उस ने कहा, अपना हाथ छाती पर
फिर रखकर ढाप। और उस ने अपना हाथ
छाती पर रखकर ढाप लिया, और जब उस
ने उसको छाती पर से निकाला तब क्या
देखता है, कि वह फिर सारी देह के समान
हो गया। ८ तब यहोवा ने कहा, यदि वे
तेरी बात की प्रतीति न करे, और पहिले
चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह की
प्रतीति करेंगे। ९ और यदि वे इन दोनो
चिन्हों की प्रतीति न करें और तेरी बात
को न माने, तब तू नील नदी * से कुछ
जल लेकर सूखी भूमि पर डालना, और
जो जल तू नदी से निकालेगा वह सूखी
भूमि पर लोहू बन जायगा। १० मूसा ने
यहोवा से कहा, हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में
निपुण नही, न तो पहिले था, और न
जब से तू अपने दास से बातें करने लगा,
मैं तो मुह और जीभ का भद्दा हू।
११ यहोवा ने उस से कहा, मनुष्य का मुह
किस ने बनाया है? और मनुष्य को गूगा,
वा बहिरा, वा देखनेवाला, वा अन्धा, मुझ
यहोवा को छोड कौन बनाता है? १२ अब
जा, मैं तेरे मुख के सग होकर जो तुझे
कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊगा।
१३ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु, जिसको
तू चाहे उसी के हाथ से भेज। १४ तब
यहोवा का कोप मूसा पर भडका और उस ने
कहा, क्या तेरा भाई लेवीय हारून नही है?
मुझे तो निश्चय है कि वह बोलने मे
निपुण है, और वह तेरी भेट के लिये निकला
भी आता है, और तुझे देखकर मन में
आनन्दित होगा। १५ इसलिये तू उसे ये
बातें सिखाना, * और मैं उसके मुख के
सग और तेरे मुख के सग होकर जो कुछ
तुम्हे करना होगा वह तुम को सिखलाता
जाऊगा। १६ और वह तेरी ओर से लोगो
से बातें किया करेगा, वह तेरे लिये मुह
और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा।
१७ और तू इस लाठी को हाथ मे लिए जा,
और इसी से इन चिन्हो को दिखाना॥

१८ तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास
लौटा और उस से कहा, मुझे विदा कर, कि
मैं मिस्र मे रहनेवाले अपने भाइयो के पास
जाकर देखू कि वे अब तक जीवित है वा
नही। यित्रो ने कहा, कुशल से जा।
१९ और यहोवा ने मिद्यान देश मे मूसा से
कहा, मिस्र को लौट जा, क्योंकि जो मनुष्य
तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं
२० तब मूसा अपनी पत्नी और बेटों को
गदहे पर चढाकर मिस्र देश की ओर
परमेश्वर की उस लाठी को हाथ मे लिये
हुए लौटा। २१ और यहोवा ने मूसा से
कहा, जब तू मिस्र मे पहुचे तब सावधान हो

* मूल में—योर।

* मूल मे—उससे बातें करना और उसके मुह में ये बातें डालना।

लोग दासत्व में रखते है उनका कराहना
भी सुनकर मै ने अपनी वाचा को स्मरण
किया है। ६ इस कारण तू इस्राएलियो से
कह, कि मै यहोवा हू, और तुम को मिस्रियो
के बोझो के नीचे से निकालूंगा, और उनके
दासत्व से तुम को छुड़ाऊंगा, और अपनी
भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हे
छुड़ा लूंगा, ७ और मै तुम को अपनी प्रजा
बनाने के लिये अपना लूगा, और मै तुम्हारा
परमेश्वर ठहरूंगा, और तुम जान लोगे कि
मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू जो तुम्हे
मिस्रियो के बोझो के नीचे से निकाल ले
आया। ८ और जिस देश के देने की
शपथ* मै ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब
से खाई थी † उसी मे मै तुम्हे पहुचाकर उसे
तुम्हारा भाग कर दूंगा। मै तो यहोवा हू।
९ और ये बातें मूसा ने इस्राएलियो को
सुनाई, परन्तु उन्हो ने मन की बेचैनी
और दासत्व की क्रूरता के कारण उसकी
न सुनी॥

१० तब यहोवा ने मूसा से कहा,
११ तू जाकर मिस्र के राजा फिरौन से कह,
कि इस्राएलियो को अपने देश मे से निकल
जाने दे। १२ और मूसा ने यहोवा से कहा,
देख, इस्राएलियो ने मेरी नही सुनी; फिर
फिरौन मुझ भद्दे बोलनेवाले ‡ की क्योकर
सुनेगा? १३ और यहोवा ने मूसा और
हारून को इस्राएलियो और मिस्र के राजा
फिरौन के लिये आज्ञा इस अभिप्राय से दी
कि वे इस्राएलियो को मिस्र देश से निकाल
ले जाए॥

१४ उनके पितरो के घरानो के मुख्य
पुरुष ये है इस्राएल के जेठा रूबेन के
पुत्र: हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी थे,
इन्ही से रूबेन के कुल निकले। १५ और
शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद,
याकिन और सोहर थे, और एक कनानी स्त्री
का बेटा शाऊल भी था, इन्ही से शिमोन के
कुल निकले। १६ और लेवी के पुत्र जिन से
उनकी वंशावली चली है, उनके नाम ये है:
अर्थात् गेर्शोन, कहात और मरारी, और
लेवी की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष
की हुई। १७ गेर्शोन के पुत्र जिन से उनका
कुल चला लिबनी और शिमी थे।
१८ और कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार,
हेब्रोन और उज्जीएल थे, और कहात की
पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई।
१९ और मरारी के पुत्र: महली और
मूशी थे। लेवियो के कुल जिन से उनकी
वंशावली चली ये ही है। २० अम्राम
ने अपनी फूफी योकेबेद को व्याह लिया और
उस से हारून और मूसा उत्पन्न हुए, और
अम्राम की पूरी अवस्था एक सौ सैंतीस वर्ष
की हुई। २१ और यिसहार के पुत्र
कोरह, नेपेग और जिक्री थे। २२ और
उज्जीएल के पुत्र: मीशाएल, एलसापन और
सित्री थे। २३ और हारून ने अम्मीनादाब
की बेटी, और नहशोन की बहिन एलीशेबा
को व्याह लिया, और उस से नादाब,
अबीहू, एलाजार और ईतामार उत्पन्न हुए।
२४ और कोरह के पुत्र अस्सीर, एलकाना
और अबीआसाप थे; और इन्ही से कोर-
हियो के कुल निकले। २५ और हारून के
पुत्र एलाजार ने पूतीएल की एक बेटी को
व्याह लिया, और उस से पीनहास उत्पन्न
हुआ जिन से उनका कुल चला। लेवियो के
पितरो के घरानो के मुख्य पुरुष ये ही है।
२६ हारून और मूसा वे ही है जिनको
यहोवा ने यह आज्ञा दी, कि इस्राएलियो को

* मूल में—को हाथ।
† मूल मे—उठाया था।
‡ मूल में—खतनारहित होंठवाले।

दल दल करके उनके जत्थों के अनुसार मिस्र
देश से निकाल ले आओ। २७ ये वही
मूसा और हारून है जिन्हों ने मिस्र के राजा
फिरौन से कहा, कि हम इस्राएलियों को
मिस्र से निकाल ले जाएंगे ॥
२८ जब यहोवा ने मिस्र देश मे मूसा से
यह बात कही, २९ कि मैं तो यहोवा
हू, इसलिये जो कुछ मैं तुम से कहूंगा वह
सब मिस्र के राजा फिरौन से कहना।
३० और मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया,
कि मैं तो बोलने में भद्दा हू *, और फिरौन
क्योंकर मेरी सुनेगा ?

७ तब यहोवा ने मूसा से कहा,
सुन, मैं तुझे फिरौन के लिये परमेश्वर
सा ठहराता हू, और तेरा भाई हारून
तेरा नबी ठहरेगा। २ जो जो आज्ञा मैं
तुझे दू वही तू कहना, और हारून
उसे फिरौन से कहेगा जिस से वह इस्रा-
एलियों को अपने देश से निकल जाने दे।
३ और मैं फिरौन के मन को कठोर कर
दूगा, और अपने चिन्ह और चमत्कार मिस्र
देश में बहुत से दिखलाऊंगा। ४ तौभी
फिरौन तुम्हारी न सुनेगा, और मैं मिस्र
देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को
भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी
इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल
लूगा। ५ और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ा-
कर इस्राएलियों को उनके बीच से निका-
लूगा तब मिस्री जान लेंगे, कि मैं यहोवा
हू। ६ तब मूसा और हारून ने यहोवा
की आज्ञा के अनुसार ही किया। ७ और
जब मूसा और हारून फिरौन से बात करने
लगे तब मूसा तो अस्सी वर्ष का, और
हारून तिरासी वर्ष का था ॥

* मूल में—खतनारहित होंठवाला हू।

८ फिर यहोवा ने, मूसा और हारून से
इस प्रकार कहा, ९ कि जब फिरौन तुम से
कहे, कि अपने प्रमाण का कोई चमत्कार
दिखाओ, तब तू हारून से कहना, कि अपनी
लाठी को लेकर फिरौन के साम्हने डाल
दे, कि वह अजगर बन जाए। १० तब
मूसा और हारून ने फिरौन के पास जाकर
यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, और
जब हारून ने अपनी लाठी को फिरौन और
उसके कर्मचारियों के साम्हने डाल दिया,
तब वह अजगर बन गया। ११ तब
फिरौन ने पण्डितों और टोनहा करनेवालों
को बुलवाया, और मिस्र के जादूगरों ने
आकर अपने अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही
किया। १२ उन्हों ने भी अपनी अपनी
लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर
बन गए। पर हारून की लाठी उनकी
लाठियों को निगल गई। १३ परन्तु फिरौन
का मन और हठीला हो गया, और यहोवा
के वचन के अनुसार उस ने मूसा और हारून
की बातों को नही माना ॥

(मिस्रियों पर दस भारी विपत्तियों के पड़ने
का वर्णन)

१४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, फिरौन
का मन कठोर हो गया है और वह इस
प्रजा को जाने नही देता। १५ इसलिये
बिहान को फिरौन के पास जा, वह तो
जल की ओर बाहर आएगा, और जो लाठी
सर्प बन गई थी, उसको हाथ मे लिए हुए
नील नदी * के तट पर उस से भेंट करने के
लिये खड़ा रहना। १६ और उस से इस
प्रकार कहना, कि इब्रियों के परमेश्वर
यहोवा ने मुझे यह कहने के लिये तेरे पास
भेजा है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे

* मूल में—योर।

कि जिस से वे जंगल में मेरी उपासना करें,
और अब तक तू ने मेरा कहना नहीं माना।
१७ यहोवा यों कहता है, इस से तू जान
लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं; देख, मैं अपने
हाथ की लाठी को नील नदी * के जल पर
मारूंगा, और जल लोहू बन जाएगा,
१८ और जो मछलियां नील नदी * में हैं
वे मर जाएंगी, और नील नदी * बसाने
लगेगी, और नदी का पानी पीने के लिये
मिस्रियों का जी न चाहेगा। १९ फिर
यहोवा ने मूसा से कहा, हारून से कह, कि
अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना
जल है, अर्थात् उसकी नदियां, नहरें, झीलें,
और पोखरे, सब के ऊपर अपना हाथ बढ़ा
कि उनका जल लोहू बन जाए, और सारे
मिस्र देश में काठ और पत्थर दोनों भांति
के जलपात्रों में लोहू ही लोहू हो जाएगा।
२० तब मूसा और हारून ने यहोवा की
आज्ञा ही के अनुसार किया, अर्थात् उस ने
लाठी को उठाकर फिरौन और उसके कर्म-
चारियों के देखते नील नदी * के जल पर
मारा, और नदी का सब जल लोहू बन गया।
२१ और नील नदी * में जो मछलियां थीं
वे मर गईं, और नदी * से दुर्गन्ध आने
लगी, और मिस्री लोग नदी का पानी न पी
सके, और सारे मिस्र देश में लोहू हो गया।
२२ तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने
तंत्र-मंत्रों से वैसा ही किया, तौभी फिरौन
का मन हठीला हो गया, और यहोवा के
कहने के अनुसार उस ने मूसा और हारून
की न मानी। २३ फिरौन ने इस पर भी
ध्यान नहीं दिया, और मुंह फेर के अपने घर
में चला गया। २४ और सब मिस्री लोग
पीने के जल के लिये नील नदी * के आस

* मूल में—योर।

पास खोदने लगे, क्योंकि वे नदी * का जल
नहीं पी सकते थे। २५ और जब यहोवा ने
नील नदी * को मारा था तब से सात दिन
हो चुके थे॥

८ और तब यहोवा ने फिर मूसा
से कहा, फिरौन के पास जाकर
कह, यहोवा तुझ से इस प्रकार कहता है, कि
मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे जिस से वे
मेरी उपासना करें। २ और यदि उन्हें जाने
न देगा तो सुन, मैं मेंढक भेजकर तेरे सारे
देश को हानि पहुंचानेवाला हूं। ३ और
नील नदी मेंढकों से भर जाएगी, और वे तेरे
भवन में, और तेरे बिछौने पर, और तेरे
कर्मचारियों के घरों में, और तेरी प्रजा पर,
वरन तेरे तन्दूरों और कठौतियों में भी चढ़
जाएंगे। ४ और तुझ पर, और तेरी प्रजा,
और तेरे कर्मचारियों, सभों पर मेंढक चढ़
जाएंगे। ५ फिर यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी, कि हारून से कह दे, कि नदियों,
नहरों, और झीलों के ऊपर लाठी के साथ
अपना हाथ बढ़ाकर मेंढकों को मिस्र
देश पर चढ़ा ले आए। ६ तब हारून ने
मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ
बढ़ाया, और मेंढकों ने मिस्र देश पर चढ़कर
उसे छा लिया। ७ और जादूगर भी अपने
तंत्र-मंत्रों से उसी प्रकार मिस्र देश पर मेंढक
चढ़ा ले आए। ८ तब फिरौन ने मूसा और
हारून को बुलवाकर कहा, यहोवा से बिनती
करो कि वह मेंढकों को मुझ से और मेरी
प्रजा से दूर करे, और मैं इस्राएली लोगों को
जाने दूंगा जिस से वे यहोवा के लिये
बलिदान करें। ९ तब मूसा ने फिरौन से
कहा, इतनी बात पर तो मुझ पर तेरा घमंड
रहे, अब मैं तेरे, और तेरे कर्मचारियों, और

* मूल में—योर।

प्रजा के निमित्त तब बिनती करूं, कि यहोवा
तेरे पास से और तेरे घरों में से मेंढकों को
दूर करे, और वे केवल नील नदी * में पाए
जाएं? १० उस ने कहा, कल। उस ने कहा,
तेरे वचन के अनुसार होगा, जिस से तुझे यह
ज्ञात हो जाए कि हमारे परमेश्वर यहोवा
के तुल्य कोई दूसरा नहीं है। ११ और
मेंढक तेरे पास से, और तेरे घरों में से,
और तेरे कर्मचारियों और प्रजा के पास से
दूर होकर केवल नदी में रहेंगे। १२ तब
मूसा और हारून फिरौन के पास से निकल
गए, और मूसा ने उन मेंढकों के विषय
यहोवा की दोहाई दी जो उस ने फिरौन
पर भेजे थे। १३ और यहोवा ने मूसा के
कहने के अनुसार किया, और मेंढक घरों,
आंगनों और खेतों में मर गए। १४ और
लोगों ने इकट्ठे करके उनके ढेर लगा दिए,
और सारा देश दुर्गन्ध से भर गया।
१५ परन्तु जब फिरौन ने देखा कि अब
आराम मिला है तब यहोवा के कहने के
अनुसार उस ने फिर अपने मन को कठोर
किया, और उनकी न सुनी॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, हारून
को आज्ञा दे, कि तू अपनी लाठी बढ़ाकर
भूमि की धूल पर मार, जिस से वह मिस्र
देश भर में कुटकियां बन जाए। १७ और
उन्हों ने वैसा ही किया, अर्थात् हारून ने
लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल
पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनों पर
कुटकियां हो गईं वरन सारे मिस्र देश में
भूमि की धूल कुटकियां बन गईं। १८ तब
जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के
बल से हम भी कुटकियां ले आएं, परन्तु यह
उन से न हो सका। और मनुष्यों और पशुओं
दोनों पर कुटकियां बनी ही रहीं। १९ तब
जादूगरों ने फिरौन से कहा, यह तो परमेश्वर
के हाथ का काम है।* तौभी यहोवा के कहने
के अनुसार फिरौन का मन कठोर होता
गया, और उस ने मूसा और हारून की बात
न मानी॥

२० फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
बिहान को तड़के उठकर फिरौन के साम्हने
खड़ा होना, वह तो जल की ओर आएगा,
और उस से कहना, कि यहोवा तुझ से यह
कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने
दे, कि वे मेरी उपासना करें। २१ यदि तू
मेरी प्रजा को न जाने देगा तो सुन, मैं तुझ
पर, और तेरे कर्मचारियों और तेरी प्रजा
पर, और तेरे घरों में झुंड के झुंड डांस
भेजूंगा, और मिस्रियों के घर और उनके
रहने की भूमि भी डांसों से भर जाएगी।
२२ उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में
मेरी प्रजा रहती है अलग करूंगा, और उस
में डांसों के झुंड न होंगे, जिस से तू जान
ले कि पृथ्वी के बीच में ही यहोवा हूं।
२३ और मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में
अन्तर ठहराऊंगा। यह चिन्ह कल होगा।
२४ और यहोवा ने वैसा ही किया, और
फिरौन के भवन, और उसके कर्मचारियों
के घरों में, और सारे मिस्र देश में डांसों के
झुंड के झुंड भर गए, और डांसों के मारे
वह देश नाश हुआ। २५ तब फिरौन ने
मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, तुम
जाकर अपने परमेश्वर के लिये इसी देश में
बलिदान करो। २६ मूसा ने कहा, ऐसा
करना उचित नहीं, क्योंकि हम अपने
परमेश्वर यहोवा के लिये मिस्रियों की
घृणित वस्तु बलिदान करेंगे, और यदि हम

* मूल में—योर।

* मूल में—यह परमेश्वर की अंगुली है।

मिस्रियो के देखते उनकी घृणित वस्तु
बलिदान करें तो क्या वे हम को पत्थरवाह
न करेगे? २७ हम जगल मे तीन दिन
के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा
के लिये जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही
बलिदान करेगे। २८ फिरौन ने कहा,
मैं तुम को जगल मे जाने दूगा कि तुम अपने
परमेश्वर यहोवा के लिये जगल मे बलिदान
करो, केवल बहुत दूर न जाना, और मेरे
लिये बिनती करो। २९ तब मूसा ने
कहा, सुन, मै तेरे पास से बाहर जाकर
यहोवा से बिनती करूगा कि डासो के झुड
तेरे, और तेरे कर्मचारियो, और प्रजा के
पास से कल ही दूर हो, पर फिरौन आगे को
कपट करके हमे यहोवा के लिये बलिदान
करने को जाने देने के लिये नाही न करे।
३० सो मूसा ने फिरौन के पास से बाहर
जाकर यहोवा से बिनती की। ३१ और
यहोवा ने मूसा के कहे के अनुसार डासो के
झुण्डो को फिरौन, और उसके कर्मचारियो,
और उसकी प्रजा से दूर किया, यहा तक
कि एक भी न रहा। ३२ तब फिरौन ने
इस बार भी अपने मन को सुन्न किया, और
उन लोगो को जाने न दिया॥

९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
फिरौन के पास जाकर कह, कि इब्रियो
का परमेश्वर यहोवा तुझ से इस प्रकार
कहता है, कि मेरी प्रजा के लोगो को जाने
दे, कि मेरी उपासना करें। २ और यदि
तू उन्हें जाने न दे और अब भी पकडे रहे,
३ तो सुन, तेरे जो घोडे, गदहे, ऊँट, गाय-
बैल, भेड-बकरी आदि पशु मैदान मे है, उन
पर यहोवा का हाथ ऐसा पडेगा कि बहुत
भारी मरी होगी। ४ और यहोवा इस्राए-
लियों के पशुओ में और मिस्रियो के पशुओ
में ऐसा अन्तर करेगा, कि जो इस्राएलियो
के है उन में से कोई भी न मरेगा। ५ फिर
यहोवा ने यह कहकर एक समय ठहराया,
कि मैं यह काम इस देश में कल करूगा।
६ दूसरे दिन यहोवा ने ऐसा ही किया,
और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु
इस्राएलियो का एक भी पशु न मरा।
७ और फिरौन ने लोगो को भेजा, पर
इस्राएलियो के पशुओ में से एक भी नही
मरा था। तौभी फिरौन का मन सुन्न हो
गया, और उस ने उन लोगो को जाने
न दिया॥

८ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, कि तुम दोनो भट्ठी मे से एक एक
मुट्ठी राख ले लो, और मूसा उसे फिरौन के
साम्हने आकाश की ओर उडा दे। ९ तब
वह सूक्ष्म धूल होकर सारे मिस्र देश में
मनुष्यो और पशुओ दोनो पर फफोले और
फोडे बन जाएगी। १० सो वे भट्ठी मे की
राख लेकर फिरौन के साम्हने खडे हुए, और
मूसा ने उसे आकाश की ओर उडा दिया,
और वह मनुष्यो और पशुओ दोनो पर
फफोले और फोडे बन गई। ११ और
उन फोडो के कारण जादूगर मूसा के
साम्हने खडे न रह सके, क्योकि वे फोड़े
जैसे सब मिस्रियो के वैसे ही जादूगरो के
भी निकले थे। १२ तब यहोवा ने फिरौन
के मन को कठोर कर दिया, और जैसा
यहोवा ने मूसा से कहा था, उस ने उसकी
न सुनी॥

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
बिहान को तडके उठकर फिरौन के साम्हने
खडा हो, और उस से कह इब्रियो का
परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि
मेरी प्रजा के लोगो को जाने दे, कि वे मेरी
उपासना करें। १४ नही तो अब की बार

में तुझ पर, * और तेरे कमचारियो और
तेरी प्रजा पर सब प्रकार की विपत्तिया
डालूगा, जिससे तू जान ले कि सारी पृथ्वी
पर मेरे तुल्य कोई दूसरा नही है। १५ मैं ने
तो अभी हाथ बढ़ाकर तुझे और तेरी
प्रजा को मरी से मारा होता, और तू पृथ्वी
पर से सत्यानाश हो गया होता, १६ परन्तु
सचमुच मैं ने इसी कारण तुझे बनाए रखा
है, कि तुझे अपना सामर्थ्य दिखाऊ, और
अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करू।
१७ क्या तू अब भी मेरी प्रजा के साम्हने
अपने आप को बडा समझता है, और उन्हें
जाने नही देता? १८ सुन, कल मैं इसी
समय ऐसे भारी भारी ओले बरसाऊगा, कि
जिन के तुल्य मिस्र की नेव पडने के दिन से
लेकर अब तक कभी नही पडे। १९ सो
अब लोगो को भेजकर अपने पशुओ को
और मैदान में जो कुछ तेरा है सब को
फुर्ती से आड मे छिपा ले, नही तो जितने
मनुष्य वा पशु मैदान में रहे और घर में
इकट्ठे न किए जाए उन पर ओले गिरेंगे,
और वे मर जाएगे। २० इसलिये फिरौन
के कर्मचारियो मे से जो लोग यहोवा के
वचन का भय मानते थे उन्हो ने तो अपने
अपने सेवको और पशुओ को घर मे हाँक
दिया। २१ पर जिन्हो ने यहोवा के वचन
पर मन न लगाया उन्हो ने अपने सेवको
और पशुओ को मैदान मे रहने दिया॥
२२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, अपना
हाथ आकाश की ओर बढा, कि सारे मिस्र
देश के मनुष्यो पशुओ और खेतो की सारी
उपज पर ओले गिरे। २३ तब मूसा ने
अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया,
और यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने
लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही।
इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले
बरसाए। २४ जो ओले गिरते थे उनके
साथ आग भी मिली हुई थी, और वे ओले
इतने भारी थे कि जब से मिस्र देश बसा था
तब से मिस्र भर मे ऐसे ओले कभी न गिरे
थे। २५ इसलिये मिस्र भर के खेतो में
क्या मनुष्य, क्या पशु, जितने थे सब ओलो
से मारे गए, और ओलो से खेत की सारी
उपज नष्ट हो गई, और मैदान के सब वृक्ष
भी टूट गए। २६ केवल गोशेन देश मे
जहा इस्राएली बसते थे ओले नही गिरे।
२७ तब फिरौन ने मूसा और हारून को
बुलवा भेजा और उन से कहा, कि इस बार
मैं ने पाप किया है, यहोवा धर्मी है, और
मैं और मेरी प्रजा अधर्मी है। २८ मेघो
का गरजना और ओलो का बरसना तो
बहुत हो गया, अब भविष्य मे यहोवा से
विनती करो, तब मैं तुम लोगो को जाने
दूगा, और तुम न रोके जाओगे। २९ मूसा
ने उस से कहा, नगर से निकलते ही मैं
यहोवा की ओर हाथ फैलाऊगा, तब बादल
का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले
फिर न गिरेगे, इस से तू जान लेगा कि
पृथ्वी यहोवा ही की है। ३० तौभी
मैं जानता हू, कि न तो तू और न तेरे
कर्मचारी यहोवा परमेश्वर का भय मानेगे।
३१ सन और जव तो ओलो से मारे गए,
क्योकि जव की बाले निकल चुकी थी
और सन मे फूल लगे हुए थे। ३२ पर
गेहू और कठिया गेहू जो बढे न थे, इस
कारण वे मारे न गए। ३३ जब मूसा ने
फिरौन के पास से नगर के बाहर निकलकर
यहोवा की ओर हाथ फैलाए, तब बादल का
गरजना और ओलो का बरसना बन्द हुआ,
और फिर बहुत मेंह भूमि पर न पडा।

* मूल में—तेरे हृदय पर।

३४ यह देखकर कि मेंह और ओलो और
बादल का गरजना बन्द हो गया फिरौन
ने अपने कर्मचारियो समेत फिर अपने मन
को कठोर करके पाप किया। ३५ और
फिरौन का मन हठीला होता गया, और
उस ने इस्राएलियो को जाने न दिया, जैसा
कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया
था।।

१० फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
फिरौन के पास जा, क्योकि मैं ही
ने उसके और उसके कर्मचारियो के मन
को इसलिये कठोर कर दिया है, कि अपने
चिन्ह उनके बीच में दिखलाऊ। २ और
तुम लोग अपने बेटो और पोतो से इसका
वर्णन करो कि यहोवा ने मिस्रियो को
कैसे ठट्ठो मे उडाया और अपने क्या क्या
चिन्ह उनके बीच प्रगट किए है; जिस से
तुम यह जान लोगे कि मैं यहोवा हू।
३ तब मूसा और हारून न फिरौन के पास
जाकर कहा, कि इब्रियो का परमेश्वर यहोवा
तुझ से इस प्रकार कहता है, कि तू कब तक
मेरे साम्हने दीन होने से सकोच करता
रहेगा? मेरी प्रजा के लोगो को जाने दे,
कि वे मेरी उपासना करे। ४ यदि तू मेरी
प्रजा को जाने न दे तो सुन, कल मैं तेरे
देश में टिड्डिया ले आऊगा। ५ और वे
धरती को ऐसा छा लेगी, कि वह देख न
पडेगी, और तुम्हारा जो कुछ ओलो से
बच रहा है उसको वे चट कर जाएगी,
और तुम्हारे जितने वृक्ष मैदान मे लगे है
उनको भी वे चट कर जाएगी, ६ और
वे तेरे और तेरे सारे कर्मचारियो, निदान
सारे मिस्रियो के घरो में भर जाएगी,
इतनी टिड्डिया तेरे बापदादो ने वा उनके
आज तक कभी न देखी। और वह मुह
फेरकर फिरौन के पास से बाहर गया।
७ तब फिरौन के कर्मचारी उस से कहने
लगे, वह जन कब तक हमारे लिये फन्दा
बना रहेगा? उन मनुष्यो को जाने दे, कि वे
अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करे;
क्या तू अब तक नही जानता, कि सारा
मिस्र नाश हो गया है? ८ तब मूसा और
हारून फिरौन के पास फिर बुलवाए गए,
और उस ने उन से कहा, चले जाओ,
अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो,
परन्तु वे जो जानेवाले है, कौन कौन है?
९ मूसा ने कहा, हम तो बेटो बेटियो,
भेड-बकरियो, गाय-बैलो समेत वरन बच्चो
से बूढो तक सब के सब जाएगे, क्योकि हमें
यहोवा के लिये पर्ब्ब करना है। १० उस
ने इस प्रकार उन से कहा, यहोवा तुम्हारे
सग रहे जब कि मैं तुम्हे बच्चो समेत जाने
देता हू, देखो, तुम्हारे आगे को बुराई है।
११ नही, ऐसा नही होने पाएगा, तुम
पुरुष ही जाकर यहोवा की उपासना करो,
तुम यही तो चाहते थे। और वे फिरौन के
सम्मुख से निकाल दिए गए।।

१२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, मिस्र
देश के ऊपर अपना हाथ बढा, कि टिड्डिया
मिस्र देश पर चढके भूमि का जितना अन्न
आदि ओलो से बचा है सब को चट कर
जाए। १३ और मूसा ने अपनी लाठी
को मिस्र देश के ऊपर बढाया, तब यहोवा ने
दिन भर और रात भर देश पर पुरवाई
बहाई, और जब भोर हुआ तब उस पुरवाई
में टिड्डिया आईं। १४ और टिड्डियो ने
चढके मिस्र देश के सारे स्थानो में बसेरा
किया, उनका दल बहुत भारी था, वरन
न तो उनसे पहिले ऐसी टिड्डिया आई थी,
और न उनके पीछे ऐसी फिर आएगी।

१५ वे तो सारी धरती पर छा गई, यहा
तक कि देश अन्धेरा हो गया, और उसका
सारा अन्न आदि और वृक्षो के सब फल,
निदान जो कुछ ओलो से बचा था, सब को
उन्हो ने चट कर लिया, यहा तक कि
मिस्र देश भर में न तो किसी वृक्ष पर कुछ
हरियाली रह गई और न खेत में अनाज
रह गया। १६ तब फिरौन ने फुर्ती से
मूसा और हारून को बुलवाके कहा, मैं ने
तो तुम्हारे परमेदवर यहोवा का और
तुम्हारा भी अपराध किया है। १७ इस-
लिये अब की बार मेरा अपराध क्षमा करो,
और अपने परमेश्वर यहोवा से बिनती करो,
कि वह केवल मेरे ऊपर से इस मृत्यु को दूर
करे। १८ तब मूसा ने फिरौन के पास से
निकल कर यहोवा से बिनती की। १९ तब
यहोवा ने बहुत प्रचण्ड पछुवा बहाकर
टिड्डियो को उडाकर लाल समुन्द्र में डाल
दिया, और मिस्र के किसी स्थान में एक
भी टिड्डी न रह गई। २० तौभी यहोवा ने
फिरौन के मन को कठोर कर दिया, जिस
से उस ने इस्राएलियो को जाने न दिया॥

२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना
हाथ आकाश की ओर बढा कि मिस्र देश के
ऊपर अन्धकार छा जाए, ऐसा अन्धकार कि
टटोला जा सके। २२ तब मूसा ने अपना
हाथ आकाश की ओर बढाया, और सारे
मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अन्धकार
छाया रहा। २३ तीन दिन तक न तो
किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने
स्थान से उठा, परन्तु सारे इस्राएलियो के
घरो में उजियाला रहा। २४ तब फिरौन
ने मूसा को बुलवाकर कहा, तुम लोग
जाओ, यहोवा की उपासना करो, अपने
बालको को भी सग ले जाओ, केवल अपनी
भेड-बकरी और गाय-बैल को छोड जाओ।
२५ मूसा ने कहा, तुझ को हमारे हाथ
मेलबलि और होमबलि के पशु भी देने
पडेंगे, जिन्हें हम अपने परमेश्वर यहोवा के
लिये चढाए। २६ इसलिये हमारे पशु
भी हमारे सग जाएगे, उनका एक खुर
तक न रह जाएगा, क्योंकि उन्ही में से
हम को अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना
का सामान लेना होगा, और हम जब तक
वहा न पहुचें तब तक नही जानते कि क्या
क्या लेकर यहोवा की उपासना करनी
होगी। २७ पर यहोवा ने फिरौन का
मन हठीला कर दिया, जिस से उस ने उन्हें
जाने न दिया। २८ तब फिरौन ने उस से
कहा, मेरे साम्हने से चला जा, और सचेत
रह, मुझे अपना मुख फिर न दिखाना,
क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुह दिखलाए
उसी दिन तू मारा जाएगा। २९ मूसा ने
कहा, कि तू ने ठीक कहा है, मैं तेरे मुह को
फिर कभी न देखूगा॥

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
एक और विपत्ति मैं फिरौन और
मिस्र देश पर डालता हू, उसके पश्चात् वह
तुम लोगो को वहा से जाने देगा, और
जब वह जाने देगा तब तुम सभो को निश्चय
निकाल देगा। २ मेरी प्रजा को मेरी
यह आज्ञा सुना, कि एक एक पुरुष अपने
अपने पडोसी, और एक एक स्त्री अपनी
अपनी पडोसिन से सोने चादी के गहने
माग ले। ३ तब यहोवा ने मिस्रियो
को अपनी प्रजा पर दयालु किया। और
इससे अधिक वह पुरुष मूसा मिस्र देश में
फिरौन के कर्मचारियो और साधारण
लोगो की दृष्टि में अति महान् था॥

४ फिर मूसा ने कहा, यहोवा इस
प्रकार कहता है, कि आधी रात के लगभग

मै मिस्र देश के बीच मे होकर चलूगा।
५ तब मिस्र मे सिहासन पर विराजने
वाले फिरौन से लेकर चक्की पीसनेवाली
दासी तक के पहिलौठे, वरन पशुओ तक के
सब पहिलौठे मर जाएगे। ६ और सारे
मिस्र देश मे बडा हाहाकार मचेगा, यहा
तक कि उसके समान न तो कभी हुआ
और न होगा। ७ पर इस्राएलियो के
विरुद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर
कोई कुत्ता भी न भोकेगा, जिस से तुम
जान लो कि मिस्रियो और इस्राएलियो मे
मै यहोवा अन्तर करता हू। ८ तब तेरे ये
सब कर्मचारी मेरे पास आ मुझे दण्डवत्
करके यह कहेगे, कि अपने सब अनुचरो
समेत निकल जा। और उसके पश्चात् मै
निकल जाऊगा। यह कह कर मूसा बडे
क्रोध मे फिरौन के पास से निकल गया॥
९ यहोवा ने मूसा से कह दिया था, कि
फिरौन तुम्हारी न सुनेगा, क्योकि मेरी
इच्छा है कि मिस्र देश मे बहुत से चमत्कार
करू। १० मूसा और हारून ने फिरौन के
साम्हने ये सब चमत्कार किए, पर यहोवा
ने फिरौन का मन और कठोर कर दिया,
सो उसने इस्राएलियो को अपने देश से
जाने न दिया॥

(फसह नाम पर्ब्ब का विधान और इस्राएलियों का कूच करना)

१२ फिर यहोवा ने मिस्र देश मे
मूसा और हारून से कहा, २ कि
यह महीना तुम लोगो के लिये आरम्भ का
ठहरे, अर्थात् वर्ष का पहिला महीना यही
ठहरे। ३ इस्राएल की सारी मण्डली
मे इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के
दसवे दिन को तुम अपने अपने पितरो के
घरानो के अनुसार, घराने पीछे एक एक
मेम्ना ले रखो। ४ और यदि किसी के
घराने मे एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य
कम हो, तो वह अपने सब से निकट रहने-
वाले पडोसी के साथ प्राणियो की गिनती
के अनुसार एक मेम्ना ले रखे, और तुम
हर एक के खाने के अनुसार मेम्ने का हिसाब
करना। ५ तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और
पहिले वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेडो
मे से लेना चाहे बकरियो मे से। ६ और
इस महीने के चौदहवे दिन तक उसे रख
छोडना, और उस दिन गोधूलि के समय
इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे
बलि करे। ७ तब वे उसके लोहू मे से
कुछ लेकर जिन घरो मे मेम्ने को खाएगे
उनके द्वार के दोनो अलगो और चौखट के
सिरे पर लगाए। ८ और वे उसके मास
को उसी रात आग मे भूजकर अखमीरी
रोटी और कडवे सागपात के साथ खाए।
९ उसको सिर, पैर, और अतडियो
समेत आग मे भूजकर खाना, कच्चा वा
जल मे कुछ भी पकाकर न खाना।
१० और उस मे से कुछ बिहान तक न
रहने देना, और यदि कुछ बिहान तक रह
भी जाए, तो उसे आग मे जला देना।
११ और उसके खाने की यह विधि है,
कि कमर बान्धे, पाव मे जूती पहिने, और
हाथ मे लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना,
वह तो यहोवा का पर्ब्ब* होगा।
१२ क्योकि उस रात को मै मिस्र देश के
बीच मे होकर जाऊगा, और मिस्र देश के
क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठो को
मारूगा, और मिस्र के सारे देवताओ को भी
मै दण्ड दूगा, मै तो यहोवा हू। १३ और
जिन घरो मे तुम रहोगे उन पर वह

* अर्थात् लाघनपर्ब्ब ।

लोहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा,
अर्थात् मैं उस लोहू को देखकर तुम को
छोड * जाऊगा, और जब मैं मिस्र देश के
लोगो को मारूगा, तब वह विपत्ति तुम पर
न पडेगी और तुम नाश न होगे। १४ और
वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला
ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये
पर्व्व करके मानना, वह दिन तुम्हारी
पीढियो में सदा की विधि जानकर पर्व्व
माना जाए। १५ सात दिन तक अखमीरी
रोटी खाया करना, उन में से पहिले ही
दिन अपने अपने घर में से खमीर उठा
डालना, वरन जो कोई पहिले दिन से लेकर
सातवें दिन तक कोई खमीरी वस्तु खाए,
वह प्राणी इस्राएलियो में से नाश किया
जाए। १६ और पहिले दिन एक पवित्र
सभा, और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा
करना, उन दोनो दिनो में कोई काम न
किया जाए, केवल जिस प्राणी का जो
खाना हो उसके काम करने की आज्ञा है।
१७ इसलिये तुम विना खमीर की रोटी का
पर्व्व मानना, क्योंकि उसी दिन † मानो मै
ने तुम को दल दल करके मिस्र देश से
निकाला है, इस कारण वह दिन तुम्हारी
पीढियो में सदा की विधि जानकर माना
जाए। १८ पहीले महीने के चौदहवें दिन
की साझ से लेकर इक्कीसवे दिन की साझ
तक तुम अखमीरी रोटी खाया करना।
१९ सात दिन तक तुम्हारे घरो में कुछ
भी खमीर न रहे, वरन जो कोई किसी
खमीरी वस्तु को खाए, चाहे वह देशी
हो चाहे परदेशी, वह प्राणी इस्रा-
एलियो की मण्डली से नाश किया जाए।
२० कोई खमीरी वस्तु न खाना, अपने
सब घरो में विना खमीर की रोटी खाया
करना॥

२१ तब मूसा ने इस्राएल के सब
पुरनियो को बुलाकर कहा, तुम अपने अपने
कुल के अनुसार एक एक मेम्ना अलग कर
रखो, और फसह का पशु बलि करना।
२२ और उसका लोहू जो तसले में होगा
उस मे जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी
तसले में के लोहू से द्वार * के चौखट के सिरे
और दोनो अलगो पर कुछ लगाना, और
भोर तक तुम में से कोई घर से बाहर न
निकले। २३ क्योंकि यहोवा देश के बीच
होकर मिस्रियो को मारता जाएगा, इसलिये
जहा जहा वह चौखट के सिरे, और दोनो
अलगो पर उस लोहू को देखेगा, वहा वहा
वह उस द्वार को छोड जाएगा, और नाश
करनेवाले को तुम्हारे घरो मे मारने के लिये
न जाने देगा। २४ फिर तुम इस विधि
को अपने और अपने वंश के लिये सदा की
विधि जानकर माना करो। २५ जब तुम
उस देश में जिसे यहोवा अपने कहने के
अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो, तब वह
काम किया करना। २६ और जब तुम्हारे
लडकेवाले तुम से पूछे, कि इस काम से
तुम्हारा क्या मतलब है? २७ तब तुम
उनको यह उत्तर देना, कि यहोवा ने जो
मिस्रियो के मारने के समय मिस्र में रहने-
वाले हम इस्राएलियो के घरो को छोडकर †
हमारे घरो को बचाया, इसी कारण उसके
फसह * का यह बलिदान किया जाता है।
तब लोगो ने सिर झुकाकर दण्डवत् की।
२८ और इस्राएलियो ने जाकर, जो आज्ञा
यहोवा ने मूसा और हारून को दी थी,
उसी के अनुसार किया॥

* मूल में—लाघके।
† मूल में—आज ही के दिन।

* अर्थात् लाघनपर्व्व।
† मूल में—लाघ।

२९ और ऐसा हुआ कि आधी रात को
यहोवा ने मिस्र देश में सिहासन पर
विराजनेवाले फिरौन से लेकर गडहे में पड़े
हुए बन्धुए तक सब के पहिलौठो को, वरन
पशुओ तक के सब पहिलौठो को मार डाला।
३० और फिरौन रात ही को उठ बैठा,
और उसके सब कर्मचारी, वरन सारे मिस्री
उठे; और मिस्र मे बडा हाहाकार मचा,
क्योकि एक भी ऐसा घर न था जिसमे कोई
मरा न हो। ३१ तब फिरौन ने रात ही
रात मे मूसा और हारून को बुलवाकर
कहा, तुम इस्राएलियो समेत मेरी प्रजा के
बीच से निकल जाओ, और अपने कहने के
अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो।
३२ अपने कहने के अनुसार अपनी भेड-
बकरियो और गाय-बैलो को साथ ले जाओ,
और मुझे आशीर्वाद दे जाओ। ३३ और
मिस्री जो कहते थे, कि हम तो सब मर मिटे
है, उन्हो ने इस्राएली लोगो पर दबाव
डालकर कहा, कि देश से झटपट निकल
जाओ। ३४ तब उन्हो ने अपने गून्धे
गुन्धाए आटे को बिना खमीर दिए ही
कठौतियो समेत कपडो मे बान्धके अपने
अपने कन्धे पर डाल लिया। ३५ और
इस्राएलियो ने मूसा के कहने के अनुसार
मिस्रियो से सोने चादी के गहने और वस्त्र
माग लिये। ३६ और यहोवा ने मिस्रियो
को अपनी प्रजा के लोगो पर ऐसा दयालु
किया, कि उन्हो ने जो जो मागा वह सब
उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियो ने
मिस्रियो को लूट लिया॥

३७ तब इस्राएली रामसेस से कूच
करके सुक्कोत को चले, और बालबच्चो को
छोड़ वे कोई छ लाख पुरुष प्यादे थे।
३८ और उनके साथ मिली जुली हुई एक
भीड़ गई, और भेड-बकरी, गाय-बैल, बहुत
से पशु भी साथ गए। ३९ और जो गून्धा
आटा वे मिस्र से साथ ले गए उसकी उन्हो ने
बिना खमीर दिए रोटिया बनाई; क्योंकि
वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले गए, कि
उन्हें अवसर भी न मिला की मार्ग में खाने
के लिये कुछ पका सकें, इसी कारण वह गून्धा
हुआ आटा बिना खमीर का था। ४० मिस्र
मे बसे हुए इस्राएलियो को चार सौ तीस
वर्ष बीत गए थे। ४१ और उन चार सौ
तीस वर्षों के बीतने पर, ठीक उसी दिन,
यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल
गई। ४२ यहोवा इस्राएलियो को मिस्र
देश से निकाल लाया, इस कारण वह रात
उसके निमित्त मानने के अति योग्य है;
यह यहोवा की वही रात है जिसका पीढी
पीढी मे मानना इस्राएलियो के लिये अति
अवश्य है॥

४३ फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, पर्व्व * की विधि यह है; कि कोई
परदेशी उस मे से न खाए, ४४ पर जो
किसी का मोल लिया हुआ दास हो, और
तुम लोगो ने उसका खतना किया हो,
वह तो उस में से खा सकेगा। ४५ पर
परदेशी और मजदूर उस मे से न खाए।
४६ उसका खाना एक ही घर में हो;
अर्थात् तुम उसके मास मे से कुछ घर से
बाहर न ले जाना, और बलिपशु की कोई
हड्डी न तोडना। ४७ पर्व्व * का मानना
इस्राएल की सारी मण्डली का कर्त्तव्य
कर्म है। ४८ और यदि कोई परदेशी
तुम लोगो के सग रहकर यहोवा के लिये
पर्व्व * को मानना चाहे, तो वह अपने यहा
के सब पुरुषो का खतना कराए, तब वह
समीप आकर उसको माने, और वह देशी

* अर्थात् लाघनपर्व्व।

मनुष्य के तुल्य ठहरेगा। पर कोई खतना-
रहित पुरुष उस में से न खाने पाए।
४९ उसकी व्यवस्था देशी और तुम्हारे
बीच में रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक
ही हो। ५० यह आज्ञा जो यहोवा ने
मूसा और हारून को दी उसके अनुसार
सारे इस्राएलियों ने किया। ५१ और
ठीक उसी दिन यहोवा इस्राएलियों को मिस्र
देश से दल दल करके निकाल ले गया॥

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ कि क्या मनुष्य के क्या पशु के,
इस्राएलियों में जितने अपनी अपनी मा के
जेठे हों, उन्हें मेरे लिये पवित्र मानना, वह
तो मेरा ही है॥

३ फिर मूसा ने लोगों से कहा, इस
दिन को स्मरण रखो, जिस में तुम लोग
दासत्व के घर, अर्थात् मिस्र से निकल आए
हो, यहोवा तो तुम को वहां से अपने हाथ
के बल से निकाल लाया, इस में खमीरी
रोटी न खाई जाए। ४ आबीब के महीने
में आज के दिन तुम निकले हो। ५ इस-
लिये जब यहोवा तुम को कनानी, हित्ती,
एमोरी, हिव्वी, और यबूसी लोगों के देश में
पहुंचाएगा, जिसे देने की उस ने तुम्हारे
पुरखाओं से शपथ खाई थी, और जिस में
दूध और मधु की धारा बहती है, तब
तुम इसी महीने में पर्ब्ब करना। ६ सात
दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना,
और सातवें दिन * यहोवा के लिये पर्ब्ब
मानना। ७ इन सातों दिनों में अखमीरी
रोटी खाई जाए, वरन तुम्हारे देश भर में
न खमीरी रोटी, न खमीर तुम्हारे पास
देखने में आए। ८ और उस दिन तुम
अपने अपने पुत्रों को यह कहके समझा देना,
कि यह तो हम उसी काम के कारण करते
हैं, जो यहोवा ने हमारे मिस्र से निकल आने
के समय हमारे लिये किया था। ९ फिर
यह तुम्हारे लिये तुम्हारे हाथ में एक चिन्ह
होगा, और तुम्हारी आंखों के साम्हने स्मरण
करानेवाली वस्तु ठहरे, जिस से यहोवा की
व्यवस्था तुम्हारे मुंह पर रहे क्योंकि यहोवा
ने तुम्हें अपने बलवन्त हाथों से मिस्र से
निकाला है। १० इस कारण तुम इस विधि
को प्रति वर्ष नियत समय पर माना करना॥

११ फिर जब यहोवा उस शपथ के
अनुसार, जो उस ने तुम्हारे पुरखाओं से
और तुम से भी खाई है, तुम्हें कनानियों के
देश में पहुंचाकर उसको तुम्हें दे देगा,
१२ तब तुम में से जितने अपनी अपनी
मा के जेठे हों उनको, और तुम्हारे पशुओं
में जो ऐसे हों उनको भी यहोवा के लिये
अर्पण करना, सब नर बच्चे तो यहोवा
के हैं। १३ और गदही के हर एक पहिलौठे
की सन्ती मेम्ना देकर उसको छुड़ा लेना,
और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो तो
उसका गला तोड़ देना। पर अपने सब
पहिलौठे पुत्रों को बदला देकर छुड़ा लेना।
१४ और आगे के दिनों में जब तुम्हारे
पुत्र तुम से पूछें, कि यह क्या है? तो उन
से कहना, कि यहोवा हम लोगों को दासत्व
के घर से, अर्थात् मिस्र देश से अपने हाथों के
बल से निकाल लाया है। १५ उस समय
जब फिरौन ने कठोर होकर हम को जाने
देना न चाहा, तब यहोवा ने मिस्र देश में
मनुष्य से लेकर पशु तक सब के पहिलौठों
को मार डाला। इसी कारण पशुओं में से
तो जितने अपनी अपनी मा के पहिलौठे
नर हैं, उन्हें हम यहोवा के लिये बलि करते
हैं, पर अपने सब जेठे पुत्रों को हम बदला
देकर छुड़ा लेते हैं। १६ और यह तुम्हारे

* मूल में—उस दिन।

हाथो पर एक चिन्ह सा और तुम्हारी
भौहो के बीच टीका सा ठहरे, क्योकि
यहोवा हम लोगो को मिस्र से अपने हाथो
के बल से निकाल लाया है ॥

१७ जब फिरौन ने लोगो को जाने की
आज्ञा दे दी, तब यद्यपि पलिश्तियो के देश
मे होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था,
तौभी परमेश्वर यह सोच कर उनको उस
मार्ग से नही ले गया, कि कही ऐसा न हो
कि जब ये लोग लडाई देखे तब पछताकर
मिस्र को लौट आए। १८ इसलिये
परमेश्वर उनको चक्कर खिलाकर लाल
समुद्र के जगल के मार्ग से ले चला। और
इस्राएली पाति बान्धे हुए मिस्र से निकल
गए। १९ और मूसा यूसुफ की हड्डियो
को साथ लेता गया, क्योकि यूसुफ ने इस्रा-
एलियो से यह कहके, कि परमेश्वर निश्चय
तुम्हारी सुधि लेगा, उनको इस विषय
की दृढ शपथ खिलाई थी, कि वे उसकी
हड्डियो को अपने साथ यहा से ले जाएगे।
२० फिर उन्हो ने सुक्कोत से कूच करके
जगल की छोर पर एताम मे डेरा किया।
२१ और यहोवा उन्हे दिन को मार्ग
दिखाने के लिये मेघ के खम्भे मे, और रात
को उजियाला देने के लिये आग के खम्भे मे
होकर उनके आगे आगे चला करता था,
जिससे वे रात और दिन दोनो मे चल सके।
२२ उस ने न तो बादल के खम्भे को दिन
मे और न आग के खम्भे को रात मे लोगो के
आगे से हटाया ॥

(इस्राएल के लाल समुद्र के पार जाने का वर्णन)

१४ यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो को आज्ञा दे, कि वे
लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच,
पीहाहीरोत के सम्मुख, बालसपोन के साम्हने
अपने डेरे खडे करे, उसी के साम्हने समुद्र के
तट पर डेरे खडे करे। ३ तब फिरौन
इस्राएलियो के विषय मे सोचेगा, कि वे
देश के उलझनो मे फसे है और जगल मे
घिर गए है। ४ तब मै फिरौन के मन को
कठोर कर दूगा, और वह उनका पीछा
करेगा, तब फिरौन और उसकी सारी सेना
के द्वारा मेरी महिमा होगी, और मिस्री
जान लेगे कि मै यहोवा हू। और उन्हो ने
वैसा ही किया। ५ जब मिस्र के राजा को
यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गए,
तब फिरौन और उसके कर्मचारियो का
मन उनके विरुद्ध पलट गया, और वे कहने
लगे, हम ने यह क्या किया, कि इस्राएलियो
को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने
दिया ? ६ तब उस ने अपना रथ जुतवाया
और अपनी सेना को सग लिया। ७ उस ने
छ सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन मिस्र के
सब रथ लिए और उन सभो पर सरदार
बैठाए। ८ और यहोवा ने मिस्र के राजा
फिरौन के मन को कठोर कर दिया। सो
उस ने इस्राएलियो का पीछा किया,
परन्तु इस्राएली तो बेखटके * निकले चले
जाते थे। ९ पर फिरौन के सब घोडो,
और रथो, और सवारो समेत मिस्री सेना ने
उनका पीछा करके उन्हे, जो पीहाहीरोत के
पास, बालसपोन के साम्हने, समुद्र के तीर
पर डेरे डाले पडे थे, जा लिया ॥

१० जब फिरौन निकट आया, तब
इस्राएलियो ने आखे उठाकर क्या देखा, कि
मिस्री हमारा पीछा किए चले आ रहे है,
और इस्राएली अत्यन्त डर गए, और
चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी। ११ और

* मूल में—ऊंचे हाथ के साथ।

वे मूसा से कहने लगे, क्या मिस्र में कबरें न
थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये
जंगल में ले आया है ? तू ने हम से यह क्या
किया, कि हम को मिस्र से निकाल लाया ?
१२ क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात
न कहते रहे, कि हमें रहने दे कि हम
मिस्रियों की सेवा करें ? हमारे लिये जंगल
में मरने से मिस्रियों की सेवा करनी अच्छी
थी। १३ मूसा ने लोगों से कहा, डरो मत,
खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो
यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा, क्योंकि
जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो,
उनको फिर कभी न देखोगे। १४ यहोवा
आप ही तुम्हारे लिये लड़ेगा, इसलिये तुम
चुपचाप रहो॥

१५ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तू
क्यों मेरी दोहाई दे रहा है ? इस्राएलियों
को आज्ञा दे कि यहां से कूच करें। १६ और
तू अपनी लाठी उठाकर अपना हाथ समुद्र
के ऊपर बढ़ा, और वह दो भाग हो जाएगा,
तब इस्राएली समुद्र के बीच होकर स्थल ही
स्थल पर चले जाएंगे। १७ और सुन, मैं
आप मिस्रियों के मन को कठोर करता हूं,
और वे उनका पीछा करके समुद्र में घुस
पड़ेंगे, तब फिरौन और उसकी सारी सेना,
और रथों, और सवारों के द्वारा मेरी
महिमा होगी। १८ और जब फिरौन,
और उसके रथों, और सवारों के द्वारा मेरी
महिमा होगी, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं
यहोवा हूं। १९ तब परमेश्वर का दूत जो
इस्राएली सेना के आगे आगे चला करता
था जाकर उनके पीछे हो गया, और बादल
का खम्भा उनके आगे से हटकर उनके पीछे
जा ठहरा। २० इस प्रकार वह मिस्रियों
की सेना और इस्राएलियों की सेना के
बीच में आ गया, और बादल और अन्धकार
तो हुआ, तौभी उससे रात को उन्हें प्रकाश
मिलता रहा, और वे रात भर एक दूसरे के
पास न आए। २१ और मूसा ने अपना
हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और यहोवा ने
रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई, और
समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया,
जिससे कि उसके बीच सूखी भूमि हो गई।
२२ तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही
स्थल पर होकर चले, और जल उनकी
दहिनी और बाइं ओर दीवार का काम
देता था। २३ तब मिस्री, अर्थात फिरौन
के सब घोड़े, रथ, और सवार उनका पीछा
किए हुए समुद्र के बीच में चले गए।
२४ और रात के पिछले पहर में यहोवा ने
बादल और आग के खम्भे में से मिस्रियों की
सेना पर दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया।
२५ और उस ने उनके रथों के पहियों को
निकाल डाला, जिससे उनका चलाना कठिन
हो गया, तब मिस्री आपस में कहने लगे,
आओ, हम इस्राएलियों के साम्हने से भागें,
क्योंकि यहोवा उनकी ओर से मिस्रियों के
विरुद्ध युद्ध कर रहा है॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना
हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियों,
और उनके रथों, और सवारों पर फिर
बहने लगे। २७ तब मूसा ने अपना हाथ
समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते
क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने
बल पर आ गया, और मिस्री उलटे भागने
लगे, परन्तु यहोवा ने उनको समुद्र के बीच
ही में झटक दिया। २८ और जल के
पलटने से, जितने रथ और सवार इस्राए-
लियों के पीछे समुद्र में आए थे, सो सब वरन
फिरौन की सारी सेना उस में डूब गई, और
उस में से एक भी न बचा। २९ परन्तु
इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर

होकर चले गए, और जल उनकी दहिनी
और बाई दोनो ओर दीवार का काम देता
था। ३० और यहोवा ने उस दिन इस्रा-
एलियो को मिस्रियो के वश मे उस प्रकार
छुड़ाया, और इस्राएलियो ने मिस्रियो
को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा।
३१ और यहोवा ने मिस्रियो पर जो अपना
पराक्रम दिखलाया था, उसको देखकर
इस्राएलियो ने यहोवा का भय माना और
यहोवा की और उसके दास मूसा की भी
प्रतीति की॥

१५ तब मूसा और इस्राएलियो ने
यहोवा के लिये यह गीत गाया।
उन्हो ने कहा,

मै यहोवा का गीत गाऊगा, क्योकि
वह महाप्रतापी ठहरा है;
घोडो समेत सवारो को उस ने
समुद्र मे डाल दिया है॥
२ यहोवा मेरा बल और भजन का
विषय है,
और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है,
मेरा ईश्वर वही है, मै उसी की
स्तुति करूगा, (मै उसके लिये
निवासस्थान बनाऊगा),
मेरे पूर्वजो का परमेश्वर वही है,
मै उसको सराहूगा॥
३ यहोवा योद्धा है,
उसका नाम यहोवा है॥
४ फिरौन के रथो और सेना को
उस ने समुद्र मे डाल दिया,
और उसके उत्तम से उत्तम रथी
लाल समुद्र मे डूब गए॥
५ गहिरे जल ने उन्हे ढाप लिया,
वे पत्थर की नाई गहिरे स्थानो मे
डूब गए॥
६ हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शक्ति
मे महाप्रतापी हुआ
हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शत्रु
को चकनाचूर कर देता है॥
७ और तू अपने विरोधियो को अपने
महाप्रताप से गिरा देता है,
तू अपना कोप भड़काता, और वे
भूसे की नाई भस्म हो जाते है॥
८ और तेरे नथनो की सांस से जल
एकत्र हो गया,
धाराए ढेर की नाई थम गई,
समुद्र के मध्य मे गहिरा जल जम
गया॥
९ शत्रु ने कहा था,
मै पीछा करूगा, मै जा पकडूगा,
मै लूट के माल को बांट लूगा,
उन से मेरा जी भर जाएगा।
मै अपनी तलवार खींचते ही अपने
हाथ से उनको नाश कर
डालूगा॥
१० तू ने अपने श्वास का पवन चलाया,
तब समुद्र ने उनको ढाप लिया,
वे महाजलराशि मे सीसे की नाई
डूब गए॥
११ हे यहोवा, देवताओ मे तेरे तुल्य
कौन है?
तू तो पवित्रता के कारण महा-
प्रतापी, और अपनी स्तुति करने
वालो के भय के योग्य,
और आश्चर्य कर्म का कर्त्ता है॥
१२ तू ने अपना दहिना हाथ बढाया,
और पृथ्वी ने उनको निगल
लिया है॥
१३ अपनी करूणा से तू ने अपनी
छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की
है,

अपने बल से तू उसे अपने पवित्र
निवासस्थान को ले चला है॥
१४ देश देश के लोग सुनकर कांप
उठेंगे, पलिश्तियों के प्राणों के
लाले पड़ जाएंगे॥
१५ एदोम के अधिपति व्याकुल होंगे,
मोआब के पहलवान थरथरा
उठेंगे, सब कनान निवासियों
के मन पिघल जाएंगे॥
१६ उन में डर और घबराहट समा
जाएगा,
तेरी बांह के प्रताप से वे पत्थर की
नाईं अबोल होंगे,
जब तक, हे यहोवा, तेरी प्रजा के
लोग निकल न जाएं,
जब तक तेरी प्रजा के लोग जिनको
तू ने मोल लिया है पार न निकल
जाएं॥
१७ तू उन्हें पहुंचाकर अपने निज भाग-
वाले पहाड़ पर बसाएगा, यह वही
स्थान है, हे यहोवा, जिसे तू ने
अपने निवास के लिये बनाया,
और वही पवित्रस्थान है जिसे, हे
प्रभु, तू ने आप ही स्थिर किया
है॥
१८ यहोवा सदा सर्वदा राज्य करता
रहेगा॥
१९ यह गीत गाने का कारण यह
है, कि फिरौन के घोड़े रथों और सवारों
समेत समुद्र के बीच में चले गए, और यहोवा
उनके ऊपर समुद्र का जल लौटा ले आया,
परन्तु इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही
स्थल पर होकर चले गए। २० और
हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने
हाथ में डफ लिया, और सब स्त्रियां डफ
लिए नाचती हुईं उसके पीछे हो लीं।
२१ और मरियम उनके साथ यह टेक
गाती गई कि —
यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महा-
प्रतापी ठहरा है,
घोड़ों समेत सवारों को उस ने समुद्र में
डाल दिया है॥
२२ तब मूसा इस्राएलियों को लाल
समुद्र से आगे ले गया, और वे शूर नाम जंगल
में आए, और जंगल में जाते हुए तीन दिन
तक पानी का सोता न मिला। २३ फिर
मारा नाम एक स्थान पर पहुंचे, वहां का
पानी खारा था, उसे वे न पी सके, इस
कारण उस स्थान का नाम मारा * पड़ा।
२४ तब वे यह कहकर मूसा के विरुद्ध
बकझक करने लगे, कि हम क्या पीएं?
२५ तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी,
और यहोवा ने उसे एक पौधा बतला दिया,
जिसे जब उस ने पानी में डाला, तब वह
पानी मीठा हो गया। वहीं यहोवा ने
उनके लिये एक विधि और नियम बनाया,
और वहीं उस ने यह कहकर उनकी
परीक्षा की, २६ कि यदि तू अपने परमेश्वर
यहोवा का वचन तन मन से सुने, और
जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे,
और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए,
और उसकी सब विधियों को माने, तो
जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है
उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा,
क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा
हूं॥

(इस्राएलियों को आकाश से रोटी और
चट्टान में से पानी मिलने का वर्णन)

२७ तब वे एलीम को आए, जहां पानी
के बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ थे,

* अर्थात् खारा वा कड़ुआ।

और वहा उन्हो ने जल के पास डेरे खडे
किए ॥

१६ फिर एलीम से कूच करके
इस्राएलियो की सारी मण्डली,
मिस्र देश से निकलने के महीने के दूसरे
महीने के पन्द्रहवे दिन को, सीन नाम जगल
मे, जो एलीम और सीनै पर्वत के बीच मे है,
आ पहुची। २ जगल मे इस्राएलियो की
सारी मण्डली मूसा और हारून के विरुद्ध
बकझक करने लगी। ३ और इस्राएली
उन से कहने लगे, कि जब हम मिस्र देश मे
मास की हाडियो के पास बैठकर मनमाना
भोजन खाते थे, तब यदि हम यहोवा के हाथ
से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था,
पर तुम हम को इस जगल मे इसलिये
निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को
भूखो मार डालो। ४ तब यहोवा ने मूसा
से कहा, देखो, मै तुम लोगो के लिये आकाश
से भोजन वस्तु बरसाऊगा, और ये लोग
प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन
इकट्ठा करेंगे, इस से मै उनकी परीक्षा
करूगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेगे कि
नही। ५ और ऐसा होगा कि छठवे दिन
वह भोजन और दिनो से दूना होगा, इसलिये
जो कुछ वे उस दिन बटोरे उसे तैयार कर
रखें। ६ तब मूसा और हारून ने सारे
इस्राएलियो से कहा, साझ को तुम जान
लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले
आया है वह यहोवा है। ७ और भोर को
तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा, क्योकि
तुम जो यहोवा पर बुडबुडाते हो उसे वह
सुनता है। और हम क्या है, कि तुम हम पर
बुडबुडाते हो? ८ फिर मूसा ने कहा, यह
तब होगा जब यहोवा साझ को तुम्हें खाने
के लिये मास और भोर को रोटी मनमाने
देगा, क्योकि तुम जो उस पर बुडबुडाते हो
उसे वह सुनता है। और हम क्या है?
तुम्हारा बुडबुडाना हम पर नही यहोवा ही
पर होता है। ९ फिर मूसा ने हारून से
कहा, इस्राएलियो की सारी मण्डली को
आज्ञा दे, कि यहोवा के साम्हने वरन उसके
समीप आवे, क्योकि उस ने उनका बुडबुडाना
सुना है। १० और ऐसा हुआ कि जब हारून
इस्राएलियो की सारी मण्डली से ऐसी ही
बाते कर रहा था, कि उन्हो ने जगल की ओर
दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का
तेज बादल मे दिखलाई दिया। ११ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, १२ इस्राएलियो
का बुडबुडाना मै ने सुना है, उन से कह
दे, कि गोधूलि के समय तुम मास खाओगे
और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे,
और तुम यह जान लोगे कि मै तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हू। १३ और ऐसा हुआ
कि साझ को बटेरे आकर सारी छावनी पर
बैठ गईं, और भोर को छावनी के चारो ओर
ओस पडी। १४ और जब ओस सूख* गई
तो वे क्या देखते है, कि जगल की भूमि पर
छोटे छोटे छिलके छोटाई मे पाले के किनको
के समान पडे है। १५ यह देखकर इस्रा-
एली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है,
सो आपस मे कहने लगे यह तो मन्ना† है।
तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजन-
वस्तु है जिसे यहोवा तुम्हे खाने के लिये देता
है। १६ जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह
यह है, कि तुम उस मे से अपने अपने खाने के
योग्य बटोरा करना, अर्थात् अपने अपने
प्राणियो की गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य
के पीछे एक एक ओमेर बटोरना; जिसके
डेरे मे जितने हो वह उन्ही भर के लिये

* मूल—में चढ।
† अर्थात् क्या, वा अंश।

बटोरा करे। १७ और इस्राएलियो ने
वैसा ही किया, और किसी ने अधिक, और
किसी ने थोडा बटोर लिया। १८ और
जब उन्हो ने उसको ओमेर मे नापा, तब
जिसके पास अधिक था उसके कुछ अधिक न
रह गया, और जिसके पास थोडा था उसको
कुछ घटी न हुई, क्योकि एक एक मनुष्य
ने अपने खाने के योग्य ही बटोर लिया था।
१९ फिर मूसा ने उन से कहा, कोई इस में
से कुछ बिहान तक न रख छोडे। २० तौभी
उन्हो ने मूसा की बात न मानी, इसलिये
जब किसी किसी मनुष्य ने उस में से कुछ
बिहान तक रख छोडा, तो उस में कीडे पड
गए और वह बसाने लगा, तब मूसा उन पर
क्रोधित हुआ। २१ और वे भोर को प्रति-
दिन अपने अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे,
और जब धूप कडी होती थी, तब वह गल
जाता था। २२ और ऐसा हुआ कि छठवें
दिन उन्हो ने दूना, अर्थात् प्रति मनुष्य के पीछे
दो दो ओमेर बटोर लिया, और मण्डली के
सब प्रधानो ने आकर मूसा को बता दिया।
२३ उस ने उन से कहा, यह तो वही बात
है जो यहोवा ने कही, क्योकि कल परम-
विश्राम, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र
विश्राम होगा, इसलिये तुम्हे जो तन्दूर मे
पकाना हो उसे पकाओ, और जो सिझाना
हो उसे सिझाओ, और इस में से जितना
बचे उसे बिहान के लिये रख छोडो।
२४ जब उन्हो ने उसको मूसा की इस
आज्ञा के अनुसार बिहान तक रख छोडा,
तब न तो वह बसाया, और न उस मे कीडे
पडे। २५ तब मूसा ने कहा, आज उसी
को खाओ, क्योकि आज यहोवा का विश्राम-
दिन है, इसलिये आज तुम को वह मैदान
में न मिलेगा। २६ छ दिन तो तुम उसे
बटोरा करोगे, परन्तु सातवा दिन तो
विश्राम का दिन है, उस मे वह न मिलेगा।
२७ तौभी लोगो मे से कोई कोई सातवे
दिन भी बटोरने के लिये बाहर गए, परन्तु
उनको कुछ न मिला। २८ तब यहोवा ने
मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओ और
व्यवस्था को कब तक नही मानोगे?
२९ देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्राम
का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवे
दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है,
इसलिये तुम अपने अपने यहा बैठे रहना,
सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न
जाना। ३० लोगो ने सातवे दिन विश्राम
किया। ३१ और इस्राएल के घरानेवालो
ने उस वस्तु का नाम मन्ना रखा, और वह
धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद
मधु के बने हुए पूए का सा था। ३२ फिर
मूसा ने कहा, यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह
है, कि इस मे से ओमेर भर अपने वंश की
पीढी पीढी के लिये रख छोडो, जिससे वे
जाने कि यहोवा हमको मिस्र देश से निकाल-
कर जगल में कैसी रोटी खिलाता था।
३३ तब मूसा ने हारून से कहा, एक पात्र
लेकर उस मे ओमेर भर लेकर उसे यहोवा
के आगे धर दे, कि वह तुम्हारी पीढियो के
लिये रखा रहे। ३४ जैसी आज्ञा यहोवा ने
मूसा को दी थी, उसी के अनुसार हारून ने
उसको साक्षी के सन्दूक के आगे धर दिया,
कि वह वही रखा रहे। ३५ इस्राएली जब
तक बसे हुए देश मे न पहुचे तब तक,
अर्थात् चालीस वर्ष तक मन्ना को खाते रहे,
वे जब तक कनान देश के सिवाने पर नही
पहुचे तब तक मन्ना को खाते रहे। ३६ एक
ओमेर तो एपा का दसवा भाग है।

१७ फिर इस्राएलियो की सारी
मण्डली सीन नाम जगल से निकल

चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके
रपीदीम मे अपने डेरे खडे किए, और वहा
उन लोगो को पीने का पानी न मिला।
२ इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके
कहने लगे, कि हमे पीने का पानी दे। मूसा ने
उन से कहा, तुम मुझ से क्यो वादविवाद
करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यो
करते हो? ३ फिर वहा लोगो को पानी
की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर
बुडबुडाने लगे, कि तू हमे लडकेवालो और
पशुओ समेत प्यासो मार डालने के लिये
मिस्र से क्यो ले आया है? ४ तब मूसा ने
यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगो
से मै क्या करू? ये सब मुझे पत्थरवाह
करने को तैयार है। ५ यहोवा ने मूसा से
कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगो मे से कुछ को
अपने साथ ले ले, और जिस लाठी से तू ने
नील नदी* पर मारा था, उसे अपने हाथ मे
लेकर लोगो के आगे बढ चल। ६ देख,
मै तेरे आगे चलकर होरेब पहाड की एक
चट्टान पर खडा रहूगा, और तू उस चट्टान
पर मारना, तब उस मे से पानी निकलेगा,
जिससे ये लोग पीए। तब मूसा ने इस्राएल
के वृद्ध लोगो के देखते वैसा ही किया।
७ और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा†
और मरीबा‡ रखा, क्योकि इस्राए-
लियो ने वहा वादविवाद किया था, और
यहोवा की परीक्षा यह कहकर की, कि क्या
यहोवा हमारे बीच है वा नही?

(अमालेकियों पर विजय)

८ तब अमालेकी आकर रपीदीम में
इस्राएलियो से लडने लगे। ९ तब मूसा ने
यहोशू से कहा, हमारे लिये कई एक पुरुषो
को चुनकर छाट ले, और बाहर जाकर
अमालेकियो से लड, और मै कल परमेश्वर
की लाठी हाथ मे लिये हुए पहाडी की चोटी
पर खडा रहूगा। १० मूसा की इस आज्ञा
के अनुसार यहोशू अमालेकियो से लडने
लगा, और मूसा, हारून, और हूर पहाड़ी
की चोटी पर चढ गए। ११ और जब तक
मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक
तो इस्राएल प्रबल होता था, परन्तु जब
जब वह उसे नीचे करता तब तब अमालेक
प्रबल होता था। १२ और जब मूसा के
हाथ भर गए, तब उन्हो ने एक पत्थर लेकर
मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर
बैठ गया, और हारून और हूर एक एक
अलग मे उसके हाथो को सम्भाले रहे, और
उसके हाथ सूर्यास्त तक स्थिर रहे।
१३ और यहोशू ने अनुचरो समेत अमाले-
कियो को तलवार के बल से हरा दिया।
१४ तब यहोवा ने मूसा से कहा, स्मरणार्थ
इस बात को पुस्तक मे लिख ले और यहोशू
को सुना दे, कि मै आकाश के नीचे से
अमालेक का स्मरण भी पूरी रीति से मिटा
डालूगा। १५ तब मूसा ने एक वेदी
बनाकर उसका नाम यहोवानिस्सी* रखा,
१६ और कहा, यहोवा ने शपथ खाई
है, कि यहोवा अमालेकियो से पीढियो तक
लडाई करता रहेगा॥

(मूसा की अपने ससुर से भेंट करने का वर्णन)

१८ और मूसा के ससुर मिद्यान के
याजक यित्रो ने यह सुना, कि
परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल
के लिये क्या क्या किया है, अर्थात् यह कि
किस रीति से यहोवा इस्राएलियो को मिस्र

* मूल में—योर।
† अर्थात् परीक्षा। ‡ अर्थात् झगडा।

* अर्थात् ईश्वर सहाय।

से निकाल ले आया। २ तब मूसा के ससुर
यित्रो मूसा की पत्नी सिप्पोरा को, जो
पहिले नैहर भेज दी गई थी, ३ और
उसके दोनों बेटों को भी ले आया, इन में से
एक का नाम मूसा ने यह कहकर गेर्शोम
रखा था, कि मैं अन्य देश में परदेशी हुआ हूं।
४ और दूसरे का नाम उस ने यह कहकर
एलीएजेर* रखा, कि मेरे पिता के परमेश्वर
ने मेरा सहायक होकर मुझे फिरौन की
तलवार से बचाया। ५ मूसा की पत्नी
और पुत्रों को उसका ससुर यित्रो संग लिए
मूसा के पास जंगल के उस स्थान में आया,
जहां परमेश्वर के पर्वत के पास उसका डेरा
पड़ा था। ६ और आकर उस ने मूसा के
पास यह कहला भेजा, कि मैं तेरा ससुर यित्रो
हूं, और दोनों बेटों समेत तेरी पत्नी को
तेरे पास ले आया हूं। ७ तब मूसा अपने
ससुर से भेंट करने के लिये निकला, और
उसको दण्डवत् करके चूमा, और वे परस्पर
कुशल क्षेम पूछते हुए डेरे पर आ गए।
८ वहां मूसा ने अपने ससुर से वर्णन किया,
कि यहोवा ने इस्राएलियों के निमित्त फिरौन
और मिस्रियों से क्या क्या किया, और
इस्राएलियों ने मार्ग में क्या क्या कष्ट
उठाया, फिर यहोवा उन्हें कैसे कैसे
छुड़ाता आया है। ९ तब यित्रो ने उस
समस्त भलाई के कारण जो यहोवा ने
इस्राएलियों के साथ की थी, कि उन्हें
मिस्रियों के वश से छुड़ाया था, मग्न होकर
कहा, १० धन्य है यहोवा, जिस ने तुम
को फिरौन और मिस्रियों के वश से छुड़ाया,
जिस ने तुम लोगों को मिस्रियों की मुट्ठी में
से छुड़ाया है। ११ अब मैं ने जान लिया
है कि यहोवा सब देवताओं से बड़ा है,
वरन उस विषय में भी जिस में उन्हों ने
इस्राएलियों से अभिमान किया था।
१२ तब मूसा के ससुर यित्रो ने परमेश्वर
के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए,
और हारून इस्राएलियों के सब पुरनियों
समेत मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर
के आगे भोजन करने को आया। १३ दूसरे
दिन मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा,
और भोर से सांझ तक लोग मूसा के आस-
पास खड़े रहे। १४ यह देखकर कि मूसा
लोगों के लिये क्या क्या करता है, उसके
ससुर ने कहा, यह क्या काम है जो तू लोगों
के लिये करता है? क्या कारण है कि तू
अकेला बैठा रहता है, और लोग भोर से
सांझ तक तेरे आसपास खड़े रहते हैं?
१५ मूसा ने अपने ससुर से कहा, इसका
कारण यह है कि लोग मेरे पास परमेश्वर
से पूछने आते हैं। १६ जब जब उनका
कोई मुकद्दमा होता है तब तब वे मेरे पास
आते हैं, और मैं उनके बीच न्याय करता,
और परमेश्वर की विधि और व्यवस्था उन्हें
जताता हूं। १७ मूसा के ससुर ने उस से
कहा, जो काम तू करता है वह अच्छा
नहीं। १८ और इस से तू क्या, वरन ये
लोग भी जो तेरे संग हैं निश्चय हार जाएंगे,
क्योंकि यह काम तेरे लिये बहुत भारी है,
तू इसे अकेला नहीं कर सकता। १९ इस-
लिये अब मेरी सुन ले, मैं तुझ को सम्मति
देता हूं, और परमेश्वर तेरे संग रहे। तू
तो इन लोगों के लिये परमेश्वर के सम्मुख
जाया कर, और इनके मुकद्दमों को परमेश्वर
के पास तू पहुंचा दिया कर। २० इन्हें
विधि और व्यवस्था प्रगट कर करके, जिस
मार्ग पर इन्हें चलना, और जो जो काम
इन्हें करना हो, वह इनको जता दिया कर।
२१ फिर तू इन सब लोगों में से ऐसे पुरुषों

* अर्थात् यहोवा मेरा झण्डा है।

को छाट ले, जो गुणी, और परमेश्वर का
भय मानने वाले, सच्चे, और अन्याय के लाभ
से घृणा करने वाले हो, और उनको हजार-
हजार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस
मनुष्यो पर प्रधान नियुक्त कर दे। २२ और
वे सब समय इन लोगो का न्याय किया करे,
और सब बडे बडे मुकद्दमो को तो तेरे पास
ले आया करे, और छोटे छोटे मुकद्दमो का
न्याय आप ही किया करे, तब तेरा बोझ
हलका होगा, क्योकि इस बोझ को वे भी
तेरे साथ उठाएगे। २३ यदि तू यह उपाय
करे, और परमेश्वर तुझ को ऐसी आज्ञा दे,
तो तू ठहर सकेगा, और ये सब लोग अपने
स्थान को कुशल से पहुच सकेगे। २४ अपने
ससुर की यह बात मान कर मूसा ने उसके
सब वचनो के अनुसार किया। २५ सो
उस ने सब इस्राएलियो मे से गुणी गुणी
पुरुष चुनकर उन्हे हजार-हजार, सौ-सौ,
पचास-पचास, दस-दस लोगो के ऊपर प्रधान
ठहराया। २६ और वे सब लोगो का न्याय
करने लगे, जो मुकद्दमा कठिन होता उसे
तो वे मूसा के पास ले आते थे, और सब
छोटे मुकद्दमो का न्याय वे आप ही किया
करते थे। २७ और मूसा ने अपने ससुर
को विदा किया, और उस ने अपने देश का
मार्ग लिया॥

(सीनै पर्वत पर यहोवा के दर्शन देने का
वर्णन)

१९ इस्राएलियो को मिस्र देश से
निकले हुए जिस दिन तीन महीने
बीत चुके, उसी दिन वे सीनै के जगल मे
आए। २ और जब वे रपीदीम से कूच
करके सीनै के जगल मे आए, तब उन्हो ने
जगल में डेरे खडे किए, और वही पर्वत के
आगे इस्राएलियो ने छावनी डाली। ३ तब
मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ गया,
और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर
कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह, और
इस्राएलियो को मेरा यह वचन सुना, ४ कि
तुम ने देखा है कि मै ने मिस्रियो से
क्या क्या किया, तुम को मानो उकाब
पक्षी के पखो पर चढाकर अपने पास ले
आया हू। ५ इसलिये अब यदि तुम निश्चय
मेरी मानोगे, और मेरी वाचा को पालन
करोगे, तो सब लोगो मे से तुम ही मेरा निज
धन ठहरोगे, समस्त पृथ्वी तो मेरी है।
६ और तुम मेरी दृष्टि मे याजको का राज्य
और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बाते तुझे
इस्राएलियो से कहनी है वे ये ही है।
७ तब मूसा ने आकर लोगो के पुरनियो
को बुलवाया, और ये सब बाते, जिनके कहने
की आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी, उनको
समझा दी। ८ और सब लोग मिलकर
बोल उठे, जो कुछ यहोवा ने कहा है
वह सब हम नित करेगे। लोगो की यह
बाते मूसा ने यहोवा को सुनाई। ९ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, सुन, मै बादल के
अधियारे मे होकर तेरे पास आता हू,
इसलिये कि जब मै तुझ से बाते करू तब वे
लोग सुने, और सदा तेरी प्रतीति करे।
और मूसा ने यहोवा से लोगो की बातो का
वर्णन किया। १० तब यहोवा ने मूसा से
कहा, लोगो के पास जा और उन्हे आज
और कल पवित्र करना, और वे अपने वस्त्र
धो ले, ११ और वे तीसरे दिन तक
तैयार हो रहे, क्योकि तीसरे दिन यहोवा
सब लोगो के देखते सीनै पर्वत पर उतर
आएगा। १२ और तू लोगो के लिये चारो
ओर बाडा बान्ध देना, और उन से कहना,
कि तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढो
और उसके सिवाने को भी न छूओ, और

जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार
डाला जाए। १३ उसको कोई हाथ से
तो न छूए, परन्तु वह निश्चय पत्थरवाह
किया जाए, वा तीर से छेदा जाए, चाहे
पशु हो चाहे मनुष्य, वह जीवित न बचे।
जब महाशब्द वाले नरसिंगे का शब्द देर
तक सुनाई दे, तब लोग पर्वत के पास आएं।
१४ तब मूसा ने पर्वत पर से उतरकर
लोगों के पास आकर उनको पवित्र कराया,
और उन्हों ने अपने वस्त्र धो लिए।
१५ और उस ने लोगों से कहा, तीसरे दिन
तक तैयार हो रहो, स्त्री के पास न जाना।
१६ जब तीसरा दिन आया तब भोर होते
बादल गरजने और बिजली चमकने लगी,
और पर्वत पर काली घटा छा गई, फिर
नरसिंगे का शब्द बड़ा भारी हुआ, और
छावनी में जितने लोग थे सब कांप उठे।
१७ तब मूसा लोगों को परमेश्वर से भेंट
करने के लिये छावनी से निकाल ले गया,
और वे पर्वत के नीचे खड़े हुए। १८ और
यहोवा जो आग में होकर सीनै पर्वत पर
उतरा था, इस कारण समस्त पर्वत धुएं से
भर गया, और उसका धुआं भट्ठे का सा उठ
रहा था, और समस्त पर्वत बहुत कांप रहा
था। १९ फिर जब नरसिंगे का शब्द
बढ़ता और बहुत भारी होता गया, तब
मूसा बोला, और परमेश्वर ने वाणी
सुनाकर उसको उत्तर दिया। २० और
यहोवा सीनै पर्वत की चोटी पर उतरा,
और मूसा को पर्वत की चोटी पर बुलाया,
और मूसा ऊपर चढ़ गया। २१ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, नीचे उतरके लोगों
को चितावनी दे, कहीं ऐसा न हो कि वे
बाड़ा तोड़के यहोवा के पास देखने को घुसें,
और उन में से बहुत नाश हो जाएं।
२२ और याजक जो यहोवा के समीप आया
करते हैं वे भी अपने को पवित्र करें, कहीं
ऐसा न हो कि यहोवा उन पर टूट पड़े।
२३ मूसा ने यहोवा से कहा, वे लोग सीनै
पर्वत पर नहीं चढ़ सकते, तू ने तो आप हम
को यह कहकर चिताया, कि पर्वत के चारों
ओर बाड़ा बान्धकर उसे पवित्र रखो।
२४ यहोवा ने उस से कहा, उतर तो जा,
और हारून समेत तू ऊपर आ, परन्तु याजक
और साधारण लोग कहीं यहोवा के पास
बाड़ा तोड़के न चढ़ आएं, कहीं ऐसा न हो कि
वह उन पर टूट पड़े। २५ ये ही बातें मूसा
ने लोगों के पास उतरके उनको सुनाईं॥

(सब इस्राएलियों को दस आज्ञाओं के
सुनाये जाने का वर्णन)

२० तब परमेश्वर ने ये सब वचन
कहे, २ कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा
हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र
देश से निकाल लाया है॥

३ तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके
न मानना॥

४ तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न
बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो
आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल
में है। ५ तू उनको दण्डवत न करना, और
न उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं तेरा
परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर
हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों,
पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड
दिया करता हूं, ६ और जो मुझ से प्रेम
रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन
हजारों पर करुणा किया करता हूं॥

७ तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ *
न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ *
ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा॥

---

* वा झूठी बात पर।

८ तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के
लिये स्मरण रखना। ९ छ दिन तो तू
परिश्रम करके अपना सब काम काज
करना, १० परन्तु सातवा दिन तेरे
परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है।
उस मे न तो तू किसी भाति का काम काज
करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न
तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न
कोई परदेशी जो तेरे फाटको के भीतर हो।
११ क्योंकि छ दिन मे यहोवा ने आकाश,
और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन मे
है, सब को बनाया, और सातवे दिन विश्राम
किया, इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन
को आशीष दी और उसको पवित्र
ठहराया ॥

१२ तू अपने पिता और अपनी माता
का आदर करना, जिस से जो देश तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस मे तू
बहुत दिन तक रहने पाए ॥

१३ तू खून न करना ॥

१४ तू व्यभिचार न करना ॥

१५ तू चोरी न करना ॥

१६ तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न
देना ॥

१७ तू किसी के घर का लालच न
करना, न तो किसी की स्त्री का लालच
करना, और न किसी के दास-दासी, वा
बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का
लालच करना ॥

१८ और सब लोग गरजने और बिजली
और नरसिंगे के शब्द सुनते, और धुआं
उठते हुए पर्वत को देखते रहे, और देखके,
कापकर दूर खड़े हो गए, १९ और वे
मूसा से कहने लगे, तू ही हम से बाते कर,
तब तो हम सुन सकेंगे, परन्तु परमेश्वर
हम से बाते न करे, ऐसा न हो कि हम मर
जाए। २० मूसा ने लोगो से कहा, डरो
मत, क्योंकि परमेश्वर इस निमित्त आया
है कि तुम्हारी परीक्षा करे, और उसका
भय तुम्हारे मन मे * बना रहे, कि तुम पाप
न करो। २१ और वे लोग तो दूर ही
खड़े रहे, परन्तु मूसा उस घोर अन्धकार के
समीप गया जहा परमेश्वर था ॥

(मूसा से कही हुई यहोवा की व्यवस्था)

२२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, तू
इस्राएलियो को मेरे ये वचन सुना, कि तुम
लोगो ने तो आप ही देखा है कि मै ने
तुम्हारे साथ आकाश से बाते की है।
२३ तुम मेरे साथ किसी को सम्मिलित न
करना, अर्थात् अपने लिये चान्दी वा सोने से
देवताओ को न गढ लेना। २४ मेरे लिये
मिट्टी की एक वेदी बनाना, और अपनी
भेड़-बकरियो और गाय-बैलो के होमबलि
और मेलबलि को उस पर चढाना, जहा
जहा मै अपने नाम का स्मरण कराऊ वहा
वहा मै आकर तुम्हे आशीष दूगा। २५ और
यदि तुम मेरे लिये पत्थरो की वेदी बनाओ,
तो तराशे हुए पत्थरो से न बनाना, क्योंकि
जहा तुम ने उस पर अपना हथियार लगाया
वहा तू उसे अशुद्ध कर देगा। २६ और
मेरी वेदी पर सीढी से कभी न चढना, कही
ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर नगा
देख पडे ॥

२१ फिर जो नियम तुझे उनको
समझाने है वे ये है ॥

२ जब तुम कोई इब्री दास मोल लो,
तब वह छ वर्ष तक सेवा करता रहे, और
सातवे वर्ष स्वतन्त्र होकर सेतमेत चला
जाए। ३ यदि वह अकेला आया हो, तो

* मूल में—तुम्हारे साम्हने।

अकेला ही चला जाए, और यदि पत्नी
सहित आया हो, तो उसके साथ उसकी
पत्नी भी चली जाए। ४ यदि उसके
स्वामी ने उसको पत्नी दी हो और उस से
उसके बेटे वा बेटिया उत्पन्न हुई हो, तो
उसकी पत्नी और बालक उस स्वामी के
ही रहे, और वह अकेला चला जाए।
५ परन्तु यदि वह दास दृढता से कहे, कि
मै अपने स्वामी, और अपनी पत्नी, और
बालको मे प्रेम रखता हू, इसलिये मै
स्वतन्त्र होकर न चला जाऊगा, ६ तो
उसका स्वामी उसको परमेश्वर * के पास
ले चले, फिर उसको द्वार के किवाड वा
बाजू के पास ले जाकर उसके कान मे
सुतारी से छेद करे, तब वह सदा उसकी
सेवा करता रहे॥

७ यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने
के लिये बेच डाले, तो वह दासी की नाई
बाहर न जाए। ८ यदि उसका स्वामी
उसको अपनी पत्नी बनाए, और फिर उस
से प्रसन्न न रहे, तो वह उसे दाम से
छुडाई जाने दे, उसका विश्वासघात करने
के बाद उसे ऊपरी लोगो के हाथ बेचने का
उसको अधिकार न होगा। ९ और यदि
उस ने उसे अपने बेटे को ब्याह दिया हो,
तो उस से बेटी का सा व्यवहार करे।
१० चाहे वह दूसरी पत्नी कर ले, तौभी
वह उसका भोजन, वस्त्र, और सगति न
घटाए। ११ और यदि वह इन तीन बातो
में घटी करे, तो वह स्त्री सेतमेत बिना दाम
चुकाए ही चली जाए॥

१२ जो किसी मनुष्य को ऐसा मारे
कि वह मर जाए, तो वह भी निश्चय मार
डाला जाए। १३ यदि वह उसकी घात
में न बैठा हो, और परमेश्वर की इच्छा ही
से वह उसके हाथ मे पड गया हो, तो ऐसे
मारनेवाले के भागने के निमित्त मैं एक
स्थान ठहराऊगा जहा वह भाग जाए।
१४ परन्तु यदि कोई ढिठाई से किसी पर
चढाई करके उसे छल से घात करे, तो
उसको मार डालने के लिये मेरी वेदी के
पास से भी अलग ले जाना॥

१५ जो अपने पिता वा माता को मारे-
पीटे वह निश्चय मार डाला जाए॥

१६ जो किसी मनुष्य को चुराए, चाहे
उसे ले जाकर बेच डाले, चाहे वह उसके
यहा पाया जाए, तो वह भी निश्चय मार
डाला जाए॥

१७ जो अपने पिता वा माता को श्राप
दे वह भी निश्चय मार डाला जाए॥

१८ यदि मनुष्य झगडते हो, और एक
दूसरे को पत्थर वा मुक्के से ऐसा मारे कि
वह मरे नही परन्तु बिछौने पर पडा रहे,
१९ तो जब वह उठकर लाठी के सहारे से
बाहर चलने फिरने लगे, तब वह मारनेवाला
निर्दोष ठहरे, उस दशा मे वह उसके पडे
रहने के समय की हानि तो भर दे, और
उसको भला चगा भी करा दे॥

२० यदि कोई अपने दास वा दासी को
सोटे से ऐसा मारे कि वह उसके मारने से
मर जाए, तब तो उसको निश्चय दण्ड दिया
जाए। २१ परन्तु यदि वह दो एक दिन
जीवित रहे, तो उसके स्वामी को दण्ड न
दिया जाए, क्योकि वह दास उसका धन है॥

२२ यदि मनुष्य आपस मे मारपीट
करके किसी गर्भिणी स्त्री को ऐसी चोट
पहुचाए, कि उसका गर्भ गिर जाए, परन्तु
और कुछ हानि न हो, तो मारनेवाले से
उतना दण्ड लिया जाए जितना उस स्त्री
का पति पच की सम्मति से ठहराए।

* वा न्यायियों।

लेना। २६ यदि तू कभी अपने भाईबन्धु
के वस्त्र को बन्धक करके रख भी ले, तो
सूर्य के अस्त होने तक उसको लौटा देना;
२७ क्योंकि वह उसका एक ही ओढ़ना है,
उसकी देह का वही अकेला वस्त्र होगा;
फिर वह किसे ओढ़कर सोएगा? तौभी
जब वह मेरी दोहाई देगा तब मैं उसकी
सुनूंगा, क्योंकि मैं तो करुणामय हूं॥
२८ परमेश्वर * को श्राप न देना, और
न अपने लोगों के प्रधान को श्राप देना।
२९ अपने खेतों की उपज और फलों के
रस में से कुछ मुझे देने में विलम्ब न करना।
अपने बेटों में से पहिलौठे को मुझे देना।
३० वैसे ही अपनी गायों और भेड़-बकरियों
के पहिलौठे भी देना, सात दिन तक तो
बच्चा अपनी माता के संग रहे, और आठवें
दिन तू उसे मुझ को दे देना। ३१ और
तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य बनना, इस
कारण जो पशु मैदान में फाड़ा हुआ पड़ा
मिले उसका मांस न खाना, उसको कुत्तों के
आगे फेंक देना॥

२३ झूठी बात न फैलाना। अन्यायी
साक्षी होकर दुष्ट का साथ न देना।
२ बुराई करने के लिये न तो बहुतों के पीछे
हो लेना, और न उनके पीछे फिरके मुकद्दमे
में न्याय बिगाड़ने को साक्षी देना, ३ और
कंगाल के मुकद्दमे में उसका भी पक्ष न
करना॥
४ यदि तेरे शत्रु का बैल वा गदहा
भटकता हुआ तुझे मिले, तो उसे उसके पास
अवश्य फेर ले आना। ५ फिर यदि तू
अपने बैरी के गदहे को बोझ के मारे दबा
हुआ देखे, तो चाहे उसको उसके स्वामी के
लिये छुड़ाने के लिये तेरा मन न चाहे, तौभी
अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा
लेना॥
६ तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके
मुकद्दमे में न्याय न बिगाड़ना। ७ झूठे
मुकद्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और
धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को
निर्दोष न ठहराऊंगा। ८ घूस न लेना,
क्योंकि घूस देखने वालों को भी अन्धा कर
देता, और धर्मियों की बातें पलट देता है।
९ परदेशी पर अन्धेर न करना; तुम तो
परदेशी के मन की बातें जानते हो, क्योंकि
तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे॥
१० छः वर्ष तो अपनी भूमि में
बोना और उसकी उपज इकट्ठी करना,
११ परन्तु सातवें वर्ष में उसको पड़ती
रहने देना और वैसा ही छोड़ देना, तो तेरे
भाई बन्धुओं में के दरिद्र लोग उस से खाने
पाएं, और जो कुछ उन से भी बचे वह
बनैले पशुओं के खाने के काम में आए।
और अपनी दाख और जलपाई की बारियों
को भी ऐसे ही करना। १२ छः दिन तक
तो अपना काम काज करना, और सातवें
दिन विश्राम करना, कि तेरे बैल और
गदहे सुस्ताएं, और तेरी दासियों के बेटे
और परदेशी भी अपना जी ठंढा कर सकें।
१३ और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है उस
में सावधान रहना, और दूसरे देवताओं के
नाम की चर्चा न करना, वरन वे तुम्हारे
मुंह से सुनाई भी न दें।
१४ प्रति वर्ष तीन बार मेरे लिये पर्ब्ब
मानना। १५ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब
मानना, उस में मेरी आज्ञा के अनुसार
अबीब महीने के नियत समय पर सात दिन
तक अखमीरी रोटी खाया करना, क्योंकि
उसी महीने में तुम मिस्र से निकल आए।
और मुझ को कोई छूछे हाथ अपना मुंह

* वा न्यायियों।

न दिखाए। १६ और जब तेरी बोई हुई
खेती की पहिली उपज तैयार हो, तब कटनी
का पर्ब्ब मानना। और वर्ष के अन्त में जब
तू परिश्रम के फल बटोर के ढेर लगाए,
तब बटोरन का पर्ब्ब मानना। १७ प्रति
वर्ष तीनों बार तेरे सब पुरुष प्रभु यहोवा
को अपना मुंह दिखाएं॥

१८ मेरे बलिपशु का लोहू खमीरी रोटी
के संग न चढ़ाना, और न मेरे पर्ब्ब के उत्तम
बलिदान* में से कुछ बिहान तक रहने
देना। १९ अपनी भूमि की पहिली उपज
का पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा
के भवन में ले आना। बकरी का बच्चा
उसकी माता के दूध में न पकाना॥

२० सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे
भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा,
और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया
है उस में तुझे पहुंचाएगा। २१ उसके
साम्हने सावधान रहना, और उसकी
मानना, उसका विरोध न करना, क्योंकि
वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा,
इसलिये कि उस में मेरा नाम रहता है।
२२ और यदि तू सचमुच उसकी माने
और जो कुछ मैं कहूं वह करे, तो मैं तेरे
शत्रुओं का शत्रु और तेरे द्रोहियों का द्रोही
बनूंगा। २३ इस रीति मेरा दूत तेरे आगे
आगे चलकर तुझे एमोरी, हित्ती, परज्जी,
कनानी, हिव्वी, और यबूसी लोगों के यहां
पहुंचाएगा, और मैं उनको सत्यानाश कर
डालूंगा। २४ उनके देवताओं को दण्डवत
न करना, और न उनकी उपासना करना,
और न उनके से काम करना, वरन उन
मूरतों को पूरी रीति से सत्यानाश कर
डालना, और उन लोगों की लाटों को टुकड़े

* मूल में—की चर्बी।

टुकड़े कर देना। २५ और तुम अपने
परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब
वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और
तेरे बीच में से रोग दूर करेगा। २६ तेरे
देश में न तो किसी का गर्भ गिरेगा और न
कोई बांझ होगी, और तेरी आयु मैं पूरी
करूंगा। २७ जितने लोगों के बीच तू
जायगा उन सभों के मन में मैं अपना भय
पहिले से ऐसा समवा दूंगा कि उनको
व्याकुल कर दूंगा, और मैं तुझे सब शत्रुओं
की पीठ दिखाऊंगा। २८ और मैं तुझ से
पहिले बर्रों को भेजूंगा जो हिव्वी, कनानी,
और हित्ती लोगों को तेरे साम्हने से भगा के
दूर कर देंगी। २९ मैं उनको तेरे आगे से
एक ही वर्ष में तो न निकाल दूंगा, ऐसा न
हो कि देश उजाड़ हो जाए, और बनैले
पशु बढ़कर तुझे दुःख देने लगें। ३० जब
तक तू फूल फलकर देश को अपने अधिकार
में न कर ले तब तक मैं उन्हें तेरे आगे से
थोड़ा थोड़ा करके निकालता रहूंगा।
३१ मैं लाल समुद्र से लेकर पलिश्तियों
के समुद्र तक और जंगल से लेकर महानद
तक के देश को तेरे वश में कर दूंगा, मैं उस
देश के निवासियों को भी तेरे वश में कर
दूंगा, और तू उन्हें अपने साम्हने से बरबस
निकालेगा। ३२ तू न तो उन से वाचा
बान्धना और न उनके देवताओं से।
३३ वे तेरे देश में रहने न पाएं, ऐसा न हो
कि वे तुझ से मेरे विरुद्ध पाप कराएं, क्योंकि
यदि तू उनके देवताओं की उपासना करे,
तो यह तेरे लिये फंदा बनेगा॥

(यहोवा और इस्राएलियों के बीच वाचा बान्धने का वर्णन)

२४ फिर उस ने मूसा से कहा, तू,
हारून, नादाब, अबीहू, और इस्राए-
लियों के सत्तर पुरनियों समेत यहोवा के

पास ऊपर आकर दूर से दण्डवत् करना।
२ और केवल मूसा यहोवा के समीप आए,
परन्तु वे समीप न आए, और दूसरे लोग
उसके सग ऊपर न आए। ३ तब मूसा ने
लोगो के पास जाकर यहोवा की सब बाते
और सब नियम सुना दिए, तब सब लोग
एक स्वर से बोल उठे, कि जितनी बाते
यहोवा ने कही हैं उन सब बातो को हम
मानेंगे। ४ तब मूसा ने यहोवा के सब
वचन लिख दिए। और बिहान को सवेरे
उठकर पर्वत के नीचे एक वेदी और इस्राएल
के बारहो गोत्रो के अनुसार बारह खम्भे भी
बनवाए। ५ तब उस ने कई इस्राएली
जवानो को भेजा, जिन्हो ने यहोवा के लिये
होमबलि और बैलो के मेलबलि चढाए।
६ और मूसा ने आधा लोहू तो लेकर
कटोरो मे रखा, और आधा वेदी पर
छिड़क दिया। ७ तब वाचा की पुस्तक को
लेकर लोगो को पढ सुनाया, उसे सुनकर
उन्हो ने कहा, जो कुछ यहोवा ने कहा है
उस सब को हम करेंगे, और उसकी आज्ञा
मानेंगे। ८ तब मूसा ने लोहू को लेकर
लोगो पर छिड़क दिया, और उन से कहा,
देखो, यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा
ने इन सब वचनो पर तुम्हारे साथ बान्धी
है। ९ तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू
और इस्राएलियो के सत्तर पुरनिए ऊपर
गए, १० और इस्राएल के परमेश्वर का
दर्शन किया, और उसके चरणो के तले
नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो
आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। ११ और
उस ने इस्राएलियो के प्रधानो पर हाथ न
बढाया, तब उन्हो ने परमेश्वर का दर्शन
किया, और खाया पिया॥

१२ तब यहोवा ने मूसा से कहा, पहाड
पर मेरे पास चढ़, और वहा रह; और
मैं तुझे पत्थर की पटियाएं, और अपनी
लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूगा, कि तू
उनको सिखाए। १३ तब मूसा यहोशू नाम
अपने टहलुए समेत परमेश्वर के पर्वत पर
चढ गया। १४ और पुरनियो से वह यह
कह गया, कि जब तक हम तुम्हारे पास फिर
न आए तब तक तुम यही हमारी बाट जोहते
रहो, और सुनो, हारून और हूर तुम्हारे
सग हैं, तो यदि किसी का मुकद्दमा हो तो
उन्ही के पास जाए। १५ तब मूसा पर्वत
पर चढ गया, और बादल ने पर्वत को छा
लिया। १६ तब यहोवा के तेज ने सीनै
पर्वत पर निवास किया, और वह बादल
उस पर छः दिन तक छाया रहा, और
सातवे दिन उस ने मूसा को बादल के बीच
मे से पुकारा। १७ और इस्राएलियो की
दृष्टि मे यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर
प्रचण्ड आग सा देख पडता था। १८ तब
मूसा बादल के बीच मे प्रवेश करके पर्वत
पर चढ गया। और मूसा पर्वत पर चालीस
दिन और चालीस रात रहा॥

(सामान सहित पवित्रस्थान के बनाने की आज्ञाएं)

२५ यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से यह कहना, कि
मेरे लिये भेट लाए, जितने अपनी इच्छा से
देना चाहे उन्ही सभो से मेरी भेंट लेना।
३ और जिन वस्तुओ की भेट उन से
लेनी है वे ये हैं, अर्थात् सोना, चादी,
पीतल, ४ नीले, बैंजनी और लाल रग का
कपडा, सूक्ष्म सनी का कपडा, बकरी का
बाल, ५ लाल रग से रगी हुई मेढो की
खाले, सुइसो की खाले, बबूल की लकडी,
६ उजियाले के लिये तेल, अभिषेक के तेल
के लिये और सुगन्धित धूप के लिये सुगन्ध

द्रव्य, ७ एपोद और चपरास के लिये
सुलैमानी पत्थर, और जडने के लिये मणि।
८ और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान
बनाए, कि मै उनके बीच निवास करू।
९ जो कुछ मै तुझे दिखाता हू, अर्थात्
निवासस्थान और उसके सब सामान का
नमूना, उसी के अनुसार तुम लोग उसे
बनाना॥

१० बबूल की लकडी का एक सन्दूक
बनाया जाए, उसकी लम्बाई अढाई हाथ,
और चौडाई और ऊचाई डेढ डेढ हाथ की
हों। ११ और उसको चोखे सोने से
भीतर और बाहर मढवाना, और सन्दूक के
ऊपर चारो ओर सोने की बाड बनवाना।
१२ और सोने के चार कडे ढलवाकर
उसके चारो पायो पर, एक अलग दो कडे
और दूसरी अलग भी दो कडे लगवाना।
१३ फिर बबूल की लकडी के डण्डे बन-
वाना, और उन्हें भी सोने से मढवाना।
१४ और डण्डो को सन्दूक की दोनो अलगो
के कडो में डालना जिस से उनके बल सन्दूक
उठाया जाए। १५ वे डण्डे सन्दूक के कडो
में लगे रहें, और उस से अलग न किए
जाए। १६ और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूगा
उसे उसी सन्दूक में रखना। १७ फिर
चोखे सोने का एक प्रायश्चित्त का ढकना
बनवाना, उसकी लम्बाई अढाई हाथ,
और चौडाई डेढ हाथ की हो। १८ और
सोना ढालकर दो करूब बनवाकर
प्रायश्चित्त के ढकने के दोनो सिरो पर
लगवाना। १९ एक करूब तो एक सिरे
पर और दूसरा करूब दूसरे सिरे पर
लगवाना, और करूबो को और प्रायश्चित्त
के ढकने को एक ही टुकडे से बनाकर
उसके दोनो सिरो पर लगवाना। २० और
उन करूबो के पख ऊपर से ऐसे फैले हुए
बनें कि प्रायश्चित्त का ढकना उन से ढपा
रहे, और उनके मुख आम्हने-साम्हने और
प्रायश्चित्त के ढकने की ओर रहें। २१ और
प्रायश्चित्त के ढकने को सन्दूक के ऊपर
लगवाना, और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूगा
उसे सन्दूक के भीतर रखना। २२ और
मै उसके ऊपर रहकर * तुझ से मिला
करूगा, और इस्राएलियों के लिये जितनी
आज्ञाए मुझ को तुझे देनी होगी, उन सभो
के विषय में प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर
से और उन करूबो के बीच में से, जो
साक्षीपत्र के सन्दूक पर होगे, तुझ से
वार्तालाप किया करूगा॥

२३ फिर बबूल की लकडी की एक
मेज बनवाना, उसकी लम्बाई दो हाथ,
चौडाई एक हाथ, और ऊचाई डेढ हाथ की
हो। २४ उसे चोखे सोने से मढवाना,
और उसके चारो ओर सोने की एक बाड
बनवाना। २५ और उसके चारो ओर
चार अगुल चौडी एक पटरी बनवाना, और
इस पटरी के चारो ओर सोने की एक बाड
बनवाना। २६ और सोने के चार कडे
बनवाकर मेज के उन चारो कोनो मे
लगवाना जो उसके चारो पायो में होगे।
२७ वे कडे पटरी के पास ही हो, और
डण्डो के घरो का काम दें कि मेज़ उन्ही के
बल उठाई जाए। २८ और डण्डो को
बबूल की लकडी के बनवाकर सोने से
मढवाना, और मेज उन्ही से उठाई जाए।
२९ और उसके परात और धूपदान, और
चमचे और उडेलने के कटोरे, सब चोखे
सोने के बनवाना। ३० और मेज पर
मेरे आगे भेंट की रोटिया नित्य रखा
करना॥

---

* मूल में—मैं वहा।

३१ फिर चोखे सोने की एक दीवट
वनवाना। सोना ढलवाकर वह दीवट, पाये
और डण्डी सहित वनाया जाए, उसके
पुष्पकोष, गाठ और फूल, सब एक ही
टुकडे के वने, ३२ और उसकी अलगो
से छ डालिया निकले, तीन डालिया तो
दीवट की एक अलग से और तीन डालिया
उसकी दूसरी अलग से निकली हुई हो,
३३ एक एक डाली मे वादाम के फूल के
समान तीन तीन पुष्पकोष, एक एक गाठ,
और एक एक फूल हो, दीवट से निकली
हुई छहो डालियो का यही आकार या रूप
हो, ३४ और दीवट की डण्डी मे वादाम
के फूल के समान चार पुष्पकोष अपनी
अपनी गाठ और फूल समेत हो, ३५ और
दीवट से निकली हुई छहो डालियो मे से
दो दो डालियो के नीचे एक एक गाठ हो,
वे दीवट समेत एक ही टुकडे के वने हुए हो।
३६ उनकी गाठे और डालिया, सव दीवट
समेत एक ही टुकडे की हो, चोखा सोना
ढलवाकर पूरा दीवट एक ही टुकडे का
वनवाना। ३७ और सात दीपक वनवाना,
और दीपक जलाए जाए कि वे दीवट के
साम्हने प्रकाश दे। ३८ और उसके गुल-
तराश और गुलदान सव चोखे सोने के हो।
३९ वह सव इन समस्त सामान समेत
किक्कार भर चोखे सोने का वने। ४० और
सावधान रहकर इन सव वस्तुओ को
उस नमूने के समान वनवाना, जो तुझे इस
पर्वत पर दिखाया गया है॥

२६ फिर निवासस्थान के लिये दस
परदे वनवाना, इनको वटी हुई
सनीवाले और नीले, वैजनी और लाल रग
के कपडे का कढाई के काम किए हुए
करूवो के साथ वनवाना। २ एक एक
परदे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौडाई
चार हाथ की हो, सव परदे एक ही नाप
के हो। ३ पाच परदे एक दूसरे से जुडे
हुए हो, और फिर जो पाच परदे रहेगे वे
भी एक दूसरे से जुडे हुए हो। ४ और
जहा ये दोनो परदे जोडे जाए वहा
की दोनो छोरो पर नीली नीली फलिया
लगवाना। ५ दोनो छोरो मे पचास पचास
फलिया ऐसे लगवाना कि वे आम्हने-
साम्हने हो। ६ और सोने के पचास अकडे
वनवाना, और परदो के पचो को अकडो
के द्वारा एक दूसरे से ऐसा जुडवाना कि
निवासस्थान मिलकर एक ही हो जाए।
७ फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम देने
के लिये वकरी के वाल के ग्यारह परदे
वनवाना। ८ एक एक परदे की लम्बाई
तीस हाथ और चौडाई चार हाथ की हो,
ग्यारहो परदे एक ही नाप के हो। ९ और
पाच परदे अलग और फिर छ परदे अलग
जुडवाना, और छटवे परदे को तम्बू के साम्हने
मोड कर दुहरा कर देना। १० और तू
पचास अकडे उस परदे की छोर मे जो
वाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही
अकडे दूसरी ओर के परदे की छोर मे जो
वाहर से मिलाया जाएगा वनवाना।
११ और पीतल के पचास अकडे वनाना,
और अकडो को फलियो मे लगाकर तम्बू
को ऐसा जुडवाना कि वह मिलकर एक
ही हो जाए। १२ और तम्बू के परदो का
लटका हुआ भाग, अर्थात् जो आधा पट
रहेगा, वह निवास की पिछली ओर लटका
रहे। १३ और तम्बू के परदो की लम्बाई
मे से हाथ भर इधर, और हाथ भर उधर
निवास के ढाकने के लिये उसकी दोनों
अलगो पर लटका हुआ रहे। १४ फिर
तम्बू के लिये लाल रग से रगी हुई मेढो की

खालो का एक ओढना और उसके ऊपर
सूइसो की खालो का भी एक ओढना
बनवाना ॥
१५ फिर निवास को खडा करने के
लिये बबूल की लकडी के तख्ते बनवाना।
१६ एक एक तख्ते की लम्बाई दस हाथ
और चौडाई डेढ हाथ की हो। १७ एक
एक तख्ते मे एक दूसरे से जोडी हुई दो दो
चूले हो, निवास के सब तख्तो को इसी
भाति से बनवाना। १८ और निवास के
लिये जो तख्ते तू बनवाएगा उन मे से बीस
तख्ते तो दक्खिन की ओर के लिये हो,
१९ और बीसो तख्तो के नीचे चादी की
चालीस कुर्सिया बनवाना, अर्थात् एक एक
तख्ते के नीचे उसके चूलो के लिये दो दो
कुर्सिया। २० और निवास की दूसरी
अलग, अर्थात् उत्तर की ओर बीस तख्ते
बनवाना। २१ और उनके लिये चादी
की चालीस कुर्सिया बनवाना, अर्थात् एक
एक तख्ते के नीचे दो दो कुर्सिया हो।
२२ और निवास की पिछली अलग, अर्थात्
पश्चिम की ओर के लिये छ तख्ते
बनवाना। २३ और पिछले अलग मे
निवास के कोनो के लिये दो तख्ते बनवाना,
२४ और ये नीचे से दो दो भाग के हो,
और दोनो भाग ऊपर के सिरे तक एक एक
कडे मे मिलाये जाए, दोनो तख्तो का यही
रूप हो, ये तो दोनो कोनो के लिये हो।
२५ और आठ तख्ते हो, और उनकी
चादी की सोलह कुर्सिया हो, अर्थात् एक
एक तख्ते के नीचे दो दो कुर्सिया हो।
२६ फिर बबूल की लकडी के बेडे बनवाना,
अर्थात् निवास की एक अलग के तख्तो के
लिये पाच, २७ और निवास की दूसरी
अलग के तख्तो के लिये पाच बेंडे, और
निवास की जो अलग पश्चिम की ओर
पिछले भाग मे होगी, उसके लिये पाच बेंडे
बनवाना। २८ और बीचवाला बेंडा
जो तख्तो के मध्य मे होगा वह तम्बू के एक
सिरे से दूसरे सिरे तक पहुचे। २९ फिर
तख्तो को सोने से मढवाना, और उनके
कडे जो बेंडो के घरो का काम देगे उन्हे
भी सोने के बनवाना, और बेंडो को भी
सोने से मढवाना। ३० और निवास को
इस रीति खडा करना जैसा इस पर्वत पर
तुझे दिखाया गया है॥
३१ फिर नीले, बैंजनी और लाल रग
के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपडे का
एक बीचवाला पर्दा बनवाना, वह कढाई
के काम किये हुए करूबो के साथ बने।
३२ और उसको सोने से मढे हुए बबूल के
चार खम्भो पर लटकाना, इनकी अकडिया
सोने की हो, और ये चादी की चार कुर्सियो
पर खडी रहे। ३३ और बीचवाले पर्दे
को अकडियो के नीचे लटकाकर, उसकी
आड मे साक्षीपत्र का सन्दूक भीतर लिवा
ले जाना, सो वह बीचवाला पर्दा तुम्हारे
लिये पवित्रस्थान को परमपवित्रस्थान से
अलग किये रहे। ३४ फिर परमपवित्र-
स्थान मे साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर
प्रायश्चित्त के ढकने को रखना। ३५ और
उस पर्दे के बाहर निवास की उत्तर अलग
मेज रखना, और उसकी दक्खिन अलग
मेज के साम्हने दीवट को रखना। ३६ फिर
तम्बू के द्वार के लिये नीले, बैंजनी और लाल
रग के और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले कपडे
का कढाई का काम किया हुआ एक पर्दा
बनवाना। ३७ और इस पर्दे के लिये बबूल
के पाच खम्भे बनवाना, और उनको सोने से
मढवाना, उनकी कडिया सोने की हो,
और उनके लिये पीतल की पाच कुर्सिया
ढलवा कर बनवाना॥

२७ फिर वेदी को बबूल की लकडी
की, पाच हाथ लम्बी और पाच
हाथ चौडी बनवाना, वेदी चौकोर हो,
और उसकी ऊचाई तीन हाथ की हो।
२ और उसके चारो कोनो पर चार सीग
बनवाना, वे उस समेत एक ही टुकडे के
हो, और उसे पीतल से मढवाना। ३ और
उसकी राख उठाने के पात्र, और फावडिया,
और कटोरे, और काटे, और अगीठिया
बनवाना, उसका कुल सामान पीतल का
बनवाना। ४ और उसके पीतल की जाली
एक झझरी बनवाना, और उसके चारो
सिरो मे पीतल के चार कडे लगवाना।
५ और उस झझरी को वेदी के चारो ओर
की कगनी के नीचे ऐसे लगवाना, कि वह
वेदी की ऊचाई के मध्य तक पहुचे।
६ और वेदी के लिये बबूल की लकडी के
डण्डे बनवाना, और उन्हे पीतल से
मढवाना। ७ और डडे कडो मे डाले जाए,
कि जब जब वेदी उठाई जाए तब वे उसकी
दोनो अलगो पर रहे। ८ वेदी को तख्तो
से खोखली बनवाना, जैसी वह इस पर्वत
पर तुझे दिखाई गई है वैसी ही बनाई
जाए॥

९ फिर निवास के आगन को बनवाना।
उसकी दक्खिन अलग के लिये तो बटी
हुई सूक्ष्म सनी के कपडे के सब पर्दो को
मिलाए कि उसकी लम्बाई सौ हाथ की हो,
एक अलग पर तो इतना ही हो। १० और
उनके बीस खम्भे बने, और इनके लिये
पीतल की बीस कुर्सिया बने, और खम्भो के
कुन्डे और उनकी पट्टिया चादी की हो।
११ और उसी भाति आगन की उत्तर
अलग की लम्बाई मे भी सौ हाथ लम्बे पर्दे
हो, और उनके भी बीस खम्भे और इनके
लिये भी पीतल के बीस खाने हो, और उन
खम्भो के कुन्डे और पट्टिया चादी की हो।
१२ फिर आगन की चौडाई मे पच्छिम
की ओर पचास हाथ के पर्दे हो, उनके
खम्भे दस और खाने भी दस हो। १३ और
पूरब अलग पर आगन की चौडाई पचास
हाथ की हो। १४ और आगन के द्वार
की एक ओर पन्द्रह हाथ के पर्दे हो, और
उनके खम्भे तीन और खाने तीन हो।
१५ और दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के
पर्दे हो, उनके भी खम्भे तीन और खाने तीन
हो। १६ और आगन के द्वार के लिये एक
पर्दा बनवाना, जो नीले, बैजनी और लाल
रग के कपडे और बटी हुई सूक्ष्म सनी के
कपडे का कामदार बना हुआ बीस हाथ का
हो, उसके खम्भे चार और खाने भी चार
हो। १७ आगन की चारो ओर के सब
खम्भे चादी की पट्टियो से जुडे हुए हो, उनके
कुन्डे चादी के और खाने पीतल के हो।
१८ आगन की लम्बाई सौ हाथ की, और
उसकी चौडाई बराबर पचास हाथ की,
और उसकी कनात की ऊचाई पाच
हाथ की हो, उसकी कनात बटी हुई सूक्ष्म
सनी के कपडे की बने, और खम्भो के खाने
पीतल के हो। १९ निवास के भाति
भाति के बर्तन और सब सामान और
उसके सब खूटे और आगन के भी सब खूटे
पीतल ही के हो॥

२० फिर तू इस्राएलियो को आज्ञा
देना, कि मेरे पास दीवट के लिये कूट के
निकाला हुआ जलपाई का निर्मल तेल ले
आना, जिस से दीपक नित्य जलता * रहे।
२१ मिलाप के तम्बू मे, उस बीचवाले पर्दे
से बाहर जो साक्षीपत्र के आगे होगा,
हारून और उसके पुत्र दीवट साझ से भोर

* मूल में—चढ़ा।

तक यहोवा के साम्हने सजा कर रखे। यह
विधि इस्राएलियों की पीढ़ियों के लिये
सदैव बनी रहेगी॥

(याजकों के पवित्र वस्त्र बनाने और उनके
संस्कार होने की आज्ञाएं)

२८ फिर तू इस्राएलियों में से अपने
भाई हारून, और नादाब, अबीहू,
एलीआज़ार और ईतामार नाम उसके
पुत्रों को अपने समीप ले आना कि वे मेरे
लिये याजक का काम करें। २ और तू
अपने भाई हारून के लिये विभव और
शोभा के निमित्त पवित्र वस्त्र बनवाना।
३ और जितनों के हृदय में बुद्धि है, जिनको
मैं ने बुद्धि देनेवाली आत्मा से परिपूर्ण
किया है, उनको तू हारून के वस्त्र बनाने
की आज्ञा दे कि वह मेरे निमित्त याजक का
काम करने के लिये पवित्र बने। ४ और
जो वस्त्र उन्हें बनाने होंगे वे ये हैं, अर्थात्
सीनाबन्द, और एपोद, और जामा, चार-
खाने का अंगरखा, पुरोहित का टोप, और
कमरबन्द, ये ही पवित्र वस्त्र तेरे भाई
हारून और उसके पुत्रों के लिये बनाए जाएं
कि वे मेरे लिये याजक का काम करें।
५ और वे सोने और नीले और बैंजनी
और लाल रंग का और सूक्ष्म सनी का
कपड़ा लें॥

६ और वे एपोद को सोने, और नीले,
बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का और
बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े का बनाएं, जो
कि निपुण कढ़ाई के काम करनेवाले के
हाथ का काम हो। ७ और वह इस तरह
से जोड़ा जाए कि उसके दोनों कन्धों के सिरे
आपस में मिले रहें। ८ और एपोद पर
जो काढ़ा हुआ पटुका होगा उसकी बनावट
उसी के समान हो, और वे दोनों बिना जोड़
के हों, और सोने और नीले, बैंजनी और
लाल रंगवाले और बटी हुई सूक्ष्म सनीवाले
कपड़े के हों। ९ फिर दो सुलैमानी मणि
लेकर उन पर इस्राएल के पुत्रों के नाम
खुदवाना, १० उनके नामों में से छः तो
एक मणि पर, और शेष छः नाम दूसरे मणि
पर, इस्राएल के पुत्रों की उत्पत्ति के अनुसार
खुदवाना। ११ मणि खोदनेवाले के काम
से जैसे छापा खोदा जाता है, वैसे ही उन
दो मणियों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम
खुदवाना, और उनको सोने के खानों में
जड़वा देना। १२ और दोनों मणियों को
एपोद के कन्धों पर लगवाना, वे इस्राएलियों
के निमित्त स्मरण दिलवाने वाले मणि
ठहरेंगे, अर्थात् हारून उनके नाम यहोवा
के आगे अपने दोनों कन्धों पर स्मरण के
लिये लगाए रहे॥

१३ फिर सोने के खाने बनवाना,
१४ और डोरियों की नाईं गूथे हुए दो
जंजीर चोखे सोने के बनवाना, और गूथे
हुए जंजीरों को उन खानों में जड़वाना।
१५ फिर न्याय की चपरास को भी कढ़ाई
के काम का बनवाना, एपोद की नाईं सोने,
और नीले, बैंजनी और लाल रंग के और
बटी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े की उसे
बनवाना। १६ वह चौकोर और दोहरी
हो, और उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक
एक बित्ते की हो। १७ और उस में चार
पांति मणि जड़ाना। पहिली पांति में तो
माणिक्य, पद्मराग और लालड़ी हों,
१८ दूसरी पांति में मरकत, नीलमणि
और हीरा, १९ तीसरी पांति में लशम,
सूर्यकांत और नीलम, २० और चौथी
पांति में फीरोज़ा, सुलैमानी मणि और
यशब हों, ये सब सोने के खानों में जड़े जाएं।
२१ और इस्राएल के पुत्रों के जितने नाम

हैं उतने मणि हो, अर्थात् उनके नामो की
गिनती के अनुसार बारह नाम खुदे, बारहो
गोत्रो मे से एक एक का नाम एक एक मणि
पर ऐसे खुदे जैसे छापा खोदा जाता है।
२२ फिर चपरास पर डोरियो की नाई
गूथे हुए चोखे सोने की जजीर लगवाना,
२३ और चपरास मे सोने की दो कडिया
लगवाना, और दोनो कडियो को चपरास
के दोनो सिरो पर लगवाना। २४ और
सोने के दोनो गूथे जजीरो को उन दोनो
कडियो मे जो चपरास के सिरो पर होगी
लगवाना, २५ और गूथे हुए दोनो जजीरो
के दोनो बाकी सिरो को दोनो खानो मे
जडवा के एपोद के दोनो कन्धो के बधनो पर
उसके साम्हने लगवाना। २६ फिर सोने
की दो और कडिया बनवाकर चपरास के
दोनो सिरो पर, उसकी उस कोर पर जो
एपोद की भीतर की ओर होगी लगवाना।
२७ फिर उनके सिवाय सोने की दो और
कडिया बनवाकर एपोद के दोनो कन्धो के
बधनो पर, नीचे से उसके साम्हने और उसके
जोड के पास एपोद के काढे हुए पटुके के
ऊपर लगवाना। २८ और चपरास अपनी
कडियो के द्वारा एपोद की कडियो मे नीले
फीते से बाधी जाए, इस रीति वह एपोद के
काढे हुए पटुके पर बनी रहे, और चपरास
एपोद पर से अलग न होने पाए। २९ और
जब जब हारून पवित्रस्थान मे प्रवेश करे,
तब तब वह न्याय की चपरास पर अपने
हृदय के ऊपर इस्राएलियो के नामो को
लगाए रहे, जिस से यहोवा के साम्हने उनका
स्मरण नित्य रहे। ३० और तू न्याय
की चपरास मे ऊरीम * और तुम्मीम † को
रखना, और जब जब हारून यहोवा के
साम्हने प्रवेश करे, तब तब वे उसके हृदय
के ऊपर हो; इस प्रकार हारून इस्राएलियो
के न्याय पदार्थ को अपने हृदय के ऊपर
यहोवा के साम्हने नित्य लगाए रहे॥

३१ फिर एपोद के बागे को सम्पूर्ण
नीले रग का बनवाना। ३२ और उसकी
बनावट ऐसी हो कि उसके बीच में सिर
डालने के लिये छेद हो, और उस छेद की
चारो ओर बखतर के छेद की सी एक बुनी
हुई कोर हो, कि वह फटने न पाए। ३३ और
उसके नीचेवाले घेरे मे चारो ओर नीले,
बैंजनी और लाल रग के कपडे के अनार
बनवाना, और उनके बीच बीच चारो
ओर सोने की घटिया लगवाना, ३४ अर्थात्
एक सोने की घटी और एक अनार, फिर
एक सोने की घटी और एक अनार, इसी
रीति बागे के नीचेवाले घेरे मे चारो ओर
ऐसा ही हो। ३५ और हारून उस बागे
को सेवा टहल करने के समय पहिना करे,
कि जब जब वह पवित्रस्थान के भीतर
यहोवा के साम्हने जाए, वा बाहर निकले
तब तब उसका शब्द सुनाई दे, नही तो वह
मर जाएगा॥

३६ फिर चोखे सोने का एक टीका
बनवाना, और जैसे छापे मे वैसे ही उस मे
ये अक्षर खोदे जाए, अर्थात् यहोवा के लिये
पवित्र। ३७ और उसे नीले फीते से
बाधना, और वह पगडी के साम्हने के हिस्से
पर रहे। ३८ और वह हारून के माथे पर
रहे, इसलिये कि इस्राएली जो कुछ पवित्र
ठहराए, अर्थात् जितनी पवित्र वस्तुए भेंट में
चढावे उन पवित्र वस्तुओ का दोष हारून
उठाए रहे, और वह नित्य उसके माथे पर
रहे, जिस से यहोवा उन से प्रसन्न रहे॥

३९ और अगरखे को सूक्ष्म सनी के
कपडे का चारखाना बुनवाना, और एक

* अर्थात् ज्योतिया।
† अर्थात् पूर्णताए।

पगडी भी सूक्ष्म सनी के कपडे की बनवाना,
और कारचोबी काम किया हुआ एक
कमरबन्द भी बनवाना॥

४० फिर हारून के पुत्रो के लिये भी
अगरखे और कमरबन्द और टोपिया
बनवाना, ये वस्त्र भी विभव और शोभा
के लिये बने। ४१ अपने भाई हारून और
उसके पुत्रो को ये ही सब वस्त्र पहिनाकर
उनका अभिषेक और संस्कार* करना,
और उन्हे पवित्र करना, कि वे मेरे लिये
याजक का काम करें। ४२ और उनके
लिये सनी के कपडे की जाघिया बनवाना
जिन से उनका तन ढपा रहे, वे कमर से
जांघ तक की हो, ४३ और जब जब
हारून वा उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू मे
प्रवेश करे, वा पवित्र स्थान मे सेवा टहल
करने को वेदी के पास जाए तब तब वे उन
जाघियो को पहिने रहे, न हो कि वे पापी
ठहरे और मर जाए। यह हारून के लिये
और उसके बाद उसके वंश के लिये भी
सदा की विधि ठहरे॥

२६ और उन्हें पवित्र करने को जो
काम तुझे उन से करना है, कि वे
मेरे लिये याजक का काम करे वह यह है।
एक निर्दोष बछडा और दो निर्दोष मेढे
लेना, २ और अखमीरी रोटी, और तेल
से सने हुए मैदे के अखमीरी फुलके, और
तेल से चुपडी हुई अखमीरी पपडिया भी
लेना। ये सब गेहू के मैदे के बनवाना।
३ इनको एक टोकरी में रखकर उस
टोकरी को उस बछडे और उन दोनो मेढो
समेत समीप ले आना। ४ फिर हारून

* यहा, और जहा कही याजकों के संस्कार
वा याजकों के संस्कार की चर्चा हो वहा
जानो, कि मूल का शब्दार्थ हाथ भर देना वा
भर लेना है।

और उसके पुत्रो को मिलापवाले तम्बू के
द्वार के समीप ले आकर जल से नहलाना।
५ तब उन वस्त्रो को लेकर हारून को
अगरखा और एपोद का बागा पहिनाना,
और एपोद और चपरास बान्धना, और
एपोद का काढा हुआ पटुका भी बान्धना,
६ और उसके सिर पर पगडी को रखना,
और पगडी पर पवित्र मुकुट को रखना।
७ तब अभिषेक का तेल ले उसके सिर
पर डालकर उसका अभिषेक करना।
८ फिर उसके पुत्रो को समीप ले आकर
उनको अगरखे पहिनाना, ९ और उनके
अर्थात् हारून और उसके पुत्रो के कमर
बान्धना और उनके सिर पर टोपिया रखना,
जिस से याजक के पद पर सदा उनका
हक रहे। इसी प्रकार हारून और उसके
पुत्रो का संस्कार करना। १० और बछडे
को मिलापवाले तम्बू के साम्हने समीप ले
आना। और हारून और उसके पुत्र बछडे के
सिर पर अपने अपने हाथ रखे, ११ तब
उस बछडे को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर बलिदान करना, १२ और
बछडे के लोहू में से कुछ लेकर अपनी उंगली
से वेदी के सींगो पर लगाना, और शेष सब
लोहू को वेदी के पाए पर उंडेल देना,
१३ और जिस चरबी से अंतडिया ढपी
रहती है, और जो झिल्ली कलेजे के ऊपर
होती है, उनको और दोनो गुर्दो को उनके
ऊपर की चरबी समेत लेकर सब को वेदी
पर जलाना। १४ और बछडे का मांस,
और खाल, और गोबर, छावनी से बाहर
आग मे जला देना, क्योंकि यह पापबलि
होगा। १५ फिर एक मेढा लेना, और
हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर
अपने अपने हाथ रखे, १६ तब उस मेढे
को बलि करना, और उसका लोहू लेकर

वेदी पर चारो ओर छिडकना। १७ और
उस मेढे को टुकडे टुकडे काटना, और
उसकी अतडियो और पैरो को धोकर उसके
टुकडो और सिर के ऊपर रखना, १८ तव
उस पूरे मेढे को वेदी पर जलाना, वह तो
यहोवा के लिये होमवलि होगा, वह सुख-
दायक सुगन्ध और यहोवा के लिये हवन *
होगा। १९ फिर दूसरे मेढे को लेना,
और हारून और उसके पुत्र उसके सिर पर
अपने अपने हाथ रखे, २० तव उस मेढे
को वलि करना, और उसके लोहू मे से
कुछ लेकर हारून और उसके पुत्रो के
दहिने कान के सिरे पर, और उनके दहिने
हाथ और दहिने पाव के अगूठो पर लगाना,
और लोहू को वेदी पर चारो ओर छिडक
देना। २१ फिर वेदी पर के लोहू, और
अभिषेक के तेल, इन दोनो मे से कुछ कुछ
लेकर हारून और उसके वस्त्रो पर, और
उसके पुत्रो और उनके वस्त्रो पर भी छिडक
देना, तव वह अपने वस्त्रो समेत, और उसके
पुत्र भी अपने अपने वस्त्रो समेत पवित्र हो
जाएगे। २२ तव मेढे को सस्कारवाला
जानकर उस मे से चरवी और मोटी पूछ
को, और जिस चरवी से अतडिया ढपी
रहती है उसको, और कलेजे पर की झिल्ली
को, और चरवी समेत दोनो गुर्दो को, और
दहिने पुट्ठे को लेना, २३ और अखमीरी
रोटी की टोकरी जो यहोवा के आगे धरी
होगी उस मे से भी एक रोटी, और तेल
से सने हुए मैदे का एक फुलका, और एक
पपडी लेकर, २४ इन सव को हारून और
उसके पुत्रो के हाथो मे रखकर हिलाए जाने
की भेट ठहराके यहोवा के आगे हिलाया
जाए। २५ तव उन वस्तुओ को उनके हाथो
से लेकर होमवलि की वेदी पर जला देना,
जिस से वह यहोवा के साम्हने सुखदायक
सुगन्ध ठहरे, वह तो यहोवा के लिये हवन
होगा। २६ फिर हारून के सस्कार का
जो मेढा होगा उसकी छाती को लेकर
हिलाए जाने की भेट के लिये यहोवा के
आगे हिलाना, और वह तेरा भाग ठहरेगा।
२७ और हारून और उसके पुत्रो के सस्कार
का जो मेढा होगा, उस मे से हिलाए जाने
की भेटवाली छाती जो हिलाई जाएगी, और
उठाए जाने का भेटवाला पुट्ठा जो उठाया
जाएगा, इन दोनो को पवित्र ठहराना।
२८ और ये सदा की विधि की रीति पर
इस्राएलियो की ओर से उसका और उसके
पुत्रो का भाग ठहरे, क्योकि ये उठाए जाने
की भेटे ठहरी है, और यह इस्राएलियो
की ओर से उनके मेलवलियो में से यहोवा
के लिये उठाए जाने की भेट होगी।
२९ और हारून के जो पवित्र वस्त्र होगे
वह उसके वाद उसके वेटे पोते आदि को
मिलते रहे, जिस से उन्ही को पहिने हुए
उनका अभिषेक और सस्कार किया जाए।
३० उसके पुत्रो मे से जो उसके स्थान पर
याजक होगा, वह जव पवित्रस्थान मे सेवा
टहल करने को मिलाप वाले तम्वू मे पहिले
आए, तव उन वस्त्रो को सात दिन तक
पहिने रहे। ३१ फिर याजक के सस्कार
का जो मेढा होगा उसे लेकर उसका मास
किसी पवित्र स्थान मे पकाना, ३२ तव
हारून अपने पुत्रो समेत उस मेढे का मास
और टोकरी की रोटी, दोनो को मिलापवाले
तम्वू के द्वार पर खाए। ३३ और जिन
पदार्थो से उनका सस्कार और उन्हे पवित्र
करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाएगा
उनको तो वे खाए, परन्तु पराए कुल का
कोई उन्हे न खाने पाए, क्योकि वे पवित्र

* अर्थात् जो वस्तु अग्नि में छोड़के चढाई
जाए।

होगे। ३४ और यदि संस्कारवाले मांस
वा रोटी में से कुछ विहान तक बचा रहे,
तो उस बचे हुए को आग में जलाना, वह
खाया न जाए, क्योंकि वह पवित्र होगा।
३५ और मैं ने तुझे जो जो आज्ञा दी है,
उन सभों के अनुसार तू हारून और उसके
पुत्रों से करना, और सात दिन तक उनका
संस्कार करते रहना, ३६ अर्थात् पापबलि
का एक बछड़ा प्रायश्चित्त के लिये प्रतिदिन
चढ़ाना। और वेदी को भी प्रायश्चित्त
करने के समय शुद्ध करना, और उसे पवित्र
करने के लिये उसका अभिषेक करना।
३७ सात दिन तक वेदी के लिये प्रायश्चित्त
करके उसे पवित्र करना, और वेदी परम-
पवित्र ठहरेगी, और जो कुछ उस से छू
जाएगा वह भी पवित्र हो जाएगा॥

३८ जो तुझे वेदी पर नित्य चढ़ाना
होगा वह यह है, अर्थात् प्रतिदिन एक
एक वर्ष के दो भेड़ी के बच्चे। ३९ एक
भेड़ के बच्चे को तो भोर के समय, और दूसरे
भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय चढ़ाना।
४० और एक भेड़ के बच्चे के संग हीन की
चौथाई कूटके निकाले हुए तेल से सना हुआ
एपा का दसवां भाग मैदा, और अर्घ के लिये
हीन की चौथाई दाखमधु देना। ४१ और
दूसरे भेड़ के बच्चे को गोधूलि के समय
चढ़ाना, और उसके साथ भोर की रीति
अनुसार अन्नबलि और अर्घ दोनों देना, जिस
से वह सुखदायक सुगन्ध और यहोवा के लिये
हवन ठहरे। ४२ तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में
यहोवा के आगे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
नित्य ऐसा ही होमबलि हुआ करे, यह वह
स्थान है जिस में मैं तुम लोगों से इसलिये
मिला करूंगा, कि तुझ से बातें करूं।
४३ और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला
करूंगा, और वह तम्बू मेरे तेज से पवित्र
किया जाएगा। ४४ और मैं मिलापवाले
तम्बू और वेदी को पवित्र करूंगा, और हारून
और उसके पुत्रों को भी पवित्र करूंगा, कि
वे मेरे लिये याजक का काम करें। ४५ और
मैं इस्राएलियों के मध्य निवास करूंगा,
और उनका परमेश्वर ठहरूंगा। ४६ तब
वे जान लेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर
हूं, जो उनको मिस्र देश से इसलिये निकाल
ले आया, कि उनके मध्य निवास करूं, मैं
ही उनका परमेश्वर यहोवा हूं॥

(भांति भांति की पवित्र वस्तुएं बनाने और
भांति भांति की रीति चलाने की आज्ञाएं)

३० फिर धूप जलाने के लिये बबूल
की लकड़ी की वेदी बनाना।
२ उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई
एक हाथ की हो, वह चौकोर हो, और
उसकी ऊंचाई दो हाथ की हो, और उसके
सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएं। ३ और
वेदी के ऊपरवाले पल्ले और चारों ओर की
अलंगों और सींगों को चोखे सोने से मढ़ना,
और इसकी चारों ओर सोने की एक बाड़
बनाना। ४ और इसकी बाड़ के नीचे
इसके दोनों पल्लों पर सोने के दो दो कड़े
बनाकर इसके दोनों ओर लगाना, वे इसके
उठाने के डण्डों के खानों का काम देंगे।
५ और डण्डों को बबूल की लकड़ी के
बनाकर उनको सोने से मढ़ना। ६ और तू
उसको उस पर्दे के आगे रखना जो साक्षीपत्र
के सन्दूक के साम्हने है, अर्थात् प्रायश्चित्त-
वाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर
है, वहीं मैं तुझ से मिला करूंगा। ७ और
उसी वेदी पर हारून सुगन्धित धूप जलाया
करे, प्रतिदिन भोर को जब वह दीपक को
ठीक करे तब वह धूप को जलाए, ८ तब
गोधूलि के समय जब हारून दीपकों को

जलाए * तब धूप जलाया करे, यह धूप
यहोवा के साम्हने तुम्हारी पीढी पीढी मे
नित्य जलाया जाए। ९ और उस वेदी पर तुम
और प्रकार का धूप न जलाना, और न उस
पर होमबलि और न अन्नबलि चढाना, और
न इस पर अर्घ देना। १० और हारून वर्ष
मे एक बार इसके सीगो पर प्रायश्चित्त करे,
और तुम्हारी पीढी पीढी मे वर्ष मे एक बार
प्रायश्चित्त के पापबलि के लोहू से इस पर
प्रायश्चित्त किया जाए, यह यहोवा के लिये
परमपवित्र है॥

११ और तब यहोवा ने मूसा से कहा,
१२ जब तू इस्राएलियो की गिनती लेने
लगे, तब वे गिनने के समय जिनकी गिनती
हुई हो अपने अपने प्राणो के लिये यहोवा
को प्रायश्चित्त दे, जिस से जब तू उनकी
गिनती कर रहा हो उस समय कोई विपत्ति
उन पर न आ पडे। १३ जितने लोग गिने
जाए † वे पवित्रस्थान के शेकेल के लिये
आधा शेकेल दे, यह शेकेल बीस गेरा का
होता है, यहोवा की भेट आधा शेकेल हो।
१४ बीस वर्ष के वा उस से अधिक अवस्था
के जितने गिने जाए † उन मे से एक एक
जन यहोवा की भेट दे। १५ जब तुम्हारे
प्राणो के प्रायश्चित्त के निमित्त यहोवा की
भेट दी जाए, तब न तो धनी लोग आधे
शेकेल मे अधिक दे, और न कगाल लोग
उस से कम दे। १६ और तू इस्राएलियो से
प्रायश्चित्त का रुपया लेकर मिलापवाले तम्बू
के काम मे लगाना, जिस से वह यहोवा के
सम्मुख इस्राएलियो के स्मरणार्थ चिन्ह ठहरे,
और उनके प्राणो का प्रायश्चित्त भी हो॥

१७ और यहोवा ने मूसा से कहा,
१८ धोने के लिये पीतल की एक हौदी और
उसका पाया पीतल का बनाना। और उसे
मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच मे
रखकर उस मे जल भर देना, १९ और
उस मे हारून और उसके पुत्र अपने अपने
हाथ पाव धोया करे। २० जब जब वे
मिलापवाले तम्बू मे प्रवेश करे तब तब वे
हाथ पाव जल से धोए, नही तो मर जाएगे,
और जब जब वे वेदी के पास सेवा टहल
करने, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य जलाने
को आए तब तब वे हाथ पाव धोए, न हो
कि मर जाए। २१ यह हारून और
उसके पीढी पीढी के वश के लिये सदा
की विधि ठहरे॥

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२३ तू मुख्य मुख्य सुगन्ध द्रव्य, अर्थात्
पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार पाच सौ
शेकेल अपने आप निकला हुआ गन्धरस,
और उसका आधा, अर्थात् अढाई सौ शेकेल
सुगन्धित दालचीनी, और अढाई सौ शेकेल
सुगन्धित अगर, २४ और पाच सौ शेकेल
तज, और एक हीन जलपाई का तेल लेकर
२५ उन से अभिषेक का पवित्र तेल, अर्थात्
गन्धी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित
तेल बनवाना, यह अभिषेक का पवित्र तेल
ठहरे। २६ और उस से मिलापवाले तम्बू
का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का, २७ और
सारे सामान समेत मेज का, और सामान
समेत दीवट का, और धूपवेदी का, २८ और
सारे सामान समेत होमवेदी का, और पाए
समेत हौदी का अभिषेक करना। २९ और
उनको पवित्र करना, जिस से वे परमपवित्र
ठहरे, और जो कुछ उन से छू जाएगा वह
पवित्र हो जाएगा। ३० फिर हारून का
उसके पुत्रो के साथ अभिषेक करना, और
इस प्रकार उन्हे मेरे लिये याजक का काम
करने के लिये पवित्र करना। ३१ और

* मूल मे—चढाएगा।
† मूल मे—गिने हुओं के पास पार जाए।

इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना,
कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये
पवित्र अभिषेक का तेल होगा। ३२ वह
किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाए, और
मिलावट में उसके समान और कुछ न
बनाना, वह तो पवित्र होगा, वह तुम्हारे
लिये पवित्र होगा। ३३ जो कोई उसके
समान कुछ बनाए, वा जो कोई उस में से
कुछ पराए कुलवाले पर लगाए, वह अपने
लोगों में से नाश किया जाए॥

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
बोल, नखी और कुन्दरू, ये सुगन्ध द्रव्य
निर्मल लोबान समेत ले लेना, ये सब एक
तौल के हों, ३५ और इनका धूप अर्थात्
लोन मिलाकर गन्धी की रीति के अनुसार
चोखा और पवित्र सुगन्ध द्रव्य बनवाना,
३६ फिर उस में से कुछ पीसकर बुकनी कर
डालना, तब उस में से कुछ मिलापवाले तम्बू
में साक्षीपत्र के आगे, जहां पर मैं तुझ से
मिला करूंगा वहां रखना, वह तुम्हारे लिये
परमपवित्र होगा। ३७ और जो धूप तू
बनवाएगा, मिलावट में उसके समान तुम
लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना, वह
तुम्हारे आगे यहोवा के लिये पवित्र होगा।
३८ जो कोई सूंघने के लिये उसके समान
कुछ बनाए वह अपने लोगों में से नाश किया
जाए॥

३१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को,
जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है,
नाम लेकर बुलाता हूं। ३ और मैं उसको
परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता,
ज्ञान, और सब प्रकार के कार्यों की समझ
देनेवाली आत्मा है परिपूर्ण करता हूं,
४ जिस से वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से
निकाल निकालकर सब भांति की बनावट
में, अर्थात् सोने, चांदी, और पीतल में,
५ और जड़ने के लिये मणि काटने में, और
लकड़ी के खोदने में काम करे। ६ और
सुन, मैं दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र
ओहोलीआब को उसके संग कर देता हूं,
वरन जितने बुद्धिमान हैं उन सभों के हृदय में
मैं बुद्धि देता हूं, जिस से जितनी वस्तुओं की
आज्ञा मैं ने तुझे दी है उन सभों को वे बनाएं,
७ अर्थात् मिलापवाला तम्बू, और साक्षीपत्र
का सन्दूक, और उस पर का प्रायश्चित्तवाला
ढकना, और तम्बू का सारा सामान, ८ और
सामान सहित मेज़, और सारे सामान
समेत चोखे सोने की दीवट, और धूपवेदी,
९ और सारे सामान सहित होमवेदी, और
पाए समेत हौदी, १० और काढ़े हुए वस्त्र,
और हारून याजक के याजकवाले काम के
पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र,
११ और अभिषेक का तेल, और पवित्र-
स्थान के लिये सुगन्धित धूप, इन सभों को वे
उन सब आज्ञाओं के अनुसार बनाएं जो मैं
ने तुझे दी हैं॥

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१३ तू इस्राएलियों से यह भी कहना, कि
निश्चय तुम मेरे विश्रामदिनों को मानना,
क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे और तुम
लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है, जिस से
तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा
पवित्र करनेहारा है। १४ इस कारण तुम
विश्रामदिन को मानना, क्योंकि वह तुम्हारे
लिये पवित्र ठहरा है, जो उसको अपवित्र
करे वह निश्चय मार डाला जाए, जो कोई
उस दिन में कुछ कामकाज करे वह प्राणी
अपने लोगों के बीच से नाश किया जाए।
१५ छः दिन तो काम काज किया जाए, पर
सातवां दिन परमविश्राम का दिन और

यहोवा के लिये पवित्र है, इसलिये जो कोई
विश्राम के दिन मे कुछ काम काज करे
वह निश्चय मार डाला जाए। १६ सो
इस्राएली विश्रामदिन को माना करे, वरन
पीढी पीढी मे उसको सदा की वाचा का
विषय जानकर माना करे। १७ वह मेरे
और इस्राएलियो के वीच सदा एक चिन्ह
रहेगा, क्योकि छ दिन मे यहोवा ने आकाश
और पृथ्वी को वनाया, और सातवे दिन
विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया ॥
१८ जव परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत
पर ऐसी वाते कर चुका, तव उस ने उसको
अपनी उगली से लिखी हुई साक्षी देनेवाली
पत्थर की दोनो तख्तिया दी ॥

(इस्राएलियों के मूर्तिपूजा मे फसने का वर्णन)

३२ जव लोगो ने देखा कि मूसा को
पर्वत से उतरने मे विलम्व हो रहा
है, तव वे हारून के पास इकट्ठे होकर कहने
लगे, अव हमारे लिये देवता वना, जो हमारे
आगे आगे चले, क्योकि उस पुरुष मूसा को
जो हमे मिस्र देश से निकाल ले आया है, हम
नही जानते कि उसे क्या हुआ ? २ हारून
ने उन से कहा, तुम्हारी स्त्रियो और वेटे
वेटियो के कानो मे सोने की जो वालिया है
उन्हे तोडकर उतारो, और मेरे पास ले
आओ। ३ तव सव लोगो ने उनके कानो
मे सोने की वालियो को तोडकर उतारा,
और हारून के पास ले आए। ४ और
हारून ने उन्हे उनके हाथ मे लिया, और
एक वछडा ढालकर वनाया, और टाकी मे
गढा, तव वे कहने लगे, कि हे इस्राएल तेरा
परमेश्वर जो तुझे मिस्र देश मे छुडा लाया
है वह यही है। ५ यह देखके हारून ने
उसके आगे एक वेदी वनवाई, और यह
प्रचार किया, [illegible] वा के [illegible]
होगा। ६ और दूसरे दिन लोगो ने तडके
उठकर होमवलि चढाए, और मेलवलि ले
आए, फिर वैठकर खाया पिया, और
उठकर खेलने लगे ॥
७ तव यहोवा ने मूसा से कहा, नीचे
उतर जा, क्योकि तेरी प्रजा के लोग, जिन्हे तू
मिस्र देश से निकाल ले आया है, सो विगड
गए है, ८ और जिस मार्ग पर चलने की
आज्ञा मै ने उनको दी थी उसको झटपट
छोडकर उन्हो ने एक वछडा ढालकर वना
लिया, फिर उसको दण्डवत् किया, और
उसके लिये वलिदान भी चढाया, और यह
कहा है, कि हे इस्राएलियो तुम्हारा परमेश्वर
जो तुम्हे मिस्र देश से छुडा ले आया है वह
यही है। ९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
मै ने इन लोगो को देखा, और सुन, वे हठीले
है *। १० अव मुझे मत रोक, मेरा कोप
उन पर भडक उठा है जिस से मै उन्हे भस्म
करू, परन्तु तुझ से एक वडी जाति
उपजाऊगा। ११ तव मूसा अपने परमेश्वर
यहोवा को यह कहके मनाने लगा, कि
हे यहोवा, तेरा कोप अपनी प्रजा पर क्यो
भडका है, जिसे तू वडे सामर्थ्य और वलवन्त
हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल लाया है ?
१२ मिस्री लोग यह क्यो कहने पाए, कि वह
उनको वुरे अभिप्राय से, अर्थात् पहाडो मे
घात करके धरती पर से मिटा डालने की
मनसा से निकाल ले गया ? तू अपने भडके
हुए कोप को शात कर, और अपनी प्रजा को
ऐसी हानि पहुचाने से फिर जा। १३ अपने
दास इब्राहीम, इसहाक, और याकूव को
स्मरण कर, जिन से तू ने अपनी ही किरिया
खाकर यह कहा था, कि मै तुम्हारे वश को
आकाश के तारो के तुल्य वहुत करूगा, और

* मूल मे—कडी गर्दन वाले।

यह सारा देश जिसकी मैं ने चर्चा की है
तुम्हारे वंश को दूंगा, कि वह उसके
अधिकारी सदैव बने रहें। १४ तब यहोवा
अपनी प्रजा की हानि करने से जो उस ने
कहा था पछताया॥

१५ तब मूसा फिरकर साक्षी की दोनो
तख्तियो को हाथ में लिये हुए पहाड मे उतर
गया, उन तख्तियो के तो इधर और उधर
दोनो अलगो पर कुछ लिखा हुआ था।
१६ और वे तख्तिया परमेश्वर की बनाई
हुई थी, और उन पर जो खोदकर लिखा
हुआ था वह परमेश्वर का लिखा हुआ
था॥

१७ जब यहोशू को लोगो के कोलाहल
का शब्द सुनाई पडा, तब उस ने मूसा से
कहा, छावनी से लडाई का सा शब्द सुनाई
देता है। १८ उस ने कहा, वह जो शब्द है
वह न तो जीतनेवालो का है, और न हारने-
वालो का, मुझे तो गाने का शब्द सुन पडता
है। १९ छावनी के पास आते ही मूसा को
वह बछडा और नाचना देख पडा, तब मूसा
का कोप भडक उठा, और उस ने तख्तियो को
अपने हाथो से पर्वत के नीचे पटककर तोड
डाला। २० तब उस ने उनके बनाए हुए
बछडे को लेकर आग मे डालके फूक दिया।
और पीसकर चूर चूरकर डाला, और जल
के ऊपर फेक दिया, और इस्राएलियो को
उसे पिलवा दिया। २१ तब मूसा हारून से
कहने लगा, उन लोगो ने तुझ से क्या किया
कि तू ने उनको इतने बडे पाप मे फसाया?
२२ हारून ने उत्तर दिया, मेरे प्रभु का कोप
न भडके, तू तो उन लोगो को जानता ही है,
कि वे बुराई मे मन लगाए रहते है।
२३ और उन्हो ने मुझ से कहा, कि हमारे
लिये देवता बनवा जो हमारे आगे आगे चले,
क्योकि उस पुरुष मूसा को, जो हमे मिस्र देश
से छुडा लाया है, हम नही जानते कि उसे क्या
हुआ? २४ तब मैं ने उन से कहा, जिस
जिसके पास सोने के गहने हो, वे उनको
तोडकर उतार लाए, और जब उन्हो ने
मुझ को दिया, मैं ने उन्हे आग में डाल दिया,
तब यह बछडा निकल पडा। २५ हारून ने
उन लोगो को ऐसा निरकुश कर दिया था
कि वे अपने विरोधियो के बीच उपहास *
के योग्य हुए, २६ उनको निरकुश
देखकर मूसा ने छावनी के निकास पर खडे
होकर कहा, जो कोई यहोवा की ओर का
हो वह मेरे पास आए, तब सारे लेवीय उस
के पास इकट्ठे हुए। २७ उस ने उन से कहा,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
कि अपनी अपनी जाघ पर तलवार लटका-
कर छावनी से एक निकास से दूसरे निकास
तक घूम घूमकर अपने अपने भाइयो, सगियो,
और पडोसियो को घात करो। २८ मूसा
के इस वचन के अनुसार लेवियो ने किया,
और उस दिन तीन हजार के अटकल लोग
मारे गए। २९ फिर मूसा ने कहा, आज के
दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का
सस्कार करो †, वरन अपने अपने बेटो और
भाइयो के भी विरुद्ध होकर ऐसा करो जिस
से वह आज तुम को आशीष दे। ३० दूसरे
दिन मूसा ने लोगो से कहा, तुम ने बडा ही
पाप किया है। अब मै यहोवा के पास चढ
जाऊगा, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पाप का
प्रायश्चित्त कर सकू। ३१ तब मूसा यहोवा
के पास जाकर कहने लगा, कि हाय,
हाय, उन लोगो ने सोने का देवता बनवा-
कर बडा ही पाप किया है। ३२ तौभी अब
तू उनका पाप क्षमा कर—नही तो अपनी
लिखी हुई पुस्तक मे से मेरे नाम को काट

* मूल में—फुसफुसाहट।
† मूल में—अपना हाथ भरो।

दे*। ३३ यहोवा ने मूसा से कहा, जिस ने
मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मै
अपनी पुस्तक मे से काट दूगा। ३४ अब तो
तू जाकर उन लोगो को उस स्थान मे ले चल
जिसकी चर्चा मै ने तुझ से की थी, देख,
मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा। परन्तु जिस
दिन मै दण्ड देने लगूगा उस दिन उनको
इस पाप का भी दण्ड दूगा। ३५ और
यहोवा ने उन लोगो पर विपत्ति डाली,
क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्ही
ने बनवाया था॥

३३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
तू उन लोगो को जिन्हे मिस्र देश से
छुड़ा लाया है संग लेकर उस देश को जा,
जिसके विषय मै ने इब्राहीम, इसहाक, और
याकूब से शपथ खाकर कहा था, कि मै उसे
तुम्हारे वंश को दूगा। २ और मै तेरे
आगे आगे एक दूत को भेजूगा, और कनानी,
एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी
लोगो को बरबस निकाल दूगा। ३ तुम
लोग उस देश को जाओ जिस मे दूध और
मधु की धारा बहती है, परन्तु तुम हठीले
हो, इस कारण मै तुम्हारे बीच मे होके न
चलूगा, ऐसा न हो कि मै मार्ग मे तुम्हारा
अन्त कर डालू। ४ यह बुरा समाचार
सुनकर वे लोग विलाप करने लगे, और
कोई अपने गहने पहिने हुए न रहा।
५ क्योंकि यहोवा ने मूसा से कह दिया था,
कि इस्राएलियो को मेरा यह वचन सुना,
कि तुम लोग तो हठीले हो, जो मै पल
भर के लिये तुम्हारे बीच होकर चलू, तो
तुम्हारा अन्त कर डालूगा। इसलिये अब
अपने अपने गहने अपने अंगो से उतार दो,
कि मै जानू कि तुम्हारे साथ क्या करना
चाहिए। ६ तब इस्राएली होरेब पर्वत से
लेकर आगे को अपने गहने उतारे रहे॥

(मूसा के इस्राएलियों के लिये पापमोचन
मांगने का वर्णन)

७ मूसा तम्बू को छावनी से बाहर वरन
दूर खड़ा कराया करता था, और उसको
मिलापवाला तम्बू कहता था। और जो कोई
यहोवा को ढूढ़ता वह उस मिलापवाले तम्बू
के पास जो छावनी के बाहर था निकल
जाता था। ८ और जब जब मूसा तम्बू के
पास जाता, तब तब सब लोग उठकर अपने
अपने डेरे के द्वार पर खड़े हो जाते, और
जब तक मूसा उस तम्बू मे प्रवेश न करता
था तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे।
९ और जब मूसा उस तम्बू मे प्रवेश करता
था, तब बादल का खम्भा उतर के तम्बू के
द्वार पर ठहर जाता था, और यहोवा मूसा से
बाते करने लगता था। १० और सब लोग
जब बादल के खम्भे को तम्बू के द्वार पर
ठहरा देखते थे, तब उठकर अपने अपने डेरे
के द्वार पर से दण्डवत् करते थे। ११ और
यहोवा मूसा से इस प्रकार आम्हने-साम्हने
बाते करता था, जिस प्रकार कोई अपने
भाई से बाते करे। और मूसा तो छावनी मे
फिर आता था, पर यहोशू नाम एक जवान,
जो नून का पुत्र और मूसा का टहलुआ था,
वह तम्बू मे से न निकलता था॥

१२ और मूसा ने यहोवा से कहा, सुन
तू मुझ से कहता है, कि इन लोगो को ले
चल; परन्तु यह नही बताया कि तू मेरे संग
किसको भेजेगा। तौभी तू ने कहा है,
कि तेरा नाम मेरे चित्त मे बसा है,* और
तुझ पर मेरे अनुग्रह की दृष्टि है।
१३ और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की

* मूल मे—मुझी को मिटा।

* मूल मे—मै तुझे नाम से जानता हू।

दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे,
जिस से जब मैं तेरा ज्ञान पाऊं तब तेरे
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर
इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी
प्रजा है। १४ यहोवा ने कहा, मैं आप
चलूंगा* और तुझे विश्राम दूंगा।
१५ उस ने उस से कहा, यदि तू आप† न
चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा।
१६ यह कैसे जाना जाए कि तेरे अनुग्रह
की दृष्टि मुझ पर और अपनी प्रजा पर
है? क्या इस से नहीं कि तू हमारे संग
संग चले, जिस से मैं और तेरी प्रजा
के लोग पृथ्वी भर के सब लोगों से अलग
ठहरें?

१७ यहोवा ने मूसा से कहा, मैं यह काम
भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूंगा,
क्योंकि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर है,
और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है‡।
१८ उस ने कहा मुझे अपना तेज दिखा दे।
१९ उस ने कहा, मैं तेरे सम्मुख होकर
चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई
दिखाऊंगा,§ और तेरे सम्मुख यहोवा नाम
का प्रचार करूंगा, और जिस पर मैं अनुग्रह
करना चाहूं उसी पर अनुग्रह करूंगा, और
जिस पर दया करना चाहूं उसी पर दया
करूंगा। २० फिर उस ने कहा, तू मेरे
मुख का दर्शन नहीं कर सकता, क्योंकि
मनुष्य मेरे मुख का दर्शन करके जीवित नहीं
रह सकता। २१ फिर यहोवा ने कहा, सुन,
मेरे पास एक स्थान है, तू उस चट्टान पर
खड़ा हो, २२ और जब तक मेरा तेज
तेरे साम्हने होके चलता रहे* तब तक मैं
तुझे चट्टान के दरार में रखूंगा, और जब तक
मैं तेरे साम्हने होकर न निकल जाऊं तब तक
अपने हाथ से तुझे ढांपे रहूंगा, २३ फिर
मैं अपना हाथ उठा लूंगा, तब तू मेरी पीठ
का तो दर्शन पाएगा, परन्तु मेरे मुख का
दर्शन नहीं मिलेगा॥

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
पहिली तख्तियों के समान पत्थर
की दो और तख्तियां गढ़ ले, तब जो वचन
उन पहिली तख्तियों पर लिखे थे, जिन्हें तू
ने तोड़ डाला, वे ही वचन मैं उन तख्तियों
पर भी लिखूंगा। २ और बिहान को तैयार
रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर
उसकी चोटी पर मेरे साम्हने खड़ा होना।
३ और तेरे संग कोई न चढ़ पाए, वरन
पर्वत भर पर कोई मनुष्य कहीं दिखाई न दे,
और न भेड़-बकरी और गाय-बैल भी पर्वत
के आगे चरने पाएं। ४ तब मूसा ने पहिली
तख्तियों के समान दो और तख्तियां गढ़ी,
और बिहान को सबेरे उठकर अपने हाथ में
पत्थर की वे दोनों तख्तियां लेकर यहोवा
की आज्ञा के अनुसार सीनै पर्वत पर चढ़
गया। ५ तब यहोवा ने बादल में उतरके
उसके संग वहां खड़ा होकर यहोवा नाम का
प्रचार किया। ६ और यहोवा उसके
साम्हने होकर यों प्रचार करता हुआ चला,
कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और
अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त,
और अति करुणामय और सत्य, ७ हजारों
पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला,
अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा
करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी

---

* मूल में—मेरा मुंह चलेगा।
† मूल में—तेरा मुंह।
‡ मूल में—मैं तुझे नाम से जानता हूं।
§ मूल में—अपनी सारी भलाई तेरे साम्हने से चलाऊंगा।

* मूल में—मेरा तेज तेरे साम्हने होके चलता रहे।

प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरो के
अधर्म का दण्ड उनके बेटो वरन पोतो और
परपोतो को भी देनेवाला है। ८ तब
मूसा ने फुर्ती कर पृथ्वी की ओर झुककर
दण्डवत् की। ९ और उस ने कहा, हे
प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर
हो तो प्रभु, हम लोगो के बीच मे होकर चले,
ये लोग हठीले तो है, तौभी हमारे अधर्म
और पाप को क्षमा कर, और हमे अपना
निज भाग मानके ग्रहण कर। १० उस ने
कहा, सुन, मै एक वाचा बान्धता हू। तेरे
सब लोगो के साम्हने मै ऐसे आश्चर्य कर्म
करूगा जैसा पृथ्वी पर और सब जातियो
मे कभी नही हुए, और वे सारे लोग जिनके
बीच तू रहता है यहोवा के कार्य को देखेगे,
क्योकि जो मै तुम लोगो से करने पर हू वह
भय योग्य काम है। ११ जो आज्ञा मै आज
तुम्हे देता हू उसे तुम लोग मानना। देखो,
मै तुम्हारे आगे से एमोरी, कनानी, हित्ती,
परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगो को
निकालता हू। १२ इसलिये सावधान
रहना कि जिस देश मे तू जानेवाला है उसके
निवासियो से वाचा न बान्धना, कही ऐसा
न हो कि वह तेरे लिये फदा ठहरे।
१३ वरन उनकी वेदियो को गिरा देना,
उनकी लाठो को तोड डालना, और उनकी
अशेरा नाम मूर्त्तियो को काट डालना,
१४ क्योकि तुम्हे किसी दूसरे को ईश्वर
करके दण्डवत् करने की आज्ञा नही,
क्योकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है,
वह जल उठनेवाला ईश्वर है ही, १५ ऐसा
न हो कि तू उस देश के निवासियो से वाचा
बान्धे, और वे अपने देवताओ के पीछे होने
का व्यभिचार करे, और उनके लिये
बलिदान भी करे, और कोई तुझे नेवता दे
और तू भी उसके बलिपशु का प्रसाद खाए,
१६ और तू उनकी बेटियो को अपने बेटो
के लिये लावे, और उनकी बेटिया जो आप
अपने देवताओ के पीछे होने का व्यभिचार
करती है तेरे बेटो से भी अपने देवताओ के
पीछे होने का व्यभिचार करवाए।
१७ तुम देवताओ की मूर्त्तिया ढालकर न
बना लेना। १८ अखमीरी रोटी का पर्व्व
मानना। उस मे मेरी आज्ञा के अनुसार
आबीब महीने के नियत समय पर सात दिन
तक अखमीरी रोटी खाया करना, क्योकि
तू मिस्र से आबीब महीने मे निकल आया।
१९ हर एक पहिलौठा मेरा है, और क्या
बछडा, क्या मेम्ना, तेरे पशुओ मे से जो
नर पहिलौठे हो वे सब मेरे ही है।
२० और गदही के पहिलौठे की सन्ती मेम्ना
देकर उसको छुडाना, यदि तू उसे छुडाना
न चाहे तो उसकी गर्दन तोड देना। परन्तु
अपने सब पहिलौठे बेटो को बदला देकर
छुडाना। मुझे कोई छूछे हाथ अपना मुह
न दिखाए। २१ छ दिन तो परिश्रम
करना, परन्तु सातवे दिन विश्राम करना,
वरन हल जोतने और लवने के समय मे भी
विश्राम करना। २२ और तू अठवारो का
पर्व्व मानना जो पहिले लवे हुए गेहू का
पर्व्व कहलाता है, और वर्ष के अन्त मे बटोरन
का भी पर्व्व मानना। २३ वर्ष मे तीन
बार तेरे सब पुरुष इस्राएल के परमेश्वर
प्रभु यहोवा को अपने मुह दिखाए। २४ मै
तो अन्यजातियो को तेरे आगे से निकालकर
तेरे सिवानो को बढाऊगा, और जब तू अपने
परमेश्वर यहोवा को अपना मुह दिखाने के
लिये वर्ष मे तीन बार आया करे, तब कोई
तेरी भूमि का लालच न करेगा। २५ मेरे
बलिदान के लोहू को खमीर सहित न
चढाना, और न फसह के पर्व्व के बलिदान
मे से कुछ बिहान तक रहने देना।

२६ अपनी भूमि की पहिली उपज का
पहिला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के
भवन में ले आना। बकरी के बच्चे को
उसकी मा के दूध मे न सिझाना।
२७ और यहोवा ने मूसा से कहा, ये वचन
लिख ले, क्योंकि इन्ही वचनों के अनुसार
मैं तेरे और इस्राएल के साथ वाचा बान्धता
हू। २८ मूसा तो वहा यहोवा के संग
चालीस दिन और रात रहा, और तब तक
न तो उस ने रोटी खाई और न पानी पिया।
और उस ने उन तख्तियों पर वाचा के वचन
अर्थात् दस आज्ञाएं* लिख दीं॥

२९ जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियां
हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतरा आता
था तब यहोवा के साथ बातें करने के कारण
उसके चेहरे से किरणें† निकल रही थीं,
परन्तु वह यह नहीं जानता था कि उसके
चेहरे से किरणें† निकल रही हैं।
३० जब हारून और सब इस्राएलियों ने
मूसा को देखा कि उसके चेहरे से किरणें†
निकलती हैं, तब वे उसके पास जाने से डर
गए। ३१ तब मूसा ने उनको बुलाया,
और हारून मण्डली के सारे प्रधानों समेत
उसके पास आया, और मूसा उन से
बातें करने लगा। ३२ इसके बाद सब
इस्राएली पास आए, और जितनी आज्ञाएं
यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसके साथ बात
करने के समय दी थीं, वे सब उस ने उन्हें
बताईं। ३३ जब तक मूसा उन से बात न
कर चुका तब तक अपने मुंह पर ओढ़ना
डाले रहा। ३४ और जब जब मूसा भीतर
यहोवा से बात करने को उसके साम्हने
जाता तब तब वह उस ओढ़नी को निकलते
समय तक उतारे हुए रहता था, फिर बाहर
आकर जो जो आज्ञा उसे मिलती उन्हें
इस्राएलियों से वह देता था। ३५ सो
इस्राएली मूसा का चेहरा देखते थे कि उस से
किरणें* निकलती हैं, और जब तक वह
यहोवा से बात करने को भीतर न जाता
तब तक वह उस ओढ़नी को डाले रहता था॥

(सारे सामान समेत पवित्रस्थान और याजकों के वस्त्र बनाए जाने का वर्णन)

३५ मूसा ने इस्राएलियों की सारी
मण्डली इकट्ठी करके उन से कहा,
जिन कामों के करने की आज्ञा यहोवा ने दी
है वे ये हैं। २ छः दिन तो काम काज
किया जाए, परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिये
पवित्र और यहोवा के लिये परमविश्राम का
दिन ठहरे, उस में जो कोई काम काज करे
वह मार डाला जाए, ३ वरन विश्राम के
दिन तुम अपने अपने घरों में आग तक न
जलाना॥

४ फिर मूसा ने इस्राएलियों की सारी
मण्डली से कहा, जिस बात की आज्ञा
यहोवा ने दी है वह यह है। ५ तुम्हारे
पास से यहोवा के लिये भेंट ली जाए, अर्थात्
जितने अपनी इच्छा से देना चाहें वे यहोवा
की भेंट करके ये वस्तुएं ले आएं, अर्थात्
सोना, रूपा, पीतल, ६ नीले, बैंजनी और
लाल रंग का कपड़ा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा,
बकरी का बाल, ७ लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों
की खालें, सूइसों की खालें, बबूल की लकड़ी,
८ उजियाला देने के लिये तेल, अभिषेक का
तेल, और धूप के लिये सुगन्धद्रव्य, ९ फिर
एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी मणि
और जड़ने के लिये मणि। १० और तुम
मे से जितनों के हृदय मे बुद्धि का प्रकाश है
वे सब आकर जिस जिस वस्तु की आज्ञा

* मूल में—वचन। † मूल में—सींग।

* मूल में—सींग।

यहोवा ने दी है वे सब बनाए। ११ अर्थात्
तम्बू, और ओहार समेत निवास, और उस-
की घुडी, तख़्ते, बेंडे, खम्भे और कुर्सिया,
१२ फिर डण्डो समेत सन्दूक, और प्राय-
श्चित्त का ढकना, और बीचवाला पर्दा,
१३ डण्डो और सब सामान समेत मेज,
और भेट की रोटिया, १४ सामान
और दीपको समेत उजियाला देनेवाला
दीवट, और उजियाला देने के लिये तेल,
१५ डण्डो समेत धूपवेदी, अभिषेक का तेल,
सुगन्धित धूप, और निवास के द्वार का पर्दा,
१६ पीतल की झझरी, डण्डो आदि सारे
सामान समेत होमवेदी, पाए समेत हौदी,
१७ खम्भो और उनकी कुर्सियो समेत
आगन के पर्दे, और आगन के द्वार के पर्दे,
१८ निवास और आगन दोनो के खूटे, और
डोरिया, १९ पवित्रस्थान मे सेवा टहल
करने के लिये काढे हुए वस्त्र, और याजक
का काम करने के लिये हारून याजक के
पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रो के वस्त्र भी॥

२० तब इस्राएलियो की सारी मण्डली
मूसा के साम्हने से लौट गई। २१ और
जितनो को उत्साह हुआ, * और जितनो के
मन † मे ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे
मिलापवाले तम्बू के काम करने और उसकी
सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रो के बनाने
के लिये यहोवा की भेट ले आने लगे।
२२ क्या स्त्री, क्या पुरुष, जितनो के
मन मे ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी वे सब
जुगनू, नथुनी, मुदरी, और कगन आदि सोने
के गहने ले आने लगे, इस भाति जितने
मनुष्य यहोवा के लिये सोने की भेट के
देनेवाले थे वे सब उनको ले आए।
२३ और जिस जिस पुरुष के पास नीले,
बैंजनी वा लाल रग का कपडा, वा सूक्ष्म
सनी का कपडा, वा बकरी का बाल, वा लाल
रग से रगी हुई मेढो की खाले, वा सूइसो
की खाले थी वे उन्हे ले आए। २४ फिर
जितने चादी, वा पीतल की भेट के देनेवाले
थे वे यहोवा के लिये वैसी भेट ले आए,
और जिस जिसके पास सेवकाई के किसी
काम के लिये बबूल की लकडी थी वे उसे ले
आए। २५ और जितनी स्त्रियो के हृदय
मे बुद्धि का प्रकाश था वे अपने हाथो से
सूत कातकर नीले, बैंजनी और लाल
रग के, और सूक्ष्म सनी के काते हुए सूत को
ले आई। २६ और जितनी स्त्रियो के
मन मे ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्हो ने
बकरी के बाल भी काते। २७ और प्रधान
लोग एपोद और चपरास के लिये सुलैमानी
मणि, और जडने के लिये मणि, २८ और
उजियाला देने और अभिषेक और धूप के
सुगन्धद्रव्य और तेल ले आये। २९ जिस
जिस वस्तु के बनाने की आज्ञा यहोवा ने
मूसा के द्वारा दी थी उसके लिये जो कुछ
आवश्यक था, उसे वे सब पुरुष और स्त्रिया
ले आई, जिनके हृदय मे ऐसी इच्छा उत्पन्न
हुई थी। इस प्रकार इस्राएली यहोवा के
लिये अपनी ही इच्छा से भेट ले आए॥

३० तब मूसा ने इस्राएलियो से कहा
सुनो, यहोवा ने यहूदा के गोत्रवाले बसलेल
को, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता है,
नाम लेकर बुलाया है। ३१ और उस ने
उसको परमेश्वर के आत्मा से ऐसा परिपूर्ण
किया है कि सब प्रकार की बनावट के लिये
उसको ऐसी बुद्धि, समझ, और ज्ञान मिला
है, ३२ कि वह कारीगरी की युक्तिया
निकालकर सोने, चादी, और पीतल मे,
३३ और जडने के लिये मणि काटने मे

* मूल मे—जितनो को उनके मन ने उठाया।
† मूल मे—आत्मा।

और लकड़ी के खोदने में, वरन बुद्धि से सब
भाति की निकाली हुई बनावट में काम कर
सके। ३४ फिर यहोवा ने उसके मन में
और दान के गोत्रवाले अहीसामाक के पुत्र
ओहोलीआब के मन में भी शिक्षा देने की
शक्ति दी है। ३५ इन दोनो के हृदय को
यहोवा ने ऐसी बुद्धि से परिपूर्ण किया है, कि
वे खोदने और गढ़ने और नीले, बैंजनी और
लाल रग के कपड़े और सूक्ष्म सनी के
कपड़े में काढ़ने और बुनने, वरन सब प्रकार
की बनावट में, और बुद्धि से काम निकालने
में सब भाति के काम करे॥

३६ और बसलेल और ओहोलीआब
और सब बुद्धिमान जिनको यहोवा
ने ऐसी बुद्धि और समझ दी हो, कि वे
यहोवा की सारी आज्ञाओ के अनुसार
पवित्रस्थान की सेवकाई के लिये सब
प्रकार का काम करना जाने, वे सब यह
काम करे॥
२ तब मूसा ने बसलेल और ओहोली-
आब और सब बुद्धिमानो को जिनके
हृदय मे यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया
था, अर्थात् जिस जिसको पास आकर काम
करने का उत्साह हुआ था * उन सभो को
बुलवाया। ३ और इस्राएली जो जो भेट
पवित्रस्थान की सेवकाई के काम और उसके
बनाने के लिये ले आए थे, उन्हे उन पुरुषो ने
मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग
प्रति भोर को उसके पास भेट अपनी इच्छा से
लाते रहे, ४ और जितने बुद्धिमान पवित्र-
स्थान का काम करते थे वे सब अपना
अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए,
५ और कहने लगे, जिस काम के करने की
आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिये जितना
चाहिये उससे अधिक वे ले आए है।
६ तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा
का प्रचार करवाया, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री,
कोई पवित्रस्थान के लिये और भेट न लाए,
इस प्रकार लोग और भेट लाने से रोके
गए। ७ क्योंकि सब काम बनाने के लिये
जितना सामान आवश्यक था उतना वरन
उससे अधिक बनाने वालो के पास आ
चुका था॥
८ और काम करनेवाले जितने बुद्धिमान
थे उन्हो ने निवास के लिये बटी हुई सूक्ष्म
सनी के कपड़े के, और नीले, बैंजनी और
लाल रग के कपड़े के दस पटो को काढ़े हुए
करूबो सहित बनाया। ९ एक एक पट की
लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार
हाथ की हुई, सब पट एक ही नाप के बने।
१० उस ने पाच पट एक दूसरे से जोड़
दिए, और फिर दूसरे पाच पट भी एक
दूसरे से जोड़ दिए। ११ और जहा ये पट
जोड़े गए वहा की दोनो छोरो पर उस ने
नीली नीली फलिया लगाई। १२ उस ने
दोनो छोरो मे पचास पचास फलिया इस
प्रकार लगाई कि वे आम्हने-साम्हने हुई।
१३ और उस ने सोने की पचास घुडिया
बनाइ, और उनके द्वारा पटो को एक
दूसरे से ऐसा जोड़ा कि निवास मिलकर
एक हो गया। १४ फिर निवास के ऊपर
के तम्बू के लिये उस ने बकरी के बाल के
ग्यारह पट बनाए। १५ एक एक पट की
लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ
की हुई, और ग्यारहो पट एक ही नाप के
थे। १६ इन मे से उस ने पाच पट अलग
और छ पट अलग जोड़ दिए। १७ और
जहा दोनो जोड़े गए वहा की छोरो मे उस ने
पचास पचास फलिया लगाई। १८ और

* मूल में—जिसको काम करने के लिये पास आने को उसके मन ने उठाया हो।

उस ने तम्बू के जोडने के लिये पीतल की
पचास घुडिया भी वनाई जिस से वह
एक हो जाए। १९ और उस ने तम्बू के
लिये लाल रग से रगी हुई मेढो की खालो
का एक ओढना और उसके ऊपर के लिये
सूइसो की खालो का भी एक ओढना
वनाया॥

२० फिर उस ने निवास के लिये ववूल
की लकडी के तख़्तो को खडे रहने के लिये
वनाया। २१ एक एक तख़्ते की लम्बाई
दस हाथ और चौडाई डेढ हाथ की हुई।
२२ एक एक तख़्ते मे एक दूसरी से जोडी
हुई दो दो चूले वनी, निवास के सव तख़्तो
के लिये उस ने इसी भाति वनाई।
२३ और उस ने निवास के लिये तख़्तो को
इस रीति से वनाया, कि दक्खिन की ओर
वीस तख़्ते लगे। २४ और इन वीसो
तख़्तो के नीचे चादी की चालीस कुर्सिया,
अर्थात् एक एक तख़्ते के नीचे उसकी दो
चूलो के लिये उस ने दो कुर्सिया वनाई।
२५ और निवास की दूसरी अलग, अर्थात्
उत्तर की ओर के लिये भी उस ने वीस
तख़्ते वनाए। २६ और इनके लिये भी
उस ने चादी की चालीस कुर्सिया, अर्थात् एक
एक तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सिया वनाई।
२७ और निवास की पिछली अलग, अर्थात्
पश्चिम ओर के लिये उस ने छ तख़्ते
वनाए। २८ और पिछली अलग मे निवास
के कोनो के लिये उस ने दो तख़्ते वनाए।
२९ और वे नीचे से दो दो भाग के वने, और
दोनो भाग ऊपर के सिरे तक उन दोनो
तख़्तो का ढव ऐसा ही वनाया। ३० इस
प्रकार आठ तख़्ते हुए, और उनकी चादी
की सोलह कुर्सिया हुई, अर्थात् एक एक
तख़्ते के नीचे दो दो कुर्सिया हुई।
३१ फिर उस ने ववूल की लकडी के वेडे
वनाए, अर्थात् निवास की एक अलग के
तख़्तो के लिये पाच वेडे, ३२ और निवास
की दूसरी अलग के तख़्तो के लिये पाच वेडे,
और निवास की जो अलग पश्चिम ओर
पिछले भाग मे थी उसके लिये भी पाच वेडे,
वनाए। ३३ और उस ने वीचवाले वेडे को
तख़्तो के मध्य मे तम्बू के एक सिरे से दूसरे
सिरे तक पहुचने के लिये वनाया।
३४ और तख़्तो को उस ने सोने से मढा,
और वेडो के घर का काम देनेवाले कडो को
सोने के वनाया, और वेडो को भी सोने से
मढा॥

३५ फिर उस ने नीले, वैजनी और
लाल रग के कपडे का, और वटी हुई सूक्ष्म
सनीवाले कपडे का वीचवाला पर्दा वनाया,
वह कढाई के काम किये हुए करूवो के साथ
वना। ३६ और उस ने उसके लिये ववूल
के चार खम्भे वनाए, और उनको सोने से
मढा, उनकी घुडिया सोने की वनी, और
उस ने उनके लिये चादी की चार कुर्सिया
ढाली। ३७ और उस ने तम्बू के द्वार के
लिये नीले, वैजनी और लाल रग के कपडे
का, और वटी हुई सूक्ष्म सनी के कपडे का
कढाई का काम किया हुआ पर्दा वनाया।
३८ और उस ने घुडियो समेत उसके
पाच खम्भे भी वनाए, और उनके सिरो
और जोडने की छडो को सोने से मढा,
और उनकी पाच कुर्सिया पीतल की
वनाई॥

३७ फिर वसलेल ने ववूल की
लकडी का सन्दूक वनाया, उसकी
लम्बाई अढाई हाथ, चौडाई डेढ हाथ, और
ऊचाई डेढ हाथ की थी। २ और उस ने
उसको भीतर वाहर चोखे सोने से मढा,
और उसके चारो ओर सोने की वाड वनाई।

३ और उसके चारो पायो पर लगाने को
उस ने सोने के चार कडे ढाले, दो कडे एक
अलग और दो कडे दूसरी अलग पर लगे।
४ फिर उस ने बबूल के डण्डे बनाए, और
उन्हे सोने से मढा, ५ और उनको सन्दूक
की दोनो अलगो के कडो मे डाला कि उनके
बल सन्दूक उठाया जाए। ६ फिर उस ने
चोखे सोने के प्रायश्चित्तवाले ढकने को
बनाया, उसकी लम्बाई अढाई हाथ और
चौडाई डेढ हाथ की थी। ७ और उस ने
सोना गढकर दो करूब प्रायश्चित्त के ढकने
के दोनो सिरो पर बनाए, ८ एक करूब
तो एक सिरे पर, और दूसरा करूब दूसरे
सिरे पर बना, उस ने उनको प्रायश्चित्त के
ढकने के साथ एक ही टुकडे के दोनो सिरो
पर बनाया। ९ और करूबो के पख ऊपर
से फैले हुए बने, और उन पखो से प्रायश्चित्त
का ढकना ढपा हुआ बना, और उनके
मुख आम्हने-साम्हने और प्रायश्चित्त के
ढकने की ओर किए हुए बने ॥

१० फिर उस ने बबूल की लकडी की
मेज को बनाया, उसकी लम्बाई दो हाथ,
चौडाई एक हाथ, और ऊचाई डेढ हाथ की
थी, ११ और उस ने उसको चोखे सोने
से मढा, और उस मे चारो ओर सोने की
एक बाड बनाई। १२ और उस ने उसके
लिये चार अगुल चौडी एक पटरी, और
इस पटरी के लिये चारो ओर सोने की एक
बाड बनाई। १३ और उस ने मेज के लिये
सोने के चार कडे ढालकर उन चारो कोनो मे
लगाया, जो उसके चारो पायो पर थे।
१४ वे कडे पटरी के पास मेज उठाने के
डण्डो के खानो का काम देने को बने।
१५ और उस ने मेज उठाने के लिये डण्डो
को बबूल की लकडी के बनाया, और सोने से
मढा। १६ और उस ने मेज पर का सामान
अर्थात् परात, धूपदान, कटोरे, और उडेलने
के बर्तन सब चोखे सोने के बनाए ॥

१७ फिर उस ने चोखा सोना गढके
पाए और डण्डी समेत दीवट को बनाया,
उसके पुष्पकोश, गाठ, और फूल सब एक ही
टुकडे के बने। १८ और दीवट से निकली
हुई छः डालिया बनी, तीन डालिया तो
उसकी एक अलग से और तीन डालिया
उसकी दूसरी अलग से निकली हुई बनी।
१९ एक एक डाली मे बादाम के फूल के
सरीखे तीन तीन पुष्पकोश, एक एक गाठ,
और एक एक फूल बना, दीवट से निकली
हुई, उन छहो डालियो का यही ढब हुआ।
२० और दीवट की डण्डी मे बादाम के फूल
के समान अपनी अपनी गाठ और फूल समेत
चार पुष्पकोश बने। २१ और दीवट से
निकली हुई छहो डालियो म से दो दो
डालियो के नीचे एक एक गाठ दीवट के साथ
एक ही टुकडे की बनी। २२ गाठे और
डालिया सब दीवट के साथ एक ही टुकडे
की बनी, सारा दीवट गढे हुए चोखे सोने का
और एक ही टुकडे का बना। २३ और उस
ने दीवट के सातो दीपक, और गुलतराश,
और गुलदान, चोखे सोने के बनाए।
२४ उस ने सारे सामान समेत दीवट को
किक्कार भर सोने का बनाया ॥

२५ फिर उस ने बबूल की लकडी की
धूपवेदी भी बनाई, उसकी लम्बाई एक हाथ
और चौडाई एक हाथ की थी, वह चौकोर
बनी, और उसकी ऊचाई दो हाथ की थी,
और उसके सीग उसके साथ बिना जोड के
बने थे। २६ और ऊपरवाले पल्लो, और
चारो ओर की अलगो, और सीगो समेत
उस ने उस वेदी को चोखे सोने से मढा,
और उसकी चारो ओर सोने की एक बाड
बनाई, २७ और उस बाड के नीचे उसके

दोनो पल्लो पर उस ने सोने के दो कडे
बनाए, जो उसके उठाने के डण्डो के खानो
का काम दे। २८ और डण्डो को उस ने
बबूल की लकडी का बनाया, और सोने से
मढा। २९ और उस ने अभिषेक का पवित्र
तेल, और सुगन्धद्रव्य का धूप, गन्धी की
रीति के अनुसार बनाया॥

३८ फिर उस ने बबूल की लकडी
की होमवेदी भी बनाई, उसकी
लम्बाई पाच हाथ और चौडाई पाच हाथ की
थी, इस प्रकार से वह चौकोर बनी, और
ऊचाई तीन हाथ की थी। २ और उस ने
उसके चारो कोनो पर उसके चार सीग
बनाए, वे उसके साथ बिना जोड के बने,
और उस ने उसको पीतल से मढा।
३ और उस ने वेदी का सारा सामान, अर्थात्
उसकी हाडियो, फावडियो, कटोरो, काटो,
और करछो को बनाया। उसका सारा
सामान उस ने पीतल का बनाया। ४ और
वेदी के लिये उसके चारो ओर की कगनी
के तले उस ने पीतल की जाली की एक
झझरी बनाई, वह नीचे से वेदी की ऊचाई
के मध्य तक पहुची। ५ और उस ने पीतल
की झझरी के चारो कोनो के लिये चार
कडे ढाले, जो डण्डो के खानो का काम
दे। ६ फिर उस ने डण्डो को बबूल की
लकडी का बनाया, और पीतल से मढा।
७ तब उस ने डण्डो को वेदी की अलगो
के कडो मे वेदी के उठाने के लिये डाल
दिया। वेदी को उस ने तख्तो से खोखली
बनाया॥

८ और उस ने हौदी और उसका पाया
दोनो पीतल के बनाए, यह मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर सेवा करनेवाली महिलाओ के
दर्पणो के लिये पीतल के बनाए गए॥

९ फिर उस ने आगन बनाया, और
दक्खिन अलग के लिये आगन के पर्दे बटी
हुई सूक्ष्म सनी के कपडे के थे, और सब
मिलाकर सौ हाथ लम्बे थे, १० उनके
लिये बीस खम्भे, और उनकी पीतल की बीस
कुर्सिया बनी, और खम्भो की घुण्डिया और
जोडने की छडे चादी की बनी। ११ और
उत्तर अलग के लिये भी सौ हाथ लम्बे पर्दे
बने, और उनके लिये बीस खम्भे, और
इनकी पीतल की बीस ही कुर्सिया बनी, और
खम्भो की घुण्डिया और जोडने की छडे चादी
की बनी। १२ और पच्छिम अलग के लिये
सब पर्दे मिलाकर पचास हाथ के थे, उनके
लिये दस खम्भे, और दस ही उनकी कुर्सिया
थी, और खम्भो की घुडिया और जोडने की
छडे चादी की थी। १३ और पूरब अलग
मे भी वह पचास हाथ के थे। १४ आगन
के द्वार के एक ओर के लिये पद्रह हाथ के
पर्दे बने, और उनके लिये तीन खम्भे और
तीन कुर्सिया थी। १५ और आगन के द्वार
की दूसरी ओर भी वैसा ही बना था, और
आगन के दरवाजे के इधर और उधर पद्रह
पद्रह हाथ के पर्दे बने थे, और उनके लिये
तीन ही तीन खम्भे, और तीन ही तीन इनकी
कुर्सिया भी थी। १६ आगन की चारो
ओर सब पर्दे सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपडे
के बने हुए थे। १७ और खम्भो की
कुर्सिया पीतल की, और घुडिया और छडे
चादी की बनी, और उनके सिरे चादी से
मढे गए, और आगन के सब खम्भे चादी के
छडो से जोडे गए थे। १८ आगन के द्वार
के पर्दे पर बेल बूटे का काम किया हुआ था,
और वह नीले, बैंजनी और लाल रग के
कपडे का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपडे
के बने थे, और उसकी लम्बाई बीस हाथ
की थी, और उसकी ऊचाई आगन की कनात

की चौडाई के समान पाच हाथ की वनी।
१९ और उनके लिये चार खम्भे, और खम्भो
की चार ही कुसिया पीतल की वनी, उनकी
घुडिया चादी की वनी, और उनके सिरे
चादी से मढे गए, और उनकी छडे चादी
की वनी। २० और निवास और आगन की
चारो ओर के सब खूटे पीतल के वने थे॥

२१ साक्षीपत्र के निवास का सामान जो
लेवियो की सेवकाई के लिये वना, और
जिसकी गिनती हारून याजक के पुत्र
ईतामार के द्वारा मूसा के कहने से हुई थी,
उसका वर्णन यह है। २२ जिस जिस वस्तु
के वनाने की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी
थी उसको यहूदा के गोत्रवाले वसलेल ने,
जो हूर का पोता और ऊरी का पुत्र था,
वना दिया। २३ और उसके सग दान के
गोत्रवाले, अहीसामाक का पुत्र, ओहोलीआव
था, जो खोदने और काढनेवाला और नीले,
वैंजनी और लाल रग के और सूक्ष्म सनी के
कपडे म कारचोव करनेवाला निपुण
कारीगर था॥

२४ पवित्रस्थान के सारे काम मे जो
भेट का सोना लगा वह उनतीस किक्कार,
और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाव से सात
सौ तीन शेकेल था। २५ और मण्डली के
गिने हुए लोगो की भेट की चादी सौ
किक्कार, और पवित्रस्थान के शेकेल के
हिसाव से सतरह सौ पचहत्तर शेकेल थी।
२६ अर्थात् जितने वीस वरस के और उससे
अधिक अवस्था के गिने गए थे, वे छः लाख
तीन हजार साढे पाच सौ पुरुष थे,
और एक एक जन की ओर से पवित्रस्थान
के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल, जो एक
वेका होता है मिला। २७ और वह सौ
किक्कार चादी पवित्रस्थान और वीचवाले
पर्दे दोनो की कुसियो के ढालने मे लग गई,
सौ किक्कार से सौ कुसिया वनी, एक एक
कुर्सी एक किक्कार की वनी। २८ और
सतरह सौ पचहत्तर शेकेल जो वच गए
उन से खम्भो की घुडिया वनाई गई, और
खम्भो की चोटिया मढी गई, और उनकी
छडें भी वनाई गई। २९ और भेंट का
पीतल सत्तर किक्कार और दो हजार चार
सौ शेकेल था, ३० उससे मिलापवाले
तम्बू के द्वार की कुसिया, और पीतल की
वेदी, पीतल की झझरी, और वेदी का सारा
सामान, ३१ और आगन के चारो ओर
की कुर्सिया, और उसके द्वार की कुर्सिया,
और निवास, और आगन की चारो ओर
के खूटे भी वनाए गए॥

३९ फिर उन्हो ने नीले, वैंजनी और
लाल रग के काढे हुए कपडे पवित्र-
स्थान की सेवकाई के लिये, और हारून के
लिये भी पवित्र वस्त्र वनाए, जिस प्रकार
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी॥

२ और उस ने एपोद को सोने, और
नीले, वैंजनी और लाल रग के कपडे का,
और सूक्ष्म वटी हुई सनी के कपडे का
वनाया। ३ और उन्हो ने सोना पीट-
पीटकर उसके पत्तर वनाए, फिर पत्तरो को
काट-काटकर तार वनाए, और तारो को
नीले, वैंजनी और लाल रग के कपडे मे, और
सूक्ष्म सनी के कपडे मे कढाई की वनावट से
मिला दिया। ४ एपोद के जोडने को
उन्हो ने उसके कन्धो पर के वन्धन वनाए
वह तो अपने दोनो सिरो से जोडा गया।
५ और उसके कसने के लिये जो काढा हुआ
पटुका उस पर वना, वह उसके साथ विना
जोड का और उसी की वनावट के अनुसार,
अर्थात् सोने और नीले, वैंजनी और लाल
रग के कपडे का और सूक्ष्म वटी हुई सनी

के कपडे का वना, जिस प्रकार यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी ॥
६ और उन्हो ने सुलैमानी मणि काटकर
उनमे इस्राएल के पुत्रो के नाम जैसा
छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे, और
सोने के खानो मे जड दिए। ७ और उस ने
उनको एपोद के कन्धे के वन्धनो पर लगाया,
जिस से इस्राएलियो के लिये स्मरण करानेवाले
मणि ठहरे, जिस प्रकार यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी ॥
८ और उस ने चपरास को एपोद की
नाई सोने की, और नीले, वैजनी और लाल
रग के कपडे की, और सूक्ष्म वटी हुई सनी
के कपडे मे वेल वूटे का काम किया हुआ
वनाया। ९ चपरास तो चौकोर वनी,
और उन्हो ने उसको दोहरा वनाया, और
वह दोहरा होकर एक वित्ता लम्वा और एक
वित्ता चौडा वना। १० और उन्हो ने उस
मे चार पाति मणि जडे। पहिली पाति मे
तो माणिक्य, पद्मराग, और लालडी जडे
गए, ११ और दूसरी पाति मे मरकत,
नीलमणि, और हीरा, १२ और तीसरी
पाति मे लशम, सूर्यकान्त, और नीलम,
१३ और चौथी पाति मे फीरोजा, सुलैमानी
मणि, और यशव जडे, ये सव अलग अलग
सोने के खानो मे जडे गए। १४ और ये
मणि इस्राएल के पुत्रो के नामो की गिनती
के अनुसार वारह थे, वारहो गोत्रो मे से
एक एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता
है वैसा ही खोदा गया। १५ और उन्हो ने
चपरास पर डोरियो की नाई गूथे हुए चोखे
सोने की जजीर वनाकर लगाई, १६ फिर
उन्हो ने सोने के दो खाने, और सोने की दो
कडिया वनाकर दोनो कडियो को चपरास
के दोनो सिरो पर लगाया, १७ तव उन्हो
ने सोने की दोनो गूथी हुई जजीरो को
चपरास के सिरों पर की दोनो कडियो मे
लगाया। १८ और गूथी हुई दोनो जजीरो
के दोनो वाकी सिरो को उन्हो ने दोनो
खानो मे जडके, एपोद के साम्हने दोनो
कन्धो के वन्धनो पर लगाया। १९ और
उन्हो ने सोने की और दो कडिया वनाकर
चपरास के दोनो सिरो पर उसकी उस कोर
पर, जो एपोद की भीतरी भाग मे थी,
लगाई। २० और उन्हो ने सोने की दो और
कडिया भी वनाकर एपोद के दोनो कन्धो के
वन्धनो पर नीचे से उसके साम्हने, और जोड
के पास, एपोद के काढे हुए पटुके के ऊपर
लगाई। २१ तव उन्हो ने चपरास को
उसकी कडियो के द्वारा एपोद की कडियो
मे नीले फीते से ऐसा वान्धा, कि वह एपोद
के काढे हुए पटुके के ऊपर रहे, और
चपरास एपोद से अलग न होने पाए, जैसे
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी ॥
२२ फिर एपोद का वागा सम्पूर्ण नीले
रग का वनाया गया। २३ और उसकी
वनावट ऐसी हुई कि उसके वीच वख्तर के
छेद के समान एक छेद वना, और छेद के
चारो ओर एक कोर वनी, कि वह फटने न
पाए। २४ और उन्हो ने उसके नीचेवाले
घेरे मे नीले, वैजनी और लाल रग के कपडे
के अनार वनाए। २५ और उन्हो ने चोखे
सोने की घटिया भी वनाकर वागे के नीचेवाले
घेरे के चारो ओर अनारो के वीचोवीच
लगाई, २६ अर्थात् वागे के नीचेवाले घेरे
की चारो ओर एक सोने की घटी, और एक
अनार, फिर एक सोने की घटी, और एक
अनार लगाया गया कि उन्हे पहिने हुए
सेवा टहल करे; जैसे यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी थी ॥
२७ फिर उन्हो ने हारून, और उसके
पुत्रो के लिये वुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपडे

के अंगरखे, २८ और सूक्ष्म सनी के कपडे
की पगडी, और सूक्ष्म सनी के कपडे की
सुन्दर टोपिया, और सूक्ष्म वटी हुई सनी के
कपडे की जाघिया, २९ और सूक्ष्म वटी
हुई सनी के कपडे की और नीले, बैंजनी और
लाल रग की कारचोबी काम की हुई पगडी,
इन सभो को जिस तरह यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी थी वैसा ही बनाया ॥

३० फिर उन्हो ने पवित्र मुकुट की पटरी
चोखे सोने की बनाई, और जैसे छापे में
वैसे ही उस में ये अक्षर खोदे गए, अर्थात्
यहोवा के लिये पवित्र। ३१ और उन्हो ने
उस मे नीला फीता लगाया, जिस से वह
ऊपर पगडी पर रहे, जिस तरह यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी ॥

३२ इस प्रकार मिलापवाले तम्बू के
निवास का सब काम समाप्त हुआ, और जिस
जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी
थी, इस्राएलियो ने उसी के अनुसार किया ॥
३३ तव वे निवास को मूसा के पास ले
आए, अर्थात् घुडिया, तख्ते, वेंडे, खम्भे,
कुसिया आदि सारे सामान समेत तम्बू,
३४ और लाल रग मे रगी हुई मेढो की
खालो का ओढना, और सूइसो की खालो का
ओढना, और वीच का पर्दा, ३५ डण्डो
सहित साक्षीपत्र का सन्दूक, और प्रायश्चित्त
का ढकना, ३६ सारे सामान समेत मेज,
और भेट की रोटी, ३७ सारे सामान
सहित दीवट, और उसकी सजावट के दीपक,
और उजियाला देने के लिये तेल, ३८ सोने
की वेदी, और अभिषेक का तेल, और
सुगन्धित धूप, और तम्बू के द्वार का पर्दा,
३९ पीतल की झझरी, डण्डो, और सारे
सामान समेत पीतल की वेदी, और पाए
समेत हौदी, ४० खम्भो, और कुर्सियो समेत
आगन के पर्दे, और आगन के द्वार का पर्दा,
और डोरिया, और खूटे, और मिलापवाले
तम्बू के निवास की सेवकाई का सारा
सामान, ४१ पवित्रस्थान मे सेवा टहल
करने के लिये वेल वूटा काढे हुए वस्त्र, और
हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके
पुत्रो के वस्त्र जिन्हे पहिनकर उन्हे याजक
का काम करना था। ४२ अर्थात् जो जो
आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उन्ही के
अनुसार इस्राएलियो ने सब काम किया।
४३ तव मूसा ने सारे काम का निरीक्षण
करके देखा, कि उन्हो ने यहोवा की आज्ञा के
अनुसार सब कुछ किया है। और मूसा ने
उनको आशीर्वाद दिया ॥

(यहोवा के निवास के खडे किए जाने और
उसकी प्रतिष्ठा होने का वर्णन)

४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ पहिले महीने के पहिले दिन को
तू मिलापवाले तम्बू के निवास को खडा करा
देना। ३ और उस मे साक्षीपत्र के सन्दूक
को रखकर बीचवाले पर्दे की ओट मे करा
देना। ४ और मेज को भीतर ले जाकर
जो कुछ उस पर सजाना है उसे सजवा देना,
तव दीवट को भीतर ले जाकर उसके दीपको
को जला देना। ५ और साक्षीपत्र के सन्दूक
के साम्हने सोने की वेदी को जो धूप के
लिये है उसे रखना, और निवास के द्वार के
पर्दे को लगा देना। ६ और मिलापवाले
तम्बू के निवास के द्वार के साम्हने होमवेदी
को रखना। ७ और मिलापवाले तम्बू और
वेदी के वीच हौदी को रखके उस मे जल
भरना। ८ और चारो ओर के आगन
की कनात को खडा करना, और उस आगन
के द्वार पर पर्दे को लटका देना। ९ और
अभिषेक का तेल लेकर निवास को और जो
कुछ उस मे होगा सब कुछ का अभिषेक

करना, और सारे सामान समेत उसको
पवित्र करना, तव वह पवित्र ठहरेगा।
१० और सव सामान समेत होमवेदी का
अभिषेक करके उसको पवित्र करना, तव
वह परमपवित्र ठहरेगी। ११ और पाए
समेत हौदी का भी अभिषेक करके उसे
पवित्र करना। १२ और हारून और
उसके पुत्रो को मिलापवाले तम्वू के द्वार पर
ले जाकर जल से नहलाना, १३ और
हारून को पवित्र वस्त्र पहिनाना, और
उसका अभिषेक करके उसको पवित्र
करना, कि वह मेरे लिये याजक का काम
करे। १४ और उसके पुत्रो को ले जाकर
अगरखे पहिनाना, १५ और जैसे तू उनके
पिता का अभिषेक करे वैसे ही उनका
भी अभिषेक करना, कि वे मेरे लिये याजक
का काम करे, और उनका अभिषेक उनकी
पीढी पीढी के लिये उनके सदा के याजकपद
का चिन्ह ठहरेगा। १६ और मूसा ने
जो जो आज्ञा यहोवा ने उसको दी थी
उसी के अनुसार किया॥

१७ और दूसरे बरस के पहिले महीने के
पहिले दिन को निवास खडा किया गया।
१८ और मूसा ने निवास को खडा
करवाया, और उसकी कुर्सिया धर उसके
तख्ते लगाके उन मे वेडे डाले, और उसके
खम्भो को खडा किया, १९ और उस ने
निवास के ऊपर तम्वू को फैलाया, और तम्वू
के ऊपर उस ने ओढने को लगाया, जिस
प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
२० और उस ने साक्षीपत्र को लेकर सन्दूक
मे रखा, और सन्दूक मे डण्डो को लगाके
उसके ऊपर प्रायश्चित्त के ढक्कने को धर
दिया, २१ और उस ने सन्दूक को निवास
मे पहुचवाया और वीचवाले पर्दे को लटक-
वाके साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके अन्दर
किया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी। २२ और उस ने मिलापवाले तम्वू
मे निवास की उत्तर अलग पर वीच के
पर्दे से वाहर मेज को लगवाया, २३ और
उस पर उस ने यहोवा के सम्मुख रोटी
सजाकर रखी, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा
को आज्ञा दी थी। २४ और उस ने मिलाप-
वाले तम्वू मे मेज के साम्हने निवास की
दक्खिन अलग पर दीवट को रखा,
२५ और उस ने दीपको को यहोवा के
सम्मुख जला दिया, जिस प्रकार यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी। २६ और उस ने
मिलापवाले तम्वू मे वीच के पर्दे के साम्हने
सोने की वेदी को रखा, २७ और उस ने
उस पर सुगन्धित धूप जलाया, जिस प्रकार
यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
२८ और उस ने निवास के द्वार पर पर्दे को
लगाया। २९ और मिलापवाले तम्वू के
निवास के द्वार पर होमवेदी को रखकर
उस पर होमवलि और अन्नवलि को चढाया,
जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी
थी। ३० और उस ने मिलापवाले तम्वू
और वेदी के वीच हौदी को रखकर उस मे
धोने के लिये जल डाला, ३१ और मूसा
और हारून और उसके पुत्रो ने उस मे
अपने अपने हाथ पाव धोए, ३२ और जव
जव वे मिलापवाले तम्वू मे वा वेदी के पास
जाते थे तव तव वे हाथ पाव धोते थे, जिस
प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
३३ और उस ने निवास की चारो ओर
और वेदी के आसपास आगन की कनात को
खडा करवाया, और आगन के द्वार के पर्दे
को लटका दिया। इस प्रकार मूसा ने सव
काम को पूरा कर समाप्त किया॥

३४ तव बादल मिलापवाले तम्वू पर
छा गया, और यहोवा का तेज निवासस्थान

मे भर गया। ३५ और बादल जो
मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा
का तेज जो निवासस्थान मे भर गया, इस
कारण मूसा उस मे प्रवेश न कर सका।
३६ और इस्राएलियो की सारी यात्रा में
ऐसा होता था, कि जब जब वह बादल
निवास के ऊपर उठ जाता तब तब वे कूच
करते थे। ३७ और यदि वह न उठता, तो
जिस दिन तक वह न उठता था उस दिन तक
वे कूच नही करते थे। ३८ इस्राएल के
घराने की सारी यात्रा मे दिन को तो
यहोवा का बादल निवास पर, और रात को
उसी बादल मे आग उन सभो को दिखाई
दिया करती थी॥

लैव्यव्यवस्था

(होमबलि की विधि)

१ यहोवा ने मिलापवाले तम्बू में से
मूसा को बुलाकर उस से कहा,
२ इस्राएलियो से कह, कि तुम मे से यदि
कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढावा
चढाए, तो उसका बलिपशु गाय-बैलो वा
भेड-बकरियो मे से एक का हो॥

३ यदि वह गाय-बैलो मे से होमबलि
करे, तो निर्दोष नर मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर चढाए, कि यहोवा उसे ग्रहण करे।
४ और वह अपना हाथ होमबलिपशु के सिर
पर रखे, और वह उनके लिये प्रायश्चित्त
करने को ग्रहण किया जाएगा। ५ तब वह
उस बछडे को यहोवा के साम्हने बलि करे,
और हारून के पुत्र जो याजक है वे लोहू
को समीप ले जाकर उस वेदी की चारो
अलगो पर छिडकें जो मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर है। ६ फिर वह होमबलिपशु की
खाल निकालकर उस पशु को टुकडे टुकडे
करे, ७ तब हारून याजक के पुत्र वेदी
पर आग रखे, और आग पर लकडी सजाकर
धरें, ८ और हारून के पुत्र जो याजक है
वे सिर और चरबी समेत पशु के टुकडो को
उस लकडी पर जो वेदी की आग पर
होगी सजाकर धरे, ९ और वह उसकी
अतडियो और पैरो को जल से धोए। तब
याजक सब को वेदी पर जलाए, कि वह
होमबलि यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध-
वाला हवन ठहरे॥

१० और यदि वह भेडो वा बकरो का
होमबलि चढाए, तो निर्दोष नर को चढाए।
११ और वह उसको यहोवा के आगे वेदी
की उत्तरवाली अलग पर बलि करे, और
हारून के पुत्र जो याजक है वे उसके लोहू
को वेदी की चारो अलगो पर छिडकें।
१२ और वह उसको टुकडे टुकडे करे, और
सिर और चरबी को अलग करे, और याजक
इन सब को उस लकडी पर सजाकर धरे
जो वेदी की आग पर होगी, १३ और वह
उसकी अतडियो और पैरो को जल से धोए।
और याजक सब को समीप ले जाकर
वेदी पर जलाए, कि वह होमबलि और
यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन
ठहरे॥

१४ और यदि वह यहोवा के लिये
पक्षियो का होमवलि चढाए, तो पडुको वा
कवूतरो का चढावा चढाए। १५ याजक
उसको वेदी के समीप ले जाकर उसका
गला मरोडके सिर को धड से अलग करे,
और वेदी पर जलाए, और उसका सारा
लोहू उस वेदी की अलग पर गिराया जाए,
१६ और वह उसका ओझर मल सहित
निकालकर वेदी की पूरव की ओर से राख
डालने के स्थान पर फेक दे; १७ और वह
उसको पखो के वीच से फाडे, पर अलग
अलग न करे। तव याजक उसको वेदी पर
उस लकड़ी के ऊपर रखकर जो आग पर
होगी जलाए, कि वह होमवलि और यहोवा
के लिये सुखदायक सुगन्धवाला हवन ठहरे॥

(अन्नवलि की विधि)

२ और जव कोई यहोवा के लिये
अन्नवलि का चढावा चढाना चाहे, तो
वह मैदा चढाए, और उस पर तेल डाल-
कर उसके ऊपर लोवान रखे, २ और वह
उसको हारून के पुत्रो के पास जो याजक
है लाए। और अन्नवलि के तेल मिले हुए
मैदे मे से इस तरह अपनी मुट्ठी भरकर
निकाले कि सव लोवान उस मे आ जाए,
और याजक उन्हे स्मरण दिलानेवाले भाग
के लिये वेदी पर जलाए, कि यह यहोवा के
लिये सुखदायक सुगन्धित हवन ठहरे।
३ और अन्नवलि मे से जो वचा रहे सो
हारून और उसके पुत्रो का ठहरे, यह
यहोवा के हवनो मे से परमपवित्र वस्तु
होगी॥

४ और जव तू अन्नवलि के लिये तन्दूर
मे पकाया हुआ चढावा चढाए, तो वह तेल
से सने हुए अखमीरी मैदे के फुलको, वा तेल
से चुपडी हुई अखमीरी पपडियो का हो।
५ और यदि तेरा चढावा तवे पर पकाया
हुआ अन्नवलि हो, तो वह तेल मे सने हुए
अखमीरी मैदे का हो, ६ उसको टुकडे
टुकडे करके उस पर तेल डालना, तव वह
अन्नवलि हो जाएगा। ७ और यदि तेरा
चढावा कढाही मे तला हुआ अन्नवलि हो,
तो वह मैदे से तेल मे वनाया जाए। ८ और
जो अन्नवलि इन वस्तुओ मे से किसी का
वना हो उसे यहोवा के समीप ले जाना,
और जव वह याजक के पास लाया जाए,
तव याजक उसे वेदी के समीप ले जाए।
९ और याजक अन्नवलि मे से स्मरण
दिलानेवाला भाग निकालकर वेदी पर
जलाए, कि वह यहोवा के लिये सुखदायक
सुगन्धवाला हवन ठहरे; १० और अन्न-
वलि मे से जो वचा रहे वह हारून और
उसके पुत्रो का ठहरे, वह यहोवा के
हवनो मे परमपवित्र वस्तु होगी। ११ कोई
अन्नवलि जिसे तुम यहोवा के लिये चढाओ
खमीर मिलाकर वनाया न जाए, तुम कभी
हवन मे यहोवा के लिये खमीर और मधु
न जलाना। १२ तुम इनको पहिली उपज
का चढ़ावा करके यहोवा के लिये चढाना,
पर वे सुखदायक सुगन्ध के लिये वेदी पर
चढाए न जाए। १३ फिर अपने सव अन्न-
वलियो को नमकीन वनाना, और अपना
कोई अन्नवलि अपने परमेश्वर के साथ वन्धी
हुई वाचा के नमक से रहित होने न देना,
अपने सव चढावो के साथ नमक भी चढाना॥

१४ और यदि तू यहोवा के लिये पहिली
उपज का अन्नवलि चढाए, तो अपनी पहिली
उपज के अन्नवलि के लिये आग से झुलसाई
हुई हरी हरी वाले, अर्थात् हरी हरी वालो
को मीजके निकाल लेना, तव अन्न को
चढाना। १५ और उस मे तेल डालना,
और उसके ऊपर लोवान रखना, तव वह

अन्नबलि हो जाएगा। १६ और याजक
मीजकर निकाले हुए अन्न को, और तेल को,
और सारे लोबान को स्मरण दिलानेवाला
भाग करके जला दे, वह यहोवा के लिये
हवन ठहरे॥

(मेलबलि की विधि)

३ और यदि उसका चढ़ावा मेलबलि
का हो, और यदि वह गाय-बैलों में से
किसी को चढ़ाए, तो चाहे वह पशु नर हो
या मादा, पर जो निर्दोष हो उसी को वह
यहोवा के आगे चढ़ाए। २ और वह अपना
हाथ अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर रखे
और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
बलि करे, और हारून के पुत्र जो याजक हैं
वे उसके लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर
छिड़के। ३ और वह मेलबलि में से यहोवा
के लिये हवन करे, अर्थात् जिस चरबी से
अंतड़िया ढपी रहती है, और जो चरबी
उन में लिपटी रहती है वह भी, ४ और
दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चरबी जो
कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत
कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को
वह अलग करे। ५ और हारून के पुत्र
इनको वेदी पर उस होमबलि के ऊपर
जलाए, जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग
के ऊपर है, कि यह यहोवा के लिये सुख-
दायक सुगन्धवाला हवन ठहरे॥

६ और यदि यहोवा के मेलबलि के लिये
उसका चढ़ावा भेड़-बकरियों में से हो, तो
चाहे वह नर हो या मादा, पर जो निर्दोष
हो उसी को वह चढ़ाए। ७ यदि वह भेड़
का बच्चा चढ़ाता हो, तो उसको यहोवा के
साम्हने चढ़ाए, ८ और वह अपने चढ़ावे
के पशु के सिर पर हाथ रखे और उसको
मिलापवाले तम्बू के आगे बलि करे, और
हारून के पुत्र उसके लोहू को वेदी की चारों
अलंगों पर छिड़कें। ९ और मेलबलि में से
चरबी को यहोवा के लिये हवन करे, अर्थात्
उसकी चरबी भरी मोटी पूंछ को वह रीढ़
के पास से अलग करे, और जिस चरबी से
अंतड़िया ढपी रहती है, और जो चरबी उन
में लिपटी रहती है, १० और दोनों गुर्दे, और
जो चरबी उनके ऊपर कमर के पास रहती
है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की
झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे।
११ और याजक इन्हें वेदी पर जलाए, यह
यहोवा के लिये हवन रूपी भोजन ठहरे॥

१२ और यदि वह बकरा वा बकरी
चढ़ाए, तो उसे यहोवा के साम्हने चढ़ाए।
१३ और वह अपना हाथ उसके सिर पर
रखे, और उसको मिलापवाले तम्बू के
आगे बलि करे, और हारून के पुत्र उसके
लोहू को वेदी की चारों अलंगों पर छिड़कें।
१४ और वह उस में से अपना चढ़ावा
यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाए, अर्थात्
जिस चरबी से अंतड़िया ढपी रहती है,
और जो चरबी उन में लिपटी रहती है वह
भी, १५ और दोनों गुर्दे और जो चरबी
उनके ऊपर कमर के पास रहती है, और
गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन
सभों को वह अलग करे। १६ और याजक
इन्हें वेदी पर जलाए, यह तो हवन रूपी
भोजन है जो सुखदायक सुगन्ध के लिये
होता है, क्योंकि सारी चरबी यहोवा की
है। १७ यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी
पीढ़ी पीढ़ी के लिये सदा की विधि ठहरेगी
कि तुम चरबी और लोहू कभी न खाओ॥

(पापबलि की विधि)

४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा
२ कि इस्राएलियों से यह कह, कि यदि

कोई मनुष्य उन कामो मे से जिनको
यहोवा ने मना किया है किसी काम को
भूल से करके पापी हो जाए, ३ और यदि
अभिषिक्त याजक ऐसा पाप करे, जिस से
प्रजा दोषी ठहरे, तो अपने पाप के कारण
वह एक निर्दोष वछडा यहोवा को पापवलि
करके चढाए। ४ और वह उस वछडे को
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के
आगे ले जाकर उसके सिर पर हाथ रखे,
और उस वछडे को यहोवा के साम्हने वलि
करे। ५ और अभिषिक्त याजक वछडे के
लोहू मे से कुछ लेकर मिलापवाले तम्बू मे
ले जाए, ६ और याजक अपनी उगली
लोहू मे डुवो डुवोकर और उस मे से कुछ
लेकर पवित्रस्थान के वीचवाले पर्दे के आगे
यहोवा के साम्हने सात वार छिडके।
७ और याजक उस लोहू मे से कुछ और
लेकर सुगन्धित धूप की वेदी के सीगो पर
जो मिलापवाले तम्बू मे है यहोवा के
साम्हने लगाए, फिर वछडे के सव लोहू को
वेदी के पाए पर जो मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर है उडेल दे। ८ फिर वह पापवलि
के वछडे की सव चरवी को उस से अलग
करे, अर्थात् जिस चरवी से अतडिया ढपी
रहती है, और जितनी चरवी उन मे लिपटी
रहती है, ९ और दोनो गुर्दे और उनके
ऊपर की चरवी जो कमर के पास रहती
है, और गुर्दो समेत कलेजे के ऊपर की
झिल्ली, इन सभो को वह ऐसे अलग करे,
१० जैसे मेलवलिवाले चढावे के वछडे से
अलग किए जाते है, और याजक इनको
होमवलि की वेदी पर जलाए। ११ और
उस वछडे की खाल, पाव, सिर, अतडिया,
गोवर, १२ और सारा मास, निदान समूचा
वछडा छावनी से वाहर शुद्ध स्थान मे, जहा
राख डाली जाएगी, ले जाकर लकडी पर
रखकर आग से जलाए, जहा राख डाली
जाती है वह वही जलाया जाए॥

१३ और यदि इस्राएल की सारी
मण्डली अज्ञानता के कारण पाप करे और
वह वात मण्डली की आँखो से छिपी हो,
और वे यहोवा की किसी आज्ञा के विरुद्ध
कुछ करके दोषी ठहरे हो, १४ तो जव
उनका किया हुआ पाप प्रगट हो जाए तव
मण्डली एक वछडे को पापवलि करके
चढाए। वह उसे मिलापवाले तम्बू के आगे
ले जाए, १५ और मण्डली के वृद्ध लोग
अपने अपने हाथो को यहोवा के आगे वछडे
के सिर पर रखे, और वह वछडा यहोवा के
साम्हने वलि किया जाए। १६ और
अभिषिक्त याजक वछडे के लोहू मे से कुछ
मिलापवाले तम्बू मे ले जाए, १७ और
याजक अपनी उगली लोहू मे डुवो डुवोकर
उसे वीचवाले पर्दे के आगे सात वार यहोवा
के साम्हने छिडके। १८ और उसी लोहू मे
से वेदी के सीगो पर जो यहोवा के आगे
मिलापवाले तम्बू मे है लगाए, और वचा
हुआ सव लोहू होमवलि की वेदी के पाए
पर जो मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है
उडेल दे। १९ और वह वछडे की कुल
चरवी निकालकर वेदी पर जलाए।
२० और जैसे पापवलि के वछडे से
किया था वैसे ही इस से भी करे, इस भाति
याजक इस्राएलियो के लिये प्रायश्चित्त
करे, तव उनका वह पाप क्षमा किया
जाएगा। २१ और वह वछडे को छावनी
मे वाहर ले जाकर उसी भाति जलाए
जैसे पहिले वछडे को जलाया था, यह
तो मण्डली के निमित्त पापवलि ठहरेगा॥

२२ जव कोई प्रधान पुरुष पाप करके,
अर्थात् अपने परमेश्वर यहोवा की किसी
आज्ञा के विरुद्ध भूल से कुछ करके दोषी हो

जाए, २३ और उसका पाप उस पर प्रगट
हो जाए, तो वह एक निर्दोष बकरा बलिदान
करने के लिये ले आए, २४ और बकरे
के सिर पर अपना हाथ धरे, और बकरे को
उस स्थान पर बलि करे जहां होमबलिपशु
यहोवा के आगे बलि किये जाते हैं, यह तो
पापबलि ठहरेगा। २५ और याजक अपनी
उंगली से पापबलिपशु के लोहू में से कुछ
लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए,
और उसका लोहू होमबलि की वेदी के पाए
पर उंडेल दे। २६ और वह उसकी कुल
चरबी को मेलबलि की चरबी की नाईं वेदी
पर जलाए, और याजक उसके पाप के
विषय में प्रायश्चित्त करे, तब वह क्षमा
किया जाएगा॥

२७ और यदि साधारण लोगों में से
कोई अज्ञानता से पाप करे, अर्थात् कोई ऐसा
काम जिसे यहोवा ने मना किया हो करके
दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर
प्रगट हो जाए, २८ तो वह उस पाप के
कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिये
ले आए, २९ और वह अपना हाथ
पापबलिपशु के सिर पर रखे, और होमबलि
के स्थान पर पापबलिपशु का बलिदान करे।
३० और याजक उसके लोहू में से अपनी
उंगली से कुछ लेकर होमबलि की वेदी के
सींगों पर लगाए, और उसके सब लोहू को
उसी वेदी के पाए पर उंडेल दे। ३१ और
वह उसकी सब चरबी को मेलबलिपशु की
चरबी की नाईं अलग करे, तब याजक
उसको वेदी पर यहोवा के निमित्त
सुखदायक सुगन्ध के लिये जलाए, और इस
प्रकार याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे,
तब उसे क्षमा मिलेगी॥

३२ और यदि वह पापबलि के लिये एक
भेड़ी का बच्चा ले आए, तो वह निर्दोष मादा
हो, ३३ और वह अपना हाथ पापबलि-
पशु के सिर पर रखे, और उसको पापबलि
के लिये वहीं बलिदान करे जहां होमबलिपशु
बलि किया जाता है। ३४ और याजक
अपनी उंगली से पापबलि के लोहू में से कुछ
लेकर होमबलि की वेदी के सींगों पर लगाए,
और उसके सब लोहू को वेदी के पाए पर
उंडेल दे। ३५ और वह उसकी सब चरबी
को मेलबलिवाले भेड़ के बच्चे की चरबी की
नाईं अलग करे, और याजक उसे वेदी पर
यहोवा के हवनों के ऊपर जलाए, और इस
प्रकार याजक उसके पाप के लिये प्रायश्चित्त
करे, और वह क्षमा किया जाएगा॥

(दोषबलि की विधि)

५ और यदि कोई साक्षी होकर ऐसा
पाप करे कि शपथ खिलाकर पूछने पर
भी, कि क्या तू ने यह सुना अथवा जानता
है, और वह बात प्रगट न करे, तो उसको
अपने अधर्म का भार उठाना पड़ेगा।
२ और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को
अज्ञानता से छू ले, तो चाहे वह अशुद्ध बनैले
पशु की, चाहे अशुद्ध घरेलू पशु की, चाहे
अशुद्ध रेंगनेवाले जीव-जन्तु की लोथ हो, तो
वह अशुद्ध होकर दोषी ठहरेगा। ३ और
यदि कोई मनुष्य किसी अशुद्ध वस्तु को
अज्ञानता से छू ले, चाहे वह अशुद्ध वस्तु
किसी भी प्रकार की क्यों न हो जिस से
लोग अशुद्ध हो जाते हैं, तो जब वह उस
बात को जान लेगा तब वह दोषी ठहरेगा।
४ और यदि कोई बुरा वा भला करने को
बिना सोचे समझे शपथ खाए, चाहे किसी
प्रकार की बात वह बिना सोचे विचारे
शपथ खाकर कहे, तो ऐसी बात में वह दोषी
उस समय ठहरेगा जब उसे मालूम हो
जाएगा। ५ और जब वह इन बातों में से

किसी भी वात मे दोषी हो, तव जिस विषय
मे उस ने पाप किया हो वह उसको मान
ले, ६ और वह यहोवा के साम्हने अपना
दोषवलि ले आए, अर्थात् उस पाप के कारण
वह एक भेड वा वकरी पापवलि करने के
लिये ले आए, तव याजक उस पाप के
विषय उसके लिये प्रायश्चित्त करे।
७ और यदि उसे भेड वा वकरी देने की
सामर्थ्य न हो, तो अपने पाप के कारण दो
पडुकी वा कवूतरी के दो वच्चे दोषवलि
चढाने के लिये यहोवा के पास ले आए,
उन मे से एक तो पापवलि के लिये और
दूसरा होमवलि के लिये। ८ और वह
उनको याजक के पास ले आए, और याजक
पापवलिवाले को पहिले चढाए, और उसका
सिर गले से मरोड डाले, पर अलग न करे,
९ और वह पापवलिपशु के लोहू मे से कुछ
वेदी की अलग पर छिडके, और जो लोहू
शेष रहे वह वेदी के पाए पर गिराया जाए,
वह तो पापवलि ठहरेगा। १० और दूसरे
पक्षी को वह विधि के अनुसार होमवलि
करे, और याजक उसके पाप का प्रायश्चित्त
करे, और तव वह क्षमा किया जाएगा॥

११ और यदि वह दो पडुकी वा कवूतरी
के दो वच्चे भी न दे सके, तो वह अपने पाप
के कारण अपना चढावा एपा का दसवा भाग
मैदा पापवलि करके ले आए, उस पर न
तो वह तेल डाले, और न लोवान रखे,
क्योंकि वह पापवलि होगा। १२ वह उसको
याजक के पास ले जाए, और याजक
उस मे से अपनी मुट्ठी भर स्मरण दिलाने-
वाला भाग जानकर वेदी पर यहोवा के
हवनो के ऊपर जलाए, वह तो पापवलि
ठहरेगा। १३ और इन वातो मे से किसी
भी वात के विषय मे जो कोई पाप करे,
याजक उसका प्रायश्चित्त करे, और तव
वह पाप क्षमा किया जाएगा। और इस
पापवलि का शेष अन्नवलि के शेष की नाई
याजक का ठहरेगा॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१५ यदि कोई यहोवा की पवित्र की हुई
वस्तुओ के विषय मे भूल से विश्वासघात
करे और पापी ठहरे, तो वह यहोवा के पास
एक निर्दोष मेढा दोषवलि के लिये ले आए,
उसका दाम पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार
उतने ही शेकेल रुपये का हो जितना याजक
ठहराए। १६ और जिस पवित्र वस्तु के
विषय उस ने पाप किया हो, उस मे वह
पाचवा भाग और वढाकर याजक को दे,
और याजक दोषवलि का मेढा चढाकर
उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तव उसका पाप
क्षमा किया जाएगा॥

१७ और यदि कोई ऐसा पाप करे, कि
उन कामो मे से जिन्हे यहोवा ने मना किया
है किसी काम को करे, तो चाहे वह उसके
अनजाने मे हुआ हो, तौभी वह दोषी
ठहरेगा, और उसको अपने अधर्म का भार
उठाना पडेगा। १८ इसलिये वह एक
निर्दोष मेढा दोषवलि करके याजक के पास
ले आए, वह उतने ही दाम का हो जितना
याजक ठहराए, और याजक उसके लिये
उसकी उस भूल का जो उस ने अनजाने मे
की हो प्रायश्चित्त करे, और वह क्षमा
किया जाएगा। १९ यह दोषवलि ठहरे,
क्योंकि वह मनुष्य नि सन्देह यहोवा के
सम्मुख दोषी ठहरेगा॥

६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ यदि कोई यहोवा का विश्वासघात
करके पापी ठहरे, जैसा कि धरोहर, वा
लेनदेन, वा लूट के विषय मे अपने भाई से
छल करे, वा उस पर अन्धेर करे, ३ वा पडी

हुई वस्तु को पाकर उसके विषय झूठ बोले
और झूठी शपथ भी खाए, ऐसी कोई भी
बात क्यों न हो जिसे करके मनुष्य पापी
ठहरते हैं, ४ तो जब वह ऐसा काम करके
दोषी हो जाए, तब जो भी वस्तु उस ने लूट,
वा अन्धेर करके, वा धरोहर, वा पड़ी पाई
हो, ५ चाहे कोई वस्तु क्यों न हो जिसके
विषय मे उस ने झूठी शपथ खाई हो, तो
वह उसको पूरा पूरा लौटा दे, और पाचवा
भाग भी बढाकर भर दे, जिस दिन यह
मालूम हो कि वह दोषी है, उसी दिन वह
उस वस्तु को उसके स्वामी को लौटा दे।
६ और वह यहोवा के सम्मुख अपना
दोषबलि भी ले आए, अर्थात् एक निर्दोष
मेढा दोषबलि के लिये याजक के पास ले
आए, वह उतने ही दाम का हो जितना
याजक ठहराए। ७ इस प्रकार याजक
उसके लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त
करे, और जिस काम को करके वह दोषी
हो गया है उसकी क्षमा उसे मिलेगी ॥

(भाति भाति के बलिदानों की विधि)

८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
६ हारून और उसके पुत्रों को आज्ञा देकर
यह कह, कि होमबलि की व्यवस्था यह है,
अर्थात् होमबलि ईंधन के ऊपर रात भर
भोर तक वेदी पर पडा रहे, और वेदी की
अग्नि वेदी पर जलती रहे। १० और
याजक अपने सनी के वस्त्र और अपने तन
पर अपनी सनी की जाघिया पहिनकर
होमबलि की राख, जो आग के भस्म करने से
वेदी पर रह जाए, उसे उठाकर वेदी के पास
रखे। ११ तब वह अपने ये वस्त्र उतारकर
दूसरे वस्त्र पहिनकर राख को छावनी
से बाहर किसी शुद्ध स्थान पर ले जाए।
१२ और वेदी पर अग्नि जलती रहे, और
कभी बुझने न पाए, और याजक भोर भोर
उस पर लकडिया जलाकर होमबलि के
टुकडो को उसके ऊपर सजाकर धर दे, और
उसके ऊपर मेलबलियो की चरबी को
जलाया करे। १३ वेदी पर आग लगातार
जलती रहे, वह कभी बुझने न पाए ॥

१४ अन्नबलि की व्यवस्था इस प्रकार
है, कि हारून के पुत्र उसको वेदी के आगे
यहोवा के समीप ले आए। १५ और वह
अन्नबलि के तेल मिले हुए मैदे मे से मुट्ठी
भर और उस पर का सब लोबान उठाकर
अन्नबलि के स्मरणार्थ के इस भाग को
यहोवा के सम्मुख सुखदायक सुगन्ध के लिये
वेदी पर जलाए। १६ और उस मे से जो
शेष रह जाए उसे हारून और उसके पुत्र
खा जाए, वह बिना खमीर पवित्र स्थान मे
खाया जाए, अर्थात् वे मिलापवाले तम्बू के
आगन में उसे खाए। १७ वह खमीर के
साथ पकाया न जाए, क्योंकि मैं ने अपने
हव्य मे से उसको उनका निज भाग होने के
लिये उन्हे दिया है, इसलिये जैसा पापबलि
और दोषबलि परमपवित्र है, वैसा ही वह भी
है। १८ हारून के वंश के सब पुरुष उस
मे से खा सकते है, तुम्हारी पीढी-पीढी मे
यहोवा के हवनो मे से यह उनका भाग
सदैव बना रहेगा, जो कोई उन हवनो को
छूए वह पवित्र ठहरेगा ॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२० जिस दिन हारून का अभिषेक हो
उस दिन वह अपने पुत्रो के साथ यहोवा को
यह चढावा चढाए, अर्थात् एपा का दसवा
भाग मैदा नित्य अन्नबलि मे चढाए, उस
मे से आधा भोर को और आधा सन्ध्या के
समय चढाए। २१ वह तवे पर तेल के
साथ पकाया जाए, जब वह तेल से तर हो
जाए तब उसे ले आना, इस अन्नबलि के पके

हुए टुकडे यहोवा के सुखदायक सुगन्ध के
लिये चढाना। २२ और उसके पुत्रो मे से
जो भी उस याजकपद पर अभिषिक्त होगा,
वह भी उसी प्रकार का चढावा चढाया करे,
यह विधि सदा के लिये है, कि यहोवा के
सम्मुख वह सम्पूर्ण चढावा जलाया जाये।
२३ याजक के सम्पूर्ण अन्नबलि भी सब
जलाए जाए, वह कभी न खाया जाए॥

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२५ हारून और उसके पुत्रो से यह कह, कि
पापबलि की व्यवस्था यह है, अर्थात् जिस
स्थान मे होमबलिपशु वध किया जाता है
उसी मे पापबलिपशु भी यहोवा के सम्मुख
बलि किया जाए, वह परमपवित्र है।
२६ और जो याजक पापबलि चढावे वह
उसे खाए, वह पवित्र स्थान मे, अर्थात्
मिलापवाले तम्बू के आँगन मे खाया जाए।
२७ जो कुछ उसके मास से छू जाए, वह
पवित्र ठहरेगा, और यदि उसके लोहू के
छीटे किसी वस्त्र पर पड जाए, तो उसे किसी
पवित्रस्थान मे धो देना। २८ और वह
मिट्टी का पात्र जिस मे वह पकाया गया हो
तोड दिया जाए, यदि वह पीतल के पात्र
मे सिझाया गया हो, तो वह माजा जाए,
और जल से धो लिया जाए। २९ और
याजको मे से सब पुरुष उसे खा सकते है,
वह परमपवित्र वस्तु है। ३० पर जिस
पापबलिपशु के लोहू मे से कुछ भी खून
मिलापवाले तम्बू के भीतर पवित्रस्थान मे
प्रायश्चित्त करने को पहुचाया जाए तब तो
उसका मास कभी न खाया जाए, वह आग
मे जला दिया जाए॥

७ फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है।
वह परमपवित्र है, २ जिस स्थान पर
होमबलिपशु का वध करते है उसी स्थान
पर दोषबलिपशु का भी बलि करे, और
उसके लोहू को याजक वेदी पर चारो ओर
छिडके। ३ और वह उस मे की सब चरबी
को चढाए, अर्थात् उसकी मोटी पूछ को,
और जिस चरबी से अतडियां ढपी रहती है
वह भी, ४ और दोनो गुर्दे और जो चरबी
उनके ऊपर और कमर के पास रहती है,
और गुर्दो समेत कलेजे के ऊपर की
झिल्ली, इन सभो को वह अलग करे,
५ और याजक इन्हे वेदी पर यहोवा के लिये
हवन करे, तब वह दोषबलि होगा।
६ याजको मे के सब पुरुष उस मे से खा
सकते है, वह किसी पवित्रस्थान मे खाया
जाए, क्योकि वह परमपवित्र है। ७ जैसा
पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन
दोनो की एक ही व्यवस्था है, जो याजक
उन बलियो को चढा के प्रायश्चित्त करे वही
उन वस्तुओ को ले ले। ८ और जो याजक
किसी के लिये होमबलि को चढाए उस
होमबलिपशु की खाल को वही याजक ले
ले। ९ और तदूर मे, वा कढाही मे, वा तवे
पर पके हुए सब अन्नबलि उसी याजक की
होगी जो उन्हे चढाता है। १० और सब
अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हुए हो चाहे
रूखे हो, वे हारून के सब पुत्रो को एक
समान मिले॥

११ और मेलबलि की जिसे कोई यहोवा
के लिये चढाए व्यवस्था यह है। १२ यदि वह
उसे धन्यवाद के लिये चढाए, तो धन्यवाद-
बलि के साथ तेल से सने हुए अखमीरी
फुलके, और तेल से चुपडी हुई अखमीरी
रोटिया, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके
तेल से तर चढाए। १३ और वह अपने
धन्यवादवाले मेलबलि के साथ अखमीरी
रोटिया भी चढाए। १४ और ऐसे एक
एक चढावे मे से वह एक एक रोटी यहोवा

को उठाने की भेट करके चढाए, वह मेलवलि
के लोहू के छिडकनेवाले याजक की होगी।
१५ और उम धन्यवादवाले मेलवलि का
मास वलिदान चढाने के दिन ही खाया
जाए, उस मे मे कुछ भी भोर तक शेप न
रह जाए। १६ पर यदि उसके वलिदान
का चढावा मन्नत का वा स्वेच्छा का हो, तो
उस वलिदान को जिस दिन वह चढाया
जाए उसी दिन वह खाया जाए, और उस
मे से जो शेप रह जाए वह दूसरे दिन भी
खाया जाए। १७ परन्तु जो कुछ वलिदान
के मास मे से तीसरे दिन तक रह जाए वह
आग मे जला दिया जाए। १८ और उमके
मेलवलि के माम मे से यदि कुछ भी तीसरे
दिन खाया जाए, तो वह ग्रहण न किया
जाएगा, और न पुन मे गिना जाएगा, वह
घृणित कम समझा जाएगा, और जो कोई
उस मे से खाए उसका अधर्म उसी के सिर
पर पडेगा। १९ फिर जो मास किसी
अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह न खाया जाए,
वह आग मे जला दिया जाए। फिर
मेलवलि का मास जितने शुद्ध हो वे ही खाए,
२० परन्तु जो अशुद्ध होकर यहोवा के मेल-
वलि के माम मे से कुछ खाए वह अपने
लोगो मे से नाश किया जाए। २१ और यदि
कोई किसी अशुद्ध वस्तु को छूकर यहोवा के
मेलवलिपशु के माम मे मे खाए, तो वह भी
अपने लोगो मे से नाश किया जाए, चाहे
वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु वा अशुद्ध
पशु वा कोई भी अशुद्ध और घृणित वस्तु
हो॥

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२३ इस्राएलियो से इम प्रकार कह, कि
तुम लोग न तो बैल की कुछ चरबी खाना
और न भेड वा वकरी की। २४ और जो
पशु स्वय मर जाए, और जो दूमरे पशु से
फाडा जाए, उसकी चरबी और और काम में
लाना, परन्तु उसे किमी प्रकार से खाना
नही। २५ जो कोई ऐसे पशु की चरबी
खाएगा जिस मे से लोग कुछ यहोवा के लिये
हवन करके चढाया करते हैं वह खानेवाला
अपने लोगो मे से नाश किया जाएगा।
२६ और तुम अपने घर मे किसी भाति का
लोहू, चाहे पक्षी का चाहे पशु का हो, न
खाना। २७ हर एक प्राणी जो किसी
भाति का लोहू खाएगा वह अपने लोगो
मे से नाश किया जाएगा॥

२८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२९ इस्राएलियो से इम प्रकार कह, कि जो
यहोवा के लिये मेलवलि चढाए वह उसी
मेलवलि मे से यहोवा के पास भेट ले आए,
३० वह अपने ही हाथो से यहोवा के हव्य
को, अर्थात् छाती ममेत चरवी को ले आए,
कि छाती हिलाने की भेट करके यहोवा के
साम्हने हिलाई जाए। ३१ और याजक
चरवी को तो वेदी पर जलाए, परन्तु छाती
हारून और उसके पुत्रो की होगी।
३२ फिर तुम अपने मेलवलियो मे से
दहिनी जाघ को भी उठाने की भेट करके
याजक को देना, ३३ हारून के पुत्रो मे से
जो मेलवलि के लोहू और चरवी को चढाए
दहिनी जाघ उमी का भाग होगा।
३४ क्योकि इस्राएलियो के मेलवलियो मे से
हिलाने की भेंट की छाती और उठाने की
भेंट की जाघ को लेकर मैं ने याजक हारून
और उसके पुत्रो को दिया है, कि यह सर्वदा
इस्राएलियो की ओर से उनका हक बना
रहे॥

३५ जिस दिन हारून और उसके पुत्र
यहोवा के समीप याजक पद के लिये लाए
गए उसी दिन यहोवा के हव्यो में से
उनका यही अभिपिक्त भाग ठहराया गया,

३६ अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उनका
अभिषेक किया उसी दिन उस ने आज्ञा दी
कि उनको इस्राएलियो की ओर से ये ही
भाग नित मिला करे, उनकी पीढी पीढी
के लिये उनका यही हक ठहराया गया।
३७ होमबलि, अन्नवलि, पापवलि, दोपवलि,
याजको के सस्कार वलि, और मेलवलि
की व्यवस्था यही है, ३८ जव यहोवा ने
सीनै पर्वत के पास के जगल मे मूसा को
आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या क्या
चढावे चढाए, तव उस ने उनको यही
व्यवस्था दी थी ॥

(याजकों के सस्कार का वर्णन)

८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ तू हारून और उसके पुत्रो के वस्त्रो,
और अभिषेक के तेल, और पापवलि के
वछडे, और दोनो मेढो, और अखमीरी रोटी
की टोकरी को ३ मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर ले आ, और वही सारी मण्डली को
इकट्ठा कर। ४ यहोवा की इस आज्ञा के
अनुसार मूसा ने किया, और मण्डली
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठी हुई।
५ तव मूसा ने मण्डली से कहा, जो काम
करने की आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है।
६ फिर मूसा ने हारून और उसके पुत्रो को
समीप ले जाकर जल से नहलाया। ७ तव
उस ने उनको अगरखा पहिनाया और
कटिवन्द लपेटकर वागा पहिना दिया, और
एपोद लगाकर एपोद के काढे हुए पटुके से
एपोद को वान्धकर कस दिया। ८ और उस
न उनके चपरास लगाकर चपरास मे
ऊरीम और तुम्मीम रख दिए। ९ तव उस
ने उसके सिर पर पगडी वान्धकर पगडी के
साम्हने पर सोने के टीके को, अर्थात् पवित्र
मुकुट को लगाया, जिस प्रकार यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी। १० तव मूसा ने
अभिषेक का तेल लेकर निवास का और
जो कुछ उस मे था उन सव का भी अभिषेक
करके उन्हे पवित्र किया। ११ और उस
तेल मे से कुछ उस ने वेदी पर सात वार
छिडका, और कुल सामान समेत वेदी का
और पाए समेत हौदी का अभिषेक करके
उन्हे पवित्र किया। १२ और उस ने
अभिषेक के तेल मे से कुछ हारून के सिर पर
डालकर उसका अभिषेक करके उसे पवित्र
किया। १३ फिर मूसा ने हारून के पुत्रो
को समीप ले आकर, अगरखे पहिनाकर,
फेंटे वान्ध के उनके सिर पर टोपी रख
दी, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी। १४ तव वह पापवलि के वछडे को
समीप ले गया, और हारून और उसके
पुत्रो ने अपने अपने हाथ पापवलि के वछडे
के सिर पर रखे। १५ तव वह वलि किया
गया, और मूसा ने लोहू को लेकर उगली से
वेदी के चारो सीगो पर लगाकर पवित्र
किया, और लोहू को वेदी के पाए पर
उडेल दिया, और उसके लिये प्रायश्चित्त
करके उसको पवित्र किया। १६ और
मूसा ने अतडियो पर की सव चरवी, और
कलेजे पर की झिल्ली, और चरवी समेत
दोनो गुर्दो को लेकर वेदी पर जलाया।
१७ और वछडे मे से जो कुछ शेष रह गया
उसको, अर्थात् गोवर समेत उसकी खाल
और मास को उस ने छावनी से बाहर आग
मे जलाया, जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी थी। १८ फिर वह होमवलि के
मेढे को समीप ले गया, और हारून और
उसके पुत्रो ने अपने अपने हाथ मेढे के सिर
पर रखे। १९ तव वह वलि किया गया,
और मूसा ने उसका लोहू वेदी पर चारो
ओर छिडका। २० तव मेढा टुकडे टुकडे

किया गया, और मूसा ने सिर और चरबी
समेत टुकडो को जलाया। २१ तब
अतडिया और पाव जल से धोये गए, और
मूसा ने पूरे मेढे को वेदी पर जलाया, और
वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि
और यहोवा के लिये हव्य हो गया, जिस
प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
२२ फिर वह दूसरे मेढे को जो सस्कार का
मेढा था समीप ले गया, और हारून और
उसके पुत्रो ने अपने अपने हाथ मेढे के सिर
पर रखे। २३ तब वह बलि किया गया,
और मूसा ने उसके लोहू मे से कुछ लेकर
हारून के दहिने कान के सिरे पर और उसके
दहिने हाथ और दहिने पाव के अगूठो पर
लगाया। २४ और वह हारून के पुत्रो को
समीप ले गया, और लोहू मे से कुछ एक
एक के दहिने कान के सिरे पर और दहिने
हाथ और दहिने पाव के अगूठो पर लगाया,
और मूसा ने लोहू को वेदी पर चारो ओर
छिडका। २५ और उस ने चरबी, और
मोटी पूछ, और अतडियो पर की सब
चरबी, और कलेजे पर की झिल्ली समेत
दोनो गुर्दे, और दहिनी जाघ, ये सब लेकर
अलग रखे, २६ और अखमीरी रोटी की
टोकरी जो यहोवा के आगे रखी गई थी
उस में से एक रोटी, और तेल से सने हुए
मैदे का एक फुलका, और एक रोटी लेकर
चरबी और दहिनी जाघ पर रख दी,
२७ और ये सब वस्तुए हारून और उसके
पुत्रो के हाथो पर धर दी गई, और हिलाने
की भेंट के लिये यहोवा के आगे हिलाई गई।
२८ और मूसा ने उन्हें फिर उनके हाथो
पर से लेकर उन्हें वेदी पर होमबलि के
ऊपर जलाया, यह सुखदायक सुगन्ध देने के
लिये सस्कार की भेंट और यहोवा के लिये
हव्य था। २९ तब मूसा ने छाती को
लेकर हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के
आगे हिलाया, और सस्कार के मेढे मे से
मूसा का भाग यही हुआ जैसा यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी। ३० और मूसा ने
अभिषेक के तेल और वेदी पर के लोहू,
दोनो मे से कुछ लेकर हारून और उसके
वस्त्रो पर, और उसके पुत्रो और उनके
वस्त्रो पर भी छिडका, और उस ने वस्त्रो
समेत हारून को और वस्त्रो समेत उसके
पुत्रो को भी पवित्र किया। ३१ और
मूसा ने हारून और उसके पुत्रो से कहा,
मास को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
पकाओ, और उस रोटी को जो सस्कार की
टोकरी मे है वही खाओ, जैसा मै ने आज्ञा
दी है, कि हारून और उसके पुत्र उसे खाए।
३२ और मास और रोटी मे से जो शेष
रह जाए उसे आग मे जला देना। ३३ और
जब तक तुम्हारे सस्कार के दिन पूरे न हो
तब तक, अर्थात् सात दिन तक मिलापवाले
तम्बू के द्वार के बाहर न जाना, क्योकि वह
सात दिन तक तुम्हारा सस्कार करता
रहेगा। ३४ जिस प्रकार आज किया गया
है वैसा ही करने की आज्ञा यहोवा ने दी
है, जिस से तुम्हारा प्रायश्चित्त किया जाए।
३५ इसलिये तुम मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर सात दिन तक दिन रात ठहरे रहना,
और यहोवा की आज्ञा को मानना, ताकि
तुम मर न जाओ, क्योकि ऐसी ही आज्ञा
मुझे दी गई है। ३६ तब यहोवा की इन्ही
सब आज्ञाओ के अनुसार जो उस ने मूसा के
द्वारा दी थी हारून और उसके पुत्रो ने
उनका पालन किया॥

९ आठवे दिन मूसा ने हारून और
उसके पुत्रो को और इस्राएली
पुरनियो को बुलवाकर हारून से कहा,

२ पापवलि के लिये एक निर्दोष वछडा,
और होमवलि के लिये एक निर्दोष मेढा
लेकर यहोवा के साम्हने भेट चढा।
३ और इस्राएलियो से यह कह, कि तुम
पापवलि के लिये एक वकरा, और होमवलि
के लिये एक वछडा और एक भेड का वच्चा
लो, जो एक वर्ष के हो और निर्दोष हो,
४ और मेलवलि के लिये यहोवा के सम्मुख
चढाने के लिये एक वैल और एक मेढा,
और तेल से सने हुए मैदे का एक अन्नवलि
भी ले लो, क्योकि आज यहोवा तुम को
दर्शन देगा। ५ और जिस जिस वस्तु की
आज्ञा मूसा ने दी उन सब को वे मिलापवाले
तम्बू के आगे ले आए, और सारी मण्डली
समीप जाकर यहोवा के साम्हने खडी हुई।
६ तव मूसा ने कहा, यह वह काम है जिसके
करने के लिये यहोवा ने आज्ञा दी है कि
तुम उसे करो, और यहोवा की महिमा का
तेज तुम को दिखाई पडेगा। ७ और मूसा
ने हारून से कहा, यहोवा की आज्ञा के
अनुसार वेदी के समीप जाकर अपने पाप-
वलि और होमवलि को चढाकर अपने और
सव जनता के लिये प्रायश्चित्त कर, और
जनता के चढावे को भी चढाकर उनके लिये
प्रायश्चित्त कर। ८ इसलिये हारून ने वेदी
के समीप जाकर अपने पापवलि के वछडे का
वलिदान किया। ९ और हारून के पुत्र
लोहू को उसके पास ले गए, तव उस ने अपनी
उगली को लोहू मे डुवाकर वेदी के सीगो
पर लोहू को लगाया, और शेष लोहू को
वेदी के पाए पर उडेल दिया, १० और
पापवलि मे की चरवी और गुर्दो और कलेजे
पर की झिल्ली को उस ने वेदी पर जलाया,
जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
११ और मास और खाल को उस ने
छावनी से वाहर आग मे जलाया। १२ तव
होमवलिपशु का वलिदान किया, और
हारून के पुत्रो ने लोहू को उसके हाथ मे
दिया, और उस ने उसको वेदी पर चारो
ओर छिडक दिया। १३ तव उन्हो ने होम-
वलिपशु का टुकडा टुकडा करके सिर सहित
उसके हाथ मे दे दिया और उस ने उनको
वेदी पर जला दिया। १४ और उस ने
अतडियो और पावो को धोकर वेदी पर
होमवलि के ऊपर जलाया। १५ और उस
ने लोगो के चढावे को आगे लेकर और उस
पापवलि के वकरे को जो उनके लिये था
लेकर उसका वलिदान किया, और पहिले
के समान उसे भी पापवलि करके चढाया।
१६ और उस ने होमवलि को भी समीप ले
जाकर विधि के अनुसार चढाया। १७ और
अन्नवलि को भी समीप ले जाकर उस मे से
मुट्ठी भर वेदी पर जलाया, यह भोर के
होमवलि के अलावा चढाया गया।
१८ और वैल और मेढा, अर्थात् जो
मेलवलिपशु जनता के लिये थे वे भी वलि
किये गए; और हारून के पुत्रो ने लोहू को
उसके हाथ मे दिया, और उस ने उसको
वेदी पर चारो ओर छिडक दिया,
१९ और उन्हो ने वैल की चरवी को, और
मेढे मे से मोटी पूछ को, और जिस चरवी से
अतडिया ढपी रहती है उसको, और गुर्दो
सहित कलेजे पर की झिल्ली को भी उसके
हाथ मे दिया, २० और उन्हो ने चरवी
को छातियो पर रखा, और उस ने वह
चरवी वेदी पर जलाई, २१ परन्तु छातियो
और दहिनी जाघ को हारून ने मूसा की
आज्ञा के अनुसार हिलाने की भेट के लिये
यहोवा के साम्हने हिलाया। २२ तव
हारून ने लोगो की ओर हाथ वढाकर उन्हे
आशीर्वाद दिया, और पापवलि, होमवलि,
और मेलवलियो को चढाकर वह नीचे

उतर आया। २३ तब मूसा और हारून
मिलापवाले तम्बू मे गए, और निकलकर
लोगो को आशीर्वाद दिया, तब यहोवा
का तेज सारी जनता को दिखाई दिया।
२४ और यहोवा के साम्हने से आग निकल-
कर चरबी सहित होमबलि को वेदी पर
भस्म कर दिया, इसे देखकर जनता ने जय
जयकार का नारा मारा, और अपने अपने
मुह के बल गिरकर दण्डवत किया॥

(नादाब और अबीहू के भस्म होने का वर्णन)

१० तब नादाब और अबीहू नामक
हारून के दो पुत्रो ने अपना अपना
धूपदान लिया, और उन मे आग भरी, और
उस मे धूप डालकर उस ऊपरी आग की
जिसकी आज्ञा यहोवा ने नही दी थी यहोवा
के सम्मुख आरती दी। २ तब यहोवा के
सम्मुख से आग निकलकर उन दोनो को
भस्म कर दिया, और वे यहोवा के साम्हने
मर गए। ३ तब मूसा ने हारून से कहा,
यह वही बात है जिसे यहोवा ने कहा था, कि
जो मेरे समीप आए अवश्य है कि वह मुझे
पवित्र जाने, और सारी जनता के साम्हने
मेरी महिमा करे। और हारून चुप रहा।
४ तब मूसा ने मीशाएल और एलसाफान
को जो हारून के चाचा उज्जीएल के पुत्र थे
बुलाकर कहा, निकट आओ, और अपने
भतीजो को पवित्रस्थान के आगे से उठाकर
छावनी के बाहर ले जाओ। ५ मूसा की
इस आज्ञा के अनुसार वे निकट जाकर उनको
अंगरखो सहित उठाकर छावनी के बाहर
ले गए। ६ तब मूसा ने हारून से और
उसके पुत्र एलीआजर और ईतामार से कहा,
तुम लोग अपने सिरो के बाल मत बिखराओ,
और न अपने वस्त्रो को फाडो, ऐसा न हो कि
तुम भी मर जाओ, और सारी मण्डली
पर उसका क्रोध भडक उठे, परन्तु वह
इस्राएल के कुल घराने के लोग जो तुम्हारे
भाईबन्धु है यहोवा की लगाई हुई आग
पर विलाप करे। ७ और तुम लोग
मिलापवाले तम्बू के द्वार के बाहर न जाना,
ऐसा न हो कि तुम मर जाओ, क्योकि
यहोवा के अभिषेक का तेल तुम पर लगा
हुआ है। मूसा के इस वचन के अनुसार
उन्हो ने किया॥

८ फिर यहोवा ने हारून से कहा,
९ कि जब जब तू वा तेरे पुत्र मिलापवाले
तम्बू मे आए तब तब तुम मे से कोई न तो
दाखमधु पिए हो न और किसी प्रकार का
मद्य, कही ऐसा न हो कि तुम मर जाओ,
तुम्हारी पीढी पीढी मे यह विधि प्रचलित
रहे, १० जिस से तुम पवित्र और अपवित्र
मे, और शुद्ध और अशुद्ध मे अन्तर कर सको,
११ और इस्राएलियो को उन सब विधियो
को सिखा सको जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा
उनको सुनवा दी है॥

१२ फिर मूसा ने हारून से और उसके
बचे हुए दोनो पुत्र ईतामार और एलीआजर
से भी कहा, यहोवा के हव्य मे से जो
अन्नबलि बचा है उसे लेकर वेदी के पास
बिना खमीर खाओ, क्योकि वह परमपवित्र
है, १३ और तुम उसे किसी पवित्रस्थान
मे खाओ, वह तो यहोवा के हव्य मे से तेरा
और तेरे पुत्रो का हक है, क्योकि मै ने ऐसी
ही आज्ञा पाई है। १४ और हिलाई हुई
भेट की छाती और उठाई हुई भेट की जाघ
को तुम लोग, अर्थात् तू और तेरे बेटे-बेटिया
सब किसी शुद्ध स्थान मे खाओ, क्योकि वे
इस्राएलियो के मेलबलियो मे से तुझे और
तेरे लडकेबालो को हक ठहरा दी गई है।
१५ चरबी के हव्यो समेत जो उठाई हुई

जाघ और हिलाई हुई छाती यहोवा के
साम्हने हिलाने के लिये आया करेगी, ये
भाग यहोवा की आज्ञा के अनुसार सर्वदा
की विधि की व्यवस्था से तेरे और तेरे
लडकेवालो के लिये है॥
१६ फिर मूसा ने पापवलि के बकरे की
जो ढूढ-ढाढ की, तो क्या पाया, कि वह
जलाया गया है, सो एलीआजर और ईतामार
जो हारून के पुत्र बचे थे उन से वह क्रोध से
आकर कहने लगा, १७ कि पापबलि जो
परमपवित्र है और जिसे यहोवा ने तुम्हे
इसलिये दिया है कि तुम मण्डली के अधर्म
का भार अपने पर उठाकर उनके लिये
यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करो, तुम
ने उसका मास पवित्रस्थान मे क्यो
नही खाया? १८ देखो, उसका लोहू
पवित्रस्थान के भीतर तो लाया ही नही गया,
नि सन्देह उचित था कि तुम मेरी आज्ञा के
अनुसार उसके मास को पवित्रस्थान मे
खाते। १९ इसका उत्तर हारून ने मूसा
को इस प्रकार दिया, कि देख, आज ही
उन्हो ने अपने पापवलि और होमवलि को
यहोवा के साम्हने चढाया, फिर मुझ पर
ऐसी विपत्तिया आ पडी है! इसलिये यदि मै
आज पापबलि का मास खाता तो क्या यह
बात यहोवा के सम्मुख भली होती? २० जब
मूसा ने यह सुना तब उसे सतोष हुआ॥

(शुद्ध और अशुद्ध मास की विधि)

११ फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, २ इस्राएलियो से कहो,
कि जितने पशु पृथ्वी पर है उन सभो मे से
तुम इन जीवधारियो का मास खा सकते हो।
३ पशुओ मे से जितने चिरे वा फटे खुर के
होते है और पागुर करते है उन्हे खा सकते
हो। ४ परन्तु पागुर करनेवाले वा फटे
खुरवालो मे से इन पशुओ को न खाना,
अर्थात् ऊट, जो पागुर तो करता है परन्तु
चिरे खुर का नही होता, इसलिये वह तुम्हारे
लिये अशुद्ध ठहरा है। ५ और शापान, जो
पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नही
होता, वह भी तुम्हारे लिये अशुद्ध है।
६ और खरहा, जो पागुर तो करता है परन्तु
चिरे खुर का नही होता, इसलिये वह भी
तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ७ और सूअर, जो
चिरे अर्थात् फटे खुर का होता तो है परन्तु
पागुर नही करता, इसलिये वह तुम्हारे लिये
अशुद्ध है। ८ इनके मास मे से कुछ न
खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नही,
ये तो तुम्हारे लिये अशुद्ध है॥
९ फिर जितने जलजन्तु है उन मे से तुम
इन्हे खा सकते हो, अर्थात् समुद्र वा नदियो के
जलजन्तुओ मे से जितनो के पख और चोयेटे
होते है उन्हे खा सकते हो। १० और
जलचरी प्राणियो मे से जितने जीवधारी
बिना पख और चोयेटे के समुद्र वा नदियो मे
रहते है वे सब तुम्हारे लिये घृणित है।
११ वे तुम्हारे लिये घृणित ठहरे, तुम
उनके मास मे से कुछ न खाना, और उनकी
लोथो को अशुद्ध जानना। १२ जल मे
जिस किसी जन्तु के पख और चोयेटे नही
होते वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है॥
१३ फिर पक्षियो मे से इनको अशुद्ध
जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाए न
जाए, अर्थात् उकाव, हडफोड, कुरर,
१४ शाही, और भाति भाति की चील,
१५ और भाति भाति के सब काग, १६ शुतु-
र्मुर्ग, तखमास, जलकुक्कुट, और भाति भाति
के बाज, १७ हवासिल, हाडगील, उल्लू,
१८ राजहँस, धनेश, गिद्ध, १९ लगलग,
भाति भाति के बगुले, टिटीहरी और
चमगीदड॥

२० जितने पखवाले चार पावों के बल
चलते हैं वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।
२१ पर रेंगनेवाले और पखवाले जो चार
पावों के बल चलते हैं, जिनके भूमि पर
कूदने फांदने को टांगें होती हैं उनको तो
खा सकते हो। २२ वे ये हैं, अर्थात् भांति
भांति की टिड्डी, भांति भांति के फनगे, भांति
भांति के हर्गोल, और भांति भांति के
हागाब। २३ परन्तु और सब रेंगनेवाले
पखवाले जो चार पाववाले होते हैं वे तुम्हारे
लिये अशुद्ध हैं॥

२४ और इनके कारण तुम अशुद्ध
ठहरोगे, जिस किसी से इनकी लोथ छू जाए
वह सांझ तक अशुद्ध ठहरे। २५ और जो
कोई इनकी लोथ में का कुछ भी उठाए वह
अपने वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे।
२६ फिर जितने पशु चिरे खुर के होते हैं
परन्तु न तो बिलकुल फटे खुर और न पागुर
करनेवाले हैं वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, जो
कोई उन्हें छूए वह अशुद्ध ठहरेगा।
२७ और चार पांव के बल चलनेवालों में से
जितने पंजों के बल चलते हैं वे सब तुम्हारे
लिये अशुद्ध हैं, जो कोई उनकी लोथ छूए
वह सांझ तक अशुद्ध रहे। २८ और जो
कोई उनकी लोथ उठाए वह अपने वस्त्र
धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे, क्योंकि वे
तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥

२९ और जो पृथ्वी पर रेंगते हैं उन में
से ये रेंगनेवाले तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, अर्थात्
नेवला, चूहा, और भांति भांति के गोह,
३० और छिपकली, मगर, टिकटिक, सांडा,
और गिरगिटान। ३१ सब रेंगनेवालों
में से ये ही तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं, जो
कोई इनकी लोथ छूए वह सांझ तक अशुद्ध
रहे। ३२ और इन में से किसी की लोथ
जिस किसी वस्तु पर पड़ जाए वह भी अशुद्ध
ठहरे, चाहे वह काठ का कोई पात्र हो, चाहे
वस्त्र, चाहे खाल, चाहे बोरा, चाहे किसी
काम का कैसा ही पात्रादि क्यों न हो, वह
जल में डाला जाए, और सांझ तक अशुद्ध
रहे, तब शुद्ध समझा जाए। ३३ और यदि
मिट्टी का कोई पात्र हो जिस में इन जन्तुओं
में से कोई पड़े, तो उस पात्र में जो कुछ हो
वह अशुद्ध ठहरे, और पात्र को तुम तोड़
डालना। ३४ उस में जो खाने के योग्य
भोजन हो, जिस में पानी का छुआव हो वह
सब अशुद्ध ठहरे, फिर यदि ऐसे पात्र में पीने
के लिये कुछ हो तो वह भी अशुद्ध ठहरे।
३५ और यदि इनकी लोथ में का कुछ
तंदूर वा चूल्हे पर पड़े तो वह भी अशुद्ध
ठहरे, और तोड़ डाला जाए, क्योंकि वह
अशुद्ध हो जाएगा, वह तुम्हारे लिये भी
अशुद्ध ठहरे। ३६ परन्तु सोता वा तालाब
जिस में जल इकट्ठा हो वह तो शुद्ध ही रहे,
परन्तु जो कोई इनकी लोथ को छूए वह
अशुद्ध ठहरे। ३७ और यदि इनकी लोथ
में का कुछ किसी प्रकार के बीज पर जो
बोने के लिये हो पड़े, तो वह बीज शुद्ध रहे,
३८ पर यदि बीज पर जल डाला गया हो
और पीछे लोथ में का कुछ उस पर पड़
जाए, तो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहरे॥

३९ फिर जिन पशुओं के खाने की आज्ञा
तुम को दी गई है यदि उन में से कोई पशु
मरे, तो जो कोई उसकी लोथ छूए वह
सांझ तक अशुद्ध रहे। ४० और उसकी
लोथ में से जो कोई कुछ खाए वह अपने
वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे, और
जो कोई उसकी लोथ उठाए वह भी अपने
वस्त्र धोए और सांझ तक अशुद्ध रहे।
४१ और सब प्रकार के पृथ्वी पर
रेंगनेवाले जन्तु घिनौने हैं, वे खाए न जाएं।
४२ पृथ्वी पर सब रेंगनेवालों में से जितने

पेट वा चार पावो के बल चलते है, वा
अधिक पाववाले होते है, उन्हे तुम न खाना,
क्योकि वे घिनौने है। ४३ तुम किसी प्रकार
के रेगनेवाले जन्तु के द्वारा अपने आप को
घिनौना न करना, और न उनके द्वारा
अपने को अशुद्ध करके अपवित्र ठहराना।
४४ क्योकि मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू,
इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने
रहो, क्योकि मै पवित्र हू। इसलिये तुम
किसी प्रकार के रेगनेवाले जन्तु के द्वारा जो
पृथ्वी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न
करना। ४५ क्योकि मै वह यहोवा हू जो
तुम्हे मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया
हू कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरू, इसलिये
तुम पवित्र बनो, क्योकि मै पवित्र हू॥

४६ पशुओ, पक्षियो, और सब जलचरी
प्राणियो, और पृथ्वी पर सब रेगनेवाले
प्राणियो के विषय मे यही व्यवस्था है,
४७ कि शुद्ध अशुद्ध और भक्षय और
अभक्षय जीवधारियो मे भेद किया जाए॥

(प्रसूता के विषय की विधि)

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से कह, कि जो स्त्री
गर्भिणी हो और उसके लडका हो, तो वह
सात दिन तक अशुद्ध रहेगी, जिस प्रकार
वह ऋतुमती होकर अशुद्ध रहा करती।
३ और आठवे दिन लडके का खतना किया
जाए। ४ फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करनेवाले
रुधिर मे तेतीस दिन रहे, और जब
तक उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे न हो
तब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को
छूए, और न पवित्रस्थान मे प्रवेश करे।
५ और यदि उसके लडकी पैदा हो, तो
उसको ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह
दिन की लगे, और फिर छियासठ दिन तक
अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर मे रहे।
६ और जब उसके शुद्ध हो जाने के
दिन पूरे हो, तब चाहे उसके बेटा हुआ हो
चाहे बेटी, वह होमबलि के लिये एक वर्ष का
भेडी का बच्चा, और पापबलि के लिये
कबूतरी का एक बच्चा वा पडुकी
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास
लाए। ७ तब याजक उसको यहोवा के
साम्हने भेट चढाके उसके लिये प्रायश्चित्त
करे, और वह अपने रुधिर के बहने की
अशुद्धता से छूटकर शुद्ध ठहरेगी। जिस स्त्री
के लडका वा लडकी उत्पन्न हो उसके लिये
यही व्यवस्था है। ८ और यदि उसके पास
भेड वा बकरी देने की पूजी न हो, तो दो
पडुकी वा कबूतरी के दो बच्चे, एक तो
होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे,
और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे,
तब वह शुद्ध ठहरेगी॥

(कोढ की विधि)

१३ फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, २ जब किसी मनुष्य के
शरीर के चर्म मे सूजन वा पपडी वा फूल
हो, और इस से उसके चर्म मे कोढ की
व्याधि सा कुछ देख पडे, तो उसे हारून
याजक के पास या उसके पुत्र जो याजक है
उन मे से किसी के पास ले जाए। ३ जब
याजक उसके चर्म की व्याधि को देखे, और
यदि उस व्याधि के स्थान के रोए उजले हो
गए हो और व्याधि चर्म से गहरी देख पडे,
तो वह जान ले कि कोढ की व्याधि है, और
याजक उस मनुष्य को देखकर उसको अशुद्ध
ठहराए। ४ और यदि वह फूल उसके चर्म
मे उजला तो हो, परन्तु चर्म से गहरा न देख
पडे, और न वहा के रोए उजले हो गए हो,
तो याजक उसको सात दिन तक बन्दकर

रखे, ५ और सातवें दिन याजक उसको
देखे, और यदि वह व्याधि जैसी की तैसी
बनी रहे और उसके चर्म में न फैली हो, तो
याजक उसको और भी सात दिन तक बन्द कर
रखे, ६ और सातवें दिन याजक उसको
फिर देखे, और यदि देख पड़े कि व्याधि
की चमक कम है और व्याधि चर्म पर फैली
न हो, तो याजक उसको शुद्ध ठहराए,
क्योंकि उसके तो चर्म में पपड़ी है, और वह
अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाए। ७ और
यदि याजक की उस जांच के पश्चात् जिस में
वह शुद्ध ठहराया गया था, वह पपड़ी उसके
चम पर बहुत फैल जाए, तो वह फिर
याजक को दिखाया जाए, ८ और यदि
याजक को देख पड़े कि पपड़ी चम में फैल
गई है, तो वह उसको अशुद्ध ठहराए,
क्योंकि वह कोढ ही है॥

९ यदि कोढ की सी व्याधि किसी मनुष्य
के हो, तो वह याजक के पास पहुंचाया जाए,
१० और याजक उसको देखे, और यदि वह
सूजन उसके चम में उजली हो, और उसके
कारण रोए भी उजले हो गए हों, और उस
सूजन में बिना चर्म का मास हो, ११ तो
याजक जाने कि उसके चर्म मे पुराना कोढ
है, इसलिये वह उसको अशुद्ध ठहराए, और
बन्द न रखे, क्योंकि वह तो अशुद्ध है।
१२ और यदि कोढ किसी के चम में फूटकर
यहां तक फैल जाए, कि जहां कहीं याजक देखे
व्याधित के सिर से पैर के तलवे तक कोढ ने
सारे चर्म को छा लिया हो, १३ तो याजक
ध्यान से देखे, और यदि कोढ ने उसके सारे
शरीर को छा लिया हो, तो वह उस व्याधित
को शुद्ध ठहराए, और उसका शरीर जो
बिलकुल उजला हो गया है वह शुद्ध ही ठहरे।
१४ पर जब उस में चमहीन मास देख पड़े,
तब तो वह अशुद्ध ठहरे। १५ और याजक
चमहीन मास को देखकर उसको अशुद्ध
ठहराए, क्योंकि वैसा चमहीन मास अशुद्ध
ही होता है, वह कोढ है। १६ पर यदि वह
चमहीन मास फिर उजला हो जाए, तो वह
मनुष्य याजक के पास जाए, १७ और
याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि
फिर से उजली हो गई हो, तो याजक व्याधित
को शुद्ध जाने, वह शुद्ध है॥

१८ फिर यदि किसी के चर्म में फोड़ा
होकर चंगा हो गया हो, १९ और फोड़े के
स्थान में उजली सी सूजन वा लाली लिये
हुए उजला फूल हो, तो वह याजक को
दिखाया जाए। २० और याजक उस सूजन
को देखे, और यदि वह चम से गहिरा देख
पड़े, और उसके रोए भी उजले हो गए हों,
तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध
ठहराए, क्योंकि वह कोढ की व्याधि है
जो फोड़े में से फूटकर निकली है। २१ और
यदि याजक देखे कि उस में उजले रोए नहीं
है, और वह चम से गहिरी नही, और उसकी
चमक कम हुई है, तो याजक उस मनुष्य को
सात दिन तक बन्द कर रखे। २२ और
यदि वह व्याधि उस समय तक चर्म में
सचमुच फैल जाए, तो याजक उस मनुष्य को
अशुद्ध ठहराए, क्योंकि वह कोढ की व्याधि
है। २३ परन्तु यदि वह फूल न फैले और
अपने स्थान ही पर बना रहे, तो वह फोड़े का
दाग है, याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए॥

२४ फिर यदि किसी के चम में जलने का
घाव हो, और उस जलने के घाव में चमहीन
फूल लाली लिये हुए उजला वा उजला ही
हो जाए, २५ तो याजक उसको देखे, और
यदि उस फूल में के रोए उजले हो गए हों
और वह चम में गहिरा देख पड़े, तो वह
कोढ है, जो उस जलने के दाग में से फूट
निकला है, याजक उस मनुष्य को अशुद्ध

ठहराए, क्योकि उस मे कोढ की व्याधि है।
२६ और यदि याजक देखे, कि फूल मे
उजले रोए नही और न वह चर्म से कुछ
गहिरा है, और उसकी चमक कम हुई है,
तो वह उसको सात दिन तक बन्द कर
रखे, २७ और सातवे दिन याजक उसको
देखे, और यदि वह चर्म मे फैल गई हो,
तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए,
क्योकि उसको कोढ की व्याधि है।
२८ परन्तु यदि वह फूल चर्म मे नही फैला
और अपने स्थान ही पर जहा का तहा ही
बना हो, और उसकी चमक कम हुई हो,
तो वह जल जाने के कारण सूजा हुआ है,
याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए, क्योकि
वह दाग जल जाने के कारण से है॥

२९ फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के
सिर पर, वा पुरुष की डाढी मे व्याधि हो,
३० तो याजक व्याधि को देखे, और यदि
वह चर्म से गहिरी देख पडे, और उस मे
भूरे भूरे पतले बाल हो, तो याजक उस
मनुष्य को अशुद्ध ठहराए, वह व्याधि सेहुआ,
अर्थात् सिर वा डाढी का कोढ है। ३१ और
यदि याजक सेहुए की व्याधि को देखे, कि
वह चर्म से गहिरी नही है और उस मे काले
काले बाल नही है, तो वह सेहुए के व्याधित
को सात दिन तक बन्द कर रखे, ३२ और
सातवे दिन याजक व्याधि को देखे, तब यदि
वह सेहुआ फैला न हो, और उस मे भूरे भूरे
बाल न हो, और सेहुआ चर्म से गहिरा न
देख पडे, ३३ तो यह मनुष्य मूडा तो जाए,
परन्तु जहा सेहुआ हो वहा न मूडा जाए,
और याजक उस सेहुएवाले को और भी सात
दिन तक बन्द करे, ३४ और सातवे दिन
याजक सेहुए को देखे, और यदि वह सेहुआ
चर्म मे फैला न हो और चर्म से गहिरा न
देख पडे, तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध
ठहराए, और वह अपने वस्त्र धोके शुद्ध
ठहरे। ३५ और यदि उसके शुद्ध ठहरने
के पश्चात् सेहुआ चर्म मे कुछ भी फैले,
३६ तो याजक उसको देखे, और यदि वह
चर्म मे फैला हो, तो याजक यह भूरे बाल
न ढूढे, क्योकि वह मनुष्य अशुद्ध है।
३७ परन्तु यदि उसकी दृष्टि मे वह सेहुआ
जैसे का तैसा बना हो, और उस मे काले-
काले बाल जमे हो, तो वह जाने कि सेहुआ
चगा हो गया है, और वह मनुष्य शुद्ध है,
याजक उसको शुद्ध ही ठहराए॥

३८ फिर यदि किसी पुरुष वा स्त्री के
चर्म मे उजले फूल हो, ३९ तो याजक
देखे, और यदि उसके चर्म मे वे फूल कम
उजले हो, तो वह जाने कि उसको चर्म मे
निकली हुई चाई ही है, वह मनुष्य शुद्ध
ठहरे॥

४० फिर जिसके सिर के बाल झड गए
हो, तो जानना कि वह चन्दुला तो है परन्तु
शुद्ध है। ४१ और जिसके सिर के आगे
के बाल झड गए हो, तो वह माथे का चन्दुला
तो है परन्तु शुद्ध है। ४२ परन्तु यदि
चन्दुले सिर पर वा चन्दुले माथे पर लाली
लिये हुए उजली व्याधि हो, तो जानना कि
वह उसके चन्दुले सिर पर वा चन्दुले माथे
पर निकला हुआ कोढ है। ४३ इसलिये
याजक उसको देखे, और यदि व्याधि की
सूजन उसके चन्दुले सिर वा चन्दुले माथे
पर ऐसी लाली लिये हुए उजली हो जैसा
चर्म के कोढ मे होता है, ४४ तो वह मनुष्य
कोढी है और अशुद्ध है, और याजक उसको
अवश्य अशुद्ध ठहराए, क्योकि वह व्याधि
उसके सिर पर है॥

४५ और जिस मे वह व्याधि हो उस
कोढी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे
रहे, और वह अपने ऊपरवाले होठ को ढापे

हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे। ४६ जितने
दिन तक वह व्याधि उस में रहे उतने दिन
तक वह तो अशुद्ध रहेगा, और वह अशुद्ध
ठहरा रहे, इसलिये वह अकेला रहा करे,
उसका निवास स्थान छावनी के बाहर हो॥
४७ फिर जिस वस्त्र में कोढ की व्याधि
हो, चाहे वह वस्त्र ऊन का हो चाहे सनी
का, ४८ वह व्याधि चाहे उस सनी वा
ऊन के वस्त्र के ताने मे हो चाहे बाने मे,
वा वह व्याधि चमडे में वा चमडे की बनी
हुई किसी वस्तु में हो, ४९ यदि वह व्याधि
किसी वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में,
वा चमडे में वा चमडे की किसी वस्तु में
हरी हो वा लाल सी हो, तो जानना कि वह
कोढ की व्याधि है और वह याजक को
दिखाई जाए। ५० और याजक व्याधि को
देखे, और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन
के लिये बन्द करे, ५१ और सातवे दिन
वह उस व्याधि को देखे, और यदि वह वस्त्र
के चाहे ताने मे चाहे बाने मे, वा चमडे में
वा चमडे की बनी हुई किसी वस्तु में फैल
गई हो, तो जानना कि व्याधि गलित कोढ
है, इसलिये वह वस्तु, चाहे कैसे ही काम मे
क्यो न आती हो, तौभी अशुद्ध ठहरेगी।
५२ वह उस वस्त्र को जिसके ताने वा बाने
मे वह व्याधि हो, चाहे वह ऊन का हो
चाहे सनी का, वा चमडे की वस्तु हो, उसको
जला दे, वह व्याधि गलित कोढ की है,
वह वस्तु आग मे जलाई जाए। ५३ और
यदि याजक देखे कि वह व्याधि उस वस्त्र के
ताने वा बाने में, वा चमडे की उस वस्तु में
नही फैली, ५४ तो जिस वस्तु में व्याधि
हो उसके धोने की आज्ञा दे, तब उसे और
भी सात दिन तक बन्द कर रखे, ५५ और
उसके धोने के बाद याजक उसको देखे, और
यदि व्याधि का न तो रग बदला हो, और
न व्याधि फैली हो, तो जानना कि वह अशुद्ध
है, उसे आग मे जलाना, क्योकि चाहे वह
व्याधि भीतर चाहे ऊपरी हो तौभी वह
खा जाने वाली व्याधि है। ५६ और यदि
याजक देखे, कि उसके धोने के पश्चात्
व्याधि की चमक कम हो गई, तो वह उसको
वस्त्र के चाहे ताने चाहे बाने म से, वा चमडे
म से फाडके निकाले, ५७ और यदि वह
व्याधि तब भी उस वस्त्र के ताने वा बाने
मे, वा चमडे की उस वस्तु मे देख पडे, तो
जानना कि वह फूट के निकली हुई व्याधि
है, और जिस में वह व्याधि हो उसे आग
मे जलाना। ५८ और यदि उस वस्त्र से
जिसके ताने वा बाने मे व्याधि हो, वा चमडे
की जो वस्तु हो उस मे जब धोई जाए और
व्याधि जाती रही, तो वह दूसरी बार धुल
कर शुद्ध ठहरे। ५९ ऊन वा सनी के वस्त्र
मे के ताने वा बाने मे, वा चमडे की किसी
वस्तु मे जो कोढ की व्याधि हो उसके शुद्ध
और अशुद्ध ठहराने की यही व्यवस्था है॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ कोढी के शुद्ध ठहराने की
व्यवस्था यह है, कि वह याजक के पास
पहुचाया जाए। ३ और याजक छावनी के
बाहर जाए, और याजक उस कोढी को देखे,
और यदि उसके कोढ की व्याधि चगी हुई
हो, ४ तो याजक आज्ञा दे कि शुद्ध ठहराने-
वाले के लिये दो शुद्ध और जीवित पक्षी,
देवदारु की लकडी, और लाल रग का
कपडा, और जूफा ये सब लिये जाए,
५ और याजक आज्ञा दे कि एक पक्षी बहते
हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र मे बलि
किया जाए। ६ तब वह जीवित पक्षी को
देवदारु की लकडी और लाल रग के कपडे
और जूफा इन सभो को लेकर एक सग

उस पक्षी के लोहू मे जो बहते हुए जल के
ऊपर बलि किया गया है डुबा दे, ७ और
कोढ से शुद्ध ठहरनेवाले पर सात बार
छिडककर उसको शुद्ध ठहराए, तब उस
जीवित पक्षी को मैदान मे छोड दे।
८ और शुद्ध ठहरनेवाला अपने वस्त्रो को
धोए, और सब बाल मुडवाकर जल से स्नान
करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा, और उसके बाद
वह छावनी मे आने पाए, परन्तु सात दिन
तक अपने डेरे से बाहर ही रहे। ९ और
सातवे दिन वह सिर, डाढी और भौहो के सब
बाल मुडाए, और सब अग मुण्डन कराए,
और अपने वस्त्रो को धोए, और जल से
स्नान करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा। १० और
आठवे दिन वह दो निर्दोष भेड के बच्चे,
और एक वर्ष की निर्दोष भेड की बच्ची,
और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ
एपा का तीन दहाई अग मैदा, और लोज
भर तेल लाए। ११ और शुद्ध ठहराने-
वाला याजक इन वस्तुओ समेत उस शुद्ध
होनेवाले मनुष्य को यहोवा के सम्मुख
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खडा करे।
१२ तब याजक एक भेड का बच्चा लेकर
दोषबलि के लिये उसे और उस लोज भर
तेल को समीप लाए, और इन दोनो को
हिलाने की भेट के लिये यहोवा के साम्हने
हिलाए, १३ और वह उस भेड के बच्चे
को उसी स्थान मे जहा वह पापबलि और
होमबलि पशुओ का बलिदान किया करेगा,
अर्थात् पवित्रस्थान मे बलिदान करे, क्योकि
जैसा पापबलि याजक का निज भाग होगा
वैसा ही दोषबलि भी उसी का निज भाग
ठहरेगा, वह परमपवित्र है। १४ तब
याजक दोषबलि के लोहू मे से कुछ लेकर
शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिरे पर,
और उसके दहिने हाथ और दहिने पाव के
अगूठो पर लगाए। १५ और याजक उस
लोज भर तेल मे से कुछ लेकर अपने बाए
हाथ की हथेली पर डाले, १६ और
याजक अपने दहिने हाथ की उगली को
अपने बाई हथेली पर के तेल मे डुबाकर
उस तेल मे से कुछ अपनी उगली से यहोवा
के सम्मुख सात बार छिडके। १७ और जो
तेल उसकी हथेली पर रह जाएगा याजक
उस मे से कुछ शुद्ध होनेवाले के दहिने
कान के सिरे पर, और उसके दहिने हाथ
और दहिने पांव के अगूठो पर दोषबलि
के लोहू के ऊपर लगाए, १८ और
जो तेल याजक की हथेली पर रह जाए
उसको वह शुद्ध होनेवाले के सिर पर डाल
दे। और याजक उसके लिये यहोवा के
साम्हने प्रायश्चित्त करे। १९ और याजक
पापबलि को भी चढाकर उसके लिये जो
अपनी अशुद्धता से शुद्ध होनेवाला हो
प्रायश्चित्त करे, और उसके बाद होमबलि
पशु का बलिदान करके २० अन्नबलि
समेत वेदी पर चढाए और याजक उसके
लिये प्रायश्चित्त करे, और वह शुद्ध
ठहरेगा॥

२१ परन्तु यदि वह दरिद्र हो और
इतना लाने के लिये उसके पास पूजी न हो,
तो वह अपना प्रायश्चित्त करवाने के
निमित्त, हिलाने के लिये भेड का बच्चा
दोषबलि के लिये, और तेल से सना हुआ
एपा का दसवा अश मैदा अन्नबलि करके,
और लोज भर तेल लाए, २२ और दो पण्डुक,
वा कबूतरी के दो बच्चे लाए, जो वह ला
सके, और इन मे से एक तो पापबलि के लिये
और दूसरा होमबलि के लिये हो। २३ और
आठवे दिन वह इन सभो को अपने शुद्ध
ठहरने के लिये मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर, यहोवा के सम्मुख, याजक के पास ले

आए, २४ तब याजक उस लोज भर तेल
और दोषबलिवाले भेड़ के बच्चे को लेकर
हिलाने की भेंट के लिये यहोवा के साम्हने
हिलाए। २५ फिर दोषबलि के भेड़ के
बच्चे का बलिदान किया जाए, और याजक
उसके लोहू में से कुछ लेकर शुद्ध ठहरनेवाले
के दहिने कान के सिरे पर, और उसके
दहिने हाथ और दहिने पांव के अंगूठों पर
लगाए। २६ फिर याजक उस तेल में से
कुछ अपने बाएं हाथ की हथेली पर डालकर,
२७ अपने दहिने हाथ की उंगली से अपनी
बाईं हथेली पर के तेल में से कुछ यहोवा के
सम्मुख सात बार छिड़के, २८ फिर
याजक अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ
शुद्ध ठहरनेवाले के दहिने कान के सिरे पर,
और उसके दहिने हाथ और दहिने पांव के
अंगूठों पर, दोषबलि के लोहू के स्थान पर,
लगाए। २९ और जो तेल याजक की
हथेली पर रह जाए उसे वह शुद्ध ठहरनेवाले
के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करने
को उसके सिर पर डाल दे। ३० तब वह
पंडुकों वा कबूतरी के बच्चों में से जो वह
ला सका हो एक को चढ़ाए, ३१ अर्थात्
जो पक्षी वह ला सका हो, उन में से वह
एक को पापबलि के लिये और अन्नबलि
समेत दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए,
इस रीति से याजक शुद्ध ठहरनेवाले के
लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त करे।
३२ जिसे कोढ़ की व्याधि हुई हो, और
उसके इतनी पूंजी न हो कि वह शुद्ध ठहरने
की सामग्री को ला सके, तो उसके लिये यही
व्यवस्था है॥

३३ फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, ३४ जब तुम लोग कनान देश में
पहुंचो, जिसे मैं तुम्हारी निज भूमि होने के
लिये तुम्हें देता हूं, उस समय यदि मैं कोढ़
की व्याधि तुम्हारे अधिकार के किसी घर
में दिखाऊं, ३५ तो जिसका वह घर हो
वह आकर याजक को बता दे, कि मुझे ऐसा
देख पड़ता है कि घर में मानो कोई व्याधि
है। ३६ तब याजक आज्ञा दे, कि उस घर
में व्याधि देखने के लिये मेरे जाने से पहिले
उसे खाली करो, कहीं ऐसा न हो कि जो
कुछ घर में हो वह सब अशुद्ध ठहरे, और
पीछे याजक घर देखने को भीतर जाए।
३७ तब वह उस व्याधि को देखे, और यदि
वह व्याधि घर की दीवारों पर हरी हरी वा
लाल लाल मानो खुदी हुई लकीरों के रूप में
हो, और ये लकीरें दीवार में गहिरी देख
पड़ती हों, ३८ तो याजक घर से बाहर
द्वार पर जाकर घर को सात दिन तक
बन्द कर रखे। ३९ और सातवें दिन
याजक आकर देखे, और यदि वह व्याधि
घर की दीवारों पर फैल गई हो, ४० तो
याजक आज्ञा दे, कि जिन पत्थरों को व्याधि
है उन्हें निकाल कर नगर से बाहर किसी
अशुद्ध स्थान में फेंक दें, ४१ और वह घर
के भीतर ही भीतर चारों ओर खुरचवाए,
और वह खुरचन की मिट्टी नगर से बाहर
किसी अशुद्ध स्थान में डाली जाए,
४२ और उन पत्थरों के स्थान में और दूसरे
पत्थर लेकर लगाए और याजक ताजा गारा
लेकर घर की जुड़ाई करे। ४३ और यदि
पत्थरों के निकाले जाने और घर के खुरचे
और लेसे जाने के बाद वह व्याधि फिर घर
में फूट निकले, ४४ तो याजक आकर
देखे, और यदि वह व्याधि घर में फैल गई
हो, तो वह जान ले कि घर में गलित कोढ़
है, वह अशुद्ध है। ४५ और वह सब गारे
समेत पत्थर, लकड़ी और घर को खुदवा-
कर गिरा दे, और उन सब वस्तुओं को
उठवाकर नगर से बाहर किसी अशुद्ध स्थान

पर फिकवा दे। ४६ और जब तक वह
घर बन्द रहे तब तक यदि कोई उस मे जाए
तो वह साझ तक अशुद्ध रहे, ४७ और
जो कोई उस घर मे सोए वह अपने वस्त्रो
को धोए, और जो कोई उस घर मे खाना
खाए वह भी अपने वस्त्रो को धोए।
४८ और यदि याजक आकर देखे कि जब
से घर लेसा गया है तब से उस मे व्याधि
नही फैली है, तो यह जानकर कि वह व्याधि
दूर हो गई है, घर को शुद्ध ठहराए।
४९ और उस घर को पवित्र करने के लिये
दो पक्षी, देवदारु की लकडी, लाल रग का
कपडा और जूफा लिवा लाए, ५० और एक
पक्षी बहते हुए जल के ऊपर मिट्टी के पात्र मे
बलिदान करे, ५१ तब वह देवदारु की
लकडी, लाल रग के कपडे और जूफा और
जीवित पक्षी इन सभो को लेकर बलिदान
किए हुए पक्षी के लोहू मे और बहते हुए
जल मे डुबा दे, और उस घर पर सात बार
छिडके। ५२ और वह पक्षी के लोहू, और
बहते हुए जल, और जीवित पक्षी, और
देवदारु की लकडी, और जूफा और लाल
रग के कपडे के द्वारा घर को पवित्र करे,
५३ तब वह जीवित पक्षी को नगर से बाहर
मैदान मे छोड दे, इसी रीति से वह घर के
लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगा॥
५४ सब भाति के कोढ की व्याधि,
और सेहुए, ५५ और वस्त्र, और घर के
कोढ, ५६ और सूजन, और पपडी, और
फूल के विषय मे, ५७ शुद्ध और अशुद्ध
ठहराने की शिक्षा की व्यवस्था यही है।
सब प्रकार के कोढ की व्यवस्था यही है॥

(ऐसे लोगों की विधि जिनके प्रमेह हो)

१५ फिर यहोवा ने मूसा और
हारून से कहा, २ कि इस्राएलियो
से कहो, कि जिस जिस पुरुष के प्रमेह हो,
तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध ठहरे।
३ और चाहे बहता रहे, चाहे बहना बन्द
भी हो, तौभी उसकी अशुद्धता बनी रहेगी।
४ जिसके प्रमेह हो वह जिस जिस बिछौने
पर लेटे वह अशुद्ध ठहरे, और जिस जिस
वस्तु पर वह बैठे वह भी अशुद्ध ठहरे।
५ और जो कोई उसके बिछौने को छूए वह
अपने वस्त्रो को धोकर जल से स्नान करे,
और साझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। ६ और
जिसके प्रमेह हो और वह जिस वस्तु पर
बैठा हो, उस पर जो कोई बैठे वह अपने
वस्त्रो को धोकर जल से स्नान करे, और
साझ तक अशुद्ध ठहरा रहे। ७ और
जिसके प्रमेह हो उस से जो कोई छू जाए
वह अपने वस्त्रो को धोकर जल से स्नान
करे और साझ तक अशुद्ध रहे। ८ और
जिसके प्रमेह हो यदि वह किसी शुद्ध मनुष्य
पर थूके, तो वह अपने वस्त्रो को धोकर
जल से स्नान करे, और साझ तक अशुद्ध
रहे। ९ और जिसके प्रमेह हो वह सवारी
की जिस वस्तु पर बैठे वह अशुद्ध ठहरे।
१० और जो कोई किसी वस्तु को जो उसके
नीचे रही हो छूए वह साझ तक अशुद्ध
रहे, और जो कोई ऐसी किसी वस्तु को
उठाए वह अपने वस्त्रो को धोकर जल से
स्नान करे, और साझ तक अशुद्ध रहे।
११ और जिसके प्रमेह हो वह जिस किसी
को बिना हाथ धोए छूए वह अपने वस्त्रो को
धोकर जल से स्नान करे, और साझ तक
अशुद्ध रहे। १२ और जिसके प्रमेह हो
वह मिट्टी के जिस किसी पात्र को छूए वह
तोड डाला जाए, और काठ के सब प्रकार
के पात्र जल से धोए जाए। १३ फिर
जिसके प्रमेह हो वह जब अपने रोग से चगा
हो जाए, तब से शुद्ध ठहरने के सात दिन

गिन लें, और उनके बीतने पर अपने वस्त्रों
को धोकर बहते हुए जल से स्नान करे,
तब वह शुद्ध ठहरेगा। १४ और आठवें
दिन वह दो पंडुक वा कबूतरी के दो बच्चे
लेकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा
के सम्मुख जाकर उन्हें याजक को दे।
१५ तब याजक उन में से एक को पापबलि,
और दूसरे को होमबलि के लिये भेंट चढ़ाए,
और याजक उसके लिये उसके प्रमेह
के कारण यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त
करे॥

१६ फिर यदि किसी पुरुष का वीर्य्य
स्खलित हो जाए, तो वह अपने सारे शरीर
को जल से धोए, और सांझ तक अशुद्ध रहे।
१७ और जिस किसी वस्त्र वा चमड़े पर
वह वीर्य्य पड़े वह जल से धोया जाए, और
सांझ तक अशुद्ध रहे। १८ और जब कोई
पुरुष स्त्री से प्रसंग करे, तो वे दोनों जल से
स्नान करें, और सांझ तक अशुद्ध रहें॥

१९ फिर जब कोई स्त्री ऋतुमती रहे,
तो वह सात दिन तक अशुद्ध ठहरी रहे,
और जो कोई उसको छूए वह सांझ तक
अशुद्ध रहे। २० और जब तक वह अशुद्ध
रहे तब तक जिस जिस वस्तु पर वह लेटे,
और जिस जिस वस्तु पर वह बैठे वे सब
अशुद्ध ठहरें। २१ और जो कोई उसके
बिछौने को छूए वह अपने वस्त्र धोकर जल
से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे।
२२ और जो कोई किसी वस्तु को छूए
जिस पर वह बैठी हो वह अपने वस्त्र धोकर
जल से स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध
रहे। २३ और यदि बिछौने वा और
किसी वस्तु पर जिस पर वह बैठी हो छूने
के समय उसका रुधिर लगा हो, तो छूनेहारा
सांझ तक अशुद्ध रहे। २४ और यदि कोई
पुरुष उस से प्रसंग करे, और उसका रुधिर
उसके लग जाए, तो वह पुरुष सात दिन तक
अशुद्ध रहे, और जिस जिस बिछौने पर वह
लेटे वे सब अशुद्ध ठहरें॥

२५ फिर यदि किसी स्त्री के अपने
मासिक धर्म के नियुक्त समय से अधिक दिन
तक रुधिर बहता रहे, वा उस नियुक्त समय
से अधिक समय तक ऋतुमती रहे, तो जब
तक वह ऐसी दशा में रहे तब तक वह अशुद्ध
ठहरी रहे। २६ उसके ऋतुमती रहने के
सब दिनों में जिस जिस बिछौने पर वह लेटे
वे सब उसके मासिक धर्म के बिछौने के
समान ठहरें, और जिस जिस वस्तु पर वह
बैठे वे भी उसके ऋतुमती रहने के दिनों
की नाईं अशुद्ध ठहरें। २७ और जो कोई
उन वस्तुओं को छूए वह अशुद्ध ठहरे,
इसलिये वह अपने वस्त्रों को धोकर जल से
स्नान करे, और सांझ तक अशुद्ध रहे।
२८ और जब वह स्त्री अपने ऋतुमती से
शुद्ध हो जाए, तब से वह सात दिन गिन ले,
और उन दिनों के बीतने पर वह शुद्ध ठहरे।
२९ फिर आठवें दिन वह दो पंडुक या
कबूतरी के दो बच्चे लेकर मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर याजक के पास जाए।
३० तब याजक एक को पापबलि और
दूसरे को होमबलि के लिये चढ़ाए, और
याजक उसके लिये उसके मासिक धर्म की
अशुद्धता के कारण यहोवा के साम्हने
प्रायश्चित्त करे॥

३१ इस प्रकार से तुम इस्राएलियों को
उनकी अशुद्धता से न्यारे रखा करो, कहीं
ऐसा न हो कि वे यहोवा के निवास को जो
उनके बीच में है अशुद्ध करके अपनी
अशुद्धता में फंसे हुए मर जाएं॥

३२ जिसके प्रमेह हो और जो पुरुष
वीर्य्य स्खलित होने से अशुद्ध हो, ३३ और
जो स्त्री ऋतुमती हो, और क्या पुरुष

क्या स्त्री, जिस किसी के धातुरोग हो, और
जो पुरुष अशुद्ध स्त्री से प्रसग करे, इन सभो
के लिये यही व्यवस्था है ॥

(प्रायश्चित्त के दिन का आचार)

१६ जब हारून के दो पुत्र यहोवा के
साम्हने समीप जाकर मर गए,
उसके बाद यहोवा ने मूसा से बाते की,
२ और यहोवा ने मूसा से कहा, अपने
भाई हारून से कह, कि सन्दूक के ऊपर के
प्रायश्चित्तवाले ढकने के आगे, बीचवाले पर्दे
के अन्दर, पवित्रस्थान मे हर समय न प्रवेश
करे, नही तो मर जाएगा, क्योकि मै
प्रायश्चित्तवाले ढकने के ऊपर बादल
मे दिखाई दूगा। ३ और जब हारून
पवित्रस्थान मे प्रवेश करे तब इस रीति से
प्रवेश करे, अर्थात् पापबलि के लिये एक
बछडे को और होमबलि के लिये एक मेढे को
लेकर आए। ४ वह सनी के कपडे का पवित्र
अगरखा, और अपने तन पर सनी के कपडे
की जाघिया पहिने हुए, और सनी के कपडे
का कटिबन्द, और सनी के कपडे की पगडी
भी बाधे हुए प्रवेश करे, ये पवित्र वस्त्र है,
और वह जल से स्नान करके इन्हे पहिने।
५ फिर वह इस्राएलियो की मण्डली के
पास से पापबलि के लिये दो बकरे और
होमबलि के लिये एक मेढा ले। ६ और
हारून उस पापबलि के बछडे को जो उसी
के लिये होगा चढाकर अपने और अपने
घराने के लिये प्रायश्चित्त करे। ७ और
उन दोनो बकरो को लेकर मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर यहोवा के साम्हने खडा
करे, ८ और हारून दोनो बकरो पर
चिट्ठिया डाले, एक चिट्ठी यहोवा के लिये
और दूसरी अजाजेल के लिये हो। ९ और
जिस बकरे पर यहोवा के नाम की चिट्ठी
निकले उसको हारून पापबलि के लिये
चढाए, १० परन्तु जिस बकरे पर
अजाजेल के लिये चिट्ठी निकले वह यहोवा
के साम्हने जीवता खडा किया जाए कि उस
से प्रायश्चित्त किया जाए, और वह अजाजेल
के लिये जगल मे छोडा जाए। ११ और
हारून उस पापबलि के बछडे को जो उसी
के लिये होगा समीप ले आए, और उसको
बलिदान करके अपने और अपने घराने के
लिये प्रायश्चित्त करे। १२ और जो वेदी
यहोवा के सम्मुख है उस पर के जलते हुए
कोयलो से भरे हुए धूपदान को लेकर, और
अपनी दोनो मुट्ठियो को कूटे हुए सुगन्धित
धूप से भरकर, बीचवाले पर्दे के भीतर ले
आकर १३ उस धूप को यहोवा के सम्मुख
आग मे डाले, जिस से धूप का धूआ साक्षीपत्र
के ऊपर के प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर
छा जाए, नही तो वह मर जाएगा,
१४ तब वह बछडे के लोहू मे से कुछ लेकर
पूरब की ओर प्रायश्चित्त के ढकने के
ऊपर अपनी उगली से छिडके, और फिर
उस लोहू मे से कुछ उगली के द्वारा उस
ढकने के साम्हने भी सात बार छिडक दे।
१५ फिर वह उस पापबलि के बकरे को
जो साधारण जनता के लिये होगा बलिदान
करके उसके लोहू को बीचवाले पर्दे के
भीतर ले आए, और जिस प्रकार बछडे के
लोहू से उस ने किया था ठीक वैसा ही वह
बकरे के लोहू से भी करे, अर्थात् उसको
प्रायश्चित्त के ढकने के ऊपर और उसके
साम्हने छिडके। १६ और वह इस्राएलियो
की भाति भाति की अशुद्धता, और
अपराधो, और उनके सब पापो के कारण
पवित्रस्थान के लिये प्रायश्चित्त करे,
और मिलापवाला तम्बू जो उनके सग
उनकी भाति भाति की अशुद्धता के

बीच रहता है * उसके लिये भी वह वैसा
ही करे। १७ और जब हारून प्रायश्चित्त
करने के लिये पवित्रस्थान में प्रवेश करे,
तब से जब तक वह अपने और अपने घराने
और इस्राएल की सारी मण्डली के लिये
प्रायश्चित्त करके बाहर न निकले तब तक
कोई मनुष्य मिलापवाले तम्बू में न रहे।
१८ फिर वह निकलकर उस वेदी के पास
जो यहोवा के साम्हने है जाए और उसके
लिये प्रायश्चित्त करे, अर्थात् बछड़े के
लोहू और बकरे के लोहू दोनों में से कुछ
लेकर उस वेदी के चारों कोनों के सींगों पर
लगाए। १९ और उस लोहू में से कुछ
अपनी उंगली के द्वारा सात बार उस पर
छिड़ककर उसे इस्राएलियों की भांति
भांति की अशुद्धता छुड़ाकर शुद्ध और पवित्र
करे। २० और जब वह पवित्रस्थान और
मिलापवाले तम्बू और वेदी के लिये
प्रायश्चित्त कर चुके, तब जीवित बकरे को
आगे ले आए, २१ और हारून अपने
दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर
इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और
उनके सब अपराधों, निदान उनके सारे
पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे
के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के
हाथ जो इस काम के लिये तैयार हो जंगल
में भेजके छुड़वा दे। २२ और वह बकरा
उनके सब अधर्म के कामों को अपने ऊपर
लादे हुए किसी निराले देश में उठा ले
जाएगा, इसलिये वह मनुष्य उस बकरे
को जंगल में छोड़ दे। २३ तब हारून
मिलापवाले तम्बू में आए, और जिस सनी
के वस्त्रों को पहिने हुए उस ने पवित्रस्थान
में प्रवेश किया था उन्हें उतारकर वहीं पर
रख दे। २४ फिर वह किसी पवित्र स्थान
में जल से स्नान करके अपने निज वस्त्र पहिन
ले, और बाहर जाकर अपने होमबलि और
साधारण जनता के होमबलि को चढ़ाकर
अपने और जनता के लिये प्रायश्चित्त करे।
२५ और पापबलि की चर्बी को वह वेदी
पर जलाए। २६ और जो मनुष्य बकरे
को अजाजेल के लिये छोड़कर आए वह
भी अपने वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान
करे, और तब वह छावनी में प्रवेश करे।
२७ और पापबलि का बछड़ा और
पापबलि का बकरा भी जिनका लोहू
पवित्रस्थान में प्रायश्चित्त करने के लिये
पहुंचाया जाए वे दोनों छावनी से बाहर
पहुंचाए जाएं, और उनका चमड़ा, मांस,
और गोबर आग में जला दिया जाए।
२८ और जो उनको जलाए वह अपने
वस्त्रों को धोए, और जल से स्नान करे,
और इसके बाद वह छावनी में प्रवेश
करने पाए॥

२९ और तुम लोगों के लिये यह सदा
की विधि होगी कि सातवें महीने के दसवें
दिन को तुम अपने अपने जीव को दुःख
देना, और उस दिन कोई, चाहे वह तुम्हारे
निज देश का हो चाहे तुम्हारे बीच रहने
वाला कोई परदेशी हो, कोई भी किसी
प्रकार का काम काज न करे, ३० क्योंकि
उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिये तुम्हारे
निमित्त प्रायश्चित्त किया जाएगा, और
तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख
पवित्र ठहरोगे। ३१ यह तुम्हारे लिये
परमविश्राम का दिन ठहरे, और तुम उस
दिन अपने अपने जीव को दुःख देना, यह
सदा की विधि है। ३२ और जिसका
अपने पिता के स्थान पर याजक पद के लिये
अभिषेक और संस्कार किया जाए वह

* मूल में—वास किए रहता है।

याजक प्रायश्चित्त किया करे, अर्थात् वह
सनी के पवित्र वस्त्रो को पहिनकर,
३३ पवित्रस्थान, और मिलापवाले तम्बू,
और वेदी के लिये प्रायश्चित्त करे, और
याजको के और मण्डली के सब लोगो के
लिये भी प्रायश्चित्त करे। ३४ और यह
तुम्हारे लिये सदा की विधि होगी, कि
इस्राएलियो के लिये प्रतिवर्ष एक बार
तुम्हारे सारे पापो के लिये प्रायश्चित्त किया
जाए। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो
उस ने मूसा को दी थी हारून ने किया॥

(बलिदान केवल पवित्र तम्बू के साम्हने करने की आज्ञा)

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ हारून और उसके पुत्रो से और
कुल इस्राएलियो से कह, कि यहोवा ने यह
आज्ञा दी है, ३ कि इस्राएल के घराने मे
से कोई मनुष्य हो जो बैल वा भेड के बच्चे,
वा बकरी को, चाहे छावनी मे चाहे छावनी
से बाहर घात करके ४ मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर, यहोवा के निवास के साम्हने
यहोवा को चढाने के निमित्त न ले जाए, तो
उस मनुष्य को लोहू बहाने का दोष लगेगा,
और वह मनुष्य जो लोहू बहाने वाला
ठहरेगा, वह अपने लोगो के बीच से नाश
किया जाए। ५ इस विधि का यह कारण
है कि इस्राएली अपने बलिदान जिनको
वह खुले मैदान मे वध करते है, वे उन्हे
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के
पास, यहोवा के लिये ले जाकर उसी के
लिये मेलबलि करके बलिदान किया करे,
६ और याजक लोहू को मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर यहोवा की वेदी के ऊपर छिडके,
और चर्बी को उसके सुखदायक सुगन्ध
के लिये जलाए। ७ और वे जो बकरो के
पूजक * होकर व्यभिचार करते है, वे फिर
अपने बलिपशुओ को उनके लिये बलिदान
न करे। तुम्हारी पीढियो के लिये यह सदा
की विधि होगी॥

८ और तू उन से कह, कि इस्राएल के
घराने के लोगो मे से वा उनके बीच
रहनेहारे परदेशियो मे से कोई मनुष्य क्यो
न हो जो होमबलि वा मेलबलि चढाए,
९ और उसको मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर यहोवा के लिये चढाने को न ले
आए, वह मनुष्य अपने लोगो मे से नाश
किया जाए॥

(लोहू की पवित्रता)

१० फिर इस्राएल के घराने के लोगो
मे से वा उनके बीच रहनेवाले परदेशियो
मे से कोई मनुष्य क्यो न हो जो किसी प्रकार
का लोहू खाए, मै उस लोहू खानेवाले के
विमुख होकर उसको उसके लोगो के बीच
मे से नाश कर डालूगा। ११ क्योकि
शरीर का प्राण लोहू मे रहता है, और
उसको मै ने तुम लोगो को वेदी पर चढाने
के लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणो के लिये
प्रायश्चित्त किया जाए, क्योकि प्राण के
कारण लोहू ही से प्रायश्चित्त होता है।
१२ इस कारण मै इस्राएलियो से कहता
हू, कि तुम मे से कोई प्राणी लोहू न खाए,
और जो परदेशी तुम्हारे बीच रहता हो
वह भी लोहू कभी न खाए॥

१३ और इस्राएलियो मे से वा उनके
बीच रहनेवाले परदेशियो मे से कोई मनुष्य
क्यो न हो जो अहेर करके खाने के योग्य
पशु वा पक्षी को पकडे, वह उसके लोहू को
उंडेलकर धूलि से ढाप दे। १४ क्योकि
शरीर का प्राण जो है वह उसका लोहू ही

* मूल में—के पीछे।

है जो उसके प्राण के साथ एक है, इसी लिये
मैं इस्राएलियों से कहता हू, कि किसी प्रकार
के प्राणी के लोहू को तुम न खाना, क्योंकि
सब प्राणियों का प्राण उनका लोहू ही है,
जो कोई उसको खाए वह नाश किया
जाएगा। १५ और चाहे वह देशी हो वा
परदेशी हो, जो कोई किसी लोथ वा फाडे
हुए पशु का मांस खाए वह अपने वस्त्रों
को धोकर जल से स्नान करे, और सांझ
तक अशुद्ध रहे, तब वह शुद्ध होगा।
१६ और यदि वह उनको न धोए और
न स्नान करे, तो उसको अपने अधर्म का
भार स्वयं उठाना पड़ेगा॥

(भांति भांति के घिनौने कामों का निषेध)

१८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियों से कह, कि मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू। ३ तुम
मिस्र देश के कामों के अनुसार जिस में तुम
रहते थे न करना, और कनान देश के
कामों के अनुसार भी जहां मैं तुम्हें ले चलता
हू न करना, और न उन देशों की विधियों
पर चलना। ४ मेरे ही नियमों को मानना,
और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन
पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हू। ५ इसलिये तुम मेरे नियमों और
मेरी विधियों को निरन्तर मानना, जो
मनुष्य उनको माने वह उनके कारण
जीवित रहेगा। मैं यहोवा हू। ६ तुम
में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिन
का तन उघाडने को उसके पास न जाए।
मैं यहोवा हू। ७ अपनी माता का तन
जो तुम्हारे पिता का तन है न उघाडना,
वह तो तुम्हारी माता है, इसलिये तुम उसका
तन न उघाडना। ८ अपनी सौतेली माता
का भी तन न उघाडना, वह तो तुम्हारे
पिता ही का तन है। ९ अपनी बहिन
चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो, चाहे वह घर
में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर, उसका तन
न उघाडना। १० अपनी पोती वा अपनी
नतिनी का तन न उघाडना, उनकी देह
तो मानो तुम्हारी ही है। ११ तुम्हारी
सौतेली बहिन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न
हुई, वह तुम्हारी बहिन है, इस कारण
उसका तन न उघाडना। १२ अपनी फूफी
का तन न उघाडना, वह तो तुम्हारे पिता
की निकट कुटुम्बिन है। १३ अपनी मौसी
का तन न उघाडना, क्योंकि वह तुम्हारी
माता की निकट कुटुम्बिन है। १४ अपने
चाचा का तन न उघाडना, अर्थात् उसकी
स्त्री के पास न जाना, वह तो तुम्हारी चाची
है। १५ अपनी बहू का तन न उघाडना,
वह तो तुम्हारे बेटे की स्त्री है, इस कारण
तुम उसका तन न उघाडना। १६ अपनी
भौजी का तन न उघाडना, वह तो तुम्हारे
भाई ही का तन है। १७ किसी स्त्री और
उसकी बेटी दोनों का तन न उघाडना, और
उसकी पोती को वा उसकी नतिनी को
अपनी स्त्री करके उसका तन न उघाडना, वे
तो निकट कुटुम्बिन हैं, ऐसा करना महापाप
है। १८ और अपनी स्त्री की बहिन
को भी अपनी स्त्री करके उसकी सौत न
करना, कि पहली के जीवित रहते हुए
उसका तन भी उघाडे। १९ फिर जब तक
कोई स्त्री अपने ऋतु के कारण अशुद्ध रहे
तब तक उसके पास उसका तन उघाडने
को न जाना। २० फिर अपने भाईबन्धु
की स्त्री से कुकर्म करके अशुद्ध न हो जाना।
२१ और अपने सन्तान में से किसी को
मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना, और
न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र

ठहराना, मै यहोवा हू। २२ स्त्रीगमन
की रीति से पुरुषगमन न करना, वह तो
घिनौना काम है। २३ किसी जाति के
पशु के साथ पशुगमन करके अशुद्ध न हो
जाना, और न कोई स्त्री पशु के साम्हने
इसलिये खडी हो कि उसके सग कुकर्म
करे, यह तो उलटी वात है॥

२४ ऐसा ऐसा कोई भी काम करके
अशुद्ध न हो जाना, क्योकि जिन जातियो
को मै तुम्हारे आगे से निकालने पर हू वे
ऐसे ऐसे काम करके अशुद्ध हो गई है,
२५ और उनका देश भी अशुद्ध हो गया
है, इस कारण मै उस पर उसके अधर्म का
दण्ड देता हू, और वह देश अपने निवासियो
को उगल देता है। २६ इस कारण तुम
लोग मेरी विधियो और नियमो को निरन्तर
मानना, और चाहे देशी चाहे तुम्हारे वीच
रहनेवाला परदेशी हो तुम मे से कोई भी
ऐसा घिनौना काम न करे, २७ क्योकि
ऐसे सब घिनौने कामो को उस देश के
मनुष्य जो तुम से पहिले उस मे रहते थे
वे करते आए है, इसी से वह देश अशुद्ध हो
गया है। २८ अव ऐसा न हो कि जिस
रीति से जो जाति तुम से पहिले उस देश मे
रहती थी उसको उस ने उगल दिया, उसी
रीति जव तुम उसको अशुद्ध करो, तो वह
तुम को भी उगल दे। २९ जितने ऐसा
कोई घिनौना काम करे वे सब प्राणी अपने
लोगो मे से नाश किए जाए। ३० यह
आज्ञा जो मै ने तुम्हारे मानने को दी है उसे
तुम मानना, और जो घिनौनी रीतिया तुम
से पहिले प्रचलित है उन में से किसी पर
न चलना, और न उनके कारण अशुद्ध हो
जाना। मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हू॥

(भांति भांति का आचार)

१९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो की सारी मण्डली
से कह, कि तुम पवित्र वने रहो, क्योकि मै
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हू।
३ तुम अपनी अपनी माता और अपने
अपने पिता का भय मानना, और मेरे
विश्राम दिनो को मानना, मै तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हू। ४ तुम मूरतो की
ओर न फिरना, और देवताओ की प्रतिमाए
ढालकर न वना लेना, मै तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हू। ५ जव तुम यहोवा के लिये
मेलवलि करो, तव ऐसा वलिदान करना
जिससे मै तुम से प्रसन्न हो जाऊ। ६ उसका
मास वलिदान के दिन और दूसरे दिन
खाया जाए, परन्तु तीसरे दिन तक जो रह
जाए वह आग मे जला दिया जाए। ७ और
यदि उस मे से कुछ भी तीसरे दिन खाया
जाए, तो यह घृणित ठहरेगा, और ग्रहण न
किया जाएगा। ८ और उसका खानेवाला
यहोवा के पवित्र पदार्थ को अपवित्र ठहराता
है, इसलिये उसको अपने अधर्म का भार
स्वय उठाना पडेगा, और वह प्राणी अपने
लोगो मे से नाश किया जाएगा॥

९ फिर जव तुम अपने देश के खेत
काटो तव अपने खेत के कोने कोने तक पूरा
न काटना, और काटे हुए खेत की गिरी
पडी वालो को न चुनना। १० और अपनी
दाख की वारी का दाना दाना न तोड लेना,
और अपनी दाख की वारी के झडे हुए अगूरो
को न वटोरना, उन्हे दीन और परदेशी
लोगो के लिये छोड देना, मै तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हू। ११ तुम चोरी न
करना, और एक दूसरे से न तो कपट करना,
और न झूठ वोलना। १२ तुम मेरे नाम
की झूठी शपथ खाके अपने परमेश्वर का

नाम अपवित्र न ठहराना, मैं यहोवा हूं।
१३ एक दूसरे पर अन्धेर न करना, और
न एक दूसरे को लूट लेना। और मजदूर की
मजदूरी तेरे पास सारी रात बिहान तक न
रहने पाए। १४ बहिरे को शाप न देना,
और न अन्धे के आगे ठोकर रखना, और
अपने परमेश्वर का भय मानना, मैं यहोवा
हूं। १५ न्याय में कुटिलता न करना,
और न तो कंगाल का पक्ष करना और
न बड़े मनुष्यों का मुंह देखा विचार करना,
एक दूसरे का न्याय धर्म से करना।
१६ लुतरा बनके अपने लोगों में न फिरा
करना, और एक दूसरे के लोहू बहाने की
युक्तियां न बान्धना, मैं यहोवा हूं।
१७ अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न
रखना, अपने पड़ोसी को अवश्य डांटना
नहीं, तो उसके पाप का भार तुझ को उठाना
पड़ेगा। १८ पलटा न लेना, और न अपने
जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे
से अपने ही समान प्रेम रखना, मैं यहोवा
हूं। १९ तुम मेरी विधियों को निरन्तर
मानना। अपने पशुओं को भिन्न जाति के
पशुओं से मेल खाने न देना, अपने खेत में
दो प्रकार के बीज इकट्ठे न बोना, और
सनी और ऊन की मिलावट से बना हुआ
वस्त्र न पहिनना। २० फिर कोई स्त्री
दासी हो, और उसकी मंगनी किसी पुरुष
से हुई हो, परन्तु वह न तो दाम से और न
सेंतमेंत स्वाधीन की गई हो, उस से यदि
कोई कुकर्म करे, तो उन दोनों को दण्ड तो
मिले, पर उस स्त्री के स्वाधीन न होने के
कारण वे दोनों मार न डाले जाएं।
२१ पर वह पुरुष मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर यहोवा के पास एक मेढ़ा दोषबलि के
लिये ले आए। २२ और याजक उसके
किये हुए पाप के कारण दोषबलि के मेढ़े
के द्वारा उसके लिये यहोवा के साम्हने
प्रायश्चित्त करे, तब उसका किया हुआ पाप
क्षमा किया जाएगा। २३ फिर जब तुम
कनान देश में पहुंचकर किसी प्रकार के
फल के वृक्ष लगाओ, तो उनके फल तीन
वर्ष तक तुम्हारे लिये मानो खतनारहित
ठहरे रहें, इसलिये उन में से कुछ न खाया
जाए। २४ और चौथे वर्ष में उनके सब
फल यहोवा की स्तुति करने के लिये पवित्र
ठहरें। २५ तब पांचवें वर्ष में तुम उनके
फल खाना, इसलिये कि उन से तुम को बहुत
फल मिलें, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हूं। २६ तुम लोहू लगा हुआ कुछ मांस
न खाना। और न टोना करना, और
न शुभ वा अशुभ मुहूर्तों को मानना।
२७ अपने सिर में घेरा रखकर न मुंड़ाना,
और न अपने गाल के बालों को मुंड़ाना।
२८ मुर्दों के कारण अपने शरीर को
बिलकुल न चीरना, और न उस में छाप
लगाना, मैं यहोवा हूं। २९ अपनी बेटियों
को वेश्या बनाकर अपवित्र न करना, ऐसा
न हो कि देश वेश्यागमन के कारण महापाप
से भर जाए। ३० मेरे विश्रामदिन को
माना करना, और मेरे पवित्रस्थान का
भय निरन्तर मानना, मैं यहोवा हूं।
३१ ओझाओं और भूत साधने वालों की
ओर न फिरना, और ऐसों की खोज करके
उनके कारण अशुद्ध न हो जाना, मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। ३२ पक्के
बालवाले के साम्हने उठ खड़े होना, और
बूढ़े का आदरमान करना, और अपने
परमेश्वर का भय निरन्तर मानना, मैं
यहोवा हूं। ३३ और यदि कोई परदेशी
तुम्हारे देश में तुम्हारे संग रहे, तो उसको
दुःख न देना। ३४ जो परदेशी तुम्हारे
संग रहे वह तुम्हारे लिये देशी के समान हो,

और उस से अपने ही समान प्रेम रखना,
क्योकि तुम भी मिस्र देश मे परदेशी
थे, मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू।
३५ तुम न्याय मे, और परिमाण मे, और
तौल मे, और नाप मे कुटिलता न करना।
३६ सच्चा तराजू, धर्म के बटखरे, सच्चा
एपा, और धर्म का हीन* तुम्हारे पास
रहे, मै तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हू
जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया।
३७ इसलिये तुम मेरी सब विधियो और
सब नियमो को मानते हुए निरन्तर पालन
करो, मै यहोवा हू॥

(प्राणदण्ड के योग्य भाति भाति के पापों का वर्णन)

२० फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से कह, कि इस्रा-
एलियो मे से, वा इस्राएलियो के बीच
रहनेवाले परदेशियो मे से, कोई क्यो न हो
जो अपनी कोई सन्तान मोलेक को बलिदान
करे वह निश्चय मार डाला जाए, और
जनता उसको पत्थरवाह करे। ३ और
मै भी उस मनुष्य के विरुद्ध होकर उसको
उसके लोगो मे से इस कारण नाश करूगा,
कि उस ने अपनी सन्तान मोलेक को देकर
मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया, और मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र ठहराया। ४ और
यदि कोई अपनी सन्तान मोलेक को बलिदान
करे, और जनता उसके विषय मे आनाकानी
करे, और उसको मार न डाले, ५ तब तो
मै स्वय उस मनुष्य और उसके घराने के
विरुद्ध होकर उसको और जितने उसके
पीछे होकर मोलेक के साथ व्यभिचार करे
उन सभो को भी उनके लोगो के बीच मे
से नाश करूगा। ६ फिर जो प्राणी

* हीन—तौल बराबर ६ हन्डरवेट के।

ओझाओ वा भूतसाधनेवालो की ओर
फिरके, और उनके पीछे होकर व्यभिचारी
बने, तब मै उस प्राणी के विरुद्ध होकर
उसको उसके लोगो के बीच मे से नाश
कर दूगा। ७ इसलिये तुम अपने आप
को पवित्र करो, और पवित्र बने रहो,
क्योकि मै तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू।
८ और तुम मेरी विधियो को मानना, और
उनका पालन भी करना, क्योकि मै तुम्हारा
पवित्र करनेवाला यहोवा हू। ९ कोई
क्यो न हो जो अपने पिता वा माता को
शाप दे वह निश्चय मार डाला जाए,
उस ने अपने पिता वा माता को शाप दिया
है, इस कारण उसका खून उसी के सिर पर
पडेगा। १० फिर यदि कोई पराई स्त्री
के साथ व्यभिचार करे, तो जिस ने किसी
दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो
तो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिणी
दोनो निश्चय मार डाले जाए। ११ और
यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ
सोए, वह जो अपने पिता ही का तन
उघाडनेवाला ठहरेगा, सो इसलिये वे दोनो
निश्चय मार डाले जाए, उनका खून उन्ही
के सिर पर पडेगा। १२ और यदि कोई
अपनी पतोहू के साथ सोए, तो वे दोनो
निश्चय मार डाले जाए, क्योकि वे उलटा
काम करनेवाले ठहरेगे, और उनका खून
उन्ही के सिर पर पडेगा। १३ और यदि
कोई जिस रीति स्त्री से उसी रीति पुरुष
से प्रसग करे, तो वे दोनो घिनौना काम
करनेवाले ठहरेगे, इस कारण वे निश्चय
मार डाले जाए, उनका खून उन्ही के सिर
पर पडेगा। १४ और यदि कोई अपनी
पत्नी और अपनी सास दोनो को रखे, तो
यह महापाप है, इसलिये वह पुरुष और वे
स्त्रिया तीनो के तीनो आग मे जलाए जाए,

जिस मे तुम्हारे बीच महापाप न हो।
१५ फिर यदि कोई पुरुष पशुगामी हो, तो
पुरुष और पशु दोनो निश्चय मार डाले
जाए। १६ और यदि कोई स्त्री पशु के
पास जाकर उसके सग कुकर्म करे, तो तू
उस स्त्री और पशु दोनो को घात करना,
वे निश्चय मार डाले जाए, उनका खून
उन्ही के सिर पर पडेगा। १७ और यदि
कोई अपनी बहिन का, चाहे उसकी सगी
बहिन हो चाहे सौतेली, उसका नग्न तन
देखे, और उसकी बहिन भी उसका नग्न
तन देखे, तो यह निन्दित बात है, वे दोनो
अपने जाति भाइयो की आखो के साम्हने
नाश किए जाए, क्योकि जो अपनी बहिन
का तन उघाडनेवाला ठहरेगा उसे अपने
अधर्म का भार स्वय उठाना पडेगा।
१८ फिर यदि कोई पुरुष किसी ऋतुमती
स्त्री के सग सोकर उसका तन उघाडे, तो
वह पुरुष उसके रुधिर के सोते का उघाडने-
वाला ठहरेगा, और वह स्त्री अपने रुधिर
के सोते की उघाडनेवाली ठहरेगी, इस
कारण वे दोनो अपने लोगो के बीच में से
नाश किए जाए। १९ और अपनी मौसी
वा फूफी का तन न उघाडना, क्योकि
जो उसे उघाडे वह अपनी निकट कुटुम्बिन
को नङ्गा करता है, इसलिये उन दोनो को
अपने अधर्म का भार उठाना पडेगा।
२० और यदि कोई अपनी चाची के सग
सोए, तो वह अपने चाचा का तन उघाडने-
वाला ठहरेगा, इसलिये वे दोनो अपने पाप
के भार को उठाए हुए निर्वंश मर जाएगे।
२१ और यदि कोई अपनी भौजी वा भयाहु
को अपनी पत्नी बनाए, तो इसे घिनौना काम
जानना, और वह अपने भाई का तन
उघाडनेवाला ठहरेगा, इस कारण वे दोनो
निर्वंश रहेंगे॥

२२ तुम मेरी सब विधियो और मेरे सब
नियमो को समझ के साथ मानना, जिससे
यह न हो कि जिस देश मे मैं तुम्हे लिये जा
रहा हू वह तुम को उगल देवे। २३ और
जिस जाति के लोगो को मैं तुम्हारे आगे से
निकालता हू उनकी रीति रस्म पर न
चलना, क्योकि उन लोगो ने जो ये सब
कुकर्म किए है, इसी कारण मुझे उन से
घृणा हो गई है। २४ और मैं तुम लोगो से
कहता हू, कि तुम तो उनकी भूमि के
अधिकारी होगे, और मैं इस देश को जिस मे
दूध और मधु की धाराए बहती है तुम्हारे
अधिकार मे कर दूगा, मै तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हू जिस ने तुम को और देशो के
लोगो से अलग किया है। २५ इस कारण
तुम शुद्ध और अशुद्ध पशुओ मे, और शुद्ध
और अशुद्ध पक्षियो मे भेद करना, और
कोई पशु वा पक्षी वा किसी प्रकार का
भूमि पर रेगनेवाला जीवजन्तु क्यो न हो,
जिसको मैं ने तुम्हारे लिये अशुद्ध ठहराकर
वर्जित किया है, उस से अपने आप को अशुद्ध
न करना। २६ और तुम मेरे लिये पवित्र
बने रहना, क्योकि मैं यहोवा स्वय पवित्र हू,
और मैं ने तुम को और देशो के लोगो से
इसलिये अलग किया है कि तुम निरन्तर मेरे
ही बने रहो॥

२७ यदि कोई पुरुष वा स्त्री ओझाई
वा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार
डाला जाए, ऐसो का पत्थरवाह किया
जाए, उनका खून उन्ही के सिर पर
पडेगा॥

(याजकों के लिये विशेष विशेष विधिया)

२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
हारून के पुत्र जो याजक है उन से
कह, कि तुम्हारे लोगो में से कोई भी मरे, तो

उसके कारण तुम में से कोई अपने को अशुद्ध
न करे, २ अपने निकट कुटुम्बियों, अर्थात्
अपनी माता, वा पिता, वा बेटे, वा बेटी,
वा भाई के लिये, ३ वा अपनी कुंवारी
बहिन जिसका विवाह न हुआ हो, जिनका
समीपी सम्बन्ध है, उनके लिये वह अपने को
अशुद्ध कर सकता है। ४ पर याजक होने के
नाते से वह अपने लोगों में प्रधान है, इसलिये
वह अपने को ऐसा अशुद्ध न करे कि अपवित्र
हो जाए। ५ वे न तो अपने सिर मुंडाएं,
और न अपने गाल के बालों को मुंडाएं,
और न अपने शरीर चीरें। ६ वे अपने
परमेश्वर के लिये पवित्र बने रहें, और अपने
परमेश्वर का नाम अपवित्र न करें, क्योंकि
वे यहोवा के हव्य को जो उनके परमेश्वर
का भोजन है चढ़ाया करते हैं, इस कारण
वे पवित्र बने रहें। ७ वे वेश्या वा भ्रष्टा
को ब्याह न लें, और न त्यागी हुई को
ब्याह लें, क्योंकि याजक अपने परमेश्वर के
लिये पवित्र होता है। ८ इसलिये तू याजक
को पवित्र जानना, क्योंकि वह तुम्हारे
परमेश्वर का भोजन चढ़ाया करता है,
इसलिये वह तेरी दृष्टि में पवित्र ठहरे,
क्योंकि मैं यहोवा, जो तुम को पवित्र करता
हूं, पवित्र हूं। ९ और यदि याजक की बेटी
वेश्या बनकर अपने आप को अपवित्र करे,
तो वह अपने पिता को अपवित्र ठहराती है,
वह आग में जलाई जाए॥

१० और जो अपने भाइयों में महा-
याजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का
तेल डाला गया हो, और जिसका पवित्र
वस्त्रों को पहिनने के लिये संस्कार हुआ हो,
वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे, और
न अपने वस्त्र फाड़े, ११ और न वह किसी
लोथ के पास जाए, और न अपने पिता वा
माता के कारण अपने को अशुद्ध करे,
१२ और वह पवित्रस्थान से बाहर भी न
निकले, और न अपने परमेश्वर के पवित्र-
स्थान को अपवित्र ठहराए, क्योंकि वह
अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी
मुकुट धारण * किए हुए है, मैं यहोवा हूं।
१३ और वह कुंवारी ही स्त्री को ब्याहे।
१४ जो विधवा, वा त्यागी हुई, वा भ्रष्ट,
वा वेश्या हो, ऐसी किसी को वह न ब्याहे,
वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी
कुंवारी कन्या को ब्याहे, १५ और वह
अपने वीर्य को अपने लोगों में अपवित्र न
करे, क्योंकि मैं उसका पवित्र करनेवाला
यहोवा हूं॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१७ हारून से कह, कि तेरे वंश की पीढ़ी-
पीढ़ी में जिस किसी के कोई भी दोष हो वह
अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये
समीप न आए। १८ कोई क्यों न हो जिस
में दोष हो वह समीप न आए, चाहे वह
अन्धा हो, चाहे लंगड़ा, चाहे नकचपटा हो,
चाहे उसके कुछ अधिक अंग हो, १९ वा
उसका पांव, वा हाथ टूटा हो, २० वा वह
कुबड़ा, वा बौना हो, वा उसकी आंख में
दोष हो, वा उस मनुष्य के चाई वा खजुली
हो, वा उसके अंड पिचके हों, २१ हारून
याजक के वंश में से जिस किसी में कोई भी
दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने के लिये
समीप न आए, वह जो दोषयुक्त है कभी
भी अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये
समीप न आए। २२ वह अपने परमेश्वर
के पवित्र और परमपवित्र दोनों प्रकार के
भोजन को खाए, २३ परन्तु उसके दोष के
कारण वह न तो बीचवाले पर्दे के भीतर
आए और न वेदी के समीप, जिस से ऐसा

* वा, का तेल जो उसके न्यारे किये जाने
का चिन्ह है उसे।

न हो कि वह मेरे पवित्रस्थानो को अपवित्र
करे, क्योकि मै उनका पवित्र करनेवाला
यहोवा हू। २४ इसलिये मूसा ने हारून
और उसके पुत्रो को तथा कुल इस्राएलियो
को यह बाते कह सुनाई॥

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ हारून और उसके पुत्रो से कह,
कि इस्राएलियो की पवित्र की हुई वस्तुओ मे
जिनको वे मेरे लिये पवित्र करते है न्यारे
रहे, और मेरे पवित्र नाम को अपवित्र न
करे, मै यहोवा हू। ३ और उन से कह,
कि तुम्हारी पीढी-पीढी मे तुम्हारे सारे
वश मे से जो कोई अपनी अशुद्धता की दशा
में उन पवित्र की हुई वस्तुओ के पास जाए,
जिन्हे इस्राएली यहोवा के लिये पवित्र करते
है, वह प्राणी मेरे साम्हने से नाश किया
जाएगा, मै यहोवा हू। ४ हारून के वश
मे से कोई क्यो न हो जो कोढी हो, वा
उसके प्रमेह हो, वह मनुष्य जब तक शुद्ध न
हो जाए तब तक पवित्र की हुई वस्तुओ
मे से कुछ न खाए। और जो लोथ के कारण
अशुद्ध हुआ हो, वा जिसका वीर्य्य स्खलित
हुआ हो, ऐसे मनुष्य को जो कोई छूए,
५ और जो कोई किसी ऐसे रेंगनेहारे जन्तु
को छूए जिस मे लोग अशुद्ध हो सकते है,
वा किसी ऐसे मनुष्य को छूए जिस में किसी
प्रकार की अशुद्धता हो जो उसको भी लग
सकती है ६ तो वह प्राणी जो इन मे से
किसी को छूए साझ तक अशुद्ध ठहरा रहे,
और जब तक जल से स्नान न कर ले तब
तक पवित्र वस्तुओ मे से कुछ न खाए।
७ तब सूर्य अस्त होने पर वह शुद्ध ठहरेगा,
और तब वह पवित्र वस्तुओ मे से खा
सकेगा, क्योकि उसका भोजन वही है।
८ जो जानवर आप से मरा हो वा पशु से
फाडा गया हो उसे खाकर वह अपने आप को
अशुद्ध न करे, मै यहोवा हू। ९ इसलिये
याजक लोग मेरी सौपी हुई वस्तुओ की रक्षा
करे, ऐसा न हो कि वे उनको अपवित्र करके
पाप का भार उठाए, और इसके कारण मर
भी जाए, मै उनका पवित्र करनेवाला
यहोवा हू। १० पराए कुल का जन किसी
पवित्र वस्तु को न खाने पाए, चाहे वह
याजक का पाहुन हो वा मजदूर हो, तौभी
वह कोई पवित्र वस्तु न खाए। ११ यदि
याजक किसी प्राणी को रुपया देकर मोल
ले, तो वह प्राणी उस मे से खा सकता है,
और जो याजक के घर मे उत्पन्न हुए हो वे
भी उसके भोजन मे से खाए। १२ और
यदि याजक की बेटी पराए कुल के किसी
पुरुष से व्याही गई हो, तो वह भेंट की हुई
पवित्र वस्तुओ मे से न खाए। १३ यदि
याजक की बेटी विधवा वा त्यागी हुई हो,
और उसकी सन्तान न हो, और वह अपनी
बाल्यावस्था की रीति के अनुसार अपने
पिता के घर मे रहती हो, तो वह अपने पिता
के भोजन मे से खाए, पर पराए कुल का कोई
उस मे से न खाने पाए। १४ और यदि
कोई मनुष्य किसी पवित्र वस्तु मे से कुछ
भूल से खा जाए, तो वह उसका पाचवा भाग
बढाकर उसे याजक को भर दे। १५ और
वे इस्राएलियो की पवित्र की हुई वस्तुओ
को, जिन्हे वे यहोवा के लिये चढाए, अपवित्र
न करे। १६ वे उनको अपनी पवित्र
वस्तुओ मे से खिलाकर उन से अपराध का
दोष न उठवाए, मै उनका पवित्र करने-
वाला यहोवा हू॥

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१८ हारून और उसके पुत्रो से और इस्रा-
एलियो से समझाकर कह, कि इस्राएल
के घराने वा इस्राएलियो मे रहनेवाले—

परदेशियो मे से कोई क्यो न हो जो मन्नत
वा स्वेच्छाबलि करने के लिये यहोवा को
कोई होमबलि चढाए, १९ तो अपने
निमित्त ग्रहणयोग्य ठहरने के लिये बैलो वा
भेडो वा बकरियो मे से निर्दोष नर चढाया
जाए। २० जिस मे कोई भी दोष हो उसे न
चढाना, क्योकि वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण-
योग्य न ठहरेगा। २१ और जो कोई बैलो
वा भेड-बकरियो मे से विशेष वस्तु सकल्प
करने के लिये वा स्वेच्छाबलि के लिये यहोवा
को मेलबलि चढ़ाए, तो ग्रहण होने के लिये
अवश्य है कि वह निर्दोष हो, उस मे कोई
भी दोष न हो। २२ जो अन्धा वा अग का
टूटा वा लूला हो, वा उस मे रसौली वा
खौरा वा खुजली हो, ऐसो को यहोवा के
लिये न चढाना, उनको वेदी पर यहोवा के
लिये हव्य न चढाना। २३ जिस किसी
बैल वा भेड वा बकरे का कोई अग अधिक
वा कम हो उसको स्वेच्छाबलि के लिये
चढा सकते हो, परन्तु मन्नत पूरी करने के
लिये वह ग्रहण न होगा। २४ जिसके
अड दबे वा कुचले वा टूटे वा कट गए हो
उसको यहोवा के लिये न चढाना, और
अपने देश मे भी ऐसा काम न करना।
२५ फिर इन मे से किसी को तुम अपने
परमेश्वर का भोजन जानकर किसी
परदेशी से लेकर न चढाओ, क्योकि उन मे
उनका बिगाड वर्तमान है, उन मे दोष है,
इसलिये वे तुम्हारे निमित्त ग्रहण न होगे॥
२६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२७ जब बछडा वा भेड वा बकरी का बच्चा
उत्पन्न हो, तो वह सात दिन तक अपनी मा
के साथ रहे, फिर आठवे दिन से आगे को
वह यहोवा के हव्यवाह चढावे के लिये
ग्रहणयोग्य ठहरेगा। २८ चाहे गाय, चाहे
भेडी वा बकरी हो, उसको और उसके
बच्चे को एक ही दिन मे बलि न करना।
२९ और जब तुम यहोवा के लिये धन्यवाद
का मेलबलि चढाओ, तो उसे इसी प्रकार से
करना जिस से वह ग्रहणयोग्य ठहरे।
३० वह उसी दिन खाया जाए, उस मे से
कुछ भी बिहान तक रहने न पाए, मै
यहोवा हू। ३१ और तुम मेरी आज्ञाओ
को मानना और उनका पालन करना, मै
यहोवा हू। ३२ और मेरे पवित्र नाम को
अपवित्र न ठहराना, क्योकि मै इस्राएलियो
के बीच अवश्य ही पवित्र माना जाऊगा,
मै तुम्हारा पवित्र करनेवाला यहोवा हू,
३३ जो तुम को मिस्र देश से निकाल लाया
हू जिस से तुम्हारा परमेश्वर बना रहू, मै
यहोवा हू॥

(वर्ष भर के नियत त्योहारों की विधियां)

२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से कह, कि यहोवा
के पर्व्व जिनका तुम को पवित्र सभा
एकत्रित करने के लिये नियत समय पर
प्रचार करना होगा, मेरे वे पर्व्व ये है।
३ छ दिन कामकाज किया जाए, पर
सातवा दिन परमविश्राम का और पवित्र
सभा का दिन है, उस मे किसी प्रकार का
कामकाज न किया जाए, वह तुम्हारे सब
घरो मे यहोवा का विश्राम दिन ठहरे॥
४ फिर यहोवा के पर्व्व जिन मे से एक
एक के ठहराये हुए समय मे तुम्हे पवित्र
सभा करने के लिये प्रचार करना होगा वे
ये है। ५ पहिले महीने के चौदहवे दिन को
गोधूलि के समय यहोवा का फसह हुआ
करे। ६ और उसी महीने के पद्रहवे दिन
को यहोवा के लिये अखमीरी रोटी का पर्व्व
हुआ करे, उस मे तुम सात दिन तक
अखमीरी रोटी खाया करना। ७ उन मे से

पहिले दिन तुम्हारी पवित्र सभा हो,
और उस दिन परिश्रम का कोई काम न
करना। ८ और सातो दिन तुम यहोवा को
हव्य चढाया करना, और सातवे दिन पवित्र
सभा हो, उस दिन परिश्रम का कोई काम
न करना ॥
९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१० इस्राएलियो से कह, कि जब तुम उस
देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हे देता है
और उस मे के खेत काटो, तब अपने अपने
पक्के खेत की पहिली उपज का पूला याजक
के पास ले आया करना, ११ और वह
उस पूले को यहोवा के साम्हने हिलाए, कि
वह तुम्हारे निमित्त ग्रहण किया जाए,
वह उसे विश्रामदिन के दूसरे दिन हिलाए।
१२ और जिस दिन तुम पूले को हिलवाओ
उसी दिन एक वर्ष का निर्दोष भेड का
बच्चा यहोवा के लिये होमबलि चढाना।
१३ और उसके साथ का अन्नबलि एपा के
दो दसवें अंश तेल से सने हुए मैदे का हो,
वह सुखदायक सुगन्ध के लिये यहोवा का
हव्य हो, और उसके साथ का अर्घ हीन भर
की चौथाई दाखमधु हो। १४ और जब
तक तुम इस चढावे को अपने परमेश्वर के
पास न ले जाओ, उस दिन तक नये खेत में
से न तो रोटी खाना और न भूना हुआ
अन्न और न हरी बाले, यह तुम्हारी पीढी
पीढी में तुम्हारे सारे घरानो में सदा की
विधि ठहरे ॥
१५ फिर उस विश्रामदिन के दूसरे दिन
से, अर्थात् जिस दिन तुम हिलाई जानेवाली
भेंट के पूले को लाओगे, उस दिन से पूरे
सात विश्रामदिन गिन लेना, १६ सातवें
विश्रामदिन के दूसरे दिन तक पचास दिन
गिनना, और पचासवें दिन यहोवा के लिये
नया अन्नबलि चढाना। १७ तुम अपने
घरो में से एपा के दो दसवें अंश मैदे की दो
रोटिया हिलाने की भेंट के लिये ले आना,
वे खमीर के साथ पकाई जाए, और यहोवा
के लिये पहिली उपज ठहरें। १८ और उस
रोटी के संग एक एक वर्ष के सात निर्दोष
भेड के बच्चे, और एक बछडा, और दो मेढे
चढाना, वे अपने अपने साथ के अन्नबलि
और अर्घ समेत यहोवा के लिये होमबलि के
समान चढाए जाए, अर्थात् वे यहोवा के लिये
सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य ठहरें।
१९ फिर पापबलि के लिये एक बकरा,
और मेलबलि के लिये एक एक वर्ष के दो
भेड के बच्चे चढाना। २० तब याजक
उनको पहिली उपज की रोटी समेत यहोवा
के साम्हने हिलाने की भेंट के लिये हिलाए,
और इन रोटियो के संग वे दो भेड के बच्चे
भी हिलाए जाए, वे यहोवा के लिये पवित्र,
और याजक का भाग ठहरे। २१ और तुम
उसी दिन यह प्रचार करना, कि आज हमारी
एक पवित्र सभा होगी, और परिश्रम का कोई
काम न करना, यह तुम्हारे सारे घरानो में
तुम्हारी पीढी पीढी मे सदा की विधि ठहरे ॥
२२ जब तुम अपने देश मे के खेत काटो,
तब अपने खेत के कोनो को पूरी रीति से
न काटना, और खेत में गिरी हुई बालो को
न इकट्ठा करना, उसे दीनहीन और परदेशी
के लिये छोड देना, मै तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हू ॥
२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२४ इस्राएलियो से कह, कि सातवें महीने
के पहिले दिन को तुम्हारे लिये परमविश्राम
हो, उस मे स्मरण दिलाने के लिये नरसिंगे
फूके जाए, और एक पवित्र सभा इकट्ठी हो।
२५ उस दिन तुम परिश्रम का कोई काम न
करना, और यहोवा के लिये एक हव्य
चढाना ॥

काज करे उस प्राणी को मैं उसके लोगों के
बीच में से नाश कर डालूंगा। ३१ तुम
किसी प्रकार का कामकाज न करना, यह
तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में तुम्हारे घरानों में सदा
की विधि ठहरे। ३२ वह दिन तुम्हारे लिये
परमविश्राम का हो, उस में तुम अपने अपने
जीव को दुःख देना, और उस महीने के नवें
दिन की सांझ से लेकर दूसरी सांझ तक
अपना विश्रामदिन माना करना॥

३३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
३४ इस्राएलियों से कह, कि उसी सातवें
महीने के पन्द्रहवें दिन से सात दिन तक
यहोवा के लिये झोपड़ियों का पर्ब्ब रहा करे।
३५ पहिले दिन पवित्र सभा हो, उस में
परिश्रम का कोई काम न करना।
३६ सातों दिन यहोवा के लिये हव्य चढ़ाया
करना, फिर आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा
हो, और यहोवा के लिये हव्य चढ़ाना, वह
महासभा का दिन है, और उस में परिश्रम
का कोई काम न करना॥

३७ यहोवा के नियत पर्ब्ब ये ही हैं,
इन में तुम यहोवा को हव्य चढ़ाना, अर्थात्
...डालियां, और नालों में के मजनू की लकड़ी
अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने सात दिन
तक आनन्द करना। ४१ और प्रतिवर्ष
सात दिन तक यहोवा के लिये यह पर्ब्ब माना
करना, यह तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में सदा की
विधि ठहरे, कि सातवें महीने में यह पर्ब्ब
माना जाए। ४२ सात दिन तक तुम
झोपड़ियों में रहा करना, अर्थात् जितने जन्म
के इस्राएली हैं वे सब के सब झोपड़ियों में
रहें, ४३ इसलिये कि तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी
के लोग जान रखें, कि जब यहोवा हम
इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल कर ला
रहा था तब उस ने उनको झोपड़ियों में
टिकाया था, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।
४४ और मूसा ने इस्राएलियों को यहोवा के
पर्ब्ब के नियत समय कह सुनाए॥

(पवित्र दीपकों और रोटियों की विधि)

२४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियों को यह आज्ञा दे
कि मेरे पास उजियाला देने के लिये कूट के
निकाला हुआ जलपाई का निर्मल तेल ले

आना, कि दीपक नित्य जलता रहे*।
३ हारून उसको, मिलापवाले तम्बू मे,
साक्षीपत्र के वीचवाले पर्दे से वाहर, यहोवा
के साम्हने नित्य सांझ से भोर तक सजाकर
रखे, यह तुम्हारी पीढी पीढी के लिये सदा
की विधि ठहरे। ४ वह दीपको के स्वच्छ
दीवट पर यहोवा के साम्हने नित्य सजाया
करे॥

५ और तू मैदा लेकर वारह रोटिया
पकवाना, प्रत्येक रोटी में एपा का दो दसवा
अंश मैदा हो। ६ तव उनकी दो पांति†
करके, एक एक पांति मे‡ छ छ रोटिया,
स्वच्छ मेज पर यहोवा के साम्हने धरना।
७ और एक एक पांति पर§ चोखा लोवान
रखना, कि वह रोटी पर स्मरण दिलानेवाला
वस्तु और यहोवा के लिये हव्य हो। ८ प्रति
विश्रामदिन को वह उसे नित्य यहोवा के
सम्मुख क्रम से रखा करे, यह सदा की वाचा
की रीति इस्राएलियो की ओर से हुआ करे।
९ और वह हारून और उसके पुत्रो की
होगी, और वे उसको किसी पवित्र स्थान मे
खाए, क्योंकि वह यहोवा के हव्यो में से सदा
की विधि के अनुसार हारून के लिये परम-
पवित्र वस्तु ठहरी है॥

(यहोवा की निन्दा आदि प्राणदण्ड योग्य पापों की व्यवस्था)

१० उन दिनो मे किसी इस्राएली स्त्री
[illegible]ा वेटा, जिसका पिता मिस्री पुरुष था,
[illegible]स्राएलियो के वीच चला गया, और वह
[illegible]स्राएली स्त्री का वेटा और एक इस्राएली
[illegible]रुष छावनी के वीच आपस मे मारपीट
[illegible]रने लगे, ११ और वह इस्राएली स्त्री
का वेटा यहोवा के नाम की निन्दा करके
शाप देने लगा। यह सुनकर लोग उसको
मूसा के पास ले गए। उसकी माता का
नाम शलोमीत था, जो दान के गोत्र के
दिब्री की वेटी थी। १२ उन्हो ने उसको
हवालात मे वन्द किया, जिस से यहोवा की
आज्ञा से इस वात पर विचार किया जाए॥

१३ तव यहोवा ने मूसा से कहा,
१४ तुम लोग उस शाप देने वाले को
छावनी से वाहर लिवा ले जाओ, और
जितनो ने वह निन्दा सुनी हो वे सव अपने
अपने हाथ उसके सिर पर टेके, तव सारी
मण्डली के लोग उसको पत्थरवाह करे।
१५ और तू इस्राएलियो से कह, कि कोई
क्यो न हो जो अपने परमेश्वर को शाप दे
उसे अपने पाप का भार उठाना पड़ेगा।
१६ यहोवा के नाम की निन्दा करनेवाला
निश्चय मार डाला जाए, सारी मण्डली के
लोग निश्चय उसको पत्थरवाह करे, चाहे
देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम
की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए।
१७ फिर जो कोई किसी मनुष्य को प्राण से
मारे वह निश्चय मार डाला जाए।
१८ और जो कोई किसी घरेलू पशु को
प्राण से मारे वह उसे भर दे, अर्थात् प्राणी
की सन्ती प्राणी दे। १९ फिर यदि कोई
किसी दूसरे को चोट पहुंचाए,* तो जैसा
उस ने किया हो वैसा ही उसके साथ भी
किया जाए, २० अर्थात् अंग भंग करने
की सन्ती अंग भंग किया जाए, आंख की
सन्ती आंख दांत की सन्ती दांत, जैसी चोट
जिस ने किसी को पहुंचाई हो वैसी ही
उसको भी पहुंचाई जाए। २१ और पशु
का मार डालनेवाला उसको भर दे, परन्तु

* मूल में—चढ़ाया जाया करे।
† वा उनके दो ढेर। ‡ वा एक एक ढेर में।
§ वा एक एक ढेर पर।

* मूल में—यदि कोइ अपने भाईबन्धु में दोष दे।

मनुष्य का मार डालनेवाला मार डाला
जाए। २२ तुम्हारा नियम एक ही हो,
जैसा देशी के लिये वैसा ही परदेशी के लिये
भी हो, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।
२३ और मूसा ने इस्राएलियों को यही
समझाया, तब उन्हों ने उस शाप देनेवाले
को छावनी में बाहर ले जाकर उसको
पत्थरवाह किया। और इस्राएलियों ने वैसा
ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा
दी थी॥

(सातवें वर्ष और पचासवें वर्ष के विश्राम-
कालों की विधि)

२५ फिर यहोवा ने सीनै पर्वत
के पास मूसा से कहा, २ इस्रा-
एलियों से कह, कि जब तुम उस देश में
प्रवेश करो जो मैं तुम्हें देता हूं, तब भूमि को
यहोवा के लिये विश्राम मिला करे। ३ छः
वर्ष तो अपना अपना खेत बोया करना, और
छहों वर्ष अपनी अपनी दाख की बारी छांट
छांटकर देश की उपज इकट्ठी किया करना,
४ परन्तु सातवें वर्ष भूमि को यहोवा के लिये
परमविश्रामकाल मिला करे, उस में न तो
अपना खेत बोना और न अपनी दाख की
बारी छांटना। ५ जो कुछ काटे हुए खेत में
अपने आप से उगे उसे न काटना, और अपनी
बिन छांटी हुई दाखलता की दाखों को न
तोड़ना, क्योंकि वह भूमि के लिये परम-
विश्राम का वर्ष होगा। ६ और भूमि
के विश्रामकाल ही की उपज से तुम को,
और तुम्हारे दास-दासी को, और तुम्हारे
साथ रहनेवाले मजदूरों और परदेशियों
को भी भोजन मिलेगा, ७ और तुम्हारे
पशुओं का और देश में जितने जीवजन्तु
हों उनका भी भोजन भूमि की सब उपज
से होगा॥

८ और सात विश्रामवर्ष, अर्थात् सात-
गुना सात वर्ष गिन लेना, सातों विश्राम-
वर्षों का यह समय उनचास वर्ष होगा।
९ तब सातवें महीने के दसवें दिन को,
अर्थात् प्रायश्चित्त के दिन, जय जयकार के
महाशब्द का नरसिंगा अपने सारे देश
में सब कहीं फुकवाना। १० और उस
पचासवें वर्ष को पवित्र करके मानना,
और देश के सारे निवासियों के लिये
छुटकारे का प्रचार करना, वह वर्ष तुम्हारे
यहां जुबली * कहलाए, उस में तुम अपनी
अपनी निज भूमि और अपने अपने घराने
में लौटने पाओगे। ११ तुम्हारे यहां वह
पचासवां वर्ष जुबली का वर्ष कहलाए, उस
में तुम न बोना, और जो अपने आप उगे
उसे भी न काटना, और न बिन छांटी
हुई दाखलता की दाखों को तोड़ना।
१२ क्योंकि वह जो जुबली का वर्ष होगा,
वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा, तुम उसकी
उपज खेत ही में से ले लेके खाना।
१३ इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी अपनी
निज भूमि को लौटने पाओगे। १४ और
यदि तुम अपने भाईबन्धु के हाथ कुछ
बेचो वा अपने भाईबन्धु से कुछ मोल लो,
तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना।
१५ जुबली * के पीछे जितने वर्ष बीते हों
उनकी गिनती के अनुसार दाम ठहराके एक
दूसरे से मोल लेना, और शेष वर्षों की उपज
के अनुसार वह तेरे हाथ बेचे। १६ जितने
वर्ष और रहें उतना ही दाम बढ़ाना, और
जितने वर्ष कम रहें उतना ही दाम घटाना,
क्योंकि वर्ष की उपज जितनी हो उतनी ही
वह तेरे हाथ बेचेगा। १७ और तुम अपने
अपने भाईबन्धु पर अन्धेर न करना, अपने

* अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

परमेश्वर का भय मानना, मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूं। १८ इसलिये तुम
मेरी विधियों को मानना, और मेरे नियमों
पर समझ बूझकर चलना, क्योंकि ऐसा
करने से तुम उस देश में निडर बसे
रहोगे। १९ और भूमि अपनी उपज
उपजाया करेगी, और तुम पेट भर खाया
करोगे, और उस देश में निडर बसे रहोगे।
२० और यदि तुम कहो, कि सातवें वर्ष में
हम क्या खाएंगे, न तो हम बोएंगे न अपने
खेत की उपज इकट्ठी करेंगे? २१ तो
जानो कि मैं तुम को छठवें वर्ष में ऐसी
आशीष दूंगा,* कि भूमि की उपज तीन वर्ष
तक काम आएगी। २२ तुम आठवें वर्ष में
जोओगे, और पुरानी उपज में से खाते
रहोगे, और नवें वर्ष की उपज जब तक न
मिले तब तक तुम पुरानी उपज में से खाते
रहोगे। २३ भूमि सदा के लिये तो बेची
न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है, और उस में
तुम परदेशी और बाहरी होगे। २४ लेकिन
तुम अपने भाग के सारे देश में भूमि को छुड़ा
लेने देना॥

२५ यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल
होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले,
तो उसके कुटुम्बियों में से जो सब से निकट
हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए
भाग को छुड़ा ले। २६ और यदि किसी
मनुष्य के लिये कोई छुड़ानेवाला न हो,
और उसके पास इतना धन हो कि आप
ही अपने भाग को छुड़ा ले सके, २७ तो वह
उसके बिकने के समय से वर्षों की गिनती
करके शेष वर्षों की उपज का दाम उसको
जिस ने उसे मोल लिया हो फेर दे, तब वह
अपनी निज भूमि का अधिकारी हो जाए।

* मूल में—अपनी आशीष को आज्ञा दूंगा।

२८ परन्तु यदि उसके इतनी पूंजी न हो
कि उसे फिर अपनी कर सके, तो उसकी
बेची हुई भूमि जुबली* के वर्ष तक मोल
लेनेवाले के हाथ में रहे, और जुबली* के
वर्ष में छूट जाए तब वह मनुष्य अपनी
निज भूमि का फिर अधिकारी हो जाए॥

२९ फिर यदि कोई मनुष्य शहरपनाह-
वाले नगर में बसने का घर बेचे, तो वह
बेचने के बाद वर्ष भर के अन्दर उसे छुड़ा
सकेगा, अर्थात् पूरे वर्ष भर उस मनुष्य को
छुड़ाने का अधिकार रहेगा। ३० परन्तु
यदि वह वर्ष भर में न छुड़ाए, तो वह घर जो
शहरपनाहवाले नगर में हो मोल लेनेवाले
का बना रहे, और पीढ़ी-पीढ़ी में उसी के
वंश का बना रहे, और जुबली* के वर्ष
में भी न छूटे। ३१ परन्तु बिना शहरपनाह
के गांवों के घर तो देश के खेतों के समान
गिने जाएं, उनका छुड़ाना भी हो सकेगा,
और वे जुबली* के वर्ष में छूट जाएं।
३२ और लेवियों के निज भाग के नगरों के
जो घर हों उनको लेवीय जब चाहें तब
छुड़ाएं। ३३ और यदि कोई लेवीय अपना
भाग न छुड़ाए, तो वह बेचा हुआ घर जो
उसके भाग के नगर में हो जुबली* के वर्ष में
छूट जाए, क्योंकि इस्राएलियों के बीच
लेवियों का भाग उनके नगरों में के घर ही
हैं। ३४ और उनके नगरों की चारों ओर
की चराई की भूमि बेची न जाए, क्योंकि
वह उनका सदा का भाग होगा॥

३५ फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु
कंगाल हो जाए, और उसकी दशा तेरे
साम्हने तरस योग्य हो जाए, तो तू उसको
संभालना, वह परदेशी वा यात्री की नाईं तेरे
संग रहे। ३६ उस से ब्याज वा बढ़ती न

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

लेना, अपने परमेश्वर का भय मानना,
जिस से तेरा भाईबन्धु तेरे सग जीवन निर्वाह
कर सके। ३७ उसको ब्याज पर रुपया न
देना, और न उसको भोजनवस्तु लाभ के
लालच से देना। ३८ मै तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हू, मै तुम्हे कनान देश देने के लिये
और तुम्हारा परमेश्वर ठहरने की मनसा से
तुम को मिस्र देश से निकाल लाया हू ॥

३९ फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे
साम्हने कगाल होकर अपने आप को तेरे
हाथ बेच डाले, तो उस से दास के समान
सेवा न करवाना। ४० वह तेरे सग मजदूर
वा यात्री की नाई रहे, और जुबली * के वर्ष
तक तेरे सग रहकर सेवा करता रहे,
४१ तब वह बालबच्चो समेत तेरे पास
से निकल जाए, और अपने कुटुम्ब मे और
अपने पितरो की निज भूमि मे लौट जाए।
४२ क्योकि वे मेरे ही दास है, जिनको मै
मिस्र देश से निकाल लाया हू, इसलिये वे
दास की रीति से न बेचे जाए। ४३ उस
पर कठोरता से अधिकार न करना, अपने
परमेश्वर का भय मानते रहना। ४४ तेरे
जो दास-दासिया हो वे तुम्हारी चारो ओर
की जातियो मे से हो, और दास और दासिया
उन्ही मे से मोल लेना। ४५ और जो यात्री
लोग तुम्हारे बीच मे परदेशी होकर रहेगे,
उन मे से और उनके घरानो मे से भी जो
तुम्हारे आस पास हो, और जो तुम्हारे देश मे
उत्पन्न हुए हो, उन मे से तुम दास और दासी
मोल लो, और वे तुम्हारा भाग ठहरे।
४६ और तुम अपने पुत्रो को भी जो तुम्हारे
बाद होगे उनके अधिकारी कर सकोगे, और
वे उनका भाग ठहरे, उन मे से तुम सदा
अपने लिये दास लिया करना, परन्तु तुम्हारे
भाईबन्धु जो इस्राएली हो उन पर अपना
अधिकार कठोरता से न जताना ॥

४७ फिर यदि तेरे साम्हने कोई परदेशी
वा यात्री धनी हो जाए, और उसके साम्हने
तेरा भाई कगाल होकर अपने आप को तेरे
साम्हने उस परदेशी वा यात्री वा उसके
वश के हाथ बेच डाले, ४८ तो उसके बिक
जाने के बाद वह फिर छुडाया जा सकता है,
उसके भाइयो मे से कोई उसको छुडा सकता
है, ४९ वा उसका चाचा, वा चचेरा भाई,
तथा उसके कुल का कोई भी निकट कुटुम्बी
उसको छुडा सकता है, वा यदि वह धनी
हो जाए, तो वह आप ही अपने को छुडा
सकता है। ५० वह अपने मोल लेनेवाले
के साथ अपने बिकने के वर्ष से जुबली के
वर्ष तक हिसाब करे, और उसके बिकने का
दाम वर्षो की गिनती के अनुसार हो, अर्थात्
वह दाम मजदूर के दिवसो के समान उसके
साथ होगा। ५१ यदि जुबली * के बहुत
वर्ष रह जाए, तो जितने रुपयो से वह मोल
लिया गया हो उन मे से वह अपने छुडाने का
दाम उतने वर्षो के अनुसार फेर दे।
५२ और यदि जुबली * के वर्ष के थोडे वर्ष
रह गए हो, तौभी वह अपने स्वामी के साथ
हिसाब करके अपने छुडाने का दाम उतने ही
वर्षो के अनुसार फेर दे। ५३ वह अपने
स्वामी के सग उस मजदूर के समान रहे
जिसकी वार्षिक मजदूरी ठहराई जाती हो,
और उसका स्वामी उस पर तेरे साम्हने
कठोरता से अधिकार न जताने पाए।
५४ और यदि वह इन रीतियो से छुडाया न
जाए, तो वह जुबली * के वर्ष मे अपने बाल-
बच्चो समेत छूट जाए। ५५ क्योकि
इस्राएली मेरे ही दास है, वे मिस्र देश

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

से मेरे ही निकाले हुए दास हैं, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं॥

(धर्म तथा अधर्म के फल)

२६ तुम अपने लिये मूरतें न बनाना, और न कोई खुदी हुई मूर्ति वा लाट अपने लिये खड़ी करना, और न अपने देश में दण्डवत् करने के लिये नक्काशीदार पत्थर स्थापन करना, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं। २ तुम मेरे विश्राम-दिनों का पालन करना और मेरे पवित्रस्थान का भय मानना, मैं यहोवा हूं॥

३ यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो, ४ तो मैं तुम्हारे लिये समय समय पर मेंह बरसाऊंगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने अपने फल दिया करेंगे, ५ यहां तक कि तुम दाख तोड़ने के समय भी दावनी करते रहोगे, और बोने के समय भी भर पेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम मनमानी रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिन्त बसे रहोगे। ६ और मैं तुम्हारे देश में सुख चैन दूंगा, और तुम सोओगे और तुम्हारा कोई डरानेवाला न होगा, और मैं उस देश में दुष्ट जन्तुओं को न रहने दूंगा, और तलवार तुम्हारे देश में न चलेगी। ७ और तुम अपने शत्रुओं को मार भगा दोगे, और वे तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। ८ और तुम में से पांच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे, और तुम्हारे शत्रु तलवार से तुम्हारे आगे आगे मारे जाएंगे, ९ और मैं तुम्हारी ओर कृपा दृष्टि रखूंगा और तुम को फलवन्त करूंगा और बढ़ाऊंगा, और तुम्हारे संग अपनी वाचा को पूर्ण करूंगा। १० और तुम रखे हुए पुराने अनाज को खाओगे, और नये के रहते भी पुराने को निकालोगे। ११ और मैं तुम्हारे बीच अपना निवासस्थान बनाए रखूंगा, और मेरा जी तुम से घृणा नहीं करेगा। १२ और मैं तुम्हारे मध्य चला फिरा करूंगा, और तुम्हारा परमेश्वर बना रहूंगा, और तुम मेरी प्रजा बने रहोगे। १३ मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो, और मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला है, और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया है॥

१४ यदि तुम मेरी न सुनोगे, और इन सब आज्ञाओं को न मानोगे, १५ और मेरी विधियों को निकम्मा जानोगे, और तुम्हारी आत्मा मेरे निर्णयों से घृणा करे, और तुम मेरी सब आज्ञाओं का पालन न करोगे, वरन मेरी वाचा को तोड़ोगे, १६ तो मैं तुम से यह करूंगा, अर्थात् मैं तुम को बेचैन करूंगा, और क्षयीरोग और ज्वर से पीड़ित करूंगा, और इनके कारण तुम्हारी आंखें धुंधली हो जाएंगी, और तुम्हारा मन अति उदास होगा। और तुम्हारा बीज बोना व्यर्थ होगा, क्योंकि तुम्हारे शत्रु उसकी उपज खा लेंगे, १७ और मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हो जाऊंगा, और तुम अपने शत्रुओं से हार जाओगे, और तुम्हारे बैरी तुम्हारे ऊपर अधिकार करेंगे, और जब कोई तुम को खदेड़ता भी न होगा तब भी तुम भागोगे। १८ और यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और दूंगा, १९ और मैं तुम्हारे बल का घमण्ड तोड़ डालूंगा, और तुम्हारे लिये आकाश को मानो लोहे का और भूमि को मानो पीतल की बना दूंगा, २० और तुम्हारा बल अकारथ

गवाया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी
उपज न उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष
अपने फल न देंगे। २१ और यदि तुम
मेरे विरुद्ध चलते ही रहो, और मेरा कहना
न मानो, तो मैं तुम्हारे पापों के अनुसार
तुम्हारे ऊपर और सातगुणा संकट डालूंगा।
२२ और मैं तुम्हारे बीच वन पशु भेजूंगा,
जो तुम को निर्वंश करेंगे, और तुम्हारे
घरेलू पशुओं को नाश कर डालेंगे, और
तुम्हारी गिनती घटाएंगे, जिस से तुम्हारी
सड़कें सूनी पड़ जाएंगी। २३ फिर यदि
तुम इन बातों पर भी मेरी ताड़ना से न
सुधरो, और मेरे विरुद्ध चलते ही रहो,
२४ तो मैं भी तुम्हारे विरुद्ध चलूंगा, और
तुम्हारे पापों के कारण मैं आप ही तुम को
सातगुणा मारूंगा। २५ और मैं तुम पर
एक ऐसी तलवार चलवाऊंगा, जो वाचा
तोड़ने का पूरा पूरा पलटा लेगी, और जब
तुम अपने नगरों में जा जाकर इकट्ठे होगे
तब मैं तुम्हारे बीच मरी फैलाऊंगा, और तुम
अपने शत्रुओं के वश में सौंप दिए जाओगे।
२६ और जब मैं तुम्हारे लिये अन्न के
आधार को दूर कर डालूंगा, तब दस स्त्रियां
तुम्हारी रोटी एक ही तंदूर में पकाकर
तौल तौलकर बांट देंगी, और तुम खाकर
भी तृप्त न होगे॥

२७ फिर यदि तुम इसके उपरान्त भी
मेरी न सुनोगे, और मेरे विरुद्ध चलते ही
रहोगे, २८ तो मैं अपने न्याय में तुम्हारे
विरुद्ध चलूंगा, और तुम्हारे पापों के कारण
तुम को सातगुणी ताड़ना और भी दूंगा।
२९ और तुम को अपने बेटों और बेटियों
का मांस खाना पड़ेगा। ३० और मैं
तुम्हारे पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा,
और तुम्हारे सूर्य की प्रतिमाएं तोड़ डालूंगा,
और तुम्हारी लोथों को तुम्हारी तोड़ी हुई
मूरतों पर फेंक दूंगा, और मेरी आत्मा को
तुम से घृणा हो जाएगी। ३१ और मैं
तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूंगा, और
तुम्हारे पवित्र स्थानों को उजाड़ दूंगा, और
तुम्हारा सुखदायक सुगन्ध ग्रहण न करूंगा।
३२ और मैं तुम्हारे देश को सूना कर दूंगा,
और तुम्हारे शत्रु जो उस में रहते हैं वे इन
बातों के कारण चकित होंगे। ३३ और
मैं तुम को जाति जाति के बीच तितर-बितर
करूंगा, और तुम्हारे पीछे पीछे तलवार
खींचे रहूंगा; और तुम्हारा देश सूना हो
जाएगा, और तुम्हारे नगर उजाड़ हो
जाएंगे। ३४ तब जितने दिन वह देश सूना
पड़ा रहेगा और तुम अपने शत्रुओं के देश में
रहोगे उतने दिन वह अपने विश्रामकालों
को मानता रहेगा, तब ही वह देश विश्राम
पाएगा, अर्थात् अपने विश्रामकालों को
मानता रहेगा। ३५ और जितने दिन वह
सूना पड़ा रहेगा उतने दिन उसको विश्राम
रहेगा, अर्थात् जो विश्राम उसको तुम्हारे
वहां बसे रहने के समय तुम्हारे विश्राम-
कालों में न मिला होगा वह उसको तब
मिलेगा। ३६ और तुम में से जो बच
रहेंगे और अपने शत्रुओं के देश में होंगे उनके
हृदय में मैं कायरता उपजाऊंगा; और
वे पत्ते के खड़कने से भी भाग जाएंगे, और
वे ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागे, और
किसी के बिना पीछा किए भी वे गिर गिर
पड़ेंगे। ३७ और जब कोई पीछा करने-
वाला न हो तब भी मानो तलवार के भय से
वे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिरते जाएंगे,
और तुम को अपने शत्रुओं के साम्हने ठहरने
की कुछ शक्ति न होगी। ३८ तब तुम
जाति जाति के बीच पहुंचकर नाश हो
जाओगे, और तुम्हारे शत्रुओं की भूमि तुम
को खा जाएगी। ३९ और तुम में से जो

बचे रहेंगे वे अपने शत्रुओ के देशो मे अपने
अधर्म के कारण गल जाएगे, और अपने
पुरखाओ के अधर्म के कामो के कारण भी
वे उन्ही की नाई गल जाएगे। ४० तब वे
अपने और अपने पितरो के अधर्म को मान
लेंगे, अर्थात् उस विश्वासघात को जो वे मेरा
करेंगे, और यह भी मान लेगे, कि हम
यहोवा के विरुद्ध चले थे, ४१ इसी कारण
वह हमारे विरुद्ध होकर हमे शत्रुओ के देश
मे ले आया है। यदि उस समय उनका
खतनारहित हृदय दब जाएगा और वे उस
समय अपने अधर्म के दण्ड को अगीकार
करेंगे, ४२ तब जो वाचा मैं ने याकूब के
सग बान्धी थी उसको मैं स्मरण करूगा,
और जो वाचा मैं ने इसहाक से और जो
वाचा मै ने इब्राहीम से बान्धी थी उनको भी
स्मरण करूगा, और इस देश को भी मैं
स्मरण करूगा। ४३ और वह देश उन से
रहित होकर सूना पडा रहेगा, और उनके
बिना सूना रहकर भी अपने विश्रामकालो
को मानता रहेगा, और वे लोग अपने अधर्म
के दण्ड को अगीकार करेंगे, इसी कारण से
कि उन्हो ने मेरी आज्ञाओ का उलघन किया
था, और उनकी आत्माओ को मेरी विधियो
से घृणा थी। ४४ इतने पर भी जब वे
अपने शत्रुओ के देश मे होगे तब मैं उनको
इस प्रकार नही छोडूगा, और न उन से ऐसी
घृणा करूगा कि उनका सवनाश कर डालू
और अपनी उस वाचा को तोड दू जो मैं ने
उन से बान्धी है, क्योकि मैं उनका परमेश्वर
यहोवा हू, ४५ परन्तु मैं उनके भलाई के
लिये उनके पितरो से बान्धी हुई वाचा को
स्मरण करूगा, जिन्हे मैं अन्यजातियो की
आखो के साम्हने मिस्र देश से निकालकर
लाया कि मैं उनका परमेश्वर ठहरू, मैं
यहोवा हू॥

४६ जो जो विधिया और नियम
और व्यवस्था यहोवा ने अपनी ओर से
इस्राएलियो के लिये सीनै पर्वत पर मूसा के
द्वारा ठहराई थी वे ये ही हैं॥

(विशेष सकल्प की विधि)

२७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से यह कह, कि जब
कोई विशेष सकल्प माने, तो सकल्प किए
हुए प्राणी तेरे ठहराने के अनुसार यहोवा के
होगे, ३ इसलिये यदि वह बीस वर्ष वा
उस से अधिक और साठ वर्ष से कम अवस्था
का पुरुष हो, तो उसके लिये पवित्रस्थान के
शेकेल के अनुसार पचास शेकेल का रुपया
ठहरे। ४ और यदि वह स्त्री हो, तो तीस
शेकेल ठहरे। ५ फिर यदि उसकी अवस्था
पाच वर्ष वा उससे अधिक और बीस वर्ष से
कम की हो, तो लडके के लिये तो बीस
शेकेल, और लडकी के लिये दस शेकेल
ठहरे। ६ और यदि उसकी अवस्था एक
महीने वा उस से अधिक और पाच वर्ष से
कम की हो, तो लडके के लिये तो पाच,
और लडकी के लिये तीन शेकेल ठहरे।
७ फिर यदि उसकी अवस्था साठ वर्ष की
वा उस से अधिक हो, और वह पुरुष हो तो
उसके लिये पद्रह शेकेल, और स्त्री हो तो
दस शेकेल ठहरे। ८ परन्तु यदि कोई
इतना कगाल हो कि याजक का ठहराया
हुआ दाम न दे सके, तो वह याजक के
साम्हने खडा किया जाए, और याजक
उसकी पूजी ठहराए, अर्थात् जितना सकल्प
करनेवाले मे हो सके, याजक उसी के
अनुसार ठहराए॥

९ फिर जिन पशुओ मे से लोग यहोवा
को चढावा चढाते हैं, यदि ऐसो में से कोई
सकल्प किया जाए, तो जो पशु कोई यहोवा

को दे वह पवित्र ठहरेगा। १० वह उसे
किसी प्रकार से न बदले, न तो वह बुरे की
सन्ती अच्छा, और न अच्छे की सन्ती बुरा
दे; और यदि वह उस पशु की सन्ती दूसरा
पशु दे, तो वह और उसका बदला दोनो
पवित्र ठहरेंगे। ११ और जिन पशुओ मे से
लोग यहोवा के लिये चढावा नही चढाते
ऐसो में से यदि वह हो, तो वह उसको
याजक के साम्हने खडा कर दे, १२ तब
याजक पशु के गुण अवगुण दोनो विचार-
कर उसका मोल ठहराए, और जितना
याजक ठहराए उसका मोल उतना ही
ठहरे। १३ और यदि सकल्प करनेवाला
उसे किसी प्रकार से छुडाना चाहे, तो जो
मोल याजक ने ठहराया हो उस मे उसका
पाचवा भाग और बढाकर दे ॥

१४ फिर यदि कोई अपना घर यहोवा
के लिये पवित्र ठहराकर सकल्प करे, तो
याजक उसके गुण-अवगुण दोनो विचारकर
उसका मोल ठहराए, और जितना याजक
ठहराए उसका मोल उतना ही ठहरे।
१५ और यदि घर का पवित्र करनेवाला
उसे छुडाना चाहे, तो जितना रुपया याजक
ने उसका मोल ठहराया हो उस मे वह
पाचवा भाग और बढाकर दे, तब वह घर
उसी का रहेगा ॥

१६ फिर यदि कोई अपनी निज भूमि
का कोई भाग यहोवा के लिये पवित्र
ठहराना चाहे, तो उसका मोल इसके
अनुसार ठहरे, कि उस मे कितना बीज
पडेगा, जितना भूमि मे होमेर भर जौ पडे
उतनी का मोल पचास शेकेल ठहरे।
१७ यदि वह अपना खेत जुबली * के वर्ष
ही में पवित्र ठहराए, तो उसका दाम तेरे
ठहराने के अनुसार ठहरे, १८ और यदि
वह अपना खेत जुबली * के वर्ष के बाद
पवित्र ठहराए, तो जितने वर्ष दूसरे
जुबली * के वर्ष के बाकी रहे उन्ही के
अनुसार याजक उसके लिये रुपये का हिसाब
करे, तब जितना हिसाब मे आए उतना
याजक के ठहराने से कम हो। १९ और
यदि खेत का पवित्र ठहरानेवाला उसे
छुडाना चाहे, तो जो दाम याजक ने ठहराया
हो उस मे वह पाचवां भाग और बढाकर
दे, तब खेत उसी का रहेगा। २० और
यदि वह खेत को छुडाना न चाहे, वा उस ने
उसको दूसरे के हाथ बेचा हो, तो खेत
आगे को कभी न छुडाया जाए, २१ परन्तु
जब वह खेत जुबली * के वर्ष मे छूटे, तब
पूरी रीति से अर्पण किए हुए खेत की नाई
यहोवा के लिये पवित्र ठहरे, अर्थात् वह
याजक ही की निज भूमि हो जाए।
२२ फिर यदि कोई अपना मोल लिया
हुआ खेत, जो उसकी निज भूमि के खेतो मे
का न हो, यहोवा के लिये पवित्र ठहराए,
२३ तो याजक जुबली * के वर्ष तक का
हिसाब करके उस मनुष्य के लिये जितना
ठहराए उतना ही वह यहोवा के लिये पवित्र
जानकर उसी दिन दे दे। २४ और
जुबली * के वर्ष मे वह खेत उसी के
अधिकार मे जिस से वह मोल लिया गया
हो फिर आ जाए, अर्थात् जिसकी वह निज
भूमि हो उसी की फिर हो जाए। २५ और
जिस जिस वस्तु का मोल याजक ठहराए
उसका मोल पवित्रस्थान ही के शेकेल के
हिसाब से ठहरे शेकेल बीस गेरा का ठहरे ॥

२६ पर घरेलू पशुओ का पहिलौठा, जो
यहोवा का पहिलौठा ठहरा है, उसको तो

* अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

* अर्थात् नरसिंगे का शब्द।

कोई पवित्र न ठहराए, चाहे वह बछड़ा हो,
चाहे भेड वा बकरी का बच्चा, वह यहोवा
ही का है। २७ परन्तु यदि वह अशुद्ध पशु
का हो, तो उसका पवित्र ठहरानेवाला
उसको याजक के ठहराए हुए मोल के
अनुसार उसका पाचवा भाग और बढाकर
छुडा सकता है, और यदि वह न छुडाया
जाए, तो याजक के ठहराए हुए मोल पर
बेच दिया जाए॥

२८ परन्तु अपनी सारी वस्तुओ मे से जो
कुछ कोई यहोवा के लिये अर्पण करे, चाहे
मनुष्य हो चाहे पशु, चाहे उसकी निज
भूमि का खेत हो, ऐसी कोई अर्पण की हुई
वस्तु न तो बेची जाए और न छुडाई जाए,
जो कुछ अर्पण किया जाए वह यहोवा के
लिये परमपवित्र ठहरे। २९ मनुष्यो मे से
जो कोई अर्पण किया जाए, वह छुडाया न
जाए, निश्चय वह मार डाला जाए॥

३० फिर भूमि की उपज का सारा
दशमाश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे
वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है, वह
यहोवा के लिये पवित्र ठहरे। ३१ यदि
कोई अपने दशमाश मे से कुछ छुडाना चाहे,
तो पाचवा भाग बढाकर उसको छुडाए।
३२ और गाय-बैल और भेड-बकरिया,
निदान जो जो पशु गिनने के लिये लाठी के
तले निकल जानेवाले है उनका दशमाश,
अर्थात् दस दस पीछे एक एक पशु यहोवा के
लिये पवित्र ठहरे। ३३ कोई उसके गुण
अवगुण न विचारे, और न उसको बदले,
और यदि कोई उसको बदल भी ले, तो वह
और उसका बदला दोनो पवित्र ठहरे, और
वह कभी छुडाया न जाए॥

३४ जो आज्ञाए यहोवा ने इस्राएलियो
के लिये सीनै पर्वत पर मूसा को दी थी वे
ये ही है॥

गिनती नाम पुस्तक

(इस्राएलियों की गिनती)

१ इस्राएलियो के मिस्र देश से निकल
जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के
पहिले दिन को, यहोवा ने सीनै के जगल में,
मिलापवाले तम्बू मे, मूसा से कहा, २ इस्रा-
एलियो की सारी मण्डली के कुलो और
पितरो के घरानो के अनुसार, एक एक
पुरुष की गिनती नाम ले लेकर करना,
३ जितने इस्राएली बीस वर्ष वा उस से
अधिक अवस्था के हो, और जो युद्ध करने
के योग्य हो, उन सभो को उनके दलो के
अनुसार तू और हारून गिन ले। ४ और
तुम्हारे साथ एक एक गोत्र का एक एक
पुरुष भी हो जो अपने पितरो के घराने का
मुख्य पुरुष हो। ५ तुम्हारे उन साथियो के
नाम ये है, अर्थात् रूबेन के गोत्र में से शदेऊर
का पुत्र एलीसूर, ६ शिमोन के गोत्र में से
सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल, ७ यहूदा के
गोत्र मे से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन,
८ इस्साकार के गोत्र मे से सूआर का पुत्र
नतनेल, ९ जबूलून के गोत्र मे से हेलोन
का पुत्र एलीआब, १० यूसुफवंशियो मे से

ये है, अर्थात् एप्रैम के गोत्र मे से अम्मीहूद का
पुत्र एलीशामा, और मनश्शे के गोत्र मे से
पदासूर का पुत्र गम्लीएल, ११ बिन्यामीन
के गोत्र मे से गिदोनी का पुत्र अबीदान,
१२ दान के गोत्र मे से अम्मीशद्दै का पुत्र
अहीएजेर, १३ आशेर के गोत्र मे से
ओक्रान का पुत्र पगीएल, १४ गाद के
गोत्र मे से दूएल का पुत्र एल्यासाप,
१५ नप्ताली के गोत्र मे से एनाम का पुत्र
अहीरा। १६ मण्डली मे से जो पुरुष अपने
अपने पितरो के गोत्रो के प्रधान होकर
बुलाए गए वे ये ही है, और ये इस्राएलियो
के हज़ारो * मे मुख्य पुरुष थे। १७ और
जिन पुरुषो के नाम ऊपर लिखे है उनको
साथ लेकर, १८ मूसा और हारून ने दूसरे
महीने के पहिले दिन सारी मण्डली इकट्ठी
की, तब इस्राएलियो ने अपने अपने कुल
और अपने अपने पितरो के घराने के अनुसार
बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्थावालो के
नामो की गिनती करवाके अपनी अपनी
वशावली लिखवाई, १९ जिस प्रकार
यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उसी के
अनुसार उस ने सीनै के जगल मे उनकी
गणना की॥

२० और इस्राएल के पहिलौठे रूबेन के
वश के जितने पुरुष अपने कुल और अपने
पितरो के घराने के अनुसार बीस वर्ष वा
उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध
करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से
गिने गए २१ और रूबेन के गोत्र के गिने
हुए पुरुष साढे छियालीस हज़ार थे॥

२२ और शिमोन के वश के लोग जितने
पुरुष अपने कुलो और अपने पितरो के
घरानो के अनुसार बीस वर्ष वा उस से
अधिक अवस्था के थे, और जो युद्ध करने
के योग्य थे वे सब अपने अपने नाम से गिने
गए २३ और शिमोन के गोत्र के गिने
हुए पुरुष उनसठ हजार तीन सौ थे॥

२४ और गाद के वश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करन के योग्य थे, वे सब
अपने अपने नाम से गिने गए २५ और
गाद के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैंतालीस
हजार साढे छ सौ थे॥

२६ और यहूदा के वश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब
अपने अपने नाम से गिने गए २७ और
यहूदा के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौहत्तर
हजार छ सौ थे॥

२८ और इस्साकार के वश के जितने
पुरुष अपने कुलो और अपने पितरो के
घरानो के अनुसार बीस वर्ष वा उस से
अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के
योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने
गए २९ और इस्साकार के गोत्र के गिने
हुए पुरुष चौवन हजार चार सौ थे॥

३० और जबूलून के वश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे
सब अपने अपने नाम से गिने गए
३१ और जबूलून के गोत्र के गिने हुए पुरुष
सत्तावन हज़ार चार सौ थे॥

३२ और यूसुफ के वश मे से एप्रैम के
वश के जितने पुरुष अपने कुलो और अपने
पितरो के घरानो के अनुसार बीस वर्ष वा
उस से अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध

* वा कुलो।

करने के योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से
गिने गए ३३ और एप्रैम गोत्र के गिने
हुए पुरुष साढे चालीस हज़ार थे ॥
३४ और मनश्शे के वंश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब
अपने अपने नाम से गिने गए ३५ और
मनश्शे के गोत्र के गिने हुए पुरुष बत्तीस
हज़ार दो सौ थे ॥
३६ और बिन्यामीन के वंश के जितने
पुरुष अपने कुलो और अपने पितरो के
घरानो के अनुसार बीस वर्ष वा उस से
अधिक अवस्था के थे और जो युद्ध करने के
योग्य थे, वे सब अपने अपने नाम से गिने
गए ३७ और बिन्यामीन के गोत्र के गिने
हुए पुरुष पैंतीस हज़ार चार सौ थे ॥
३८ और दान के वंश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे
सब अपने अपने नाम से गिने गए
३९ और दान के गोत्र के गिने हुए पुरुष
बासठ हजार सात सौ थे ॥
४० और आशेर के वंश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उससे अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब
अपने अपने नाम से गिने गए ४१ और
आशेर के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढे
एकतालीस हजार थे ॥
४२ और नप्ताली के वंश के जितने पुरुष
अपने कुलो और अपने पितरो के घरानो के
अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक अवस्था
के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब
अपने अपने नाम से गिने गए ४३ और
नप्ताली के गोत्र के गिने हुए पुरुष तिरपन
हजार चार सौ थे ॥
४४ इस प्रकार मूसा और हारून और
इस्राएल के बारह प्रधानो ने, जो अपने अपने
पितरो के घराने के प्रधान थे, उन सभो को
गिन लिया और उनकी गिनती यही थी।
४५ सो जितने इस्राएली बीस वर्ष वा उस
से अधिक अवस्था के होने के कारण युद्ध
करने के योग्य थे वे अपने पितरो के घरानो
के अनुसार गिने गए, ४६ और वे सब गिने
हुए पुरुष मिलाकर छ लाख तीन हजार साढे
पाच सौ थे ॥
४७ इन में लेवीय अपने पितरो के गोत्र
के अनुसार नही गिने गए। ४८ क्योंकि
यहोवा ने मूसा से कहा था, ४९ कि लेवीय
गोत्र की गिनती इस्राएलियो के संग न
करना, ५० परन्तु तू लेवियो को साक्षी
के तम्बू पर, और उसके कुल सामान पर,
निदान जो कुछ उस से सम्बन्ध रखता है
उस पर अधिकारी नियुक्त करना, और कुल
सामान सहित निवास को वे ही उठाया करें,
और वे ही उस मे सेवा टहल भी किया करें,
और तम्बू के आसपास वे ही अपने डेरे डाला
करे। ५१ और जब जब निवास का कूच
हो तब तब लेवीय उसको गिरा दे, और
जब जब निवास को खडा करना हो तब
तब लेवीय उसको खडा किया करे, और
यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार
डाला जाए। ५२ और इस्राएली अपना
अपना डेरा अपनी अपनी छावनी मे और
अपने अपने झण्डे के पास खडा किया करें,
५३ पर लेवीय अपने डेरे साक्षी के तम्बू ही
की चारो ओर खडे किया करें, कही ऐसा न
हो कि इस्राएलियो की मण्डली पर कोप
भडके, और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा
किया करें। ५४ जो आज्ञाए यहोवा ने

मूसा को दी थी इस्राएलियों ने उन्ही के
अनुसार किया ॥

(इस्राएलियों की छावनी का क्रम)

२ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, २ इस्राएली मिलापवाले तम्बू
की चारों ओर और उसके साम्हने अपने
अपने झण्डे और अपने अपने पितरों के
घराने के निशान के समीप अपने डेरे खडे
करें। ३ और जो अपने पूर्व दिशा की ओर
जहा सूर्योदय होता है अपने अपने दलो के
अनुसार डेरे खडे किया करें वे ही यहूदा की
छावनीवाले झण्डे के लोग होगे, और उनका
प्रधान अम्मीनादाव का पुत्र नहशोन होगा,
४ और उनके दल के गिने हुए पुरुष
चौहत्तर हजार छ सौ हैं। ५ उनके समीप
जो डेरे खडे किया करें वे इस्साकार के गोत्र
के हो, और उनका प्रधान सूआर का पुत्र
नतनेल होगा, ६ और उनके दल के गिने
हुए पुरुष चौवन हजार चार सौ है।
७ इनके पास जवूलून के गोत्रवाले रहेगे,
और उनका प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआव
होगा, ८ और उनके दल के गिने हुए
पुरुष सत्तावन हजार चार सौ है। ९ इस
रीति से यहूदा की छावनी मे जितने अपने
अपने दलो के अनुसार गिने गए वे सव
मिलकर एक लाख छियासी हजार चार
सौ है। पहिले ये ही कूच किया करें ॥

१० दक्खिन अलग पर रूवेन की छावनी
के झण्डे के लोग अपने अपने दलो के
अनुसार रहें, और उनका प्रधान शदेऊर का
पुत्र एलीसूर होगा, ११ और उनके दल
के गिने हुए पुरुष साढे छियालीस हज़ार हैं।
१२ उनके पास जो डेरे खडे किया करें वे
शिमोन के गोत्र के होगे, और उनका
प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल होगा,
१३ और उनके दल के गिने हुए पुरुष
उनसठ हज़ार तीन सौ हैं। १४ फिर गाद
के गोत्र के रहे, और उनका प्रधान रूएल
का पुत्र एल्यासाप होगा, १५ और उनके
दल के गिने हुए पुरुष पैंतालीस हज़ार साढे
छ सौ हैं। १६ रूवेन की छावनी में जितने
अपने अपने दलो के अनुसार गिने गए वे सव
मिलकर डेढ लाख एक हजार साढे चार सौ
हैं। दूसरा कूच इनका हो ॥

१७ उनके पीछे और सव छावनियो के
वीचोवीच लेवियो की छावनी समेत मिलाप-
वाले तम्बू का कूच हुआ करे, जिस क्रम से
वे डेरे खडे करें उसी क्रम से वे अपने अपने
स्थान पर अपने अपने झण्डे के पास पास
चलें ॥

१८ पच्छिम अलग पर एप्रैम की छावनी
के झण्डे के लोग अपने अपने दलो के
अनुसार रहे, और उनका प्रधान अम्मीहूद
का पुत्र एलीशामा होगा, १९ और उनके
दल के गिने हुए पुरुष साढे चालीस हज़ार हैं।
२० उनके समीप मनश्शे के गोत्र के रहे,
और उनका प्रधान पदासूर का पुत्र
गम्लीएल होगा, २१ और उनके दल के
गिने हुए पुरुष वत्तीस हज़ार दो सौ हैं।
२२ फिर विन्यामीन के गोत्र के रहे, और
उनका प्रधान गिदोनी का पुत्र अवीदान
होगा, २३ और उनके दल के गिने हुए
पुरुष पैंतीस हजार चार सौ हैं। २४ एप्रैम
की छावनी मे जितने अपने अपने दलो के
अनुसार गिने गए वे सव मिलकर एक लाख
आठ हज़ार एक सौ पुरुष है। तीसरा कूच
इनका हो ॥

२५ उत्तर अलग पर दान की छावनी के
झण्डे के लोग अपने अपने दलो के अनुसार
रहे, और उनका प्रधान अम्मीशद्दै का पुत्र
अहीएजेर होगा, २६ और उनके दल के

गिने हुए पुरुष बासठ हजार सात सौ हैं।
२७ और उनके पास जो डेरे खडे करे वे
आशेर के गोत्र के रहे, और उनका प्रधान
ओक्रान का पुत्र पगीएल होगा, २८ और
उनके दल के गिने हुए पुरुष साढे इकतालीस
हज़ार हैं। २९ फिर नप्ताली के गोत्र के
रहे, और उनका प्रधान एनान का पुत्र
अहीरा होगा, ३० और उनके दल के
गिने हुए पुरुष तिरपन हजार चार सौ हैं।
३१ और दान की छावनी मे जितने गिने
गए वे सब मिलकर डेढ लाख सात हजार छ
सौ है। ये अपने अपने झण्डे के पास पास
होकर सब से पीछे कूच करे॥

३२ इस्राएलियो मे से जो अपने अपने
पितरो के घराने के अनुसार गिने गए वे ये
ही है, और सब छावनियो के जितने पुरुष
अपने अपने दलो के अनुसार गिने गए वे
सब मिलकर छ लाख तीन हजार साढे
पाच सौ थे। ३३ परन्तु यहोवा ने मूसा को
जो आज्ञा दी थी उसके अनुसार लेवीय तो
इस्राएलियो मे गिने नही गए। ३४ और
जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी
इस्राएली उन आज्ञाओ के अनुसार अपने
अपने कुल और अपने अपने पितरो के घरानो
के अनुसार, अपने अपने झण्डे के पास डेरे
खडे करते और कूच भी करते थे॥

(पहिलौठों की सन्ती लेवियों का यहोवा से ग्रहण किया जाना)

३ जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत के
पास मूसा से बाते की उस समय
हारून और मूसा की यह वंशावली थी।
२ हारून के पुत्रो के नाम ये है नादाब जो
उसका जेठा था, और अबीहू, एलीआजार
और ईतामार, ३ हारून के पुत्र, जो
अभिषिक्त याजक थे, और उनका संस्कार
याजक का काम करने के लिये हुआ था
उनके नाम ये ही हैं। ४ नादाब और
अबीहू जिस समय सीनै के जंगल मे यहोवा
के सम्मुख ऊपरी आग ले गए उसी समय
यहोवा के साम्हने मर गए थे, और वे पुत्रहीन
भी थे। एलीआजार और ईतामार अपने
पिता हारून के साम्हने याजक का काम
करते रहे॥

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
६ लेवी गोत्रवालो को समीप ले आकर
हारून याजक के साम्हने खडा कर कि वे
उसकी सेवा टहल करे। ७ और जो कुछ
उसकी ओर से और सारी मण्डली की
ओर से उन्हें सौंपा जाए उसकी रक्षा वे
मिलापवाले तम्बू के साम्हने करें, इस प्रकार
वे तम्बू की सेवा करें, ८ वे मिलापवाले
तम्बू के कुल सामान की और इस्राएलियो
की सौंपी हुई वस्तुओ की भी रक्षा करें, इस
प्रकार वे तम्बू की सेवा करे। ९ और तू
लेवियो को हारून और उसके पुत्रो को सौंप
दे, और वे इस्राएलियो की ओर से हारून
को सम्पूर्ण रीति से अर्पण किए हुए हो।
१० और हारून और उसके पुत्रो को याजक
के पद पर नियुक्त कर, और वे अपने याजक-
पद की रक्षा किया करे, और यदि अन्य
मनुष्य समीप आए, तो वह मार डाला जाए॥

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१२ सुन इस्राएली स्त्रियो के सब पहिलौठो
की सन्ती मैं इस्राएलियो मे से लेवियो को
ले लेता हू, सो लेवीय मेरे ही हो। १३ सब
पहिलौठे मेरे है, क्योकि जिस दिन मैं ने
मिस्र देश में के सब पहिलौठो को मारा,
उसी दिन मैं ने क्या मनुष्य क्या पशु
इस्राएलियो के सब पहिलौठो को अपने लिये
पवित्र ठहराया, इसलिये वे मेरे ही
ठहरेंगे, मैं यहोवा हू॥

१४ फिर यहोवा ने सीनै के जगल मे
मूसा से कहा, १५ लेवियो मे से जितने
पुरुष एक महीने वा उस से अधिक अवस्था
के हो उनको उनके पितरो के घरानो और
उनके कुलो के अनुसार गिन ले। १६ यह
आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे के
अनुसार उनको गिन लिया। १७ लेवी के
पुत्रो के नाम ये है, अर्थात् गेर्शोन, कहात,
और मरारी। १८ और गेर्शोन के पुत्र
जिन से उसके कुल चले उनके नाम ये है,
अर्थात् लिब्नी और शिमी। १९ कहात के
पुत्र जिन से उसके कुल चले ये है, अर्थात्
अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल।
२० और मरारी के पुत्र जिन से उनके
कुल चले ये है, अर्थात् महली और मूशी।
ये लेवियो के कुल अपने पितरो के घरानो के
अनुसार है॥

२१ गेर्शोन से लिब्नियो और शिमियो
के कुल चले, गेर्शोनवशियो के कुल ये ही है।
२२ इन मे से जितने पुरुषो की अवस्था एक
महीने की वा उस से अधिक थी, उन सभो
की गिनती साढे सात हज़ार थी।
२३ गेर्शोनवाले कुल निवास के पीछे
पच्छिम की ओर अपने डेरे डाला करे,
२४ और गेर्शोनियो के मूलपुरुष के घराने
का प्रधान लाएल का पुत्र एल्यासाप हो।
२५ और मिलापवाले तम्बू की जो वस्तुए
गेर्शोनवशियो को सौंपी जाए वे ये हो,
अर्थात् निवास और तम्बू, और उसका
ओहार, और मिलापवाले तम्बू से द्वार का
पर्दा, २६ और जो आगन निवास और
वेदी की चारो ओर है उसके पर्दे, और उसके
द्वार का पर्दा, और सब डोरियां जो उस मे
काम आती है॥

२७ फिर कहात से अम्रामियो, यिस-
हारियो, हेब्रोनियो, और उज्जीएलियो के
कुल चले, कहातियो के कुल ये ही है।
२८ उन मे से जितने पुरुषो की अवस्था एक
महीने की वा उस से अधिक थी उनकी
गिनती आठ हजार छ सौ थी। वे
पवित्र स्थान की रक्षा के उत्तरदायित्व थे।
२९ कहातियो के कुल निवास की उस
अलग पर अपने डेरे डाला करे जो दक्खिन
की ओर है, ३० और कहातवाले कुलो से
मूलपुरुष के घराने का प्रधान उज्जीएल का
पुत्र एलीसापान हो। ३१ और जो वस्तुए
उनको सौपी जाए वे सन्दूक, मेज, दीवट,
वेदिया, और पवित्रस्थान का वह सामान
जिस से सेवा टहल होती है, और पर्दा,
निदान पवित्रस्थान मे काम मे आनेवाला
सारा सामान हो। ३२ और लेवियो के
प्रधानो का प्रधान हारून याजक का पुत्र
एलीआजार हो, और जो लोग पवित्रस्थान
की सौपी हुई वस्तुओ की रक्षा करेगे उन पर
वही मुखिया ठहरे॥

३३ फिर मरारी से महलियो और
मूशियो के कुल चले, मरारी के कुल ये ही
है। ३४ इन में से जितने पुरुषो की अवस्था
एक महीने की वा उस से अधिक थी उन
सभो की गिनती छ हज़ार दो सौ थी।
३५ और मरारी के कुलो के मूलपुरुष के
घराने का प्रधान अबीहैल का पुत्र सूरीएल
हो, ये लोग निवास के उत्तर की ओर अपने
डेरे खडे करे। ३६ और जो वस्तुए मरारी-
वशियो को सौपी जाए, कि वे उनकी रक्षा
करें, वे निवास के तख़्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सिया,
और सारा सामान, निदान जो कुछ उसके
बरतने मे काम आए, ३७ और चारो ओर
के आगन के खम्भे, और उनकी कुर्सिया,
खूटे और डोरिया हो। ३८ और जो
मिलापवाले तम्बू के साम्हने, अर्थात् निवास
के साम्हने, पूरब की ओर जहा से सूर्योदय

होता है, अपने डेरे डाला करें, वे मूसा और
हारून और उसके पुत्रो के डेरे हो, और
पवित्रस्थान की रखवाली इस्राएलियो के
वदले वे ही किया करें, और दूसरा जो कोई
उसके समीप आए वह मार डाला जाए।
३९ यहोवा की इस आज्ञा को पाकर एक
महीने की वा उस से अधिक अवस्थावाले
जितने लेवीय पुरुषो को मूसा और हारून ने
उनके कुलो के अनुसार गिन लिया, वे सब
के सब बाईस हज़ार थे॥
४० फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
इस्राएलियो के जितने पहिलौठे पुरुषो की
अवस्था एक महीने की वा उस से अधिक
है, उन सभो को नाम ले लेकर गिन ले।
४१ और मेरे लिये इस्राएलियो के सब
पहिलौठो की सन्ती लेवियो को, और
इस्राएलियो के पशुओ के सब पहिलौठो की
सन्ती लेवियो के पशुओ को ले, मै यहोवा
हू। ४२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार
मूसा ने इस्राएलियो के सब पहिलौठो को
गिन लिया। ४३ और सब पहिलौठे पुरुष
जिनकी अवस्था एक महीने की वा उस से
अधिक थी, उनके नामो की गिनती बाईस
हज़ार दो सौ तिहत्तर थी॥
४४ तब यहोवा ने मूसा से कहा,
४५ इस्राएलियो के सब पहिलौठो की सन्ती
लेवियो को, और उनके पशुओ की सन्ती
लेवियो के पशुओ को ले, और लेवीय
मेरे ही हो, मै यहोवा हू। ४६ और
इस्राएलियो के पहिलौठो में से जो दो सौ
तिहत्तर गिनती मे लेवियो से अधिक है,
उनके छुडाने के लिये, ४७ पुरुष पीछे पाच
शेकेल ले, वे पवित्रस्थान के शेकेल के
हिसाब से हो, अर्थात् बीस गेरा का शेकेल
हो। ४८ और जो रुपया उन अधिक
पहिलौठो की छुडौती का होगा उसे हारून
और उसके पुत्रो को दे देना। ४९ और जो
इस्राएली पहिलौठे लेवियो के द्वारा छुडाए
हुओ से अधिक थे उनके हाथ से मूसा ने
छुडौती का रुपया लिया। ५० और एक
हजार तीन सौ पैंसठ शेकेल रुपया पवित्र-
स्थान के शेकेल के हिसाब से वसूल हुआ।
५१ और यहोवा की आज्ञा के अनुसार
मूसा ने छुडाए हुओ का रुपया हारून और
उसके पुत्रो को दे दिया॥

(लेवियों के कर्त्तव्य कर्म)

४ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, २ लेवियो में से कहातियो की,
उनके कुलो और पितरो के घरानो के
अनुसार, गिनती करो, ३ अर्थात् तीस
वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की अवस्था-
वालो की सेना मे, जितने मिलापवाले तम्बू
में कामकाज करने को भरती है। ४ और
मिलापवाले तम्बू मे परमपवित्र वस्तुओ के
विषय कहातियो का यह काम होगा,
५ अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब
तब हारून और उसके पुत्र भीतर आकर,
बीचवाले पर्दे को उतार के उस से साक्षीपत्र
के सन्दूक को ढाप दे, ६ तब वे उस पर
सूइसो की खालो का ओहार डाले, और
इसके ऊपर सम्पूर्ण नीले रग का कपडा
डाले, और सन्दूक मे डण्डो को लगाए।
७ फिर भेटवाली रोटी की मेज़ पर
नीला कपडा बिछाकर उस पर परातो,
धूपदानो, करवो, और उडेलने के कटोरो
को रखे, और नित्य की रोटी भी उस
पर हो, ८ तब वे उन पर लाल रग का
कपडा बिछाकर उसको सूइसो की खालो
के ओहार से ढापे, और मेज़ के डण्डो को
लगा दे। ९ फिर वे नीले रग का कपडा
लेकर दीपको, गुलतराशो, और गलदानो

समेत उजियाला देनेवाले दीवट को, और
उसके सब तेल के पात्रो को जिन से उसकी
सेवा टहल होती है ढापे, १० तब वे सारे
सामान समेत दीवट को सूइसो की खालो के
ओहार के भीतर रखकर डण्डे पर धर दे।
११ फिर वे सोने की वेदी पर एक नीला
कपडा बिछाकर उसको सूइसो की खालो
के ओहार से ढापे, और उसके डण्डो को
लगा दे, १२ तब वे सेवा टहल के सारे
सामान को लेकर, जिस से पवित्रस्थान मे
सेवा टहल होती है, नीले कपडे के भीतर
रखकर सूइसो की खालो के ओहार से ढापे,
और डण्डे पर धर दे। १३ फिर वे वेदी
पर से सब राख उठाकर वेदी पर बैंजनी रग
का कपडा बिछाए, १४ तब जिस सामान
से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब,
अर्थात् उसके करछे, काटे, फावडिया, और
कटोरे आदि, वेदी का सारा सामान उस पर
रखे, और उसके ऊपर सूइसो की खालो का
ओहार बिछाकर वेदी मे डण्डो को लगाए।
१५ और जब हारून और उसके पुत्र छावनी
के कूच के समय पवित्रस्थान और उसके सारे
सामान को ढाप चुके, तब उसके बाद कहाती
उसके उठाने के लिये आए, पर किसी
पवित्र वस्तु को न छूए, कही ऐसा न हो कि
मर जाए। कहातियो के उठाने के लिये
मिलापवाले तम्बू की ये ही वस्तुए है।
१६ और जो वस्तुए हारून याजक के पुत्र
एलीजार को रक्षा के लिये सौपी जाए वे
ये है, अर्थात् उजियाला देने के लिये तेल,
और सुगन्धित धूप, और नित्य अन्नबलि,
और अभिषेक का तेल, और सारे निवास,
और उस मे की सब वस्तुए, और पवित्रस्थान
और उसके कुल सामान ॥
१७ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, १८ कहातियो के कुलो के गोत्रियो
को लेवियो मे से नाश न होने देना;
१९ उनके साथ ऐसा करो, कि जब वे
परमपवित्र वस्तुओ के समीप आए तब न
मरे परन्तु जीवित रहे, अर्थात् हारून और
उसके पुत्र भीतर आकर एक एक के लिये
उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दे,
२० और वे पवित्र वस्तुओ के देखने को
क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाए,
कही ऐसा न हो कि मर जाए ॥
२१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२२ गेर्शोनियो की भी गिनती उनके पितरो
के घरानो और कुलो के अनुसार कर,
२३ तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की
अवस्थावाले, जितने मिलापवाले तम्बू में
सेवा करने को सेना मे भरती हो उन सभो
को गिन ले। २४ सेवा करने और भार
उठाने मे गेर्शोनियो के कुलवालो की यह
सेवकाई हो, २५ अर्थात् वे निवास के पटो,
और मिलापवाले तम्बू और उसके ओहार,
और इसके ऊपरवाले सूइसो की खालो के
ओहार, और मिलापवाले तम्बू के द्वार के
पर्दे, २६ और निवास, और वेदी की चारो
ओर के आगन के पर्दो, और आगन के द्वार
के पर्दे, और उनकी डोरियो, और उन मे
बरतने के सारे सामान, इन सभो को वे
उठाया करे, और इन वस्तुओ से जितना
काम होता है वह सब भी उनकी सेवकाई मे
आए। २७ और गेर्शोनियो के वश की
सारी सेवकाई हारून और उसके पुत्रो के
कहने से हुआ करे, अर्थात् जो कुछ उनको
उठाना, और जो जो सेवकाई उनको करनी
हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हे सौपा
करो। २८ मिलापवाले तम्बू मे गेर्शोनियो
के कुलो की यही सेवकाई ठहरे, और उन
पर हारून याजक का पुत्र ईतामार अधिकार
रखे ॥

२९ फिर मरारियो को भी तू उनके
कुलो और पितरो के घरानो के अनुसार गिन
ले, ३० तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक
की अवस्थावाले, जितने मिलापवाले तम्बू की
सेवा करने को सेना में भरती हो, उन सभो
को गिन ले। ३१ और मिलापवाले तम्बू
में की जिन वस्तुओ के उठाने की सेवकाई
उनको मिले वे ये हो, अर्थात् निवास के
तख़्ते, बेंडे, खम्भे, और कुर्सिया, ३२ और
चारो ओर के आगन के खम्भे, और इनकी
कुर्सिया, खूटे, डोरिया, और भाति भाति के
बरतने का सारा सामान, और जो जो
सामान ढोने के लिये उनको सौपा जाए
उस में से एक एक वस्तु का नाम लेकर तुम
गिन दो। ३३ मरारियो के कुलो की सारी
सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय
करनी होगी वह यही है, वह हारून याजक
के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे॥

३४ तब मूसा और हारून और मण्डली
के प्रधानो ने कहातियो के वश को, उनके
कुलो और पितरो के घरानो के अनुसार,
३५ तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की
अवस्था के, जितने मिलापवाले तम्बू की
सेवकाई करने को सेना में भरती हुए थे, उन
सभो को गिन लिया, ३६ और जो अपने
अपने कुल के अनुसार गिने गए वे दो हज़ार
साढे सात सौ थे। ३७ कहातियो के कुलो
में से जितने मिलापवाले तम्बू मे सेवा करने
वाले गिने गए वे इतने ही थे, जो आज्ञा
यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसी के
अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन
लिया॥

३८ और गेर्शोनियो में से जो अपने कुलो
और पितरो के घरानो के अनुसार गिने गए,
३९ अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष
तक की अवस्था के, जो मिलापवाले तम्बू
की सेवकाई करने को सेना में भरती हुए
थे, ४० उनकी गिनती उनके कुलो और
पितरो के घरानो के अनुसार दो हज़ार छ
सौ तीस थी। ४१ गेर्शोनियो के कुलो में से
जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले
गिने गए वे इतने ही थे, यहोवा की आज्ञा
के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन
लिया॥

४२ फिर मरारियो के कुलो मे से जो
अपने कुलो और पितरो के घरानो के
अनुसार गिने गए, ४३ अर्थात् तीस वर्ष से
लेकर पचास वर्ष तक की अवस्था के, जो
मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को
सेना मे भरती हुए थे, ४४ उनकी गिनती
उनके कुलो के अनुसार तीन हज़ार दो सौ
थी। ४५ मरारियो के कुलो में से जिनको
मूसा और हारून ने, यहोवा की उस आज्ञा
के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी,
गिन लिया वे इतने ही थे॥

४६ लेवियो मे से जिनको मूसा और
हारून और इस्राएली प्रधानो ने उनके कुलो
और पितरो के घरानो के अनुसार गिन
लिया, ४७ अर्थात् तीस वष से लेकर पचास
वर्ष तक की अवस्थावाले जितने मिलापवाले
तम्बू की सेवकाई करने और बोझ उठाने
का काम करने को हाजिर होने वाले थे,
४८ उन सभो की गिनती आठ हजार पाच
सौ अस्सी थी। ४९ ये अपनी अपनी सेवा
और बोझ ढोने के अनुसार यहोवा के कहने
पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी
थी उसी के अनुमार वे गिने गए॥

(कोढ़ी आदि अशुद्ध लोगों का बाहर कर
दिया जाना)

५ फिर यहोवा ने मूसा मे कहा,
२ इस्राएलियो को आज्ञा दे, कि वे

सब कोढियो को, और जितनो के प्रमेह हो,
और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हो, उन
सभो को छावनी से निकाल दे, ३ ऐसो
को चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री छावनी से
निकालकर बाहर कर दे, कही ऐसा न हो
कि तुम्हारी छावनी, जिसके बीच मै निवास
करता हू, उनके कारण अशुद्ध हो जाए।
४ और इस्राएलियो ने वैसा ही किया,
अर्थात् ऐसे लोगो को छावनी से निकालकर
बाहर कर दिया; जैसा यहोवा ने मूसा से
कहा था इस्राएलियो ने वैसा ही किया ॥

(दोषों की हानि भरने की विधि)

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
६ इस्राएलियो से कह, कि जब कोई पुरुष
वा स्त्री कोई ऐसा पाप करके जो लोग किया
करते हैं यहोवा का विश्वासघात करे, और
वह प्राणी दोषी हो, ७ तब वह अपना
किया हुआ पाप मान ले, और पूरे मूल मे
पाचवा अश बढाकर अपने दोष के बदले
मे उसी को दे, जिसके विषय दोषी हुआ हो।
८ परन्तु यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी
न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए,
तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर
दिया जाए वह याजक का हो, और वह उस
प्रायश्चित्तवाले मेढे से अधिक हो जिस से
उसके लिये प्रायश्चित्त किया जाए।
९ और जितनी पवित्र की हुई वस्तुए
इस्राएली उठाई हुई भेंट करके याजक के
पास लाए, वे उसी की हो, १० सब
मनुष्यो की पवित्र की हुई वस्तुए उसी की
ठहरें, कोई जो कुछ याजक को दे वह
उसका ठहरे ॥

(पति के अपनी स्त्री पर जलने की व्यवस्था)

११ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१२ इस्राएलियो से कह, कि यदि किसी
मनुष्य की स्त्री कुचाल चलकर* उसका
विश्वासघात करे, १३ और कोई पुरुष
उसके साथ कुकर्म करे, परन्तु यह बात उसके
पति से छिपी हो और खुली न हो, और वह
अशुद्ध हो गई, परन्तु न तो उसके विरुद्ध
कोई साक्षी हो, और न वह कुकर्म करते
पकडी गई हो, १४ और उसके पति के मन
मे जलन उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी स्त्री
पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो; वा
उसके मन में जलन उत्पन्न हो, अर्थात् वह
अपनी स्त्री पर जलने लगे परन्तु वह अशुद्ध
न हुई हो, १५ तो वह पुरुष अपनी स्त्री को
याजक के पास ले जाए, और उसके लिये
एपा का दसवा अश जव का मैदा चढावा
करके ले आए, परन्तु उस पर तेल न डाले,
न लोबान रखे, क्योकि वह जलनवाला और
स्मरण दिलानेवाला, अर्थात् अधर्म का
स्मरण करानेवाला अन्नबलि होगा।
१६ तब याजक उस स्त्री को समीप ले
जाकर यहोवा के साम्हने खडी करे,
१७ और याजक मिट्टी के पात्र मे पवित्र
जल ले, और निवासस्थान की भूमि पर की
धूलि मे से कुछ लेकर उस जल मे डाल दे।
१८ तब याजक उस स्त्री को यहोवा के
साम्हने खडी करके उसके सिर के बाल
बिखराए, और स्मरण दिलानेवाले अन्नबलि
को जो जलनवाला है उसके हाथो पर धर
दे। और अपने हाथ मे याजक कड़वा जल
लिये रहे जो शाप लगाने का कारण होगा।
१९ तब याजक स्त्री को शपथ धरवाकर
कहे, कि यदि किसी पुरुष ने तुझ से कुकर्म
न किया हो, और तू पति को छोड दूसरे की
ओर फिरके अशुद्ध न हो गई हो, तो तू इस
कड़वे जल के गुण से जो शाप का कारण

* मूल में—हटके।

होता है बची रहे। २० पर यदि तू अपने
पति को छोड दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध
हुई हो, और तेरे पति को छोड किसी दूसरे
पुरुष ने तुझ से प्रसग किया हो, २१ (और
याजक उसे शाप देनेवाली शपथ धराकर
कहे,) यहोवा तेरी जाघ सडाए और तेरा पेट
फुलाए, और लोग तेरा नाम लेकर शाप
और धिक्कार* दिया करे, २२ अर्थात्
वह जल जो शाप का कारण होता है तेरी
अतडियो में जाकर तेरे पेट को फुलाए,
और तेरी जाघ को सडा दे। तब वह स्त्री
कहे, आमीन, आमीन। २३ तब याजक
शाप के ये शब्द पुस्तक मे लिखकर उस कडुवे
जल से मिटाके, २४ उस स्त्री को वह
कडुवा जल पिलाए जो शाप का कारण
होता है, और वह जल जो शाप का कारण
होगा उस स्त्री के पेट में जाकर कडुवा हो
जाएगा। २५ और याजक स्त्री के हाथ मे
से जलनवाले अन्नबलि को लेकर यहोवा के
आगे हिलाकर वेदी के समीप पहुचाए,
२६ और याजक उस अन्नबलि मे से उसका
स्मरण दिलानेवाला भाग, अर्थात् मुट्ठी भर
लेकर वेदी पर जलाए, और उसके बाद स्त्री
को वह जल पिलाए। २७ और जब वह
उसे वह जल पिला चुके, तब यदि वह अशुद्ध
हुई हो और अपने पति का विश्वासघात
किया हो, तो वह जल जो शाप का कारण
होता है उस स्त्री के पेट में जाकर कडुआ
हो जाएगा, और उसका पेट फूलेगा, और
उसकी जाघ सड जाएगी, और उस स्त्री का
नाम उसके लोगो के बीच स्रापित होगा।
२८ पर यदि वह स्त्री अशुद्ध न हुई हो
और शुद्ध ही हो, तो वह निर्दोष ठहरेगी
और गर्भिणी हो सकेगी। २९ जलन की
व्यवस्था यही है, चाहे कोई स्त्री अपने पति
को छोड दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हो,
३० चाहे पुरुष के मन में जलन उत्पन्न हो
और वह अपनी स्त्री पर जलने लगे, तो वह
उसको यहोवा के सम्मुख खडी कर दे, और
याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे।
३१ तब पुरुष अधर्म से बचा रहेगा, और
स्त्री अपने अधर्म का बोझ आप उठाएगी।।

(नाजीरों की व्यवस्था)

६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से कह, कि जब कोई
पुरुष वा स्त्री नाजीर* की मन्नत, अर्थात्
अपने को यहोवा के लिये न्यारा करने की
विशेष मन्नत माने, ३ तब वह दाखमधु
आदि मदिरा से न्यारा रहे, वह न दाखमधु
का, न और मदिरा का सिरका पीए, और न
दाख का कुछ रस भी पीए, वरन दाख न
खाए, चाहे हरी हो चाहे सूखी। ४ जितने
दिन वह न्यारा रहे उतने दिन तक वह
बीज से ले छिलके तक, जो कुछ दाखलता से
उत्पन्न होता है, उस मे से कुछ न खाए।
५ फिर जितने दिन उस ने न्यारे रहने की
मन्नत मानी हो उतने दिन तक वह अपने
सिर पर छुरा न फिराए, और जब तक वे
दिन पूरे न हो जिन में वह यहोवा के लिये
न्यारा रहे तब तक वह पवित्र ठहरेगा, और
अपने सिर के बालो को बढाए रहे।
६ जितने दिन वह यहोवा के लिये न्यारा
रहे उतने दिन तक किसी लोथ के पास न
जाए। ७ चाहे उसका पिता, वा माता, वा
भाई, वा बहिन भी मरे, तौभी वह उनके
कारण अशुद्ध न हो, क्योंकि अपने परमेश्वर
के लिये न्यारे रहने का चिन्ह† उनके सिर

* मूल में— किरिया।

* अर्थात् न्यारा किया हुआ।
† वा उसके परमेश्वर का मुकुट।

पर होगा। ८ अपने न्यारे रहने के सारे
दिनो मे वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा
रहे। ९ और यदि कोई उसके पास अचानक
मर जाए, और उसके न्यारे रहने का जो
चिन्ह * उसके सिर पर होगा वह अशुद्ध हो
जाए, तो वह शुद्ध होने के दिन, अर्थात्
सातवे दिन अपना सिर मुडाए। १० और
आठवे दिन वह दो पडुक वा कबूतरी के दो
बच्चे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के
पास ले जाए, ११ और याजक एक को
पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके
उसके लिये प्रायश्चित्त करे, क्योकि वह
लोथ के कारण पापी ठहरा है। और याजक
उसी दिन उसका सिर फिर पवित्र करे,
१२ और वह अपने न्यारे रहने के दिनो को
फिर यहोवा के लिये न्यारे ठहराए, और
एक वर्ष का एक भेड का बच्चा दोषबलि
करके ले आए, और जो दिन इस से पहिले
बीत गए हो वे व्यर्थ गिने जाए, क्योकि
उसके न्यारे रहने का चिन्ह † अशुद्ध हो
गया॥

१३ फिर जब नाजीर के न्यारे रहने के
दिन पूरे हो, उस समय के लिये उसकी यह
व्यवस्था है, अर्थात् वह मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर पहुचाया जाए, १४ और वह
यहोवा के लिये होमबलि करके एक वर्ष का
एक निर्दोष भेड का बच्चा पापबलि करके,
और एक वर्ष की एक निर्दोष भेड की बच्ची,
और मेलबलि के लिये एक निर्दोष मेढा,
१५ और अखमीरी रोटियो की एक
टोकरी, अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके,
और तेल से चुपडी हुई अखमीरी पपडिया,
और उन बलियो के अन्नबलि और अर्घ,
ये सब चढावे समीप ले जाए। १६ इन
सब को याजक यहोवा के साम्हने पहुचाकर
उसके पापबलि और होमबलि को चढाए,
१७ और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत
मेढे को यहोवा के लिये मेलबलि करके, और
उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्घ को भी
चढाए। १८ तब नाजीर अपने न्यारे रहने
के चिन्हवाले सिर को मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर मुण्डाकर अपने बालो को उस आग
पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी।
१९ फिर जब नाजीर अपने न्यारे रहने के
चिन्हवाले * सिर को मुण्डा चुके तब याजक
मेढे का पकाया हुआ कन्धा, और टोकरी मे
से एक अखमीरी रोटी, और एक अखमीरी
पपडी लेकर नाजीर के हाथो पर धर दे,
२० और याजक इनको हिलाने की भेट
करके यहोवा के साम्हने हिलाए, हिलाई
हुई छाती और उठाई हुई जाघ समेत ये
भी याजक के लिये पवित्र ठहरे, इसके
बाद वह नाजीर दाखमधु पी सकेगा।
२१ नाजीर की मन्नत की, और जो चढावा
उसको अपने न्यारे होने के कारण यहोवा
के लिये चढाना होगा उसकी भी यही
व्यवस्था है। जो चढावा वह अपनी पूजी के
अनुसार चढा सके, उस से अधिक जैसी
मन्नत उस ने मानी हो, वैसे ही अपने न्यारे
रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना
होगा॥

(याजकों के आशीर्वाद देने की रीति)

२२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२३ हारून और उसके पुत्रो से कह, कि तुम
इस्राएलियो को इन वचनो से आशीर्वाद
दिया करना कि,

२४ यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी
रक्षा करे

* वा उसका जो मुकुट।
† वा उसका मुकुट।

* वा अपने मुकुटवाले।

२५ यहोवा तुझ पर अपने मुख का
प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे
२६ यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे,
और तुझे शाति दे।
२७ इस रीति वे मेरे * नाम को इस्रा-
एलियो पर रखे, और मैं उन्हे आशीष दिया
करूगा ॥

(वेदी के अभिषेक के उत्सव की भेंटे)

७ फिर जब मूसा ने निवास को खडा
किया, और सारे सामान समेत उसका
अभिषेक करके उसको पवित्र किया, और
सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक
करके उसे पवित्र किया, २ तब इस्राएल
के प्रधान जो अपने अपने पितरो के घरानो
के मुख्य पुरुष, और गोत्रो के भी प्रधान
होकर गिनती लेने के काम पर नियुक्त थे,
३ वे यहोवा के साम्हने भेंट ले आए, और
उनकी भेट छ छाई हुई गाडिया और बारह
बैल थे, अर्थात् दो दो प्रधान की ओर से
एक एक गाडी, और एक एक प्रधान की
ओर से एक एक बैल, इन्हे वे निवास के
साम्हने यहोवा के समीप ले गए। ४ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, ५ उन वस्तुओ को
तू उन से ले ले, कि मिलापवाले तम्बू के
बरतन में काम आए, सो तू उन्हें लेवियो के
एक एक कुल की विशेष सेवकाई के अनुसार
उनको बाट दे। ६ सो मूसा ने वे सब
गाडिया और बैल लेकर लेवियो को दे
दिए। ७ गेर्शोनियो को उनकी सेवकाई
के अनुसार उस ने दो गाडिया और चार
बैल दिए, ८ और मरारियो को उनकी
सेवकाई के अनुसार उस ने चार गाडिया
और आठ बैल दिए, ये सब हारून याजक
के पुत्र ईतामार के अधिकार मे किए गए।
९ और कहातियो को उस ने कुछ न दिया,
क्योंकि उनके लिये पवित्र वस्तुओ की यह
सेवकाई थी कि वह उसे अपने कन्धो पर
उठा लिया करें॥
१० फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ
तब प्रधान उसके सस्कार की भेट वेदी के
आगे समीप ले जाने लगे। ११ तब यहोवा
ने मूसा से कहा, वेदी के सस्कार के लिये
प्रधान लोग अपनी अपनी भेट अपने अपने
नियत दिन पर चढाए॥
१२ सो जो पुरुष पहिले दिन अपनी भेट
ले गया वह यहूदा गोत्रवाले अम्मीनादाब का
पुत्र महशोन था, १३ उसकी भेट यह
थी, अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के हिसाब
से एक सौ तीस शेकेल चादी का एक परात,
और सत्तर शेकेल चादी का एक कटोरा,
ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए
और मैदे से भरे हुए थे, १४ फिर धूप से
भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान,
१५ होमबलि के लिये एक बछडा, एक मेढा,
और एक वर्ष का एक भेडी का बच्चा,
१६ पापबलि के लिये एक बकरा,
१७ और मेलबलि के लिये दो बैल, और
पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक एक
वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। अम्मीनादाब के
पुत्र महशोन की यही भेंट थी॥
१८ और दूसरे दिन इस्साकार का
प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल भेंट ले आया,
१९ वह यह थी, अर्थात् पवित्रस्थानवाले
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल
चादी का एक परात, और सत्तर शेकेल चादी
का एक कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये
तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे,
२० फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने
का एक धूपदान, २१ होमबलि के लिये एक

* मूल में—और वे मेरा नाम इस्राएलियो
पर रखें।

बछड़ा, एक मेढा, और एक वर्ष का एक
भेडी का बच्चा; २२ पापबलि के लिये
एक बकरा; २३ और मेलबलि के लिये दो
बैल, और पाच मेढे, और पाच बकरे, और
एक एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। सूआर
के पुत्र नतनेल की यही भेंट थी॥

२४ और तीसरे दिन जबूलूनियो का
प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब यह भेंट ले
आया, २५ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल
के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; २६ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान; २७ होमबलि के लिये एक बछडा,
एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेड़ी
का बच्चा; २८ पापबलि के लिये एक
बकरा; २९ और मेलबलि के लिये दो
बैल, और पाच मेढे, और पाच बकरे, और
एक एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। हेलोन
के पुत्र एलीआब की यही भेंट थी॥

३० और चौथे दिन रूबेनियो का प्रधान
शदेऊर का पुत्र एलीसूर यह भेंट ले आया,
३१ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के
हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से सने
हुए और मैदे से भरे हुए थे, ३२ फिर धूप
से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ३३ होमबलि के लिये एक बछडा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा, ३४ पापबलि के लिये एक
बकरा; ३५ और मेलबलि के लिये दो
बैल, और पाच मेढे, और पाच बकरे, और
एक एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। शदेऊर
के पुत्र एलीसूर की यही भेंट थी॥

३६ और पांचवें दिन शिमोनियो का
प्रधान सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल यह भेंट
ले आया, ३७ अर्थात् पवित्रस्थानवाले
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी
का एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का
एक कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल
से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ३८ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ३९ होमबलि के लिये एक बछडा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा, ४० पापबलि के लिये एक
बकरा; ४१ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढ़े, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेड़ी के बच्चे। सूरीशद्दै
के पुत्र शलूमीएल की यही भेंट थी॥

४२ और छठवे दिन गादियो का प्रधान
दूएल का पुत्र एल्यासाप यह भेंट ले आया,
४३ अर्थात् पवित्रस्थानवाले शेकेल के
हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का एक
परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे; ४४ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान; ४५ होमबलि के लिये एक बछडा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा; ४६ पापबलि के लिये एक
बकरा; ४७ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। दूएल के
पुत्र एल्यासाप की यही भेंट थी॥

४८ और सातवें दिन एप्रैमियो का
प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा यह भेंट
ले आया, ४९ अर्थात् पवित्रस्थानवाले
शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल
चादी का एक परात, और सत्तर शेकेल
चादी का एक कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के

लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे,
५० फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने
का एक धूपदान, ५१ होमबलि के लिये एक
बछड़ा, एक मेढा, और एक वर्ष का एक
भेडी का बच्चा, ५२ पापबलि के लिये एक
बकरा, ५३ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। अम्मीहूद
के पुत्र एलीशामा की यही भेंट थी॥

५४ और आठवे दिन मनश्शेइयो का
प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेंट ले
आया, ५५ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल
के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे, ५६ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ५७ होमबलि के लिये एक बछड़ा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा, ५८ पापबलि के लिये एक
बकरा, ५९ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। पदासूर के
पुत्र गम्लीएल की यही भेंट थी॥

६० और नवें दिन बिन्यामीनियो का
प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेंट ले
आया, ६१ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल
के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे, ६२ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ६३ होमबलि के लिये एक बछड़ा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी का
बच्चा, ६४ पापबलि के लिये एक बकरा,
६५ और मेलबलि के लिये दो बैल, और
पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक एक
वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। गिदोनी के
पुत्र अबीदान की यही भेंट थी॥

६६ और दसवे दिन दानियो का प्रधान
अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआज़र यह भेंट ले
आया, ६७ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल
के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे, ६८ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ६९ होमबलि के लिये एक बछड़ा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा, ७० पापबलि के लिये एक
बकरा, ७१ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। अम्मीशद्दै
के पुत्र अखीआज़र की यही भेंट थी॥

७२ और ग्यारहवें दिन आशेरियो का
प्रधान ओक्रान का पुत्र पजीएल यह भेंट ले
आया ७३ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल
के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे, ७४ फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ७५ होमबलि के लिये एक बछड़ा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा, ७६ पापबलि के लिये एक
बकरा, ७७ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। ओक्रान
के पुत्र पजीएल की यही भेंट थी॥

७८ और बारहवें दिन नप्तालियो का
प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेंट ले
आया, ७९ अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल

के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चादी का
एक परात, और सत्तर शेकेल चादी का एक
कटोरा, ये दोनो अन्नबलि के लिये तेल से
सने हुए और मैदे से भरे हुए थे, ८० फिर
धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक
धूपदान, ८१ होमबलि के लिये एक बछड़ा,
और एक मेढा, और एक वर्ष का एक भेडी
का बच्चा, ८२ पापबलि के लिये एक
बकरा, ८३ और मेलबलि के लिये दो बैल,
और पाच मेढे, और पाच बकरे, और एक
एक वर्ष के पाच भेडी के बच्चे। एनान
के पुत्र अहीरा की यही भेट थी॥

८४ वेदी के अभिषेक के समय इस्राएल
के प्रधानो की ओर से उसके सस्कार की
भेट यही हुई, अर्थात् चादी के बारह परात,
चादी के बारह कटोरे, और सोने के बारह
धूपदान। ८५ एक एक चादी का परात
एक सौ तीस शेकेल का, और एक एक चादी
का कटोरा सत्तर शेकेल का था, और
पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से ये सब
चादी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल के
थे। ८६ फिर धूप से भरे हुए सोने के बारह
धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब
से दस दस शेकेल के थे, वे सब धूपदान एक
सौ बीस शेकेल सोने के थे। ८७ फिर
होमबलि के लिये सब मिलाकर बारह
बछडे, बारह मेढे, और एक एक वर्ष के बारह
भेडी के बच्चे, अपने अपने अन्नबलि सहित
थे, फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे,
८८ और मेलबलि के लिये सब मिला कर
चौबीस बैल, और साठ मेढे, और साठ बकरे,
और एक एक वर्ष के साठ भेडी के बच्चे थे।
वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके सस्कार
की भेंट यही हुई। ८९ और जब मूसा
यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तम्बू
में गया, तब उस ने प्रायश्चित्त के ढकने
पर से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर था,
दोनो करूबो के मध्य मे से उसकी आवाज़
सुनी जो उस से बातें कर रहा था, और
उस ने (यहोवा) उस से बातें की॥

(दीवट के बारने की रीति)

८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ हारून को समझाकर यह कह,
कि जब जब तू दीपको को बारे तब तब
सातो दीपक का प्रकाश दीवट के साम्हने
हो। ३ निदान हारून ने वैसा ही किया,
अर्थात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी
उसी के अनुसार उस ने दीपको को बारा, कि
वे दीवट के साम्हने उजियाला दे। ४ और
दीवट की बनावट यह थी, अर्थात् यह पाए
से लेकर फूलो तक गढे हुए सोने का बनाया
गया था; जो नमूना यहोवा ने मूसा को
दिखलाया था उसी के अनुसार उस ने
दीवट को बनाया॥

(लेवियों के नियुक्त होने का वर्णन)

५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
६ इस्राएलियो के मध्य मे से लेवियो को
अलग लेकर शुद्ध कर। ७ उन्हे शुद्ध करने के
लिये तू ऐसा कर, कि पावन करने वाला जल
उन पर छिडक दे, फिर वे सर्वाङ्ग मुण्डन
कराए, और वस्त्र धोए, और वे अपने को
स्वच्छ करे। ८ तब वे तेल से सने हुए मैदे
के अन्नबलि समेत एक बछडा ले ले, और तू
पापबलि के लिये एक दूसरा बछडा लेना।
९ और तू लेवियो को मिलापवाले तम्बू के
साम्हने समीप पहुचाना, और इस्राएलियो
की सारी मण्डली को इकट्ठा करना।
१० तब तू लेवियो को यहोवा के आगे
समीप ले आना, और इस्राएली अपने अपने
हाथ उन पर रखे, ११ तब हारून लेवियो
को यहोवा के साम्हने इस्राएलियो की ओर

से हिलाई हुई भेंट करके अर्पण करे, कि वे यहोवा की सेवा करनेवाले ठहरें। १२ और लेवीय अपने अपने हाथ उन बछड़ो के सिरो पर रखें, तब तू लेवियो के लिये प्रायश्चित्त करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाना। १३ और लेवियो को हारून और उसके पुत्रो के सम्मुख खड़ा करना, और उनको हिलाने की भेंट के लिये यहोवा को अर्पण करना। १४ और उन्हें इस्राएलियो में से अलग करना, सो वे मेरे ही ठहरेंगे। १५ और जब तू लेवियो को शुद्ध करके हिलाई हुई भेंट के लिये अर्पण कर चुके, उसके बाद वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी सेवा टहल करने के लिये अन्दर आया करें। १६ क्योंकि वे इस्राएलियो में से मुझे पूरी रीति से अर्पण किए हुए है, मैं ने उनको सब इस्राएलियो में से एक एक स्त्री के पहिलौठे की सन्ती अपना कर लिया है। १७ इस्राएलियो के पहिलौठे, चाहे मनुष्य के हो चाहे पशु के, सब मेरे है, क्योंकि मैं ने उन्हे उस समय अपने लिये पवित्र ठहराया जब मैं ने मिस्र देश के सब पहिलौठो को मार डाला। १८ और मैं ने इस्राएलियो के सब पहिलौठो के बदले लेवियो को लिया है। १९ उन्हे लेकर मैं ने हारून और उसके पुत्रो को इस्राएलियो में से दान करके दे दिया है, कि वे मिलापवाले तम्बू मे इस्राएलियो के निमित्त सेवकाई और प्रायश्चित्त किया करे, कही ऐसा न हो कि जब इस्राएली पवित्रस्थान के समीप आएं तब उन पर कोई महाविपत्ति आ पड़े। २० लेवियो के विषय यहोवा की यह आज्ञा पाकर मूसा और हारून और इस्राएलियो की सारी मण्डली ने उनके साथ ठीक वैसा ही किया। २१ लेवियो ने तो अपने को पाप से पावन किया, और अपने वस्त्र धो डाला, और हारून ने उन्हे यहोवा के साम्हने हिलाई हुई भेंट के निमित्त अर्पण किया, और उन्हे शुद्ध करने को उनके लिये प्रायश्चित्त भी किया। २२ और उसके बाद लेवीय हारून और उसके पुत्रो के साम्हने मिलापवाले तम्बू में अपनी अपनी सेवकाई करने को गए, और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को लेवियो के विषय मे दी थी उसी के अनुसार वे उन से व्यवहार करने लगे॥

२३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, २४ जो लेवियो को करना है वह यह है, कि पच्चीस वर्ष की अवस्था से लेकर उस से अधिक आयु मे वे मिलापवाले तम्बू सम्बन्धी काम करने के लिये भीतर उपस्थित हुआ करें, २५ और जब पचास वर्ष के हो तो फिर उस सेवा के लिये न आए और न काम करे, २६ परन्तु वे अपने भाई बन्धुओ के साथ मिलापवाले तम्बू के पास रक्षा का काम किया करे, और किसी प्रकार की सेवकाई न करे। लेवियो को जो जो काम सौंपे जाए उनके विषय तू उन से ऐसा ही करना॥

(दूसरी बार फसह का माना जाना, और सदा के लिये फसह की विधि)

९ इस्राएलियो के मिस्र देश से निकलने के दूसरे वर्ष के पहिले महीने में यहोवा ने सीनै के जगल मे मूसा से कहा, २ इस्राएली फसह नाम पर्ब्ब को उसके नियत समय पर माना करें। ३ अर्थात् इसी महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय तुम लोग उसे सब विधियो और नियमो के अनुसार मानना। ४ तब मूसा ने इस्राएलियो से फसह मानने के लिये कह

दिया। ५ और उन्हो ने पहले महीने के
चौदहवें दिन को गोधूलि के समय सीनै के
जगल मे फसह को माना, और जो जो
आज्ञाए यहोवा ने मूसा को दी थी उन्ही के
अनुसार इस्राएलियो ने किया। ६ परन्तु
कितने लोग किसी मनुष्य की लोथ के द्वारा
अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह को न
मान सके, वे उसी दिन मूसा और हारून के
समीप जाकर मूसा से कहने लगे, ७ हम
लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध
है, परन्तु हम क्यो रुके रहे, और इस्रा-
एलियो के सग यहोवा का चढावा नियत
समय पर क्यो न चढाए? ८ मूसा ने उन
से कहा, ठहरे रहो, मै सुन लू कि यहोवा
तुम्हारे विषय मे क्या आज्ञा देता है॥

९ यहोवा ने मूसा से कहा, १० इस्रा-
एलियो से कह, कि चाहे तुम लोग चाहे
तुम्हारे वश मे से कोई भी किसी लोथ के
कारण अशुद्ध हो, वा दूर की यात्रा पर हो,
तौभी वह यहोवा के लिये फसह को माने।
११ वे उसे दूसरे महीने के चौदहवे दिन को
गोधूलि के समय मानें, और फसह के
बलिपशु के मास को अखमीरी रोटी और
कडुए सागपात के साथ खाए। १२ और
उस मे से कुछ भी बिहान तक न रख छोडे,
और न उसकी कोई हड्डी तोडे, वे उस पर्व्व
को फसह की सारी विधियो के अनुसार
माने। १३ परन्तु जो मनुष्य शुद्ध हो और
यात्रा पर न हो, परन्तु फसह के पर्व्व को न
माने, वह प्राणी अपने लोगो मे से नाश
किया जाए, उस मनुष्य को यहोवा का
चढावा नियत समय पर न ले आने के
कारण अपने पाप का बोझ उठाना पडेगा।
१४ और यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ
रहकर चाहे कि यहोवा के लिये फसह माने,
तो वह उसी विधि और नियम के अनुसार
उसको माने, देशी और परदेशी दोनो के
लिये तुम्हारी एक ही विधि हो॥

(इस्राएलियों की यात्रा की रीति)

१५ जिस दिन निवास जो साक्षी का
तम्बू भी कहलाता है खडा किया गया, उस
दिन बादल उस पर छा गया, और सन्ध्या
को वह निवास पर आग सा दिखाई दिया
और भोर तक दिखाई देता रहा। १६ और
नित्य ऐसा ही हुआ करता था, अर्थात् दिन
को बादल छाया रहता, और रात को आग
दिखाई देती थी। १७ और जब जब वह
बादल तम्बू पर से उठ जाता तब इस्राएली
प्रस्थान करते थे, और जिस स्थान पर बादल
ठहर जाता वही इस्राएली अपने डेरे खडे
करते थे। १८ यहोवा की आज्ञा से इस्रा-
एली कूच करते थे, और यहोवा ही की आज्ञा
से वे डेरे खडे भी करते थे, और जितने
दिन तक वह बादल निवास पर ठहरा रहता
उतने दिन तक वे डेरे डाले पडे रहते थे।
१९ और जब जब बादल बहुत दिन निवास
पर छाया रहता तब इस्राएली यहोवा की
आज्ञा मानते, और प्रस्थान नही करते थे।
२० और कभी कभी वह बादल थोडे ही
दिन तक निवास पर रहता, और तब भी वे
यहोवा की आज्ञा से डेरे डाले पडे रहते थे,
और फिर यहोवा की आज्ञा ही से वह प्रस्थान
करते थे। २१ और कभी कभी बादल
केवल सन्ध्या से भोर तक रहता; और जब
वह भोर को उठ जाता था तब वे प्रस्थान
करते थे, और यदि वह रात दिन बराबर
रहता तो जब बादल उठ जाता तब ही वे
प्रस्थान करते थे। २२ वह बादल चाहे
दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर,
जब तक निवास पर ठहरा रहता तब तक
इस्राएली अपने डेरो मे रहते और प्रस्थान

नही करते थे, परन्तु जब वह उठ जाता तब
वे प्रस्थान करते थे। २३ यहोवा की आज्ञा
से वे अपने डेरे खडे करते, और यहोवा ही
की आज्ञा से वे प्रस्थान करते थे, जो आज्ञा
यहोवा मूसा के द्वारा देता था उसको वे
माना करते थे॥

(चादी की तुरहियों के बनाने और व्यवहार में लाने की विधि)

१० फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ चादी की दो तुरहिया गढके
बनाई जाए, तू उनको मण्डली के बुलाने,
और छावनियो के प्रस्थान करने में काम में
लाना। ३ और जब वे दोनो फूकी जाए,
तब सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर तेरे पास इकट्ठी हो जाए। ४ और यदि
एक ही तुरही फूकी जाए, तो प्रधान लोग
जो इस्राएल के हजारो के मुख्य पुरुष है
तेरे पास इकट्ठे हो जाए। ५ जब तुम लोग
सास बान्धकर फूको, तो पूरब दिशा की
छावनियो का प्रस्थान हो। ६ और जब
तुम दूसरी बेर सास बान्धकर फूको, तब
दक्खिन दिशा की छावनियो का प्रस्थान
हो। उनके प्रस्थान करने के लिये वे सास
बान्धकर फूकें। ७ और जब लोगो को
इकट्ठा करके सभा करनी हो तब भी फूकना,
परन्तु सास बान्धकर नही। ८ और हारून
के पुत्र जो याजक है वे उन तुरहियो को
फूका करें। यह बात तुम्हारी पीढी-पीढी के
लिये सवदा की विधि रहे। ९ और जब
तुम अपने देश में किसी सतानेवाले वैरी से
लडने को निकलो, तब तुरहियो को सास
बान्धकर फूकना, तब तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा, और
तुम अपने शत्रुओ से बचाए जाओगे।
१० और अपने आनन्द के दिन मे, और
अपने नियत पर्व्वों में, और महीनो के आदि
में, अपने होमबलियो और मेलबलियो के
साथ उन तुरहियो को फूकना, इस से तुम्हारे
परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा,
मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू॥

(इस्राएलियों का सीनै पर्वत से प्रस्थान करना)

११ और दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के
बीसवें दिन को बादल साक्षी के निवास पर से
उठ गया, १२ तब इस्राएली सीनै के जगल
में से निकलकर प्रस्थान करके निकले,
और बादल पारान नाम जगल में ठहर गया।
१३ उनका प्रस्थान यहोवा की उस आज्ञा
के अनुसार जो उस ने मूसा को दी थी
आरम्भ हुआ। १४ और सब से पहले
तो यहूदियो की छावनी के झडे का प्रस्थान
हुआ, और वे दल बान्धकर चले, और उन-
का सेनापति अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन
था। १५ और इस्साकारियो के गोत्र का
सेनापति सूआर का पुत्र नतनेल था।
१६ और जबूलूनियो के गोत्र का सेनापति
हेलोन का पुत्र एलीआब था। १७ तब
निवास उतारा गया, और गेर्शोनियो और
मरारियो ने जो निवास को उठाते थे
प्रस्थान किया। १८ फिर रूबेन की छावनी
झडे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर
चले, और उनका सेनापति शदेऊर का
पुत्र एलीशूर था। १९ और शिमोनियो के
गोत्र का सेनापति सूरीशद्दै का पुत्र शलूमी-
एल था। २० और गादियो के गोत्र का
सेनापति दूएल का पुत्र एल्यासाप था।
२१ तब कहातियो ने पवित्र वस्तुओ को
उठाए हुए प्रस्थान किया, और उनके पहुचने
तक गेर्शोनियों और मरारियों ने निवास को
खडा कर दिया। २२ फिर एप्रैमियो की
छावनी के झडे का कूच हुआ, और वे भी

दल बनाकर चले, और उनका सेनापति
अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा था। २३ और
मनश्शेइयो के गोत्र का सेनापति पदासूर का
पुत्र गम्लीएल था। २४ और बिन्या-
मीनियो के गोत्र का सेनापति गिदोनी का
पुत्र अबीदान था। २५ फिर दानियो की
छावनी जो सब छावनियो के पीछे थी, उसके
झडे का प्रस्थान हुआ, और वे भी दल बना-
कर चले, और उनका सेनापति अम्मीशद्दै
का पुत्र अखीआजर था। २६ और आशे-
रियो के गोत्र का सेनापति ओक्रान का पुत्र
पजीएल था। २७ और नप्तालियो के
गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा
था। २८ इस्राएली इसी प्रकार अपने
अपने दलो के अनुसार प्रस्थान करते, और
आगे बढा करते थे।

२९ और मूसा ने अपने ससुर रूएल
मिद्यानी के पुत्र होबाब से कहा, हम लोग
उस स्थान की यात्रा करते है जिसके विषय
मे यहोवा ने कहा है, कि मै उसे तुम को
दूगा, सो तू भी हमारे सग चल, और हम
तेरी भलाई करेगे, क्योकि यहोवा ने इस्राएल
के विषय मे भला ही कहा है। ३० होबाब
ने उसे उत्तर दिया, कि मै नही जाऊगा,
मै अपने देश और कुटुम्बियो मे लौट
जाऊगा। ३१ फिर मूसा ने कहा, हम को
न छोड, क्योकि हमे जगल मे कहा कहा डेरा
खडा करना चाहिये, यह तुझे ही मालूम है,
तू हमारे लिये आखो का काम देना।
३२ और यदि तू हमारे सग चले, तो निश्चय
जो भलाई यहोवा हम से करेगा उसी के
अनुसार हम भी तुझ से वैसा ही करेगे॥

३३ फिर इस्राएलियो ने* यहोवा के
पर्वत से प्रस्थान करके तीन दिन की यात्रा

* मूल में—उन्हों ने।

की, और उन तीनो दिनो के मार्ग मे यहोवा
की वाचा का सन्दूक उनके लिये विश्राम का
स्थान ढूढता हुआ उनके आगे आगे चलता
रहा। ३४ और जब वे छावनी के स्थान
से प्रस्थान करते थे तब दिन भर यहोवा का
बादल उनके ऊपर छाया रहता था।
३५ और जब जब सन्दूक का प्रस्थान होता
था तब तब मूसा यह कहा करता था, कि
हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तितर बितर
हो जाए, और तेरे बैरी तेरे साम्हने से भाग
जाए। ३६ और जब जब वह ठहर जाता
था तब तब मूसा कहा करता था, कि
हे यहोवा, हजारो-हजार इस्राएलियो मे
लौटकर आ जा॥

(इस्राएलियों का कुड़कुड़ाना, और इसका दण्ड भोगना)

११ फिर वे लोग बुडबुडाने और
यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे,
निदान यहोवा ने सुना, और उसका कोप
भडक उठा, और यहोवा की आग उनके
मध्य मे जल उठी, और छावनी के एक किनारे
से भस्म करने लगी। २ तब लोग मूसा के
पास आकर चिल्लाए, और मूसा ने यहोवा
से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई,
३ और उस स्थान का नाम तबेरा* पडा,
क्योकि यहोवा की आग उन मे जल उठी
थी॥

४ फिर जो मिली-जुली भीड उनके
साथ थी वह कामुकता करने लगी, और
इस्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, कि
हमे मास खाने को कौन देगा। ५ हमे वे
मछलिया स्मरण है जो हम मिस्र मे सेतमेत
खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे,
और गन्दने, और प्याज, और लहसुन

* अर्थात् जलन।

भी, ६ परन्तु अब हमारा जी घबरा गया
है, यहा पर इस मन्ना को छोड और कुछ भी
देख नही पडता। ७ मन्ना तो धनिये के
समान था, और उसका रग रूप मोती का सा
था। ८ लोग इधर उधर जाकर उसे
बटोरते, और चक्की में पीसते वा ओखली
में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और
उसके फुलके बनाते थे, और उसका स्वाद
तेल में बने हुए पूए का सा था। ९ और
रात को जब छावनी मे ओस पडती थी तब
उसके साथ मन्ना भी गिरता था। १० और
मूसा ने सब घरानो के आदमियो को अपने
अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना, और यहोवा
का कोप अत्यन्त भडका, और मूसा को भी
बुरा मालूम हुआ। ११ तब मूसा ने यहोवा
से कहा, तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार
क्यो करता है? और क्या कारण है कि
मै ने तेरी दृष्टि मे अनुग्रह नही पाया,
कि तू ने इन सब लोगो का भार मुझ पर
डाला है? १२ क्या ये सब लोग मेरे ही
कोख मे पडे थे? क्या मैं ही ने उनको
उत्पन्न किया, जो तू मुझ से कहता है, कि
जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद
मे उठाए उठाए फिरता है, वैसे ही मै इन
लोगो को अपनी गोद में उठाकर उस देश मे
ले जाऊ, जिसके देने की शपथ तू ने उनके
पूर्वजो से खाई है? १३ मुझे इतना मास
कहा से मिले कि इन सब लोगो को दू? ये
तो यह कह कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि
तू हमें मास खाने को दे। १४ मैं अकेला
इन सब लोगो का भार नही सम्भाल सकता,
क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है।
१५ और जो तुझे मेरे साथ यही व्यवहार
करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह
हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिस से मैं
अपनी दुर्दशा न देखने पाऊ॥

१६ यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएली
पुरनियो मे से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास
इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा
के पुरनिये और उनके सरदार है, और
मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे
साथ यहा खडे हो। १७ तब मैं उतरकर
तुझ से वहा बाते करूगा, और जो आत्मा
तुझ मे है उस मे से कुछ लेकर उन मे
समवाऊगा, और वे इन लोगो का भार तेरे
सग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले
उठाना न पडेगा। १८ और लोगो से कह,
कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें
मास खाने को मिलेगा, क्योकि तुम यहोवा
के सुनते हुए यह कह कहकर रोए हो, कि हमे
मास खाने को कौन देगा? हम मिस्र ही
में भले थे। सो यहोवा तुम को मास खाने
को देगा, और तुम खाना। १९ फिर तुम
एक दिन, वा दो, वा पाच, वा दस, वा बीस
दिन ही नही, २० परन्तु महीने भर उसे
खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनो से
निकलने न लगे और तुम को उस से घृणा
न हो जाए, क्योकि तुम लोगो ने यहोवा को
जो तुम्हारे मध्य में है तुच्छ जाना है, और
उसके साम्हने यह कहकर रोए हो, कि
हम मिस्र से क्यो निकल आए? २१ फिर
मूसा ने कहा, जिन लोगो के बीच में हू उन
मे से छ लाख तो प्यादे ही है, और तू ने
कहा है, कि मैं उन्हें इतना मास दूगा, कि
वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे। २२ क्या
वे सब भेड-बकरी गाय-बैल उनके लिये
मारे जाए, कि उनको मास मिले? वा
क्या समुद्र की सब मछलिया उनके लिये
इकट्ठी की जाए, कि उनको मास मिले?

२३ यहोवा ने मूसा से कहा, क्या यहोवा
का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखेगा,
कि मेरा वचन जो मैं ने तुझ से कहा है वह

पूरा होता है कि नही। २४ तव मूसा ने
वाहर जाकर प्रजा के लोगो को यहोवा की
वाते कह सुनाईं, और उनके पुरनियो मे से
सत्तर पुरुष इकट्ठे करके तम्बू के चारो ओर
खडे किए। २५ तव यहोवा वादल में
होकर उतरा और उस ने मूसा से वाते की,
और जो आत्मा उस मे थी उस में से लेकर
उन सत्तर पुरनियो मे समवा दिया, और
जब वह आत्मा उन मे आई तव वे नवूवत
करने लगे। परन्तु फिर और कभी न की।
२६ परन्तु दो मनुष्य छावनी मे रह गए थे,
जिन मे से एक का नाम एलदाद और दूसरे
का मेदाद था, उन मे भी आत्मा आई, ये भी
उन्ही मे से थे जिनके नाम लिख लिये गये
थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे
छावनी ही में नवूवत करने लगे। २७ तव
किसी जवान ने दौड कर मूसा को वतलाया,
कि एलदाद और मेदाद छावनी मे नवूवत
कर रहे है। २८ तब नून का पुत्र यहोशू,
जो मूसा का टहलुआ और उसके चुने हुए
वीरो मे से था,* उस ने मूसा से कहा, हे
मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे। २९ मूसा
ने उस से कहा, क्या तू मेरे कारण जलता
है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा
के लोग नवी होते, और यहोवा अपना आत्मा
उन सभो मे समवा देता! ३० तव फिर
मूसा इस्राएल के पुरनियो समेत छावनी मे
चला गया। ३१ तव यहोवा की ओर से
एक वडी आधी आई, और वह समुद्र से वटेरे
उडाके छावनी पर और उसके चारो ओर
इतनी ले आई, कि वे इधर उधर एक दिन के
मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊचे
तक छा गए। ३२ और लोगो ने उठकर
उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन
भी दिन भर वटेरो को वटोरते रहे, जिस ने
कम से कम वटोरा उस ने दस होमेर
वटोरा, और उन्हो ने उन्हें छावनी के चारो
ओर फैला दिया। ३३ मांस उनके मुह
ही मे था, और वे उसे खाने न पाए थे, कि
यहोवा का कोप उन पर भडक उठा, और
उस ने उनको वहुत वडी मार से मारा।
३४ और उस स्थान का नाम किब्रोथ-
त्तावा* पडा, क्योंकि जिन लोगो ने
कामुकता की थी उनको वहा मिट्टी दी गई।
३५ फिर इस्राएली किब्रोथत्तावा से प्रस्थान
करके हसेरोत मे पहुचे, और वही रहे॥

(मूसा की श्रेष्ठता का प्रमाण)

१२ मूसा ने तो एक कूशी स्त्री के
साथ व्याह कर लिया था। सो
मरियम और हारून उसकी उस व्याहिता
कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने
लगे, २ उन्हो ने कहा, क्या यहोवा ने
केवल मूसा ही के साथ वाते की है? क्या
उस ने हम से भी वाते नही की? उनकी
यह वात यहोवा ने सुनी। ३ मूसा तो
पृथ्वी भर के रहने वाले सव मनुष्यो से
वहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। ४ सो
यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और
मरियम से कहा, तुम तीनो मिलापवाले तम्बू
के पास निकल आओ। तव वे तीनो निकल
आए। ५ तव यहोवा ने वादल के खम्भे मे
उतरकर तम्बू के द्वार पर खडा होकर
हारून और मरियम को वुलाया, सो वे
दोनो उसके पास निकल आए। ६ तव
यहोवा ने कहा, मेरी वाते सुनो यदि तुम मे
कोई नवी हो, तो उस पर मै यहोवा दर्शन
के द्वारा अपने आप को प्रगट करूगा, वा
स्वप्न मे उस से वाते करूगा। ७ परन्तु

* मूल मे—उसके चुने हुओं में से।

* अर्थात् तृष्णा की कबरें।

मेरा दास मूसा ऐसा नही है, वह तो मेरे
सब घरानो में विश्वास योग्य है। ८ उस
से मैं गुप्त रीति से नही, परन्तु आम्हने-
साम्हने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हू,
और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता
है। सो तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते
हुए क्यो नही डरे ? ९ तब यहोवा का कोप
उन पर भडका, और वह चला गया,
१० तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ
गया, और मरियम कोढ से हिम के समान
श्वेत हो गई। और हारून ने मरियम की
ओर दृष्टि की, और देखा, कि वह कोढिन हो
गई है। ११ तब हारुन मूसा से कहने लगा,
हे मेरे प्रभु, हम दोनो ने जो मूर्खता की
वरन पाप भी किया, यह पाप हम पर न
लगने दे। १२ और मरियम को उस मरे
हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी
मा के पेट से निकलते ही अधगली हो।
१३ सो मूसा ने यह कहकर यहोवा की
दोहाई दी, कि हे ईश्वर, कृपा कर, और
उसको चगा कर। १४ यहोवा ने मूसा
से कहा, यदि उसका पिता उसके मुह पर
थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह
लज्जित न रहती ? सो वह सात दिन तक
छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह
फिर भीतर आने पाए। १५ सो मरियम
सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही,
और जब तक मरियम फिर आने न पाई तब
तक लोगो ने प्रस्थान न किया। १६ उसके
बाद उन्हो ने हसेरोत से प्रस्थान करके
पारान नाम जगल में अपने डेरे खडे किए॥

(इस्राएलियों के कनान देश में जाने से नाश
करने और इसके दण्ड पाने का वर्णन)

१३ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ कनान देश जिसे मैं इस्राएलियो
को देता हू उसका भेद लेने के लिये पुरुषो
को भेज, वे उनके पितरो के प्रति गोत्र का
एक प्रधान पुरुष हो। ३ यहोवा से यह
आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरुषो को पारान
जगल से भेज दिया, जो सब के सब इस्रा-
एलियो के प्रधान थे। ४ उनके नाम ये हैं,
अर्थात् रूबेन के गोत्र मे से जक्कूर का पुत्र
शम्मू, ५ शिमोन के गोत्र में से होरी का
पुत्र शापात, ६ यहूदा के गोत्र में से
यपुन्ने का पुत्र कालेब, ७ इस्साकार के
गोत्र में से योसेप का पुत्र यिगाल, ८ एप्रैम
के गोत्र में से नून का पुत्र होशे,— ९ बिन्या-
मीन के गोत्र मे से रापू का पुत्र पलती,
१० जबूलून के गोत्र में से सोदी का पुत्र
गद्दीएल, ११ यूसुफ वशियो मे, मनश्शे
के गोत्र मे से सूसी का पुत्र गद्दी, १२ दान
के गोत्र मे से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल,
१३ आशेर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र
सतूर, १४ नप्ताली के गोत्र में से वोप्सी
का पुत्र नहूबी, १५ गाद के गोत्र मे से
माकी का पुत्र गूएल। १६ जिन पुरुषो
को मूसा ने देश का भेद लेने के लिये भेजा
था उनके नाम ये ही हैं। और नून के पुत्र
होशे का नाम उस ने यहोशू रखा। १७ उन-
को कनान देश के भेद लेने को भेजते समय
मूसा ने कहा, इधर से, अर्थात् दक्खिन देश
होकर जाओ, १८ और पहाडी देश में
जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है,
और उस में बसे हुए लोगो को भी देखो
कि वे बलवान् है वा निर्बल, थोडे है वा
बहुत, १९ और जिस देश में वे बसे हुए
है सो कैसा है, अच्छा वा बुरा, और वे
कैसी कैसी बस्तियो मे बसे हुए है, और
तम्बुओ में रहते है वा गढ वा किलो में
रहते है, २० और वह देश कैसा है,
उपजाऊ है वा बजर है, और उस मे वृक्ष है

वा नही। और तुम हियाव बान्धे चलो,
और उस देश की उपज मे से कुछ लेते भी
आना। वह समय पहली पक्की दाखो का
था। २१ सो वे चल दिए, और सीन नाम
जगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में
है, सारे देश को देखभालकर उसका भेद
लिया। २२ सो वे दक्षिण देश होकर
चले, और हेब्रोन तक गए; वहा अहीमन,
शेशै, और तल्मै नाम अनाकवशी रहते थे।
हेब्रोन तो मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहिले
बसाया गया था। २३ तब वे एशकोल
नाम नाले तक गए, और वहा से एक डाली
दाखो के गुच्छे समेत तोड ली, और दो
मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा
ले चले गए; और वे अनारो और अजीरो मे
से भी कुछ कुछ ले आए। २४ इस्राएली
वहा से जो दाखो का गुच्छा तोड ले
आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम
एशकोल * नाला रखा गया। २५ चालीस
दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट
आए। २६ और पारान जगल के कादेश
नाम स्थान मे मूसा और हारून और इस्रा-
एलियो की सारी मण्डली के पास पहुचे,
और उनको और सारी मण्डली को सदेशा
दिया, और उस देश के फल उनको
दिखाए। २७ उन्हो ने मूसा से यह कहकर
वर्णन किया, कि जिस देश मे तू ने हम को
भेजा था उस मे हम गए, उस मे सचमुच
दूध और मधु की धाराए बहती है, और
उसकी उपज में से यही है। २८ परन्तु उस
देश के निवासी बलवान् है, और उसके नगर
गढवाले है और बहुत बडे है, और फिर
हम ने वहा अनाकवशियो को भी देखा।
२९ दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए
है, और पहाडी देश में हित्ती, यबूसी, और
एमोरी रहते है, और समुद्र के किनारे
किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी
बसे हुए है। ३० पर कालेब ने मूसा के
साम्हने प्रजा के लोगो को चुप कराने की
मनसा से कहा, हम अभी चढके उस देश को
अपना कर लें, क्योकि नि सन्देह हम मे ऐसा
करने की शक्ति है। ३१ पर जो पुरुष
उसके सग गए थे उन्हो ने कहा, उन लोगो
पर चढने की शक्ति हम मे नही है, क्योकि
वे हम से बलवान् है। ३२ और उन्हो ने
इस्राएलियो के साम्हने उस देश की जिसका
भेद उन्हो ने लिया था यह कहकर निन्दा
भी की, कि वह देश जिसका भेद लेने को
हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियो को
निगल जाता है; और जितने पुरुष हम ने
उस मे देखे वे सब के सब बडे डील डौल
के है। ३३ फिर हम ने वहा नपीलो को,
अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवशियो को
देखा, और हम अपनी दृष्टि मे तो उनके
साम्हने टिड्डे के समान दिखाई पडते थे, और
ऐसे ही उनकी दृष्टि मे मालूम पडते थे॥

१४ तब सारी मण्डली चिल्ला उठी,
और रात भर वे लोग रोते ही रहे।
२ और सब इस्राएली मूसा और हारून पर
बुड़बुडाने लगे, और सारी मण्डली उन से
कहने लगी, कि भला होता कि हम मिस्र ही
मे मर जाते! वा इस जगल ही मे मर
जाते! ३ और यहोवा हम को उस देश मे
ले जाकर क्यो तलवार से मरवाना चाहता
है? हमारी स्त्रिया और बालबच्चे तो लूट
मे चले जाएगे, क्या हमारे लिये अच्छा नही
कि हम मिस्र देश को लौट जाए? ४ फिर
वे आपस मे कहने लगे, आओ, हम किसी
को अपना प्रधान बना ले, और मिस्र को

* अर्थात् दाखों का गुच्छा।

लौट चलें। ५ तब मूसा और हारून इस्रा-
एलियों की सारी मण्डली के साम्हने मुंह
के बल गिरे। ६ और नून का पुत्र यहोशू
और यपुन्ने का पुत्र कालिब, जो देश के भेद
लेनेवालों में से थे, अपने अपने वस्त्र फाड़-
कर, ७ इस्राएलियों की सारी मण्डली से
कहने लगे, कि जिस देश का भेद लेने को
हम इधर उधर घूम कर आए हैं, वह अत्यन्त
उत्तम देश है। ८ यदि यहोवा हम से प्रसन्न
हो, तो हम को उस देश में, जिस में दूध
और मधु की धाराएं बहती हैं, पहुंचाकर
उसे हमें दे देगा। ९ केवल इतना करो कि
तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो, और
न तो उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे
हमारी रोटी ठहरेंगे, छाया उनके ऊपर से
हट गई है, और यहोवा हमारे संग है, उन
से न डरो। १० तब सारी मण्डली चिल्ला
उठी, कि इनको पत्थरवाह करो। तब
यहोवा का तेज सब इस्राएलियों पर
प्रकाशमान हुआ॥

११ तब यहोवा ने मूसा से कहा, वे लोग
कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और
मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब
तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? १२ मैं
उन्हें मरी से मारूंगा, और उनके निज भाग
से उन्हें निकाल दूंगा, और तुझ से एक जाति
उपजाऊंगा जो उन से बड़ी और बलवन्त
होगी। १३ मूसा ने यहोवा से कहा, तब
तो मिस्री जिनके मध्य में से तू अपनी
सामर्थ्य दिखाकर उन लोगों को निकाल ले
आया है यह सुनेंगे, १४ और इस देश के
निवासियों से कहेंगे। उन्हों ने तो यह सुना
है, कि तू जो यहोवा है इन लोगों के मध्य में
रहता है, और प्रत्यक्ष दिखाई देता है, और
तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है,
और तू दिन को बादल के खम्भे में, और रात
को अग्नि के खम्भे में होकर इनके आगे आगे
चला करता है। १५ इसलिये यदि तू इन
लोगों को एक ही बार में मार डाले, तो
जिन जातियों ने तेरी कीर्त्ति सुनी है वे
कहेंगी, १६ कि यहोवा उन लोगों को उस
देश में जिसे उस ने उन्हें देने की शपथ खाई
थी पहुंचा न सका, इस कारण उस ने उन्हें
जंगल में घात कर डाला है। १७ सो अब
प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे इस कहने के
अनुसार हो, १८ कि यहोवा कोप करने
में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और
अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला
है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से
निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म
का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और
परपोतों को देता है। १९ अब इन लोगों
के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार,
और जैसे तू मिस्र से लेकर यहां तक क्षमा
करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे।
२० यहोवा ने कहा, तेरी बिनती के अनुसार
मैं क्षमा करता हूं, २१ परन्तु मेरे जीवन
की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की
महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी, २२ उन
सब लोगों ने जिन्हों ने मेरी महिमा मिस्र
देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए
हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार
मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानी,
२३ इसलिये जिस देश के विषय में मैं ने
उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे
कभी देखने न पाएंगे, अर्थात् जितनों ने मेरा
अपमान किया है उन में से कोई भी उसे
देखने न पाएगा। २४ परन्तु इस कारण
से कि मेरे दास कालिब के साथ और ही
आत्मा है, और उस ने पूरी रीति से मेरा
अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में
जिस में वह हो आया है पहुंचाऊंगा, और

उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा।
२५ अमालेकी और कनानी लोग तराई में
रहते हैं, सो कल तुम घूमकर प्रस्थान करो,
और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में
जाओ॥

२६ फिर यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, २७ यह बुरी मण्डली मुझ पर
बुड़बुड़ाती रहती है, उसको मैं कब तक
सहता रहूं? इस्राएली जो मुझ पर बुड़-
बुड़ाते रहते हैं, उनका यह बुड़बुड़ाना मैं ने
तो सुना है। २८ सो उन से कह, कि
यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की
शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं,
निःसन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ
व्यवहार करूंगा। २९ तुम्हारी लोथें इसी
जंगल में पड़ी रहेंगी, और तुम सब में से
बीस वर्ष की वा उस से अधिक अवस्था के
जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते
थे, ३० उन में से यपुन्ने के पुत्र कालिब
और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी
उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय
मैं ने शपथ खाई* है कि तुम को उस में
बसाऊंगा। ३१ परन्तु तुम्हारे बालबच्चे
जिनके विषय तुम ने कहा है, कि ये लूट में
चले जाएंगे, उनको मैं उस देश में पहुंचा
दूंगा, और वे उस देश को जान लेंगे जिस-
को तुम ने तुच्छ जाना है। ३२ परन्तु तुम
लोगों की लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी।
३३ और जब तक तुम्हारी लोथें जंगल में
न गल जाएं तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष
तक, तुम्हारे बालबच्चे जंगल में तुम्हारे
व्यभिचार का फल भोगते हुए चरवाही
करते रहेंगे। ३४ जितने दिन तुम उस
देश का भेद लेते रहे, अर्थात् चालीस दिन,
उनकी गिनती के अनुसार, दिन पीछे एक
वर्ष, अर्थात् चालीस वर्ष तक तुम अपने
अधर्म का दण्ड उठाए रहोगे, तब तुम
जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है।
३५ मैं यहोवा यह कह चुका हूं, कि इस
बुरी मण्डली के लोग जो मेरे विरुद्ध इकट्ठे
हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे, और
निःसन्देह ऐसा ही करूंगा भी। ३६ तब
जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने
के लिये भेजा था, और उन्हों ने लौटकर उस
देश की नामधराई करके सारी मण्डली को
कुड़कुड़ाने के लिये उभारा था, ३७ उस
देश की वे नामधराई करनेवाले पुरुष
यहोवा के मारने से उसके साम्हने मर गये।
३८ परन्तु देश के भेद लेनेवाले पुरुषों में
से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र
कालिब दोनों जीवित रहे। ३९ तब मूसा
ने ये बातें सब इस्राएलियों को कह सुनाईं
और वे बहुत विलाप करने लगे। ४० और
वे बिहान को सवेरे उठकर यह कहते हुए
पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम ने
पाप किया है, परन्तु अब तैयार हैं, और
उस स्थान को जाएंगे जिसके विषय यहोवा
ने वचन दिया था। ४१ तब मूसा ने कहा,
तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते
हो? यह सुफल न होगा। ४२ यहोवा
तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ो, नहीं तो
शत्रुओं से हार जाओगे। ४३ वहां तुम्हारे
आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, सो
तुम तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा
को छोड़कर फिर गए हो, इसलिये वह
तुम्हारे संग नहीं रहेगा। ४४ परन्तु वे
ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए,
परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और
मूसा, छावनी से न हटे। ४५ तब अमालेकी
और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन

---
* मूल में—हाथ उठाया।

पर चढ आए, और होर्मा तक उनको मारते
चले आए॥

(अन्नबलियों और अर्घों की विधि)

१५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियों से कह, कि जब तुम
अपने निवास के देश में पहुंचो, जो मैं तुम्हें
देता हूं, ३ और यहोवा के लिये क्या
होमबलि, क्या मेलबलि, कोई हव्य चढावो,
चाहे वह विशेष मन्नत पूरी करने का हो
चाहे स्वेच्छाबलि का हो, चाहे तुम्हारे
नियत समयों में का हो, या वह चाहे गाय-
बैल चाहे भेड-बकरियों में का हो, जिस से
यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो,
४ तब उस होमबलि वा मेलबलि के संग
भेड के बच्चे पीछे यहोवा के लिये चौथाई
हिन तेल से सना हुआ एपा का दसवां अंश
मैदा अन्नबलि करके चढाना, ५ और
चौथाई हिन दाखमधु अर्घ करके देना।
६ और मेढे पीछे तिहाई हिन तेल से सना
हुआ एपा का दो दसवां अंश मैदा अन्नबलि
करके चढाना, ७ और उसका अर्घ यहोवा
को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई हिन
दाखमधु देना। ८ और जब तू यहोवा को
होमबलि वा किसी विशेष मन्नत पूरी करने
के लिये बलि वा मेलबलि करके बछडा
चढाए, ९ तब बछडे का चढानेवाला
उसके संग आध हिन तेल से सना हुआ एपा
का तीन दसवां अंश मैदा अन्नबलि करके
चढाए। १० और उसका अर्घ आध हिन
दाखमधु चढाए, वह यहोवा को सुखदायक
सुगन्ध देनेवाला हव्य होगा। ११ एक एक
बछडे, वा मेढे, वा भेड के बच्चे, वा बकरी
के बच्चे के साथ इसी रीति चढावा चढाया
जाए। १२ तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी
गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार
एक एक के साथ ऐसा ही किया करना।
१३ जितने देशी हों वे यहोवा को सुख-
दायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढाते समय
ये काम इसी रीति से किया करें। १४ और
यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, वा
तुम्हारी किसी पीढी में तुम्हारे बीच कोई
रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुख-
दायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढाना चाहे,
तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह
भी करे। १५ मण्डली के लिये, अर्थात्
तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी
दोनों के लिये एक ही विधि हो, तुम्हारी
पीढी पीढी में यह सदा की विधि ठहरे, कि
जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के
लिये ठहरता है। १६ तुम्हारे और तुम्हारे
संग रहनेवाले परदेशियों के लिये एक ही
व्यवस्था और एक ही नियम है॥

१७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१८ इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना,
कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां मैं तुम
को लिये जाता हूं, १९ और उस देश की
उपज का अन्न खाओ, तब यहोवा के लिये
उठाई हुई भेंट चढाया करो। २० अपने
पहिले गूंधे हुए आटे की एक पपडी उठाई
हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढाना, जैसे
तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट
चढाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना।
२१ अपनी पीढी पीढी में अपने पहिले गूंधे
हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट
दिया करना॥

(अनजाने और जान बूझ के किए हुए
पापों का भेद)

२२ फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में
से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी
का उल्लंघन भूल से करो, २३ अर्थात्

जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और
आगे की तुम्हारी पीढी पीढी मे उस दिन से
उस ने जितनी आज्ञाए मूसा के द्वारा दी है,
२४ उस मे यदि भूल से किया हुआ पाप
मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी
मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने-
वाला होमबलि करके एक बछडा, और उस-
के सग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि
और अर्घ चढाए, और पापबलि करके एक
बकरा चढाए। २५ तब याजक इस्रा-
एलियो की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त
करे, और उनकी क्षमा की जाएगी,
क्योकि उनका पाप भूल से हुआ, और
उन्हो ने अपनी भूल के लिये अपना चढावा,
अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना
पापबलि उसके साम्हने चढाया। २६ सो
इस्राएलियो की सारी मण्डली का, और
उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह
पाप क्षमा किया जाएगा, क्योकि वह सब
लोगो के अनजान मे हुआ। २७ फिर यदि
कोई प्राणी भूल से पाप करे, तो वह एक
वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढाए।
२८ और याजक भूल से पाप करनेवाले
प्राणी के लिये यहोवा के साम्हने प्रायश्चित्त
करे, सो इस प्रायश्चित्त के कारण उसका
वह पाप क्षमा किया जाएगा। २९ जो
कोई भूल से कुछ करे, चाहे वह इस्राएलियो
मे देशी हो, चाहे तुम्हारे बीच परदेशी होकर
रहता हो, सब के लिये तुम्हारी एक ही
व्यवस्था हो। ३० परन्तु क्या देशी क्या
परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह
यहोवा का अनादर करनेवाला ठहरेगा,
और वह प्राणी अपने लोगो मे से नाश किया
जाए। ३१ वह जो यहोवा का वचन तुच्छ
जानता है, और उसकी आज्ञा का टालने-
वाला है, इसलिये वह प्राणी निश्चय नाश
किया जाए, उसका अधर्म उसी के सिर
पडेगा॥

३२ जब इस्राएली जगल मे रहते थे,
उन दिनो एक मनुष्य विश्राम के दिन लकडी
बीनता हुआ मिला। ३३ और जिनको
वह लकडी बीनता हुआ मिला, वे उसको
मूसा और हारून, और सारी मण्डली
के पास ले गए। ३४ उन्हो ने उसको
हवालात मे रखा, क्योकि ऐसे मनुष्य से
क्या करना चाहिये वह प्रकट नही किया
गया था। ३५ तब यहोवा ने मूसा से कहा,
वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए, सारी
मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर
पत्थरवाह करे। ३६ सो जैसा यहोवा ने
मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी
मण्डली के लोगो ने उसको छावनी से बाहर
ले जाकर पत्थरवाह किया, और वह मर
गया॥

३७ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
३८ इस्राएलियो से कह, कि अपनी पीढी
पीढी मे अपने वस्त्रो के कोर पर झालर
लगाया करना, और एक एक कोर की
झालर पर एक नीला फीता लगाया करना,
३९ और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर
ठहरे, जिस से जब जब तुम उसे देखो तब तब
यहोवा की सारी आज्ञाए तुम को स्मरण
आ जाए, और तुम उनका पालन करो,
और तुम अपने अपने मन और अपनी अपनी
दृष्टि के वश मे होकर व्यभिचार न करते
फिरो जैसे करते आए हो। ४० परन्तु तुम
यहोवा की सब आज्ञाओ को स्मरण करके
उनका पालन करो, और अपने परमेश्वर के
लिये पवित्र बनो। ४१ मै यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर हू, जो तुम्हे मिस्र देश से निकाल
ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरू, मै
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू॥

(कोरह दातान और अबीराम का मचाया
हुआ बलवा)

१६ कोरह जो लेवी का परपोता,
कहात का पोता, और यिसहार का
पुत्र था, वह एलीआब के पुत्र दातान और
अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन, २ इन
तीनो रूबेनियो से मिलकर मण्डली के
अढ़ाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी
थे, उनको संग लिया, ३ और वे मूसा
और हारून के विरुद्ध उठ खड़े हुए, और
उन से कहने लगे, तुम ने बहुत किया, अब
बस करो, क्योंकि सारी मण्डली का एक
एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके
मध्य में रहता है, इसलिये तुम यहोवा की
मण्डली में ऊचे पदवाले क्यो बन बैठे हो?
४ यह सुनकर मूसा अपने मुह के बल गिरा,
५ फिर उस ने कोरह और उसकी सारी
मण्डली से कहा, कि बिहान को यहोवा
दिखला देगा कि उसका कौन है, और
पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप
बुला लेगा, जिसको वह आप चुन लेगा
उसी को अपने समीप बुला भी लेगा।
६ इसलिये, हे कोरह, तुम अपनी सारी
मण्डली समेत यह करो, अर्थात् अपना अपना
धूपदान ठीक करो, ७ और कल उन मे
आग रखकर यहोवा के साम्हने धूप देना,
तब जिसको यहोवा चुन ले वही पवित्र
ठहरेगा। हे लेवियो, तुम भी बड़ी बड़ी बातें
करते हो, अब बस करो। ८ फिर मूसा ने
कोरह से कहा, हे लेवियो, सुनो, ९ क्या
यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है, कि
इस्राएल के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल की
मण्डली से अलग करके अपने निवास की
सेवकाई करने, और मण्डली के साम्हने खड़े
होकर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये
अपने समीप बुला लिया है, १० और तुझे
और तेरे सब लेवी भाइयो को भी अपने
समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजक
पद के भी खोजी हो? ११ और इसी
कारण तू ने अपनी सारी मण्डली को यहोवा
के विरुद्ध इकट्ठी किया है, हारून कौन है
कि तुम उस पर बुड़बुड़ाते हो? १२ फिर
मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और
अबीराम को बुलवा भेजा, और उन्हो ने
कहा, हम तेरे पास नही आएगे। १३ क्या
यह एक छोटी बात है, कि तू हम को ऐसे
देश से जिस में दूध और मधु की धाराए
बहती है इसलिये निकाल लाया है, कि हमें
जगल मे मार डाले, फिर क्या तू हमारे ऊपर
प्रधान भी बनकर अधिकार जताता है?
१४ फिर तू हमें ऐसे देश में जहा दूध और
मधु की धाराए बहती है नही पहुचाया,
और न हमें खेतो और दाख की बारियो के
अधिकारी किया। क्या तू इन लोगो की
आखो में धूलि* डालेगा? हम तो नही
आएगे। १५ तब मूसा का कोप बहुत
भडक उठा, और उस ने यहोवा से कहा, उन
लोगो की भेंट की ओर दृष्टि न कर। मैं ने
तो उन से एक गदहा नही लिया, और न
उन मे से किसी की हानि की है। १६ तब
मूसा ने कोरह से कहा, कल तू अपनी सारी
मण्डली को साथ लेकर हारून के साथ
यहोवा के साम्हने हाज़िर होना, १७ और
तुम सब अपना अपना धूपदान लेकर उन में
धूप देना, फिर अपना अपना धूपदान जो
सब समेत अढाई सौ होगे यहोवा के साम्हने
ले जाना, विशेष करके तू और हारून अपना
अपना धूपदान ले जाना। १८ सो उन्हो ने
अपना अपना धूपदान लेकर और उन में
आग रखकर उन पर धूप डाला, और मूसा

* मूल में—आंखें फोड़।

और हारून के साथ मिलापवाले तम्बू के
द्वार पर खडे हुए। १९ और कोरह ने
सारी मण्डली को उनके विरुद्ध मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया। तब
यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई
दिया ॥

२० तब यहोवा ने मूसा और हारून से
कहा, २१ उस मण्डली के बीच में से
अलग हो जाओ। कि मैं उन्हें पल भर में
भस्म कर डालू। २२ तब वे मुह के बल
गिरके कहने लगे, हे ईश्वर, हे सब
प्राणियो के आत्माओ के परमेश्वर, क्या
एक पुरुष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी
मण्डली पर होगा? २३ यहोवा ने मूसा
से कहा, २४ मण्डली के लोगो से कह, कि
कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओ के
आसपास से हट जाओ। २५ तब मूसा
उठकर दातान और अबीराम के पास
गया, और इस्राएलियो के वृद्ध लोग
उसके पीछे पीछे गए। २६ और उस
ने मण्डली के लोगो से कहा, तुम
उन दुष्ट मनुष्यो के डेरो के पास से
हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न
छूओ, कही ऐसा न हो कि तुम भी उनके
सब पापो मे फसकर मिट जाओ। २७ यह
सुन वे कोरह, दातान, और अबीराम के
तम्बुओ के आसपास से हट गए, परन्तु
दातान और अबीराम निकलकर अपनी
पत्नियो, बेटो, और बालबच्चों समेत अपने
अपने डेरे के द्वार पर खडे हुए। २८ तब
मूसा ने कहा, इस से तुम जान लोगे कि
यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम
करू, क्योकि मैं ने अपनी इच्छा से कुछ नही
किया। २९ यदि उन मनुष्यो की मृत्यु
और सब मनुष्यो के समान हो, और उनका
दण्ड सब मनुष्यो के समान हो, तब जानो
कि मैं यहोवा का भेजा हुआ नही हू।
३० परन्तु यदि यहोवा अपनी अनोखी
शक्ति प्रगट करे,* और पृथ्वी अपना मुह
पसारकर उनको, और उनका सब कुछ
निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में
जा पडे, तो तुम समझ लो कि इन मनुष्यो ने
यहोवा का अपमान किया है। ३१ वह ये
सब बातें कह ही चुका था, कि भूमि उन
लोगो के पाव के नीचे फट गई, ३२ और
पृथ्वी ने अपना मुह खोल दिया और उनका,
और उनका घरद्वार का सामान, और
कोरह के सब मनुष्यो और उनकी सारी
सम्पत्ति को भी निगल लिया। ३३ और
वे और उनका सारा घरबार जीवित ही
अधोलोक में जा पडे; और पृथ्वी ने उनको
ढाप लिया, और वे मण्डली के बीच मे
से नष्ट हो गए। ३४ और जितने इस्रा-
एली उनके चारो ओर थे वे उनका
चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे, कि कही
पृथ्वी हम को भी निगल न ले। ३५ तब
यहोवा के पास से आग निकली, और उन
अढाई सौ धूप चढानेवालो को भस्म कर
डाला ॥

३६ तब यहोवा ने मूसा से कहा,
३७ हारून याजक के पुत्र एलीआजार से
कह, कि उन धूपदानो को आग मे से उठा
ले, और आग के अगारो को उधर ही
छितरा दे, क्योकि वे पवित्र हैं। ३८ जिन्हो
ने पाप करके अपने ही प्राणोकी हानि की है,
उनके धूपदानो के पत्तर पीट पीटकर बनाए
जाए जिस से कि वह वेदी के मढने के काम
आवे, क्योकि उन्हो ने यहोवा के साम्हने
रखा था, इस से वे पवित्र है। इस प्रकार वह
इस्राएलियो के लिये एक निशान ठहरेगा।

* मूल में—यहोवा सृष्टि सिरजे।

३६ सो एलीआज़र याजक ने उन पीतल के
धूपदानों को, जिन में उन जले हुए मनुष्यों
ने धूप चढाया था, लेकर उनके पत्तर पीटकर
वेदी के मढने के लिये बनवा दिए, ४० कि
इस्राएलियों को इस बात का स्मरण रहे,
कि कोई दूसरा, जो हारून के वंश का न हो,
यहोवा के साम्हने धूप चढाने को समीप न
जाए, ऐसा न हो कि वह भी कोरह और
उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए,
जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उसको
आज्ञा दी थी॥
४१ दूसरे दिन इस्राएलियों की सारी
मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर
बुडबुडाने लगी, कि यहोवा की प्रजा को
तुम ने मार डाला है। ४२ और जब
मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरुद्ध
इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्हो ने मिलापवाले
तम्बू की ओर दृष्टि की, और देखा, कि
बादल ने उसे छा लिया है, और यहोवा का
तेज दिखाई दे रहा है। ४३ तब मूसा और
हारून मिलापवाले तम्बू के साम्हने आए,
४४ तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,
४५ तुम उस मण्डली के लोगो के बीच से
हट जाओ, कि मैं उन्हे पल भर में भस्म
कर डालूं। तब वे मुह के बल गिरे।
४६ और मूसा ने हारून से कहा, धूपदान
को लेकर उस में वेदी पर से आग रखकर
उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फुरती से
जाकर उसके लिये प्रायश्चित्त कर, क्योंकि
यहोवा का कोप अत्यन्त भडका है,* और
मरी फैलने लगी है। ४७ मूसा की आज्ञा
के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के
बीच में दौडा गया, और यह देखकर कि
लोगो में मरी फैलने लगी है, उस ने धूप
जलाकर लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया।
४८ और वह मुर्दों और जीवित के मध्य में
खडा हुआ, तब मरी थम गई। ४९ और
जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे,
उन्हें छोड जो लोग इस मरी से मर गए वे
चौदह हजार सात सौ थे। ५० तब हारून
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास
लौट गया, और मरी थम गई॥

(याजकों और लेवियों की मर्यादा और
कर्तव्य कर्म)

१७ तब यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो से बातें करके उन-
के पूर्वजो के घरानो के अनुसार, उनके सब
प्रधानो के पास से एक एक छडी ले, और
उन बारह छडियों में से एक एक पर एक
एक के मूल पुरुष का नाम लिख, ३ और
लेवियो की छडी पर हारून का नाम लिख।
क्योंकि इस्राएलियों के पूर्वजो के घरानो
के एक एक मुख्य पुरुष की एक एक छडी
होगी। ४ और उन छडियो को मिलाप-
वाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहां मैं तुम
लोगो से मिला करता हू, रख दे। ५ और
जिस पुरुष को मैं चुनूगा उसकी छडी में
कलियां फूट निकलेंगी, और इस्राएली जो
तुम पर बुडबुडाते रहते हैं, वह बुडबुडाना मैं
अपने ऊपर से दूर करूंगा। ६ सो मूसा ने
इस्राएलियो से यह बात कही, और उनके
सब प्रधानो ने अपने अपने लिये, अपने अपने
पूर्वजो के घरानो के अनुसार, एक एक छडी
उसे दी, सो बारह छडियां हुईं, और उन-
की छडियो में हारून की भी छडी थी।
७ उन छडियो को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू
में यहोवा के साम्हने रख दिया। ८ दूसरे
दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया, तो
क्या देखा, कि हारून की छडी जो लेवी के

* मूल में—यहोवा के सम्मुख से क्रोध
निकला है।

उत्तम भाग, जो पवित्र ठहरा है, सो उसे
यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट करके पूरी
पूरी देना। ३० इसलिये तू लेवियों से कह,
कि जब तुम उस में का उत्तम से उत्तम भाग
उठाकर दो, तब यह तुम्हारे लिये खलिहान
में के अन्न, और रसकुण्ड के रस के तुल्य
गिना जाएगा; ३१ और उसको तुम अपने
घरानों समेत सब स्थानों में खा सकते हो,
क्योंकि मिलापवाले तम्बू की जो सेवा तुम
करोगे उसका बदला यही ठहरा है।
३२ और जब तुम उसका उत्तम से उत्तम
भाग उठाकर दो तब उसके कारण तुम को
पाप न लगेगा। परन्तु इस्राएलियों की
पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना,
ऐसा न हो कि तुम मर जाओ॥

(लोथ आदि की स्पर्शजन्य अशुद्धता के निवारण का उपाय)

१९ फिर यहोवा ने मूसा और हारून
से कहा, २ व्यवस्था की जिस
विधि की आज्ञा यहोवा देता है वह यह है,
कि तू इस्राएलियों से कह, कि मेरे पास एक
लाल निर्दोष बछिया ले आओ, जिस में कोई
भी दोष न हो, और जिस पर जूआ कभी
न रखा गया हो। ३ तब उसे एलीआजर
याजक को दो, और वह उसे छावनी से बाहर
ले जाए, और कोई उसको उसके साम्हने
बलिदान करे; ४ तब एलीआजर याजक
अपनी उंगली से उसका कुछ लोहू लेकर
मिलापवाले तम्बू के साम्हने की ओर सात
बार छिड़क दे। ५ तब कोई उस बछिया
को खाल, मांस, लोहू, और गोबर समेत
उसके साम्हने जलाए; ६ और याजक
देवदारु की लकड़ी, जूफा, और लाल रङ्ग का
कपड़ा लेकर उस आग में जिस में बछिया
जलती हो डाल दे। ७ [illegible] अपने वस्त्र
धोए और स्नान करे, इसके बाद छावनी
में तो आए, परन्तु सांझ तक अशुद्ध रहे।
८ और जो मनुष्य उसको जलाए वह भी
जल में अपने वस्त्र धोए और स्नान करे,
और सांझ तक अशुद्ध रहे। ९ फिर कोई
शुद्ध पुरुष उस बछिया की राख बटोरकर
छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख
छोड़े, और वह राख इस्राएलियों की मण्डली
के लिये अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के लिये
रखी रहे; वह तो पापबलि है। १० और
जो मनुष्य बछिया की राख बटोरे वह अपने
वस्त्र धोए, और सांझ तक अशुद्ध रहे। और
यह इस्राएलियों के लिये, और उनके बीच
रहनेवाले परदेशियों के लिये भी सदा की
विधि ठहरे। ११ जो किसी मनुष्य की
लोथ छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे,
१२ ऐसा मनुष्य तीसरे दिन उस जल से
पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और
सातवें दिन शुद्ध ठहरे, परन्तु यदि वह तीसरे
दिन आप को पाप छुड़ाकर पावन न करे,
तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा। १३ जो
कोई किसी मनुष्य की लोथ छूकर पाप
छुड़ाकर अपने को पावन न करे, वह यहोवा
के निवासस्थान का अशुद्ध करनेवाला
ठहरेगा, और वह प्राणी इस्राएल में से नाश
किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल
उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह
अशुद्ध ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उस में बनी
रहेगी। १४ यदि कोई मनुष्य डेरे में मर
जाए तो व्यवस्था यह है, कि जितने उस
डेरे में रहें, वा उस में जाएं, वे सब सात
दिन तक अशुद्ध रहें। १५ और हर एक
खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा
न हो, वह अशुद्ध ठहरे। १६ और जो कोई
मैदान में तलवार से मारे हुए को, वा अपनी
मृत्यु से मरे हुए को, वा मनुष्य की हड्डी को,

वा किसी कब्र को छूए, तो सात दिन तक
अशुद्ध रहे। १७ अशुद्ध मनुष्य के लिये
जलाए हुए पापबलि की राख में से कुछ
लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का
जल डाला जाए, १८ तब कोई शुद्ध
मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डुबाकर
जल को उस डेरे पर, और जितने पात्र और
मनुष्य उस में हों, उन पर छिड़के, और हड्डी
के, वा मारे हुए के, वा अपनी मृत्यु से मरे
हुए के, वा कब्र के छूनेवाले पर छिड़क दे,
१९ वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें
दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के, और
सातवें दिन वह उसके पाप छुड़ाकर उसको
पावन करे, तब वह अपने वस्त्रों को धोकर
और जल से स्नान करके सांझ को शुद्ध
ठहरे। २० और जो कोई अशुद्ध होकर
अपने पाप छुड़ाकर अपने को पावन न कराए,
वह प्राणी यहोवा के पवित्र स्थान का अशुद्ध
करनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मण्डली
के बीच में से नाश किया जाए, अशुद्धता से
छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया,
इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा। २१ और
यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। जो
अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के वह
अपने वस्त्रों को धोए, और जिस जन से
अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छू जाए वह
भी सांझ तक अशुद्ध रहे। २२ और जो
कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध
ठहरे, और जो प्राणी उस वस्तु को छूए
वह भी सांझ तक अशुद्ध रहे॥

(मूसा और हारून का पाप और उस पाप का दण्ड)

२० पहिले महीने में सारी इस्राएली
मण्डली के लोग सीन नाम जंगल
में आ गए, और कादेश में रहने लगे, और
वहां मरियम मर गई, और वहीं उसको
मिट्टी दी गई। २ वहां मण्डली के लोगों
के लिये पानी न मिला, सो वे मूसा और
हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए। ३ और लोग
यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, कि भला
होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब
हमारे भाई यहोवा के साम्हने मर गए!
४ और तुम यहोवा की मण्डली को इस
जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने
पशुओं समेत यहां मर जाएं? ५ और तुम ने
हम को मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे
स्थान में पहुंचाया है? यहां तो बीज, वा
अंजीर, वा दाखलता, वा अनार, कुछ नहीं
है, यहां तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं
है। ६ तब मूसा और हारून मण्डली के
साम्हने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
जाकर अपने मुंह के बल गिरे। और यहोवा
का तेज उनको दिखाई दिया। ७ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, ८ उस लाठी को ले,
और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को
इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें
कर, तब वह अपना जल देगी, इस प्रकार
से तू चट्टान में से उनके लिये जल निकाल
कर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को
पिला। ९ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार
मूसा ने उसके साम्हने से लाठी को ले लिया।
१० और मूसा और हारून ने मण्डली को
उस चट्टान के साम्हने इकट्ठा किया, तब
मूसा ने उस से कहा, हे दंगा करनेवालो,
सुनो, क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे
लिये जल निकालना होगा? ११ तब मूसा
ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार
मारी, और उस में से बहुत पानी फूट
निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं
समेत पीने लगे। १२ परन्तु मूसा और

हारून से यहोवा ने कहा, तुम ने जो मुझ पर
विश्वास नही किया, और मुझे इस्राएलियो
की दृष्टि मे पवित्र नही ठहराया, इसलिये
तुम इस मण्डली को उस देश मे पहुचाने न
पाओगे जिसे मै ने उन्हे दिया है। १३ उस
सोते का नाम मरीबा पडा, क्योकि
इस्राएलियो ने यहोवा से झगडा किया
था, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया
गया ॥

(एदोमियों का इस्राएलियों को अपने पास
होकर चलने से बरजना)

१४ फिर मूसा ने कादेश से एदोम के
राजा के पास दूत भेजे, कि तेरा भाई इस्राएल
यो कहता है, कि हम पर जो जो क्लेश पडे
है वह तू जानता होगा, १५ अर्थात् यह
कि हमारे पुरखा मिस्र मे गए थे, और हम
मिस्र मे बहुत दिन रहे, और मिस्रियो ने
हमारे पुरखाओ के साथ और हमारे साथ
भी बुरा बर्ताव किया, १६ परन्तु जब
हम ने यहोवा की दोहाई दी तब उस ने
हमारी सुनी, और एक दूत को भेजकर हमे
मिस्र से निकाल ले आया है, सो अब हम
कादेश नगर मे है जो तेरे सिवाने ही पर है।
१७ सो हमे अपने देश मे से होकर जाने
दे। हम किसी खेत वा दाख की बारी से
होकर न चलेगे, और कूओ का पानी न
पीएगें; सडक-सडक होकर चले जाएगे, और
जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाए, तब
तक न दहिने न बाए मुडेगे। १८ परन्तु
एदोमियो ने उसके पास कहला भेजा, कि
तू मेरे देश मे से होकर मत जा, नही तो मै
तलवार लिये हुए तेरा साम्हना करने को
निकलूगा। १९ इस्राएलियो ने उसके पास
फिर कहला भेजा, कि हम सडक ही सडक
चलेंगे, और यदि हम और हमारे पशु तेरा
पानी पीए, तो उसका दाम देगे, हम को और
कुछ नही, केवल पाव पाव चलकर निकल
जाने दे। २० परन्तु उस ने कहा, तू आने
न पाएगा। और एदोम बडी सेना लेकर
भुजबल से उसका साम्हना करने को निकल
आया। २१ इस प्रकार एदोम ने इस्राएल
को अपने देश के भीतर मे होकर जाने देने
से इन्कार किया, इसलिये इस्राएल उसकी
ओर से मुड गए ॥

(हारून की मृत्यु)

२२ तब इस्राएलियो की सारी मण्डली
कादेश से कूच करके होर नाम पहाड के
पास आ गई। २३ और एदोम देश के
सिवाने पर होर पहाड मे यहोवा ने मूसा
और हारून से कहा, २४ हारून अपने
लोगो मे जा मिलेगा; क्योकि तुम दोनो ने
जो मरीबा नाम सोते पर मेरा कहना छोड-
कर मुझ से बलवा किया है, इस कारण वह
उस देश मे जाने न पाएगा जिसे मै ने इस्रा-
एलियो को दिया है। २५ सो तू हारून
और उसके पुत्र एलीआजर को होर पहाड
पर ले चल, २६ और हारून के वस्त्र
उतारके उसके पुत्र एलीआजर को पहिना,
तब हारून वही मरकर अपने लोगो मे जा
मिलेगा। २७ यहोवा की इस आज्ञा के
अनुसार मूसा ने किया, और वे सारी
मण्डली के देखते होर पहाड पर चढ गए।
२८ तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारके
उसके पुत्र एलीआजर को पहिनाए और
हारून वही पहाड की चोटी पर मर गया।
तब मूसा और एलीआजर पहाड पर से
उतर आए। २९ और जब इस्राएल की
सारी मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण
छूट गया है, तब इस्राएल के सब घराने के
लोग उसके लिये तीस दिन तक रोते रहे ॥

(कनानी राजा पर जय)

२१ तब अराद का कनानी राजा, जो
दक्खिन देश मे रहता था, यह सुन-
कर, कि जिस मार्ग से वे भेदिये आए थे उसी
मार्ग से अब इस्राएली आ रहे हैं, इस्राएल से
लड़ा, और उन में से कितनों को बन्धुआ कर
लिया। २ तब इस्राएलियों ने यहोवा से
यह कहकर मन्नत मानी, कि यदि तू सचमुच
उन लोगों को हमारे वश में कर दे, तो हम
उनके नगरों को सत्यानाश कर देंगे।
३ इस्राएल की यह बात सुनकर यहोवा ने
कनानियों को उनके वश में कर दिया, सो
उन्हों ने उनके नगरों समेत उनको भी
सत्यानाश किया, इस से उस स्थान का
नाम होर्मा * रखा गया॥

(पीतल का बना हुआ सर्प)

४ फिर उन्हों ने होर पहाड़ से कूच
करके लाल समुद्र का मार्ग लिया, कि एदोम
देश से बाहर बाहर घूमकर जाएं, और
लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल
हो गया। ५ सो वे परमेश्वर के विरुद्ध
बात करने लगे, और मूसा से कहा, तुम लोग
हम को मिस्र से जंगल में मरने के लिये
क्यों ले आए हो? यहां न तो रोटी है, और
न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी
रोटी से दुखित हैं। ६ सो यहोवा ने उन
लोगों में तेज विषवाले † सांप भेजे, जो
उनको डसने लगे, और बहुत से इस्राएली
मर गए। ७ तब लोग मूसा के पास जाकर
कहने लगे, हम ने पाप किया है, कि हम ने
यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें कीं हैं;
यहोवा से प्रार्थना कर, कि वह सांपों को
हम से दूर करे। तब मूसा ने उनके लिये
प्रार्थना की। ८ यहोवा ने मूसा से कहा,
एक तेज विषवाले * सांप की प्रतिमा बनवा-
कर खम्भे पर लटका, तब जो सांप से
डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित
बचेगा। ९ सो मूसा ने पीतल का एक सांप
बनवाकर खम्भे पर लटकाया, तब सांप के
डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के
सांप की ओर देखा वह जीवित बच गया।
१० फिर इस्राएलियों ने कूच करके ओबोत
में डेरे डाले। ११ और ओबोत से कूच
करके अबारीम नाम डीहों में डेरे डाले, जो
पूरब की ओर मोआब के साम्हने के जंगल
में है। १२ वहां से कूच करके उन्हों ने
जेरेद नाम नाले में डेरे डाले। १३ वहां
से कूच करके उन्हों ने अर्नोन नदी, जो
जंगल में बहती और एमोरियों के देश
से निकलती है, उसकी परली ओर डेरे
खड़े किए, क्योंकि अर्नोन मोआबियों और
एमोरियों के बीच होकर मोआब देश
का सिवाना ठहरा है। १४ इस कारण
यहोवा के संग्राम नाम पुस्तक में इस
प्रकार लिखा है,

कि सूपा में वाहेब,
और अर्नोन के नाले,
१५ और उन नालों की ढलान
जो आर नाम नगर की ओर है,
और जो मोआब के सिवाने पर
है †।

१६ फिर वहां से कूच करके वे बेर तक
गए, वहां वही कुआं है जिसके विषय में
यहोवा ने मूसा से कहा था, कि उन
लोगों को इकट्ठा कर, और मैं उन्हें पानी
दूंगा॥

---

* अर्थात् सत्यानाश।
† मूल में—जलते हुए।

* मूल में—जलते हुए।
† मूल में—ठहरी है।

१७ उस समय इस्राएल ने यह गीत
गाया, कि

हे कूए, उबल आ, उस कूए के
विषय मे गाओ!
१८ जिसको हाकिमो ने खोदा,
और इस्राएल के रईसो ने
अपने सोटो और लाठियो से खोद
लिया॥

१९ फिर वे जगल से मत्ताना को, और
मत्ताना से नहलीएल को, और नहलीएल से
बामोत को, २० और बामोत से कूच करके
उस तराई तक जो मोआब के मैदान मे है,
और पिसगा के उस सिरे तक भी जो
यशीमोन की ओर झुका है पहुच गए॥

(सीहोन और ओग नाम राजाओं का पराजय और उनका देश इस्राएलियों के वश में आना)

२१ तब इस्राएल ने एमोरियो के राजा
सीहोन के पास दूतो से यह कहला भेजा,
२२ कि हमे अपने देश मे होकर जाने दे;
हम मुडकर किसी खेत वा दाख की बारी मे
तो न जाएगे, न किसी कूए का पानी पीएगे,
और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाए
तब तक सडक ही से चले जाएगे। २३ तौभी
सीहोन ने इस्राएल को अपने देश मे होकर
जाने न दिया, वरन अपनी सारी सेना को
इकट्ठा करके इस्राएल का साम्हना करने को
जगल मे निकल आया, और यहस को आकर
उन से लडा। २४ तब इस्राएलियो ने उस-
को तलवार से मार लिया, और अर्नोन से
यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियो का
सिवाना था, उसके देश के अधिकारी हो
गए, अम्मोनियो का सिवाना तो दृढ था।
२५ सो इस्राएल ने एमोरियो के सब नगरो
को ले लिया, और उन मे, अर्थात् हेशबोन
और उसके आस पास के नगरो मे रहने-
लगे। २६ हेशबोन एमोरियो के राजा
सीहोन का नगर था, उस ने मोआब के
अगले राजा से लडके उसका सारा देश
अर्नोन तक उसके हाथ से छीन लिया था।
२७ इस कारण गूढ बात के कहनेवाले कहते
है, कि

हेशबोन मे आओ,
सीहोन का नगर बसे, और दृढ
किया जाए।
२८ क्योकि हेशबोन से आग,
अर्थात् सीहोन के नगर से लौ
निकली,
जिस से मोआब देश का आर नगर,
और अर्नोन के ऊचे स्थानो के
स्वामी भस्म हुए।
२९ हे मोआब, तुझ पर हाय!
कमोश देवता की प्रजा नाश हुई,
उस ने अपने बेटो को भगेडू,
और अपनी बेटियो को एमोरी राजा
सीहोन की दासी कर दिया।
३० हम ने उन्हे गिरा दिया है, हेशबोन
दीबोन तक नष्ट हो गया है,
और हम ने नोपह और
मेदबा तक भी उजाड दिया है॥

३१ सो इस्राएल एमोरियो के देश मे
रहने लगा। ३२ तब मूसा ने याजेर नगर
का भेद लेने को भेजा, और उन्हो ने उसके
गावो को ले लिया, और वहा के एमोरियो
को उस देश से निकाल दिया। ३३ तब वे
मुडके बाशान के मार्ग से जाने लगे, और
बाशान के राजा ओग ने उनका साम्हना
किया, अर्थात् लडने को अपनी सारी सेना
समेत एद्रेई मे निकल आया। ३४ तब
यहोवा ने मूसा से कहा, उस से मत डर,
क्योकि मै उसको सारी सेना और देश समेत
तेरे हाथ मे कर देता हू; और जैसा तू ने

एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के
साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी
करना। ३५ तब उन्होंने उसको, और
उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहां तक
मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे
उसके देश के अधिकारी हो गए।

२२ तब इस्राएलियों ने कूच करके
यरीहो के पास यर्दन नदी के इस
पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किए॥

(बिलाम का चरित्र)

२ और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा
कि इस्राएल ने एमोरियों से क्या क्या किया
है। ३ इसलिये मोआब यह जानकर, कि
इस्राएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यन्त
डर गया; यहां तक कि मोआब इस्राएलियों
के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ। ४ तब
मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा,
अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों
को ऐसा चट कर जाएगा, जिस तरह बैल
खेत की हरी घास को चट कर जाता है।
उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब
का राजा था; ५ और इस ने पतोर नगर
को, जो महानद के तट पर बोर के पुत्र
बिलाम के जातिभाइयों की भूमि थी, वहां
बिलाम के पास दूत भेजे, कि वे यह कह-
कर उसे बुला लाएं, कि सुन एक दल मिस्र
से निकल आया है, और भूमि उन से ढक गई
है, और अब वे मेरे साम्हने ही आकर बस
गए हैं। ६ इसलिये आ, और उन लोगों को
मेरे निमित्त शाप दे, क्योंकि वे मुझ से अधिक
बलवन्त हैं, तब सम्भव है कि हम उन पर
जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश
से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं
जानता हूं कि जिसको तू आशीर्वाद देता
है वह धन्य होता है, और जिसको तू शाप
देता है वह स्रापित होता है। ७ तब
मोआबी और मिद्यानी पुरनिये भावी कहने
की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास
पहुंचकर बालाक की बातें कह सुनाईं।
८ उस ने उन से कहा, आज रात को यहां
टिको, और जो बात यहोवा मुझ से कहेगा,
उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूंगा;
तब मोआब के हाकिम बिलाम के यहां ठहर
गए। ९ तब परमेश्वर ने बिलाम के पास
आकर पूछा, कि तेरे यहां ये पुरुष कौन
हैं? १० बिलाम ने परमेश्वर से कहा,
सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने
मेरे पास यह कहला भेजा है, ११ कि सुन,
जो दल मिस्र से निकल आया है उस से
भूमि ढंप गई है; इसलिये आकर मेरे लिये
उन्हें शाप दे; सम्भव है कि मैं उन से लड़कर
उनको बरबस निकाल सकूंगा। १२ पर-
मेश्वर ने बिलाम से कहा, तू इनके संग मत
जा; उन लोगों को शाप मत दे, क्योंकि
वे आशीष के भागी हो चुके हैं। १३ भोर
को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से
कहा, तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि
यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा
नहीं देता। १४ तब मोआबी हाकिम चले
गए और बालाक के पास जाकर कहा, कि
बिलाम ने हमारे साथ आने से नाह किया
है। १५ इस पर बालाक ने फिर और
हाकिम भेजे, जो पहिलों से प्रतिष्ठित और
गिनती में भी अधिक थे। १६ उन्होंने
बिलाम के पास आकर कहा, कि सिप्पोर का
पुत्र बालाक यों कहता है, कि मेरे पास आने
से किसी कारण नाह न कर; १७ क्योंकि
मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा, और
जो कुछ तू मुझ से कहे वही मैं करूंगा;
इसलिये आ, और उन लोगों को मेरे
निमित्त शाप दे। १८ बिलाम ने बालाक के

यहोवा ने मुझे सिखलाई क्या मुझे उसी
को सावधानी से बोलना न चाहिये ?
१३ बालाक ने उस से कहा, मेरे संग
दूसरे स्थान पर चल, जहां से वे तुझे
दिखाई देंगे, तू उन सभों को तो नहीं,
केवल बाहरवालों को देख सकेगा, वहां
से उन्हें मेरे लिये शाप दे। १४ तब वह
उसको सोपीम नाम मैदान में पिसगा के
सिरे पर ले गया, और वहां सात वेदियां
बनवाकर प्रत्येक पर एक बछड़ा और एक
मेढ़ा चढ़ाया। १५ तब बिलाम ने बालाक
से कहा, अपने होमबलि के पास यहीं खड़ा
रह, और मैं उधर जाकर यहोवा से भेंट
करूं। १६ और यहोवा ने बिलाम से भेंट
की, और उस ने उसके मुंह में एक बात
डाली, और कहा, कि बालाक के पास लौट
जा, और यों कहना। १७ और वह उसके
पास गया, और क्या देखता है, कि वह
मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के
पास खड़ा है। और बालाक ने पूछा, कि यहोवा
ने क्या कहा है ? १८ तब बिलाम ने अपनी
गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा,

हे बालाक, मन लगाकर * सुन,
हे सिप्पोर के पुत्र, मेरी बात पर
कान लगा

१९ ईश्वर मनुष्य नहीं, कि झूठ बोले,
और न वह आदमी है, कि अपनी
इच्छा बदले।
क्या जो कुछ उस ने कहा उसे न
करे ?
क्या वह वचन देकर उसे पूरा न
करे ?
२० देख, आशीर्वाद ही देने की आज्ञा
मैं ने पाई है
वह आशीष दे चुका है, और मैं
उसे नहीं पलट सकता।
२१ उस ने याकूब में अनर्थ नहीं पाया,
और न इस्राएल में अन्याय देखा
है।
उसका परमेश्वर यहोवा उसके
संग है,
और उन में राजा की सी ललकार
होती है।
२२ उनको मिस्र में से ईश्वर ही
निकाले लिये आ रहा है,
वह तो बनैले सांड के समान बल
रखता है।
२३ निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं
चल सकता, और इस्राएल पर
भावी कहना कोई अर्थ नहीं
रखता,
परन्तु याकूब और इस्राएल के
विषय अब यह कहा जाएगा,
कि ईश्वर ने क्या ही विचित्र काम
किया है !
२४ सुन, वह दल सिंहनी की नाईं उठेगा,
और सिंह की नाईं खड़ा होगा,
वह जब तक अहेर को न खा ले,
और मारे हुओं के लोहू को न
पी ले,
तब तक न लेटेगा॥

२५ तब बालाक ने बिलाम से कहा,
उनको न तो शाप देना, और न आशीष
देना। २६ बिलाम ने बालाक से कहा,
क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा, कि जो कुछ
यहोवा मुझ से कहेगा, वही मुझे करना
पड़ेगा ? २७ बालाक ने बिलाम से कहा,
चल, मैं तुझ को एक और स्थान पर ले
चलता हूं, सम्भव है कि परमेश्वर की इच्छा
हो कि तू वहां से उन्हें मेरे लिये शाप दे।

---

* मूल में—उठकर।

२८ तब बालाक बिलाम को पोर के सिरे
पर, जहां से यशीमोन देश दिखाई देता है,
ले गया। २९ और बिलाम ने बालाक से
कहा, यहां पर मेरे लिये सात वेदियां बनवा,
और यहां सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार
कर। ३० बिलाम के कहने के अनुसार
बालाक ने प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और
एक मेढ़ा चढ़ाया॥

२४ यह देखकर, कि यहोवा इस्राएल
को आशीष ही दिलाना चाहता है,
बिलाम पहिले की नाईं शकुन देखने को न
गया, परन्तु अपना मुंह जंगल की ओर कर
लिया। २ और बिलाम ने आंखें उठाईं,
और इस्राएलियों को अपने गोत्र गोत्र के
अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का
आत्मा उस पर उतरा। ३ तब उसने अपनी
गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है,
जिस पुरुष की आंखें बन्द थीं उसी की यह वाणी है,
४ ईश्वर के वचनों का सुननेवाला,
जो दण्डवत में पड़ा हुआ खुली हुई आंखों से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है,
उसी की यह वाणी है कि
५ हे याकूब, तेरे डेरे,
और हे इस्राएल, तेरे निवासस्थान
क्या ही मनभावने हैं!
६ वे तो नालों वा घाटियों की नाईं,
और नदी के तट की वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं,
जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर के वृक्ष,
और जल के निकट के देवदारु।
७ और उसके डोलों से जल उमण्डा करेगा,
और उसका बीज बहुतेरे जलभरे खेतों में पड़ेगा,
और उसका राजा अगाग से भी महान होगा,
और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा।
८ उसको मिस्र में से ईश्वर ही निकाले लिये आ रहा है,
वह तो बनैले सांड के समान बल रखता है,
जाति जाति के लोग जो उसके द्रोही हैं उनको वह खा जायेगा,
और उनकी हड्डियों को टुकड़े टुकड़े करेगा,
और अपने तीरों से उनको बेधेगा।
९ वह दबका बैठा है, वह सिंह वा सिंहनी की नाईं लेट गया है,
अब उसको कौन छेड़े?
जो कोई तुझे आशीर्वाद दे सो आशीष पाए,
और जो कोई तुझे शाप दे वह स्रापित हो॥

१० तब बालाक का कोप बिलाम पर
भड़क उठा, और उस ने हाथ पर हाथ
पटककर बिलाम से कहा, मैं ने तुझे अपने
शत्रुओं के शाप देने को बुलवाया, परन्तु
तू ने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद
दिया है। ११ इसलिये अब तू अपने स्थान
पर भाग जा, मैं ने तो सोचा था कि तेरी
बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा, परन्तु अब यहोवा ने
तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है।
१२ बिलाम ने बालाक से कहा, जो दूत तू
ने मेरे पास भेजे थे, क्या मैं ने उन से भी न
कहा था, १३ कि चाहे बालाक अपने घर

को सोने चादी से भरकर मुझे दे, तौभी
मैं यहोवा की आज्ञा तोडकर अपने मन से
न तो भला कर सकता हू और न बुरा,
जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहूगा ?
१४ अब सुन, मैं अपने लोगो के पास लौट
कर जाता हू, परन्तु पहिले मैं तुझे चिता
देता हू कि अन्त के दिनो मे वे लोग तेरी
प्रजा से क्या क्या करेंगे। १५ फिर वह
अपनी गूढ बात आरम्भ करके कहने
लगा, कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी
है,
जिस पुरुष की आखें बन्द थी
उसी की यह वाणी है,
१६ ईश्वर के वचनो का सुननेवाला,
और परमप्रधान के ज्ञान का
जाननेवाला,
जो दण्डवत मे पडा हुआ खुली
हुई आखो से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता
है,
उसी की यह वाणी है कि
१७ मैं उसको देखूगा तो सही, परन्तु
अभी नही,
मैं उसको निहारूगा तो सही,
परन्तु समीप होके नही
याकूब मे से एक तारा उदय होगा,
और इस्राएल मे से एक राज दण्ड
उठेगा,
जो मोआब की अलगो को चूर
कर देगा,
और सब दगा करनेवालो को
गिरा देगा।
१८ तब एदोम और सेईर भी, जो
उसके शत्रु है,
दोनों उसके वश में पड़ेंगे,
और इस्राएल वीरता दिखाता
जाएगा।
१९ और याकूब ही मे से एक अधिपति
आवेगा जो प्रभुता करेगा,
और नगर मे से बचे हुओ को भी
सत्यानाश करेगा॥
२० फिर उस ने अमालेक पर दृष्टि
करके अपनी गूढ बात आरम्भ
की, और कहने लगा,
अमालेक अन्यजातियो मे श्रेष्ठ
तो था,
परन्तु उसका अन्त विनाश ही
है॥
२१ फिर उस ने केनियो पर दृष्टि करके
अपनी गूढ बात आरम्भ की, और
कहने लगा,
तेरा निवासस्थान अति दृढ तो
है,
और तेरा बसेरा चट्टान पर तो
है,
२२ तौभी केन उजड जाएगा।
और अन्त मे अश्शूर तुझे बन्धुआई
मे ले आएगा॥
२३ फिर उस ने अपनी गूढ बात आरम्भ
की, और कहने लगा,
हाय जब ईश्वर यह करेगा तब
कौन जीवित बचेगा ?
२४ तौभी कित्तियो के पास से जहाज-
वाले आकर अश्शूर को और
एबेर को भी दु ख देंगे,
और अन्त मे उसका भी विनाश
हो जाएगा॥
२५ तब बिलाम चल दिया, और अपने
स्थान पर लौट गया, और
बालाक ने भी अपना मार्ग
लिया॥

(इस्राएलियों का वेश्यागमन और उसका दण्ड)

२५ इस्राएली शित्तीम में रहते थे,
और लोग मोआबी लड़कियों के
संग कुकर्म करने लगे। २ और जब उन
स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के
यज्ञों में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उन-
के देवताओं को दण्डवत करने लगे। ३ यों
इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे।
तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भड़क
उठा, ४ और यहोवा ने मूसा से कहा,
प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा
के लिये धूप में लटका दे, जिस से मेरा
भड़का हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर
हो जाए। ५ तब मूसा ने इस्राएली
न्यायियों से कहा, तुम्हारे जो जो आदमी
बालपोर के संग मिल गए हैं उन्हें घात
करो॥

६ और जब इस्राएलियों की सारी
मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रो
रही थी, तो एक इस्राएली पुरुष मूसा और
सब लोगों की आंखों के सामने एक मिद्यानी
स्त्री को अपने साथ अपने भाइयों के पास
ले आया। ७ इसे देखकर एलीआजर का
पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता
था, उस ने मण्डली में से उठकर हाथ में
एक बरछी ली, ८ और उस इस्राएली पुरुष
के डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया,
और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में
बरछी बेध दी। इस पर इस्राएलियों में जो
मरी फैल गई थी वह थम गई। ९ और
मरी से चौबीस हजार मनुष्य मर गए॥

१० तब यहोवा ने मूसा से कहा,
११ हारून याजक का पोता एलीआजर का
पुत्र पीनहास, जिसे इस्राएलियों के बीच मेरी
सी जलन उठी, उस ने मेरी जलजलाहट
को उन पर से यहां तक दूर किया है, कि मैं ने
जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला।
१२ इसलिये तू कह दे, कि मैं उस से शांति
की वाचा बान्धता हूं*, १३ और वह उसके
लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये,
सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि
उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी,
और उस ने इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त
किया। १४ जो इस्राएली पुरुष मिद्यानी
स्त्री के संग मारा गया, उसका नाम जिम्री
था, वह साल का पुत्र और शिमोनियों में से
अपने पितरों के घराने का प्रधान था।
१५ और जो मिद्यानी स्त्री मारी गई
उसका नाम कोजबी था, वह सूर की बेटी
थी, जो मिद्यानी पितरों के एक घराने के
लोगों का प्रधान था॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१७ मिद्यानियों को सता, और उन्हें मार,
१८ क्योंकि पोर के विषय और कोजबी
के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं।
कोजबी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी
और मिद्यानियों की जाति बहिन थी, और
मरी के दिन में पोर के मामले में मारी
गई॥

(इस्राएलियों की दूसरी बार गिनती लिए जाने का वर्णन)

२६ फिर यहोवा ने मूसा और
एलीआजर नाम हारून याजक के
पुत्र से कहा, २ इस्राएलियों की सारी
मण्डली में जितने बीस वर्ष के, वा उस से
अधिक अवस्था के होने से इस्राएलियों के
बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरों
के घरानों के अनुसार उन सभों की गिनती

* मूल में—मैं उसे अपनी शांतिवाली वाचा
देता हूं।

को सोने चादी से भरकर मुझे दे, तौभी
मैं यहोवा की आज्ञा तोडकर अपने मन से
न तो भला कर सकता हू और न बुरा,
जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहूगा?
१४ अब सुन, मै अपने लोगो के पास लौट
कर जाता हू, परन्तु पहिले मैं तुझे चिता
देता हू कि अन्त के दिनो मे वे लोग तेरी
प्रजा से क्या क्या करेगे। १५ फिर वह
अपनी गूढ बात आरम्भ करके कहने
लगा, कि

बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी
है,
जिस पुरुष की आखें बन्द थी
उसी की यह वाणी है,
१६ ईश्वर के वचनो का सुननेवाला,
और परमप्रधान के ज्ञान का
जाननेवाला,
जो दण्डवत मे पडा हुआ खुली
हुई आखो से
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता
है,
उसी की यह वाणी है: कि
१७ मै उसको देखूगा तो सही, परन्तु
अभी नही,
मै उसको निहारूगा तो सही,
परन्तु समीप होके नही·
याकूब मे से एक तारा उदय होगा,
और इस्राएल मे से एक राज दण्ड
उठेगा,
जो मोआब की अलगो को चूर
कर देगा,
और सब दगा करनेवालो को
गिरा देगा।
१८ तब एदोम और सेईर भी, जो
उसके शत्रु है,
दोनो उसके वश मे पडेंगे,
और इस्राएल वीरता दिखाता
जाएगा।
१९ और याकूब ही मे से एक अधिपति
आवेगा जो प्रभुता करेगा,
और नगर मे से बचे हुओ को भी
सत्यानाश करेगा॥
२० फिर उस ने अमालेक पर दृष्टि
करके अपनी गूढ बात आरम्भ
की, और कहने लगा,
अमालेक अन्यजातियो मे श्रेष्ठ
तो था,
परन्तु उसका अन्त विनाश ही
है॥
२१ फिर उस ने केनियो पर दृष्टि करके
अपनी गूढ बात आरम्भ की, और
कहने लगा,
तेरा निवासस्थान अति दृढ तो
है,
और तेरा बसेरा चट्टान पर तो
है;
२२ तौभी केन उजड जाएगा।
और अन्त मे अश्शूर तुझे बन्धुआई
मे ले आएगा॥
२३ फिर उस ने अपनी गूढ बात आरम्भ
की, और कहने लगा,
हाय जब ईश्वर यह करेगा तब
कौन जीवित बचेगा?
२४ तौभी कित्तियो के पास से जहाज-
वाले आकर अश्शूर को और
एबेर को भी दु ख देगे,
और अन्त मे उसका भी विनाश
हो जाएगा॥
२५ तब बिलाम चल दिया, और अपने
स्थान पर लौट गया, और
बालाक ने भी अपना मार्ग
लिया॥

(इस्राएलियों का वेश्यागमन और उसका दण्ड)

२५ इस्राएली शित्तीम मे रहते थे,
और लोग मोआबी लडकियो के
संग कुकर्म करने लगे। २ और जब उन
स्त्रीयो ने उन लोगो को अपने देवताओं के
यज्ञो में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उन-
के देवताओं को दण्डवत करने लगे। ३ यो
इस्राएली बालपोर देवता को पूजने लगे।
तब यहोवा का कोप इस्राएल पर भडक
उठा, ४ और यहोवा ने मूसा से कहा,
प्रजा के सब प्रधानो को पकडकर यहोवा
के लिये धूप में लटका दे, जिस से मेरा
भडका हुआ कोप इस्राएल के ऊपर से दूर
हो जाए। ५ तब मूसा ने इस्राएली
न्यायियो से कहा, तुम्हारे जो जो आदमी
बालपोर के संग मिल गए हैं उन्हें घात
करो॥

६ और जब इस्राएलियो की सारी
मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रो
रही थी, तो एक इस्राएली पुरुष मूसा और
सब लोगो की आंखो के सामने एक मिद्यानी
स्त्री को अपने साथ अपने भाइयो के पास
ले आया। ७ इसे देखकर एलीआजर का
पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता
था, उस ने मण्डली में से उठकर हाथ में
एक बरछी ली, ८ और उस इस्राएली पुरुष
के डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया,
और उस पुरुष और उस स्त्री दोनो के पेट में
बरछी बेध दी। इस पर इस्राएलियो में जो
मरी फैल गई थी वह थम गई। ९ और
मरी से चौबीस हजार मनुष्य मर गए॥

१० तब यहोवा ने मूसा से कहा,
११ हारून याजक का पोता एलीआजर का
पुत्र पीनहास, जिसे इस्राएलियो के बीच मेरी
सी जलन उठी, उस ने मेरी जलजलाहट
को उन पर से यहा तक दूर किया है, कि मैं ने
जलकर उनका अन्त नही कर डाला।
१२ इसलिये तू कह दे, कि मैं उस से शांति
की वाचा बान्धता हूं*, १३ और वह उसके
लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये,
सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि
उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी,
और उस ने इस्राएलियो के लिये प्रायश्चित्त
किया। १४ जो इस्राएली पुरुष मिद्यानी
स्त्री के संग मारा गया, उसका नाम जिम्री
था, वह साल का पुत्र और शिमोनियो में से
अपने पितरो के घराने का प्रधान था।
१५ और जो मिद्यानी स्त्री मारी गई
उसका नाम कोजबी था, वह सूर की बेटी
थी, जो मिद्यानी पितरो के एक घराने के
लोगो का प्रधान था॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१७ मिद्यानियो को सता, और उन्हे मार,
१८ क्योंकि पोर के विषय और कोजबी
के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं।
कोजबी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी
और मिद्यानियों की जाति बहिन थी, और
मरी के दिन में पोर के मामले में मारी
गई॥

(इस्राएलियों की दूसरी बार गिनती लिए जाने का वर्णन)

२६ फिर यहोवा ने मूसा और
एलीआजर नाम हारून याजक के
पुत्र से कहा, २ इस्राएलियो की सारी
मण्डली मे जितने बीस वर्ष के, वा उस से
अधिक अवस्था के होने से इस्राएलियो के
बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरो
के घरानो के अनुसार उन सभो की गिनती

* मूल में—मैं उसे अपनी शांतिवाली वाचा देता हूं।

करो। ३ सो मूसा और एलीआजर याजक
ने यरीहो के पास यरदन नदी के तीर पर
मोआब के अराबा मे उन से समझाके कहा,
४ बीस वर्ष के और उस से अधिक अवस्था
के लोगो की गिनती लो, जैसे कि यहोवा ने
मूसा और इस्राएलियो को मिस्र देश से
निकल आने के समय आज्ञा दी थी॥

५ रूबेन जो इस्राएल का जेठा था, उसके
ये पुत्र थे, अर्थात् हनोक, जिस से हनोकियो
का कुल चला, और पल्लू, जिस से पल्लूइयो
का कुल चला, ६ हेस्रोन, जिस से हेस्रो-
नियो का कुल चला, और कर्मी, जिस से
कर्मियो का कुल चला। ७ रूबेनवाले कुल
ये ही थे, और इन मे से जो गिने गए वे
तैतालीस हजार सात सौ तीस पुरुष थे।
८ और पल्लू का पुत्र एलीआब था।
९ और एलीआब के पुत्र नमूएल, दातान,
और अबीराम थे। ये वही दातान और
अबीराम है जो सभासद थे, और जिस
समय कोरह की मण्डली ने यहोवा से झगडा
किया था, उस समय उस मण्डली मे मिल-
कर वे भी मूसा और हारून से झगडे थे,
१० और जब उन अढाई सौ मनुष्यो के
आग मे भस्म हो जाने से वह मण्डली
मिट गई, उसी समय पृथ्वी ने मुह खोलकर
कोरह समेत इनको भी निगल लिया, और
वे एक दृष्टान्त ठहरे। ११ परन्तु कोरह
के पुत्र तो नही मरे थे॥

१२ शिमोन के पुत्र जिन से उनके कुल
निकले वे ये थे, अर्थात् नमूएल, जिस से
नमूएलियो का कुल चला, और यामीन,
जिस से यामीनियो का कुल चला, और
याकीन, जिस से याकीनियो का कुल चला,
१३ और जेरह, जिस से जेरहियो का कुल
चला, और शाऊल, जिस से शाऊलियो का
कुल चला। १४ शिमोनवाले कुल ये ही
थे, इन मे से बाईस हजार दो सौ पुरुष
गिने गए॥

१५ और गाद के पुत्र जिन से उनके
कुल निकले वे ये थे, अर्थात् सपोन, जिस से
सपोनियो का कुल चला, और हाग्गी, जिस
से हाग्गियो का कुल चला, और शूनी, जिस
से शूनियो का कुल चला, और ओजनी, जिस
से ओजनियो का कुल चला, १६ और एरी,
जिस से एरियो का कुल चला, और अरोद,
जिस से अरोदियो का कुल चला, १७ और
अरेली, जिस से अरेलियो का कुल चला।
१८ गाद के वंश के कुल ये ही थे, इन मे से
साढे चालीस हजार पुरुष गिने गए॥

१९ और यहूदा के एर और ओनान
नाम पुत्र तो हुए, परन्तु वे कनान देश मे मर
गए। २० और यहूदा के जिन पुत्रो से
उनके कुल निकले वे ये थे, अर्थात् शेला,
जिस से शेलियो का कुल चला, और पेरेस,
जिस से पेरेसियो का कुल चला, और जेरह,
जिस से जेरहियो का कुल चला। २१ और
पेरेस के पुत्र ये थे, अर्थात् हेस्रोन, जिस से
हेस्रोनियो का कुल चला, और हामूल, जिस
से हामूलियो का कुल चला। २२ यहूदियो
के कुल ये ही थे, इन मे से साढे छिहत्तर
हजार पुरुष गिने गए॥

२३ और इस्साकार के पुत्र जिन से
उनके कुल निकले वे ये थे, अर्थात तोला,
जिस से तोलियो का कुल चला, और पुव्वा,
जिस से पुव्वियो का कुल चला, २४ और
याशूब, जिस से याशूबियो का कुल चला,
और शिम्रोन, जिस से शिम्रोनियो का कुल
चला। २५ इस्साकारियो के कुल ये ही
थे, इन मे से चौसठ हजार तीन सौ पुरुष
गिने गए॥

२६ और जबूलून के पुत्र जिन से उनके
कुल निकले वे ये थे, अर्थात् सेरेद, जिस से

मेरेदियो का कुल चला, और एलोन, जिन
से एलोनियो का कुल चला, और यहलेल,
जिस से यहलेलियो का कुल चला।
२७ जबूलूनियो के कुल ये ही थे, इन मे
से साढ़े साठ हजार पुरुष गिने गए॥

२८ और यूसुफ के पुत्र जिन से उनके
कुल निकले वे मनश्शे और एप्रैम थे।
२९ मनश्शे के पुत्र ये थे, अर्थात् माकीर,
जिस से माकीरियो का कुल चला, और
माकीर से गिलाद उत्पन्न हुआ, और गिलाद
से गिलादियो का कुल चला। ३० गिलाद
के तो पुत्र ये थे, अर्थात् ईएजेर, जिस से
ईएजेरियो का कुल चला, ३१ और हेलेक,
जिस से हेलेकियो का कुल चला और अस्री-
एल, जिस से अस्रीएलियो का कुल चला,
और शकेम, जिस से शेकेमियो का कुल
चला, और शमीदा, जिस से शमीदियो का
कुल चला, ३२ और हेपेर, जिस से हेपेरियो
का कुल चला। ३३ और हेपेर के पुत्र सलो-
फाद के बेटे नही, केवल बेटिया हुई, इन
बेटियो के नाम महला, नोआ, होग्ला,
मिल्का, और तिर्सा है। ३४ मनश्शेवाले
कुल ये ही थे, और इन मे से जो गिने गए
वे बावन हजार सात सौ पुरुष थे॥

३५ और एप्रैम के पुत्र जिन से उनके
कुल निकले वे ये थे, अर्थात् शूतेलह, जिस
से शूतेलहियो का कुल चला, और बेकेर,
जिस से बेकेरियो का कुल चला, और तहन,
जिस से तहनियो का कुल चला। ३६ और
शूतेलह के यह पुत्र हुआ, अर्थात् एरान, जिस
से एरानियो का कुल चला। ३७ एप्रैमियो
के कुल ये ही थे, इन मे से साढ़े बत्तीस हजार
पुरुष गिने गए। अपने कुलो के अनुसार
यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे॥

३८ और बिन्यामीन के पुत्र जिन से
उनके कुल निकले वे ये थे, अर्थात् बेला
जिस से बेलियो का कुल चला, और अशबेल,
जिस से अशबेलियो का कुल चला, और
अहीराम, जिस से अहीरामियो का कुल
चला, ३९ और शपूपाम, जिस से शपूपा-
मियो का कुल चला, और हूपाम, जिस से
हूपामियो का कुल चला। ४० और बेला के
पुत्र अर्द और नामान थे, तथा अर्द से तो
अर्दियो का कुल, और नामान से नामानियो
का कुल चला। ४१ अपने कुलो के अनुसार
बिन्यामीनी ये ही थे, और इन मे से जो
गिने गए वे पैंतालीस हजार छ सौ
पुरुष थे॥

४२ और दान का पुत्र जिस से उनका
कुल निकला यह था, अर्थात् शूहाम, जिस से
शूहामियो का कुल चला। और दान का
कुल यही था। ४३ और शूहामियो मे से
जो गिने गए उनके कुल मे चौसठ हजार
चार सौ पुरुष थे॥

४४ और आशेर के पुत्र जिन से उनके
कुल निकले वे ये थे, अर्थात् यिम्ना, जिस से
यिम्नियो का कुल चला, यिश्वी, जिस से
यिश्वियो का कुल चला, और बरीआ, जिस
से बरीइयो का कुल चला। ४५ फिर बरीआ
के ये पुत्र हुए, अर्थात् हेबेर, जिस से हेबेरियो
का कुल चला, और मल्कीएल, जिस से
मल्कीएलियो का कुल चला। ४६ और
आशेर की बेटी का नाम सेरह है।
४७ आशेरियो के कुल ये ही थे, इन मे से
तिरपन हजार चार सौ पुरुष गिने गए॥

४८ और नप्ताली के पुत्र जिन से उनके
कुल निकले वे ये थे, अर्थात् यहसेल, जिस से
यहसेलियो का कुल चला, और गूनी, जिस
से गूनियो का कुल चला, ४९ येसेर, जिस
से येसेरियो का कुल चला, और शिल्लेम,
जिस से शिल्लेमियो का कुल चला।
५० अपने कुलो के अनुसार नप्ताली के कुल

लिये चढाना होगा वे ये है, अर्थात् नित्य
होमवलि के लिये एक एक वर्ष के दो
निर्दोष भेडी के बच्चे प्रतिदिन चढाया करे।
४ एक बच्चे को भोर को और दूसरे को
गोधूलि के समय चढाना, ५ और भेड के
बच्चे के पीछे एक चौथाई हीन कूटके
निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवे
अश मैदे का अन्नवलि चढाना। ६ यह
नित्य होमवलि है, जो सीनै पर्वत पर
यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने
के लिये ठहराया गया। ७ और उसका
अर्घ प्रति एक भेड के बच्चे के सग एक
चौथाई हीन हो, मदिरा का यह अर्घ यहोवा
के लिये पवित्रस्थान मे देना। ८ और
दूसरे बच्चे को गोधूलि के समय चढाना,
अन्नवलि और अर्घ समेत भोर के होमवलि
की नाई उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध
देनेवाला हव्य करके चढाना॥

९ फिर विश्रामदिन को दो निर्दोष भेड
के एक साल के नर बच्चे, और अन्नवलि के
लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवा
अश मैदा अर्घ समेत चढाना। १० नित्य
होमवलि और उसके अर्घ के अलावा
प्रत्येक विश्रामदिन का यही होमवलि ठहरा
है॥

११ फिर अपने महीनो के आरम्भ मे
प्रतिमास यहोवा के लिये होमवलि चढाना;
अर्थात् दो बछडे, एक मेढा, और एक एक
वर्ष के निर्दोष भेड के सात बच्चे, १२ और
बछडे पीछे तेल मे सना हुआ एपा का तीन
दसवा अश मैदा, और उस एक मेढे के साथ
तेल से सना हुआ एपा का दो दसवा अश
मैदा, १३ और प्रत्येक भेड के बच्चे के
पीछे तेल मे सना हुआ एपा का दसवा अश
मैदा, उन सभो को अन्नवलि करके चढाना,
वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमवलि
और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा। १४ और
उनके साथ ये अर्घ हो, अर्थात् बछडे पीछे
आध हीन, मेढे के साथ तिहाई हीन, और
भेड के बच्चे पीछे चौथाई हीन दाखमधु
दिया जाए, वर्ष के सब महीनो मे से प्रति
एक महीने का यही होमवलि ठहरे।
१५ और एक बकरा पापवलि करके यहोवा
के लिये चढाया जाए, यह नित्य होमवलि
और उसके अर्घ के अलावा चढाया जाए॥

१६ फिर पहिले महीने के चौदहवे दिन
को यहोवा का फसह हुआ करे। १७ और
उसी महीने के पन्द्रहवे दिन को पर्व्व लगा
करे, सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई
जाए। १८ पहिले दिन पवित्र सभा हो;
और उस दिन परिश्रम का कोई काम
न किया जाए, १९ उस मे तुम यहोवा
के लिये एक हव्य, अर्थात् होमवलि चढाना,
सो दो बछडे, एक मेढा, और एक एक वर्ष के
सात भेड के बच्चे हो, ये सब निर्दोष हो,
२० और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए
मैदे का हो, बछडे पीछे एपा का तीन दसवा
अश और मेढे के साथ एपा का दो दसवा
अश मैदा हो। २१ और सातो भेड के
बच्चो मे से प्रति एक बच्चे पीछे एपा का
दसवा अश चढाना। २२ और एक बकरा
भी पापवलि करके चढाना, जिस से तुम्हारे
लिये प्रायश्चित्त हो। २३ भोर का होम-
वलि जो नित्य होमवलि ठहरा है, उसके
अलावा इनको चढाना। २४ इस रीति
मे तुम उन सातो दिनो मे भी हव्य का भोजन
चढाना, जो यहोवा को सुखदायक सुगन्ध
देने के लिये हो, यह नित्य होमवलि और
उसके अर्घ के अलावा चढाया जाए।
२५ और सातवे दिन भी तुम्हारी पवित्र
सभा हो, और उस दिन परिश्रम का कोई
काम न करना॥

२६ फिर पहिली उपज के दिन में, जब
तुम अपने अठवारे नाम पर्ब्ब में यहोवा के
लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे, तब भी
तुम्हारी पवित्र सभा हो, और परिश्रम का
कोई काम न करना। २७ और एक होम-
बलि चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिये सुख-
दायक सुगन्ध हो, अर्थात् दो बछड़े, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे,
२८ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए
मैदे का हो, अर्थात् बछड़े पीछे एपा का तीन
दसवां अंश, और मेढ़े के संग एपा का दो
दसवां अंश, २९ और सातों भेड़ के बच्चों
में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां
अंश मैदा चढ़ाना। ३० और एक बकरा
भी चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त
हो। ३१ ये सब निर्दोष हों, और नित्य
होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के
अलावा इनको भी चढ़ाना॥

२९ फिर सातवें महीने के पहिले
दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो,
उस में परिश्रम का कोई काम न करना।
वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा
फूंकने का दिन ठहरा है, २ तुम होमबलि
चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिये सुखदायक
सुगन्ध हो, अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के
बच्चे, ३ और उनका अन्नबलि तेल से सने
हुए मैदे का हो, अर्थात बछड़े के साथ एपा
का तीन दसवां अंश, और मेढ़े के साथ एपा
का दो दसवां अंश, ४ और सातों भेड़ के
बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का
दसवां अंश मैदा चढ़ाना। ५ और एक
बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिस से
तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। ६ इन सभों
से अधिक नये चांद का होमबलि और उसका
अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका
अन्नबलि, और उन सभों के अर्घ भी उनके
नियम के अनुसार सुखदायक सुगन्ध देने के
लिये यहोवा का हव्य करके चढ़ाना॥

७ फिर उसी सातवें महीने के दसवें
दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो, तुम
अपने अपने प्राण को दुःख देना, और किसी
प्रकार का कामकाज न करना, ८ और
यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देने को
होमबलि, अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे
चढ़ाना, फिर ये सब निर्दोष हों, ९ और
उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो,
अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवां
अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवां
अंश, १० और सातों भेड़ के बच्चों में से
एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवां अंश
मैदा चढ़ाना। ११ और पापबलि के लिये
एक बकरा भी चढ़ाना, ये सब प्रायश्चित्त
के पापबलि और नित्य होमबलि और उसके
अन्नबलि के, और उन सभों के अर्घों के
अलावा चढ़ाए जाएं॥

१२ फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन
को तुम्हारी पवित्र सभा हो, और उस में
परिश्रम का कोई काम न करना, और सात
दिन तक यहोवा के लिये पर्ब्ब मानना,
१३ तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक
सुगन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना,
अर्थात् तेरह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक
एक वर्ष के चौदह भेड़ के बच्चे, ये सब
निर्दोष हों, १४ और उनका अन्नबलि तेल
से सने हुए मैदे का हो, अर्थात तेरहों
बछड़ों में से एक एक बछड़े के पीछे एपा का
तीन दसवां अंश, और दोनों मेढ़ों में से एक
एक मेढ़े के पीछे एपा का दो दसवां अंश,
१५ और चौदहों भेड़ के बच्चों में से एक

ये ही थे, और इन मे से जो गिने गए वे
पैंतालीस हजार चार सौ पुरुष थे ॥

५१ सब इस्राएलियो मे से जो गिने गए
थे वे ये ही थे; अर्थात् छ लाख एक
हज़ार सात सौ तीस पुरुष थे ॥

५२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
५३ इनको, इनकी गिनती के अनुसार,
वह भूमि इनका भाग होने के लिये बाट दी
जाए। ५४ अर्थात् जिस कुल मे अधिक हो
उनको अधिक भाग, और जिस मे कम हो
उनको कम भाग देना, प्रत्येक गोत्र को
उसका भाग उसके गिने हुए लोगो के
अनुसार दिया जाए। ५५ तौभी देश
चिट्ठी डालकर बाटा जाए, इस्राएलियों के
पितरो के एक एक गोत्र का नाम, जैसे जैसे
निकले वैसे वैसे वे अपना अपना भाग पाए।
५६ चाहे बहुतो का भाग हो चाहे थोडो
का हो, जो जो भाग बाटे जाए वह चिट्ठी
डालकर बाटे जाए ॥

५७ फिर लेवियो मे से जो अपने कुलो
के अनुसार गिने गए वे ये है, अर्थात् गेर्शो-
नियो से निकला हुआ गेर्शोनियो का कुल,
कहात मे निकला हुआ कहातियो का कुल,
और मरारी से निकला हुआ मरारियो का
कुल। ५८ लेवियो के कुल ये है; अर्थात्
लिब्नियो का, हेब्रोनियो का, महलियो का,
मूशियो का, और कोरहियो का कुल। और
कहात से अम्राम उत्पन्न हुआ। ५९ और
अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद है, वह
लेवी के वश की थी जो लेवी के वश मे मिस्र
देश मे उत्पन्न हुई थी, और वह अम्राम मे
हारून और मूसा और उनकी बहिन मरियम
को भी जनी। ६० और हारून से नादाब,
अबीहू, एलीआज़र, और ईतामार उत्पन्न
हुए। ६१ नादाब और अबीहू तो उस
समय मर गए थे, जब वे यहोवा के साम्हने
ऊपरी आग ले गए थे। ६२ सब लेवियो
मे से जो गिने गये, अर्थात् जितने पुरुष एक
महीने के वा उस से अधिक अवस्था के थे,
वे तेईस हजार थे, वे इस्राएलियो के बीच
इसलिये नही गिने गए, क्योकि उनको देश
का कोई भाग नही दिया गया था ॥

६३ मूसा और एलीआज़र याजक
जिन्हो ने मोआब के अराबा मे यरीहो के
पास की यरदन नदी के तट पर इस्राएलियो
को गिन लिया, उनके गिने हुए लोग इतने
ही थे। ६४ परन्तु जिन इस्राएलियो को
मूसा और हारून याजक ने सीनै के जगल
मे गिना था, उन मे से एक भी पुरुष इस
समय के गिने हुओ मे न था। ६५ क्योकि
यहोवा ने उनके विषय कहा था, कि वे
निश्चय जगल मे मर जाएगे, इसलिये
यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू
को छोड, उन मे से एक भी पुरुष नही बचा ॥

(सलोफाद की बेटियों की बिनती)

२७ तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के
वश के कुलो मे से सलोफाद, जो
हेपेर का पुत्र, और गिलाद का पोता, और
मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था,
उसकी बेटिया जिनके नाम महला, नोवा,
होग्ला, मिलका, और तिर्सा है वे पास
आई। २ और वे मूसा और एलीआज़र
याजक और प्रधानो और सारी मण्डली के
साम्हने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खडी
होकर कहने लगी, ३ हमारा पिता जगल
मे मर गया, परन्तु वह उस मण्डली मे का
न था जो कोरह की मण्डली के सग होकर
यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी हुई थी, वह अपने
ही पाप के कारण मरा, और उसके कोई
पुत्र न था। ४ तो हमारे पिता का नाम
उसके कुल मे से पुत्र न होने के कारण क्यो

मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी
कुछ भूमि निज भाग करके दे। ५ उनकी
यह बिनती मूसा ने यहोवा को सुनाई।
६ यहोवा ने मूसा से कहा, ७ सलोफाद
की बेटियां ठीक कहती हैं, इसलिये तू उनके
चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही
कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात्
उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे।
८ और इस्राएलियों से यह कह, कि यदि
कोई मनुष्य निपुत्र मर जाए, तो उसका
भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना। ९ और
यदि उसके कोई बेटी भी न हो, तो उसका
भाग उसके भाइयों को देना। १० और
यदि उसके भाई भी न हों, तो उसका भाग
उसके चाचाओं को देना। ११ और यदि
उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से
उसका जो कुटुम्बी सब से समीप हो उसको
उसका भाग देना, कि वह उसका अधिकारी
हो। इस्राएलियों के लिये यह न्याय की
विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को
आज्ञा दी॥

(यहोशू के मूसा के स्थान पर नियुक्त किए जाने का वर्णन)

१२ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस
अबारीम नाम पर्वत के ऊपर चढके उस देश
को देख ले जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया
है। १३ और जब तू उसको देख लेगा,
तब अपने भाई हारून की नाईं तू भी अपने
लोगों में जा मिलेगा, १४ क्योंकि सीन नाम
जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगडने
के समय मेरी आज्ञा को तोडकर मुझ से
बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी
दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया। (यह मरीबा
नाम सोता है जो सीन नाम जंगल के कादेश
में है)। १५ मूसा ने यहोवा से कहा,
१६ यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं
का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों
के ऊपर किसी पुरुष को नियुक्त कर दे,
१७ जो उनके साम्हने आया जाया करे,
और उनका निकालने और पैठानेवाला
हो, जिस से यहोवा की मण्डली बिना
चरवाहे की भेड बकरियों के समान न रहे।
१८ यहोवा ने मूसा से कहा, तू नून के पुत्र
यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख, वह तो
ऐसा पुरुष है जिस में मेरा आत्मा बसा है,
१९ और उसको एलीआजर याजक के
और सारी मण्डली के साम्हने खडा करके
उनके साम्हने उसे आज्ञा दे। २० और
अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिस से
इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना
करे। २१ और वह एलीआजर याजक के
साम्हने खडा हुआ करे, और एलीआजर
उसके लिये यहोवा से ऊरीम की आज्ञा
पूछा करे, और वह इस्राएलियों की सारी
मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे,
और उसी के कहने से लौट भी आया करे।
२२ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा
ने यहोशू को लेकर, एलीआजर याजक
और सारी मण्डली के साम्हने खडा करके,
२३ उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी
जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था॥

(नियत नियत समयों के विशेष विशेष बलिदान)

२८ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियों को यह आज्ञा सुना,
कि मेरा चढावा, अर्थात् मुझे सुखदायक
सुगन्ध देनेवाला मेरा हव्यरूपी भोजन, तुम
लोग मेरे लिये उनके नियत समयों पर
चढाने के लिये स्मरण रखना। ३ और
तू उन से कह, कि जो जो तुम्हें यहोवा के

लिये चढाना होगा वे ये है, अर्थात् नित्य
होमबलि के लिये एक एक वर्ष के दो
निर्दोष भेडी के बच्चे प्रतिदिन चढाया करे।
४ एक बच्चे को भोर को और दूसरे को
गोधूलि के समय चढाना, ५ और भेड के
बच्चे के पीछे एक चौथाई हीन कूटके
निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवे
अश मैदे का अन्नबलि चढाना। ६ यह
नित्य होमबलि है, जो सीनै पर्वत पर
यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने
के लिये ठहराया गया। ७ और उसका
अर्घ प्रति एक भेड के बच्चे के सग एक
चौथाई हीन हो, मदिरा का यह अर्घ यहोवा
के लिये पवित्रस्थान मे देना। ८ और
दूसरे बच्चे को गोधूलि के समय चढाना,
अन्नबलि और अर्घ समेत भोर के होमबलि
की नाई उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध
देनेवाला हव्य करके चढाना॥

९ फिर विश्रामदिन को दो निर्दोष भेड
के एक साल के नर बच्चे, और अन्नबलि के
लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवा
अश मैदा अर्घ समेत चढाना। १० नित्य
होमबलि और उसके अर्घ के अलावा
प्रत्येक विश्रामदिन का यही होमबलि ठहरा
है॥

११ फिर अपने महीनो के आरम्भ मे
प्रतिमास यहोवा के लिये होमबलि चढाना,
अर्थात् दो बछडे, एक मेढा, और एक एक
वर्ष के निर्दोष भेड के सात बच्चे, १२ और
बछडे पीछे तेल मे सना हुआ एपा का तीन
दसवा अश मैदा, और उस एक मेढे के साथ
तेल मे सना हुआ एपा का दो दसवा अश
मैदा, १३ और प्रत्येक भेड के बच्चे के
पीछे तेल मे सना हुआ एपा का दसवा अश
मैदा इन सभों को अन्नबलि करके चढाना,
यह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि
और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा। १४ और
उनके साथ ये अर्घ हो, अर्थात् बछडे पीछे
आध हीन, मेढे के साथ तिहाई हीन, और
भेड के बच्चे पीछे चौथाई हीन दाखमधु
दिया जाए, वर्ष के सब महीनो मे से प्रति
एक महीने का यही होमबलि ठहरे।
१५ और एक बकरा पापबलि करके यहोवा
के लिये चढाया जाए, यह नित्य होमबलि
और उसके अर्घ के अलावा चढाया जाए॥

१६ फिर पहिले महीने के चौदहवे दिन
को यहोवा का फसह हुआ करे। १७ और
उसी महीने के पन्द्रहवे दिन को पर्व्व लगा
करे, सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई
जाए। १८ पहिले दिन पवित्र सभा हो,
और उस दिन परिश्रम का कोई काम
न किया जाए, १९ उस मे तुम यहोवा
के लिये एक हव्य, अर्थात् होमबलि चढाना,
सो दो बछडे, एक मेढा, और एक एक वर्ष के
सात भेड के बच्चे हो, ये सब निर्दोष हो,
२० और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए
मैदे का हो, बछडे पीछे एपा का तीन दसवा
अश और मेढे के साथ एपा का दो दसवा
अश मैदा हो। २१ और सातो भेड के
बच्चो मे से प्रति एक बच्चे पीछे एपा का
दसवा अश चढाना। २२ और एक बकरा
भी पापबलि करके चढाना, जिस से तुम्हारे
लिये प्रायश्चित्त हो। २३ भोर का होम-
बलि जो नित्य होमबलि ठहरा है, उसके
अलावा इनको चढाना। २४ इस रीति
मे तुम उन सातो दिनो मे भी हव्य का भोजन
चढाना, जो यहोवा को सुखदायक सुगन्ध
देने के लिये हो, यह नित्य होमबलि और
उसके अर्घ के अलावा चढाया जाए।
२५ और सातवे दिन भी तुम्हारी पवित्र
सभा हो, और उस दिन परिश्रम का कोई
काम न करना॥

२६ फिर पहिली उपज के दिन में, जब
तुम अपने अठवारों नाम पर्ब्ब में यहोवा के
लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे, तब भी
तुम्हारी पवित्र सभा हो, और परिश्रम का
कोई काम न करना। २७ और एक होम-
बलि चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिये सुख-
दायक सुगन्ध हो, अर्थात् दो बछड़े, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे,
२८ और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए
मैदे का हो, अर्थात् बछड़े पीछे एपा का तीन
दसवा अंश, और मेढ़े के संग एपा का दो
दसवा अंश, २९ और सातों भेड़ के बच्चों
में से एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवा
अंश मैदा चढ़ाना। ३० और एक बकरा
भी चढ़ाना, जिस से तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त
हो। ३१ ये सब निर्दोष हों, और नित्य
होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्घ के
अलावा इनको भी चढ़ाना॥

२९ फिर सातवें महीने के पहिले
दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो,
उस में परिश्रम का कोई काम न करना।
वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा
फूंकने का दिन ठहरा है, २ तुम होमबलि
चढ़ाना, जिस से यहोवा के लिये सुखदायक
सुगन्ध हो, अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के
बच्चे, ३ और उनका अन्नबलि तेल से सने
हुए मैदे का हो, अर्थात् बछड़े के साथ एपा
का तीन दसवा अंश, और मेढ़े के साथ एपा
का दो दसवा अंश, ४ और सातों भेड़ के
बच्चों में से एक एक बच्चे पीछे एपा का
दसवा अंश मैदा चढ़ाना। ५ और एक
बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिस से
तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त हो। ६ इन सभों
से अधिक नये चांद का होमबलि और उसका
अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका
अन्नबलि, और उन सभों के अर्घ भी उनके
नियम के अनुसार सुखदायक सुगन्ध देने के
लिये यहोवा का हव्य करके चढ़ाना॥

७ फिर उसी सातवें महीने के दसवें
दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो, तुम
अपने अपने प्राण को दुःख देना, और किसी
प्रकार का कामकाज न करना, ८ और
यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध देने को
होमबलि, अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा,
और एक एक वर्ष के सात भेड़ के बच्चे
चढ़ाना, फिर ये सब निर्दोष हों, ९ और
उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो,
अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवा
अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवा
अंश, १० और सातों भेड़ के बच्चों में से
एक एक बच्चे के पीछे एपा का दसवा अंश
मैदा चढ़ाना। ११ और पापबलि के लिये
एक बकरा भी चढ़ाना, ये सब प्रायश्चित्त
के पापबलि और नित्य होमबलि और उसके
अन्नबलि के, और उन सभों के अर्घों के
अलावा चढ़ाए जाएं॥

१२ फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन
को तुम्हारी पवित्र सभा हो, और उस में
परिश्रम का कोई काम न करना और सात
दिन तक यहोवा के लिये पर्ब्ब मानना,
१३ तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक
सुगन्ध देने के लिये हव्य करके चढ़ाना,
अर्थात् तेरह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक
एक वर्ष के चौदह भेड़ के बच्चे, ये सब
निर्दोष हों, १४ और उनका अन्नबलि तेल
से सने हुए मैदे का हो, अर्थात् तेरहों
बछड़ों में से एक एक बछड़े के पीछे एपा का
तीन दसवा अंश, और दोनों मेढ़ों में से एक
एक मेढ़े के पीछे एपा का दो दसवा अंश,
१५ और चौदहों भेड़ के बच्चों में से एक

एक बच्चे के पीछे एपा का दसवा अंश
मैदा चढाना। १६ और पापबलि के लिये
एक बकरा चढाना; ये नित्य होमबलि
और उसके अन्नबलि और अर्घ के अलावा
चढाए जाए॥

१७ फिर दूसरे दिन बारह बछडे, और
दो मेढे, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष
भेड के बच्चे चढाना, १८ और बछडो,
और मेढो, और भेड के बच्चो के साथ
उनके अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के
अनुसार, और नियम के अनुसार चढाना।
१९ और पापबलि के लिये एक बकरा भी
चढाना, ये नित्य होमबलि और उसके अन्न-
बलि और अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

२० फिर तीसरे दिन ग्यारह बछडे, और
दो मेढे, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष
भेड के बच्चे चढाना, २१ और बछडो,
और मेढो, और भेड के बच्चो के साथ उनके
अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के
अनुसार, और नियम के अनुसार चढाना।
२२ और पापबलि के लिये एक बकरा भी
चढाना, ये नित्य होमबलि और उसके
अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

२३ और फिर चौथे दिन दस बछडे,
और दो मेढे, और एक एक वर्ष के चौदह
निर्दोष भेड के बच्चे चढाना, २४ बछडो,
और मेढो, और भेड के बच्चो के साथ उनके
अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनु-
सार, और नियम के अनुसार चढाना।
२५ और पापबलि के लिये एक बकरा
भी चढाना, ये नित्य होमबलि और उसके
अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

२६ फिर पांचवे दिन नौ बछडे, दो
मेढे, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड
के बच्चे चढाना; २७ और बछडो, मेढो,
और भेड के बच्चो के साथ उनके अन्नबलि
और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और
नियम के अनुसार चढाना। २८ और
पापबलि के लिये एक बकरा भी चढाना;
ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और
अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

२९ फिर छठवे दिन आठ बछडे, और
दो मेढे, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष
भेड के बच्चे चढाना, ३० और बछडो,
और मेढो, और भेड के बच्चो के साथ उनके
अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनु-
सार, और नियम के अनुसार चढाना।
३१ और पापबलि के लिये एक बकरा भी
चढाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्न-
बलि और अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

३२ फिर सातवे दिन सात बछडे, और
दो मेढे, और एक एक वर्ष के चौदह निर्दोष
भेड के बच्चे चढाना, ३३ और बछडो,
और मेढो, और भेड के बच्चो के साथ उनके
अन्नबलि और अर्घ, उनकी गिनती के अनु-
सार, और नियम के अनुसार चढाना।
३४ और पापबलि के लिये एक बकरा भी
चढाना, ये नित्य होमबलि और उसके
अन्नबलि और अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

३५ फिर आठवे दिन तुम्हारी एक
महासभा हो, उस मे परिश्रम का कोई
काम न करना, ३६ और उस मे होमबलि
यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देने के लिये
हव्य करके चढाना, वह एक बछडे, और एक
मेढे, और एक एक वर्ष के सात निर्दोष भेड
के बच्चो का हो, ३७ बछडे, और मेढे,
और भेड के बच्चो के साथ उनके अन्नबलि
और अर्घ, उनकी गिनती के अनुसार, और
नियम के अनुसार चढाना। ३८ और
पापबलि के लिये एक बकरा भी चढाना, ये
नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और
अर्घ के अलावा चढाए जाए॥

३९ अपनी मन्नतों और स्वेच्छाबलियों
के अलावा, अपने अपने नियत समयों में,
ये ही होमबलि, अन्नबलि, अर्घ, और
मेलबलि, यहोवा के लिये चढ़ाना। ४० यह
सारी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी जो
उस ने इस्राएलियों को सुनाई॥

(मन्नत मानने की विधि)

३० फिर मूसा ने इस्राएली गोत्रों
के मुख्य मुख्य पुरुषों से कहा, यहोवा
ने यह आज्ञा दी है, २ कि जब कोई पुरुष
यहोवा की मन्नत माने, वा अपने आप को
वाचा से बान्धने के लिये शपथ खाए, तो वह
अपना वचन न टाले, जो कुछ उसके मुंह
से निकला हो उसके अनुसार वह करे।
३ और जब कोई स्त्री अपनी कुंवारी
अवस्था में, अपने पिता के घर में रहते हुए,
यहोवा की मन्नत माने, वा अपने को वाचा
से बान्धे, ४ तो यदि उसका पिता उसकी
मन्नत वा उसका वह वचन सुनकर, जिस से
उसने अपने आप को बान्धा हो, उस में कुछ
न कहे, तब तो उसकी सब मन्नतें स्थिर
बनी रहें, और कोई बन्धन क्यों न हो, जिस
से उस ने अपने आप को बान्धा हो, वह भी
स्थिर रहे। ५ परन्तु यदि उसका पिता
उसकी सुनकर उसी दिन उसको बरजे, तो
उसकी मन्नतें वा और प्रकार के बन्धन, जिन
से उस ने अपने आप को बान्धा हो, उन में से
एक भी स्थिर न रहे, और यहोवा यह
जान कर, कि उस स्त्री के पिता ने उसे मना
कर दिया है, उसका यह पाप क्षमा करेगा।
६ फिर यदि वह पति के अधीन हो और
मन्नत माने, वा बिना सोच विचार किए
ऐसा कुछ कहे जिस से वह बन्धन में पड़े,
७ और यदि उसका पति सुनकर उस दिन
उससे कुछ न कहे, तब तो उसकी मन्नतें
स्थिर रहें, और जिन बन्धनों से उस ने
अपने आप को बान्धा हो वह भी स्थिर रहें।
८ परन्तु यदि उसका पति सुनकर उसी दिन
उसे मना कर दे, तो जो मन्नत उस ने मानी
है, और जो बात बिना सोच विचार किए
कहने से उस ने अपने आप को वाचा से
बान्धा हो, वह टूट जाएगी, और यहोवा
उस स्त्री का पाप क्षमा करेगा। ९ फिर
विधवा वा त्यागी हुई स्त्री की मन्नत, वा
किसी प्रकार की वाचा का बन्धन क्यों न हो,
जिस से उस ने अपने आप को बान्धा हो,
तो वह स्थिर ही रहे। १० फिर यदि
कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्नत
माने, वा शपथ खाकर अपने आप को बान्धे,
११ और उसका पति सुनकर कुछ न कहे,
और न उसे मना करे, तब तो उसकी सब
मन्नतें स्थिर बनी रहें, और हर एक बन्धन
क्यों न हो, जिस से उस ने अपने आप को
बान्धा हो, वह स्थिर रहे। १२ परन्तु यदि
उसका पति उसकी मन्नत आदि सुनकर
उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे, तो उसकी
मन्नतें आदि, जो कुछ उसके मुंह से अपने
बन्धन के विषय निकला हो, उस में से एक
बात भी स्थिर न रहे, उसके पति ने सब
तोड़ दिया है, इसलिये यहोवा उस स्त्री
का वह पाप क्षमा करेगा। १३ कोई भी
मन्नत वा शपथ क्यों न हो, जिस से उस स्त्री
ने अपने जीव को दु:ख देने की वाचा बान्धी
हो, उसको उसका पति चाहे तो दृढ़ करे,
और चाहे तो तोड़े, १४ अर्थात् यदि उसका
पति दिन प्रति दिन उस से कुछ भी न कहे,
तो वह उसकी सब मन्नतें आदि बन्धनों को
जिन से वह बन्धी हो दृढ़ कर देता है, उस ने
उनको दृढ़ किया है, क्योंकि सुनने के दिन
उस ने कुछ नहीं कहा। १५ और यदि वह
उन्हें सुनकर पीछे तोड़ दे, तो अपनी स्त्री

के अधर्म का भार वही उठाएगा। १६ पति-
पत्नी के बीच, और पिता और उसके घर मे
रहती हुई कुवारी बेटी के बीच, जिन
विधियो की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी
वे ये ही है॥

(मिद्यानियों से पलटा लेने का वर्णन)

३१ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ मिद्यानियो से इस्राएलियो का
पलटा ले, बाद को तू अपने लोगो मे जा
मिलेगा। ३ तब मूसा ने लोगो से कहा,
अपने मे से पुरुषो को युद्ध के लिये हथियार
बन्धाओ, कि वे मिद्यानियो पर चढ़के उन से
यहोवा का पलटा ले। ४ इस्राएल के सब
गोत्रो मे से प्रत्येक गोत्र के एक एक हजार
पुरुषो को युद्ध करने के लिये भेजो। ५ तब
इस्राएल के सब गोत्रो मे से प्रत्येक गोत्र के
एक एक हजार पुरुष चुने गये, अर्थात् युद्ध के
लिये हथियार-बन्द बारह हजार पुरुष।
६ प्रत्येक गोत्र मे से उन हजार हजार
पुरुषो को, और एलीआजर याजक के पुत्र
पिनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिये
भेजा, और उसके हाथ मे पवित्रस्थान के पात्र
और वे तुरहिया थी जो सास बान्ध बान्ध
कर फूकी जाती थी। ७ और जो आज्ञा
यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार
उन्हो ने मिद्यानियो से युद्ध करके सब पुरुषो
को घात किया। ८ और दूसरे जूझे हुओ
को छोड उन्हो ने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और
रेबा नाम मिद्यान के पाचो राजाओ को
घात किया, और बोर के पुत्र बिलाम को
भी उन्हो ने तलवार से घात किया।
९ और इस्राएलियो ने मिद्यानी स्त्रियो
को बालबच्चो समेत बन्धुआई मे कर
लिया, और उनके गाय-बैल, भेड-बकरी,
और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया।
१० और उनके निवास के सब नगरो,
और सब छावनियो को फूक दिया, ११ तब
वे, क्या मनुष्य क्या पशु, सब बन्धुओ
और सारी लूट-पाट को लेकर १२ यरीहो
के पास की यरदन नदी के तीर पर, मोआब
के अराबा मे, छावनी के निकट, मूसा और
एलीआजर याजक और इस्राएलियो की
मण्डली के पास आए॥

१३ तब मूसा और एलीआजर याजक
और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर
उनका स्वागत करने को निकले। १४ और
मूसा सहस्रपति-शतपति आदि, सेनापतियो
से, जो युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर
कहने लगा, १५ क्या तुम ने सब स्त्रियो
को जीवित छोड दिया? १६ देखो, बिलाम
की सम्मति से, पोर के विषय मे इस्राएलियो
से यहोवा का विश्वासघात इन्ही ने कराया,
और यहोवा की मण्डली मे मरी फैली।
१७ सो अब बालबच्चो मे से हर एक लडके
को, और जितनी स्त्रियो ने पुरुष का मुह देखा
हो उन सभो को घात करो। १८ परन्तु
जितनी लडकियो ने पुरुष का मुह न देखा
हो उन सभो को तुम अपने लिये जीवित
रखो। १९ और तुम लोग सात दिन तक
छावनी के बाहर रहो, और तुम मे से जितनो
ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनो
ने किसी मरे हुए को छूआ हो, वे सब अपने
अपने बन्धुओ समेत तीसरे और सातवे दिनो
मे अपने अपने को पाप छुडाकर पावन करे।
२० और सब वस्त्रो, और चमडे की बनी
हुई सब वस्तुओ, और बकरी के बालो की
और लकडी की बनी हुई सब वस्तुओ को
पावन कर लो। २१ तब एलीआजर
याजक ने सेना के उन पुरुषो से जो युद्ध
करने गए थे कहा व्यवस्था की जिस विधि
की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह

ह, २२ कि सोना, चांदी, पीतल, लोहा,
रांगा, और सीसा, २३ जो कुछ आग में
ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह
शुद्ध ठहरेगा, तौभी वह अशुद्धता से छुड़ाने-
वाले जल के द्वारा पावन किया जाए,
परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे
जल में डुबाओ। २४ और सातवें दिन
अपने वस्त्रों को धोना, तब तुम शुद्ध
ठहरोगे, और तब छावनी में आना॥

२५ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२६ एलीआज़र याजक और मण्डली के
पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को
साथ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं
की गिनती कर, २७ तब उनको आधा-
आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को
जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग
मण्डली को दे। २८ फिर जो सिपाही
युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से
यहोवा के लिये, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल,
क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियां, २९ पांच
सौ के पीछे एक को कर मानकर ले
ले, और यहोवा की भेंट करके एलीआज़र
याजक को दे दे। ३० फिर इस्राएलियों
के आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-
बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियां, क्या
किसी प्रकार का पशु हो, पचास के पीछे
एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली
करनेवाले लेवियों को दे। ३१ यहोवा की
इस आज्ञा के अनुसार जो उस ने मूसा को
दी मूसा और एलीआज़र याजक ने किया।
३२ और जो वस्तुएं सेना के पुरुषों ने अपने
अपने लिये लूट ली थीं उन से अधिक की लूट
यह थी, अर्थात् छः लाख पचहत्तर हजार
भेड़-बकरियां, ३३ बहत्तर हजार गाय-
बैल, ३४ इकसठ हजार गदहे, ३५ और
मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुंह
नहीं देखा था वह सब बत्तीस हजार थीं।
३६ और इसका आधा, अर्थात् उनका
भाग जो युद्ध करने को गए थे, उस में भेड़-
बकरियां तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार,
३७ जिन में से पौने सात सौ भेड़-बकरियां
यहोवा का कर ठहरीं। ३८ और गाय-बैल
छत्तीस हजार, जिन में से बहत्तर यहोवा
का कर ठहरे। ३९ और गदहे साढ़े तीस
हजार, जिन में से इकसठ यहोवा का कर
ठहरे। ४० और मनुष्य सोलह हजार जिन
में से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे।
४१ इस कर को जो यहोवा की भेंट थी
मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार
एलीआज़र याजक को दिया। ४२ और
इस्राएलियों की मण्डली का आधा ४३ तीन
लाख साढ़े सैंतीस हजार भेड़-बकरियां,
४४ छत्तीस हजार गाय-बैल, ४५ साढ़े
तीस हजार गदहे, ४६ और सोलह हजार
मनुष्य हुए। ४७ इस आधे में से, जिसे
मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरुषों के पास से
अलग किया था, यहोवा की आज्ञा के
अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु,
पचास पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की
रखवाली करनेवाले लेवियों को दिया।
४८ तब सहस्रपति-शतपति आदि, जो
सरदार सेना के हजारों के ऊपर नियुक्त
थे, वे मूसा के पास आकर कहने लगे,
४९ जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी तेरे
दासों ने गिनती ली, और उन में से एक
भी नहीं घटा। ५० इसलिये पायजेब,
कड़े, मुंदरियां, बालियां, बाजूबन्द, सोने के
जो गहने, जिस ने पाया है, उनको हम यहोवा
के साम्हने अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त
करने को यहोवा की भेंट करके ले आए हैं।
५१ तब मूसा और एलीआज़र याजक ने
उन से वे सब सोने के नक़्क़ाशीदार गहने ले

लिए। ५२ और सहस्रपतियो और शत-
पतियो ने जो भेट का सोना यहोवा की भेट
करके दिया वह सब का सब सोलह हजार
साढे सात सौ शेकेल का था। (५३ योद्धाओ
ने तो अपने अपने लिये लूट ले ली थी।)
५४ यह सोना मूसा और एलीआजर
याजक ने सहस्रपतियो और शतपतियो से
लेकर मिलापवाले तम्बू मे पहुचा दिया,
कि इस्राएलियो के लिये यहोवा के साम्हने
स्मरण दिलानेवाली वस्तु ठहरे॥

(अढ़ाई गोत्र के इस्राएलियों को यरदन के इसी पार का भाग मिलने का वर्णन)

३२ रूबेनियो और गादियो के पास
बहुत जानवर थे। जब उन्हो ने
याजेर और गिलाद देशो को देखकर विचार
किया, कि वह ढोरो के योग्य देश है, २ तब
मूसा और एलीआज़र याजक और मण्डली
के प्रधानो के पास जाकर कहने लगे,
३ अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेश-
बोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन नगरो
का देश ४ जिस पर यहोवा ने इस्राएल
की मण्डली को विजय दिलवाई है, वह ढोरो
के योग्य है; और तेरे दासो के पास ढोर है।
५ फिर उन्हो ने कहा, यदि तेरा अनुग्रह
तेरे दासो पर हो, तो यह देश तेरे दासो को
मिले कि उनकी निज भूमि हो, हमे यरदन
पार न ले चल। ६ मूसा ने गादियो और
रूबेनियो से कहा, जब तुम्हारे भाई युद्ध
करने को जाएगे तब क्या तुम यहा बैठे
रहोगे? ७ और इस्राएलियो से भी उस
पार के देश जाने के विषय जो यहोवा ने
उन्हे दिया है तुम क्यो अस्वीकार करवाते
हो? ८ जब मैं ने तुम्हारे बापदादो को
कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिये भेजा,
तब उन्हो ने भी ऐसा ही किया था।
९ अर्थात् जब उन्हो ने एशकोल नाम नाले
तक पहुचकर देश को देखा, तब इस्राएलियो
से उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हे
दिया था अस्वीकार करा दिया। १० इस-
लिये उस समय यहोवा ने कोप करके यह
शपथ खाई कि, ११ निःसन्देह जो मनुष्य
मिस्र से निकल आए है उन मे से, जितने
बीस वर्ष के वा उस से अधिक अवस्था के
है, वे उस देश को देखने न पाएगे, जिसके
देने की शपथ मै ने इब्राहीम, इसहाक, और
याकूब से खाई है, क्योकि वे मेरे पीछे पूरी
रीति से नही हो लिये; १२ परन्तु यपुन्ने
कनजी का पुत्र कालेब, और नून का पुत्र
यहोशू, ये दोनो जो मेरे पीछे पूरी रीति से
हो लिये है ये तो उसे देखने पाएगे। १३ सो
यहोवा का कोप इस्राएलियो पर भडका,
और जब तक उस पीढी के सब लोगो का
अन्त न हुआ, जिन्हो ने यहोवा के प्रति बुरा
किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक
वह उन्हे जगल मे मारे मारे फिराता रहा।
१४ और सुनो, तुम लोग उन पापियो
के बच्चे होकर इसी लिये अपने बाप-दादो
के स्थान पर प्रकट हुए हो, कि इस्राएल के
विरुद्ध यहोवा से भडके हुए कोप को और
भी भडकाओ। १५ यदि तुम उसके पीछे
चलने से फिर जाओ, तो वह फिर हम सभो
को जगल मे छोड देगा, इस प्रकार तुम इन
सारे लोगो का नाश कराओगे। १६ तब
उन्हो ने मूसा के और निकट आकर कहा,
हम अपने ढोरो के लिये यही भेडशाले
बनाएगे, और अपने बालबच्चो के लिये
यही नगर बसाएगे, १७ परन्तु आप
इस्राएलियो के आगे आगे हथियार-बन्द तब
तक चलेंगे, जब तक उनको उनके स्थान मे
न पहुचा दे, परन्तु हमारे बालबच्चे इस
देश के निवासियो के डर से गढवाले नगरो

में रहेंगे। १८ परन्तु जब तक इस्राएली
अपने अपने भाग के अधिकारी न हों तब
तब हम अपने घरों को न लौटेंगे। १९ हम
उनके साथ यरदन पार वा कहीं आगे अपना
भाग न लेंगे, क्योंकि हमारा भाग यरदन के
इसी पार पूरब की ओर मिला है। २० तब
मूसा ने उन से कहा, यदि तुम ऐसा करो,
अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे आगे युद्ध
करने को हथियार बान्धो, २१ और हर एक
हथियार-बन्द यरदन के पार तब तक चले,
जब तक यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं
को न निकाले २२ और देश यहोवा के
वश में न आए, तो उसके पीछे तुम यहां
लौटोगे, और यहोवा के और इस्राएल के
विषय निर्दोष ठहरोगे, और यह देश यहोवा
के प्रति तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा।
२३ और यदि तुम ऐसा न करो, तो यहोवा
के विरुद्ध पापी ठहरोगे, और जान रखो
कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा। २४ तुम
अपने बालबच्चों के लिये नगर बसाओ,
और अपनी भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाले
बनाओ, और जो तुम्हारे मुंह से निकला है
वही करो। २५ तब गादियों और रूबे-
नियों ने मूसा से कहा, अपने प्रभु की आज्ञा
के अनुसार तेरे दास करेंगे। २६ हमारे
बालबच्चे, स्त्रियां, भेड़-बकरी आदि, सब
पशु तो यहीं गिलाद के नगरों में रहेंगे,
२७ परन्तु अपने प्रभु के कहे के अनुसार
तेरे दास सब के सब युद्ध के लिये हथियार-
बन्द यहोवा के आगे आगे लड़ने को पार
जाएंगे। २८ तब मूसा ने उनके विषय में
एलीआज़र याजक, और नून के पुत्र यहोशू,
और इस्राएलियों के गोत्रों के पितरों के
घरानों के मुख्य मुख्य पुरुषों को यह आज्ञा
दी, २९ कि यदि सब गादी और रूबेनी
पुरुष युद्ध के लिये हथियार-बन्द तुम्हारे संग
यरदन पार जाएं, और देश तुम्हारे वश में
आ जाए, तो गिलाद देश उनकी निज भूमि
होने को उन्हें देना। ३० परन्तु यदि वे
तुम्हारे संग हथियार-बन्द पार न जाएं, तो
उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश
में ठहरे। ३१ तब गादी और रूबेनी बोल
उठे, यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया
है वैसा ही हम करेंगे। ३२ हम हथियार-
बन्द यहोवा के आगे आगे उस पार कनान
देश में जाएंगे, परन्तु हमारी निज भूमि
यरदन के इसी पार रहे॥

३३ तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों
को, और यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे
गोत्रियों को एमोरियों के राजा सीहोन
और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों
का देश, नगरों, और उनके आसपास की
भूमि समेत दे दिया। ३४ तब गादियों ने
दीबोन, अतारोत, अरोएर, ३५ अत्रोत,
शोपान, याजेर, योगबहा, ३६ बेतनिम्रा,
और बेथारान नाम नगरों को दृढ़
किया, और उन में भेड़-बकरियों के लिये
भेड़शाले बनाए। ३७ और रूबेनियों ने
हेशबोन, एलाले, और किर्यातैम को,
३८ फिर नबो और बालमोन के नाम
बदलकर उनको, और सिबमा को दृढ़
किया, और उन्हों ने अपने दृढ़ किए हुए
नगरों के और और नाम रखे। ३९ और
मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशवालों ने
गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया,
और जो एमोरी उस में रहते थे उनको
निकाल दिया। ४० तब मूसा ने मनश्शे
के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद दे दिया,
और वे उस में रहने लगे। ४१ और
मनश्शेई याईर ने जाकर गिलाद की
कितनी बस्तियां ले लीं, और उनके नाम

हव्वोत्याईर* रखे। ४२ और नोवह ने
जाकर गावो समेत कनात को ले लिया,
और उसका नाम अपने नाम पर नोवह
रखा॥

(इस्राएलियों के पडाव पडाव की
नामावली)

३३ जब से इस्राएली मूसा और
हारून की अगुवाई से † दल बान्ध-
कर मिस्र देश से निकले, तब से उनके ये
पडाव हुए। २ मूसा ने यहोवा से आज्ञा
पाकर उनके कूच उनके पडावो के अनुसार
लिख दिए, और वे ये है। ३ पहिले महीने
के पन्द्रहवे दिन को उन्हो ने रामसेस से कूच
किया, फसह के दूसरे दिन इस्राएली सब
मिस्रियो के देखते बेखटके ‡ निकल गए,
४ जब कि मिस्री अपने सब पहिलौठो को
मिट्टी दे रहे थे जिन्हे यहोवा ने मारा था,
और उस ने उनके देवताओ को भी दण्ड
दिया था। ५ इस्राएलियो ने रामसेस से
कूच करके सुक्कोत मे डेरे डाले। ६ और
सुक्कोत से कूच करके एताम मे, जो जगल
के छोर पर है, डेरे डाले। ७ और एताम
से कूच करके वे पीहहीरोत को मुड गए, जो
बालसपोन के साम्हने है, और मिगदोल के
साम्हने डेरे खडे किए। ८ तब वे पीह-
हीरोत के साम्हने से कूच कर समुद्र के
बीच होकर जगल मे गए, और एताम नाम
जगल मे तीन दिन का मार्ग चलकर मारा
मे डेरे डाले। ९ फिर मारा से कूच करके
वे एलीम को गए, और एलीम मे जल के
बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष मिले,
और उन्हो ने वहा डेरे खडे किए। १० तब
उन्हो ने एलीम से कूच करके लाल समुद्र के
तीर पर डेरे खडे किए। ११ और लाल
समुद्र से कूच करके सीन नाम जगल मे
डेरे खडे किए। १२ फिर सीन नाम जगल
से कूच करके उन्हो ने दोपका मे डेरा किया।
१३ और दोपका से कूच करके आलूश मे
डेरा किया। १४ और आलूश से कूच
करके रपीदीम मे डेरा किया, और वहा
उन लोगो को पीने का पानी न मिला।
१५ फिर उन्हो ने रपीदीम से कूच करके
सीनै के जगल मे डेरे डाले। १६ और
सीनै के जगल से कूच करके किब्रोथत्तावा
मे डेरा किया। १७ और किब्रोथत्तावा से
कूच करके हसेरोत मे डेरे डाले। १८ और
हसेरोत से कूच करके रित्मा मे डेरे डाले।
१९ फिर उन्हो ने रित्मा से कूच करके
रिम्मोनपेरेस मे डेरे खडे किए। २० और
रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिब्ना मे डेरे
खडे किए। २१ और लिब्ना से कूच करके
रिस्सा मे डेरे खडे किए। २२ और रिस्सा
से कूच करके कहेलाता मे डेरा किया।
२३ और कहेलाता से कूच करके शेपेर
पर्वत के पास डेरा किया। २४ फिर उन्हो
ने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा मे डेरा
किया। २५ और हरादा से कूच करके
मखेलोत मे डेरा किया। २६ और मखे-
लोत से कूच करके तहत मे डेरे खडे किए।
२७ और तहत से कूच करके तेरह मे डेरे
डाले। २८ और तेरह से कूच करके मित्का
मे डेरे डाले। २९ फिर मित्का से कूच
करके उन्हो ने हशमोना मे डेरे डाले।
३० और हशमोना से कूच करके मोसेरोत
मे डेरे खडे किए। ३१ और मोसेरोत से
कूच करके याकानियो के बीच डेरा किया।
३२ और याकानियो के बीच से कूच करके
होर्हग्गिदगाद मे डेरा किया। ३३ और
होर्हग्गिदगाद से कूच करके योतबाता मे

* अर्थात् याईर की बस्तिया।
† मूल मे—के हाथ से।
‡ मूल मे—ऊंचे हाथ से।

डेरा किया। ३४ और योतबाता से कूच
करके अब्रोना में डेरे खड़े किए। ३५ और
अब्रोना से कूच करके एस्योनगेबेर में डेरे
खड़े किए। ३६ और एस्योनगेबेर से कूच
करके उन्हों ने सीन नाम जंगल के कादेश
में डेरा किया। ३७ फिर कादेश से कूच
करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश के
सिवाने पर है, डेरे डाले। ३८ वहां इस्रा-
एलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें
वर्ष के पांचवें महीने के पहिले दिन को
हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर
पर्वत पर चढ़ा, और वहां मर गया।
३९ और जब हारून होर पर्वत पर मर
गया तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था।
४० और अराद का कनानी राजा, जो
कनान देश के दक्खिन भाग में रहता था,
उस ने इस्राएलियों के आने का समाचार
पाया। ४१ तब इस्राएलियों ने होर पर्वत
से कूच करके सलमोना में डेरे डाले।
४२ और सलमोना से कूच करके पूनोन
में डेरे डाले। ४३ और पूनोन से कूच करके
ओबोत में डेरे डाले। ४४ और ओबोत से
कूच करके अबारीम नाम डीहों में जो
मोआब के सिवाने पर है, डेरे डाले।
४५ तब उन डीहों से कूच करके उन्हों ने
दीबोनगाद में डेरा किया। ४६ और
दीबोनगाद से कूच करके अल्मोनदिबलातैम
में डेरा किया। ४७ और अल्मोनदिबलातैम
से कूच करके उन्हों ने अबारीम नाम
पहाड़ों में नबो के साम्हने डेरा किया।
४८ फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके
मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन
नदी के तट पर डेरा किया। ४९ और वे
मोआब के अराबा में बेत्यशीमोत से लेकर
आबेलशित्तीम तक यरदन के तीर तीर डेरे
डाले॥

५० फिर मोआब के अराबा में, यरीहो
के पास की यरदन नदी के तट पर, यहोवा
ने मूसा से कहा, ५१ इस्राएलियों को
समझाकर कह, जब तुम यरदन पार होकर
कनान देश में पहुंचो, ५२ तब उस देश के
निवासियों को उनके देश से निकाल देना,
और उनके सब नक्काशे पत्थरों को और
ढली हुई मूर्तियों को नाश करना, और
उनके सब पूजा के ऊंचे स्थानों को ढा देना।
५३ और उस देश को अपने अधिकार में
लेकर उस में निवास करना, क्योंकि मैं ने
वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके
अधिकारी हो। ५४ और तुम उस देश को
चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बांट
लेना, अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें
अधिक, और जो थोड़ेवाले हैं उनको थोड़ा
भाग देना, जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान
के लिये निकले वही उसका भाग ठहरे,
अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना
अपना भाग लेना। ५५ परन्तु यदि तुम
उस देश के निवासियों को अपने आगे से न
निकालोगे, तो उन में से जिनको तुम उस
में रहने दोगे वे मानो तुम्हारी आंखों में
कांटे और तुम्हारे पांजरों में कीलें ठहरेंगे,
और वे उस देश में जहां तुम बसोगे तुम्हें
संकट में डालेंगे। ५६ और उन से जैसा
बर्ताव करने की मनसा मैं ने की है वैसा ही
तुम से करूंगा॥

(कनान देश के सिवाने)

३४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
२ इस्राएलियों को यह आज्ञा दे,
कि जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो
चारों ओर के सिवाने तक का कनान देश
है, इसलिये जब तुम कनान देश में पहुंचो,
३ तब तुम्हारा दक्खिनी प्रान्त सीन नाम

जगल मे ले एदोम देश के किनारे किनारे
होता हुआ चला जाए, और तुम्हारा
दक्खिनी सिवाना खारे ताल के सिरे पर
आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले;
४ वहा से तुम्हारा सिवाना अक्रब्बीम नाम
चढाई की दक्खिन की ओर पहुचकर मुडे,
और सीन तक आए, और कादेशबर्ने की
दक्खिन की ओर निकले, और हसरद्दार
तक बढके अस्मोन तक पहुचे; ५ फिर
वह सिवाना अस्मोन से घूमकर मिस्र के
नाले तक पहुचे, और उसका अन्त समुद्र
का तट ठहरे। ६ फिर पच्छिमी सिवाना
महासमुद्र हो, तुम्हारा पच्छिमी सिवाना
यही ठहरे। ७ और तुम्हारा उत्तरीय
सिवाना यह हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से
ले होर पर्वत तक सिवाना बान्धना;
८ और होर पर्वत से हमात की घाटी तक
सिवाना बान्धना, और वह सदाद पर
निकले, ९ फिर वह सिवाना जिप्रोन तक
पहुचे, और हसरेनान पर निकले, तुम्हारा
उत्तरीय सिवाना यही ठहरे। १० फिर
अपना पूरबी सिवाना हसरेनान से शपाम
तक बान्धना; ११ और वह सिवाना शपाम
से रिबला तक, जो ऐन की पूर्व की ओर है,
नीचे को उतरते उतरते किन्नेरेत नाम ताल
के पूर्व से लग जाए, १२ और वह सिवाना
यरदन तक उतरके खारे ताल के तट पर
निकले। तुम्हारे देश के चारो सिवाने ये ही
ठहरे। १३ तब मूसा ने इस्राएलियो से
फिर कहा, जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर
अधिकारी होगे, और यहोवा ने उसे साढे
नौ गोत्र के लोगो को देने की आज्ञा दी है,
वह यही है; १४ परन्तु रूबेनियो और
गादियो के गोत्र तो अपने अपने पितरो के
कुलो के अनुसार अपना अपना भाग पा चुके
है, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी
अपना भाग पा चुके है; १५ अर्थात् उन
अढाई गोत्रो के लोग यरीहो के पास की
यरदन के पार पूर्व दिशा मे, जहा सूर्योदय
होता है, अपना अपना भाग पा चुके है॥

१६ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१७ कि जो पुरुष तुम लोगो के लिये उस देश
को बाटेगे उनके नाम ये है, अर्थात् एलीआजर याजक और नून का पुत्र यहोशू।
१८ और देश को बाटने के लिये एक एक
गोत्र का एक एक प्रधान ठहराना।
१९ और इन पुरुषो के नाम ये है; अर्थात्
यहूदागोत्री यपुन्ने का पुत्र कालेब,
२० शिमोनगोत्री अम्मीहूद का पुत्र शमूएल,
२१ बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र
एलीदाद, २२ दानियो के गोत्र का प्रधान
योग्ली का पुत्र बुक्की, २३ यूसुफियो में
से मनश्शेइयो के गोत्र का प्रधान एपोद का
पुत्र हन्नीएल, २४ और एप्रैमियो के गोत्र
का प्रधान शिप्तान का पुत्र कमूएल,
२५ जबूलूनियो के गोत्र का प्रधान पर्नाक
का पुत्र एलीसापान, २६ इस्साकारियो
के गोत्र का प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल, २७ आशेरियो के गोत्र का प्रधान
शलोमी का पुत्र अहीहूद, २८ और
नप्तालियो के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद का
पुत्र पदहेल। २९ जिन पुरुषो को यहोवा
ने कनान देश को इस्राएलियो के लिये बाटने
की आज्ञा दी वे ये ही है॥

(लेवियों के नगरों की और शरणनगरों की विधि)

३५ फिर यहोवा ने, मोआब के
अराबा मे, यरीहो के पास की
यरदन नदी के तट पर मूसा से कहा,
२ इस्राएलियो को आज्ञा दे, कि तुम अपने
अपने निज भाग की भूमि में से लेवियो को

रहने के लिये नगर देना, और नगरो के
चारो ओर की चराइया भी उनको देना।
३ नगर तो उनके रहने के लिये, और
चराइया उनके गाय-बैल और भेड़-बकरी
आदि, उनके सब पशुओ के लिये होगी।
४ और नगरो की चराइया, जिन्हें तुम
लेवियो को दोगे, वह एक एक नगर की
शहरपनाह से बाहर चारो ओर एक एक
हजार हाथ तक की हो। ५ और नगर के
बाहर पूर्व, दक्खिन, पच्छिम, और उत्तर
अलग, दो दो हजार हाथ इस रीति से
नापना कि नगर बीचोंबीच हो, लेवियो के
एक एक नगर की चराई इतनी ही भूमि
की हो। ६ और जो नगर तुम लेवियो
को दोगे उन में से छ शरणनगर हो,
जिन्हें तुम को खूनी के भागने के लिये
ठहराना होगा, और उन से अधिक बयालीस
नगर और भी देना। ७ जितने नगर तुम
लेवियो को दोगे वे सब अड़तालीस हो,
और उनके साथ चराइया देना। ८ और
जो नगर तुम इस्राएलियो की निज भूमि में
से दो, वे जिनके बहुत नगर हो उन से
बहुत, और जिनके थोड़े नगर हो उन से
थोड़े लकर देना, सब अपने अपने नगरो
में से लेवियो को अपने ही अपने भाग के
अनुसार दें॥

९ फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
१० इस्राएलियो से कह, कि जब तुम यरदन
पार होकर कनान देश में पहुचो, ११ तब
ऐसे नगर ठहराना जो तुम्हारे लिये शरण-
नगर हो, कि जो कोई किसी को भूल से
मारके खूनी ठहरा हो वह वहा भाग जाए।
१२ वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेने-
वाले से शरण लेने के काम आएगे, कि जब
तक खूनी न्याय के लिये मण्डली के साम्हने
खड़ा न हो तब तक वह न मार डाला जाए।
१३ और शरण के जो नगर तुम दोगे वे
छ हो। १४ तीन नगर तो यरदन के इस
पार, और तीन कनान देश में देना, शरण-
नगर इतने ही रहें। १५ ये छहो नगर
इस्राएलियो के और उनके बीच रहनेवाले
परदेशियो के लिये भी शरणस्थान ठहरे,
कि जो कोई किसी को भूल से मार डाले वह
वही भाग जाए। १६ परन्तु यदि कोई
किसी को लोहे के किसी हथियार से ऐसा
मारे कि वह मर जाए, तो वह खूनी
ठहरेगा, और वह खूनी अवश्य मार डाला
जाए। १७ और यदि कोई ऐसा पत्थर
हाथ में लेकर, जिस से कोई मर सकता है,
किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह
भी खूनी ठहरेगा, और वह खूनी अवश्य
मार डाला जाए। १८ वा कोई हाथ में
ऐसी लकड़ी लेकर, जिस से कोई मर सकता
है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो
वह भी खूनी ठहरेगा, और वह खूनी अवश्य
मार डाला जाए। १९ लोहू का पलटा
लेनेवाला आप ही उस खूनी को मार डाले,
जब भी वह मिले तब ही वह उसे मार डाले।
२० और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल
दे, वा घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक
दे कि वह मर जाए, २१ वा शत्रुता से
उसको अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर
जाए, तो जिस ने मारा हो वह अवश्य मार
डाला जाए, वह खूनी ठहरेगा, लोहू
का पलटा लेनेवाला जब भी वह खूनी उसे
मिल जाए तब ही उसको मार डाले।
२२ परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे,
और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, वा बिना
घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे, २३ वा
ऐसा कोई पत्थर लेकर, जिस से कोई
मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर
फेंक दे, और वह मर जाए, परन्तु वह न

उसका शत्रु हो, और न उसकी हानि का
खोजी रहा हो, २४ तो मण्डली मारनेवाले
और लोहू के पलटा लेनेवाले के बीच उन
नियमो के अनुसार न्याय करे, २५ और
मण्डली उस खूनी को लोहू के पलटा लेने-
वाले के हाथ मे बचाकर उस शरणनगर मे
जहा वह पहिले भाग गया हो लौटा दे,
और जब तक पवित्र तेल मे अभिषेक किया
हुआ महायाजक न मर जाए तब तक वह
वही रहे। २६ परन्तु यदि वह खूनी उस
शरणनगर के सिवाने से जिस मे वह भाग
गया हो बाहर निकलकर और कही जाए,
२७ और लोहू का पलटा लेनेवाला उसको
शरणनगर के सिवाने के बाहर कही पाकर
मार डाले, तो वह लोहू बहाने का दोषी न
ठहरे। २८ क्योंकि खूनी को महायाजक
की मृत्यु तक शरणनगर मे रहना चाहिये,
और महायाजक के मरने के पश्चात् वह
अपनी निज भूमि को लौट सकेगा।
२९ तुम्हारी पीढी पीढी मे तुम्हारे सब
रहने के स्थानो मे न्याय की यह विधि होगी।
३० और जो कोई किसी मनुष्य को मार
डाले वह साक्षियो के कहने पर मार डाला
जाए, परन्तु एक ही साक्षी की साक्षी से
कोई न मार डाला जाए। ३१ और जो
खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उस से प्राण-
दण्ड के बदले मे जुरमाना न लेना, वह
अवश्य मार डाला जाए। ३२ और जो
किसी शरणनगर मे भागा हो उसके लिये
भी इस मतलब से जुरमाना न लेना, कि
वह याजक के मरने से पहिले फिर अपने
देश मे रहने को लौटने पाए। ३३ इस-
लिये जिस देश मे तुम रहोगे उसको अशुद्ध
न करना, खून से तो देश अशुद्ध हो जाता
है, और जिस देश मे जब खून किया जाए
तब केवल खूनी के लोहू बहाने ही से उस
देश का प्रायश्चित्त हो सकता है। ३४ जिस
देश मे तुम निवास करोगे उसी बीच मैं
रहूंगा, उसको अशुद्ध न करना, मैं यहोवा
तो इस्राएलियो के बीच रहता हूं॥

(यूसुफ गोत्र के भाग में गड़बड़ पड़ने का
निषेध)

३६ फिर यूसुफियो के कुलो में से
गिलाद, जो माकीर का पुत्र और
मनश्शे का पोता था, उसके वंश के कुल के
पितरो के घरानो के मुख्य मुख्य पुरुष मूसा
के समीप जाकर उन प्रधानो के साम्हने,
जो इस्राएलियो के पितरो के घरानो के
मुख्य पुरुष थे, कहने लगे, २ यहोवा ने
हमारे प्रभु को आज्ञा दी थी, कि इस्राएलियो
को चिट्ठी डालकर देश बाट देना, और फिर
यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को
मिली, कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग
उसकी बेटियो को देना। ३ तो यदि वे
इस्राएलियो के और किसी गोत्र के पुरुषो
मे व्याही जाए, तो उनका भाग हमारे
पितरो के भाग से छूट जाएगा, और जिस
गोत्र मे वे व्याही जाए उसी गोत्र के भाग
मे मिल जाएगा, तब हमारा भाग घट
जाएगा। ४ और जब इस्राएलियो की
जुबली * होगी, तब जिस गोत्र मे वे व्याही
जाए उसके भाग मे उनका भाग पक्की
रीति से मिल जाएगा, और वह हमारे
पितरो के गोत्र के भाग से सदा के लिये छूट
जाएगा। ५ तब यहोवा से आज्ञा पाकर
मूसा ने इस्राएलियो से कहा, यूसुफियो के
गोत्री ठीक कहते है। ६ सलोफाद की
बेटियो के विषय मे यहोवा ने यह आज्ञा
दी है, कि जो वर जिसकी दृष्टि मे अच्छा
लगे वह उसी से व्याही जाए, परन्तु वे

* अर्थात् महाशब्दवाले नरसिंगे का शब्द।

अपने मूलपुरुष ही के गोत्र के कुल में व्याही
जाए। ७ और इस्राएलियों के किसी गोत्र
का भाग दूसरे गोत्र के भाग में न मिलने
पाए, इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष के
गोत्र के भाग पर बने रहें। ८ और इस्रा-
एलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो
जो भाग पानेवाली हो, वह अपने ही मूल-
पुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से व्याही जाए,
इसलिये कि इस्राएली अपने अपने मूलपुरुष
के भाग के अधिकारी रहें। ९ किसी गोत्र
का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न
पाए, इस्राएलियों के एक एक गोत्र के
लोग अपने अपने भाग पर बने रहें।
१० यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उस
ने मूसा को दी सलोफाद की बेटियों ने
किया। ११ अर्थात् महला, तिर्सा, होग्ला,
मिल्का, और नोआ, जो सलोफाद की
बेटियां थीं, उन्हों ने अपने चचेरे भाइयों से
व्याह किया। १२ वे यूसुफ के पुत्र मनश्शे
के वंश के कुलों में व्याही गईं, और उनका
भाग उनके मूलपुरुष के कुल के गोत्र के
अधिकार में बना रहा॥

१३ जो आज्ञाएं और नियम यहोवा ने
मोआब के अराबा में यरीहो के पास की
यरदन नदी के तीर पर मूसा के द्वारा
इस्राएलियों को दिए वे ये ही हैं॥

व्यवस्थाविवरण

(पूर्व वृत्तान्त का विवरण)

१ जो बातें मूसा ने यरदन के पार
जंगल में, अर्थात् सूप के साम्हने के
अराबा में, और पारान और तोपेल के बीच,
और लाबान हसेरोत और दीजाहाब में, सारे
इस्राएलियों से कहीं वे ये हैं। २ होरेब से
कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ का मार्ग ग्यारह
दिन का है। ३ चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें
महीने के पहिले दिन को जो कुछ यहोवा ने
मूसा को इस्राएलियों से कहने की आज्ञा दी
थी, उसके अनुसार मूसा उन से ये बातें कहने
लगा। ४ अर्थात् जब मूसा ने एमोरियों
के राजा हेशबोनवासी सीहोन और बाशान
के राजा अशतारोतवासी ओग को एद्रेई में
मार डाला, ५ उसके बाद यरदन के पार
मोआब देश में वह व्यवस्था का विवरण
यों करने लगा, ६ कि हमारे परमेश्वर
यहोवा ने होरेब के पास हम से कहा था,
कि तुम लोगों को इस पहाड़ के पास रहते
हुए बहुत दिन हो गए हैं, ७ इसलिये अब
यहां से कूच करो, और एमोरियों के
पहाड़ी देश को, और क्या अराबा में, क्या
पहाड़ों में, क्या नीचे के देश में, क्या
दक्खिन देश में, क्या समुद्र के तीर पर,
जितने लोग एमोरियों के पास रहते हैं
उनके देश को, अर्थात् लबानोन पर्वत तक
और परात नाम महानद तक रहनेवाले
कनानियों के देश को भी चले जाओ।
८ सुनो, मैं उस देश को तुम्हारे साम्हने
किए देता हूं, जिस देश के विषय यहोवा ने
इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तुम्हारे
पितरों से शपथ खाकर कहा था, कि मैं

इसे तुम को और तुम्हारे वाद तुम्हारे वंश
को दूगा, उसको अब जाकर अपने अधिकार
मे कर लो। ९ फिर उसी समय मै ने
तुम से कहा, कि मै तुम्हारा भार अकेला
नही सह सकता, १० क्योंकि तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम को यहा तक वढाया
है, कि तुम गिनती मे आज आकाश के तारो
के समान हो गए हो। ११ तुम्हारे पितरो
का परमेश्वर तुम को हजारगुणा और भी
वढाए, और अपने वचन के अनुसार तुम को
आशीष भी देता रहे! १२ परन्तु तुम्हारे
जजाल, और भार, और झगडे रगडे को
मै अकेला कहा तक सह सकता हूं?
१३ सो तुम अपने एक एक गोत्र में से
वुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुरुष
चुन लो, और मै उन्हे तुम पर मुखिया
ठहराऊगा। १४ इसके उत्तर मे तुम ने
मुझ से कहा, जो कुछ तू हम से कहता है
उसका करना अच्छा है। १५ इसलिये
मै ने तुम्हारे गोत्रो के मुख्य पुरुषो को जो
वुद्धिमान और प्रसिद्ध पुरुष थे चुनकर तुम
पर मुखिया नियुक्त किया, अर्थात् हजार-
हजार, सौ-सौ, पचास-पचास, और दस-दस
के ऊपर प्रधान और तुम्हारे गोत्रो के
सरदार भी नियुक्त किए। १६ और उस
समय मै ने तुम्हारे न्यायियो को आज्ञा दी,
कि तुम अपने भाइयो के मुकद्दमे सुना करो,
और उनके वीच और उनके पडोसियो
और परदेशियो के वीच भी धर्म से न्याय
किया करो। १७ न्याय करते समय किसी
का पक्ष न करना, जैसे वडे की वैसे ही
छोटे मनुष्य की भी सुनना; किसी का मुह
देखकर न डरना, क्योकि न्याय परमेश्वर
का काम है, और जो मुकद्दमा तुम्हारे
लिये कठिन हो, वह मेरे पास ले आना,
और मै उसे सुनूगा। १८ और मै ने उसी
समय तुम्हारे सारे कर्तव्य कर्म तुम को
वता दिए॥
१९ और हम होरेव से कूच करके अपने
परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार
उस सारे वडे और भयानक जगल मे होकर
चले, जिसे तुम ने एमोरियो के पहाडी देश के
मार्ग मे देखा, और हम कादेशवर्ने तक आए।
२० वहा मै ने तुम से कहा, तुम एमोरियो
के पहाडी देश तक आ गए हो जिसको
हमारा परमेश्वर यहोवा हमे देता है।
२१ देखो, उस देश को तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हारे साम्हने किए देता है, इसलिये
अपने पितरो के परमेश्वर यहोवा के वचन
के अनुसार उस पर चढो, और उसे अपने
अधिकार मे ले लो, न तो तुम डरो
और न तुम्हारा मन कच्चा हो। २२ और
तुम सव मेरे पास आकर कहने लगे, हम
अपने आगे पुरुषो को भेज देगे, जो उस देश
का पता लगाकर हम को यह सन्देश दे, कि
कौन सा मार्ग होकर चलना होगा और किस
किस नगर मे प्रवेश करना पडेगा?
२३ इस वात से प्रसन्न होकर मै ने तुम मे
से वारह पुरुष, अर्थात् गोत्र पीछे एक पुरुष
चुन लिया, २४ और वे पहाड पर चढ
गए, और एशकोल नाम नाले को पहुचकर
उस देश का भेद लिया। २५ और उस देश
के फलो मे से कुछ हाथ मे लेकर हमारे पास
आए, और हम को यह सन्देश दिया, कि जो
देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमे देता है
वह अच्छा है। २६ तौभी तुम ने वहा
जाने से नाह किया, किन्तु अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध होकर २७ अपने
अपने डेरे मे यह कहकर कुडकुडाने
लगे, कि यहोवा हम से वैर रखता है, इस
कारण हम को मिस्र देश से निकाल ले
आया है, कि हम को एमोरियो के वश मे

करके सत्यानाश कर डाले। २८ हम
किधर जाए? हमारे भाइयों ने यह कहके
हमारे मन को कच्चा कर दिया है, कि वहा
के लोग हम से बड़े और लम्बे हैं, और वहा
के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह
आकाश से बातें करती हैं*, और हम ने वहा
अनाकवंशियों को भी देखा है। २९ मैं ने
तुम से कहा, उनके कारण त्रास मत खाओ
और न डरो। ३० तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है
वह आप तुम्हारी ओर से लड़ेगा, जैसे कि
उस ने मिस्र में तुम्हारे देखते तुम्हारे लिये
किया, ३१ फिर तुम ने जंगल में भी
देखा, कि जिस रीति कोई पुरुष अपने लड़के
को उठाए चलता है, उसी रीति हमारा
परमेश्वर यहोवा हम को इस स्थान पर
पहुचने तक, उस सारे मार्ग में जिस में हम
आए हैं, उठाये रहा। ३२ इस बात पर
भी तुम ने अपने उस परमेश्वर यहोवा पर
विश्वास नहीं किया, ३३ जो तुम्हारे आगे
आगे इसलिये चलता रहा, कि डेरे डालने
का स्थान तुम्हारे लिये ढूंढे, और रात को
आग में और दिन को बादल में प्रगट होकर
चला, ताकि तुम को वह मार्ग दिखाए जिस
से तुम चलो। ३४ परन्तु तुम्हारी वे बातें
सुनकर यहोवा का कोप भड़क उठा, और
उस ने यह शपथ खाई, ३५ कि निश्चय
इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस
अच्छे देश को देखने न पाएगा, जिसे मैं
ने उनके पितरों को देने की शपथ खाई थी।
३६ यपुन्ने का पुत्र कालेब ही उसे देखने
पाएगा, और जिस भूमि पर उसके पाव
पड़े हैं उसे मैं उसको और उसके वंश को
भी दूगा, क्योंकि वह मेरे पीछे पूरी रीति
से हो लिया है। ३७ और मुझ पर भी
यहोवा तुम्हारे कारण क्रोधित हुआ, और
यह कहा, कि तू भी वहा जाने न पाएगा,
३८ नून का पुत्र यहोशू जो तेरे साम्हने
खड़ा रहता है, वह तो वहा जाने पाएगा,
सो तू उसको हियाव दे, क्योंकि उस देश
को इस्राएलियों के अधिकार में वही कर
देगा। ३९ फिर तुम्हारे बालबच्चे जिनके
विषय में तुम कहते हो, कि ये लूट में चले
जाएंगे, और तुम्हारे जो लड़केवाले अभी
भले बुरे का भेद नहीं जानते, वे वहा प्रवेश
करेंगे, और उनको मैं वह देश दूगा, और
वे उसके अधिकारी होंगे। ४० परन्तु तुम
लोग घूमकर कूच करो, और लाल समुद्र के
मार्ग से जंगल की ओर जाओ। ४१ तब
तुम ने मुझ से कहा, हम ने यहोवा के विरुद्ध
पाप किया है, अब हम अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा के अनुसार चढ़ाई करेंगे
और लड़ेंगे। तब तुम अपने अपने हथियार
बान्धकर पहाड़ पर बिना सोचे समझे चढ़ने
को तैयार हो गए। ४२ तब यहोवा ने
मुझ से कहा, उन से कह दे, कि तुम मत
चढ़ो, और न लड़ो, क्योंकि मैं तुम्हारे
मध्य में नहीं हू, कहीं ऐसा न हो कि
तुम अपने शत्रुओं से हार जाओ। ४३ यह
बात मैं ने तुम से कह दी, परन्तु तुम ने न
मानी, किन्तु ढिठाई से यहोवा की आज्ञा
का उल्लंघन करके पहाड़ पर चढ़ गए।
४४ तब उस पहाड़ के निवासी एमोरियों
ने तुम्हारा साम्हना करने को निकलकर
मधुमक्खियों की नाईं तुम्हारा पीछा किया,
और सेईर देश के होर्मा तक तुम्हें मारते
मारते चले आए। ४५ तब तुम लौटकर
यहोवा के साम्हने रोने लगे, परन्तु यहोवा
ने तुम्हारी न सुनी, न तुम्हारी बातों पर
कान लगाया। ४६ और तुम कादेश में

* मूल में—नगर बड़े और आकाश लों दृढ़ हैं।

हुए वहुत दिन वीत गए, अव घूमकर उत्तर
की ओर चलो। ४ और तू प्रजा के लोगो
को मेरी यह आज्ञा सुना, कि तुम सेईर के
निवासी अपने भाई एसावियो के सिवाने
के पास होकर जाने पर हो, और वे तुम से
डर जाएगे। इसलिये तुम वहुत चौकस
रहो; ५ उन्हे न छेडना, क्योकि उनके देश
मे से मै तुम्हे पाव धरने का ठौर तक न दूगा,
इस कारण कि मै ने सेईर पर्वत एसावियो
के अधिकार मे कर दिया है। ६ तुम उन
से भोजन रुपये से मोल लेकर खा सकोगे,
और रुपया देकर कुओ से पानी भरके पी
सकोगे। ७ क्योकि तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हारे हाथो के सव कामो के विषय
तुम्हे आशीष देता आया है, इस भारी
जगल मे तुम्हारा चलना फिरना वह जानता
है, इन चालीस वर्षो मे तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हारे सग सग रहा है, और तुम को
कुछ घटी नही हुई। ८ यो हम सेईर
निवासी और अपने भाई एसावियो के पास
से होकर, अरावा के मार्ग, और एलत और
एस्योनगेवेर को पीछे छोडकर चले॥

फिर हम मुडकर मोआव के जगल के
मार्ग से होकर चले। ९ और यहोवा ने मुझ
से कहा, मोआवियो को न सताना और
न लडाई छेडना, क्योकि मै उनके देश मे
हुए थे, परन्तु एसावियो ने उनको उस
देश से निकाल दिया, और अपने साम्हने
से नाश करके उनके स्थान पर आप वस
गए, जैसे कि इस्राएलियो ने यहोवा के
दिए हुए अपने अधिकार के देश में किया।)
१३ अव तुम लोग कूच करके जेरेद नदी
के पार जाओ, तव हम जेरेद नदी के पार
आए। १४ और हमारे कादेशवर्ने को
छोडने से लेकर जेरेद नदी पार होने तक
अडतीस वर्ष वीत गए, उस वीच मे यहोवा
की शपथ के अनुसार उस पीढी के सव योद्धा
छावनी मे से नाश हो गए। १५ और जव
तक वे नाश न हुए तव तक यहोवा का
हाथ उन्हे छावनी मे से मिटा डालने के
लिये उनके विरुद्ध वढा ही रहा॥

१६ जव सव योद्धा मरते मरते लोगो
के वीच मे से नाश हो गए, १७ तव
यहोवा ने मुझ से कहा, १८ अव मोआव
के सिवाने, अर्थात् आर को पार कर,
१९ और जव तू अम्मोनियो के साम्हने
जाकर उनके निकट पहुचे, तव उनको
न सताना और न छेडना, क्योकि मै
अम्मोनियो के देश मे से कुछ भी तेरे
अधिकार मे न करूगा, क्योकि मै ने उसे
लूतियो के अधिकार मे कर दिया है।
(२० वह देश भी रपाइयो का गिना जाता
था, क्योकि अगले दिनो मे रपाई, जिन्हे

अम्मोनी जमजुम्मी कहते थे, वे वहा
रहते थे, २१ वे भी अनाकियो के समान
बलवान और लम्बे लम्बे और गिनती
में बहुत थे, परन्तु यहोवा ने उनको
अम्मोनियो के साम्हने से नाश कर डाला,
और उन्हो ने उनको उस देश से निकाल
दिया, और उनके स्थान पर आप रहने
लगे, २२ जैसे कि उस ने सेईर के निवासी
एसावियो के साम्हने से होरियो को नाश
किया, और उन्हो ने उनको उस देश से
निकाल दिया, और आज तक उनके स्थान
पर वे आप निवास करते है। २३ वैसा
ही अव्वियो को, जो अज्जा नगर तक गावो
में बसे हुए थे, उनको कप्तोरियो ने जो
कप्तोर से निकले थे नाश किया, और उनके
स्थान पर आप रहने लगे।) २४ अब तुम
लोग उठकर कूच करो, और अर्नोन के
नाले के पार चलो, सुन, मैं देश समेत
हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन को तेरे
हाथ में कर देता हू, इसलिये उस देश को
अपने अधिकार में लेना आरम्भ करो, और
उस राजा से युद्ध छेड दो। २५ और
जितने लोग धरती पर* रहने है उन सभो
के मन में मै आज ही के दिन से तेरे कारण
डर और थरथराहट समवाने लगूगा, वे
तेरा समाचार पाकर तेरे डर के मारे
कापेंगे और पीडित होगे॥

२६ और मै ने कदेमोत नाम जगल से
हेशबोन के राजा सीहोन के पास मेल की
ये बातें कहने को दूत भेजे, २७ कि मुझे
अपने देश में से होकर जाने दे, मै राजपथ
पर चला जाऊगा, और दहिने और बाए
हाथ न मुडूगा। २८ तू रुपया लेकर मेरे
हाथ भोजनवस्तु देना कि मै खाऊ, और
पानी भी रुपया लेकर मुझ को देना कि मै
पीऊ, केवल मुझे पाव पाव चले जाने दे,
२९ जैसा सेईर के निवासी एसावियो ने
और आर के निवासी मोआबियो ने मुझ से
किया, वैसा ही तू भी मुझ से कर, इस रीति
मैं यरदन पार होकर उस देश मे पहुचूगा
जो हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है।
३० परन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने
हम को अपने देश मे से होकर चलने न
दिया, क्योकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने
उसका चित्त कठोर और उसका मन
हठीला कर दिया था, इसलिये कि उसको
तुम्हारे हाथ में कर दे, जैसा कि आज प्रगट
है। ३१ और यहोवा ने मुझ से कहा,
सुन, मै देश समेत सीहोन को तेरे वश मे
कर देने पर हू, उस देश को अपने अधिकार
में लेना आरम्भ कर। ३२ तब सीहोन
अपनी सारी सेना समेत निकल आया, और
हमारा साम्हना करके युद्ध करने को यहस
तक चढ आया। ३३ और हमारे परमेश्वर
यहोवा ने उसको हमारे द्वारा हरा दिया,
और हम ने उसको पुत्रो और सारी सेना
समेत मार डाला। ३४ और उसी समय
हम ने उसके सारे नगर ले लिए, और एक
एक बसे हुए नगर का स्त्रियो और बाल-
बच्चो समेत यहा तक सत्यानाश किया
कि कोई न छूटा, ३५ परन्तु पशुओ को
हम ने अपना कर लिया, और उन नगरो
की लूट भी हम ने ले ली जिनको हम ने
जीत लिया था। ३६ अर्नोन के नाले के
छोरवाले अरोएर नगर से लेकर, और
उस नाले मे के नगर से लेकर, गिलाद तक
कोई नगर ऐसा ऊचा न रहा जो हमारे
साम्हने ठहर सकता था, क्योकि हमारे
परमेश्वर यहोवा ने सभो को हमारे वश में
कर दिया। ३७ परन्तु हम अम्मोनियो

* मूल में—आकाश के तले।

के देश के निकट, वरन यब्बोक नदी के
उस पार जितना देश है, और पहाडी देश
के नगर जहा जहा जाने से हमारे परमेश्वर
यहोवा ने हम को मना किया था, वहा हम
नही गए॥

३ तब हम मुडकर बाशान के मार्ग
से चढ चले; और बाशान का ओग
नाम राजा अपनी सारी सेना समेत हमारा
साम्हना करने को निकल आया, कि एद्रेई
मे युद्ध करे। २ तब यहोवा ने मुझ से
कहा, उस से मत डर, क्योकि मै उसको
सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ मे
किए देता हू, और जैसा तू ने हेशबोन के
निवासी एमोरियो के राजा सीहोन से किया
है वैसा ही उस से भी करना। ३ सो इस
प्रकार हमारे परमेश्वर यहोवा ने सारी
सेना समेत बाशान के राजा ओग को भी
हमारे हाथ मे कर दिया, और हम उसको
यहा तक मारते रहे कि उन मे से कोई भी
न बच पाया। ४ उसी समय हम ने उनके
सारे नगरो को ले लिया, कोई ऐसा नगर
न रह गया जिसे हम ने उन से न ले लिया
हो, इस रीति अर्गोब का सारा देश, जो
बाशान मे ओग के राज्य मे था और उस मे
साठ नगर थे, वह हमारे वश मे आ गया।
५ ये सब नगर गढवाले थे, और उनके
ऊची ऊची शहरपनाह, और फाटक, और
बेडे थे, और इनको छोड बिना शहरपनाह
के भी बहुत से नगर थे। ६ और जैसा
हम ने हेशबोन के राजा सीहोन के नगरो
से किया था वैसा ही हम ने इन नगरो से
भी किया, अर्थात् सब बसे हुए नगरो को
स्त्रियो और बालबच्चो समेत सत्यानाश
कर डाला। ७ परन्तु सब घरेलू पशु और
नगरो की लूट हम ने अपनी कर ली।
८ यो हम ने उस समय यरदन के उस पार
रहनेवाले एमोरियो के दोनो राजाओ के
हाथ से अर्नोन के नाले से लेकर हेर्मोन
पर्वत तक का देश ले लिया। (९ हेर्मोन
को सीदोनी लोग सिर्योन, और एमोरी
लोग सनीर कहते है।) १० समथर देश
के सब नगर, और सारा गिलाद, और
सल्का, और एद्रेई तक जो ओग के राज्य
के नगर थे, सारा बाशान हमारे वश मे आ
गया। ११ जो रपाई रह गए थे, उन मे
से केवल बाशान का राजा ओग रह गया
था, उसकी चारपाई जो लोहे की है वह
तो अम्मोनियो के रब्बा नगर मे पडी है,
साधारण पुरुष के हाथ के हिसाब से उसकी
लम्बाई नौ हाथ की और चौडाई चार
हाथ की है। १२ जो देश हम ने उस समय
अपने अधिकार मे ले लिया वह यह है,
अर्थात् अर्नोन के नाले के किनारेवाले
अरोएर नगर से ले सब नगरो समेत गिलाद
के पहाडी देश का आधा भाग, जिसे मै ने
रूबेनियो और गादियो को दे दिया,
१३ और गिलाद का बचा हुआ भाग, और
सारा बाशान, अर्थात् अर्गोब का सारा देश
जो ओग के राज्य मे था, इन्हे मै ने मनश्शे
के आधे गोत्र को दे दिया। (सारा बाशान
तो रपाइयो का देश कहलाता है। १४ और
मनश्शेई याईर ने गशूरियो और माका-
वासियो के सिवानो तक अर्गोब का सारा
देश ले लिया, और बाशान के नगरो का
नाम अपने नाम पर हव्वोत्याईर* रखा,
और वही नाम आज तक बना है।)
१५ और मै ने गिलाद देश माकीर को दे
दिया, १६ और रूबेनियो और गादियो
को मै ने गिलाद से ले अर्नोन के नाले तक

* अर्थात् याईर की बस्तिया।

का देश दे दिया, अर्थात् उस नाले का बीच
उनका सिवाना ठहराया, और यब्बोक
नदी तक जो अम्मोनियों का सिवाना है,
१७ और किन्नेरेत से ले पिसगा की सलामी
के नीचे के अराबा के ताल तक, जो खारा
ताल भी कहलाता है, अराबा और यरदन
की पूर्व की ओर का सारा देश भी मैं ने
उन्हीं को दे दिया॥

१८ और उस समय मैं ने तुम्हें यह
आज्ञा दी, कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने
तुम्हें यह देश दिया है कि उसे अपने
अधिकार में रखो, तुम सब योद्धा हथियार-
बन्द होकर अपने भाई इस्राएलियों के आगे
आगे पार चलो। १९ परन्तु तुम्हारी
स्त्रियां, और बालबच्चे, और पशु, जिन्हें मैं
जानता हूं कि बहुत से हैं, वह सब तुम्हारे
नगरों में जो मैं ने तुम्हें दिए हैं रह जाएं।
२० और जब यहोवा तुम्हारे भाइयों को
वैसा विश्राम दे जैसा कि उस ने तुम को
दिया है, और वे उस देश के अधिकारी हो
जाएं जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें
यरदन पार देता है, तब तुम भी अपने अपने
अधिकार की भूमि पर जो मैं ने तुम्हें दी
है लौटोगे। २१ फिर मैं ने उसी समय
यहोशू से चिताकर कहा, तू ने अपनी आंखों
से देखा है कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने इन
दोनों राजाओं से क्या क्या किया है,
वैसा ही यहोवा उन सब राज्यों से करेगा
जिन में तू पार होकर जाएगा। २२ उन
से न डरना क्योंकि जो तुम्हारी ओर से
लड़नेवाला है वह तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा है॥

२३ उसी समय मैं ने यहोवा से गिड़-
गिड़ाकर विनती की, कि हे प्रभु यहोवा,
२४ तू अपने दास को अपनी महिमा और
बलवन्त हाथ दिखाने लगा है, स्वर्ग में और
पृथ्वी पर ऐसा कौन देवता है जो तेरे से
काम और पराक्रम के कर्म कर सके?
२५ इसलिये मुझे पार जाने दे कि यरदन
पार के उस उत्तम देश को, अर्थात् उस
उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी देखने
पाऊं। २६ परन्तु यहोवा तुम्हारे कारण
मुझ से रुष्ट हो गया, और मेरी न सुनी,
किन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, बस कर, इस
विषय में फिर कभी मुझ से बातें न करना।
२७ पिसगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ जा,
और पूर्व, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन, चारों
ओर दृष्टि करके उस देश को देख ले,
क्योंकि तू इस यरदन के पार जाने न
पाएगा। २८ और यहोशू को आज्ञा दे, और
उसे ढाढ़स देकर दृढ़ कर, क्योंकि इन लोगों
के आगे आगे वही पार जाएगा, और जो
देश तू देखेगा उसको वही उनका निज
भाग करा देगा। २९ तब हम बेतपोर
के साम्हने की तराई में ठहरे रहे॥

(मूसा का उपदेश)

४ अब, हे इस्राएल, जो जो विधि और
नियम मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं
उन्हें सुन लो, और उन पर चलो, जिस
से तुम जीवित रहो, और जो देश तुम्हारे
पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है
उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाओ।
२ जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में
न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना,
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा
मैं तुम्हें सुनाता हूं उन्हें तुम मानना।
३ तुम ने तो अपनी आंखों से देखा है कि
बालपोर के कारण यहोवा ने क्या क्या
किया, अर्थात् जितने मनुष्य बालपोर के
पीछे हो लिये थे उन सभों को तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे बीच में से

सत्यानाश कर डाला; ४ परन्तु तुम जो
अपने परमेश्वर यहोवा के साथ लिपटे रहे
हो सब के सब आज तक जीवित हो।
५ सुनो, मै ने तो अपने परमेश्वर यहोवा
की आज्ञा के अनुसार तुम्हे विधि और
नियम सिखाए है, कि जिस देश के अधिकारी
होने जाते हो उस मे तुम उनके अनुसार
चलो। ६ सो तुम उनको धारण करना
और मानना, क्योकि और देशो के लोगो
के साम्हने तुम्हारी बुद्धि और समझ उसी
से प्रगट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियो
को सुनकर कहेगे, कि निश्चय यह बडी
जाति बुद्धिमान और समझदार है।
७ देखो, कौन ऐसी बडी जाति है जिसका
देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा
हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उस
को पुकारते है? ८ फिर कौन ऐसी बडी
जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि
और नियम हो, जैसी कि यह सारी व्यवस्था
जिसे मै आज तुम्हारे साम्हने रखता हू?
९ यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम अपने
विषय मे सचेत रहो, और अपने मन की
बड़ी चौकसी करो, कही ऐसा न हो कि जो
जो बाते तुम ने अपनी आखो से देखी उनको
भूल जाओ, और वह जीवन भर के लिये
तुम्हारे मन से जाती रहे, किन्तु तुम उन्हे
अपने बेटो पोतो को सिखाना। १० विशेष
करके उस दिन की बाते जिस मे तुम होरेब
के पास अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने
खडे थे, जब यहोवा ने मुझ से कहा था,
कि उन लोगो को मेरे पास इकट्ठा कर कि
मै उन्हे अपने वचन सुनाऊ, जिस से वे
सीखे, ताकि जितने दिन वे पृथ्वी पर
जीवित रहे उतने दिन मेरा भय मानते
रहे, और अपने लडके वालो को भी यही
सिखाए। ११ तब तुम समीप जाकर उस
पर्वत के नीचे खडे हुए, और वह पहाड
आग से धधक रहा था, और उसकी लौ
आकाश तक पहुचती थी, और उसके चारो
ओर अन्धियारा, और बादल, और घोर
अन्धकार छाया हुआ था। १२ तब यहोवा
ने उस आग के बीच मे से तुम से बाते की,
बातो का शब्द तो तुम को सुनाई पडा,
परन्तु कोई रूप न देखा, केवल शब्द ही
शब्द सुन पडा। १३ और उस ने तुम को
अपनी वाचा के दसो वचन बताकर उनके
मानने की आज्ञा दी, और उन्हे पत्थर की
दो पटियाओ पर लिख दिया। १४ और
मुझ को यहोवा ने उसी समय तुम्हे विधि
और नियम सिखाने की आज्ञा दी, इसलिये
कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम
पार जाने पर हो उस मे तुम उनको माना
करो। १५ इसलिये तुम अपने विषय मे
बहुत सावधान रहना। क्योकि जब यहोवा
ने तुम से होरेब पर्वत पर आग के बीच मे
से बाते की तब तुम को कोई रूप न देख
पडा, १६ कही ऐसा न हो कि तुम बिगड-
कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, १७ चाहे
पृथ्वी पर चलनेवाले किसी पशु, चाहे
आकाश मे उडनेवाले किसी पक्षी के,
१८ चाहे भूमि पर रेगनेवाले किसी जन्तु,
चाहे पृथ्वी के जल मे * रहनेवाली किसी
मछली के रूप की कोई मूर्त्ति खोदकर बना
लो, १९ वा जब तुम आकाश की ओर आखे
उठाकर सूर्य, चद्रमा, और तारो को, अर्थात्
आकाश का सारा तारागण देखो, तब बहक-
कर उन्हे दण्डवत् करके उनकी सेवा करने
लगो जिनको तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने धरती पर के सब देशवालो के लिये रखा †
है। २० और तुम को यहोवा लोहे के भट्ठे

* मूल में—पृथ्वी के नीचे जल में।
† मूल में—बाट दिया।

के सरीखे मिस्र देश से निकाल ले आया है,
इसलिये कि तुम उसकी प्रजारूपी निज भाग
ठहरो, जैसा आज प्रगट है। २१ फिर
तुम्हारे कारण यहोवा ने मुझ से क्रोध करके
यह शपथ खाई, कि तू यरदन पार जाने न
पाएगा, और जो उत्तम देश इस्राएलियो का
परमेश्वर यहोवा उन्हें उनका निज भाग
करके देता है उस में तू प्रवेश करने न
पाएगा। २२ किन्तु मुझे इसी देश में
मरना है, मैं तो यरदन पार नही जा सकता,
परन्तु तुम पार जाकर उस उत्तम देश के
अधिकारी हो जाओगे। २३ इसलिये
अपने विषय में तुम सावधान रहो, कही
ऐसा न हो कि तुम उस वाचा को भूलकर,
जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से
बान्धी है, किसी और वस्तु की मूर्त्ति खोदकर
बनाओ, जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने
तुम को मना किया है। २४ क्योकि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा भस्म करनेवाली
आग है, वह जल उठनेवाला ईश्वर है॥

२५ यदि उस देश में रहते रहते बहुत
दिन बीत जाने पर, और अपने बेटे-पोते
उत्पन्न होने पर, तुम बिगडकर किसी वस्तु
के रूप की मूर्त्ति खोदकर बनाओ, और इस
रीति अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति बुराई
करके उसे अप्रसन्न कर दो, २६ तो मैं
आज आकाश और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध
साक्षी करके कहता हूं, कि जिस देश के
अधिकारी होने के लिये तुम यरदन पार जाने
पर हो उस मे तुम जल्दी बिल्कुल नाश हो
जाओगे, और बहुत दिन रहने न पाओगे,
किन्तु पूरी रीति से नष्ट हो जाओगे।
२७ और यहोवा तुम को देश देश के लोगो
में तितर बितर करेगा और जिन जातियो
के बीच यहोवा तुम को पहुचाएगा उन में
तुम थोडे ही से रह जाओगे। २८ और
वहा तुम मनुष्य के बनाए हुए लकडी और
पत्थर के देवताओ की सेवा करोगे, जो न
देखते, और न सुनते, और न खाते, और न
सूघते हैं। २९ परन्तु वहा भी यदि तुम
अपने परमेश्वर यहोवा को ढूढोगे, तो वह
तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम
अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से
उसे ढूढो। ३० अन्त के दिनो मे जब तुम
सकट में पडो, और ये सब विपत्तिया तुम
पर आ पडेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर
यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना,
३१ क्योकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु
ईश्वर है, वह तुम को न तो छोडेगा और
न नष्ट करेगा, और जो वाचा उस ने तेरे
पितरो से शपथ खाकर बान्धी है उसको
नही भूलेगा। ३२ और जब से परमेश्वर
ने मनुष्य को उत्पन्न करके पृथ्वी पर रखा
तब से लेकर तू अपने उत्पन्न होने के दिन
तक की बातें पूछ, और आकाश के एक छोर
से दूसरे छोर तक की बातें पूछ, क्या
ऐसी बडी बात कभी हुई वा सुनने में आई
है? ३३ क्या कोई जाति कभी परमेश्वर
की वाणी आग के बीच में से आती हुई
सुनकर जीवित रही, जैसे कि तू ने सुनी
है? ३४ फिर क्या परमेश्वर ने और
किसी जाति को दूसरी जाति के बीच से
निकालने को कमर बान्धकर परीक्षा, और
चिन्ह, और चमत्कार, और युद्ध, और बली
हाथ, और बढाई हुई भुजा से ऐसे बडे
भयानक काम किए, जैसे तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने मिस्र में तुम्हारे देखते किए?
३५ यह सब तुझ को दिखाया गया, इस-
लिये कि तू जान रखे कि यहोवा ही
परमेश्वर है, उसको छोड और कोई है
ही नही। ३६ आकाश में से उस ने तुझे
अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे,

से हम भस्म हो जाएगे, और यदि हम अपने
परमेश्वर यहोवा का शब्द फिर सुने, तव
तो मर ही जाएगे। २६ क्योकि सारे
प्राणियो मे से कौन ऐसा है जो हमारी
नाई जीवित और अग्नि के वीच मे से वोलते
हुए परमेश्वर का शब्द सुनकर जीवित वचा
रहे? २७ इसलिये तू समीप जा, और जो
कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा कहे उसे सुन
ले; फिर जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा
कहे उसे हम से कहना, और हम उसे सुनेगे
और उसे मानेगे। २८ जव तुम मुझ से
ये वाते कह रहे थे तव यहोवा ने तुम्हारी
वाते सुनी; तव उस ने मुझ से कहा, कि इन
लोगो ने जो जो वाते तुझ से कही है मै ने
सुनी है, इन्हो ने जो कुछ कहा वह ठीक
ही कहा। २९ भला होता कि उनका मन
सदैव ऐसा ही वना रहे, कि वे मेरा भय
मानते हुए मेरी सव आज्ञाओ पर चलते रहें,
जिस से उनकी और उनके वंश की सदैव
भलाई होती रहे! ३० इसलिये तू जाकर
उन से कह दे, कि अपने अपने डेरो को लौट
जाओ। ३१ परन्तु तू यही मेरे पास खडा
रह, और मै वे सारी आज्ञाए और विधिया
और नियम जिन्हे तुझे उनको सिखाना
होगा तुझ से कहूगा, जिस से वे उन्हे उस
देश मे जिसका अधिकार मै उन्हे देने पर
हू माने। ३२ इसलिये तुम अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा के अनुसार करने मे
चौकसी करना, न तो दहिने मुडना और न
वाए। ३३ जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है
उस सारे मार्ग पर चलते रहो, कि तुम
जीवित रहो, और तुम्हारा भला हो, और
जिस देश के तुम अधिकारी होगे उस में
तुम वहुत दिनो के लिये वने रहो॥

६ यह वह आज्ञा, और वे विधिया
और नियम है जो तुम्हे सिखाने की
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है,
कि तुम उन्हें उस देश मे मानो जिसके
अधिकारी होने को पार जाने पर हो;
२ और तू और तेरा वेटा और तेरा पोता
यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सव
विधियो और आज्ञाओ पर, जो मै तुझे
सुनाता हू, अपने जीवन भर चलते रहे,
जिस से तू वहुत दिन तक वना रहे। ३ हे
इस्राएल, सुन, और ऐसा ही करने की
चौकसी कर; इसलिये कि तेरा भला हो,
और तेरे पितरो के परमेश्वर यहोवा के वचन
के अनुसार उस देश मे जहा दूध और मधु
की धाराए वहती है तुम वहुत हो जाओ॥
४ हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा
परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; ५ तू अपने
परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और
सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम
रखना। ६ और ये आज्ञाए जो मै आज
तुझ को सुनाता हू वे तेरे मन मे वनी रहे;
७ और तू इन्हे अपने वालवच्चो को
समझाकर सिखाया करना, और घर मे वैठे,
मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा
किया करना। ८ और इन्हें अपने हाथ
पर चिन्हानी करके वान्धना, और ये तेरी
आखो के वीच टीके का काम दे। ९ और
इन्हे अपने अपने घर के चौखट की वाजुओ
और अपने फाटको पर लिखना॥
१० और जव तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे उस देश मे पहुचाए जिसके विषय मे
उस ने इव्राहीम, इसहाक, और याकूव नाम,
तेरे पूर्वजो से तुझे देने की शपथ खाई, और
जव वह तुझ को वडे वड़े और अच्छे नगर,
जो तू ने नही वनाए, ११ और अच्छे अच्छे
[illegible] ए घर, जो तू ने नही भरे,

और खुदे हुए कूए, जो तू ने नहीं खोदे, और
दाख की बारियां और जलपाई के वृक्ष, जो
तू ने नहीं लगाए, ये सब वस्तुएं जब वह दे,
और तू खाके तृप्त हो, १२ तब सावधान
रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा को
भूल जाए, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात्
मिस्र देश से निकाल लाया है। १३ अपने
परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसी
की सेवा करना, और उसी के नाम की
शपथ खाना। १४ तुम पराए देवताओं
के, अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के
लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना,
१५ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो
तेरे बीच में है वह जल उठनेवाला ईश्वर
है, कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर
यहोवा का कोप तुझ पर भड़के, और वह
तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले॥
१६ तुम अपने परमेश्वर यहोवा की
परीक्षा न करना, जैसे कि तुम ने मस्सा में
उसकी परीक्षा की थी। १७ अपने परमे-
श्वर यहोवा की आज्ञाओं, चितौनियों, और
विधियों को, जो उस ने तुझ को दी हैं,
सावधानी से मानना। १८ और जो काम
यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है
वही किया करना, जिस से कि तेरा भला
हो, और जिस उत्तम देश के विषय में
यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई उस में
तू प्रवेश करके उसका अधिकारी हो जाए,
१९ कि तेरे सब शत्रु तेरे साम्हने से दूर
कर दिए जाएं, जैसा कि यहोवा ने कहा
था॥
२० फिर आगे को जब तेरा लड़का
तुझ से पूछे, कि ये चितौनियां और विधि
और नियम, जिनके मानने की आज्ञा हमारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम को दी है, इनका
प्रयोजन क्या है? २१ तब अपने लड़के
से कहना, कि जब हम मिस्र में फिरौन के
दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से हम को
मिस्र में से निकाल ले आया, २२ और
यहोवा ने हमारे देखते मिस्र में फिरौन और
उसके सारे घराने को दुःख देनेवाले बड़े बड़े
चिन्ह और चमत्कार दिखाए, २३ और
हम को वह वहां से निकाल लाया, इसलिये
कि हमें इस देश में पहुंचाकर, जिसके विषय
में उस ने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी,
इसको हमें सौंप दे। २४ और यहोवा
ने हमें ये सब विधियां पालने की आज्ञा दी,
इसलिये कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का
भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला
हो, और वह हम को जीवित रखे, जैसा कि
आज के दिन है। २५ और यदि हम अपने
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में उसकी आज्ञा
के अनुसार इन सारे नियमों के मानने
में चौकसी करें, तो यह हमारे लिये धर्म
ठहरेगा॥

७ फिर जब तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे उस देश में जिसके अधिकारी
होने को तू जाने पर है पहुंचाए, और तेरे
साम्हने से हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी नाम, बहुत सी
जातियों को, अर्थात् तुम से बड़ी और सामर्थी
सातों जातियों को निकाल दे, २ और तेरा
परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे द्वारा हरा दे,
और तू उन पर जय प्राप्त कर ले, तब उन्हें
पूरी रीति से नष्ट कर डालना, उन से न
वाचा बान्धना, और न उन पर दया करना।
३ और न उन से ब्याह शादी करना, न तो
अपनी बेटी उनके बेटे को ब्याह देना, और
न उनकी बेटी को अपने बेटे के लिये ब्याह
लेना। ४ क्योंकि वे तेरे बेटे को मेरे पीछे
चलने से बहकाएंगी, और दूसरे देवताओं

और पृथ्वी पर उस ने तुझे अपनी बडी
आग दिखाई, और उसके वचन आग के
बीच में से आते हुए तुझे सुन पडे। ३७ और
उस ने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस
कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन
लिया, और प्रत्यक्ष होकर तुझे अपने बडे
सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से इसलिये निकाल
लाया, ३८ कि तुझ से बडी और सामर्थी
जातियों को तेरे आगे से निकालकर तुझे
उनके देश में पहुंचाए, और उसे तेरा निज
भाग कर दे, जैसा आज के दिन दिखाई
पडता है; ३९ सो आज जान ले, और
अपने मन में सोच भी रख, कि ऊपर
आकाश में और नीचे पृथ्वी पर यहोवा
ही परमेश्वर है, और कोई दूसरा नहीं।
४० और तू उसकी विधियों और आज्ञाओं
को जो मैं आज तुझे सुनाता हूं मानना,
इसलिये कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का
भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझे देता है उस में तेरे दिन बहुत
वरन सदा के लिये हों॥

४१ तब मूसा ने यरदन के पार पूर्व की
ओर तीन नगर अलग किए, ४२ इसलिये
कि जो कोई बिना जाने और बिना पहले
से बैर रखे अपने किसी भाई को मार डाले,
वह उन में से किसी नगर में भाग जाए,
और भागकर जीवित रहे ४३ अर्थात्
रूबेनियों का बेसेर नगर जो जंगल के
समथर देश में है, और गादियों के गिलाद
का रामोत, और मनश्शेइयों के बाशान
का गोलान॥

४४ फिर जो व्यवस्था मूसा ने इस्रा-
एलियों को दी वह यह है, ४५ ये ही वे
चितौनियां और नियम हैं जिन्हें मूसा ने
इस्राएलियों को उस समय कह सुनाया जब
वे मिस्र से निकले थे, ४६ अर्थात् यरदन के
पार बेतपोर के साम्हने की तराई में, एमो-
रियों के राजा हेश्बोनवासी सीहोन के देश
में, जिस राजा को उन्हों ने मिस्र से निकलने
के पीछे मारा। ४७ और उन्हों ने उसके
देश को और बाशान के राजा ओग के देश
को, अपने वश में कर लिया, यरदन के पार
सूर्योदय की ओर रहनेवाले एमोरियों के
राजाओं के ये देश थे। ४८ यह देश अर्नोन
के नाले के छोरवाले अरोएर से लेकर
सीओन, जो हेर्मोन भी कहलाता है, ४९ उस
पर्वत तक का सारा देश, और पिसगा की
सलामी के नीचे के अराबा के ताल तक,
यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा
है॥

५ मूसा ने सारे इस्राएलियों को
बुलवाकर कहा, हे इस्राएलियो, जो जो
विधि और नियम मैं आज तुम्हें सुनाता
हूं वे सुनो, इसलिये कि उन्हें सीखकर
मानने में चौकसी करो। २ हमारे परमे-
श्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा
बान्धी। ३ इस वाचा को यहोवा ने हमारे
पितरों से नहीं, हम ही से बान्धा, जो यहां
आज के दिन जीवित हैं। ४ यहोवा ने उस
पर्वत पर आग के बीच में से तुम लोगों से
आम्हने साम्हने बातें की, ५ उस आग के
डर के मारे तुम पर्वत पर न चढे, इसलिये
मैं यहोवा के और तुम्हारे बीच उसका वचन
तुम्हें बताने को खडा रहा। तब उस ने कहा,
६ तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे
दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से
निकाल लाया है, वह मैं हूं॥
७ मुझे छोड दूसरों को परमेश्वर करके
न मानना *॥

* वा मेरे साम्हने पराए देवताओं को न
मानना।

८ तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न
बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो
आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल
में * है, ९ तू उनको दण्डवत् न करना
और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं
तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला
ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं
उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को पितरों
का दण्ड दिया करता हूं, १० और जो
मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को
मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया
करता हूं॥

११ तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम
व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम
व्यर्थ † ले वह उसको निर्दोष न ठहरा-
एगा॥

१२ तू विश्रामदिन को मानकर पवित्र
रखना, जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे
आज्ञा दी। १३ छः दिन तो परिश्रम करके
अपना सारा कामकाज करना, १४ परन्तु
सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये
विश्रामदिन है, उस में न तू किसी भांति
का कामकाज करना, न तेरा बेटा, न तेरी
बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरा
बैल, न तेरा गदहा, न तेरा कोई पशु, न कोई
परदेशी भी जो तेरे फाटकों के भीतर हो,
जिस से तेरा दास और तेरी दासी भी तेरी
नाईं विश्राम करें। १५ और इस बात को
स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास
था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा
निकाल लाया, इस कारण तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा
देता है॥

* मूल में—पृथ्वी के नीचे के जल में।
† वा झूठी बात पर।

१६ अपने पिता और अपनी माता का
आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा
ने तुझे आज्ञा दी है, जिस से जो देश तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू
बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला
हो॥

१७ तू हत्या न करना॥

१८ तू व्यभिचार न करना॥

१९ तू चोरी न करना॥

२० तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न
देना॥

२१ तू न किसी की पत्नी का लालच
करना, और न किसी के घर का लालच
करना, न उसके खेत का, न उसके दास का,
न उसकी दासी का, न उसके बैल वा गदहे
का, न उसकी किसी और वस्तु का लालच
करना॥

२२ यही वचन यहोवा ने उस पर्वत पर
आग, और बादल, और घोर अन्धकार के
बीच में से तुम्हारी सारी मण्डली से पुकार-
कर कहा, और इस से अधिक और कुछ न
कहा। और उन्हें उस ने पत्थर की दो
पटियाओं पर लिखकर मुझे दे दिया।
२३ जब पर्वत आग से दहक रहा था और
तुम ने उस शब्द को अन्धियारे के बीच में से
आते सुना, तब तुम और तुम्हारे गोत्रों के
सब मुख्य मुख्य पुरुष और तुम्हारे पुरनिये
मेरे पास आए, २४ और तुम कहने लगे,
कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम को अपना
तेज और अपनी महिमा दिखाई है, और
हम ने उसका शब्द आग के बीच में से आते
हुए सुना, आज हम ने देख लिया कि यद्यपि
परमेश्वर मनुष्य से बातें करता है तौभी
मनुष्य जीवित रहता है। २५ अब हम
क्यों मर जाएं? क्योंकि ऐसी बड़ी आग

की उपासना करवाएगी; और इस कारण
यहोवा का कोप तुम पर भडक उठेगा, और
वह तुझ को शीघ्र सत्यानाश कर डालेगा।
५ उन लोगों से ऐसा वर्ताव करना, कि
उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों
को तोड डालना, उनकी अशेरा नाम
मूर्त्तियों को काट काटकर गिरा देना, और
उनकी खुदी हुई मूर्त्तियों को आग मे जला
देना। ६ क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा
की पवित्र प्रजा है, यहोवा ने पृथ्वी भर
के सब देशों के लोगों मे से तुझ को चुन लिया
है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे।
७ यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को
चुन लिया, इसका कारण यह नही था कि
तुम गिनती मे और सब देशों के लोगों से
अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशों के लोगों
से गिनती मे थोडे थे, ८ यहोवा ने जो
तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के
घर मे से, और मिस्र के राजा फिरौन के
हाथ से छुडाकर निकाल लिया, इसका
यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है,
और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता
है जो उस ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी।
९ इसलिये जान रख कि तेरा परमेश्वर
यहोवा ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य
ईश्वर है, और जो उस से प्रेम रखते और
उसकी आज्ञाएं मानते हैं उनके साथ वह
हजार पीढी तक अपनी वाचा पालता,
और उन पर करुणा करता रहता है,
१० और जो उस से वैर रखते हैं वह उनके
देखते उन से बदला लेकर नष्ट कर डालता
है, अपने वैरी के विषय वह विलम्ब न
करेगा, उसके देखते ही उस से बदला लेगा।
११ इसलिये इन आज्ञाओं, विधियों, और
नियमों को, जो मैं आज तुझे चिताता हूं,
मानने में चौकसी करना॥

१२ और तुम जो इन नियमों को सुन-
कर मानोगे और इन पर चलोगे, तो तेरा
परमेश्वर यहोवा भी उस करुणामय वाचा
को पालेगा जिसे उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ
खाकर बान्धी थी, १३ और वह तुझ से
प्रेम रखेगा, और तुझे आशीष देगा, और
गिनती मे बढाएगा, और जो देश उस ने
तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा
है उस में वह तेरी सन्तान पर, और अन्न,
नये दाखमधु, और टटके तेल आदि, भूमि की
उपज पर आशीष दिया करेगा, और तेरी
गाय-बैल और भेड-बकरियों की बढती
करेगा। १४ तू सब देशों के लोगों से
अधिक धन्य होगा; तेरे बीच मे न पुरुष
न स्त्री निर्वंश होगी, और तेरे पशुओं मे भी
ऐसा कोई न होगा। १५ और यहोवा तुझ
से सब प्रकार के रोग दूर करेगा, और मिस्र
की बुरी बुरी व्याधियां जिन्हे तू जानता है
उन मे से किसी को भी तुझे लगने न देगा,
ये सब तेरे वैरियों ही को लगेंगे। १६ और
देश देश के जितने लोगों को तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरे वश मे कर देगा, तू उन सभों
को सत्यानाश करना; उन पर तरस की
दृष्टि न करना, और न उनके देवताओं की
उपासना करना, नही तो तू फन्दे मे फस
जाएगा। १७ यदि तू अपने मन मे सोचे,
कि वे जातियां जो मुझ से अधिक हैं, तो मैं
उनको क्योंकर देश से निकाल सकूंगा?
१८ तौभी उन से न डरना, जो कुछ तेरे
परमेश्वर यहोवा ने फिरौन से और सारे
मिस्र से किया उसे भली भांति स्मरण
रखना। १९ जो बडे बडे परीक्षा के काम
तू ने अपनी आंखों से देखे, और जिन चिन्हों,
और चमत्कारों और जिस बलवन्त हाथ,
और बढाई हुई भुजा के द्वारा तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझ को निकाल लाया, उनके

अनुसार तेरा परमेश्वर यहोवा उन सब
लोगों से भी जिन से तू डरता है करेगा।
२० इस से अधिक तेरा परमेश्वर यहोवा
उनके बीच बर्रें भी भेजेगा, यहां तक कि
उन में से जो बचकर छिप जाएंगे वे भी
तेरे साम्हने से नाश हो जाएंगे। २१ उन
से भय न खाना, क्योंकि तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरे बीच में है, और वह महान् और
भय योग्य ईश्वर है। २२ तेरा परमेश्वर
यहोवा उन जातियों को तेरे आगे से धीरे
धीरे निकाल देगा, तो तू एक दम से उनका
अन्त न कर सकेगा, नहीं तो बनैले पशु बढ़-
कर तेरी हानि करेंगे। २३ तौभी तेरा
परमेश्वर यहोवा उनको तुझ से हरवा देगा,
और जब तक वे सत्यानाश न हो जाएं तब
तब उनको अति व्याकुल करता रहेगा।
२४ और वह उनके राजाओं को तेरे हाथ
में करेगा, और तू उनका भी नाम धरती पर
से * मिटा डालेगा, उन में से कोई भी तेरे
साम्हने खड़ा न रह सकेगा, और अंत में
तू उन्हें सत्यानाश कर डालेगा। २५ उनके
देवताओं की खुदी हुई मूर्तियां तुम आग में
जला देना, जो चांदी वा सोना उन पर
मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं
तो तू उसके कारण फन्दे में फंसेगा, क्योंकि
ऐसी वस्तुएं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की
दृष्टि में घृणित हैं। २६ और कोई घृणित
वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू
भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु
ठहरेगा, उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर
उस से घृणा करना और उसे कदापि न
चाहना, क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।

८ जो जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता
हूं उन सभों पर चलने की चौकसी
करना, इसलिये कि तुम जीवित रहो और
बढ़ते रहो, और जिस देश के विषय में
यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई है
उस में जाकर उसके अधिकारी हो जाओ।
२ और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर
यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल
के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह
तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके
यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और
कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा
वा नहीं। ३ उस ने तुझ को नम्र बनाया,
और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना,
जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे,
वही तुझ को खिलाया, इसलिये कि वह
तुझ को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही
से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन
यहोवा के मुंह से निकलते हैं उन ही से वह
जीवित रहता है। ४ इन चालीस वर्षों में
तेरे वस्त्र पुराने न हुए, और तेरे तन से भी
नहीं गिरे, और न तेरे पांव फूले। ५ फिर
अपने मन में यह तो विचार कर, कि जैसा
कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही
तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को ताड़ना देता
है। ६ इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा
की आज्ञाओं का पालन करते हुए उसके
मार्गों पर चलना, और उसका भय मानते
रहना। ७ क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे एक उत्तम देश में लिये जा रहा है,
जो जल की नदियों का, और तराइयों और
पहाड़ों से निकले हुए गहिरे गहिरे सोतों का
देश है। ८ फिर वह गेहूं, जौ, दाखलताओं,
अंजीरों, और अनारों का देश है, और
तेलवाली जलपाई और मधु का भी देश है।
९ उस देश में अन्न की महंगी न होगी,
और न उस में तुझे किसी पदार्थ की घटी

* मूल में — आकाश के तले से।

होगी, वहा के पत्थर लोहे के है,* और
वहा के पहाडो मे से तू तांबा खोदकर
निकाल सकेगा। १० और तू पेट भर
खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण
जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसका
धन्य मानेगा। ११ इसलिये सावधान
रहना, कही ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर
यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा,
नियम, और विधि मै आज तुझे सुनाता हू
उनका मानना छोड दे; १२ ऐसा न हो कि
जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे अच्छे
घर बनाकर उन मे रहने लगे, १३ और
तेरी गाय-बैलो और भेड-बकरियो की
बढती हो, और तेरा सोना, चादी, और तेरा
सब प्रकार का धन बढ जाए, १४ तब तेरे
मन मे अहकार समा जाए, और तू अपने
परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझ को
दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल
लाया है, १५ और उस बडे और भयानक
जगल में से ले आया है, जहा तेज विषवाले †
सर्प और बिच्छू है, और जलरहित सूखे
देश मे उस ने तेरे लिये चकमक की चट्टान
से जल निकाला, १६ और तुझे जगल मे
मन्ना खिलाया, जिसे तुम्हारे पुरखा जानते
भी न थे, इसलिये कि वह तुझे नम्र बनाए,
और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला
ही करे। १७ और कही ऐसा न हो कि तू
सोचने लगे, कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य
और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई।
१८ परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को
स्मरण रखना, क्योकि वही है जो तुझे
सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य इसलिये
देता है, कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजो से
शपथ खाकर बान्धी थी उसको पूरा करे,

* मूल में—जिसके पत्थर लोहा हैं।
† मूल में—जलते हुए।

जैसा आज प्रगट है। १९ यदि तू अपने
परमेश्वर यहोवा को भूलकर दूसरे देवताओं
के पीछे हो लेगा, और उनकी उपासना
और उनको दण्डवत करेगा, तो मैं आज तुम
को चिता देता हू कि तुम निःसन्देह नष्ट हो
जाओगे। २० जिन जातियो को यहोवा
तुम्हारे सम्मुख से नष्ट करने पर है, उन्ही
की नाई तुम भी अपने परमेश्वर यहोवा का
वचन न मानने के कारण नष्ट हो जाओगे॥

९ हे इस्राएल, सुन, आज तू यरदन
पार इसलिये जानेवाला है, कि ऐसी
जातियो को जो तुझ से बडी और सामर्थी
है, और ऐसे बडे नगरो को जिनकी शहर-
पनाह आकाश से बाते करती है,* अपने
अधिकार मे ले। २ उन मे बडे बडे
और लम्बे लम्बे लोग, अर्थात् अनाकवंशी
रहते है, जिनका हाल तू जानता है, और
उनके विषय मे तू ने यह सुना है, कि अनाक-
वशियो के साम्हने कौन ठहर सकता है ?
३ इसलिये आज तू यह जान ले, कि जो
तेरे आगे भस्म करनेवाली आग की नाई
पार जानेवाला है वह तेरा परमेश्वर
यहोवा है, और वह उनका सत्यानाश
करेगा, और वह उनको तेरे साम्हने दबा
देगा; और तू यहोवा के वचन के अनुसार
उनको उस देश से निकालकर शीघ्र ही
नष्ट कर डालेगा। ४ जब तेरा परमेश्वर
यहोवा उन्हे तेरे साम्हने से निकाल चुके तब
यह न सोचना, कि यहोवा तेरे धर्म के
कारण तुझे इस देश का अधिकारी होने को
ले आया है, किन्तु उन जातियो की दुष्टता
ही के कारण यहोवा उनको तेरे साम्हने से
निकालता है। ५ तू जो उनके देश का
अधिकारी होने के लिये जा रहा है, इसका

* मूल में—आकाश तक गढवाले नगरों को।

कारण तेरा धर्म वा मन की सिधाई नही
है, तेरा परमेश्वर यहोवा जो उन जातियो
को तेरे साम्हने से निकालता है, उसका
कारण उनकी दुष्टता है, और यह भी कि
जो वचन उस ने इब्राहीम, इसहाक, और
याकूब, तेरे पूर्वजो को शपथ खाकर दिया
था, उसको वह पूरा करना चाहता है।
६ इसलिये यह जान ले कि तेरा परमेश्वर
यहोवा, जो तुझे वह अच्छा देश देता है
कि तू उसका अधिकारी हो, उसे वह तेरे
धम के कारण नही दे रहा है, क्योकि तू तो
एक हठीली * जाति है। ७ इस बात का
स्मरण रख और कभी भी न भूलना, कि
जगल मे तू ने किस किस रीति से अपने
परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया, और
जिस दिन से तू मिस्र देश से निकला है
जब तक तुम इस स्थान पर न पहुचे तब
तक तुम यहोवा से बलवा ही बलवा करते
आए हो। ८ फिर होरेब के पास भी तुम ने
यहोवा को क्रोधित किया, और वह क्रोधित
होकर तुम्हे नष्ट करना चाहता था। ९ जब
मै उस वाचा के पत्थर की पटियाओ को
जो यहोवा ने तुम से बान्धी थी लेने के लिये
पवत के ऊपर चढ गया, तब चालीस दिन
और चालीस रात पर्वत ही के ऊपर रहा,
और मै ने न तो रोटी खाई न पानी पिया।
१० और यहोवा ने मुझे अपने ही हाथ †
की लिखी हुई पत्थर की दोनो पटियाओ
को सौप दिया, और वे ही वचन जिन्हें
यहोवा ने पर्वत के ऊपर आग के मध्य मे
से सभा के दिन तुम से कहे थे वे सब उन
पर लिखे हुए थे। ११ और चालीस दिन
और चालीस रात के बीत जाने पर यहोवा
ने पत्थर की वे दो वाचा की पटियाए मुझे
दे दी। १२ और यहोवा ने मुझ से कहा,
उठ, यहा से झटपट नीचे जा, क्योकि तेरी
प्रजा के लोग जिनको तू मिस्र से निकाल-
कर ले आया है वे बिगड गए है, जिस मार्ग
पर चलने की आज्ञा मै ने उन्हें दी थी
उसको उन्हो ने झटपट छोड दिया है,
अर्थात् उन्हो ने तुरन्त अपने लिये एक मूर्त्ति
ढालकर बना ली है। १३ फिर यहोवा ने
मुझ से यह भी कहा, कि मै ने उन लोगो को
देख लिया, वे हठीली जाति * के लोग है,
१४ इसलिये अब मुझे तू मत रोक, ताकि
मै उन्हें नष्ट कर डालू, और धरती के ऊपर
से † उनका नाम वा चिन्ह तक मिटा डालू,
और मै उन से बढकर एक बडी और सामर्थी
जाति तुझी से उत्पन्न करूगा। १५ तब
मै उलटे पैर पर्वत से नीचे उतर चला, और
पर्वत अग्नि से दहक रहा था, और मेरे
दोनो हाथो में वाचा की दोनो पटियाए थी।
१६ और मै ने देखा कि तुम ने अपने
परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध महापाप किया,
और अपने लिये एक बछडा ढालकर बना
लिया है, और तुरन्त उस मार्ग से जिस पर
चलने की आज्ञा यहोवा ने तुम को दी थी
उसको तुम ने तज दिया। १७ तब मै ने
उन दोनो पटियाओ को अपने दोनो हाथो
से लेकर फेंक दिया, और तुम्हारी आखो
के साम्हने उनको तोड डाला। १८ तब
तुम्हारे उस महापाप के कारण जिसे करके
तुम ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, और
उसे रीस दिलाई थी, मै यहोवा के साम्हने
मुह के बल गिर पडा, और पहिले की नाईं,
अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक,
न तो रोटी खाई और न पानी पिया।
१९ मै तो यहोवा के उस कोप और जल-

* मूल में—कड़ी गर्दनवाली।
† मूल में—परमेश्वर की अंगुली।

* मूल में—कड़ी गर्दनवाले।
† मूल में—आकाश के नीचे से।

जलाहट से डर रहा था, क्योंकि वह तुम से
अप्रसन्न होकर तुम्हें सत्यानाश करने को
था। परन्तु यहोवा ने उस बार भी मेरी सुन
ली। २० और यहोवा हारून से इतना
कोपित हुआ कि उसे भी सत्यानाश करना
चाहा, परन्तु उसी समय मैं ने हारून के
लिये भी प्रार्थना की। २१ और मैं ने वह
बछड़ा जिसे बनाकर तुम पापी हो गए थे
लेकर, आग में डालकर फूंक दिया, और
फिर उसे पीस पीसकर ऐसा चूर चूरकर
डाला कि वह धूल की नाईं जीर्ण हो गया,
और उसकी उस राख को उस नदी में फेंक
दिया जो पर्वत से निकलकर नीचे बहती
थी। २२ फिर तबेरा, और मस्सा, और
किब्रोतहत्तावा में भी तुम ने यहोवा को
रीस दिलाई थी। २३ फिर जब यहोवा
ने तुम को कादेशबर्ने से यह कहकर भेजा,
कि जाकर उस देश के जिसे मैं ने तुम्हें दिया
है अधिकारी हो जाओ, तब भी तुम ने
अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध
बलवा किया, और न तो उसका विश्वास
किया, और न उसकी बात ही मानी।
२४ जिस दिन से मैं तुम्हें जानता हूं
उस दिन से तुम यहोवा से बलवा ही करते
आए हो। २५ मैं यहोवा के साम्हने
चालीस दिन और चालीस रात मुंह के बल
पड़ा रहा, क्योंकि यहोवा ने कह दिया
था, कि वह तुम को सत्यानाश करेगा।
२६ और मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना की,
कि हे प्रभु यहोवा, अपना प्रजारूपी निज
भाग, जिनको तू ने अपने महान् प्रताप
से छुड़ा लिया है, और जिनको तू ने अपने
बलवन्त हाथ से मिस्र से निकाल लिया है,
उन्हें नष्ट न कर। २७ अपने दास इब्राहीम,
इसहाक, और याकूब को स्मरण कर, और
इन लोगों की कठोरता, और दुष्टता, और
पाप पर दृष्टि न कर, २८ जिस से ऐसा
न हो कि जिस देश से तू हम को निकालकर
ले आया है, वहां के लोग कहने लगें, कि
यहोवा उन्हें उस देश में जिसके देने का
वचन उनको दिया था नहीं पहुंचा सका,
और उन से बैर भी रखता था इसी कारण
उस ने उन्हें जंगल में निकालकर मार डाला
है। २९ ये लोग तेरी प्रजा और निज
भाग हैं, जिनको तू ने अपने बड़े सामर्थ्य
और बलवन्त भुजा के द्वारा निकाल ले
आया है॥

१० उस समय यहोवा ने मुझ से
कहा, पहिली पटियाओं के समान
पत्थर की दो और पटियाएं गढ़ ले, और
उन्हें लेकर मेरे पास पर्वत के ऊपर आ जा,
और लकड़ी का एक सन्दूक भी बनवा ले।
२ और मैं उन पटियाओं पर वे ही वचन
लिखूंगा, जो उन पहिली पटियाओं पर थे,
जिन्हें तू ने तोड़ डाला, और तू उन्हें उस
सन्दूक में रखना। ३ तब मैं ने बबूल की
लकड़ी का एक सन्दूक बनवाया, और पहिली
पटियाओं के समान पत्थर की दो और
पटियाएं गढ़ी, तब उन्हें हाथों में लिये
हुए पर्वत पर चढ़ गया। ४ और जो दस
वचन यहोवा ने सभा के दिन पर्वत पर
अग्नि के मध्य में से तुम से कहे थे, वे ही
उस ने पहिलों के समान उन पटियाओं
पर लिखे, और उनको मुझे सौंप दिया।
५ तब मैं पर्वत से नीचे उतर आया, और
पटियाओं को अपने बनवाए हुए सन्दूक में धर
दिया, और यहोवा की आज्ञा के अनुसार
वे वहीं रखी हुई हैं। (६ तब इस्राएली
याकानियों के कूओं से कूच करके मोसेरा
तक आए। वहां हारून मर गया, और
उसको वहीं मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र

एलीआज़र उसके स्थान पर याजक का
काम करने लगा। ७ वे वहा से कूच करके
गुदगोदा को, और गुदगोदा से योतवाता
को चले, इस देश मे जल की नदिया है।
८ उस समय यहोवा ने लेवी गोत्र को इस-
लिये अलग किया कि वे यहोवा की वाचा
का सन्दूक उठाया करे, और यहोवा के
सम्मुख खडे होकर उसकी सेवाटहल किया
करे, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया
करे, जिस प्रकार कि आज के दिन तक
होता आ रहा है। ९ इस कारण लेवियो
को अपने भाइयो के साथ कोई निज अंश वा
भाग नही मिला, यहोवा ही उनका निज
भाग है, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने
उन से कहा था।) १० मै तो पहिले की
नाई उस पर्वत पर चालीस दिन और
चालीस रात ठहरा रहा, और उस बार
भी यहोवा ने मेरी सुनी, और तुझे नाश
करने की मनसा छोड दी। ११ फिर
यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, और तू इन
लोगो की अगुवाई कर, ताकि जिस देश के
देने को मैं ने उनके पूर्वजो से शपथ खाकर
कहा था उस मे वे जाकर उसको अपने
अधिकार मे कर लें॥

१२ और अब, हे इस्राएल, तेरा परमे-
श्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और
तेरे पूर्वजो से स्नेह और प्रेम रखा, और
उनके बाद तुम लोगो को जो उनकी
सन्तान हो सर्व देशो के लोगो के मध्य में से
चुन लिया, जैसा कि आज के दिन प्रकट है।
१६ इसलिये अपने अपने हृदय का खतना
करो, और आगे को हठीले* न रहो।
१७ क्योकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही
ईश्वरो का परमेश्वर और प्रभुओ का प्रभु
है, वह महान् पराक्रमी और भय योग्य
ईश्वर है, जो किसी का पक्ष नहीं करता
और न घूस लेता है। १८ वह अनाथो और
विधवा का न्याय चुकाता, और परदेशियो
से ऐसा प्रेम करता है कि उन्हें भोजन
और वस्त्र देता है। १९ इसलिये तुम भी
परदेशियो से प्रेम भाव रखना, क्योंकि तुम
भी मिस्र देश मे परदेशी थे। २० अपने
परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसी की
सेवा करना और उसी से लिपटे रहना, और
उसी के नाम की शपथ खाना। २१ वही
तुम्हारी स्तुति के योग्य है†, और वही
तेरा परमेश्वर है, जिस ने तेरे साथ वे
बडे महत्व के और भयानक काम किए है
जिन्हे तू ने अपनी आखो से देखा है।
२२ तेरे पुरखा जब मिस्र में गए तब सत्तर
ही मनुष्य थे, परन्तु अब तेरे परमेश्वर
यहोवा ने तेरी गिनती आकाश के तारो के

बच्चो से नही कहता,) जिन्हो ने न तो कुछ
देखा और न जाना है कि तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने क्या क्या ताडना की, और कैसी
महिमा, और बलवन्त हाथ, और बढाई हुई
भुजा दिखाई, ३ और मिस्र मे वहा के
राजा फिरौन को कैसे कैसे चिन्ह दिखाए,
और उसके सारे देश मे कैसे कैसे चमत्कार
के काम किए, ४ और उस ने मिस्र
की सेना के घोड़ो और रथो से क्या किया,
अर्थात् जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे
तब उस ने उनको लाल समुद्र मे डुबोकर
किस प्रकार नष्ट कर डाला, कि आज
तक उनका पता नही, ५ और तुम्हारे
इस स्थान में पहुचने तक उस ने जगल में तुम
से क्या क्या किया, ६ और उस ने रूबेनी
एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम से
क्या क्या किया; अर्थात् पृथ्वी ने अपना
मुह पसारके उनको घरानो, और डेरो, और
सब अनुचरो समेत सब इस्राएलियो के
देखते * देखते कैसे निगल लिया; ७ परन्तु
यहोवा के इन सब बडे बडे कामो को तुम ने
अपनी आखो से देखा है। ८ इस कारण
जितनी आज्ञाए मै आज तुम्हें सुनाता हू
उन सभो को माना करना, इसलिये कि तुम
सामर्थी होकर उस देश में जिसके अधिकारी
होने के लिये तुम पार जा रहे हो प्रवेश करके
उसके अधिकारी हो जाओ, ९ और उस
देश मे बहुत दिन रहने पाओ, जिसे तुम्हे
और तुम्हारे वश को देने की शपथ यहोवा ने
तुम्हारे पूर्वजो से खाई थी, और उस मे दूध
और मधु की धाराए बहती है। १० देखो,
जिस देश के अधिकारी होने को तुम जा रहे
हो वह मिस्र देश के समान नही है, जहा से
निकलकर आए हो, जहा तुम बीज बोते थे
और हरे साग के खेत की रीति के अनुसार
अपने पाव से नालिया बनाकर सींचते थे,
११ परन्तु जिस देश के अधिकारी होने
को तुम पार जाने पर हो वह पहाडो और
तराइयो का देश है, और आकाश की वर्षा
के जल से सिंचता है, १२ वह ऐसा देश
है जिसकी तेरे परमेश्वर यहोवा को सुधि
रहती है, और वर्ष के आदि से लेकर अन्त
तक तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि उस पर
निरन्तर लगी रहती है॥

१३ और यदि तुम मेरी आज्ञाओ को
जो आज मैं तुम्हे सुनाता हू ध्यान से सुनकर,
अपने सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साथ,
अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो
और उसकी सेवा करते रहो, १४ तो मैं
तुम्हारे देश में बरसात के आदि और अन्त
दोनो समयो की वर्षा को अपने अपने समय
पर बरसाऊगा, जिस से तू अपना अन्न, नया
दाखमधु, और टटका तेल सचय कर सकेगा।
१५ और मै तेरे पशुओ के लिये तेरे मैदान
मे घास उपजाऊगा, और तू पेट भर खाएगा
और सन्तुष्ट रहेगा। १६ इसलिये अपने
विषय मे सावधान रहो, ऐसा न हो कि
तुम्हारे मन धोखा खाए, और तुम बहककर
दूसरे देवताओ की पूजा करने लगो और
उनको दण्डवत् करने लगो, १७ और
यहोवा का कोप तुम पर भडके, और वह
आकाश की वर्षा बन्द कर दे, और भूमि
अपनी उपज न दे, और तुम उस उत्तम देश
में से जो यहोवा तुम्हे देता है शीघ्र नष्ट
हो जाओ। १८ इसलिये तुम मेरे ये वचन
अपने अपने मन और प्राण मे धारण किए
रहना, और चिन्हानी के लिये अपने हाथो
पर बान्धना, और वे तुम्हारी आखो के मध्य
में टीके का काम दें। १९ और तुम घर में
बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी

* मूल में—बीच में।

चर्चा करके अपने लडकेवालो को सिखाया
करना। २० और इन्हे अपने अपने घर के
चौखट के बाजुओ और अपने फाटको के
ऊपर लिखना, २१ इसलिये कि जिस
देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजो से शपथ
खाकर कहा था, कि मै उसे तुम्हे दूगा, उस
में तुम्हारे और तुम्हारे लडकेवालो की
दीर्घायु हो, और जब तक पृथ्वी के ऊपर का
आकाश बना रहे तब तक वे भी बने रहे।
२२ इसलिये यदि तुम इन सब आज्ञाओ
के मानने मे जो मैं तुम्हें सुनाता हू पूरी
चौकसी करके अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम
रखो, और उसके सब मार्गो पर चलो, और
उस से लिपटे रहो, २३ तो यहोवा उन सब
जातियो को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा,
और तुम अपने से बडी और सामर्थी जातियो
के अधिकारी हो जाओगे। २४ जिस जिस
स्थान पर तुम्हारे पाव के तलवे पडें वे सब
तुम्हारे ही हो जाएगे, अर्थात् जगल से
लबानोन तक, और परात नाम महानद
से लेकर पश्चिम के समुद्र तक तुम्हारा
सिवाना होगा। २५ तुम्हारे साम्हने कोई
भी खडा न रह सकेगा, क्योकि जितनी
भूमि पर तुम्हारे पाव पडेगे उस सब पर
रहनेवालो के मन मे तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारे
कारण उन मे डर और थरथराहट उत्पन्न
कर देगा॥

२६ सुनो, मैं आज के दिन तुम्हारे
आगे आशीष और शाप दोनो रख देता हू।
२७ अर्थात् यदि तुम अपने परमेश्वर
यहोवा की इन आज्ञाओ को जो म आज
तुम्हें सुनाता हू मानो, तो तुम पर आशीष
होगी, २८ और यदि तुम अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञाओ को नही मानोगे, और
जिस मार्ग की आज्ञा मै आज सुनाता हू उसे
तजकर दूसरे देवताओ के पीछे हो लोगे
जिन्हें तुम नही जानते हो, तो तुम पर शाप
पडेगा॥

२९ और जब तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझ को उस देश मे पहुचाए जिसके अधि-
कारी होने को तू जाने पर है, तब आशीष
गरीज्जीम पर्वत पर से और शाप एबाल
पर्वत पर से सुनाना*। ३० क्या वे यरदन
के पार, सूर्य के अस्त होने की ओर, अराबा
के निवासी कनानियो के देश में, गिल्गाल के
साम्हने, मोरे के बाज वृक्षो के पास नही है?
३१ तुम तो यरदन पार इसी लिये जाने पर
हो, कि जो देश तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
तुम्हें देता है उसके अधिकारी हो जाओ,
और तुम उसके अधिकारी होकर उस
मे निवास करोगे, ३२ इसलिये जितनी
विधिया और नियम मैं आज तुम को सुनाता
हू उन सभो के मानने मे चौकसी करना॥

१२ जो देश तुम्हारे पूर्वजो के
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें अधिकार
मे लेने को दिया है, उस मे जब तक तुम
भूमि पर जीवित रहो तब तक इन विधियो
और नियमो के मानने में चौकसी करना।
२ जिन जातियो के तुम अधिकारी होगे
उनके लोग ऊचे ऊचे पहाडो वा टीलो पर,
वा किसी भाति के हरे वृक्ष के तले, जितने
स्थानो में अपने देवताओ की उपासना करते
हैं, उन सभो को तुम पूरी रीति से नष्ट कर
डालना, ३ उनकी वेदियो को ढा देना,
उनकी लाठो को तोड डालना, उनकी
अशेरा नाम मूरतियो को आग म जला देना
और उनके देवताओ की खुदी हुई मूरतो
को काटकर गिरा देना कि उन के नाम
उस देश मे से मिट जाए। ४ फिर जैसा

* मूल में—धरेन पर रखना।

पहिलौठे ले जाया करना, ७ और वहीं
तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने
भोजन करना, और अपने अपने घराने समेत
उन सब कामो पर, जिन मे तुम ने हाथ
लगाया हो, और जिन पर तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा की आशीष मिली हो, आनन्द
करना। ८ जैसे हम आजकल यहा जो काम
जिसको भाता है वही करते है वैसा तुम न
करना, ९ जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमे-
श्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहा तुम
अब तक तो नही पहुचे। १० परन्तु जब
तुम यरदन पार जाकर उस देश मे जिसके
भागी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हे करता
है बस जाओ, और वह तुम्हारे चारो ओर
के सब शत्रुओ से तुम्हे विश्राम दे, ११ और
तुम निडर रहने पाओ, तब जो स्थान
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का
निवास ठहराने के लिये चुन ले उसी मे
तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और
दशमाश, और उठाई हुई भेंटे, और मन्नतो
की सब उत्तम उत्तम वस्तुए जो तुम यहोवा
के लिये सकल्प करोगे, निदान जितनी
वस्तुओ की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हू
उन सभो को वही ले जाया करना।
१२ और वहा तुम अपने अपने बेटे बेटियो
और दास दासियो सहित अपने परमेश्वर
यहोवा के साम्हने आनन्द करना, और जो
करना। १५ परन्तु तू अपने सब फाटको
के भीतर अपने जी की इच्छा और अपने
परमेश्वर यहोवा की दी हुई आशीष के
अनुसार पशु मारके खा सकेगा, शुद्ध और
अशुद्ध मनुष्य दोनो खा सकेंगे, जैसे कि
चिकारे और हरिण का मास। १६ परन्तु
उसका लोहू न खाना, उसे जल की नाई
भूमि पर उडेल देना। १७ फिर अपने
अन्न, वा नये दाखमधु, वा टटके तेल का
दशमाश, और अपने गाय-बैलो वा भेड़-
बकरियो के पहिलौठे, और अपनी मन्नतो
की कोई वस्तु, और अपने स्वेच्छाबलि,
और उठाई हुई भेंटे अपने सब फाटको के
भीतर न खाना; १८ उन्हे अपने परमेश्वर
यहोवा के साम्हने उसी स्थान पर जिसको
वह चुने अपने बेटे बेटियो और दास दासियो
के, और जो लेवीय तेरे फाटको के भीतर
रहेंगे उनके साथ खाना, और तू अपने
परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपने सब कामो
पर जिन मे हाथ लगाया हो आनन्द करना।
१९ और सावधान रह कि जब तक तू भूमि
पर जीवित रहे तब तक लेवियो को न
छोडना॥

२० जब तेरा परमेश्वर यहोवा अपने
वचन के अनुसार तेरा देश बढाए, और तेरा
जी मास खाना चाहे, और तू सोचने लगे,
कि मै मास खाऊगा, तब जो मास तेरा जी

चाहे वही खा सकेगा। २१ जो स्थान तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिये चुन ले वह यदि तुझ से बहुत दूर हो, तो जो गाय-बैल भेड़-बकरी यहोवा ने तुझे दी हों, उन में से जो कुछ तेरा जी चाहे, उसे मेरी आज्ञा के अनुसार मारके अपने फाटकों के भीतर खा सकेगा। २२ जैसे चिकारे और हरिण का मांस खाया जाता है वैसे ही उनको भी खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के मनुष्य उनका मांस खा सकेंगे। २३ परन्तु उनका लोहू किसी भांति न खाना, क्योंकि लोहू जो है वह प्राण ही है, और तू मांस के साथ प्राण कभी भी न खाना। २४ उसको न खाना, उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल देना। २५ तू उसे न खाना, इसलिये कि वह काम करने से जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी भला हो। २६ परन्तु जब तू कोई वस्तु पवित्र करे, वा मन्नत माने, तो ऐसी वस्तुएं लेकर उस स्थान को जाना जिसको यहोवा चुन लेगा, २७ और वहां अपने होमबलियों के मांस और लोहू दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ाना, और मेलबलियों का लोहू उसकी वेदी पर उंडेलकर उनका मांस खाना। २८ इन बातों को जिनकी आज्ञा मैं तुझे सुनाता हूं चित्त लगाकर सुन, कि जब तू वह काम करे जो तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक है, तब तेरा और तेरे बाद तेरे वंश का भी सदा भला होता रहे॥

२९ जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिनका अधिकारी होने को तू जा रहा है तेरे आगे से नष्ट करे, और तू उनका अधिकारी होकर उनके देश में बस जाए, ३० तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनके सत्यानाश होने के बाद तू भी उनकी नाईं फंस जाए, अर्थात् यह कहकर उनके देवताओं के सम्बन्ध में यह पूछपाछ न करना, कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति करते थे?—मैं भी वैसी ही करूंगा। ३१ तू अपने परमेश्वर यहोवा से ऐसा व्यवहार न करना, क्योंकि जितने प्रकार के कामों से यहोवा घृणा करता है और बैर-भाव रखता है, उन सभों को उन्हों ने अपने देवताओं के लिये किया है, यहां तक कि अपने बेटे बेटियों को भी वे अपने देवताओं के लिये अग्नि में डालकर जला देते हैं॥

३२ जितनी बातों की मैं तुम को आज्ञा देता हूं उनको चौकस होकर माना करना, और न तो कुछ उन में बढ़ाना और न उन में से कुछ घटाना॥

१३ यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई चिन्ह वा चमत्कार दिखाए, २ और जिस चिन्ह वा चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, कि आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिन से तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें, ३ तब तुम उस भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिस से यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं वा नहीं? ४ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे चलना और उसका भय मानना, और उसकी आज्ञाओं पर चलना, और उसका वचन मानना, और उसकी सेवा करना, और उसी से लिपटे रहना। ५ और ऐसा भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न

देखनेवाला जो तुम को तुम्हारे उस परमेश्वर
यहोवा से फेरके, जिस ने तुम को मिस्र देश
से निकाला और दासत्व के घर से छुड़ाया
है, तेरे उसी परमेश्वर यहोवा के मार्ग
से बहकाने की बात कहनेवाला ठहरेगा,
इस कारण वह मार डाला जाए। इस
रीति से तू अपने बीच में से ऐसी बुराई को
दूर कर देना॥

६ यदि तेरा सगा भाई, वा बेटा, वा
बेटी, वा तेरी अर्द्धांगिन *, वा प्राणप्रिय तेरा
कोई मित्र निराले में तुझ को यह कहकर
फुसलाने लगे, कि आओ हम दूसरे देवताओं
की उपासना वा पूजा करें, जिन्हें न तो तू
न तेरे पुरखा जानते थे, ७ चाहे वे तुम्हारे
निकट रहनेवाले आस पास के लोगों के,
चाहे पृथ्वी के एक छोर से लेके दूसरे
छोर तक दूर दूर के रहनेवालों के देवता
हों, ८ तो तू उसकी न मानना, और न
तो उसकी बात सुनना, और न उस पर
तरस खाना, और न कोमलता दिखाना,
और न उसको छिपा रखना, ९ उसको
अवश्य घात करना, उसके घात करने में
पहिले तेरा हाथ उठे, पीछे सब लोगों के
हाथ उठें। १० उस पर ऐसा पत्थरवाह
करना कि वह मर जाए, क्योंकि उस ने
तुझको तेरे उस परमेश्वर यहोवा से, जो
तुझ को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से
निकाल लाया है, बहकाने का यत्न किया
है। ११ और सब इस्राएली सुनकर भय
खाएंगे, और ऐसा बुरा काम फिर तेरे बीच
न करेंगे॥

१२ यदि तेरे किसी नगर के विषय में,
जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे रहने के
लिये देता है, ऐसी बात तेरे सुनने में आए,
१३ कि कितने अधम पुरुषों ने तेरे ही
बीच में से निकलकर अपने नगर के
निवासियों को यह कहकर बहका दिया है,
कि आओ हम और देवताओं की जिन में
अब तक अनजान रहे उपासना करें,
१४ तो पूछपाछ करना, और खोजना,
और भली भांति पता लगाना, और यदि
यह बात सच हो, और कुछ भी सन्देह न रहे
कि तेरे बीच ऐसा घिनौना काम किया
जाता है, १५ तो अवश्य उस नगर के
निवासियों को तलवार से मार डालना,
और पशु आदि उस सब समेत जो उस में
हो उसको तलवार से सत्यानाश करना।
१६ और उस में की सारी लूट चौक के
बीच इकट्ठी करके उस नगर को लूट समेत
अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मानो
सर्वांग होम करके जलाना; और वह सदा
के लिये डीह रहे, वह फिर बसाया न जाए।
१७ और कोई सत्यानाश की वस्तु तेरे
हाथ न लगने पाए, जिस से यहोवा अपने
भड़के हुए कोप से शान्त होकर जैसा उस ने
तेरे पूर्वजों से शपथ खाई थी वैसा ही तुझ
से दया का व्यवहार करे, और दया करके
तुझ को गिनती में बढ़ाए। १८ यह तब
होगा जब तू अपने परमेश्वर यहोवा की
जितनी आज्ञाएं मैं आज तुझे सुनाता हूं
उन सभों को मानेगा, और जो तेरे परमेश्वर
यहोवा की दृष्टि में ठीक है वही करेगा॥

१४ तुम अपने परमेश्वर यहोवा के
पुत्र हो; इसलिये मरे हुओं के
कारण न तो अपना शरीर चीरना, और
न भौहों के बाल मुड़ाना *। २ क्योंकि
तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र

* मूल में—तुम्हारी गोद की स्त्री।

* मूल में—अपनी आखों के बीच गजापन न करना।

समाज है, और यहोवा ने तुझ को पृथ्वी
भर के समस्त देशो के लोगो मे से अपनी
निज सम्पत्ति होने के लिये चुन लिया है॥
३ तू कोई घिनौनी वस्तु न खाना।
४ जो पशु तुम खा सकते हो वे ये है,
अर्थात् गाय-बैल, भेड-बकरी, ५ हरिण,
चिकारा, यखमूर, बनैली बकरी, साबर,
नीलगाय, और बनैली भेड। ६ निदान
पशुओ में से जितने पशु चिरे वा फटे खुर-
वाले और पागुर करनेवाले होते है उनका
मास तुम खा सकते हो। ७ परन्तु पागुर
करनेवाले वा चिरे खुरवालो मे से इन
पशुओ को, अर्थात् ऊट, खरहा, और शापान
को न खाना, क्योकि ये पागुर तो करते है
परन्तु चिरे खुर के नही होते, इस कारण
वे तुम्हारे लिये अशुद्ध है। ८ फिर सूअर,
जो चिरे खुर का तो होता है परन्तु पागुर
नही करता, इस कारण वह तुम्हारे लिय
अशुद्ध है। तुम न तो इनका मास खाना,
और न इनकी लोथ छूना॥
९ फिर जितने जलजन्तु है उन मे से
तुम इन्हे खा सकते हो, अर्थात् जितनो के
पख और छिलके होते है। १० परन्तु
जितने बिना पख और छिलके के होते है
उन्हे तुम न खाना, क्योकि वे तुम्हारे लिये
अशुद्ध है॥
११ सब शुद्ध पक्षियो का मास तो तुम
खा सकते हो। १२ परन्तु इनका मास
न खाना, अर्थात् उकाब, हडफोड, कुरर,
१३ गरुड, चील और भाति भाति के
शाही, १४ और भाति भाति के सब
काग, १५ शुतर्मुग, तहमास, जलकुकुट,
और भाति भाति के बाज, १६ छोटा
और बडा दोनो जाति का उल्लू, और
घुग्घू, १७ धनेश, गिद्ध, हाडगील,
१८ सारस, भाति भाति के बगुले, नौवा,
और चमगीदड। १९ और जितने रेंगनेवाले
पखेरु है वे सब तुम्हारे लिये अशुद्ध है, वे
खाए न जाए। २० परन्तु सब शुद्ध
पखवालो का मास तुम खा सकते हो॥
२१ जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे
तुम न खाना, उसे अपने फाटको के भीतर
किसी परदेशी को खाने के लिये दे सकते
हो, वा किसी पराए के हाथ बेच सकते हो,
परन्तु तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिये
पवित्र समाज है। बकरी का बच्चा उसकी
माता के दूध में न पकाना॥
२२ बीज की सारी उपज में से जो
प्रतिवर्ष खेत में उपजे उसका दशमाश अवश्य
अलग करके रखना। २३ और जिस
स्थान को तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम
का निवास ठहराने के लिये चुन ले उस में
अपने अन्न, और नये दाखमधु, और टटके
तेल का दशमाश, और अपने गाय-बैलो
और भेड-बकरियो के पहिलौठे अपने
परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाया करना,
जिस से तुम उसका भय नित्य मानना
सीखोगे। २४ परन्तु यदि वह स्थान जिस
को तेरा परमेश्वर यहोवा अपना नाम
बनाए रखने के लिये चुन लेगा बहुत दूर
हो, और इस कारण वहा की यात्रा तेरे
लिये इतनी लम्बी हो कि तू अपने परमेश्वर
यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुए वहा
न ले जा सके, २५ तो उसे बेचके, रुपये
को बान्ध, हाथ में लिये हुए उस स्थान पर
जाना जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा,
२६ और वहा गाय-बैल, वा भेड-बकरी, वा
दाखमधु, वा मदिरा, वा किसी भाति की
वस्तु क्यो न हो, जो तेरा जी चाहे, उसे उसी
रुपये से मोल लेकर अपने घराने समेत
अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने खाकर
आनन्द करना। २७ और अपने फाटको

के भीतर के लेवीय को न छोडना, क्योंकि
तेरे साथ उसका कोई भाग वा अंश न
होगा ॥

२८ तीन तीन वर्ष के बीतने पर
तीसरे* वर्ष की उपज का सारा दशमांश
निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा
कर रखना; २९ तब लेवीय जिसका
तेरे संग कोई निज भाग वा अंश न होगा
वह, और जो परदेशी, और अनाथ, और
विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों, वे भी
आकर पेट भर खाएं, जिस से तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे ॥

१५ सात सात वर्ष बीतने पर तुम
छुटकारा दिया करना, २ अर्थात्
जिस किसी ऋण देनेवाले ने अपने पडोसी
को कुछ उधार दिया हो, तो वह उसे छोड
दे, और अपने पडोसी वा भाई से उसको
बरबस न भरवा ले, क्योंकि यहोवा के नाम
से इस छुटकारे का प्रचार हुआ है। ३ पर-
देशी मनुष्य से तू उसे बरबस भरवा सकता
है, परन्तु जो कुछ तेरे भाई के पास तेरा हो
उसको तू बिना भरवाए छोड देना। ४ तेरे
बीच कोई दरिद्र न रहेगा, क्योंकि जिस देश
को तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके
तुझे देता है, कि तू उसका अधिकारी हो,
उस में वह तुझे बहुत ही आशीष देगा।
५ इतना अवश्य है कि तू अपने परमेश्वर
यहोवा की बात चित्त लगाकर सुने, और
इन सारी आज्ञाओं के मानने में जो मैं आज
तुझे सुनाता हूं चौकसी करे। ६ तब तेरा
परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार
तुझे आशीष देगा, और तू बहुत जातियों
को उधार देगा, परन्तु तुझे उधार लेना न
पड़ेगा, और तू बहुत जातियों पर प्रभुता
करेगा, परन्तु वे तेरे ऊपर प्रभुता न करने
पाएंगी ॥

७ जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
देता है उसके किसी फाटक के भीतर यदि
तेरे भाइयों में से कोई तेरे पास दरिद्र हो,
तो अपने उस दरिद्र भाई के लिये न तो अपना
हृदय कठोर करना, और न अपनी मुट्ठी
कड़ी करना, ८ जिस वस्तु की घटी
उसको हो, उसका जितना प्रयोजन हो उतना
अवश्य अपना हाथ ढीला करके उसको
उधार देना। ९ सचेत रह कि तेरे मन में
ऐसी अधम चिन्ता न समाए, कि सातवां
वर्ष जो छुटकारे का वर्ष है वह निकट है,
और अपनी दृष्टि तू अपने उस दरिद्र भाई
की ओर से क्रूर करके उसे कुछ न दे, और
वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई दे, तो यह
तेरे लिये पाप ठहरेगा। १० तू उसको
अवश्य देना, और उसे देते समय तेरे मन
को बुरा न लगे, क्योंकि इसी बात के कारण
तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में
जिन में तू अपना हाथ लगाएगा तुझे आशीष
देगा। ११ तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए
जाएंगे, इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं,
कि तू अपने देश में अपने दीन-दरिद्र भाइयों
को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान
देना ॥

१२ यदि तेरा कोई भाईबन्धु, अर्थात्
कोई इब्री वा इब्रिन, तेरे हाथ बिके, और वह
छः वर्ष तेरी सेवा कर चुके, तो सातवें वर्ष
उसको अपने पास से स्वतन्त्र करके जाने
देना। १३ और जब तू उसको स्वतन्त्र
करके अपने पास से जाने दे तब उसे छूछे
हाथ न जाने देना, १४ वरन अपनी भेड़-
बकरियों, और खलिहान, और दाखमधु के
कुण्ड में से उसको बहुतायत से देना, तेरे
परमेश्वर यहोवा ने तुझे जैसी आशीष दी

* मूल में—उस।

हो उसी के अनुसार उसे देना। १५ और
इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्र
देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने
तुझे छुड़ा लिया, इस कारण मैं आज तुझे
यह आज्ञा सुनाता हूं। १६ और यदि वह
तुझ से और तेरे घराने से प्रेम रखता,
और तेरे संग आनन्द से रहता हो, और इस
कारण तुझ से कहने लगे, कि मैं तेरे पास
से न जाऊंगा, १७ तो सुतारी लेकर उसका
कान किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह
सदा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी
दासी से भी ऐसा ही करना। १८ जब तू
उसको अपने पास से स्वतन्त्र करके जाने
दे, तब उसे छोड़ देना तुझ को कठिन न जान
पड़े, क्योंकि उस ने छः वर्ष दो मजदूरों के
बराबर तेरी सेवा की है। और तेरा
परमेश्वर यहोवा तेरे सारे कामों में तुझ
को आशीष देगा॥

१९ तेरी गायों और भेड़-वकरियों के
जितने पहिलौठे नर हों उन सभों को अपने
परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र रखना,
अपनी गायों के पहिलौठे से कोई काम न
लेना, और न अपनी भेड़-वकरियों के
पहिलौठे का ऊन कतरना। २० उस स्थान
पर जो तेरा परमेश्वर यहोवा चुन लेगा
तू यहोवा के साम्हने अपने अपने घराने
समेत प्रति वर्ष उसका मांस खाना।
२१ परन्तु यदि उस में किसी प्रकार का
दोष हो, अर्थात् वह लंगड़ा वा अन्धा हो,
वा उस में किसी और ही प्रकार की बुराई
का दोष हो, तो उसे अपने परमेश्वर यहोवा
के लिये वलि न करना। २२ उसको अपने
फाटकों के भीतर खाना, शुद्ध और अशुद्ध
दोनों प्रकार के मनुष्य जैसे चिकारे और
हरिण का मांस खाते हैं वैसे ही उसका
भी खा सकेंगे। २३ परन्तु उसका लोहू
न खाना, उसे जल की नाईं भूमि पर उंडेल
देना॥

१६ आवीव महीने को स्मरण
करके अपने परमेश्वर यहोवा के
लिये फसह का पर्व मानना, क्योंकि आवीव
महीने में तेरा परमेश्वर यहोवा रात को
तुझे मिस्र से निकाल लाया। २ इसलिये
जो स्थान यहोवा अपने नाम का निवास
ठहराने को चुन लेगा, वहीं अपने परमेश्वर
यहोवा के लिये भेड़-वकरियों और गाय-बैल
फसह करके वलि करना। ३ उसके संग
कोई खमीरी वस्तु न खाना, सात दिन तक
अखमीरी रोटी जो दुःख की रोटी है
खाया करना, क्योंकि तू मिस्र देश से
उतावली करके निकला था, इस रीति से
तुझ को मिस्र देश से निकलने का दिन
जीवन भर स्मरण रहेगा। ४ सात दिन
तक तेरे सारे देश में तेरे पास कहीं खमीर
देखने में भी न आए, और जो पशु तू पहिले
दिन की सन्ध्या को वलि करे उसके मांस
में से कुछ विहान तक रहने न पाए।
५ फसह को अपने किसी फाटक के भीतर,
जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे वलि
न करना, ६ जो स्थान तेरा परमेश्वर
यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये
चुन ले केवल वहीं, वर्ष के उसी समय जिस
में तू मिस्र से निकला था, अर्थात् सूरज
डूबने पर सन्ध्याकाल को, फसह का पशुवलि
करना। ७ तब उसका मांस उसी स्थान
में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले
भूनकर खाना, फिर विहान को उठकर
अपने अपने डेरे को लौट जाना। ८ छः
दिन तक अखमीरी रोटी खाया करना,
और सातवें दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के

लिये महासभा हो, उस दिन किसी प्रकार
का कामकाज न किया जाए॥
६ फिर जब तू खेत मे हसुआ लगाने
लगे, तब से आरम्भ करके सात अठवारे
गिनना। १० तब अपने परमेश्वर यहोवा
की आशीष के अनुसार उसके लिये स्वेच्छा-
बलि देकर अठवारो नाम पर्व्व मानना,
११ और उस स्थान मे जो तेरा परमेश्वर
यहोवा अपने नाम का निवास करने को
चुन ले अपने अपने बेटे-बेटियो, दास-
दासियो समेत तू और तेरे फाटको के भीतर
जो लेवीय हो, और जो जो परदेशी, और
अनाथ, और विधवाए तेरे बीच मे हो, वे
सब के सब अपने परमेश्वर यहोवा के
साम्हने आनन्द करे। १२ और स्मरण
रखना कि तू भी मिस्र मे दास था; इसलिये
इन विधियो के पालन करने मे चौकसी
करना॥
१३ तू जब अपने खलिहान और दाख-
मधु के कुण्ड मे से सब कुछ इकट्ठा कर चुके,
तब झोपडियो नाम पर्व्व सात दिन मानते
रहना, १४ और अपने इस पर्व्व मे अपने
अपने बेटे-बेटियो, दास-दासियो समेत तू
और जो लेवीय, और परदेशी, और अनाथ,
और विधवाए तेरे फाटको के भीतर हो
वे भी आनन्द करे। १५ जो स्थान
यहोवा चुन ले उस मे तू अपने परमेश्वर
यहोवा के लिये सात दिन तक पर्व्व मानते
रहना, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरी
सारी बढती मे और तेरे सब कामो मे तुझ
को आशीष देगा, तू आनन्द ही करना।
१६ वर्ष मे तीन बार, अर्थात् अखमीरी
रोटी के पर्व्व, और अठवारो के पर्व्व, और
झोपडियो के पर्व्व, इन तीनो पर्व्वो मे
तुम्हारे सब पुरुष अपने परमेश्वर यहोवा के
साम्हने उस स्थान मे जो वह चुन लेगा
जाए। और देखो, छूछे हाथ यहोवा के
साम्हने कोई न जाए, १७ सब पुरुष अपनी
अपनी पूजी, और उस आशीष के अनुसार
जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझ को दी हो,
दिया करे॥
१८ तू अपने एक एक गोत्र मे से, अपने
सब फाटको के भीतर जिन्हे तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझ को देता है न्यायी और सरदार
नियुक्त कर लेना, जो लोगो का न्याय धर्म
से किया करे। १९ तुम न्याय न बिगाडना,
तू न तो पक्षपात करना, और न तो घूस
लेना, क्योकि घूस बुद्धिमान की आखे अन्धी
कर देती है, और धर्मियो की बाते पलट देती
है। २० जो कुछ नितान्त ठीक है उसी का
पीछा पकडे रहना, जिस से तू जीवित रहे,
और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
देता है उसका अधिकारी बना रहे॥
२१ तू अपने परमेश्वर यहोवा की जो
वेदी बनाएगा उसके पास किसी प्रकार की
लकडी की बनी हुई अशेरा का स्थापन न
करना। २२ और न कोई लाठ खडी
करना, क्योकि उस से तेरा परमेश्वर यहोवा
घृणा करता है॥

१७ तू अपने परमेश्वर यहोवा के
लिये कोई बैल वा भेड-बकरी बलि
न करना जिस मे दोष वा किसी प्रकार की
खोट हो, क्योकि ऐसा करना तेरे परमेश्वर
यहोवा के समीप घृणित है॥
२ जो बस्तियां * तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे देता है, यदि उन मे से किसी मे कोई
पुरुष वा स्त्री ऐसी पाई जाए, जिस ने तेरे
परमेश्वर यहोवा की वाचा तोडकर ऐसा
काम किया हो, जो उसकी दृष्टि मे बुरा है,
३ अर्थात् मेरी आज्ञा उल्लघन करके पराए

* मूल में—फाटक।

देवताओं की, वा सूर्य, वा चंद्रमा, वा
आकाश के गण में से किसी की उपासना
की हो, वा उनको दण्डवत किया हो,
४ और यह बात तुझे बतलाई जाए और
तेरे सुनने में आए, तब भली भांति पूछपाछ
करना, और यदि यह बात सच ठहरे कि
इस्राएल में ऐसा घृणित कर्म किया गया है,
५ तो जिस पुरुष वा स्त्री ने ऐसा बुरा काम
किया हो, उस पुरुष वा स्त्री को बाहर अपने
फाटकों पर ले जाकर ऐसा पत्थरवाह करना
कि वह मर जाए। ६ जो प्राणदण्ड के
योग्य ठहरे वह एक ही की साक्षी से न मार
डाला जाए, किन्तु दो वा तीन मनुष्यों की
साक्षी से मार डाला जाए। ७ उसके मार
डालने के लिये सब से पहिले साक्षियों के
हाथ, और उनके बाद और सब लोगों के
हाथ उस पर उठें। इसी रीति से ऐसी
बुराई को अपने मध्य में से दूर करना॥

८ यदि तेरी बस्तियों * के भीतर कोई
झगड़े की बात हो, अर्थात् आपस के खून, वा
विवाद, वा मारपीट का कोई मुकद्दमा उठे,
और उसका न्याय करना तेरे लिये कठिन
जान पड़े, तो उस स्थान को जाकर जो तेरा
परमेश्वर यहोवा चुन लेगा, ९ लेवीय
याजकों के पास और उन दिनों के न्यायियों
के पास जाकर पूछपाछ करना, कि वे तुम को
न्याय की बातें बतलाएं। १० और न्याय
की जैसी बात उस स्थान के लोग जो यहोवा
चुन लेगा तुझे बता दें, उसी के अनुसार
करना, और जो व्यवस्था वे तुझे दें उसी
के अनुसार चलने में चौकसी करना,
११ व्यवस्था की जो बात वे तुझे बताएं,
और न्याय की जो बात वे तुझ से कहें, उसी
के अनुसार करना, जो बात वे तुझ को
बताएं उस से दहिने वा बाएं न मुड़ना।
१२ और जो मनुष्य अभिमान करके उस
याजक की, जो वहां तेरे परमेश्वर यहोवा
की सेवा टहल करने को उपस्थित रहेगा, न
माने, वा उस न्यायी की न सुने, तो वह मनुष्य
मार डाला जाए, इस प्रकार तू इस्राएल
में से ऐसी बुराई को दूर कर देना।
१३ इस से सब लोग सुनकर डर जाएंगे,
और फिर अभिमान नहीं करेंगे॥

१४ जब तू उस देश में पहुंचे जिसे तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, और उसका
अधिकारी हो, और उस में बसकर कहने
लगे, कि चारों ओर की सब जातियों की नाईं
मैं भी अपने ऊपर राजा ठहराऊंगा, १५ तब
जिसको तेरा परमेश्वर यहोवा चुन ले
अवश्य उसी को राजा ठहराना। अपने
भाइयों ही में से किसी को अपने ऊपर राजा
ठहराना, किसी परदेशी को जो तेरा भाई
न हो तू अपने ऊपर अधिकारी नहीं ठहरा
सकता। १६ और वह बहुत घोड़े न रखे,
और न इस मनसा से अपनी प्रजा के लोगों
को मिस्र में भेजे कि उसके पास बहुत से
घोड़े हो जाएं, क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा
है, कि तुम उस मार्ग से फिर कभी न लौटना।
१७ और वह बहुत स्त्रियां भी न रखे,
ऐसा न हो कि उसका मन यहोवा की ओर
से पलट जाए, और न वह अपना सोना
रूपा बहुत बढ़ाए। १८ और जब वह
राजगद्दी पर विराजमान हो, तब इसी
व्यवस्था की पुस्तक, जो लेवीय याजकों
के पास रहेगी, उसकी एक नकल अपने लिये
कर ले। १९ और वह उसे अपने पास
रखे, और अपने जीवन भर उसको पढ़ा करे,
जिस से वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय
मानना, और इस व्यवस्था और इन विधियों
की सारी बातों के मानने में चौकसी करना

* मूल में—फाटक।

आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा।
१९ और जो मनुष्य मेरे वह वचन जो वह
मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं
उसका हिसाब उस से लूंगा। २० परन्तु
जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई
ऐसा वचन कहे जिसकी आज्ञा मैं ने उसे न
दी हो, वा पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे,
वह नबी मार डाला जाए। २१ और यदि
तू अपने मन में कहे, कि जो वचन यहोवा ने
नहीं कहा उसको हम किस रीति से
पहिचानें? २२ तो पहिचान यह है कि
जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे,
तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो
जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ
नहीं, परन्तु उस नबी ने वह बात अभिमान
करके कही है, तू उस से भय न खाना॥

१९ जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन
जातियों को नाश करे जिनका
देश वह तुझे देता है, और तू उनके देश का
अधिकारी हो के उनके नगरों और घरों में
रहने लगे, २ तब अपने देश के बीच
जिसका अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे कर देता है तीन नगर अपने लिये अलग
कर देना। ३ और तू अपने लिये मार्ग भी
तैयार करना, और अपने देश के जो तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझे सौंप देता है तीन भाग
करना, ताकि हर एक खूनी वहीं भाग जाए।
४ और जो खूनी वहां भागकर अपने प्राण
को बचाए, वह इस प्रकार का हो, अर्थात्
वह किसी से बिना पहिले बैर रखे वा उसको
बिना जाने बूझे मार डाला हो—५ जैसे
कोई किसी के संग लकड़ी काटने को जंगल
में जाए, और वृक्ष काटने को कुल्हाड़ी हाथ
से उठाए, और कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर
उस भाई को ऐसी लगे कि वह मर जाए—
तो वह उन नगरों में से किसी में भागकर
जीवित रहे, ६ ऐसा न हो कि मार्ग की
लम्बाई के कारण खून का पलटा लेनेवाला
अपने क्रोध के ज्वलन में उसका पीछा करके
उसको जा पकड़े, और मार डाले, यद्यपि
वह प्राणदण्ड के योग्य नहीं, क्योंकि उस से
बैर नहीं रखता था। ७ इसलिये मैं तुझे
यह आज्ञा देता हूं, कि अपने लिये तीन नगर
अलग कर रखना। ८ और यदि तेरा
परमेश्वर यहोवा उस शपथ के अनुसार जो
उस ने तेरे पूर्वजों से खाई थी तेरे सिवानों
को बढ़ाकर वह सारा देश तुझे दे, जिसके
देने का वचन उस ने तेरे पूर्वजों को दिया
था—९ यदि तू इन सब आज्ञाओं के मानने
में जिन्हें मैं आज तुझ को सुनाता हूं चौकसी
करे, और अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम
रखे और सदा उसके मार्गों पर चलता रहे—
तो इन तीन नगरों से अधिक और भी
तीन नगर अलग कर देना, १० इसलिये
कि तेरे उस देश में जो तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरा निज भाग करके देता है किसी
निर्दोष का खून न बहाया जाए, और उसका
दोष तुझ पर न लगे। ११ परन्तु यदि
कोई किसी से बैर रखकर उसकी घात में
लगे, और उस पर लपककर उसे ऐसा मारे
कि वह मर जाए, और फिर उन नगरों में
से किसी में भाग जाए, १२ तो उसके नगर
के पुरनिये किसी को भेजकर उसको वहां
से मंगाकर खून के पलटा लेनेवाले के हाथ
में सौंप दें, कि वह मार डाला जाए।
१३ उस पर तरस न खाना, परन्तु निर्दोष
के खून का दोष इस्राएल से दूर करना, जिस
से तुम्हारा भला हो॥
१४ जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझ को देता है उसका जो भाग तुझे

मेलेगा, उस मे किसी का सिवाना जिसे
अगले लोगो ने ठहराया हो न हटाना ॥
१५ किसी मनुष्य के विरुद्ध किसी
प्रकार के अधर्म वा पाप के विषय मे, चाहे
उसका पाप कैसा ही क्यो न हो, एक ही जन
की साक्षी न सुनना, परन्तु दो वा तीन
साक्षियो के कहने से बात पक्की ठहरे।
१६ यदि कोई झूठी साक्षी देनेवाला किसी
के विरुद्ध यहोवा से फिर जाने की साक्षी
देने को खडा हो, १७ तो वे दोनो मनुष्य,
जिनके बीच ऐसा मुकद्दमा उठा हो, यहोवा
के सम्मुख, अर्थात् उन दिनो के याजको
और न्यायियो के साम्हने खडे किए जाए,
१८ तब न्यायी भली भाति पूछपाछ करे,
और यदि यह निर्णय पाए कि वह झूठा
साक्षी है, और अपने भाई के विरुद्ध झूठी
साक्षी दी है १९ तो अपने भाई की जैसी
भी हानि करवाने की युक्ति उस ने की हो
वैसी ही तुम भी उसकी करना, इसी रीति
से अपने बीच में से ऐसी बुराई को दूर
करना। २० और दूसरे लोग सुनकर
डरेगे, और आगे को तेरे बीच फिर ऐसा
बुरा काम नही करेगे। २१ और तू बिल-
कुल तरस न खाना, प्राण की सन्ती प्राण
का, आख की सन्ती आख का, दात की सन्ती
दात का, हाथ की सन्ती हाथ का, पाव की
सन्ती पाव का दण्ड देना ॥

२० जब तू अपने शत्रुओ से युद्ध
करने को जाए, और घोडे, रथ,
और अपने से अधिक सेना को देखे, तब
उन से न डरना, तेरा परमेश्वर यहोवा जो
तुझ को मिस्र देश से निकाल ले आया है
वह तेरे संग है। २ और जब तुम युद्ध करने
को शत्रुओ के निकट जाओ, तब याजक सेना
के पास आकर कहे, ३ हे इस्राएलियो सुनो,
आज तुम अपने शत्रुओ से युद्ध करने को
निकट आए हो, तुम्हारा मन कच्चा न हो,
तुम मत डरो, और न थरथराओ, और न
उनके साम्हने भय खाओ, ४ क्योकि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओ
से युद्ध करने और तुम्हे बचाने के लिये
तुम्हारे संग संग चलता है। ५ फिर सरदार
सिपाहियो से यह कहे, कि तुम मे से कौन है
जिस ने नया घर बनाया हो और उसका
समर्पण न किया हो? तो वह अपने घर को
लौट जाए, कही ऐसा न हो कि वह युद्ध में
मर जाए और दूसरा मनुष्य उसका समर्पण
करे। ६ और कौन है जिस ने दाख की
बारी लगाई हो, परन्तु उसके फल न खाए
हो? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा
न हो कि वह संग्राम मे मारा जाए, और
दूसरा मनुष्य उसके फल खाए। ७ फिर
कौन है जिस ने किसी स्त्री से ब्याह की बात
लगाई हो, परन्तु उसको ब्याह न लाया
हो? वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा
न हो कि वह युद्ध मे मारा जाए, और दूसरा
मनुष्य उस से ब्याह कर ले। ८ इसके
अलावा सरदार सिपाहियो से यह भी कहे,
कि कौन कौन मनुष्य है जो डरपोक और
कच्चे मन का है, वह भी अपने घर को लौट
जाए, ऐसा न हो कि उसकी देखादेखी उसके
भाइयो का भी हियाव टूट जाए। ९ और
जब प्रधान सिपाहियो से यह कह चुके, तब
उन पर प्रधानता करने के लिये सेनापतियो
को नियुक्त करे ॥
१० जब तू किसी नगर से युद्ध करने को
उसके निकट जाए, तब पहिले उस से सन्धि
करने का समाचार दे। ११ और यदि वह
सन्धि करना अंगीकार करे और तेरे लिये
अपने फाटक खोल दे, तब जितने उस मे हो
वे सब तेरे अधीन होकर तेरे लिये बेगार

करनेवाले ठहरें। १२ परन्तु यदि वे तुझ
मे सन्धि न करे, परन्तु तुझ से लडना चाहे,
तो तू उस नगर को घेर लेना, १३ और
जब तेरा परमेश्वर यहोवा उसे तेरे हाथ में
सौप दे तब उस में के सब पुरुषो को तलवार
से मार डालना। १४ परन्तु स्त्रिया और
बालबच्चे, और पशु आदि जितनी लूट उस
नगर में हो उसे अपने लिये रख लेना, और
तेरे शत्रुओ की लूट जो तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना। १५ इस
प्रकार उन नगरो से करना जो तुझ से बहुत
दूर है, और इन जातियो के नगर नही है।
१६ परन्तु जो नगर इन लोगो के है, जिनका
अधिकारी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को
ठहराने पर है, उन में से किसी प्राणी को
जीवित न रख छोडना, १७ परन्तु उनको
अवश्य सत्यानाश करना, अर्थात् हित्तियो,
एमोरियो, कनानियो, परिज्जियो, हिव्वियो,
और यबूसियो को, जैसे कि तेरे परमेश्वर
यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है, १८ ऐसा न हो
कि जितने घिनौने काम वे अपने देवताओ
की सेवा में करते आए है वैसा ही करना
तुम्हें भी सिखाए, और तुम अपने परमेश्वर
यहोवा के विरुद्ध पाप करने लगो॥

१९ जब तू युद्ध करते हुए किसी नगर
को जीतने के लिये उसे बहुत दिनो तक घेरे
रहे, तब उसके वृक्षो पर कुल्हाडी चलाकर
उन्हें नाश न करना, क्योंकि उनके फल तेरे
खाने के काम आएगें, इसलिये उन्हे न
काटना। क्या मैदान के वृक्ष भी मनुष्य है
कि तू उनको भी घेर रखे? २० परन्तु
जिन वृक्षो के विषय में तू यह जान ले कि
इनके फल खाने के नही है, तो उनको
काटकर नाश करना, और उस नगर के
विरुद्ध उस समय तक कोट बाधे रहना जब
तक वह तेरे वश में न आ जाए॥

२१ यदि उस देश के मैदान मे जो
तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है
किसी मारे हुए की लोथ पडी हुई मिले, और
उसको किस ने मार डाला है यह जान
न पडे, २ तो तेरे सियाने* लोग और
न्यायी निकलकर उस लोथ से चारो ओर
के एक एक नगर की दूरी को नापें, ३ तब
जो नगर उस लोथ के सब से निकट ठहरे,
उसके सियाने* लोग एक ऐसी कलोर ले
रखें, जिस से कुछ काम न लिया गया हो,
और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो।
४ तब उस नगर के सियाने* लोग उस
कलोर को एक बारहमासी नदी की ऐसी
तराई में जो न जोती और न बोई गई हो
ले जाए, और उसी तराई में उस कलोर का
गला तोड दे। ५ और लेवीय याजक भी
निकट आए, क्योकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने
उनको चुन लिया है कि उसकी सेवा टहल
करें और उसके नाम से आशीर्वाद दिया
करें, और उनके कहने के अनुसार हर एक
झगडे और मारपीट के मुकद्दमे का निर्णय
हो। ६ फिर जो नगर उस लोथ के सब से
निकट ठहरे, उसके सब सियाने* लोग उस
कलोर के ऊपर जिसका गला तराई में तोडा
गया हो अपने अपने हाथ धोकर कहें, ७ यह
खून हम से नही किया गया, और न यह
हमारी आखो का देखा हुआ काम है। ८ इस-
लिये, हे यहोवा, अपनी छुडाई हुई इस्राएली
प्रजा का पाप ढापकर निर्दोष के खून का
पाप अपनी इस्राएली प्रजा के सिर पर से
उतार। तब उस खून का दोष उनको क्षमा
कर दिया जाएगा। ९ यो वह काम करके
जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है तू निर्दोष के
खून का दोष अपने मध्य म से दूर करना॥

* वृद्ध लोग, वा पुरनिये।

१० जब तू अपने शत्रुओ से युद्ध करने
को जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हे
तेरे हाथ मे कर दे, और तू उन्हे बन्धुआ कर
ले, ११ तब यदि तू बन्धुओ मे किसी सुन्दर
स्त्री को देखकर उस पर मोहित हो जाए,
और उस से ब्याह कर लेना चाहे, १२ तो
उसे अपने घर के भीतर ले आना, और वह
अपना सिर मुडाए, नाखून कटाए, १३ और
अपने बन्धुआई के वस्त्र उतारके तेरे घर मे
महीने भर रहकर अपने माता पिता के लिये
विलाप करती रहे, उसके बाद तू उसके पास
जाना, और तू उसका पति और वह तेरी पत्नी
बने। १४ फिर यदि वह तुझ को अच्छी
न लगे, तो जहा वह जाना चाहे वहा उसे
जाने देना, उसको रुपया लेकर कही न
बेचना, और तू ने जो उसकी पत-पानी ली,
इस कारण उस से दासी का सा व्यवहार न
करना॥

१५ यदि किसी पुरुष की दो पत्निया हो,
और उसे एक प्रिय और दूसरी अप्रिय हो,
और प्रिया और अप्रिया दोनो स्त्रिया बेटे
जने, परन्तु जेठा अप्रिया का हो, १६ तो
जब वह अपने पुत्रो को अपनी सम्पत्ति का
बटवारा करे, तब यदि अप्रिया का बेटा जो
सचमुच जेठा है यदि जीवित हो, तो वह
प्रिया के बेटे को जेठास न दे सकेगा,
१७ वह यह जानकर कि अप्रिया का बेटा
मेरे पौरुष का पहिला फल है, और जेठे
का अधिकार उसी का है, उसी को अपनी
सारी सम्पत्ति मे से दो भाग देकर जेठासी
माने॥

१८ यदि किसी के हठीला और दगैत
बेटा हो, जो अपने माता-पिता की बात न
माने, किन्तु ताडना देने पर भी उनकी न
सुने, १९ तो उसके माता-पिता उसे पकड-
कर अपने नगर से बाहर फाटक के निकट
नगर के सियानो* के पास ले जाए,
२० और वे नगर के सियानो* से कहे, कि
हमारा यह बेटा हठीला और दगैत है यह
हमारी नही सुनता, यह उडाऊ और
पियक्कड है। २१ तब उस नगर के सब
पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डाले, यो
तू अपने मध्य मे से ऐसी बुराई को दूर
करना, तब सारे इस्राएली सुनकर भय
खाएगे॥

२२ फिर यदि किसी से प्राणदण्ड के
योग्य कोई पाप हुआ हो जिस से वह मार
डाला जाए, और तू उसकी लोथ को वृक्ष
पर लटका दे, २३ तो वह लोथ रात को
वृक्ष पर टगी न रहे, अवश्य उसी दिन उसे
मिट्टी देना, क्योकि जो लटकाया गया हो
वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता
है, इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा
तेरा भाग करके देता है उसकी भूमि को
अशुद्ध न करना॥

२२ तू अपने भाई के गाय-बैल वा
भेड-बकरी को भटकी हुई देखकर
अनदेखी न करना, उसको अवश्य उसके
पास पहुचा देना। २ परन्तु यदि तेरा वह
भाई निकट न रहता हो, वा तू उसे न जानता
हो, तो उस पशु को अपने घर के भीतर ले
आना, और जब तक तेरा वह भाई उसको
न ढूढे तब तक वह तेरे पास रहे; और जब
वह उसे ढूढे तब उसको दे देना। ३ और
उसके गदहे वा वस्त्र के विषय, वरन उसकी
कोई वस्तु क्यो न हो, जो उस से खो गई हो
और तुझ को मिले, उसके विषय मे भी ऐसा
ही करना, तू देखी-अनदेखी न करना॥
४ तू अपने भाई के गदहे वा बैल को
मार्ग पर गिरा हुआ देखकर अनदेखी न

* वृद्ध लोग, वा पुरनिये।

करना, उसके उठाने में अवश्य उसकी
सहायता करना ॥
५ कोई स्त्री पुरुष का पहिरावा न पहिने,
और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहिने,
क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेवाले तेरे
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं ॥
६ यदि वृक्ष वा भूमि पर तेरे साम्हने
मार्ग में किसी चिड़िया का घोंसला मिले,
चाहे उस में बच्चे हों चाहे अण्डे, और उन
बच्चों वा अण्डों पर उनकी मा बैठी हुई हो,
तो बच्चों समेत मा को न लेना, ७ बच्चों
को अपने लिये ले तो ले, परन्तु मा को
अवश्य छोड़ देना, इसलिये कि तेरा भला
हो, और तेरी आयु के दिन बहुत हों ॥
८ जब तू नया घर बनाए तब उसकी
छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाना, ऐसा
न हो कि कोई छत पर से गिर पड़े, और तू
अपने घराने पर खून का दोष लगाए।
९ अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के
बीज न बोना, ऐसा न हो कि उसकी सारी
उपज, अर्थात् तेरा बोया हुआ बीज और दाख
की बारी की उपज दोनों अपवित्र ठहरें।
१० बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल
न चलाना। ११ ऊन और सनी की
मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना ॥
१२ अपने ओढ़ने के चारों ओर की कोर
पर झालर लगाया करना ॥
१३ यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को
ब्याहे, और उसके पास जाने के समय वह
उसको अप्रिय लगे, १४ और वह उस स्त्री
की नामधराई करे, और यह कहकर उस पर
कुकर्म का दोष लगाए, कि इस स्त्री को मैं
ने ब्याहा, और जब उस से संगति की तब
उस में कुवारी अवस्था के लक्षण न पाए,
१५ तो उस कन्या के माता-पिता उसके
कुवारीपन के चिन्ह लेकर नगर के वृद्ध
लोगों के पास फाटक के बाहर जाएं,
१६ और उस कन्या का पिता वृद्ध लोगों
से कहे, मैं ने अपनी बेटी इस पुरुष को ब्याह
दी, और वह उसको अप्रिय लगती है,
१७ और वह तो यह कहकर उस पर कुकर्म
का दोष लगाता है, कि मैं ने तेरी बेटी में
कुवारीपन के लक्षण नहीं पाए। परन्तु
मेरी बेटी के कुवारीपन के चिन्ह ये हैं। तब
उसके माता-पिता नगर के वृद्ध लोगों के
साम्हने उस चद्दर को फैलाएं। १८ तब
नगर के सियाने * लोग उस पुरुष को पकड़-
कर ताड़ना दें, १९ और उस पर सौ
शेकेल रूपे का दण्ड भी लगाकर उस कन्या
के पिता को दें, इसलिये कि उस ने एक
इस्राएली कन्या की नामधराई की है, और
वह उसी की पत्नी बनी रहे, और वह जीवन
भर उस स्त्री को त्यागने न पाए। २० परन्तु
यदि उस कन्या के कुवारीपन के चिन्ह पाए
न जाएं, और उस पुरुष की बात सच ठहरे,
२१ तो वे उस कन्या को उसके पिता के
घर के द्वार पर ले जाएं, और उस नगर के
पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डालें,
उस ने तो अपने पिता के घर में वेश्या का
काम करके बुराई की है; यों तू अपने मध्य
में से ऐसी बुराई को दूर करना ॥
२२ यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की
ब्याही हुई स्त्री के संग सोता हुआ पकड़ा
जाए, तो जो पुरुष उस स्त्री के संग सोया हो
वह और वह स्त्री दोनों मार डाले जाएं,
इस प्रकार तू ऐसी बुराई को इस्राएल में से
दूर करना ॥
२३ यदि किसी कुवारी कन्या के ब्याह
की बात लगी हो, और कोई दूसरा पुरुष उसे
नगर में पाकर उस से कुकर्म करे, २४ तो

* वृद्ध लोग, वा पुरनिये।

तुम उन दोनो को उस नगर के फाटक के
बाहर ले जाकर उनको पत्थरवाह करके
मार डालना, उस कन्या को तो इसलिये
कि वह नगर मे रहते हुए भी नही चिल्लाई,
और उस पुरुष को इस कारण कि उस ने
अपने पडोसी की स्त्री की पत-पानी ली है,
इस प्रकार तू अपने मध्य मे से ऐसी बुराई
को दूर करना॥

२५ परन्तु यदि कोई पुरुष किसी कन्या
को जिसके व्याह की बात लगी हो मैदान
पाकर बरबस उस से कुकर्म करे, तो केवल
ह पुरुष मार डाला जाए जिस ने उस से
कर्म किया हो। २६ और उस कन्या से
छ न करना, उस कन्या का पाप प्राणदण्ड
योग्य नही, क्योंकि जैसे कोई अपने पडोसी
र चढाई करके उसे मार डाले, वैसी ही
ह बात भी ठहरेगी, २७ कि उस पुरुष ने
उस कन्या को मैदान मे पाया, और वह
चिल्लाई तो सही, परन्तु उसको कोई
बचानेवाला न मिला॥

२८ यदि किसी पुरुष को कोई कुवारी
कन्या मिले जिसके व्याह की बात न लगी
हो, और वह उसे पकडकर उसके साथ
कुकर्म करे, और वे पकडे जाए, २९ तो
जिस पुरुष ने उस से कुकर्म किया हो वह
उस कन्या के पिता को पचास शेकेल रूपा
दे, और वह उसी की पत्नी हो, उस ने उस-
की पत-पानी ली, इस कारण वह जीवन
भर उसे न त्यागने पाए॥

३० कोई अपनी सौतेली माता को
अपनी स्त्री न बनाए, वह अपने पिता का
ओढना न उघारे॥

२३ जिसके अण्ड कुचले गए वा
लिंग काट डाला गया हो वह
यहोवा की सभा मे न आने पाए॥

२ कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की
सभा मे न आने पाए, किन्तु दस पीढी तक
उसके वंश का कोई यहोवा की सभा मे न
आने पाए॥

३ कोई अम्मोनी वा मोआबी यहोवा
की सभा मे न आने पाए, उनकी दसवी
पीढी तक का कोई यहोवा की सभा में कभी
न आने पाए, ४ इस कारण से कि जब तुम
मिस्र से निकलकर आते थे तब उन्हों ने
अन्न जल लेकर मार्ग मे तुम से भेंट नही की,
और यह भी कि उन्हों ने अरम्नहरैम देश के
पतोर नगरवाले बोर के पुत्र बिलाम को
तुझे शाप देने के लिये दक्षिणा दी। ५ परन्तु
तेरे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की न सुनी;
किन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त
उसके शाप को आशीष से पलट दिया,
इसलिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से
प्रेम रखता था। ६ तू जीवन भर उनका
कुशल और भलाई कभी न चाहना॥

७ किसी एदोमी से घृणा न करना,
क्योंकि वह तेरा भाई है, किसी मिस्री से
भी घृणा न करना, क्योंकि उसके देश मे तू
परदेशी होकर रहा था। ८ उनके जो
परपोते उत्पन्न हो वे यहोवा की सभा मे
आने पाए॥

९ जब तू शत्रुओं से लडने को जाकर
छावनी डाले, तब सब प्रकार की बुरी बातो
से बचा रहना। १० यदि तेरे बीच कोई
पुरुष उस अशुद्धता से जो रात्रि को आप से
आप हुआ करती है अशुद्ध हुआ हो, तो वह
छावनी से बाहर जाए, और छावनी के भीतर
न आए, ११ परन्तु सध्या से कुछ पहिले
वह स्नान करे, और जब सूर्य डूब जाए तब
छावनी मे आए। १२ छावनी के बाहर
तेरे दिशा फिरने का एक स्थान हुआ करे,
और वही दिशा फिरने को जाया करना,

१३ और तेरे पास के हथियारों में एक
खनती भी रहे, और जब तू दिशा फिरने
को बैठे, तब उस से खोदकर अपने मल को
ढांप देना। १४ क्योंकि तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझ को बचाने और तेरे शत्रुओं को
तुझ से हरवाने को तेरी छावनी के मध्य
घूमता रहेगा, इसलिये तेरी छावनी पवित्र
रहनी चाहिये, ऐसा न हो कि वह तेरे मध्य में
कोई अशुद्ध वस्तु देखकर तुझ से फिर जाए॥

१५ जो दास अपने स्वामी के पास से
भागकर तेरी शरण ले उसको उसके
स्वामी के हाथ न पकड़ा देना, १६ वह
तेरे बीच जो नगर उसे अच्छा लगे उसी में
तेरे संग रहने पाए, और तू उस पर अन्धेर
न करना॥

१७ इस्राएली स्त्रियों में से कोई देव-
दासी न हो, और न इस्राएलियों में से कोई
पुरुष ऐसा बुरा काम करनेवाला हो।
१८ तू वेश्यापन की कमाई वा कुत्ते की
कमाई किसी मन्नत को पूरी करने के लिये
अपने परमेश्वर यहोवा के घर में न लाना,
क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा के समीप ये
दोनों की दोनों कमाई घृणित कर्म है॥

१९ अपने किसी भाई को ब्याज पर
ऋण न देना, चाहे रुपया हो, चाहे भोजन-
वस्तु हो, चाहे कोई वस्तु हो जो ब्याज पर
दी जाति है, उसे ब्याज न देना। २० तू
परदेशी को ब्याज पर ऋण तो दे, परन्तु
अपने किसी भाई से ऐसा न करना, ताकि
जिस देश का अधिकारी होने को तू जा रहा
है, वहां जिस जिस काम में अपना हाथ लगाए
उन सभों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे
आशीष दे॥

२१ जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के
लिये मन्नत माने, तो उसके पूरी करने में
विलम्ब न करना, क्योंकि तेरा परमेश्वर
यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा,
और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा।
२२ परन्तु यदि तू मन्नत न माने, तो तेरा
कोई पाप नहीं। २३ जो कुछ तेरे मुंह से
निकले उसके पूरा करने में चौकसी करना,
तू अपने मुंह से वचन देकर अपनी इच्छा से
अपने परमेश्वर यहोवा की जैसी मन्नत माने,
वैसी ही स्वतन्त्रता पूर्वक उसे पूरा करना॥

२४ जब तू किसी दूसरे की दाख की
बारी में जाए, तब पेट भर मनमाने दाख
खा तो खा, परन्तु अपने पात्र में कुछ न
रखना। २५ और जब तू किसी दूसरे के
खड़े खेत में जाए, तब तू हाथ से बालें तोड़
सकता है, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर
हंसुआ न लगाना॥

२४ यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को
ब्याह ले, और उसके बाद उसमें
कुछ लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न
हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर
और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर
से निकाल दे। २ और जब वह उसके घर
से निकल जाए, तब दूसरे पुरुष की हो
सकती है। ३ परन्तु यदि वह उस दूसरे
पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके
लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में
देकर उसे अपने घर से निकाल दे, वा वह
दूसरा पुरुष जिस ने उसको अपनी स्त्री कर
लिया हो मर जाए, ४ तो उसका पहिला
पति, जिस ने उसको निकाल दिया हो,
उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी
न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख
घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को
जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके
तुझे देता है पापी न बनाना*॥

* मूल में—देश से पाप न कराना।

५ जो पुरुष हाल का व्याहा हुआ हो,
वह सेना के साथ न जाए और न किसी काम
का भार उस पर डाला जाए, वह वर्ष भर
अपने घर मे स्वतत्रता से रहकर अपनी
व्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे।
६ कोई मनुष्य चक्की को वा उसके ऊपर के
पाट को बन्धक न रखे, क्योकि वह तो
मानो प्राण ही को बन्धक रखना है॥

७ यदि कोई अपने किसी इस्राएली
भाई को दास बनाने वा बेच डालने की
मनसा से चुराता हुआ पकडा जाए, तो ऐसा
चोर मार डाला जाए, ऐसी बुराई को
अपने मध्य मे से दूर करना॥

८ कोढ की व्याधि के विषय मे चौकस
रहना, और जो कुछ लेवीय याजक तुम्हे
सिखाए उसी के अनुसार यत्न से करने मे
चौकसी करना, जैसी आज्ञा मैं ने उनको दी
है वैसा करने मे चौकसी करना। ९ स्मरण
रख कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने, जब तुम
मिस्र से निकलकर आ रहे थे, तब मार्ग मे
मरियम से क्या किया॥

१० जब तू अपने किसी भाई को कुछ
उधार दे, तब बन्धक की वस्तु लेने के लिये
उसके घर के भीतर न घुसना। ११ तू
बाहर खडा रहना, और जिसको तू उधार
दे वही बन्धक की वस्तु को तेरे पास बाहर
ले आए। १२ और यदि वह मनुष्य कगाल
हो, तो उसका बन्धक अपने पास रखे हुए न
सोना, १३ सूर्य अस्त होते होते उसे वह
बन्धक अवश्य फेर देना, इसलिये कि वह
अपना ओढना ओढकर सो सके और तुझे
आशीर्वाद दे, और यह तेरे परमेश्वर
यहोवा की दृष्टि मे धर्म का काम ठहरेगा॥

१४ कोई मजदूर जो दीन और कगाल
हो, चाहे वह तेरे भाइयो मे से हो चाहे तेरे
देश के फाटको के भीतर रहनेवाले परदेशियो
मे से हो, उस पर अन्धेर न करना, १५ यह
जानकर, कि वह दीन है और उसका मन
मजदूरी मे लगा रहता है, मजदूरी करने ही
के दिन सूर्यास्त से पहिले तू उसकी मजदूरी
देना, ऐसा न हो कि वह तेरे कारण यहोवा
की दोहाई दे, और तू पापी ठहरे॥

१६ पुत्र के कारण पिता न मार डाला
जाए, और न पिता के कारण पुत्र मार डाला
जाए, जिस ने पाप किया हो वही उस पाप
के कारण मार डाला जाए॥

१७ किसी परदेशी मनुष्य वा अनाथ
बालक का न्याय न बिगाडना, और न किसी
विधवा के कपडे को बन्धक रखना, १८ और
इसको स्मरण रखना कि तू मिस्र मे दास
था, और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे वहा से
छुडा लाया है, इस कारण मै तुझे यह आज्ञा
देता हू॥

१९ जब तू अपने पक्के खेत को काटे,
और एक पूला खेत मे भूल से छूट जाए, तो
उसे लेने को फिर न लौट जाना, वह परदेशी,
अनाथ, और विधवा के लिये पडा रहे, इस-
लिये कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामो मे
तुझ को आशीष दे। २० जब तू अपने
जलपाई के वृक्ष को झाडे, तब डालियो को
दूसरी बार न झाडना, वह परदेशी, अनाथ,
और विधवा के लिये रह जाए। २१ जब
तू अपनी दाख की बारी के फल तोडे, तो
उसका दाना दाना न तोड लेना, वह
परदेशी, अनाथ और विधवा के लिये रह
जाए। २२ और इसको स्मरण रखना
कि तू मिस्र देश मे दास था, इस कारण मै
तुझे यह आज्ञा देता हू॥

२५ यदि मनुष्यो के बीच कोई
झगडा हो, और वे न्याय करवाने
के लिये न्यायियो के पास जाए, और वे

उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष
और दोषी को दोषी ठहराएं, २ और यदि
दोषी मार खाने के योग्य ठहरे, तो न्यायी
उसको गिरवाकर अपने साम्हने जैसा
उसका दोष हो उसके अनुसार कोड़े गिन
गिनकर लगवाए। ३ वह उसे चालीस
कोड़े तक लगवा सकता है, इस से अधिक
नहीं लगवा सकता, ऐसा न हो कि उस से
अधिक बहुत मार खिलवाने से तेरा भाई
तेरी दृष्टि में तुच्छ ठहरे॥

४ दावते समय चलते हुए बैल का मुंह
न बान्धना॥

५ जब कई भाई संग रहते हों, और उन
में से एक निपुत्र मर जाए, तो उसकी स्त्री
का ब्याह परगोत्री से न किया जाए, उसके
पति का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी
पत्नी कर ले, और उस से पति के भाई का
धर्म पालन करे। ६ और जो पहिला बेटा
उस स्त्री से उत्पन्न हो वह उस मरे हुए भाई
के नाम का ठहरे, जिस से कि उसका नाम
इस्राएल में से मिट न जाए। ७ यदि उस
स्त्री के पति के भाई को उसे ब्याहना न भाए,
तो वह स्त्री नगर के फाटक पर वृद्ध लोगों
के पास जाकर कहे, कि मेरे पति के भाई ने
अपने भाई का नाम इस्राएल में बनाए रखने
से नकार दिया है, और मुझ से पति के भाई
का धर्म पालन करना नहीं चाहता। ८ तब
उस नगर के वृद्ध लोग उस पुरुष को बुलवा-
कर उसको समझाएं, और यदि वह अपनी
बात पर अटा रहे, और कहे, कि मुझे इसको
ब्याहना नहीं भावता, ९ तो उसके भाई
की पत्नी उन वृद्ध लोगों के साम्हने उसके
पास जाकर उसके पांव से जूती उतारे, और
उसके मुंह पर थूक दे, और कहे, जो पुरुष
अपने भाई के वंश को चलाना न चाहे उस से
इसी प्रकार का व्यवहार किया जाएगा।
१० तब इस्राएल में उस पुरुष का यह नाम
पड़ेगा, अर्थात् जूती उतारे हुए पुरुष का
घराना॥

११ यदि दो पुरुष आपस में मारपीट
करते हों, और उन में से एक की पत्नी अपने
पति को मारनेवाले के हाथ से छुड़ाने के लिये
पास जाए, और अपना हाथ बढ़ाकर उसके
गुप्त अंग को पकड़े, १२ तो उस स्त्री का
हाथ काट डालना, उस पर तरस न खाना॥

१३ अपनी थैली में भांति भांति के,
अर्थात् घटती-बढ़ती बटखरे न रखना।
१४ अपने घर में भांति भांति के, अर्थात्
घटती-बढ़ती नपुए न रखना। १५ तेरे
बटखरे और नपुए पूरे पूरे और धर्म के हों,
इसलिये कि जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे देता है उस में तेरी आयु बहुत हो।
१६ क्योंकि ऐसे कामों में जितने कुटिलता
करते हैं वे सब तेरे परमेश्वर यहोवा की
दृष्टि में घृणित हैं॥

१७ स्मरण रख कि जब तू मिस्र से
निकलकर आ रहा था तब अमालेक ने
तुझ से मार्ग में क्या किया, १८ अर्थात्
उनको परमेश्वर का भय न था, इस कारण
उस ने जब तू मार्ग में थका मांदा था, तब
तुझ पर चढ़ाई करके जितने निर्बल होने के
कारण सब से पीछे थे उन सभों को मारा।
१९ इसलिये जब तेरा परमेश्वर यहोवा
उस देश में, जो वह तेरा भाग करके तेरे
अधिकार में कर देता है, तुझे चारों ओर के
सब शत्रुओं से विश्राम दे, तब अमालेक का
नाम धरती पर से * मिटा डालना, और
तुम इस बात को न भूलना॥

२६ फिर जब तू उस देश में जिसे
तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा निज

* मूल में—आकाश के तल से।

१८ शापित हो वह जो अन्धे को मार्ग से भटका दे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

१९ शापित हो वह जो परदेशी, अनाथ, वा विधवा का न्याय बिगाडे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२० शापित हो वह जो अपनी सौतेली माता से कुकर्म करे, क्योकि वह अपने पिता का ओढना उघारता है। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२१ शापित हो वह जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म करे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२२ शापित हो वह जो अपनी बहिन, चाहे सगी हो चाहे सौतेली, उस से कुकर्म करे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२३ शापित हो वह जो अपनी सास के सग कुकर्म करे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२४ शापित हो वह जो किसी को छिपकर मारे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२५ शापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये धन ले। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२६ शापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनो को मानकर पूरा न करे। तब सब लोग कहे, आमीन ॥

२८ यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा
की सब आज्ञाए, जो मै आज तुझे
सुनाता हू, चौकसी से पूरी करने को चित्त
लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी
की सब जातियो में श्रेष्ठ करेगा। २ फिर
अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण
ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होगे।
३ धन्य हो तू नगर मे, धन्य हो तू खेत मे।
४ धन्य हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि
की उपज, और गाय और भेड-बकरी आदि
पशुओ के बच्चे। ५ धन्य हो तेरी टोकरी
और तेरी कठौती। ६ धन्य हो तू भीतर
आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते
समय। ७ यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे
शत्रु जो तुझ पर चढाई करेगे वे तुझ से
हार जाएगे, वे एक मार्ग से तुझ पर चढाई
करेगे, परन्तु तेरे साम्हने से सात मार्ग से
होकर भाग जाएगे। ८ तेरे खत्तो पर
और जितने कामो मे तू हाथ लगाएगा उन
सभो पर यहोवा आशीष देगा, इसलिये
जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है
उस मे वह तुझे आशीष देगा। ९ यदि तू
अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओ को
मानते हुए उसके मार्गो पर चले, तो वह
अपनी शपथ के अनुसार तुझे अपनी पवित्र
प्रजा करके स्थिर रखेगा। १० और पृथ्वी
के देश देश के सब लोग यह देखकर, कि
तू यहोवा का कहलाता है*, तुझ से डर
जाएगे। ११ और जिस देश के विषय
यहोवा ने तेरे पूर्वजो से शपथ खाकर तुझे
देने को कहा था, उस मे वह तेरी सन्तान
की, और भूमि की उपज की, और पशुओ
की बढती करके तेरी भलाई करेगा।
१२ यहोवा तेरे लिये अपने आकाशरूपी
उत्तम भण्डार को खोलकर तेरी भूमि पर
समय पर मेह बरसाया करेगा, और तेरे
सारे कामो पर आशीष देगा, और तू बहुतेरी
जातियो को उधार देगा, परन्तु किसी से
तुझे उधार लेना न पडेगा। १३ और
यहोवा तुझ को पूछ नही, किन्तु सिर ही
ठहराएगा, और तू नीचे नही, परन्तु ऊपर

* मूल मे—यहोवा का नाम तुझ पर पुकारा गया है।

ही रहेगा, यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं
जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं, तू उनके
मानने में मन लगाकर चौकसी करे,
१४ और जिन वचनों की मैं आज तुझे
आज्ञा देता हूं उन में से किसी से दहिने वा
बाएं मुड़के पराये देवताओं के पीछे न हो
ले, और न उनकी सेवा करे॥

१५ परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर
यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी
आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं
आज सुनाता हूं चौकसी नहीं करेगा, तो ये
सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे। १६ अर्थात्
शापित हो तू नगर में, शापित हो तू खेत
में। १७ शापित हो तेरी टोकरी और
तेरी कठौती। १८ शापित हो तेरी सन्तान,
और भूमि की उपज, और गायों और भेड़-
बकरियों के बच्चे। १९ शापित हो तू
भीतर आते समय, और शापित हो तू बाहर
जाते समय। २० फिर जिस जिस काम
में तू हाथ लगाए, उस में यहोवा तब तक
तुझ को शाप देता, और भयातुर करता, और
धमकी देता रहेगा, जब तक तू मिट न जाए,
और शीघ्र नष्ट न हो जाए, यह इस कारण
होगा कि तू यहोवा को त्यागकर दुष्ट काम
करेगा। २१ और यहोवा ऐसा करेगा कि
मरी तुझ में फैलकर उस समय तक लगी *
रहेगी, जब तक जिस भूमि के अधिकारी
होने के लिये तू जा रहा है उस पर से तेरा
अन्त न हो जाए। २२ यहोवा तुझ को
क्षयीरोग से, और ज्वर, और दाह, और
बड़ी जलन से, और तलवार, और झुलस,
और गेरूई से मारेगा, और ये उस समय
तक तेरा पीछा किये रहेंगे, जब तक तू सत्या-
नाश न हो जाए। २३ और तेरे सिर के
ऊपर आकाश पीतल का, और तेरे पांव के
तले भूमि लोहे की हो जाएगी। २४ यहोवा
तेरे देश में पानी के बदले बालू और धूलि
बरसाएगा, वह आकाश से तुझ पर यहां
तक बरसेगी कि तू सत्यानाश हो जाएगा।
२५ यहोवा तुझ को शत्रुओं से हरवाएगा,
और तू एक मार्ग से उनका साम्हना करने
को जाएगा, परन्तु सात मार्ग से होकर उनके
साम्हने से भाग जाएगा, और पृथ्वी के सब
राज्यों में मारा मारा फिरेगा। २६ और
तेरी लोथ आकाश के भांति भांति के
पक्षियों, और धरती के पशुओं का आहार
होगी, और उनका कोई हांकनेवाला न
होगा। २७ यहोवा तुझ को मिस्र के से
फोड़े, और बवासीर, और दाद, और खुजली
से ऐसा पीड़ित करेगा, कि तू चंगा न हो
सकेगा। २८ यहोवा तुझे पागल और
अन्धा कर देगा, और तेरे मन को अत्यन्त
घबरा देगा, २९ और जैसे अन्धा अन्धियारे
में टटोलता है वैसे ही तू दिन दुपहरी में
टटोलता फिरेगा, और तेरे काम काज
सुफल न होंगे, और तू सदैव केवल अन्धेर
सहता और लुटता ही रहेगा, और तेरा
कोई छुड़ानेवाला न होगा। ३० तू स्त्री से
ब्याह की बात लगाएगा, परन्तु दूसरा पुरुष
उसको भ्रष्ट करेगा, घर तू बनाएगा,
परन्तु उस में बसने न पाएगा, दाख की
बारी तू लगाएगा, परन्तु उसके फल खाने
न पाएगा। ३१ तेरा बैल तेरी आंखों के
साम्हने मारा जाएगा, और तू उसका मांस
खाने न पाएगा, तेरा गदहा तेरी आंख के
साम्हने लूट में चला जाएगा, और तुझे फिर
न मिलेगा, तेरी भेड़-बकरियां तेरे शत्रुओं
के हाथ लग जाएंगी, और तेरी ओर से उनका
कोई छुड़ानेवाला न होगा। ३२ तेरे बेटे-
बेटियां दूसरे देश के लोगों के हाथ लग

* मूल में—चिमटी।

भाग करके तुझे देता है पहुचे, और उसका
अधिकारी होकर उस मे बस जाए, २ तब
जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है,
उसकी भूमि की भानि भाति की जो पहिली
उपज तू अपने घर लाएगा, उस मे से कुछ
टोकरी मे लेकर उस स्थान पर जाना, जिसे
तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास
करने को चुन ले। ३ और उन दिनो के
याजक के पास जाकर यह कहना, कि मै
आज तेरे परमेश्वर यहोवा के साम्हने
निवेदन करता हू, कि यहोवा ने हम लोगो को
जिस देश के देने की हमारे पूर्वजो से शपथ
खाई थी उस मे मै आ गया हू। ४ तब
याजक तेरे हाथ से वह टोकरी लेकर तेरे
परमेश्वर यहोवा की वेदी के साम्हने धर
दे। ५ तब तू अपने परमेश्वर यहोवा से
इस प्रकार कहना, कि मेरा मूलपुरुष एक
अरामी मनुष्य था जो मरने पर था, और
वह अपने छोटे से परिवार समेत मिस्र को
गया, और वहा परदेशी होकर रहा, और
वहा उस से एक बडी, और सामर्थी, और
बहुत मनुष्यो से भरी हुई जाति उत्पन्न हुई।
६ और मिस्रियो ने हम लोगो से बुरा
बर्त्ताव किया, और हमे दुःख दिया, और
हम से कठिन सेवा ली। ७ परन्तु हम
ने अपने पूर्वजो के परमेश्वर यहोवा की
दोहाई दी, और यहोवा ने हमारी
सुनकर हमारे दुख-श्रम और अन्धेर
पर दृष्टि की, ८ और यहोवा ने
बलवन्त हाथ और बढाई हुई भुजा से
अति भयानक चिन्ह और चमत्कार दिखला-
कर हम को मिस्र मे निकाल लाया, ९ और
हमे इस स्थान पर पहुचाकर यह देश जिस
मे दूध और मधु की धाराए बहती है हमे
दे दिया है। १० अब हे यहोवा, देख, जो
भूमि तू ने मुझे दी है उसकी पहली उपज
मै तेरे पास ले आया हू। तब तू उसे अपने
परमेश्वर यहोवा के साम्हने रखना, और
यहोवा को दण्डवत करना, ११ और
जितने अच्छे पदार्थ तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझे और तेरे घराने को दे, उनके कारण तू
लेवीयो और अपने मध्य मे रहनेवाले पर-
देशियो सहित आनन्द करना॥

१२ तीसरे वर्ष जो दशमांश देने का वर्ष
ठहरा है, जब तू अपनी सब भाति की बढती
के दशमांश को निकाल चुके, तब उसे लेवीय,
परदेशी, अनाथ, और विधवा को देना, कि
वे तेरे फाटको के भीतर खाकर तृप्त हो,
१३ और तू अपने परमेश्वर यहोवा से
कहना, कि मै ने तेरी सब आज्ञाओ के
अनुसार पवित्र ठहराई हुई वस्तुओ को अपने
घर से निकाला, और लेवीय, परदेशी,
अनाथ, और विधवा को दे दिया है, तेरी
किसी आज्ञा को मै ने न तो टाला है, और न
भूला है। १४ उन वस्तुओ मे से मै ने शोक
के समय नही खाया, और न उन मे से कोई
वस्तु अशुद्धता की दशा मे घर से निकाली,
और न कुछ शोक करनेवालो को * दिया,
मै ने अपने परमेश्वर यहोवा की सुन ली,
मै ने तेरी सब आज्ञाओ के अनुसार किया
है। १५ तू स्वर्ग मे से जो तेरा पवित्र धाम
है, दृष्टि करके अपनी प्रजा इस्राएल को
आशीष दे, और इस दूध और मधु की
धाराओ के देश की भूमि पर आशीष दे,
जिसे तू ने हमारे पूर्वजो से खाई हुई शपथ
के अनुसार हमे दिया है॥

१६ आज के दिन तेरा परमेश्वर यहोवा
तुझ को इन्ही विधियो और नियमो के मानने
की आज्ञा देता है, इसलिये अपने सारे मन
और सारे प्राण से इनके मानने मे चौकसी

* मूल मे—मुर्दे के लिये।

करना। १७ तू ने तो आज यहोवा को
अपना परमेश्वर मानकर यह वचन दिया
है, कि मैं तेरे बनाए हुए मार्गों पर चलूंगा,
और तेरी विधियो, आज्ञाओं, और नियमो
को माना करूंगा, और तेरी सुना करूंगा।
१८ और यहोवा ने भी आज तुझ को अपने
वचन के अनुसार अपना प्रजारूपी निज धन-
सम्पत्ति माना है, कि तू उसकी सब आज्ञाओं
को माना करे, १९ और कि वह अपनी
बनाई हुई सब जातियों से अधिक प्रशंसा,
नाम, और शोभा के विषय में तुझ को
प्रतिष्ठित करे, और तू उसके वचन के
अनुसार अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र
प्रजा बना रहे॥

(आशीष और शाप)

२७ फिर इस्राएल के वृद्ध लोगों
समेत मूसा ने प्रजा के लोगों को
यह आज्ञा दी, कि जितनी आज्ञाएं मैं आज
तुम्हें सुनाता हूं उन सब को मानना।
२ और जब तुम यरदन पार होके उस देश में
पहुंचो, जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता
है, तब बड़े बड़े पत्थर खड़े कर लेना, और
उन पर चूना पोतना, ३ और पार होने
के बाद उन पर इस व्यवस्था के सारे वचनों
को लिखना, इसलिये कि जो देश तेरे पूर्वजों
का परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार
तुझे देता है, और जिस में दूध और मधु की
धाराएं बहती हैं, उस देश में तू जाने पाए।
४ फिर जिन पत्थरों के विषय में मैं ने आज
आज्ञा दी है, उन्हें तुम यरदन के पार होकर
एबाल पहाड़ पर खड़ा करना, और उन पर
चूना पोतना। ५ और वहीं अपने परमेश्वर
यहोवा के लिये पत्थरों की एक वेदी बनाना,
उन पर कोई औजार न चलाना। ६ अपने
परमेश्वर यहोवा की वेदी अनगढ़े पत्थरों
की बनाकर उस पर उसके लिये होमबलि
चढ़ाना, ७ और वहीं मेलबलि भी चढ़ा-
कर भोजन करना, और अपने परमेश्वर
यहोवा के सम्मुख आनन्द करना। ८ और
उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के सब वचनों
को शुद्ध रीति से लिख देना॥

९ फिर मूसा और लेवीय याजकों ने
सब इस्राएलियों से यह भी कहा, कि हे
इस्राएल, चुप रहकर सुन, आज के दिन
तू अपने परमेश्वर यहोवा की प्रजा हो गया
है। १० इसलिये अपने परमेश्वर यहोवा
की बात मानना, और उसकी जो जो आज्ञा
और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूं उनका
पालन करना॥

११ फिर उसी दिन मूसा ने प्रजा के
लोगों को यह आज्ञा दी, १२ कि जब तुम
यरदन पार हो जाओ तब शिमोन, लेवी,
यहूदा, इस्साकार, यूसुफ, और बिन्यामीन,
ये गिरिज्जीम पहाड़ पर खड़े होकर
आशीर्वाद सुनाएं। १३ और रूबेन, गाद,
आशेर, जबूलून, दान, और नप्ताली, ये
एबाल पहाड़ पर खड़े होके शाप सुनाएं।
१४ तब लेवीय लोग सब इस्राएली पुरुषों
से पुकारके कहें,

१५ कि शापित हो वह मनुष्य जो कोई
मूर्त्ति कारीगर से खुदवाकर वा ढलवाकर
निराले स्थान में स्थापन करे, क्योंकि इस से
यहोवा को घृणा लगती है। तब सब लोग
कहें, आमीन॥

१६ शापित हो वह जो अपने पिता
वा माता को तुच्छ जाने। तब सब लोग
कहें, आमीन॥

१७ शापित हो वह जो किसी दूसरे के
सिवाने को हटाए। तब सब लोग कहें,
आमीन॥

जाएगे, और उनके लिये चाव से देखते देखते
तेरी आखे रह जाएगी; और तेरा कुछ वस
न चलेगा। ३३ तेरी भूमि की उपज और
तेरी सारी कमाई एक अनजाने देश के
लोग खा जाएगे, और सर्वदा तू केवल अन्धेर
सहता और पीसा जाता रहेगा, ३४ यहा
तक कि तू उन वातो के कारण जो अपनी
आखो से देखेगा पागल हो जाएगा।
३५ यहोवा तेरे घुटनो और टागो मे, वरन
नख* से शिख तक भी असाध्य फोडे
निकालकर तुझ को पीडित करेगा।
३६ यहोवा तुझ को उस राजा समेत, जिस-
को तू अपने ऊपर ठहराएगा, तेरी और तेरे
पूर्वजो से अनजानी एक जाति के वीच
पहुचाएगा, और उनके मध्य मे रहकर तू
काठ और पत्थर के दूसरे देवताओ की
उपासना और पूजा करेगा। ३७ और
उन सव जातियो मे जिनके मध्य मे यहोवा
तुझ को पहुचाएगा, वहा के लोगो के लिये
तू चकित होने का, और दृष्टान्त और शाप
का कारण समझा जाएगा। ३८ तू खेत मे
वीज तो वहुत सा ले जाएगा, परन्तु उपज
थोडी ही वटोरेगा, क्योकि टिड्डिया उसे खा
जाएगी। ३९ तू दाख की वारिया लगाकर
उन मे काम तो करेगा, परन्तु उनकी दाख
का मधु पीने न पाएगा, वरन फल भी
तोडने न पाएगा, क्योकि कीडे उनको खा
जाएगे। ४० तेरे सारे देश मे जलपाई के
वृक्ष तो होगे, परन्तु उनका तेल तू अपने
शरीर मे लगाने न पाएगा; क्योकि वे झड
जाएगे। ४१ तेरे वेटे-वेटिया तो उत्पन्न
होगे, परन्तु तेरे रहेगे नही, क्योकि वे
वन्धुआई में चले जाएगे। ४२ तेरे सव
वृक्ष और तेरी भूमि की उपज टिड्डिया खा
जाएगी। ४३ जो परदेशी तेरे मध्य में
रहेगा वह तुझ से वढता जाएगा, और तू
आप घटता चला जाएगा। ४४ वह तुझ
को उधार देगा, परन्तु तू उसको उधार न
दे सकेगा, वह तो सिर और तू पूछ
ठहरेगा। ४५ तू जो अपने परमेश्वर
यहोवा की दी हुई आज्ञाओ और विधियो के
मानने को उसकी न सुनेगा, इस कारण
ये सव शाप तुझ पर आ पडेगे, और तेरे
पीछे पडे रहेगे, और तुझ को पकडेगे, और
अन्त मे तू नष्ट हो जाएगा। ४६ और वे
तुझ पर और तेरे वश पर सदा के लिये
वने रहकर चिन्ह और चमत्कार ठहरेंगे,
४७ तू जो सव पदार्थ की वहुतायत होने
पर भी आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने
परमेश्वर यहोवा की सेवा नही करेगा,
४८ इस कारण तुझ को भूखा, प्यासा,
नङ्गा, और सव पदार्थो से रहित होकर अपने
उन शत्रुओ की सेवा करनी पड़ेगी जिन्हें
यहोवा तेरे विरुद्ध भेजेगा, और जव तक
तू नष्ट न हो जाए तव तक वह तेरी गर्दन
पर लोहे का जूआ डाल रखेगा। ४९ यहोवा
तेरे विरुद्ध दूर से, वरन पृथ्वी के छोर से
वेग उडनेवाले उकाव सी एक जाति को
चढा लाएगा जिसकी भाषा को तू न
समझेगा, ५० उस जाति के लोगो का
व्यवहार क्रूर होगा, वे न तो वूढो का मुह
देखकर आदर करेगे, और न वालको पर
दया करेगे, ५१ और वे तेरे पशुओ के
वच्चे और भूमि की उपज यहा तक खा
जाएगे कि तू नष्ट हो जाएगा, और वे तेरे
लिये न अन्न, और न नया दाखमधु, और
न टटका तेल, और न वछडे, न मेम्ने छोडेगे,
यहा तक कि तू नाश हो जाएगा। ५२ और
वे तेरे परमेश्वर यहोवा के दिए हुए सारे
के सव फाटको के भीतर तुझे घेर

* मूल में—पाव के नलरे।

रखेंगे, वे तेरे सब फाटकों के भीतर तुझे
उस समय तक घेरेंगे, जब तक तेरे सारे देश
में तेरी ऊंची ऊंची और दृढ़ शहरपनाहें
जिन पर तू भरोसा करेगा गिर न जाएं।
५३ तब घिर जाने और उस सकेती के
समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे, तू
अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का मांस
जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा
खाएगा। ५४ और तुझ में जो पुरुष
कोमल और अति सुकुमार हो वह भी
अपने भाई, और अपनी प्राणप्यारी, और
अपने बचे हुए बालकों को क्रूर दृष्टि से
देखेगा, ५५ और वह उन में से किसी
को भी अपने बालकों के मांस में से जो वह
आप खाएगा कुछ न देगा, क्योंकि घिर
जाने और उस सकेती में, जिस में तेरे शत्रु
तेरे सारे फाटकों के भीतर तुझे घेर डालेंगे,
उसके पास कुछ न रहेगा। ५६ और तुझ
में जो स्त्री यहां तक कोमल और सुकुमार
हो कि सुकुमारपन और कोमलता के मारे
भूमि पर पांव धरते भी डरती हो, वह भी
अपने प्राणप्रिय पति, और बेटे, और बेटी
को, ५७ अपनी खेरी, वरन अपने जने हुए
बच्चों को क्रूर दृष्टि से देखेगी, क्योंकि घिर
जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे
शत्रु तुझे तेरे फाटकों के भीतर घेरकर रखेंगे,
वह सब वस्तुओं की घटी के मारे उन्हें छिप
के खाएगी। ५८ यदि तू इन व्यवस्था के
सारे वचनों के पालने में, जो इस पुस्तक
में लिखे हैं, चौकसी करके उस आदरनीय
और भययोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे
परमेश्वर का है भय न माने, ५९ तो
यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे
अनोखे दण्ड देगा, वे दुष्ट और बहुत दिन
रहनेवाले रोग और भारी भारी दण्ड होंगे।
६० और वह मिस्र के उन सब रोगों को
फिर तेरे ऊपर लगा देगा, जिन से तू भय खाता
था, और वे तुझ में लगे रहेंगे। ६१ और
जितने रोग आदि दण्ड इस व्यवस्था की
पुस्तक में नहीं लिखे हैं, उन सभों को भी
यहोवा तुझ को यहां तक लगा देगा, कि
तू सत्यानाश हो जाएगा। ६२ और तू
जो अपने परमेश्वर यहोवा की न मानेगा,
इस कारण आकाश के तारों के समान
अनगिनित होने की सन्ती तुझ में से थोड़े
ही मनुष्य रह जाएंगे। ६३ और जैसे
अब यहोवा को तुम्हारी भलाई और बढ़ती
करने से हर्ष होता है, वैसे ही तब उसको
तुम्हें नाश वरन सत्यानाश करने में हर्ष
होगा, और जिस भूमि के अधिकारी होने
को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े
जाओगे। ६४ और यहोवा तुझ को पृथ्वी
के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब
देशों के लोगों में तितर बितर करेगा, और
वहां रहकर तू अपने और अपने पुरखाओं
के अनजाने काठ और पत्थर के दूसरे
देवताओं की उपासना करेगा। ६५ और
उन जातियों में तू कभी चैन न पाएगा,
और न तेरे पांव को ठिकाना मिलेगा,
क्योंकि वहां यहोवा ऐसा करेगा कि तेरा
हृदय कांपता रहेगा, और तेरी आंखें धुंधली
पड़ जाएंगी, और तेरा मन कलपता रहेगा,
६६ और तुझ को जीवन का नित्य सन्देह
रहेगा, और तू दिन रात थरथराता रहेगा,
और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा।
६७ तेरे मन में जो भय बना रहेगा, और
तेरी आंखों को जो कुछ दीखता रहेगा, उसके
कारण तू भोर को आह मारके कहेगा, कि
सांझ कब होगी! और सांझ को आह
मारके कहेगा, कि भोर कब होगा!
६८ और यहोवा तुझ को नावों पर चढ़ाकर
मिस्र में उस मार्ग से लौटा देगा, जिसके

विषय मे मै ने तुझ से कहा था, कि वह फिर
तेरे देखने मे न आएगा, और वहा तुम अपने
शत्रुओ के हाथ दास-दासी होने के लिये
बिकाऊ तो रहोगे, परन्तु तुम्हारा कोई
ग्राहक न होगा ॥

२९ इस्राएलियो से जिस वाचा के
बान्धने की आज्ञा यहोवा ने मूसा
को मोआब के देश मे दी उसके ये ही वचन
है, और जो वाचा उस ने उन से होरेब पहाड
पर बान्धी थी यह उस से अलग है ॥

२ फिर मूसा ने सब इस्राएलियो को
बुलाकर कहा, जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश
मे तुम्हारे देखते फिरौन और उसके सब
कर्मचारियो और उसके सारे देश से किया
वह तुम ने देखा है, ३ वे बडे बडे परीक्षा
के काम, और चिन्ह, और बडे बडे चमत्कार
तेरी आखो के साम्हने हुए, ४ परन्तु
यहोवा ने आज तक तुम को न तो समझने
की बुद्धि, और न देखने की आखे, और न
सुनने के कान दिए है। ५ मै तो तुम को
जगल मे चालीस वर्ष लिए फिरा, और न
तुम्हारे तन पर वस्त्र पुराने हुए, और न
तेरी जूतिया तेरे पैरो मे पुरानी हुई;
६ रोटी जो तुम नही खाने पाए, और
दाखमधु और मदिरा जो तुम नही पीने
पाए, वह इसलिये हुआ कि तुम जानो कि
मै यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हू। ७ और
जब तुम इस स्थान पर आए, तब हेशबोन
का राजा सीहोन और बाशान का राजा
ओग, ये दोनो युद्ध के लिये हमारा साम्हना
करने को निकल आए, और हम ने उनको
जीतकर उनका देश ले लिया, ८ और
रूबेनियो, गादियो, और मनश्शे के आधे
गोत्र के लोगो का निज भाग करके दे
दिया। ९ इसलिये इस वाचा की बातो
का पालन करो, ताकि जो कुछ करो वह
सुफल हो ॥

१० आज क्या वृद्ध लोग, क्या सरदार,
तुम्हारे मुख्य मुख्य पुरुष, क्या गोत्र गोत्र
के तुम सब इस्राएली पुरुष, ११ क्या
तुम्हारे बालबच्चे और स्त्रिया, क्या
लकडहारे, क्या पनभरे, क्या तेरी छावनी
मे रहनेवाले परदेशी, तुम सब के सब अपने
परमेश्वर यहोवा के साम्हने इसलिये खडे
हुए हो, १२ कि जो वाचा तेरा परमेश्वर
यहोवा आज तुझ से बान्धता है, और जो
शपथ वह आज तुझ को खिलाता है, उस मे
तू साझी हो जाए; १३ इसलिये कि उस
वचन के अनुसार जो उसने तुझ को दिया,
और उस शपथ के अनुसार जो उसने
इब्राहीम, इसहाक, और याकूब, तेरे पूर्वजो
से खाई थी, वह आज तुझ को अपनी प्रजा
ठहराए, और आप तेरा परमेश्वर ठहरे।
१४ फिर मै इस वाचा और इस शपथ मे
केवल तुम को नही, १५ परन्तु उनको भी,
जो आज हमारे सग यहा हमारे परमेश्वर
यहोवा के साम्हने खडे है, और जो आज
यहा हमारे सग नही है, साझी करता हू।
१६ तुम जानते हो कि जब हम मिस्र देश
मे रहते थे, और जब मार्ग मे की जातियो के
बीचो बीच होकर आ रहे थे, १७ तब
तुम ने उनकी कैसी कैसी घिनौनी वस्तुए,
और काठ, पत्थर, चादी, सोने की कैसी
मूरते देखी। १८ इसलिये ऐसा न हो,
कि तुम लोगो मे ऐसा कोई पुरुष, वा स्त्री,
वा कुल, वा गोत्र के लोग हो जिनका मन
आज हमारे परमेश्वर यहोवा से फिर जाए,
और वे जाकर उन जातियो के देवताओ
की उपासना करे, फिर ऐसा न हो कि
तुम्हारे मध्य ऐसी कोई जड हो, जिस से
विष वा कडआ बीज उगा हो, १९ और

ऐसा मनुष्य इस शाप के वचन सुनकर अपने
को आशीर्वाद के योग्य माने, और यह सोचे
कि चाहे मैं अपने मन के हठ पर चलू, और
तृप्त होकर प्यास को मिटा डालू *, तौभी
मेरा कुशल होगा। २० यहोवा उसका
पाप क्षमा नही करेगा, वरन यहोवा के
कोप और जलन का धूआ उसको छा लेगा,
और जितने शाप इस पुस्तक में लिखे हैं वे
सब उस पर आ पड़ेंगे, और यहोवा उसका
नाम धरती पर से † मिटा देगा। २१ और
व्यवस्था की इस पुस्तक में जिस वाचा की
चर्चा है उसके सब शापो के अनुसार यहोवा
उसको इस्राएल के सब गोत्रो में से हानि
के लिये अलग करेगा। २२ और आने-
वाली पीढ़ियो में तुम्हारे वश के लोग जो
तुम्हारे बाद उत्पन्न होंगे, और परदेशी
मनुष्य भी जो दूर देश से आएंगे, वे उस देश
की विपत्तिया और उस में यहोवा के
फैलाए हुए रोग देखकर, २३ और यह
भी देखकर कि इसकी सब भूमि गन्धक
और लोन से भर गई है, और यहा तक जल
गई है कि इस मे न कुछ बोया जाता, और न
कुछ जम सकता, और न घास उगती है,
वरन सदोम और अमोरा, अदमा और
सबोयीम के समान हो गया है जिन्हें यहोवा
ने अपने कोप और जलजलाहट में उलट
दिया था, २४ और सब जातियो के लोग
पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश से ऐसा
क्यो किया? और इस बडे कोप के भड़कने
का क्या कारण है? २५ तब लोग यह
उत्तर देंगे, कि उनके पूर्वजो के परमेश्वर
यहोवा ने जो वाचा उनके साथ मिस्र देश से
निकालने के समय बान्धी थी उसको उन्हो
ने तोड़ा है, २६ और पराए देवताओ की
उपासना की है जिन्हें वे पहिले नही जानते
थे, और यहोवा ने उनको नही दिया था,
२७ इसलिये यहोवा का कोप इस देश पर
भड़क उठा है, कि पुस्तक में लिखे हुए सब
शाप इस पर आ पड़ें, २८ और यहोवा
ने कोप, और जलजलाहट, और बड़ा ही
क्रोध करके उन्हे उनके देश में से उखाड़-
कर दूसरे देश में फेंक दिया, जैसा कि आज
प्रगट है॥

२९ गुप्त बाते हमारे परमेश्वर यहोवा
के वश में हैं, परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे
सदा के लिये हमारे और हमारे वश के वश
में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की
सब बातें पूरी की जाए॥

३० फिर जब आशीष और शाप
की ये सब बाते जो मैं ने तुझ को
कह सुनाई है तुझ पर घटें, और तू उन सब
जातियो के मध्य में रहकर, जहा तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझ को बरबस पहुचाएगा,
इन बातो को स्मरण करे, २ और अपनी
सन्तान सहित अपने सारे मन और सारे
प्राण से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर
फिरकर उसके पास लौट आए, और इन
सब आज्ञाओ के अनुसार जो मैं आज तुझे
सुनाता हू उसकी बातें माने, ३ तब तेरा
परमेश्वर यहोवा तुझ को बन्धुआई से लौटा
ले आएगा, और तुझ पर दया करके उन
सब देशो के लोगो में से जिनके मध्य में
वह तुझ को तितर बितर कर देगा फिर
इकट्ठा करेगा। ४ चाहे धरती * के छोर
तक तेरा बरबस पहुचाया जाना हो, तौभी
तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को वहा से ले
आकर इकट्ठा करेगा। ५ और तेरा परमेश्वर

* वा प्यास पर मतवालापन भी बढ़ाऊ, वा प्यास और तृप्त दोनों को मिटा डालू।
† मूल में—आकाश के तले से।

* मूल में—आकाश।

यहोवा तुझे उसी देश मे पहुचाएगा जिसके
तेरे पुरखा अधिकारी हुए थे, और तू
फिर उसका अधिकारी होगा; और वह
तेरी भलाई करेगा, और तुझ को तेरे
पुरखाओ से भी गिनती मे अधिक वढाएगा।
६ और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और
तेरे वश के मन का खतना करेगा, कि तू
अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन
और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से
तू जीवित रहे। ७ और तेरा परमेश्वर
यहोवा ये सब शाप की वाते तेरे शत्रुओ पर
जो तुझ से बैर करके तेरे पीछे पडेगे भेजेगा।
८ और तू फिरेगा और यहोवा की सुनेगा,
और इन सब आज्ञाओ को मानेगा जो मै
आज तुझ को सुनाता हू। ९ और यहोवा
तेरी भलाई के लिये तेरे सब कामो मे, और
तेरी सन्तान, और पशुओ के बच्चो, और
भूमि की उपज मे तेरी वढती करेगा,
क्योकि यहोवा फिर तेरे ऊपर भलाई के
लिये वैसा ही आनन्द करेगा, जैसा उस ने
तेरे पूर्वजो के ऊपर किया था; १० क्योकि
तू अपने परमेश्वर यहोवा की सुनकर
उसकी आज्ञाओ और विधियो को जो इस
व्यवस्था की पुस्तक मे लिखी है माना करेगा,
और अपने परमेश्वर यहोवा की ओर
अपने सारे मन और सारे प्राण से मन
फिराएगा॥

११ देखो, यह जो आज्ञा मै आज
तुझे सुनाता हू, वह न तो तेरे लिये अनोखी,
और न दूर है। १२ और न तो यह आकाश
में है, कि तू कहे, कि कौन हमारे लिये आकाश
में चढकर उसे हमारे पास ले आए, और
हम को सुनाए कि हम उसे मानें? १३ और
न यह समुद्र पार है, कि तू कहे, कौन हमारे
लिये समुद्र पार जाए, और उसे हमारे पास
ले आए, और हम को सुनाए कि हम उसे
मानें? १४ परन्तु यह वचन तेरे वहुत
निकट, वरन तेरे मुह और मन ही मे है,
ताकि तू इस पर चले॥

१५ सुन, आज मै ने तुझ को जीवन
और मरण, हानि और लाभ दिखाया है।
१६ क्योकि मै आज तुझे आज्ञा देता हू,
कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना,
और उसके मार्गों पर चलना, और उसकी
आज्ञाओ, विधियो, और नियमो को मानना,
जिस से तू जीवित रहे, और वढता जाए,
और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में
जिसका अधिकारी होने को तू जा रहा है,
तुझे आशीष दे। १७ परन्तु यदि तेरा
मन भटक जाए, और तू न सुने, और
भटककर पराए देवताओ को दण्डवत् करे
और उनकी उपासना करने लगे, १८ तो
मै तुम्हे आज यह चितौनी दिए देता हू कि
तुम नि सन्देह नष्ट हो जाओगे, और जिस
देश का अधिकारी होने के लिये तू यरदन पार
जा रहा है, उस देश मे तुम वहुत दिनो के
लिये रहने न पाओगे। १९ मै आज
आकाश और पृथ्वी दोनो को तुम्हारे
साम्हने इस वात की साक्षी बनाता हू, कि
मै ने जीवन और मरण, आशीष और शाप
को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन
ही को अपना ले, कि तू और तेरा वश
दोनो जीवित रहे, २० इसलिये अपने
परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, और उसकी
वात मानो, और उस से लिपटे रहो, क्योकि
तेरा जीवन और दीर्घजीवन यही है, और
ऐसा करने से जिस देश को यहोवा ने
इब्राहीम, इसहाक, और याकूव, तेरे पूर्वजो
को देने की शपथ खाई थी उस देश मे तू
वसा रहेगा॥

(मूसा का प्रसिद्ध गीत)

३१ और मूसा ने जाकर यह बातें
सब इस्राएलियों को सुनाईं।
२ और उस ने उन से यह भी कहा, कि
आज मैं एक सौ बीस वर्ष का हूं, और
अब मैं चल फिर नहीं सकता, क्योंकि यहोवा
ने मुझ से कहा है, कि तू इस यरदन पार नहीं
जाने पाएगा। ३ तेरे आगे पार जानेवाला
तेरा परमेश्वर यहोवा ही है, वह उन जातियों
को तेरे साम्हने से नष्ट करेगा, और तू
उनके देश का अधिकारी होगा, और यहोवा
के वचन के अनुसार यहोशू तेरे आगे आगे
पार जाएगा। ४ और जिस प्रकार यहोवा
ने एमोरियों के राजा सीहोन और ओग
और उनके देश को नष्ट किया है, उसी
प्रकार वह उन सब जातियों से भी करेगा।
५ और जब यहोवा उनको तुम से हरवा
देगा, तब तुम उन सारी आज्ञाओं के अनुसार
उन से करना जो मैं ने तुम को सुनाई हैं।
६ तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो, उन से न
डर और न भयभीत हो, क्योंकि तेरे संग
चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है, वह
तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा।
७ तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब
इस्राएलियों के सम्मुख कहा, कि तू हियाव
बान्ध और दृढ़ हो जा, क्योंकि इन लोगों के
संग उस देश में जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों
से शपथ खाकर देने को कहा था तू जाएगा,
और तू इनको उसका अधिकारी कर देगा।
८ और तेरे आगे आगे चलनेवाला यहोवा
है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे
धोखा देगा और न छोड़ देगा, इसलिये
मत डर और तेरा मन कच्चा न हो॥

९ फिर मूसा ने यही व्यवस्था लिखकर
लेवीय याजकों को, जो यहोवा की वाचा के
सन्दूक उठानेवाले थे, और इस्राएल के सब
वृद्ध लोगों को सौंप दी। १० तब मूसा ने
उनको आज्ञा दी, कि सात सात वर्ष के
बीतने पर, अर्थात् उगाही न होने के वर्ष
के झोपड़ीवाले पर्व्व में, ११ जब सब
इस्राएली तेरे परमेश्वर यहोवा के उस स्थान
पर जिसे वह चुन लेगा आकर इकट्ठे हों, तब
यह व्यवस्था सब इस्राएलियों को पढ़कर
सुनाना। १२ क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या
बालक, क्या तुम्हारे फाटकों के भीतर
के परदेशी, सब लोगों को इकट्ठा करना
कि वे सुनकर सीखें, और तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा का भय मानकर, इस व्यवस्था
के सारे वचनों के पालन करने में चौकसी
करें, १३ और उनके लड़केवाले जिन्हों
ने ये बातें नहीं सुनीं वे भी सुनकर सीखें,
कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का भय उस
समय तक मानते रहें, जब तक तुम उस
देश में जीवित रहो जिसके अधिकारी
होने को तुम यरदन पार जा रहे हो॥

१४ फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तेरे
मरने का दिन निकट है, तू यहोशू को
बुलवा, और तुम दोनों मिलापवाले तम्बू में
आकर उपस्थित हो कि मैं उसको आज्ञा दूं।
तब मूसा और यहोशू जाकर मिलापवाले
तम्बू में उपस्थित हुए। १५ तब यहोवा ने
उस तम्बू में बादल के खम्भे में होकर दर्शन
दिया, और बादल का खम्भा तम्बू के द्वार
पर ठहर गया। १६ तब यहोवा ने मूसा
से कहा, तू तो अपने पुरखाओं के संग सो
जाने पर है, और ये लोग उठकर उस
देश के पराये देवताओं के पीछे जिनके
मध्य वे जाकर रहेंगे व्यभिचारी हो जाएंगे,
और मुझे त्यागकर उस वाचा को जो मैं
ने उन से बान्धी है तोड़ेंगे। १७ उस समय
मेरा कोप इन पर भड़केगा, और मैं भी
इन्हें त्यागकर इन से अपना मुंह छिपा

लूगा, और ये आहार हो जाएगे, और बहुत
सी विपत्तिया और क्लेश इन पर आ पडेगे,
यहा तक कि ये उस समय कहेगे, क्या ये
विपत्तिया हम पर इस कारण तो नही आ
पडी, क्योकि हमारा परमेश्वर हमारे मध्य
में नही रहा? १८ उस समय मैं उन सब
बुराइयो के कारण जो ये पराये देवताओ
की ओर फिरकर करेगे नि मन्देह उन से
अपना मुह छिपा लूगा। १९ सो अब तुम
यह गीत लिख लो, और तू इसे इस्राएलियो
को सिखाकर कठ करा देना, इसलिये कि
यह गीत उनके विरुद्ध मेरा साक्षी ठहरे।
२० जब मैं इनको उस देश मे पहुचाऊगा
जिसे देने की मैं ने इनके पूर्वजो से शपथ
खाई थी, और जिस मे दूध और मधु की
धाराए बहती है, और खाते-खाते इनका
पेट भर जाए, और ये हृष्ट-पुष्ट हो जाएगे,
तब ये पराये देवताओ की ओर फिरकर
उनकी उपासना करने लगेगे, और मेरा
तिरस्कार करके मेरी वाचा को तोड देगे।
२१ वरन अभी भी जब मैं इन्हे उस देश मे
जिसके विषय मैं ने शपथ खाई है पहुचा
नही चुका, मुझे मालूम है, कि ये क्या क्या
कल्पना कर रहे है, इसलिये जब बहुत सी
विपत्तिया और क्लेश इन पर आ पडेगे,
तब यह गीत इन पर साक्षी देगा, क्योकि
इनकी मन्तान इसको कभी भी नही भूलेगी।
२२ तब मूमा ने उमी दिन यह गीत लिख-
कर इस्राएलियो को सिखाया। २३ और
उम ने नून के पुत्र यहोशू को यह आज्ञा दी,
कि हियाव बान्ध और दृढ हो, क्योकि
इस्राएलियो को उस देश मे जिसे उन्हे देने
को मैं ने उनसे शपथ खाई है तू पहुचाएगा,
और मैं आप तेरे मग रहूगा॥

२४ जब मूसा इम व्यवस्था के वचन
को आदि मे अन्त तक पुस्तक में लिख चुका,
२५ तब उम ने यहोवा के मन्दूक उठानेवाले
लेवियो को आज्ञा दी, २६ कि व्यवस्था
की इस पुस्तक को लेकर अपने परमेश्वर
यहोवा की वाचा के सन्दूक के पाम रख दो,
कि यह वहा तुझ पर साक्षी देती रहे।
२७ क्योकि तेरा बलवा और हठ मुझे
मालूम है, देखो, मेरे जीवित और मग रहते
हुए भी तुम यहोवा मे बलवा करते आए हो;
फिर मेरे मरने के बाद भी क्यो न करोगे!
२८ तुम अपने गोत्रो के सब वृद्ध लोगो को
और अपने सरदारो को मेरे पास इकट्ठा
करो, कि मैं उनको ये वचन सुनाकर उनके
विरुद्ध आकाश और पृथ्वी दोनो को साक्षी
बनाऊ। २९ क्योकि मुझे मालूम है कि
मेरी मृत्यु के बाद तुम बिलकुल बिगड जाओगे,
और जिस मार्ग में चलने की आज्ञा मैं ने तुम
को सुनाई है उसको भी तुम छोड दोगे, और
अन्त के दिनो मे जब तुम वह काम करके
जो यहोवा की दृष्टि मे बुरा है, अपनी बनाई
हुई वस्तुओ की पूजा करके उसको रिस
दिलाओगे, तब तुम पर विपत्ति आ पडेगी॥

३० तब मूसा ने इस्राएल की सारी
सभा को इस गीत के वचन आदि से अन्त
तक कह सुनाए

३२ हे आकाश, कान लगा, कि मैं
बोलू, और हे पृथ्वी, मेरे मुह की
बाते सुन॥
२ मेरा उपदेश मेह की नाईं बरसेगा,
और मेरी बाते ओस की नाईं
टपकेगी,
जैसे कि हरी घास पर झीसी,
और पौधो पर झडिया॥
३ मैं तो यहोवा नाम का प्रचार
करूगा। तुम अपने परमेश्वर
की महिमा को मानो।

४ वह चट्टान है, उसका काम
खरा है,
और उसकी सारी गति न्याय की
है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में
कुटिलता नहीं, वह धर्मी और
सीधा है॥
५ परन्तु इसी जाति* के लोग टेढ़े
और तिर्छे हैं, ये बिगड़ गए, ये
उसके पुत्र नहीं, यह उनका
कलंक है॥
६ हे मूढ़ और निर्बुद्धि लोगो,
क्या तुम यहोवा को यह बदला
देते हो?
क्या वह तेरा पिता नहीं है,
जिस ने तुझ को मोल लिया है?
उस ने तुझ को बनाया और स्थिर
भी किया है॥
७ प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण
करो,
पीढ़ी पीढ़ी के वर्षों को विचारो,
अपने बाप से पूछो, और वह तुम
को बताएगा,
अपने वृद्ध लोगों से प्रश्न करो,
और वे तुझ से कह देंगे॥
८ जब परमप्रधान ने एक एक जाति
को निज निज भाग बांट दिया,
और आदमियों को अलग अलग
बसाया,
तब उस ने देश देश के लोगों के
सिवाने
इस्राएलियों की गिनती के अनुसार
ठहराए॥
९ क्योंकि यहोवा का अंश उसकी
प्रजा है,

* मूल में—पीढ़ी।

याकूब उसका नपा हुआ निज
भाग है॥
१० उस ने उसको जंगल में,
और सुनसान और गरजनेवालों
से भरी हुई मरुभूमि में पाया,
उस ने उसके चहुं ओर रहकर
उसकी रक्षा की,
और अपनी आंख की पुतली की
नाईं उसकी सुधि रखी॥
११ जैसे उकाब अपने घोंसले को हिला
हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर
ऊपर मण्डलाता है,
वैसे ही उस ने अपने पंख फैलाकर
उसको अपने परों पर उठा
लिया॥
१२ यहोवा अकेला ही उसकी अगुवाई
करता रहा,
और उसके संग कोई पराया देवता
न था॥
१३ उस ने उसको पृथ्वी के ऊंचे
ऊंचे स्थानों पर सवार कराया,
और उसको खेतों की उपज
खिलाई,
उस ने उसे चट्टान में से मधु
और चकमक की चट्टान में से तेल
चुसाया॥
१४ गायों का दही, और भेड़-बकरियों
का दूध, मेम्नों की चर्बी,
बकरे और बाशान की जाति के
मेढ़े,
और गेहूं का उत्तम से उत्तम आटा
भी,
और तू दाखरस का मधु पिया
करता था॥
१५ परन्तु यशूरून मोटा होकर लात
मारने लगा,

तू मोटा और हृष्ट-पुष्ट हो गया,
और चर्बी मे छा गया है;
तब उस ने अपने सृजनहार ईश्वर
को तज दिया,
और अपने उद्धारमूल चट्टान को
तुच्छ जाना ॥
१६ उन्हो ने पराए देवताओं को मान-
कर उस मे जलन उपजाई;
और घृणित कर्म करके उसको
रिस दिलाई ॥
१७ उन्हो ने पिशाचो के लिये जो ईश्वर
न थे बलि चढाए,
और उनके लिये वे अनजाने देवता
थे,
वे तो नये नये देवता थे जो थोडे
ही दिन से प्रकट हुए थे,
और जिन से उनके पुरखा कभी
डरे नही।
१८ जिस चट्टान से तू उत्पन्न हुआ
उसको तू भूल गया,
और ईश्वर जिस से तेरी उत्पत्ति
हुई उसको भी तू भूल गया
है ॥
१९ इन बातों को देखकर यहोवा ने
उन्हे तुच्छ जाना,
क्योकि उसके बेटे-बेटियो ने उसे
रिस दिलाई थी ॥
२० तब उस ने कहा, मै उन से अपना
मुख छिपा लूगा,
और देखूगा कि उनका अन्त कैसा
होगा,
क्योकि इस जाति * के लोग बहुत
टेढे है
और धोखा देनेवाले पुत्र है ।

* मूल में—पीढी ।

२१ उन्हो ने ऐसी वस्तु मानकर जो
ईश्वर नही है, मुझ में जलन
उत्पन्न की,
और अपनी व्यर्थ वस्तुओं के द्वारा
मुझे रिस दिलाई।
इसलिये मै भी उनके द्वारा जो
मेरी प्रजा नही है उनके मन में
जलन उत्पन्न करूगा,
और एक मूढ जाति के द्वारा उन्हें
रिस दिलाऊगा ॥
२२ क्योकि मेरे कोप की आग भडक
उठी है,
जो पाताल की तह तक जलती
जाएगी,
और पृथ्वी अपनी उपज समेत भस्म
हो जाएगी,
और पहाडो की नेवो में भी आग
लगा देगी ॥
२३ मै उन पर विपत्ति पर विपत्ति
भेजूगा;
और उन पर मै अपने सब तीरो
को छोडूगा ॥
२४ वे भूख से दुबले हो जाएगे, और
अगारो से
और कठिन महारोगो से ग्रसित
हो जाएगे,
और मै उन पर पशुओ के दात
लगवाऊगा,
और धूलि पर रेंगनेवाले सर्पो का
विष छोड दूगा ॥
२५ बाहर वे तलवार से मरेंगे,
और कोठरियो के भीतर भय से;
क्या कुवारे और क्या कुवारिया,
क्या दूध पीता हुआ बच्चा क्या
पक्के बालवाले, सब इसी प्रकार
बर्बाद होंगे।

२६ मैं ने कहा था, कि मैं उनको दूर
दूर तक तितर-बितर करूंगा,
और मनुष्यों में से उनका स्मरण
तक मिटा डालूंगा,
२७ परन्तु मुझे शत्रुओं की छेड़ छाड़
का डर था,
ऐसा न हो कि द्रोही इसको उलटा
समझकर यह कहने लगें, कि
हम अपने ही बाहुबल से प्रबल
हुए,
और यह सब यहोवा से नहीं हुआ॥
२८ यह जाति युक्तहीन तो है,
और इन में समझ है ही नहीं॥
२९ भला होता कि ये बुद्धिमान होते,
कि इसको समझ लेते,
और अपने अन्त का विचार
करते!
३० यदि उनकी चट्टान ही उनको न
बेच देती,
और यहोवा उनको औरों के हाथ
में न कर देता,
तो यह क्योंकर हो सकता कि
उनके हज़ार का पीछा एक मनुष्य
करता,
और उनके दस हज़ार को दो मनुष्य
भगा देते?
३१ क्योंकि जैसी हमारी चट्टान है
वैसी उनकी चट्टान नहीं है,
चाहे हमारे शत्रु ही क्यों न न्यायी
हों॥
३२ क्योंकि उनकी दाखलता सदोम की
दाखलता से निकली,
और अमोरा की दाख की बारियों
में की है,
उनकी दाख विषभरी,
और उनके गुच्छे कड़वे हैं,
३३ उनका दाखमधु सांपों का सा विष,
और काले नागों का सा हलाहल
है॥
३४ क्या यह बात मेरे मन में संचित,
और मेरे भण्डारों में मुहरबन्द
नहीं है?
३५ पलटा लेना और बदला देना मेरा
ही काम है, यह उनके पांव
फिसलने के समय प्रगट होगा,
क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन
निकट है, और जो दुःख उन पर
पड़नेवाले हैं वे शीघ्र आ रहे हैं।
३६ क्योंकि जब यहोवा देखेगा कि मेरी
प्रजा की शक्ति जाती रही,
और क्या बन्धुआ और क्या
स्वाधीन, उन में कोई बचा नहीं
रहा,
तब यहोवा अपने लोगों का न्याय
करेगा,
और अपने दासों के विषय तरस
खाएगा॥
३७ तब वह कहेगा, उनके देवता
कहां हैं,
अर्थात वह चट्टान कहां जिस पर
उनका भरोसा था,
३८ जो उनके बलिदानों की चर्बी खाते,
और उनके तपावनों का दाखमधु
पीते थे?
वे ही उठकर तुम्हारी सहायता
करें,
और तुम्हारी आड़ हों!
३९ इसलिये अब तुम देख लो कि मैं
ही वह हूं,
और मेरे संग कोई देवता नहीं,
मैं ही मार डालता, और मैं
जिलाता भी हूं,

मैं ही घायल करता, और मैं ही
चंगा भी करता हू;
और मेरे हाथ मे कोई नही छुड़ा
सकता ॥
४० क्योंकि मैं अपना हाथ स्वर्ग की
ओर उठाकर कहता हू,
क्योंकि मैं अनन्त काल के लिये
जीवित हू,
४१ सो यदि मैं बिजली की तलवार
पर सान धरकर झलकाऊ,
और न्याय अपने हाथ मे ले लू,
तो अपने द्रोहियो से बदला लूगा,
और अपने बैरियो को बदला
दूगा ॥
४२ मैं अपने तीरो को लोहू से मतवाला
करूगा,
और मेरी तलवार मास खाएगी—
वह लोहू, मारे हुओ और बन्धुओ
का, और वह मास, शत्रुओ के
प्रधानो के शीश का होगा ॥
४३ हे अन्यजातियो, उसकी प्रजा के
साथ आनन्द मनाओ;
क्योंकि वह अपने दासो के लोहू
का पलटा लेगा,
और अपने द्रोहियो को बदला
देगा,
और अपने देश और अपनी प्रजा
के पाप के लिये प्रायश्चित्त देगा।

४४ इस गीत के सब वचन मूसा ने नून
के पुत्र होशे समेत आकर लोगो को सुनाए।
४५ जब मूसा ये सब वचन सब इस्राएलियो
से कह चुका, ४६ तब उस ने उन से कहा,
कि जितनी बाते मैं आज तुम से चिताकर
कहता हू उन सब पर अपना अपना मन
लगाओ, और उनके अर्थात् इस व्यवस्था
की सारी बातो के मानने मे चौकसी करने
की आज्ञा अपने लड़केबालो को दो।
४७ क्योंकि यह तुम्हारे लिये व्यर्थ काम
नही, परन्तु तुम्हारा जीवन ही है, और ऐसा
करने से उस देश में तुम्हारी आयु के दिन
बहुत होगे, जिसके अधिकारी होने को
तुम यरदन पार जा रहे हो ॥

४८ फिर उसी दिन यहोवा ने मूसा से
कहा, ४९ उस अबारीम पहाड़ की नबो
नाम चोटी पर, जो मोआब देश में यरीहो
के साम्हने है, चढ़कर कनान देश जिसे मैं
इस्राएलियो की निज भूमि कर देता हू
उसको देख ले। ५० तब जैसा तेरा भाई
हारून होर पहाड़ पर मरकर अपने लोगो
मे मिल गया, वैसा ही तू इस पहाड़ पर
चढ़कर मर जाएगा, और अपने लोगो में
मिल जाएगा। ५१ इसका कारण यह है,
कि सीन जंगल मे, कादेश के मरीबा नाम
सोते पर, तुम दोनो ने मेरा अपराध किया,
क्योंकि तुम ने इस्राएलियो के मध्य मे मुझे
पवित्र न ठहराया। ५२ इसलिये वह देश जो
मैं इस्राएलियो को देता हू, तू अपने साम्हने
देख लेगा, परन्तु वहा जाने न पाएगा ॥

(मूसा का इस्राएलियों को दिया
हुआ आशीर्वाद)

३३ जो आशीर्वाद परमेश्वर के
जन मूसा ने अपनी मृत्यु से पहिले
इस्राएलियो को दिया वह यह है ॥
२ उस ने कहा,
यहोवा सीनै से आया,
और सेईर से उनके लिये उदय
हुआ,
उस ने पारान पर्वत पर से अपना
तेज दिखाया,
और लाखो पवित्रो के मध्य मे से
आया,

उसके दहिने हाथ से उनके लिये
ज्वालामय विधिया निकली॥
३ वह निश्चय देश देश के लोगों से
प्रेम करता है,
उसके सब पवित्र लोग तेरे हाथ
मे है
वे तेरे पावो के पास बैठे रहते
है,
एक एक तेरे वचनो से लाभ उठाता
है॥
४ मूसा ने हमें व्यवस्था दी,
और याकूब की मण्डली का निज
भाग ठहरी॥
५ जब प्रजा के मुख्य मुख्य पुरुष,
और इस्राएल के गोत्री एक सग
होकर एकत्रित हुए, तब वह
यशूरून में राजा ठहरा॥
६ रूबेन न मरे, वरन जीवित रहे,
तौभी उसके यहा के मनुष्य थोडे
हो॥
७ और यहूदा पर यह आशीर्वाद
हुआ जो मूसा ने कहा,
हे यहोवा, तू यहूदा की सुन,
और उसे उसके लोगो के पास
पहुचा।
वह अपने लिये आप अपने हाथो
से लडा,
और तू ही उसके द्रोहियो के विरुद्ध
उसका सहायक हो॥
८ फिर लेवी के विषय मे उस ने
कहा,
तेरे तुम्मीम और ऊरीम तेरे भक्त
के पास है, जिसको तू ने मस्सा
मे परख लिया,
और जिसके साथ मरीबा नाम
सोते पर तेरा वादविवाद हुआ,
९ उस ने तो अपने माता पिता के
विषय मे कहा, कि म उनको
नही जानता,
और न तो उस ने अपने भाइयो
को अपना माना,
और न अपने पुत्रो को पहिचाना।
क्योकि उन्हो ने तेरी बाते मानी,
और वे तेरी वाचा का पालन
करते है॥
१० वे याकूब को तेरे नियम,
और इस्राएल को तेरी व्यवस्था
सिखाएगे,
और तेरे आगे धूप,
और तेरी वेदी पर सर्वाङ्ग पशु
को होमबलि करेगे॥
११ हे यहोवा, उसकी सम्पत्ति पर
आशीष दे,
और उसके हाथो की सेवा को
ग्रहण कर,
उसके विरोधियो और बैरियो की
कमर पर ऐसा मार, कि वे फिर
न उठ सके॥
१२ फिर उस ने बिन्यामीन के विषय
मे कहा,
यहोवा का वह प्रिय जन, उसके
पास निडर वास करेगा,
और वह दिन भर उस पर छाया
करेगा,
और वह उसके कन्धो के बीच रहा
करता है॥
१३ फिर यूसुफ के विषय मे उस ने
कहा,
इसका देश यहोवा से आशीष पाए,
अर्थात् आकाश के अनमोल पदार्थ
और ओस,
और वह गहिरा जल जो नीचे है,

१४ और सूर्य के पकाए हुए अनमोल
फल,
और जो अनमोल पदार्थ चद्रमा के
उगाए उगते है,
१५ और प्राचीन पहाडो के उत्तम
पदार्थ,
और सनातन पहाडियो के अनमोल
पदार्थ,
१६ और पृथ्वी और जो अनमोल पदार्थ
उस मे भरे है,
और जो झाडी मे रहता था
उसकी प्रसन्नता।
इन सभो के विषय मे यूसुफ के
सिर पर,
अर्थात् उसी के सिर के चाद पर
जो अपने भाइयो से न्यारा हुआ
था आशीष ही आशीष फले॥
१७ वह प्रतापी है, मानो गाय का
पहिलौठा है,
और उसके सीग वनैले बैल के से
है,
उन से वह देश देश के लोगो को,
वरन पृथ्वी के छोर तक के सब
मनुष्यो को ढकेलेगा;
वे एप्रैम के लाखो लाख,
और मनश्शे के हजारो हजार
है॥
१८ फिर जबूलून के विषय मे उस ने
कहा,
हे जबूलून, तू बाहर निकलते समय,
और हे इस्साकार, तू अपने डेरो
मे आनन्द करे॥
१९ वे देश देश के लोगो को पहाड़ पर
बुलाएगे;
वे वहा धर्मयज्ञ करेंगे;
क्योंकि वे समुद्र का धन,
और बालू मे छिपे हुए अनमोल
पदार्थ से लाभ उठाएगे॥
२० फिर गाद के विषय मे उस ने
कहा,
धन्य वह है जो गाद को बढाता
है!
गाद तो सिहनी के समान रहता
है,
और बाह को, वरन सिर के चाद
तक को फाड डालता है॥
२१ और उस ने पहिला अश तो अपने
लिये चुन लिया,
क्योकि वहा रईस के योग्य भाग
रखा हुआ था;
तब उस ने प्रजा के मुख्य मुख्य
पुरुषो के सग आकर
यहोवा का ठहराया हुआ धर्म,
और इस्राएल के साथ होकर उसके
नियम का प्रतिपालन किया॥
२२ फिर दान के विषय मे उस ने कहा,
दान तो बाशान से कूदनेवाला सिह
का बच्चा है॥
२३ फिर नप्ताली के विषय मे उस ने
कहा,
हे नप्ताली, तू जो यहोवा की
प्रसन्नता से तृप्त,
और उसकी आशीष से भरपूर
है,
तू पच्छिम और दक्खिन के देश का
अधिकारी हो॥
२४ फिर आशेर के विषय मे उस ने
कहा,
आशेर पुत्रो के विषय मे आशीष
पाए;
वह अपने भाइयों में प्रिय रहे,
और अपना पांव तेल में डुबोए॥

२५ तेरे जूते लोहे और पीतल के होंगे,
और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी
शक्ति हो *॥
२६ हे यशूरून, ईश्वर के तुल्य और
कोई नहीं है,
वह तेरी सहायता करने को
आकाश पर,
और अपना प्रताप दिखाता हुआ
आकाशमण्डल पर सवार होकर
चलता है॥
२७ अनादि परमेश्वर तेरा गृहधाम है,
और नीचे सनातन भुजाए हैं।
वह शत्रुओं को तेरे साम्हने से
निकाल देता,
और कहता है, उनको सत्यानाश
कर दे॥
२८ और इस्राएल निडर बसा रहता है,
अन्न और नये दाखमधु के देश मे
याकूब का सोता अकेला ही रहता
है,
और उसके ऊपर के आकाश से
ओस पडा करती है॥
२९ हे इस्राएल, तू क्या ही धन्य है!
हे यहोवा से उद्धार पाई हुई प्रजा,
तेरे तुल्य कौन है?
वह तो तेरी सहायता के लिये
ढाल,
और तेरे प्रताप के लिये तलवार
है, तेरे शत्रु तुझे सराहेंगे,
और तू उनके ऊचे स्थानो को
रौंदेगा॥

(मूसा की मृत्यु)

३४ फिर मूसा मोआब के अराबा
मे नबो पहाड पर जो पिसगा की
एक चोटी और यरीहो के साम्हने है, चढ
गया, और यहोवा ने उसको दान तक का
गिलाद नाम सारा देश, २ और नप्ताली
का सारा देश, और एप्रैम और मनश्शे का
देश, और पच्छिम के समुद्र तक का यहूदा
का सारा देश, ३ और दक्खिन देश, और
सोअर तक की यरीहो नाम खजूरवाले नगर
की तराई, यह सब दिखाया। ४ तब
यहोवा ने उस से कहा, जिस देश के विषय
में मैं ने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से
शपथ खाकर कहा था, कि मैं इसे तेरे वंश
को दूगा वह यही है। मै ने इसको तुझे
साक्षात दिखला दिया है, परन्तु तू पार
होकर वहा जाने न पाएगा। ५ तब यहोवा
के कहने के अनुसार उसका दास मूसा वही
मोआब के देश में मर गया, ६ और उस ने
उसे मोआब के देश मे बेतपोर के साम्हने
एक तराई में मिट्टी दी, और आज के दिन
तक कोई नही जानता कि उसकी कब्र
कहा है। ७ मूसा अपनी मृत्यु के समय
एक सौ बीस वर्ष का था, परन्तु न तो
उसकी आखें धुधली पडी, और न उसका
पौरुष घटा था। ८ और इस्राएली मोआब
के अराबा में मूसा के लिये तीस दिन तक
रोते रहे, तब मूसा के लिये रोने और
विलाप करने के दिन पूरे हुए। ९ और
नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से
परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ
उस पर रखे थे, और इस्राएली उस आज्ञा
के अनुसार जो यहोवा ने मूसा को दी थी
उसकी मानते रहे। १० और मूसा के
तुल्य इस्राएल मे ऐसा कोई नबी नही
उठा, जिस से यहोवा ने आम्हने-साम्हने
बातें की,* ११ और उससे यहोवा ने

* मूल में—जैसे तेरे दिन वैसा तेरा बल।

* मूल में—उसको आम्हने-साम्हने जाना।

फिरौन और उसके सब कर्मचारियों के
साम्हने, और उसके सारे देश में, सब
चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा था,
१२ और उस ने सारे इस्राएलियों की
दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के
काम कर दिखाए॥

यहोशू

(यहोशू का हियाव बन्धाया जाना)

१ यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के
बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से
जो नून का पुत्र था कहा, २ मेरा दास मूसा
मर गया है, सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और
इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस
देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात् इस्रा-
एलियों को देता हूं। ३ उस वचन के
अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस
जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं
तुम्हें दे देता हूं। ४ जंगल और उस
लबानोन से लेकर परात महानद तक, और
सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक हित्तियों का
सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा। ५ तेरे
जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा,
जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी
रहूंगा, और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और
न तुझ को छोड़ूंगा। ६ इसलिये हियाव
बान्धकर दृढ़ हो जा, क्योंकि जिस देश के
देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से
खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा।
७ इतना हो कि तू हियाव बान्धकर और
बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा
ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में
चौकसी करना, और उस से न तो दहिने
मुड़ना और न बाएं, तब जहां जहां तू
जाएगा वहां वहां तेरा काम सुफल होगा।
८ व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से
कभी न उतरने पाए,* इसी में दिन रात
ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस
में लिखा है उसके अनुसार करने की तू
चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे
सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली
होगा। ९ क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी?
हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा, भय न खा,
और तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि जहां
जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर
यहोवा तेरे संग रहेगा॥

(चढ़ाई की तैयारी का आज्ञा मानना)

१० तब यहोशू ने प्रजा के सरदारों को
यह आज्ञा दी, ११ कि छावनी में इधर
उधर जाकर प्रजा के लोगों को यह आज्ञा
दो, कि अपने अपने लिये भोजन तैयार कर
रखो, क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम को
इस यरदन के पार उतरकर उस देश को
अपने अधिकार में लेने के लिये जाना है
जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे
अधिकार में देनेवाला है॥

* मूल में—पुस्तक तेरे मुंह से न हटे।

१२ फिर यहोशू ने रूबेनियों, गादियों,
और मनश्शे के आधे गोत्र के लोगों से कहा,
१३ जो बात यहोवा के दास मूसा ने तुम से
कही थी, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
तुम्हे विश्राम देता है, और यही देश तुम्हें
देगा, उसकी सुधि करो। १४ तुम्हारी
स्त्रिया, बालबच्चे, और पशु तो इस देश में
रहें जो मूसा ने तुम्हें यरदन के इसी पार
दिया, परन्तु तुम जो शूरवीर हो पांति बान्धे
हुए अपने भाइयो के आगे आगे पार उतर
चलो, और उनकी सहायता करो, १५ और
जब यहोवा उनको ऐसा विश्राम देगा जैसा
वह तुम्हें दे चुका है, और वे भी तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा के दिए हुए देश के अधि-
कारी हो जाएगे, तब तुम अपने अधिकार
के देश में, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन
के इस पार सूर्योदय की ओर तुम्हे दिया है,
लौटकर इसके अधिकारी होगे। १६ तब
उन्हो ने यहोशू को उत्तर दिया, कि जो कुछ
तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम
करेंगे, और जहा कही तू हमे भेजे वहा
हम जाएगे। १७ जैसे हम सब बातो मे
मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना
करेंगे, इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा
जैसा मूसा के सग रहता था वैसा ही तेरे
सग भी रहे। १८ कोई क्यो न हो जो
तेरे विरुद्ध बलवा करे और जितनी आज्ञाए
तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला
जाएगा। परन्तु तू दृढ और हियाव बान्धे
रह॥

(यरीहो का भेद लिया जाना)

२ तब नून के पुत्र यहोशू ने दो भेदियो
को शित्तीम से चुपके से भेज दिया,
और उन से कहा, जाकर उस देश और
यरीहो को देखो। तुरन्त वे चल दिए, और
राहाब नाम किसी वेश्या के घर मे जाकर
सो गए। २ तब किसी ने यरीहो के राजा
से कहा, कि आज की रात कई एक इस्राएली
हमारे देश का भेद लेने को यहा आए हुए
है। ३ तब यरीहो के राजा ने राहाब के
पास यो कहला भेजा, कि जो पुरुष तेरे यहा
आए है उन्हे बाहर ले आ, क्योंकि वे सारे
देश का भेद लेने को आए है। ४ उस स्त्री
ने दोनो पुरुषो को छिपा रखा, और इस
प्रकार कहा, कि मेरे पास कई पुरुष आए तो
थे, परन्तु मैं नही जानती कि वे कहा के थे,
५ और जब अन्धेरा हुआ, और फाटक बन्द
होने लगा, तब वे निकल गए, मुझे मालूम
नही कि वे कहा गए, तुम फुर्ती करके उनका
पीछा करो तो उन्हे जा पकडोगे। ६ उस ने
उनको घर की छत पर चढाकर सनई की
लकडियो के नीचे छिपा दिया था जो उस ने
छत पर सजा कर रखी थी। ७ वे पुरुष
तो यरदन का मार्ग ले उनकी खोज में घाट
तक चले गए, और ज्यो ही उनको खोजने-
वाले फाटक से निकले त्यो ही फाटक
बन्द किया गया। ८ और ये लेटने न पाए
थे कि वह स्त्री छत पर इनके पास जाकर
९ इन पुरुषो से कहने लगी, मुझे तो
निश्चय है कि यहोवा ने तुम लोगो को यह
देश दिया है, और तुम्हारा भय हम लोगो
के मन में समाया है, और इस देश के सब
निवासी तुम्हारे कारण घबरा रहे है*।
१० क्योंकि हम ने सुना है कि यहोवा ने
तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय तुम्हारे
साम्हने लाल समुद्र का जल सुखा दिया।
और तुम लोगो ने सीहोन और ओग नाम
यरदन पार रहनेवाले एमोरियो के दोनो
राजाओ को सत्यानाश कर डाला है।

* मूल मे—पिघल गए।

११ और यह सुनते ही हमारा मन पिघल
गया, और तुम्हारे कारण किसी के जी मे जी
न रहा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का
परमेश्वर है। १२ अब मैं ने जो तुम पर
दया की है, इसलिये मुझ से यहोवा की शपथ
खाओ कि तुम भी मेरे पिता के घराने पर
दया करोगे, और इसकी सच्ची चिन्हानी
मुझे दो, १३ कि तुम मेरे माता-पिता,
भाइयो और बहिनो को, और जो कुछ उनका
है उन सभो को भी जीवित रख छोडो, और
हम सभो का प्राण मरने से बचाओगे।
१४ तब उन पुरुषो ने उस से कहा, यदि तू
हमारी यह बात किसी पर प्रगट न करे, तो
तुम्हारे प्राण के बदले हमारा प्राण जाए;
और जब यहोवा हम को यह देश देगा, तब
हम तेरे साथ कृपा और सच्चाई से बर्ताव
करेंगे। १५ तब राहाब जिसका घर
शहरपनाह पर बना था, और वह वहीं रहती
थी, उस ने उनको खिडकी से रस्सी के बल
उतारके नगर के बाहर कर दिया।
१६ और उस ने उन से कहा, पहाड को
चले जाओ, ऐसा न हो कि खोजनेवाले तुम
को पाए, इसलिये जब तक तुम्हारे खोजने-
वाले लौट न आए तब तक, अर्थात् तीन दिन
वही छिपे रहना, उसके बाद अपना मार्ग
लेना। १७ उन्हो ने उस से कहा, जो
शपथ तू ने हम को खिलाई है उसके विषय
में हम तो निर्दोष रहेंगे। १८ सुन,
जब हम लोग इस देश में आएंगे, तब जिस
खिडकी से तू ने हम को उतारा है उस मे
यही लाल रंग के सूत की डोरी बान्ध देना,
और अपने माता-पिता, भाइयो, वरन अपने
पिता के सारे घराने को इसी घर मे अपने
पास इकट्ठा कर रखना। १९ तब जो कोई
तेरे घर के द्वार से बाहर निकले, उसके
खून का दोष उसी के सिर पडेगा, और हम
निर्दोष ठहरेंगे परन्तु यदि तेरे संग घर में
रहते हुए किसी पर किसी का हाथ पडे,
तो उसके खून का दोष हमारे सिर पर
पडेगा। २० फिर यदि तू हमारी यह बात
किसी पर प्रगट करे, तो जो शपथ तू ने हम
को खिलाई है उस से हम निर्बन्ध ठहरेंगे।
२१ उस ने कहा, तुम्हारे वचनो के अनुसार
हो। तब उस ने उनको विदा किया, और
वे चले गए, और उस ने लाल रंग की डोरी
को खिडकी में बान्ध दिया। २२ और वे
जाकर पहाड पर पहुचे, और वहा खोजने-
वालो के लौटने तक, अर्थात् तीन दिन तक
रहे, और खोजनेवाले उनको सारे मार्ग में
ढूढते रहे और कही न पाया। २३ तब वे
दोनो पुरुष पहाड से उतरे, और पार जाकर
नून के पुत्र यहोशू के पास पहुंचकर जो कुछ
उन पर बीता था उसका वर्णन किया।
२४ और उन्हो ने यहोशू से कहा, नि सन्देह
यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर
दिया है, फिर इसके सिवाय उसके सारे
निवासी हमारे कारण घबरा रहे हैं *॥

(इस्राएलियों का यरदन पार उतर जाना)

३ बिहान को यहोशू सवेरे उठा, और
सब इस्राएलियो को साथ ले शित्तीम
से कूच कर यरदन के किनारे आया,
और वे पार उतरने से पहिले वही टिक गए।
२ और तीन दिन के बाद सरदारो ने छावनी
के बीच जाकर ३ प्रजा के लोगो को यह
आज्ञा दी, कि जब तुम को अपने परमेश्वर
यहोवा की वाचा का सन्दूक और उसे उठाए
हुए लेवीय याजक भी देख पडे, तब अपने
स्थान से कूच करके उसके पीछे पीछे चलना,
४ परन्तु उसके और तुम्हारे बीच मे दो

* मूल में—पिघल गए।

हज़ार हाथ के अटकल अन्तर रहे, तुम
सन्दूक के निकट न जाना। ताकि तुम देख
सको, कि किस मार्ग से तुम को चलना है,
क्योंकि अब तक तुम इस मार्ग पर होकर
नही चले। ५ फिर यहोशू ने प्रजा के
लोगो से कहा, तुम अपने आप को पवित्र
करो, क्योंकि कल के दिन यहोवा तुम्हारे
मध्य में आश्चर्यकर्म करेगा। ६ तब यहोशू
ने याजको से कहा, वाचा का सन्दूक उठाकर
प्रजा के आगे आगे चलो। तब वे वाचा का
सन्दूक उठाकर आगे आगे चले। ७ तब
यहोवा ने यहोशू से कहा, आज के दिन से
मैं सब इस्राएलियो के सम्मुख तेरी प्रशसा
करना आरम्भ करूगा, जिस से वे जान लें
कि जैसे मै मूसा के सग रहता था वैसे ही
मैं तेरे सग भी हू। ८ और तू वाचा के
सन्दूक के उठानेवाले याजको को यह आज्ञा
दे, कि जब तुम यरदन के जल के किनारे
पहुचो, तब यरदन मे खडे रहना॥

९ तब यहोशू ने इस्राएलियो से कहा,
कि पास आकर अपने परमेश्वर यहोवा के
वचन सुनो। १० और यहोशू कहने लगा,
कि इस से तुम जान लोगे कि जीवित ईश्वर
तुम्हारे मध्य में है, और वह तुम्हारे साम्हने
से निःसन्देह कनानियो, हित्तियो, हिव्वियो,
परिज्जियो, गिर्गाशियो, एमोरियो, और
यबूसियो को उनके देश मे से निकाल देगा।
११ सुनो, पृथ्वी भर के प्रभु की वाचा का
सन्दूक तुम्हारे आगे आगे यरदन में जाने पर
है। १२ इसलिये अब इस्राएल के गोत्रो
में से बारह पुरुषो को चुन लो, वे एक एक
गोत्र में से एक पुरुष हो। १३ और जिस
समय पृथ्वी भर के प्रभु यहोवा की वाचा
का सन्दूक उठानेवाले याजको के पाव यरदन
के जल में पडेंगे, उस समय यरदन का ऊपर
से बहता हुआ जल थम जाएगा, और ढेर
होकर ठहरा रहेगा। १४ सो जब प्रजा के
लोगो ने अपने डेरो से यरदन पार जाने को
कूच किया, और याजक वाचा का सन्दूक
उठाए हुए प्रजा के आगे आगे चले, १५ और
सन्दूक के उठानेवाले यरदन पर पहुचे, और
सन्दूक के उठानेवाले याजको के पाव यरदन
के तीर के जल में डूब गए (यरदन का जल
तो कटनी के समय के सब दिन कडारो के
ऊपर ऊपर बहा करता है), १६ तब जो
जल ऊपर की ओर से बहा आता था वह
बहुत दूर, अर्थात् आदाम नगर के पास जो
सारतान के निकट है रुककर एक ढेर हो
गया, और दीवार सा उठा रहा, और जो
जल अराबा का ताल, जो खारा ताल भी
कहलाता है, उसकी ओर बहा जाता था,
वह पूरी रीति से सूख गया, और प्रजा के
लोग यरीहो के साम्हने पार उतर गए।
१७ और याजक यहोवा की वाचा का
सन्दूक उठाए हुए यरदन के बीचोबीच
पहुचकर स्थल पर स्थिर खडे रहे, और सब
इस्राएली स्थल ही स्थल पार उतरते रहे,
निदान उस सारी जाति के लोग यरदन
पार हो गए॥

४ जब उस सारी जाति के लोग यरदन
के पार उतर चुके, तब यहोवा ने
यहोशू से कहा, २ प्रजा मे से बारह पुरुष,
अर्थात् गोत्र पीछे एक एक पुरुष को चुनकर
यह आज्ञा दे, ३ कि तुम यरदन के बीच में,
जहा याजको ने पाव धरे थे वहा से बारह
पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो,
और जहा आज की रात पडाव होगा वही
उनको रख देना। ४ तब यहोशू ने उन
बारह पुरुषो को, जिन्हें उस ने इस्राएलियो
के प्रत्येक गोत्र में से छाटकर ठहरा रखा था,
५ बुलवाकर कहा, तुम अपने परमेश्वर

यहोवा के सन्दूक के आगे यरदन के बीच मे
जाकर इस्राएलियो के गोत्रो की गिनती के
अनुसार एक एक पत्थर उठाकर अपने अपने
कन्धे पर रखो, ६ जिस मे यह तुम लोगो
के बीच चिन्हानी ठहरे, और आगे को जब
तुम्हारे बेटे यह पूछें, कि इन पत्थरो का क्या
मतलब है? ७ तब तुम उन्हे यह उत्तर
दो, कि यरदन का जल यहोवा की वाचा के
सन्दूक के साम्हने से दो भाग हो गया था;
क्योकि जब वह यरदन पार आ रहा था, तब
यरदन का जल दो भाग हो गया। सो वे
पत्थर इस्राएल को सदा के लिये स्मरण
दिलानेवाले ठहरेंगे। ८ यहोशू की इस
आज्ञा के अनुसार इस्राएलियो ने किया,
जैसा यहोवा ने यहोशू से कहा था वैसा ही
उन्हो ने इस्राएली गोत्रो की गिनती के
अनुसार बारह पत्थर यरदन के बीच मे से
उठा लिए; और उनको अपने साथ ले जाकर
पडाव में रख दिया। ९ और यरदन के बीच,
जहा याजक वाचा के सन्दूक को उठाए हुए
अपने पाव धरे थे वहा यहोशू ने बारह पत्थर
खडे कराए वे आज तक वही पाए जाते है।
१० और याजक सन्दूक उठाए हुए उस समय
तक यरदन के बीच खडे रहे जब तक वे सब
बाते पूरी न हो चुकी, जिन्हें यहोवा ने यहोशू
को लोगो से कहने की आज्ञा दी थी। तब सब
लोग फुर्ती से पार उतर गए, ११ और
जब सब लोग पार उतर चुके, तब याजक
और यहोवा का सन्दूक भी उनके देखते पार
हुए। १२ और रूबेनी, गादी, और मनश्शे
के आधे गोत्र के लोग मूसा के कहने के
अनुसार इस्राएलियो के आगे पांति बान्धे
हुए पार गए; १३ अर्थात् कोई चालीस
हज़ार पुरुष युद्ध के हथियार बान्धे हुए
सग्राम करने के लिये यहोवा के साम्हने पार
उतरकर यरीहो के पास के अराबा में पहुचे।
१४ उस दिन यहोवा ने सब इस्राएलियो के
साम्हने यहोशू की महिमा बढाई, और जैसे
वे मूसा का भय मानते थे वैसे ही यहोशू
का भी भय उसके जीवन भर मानते
रहे॥

१५ और यहोवा ने यहोशू से कहा,
१६ कि साक्षी का सन्दूक उठानेवाले याजको
को आज्ञा दे कि यरदन मे से निकल आए।
१७ तो यहोशू ने याजको को आज्ञा दी,
कि यरदन में से निकल आओ। १८ और
ज्यो ही यहोवा की वाचा का सन्दूक उठाने-
वाले याजक यरदन के बीच में से निकल आए,
और उनके पाव स्थल पर पडे, त्यो ही यरदन
का जल अपने स्थान पर आया, और पहिले
की नाई कडारो के ऊपर फिर बहने लगा।
१९ पहिले महीने के दसवे दिन को प्रजा के
लोगो ने यरदन मे से निकलकर यरीहो के
पूर्वी सिवाने पर गिलगाल मे अपने डेरे
डाले। २० और जो बारह पत्थर यरदन मे
से निकाले गए थे, उनको यहोशू ने गिलगाल
में खडे किए। २१ तब उस ने इस्राएलियो
से कहा, आगे को जब तुम्हारे लडकेवाले
अपने अपने पिता से यह पूछें, कि इन पत्थरो
का क्या मतलब है? २२ तब तुम यह
कहकर उनको बताना, कि इस्राएली यरदन
के पार स्थल ही स्थल चले आए थे।
२३ क्योकि जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने लाल समुद्र को हमारे पार हो जाने तक
हमारे साम्हने से हटाकर सुखा रखा था,
वैसे ही उस ने यरदन का भी जल तुम्हारे
पार हो जाने तक तुम्हारे साम्हने से हटाकर
सुखा रखा, २४ इसलिये कि पृथ्वी के सब
देशो के लोग जान ले कि यहोवा का हाथ
बलवन्त है, और तुम सर्वदा अपने परमेश्वर
यहोवा का भय मानते रहो॥

(इस्राएलियों का खतना किया जाना और फसह मानना)

५ जब यरदन के पच्छिम की ओर रहनेवाले एमोरियों के सब राजाओं ने,
और समुद्र के पास रहनेवाले कनानियों के
सब राजाओं ने यह सुना, कि यहोवा ने
इस्राएलियों के पार होने तक उनके साम्हने
से यरदन का जल हटाकर सुखा रखा है, तब
इस्राएलियों के डर के मारे उनका मन
घबरा * गया, और उनके जी में जी न
रहा ॥

२ उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा,
चकमक की छुरियां बनवाकर दूसरी बार
इस्राएलियों का खतना करा दे। ३ तब
यहोशू ने चकमक की छुरियां बनवाकर
खलड़ियां नाम टीले पर इस्राएलियों का
खतना कराया। ४ और यहोशू ने जो
खतना कराया, इसका कारण यह है, कि
जितने युद्ध के योग्य पुरुष मिस्र से निकले
थे वे सब मिस्र से निकलने पर जंगल के
मार्ग में मर गए थे। ५ जो पुरुष मिस्र से
निकले थे उन सब का तो खतना हो चुका
था, परन्तु जितने उनके मिस्र से निकलने पर
जंगल के मार्ग में उत्पन्न हुए उन में से किसी
का खतना न हुआ था। ६ क्योंकि इस्रा-
एली तो चालीस वर्ष तक जंगल में फिरते
रहे, जब तक उस सारी जाति के लोग,
अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से
निकले थे वे नाश न हो गए, क्योंकि उन्हों ने
यहोवा की न मानी थी, सो यहोवा ने शपथ
खाकर उन से कहा था, कि जो देश मैं ने
तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर तुम्हें देने को
कहा था, और उस में दूध और मधु की
धाराएं बहती हैं, वह देश मैं तुम को नहीं
दिखाने का। ७ तो उन लोगों के पुत्र जिन-
को यहोवा ने उनके स्थान पर उत्पन्न किया
था, उनका खतना यहोशू से कराया, क्योंकि
मार्ग में उनके खतना न होने के कारण वे
खतनारहित थे। ८ और जब उस सारी
जाति के लोगों का खतना हो चुका, तब वे
चंगे हो जाने तक अपने अपने स्थान पर
छावनी में रहे। ९ तब यहोवा ने यहोशू
से कहा, तुम्हारी नामधराई जो मिस्रियों
में हुई है उसे मैं ने आज दूर की है। * इस
कारण उस स्थान का नाम आज के दिन
तक गिलगाल † पड़ा है ॥

१० सो इस्राएली गिलगाल में डेरे डाले
हुए रहे, और उन्हों ने यरीहो के पास के
अराबा में पूर्णमासी की सन्ध्या के समय
फसह माना। ११ और फसह के दूसरे दिन
वे उस देश की उपज में से अखमीरी रोटी
और उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाने
लगे। १२ और जिस दिन वे उस देश की
उपज में से खाने लगे, उसी दिन के बिहान
को मन्ना बन्द हो गया, और इस्राएलियों
को आगे फिर कभी मन्ना न मिला, परन्तु
उस वर्ष उन्हों ने कनान देश की उपज में
से खाई ॥

(यरीहो का ले लिया जाना)

१३ जब यहोशू यरीहो के पास था तब
उस ने अपनी आंखें उठाईं, और क्या देखा,
कि हाथ में नंगी तलवार लिये हुए एक पुरुष
साम्हने खड़ा है, और यहोशू ने उसके पास
जाकर पूछा, क्या तू हमारी ओर का है, वा
हमारे बैरियों की ओर का? १४ उस ने
उत्तर दिया, कि नहीं, मैं यहोवा की सेना का
प्रधान होकर अभी आया हूं। तब यहोशू ने
पृथ्वी पर मुंह के बल गिरकर दण्डवत् किया,

* मूल में—गल।

* मूल में—लुढ़का दी है।
† अर्थात् लुढ़कना।

और उस से कहा, अपने दास के लिये मेरे
प्रभु की क्या आज्ञा है? १५ यहोवा की
सेना के प्रधान ने यहोशू से कहा, अपनी
जूती पाव से उतार डाल, क्योंकि जिस स्थान
पर तू खडा है वह पवित्र है। तव यहोशू ने
वैसा ही किया॥

६ और यरीहो के सब फाटक इस्रा-
एलियो के डर के मारे लगातार वन्द
रहे, और कोई वाहर भीतर आने जाने नही
पाता था। २ फिर यहोवा ने यहोशू से
कहा, सुन, मै यरीहो को उसके राजा और
शूरवीरो समेत तेरे वश मे कर देता हू।
३ सो तुम मे जितने योद्धा है नगर को घेर
ले, और उस नगर के चारो ओर एक वार
घूम आए। और छ दिन तक ऐसा ही किया
करना। ४ और सात याजक सन्दूक के
आगे आगे जुवली * के सात नरसिगे लिये
हुए चले, फिर सातवे दिन तुम नगर के
चारो ओर सात वार घूमना, और याजक
भी नरसिगे फूकते चले। ५ और जव वे
जुवली के नरसिगे देर तक फूकते रहे, तव
सव लोग नरसिगे का शब्द सुनते ही वडी
ध्वनि से जयजयकार करे, तव नगर की
शहरपनाह नेव से गिर जाएगी, और सव
लोग अपने अपने साम्हने चढ जाए।
६ सो नून के पुत्र यहोशू ने याजको को
वुलवाकर कहा, वाचा के सन्दूक को उठा
लो, और सात याजक यहोवा के सन्दूक के
आगे आगे जुवली के सात नरसिगे लिए
चलें। ७ फिर उस ने लोगो से कहा, आगे
वढ़कर नगर के चारो ओर घूम आओ,
और हथियारवन्द पुरुष यहोवा के सन्दूक
के आगे आगे चले। ८ और जव यहोशू ये
वातें लोगो से कह चुका, तो वे सात याजक

* मेढों के सींगों के।

जो यहोवा के साम्हने सात नरसिगे लिए
हुए थे नरसिगे फूकते हुए चले, और यहोवा
की वाचा का सन्दूक उनके पीछे पीछे चला।
९ और हथियारवन्द पुरुष नरसिगे फूकने-
वाले याजको के आगे आगे चले, और पीछे
वाले सन्दूक के पीछे पीछे चले, और याजक
नरसिगे फूकते हुए चले। १० और यहोशू
ने लोगो को आज्ञा दी, कि जव तक मै तुम्हे
जयजयकार करने की आज्ञा न दू, तव तक
जयजयकार न करो, और न तुम्हारा कोई
शब्द सुनने मे आए, न कोई वात तुम्हारे
मुह से निकलने पाए; आज्ञा पाते ही जय-
जयकार करना। ११ उस ने यहोवा के
सन्दूक को एक वार नगर के चारो ओर
घुमवाया; तव वे छावनी मे आए, और
रात वही काटी॥

१२ विहान को यहोशू सवेरे उठा, और
याजको ने यहोवा का सन्दूक उठा लिया।
१३ और उन सात याजको ने जुवली * के
सात नरसिगे लिए और यहोवा के सन्दूक के
आगे आगे फूकते हुए चले, और उनके आगे
हथियारवन्द पुरुष चले, और पीछेवाले
यहोवा के सन्दूक के पीछे पीछे चले, और
याजक नरसिगे फूकते चले गए। १४ इस
प्रकार वे दूसरे दिन भी एक वार नगर के
चारो ओर घूमकर छावनी मे लौट आए।
और इसी प्रकार उन्हो ने छ दिन तक
किया। १५ फिर सातवे दिन वे भोर को
वडे तडके उठकर उसी रीति से नगर के
चारो ओर सात वार घूम आए, केवल उसी
दिन वे सात वार घूमे। १६ तव सातवी
वार जव याजक नरसिगे फूकते थे, तव
यहोशू ने लोगो से कहा, जयजयकार करो,
क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हे दे दिया है।

* मेढों के सींगों के।

१७ और नगर और जो कुछ उस में है
यहोवा के लिये अर्पण की वस्तु ठहरेगी,
केवल राहाब वेश्या और जितने उसके घर
में हो वे जीवित छोड़े जाएंगे, क्योंकि उस ने
हमारे भेजे हुए दूतो को छिपा रखा था।
१८ और तुम अर्पण की हुई वस्तुओ से
सावधानी से अपने आप को अलग रखो,
ऐसा न हो कि अर्पण की वस्तु ठहराकर पीछे
उसी अर्पण की वस्तु में से कुछ ले लो, और
इस प्रकार इस्राएली छावनी को भ्रष्ट करके
उसे कष्ट में डाल दो। १९ सब चादी,
सोना, और जो पात्र पीतल और लोहे के है,
वे यहोवा के लिये पवित्र है, और उसी के
भण्डार में रखे जाए। २० तब लोगो ने
जयजयकार किया, और याजक नरसिंगे
फूकते रहे। और जब लोगो ने नरसिंगे का
शब्द सुना तो फिर बड़ी ही ध्वनि से उन्हो ने
जयजयकार किया, तब शहरपनाह नेव से
गिर पड़ी, और लोग अपने अपने साम्हने
से उस नगर में चढ़ गए, और नगर को ले
लिया। २१ और क्या पुरुष, क्या स्त्री,
क्या जवान, क्या बूढ़े, वरन बैल, भेड़-बकरी,
गदहे, और जितने नगर मे थे, उन सभो को
उन्हो ने अर्पण की वस्तु जानकर तलवार
से मार डाला। २२ तब यहोशू ने उन दोनो
पुरुषो से जो उस देश का भेद लेने गए थे
कहा, अपनी शपथ के अनुसार उस वेश्या के
घर में जाकर उसको और जो उसके पास
हो उन्हें भी निकाल ले आओ। २३ तब वे
दोनो जवान भेदिए भीतर जाकर राहाब
को, और उसके माता-पिता, भाइयो, और
सब को जो उसके यहा रहते थे, वरन उसके
सब कुटुम्बियो को निकाल लाए, और
इस्राएल की छावनी से बाहर बैठा दिया।
२४ तब उन्हो ने नगर को, और जो कुछ
उस में था, सब को आग लगाकर फूंक दिया,
केवल चादी, सोना, और जो पात्र पीतल और
लोहे के थे, उनको उन्हो ने यहोवा के भवन
के भण्डार में रख दिया। २५ और यहोशू
ने राहाब वेश्या और उसके पिता के घराने
को, वरन उसके सब लोगो को जीवित
छोड़ दिया, और आज तक उसका वंश
इस्राएलियो के बीच में रहता है,
क्योंकि जो दूत यहोशू ने यरीहो के
भेद लेने को भेजे थे उनको उस ने
छिपा रखा था। २६ फिर उसी समय
यहोशू ने इस्राएलियों के सम्मुख शपथ रखी,
और कहा, कि जो मनुष्य उठकर इस नगर
यरीहो को फिर से बनाए वह यहोवा की
ओर से शापित हो। जब वह उसकी नेव
डालेगा तब तो उसका जेठा पुत्र मरेगा,
और जब वह उसके फाटक लगवाएगा तब
उसका छोटा पुत्र मर जाएगा *। २७ और
यहोवा यहोशू के संग रहा, और यहोशू की
कीर्ति उस सारे देश में फैल गई॥

(आकान का पाप)

७ परन्तु इस्राएलियो ने अर्पण की
वस्तु के विषय में विश्वासघात किया,
अर्थात् यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवंशी
जब्दी का पोता और कर्म्मी का पुत्र था, उस
ने अर्पण की वस्तुओ में से कुछ ले
लिया, इस कारण यहोवा का कोप
इस्राएलियो पर भड़क उठा॥

२ और यहोशू ने यरीहो से ऐ नाम नगर
के पास, जो बेतावेन से लगा हुआ बेतेल की
पूर्व की ओर है, कितने पुरुषो को यह कहकर
भेजा, कि जाकर देश का भेद ले आओ।
और उन पुरुषो ने जाकर ऐ का भेद लिया।

* मूल में—वह अपने जेठे के बदले में
उसकी नेव डालेगा, और अपने लहुरे के बदले
में उसके फाटक खड़े करेगा।

३ और उन्हो ने यहोशू के पास लौटकर
कहा, सब लोग वहा न जाए, कोई दो वा
तीन हजार पुरुष जाकर ऐ को जीत सकते
है, सब लोगो को वहा जाने का कष्ट न दे,
क्योकि वे लोग थोडे ही है। ४ इसलिये
कोई तीन हज़ार पुरुष वहा गए, परन्तु ऐ के
रहनेवालो के साम्हने से भाग आए,
५ तब ऐ के रहनेवालो ने उन मे से कोई
छत्तीस पुरुष मार डाले, और अपने फाटक
से शवारीम तक उनका पीछा करके उतराई
मे उनको मारते गए। तब लोगो का मन
पिघलकर* जल सा बन गया। ६ तब
यहोशू ने अपने वस्त्र फाडे, और वह और
इस्राएली वृद्ध लोग यहोवा के सन्दूक के
साम्हने मुह के बल गिरकर पृथ्वी पर साझ
तक पडे रहे, और उन्हो ने अपने अपने सिर
पर धूल डाली। ७ और यहोशू ने कहा,
हाय, प्रभु यहोवा, तू अपनी इस प्रजा
को यरदन पार क्यो ले आया? क्या हमें
एमोरियो के वश मे करके नष्ट करने के
लिये ले आया है? भला होता कि हम
सतोष करके यरदन के उस पार रह जाते!
८ हाय, प्रभु मै क्या कहू, जब इस्राएलियो
ने अपने शत्रुओ को पीठ दिखाई है।
९ क्योकि कनानी वरन इस देश के सब
निवासी यह सुनकर हम को घेर लेगे, और
हमारा नाम पृथ्वी पर से मिटा डालेगे, फिर
तू अपने बडे नाम के लिये क्या करेगा?
१० यहोवा ने यहोशू से कहा, उठ, खडा
हो जा, तू क्यो इस भाति मुंह के बल
पृथ्वी पर पडा है? ११ इस्राएलियो ने
पाप किया है; और जो वाचा मै ने उन से
अपने साथ बन्धाई थी उसको उन्हो ने तोड
दिया है, उन्हो ने अर्पण की वस्तुओ मे से

* मूल में—गलकर।

ले लिया, वरन चोरी भी की, और छल करके
उसको अपने सामान मे रख लिया है।
१२ इस कारण इस्राएली अपने शत्रुओ के
साम्हने खडे नही रह सकते, वे अपने शत्रुओ
को पीठ दिखाते है, इसलिये कि वे आप
अर्पण की वस्तु बन गए है। और यदि तुम
अपने मध्य मे से अर्पण की वस्तु को सत्या-
नाश न कर डालोगे, तो मै आगे को तुम्हारे
सग नही रहूगा। १३ उठ, प्रजा के लोगो
को पवित्र कर, उन से कह, कि बिहान तक
अपने अपने को पवित्र कर रखो; क्योकि
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता
है, कि हे इस्राएल, तेरे मध्य मे अर्पण की
वस्तु है; इसलिये जब तक तू अर्पण की
वस्तु को अपने मध्य में से दूर न करे तब तक
तू अपने शत्रुओ के साम्हने खडा न रह
सकेगा। १४ इसलिये बिहान को तुम गोत्र
गोत्र के अनुसार समीप खडे किए जाओगे;
और जिस गोत्र को यहोवा पकडे वह एक
एक कुल करके पास आए; और जिस कुल
को यहोवा पकडे सो घराना घराना करके
पास आए, फिर जिस घराने को यहोवा
पकडे वह एक एक पुरुष करके पास आए।
१५ तब जो पुरुष अर्पण की वस्तु रखे हुए
पकडा जाएगा, वह और जो कुछ उसका हो
सब आग मे डालकर जला दिया जाए;
क्योकि उस ने यहोवा की वाचा को तोडा
है, और इस्राएल में अनुचित कर्म किया है॥
१६ बिहान को यहोशू सवेरे उठकर
इस्राएलियो को गोत्र गोत्र करके समीप
लिवा ले गया, और यहूदा का गोत्र पकड़ा
गया, १७ तब उस ने यहूदा के परिवार
को समीप किया, और जेरहवंशियो का कुल
पकडा गया; फिर जेरहवंशियो के घराने के
एक एक पुरुष को समीप लाया, और जब्दी
पकडा गया; १८ तब उस ने उसके घराने

के एक एक पुरुष को समीप खडा किया, और
यहूदा गोत्र का आकान, जो जेरहवशी जब्दी
का पोता और कर्म्मी का पुत्र था, पकडा
गया। १९ तब यहोशू आकान से कहने
लगा, हे मेरे वेटे, इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा का आदर कर, और उसके आगे
अगीकार कर, और जो कुछ तू ने किया
है वह मुझ को बता दे, और मुझ से कुछ मत
छिपा। २० और आकान ने यहोशू को
उत्तर दिया, कि सचमुच मैं ने इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है,
और इस प्रकार मैं ने किया है, २१ कि
जब मुझे लूट में शिनार देश का एक सुन्दर
ओढना, और दो सौ शेकेल चादी, और पचास
शेकेल सोने की एक ईंट देख पडी, तब मैं ने
उनका लालच करके उन्हें रख लिया, वे
मेरे डेरे के भीतर भूमि में गडे है, और सब के
नीचे चादी है। २२ तब यहोशू ने दूत भेजे,
और वे उस डेरे में दौडे गए, और क्या देखा,
कि वे वस्तुए उसके डेरे में गडी है, और
सब के नीचे चादी है। २३ उनको उन्हो ने
डेरे में से निकालकर यहोशू और सब इस्रा-
एलियो के पास लाकर यहोवा के साम्हने
रख दिया। २४ तब सब इस्राएलियो
समेत यहोशू जेरहवशी आकान को, और
उस चादी और ओढने और सोने की ईंट
को, और उसके वेटे-वेटियो को, और उसके
बैलो, गदहो और भेड-बकरियो को, और
उसके डेरे को, निदान जो कुछ उसका था
उन सब को आकोर नाम तराई में ले गया।
२५ तब यहोशू ने उस से कहा, तू ने हमें
क्यो कष्ट दिया है? आज के दिन यहोवा
तुझी को कष्ट देगा। तब सब इस्राएलियो
ने उसको पत्थरवाह किया, और उनको
आग में डालकर जलाया, और उनके ऊपर
पत्थर डाल दिए। २६ और उन्हो ने उसके
ऊपर पत्थरो का बडा ढेर लगा दिया जो
आज तक बना है, तब यहोवा का भडका
हुआ कोप शान्त हो गया। इस कारण उस
स्थान का नाम आज तक आकोर* तराई
पडा है॥

(ऐ नगर का ले लिया जाना)

८ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, मत
डर, और तेरा मन कच्चा न हो, कमर
बान्धकर सब योद्धाओ को साथ ले, और ऐ
पर चढाई कर, सुन, मैं ने ऐ के राजा को
उसकी प्रजा और उसके नगर और देश
समेत तेरे वश में किया है। २ और जैसा
तू ने यरीहो और उसके राजा से किया वैसा
ही ऐ और उसके राजा के साथ भी करना,
केवल तुम पशुओ समेत उसकी लूट तो अपने
लिये ले सकोगे, इसलिये उस नगर के पीछे
की ओर अपने पुरुष घात में लगा दो।
३ सो यहोशू ने सब योद्धाओ समेत ऐ पर
चढाई करने की तैयारी की, और यहोशू ने
तीस हज़ार पुरुषो को जो शूरवीर थे
चुनकर रात ही को आज्ञा देकर भेजा।
४ और उनको यह आज्ञा दी, कि सुनो, तुम
उस नगर के पीछे की ओर घात लगाए बैठे
रहना, नगर से बहुत दूर न जाना, और सब
के सब तैयार रहना, ५ और मैं अपने
सब साथियो समेत उस नगर के निकट
जाऊगा। और जब वे पहिले की नाई हमारा
साम्हना करने को निकले, तब हम उनके
आगे से भागेंगे, ६ तब वे यह सोचकर,
कि वे पहिले की भाति हमारे साम्हने से
भागे जाते है, हमारा पीछा करेंगे, इस
प्रकार हम उनके साम्हने से भागकर उन्हें
नगर से दूर निकाल ले जाएगे, ७ तब
तुम घात में से उठकर नगर को अपना कर

* अर्थात् कष्ट देना।

लेना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
उसको तुम्हारे हाथ मे कर देगा। ८ और
जब नगर को ले लो, तब उस में आग लगा-
कर फूक देना, यहोवा की आज्ञा के अनुसार
ही काम करना, सुनो, मै ने तुम्हे आज्ञा दी
है। ९ तब यहोशू ने उनको भेज दिया,
और वे घात मे बैठने को चले गए, और
बेतेल और ऐ के मध्य मे और ऐ की पश्चिम
की ओर बैठे रहे, परन्तु यहोशू उस रात
को लोगो के बीच टिका रहा॥

१० बिहान को यहोशू सवेरे उठा, और
लोगो की गिनती लेकर इस्राएली वृद्ध लोगो
समेत लोगो के आगे आगे ऐ की ओर चला।
११ और उसके सग के सब योद्धा चढ गए,
और ऐ नगर के निकट पहुचकर उसके
साम्हने उत्तर की ओर डेरे डाल दिए, और
उनके और ऐ के बीच एक तराई थी।
१२ तब उस ने कोई पाच हजार पुरुष चुन-
कर बेतेल और ऐ के मध्यस्त नगर की
पश्चिम की ओर उनको घात मे बैठा दिया।
१३ और जब लोगो ने नगर की उत्तर ओर
की सारी सेना को और उसकी पश्चिम ओर
घात मे बैठे हुओ को भी ठिकाने पर कर
दिया, तब यहोशू उसी रात तराई के बीच
गया। १४ जब ऐ के राजा ने यह देखा,
तब वे फुर्ती करके सवेरे उठे, और राजा
अपनी सारी प्रजा को लेकर इस्राएलियो
के साम्हने उन से लडने को निकलकर
ठहराए हुए स्थान पर जो अराबा के साम्हने
है पहुचा; और वह नहीं जानता था कि नगर
की पिछली ओर लोग घात लगाए बैठे है।
१५ तब यहोशू और सब इस्राएली उन से
मानो हार मानकर जगल का मार्ग लेकर
भाग निकले। १६ तब नगर के सब लोग
इस्राएलियों का पीछा करने को पुकार पुकार-
के बुलाए गए, और वे यहोशू का पीछा
करते हुए नगर से दूर निकल गए। १७ और
न ऐ मे और न बेतेल मे कोई पुरुष रह गया,
जो इस्राएलियो का पीछा करने को न गया
हो, और उन्हो ने नगर को खुला हुआ
छोडकर इस्राएलियो का पीछा किया।
१८ तब यहोवा ने यहोशू से कहा, अपने
हाथ का बर्छा ऐ की ओर बढा; क्योकि मै
उसे तेरे हाथ मे दे दूगा। और यहोशू ने
अपने हाथ के बर्छे को नगर की ओर बढाया।
१९ उसके हाथ बढाते ही जो लोग घात मे
बैठे थे वे झटपट अपने स्थान से उठे, और
दौडकर नगर मे प्रवेश किया और उसको
ले लिया; और झटपट उस मे आग लगा
दी। २० जब ऐ के पुरुषो ने पीछे की ओर
फिरकर दृष्टि की, तो क्या देखा, कि नगर का
धूआ आकाश की ओर उठ रहा है; और
उन्हे न तो इधर भागने की शक्ति रही, और
न उधर, और जो लोग जगल की ओर
भागे जाते थे वे फिरकर अपने खदेडने-
वालो पर टूट पडे। २१ जब यहोशू और
सब इस्राएलियो ने देखा कि घातियो ने नगर
को ले लिया, और उसका धूआ उठ रहा है,
तब घूमकर ऐ के पुरुषो को मारने लगे।
२२ और उनका साम्हना करने को दूसरे
भी नगर से निकल आए; सो वे इस्राएलियो
के बीच मे पड गए, कुछ इस्राएली तो उनके
आगे, और कुछ उनके पीछे थे; सो उन्हो ने
उनको यहा तक मार डाला कि उन मे से
न तो कोई बचने और न भागने पाया।
२३ और ऐ के राजा को वे जीवित पकडकर
यहोशू के पास ले आए। २४ और जब
इस्राएली ऐ के सब निवासियो को मैदान
मे, अर्थात् उस जगल मे जहा उन्हो ने उनका
पीछा किया था घात कर चुके, और वे सब
के सब तलवार से मारे गए यहा तक कि
उनका अन्त ही हो गया, तब सब

इस्राएलियो ने ऐ को लौटकर उसे भी तल-
वार से मारा। २५ और स्त्री पुरुष, सब
मिलाकर जो उस दिन मारे गए वे बारह
हज़ार थे, और ऐ के सब पुरुष इतने ही थे।
२६ क्योंकि जब तक यहोशू ने ऐ के सब
निवासियो को सत्यानाश न कर डाला तब
तक उस ने अपना हाथ, जिस से बर्छा बढाया
था, फिर न खींचा। २७ यहोवा की उस
आज्ञा के अनुसार जो उस ने यहोशू को दी
थी इस्राएलियो ने पशु आदि नगर की लूट
अपनी कर ली। २८ तब यहोशू ने ऐ को
फूकवा दिया, और उसे सदा के लिये खडहर
कर दिया वह आज तक उजाड पडा है।
२९ और ऐ के राजा को उस ने साझ तक
वृक्ष पर लटका रखा, और सूर्य डूबते डूबते
यहोशू की आज्ञा से उसकी लोथ वृक्ष पर से
उतारकर नगर के फाटक के साम्हने डाल
दी गई, और उस पर पत्थरो का बडा ढेर
लगा दिया, जो आज तक बना है॥

(आशीर्वाद और शाप का सुनाया जाना)

३० तब यहोशू ने इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के लिये एबाल-पर्वत पर एक वेदी
बनवाई, ३१ जैसा यहोवा के दास मूसा ने
इस्राएलियो को आज्ञा दी थी, और जैसा
मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है,
उस ने समूचे पत्थरो की एक वेदी बनवाई
जिस पर औज़ार नही चलाया गया था।
और उस पर उन्हो ने यहोवा के लिये होम
बलि चढाए, और मेलबलि किए। ३२ उसी
स्थान पर यहोशू ने इस्राएलियो के साम्हने
उन पत्थरो के ऊपर मूसा की व्यवस्था, जो
उस ने लिखी थी, उसकी नकल कराई।
३३ और वे, क्या देशी क्या परदेशी, सारे
इस्राएली अपने वृद्ध लोगो, सरदारो, और
न्यायियो समेत यहोवा की वाचा का सन्दूक
उठानेवाले लेवीय याजको के साम्हने उस
सन्दूक के इधर उधर खडे हुए, अर्थात् आधे
लोग तो गिरिज्जीम पर्वत के, और आधे
एबाल पर्वत के साम्हने खडे हुए, जैसा कि
यहोवा के दास मूसा ने पहिले से आज्ञा दी
थी, कि इस्राएली प्रजा को आशीर्वाद दिए
जाए। ३४ उसके बाद उस ने आशीष
और शाप की व्यवस्था के सारे वचन, जैसे
जैसे व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हुए है वैसे
वैसे पढ पढकर सुना दिए। ३५ जितनी
बातो की मूसा ने आज्ञा दी थी, उन में से
कोई ऐसी बात नही रह गई जो यहोशू ने
इस्राएल की सारी सभा, और स्त्रियो, और
बाल-बच्चो, और उनके साथ रहनेवाले*
परदेशी लोगो के साम्हने भी पढकर न
सुनाई॥

(गिबोनियों का छल)

९ यह सुनकर हित्ती, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी, जितने
राजा यरदन के इस पार पहाडी देश मे और
नीचे के देश मे, और लबानोन के साम्हने
के महासागर के तट पर रहते थे, २ वे
एक मन होकर यहोशू और इस्राएलियो
से लडने को इकट्ठे हुए॥

३ जब गिबोन के निवासियो ने सुना
कि यहोशू ने यरीहो और ऐ से क्या क्या
किया है, ४ तब उन्हो ने छल किया,
और राजदूतो का भेष बनाकर अपने गदहो
पर पुराने बोरे, और पुराने फटे, और जोडे
हुए मदिरा के कुप्पे लादकर ५ अपने पावो
में पुरानी गाठी हुई जूतिया, और तन पर
पुराने वस्त्र पहिने, और अपने भोजन के
लिये सूखी और फफूदी लगी हुई रोटी ले
ली। ६ तब वे गिलगाल की छावनी में

* मूल में—चलते हुए।

यहोशू के पास जाकर उस से और इस्राएली
पुरुषो से कहने लगे, हम दूर देश से आए है,
इसलिये अब तुम हम से वाचा बान्धो।
७ इस्राएली पुरुषो ने उन हिव्वियो से कहा,
क्या जाने तुम हमारे मध्य मे ही रहते हो,
फिर हम तुम से वाचा कैसे बान्धे? ८ उन्हो
ने यहोशू से कहा, हम तेरे दास है। तब यहोशू
ने उन से कहा, तुम कौन हो? और कहा से
आए हो? ९ उन्हो ने उस से कहा, तेरे
दास बहुत दूर के देश से तेरे परमेश्वर यहोवा
का नाम सुनकर आए है, क्योकि हम ने यह
सब सुना है, अर्थात् उसकी कीर्ति और जो
कुछ उस ने मिस्र मे किया, १० और जो
कुछ उस ने एमोरियो के दोनो राजाओ से
किया जो यरदन के उस पार रहते थे, अर्थात्
हेश्बोन के राजा सीहोन से, और बाशान के
राजा ओग से जो अशतारोत मे था।
११ इसलिये हमारे यहा के वृद्धलोगो ने
और हमारे देश के सब निवासियो ने हम से
कहा, कि मार्ग के लिये अपने साथ भोजन-
वस्तु लेकर उन से मिलने को जाओ, और
उन से कहना, कि हम तुम्हारे दास है, इस-
लिये अब तुम हम से वाचा बान्धो। १२ जिस
दिन हम तुम्हारे पास चलने को निकले उस
दिन तो हम ने अपने अपने घर से यह रोटी
गरम और ताजी ली थी, परन्तु अब
देखो, यह सूख गई है और इस मे फफूदी
लग गई है। १३ फिर ये जो मदिरा के
कुप्पे हम ने भर लिये थे, तब तो नये थे,
परन्तु देखो अब ये फट गए हैं, और हमारे
ये वस्त्र और जूतिया बडी लम्बी यात्रा के
कारण पुरानी हो गई है। १४ तब उन
पुरुषो ने यहोवा मे विना सलाह लिये उनके
भोजन मे मे कुछ ग्रहण किया। १५ तब
यहोशू ने उन मे मेल करके उन से यह वाचा
बान्धी, कि तुम को जीवित छोडेगे, और
मण्डली के प्रधानो ने उन से शपथ खाई।
१६ और उनके साथ वाचा बान्धने के तीन
दिन के बाद उनको यह समाचार मिला,
कि वे हमारे पडोस के रहनेवाले लोग हैं,
और हमारे ही मध्य मे बसे है। १७ तब
इस्राएली कूच करके तीसरे दिन उनके नगरो
को जिनके नाम गिबोन, कपीरा, बेरोत,
और किर्यत्यारीम है पहुच गए, १८ और
इस्राएलियो ने उनको न मारा, क्योकि
मण्डली के प्रधानो ने उनके सग इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई थी। तब
सारी मण्डली के लोग प्रधानो के विरुद्ध
कुडकुडाने लगे। १९ तब सब प्रधानो ने
सारी मण्डली से कहा, हम ने उन से
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई
है, इसलिये अब उनको छू नही सकते।
२० हम उन से यही करेंगे, कि उस शपथ
के अनुसार हम उनको जीवित छोड देंगे,
नही तो हमारी खाई हुई शपथ के कारण
हम पर क्रोध पडेगा। २१ फिर प्रधानो ने
उन से कहा, वे जीवित छोडे जाए। सो
प्रधानो के इस वचन के अनुसार वे सारी
मण्डली के लिये लकडहारे और पानी भरने-
वाले बने। २२ फिर यहोशू ने उनको
बुलवाकर कहा, तुम तो हमारे ही बीच मे
रहते हो, फिर तुम ने हम से यह कहकर क्यो
छल किया है, कि हम तुम से बहुत दूर रहते
है? २३ इसलिये अब तुम शापित हो,
और तुम मे से ऐसा कोई न रहेगा जो दास,
अर्थात् मेरे परमेश्वर के भवन के लिये
लकडहारा और पानी भरनेवाला न हो।
२४ उन्हो ने यहोशू को उत्तर दिया, तेरे
दासो को यह निश्चय बतलाया गया था,
कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने अपने दास मूसा
को आज्ञा दी थी कि तुम को वह सारा देश
दे, और उसके सारे निवासियो को तुम्हारे

साम्हने से सर्वनाश करे, इसलिये हम लोगों
को तुम्हारे कारण से अपने प्राणों के लाले
पड गए, इसलिये हम ने ऐसा काम किया।
२५ और अब हम तेरे वश में हैं, जैसा बर्ताव
तुझे भला लगे और ठीक जान पडे, वैसा ही
व्यवहार हमारे साथ कर। २६ तब उस ने
उन से वैसा ही किया, और उन्हे इस्राएलियो
के हाथ से ऐसा बचाया, कि वे उन्हें घात
करने न पाए। २७ परन्तु यहोशू ने उसी
दिन उनको मण्डली के लिये, और जो स्थान
यहोवा चुन ले उस में उसकी वेदी के लिये,
लकडहारे और पानी भरनेवाले नियुक्त कर
दिया, जैसा आज तक है॥

(कनान के दक्खिनी भाग का जीता जाना)

१० जब यरूशलेम के राजा अदोनी-
मेदेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ को ले
लिया, और उसको सत्यानाश कर डाला
है, और जैसा उस ने यरीहो और उसके
राजा से किया था वैसा ही ऐ और उसके
राजा से भी किया है, और यह भी सुना
कि गिबोन के निवासियो ने इस्राएलियों से
मेल किया, और उनके बीच रहने लगे हैं,
२ तब वे निपट डर गए, क्योंकि गिबोन
बडा नगर वरन राजनगर के तुल्य और ऐ
से बडा था, और उसके सब निवासी
शूरवीर थे। ३ इसलिये यरूशलेम के राजा
अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम,
यर्मूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा
यापी, और एग्लोन के राजा दबीर के पास
यह कहला भेजा, ४ कि मेरे पास आकर
मेरी सहायता करो, और चलो हम गिबोन
को मारें, क्योंकि उस ने यहोशू और इस्रा-
एलियो से मेल कर लिया है। ५ इसलिये
यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और
एग्लोन के पांचो एमोरी राजाओं ने अपनी
अपनी सारी सेना इकट्ठी करके चढाई कर
दी, और गिबोन के साम्हने डेरे डालकर उस
से युद्ध छेड दिया। ६ तब गिबोन के
निवासियों ने गिलगाल की छावनी में यहोशू
के पास यों कहला भेजा, कि अपने दासों की
ओर से तू अपना हाथ न हटाना, शीघ्र
हमारे पास आकर हमें बचा ले, और हमारी
सहायता कर, क्योंकि पहाड पर रहनेवाले
एमोरियो के सब राजा हमारे विरुद्ध इकट्ठे
हुए हैं। ७ तब यहोशू सारे योद्धाओं और
सब शूरवीरों को संग लेकर गिलगाल से चल
पडा*। ८ और यहोवा ने यहोशू से कहा,
उन से मत डर, क्योंकि मैं ने उनको तेरे
हाथ में कर दिया है, उन में से एक पुरुष भी
तेरे साम्हने टिक न सकेगा। ९ तब यहोशू
रातोरात गिलगाल से जाकर एकाएक उन
पर टूट पडा। १० तब यहोवा ने ऐसा
किया कि वे इस्राएलियों से घबरा गए,
और इस्राएलियों ने गिबोन के पास उनका
बडा संहार किया, और बेथोरोन के चढाव
पर उनका पीछा करके अजेका और मक्केदा
तक उनको मारते गए। ११ फिर जब वे
इस्राएलियों के साम्हने से भागकर बेथोरोन
की उतराई पर आए, तब अजेका पहुंचने तक
यहोवा ने आकाश से बडे बडे पत्थर उन पर
बरसाए, और वे मर गए, जो ओलों से मारे
गए उनकी गिनती इस्राएलियों की तलवार
से मारे हुओं से अधिक थी॥

१२ और उस समय, अर्थात् जिस दिन
यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश
में कर दिया, उस दिन यहोशू ने यहोवा से
इस्राएलियों के देखते इस प्रकार कहा,

हे सूर्य, तू गिबोन पर,
और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की
तराई के ऊपर थमा रह॥

* मूल में—चढा।

१३ और सूर्य उस समय तक थमा रहा,
और चन्द्रमा उस समय तक
ठहरा रहा *,
जब तक उस जाति के लोगो
ने अपने शत्रुओ से पलटा न
लिया ।।
क्या यह बात याशार नाम पुस्तक मे
नही लिखी है कि सूर्य आकाशमण्डल के
बीचोबीच ठहरा रहा, और लगभग चार
पहर तक न डूबा ? १४ न तो उस से पहिले
कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिस
में यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो;
क्योंकि यहोवा तो इस्राएल की ओर से
लडता था ।।
१५ तब यहोशू सारे इस्राएलियो समेत
गिलगाल की छावनी को लौट गया ।।
१६ और वे पाचो राजा भागकर
मक्केदा के पास की गुफा मे जा छिपे ।
१७ तब यहोशू को यह समाचार मिला, कि
पाचो राजा मक्केदा के पास की गुफा मे
छिपे हुए हमे मिले है । १८ यहोशू ने कहा,
गुफा के मुह पर बडे बडे पत्थर लुढकाकर
उनकी देख भाल के लिये मनुष्यो को उसके
पास बैठा दो, १९ परन्तु तुम मत ठहरो,
अपने शत्रुओ का पीछा करके उन मे से जो
जो पिछड गए है उनको मार डालो, उन्हे
अपने अपने नगर मे प्रवेश करने का अवसर
न दो, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने
उनको तुम्हारे हाथ मे कर दिया है ।
२० जब यहोशू और इस्राएली उनका
सहार करके नाश कर चुके, और उन मे से
जो बच गए वे अपने अपने गढवाले नगर मे
घुस गए, २१ तब सब लोग मक्केदा की
छावनी को यहोशू के पास कुशल-क्षेम मे
लौट आए; और इस्राएलियो के विरुद्ध किसी
ने जीभ तक न हिलाई * । २२ तब यहोशू
ने आज्ञा दी, कि गुफा का मुह खोलकर उन
पाचो राजाओ को मेरे पास निकाल ले
आओ । २३ उन्हो ने ऐसा ही किया, और
यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश, और
एग्लोन के उन पाचो राजाओ को गुफा मे
से उसके पास निकाल ले आए । २४ जब
वे उन राजाओ को यहोशू के पास निकाल
ले आए, तब यहोशू ने इस्राएल के सब पुरुषो
को बुलाकर अपने साथ चलनेवाले योद्धाओ
के प्रधानो से कहा, निकट आकर अपने अपने
पाव इन राजाओ की गर्दनो पर रखो ।
और उन्हो ने निकट जाकर अपने अपने पाव
उनकी गर्दनो पर रखे । २५ तब यहोशू
ने उन से कहा, डरो मत, और न तुम्हारा
मन कच्चा हो, हियाव बान्धकर दृढ हो,
क्योंकि यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओ से जिन से
तुम लडनेवाले हो ऐसा ही करेगा । २६ इस-
के बाद यहोशू ने उनको मरवा डाला, और
पाच वृक्षो पर लटका दिया । और वे साझ
तक उन वृक्षो पर लटके रहे । २७ सूर्य
डूबते डूबते यहोशू से आज्ञा पाकर लोगो ने
उन्हे उन वृक्षो पर से उतारके उसी गुफा मे
जहा वे छिप गए थे डाल दिया, और उस
गुफा के मुह पर बडे बडे पत्थर धर दिए
वे आज तक वही धरे हुए है ।।
२८ उसी दिन यहोशू ने मक्केदा को ले
लिया, और उसको तलवार से मारा, और
उसके राजा को सत्यानाश किया, और
जितने प्राणी उस मे थे उन सभो मे से किसी
को जीवित न छोडा; और जैसा उस ने
यरीहो के राजा के साथ किया था वैसा ही
मक्केदा के राजा से भी किया ।।

* मूल में—चुप हो गया ।

* मूल में—सान न चढाई ।

२९ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत
मक्केदा से चलकर लिब्ना को गया, और
लिब्ना से लडा, ३० और यहोवा ने उस-
को भी राजा समेत इस्राएलियों के हाथ में
कर दिया, और यहोशू ने उसको और उस
में के सब प्राणियों को तलवार से मारा,
और उस में से किसी को भी जीवित न
छोडा, और उसके राजा से वैसा ही किया
जैसा उस ने यरीहो के राजा के साथ किया
था॥

३१ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत
लिब्ना से चलकर लाकीश को गया, और
उसके विरुद्ध छावनी डालकर लडा,
३२ और यहोवा ने लाकीश को इस्राएल
के हाथ में कर दिया, और दूसरे दिन उस ने
उसको जीत लिया, और जैसा उस ने लिब्ना
के सब प्राणियों को तलवार से मारा था
वैसा ही उस ने लाकीश से भी किया॥

३३ तब गेजेर का राजा होराम लाकीश
की सहायता करने को चढ आया, और
यहोशू ने प्रजा समेत उसको भी ऐसा मारा
कि उसके लिये किसी को जीवित न छोडा॥

३४ फिर यहोशू ने सब इस्राएलियों
समेत लाकीश से चलकर एग्लोन को गया,
और उसके विरुद्ध छावनी डालकर युद्ध करने
लगा, ३५ और उसी दिन उन्हों ने उसको
ले लिया, और उसको तलवार से मारा,
और उसी दिन जैसा उस ने लाकीश के सब
प्राणियों को सत्यानाश कर डाला था वैसा
ही उस ने एग्लोन से भी किया॥

३६ फिर यहोशू सब इस्राएलियों समेत
एग्लोन से चलकर हेब्रोन को गया, और उस
से लडने लगा, ३७ और उन्हों ने उसे ले
लिया, और उसको और उसके राजा और
सब गावों को और उन में के सब प्राणियों
को तलवार से मारा, जैसा यह
से किया था वैसा ही उस ने हेब्रोन में भी
किसी को जीवित न छोडा, उस ने उसको
और उस में के सब प्राणियों को सत्यानाश
कर डाला॥

३८ तब यहोशू सब इस्राएलियों समेत
घूमकर दबीर को गया, और उस से लडने
लगा, ३९ और राजा समेत उसे और
उसके सब गावों को ले लिया, और उन्हों ने
उनको तलवार से घात किया, और जितने
प्राणी उन में थे सब को सत्यानाश कर
डाला, किसी को जीवित न छोडा, जैसा
यहोशू ने हेब्रोन और लिब्ना और उसके
राजा से किया था वैसा ही उस ने दबीर
और उसके राजा से भी किया॥

४० इसी प्रकार यहोशू ने उस सारे देश
को, अर्थात् पहाडी देश, दक्खिन देश, नीचे के
देश, और ढालू देश को, उनके सब राजाओं
समेत मारा, और इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा के अनुसार किसी को
जीवित न छोडा, वरन जितने प्राणी थे सभों
को सत्यानाश कर डाला। ४१ और यहोशू
ने कादेशबर्ने से ले अज्जा तक, और गिबोन
तक के सारे गोशेन देश के लोगों को मारा।
४२ इन सब राजाओं को उनके देशों समेत
यहोशू ने एक ही समय में ले लिया, क्योंकि
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएलियों
की ओर से लडता था। ४३ तब यहोशू
सब इस्राएलियों समेत गिलगाल की छावनी
में लौट आया॥

(कनान के उत्तरीय भाग का जीता जाना)

११ यह सुनकर हासोर के राजा
याबीन ने मादोन के राजा योबाब,
और शिम्रोन और अक्षाप के राजाओं को,
२ और जो जो राजा उत्तर की ओर
पहाडी देश में, और किन्नेरेत की दक्खिन के

अराबा मे, और नीचे के देश मे, और
पच्छिम की ओर दोर के ऊचे देश मे रहते
थे, उनको, ३ और पूरब पच्छिम दोनो
ओर के रहनेवाले कनानियो, और एमो-
रियो, हित्तियो, परिज्जियो, और पहाडी
यबूसियो, और मिस्पा देश मे हेर्मोन पहाड के
नीचे रहनेवाले हिव्वियो को बुलवा भेजा।
४ और वे अपनी अपनी सेना समेत, जो
समुद्र के किनारे की बालू के किनकों के
समान बहुत थी, मिलकर निकल आए,
और उनके साथ बहुत ही घोडे और रथ
भी थे। ५ तब ये सब राजा सम्मति करके
इकट्ठे हुए, और इस्राएलियो से लडने को
मेरोम नाम ताल के पास आकर एक सग
छावनी डाली। ६ तब यहोवा ने यहोशू से
कहा, उन से मत डर, क्योकि कल इसी
समय मै उन सभो को इस्राएलियो के वश
करके मरवा डालूगा, तब तू उनके घोडो
के सुम की नस कटवाना, और उनके रथ
भस्म कर देना। ७ और यहोशू सब
योद्धाओ समेत मेरोम नाम ताल के पास
अचानक पहुचकर उन पर टूट पडा।
८ और यहोवा ने उनको इस्राएलियो के
हाथ मे कर दिया, इसलिये उन्हो ने उन्हे
मार लिया, और बडे नगर सीदोन और
मिस्रपोतमैम तक, और पूर्व की ओर मिस्पे
के मैदान तक उनका पीछा किया; और
उनको मारा, और उन मे से किसी को
जीवित न छोडा। ९ तब यहोशू ने यहोवा
की आज्ञा के अनुसार उन से किया, अर्थात्
उनके घोडो के सुम की नस कटवाई, और
उनके रथ आग मे जलाकर भस्म कर दिए॥

१० उस समय यहोशू ने घूमकर हासोर
को जो पहिले उन सब राज्यो मे मुख्य
नगर था ले लिया, और उसके राजा को
तलवार से मार डाला। ११ और जितने
प्राणी उन में थे उन सभो को उन्हो ने
तलवार से मारकर सत्यानाश किया; और
किसी प्राणी को जीवित न छोडा, और
हासोर को यहोशू ने आग लगाकर फुकवा
दिया। १२ और उन सब नगरो को उनके
सब राजाओ समेत यहोशू ने ले लिया,
और यहोवा के दास मूसा की आज्ञा के
अनुसार उनको तलवार से घात करके
सत्यानाश किया। १३ परन्तु हासोर को
छोडकर, जिसे यहोशू ने फुकवा दिया,
इस्राएल ने और किसी नगर को जो अपने
टीले पर बसा था नही जलाया। १४ और
इन नगरो के पशु और इनकी सारी लूट को
इस्राएलियो ने अपना कर लिया; परन्तु
मनुष्यो को उन्हो ने तलवार से मार डाला,
यहा तक उनको सत्यानाश कर डाला कि
एक भी प्राणी को जीवित नही छोडा गया।
१५ जो आज्ञा यहोवा ने अपने दास मूसा
को दी थी उसी के अनुसार मूसा ने यहोशू
को आज्ञा दी थी, और ठीक वैसा ही
यहोशू ने किया भी, जो जो आज्ञा यहोवा
ने मूसा को दी थी उन मे से यहोशू ने
कोई भी पूरी किए विना न छोडी॥

(समस्त कनान का राजाओं समेत
जीता जाना)

१६ तब यहोशू ने उस सारे देश को,
अर्थात पहाडी देश, और सारे दक्खिनी देश,
और कुल गोशेन देश, और नीचे के देश,
अराबा, और इस्राएल के पहाडी देश, और
उसके नीचेवाले देश को, १७ हालाक
नाम पहाड से ले, जो सेईर की चढाई पर है,
बालगाद तक, जो लबानोन के मैदान मे
हेर्मोन पर्वत के नीचे है, जितने देश है उन
सब को जीत लिया और उन देशों के सारे
राजाओ को पकडकर मार डाला। १८ उन

सब राजाओ मे युद्ध करते करते यहोशू
को बहुत दिन लग गए। १९ गिबोन के
निवासी हिव्वियो को छोड और किसी नगर
के लोगो ने इस्राएलियो से मेल न किया,
और सब नगरो को उन्हो ने लड लडकर
जीत लिया। २० क्योकि यहोवा की जो
मनसा थी, कि अपनी उस आज्ञा के अनुसार
जो उस ने मूसा को दी थी उन पर कुछ भी
दया न करे, वरन सत्यानाश कर डाले, इस
कारण उस ने उनके मन ऐसे कठोर कर
दिए, कि उन्हो ने इस्राएलियो का साम्हना
करके उन मे युद्ध किया॥

२१ उस समय यहोशू ने पहाडी देश में
आकर हेब्रोन, दबीर, अनाब, वरन यहूदा
और इस्राएल दोनो के सारे पहाडी देश में
रहनेवाले अनाकियो को नाश किया,
यहोशू ने नगरो समेत उन्हे सत्यानाश कर
डाला। २२ इस्राएलियो के देश मे कोई
अनाकी न रह गया, केवल अज्जा, गत,
और अशदोद में कोई कोई रह गए।
२३ जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था, वैसा
ही यहोशू ने वह सारा देश ले लिया, और
उसे इस्राएल के गोत्रो और कुलो के अनुसार
बांट करके उन्हे दे दिया। और देश को
लडाई मे शान्ति मिली॥

१२ यरदन पार सूर्योदय की ओर,
अर्थात् अर्नोन नाले से लेकर हेर्मोन
पर्वत तक के देश, और सारे पूर्वी अराबा के
जिन राजाओ को इस्राएलियो ने मारकर
उनके देश को अपने अधिकार मे कर लिया
था ये है, २ एमोरियो का हेशबोनवासी
राजा सीहोन, जो अर्नोन नाले के किनारे के
अरोएर मे रहता, और उसी नाले के बीच
के नगर को छोडकर यब्बोक नदी तक, जो
अम्मोनियो का सिवाना है आधे गिलाद
पर, ३ और किन्नेरेत नाम ताल से लेकर
बेत्यशीमोत से होकर अराबा के ताल तक,
जो खारा ताल भी कहलाता है, पूर्व की
ओर के अराबा, और दक्खिन की ओर
पिसगा की सलामी के नीचे नीचे के देश
पर प्रभुता रखता था। ४ फिर बचे हुए
रपाइयो मे से बाशान के राजा ओग का
देश था, जो अशतारोत और एद्रेई में रहा
करता था, ५ और हेर्मोन पर्वत सलका,
और गशूरियो, और माकियो के सिवाने तक
कुल बाशान मे, और हेशबोन के राजा
सीहोन के सिवाने तक आधे गिलाद में भी
प्रभुता करता था। ६ इस्राएलियो और
यहोवा के दास मूसा ने इनको मार लिया,
और यहोवा के दास मूसा ने इनका देश
रूबेनियो और गादियो और मनश्शे के आधे
गोत्र के लोगो को दे दिया॥

७ और यरदन के पश्चिम की ओर,
लबानोन के मैदान मे के बालगाद से लेकर
सेईर की चढाई के हालाक पहाड तक के
देश के जिन राजाओ को यहोशू और इस्रा-
एलियो ने मारकर उनका देश इस्राएलियो
को गोत्रो और कुलो के अनुसार भाग करके
दे दिया था वे ये है, ८ हित्ती, और एमोरी,
और कनानी, और परिज्जी, और हिव्वी,
और यबूसी, जो पहाडी देश में, और नीचे के
देश में, और अराबा में, और ढालू देश में,
और जगल में, और दक्खिनी देश में रहते
थे। ९ एक, यरीहो का राजा, एक, बेतेल
के पास के ऐ का राजा, १० एक, यरूशलेम
का राजा, एक, हेब्रोन का राजा, ११ एक,
यर्मूत का राजा, एक, लाकीश का राजा,
१२ एक, एग्लोन का राजा, एक, गेजेर का
राजा, १३ एक, दबीर का राजा, एक,
गेदेर का राजा, १४ एक, होर्मा का राजा,
एक, अराद का राजा, १५ एक, लिब्ना का

राजा; एक, अदुल्लाम का राजा; १६ एक,
मक्केदा का राजा; एक, बेतेल का राजा;
१७ एक, तप्पूह का राजा; एक, हेपेर का
राजा; १८ एक, अपेक का राजा, एक,
लश्शारोन का राजा, १९ एक, मादोन का
राजा, एक, हासोर का राजा, २० एक,
शिम्रोन्मरोन का राजा; एक, अक्षाप का
राजा, २१ एक, तानाक का राजा; एक,
मगिद्दो का राजा, २२ एक, केदेश का
राजा, एक, कर्मेल मे के योकनाम का
राजा; २३ एक, दोर नाम ऊचे देश मे के
दोर का राजा, एक, गिलगाल मे के गोयीम
का राजा, २४ और एक, तिर्सा का राजा
है, इस प्रकार सब राजा इकतीस हुए॥

(कनान देश का इस्राएली गोत्र गोत्र में बांटा जाना)

१३ यहोशू बूढा और बहुत उम्र का
हो गया, और यहोवा ने उस से
कहा,तू बूढा और बहुत उम्र का हो गया है,
और बहुत देश रह गए है, जो इस्राएल के
अधिकार मे अभी तक नही आए। २ ये
देश रह गए है, अर्थात् पलिश्तियो का सारा
प्रान्त, और सारे गशूरी ३ (मिस्र के आगे
शीहोर से लेकर उत्तर की ओर एक्रोन
के सिवाने तक जो कनानियो का भाग गिना
जाता है, और पलिश्तियो के पाचो सरदार,
अर्थात् अज्जा, अशदोद, अशकलोन, गत,
और एक्रोन के लोग), और दक्खिनी ओर
अव्वी भी, ४ फिर अपेक और एमोरियो
के सिवाने तक कनानियो का सारा देश,
और सीदोनियो का मारा नाम देश,
५ फिर गबालियो का देश, और सूर्योदय की
ओर हेर्मोन पर्वत के नीचे के बालगाद से
लेकर हमात की घाटी तक सारा लबानोन,
६ फिर लबानोन से लेकर मिस्रपोतमैम
तक सीदोनियो के पहाडी देश के निवासी।
इनको मै इस्राएलियो के साम्हने से
निकाल दूगा, इतना हो कि तू मेरी आज्ञा
के अनुसार चिट्ठी डाल डालकर उनका देश
इस्राएल को बाट दे। ७ इसलिये तू अब
इस देश को नवो गोत्रो और मनश्शे के
आधे गोत्र को उनका भाग होने के लिये
बाट दे॥

८ इसके साथ रूबेनियो और गादियो
को तो वह भाग मिल चुका था, जिसे
मूसा ने उन्हे यरदन के पूर्व की ओर दिया
था, क्योकि यहोवा के दास मूसा ने उन्ही को
दिया था, ९ अर्थात् अर्नोन नाम नाले के
किनारे के अरोएर से लेकर, और उसी नाले
के बीच के नगर को छोडकर दीबोन तक
मेदबा के पास का सारा चौरस देश;
१० और अम्मोनियो के सिवाने तक
हेशबोन मे विराजनेवाले एमोरियो के राजा
सीहोन के सारे नगर; ११ और गिलाद
देश, और गशूरियो और माकावासियो
का सिवाना, और सारा हेर्मोन पर्वत,
और सल्का तक कुल बाशान, १२ फिर
आशतारोत और एद्रेई मे बिराजनेवाले
उस ओग का सारा राज्य जो रपाइयो
मे से अकेला बच गया था, क्योकि
इन्ही को मूसा ने मारकर उनकी प्रजा को
उस देश से निकाल दिया था। १३ परन्तु
इस्राएलियो ने गशूरियो और माकियो को
उनके देश से न निकाला; इसलिये गशूरी
और माकी इस्राएलियो के मध्य मे आज
तक रहते है। १४ और लेवी के गोत्रियो
को उस ने कोई भाग न दिया, क्योकि
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के
अनुसार उसी के हव्य उनके लिये भाग
ठहरे है॥

१५ मूसा ने रूबेन के गोत्र को उनके
कुलो के अनुसार दिया, १६ अर्थात् अर्नोन
नाम नाले के किनारे के अरोएर से लेकर
और उसी नाले के बीच के नगर को छोड-
कर मेदबा के पास का सारा चौरस देश,
१७ फिर चौरस देश में का हेशबोन और
उसके सब गाव, फिर दीबोन, बामोतबाल,
बेतबाल्मोन, १८ यहसा, कदेमोत, मेपात,
१९ किर्यातैम, सिबमा, और तराई में के
पहाड पर बसा हुआ सेरेयश्शहर, २० बेत-
पोर, पिसगा की सलामी और बेत्यशीमोत,
२१ निदान चौरस देश में बसे हुए हेशबोन
में विराजनेवाले एमोरियो के उस राजा
सीहोन के राज्य के कुल नगर जिन्हे मूसा ने
मार लिया था। मूसा ने एवी, रेकेम, सूर,
हूर, और रेबा नाम मिद्यान के प्रधानो को
भी मार डाला था जो सीहोन के ठहराए
हुए हाकिम और उसी देश के निवासी थे।
२२ और इस्राएलियो ने उनके और मारे
हुओ के साथ बोर के पुत्र भावी कहनेवाले
बिलाम को भी तलवार से मार डाला।
२३ और रूबेनियो का सिवाना यरदन का
तीर ठहरा। रूबेनियो का भाग उनके
कुलो के अनुसार नगरो और गावो समेत
यही ठहरा॥

२४ फिर मूसा ने गाद के गोत्रियो को
भी कुलो के अनुसार उनका निज भाग
करके बाट दिया। २५ तब यह ठहरा,
अर्थात् याजेर आदि गिलाद के सारे नगर,
और रब्बा के साम्हने के अरोएर तक अम्मो-
नियो का आधा देश, २६ और हेशबोन
से रामतमिस्पे और बतोनीम् तक, और
महनैम से दबीर के सिवाने तक, २७ और
तराई में बेथारम, बेत्निम्रा, सुक्कोत,
और सापोन, और हेशबोन के राजा सीहोन
के राज्य के बचे हुए भाग, और किन्नेरेत
नाम ताल के सिरे तक, यरदन के पूर्व की
ओर का वह देश जिसका सिवाना यरदन
है। २८ गादियो का भाग उनके कुलो के
अनुसार नगरो और गावो समेत यही
ठहरा॥

२९ फिर मूसा ने मनश्शे के आधे
गोत्रियो को भी उनका निज भाग कर
दिया, वह मनश्शेइयो के आधे गोत्र का
निज भाग उनके कुलो के अनुसार ठहरा।
३० वह यह है, अर्थात् महनैम से लेकर
बाशान के राजा ओग के राज्य का सब देश,
और बाशान में बसी हुई याईर की साठो
बस्तिया, ३१ और गिलाद का आधा
भाग, और अश्तारोत, और एद्रेई, जो
बाशान मे ओग के राज्य के नगर थे, ये
मनश्शे के पुत्र माकीर के वश का, अर्थात्
माकीर के आधे वश का निज भाग कुलो के
अनुसार ठहरे॥

३२ जो भाग मूसा ने मोआब के अराबा
में यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर
बाट दिए वे ये ही है। ३३ परन्तु लेवी के
गोत्र को मूसा ने कोई भाग न दिया,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा ही अपने
वचन के अनुसार उनका भाग ठहरा॥

१४ जो जो भाग इस्राएलियो ने
कनान देश में पाए, जिन्हे एली-
आज़र याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और
इस्राएली गोत्रो के पूर्वजो के घरानो के
मुख्य मुख्य पुरुषो ने उनको दिया वे ये है।
२ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा साढे
नौ गोत्रो के लिये दी थी, उसके अनुसार
उनके भाग चिट्ठी डाल डालकर दिए गए।
३ मूसा ने तो अढाई गोत्रो के भाग यरदन
पार दिए थे, परन्तु लेवियो को उसने उनके
बीच कोई भाग न दिया था। ४ यूसुफ के

वंश के तो दो गोत्र हो गए थे, अर्थात्
मनश्शे और एप्रैम, और उस देश मे लेवियो
को कुछ भाग न दिया गया, केवल रहने
के नगर, और पशु आदि धन रखने को और
चराइया उनको मिली। ५ जो आज्ञा
यहोवा ने मूसा को दी थी उसके अनुसार
इस्राएलियो ने किया; और उन्हो ने देश को
बाट लिया ।।

६ तब यहूदी यहोशू के पास गिलगाल मे
आए; और कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब ने
उस से कहा, तू जानता होगा कि यहोवा ने
कादेशबर्ने मे परमेश्वर के जन मूसा से
मेरे और तेरे विषय मे क्या कहा था।
७ जब यहोवा के दास मूसा ने मुझे इस देश
का भेद लेने के लिये कादेशबर्ने से भेजा
था तब मै चालीस वर्ष का था, और मैं
सच्चे मन से * उसके पास सन्देश ले आया।
८ और मेरे साथी जो मेरे सग गए थे
उन्हो ने तो प्रजा के लोगो का मन निराश
कर दिया †, परन्तु मैं ने अपने परमेश्वर
यहोवा की पूरी रीति से बात मानी।
९ तब उस दिन मूसा ने शपथ खाकर मुझ
से कहा, तू ने पूरी रीति से मेरे परमेश्वर
यहोवा की बातो का अनुकरण किया है,
इस कारण नि सन्देह जिस भूमि पर तू
अपने पाव धर आया है वह सदा के लिये
तेरा और तेरे वंश का भाग होगी।
१० और अब देख, जब से यहोवा ने
मूसा से यह वचन कहा था तब से पैतालीस
वर्ष हो चुके है, जिन में इस्राएली जगल मे
घूमते फिरते रहे, उन मे यहोवा ने अपने
कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है,
और अब मैं पचासी वर्ष का हू।
११ जितना बल मूसा के भेजने के दिन
मुझ मे था उतना बल अभी तक मुझ में
है; युद्ध करने, वा भीतर बाहर आने जाने
के लिये जितनी उस समय मुझ मे सामर्थ्य
थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है।
१२ इसलिये अब वह पहाडी मुझे दे
जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी;
तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उस में
अनाकवंशी रहते है, और बडे बडे गढवाले
नगर भी है; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि
यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के
अनुसार मैं उन्हे उनके देश से निकाल दू।
१३ तब यहोशू ने उसको आशीर्वाद दिया;
और हेब्रोन को यपुन्ने के पुत्र कालेब का
भाग कर दिया। १४ इस कारण हेब्रोन
कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब का भाग आज
तक बना है, क्योकि वह इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा का पूरी रीति से अनुगामी
था। १५ पहिले समय मे तो हेब्रोन का
नाम किर्यतर्बा था; वह अर्बा अनाकियो में
सब से बडा पुरुष था। और उस देश को
लडाई से शान्ति मिली।।

१५ यहूदियो के गोत्र का भाग उनके
कुलो के अनुसार चिट्ठी डालने से
एदोम के सिवाने तक, और दक्खिन की
ओर सीन के जगल तक जो दक्खिनी सिवाने
पर है ठहरा। २ उनके भाग का दक्खिनी
सिवाना खारे ताल के उस सिरेवाले कोल से
आरम्भ हुआ जो दक्खिन की ओर बढा है;
३ और वह अक्रब्बीम नाम चढाई की
दक्खिनी ओर से निकलकर सीन होते हुए
कादेशबर्ने के दक्खिन की ओर को चढ
गया, फिर हेस्रोन के पास हो अद्दार को
चढकर कर्काआ की ओर मुड गया,
४ वहा से अस्मोन होते हुए वह मिस्र के
नाले पर निकला, और उस सिवाने का

* मूल में—जैसा मेरे मन के साथ था वैसा ही।
† मूल मे—गला दिया।

अन्त समुद्र हुआ। तुम्हारा दक्खिनी सिवाना
यही होगा। ५ फिर पूर्वी सिवाना यरदन
के मुहाने तक खारा ताल ही ठहरा, और
उत्तर दिशा का सिवाना यरदन के मुहाने
के पास के ताल के कोल से आरम्भ करके,
६ बेथोग्ला को चढते हुए बेतराबा की
उत्तर की ओर होकर रूबेनी बोहनवाले
नाम पत्थर तक चढ गया, ७ और
वही सिवाना आकोर नाम तराई से दबीर
की ओर चढ गया, और उत्तर होते
हुए गिलगाल की ओर झुका जो नाले की
दक्खिन ओर की अदुम्मीम की चढाई के
साम्हने है, वहा से वह एनशेमेश नाम सोते
के पास पहुचकर एनरोगेल पर निकला,
८ फिर वही सिवाना हिन्नोम के पुत्र की
तराई से होकर यबूस* (जो यरूशलेम
कहलाता है) उसकी दक्खिन अलग मे चढते
हुए उस पहाड की चोटी पर पहुचा, जो
पश्चिम की ओर हिन्नोम की तराई के
साम्हने और रपाईम की तराई के उत्तरवाले
सिरे पर है, ९ फिर वही सिवाना उस
पहाड की चोटी से नेप्तोह नाम सोते को
चला गया, और एप्रोन पहाड के नगरो पर
निकला, फिर वहा से बाला को (जो
किर्यत्यारीम भी कहलाता है) पहुचा,
१० फिर वह बाला से पश्चिम की ओर
मुडकर सेईर पहाड तक पहुचा, और यारीम
पहाड (जो कसालोन भी कहलाता है) उस-
की उत्तरवाली अलग से होकर बेतशेमेश को
उतर गया, और वहा से तिम्ना पर निकला,
११ वहा से वह सिवाना एक्रोन की उत्तरी
अलग के पास होते हुए शिक्करोन गया,
और बाला पहाड होकर यब्नेल पर
निकला, और उस सिवाने का अन्त समुद्र
का तट हुआ। १२ और पश्चिम का
सिवाना महासमुद्र का तीर ठहरा। यहूदियो
को जो भाग उनके कुलो के अनुसार मिला
उसकी चारो ओर का सिवाना यही हुआ॥

१३ और यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसने
यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहूदियो के
बीच भाग दिया, अर्थात् किर्यतर्बा जो हेब्रोन
भी कहलाता है (वह अर्बा अनाक का पिता
था)। १४ और कालेब ने वहा से शेशै,
अहीमन, और तल्मै नाम, अनाक के तीनो
पुत्रो को निकाल दिया। १५ फिर वहा से
वह दबीर के निवासियो पर चढ गया,
पूर्वकाल मे तो दबीर का नाम किर्यत्सेपेर
था। १६ और कालेब ने कहा, जो किर्यत्सेपेर
को मारकर ले ले उसे मै अपनी बेटी अकसा
को ब्याह दूगा। १७ तब कालेब के भाई
ओत्नीएल कनजी ने उसे ले लिया, और उस
ने उसे अपनी बेटी अकसा को ब्याह दिया।
१८ और जब वह उसके पास आई, तब
उस ने उसको पिता से कुछ भूमि मागने को
उभारा, फिर वह अपने गदहे पर से उतर
पडी, और कालेब ने उस से पूछा, तू क्या
चाहती है? १९ वह बोली, मुझे आशीर्वाद
दे, तू ने मुझे दक्खिन देश में की कुछ भूमि
तो दी है, मुझे जल के सोते भी दे। तब
उस ने ऊपर के सोते, नीचे के सोते, दोनो
उसे दिए॥

२० यहूदियो के गोत्र का भाग तो उनके
कुलो के अनुसार यही ठहरा॥

२१ और यहूदियो के गोत्र के किनारे-
वाले नगर दक्खिन देश में एदोम के सिवाने
की ओर ये हैं, अर्थात् कबसेल, एदेर, यागूर
२२ कीना, दीमोना, अदादा, २३ केदेश,
हासोर, यित्नान, २४ जीप, तेलेम, बालोत,
२५ हासोर्हदत्ता, करिय्योथेस्रोन (जो
हासोर भी कहलाता है), २६ और अमाम,

* मूल में—यबूसी।

शमा, मोलादा, २७ हसर्गद्दा, हेशमोन,
वेत्पालेत, २८ हसर्शूआल, वेर्शेवा,
विज्योत्या, २९ वाला, इय्यीम, एसेम,
३० एलतोलद, कसील, होर्मा, ३१ सिक-
लग, मदमन्ना, सनसन्ना, ३२ लवाओत,
शिल्हीम, ऐन, और रिम्मोन; ये सब नगर
उन्तीस है, और इनके गाव भी है ॥

३३ और नीचे के देश मे ये है, अर्थात्
एश्ताओल सोरा, अशना, ३४ जानोह,
एनगन्नीम, तप्पूह, एनाम, ३५ यर्मूत,
अदुल्लाम, सोको, अजेका, ३६ शारैम,
अदीतैम, गदेरा, और गदेरोतैम, ये सब
चौदह नगर है, और इनके गाव भी है ॥

३७ फिर सनान, हदाशा, मिगदलगाद,
३८ दिलान, मिस्पे, योक्तेल, ३९ लाकीश,
बोस्कत, एग्लोन, ४० कब्बोन, लहमास,
कितलीश, ४१ गदेरोत, बेतदागोन, नामा,
और मक्केदा; ये सोलह नगर है, और
इनके गाव भी है ॥

४२ फिर लिब्ना, एतेर, आशान,
४३ यिप्ताह, अशना, नसीब, ४४ कीला,
अकजीब और मारेशा, ये नौ नगर है,
और इनके गाव भी है ॥

४५ फिर नगरो और गावो समेत
एक्रोन, ४६ और एक्रोन से लेकर समुद्र
तक, अपने अपने गावो समेत जितने नगर
अशदोद की अलग पर है ॥

४७ फिर अपने अपने नगरो और गावो
समेत अशदोद, और अज्जा, वरन मिस्र के
नाले तक और महासमुद्र के तीर तक जितने
नगर है ॥

४८ और पहाडी देश मे ये है; अर्थात्
शामीर, यत्तीर, सोको, ४९ दन्ना, किर्य-
त्सन्ना (जो दबीर भी कहलाता है),
५० अनाव, एशतमो, आनीम, ५१ गोशेन,
होलोन, और गीलो; ये ग्यारह नगर है,
और इनके गाव भी है ॥

५२ फिर अराब, दूमा, एशान, ५३ या-
नीम, बेत्तप्पूह, अपेका, ५४ हुमता, किर्यतर्बा
(जो हेब्रोन भी कहलाता है, और सीओर;)
ये नौ नगर है, और इनके गाव भी है ॥

५५ फिर माओन, कर्मेल, जीप, यूता,
५६ यिज्रेल, योकदाम, जानोह, ५७ कैन,
गिबा, और तिम्ना; ये दस नगर है, और
इनके गाव भी है ॥

५८ फिर हलहूल, बेतसूर, गदोर,
५९ मरात, बेतनोत, और एलतकोन, ये
छ नगर है, और इनके गाव भी है ॥

६० फिर किर्यतवाल (जो किर्यत्यारीम
भी कहलाता है), और रब्बा; ये दो नगर
है, और इनके गाव भी है ॥

६१ और जगल मे ये नगर हैं, अर्थात्
बेतराबा, मिद्दीन, सकाका, ६२ निबशान,
लोनवाला नगर, और एनगदी, ये छ नगर
है, और इनके गाव भी है ॥

६३ यरूशलेम के निवासी यबूसियो को
यहूदी न निकाल सके, इसलिये आज के दिन
तक यबूसी यहूदियो के सग यरूशलेम मे
रहते है ॥

१६ फिर यूसुफ की सन्तान का भाग
चिट्ठी डालने से ठहराया गया,
उनका सिवाना यरीहो के पास की यरदन
नदी से, अर्थात् पूर्व की ओर यरीहो के
जल से आरम्भ होकर उस पहाडी देश से
होते हुए, जो जगल मे है, बेतेल को पहुचा,
२ वहा से वह लूज तक पहुचा, और
एरेकियो के सिवाने होते हुए अतारोत पर
जा निकला, ३ और पश्चिम की ओर
यपलेतियो के सिवाने से उतरकर फिर
नीचेवाले बेथोरोन के सिवाने से होकर

गेजेर को पहुंचा, और समुद्र पर निकला।
४ तब मनश्शे और एप्रैम नाम यूसुफ के
दोनों पुत्रों की सन्तान ने अपना अपना भाग
लिया। ५ एप्रैमियों का सिवाना उनके
कुलों के अनुसार यह ठहरा, अर्थात् उनके
भाग का सिवाना पूर्व से आरम्भ होकर
अत्रोनदार से होते हुए ऊपरवाले बेथोरोम
तक पहुंचा, ६ और उत्तरी सिवाना
पश्चिम की ओर के मिकमतात से आरम्भ
होकर पूर्व की ओर मुड़कर तानतशीलो को
पहुंचा, और उसके पास से होते हुए यानोह
तक पहुंचा, ७ फिर यानोह से वह
अतारोत और नारा को उतरता हुआ
यरीहो के पास होकर यरदन पर निकला।
८ फिर वही सिवाना तप्पूह से निकलकर,
और पश्चिम की ओर जाकर, काना के नाले
तक होकर समुद्र पर निकला। एप्रैमियों के
गोत्र का भाग उनके कुलों के अनुसार यही
ठहरा। ९ और मनश्शेइयों के भाग के
बीच भी कई एक * नगर अपने अपने गांवों
समेत एप्रैमियों के लिये अलग किये गए।
१० परन्तु जो कनानी गेजेर में बसे थे
उनको एप्रैमियों ने वहां से नहीं निकाला,
इसलिये वे कनानी उनके बीच आज के दिन
तक बसे हैं, और बेगारी में दास के समान
काम करते हैं॥

१७ फिर यूसुफ के जेठे मनश्शे के
गोत्र का भाग चिट्ठी डालने से यह
ठहरा। मनश्शे का जेठा पुत्र गिलाद का
पिता माकीर योद्धा था, इस कारण
उसके वंश को गिलाद और बाशान मिला।
२ इसलिये यह भाग दूसरे मनश्शेइयों के
लिये उनके कुलों के अनुसार ठहरा, अर्थात्
अबीएजेर, हेलेक, असीएल, शेकेम, हेपेर,

* मूल में—सब।

और शमीदा, जो अपने अपने कुलों के
अनुसार यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश में के
पुरुष थे, उनके अलग अलग वंशों के लिये
ठहरा। ३ परन्तु हेपेर जो गिलाद का पुत्र,
माकीर का पोता, और मनश्शे का परपोता
था, उसके पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं,
बेटियां ही हुईं, और उनके नाम महला,
नोआ, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा हैं।
४ तब वे एलीआजर याजक, नून के पुत्र
यहोशू, और प्रधानों के पास जाकर कहने
लगीं, यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, कि
वह हम को हमारे भाइयों के बीच भाग दे।
तो यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार
उन्हें उनके चचाओं के बीच भाग दिया।
५ तब मनश्शे को, यरदन पार गिलाद देश
और बाशान को छोड़, दस भाग मिले,
६ क्योंकि मनश्शेइयों के बीच में मनश्शेई
स्त्रियों को भी भाग मिला। और दूसरे
मनश्शेइयों को गिलाद देश मिला। ७ और
मनश्शे का सिवाना आशेर से लेकर मिक-
मतात तक पहुंचा, जो शकेम के साम्हने है,
फिर वह दक्खिन की ओर बढ़कर एनतप्पूह
के निवासियों तक पहुंचा। ८ तप्पूह की
भूमि तो मनश्शे को मिली, परन्तु तप्पूह
नगर जो मनश्शे के सिवाने पर बसा है
वह एप्रैमियों का ठहरा। ९ फिर वहां से
वह सिवाना काना के नाले तक उतरके
उसके दक्खिन की ओर तक पहुंच गया,
ये नगर यद्यपि मनश्शे के नगरों के बीच में
थे तौभी एप्रैम के ठहरे, और मनश्शे का
सिवाना उस नाले की उत्तर की ओर से
जाकर समुद्र पर निकला, १० दक्खिन
की ओर का देश तो एप्रैम को और उत्तर
की ओर का मनश्शे को मिला, और उसका
सिवाना समुद्र ठहरा, और वे उत्तर की
ओर आशेर से और पूर्व की ओर इस्साकार

से जा मिले। ११ और मनश्शे को,
इस्साकार और आशेर अपने अपने नगरो
समेत बेतशान, यिबलाम, और अपने नगरो
समेत दोर के निवासी, और अपने नगरो
समेत एनदोर के निवासी, और अपने नगरो
समेत तानाक के निवासी, और अपने नगरो
समेत मगिद्दो के निवासी, ये तीनो जो ऊंचे
स्थानो पर बसे है मिले। १२ परन्तु मनश्शेई
उन नगरो के निवासियो को उन मे से नही
निकाल सके, इसलिये वे कनानी उस देश मे
बरियाई से बसे ही रहे। १३ तौभी जब
इस्राएली सामर्थी हो गए, तब कनानियो से
बेगारी तो कराने लगे, परन्तु उनको पूरी
रीति से निकाल बाहर न किया॥
१४ यूसुफ की सन्तान यहोशू से कहने
लगी, हम तो गिनती मे बहुत है, क्योकि
अब तक यहोवा हमे आशीष ही देता आया
है, फिर तू ने हमारे भाग के लिये चिट्ठी
डालकर क्यो एक ही अंश दिया है?
१५ यहोशू ने उन से कहा, यदि तुम
गिनती मे बहुत हो, और एप्रैम का पहाडी
देश तुम्हारे लिये छोटा हो, तो परिज्जियो
और रपाइयो का देश जो जगल है उसमे
जाकर पेडो को काट डालो। १६ यूसुफ
की सन्तान ने कहा, वह पहाडी देश हमारे
लिये छोटा है; और क्या बेतशान और उसके
नगरो मे रहनेवाले, क्या यिज्रेल की तराई मे
रहनेवाले, जितने कनानी नीचे के देश मे
रहते है, उन सभो के पास लोहे के रथ है।
१७ फिर यहोशू ने, क्या एप्रैमी क्या
मनश्शेई, अर्थात् यूसुफ के सारे घराने से
कहा, हा तुम लोग तो गिनती मे बहुत हो,
और तुम्हारी बडी सामर्थ्य भी है, इसलिये
तुम को केवल एक ही भाग न मिलेगा,
१८ पहाडी देश भी तुम्हारा हो जाएगा,
क्योकि वह जगल तो है, परन्तु उसके पेड
काट डालो, तब उसके आस पास का देश भी
तुम्हारा हो जाएगा, क्योंकि चाहे कनानी
सामर्थी हो, और उनके पास लोहे के रथ
भी हो, तौभी तुम उन्हें वहा से निकाल
सकोगे॥

१८ फिर इस्राएलियो की सारी
मण्डली ने शीलो मे इकट्ठी होकर
वहा मिलापवाले तम्बू को खडा किया;
क्योकि देश उनके वश मे आ गया था।
२ और इस्राएलियो में से सात गोत्रो के
लोग अपना अपना भाग बिना पाये रह गए
थे। ३ तब यहोशू ने इस्राएलियो से कहा,
जो देश तुम्हारे पूर्वजो के परमेश्वर यहोवा
ने तुम्हे दिया है, उसे अपने अधिकार मे
कर लेने मे तुम कब तक ढिलाई करते
रहोगे? ४ अब प्रति गोत्र के पीछे तीन
मनुष्य ठहरा लो, और मै उन्हे इसलिये
भेजूगा कि वे चलकर देश मे घूमे फिरे,
और अपने अपने गोत्र के भाग के प्रयोजन
के अनुसार उसका हाल लिख लिखकर मेरे
पास लौट आए। ५ और वे देश के सात
भाग लिखे, यहूदी तो दक्खिन की ओर
अपने भाग मे, और यूसुफ के घराने के
लोग उत्तर की ओर अपने भाग मे रहें।
६ और तुम देश के सात भाग लिखकर मेरे
पास ले आओ; और मै यहा तुम्हारे लिये
अपने परमेश्वर यहोवा के साम्हने चिट्ठी
डालूगा। ७ और लेवियो का तुम्हारे मध्य
मे कोई भाग न होगा, क्योकि यहोवा का
दिया हुआ याजकपद ही उनका भाग है;
और गाद, रूबेन, और मनश्शे के आधे
गोत्र के लोग यरदन के पूर्व की ओर यहोवा
के दास मूसा का दिया हुआ अपना अपना
भाग पा चुके है। ८ तो वे पुरुष उठकर
चल दिए; और जो उस देश का हाल

लिखने को चले उन्हें यहोशू ने यह आज्ञा
दी, कि जाकर देश में घूमो फिरो, और
उसका हाल लिखकर मेरे पास लौट आओ,
और मैं यहा शिलो में यहोवा के साम्हने
तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूगा। ९ तब वे
पुरुष चल दिए, और उस देश में घूमे, और
उसके नगरो के सात भाग करके उनका
हाल पुस्तक में लिखकर शीलो की छावनी
में यहोशू के पास आए। १० तब यहोशू ने
शीलो में यहोवा के साम्हने उनके लिये
चिट्ठिया डाली, और वही यहोशू ने
इस्राएलियो को उनके भागो के अनुसार देश
बाट दिया॥

११ और बिन्यामीनियो के गोत्र की
चिट्ठी उनके कुलो के अनुसार निकली, और
उनका भाग यहूदियो और यूसुफियो के
बीच में पडा। १२ और उनका उत्तरी
सिवाना यरदन से आरम्भ हुआ, और यरीहो
की उत्तर अलग से चढते हुए पश्चिम की
ओर पहाडी देश में होकर बेतावेन के जगल
में निकला, १३ वहा से वह लूज को
पहुचा (जो बेतेल भी कहलाता है), और
लूज की दक्खिन अलग से होते हुए निचले
बेथोरोन की दक्खिन ओर के पहाड के पास
हो अत्रोतद्दार को उतर गया। १४ फिर
पश्चिमी सिवाना मुडके बेथोरोन के साम्हने
और उसकी दक्खिन ओर के पहाड से
होते हुए किर्यतबाल नाम यहूदियो के एक
नगर पर निकला (जो किर्यत्यारीम भी
कहलाता है), पश्चिम का सिवाना यही
ठहरा। १५ फिर दक्खिन अलग का
सिवाना पश्चिम से आरम्भ होकर किय-
त्यारीम के सिरे मे निकलकर नेप्तोह के
सोते पर पहुचा, १६ और उस पहाड के
सिरे पर उतरा, जो हिन्नोम के पुत्र की तराई
के साम्हने और रपाईम नाम तराई की
उत्तर ओर है, वहा से वह हिन्नोम की
तराई मे, अर्थात् यबूस की दक्खिन अलग
होकर एनरोगेल को उतरा, १७ वहा से
वह उत्तर की ओर मुडकर एनशेमेश को
निकलकर उस गलीलोत की ओर गया, जो
अदुम्मीम की चढाई के साम्हने है, फिर
वहा से वह रूबेन के पुत्र बोहन के पत्थर तक
उतर गया, १८ वहा से वह उत्तर की
ओर जाकर अराबा के साम्हने के पहाड की
अलग मे होते हुए अराबा को उतरा,
१९ वहा से वह सिवाना बेथोग्ला की उत्तर
अलग से जाकर खारे ताल की उत्तर ओर
के कोल मे यरदन के मुहाने पर * निकला,
दक्खिन का सिवाना यही ठहरा। २० और
पूर्व की ओर का सिवाना यरदन ही ठहरा।
बिन्यामीनियो का भाग, चारो ओर के
सिवानो सहित, उनके कुलो के अनुसार, यही
ठहरा। २१ और बिन्यामीनियो के गोत्र
को उनके कुलो के अनुसार ये नगर मिले,
अर्थात् यरीहो, बेथोग्ला, एमेककसीस,
२२ बेतराबा, समारैम, बेतेल, २३ अव्वीम,
पारा, ओप्रा, २४ कपरम्मोनी, ओप्नी और
गेबा, ये बारह नगर और इनके गाव
मिले। २५ फिर गिबोन, रामा, बेरोत,
२६ मिस्पे, कपीरा, मोसा, २७ रेकेम,
यिर्पेल, तरला, २८ सेला, एलेप, यबूस (जो
यरूशलेम भी कहलाता है), गिबत और
कियत, ये चौदह नगर और इनके गाव उन्हे
मिले। बिन्यामीनियो का भाग उनके कुलो
के अनुसार यही ठहरा॥

१९ दूसरी चिट्ठी शिमोन के नाम पर,
अर्थात् शिमोनियो के कुलो के
अनुसार उनके गोत्र के नाम पर निकली,
और उनका भाग यहूदियो के भाग के

* मूल में—दक्खिनी सिरे पर।

बीच मे ठहरा। २ उनके भाग में ये नगर
हैं, अर्थात् बेर्शेबा, शेबा, मोलादा, ३ हसर्-
शूआल, बाला, एसेम, ४ एलतोलद, बतूल
होर्मा, ५ सिक्लग, बेत्मर्काबोत, हसर्सूसा,
६ बेतलबाओत, और शारूहेन, ये तेरह
नगर और इनके गाव उन्हे मिले। ७ फिर
ऐन, रिम्मोन, एतेर, और आशान, ये चार
नगर गावो समेत, ८ और बालत्बेर जो
दक्खिन देश का रामा भी कहलाता है, वहा
तक इन नगरो के चारो ओर के सब गाव
भी उन्हे मिले। शिमोनियो के गोत्र का भाग
उनके कुलो के अनुसार यही ठहरा।
९ शिमोनियो का भाग तो यहूदियो के
अंश मे से दिया गया; क्योंकि यहूदियो का
भाग उनके लिये बहुत था, इस कारण
शिमोनियो का भाग उन्ही के भाग के बीच
ठहरा॥

१० तीसरी चिट्ठी जबूलूनियो के कुलो
के अनुसार उनके नाम पर निकली। और
उनके भाग का सिवाना सारीद तक पहुचा;
११ और उनका सिवाना पश्चिम की ओर
मरला को चढकर दब्बेशेत को पहुचा,
और योकनाम के साम्हने के नाले तक पहुच
गया, १२ फिर सारीद से वह सूर्योदय
की ओर मुडकर किसलोत्ताबोर के सिवाने
तक पहुचा, और वहा से बढते बढते
दाबरत मे निकला, और यापी की ओर
जा निकला, १३ वहा से वह पूर्व की
ओर आगे बढकर गथेपेर और इत्कासीन को
गया, और उस रिम्मोन मे निकला जो
नेआ तक फैला हुआ है, १४ वहा से वह
सिवाना उसके उत्तर की ओर से मुडकर
हन्नातोन पर पहुचा, और यिप्तहेल की
तराई मे जा निकला, १५ कत्तात,
नहलाल, शिम्रोन, यिदला, और बेतलेहम,
ये बारह नगर उनके गावो समेत उसी
भाग के ठहरे। १६ जबूलूनियो का भाग
उनके कुलो के अनुसार यही ठहरा;
और उस में अपने अपने गावो समेत ये ही
नगर है॥

१७ चौथी चिट्ठी इस्साकारियो के कुलो
के अनुसार उनके नाम पर निकली।
१८ और उनका सिवाना यिज्रेल कसुल्लोत,
शूनेम १९ हपारैम, शीओन, अनाहरत,
२० रब्बीत, किश्योन, एबेस, २१ रेमेत,
एनगन्नीम, एनहद्दा, और बेत्पस्सेस तक
पहुचा। २२ फिर वह सिवाना ताबोर-
शहसूमा और बेतशेमेश तक पहुचा, और
उनका सिवाना यरदन नदी पर जा निकला;
इस प्रकार उनको सोलह नगर अपने अपने
गावो समेत मिले। २३ कुलो के अनुसार
इस्साकारियो के गोत्र का भाग नगरो और
गावो समेत यही ठहरा॥

२४ पाचवी चिट्ठी आशेरियो के गोत्र के
कुलो के अनुसार उनके नाम पर निकली।
२५ उनके सिवाने मे हेल्कत, हली, बेतेन,
अक्षाप, २६ अलाम्मेल्लेक, अमाद, और
मिशाल थे, और वह पश्चिम की ओर
कार्म्मेल तक और शीहोर्लिब्नात तक पहुचा;
२७ फिर वह सूर्योदय की ओर मुडकर
बेतदागोन को गया, और जबलून के भाग
तक, और यिप्तहेल की तराई से उत्तर की
ओर होकर बेतेमेक और नीएल तक पहुचा,
और उत्तर की ओर जाकर काबूल पर
निकला, २८ और वह एब्रोन, रहोब,
हम्मोन, और काना से होकर बडे सीदोन को
पहुचा; २९ वहा से वह सिवाना मुडकर
रामा से होते हुए सोर नाम गढवाले नगर
तक चला गया, फिर सिवाना होसा की ओर
मुडकर और अकजीब के पास के देश मे
होकर समुद्र पर निकला, ३० उम्मा,
अपेक, और रहोब भी उनके भाग मे ठहरे;

इस प्रकार बाईस नगर अपने अपने गावो
समेत उनको मिले। ३१ कुलो के अनुसार
आशेरियो के गोत्र का भाग नगरो और
गावो समेत यही ठहरा॥

३२ छठवी चिट्ठी नप्तालियो के कुलो
के अनुसार उनके नाम पर निकली।
३३ और उनका सिवाना हेलेप से, और
सानन्नीम में के बाज वृक्ष से, अदामीनेकेब
और यब्नेल से होकर, और लक्कूम को
जाकर यरदन पर निकला, ३४ वहा से
वह सिवाना पश्चिम की ओर मुडकर
अजनोत्ताबोर को गया, और वहा से हुक्कोक
को गया, और दक्खिन, और जबूलून के भाग
तक, और पश्चिम की ओर आशेर के भाग
तक, और सूर्योदय की ओर यहूदा के भाग के
पास की यरदन नदी पर पहुचा। ३५ और
उनके गढवाले नगर ये है, अर्थात् सिद्दीम,
सेर, हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत, ३६ अदामा,
रामा, हासोर, ३७ केदेश, एद्रेई, एन्हासेर,
३८ यिरोन, मिगदलेल, होरेम, बेतनात,
और बेतशेमेश, ये उन्नीस नगर गावो
समेत उनको मिले। ३९ कुलो के अनुसार
नप्तालियो के गोत्र का भाग नगरो और
उनके गावो समेत यही ठहरा॥

४० सातवी चिट्ठी कुलो के अनुसार
दानियो के गोत्र के नाम पर निकली।
४१ और उनके भाग के सिवाने मे सोरा,
एशताओल, ईरशेमेश, ४२ शालब्बीन,
अय्यालोन, यितला, ४३ एलोन, तिम्ना,
एक्रोन, ४४ एलतके, गिब्बतोन, बालात,
४५ यहूद, बनेबराक, गत्रिम्मोन, ४६ मेय-
र्कोन, और रक्कोन ठहरे, और यापो के
साम्हने का सिवाना भी उनका था।
४७ और दानियो का भाग इस से * अधिक
हो गया, अर्थात् दानी लेशेम पर चढकर
उस से लडे, और उसे लेकर तलवार से मार
डाला, और उसको अपने अधिकार मे करके
उस मे बस गए, और अपने मूलपुरुष के नाम
पर लेशेम का नाम दान रखा। ४८ कुलो
के अनुसार दानियो के गोत्र का भाग नगरो
और गावो समेत यही ठहरा॥

४९ जब देश का बाटा जाना सिवानो के
अनुसार निपट गया, तब इस्राएलियो ने नून
के पुत्र यहोशू को भी अपने बीच मे एक भाग
दिया। ५० यहोवा के कहने के अनुसार
उन्हो ने उसको उसका मागा हुआ नगर
दिया, यह एप्रैम के पहाडी देश में का
तिम्नत्सेरह है, और वह उस नगर को
बसाकर उस में रहने लगा॥

५१ जो जो भाग एलीआजर याजक,
और नून के पुत्र यहोशू, और इस्राएलियो के
गोत्रो के घरानों के पूर्वजो के मुख्य मुख्य
पुरुषो ने शीलो में, मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर, यहोवा के साम्हने चिट्ठी डाल डालके
बाट दिए वे ये ही हैं। निदान उन्हों ने देश
विभाजन का काम निपटा दिया॥

(शरण नगरों का ठहराया जाना)

२० फिर यहोवा ने यहोशू से कहा,
२ इस्राएलियो से यह कह, कि मैं ने
मूसा के द्वारा तुम से शरण नगरो की जो
चर्चा की थी उसके अनुसार उनको ठहरा
लो, ३ जिस से जो कोई भूल से बिना
जाने किसी को मार डाले, वह उन मे से
किसी में भाग जाए, इसलिये वे नगर खून
के पलटा लेनेवाले से बचने के लिये तुम्हारे
शरणस्थान ठहरें। ४ वह उन नगरो में
से किसी को भाग जाए, और उस नगर के
फाटक में से खडा होकर उसके पुरनियो को
अपना मुकद्दमा कह सुनाए, और वे उसको

* मूल में—उन से।

अपने नगर मे अपने पास टिका ले, और
उसे कोई स्थान दे, जिस मे वह उनके साथ
रहे। ५ और यदि खून का पलटा लेनेवाला
उसका पीछा करे, तो वे यह जानकर कि
उस ने अपने पडोसी को बिना जाने, और
पहिले उस से बिना बैर रखे मारा, उस खूनी
को उसके हाथ मे न दे। ६ और जब तक
वह मण्डली के साम्हने न्याय के लिये खडा
न हो, और जब तक उन दिनो का महायाजक
न मर जाए, तब तक वह उसी नगर मे रहे,
उसके बाद वह खूनी अपने नगर को लौटकर
जिस से वह भाग आया हो अपने घर मे फिर
रहने पाए। ७ और उन्हो ने नप्ताली के
पहाड़ी देश मे गलील के केदेश को, और
एप्रैम के पहाडी देश मे शकेम को, और यहूदा
के पहाडी देश मे किर्य्यतर्बा को, (जो हेब्रोन
भी कहलाता है) पवित्र ठहराया। ८ और
यरीहो के पास के यरदन के पूर्व की ओर
उन्हो ने रूबेन के गोत्र के भाग मे बेसेर को,
जो जगल मे चौरस भूमि पर बसा हुआ है,
और गाद के गोत्र के भाग मे गिलाद के
रमोत को, और मनश्शे के गोत्र के भाग मे
बाशान के गोलान को ठहराया। ९ सारे
इस्राएलियो के लिये, और उन से बीच रहने-
वाले परदेशियो के लिये भी, जो नगर इस
मनसा से ठहराए गए कि जो कोई किसी
प्राणी को भूल मे मार डाले वह उन मे से
किसी मे भाग जाए, और जब तक न्याय के
लिये मण्डली के साम्हने खडा न हो, तब
तक खून का पलटा लेनेवाला उसे मार
डालने न पाए, वे ये ही है॥

(लेवियों को बसने के नगरों का
दिया जाना)

२१ तब लेवियो के पूर्वजो के घरानो
के मुख्य मुख्य पुरुष एलीआजर
याजक, और नून के पुत्र यहोशू, और इस्रा-
एली गोत्रो के पूर्वजो के घरानो के मुख्य
मुख्य पुरुषो के पास आकर २ कनान
देश के शीलो नगर मे कहने लगे, यहोवा ने
मूसा से हमे बसने के लिये नगर, और हमारे
पशुओ के लिये उन्ही नगरों की चराइया
भी देने की आज्ञा दिलाई थी। ३ तब
इस्राएलियो ने यहोवा के कहने के अनुसार
अपने अपने भाग मे से लेवियो को चराइयो
समेत ये नगर दिए॥

४ और कहातियो के कुलो के नाम पर
चिट्ठी निकली। इसलिये लेवियो मे से
हारून याजक के वश को यहूदी, शिमोन,
और बिन्यामीन के गोत्रो के भागो मे से
तेरह नगर मिले॥

५ और बाकी कहातियो को एप्रैम के
गोत्र के कुलो, और दान के गोत्र, और मनश्शे
के आधे गोत्र के भागो मे से चिट्ठी डाल डाल-
कर दस नगर दिए गए॥

६ और गेर्शोनियो को इस्साकार के
गोत्र के कुलो, और आशेर, और नप्ताली के
गोत्रो के भागो मे से, और मनश्शे के उस
आधे गोत्र के भागो मे से भी जो बाशान मे
था चिट्ठी डाल डालकर तेरह नगर दिए
गए॥

७ और कुलो के अनुसार मरारियो को
रूबेन, गाद, और जबूलून के गोत्रो के भागो
मे से बारह नगर दिए गए॥

८ जो आज्ञा यहोवा ने मूसा से दिलाई
थी उसके अनुसार इस्राएलियो ने लेवियो
को चराइयो समेत ये नगर चिट्ठी डाल डाल-
कर दिए। ९ उन्हो ने यहूदियो और
शिमोनियो के गोत्रो के भागो मे से ये नगर
जिनके नाम लिखे है दिए, १० ये नगर
लेवीय कहाती कुलो मे से हारून के वश के
लिये थे, क्योकि पहिली चिट्ठी उन्ही के नाम

पर निकली थी। ११ अर्थात् उन्हों ने उन-
को यहूदा के पहाड़ी देश में चारों ओर की
चराइयों समेत किर्यतर्बा नगर दे दिया, जो
अनाक के पिता अर्बा के नाम पर कहलाया
और हेब्रोन भी कहलाता है। १२ परन्तु
उस नगर के खेत और उसके गांव उन्हों ने
यपुन्ने के पुत्र कालेब को उसकी निज भूमि
करके दे दिए॥
१३ तब उन्हों ने हारून याजक के वंश
को चराइयों समेत खूनी के शरण नगर
हेब्रोन, और अपनी अपनी चराइयों समेत
लिब्ना, १४ यत्तीर, एशतमो, १५ होलोन,
दबीर, ऐन, १६ युत्ता और बेतशेमेश दिए,
इस प्रकार उन दोनों गोत्रों के भागों में से नौ
नगर दिए गए। १७ और बिन्यामीन के
गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों
समेत ये चार नगर दिए गए, अर्थात् गिबोन,
गेबा, १८ अनातोत और अल्मोन। १९ इस
प्रकार हारूनवंशी याजकों को तेरह नगर
और उनकी चराइयां मिलीं॥
२० फिर बाकी कहाती लेवियों के कुलों
के भाग के नगर चिट्ठी डाल डालकर एप्रैम
के गोत्र के भाग में से दिए गए। २१ अर्थात्
उनको चराइयों समेत एप्रैम के पहाड़ी देश
में खूनी के शरण लेने का शकेम नगर दिया
गया, फिर अपनी अपनी चराइयों समेत
गेजेर, २२ किबसैम, और बेथोरोन, ये
चार नगर दिए गए। २३ और दान के गोत्र
के भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत,
एलतके, गिब्बतोन, २४ अय्यालोन, और
गत्रिम्मोन, ये चार नगर दिए गए। २५ और
मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से अपनी
अपनी चराइयों समेत तानाक और गत्रि-
म्मोन, ये दो नगर दिए गए। २६ इस
प्रकार बाकी कहातियों के कुलों के सब नगर
चराइयों समेत दस ठहरे॥

२७ फिर लेवियों के कुलों में के गेर्शो-
नियों को मनश्शे के आधे गोत्र के भाग में से
अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी के शरण
नगर बाशान का गोलान और बेशतरा,
ये दो नगर दिए गए। २८ और इस्साकार
के गोत्र के भाग में से अपनी अपनी चराइयों
समेत किश्योन, दाबरत, २९ यर्मूत, और
एनगन्नीम, ये चार नगर दिए गए। ३० और
आशेर के गोत्र के भाग में से अपनी
अपनी चराइयों समेत मिशाल, अब्दोन,
३१ हेल्कात, और रहोब, ये चार नगर
दिए गए। ३२ और नप्ताली के गोत्र के
भाग में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी
के शरण नगर गलील का केदेश, फिर
हम्मोतदोर, और कर्तान, ये तीन नगर दिए
गए। ३३ गेर्शोनियों के कुलों के अनुसार
उनके सब नगर अपनी अपनी चराइयों
समेत तेरह ठहरे॥
३४ फिर बाकी लेवियों, अर्थात मरारियों
के कुलों को जबूलून के गोत्र के भाग में से
अपनी अपनी चराइयों समेत योक्नाम, कर्ता,
३५ दिम्ना, और नहलाल, ये चार नगर दिए
गए। ३६ और रूबेन के गोत्र के भाग में
से अपनी अपनी चराइयों समेत बेसेर, यहसा,
३७ कदेमोत, और मेपात, ये चार नग
दिए गए। ३८ और गाद के गोत्र के भा
में से अपनी अपनी चराइयों समेत खूनी
शरण नगर गिलाद में का रामोत, फि
महनैम, ३९ हेशबोन, और याजेर, जो स
मिलाकर चार नगर हैं दिए गए
४० लेवियों के बाकी कुलों अर्थात् मरारियों
के कुलों के अनुसार उनके सब नगर ये ह
ठहरे, इस प्रकार उनको बारह नगर चिट्ठी
डाल डालकर दिए गए॥
४१ इस्राएलियों की निज भूमि के बीच
लेवियों के सब नगर अपनी अपनी चराइयों

समेत अड़तालीस ठहरे। ४२ ये सब नगर
अपने अपने चारो ओर की चराइयो के
साथ ठहरे, इन सब नगरो की यही दशा
थी॥

४३ इस प्रकार यहोवा ने इस्राएलियो
को वह सारा देश दिया, जिसे उस ने उनके
पूर्वजो से शपथ खाकर देने को कहा था,
और वे उसके अधिकारी होकर उस मे बस
गए। ४४ और यहोवा ने उन सब बातो
के अनुसार, जो उस ने उनके पूर्वजो से शपथ
खाकर कही थी, उन्हे चारो ओर से विश्राम
दिया, और उनके शत्रुओ में से कोई भी उनके
साम्हने टिक न सका, यहोवा ने उन सभो
को उनके वश मे कर दिया। ४५ जितनी
भलाई की बाते यहोवा ने इस्राएल के घराने
से कही थी उन मे से कोई बात भी न छूटी,
सब की सब पूरी हुई॥

२२ उस समय यहोशू ने रूबेनियो,
गादियो, और मनश्शे के आधे
गोत्रियो को बुलवाकर कहा, २ जो जो
आज्ञा यहोवा के दास मूसा ने तुम्हे दी थी
वे सब तुम ने मानी है, और जो जो आज्ञा
मैं ने तुम्हे दी है उन सभो को भी तुम ने
माना है, ३ तुम ने अपने भाइयो को इस
मुद्दत मे आज के दिन तक नही छोड़ा, परन्तु
अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा तुम ने
चौकसी से मानी है। ४ और अब तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयो को
अपने वचन के अनुसार विश्राम दिया है,
इसलिये अब तुम लौटकर अपने अपने डेरो
को, और अपनी निज भूमि में, जिसे यहोवा
के दास मूसा ने यरदन पार तुम्हें दिया है चले
जाओ। ५ केवल इस बात की पूरी चौकसी
करना कि जो जो आज्ञा और व्यवस्था
यहोवा के दास मूसा ने तुम को दी है उसको
मानकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम
रखो, उसके सारे मार्गो पर चलो, उसकी
आज्ञाए मानो, उसकी भक्ति मे लौलीन
रहो, और अपने सारे मन और सारे प्राण
से उसकी सेवा करो। ६ तब यहोशू ने
उन्हे आशीर्वाद देकर विदा किया, और वे
अपने अपने डेरे को चले गए॥

७ मनश्शे के आधे गोत्रियो को मूसा ने
बाशान मे भाग दिया था, परन्तु दूसरे आधे
गोत्र को यहोशू ने उनके भाइयो के बीच यरदन
के पश्चिम की ओर भाग दिया। उनको
जब यहोशू ने विदा किया कि अपने अपने
डेरे को जाए, ८ तब उनको भी आशीर्वाद
देकर कहा, बहुत से पशु, और चादी, सोना,
पीतल, लोहा, और बहुत से वस्त्र, और बहुत
धन-सम्पत्ति लिए हुए अपने अपने डेरे को
लौट जाओ, और अपने शत्रुओ की लूट की
सम्पत्ति को अपने भाइयो के सग बाट
लेना॥

९ तब रूबेनी, गादी, और मनश्शे के
आधे गोत्री इस्राएलियो के पास से, अर्थात्
कनान देश के शीलो नगर से, अपनी गिलाद
नाम निज भूमि मे, जो मूसा से दिलाई हुई,
यहोवा की आज्ञा के अनुसार उनकी निज
भूमि हो गई थी, जाने की मनसा से लौट
गए। १० और जब रूबेनी, गादी, और
मनश्शे के आधे गोत्री यरदन की उस तराई
में पहुचे जो कनान देश मे है, तब उन्हो ने
वहा देखने के योग्य एक बड़ी वेदी बनाई।
११ और इसका समाचार इस्राएलियो
के सुनने मे आया, कि रूबेनियो, गादियो,
और मनश्शे के आधे गोत्रियो ने कनान देश
के साम्हने यरदन की तराई मे, अर्थात् उसके
उस पार जो इस्राएलियो का है, एक वेदी
बनाई है। १२ जब इस्राएलियो ने यह
सुना, तब इस्राएलियो की सारी मण्डली

उन से लड़ने के लिये चढ़ाई करने को शीलो
में इकट्ठी हुई॥
१३ तब इस्राएलियों ने रूबेनियों,
गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों के
पास गिलाद देश में एलीआज़र याजक के
पुत्र पीनहास को, १४ और उसके संग दस
प्रधानों को, अर्थात् इस्राएल के एक एक
गोत्र में से पूर्वजों के घरानों के एक एक
प्रधान को भेजा, और वे इस्राएल के हज़ारों
में अपने अपने पूर्वजों के घरानों के मुख्य
पुरुष थे। १५ वे गिलाद देश में रूबेनियों,
गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्रियों के
पास जाकर कहने लगे, १६ यहोवा की
सारी मण्डली यह कहती है, कि तुम ने
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का यह कैसा
विश्वासघात किया, आज जो तुम ने एक
वेदी बना ली है, इस में तुम ने उसके पीछे
चलना छोड़कर उसके विरुद्ध आज बलवा
किया है? १७ सुनो, पोर के विषय
का अधर्म हमारे लिये कुछ कम था, यद्यपि
यहोवा की मण्डली को भारी दण्ड मिला
तौभी आज के दिन तक हम उस अधर्म से
शुद्ध नहीं हुए, क्या वह तुम्हारी दृष्टि में
एक छोटी बात है, १८ कि आज तुम
यहोवा को त्यागकर उसके पीछे चलना
छोड़ देते हो? आज तुम यहोवा से फिर
जाते हो, और कल वह इस्राएल की सारी
मण्डली से क्रोधित होगा। १९ परन्तु यदि
तुम्हारी निज भूमि अशुद्ध हो, तो पार आकर
यहोवा की निज भूमि में, जहां यहोवा का
निवास रहता है, हम लोगों के बीच में अपनी
अपनी निज भूमि कर लो, परन्तु हमारे
परमेश्वर यहोवा की वेदी को छोड़ और
कोई वेदी बनाकर न तो यहोवा से बलवा
करो, और न हम से। २० देखो, जब
जेरह के पुत्र आकान ने अर्पण की हुई वस्तु
के विषय में विश्वासघात किया, तब क्या
यहोवा का कोप इस्राएल की पूरी मण्डली
पर न भड़का? और उस पुरुष के अधर्म
का प्राणदण्ड अकेले उसी को न मिला॥
२१ तब रूबेनियों, गादियों, और मनश्शे
के आधे गोत्रियों ने इस्राएल के हज़ारों के
मुख्य पुरुषों को यह उत्तर दिया, २२ कि
यहोवा जो ईश्वरों का परमेश्वर है, ईश्वरों
का परमेश्वर यहोवा इसको जानता है,
और इस्राएली भी इसे जान लेंगे, कि यदि
यहोवा से फिरके वा उसका विश्वासघात
करके हम ने यह काम किया हो, तो तू आज
हम को जीवित न छोड़, २३ यदि आज
के दिन हम ने वेदी को इसलिये बनाया
हो कि यहोवा के पीछे चलना छोड़ दें, वा
इसलिये कि उस पर होमबलि, अन्नबलि, वा
मेलबलि चढ़ाए, तो यहोवा आप इसका
हिसाब ले, २४ परन्तु हम ने इसी विचार
और मनसा से यह किया है कि कहीं भविष्य
में तुम्हारी सन्तान हमारी सन्तान से यह न
कहने लगे, कि तुम को इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा से क्या काम? २५ क्योंकि, हे
रूबेनियो, हे गादियो, यहोवा ने जो हमारे
और तुम्हारे बीच में यरदन को हद ठहरा
दिया है, इसलिये यहोवा में तुम्हारा कोई
भाग नहीं है। ऐसा कहकर तुम्हारी सन्तान
हमारी सन्तान में से यहोवा का भय छुड़ा
देगी। २६ इसीलिये हम ने कहा, आओ, हम
अपने लिये एक वेदी बना लें, वह होमबलि
वा मेलबलि के लिये नहीं, २७ परन्तु
इसलिये कि हमारे और तुम्हारे, और
हमारे बाद हमारे और तुम्हारे वंश के बीच
में साक्षी का काम दे, इसलिये कि हम
होमबलि, मेलबलि, और बलिदान चढ़ाकर
यहोवा के सम्मुख उसकी उपासना करें,
और भविष्य में तुम्हारी सन्तान हमारी

सन्तान से यह न कहने पाए, कि यहोवा में
तुम्हारा कोई भाग नही। २८ इसलिये हम
ने कहा, कि जब वे लोग भविष्य मे हम से
वा हमारे वश से यो कहने लगे, तब हम उन
से कहेगे, कि यहोवा के वेदी के नमूने पर
बनी हुई इस वेदी को देखो, जिसे हमारे
पुरखाओ ने होमबलि वा मेलबलि के लिये
नही बनाया, परन्तु इसलिये बनाया था
कि हमारे और तुम्हारे बीच मे साक्षी का
काम दे। २९ यह हम से दूर रहे कि
यहोवा से फिरकर आज उसके पीछे चलना
छोड दे, और अपने परमेश्वर यहोवा की
उस वेदी को छोडकर जो उसके निवास
के साम्हने है होमबलि, और अन्नबलि, वा
मेलबलि के लिये दूसरी वेदी बनाए॥
३० रूबेनियो, गादियो, और मनश्शे के
आधे गोत्रियो की इन बातो को सुनकर
पीनहास याजक और उसके सग मण्डली
के प्रधान, जो इस्राएल के हजारो के मुख्य
पुरुष थे, वे अति प्रसन्न हुए। ३१ और
एलीआजर याजक के पुत्र पीनहास ने
रूबेनियो, गादियो, और मनश्शेइयो से कहा,
तुम ने जो यहोवा का ऐसा विश्वासघात
नही किया, इस से आज हम ने यह जान
लिया कि यहोवा हमारे बीच मे है: और
तुम लोगो ने इस्राएलियो को यहोवा के हाथ
से बचाया है। ३२ तब एलीआजर याजक
का पुत्र पीनहास प्रधानो समेत रूबेनियो
और गादियो के पास से गिलाद होते
हुए कनान देश मे इस्राएलियो के पास
लौट गया: और यह वृत्तान्त उनको कह
सुनाया। ३३ तब इस्राएली प्रसन्न हुए,
और परमेश्वर को धन्य कहा, और
रूबेनियो और गादियो से लडने और उनके
रहने का देश उजाडने के लिये चढाई करने
की चर्चा फिर न की। ३४ और रूबेनियो
और गादियो ने यह कहकर, कि यह वेदी
हमारे और उनके मध्य मे इस बात का
साक्षी ठहरी है, कि यहोवा ही परमेश्वर है:
उस वेदी का नाम एद* रखा॥

(यहोशू के पिछले उपदेश)

२३ इसके बहुत दिनो के बाद, जब
यहोवा ने इस्राएलियो को उनके
चारो ओर के शत्रुओ से विश्राम दिया, और
यहोशू बूढा और बहुत आयु का हो गया,
२ तब यहोशू सब इस्राएलियो को, अर्थात्
पुरनियो, मुख्य पुरुषो, न्यायियो, और
सरदारो को बुलवाकर कहने लगा, मैं तो अब
बूढा और बहुत आयु का हो गया हू; ३ और
तुम ने देखा है कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने तुम्हारे निमित्त इन सब जातियो से क्या
क्या किया है, क्योकि जो तुम्हारी ओर
लडता आया है वह तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा है। ४ देखो, मैं ने इन बची हुई
जातियो को चिट्ठी डाल डालकर तुम्हारे
गोत्रो का भाग कर दिया है, और यरदन से
लेकर सूर्यास्त की ओर के बडे समुद्र तक
रहनेवाली उन सब जातियो को भी ऐसा
ही दिया है, जिनको मैं ने काट डाला है।
५ और तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उनको
तुम्हारे साम्हने से उनके देश से निकाल देगा,
और तुम अपने परमेश्वर यहोवा के वचन
के अनुसार उनके देश के अधिकारी हो
जाओगे। ६ इसलिये बहुत हियाव बान्ध-
कर, जो कुछ मूसा की व्यवस्था की पुस्तक
मे लिखा है उसके पूरा करने मे चौकसी
करना, उस से न तो दाहिने मुडना और न
बाए। ७ ये जो जातिया तुम्हारे बीच रह
गई है इनके बीच न जाना, और न इनके
देवताओ के नामो की चर्चा करना, और

* अर्थात् साक्षी।

न उनकी शपथ खिलाना, और न उनकी
उपासना करना, और न उनको दण्डवत्
करना, ८ परन्तु जैसे आज के दिन तक
तुम अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति में
लवलीन रहते हो, वैसे ही रहा करना।
९ यहोवा ने तुम्हारे साम्हने से बड़ी बड़ी
और बलवन्त जातियां निकाली हैं, और
तुम्हारे साम्हने आज के दिन तक कोई ठहर
नहीं सका। १० तुम में से एक मनुष्य
हज़ार मनुष्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार
तुम्हारी ओर से लड़ता है। ११ इसलिये
अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखने की
पूरी चौकसी करना। १२ क्योंकि यदि
तुम किसी रीति यहोवा से फिरकर इन
जातियों के बाकी लोगों से मिलने लगो जो
तुम्हारे बीच बचे हुए रहते हैं, और इन से
ब्याह शादी करके इनके साथ समधियाना
रिश्ता जोड़ो, १३ तो निश्चय जान लो
कि आगे को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
इन जातियों को तुम्हारे साम्हने से नहीं
निकालेगा, और ये तुम्हारे लिये जाल और
फंदे, और तुम्हारे पांजरों के लिये कोड़े, और
तुम्हारी आंखों में कांटे ठहरेंगी, और अन्त
में तुम इस अच्छी भूमि पर से जो तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी है नष्ट हो
जाओगे। १४ सुनो, मैं तो अब सब
संसारियों* की गति पर जानेवाला हूं,
और तुम सब अपने अपने हृदय और मन में
जानते हो, कि जितनी भलाई की बातें हमारे
परमेश्वर यहोवा ने हमारे विषय में कहीं
उन में से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही,
वे सब की सब तुम पर घट गई हैं, उन में
से एक भी बिना पूरी हुए नहीं रही।

* मूल में—सारी पृथ्वी।

१५ तो जैसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की
कही हुई सब भलाई की बातें तुम पर घटी
है, वैसे ही यहोवा विपत्ति की सब बातें भी
तुम पर घटाते घटाते तुम को इस अच्छी
भूमि के ऊपर से, जिसे तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने तुम्हें दिया है, सत्यानाश कर
डालेगा। १६ जब तुम उस वाचा को,
जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम को
आज्ञा देकर अपने साथ बन्धाया है, उल्लंघन
करके पराये देवताओं की उपासना और
उनको दण्डवत् करने लगो, तब यहोवा का
कोप तुम पर भड़केगा, और तुम इस अच्छे
देश में से जिसे उस ने तुम को दिया है शीघ्र
नाश हो जाओगे॥

२४ फिर यहोशू ने इस्राएल के सब
गोत्रों को शकेम में इकट्ठा किया, और
इस्राएल के वृद्ध लोगों, और मुख्य पुरुषों,
और न्यायियों, और सरदारों को बुलवाया,
और वे परमेश्वर के साम्हने उपस्थित हुए।
२ तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार
कहता है, कि प्राचीन काल में इब्राहीम और
नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा
परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे
देवताओं की उपासना करते थे। ३ और
मैं ने तुम्हारे मूलपुरुष इब्राहीम को महानद
के उस पार से ले आकर कनान देश के सब
स्थानों में फिराया, और उसका वंश
बढ़ाया। और उसे इसहाक को दिया,
४ फिर मैं ने इसहाक को याकूब और एसाव
दिया। और एसाव को मैं ने सेईर नाम
पहाड़ी देश दिया कि वह उसका अधिकारी
हो, परन्तु याकूब बेटों-पोतों समेत मिस्र
को गया। ५ फिर मैं ने मूसा और हारून
को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैं ने

मिस्र मे किए उस देश को मारा, और
उसके बाद तुम को निकाल लाया। ६ और
मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र मे से निकाल
लाया, और तुम समुद्र के पास पहुचे, और
मिस्रियो ने रथ और सवारो को सग लेकर
लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया।
७ और जब तुम ने यहोवा की दोहाई दी
तब उस ने तुम्हारे और मिस्रियो के बीच में
अन्धियारा कर दिया, और उन पर समुद्र को
बहाकर उनको डुबा दिया, और जो कुछ
मैं ने मिस्र मे किया उसे तुम लोगो ने अपनी
आखो से देखा, फिर तुम बहुत दिन तक
जगल मे रहे। ८ तब मै तुम को उन
एमोरियो के देश मे ले आया, जो यरदन के
उस पार बसे थे, और वे तुम से लड़े, और
मै ने उन्हें तुम्हारे वश मे कर दिया, और
तुम उनके देश के अधिकारी हो गए, और
मैं ने उनको तुम्हारे साम्हने से सत्यानाश
कर डाला। ९ फिर मोआब के राजा
सिप्पोर का पुत्र बालाक उठकर इस्राएल से
लड़ा, और तुम्हे शाप देने के लिये बोर के
पुत्र बेलाम को बुलवा भेजा, १० परन्तु मैं
ने बेलाम की सुनने के लिये नाही की; वह
तुम को आशीष ही आशीष देता गया; इस
प्रकार मैं ने तुम को उसके हाथ से बचाया।
११ तब तुम यरदन पार होकर यरीहो के
पास आए, और जब यरीहो के लोग, और
एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी,
हिव्वी, और यबूसी तुम से लडे, तब मै ने
उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया। १२ और
मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा, और उन्हो
ने एमोरियो के दोनो राजाओ को तुम्हारे
साम्हने से भगा दिया, देखो, यह तुम्हारी
तलवार वा धनुष का काम नहीं हुआ।
१३ फिर मै ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस
में तुम ने परिश्रम न किया था, और ऐसे
नगर भी दिए है जिन्हें तुम ने न बसाया था,
और तुम उन मे बसे हो; और जिन दाख
और जलपाई के बगीचो के फल तुम खाते
हो उन्हे तुम ने नही लगाया था। १४ इस-
लिये अब यहोवा का भय मानकर उसकी
सेवा खराई और सच्चाई से करो, और जिन
देवताओ की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के
उस पार और मिस्र मे करते थे, उन्हे दूर
करके यहोवा की सेवा करो। १५ और
यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हे बुरी लगे,
तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा
करोगे, चाहे उन देवताओ की जिनकी
सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार
करते थे, और चाहे एमोरियो के देवताओ
की सेवा करो जिनके देश मे तुम रहते
हो; परन्तु मै तो अपने घराने समेत यहोवा
ही की सेवा नित करूगा। १६ तब लोगो
ने उत्तर दिया, यहोवा को त्यागकर दूसरे
देवताओ की सेवा करनी हम से दूर रहे;
१७ क्योकि हमारा परमेश्वर यहोवा वही
है जो हम को और हमारे पुरखाओ को
दासत्व के घर, अर्थात् मिस्र देश से निकाल
ले आया, और हमारे देखते देखते बडे बड़े
आश्चर्य कर्म किए, और जिस मार्ग पर और
जितनी जातियो के मध्य मे से हम चले आते
थे उन मे हमारी रक्षा की, १८ और हमारे
साम्हने से इस देश मे रहनेवाली एमोरी
आदि सब जातियो को निकाल दिया
है; इसलिये हम भी यहोवा की सेवा
करेगे, क्योकि हमारा परमेश्वर वही है।
१९ यहोशू ने लोगो से कहा, तुम से यहोवा
की सेवा नहीं हो सकती, क्योकि वह पवित्र
परमेश्वर है; वह जलन रखनेवाला ईश्वर
है, वह तुम्हारे अपराध और पाप क्षमा न
करेगा। २० यदि तुम यहोवा को त्यागकर
पराए देवताओ की सेवा करने लगोगे, तो

यद्यपि वह तुम्हारा भला करता आया है
तौभी वह फिरकर तुम्हारी हानि करेगा,
और तुम्हारा अन्त भी कर डालेगा।
२१ लोगों ने यहोशू से कहा, नहीं, हम
यहोवा ही की सेवा करेंगे। २२ यहोशू
ने लोगों से कहा, तुम आप ही अपने साक्षी
हो कि तुम ने यहोवा की सेवा करनी
अंगीकार कर ली है। उन्हों ने कहा, हां,
हम साक्षी हैं। २३ यहोशू ने कहा, अपने
बीच में से पराए देवताओं को दूर करके
अपना अपना मन इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की ओर लगाओ। २४ लोगों ने
यहोशू से कहा, हम तो अपने परमेश्वर
यहोवा ही की सेवा करेंगे, और उसी की
बात मानेंगे। २५ तब यहोशू ने उसी दिन
उन लोगों से वाचा बन्धाई, और शकेम में
उनके लिये विधि और नियम ठहराया॥

२६ यह सारा वृत्तान्त यहोशू ने परमे-
श्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिख दिया,
और एक बड़ा पत्थर चुनकर वहां उस बांज-
वृक्ष के तले खड़ा किया, जो यहोवा के पवित्र
स्थान में था। २७ तब यहोशू ने सब लोगों
से कहा, सुनो, यह पत्थर हम लोगों का
साक्षी रहेगा, क्योंकि जितने वचन यहोवा ने
हम से कहे हैं उन्हें इस ने सुना है, इसलिये
यह तुम्हारा साक्षी रहेगा, ऐसा न हो कि
तुम अपने परमेश्वर से मुकर जाओ।
२८ तब यहोशू ने लोगों को अपने अपने
निज भाग पर जाने के लिये विदा किया॥

(यहोशू और एलीआजर का मरना)

२९ इन बातों के बाद यहोवा का दास,
नून का पुत्र यहोशू, एक सौ दस वर्ष
का होकर मर गया। ३० और उसको
तिम्नत्सेरह में, जो एप्रैम के पहाड़ी देश में
गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है,
उसी के भाग में मिट्टी दी गई। ३१ और
यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग
यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और
जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये
कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर
इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे।
३२ फिर यूसुफ की हड्डियां जिन्हें इस्राएली
मिस्र से ले आए थे वे शकेम की भूमि के उस
भाग में गाड़ी गईं, जिसे याकूब ने शकेम
के पिता हमोर से एक सौ चांदी के सिक्कों
में मोल लिया था, इसलिये वह यूसुफ
की सन्तान का निज भाग हो गया। ३३ और
हारून का पुत्र एलीआज़र भी मर गया,
और उसको एप्रैम के पहाड़ी देश में उस
पहाड़ी पर मिट्टी दी गई, जो उसके पुत्र
पीनहास के नाम पर गिबत्पीनहास कहलाती
है और उसको दे दी गई थी॥

न्यायियों

(कनानियो मे से किसी किसी का नष्ट होना
और किसी किसी का बच जाना)

१ यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियो
ने यहोवा से पूछा, कि कनानियो के
विरुद्ध लडने को हमारी ओर से पहिले
कौन चढाई करेगा? २ यहोवा ने उत्तर
दिया, यहूदा चढाई करेगा, सुनो, मै ने
इस देश को उसके हाथ मे दे दिया है।
३ तब यहूदा ने अपने भाई शिमोन से
कहा, मेरे सग मेरे भाग मे आ, कि हम
कनानियो से लडे, और मै भी तेरे भाग
मे जाऊगा। सो शिमोन उसके सग चला।
४ और यहूदा ने चढाई की, और यहोवा
ने कनानियो और परिज्जियो को उसके
हाथ मे कर दिया, तब उन्हो ने बेजेक
मे उन मे से दस हजार पुरुष मार डाले।
५ और बेजेक मे अदोनीबेजेक को पाकर
वे उस से लडे, और कनानियो और परि-
ज्जियो को मार डाला। ६ परन्तु अदोनी-
बेजेक भागा, तब उन्हो ने उसका पीछा
करके उसे पकड लिया, और उसके हाथ
पाव के अगूठे काट डाले। ७ तब अदोनी-
बेजेक ने कहा, हाथ पाव के अगूठे काटे
हुए सत्तर राजा मेरी मेज के नीचे टुकडे
बीनते थे, जैसा मै ने किया था, वैसा
ही बदला परमेश्वर ने मुझे दिया है। तब
वे उसे यरूशलेम को ले गए और वहा
वह मर गया॥

८ और यहूदियो ने यरूशलेम से लड-
कर उसे ले लिया, और तलवार से उसके
निवासियो को मार डाला, और नगर को
फूक दिया। ९ और तब यहूदी पहाडी
देश, और दक्खिन देश, और नीचे के देश
मे रहनेवाले कनानियो से लडने को गए।
१० और यहूदा ने उन कनानियो पर चढाई
की जो हेब्रोन मे रहते थे (हेब्रोन का नाम
तो पूर्वकाल मे किर्यतर्बा था), और उन्हो
ने शेशै, अहीमन, और तल्मै को मार
डाला। ११ वहा से उस ने जाकर दबीर
के निवासियो पर चढाई की। (दबीर
का नाम तो पूर्वकाल मे किर्यत्सेपेर था।)
१२ तब कालेब ने कहा, जो किर्यत्सेपेर
को मारके ले ले उसे मै अपनी बेटी अकसा
को ब्याह दूगा। १३ इस पर कालेब के
छोटे भाई कनजी ओत्नीएल ने उसे ले
लिया, और उस ने उसे अपनी बेटी अकसा
को ब्याह दिया। १४ और जब वह
ओत्नीएल के पास आई, तब उस ने उसको
अपने पिता से कुछ भूमि मागने को
उभारा, फिर वह अपने गदहे पर से
उतरी, तब कालेब ने उस से पूछा, तू
क्या चाहती है? १५ वह उस से बोली
मुझे आशीर्वाद दे, तू ने मुझे दक्खिन देश
तो दिया है, तो जल के सोते भी दे।
इस प्रकार कालेब ने उसको ऊपर और
नीचे के दोनो सोते दे दिए॥

१६ और मूसा के साले, एक केनी
मनुष्य के सन्तान, यहूदी के सग खजूर
वाले नगर से यहूदा के जगल मे गए जो
अराद के दक्खिन की ओर है, और जाकर
इस्राएली लोगो के साथ रहने लगे।
१७ फिर यहूदा ने अपने भाई शिमोन के
सग जाकर सपत मे रहनेवाले कनानियो

को मार लिया, और उस नगर को सत्या
नाश कर डाला। इसलिये उस नगर का
नाम होर्मा* पडा। १८ और यहूदा ने
चारो ओर की भूमि समेत अज्जा, अश-
कलोन, और एक्रोन को ले लिया।
१९ और यहोवा यहूदा के साथ रहा,
इसलिये उस ने पहाडी देश के निवासियो
को निकाल दिया, परन्तु तराई के निवा-
सियो के पास लोहे के रथ थे, इसलिये
वह उन्हें न निकाल सका। २० और
उन्हो ने मूसा के कहने के अनुसार हेब्रोन
कालेब को दे दिया और उस ने वहा
से अनाक के तीनो पुत्रो को निकाल दिया।
२१ और यरूशलेम मे रहनेवाले यबूसियो
को बिन्यामीनियो ने न निकाला, इसलिये
यबूसी आज के दिन तक यरूशलेम मे
बिन्यामीनियो के सग रहते है॥

२२ फिर यूसुफ के घराने ने बेतेल
पर चढाई की, और यहोवा उनके सग
था। २३ और यूसुफ के घराने ने बेतेल
का भेद लेने को लोग भेजे। (और उस
नगर का नाम पूर्वकाल में लूज था।)
२४ और पहरुओ ने एक मनुष्य को उस
नगर से निकलते हुए देखा, और उस से
कहा, नगर मे जाने का मार्ग हमें दिखा,
और हम तुझ पर दया करेंगे। २५ जब
उस ने उन्हें नगर मे जाने का मार्ग
दिखाया, तब उन्हो ने नगर को तो तल-
वार से मारा, परन्तु उस मनुष्य को सारे
घराने समेत छोड दिया। २६ उस
मनुष्य ने हित्तियो के देश में जाकर एक
नगर बसाया, और उसका नाम लूज रखा,
और आज के दिन तक उसका नाम वही
है॥

२७ मनश्शे ने अपने अपने गावो समेत
बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम, और
मगिद्दो के निवासियो को न निकाला,
इस प्रकार कनानी उस देश मे बसे ही
रहे। २८ परन्तु जब इस्राएली सामर्थी
हुए, तब उन्हो ने कनानियो से बेगारी
ली, परन्तु उन्हें पूरी रीति से न
निकाला॥

२९ और एप्रैम ने गेजेर मे रहनेवाले
कनानियो को न निकाला, इसलिये
कनानी गेजेर में उनके बीच में बसे
रहे॥

३० जबलून ने कित्रोन और नहलोल
के निवासियो को न निकाला, इसलिये
कनानी उनके बीच मे बसे रहे, और
उनके वश मे हो गए॥

३१ आशेर ने अक्को, सीदोन, अह-
लाब, अकजीब, हेलबा, अपीक, और रहोब
के निवासियो को न निकाला, ३२ इस-
लिये आशेरी लोग देश के निवासी कना-
नियो के बीच में बस गए, क्योंकि उन्हो
ने उनको न निकाला था॥

३३ नप्ताली ने बेतशेमेश और बेतनात
के निवासियो को न निकाला, परन्तु देश
के निवासी कनानियो के बीच में बस
गए, तौभी बेतशेमेश और बेतनात के
लोग उनके वश मे हो गए॥

३४ और एमोरियो ने दानियो को
पहाडी देश में भगा दिया, और तराई मे
आने न दिया, ३५ इसलिये एमोरी हेरेस
नाम पहाड, अय्यलोन और शालबीम मे बसे
ही रहे, तौभी यूसुफ का घराना यहा तक
प्रबल हो गया कि वे उनके वश में हो गए।
३६ और एमोरियो के देश का सिवाना
अक्रब्बीम नाम पर्वत की चढाई से आरम्भ
करके ऊपर की ओर था॥

---
* अर्थात् सत्यानाश करना।

की सारी सेना को अन्यजातियो के हरोशेत
से कीशोन नदी पर बुलवाया। १४ तव
दवोरा ने वाराक से कहा, उठ! क्योकि
आज वह दिन है जिस मे यहोवा सीसरा
को तेरे हाथ मे कर देगा। क्या यहोवा
तेरे आगे नही निकला है? इस पर
वाराक और उसके पीछे पीछे दस हजार
पुरुष तावोर पहाड से उतर पडे।
१५ तव यहोवा ने सारे रथो वरन सारी
सेना समेत सीसरा को तलवार से वाराक
के साम्हने घवरा दिया, और सीसरा
रथ पर से उतरके पाव पाव भाग चला।
१६ और वाराक ने अन्यजातियो के
हरोशेत तक रथो और सेना का पीछा
किया, और तलवार से सीसरा की सारी
सेना नष्ट की गई, और एक भी मनुष्य
न वचा॥

१७ परन्तु सीसरा पाव पाव हेवेर
केनी की स्त्री याएल के डेरे को भाग
गया, क्योकि हासोर के राजा यावीन और
हेवेर केनी मे मेल था। १८ तव याएल
सीसरा की भेट के लिये निकलकर उस
से कहने लगी, हे मेरे प्रभु, आ, मेरे पास
आ, और न डर। तव वह उसके पास
डेरे मे गया, और उस ने उसके ऊपर
कम्वल डाल दिया। १९ तव सीसरा ने
उस से कहा, मुझे प्यास लगी है, मुझे
थोडा पानी पिला। तव उस ने दूध की
कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया, और
उसको ओढा दिया। २० तव उस ने
उस से कहा, डेरे के द्वार पर खडी रह,
और यदि कोई आकर तुझ से पूछे, कि
यहा कोई पुरुष है? तव कहना, कोई भी
नही। २१ इसके वाद हेवेर की स्त्री याएल
ने डेरे की एक खूटी ली, और अपने हाथ
में एक हथौडा भी लिया, और दबे पाव
उसके पास जाकर खूटी को उसकी कन-
पटी में ऐसा ठोक दिया कि खूटी पार
होकर भूमि में धस गई, वह तो थका
था ही इसलिये गहरी नीद में सो रहा
था। सो वह मर गया। २२ जव वाराक
सीसरा का पीछा करता हुआ आया,
तव याएल उस से भेट करने के लिये
निकली, और कहा, इधर आ, जिसका
तू खोजी है उसको मैं तुझे दिखाऊगी।
तव उस ने उसके साथ जाकर क्या
देखा, कि सीसरा मरा पडा है, और
वह खूटी उसकी कनपटी मे गडी है।
२३ इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन
कनान के राजा यावीन को इस्राएलियो
के साम्हने नीचा दिखाया। २४ और
इस्राएली कनान के राजा यावीन पर प्रवल
होते गए, यहा तक कि उन्हो ने कनान
के राजा यावीन को नष्ट कर डाला॥

(दबोरा का गीत)

५ उसी दिन दवोरा और अवीनोअम
के पुत्र वाराक ने यह गीत गाया,
२ कि इस्राएल के अगुवो ने जो
अगुवाई की और प्रजा जो
अपनी ही इच्छा से भरती
हुई, इसके लिये यहोवा को
धन्य कहो!
३ हे राजाओ, सुनो; हे अधिपतियो,
कान लगाओ, मै आप यहोवा
के लिये गीत गाऊगी,
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का
मै भजन करूगी॥
४ हे यहोवा, जव तू सेईर से निकल
चला,
जव तू ने एदोम के देश से प्रस्थान
किया,

(इस्राएलियों का बिगड़ना, और उसका दण्ड
भोगना, और फिर पश्चात्ताप करके
छुटकारा पाना।)

२ और यहोवा का दूत गिलगाल से
बोकीम को जाकर कहने लगा, कि मैं
ने तुम को मिस्र से ले आकर उस देश में
पहुचाया है, जिसके विषय में मै ने तुम्हारे
पुरखाओ से शपथ खाई थी। और मै ने
कहा था, कि जो वाचा मै ने तुम से बान्धी
है, उसे मै कभी न तोड़ूगा, २ इसलिये
तुम इस देश के निवासियो से वाचा न
बान्धना, तुम उनकी वेदियो को ढा
देना। परन्तु तुम ने मेरी बात नही मानी।
तुम ने ऐसा क्यो किया है? ३ इसलिये
मै कहता हू, कि मै उन लोगो को तुम्हारे
साम्हने से न निकालूगा, और वे तुम्हारे
पाजर मे काटे, और उनके देवता तुम्हारे
लिये फदे ठहरेगे। ४ जब यहोवा के दूत
ने सारे इस्राएलियो से ये बाते कही, तब
वे लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे।
५ और उन्हो ने उस स्थान का नाम
बोकीम * रखा। और वहा उन्हो ने
यहोवा के लिये बलि चढाया॥

६ जब यहोशू ने लोगो को विदा किया
था, तब इस्राएली देश को अपने अधि-
कार मे कर लेने के लिये अपने अपने
निज भाग पर गए। ७ और यहोशू के
जीवन भर, और उन वृद्ध लोगो के जीवन
भर जो यहोशू के मरने के बाद जीवित
रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इस्रा-
एल के लिये कैसे कैसे बडे काम किए
है, इस्राएली लोग यहोवा की सेवा
करते रहे। ८ निदान यहोवा का दास
नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष
का होकर मर गया। ९ और उसको
तिम्नथेरेस में जो एप्रैम के पहाड़ी देश
में गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर
है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई।
१० और उस पीढ़ी के सब लोग भी
अपने अपने पितरों में मिल गए, तब
उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके
लोग न तो यहोवा को जानते थे और
न उस काम को जो उस ने इस्राएल के
लिये किया था॥

११ इसलिये इस्राएली वह करने लगे
जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और
बाल नाम देवताओ की उपासना करने
लगे, १२ वे अपने पूर्वजो के परमेश्वर
यहोवा को, जो उन्हे मिस्र देश से निकाल
लाया था, त्यागकर पराये देवताओ, अर्थात्
आसपास के लोगो के देवताओ की उपा-
सना करने लगे, और उन्हे दण्डवत् किया;
और यहोवा को रिस दिलाई। १३ वे
यहोवा को त्याग कर के बाल देवताओ और
अशतोरेत देवियो की उपासना करने
लगे। १४ इसलिये यहोवा का कोप
इस्राएलियो पर भडक उठा, और उस ने
उनको लुटेरो के हाथ मे कर दिया जो
उन्हें लूटने लगे, और उस ने उनको
चारो ओर के शत्रुओ के आधीन कर
दिया, और वे फिर अपने शत्रुओ के
साम्हने ठहर न सके। १५ जहा कही वे
बाहर जाते वहा यहोवा का हाथ उनकी
बुराई मे लगा रहता था, जैसे यहोवा
ने उन से कहा था, वरन यहोवा ने शपथ
भी खाई थी, इस प्रकार वे बड़े संकट
मे पड गए। १६ तौभी यहोवा उनके
लिये न्यायी ठहराता था जो उन्हे लूटने
वाले के हाथ से छुडाते थे। १७ परन्तु
वे अपने न्यायियो की भी नही मानते
थे, वरन व्यभिचारिन की नाईं पराये

* अर्थात् रोनेवाले।

देवताओ के पीछे चलते और उन्हे दण्ड-
वत् करते थे, उनके पूर्वज जो यहोवा
की आज्ञाए मानते थे, उनकी उस लीक
को उन्हो ने शीघ्र ही छोड दिया, और
उनके अनुसार न किया। १८ और जब
जब यहोवा उनके लिये न्यायी को ठह-
राता तब तब वह उस न्यायी के सग
रहकर उसके जीवन भर उन्हें शत्रुओ
के हाथ से छुडाता था, क्योकि यहोवा
उनका कराहना जो अन्धेर और उपद्रव
करनेवालो के कारण होता था सुनकर
दुखी था। १९ परन्तु जब न्यायी मर
जाता, तब वे फिर पराये देवताओ के
पीछे चलकर उनकी उपासना करते, और
उन्हें दण्डवत् करके अपने पुरखाओ से
अधिक बिगड जाते थे, और अपने बुरे
कामो और हठीली चाल को नही छोडते
थे। २० इसलिये यहोवा का कोप इस्राएल
पर भडक उठा, और उस ने कहा, इस
जाति ने उस वाचा को जो मैं ने उनके
पूर्वजो से बान्धी थी तोड दिया, और
मेरी बात नही मानी, २१ इस कारण
जिन जातियो को यहोशू मरते समय छोड
गया है उन में से मै अब किसी को उनके
साम्हने से न निकालूगा, २२ जिस से उनके
द्वारा मै इस्राएलियो की परीक्षा करू, कि
जैसे उनके पूर्वज मेरे मार्ग पर चलते थे वैसे
ही ये भी चलेंगे कि नही। २३ इसलिये
यहोवा ने उन जातियो को एकाएक न
निकाला, वरन रहने दिया, और उस ने उन्हें
यहोशू के हाथ में भी उनको न सौंपा था॥

३ इस्राएलियो में से जितने कनान
में की लडाइयो में भागी न हुए थे,
उन्हें परखने के लिये यहोवा ने इन जातियो
को देश में इसलिये रहने दिया, २ कि
पीढी पीढी के इस्राएलियो मे से जो लडाई
को पहिले न जानते थे वे सीखे, और
जान ले, ३ अर्थात् पाचो सरदारो समेत
पलिश्तियो, और सब कनानियो, और
सीदोनियो, और बालहेर्मोन नाम पहाड
से लेकर हमात की तराई तक लबानोन
पर्वत में रहनेवाले हिव्वियो को। ४ ये
इसलिये रहने पाए* कि इनके द्वारा इस्रा-
एलियो की इस बात मे परीक्षा हो, कि
जो आज्ञाए यहोवा ने मूसा के द्वारा उनके
पूर्वजो को दिलाई थी उन्हें वे मानेंगे वा
नही। ५ इसलिये इस्राएली कनानियो,
हित्तियो, एमोरियो, परिज्जियो, हिव्वियो,
और यबूसियो के बीच में बस गए, ६ तब
वे उनकी बेटिया व्याह में लेने लगे, और
अपनी बेटिया उनके बेटो को व्याह में
देने लगे, और उनके देवताओ की भी
उपासना करने लगे॥

(ओत्नीएल का चरित्र)

७ इस प्रकार इस्राएलियो ने यहोवा
की दृष्टि में बुरा किया, और अपने पर-
मेश्वर यहोवा को भूलकर बाल नाम
देवताओ और अशेरा नाम देवियो की
उपासना करने लग गए। ८ तब यहोवा
का क्रोध इस्राएलियो पर भडका, और
उस ने उनको अरम्नहरैम के राजा कूश-
न्रिशातैम के अधीन कर दिया, सो इस्रा-
एली आठ वर्ष तक कूशन्रिशातैम के अधीन
में रहे। ९ तब इस्राएलियो ने यहोवा की
दोहाई दी, और उसने इस्राएलियो के लिये
कालेब के छोटे भाई ओत्नीएल नाम एक
कनजी छुडानेवाले को ठहराया, और
उस ने उनको छुडाया। १० उस में
यहोवा का आत्मा समाया, और वह

* मूल में—छूप।

इस्राएलियो का न्यायी बन गया, और
लडने को निकला, और यहोवा ने अराम
के राजा कूशत्रिशातैम को उसके हाथ मे
कर दिया, और वह कूशत्रिशातैम पर
जयवन्त हुआ। ११ तब चालीस वर्ष तक
देश में शान्ति बनी रही। और उन्ही
दिनो में कनजी ओत्नीएल मर गया॥

(एहूद का चरित्र)

१२ तब इस्राएलियो ने फिर यहोवा
की दृष्टि मे बुरा किया; और यहोवा
ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल
पर प्रबल किया, क्योकि उन्हो ने यहोवा
की दृष्टि मे बुरा किया था। १३ इस-
लिये उस ने अम्मोनियो और अमालेकियो
को अपने पास इकट्ठा किया, और जाकर
इस्राएल को मार लिया, और खजूरवाले
नगर को अपने वश मे कर लिया।
१४ तब इस्राएली अठारह वर्ष तक मोआब
के राजा एग्लोन के अधीन मे रहे।
१५ फिर इस्राएलियो ने यहोवा की दोहाई
दी, और उस ने गेरा के पुत्र एहूद नाम
एक बिन्यामीनी को उनका छुडानेवाला
ठहराया, वह बैहत्था था। इस्राएलियो
ने उसी के हाथ से मोआब के राजा एग्लोन
के पास कुछ भेट भेजी। १६ एहूद ने
हाथ भर लम्बी एक दोधारी तलवार
बनवाई थी, और उसको अपने वस्त्र
के नीचे दाहिनी जाघ पर लटका लिया।
१७ तब वह उस भेट को मोआब के
राजा एग्लोन के पास जो बडा मोटा
पुरुष था ले गया। १८ जब वह भेट
को दे चुका, तब भेट के लानेवाले को
विदा किया। १९ परन्तु वह आप गिल-
गाल के निकट की खुदी हुई मूरतो के
पास लौट गया, और एग्लोन के पास
कहला भेजा, कि हे राजा, मुझे तुझ से
एक भेद की बात कहनी है। तब राजा
ने कहा, थोडी देर के लिये बाहर जाओ*।
तब जितने लोग उसके पास उपस्थित
थे वे सब बाहर चले गए। २० तब
एहूद उसके पास गया, वह तो अपनी
एक हवादार अटारी मे अकेला बैठा था।
एहूद ने कहा, परमेश्वर की ओर से मुझे
तुझ से एक बात कहनी है। तब वह
गद्दी पर से उठ खडा हुआ। २१ इतने
मे एहूद ने अपना बाया हाथ बढाकर
अपनी दाहिनी जाघ पर से तलवार खीच-
कर उसकी तोंद मे घुसेड दी, २२ और
फल के पीछे मूठ भी पैठ गई, और फल
चर्बी मे धसा रहा, क्योकि उस ने तलवार
को उसकी तोंद मे से न निकाला, वरन
वह उसके आरपार निकल गई। २३ तब
एहूद छज्जे से निकलकर बाहर गया,
और अटारी के किवाड खीचकर उसको
बन्द करके ताला लगा दिया। २४ उसके
निकल जाते ही राजा† के दास आए,
तो क्या देखते हैं, कि अटारी के
किवाडो मे ताला लगा है, इस कारण
वे बोले, कि निश्चय वह हवादार कोठरी
में लघुशका करता होगा। २५ वे बाट
जोहते जोहते लज्जित हो गए, तब यह
देखकर कि वह अटारी के किवाड नही
खोलता, उन्हो ने कुजी लेकर किवाड
खोले तो क्या देखा, कि उनका स्वामी
भूमि पर मरा पडा है। २६ जब तक
वे सोच विचार कर ही रहे थे तब तक
एहूद भाग निकला, और खुदी हुई मूरतो
की परली ओर होकर सेइरे मे जाकर
शरण ली। २७ वहा पहुचकर उस ने

* मूल में—चुप रहो।
† मूल में—उस।

एप्रैम के पहाडी देश मे नरसिगा फूका,
तव इस्राएली उसके सग होकर पहाडी
देश से उसके पीछे पीछे नीचे गए।
२८ और उस ने उन से कहा, मेरे पीछे
पीछे चले आओ, क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे
मोआवी शत्रुओ को तुम्हारे हाथ में कर
दिया है। तव उन्हो ने उसके पीछे पीछे
जाके यरदन के घाटो को जो मोआव
देश की ओर है ले लिया, और किसी
को उतरने न दिया। २९ उस समय
उन्हो ने कोई दस हजार मोआवियो को
मार डाला, वे सब के सब हृष्ट पुष्ट और
शूरवीर थे, परन्तु उन में से एक भी न
वचा। ३० इस प्रकार उस समय मोआव
इस्राएल के हाथ के तले दव गया। तव
अस्सी वर्ष तक देश मे शान्ति वनी रही॥
३१ उसके वाद अनात का पुत्र शमगर
हुआ, उस ने छ सौ पलिश्ती पुरुषो को
वैल के पैने मे मार डाला, इस कारण
वह भी इस्राएल का छुडानेवाला हुआ॥

(दवोरा और बाराक का चरित्र)

४ जब एहूद मर गया तव इस्राएलियो
ने फिर यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।
२ इसलिये यहोवा ने उनको हासोर मे
विराजनेवाले कनान के राजा यावीन के
अधीन में कर दिया, जिसका सेनापति
सीसरा था, जो अन्यजातियो की हरोशेत
का निवासी था। ३ तव इस्राएलियो ने
यहोवा की दोहाई दी, क्योंकि सीसरा
के पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और वह
इस्राएलियो पर वीस वर्ष तक वडा अन्धेर
करता रहा॥
४ उस समय लप्पीदोत की स्त्री
दवोरा जो नविया थी इस्राएलियो का
न्याय करती थी। एप्रैम के
पहाडी देश में रामा और वेतेल के वीच
में दवोरा के खजूर के तले वैठा करती
थी, और इस्राएली उसके पास न्याय के
लिये जाया करते थे। ६ उस ने अवी-
नोअम के पुत्र वाराक को केदेश नप्ताली
में से वुलाकर कहा, क्या इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा नही दी,
कि तू जाकर तावोर पहाड पर चढ*,
और नप्तालियो और जबूलूनियो में के
दस हजार पुरुषो को सग ले जा? ७ तव
मैं यावीन के सेनापति सीसरा के रथो
और भीडभाड समेत कीशोन नदी तक
तेरी ओर खीच ले आऊगा, और उसको
तेरे हाथ में कर दूगा। ८ वाराक ने
उस से कहा, यदि तू मेरे सग चलेगी तो
मै जाऊगा, नही तो न जाऊगा। ९ उस
ने कहा, निःसन्देह मैं तेरे सग चलूगी,
तौभी इस यात्रा से तेरी तो कुछ वडाई
न होगी, क्योंकि यहोवा सीसरा को एक
स्त्री के अधीन कर देगा। तब दवोरा
उठकर वाराक के सग केदेश को गई।
१० तव बाराक ने जवूलून और नप्ताली के
लोगो को केदेश में वुलवा लिया, और
उसके पीछे दस हजार पुरुष चढ गए,
और दवोरा उसके सग चढ गई।
११ हेवेर नाम केनी ने उन केनियो मे
से, जो मूसा के साले होवाव के वश के थे,
अपने को अलग करके केदेश के पास के
सानन्नीम के वाजवृक्ष तक जाकर अपना डेरा
वही डाला था। १२ जब सीसरा को यह
समाचार मिला कि अवीनोअम का पुत्र
वाराक तावोर पहाड पर चढ गया है,
१३ तव सीसरा ने अपने सव रथ, जो
लोहे के नौ सौ रथ थे, और अपने सग

* मूल में—खींच।

की सारी सेना को अन्यजातियो के हरोशेत
से कीशोन नदी पर बुलवाया। १४ तब
दबोरा ने बाराक से कहा, उठ! क्योकि
आज वह दिन है जिस मे यहोवा सीसरा
को तेरे हाथ मे कर देगा। क्या यहोवा
तेरे आगे नही निकला है? इस पर
बाराक और उसके पीछे पीछे दस हजार
पुरुष ताबोर पहाड से उतर पडे।
१५ तब यहोवा ने सारे रथो वरन सारी
सेना समेत सीसरा को तलवार से बाराक
के साम्हने घबरा दिया, और सीसरा
रथ पर से उतरके पाव पाव भाग चला।
१६ और बाराक ने अन्यजातियो के
हरोशेत तक रथो और सेना का पीछा
किया, और तलवार से सीसरा की सारी
सेना नष्ट की गई, और एक भी मनुष्य
न बचा॥

१७ परन्तु सीसरा पाव पाव हेबेर
केनी की स्त्री याएल के डेरे को भाग
गया, क्योकि हासोर के राजा याबीन और
हेबेर केनी मे मेल था। १८ तब याएल
सीसरा की भेंट के लिये निकलकर उस
से कहने लगी, हे मेरे प्रभु, आ, मेरे पास
आ, और न डर। तब वह उसके पास
डेरे में गया, और उस ने उसके ऊपर
कम्बल डाल दिया। १९ तब सीसरा ने
उस से कहा, मुझे प्यास लगी है, मुझे
थोडा पानी पिला। तब उस ने दूध की
कुप्पी खोलकर उसे दूध पिलाया, और
उसको ओढा दिया। २० तब उस ने
उस से कहा, डेरे के द्वार पर खडी रह,
और यदि कोई आकर तुझ से पूछे, कि
यहा कोई पुरुष है? तब कहना, कोई भी
नही। २१ इसके बाद हेबेर की स्त्री याएल
ने डेरे की एक खूटी ली, और अपने हाथ
मे एक हथौडा भी लिया, और दबे पाव
उसके पास जाकर खूटी को उसकी कन-
पटी मे ऐसा ठोक दिया कि खूटी पार
होकर भूमि मे धस गई, वह तो थका
था ही इसलिये गहरी नीद मे सो रहा
था। सो वह मर गया। २२ जब बाराक
सीसरा का पीछा करता हुआ आया,
तब याएल उस से भेंट करने के लिये
निकली, और कहा, इधर आ, जिसका
तू खोजी है उसको मैं तुझे दिखाऊगी।
तब उस ने उसके साथ जाकर क्या
देखा, कि सीसरा मरा पडा है, और
वह खूटी उसकी कनपटी मे गडी है।
२३ इस प्रकार परमेश्वर ने उस दिन
कनान के राजा याबीन को इस्राएलियो
के साम्हने नीचा दिखाया। २४ और
इस्राएली कनान के राजा याबीन पर प्रबल
होते गए, यहा तक कि उन्हो ने कनान
के राजा याबीन को नष्ट कर डाला॥

(दबोरा का गीत)

५ उसी दिन दबोरा और अबीनोअम
के पुत्र बाराक ने यह गीत गाया,
२ कि इस्राएल के अगुवो ने जो
अगुवाई की और प्रजा जो
अपनी ही इच्छा से भरती
हुई, इसके लिये यहोवा को
धन्य कहो!
३ हे राजाओ, सुनो; हे अधिपतियो,
कान लगाओ, मैं आप यहोवा
के लिये गीत गाऊगी,
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का
मैं भजन करूगी॥
४ हे यहोवा, जब तू सेईर से निकल
चला,
जब तू ने एदोम के देश से प्रस्थान
किया,

तब पृथ्वी डोल उठी, और
आकाश टूट पडा,
बादल से भी जल बरसने लगा ॥
५ यहोवा के प्रताप से पहाड,
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के
प्रताप से वह सीनै पिघलकर
बहने लगा ॥
६ अनात के पुत्र शमगर के दिनो में,
और याएल के दिनों में सडकें
सूनी पडी थी,
और बटोही पगडडियों से चलते
थे ॥
७ जब तक मैं दबोरा न उठी,
जब तक मैं इस्राएल में माता
होकर न उठी,
तब तक गाव सूने पडे थे ॥*
८ नये नये देवता माने गए,
उस समय फाटको में लडाई होती
थी।
क्या चालीस हजार इस्राएलियो
में भी
ढाल वा बर्छी कही देखने में
आती थी ?
९ मेरा मन इस्राएल के हाकिमो
की ओर लगा है,
जो प्रजा के बीच में अपनी ही
इच्छा से भरती हुए।
यहोवा को धन्य कहो ॥
१० हे उजली गदहियो पर चढनेवालो,
हे फर्शो पर विराजनेवालो,
हे मार्ग पर पैदल चलनेवालो,
ध्यान रखो ॥
११ पनघटो के आस पास धनुर्धारियो
की बात के कारण,
वहा वे यहोवा के धर्ममय कामो
का,
इस्राएल के लिये उसके धर्ममय
कामो का बखान करेंगे।
उस समय यहोवा की प्रजा के
लोग फाटको के पास गए ॥
१२ जाग, जाग, हे दबोरा !
जाग, जाग, गीत सुना !
हे बाराक, उठ, हे अबीनोअम
के पुत्र, अपने बन्धुओ को बन्धु-
आई में ले चल।
१३ उस समय थोडे से* रईस प्रजा
समेत उतर पडे,
यहोवा शूरवीरो के विरुद्ध † मेरे
हित उतर आया ॥
१४ एप्रैम में से वे आए जिसकी जड
अमालेक में है,
हे बिन्यामीन, तेरे पीछे तेरे दलो
में,
माकीर में से हाकिम, और जबू-
लून में से सेनापति का दण्ड
लिए हुए उतरे,
१५ और इस्साकार के हाकिम
दबोरा के सग हुए,
जैसा इस्साकार वैसा ही बाराक
भी था,
उसके पीछे लगे हुए वे तराई में
झपटकर गए।
रूबेन की नदियो के पास
बडे बडे काम मन मे ठाने
गए ॥
१६ तू चरवाहो ‡ का सीटी बजाना
सुनने को

* वा इस्राएलियों में कोई प्रधान न रहा।

* मूल में—प्रजा के बचे हुए।
† वा सग।
‡ मूल में—भेड बकरियों के

भेड़शालों के बीच क्यों बैठा
रहा ?
रूबेन की नदियों के पास बड़े बड़े
काम सोचे गए ॥
१७ गिलाद यरदन पार रह गया,
और दान क्यों जहाजों में रह
गया ?
आशेर समुद्र के तीर पर बैठा
रहा,
और उसकी खाड़ियों के पास
रह गया ॥
१८ जबलून अपने प्राण पर खेलने-
वाले लोग ठहरे,
नप्ताली भी देश के ऊंचे ऊंचे
स्थानों पर वैसा ही ठहरा ।
१९ राजा आकर लड़े,
उस समय कनान के राजा मगिद्दो
के सोतों के पास तानाक में
लड़े,
पर रुपयों का कुछ लाभ न
पाया ॥
२० आकाश की ओर से भी लड़ाई
हुई,
वरन ताराओं ने अपने अपने
मण्डल से सीसरा से लड़ाई
की ॥
२१ कीशोन नदी ने उनको बहा दिया,
अर्थात् वही प्राचीन नदी जो
कीशोन नदी है ।
हे मन, हियाव बान्धे आगे बढ़ ॥
२२ उस समय घोड़े के खुरों से टाप
का शब्द होने लगा,
उनके बलिष्ट घोड़ों के कूदने
से यह हुआ ॥
२३ यहोवा का दूत कहता है, कि
मेरोज को शाप दो,
उसके निवासियों को भारी शाप
दो,
क्योंकि वे यहोवा की सहायता
करने को,
शूरवीरों के विरुद्ध यहोवा की
सहायता करने को न आए ॥
२४ सब स्त्रियों में से केनी हेबेर की
स्त्री याएल धन्य ठहरेगी;
डेरों में से रहनेवाली सब स्त्रियों
में वह धन्य ठहरेगी ॥
२५ सीसरा ने पानी मांगा, उस ने
दूध दिया,
रईसों के योग्य बर्तन में वह
मक्खन ले आई ॥
२६ उस ने अपना हाथ खूंटी की ओर,
अपना दाहिना हाथ बढ़ई के
हथौड़े की ओर बढ़ाया,
और हथौड़े से सीसरा को मारा,
उसके सिर को फोड़ डाला,
और उसकी कनपटी को आर-
पार छेद दिया ॥
२७ उस स्त्री के पांवों पर वह
झुका, वह गिरा, वह पड़ा
रहा,
उस स्त्री के पांवों पर वह झुका,
वह गिरा, जहां झुका, वहीं
मरा पड़ा रहा ॥
२८ खिड़की में से एक स्त्री झांककर
चिल्लाई,
सीसरा की माता ने झिलमिली
की ओट से पुकारा,
कि उसके रथ के आने में इतनी
देर क्यों लगी ?
उसके रथों के पहियों को अबेर
क्यों हुई है ?

२९ उसकी बुद्धिमान प्रतिष्ठित
स्त्रियों ने उसे उत्तर दिया,
वरन उस ने अपने आप को उस
प्रकार उत्तर दिया,
३० कि क्या उन्हों ने लूट पाकर बाट
नहीं ली ?
क्या एक एक पुरुष को एक एक
वरन दो दो कुवारियां,
और सीसरा को रंगे हुए वस्त्र
की लूट,
वरन बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र
की लूट,
और लूटे हुओं के गले में दोनों
ओर बूटे काढ़े हुए रंगीले वस्त्र
नहीं मिले ?
३१ हे यहोवा, तेरे सब शत्रु ऐसे ही
नाश हो जाएं !
परन्तु उसके प्रेमी लोग प्रताप के
साथ उदय होते हुए सूर्य के
समान तेजोमय हों ॥
फिर देश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही ॥

(गिदोन का चरित्र)

६ तब इस्राएलियों ने यहोवा की
दृष्टि में बुरा किया, इसलिये यहोवा
ने उन्हें मिद्यानियों के वश में सात वर्ष
कर रखा। २ और मिद्यानी इस्राएलियों
पर प्रबल हो गए। मिद्यानियों के डर
के मारे इस्राएलियों ने पहाड़ों के गहिरे
खड्डों, और गुफाओं, और किलों को अपने
निवास बना लिए। ३ और जब जब
इस्राएली बीज बोते तब तब मिद्यानी
और अमालेकी और पूर्वी लोग उनके
विरुद्ध चढ़ाई करके ४ अज्जा तक
छावनी डाल डालकर भूमि की उपज
नाश कर डालते थे, और इस्राएलियों के
लिये न तो कुछ भोजनवस्तु, और न भेड़-
बकरी, और न गाय-बैल, और न गदहा
छोड़ते थे। ५ क्योंकि वे अपने पशुओं
और डेरों को लिए हुए चढ़ाई करते, और
टिड्डियों के दल के समान बहुत आते थे,
और उनके ऊंट भी अनगिनत होते थे,
और वे देश को उजाड़ने के लिये उस में
आया करते थे। ६ और मिद्यानियों के
कारण इस्राएली बड़ी दुर्दशा में पड़ गए,
तब इस्राएलियों ने यहोवा की दोहाई
दी ॥

७ जब इस्राएलियों ने मिद्यानियों के
कारण यहोवा की दोहाई दी, ८ तब
यहोवा ने इस्राएलियों के पास एक नबी
को भेजा, जिस ने उन से कहा, इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि
मैं तुम को मिस्र में से ले आया, और
दासत्व के घर से निकाल ले आया,
९ और मैं ने तुम को मिस्रियों के हाथ
से, वरन जितने तुम पर अन्धेर करते
थे उन सभों के हाथ से छुड़ाया, और
उनको तुम्हारे साम्हने से बरबस निकाल-
कर उनका देश तुम्हें दे दिया, १० और
मैं ने तुम से कहा, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूं, एमोरी लोग जिनके देश में
तुम रहते हो उनके देवताओं का भय
न मानना। परन्तु तुम ने मेरा कहना
नहीं माना ॥

११ फिर यहोवा का दूत आकर उस
बांजवृक्ष के तले बैठ गया, जो ओप्रा में
अबीएजेरी योआश का था, और उसका
पुत्र गिदोन एक दाखरस के कुण्ड में
गेहूं इसलिये झाड़ रहा था कि उसे मिद्या-
नियों से छिपा रखे। १२ उसको यहोवा
के दूत ने दर्शन देकर कहा, हे शूरवीर
सूरमा, यहोवा तेरे संग है। १३ गिदोन

ने उस से कहा, हे मेरे प्रभु, विनती सुन,
यदि यहोवा हमारे सग होता, तो हम पर
यह सब विपत्ति क्यो पडती? और
जितने आश्चर्यकर्मो का वर्णन हमारे
पुरखा यह कहकर करते थे, कि क्या
यहोवा हम को मिस्र से छुडा नही लाया,
वे कहा रहे? अब तो यहोवा ने हम को
त्याग दिया, और मिद्यानियो के हाथ कर
दिया है। १४ तब यहोवा ने उस पर
दृष्टि करके कहा, अपनी इसी शक्ति
पर जा और तू इस्राएलियो को मिद्यानियो
के हाथ से छुडाएगा, क्या मै ने तुझे
नही भेजा? १५ उस ने कहा, हे मेरे
प्रभु, विनती सुन, मै इस्राएल को क्योकर
छुडाऊ? देख, मेरा कुल मनश्शे मे
सब से कगाल है, फिर मै अपने पिता के
घराने मे सब से छोटा हू। १६ यहोवा
ने उस से कहा, निश्चय मै तेरे सग रहूगा,
सो तू मिद्यानियो को ऐसा मार लेगा
जैसा एक मनुष्य को। १७ गिदोन ने
उस से कहा, यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर
हो, तो मुझे इसका कोई चिन्ह दिखा कि
तू ही मुझ से बाते कर रहा है। १८ जब
तक मै तेरे पास फिर आकर अपनी भेट
निकालकर तेरे साम्हने न रखू, तब तक
तू यहा से न जा। उस ने कहा, मै तेरे
लौटने तक ठहरा रहूगा। १९ तब गिदोन
ने जाकर बकरी का एक बच्चा और
एक एपा मैदे की अखमीरी रोटिया तैयार
की, तब मास को टोकरी मे, और जूस
को तसले मे रखकर बाजवृक्ष के तले
उसके पास ले जाकर दिया। २० पर-
मेश्वर के दूत ने उस से कहा, मास और
अखमीरी रोटियो को लेकर इस चट्टान
पर रख दे, और जूस को उण्डेल दे।
उस ने ऐसा ही किया। २१ तब यहोवा
के दूत ने अपने हाथ की लाठी को
बढाकर मास और अखमीरी रोटियो को
छूआ, और चट्टान से आग निकली जिस
से मास और अखमीरी रोटिया भस्म
हो गई, तब यहोवा का दूत उसकी दृष्टि
से अन्तरध्यान हो गया। २२ जब गिदोन
ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था,
तब गिदोन कहने लगा, हाय, प्रभु
यहोवा! मै ने तो यहोवा के दूत को
साक्षात देखा है। २३ यहोवा ने उस से
कहा, तुझे शान्ति मिले; मत डर, तू न
मरेगा। २४ तब गिदोन ने वहा यहोवा
की एक वेदी बनाकर उसका नाम यहोवा
शालोम* रखा। वह आज के दिन तक
अबीएजेरियो के ओप्रा मे बनी है॥

२५ फिर उसी रात को यहोवा ने गिदोन
से कहा, अपने पिता का जवान बैल, अर्थात्
दूसरा सात वर्ष का बैल ले, और बाल की
जो वेदी तेरे पिता की है उसे गिरा दे, और
जो अशेरा देवी उसके पास है उसे काट डाल,
२६ और उस दृढ स्थान की चोटी पर
ठहराई हुई रीति से अपने परमेश्वर यहोवा
की एक वेदी बना, तब उस दूसरे बैल
को ले, और उस अशेरा की लकड़ी जो
तू काट डालेगा जलाकर होमबलि चढा।
२७ तब गिदोन ने अपने सग दस दासो
को लेकर यहोवा के वचन के अनुसार
किया, परन्तु अपने पिता के घराने और
नगर के लोगो के डर के मारे वह काम
दिन को न कर सका, इसलिये रात मे
किया। २८ बिहान को नगर के लोग
सवेरे उठकर क्या देखते है, कि बाल की
वेदी गिरी पडी है, और उसके पास की
अशेरा कटी पडी है, और दूसरा बैल

* अर्थात् यहोवा शान्ति [देनेवाला है।]

बनाई हुई वेदी पर चढ़ाया हुआ है।
२९ तब वे आपस में कहने लगे, यह
काम किस ने किया? और पूछपाछ
और ढूंढ़-ढांढ करके वे कहने लगे, कि यह
योआश के पुत्र गिदोन का काम है।
३० तब नगर के मनुष्यों ने योआश से
कहा, अपने पुत्र को बाहर ले आ, कि
मार डाला जाए, क्योंकि उस ने बाल
की वेदी को गिरा दिया है, और उसके
पास की अशेरा को भी काट डाला है।
३१ योआश ने उन सभों से जो उसके
साम्हने खड़े हुए थे कहा, क्या तुम
बाल के लिये वाद विवाद करोगे?
क्या तुम उसे बचाओगे? जो कोई उसके
लिये वाद विवाद करे वह मार डाला
जाएगा। बिहान तक ठहरे रहो, तब
तक यदि वह परमेश्वर हो, तो जिस
ने उसकी वेदी गिराई है उस से वह आप
ही अपना वाद विवाद करे। ३२ इसलिये
उस दिन गिदोन का नाम यह कहकर
यरुब्बाल* रखा गया, कि इस ने जो बाल
की वेदी गिराई है तो इस पर बाल आप
वाद विवाद कर ले॥

३३ इसके बाद सब मिद्यानी और
अमालेकी और पूर्वी इकट्ठे हुए, और
पार आकर यिज्रेल की तराई में डेरे
डाले। ३४ तब यहोवा का आत्मा
गिदोन में समाया†, और उस ने नरसिंगा
फूंका, तब अबीएजेरी उसकी सुनने के
लिये इकट्ठे हुए। ३५ फिर उस ने कुल
मनश्शे के पास अपने दूत भेजे, और
वे भी उसके समीप इकट्ठे हुए। और
उस ने आशेर, जबूलून, और नप्ताली के
पास भी दूत भेजे, तब वे भी उस से
मिलने को चले आए। ३६ तब गिदोन
ने परमेश्वर से कहा, यदि तू अपने वचन
के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुड़ा-
एगा, ३७ तो सुन, मैं एक भेड़ी की ऊन
खलिहान में रखूंगा, और यदि ओस केवल
उस ऊन पर पड़े, और उसे छोड़ सारी
भूमि सूखी रह जाए, तो मैं जान लूंगा
कि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल
को मेरे द्वारा छुड़ाएगा। ३८ और ऐसा
ही हुआ। इसलिये जब उस ने बिहान
को सवेरे उठकर उस ऊन को दबाकर
उस में से ओस निचोड़ी, तब एक कटोरा
भर गया। ३९ फिर गिदोन ने परमेश्वर
से कहा, यदि मैं एक बार फिर कहूं, तो
तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के, मैं इस
ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा
करूं, अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रहे,
और सारी भूमि पर ओस पड़े। ४० उस
रात को परमेश्वर ने ऐसा ही किया,
अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रह गई, और
सारी भूमि पर ओस पड़ी॥

७ तब गिदोन जो यरुब्बाल भी कह-
लाता है और सब लोग जो उसके
संग थे सवेरे उठे, और हरोद नाम सोते
के पास अपने डेरे खड़े किए, और मिद्या-
नियों की छावनी उनकी उत्तरी ओर
मोरे नाम पहाड़ी के पास तराई में पड़ी
थी॥

२ तब यहोवा ने गिदोन से कहा, जो
लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं कि मैं मिद्या-
नियों को उनके हाथ नहीं कर सकता,
नहीं तो इस्राएल यह कहकर मेरे विरुद्ध
अपनी बड़ाई मारने लगे, कि हम अपने
ही भुजबल के द्वारा बचे हैं। ३ इसलिये

* अर्थात् बाल वाद विवाद करे।
† मूल में—आत्मा ने गिदोन को पहिन लिया।

तू जाकर लोगो मे यह प्रचार करके सुना
दे, कि जो कोई डर के मारे थरथराता
हो, वह गिलाद पहाड से लौटकर चला
जाए। तब बाईस हजार लोग लौट गए,
और केवल दस हजार रह गए॥
४ फिर यहोवा ने गिदोन से कहा,
अब भी लोग अधिक हैं, उन्हे सोते के
पास नीचे ले चल, वहा मैं उन्हे तेरे लिये
परखूगा, और जिस जिसके विषय मे
मैं तुझ से कहू, कि यह तेरे सग चले,
वह तो तेरे सग चले, और जिस जिसके
विषय मे मैं कहू, कि यह तेरे सग न
जाए, वह न जाए। ५ तब वह उनको
सोते के पास नीचे ले गया, वहा यहोवा
ने गिदोन से कहा, जितने कुत्ते की नाई
जीभ से पानी चपड चपड करके पीए
उनको अलग रख, और वैसा ही उन्हे
भी जो घुटने टेककर पीए। ६ जिन्हो ने
मुह मे हाथ लगा चपड चपड करके पानी
पिया उनकी तो गिनती तीन सौ ठहरी,
और बाकी सब लोगो ने घुटने टेककर
पानी पिया। ७ तब यहोवा ने गिदोन
से कहा, इन तीन सौ चपड चपड करके
पीनेवालो के द्वारा मैं तुम को छुडाऊगा,
और मिद्यानियो को तेरे हाथ मे कर
दूगा, और सब लोग अपने अपने स्थान
को लौट जाए। ८ तब उन लोगो ने
हाथ मे सीधा और अपने अपने नरसिंगे
लिए, और उस ने इस्राएल के सब पुरुषो
को अपने अपने डेरे की ओर भेज दिया,
परन्तु उन तीन सौ पुरुषो को अपने पास
रख छोडा, और मिद्यान की छावनी
उसके नीचे तराई मे पडी थी॥
९ उसी रात को यहोवा ने उस से
कहा, उठ, छावनी पर चढाई कर, क्योकि
मैं उसे तेरे हाथ कर देता हू। १० परन्तु
यदि तू चढाई करते डरता हो, तो अपने
सेवक फूरा को सग लेकर छावनी के पास
जाकर सुन, ११ कि वे क्या कह रहे हैं;
उसके बाद तुझे उस छावनी पर चढाई
करने का हियाव होगा। तब वह अपने
सेवक फूरा को सग ले उन हथियार-
बन्दो के पास जो छावनी की छोर
पर थे उतर गया। १२ मिद्यानी और
अमालेकी और सब पूर्वी लोग तो टिड्डियो
के समान बहुत से तराई मे फैले पडे थे,
और उनके ऊट समुद्रतीर के बालू के
किनको के समान गिनती से बाहर थे।
१३ जब गिदोन वहा आया, तब एक
जन अपने किसी सगी से अपना स्वप्न
यो कह रहा था, कि सुन, मैं ने स्वप्न
मे क्या देखा है कि जौ की एक रोटी
लुढकते लुढकते मिद्यान की छावनी मे
आई, और डेरे को ऐसा टक्कर मारा
कि वह गिर गया, और उसको ऐसा
उलट दिया, कि डेरा गिरा पडा रहा।
१४ उसके सगी ने उत्तर दिया, यह
योआश के पुत्र गिदोन नाम एक इस्राएली
पुरुष की तलवार को छोड कुछ नही
है, उसी के हाथ मे परमेश्वर ने मिद्यान
को सारी छावनी समेत कर दिया है॥
१५ उस स्वप्न का वर्णन और फल
सुनकर गिदोन ने दण्डवत् की, और
इस्राएल की छावनी मे लौटकर कहा,
उठो, यहोवा ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे
वश मे कर दिया है। १६ तब उस ने
उन तीन सौ पुरुषो के तीन झुण्ड किए,
और एक एक पुरुष के हाथ मे एक नर-
सिगा और खाली घडा दिया, और घडो
के भीतर एक मशाल थी। १७ फिर
उस ने उन से कहा, मुझे देखो, और वैसा
ही करो, सुनो, जब मैं उस छावनी की

छोर पर पहुचू, तब जैसा मै करू वैसा
ही तुम भी करना। १८ अर्थात् जब
मै और मेरे सब सगी नरसिगा फूके तब
तुम भी छावनी की चारो ओर नरसिगे
फूकना, और ललकारना, कि यहोवा
की और गिदोन की तलवार॥

१९ बीचवाले पहर के आदि में ज्योंही
पहरुओ की बदली हो गई थी त्योंही
गिदोन अपने सग के सौ पुरुषो समेत
छावनी की छोर पर गया, और नरसिगे
को फूक दिया और अपने हाथ के घडो
को तोड डाला। २० तब तीनो झुण्डो ने
नरसिगो को फूका और घडो को तोड
डाला, और अपने अपने बाए हाथ में
मशाल और दहिने हाथ मे फूकने को
नरसिगा लिए हुए चिल्ला उठे, यहोवा की
तलवार और गिदोन की तलवार।
२१ तब वे छावनी के चारो ओर अपने
अपने स्थान पर खडे रहे, और सब सेना
के लोग दौडने लगे, और उन्हों ने चिल्ला
चिल्लाकर उन्हें भगा दिया। २२ और
उन्हो ने तीन सौ नरसिगो को फूका,
और यहोवा ने एक एक पुरुष की तलवार
उसके सगी पर और सब सेना पर चल-
वाई, तो सेना के लोग सरेरा की ओर
बेतशित्ता तक और तब्बात के पास के
आबेलमहोला तक भाग गए। २३ तब
इस्राएली पुरुष नप्ताली और आशेर और
मनश्शे के सारे देश मे इकट्ठे होकर
मिद्यानियो के पीछे पडे। २४ और
गिदोन ने एप्रैम के सब पहाडी देश में
यह कहने को दूत भेज दिए, कि मिद्या-
नियो से मुठभेड करने को चले आओ,
और यरदन नदी के घाटो को बेतबारा
तक उन से पहिले अपने वश मे कर लो।
तब सब एप्रैमी पुरुषो ने इकट्ठे होकर
यरदन नदी को बेतबारा तक अपने वश
मे कर लिया। २५ और उन्हो ने ओरेब
और जेब नाम मिद्यान के दो हाकिमो
को पकडा, और ओरेब को ओरेब-नाम
चट्टान पर, और जेब को जेब नाम दाख-
रस के कुण्ड पर घात किया, और वे
मिद्यानियो के पीछे पडे, और ओरेब
और जेब के सिर यरदन के पार गिदोन
के पास ले गए॥

८ तब एप्रैमी पुरुषो ने गिदोन से
कहा, तू ने हमारे साथ ऐसा बर्ताव
क्यो किया है, कि जब तू मिद्यान से
लडने को चला तब हम को नही बुल-
वाया? सो उन्हो ने उस से बडा झगडा
किया। २ उस ने उन से कहा, मैं ने तुम्हारे
समान भला अब किया ही क्या है? क्या
एप्रैम की छोडी हुई दाख भी अबीएजेर
की सब फसल से अच्छी नही है?
३ तुम्हारे ही हाथो में परमेश्वर ने
ओरेब और जेब नाम मिद्यान के हाकिमो
को कर दिया, तब तुम्हारे बराबर मैं
कर ही क्या सका? जब उस ने यह
बात कही, तब उनका जी उसकी ओर
से ठडा हो गया॥

४ तब गिदोन और उसके सग तीनो
सौ पुरुष, जो थके मान्दे थे तौभी खदेडते
ही रहे थे, यरदन के तीर आकर पार
हो गए। ५ तब उस ने सुक्कोत के
लोगो से कहा, मेरे पीछे इन आनेवालो
को रोटिया दो, क्योंकि ये थके मान्दे
है, और मै मिद्यान के जेबह और सल्मुन्ना
नाम राजाओ का पीछा कर रहा हू।
६ सुक्कोत के हाकिमो ने उत्तर दिया,
क्या जेबह और सल्मुन्ना तेरे हाथ में
पड चुके है, कि हम तेरी सेना को रोटी

दे ? ७ गिदोन ने कहा, जब यहोवा
जेबह और सल्मुन्ना को मेरे हाथ मे कर
देगा, तब मै इस बात के कारण तुम को
जगल के कटीले और बिच्छू पेडो से
नुचवाऊगा। ८ वहा से वह पनूएल को
गया, और वहा के लोगो* से ऐसी ही
बात कही, और पनूएल के लोगो ने
सुक्कोत के लोगो का सा उत्तर दिया।
९ उस ने पनूएल के लोगो से कहा, जब
मै कुशल से लौट आऊगा, तब इस गुम्मट
को ढा दूगा ॥

१० जेबह और सल्मुन्ना तो कर्कोर
मे थे, और उनके साथ कोई पन्द्रह हजार
पुरुषो की सेना थी, क्योकि पूर्वियो की
सारी सेना मे से उतने ही रह गए थे,
और जो मारे गए थे वे एक लाख बीस
हजार हथियारबन्द थे। ११ तब गिदोन
ने नोबह और योग्बहा के पूर्व की ओर
डेरो मे रहनेवालो के मार्ग से चढकर
उस सेना को जो निडर पडी थी मार
लिया। १२ और जब जेबह और
सल्मुन्ना भागे, तब उस ने उनका पीछा
करके मिद्यानियो के उन दोनो राजाओ,
अर्थात् जेबह और सल्मुन्ना को पकड
लिया, और सारी सेना को भगा दिया।
१३ और योआश का पुत्र गिदोन हेरेस
नाम चढाई पर से लडाई से लौटा†।
१४ और सुक्कोत के एक जवान पुरुष
को पकडकर उस से पूछा, और उस ने
सुक्कोत के सतहत्तरो हाकिमों और वृद्ध
लोगो के पते लिखवाये। १५ तब वह
सुक्कोत के मनुष्यो के पास जाकर कहने
लगा, जेबह और सल्मुन्ना को देखो,
जिनके विषय मे तुम ने यह कहकर मुझे
चिढाया था, कि क्या जेबह और सल्मुन्ना
अभी तेरे हाथ मे है, कि हम तेरे थके
मान्दे जनो को रोटी दे ? १६ तब
उस ने उस नगर के वृद्ध लोगो को पकडा,
और जगल के कटीले और बिच्छू पेड
लेकर सुक्कोत के पुरुषो को कुछ सिखाया।
१७ और उस ने पनूएल के गुम्मट को
ढा दिया, और उस नगर के मनुष्यो को
घात किया। १८ फिर उस ने जेबह और
सल्मुन्ना से पूछा, जो मनुष्य तुम ने ताबोर
पर घात किए थे वे कैसे थे ? उन्हो ने
उत्तर दिया, जैसा तू वैसे ही वे भी थे,
अर्थात् एक एक का रूप राजकुमार का
सा था। १९ उस ने कहा, वे तो मेरे
भाई, वरन मेरे सहोदर भाई थे, यहोवा
के जीवन की शपथ, यदि तुम ने उनको
जीवित छोडा होता, तो मै तुम को
घात न करता। २० तब उस ने अपने
जेठे पुत्र यतेरे से कहा, उठकर इन्हे घात
कर। परन्तु जवान ने अपनी तलवार
न खीची, क्योकि वह उस समय तक
लडका ही था, इसलिये वह डर गया।
२१ तब जेबह और सल्मुन्ना ने कहा,
तू उठकर हम पर प्रहार कर, क्योकि
जैसा पुरुष हो, वैसा ही उसका पौरुष
भी होगा। तब गिदोन ने उठकर जेबह
और सल्मुन्ना को घात किया, और
उनके ऊटो के गलो के चन्द्रहारो को ले
लिया ॥

२२ तब इस्राएल के पुरुषो ने गिदोन
से कहा, तू हमारे ऊपर प्रभुता कर, तू
और तेरा पुत्र और पोता भी प्रभुता
करे, क्योकि तू ने हम को मिद्यान के
हाथ से छुडाया है। २३ गिदोन ने उन
से कहा, मै तुम्हारे ऊपर प्रभुता न करूगा,

* मूल मे—उन।

† वा सूर्य उदय न होने पाया कि योआश का पुत्र गिदोन लडाई से लौटा।

और न मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर प्रभुता
करेगा, यहोवा ही तुम पर प्रभुता करेगा।
२४ फिर गिदोन ने उन से कहा, मैं
तुम से कुछ मागता हू, अर्थात् तुम मुझ
को अपनी अपनी लूट मे की वालिया
दो। (वे तो इशमाएली थे, इस कारण
उनकी वालिया सोने की थी।) उन्हो
ने कहा, निश्चय हम देगे। २५ तब
उन्हो ने कपडा विछाकर उस में अपनी
अपनी लूट में से निकालकर वालिया
डाल दी। २६ जो सोने की वालिया
उस ने माग ली उनका तौल एक हजार
सात सौ शेकेल हुआ, और उनको छोड
चन्द्रहार, झुमके, और बैंगनी रग के
वस्त्र जो मिद्यानियो के राजा पहिने थे,
और उनके ऊटो के गलो की जजीर।
२७ उनका गिदोन ने एक एपोद बनवा-
कर अपने ओप्रा नाम नगर में रखा,
और सब इस्राएल वहा व्यभिचारिणी की
नाईं उसके पीछे हो लिया, और वह गिदोन
और उसके घराने के लिये फन्दा ठहरा।
२८ इस प्रकार मिद्यान इस्राएलियो से
दब गया, और फिर सिर न उठाया।
और गिदोन के जीवन भर अर्थात् चालीस
वर्ष तक देश चैन से रहा॥

२९ योआश का पुत्र यरुब्बाल तो
जाकर अपने घर में रहने लगा।
३० और गिदोन के सत्तर बेटे उत्पन्न
हुए, क्योंकि उसके बहुत स्त्रिया थी।
३१ और उसकी जो एक रखेली शकेम
में रहती थी उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ,
और गिदोन ने उसका नाम अबीमेलेक
रखा। ३२ निदान योआश का पुत्र गिदोन
पूरे बुढापे में मर गया, और अबीएजेरियो
के ओप्रा नाम गाव में उसके पिता योआश
की कबर में उसको मिट्टी दी गई॥

३३ गिदोन के मरते ही इस्राएली
फिर गए, और व्यभिचारिणी की नाईं
बाल देवताओ के पीछे हो लिए, और
बालबरीत को अपना देवता मान लिया।
३४ और इस्राएलियो ने अपने परमेश्वर
यहोवा को, जिस ने उनको चारो ओर के
सब शत्रुओ के हाथ मे छुडाया था, स्मरण
न रखा, ३५ और न उन्हो ने यरुब्बाल
अर्थात् गिदोन की उस सारी भलाई के
अनुसार जो उस ने इस्राएलियो के साथ
की थी उसके घराने को प्रीति दिखाई॥

(अबीमेलेक का चरित्र)

९ यरुब्बाल का पुत्र अबीमेलेक शकेम
को अपने मामाओ के पास जाकर
उन से और अपने नाना के सब घराने
से यो कहने लगा, २ शकेम के सब
मनुष्यो से यह पूछो, कि तुम्हारे लिये क्या
भला है? क्या यह कि यरुब्बाल के
सत्तर पुत्र तुम पर प्रभुता करें? वा
यह कि एक ही पुरुष तुम पर प्रभुता करे?
और यह भी स्मरण रखो कि मै तुम्हारा
हाड मास हू। ३ तब उसके मामाओ
ने शकेम के सब मनुष्यो से ऐसी ही बातें
कही, और उन्हो ने यह सोचकर कि
अबीमेलेक तो हमारा भाई है अपना मन
उसके पीछे लगा दिया। ४ तब उन्हो
ने बालबरीत के मन्दिर में से सत्तर
टुकडे रूपे उसको दिए, और उन्हें लगा-
कर अबीमेलेक ने नीच और लुच्चे जन
रख लिए, जो उसके पीछे हो लिए।
५ तब उस ने ओप्रा में अपने पिता के घर
जाके अपने भाइयो को जो यरुब्बाल के
सत्तर पुत्र थे एक ही पत्थर पर घात
किया, परन्तु यरुब्बाल का योताम नाम
लहुरा पुत्र छिपकर बच गया॥

६ तब शकेम के सब मनुष्यो और
बेतमिल्लो के सब लोगो ने इकट्ठे होकर
शकेम के खम्भे के पासवाले बाजवृक्ष
के पास अबीमेलेक को राजा बनाया।
७ इसका समाचार सुनकर योताम
गरिज्जीम पहाड की चोटी पर जाकर
खडा हुआ, और ऊंचे स्वर से पुकार के
कहने लगा, हे शकेम के मनुष्यो, मेरी
सुनो, इसलिये कि परमेश्वर तुम्हारी
सुनें। ८ किसी युग मे वृक्ष किसी का
अभिषेक करके अपने ऊपर राजा ठहराने
को चले, तब उन्हो ने जलपाई के वृक्ष
से कहा, तू हम पर राज्य कर। ९ तब
जलपाई के वृक्ष ने कहा, क्या मैं अपनी
उस चिकनाहट को छोडकर, जिस से
लोग परमेश्वर और मनुष्य दोनो का
आदर मान करते हैं, वृक्षो का अधिकारी
होकर इधर उधर डोलने को चलू?
१० तब वृक्षो ने अजीर के वृक्ष से कहा,
तू आकर हम पर राज्य कर। ११ अजीर
के वृक्ष ने उन से कहा, क्या मैं अपने
मीठेपन और अपने अच्छे अच्छे फलो
को छोड वृक्षो का अधिकारी होकर
इधर उधर डोलने को चलू? १२ फिर
वृक्षो ने दाखलता से कहा, तू आकर हम
पर राज्य कर। १३ दाखलता ने उन
से कहा, क्या मैं अपने नये मधु को छोड,
जिस से परमेश्वर और मनुष्य दोनो को
आनन्द होता है, वृक्षो की अधिकारिणी
होकर इधर उधर डोलने को चलू?
१४ तब सब वृक्षो ने झडबेरी से कहा,
तू आकर हम पर राज्य कर। १५ झड-
बेरी ने उन वृक्षो से कहा, यदि तुम अपने
ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक सच्चाई
से करते हो, तो आकर मेरी छांह मे
शरण लो, और नही तो, झडबेरी से
आग निकलेगी जिस से लबानोन के देव-
दारु भी भस्म हो जाएगे। १६ इसलिये
अब यदि तुम ने सच्चाई और खराई से
अबीमेलेक को राजा बनाया है, और
यरुब्बाल और उसके घराने से भलाई
की, और उस से उसके काम के योग्य
बर्ताव किया हो, तो भला। १७ (मेरा
पिता तो तुम्हारे निमित्त लडा, और
अपने प्राण पर खेलकर तुम को मिद्या-
नियो के हाथ से छुडाया, १८ परन्तु
तुम ने आज मेरे पिता के घराने के विरुद्ध
उठकर बलवा किया, और उसके सत्तर
पुत्र एक ही पत्थर पर घात किए, और
उसकी लौंडी के पुत्र अबीमेलेक को इस-
लिये शकेम के मनुष्यो के ऊपर राजा
बनाया है कि वह तुम्हारा भाई है),
१९ इसलिये यदि तुम लोगो ने आज के
दिन यरुब्बाल और उसके घराने से सच्चाई
और खराई से बर्ताव किया हो, तो अबी-
मेलेक के कारण आनन्द करो, और वह
भी तुम्हारे कारण आनन्द करे, २० और
नही, तो अबीमेलेक से ऐसी आग निकले
जिस से शकेम के मनुष्य और बेतमिल्लो
भस्म हो जाए और शकेम के मनुष्यो
और बेतमिल्लो से ऐसी आग निकले
जिस से अबीमेलेक भस्म हो जाए।
२१ तब योताम भागा, और अपने भाई
अबीमेलेक के डर के मारे बेर को जाकर
वही रहने लगा॥

२२ और अबीमेलेक इस्राएल के ऊपर
तीन वर्ष हाकिम रहा। २३ तब पर-
मेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के मनुष्यो
के बीच एक बुरी आत्मा भेज दी, सो
शकेम के मनुष्य अबीमेलेक का विश्वास-
घात करने लगे, २४ जिस से यरुब्बाल
के सत्तर पुत्रो पर किए हुए उपद्रव का

फल भोगा जाए*, और उनका खून
उनके घात करनेवाले उनके भाई अबी-
मेलेक के सिर पर, और उसके अपने
भाइयो के घात करने में उसकी सहायता
करनेवाले शकेम के मनुष्यो के सिर
पर भी हो। २५ तब शकेम के मनुष्यो
ने पहाडो की चोटियो पर उसके लिये
घातको को बैठाया, जो उस मार्ग से
सब आने जानेवालो को लूटते थे, और
इसका समाचार अबीमेलेक को मिला॥

२६ तब एबेद का पुत्र गाल अपने
भाइयो समेत शकेम मे आया, और
शकेम के मनुष्यो ने उसका भरोसा किया।
२७ और उन्हो ने मैदान में जाकर अपनी
अपनी दाख की बारियो के फल तोडे
और उनका रस रौन्दा, और स्तुति का
बलिदान कर अपने देवता के मन्दिर में
जाकर खाने पीने और अबीमेलेक को
कोसने लगे। २८ तब एबेद के पुत्र गाल
ने कहा, अबीमेलेक कौन है? शकेम कौन
है कि हम उसके अधीन रहे? क्या
वह यरुब्बाल का पुत्र नही? क्या जबूल
उसका नाइब नही? शकेम के पिता
हमोर के लोगो के तो अधीन हो, परन्तु
हम उसके अधीन क्यो रहें? २९ और
यह प्रजा मेरे वश में होती तो क्या ही
भला होता! तब तो मैं अबीमेलक को
दूर करता। फिर उस ने अबीमेलेक से
कहा, अपनी सेना की गिनती बढाकर
निकल आ। ३० एबेद के पुत्र गाल की
वे बाते सुनकर नगर के हाकिम जबूल
का क्रोध भडक उठा। ३१ और उस
ने अबीमेलेक के पास छिपके† दूतो से
कहला भेजा, कि एबेद का पुत्र गाल
और उसके भाई शकेम में आके नगरवालो
को तेरा विरोध करने को उसका रहे है।
३२ इसलिये तू अपने सगवालो समेत
रात को उठकर मैदान म घात लगा।
३३ फिर बिहान को सवेरे सूर्य के निक-
लते ही उठकर इस नगर पर चढाई
करना, और जब वह अपने सगवालो
समेत तेरा साम्हना करने को निकले तब
जो तुझ से बन पडे वही उस से करना॥

३४ तब अबीमेलेक और उसके सग
के सब लोग रात को उठ चार झुण्ड
बान्धकर शकेम के विरुद्ध घात मे बैठ
गए। ३५ और एबेद का पुत्र गाल
बाहर जाकर नगर के फाटक मे खडा
हुआ, तब अबीमेलेक और उसके सगी
घात छोडकर उठ खडे हुए। ३६ उन
लोगो को देखकर गाल जबूल से कहने
लगा, देख, पहाडो की चोटियो पर से
लोग उतरे आते है! जबूल ने उस से
कहा, वह तो पहाडो की छाया है जो
तुझे मनुष्यो के समान देख पडती है।
३७ गाल ने फिर कहा, देख, लोग देश
के बीचोबीच होकर उतरे आते ह, और
एक झुण्ड मोननीम नाम बाज वृक्ष के
मार्ग से चला आता है। ३८ जबूल ने
उस से कहा, तेरी यह बात कहा रही,
कि अबीमेलेक कौन है कि हम उसके
अधीन रहे? ये तो वे ही लोग है जिन-
को तू ने निकम्मा जाना था, इसलिये
अब निकलकर उन से लड। ३९ तब
गाल शकेम के पुरुषो का अगुआ हो बाहर
निकलकर अबीमेलेक से लडा। ४० और
अबीमेलेक ने उसको खदेडा, और वह
अबीमेलेक के साम्हने से भागा, और
नगर के फाटक तक पहुचते पहुचते बहु-
तेरे घायल होकर गिर पडे। ४१ तब

* मूल में—उपद्रव आए।
† मूल में—चतुराई से।

अबीमेलेक अरूमा मे रहने लगा, और
जबूल ने गाल और उसके भाइयो को
निकाल दिया, और शकेम मे रहने न
दिया। ४२ दूसरे दिन लोग मैदान मे
निकल गए, और यह अबीमेलेक को
बताया गया। ४३ और उस ने अपनी
सेना के तीन दल बान्धकर मैदान मे
घात लगाई, और जब देखा कि लोग
नगर से निकले आते है तब उन
पर चढाई करके उन्हे मार लिया।
४४ अबीमेलेक अपने सग के दलो समेत
आगे दौडकर नगर के फाटक पर खडा
हो गया, और दो दलो ने उन सब लोगो
पर धावा करके जो मैदान मे थे उन्हे
मार डाला। ४५ उसी दिन अबीमेलेक
ने नगर से दिन भर लडकर उसको ले
लिया, और उसके लोगो को घात करके
नगर को ढा दिया, और उस पर नमक
छिडकवा दिया॥

४६ यह सुनकर शकेम के गुम्मट के
सब रहनेवाले एलबरीत के मन्दिर के
गढ मे जा घुसे। ४७ जब अबीमेलेक को
यह समाचार मिला कि शकेम के गुम्मट
के सब मनुष्य इकट्ठे हुए है, ४८ तब
वह अपने सब सगियो समेत सलमोन
नाम पहाड पर चढ गया, और हाथ
में कुल्हाडी ले पेडो मे से एक डाली काटी,
और उसे उठाकर अपने कन्धे पर रख
ली। और अपने सगवालो से कहा कि
जैसा तुम ने मुझे करते देखा वैसा ही तुम
भी झटपट करो। ४९ तब उन सब
लोगो ने भी एक एक डाली काट ली,
और अबीमेलेक के पीछे हो उनको गढ
पर डालकर गढ* मे आग लगाई, तब
शकेम के गुम्मट के सब स्त्री पुरुष जो
अटकल एक हजार थे मर गए॥

५० तब अबीमेलेक ने तेबेस को
जाकर उसके साम्हने डेरे खडे करके उस
को ले लिया। ५१ परन्तु उस नगर
के बीच एक दृढ गुम्मट था, सो क्या
स्त्री क्या पुरुष, नगर के सब लोग भाग-
कर उस मे घुसे, और उसे बन्द करके
गुम्मट की छत पर चढ गए। ५२ तब
अबीमेलेक गुम्मट के निकट जाकर उस-
के विरुद्ध लडने लगा, और गुम्मट के
द्वार तक गया कि उस मे आग लगाए।
५३ तब किसी स्त्री ने चक्की के ऊपर
का पाट अबीमेलेक के सिर पर डाल
दिया, और उसकी खोपडी फट गई।
५४ तब उस ने झट अपने हथियारो के
ढोनेवाले जवान को बुलाकर कहा, अपनी
तलवार खीचकर मुझे मार डाल, ऐसा
न हो कि लोग मेरे विषय मे कहने पाए,
कि उसको एक स्त्री ने घात किया।
तब उसके जवान ने तलवार भोक दी,
और वह मर गया। ५५ यह देखकर
कि अबीमेलेक मर गया है इस्राएली
अपने अपने स्थान को चले गए।
५६ इस प्रकार जो दुष्ट काम अबीमेलेक
ने अपने सत्तर भाइयो को घात करके
अपने पिता के साथ किया था, उसको
परमेश्वर ने उसके सिर पर लौटा दिया,
५७ और शकेम के पुरुषो के भी सब
दुष्ट काम परमेश्वर ने उनके सिर पर
लौटा दिए, और यरुब्बाल के पुत्र योताम
का शाप उन पर घट गया॥

(तोला और याइर के चरित्र)

१० अबीमेलेक के बाद इस्राएल के
छुडाने के लिये तोला नाम एक

* मूल में—उनके ऊपर गढ।

इस्साकारी उठा, वह दोदो का पोता
और पूआ का पुत्र था, और एप्रैम के
पहाडी देश के शामीर नगर में रहता
था। २ वह तेईस वर्ष तक इस्राएल का
न्याय करता रहा। तब मर गया, और
उसको शामीर में मिट्टी दी गई॥

३ उसके बाद गिलादी याईर उठा,
वह बाईस वर्ष तक इस्राएल का न्याय
करता रहा। ४ और उसके तीस पुत्र
थे जो गदहियो के तीस बच्चो पर सवार
हुआ करते थे, और उनके तीस नगर
भी थे जो गिलाद देश में हैं, और आज
तक हव्वोत्याईर* कहलाते हैं। ५ और
याईर मर गया, और उसको कामोन में
मिट्टी दी गई॥

६ तब इस्राएलियो ने फिर यहोवा
की दृष्टि मे बुरा किया, अर्थात् बाल
देवताओ और अश्तोरेत देवियो और
आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोनियो,
और पलिश्तियो के देवताओ की उपासना
करने लगे, और यहोवा को त्याग दिया,
और उसकी उपासना न की। ७ तब
यहोवा का क्रोध इस्राएल पर भडका, और
उस ने उन्हें पलिश्तियो और अम्मोनियो
के अधीन कर दिया, ८ और उस वर्ष
ये इस्राएलियों को सताते और पीसते
रहे। वरन यरदन पार एमोरियो के देश
गिलाद में रहनेवाले सब इस्राएलियो पर
अठारह वर्ष तक अन्धेर करते रहे।
९ अम्मोनी यहूदा और बिन्यामीन से
और एप्रैम के घराने से लडने को यरदन
पार जाते थे, यहा तक कि इस्राएल बडे
सकट में पड गया। १० तब इस्राएलियो
ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी,

* अर्थात् याईर की बस्तिया।

कि हम ने जो अपने परमेश्वर को त्याग-
कर बाल देवताओ की उपासना की है,
यह हम ने तेरे विरुद्ध महा पाप किया
है। ११ यहोवा ने इस्राएलियो से कहा,
क्या मैं ने तुम को मिस्रियो, एमोरियो,
अम्मोनियो, और पलिश्तियो के हाथ से न
छुडाया था? १२ फिर जब सीदोनी,
और अमालेकी, और माओनी लोगो ने
तुम पर अन्धेर किया, और तुम ने मेरी
दोहाई दी, तब मैं ने तुम को उनके हाथ
से भी न छुडाया? १३ तौभी तुम ने
मुझे त्यागकर पराये देवताओ की उपा-
सना की है, इसलिये मैं फिर तुम को
न छुडाऊगा। १४ जाओ, अपने माने
हुए देवताओ की दोहाई दो, तुम्हारे
सकट के समय वे ही तुम्हें छुडाए।
१५ इस्राएलियो ने यहोवा से कहा, हम
ने पाप किया है, इसलिये जो कुछ तेरी
दृष्टि में भला हो वही हम से कर,
परन्तु अभी हमें छुडा। १६ तब वे पराए
देवताओ को अपने मध्य में से दूर करके
यहोवा की उपासना करने लगे, और
वह इस्राएलियो के कष्ट के कारण खेदित
हुआ॥

१७ तब अम्मोनियो ने इकट्ठे होकर
गिलाद में अपने डेरे डाले, और इस्रा-
एलियो ने भी इकट्ठे होकर मिस्पा में
अपने डेरे डाले। १८ तब गिलाद के
हाकिम एक दूसरे से कहने लगे, कौन
पुरुष अम्मोनियो से सग्राम आरम्भ
करेगा? वही गिलाद के सब निवासियो
का प्रधान ठहरेगा॥

११ यिप्तह नाम गिलादी बडा शूर-
वीर था, और वह वेश्या का बेटा
था, और गिलाद से यिप्तह उत्पन्न हुआ

हो गई है, क्योकि मैं ने यहोवा
को वचन दिया है, और उसे टाल
नही सकता। ३६ उस ने उस से कहा,
हे मेरे पिता, तू ने जो यहोवा को
वचन दिया है, तो जो बात तेरे मुह से
निकली है उसी के अनुसार मुझ से वर्ताव
कर, क्योकि यहोवा ने तेरे अम्मोनी शत्रुओ
से तेरा पलटा लिया है। ३७ फिर
उस ने अपने पिता से कहा, मेरे लिये
यह किया जाए, कि दो महीने तक मुझे
छोडे रह, कि मैं अपनी सहेलियो सहित
जाकर पहाडो पर फिरती हुई अपनी
कुवारीपन पर रोती रहू। ३८ उस ने
कहा, जा। तव उस ने उसे दो महीने
की छुट्टी दी, इसलिये वह अपनी
सहेलियो सहित चली गई, और पहाडो
पर अपनी कुवारीपन पर रोती रही।
३९ दो महीने के वीतने पर वह अपने
पिता के पास लौट आई, और उस ने
उसके विषय मे अपनी मानी हुई मन्नत
को पूरी किया। और उस कन्या ने
पुरुष का मुह कभी न देखा था। इसलिये
इस्राएलियो मे यह रीति चली ४० कि
इस्राएली स्त्रिया प्रतिवर्ष यिप्तह गिलादी
की वेटी का यश गाने को वर्ष मे चार
दिन तक जाया करती थी॥

१२ तव एप्रैमी पुरुष इकट्ठे होकर
सापोन को जाकर यिप्तह से कहने
लगे, कि जव तू अम्मोनियो से लडने
को गया तव हमे सग चलने को क्यो
नही वुलवाया? हम तेरा घर तुझ
समेत जला देगे। २ यिप्तह ने उन से
कहा, मेरा और मेरे लोगो का अम्मोनियो
से वडा झगडा हुआ था, और जव मैं
ने तुम से सहायता मागी, तव तुम ने
मुझे उनके हाथ से नही वचाया। ३ तव
यह देखकर कि तुम मुझे नही वचाते मैं
अपने प्राणो को हथेली पर रखकर अम्मो-
नियो के विरुद्ध चला, और यहोवा ने
उनको मेरे हाथ मे कर दिया, फिर
तुम अव मुझ से लडने को क्यो चढ आए
हो? ४ तव यिप्तह गिलाद के सव
पुरुषो को इकट्ठा करके एप्रैम से लडा,
और एप्रैम जो कहता था, कि हे गिला-
दियो, तुम तो एप्रैम और मनश्शे के वीच
रहनेवाले एप्रैमियो के भगोडे हो, और
गिलादियो ने उनको मार लिया। ५ और
गिलादियो ने यरदन का घाट उन से
पहिले अपने वश मे कर लिया। और
जव कोई एप्रैमी भगोडा कहता, कि मुझे
पार जाने दो, तव गिलाद के पुरुष उस
से पूछते थे, क्या तू एप्रैमी* है? और
यदि वह कहता, नही, ६ तो वे उस
से कहते, अच्छा, शिव्वोलेत कह, और
वह कहता सिव्वोलेत, क्योकि उस से वह
ठीक वोला नही जाता था; तव वे उसको
पकडकर यरदन के घाट पर मार डालते
थे। इस प्रकार उस समय वयालीस
हजार एप्रैमी मारे गए॥

७ यिप्तह छ वर्ष तक इस्राएल का
न्याय करता रहा। तव यिप्तह गिलादी
मर गया, और उसको गिलाद के किसी
नगर मे† मिट्टी दी गई॥

८ उसके वाद वेतलेहेम का निवासी
इवसान इस्राएल का न्याय करने लगा।
९ और उसके तीस वेटे हुए, और उस
ने अपनी तीस वेटिया वाहर व्याह दी,
और वाहर से अपने वेटो का व्याह करके
तीस वहू ले आया। और वह इस्राएल

* मूल में—एप्राती।
† मूल में—नगरों में।

का न्याय सात वर्ष तक करता रहा।
१० तब इबसान मर गया, और उसको
बेतलेहेम मे मिट्टी दी गई॥
११ उसके बाद जबूलूनी एलोन
इस्राएल का न्याय करने लगा, और
वह इस्राएल का न्याय दस वर्ष तक करता
रहा। १२ तब एलोन जबूलूनी मर गया,
और उसको जबूलून के देश के अय्यालोन
में मिट्टी दी गई॥
१३ उसके बाद हिल्लेल का पुत्र
पिरातोनी अब्दोन इस्राएल का न्याय
करने लगा। १४ और उसके चालीस
बेटे और तीस पोते हुए, जो गदहियो के
सत्तर बच्चो पर सवार हुआ करते थे।
वह आठ वर्ष तक इस्राएल का न्याय
करता रहा। १५ तब हिल्लेल का पुत्र
पिरातोनी अब्दोन मर गया, और उसको
एप्रैम के देश के पिरातोन में, जो अमा-
लेकिया के पहाड़ी देश में है, मिट्टी दी
गई॥

(शिमशोन का चरित्र)

१३ और इस्राएलियो ने फिर
यहोवा की दृष्टि में बुरा किया,
इसलिये यहोवा ने उनको पलिश्तियो के
वश में चालीस वर्ष के लिये रखा॥
२ दानियो के कुल का सोरावासी
मानोह नाम एक पुरुष था, जिसकी
पत्नी के बांझ होने के कारण कोई पुत्र
न था। ३ इस स्त्री को यहोवा के दूत
ने दर्शन देकर कहा, सुन, बांझ होने के
कारण तेरे बच्चा नही, परन्तु अब तू
गर्भवती होगी और तेरे बेटा होगा।
४ इसलिये अब सावधान रह, कि न
तो तू दाखमधु वा और किसी भांति की
मदिरा पिए, और न कोई अशुद्ध वस्तु
खाए, ५ क्योंकि तू गर्भवती होगी और
तेरे एक बेटा उत्पन्न होगा। और उसके
सिर पर छुरा न फिरे, क्योंकि वह जन्म
ही से परमेश्वर का नाज़ीर रहेगा, और
इस्राएलियो को पलिश्तियो के हाथ से
छुड़ाने मे वही हाथ लगाएगा। ६ उस
स्त्री ने अपने पति के पास जाकर कहा,
परमेश्वर का एक जन मेरे पास आया
था जिसका रूप परमेश्वर के दूत का सा
अति भययोग्य था, और मैं ने उस से
न पूछा कि तू कहां का है? और न उस
ने मुझे अपना नाम बताया, ७ परन्तु
उस ने मुझ से कहा, सुन तू गर्भवती
होगी और तेरे एक बेटा होगा, इसलिये
अब न तो दाखमधु वा और किसी भांति
की मदिरा पीना, और न कोई अशुद्ध
वस्तु खाना, क्योंकि वह लड़का जन्म से
मरण के दिन तक परमेश्वर का नाज़ीर
रहेगा। ८ तब मानोह ने यहोवा से यह
बिनती की, कि हे प्रभु, बिनती सुन,
परमेश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था
फिर हमारे पास आए, और हमे सिखलाए
कि जो बालक उत्पन्न होनेवाला है उस से
हम क्या क्या करें। ९ मानोह की यह बात
परमेश्वर ने सुन ली, इसलिये जब वह
स्त्री मैदान मे बैठी थी, और उसका पति
मानोह उसके संग न था, तब परमेश्वर का
वही दूत उसके पास आया। १० तब उस
स्त्री ने झट दौड़कर अपने पति को यह
समाचार दिया, कि जो पुरुष उस दिन
मेरे पास आया था उसी ने मुझे दर्शन
दिया है। ११ यह सुनते ही मानोह
उठकर अपनी पत्नी के पीछे चला, और
उस पुरुष के पास आकर पूछा, कि क्या
तू वही पुरुष है जिसने इस स्त्री से बातें
की थी? उस ने कहा, मैं वही हूं।

था। २ गिलाद की स्त्री के भी बेटे
उत्पन्न हुए, और जब वे बडे हो गए तब
यिप्तह को यह कहकर निकाल दिया,
कि तू तो पराई स्त्री का बेटा है, इस
कारण हमारे पिता के घराने मे कोई
भाग न पाएगा। ३ तब यिप्तह अपने
भाइयो के पास से भागकर तोब देश
मे रहने लगा, और यिप्तह के पास
लुच्चे मनुष्य इकट्ठे हो गए, और उसके
सग फिरने लगे॥

४ और कुछ दिनो के बाद अम्मोनी
इस्राएल से लडने लगे। ५ जब अम्मोनी
इस्राएल से लडते थे, तब गिलाद के वृद्ध
लोग यिप्तह को तोब देश से ले आने
को गए, ६ और यिप्तह से कहा, चल-
कर हमारा प्रधान हो जा, कि हम अम्मो-
नियो से लड़ सके। ७ यिप्तह ने गिलाद
के वृद्ध लोगो से कहा, क्या तुम ने मुझ
से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से
निकाल न दिया था? फिर अब सकट
में पडकर मेरे पास क्यो आए हो?
८ गिलाद के वृद्ध लोगो ने यिप्तह से
कहा, इस कारण हम अब तेरी ओर
फिरे है, कि तू हमारे सग चलकर अम्मो-
नियो से लडे, तब तू हमारी ओर से
गिलाद के सब निवासियो का प्रधान
ठहरेगा। ९ यिप्तह ने गिलाद के वृद्ध
लोगो से पूछा, यदि तुम मुझे अम्मोनियो
से लडने को फिर मेरे घर ले चलो,
और यहोवा उन्हे मेरे हाथ कर दे,
तो क्या मै तुम्हारा प्रधान ठहरूगा?
१० गिलाद के वृद्ध लोगो ने यिप्तह से
कहा, निश्चय हम तेरी इस बात के अनु-
सार करेगे, यहोवा हमारे और तेरे बीच
में इन वचनों का सुननेवाला है। ११ तब
यिप्तह गिलाद के वृद्ध लोगो के सग चला,
और लोगो ने उसको अपने ऊपर मुखिया
और प्रधान ठहराया, और यिप्तह ने
अपनी सब बाते मिस्पा मे यहोवा के
सम्मुख कह सुनाई॥

१२ तब यिप्तह ने अम्मोनियो के
राजा के पास दूतो से यह कहला भेजा,
कि तुझे मुझ से क्या काम, कि तू मेरे
देश मे लडने को आया है? १३ अम्मो-
नियो के राजा ने यिप्तह के दूतो से कहा,
कारण यह है, कि जब इस्राएली मिस्र
से आए, तब अर्नोन से यब्बोक और
यरदन तक जो मेरा देश था उसको उन्हो
ने छीन लिया, इसलिये अब उसको बिना
झगडा किए फेर दे। १४ तब यिप्तह
ने फिर अम्मोनियो के राजा के पास
यह कहने को दूत भेजे, १५ कि यिप्तह
तुझ से यो कहता है, कि इस्राएल ने न
तो मोआब का देश ले लिया और न
अम्मोनियो का, १६ वरन जब वे मिस्र
से निकले, और इस्राएली जगल मे होते
हुए लाल समुद्र तक चले, और कादेश
को आए, १७ तब इस्राएल ने एदोम
के राजा के पास दूतो से यह कहला
भेजा, कि मुझे अपने देश में होकर जाने दे;
और एदोम के राजा ने उनकी न मानी।
इसी रीति उस ने मोआब के राजा से
भी कहला भेजा, और उस ने भी न
माना। इसलिये इस्राएल कादेश मे रह
गया। १८ तब उस ने जगल मे चलते
चलते एदोम और मोआब दोनो देशो के
बाहर बाहर घूमकर मोआब देश की पूर्व
ओर से आकर अर्नोन के इसी पार अपने
डेरे डाले, और मोआब के सिवाने के
भीतर न गया, क्योकि मोआब का सिवाना
अर्नोन था। १९ फिर इस्राएल ने एमो-
रियो के राजा सीहोन के पास जो हेश्बोन

का राजा था दूतो से यह कहला भेजा, कि
हमें अपने देश में से होकर हमारे स्थान
को जाने दे। २० परन्तु सीहोन ने
इस्राएल का इतना विश्वास न किया कि
उसे अपने देश में से होकर जाने देता,
वरन अपनी सारी प्रजा को इकट्ठी कर
अपने डेरे यहस में खड़े करके इस्राएल
से लड़ा। २१ और इस्राएल के पर-
मेश्वर यहोवा ने सीहोन को सारी प्रजा
समेत इस्राएल के हाथ में कर दिया,
और उन्हो ने उनको मार लिया, इस-
लिये इस्राएल उस देश के निवासी एमो-
रियो के सारे देश का अधिकारी हो गया।
२२ अर्थात् वह अर्नोन से यब्बोक तक
और जंगल से ले यरदन तक एमोरियो
के सारे देश का अधिकारी हो गया।
२३ इसलिये अब इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा ने अपनी इस्राएली प्रजा के साम्हने
से एमोरियो को उनके देश से निकाल
दिया है, फिर क्या तू उसका अधिकारी
होने पाएगा? २४ क्या तू उसका अधि-
कारी न होगा, जिसका तेरा कमोश
देवता तुझे अधिकारी कर दे? इसी
प्रकार से जिन लोगो को हमारा परमेश्वर
यहोवा हमारे साम्हने से निकाले, उनके
देश के अधिकारी हम होगे। २५ फिर
क्या तू मोआब के राजा सिप्पोर के पुत्र
बालाक से कुछ अच्छा है? क्या उस
ने कभी इस्राएलियो से कुछ भी झगड़ा
किया? क्या वह उन से कभी लड़ा?
२६ जब कि इस्राएल हेश्बोन और उसके
गावो में, और अरोएर और उसके गावो
में, और अर्नोन के किनारे के सब नगरो
में तीन सौ वर्ष से बसा है, तो इतने
दिनो में तुम लोगो ने उसको क्यो नही
छुड़ा लिया? २७ मैं ने तेरा अपराध
नही किया, तू ही मुझ से युद्ध छेड़कर बुरा
व्यवहार करता है, इसलिये यहोवा जो
न्यायी है, वह इस्राएलियो और अम्मोनियो
के बीच में आज न्याय करे। २८ तौभी
अम्मोनियो के राजा ने यिप्तह की ये बातें
न मानी जिनको उस ने कहला भेजा था॥

२९ तब यहोवा का आत्मा यिप्तह में
समा गया, और वह गिलाद और मनश्शे
से होकर गिलाद के मिस्पे में आया,
और गिलाद के मिस्पे से होकर अम्मो-
नियो की ओर चला। ३० और यिप्तह
ने यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी,
कि यदि तू निःसन्देह अम्मोनियो को मेरे
हाथ में कर दे, ३१ तो जब मैं कुशल
के साथ अम्मोनियो के पास से लौट आऊं तब
जो कोई मेरे भेंट के लिये मेरे घर के
द्वार से निकले वह यहोवा का ठहरेगा,
और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊंगा।
३२ तब यिप्तह अम्मोनियो से लड़ने को
उनकी ओर गया, और यहोवा ने उनको
उसके हाथ में कर दिया। ३३ और वह
अरोएर से ले मिन्नीत तक, जो बीस नगर
है, वरन आबेलकरामीम तक जीतते जीतते
उन्हें बहुत बड़ी मार से मारता गया।
और अम्मोनी इस्राएलियो से हार गए॥

३४ जब यिप्तह मिस्पा को अपने
घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती
और नाचती हुई उसकी भेंट के लिये
निकल आई, वह उसकी एकलौती थी,
उसको छोड़ उसके न तो कोई बेटा था
और कोई न बेटी। ३५ उसको देखते
ही उस ने अपने कपड़े फाड़कर कहा,
हाय, मेरी बेटी! तू ने कमर तोड़
दी*, और तू भी मेरे कष्ट देनेवालो में

* मूल में—तू ने मुझे बहुत झुकाया है।

१२ मानोह ने कहा, अब तेरे वचन पूरे
हो जाए तो, उस बालक का कैसा ढग
और उसका क्या काम होगा?
१३ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा,
जितनी वस्तुओ की चर्चा मै ने इस स्त्री
से की थी उन सब से यह परे रहे।
१४ यह कोई वस्तु जो दाखलता से उत्पन्न
होती है न खाए, और न दाखमधु वा
और किसी भाति की मदिरा पीए, और
न कोई अशुद्ध वस्तु खाए, जो जो आज्ञा
मै ने इसको दी थी उसी को यह माने।
१५ मानोह ने यहोवा के दूत से कहा,
हम तुझ को रोक ले, कि तेरे लिये बकरी
का एक बच्चा पकाकर तैयार करे।
१६ यहोवा के दूत ने मानोह से कहा,
चाहे तू मुझे रोक रखे, परन्तु मै तेरे
भोजन मे से कुछ न खाऊगा, और यदि
तू होमबलि करना चाहे तो यहोवा ही
के लिये कर। (मानोह तो न जानता
था, कि यह यहोवा का दूत है।)
१७ मानोह ने यहोवा के दूत से कहा,
अपना नाम बता*, इसलिये कि जब तेरी
बाते पूरी हो तब हम तेरा आदरमान
कर सके। १८ यहोवा के दूत ने उस
से कहा, मेरा नाम तो अद्भुत है, इसलिये
तू उसे क्यो पूछता है? १९ तब मानोह
ने अन्नबलि समेत बकरी का एक बच्चा
लेकर चट्टान पर यहोवा के लिये चढाया,
तब उस दूत ने मानोह और उसकी पत्नी
के देखते देखते एक अद्भुत काम किया।
२० अर्थात् जब लौ उस वेदी पर से
आकाश की ओर उठ रही थी, तब यहोवा
का दूत उस वेदी की लौ मे होकर मानोह
और उसकी पत्नी के देखते देखते चढ गया,
तब वे भूमि पर मुह के बल गिरे।
२१ परन्तु यहोवा के दूत ने मानोह
और उसकी पत्नी को फिर कभी दर्शन
न दिया। तब मानोह ने जान लिया कि
वह यहोवा का दूत था। २२ तब मानोह
ने अपनी पत्नी से कहा, हम निश्चय मर
जाएगे, क्योकि हम ने परमेश्वर का दर्शन
पाया है। २३ उसकी पत्नी ने उस से
कहा, यदि यहोवा हमे मार डालना
चाहता, तो हमारे हाथ से होमबलि और
अन्नबलि ग्रहण न करता, और न वह ऐसी
सब बाते हम को दिखाता, और न वह
इस समय हमे ऐसी बाते सुनाता।
२४ और उस स्त्री के एक बेटा उत्पन्न
हुआ, और उसका नाम शिमशोन रखा,
और वह बालक बढता गया, और यहोवा
उसको आशीष देता रहा। २५ और
यहोवा का आत्मा सोरा और एशताओल
के बीच महनेदान* मे उसको उभारने
लगा॥

१४ शिमशोन तिम्ना को गया,
और तिम्ना मे एक पलिश्ती स्त्री
को देखा। २ तब उस ने जाकर अपने
माता पिता से कहा, तिम्ना मे मै ने एक
पलिश्ती स्त्री को देखा है, सो अब तुम
उस से मेरा ब्याह करा दो। ३ उसके
माता पिता ने उस से कहा, क्या तेरे
भाइयो की बेटियो में, वा हमारे सब लोगो
मे कोई स्त्री नही है, कि तू खतनाहीन
पलिश्तियो मे से स्त्री ब्याहने चाहता है?
शिमशोन ने अपने पिता से कहा, उसी से
मेरा ब्याह करा दे, क्योकि मुझे वही
अच्छी लगती है। ४ उसके माता पिता
न जानते थे कि यह बात यहोवा की ओर

* मूल मे—मेरा नाम क्या है।

* अर्थात् दान की छावनी।

से होनी है, कि वह पलिश्तियो के विरुद्ध
दाव ढूंढता है। उस समय तो पलिश्ती
इस्राएल पर प्रभुता करते थे॥
५ तब शिमशोन अपने माता पिता
को संग ले तिम्ना को चलकर तिम्ना
की दाख की बारी के पास पहुंचा, वहां
उसके साम्हने एक जवान सिंह गरजने
लगा। ६ तब यहोवा का आत्मा उस
पर बल से उतरा, और यद्यपि उसके
हाथ में कुछ न था, तौभी उस ने उसको
ऐसा फाड़ डाला जैसा कोई बकरी का
बच्चा फाड़े। अपना यह काम उसने
अपने पिता वा माता को न बतलाया।
७ तब उस ने जाकर उस स्त्री से बातचीत
की, और वह शिमशोन को अच्छी लगी।
८ कुछ दिनों के बीतने पर वह उसे लाने
को लौट चला, और उस सिंह की लोथ
देखने के लिये मार्ग से मुड़ गया, तो क्या
देखा, कि सिंह की लोथ में मधुमक्खियों
का एक झुण्ड और मधु भी है। ९ तब
वह उस में से कुछ हाथ में लेकर खाते
खाते अपने माता पिता के पास गया,
और उनको यह बिना बताए, कि मैं ने
इसको सिंह की लोथ में से निकाला है, कुछ
दिया, और उन्हों ने भी उसे खाया।
१० तब उसका पिता उस स्त्री के यहां
गया, और शिमशोन ने जवानों की रीति
के अनुसार वहां जेवनार की। ११ उसको
देखकर वे उसके संग रहने के लिये तीस
संगियों को ले आए। १२ शिमशोन ने
उन से कहा, मैं तुम से एक पहेली कहता
हूं, यदि तुम इस जेवनार के सातों दिनों
के भीतर उसे बूझकर अर्थ बता दो,
तो मैं तुम को तीस कुरते और तीस जोड़े
कपड़े दूंगा, १३ और यदि तुम उसे
न बता सको, तो तुम को मुझे तीस
कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े देने पड़ेंगे।
उन्हों ने उस से कहा, अपनी पहेली कह, कि
हम उसे सुनें। १४ उस ने उन से कहा,

खानेवाले में से खाना,
और बलवन्त में से मीठी वस्तु
निकली।

इस पहेली का अर्थ वे तीन दिन के भीतर
न बता सके। १५ सातवें दिन उन्हों
ने शिमशोन की पत्नी से कहा, अपने पति
को फुसला कि वह हमें पहेली का अर्थ
बताए, नहीं तो हम तुझे तेरे पिता के
घर समेत आग में जलाएंगे। क्या तुम
लोगों ने हमारा धन लेने के लिये हमारा
नेवता किया है? क्या यही बात नहीं
है? १६ तब शिमशोन की पत्नी यह
कहकर उसके साम्हने रोने लगी, कि तू
तो मुझ से प्रेम नहीं, बैर ही रखता है,
कि तू ने एक पहेली मेरी जाति के लोगों
से तो कही है, परन्तु मुझ को उसका
अर्थ भी नहीं बताया। उस ने कहा,
मैं ने उसे अपनी माता वा पिता को भी
नहीं बताया, फिर क्या मैं तुझ को
बता दूं? १७ और जेवनार के सातों
दिनों में वह स्त्री उसके साम्हने रोती
रही, और सातवें दिन जब उस ने उसको
बहुत तंग किया, तब उस ने उसको
पहेली का अर्थ बता दिया। तब उस ने
उसे अपनी जाति के लोगों को बता
दिया। १८ तब सातवें दिन सूर्य डूबने
न पाया कि उस नगर के मनुष्यों ने शिम-
शोन से कहा, मधु से अधिक क्या मीठा?
और सिंह से अधिक क्या बलवन्त है?
उस ने उन से कहा,

यदि तुम मेरी कलोर को हल में न
जोतते,
तो मेरी पहेली को कभी न बूझते॥

१६ तब यहोवा का आत्मा उस पर
बल से उतरा, और उस ने अश्कलोन
को जाकर वहा के तीस पुरुषो को मार
डाला, और उनका धन लूटकर तीस जोडे
कपडो को पहेली के बतानेवालो को दे
दिया। तब उसका क्रोध भडका, और
वह अपने पिता के घर गया। २० और
शिमशोन की पत्नी उसके एक सगी को
जिस से उस ने मित्र का सा बर्ताव किया
था ब्याह दी गई॥

१५ परन्तु कुछ दिनो बाद, गेहू
की कटनी के दिनो मे, शिमशोन
ने बकरी का एक बच्चा लेकर अपनी
ससुराल मे जाकर कहा, मै अपनी पत्नी
के पास कोठरी मे जाऊगा। परन्तु उसके
ससुर ने उसे भीतर जाने से रोका।
२ और उसके ससुर ने कहा, मै सचमुच
यह जानता था कि तू उस मे बैर ही
रखता है, इसलिये मै ने उसे तेरे सगी
को ब्याह दिया। क्या उसकी छोटी
बहिन उस मे सुन्दर नही है? उसके
बदले उसी को ब्याह ले। ३ शिमशोन
ने उन लोगो से कहा, अब चाहे मै पलि-
श्तियो की हानि भी करू, तौभी उनके
विषय मे निर्दोष ही ठहरूगा। ४ तब
शिमशोन ने जाकर तीन सौ लोमडिया
पकडी, और मशाल लेकर दो दो लोम-
डियो की पूछ एक साथ बान्धी, और
उनके बीच एक एक मशाल बान्धा।
५ तब मशालो मे आग लगाकर उस
ने लोमड़ियों को पलिश्तियो के खडे खेतो
मे छोड दिया, और पूलियो के ढेर वरन
खड़े खेत और जलपाई की बारिया भी
जल गई। ६ तब पलिश्ती पूछने लगे,
यह किस ने किया है? लोगो ने कहा,
उस तिम्नी के दामाद शिमशोन ने यह
इसलिये किया, कि उसके ससुर ने
उसकी पत्नी उसके सगी को ब्याह दी।
तब पलिश्तियो ने जाकर उस पत्नी और
उसके पिता दोनो को आग मे जला दिया।
७ शिमशोन ने उन से कहा, तुम जो
ऐसा काम करते हो, इसलिये मै तुम से
पलटा लेकर ही चुप रहूगा। ८ तब
उस ने उनको अति निठुरता के साथ*
बडी मार से मार डाला; तब जाकर
एताम नाम चट्टान की एक दरार मे रहने
लगा॥

९ तब पलिश्तियो ने चढाई करके
यहूदा देश मे डेरे खडे किए, और लही
में फैल गए। १० तब यहूदी मनुष्यो
ने उन से पूछा, तुम हम पर क्यो चढाई
करते हो? उन्हो ने उत्तर दिया, शिमशोन
को बान्धने के लिये चढाई करते है, कि
जैसे उस ने हम से किया वैसे ही हम भी
उस से करे। ११ तब तीन हजार यहूदी
पुरुष एताम नाम चट्टान की दरार मे
जाकर शिमशोन से कहने लगे, क्या तू नही
जानता कि पलिश्ती हम पर प्रभुता करते
है? फिर तू ने हम से ऐसा क्यो किया है?
उस ने उन से कहा, जैसा उन्हो ने मुझ
से किया था, वैसा ही मै ने भी उन से
किया है। १२ उन्हो ने उस से कहा,
हम तुझे बान्धकर पलिश्तियो के हाथ
मे कर देने के लिये आए है। शिमशोन
ने उन से कहा, मुझ से यह शपथ खाओ
कि तुम मुझ पर प्रहार न करोगे।
१३ उन्हो ने कहा, ऐसा न होगा, हम
तुझे कसकर उनके हाथ मे कर देगे,
परन्तु तुझे किसी रीति मार न डालेगे।

* मूल में—जाघ पर टाग।

तब वे उसको दो नई रस्सियों से बान्धकर
उस चट्टान में से ले गए। १४ वह लही
तक आ गया था, कि पलिश्ती उसको
देखकर ललकारने लगे, तब यहोवा
का आत्मा उस पर बल से उतरा, और
उसकी बांहों की रस्सियां आग में जले
हुए सन के समान हो गईं, और उसके
हाथों के बन्धन मानो गलकर टूट पड़े।
१५ तब उसको गदहे के जबड़े की एक
नई हड्डी मिली, और उस ने हाथ बढ़ा
उसे लेकर एक हज़ार पुरुषों को मार
डाला। १६ तब शिमशोन ने कहा,

गदहे के जबड़े की हड्डी से ढेर के
ढेर लग गए,
गदहे के जबड़े की हड्डी ही से मैं ने
हज़ार पुरुषों को मार डाला॥

१७ जब वह ऐसा कह चुका, तब
उस ने जबड़े की हड्डी फेंक दी, और
उस स्थान का नाम रामत-लही* रखा
गया। १८ तब उसको बड़ी प्यास लगी,
और उस ने यहोवा को पुकार के कहा,
तू ने अपने दास से यह बड़ा छुटकारा
कराया है, फिर क्या मैं अब प्यासों मरके
उन खतनाहीन लोगों के हाथ में पड़ूं?
१९ तब परमेश्वर ने लही में ओखली
सा गढ़हा कर दिया, और उस में से पानी
निकलने लगा, और जब शिमशोन ने
पीया, तब उसके जी में जी आया, और
वह फिर ताजा दम हो गया। इस कारण
उस सोते का नाम एनहक्कोरे† रखा
गया, वह आज के दिन तक लही में है।
२० शिमशोन तो पलिश्तियों के दिनों
में बीस वर्ष तक इस्राएल का न्याय करता
रहा॥

१६ तब शिमशोन अज्जा को गया,
और वहां एक वेश्या को देखकर
उसके पास गया। २ जब अज्जियों को
इसका समाचार मिला कि शिमशोन यहां
आया है, तब उन्हों ने उसको घेर लिया,
और रात भर नगर के फाटक पर उसकी
घात में लगे रहे, और यह कहकर रात भर
चुपचाप रहे, कि बिहान को भोर होते
ही हम उसको घात करेंगे। ३ परन्तु
शिमशोन आधी रात तक पड़ा रह कर,
आधी रात को उठकर, उस ने नगर के
फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं
को पकड़कर बेंड़ों समेत उखाड़ लिया,
और अपने कन्धों पर रखकर उन्हें उस
पहाड़ की चोटी पर ले गया, जो हेब्रोन
के साम्हने है॥

४ इसके बाद वह सोरेक नाम नाले
में रहनेवाली दलीला नाम एक स्त्री से
प्रीति करने लगा। ५ तब पलिश्तियों के
सरदारों ने उस स्त्री के पास जाके कहा,
तू उसको फुसलाकर बूझ ले कि उसके
महाबल का भेद क्या है, और कौन उपाय
करके हम उस पर ऐसे प्रबल हों, कि
उसे बान्धकर दबा रखें, तब हम तुझे
ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी देंगे। ६ तब
दलीला ने शिमशोन से कहा, मुझे बता
दे कि तेरे बड़े बल का भेद क्या है, और
किस रीति से कोई तुझे बान्धकर दबा
रख सके। ७ शिमशोन ने उस से कहा,
यदि मैं सात ऐसी नई नई तांतों से बान्धा
जाऊं जो सुखाई न गई हों, तो मेरा बल
घट जायेगा, और मैं साधारण मनुष्य
सा हो जाऊंगा। ८ तब पलिश्तियों के
सरदार दलीला के पास ऐसी नई नई
सात तांतें ले गए जो सुखाई न गई थीं,
और उन से उस ने शिमशोन को बांधा।

---

* अर्थात् जबड़े का टीला।
† अर्थात् पुकारनेहारे का सोता।

९ उसके पास तो कुछ मनुष्य कोठरी
मे घात लगाए बैठे थे। तब उस ने उस
से कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात
मे है। तब उस ने तातो को ऐसा तोड़ा
जैसा सन का सूत आग से छूते ही टूट
जाता है। और उसके बल का भेद न
खुला। १० तब दलीला ने शिमशोन से
कहा, सुन, तू ने तो मुझ से छल किया,
और झूठ कहा है, अब मुझे बता दे
कि तू किस वस्तु से बन्ध सकता है।
११ उस ने उस से कहा, यदि मै ऐसी
नई नई रस्सियो से जो किसी काम मे
न आई हो कसकर बान्धा जाऊ, तो मेरा
बल घट जाएगा, और मै साधारण
मनुष्य के समान हो जाऊगा। १२ तब
दलीला ने नई नई रस्सिया लेकर और
उसको बान्धकर कहा, हे शिमशोन, पलिश्ती
तेरी घात मे है। कितने मनुष्य तो उस
कोठरी मे घात लगाए हुए थे। तब
उस ने उनको सूत की नाई अपनी भुजाओ
पर से तोड डाला। १३ तब दलीला
ने शिमशोन से कहा, अब तक तू मुझ
से छल करता, और झूठ बोलता आया
है, अब मुझे बता दे कि तू काहे से
बन्ध सकता है? उस ने कहा, यदि तू
मेरे सिर की सातो लटे ताने मे बुने तो
बन्ध सकूगा। १४ सो उस ने उसे
खूटी से जकडा। तब उस से कहा, हे
शिमशोन, पलिश्ती तेरी घात मे है।
तब वह नीद से चौक उठा, और
खूटी को धरन मे से उखाडकर उसे
ताने समेत ले गया। १५ तब दलीला
ने उस से कहा, तेरा मन तो मुझ मे नही
लगा, फिर तू क्यो कहता है, कि मै तुझ
से प्रीति रखता हू? तू ने ये तीनो बार
मुझ से छल किया, और मुझे नही बताया
कि तेरे बडे बल का भेद क्या है। १६ सो
जब उस ने हर दिन बाते करते करते
उसको तंग किया, और यहा तक हठ
किया, कि उसके नाको मे दम आ गया,
१७ तब उस ने अपने मन का सारा
भेद खोलकर उस से कहा, मेरे सिर पर
छुरा कभी नही फिरा, क्योकि मै मा
के पेट ही से परमेश्वर का नाजीर हू,
यदि मै मूडा जाऊ, तो मेरा बल इतना
घट जाएगा, कि मै साधारण मनुष्य सा
हो जाऊगा। १८ यह देखकर, कि उस
ने अपने मन का सारा भेद मुझ से कह
दिया है, दलीला ने पलिश्तियो के सरदारो
के पास कहला भेजा, कि अब की बार
फिर आओ, क्योकि उस ने अपने मन
का सब भेद मुझे बता दिया है। तब
पलिश्तियो के सरदार हाथ मे रुपया लिए
हुए उसके पास गए। १९ तब उस ने
उसको अपने घुटनो पर सुला रखा,
और एक मनुष्य बुलवाकर उसके सिर
की सातो लटे मुण्डवा डाली। और
वह उसको दबाने लगी, और वह निर्बल
हो गया। २० तब उस ने कहा, हे शिम-
शोन, पलिश्ती तेरी घात मे है। तब
वह चौककर सोचने लगा, कि मै पहिले
की नाई बाहर जाकर झटकूगा। वह
तो न जानता था, कि यहोवा उसके
पास से चला गया है। २१ तब पलि-
श्तियो ने उसको पकडकर उसकी आखे
फोड डाली, और उसे अज्जा को ले जाके
पीतल की बेडियो से जकड दिया, और
वह बन्दीगृह मे चक्की पीसने लगा।
२२ उसके सिर के बाल मुण्ड जाने के
बाद फिर बढने लगे॥

२३ तब पलिश्तियो के सरदार अपने
दागोन नाम देवता के लिये बडा यज्ञ,

और आनन्द करने को यह कहकर इकट्ठे
हुए, कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु
शिमशोन को हमारे हाथ में कर दिया
है। २४ और जब लोगों ने उसे देखा,
तब यह कहकर अपने देवता की स्तुति
की, कि हमारे देवता ने हमारे शत्रु और
हमारे देश के नाश करनेवाले को, जिस
ने हम में से बहुतों को मार भी डाला,
हमारे हाथ में कर दिया है। २५ जब
उनका मन मगन हो गया, तब उन्हों
ने कहा, शिमशोन को बुलवा लो, कि
वह हमारे लिये तमाशा करे। इसलिये
शिमशोन बन्दीगृह में से बुलवाया गया,
और उनके लिये तमाशा करने लगा,
और खम्भों के बीच खड़ा कर दिया गया।
२६ तब शिमशोन ने उस लड़के से जो
उसका हाथ पकड़े था कहा, मुझे उन
खम्भों को जिन से घर सम्भला हुआ है
छूने दे, कि मैं उस पर टेक लगाऊं।
२७ वह घर तो स्त्री पुरुषों से भरा
हुआ था, और पलिश्तियों के सब सरदार
भी वहां थे, और छत पर कोई तीन हजार
स्त्री पुरुष थे, जो शिमशोन को तमाशा
करते हुए देख रहे थे। २८ तब शिमशोन
ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी,
कि हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले,
हे परमेश्वर, अब की बार मुझे बल दे,
कि मैं पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों
का एक ही पलटा लूं। २९ तब शिम-
शोन ने उन दोनों बीचवाले खम्भों को
जिन से घर सम्भला हुआ था पकड़कर
एक पर तो दाहिने हाथ से और दूसरे
पर बाएं हाथ से बल लगा दिया।
३० और शिमशोन ने कहा, पलिश्तियों के
संग मेरा प्राण भी जाए। और वह अपना
सारा बल लगाकर झुका, तब वह घर
सब सरदारों और उस में के सारे लोगों
पर गिर पड़ा। सो जिनको उस ने मरते
समय मार डाला वे उन से भी अधिक
थे जिन्हें उस ने अपने जीवन में मार
डाला था। ३१ तब उसके भाई और उसके
पिता के सारे घराने के लोग आए, और
उसे उठाकर ले गए, और सोरा और
एश्ताओल के मध्य उसके पिता मानोह
की कबर में मिट्टी दी। उसने इस्राएल
का न्याय बीस वर्ष तक किया था॥

१७ एप्रैम के पहाड़ी देश में मीका नाम
एक पुरुष था। २ उस ने अपनी
माता से कहा, जो ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी
तुझ से ले लिए गए थे, जिनके विषय
में तू ने मेरे सुनते भी शाप दिया था,
वे मेरे पास हैं, मैं ने ही उनको ले लिया
था। उसकी माता ने कहा, मेरे बेटे
पर यहोवा की ओर से आशीष होए।
३ जब उस ने वे ग्यारह सौ टुकड़े चान्दी
अपनी माता को फेर दिए, तब माता ने
कहा, मैं अपनी ओर से अपने बेटे के लिये
यह रुपया यहोवा को निश्चय अर्पण करती
हूं ताकि उस से एक मूरत खोदकर, और
दूसरी ढालकर बनाई जाए, सो अब मैं
उसे तुझ को फेर देती हूं। ४ जब उस
ने वह रुपया अपनी माता को फेर दिया,
तब माता ने दो सौ टुकड़े ढलवैयों को
दिए, और उस ने उन से एक मूर्त्ति खोद-
कर, और दूसरी ढालकर बनाई, और
वे मीका के घर में रहीं। ५ मीका के पास
एक देवस्थान था, तब उस ने एक एपोद,
और कई एक गृहदेवता बनवाए, और
अपने एक बेटे का संस्कार करके उसे
अपना पुरोहित ठहरा लिया। ६ उन
दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न

था, जिसको जो ठीक सूझ पडता था
वही वह करता था ॥
७ यहूदा के कुल का एक जवान
लेवीय यहूदा के बेतलेहेम मे परदेशी
होकर रहता था। ८ वह यहूदा के बेत-
लेहेम नगर से इसलिये निकला, कि जहा
कही स्थान मिले वहा जा रहे। चलते
चलते वह एप्रैम के पहाडी देश मे मीका
के घर पर आ निकला। ९ मीका ने
उस से पूछा, तू कहा से आता है? उस
ने कहा, मै तो यहूदा के बेतलेहेम से आया
हुआ एक लेवीय हू, और इसलिये चला
जाता हू, कि जहा कही ठिकाना मुझे
मिले वही रहू। १० मीका ने उस से
कहा, मेरे सग रहकर मेरे लिये पिता
और पुरोहित बन, और मै तुझे प्रति
वर्ष दस टुकडे रूपे, और एक जोडा कपडा,
और भोजनवस्तु दिया करूगा, तब वह
लेवीय भीतर गया। ११ और वह लेवीय
उस पुरुष के सग रहने को प्रसन्न हुआ,
और वह जवान उसके साथ बेटा सा
बना रहा। १२ तब मीका ने उस लेवीय
का सस्कार किया, और वह जवान उसका
पुरोहित होकर मीका के घर मे रहने
लगा। १३ और मीका सोचता था, कि
अब मै जानता हू कि यहोवा मेरा भला
करेगा, क्योकि मै ने एक लेवीय को
अपना पुरोहित कर रखा है ॥

(दानियो का लैश को जीतकर उस मे
बस जाने की कथा)

१८ उन दिनो मे इस्राएलियो का
कोई राजा न था। और उन्ही
दिनो मे दानियो के गोत्र के लोग रहने
के लिये कोई भाग ढूढ रहे थे, क्योकि
इस्राएली गोत्रो के बीच उनका भाग
उस समय तक न मिला था। २ तब
दानियो ने अपने सब कुल मे से पाच
शूरवीरो को सोरा और एश्ताओल से
देश का भेद लेने और उस मे देख भाल
करने के लिये यह कहकर भेज दिया,
कि जाकर देश मे देख भाल करो। इसलिये
वे एप्रैम के पहाडी देश मे मीका के
घर तक जाकर वहा टिक गए। ३ जब
वे मीका के घर के पास आए, तब उस
जवान लेवीय का बोल पहचाना, इसलिये
वहा मुडकर उस से पूछा, तुझे यहा
कौन ले आया? और तू यहा क्या
करता है? और यहा तेरे पास क्या है?
४ उस ने उन से कहा, मीका ने मुझ
से ऐसा ऐसा व्यवहार किया है, और
मुझे नौकर रखा है, और मै उसका
पुरोहित हो गया हू। ५ उन्हो ने उस
से कहा, परमेश्वर से सलाह ले, कि हम
जान ले कि जो यात्रा हम करते है वह
सफल होगी वा नही। ६ पुरोहित ने
उन से कहा, कुशल से चले जाओ। जो
यात्रा तुम करते हो वह ठीक यहोवा
के साम्हने है ॥
७ तब वे पाच मनुष्य चल निकले,
और लैश को जाकर वहा के लोगो को
देखा कि सीदोनियो की नाई निडर,
बेखटके, और शान्ति से रहते है, और
इस देश का कोई अधिकारी नही है, जो
उन्हे किसी काम मे रोके*, और ये सीदो-
नियो से दूर रहते है, और दूसरे मनुष्यो से
कुछ व्यवहार नही रखते। ८ तब वे
सोरा और एश्ताओल को अपने भाइयो
के पास गए, और उनके भाइयो ने उन
से पूछा, तुम क्या समाचार ले आए हो?

* मूल में—लजवाए।

९ उन्हो ने कहा, आओ, हम उन लोगो
पर चढाई करें, क्योकि हम ने उस देश
को देखा कि वह बहुत अच्छा है। तुम
क्यो चुपचाप रहते हो? वहा चलकर
उस देश को अपने वश में कर लेने में
आलस न करो। १० वहा पहुचकर
तुम निडर रहते हुए लोगो को, और
लम्बा चौडा देश पाओगे, और परमेश्वर
ने उसे तुम्हारे हाथ में दे दिया है। वह
ऐसा स्थान है जिस में पृथ्वी भर के किसी
पदार्थ की घटी नही है॥

११ तब वहा से अर्थात् सोरा और
एश्ताओल से दानियो के कुल के छ सौ
पुरुषो ने युद्ध के हथियार बान्धकर प्रस्थान
किया। १२ उन्हो ने जाकर यहूदा देश
के किर्य्यत्यारीम नगर मे डेरे खडे किए।
इस कारण उस स्थान का नाम महनेदान*
आज तक पडा है, वह तो किर्य्यत्यारीम
के पश्चिम की ओर है। १३ वहा से
वे आगे बढकर एप्रैम के पहाडी देश में
मीका के घर के पास आए। १४ तब
जो पाच मनुष्य लैश के देश का भेद
लेने गए थे, वे अपने भाइयो से कहने
लगे, क्या तुम जानते हो कि इन घरो
में एक एपोद, कई एक गृहदेवता, एक
खुदी और एक ढली हुई मूरत है? इस-
लिये अब सोचो, कि क्या करना चाहिये।
१५ वे उधर मुडकर उस जवान लेवीय
के घर गए, जो मीका का घर था, और
उसका कुशल क्षेम पूछा। १६ और वे
छ सौ दानी पुरुष फाटक मे हथियार
बान्धे हुए खडे रहे। १७ और जो पाच
मनुष्य देश का भेद लेने गए थे, उन्हो
ने वहा घुसकर उस खुदी हुई मूरत, और
एपोद, और गृहदेवताओ, और ढली हुई
मूरत को ले लिया, और वह पुरोहित
फाटक में उन हथियार बान्धे हुए छ सौ
पुरुषो के सग खडा था। १८ जब वे
पाच मनुष्य मीका के घर में घुसकर खुदी
हुई मूरत, एपोद, गृहदेवता, और ढली
हुई मूरत को ले आए थे, तब पुरोहित
ने उन से पूछा, यह तुम क्या करते हो?
१९ उन्हो ने उस से कहा, चुप रह,
अपने मुह को हाथ से बन्दकर, और हम
लोगो के सग चलकर, हमारे लिये पिता
और पुरोहित बन। तेरे लिये क्या अच्छा
है? यह, कि एक ही मनुष्य के घराने
का पुरोहित हो, वा यह, कि इस्राएलियो
के एक गोत्र और कुल का पुरोहित हो?
२० तब पुरोहित प्रसन्न हुआ, सो वह
एपोद, गृहदेवता, और खुदी हुई मूरत
को लेकर उन लोगो के सग चला गया।
२१ तब वे मुडे, और बालबच्चो, पशुओ,
और सामान को अपने आगे करके चल
दिए। २२ जब वे मीका के घर से दूर
निकल गए थे, तब जो मनुष्य मीका के
घर के पासवाले घरो मे रहते थे उन्हो
ने इकट्ठे होकर दानियो को जा लिया।
२३ और दानियो को पुकारा, तब उन्हो
ने मुह फेर के मीका से कहा, तुझे क्या
हुआ कि तू इतना बडा दल लिए आता
है*? २४ उस ने कहा, तुम तो मेरे
बनवाए हुए देवताओ और पुरोहित को
ले चले हो, फिर मेरे पास क्या रह गया?
तो तुम मुझ से क्यो पूछते हो, कि तुझे
क्या हुआ है? २५ दानियो ने उस से
कहा, तेरा बोल हम लोगो में सुनाई न
दे, कही ऐसा न हो कि क्रोधी जन तुम

* अर्थात् दान की छावनी।

* मूल में—तू इकट्ठा हुआ है।

लोगो पर प्रहार करें, और तू अपना और
अपने घर के लोगो के भी प्राण को
खो दे। २६ तब दानियो ने अपना मार्ग
लिया, और मीका यह देखकर कि वे
मुझ से अधिक बलवन्त है फिरके अपने
घर लौट गया। २७ और वे मीका के
बनवाए हुए पदार्थो और उसके पुरोहित
को साथ ले लैश के पास आए, जिसके
लोग शान्ति से और बिना खटके रहते
थे, और उन्हो ने उनको तलवार से मार
डाला, और नगर को आग लगाकर फूक
दिया। २८ और कोई बचानेवाला न
था, क्योकि वह सीदोन से दूर था, और
वे और मनुष्यो से कुछ व्यवहार न रखते
थे। और वह बेत्रहोब की तराई मे था।
तब उन्हो ने नगर को दृढ किया, और
उस मे रहने लगे। २९ और उन्हो ने
उस नगर का नाम इस्राएल के एक पुत्र
अपने मूलपुरुष दान के नाम पर दान
रखा, परन्तु पहिले तो उस नगर का नाम
लैश था। ३० तब दानियो ने उस खुदी
हुई मूरत को खडा कर लिया, और देश
की बन्धुआई के समय वह योनातान जो
गेर्शोम का पुत्र और मूसा * का पोता था,
वह और उसके वंश के लोग दान गोत्र
के पुरोहित बने रहे। ३१ और जब तक
परमेश्वर का भवन शीलो मे बना रहा,
तब तक वे मीका की खुदवाई हुई मूरत
को स्थापित किए रहे॥

(बिन्यामीनियों के पाप में पड़े रहने और प्राय नाश किए जाने की कथा)

१९ उन दिनो मे जब इस्राएलियो
का कोई राजा न था, तब एक
लेवीय पुरुष एप्रैम के पहाडी देश की
परली ओर परदेशी होकर रहता था,
जिस ने यहूदा के बेतलेहेम मे की एक
सुरैतिन रख ली थी। २ उसकी सुरैतिन
व्यभिचार करके यहूदा के बेतलेहेम
को अपने पिता के घर चली गई, और
चार महीने वही रही। ३ तब उसका
पति अपने साथ एक सेवक और दो गदहे
लेकर चला, और उसके यहा गया, कि
उसे समझा बुझाकर ले आए। वह उसे
अपने पिता के घर ले गई, और उस
जवान स्त्री का पिता उसे देखकर उसकी
भेट मे आनन्दित हुआ। ४ तब उसके
ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने बिनती
करके उसे रोक लिया, और वह तीन
दिन तक उसके पास रहा, सो वे वहा
खाते पिते टिके रहे। ५ चौथे दिन जब
वे भोर को सवेरे उठे, और वह चलने को
हुआ, तब स्त्री के पिता ने अपने दामाद
से कहा, एक टुकडा रोटी खाकर अपना
जी ठण्डा कर, तब तुम लोग चले जाना।
६ तब उन दोनो ने बैठकर संग संग
खाया पिया, फिर स्त्री के पिता ने उस
पुरुष से कहा, और एक रात टिके रहने
को प्रसन्न हो और आनन्द कर। ७ वह
पुरुष बिदा होने को उठा, परन्तु उसके
ससुर ने बिनती करके उसे दबाया, इसलिये
उस ने फिर उसके यहा रात बिताई।
८ पाचवे दिन भोर को वह तो बिदा
होने को सवेरे उठा, परन्तु स्त्री के पिता
ने कहा, अपना जी ठण्डा कर, और तुम
दोनो दिन ढलने तक रुके रहो। तब
उन दोनो ने रोटी खाई। ९ जब वह
पुरुष अपनी सुरैतिन और सेवक समेत
बिदा होने को उठा, तब उसके ससुर
अर्थात् स्त्री के पिता ने उस से कहा, देख
दिन तो ढल चला है, और साझ होने

* वा मनश्शे।

पर है, इसलिये तुम लोग रात भर टिके
रहो। देख, दिन तो डूबने पर है, सो यहीं
आनन्द करता हुआ रात बिता, और
बिहान को सवेरे उठकर अपना मार्ग लेना,
और अपने डेरे को चले जाना।
१० परन्तु उस पुरुष ने उस रात को
टिकना न चाहा, इसलिये वह उठकर
विदा हुआ, और काठी बान्धे हुए दो
गदहे और अपनी सुरैतिन संग लिए हुए
यबूस के साम्हने तक (जो यरूशलेम
कहलाता है) पहुचा। ११ वे यबूस के
पास थे, और दिन बहुत ढल गया था,
कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा, आ,
हम यबूसियो के इस नगर मे मुडकर
टिकें। १२ उसके स्वामी ने उस से
कहा, हम पराए नगर मे जहा कोई इस्रा-
एली नही रहता, न उतरेंगे, गिबा तक
बढ जाएगे। १३ फिर उस ने अपने
सेवक से कहा, आ, हम उधर के स्थानो
में से किसी के पास जाए, हम गिबा
वा रामा में रात बिताए। १४ और
वे आगे की ओर चले, और उनके
बिन्यामीन के गिबा के निकट पहुचते
पहुचते सूर्य अस्त हो गया, १५ इसलिये
वे गिबा में टिकने के लिये उसकी ओर
मुड गए। और वह भीतर जाकर उस
नगर के चौक मे बैठ गया, क्योंकि किसी
ने उनको अपने घर में न टिकाया।
१६ तब एक बूढा अपने खेत के काम
को निपटाकर साझ को चला आया,
वह तो एप्रैम के पहाडी देश का था, और
गिबा में परदेशी होकर रहता था, परन्तु
उस स्थान के लोग बिन्यामीनी थे।
१७ उस ने आखे उठाकर उस यात्री
को नगर के चौक म बैठे देखा, और उस
बूढे ने पूछा, तू किधर जाता, और
कहा से आता है? १८ उस ने उस से
कहा, हम लोग तो यहूदा के बेतलेहेम
से आकर एप्रैम के पहाडी देश की परली
ओर जाते है, मै तो वही का हू, और
यहूदा के बेतलेहेम तक गया था, और
यहोवा के भवन को जाता हू, परन्तु कोई
मुझे अपने घर में नही टिकाता।
१९ हमारे पास तो गदहो के लिये पुआल
और चारा भी है, और मेरे और तेरी
इस दासी और इस जवान के लिये भी
जो तेरे दासो के सग है रोटी और दाख-
मधु भी है, हमें किसी वस्तु की घटी
नही है। २० बूढे ने कहा, तेरा
कल्याण हो, तेरे प्रयोजन की सब वस्तुए
मेरे सिर हो, परन्तु रात को चौक में
न बिता। २१ तब वह उसको अपने
घर ले चला, और गदहो को चारा दिया,
तब वे पाव धोकर खाने पीने लगे।
२२ वे आनन्द कर रहे थे, कि नगर के
लुच्चो ने घर को घेर लिया, और द्वार
को खटखटा-खटखटाकर घर के उस
बूढे स्वामी से कहने लगे, जो पुरुष तेरे
घर मे आया, उसे बाहर ले आ, कि
हम उस से भोग करें। २३ घर का
स्वामी उनके पास बाहर जाकर उन से
कहने लगा, नही, नही, हे मेरे भाइयो,
ऐसी बुराई न करो, यह पुरुष जो मेरे
घर पर आया है, इस से ऐसी मूढता का
काम मत करो। २४ देखो, यहा मेरी
कुवारी बेटी है, और उस पुरुष की सुरै-
तिन भी है, उनको मैं बाहर ले आऊगा।
और उनका पत-पानी लो तो लो, और
उन से तो जो चाहो सो करो, परन्तु
इस पुरुष से ऐसी मूढता का काम मत
करो। २५ परन्तु उन मनुष्यो ने उसकी
न मानी। तब उस पुरुष ने अपनी

सुरैतिन को पकडकर उनके पास बाहर
कर दिया, और उन्हो ने उस से कुकर्म
किया, और रात भर क्या भोर तक उस
से लीला क्रीडा करते रहे। और पह
फटते ही उसे छोड दिया। २६ तब वह
स्त्री पह फटते हुए जाके उस मनुष्य के
घर के द्वार पर जिस मे उसका पति था
गिर गई, और उजियाले के होने तक
वही पडी रही। २७ सवेरे जब उसका
पति उठ, घर का द्वार खोल, अपना मार्ग
लेने को बाहर गया, तो क्या देखा, कि
मेरी सुरैतिन घर के द्वार के पास डेवढी
पर हाथ फैलाए हुए पडी है। २८ उस
ने उस से कहा, उठ, हम चले। जब कोई
न बोला, तब वह उसको गदहे पर लाद-
कर अपने स्थान को गया। २९ जब
वह अपने घर पहुचा, तब छूरी ले सुरैतिन
को अग अग अलग करके काटा, और
उसे बारह टुकडे करके इस्राएल के देश
में भेज दिया। ३० जितनो ने उसे
देखा, वे सब आपस मे कहने लगे, इस्रा-
एलियो के मिस्र देश से चले आने के समय
से लेकर आज के दिन तक ऐसा कुछ
कभी नही हुआ, और न देखा गया,
सो इसको सोचकर सम्मति करो, और
बताओ॥

२० तब दान से लेकर बर्शेबा तक
के सब इस्राएली और गिलाद के
लोग भी निकले, और उनकी मण्डली
एक मत होकर मिस्पा मे यहोवा के पास
इकट्ठी हुई। २ और सारी प्रजा के
प्रधान लोग, वरन सब इस्राएली गोत्रो
के लोग जो चार लाख तलवार चलाने-
वाले प्यादे थे, परमेश्वर की प्रजा की
सभा में उपस्थित हुए। ३ (बिन्यामीनियो
ने तो सुना कि इस्राएली मिस्पा को आए
है।) और इस्राएली पूछने लगे, हम
से कहो, यह बुराई कैसे हुई? ४ उस
मार डाली हुई स्त्री के लेवीय पति ने
उत्तर दिया, मैं अपनी सुरैतिन समेत
बिन्यामीन के गिबा मे टिकने को गया
था। ५ तब गिबा के पुरुषो ने मुझ पर
चढाई की, और रात के समय घर को
घेरके मुझे घात करना चाहा, और
मेरी सुरैतिन से इतना कुकर्म किया
कि वह मर गई। ६ तब मैं ने अपनी
सुरैतिन को लेकर टुकडे टुकडे किया,
और इस्राएलियो के भाग के सारे देश
मे भेज दिया, उन्हो ने तो इस्राएल मे
महापाप और मूढता का काम किया
है। ७ सुनो, हे इस्राएलियो, सब के सब
देखो, और यही अपनी सम्मति दो।
८ तब सब लोग एक मन हो, उठकर
कहने लगे, न तो हम मे से कोई अपने
डेरे जाएगा, और न कोई अपने घर की
ओर मुडेगा। ९ परन्तु अब हम गिबा
से यह करेगे, अर्थात् हम चिट्ठी डाल डाल-
कर उस पर चढाई करेगे, १० और
हम सब इस्राएली गोत्रो मे सौ पुरुषो
मे से दस, और हजार पुरुषो मे से एक
सौ, और दस हजार मे से एक हजार
पुरुषो को ठहराए, कि वे सेना के लिये
भोजनवस्तु पहुचाए, इसलिये कि हम
बिन्यामीन के गिबा मे पहुचकर उसको
उस मूढता का पूरा फल भुगता सके जो
उन्हो ने इस्राएल मे की है। ११ तब
सब इस्राएली पुरुष उस नगर के विरुद्ध
एक पुरुष की नाई जुटे हुए इकट्ठे हो गए॥
१२ और इस्राएली गोत्रियो ने बिन्या-
मीन के सारे गोत्रियों मे कितने मनुष्य
यह पूछने को भेजे, कि यह क्या बुराई

है जो तुम लोगो मे की गई है ? १३ अब
उन गिबावासी लुच्चो को हमारे हाथ
कर दो, कि हम उनका जान से मार के
इस्राएल मे से बुराई नाश करे। परन्तु
बिन्यामीनियो ने अपने भाई इस्राएलियो
की मानने से इनकार किया। १४ और
बिन्यामीनी अपने अपने नगर मे मे आकर
गिबा मे इसलिये इकट्ठे हुए, कि इस्रा-
एलियो मे लडने को निकलें। १५ और
उसी दिन गिबावासी पुरुषो को छोड,
जिनकी गिनती सात सौ चुने हुए पुरुष
ठहरी, और और नगरो से आए हुए
तलवार चलानेवाले बिन्यामीनियो की
गिनती छब्बीस हजार पुरुष ठहरी।
१६ इन सब लोगो में से सात सौ बैंहत्थे
चुने हुए पुरुष थे, जो सब के सब ऐसे
थे कि गोफन से पत्थर मारने में बाल
भर भी न चूकते थे। १७ और बिन्या-
मीनियो को छोड इस्राएली पुरुष चार
लाख तलवार चलानेवाले थे, ये सब
के सब योद्धा थे ॥

१८ सब इस्राएली उठकर बेतेल को
गए, और यह कहकर परमेश्वर से सलाह
ली, और इस्राएलियो ने पूछा, कि हम
में से कौन बिन्यामीनियो से लडने को
पहिले चढाई करे ? यहोवा ने कहा,
यहूदा पहिले चढाई करे। १९ तब इस्रा-
एलियो ने बिहान को उठकर गिबा के
साम्हने डेरे डाले। २० और इस्राएली
पुरुष बिन्यामीनियो से लडने को निकल
गए, और इस्राएली पुरुषो ने उस से
लडने को गिबा के विरुद्ध पाति बान्धी।
२१ तब बिन्यामीनियो ने गिबा से निकल
उसी दिन बाईस हजार इस्राएली पुरुषो
को मारके मिट्टी मे मिला दिया।
२२ तौभी इस्राएली पुरुष लोगो ने हियाव
बान्धकर उसी स्थान में जहा उन्हो ने
पहिले दिन पाति बान्धी थी, फिर पाति
बान्धी। २३ और इस्राएली जाकर साझ
तक यहोवा के साम्हने रोते रहे, और
यह कहकर यहोवा से पूछा, कि क्या
हम अपने भाई बिन्यामीनियो मे लडने
को फिर पास जाए ? यहोवा ने कहा,
हा, उन पर चढाई करो ॥

२४ तब दूसरे दिन इस्राएली बिन्या-
मीनियो के निकट पहुचे। २५ तब
बिन्यामीनियो ने दूसरे दिन उनका साम्हना
करने को गिबा से निकलकर फिर
अठारह हजार इस्राएली पुरुषो को मारके,
जो सब के सब तलवार चलानेवाले थे,
मिट्टी में मिला दिया। २६ तब सब
इस्राएली, वरन सब लोग बेतेल को गए,
और रोते हुए यहोवा के साम्हने बैठे
रहे, और उस दिन साझ तक उपवास
किए रहे, और यहोवा को होमबलि
और मेलबलि चढाए। २७ और इस्रा-
एलियो ने यहोवा से सलाह ली (उस
समय तो परमेश्वर का वाचा का सन्दूक
वहीं था, २८ और पीनहास, जो हारून
का पोता और एलीआजर का पुत्र था,
उन दिनो में उसके साम्हने हाजिर रहा
करता था) उन्हो ने पूछा, क्या मैं एक
और बार अपने भाई बिन्यामीनियो से
लडने को निकल जाऊ, वा उनको छोडू ?
यहोवा ने कहा, चढाई कर, क्योकि
कल मै उनको तेरे हाथ में कर दूगा।
२९ तब इस्राएलियो ने गिबा के चारो
ओर लोगो को घात में बैठाया ॥

३० तीसरे दिन इस्राएलियो ने बिन्या-
मीनियो पर फिर चढाई की, और पहिले
की नाईं गिबा के विरुद्ध पाति बान्धी।
३१ तब बिन्यामीनी उन लोगो का

साम्हना करने को निकले, और नगर के
पास से खींचे गए, और जो दो सडके,
एक बेतेल को और दूसरी गिबा को गई
है, उन मे लोगों को पहिले की नाईं मारने
लगे, और मैदान मे कोई तीस इस्राएली
मारे गए। ३२ बिन्यामीनी कहने लगे,
वे पहिले की नाईं हम से मारे जाते है।
परन्तु इस्राएलियो ने कहा, हम भागकर
उनको नगर मे से सडको मे खीच ले
आए। ३३ तब सब इस्राएली पुरुषो ने
अपने स्थान से उठकर बालतामार मे
पाति बान्धी, और घात मे बैठे हुए इस्रा-
एली अपने स्थान से, अर्थात् मारेगेबा
से अचानक निकले। ३४ तब सब इस्रा-
एलियो मे से छाटे हुए दस हजार पुरुष
गिबा के साम्हने आए, और घोर लडाई
होने लगी, परन्तु वे न जानते थे कि हम
पर विपत्ति अभी पडा चाहती है।
३५ तब यहोवा ने बिन्यामीनियो को
इस्राएल से हरवा दिया, और उस दिन
इस्राएलियो ने पचीस हजार एक सौ
बिन्यामीनी पुरुषो को नाश किया, जो
सब के सब तलवार चलानेवाले थे।।
३६ तब बिन्यामीनियो ने देखा कि
हम हार गए। और इस्राएली पुरुष उन
घातको का भरोसा करके जिन्हे उन्हो
ने गिबा के पास बैठाया था बिन्यामीनियो
के साम्हने से चले गए। ३७ परन्तु
घातक लोग फुर्ती करके गिबा पर झपट
गए, और घातको ने आगे बढकर कुल
नगर को तलवार से मारा। ३८ इस्रा-
एली पुरुषो और घातको के बीच तो
यह चिन्ह ठहराया गया था, कि वे नगर
मे से बहुत बडा धूए का खम्भा उठाए।
३९ इस्राएली पुरुष तो लडाई मे हटने लगे,
और बिन्यामीनियो ने यह कहकर कि
निश्चय वे पहिली लडाई की नाईं हम
से हारे जाते है, इस्राएलियो को मार
डालने लगे, और तीस एक पुरुषो को
मार डाला। ४० परन्तु जब वह धूए
का खम्भा नगर मे से उठने लगा, तब
बिन्यामीनियो ने अपने पीछे जो दृष्टि
की तो क्या देखा, कि नगर का नगर
धूआ होकर आकाश की ओर उड रहा
है। ४१ तब इस्राएली पुरुष घूमे, और
बिन्यामीनी पुरुष यह देखकर घबरा
गए, कि हम पर विपत्ति आ पडी है।
४२ इसलिये उन्हो ने इस्राएली पुरुषो
को पीठ दिखाकर जगल का मार्ग लिया,
परन्तु लडाई उन से होती ही रही, और
जो और नगरो मे से आए थे उनको
इस्राएली रास्ते मे नाश करते गए।
४३ उन्हो ने बिन्यामीनियो को घेर लिया,
और उन्हे खदेडा, वे मनूहा मे वरन गिबा
के पूर्व की ओर तक उन्हे लताडते गए।
४४ और बिन्यामीनियों मे से अठारह
हजार पुरुष जो सब के सब शूरवीर थे
मारे गए। ४५ तब वे घूमकर जगल मे
की रिम्मोन नाम चट्टान की ओर तो
भाग गए, परन्तु इस्राएलियो ने उन मे
से पाच हजार को बीनकर सडको मे
मार डाला, फिर गिदोम तक उनके
पीछे पडके उन मे से दो हजार पुरुष
मार डाले। ४६ तब बिन्यामीनियो मे
से जो उस दिन मारे गए वे पचीस हजार
तलवार चलानेवाले पुरुष थे, और ये
सब शूरवीर थे। ४७ परन्तु छ सौ
पुरुष घूमकर जगल की ओर भागे, और
रिम्मोन नाम चट्टान मे पहुच गए, और
चार महीने वही रहे। ४८ तब इस्रा-
एली पुरुष लौटकर बिन्यामीनियो पर
लपके और नगरो मे क्या मनुष्य, क्या

पशु, क्या जो कुछ मिला, सब को तलवार
से नाश कर डाला। और जितने नगर
उन्हे मिले उन सभो को आग लगाकर
फूंक दिया॥

२१ इस्राएली पुरुषों ने तो मिस्पा
में शपथ खाकर कहा था, कि हम में
कोई अपनी बेटी किसी बिन्यामीनी को
न ब्याह देगा। २ वे बेतेल को जाकर
सांझ तक परमेश्वर के साम्हने बैठे रहे,
और फूट फूटकर बहुत रोते रहे। ३ और
कहते थे, हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा,
इस्राएल में ऐसा क्यों होने पाया, कि
आज इस्राएल में एक गोत्र की घटी हुई
है? ४ फिर दूसरे दिन उन्हों ने सवेरे
उठ वहां वेदी बनाकर होमबलि और
मेलबलि चढ़ाए। ५ तब इस्राएली पूछने
लगे, इस्राएल के सारे गोत्रों में से कौन
है जो यहोवा के पास सभा में न आया
था? उन्हों ने तो भारी शपथ खाकर
कहा था, कि जो कोई मिस्पा को यहोवा
के पास न आए वह निश्चय मार डाला
जाएगा। ६ तब इस्राएली अपने भाई
बिन्यामीन के विषय में यह कहकर पछ-
ताने लगे, कि आज इस्राएल में से एक
गोत्र कट गया है। ७ हम ने जो यहोवा की
शपथ खाकर कहा है, कि हम उन्हें अपनी
किसी बेटी को न ब्याह देंगे, इसलिये
बचे हुओं को स्त्रियां मिलने के लिये क्या
करें? ८ जब उन्हों ने यह पूछा, कि
इस्राएल के गोत्रों में से कौन है जो मिस्पा
को यहोवा के पास न आया था? तब यह
मालूम हुआ, कि गिलादी याबेश से कोई
छावनी में सभा को न आया था।
९ अर्थात् जब लोगों की गिनती की
गई, तब यह जाना गया कि गिलादी
याबेश के निवासियों में से कोई यहां
नहीं है। १० इसलिये मण्डली ने बारह
हजार शूरवीरों को वहां यह आज्ञा देकर
भेज दिया, कि तुम जाकर स्त्रियों और
बालबच्चों समेत गिलादी याबेश को
तलवार से नाश करो। ११ और तुम्हें
जो करना होगा वह यह है, कि सब
पुरुषों को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष
का मुंह देखा हो उनको सत्यानाश कर
डालना। १२ और उन्हें गिलादी याबेश
के निवासियों में से चार सौ जवान
कुमारियां मिलीं जिन्हों ने पुरुष का मुंह
नहीं देखा था, और उन्हें वे शीलो
को जो कनान देश में है छावनी में ले
आए॥

१३ तब सारी मण्डली ने उन बिन्या-
मीनियों के पास जो रिम्मोन नाम चट्टान
पर थे कहला भेजा, और उन से संधि
का प्रचार कराया। १४ तब बिन्यामीन
उसी समय लौट गए, और उनको वे
स्त्रियां दी गईं जो गिलादी याबेश की
स्त्रियों में से जीवित छोड़ी गई थीं, तौभी
वे उनके लिये थोड़ी थीं। १५ तब लोग
बिन्यामीन के विषय फिर यह कहके
पछताये, कि यहोवा ने इस्राएल के गोत्रों
में घटी की है॥

१६ तब मण्डली के वृद्ध लोगों ने
कहा, कि बिन्यामीनी स्त्रियां जो नाश
हुई हैं, तो बचे हुए पुरुषों के लिये स्त्री
पाने का हम क्या उपाय करें? १७ फिर
उन्हों ने कहा, बचे हुए बिन्यामीनियों
के लिये कोई भाग चाहिये, ऐसा न हो
कि इस्राएल में से एक गोत्र मिट जाए।
१८ परन्तु हम तो अपनी किसी बेटी
को उन्हें ब्याह नहीं दे सकते, क्योंकि
इस्राएलियों ने यह कहकर शपथ खाई

है कि शापित हो वह जो किसी बिन्या-
मीनी को अपनी लडकी ब्याह दे।
१९ फिर उन्हो ने कहा, सुनो, शीलो
जो बेतेल की उत्तर ओर, और उस
सडक की पूर्व ओर है जो बेतेल से शकेम
को चली गई है, और लबोना की दक्खिन
ओर है, उस मे प्रति वर्ष यहोवा का एक
पर्व माना जाता है। २० इसलिये उन्हो
ने बिन्यामीनियो को यह आज्ञा दी, कि
तुम जाकर दाख की बारियो के बीच घात
लगाए बैठे रहो, २१ और देखते रहो,
और यदि शीलो की लडकिया नाचने
को निकले, तो तुम दाख की बारियो से
निकलकर शीलो की लडकियो मे से
अपनी अपनी स्त्री को पकडकर बिन्या-
मीन के देश को चले जाना। २२ और
जब उनके पिता वा भाई हमारे पास
झगडने को आएगे, तब हम उन से कहेगे,
कि अनुग्रह करके उनको हमें दे दो,
क्योंकि लडाई के समय हम ने उन में
से एक एक के लिये स्त्री नही बचाई*, और
तुम लोगो ने तो उनको ब्याह नही दिया,
नही तो तुम अब दोषी ठहरते। २३ तब
बिन्यामीनियो ने ऐसा ही किया, अर्थात्
उन्हो ने अपनी गिनती के अनुसार उन
नाचनेवालियो मे से पकडकर स्त्रिया ले
ली; तब अपने भाग को लौट गए, और
नगरो को बसाकर उन मे रहने लगे।
२४ उसी समय इस्राएली वहा से चल-
कर अपने अपने गोत्र और अपने अपने
घराने को गए, और वहा से वे अपने
अपने निज भाग को गए। २५ उन दिनो
मे इस्राएलियो का कोई राजा न था,
जिसको जो ठीक सूझ पडता था वही
वह करता था॥

* मूल में—ली।

रूत

१ जिन दिनो मे न्यायी लोग न्याय
करते थे उन दिनो मे देश मे अकाल
पडा, तब यहूदा के बेतलेहेम का एक
पुरुष अपनी स्त्री और दोनो पुत्रो को
सग लेकर मोआब के देश में परदेशी
होकर रहने के लिये चला। २ उस पुरुष
का नाम एलीमेलेक, और उसकी पत्नि
का नाम नाओमी, और उसके दो बेटो
के नाम महलोन और किल्योन थे, ये
एप्राती अर्थात् यहूदा के बेतलेहेम के
रहनेवाले थे। और मोआब के देश मे
आकर वहा रहे। ३ और नाओमी का
पति एलीमेलेक मर गया, और नाओमी
और उसके दोनो पुत्र रह गए। ४ और
इन्हो ने एक एक मोआबिन ब्याह ली;
एक स्त्री का नाम तो ओर्पा और दूसरी
का नाम रूत था। फिर वे वहा कोई
दस वर्ष रहे। ५ जब महलोन और
किल्योन दोनो मर गए, तब नाओमी
अपने दोनो पुत्रो और पति से रहित हो

गई। ६ तब वह मोआब के देश में
यह सुनकर, कि यहोवा ने अपनी प्रजा
के लोगों की सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु
दी है, उस देश से अपनी दोनों बहुओं
समेत लौट जाने को चली। ७ तब वह
अपनी दोनों बहुओं समेत उस स्थान से
जहां रहती थी निकली, और वे यहूदा
देश को लौट जाने का मार्ग लिया।
८ तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से
कहा, तुम अपने अपने मैके लौट जाओ।
और जैसे तुम ने उन से जो मर गए हैं और
मुझ से भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा
तुम्हारे ऊपर कृपा करे। ९ यहोवा ऐसा
करे कि तुम फिर पति करके उनके
घरों में विश्राम पाओ। तब उस ने उन-
को चूमा, और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने
लगीं, १० और उस से कहा, निश्चय
हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगी।
११ नाओमी ने कहा, हे मेरी बेटियो,
लौट जाओ, तुम क्यों मेरे संग चलोगी?
क्या मेरी कोख में और पुत्र हैं जो तुम्हारे
पति हों? १२ हे मेरी बेटियो, लौटकर
चली जाओ, क्योंकि मैं पति करने को
बूढ़ी हूं। और चाहे मैं कहती भी, कि
मुझे आशा है, और आज की रात मेरे
पति होता भी, और मेरे पुत्र भी होते,
१३ तौभी क्या तुम उनके सयाने होने
तक आशा लगाए ठहरी रहतीं? और
उनके निमित्त पति करने से रुकी रहतीं?
हे मेरी बेटियो, ऐसा न हो, क्योंकि मेरा
दुःख * तुम्हारे दुःख से बहुत बढ़कर है,
देखो, यहोवा का हाथ मेरे विरुद्ध उठा
है। १४ तब वे फिर से उठीं, और
ओर्पा ने तो अपनी सास को चूमा, परन्तु
रूत उस से अलग न हुई। १५ तब
उस ने कहा, देख, तेरी जिठानी * तो
अपने लोगों और अपने देवता के पास
लौट गई है, इसलिये तू अपनी जिठानी *
के पीछे लौट जा। १६ रूत बोली, तू
मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग
वा छोड़कर लौट जा, क्योंकि जिधर
तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी, जहां तू
टिके वहां मैं भी टिकूंगी, तेरे लोग मेरे
लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा
परमेश्वर होगा, १७ जहां तू मरेगी वहां
मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी
जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी
कारण मैं तुझ से अलग होऊं, तो यहोवा
मुझ से वैसा ही वरन उस से भी अधिक
करे। १८ जब उस ने यह देखा कि
वह मेरे संग चलने को स्थिर है, तब
उस ने उस से और बात न कही। १९ सो
वे दोनों चल निकलीं और बेतलेहेम को
पहुंचीं। और उनके बेतलेहेम में पहुंचने
पर कुल नगर में उनके कारण धूम मची,
और स्त्रियां कहने लगीं, क्या यह नाओमी
है? २० उस ने उन से कहा, मुझे
नाओमी † न कहो, मुझे मारा ‡ कहो,
क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा
दुःख दिया § है। २१ मैं भरी पूरी चली
गई थी, परन्तु यहोवा ने मुझे छूछी करके
लौटाया है। सो जब कि यहोवा ही ने
मेरे विरुद्ध साक्षी दी, और सर्वशक्तिमान्
ने मुझे दुःख दिया है, फिर तुम मुझे
क्यों नाओमी कहती हो? २२ इस प्रकार
नाओमी अपनी मोआबिन बहू रूत के

* मूल में—कड़वाहट।

* वा देवरानी। † अर्थात् मनोहर।
‡ अर्थात् दुखियारी। मूल में—कड़वी।
§ मूल में—मुझ से बहुत कड़वा व्यवहार किया।

साथ लौटी, जो मोआब देश से आई थी।
और वे जौ कटने के आरम्भ के समय
बेतलेहेम मे पहुची॥

२ नाओमी के पति एलीमेलेक के
कुल मे उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी
था, जिसका नाम बोअज था। २ और
मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा, मुझे
किसी खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर
अनुग्रह की दृष्टि करे, उसके पीछे पीछे
मैं सिला बीनती जाऊ। उस ने कहा,
चली जा, बेटी। ३ सो वह जाकर एक
खेत मे लवनेवालो के पीछे बीनने लगी,
और जिस खेत मे* वह सयोग से गई
थी वह एलीमेलेक के कुटुम्बी बोअज
का था। ४ और बोअज बेतलेहेम से
आकर लवनेवालो से कहने लगा, यहोवा
तुम्हारे सग रहे, और वे उस से बोले,
यहोवा तुझे आशीष दे। ५ तब बोअज
ने अपने उस सेवक से जो लवनेवालो
के ऊपर ठहराया गया था पूछा, वह किस
की कन्या है। ६ जो सेवक लवनेवालो के
ऊपर ठहराया गया था उस ने उत्तर
दिया, वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी
के सग मोआब देश से लौट आई है।
७ उस ने कहा था, मुझे लवनेवालो के
पीछे पीछे पूलो के बीच बीनने और बाले
बटोरने दे। तो वह आई, और भोर
से अब तक यही है, केवल थोडी देर तक
घर मे रही थी। ८ तब बोअज ने रूत
से कहा, हे मेरी बेटी, क्या तू सुनती है?
किसी दूसरे के खेत मे बीनने को न जाना,
मेरी ही दासियो के सग यही रहना।
९ जिस खेत को वे लवती हो उसी पर
तेरा ध्यान बन्धा रहे, और उन्ही के
पीछे पीछे चला करना। क्या मैं ने जवानो
को आज्ञा नही दी, कि तुझ से न छूए?
और जब जब तुझे प्यास लगे, तब तब
तू बरतनो के पास जाकर जवानो का
भरा हुआ पानी पीना। १० तब वह
भूमि तक झुककर मुह के बल गिरी,
और उस से कहने लगी, क्या कारण
है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की
दृष्टि करके मेरी सुधि ली है? ११ बोअज
ने उत्तर दिया, जो कुछ तू ने पति मरने
के पीछे अपनी सास से किया है, और
तू किस रीति अपने माता पिता और
जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगो मे
आई है जिनको पहिले तू न जानती
थी, यह सब मुझे विस्तार के साथ बताया
गया है। १२ यहोवा तेरी करनी का
फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा जिसके परो तले तू शरण लेने
आई है तुझे पूरा बदला दे। १३ उस
ने कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे अनुग्रह की
दृष्टि मुझ पर बनी रहे, क्योकि यद्यपि
मै तेरी दासियो मे से किसी के भी बरा-
बर नही हू, तौभी तू ने अपनी दासी के
मन मे पैठनेवाली बाते कहकर मुझे शान्ति
दी है। १४ फिर खाने के समय बोअज
ने उस से कहा, यही आकर रोटी खा,
और अपना कौर सिरके मे बोर। तो
वह लवनेवालो के पास बैठ गई, और
उस ने उसको भुनी हुई बाले दी, और
वह खाकर तृप्त हुई, वरन कुछ बचा
भी रखा। १५ जब वह बीनने को
उठी, तब बोअज ने अपने जवानो को आज्ञा
दी, कि उसको पूलो के बीच बीच मे
भी बीनने दो, और दोष मत लगाओ।
१६ वरन मुट्ठी भर जाने पर कुछ कुछ
निकाल कर गिरा भी दिया करो, और

* मूल में—जिस खेत के भाग में।

उसके बीनने के लिये छोड़ दो, और उसे
घुड़को मत। १७ सो वह साझ तक
खेत मे बीनती रही, तब जो कुछ बीन
चुकी उसे फटका, और वह कोई एपा
भर जौ निकला। १८ तब वह उसे
उठाकर नगर में गई, और उसकी सास
ने उसका बीना हुआ देखा, और जो कुछ
उस ने तृप्त होकर बचाया था उसको
उस ने निकालकर अपनी सास को दिया।
१९ उसकी सास ने उस से पूछा, आज
तू कहा बीनती, और कहा काम करती
थी? धन्य वह हो जिस ने तेरी सुधि
ली है। तब उस ने अपनी सास को बता
दिया, कि मैं ने किस के पास काम किया,
और कहा, कि जिस पुरुष के पास मैं
ने आज काम किया उसका नाम बोअज
है। २० नाओमी ने अपनी बहू से कहा,
वह यहोवा की ओर से आशीष पाए,
क्योंकि उस ने न तो जीवित पर से और
न मरे हुओ पर से अपनी करुणा हटाई।
फिर नाओमी ने उस से कहा, वह पुरुष
तो हमारा एक कुटुम्बी है, वरन उन में से
है जिनको हमारी भूमि छुड़ाने का अधि-
कार है। २१ फिर रूत मोआबिन बोली,
उस ने मुझ से यह भी कहा, कि जब तक
मेरे सेवक मेरी सारी कटनी पूरी न कर
चुके तब तक उन्ही के संग संग लगी रह।
२२ नाओमी ने अपनी बहू रूत से कहा,
मेरी बेटी यह अच्छा भी है, कि तू उसी
की दासियो के साथ साथ जाया करे,
और वे तुझ से दूसरे के खेत में न मिले।
२३ इसलिये रूत जौ और गेहू दोनो
की कटनी के अन्त तक बीनने के लिये
बोअज की दासियो के साथ साथ
लगी रही, और अपनी सास के यहा
रहती थी॥

३ उसकी सास नाओमी ने उस से
कहा, हे मेरी बेटी, क्या मैं तेरे लिये
ठाव न ढूढू कि तेरा भला हो? २ अब
जिसकी दासियो के पास तू थी, क्या
वह बोअज हमारा कुटुम्बी नही है?
वह तो आज रात को खलिहान मे जौ
फटकेगा। ३ तू स्नान कर तेल लगा,
वस्त्र पहिनकर खलिहान को जा, परन्तु
जब तक वह पुरुष खा पी न चुके तब
तक अपने को उस पर प्रगट न करना।
४ और जब वह लेट जाए, तब तू उस
के लेटने के स्थान को देख लेना, फिर
भीतर जा उसके पाव उघारके लेट जाना,
तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या
करना चाहिये। ५ उस ने उस से कहा,
जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूगी।
६ तब वह खलिहान को गई और अपनी
सास की आज्ञा के अनुसार ही किया।
७ जब बोअज खा पी चुका, और उसका
मन आनन्दित हुआ, तब जाकर राशि
के एक सिरे पर लेट गया। तब वह
चुपचाप गई, और उसके पाव उघार के
लेट गई। ८ आधी रात को वह पुरुष
चौक पड़ा, और आगे की ओर झुककर
क्या पाया, कि मेरे पावो के पास कोई
स्त्री लेटी है। ९ उस ने पूछा, तू कौन
है? तब वह बोली, मैं तो तेरी दासी
रूत हू, तू अपनी दासी को अपनी चद्दर
ओढा दे, क्योंकि तू हमारी भूमि छुड़ाने-
वाला कुटुम्बी है। १० उस ने कहा, हे
बेटी, यहोवा की ओर से तुझ पर आशीष
हो, क्योंकि तू ने अपनी पिछली प्रीति
पहिली से अधिक दिखाई, क्योंकि तू, क्या
धनी, क्या कगाल, किसी जवान के पीछे
नही लगी। ११ इसलिये अब, हे मेरी
बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी मैं तुझ

से करूंगा, क्योंकि मेरे नगर के सब लोग *
जानते हैं कि तू भली स्त्री है। १२ और
अब सच तो है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्बी
हूं, तौभी एक और है जिसे मुझ से पहिले
ही छुड़ाने का अधिकार है। १३ सो रात
भर ठहरी रह, और सवेरे यदि वह तेरे
लिये छुड़ानेवाले का काम करना चाहे,
तो अच्छा, वही ऐसा करे, परन्तु यदि
वह तेरे लिये छुड़ानेवाले का काम करने
को प्रसन्न न हो, तो यहोवा के जीवन की
शपथ मैं ही वह काम करूंगा। भोर
तक लेटी रह। १४ तब वह उसके पांवों
के पास भोर तक लेटी रही, और उस
से पहिले कि कोई दूसरे को चीन्ह सके
वह उठी, और बोअज ने कहा, कोई
जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री
आई थी। १५ तब बोअज ने कहा, जो
चद्दर तू ओढ़े है उसे फैलाकर थाम्भ ले।
और जब उस ने उसे थाम्भा तब उस ने
छः नपुए जौ नापकर उसको उठा दिया,
फिर वह नगर में चली गई। १६ जब
रूत अपनी सास के पास आई तब उस
ने पूछा, हे बेटी, क्या हुआ † ? तब जो
कुछ उस पुरुष ने उस से किया था वह
सब उस ने उसे कह सुनाया। १७ फिर
उस ने कहा, यह छः नपुए जौ उस ने
यह कहकर मुझे दिया, कि अपनी सास
के पास छूछे हाथ मत जा। १८ उस ने
कहा, हे मेरी बेटी, जब तक तू न जाने
कि इस बात का कैसा फल निकलेगा, तब
तक चुपचाप बैठी रह, क्योंकि आज उस
पुरुष को यह काम बिना निपटाए चैन
न पड़ेगा॥

---

* मूल में—मेरे लोगों का सारा फाटक।
† मूल में—तू कौन है?

४ तब बोअज फाटक के पास जाकर
बैठ गया, और जिस छुड़ानेवाले
कुटुम्बी की चर्चा बोअज ने की थी, वह
भी आ गया। तब बोअज ने कहा, हे
फुलाने, इधर आकर यहीं बैठ जा, तो
वह उधर जाकर बैठ गया। २ तब उस
ने नगर के दस वृद्ध लोगों को बुलाकर
कहा, यहीं बैठ जाओ, वे भी बैठ गए।
३ तब वह उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी
से कहने लगा, नाओमी जो मोआब
देश से लौट आई है वह हमारे भाई
एलीमेलेक की एक टुकड़ा भूमि बेचना
चाहती है। ४ इसलिये मैं ने सोचा कि
यह बात तुझ को जताकर कहूंगा, कि
तू उसको इन बैठे हुओं के साम्हने और
मेरे लोगों के इन वृद्ध लोगों के साम्हने
मोल ले। और यदि तू उसको छुड़ाना
चाहे, तो छुड़ा, और यदि तू छुड़ाना
न चाहे, तो मुझे ऐसा ही बता दे, कि
मैं समझ लूं, क्योंकि तुझे छोड़ उसके
छुड़ाने का अधिकार और किसी को नहीं
है, और तेरे बाद मैं हूं। उस ने कहा,
मैं उसे छुड़ाऊंगा। ५ फिर बोअज ने
कहा, जब तू उस भूमि को नाओमी के
हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबिन
के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस
मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए
का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे।
६ उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने कहा, मैं
उसको छुड़ा नहीं सकता, ऐसा न हो कि
मेरा निज भाग बिगड़ जाए। इसलिये
मेरा छुड़ाने का अधिकार तू ले ले, क्योंकि
मुझ से वह छुड़ाया नहीं जाता। ७ अगले
समय में इस्राएल में छुड़ाने और बदलने
के विषय में सब पक्का करने के लिये
यह व्यवहार था, कि मनुष्य अपनी जूती

उतार के दूसरे को देना था। इस्राएल
में गवाही इसी रीति होती थी। ८ इस-
लिये उस छुड़ानेवाले कुटुम्बी ने बोअज
से यह कहकर, कि तू उसे मोल ले, अपनी
जूती उतारी। ९ तब बोअज ने वृद्ध
लोगों और सब लोगों से कहा, तुम आज
इस बात के साक्षी हो कि जो कुछ एली-
मेलेक का और जो कुछ किल्योन और
महलोन का था, वह सब मैं नाओमी के
हाथ से मोल लेता हूं। १० फिर मह-
लोन की स्त्री रूत मोआबिन को भी मैं
अपनी पत्नी करने के लिये इस मनसा
से मोल लेता हूं, कि मरे हुए का नाम
उसके निज भाग पर स्थिर करूं, कहीं
ऐसा न हो कि मरे हुए का नाम उसके
भाइयों में से और उसके स्थान के फाटक
से मिट जाए, तुम लोग आज साक्षी
ठहरे हो। ११ तब फाटक के पास जितने
लोग थे उन्हों ने और वृद्ध लोगों ने कहा,
हम साक्षी हैं। यह जो स्त्री तेरे घर
में आती है उसको यहोवा इस्राएल के
घराने की दो उपजानेवाली * राहेल और
लिआ के समान करे। और तू एप्राता
में वीरता करे, और बेतलेहेम में तेरा
बड़ा नाम हो, १२ और जो सन्तान
यहोवा इस जवान स्त्री के द्वारा तुझे दे
उसके कारण से तेरा घराना पेरेस का

* मूल में—घर की बनानेवाली।

सा हो जाए, जो तामार से यहूदा के
द्वारा उत्पन्न हुआ। १३ तब बोअज ने
रूत को ब्याह लिया, और वह उसकी
पत्नी हो गई, और जब वह उसके
पास गया तब यहोवा की दया से उस-
को गर्भ रहा, और उसके एक बेटा
उत्पन्न हुआ। १४ तब स्त्रियों ने नाओमी
से कहा, यहोवा धन्य है, जिस ने
तुझे आज छुड़ानेवाले कुटुम्बी के बिना
नहीं छोड़ा, इस्राएल में इसका बड़ा
नाम हो। १५ और यह तेरे जी में जी
ले आनेवाला और तेरा बुढ़ापे में पालने-
वाला हो, क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से
प्रेम रखती और सात बेटों से भी तेरे
लिये श्रेष्ठ है उसी का यह बेटा
है। १६ फिर नाओमी उस बच्चे को
अपनी गोद में रखकर उसकी धाई
का काम करने लगी। १७ और उसकी
पड़ोसिनों ने यह कहकर, कि नाओमी
के एक बेटा उत्पन्न हुआ है, लड़के का
नाम ओबेद रखा। यिशै का पिता और
दाऊद का दादा वही हुआ॥

१८ पेरेस की यह वंशावली है, अर्थात्
पेरेस से हेस्रोन, १९ और हेस्रोन से राम,
और राम से अम्मीनादाब, २० और
अम्मीनादाब से नहशोन, और नहशोन
से सल्मोन, २१ और सल्मोन से बोअज,
और बोअज से ओबेद, २२ और ओबेद
से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ॥

शमूएल की पहिली पुस्तक

(शमूएल के जन्म और लड़कपन का वर्णन)

१ एप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैम-
सोपीम नाम नगर का निवासी एल्काना
नाम एक पुरुष था, वह एप्रैमी था, और
सूप के पुत्र तोहू का परपोता, एलीहू का
पोता, और यरोहाम का पुत्र था।
२ और उसके दो पत्नियां थीं, एक
का तो नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना
था। और पनिन्ना के तो बालक हुए,
परन्तु हन्ना के कोई बालक न हुआ।
३ वह पुरुष प्रति वर्ष अपने नगर से
सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने
और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में
जाता था, और वहां होप्नी और पीन-
हास नाम एली के दोनों पुत्र रहते थे,
जो यहोवा के याजक थे। ४ और जब
जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब
तब वह अपनी पत्नी पनिन्ना को और
उसके सब बेटे-बेटियों को दान दिया
करता था, ५ परन्तु हन्ना को वह
दूना दान दिया करता था, क्योंकि वह
हन्ना से प्रीति रखता था, तौभी यहोवा
ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी।
६ परन्तु उसकी सौत इस कारण से,
कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी
थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुढ़ाती रहती
थी। ७ और वह तो प्रति वर्ष ऐसा
ही करता था, और जब हन्ना यहोवा
के भवन को जाती थी तब पनिन्ना
उसको चिढ़ाती थी। इसलिये वह रोती
और खाना न खाती थी। ८ इसलिये
उसके पति एल्काना ने उस से कहा,
हे हन्ना, तू क्यों रोती है? और खाना
क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यों
उदास है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों
से भी अच्छा नहीं हूं? ९ तब शीलो
में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी।
और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक
अलंग के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा
हुआ था। १० और यह मन में व्याकुल*
होकर यहोवा से प्रार्थना करने और
बिलख बिलखकर रोने लगी। ११ और
उस ने यह मन्नत मानी, कि हे सेनाओं
के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख
पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि
ले, और अपनी दासी को भूल न जाए,
और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसे
उसके जीवन भर के लिये यहोवा को
अर्पण करूंगी, और उसके सिर पर
छुरा फिरने न पाएगा। १२ जब वह
यहोवा के साम्हने ऐसी प्रार्थना कर रही
थी, तब एली उसके मुंह की ओर ताक
रहा था। १३ हन्ना मन ही मन कह
रही थी, उसके होंठ तो हिलते थे परन्तु
उसका शब्द न सुन पड़ता था, इसलिये
एली ने समझा कि वह नशे में है।
१४ तब एली ने उस से कहा, तू कब
तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार†।
१५ हन्ना ने कहा, नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं
तो दुःखिया हूं, मैं ने न तो दाखमधु
पिया है और न मदिरा, मैं ने अपने मन

---

* मूल में—कड़वी।

† मूल में—अपना दाखमधु अपने घर से दूर कर।

की बात खोलकर यहोवा से कही है*।
१६ अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान,
जो कुछ मैं ने अब तक कहा है, वह बहुत
ही शोकित होने और चिढ़ाई जाने के
कारण कहा है। १७ एली ने कहा,
कुशल से चली जा; इस्राएल का परमेश्वर
तुझे मन चाहा वर दे। १८ उस ने
कहा, तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह
पाए। तब वह स्त्री चली गई और खाना
खाया, और उसका मुंह फिर उदास
न रहा। १९ बिहान को वे सवेरे उठ
यहोवा को दण्डवत करके रामा में अपने
घर लौट गए। और एल्काना अपनी
स्त्री हन्ना के पास गया, और यहोवा
ने उसकी सुधि ली, २० तब हन्ना गर्भ-
वती हुई और समय पर उसके एक
पुत्र हुआ, और उसका नाम शमूएल†
रखा, क्योंकि वह कहने लगी, मैं ने यहोवा
से मांगकर इसे पाया है। २१ फिर
एल्काना अपने पूरे घराने समेत यहोवा
के साम्हने प्रति वर्ष की मेलबलि चढ़ाने
और अपनी मन्नत पूरी करने के लिये
गया। २२ परन्तु हन्ना अपने पति से
यह कहकर घर में रह गई‡, कि जब
बालक का दूध छूट जाएगा तब मैं उसको
ले जाऊंगी, कि वह यहोवा को मुंह
दिखाए, और वहां सदा बना रहे।
२३ उसके पति एल्काना ने उस से
कहा, जो तुझे भला लगे वही कर, जब
तक तू उसका दूध न छुड़ाए तब तक
यहीं ठहरी रह; केवल इतना हो कि
यहोवा अपना वचन पूरा करे। इसलिये
वह स्त्री वहीं घर पर रह गई और अपने
पुत्र के दूध छूटने के समय तक उसको
पिलाती रही। २४ जब उस ने उसका
दूध छुड़ाया तब वह उसको संग ले
गई, और तीन बछड़े, और एपा भर
आटा, और कुप्पी भर दाखमधु भी ले
गई, और उस लड़के को शीलो में यहोवा
के भवन में पहुंचा दिया; उस समय
वह लड़का ही था। २५ और उन्हों ने
बछड़ा बलि करके बालक को एली के
पास पहुंचा दिया। २६ तब हन्ना ने
कहा, हे मेरे प्रभु, तेरे जीवन की शपथ,
हे मेरे प्रभु, मैं वही स्त्री हूं जो तेरे पास
यहीं खड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना करती
थी। २७ यह वही बालक है जिसके
लिये मैं ने प्रार्थना की थी; और यहोवा
ने मुझे मुंह मांगा वर दिया है। २८ इसी
लिये मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर
देती हूं*, कि यह अपने जीवन भर यहोवा
ही का बना रहे†। तब उस ने वहीं
यहोवा को दण्डवत् किया॥

२ और हन्ना ने प्रार्थना करके कहा,
मेरा मन यहोवा के कारण मगन है;
मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा
हुआ है।
मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध
खुल गया,
क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार
से आनन्दित हूं॥
२ यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं,
क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई
है ही नहीं;

* मूल में—मैं ने अपना जीव यहोवा के साम्हने उण्डेल दिया।
† अर्थात् ईश्वर का सुना हुआ।
‡ मूल में—न चढ़ गई।

* मूल में—मैं ने इसे यहोवा का मांगा हुआ मान लिया।
† मूल में—यहोवा ही का मांगा हुआ ठहरे।

और हमारे परमेश्वर के समान
कोई चट्टान नहीं है॥
३ फूलकर अहंकार की और बातें
मत करो,
और अन्धेर की बातें तुम्हारे
मुंह से न निकलें
क्योंकि यहोवा ज्ञानी ईश्वर है,
और कामों का तौलनेवाला है॥
४ शूरवीरों के धनुष टूट गए,
और ठोकर खानेवालों की कटि
में बल का फेंटा कसा गया॥
५ जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के
लिये मजदूरी करनी पड़ी,
जो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे।
वरन जो बांझ थी उसके सात
हुए,
और अनेक बालकों की माता
घुलती जाती है॥
६ यहोवा मारता है और जिलाता
भी है,
वही अधोलोक में उतारता और
उस से निकालता भी * है॥
७ यहोवा निर्धन करता है और
धनी भी बनाता है,
वही नीचा करता और ऊंचा
भी करता है॥
८ वह कङ्गाल को धूलि में से
उठाता,
और दरिद्र को घूरे में से निकाल
खड़ा करता है,
ताकि उनको अधिपतियों के संग
बिठाए,
और महिमायुक्त सिंहासन के
अधिकारी बनाए।

* मूल में—और उस ने चढ़या।

क्योंकि पृथ्वी के खम्भे यहोवा
के हैं,
और उस ने उन पर जगत को
धरा है॥
९ वह अपने भक्तों के पांवों को
सम्भाले रहेगा,
परन्तु दुष्ट अन्धियारे में चुपचाप
पड़े रहेंगे,
क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल
के कारण प्रबल न होगा॥
१० जो यहोवा से झगड़ते हैं वे
चकनाचूर होंगे,
वह उनके विरुद्ध आकाश में
गरजेगा।
यहोवा पृथ्वी की छोर तक
न्याय करेगा,
और अपने राजा को बल देगा,
और अपने अभिषिक्त के सींग
को ऊंचा करेगा॥
११ तब एल्काना रामा को अपने
घर चला गया। और वह बालक एली
याजक के साम्हने यहोवा की सेवा टहल
करने लगा॥
१२ एली के पुत्र तो लुच्चे थे, उन्हों
ने यहोवा को न पहिचाना। १३ और
याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी,
कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता था
तब याजक का सेवक मांस पकाने के
समय एक त्रिशूली कांटा हाथ में लिये
हुए आकर १४ उसे कड़ाही, वा हांडी,
वा हंडे, वा तसले के भीतर डालता था;
और जितना मांस कांटे में लग जाता
था उतना याजक आप लेता था। यों
ही वे शीलो में सारे इस्राएलियों से किया
करते थे जो वहां आते थे। १५ और
चर्बी जलाने से पहिले भी याजक का

सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता
था, कि कबाब के लिये याजक को मांस
दे, वह तुझ से पका हुआ नहीं, कच्चा
ही मांस लेगा। १६ और जब कोई उस
से कहता, कि निश्चय चर्बी अभी जलाई
जाएगी, तब जितना तेरा जी चाहे उतना
ले लेना, तब वह कहता था, नहीं, अभी
दे, नहीं तो मैं छीन लूंगा। १७ इसलिये
उन जवानों का पाप यहोवा की दृष्टि में
बहुत भारी हुआ, क्योंकि वे मनुष्य
यहोवा की भेंट का तिरस्कार करते थे॥

१८ परन्तु शमूएल जो बालक था सनी
का एपोद पहिने हुए यहोवा के साम्हने
सेवा टहल किया करता था। १९ और
उसकी माता प्रति वर्ष उसके लिये एक
छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति
के संग प्रति वर्ष की मेलबलि चढ़ाने आती
थी तब बागे को उसके पास लाया करती
थी। २० और एली ने एल्काना और
उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा,
यहोवा इस अर्पण किए हुए बालक की
सन्ती जो उसको अर्पण किया गया है*
तुझ को इस पत्नी से वंश दे,
तब वे अपने यहां चले गए। २१ और
यहोवा ने हन्ना की सुधि ली, और वह
गर्भवती हुई और उसके तीन बेटे और
दो बेटियां उत्पन्न हुईं। और शमूएल
बालक यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता
गया॥

२२ और एली तो अति बूढ़ा हो गया
था, और उस ने सुना कि मेरे पुत्र सारे
इस्राएल से कैसा कैसा व्यवहार करते
हैं, वरन मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
सेवा करनेवाली स्त्रियों के संग कुकर्म
भी करते हैं। २३ तब उस ने उन से
कहा, तुम ऐसे ऐसे काम क्यों करते हो?
मैं तो इन सब लोगों से तुम्हारे कुकर्मों
की चर्चा सुना करता हूं। २४ हे मेरे
बेटो, ऐसा न करो, क्योंकि जो समाचार
मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं,
तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध
कराते हो। २५ यदि एक मनुष्य दूसरे
मनुष्य का अपराध करे, तब तो पर-
मेश्वर* उसका न्याय करेगा, परन्तु
यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप
करे, तो उसके लिये कौन बिनती करेगा?
तौभी उन्हों ने अपने पिता की बात न
मानी, क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें
मार डालने की थी। २६ परन्तु शमू-
एल बालक बढ़ता गया और यहोवा
और मनुष्य दोनों उस से प्रसन्न रहते
थे॥

२७ और परमेश्वर का एक जन एली
के पास जाकर उस से कहने लगा, यहोवा
यों कहता है, कि जब तेरे मूलपुरुष का
घराना मिस्र में फिरौन के घराने के वश
में था, तब क्या मैं उस पर निश्चय
प्रगट न हुआ था? २८ और क्या
मैं ने उसे इस्राएल के सब गोत्रों में
से इसलिये चुन नहीं लिया था, कि
मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर
चढ़ावे चढ़ाए, और धूप जलाए, और
मेरे साम्हने एपोद पहिना करे? और
क्या मैं ने तेरे मूलपुरुष के घराने को
इस्राएलियों के कुल हव्य न दिए थे?
२९ इसलिये मेरे मेलबलि और अन्नबलि
जिनको मैं ने अपने धाम में चढ़ाने
की आज्ञा दी है, उन्हें तुम लोग क्यों

* मूल में—इस मांगी हुई वस्तु की सन्ती जो उसके निमित्त मांगी गई है।

* वा न्यायी।

पाव तले रौदते हो? और तू क्यो
अपने पुत्रो का आदर मेरे आदर से
अधिक करता है, कि तुम लोग मेरी
इस्राएली प्रजा की अच्छी से अच्छी
भेटे खा खाके मोटे हो जाओ?
३० इसलिये इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की यह वाणी है, कि मै ने
कहा तो था, कि तेरा घराना और
तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे साम्हने
सदैव चला करेगा, परन्तु अब यहोवा
की वाणी यह है, कि यह बात मुझ
से दूर हो, क्योकि जो मेरा आदर
करे मै उनका आदर करूगा, और जो
मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जाएगे।
३१ सुन, वे दिन आते है, कि मै तेरा
भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने
का भुजबल ऐसा तोड डालूगा, कि
तेरे घराने मे कोई बूढा होने न पाएगा।
३२ इस्राएल का कितना ही कल्याण
क्यो न हो, तौभी तुझे मेरे धाम का
दुख देख पडेगा, और तेरे घराने
मे कोई कभी बूढा न होने पाएगा। ३३ मै
तेरे कुल के सब किसी मे तो अपनी
वेदी की सेवा न छीनूगा, परन्तु
तौभी तेरी आखे देखती रह जाएगी,
और तेरा मन शोकित होगा, और तेरे
घर की बढनी सब अपनी पूरी जवानी
ही मे मर मिटेगे। ३४ और मेरी
इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी
जो होप्नी और पीनहास नाम तेरे दोनो
पुत्रो पर पडेगी, अर्थात् वे दोनो के दोनो
एक ही दिन मर जाएंगे। ३५ और
मै अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक
ठहराऊगा, जो मेरे हृदय और मन की
इच्छा के अनुसार किया करेगा, और
मै उसका घर बसाऊगा और स्थिर
करूगा*, और वह मेरे अभिषिक्त के
आगे आगे सब दिन चला फिरा करेगा।
३६ और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे
घराने मे बचा रहेगा वह उसी के पास
जाकर एक छोटे से टुकडे चान्दी के वा
एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा,
याजक के किसी काम मे मुझे लगा,
जिस से मुझे एक टुकडा रोटी मिले॥

३ और वह बालक शमूएल एली के
साम्हने यहोवा की सेवा टहल करता
था। और उन दिनो मे यहोवा का वचन
दुर्लभ था, और दर्शन कम मिलता था।
२ और उस समय ऐसा हुआ कि (एली
की आखे तो धुधली होने लगी थी और
उसे न सूझ पडता था) जब वह अपने
स्थान मे लेटा हुआ था, ३ और पर-
मेश्वर का दीपक अब तक बुझा नही
था, और शमूएल यहोवा के मन्दिर मे
जहा परमेश्वर का सन्दूक था लेटा था,
४ तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा,
और उस ने कहा, क्या आज्ञा! ५ तब
उस ने एली के पास दौडकर कहा, क्या
आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। वह
बोला, मै ने नही पुकारा, फिर जा लेट
रह। तो वह जाकर लेट गया। ६ तब
यहोवा ने फिर पुकार के कहा, हे शमूएल!
शमूएल उठकर एली के पास गया, और
कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा
है। उस ने कहा, हे मेरे बेटे, मै ने नही
पुकारा, फिर जा लेट रह। ७ उस
समय तक तो शमूएल यहोवा को नही
पहचानता था, और न तो यहोवा का
वचन ही उस पर प्रगट हुआ था। ८ फिर

* मूल में—मै उसके लिये एक स्थिर घर बनाऊगा।

तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को
पुकारा। और वह उठके एली के पास
गया, और कहा, क्या आज्ञा, तू ने
तो मुझे पुकारा है। तब एली ने समझ
लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा
है। ९ इसलिये एली ने शमूएल से कहा,
जा लेट रह, और यदि वह तुझे फिर
पुकारे, तो तू कहना, कि हे यहोवा, कह,
क्योंकि तेरा दास सुन रहा है। तब शमू-
एल अपने स्थान पर जाकर लेट गया।
१० तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और
पहिले की नाईं पुकारा, शमूएल!
शमूएल! शमूएल ने कहा, कह, क्योंकि
तेरा दास सुन रहा है। ११ यहोवा ने
शमूएल से कहा, सुन, मैं इस्राएल में एक
ऐसा काम करने पर हूं, जिससे सब सुनने-
वालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा*।
१२ उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब
कुछ पूरा करूंगा जो मैं ने उसके घराने
के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त
तक पूरा करूंगा। १३ क्योंकि मैं तो
उसको यह कहकर जता चुका हूं, कि
मैं उस अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता
है सदा के लिये उसके घर का न्याय
करूंगा, क्योंकि उसके पुत्र आप शापित
हुए हैं, और उस ने उन्हें नहीं रोका।
१४ इस कारण मैं ने एली के घराने
के विषय यह शपथ खाई, कि एली के
घराने के अधर्म का प्रायश्चित न तो
मेलबलि से कभी होगा, और न अन्न-
बलि से। १५ और शमूएल भोर तक
लेटा रहा, तब उस ने यहोवा के भवन
के किवाड़ों को खोला। और शमूएल
एली को उस दर्शन की बातें बताने से

* मूल में—उस के दोनों कान झनझनाएंगे।

डरा। १६ तब एली ने शमूएल को
पुकारकर कहा, हे मेरे बेटे, शमूएल।
वह बोला, क्या आज्ञा। १७ तब उस
ने पूछा, वह कौन सी बात है जो यहोवा
ने तुझ से कही है? उसे मुझ से न छिपा।
जो कुछ उस ने तुझ से कहा हो यदि तू
उस में से कुछ भी मुझ से छिपाए, तो
परमेश्वर तुझ से वैसा ही वरन उस से
भी अधिक करे। १८ तब शमूएल ने
उसको रत्ती रत्ती बातें कह सुनाईं, और
कुछ भी न छिपा रखा। वह बोला, वह
तो यहोवा है, जो कुछ वह भला जाने
वही करे। १९ और शमूएल बड़ा होता
गया, और यहोवा उसके संग रहा, और
उस ने उसकी कोई भी बात निष्फल
होने* नहीं दी। २० और दान से बेर्शेबा
तक के रहनेवाले सारे इस्राएलियों ने
जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी
होने के लिये नियुक्त किया गया है।
२१ और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन
दिया, क्योंकि यहोवा ने अपने आप को
शीलो में शमूएल पर अपने वचन के
द्वारा प्रगट किया॥

(पवित्र सन्दूक की बन्धुआई और
लौटाया जाना)

४ और शमूएल का वचन सारे
इस्राएल के पास पहुंचा। और इस्रा-
एली पलिश्तियों से युद्ध करने को निकले,
और उन्हों ने तो एबेनेजेर के आस-पास
छावनी डाली, और पलिश्तियों ने अपेक
में छावनी डाली। २ तब पलिश्तियों ने
इस्राएल के विरुद्ध पांति बान्धी, और
जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्रा-
एली पलिश्तियों से हार गए और उन्हों

* मूल में—भूमि पर गिरने।

ने कोई चार हजार इस्राएली सेना के
पुरुषो को मैदान ही मे मार डाला।
३ और जब वे लोग छावनी मे लौट
आए, तब इस्राएल के वृद्ध लोग कहने
लगे, कि यहोवा ने आज हमे पलिश्तियो
से क्यो हरवा दिया है? आओ, हम
यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलो से
माग ले आए, कि वह हमारे बीच मे
आकर हमे शत्रुओ के हाथ से बचाए।
४ तब उन लोगो ने शीलो मे भेजकर
वहा से करूबो के ऊपर विराजनेवाले
सेनाओ के यहोवा की वाचा का सन्दूक
मगा लिया, और परमेश्वर की वाचा
के सन्दूक के साथ एली के दोनो पुत्र,
होप्नी और पिनहास भी वहा थे।
५ जब यहोवा की वाचा का सन्दूक
छावनी मे पहुचा, तब सारे इस्राएली
इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि
गूज उठी। ६ इस ललकार का शब्द
सुनकर पलिश्तियो ने पूछा, इब्रियो की
छावनी मे ऐसी बडी ललकार का क्या
कारण है? तब उन्हो ने जान लिया,
कि यहोवा का सन्दूक छावनी मे आया
है। ७ तब पलिश्ती डरकर कहने लगे,
उस छावनी मे परमेश्वर आ गया है।
फिर उन्हो ने कहा, हाय! हम पर
ऐसी बात पहिले नही हुई थी। ८ हाय!
ऐसे महाप्रतापी देवताओ के हाथ से हम
को कौन बचाएगा? ये तो वे ही देवता
है जिन्हो ने मिस्रियो पर जगल मे सब
प्रकार की विपत्तिया डाली थी। ९ हे
पलिश्तियो, तुम हियाव बान्धो, और
पुरुषार्थ जगाओ, कही ऐसा न हो कि
जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे
तुम भी उनके अधीन हो जाओ,
पुरुषार्थ करके सग्राम करो। १० तब
पलिश्ती लडाई के मैदान मे टूट पडे,
और इस्राएली हारकर अपने अपने डेरे
को भागने लगे, और ऐसा अत्यन्त सहार
हुआ, कि तीस हजार इस्राएली पैदल
खेत आए। ११ और परमेश्वर का
सन्दूक छीन लिया गया, और एली
के दोनो पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी
मारे गए। १२ तब एक बिन्यामीनी
मनुष्य ने सेना मे से दौडकर उसी दिन
अपने वस्त्र फाडे और सिर पर मिट्टी
डाले हुए शीलो मे पहुचा। १३ वह जब
पहुचा उस समय एली, जिसका मन
परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से थरथरा
रहा था, वह मार्ग के किनारे कुर्सी पर
बैठा बाट जोह रहा था। और ज्योही
उस मनुष्य ने नगर मे पहुचकर वह
समाचार दिया त्योही सारा नगर चिल्ला
उठा। १४ चिल्लाने का शब्द सुनकर
एली ने पूछा, ऐसे हुल्लड और हाहाकार
मचने का क्या कारण है? और उस
मनुष्य ने झट जाकर एली को पूरा हाल
सुनाया। १५ एली तो अट्ठानवे वर्ष का
था, और उसकी आखे धुन्धली पड़ गई
थी, और उसे कुछ सूझता न था।
१६ उस मनुष्य ने एली से कहा, मै वही
हू जो सेना मे से आया हू, और मै सेना
से आज ही भाग आया। वह बोला,
हे मेरे बेटे, क्या समाचार है? १७ उस
समाचार देनेवाले ने उत्तर दिया, कि
इस्राएली पलिश्तियो के साम्हने से भाग
गए है, और लोगो का बडा भयानक
सहार भी हुआ है, और तेरे दोनो पुत्र
होप्नी और पीनहास भी मारे गए, और
परमेश्वर का सन्दूक भी छीन लिया गया
है। १८ ज्योही उस ने परमेश्वर के
सन्दूक का नाम लिया त्योही एली फाटक

के पास कुर्सी पर से पछाड खाकर गिर
पडा, और बूढे और भारी होने के कारण
उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया।
उस ने तो इस्राएलियो का न्याय चालीस
वर्ष तक किया था। १९ उसकी बहू
पीनहास की स्त्री गर्भवती थी, और
उसका समय समीप था। और जब उस
ने परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने,
और अपने ससुर और पति के मरने का
समाचार सुना, तब उसको जच्चा का
दर्द उठा, और वह दुहर गई, और
उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। २० उसके
मरते मरते उन स्त्रियो ने जो उसके
आस पास खडी थी उस से कहा, मत डर,
क्योंकि तेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है। परन्तु
उस ने कुछ उत्तर न दिया, और न कुछ
ध्यान दिया। २१ और परमेश्वर के
सन्दूक के छीन लिए जाने और अपने
ससुर और पति के कारण उस ने यह
कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद*
रखा, कि इस्राएल मे से महिमा उठ गई।
२२ फिर उस ने कहा, इस्राएल मे से
महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का
सन्दूक छीन लिया गया है॥

५ और पलिश्तियो ने परमेश्वर का
सन्दूक एबनेजेर से उठाकर अशदोद मे
पहुचा दिया, २ फिर पलिश्तियो ने पर-
मेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के
मन्दिर मे पहुचाकर दागोन के पास धर
दिया। ३ बिहान को अशदोदियो ने
तडके उठकर क्या देखा, कि दागोन यहोवा
के सन्दूक के साम्हने औंधे मुह भूमि पर
गिरा पडा है। तब उन्हो ने दागोन को
उठाकर उसी के स्थान पर फिर खडा

* अर्थात् महिमा जाती रही।

किया। ४ फिर बिहान को जब वे तडके
उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा
के सन्दूक के साम्हने औंधे मुह भूमि पर
गिरा पडा है, और दागोन का सिर
और दोनो हथेलिया डेवढी पर कटी हुई
पडी है, निदान दागोन का केवल धड
समूचा रह गया। ५ इस कारण आज
के दिन तक भी दागोन के पुजारी और
जितने दागोन के मन्दिर में जाते है, वे
अशदोद मे दागोन की डेवढी पर पाव
नही धरते॥

६ तब यहोवा का हाथ अशदोदियो के
ऊपर भारी पडा, और वह उन्हे नाश
करने लगा, और उस ने अशदोद और
उसके आस पास के लोगो के गिलटिया
निकाली। ७ यह हाल देखकर अशदोद
के लोगो ने कहा, इस्राएल के देवता
का सन्दूक हमारे मध्य रहने नही
पाएगा, क्योंकि उसका हाथ हम पर
और हमारे देवता दागोन पर कठोरता
के साथ पडा है। ८ तब उन्हो ने पलि-
श्तियो के सब सरदारो को बुलवा भेजा,
और उन से पूछा, हम इस्राएल के देवता
के सन्दूक से क्या करें? वे बोले, इस्राएल
के देवता का सन्दूक घुमाकर गत नगर
मे पहुचाया जाए। तो उन्हो ने इस्राएल
के परमेश्वर के सन्दूक को घुमाकर गत
पहुचा दिया। ९ जब वे उसको घुमाकर
वहा पहुचे, तो यू हुआ कि यहोवा का हाथ
उस नगर के विरुद्ध ऐसा उठा कि उस
मे अत्यन्त बडी हलचल मच गई, और
उस ने छोटे से बडे तक उस नगर के
सब लोगो को मारा, और उनके गिल
टिया निकलने लगी। १० तब उन्हो
ने परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन को भेजा
और ज्योंही परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन

मे पहुचा त्योही एक्रोनी यह कहकर
चिल्लाने लगे, कि इस्राएल के देवता
का सन्दूक घुमाकर हमारे पास इस-
लिये पहुचाया गया है, कि हम और
हमारे लोगो को मरवा डाले। ११ तब
उन्हो ने पलिश्तियो के सब सरदारो
को इकट्ठा किया, और उन से कहा,
इस्राएल के देवता के सन्दूक को निकाल
दो, कि वह अपने स्थान पर लौट जाए,
और हम को और हमारे लोगो को
मार डालने न पाए। उस समस्त
नगर मे तो मृत्यु के भय की हलचल
मच रही थी, और परमेश्वर का हाथ
वहा बहुत भारी पडा था। १२ और
जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियो के
मारे पडे रहे, और नगर की चिल्लाहट
आकाश तक पहुची॥

६ यहोवा का सन्दूक पलिश्तियो के
देश मे सात महीने तक रहा। २ तब
पलिश्तियो ने याजको और भावी कहने-
वालो को बुलाकर पूछा, कि यहोवा के
सन्दूक से हम क्या करे? हमे बताओ
कि क्या प्रायश्चित देकर हम उसे
उसके स्थान पर भेजे? ३ वे बोले, यदि
तुम इस्राएल के देवता का सन्दूक वहा
भेजो, तो उसे वैसे ही न भेजना, उसकी
हानि भरने के लिये अवश्य ही दोष-
बलि देना। तब तुम चगे हो जाओगे,
और तुम जान लोगे कि उसका हाथ
तुम पर से क्यो नही उठाया गया।
४ उन्हो ने पूछा, हम उसकी हानि
भरने के लिये कौन सा दोषबलि दे?
वे बोले, पलिश्ती सरदारो की गिनती
के अनुसार सोने की पाच गिलटिया,
और सोने के पाच चूहे, क्योकि तुम
सब और तुम्हारे सरदार दोनो एक ही
रोग से ग्रसित हो। ५ तो तुम * अपनी
गिलटियो और अपने देश के नाश
करनेवाले चूहो की भी मूरते बनाकर
इस्राएल के देवता की महिमा मानो,
सम्भव है वह अपना हाथ तुम पर से
और तुम्हारे देवताओ और देश पर से
उठा ले। ६ तुम अपने मन क्यो ऐसे
हठीले करते हो जैसे मिस्रियो और
फिरौन ने अपने मन हठीले कर दिए
थे? जब उस ने उनके मध्य मे
अचम्भित काम किए, तब क्या उन्हो
ने उन लोगो को जाने न दिया, और
क्या वे चले न गए? ७ सो अब तुम
एक नई गाडी बनाओ, और ऐसी दो
दुधार गाये लो जो जूए तले न आई
हो, और उन गायो को उस गाडी मे
जोतकर उनके बच्चो को उनके पास
से लेकर घर को लौटा दो। ८ तब
यहोवा का सन्दूक लेकर उस गाडी पर
धर दो, और सोने की जो वस्तुए तुम
उसकी हानि भरने के लिये दोषबलि
की रीति से दोगे उन्हे दूसरे सन्दूक
मे धर के उसके पास रख दो। फिर
उसे रवाना कर दो कि चली जाए।
९ और देखते रहना, यदि वह अपने
देश के मार्ग से होकर बेतशेमेश को चले,
तो जानो कि हमारी यह बडी हानि उसी
की ओर से हुई और यदि नही, तो हम
को निश्चय होगा कि यह मार हम पर
उसकी ओर से नही, परन्तु सयोग ही
से हुई। १० उन मनुष्यो ने वैसा ही
किया, अर्थात् दो दुधार गाये लेकर उस
गाडी मे जोती, और उनके बच्चो को

* मूल में—उन।

घर में बन्द कर दिया। ११ और यहोवा
का सन्दूक, और दूसरा सन्दूक, और
सोने के चूहों और अपनी गिलटियों
की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया।
१२ तब गायों ने बेतशेमेश का सीधा
मार्ग लिया, वे सड़क ही सड़क बम्बाती
हुई चली गईं, और न दाहिने मुड़ीं और
न बायें, और पलिश्तियों के सरदार
उनके पीछे पीछे बेतशेमेश के सिवाने
तक गए। १३ और बेतशेमेश के लोग
तराई में गेहूं काट रहे थे, और जब उन्हों
ने आंखें उठाकर सन्दूक को देखा,
तब उसके देखने से आनन्दित हुए।
१४ और गाड़ी यहोशू नाम एक बेतशे-
मेशी के खेत में जाकर वहां ठहर गई,
जहां एक बड़ा पत्थर था। तब उन्हों
ने गाड़ी की लकड़ी को चीरा और गायों
को होमबलि करके यहोवा के लिये
चढ़ाया। १५ और लेवीयों ने यहोवा के
सन्दूक को उस सन्दूक के समेत जो साथ
था, जिस में सोने की वस्तुएं थीं, उतारके
उस बड़े पत्थर पर धर दिया, और बेत-
शेमेश के लोगों ने उसी दिन यहोवा के
लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।
१६ यह देखकर पलिश्तियों के पांचों
सरदार उसी दिन एक्रोन को लौट
गए॥

१७ सोने की गिलटियां जो पलिश्तियों
ने यहोवा की हानि भरने के लिये दोषबलि
करके दे दी थीं उन में से एक तो अशदोद
की ओर से, एक अज्जा, एक अश्कलोन,
एक गत, और एक एक्रोन की ओर से
दी गई थी। १८ और वह सोने के
चूहे, क्या शहरपनाहवाले नगर, क्या
बिना शहरपनाह के गांव, वरन जिस बड़े
पत्थर पर यहोवा का सन्दूक धरा गया था
वहां पलिश्तियों के पांचों सरदारों के
अधिकार तक की सब बस्तियों की
गिनती के अनुसार दिए गए। वह
पत्थर तो आज तक बेतशेमेशी यहोशू के
खेत में है। १९ फिर इस कारण से
कि बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के सन्दूक
के भीतर झांका था उस ने उन में से
सत्तर मनुष्य, और फिर पचास हज़ार
मनुष्य मार डाले, और वहां के लोगों ने
इसलिये विलाप किया कि यहोवा ने
लोगों का बड़ा ही संहार किया था।
२० तब बेतशेमेश के लोग कहने
लगे, इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के
साम्हने कौन खड़ा रह सकता है? और
वह हमारे पास से किस के पास चला
जाए? २१ तब उन्हों ने किर्यत्यारीम
के निवासियों के पास यों कहने को दूत
भेजे, कि पलिश्तियों ने यहोवा का सन्दूक
लौटा दिया है, इसलिये तुम आकर उसे
अपने यहां ले जाओ॥

७ तब किर्यत्यारीम के लोगों ने
जाकर यहोवा के सन्दूक को उठाया,
और अबीनादाब के घर में जो टीले पर
बना था रखा, और यहोवा के सन्दूक की
रक्षा करने के लिये अबीनादाब के पुत्र
एलीआज़ार को पवित्र किया॥

(शमूएल नबी और न्यायी के कार्य)

२ किर्यत्यारीम में रहते रहते सन्दूक
को बहुत दिन हुए, अर्थात् बीस वर्ष
बीत गए, और इस्राएल का सारा घराना
विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने
लगा। ३ तब शमूएल ने इस्राएल के
सारे घराने से कहा, यदि तुम अपने पूर्ण
मन से यहोवा की ओर फिरे हो, तो पराए
देवताओं और अश्तोरेत देवियों को अपने

बीच मे से दूर करो, और यहोवा की
ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की
उपासना करो, तब वह तुम्हे पलिश्तियो
के हाथ से छुडाएगा। ४ तब इस्राएलियो
ने बाल देवताओ और अश्तोरेत देवियो
को दूर किया, और केवल यहोवा ही
की उपासना करने लगे॥

५ फिर शमूएल ने कहा, सब इस्रा-
एलियो को मिस्पा मे इकट्ठा करो, और
मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूगा।
६ तब वे मिस्पा मे इकट्ठे हुए, और
जल भरके यहोवा के साम्हने उडेल दिया,
और उस दिन उपवास किया, और वहा
कहने लगे, कि हम ने यहोवा के विरुद्ध
पाप किया है। और शमूएल ने मिस्पा
मे इस्राएलियो का न्याय किया। ७ जब
पलिश्तियो ने सुना कि इस्राएली मिस्पा
मे इकट्ठे हुए है, तब उनके सरदारो ने
इस्राएलियो पर चढाई की। यह सुनकर
इस्राएली पलिश्तियो से भयभीत हुए।
: और इस्राएलियो ने शमूएल से कहा,
मारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की
ोहाई देना न छोड, जिस से वह हम को
लिश्तियो के हाथ से बचाए। ९ तब
मूएल ने एक दूधपिउवा मेम्ना ले
सर्वाङ्ग होमबलि करके यहोवा को
चढाया, और शमूएल ने इस्राएलियो
के लिये यहोवा की दोहाई दी, और
यहोवा ने उसकी सुन ली। १० और
जिस समय शमूएल होमबलि को चढा
रहा था उस समय पलिश्ती इस्राएलियो
के संग युद्ध करने के लिये निकट
आ गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलि-
श्तियो के ऊपर बादल को बडे कडक के
साथ गरजाकर उन्हे घबरा [illegible]
के इस्राएलि[illegible]

इस्राएली पुरुषो ने मिस्पा से निकलकर
पलिश्तियो को खदेडा, और उन्हे बेतकर
के नीचे तक मारते चले गए। १२ तब
शमूएल ने एक पत्थर लेकर मिस्पा और
शेन के बीच मे खडा किया, और यह
कहकर उसका नाम एबेनेजेर* रखा,
कि यहा तक यहोवा ने हमारी सहायता
की है। १३ तब पलिश्ती दब गए, और
इस्राएलियो के देश मे फिर न आए, और
शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ
पलिश्तियो के विरुद्ध बना रहा। १४ और
एक्रोन और गत तक जितने नगर पलि-
श्तियो ने इस्राएलियो के हाथ से छीन
लिए थे, वे फिर इस्राएलियो के वश मे
आ गए, और उनका देश भी इस्राए-
लियो ने पलिश्तियो के हाथ से छुडाया।
और इस्राएलियो और एमोरियो के
बीच भी सन्धि हो गई। १५ और
शमूएल जीवन भर इस्राएलियो का
न्याय करता रहा। १६ वह प्रति वर्ष
बेतेल और गिलगाल और मिस्पा मे घूम-
घूमकर उन सब स्थानो मे इस्राएलियो
का न्याय करता था। १७ तब वह रामा
मे जहा उसका घर था लौट आया,
और वहा भी इस्राएलियो का न्याय करता
था, और वहा उस ने यहोवा के लिये
एक वेदी बनाई॥

(शाऊल को राजपद का मिलना)

८ जब शमूएल बूढा हुआ, तब उस
ने अपने पुत्रो को इस्राएलियो पर
न्यायी ठहराया। २ उसके जेठे पुत्र
का नाम योएल, और दूसरे का नाम
अबिय्याह था, ये बेर्शेबा मे न्याय करते
थे। ३ परन्तु उसके पुत्र उसकी राह

* अर्थात् सहायता का पत्थर।

पर न चले, अर्थात् लालच में आकर*
घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे॥
४ तब सब इस्राएली वृद्ध लोग इकट्ठे
होकर रामा में शमूएल के पास जाकर
५ उस से कहने लगे, सुन, तू तो अब
बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह
पर नहीं चलते, अब हम पर न्याय करने
के लिये सब जातियों की रीति के अनु-
सार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर
दे। ६ परन्तु जो बात उन्हों ने कही,
कि हम पर न्याय करने के लिये हमारे
ऊपर राजा नियुक्त कर दे, यह बात
शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल
ने यहोवा से प्रार्थना की। ७ और यहोवा
ने शमूएल से कहा, वे लोग जो कुछ तुझ
से कहें उसे मान ले, क्योंकि उन्हों ने
तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा
जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूं।
८ जैसे जैसे काम वे उस दिन से, जब
से मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया, आज
के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को
त्यागकर पराए देवताओं की उपासना
करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी करते
हैं। ९ इसलिये अब तू उनकी बात
मान, तौभी तू गम्भीरता से उनको
भली भांति समझा दे, और उनको बतला
भी दे कि जो राजा उन पर राज्य करेगा
उसका व्यवहार किस प्रकार होगा॥
१० और शमूएल ने उन लोगों को
जो उस से राजा चाहते थे यहोवा की
सब बातें कह सुनाईं। ११ और उस
ने कहा जो राजा तुम पर राज्य करेगा
उसकी यह चाल होगी, अर्थात् वह
तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और
घोड़ों के काम पर नौकर रखेगा, और
वे उसके रथों के आगे आगे दौड़ा करेंगे,
१२ फिर वह उनको हज़ार हज़ार और
पचास पचास के ऊपर प्रधान बनाएगा,
और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा,
और अपने खेत कटवाएगा, और अपने
लिये युद्ध के हथियार और रथों
के साज बनवाएगा। १३ फिर वह
तुम्हारी बेटियों को लेकर उन से सुगन्ध-
द्रव्य और रसोई और रोटियां बनवाएगा।
१४ फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख
और जलपाई की बारियों में से जो अच्छी
से अच्छी होंगी उन्हें ले लेकर अपने कर्म-
चारियों को देगा। १५ फिर वह तुम्हारे
बीज और दाख की बारियों का दसवां
अंश ले लेकर अपने हाकिमों और कर्म-
चारियों को देगा। १६ फिर वह तुम्हारे
दास-दासियों को, और तुम्हारे अच्छे से
अच्छे जवानों को, और तुम्हारे गदहों
को भी लेकर अपने काम में लगाएगा।
१७ वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का भी
दसवां अंश लेगा, निदान तुम लोग उस-
के दास बन जाओगे। १८ और उस
दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के
कारण दोहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस
समय तुम्हारी न सुनेगा। १९ तौभी उन
लोगों ने शमूएल की बात न सुनी, और
कहने लगे, नहीं! हम निश्चय अपने लिये
राजा चाहते हैं, २० जिस से हम भी और
सब जातियों के समान हो जाएं, और हमारा
राजा हमारा न्याय करे, और हमारे
आगे आगे चलकर हमारी ओर से
युद्ध किया करे। २१ लोगों की ये सब
बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के कानों
तक पहुंचाया। २२ यहोवा ने शमूएल
से कहा, उनकी बात मानकर उनके

* के पीछे मुड़के।

लिये राजा ठहरा दे। तब शमूएल ने
इस्राएली मनुष्यो से कहा, तुम सब अपने
अपने नगर को चले जाओ॥

९ बिन्यामीन के गोत्र मे कीश नाम
का एक पुरुष था, जो अपीह के पुत्र,
बकोरत का परपोता, और सरोर का
पोता, और अबीएल का पुत्र था, वह
एक बिन्यामीनी पुरुष का पुत्र और
बडा शक्तिशाली सूरमा था। २ उसके
शाऊल नाम एक जवान पुत्र था, जो
सुन्दर था, और इस्राएलियो मे कोई
उस से बढकर सुन्दर न था, वह इतना
लम्बा था कि दूसरे लोग उसके कान्धे
ही तक आते थे। ३ जब शाऊल के
पिता कीश की गदहिया खो गई, तब
कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, एक
सेवक को अपने साथ ले जा और गदहियो
को ढूढ ला। ४ तब वह एप्रैम के पहाडी
देश और शलीशा देश होते हुए गया,
परन्तु उन्हे न पाया। तब वे शालीम
नाम देश भी होकर गए, और वहा भी
न पाया। फिर बिन्यामीन के देश मे
गए, परन्तु गदहिया न मिली। ५ जब
वे सूफ नाम देश मे आए, तब शाऊल
ने अपने साथ के सेवक से कहा, आ,
हम लौट चले, ऐसा न हो कि मेरा पिता
गदहियो की चिन्ता छोडकर हमारी
चिन्ता करने लगे। ६ उस ने उस से
कहा, सुन, इस नगर मे परमेश्वर का
एक जन है जिसका बडा आदरमान
होता है, और जो कुछ वह कहता है वह
बिना पूरा हुए नही रहता। अब हम
उधर चले, सम्भव है वह हम को हमारा
मार्ग बताए कि किधर जाए। ७ शाऊल
ने अपने सेवक से कहा, सुन, यदि हम
उस पुरुष के पास चले तो उसके लिये
क्या ले चले? देख, हमारी थैलियो
मे की रोटी चुक गई है और भेंट के योग्य
कोई वस्तु है ही नही, जो हम परमेश्वर
के उस जन को दे। हमारे पास क्या
है? ८ सेवक ने फिर शाऊल से कहा,
कि मेरे पास तो एक शेकेल चान्दी की
चौथाई है, वही मै परमेश्वर के जन को
दूगा, कि वह हम को बताए कि किधर
जाए। (९ पूर्वकाल मे तो इस्राएल मे
जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता
तब ऐसा कहता था, कि चलो, हम दर्शी
के पास चले, क्योंकि जो आज कल नबी
कहलाता है वह पूर्वकाल मे दर्शी कह-
लाता था।) १० तब शाऊल ने अपने
सेवक से कहा, तू ने भला कहा है, हम
चले। सो वे उस नगर को चले जहा
परमेश्वर का जन था। ११ उस नगर
की चढाई पर चढते समय उन्हे कई एक
लडकिया मिली जो पानी भरने को
निकली थी, उन्हो ने उन से पूछा,
क्या दर्शी यहा है? १२ उन्हो ने उत्तर
दिया, कि है, देखो, वह तुम्हारे आगे
है। अब फुर्ती करो, आज ऊचे स्थान
पर लोगो का यज्ञ है, इसलिये वह आज
नगर मे आया हुआ है। १३ ज्योही
तुम नगर मे पहुचो त्योही वह तुम को
ऊचे स्थान पर खाना खाने को जाने से
पहिले मिलेगा, क्योकि जब तक वह
न पहुचे तब तक लोग भोजन न करेगे,
इसलिये कि यज्ञ के विषय मे वही धन्य-
वाद करता, तब उसके पीछे ही न्योतहरी
भोजन करते है। इसलिये तुम अभी
चढ जाओ, इसी समय वह तुम्हे मिलेगा।
१४ वे नगर मे चढ गए और ज्योही
नगर के भीतर पहुचे त्योही शमूएल ऊचे

स्थान पर चढ़ने की मनसा से उनके
साम्हने आ रहा था॥
१५ शाऊल के आने से एक दिन
पहिले यहोवा ने शमूएल को यह चिता
रखा* था, १६ कि कल इसी समय मैं
तेरे पास बिन्यामीन के देश से एक पुरुष
को भेजूंगा, उसी को तू मेरी इस्राएली
प्रजा के ऊपर प्रधान होने के लिये अभिषेक
करना। और वह मेरी प्रजा को पलि-
श्तियों के हाथ से छुड़ाएगा, क्योंकि
मैं ने अपनी प्रजा पर कृपा दृष्टि की है,
इसलिये कि उनकी चिल्लाहट मेरे पास
पहुंची है। १७ फिर जब शमूएल को
शाऊल देख पड़ा, तब यहोवा ने उस से
कहा, जिस पुरुष की चर्चा मैं ने तुझ से
की थी वह यही है, मेरी प्रजा पर यही
अधिकार करेगा। १८ तब शाऊल फाटक
में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा,
मुझे बता कि दर्शी का घर कहां है?
१९ उस ने कहा, दर्शी तो मैं हूं, मेरे
आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ जा, क्योंकि
आज के दिन तुम मेरे साथ भोजन
खाओगे, और बिहान को जो कुछ तेरे
मन में हो सब कुछ मैं तुझे बताकर
विदा करूंगा। २० और तेरी गदहियां
जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी
कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल
गईं। और इस्राएल में जो कुछ मनभाऊ
है वह किस का है? क्या वह तेरा और
तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है?
२१ शाऊल ने उत्तर देकर कहा, क्या
मैं बिन्यामिनी, अर्थात् सब इस्राएली गोत्रों
में से छोटे गोत्र का नहीं हूं? और क्या
मेरा कुल बिन्यामीनी के गोत्र के सारे
कुलों में से छोटा नहीं है? इसलिये तू
मुझ से ऐसी बातें क्यों कहता है?
२२ तब शमूएल ने शाऊल और उसके
सेवक को कोठरी में पहुंचाकर न्योतहारी,
जो लगभग तीस जन थे, उनके साथ
मुख्य स्थान पर बैठा दिया। २३ फिर
शमूएल ने रसोइये से कहा, जो टुकड़ा
मैं ने तुझे देकर, अपने पास रख छोड़ने
को कहा था, उसे ले आ। २४ तो
रसोइये ने जांघ को मांस समेत उठाकर
शाऊल के आगे धर दिया, तब शमूएल
ने कहा, जो रखा गया था उसे देख,
और अपने साम्हने धरके खा, क्योंकि
वह तेरे लिये इसी नियत समय तक,
जिसकी चर्चा करके मैं ने लोगों को
न्योता दिया, रखा हुआ है। और शाऊल
ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन
किया। २५ तब वे ऊंचे स्थान से
उतरकर नगर में आए, और उस ने घर
की छत पर शाऊल से बातें कीं।
२६ बिहान को वे तड़के उठे, और पह
फटते फटते शमूएल ने शाऊल को छत
पर बुलाकर कहा, उठ, मैं तुझ को विदा
करूंगा। तब शाऊल उठा, और वह
और शमूएल दोनों बाहर निकल गए।
२७ और नगर के सिरे की उतराई पर
चलते चलते शमूएल ने शाऊल से कहा,
अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की
आज्ञा दे, (वह आगे बढ़ गया,) परन्तु
तू अभी खड़ा रह कि मैं तुझे परमेश्वर
का वचन सुनाऊं॥

१० तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल
लेकर उसके सिर पर उंडेला, और
उसे चूमकर कहा, क्या इसका कारण
यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग

* मूल में—शमूएल का कान खोला।

के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक
किया है? २ आज जब तू मेरे पास
से चला जाएगा, तब राहेल की कब्र के
पास जो बिन्यामीन के देश के सिवाने
पर सेलसह में है दो जन तुझे मिलेंगे,
और कहेंगे, कि जिन गदहियो को तू
ढूंढने गया था वे मिली है, और सुन,
तेरा पिता गदहियो की चिन्ता छोड़कर
तुम्हारे कारण कुढ़ता हुआ कहता है,
कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूं?
३ फिर वहा से आगे बढ़कर जब तू
ताबोर के बाजवृक्ष के पास पहुचेगा, तब
वहा तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल
को जाते हुए तुझे मिलेंगे, जिन मे से
एक तो बकरी के तीन बच्चे, और दूसरा
तीन रोटी, और तीसरा एक कुप्पा दाख-
मधु लिए हुए होगा। ४ और वे तेरा
कुशल पूछेंगे, और तुझे दो रोटी देंगे,
और तू उन्हें उनके हाथ से ले लेना।
५ तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुचेगा *
जहा पलिश्तियो की चौकी है, और जब
तू वहा नगर में प्रवेश करे, तब नबियो
का एक दल ऊचे स्थान से उतरता
हुआ तुझे मिलेगा, और उनके आगे
सितार, डफ, बासुली, और वीणा होंगे,
और वे नबूवत करते होंगे। ६ तब
यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उत-
रेगा, और तू उनके साथ होकर नबूवत
करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर
और ही मनुष्य हो जाएगा। ७ और
जब ये चिन्ह तुझे देख पड़ेंगे, तब जो काम
करने का अवसर तुझे मिले उस मे लग
जाना क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा।
८ और तू मुझ से पहिले गिलगाल को
जाना, और मैं होमबलि और मेलबलि
चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊंगा। तू
सात दिन तक मेरी बाट जोहते रहना,
तब मैं तेरे पास पहुचकर तुझे बताऊंगा
कि तुझ को क्या क्या करना है।
९ ज्योंही उस ने शमूएल के पास से जाने
को पीठ फेरी त्योंही परमेश्वर ने उसके
मन को परिवर्तन किया, और वे सब
चिन्ह उसी दिन प्रगट हुए॥

१० जब वे उधर उस पहाड़ के
पास * आए, तब नबियो का एक दल
उसको मिला, और परमेश्वर का आत्मा
उस पर बल से उतरा, और वह उनके
बीच मे नबूवत करने लगा। ११ जब
उन सभो ने जो उसे पहिले से जानते
थे यह देखा कि वह नबियो के बीच मे
नबूवत कर रहा है, तब आपस मे कहने
लगे, कि कीश के पुत्र को यह क्या हुआ?
क्या शाऊल भी नबियो मे का है?
१२ वहा के एक मनुष्य ने उत्तर दिया,
भला, उनका बाप कौन है? इस पर
यह कहावत चलने लगी, कि क्या शाऊल
भी नबियो मे का है? १३ जब वह
नबूवत कर चुका, तब ऊचे स्थान पर
चढ़ गया॥

१४ तब शाऊल के चचा ने उस से
और उसके सेवक से पूछा, कि तुम कहा
गए थे? उस ने कहा, हम तो गदहियो
को ढूढने गए थे, और जब हम ने देखा
कि वे कहीं नहीं मिलती, तब शमूएल
के पास गए। १५ शाऊल के चचा ने
कहा, मुझे बतला दे कि शमूएल ने तुम
से क्या कहा। १६ शाऊल ने अपने
चचा से कहा, कि उस ने हमें निश्चय

* वा तू परमेश्वर की पहाड़ी को पहुंचेगा।

* वा पहाड़ी।

करके बताया कि गदहियां मिल गईं।
परन्तु जो बात शमूएल ने राज्य के विषय
में कही थी वह उस ने उसको न बताई॥
१७ तब शमूएल ने प्रजा के लोगों
को मिस्पा में यहोवा के पास बुलवाया,
१८ तब उस ने इस्राएलियों से कहा,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता
है, कि मैं तो इस्राएल को मिस्र देश से
निकाल लाया, और तुम को मिस्रियों
के हाथ से, और उन सब राज्यों के हाथ
से जो तुम पर अन्धेर करते थे छुड़ाया
है। १९ परन्तु तुम ने आज अपने पर-
मेश्वर को जो सब विपत्तियों और कष्टों
से तुम्हारा छुड़ानेवाला है तुच्छ जाना,
और उस से कहा है, कि हम पर राजा
नियुक्त कर दे। इसलिये अब तुम गोत्र
गोत्र और हज़ार हज़ार करके यहोवा
के साम्हने खड़े हो जाओ। २० तब
शमूएल सारे इस्राएली गोत्रियों को समीप
लाया, और चिट्ठी बिन्यामीन के नाम
पर निकली *। २१ तब वह बिन्यामीन
के गोत्र को कुल कुल करके समीप लाया,
और चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर
निकली †, फिर चिट्ठी कीश के पुत्र
शाऊल के नाम पर निकली ‡। और जब
वह ढूंढा गया, तब न मिला। २२ तब
उन्हों ने फिर यहोवा से पूछा, क्या यहां
कोई और आनेवाला है? यहोवा ने
कहा, हां, सुनो, वह सामान के बीच में
छिपा हुआ है। २३ तब वे दौड़कर उसे
वहां से लाए, और वह लोगों के बीच
में खड़ा हुआ, और वह कान्धे से सिर तक §
सब लोगों से लम्बा * था। २४ शमू-
एल ने सब लोगों से कहा, क्या तुम ने
यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे
लोगों में कोई उसके बराबर नहीं?
तब सब लोग ललकारके बोल उठे, राजा
चिरंजीव रहे॥
२५ तब शमूएल ने लोगों से राजनीति
का वर्णन किया, और उसे पुस्तक में
लिखकर यहोवा के आगे रख दिया। और
शमूएल ने सब लोगों को अपने अपने
घर जाने को विदा किया। २६ और
शाऊल गिबा को अपने घर चला गया,
और उसके साथ एक दल भी गया जिन-
के मन को परमेश्वर ने उभारा था।
२७ परन्तु कई लुच्चे लोगों ने कहा,
यह जन हमारा क्या उद्धार करेगा?
और उन्हों ने उसको तुच्छ जाना, और
उसके पास भेंट न लाए। तौभी वह सुनी
अनसुनी करके चुप रहा †॥

(अम्मोनियों पर शाऊल की जय)

११ तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई
करके गिलाद के याबेश के विरुद्ध
छावनी डाली, और याबेश के सब
पुरुषों ने नाहाश से कहा, हम से वाचा
बान्ध, और हम तेरी अधीनता मान लेंगे।
२ अम्मोनी नाहाश ने उन से कहा, मैं तुम
से वाचा इस शर्त पर बान्धूंगा, कि मैं तुम
सभों की दाहिनी आंखें फोड़कर इसे सारे
इस्राएल की नामधराई का कारण कर
दूं। ३ याबेश के वृद्ध लोगों ने उस से
कहा, हमें सात दिन का अवकाश दे तब
तक हम इस्राएल के सारे देश में दूत
भेजेंगे। और यदि हम को कोई बचाने-

* मूल में—बिन्यामीन का गोत्र लिया गया।
† मूल में—मत्री का कुल लिया गया।
‡ मूल में—कीश का पुत्र शाऊल लिया गया।
§ मूल में—ऊपर।

* मूल में—सब लोग उसके कान्धे तक थे।
† मूल में—वह बहिरा सा हो गया।

वह मेघ गरजाएगा और मेह बरसाएगा;
तब तुम जान लोगे, और देख भी लोगे,
कि तुम ने राजा मागकर यहोवा की
दृष्टि मे बहुत बडी बुराई की है। १८ तब
शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा
ने उसी दिन मेघ गरजाया और मेह
बरसाया, और सब लोग यहोवा से और
शमूएल से अत्यन्त डर गए। १९ और
सब लोगो ने शमूएल से कहा, अपने
दासो के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा
से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाए,
क्योकि हम ने अपने सारे पापो से बढकर
यह बुराई की है कि राजा मागा है।
२० शमूएल ने लोगो से कहा, डरो मत,
तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु
अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत
मुडना, परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उस
की उपासना करना, २१ और मत
मुडना, नही तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओ के
पीछे चलने लगोगे जिन से न कुछ लाभ
पहुचेगा, और न कुछ छुटकारा हो सकता
है, क्योकि वे सब व्यर्थ ही है। २२ यहोवा
तो अपने बडे नाम के कारण अपनी प्रजा
को न तजेगा, क्योकि यहोवा ने तुम्हे
अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा बनाया
है। २३ फिर यह मुझ से दूर हो कि
मै तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोडकर
यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरू, मै तो
तुम्हें अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता
रहूगा। २४ केवल इतना हो कि तुम
लोग यहोवा का भय मानो, और सच्चाई
से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी
उपासना करो, क्योकि यह तो सोचो
कि उस ने तुम्हारे लिये कैसे बडे बडे
काम किए है। २५ परन्तु यदि तुम बुराई
करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा
राजा दोनो के दोनो मिट जाओगे॥

(शाऊल राजा का पहिला अपराध और
उसका फल)

१३ शाऊल तीस वर्ष का होकर राज्य
करने लगा, और उस ने इस्राएलियों
पर दो* वर्ष तक राज्य किया। २ फिर
शाऊल ने इस्राएलियो मे से तीन हजार
पुरुषो को अपने लिये चुन लिया, और
उन मे से दो हजार शाऊल के साथ
मिकमाश मे और बेतेल के पहाड पर
रहे, और एक हजार योनातान के साथ
बिन्यामीन के गिबा मे रहे, और दूसरे
सब लोगो को उस ने अपने अपने डेरे
मे जाने को विदा किया। ३ तब योनातान
ने पलिश्तियो की उस चौकी को जो
गिबा मे थी मार लिया, और इसका
समाचार पलिश्तियो के कानो मे पडा।
तब शाऊल ने सारे देश मे नरसिगा
फुकवाकर यह कहला भेजा, कि इब्री
लोग सुने। ४ और सब इस्राएलियो ने
यह समाचार सुना कि शाऊल ने पलि-
श्तियो की चौकी को मारा है, और यह
भी कि पलिश्ती इस्राएल से घृणा करने
लगे है। तब लोग शाऊल के पीछे चलकर
गिलगाल मे इकट्ठे हो गए॥
५ और पलिश्ती इस्राएल से युद्ध
करने के लिये इकट्ठे हो गए, अर्थात्
तीस हजार रथ, और छ हजार सवार,
और समुद्र के तीर की बालू के किनको
के समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए,
और बेतावेन के पूर्व की ओर जाकर
मिकमाश मे छावनी डाली। ६ जब

* जान पड़ता है कि दो से अधिक कोई संख्या यहां छूट गई है, यथा बत्तीस बयालीस इत्यादि।

इस्राएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती
में पड़े हैं (और सचमुच लोग सकट में
पड़े थे), तब वे लोग गुफाओं, झाड़ियों,
चट्टानों, गढ़ियों, और गढ़हों में जा छिपे।
७ और कितने इब्री यरदन पार होकर
गाद और गिलाद के देशों में चले गए,
परन्तु शाऊल गिलगाल ही में रहा, और
सब लोग थरथराते हुए उसके पीछे हो
लिए॥

८ वह शमूएल के ठहराए हुए समय,
अर्थात् सात दिन तक बाट जोहता रहा,
परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया,
और लोग उसके पास से इधर उधर होने
लगे। ९ तब शाऊल ने कहा, होमबलि
और मेलबलि मेरे पास लाओ। तब उस
ने होमबलि को चढ़ाया। १० ज्योंही
वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्या
देखता है कि शमूएल आ पहुंचा, और
शाऊल उस से मिलने और नमस्कार
करने को निकला। ११ शमूएल ने पूछा,
तू ने क्या किया? शाऊल ने कहा, जब
मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर
उधर हो चले हैं, और तू ठहराए हुए
दिनों के भीतर नहीं आया, और पलि-
श्ती मिकमाश में इकट्ठे हुए है, १२ तब
मैं ने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में
मुझ पर अभी आ पड़ेंगे, और मैं ने यहोवा
से बिनती भी नहीं की है, सो मैं ने
अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि
चढ़ाया। १३ शमूएल ने शाऊल से कहा,
तू ने मूर्खता का काम किया है, तू ने
अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को
नहीं माना, नहीं तो यहोवा तेरा राज्य
इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता।
१४ परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा,
यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को
ढूंढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार
है, और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा
पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि
तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं
माना॥

१५ तब शमूएल चल निकला, और
गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया।
और शाऊल ने अपने साथ के लोगों को
गिनकर कोई छः सौ पाए। १६ और
शाऊल और उसका पुत्र योनातान और
जो लोग उनके साथ थे वे बिन्यामीन
के गिबा में रहे, और पलिश्ती मिकमाश
में डेरे डाले पड़े रहे। १७ और
पलिश्तियों की छावनी से नाश करनेवाले
तीन दल बान्धकर निकले, एक दल ने
शूआल नाम देश की ओर फिर के ओप्रा
का मार्ग लिया, १८ एक और दल ने
मुड़कर बेथोरोन का मार्ग लिया, और
एक और दल ने मुड़कर उस देश का
मार्ग लिया जो सबोईम नाम तराई की
ओर जंगल की तरफ है॥

१९ और इस्राएल के पूरे देश में
लोहार कहीं नहीं मिलता था, क्योंकि
पलिश्तियों ने कहा था, कि इब्री तलवार
वा भाला बनाने न पाए, २० इसलिये
सब इस्राएली अपने अपने हल की फली,
और भाले, और कुल्हाड़ी, और हसुआ
तेज करने के लिये पलिश्तियों के पास
जाते थे, २१ परन्तु उनके हसुओं, फालों,
खेती के त्रिशूलों, और कुल्हाड़ियों की
धारें, और पैनों की नोकें ठीक करने के
लिये वे रेती रखते थे। २२ सो युद्ध
के दिन शाऊल और योनातान के साथियों
में से किसी के पास न तो तलवार थी
और न भाला, वे केवल शाऊल और
उसके पुत्र योनातान के पास रहे।

वाला न मिलेगा, तो हम तेरे ही पास
निकल आएगे। ४ दूतो ने शाऊलवाले
गिबा मे आकर लोगो को यह सन्देश
सुनाया, और सब लोग चिल्ला चिल्ला-
कर रोने लगे। ५ और शाऊल बैलो
के पीछे पीछे मैदान से चला आता था,
और शाऊल ने पूछा, लोगो को क्या हुआ
कि वे रोते है? उन्हो ने याबेश के लोगो
का सन्देश उसे सुनाया। ६ यह सन्देश
सुनते ही शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा
बल से उतरा, और उसका कोप बहुत
भडक उठा। ७ और उस ने एक जोडी
बैल लेकर उसके टुकडे टुकडे काटे, और
यह कहकर दूतो के हाथ से इस्राएल के
सारे देश मे कहला भेजा, कि जो कोई
आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न
हो लेगा उसके बैलो से ऐसा ही किया
जाएगा। तब यहोवा का भय लोगो मे
ऐसा समाया कि वे एक मन होकर*
निकल आए। ८ तब उस ने उन्हे
बेजेक मे गिन लिया, और इस्राएलियो
के तीन लाख, और यहूदियो के तीस
हज़ार ठहरे। ९ और उन्हो ने उन दूतो
से जो आए थे कहा, तुम गिलाद मे के
याबेश के लोगो से यो कहो, कि कल
धूप तेज़ होने की घडी तक तुम छुटकारा
पाओगे। तब दूतो ने जाकर याबेश के
लोगो को सन्देश दिया, और वे आनन्दित
हुए। १० तब याबेश के लोगो ने कहा,
कल हम तुम्हारे पास निकल आएगे,
और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही
हम से करना। ११ दूसरे दिन शाऊल
ने लोगो के तीन दल किए, और उन्हो
ने रात के पिछले पहर मे छावनी के बीच
मे आकर अम्मोनियो को मारा; और
घाम के कडे होने के समय तक ऐसे मारते
रहे कि जो बच निकले वे यहा तक तितर
बितर हुए कि दो जन भी एक संग कही
न रहे। १२ तब लोग शमूएल से कहने
लगे, जिन मनुष्यो ने कहा था, कि
क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा?
उनको लाओ कि हम उन्हे मार डाले।
१३ शाऊल ने कहा, आज के दिन कोई
मार डाला न जाएगा; क्योकि आज
यहोवा ने इस्राएलियो को छुटकारा
दिया है॥

(सभा मे शमूएल का उपदेश)

१४ तब शमूएल ने इस्राएलियो से
कहा, आओ, हम गिलगाल को चले,
और वहा राज्य को नये सिरे से स्थापित
करे। १५ तब सब लोग गिलगाल को
चले, और वहा उन्हो ने गिलगाल मे
यहोवा के साम्हने शाऊल को राजा
बनाया, और वही उन्हो ने यहोवा को
मेलबलि चढाए, और वही शाऊल और
सब इस्राएली लोगो ने अत्यन्त आनन्द
मनाया॥

१२ तब शमूएल ने सारे इस्राएलियो
से कहा, सुनो, जो कुछ तुम ने मुझ
से कहा था उसे मानकर मै ने एक राजा
तुम्हारे ऊपर ठहराया है। २ और अब
देखो, वह राजा तुम्हारे आगे आगे चलता
है*, और अब मै बूढा हू, और मेरे बाल
उजले हो गए है, और मेरे पुत्र तुम्हारे
पास है, और मै लडकपन से लेकर आज
तक तुम्हारे साम्हने काम करता† रहा

* मूल में—एक पुरुष के समान।

* मूल में—तुम्हारे साम्हने चल फिर रहा है।

† मूल में—हमारे साम्हने चलता फिरता।

हूं। ३ मैं उपस्थित हूं, इसलिये तुम
यहोवा के साम्हने, और उसके अभि-
षिक्त के साम्हने मुझ पर साक्षी दो, कि
मैं ने किस का बैल ले लिया? वा किस
का गदहा ले लिया? वा किस पर अन्धेर
किया? वा किस को पीसा? वा किस
के हाथ से अपनी आंखें बन्द करने के
लिये घूस लिया? बताओ, और मैं वह
तुम को फेर दूंगा? ४ वे बोले, तू ने
न तो हम पर अन्धेर किया, न हमें पीसा,
और न किसी के हाथ से कुछ लिया है।
५ उस ने उन से कहा, आज के दिन
यहोवा तुम्हारा साक्षी, और उसका
अभिषिक्त इस बात का साक्षी है, कि
मेरे यहां कुछ नहीं निकला। वे बोले,
हां, वह साक्षी है। ६ फिर शमूएल लोगों
से कहने लगा, जो मूसा और हारून को
ठहराकर तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश
से निकाल लाया वह यहोवा ही है।
७ इसलिये अब तुम खड़े रहो, और
मैं यहोवा के साम्हने उसके सब धर्म
के कामों के विषय में, जिन्हें उस ने तुम्हारे
साथ और तुम्हारे पूर्वजों के साथ
किया है, तुम्हारे साथ विचार करूंगा।
८ याकूब मिस्र में गया, और तुम्हारे
पूर्वजों ने यहोवा की दोहाई दी, तब
यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा,
और उन्हों ने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र
से निकाला, और इस स्थान में बसाया।
९ फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा
को भूल गए, तब उस ने उन्हें हासोर के
सेनापति सीसरा, और पलिश्तियों और
मोआब के राजा के अधीन कर दिया*,
और वे उन से लड़े। १० तब उन्हों ने
यहोवा की दोहाई देकर कहा, हम ने
यहोवा को त्यागकर और बाल देवताओं
और अश्तोरेत देवियों की उपासना करके
महा पाप किया है, परन्तु अब तू हम को
हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा, तो
हम तेरी उपासना करेंगे। ११ इसलिये
यहोवा ने यरुब्बाल, बदान, यिप्तह, और
शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों
ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया, और
तुम निडर रहने लगे। १२ और जब
तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा
नाहाश हम पर चढ़ाई करता है, तब यद्यपि
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा
था तौभी तुम ने मुझ से कहा, नहीं,
हम पर एक राजा राज्य करेगा।
१३ अब उस राजा को देखो जिसे तुम
ने चुन लिया, और जिसके लिये तुम
ने प्रार्थना की थी, देखो, यहोवा ने एक
राजा तुम्हारे ऊपर नियुक्त कर दिया
है। १४ यदि तुम यहोवा का भय मानते,
उसकी उपासना करते, और उसकी
बात सुनते रहो, और यहोवा की आज्ञा
को टालकर उस से बलवा न करो, और
तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ है
दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे
पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला
होगा, १५ परन्तु यदि तुम यहोवा की
बात न मानो, और यहोवा की आज्ञा
को टालकर उस से बलवा करो, तो
यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखाओं के
विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध
उठेगा। १६ इसलिये अब तुम खड़े रहो,
और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा
तुम्हारी आंखों के साम्हने करने पर है।
१७ आज क्या गेहूं की कटनी
नहीं? मैं यहोवा को

* मूल में—के हाथ बेच डाला।

२३ और पलिश्तियो की चौकी के सिपाही
निकलकर मिकमाश की घाटी को गए ॥

(योनातान की जय और शाऊल का हठ)

१४ एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान
ने अपने पिता से बिना कुछ कहे
अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा,
आ, हम उधर पलिश्तियो की चौकी के
पास चले। २ शाऊल तो गिबा के सिरे
पर मिग्रोन मे के अनार के पेड के तले
टिका हुआ था, और उसके सग के लोग
कोई छ सौ थे, ३ और एली जो शीलो
मे यहोवा का याजक था, उसके पुत्र
पीनहास का पोता, और ईकावोद के
भाई, अहीतूव का पुत्र अहिय्याह भी
एपोद पहिने हुए सग था। परन्तु उन
लोगो को मालूम न था कि योनातान
चला गया है। ४ उन घाटियो के बीच
मे, जिन से होकर योनातान पलिश्तियो
की चौकी को जाना चाहता था, दोनो
अलगो पर एक एक नोकीली चट्टान थी,
एक चट्टान का नाम तो बोसेस, और
दूसरी का नाम सेने था। ५ एक चट्टान
तो उत्तर की ओर मिकमाश के साम्हने,
और दूसरी दक्खिन की ओर गेबा के
साम्हने खडी है। ६ तब योनातान ने
अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा,
आ, हम उन खतनारहित लोगो की चौकी
के पास जाए, क्या जाने यहोवा हमारी
सहायता करे, क्योकि यहोवा को कुछ
रोक नही, कि चाहे तो बहुत लोगो के
द्वारा चाहे थोडे लोगो के द्वारा छुटकारा
दे। ७ उसके ... वाले ने
मे कहा, जो ... वही
उधर चल, ...
ने मग र ... ने ५.

सुन, हम उन मनुष्यो के पास जाकर
अपने को उन्हे दिखाए। ९ यदि वे हम
से यो कहे, हमारे आने तक ठहरे रहो,
तब तो हम उसी स्थान पर खडे रहे,
और उनके पास न चढे। १० परन्तु
यदि वे यह कहे, कि हमारे पास चढ
आओ, तो हम यह जानकर चढे, कि यहोवा
उन्हे हमारे साथ कर देगा। हमारे लिये
यही चिन्ह हो। ११ तब उन दोनो ने
अपने को पलिश्तियो की चौकी पर प्रगट
किया, तब पलिश्ती कहने लगे, देखो,
इब्री लोग उन बिलो मे से जहा वे छिप
रहे थे निकले आते है। १२ फिर
चौकी के लोगो ने योनातान और
उसके हथियार ढोनेवाले से पुकार के
कहा, हमारे पास चढ आओ, तब हम
तुम को कुछ सिखाएगे। तब योनातान
ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा,
मेरे पीछे पीछे चढ आ, क्योकि यहोवा
उन्हे इस्राएलियो के हाथ मे कर देगा।
१३ और योनातान अपने हाथो और
पावो के बल चढ गया, और उसका
हथियार ढोनेवाला भी उसके पीछे पीछे
चढ गया। और पलिश्ती योनातान के
साम्हने गिरते गए, और उसका हथियार
ढोनेवाला उसके पीछे पीछे उन्हे मारता
गया। १४ यह पहिला सहार जो
योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले
से हुआ, उस मे आधे बीघे * भूमि मे
बीस एक पुरुष मारे गए। १५ और
... मे, और मैदान पर, और उन
... मे थरथराहट हुई, और चौकी-
... नाश करनेवाले भी थरथराने
... भुईडोल भी हुआ, और

*—आधे बीघे की रेघारी।

अत्यन्त बड़ी थरथराहट * हुई। १६ और
बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरुओं
ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती †
जाती है, और वे लोग इधर उधर चले
जाते हैं॥

१७ तब शाऊल ने अपने साथ के
लोगों से कहा, अपनी गिनती करके देखो
कि हमारे पास से कौन चला गया है।
उन्हों ने गिनकर देखा, कि योनातान और
उसका हथियार ढोनेवाला यहां नहीं हैं।
१८ तब शाऊल ने अहिय्याह से कहा,
परमेश्वर का सन्दूक इधर ला। उस समय
तो परमेश्वर का सन्दूक इस्राएलियों के
साथ था। १९ शाऊल याजक से बातें
कर रहा था, कि पलिश्तियों की छावनी
में हुल्लड़ अधिक होता गया, तब
शाऊल ने याजक से कहा, अपना हाथ
खींच। २० तब शाऊल और उसके संग
के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई में
गए, वहां उन्हों ने क्या देखा, कि एक
एक पुरुष की तलवार अपने अपने साथी
पर चल रही है, और बहुत बड़ा कोला-
हल मच रहा है। २१ और जो इब्री
पहिले की नाईं पलिश्तियों की ओर के
थे, और उनके साथ चारों ओर से छावनी
में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान
के संग के इस्राएलियों में मिल गए।
२२ और जितने इस्राएली पुरुष एप्रैम
के पहाड़ी देश में छिप गए थे, वे भी यह
सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं, लड़ाई
में आ उनका पीछा करने में लग गए।
२३ तब यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों
को छुटकारा दिया, और लड़नेवाले बेता-
वेन की परली ओर तक चले गए।

२४ परन्तु इस्राएली पुरुष उस दिन तंग
हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगों को
शपथ धराकर कहा, शापित हो वह, जो
सांझ से पहिले कुछ खाए, इसी रीति
मैं अपने शत्रुओं से पलटा ले सकूंगा।
तब उन लोगों में से किसी ने कुछ भी
भोजन न किया। २५ और सब लोग *
किसी वन में पहुंचे, जहां भूमि पर मधु
पड़ा हुआ था। २६ जब लोग वन में
आए तब क्या देखा, कि मधु टपक रहा
है, तौभी शपथ के डर के मारे कोई
अपना हाथ अपने मुंह तक न ले गया।
२७ परन्तु योनातान ने अपने पिता को
लोगों को शपथ धराते न सुना था, इस-
लिये उस ने अपने हाथ की छड़ी की
नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में डुबाया,
और अपना हाथ अपने मुंह तक लगाया,
तब उसकी आंखों में ज्योति आई।
२८ तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा,
तेरे पिता ने लोगों को दृढ़ता से शपथ
धरा के कहा, शापित हो वह, जो आज
कुछ खाए। और लोग थके मांदे थे।
२९ योनातान ने कहा, मेरे पिता ने लोगों
को † कष्ट दिया है, देखो, मैं ने इस मधु
को थोड़ा सा चखा, और मुझे आंखों
से कैसा सूझने लगा। ३० यदि आज
लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्हों
ने पाया मनमाना खाते, तो कितना अच्छा
होता, अभी तो बहुत पलिश्ती मारे नहीं
गए। ३१ उस दिन वे मिकमाश से लेकर
अय्यालोन तक पलिश्तियों को मारते गए,
और लोग बहुत ही थक गए। ३२ सो
वे लूट पर टूटे, और भेड़-बकरी, और
गाय-बैल, और बछड़े लेकर भूमि पर

* मूल में—परमेश्वर की थरथराहट
† मूल में—गलती।

* मूल में—सारा देश।
† मूल में—देश को।

मारके उनका मांस लोहू समेत खाने
लगे। ३३ जब इसका समाचार शाऊल
को मिला, कि लोग लोहू समेत मांस
खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं।
तब उस ने उन से कहा, तुम ने तो विश्वास-
घात किया है, अभी एक बड़ा पत्थर
मेरे पास लुढ़का दो। ३४ फिर शाऊल
ने कहा, लोगो के बीच मे इधर उधर
फिरके उन से कहो, कि अपना अपना
बैल और भेड़ शाऊल के पास ले जाओ,
और वही बलि करके खाओ, और लोहू
समेत खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो।
तब सब लोगो ने उसी रात अपना अपना
बैल ले जाकर वही बलि किया। ३५ तब
शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी
बनवाई, वह तो पहिली वेदी है जो उस
ने यहोवा के लिये बनवाई॥

३६ फिर शाऊल ने कहा, हम इसी
रात को पलिश्तियो का पीछा करके उन्हे
भोर तक लूटते रहे, और उन मे से एक
मनुष्य को भी जीवित न छोड़े। उन्हो
ने कहा, जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही
कर। परन्तु याजक ने कहा, हम इधर
परमेश्वर के समीप आए। ३७ तब
शाऊल ने परमेश्वर से पुछवाया, कि क्या
मै पलिश्तियो का पीछा करू? क्या तू
उन्हे इस्राएल के हाथ मे कर देगा?
परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला।
३८ तब शाऊल ने कहा, हे प्रजा के मुख्य
लोगो, इधर आकर बूझो, और देखो कि
आज पाप किस प्रकार से हुआ है।
३९ क्योकि इस्राएल के छुड़ानेवाले यहोवा
के जीवन की शपथ, यदि वह पाप मेरे
पुत्र योनातान से हुआ हो, तौभी निश्चय
वह मार डाला जाएगा। परन्तु लोगो
में से किसी ने उसे उत्तर न दिया।
४० तब उस ने सारे इस्राएलियों से
कहा, तुम एक ओर हो, और मैं और
मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर होगे।
लोगो ने शाऊल से कहा, जो कुछ तुझे
अच्छा लगे वही कर। ४१ तब शाऊल
ने यहोवा से कहा, हे इस्राएल के परमेश्वर,
सत्य बात बता*। तब चिट्ठी योनातान
और शाऊल के नाम पर निकली†, और
प्रजा बच गई। ४२ फिर शाऊल ने कहा,
मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर
चिट्ठी डालो। तब चिट्ठी योनातान के
नाम पर निकली‡। ४३ तब शाऊल ने
योनातान से कहा, मुझे बता, कि तू ने
क्या किया है। योनातान ने बताया,
और उस से कहा, मै ने अपने हाथ
की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख
तो लिया है, और देख, मुझे मरना
है। ४४ शाऊल ने कहा, परमेश्वर
ऐसा ही करे, वरन इस से भी अधिक
करे, हे योनातान, तू निश्चय मारा
जाएगा। ४५ परन्तु लोगो ने शाऊल से
कहा, क्या योनातान मारा जाए, जिस
ने इस्राएलियो का ऐसा बड़ा छुटकारा
किया है? ऐसा न होगा। यहोवा के
जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल
भी भूमि पर गिरने न पाएगा, क्योकि
आज के दिन उस ने परमेश्वर के साथ
होकर काम किया है। तब प्रजा के लोगो
ने योनातान को बचा लिया, और वह मारा
न गया। ४६ तब शाऊल पलिश्तियो का
पीछा छोड़कर लौट गया, और पलिश्ती
भी अपने स्थान को चले गए॥

---

* मूल में—खराई दे।

† मूल में—योनातान और शाऊल पकड़े गए।

‡ मूल में—योनातान पकड़ा गया।

४७ जब शाऊल इस्राएलियो के राज्य
में स्थिर हो गया*, तब वह मोआबी,
अम्मोनी, एदोमी, और पलिश्ती, अपने
चारो ओर के सब शत्रुओ से, और सोबा
के राजाओ से लडा, और जहा जहा
वह जाता वहा जय पाता था। ४८ फिर
उस ने वीरता करके अमालेकियो को
जीता, और इस्राएलियो को लूटनेवालो
के हाथ से छुडाया॥

४९ शाऊल के पुत्र योनातान, यिशवी,
और मलकीश थे, और उसकी दो बेटियो
के नाम ये थे, बडी का नाम तो मेरब
और छोटी का नाम मीकल था। ५० और
शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम था
जो अहीमास की बेटी थी। और उसके
प्रधान सेनापति का नाम अब्नेर था जो
शाऊल के चचा नेर का पुत्र था।
५१ और शाऊल का पिता कीश था,
और अब्नेर का पिता नेर अबीएल का
पुत्र था॥

५२ और शाऊल जीवन भर पलिश्तियो
से संग्राम करता रहा, जब जब शाऊल
को कोई वीर वा अच्छा योद्धा दिखाई
पडा, तब तब उस ने उसे अपने पास रख
लिया॥

(शाऊल का दूसरा अपराध और
उसका फल)

१५ शमूएल ने शाऊल से कहा,
यहोवा ने अपनी प्रजा इस्राएल पर
राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को
मुझे भेजा था, इसलिये अब यहोवा की
बातें सुन ले। २ सेनाओ का यहोवा यो
कहता है, कि मुझे चेत आता है कि
अमालेकियो ने इस्राएलियो से क्या
किया, और जब इस्राएली मिस्र से आ
रहे थे, तब उन्हो ने मार्ग में उनका
साम्हना किया। ३ इसलिये अब तू जाकर
अमालेकियो को मार, और जो कुछ उनका
है उसे बिना कोमलता किए सत्यानाश
कर, क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा,
क्या दूधपिउवा, क्या गाय-बैल, क्या भेड-
बकरी, क्या ऊंट, क्या गदहा, सब को
मार डाल॥

४ तब शाऊल ने लोगो को बुलाकर
इकट्ठा किया, और उन्हे तलाईम में गिना,
और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार
यहूदी पुरुष भी थे। ५ तब शाऊल ने
अमालेक नगर के पास जाकर एक नाले
में घातको को बिठाया। ६ और शाऊल
ने केनियो से कहा, कि वहा से हटो,
अमालेकियो के मध्य में से निकल जाओ,
कही ऐसा न हो कि मैं उनके साथ तुम्हारा
भी अन्त कर डालू, क्योकि तुम ने सब
इस्राएलियो पर उनके मिस्र से आते
समय प्रीति दिखाई थी। और केनी
अमालेकियो के मध्य में से निकल गए।
७ तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर
तक जो मिस्र के साम्हने है अमालेकियो
को मारा। ८ और उनके राजा अगाग
को जीवित पकडा, और उसकी सब प्रजा
को तलवार से सत्यानाश कर डाला।
९ परन्तु अगाग पर, और अच्छी से
अच्छी भेड-बकरियो, गाय-बैलो, मोटे
पशुओ, और मेम्नो, और जो कुछ अच्छा
था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा
ने कोमलता की, और उन्हें सत्यानाश
करना न चाहा, परन्तु जो कुछ तुच्छ
और निकम्मा था उसको उन्हो ने सत्या-
नाश किया॥

* मूल में—शाऊल ने इस्राएल पर राज्य
ले लिया।

१० तब यहोवा का यह वचन शमूएल
के पास पहुचा, ११ कि मैं शाऊल को
राजा बना के पछताता हू, क्योंकि उस ने
मेरे पीछे चलना छोड दिया, और मेरी
आज्ञाओ का पालन नहीं किया। तब
शमूएल का क्रोध भडका, और वह रात भर
यहोवा की दोहाई देता रहा। १२ विहान
को जब शमूएल शाऊल से भेंट करने
के लिये सवेरे उठा, तब शमूएल को
यह वताया गया, कि शाऊल कर्म्मेल
को आया था, और अपने लिये एक
निशानी खडी की, और घूमकर गिलगाल
को चला गया है। १३ तब शमूएल
शाऊल के पास गया, और शाऊल ने उस
से कहा, तुझे यहोवा की ओर से आशीष
मिले, मैं ने यहोवा की आज्ञा पूरी की
है। १४ शमूएल ने कहा, फिर भेड-
वकरियो का यह मिमियाना, और गाय-
वैलो का यह ववाना जो मुझे सुनाई देता
है, यह क्यो हो रहा है? १५ शाऊल
ने कहा, वे तो अमालेकियो के यहां से
आए है, अर्थात् प्रजा के लोगो ने अच्छी
से अच्छी भेड-वकरियो और गाय-वैलो
को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये वलि
करने को छोड दिया है, और वाकी
सव को तो हम ने सत्यानाश कर दिया है।
१६ तव शमूएल ने शाऊल से कहा,
ठहर जा! और जो वात यहोवा ने
आज रात को मुझ से कही है वह मै
तुझ को वताता हू। उस ने कहा, कह दे।
१७ शमूएल ने कहा, जव तू अपनी दृष्टि
में छोटा था, तव क्या तू इस्राएली गोत्रियो
का प्रधान न हो गया? और क्या यहोवा
ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा
अभिषेक नहीं किया? १८ और यहोवा
ने तुझे यात्रा करने की आज्ञा दी, और
कहा, जाकर उन पापी अमालेकियों को
सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट
न जाएं, तब तक उन से लड़ता रह।
१९ फिर तू ने किस लिये यहोवा की
वह बात टालकर लूट पर टूट के वह
काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा
है? २० शाऊल ने शमूएल से कहा,
निःसन्देह मै ने यहोवा की वात मानकर
जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला,
और अमालेकियों के राजा को ले आया
हू, और अमालेकियों को सत्यानाश किया
है। २१ परन्तु प्रजा के लोग लूट में से
भेड़-वकरियों, और गाय-वैलो, अर्थात्
सत्यानाश होने की उत्तम उत्तम वस्तुओ
को गिलगाल मे तेरे परमेश्वर यहोवा
के लिये वलि चढाने को ले आए है।
२२ शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होम-
वलियो और मेलवलियो से उतना प्रसन्न
होता है, जितना कि अपनी वात के माने
जाने मे प्रसन्न होता है? सुन, मानना
तो वलि चढ़ाने से, और कान लगाना
मेढो की चर्वी मे उत्तम है। २३ देख,
वलवा करना और भावी कहनेवालो मे
पूछना एक ही समान पाप है, और हठ
करना मूरतो और गृहदेवताओ की पूजा
के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की वात
को तुच्छ जाना, इसलिये उस ने तुझे
राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।
२४ शाऊल ने शमूएल से कहा, मै ने
पाप किया है, मै ने तो अपनी प्रजा के
लोगो का भय मानकर और उनकी
वात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी
वातो का उल्लघन किया है। २५ परन्तु
अव मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे
साथ लौट आ, कि मै यहोवा को दण्डवत्
करू। २६ शमूएल ने शाऊल से कहा,

में तेरे साथ न लौटूगा, क्योंकि तू ने
यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और
यहोवा ने तुझे इस्राएल के राजा होने
के लिये तुच्छ जाना है। २७ तब शमूएल
जाने के लिये घूमा, और शाऊल ने उसके
बागे की छोर को पकडा, और वह फट
गया। २८ तब शमूएल ने उस से कहा,
आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को
फाडकर तुझ से छीन लिया, और तेरे
एक पडोसी को जो तुझ से अच्छा है दे
दिया है। २९ और जो इस्राएल का
बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और
न पछताता है, क्योंकि वह मनुष्य नही
है, कि पछताए। ३० उस ने कहा, मैं
ने पाप तो किया है, तौभी मेरी प्रजा
के पुरनियो और इस्राएल के साम्हने मेरा
आदर कर, और मेरे साथ लौट, कि
मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत्
करू। ३१ तब शमूएल लौटकर शाऊल
के पीछे गया, और शाऊल ने यहोवा
को दण्डवत् की॥

३२ तब शमूएल ने कहा, अमालेकियो
के राजा अगाग को मेरे पास ले आओ।
तब अगाग आनन्द के साथ यह कहता
हुआ उसके पास गया, कि निश्चय मृत्यु
का दुख जाता रहा। ३३ शमूएल ने
कहा, जैसे स्त्रिया तेरी तलवार से निर्वंश
हुई है, वैसे ही तेरी माता स्त्रियो में निर्वंश
होगी। तब शमूएल ने अगाग को गिल-
गाल में यहोवा के साम्हने टुकडे टुकडे
किया॥

३४ तब शमूएल रामा को चला गया,
और शाऊल अपने नगर गिबा को अपने
घर गया। ३५ और शमूएल ने अपने
जीवन भर शाऊल से फिर भेंट न की,
क्योंकि शमूएल शाऊल के लिये विलाप
करता रहा। और यहोवा शाऊल को
इस्राएल का राजा बनाकर पछताता
था॥

(दाऊद का राज्याभिषेक)

१६ और यहोवा ने शमूएल से कहा,
मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य
करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब
तक उसके विषय विलाप करता रहेगा?
अपने सींग में तेल भर के चल, मैं तुझ
को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हू,
क्योंकि मैं ने उसके पुत्रो में से एक को
राजा होने के लिये चुना है। २ शमूएल
बोला, मैं क्योंकर जा सकता हू? यदि
शाऊल सुन लेगा, तो मुझे घात करेगा।
यहोवा ने कहा, एक बछिया साथ ले
जाकर कहना, कि मैं यहोवा के लिये
यज्ञ करने को आया हू। ३ और यज्ञ
पर यिशै को न्योता देना, तब मैं तुझे जता
दूगा कि तुझ को क्या करना है, और
जिसको मैं तुझे बताऊ उसी का मेरी ओर
से अभिषेक करना। ४ तब शमूएल ने
यहोवा के कहने के अनुसार किया, और
बेतलहेम को गया। उस नगर के पुरनिये
थरथराते हुए उस से मिलने को गए,
और कहने लगे, क्या तू मित्रभाव से
आया है कि नही? ५ उस ने कहा, हा,
मित्रभाव से आया हू, मैं यहोवा के लिये
यज्ञ करने को आया हू, तुम अपने अपने
को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ।
तब उस ने यिशै और उसके पुत्रो को
पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया।
६ जब वे आए, तब उस ने एलीआब
पर दृष्टि करके सोचा, कि निश्चय जो
यहोवा के साम्हने है वही उसका अभि-
षिक्त होगा। ७ परन्तु यहोवा ने शमूएल

मे कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर,
और न उसके डील की ऊचाई पर, क्योंकि
मै ने उसे अयोग्य जाना है, क्योंकि
यहोवा का देखना मनुष्य का सा नही
है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है,
परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती
है। ८ तब यिशै ने अबीनादाब को
बुलाकर शमूएल के साम्हने भेजा। और
उस ने कहा, यहोवा ने इसको भी नही
चुना। ९ फिर यिशै ने शम्मा को साम्हने
भेजा। और उस ने कहा, यहोवा ने
इसको भी नही चुना। १० योही यिशै ने
अपने सात पुत्रो को शमूएल के साम्हने
भेजा। और शमूएल यिशै से कहता गया,
यहोवा ने इन्हे नही चुना। ११ तब
शमूएल ने यिशै से कहा, क्या सब लडके
आ गए? वह बोला, नही, लहुरा तो
रह गया, और वह भेड-बकरियो को चरा
रहा है। शमूएल ने यिशै से कहा, उसे
बुलवा भेज, क्योकि जब तक वह यहा
न आए तब तक हम खाने * को न बैठेगे।
१२ तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया।
उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी
आखे सुन्दर, और उसका रूप सुडौल
था। तब यहोवा ने कहा, उठकर इस
का अभिषेक कर यही है। १३ तब
शमूएल ने अपना तेल का सीग लेकर
उसके भाइयो के मध्य मे उसका अभिषेक
किया, और उस दिन से लेकर भविष्य
को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से
उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामा
को चला गया॥

१४ और यहोवा का आत्मा शाऊल
पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से
एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।
१५ और शाऊल के कर्मचारियो ने उस
से कहा, सुन, परमेश्वर की ओर से
एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है।
१६ हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को
जो उपस्थित है आज्ञा दे, कि वे किसी
अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूढ ले आए,
और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट
आत्मा तुझ पर चढे, तब तब वह अपने
हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।
१७ शाऊल ने अपने कर्मचारियो से
कहा, अच्छा, एक उत्तम बजवैया देखो,
और उसे मेरे पास लाओ। १८ तब एक
जवान ने उत्तर देके कहा, सुन, मै ने
बेतलेहेमी यिशै के एक पुत्र को देखा जो
वीणा बजाना जानता है, और वह वीर
योद्धा भी है, और बात करने मे बुद्धिमान
और रूपवान भी है; और यहोवा उसके
साथ रहता है। १९ तब शाऊल ने
दूतो के हाथ यिशै के पास कहला भेजा,
कि अपने पुत्र दाऊद को जो भेड-बकरियो
के साथ रहता है मेरे पास भेज दे।
२० तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक
गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और
बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र
दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज
दिया। २१ और दाऊद शाऊल के पास
जाकर उसके साम्हने उपस्थित रहने
लगा। और शाऊल उस से बहुत प्रीति
करने लगा, और वह उसका हथियार
ढोनेवाला हो गया। २२ तब शाऊल ने
यिशै के पास कहला भेजा, कि दाऊद
को मेरे साम्हने उपस्थित रहने दे, क्योकि
मै उस से बहुत प्रसन्न हू। २३ और
जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा
शाऊल पर चढता था, तब तब दाऊद

* मूल में—हम चारों ओर।

वीणा लेकर बजाता, और शाऊल चैन
पाकर अच्छा हो जाता था, और वह
दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था॥

(दाऊद का गोलियत को मार डालना)

१७ अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिये
अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया,
और यहूदा देश के सोको में एक साथ
होकर सोको और अजेका के बीच एपे-
सदम्मीम में डेरे डाले। २ और शाऊल
और इस्राएली पुरुषों ने भी इकट्ठे होकर
एला नाम तराई में डेरे डाले, और युद्ध
के लिये पलिश्तियों के विरुद्ध पांती बान्धी।
३ पलिश्ती तो एक ओर के पहाड़ पर
और इस्राएली दूसरी ओर के पहाड़ पर
खड़े रहे, और दोनों के बीच तराई थी।
४ तब पलिश्तियों की छावनी में से एक
वीर* गोलियत नाम निकला, जो गत
नगर का था, और उसके डील की लम्बाई
छः हाथ एक बित्ता थी। ५ उसके सिर
पर पीतल का टोप था, और वह एक
पत्तर का झिलम पहिने हुए था, जिसका
तौल पांच हज़ार शेकेल पीतल का था।
६ उसकी टांगों पर पीतल के कवच थे,
और उस से कन्धों के बीच बरछी बन्धी
थी। ७ उसके भाले की छड़ जुलाहे के
डोंगी के समान थी, और उस भाले का
फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और
बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके
आगे आगे चलता था। ८ वह खड़ा
होकर इस्राएली पांतियों को ललकार के
बोला, तुम ने यहां आकर लड़ाई के लिये
क्यों पांति बान्धी है? क्या मैं पलिश्ती
नहीं हूं, और तुम शाऊल के अधीन नहीं
हो? अपने में से एक पुरुष चुनो, कि
वह मेरे पास उतर आए। ९ यदि वह
मुझ से लड़कर मुझे मार सके, तब तो
हम तुम्हारे अधीन हो जाएंगे, परन्तु
यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूं, तो
तुम को हमारे अधीन होकर हमारी
सेवा करनी पड़ेगी। १० फिर वह पलि-
श्ती बोला, मैं आज के दिन इस्राएली
पांतियों को ललकारता हूं, किसी पुरुष
को मेरे पास भेजो*, कि हम एक दूसरे से
लड़ें। ११ उस पलिश्ती की इन बातों को
सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों
का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त
डर गए॥

१२ दाऊद तो यहूदा के बेतलेहेम के
उस एप्राती पुरुष का पुत्र था, जिसका
नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र
थे और वह पुरुष शाऊल के दिनों में
बूढ़ा और निर्बल हो गया था। १३ यिशै
के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर
लड़ने को गए थे, और उसके तीन पुत्रों
के नाम जो लड़ने को गए थे ये थे, अर्थात्
ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबी-
नादाब, और तीसरे का शम्मा था।
१४ और सब से छोटा दाऊद था, और
तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर
गए थे, १५ और दाऊद बेतलेहेम में अपने
पिता की भेड़ बकरियां चराने को शाऊल
के पास से आया जाया करता था॥

१६ वह पलिश्ती तो चालीस दिन
तक सवेरे और सांझ को निकट जाकर
खड़ा हुआ करता था। १७ और यिशै
ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, यह एपा
भर चबैना, और ये दस रोटियां लेकर
छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़

* मूल में—दोनों ओर का पुरुष।

* मूल में—मुझे दो।

जा, १८ और पनीर की ये दस टिकिया
उनके सहस्रपति के लिये ले जा। और
अपने भाइयो का कुशल देखकर उन-
की कोई चिन्हानी ले आना। १९ शाऊल,
और वे भाई, और समस्त इस्राएली पुरुष
एला नाम तराई में पलिश्तियो से लड
रहे थे। २० और दाऊद बिहान को
सवेरे उठ, भेड बकरियो को किसी रख-
वाले के हाथ मे छोडकर, उन वस्तुओ
को लेकर चला, और जब सेना रणभूमि
को जा रही, और सग्राम के लिये ललकार
रही थी, उसी समय वह गाडियो के
पडाव पर पहुचा। २१ तब इस्राएलियो
और पलिश्तियो ने अपनी अपनी सेना
आम्हने-साम्हने करके पाति बान्धी।
२२ और दाऊद अपनी सामग्री सामान
के रखवाले के हाथ मे छोडकर रणभूमि
को दौडा, और अपने भाइयो के पास
जाकर उनका कुशल क्षेम पूछा। २३ वह
उनके साथ बाते कर ही रहा था, कि
पलिश्तियो की पातियो मे से वह वीर,
अर्थात् गतवासी गोलियात नाम वह
पलिश्ती योद्धा चढ आया, और पहिले की
सी बाते कहने लगा। और दाऊद ने उन्हे
सुना। २४ उस पुरुष को देखकर सब
इस्राएली अत्यन्त भय खाकर उसके साम्हने
से भागे। २५ फिर इस्राएली पुरुष कहने
लगे, क्या तुम ने उस पुरुष को देखा है
जो चढा आ रहा है? निश्चय वह इस्रा-
एलियो को ललकारने को चढा आता
है, और जो कोई उसे मार डालेगा उसको
राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी
व्याह देगा, और उसके पिता के घराने
को इस्राएल में स्वतन्त्र कर देगा।
२६ तब दाऊद ने उन पुरुषो से जो
उसके आस पास खडे थे पूछा, कि जो
उस पलिश्ती को मारके इस्राएलियो की
नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या
किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती
तो क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना
को ललकारे? २७ तब लोगो ने उस
से वही बातें कही, अर्थात् यह, कि जो
कोई उसे मारेगा उस से ऐसा ऐसा किया
जाएगा। २८ जब दाऊद उन मनुष्यो
से बातें कर रहा था, तब उसका बडा
भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब
दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा,
तू यहा क्यो आया है? और जगल मे
उन थोडी सी भेड बकरियो को तू किस
के पास छोड आया है? तेरा अभिमान
और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है,
तू तो लडाई देखने के लिये यहा आया
है। २९ दाऊद ने कहा, मै ने अब क्या
किया है? वह तो निरी बात थी?
३० तब उस ने उसके पास से मुह फेरके
दूसरे के सम्मुख होकर वैसी ही बात
कही, और लोगो ने उसे पहिले की नाई
उत्तर दिया। ३१ जब दाऊद की बातो की
चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई,
और उस ने उसे बुलवा भेजा। ३२ तब
दाऊद ने शाऊल से कहा, किसी मनुष्य
का मन उसके कारण कच्चा न हो, तेरा
दास जाकर उस पलिश्ती से लडेगा।
३३ शाऊल ने दाऊद से कहा, तू जाकर
उस पलिश्ती के विरुद्ध नही युद्ध कर
सकता, क्योकि तू तो लडका ही है, और
वह लडकपन ही से योद्धा है। ३४ दाऊद
ने शाऊल से कहा, तेरा दास अपने पिता
की भेड बकरिया चराता था, और जब
कोई सिह वा भालू झुड मे से मेम्ना
उठा ले गया, ३५ तब मै ने उसका
पीछा करके उसे मारा, और मेम्ने को

उसके मुह से छुडाया, और जब उस ने
मुझ पर चढाई की, तब मैं ने उसके
केश को पकडकर उसे मार डाला।
३६ तेरे दास ने सिंह और भालू दोनो
को मार डाला, और वह खतनारहित
पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि
उस ने जीवित परमेश्वर की सेना को
ललकारा है। ३७ फिर दाऊद ने कहा,
यहोवा जिस ने मुझे सिंह और भालू
दोनो के पजे से बचाया है, वह मुझे उस
पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा। शाऊल
ने दाऊद से कहा, जा, यहोवा तेरे साथ
रहे। ३८ तब शाऊल ने अपने वस्त्र
दाऊद को पहिनाए, और पीतल का टोप
उसके सिर पर रख दिया, और झिलम
उसको पहिनाया। ३९ और दाऊद से
उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी,
और चलने का यत्न किया, उस ने तो
उनको न परखा था। इसलिये दाऊद
ने शाऊल से कहा, इन्हें पहिने हुए मुझ
से चला नही जाता, क्योंकि मैं ने नही
परखा। और दाऊद ने उन्हें उतार दिया।
४० तब उस ने अपनी लाठी हाथ में
ले नाले में से पाच चिकने पत्थर छाटकर
अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने
झोले में रखे, और अपना गोफन हाथ
में लेकर पलिश्ती के निकट चला।
४१ और पलिश्ती चलते चलते दाऊद
के निकट पहुचने लगा, और जो जन उसकी
बडी ढाल लिए था वह उसके आगे आगे
चला। ४२ जब पलिश्ती ने दृष्टि करके
दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना,
क्योंकि वह लडका ही था, और उसके
मुख पर लाली झलकती थी, और वह
सुन्दर था। ४३ तब पलिश्ती ने दाऊद
से कहा, क्या मै कुत्ता हू, कि तू लाठी
लेकर मेरे पास आता है? तब पलिश्ती
अपने देवताओ के नाम लेकर दाऊद को
कोसने लगा। ४४ फिर पलिश्ती ने दाऊद
से कहा, मेरे पास आ, मैं तेरा मास आकाश
के पक्षियो और वनपशुओ को दे दूगा।
४५ दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो
तलवार और भाला और साग लिए हुए
मेरे पास आता है, परन्तु मैं सेनाओ
के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हू,
जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और
उसी को तू ने ललकारा है। ४६ आज
के दिन यहोवा तुझ को मेरे हाथ में कर
देगा, और मैं तुझ को मारूगा, और तेरा
सिर तेरे धड से अलग करूगा, और
मैं आज के दिन पलिश्ती सेना की लोथें
आकाश के पक्षियो और पृथ्वी के जीव
जन्तुओ को दे दूगा, तब समस्त पृथ्वी
के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक
परमेश्वर है। ४७ और यह समस्त
मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार
वा भाले के द्वारा जयवन्त नही करता,
इसलिये कि सग्राम तो यहोवा का है,
और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।
४८ जब पलिश्ती उठकर दाऊद का
साम्हना करने के लिये निकट आया, तब
दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का साम्हना
करने के लिये फुर्ती से दौडा। ४९ फिर
दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर
उस में से एक पत्थर निकाला, और उसे
गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर
ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के
भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुह
के बल गिर पडा। ५० यो दाऊद ने
पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्थर
के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला,
परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी।

५१ तब दाऊद दौडकर पलिश्ती के ऊपर
खडा हुआ, और उसकी तलवार पकड़कर
मियान से खीची, और उसको घात किया,
और उसका सिर उसी तलवार से काट
डाला। यह देखकर कि हमारा वीर मर
गया पलिश्ती भाग गए। ५२ इस पर
इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे,
और गत * और एक्रोन के फाटको तक
पलिश्तियो का पीछा करते गए, और
घायल पलिश्ती शारैम के मार्ग मे और गत
और एक्रोन तक गिरते गए। ५३ तब
इस्राएली पलिश्तियो का पीछा छोडकर
लौट आए, और उनके डेरो को लूट
लिया। ५४ और दाऊद पलिश्ती का
सिर यरूशलेम मे ले गया, और उसके
हथियार अपने डेरे मे धर लिए॥

(शाऊल की शत्रुता का आरम्भ और बढ़ती)

५५ जब शाऊल ने दाऊद को उस
पलिश्ती का साम्हना करने के लिये जाते
देखा, तब उस ने अपने सेनापति अब्नेर
से पूछा, हे अब्नेर, वह जवान किस का
पुत्र है? अब्नेर ने कहा, हे राजा, तेरे
जीवन की शपथ, मै नही जानता।
५६ राजा ने कहा, तू पूछ ले कि वह
जवान किस का पुत्र है। ५७ जब दाऊद
पलिश्ती को मारकर लौटा, तब अब्नेर
ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ मे लिए
हुए शाऊल के साम्हने पहुचाया।
५८ शाऊल ने उस से पूछा, हे जवान,
तू किस का पुत्र है? दाऊद ने कहा,
मै तो तेरे दास बेतलेहेमी यिशै का पुत्र हू॥

१८ जब वह शाऊल से बातें
कर चुका, तब योनातन का मन
दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातन
उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने
लगा। २ और उस दिन से शाऊल ने
उसे अपने पास रखा, और पिता के घर
को फिर लौटने न दिया। ३ तब योना-
तन ने दाऊद से वाचा बान्धी, क्योंकि
वह उसको अपने प्राण के बराबर प्यार
करता था। ४ और योनातन ने अपना
बागा जो वह स्वय पहिने था उतारकर
अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया,
वरन अपनी तलवार और धनुष और
कटिबन्द भी उसको दे दिए। ५ और
जहा कही शाऊल दाऊद को भेजता था
वहा वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम
करता था, और शाऊल ने उसे योद्धाओ
का प्रधान नियुक्त किया। और समस्त
प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी
उस से प्रसन्न थे॥

६ जब दाऊद उस पलिश्ती को मारकर
लौटा आता था, और वे सब लोग भी
आ रहे थे, तब सब इस्राएली नगरो से
स्त्रियो ने निकलकर डफ और तिकोने
बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती
और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत
मे निकली। ७ और वे स्त्रिया नाचती
हुई एक दूसरी के साथ यह गाती गईं, कि

शाऊल ने तो हजारो को,
परन्तु दाऊद ने लाखो को मारा है॥

८ तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और
यह बात उसको बुरी लगी, और वह
कहने लगा, उन्हो ने दाऊद के लिये तो
लाखो और मेरे लिये हजारो ही ठहराया;
इसलिये अब राज्य को छोड उसको अब
क्या मिलना बाकी है? ९ तब उस दिन
से भविष्य में शाऊल दाऊद की ताक में
लगा रहा॥

* वा तराई।

१० दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से
एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा,
और वह अपने घर के भीतर नबूवत
करने लगा, दाऊद प्रति दिवस की नाईं
अपने हाथ से बजा रहा था। और शाऊल
अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए
था, ११ तब शाऊल ने यह सोचकर,
कि मैं ऐसा मारूंगा कि भाला दाऊद
को बेधकर भीत में धस जाए, भाले को
चलाया, परन्तु दाऊद उसके साम्हने से
दो बार हट गया। १२ और शाऊल
दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा
दाऊद के साथ था और शाऊल के पास
से अलग हो गया था। १३ शाऊल ने
उसको अपने पास से अलग करके सहस्र-
पति किया, और वह प्रजा के साम्हने
आया जाया करता था। १४ और दाऊद
अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता
था, और यहोवा उसके साथ साथ था।
१५ और जब शाऊल ने देखा कि वह
बहुत बुद्धिमान है, तब वह उस से डर
गया। १६ परन्तु इस्राएल और यहूदा
के समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे,
क्योंकि वह उनके देखते आया जाया
करता था॥

१७ और शाऊल ने यह सोचकर,
कि मेरा हाथ नहीं, वरन पलिश्तियों ही
का हाथ दाऊद पर पड़े, उस से कहा,
सुन, मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब को तुझे
ब्याह दूंगा, इतना कर, कि तू मेरे लिये
वीरता के साथ यहोवा की ओर से युद्ध
कर। १८ दाऊद ने शाऊल से कहा,
मैं क्या हूं, और मेरा जीवन क्या है, और
इस्राएल में मेरे पिता का कुल क्या है,
कि मैं राजा का दामाद हो जाऊं?
१९ जब समय आ गया कि शाऊल की
बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए, तब
वह महोलाई अद्रीएल से ब्याही गई।
२० और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद
से प्रीति रखने लगी, और जब इस बात
का समाचार शाऊल को मिला, तब वह
प्रसन्न हुआ। २१ शाऊल तो सोचता था,
कि वह उसके लिये फन्दा हो, और पलि-
श्तियों का हाथ उस पर पड़े। और शाऊल
ने दाऊद से कहा, अब की बार तो तू
अवश्य ही* मेरा दामाद हो जाएगा।
२२ फिर शाऊल ने अपने कर्मचारियों
को आज्ञा दी, कि दाऊद से छिपकर ऐसी
बातें करो, कि सुन, राजा तुझ से प्रसन्न
है, और उसके सब कर्मचारी भी तुझ
से प्रेम रखते हैं, इसलिये अब तू राजा
का दामाद हो जा। २३ तब शाऊल
के कर्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही
बातें कहीं। परन्तु दाऊद ने कहा, मैं तो
निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूं, फिर क्या
तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना
छोटी बात है? २४ जब शाऊल के
कर्मचारियों ने उसे बताया, कि दाऊद
ने ऐसी ऐसी बातें कहीं। २५ तब शाऊल
ने कहा, तुम दाऊद से यों कहो, कि राजा
कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता,
केवल पलिश्तियों की एक सौ खलड़ियां
चाहता है, कि वह अपने शत्रुओं से पलटा
ले। शाऊल की मनसा यह थी, कि पलि-
श्तियों से दाऊद को मरवा डाले। २६ जब
उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें
बताईं, तब वह राजा का दामाद होने
को प्रसन्न हुआ। जब ब्याह के दिन कुछ
रह गए, २७ तब दाऊद अपने जनों को
संग लेकर चला, और पलिश्तियों के दो

* मूल में—आज दूसरी रीति पर तू।

सौ पुरुषो को मारा, तब दाऊद उनकी
खलड़ियो को ले आया, और वे राजा को
गिन गिन कर दी गई, इसलिये कि वह
राजा का दामाद हो जाए। और शाऊल
ने अपनी वेटी मीकल को उसे व्याह
दिया। २८ जब शाऊल ने देखा, और
निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ
है, और मेरी वेटी मीकल उस से प्रेम
रखती है, २९ तब शाऊल दाऊद से और
भी डर गया। और शाऊल सदा के लिये
दाऊद का वैरी बन गया॥

३० फिर पलिश्तियो के प्रधान निकल
आए, और जब जब वे निकल आए तब
तब दाऊद ने शाऊल के और सब कर्म-
चारियो से अधिक बुद्धिमानी दिखाई,
इस से उसका नाम बहुत बड़ा हो
गया *॥

१९ और शाऊल ने अपने पुत्र योना-
तन और अपने सब कर्मचारियो से
दाऊद को मार डालने की चर्चा की। परन्तु
शाऊल का पुत्र योनातन दाऊद से बहुत
प्रसन्न था। २ और योनातन ने दाऊद
को बताया, कि मेरा पिता तुझे मरवा
डालना चाहता है, इसलिये तू बिहान
को सावधान रहना, और किसी गुप्त
स्थान मे बैठा हुआ छिपा रहना, ३ और
मै मैदान मे जहा तू होगा वहा जाकर
अपने पिता के पास खड़ा होकर उस से
तेरी चर्चा करूगा, और यदि मुझे
कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊगा।
४ और योनातन ने अपने पिता शाऊल
से दाऊद की प्रशसा करके उस से कहा,
कि हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी
न हो, क्योकि उस ने तेरा कुछ अपराध
नही किया, वरन उसके सब काम तेरे
बहुत हित के है, ५ उस ने अपने प्राण
पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला,
और यहोवा ने समस्त इस्राएलियो की
बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आन-
न्दित हुआ था, और तू दाऊद को अकारण
मारकर निर्दोष के खून का पापी क्यो
बने? ६ तब शाऊल ने योनातन की
बात मानकर यह शपथ खाई, कि यहोवा
के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला
न जाएगा। ७ तब योनातन ने दाऊद
को बुलाकर ये समस्त बाते उसको बताई।
फिर योनातन दाऊद को शाऊल के पास
ले गया, और वह पहिले की नाई उसके
साम्हने रहने लगा॥

८ तब फिर लड़ाई होने लगी; और
दाऊद जाकर पलिश्तियो से लड़ा, और
उन्हे बड़ी मार से मारा, और वे उसके
साम्हने से भाग गए। ९ और जब शाऊल
हाथ मे भाला लिए हुए घर मे बैठा था;
और दाऊद हाथ से बजा रहा था, तब
यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा
शाऊल पर चढ़ा। १० और शाऊल ने
चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला
उसे बेधते हुए भीत मे धस जाए, परन्तु
दाऊद शाऊल के साम्हने से ऐसा हट
गया कि भाला जाकर भीत ही मे धस
गया। और दाऊद भागा, और उस रात
को बच गया। ११ और शाऊल ने
दाऊद के घर पर दूत इसलिये भेजे कि
वे उसकी घात मे रहे, और बिहान को
उसे मार डाले, तब दाऊद की स्त्री मीकल
ने उसे यह कहकर जताया, कि यदि तू
इस रात को अपना प्राण न बचाए, तो
बिहान को मारा जाएगा। १२ तब मीकल
ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया,

* मूल में—अनमोल।

और वह भाग कर बच निकला। १३ तब
मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई
पर लिटाया, और बकरियों के रोएं की
तकिया उसके सिरहाने पर रखकर उन-
को वस्त्र ओढ़ा दिए। १४ जब शाऊल
ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत
भेजे, तब वह बोली, वह तो बीमार है।
१५ तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के
देखने के लिये भेजा, और कहा, उसे
चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं
उसे मार डालूं। १६ जब दूत भीतर
गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर
गृहदेवता पड़े हैं, और सिरहाने पर बक-
रियों के रोएं की तकिया है। १७ सो
शाऊल ने मीकल से कहा, तू ने मुझे
ऐसा धोखा क्यों दिया? तू ने मेरे शत्रु
को ऐसा क्यों जाने दिया कि वह बच
निकला है? मीकल ने शाऊल से कहा,
उस ने मुझ से कहा, कि मुझे जाने दे,
मैं तुझे क्यों मार डालूं॥

१८ और दाऊद भागकर बच निकला,
और रामा में शमूएल के पास पहुंचकर
जो कुछ शाऊल ने उस से किया था
सब उसे कह सुनाया। तब वह और
शमूएल जाकर नबायोत* में रहने लगे।
१९ जब शाऊल को इसका समाचार
मिला कि दाऊद रामा में के नबायोत*
में है, २० तब शाऊल ने दाऊद के पकड़
लाने के लिये दूत भेजे, और जब शाऊल
के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत
करते हुए, और शमूएल को उनकी
प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर
का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी
नबूवत करने लगे। २१ इसका समाचार

* अर्थात् कई वासस्थान।

पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और
वे भी नबूवत करने लगे। फिर शाऊल
ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी
नबूवत करने लगे। २२ तब वह आप
ही रामा को चला, और उस बड़े गड़हे
पर जो सेकू में है पहुंचकर पूछने लगा,
कि शमूएल और दाऊद कहां है? किसी
ने कहा, वे तो रामा के नबायोत* में
हैं। २३ तब वह उधर, अर्थात् रामा
के नबायोत* को चला, और परमेश्वर
का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह
रामा के नबायोत* को पहुंचने तक नबूवत
करता हुआ चला गया। २४ और उस
ने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल
के साम्हने नबूवत करने लगा, और भूमि
पर गिरकर दिन और रात नङ्गा पड़ा
रहा। इस कारण से यह कहावत चली,
कि क्या शाऊल भी नबियों में से है?

(दाऊद का भागना और शाऊल के डर
के मारे इधर उधर घूमना)

२० फिर दाऊद रामा के नबायोत*
से भागा, और योनातन के पास
जाकर कहने लगा, मैं ने क्या किया है?
मुझ से क्या पाप हुआ? मैं ने तेरे पिता की
दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया
है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता
है? २ उस ने उस से कहा, ऐसी बात
नहीं है, तू मारा न जाएगा। सुन, मेरा
पिता मुझ को बिना जताए न तो कोई
बड़ा काम करता है और न कोई छोटा,
फिर वह ऐसी बात को मुझ से क्यों
छिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है।
३ फिर दाऊद ने शपथ खाकर कहा,
तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरे

* अर्थात् कई वासस्थान।

अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है, और वह
सोचता होगा, कि योनातन इस बात को
न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित
हो जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की
शपथ और तेरे जीवन की शपथ, निःसन्देह,
मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का
अन्तर है। ४ योनातन ने दाऊद से कहा,
जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिये
करूंगा। ५ दाऊद ने योनातन से कहा,
सुन कल नया चांद होगा, और मुझे
उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन
करूं; परन्तु तू मुझे विदा कर, और
मैं परसों सांझ तक मैदान में छिपा रहूंगा।
६ यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे,
तो कहना, कि दाऊद ने अपने नगर
बेतलेहेम को शीघ्र जाने के लिये मुझ
से बिनती करके छुट्टी मांगी है; क्योंकि
वहां उसके समस्त कुल के लिये वार्षिक
यज्ञ है। ७ यदि वह यों कहे, कि अच्छा!
तब तो तेरे दास के लिये कुशल होगा;
परन्तु यदि उसका क्रोध बहुत भड़क उठे,
तो जान लेना कि उस ने बुराई ठानी
है। ८ और तू अपने दास से कृपा का
व्यवहार करना, क्योंकि तू ने यहोवा
की शपथ खिलाकर अपने दास को अपने
साथ वाचा बन्धाई है। परन्तु यदि मुझ
से कुछ अपराध हुआ हो, तो तू आप
मुझे मार डाल, तू मुझे अपने पिता के
पास क्यों पहुंचाए? ९ योनातन ने कहा,
ऐसी बात कभी न होगी! यदि मैं निश्चय
जानता कि मेरे पिता ने तुझ से बुराई
करनी ठानी है, तो क्या मैं तुझ को न
बताता? १० दाऊद ने योनातन से कहा,
यदि तेरा पिता तुझ को कठोर उत्तर
दे, तो कौन मुझे बताएगा? ११ योनातन
ने दाऊद से कहा, चल, हम मैदान को
निकल जाएं। और वे दोनों मैदान की
ओर चले गए॥
१२ तब योनातन दाऊद से कहने
लगा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की
शपथ, जब मैं कल वा परसों इसी समय
अपने पिता का भेद पाऊं, तब यदि दाऊद
की भलाई देखूं, तो क्या मैं उसी समय
तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊंगा?
१३ यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई
करने का हो, और मैं तुझ पर यह प्रगट
करके तुझे विदा न करूं कि तू कुशल
के साथ चला जाए, तो यहोवा योनातन
से ऐसा ही वरन इस से भी अधिक करे।
और यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा
वह मेरे पिता के साथ रहा। १४ और
न केवल जब तक मैं जीवित रहूं, तब
तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसा
करना, कि मैं न मरूं, १५ परन्तु मेरे
घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी
न हटाना। वरन जब यहोवा दाऊद
के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नाश
कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना।
१६ इस प्रकार योनातन ने दाऊद के
घराने से यह कहकर वाचा बन्धाई, कि
यहोवा दाऊद के शत्रुओं से पलटा ले।
१७ और योनातन दाऊद से प्रेम रखता
था, और उस ने उसको फिर शपथ
खिलाई; क्योंकि वह उस से अपने प्राण
के बराबर प्रेम रखता था। १८ तब
योनातन ने उस से कहा, कल नया चांद
होगा; और तेरी चिन्ता की जाएगी,
क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी।
१९ और तू तीन दिन के बीतने पर तुरन्त
आना, और उस स्थान पर जाकर जहां
तू उस काम के दिन छिपा था, अर्थात्
एजेल नाम पत्थर के पास रहना। २० तब

मैं उसकी अलग, मानो अपने किसी ठहराए
हुए चिन्ह पर तीन तीर चलाऊंगा।
२१ फिर मैं अपने टहलुए छोकरे को
यह कहकर भेजूंगा, कि जाकर तीरों को
ढूंढ ले आ। यदि मैं उस छोकरे से साफ
साफ कहूं, कि देख, तीर इधर तेरी इस
अलग पर हैं, तो तू उसे ले आ, क्योंकि
यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे लिये
कुशल को छोड़ और कुछ न होगा।
२२ परन्तु यदि मैं छोकरे से यों कहूं,
कि सुन, तीर उधर तेरे उस अलग पर
है, तो तू चला जाना, क्योंकि यहोवा ने
तुझे विदा किया है। २३ और उस बात
के विषय जिसकी चर्चा मैं ने और तू ने
आपस में की है, यहोवा मेरे और तेरे
मध्य में सदा रहे॥

२४ इसलिये दाऊद मैदान में जा
छिपा, और जब नया चांद हुआ, तब
राजा भोजन करने को बैठा। २५ राजा
तो पहिले की नाईं अपने उस आसन पर
बैठा जो भीत के पास था, और योनातन
खड़ा हुआ, और अब्नेर शाऊल के निकट
बैठा, परन्तु दाऊद का स्थान खाली रहा।
२६ उस दिन तो शाऊल यह सोचकर
चुप रहा, कि इसका कोई न कोई कारण
होगा, वह अशुद्ध होगा, निःसन्देह शुद्ध न
होगा। २७ फिर नये चांद के दूसरे दिन को
दाऊद का स्थान खाली रहा। और शाऊल
ने अपने पुत्र योनातन से पूछा, क्या कारण
है कि यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर
आया था, और न आज ही आया है?
२८ योनातन ने शाऊल से कहा, दाऊद
ने बेतलेहम जाने के लिये मुझ से विनती
करके छुट्टी मांगी, २९ और कहा, मुझे
जाने दे, क्योंकि उस नगर में हमारे
कुल का यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को
वहां उपस्थित होने की आज्ञा दी है।
और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की
दृष्टि हो, तो मुझे जाने दे कि मैं अपने
भाइयों से भेंट कर आऊं। इसी कारण
वह राजा की मेज पर नहीं आया।
३० तब शाऊल का कोप योनातन पर
भड़क उठा, और उस ने उस से कहा,
हे कुटिला राजद्रोही के पुत्र, क्या मैं नहीं
जानता कि तेरा मन तो यिशै के पुत्र
पर लगा है? इसी से तेरी आशा का
टूटना और तेरी माता का अनादर ही
होगा। ३१ क्योंकि जब तक यिशै का
पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब तक न
तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा।
इसलिये अभी भेजकर उसे मेरे पास ला,
क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा।
३२ योनातन ने अपने पिता शाऊल को
उत्तर देकर उस से कहा, वह क्यों मारा
जाए? उस ने क्या किया है? ३३ तब
शाऊल ने उसको मारने के लिये उस
पर भाला चलाया, इससे योनातन ने
जान लिया, कि मेरे पिता ने दाऊद को
मार डालना ठान लिया है। ३४ तब
योनातन क्रोध में जलता हुआ मेज पर
से उठ गया, और महीने के दूसरे दिन को
भोजन न किया, क्योंकि वह बहुत खेदित
था, इसलिये कि उसके पिता ने दाऊद
का अनादर किया था॥

३५ बिहान को योनातन एक छोटा
लड़का संग लिए हुए मैदान में दाऊद के
साथ ठहराए हुए स्थान को गया। ३६ तब
उस ने अपने छोकरे से कहा, दौड़कर
जो जो तीर मैं चलाऊं उन्हें ढूंढ ले आ।
छोकरा दौड़ता ही था, कि उस ने एक
तीर उसके परे चलाया। ३७ जब छोकरा

योनातन के चलाए तीर के स्थान पर
पहुचा, तब योनातन ने उसके पीछे से
पुकारके कहा, तीर तो तेरी परली ओर
है। ३८ फिर योनातन ने छोकरे के
पीछे से पुकारके कहा, बडी फुर्ती कर,
ठहर मत। और योनातन का छोकरा
तीरो को बटोरके अपने स्वामी के पास
ले आया। ३९ इसका भेद छोकरा तो
कुछ न जानता था, केवल योनातन और
दाऊद उस बात को जानते थे। ४० और
योनातन ने अपने हथियार अपने छोकरे
को देकर कहा, जा, इन्हे नगर को पहुचा।
४१ ज्योही छोकरा चला गया, त्योही
दाऊद दक्खिन दिशा की अलग से निकला,
और भूमि पर औंधे मुह गिरके तीन बार
दण्डवत् की, तब उन्हो ने एक दूसरे
को चूमा, और एक दूसरे के साथ रोए,
परन्तु दाऊद का रोना अधिक था।
४२ तब योनातन ने दाऊद से कहा,
कुशल से चला जा, क्योकि हम दोनो
ने एक दूसरे से यह कहके यहोवा के
नाम की शपथ खाई है, कि यहोवा मेरे
और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश
के मध्य में सदा रहे। तब वह उठकर
चला गया, और योनातन नगर मे गया॥

२१ और दाऊद नोब को अहीमेलेक
याजक के पास आया, और अहीमेलेक
दाऊद से भेट करने को थरथराता हुआ
निकला, और उस से पूछा, क्या कारण
है कि तू अकेला है, और तेरे साथ कोई
नही? २ दाऊद ने अहीमेलेक याजक से
कहा, राजा ने मुझे एक काम करने की
आज्ञा देकर मुझ से कहा, जिस काम को
मैं तुझे भेजता, और जो आज्ञा मैं तुझे
देता हू, वह किसी पर प्रकट न होने पाए,
और मैं ने जवानो को फलाने स्थान पर
जाने को समझाया है। ३ अब तेरे हाथ
मे क्या है? पांच रोटी, वा जो कुछ
मिले उसे मेरे हाथ मे दे। ४ याजक ने
दाऊद से कहा, मेरे पास साधारण रोटी
तो कुछ नही है, केवल पवित्र रोटी है,
इतना हो कि वे जवान स्त्रियो से अलग
रहे हो। ५ दाऊद ने याजक को उत्तर
देकर उस से कहा, सच है कि हम तीन
दिन से स्त्रियो से अलग है; फिर जब
मैं निकल आया, तब तो जवानो के
बर्तन पवित्र थे, यद्यपि यात्रा साधारण
है तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र
होगे। ६ तब याजक ने उसको पवित्र
रोटी दी, क्योकि दूसरी रोटी वहा न
थी, केवल भेट की रोटी थी जो यहोवा
के सम्मुख से उठाई गई थी, कि उसके
उठा लेने के दिन गरम रोटी रखी जाए।
७ उसी दिन वहा दोएग नाम शाऊल का
एक कर्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ
था, वह एदोमी और शाऊल के चरवाहो
का मुखिया था। ८ फिर दाऊद ने
अहीमेलेक से पूछा, क्या यहा तेरे पास
कोई भाला व तलवार नही है? क्योकि
मुझे राजा के काम की ऐसी जल्दी थी
कि मैं न तो अपनी तलवार साथ लाया
हू, और न अपना कोई हथियार ही लाया।
९ याजक ने कहा, हा, पलिश्ती गोलियात
जिसे तू ने एला तराई मे घात किया
उसकी तलवार कपडे मे लपेटी हुई एपोद
के पीछे धरी है, यदि तू उसे लेना चाहे,
तो ले ले, उसे छोड और कोई यहा नही
है। दाऊद बोला, उसके तुल्य कोई नही,
वही मुझे दे॥

१० तब दाऊद चला, और उसी दिन
शाऊल के डर के मारे भागकर गत के

राजा आकीश के पास गया। ११ और
आकीश के कर्मचारियों ने आकीश से
कहा, क्या वह उस देश का राजा दाऊद
नहीं है? क्या लोगों ने उसी के विषय
नाचते नाचते एक दूसरे के साथ यह
गाना न गाया था, कि

शाऊल ने हजारों को,
और दाऊद ने लाखों को मारा है?

१२ दाऊद ने ये बातें अपने मन में
रखीं, और गत के राजा आकीश से अत्यन्त
डर गया। १३ तब वह उनके साम्हने
दूसरी चाल चला, और उनके हाथ में
पड़कर बौड़हा, अर्थात् पागल बन गया,
और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचते,
और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने
लगा। १४ तब आकीश ने अपने कर्म-
चारियों से कहा, देखो, वह जन तो बावला
है, तुम उसे मेरे पास क्यों लाए हो?
१५ क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी
है, कि तुम उसको मेरे साम्हने बावलापन
करने के लिये लाए हो? क्या ऐसा जन
मेरे भवन में आने पाएगा?

२२ और दाऊद वहां से चला, और
अदुल्लाम की गुफा में पहुंचकर बच
गया, और यह सुनकर उसके भाई, वरन
उसके पिता का समस्त घराना वहां उसके
पास गया। २ और जितने संकट में
पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और
जितने उदास थे, वे सब उसके पास
इकट्ठे हुए, और वह उनका प्रधान हुआ।
और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ
हो गए॥

३ वहां से दाऊद ने मोआब के मिस्पे
को जाकर मोआब के राजा से कहा,
मेरे पिता को अपने पास तब तक आकर
रहने दो, जब तक कि मैं न जानूं कि
परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा। ४ और
वह उनको मोआब के राजा के सम्मुख
ले गया, और जब तक दाऊद उस गढ़
में रहा, तब तक वे उसके पास रहे।
५ फिर गाद नाम एक नबी ने दाऊद से
कहा, इस गढ़ में मत रह, चल, यहूदा
के देश में जा। और दाऊद चलकर
हेरेत के वन में गया॥

६ तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और
उसके संगियों का पता लग गया है।
उस समय शाऊल गिबा के ऊंचे स्थान
पर, एक झाऊ के पेड़ के तले, हाथ में
अपना भाला लिए हुए बैठा था, और
उसके सब कर्मचारी उसके आसपास
खड़े थे। ७ तब शाऊल अपने कर्मचारियों
से जो उसके आसपास खड़े थे कहने लगा,
हे बिन्यामीनियो, सुनो, क्या यिशै का
पुत्र तुम सभों को खेत और दाख की
बारियां देगा? क्या वह तुम सभों को
सहस्रपति और शतपति करेगा? ८ तुम
सभों ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की
गोष्ठी की है? और जब मेरे पुत्र ने
यिशै के पुत्र से वाचा बान्धी, तब किसी
ने मुझ पर प्रगट नहीं किया, और तुम
में से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर
मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र
ने मेरे कर्मचारी को मेरे विरुद्ध ऐसा
घात लगाने को उभारा है, जैसा आज
के दिन है। ९ तब एदोमी दोएग ने,
जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया
गया था, उत्तर देकर कहा, मैं ने तो
यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र
अहीमेलेक के पास आते देखा, १० और
उस ने उसके लिये यहोवा से पूछा, और उसे
भोजन वस्तु दी, और पलिश्ती गोलियात

की तलवार भी दी। ११ और राजा
ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक याजक को
और उसके पिता के समस्त घराने को,
अर्थात् नोब मे रहनेवाले याजको को
बुलवा भेजा, और जब वे सब के सब
शाऊल राजा के पास आए, १२ तब
शाऊल ने कहा, हे अहीतूब के पुत्र, सुन,
वह बोला, हे प्रभु, क्या आज्ञा? १३ शाऊल
ने उस से पूछा, क्या कारण है कि तू और
यिशै के पुत्र दोनो ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह
की गोष्ठी की है? तू ने उसे रोटी और
तलवार दी, और उसके लिये परमेश्वर
से पूछा भी, जिस से वह मेरे विरुद्ध उठे,
और ऐसा घात लगाए जैसा आज के
दिन है? १४ अहीमेलेक ने राजा को
उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त कर्मचारियो
मे दाऊद के तुल्य विश्वासयोग्य कौन
है? वह तो राजा का दामाद है, और
तेरी राजसभा में उपस्थित हुआ करता,
और तेरे परिवार मे प्रतिष्ठित है।
१५ क्या मै ने आज ही उसके लिये
परमेश्वर से पूछना आरम्भ किया है?
वह मुझ से दूर रहे! राजा न तो अपने
दास पर ऐसा कोई दोष लगाए, न मेरे
पिता के समस्त घराने पर, क्योकि तेरा
दास इन सब बखेड़ों के विषय कुछ भी *
नही जानता। १६ राजा ने कहा, हे
अहीमेलेक, तू और तेरे पिता का समस्त
घराना निश्चय मार डाला जाएगा।
१७ फिर राजा ने उन पहरुओ से जो
उसके आसपास खडे थे आज्ञा दी, कि
मुडो और यहोवा के याजको को मार
डालो, क्योकि उन्हो ने भी दाऊद की
सहायता की है, और उसका भागना
जानने पर भी मुझ पर प्रगट नही किया।
परन्तु राजा के सेवक यहोवा के याजको
को मारने के लिये हाथ बढाना न चाहते थे।
१८ तब राजा ने दोएग से कहा, तू
मुडकर याजको को मार डाल। तब
एदोमी दोएग ने मुडकर याजको को मारा,
और उस दिन सनीवाला एपोद पहिने
हुए पचासी पुरुषो को घात किया।
१९ और याजको के नगर नोब को उस
ने स्त्रियो-पुरुषो, और बालबच्चो, और
दूधपिउवो, और बैलो, गदहो, और भेड-
बकरियो समेत तलवार से मारा।
२० परन्तु अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का
एब्यातार नाम एक पुत्र बच निकला,
और दाऊद के पास भाग गया। २१ तब
एब्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल
ने यहोवा के याजको को वध किया है।
२२ और दाऊद ने एब्यातार से कहा,
जिस दिन एदोमी दोएग वहा था, उसी
दिन मै ने जान लिया, कि वह निश्चय
शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त
घराने के मारे जाने का कारण मै ही
हुआ। २३ इसलिये तू मेरे साथ निडर
रह, जो मेरे प्राण का ग्राहक है वही तेरे
प्राण का भी ग्राहक है, परन्तु मेरे साथ
रहने से तेरी रक्षा होगी॥

२३ और दाऊद को यह समाचार
मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर
से युद्ध कर रहे है, और खलिहानो को लूट
रहे है। २ तब दाऊद ने यहोवा से पूछा,
कि क्या मै जाकर पलिश्तियो को मारू?
यहोवा ने दाऊद से कहा, जा, और
पलिश्तियो को मार के कीला को
बचा। ३ परन्तु दाऊद के जनो ने उस
से कहा, हम तो इस यहूदा देश में भी

* मूल में—छोटा और बड़ा।

डरते रहते हैं, यदि हम कीला जाकर
पलिश्तियों की सेना का साम्हना करें,
तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे?
४ तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा,
और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा,
कमर बान्धकर कीला को जा, क्योंकि
मैं पलिश्तियों को तेरे हाथ में कर दूंगा।
५ इसलिये दाऊद अपने जनों को संग
लेकर कीला को गया, और पलिश्तियों
से लड़कर उनके पशुओं को हांक लाया,
और उन्हें बड़ी मार से मारा। यों दाऊद
ने कीला के निवासियों को बचाया।
६ जब अहीमेलेक का पुत्र एब्यातार दाऊद
के पास कीला को भाग गया था, तब
हाथ में एपोद लिए हुए गया था॥

७ तब शाऊल को यह समाचार मिला
कि दाऊद कीला को गया है। और शाऊल
ने कहा, परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में
कर दिया है, वह तो फाटक और बेंड़ेवाले
नगर में घुसकर बन्द हो गया है। ८ तब
शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई
के लिये बुलवाया, कि कीला को जाकर
दाऊद और उसके जनों को घेर ले।
९ तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल
मेरी हानि की युक्ति कर रहा है, इसलिये
उस ने एब्यातार याजक से कहा, एपोद
को निकट ले आ। १० तब दाऊद ने
कहा, हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा,
तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल
मेरे कारण कीला नगर नाश करने को
आना चाहता है। ११ क्या कीला के
लोग मुझे उसके वश में कर देंगे? क्या
जैसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल
आएगा? हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा,
अपने दास को यह बता। यहोवा ने कहा,
हां, वह आएगा। १२ फिर दाऊद ने
पूछा, क्या कीला के लोग मुझे और मेरे
जनों को शाऊल के वश में कर देंगे?
यहोवा ने कहा, हां, वे कर देंगे। १३ तब
दाऊद और उसके जन जो कोई छः सौ
थे कीला से निकल गए, और इधर उधर
जहां कहीं जा सके वहां गए। और जब
शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद
कीला से निकल भागा है, तब उस ने
वहां जाने की मनसा छोड़ दी॥

१४ तब दाऊद तो जंगल के गढ़ों में
रहने लगा, और पहाड़ी देश के जीप
नाम जंगल में रहा। और शाऊल उसे
प्रति दिन ढूंढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर
ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।
१५ और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल
मेरे प्राण की खोज में निकला है। और
दाऊद जीप नाम जंगल के होरेश नाम
स्थान में था, १६ कि शाऊल का पुत्र
योनातन उठकर उसके पास होरेश में
गया, और परमेश्वर की चर्चा करके
उसको ढाढ़स दिलाया*। १७ उस ने उस
से कहा, मत डर, क्योंकि तू मेरे पिता
शाऊल के हाथ में न पड़ेगा, और तू ही
इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे
नीचे हूंगा, और इस बात को मेरा पिता
शाऊल भी जानता है। १८ तब उन
दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर† आपस
में वाचा बान्धी, तब दाऊद होरेश में
रह गया, और योनातन अपने घर चला
गया। १९ तब जीपी लोग गिबा में
शाऊल के पास जाकर कहने लगे, दाऊद
तो हमारे पास होरेश के गढ़ों में, अर्थात्
उस हकीला नाम पहाड़ी पर छिपा रहता

* मूल में—परमेश्वर ने उसके हाथ बली
किए।
† मूल में—यहोवा के साम्हने।

है, जो यशीमोन के दक्खिन की ओर है।
२० इसलिये अब, हे राजा, तेरी जो इच्छा
आने की है, तो आ, और उसको राजा
के हाथ मे पकडवा देना हमारा काम
होगा। २१ शाऊल ने कहा, यहोवा की
आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने मुझ
पर दया की है। २२ तुम चलकर और
भी निश्चय कर लो, और देख भालकर
जान लो, और उसके अड्डे का पता लगा
लो, और बूझो कि उसको वहा किसने
देखा है, क्योंकि किसी ने मुझ से कहा
है, कि वह बडी चतुराई से काम करता
है। २३ इसलिये जहा कही वह छिपा
करता है उन सब स्थानो को देख देखकर
पहिचानो, तब निश्चय करके मेरे पास
लौट आना। और मै तुम्हारे साथ चलूगा,
और यदि वह उस देश मे कही भी हो,
तो मै उसे यहूदा के हजारो मे से ढूढ
निकालूगा। २४ तब वे चलकर शाऊल
से पहिले जीप को गए। परन्तु दाऊद
अपने जनो समेत माओन नाम जगल
मे चला गया था, जो अराबा मे यशीमोन
के दक्खिन की ओर है। २५ तब शाऊल
अपने जनो को साथ लेकर उसकी खोज
मे गया। इसका समाचार पाकर दाऊद
पर्वत पर से उतरके माओन जगल मे
रहने लगा। यह सुन शाऊल ने माओन
जगल मे दाऊद का पीछा किया।
२६ शाऊल तो पहाड की एक ओर,
और दाऊद अपने जनो समेत पहाड की
दूसरी ओर जा रहा था, और दाऊद
शाऊल के डर के मारे जल्दी जा रहा था,
और शाऊल अपने जनो समेत दाऊद
और उसके जनो को पकडने के लिये
घेरा बनाना चाहता था, २७ कि एक
दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, फुर्ती
से चला आ, क्योंकि पलिश्तियो ने देश
पर चढाई की है। २८ यह सुन शाऊल
दाऊद का पीछा छोडकर पलिश्तियो का
साम्हना करने को चला, इस कारण
उस स्थान का नाम सेलाहम्महलकोत*
पडा। २९ वहा से दाऊद चढकर एनगदी
के गढो मे रहने लगा॥

२४ जब शाऊल पलिश्तियो का पीछा
करके लौटा, तब उसको यह समा-
चार मिला, कि दाऊद एनगदी के जगल मे
है। २ तब शाऊल समस्त इस्राएलियो
मे से तीन हजार को छाटकर दाऊद
और उसके जनो को बनैले बकरो की
चट्टानो पर खोजने गया। ३ जब वह
मार्ग पर के भेडशालो के पास पहुचा जहा
एक गुफा थी, तब शाऊल दिशा फिरने
को उसके भीतर गया। और उसी गुफा
के कोनो मे दाऊद और उसके जन बैठे
हुए थे। ४ तब दाऊद के जनो ने उस से
कहा, सुन, आज वही दिन है जिसके
विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, कि
मै तेरे शत्रु को तेरे हाथ मे सौप दूगा,
कि तू उस से मनमाना बर्ताव कर ले।
तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे की
छोर को छिपकर काट लिया। ५ इसके
पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर
काटने से पछताया†। ६ और अपने जनो
से कहने लगा, यहोवा न करे कि मै अपने
प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा
काम करू, कि उस पर हाथ चलाऊ,
क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।
७ ऐसी बाते कहकर दाऊद ने अपने
जनो को घुडकी लगाई, और उन्हे शाऊल

* अर्थात् बच निकलने का ढग।
† मूल में—दाऊद के मन ने उसे मारा।

की हानि करने को उठने न दिया। फिर
शाऊल उठकर गुफा से निकला और
अपना मार्ग लिया। ८ उसके पीछे दाऊद
भी उठकर गुफा से निकला, और शाऊल
को पीछे से पुकार के बोला, हे मेरे प्रभु,
हे राजा। जब शाऊल ने फिर के देखा,
तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुकाकर
दण्डवत् की। ९ और दाऊद ने शाऊल
से कहा, जो मनुष्य कहते हैं, कि दाऊद
तेरी हानि चाहता है उनकी तू क्यों
सुनता है? १० देख, आज तू ने अपनी
आंखों से देखा है कि यहोवा ने आज
गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था,
और किसी किसी ने तो मुझ से तुझे
मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर
तरस आया, और मैं ने कहा, मैं अपने
प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा, क्योंकि वह
यहोवा का अभिषिक्त है। ११ फिर,
हे मेरे पिता, देख, अपने बागे की छोर
मेरे हाथ में देख, मैं ने तेरे बागे की
छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न
किया, इस से निश्चय करके जान ले,
कि मेरे मन * में कोई बुराई वा अपराध
का सोच नहीं है। और मैं ने तेरा कुछ
अपराध नहीं किया, परन्तु तू मेरे प्राण
लेने को मानो उसका अहेर करता रहता
है। १२ यहोवा मेरा और तेरा न्याय
करे, और यहोवा तुझ से मेरा पलटा
ले, परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।
१३ प्राचीनों के नीति वचन के अनुसार
दुष्टता दुष्टों से होती है, परन्तु मेरा
हाथ तुझ पर न उठेगा। १४ इस्राएल
का राजा किस का पीछा करने को निकला
है? और किस के पीछे पड़ा है? एक
मरे कुत्ते के पीछे! एक पिस्सू के पीछे!
१५ इसलिये यहोवा न्यायी होकर मेरा
तेरा विचार करे, और विचार करके
मेरा मुकद्दमा लड़े, और न्याय करके मुझे
तेरे हाथ से बचाए। १६ दाऊद शाऊल
से ये बातें कह ही चुका था, कि शाऊल ने
कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा
बोल है? तब शाऊल चिल्लाकर रोने
लगा। १७ फिर उस ने दाऊद से कहा,
तू मुझ से अधिक धर्मी है, तू ने तो
मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैं ने तेरे
साथ बुराई की। १८ और तू ने आज
यह प्रगट किया है, कि तू ने मेरे साथ
भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे
तेरे हाथ में कर दिया, तब तू ने मुझे
घात न किया। १९ भला! क्या कोई
मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से
जाने देता है? इसलिये जो तू ने आज
मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला
यहोवा तुझे दे। २० और अब, मुझे
मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो
जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ
में स्थिर होगा। २१ अब मुझ से यहोवा
की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे
पीछे नाश न करूंगा, और तेरे पिता के
घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूंगा।
२२ तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही
शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला
गया, और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों
में चला गया॥

२५ और शमूएल मर गया, और
समस्त इस्राएलियों ने इकट्ठे होकर
उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही
में जो रामा में था उसको मिट्टी दी। तब
दाऊद उठकर पारान जंगल को चला गया॥

* मूल में—हाथ।

२ माओन मे एक पुरुष रहता था
जिसका माल कर्मेल मे था। और वह
पुरुष बहुत बडा था, और उसके तीन
हजार भेडे, और एक हजार बकरिया
थी, और वह अपनी भेडो का ऊन कतर
रहा था। ३ उस पुरुष का नाम नाबाल,
और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था।
स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी, परन्तु
पुरुष कठोर, और बुरे बुरे काम करनेवाला
था, वह तो कालेबवशी था। ४ जब
दाऊद ने जगल मे समाचार पाया, कि
नाबाल अपनी भेडो का ऊन कतर रहा
है, ५ तब दाऊद ने दस जवानो को वहा
भेज दिया, और दाऊद ने उन जवानो
से कहा, कि कर्मेल मे नाबाल के पास
जाकर मेरी ओर से उसका कुशलक्षेम
पूछो। ६ और उस से यो कहो, कि
तू चिरजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और
तेरा घराना कल्याण मे रहे, और जो
कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे। ७ मै ने
सुना है, कि जो तू ऊन कतर रहा है,
तेरे चरवाहे हम लोगो के पास रहे, और
न तो हम ने उनकी कुछ हानि की *,
और न उनका कुछ खोया गया। ८ अपने
जवानो से यह बात पूछ ले, और वे
तुझ को बताएगे। सो इन जवानो पर
तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, हम तो आनन्द
के समय मे आए है, इसलिये जो कुछ
तेरे हाथ लगे वह अपने दासो और अपने
बेटे दाऊद को दे। ९ ऐसी ऐसी बाते
दाऊद के जवान जाकर उसके नाम से
नाबाल को सुनाकर चुप रहे †।
१० नाबाल ने दाऊद के जनो को उत्तर
देकर उन से कहा, दाऊद कौन है? यिशै
का पुत्र कौन है? आज कल बहुत से
दास अपने अपने स्वामी के पास से भाग
जाते है। ११ क्या मै अपनी रोटी-पानी
और जो पशु मै ने अपने कतरनेवालो के
लिये मारे है लेकर ऐसे लोगो को दे दू,
जिनको मै नही जानता कि कहा के है?
१२ तब दाऊद के जवानो ने लौटकर
अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको ये
सब बाते ज्यो की त्यो सुना दी। १३ तब
दाऊद ने अपने जनो से कहा, अपनी
अपनी तलवार बान्ध लो। तब उन्हो ने
अपनी अपनी तलवार बान्ध ली, और
दाऊद ने भी अपनी तलवार बान्ध ली,
और कोई चार सौ पुरुष दाऊद के पीछे
पीछे चले, और दो सौ सामान के पास
रह गए। १४ परन्तु एक सेवक ने नाबाल
की पत्नी अबीगैल को बताया, कि दाऊद
ने जगल मे हमारे स्वामी को आशीर्वाद
देने के लिये दूत भेजे थे, और उस ने
उन्हे ललकार दिया। १५ परन्तु वे मनुष्य
हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और
जब तक हम मैदान मे रहते हुए उनके
पास आया जाया करते थे, तब तक न
तो हमारी कुछ हानि हुई *, और न हमारा
कुछ खोया गया, १६ जब तक हम उन-
के साथ भेड-बकरिया चराते रहे, तब
तक वे रात दिन हमारी आड बने रहे।
१७ इसलिये अब सोच विचार कर कि
क्या करना चाहिए, क्योकि उन्हो ने
हमारे स्वामी की और उसके समस्त
घराने की हानि ठानी होगी, वह तो
ऐसा दुष्ट है कि उस से कोई बोल भी
नही सकता। १८ तब अबीगैल ने फुर्ती
से दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु,

* मूल में—उनको लजवाया।
† मूल में—विश्राम किया।

* मूल में—न हम लजवाए गए।

और पांच भेड़ियों का मांस, और पांच
सआ * भूना हुआ अनाज, और एक सौ
गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ
टिकिया लेकर गदहों पर लदवाईं।
१९ और उस ने अपने जवानों से कहा,
तुम मेरे आगे आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे
पीछे आती हूं, परन्तु उस ने अपने पति
नाबाल से कुछ न कहा। २० वह गदहे
पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी
जाती थी, और दाऊद अपने जनों समेत
उसके साम्हने उतरा आता था, और
वह उनको मिली। २१ दाऊद ने तो
सोचा था, कि मैं ने जो जंगल में उसके
सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ
भी न खोया, यह निःसन्देह व्यर्थ हुआ,
क्योंकि उस ने भलाई के बदले मुझ से
बुराई ही की है। २२ यदि बिहान को
उजियाला होने तक उस जन के समस्त
लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीवित
छोड़ूं, तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से
ऐसा ही, वरन इस से भी अधिक करे।
२३ दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके
गदहे पर से उतर पड़ी, और दाऊद के
सम्मुख मुंह के बल भूमि पर गिरकर
दण्डवत् की। २४ फिर वह उसके पांव
पर गिरके कहने लगी, हे मेरे प्रभु, यह
अपराध मेरे ही सिर पर हो, तेरी दासी
तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू
अपनी दासी की बातों को सुन ले।
२५ मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त
न लगाए, क्योंकि जैसा उसका नाम है
वैसा ही वह आप है, उसका नाम तो
नाबाल † है, और सचमुच उस में मूढ़ता
पाई जाती है, परन्तु मुझ तेरी दासी

* यह विशेष नपुए का नाम है।
† अर्थात् मूढ़।

ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तू ने
भेजा था न देखा था। २६ और अब,
हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ
और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा
ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के
द्वारा अपना पलटा लेने से रोक रखा
है, इसलिये अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की
हानि के चाहनेवाले नाबाल ही के समान
ठहरें। २७ और अब यह भेंट जो तेरी
दासी अपने प्रभु के पास लाई है, उन
जवानों को दी जाए जो मेरे प्रभु के साथ
चलते हैं। २८ अपनी दासी का अपराध
क्षमा कर, क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे
प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा,
इसलिये कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर
से लड़ता है, और जन्म भर तुझ में
कोई बुराई नहीं पाई जाएगी। २९ और
यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और
तेरे प्राण का ग्राहक होने को उठा है,
तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर
यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बन्धा
रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह
मानो गोफन में रखकर फेंक देगा।
३० इसलिये जब यहोवा मेरे प्रभु के
लिये यह समस्त भलाई करेगा जो उस
ने तेरे विषय में कही है, और तुझे इस्राएल
पर प्रधान करके ठहराएगा, ३१ तब
तुझे इस कारण पछताना न होगा, वा
मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न * होगा कि
तू ने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु
ने अपना पलटा आप लिया है। फिर जब
यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी
दासी को स्मरण करना। ३२ दाऊद ने
अबीगैल से कहा, इस्राएल का परमेश्वर

* मूल में—हृदय का ठोकर खाना।

यहोवा धन्य है, जिस ने आज के दिन
मुझ से भेंट करने के लिये तुझे भेजा है।
३३ और तेरा विवेक धन्य है, और तू
आप भी धन्य है, कि तू ने मुझे आज
के दिन खून करने और अपना पलटा
आप लेने से रोक लिया है। ३४ क्योंकि
सचमुच इस्राएल का परमेश्वर यहोवा,
जिस ने मुझे तेरी हानि करने से रोका
है, उसके जीवन की शपथ, यदि तू फुर्ती
करके मुझ से भेंट करने को न आती,
तो निःसन्देह बिहान को उजियाला होने
तक नाबाल का कोई लड़का भी न बचता।
३५ तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो
वह उसके लिये लाई थी, फिर उस से
उस ने कहा, अपने घर कुशल से जा,
सुन, मैं ने तेरी बात मानी है और तेरी
विनती ग्रहण कर ली है। ३६ तब
अबीगैल नाबाल के पास लौट गई, और
क्या देखती है, कि वह घर में राजा
की सी जेवनार कर रहा है। और नाबाल
का मन मगन है, और वह नशे में अति
चूर हो गया है, इसलिये उस ने भोर
के उजियाले होने से पहिले उस से कुछ
भी * न कहा। ३७ बिहान को जब नाबाल
का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी
ने उसे कुल हाल सुना दिया, तब उसके
मन का हियाव जाता रहा †, और वह
पत्थर सा सुन्न हो गया। ३८ और दस
दिन के पश्चात् यहोवा ने नाबाल को
ऐसा मारा, कि वह मर गया। ३९ नाबाल
के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा,
धन्य है यहोवा जिस ने नाबाल के साथ

* मूल में—छोटा और बड़ा कुछ।

† मूल में—उसका हृदय उसके अन्दर में मर गया।

मेरी नामधराई का मुकद्दमा लड़कर अपने
दास को बुराई से रोक रखा, और यहोवा
ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर
लाद दिया है। तब दाऊद ने लोगों को
अबीगैल के पास इसलिये भेजा कि वे
उन से उसकी पत्नी होने की बातचीत
करें। ४० तो जब दाऊद के सेवक कर्मेल
को अबीगैल के पास पहुंचे, तब उस से
कहने लगे, कि दाऊद ने हमें तेरे पास
इसलिये भेजा है कि तू उसकी पत्नी बने।
४१ तब वह उठी, और मुंह के बल भूमि
पर गिर दण्डवत् करके कहा, तेरी दासी
अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के
लिये लौंडी बने। ४२ तब अबीगैल फुर्ती
से उठी, और गदहे पर चढ़ी, और उसकी
पांच सहेलियां उसके पीछे पीछे हो लीं,
और वह दाऊद के दूतों के पीछे पीछे
गई, और उसकी पत्नी हो गई। ४३ और
दाऊद ने यिज्रेल नगर की अहिनोअम
को भी ब्याह लिया, तो वे दोनों उसकी
पत्नियां हुईं। ४४ परन्तु शाऊल ने अपनी
बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के
पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था॥

२६ फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल
के पास जाकर कहने लगे, क्या दाऊद
उस हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन
के साम्हने है छिपा नहीं रहता? २ तब
शाऊल उठकर इस्राएल के तीन हजार
छांटे हुए योद्धा संग लिए हुए गया कि
दाऊद को जीप के जंगल में खोजे। ३ और
शाऊल ने अपनी छावनी मार्ग के पास
हकीला नाम पहाड़ी पर जो यशीमोन के
साम्हने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल
में रहा, और उस ने जान लिया, कि
शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में

आया है, ४ तब दाऊद ने भेदियों को
भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल
सचमुच आ गया है। ५ तब दाऊद
उठकर उस स्थान पर गया जहां शाऊल
पड़ा था, और दाऊद ने उस स्थान को
देखा जहां शाऊल अपने सेनापति नेर
के पुत्र अब्नेर समेत पड़ा था, शाऊल
तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था, और
उसके लोग उसके चारों ओर डेरे डाले
हुए थे। ६ तब दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक
और जरूयाह के पुत्र योआब के भाई
अबीशै से कहा, मेरे साथ उस छावनी
में शाऊल के पास कौन चलेगा? अबीशै
ने कहा, तेरे साथ मैं चलूंगा। ७ सो
दाऊद और अबीशै रातों रात उन लोगों के
पास गए, और क्या देखते हैं, कि शाऊल
गाड़ियों की आड़ में पड़ा सो रहा है,
और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि
में गड़ा है, और अब्नेर और योद्धा लोग
उसके चारों ओर पड़े हुए हैं। ८ तब
अबीशै ने दाऊद से कहा, परमेश्वर ने
आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया
है, इसलिये अब मैं उसको एक बार
ऐसा मारूं कि भाला उसे बेधता हुआ
भूमि में धंस जाए, और मुझ को उसे
दूसरी बार मारना न पड़ेगा। ९ दाऊद
ने अबीशै से कहा, उसे नाश न कर,
क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ
चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है?
१० फिर दाऊद ने कहा, यहोवा के जीवन
की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा,
वा वह अपनी मृत्यु से मरेगा*, वा वह
लड़ाई में जाकर मर जाएगा। ११ यहोवा
न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के
अभिषिक्त पर बढ़ाऊं, अब उसके सिरहाने
से भाला और पानी की झारी उठा ले,
और हम यहां से चले जाएं। १२ तब
दाऊद ने भाले और पानी की झारी को
शाऊल के सिरहाने से उठा लिया, और
वे चले गए। और किसी ने इसे न देखा,
और न जाना, और न कोई जागा, क्योंकि
वे सब इस कारण सोए हुए थे, कि यहोवा
की ओर से उन में भारी नींद समा गई
थी। १३ तब दाऊद परली ओर जाकर
दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ,
और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था,
१४ और दाऊद ने उन लोगों को, और नेर
के पुत्र अब्नेर को पुकार के कहा, हे
अब्नेर, क्या तू नहीं सुनता? अब्नेर ने
उत्तर देकर कहा, तू कौन है जो राजा
को पुकारता है? १५ दाऊद ने अब्नेर
से कहा, क्या तू पुरुष नहीं है? इस्राएल
में तेरे तुल्य कौन है? तू ने अपने स्वामी
राजा की चौकसी क्यों नहीं की? एक
जन तो तेरे स्वामी राजा को नाश करने
घुसा था। १६ जो काम तू ने किया है
वह अच्छा नहीं। यहोवा के जीवन की
शपथ तुम लोग मारे जाने के योग्य हो,
क्योंकि तुम ने अपने स्वामी, यहोवा के
अभिषिक्त की चौकसी नहीं की। और
अब देख, राजा का भाला और पानी की
झारी जो उसके सिरहाने थी वे कहां
हैं? १७ तब शाऊल ने दाऊद का बोल
पहिचानकर कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या
यह तेरा बोल है? दाऊद ने कहा, हां,
मेरे प्रभु राजा, मेरा ही बोल है। १८ फिर
उस ने कहा, मेरा प्रभु अपने दास का
पीछा क्यों करता है? मैं ने क्या किया
है? और मुझ में कौन सी बुराई हुई

* मूल में—उसका दिन आएगा और वह मरेगा।

है* ? १९ अब मेरा प्रभु राजा, अपने
दास की बाते सुन ले। यदि यहोवा ने
तुझे मेरे विरुद्ध उसकाया हो, तब तो वह
भेट ग्रहण करे†, परन्तु यदि आदमियो
ने ऐसा किया हो, तो वे यहोवा की ओर
से शापित हो, क्योकि उन्हो ने अब मुझे
निकाल दिया कि मै यहोवा के निज भाग
मे न रहू, और उन्हो ने कहा है, कि जा,
पराए देवताओ की उपासना कर।
२० इसलिये अब मेरा लोहू यहोवा की
आखो की ओट मे भूमि पर न बहने‡
पाए, इस्राएल का राजा तो एक पिस्सू
ढूढने आया है, जैसा कि कोई पहाडो पर
तीतर का अहेर करे। २१ शाऊल ने
कहा, मै ने पाप किया है, हे मेरे बेटे
दाऊद, लौट आ, मेरा प्राण आज के
दिन तेरी दृष्टि मे अनमोल ठहरा, इस
कारण मै फिर तेरी कुछ हानि न करूगा,
सुन, मै ने मूर्खता की, और मुझ से बडी
भूल हुई है। २२ दाऊद ने उत्तर देकर
कहा, हे राजा, भाले को देख, कोई जवान
इधर आकर इसे ले जाए। २३ यहोवा
एक एक को अपने अपने धर्म और सच्चाई
का फल देगा, देख, आज यहोवा ने
तुझ को मेरे हाथ मे कर दिया था, परन्तु
मै ने यहोवा के अभिषिक्त पर अपना हाथ
बढाना उचित न समझा। २४ इसलिये
जैसे तेरे प्राण आज मेरी दृष्टि मे प्रिय§
ठहरे, वैसे ही मेरे प्राण भी यहोवा
की दृष्टि मे प्रिय ठहरे, और वह मुझे
समस्त विपत्तियो से छुडाए। २५ शाऊल
ने दाऊद से कहा, हे मेरे बेटे दाऊद,
तू धन्य है! तू बडे बडे काम करेगा और
तेरे काम सुफल होगे। तब दाऊद ने
अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपने
स्थान को लौट गया॥

(दाऊद का पलिश्तियों के यहां शरण लेना और शाऊल और योनातान का मारा जाना)

२७ और दाऊद सोचने लगा, अब मै
किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ
मे नाश हो जाऊगा, अब मेरे लिये उत्तम
यह है कि मै पलिश्तियो के देश मे भाग
जाऊ, तब शाऊल मेरे विषय निराश
होगा, और मुझे इस्राएल के देश के किसी
भाग मे फिर न ढूढेगा, यो मै उसके हाथ
से बच निकलूगा। २ तब दाऊद अपने
छ सौ सगी पुरुषो को लेकर चला गया,
और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश
के पास गया। ३ और दाऊद और
उसके जन अपने अपने परिवार समेत गत
मे आकीश के पास रहने लगे। दाऊद
तो अपनी दो स्त्रियो के साथ, अर्थात्
यिज्रेली अहीनोअम, और नाबाल की स्त्री
कर्मेली अबीगैल के साथ रहा। ४ जब
शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद
गत को भाग गया है, तब उस ने उसे
फिर कभी न ढूढा॥

५ दाऊद ने आकीश से कहा, यदि
मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो
देश की किसी बस्ती मे मुझे स्थान
दिला दे जहा मै रहू, तेरा दास तेरे साथ
राजधानी मे क्यो रहे? ६ तब आकीश
ने उसे उसी दिन सिकलग बस्ती दी, इस
कारण से सिकलग आज के दिन तक
यहूदा के राजाओ का बना है॥

७ पलिश्तियो के देश मे रहते रहते
दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए।

* मूल में—मेरे हाथ में क्या बुराई है।
† मूल में—सूखे।
‡ मूल में—गिरने।
§ मूल में—बड़ा।

८ और दाऊद ने अपने जनो समेत जाकर
गशूरियो, गिजियो, और अमालेकियो पर
चढाई की, ये जातिया तो प्राचीन काल
से उस देश में रहती थी जो शूर के माग
मे मिस्र देश तक है। ९ दाऊद ने उस
देश को नाश किया, और स्त्री पुरुष किसी
को जीवित न छोडा, और भेड-बकरी,
गाय-बैल, गदहे, ऊट, और वस्त्र लेकर
लौटा, और आकीश के पास गया।
१० आकीश ने पूछा, आज तुम ने चढाई
तो नही की? दाऊद ने कहा, हा, यहूदा
यरह्मेलियो और केनियो की दक्खिन
दिशा मे। ११ दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी
को जीवित न छोडा कि उन्हे गत मे
पहुचाए, उस ने सोचा था, कि ऐसा न
हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहे,
कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया है। वरन
जब से वह पलिश्तियो के देश में रहता
है, तब से उसका काम ऐसा ही है।
१२ तब आकीश ने दाऊद की बात सच
मानकर कहा, यह अपने इस्राएली लोगो
की दृष्टि मे अति घृणित हुआ है, इसलिये
यह सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा॥

२८ उन दिनो मे पलिश्तियो ने
इस्राएल मे लडने के लिये अपनी
सेना इकट्ठी की। और आकीश ने दाऊद से
कहा, निश्चय जान कि तुझे अपने जनो समेत
मेरे साथ सेना मे जाना होगा। २ दाऊद
ने आकीश से कहा, इस कारण तू जान
लेगा कि तेरा दास क्या करेगा। आकीश
ने दाऊद से कहा, इस कारण मै तुझे
अपने सिर का रक्षक सदा के लिये
ठहराऊगा॥

३ शमूएल तो मर गया था, और
समस्त इस्राएलियो ने उसके विषय छाती
पीटी, और उसको उसके नगर रामा
में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने
ओझो और भूतसिद्धि करनेवालो को
देश से निकाल दिया था॥

४ जब पलिश्ती इकट्ठे हुए, और
शूनेम मे छावनी डाली, तो शाऊल ने
सब इस्राएलियो को इकट्ठा किया, और
उन्हो ने गिलबो मे छावनी डाली।
५ पलिश्तियो की सेना को देखकर शाऊल
डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत
हो काप उठा। ६ और जब शाऊल ने
यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो
स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और
न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओ के
द्वारा। ७ तब शाऊल ने अपने कर्मचारियो
से कहा, मेरे लिये किसी भूतसिद्धि
करनेवाली को ढूढो, कि मै उसके पास
जाकर उस से पूछू। उसके कर्मचारियो
ने उस से कहा, एन्दोर मे एक भूतसिद्धि
करनेवाली रहती है। ८ तब शाऊल
ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपडे
पहिनकर, दो मनुष्य सग लेकर, रातोरात
चलकर उस स्त्री के पास गया, और
कहा, अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी
कहलवा, और जिसका नाम मै लूगा
उसे बुलवा* दे। ९ स्त्री ने उस से
कहा, तू जानता है कि शाऊल ने क्या
किया है, कि उस ने ओझो और भूतसिद्धि
करनेवालो को देश से नाश किया है।
फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यो फदा
लगाता है कि मुझे मरवा डाले।
१० शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर
उस से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ,
इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।

* मूल में—चढा।

लोग अपने बेटे-बेटियो के कारण बहुत
शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने
की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने
अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके*
हियाव बान्धा॥
७ तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र
एब्यातार याजक से कहा, एपोद को
मेरे पास ला। तब एब्यातार एपोद को
दाऊद के पास ले आया। ८ और दाऊद
ने यहोवा से पूछा, क्या मै इस दल का
पीछा करू? क्या उसको जा पकडूगा?
उस ने उस से कहा, पीछा कर, क्योकि
तू निश्चय उसको पकडेगा, और नि सन्देह
सब कुछ छुडा लाएगा, ९ तब दाऊद
अपने छ सौ साथी जनो को लेकर बसोर
नाम नाले तक पहुचा, वहा कुछ लोग
छोडे जाकर रह गए। १० दाऊद तो
चार सौ पुरुषो समेत पीछा किए चला
गया, परन्तु दो सौ जो ऐसे थक गए
थे, कि बसोर नाले के पार न जा सके,
वही रहे। ११ उनको एक मिस्री पुरुष
मैदान मे मिला, उन्हो ने उसे दाऊद
के पास ले जाकर रोटी दी, और उस
ने उसे खाया, तब उसे पानी पिलाया,
१२ फिर उन्हो ने उसको अजीर की
टिकिया का एक टुकडा और दो गुच्छे
किशमिश दिए। और जब उस ने खाया,
तब उसके जी मे जी आया, उस ने
तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी
खाई थी और न पानी पिया था। १३ तब
दाऊद ने उस से पूछा, तू किस का जन
है? और कहा का है? उस ने कहा,
मै तो मिस्री जवान और एक अमालेकी
मनुष्य का दास हू, और तीन दिन हुए
कि मै बीमार पडा, और मेरा स्वामी
मुझे छोड गया। १४ हम लोगो ने करेतियो
की दक्खिन दिशा मे, और यहूदा के
देश मे, और कालेब की दक्खिन दिशा
मे चढाई की, और सिकलग को आग
लगाकर फूक दिया था। १५ दाऊद ने
उस से पूछा, क्या तू मुझे उस दल के
पास पहुचा देगा? उस ने कहा, मुझ
से परमेश्वर की यह शपथ खा, कि मै
तुझे न तो प्राण से मारूगा, और न
तेरे स्वामी के हाथ कर दूगा, तब मै तुझे
उस दल के पास पहुचा दूगा। १६ जब
उस ने उसे पहुचाया, तब देखने मे आया
कि वे सब भूमि पर छिटके हुए खाते
पीते, और उस बडी लूट के कारण, जो
वे पलिश्तियो के देश और यहूदा देश से
लाए थे, नाच रहे है। १७ इसलिये
दाऊद उन्हे रात के पहिले पहर से लेकर
दूसरे दिन की साझ तक मारता रहा,
यहा तक कि चार सौ जवान को छोड,
जो ऊटो पर चढकर भाग गए, उन मे
से एक भी मनुष्य न बचा। १८ और
जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब
दाऊद ने छुडाया, और दाऊद ने अपनी
दोनो स्त्रियो को भी छुडा लिया।
१९ वरन उनके क्या छोटे, क्या बडे, क्या
बेटे, क्या बेटिया, क्या लूट का माल,
सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उस
मे से कोई वस्तु न रही जो उनको न
मिली हो, क्योकि दाऊद सब का सब
लौटा लाया। २० और दाऊद ने सब
भेड-बकरिया, और गाय-बैल भी लूट
लिए, और इन्हे लोग यह कहते हुए
अपने जानवरो के आगे हाकते गए, कि
यह दाऊद की लूट है। २१ तब दाऊद
उन दो सौ पुरुषो के पास आया, जो

* मूल मे—यहोवा में।

ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे पीछे
न जा सके थे, और बसोर नाले के पास
छोड दिए गए थे, और वे दाऊद से
और उसके सग के लोगो से मिलने को
चले, और दाऊद ने उनके पास पहुंचकर
उनका कुशल क्षेम पूछा। २२ तब उन
लोगो में से जो दाऊद के सग गए थे सब
दुष्ट और ओछे लोगो ने कहा, ये लोग
हमारे साथ नही चले थे, इस कारण हम
उन्हें अपने छुडाए हुए लूट के माल मे
मे कुछ न देंगे, केवल एक एक मनुष्य
को उसकी स्त्री और बाल बच्चे देंगे,
कि वे उन्हें लेकर चले जाए। २३ परन्तु
दाऊद ने कहा, हे मेरे भाइयो, तुम उस
माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे
यहोवा ने हमे दिया है, और उसने हमारी
रक्षा की, और उस दल को जिस ने
हमारे ऊपर चढाई की थी हमारे हाथ
में कर दिया है। २४ और इस विषय
मे तुम्हारी कौन सुनेगा? लडाई मे
जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के
पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा,
दोनो एक ही समान भाग पाएगे।
२५ और दाऊद ने इस्राएलियो के लिये
ऐसी ही विधि और नियम ठहराया,
और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन
आज लो बना है।

२६ सिकलग में पहुचकर दाऊद ने
यहूदी पुरनियो के पास जो उसके मित्र
थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा,
और यह कहलाया, कि यहोवा के शत्रुओ
से ली हुई लूट मे से तुम्हारे लिये यह भेंट
है। २७ अर्थात् बेतेल के दक्खिन देश
के रामोत, यत्तीर, २८ अरोएर, सिपमोत,
एश्तमो, २९ राकाल, यरहमेलियो के
नगरो, केनियो के नगरो, ३० होर्मा,
कोराशान, अताक, ३१ हेब्रोन आदि
जितने स्थानो मे दाऊद अपने जनो समेत
फिरा करता था, उन सब के पुरनियो
के पास उसने कुछ कुछ भेजा॥

३१ पलिश्ती तो इस्राएलियो से लडे,
और इस्राएली पुरुष पलिश्तियो के
साम्हने से भागे, और गिलबो नाम पहाड
पर मारे गए। २ और पलिश्ती शाऊल
और उसके पुत्रो के पीछे लगे रहे, और
पलिश्तियो ने शाऊल के पुत्र योनातन,
अबीनादाब, और मल्कीश को मार डाला।
३ और शाऊल के साथ घमासान युद्ध
हो रहा था, और धनुर्धारियो ने उसे जा
लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त
व्याकुल हो गया। ४ तब शाऊल ने अपने
हथियार ढोनेवाले से कहा, अपनी तलवार
खीचकर मुझे भोक दे, ऐसा न हो कि वे
खतनारहित लोग आकर मुझे भोक दे,
और मेरी ठट्ठा करे। परन्तु उसके हथियार
ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा
करने से इन्कार किया। तब शाऊल
अपनी तलवार खडी करके उस पर गिर
पडा। ५ यह देखकर कि शाऊल मर
गया, उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी
तलवार पर आप गिरकर उसके साथ
मर गया। ६ यो शाऊल, और उसके तीनो
पुत्र, और उसका हथियार ढोनेवाला, और
उसके समस्त जन उसी दिन एक सग
मर गए। ७ यह देखकर कि इस्राएली
पुरुष भाग गए, और शाऊल और उसके
पुत्र मर गए, उस तराई की परली ओर
वाले और यरदन के पार रहनेवाले भी
इस्राएली मनुष्य अपने अपने नगरो को
छोडकर भाग गए, और पलिश्ती आकर
उन में रहने लगे॥

११ स्त्री ने पूछा, मैं तेरे लिये किस
को बुलाऊं * ? उस ने कहा, शमूएल को
मेरे लिये बुला। १२ जब स्त्री ने शमूएल
को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई,
और शाऊल से कहा, तू ने मुझे क्यों
धोखा दिया? तू तो शाऊल है।
१३ राजा ने उस से कहा, मत डर,
तुझे क्या देख पड़ता है? स्त्री ने शाऊल
से कहा, मुझे एक देवता पृथ्वी में से
चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। १४ उस
ने उस से पूछा, उसका कैसा रूप है?
उस ने कहा, एक बूढ़ा पुरुष बागा ओढ़े
हुए चढ़ा आता है। तब शाऊल ने निश्चय
जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह
भूमि पर गिरके दण्डवत् किया। १५ शमू-
एल ने शाऊल से पूछा, तू ने मुझे ऊपर
बुलवाकर क्यों सताया है? शाऊल ने
कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं, क्योंकि
पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर
ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और
न स्वप्नों के, इसलिये मैं ने तुझे बुलाया
कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं।
१६ शमूएल ने कहा, जब यहोवा तुझे
छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझ से
क्यों पूछता है? १७ यहोवा ने तो जैसे
मुझ से कहलवाया था वैसा ही उस ने
व्यवहार किया है, अर्थात् उस ने तेरे हाथ
से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को
दे दिया है। १८ तू ने जो यहोवा की
बात न मानी, और न अमालेकियों को
उसके भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड
दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से
आज ऐसा बर्ताव किया। १९ फिर यहोवा
तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों
के हाथ में कर देगा, और तू अपने बेटों
समेत कल मेरे साथ होगा, और इस्राएली
सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ
में कर देगा। २० तब शाऊल तुरन्त
मुंह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और
शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर
गया, उस ने पूरे दिन और रात भोजन
न किया था, इस से उस में बल कुछ
भी न रहा। २१ तब वह स्त्री शाऊल
के पास गई, और उसको अति व्याकुल
देखकर उस से कहा, सुन, तेरी दासी
ने तो तेरी बात मानी, और मैं ने अपने
प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन
लिया जो तू ने मुझ से कहा। २२ तो
अब तू भी अपनी दासी की बात मान,
और मैं तेरे साम्हने एक टुकड़ा रोटी
रखूं, तू उसे खा, कि जब तू अपना मार्ग
ले तब तुझे बल आ जाए। २३ उस ने
इनकार करके कहा, मैं न खाऊंगा।
परन्तु उसके सेवकों और स्त्री ने मिलकर
यहां तक उसे दबाया कि वह उनकी
बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट
पर बैठ गया। २४ स्त्री के घर में तो
एक तैयार किया हुआ बछड़ा था, उस
ने फुर्ती करके उसे मारा, फिर आटा
लेकर गूंधा, और अखमीरी रोटी बनाकर
२५ शाऊल और उसके सेवकों के आगे
लाई, और उन्हों ने खाया। तब वे
उठकर उसी रात चले गए॥

२९ पलिश्तियों ने अपनी समस्त
सेना को अपेक में इकट्ठा किया,
और इस्राएली यिज्रेल के निकट के सोते के
पास डेरे डाले हुए थे। २ तब पलिश्तियों
के सरदार अपने अपने सैकड़ों और हजारों

* मूल में—चढ़ाऊं।

समेत आगे बढ गए, और सेना के पीछे
पीछे आकीश के साथ दाऊद भी अपने
जनो समेत बढ गया। ३ तब पलिश्ती
हाकिमो ने पूछा, उन इब्रियो का यहा
क्या काम है? आकीश ने पलिश्ती
सरदारो से कहा, क्या वह इस्राएल के
राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नही
है, जो क्या जाने कितने दिनो मे वरन
वर्षो से मेरे साथ रहता है, और जब
से वह भाग आया, तब से आज तक मैंने
उस में कोई दोष नही पाया। ४ तब
पलिश्ती हाकिम उस से क्रोधित हुए,
और उस से कहा, उस पुरुष को लौटा
दे, कि वह उस स्थान पर जाए जो तू ने
उसके लिये ठहराया है, वह हमारे सग
लडाई मे न आने पाएगा, कही ऐसा न
हो कि वह लडाई मे हमारा विरोधी
बन जाए। फिर वह अपने स्वामी से
किस रीति से मेल करे? क्या लोगो
के सिर कटवाकर न करेगा? ५ क्या
यह वही दाऊद नही है, जिसके विषय
में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे
से कहते थे, कि

शाऊल ने हजारो को,
पर दाऊद ने लाखो को मारा है?

६ तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर
उस से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ
तू तो सीधा है, और सेना मे तेरा मेरे
सग आना जाना भी मुझे भावता है,
क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से
लेकर आज तक मैं ने तो तुझ मे कोई
बुराई नही पाई। तौभी सरदार लोग
तुझे नही चाहते। ७ इसलिये अब तू
कुशल से लौट जा, ऐसा न हो कि पलिश्ती
सरदार तुझ से अप्रसन्न हो। ८ दाऊद
ने आकीश से कहा, मै ने क्या किया है?
और जब से मैं तेरे साम्हने आया तब
से आज तक तू ने अपने दास में क्या
पाया है कि मै अपने प्रभु राजा के शत्रुओ
से लडने न पाऊ? ९ आकीश ने दाऊद
को उत्तर देकर कहा, हा, यह मुझे मालूम
है, तू मेरी दृष्टि मे तो परमेश्वर के दूत
के समान अच्छा लगता है, तौभी पलिश्ती
हाकिमो ने कहा है, कि वह हमारे सग
लडाई मे न जाने पाएगा। १० इसलिये
अब तू अपने प्रभु के सेवको को लेकर जो
तेरे साथ आए है बिहान को तडके उठना,
और तुम बिहान को तडके उठकर उजियाला
होते ही चले जाना। ११ इसलिये बिहान
को दाऊद अपने जनो समेत तडके उठकर
पलिश्तियो के देश को लौट गया। और
पलिश्ती यिज्रेल को चढ गए॥

३० तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनो
समेत सिकलग पहुचा, तब उन्हो ने
क्या देखा, कि अमालेकियो ने दक्खिन
देश और सिकलग पर चढाई की। और
सिकलग को मार के फूक दिया, २ और
उस मे की स्त्री आदि छोटे बडे जितने
थे, सब को बन्धुआई में ले गए, उन्हो
ने किसी को मार तो नही डाला, परन्तु
सभो को लेकर अपना मार्ग लिया।
३ इसलिये जब दाऊद अपने जनो समेत
उस नगर में पहुचा, तब नगर तो जला
पडा था, और स्त्रिया और बेटे-बेटिया
बन्धुआई मे चली गई थी। ४ तब दाऊद
और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर
इतना रोए, कि फिर उन मे रोने की शक्ति
न रही। ५ और दाऊद की दो स्त्रिया,
यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल
की स्त्री अबीगैल, बन्धुआई में गई थी।
६ और दाऊद बडे सकट में पडा, क्योंकि

८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओ
के माल को लूटने आए, तब उनको
शाऊल और उसके तीनो पुत्र गिलबो
पहाड पर पडे हुए मिले। ९ तव उन्हो
ने शाऊल का सिर काटा, और हथियार
लूट लिए, और पलिश्तियो के देश के
सब स्थानो मे दूतो को इसलिये भेजा,
कि उनके देवालयो और साधारण लोगो
मे यह शुभ समाचार देते जाए। १० तब
उन्हो ने उसके हथियार तो अश्तोरेत
नाम देवियो के मन्दिर मे रखे, और
उसकी लोथ बेतशान की शहरपनाह मे
जड दी। ११ जब गिलादवाले याबेश के
निवासियो ने सुना कि पलिश्तियो ने
शाऊल से क्या क्या किया है, १२ तब
सब शूरवीर चले, और रातोरात जाकर
शाऊल और उसके पुत्रो की लोथे बेतशान
की शहरपनाह पर से याबेश मे ले आए,
और वही फूंक दी। १३ तब उन्हो ने
उनकी हड्डिया लेकर याबेश के झाऊ
के पेड के नीचे गाड दी, और सात दिन तक
उपवास किया॥

दूसरा शमूएल

(दाऊद का शाऊल के खून का दण्ड देना)

१ शाऊल के मरने के बाद, जब
दाऊद अमालेकियो को मारकर लौटा,
और दाऊद को सिकलग मे रहते हुए दो
दिन हो गए, २ तब तीसरे दिन ऐसा
हुआ कि छावनी मे से शाऊल के पास
से एक पुरुष कपडे फाडे सिर पर धूलि
डाले हुए आया। और जब वह दाऊद
के पास पहुचा, तब भूमि पर गिरा और
दण्डवत् किया। ३ दाऊद ने उस से पूछा,
तू कहा से आया है? उस ने उस से
कहा, मै इस्राएली छावनी मे से बचकर
आया हू। ४ दाऊद ने उस से पूछा,
वहा क्या बात हुई? मुझे बता। उस
ने कहा, यह, कि लोग रणभूमि छोडकर
भाग गए, और बहुत लोग मारे गए,
और शाऊल और उसका पुत्र योनातन
भी मारे गए है। ५ दाऊद ने उस समाचार
देनेवाले जवान से पूछा, कि तू कैसे जानता
है कि शाऊल और उसका पुत्र योनातन
मर गए? ६ समाचार देनेवाले जवान
ने कहा, सयोग से मै गिलबो पहाड पर
था, तो क्या देखा, कि शाऊल अपने
भाले की टेक लगाए हुए है, फिर मै
ने यह भी देखा कि उसका पीछा किए
हुए रथ और सवार बडे वेग से दौडे आ
रहे है। ७ उस ने पीछे फिरकर मुझे
देखा, और मुझे पुकारा। मै ने कहा,
क्या आज्ञा? ८ उस ने मुझ से पूछा, तू
कौन है? मै ने उस से कहा, मै तो
अमालेकी हू। ९ उस ने मुझ से कहा,
मेरे पास * खडा होकर मुझे मार डाल,

* वा मुझ पर।

क्योंकि मेरा सिर तो घूमा जाता है,
परन्तु प्राण नही निकलता*। १० तब
मैं ने यह निश्चय जान लिया, कि वह
गिर जाने के पश्चात् नही बच सकता,
उसके पास† खडे होकर उसे मार डाला,
और मैं उसके सिर का मुकुट और उसके
हाथ का कंगन लेकर यहा अपने प्रभु के
पास आया हू। ११ तब दाऊद ने अपने
कपडे पकडकर फाडे, और जितने पुरुष
उसके संग थे उन्हो ने भी वैसा ही किया,
१२ और वे शाऊल, और उसके पुत्र
योनातन, और यहोवा की प्रजा, और
इस्राएल के घराने के लिये छाती पीटने
और रोने लगे, और सांझ तक कुछ न
खाया, इस कारण कि वे तलवार से मारे
गए थे। १३ फिर दाऊद ने उस समाचार
देनेवाले जवान से पूछा, तू कहा का है?
उस ने कहा, मैं तो परदेशी का बेटा
अर्थात् अमालेकी हू। १४ दाऊद ने उस
से कहा, तू यहोवा के अभिषिक्त को
नाश करने के लिये हाथ बढाने से क्यो
नही डरा? १५ तब दाऊद ने एक
जवान को बुलाकर कहा, निकट जाकर
उस पर प्रहार कर। तब उस ने उसे
ऐसा मारा कि वह मर गया। १६ और
दाऊद ने उस से कहा, तेरा खून तेरे ही सिर
पर पडे, क्योंकि तू ने यह कहकर कि मैं ही
ने यहोवा के अभिषिक्त को मार डाला,
अपने मुह से अपने ही विरुद्ध साक्षी दी है॥

(शाऊल और योनातन के लिये दाऊद
का बनाया हुआ विलापगीत)

१७ तब दाऊद ने शाऊल और उसके
पुत्र योनातन के विषय यह विलापगीत
बनाया, १८ और यहूदियो को यह धनुष
नाम गीत सिखाने की आज्ञा दी, यह
याशार नाम पुस्तक मे लिखा हुआ है

१९ हे इस्राएल, तेरा शिरोमणि तेरे
ऊंचे स्थान पर मारा गया॥
हाय, शूरवीर क्योकर गिर
पडे हैं!
२० गत में यह न बताओ,
और न अश्कलोन की सडको में
प्रचार करना,
न हो कि पलिश्ती स्त्रिया आनन्दित
हो,
न हो कि खतनारहित लोगो की
बेटिया गव करने लगें॥
२१ हे गिलबो पहाडो,
तुम पर न ओस पडे, और न
वर्षा हो, और न भेंट के योग्य
उपजवाले खेत पाए जाए!
क्योंकि वहा शूरवीरो की ढालें
अशुद्ध हो गईं,
और शाऊल की ढाल बिना तेल
लगाए रह गई॥
२२ जूझे हुओं के लोहू बहाने से,
और शूरवीरो की चर्बी खाने से,
योनातन का धनुष लौट न जाता
था,
और न शाऊल की तलवार
छूछी फिर आती थी॥
२३ शाऊल और योनातन जीवनकाल
में तो प्रिय और मनभाऊ
थे,
और अपनी मृत्यु के समय अलग
न हुए,
वे उकाब से भी वेग चलनेवाले,
और सिंह से भी अधिक पराक्रमी
थे॥

* मूल में—मेरा प्राण मुझ में अब तक है
† वा उस पर।

२४ हे इस्राएली स्त्रियो, शाऊल के
लिये रोओ,
वह तो तुम्हे लाल रंग के वस्त्र
पहिनाकर सुख देता,
और तुम्हारे वस्त्रो के ऊपर सोने
के गहने पहिनाता था ॥
२५ हाय, युद्ध के बीच शूरवीर कैसे
काम आए !
हे योनातन, हे ऊचे स्थानो पर
जूझे हुए,
२६ हे मेरे भाई योनातन, मै तेरे
कारण दु खित हू,
तू मुझे बहुत मनभाऊ जान
पडता था,
तेरा प्रेम मुझ पर अद्भुत,
वरन स्त्रियो के प्रेम से भी बढकर
था ॥
२७ हाय, शूरवीर क्योकर गिर गए,
और युद्ध के हथियार कैसे नाश
हो गए है !

(दाऊद के हेब्रोन में राज्य करने का वृत्तान्त)

२ इसके बाद दाऊद ने यहोवा से
पूछा, कि क्या मै यहूदा के किसी
नगर मे जाऊ ? यहोवा ने उस से कहा,
हा, जा। दाऊद ने फिर पूछा, किस नगर
मे जाऊ ? उस ने कहा, हेब्रोन मे। २ तब
दाऊद यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली
नाबाल की स्त्री अबीगैल नाम, अपनी
दोनो पत्नियो समेत वहा गया। ३ और
दाऊद अपने साथियो को भी एक एक
के घराने समेत वहा ले गया, और वे
हेब्रोन के गावो मे रहने लगे। ४ और
यहूदी लोग गए, और वहा दाऊद का
अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने
का राजा हो ॥

५ और दाऊद को यह समाचार मिला,
कि जिन्हो ने शाऊल को मिट्टी दी वे
गिलाद के याबेश नगर के लोग है। तब
दाऊद ने दूतो से गिलाद के याबेश के
लोगो के पास यह कहला भेजा, कि यहोवा
की आशिष तुम पर हो, क्योकि तुम ने
अपने प्रभु शाऊल पर यह कृपा करके
उसको मिट्टी दी। ६ इसलिये अब यहोवा
तुम से कृपा और सच्चाई का बर्त्ताव करे,
और मै भी तुम्हारी इस भलाई का बदला
तुम को दूगा, क्योकि तुम ने यह काम
किया है। ७ और अब हियाव बान्धो,
और पुरुषार्थ करो, क्योकि तुम्हारा प्रभु
शाऊल मर गया, और यहूदा के घराने
ने अपने ऊपर राजा होने को मेरा अभिषेक
किया है ॥

८ परन्तु नेर का पुत्र अब्नेर जो शाऊल
का प्रधान सेनापति था, उस ने शाऊल
के पुत्र ईशबोशेत को सग ले पार जाकर
महनैम मे पहुंचाया, ९ और उसे गिलाद
अशूरियो के देश यिज्रेल, एप्रैम, बिन्यामीन,
वरन समस्त इस्राएल के देश पर राजा
नियुक्त किया। १० शाऊल का पुत्र
ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब वह
इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो
वर्ष तक राज्य करता रहा। परन्तु यहूदा
का घराना दाऊद के पक्ष मे रहा।
११ और दाऊद के हेब्रोन मे यहूदा के
घराने पर राज्य करने का समय साढे
सात वर्ष था ॥

१२ और नेर का पुत्र अब्नेर, और
शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के जन, महनैम
से गिबोन को आए। १३ तब सरूयाह
का पुत्र योआब, और दाऊद के जन,
हेब्रोन मे निकलकर उन से गिबोन के
पोखरे के पास मिले; और दोनो दल

उस पोखरे की एक एक ओर बैठ गए।
१४ तब अब्नेर ने योआब से कहा, जवान
लोग उठकर हमारे साम्हने खेलें। योआब
ने कहा, वे उठें। १५ तब वे उठे, और
बिन्यामीन, अर्थात् शाऊल के पुत्र ईशबोशेत
के पक्ष के लिये बारह जन गिनकर निकले,
और दाऊद के जनों में से भी बारह निकले।
१६ और उन्हों ने एक दूसरे का सिर
पकड़कर अपनी अपनी तलवार एक दूसरे
के पांजर में भोंक दी, और वे एक ही
संग मरे। इस से उस स्थान का नाम
हेल्कथस्सूरीम * पड़ा, वह गिबोन में है।
१७ और उस दिन बड़ा घोर युद्ध हुआ,
और अब्नेर और इस्राएल के पुरुष दाऊद
के जनों से हार गए। १८ वहां तो
योआब, अबीशै, और असाहेल नाम
सरूयाह के तीनों पुत्र थे। और असाहेल
बनैले चिकारे के समान वेग दौड़नेवाला
था। १९ तब असाहेल अब्नेर का पीछा
करने लगा, और उसका पीछा करते हुए
न तो दाहिनी ओर मुड़ा न बाईं ओर।
२० अब्नेर ने पीछे फिरके पूछा, क्या तू
असाहेल है? उस ने कहा, हां मैं वही
हूं। २१ अब्नेर ने उस से कहा, चाहे
दाहिनी, चाहे बाईं ओर मुड़, किसी जवान
को पकड़कर उसका बकतर ले ले। परन्तु
असाहेल ने उसका पीछा न छोड़ा।
२२ अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा,
मेरा पीछा छोड़ दे, मुझ को क्यों तुझे
मारके मिट्टी में मिला देना पड़े? ऐसा
करके मैं तेरे भाई योआब को अपना
मुख कैसे दिखाऊंगा? २३ तौभी उस ने
हट जाने को नकारा, तब अब्नेर ने
अपने भाले की पिछाड़ी उसके पेट में
ऐसे मारी, कि भाला आरपार होकर
पीछे निकला, और वह वहीं गिरके मर
गया। और जितने लोग उस स्थान पर
आए जहां असाहेल गिरके मर गया,
वहां वे सब खड़े रहे। २४ परन्तु योआब
और अबीशै अब्नेर का पीछा करते रहे,
और सूर्य डूबते डूबते वे अम्मा नाम
उस पहाड़ी तक पहुंचे, जो गिबोन के
जंगल के मार्ग में गीह के साम्हने है।
२५ और बिन्यामीनी अब्नेर के पीछे
होकर एक दल हो गए, और एक पहाड़ी
की चोटी पर खड़े हुए। २६ तब अब्नेर
योआब को पुकारके कहने लगा, क्या
तलवार सदा मारती रहे? क्या तू नहीं
जानता कि इसका फल दुःखदाई * होगा?
तू कब तक अपने लोगों को आज्ञा न
देगा, कि अपने भाइयों का पीछा छोड़कर
लौटो? २७ योआब ने कहा, परमेश्वर
के जीवन की शपथ, कि यदि तू न बोला
होता, तो निःसन्देह लोग सवेरे ही चले
जाते, और अपने अपने भाई का पीछा
न करते। २८ तब योआब ने नरसिंगा
फूंका, और सब लोग ठहर गए, और
फिर इस्राएलियों का पीछा न किया, और
लड़ाई फिर न की। २९ और अब्नेर
अपने जनों समेत उसी दिन रातोंरात
अराबा में होकर गया, और यरदन के
पार हो समस्त बित्रोन देश में होकर
महनैम में पहुंचा। ३० और योआब
अब्नेर का पीछा छोड़कर लौटा, और जब
उस ने सब लोगों को इकट्ठा किया, तब
क्या देखा, कि दाऊद के जनों में से उन्नीस
पुरुष और असाहेल भी नहीं हैं। ३१ परन्तु
दाऊद के जनों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर

* अर्थात्, छुरियों का खेत।

* मूल में—कड़ुवाहट।

के आगे आगे चलो। और दाऊद राजा
स्वय अर्थी के पीछे पीछे चला। ३२ अब्नेर
को हेब्रोन मे मिट्टी दी गई, और राजा
अब्नेर की कब्र के पास फूट फूटकर रोया,
और सब लोग भी रोए। ३३ तब दाऊद
ने अब्नेर के विषय यह विलापगीत
बनाया कि,

क्या उचित था कि अब्नेर मूढ
की नाई मरे?
३४ न तो तेरे हाथ बान्धे गए, और
न तेरे पावो मे बेडिया डाली
गई,
जैसे कोई कुटिल मनुष्यो से मारा
जाए, वैसे ही तू मारा गया॥

३५ तब सब लोग उसके विषय फिर रो
उठे। तब सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद
को रोटी खिलाने आए, परन्तु दाऊद ने
शपथ खाकर कहा, यदि मै सूर्य के अस्त
होने से पहिले रोटी वा और कोई वस्तु
खाऊ, तो परमेश्वर मुझ से ऐसा ही, वरन
इस से भी अधिक करे। ३६ और सब
लोगो ने इस पर विचार किया और इस
से प्रसन्न हुए, वैसे ही जो कुछ राजा
करता था उस से सब लोग प्रसन्न होते थे।
३७ तब उन सब लोगो ने, वरन समस्त
इस्राएल ने भी, उसी दिन जान लिया
कि नेर के पुत्र अब्नेर का घात किया
जाना राजा की ओर से नही हुआ।
३८ और राजा ने अपने कर्मचारियो से
कहा, क्या तुम लोग नही जानते कि
इस्राएल मे आज के दिन एक प्रधान और
प्रतापी मनुष्य मरा है? ३९ और यद्यपि
मै अभिषिक्त राजा हू तौभी आज निर्बल
हू, और वे सरूयाह के पुत्र मुझ से अधिक
प्रचण्ड है। परन्तु यहोवा बुराई करनेवाले
को उसकी बुराई के अनुसार ही पलटा दे॥

४ जब शाऊल के पुत्र ने सुना, कि
अब्नेर हेब्रोन मे मारा गया, तब उसके
हाथ ढीले पड गए, और सब इस्राएली
भी घबरा गए। २ शाऊल के पुत्र के दो
जन थे जो दलो के प्रधान थे, एक का नाम
बाना, और दूसरे का नाम रेकाब था,
ये दोनो बेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन
के पुत्र थे, (क्योकि बेरोत भी बिन्यामीन
के भाग मे गिना जाता है, ३ और
बेरोती लोग गित्तैम को भाग गए, और
आज के दिन तक वही परदेशी होकर
रहते है॥)

४ शाऊल के पुत्र योनातन के एक
लगडा बेटा था। जब यिज्रेल से शाऊल
और योनातन का समाचार आया तब वह
पाच वर्ष का था, उस समय उसकी
धाई उसे उठाकर भागी, और उसके
उतावली से भागने के कारण वह गिरके
लगडा हो गया। और उसका नाम
मपीबोशेत था॥

५ उस बेरोती रिम्मोन के पुत्र रेकाब
और बाना कडे घाम के समय ईशबोशेत
के घर मे जब वह दोपहर को विश्राम कर
रहा था आए। ६ और गेहू ले जाने के
बहाने से घर मे घुस गए, और उसके पेट
मे मारा, तब रेकाब और उसका भाई
बाना भाग निकले। ७ जब वे घर मे
घुसे, और वह सोने की कोठरी मे चारपाई
पर सोता था, तब उन्हो ने उसे मार
डाला, और उसका सिर काट लिया,
और उसका सिर लेकर रातोरात अराबा
के मार्ग से चले। ८ और वे ईशबोशेत
का सिर हेब्रोन मे दाऊद के पास ले जाकर
राजा से कहने लगे, देख, शाऊल जो
तेरा शत्रु और तेरे प्राणो का गाहक
था, उसके पुत्र ईशबोशेत का यह सिर है,

तो आज के दिन यहोवा ने शाऊल और
उसके वंश से मेरे प्रभु राजा का पलटा
लिया है। ९ दाऊद ने बेरोती रिम्मोन
के पुत्र रेकाब और उसके भाई बाना को
उत्तर देकर उन से कहा, यहोवा जो मेरे
प्राण को सब विपत्तियों से छुड़ाता आया
है, उसके जीवन की शपथ, १० जब
किसी ने यह जानकर, कि मैं शुभ समाचार
देता हूं, सिकलग में मुझ को शाऊल के
मरने का समाचार दिया, तब मैं ने उसको
पकड़कर घात कराया, अर्थात् उसको
समाचार का यही बदला मिला। ११ फिर
जब दुष्ट मनुष्यों ने एक निर्दोष मनुष्य
को उसी के घर में, वरन उसकी चारपाई
ही पर घात किया, तो मैं अब अवश्य
ही उसके खून का पलटा तुम से लूंगा,
और तुम्हें धरती पर से नष्ट कर डालूंगा।
१२ तब दाऊद ने जवानों को आज्ञा दी,
और उन्हों ने उनको घात करके उनके
हाथ पांव काट दिए, और उनकी लोथों
को हेब्रोन के पोखरे के पास टांग दिया।
तब ईशबोशेत के सिर को उठाकर हेब्रोन
में अब्नेर की कब्र में गाड़ दिया॥

(दाऊद के यरूशलेम में राज्य करने का आरम्भ)

५ तब इस्राएल के सब गोत्र दाऊद
के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे,
सुन, हम लोग और तू एक ही हाड़ मांस
हैं। २ फिर भूतकाल में जब शाऊल
हमारा राजा था, तब भी इस्राएल का
अगुवा तू ही था, और यहोवा ने तुझ
से कहा, कि मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा,
और इस्राएल का प्रधान तू ही होगा।
३ सो सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन में
राजा के पास आए, और दाऊद राजा
ने उनके साथ हेब्रोन में यहोवा के साम्हने
वाचा बान्धी, और उन्हों ने इस्राएल का
राजा होने के लिये दाऊद का अभिषेक
किया॥

४ दाऊद तीस वर्ष का होकर राज्य
करने लगा, और चालीस वर्ष तक राज्य
करता रहा। ५ साढ़े सात वर्ष तक तो
उस ने हेब्रोन में यहूदा पर राज्य किया,
और तेंतीस वर्ष तक यरूशलेम में समस्त
इस्राएल और यहूदा पर राज्य किया।
६ तब राजा ने अपने जनों को साथ
लिए हुए यरूशलेम को जाकर यबूसियों
पर चढ़ाई की, जो उस देश के निवासी
थे। उन्हों ने यह समझकर, कि दाऊद
यहां पैठ न सकेगा, उस से कहा, जब तक
तू अन्धों और लंगड़ों को दूर न करे, तब
तक यहां पैठने न पाएगा। ७ तौभी
दाऊद ने सिय्योन नाम गढ़ को ले लिया,
वही दाऊदपुर भी कहलाता है। ८ उस
दिन दाऊद ने कहा, जो कोई यबूसियों
को मारना चाहे, उसे चाहिये कि नाले
से होकर चढ़े, और अन्धे और लंगड़े
जिन से दाऊद मन से घिन करता है उन्हें
मारे। इस से यह कहावत चली, कि
अन्धे और लंगड़े भवन में आने न पाएंगे।
९ और दाऊद उस गढ़ में रहने लगा,
और उसका नाम दाऊदपुर रखा। और
दाऊद ने चारों ओर मिल्लो से लेकर
भीतर की ओर शहरपनाह बनवाई।
१० और दाऊद की बड़ाई अधिक होती
गई, और सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
उसके संग रहता था॥

११ और सोर के राजा हीराम ने
दाऊद के पास दूत, और देवदारु की
लकड़ी, और बढ़ई, और राजमिस्त्री भेजे,
और उन्हों ने दाऊद के लिये एक भवन

के जनो को ऐसा मारा कि उन मे से
तीन सौ साठ जन मर गए। ३२ और
उन्हो ने असाहेल को उठाकर उसके पिता
के कब्रिस्तान मे, जो बेतलेहेम मे था,
मिट्टी दी। तब योआब अपने जनो समेत
रात भर चलकर पह फटते हेब्रोन मे
पहुचा॥

३ शाऊल के घराने और दाऊद के
घराने के मध्य बहुत दिन तक लडाई
होती रही, परन्तु दाऊद प्रबल होता
गया, और शाऊल का घराना निर्बल
पडता गया॥

२ और हेब्रोन मे दाऊद के पुत्र उत्पन्न
हुए, उसका जेठा बेटा अम्नोन था, जो
यिज्रेली अहीनोअम से उत्पन्न हुआ था,
३ और उसका दूसरा किलाब था, जिसकी
मा कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल
थी, तीसरा अबशालोम, जो गशूर के
राजा तल्मै की बेटी माका से उत्पन्न
हुआ था, ४ चौथा अदोनिय्याह, जो
हग्गीत से उत्पन्न हुआ था, पाचवा
शपत्याह, जिसकी मा अबीतल थी,
५ छठवा यित्राम, जो एग्ला नाम दाऊद
की स्त्री से उत्पन्न हुआ। हेब्रोन मे दाऊद
से ये ही सन्तान उत्पन्न हुए॥

६ जब शाऊल और दाऊद दोनो के
घरानो के मध्य लडाई हो रही थी, तब
अब्नेर शाऊल के घराने की सहायता मे
बल बढाता गया। ७ शाऊल की एक
रखेली थी जिसका नाम रिस्पा था,
वह अय्या की बेटी थी, और ईशबोशेत
ने अब्नेर से पूछा, तू मेरे पिता की रखेली
के पास क्यो गया? ८ ईशबोशेत की
के कारण अब्नेर अति क्रोधित
कहने लगा, क्या मै यहूदा के कुत्ते
। ह।
का सिर हू? आज तक मै तेरे पिता
शाऊल के घराने और उसके भाइयो और
मित्रो को प्रीति दिखाता आया हू, और
तुझे दाऊद के हाथ पडने नही दिया;
फिर तू अब मुझ पर उस स्त्री के विषय
मे दोष लगाता है? ९ यदि मै दाऊद
के साथ ईश्वर की शपथ के अनुसार
बर्ताव न करू, तो परमेश्वर अब्नेर से
वैसा ही, वरन उस से भी अधिक करे,
१० अर्थात् मै राज्य को शाऊल के घराने
से छीनूगा, और दाऊद की राजगद्दी
दान से लेकर बेर्शेबा तक इस्राएल और
यहूदा के ऊपर स्थिर करूगा। ११ और
वह अब्नेर को कोई उत्तर न दे सका,
इसलिये कि वह उस से डरता था॥

१२ तब अब्नेर ने उसके नाम से
दाऊद के पास दूतो से कहला भेजा, कि
देश किस का है? और यह भी कहला
भेजा, कि तू मेरे साथ वाचा बान्ध,
और मै तेरी सहायता करूगा कि समस्त
इस्राएल के मन तेरी ओर फेर दू।
१३ दाऊद ने कहा, भला, मै तेरे साथ
वाचा तो बान्धूगा, परन्तु एक बात मै
तुझ से चाहता हू, कि जब तू मुझ से
भेट करने आए, तब यदि तू पहिले शाऊल
की बेटी मीकल को न ले आए, तो मुझ
से भेट न होगी। १४ फिर दाऊद ने
शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूतो
से यह कहला भेजा, कि मेरी पत्नी मीकल,
जिसे मै ने एक सौ पलिश्तियो की खलडिया
देकर अपनी कर लिया था, उसको मुझे
दे दे। १५ तब ईशबोशेत ने लोगो को
भेजकर उसे लैश के पुत्र पलतीएल के
पास से छीन लिया। १६ और उसका
पति उसके साथ चला, और बहूरीम तक
उसके पीछे रोता हुआ चला गया। तब

अब्नेर ने उस से कहा, लौट जा, और
वह लौट गया ॥
१७ और अब्नेर ने इस्राएल के पुरनियो
के सग इस प्रकार की वातचीत की, कि
पहिले तो तुम लोग चाहते थे कि दाऊद
हमारे ऊपर राजा हो। १८ अब वैसा
करो, क्योंकि यहोवा ने दाऊद के विषय
में यह कहा है, कि अपने दास दाऊद के
द्वारा मै अपनी प्रजा इस्राएल को पलिश्तियो,
वरन उनके सब शत्रुओ के हाथ से
छुडाऊगा। १९ फिर अब्नेर ने विन्यामीन
से भी बातें की, तव अब्नेर हेब्रोन को
चला गया, कि इस्राएल और विन्यामीन
के समस्त घराने को जो कुछ अच्छा लगा,
वह दाऊद को सुनाए। २० तव अब्नेर
बीस पुरुष सग लेकर हेब्रोन में आया,
और दाऊद ने उसके और उसके
सगी पुरुषो के लिये जेवनार की। २१ तव
अब्नेर ने दाऊद से कहा, मै उठकर
जाऊगा, और अपने प्रभु राजा के पास
सव इस्राएल को इकट्ठा करूगा, कि वे
तेरे साथ वाचा वान्धें, और तू अपनी
इच्छा के अनुसार राज्य कर सके। तव
दाऊद ने अब्नेर को विदा किया, और
वह कुशल से चला गया। २२ तव दाऊद
के कई एक जन योआव समेत कही
चढाई करके * बहुत सी लूट लिये हुए
आ गए। और अब्नेर दाऊद के पास
हेब्रोन में न था, क्योंकि उस ने उसको
विदा कर दिया था, और वह कुशल से
चला गया था। २३ जव योआव और
उसके साथ की समस्त सेना आई, तव
लोगो ने योआव को वताया, कि नेर
का पुत्र अब्नेर राजा के पास आया था,
और उस ने उसको विदा कर दिया,
और वह कुशल से चला गया। २४ तव
योआव ने राजा के पास जाकर कहा,
तू ने यह क्या किया है? अब्नेर जो
तेरे पास आया था, तो क्या कारण है
कि तू ने उसको जाने दिया, और वह
चला गया है? २५ तू नेर के पुत्र अब्नेर
को जानता होगा कि वह तुझे धोखा देने,
और तेरे आने जाने, और कुल काम का
भेद लेने आया था। २६ योआव ने
दाऊद के पास से निकलकर दाऊद के
अनजाने अब्नेर के पीछे दूत भेजे, और
वे उसको सीरा नाम कुण्ड से लौटा ले
आए। २७ जब अब्नेर हेब्रोन को लौट
आया, तब योआव उस से एकान्त में
बातें करने के लिये उसको फाटक के
भीतर अलग ले गया, और वहा अपने
भाई असाहेल के खून के पलटे में उसके
पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया।
२८ इसके बाद जब दाऊद ने यह सुना,
तो कहा, नेर के पुत्र अब्नेर के खून के
विषय में अपनी प्रजा समेत यहोवा की
दृष्टि में सदैव निर्दोष रहूगा। २९ वह
योआव और उसके पिता के समस्त घराने
को लगे, और योआव के वश में कोई
न कोई प्रमेह का रोगी, और कोढी, और
बैसाखी का लगानेवाला, और तलवार
से खेत आनेवाला, और भूखो मरनेवाला
सदा होता रहे। ३० योआब और उसके
भाई अबीशै ने अब्नेर को इस कारण
घात किया, कि उस ने उनके भाई
असाहेल को गिबोन में लडाई के समय
मार डाला था ॥
३१ तव दाऊद ने योआव और अपने
सब सगी लोगो से कहा, अपने वस्त्र
फाडो, और कमर में टाट वान्धकर अब्नेर

* मूल में—दल से।

वनाया। १२ और दाऊद को निश्चय हो
गया कि यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा
करके स्थिर किया, और अपनी इस्राएली
प्रजा के निमित्त मेरा राज्य बढाया
है ॥

१३ जव दाऊद हेब्रोन से आया तव
उसके वाद उस ने यरूशलेम की और
और रखेलिया रख ली, और पत्निया
वना ली, और उसके और वेटे वेटिया
उत्पन्न हुई। १४ उसके जो सन्तान
यरूशलेम मे उत्पन्न हुए, उनके ये नाम है,
अर्थात् शम्मू, शोवाव, नातान, सुलैमान,
१५ यिभार, एलीशू, नेपेग, यापी,
१६ एलीशामा, एल्यादा, और एलीपेलेत ॥
१७ जव पलिश्तियो ने यह सुना कि
इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद
का अभिषेक हुआ, तव सव पलिश्ती
दाऊद की खोज मे निकले, यह सुनकर
दाऊद गढ मे चला गया। १८ तव पलिश्ती
आकर रपाईम नाम तराई मे फैल गए।
१९ तव दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या
मै पलिश्तियो पर चढाई करू? क्या तू
उन्हे मेरे हाथ कर देगा? यहोवा ने
दाऊद से कहा, चढाई कर, क्योकि मै
निश्चय पलिश्तियो को तेरे हाथ कर
दूगा। २० तव दाऊद वालपरासीम को
गया, और दाउद ने उन्हे वही मारा,
तव उस ने कहा, यहोवा मेरे साम्हने
होकर मेरे शत्रुओ पर जल की धारा की
नाई टूट पडा है। इस कारण उस ने
उस स्थान का नाम वालपरासीम * रखा।
२१ वहा उन्हो ने अपनी मूरतो को छोड
दिया, और दाऊद और उसके जन उन्हे
उठा ले गए ॥

* अर्थात्—टूट पडने का स्थान।

२२ फिर दूसरी वार पलिश्ती चढाई
करके रपाईम नाम तराई मे फैल गए।
२३ जव दाऊद ने यहोवा से पूछा, तव
उस ने कहा, चढाई न कर, उनके पीछे
से घूमकर तूत वृक्षो के साम्हने से उन
पर छापा मार। २४ और जव तूत वृक्षो
की फुनगियो मे से सेना के चलने की सी
आहट तुझे सुनाई पडे, तव यह जानकर
फुर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियो की
सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा
है। २५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार
दाऊद गेवा से लेकर गेजेर तक पलिश्तियो
को मारता गया ॥

(पवित्र सन्दूक का यरूशलेम में पहुंचाया जाना)

६ फिर दाऊद ने एक और वार
इस्राएल मे से सव वडे वीरो को,
जो तीस हजार थे, इकट्ठा किया। २ तव
दाऊद और जितने लोग उसके सग थे,
वे सव उठकर यहूदा के वाले नाम स्थान
से चले, कि परमेश्वर का वह सन्दूक
ले आए, जो करूवो पर विराजनेवाले
सेनाओ के यहोवा का कहलाता है*।
३ तव उन्हो ने परमेश्वर का सन्दूक एक
नई गाडी पर चढाकर टीले पर रहनेवाले
अवीनादाव के घर से निकाला, और
अवीनादाव के उज्जा और अह्यो नाम
दो पुत्र उस नई गाडी को हाकने लगे।
४ और उन्हो ने उसको परमेश्वर के
सन्दूक समेत टीले पर रहनेवाले अवीनादाव
के घर से वाहर निकाला, और अह्यो
सन्दूक के आगे आगे चला। ५ और

* मूल में—जिस पर नाम करूवो पर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा का नाम पुकारा गया।

दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना
यहोवा के आगे सनोवर की लकड़ी के
बने हुए सब प्रकार के बाजे और वीणा,
सारंगियां, डफ, डमरू, झांझ बजाते रहे।
६ जब वे नाकोन के खलिहान तक
आए, तब उज्जा ने अपना हाथ परमेश्वर
के सन्दूक की ओर बढ़ाकर उसे थाम
लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई।
७ तब यहोवा का कोप उज्जा पर
भड़क उठा, और परमेश्वर ने उसके
दोष के कारण उसको वहां ऐसा मारा,
कि वह वहां परमेश्वर के सन्दूक के पास
मर गया। ८ तब दाऊद अप्रसन्न हुआ,
इसलिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पड़ा
था, और उस ने उस स्थान का नाम
पेरेसुज्जा * रखा, यह नाम आज के दिन तक
वर्तमान है। ९ और उस दिन दाऊद
यहोवा से डरकर कहने लगा, यहोवा
का सन्दूक मेरे यहां क्योंकर आए?
१० इसलिये दाऊद ने यहोवा के सन्दूक
को अपने यहां दाऊदपुर में पहुंचाना न
चाहा, परन्तु गतवासी ओबेदेदोम के यहां
पहुंचाया। ११ और यहोवा का सन्दूक
गती ओबेदेदोम के घर में तीन महीने
रहा, और यहोवा ने ओबेदेदोम और
उसके समस्त घराने को आशिष दी।
१२ तब दाऊद राजा को यह बताया
गया, कि यहोवा ने ओबेदेदोम के घराने
पर, और जो कुछ उसका है, उस पर
भी परमेश्वर के सन्दूक के कारण आशिष
दी है। तब दाऊद ने जाकर परमेश्वर
के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर से दाऊदपुर
में आनन्द के साथ पहुंचा दिया। १३ जब
यहोवा के सन्दूक के उठानेवाले छः कदम
चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और
एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया।
१४ और दाऊद सनी का एपोद कमर
में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन
से नाचता रहा। १५ यों दाऊद और
इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के
सन्दूक को जय जयकार करते और नरसिंगा
फूंकते हुए ले चला। १६ जब यहोवा
का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था, तब
शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में
से झांककर दाऊद राजा को यहोवा के
सम्मुख नाचते कूदते देखा, और उसे
मन ही मन तुच्छ जाना। १७ और
लोग यहोवा का सन्दूक भीतर ले आए,
और उसके स्थान में, अर्थात् उस तम्बू में
रखा, जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा
कराया था; और दाऊद ने यहोवा के
सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।
१८ जब दाऊद होमबलि और मेलबलि
चढ़ा चुका, तब उस ने सेनाओं के यहोवा
के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया।
१९ तब उस ने समस्त प्रजा को, अर्थात्,
क्या स्त्री क्या पुरुष, समस्त इस्राएली
भीड़ के लोगों को एक एक रोटी, और
एक एक टुकड़ा मांस, और किशमिश की
एक एक टिकिया बंटवा दी। तब प्रजा
के सब लोग अपने अपने घर चले गए।
२० तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद
देने के लिये लौटा। और शाऊल की
बेटी मीकल दाऊद से मिलने को निकली,
और कहने लगी, आज इस्राएल का राजा
जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की
लौंडियों के साम्हने ऐसा उघाड़े हुए था,
जैसा कोई निकम्मा अपना तन उघाड़े
रहता है, तब क्या ही प्रतापी देख पड़ता
था! २१ दाऊद ने मीकल से कहा,

* अर्थात् उज्जा पर टूट पड़ना।

यहोवा, जिस ने तेरे पिता और उसके
समस्त घराने की सन्ती मुझ को चुनकर
अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान होने को
ठहरा दिया है, उसके सम्मुख मै ने ऐसा
खेला—और मै यहोवा के सम्मुख इसी
प्रकार खेला करूगा। २२ और इस से
भी मै अधिक तुच्छ वनूगा, और अपने
लेखे नीच ठहरूगा, और जिन लौडियो
की तू ने चर्चा की वे भी मेरा आदरमान
करेगी। २३ और शाऊल की वेटी मीकल
के मरने के दिन तक उसके कोई सन्तान
न हुआ॥

(दाऊद का मन्दिर वनवाने की इच्छा करना, और यहोवा का दाऊद के वश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना)

७ जब राजा अपने भवन में रहता
था, और यहोवा ने उसको उसके चारो
ओर के सब शत्रुओ से विश्राम दिया था,
२ तब राजा नातान नाम भविष्यद्वक्ता से
कहने लगा, देख, मै तो देवदारु के वने हुए
घर मे रहता हू, परन्तु परमेश्वर का सन्दूक
तम्बू मे रहता है। ३ नातान ने राजा
से कहा, जो कुछ तेरे मन मे हो उसे कर,
क्योकि यहोवा तेरे सग है। ४ उसी
दिन रात को यहोवा का यह वचन नातान
के पास पहुचा, ५ कि जाकर मेरे दास
दाऊद से कह, यहोवा यो कहता है, कि
क्या तू मेरे निवास के लिये घर वनवाएगा ?
६ जिस दिन से मै इस्राएलियो को मिस्र से
निकाल लाया आज के दिन तक मै कभी
घर मे नही रहा, तम्बू के निवास मे आया
जाया करता हू। ७ जहा जहा मै समस्त
इस्राएलियो के वीच फिरता रहा, क्या
मै ने कही इस्राएल के किसी गोत्र से,
जिसे मै ने अपनी प्रजा इस्राएल की चरवाही
करने को ठहराया हो, ऐसी वात कभी
कही, कि तुम ने मेरे लिये देवदारु का घर
क्यो नही वनवाया ? ८ इसलिये अब तू
मेरे दास दाऊद से ऐसा कह, कि सेनाओ
का यहोवा यो कहता है, कि मै ने तो तुझे
भेडशाला से, और भेड-बकरियो के पीछे
पीछे फिरने से, इस मनसा से वुला लिया
कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो
जाए। ९ और जहा कही तू आया गया,
वहा वहा मै तेरे सग रहा, और तेरे समस्त
शत्रुओ को तेरे साम्हने से नाश किया
है, फिर मै तेरे नाम को पृथ्वी पर के
वडे वडे लोगो के नामो के समान महान
कर दूगा। १० और मै अपनी प्रजा
इस्राएल के लिये एक स्थान ठहराऊगा,
और उसको स्थिर करूगा, कि वह अपने
ही स्थान मे वसी रहेगी, और कभी
चलायमान न होगी, और कुटिल लोग
उसे फिर दुख न देने पाएगे, जैसे कि
पहिले दिनो मे करते थे, ११ वरन उस
समय से भी जब मै अपनी प्रजा इस्राएल
के ऊपर न्यायी ठहराता था, और मै
तुझे तेरे समस्त शत्रुओ से विश्राम दूगा।
और यहोवा तुझे यह भी वताता है कि
यहोवा तेरा घर वनाए रखेगा *। १२ जब
तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने
पुरखाओ के सग सो जाएगा, तब मै तेरे
निज वश को † तेरे पीछे खडा करके उसके
राज्य को स्थिर करूगा। १३ मेरे नाम
का घर वही वनवाएगा, और मै उसकी
राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूगा। १४ मै
उसका पिता ठहरूगा, और वह मेरा पुत्र
ठहरेगा। यदि वह अधर्म करे, तो मै

* मूल में—तेरे लिये घर वनाएगा।
† मूल में—तेरे वश को जो तेरी अतड़ियों से निकलेगा।

उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड से, और
आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूंगा।
१५ परन्तु मेरी करुणा उस पर से ऐसे
न हटेगी, जैसे मैं ने शाऊल पर से हटाकर
उसको तेरे आगे से दूर किया। १६ वरन
तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे साम्हने
सदा अटल बना रहेगा, तेरी गद्दी सदैव
बनी रहेगी। १७ इन सब बातों और
इस दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद
को समझा दिया॥

१८ तब दाऊद राजा भीतर जाकर
यहोवा के सम्मुख बैठा, और कहने लगा,
हे प्रभु यहोवा, क्या कहूं, और मेरा घराना
क्या है, कि तू ने मुझे यहां तक पहुंचा
दिया है? १९ परन्तु तौभी, हे प्रभु
यहोवा, यह तेरी दृष्टि में छोटी सी बात
हुई, क्योंकि तू ने अपने दास के घराने
के विषय आगे के बहुत दिनों तक की चर्चा
की है, और हे प्रभु यहोवा, यह तो
मनुष्य का नियम है! २० दाऊद तुझ से
और क्या कह सकता है? हे प्रभु यहोवा,
तू तो अपने दास को जानता है! २१ तू
ने अपने वचन के निमित्त, और अपने
ही मन के अनुसार, यह सब बड़ा काम
किया है, कि तेरा दास उसको जान ले।
२२ इस कारण, हे यहोवा परमेश्वर, तू
महान् है; क्योंकि जो कुछ हम ने अपने कानों
से सुना है, उसके अनुसार तेरे तुल्य कोई
नहीं, और न तुझे छोड़ कोई और परमेश्वर
है। २३ फिर तेरी प्रजा इस्राएल के
भी तुल्य कौन है? वह तो पृथ्वी भर
में एक ही जाति है जिसे परमेश्वर ने
जाकर अपनी निज प्रजा करने को छुड़ाया,
इसलिये कि वह अपना नाम करे, (और
तुम्हारे लिये बड़े बड़े काम करे) और तू
अपनी प्रजा के साम्हने, जिसे तू ने मिस्री
आदि जाति जाति के लोगों और उनके
देवताओं से छुड़ा लिया, अपने देश के
लिये भयानक काम करे। २४ और तू ने
अपनी प्रजा इस्राएल को अपनी सदा
की प्रजा होने के लिये ठहराया, और हे
यहोवा, तू आप उसका परमेश्वर है।
२५ अब हे यहोवा परमेश्वर, तू ने जो
वचन अपने दास के और उसके घराने
के विषय दिया है, उसे सदा के लिये स्थिर
कर, और अपने कहने के अनुसार ही
कर, २६ और यह कर कि लोग तेरे
नाम की महिमा सदा किया करें, कि
सेनाओं का यहोवा इस्राएल के ऊपर
परमेश्वर है, और तेरे दास दाऊद का
घराना तेरे साम्हने अटल रहे। २७ क्योंकि,
हे सेनाओं के यहोवा, हे इस्राएल के
परमेश्वर, तू ने यह कहकर अपने दास
पर प्रगट किया है, कि मैं तेरा घर बनाए
रखूंगा *, इस कारण तेरे दास को तुझ
से यह प्रार्थना करने का हियाव हुआ है।
२८ और अब हे प्रभु यहोवा, तू ही
परमेश्वर है, और तेरे वचन सत्य है,
और तू ने अपने दास को यह भलाई करने
का वचन दिया है; २९ तो अब प्रसन्न
होकर अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष
दे, कि वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे;
क्योंकि, हे प्रभु यहोवा, तू ने ऐसा ही कहा
है, और तेरे दास का घराना तुझ से
आशीष पाकर सदैव धन्य रहे॥

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन)

८ इसके बाद दाऊद ने पलिश्तियों
को जीतकर अपने अधीन कर लिया,
और दाऊद ने पलिश्तियों की राजधानी

* मूल में—तेरे लिये घर बनाऊंगा।

की प्रभुता* उनके हाथ से छीन ली।
२ फिर उस ने मोआबियो को भी जीता,
और इनको भूमि पर लिटाकर डोरी से
मापा, तब दो डोरी से लोगो को मारकर
घात किया, और डोरी भर के लोगो को
जीवित छोड दिया। तब मोआबी दाऊद
के अधीन होकर भेट ले आने लगे।
३ फिर जब सोबा का राजा रहोब का
पुत्र हददेजेर महानद के पास अपना राज्य†
फिर ज्यो का त्यो करने को जा रहा था,
तब दाऊद ने उसको जीत लिया। ४ और
दाऊद ने उस से एक हजार सात सौ सवार,
और बीस हजार प्यादे छीन लिए, और
सब रथवाले घोडो के सुम की नस कटवाई,
परन्तु एक सौ रथवाले घोडे बचा रखे।
५ और जब दमिश्क के अरामी सोबा के
राजा हददेजेर की सहायता करने को
आए, तब दाऊद ने अरामियो मे से बाईस
हजार पुरुष मारे। ६ तब दाऊद ने
दमिश्क मे अराम के सिपाहियो की चौकिया
बैठाई, इस प्रकार अरामी दाऊद के
अधीन होकर भेट ले आने लगे। और
जहा जहा दाऊद जाता था वहा वहा
यहोवा उसको जयवन्त करता था।
७ और हददेजेर के कर्मचारियो के पास
सोने की जो ढाले थी उन्हे दाऊद
लेकर यरूशलेम को आया। ८ और बेतह
और बरौतै नाम हददेजेर के नगरो से
दाऊद राजा बहुत सा पीतल ले आया।
९ और जब हमात के राजा तोई ने सुना
कि दाऊद ने हददेजेर की समस्त सेना
को जीत लिया है, १० तब तोई ने योराम
नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास
उसका कुशल क्षेम पूछने और उसे इसलिये
बधाई देने को भेजा, कि उस ने हददेजेर
से लडकर उसको जीत लिया था,
क्योंकि हददेजेर तोई से लडा करता था।
और योराम चादी, सोने और पीतल के
पात्र लिए हुए आया। ११ इनको दाऊद
राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके
रखा, और वैसा ही अपनी जीती हुई
सब जातियो के सोने चादी से भी किया,
१२ अर्थात् अरामियो, मोआबियो, अम्मो-
नियो, पलिश्तियो, और अमालेकियो के
सोने चादी को, और रहोब के पुत्र सोबा
के राजा हददेजेर की लूट को भी रखा।
१३ और जब दाऊद लोनवाली तराई
मे अठारह हजार अरामियो को मारके
लौट आया, तब उसका बडा नाम हो
गया। १४ फिर उस ने एदोम मे सिपाहियो
की चौकिया बैठाई, पूरे एदोम मे उस ने
सिपाहियो की चौकिया बैठाई, और सब
एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और
दाऊद जहा जहा जाता था वहा वहा
यहोवा उसको जयवन्त करता था॥

(दाऊद के कर्मचारियों की नामावली)

१५ दाऊद तो समस्त इस्राएल पर
राज्य करता था, और दाऊद अपनी
समस्त प्रजा के साथ न्याय और धर्म के
काम करता था। १६ और प्रधान सेनापति
सरूयाह का पुत्र योआब था, इतिहास
का लिखनेवाला अहीलूद का पुत्र यहोशापात
था, १७ प्रधान याजक अहीतूब का पुत्र
सादोक और एब्यातार का पुत्र अहीमेलेक
थे, मंत्री सरायाह था, १८ करेतियो और
पलेतियो का प्रधान यहोयादा का पुत्र बना-
याह था, और दाऊद के पुत्र भी मंत्री* थे॥

* मूल में—पलिश्तियों की माता का बाग।
† मूल में—हाथ।

* वा याजक।

(मपीबोशेत का ऊंचा पद प्राप्त करना)

९ दाऊद ने पूछा, क्या शाऊल के
घराने में से कोई अब तक बचा है,
जिसको मैं योनातन के कारण प्रीति
दिखाऊं? २ शाऊल के घराने का सीबा
नाम एक कर्मचारी था, वह दाऊद के
पास बुलाया गया, और जब राजा ने
उस से पूछा, क्या तू सीबा है? तब
उस ने कहा, हां, तेरा दास वही है।
३ राजा ने पूछा, क्या शाऊल के घराने
में से कोई अब तक बचा है, जिसको मैं
परमेश्वर की सी प्रीति दिखाऊं? सीबा
ने राजा से कहा, हां, योनातन का एक
बेटा तो है, जो लंगडा है। ४ राजा ने
उस से पूछा, वह कहां है? सीबा ने
राजा से कहा, वह तो लोदबार नगर में,
अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर में रहता
है। ५ तब राजा दाऊद ने दूत भेजकर
उसको लोदबार से, अम्मीएल के पुत्र
माकीर के घर से बुलवा लिया। ६ जब
मपीबोशेत, जो योनातन का पुत्र और
शाऊल का पोता था, दाऊद के पास
आया, तब मुंह के बल गिरके दण्डवत्
किया। दाऊद ने कहा, हे मपीबोशेत!
उस ने कहा, तेरे दास को क्या आज्ञा?
७ दाऊद ने उस से कहा, मत डर, तेरे
पिता योनातन के कारण मैं निश्चय
तुझ को प्रीति दिखाऊंगा, और तेरे दादा
शाऊल की सारी भूमि तुझे फेर दूंगा,
और तू मेरी मेज पर नित्य भोजन किया
कर। ८ उस ने दण्डवत् करके कहा,
तेरा दास क्या है, कि तू मुझ ऐसे मरे
कुत्ते की ओर दृष्टि करे? ९ तब राजा
ने शाऊल के कर्मचारी सीबा को बुलवाकर
उस से कहा, जो कुछ शाऊल और उसके
समस्त घराने का था वह मैं ने तेरे स्वामी
के पोते को दे दिया है। १० अब से तू
अपने बेटों और सेवकों समेत उसकी
भूमि पर खेती करके उसकी उपज ले
आया करना, कि तेरे स्वामी के पोते को
भोजन मिला करे; परन्तु तेरे स्वामी का
पोता मपीबोशेत मेरी मेज पर नित्य
भोजन किया करेगा। और सीबा के
तो पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे।
११ सीबा ने राजा से कहा, मेरा प्रभु
राजा अपने दास को जो जो आज्ञा दे,
उन सभों के अनुसार तेरा दास करेगा।
दाऊद ने कहा, मपीबोशेत राजकुमारों की
नाईं मेरी मेज पर भोजन किया करे।
१२ मपीबोशेत के भी मीका नाम एक
छोटा बेटा था। और सीबा के घर में
जितने रहते थे वे सब मपीबोशेत की
सेवा करते थे। १३ और मपीबोशेत
यरूशलेम में रहता था, क्योंकि वह राजा
की मेज पर नित्य भोजन किया करता
था। और वह दोनों पावों का पंगुला था॥

(अम्मोनियों के साथ युद्ध होने का वर्णन)

१० इसके बाद अम्मोनियों का राजा
मर गया, और उसका हानून नाम
पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। २ तब
दाऊद ने यह सोचा, कि जैसे हानून के
पिता नाहाश ने मुझ को प्रीति दिखाई
थी, वैसे ही मैं भी हानून को प्रीति
दिखाऊंगा। तब दाऊद ने अपने कई कर्म-
चारियों को उसके पास उसके पिता के विषय
शान्ति देने के लिये भेज दिया। और
दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों के देश
में आए। ३ परन्तु अम्मोनियों के हाकिम
अपने स्वामी हानून से कहने लगे, दाऊद ने
जो तेरे पास शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह
क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर

करने की मनसा मे भेजे है ? क्या दाऊद
ने अपने कर्मचारियो को तेरे पास इसी
मनसा से नही भेजा कि इस नगर मे
ढूढ ढाढ करके और इसका भेद लेकर
इसको उलट दे ? ४ इसलिये हानून ने
दाऊद के कर्मचारियो को पकडा, और
उनकी आधी-आधी डाढी मुडवाकर और
आधे वस्त्र, अर्थात् नितम्ब तक कटवाकर,
उनको जाने दिया। ५ इसका समाचार
पाकर दाऊद ने लोगो को उन से मिलने
के लिये भेजा, क्योकि वे बहुत लजाते
थे। और राजा ने यह कहा, कि जब तक
तुम्हारी डाढिया बढ न जाए तब तक
यरीहो मे ठहरे रहो, तब लौट आना।
६ जब अम्मोनियो ने देखा कि हम मे
दाऊद अप्रसन्न है, तब अम्मोनियो ने
बेत्रहोब और सोबा के बीस हजार अरामी
प्यादो को, और हजार पुरुषो समेत माका
के राजा को, और बारह हजार तोबी
पुरुषो को, वेतन पर बुलवाया। ७ यह
सुनकर दाऊद ने योआब और शूरवीरो
की समस्त सेना को भेजा। ८ तब
अम्मोनी निकले और फाटक ही के पास
पाती बान्धी, और सोबा और रहोब के
अरामी और तोब और माका के पुरुष
उन से न्यारे मैदान मे थे। ९ यह देखकर
कि आगे पीछे दोनो ओर हमारे विरुद्ध
पाति बन्धी है, योआब ने सब बडे बडे
इस्राएली वीरो में से बहुतो को छाटकर
अरामियो के साम्हने उनकी पाति बन्धाई,
१० और और लोगो को अपने भाई अबीशै
के हाथ सौंप दिया, और उस ने अम्मोनियो
के साम्हने उनकी पाति बन्धाई। ११ फिर
उस ने कहा, यदि अरामी मुझ पर प्रबल
होने लगे, तो तू मेरी सहायता करना,
और यदि अम्मोनी तुझ पर प्रबल होने
लगेगे, तो मै आकर तेरी सहायता करूगा।
१२ तू हियाव बान्ध, और हम अपने लोगो
और अपने परमेश्वर के नगरो के निमित्त
पुरुषार्थ करे, और यहोवा जैसा उसको
अच्छा लगे वैसा करे। १३ तब योआब
और जो लोग उसके साथ थे अरामियो
से युद्ध करने को निकट गए, और वे
उसके साम्हने से भागे। १४ यह देखकर
कि अरामी भाग गए है अम्मोनी भी अबीशै
के साम्हने से भागकर नगर के भीतर
घुसे। तब योआब अम्मोनियो के पास
मे लौटकर यरूशलेम को आया। १५ फिर
यह देखकर कि हम इस्राएलियो से हार
गए अरामी इकट्ठे हुए। १६ और हददेजेर
ने दूत भेजकर महानद के पार के अरामियो
को बुलवाया, और वे हददेजेर के सेनापति
शोबक को अपना प्रधान बनाकर हेलाम
को आए। १७ इसका समाचार पाकर
दाऊद ने समस्त इस्राएलियो को इकट्ठा
किया, और यरदन के पार होकर हेलाम
मे पहुचा। तब अराम दाऊद के विरुद्ध
पाति बान्धकर उस से लडा। १८ परन्तु
अरामी इस्राएलियो से भागे, और दाऊद
ने अरामियो मे से सात सौ रथियो और
चालीस हजार सवारो को मार डाला, और
उनके सेनापति शोबक को ऐसा घायल
किया कि वह वही मर गया। १९ यह
देखकर कि हम इस्राएल से हार गए है,
जितने राजा हददेजेर के अधीन थे उन
सभो ने इस्राएल के साथ संधि की, और
उसके अधीन हो गए। और अरामी अम्मो-
नियो की और सहायता करने से डर गए॥

(दाऊद के पाप में फंसने का वर्णन)

११ फिर जिस समय राजा लोग युद्ध
करने को निकला करते है, उस

समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने
योआब को, और उसके संग अपने सेवकों
और समस्त इस्राएलियों को भेजा, और
उन्हों ने अम्मोनियों को नाश किया, और
रब्बा नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद
यरूशलेम में रह गया॥

२ सांझ के समय दाऊद पलंग पर
से उठकर राजभवन की छत पर टहल
रहा था, और छत पर से उसको एक
स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई
देख पड़ी। ३ जब दाऊद ने भेजकर उस
स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा,
क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती
ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?
४ तब दाऊद ने दूत भेजकर उसे बुलवा
लिया, और वह दाऊद के पास आई,
और वह उसके साथ सोया। (वह तो
ऋतु से शुद्ध हो गई थी)। तब वह
अपने घर लौट गई। ५ और वह स्त्री
गर्भवती हुई, तब दाऊद के पास कहला
भेजा, कि मुझे गर्भ है। ६ तब दाऊद
ने योआब के पास कहला भेजा, कि हित्ती
ऊरिय्याह को मेरे पास भेज, तब योआब
ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेज दिया।
७ जब ऊरिय्याह उसके पास आया, तब
दाऊद ने उस से योआब और सेना का
कुशल क्षेम और युद्ध का हाल पूछा।
८ तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, अपने
घर जाकर अपने पांव धो। और ऊरिय्याह
राजभवन से निकला, और उसके पीछे
राजा के पास से कुछ इनाम भेजा गया।
९ परन्तु ऊरिय्याह अपने स्वामी के सब
सेवकों के संग राजभवन के द्वार में लेट
गया, और अपने घर न गया। १० जब
दाऊद को यह समाचार मिला, कि ऊरिय्याह
अपने घर नहीं गया, तब दाऊद ने ऊरिय्याह
से कहा, क्या तू यात्रा करके नहीं आया?
तो अपने घर क्यों नहीं गया?
११ ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, जब
सन्दूक और इस्राएल और यहूदा झोपड़ियों
में रहते हैं, और मेरा स्वामी योआब
और मेरे स्वामी के सेवक खुले मैदान
पर डेरे डाले हुए हैं, तो क्या मैं घर जाकर
खाऊं, पीऊं, और अपनी पत्नी के साथ
सोऊं? तेरे जीवन की शपथ, और तेरे
प्राण की शपथ, कि मैं ऐसा काम नहीं
करने का। १२ दाऊद ने ऊरिय्याह से
कहा, आज यहीं रह, और कल मैं तुझे
विदा करूंगा। इसलिये ऊरिय्याह उस दिन
और दूसरे दिन भी यरूशलेम में रहा।
१३ तब दाऊद ने उसे नेवता दिया,
और उस ने उसके साम्हने खाया पिया,
और उसी ने उसे मतवाला किया, और
सांझ को वह अपने स्वामी के सेवकों के
संग अपनी चारपाई पर सोने को निकला,
परन्तु अपने घर न गया। १४ बिहान
को दाऊद ने योआब के नाम पर एक
चिट्ठी लिखकर ऊरिय्याह के हाथ से भेज
दी। १५ उस चिट्ठी में यह लिखा था,
कि सब से घोर युद्ध के साम्हने ऊरिय्याह
को रखना, तब उसे छोड़कर लौट आओ,
कि वह घायल होकर मर जाए। १६ और
योआब ने नगर को अच्छी रीति से देख
भालकर जिस स्थान में वह जानता था
कि वीर हैं, उसी में ऊरिय्याह को ठहरा
दिया। १७ तब नगर के पुरुषों ने
निकलकर योआब से युद्ध किया, और
लोगों में से, अर्थात् दाऊद के सेवकों में
से कितने खेत आए, और उन में हित्ती
ऊरिय्याह भी मर गया। १८ तब योआब
ने भेजकर दाऊद को युद्ध का पूरा हाल
बताया, १९ और दूत को आज्ञा दी,

कि जब तू युद्ध का पूरा हाल राजा को
बता चुके, २० तब यदि राजा जलकर
कहने लगे, कि तुम लोग लड़ने को नगर
के ऐसे निकट क्यों गए? क्या तुम न
जानते थे कि वे शहरपनाह पर से तीर
छोड़ेंगे? २१ यरुब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक
को किसने मार डाला? क्या एक स्त्री
ने शहरपनाह पर से चक्की का उपरला
पाट उस पर ऐसा न डाला कि वह तेबेस
में मर गया? फिर तुम शहरपनाह के
ऐसे निकट क्यों गए? तो तू यों कहना,
कि तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती भी मर
गया। २२ तब दूत चल दिया, और जाकर
दाऊद से योआब की सब बातें वर्णन
की। २३ दूत ने दाऊद से कहा, कि वे
लोग हम पर प्रबल होकर मैदान में
हमारे पास निकल आए, फिर हम ने
उन्हें फाटक तक खदेड़ा। २४ तब
धनुर्धारियों ने शहरपनाह पर से तेरे जनों
पर तीर छोड़े, और राजा के कितने जन
मर गए, और तेरा दास ऊरिय्याह हित्ती
भी मर गया। २५ दाऊद ने दूत से
कहा, योआब से यों कहना, कि इस बात
के कारण उदास न हो, क्योंकि तलवार
जैसे इसको वैसे उसको नाश करती
है, तो तू नगर के विरुद्ध अधिक दृढ़ता
से लड़कर उसे उलट दे। और तू उसे
हियाव बन्धा। २६ जब ऊरिय्याह की
स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब
वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी।
२७ और जब उसके विलाप के दिन बीत
चुके, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने
घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी
हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ।
परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया
था यहोवा क्रोधित हुआ॥

१२ तब यहोवा ने दाऊद के पास
नातान को भेजा, और वह उसके
पास जाकर कहने लगा, एक नगर में दो
मनुष्य रहते थे, जिन में से एक धनी और
एक निर्धन था। २ धनी के पास तो बहुत सी
भेड़-बकरियां और गाय बैल थे, ३ परन्तु
निर्धन के पास भेड़ की एक छोटी बच्ची
को छोड़ और कुछ भी न था, और उसको
उस ने मोल लेकर जिलाया था। और
वह उसके यहां उसके बालबच्चों के साथ
ही बढ़ी थी, वह उसके टुकड़े में से खाती,
और उसके कटोरे में से पीती, और उसकी
गोद में सोती थी, और वह उसकी बेटी
के समान थी। ४ और धनी के पास
एक बटोही आया, और उस ने उस बटोही
के लिये, जो उसके पास आया था, भोजन
बनवाने को अपनी भेड़-बकरियों वा गाय
बैलों में से कुछ न लिया, परन्तु उस
निर्धन मनुष्य की भेड़ की बच्ची लेकर
उस जन के लिये, जो उसके पास आया
था, भोजन बनवाया। ५ तब दाऊद का
कोप उस मनुष्य पर बहुत भड़का, और
उस ने नातान से कहा, यहोवा के जीवन
की शपथ, जिस मनुष्य ने ऐसा काम
किया वह प्राण दण्ड के योग्य है, ६ और
उसको वह भेड़ की बच्ची का चौगुणा
भर देना होगा, क्योंकि उस ने ऐसा काम
किया, और कुछ दया नहीं की।

७ तब नातान ने दाऊद से कहा, तू
ही वह मनुष्य है। इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तेरा अभिषेक
कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया,
और मैं ने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया,
८ फिर मैं ने तेरे स्वामी का भवन तुझे
दिया, और तेरे स्वामी की पत्नियां तेरे
भोग के लिये दीं, और मैं ने इस्राएल

और यहूदा का घराना तुझे दिया था,
और यदि यह थोड़ा था, तो मैं तुझे और
भी बहुत कुछ देनेवाला था। ९ तू ने
यहोवा की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों वह
काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है?
हित्ती ऊरिय्याह को तू ने तलवार से घात
किया, और उसकी पत्नी को अपनी कर
लिया है, और ऊरिय्याह को अम्मोनियों
की तलवार से मरवा डाला है।
१० इसलिये अब तलवार तेरे घर से
कभी दूर न होगी, क्योंकि तू ने मुझे तुच्छ
जानकर हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी को
अपनी पत्नी कर लिया है। ११ यहोवा
यों कहता है, कि सुन, मैं तेरे घर में से
विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूंगा, और
तेरी पत्नियों को तेरे साम्हने लेकर दूसरे
को दूंगा, और वह दिन दुपहरी में तेरी
पत्नियों से कुकर्म करेगा। १२ तू ने
तो वह काम छिपाकर किया, पर मैं
यह काम सब इस्राएलियों के साम्हने
दिन दुपहरी कराऊंगा। १३ तब दाऊद ने
नातान से कहा, मैं ने यहोवा के विरुद्ध
पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा,
यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है, तू
न मरेगा। १४ तौभी तू ने जो इस
काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को
तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है,
इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है
वह अवश्य ही मरेगा। १५ तब नातान
अपने घर चला गया॥

और जो बच्चा ऊरिय्याह की पत्नी
से दाऊद के द्वारा उत्पन्न था, वह यहोवा
का मारा बहुत रोगी हो गया। १६ और
दाऊद उस लड़के के लिये परमेश्वर से
विनती करने लगा, और उपवास किया,
और भीतर जाकर रात भर भूमि पर
पड़ा रहा। १७ तब उसके घराने के
पुरनिये उठकर उसे भूमि पर से उठाने
के लिये उसके पास गए, परन्तु उस ने
न चाहा, और उनके संग रोटी न खाई।
१८ सातवें दिन बच्चा मर गया, और
दाऊद के कर्मचारी उसको बच्चे के मरने
का समाचार देने से डरे, उन्हों ने तो
कहा था, कि जब तक बच्चा जीवित
रहा, तब तब उस ने हमारे समझाने
पर मन न लगाया, यदि हम उसको
बच्चे के मर जाने का हाल सुनाए, तो
वह बहुत ही अधिक दुःखी होगा।
१९ अपने कर्मचारियों को आपस में
फुसफुसाते देखकर दाऊद ने जान लिया
कि बच्चा मर गया, तो दाऊद ने अपने
कर्मचारियों से पूछा, क्या बच्चा मर
गया? उन्हों ने कहा, हां, मर गया है।
२० तब दाऊद भूमि पर से उठा, और
नहाकर तेल लगाया, और वस्त्र बदला,
तब यहोवा के भवन में जाकर दण्डवत्
की, फिर अपने भवन में आया, और
उसकी आज्ञा पर रोटी उसको परोसी
गई, और उस ने भोजन किया। २१ तब
उसके कर्मचारियों ने उस से पूछा, तू ने
यह क्या काम किया है? जब तक बच्चा
जीवित रहा, तब तक तू उपवास करता
हुआ रोता रहा, परन्तु ज्योंही बच्चा मर
गया, त्योंही तू उठकर भोजन करने लगा।
२२ उस ने उत्तर दिया, कि जब तक
बच्चा जीवित रहा तब तक तो मैं यह
सोचकर उपवास करता और रोता रहा,
कि क्या जाने यहोवा मुझ पर ऐसा
अनुग्रह करे कि बच्चा जीवित रहे।
२३ परन्तु अब वह मर गया, फिर मैं
उपवास क्यों करूं? क्या मैं उसे लौटा
ला सकता हूं? मैं तो उसके पास जाऊंगा,

परन्तु वह मेरे पास लौट न आएगा।
२४ तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा
को शान्ति दी, और वह उसके पास गया,
और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और
उस ने उसका नाम सुलैमान रखा। और
वह यहोवा का प्रिय हुआ। २५ और
उस ने नातान भविष्यद्वक्ता के द्वारा सन्देश
भेज दिया, और उस ने यहोवा के
कारण उसका नाम यदीद्याह * रखा॥
२६ और योआब ने अम्मोनियो के रब्बा
नगर से लडकर राजनगर को ले लिया।
२७ तब योआब ने दूतो से दाऊद के
पास यह कहला भेजा, कि मै रब्बा मे
लडा और जलवाले नगर को ले लिया
है। २८ सो अब रहे हुए लोगो को
इकट्ठा करके नगर के विरुद्ध छावनी
डालकर उसे भी ले ले, ऐसा न हो कि
मै उसे ले लू, और वह मेरे नाम पर
कहलाए †। २९ तब दाऊद सब लोगो
को इकट्ठा करके रब्बा को गया, और
उस से युद्ध करके उसे ले लिया। ३० तब
उस ने उनके राजा ‡ का मुकुट, जो तौल
मे किक्कार भर सोने का था, और उस
मे मणि जडे थे, उसको उसके सिर पर
से उतारा, और वह दाऊद के सिर पर
रखा गया। फिर उस ने उस नगर की
बहुत ही लूट पाई। ३१ और उस ने
उसके रहनेवालो को निकालकर आरो से
दो दो टुकडे कराया, और लोहे के हेंगे
उन पर फिरवाए, और लोहे की कुल्हाडियो
से उन्हे कटवाया, और ईंट के पजावे मे
से चलवाया *; और अम्मोनियो के सब
नगरो से भी उस ने ऐसा ही किया। तब
दाऊद समस्त लोगो समेत यरूशलेम को
लौट आया॥

(अम्नोन का कुकर्म करना और मार डाला जाना)

१३ इसके बाद तामार नाम एक
सुन्दरी जो दाऊद के पुत्र अबशा-
लोम की बहिन थी, उस पर दाऊद का पुत्र
अम्नोन मोहित हुआ। २ और अम्नोन
अपनी बहिन तामार के कारण ऐसा विकल
हो गया कि बीमार पड गया, क्योकि
वह कुमारी थी, और उसके साथ कुछ
करना अम्नोन को कठिन जान पडता था।
३ अम्नोन के योनादाब नाम एक मित्र था,
जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा था,
और वह बडा चतुर था। ४ और उस ने
अम्नोन से कहा, हे राजकुमार, क्या कारण
है कि तू प्रति दिन ऐसा दुबला होता जाता
है क्या तू मुझे न बताएगा? अम्नोन ने
उस से कहा, मै तो अपने भाई अबशालोम
की बहिन तामार पर मोहित हू।
५ योनादाब ने उस से कहा, अपने पलग
पर लेटकर बीमार बन जा, और जब
तेरा पिता तुझे देखने को आए, तब उस से
कहना, मेरी बहिन तामार आकर मुझे
रोटी खिलाए, और भोजन को मेरे साम्हने
बनाए, कि मै उसको देखकर उसके हाथ
से खाऊ। ६ और अम्नोन लेटकर बीमार
बना, और जब राजा उसे देखने आया, तब
अम्नोन ने राजा से कहा, मेरी बहिन
तामार आकर मेरे देखते दो पूरी बनाए,

* अर्थात् यहोवा का प्रिय।

† मूल में—मेरा नाम उस पर पुकारा जावे।

‡ वा मल्काम।

* वा आरों, लोहे के हेंगों, और लोहे की कुल्हाड़ियों के काम पर लगाया और उन से ईंट के पजावे में परिश्रम कराया।

कि मै उसके हाथ से खाऊं। ७ और
दाऊद ने अपने घर तामार के पास यह
कहला भेजा, कि अपने भाई अम्नोन
के घर जाकर उसके लिये भोजन बना।
८ तब तामार अपने भाई अम्नोन के घर
गई, और वह पडा हुआ था। तब उस ने
आटा लेकर गूंधा, और उसके देखते
पूरियां पकाईं। ९ तब उस ने थाल लेकर
उनको उसके लिये परोसा, परन्तु उस
ने खाने से इनकार किया। तब अम्नोन
ने कहा, मेरे आस पास से सब लोगों को
निकाल दो, तब सब लोग उसके पास से
निकल गए। १० तब अम्नोन ने तामार
से कहा, भोजन को कोठरी में ले आ,
कि मै तेरे हाथ से खाऊं। तो तामार
अपनी बनाई हुई पूरियों को उठाकर
अपने भाई अम्नोन के पास कोठरी में
ले गई। ११ जब वह उनको उसके
खाने के लिये निकट ले गई, तब उस ने
उसे पकडकर कहा, हे मेरी बहिन, आ,
मुझ से मिल। १२ उस ने कहा, हे मेरे
भाई, ऐसा नहीं, मुझे भ्रष्ट न कर,
क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम होना नहीं
चाहिये, ऐसी मूढता का काम न कर।
१३ और फिर मैं अपनी नामधराई लिये
हुए कहां जाऊंगी? और तू इस्राएलियों
में एक मूढ गिना जाएगा। तू राजा से
बातचीत कर, वह मुझ को तुझे ब्याह
देने के लिये मना न करेगा। १४ परन्तु
उस ने उसकी न सुनी, और उस से
बलवान होने के कारण उसके साथ
कुकर्म करके उसे भ्रष्ट किया। १५ तब
अम्नोन उस से अत्यन्त बैर रखने लगा,
यहां तक कि यह बैर उसके पहिले मोह से
बढकर हुआ। तब अम्नोन ने उस से
कहा, उठकर चली जा। १६ उस ने कहा,
ऐसा नहीं, क्योंकि यह बडा उपद्रव, अर्थात
मुझे निकाल देना उस पहिले से बढकर है
जो तू ने मुझ से किया है। परन्तु उस ने
उसकी न सुनी। १७ तब उस ने अपने
टहलुए जवान को बुलाकर कहा, इस
स्त्री को मेरे पास से बाहर निकाल दे,
और उसके पीछे किवाड में चिटकनी
लगा दे। १८ वह तो रंगबिरंगी कुर्ती
पहिने थी, क्योंकि जो राजकुमारियां
कुंवारी रहती थीं वे ऐसे ही वस्त्र पहिनती
थीं। सो अम्नोन के टहलुए ने उसे बाहर
निकालकर उसके पीछे किवाड में चिटकनी
लगा दी। १९ तब तामार ने अपने सिर
पर राख डाली, और अपनी रंगबिरंगी
कुर्ती को फाड डाला, और सिर पर हाथ
रखे चिल्लाती हुई चली गई। २० उसके
भाई अबशालोम ने उस से पूछा, क्या
तेरा भाई अम्नोन तेरे साथ रहा है?
परन्तु अब, हे मेरी बहिन, चुप रह, वह तो
तेरा भाई है, इस बात की चिन्ता न कर।
तब तामार अपने भाई अबशालोम के
घर में मन मारे बैठी रही। २१ जब
ये सब बातें दाऊद राजा के कान में पडीं,
तब वह बहुत झुंझला उठा। २२ और
अबशालोम ने अम्नोन से भला-बुरा कुछ
न कहा, क्योंकि अम्नोन ने उसकी बहिन
तामार को भ्रष्ट किया था, इस कारण
अबशालोम उस से घृणा रखता था॥

२३ दो वर्ष के बाद अबशालोम ने
एप्रैम के निकट के बाल्हासोर में अपनी
भेडों का ऊन कतरवाया और अबशालोम
ने सब राजकुमारों को नेवता दिया।
२४ वह राजा के पास जाकर कहने
लगा, विनती यह है, कि तेरे दास की
भेडों का ऊन कतरा जाता है, इसलिये
राजा अपने कर्मचारियों समेत अपने दास

के सग चले। २५ राजा ने अवशालोम
से कहा, हे मेरे वेटे, ऐसा नही, हम सब न
चलेगे, ऐसा न हो कि तुझे अधिक कष्ट
हो। तव अवशालोम ने उसे विनती करके
दवाया, परन्तु उस ने जाने से इनकार
किया, तौभी उसे आशीर्वाद दिया।
२६ तव अवशालोम ने कहा, यदि तू
नही तो मेरे भाई अम्नोन को हमारे सग
जाने दे। राजा ने उस से पूछा, वह तेरे
सग क्यो चले? २७ परन्तु अवशालोम
ने उसे ऐसा दवाया कि उस ने अम्नोन
और सव राजकुमारो को उसके साथ
जाने दिया। २८ और अवशालोम ने
अपने सेवको को आज्ञा दी, कि सावधान
रहो और जव अम्नोन दाखमधु पीकर
नशे मे आ जाए, और मै तुम से कहू,
अम्नोन को मारो, तव निडर होकर
उसको मार डालना। क्या इस आज्ञा
का देनेवाला मै नही हू? हियाव वान्धकर
पुरुषार्थ करना। २९ तो अवशालोम के
सेवको ने अम्नोन के साथ अवशालोम
की आज्ञा के अनुसार किया। तव सव
राजकुमार उठ खडे हुए, और अपने अपने
खच्चर पर चढकर भाग गए। ३० वे
मार्ग ही में थे, कि दाऊद को यह समाचार
मिला कि अवशालोम ने सव राजकुमारो
को मार डाला, और उन मे से एक भी
नही वचा। ३१ तव दाऊद ने उठकर
अपने वस्त्र फाडे, और भूमि पर गिर
पडा, और उसके सव कर्मचारी वस्त्र
फाडे हुए उसके पास खडे रहे। ३२ तव
दाऊद के भाई शिमा के पुत्र योनादाव
ने कहा, मेरा प्रभु यह न समझे कि सव
जवान, अर्थात् राजकुमार मार डाले गए
है, केवल अम्नोन मारा गया है, क्योकि
जिस दिन उस ने अवशालोम की वहिन
तामार को भ्रष्ट किया, उसी दिन से
अवशालोम की आज्ञा से ऐसी ही वात
ठनी थी। ३३ इसलिये अव मेरा प्रभु
राजा अपने मन मे यह समझकर कि सव
राजकुमार मर गए उदास न हो, क्योकि
केवल अम्नोन ही मर गया है। ३४ इतने
मे अवशालोम भाग गया। और जो
जवान पहरा देता था उस ने आखे उठाकर
देखा, कि पीछे की ओर से पहाड के पास
के मार्ग से वहुत लोग चले आ रहे है।
३५ तव योनादाव ने राजा से कहा,
देख, राजकुमार तो आ गए है, जैसा
तेरे दास ने कहा था वैसा ही हुआ।
३६ वह कह ही चुका था, कि राजकुमार
पहुच गए, और चिल्ला चिल्लाकर रोने
लगे, और राजा भी अपने सव कर्मचारियो
समेत विलख विलख कर रोने लगा।
३७ अवशालोम तो भागकर गशूर के राजा
अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास गया।
और दाऊद अपने पुत्र के लिये दिन दिन
विलाप करता रहा॥

(अवशालोम के राजद्रोह की गोष्ठी)

३८ जव अवशालोम भागकर गशूर
को गया, तव वहा तीन वर्ष तक रहा।
३९ और दाऊद के मन मे अवशालोम
के पास जाने की वडी लालसा रही,
क्योकि अम्नोन जो मर गया था, इस
कारण उस ने उसके विषय मे शान्ति
पाई॥

१४ और सरूयाह का पुत्र योआव
ताड गया कि राजा का मन अवशा-
लोम की ओर लगा है। २ इसलिये योआव
ने तको नगर में दूत भेजकर वहा से एक
वुद्धिमान स्त्री को वुलवाया, और उस से
कहा, शोक करनेवाली वन, अर्थात् शोक

का पहिरावा पहिन, और तेल न लगा,
परन्तु ऐसी स्त्री बन जो बहुत दिन से
मुए के लिये विलाप करती रही हो।
३ तब राजा के पास जाकर ऐसी ऐसी
बातें कहना। और योआब ने उसको
जो कुछ कहना था वह सिखा दिया।
४ जब वह तकोइन राजा से बातें करने
लगी, तब मुंह के बल भूमि पर गिर
दण्डवत् करके कहने लगी, राजा की
दोहाई। ५ राजा ने उस से पूछा,
तुझे क्या चाहिये? उस ने कहा,
सचमुच मेरा पति मर गया, और
मैं विधवा हो गई। ६ और तेरी दासी
के दो बेटे थे, और उन दोनों ने मैदान
में मार पीट की, और उनको छुड़ानेवाला
कोई न था, इसलिये एक ने दूसरे को
ऐसा मारा कि वह मर गया। ७ और
यह सुन सब कुल के लोग तेरी दासी के
विरुद्ध उठकर यह कहते हैं, कि जिस ने
अपने भाई को घात किया उसको हमें
सौंप दे, कि उसके मारे हुए भाई के प्राण
के पलटे में उसको प्राण दण्ड दें, और
वारिस को भी नाश करें। इस तरह वे
मेरे अंगारे को जो बच गया है बुझाएंगे,
और मेरे पति का नाम और सन्तान
धरती पर से मिटा डालेंगे। ८ राजा ने
स्त्री से कहा, अपने घर जा, और मैं तेरे
विषय आज्ञा दूंगा। ९ तकोइन ने राजा
से कहा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, दोष मुझी
को और मेरे पिता के घराने ही को लगे,
और राजा अपनी गद्दी समेत निर्दोष
ठहरे। १० राजा ने कहा, जो कोई
तुझ से कुछ बोले उसको मेरे पास ला,
तब वह फिर तुझे छूने न पाएगा। ११ उस
ने कहा, राजा अपने परमेश्वर यहोवा
को स्मरण करे, कि खून का पलटा
लेनेवाला और नाश करने न पाए, और
मेरे बेटे का नाश न होने पाए। उस
ने कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, तेरे
बेटे का एक बाल भी भूमि पर गिरने
न पाएगा। १२ स्त्री बोली, तेरी दासी
अपने प्रभु राजा से एक बात कहने पाए।
१३ उस ने कहा, कहे जा। स्त्री कहने
लगी, फिर तू ने परमेश्वर की प्रजा की
हानि के लिये ऐसी ही युक्ति क्यों की
है? राजा ने जो यह वचन कहा है,
इस से वह दोषी सा ठहरता है, क्योंकि
राजा अपने निकाले हुए को लौटा नहीं
लाता। १४ हम को तो मरना ही है,
और भूमि पर गिरे हुए जल के समान
ठहरेंगे, जो फिर उठाया नहीं जाता,
तौभी परमेश्वर प्राण नहीं लेता, वरन
ऐसी युक्ति करता है कि निकाला हुआ
उसके पास से निकाला हुआ न रहे।
१५ और अब मैं जो अपने प्रभु राजा से
यह बात कहने को आई हूं, इसका कारण
यह है, कि लोगों ने मुझे डरा दिया था,
इसलिये तेरी दासी ने सोचा, कि मैं राजा
से बोलूंगी, कदाचित राजा अपनी दासी
की विनती को पूरी करे। १६ निःसन्देह
राजा सुनकर अवश्य अपनी दासी को
उस मनुष्य के हाथ से बचाएगा जो मुझे
और मेरे बेटे दोनों को परमेश्वर के
भाग में से नाश करना चाहता है। १७ सो
तेरी दासी ने सोचा, कि मेरे प्रभु राजा
के वचन से शान्ति मिले, क्योंकि मेरा
प्रभु राजा परमेश्वर के किसी दूत की
नाईं भले-बुरे में भेद कर सकता है,
इसलिये तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग
रहे। १८ राजा ने उत्तर देकर उस स्त्री से
कहा, जो बात मैं तुझ से पूछता हूं उसे
मुझ से न छिपा। स्त्री ने कहा, मेरा

प्रभु राजा कहे जाए। १६ राजा ने
पूछा, इस बात मे क्या योआब तेरा संगी
है? स्त्री ने उत्तर देकर कहा, हे मेरे
प्रभु, हे राजा, तेरे प्राण की शपथ, जो
कुछ मेरे प्रभु राजा ने कहा है, उस से
कोई न दाहिनी ओर मुड़ सकता है और
न बाई। तेरे दास योआब ही ने मुझे
आज्ञा दी, और ये सब बाते उसी ने तेरी
दासी को सिखाई है। २० तेरे दास
योआब ने यह काम इसलिये किया कि बात
का रंग बदले। और मेरा प्रभु परमेश्वर
के एक दूत के तुल्य बुद्धिमान् है, यहा तक
कि धरती पर जो कुछ होता है उन सब
को वह जानता है। २१ तब राजा ने
योआब से कहा, सुन, मै ने यह बात
मानी है, तू जाकर अबशालोम जवान
को लौटा ला। २२ तब योआब ने भूमि
पर मुह के बल गिर दण्डवत् कर राजा
को आशीर्वाद दिया, और योआब कहने
लगा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, आज तेरा
दास जान गया कि मुझ पर तेरी अनुग्रह
की दृष्टि है, क्योकि राजा ने अपने दास
की विनती सुनी है। २३ और योआब
उठकर गशूर को गया, और अबशालोम
को यरूशलेम ले आया। २४ तब राजा
ने कहा, वह अपने घर जाकर रहे, और
मेरा दर्शन न पाए। तब अबशालोम अपने
घर जा रहा, और राजा का दर्शन न
पाया॥

२५ समस्त इस्राएल मे सुन्दरता के
कारण बहुत प्रशंसा योग्य अबशालोम के
तुल्य और कोई न था, वरन उस मे
नख से सिख तक कुछ दोष न था।
२६ और वह वर्ष के अन्त मे अपना सिर
मुड़वाता था (उसके बाल उसको भारी
जान पड़ते थे, इस कारण वह उसे मुडाता
था), और जब जब वह उसे मुडाता
तब तब अपने सिर के बाल तौलकर
राजा के तौल के अनुसार दो सौ शेकेल
भर पाता था। २७ और अबशालोम
के तीन बेटे, और तामार नाम एक बेटी
उत्पन्न हुई थी, और यह रूपवती स्त्री थी॥

२८ और अबशालोम राजा का दर्शन
बिना पाए यरूशलेम मे दो वर्ष रहा।
२९ तब अबशालोम ने योआब को बुलवा
भेजा कि उसे राजा के पास भेजे, परन्तु
योआब ने उसके पास आने से इनकार
किया। और उस ने उसे दूसरी बार
बुलवा भेजा, परन्तु तब भी उस ने आने
से इनकार किया। ३० तब उस ने
अपने सेवको से कहा, सुनो, योआब का
एक खेत मेरी भूमि के निकट है, और
उस मे उसका जव खडा है, तुम जाकर
उस मे आग लगाओ। और अबशालोम
के सेवको ने उस खेत मे आग लगा दी।
३१ तब योआब उठा, और अबशालोम
के घर मे उसके पास जाकर उस से पूछने
लगा, तेरे सेवको ने मेरे खेत मे क्यो आग
लगाई है? ३२ अबशालोम ने योआब
से कहा, मै ने तो तेरे पास यह कहला भेजा
था, कि यहा आना कि मै तुझे राजा के
पास यह कहने को भेजू, कि मै गशूर से
क्यो आया? मै अब तक वहा रहता
तो अच्छा होता। इसलिये अब राजा
मुझे दर्शन दे, और यदि मै दोषी हू,
तो वह मुझे मार डाले। ३३ तो योआब
ने राजा के पास जाकर उसको यह बात
सुनाई, और राजा ने अबशालोम को
बुलवाया। और वह उसके पास गया,
और उसके सम्मुख भूमि पर मुह के बल
गिरके दण्डवत् की, और राजा ने
अबशालोम को चूमा॥

१५ इसके बाद अबशालोम ने रथ
और घोड़े, और अपने आगे आगे
दौड़नेवाले पचास मनुष्य रख लिए।
२ और अबशालोम सवेरे उठकर फाटक
के मार्ग के पास खड़ा हुआ करता था,
और जब जब कोई मुद्दई राजा के पास
न्याय के लिये आता, तब तब अबशालोम
उसको पुकारके पूछता था, तू किस नगर
से आता है? ३ और वह कहता था, कि
तेरा दास इस्राएल के फुलाने गोत्र का
है। तब अबशालोम उस से कहता था,
कि सुन, तेरा पक्ष तो ठीक और न्याय का
है, परन्तु राजा की ओर से तेरी सुननेवाला
कोई नहीं है। ४ फिर अबशालोम यह
भी कहा करता था, कि भला होता कि
मैं इस देश में न्यायी ठहराया जाता!
कि जितने मुकद्दमावाले होते वे सब मेरे
ही पास आते, और मैं उनका न्याय
चुकाता। ५ फिर जब कोई उसे दण्डवत्
करने को निकट आता, तब वह हाथ
बढ़ाकर उसको पकड़के चूम लेता था।
६ और जितने इस्राएली राजा के पास
अपना मुकद्दमा तै करने को आते उन
सभों से अबशालोम ऐसा ही व्यवहार
किया करता था, इस प्रकार अबशालोम
ने इस्राएली मनुष्यों के मन को हर लिया॥
७ चार * वर्ष के बीतने पर अबशालोम
ने राजा से कहा, मुझे हेब्रोन जाकर
अपनी उस मन्नत को पूरी करने दे, जो
मैं ने यहोवा की मानी है। ८ तेरा दास
तो जब आराम के गशूर में रहता था,
तब यह कहकर यहोवा की मन्नत मानी,
कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम
को लौटा ले जाए, तो मैं यहोवा की
उपासना करूंगा। ९ राजा ने उस से
कहा, कुशल क्षेम से जा। और वह चलकर
हेब्रोन को गया। १० तब अबशालोम
ने इस्राएल के समस्त गोत्रों में यह कहने
के लिये भेदिए भेजे, कि जब नरसिंगे
का शब्द तुम को सुन पड़े, तब कहना,
कि अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ!
११ और अबशालोम के संग दो सौ नेवत-
हारी यरूशलेम से गए, वे सीधे मन से
उसका भेद बिना जाने गए। १२ फिर जब
अबशालोम का यज्ञ हुआ, तब उस ने
गीलोवासी अहीतोपेल को, जो दाऊद का
मंत्री था, बुलवा भेजा कि वह अपने
नगर गीलो से आए। और राजद्रोह की
गोष्ठी ने बल पकड़ा, क्योंकि अबशालोम
के पक्ष के लोग बराबर बढ़ते गए॥

(दाऊद का भागना)

१३ तब किसी ने दाऊद के पास जाकर
यह समाचार दिया, कि इस्राएली मनुष्यों
के मन अबशालोम की ओर हो गए हैं।
१४ तब दाऊद ने अपने सब कर्मचारियों
से जो यरूशलेम में उसके संग थे कहा,
आओ, हम भाग चलें, नहीं तो हम में
से कोई भी अबशालोम से न बचेगा,
इसलिये फुर्ती करते चले चलो, ऐसा
न हो कि वह फुर्ती करके हमें आ घेरे,
और हमारी हानि करे, और इस नगर
को तलवार से मार ले। १५ राजा के
कर्मचारियों ने उस से कहा, जैसा हमारे
प्रभु राजा को अच्छा जान पड़े, वैसा
ही करने के लिये तेरे दास तैयार हैं।
१६ तब राजा निकल गया, और उसके
पीछे उसका समस्त घराना निकला। और
राजा दस रखेलियों को भवन की चौकसी
करने के लिये छोड़ गया। १७ और

* वा चालीस

राजा निकल गया, और उसके पीछे*
सब लोग निकले, और वे बेतमेर्हक†
मे ठहर गए। १८ और उसके सब
कर्मचारी उसके पास से होकर आगे गए,
और सब करेती, और सब पलेती, और
सब गती, अर्थात् जो छ सौ पुरुष गत
से उसके पीछे हो लिए थे वे सब राजा
के साम्हने से होकर आगे चले। १९ तब
राजा ने गती इत्तै से पूछा, हमारे सग
तू क्यो चलता है? लौटकर राजा के
पास रह, क्योकि तू परदेशी और अपने
देश से दूर है, इसलिये अपने स्थान को
लौट जा। २० तू तो कल ही आया है,
क्या मै आज तुझे अपने साथ मारा मारा
फिराऊ? मै तो जहा जा सकूगा वहा
जाऊगा। तू लौट जा, और अपने भाइयो
को भी लौटा दे, ईश्वर की करुणा और
सच्चाई तेरे सग रहे। २१ इत्तै ने राजा
को उत्तर देकर कहा, यहोवा के जीवन
की शपथ, और मेरे प्रभु राजा के
जीवन की शपथ, जिस किसी स्थान मे
मेरा प्रभु राजा रहेगा, चाहे मरने के लिये
हो चाहे जीवित रहने के लिये, उसी
स्थान मे तेरा दास भी रहेगा। २२ तब
दाऊद ने इत्तै से कहा, पार चल। सो
गती इत्तै अपने समस्त जनो और अपने
साथ के सब बाल-बच्चो समेत पार हो
गया। २३ सब रहनेवाले‡ चिल्ला
चिल्लाकर रोए, और सब लोग पार
हुए, और राजा भी किद्रोन नाम नाले
के पार हुआ, और सब लोग नाले के पार
जगल के मार्ग की ओर पार होकर चल
पड़े। २४ तब क्या देखने मे आया, कि
सादोक भी और उसके सग सब लेवीय
परमेश्वर की वाचा का सन्दूक उठाए हुए
है, और उन्हो ने परमेश्वर के सन्दूक को
धर दिया, तब एब्यातार चढा, और जब
तक सब लोग नगर से न निकले तब तक
वही रहा। २५ तब राजा ने सादोक से
कहा, परमेश्वर के सन्दूक को नगर मे
लौटा ले जा। यदि यहोवा के अनुग्रह
की दृष्टि मुझ पर हो, तो वह मुझे लौटाकर
उसको और अपने वासस्थान को भी
दिखाएगा, २६ परन्तु यदि वह मुझ से
ऐसा कहे, कि मै तुझ से प्रसन्न नही,
तौभी मै हाजिर हू, जैसा उसको भाए
वैसा ही वह मेरे साथ वर्त्ताव करे।
२७ फिर राजा ने सादोक याजक से
कहा, क्या तू दर्शी नही है? सो कुशल क्षेम
से नगर मे लौट जा, और तेरा पुत्र अहीमास,
और एब्यातार का पुत्र योनातन, दोनो
तुम्हारे सग लौटें। २८ सुनो, मै जङ्गल
के घाट के पास तब तक ठहरा रहूगा,
जब तक तुम लोगो से मुझे हाल का
समाचार न मिले। २९ तब सादोक और
एब्यातार ने परमेश्वर के सन्दूक को
यरूशलेम मे लौटा दिया, और आप
वही रहे॥

३० तब दाऊद जलपाइयो के पहाड
की चढाई पर सिर ढापे, नगे पाव, रोता
हुआ चढने लगा, और जितने लोग उसके
सग थे, वे भी सिर ढापे रोते हुए चढ
गए। ३१ तब दाऊद को यह समाचार
मिला, कि अबशालोम के सगी राजद्रोहियो
के साथ अहीतोपेल है। दाऊद ने कहा,
हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को
मूर्खता बना दे। ३२ जब दाऊद चोटी
तक पहुचा, जहा परमेश्वर को दण्डवत्

* मूल में—उसके पांवों पर।
† अर्थात् दूरआश्रम।
‡ मूल में—सारा देश।

किया करते थे, तब एरेकी हूशै अगरखा
फाड़े, सिर पर मिट्टी डाले हुए उस से
मिलने को आया। ३३ दाऊद ने उस
से कहा, यदि तू मेरे संग आगे जाए, तब
तो मेरे लिये भार ठहरेगा। ३४ परन्तु
यदि तू नगर को लौटकर अबशालोम से
कहने लगे, हे राजा, मैं तेरा कर्मचारी
हूंगा, जैसा मैं बहुत दिन तेरे पिता का
कर्मचारी रहा, वैसा ही अब तेरा रहूंगा,
तो तू मेरे हित के लिये अहीतोपेल की
सम्मति को निष्फल कर सकेगा। ३५ और
क्या वहां तेरे संग सादोक और एब्यातार
याजक न रहेंगे? इसलिये राजभवन में
से जो हाल तुझे सुन पड़े, उसे सादोक और
एब्यातार याजकों को बताया करना।
३६ उनके साथ तो उनके दो पुत्र,
अर्थात् सादोक का पुत्र अहीमास, और
एब्यातार का पुत्र योनातन, वहां रहेंगे,
तो जो समाचार तुम लोगों को मिले उसे
मेरे पास उन्हीं के हाथ भेजा करना।
३७ और दाऊद का मित्र, हूशै, नगर को
गया, और अबशालोम भी यरूशलेम में
पहुंच गया॥

१६ दाऊद चोटी पर से थोड़ी दूर बढ़
गया था, कि मपीबोशेत का कर्म-
चारी सीबा एक जोड़ी जीन बान्धे हुए
गदहों पर दो सौ रोटी, किशमिश की एक
सौ टिकिया, धूपकाल के फल की एक सौ
टिकिया, और कुप्पी भर दाखमधु, लादे
हुए उस से आ मिला। २ राजा ने
सीबा से पूछा, इन से तेरा क्या प्रयोजन
है? सीबा ने कहा, गदहे तो राजा के
घराने की सवारी के लिये हैं, और रोटी
और धूपकाल के फल जवानों के खाने
के लिये हैं, और दाखमधु इसलिये है कि
जो कोई जंगल में थक जाए वह उसे
पीए। ३ राजा ने पूछा, फिर तेरे स्वामी
का बेटा कहां है? सीबा ने राजा से
कहा, वह तो यह कहकर यरूशलेम में
रह गया, कि अब इस्राएल का घराना
मुझे मेरे पिता का राज्य फेर देगा।
४ राजा ने सीबा से कहा, जो कुछ
मपीबोशेत का था वह सब तुझे मिल
गया। सीबा ने कहा, प्रणाम, हे मेरे
प्रभु, हे राजा, मुझ पर तेरे अनुग्रह की
दृष्टि बनी रहे॥

५ जब दाऊद राजा बहूरीम तक
पहुंचा, तब शाऊल का एक कुटुम्बी वहां
से निकला, वह गेरा का पुत्र शिमी नाम
का था, और वह कोसता हुआ चला
आया। ६ और दाऊद पर, और दाऊद
राजा के सब कर्मचारियों पर पत्थर फेंकने
लगा, और शूरवीरों समेत सब लोग
उसकी दाहिनी बाईं दोनों ओर थे।
७ और शिमी कोसता हुआ यों बकता
गया, कि दूर हो खूनी, दूर हो ओछे,
निकल जा, निकल जा! ८ यहोवा ने
तुझ से शाऊल के घराने के खून का पूरा
पलटा लिया है, जिसके स्थान पर तू
राजा बना है, यहोवा ने राज्य को तेरे
पुत्र अबशालोम के हाथ कर दिया है।
और इसलिये कि तू खूनी है, तू अपनी
बुराई में आप फंस गया। ९ तब सरूयाह
के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, यह मरा
हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को क्यों शाप
देने पाए? मुझे उधर जाकर उसका
सिर काटने दे। १० राजा ने कहा,
सरूयाह के बेटो, मुझे तुम से क्या काम?
वह जो कोसता है, और यहोवा ने जो
उस से कहा है, कि दाऊद को शाप दे,
तो उस से कौन पूछ सकता, कि तू ने

ऐसा क्यो किया? ११ फिर दाऊद ने
अबीशै और अपने सब कर्मचारियों से
कहा, जब मेरा निज पुत्र भी मेरे प्राण
का खोजी है, तो यह बिन्यामीनी अब
ऐसा क्यो न करे? उसको रहने दो,
और शाप देने दो, क्योकि यहोवा ने
उस से कहा है। १२ कदाचित् यहोवा
इस उपद्रव पर, जो मुझ पर हो रहा
है, दृष्टि करके आज के शाप की सन्ती
मुझे भला बदला दे। १३ तब दाऊद
अपने जनो समेत अपना मार्ग चला गया,
और शिमी उसके साम्हने के पहाड की
अलंग पर से शाप देता, और उस पर
पत्थर और धूलि फेकता हुआ चला गया।
१४ निदान राजा अपने सग के सब लोगो
समेत अपने ठिकाने पर थका हुआ पहुचा,
और वहा विश्राम किया॥

१५ अबशालोम सब इस्राएली लोगो
समेत यरूशलेम को आया, और उसके
सग अहीतोपेल भी आया। १६ जब दाऊद
का मित्र एरेकी हूशै अबशालोम के पास
पहुचा, तब हूशै ने अबशालोम से कहा,
राजा चिरजीव रहे! राजा चिरजीव
रहे! १७ अबशालोम ने उस से कहा,
क्या यह तेरी प्रीति है जो तू अपने मित्र
से रखता है? तू अपने मित्र के सग
क्यो नही गया? १८ हूशै ने अबशालोम
से कहा, ऐसा नही, जिसको यहोवा और
वे लोग, क्या वरन सब इस्राएली लोग
चाहे, उसी का मै हू, और उसी के सग
मै रहूगा। १९ और फिर मै किसकी
सेवा करू? क्या उसके पुत्र के साम्हने
रहकर सेवा न करू? जैसा मै तेरे पिता
के साम्हने रहकर सेवा करता था, वैसा
ही तेरे साम्हने रहकर सेवा करूगा।
२० तब अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा,
तुम लोग अपनी सम्मति दो, कि क्या
करना चाहिये? २१ अहीतोपेल ने
अबशालोम से कहा, जिन रखेलियों को
तेरा पिता भवन की चौकसी करने को
छोड गया, उनके पास तू जा, और जब
सब इस्राएली यह सुनेंगे, कि अबशालोम
का पिता उस से घिन करता है, तब तेरे
सब सगी हियाव बान्धेंगे। २२ सो उसके
लिये भवन की छत के ऊपर एक तम्बू
खड़ा किया गया, और अबशालोम समस्त
इस्राएल के देखते अपने पिता की रखेलियो
के पास गया। २३ उन दिनो जो सम्मति
अहीतोपेल देता था, वह ऐसी होती थी
कि मानो कोई परमेश्वर का वचन पूछ
लेता हो, अहीतोपेल चाहे दाऊद को चाहे
अबशालोम को, जो जो सम्मति देता वह
ऐसी ही होती थी॥

१७ फिर अहीतोपेल ने अबशालोम
से कहा, मुझे बारह हजार पुरुष
छाटने दे, और मै उठकर आज ही रात को
दाऊद का पीछा करूगा। २ और जब
वह थकित और निबल होगा, तब मै
उसे पकडूगा, और डराऊगा, और जितने
लोग उसके साथ है सब भागेगे। और
मै राजा ही को मारूगा, ३ और मै
सब लोगो को तेरे पास लौटा लाऊगा,
जिस मनुष्य का तू खोजी है उसके मिलने
से समस्त प्रजा का मिलना हो जाएगा,
और समस्त प्रजा कुशल क्षेम से रहेगी।
४ यह बात अबशालोम और सब इस्राएली
पुरनियो को उचित मालूम पडी॥

५ फिर अबशालोम ने कहा, एरेकी
हूशै को भी बुला ला, और जो वह कहेगा
हम उसे भी सुने। ६ जब हूशै अबशालोम
के पास आया, तब अबशालोम ने उस से

कहा, अहीतोपेल ने तो इस प्रकार की
बात कही है, क्या हम उसकी बात माने
कि नही? यदि नही, तो तू कह दे।
हूशै ने अबशालोम से कहा, जो सम्मति
अहीतोपेल ने इस बार दी वह अच्छी
नही। ८ फिर हूशै ने कहा, तू तो अपने
पिता और उसके जनो को जानता है
कि वे शूरवीर है, और बच्चा छीनी हुई
रीछनी के समान क्रोधित होगे। और
तेरा पिता योद्धा है, और और लोगो
के साथ रात नही बिताता। ९ इस समय
तो वह किसी गढहे, वा किसी दूसरे स्थान
में छिपा होगा। जब इन मे से पहिले
पहिले कोई कोई मारे जाए, तब इसके सब
सुननेवाले कहने लगेंगे, कि अबशालोम के
पक्षवाले हार गए। १० तब वीर का हृदय,
जो सिंह का सा होता है, उसका भी हियाव
छूट जाएगा, समस्त इस्राएल तो जानता
है कि तेरा पिता वीर है, और उसके संगी
बड़े योद्धा है। ११ इसलिये मेरी सम्मति
यह है कि दान से लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाले
समस्त इस्राएली तेरे पास समुद्रतीर की
बालू के किनको के समान इकट्ठे किए
जाए, और तू आप ही * युद्ध को जाए।
१२ और जब हम उसको किसी न किसी
स्थान में जहा वह मिले जा पकड़ेंगे, तब
जैसे ओस भूमि पर गिरती है वैसे ही हम
उस पर टूट पड़ेंगे, तब न तो वह बचेगा,
और न उसके संगियो मे से कोई बचेगा।
१३ और यदि वह किसी नगर में घुसा
हो, तो सब इस्राएली उस नगर के पास
रस्सिया ले आएंगे, और हम उसे नाले
मे खींचेंगे, यहा तक कि उसका एक छोटा
सा पत्थर भी न रह जाएगा। १४ तब

* मूल में—तेरा मुख।

अबशालोम और सब इस्राएली पुरुषो ने
कहा, एरेकी हूशै की सम्मति अहीतोपेल
की सम्मति से उत्तम है। यहोवा ने तो
अहीतोपेल की अच्छी सम्मति को निष्फल
करने के लिये ठाना था, कि वह अबशालोम
ही पर विपत्ति डाले॥

१५ तब हूशै ने सादोक और एब्यातार
याजको से कहा, अहीतोपेल ने तो
अबशालोम और इस्राएली पुरनियो को
इस इस प्रकार की सम्मति दी, और
मैं ने इस इस प्रकार की सम्मति दी है।
१६ इसलिये अब फुर्ती कर दाऊद के
पास कहला भेजो, कि आज रात जगंली
घाट के पास न ठहरना, अवश्य पार ही
हो जाना, ऐसा न हो कि राजा और
जितने लोग उसके संग हो, सब नाश
हो जाए। १७ योनातन और अहीमास
एनरोगेल के पास ठहरे रहे, और एक
लौंडी जाकर उन्हे सन्देशा दे आती थी,
और वे जाकर राजा दाऊद को सन्देशा
देते थे, क्योंकि वे किसी के देखते नगर
मे नही जा सकते थे। १८ एक छोकरे
ने तो उन्हे देखकर अबशालोम को बताया,
परन्तु वे दोनो फुर्ती से चले गए, और
एक बहूरीमवासी मनुष्य के घर पहुचकर
जिसके आगन मे कुआ था उस मे उतर
गए। १९ तब उसकी स्त्री ने कपड़ा
लेकर कुए के मुह पर बिछाया, और
उसके ऊपर दला हुआ अन्न फैला दिया,
इसलिये कुछ मालूम न पड़ा। २० तब
अबशालोम के सेवक उस घर में उस
स्त्री के पास जाकर कहने लगे, अहीमास
और योनातन कहा है? स्त्री ने उन से
कहा, वे तो उस छोटी नदी के पार
गए। तब उन्हों ने उन्हें ढूंढा, और न
पाकर यरूशलेम को लौटे। २१ जब वे

चले गए, तब ये कुए मे से निकले, और
जाकर दाऊद राजा को समाचार दिया,
और दाऊद से कहा, तुम लोग चलो, फुर्ती
करके नदी के पार हो जाओ, क्योंकि
अहीतोपेल ने तुम्हारी हानि की ऐसी ऐसी
सम्मति दी है। २२ तब दाऊद अपने
सब संगियो समेत उठकर यरदन पार हो
गया, और पह फटने तक उन मे से
एक भी न रह गया जो यरदन के पार
न हो गया हो। २३ जब अहीतोपेल ने
देखा कि मेरी सम्मति के अनुसार काम
नही हुआ, तब उस ने अपने गदहे पर
काठी कसी, और अपने नगर मे जाकर
अपने घर मे गया। और अपने घराने
के विषय जो जो आज्ञा देनी थी वह देकर
अपने को फांसी लगा ली, और वह
मर गया, और उसके पिता के कब्रिस्तान
मे उसे मिट्टी दे दी गई ॥

२४ दाऊद तो महनैम मे पहुचा।
और अबशालोम सब इस्राएली पुरुषो
समेत यरदन के पार गया। २५ और
अबशालोम ने अमासा को योआब के
स्थान पर प्रधान सेनापति ठहराया।
यह अमासा एक पुरुष का पुत्र था जिसका
नाम इस्राएली यित्रो था, और वह
योआब की माता, सरूयाह की बहिन,
अबीगल नाम नाहाश की बेटी के संग
सोया था। २६ और इस्राएलियो ने और
अबशालोम ने गिलाद देश मे छावनी
डाली ॥

२७ जब दाऊद महनैम मे आया, तब
अम्मोनियो के रब्बा के निवासी नाहाश
का पुत्र शोबी, और लोदबरवासी अम्मीएल
का पुत्र माकीर, और रोगलीमवासी
गिलादी बर्जिल्लै, २८ चारपाइया, तसले
मिट्टी के बर्तन, गेहू, जव, मैदा, लोबिया,
मसूर, चबेना, २९ मधु, मक्खन, भेड-
बकरिया, और गाय के दही का पनीर,
दाऊद और उसके संगियो के खाने को
यह सोचकर ले आए, कि जंगल मे वे
लोग भूखे प्यासे और थके मादे होगे ॥

१८ तब दाऊद ने अपने संग के लोगो
की गिनती ली, और उन पर सहस्त्र-
पति और शतपति ठहराए। २ फिर दाऊद
ने लोगो की एक तिहाई तो योआब के,
और एक तिहाई सरूयाह के पुत्र योआब
के भाई अबीशै के, और एक तिहाई गती
इत्तै के, अधिकार मे करके युद्ध मे भेज
दिया। और राजा ने लोगो से कहा,
मै भी अवश्य तुम्हारे साथ चलूगा।
३ लोगो ने कहा, तू जाने न पाएगा।
क्योंकि चाहे हम भाग जाए, तौभी वे
हमारी चिन्ता न करेगे, वरन चाहे हम
मे से आधे मारे भी जाए, तौभी वे हमारी
चिन्ता न करेगे। क्योंकि हमारे सरीखे
दस हजार पुरुष है, इसलिये अच्छा यह
है कि तू नगर मे से हमारी सहायता
करने को तैयार रहे। ४ राजा ने उन
से कहा, जो कुछ तुम्हे भाए वही मै
करूगा। और राजा फाटक की एक ओर
खडा रहा, और सब लोग सौ सौ, और
हजार हजार, करके निकलने लगे।
५ और राजा ने योआब, अबीशै, और
इत्तै को आज्ञा दी, कि मेरे निमित्त उस
जवान, अर्थात् अबशालोम से कोमलता
करना। यह आज्ञा राजा ने अबशालोम
के विषय सब प्रधानो को सब लोगो के
सुनते दी। ६ सो लोग इस्राएल का
साम्हना करने को मैदान मे निकले, और
एप्रैम नाम वन मे युद्ध हुआ। ७ वहा
इस्राएली लोग दाऊद के जनो से हार

गए, और उस दिन ऐसा बड़ा संहार
हुआ कि बीस हजार खेत आए। ८ और
युद्ध उस समस्त देश में फैल गया, और
उस दिन जितने लोग तलवार से मारे
गए, उन से भी अधिक वन के कारण
मर गए। ९ संयोग से अबशालोम और
दाऊद के जनों की भेंट हो गई। अबशालोम
तो एक खच्चर पर चढ़ा हुआ जा रहा
था, कि खच्चर एक बड़े बांज वृक्ष की
घनी डालियों के नीचे से गया, और उसका
सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया, और
वह अधर में लटका रह गया, और उसका
खच्चर निकल गया। १० इसको देखकर
किसी मनुष्य ने योआब को बताया,
कि मैं ने अबशालोम को बांज वृक्ष में
टंगा हुआ देखा। ११ योआब ने
बतानेवाले से कहा, तू ने यह देखा!
फिर क्यों उसे वहीं मारके भूमि पर न
गिरा दिया? तो मैं तुझे दस टुकड़े चांदी
और एक कटिबन्द देता। १२ उस मनुष्य
ने योआब से कहा, चाहे मेरे हाथ में
हजार टुकड़े चांदी तौलकर दिए जाएं,
तौभी राजकुमार के विरुद्ध हाथ न
बढ़ाऊंगा, क्योंकि हम लोगों के सुनते
राजा ने तुझे और अबीशै और इत्तै को
यह आज्ञा दी, कि तुम में से कोई क्यों
न हो उस जवान अर्थात् अबशालोम को
न छूए। १३ यदि मैं धोखा देकर उसका
प्राण लेता, तो तू आप मेरा विरोधी
हो जाता, क्योंकि राजा से कोई बात
छिपी नहीं रहती। १४ योआब ने कहा,
मैं तेरे संग योंही ठहरा नहीं रह सकता!
सो उस ने तीन लकड़ी हाथ में लेकर
अबशालोम के हृदय में, जो बांज वृक्ष में
जीवित लटका था, छेद डाला। १५ तब
योआब के दस हथियार ढोनेवाले जवानों
ने अबशालोम को घेरके ऐसा मारा कि
वह मर गया। १६ फिर योआब ने
नरसिंगा फूंका, और लोग इस्राएल का
पीछा करने से लौटे, क्योंकि योआब
प्रजा को बचाना चाहता था। १७ तब
लोगों ने अबशालोम को उतारके उस वन
के एक बड़े गड़हे में डाल दिया, और
उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर
लगा दिया, और सब इस्राएली अपने
अपने डेरे को भाग गए। १८ अपने
जीते जी अबशालोम ने यह सोचकर
कि मेरे नाम का स्मरण करानेवाला
कोई पुत्र मेरे नहीं है, अपने लिये वह लाठ
खड़ी कराई थी जो राजा की तराई में
है, और लाठ का अपना ही नाम रखा,
जो आज के दिन तक अबशालोम की
लाठ कहलाती है॥

१९ और सादोक के पुत्र अहीमास ने
कहा, मुझे दौड़कर राजा को यह समाचार
देने दे, कि यहोवा ने न्याय करके तुझे
तेरे शत्रुओं के हाथ से बचाया है।
२० योआब ने उस से कहा, तू आज
के दिन समाचार न दे, दूसरे दिन समाचार
देने पाएगा, परन्तु आज समाचार न दे,
इसलिये कि राजकुमार मर गया है।
२१ तब योआब ने एक कूशी से कहा
जो कुछ तू ने देखा है वह जाकर राजा
को बता दे। तो वह कूशी योआब को
दण्डवत् करके दौड़ गया। २२ फिर
सादोक के पुत्र अहीमास ने दूसरी बार
योआब से कहा, जो हो सो हो, परन्तु
मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ जाने दे।
योआब ने कहा, हे मेरे बेटे, तेरे समाचार
का कुछ बदला न मिलेगा, फिर तू क्यों
दौड़ जाना चाहता है? २३ उस ने यह
कहा, जो हो सो हो, परन्तु मुझे दौड़

जाने दे। उसने उस से कहा, दौड़।
तव अहीमास दौड़ा, और तराई से होकर
कूशी के आगे वढ गया॥

२४ दाऊद तो दो फाटको के वीच वैठा
था, कि पहरुआ जो फाटक की छत से
होकर शहरपनाह पर चढ गया था,
उस ने आखे उठाकर क्या देखा, कि एक
मनुष्य अकेला दौडा आता है। २५ जव
पहरुए ने पुकारके राजा को यह वता
दिया, तव राजा ने कहा, यदि अकेला
आता हो, तो सन्देशा लाता होगा।
वह दौडते दौडते निकल आया। २६ फिर
पहरुए ने एक और मनुष्य को दौडते
हुए देख फाटक के रखवाले को पुकारके
कहा, सुन, एक और मनुष्य अकेला दौडा
आता है। राजा ने कहा, वह भी सन्देशा
लाता होगा। २७ पहरुए ने कहा, मुझे
तो ऐसा देख पडता है कि पहले का दौडना
सादोक के पुत्र अहीमास का सा है।
राजा ने कहा, वह तो भला मनुष्य है,
तो भला सन्देशा लाता होगा। २८ तव
अहीमास ने पुकारके राजा से कहा,
कल्याण। फिर उस ने भूमि पर मुह के
वल गिर राजा को दण्डवत् करके कहा,
तेरा परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिस ने
मेरे प्रभु राजा के विरुद्ध हाथ उठानेवाले
मनुष्यो को तेरे वश मे कर दिया है!
२९ राजा ने पूछा, क्या उस जवान
अवशालोम का कल्याण है? अहीमास ने
कहा, जव योआव ने राजा के कर्मचारी
को और तेरे दास को भेज दिया, तव मुझे
वडी भीड देख पडी, परन्तु मालूम न हुआ
कि क्या हुआ था। ३० राजा ने कहा,
हटकर यही खड़ा रह। और वह हटकर
खड़ा रहा। ३१ तव कूशी भी आ गया;
और कूशी कहने लगा, मेरे प्रभु राजा के
लिये समाचार है। यहोवा ने आज न्याय
करके तुझे उन सभो के हाथ से वचाया
है जो तेरे विरुद्ध उठे थे। ३२ राजा ने
कूशी से पूछा, क्या वह जवान अर्थात्
अवशालोम कल्याण से है? कूशी ने
कहा, मेरे प्रभु राजा के शत्रु, और जितने
तेरी हानि के लिये उठे है, उनकी दशा
उस जवान की सी हो। ३३ तव राजा
वहुत घवराया, और फाटक के ऊपर की
अटारी पर रोता हुआ चढने लगा, और
चलते चलते यो कहता गया, कि हाय
मेरे वेटे अवशालोम! मेरे वेटे, हाय!
मेरे वेटे अवशालोम! भला होता कि
मै आप तेरी सन्ती मरता, हाय!
अवशालोम! मेरे वेटे, मेरे वेटे!!

(दाऊद का यरूशलेम को लौटना)

१९ तव योआव को यह समाचार
मिला, कि राजा अवशालोम के लिये
रो रहा है और विलाप कर रहा है। २ इस-
लिये उस दिन का विजय सव लोगो की
समझ मे विलाप ही का कारण वन गया;
क्योकि लोगो ने उस दिन सुना, कि राजा
अपने वेटे के लिये खेदित है। ३ और
उस दिन लोग ऐसा मुह चुराकर नगर
मे घुसे, जैसा लोग युद्ध से भाग आने से
लज्जित होकर मुह चुराते है। ४ और
राजा मुह ढापे हुए चिल्ला चिल्लाकर
पुकारता रहा, कि हाय मेरे वेटे अवशालोम!
हाय अवशालोम, मेरे वेटे, मेरे वेटे!
५ तव योआव घर मे राजा के पास जाकर
कहने लगा, तेरे कर्मचारियो ने आज के
दिन तेरा, और तेरे वेटे-वेटियो का और
तेरी पत्नियो और रखेलियो का प्राण
तो वचाया है, परन्तु तू ने आज के दिन
उन सभो का मुह काला किया है,

६ इसलिये कि तू अपने बैरियों से प्रेम
और अपने प्रेमियों से बैर रखता है।
तू ने आज यह प्रगट किया कि तुझे हाकिमों
और कर्मचारियों की कुछ चिन्ता नहीं,
वरन मैं ने आज जान लिया, कि यदि
हम सब आज मारे जाते और अबशालोम
जीवित रहता, तो तू बहुत प्रसन्न होता।
७ इसलिये अब उठकर बाहर जा, और
अपने कर्मचारियों को शान्ति दे, नहीं
तो मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूं,
कि यदि तू बाहर न जाएगा, तो आज रात
को एक मनुष्य भी तेरे संग न रहेगा,
और तेरे बचपन से लेकर अब तक जितनी
विपत्तियां तुझ पर पड़ी हैं उन सब से
यह विपत्ति बड़ी होगी। ८ तब राजा
उठकर फाटक में जा बैठा। और जब
सब लोगों को यह बताया गया, कि राजा
फाटक में बैठा है, तब सब लोग राजा के
साम्हने आए॥

और इस्राएली अपने अपने डेरे को
भाग गए थे। ९ और इस्राएल के सब
गोत्रों में सब लोग आपस में यह कहकर
झगड़ते थे, कि राजा ने हमें हमारे शत्रुओं
के हाथ से बचाया था, और पलिश्तियों
के हाथ से उसी ने हमें छुड़ाया, परन्तु
अब वह अबशालोम के डर के मारे देश
छोड़कर भाग गया। १० और अबशालोम
जिसको हम ने अपना राजा होने को
अभिषेक किया था, वह युद्ध में मर गया
है। तो अब तुम क्यों चुप रहते? और
राजा को लौटा ले आने की चर्चा क्यों
नहीं करते?

११ तब राजा दाऊद ने सादोक और
एब्यातार याजकों के पास कहला भेजा,
कि यहूदी पुरनियों से कहो, कि तुम लोग
राजा को भवन पहुंचाने के लिये सब से
पीछे क्यों होते हो जब कि समस्त इस्राएल
की बातचीत राजा के सुनने में आई है,
कि उसको भवन में पहुंचाए? १२ तुम
लोग तो मेरे भाई, वरन मेरी ही हड्डी
और मांस हो, तो तुम राजा को लौटाने
में सब के पीछे क्यों होते हो? १३ फिर
अमासा से यह कहो, कि क्या तू मेरी
हड्डी और मांस नहीं है? और यदि तू
योआब के स्थान पर सदा के लिये सेनापति
न ठहरे, तो परमेश्वर मुझ से वैसा ही
वरन उस से भी अधिक करे। १४ इस
प्रकार उस ने सब यहूदी पुरुषों के मन
ऐसे अपनी ओर खींच लिया कि मानो
एक ही पुरुष था, और उन्हों ने राजा
के पास कहला भेजा, कि तू अपने सब
कर्मचारियों को संग लेकर लौट आ।
१५ तब राजा लौटकर यरदन तक आ
गया, और यहूदी लोग गिलगाल तक
गए कि उस से मिलकर उसे यरदन
पार ले आए॥

१६ यहूदियों के संग गेरा का पुत्र
बिन्यामीनी शिमी भी जो बहूरीमी था
फुर्ती करके राजा दाऊद से भेंट करने
को गया, १७ उसके संग हजार बिन्या-
मीनी पुरुष थे। और शाऊल के घराने का
कर्मचारी सीबा अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस
दासों समेत था, और वे राजा के साम्हने
यरदन के पार पांव पैदल उतर गए।
१८ और एक बेड़ा राजा के परिवार को
पार ले आने, और जिस काम में वह उसे
लगाने चाहे उसी में लगने के लिये पार
गया। और जब राजा यरदन पार जाने
पर था, तब गेरा का पुत्र शिमी उसके
पांवों पर गिरके, १९ राजा से कहने
लगा, मेरा प्रभु मेरे दोष का लेखा न
करे, और जिस दिन मेरा प्रभु राजा

यरूशलेम को छोड आया, उस दिन तेरे
दास ने जो कुटिल काम किया, उसे ऐसा
स्मरण न कर कि राजा उसे अपने ध्यान
मे रखे। २० क्योंकि तेरा दास जानता
है कि मै ने पाप किया, देख, आज अपने
प्रभु राजा से भेट करने के लिये यूसुफ के
समस्त घराने मे से मै ही पहिला आया
हू। २१ तब सरूयाह के पुत्र अबीशै ने
कहा, शिमी ने जो यहोवा के अभिषिक्त
को शाप दिया था, इस कारण क्या
उसको वध करना न चाहिये? २२ दाऊद
ने कहा, हे सरूयाह के बेटो, मुझे तुम
से क्या काम, कि तुम आज मेरे विरोधी
ठहरे हो? आज क्या इस्राएल मे किसी
को प्राण दण्ड मिलेगा? क्या मै नही
जानता कि आज मै इस्राएल का राजा
हुआ हू? २३ फिर राजा ने शिमी
से कहा, तुझे प्राण दण्ड न मिलेगा।
और राजा ने उस से शपथ भी
खाई॥

२४ तब शाऊल का पोता मपीबोशेत
राजा से भेट करने को आया, उस ने
राजा के चले जाने के दिन से उसके
कुशल क्षेम से फिर आने के दिन तक न
अपने पावो के नाखून काटे, और न अपनी
दाढी बनवाई, और न अपने कपडे धुलवाए
थे। २५ तो जब यरूशलेमी राजा से मिलने
को गए, तब राजा ने उस से पूछा, हे
मपीबोशेत, तू मेरे सग क्यो नही गया
था? २६ उस ने कहा, हे मेरे प्रभु,
हे राजा, मेरे कर्मचारी ने मुझे धोखा
दिया था, तेरा दास जो पगु है, इसलिये
तेरे दास ने सोचा, कि मै गदहे पर काठी
कसवाकर उस पर चढ राजा के साथ
चला जाऊगा। २७ और मेरे कर्मचारी
ने मेरे प्रभु राजा के साम्हने मेरी चुगली
खाई है। परन्तु मेरा प्रभु राजा परमेश्वर
के दूत के समान है, और जो कुछ तुझे
भाए वही कर। २८ मेरे पिता का समस्त
घराना तेरी ओर से प्राण दण्ड के योग्य
था, परन्तु तू ने अपने दास को अपनी
मेज पर खानेवालो मे गिना है। मुझे
क्या हक है कि मै राजा की ओर दोहाई
दू? २९ राजा ने उस से कहा, तू अपनी
बात की चर्चा क्यो करता रहता है?
मेरी आज्ञा यह है, कि उस भूमि को तुम
और सीबा दोनो आपस मे बाट लो।
३० मपीबोशेत ने राजा से कहा, मेरे प्रभु
राजा जो कुशल क्षेम से अपने घर आया
है, इसलिये सीबा ही सब कुछ ले ले॥

३१ तब गिलादी बर्जिल्लै रोगलीम से
आया, और राजा के साथ यरदन पार
गया, कि उसको यरदन के पार पहुचाए।
३२ बर्जिल्लै तो वृद्ध पुरुष था, अर्थात्
अस्सी वर्ष की आयु का था, जब तक
राजा महनैम मे रहता था तब तक वह
उसका पालन पोषण करता रहा; क्योकि
वह बहुत धनी था। ३३ तब राजा ने
बर्जिल्लै से कहा, मेरे सग पार चल, और
मै तुझे यरूशलेम मे अपने पास रखकर
तेरा पालन पोषण करूगा। ३४ बर्जिल्लै
ने राजा से कहा, मुझे कितने दिन जीवित
रहना है, कि मै राजा के सग यरूशलेम
को जाऊ? ३५ आज मै अस्सी वर्ष का
हू, क्या मै भले-बुरे का विवेक कर सकता
हू? क्या तेरा दास जो कुछ खाता पीता
है उसका स्वाद पहिचान सकता है?
क्या मुझे गवैय्यो वा गायिकाओ का शब्द
अब सुन पडता है? तेरा दास अब अपने
प्रभु राजा के लिये क्यो बोझ का कारण
हो? ३६ तेरा दास राजा के सग यरदन
पार ही तक जाएगा। राजा इसका

बड़ा बदला मुझे क्यों दे? ३७ अपने
दास को लौटने दे, कि मैं अपने ही नगर
में अपने माता पिता के कब्रिस्तान के
पास मरूं। परन्तु तेरा दास किम्हाम
उपस्थित है, मेरे प्रभु राजा के संग वह
पार जाए, और जैसा तुझे भाए वैसा
ही उस से व्यवहार करना। ३८ राजा
ने कहा, हां, किम्हाम मेरे संग पार चलेगा,
और जैसा तुझे भाए वैसा ही मैं उस से
व्यवहार करूंगा, वरन जो कुछ तू मुझ
से चाहेगा वह मैं तेरे लिये करूंगा।
३९ तब सब लोग यरदन पार गए, और
राजा भी पार हुआ, तब राजा ने बर्जिल्लै
को चूमकर आशीर्वाद दिया, और वह
अपने स्थान को लौट गया॥

(शेबा की राजद्रोह की गोष्ठी)

४० तब राजा गिल्गाल की ओर पार
गया, और उसके संग किम्हाम पार हुआ,
और सब यहूदी लोगों ने और आधे
इस्राएली लोगों ने राजा को पार पहुंचाया।
४१ तब सब इस्राएली पुरुष राजा के
पास आए, और राजा से कहने लगे,
क्या कारण है कि हमारे यहूदी भाई
तुझे चोरी से ले आए, और परिवार
समेत राजा को और उसके सब जनों
को भी यरदन पार ले आए हैं? ४२ सब
यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों को उत्तर
दिया, कि कारण यह है कि राजा हमारे
गोत्र का है। तो तुम लोग इस बात से
क्यों रूठ गए हो? क्या हम ने राजा
का दिया हुआ कुछ खाया है? वा उस ने
हमें कुछ दान दिया है? ४३ इस्राएली
पुरुषों ने यहूदी पुरुषों को उत्तर दिया,
राजा में दस अंश हमारे हैं, और दाऊद
में हमारा भाग तुम्हारे भाग से बड़ा है।
तो फिर तुम ने हमें क्यों तुच्छ जाना?
क्या अपने राजा के लौटा ले आने की
चर्चा पहिले हम ही ने न की थी? और
यहूदी पुरुषों ने इस्राएली पुरुषों से अधिक
कड़ी बातें कहीं॥

२० वहां संयोग से शेबा नाम एक
बिन्यामीनी था, वह ओछा पुरुष
बिक्री का पुत्र था, वह नरसिंगा फूंककर
कहने लगा, दाऊद में हमारा कुछ अंश नहीं,
और न यिशै के पुत्र में हमारा कोई भाग
है, हे इस्राएलियो, अपने अपने डेरे को
चले जाओ! २ इसलिये सब इस्राएली
पुरुष दाऊद के पीछे चलना छोड़कर
बिक्री के पुत्र शेबा के पीछे हो लिए,
परन्तु सब यहूदी पुरुष यरदन से यरूशलेम
तक अपने राजा के संग लगे रहे॥

३ तब दाऊद यरूशलेम को अपने
भवन में आया, और राजा ने उन दस
रखेलियों को, जिन्हें वह भवन की चौकसी
करने को छोड़ गया था, अलग एक घर
में रखा, और उनका पालन पोषण करता
रहा, परन्तु उन से सहवास न किया।
इसलिये वे अपनी अपनी मृत्यु के दिन
तक विधवापन की सी दशा में जीवित
ही बन्द रहीं॥

४ तब राजा ने अमासा से कहा, यहूदी
पुरुषों को तीन दिन के भीतर मेरे पास
बुला ला, और तू भी यहां उपस्थित रहना।
५ तब अमासा यहूदियों को बुलाने गया,
परन्तु उसके ठहराए हुए समय से अधिक
रह गया। ६ तब दाऊद ने अबीशै से
कहा, अब बिक्री का पुत्र शेबा अबशालोम
से भी हमारी अधिक हानि करेगा,
इसलिये तू अपने प्रभु के लोगों को लेकर
उसका पीछा कर, ऐसा न हो कि वह

गढ़वाले नगर पाकर हमारी दृष्टि से छिप
जाए*। ७ तब योआब के जन, और
करेती और पलेती लोग, और सब शूरवीर
उसके पीछे हो लिए, और बिक्री के पुत्र
शेबा का पीछा करने को यरूशलेम से
निकले। ८ वे गिबोन मे उस भारी
पत्थर के पास पहुचे ही थे, कि अमासा
उन से आ मिला। योआब तो योद्धा का
वस्त्र फेंटे से कसे हुए था, और उस फेंटे
में एक तलवार उसकी कमर पर अपनी
म्यान मे बन्धी हुई थी, और जब वह
चला, तब वह निकलकर गिर पडी। ९ तो
योआब ने अमासा से पूछा, हे मेरे भाई,
क्या तू कुशल से है? तब योआब ने
अपना दाहिना हाथ बढाकर अमासा को
चूमने के लिये उसकी दाढी पकडी।
१० परन्तु अमासा ने उस तलवार की
कुछ चिन्ता न की जो योआब के हाथ
में थी, और उस ने उसे अमासा के पेट
मे भोक दी, जिस से उसकी अन्तडिया
निकलकर धरती पर गिर पडी, और उस
ने उसको दूसरी बार न मारा, और वह
मर गया। तब योआब और उसका भाई
अबीशै बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने
को चले। ११ और उसके पास योआब
का एक जवान खडा होकर कहने लगा,
जो कोई योआब के पक्ष और दाऊद की
ओर का हो वह योआब के पीछे हो ले।
१२ अमासा तो सडक के मध्य अपने
लोहू मे लोट रहा था। तो जब उस
मनुष्य ने देखा कि सब लोग खडे हो गए
हैं, तब अमासा को सडक पर से मैदान
में उठा ले गया, और जब देखा कि जितने
उसके पास आते है वे खडे हो जाते है,
तब उस ने उस पर एक कपड़ा डाल
दिया। १३ उसके सडक पर से सरकाए
जाने पर, सब लोग बिक्री के पुत्र शेबा का
पीछा करने को योआब के पीछे हो लिए।
१४ और वह सब इस्राएली गोत्रों में
होकर आबेल और बेतमाका और बेरियो
के देश तक पहुचा, और वे भी इकट्ठे
होकर उसके पीछे हो लिए। १५ तब
उन्हो ने उसको बेतमाका के आबेल में
घेर लिया, और नगर के साम्हने ऐसा
दमदमा बान्धा कि वह शहरपनाह से सट
गया, और योआब के संग के सब लोग
शहरपनाह को गिराने के लिये धक्का देने
लगे। १६ तब एक बुद्धिमान स्त्री ने
नगर मे से पुकारा, सुनो! सुनो! योआब
से कहो, कि यहा आए, ताकि मै उस से
कुछ बाते करू। १७ जब योआब उसके
निकट गया, तब स्त्री ने पूछा, क्या तू
योआब है? उस ने कहा, हा, मै वही
हू। फिर उस ने उस से कहा, अपनी
दासी के वचन सुन। उस ने कहा, मै तो
सुन रहा हू। १८ वह कहने लगी,
प्राचीनकाल मे तो लोग कहा करते थे, कि
आबेल मे पूछा जाए, और इस रीति
झगडे को निपटा देते थे। १९ मै तो
मेलमिलापवाले और विश्वासयोग्य इस्रा-
एलियो मे से हू, परन्तु तू एक प्रधान
नगर* नाश करने का यत्न करता है, तू
यहोवा के भाग को क्यो निगल जाएगा?
२० योआब ने उत्तर देकर कहा, यह
मुझ से दूर हो, दूर, कि मै निगल जाऊ
वा नाश करू! २१ बात ऐसी नही है।
शेबा नाम एप्रैम के पहाडी देश का एक
पुरुष जो बिक्री का पुत्र है, उस ने दाऊद

* मूल में—हमारी आख निकाले।

* मूल में—नगर और मा।

राजा के विरुद्ध हाथ उठाया है, सो तुम
लोग केवल उसी को सौंप दो, तब मैं
नगर को छोड़कर चला जाऊंगा। स्त्री
ने योआब से कहा, उसका सिर शहरपनाह
पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा।
२२ तब स्त्री अपनी बुद्धिमानी से सब
लोगों के पास गई। तब उन्हों ने बिक्री
के पुत्र शेबा का सिर काटकर योआब के
पास फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा
फूंका, और सब लोग नगर के पास से
अलग अलग होकर अपने अपने डेरे को
गए। और योआब यरूशलेम को राजा के
पास लौट गया॥

२३ योआब तो समस्त इस्राएली सेना
के ऊपर प्रधान रहा, और यहोयादा
का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों
के ऊपर था, २४ और अदोराम बेगारों
के ऊपर था, और अहीलूद का पुत्र
यहोशापात इतिहास का लेखक था,
२५ और शया मन्त्री था, और सादोक
और एब्यातार याजक थे, २६ और
याईरी ईरा भी दाऊद का एक मन्त्री था॥

(गिबोनियों का पलटा लिया जाना)

२१ दाऊद के दिनों में लगातार
तीन बरस तक अकाल पड़ा, तो
दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की*। यहोवा
ने कहा, यह शाऊल और उसके खूनी
घराने के कारण हुआ, क्योंकि उस ने
गिबोनियों को मरवा डाला था। २ तब
राजा ने गिबोनियों को बुलाकर उन से
बातें की। गिबोनी लोग तो इस्राएलियों
में से नहीं थे, वे बचे हुए एमोरियों में से
थे, और इस्राएलियों ने उनके साथ
शपथ खाई थी, परन्तु शाऊल को जो
इस्राएलियों और यहूदियों के लिये जलन
हुई थी, इस से उस ने उन्हें मार डालने
के लिये यत्न किया था॥

३ तब दाऊद ने गिबोनियों से पूछा,
मैं तुम्हारे लिये क्या करूं? और क्या
करके ऐसा प्रायश्चित करूं, कि तुम यहोवा
के निज भाग को आशीर्वाद दे सको?
४ गिबोनियों ने उस से कहा, हमारे और
शाऊल वा उसके घराने के मध्य रुपये
पैसे* का कुछ झगड़ा नहीं, और न हमारा
काम है कि किसी इस्राएली को मार
डालें। उस ने कहा, जो कुछ तुम कहो,
वही मैं तुम्हारे लिये करूंगा। ५ उन्हों ने
राजा से कहा, जिस पुरुष ने हम को नाश
कर दिया, और हमारे विरुद्ध ऐसी युक्ति
की कि हम ऐसे सत्यानाश हो जाएं, कि
इस्राएल के देश में आगे को न रह सकें,
६ उसके वंश के सात जन हमें सौंप दिए
जाएं, और हम उन्हें यहोवा के लिये
यहोवा के चुने हुए शाऊल की गिबा नाम
बस्ती में फांसी देंगे। राजा ने कहा, मैं
उनको सौंप दूंगा। ७ परन्तु दाऊद ने
और शाऊल के पुत्र योनातन ने आपस में
यहोवा की शपथ खाई थी, इस कारण
राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत को
जो शाऊल का पोता था बचा रखा।
८ परन्तु अर्मोनी और मपीबोशेत नाम,
अय्या की बेटी रिस्पा के दोनों पुत्र जो
शाऊल से उत्पन्न हुए थे, और शाऊल
की बेटी मीकल के पांचों बेटे, जो वह
महोलवासी बर्जिल्लै के पुत्र अद्रीएल की
ओर से थे, इनको राजा ने पकड़वाकर
९ गिबोनियों के हाथ सौंप दिया, और
उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर यहोवा के साम्हने

* मूल में—यहोवा का दर्शन ढूंढा।

* मूल में—सोने चान्दी।

फासी दी, और सातो एक साथ नाश
हुए। उनका मार डाला जाना तो कटनी
के पहिले दिनो मे, अर्थात् जव की कटनी
के आरम्भ मे हुआ। १० तव अय्या
की वेटी रिस्पा ने टाट लेकर, कटनी के
आरम्भ से लेकर जव तक आकाश से
उन पर अत्यन्त वृष्टि न पडी, तव तक
चट्टान पर उसे अपने नीचे विछाये रही,
और न तो दिन मे आकाश के पक्षियो को,
और न रात मे वनैले पशुओ को उन्हे
छूने* दिया। ११ जव अय्या की वेटी
शाऊल की रखेली रिस्पा के इस काम
का समाचार दाऊद को मिला, १२ तव
दाऊद ने जाकर शाऊल और उसके पुत्र
योनातन की हड्डियो को गिलादी यावेश
के लोगो से ले लिया, जिन्हो ने उन्हे
वेतशान के उस चौक से चुरा लिया था,
जहा पलिश्तियो ने उन्हे उस दिन टागा
था, जव उन्हो ने शाऊल को गिल्वो पहाड
पर मार डाला था, १३ तो वह वहा
से शाऊल और उसके पुत्र योनातन की
हड्डियो को ले आया, और फासी पाए
हुओ की हड्डिया भी इकट्ठी की गईं।
१४ और शाऊल और उसके पुत्र योनातन
की हड्डिया विन्यामीन के देश के जेला मे
शाऊल† के पिता कीश के कव्रिस्तान
गाडी गईं, और दाऊद की सव आज्ञाओ
के अनुसार काम हुआ। और उसके वाद
परमेश्वर ने देश के लिये प्रार्थना सुन ली।

(दाऊद का पलिश्तियों पर विजय पाना)

१५ पलिश्तियो ने इस्राएल से फिर
युद्ध किया, और दाऊद अपने जनो समेत
जाकर पलिश्तियो से लडने लगा, परन्तु
दाऊद थक गया। १६ तव यिशवोवनोव,
जो रपाई के वंश का था, और उसके भाले
का फल तौल मे तीन सौ शेकेल पीतल का
था, और वह नई तलवार* वान्धे हुए
था, उस ने दाऊद को मारने को ठाना।
१७ परन्तु सरूयाह के पुत्र अवीशै ने
दाऊद की सहायता करके उस पलिश्ती
को ऐसा मारा कि वह मर गया। तव
दाऊद के जनो ने शपथ खाकर उस से
कहा, तू फिर हमारे संग युद्ध को जाने न
पाएगा, ऐसा न हो कि तेरे मरने से इस्राएल
का दिया वुझ जाए॥

१८ इसके वाद पलिश्तियो के साथ
गोव मे फिर युद्ध हुआ, उस समय हूशाई
सिव्वकै ने रपाईवंशी सप को मारा।
१९ और गोव मे पलिश्तियों के साथ
फिर युद्ध हुआ, उस मे वेतलेहेमवासी
यारयोरगीम के पुत्र एल्हनान ने गती
गोल्यत को मार डाला, जिसके वर्छे की
छड जोलाहे की डोंगी के समान थी।
२० फिर गत मे भी युद्ध हुआ, और वहा
एक वड़ी डील का रपाईवंशी पुरुष था,
जिसके एक एक हाथ पाव मे, छ छ
उगली, अर्थात् गिनती मे चौवीस उगलिया
थीं। २१ जव उस ने इस्राएल को लल-
कारा, तव दाऊद के भाई शिमा के पुत्र
यहोनातान ने उसे मारा। २२ ये ही
चार गत मे उस रपाई से उत्पन्न हुए थे,
और वे दाऊद और उसके जनो से मार
डाले गए॥

(दाऊद का एक भजन)

२२ और जिस समय यहोवा ने
दाऊद को उसके सव शत्रुओ और
शाऊल के हाथ से वचाया था, तव उस ने

* मूल में—उन पर विश्राम करने।
† मूल में—इस।

* वा नये हथियार।

यहोवा के लिये इस गीत के वचन गाए
२ उस ने कहा,
यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा
गढ, मेरा छुडानेवाला,
३ मेरा चट्टानरूपी परमेश्वर है,
जिसका मै शरणागत हू,
मेरी ढाल, मेरा बचानेवाला सीग,
मेरा ऊचा गढ, और मेरा
शरणस्थान है,
हे मेरे उद्धारकर्त्ता, तू उपद्रव से
मेरा उद्धार किया करता है ॥
४ मै यहोवा को जो स्तुति के योग्य
है पुकारूगा,
और अपने शत्रुओ से बचाया
जाऊगा ॥
५ मृत्यु के तरगो ने तो मेरे चारो
ओर घेरा डाला,
नास्तिकपन की धाराओ ने मुझ
को घबडा दिया था,
६ अधोलोक की रस्सिया मेरे चारो
ओर थी,
मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने थे ॥
७ अपने सकट में मै ने यहोवा को
पुकारा,
और अपने परमेश्वर के सम्मुख
चिल्लाया ।
और उस ने मेरी बात को अपने
मन्दिर मे से सुन लिया,
और मेरी दोहाई उसके कानो
में पहुची ॥
८ तब पृथ्वी हिल गई और डोल
उठी,
और आकाश की नेवें कापकर
बहुत ही हिल गईं,
क्योकि वह अति क्रोधित हुआ
था ॥
९ उसके नथनो से धुआ निकला,
और उसके मुह से आग निकलकर
भस्म करने लगी,
जिस से कोयले दहक उठे ॥
१० और वह स्वर्ग को झुकाकर नीचे
उतर आया,
और उसके पावो के तले घोर
अधकार छाया था ॥
११ और वह करूब पर सवार होकर
उडा,
और पवन के पखो पर चढकर
दिखाई दिया ॥
१२ और उस ने अपने चारो ओर के
अधियारे को, मेघो * के समूह,
और आकाश की काली घटाओ
को अपना मण्डप बनाया ॥
१३ उसके सम्मुख की झलक तो
उसके आगे आगे थी,
आग के कोयले दहक उठे ॥
१४ यहोवा आकाश मे से गरजा,
और परमप्रधान ने अपनी वाणी
सुनाई ॥
१५ उस ने तीर चला चलाकर मेरे
शत्रुओ को † तितर बितर कर
दिया,
और बिजली गिरा गिराकर
उसको परास्त कर दिया ॥
१६ तब समुद्र की थाह दिखाई देने
लगी,
और जगत की नेवें खुल गईं,
यह तो यहोवा की डाट से,
और उसके नथनो की सास की
झोक से हुआ ॥

---

* मूल में—जलों।
† मूल में—उनको।

१७ उस ने ऊपर से हाथ बढाकर
मुझे थाम लिया,
और मुझे गहरे जल मे से खीचकर
बाहर निकाला ।।
१८ उस ने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से,
और मेरे वैरियो से, जो मुझ से
अधिक सामर्थी थे, मुझे छुड़ा
लिया ।।
१९ उन्हो ने मेरी विपत्ति के दिन मेरा
साम्हना तो किया,
परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था ।।
२० और उस ने मुझे निकालकर चौडे
स्थान मे पहुचाया,
उस ने मुझ को छुडाया, क्योकि
वह मुझ से प्रसन्न था ।।
२१ यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के
अनुसार व्यवहार किया,
मेरे कामो की शुद्धता के अनुसार
उस ने मुझे बदला दिया ।।
२२ क्योकि मै यहोवा के मार्गो पर
चलता रहा,
और अपने परमेश्वर से मुह
मोडकर दुष्ट न बना ।।
२३ उसके सब नियम तो मेरे साम्हने
बने रहे,
और मै उसकी विधियो से हट
न गया ।।
२४ और मै उसके साथ खरा बना
रहा,
और अधर्म से अपने को बचाए
रहा, जिस मे मेरे फसने का
डर था * ।।
२५ इसलिये यहोवा ने मुझे मेरे धर्म
के अनुसार बदला दिया,
मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे
वह देखता था ।।
२६ दयावन्त के साथ तू अपने को
दयावन्त दिखाता,
खरे पुरुष के साथ तू अपने को
खरा दिखाता है,
२७ शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध
दिखाता,
और टेढे के साथ तू तिरछा
बनता है ।।
२८ और दीन लोगो को तो तू बचाता
है,
परन्तु अभिमानियो पर दृष्टि
करके उन्हे नीचा करता है ।।
२९ हे यहोवा, तू ही मेरा दीपक है,
और यहोवा मेरे अन्धियारे को
दूर करके उजियाला कर देता
है ।।
३० तेरी सहायता से मै दल पर धावा
करता,
अपने परमेश्वर की सहायता से
मै शहरपनाह को फाद जाता
हू ।।
३१ ईश्वर की गति खरी है,
यहोवा का वचन ताया हुआ है,
वह अपने सब शरणागतो की
ढाल है ।।
३२ यहोवा को छोड क्या कोई ईश्वर
है ?
हमारे परमेश्वर को छोड क्या
और कोई चट्टान है ?
३३ यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति
दृढ किला है,
वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग
मे लिए चलता है ।।

* मूल में—अपने अधर्म से ।

३४ वह मेरे पैरो को हरिणियो के से
बना देता है,
और मुझे ऊंचे स्थानो* पर
खड़ा करता है ॥
३५ वह मेरे हाथो को युद्ध करना
सिखाता है,
यहा तक कि मेरी बाहें पीतल के
धनुष को झुका देती हैं ॥
३६ और तू ने मुझ को अपने उद्धार
की ढाल दी है,
और तेरी नम्रता मुझे बढाती है ।
३७ तू मेरे पैरो के लिये स्थान चौडा
करता है,
और मेरे पैर नही फिसले ॥
३८ मैं ने अपने शत्रुओ का पीछा करके
उन्हें सत्यानाश कर दिया,
और जब तक उनका अन्त न
किया तब तक न लौटा ॥
३९ और मैं ने उनका अन्त किया,
और उन्हें ऐसा छेद डाला है
कि वे उठ नही सकते,
वरन वे तो मेरे पावो के नीचे
गिरे पडे हैं ॥
४० और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर
बलवन्त की,
और मेरे विरोधियो को मेरे ही
साम्हने परास्त कर दिया ॥
४१ और तू ने मेरे शत्रुओ की पीठ
मुझे दिखाई,
ताकि मैं अपने बैरियो को काट
डालूं ॥
४२ उन्हो ने बाट तो जोही, परन्तु
कोई बचानेवाला न मिला,
उन्हो ने यहोवा की भी बाट जोही,
परन्तु उस ने उनको कोई
उत्तर न दिया ॥
४३ तब मैं ने उनको कूट कूटकर
भूमि की धूलि के समान कर
दिया,
मैं ने उन्हे सडको और गली कूचो
की कीचड के समान पटककर
चारो ओर फैला दिया ॥
४४ फिर तू ने मुझे प्रजा के झगडो से
छुडाकर अन्य जातियो का प्रधान
होने के लिये मेरी रक्षा की,
जिन लोगो को मैं न जानता था
वे भी मेरे आधीन हो जाएंगे ॥
४५ परदेशी मेरी चापलूसी करेंगे,
वे मेरा नाम सुनते ही मेरे वश
में आएंगे ॥
४६ परदेशी मुर्झाएंगे,
और अपने कोठो में से थरथराते
हुए निकलेंगे ॥
४७ यहोवा जीवित है, मेरी चट्टान
धन्य है,
और परमेश्वर जो मेरे उद्धार
की चट्टान है, उसकी महिमा
हो ॥
४८ धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला
ईश्वर,
जो देश देश के लोगो को मेरे
वश में कर देता है,
४९ और मुझे मेरे शत्रुओ के बीच से
निकालता है,
हां, तू मुझे मेरे विरोधियो से
ऊंचा करता है,
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥
५० इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति
जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद
करूंगा,

* मूल में—मेरे ऊंचे स्थानों।

और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ।।
५१ वह अपने ठहराए हुए राजा का
बडा उद्धार करता है,
वह अपने अभिषिक्त दाऊद, और
उसके वंश पर युगानुयुग करुणा
करता रहेगा ।।

(दाऊद के जीवन के अन्तिम समय के वचन)

२३ दाऊद के अन्तिम वचन ये है
यिशै के पुत्र की यह वाणी है,
उस पुरुष की वाणी है जो ऊंचे पर खड़ा
किया गया,
और याकूब के परमेश्वर का
अभिषिक्त,
और इस्राएल का मधुर भजन
गानेवाला है
२ यहोवा का आत्मा मुझ मे होकर
बोला,
और उसी का वचन मेरे मुह
मे * आया ।।
३ इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है,
इस्राएल की चट्टान ने मुझ से
बाते की है, कि मनुष्यो मे
प्रभुता करनेवाला एक धर्मी
होगा,
जो परमेश्वर का भय मानता
हुआ प्रभुता करेगा,
४ वह मानो भोर का प्रकाश होगा
जब सूर्य निकलता है,
ऐसा भोर जिस मे बादल न हो,
जैसा वर्षा के बाद निर्मल प्रकाश
के कारण भूमि से हरी हरी
घास उगती है ।।

* मूल में—मेरी जीभ पर।

५ क्या मेरा घराना ईश्वर की
दृष्टि मे ऐसा नही है ?
उस ने तो मेरे साथ सदा की
एक ऐसी वाचा बान्धी है,
जो सब बातो मे ठीक की हुई
और अटल भी है।
क्योकि चाहे वह उसको प्रगट न
करे *,
तौभी † मेरा पूर्ण उद्धार और
पूर्ण अभिलाषा का विषय
वही है ।।
६ परन्तु ओछे लोग सब के सब
निकम्मी झाडियो के समान
है जो हाथ से पकडी नही जाती,
७ और जो पुरुष उनको छूए उसे
लोहे और भाले की छड से ‡
सुसज्जित होना चाहिये।
इसलिये वे अपने ही स्थान मे
आग से भस्म कर दिए जाएगे ।।

(दाऊद के वीरों की नामावली)

८ दाऊद के शूरवीरो के नाम ये है
अर्थात् तहकमोनी योशेब्यश्शेबेत, जो
सरदारो मे मुख्य था, वह एस्नी अदीनो
भी कहलाता था, जिस ने एक ही समय
मे आठ सौ पुरुष मार डाले। ९ उसके
बाद अहोही दोदै का पुत्र एलीआजर था।
वह उस समय दाऊद के संग के तीनो वीरो
मे से था, जब कि उन्हो ने युद्ध के लिये
एकत्रित हुए पलिश्तियो को ललकारा,
और इस्राएली पुरुष चले गए थे। १० वह
कमर बान्धकर पलिश्तियो को तब तक

* मूल में—न उगाए। वा, सो क्या वह उसको न फसाएगा।
† वा इस कारण।
‡ मूल में—से भरा।

मारता रहा जब तक उसका हाथ थक
न गया, और तलवार हाथ मे चिपट न
गई, और उस दिन यहोवा ने बडी विजय
कराई, और जो लोग उसके पीछे हो
लिए वे केवल लूटने ही के लिये उसके पीछे
हो लिए। ११ उसके बाद आगे नाम
एक पहाडी का पुत्र शम्मा था। पलिश्तियो
ने इकट्ठे होकर एक स्थान में दल बान्धा,
जहा मसूर का एक खेत था, और लोग
उनके डर के मारे भागे। १२ तब उस
ने खेत के मध्य में खडे होकर उसे बचाया,
और पलिश्तियो को मार लिया, और
यहोवा ने बडी विजय दिलाई। १३ फिर
तीसो मुख्य सरदारो में से तीन जन कटनी
के दिनो में दाऊद के पास अदुल्लाम नाम
गुफा में आए, और पलिश्तियो का दल
रपाईम नाम तराई में छावनी किए हुए
था। १४ उस समय दाऊद गढ में था,
और उस समय पलिश्तियो की चौकी
बेतलेहेम में थी। १५ तब दाऊद ने
बडी अभिलाषा के साथ कहा, कौन मुझे
बेतलेहेम के फाटक के पास के कुए का
पानी पिलाएगा? १६ तो वे तीनो वीर
पलिश्तियो की छावनी मे टूट पडे, और
बेतलेहेम के फाटक के कुए मे पानी भरके
दाऊद के पास ले आए। परन्तु उस ने
पीने से इनकार किया, और यहोवा के
साम्हने अर्घ करके उण्डेला, १७ और
कहा, हे यहोवा, मुझ से ऐसा काम दूर
रहे। क्या मैं उन मनुष्यो का लोहू पीऊं
जो अपने प्राणो पर खेलकर गए थे?
इसलिये उस ने उस पानी को पीने से
इनकार किया। इन तीन वीरो ने तो
ये ही काम किए। १८ और अबीशै जो
सरूयाह के पुत्र योआब का भाई था, वह
तीनो में से मुख्य था। उस ने अपना
भाला चलाकर तीन सौ को मार डाला,
और तीनो में नामी हो गया। १९ क्या
वह तीनो से अधिक प्रतिष्ठित न था?
और इसी से वह उनका प्रधान हो गया,
परन्तु मुख्य तीनो के पद को न पहुचा।
२० फिर यहोयादा का पुत्र बनायाह था,
जो कबसेलवासी एक बडे काम करनेवाले
वीर का पुत्र था, उस ने सिंह सरीखे
दो मोआबियो को मार डाला। और बर्फ
के समय उस ने एक गडहे में उतरके एक
सिंह को मार डाला। २१ फिर उस ने
एक रूपवान् मिस्री पुरुष को मार डाला।
मिस्री तो हाथ में भाला लिए हुए था,
परन्तु बनायाह एक लाठी ही लिए हुए
उसके पास गया, और मिस्री के हाथ से
भाला को छीनकर उसी के भाले से उसे
घात किया। २२ ऐसे ऐसे काम करके
यहोयादा का पुत्र बनायाह उन तीनो वीरो
में नामी हो गया। २३ वह तीसो से
अधिक प्रतिष्ठित तो था, परन्तु मुख्य तीनो
के पद को न पहुचा। उसको दाऊद ने
अपनी निज सभा का सभासद नियुक्त
किया।

२४ फिर तीसो मे योआब का भाई
असाहेल, बेतलेहेमी दोदो का पुत्र एल्हानान,
२५ हेरोदी शम्मा, और एलीका, पेलेती
हेलेम, २६ तकोई इक्केश का पुत्र ईरा,
२७ अनातोती अबीएजेर, हूशाई मबुन्ने,
२८ अहोही सल्मोन, नतोपाही महरै,
२९ एक और नतोपाही बाना का पुत्र
हेलेब, बिन्यामीनिया के गिबा नगर के
रीबै का पुत्र इत्तै, ३० पिरातोनी, बनायाह,
गाश के नालो के पास रहनेवाला हिद्दै,
३१ अराबा का अबीअल्बोन, बहूरीमी
अजमावेत, ३२ शालबोनी एल्यहबा,
याशेन के वंश में से योनातन, ३३ पहाडी

शम्मा, अरारी शारार का पुत्र अहीआम,
३४ अहसबै का पुत्र एलीपेलेप्त माका
देश का, गीलोई अहीतोपेल का पुत्र
एलीआम, ३५ कर्म्मेली हेस्रो, अराबी पारै
३६ सोबाई नातान का पुत्र यिगाल, गादी
बानी, ३७ अम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै
को सरूयाह के पुत्र योआब का हथियार
ढोनेवाला था, ३८ येतेरी ईरा, और गारेब,
३९ और हित्ती ऊरिय्याह था सब
मिलाकर सैंतीस थे।

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना, और इस पाप का दण्ड भोगना, और पापमोचन पाना)

२४ और यहोवा का कोप इस्राए-
लियो पर फिर भडका, और उस ने
दाऊद को इनकी हानि के लिये यह कहकर
उभारा, कि इस्राएल और यहूदा की
गिनती ले। २ सो राजा ने योआब
सेनापति से जो उसके पास था कहा, तू
दान से बेर्शेबा तक रहनेवाले सब इस्राएली
गोत्रो मे इधर उधर घूम, और तुम लोग
प्रजा की गिनती लो, ताकि मै जान लू कि
प्रजा की कितनी गिनती है। ३ योआब
ने राजा से कहा, प्रजा के लोग कितने ही
क्यो न हो, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको
सौगुणा बढा दे, और मेरा प्रभु राजा
इसे अपनी आखो से देखने भी पाए,
परन्तु, हे मेरे प्रभु, हे राजा, यह बात तू
क्यो चाहता है? ४ तौभी राजा की
आज्ञा योआब और सेनापतियो पर प्रबल
हुई। सो योआब और सेनापति राजा के
सम्मुख से इस्राएली प्रजा की गिनती
लेने को निकल गए। ५ उन्हो ने यरदन
पार जाकर अरोएर नगर की दाहिनी ओर
डेरे खडे किए जो गाद के नाले के बीच
मे और याजेर की ओर है। ६ तब वे
गिलाद मे और तहतीम्होदशी नाम देश
मे गए, फिर दान्यान को गए, और चक्कर
लगाकर सीदोन मे पहुचे, ७ तब वे सोर
नाम दृढ गढ, और हिव्वियो और कनानियो
के सब नगरो मे गए, और उन्हो ने
यहूदा देश की दक्खिन दिशा मे बेर्शेबा
मे दौरा निपटाया। ८ और सब देश मे
इधर उधर घूम घूमकर वे नौ महीने
और बीस दिन के बीतने पर यरूशलेम
को आए। ९ तब योआब ने प्रजा की
गिनती का जोड राजा को सुनाया, और
तलवार चलानेवाले योद्धा इस्राएल के तो
आठ लाख, और यहूदा के पाच लाख
निकले॥

१० प्रजा की गणना करने के बाद
दाऊद का मन व्याकुल हुआ। और दाऊद
ने यहोवा से कहा, यह काम जो मै ने
किया वह महापाप है। तो अब, हे यहोवा,
अपने दास का अधर्म दूर कर, क्योकि
मुझ से बडी मूर्खता हुई है। ११ बिहान
को जब दाऊद उठा, तब यहोवा का यह
वचन गाद नाम नबी के पास जो दाऊद
का दर्शी था पहुचा, १२ कि जाकर दाऊद
से कह, कि यहोवा यो कहता है, कि मै
तुझ को तीन विपत्तिया दिखाता हू, उन
मे से एक को चुन ले, कि मै उसे तुझ पर
डालू। १३ सो गाद ने दाऊद के पास
जाकर इसका समाचार दिया, और उस
से पूछा, क्या तेरे देश मे सात वर्ष का
अकाल पडे? वा तीन महीने तक तेरे
शत्रु तेरा पीछा करते रहे और तू उन से
भागता रहे? वा तेरे देश मे तीन दिन
तक मरी फैली रहे? अब सोच विचार कर,
कि मै अपने भेजनेवाले को क्या उत्तर
दू। १४ दाऊद ने गाद से कहा, मै बडे

सकट मे हू, हम यहोवा के हाथ मे पडे,
क्योंकि उसकी दया बडी है, परन्तु मनुष्य
के हाथ मे मै न पडूगा। १५ तब यहोवा
इस्राएलियो मे बिहान मे ले ठहराए हुए
समय तक मरी फैलाए रहा, और दान
मे लेकर बेर्शेबा तक रहनेवाली प्रजा मे
मे सत्तर हजार पुरुष मर गए। १६ परन्तु
जब दूत ने यरूशलेम का नाश करने को
उस पर अपना हाथ बढाया, तब यहोवा
वह विपत्ति डालकर शोकित हुआ, और
प्रजा के नाश करनेवाले दूत मे कहा,
बस कर, अब अपना हाथ खीच। और
यहोवा का दूत उस समय अरौना नाम एक
यबूसी के खलिहान के पास था। १७ तो
जब प्रजा का नाश करनेवाला दूत दाऊद
को दिखाई पडा, तब उस ने यहोवा से
कहा, देख, पाप तो मै ही ने किया, और
कुटिलता मै ही ने की है; परन्तु इन भेडो
ने क्या किया है? सो तेरा हाथ मेरे और
मेरे पिता के घराने के विरुद्ध हो॥

१८ उसी दिन गाद ने दाऊद के पास
आकर उस स कहा, जाकर अरौना यबूसी
के खलिहान मे यहोवा की एक वेदी बनवा।
१९ सो दाऊद यहोवा की आज्ञा के
अनुसार गाद का वह वचन मानकर वहा
गया। २० जब अरौना ने दृष्टि कर दाऊद
को कर्मचारियो समेत अपनी ओर आते
देखा, तब अरौना ने निकलकर भूमि पर
मुह के बल गिर राजा को दण्डवत् की।
२१ और अरौना ने कहा, मेरा प्रभु राजा
अपने दास के पास क्यो पधारा है? दाऊद
ने कहा, तुझ से यह खलिहान मोल लेने
आया हू, कि यहोवा की एक वेदी बनवाऊ,
इसलिये कि यह व्याधि प्रजा पर से दूर
की जाए। २२ अरौना ने दाऊद से कहा,
मेरा प्रभु राजा जो कुछ उसे अच्छा लगे
सो लेकर चढाए, देख, होमबलि के लिये
तो बैल है, और दावने के हथियार, और
बैलो का सामान ईंधन का काम देगे।
२३ यह सब अरौना ने राजा को दे दिया।
फिर अरौना ने राजा से कहा, तेरा परमेश्वर
यहोवा तुझ से प्रसन्न होए। २४ राजा ने
अरौना से कहा, ऐसा नही, मै ये वस्तुए
तुझ से अवश्य दाम देकर लूगा, मै अपने
परमेश्वर यहोवा को सेंतमेंत के होमबलि
नही चढाने का। सो दाऊद ने खलिहान
और बैलो को चादी के पचास शेकेल मे
मोल लिया। २५ और दाऊद ने वहा
यहोवा की एक वेदी बनवाकर होमबलि
और मेलबलि चढाए। और यहोवा ने
देश के निमित्त बिनती सुन ली, तब वह
व्याधि इस्राएल पर से दूर हो गई॥

राजाओं का वृत्तान्त—पहिला भाग

(अदोनिय्याह की राजद्रोह की गोष्ठी और
उसका तोड़ा जाना)

१ दाऊद राजा बूढा वरन बहुत पुर-
निया हुआ, और यद्यपि उसको कपडे
ओढाये जाते थे, तौभी वह गर्म न होता था।
२ सो उसके कर्मचारियो ने उस से कहा,
हमारे प्रभु राजा के लिये कोई जवान कुवारी
ढूढी जाए, जो राजा के सम्मुख रहकर उसकी
सेवा किया करे और तेरे पास * लेटा करे,
कि हमारे प्रभु राजा को गर्मी पहुचे।
३ तब उन्हो ने समस्त इस्राएली देश मे
सुन्दर कुवारी ढूढते ढूढते अबीशग नाम एक
शूनेमिन को पाया, और राजा के पास ले
आए। ४ वह कन्या बहुत ही सुन्दर थी,
और वह राजा की दासी होकर उसकी सेवा
करती रही; परन्तु राजा उस से सहवास
न हुआ॥

५ तब हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सिर
ऊचा करके कहने लगा कि मै राजा हूगा,
सो उस ने रथ और सवार और अपने आगे
आगे दौडने को पचास पुरुष रख लिए।
६ उसके पिता ने तो जन्म से लेकर उसे
कभी यह कहकर उदास न किया था कि
तू ने ऐसा क्यो किया। वह बहुत रूपवान
था, और अबशालोम के पीछे उसका जन्म
हुआ था। ७ और उस ने सरूयाह के पुत्र
योआब से और एब्यातार याजक से बातचीत
की, और उन्हो ने उसके पीछे होकर उसकी
सहायता की। ८ परन्तु सादोक याजक
यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान नबी,
शिमी रेई, और दाऊद के शूरवीरो ने अदो-
निय्याह का साथ न दिया। ९ और अदो-
निय्याह ने जोहेलेत नाम पत्थर के पास जो
एनरोगेल के निकट है, भेड-बैल और तैयार
किए हुए पशु बलि किए, और अपने भाई
सब राजकुमारो को, और राजा के सब
यहूदी कर्मचारियो को बुला लिया।
१० परन्तु नातान नबी, और बनायाह और
शूरवीरो को और अपने भाई सुलैमान को
उस ने न बुलाया॥

११ तब नातान ने सुलैमान की माता
बतशेबा से कहा, क्या तू ने सुना है कि हग्गीत
का पुत्र अदोनिय्याह राजा बन बैठा है और
हमारा प्रभु दाऊद इसे नही जानता?
१२ इसलिये अब आ, मै तुझे ऐसी सम्मति
देता हू, जिस से तू अपना और अपने पुत्र
सुलैमान का प्राण बचाए। १३ तू दाऊद
राजा के पास जाकर, उस से यो पूछ, कि हे
मेरे प्रभु! हे राजा! क्या तू ने शपथ
खाकर अपनी दासी से नही कहा, कि तेरा
पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा, और वह
मेरी राजगद्दी पर विराजेगा? फिर अदो-
निय्याह क्यो राजा बन बैठा है? १४ और
जब तू वहा राजा से ऐसी बाते करती रहेगी,
तब मै तेरे पीछे आकर, तेरी बातो को पुष्ट
करूगा॥

१५ तब बतशेबा राजा के पास कोठरी
मे गई. राजा तो बहुत बूढा था, और
उसकी सेवा टहल शूनेमिन अबीशग करती
थी। १६ और बतशेबा ने झुककर राजा
को दण्डवत् की, और राजा ने पूछा, तू क्या
चाहती है? १७ उस ने उत्तर दिया, हे मेरे
प्रभु, तू ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की

* मूल में—तेरी गोद में।

शपथ खाकर अपनी दासी से कहा था कि
तेरा पुत्र सुलैमान मेरे पीछे राजा होगा और
वह मेरी गद्दी पर विराजेगा। १८ अब देख
अदोनिय्याह राजा बन बैठा है, और अब
तक मेरा प्रभु राजा इसे नहीं जानता।
१९ और उस ने बहुत से बैल तैयार किए,
पशु और भेड़ें बलि की, और सब राजकुमारों
को और एब्यातार याजक और योआब सेना-
पति को बुलाया है, परन्तु तेरे दास सुलैमान
को नहीं बुलाया। २० और हे मेरे प्रभु!
हे राजा! सब इस्राएली तुझे ताक रहे हैं
कि तू उन से कहे, कि हमारे प्रभु राजा की
गद्दी पर उसके पीछे कौन बैठेगा। २१ नहीं
तो जब हमारा प्रभु राजा, अपने पुरखाओं
के संग सोएगा, तब मैं और मेरा पुत्र सुलैमान
दोनों अपराधी गिने जाएंगे॥

२२ यों बतशेबा राजा से बातें कर ही
रही थी, कि नातान नबी भी आ गया।
२३ और राजा से कहा गया कि नातान
नबी हाजिर है, तब वह राजा के सम्मुख
आया, और मुंह के बल गिरकर राजा को
दण्डवत् की। २४ और नातान कहने
लगा, हे मेरे प्रभु, हे राजा! क्या तू ने कहा
है, कि अदोनिय्याह मेरे पीछे राजा होगा
और वह मेरी गद्दी पर विराजेगा?
२५ देख उस ने आज नीचे जाकर बहुत से
बैल, तैयार किए हुए पशु और भेड़ें बलि की
हैं, और सब राजकुमारों और सेनापतियों
को और एब्यातार याजक को भी बुला
लिया है, और वे उसके सम्मुख खाते पीते
हुए कह रहे हैं कि अदोनिय्याह राजा जीवित
रहे। २६ परन्तु मुझ तेरे दास को, और
सादोक याजक और यहोयादा के पुत्र बना-
याह, और तेरे दास सुलैमान को उस ने नहीं
बुलाया। २७ क्या यह मेरे प्रभु राजा की
ओर से हुआ? तू ने तो अपने दास को यह
नहीं जताया है, कि प्रभु राजा की गद्दी पर
कौन उसके पीछे विराजेगा॥

२८ दाऊद राजा ने कहा, बतशेबा को
मेरे पास बुला लाओ। तब वह राजा के
पास आकर उसके साम्हने खड़ी हुई।
२९ राजा ने शपथ खाकर कहा, यहोवा जो
मेरा प्राण सब जोखिमों से बचाता आया है,
३० उसके जीवन की शपथ, जैसा मैं ने तुझ
से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ
खाकर कहा था, कि तेरा पुत्र सुलैमान मेरे
पीछे राजा होगा, और वह मेरे बदले मेरी
गद्दी पर विराजेगा, वैसा ही मैं निश्चय आज
के दिन करूंगा। ३१ तब बतशेबा ने भूमि
पर मुंह के बल गिर राजा को दण्डवत् करके
कहा, मेरा प्रभु राजा दाऊद सदा तक
जीवित रहे! ३२ तब दाऊद राजा ने कहा,
मेरे पास सादोक याजक नातान नबी, यहो-
यादा के पुत्र बनायाह को बुला लाओ। सो
वे राजा के साम्हने आए। ३३ राजा ने
उन से कहा, अपने प्रभु के कर्मचारियों को
साथ लेकर मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निज
खच्चर पर चढ़ाओ, और गीहोन को ले
जाओ, ३४ और वहां सादोक याजक
और नातान नबी इस्राएल का राजा होने
को उसका अभिषेक करें, तब तुम सब नर-
सिंगा फूंककर कहना, राजा सुलैमान जीवित
रहे। ३५ और तुम उसके पीछे पीछे इधर
आना, और वह आकर मेरे सिंहासन पर
विराजे, क्योंकि मेरे बदले में वही राजा
होगा और उसी को मैं ने इस्राएल और
यहूदा का प्रधान होने को ठहराया है।
३६ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह ने कहा,
आमीन! मेरे प्रभु राजा का परमेश्वर
यहोवा भी ऐसा ही कहे। ३७ जिस रीति
यहोवा मेरे प्रभु राजा के संग रहा, उसी
रीति वह सुलैमान के भी संग रहे, और

उसका राज्य मेरे प्रभु दाऊद राजा के राज्य
से भी अधिक बढ़ाए ॥

३८ तब सादोक याजक और नातान
नबी और यहोयादा का पुत्र बनायाह करे-
तियो और पलेतियो को संग लिए हुए नीचे
गए, और सुलैमान को राजा दाऊद के
खच्चर पर चढ़ाकर गीहोन को ले चले।
३९ तब सादोक याजक ने यहोवा के तम्बू
मे से तेल भरा हुआ सीग निकाला, और
सुलैमान का राज्याभिषेक किया। और वे
नरसिगे फूकने लगे, और सब लोग बोल
उठे, राजा सुलैमान जीवित रहे। ४० तब
सब लोग उसके पीछे पीछे बासुली बजाते
और इतना बडा आनन्द करते हुए ऊपर
गए, कि उनकी ध्वनि से पृथ्वी डोल
उठी * ॥

४१ जब अदोनिय्याह और उसके सब
नेवतहरी खा चुके थे, तब यह ध्वनि उनको
सुनाई पडी। और योआब ने नरसिगे का
शब्द सुनकर पूछा, नगर मे हलचल और
चिल्लाहट का शब्द क्यो हो रहा है?
४२ वह यह कहता ही था, कि एब्यातार
याजक का पुत्र योनातन आया और अदो-
निय्याह ने उस से कहा, भीतर आ, तू तो
भला मनुष्य है, और भला † समाचार भी
लाया होगा। ४३ योनातन ने अदोनिय्याह
से कहा, सचमुच हमारे प्रभु राजा दाऊद ने
सुलैमान को राजा बना दिया। ४४ और
राजा ने सादोक याजक, नातान नबी और
यहोयादा के पुत्र बनायाह और करेतियो
और पलेतियो को उसके संग भेज दिया,
और उन्हो ने उसको राजा के खच्चर पर
चढाया है। ४५ और सादोक याजक, और
नातान नबी ने गीहोन मे उसका राज्या-
भिषेक किया है, और वे वहां से ऐसा
आनन्द करते हुए ऊपर गए है कि नगर मे
हलचल मच गई, और जो शब्द तुम को
सुनाई पड रहा है वही है। ४६ सुलैमान
राजगद्दी पर विराज भी रहा है। ४७ फिर
राजा के कर्मचारी हमारे प्रभु दाऊद राजा
को यह कहकर धन्य कहने आए, कि तेरा
परमेश्वर, सुलैमान का नाम, तेरे नाम से भी
महान करे, और उसका राज्य तेरे राज्य से
भी अधिक बढाए, और राजा ने अपने पलग
पर दण्डवत् की। ४८ फिर राजा ने यह
भी कहा, कि इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा धन्य है, जिस ने आज मेरे देखते
एक को मेरी गद्दी पर विराजमान
किया है ॥

४९ तब जितने नेवतहरी अदोनिय्याह
के संग थे वे सब थरथरा गए, और उठकर
अपना अपना मार्ग लिया। ५० और अदो-
निय्याह सुलैमान से डर कर उठा, और
जाकर वेदी के सीगो को पकड लिया।
५१ तब सुलैमान को यह समाचार मिला
कि अदोनिय्याह सुलैमान राजा से ऐसा डर
गया है कि उस ने वेदी के सीगो को यह कह-
कर पकड लिया है, कि आज राजा सुलैमान
शपथ खाए कि अपने दास को तलवार से
न मार डालेगा। ५२ सुलैमान ने कहा,
यदि वह भलमनसी दिखाए तो उसका एक
बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा, परन्तु
यदि उस मे दुष्टता पाई जाए, तो वह
मारा जाएगा। ५३ तब राजा सुलैमान ने
लोगो को भेज दिया जो उसको वेदी के
पास से उतार ले आए तब उस ने
आकर राजा सुलैमान को दण्डवत् की
और सुलैमान ने उस से कहा, अपने घर
चला जा ॥

---

* मूल में—फट गई।
† मूल में—अच्छा।

(दाऊद की मृत्यु और सुलैमान के राज्य
का आरम्भ)

२ जब दाऊद के मरने का समय निकट
आया, तब उस ने अपने पुत्र सुलैमान
से कहा, २ कि मैं लोक की रीति पर कूच
करनेवाला हूं इसलिये तू हियाव बान्धकर
पुरुषार्थ दिखा। ३ और जो कुछ तेरे पर-
मेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा
करके उसके मार्गों पर चला करना और
जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसा ही
उसकी विधियों तथा आज्ञाओं, और नियमों,
और चितौनियों का पालन करते रहना,
जिस से जो कुछ तू करे और जहां कहीं तू
जाए, उस में तू सफल होए, ४ और
यहोवा अपना वह वचन पूरा करे जो उस ने
मेरे विषय में कहा था, कि यदि तेरी सन्तान
अपनी चाल के विषय में ऐसे सावधान रहे,
कि अपने सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण प्राण से
सच्चाई के साथ नित मेरे सम्मुख चलते
रहें* तब तो इस्राएल की राजगद्दी पर
विराजनेवाले की, तेरे कुल परिवार में घटी
कभी न होगी॥

५ फिर तू स्वयं जानता है, कि सरूयाह
के पुत्र योआब ने मुझ से क्या क्या किया!
अर्थात् उस ने नेर के पुत्र अब्नेर, और येतेर
के पुत्र अमासा, इस्राएल के इन दो सेना-
पतियों से क्या क्या किया। उस ने उन
दोनों को घात किया, और मेल के समय युद्ध
का लोहू बहाकर उस से अपनी कमर का
कमरबन्द और अपने पांवों की जूतियां
भिगो दीं। ६ इसलिये तू अपनी बुद्धि से
काम लेना और उस पक्के बालवाले को
अधोलोक में शांति से उतरने न देना।
७ फिर गिलादी बर्जिल्लै के पुत्रों पर कृपा
रखना, और वे तेरी मेज़ पर खानेवालों में
रहें, क्योंकि जब मैं तेरे भाई अबशालोम के
साम्हने से भागा जा रहा था, तब उन्हों ने
मेरे पास आकर वैसा ही किया था।
८ फिर सुन, तेरे पास बिन्यामीनी गेरा का
पुत्र बहूरीमी शिमी रहता है, जिस दिन मैं
महनैम को जाता था उस दिन उस ने मुझे
कड़ाई से शाप दिया था पर जब वह मेरी
भेंट के लिये यरदन को आया, तब मैं ने उस
से यहोवा की यह शपथ खाई, कि मैं तुझे
तलवार से न मार डालूंगा। ९ परन्तु अब
तू इसे निर्दोष न ठहराना, तू तो बुद्धिमान
पुरुष है, तुझे मालूम होगा कि उसके साथ
क्या करना चाहिये, और उस पक्के बालवाले
का लोहू बहाकर उसे अधोलोक में उतार
देना॥

१० तब दाऊद अपने पुरखाओं के संग
सो गया और दाऊदपुर में उसे मिट्टी दी गई।
११ दाऊद ने इस्राएल पर चालीस वर्ष
राज्य किया, सात वर्ष तो उस ने हेब्रोन में
और तैंतीस वर्ष यरूशलेम में राज्य किया
था। १२ तब सुलैमान अपने पिता दाऊद
की गद्दी पर विराजमान हुआ और उसका
राज्य बहुत दृढ़ हुआ॥

१३ और हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह,
सुलैमान की माता बतशेबा के पास आया,
और बतशेबा ने पूछा, क्या तू मित्रभाव से
आता है? १४ उस ने उत्तर दिया, हां,
मित्रभाव से! फिर वह कहने लगा, मुझे
तुझ से एक बात कहनी है। उस ने कहा,
कह! १५ उस ने कहा, तुझे तो मालूम है
कि राज्य मेरा हो गया था, और समस्त
इस्राएली मेरी ओर मुंह किए थे, कि मैं
राज्य करूं, परन्तु अब राज्य पलटकर मेरे
भाई का हो गया है, क्योंकि वह यहोवा की
ओर से उसको मिला है। १६ इसलिये

* मूल में—मेरे साम्हने चलते रहें।

अब मैं तुझ से एक बात मांगता हू, मुझ से
नाही न करना उस ने कहा, कहे जा।
१७ उस ने कहा, राजा सुलैमान तुझ से
नाही न करेगा, इसलिये उस से कह, कि वह
मुझे शूनेमिन अबीशग को ब्याह दे।
१८ बतशेबा ने कहा, अच्छा, मैं तेरे लिये
राजा से कहूंगी। १९ तब बतशेबा अदो-
निय्याह के लिये राजा सुलैमान से बातचीत
करने को उसके पास गई, और राजा उसकी
भेंट के लिये उठा, और उसे दण्डवत् करके
अपने सिंहासन पर बैठ गया फिर राजा ने
अपनी माता के लिये एक सिंहासन रख
दिया, और वह उसकी दाहिनी ओर बैठ गई।
२० तब वह कहने लगी, मैं तुझ से एक
छोटा सा वरदान मांगती हू इसलिये मुझ से
नाही न करना, राजा ने कहा, हे माता मांग,
मैं तुझ से नाही न करूंगा। २१ उस ने
कहा, वह शूनेमिन अबीशग तेरे भाई अदो-
निय्याह को ब्याह दी जाए। २२ राजा
सुलैमान ने अपनी माता को उत्तर दिया, तू
अदोनिय्याह के लिये शूनेमिन अबीशग ही
को क्यो मागती है? उसके लिये राज्य भी
माग, क्योंकि वह तो मेरा बडा भाई है, और
उसी के लिये क्या! एब्यातार याजक और
सरूयाह के पुत्र योआब के लिये भी मांग।
२३ और राजा सुलैमान ने यहोवा की शपथ
खाकर कहा, यदि अदोनिय्याह ने यह बात
अपने प्राण पर खेलकर न कही हो तो पर-
मेश्वर मुझ से वैसा ही क्या वरन उस से भी
अधिक करे। २४ अब यहोवा जिस ने मुझे
स्थिर किया, और मेरे पिता दाऊद की राज-
गद्दी पर विराजमान किया है और अपने
वचन के अनुसार मेरा घर बसाया है, उसके
जीवन की शपथ आज ही अदोनिय्याह मार
डाला जाएगा। २५ और राजा सुलैमान
ने यहोयादा के पुत्र बनायाह को भेज दिया,
और उस ने जाकर, उसको ऐसा मारा कि
वह मर गया॥

२६ और एब्यातार याजक से राजा ने
कहा, अनातोत में अपनी भूमि को जा,
क्योंकि तू भी प्राणदण्ड के योग्य है। आज
के दिन तो मैं तुझे न मार डालूंगा, क्योंकि
तू मेरे पिता दाऊद के साम्हने प्रभु यहोवा
का सन्दूक उठाया करता था, और उन सब
दु खो में जो मेरे पिता पर पड़े थे तू भी
दु खी था। २७ और सुलैमान ने एब्यातार
को यहोवा के याजक होने के पद से उतार
दिया, इसलिये कि जो वचन यहोवा ने एली
के वंश के विषय में शीलो में कहा था, वह
पूरा हो जाए॥

२८ इसका समाचार योआब तक
पहुचा, योआब अबशालोम के पीछे तो नही
हो लिया था, परन्तु अदोनिय्याह के पीछे हो
लिया था। तब योआब यहोवा के तम्बू को
भाग गया, और वेदी के सीगो को पकड
लिया। २९ जब राजा सुलैमान को यह
समाचार मिला, कि योआब यहोवा के तम्बू
को भाग गया है, और वह वेदी के पास है,
तब सुलैमान ने यहोयादा के पुत्र बनायाह
को यह कहकर भेज दिया, कि तू जाकर उसे
मार डाल। ३० तब बनायाह ने यहोवा
के तम्बू के पास जाकर उससे कहा, राजा की
यह आज्ञा है, कि निकल आ। उस ने कहा,
नही, मैं यही मर जाऊंगा। तब बनायाह ने
लौटकर यह सन्देश राजा को दिया कि
योआब ने मुझे यह उत्तर दिया। ३१ राजा
ने उस से कहा, उसके कहने के अनुसार
उसको मार डाल, और उसे मिट्टी दे, ऐसा
करके निर्दोषो का जो खून योआब ने किया
है, उसका दोष तू मुझ पर से और मेरे पिता
के घराने पर से दूर करेगा। ३२ और
यहोवा उसके सिर वह खून लौटा देगा

क्योंकि उस ने मेरे पिता दाऊद के बिना जाने
अपने से अधिक धर्मी और भले दो पुरुषों
पर, अर्थात् इस्राएल के प्रधान सेनापति नेर
के पुत्र अब्नेर और यहूदा के प्रधान सेनापति
येतेर के पुत्र अमासा पर टूटकर उनको
तलवार से मार डाला था। ३३ यों योआब
के सिर पर और उसकी सन्तान के सिर पर
खून सदा तक रहेगा, परन्तु दाऊद और उसके
वंश और उसके घराने और उसके राज्य
पर* यहोवा की ओर से शांति सदैव तक
रहेगी। ३४ तब यहोयादा के पुत्र बनायाह
ने जाकर योआब को मार डाला, और
उसको जंगल में उसी के घर में मिट्टी दी
गई। ३५ तब राजा ने उसके स्थान पर
यहोयादा के पुत्र बनायाह को प्रधान सेना-
पति ठहराया, और एब्यातार के स्थान पर
सादोक याजक को ठहराया॥

३६ और राजा ने शिमी को बुलवा
भेजा, और उस से कहा, तू यरूशलेम में
अपना एक घर बनाकर वहीं रहना और
नगर से बाहर कहीं न जाना। ३७ तू
निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर
किद्रोन नाले के पार उतरे, उसी दिन तू
निःसन्देह मार डाला जाएगा, और तेरा लोहू
तेरे ही सिर पर पड़ेगा। ३८ शिमी ने
राजा से कहा, बात अच्छी है जैसा मेरे
प्रभु राजा ने कहा है, वैसा ही तेरा दास
करेगा। तब शिमी बहुत दिन यरूशलेम में
रहा। ३९ परन्तु तीन वर्ष के व्यतीत होने
पर शिमी के दो दास, गत नगर के राजा
माका के पुत्र आकीश के पास भाग गए, और
शिमी को यह समाचार मिला, कि तेरे दास
गत में हैं। ४० तब शिमी उठकर अपने
गदहे पर काठी कसकर, अपने दास को ढूंढने
के लिये गत को आकीश के पास गया, और
अपने दासों को गत से ले आया। ४१ जब
सुलैमान राजा को इसका समाचार मिला,
कि शिमी यरूशलेम से गत को गया, और
फिर लौट आया है, ४२ तब उस ने शिमी
को बुलवा भेजा, और उस से कहा, क्या मैं
ने तुझे यहोवा की शपथ न खिलाई थी?
और तुझ से चिताकर न कहा था, कि यह
निश्चय जान रख कि जिस दिन तू निकलकर
कहीं चला जाए, उसी दिन तू निःसन्देह मार
डाला जाएगा? और क्या तू ने मुझ से न
कहा था, कि जो बात मैं ने सुनी, वह अच्छी
है? ४३ फिर तू ने यहोवा की शपथ और
मेरी दृढ़ आज्ञा क्यों नहीं मानी? ४४ और
राजा ने शिमी से कहा, कि तू आप ही अपने
मन में उस सब दुष्टता को जानता है, जो तू
ने मेरे पिता दाऊद से की थी? इसलिये
यहोवा तेरे सिर पर तेरी दुष्टता लौटा देगा।
४५ परन्तु राजा सुलैमान धन्य रहेगा, और
दाऊद का राज्य यहोवा के साम्हने सदैव
दृढ़ रहेगा। ४६ तब राजा ने यहोयादा
के पुत्र बनायाह को आज्ञा दी, और उस ने
बाहर जाकर, उसको ऐसा मारा कि वह भी
मर गया। और सुलैमान के हाथ में राज्य
दृढ़ हो गया॥

३ फिर राजा सुलैमान मिस्र के राजा
फिरौन की बेटी को ब्याह कर उसका
दामाद बन गया, और उसको दाऊदपुर में
लाकर जब तक अपना भवन और यहोवा का
भवन और यरूशलेम के चारों ओर की
शहरपनाह न बनवा चुका, तब तक उसको
वहीं रखा। २ क्योंकि प्रजा के लोग तो
ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते थे और उन
दिनों तक यहोवा के नाम का कोई भवन
नहीं बना था॥

* मूल में—उसकी राजगद्दी पर।

१६ और आशेर और आलोत मे हूशै का
पुत्र बाना, १७ इस्साकार मे पारूह का पुत्र
यहोशापात, १८ और बिन्यामीन मे एला
का पुत्र शिमी था। १९ ऊरी का पुत्र गेबेर
गिलाद मे अर्थात् एमोरियो के राजा सीहोन
और बाशान के राजा ओग के देश मे था,
इस समस्त देश मे वही भण्डारी था।
२० यहूदा और इस्राएल के लोग बहुत थे,
वे समुद्र के तीर पर की बालू के किनको के
समान बहुत थे, और खाते-पीते और आनन्द
करते रहे॥

२१ सुलैमान तो महानद से लेकर पलि-
श्तियो के देश, और मिस्र के सिवाने तक के
सब राज्यो के ऊपर प्रभुता करता था और
उनके लोग सुलैमान के जीवन भर भेंट लाते,
और उसके अधीन रहते थे। २२ और
सुलैमान की एक दिन की रसोई मे इतना
उठता था, अर्थात् तीस कोर मैदा, २३ साठ
कोर आटा, दस तैयार किए हुए बैल और
चराइयो मे से बीस बैल और सौ भेड़-बकरी
और इनको छोड़ २४ हरिन, चिकारे, यख-
मूर और तैयार किए हुए पक्षी क्योकि महा-
नद के इस पार के समस्त देश पर अर्थात्
तिप्सह् से लेकर अज्जा तक जितने राजा थे,
उन सभो पर सुलैमान प्रभुता करता, और
अपने चारो ओर के सब रहनेवालो से मेल
रखता था। २५ और दान से बेर्शेबा तक
के सब यहूदी और इस्राएली अपनी अपनी
दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले सुलैमान
के जीवन भर निडर रहते थे। २६ फिर
उसके रथ के घोड़ो के लिये सुलैमान के
चालीस हजार थान थे, और उसके बारह
हजार सवार थे। २७ और वे भण्डारी
अपने अपने महीने मे राजा सुलैमान के लिये
और जितने उसकी मेज पर आते थे, उन
सभो के लिये भोजन का प्रबन्ध करते थे,
किसी वस्तु की घटी होने नही पाती थी।
२८ और घोडो और वेग चलनेवाले घोडो
के लिये जव और पुआल जहा प्रयोजन
पडता था वहा आज्ञा के अनुसार एक एक
जन पहुचाया करता था॥

२९ और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि
दी, और उसकी समझ बहुत ही बढाई, और
उसके हृदय मे समुद्र तट की बालू के किनको
के तुल्य अनगिनित गुण * दिए। ३० और
सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियो
और मिस्रियो की भी बुद्धि से बढकर बुद्धि
थी। ३१ वह तो और सब मनुष्यो से बरन
एतान, एज्रेही और हेमान, और माहोल के
पुत्र कलकोल, और दर्दा से भी अधिक बुद्धि-
मान था : और उसकी कीर्त्ति चारो ओर
की सब जातियो मे फैल गई। ३२ उस ने
तीन हजार नीतिवचन कहे, और उसके एक
हजार पाच गीत भी है। ३३ फिर उस ने
लबानोन के देवदारुओ से लेकर भीत मे से
उगते हुए जूफा तक के सब पेडो की चर्चा
और पशुओ पक्षियो और रेंगनेवाले जन्तुओ
और मछलियो की चर्चा की। ३४ और
देश देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओ की
ओर से जिन्हो ने सुलैमान की बुद्धि की
कीर्त्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बाते सुनने
को आया करते थे।

(मन्दिर के बनने की तैयारी)

५ और सोर नगर के हीराम राजा ने
अपने दूत सुलैमान के पास भेजे, क्योकि
उस ने सुना था, कि वह अभिषिक्त होकर
अपने पिता के स्थान पर राजा हुआ है :
और दाऊद के जीवन भर हीराम उसका
मित्र बना रहा। २ और सुलैमान ने हीराम
के पास यो कहला भेजा, कि तुझे मालूम है,

* मूल में—हृदय की चौड़ाई।

मेरा पिता दाऊद अपने परमेश्वर
के नाम का एक भवन इसलिये न
सका कि वह चारो ओर लडाइयो मे
तक बझा रहा, जब तक यहोवा ने उसके
शत्रुओ को उसके पाव तले न कर दिया।
परन्तु अब मेरे परमेश्वर यहोवा ने मुझे
चारो ओर से विश्राम दिया है और न तो
कोई विरोधी है, और न कुछ विपत्ति देख
पडती है। ५ मैं ने अपने परमेश्वर यहोवा
के नाम का एक भवन बनवाने को ठाना है
अर्थात् उस बात के अनुसार जो यहोवा ने
मेरे पिता दाऊद से कही थी, कि तेरा पुत्र
जिसे मैं तेरे स्थान मे गद्दी पर बैठाऊगा, वही
मेरे नाम का भवन बनवाएगा। ६ इस-
लिये अब तू मेरे लिये लबानोन पर से देवदारु
काटने की आज्ञा दे, और मेरे दास तेरे दासो
के संग रहेंगे, और जो कुछ मजदूरी तू
ठहराए, वही मैं तुझे तेरे दासो के लिये दूगा,
तुझे मालूम तो है, कि सीदोनियो के बराबर
लकडी काटने का भेद हम लोगो मे से कोई भी
नही जानता। ७ सुलैमान की ये बाते सुन-
कर, हीराम बहुत आनन्दित हुआ, और कहा,
आज यहोवा धन्य है, जिस ने दाऊद को उस
बडी जाति पर राज्य करने के लिये एक
बुद्धिमान पुत्र दिया है। ८ तब हीराम ने
सुलैमान के पास यो कहला भेजा कि जो
तू ने मेरे पास कहला भेजा है वह मेरी समझ
मे आ गया, देवदारु और सनोवर की लकडी
के विषय जो कुछ तू चाहे, वही मैं करूगा।
९ मेरे दास लकडी को लबानोन से समुद्र
तक पहुचाएगे, फिर मैं उनके बेडे बनवाकर,
जो स्थान तू मेरे लिये ठहराए, वही पर समुद्र
के मार्ग से उनको पहुचवा दूगा वहा मैं
उनको खोलकर डलवा दूगा, और तू उन्हें ले
लेना और तू मेरे परिवार के लिये भोजन
देकर, मेरी भी इच्छा पूरी करना। १० इस
प्रकार हीराम सुलैमान की इच्छा के अनुसार
उसको देवदारु और सनोवर की लकडी देने
लगा। ११ और सुलैमान ने हीराम के
परिवार के खाने के लिये उसे बीस हज़ार
कोर गेहू और बीस कोर पेरा हुआ तेल
दिया, इस प्रकार सुलैमान हीराम को प्रति
वर्ष दिया करता था। १२ और यहोवा ने
सुलैमान को अपने वचन के अनुसार बुद्धि दी,
और हीराम और सुलैमान के बीच मेल बना
रहा वरन उन दोनों ने आपस मे वाचा भी
बाध ली॥

१३ और राजा सुलैमान ने पूरे इस्राएल
मे से तीस हजार पुरुष बेगार लगाए,
१४ और उन्हें लबानोन पहाड पर पारी
पारी करके, महीने महीने दस हजार भेज
दिया करता था और एक महीना तो वे
लबानोन पर, और दो महीने घर पर रहा
करते थे, और बेगारियो के ऊपर अदोनी-
राम ठहराया गया। १५ और सुलैमान के
सत्तर हजार बोझ ढोनेवाले और पहाड पर
अस्सी हजार वृक्ष काटनेवाले और पत्थर
निकालनेवाले थे। १६ इनको छोड सुलै-
मान के तीन हजार तीन सौ मुखिये थे, जो
काम करनेवालो के ऊपर थे। १७ फिर
राजा की आज्ञा से बडे बडे अनमोल पत्थर
इसलिये खोदकर निकाले गए कि भवन की
नेव, गढे हुए पत्थरो से डाली जाए।
१८ और सुलैमान के कारीगरो और हीराम
के कारीगरो और गबालियो ने उनको गढा,
और भवन के बनाने के लिये लकडी और
पत्थर तैयार किए॥

(मन्दिर आदि की बनावट)

६ इस्राएलियो के मिस्र देश से
निकलने के चार सौ अस्सीवे वर्ष के
बाद जो सुलैमान के इस्राएल पर राज्य करने
का चौथा वर्ष था, उसके जीव नाम दूसरे

३ सुलैमान यहोवा से प्रेम रखता था
और अपने पिता दाऊद की विधियो पर
चलता तो रहा, परन्तु वह ऊचे स्थानो पर
भी बलि चढाया और धूप जलाया करता
था। ४ और राजा गिबोन को बलि चढाने
गया, क्योकि मुख्य ऊचा स्थान वही था, तब
वहा की वेदी पर सुलैमान ने एक हजार
होमबलि चढाए। ५ गिबोन मे यहोवा ने
रात को स्वप्न के द्वारा सुलैमान को दर्शन
देकर कहा, जो कुछ तू चाहे कि मै तुझे दू,
वह माग। ६ सुलैमान ने कहा, तू अपने
दास मेरे पिता दाऊद पर बडी करुणा करता
रहा, क्योकि वह अपने को तेरे सम्मुख जान-
कर तेरे साथ सच्चाई और धर्म और मन
की सीधाई से चलता रहा, और तू ने यहा
तक उस पर करुणा की थी कि उसे उसकी
गद्दी पर विराजनेवाला एक पुत्र दिया है,
जैसा कि आज वर्तमान है। ७ और अब हे
मेरे परमेश्वर यहोवा! तू ने अपने दास को
मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है,
परन्तु मै छोटा लडका सा हू जो भीतर बाहर
आना जाना नही जानता। ८ फिर तेरा
दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगो
के मध्य मे है, जिनकी गिनती बहुतायत के
मारे नही हो सकती। ९ तू अपने दास को
अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने
की ऐसी शक्ति * दे, कि मै भले बुरे को परख
सकू; क्योकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी
बडी प्रजा का न्याय कर सके? १० इस
बात से प्रभु प्रसन्न हुआ, कि सुलैमान ने ऐसा
वरदान मागा है। ११ तब परमेश्वर ने
उस से कहा, इसलिये कि तू ने यह वरदान
मागा है, और न तो दीर्घायु और न धन और
न अपने शत्रुओ का नाश मागा है, परन्तु
समझने के विवेक का वरदान मागा है इस-
लिये सुन, १२ मै तेरे वचन के अनुसार
करता हू, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा
मन देता हू, यहा तक कि तेरे समान
न तो तुझ से पहिले कोई कभी हुआ, और
न बाद मे कोई कभी होगा। १३ फिर जो
तू ने नही मागा, अर्थात् धन और महिमा,
वह भी मै तुझे यहा तक देता हू, कि तेरे
जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा।
१४ फिर यदि तू अपने पिता दाऊद की नाई
मेरे मार्गो मे चलता हुआ, मेरी विधियो और
आज्ञाओ को मानता रहेगा तो मै तेरी आयु
को बढाऊगा॥

१५ तब सुलैमान जाग उठा, और देखा
कि यह स्वप्न था, फिर वह यरूशलेम को
गया, और यहोवा की वाचा के सन्दूक के
साम्हने खडा होकर, होमबलि और मेलबलि
चढाए, और अपने सब कर्मचारियो के लिये
जेवनार की॥

१६ उस समय दो वेश्याए राजा के पास
आकर उसके सम्मुख खडी हुई। १७ उन
मे से एक स्त्री कहने लगी, हे मेरे प्रभु! मै
और यह स्त्री दोनो एक ही घर मे रहती है,
और इसके संग घर मे रहते हुए मेरे एक बच्चा
हुआ। १८ फिर मेरे जच्चा के तीन दिन
के बाद ऐसा हुआ कि यह स्त्री भी जच्चा हो
गई, हम तो संग ही संग थी, हम दोनो को
छोडकर घर मे और कोई भी न था।
१९ और रात मे इस स्त्री का बालक इसके
नीचे दबकर मर गया। २० तब इस ने
आधी रात को उठकर, जब तेरी दासी सो
ही रही थी, तब मेरा लडका मेरे पास से
लेकर अपनी छाती मे रखा, और अपना मरा
हुआ बालक मेरी छाती मे लिटा दिया।
२१ भोर को जब मै अपना बालक दूध
पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया,

* मूल मे—सुननेहारा मन।

परन्तु भोर को मै ने ध्यान मे यह देखा, कि
वह मेरा पुत्र नही है। २२ तब दूसरी स्त्री
ने कहा, नही जीवित पुत्र मेरा है, और मरा
पुत्र तेरा है। परन्तु वह कहती रही, नही,
मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित मेरा पुत्र
है, यो वे राजा के साम्हने बातें करती रही।
२३ राजा ने कहा, एक तो कहती है जो
जीवित है, वही मेरा पुत्र है, और मरा हुआ
तेरा पुत्र है, और दूसरी कहती है, नही, जो
मरा है वही तेरा पुत्र है, और जो जीवित है,
वह मेरा पुत्र है। २४ फिर राजा ने कहा,
मेरे पास तलवार ले आओ, सो एक तलवार
राजा के साम्हने लाई गई। २५ तब राजा
बोला, जीवित बालक को दो टुकडे करके
आधा इसको और आधा उसको दो।
२६ तब जीवित बालक की माता का मन
अपने बेटे के स्नेह से भर आया, और उस ने
राजा से कहा, हे मेरे प्रभु! जीवित बालक
उसी को दे, परन्तु उसको किसी भांति न
मार। दूसरी स्त्री ने कहा, वह न तो मेरा
हो और न तेरा, वह दो टुकडे किया जाए।
२७ तब राजा ने कहा, पहिली को जीवित
बालक दो, किसी भांति उसको न मारो,
क्योंकि उसकी माता वही है। २८ जो
न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार
समस्त इस्राएल को मिला, और उन्हो ने
राजा का भय माना, क्योंकि उन्हो ने यह
देखा, कि उसके मन मे न्याय करने के लिये
परमेश्वर की बुद्धि है॥

(सुलैमान का राजप्रबन्ध और माहात्म्य)

४ राजा सुलैमान तो समस्त इस्राएल
के ऊपर राजा नियुक्त हुआ था।
२ और उसके हाकिम ये थे, अर्थात् सादोक
का पुत्र अजर्याह याजक, और शीशा के पुत्र
एलीहोरेप और अहिय्याह प्रधान मन्त्री थे।
३ अहीलूद का पुत्र यहोशापात, इतिहास
का लेखक था। ४ फिर यहोयादा का पुत्र
बनायाह प्रधान सेनापति था, और सादोक
और एब्यातार याजक थे। ५ और नातान
का पुत्र अजर्याह भण्डारियो के ऊपर था,
और नातान का पुत्र जाबूद याजक, और
राजा का मित्र भी था। ६ और अहीशार
राजपरिवार के ऊपर था, और अब्दा का
पुत्र अदोनीराम बेगारो के ऊपर मुखिया
था। ७ और सुलैमान के बारह भण्डारी
थे, जो समस्त इस्राएलियो के अधिकारी हो-
कर राजा और उसके घराने के लिये भोजन
का प्रबन्ध करते थे। एक एक पुरुष प्रति वर्ष
अपने अपने नियुक्त महीने मे प्रबन्ध करता
था। ८ और उनके नाम ये थे, अर्थात्
एप्रैम के पहाडी देश मे बेन्हूर। ९ और
माकस, शालबीम बेतशेमेश और एलोनबे-
थानान मे बेन्देकेर था। १० अरुब्बोत मे
बेन्हेसेद जिसके अधिकार मे सोको और
हेपेर का समस्त देश था। ११ दोर के
समस्त ऊंचे देश मे बेनबीनादाब जिसकी
स्त्री सुलैमान की बेटी तापत थी। १२ और
अहीलूद का पुत्र बाना जिसके अधिकार मे
तानाक, मगिद्दो और बेतशान का वह सब
देश था, जो सारतान के पास और यिज्रेल
के नीचे और बेतशान से ले आबेलमहोला
तक अर्थात् योकमाम की परली ओर तक
है। १३ और गिला के रामोत मे बेनगेबेर
था, जिसके अधिकार मे मनश्शेई याईर के
गिलाद के गांव थे, अर्थात् इसी के अधिकार
मे बाशान के अर्गोब का देश था, जिस मे
शहरपनाह और पीतल के बेंडवाले साठ बडे
बडे नगर थे। १४ और इद्दो के पुत्र अही-
नादाब के हाथ मे महनैम था। १५ नप्ताली
मे अहीमास था, जिस ने सुलैमान की बास-
मत नाम बेटी को व्याह लिया था।

महीने मे वह यहोवा का भवन बनाने लगा।
२ और जो भवन राजा सुलैमान ने यहोवा
के लिये बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ,
चौडाई बीस हाथ और ऊचाई तीस हाथ की
थी। ३ और भवन के मन्दिर के साम्हने
के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ की थी,
अर्थात् भवन की चौडाई के बराबर थी,
और ओसारे की चौडाई जो भवन के साम्हने
थी, वह दस हाथ की थी। ४ फिर उस ने
भवन मे स्थिर झिलमिलीदार खिडकिया
बनाई। ५ और उस ने भवन के आसपास
की भीतो से सटे हुए अर्थात् मन्दिर और
दर्शन-स्थान दोनो भीतो के आसपास उस ने
मजिले और कोठरिया बनाई। ६ सब से
नीचेवाली मंजिल की चौडाई पाच हाथ,
और बीचवाली की छ हाथ, और ऊपरवाली
की सात हाथ की थी, क्योकि उस ने भवन के
आसपास भीत को बाहर की ओर कुर्सीदार
बनाया था इसलिये कि कडिया भवन की
भीतो को पकडे हुए न हो। ७ और बनते
समय भवन ऐसे पत्थरो का बनाया गया,
जो वहा ले आने से पहिले गढकर ठीक किए
गए थे, और भवन के बनते समय हथौडे
बसूली वा और किसी प्रकार के लोहे के
औजार का शब्द कभी सुनाई नही पडा।
८ बाहर की बीचवाली कोठरियो का द्वार
भवन की दाहिनी अलग मे था, और लोग
चक्करदार सीढियो पर होकर बीचवाली
कोठरियो मे जाते, और उन से ऊपरवाली
कोठरियो पर जाया करते थे। ९ उस ने
भवन को बनाकर पूरा किया, और उसकी
छत देवदारु की कडियो और तख्तो से बनी
थी। १० और पूरे भवन मे लगी हुई जो
मजिले उस ने बनाई वह पाच हाथ ऊची
थी, और वे देवदारु की कडियो के द्वारा
भवन मे मिलाई गई थी॥

११ तब यहोवा का यह वचन सुलैमान
के पास पहुचा, कि यह भवन जो तू बना
रहा है, १२ यदि तू मेरी विधियो पर
चलेगा, और मेरे नियमो को मानेगा, और
मेरी सब आज्ञाओ पर चलता हुआ उनका
पालन करता रहेगा, तो जो वचन मैं ने तेरे
विषय मे तेरे पिता दाऊद को दिया था उसको
मैं पूरा करूगा। १३ और मैं इस्राएलियो
के मध्य मे निवास करूगा, और अपनी
इस्राएली प्रजा को न तजूगा॥

१४ सो सुलैमान ने भवन को बनाकर
पूरा किया। १५ और उस ने भवन की
भीतो पर भीतरवार देवदारु की तख्ताबदी
की, और भवन के फर्श से छत तक भीतो
मे भीतरवार लकडी की तख्ताबदी की, और
भवन के फर्श को उस ने सनोवर के तख्तो
से बनाया। १६ और भवन की पिछली
अलग मे भी उस ने बीस हाथ की दूरी पर
फर्श से ले भीतो के ऊपर तक देवदारु की
तख्ताबदी की, इस प्रकार उस ने परमपवित्र
स्थान के लिये भवन की एक भीतरी कोठरी
बनाई। १७ उसके साम्हने का भवन
अर्थात् मन्दिर की लम्बाई चालीस हाथ की
थी। १८ और भवन की भीतो पर भीतर-
वार देवदारु की लकडी की तख्ताबदी थी,
और उस मे इन्द्रायन और खिले हुए फूल खुदे
थे, सब देवदारु ही था पत्थर कुछ नही
दिखाई पडता था। १९ भवन के भीतर
उस ने एक दर्शन-स्थान यहोवा की वाचा
का सन्दूक रखने के लिये तैयार किया।
२० और उस दर्शन-स्थान की लम्बाई
चौडाई और ऊचाई बीस बीस हाथ की थी,
और उस ने उस पर चोखा सोना मढवाया
और वेदी की तख्ताबदी देवदारु से की।
२१ फिर सुलैमान ने भवन को भीतर
भीतर [illegible] ने मे मढवाया, और दर्शन-

स्थान के साम्हने सोने की सांकलें लगाईं,
और उसको भी सोने से मढ़वाया।
२२ और उस ने पूरे भवन को सोने से
मढ़वाकर उसका पूरा काम निपटा दिया।
और दर्शन-स्थान की पूरी वेदी को भी उस ने
सोने से मढ़वाया॥
२३ दर्शन-स्थान में उस ने दो दस दस हाथ
ऊंचे जलपाई की लकड़ी के दो करूब बना
रखे। २४ एक करूब का एक पंख पांच
हाथ का था, और उसका दूसरा पंख भी
पांच हाथ का था, एक पंख के सिरे से, दूसरे
पंख के सिरे तक दस हाथ थे। २५ और
दूसरा करूब भी दस हाथ का था, दोनों
करूब एक ही नाप और एक ही आकार के
थे। २६ एक करूब की ऊंचाई दस हाथ
की, और दूसरे की भी इतनी ही थी।
२७ और उस ने करूबों को भीतरवाले
स्थान में रखवा दिया; और करूबों के पंख
ऐसे फैले थे, कि एक करूब का एक पंख, एक
भीत से, और दूसरे का दूसरा पंख, दूसरी
भीत से लगा हुआ था, फिर उनके दूसरे
दो पंख भवन के मध्य में एक दूसरे से लगे
हुए थे। २८ और करूबों को उस ने सोने
से मढ़वाया। २९ और उस ने भवन की
भीतों में बाहर और भीतर चारों ओर
करूब, खजूर और खिले हुए फूल खुदवाए।
३० और भवन के भीतर और बाहरवाले
फर्श उस ने सोने से मढ़वाए। ३१ और
दर्शन-स्थान के द्वार पर उस ने जलपाई की
लकड़ी के किवाड़ लगाए और चौखट के
सिरहाने और बाजुओं की लम्बाई भवन की
चौड़ाई का पांचवां भाग थी। ३२ दोनों
किवाड़ जलपाई की लकड़ी के थे, और उस
ने उन में करूब, खजूर के वृक्ष और खिले
हुए फूल खुदवाए और सोने से मढ़ा; और
करूबों और खजूरों के ऊपर सोना मढ़वा
दिया गया। ३३ इसी रीति उस ने
मन्दिर के द्वार के लिये भी जलपाई की
लकड़ी के चौखट के बाजू बनाए और
वह भवन की चौड़ाई की चौथाई थी।
३४ दोनों किवाड़ सनोवर की लकड़ी के थे,
जिन में से एक किवाड़ के दो पल्ले थे, और
दूसरे किवाड़ के दो पल्ले थे जो पलटकर
दुहर जाते थे। ३५ और उन पर भी उस
ने करूब और खजूर के वृक्ष और खिले हुए
फूल खुदवाए और खुदे हुए काम पर उस ने
सोना मढ़वाया। ३६ और उस ने भीतर-
वाले आंगन के घेरे को गढ़े हुए पत्थरों के
तीन रद्दे, और एक परत देवदारु की कड़ियां
लगा कर बनाया। ३७ चौथे वर्ष के जीव
नाम महीने में यहोवा के भवन की नेव डाली
गई। ३८ और ग्यारहवें वर्ष के बूल नाम
आठवें महीने में, वह भवन उस सब समेत
जो उस में उचित समझा गया बन चुका:
इस रीति सुलैमान को उसके बनाने में सात
वर्ष लगे॥

७ और सुलैमान ने अपने महल को
बनाया, और उसके पूरा करने में तेरह
वर्ष लगे। २ और उस ने लबानोनी वन
नाम महल बनाया जिसकी लम्बाई सौ हाथ,
चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ
की थी, वह तो देवदारु के खम्भों की चार
पांति पर बना और खम्भों पर देवदारु की
कड़ियां रखी गईं। ३ और खम्भों के
ऊपर देवदारु की छतवाली पैंतालीस
कोठरियां अर्थात् एक एक महल में पन्द्रह
कोठरियां बनीं। ४ तीनों महलों में
कड़ियां धरी गईं, और तीनों में खिड़कियां
आम्हने साम्हने बनीं। ५ और सब द्वार
और बाजुओं की कड़ियां भी चौकोर
थीं, और तीनों महलों में खिड़कियां

आम्हने साम्हने बनी। ६ और उस ने
एक खम्भेवाला ओसारा भी बनाया जिसकी
लम्बाई पचास हाथ और चौडाई तीस
हाथ की थी, और इन खम्भो के साम्हने
एक खम्भेवाला ओसारा और उसके साम्हने
डेवढी बनाई। ७ फिर उस ने न्याय के
सिंहासन के लिये भी एक ओसारा बनाया,
जो न्याय का ओसारा कहलाया, और
उस मे एक फर्श से दूसरे फर्श तक देवदारु
की तख्ताबन्दी थी ॥

८ और उसी के रहने का भवन जो
उस ओसारे के भीतर के एक और आगन
मे बना, वह भी उसी ढब से बना। फिर
उसी ओसारे के ढब से सुलैमान ने फिरौन
की बेटी के लिये जिसको उस ने ब्याह
लिया था, एक और भवन बनाया। ९ ये
सब घर बाहर भीतर नेव से मुडेर तक
ऐसे अनमोल और गढे हुए पत्थरो के
बने जो नापकर, और आरो से चीरकर
तैयार किये गए थे और बाहर के आगन
से ले बडे आगन तक लगाए गए।
१० उसकी नेव तो बडे मोल के बडे बडे
अर्थात् दस दस और आठ आठ हाथ के
पत्थरो की डाली गई थी। ११ और
ऊपर भी बडे मोल के पत्थर थे, जो नाप
से गढे हुए थे, और देवदारु की लकडी
भी थी। १२ और बडे आगन के चारो
ओर के घेरे मे गढे हुए पत्थरो के तीन
रद्दे, और देवदारु की कडियो का एक
परत था, जैसे कि यहोवा के भवन के
भीतरवाले आगन और भवन के ओसारे
मे लगे थे ॥

१३ फिर राजा सुलैमान ने सोर से
हीराम को बुलवा भेजा। १४ वह नप्ताली
के गोत्र की किसी विधवा का बेटा था,
और उसका पिता एक सोरवासी ठठेरा
था, और वह पीतल की सब प्रकार की
कारीगरी मे पूरी बुद्धि, निपुणता और
समझ रखता था। सो वह राजा सुलैमान
के पास आकर उसका सब काम करने
लगा। १५ उस ने पीतल ढालकर अठारह
अठारह हाथ ऊचे दो खम्भे बनाए, और
एक एक का घेरा बारह हाथ के सूत का
था। १६ और उस ने खम्भो के सिरो
पर लगाने को पीतल ढालकर दो कगनी
बनाई, एक एक कगनी की ऊचाई, पाच
पाच हाथ की थी। १७ और खम्भो के
सिरो पर की कगनियो के लिये चारखाने
की सात सात जालिया, और साकलो
की सात सात झालरे बनी। १८ और
उस ने खम्भो को भी इस प्रकार बनाया,
कि खम्भो * के सिरो पर की एक एक
कगनी के ढापने को चारो ओर जालियो की
एक एक पाति पर अनारो की दो पातिया
हो। १९ और जो कगनिया ओसारो
मे खम्भो के सिरो पर बनी, उन मे चार
चार हाथ ऊचे सोसन के फूल बने हुए
थे। २० और एक एक खम्भे के सिरे
पर, उस गोलाई के पास जो जाली से
लगी थी, एक और कगनी बनी, और
एक एक कगनी पर जो अनार चारो
ओर पाति पाति करके बने थे वह दो
सौ थे। २१ उन खम्भो को उस ने मन्दिर
के ओसारे के पास खडा किया, और
दाहिनी ओर के खम्भे को खडा करके
उसका नाम याकीन † रखा, फिर बाई
ओर के खम्भे को खडा करके उसका नाम
बोआज ‡ रखा। २२ और खम्भो के सिरो
पर सोसन के फूल का काम बना था

* मूल में—अनारों।
† अर्थात् वह स्थिर रखे।
‡ अर्थात् उसी में बल।

खम्भो का काम इसी रीति हुआ। २३ फिर
उस ने एक ढाला हुआ एक बडा हौज
बनाया, जो एक छोर मे दूसरी छोर तक
दस हाथ चौडा था, उसका आकार गोल
था, और उसकी ऊचाई पाच हाथ की
थी, और उसके चारो ओर का घेरा
तीस हाथ के सूत के बराबर था। २४ और
उसके चारो ओर मोहडे के नीचे एक
एक हाथ मे दस दस इन्द्रायन बने, जो
हौज को घेरे थी, जब वह ढाला गया,
तब ये इन्द्रायन भी दो पाति करके ढाले
गए। २५ और वह बारह बने हुए बैलो
पर रखा गया जिन मे से तीन उत्तर,
तीन पश्चिम, तीन दक्खिन, और तीन
पूर्व की ओर मुह किए हुए थे, और
उन ही के ऊपर हौज था, और उन सभो
का पिछला अग भीतर की ओर था।
२६ और उसका दल चौवा भर का
था, और उसका मोहडा कटोरे के मोहडे
की नाई सोसन के फूलो के काम से बना
था, और उस मे दो हजार बत की समाई
थी ॥

२७ फिर उस ने पीतल के दस पाये
बनाए, एक एक पाये की लम्बाई चार
हाथ, चौडाई भी चार हाथ और ऊचाई
तीन हाथ की थी। २८ उन पायो की
बनावट इस प्रकार थी, उनके पटरिया
थी, और पटरियो के बीचो बीच जोड
भी थे। २९ और जोडो के बीचो बीच
की पटरियो पर सिंह, बैल, और करूब
बने थे और जोडो के ऊपर भी एक एक
और पाया बना और सिंहो और बैलो
के नीचे लटकते हुए हार बने थे। ३० और
एक एक पाये के लिये पीतल के चार
पहिये और पीतल की धुरिया बनी, और
एक एक के चारो कोनो मे लगे हुए कधे
भी ढालकर बनाए गए जो हौदी के नीचे
तक पहुचते थे, और एक एक कधे के
पास हार बने हुए थे। ३१ और हौदी
का मोहडा जो पाये की कगनी के भीतर
और ऊपर भी था वह एक हाथ ऊचा
था, और पाये का मोहडा जिसकी
चौडाई डेढ हाथ की थी, वह पाये की
बनावट के समान गोल बना, और पाये
के उसी मोहडे पर भी कुछ खुदा हुआ
काम था और उनकी पटरिया गोल नही,
चौकोर थी। ३२ और चारो पहिये,
पटरियो के नीचे थे, और एक एक पाये
के पहियो मे धुरिया भी थी, और एक
एक पहिये की ऊचाई डेढ डेढ हाथ की
थी। ३३ पहियो की बनावट, रथ के
पहिये की सी थी, और उनकी धुरिया,
पुट्ठिया, आरे, और नाभे सब ढाली हुई
थी। ३४ और एक एक पाये के चारो
कोनो पर चार कधे थे, और कधे और
पाये दोनो एक ही टुकडे के बने थे।
३५ और एक एक पाये के सिरे पर आध
हाथ ऊची चारो ओर गोलाई थी, और
पाये के सिरे पर की टेके और पटरिया
पाये से जुडे हुए एक ही टुकडे के बने
थे। ३६ और टेको के पाटो और पटरियो
पर जितनी जगह जिस पर थी, उस मे
उस ने करूब, और सिंह, और खजूर के
वृक्ष खोद कर भर दिये, और चारो ओर
हार भी बनाए। ३७ इसी प्रकार से
उस ने दसो पायो को बनाया, सभो का
एक ही साचा और एक ही नाप, और
एक ही आकार था ॥

३८ और उस ने पीतल की दस हौदी
बनाई। एक एक हौदी में चालीस चालीस
बत की समाई थी, और एक एक, चार
चार हाथ चौडी थी, और दसो पायो

मे से एक एक पर, एक एक हौदी थी।
३९ और उस ने पाच हौदी भवन की
दक्खिन की ओर, और पाच उसकी उत्तर
की ओर रख दी, और हौज को भवन
की दाहिनी ओर अर्थात् पूर्व की ओर,
और दक्खिन के साम्हने धर दिया।
४० और हीराम ने हौदियो *, फावडियो,
और कटोरो को भी बनाया। सो हीराम
ने राजा सुलैमान के लिये यहोवा के भवन
मे जितना काम करना था, वह सब निपटा
दिया, ४१ अर्थात् दो खम्भे, और उन
कगनियो की गोलाइया जो दोनो खम्भो
के सिरे पर थी, और दोनो खम्भो के
सिरो पर की गोलाइयो के ढापने को
दो दो जालिया, और दोनो जालियो के
लिये चार चार सौ अनार, ४२ अर्थात्
खम्भो के सिरो पर जो गोलाइया थी,
उनके ढापने के लिये अर्थात् एक एक
जाली के लिये अनारो की दो दो पाति,
४३ दस पाये और इन पर की दस हौदी,
४४ एक हौज़ और उसके नीचे के बारह
बैल, और हण्डे, फावडिया, ४५ और
कटोरे बने। ये सब पात्र जिन्हे हीराम
ने यहोवा के भवन के निमित्त राजा
सुलैमान के लिये बनाया, वह झलकाये
हुए पीतल के बने। ४६ राजा ने उनको
यरदन की तराई मे अर्थात् सुक्कोत और
सारतान के मध्य की चिकनी मिट्टीवाली
भूमि मे ढाला। ४७ और सुलैमान ने
सब पात्रो को बहुत अधिक होने के कारण
बिना तौले छोड दिया, पीतल के तौल
का वज़न मालूम न हो सका॥

४८ यहोवा के भवन के जितने पात्र
थे सुलैमान ने सब बनाए, अर्थात् सोने
की वेदी, और सोने की वह मेज जिस पर
भेट की रोटी रखी जाती थी, ४९ और
चोखे सोने की दीवटे जो भीतरी कोठरी
के आगे पाच तो दक्खिन की ओर, और
पाच उत्तर की ओर रखी गई, और
सोने के फूल, ५० दीपक और चिमटे,
और चोखे सोने के तसले, कैचिया, कटोरे,
धूपदान, और करछे और भीतरवाला
भवन जो परमपवित्र स्थान कहलाता है,
और भवन जो मन्दिर कहलाता है, दोनो
के किवाडो के लिये सोने के कब्जे बने।
५१ निदान जो जो काम राजा सुलैमान
ने यहोवा के भवन के लिये किया, वह
सब पूरा किया गया। तब सुलैमान ने
अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हुए
सोने चादी और पात्रो को भीतर पहुचा
कर यहोवा के भवन के भण्डारो मे रख
दिया॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

८ तब सुलैमान ने इस्राएली
पुरनियो को और गोत्रो के सब
मुख्य पुरुष जो इस्राएलियो के पूर्वजो के
घरानो के प्रधान थे, उनको भी यरूशलेम
मे अपने पास इस मनसा से इकट्ठा किया,
कि वे यहोवा की वाचा का सन्दूक दाऊदपुर
अर्थात् सियोन मे ऊपर ले आए। २ सो
सब इस्राएली पुरुष एतानीम नाम सातवे
महीने के पर्व के समय राजा सुलैमान
के पास इकट्ठे हुए। ३ जब सब इस्राएली
पुरनिये आए, तब याजको ने सन्दूक को
उठा लिया। ४ और यहोवा का सन्दूक,
और मिलाप का तम्बू, और जितने पवित्र
पात्र उस तम्बू मे थे, उन सभो को याजक
और लेवीय लोग ऊपर ले गए। ५ और
राजा सुलैमान और समस्त इस्राएली
मण्डली, जो उसके पास इकट्ठी हुई थी,

* वा हण्डो।

वे सब सन्दूक के साम्हने इतनी भेड और
बैल बलि कर रहे थे, जिनकी गिनती
किसी रीति से नही हो सकती थी।
६ तब याजको ने यहोवा की वाचा का
सन्दूक उसके स्थान को अर्थात् भवन के
दर्शन-स्थान में, जो परमपवित्र स्थान
है, पहुंचाकर करूबो के पङ्खो के तले
रख दिया। ७ करूब तो सन्दूक के स्थान
के ऊपर पङ्ख ऐसे फैलाए हुए थे, कि वे
ऊपर से सन्दूक और उसके डडो को ढाके
थे। ८ डडे तो ऐसे लम्बे थे, कि उनके
सिरे उस पवित्र स्थान से जो दर्शन-स्थान
के साम्हने था दिखाई पडते थे परन्तु
बाहर से वे दिखाई नही पडते थे। वे
आज के दिन तक यही वर्तमान है।
९ सन्दूक में कुछ नही था, उन दो पटरियो
को छोड जो मूसा ने होरेब मे उसके
भीतर उस समय रखी, जब यहोवा ने
इस्राएलियो के मिस्र से निकलने पर उनके
साथ वाचा बान्धी थी। १० जब याजक
पवित्रस्थान से निकले, तब यहोवा के
भवन मे बादल भर आया। ११ और
बादल के कारण याजक सेवा टहल करने
को खडे न रह सके, क्योकि यहोवा का
तेज यहोवा के भवन मे भर गया था॥

१२ तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा
ने कहा था, कि मैं घोर अधकार में वास
किए रहूगा। १३ सचमुच मैं ने तेरे
लिये एक वासस्थान, वरन ऐसा दृढ
स्थान बनाया है, जिस में तू युगानुयुग
बना रहे। १४ और राजा ने इस्राएल
की पूरी सभा की ओर मुह फेरकर उसको
आशीर्वाद दिया, और पूरी सभा खडी
रही। १५ और उस ने कहा, धन्य है
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा! जिस ने
अपने मुह मे मेरे पिता दाऊद को यह
वचन दिया था, और अपने हाथ से उसे
पूरा किया है, १६ कि जिस दिन से मैं अपनी
प्रजा इस्राएल को मिस्र से निकाल लाया,
तब से मैं ने किसी इस्राएली गोत्र का
कोई नगर नही चुना, जिस म मेरे नाम
के निवास के लिये भवन बनाया जाए,
परन्तु मैं ने दाऊद को चुन लिया, कि
वह मेरी प्रजा इस्राएल का अधिकारी
हो। १७ मेरे पिता दाऊद की यह मनसा
तो थी कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
के नाम का एक भवन बनाए। १८ परन्तु
यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, यह
जो तेरी मनसा है, कि यहोवा के नाम का
एक भवन बनाए, ऐसी मनसा करके
तू ने भला तो किया, १९ तौभी तू
उस भवन को न बनाएगा, तेरा जो निज
पुत्र होगा, वही मेरे नाम का भवन
बनाएगा। २० यह जो वचन यहोवा ने
कहा था, उसे उस ने पूरा भी किया है,
और म अपने पिता दाऊद के स्थान पर
उठकर, यहोवा के वचन के अनुसार
इस्राएल की गद्दी पर विराजमान हू,
और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के
नाम से इस भवन को बनाया है। २१ और
इस में मैं ने एक स्थान उस सन्दूक के
लिये ठहराया है, जिस मे यहोवा की वह
वाचा है, जो उस ने हमारे पुरखाओ को
मिस्र देश से निकालने के समय उन से
बान्धी थी॥

२२ तब सुलैमान इस्राएल की पूरी
सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने
खडा हुआ, और अपने हाथ स्वर्ग की
ओर फैलाकर कहा, हे यहोवा! २३ हे
इस्राएल के परमेश्वर! तेरे समान न तो
ऊपर स्वर्ग मे, और न नीचे पृथ्वी पर
कोई ईश्वर है तेरे जो दास अपने सम्पूर्ण

मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर*
चलते है, उनके लिये तू अपनी वाचा
पूरी करता, और करुणा करता रहता
है। २४ जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद
को दिया था, उसका तू ने पालन किया
है, जैसा तू ने अपने मुह से कहा था,
वैसा ही अपने हाथ से उसको पूरा किया
है, जैसा आज है। २५ इसलिये अब हे
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! इस वचन
को भी पूरा कर, जो तू ने अपने
दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, कि
तेरे कुल मे, मेरे साम्हने इस्राएल की
गद्दी पर विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे
इतना हो कि जैसे तू स्वय मुझे सम्मुख
जानकर† चलता रहा, वैसे ही तेरे वश
के लोग अपनी चालचलन मे ऐसी ही
चौकसी करे। २६ इसलिये अब हे इस्रा-
एल के परमेश्वर अपना जो वचन तू ने
अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया
था उसे सच्चा सिद्ध कर। २७ क्या
परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा,
स्वर्ग में वरन सब मे ऊंचे स्वर्ग मे भी
तू नही समाता, फिर मेरे बनाए हुए
इस भवन मे क्योकर समाएगा।
२८ तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा!
अपने दास की प्रार्थना और गिडगिडाहट
की ओर कान लगाकर, मेरी चिल्लाहट
और यह प्रार्थना सुन! जो मै आज
तेरे साम्हने कर रहा हू, २९ कि तेरी
आख इस भवन की ओर अर्थात् इसी
स्थान की ओर जिसके विषय तू ने कहा
है, कि मेरा नाम वहा रहेगा, रात दिन
खुली रहे: और जो प्रार्थना तेरा दास
इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले।
३० और तू अपने दास, और अपनी
प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिसको वे
इस स्थान की ओर गिडगिडा के करे उसे
सुनना, वरन स्वर्ग मे से जो तेरा निवासस्थान
है सुन लेना, और सुनकर क्षमा करना।
३१ जब कोई किसी दूसरे का अपराध
करे, और उसको शपथ खिलाई जाए,
और वह आकर इस भवन मे तेरी वेदी
के साम्हने शपथ खाए, ३२ तब तू स्वर्ग
मे सुन कर, अर्थात् अपने दासो का न्याय
करके दुष्ट को दुष्ट ठहरा और उसकी
चाल उसी के सिर लौटा दे, और निर्दोष
को निर्दोष ठहराकर, उसके धर्म के
अनुसार उसको फल देना। ३३ फिर
जब तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप
करने के कारण अपने शत्रुओ से हार
जाए, और तेरी ओर फिरकर तेरा नाम
ले और इस भवन मे तुझ से गिडगिडाहट
के साथ प्रार्थना करे, ३४ तब तू स्वर्ग
मे से सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का
पाप क्षमा करना और उन्हे इस देश
मे लौटा ले आना, जो तू ने उनके पुरखाओ
को दिया था। ३५ जब वे तेरे विरुद्ध
पाप करे, और इस कारण आकाश बन्द
हो जाए, कि वर्षा न होए, ऐसे समय
यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके
तेरे नाम को माने जब तू उन्हे दुःख देता
है, और अपने पाप मे फिरे, तो तू स्वर्ग
मे से सुनकर क्षमा करना, ३६ और
अपने दासो, अपनी प्रजा इस्राएल के
पाप को क्षमा करना, तू जो उनको
वह भला मार्ग दिखाता है, जिस पर उन्हे
चलना चाहिये, इसलिये अपने इस देश
पर, जो तू ने अपनी प्रजा का भाग कर
दिया है, पानी बरसा देना। ३७ जब

* मूल में—तेरे साम्हने।
† मूल में—तेरे साम्हने।

इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो
वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा
उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें
घेर रखें, अथवा कोई विपत्ति वा रोग
क्यों न हो, ३८ तब यदि कोई मनुष्य
वा तेरी प्रजा इस्राएल अपने अपने मन
का दुःख जान ले, और गिड़गिड़ाहट के
साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन
की ओर फैलाए, ३९ तो तू अपने
स्वर्गीय निवासस्थान में से सुनकर क्षमा
करना, और ऐसा करना, कि एक एक
के मन को जानकर उसकी समस्त चाल
के अनुसार उसको फल देना: तू ही तो
सब आदमियों के मन के भेदों का जानने
वाला है। ४० तब वे जितने दिन इस
देश में रहें, जो तू ने उनके पुरखाओं को
दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते
रहें। ४१ फिर परदेशी भी जो तेरी
प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरा
नाम सुनकर, दूर देश से आए, ४२ वह
तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और
बढ़ाई हुई भुजा का समाचार पाए,
इसलिये जब ऐसा कोई आकर इस भवन
की ओर प्रार्थना करे, ४३ तब तू अपने
स्वर्गीय निवासस्थान में से सुन, और
जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे
पुकारे, उसी के अनुसार व्यवहार करना
जिस से पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा
नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं
तेरा भय मानें, और निश्चय जानें, कि
यह भवन जिसे मैं ने बनाया है, वह तेरा
ही कहलाता है। ४४ जब तेरी प्रजा
के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे, वहां
अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल
जाएं, और इस नगर की ओर जिसे तू
ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे
मैं ने तेरे नाम पर बनाया है, यहोवा
से प्रार्थना करें, ४५ तब तू स्वर्ग में से
उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर
उनका न्याय कर। ४६ निष्पाप तो कोई
मनुष्य नहीं है: यदि ये भी तेरे विरुद्ध
पाप करें, और तू उन पर कोप करके
उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे
उनको बन्धुआ करके अपने देश को चाहे
वह दूर हो, चाहे निकट ले जाएं, ४७ तो
यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार
करें, और फिरकर अपने बन्धुआ करनेवालों
के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें,
कि हम ने पाप किया, और कुटिलता
और दुष्टता की है, ४८ और यदि
वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें
बन्धुआ करके ले गए हों, अपने सम्पूर्ण
मन और सम्पूर्ण प्राण से तेरी ओर फिरें
और अपने इस देश की ओर जो तू ने उनके
पुरखाओं को दिया था, और इस नगर
की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस
भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का
बनाया है, तुझ से प्रार्थना करें, ४९ तो
तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उनकी
प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना, और
उनका न्याय करना, ५० और जो पाप
तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करेंगे,
और जितने अपराध वे तेरे विरुद्ध करेंगे,
सब को क्षमा करके, उनके बन्धुआ
करनेवालों के मन में ऐसी दया उपजाना
कि वे उन पर दया करें। ५१ क्योंकि
वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं,
जिन्हें तू लोहे के भट्ठे के मध्य में से अर्थात्
मिस्र में निकाल लाया है। ५२ इसलिये
तेरी आंखें तेरे दास की गिड़गिड़ाहट
और तेरी प्रजा इस्राएल की गिड़गिड़ाहट
की ओर ऐसी खुली रहें, कि जब जब

वे तुझे पुकारे, तब तब तू उनकी सुन ले,
५३ क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपने उस
वचन के अनुसार, जो तू ने हमारे पुरखाओ
को मिस्र से निकालने के समय अपने
दास मूसा के द्वारा दिया था, तू ने इन
लोगो को अपना निज भाग होने के लिये
पृथ्वी की सब जातियो से अलग
किया है ॥

५४ जब सुलैमान यहोवा से यह सब
प्रार्थना गिडगिडाहट के साथ कर चुका,
तब वह जो घुटने टेके और आकाश की
ओर हाथ फैलाए हुए था, सो यहोवा
की वेदी के साम्हने से उठा, ५५ और
खडा हो, समस्त इस्राएली सभा को ऊंचे
स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि
धन्य है यहोवा, ५६ जिस ने ठीक अपने
कथन के अनुसार अपनी प्रजा इस्राएल को
विश्राम दिया है, जितनी भलाई की बाते
उसने अपने दास मूसा के द्वारा कही थी,
उन मे से एक भी बिना पूरी हुए नही
रही। ५७ हमारा परमेश्वर यहोवा जैसे
हमारे पुरखाओ के सग रहता था, वैसे
ही हमारे सग भी रहे, वह हम को त्याग
न दे और न हम को छोड दे। ५८ वह
हमारे मन अपनी ओर ऐसा फिराए रखे,
कि हम उसके सब मार्गो पर चला करे,
और उसकी आज्ञाए और विधिया और
नियम जिन्हे उसने हमारे पुरखाओ को
दिया था, नित माना करे। ५९ और
मेरी ये बातें जिनकी मैं ने यहोवा के
साम्हने बिनती की है, वह दिन और
रात हमारे परमेश्वर यहोवा के मन मे
बनी रहे*, और जैसा दिन दिन प्रयोजन
हो वैसा ही वह अपने दास का और
अपनी प्रजा इस्राएल का भी न्याय किया
करे, ६० और इस से पृथ्वी की सब
जातिया यह जान ले, कि यहोवा ही
परमेश्वर है, और कोई दूसरा नही।
६१ तो तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर
यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा
रहे, कि आज की नाई उसकी विधियो
पर चलते और उसकी आज्ञाए मानते
रहो। ६२ तब राजा समस्त इस्राएल
समेत यहोवा के सम्मुख मेलबलि चढाने
लगा। ६३ और जो पशु सुलैमान ने
मेलबलि मे यहोवा को चढाए, सो बाईस
हजार बैल और एक लाख बीस हजार
भेडे थी। इस रीति राजा ने सब इस्रा-
एलियो समेत यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा
की। ६४ उस दिन राजा ने यहोवा के
भवन के साम्हनेवाले आगन के मध्य
भी एक स्थान पवित्र किया और होमबलि,
और अन्नबलि और मेलबलियो की चरबी
वही चढाई, क्योंकि जो पीतल की वेदी
यहोवा के साम्हने थी, वह उनके लिये
छोटी थी। ६५ और सुलैमान ने और
उसके सग समस्त इस्राएल की एक बडी
सभा ने जो हमात की घाटी से लेकर
मिस्र के नाले तक के सब देशो से इकट्ठी
हुई थी, दो सप्ताह तक अर्थात् चौदह
दिन तक हमारे परमेश्वर यहोवा के
साम्हने पर्व को माना। फिर आठवें दिन
उस ने प्रजा के लोगो को विदा किया।
६६ और वे राजा को धन्य, धन्य, कहकर
उस सब भलाई के कारण जो यहोवा
ने अपने दास दाऊद और अपनी प्रजा
इस्राएल से की थी, आनन्दित और मगन
होकर अपने अपने डेरे को चले
गए ॥

* मूल में—यहोवा के निकट रहें।

९ जब सुलैमान यहोवा के भवन
और राजभवन को बना चुका,
और जो कुछ उस ने करना चाहा था,
उसे कर चुका, २ तब यहोवा ने जैसे
गिबोन में उसको दर्शन दिया था, वैसे
ही दूसरी बार भी उसे दर्शन दिया।
३ और यहोवा ने उस से कहा, जो प्रार्थना
गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की
है, उसको मैं ने सुना है, यह जो भवन
तू ने बनाया है, उस में मैं ने अपना नाम
सदा के लिये रखकर उसे पवित्र किया
है, और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य
वहीं लगे रहेंगे। ४ और यदि तू अपने
पिता दाऊद की नाईं मन की खराई
और सिधाई से अपने को मेरे साम्हने
जानकर* चलता रहे, और मेरी सब
आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और
मेरी विधियों और नियमों को मानता
रहे, तो मैं तेरा राज्य† इस्राएल के ऊपर
सदा के लिये स्थिर करूंगा, ५ जैसे कि
मैं ने तेरे पिता दाऊद को वचन दिया
था, कि तेरे कुल में इस्राएल की गद्दी
पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे।
६ परन्तु यदि तुम लोग वा तुम्हारे वंश
के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें, और
मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को जो
मैं ने तुम को दी हैं, न मानें, और जाकर
पराये देवताओं की उपासना करें और
उन्हें दण्डवत करने लगें, ७ तो मैं
इस्राएल को इस देश में से जो मैं ने उनको
दिया है, काट डालूंगा और इस भवन
को जो मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र
किया है, अपनी दृष्टि से उतार दूंगा,

* मूल में—मेरे साम्हने।
† मूल में—राजगद्दी।

और सब देशों के लोगों में इस्राएल की
उपमा दी जायेगी और उसका दृष्टान्त
चलेगा। ८ और यह भवन जो ऊंचे पर
रहेगा, तो जो कोई इसके पास होकर
चलेगा, वह चकित होगा, और ताली
बजाएगा और वे पूछेंगे, कि यहोवा ने
इस देश और इस भवन के साथ क्यों
ऐसा किया है, ९ तब लोग कहेंगे, कि
उन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा को जो
उनके पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल
लाया था। तजकर पराये देवताओं
को पकड़ लिया, और उनको दण्डवत
की और उनकी उपासना की इस कारण
यहोवा ने यह सब विपत्ति उन पर डाल
दी॥

१० सुलैमान को तो यहोवा के भवन
और राजभवन दोनों के बनाने में बीस
वर्ष लग गए। ११ तब सुलैमान ने सोर
के राजा हीराम को जिस ने उसके मनमाने
देवदारु और सनोवर की लकड़ी और
सोना दिया था, गलील देश के बीस
नगर दिए। १२ जब हीराम ने सोर से
जाकर उन नगरों को देखा, जो सुलैमान
ने उसको दिए थे, तब वे उसको अच्छे
न लगे। १३ तब उस ने कहा, हे मेरे
भाई, ये नगर क्या तू ने मुझे दिए हैं?
और उस ने उनका नाम कबूल देश
रखा। १४ और यही नाम आज के
दिन तक पड़ा है। फिर हीराम ने राजा
के पास सौ किक्कार सोना भेज दिया॥

१५ राजा सुलैमान ने लोगों को जो
बेगारी में रखा, इसका प्रयोजन यह था,
कि यहोवा का और अपना भवन बनाए,
और मिल्लो और यरूशलेम की शहरपनाह
और हासोर, मगिद्दो और गेजेर नगरों
को दृढ़ करे। १६ गेजेर पर तो मिस्र के

राजा फिरौन ने चढाई करके उसे ले
लिया और आग लगाकर फूक दिया,
और उस नगर मे रहनेवाले कनानियो
को मार डालकर, उसे अपनी बेटी सुलैमान
की रानी का निज भाग करके दिया था,
१७ सो सुलैमान ने गेजेर और नीचेवाले
बथोरेन, १८ बालात और तामार को जो
जगल मे है, दृढ किया, ये तो देश मे है।
१९ फिर सुलैमान के जितने भण्डार
के नगर थे, और उसके रथो और सवारो
के नगर, उनको वरन जो कुछ सुलैमान
ने यरूशलेम, लबानोन और अपने राज्य
के सब देशो मे बनाना चाहा, उन सब
को उस ने दृढ किया। २० एमोरी,
हित्ती, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी जो
रह गए थे, जो इस्राएलियो मे के न थे,
२१ उनके वश जो उनके बाद देश मे
रह गए, और उनको इस्राएली सत्यानाश
न कर सके, उनको तो सुलैमान ने दास
कर के बेगारी मे रखा, और आज तक
उनकी वही दशा है। २२ परन्तु इस्रा-
एलियो मे से सुलैमान ने किसी को दास
न बनाया; वे तो योद्धा और उसके
कर्मचारी, उसके हाकिम, उसके सरदार,
और उसके रथो, और सवारो के प्रधान
हुए। २३ जो मुख्य हाकिम सुलैमान के
कामो के ऊपर ठहर के काम करनेवालो पर
प्रभुता करते थे, ये पाच सौ पचास थे॥
२४ जब फिरौन की बेटी दाऊदपुर मे
से अपने उस भवन को आ गई, जो उस
ने उसके लिये बनाया था तब उस ने
मिल्लो को बनाया। २५ और सुलैमान
उस वेदी पर जो उस ने यहोवा के लिये
बनाई थी, प्रति वर्ष में तीन बार होमबलि
और मेलबलि चढाया करता था और
साथ ही उस वेदी पर जो यहोवा के
सम्मुख थी, धूप जलाया करता था, इस
प्रकार उस ने उस भवन को तैयार कर
दिया॥

(सुलैमान की धनसम्पत्ति और व्योपार और शीबा की रानी का आना)

२६ फिर राजा सुलैमान ने एस्योन-
गेबेर मे जो एदोम देश मे लाल समुद्र
के तीर एलोत के पास है, जहाज बनाए।
२७ और जहाजो मे हीराम ने अपने
अधिकार के मल्लाहो को, जो समुद्र से
जानकारी रखते थे, सुलैमान के सेवको
के सग भेज दिया। २८ उन्हो ने ओपीर
को जाकर वहा से चार सौ बीस किक्कार
सोना, राजा सुलैमान को लाकर दिया॥

१० जब शीबा की रानी ने यहोवा
के नाम के विषय सुलैमान की
कीर्त्ति सुनी, तब वह कठिन कठिन प्रश्नो
से उसकी परीक्षा करने को चल पडी।
२ वह तो बहुत भारी दल, और मसालो,
और बहुत सोने, और मणि से लदे ऊट
साथ लिये हुए यरूशलेम को आई, और
सुलैमान के पास पहुचकर अपने मन
की सब बातो के विषय मे उस से बाते
करने लगी। ३ सुलैमान ने उसके सब
प्रश्नो का उत्तर दिया, कोई बात राजा
की बुद्धि से ऐसी बाहर न रही * कि वह
उसको न बता सका। ४ जब शीबा
की रानी ने सुलैमान की सब बुद्धिमानी
और उसका बनाया हुआ भवन, और
उसकी मेज पर का भोजन देखा, ५ और
उसके कर्मचारी किस रीति बैठते, और
उसके टहलुए किस रीति खडे रहते, और
कैसे कैसे कपडे पहिने रहते है, और उसके
पिलानेवाले कैसे है, और वह कैसी चढाई

* मूल में—कोई बात राजा से न छिपी।

है, जिस से वह यहोवा के भवन को जाया
करता है, यह सब जब उस ने देखा,
तब वह चकित हो गई। ६ तब उस ने
राजा से कहा, तेरे कामो और बुद्धिमानी
की जो कीर्त्ति मै ने अपने देश मे सुनी
थी वह सच ही है। ७ परन्तु जब तक
मै ने आप ही आकर अपनी आखो से
यह न देखा, तब तक मै ने उन बातो की
प्रतीत न की, परन्तु इसका आधा भी
मुझे न बताया गया था, तेरी बुद्धिमानी
और कल्याण उस कीर्त्ति से भी बढकर
है, जो मै ने सुनी थी। ८ धन्य है तेरे
जन! धन्य है तेरे ये सेवक! जो नित्य
तेरे सम्मुख उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि
की बाते सुनते है। ९ धन्य है तेरा
परमेश्वर यहोवा! जो तुझ से ऐसा
प्रसन्न हुआ कि तुझे इस्राएल की राजगद्दी
पर विराजमान किया यहोवा इस्राएल
से सदा प्रेम रखता है, इस कारण उस ने
तुझे न्याय और धर्म करने को राजा
बना दिया है। १० और उस ने राजा
को एक सौ बीस किक्कार सोना, बहुत सा
सुगन्ध द्रव्य, और मणि दिया, जितना
सुगन्ध द्रव्य शीबा की रानी ने राजा
सुलैमान को दिया, उतना फिर कभी
नही आया। ११ फिर हीराम के जहाज
भी जो ओपीर से सोना लाते थे, वह
बहुत सी चन्दन की लकडी और मणि
भी लाए। १२ और राजा ने चन्दन
की लकडी से यहोवा के भवन और
राजभवन के लिये जगले और गवैयो के
लिये वीणा और सारगिया बनवाई
ऐसी चन्दन की लकडी आज तक फिर
नही आई, और न दिखाई पडी है।
१३ और शीबा की रानी ने जो कुछ
चाहा, वही राजा सुलैमान ने उसकी
इच्छा के अनुसार उसको दिया, फिर
राजा सुलैमान ने उसको अपनी उदारता
से बहुत कुछ दिया, तब वह अपने जनो
समेत अपने देश को लौट गई॥

१४ जो सोना प्रति वर्ष सुलैमान के
पास पहुचा करता था, उसका तौल छ
सौ छियासठ किक्कार था। १५ इस से
अधिक सौदागरो से, और व्योपारियो के
लेन देन से, और दोगली जातियो के सब
राजाओ, और अपने देश के गवर्नरो से
भी बहुत कुछ मिलता था। १६ और
राजा सुलैमान ने सोना गढवाकर दो
सौ बडी बडी ढाले बनवाई, एक एक
ढाल मे छ छ सौ शेकेल सोना लगा।
१७ फिर उस ने सोना गढवाकर तीन
सौ छोटी ढाले भी बनवाई, एक एक
छोटी ढाल मे, तीन माने सोना लगा,
और राजा ने उनको लबानोनी वन नाम
भवन मे रखवा दिया। १८ और राजा
ने हाथीदात का एक बडा सिहासन
बनवाया, और उत्तम कुन्दन से मढवाया।
१९ उस सिहासन मे छ सीढिया थी,
और सिहासन का सिरहाना पिछाडी की
ओर गोल था, और बैठने के स्थान की
दोनो अलग टेक लगी थी, और दोनो
टेको के पास एक एक सिह खडा हुआ
बना था। २० और छहो सीढियो की
दोनो अलग एक एक सिह खडा हुआ बना
था, कुल बारह हुए। किसी राज्य मे
ऐसा कभी नही बना। २१ और राजा
सुलैमान के पीने के सब पात्र सोने के बने
थे, और लबानोनी वन नाम भवन के
सब पात्र भी चोखे सोने के थे, चादी का
कोई भी न था। सुलैमान के दिनो में
उसका कुछ लेखा न था। २२ क्योकि
समुद्र पर हीराम के जहाजो के साथ

राजा भी तर्शीश के जहाज रखता था,
और तीन तीन वर्ष पर तर्शीश के जहाज
सोना, चांदी, हाथीदांत, बन्दर और
मयूर ले आते थे। २३ इस प्रकार राजा
सुलैमान, धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब
राजाओं से बढ़कर हो गया। २४ और
समस्त पृथ्वी के लोग उसकी बुद्धि की
बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके
मन में उत्पन्न की थी, सुलैमान का दर्शन
पाना चाहते थे। २५ और वे प्रति वर्ष
अपनी अपनी भेंट, अर्थात् चांदी और
सोने के पात्र, वस्त्र, शस्त्र, सुगन्ध द्रव्य,
घोड़े, और खच्चर ले आते थे। २६ और
सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर
लिए, तो उसके चौदह सौ रथ, और
बारह हजार सवार हुए, और उनको
उस ने रथों के नगरों में, और यरूशलेम
में राजा के पास ठहरा रखा। २७ और
राजा ने बहुतायत के कारण, यरूशलेम में
चांदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर
और देवदारु को जैसे नीचे के देश के
गूलर। २८ और जो घोड़े सुलैमान रखता
था, वे मिस्र से आते थे, और राजा के
व्योपारी उन्हें झुण्ड झुण्ड करके ठहराए
हुए दाम पर लिया करते थे। २९ एक
रथ तो छः सौ शेकेल चांदी पर, और
एक घोड़ा डेढ़ सौ शेकेल पर, मिस्र से
आता था, और इसी दाम पर वे हित्तियों
और अराम के सब राजाओं के लिये भी
व्योपारियों के द्वारा आते थे॥

(सुलैमान का बिगाड़ और ईश्वर का क्रोध
और सुलैमान की मृत्यु)

११ परन्तु राजा सुलैमान फिरौन
की बेटी, और बहुतेरी और पराये
स्त्रियों से, जो मोआबी, अम्मोनी, एदोमी,
सीदोनी, और हित्ती थीं, प्रीति करने
लगा। २ वे उन जातियों की थीं, जिनके
विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा
था, कि तुम उनके मध्य में न जाना,
और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएं,
वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर
निःसन्देह फेरेंगी, उन्हीं की प्रीति में
सुलैमान लिप्त हो गया। ३ और उसके
सात सौ रानियां, और तीन सौ रखेलियां
हो गई थीं और उसकी इन स्त्रियों ने
उसका मन बहका दिया। ४ सो जब
सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों
ने उसका मन पराये देवताओं की ओर
बहका दिया, और उसका मन अपने पिता
दाऊद की नाईं अपने परमेश्वर यहोवा
पर पूरी रीति से लगा न रहा। ५ सुलैमान
तो सीदोनियों की अश्तोरेत नाम देवी,
और अम्मोनियों के मिल्कोम नाम घृणित
देवता के पीछे चला। ६ और सुलैमान
ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में
बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता
दाऊद की नाईं पूरी रीति से न चला।
७ उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के
साम्हने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश
नाम घृणित देवता के लिये और अम्मोनियों
के मोलेक नाम घृणित देवता के लिये
एक एक ऊंचा स्थान बनाया। ८ और
अपनी सब पराये स्त्रियों के लिये भी,
जो अपने अपने देवताओं को धूप जलातीं,
और बलिदान करती थीं, उस ने ऐसा
ही किया॥

९ तब यहोवा ने सुलैमान पर क्रोध
किया, क्योंकि उसका मन इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा से फिर गया था जिस
ने दो बार उसको दर्शन दिया था।
१० और उस ने इसी बात के विषय में

आज्ञा दी थी, कि पराये देवताओं के
पीछे न हो लेना, तौभी उस ने यहोवा
की आज्ञा न मानी। ११ और यहोवा ने
सुलैमान से कहा, तुझ से जो ऐसा काम
हुआ है, और मेरी बन्धाई हुई वाचा और
दी हुई विधि तू ने पूरी नहीं की, इस
कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर
तेरे एक कर्मचारी को दे दूंगा। १२ तौभी
तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे दिनों में
तो ऐसा न करूंगा, परन्तु तेरे पुत्र के
हाथ से राज्य छीन लूंगा। १३ फिर भी
मैं पूरा राज्य तो न छीन लूंगा, परन्तु
अपने दास दाऊद के कारण, और अपने
चुने हुए यरूशलेम के कारण, मैं तेरे पुत्र
के हाथ में एक गोत्र छोड़ दूंगा॥

१४ सो यहोवा ने एदोमी हदद को
जो एदोमी राजवंश का था, सुलैमान का
शत्रु बना दिया। १५ क्योंकि जब दाऊद
एदोम में था, और योआब सेनापति
मारे हुओं को मिट्टी देने गया, १६ (योआब
तो समस्त इस्राएल समेत वहां छः महीने
रहा, जब तक कि उस ने एदोम के सब
पुरुषों को नाश न कर दिया)। १७ तब
हदद जो छोटा लड़का था, अपने पिता
के कई एक एदोमी सेवकों के संग मिस्र
को जाने की मनसा से भागा। १८ और
वे मिद्यान से होकर पारान को आए, और
पारान में से कई पुरुषों को संग लेकर
मिस्र में फिरौन राजा के पास गए, और
फिरौन ने उसको घर दिया, और उसको
भोजन मिलने की आज्ञा दी और कुछ
भूमि भी दी। १९ और हदद पर फिरौन
की बड़े अनुग्रह की दृष्टि हुई, और उस
ने उसको अपनी साली अर्थात् तहपनेस
रानी की बहिन ब्याह दी। २० और
तहपनेस की बहिन से गनूबत उत्पन्न हुआ
और इसका दूध तहपनेस ने फिरौन के
भवन में छुड़ाया, तब गनूबत फिरौन
के भवन में उसी के पुत्रों के साथ रहता
था। २१ जब हदद ने मिस्र में रहते
यह सुना, कि दाऊद अपने पुरखाओं के
संग सो गया, और योआब सेनापति भी
मर गया है, तब उस ने फिरौन से कहा,
मुझे आज्ञा दे कि मैं अपने देश को जाऊं।
२२ फिरौन ने उस से कहा, क्यों? मेरे यहां
तुझे क्या घटी हुई कि तू अपने देश को चला
जाना चाहता है? उस ने उत्तर दिया, कुछ
नहीं हुई, तौभी मुझे अवश्य जाने दे॥

२३ फिर परमेश्वर ने उसका एक
और शत्रु कर दिया, अर्थात् एल्यादा
के पुत्र रजोन को, वह तो अपने स्वामी
सोबा के राजा हददेजेर के पास से भागा
था, २४ और जब दाऊद ने सोबा के
जनों को घात किया, तब रजोन अपने
पास कई पुरुषों को इकट्ठे करके, एक
दल का प्रधान हो गया, और वह दमिश्क
को जाकर वहीं रहने और राज्य करने
लगा। २५ और उस हानि को छोड़ जो
हदद ने की, रजोन भी, सुलैमान के
जीवन भर इस्राएल का शत्रु बना रहा,
और वह इस्राएल से घृणा रखता हुआ
अराम पर राज्य करता था॥

२६ फिर नबात का और सरूआह
नाम एक विधवा का पुत्र यारोबाम नाम
एक एप्रैमी सरेदावासी जो सुलैमान का
कर्मचारी था, उस ने भी राजा के विरुद्ध
सिर* उठाया। २७ उसका राजा के
विरुद्ध सिर* उठाने का यह कारण हुआ,
कि सुलैमान मिल्लो को बना रहा था
और अपने पिता दाऊद के नगर के

* मूल में—हाथ।

दरार बन्द कर रहा था। २८ यारोबाम
बड़ा शूरवीर था, और जब सुलैमान ने
जवान को देखा, कि यह परिश्रमी है,
तब उस ने उसको यूसुफ के घराने के
सब काम पर मुखिया ठहराया। २९ उन्हीं
दिनों में यारोबाम यरूशलेम से निकलकर
जा रहा था, कि शीलोवासी अहिय्याह
नबी, नई चद्दर ओढ़े हुए मार्ग पर उस से
मिला, और केवल वे ही दोनों मैदान
में थे। ३० और अहिय्याह ने अपनी
उस नई चद्दर को ले लिया, और उसे
फाड़कर बारह टुकड़े कर दिए। ३१ तब
उस ने यारोबाम से कहा, दस टुकड़े
ले ले, क्योंकि, इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यों कहता है, कि सुन, मैं राज्य
को सुलैमान के हाथ से छीन कर दस
गोत्र तेरे हाथ में कर दूंगा। ३२ परन्तु
मेरे दास दाऊद के कारण और यरूशलेम
के कारण जो मैं ने इस्राएल के सब
गोत्रों में से चुना है, उसका एक गोत्र
बना रहेगा। ३३ इसका कारण यह है
कि उन्हों ने मुझे त्याग कर सीदोनियों
की देवी अश्तोरेत और मोआबियों के
देवता कमोश, और अम्मोनियों के देवता
मिल्कोम को दण्डवत की, और मेरे
मार्गों पर नहीं चले और जो मेरी दृष्टि
में ठीक है, वह नहीं किया, और मेरी
विधियों और नियमों को नहीं माना
जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया।
३४ तौभी मैं उसके हाथ से पूर्ण राज्य
न ले लूंगा, परन्तु मेरा चुना हुआ दास
दाऊद जो मेरी आज्ञाएं और विधियां
मानता रहा, उसके कारण मैं उसको
जीवन भर प्रधान ठहराए रखूंगा।
३५ परन्तु उसके पुत्र के हाथ से मैं राज्य
अर्थात् दस गोत्र लेकर तुझे दे दूंगा।
३६ और उसके पुत्र को मैं एक गोत्र
दूंगा, इसलिये कि यरूशलेम अर्थात् उस
नगर में जिसे अपना नाम रखने को मैं
ने चुना है, मेरे दास दाऊद का दीपक
मेरे साम्हने सदैव बना रहे। ३७ परन्तु
तुझे मैं ठहरा लूंगा, और तू अपनी इच्छा
भर इस्राएल पर राज्य करेगा। ३८ और
यदि तू मेरे दास दाऊद की नाईं मेरी सब
आज्ञाएं माने, और मेरे मार्गों पर चले,
और जो काम मेरी दृष्टि में ठीक है,
वही करे, और मेरी विधियां और आज्ञाएं
मानता रहे, तो मैं तेरे संग रहूंगा, और
जिस तरह मैं ने दाऊद का घराना बनाए
रखा है, वैसे ही तेरा भी घराना बनाए
रखूंगा, और तेरे हाथ इस्राएल को दूंगा।
३९ इस पाप के कारण मैं दाऊद के
वंश को दुःख दूंगा, तौभी सदा तक नहीं।
४० और सुलैमान ने यारोबाम को मार
डालना चाहा, परन्तु यारोबाम मिस्र के
राजा शीशक के पास भाग गया, और
सुलैमान के मरने तक वहीं रहा॥

४१ सुलैमान की और सब बातें
और उसके सब काम और उसकी बुद्धिमानी
का वर्णन, क्या सुलैमान के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखा है? ४२ सुलैमान
को यरूशलेम में सब इस्राएल पर राज्य
करते हुए चालीस वर्ष बीते। ४३ और
सुलैमान अपने पुरखाओं के संग सोया,
और उसको उसके पिता दाऊद के नगर
में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र रहूबियाम
उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(इस्राएल के राज्य का दो भाग हो जाना)

१२ रहूबियाम तो शकेम को गया,
क्योंकि सब इस्राएली उसको राजा
बनाने के लिये वहीं गए थे। २ और

जब नबात के पुत्र यारोबाम ने यह सुना,
(जो अब तक मिस्र में रहता था, क्योंकि
यारोबाम सुलैमान राजा के डर के मारे
भागकर मिस्र मे रहता था। ३ सो
उन लोगो ने उसको बुलवा भेजा) तब
यारोबाम और इस्राएल की समस्त सभा
रहूबियाम के पास जाकर यो कहने लगी,
४ कि तेरे पिता ने तो हम लोगो पर
भारी जूआ डाल रखा था, तो अब तू
अपने पिता की कठिन सेवा को, और
उस भारी जूए को, जो उस ने हम पर
डाल रखा है, कुछ हलका कर, तब
हम तेरे अधीन रहेंगे। ५ उस ने कहा,
अभी तो जाओ, और तीन दिन के बाद
मेरे पास फिर आना। तब वे चले गए।
६ तब राजा रहूबियाम ने उन बूढ़ो से
जो उसके पिता सुलैमान के जीवन भर
उसके साम्हने उपस्थित रहा करते थे
सम्मति ली, कि इस प्रजा को कैसा उत्तर
देना उचित है, इस मे तुम क्या सम्मति
देते हो? ७ उन्हो ने उसको यह उत्तर
दिया, कि यदि तू अभी प्रजा के लोगो
का दास बनकर उनके अधीन हो और
उन से मधुर बाते कहे, तो वे सदैव तेरे
अधीन बने रहेंगे। ८ रहूबियाम ने उस
सम्मति को छोड़ दिया, जो बूढ़ो ने
उसको दी थी, और उन जवानो से
सम्मति ली, जो उसके सग बड़े हुए थे,
और उसके सम्मुख उपस्थित रहा करते
थे। ९ उन से उस ने पूछा, मैं प्रजा के
लोगो को कैसा उत्तर दू? इस मे तुम
क्या सम्मति देते हो? उन्हो ने तो मुझ
से कहा है, कि जो जूआ तेरे पिता ने
हम पर डाल रखा है, उसे तू हलका कर।
१० जवानो ने जो उसके सग बड़े हुए
थे उसको यह उत्तर दिया, कि उन लोगो
ने तुझ से कहा है, कि तेरे पिता ने हमारा
जूआ भारी किया था, परन्तु तू उसे हमारे
लिये हलका कर, तू उन से यो कहना,
कि मेरी छिगुलिया मेरे पिता की कमर
से भी मोटी है। ११ मेरे पिता ने तुम
पर जो भारी जूआ रखा था, उसे मैं
और भी भारी करूंगा, मेरा पिता तो
तुम को कोड़ो से ताड़ना देता था, परन्तु
मैं बिच्छुओ से दूगा। १२ तीसरे दिन,
जैसे राजा ने ठहराया था, कि तीसरे
दिन मेरे पास फिर आना, वैसे ही यारोबाम
और समस्त प्रजागण रहूबियाम के पास
उपस्थित हुए। १३ तब राजा ने प्रजा
से कड़ी बाते की, १४ और बूढ़ो की दी
हुई सम्मति छोड़कर, जवानो की सम्मति
के अनुसार उन से कहा, कि मेरे पिता
ने तो तुम्हारा जूआ भारी कर दिया,
परन्तु मैं उसे और भी भारी कर दूगा
मेरे पिता ने तो कोड़ो से तुम को ताड़ना
दी, परन्तु मैं तुम को बिच्छुओ से ताड़ना
दूगा। १५ सो राजा ने प्रजा की बात
नही मानी, इसका कारण यह है, कि जो
वचन यहोवा ने शीलोवासी अहिय्याह
के द्वारा नबात के पुत्र यारोबाम से कहा
था, उसको पूरा करने के लिये उस ने
ऐसा ही ठहराया था। १६ जब सब
इस्राएल ने देखा कि राजा हमारी नही
सुनता, तब वे बोले*, कि दाऊद के साथ
हमारा क्या अंश? हमारा तो यिशै के
पुत्र में कोई भाग नहीं! हे इस्राएल
अपने अपने डेरे को चले जाओ अब हे
दाऊद, अपने ही घराने की चिन्ता कर।
१७ सो इस्राएल अपने अपने डेरे को
चले गए। केवल जितने इस्राएली यहूदा

* मूल में—राजा को उत्तर दिया।

के नगरो मे वसे हुए थे उन पर रहूवियाम
राज्य करता रहा। १८ तव राजा रहू-
वियाम ने अदोराम को जो सव वेगारो
पर अधिकारी था, भेज दिया, और सव
इस्राएलियो ने उसको पत्थरवाह किया,
और वह मर गया तव रहूवियाम फुर्ती
से अपने रथ पर चढकर यरूशलेम को
भाग गया। १९ और इस्राएल दाऊद
के घराने से फिर गया, और आज तक
फिरा हुआ है। २० यह सुनकर कि
यारोवाम लौट आया है, समस्त इस्राएल
ने उसको मण्डली मे वुलवा भेजकर,
पूर्ण इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त
किया, और यहूदा के गोत्र को छोडकर
दाऊद के घराने से कोई मिला न
रहा॥

२१ जव रहूवियाम यरूशलेम को
आया, तव उस ने यहूदा के पूर्ण घराने
को, और विन्यामीन के गोत्र को, जो
मिलकर एक लाख अस्सी हजार अच्छे
योद्धा थे, इकट्ठा किया, कि वे इस्राएल
के घराने के साथ लडकर सुलैमान के
पुत्र रहूवियाम के वश मे फिर राज्य
कर दे। २२ तव परमेश्वर का यह वचन
परमेश्वर के जन शमायाह के पास पहुचा
कि यहूदा के राजा सुलैमान के पुत्र
रहूवियाम से, २३ और यहूदा और
विन्यामीन के सव घराने से, और सव
लोगो से कह, यहोवा यो कहता है, २४ कि
अपने भाई इस्राएलियो पर चढाई करके
युद्ध न करो, तुम अपने अपने घर लौट
जाओ, क्योकि यह बात मेरी ही ओर
से हुई है। यहोवा का यह वचन मानकर
उन्हो ने उसके अनुसार लौट जाने को
अपना अपना मार्ग लिया॥

(यारोवाम का मूर्त्तिपूजा चलाना)

२५ तव यारोवाम एप्रैम के पहाडी
देश के शकेम नगर को दृढ करके उस
मे रहने लगा, फिर वहा से निकलकर
पनूएल को भी दृढ किया। २६ तव
यारोवाम सोचने लगा, कि अव राज्य
दाऊद के घराने का हो जाएगा। २७ यदि
प्रजा के लोग यरूशलेम मे वलि करने
को जाए, तो उनका मन अपने स्वामी
यहूदा के राजा रहूवियाम की ओर फिरेगा,
और वे मुझे घात करके यहूदा के राजा
रहूवियाम के हो जाएगे। २८ तो राजा
ने सम्मति लेकर सोने के दो वछडे वनाए
और लोगो से कहा, यरूशलेम को जाना
तुम्हारी शक्ति से वाहर है इसलिये हे
इस्राएल अपने देवताओ को देखो, जो तुम्हे
मिस्र देश से निकाल लाए है। २९ तो उस
ने एक वछडे को वेतेल, और दूसरे को दान
मे स्थापित किया। ३० और यह वात
पाप का कारण हुई; क्योकि लोग उस
एक के साम्हने दण्डवत करने को दान तक
जाने लगे। ३१ और उस ने ऊंचे स्थानो
के भवन वनाए, और सव प्रकार के लोगो*
मे से जो लेवीवशी न थे, याजक ठहराए।
३२ फिर यारोवाम ने आठवे महीने के
पन्द्रहवे दिन यहूदा के पर्व के समान एक पर्व
ठहरा दिया, और वेदी पर वलि चढाने
लगा, इस रीति उस ने वेतेल मे अपने
वनाए हुए वछडो के लिये वेदी पर, वलि
किया, और अपने वनाए हुए ऊचे स्थानो
के याजको को वेतेल मे ठहरा दिया॥

(यहूदी नबी की कथा)

३३ और जिस महीने की उस ने
अपने मन मे कल्पना की थी अर्थात्

* मूल में—अन्त के लोगों।

आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह
बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास
चढ़ गया। उस ने इस्राएलियों के लिये
एक पर्व्व ठहरा दिया, और धूप जलाने
को वेदी के पास चढ़ गया॥

१३ तब यहोवा से वचन पाकर
परमेश्वर का एक जन यहूदा से
बेतेल को आया, और यारोबाम धूप
जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था।
२ उस जन ने यहोवा से वचन पाकर
वेदी के विरुद्ध यों पुकारा, कि वेदी,
हे वेदी! यहोवा यों कहता है, कि सुन,
दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक
लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊंचे स्थानों
के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते
हैं, तुझ पर बलि कर देगा, और तुझ
पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी।
३ और उस ने, उसी दिन यह कहकर
उस बात का एक चिह्न भी बताया, कि
यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका
चिह्न यह है कि यह वेदी फट जाएगी,
और इस पर की राख गिर जाएगी।
४ तब ऐसा हुआ कि परमेश्वर के जन का
यह वचन सुनकर जो उस ने बेतेल के
विरुद्ध पुकार कर कहा, यारोबाम ने वेदी
के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, उसको
पकड़ लो तब उसका हाथ जो उसकी
ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और
वह उसे अपनी ओर खींच न सका।
५ और वेदी फट गई, और उस पर
की राख गिर गई, सो वह चिह्न पूरा
हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से
वचन पाकर कहा था। ६ तब राजा
ने परमेश्वर के जन से कहा, अपने परमेश्वर
यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर,
कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए,
तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया
और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों
हो गया। ७ तब राजा ने परमेश्वर के
जन से कहा, मेरे संग घर चलकर अपना
प्राण ठंडा कर, और मैं तुझे दान भी
दूंगा। ८ परमेश्वर के जन ने राजा
से कहा, चाहे तू मुझे अपना आधा घर
भी दे, तौभी तेरे घर न चलूंगा, और
इस स्थान में मैं न तो रोटी खाऊंगा
और न पानी पीऊंगा। ९ क्योंकि यहोवा
के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली
है, कि न तो रोटी खाना, और न पानी
पीना, और न उस मार्ग से लौटना जिस से
तू जाएगा। १० इसलिये वह उस मार्ग
से जिसे बेतेल को गया था न लौटकर,
दूसरे मार्ग से चला गया॥

११ बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता
था, और उसके एक बेटे ने आकर उस
से उन सब कामों का वर्णन किया जो
परमेश्वर के जन ने उस दिन बेतेल में
किए थे, और जो बातें उस ने राजा से कही
थीं, उनको भी उस ने अपने पिता से
कह सुनाया। १२ उसके बेटों ने तो
यह देखा था, कि परमेश्वर का वह जन
जो यहूदा से आया था, किस मार्ग से
चला गया, सो उनके पिता ने उन से
पूछा, वह किस मार्ग से चला गया?
१३ और उस ने अपने बेटों से कहा,
मेरे लिये गदहे पर काठी बान्धो, तब
उन्हों ने गदहे पर काठी बान्धी, और
वह उस पर चढ़ा, १४ और परमेश्वर
के जन के पीछे जाकर उसे एक बांजवृक्ष
के तले बैठा हुआ पाया, और उस से
पूछा, परमेश्वर का जो जन यहूदा से
आया था, क्या तू वही है? १५ उस

ने कहा हा, वही हू। उस ने उस से
कहा, मेरे सग घर चलकर भोजन कर।
१६ उस ने उस से कहा, मैं न तो तेरे
सग लौट सकता, और न तेरे सग घर
मे जा सकता हू और न मैं इस स्थान
मे तेरे सग रोटी खाऊगा, वा पानी पीऊगा।
१७ क्योकि यहोवा के वचन के द्वारा
मुझे यह आज्ञा मिली है, कि वहा न तो
रोटी खाना और न पानी पीना, और
जिस मार्ग से तू जाएगा उस से न लौटना।
१८ उस ने कहा, जैसा तू नबी है वैसा
ही मैं भी नबी हू, और मुझ से एक दूत
ने यहोवा से वचन पाकर कहा, कि उस
पुरुष को अपने सग अपने घर लौटा ले
आ, कि वह रोटी खाए, और पानी पीए।
यह उस ने उस से झूठ कहा। १९ अतएव
वह उसके सग लौट गया और उसके
घर मे रोटी खाई और पानी पीया।
२० और जब वे मेज पर बैठे ही थे, कि
यहोवा का वचन उस नबी के पास पहुचा,
जो दूसरे को लौटा ले आया था। २१ और
उस ने परमेश्वर के उस जन को जो यहूदा
से आया था, पुकार के कहा, यहोवा यो
कहता है इसलिये कि तू ने यहोवा का
वचन न माना, और जो आज्ञा तेरे परमेश्वर
यहोवा ने तुझे दी थी उसे भी नही माना,
२२ परन्तु जिस स्थान के विषय उस
ने तुझ से कहा था, कि उस मे न तो
रोटी खाना और न पानी पीना, उसी
मे तू ने लौट कर रोटी खाई, और पानी
भी पिया है इस कारण तुझे अपने पुरखाओ
के कब्रिस्तान मे मिट्टी नही दी जाएगी।
२३ जब वह खा पी चुका, तब उस ने
परमेश्वर के उस जन के लिये जिसको
वह लौटा ले आया था गदहे पर काठी
बन्धाई। २४ जब वह मार्ग मे चल रहा
था, तो एक सिंह उसे मिला, और उसको
मार डाला, और उसकी लोथ मार्ग पर
पडी रही, और गदहा उसके पास खडा
रहा और सिंह भी लोथ के पास खडा
रहा। २५ जो लोग उधर से चले आ
रहे थे उन्हो ने यह देख कर कि मार्ग
पर एक लोथ पडी है, और उसके पास
सिंह खडा है, उस नगर मे जाकर जहा
वह बूढा नबी रहता था यह समाचार
सुनाया। २६ यह सुनकर उस नबी ने
जो उसको मार्ग पर से लौटा ले आया
था, कहा, परमेश्वर का वही जन होगा,
जिस ने यहोवा के वचन के विरुद्ध किया
था, इस कारण यहोवा ने उसको सिंह
के पजे मे पडने दिया, और यहोवा के
उस वचन के अनुसार जो उस ने उस से
कहा था, सिंह ने उसे फाडकर मार डाला
होगा। २७ तब उस ने अपने बेटो से
कहा, मेरे लिये गदहे पर काठी बान्धो,
जब उन्हो ने काठी बान्धी, २८ तब उस
ने जाकर उस जन की लोथ मार्ग पर
पडी हुई, और गदहे, और सिंह दोनो
को लोथ के पास खडे हुए पाया, और
यह भी कि सिंह ने न तो लोथ को खाया,
और न गदहे को फाडा है। २९ तब
उस बूढे नबी ने परमेश्वर के जन की
लोथ उठाकर गदहे पर लाद ली, और
उसके लिये छाती पीटने लगा, और उसे
मिट्टी देने को अपने नगर मे लौटा ले
गया। ३० और उस ने उसकी लोथ
को अपने कब्रिस्तान मे रखा, और लोग
हाय, मेरे भाई! यह कहकर छाती
पीटने लगे। ३१ फिर उसे मिट्टी देकर
उस ने अपने बेटो से कहा, जब मैं मर
जाऊगा तब मुझे इसी कब्रिस्तान मे रखना,
जिस मे परमेश्वर का यह जन रखा गया

है, और मेरी हड्डियां उसी की हड्डियों के
पास धर देना। ३२ क्योंकि जो वचन
उस ने यहोवा से पाकर बेतेल की वेदी
और शोमरोन के नगरों के सब ऊंचे
स्थानों के भवनों के विरुद्ध पुकार के
कहा है, वह निश्चय पूरा हो जाएगा॥

(यारोबाम का अन्तकाल)

३३ इसके बाद यारोबाम अपनी बुरी
चाल से न फिरा। उस ने फिर सब
प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों के
याजक बनाए, वरन जो कोई चाहता
था, उसका संस्कार करके, वह उसको
ऊंचे स्थानों का याजक होने को ठहरा
देता था। ३४ और यह बात यारोबाम
के घराने का पाप ठहरी, इस कारण
उसका विनाश हुआ, और वह धरती
पर से नाश किया गया॥

१४ उस समय यारोबाम का बेटा
अबिय्याह रोगी हुआ। २ तब
यारोबाम ने अपनी स्त्री से कहा, ऐसा
भेष बना कि कोई तुझे पहिचान न सके
कि यह यारोबाम की स्त्री है, और शीलो
को चली जा, वहां तो अहिय्याह नबी
रहता है जिस ने मुझ से कहा था कि
तू इस प्रजा का राजा हो जाएगा।
३ उसके पास तू दस रोटी, और पपड़ियां
और एक कुप्पी मधु लिये हुए जा, और
वह तुझे बताएगा कि लड़के को क्या
होगा। ४ यारोबाम की स्त्री ने वैसा
ही किया, और चलकर शीलो को पहुंची
और अहिय्याह के घर पर आई अहिय्याह
को तो कुछ सूझ न पड़ता था, क्योंकि
बुढ़ापे के कारण उसकी आंखें धुन्धली
पड़ गई थीं। ५ और यहोवा ने अहिय्याह
से कहा, सुन यारोबाम की स्त्री तुझ से
अपने बेटे के विषय में जो रोगी है कुछ
पूछने को आती है, तू उस से ये ये बातें
कहना, वह तो आकर अपने को दूसरी
औरत बनाएगी। ६ जब अहिय्याह ने
द्वार में आते हुए उसके पांव की आहट
सुनी तब कहा, हे यारोबाम की स्त्री!
भीतर आ, तू अपने को क्यों दूसरी
स्त्री बनाती है? मुझे तेरे लिये भारी
सन्देशा मिला है। ७ तू जाकर यारोबाम
से कह कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
तुझ से यों कहता है, कि मैं ने तो तुझ को
प्रजा में से बढ़ाकर अपनी प्रजा इस्राएल
पर प्रधान किया, ८ और दाऊद के
घराने से राज्य छीनकर तुझ को दिया,
परन्तु तू मेरे दास दाऊद के समान न
हुआ जो मेरी आज्ञाओं को मानता, और
अपने पूर्ण मन से मेरे पीछे पीछे चलता,
और केवल वही करता था जो मेरी
दृष्टि में ठीक है। ९ तू ने उन सभों
से बढ़कर जो तुझ से पहिले थे बुराई,
की है, और जाकर पराये देवता की
उपासना की और मूरतें ढालकर बनाईं,
जिस से मुझे क्रोधित कर दिया और
मुझे तो पीठ के पीछे फेंक दिया है।
१० इस कारण मैं यारोबाम के घराने
पर विपत्ति डालूंगा, वरन मैं यारोबाम
के कुल में से हर एक लड़के को और
क्या बन्धुए, क्या स्वाधीन इस्राएल के
मध्य हर एक रहनेवाले को भी नष्ट कर
डालूंगा और जैसा कोई गोबर को तब
तक उठाता रहता है जब तक वह सब
उठा नहीं लिया जाता, वैसे ही मैं यारोबाम
के घराने की सफाई कर दूंगा। ११ यारो-
बाम के घराने का जो कोई नगर में मर
जाए, उसको कुत्ते खाएंगे, और जो
मैदान में मरे, उसको आकाश के पक्षी

खा जाएगे, क्योकि यहोवा ने यह कहा
है। १२ इसलिये तू उठ और अपने
घर जा, और नगर के भीतर तेरे पाव
पडते ही वह बालक मर जाएगा। १३ उसे
तो समस्त इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी
देंगे, यारोबाम के सन्तानो मे से केवल
उसी को कबर मिलेगी, क्योकि यारोबाम
के घराने मे से उसी मे कुछ पाया जाता
है जो यहोवा इस्राएल के प्रभु की दृष्टि
मे भला है। १४ फिर यहोवा इस्राएल
के लिये एक ऐसा राजा खडा करेगा जो
उसी दिन यारोबाम के घराने को नाश
कर डालेगा, परन्तु कब? १५ यह अभी
होगा। क्योकि यहोवा इस्राएल को ऐसा
मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट
हिलाया जाता है, और वह उनको इस
अच्छी भूमि मे से जो उस ने उनके पुरखाओ
को दी थी उखाडकर महानद के पार
तित्तर-बित्तर करेगा; क्योकि उन्हो ने
अशेरा नाम मूरतें अपने लिये बनाकर
यहोवा को क्रोध दिलाया है। १६ और
उन पापो के कारण जो यारोबाम ने
किए और इस्राएल से कराए थे, यहोवा
इस्राएल को त्याग देगा। १७ तब यारो-
बाम की स्त्री विदा होकर चली और
तिरजा को आई, और वह भवन की
डेवढी पर जैसे ही पहुची कि वह बालक
मर गया। १८ तब यहोवा के वचन के
अनुसार जो उस ने अपने दास अहिय्याह
नबी से कहलाया था समस्त इस्राएल
ने उसको मिट्टी देकर उसके लिये शोक
मनाया। १९ यारोबाम के और काम
अर्थात् उस ने कैसा कैसा युद्ध किया,
और कैसा राज्य किया, यह सब इस्राएल
के राजाओ के इतिहास की पुस्तक मे
लिखा है। २० यारोबाम बाईस वर्ष तक
राज्य करके अपने पुरखाओ के साथ सो
गया और नादाब नाम उसका पुत्र उसके
स्थान पर राजा हुआ॥

(रहूबियाम का राज्य)

२१ और सुलैमान का पुत्र रहूबियाम
यहूदा मे राज्य करने लगा। रहूबियाम
इकतालीस वर्ष का होकर राज्य करने
लगा; और यरूशलेम जिसको यहोवा
ने सारे इस्राएली गोत्रो मे से अपना नाम
रखने के लिये चुन लिया था, उस नगर
मे वह सत्रह वर्ष तक राज्य करता रहा,
और उसकी माता का नाम नामा था जो
अम्मोनी स्त्री थी। २२ और यहूदी लोग
वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि मे
बुरा है, और अपने पुरखाओ से भी
अधिक पाप करके उसकी जलन भडकाई।
२३ उन्हो ने तो सब ऊचे टीलो पर,
और सब हरे वृक्षो के तले, ऊचे स्थान,
और लाठें, और अशेरा नाम मूरतें बना
ली। २४ और उनके देश मे पुरुषगामी
भी थे, निदान वे उन जातियो के से सब
घिनौने काम करते थे जिन्हे यहोवा ने
इस्राएलियो के साम्हने से निकाल दिया
था। २५ राजा रहूबियाम के पाचवे वर्ष
मे मिस्र का राजा शीशक, यरूशलेम पर
चढाई करके, २६ यहोवा के भवन की
अनमोल वस्तुए और राजभवन की अनमोल
वस्तुए, सब की सब उठा ले गया, और
सोने की जो ढाले सुलैमान ने बनाई थी
सब को वह ले गया। २७ इसलिये राजा
रहूबियाम ने उनके बदले पीतल की ढाले
बनवाई और उन्हे पहरुओ के प्रधानो के
हाथ सौंप दिया जो राजभवन के द्वार
की रखवाली करते थे। २८ और जब
जब राजा यहोवा के भवन मे जाता था

तब तब पहरुए उन्हें उठा ले चलते, और
फिर अपनी कोठरी में लौटाकर रख
देते थे। २९ रहूबियाम के और सब
काम जो उस ने किए वह क्या यहूदा
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में
नहीं लिखे है? ३० रहूबियाम और
यारोबाम में तो सदा लड़ाई होती रही।
३१ और रहूबियाम जिसकी माता नामा
नाम एक अम्मोनिन थी, अपने पुरखाओं के
साथ सो गया, और उन्ही के पास दाऊदपुर
में उसको मिट्टी दी गई और उसका
पुत्र अबिय्याम उसके स्थान पर राज्य
करने लगा॥

(अबिय्याम का राज्य)

१५ नबात के पुत्र यारोबाम के
राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याम
यहूदा पर राज्य करने लगा। २ और
वह तीन वर्ष तक यरूशलेम में राज्य
करता रहा। उसकी माता का नाम माका
था जो अबशालोम की पुत्री थी ३ वह
वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा
जैसे उसके पिता ने उस से पहिले किए थे
और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की
ओर अपने परदादा दाऊद की नाईं पूरी रीति
से सिद्ध न था, ४ तौभी दाऊद के कारण
उसके परमेश्वर यहोवा ने यरूशलेम में
उसे एक दीपक दिया अर्थात् उसके पुत्र को
उसके बाद ठहराया और यरूशलेम को
बनाए रखा। ५ क्योंकि दाऊद वह किया
करता था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक
था और हित्ती ऊरिय्याह की बात के
सिवाय और किसी बात में यहोवा की
किसी आज्ञा से जीवन भर कभी न मुड़ा।
६ रहूबियाम के जीवन भर तो उसके
और यारोबाम के बीच लड़ाई होती
रही। ७ अबिय्याम के और सब काम
जो उस ने किए, क्या वे यहूदा के राजाओं
के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं?
और अबिय्याम की यारोबाम के साथ
लड़ाई होती रही। ८ निदान अबिय्याम
अपने पुरखाओं के संग सोया, और
उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और
उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य
करने लगा॥

(आसा का राज्य)

९ इस्राएल के राजा यारोबाम के
बीसवें वर्ष में आसा यहूदा पर राज्य
करने लगा, १० और यरूशलेम में
इकतालीस वर्ष तक राज्य करता रहा,
और उसकी माता अबशालोम की पुत्री
माका थी। ११ और आसा ने अपने
मूलपुरुष दाऊद की नाईं वही किया जो
यहोवा की दृष्टि में ठीक था। १२ उस
ने तो पुरुषगामियों को देश से निकाल
दिया, और जितनी मूरतें उसके पुरखाओं
ने बनाई थीं उन सभों को उस ने दूर कर
दिया। १३ वरन उसकी माता माका
जिस ने अशेरा के लिये एक घिनौनी
मूरत बनाई थी उसको उस ने राजमाता
के पद से उतार दिया, और आसा ने
उसकी मूरत को काट डाला और किद्रोन
के नाले में फूंक दिया। १४ परन्तु ऊंचे
स्थान तो ढाए न गए, तौभी आसा का
मन जीवन भर यहोवा की ओर पूरी
रीति से लगा रहा। १५ और जो सोना
चांदी और पात्र उसके पिता ने अर्पण
किए थे, और जो उसने स्वयं अर्पण
किए थे, उन सभों को उस ने यहोवा के
भवन में पहुंचा दिया। १६ और आसा और
इस्राएल के राजा बाशा के बीच उनके

जीवन भर युद्ध होता रहा। १७ और
इस्राएल के राजा वाशा ने यहूदा पर
चढाई की, और रामा को इसलिये दृढ
किया कि कोई यहूदा के राजा आसा के
पास आने जाने न पाए। १८ तब आसा
ने जितना सोना चादी यहोवा के भवन
और राजभवन के भण्डारो मे रह गया
था उस सब को निकाल अपने कर्मचारियो
के हाथ सौपकर, दमिश्कवासी अराम के
राजा बेन्हदद के पास जो हेज्योन का
पोता और तब्रिम्मोन का पुत्र था भेजकर
यह कहा, कि जैसा मेरे और तेरे पिता
के मध्य मे वैसा ही मेरे और तेरे मध्य
भी वाचा बान्धी जाए १९ देख, मैं
तेरे पास चादी सोने की भेट भेजता हू,
इसलिये आ, इस्राएल के राजा वाशा के
साथ की अपनी वाचा को टाल दे, कि
वह मेरे पास से चला जाए। २० राजा
आसा की यह बात मानकर बेन्हदद ने
अपने दलो के प्रधानो से इस्राएली नगरो
पर चढाई करवाकर इय्योन, दान,
आबेल्बेत्माका और समस्त किन्नेरेत को
और नप्ताली के समस्त देश को पूरा
जीत लिया। २१ यह सुनकर वाशा ने
रामा को दृढ करना छोड दिया, और
तिर्सा मे रहने लगा। २२ तब राजा
आसा ने सारे यहूदा मे प्रचार करवाया
और कोई अनसुना न रहा, तब वे रामा
के पत्थरो और लकडी को जिन से वाशा
उसे दृढ करता था उठा ले गए और
उन से राजा आसा ने बिन्यामीन के
गेबा और मिस्पा को दृढ किया।
२३ आसा के और सब काम और वीरता
और जो कुछ उस ने किया, और जो
नगर उस ने दृढ किए, यह सब क्या
यहूदा के राजाओ के इतिहास की पुस्तक
मे नही लिखा है? २४ परन्तु उसके
बुढापे मे तो उसे पावो का रोग लग
गया। निदान आसा अपने पुरखाओ के
सग सो गया, और उसे उसके मूलपुरुष
दाऊद के नगर मे उन्ही के पास मिट्टी
दी गई और उसका पुत्र यहोशापात उसके
स्थान पर राज्य करने लगा॥

(नादाब का राज्य)

२५ यहूदा के राजा आसा के दूसरे
वर्ष मे यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल
पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष
तक राज्य करता रहा। २६ उस ने
वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि मे
बुरा था और अपने पिता के मार्ग पर
वही पाप करता हुआ चलता रहा जो
उस ने इस्राएल से करवाया था।
२७ नादाब सब इस्राएल समेत पलिश्तियो
के देश के गिब्बतोन नगर को घेरे था।
और इस्साकार के गोत्र के अहिय्याह के
पुत्र वाशा ने उसके विरुद्ध राजद्रोह की
गोष्ठी करके गिब्बतोन के पास उसको
मार डाला। २८ और यहूदा के राजा
आसा के तीसरे वर्ष मे वाशा ने नादाब
को मार डाला, और उसके स्थान पर
राजा बन गया। २९ राजा होते ही
वाशा ने यारोबाम के समस्त घराने को
मार डाला, उस ने यारोबाम के वंश को
यहा तक नष्ट किया कि एक भी जीवित
न रहा। यह सब यहोवा के उस वचन
के अनुसार हुआ जो उस ने अपने दास
शीलोवासी अहिय्याह से कहलाया था।
३० यह उस कारण हुआ कि यारोबाम
ने स्वय पाप किए, और इस्राएल से भी
करवाए थे, और उस ने इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा को क्रोधित किया था।

३१ नादाब के और सब काम जो उस
ने किए, वह क्या इस्राएल के राजाओं
के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे
हैं? ३२ आसा और इस्राएल के राजा
बाशा के मध्य में तो उनके जीवन भर
युद्ध होता रहा ॥

(बाशा का राज्य)

३३ यहूदा के राजा आसा के तीसरे
वर्ष में अहिय्याह का पुत्र बाशा, तिर्सा
में समस्त इस्राएल पर राज्य करने लगा,
और चौबीस वर्ष तक राज्य करता रहा।
३४ और उस ने वह किया, जो यहोवा
की दृष्टि में बुरा था, और यारोबाम के
मार्ग पर वही पाप करता रहा जिसे
उस ने इस्राएल से करवाया था ॥

१६ और बाशा के विषय यहोवा
का यह वचन हनानी के पुत्र येहू
के पास पहुंचा, २ कि मैं ने तुझ को
मिट्टी पर से उठाकर अपनी प्रजा इस्राएल
का प्रधान किया, परन्तु तू यारोबाम की
सी चाल चलता और मेरी प्रजा इस्राएल
से ऐसे पाप कराता आया है जिन से
वे मुझे क्रोध दिलाते हैं। ३ सुन, मैं
बाशा और उसके घराने की पूरी रीति से
सफाई कर दूंगा और तेरे घराने को
नबात के पुत्र यारोबाम के समान कर
दूंगा। ४ बाशा के घर का जो कोई
नगर में मर जाए, उसको कुत्ते खा डालेंगे,
और उसका जो कोई मैदान में मर जाए,
उसको आकाश के पक्षी खा डालेंगे ॥
५ बाशा के और सब काम जो उस ने
किए, और उसकी वीरता यह सब क्या
इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में नहीं लिखा है? ६ निदान
बाशा अपने पुरखाओं के संग सो गया
और तिर्सा में उसे मिट्टी दी गई, और
उसका पुत्र एला उसके स्थान पर राज्य
करने लगा। ७ यहोवा का जो वचन
हनानी के पुत्र येहू के द्वारा बाशा और
उसके घराने के विरुद्ध आया, वह न केवल
उन सब बुराइयों के कारण आया जो
उस ने यारोबाम के घराने के समान
होकर यहोवा की दृष्टि में किया था और
अपने कामों से उसको क्रोधित किया,
वरन इस कारण भी आया, कि उस ने
उसको मार डाला था ॥

(एला का राज्य)

८ यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवें
वर्ष में बाशा का पुत्र एला तिर्सा में इस्राएल
पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक
राज्य करता रहा। ९ जब वह तिर्सा
में अर्सा नाम भण्डारी के घर में जो उसके
तिर्सावाले भवन का प्रधान था, दारू
पीकर मतवाला हो गया था, तब उसके
जिम्री नाम एक कर्मचारी ने जो उसके
आधे रथों का प्रधान था, १० राजद्रोह
की गोष्ठी की और भीतर जाकर उसको
मार डाला, और उसके स्थान पर राजा
बन गया। यह यहूदा के राजा आसा
के सत्ताइसवें वर्ष में हुआ। ११ और
जब वह राज्य करने लगा, तब गद्दी पर
बैठते ही उस ने बाशा के पूरे घराने को
मार डाला, वरन उस ने न तो उसके
कुटुम्बियों और न उसके मित्रों में से एक
लड़के को भी जीवित छोड़ा। १२ इस
रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार
जो उस ने येहू नबी के द्वारा बाशा के
विरुद्ध कहा था, जिम्री ने बाशा का
समस्त घराना नष्ट कर दिया।
१३ इसका कारण बाशा के सब पाप

और उसके पुत्र एला के भी पाप थे,
जो उन्हो ने स्वय आप करके और इस्राएल
से भी करवा के इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा को व्यर्थ बातो से क्रोध दिलाया
था। १४ एला के और सब काम जो
उस ने किए, वह क्या इस्राएल के राजाओ
के इतिहास की पुस्तक मे नही लिखे
है ॥

(जिम्री का राज्य)

१५ यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवे
वर्ष मे जिम्री तिर्सा मे राज्य करने लगा,
और तिर्सा मे सात दिन तक राज्य करता
रहा। उस समय लोग पलिश्तियो के
देश गिब्बतोन के विरुद्ध डेरे किए हुए
थे। १६ तो जब उन डेरे लगाए हुए
लोगो ने सुना, कि जिम्री ने राजद्रोह
की गोष्ठी करके राजा को मार डाला,
तब उसी दिन समस्त इस्राएल ने ओम्री
नाम प्रधान सेनापति को छावनी मे
इस्राएल का राजा बनाया। १७ तब
ओम्री ने समस्त इस्राएल को सग ले
गिब्बतोन को छोडकर तिर्सा को घेर
लिया। १८ जब जिम्री ने देखा, कि
नगर ले लिया गया है, तब राजभवन
के गुम्मट मे जाकर राजभवन मे आग
लगा दी, और उसी मे स्वय जल मरा।
१९ यह उसके पापो के कारण हुआ क्योकि
उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि
मे बुरा था, क्योकि वह यारोबाम की
सी चाल और उसके किए हुए और
इस्राएल से करवाए हुए पाप की लीक
पर चला। २० जिम्री के और काम
और जो राजद्रोह की गोष्ठी उस ने की,
यह सब क्या इस्राएल के राजाओ के
इतिहास की पुस्तक मे नही लिखा है?

(ओम्री का राज्य)

२१ तब इस्राएली प्रजा के दो भाग
किए गए, प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी
नाम गीनत के पुत्र को राजा करने के
लिये उसी के पीछे हो लिए, और आधे
ओम्री के पीछे हो लिए। २२ अन्त मे
जो लोग ओम्री के पीछे हुए थे वे उन
पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र तिब्नी
के पीछे हो लिए थे, इसलिये तिब्नी
मारा गया और ओम्री राजा बन गया।
२३ यहूदा के राजा आशा के इकतीसवे
वर्ष मे ओम्री इस्राएल पर राज्य करने
लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता
रहा, उसने छ वर्ष तो तिर्सा मे राज्य
किया। २४ और उस ने शेमेर से
शोमरोन पहाड को दो किक्कार चादी
मे मोल लेकर, उस पर एक नगर बसाया,
और अपने बसाए हुए नगर का नाम
पहाड के मालिक शेमेर के नाम पर
शोमरोन रखा। २५ और ओम्री ने वह
किया जो यहोवा की दृष्टि मे बुरा था
वरन उन सभो से भी जो उससे पहिले
थे अधिक बुराई की। २६ वह नबात
के पुत्र यारोबाम की सी सब चाल चला,
और उसके सब पापो के अनुसार जो उस
ने इस्राएल से करवाए थे जिसके कारण
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को उन्हो
ने अपने व्यर्थ कर्मो से क्रोध दिलाया
था। २७ ओम्री के और काम जो उस
ने किए, और जो वीरता उस ने दिखाई,
यह सब क्या इस्राएल के राजाओ के
इतिहास की पुस्तक मे नही लिखा है?
२८ निदान ओम्री अपने पुरखाओ के
सग सो गया और शोमरोन मे उसको
मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र अहाब
उसके स्थान पर राज्य करने लगा ॥

(अहाब के राज्य का आरम्भ)

२९ यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें
वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल
पर राज्य करने लगा, और इस्राएल पर
शोमरोन में बाईस वर्ष तक राज्य करता
रहा। ३० और ओम्री के पुत्र अहाब ने
उन सब से अधिक जो उस से पहिले थे,
वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में
बुरे थे। ३१ उस ने तो नबात के पुत्र
यारोबाम के पापों में चलना हलकी सी
बात जानकर, सीदोनियों के राजा एतबाल
की बेटी ईज़ेबेल को ब्याह कर बाल
देवता की उपासना की और उसको
दण्डवत किया। ३२ और उस ने बाल
का एक भवन शोमरोन में बनाकर उस में
बाल की एक वेदी बनाई। ३३ और
अहाब ने एक अशेरा भी बनाया, वरन
उस ने उन सब इस्राएली राजाओं से
बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने
के काम किए। ३४ उसके दिनों में
बेतेलवासी हीएल ने यरीहो को फिर
बसाया, जब उस ने उसकी नेव डाली
तब उसका जेठा पुत्र अबीराम मर गया,
और जब उस ने उसके फाटक खड़े किए
तब उसका लहुरा पुत्र सगूब मर गया,
यह यहोवा के उस वचन के अनुसार हुआ,
जो उस ने नून के पुत्र यहोशू के द्वारा
कहलवाया था॥

(एलिय्याह के काम का आरम्भ)

१७ और तिशबी एलिय्याह जो
गिलाद के परदेशियों में से था
उस ने अहाब से कहा, इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित
रहता हूं, उसके जीवन की शपथ इन
वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा,
और न ओस पड़ेगी। २ तब यहोवा का
यह वचन उसके पास पहुंचा, ३ कि यहां
से चलकर पूरब ओर मुख करके करीत
नाम नाले में जो यरदन के साम्हने है
छिप जा। ४ उसी नाले का पानी तू
पिया कर, और मैं ने कौवों को आज्ञा
दी है कि वे तुझे वहां खिलाएं*। ५ यहोवा
का यह वचन मानकर वह यरदन के
साम्हने के करीत नाम नाले में जाकर
छिप रहा। ६ और सबेरे और सांझ
को कौवे उसके पास रोटी और मांस
लाया करते थे और वह नाले का पानी
पिया करता था। ७ कुछ दिनों के बाद
उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला
सूख गया॥

८ तब यहोवा का यह वचन उसके
पास पहुंचा, ९ कि चलकर सीदोन के
सारपत नगर में जाकर वहीं रह सुन,
मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने
की आज्ञा दी है। १० सो वह वहां
से चल दिया, और सारपत को गया,
नगर के फाटक के पास पहुंचकर उस ने
क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन
रही है, उसको बुलाकर उस ने कहा,
किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी
ले आ। ११ जब वह लेने जा रही थी,
तो उस ने उसे पुकार के कहा अपने हाथ
में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती
आ। १२ उस ने कहा, तेरे परमेश्वर
यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास
एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी
भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल
है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए

* मूल में—तेरे पालने पोसने की।

जाती हू कि अपने और अपने बेटे के
लिये उसे पकाऊ, और हम उसे खाए,
फिर मर जाए। १३ एलिय्याह ने उस
से कहा, मत डर, जाकर अपनी बात
के अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिये
एक छोटी सी रोटी बनाकर मेरे पास
ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने
बेटे के लिये बनाना। १४ क्योंकि
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यो कहता
है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेह न
बरसाएगा तब तक न तो उस घडे का
मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का
तेल घटेगा। १५ तब वह चली गई,
और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया,
तब से वह और स्त्री और उसका घराना
बहुत दिन तक खाते रहे। १६ यहोवा
के उस वचन के अनुसार जो उस ने
एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस
घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी
का तेल घट गया। १७ इन बातो के
बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी
थी, रोगी हुआ, और उसका रोग यहा
तक बढा कि उसका सास लेना बन्द हो
गया। १८ तब वह एलिय्याह से कहने
लगी, हे परमेश्वर के जन! मेरा तुझ से
क्या काम? क्या तू इसलिये मेरे यहा
आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण
हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाए?
१९ उस ने उस से कहा अपना बेटा
मुझे दे, तब वह उसे उसकी गोद से लेकर
उस अटारी पर ले गया जहा वह स्वय
रहता था, और अपनी खाट पर लिटा
दिया। २० तब उस ने यहोवा को
पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा!
क्या तू इस विधवा का बेटा मार डालकर
जिसके यहा मै टिका हू, इस पर भी
विपत्ति ले आया है? २१ तब वह
बालक पर तीन बार पसर गया और
यहोवा को पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर
यहोवा! इस बालक का प्राण इस मे
फिर डाल दे। २२ एलिय्याह की यह
बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का
प्राण उस मे फिर आ गया और वह जी
उठा। २३ तब एलिय्याह बालक को
अटारी पर से नीचे घर मे ले गया, और
एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता के
हाथ मे सौप दिया, कि देख तेरा बेटा
जीवित है। २४ स्त्री ने एलिय्याह से
कहा, अब मुझे निश्चय हो गया है कि
तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का
जो वचन तेरे मुह से निकलता है, वह सच
होता है॥

(यहोवा की विजय और बाल का पराजय)

१८ बहुत दिनो के बाद, तीसरे वर्ष
मे यहोवा का यह वचन एलिय्याह
के पास पहुचा, कि जाकर अपने आप
को अहाब को दिखा, और मै भूमि पर
मेह बरसा दूगा। २ तब एलिय्याह अपने
आप को अहाब को दिखाने गया। उस
समय शोमरोन मे अकाल भारी था।
३ इसलिये अहाब ने ओबद्याह को जो
उसके घराने का दीवान था बुलवाया।
४ ओबद्याह तो यहोवा का भय यहा तक
मानता था कि जब ईजेबेल यहोवा के
नबियो को नाश करती थी, तब ओबद्याह
ने एक सौ नबियो को लेकर पचास-पचास
करके गुफाओ मे छिपा रखा, और अन्न
जल देकर उनका पालन-पोषण करता
रहा। ५ और अहाब ने ओबद्याह से
कहा, कि देश मे जल के सब सोतो और
सब नदियो के पास जा, कदाचित इतनी

घास मिले कि हम घोड़ों और खच्चरों
को जीवित बचा सकें, ६ और हमारे
सब पशु न मर जाएं। और उन्हों ने
आपस में देश बांटा कि उस में होकर चलें,
एक ओर अहाब और दूसरी ओर ओबद्याह
चला। ७ ओबद्याह मार्ग में था, कि
एलिय्याह उसको मिला, उसे चीन्ह कर
वह मुंह के बल गिरा, और कहा, हे मेरे
प्रभु एलिय्याह, क्या तू है? ८ उस ने
कहा हां मैं ही हूं जाकर अपने स्वामी
से कह, कि एलिय्याह मिला है। ६ उस
ने कहा, मैं ने ऐसा क्या पाप किया है
कि तू मुझे मरवा डालने के लिये अहाब
के हाथ करना चाहता है? १० तेरे
परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ
कोई ऐसी जाति वा राज्य नहीं, जिस में
मेरे स्वामी ने तुझे ढूंढने को न भेजा हो,
और जब उन लोगों ने कहा, कि वह यहां
नहीं है, तब उस ने उस राज्य वा जाति
को इसकी शपथ खिलाई कि एलिय्याह
नहीं मिला। ११ और अब तू कहता
है कि जाकर अपने स्वामी से कह, कि
एलिय्याह मिला। १२ फिर ज्यों ही मैं
तेरे पास से चला जाऊंगा, त्यों ही यहोवा
का आत्मा तुझे न जाने कहां उठा ले
जाएगा, सो जब मैं जाकर अहाब को
बताऊंगा, और तू उसे न मिलेगा, तब
वह मुझे मार डालेगा परन्तु मैं तेरा
दास अपने लड़कपन से यहोवा का भय
मानता आया हूं। १३ क्या मेरे प्रभु
को यह नहीं बताया गया, कि जब ईज़ेबेल
यहोवा के नबियों को घात करती थी
तब मैं ने क्या किया? कि यहोवा के
नबियों में से एक सौ लेकर पचास-पचास
करके गुफाओं में छिपा रखा, और उन्हें
अन्न जल देकर पालता रहा। १४ फिर
अब तू कहता है, जाकर अपने स्वामी
से कह, कि एलिय्याह मिला है। तब
वह मुझे घात करेगा। १५ एलिय्याह ने
कहा, सेनाओं का यहोवा जिसके साम्हने
मैं रहता हूं, उसके जीवन की शपथ आज
मैं अपने आप को उसे दिखाऊंगा। १६ तब
ओबद्याह अहाब से मिलने गया, और
उसको बता दिया, सो अहाब एलिय्याह
से मिलने चला। १७ एलिय्याह को देखते
ही अहाब ने कहा, हे इस्राएल के सतानेवाले
क्या तू ही है? १८ उस ने कहा, मैं ने
इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू
ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया
है, क्योंकि तुम यहोवा की आज्ञाओं को
टालकर बाल देवताओं की उपासना करने
लगे। १६ अब दूत भेजकर सारे इस्राएल
को और बाल के साढ़े चार सौ नबियों और
अशेरा के चार सौ नबियों को जो ईज़ेबेल
की मेज पर खाते हैं, मेरे पास कर्म्मेल
पर्वत पर इकट्ठा कर ले॥

२० तब अहाब ने सारे इस्राएलियों
को बुला भेजा और नबियों को कर्म्मेल
पर्वत पर इकट्ठा किया। २१ और एलि-
य्याह सब लोगों के पास आकर कहने
लगा, तुम कब तक दो विचारों में लटके
रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो
उसके पीछे हो लेओ, और यदि बाल
हो, तो उसके पीछे हो लेओ। लोगों
ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।
२२ तब एलिय्याह ने लोगों से कहा,
यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह
गया हूं, और बाल के नबी साढ़े चार
सौ मनुष्य हैं। २३ इसलिये दो बछड़े
लाकर हमें दिए जाएं, और वे एक अपने

लिये चुनकर उसे टुकडे टुकडे काटकर
लकडी पर रख दे, और कुछ आग न
लगाए; और मै दूसरे बछडे को तैयार
करके लकडी पर रखूगा, और कुछ आग
न लगाऊगा। २४ तब तुम तो अपने
देवता से प्रार्थना करना, और मै यहोवा
से प्रार्थना करूगा, और जो आग गिराकर
उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे। तब सब
लोग बोल उठे, अच्छी बात। २५ और
एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा,
पहिले तुम एक बछडा चुनकर तैयार
कर लो, क्योकि तुम तो बहुत हो, तब
अपने देवता से प्रार्थना करना, परन्तु
आग न लगाना। २६ तब उन्हो ने उस
बछडे को जो उन्हे दिया गया था लेकर
तैयार किया, और भोर से लेकर दोपहर
तक वह यह कहकर बाल से प्रार्थना करते
रहे, कि हे बाल हमारी सुन, हे बाल
हमारी सुन! परन्तु न कोई शब्द और
न कोई उत्तर देनेवाला हुआ। तब वे
अपनी बनाई हुई वेदी पर उछलने कूदने
लगे। २७ दोपहर को एलिय्याह ने यह
कहकर उनका ठट्ठा किया, कि ऊचे शब्द
से पुकारो, वह तो देवता है, वह तो ध्यान
लगाए होगा, वा कही गया होगा वा
यात्रा मे होगा, वा हो सकता है कि सोता
हो और उसे जगाना चाहिए। २८ और
उन्हो ने बडे शब्द से पुकार पुकार के अपनी
रीति के अनुसार छुरियो और बर्छियो
मे अपने अपने को यहा तक घायल किया
कि लोहू लुहान हो गए। २९ वे दोपहर
भर ही क्या, वरन भेट चढाने के समय
तक नबूवत करते रहे, परन्तु कोई शब्द
सुन न पडा, और न तो किसी ने उत्तर
दिया और न ध्यान लगाया॥

३० तब एलिय्याह ने सब लोगो से
कहा, मेरे निकट आओ और सब लोग
उसके निकट आए। तब उस ने यहोवा
की वेदी को जो गिराई गई थी मरम्मत
की। ३१ फिर एलिय्याह ने याकूब के
पुत्रो की गिनती के अनुसार जिसके पास
यहोवा का यह वचन आया था, ३२ कि
तेरा नाम इस्राएल होगा, बारह पत्थर
छाटे, और उन पत्थरो से यहोवा के नाम
की एक वेदी बनाई, और उसके चारो
ओर इतना बडा एक गडहा खोद दिया,
कि उस मे दो सआ बीज समा सके।
३३ तब उस ने वेदी पर लकडी को
सजाया, और बछडे को टुकडे टुकडे काटकर
लकडी पर धर दिया, और कहा, चार
घडे पानी भर के होमबलि, पशु और
लकडी पर उण्डेल दो। ३४ तब उस
ने कहा, दूसरी बार वैसा ही करो, तब
लोगो ने दूसरी बार वैसा ही किया।
फिर उस ने कहा, तीसरी बार करो,
तब लोगो ने तीसरी बार भी वैसा ही
किया। ३५ और जल वेदी के चारो
ओर बह गया, और गडहे को भी उस
ने जल से भर दिया। ३६ फिर भेट
चढाने के समय एलिय्याह नबी समीप
जाकर कहने लगा, हे इब्राहीम, इसहाक
और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा!
आज यह प्रगट कर कि इस्राएल मे तू
ही परमेश्वर है, और मै तेरा दास हू,
और मै ने ये सब काम तुझ से वचन पाकर
किए है। ३७ हे यहोवा! मेरी सुन,
मेरी सुन, कि ये लोग जान ले कि हे
यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही
उनका मन लौटा लेता है। ३८ तब
यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई
और होमबलि को लकडी और पत्थरो

और धूलि समेत भस्म कर दिया, और
गड़हे में का जल भी सुखा दिया। ३९ यह
देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल
उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही
परमेश्वर है, ४० एलिय्याह ने उन से
कहा, बाल के नबियों को पकड़ लो, उन में
से एक भी छूटने न पाए, तब उन्हों ने उनको
पकड़ लिया, और एलिय्याह ने उन्हें नीचे
किशोन के नाले में ले जाकर मार डाला॥
४१ फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा,
उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की
सनसनाहट सुन पड़ती है। ४२ तब
अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह
कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और
भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनों
के बीच किया। ४३ और उस ने अपने
सेवक से कहा, चढ़कर समुद्र की ओर
दृष्टि कर देख, तब उस ने चढ़कर देखा
और लौटकर कहा, कुछ नहीं दीखता।
एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा।
४४ सातवीं बार उस ने कहा, देख समुद्र
में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा
बादल उठ रहा है। एलिय्याह ने कहा,
अहाब के पास जाकर कह, कि रथ जुतवा
कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू
वर्षा के कारण रुक जाए। ४५ थोड़ी
ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई
घटाओं, और आन्धी से काला हो गया
और भारी वर्षा होने लगी, और अहाब
सवार होकर यिज्रेल को चला। ४६ तब
यहोवा की शक्ति* एलिय्याह पर ऐसी
हुई, कि वह कमर बान्धकर अहाब के
आगे आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला
गया॥

* मूल में—का हाथ।

(एलिय्याह का निराश होना और फिर हियाव बान्धना)

१९ तब अहाब ने ईज़ेबेल को
एलिय्याह के सब काम विस्तार से
बताए कि उस ने सब नबियों को तलवार
से किस प्रकार मार डाला। २ तब
ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत
के द्वारा कहला भेजा, कि यदि मैं कल
इसी समय तक तेरा प्राण उनका सा न
कर डालूं तो देवता मेरे साथ वैसा ही
वरन उस से भी अधिक करें। ३ यह
देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा,
और यहूदा के बेर्शेबा को पहुंचकर अपने
सेवक को वहीं छोड़ दिया। ४ और आप
जंगल में एक दिन के मार्ग पर जाकर
एक झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया, वहां
उस ने यह कह कर अपनी मृत्यु मांगी
कि हे यहोवा बस है, अब मेरा प्राण
ले ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा
नहीं हूं। ५ वह झाऊ के पेड़ तले लेटकर
सो गया और देखो एक दूत ने उसे छूकर
कहा, उठकर खा। ६ उस ने दृष्टि करके
क्या देखा कि मेरे सिरहाने पत्थरों पर
पकी हुई एक रोटी, और एक सुराही
पानी धरा है, तब उस ने खाया और
पिया और फिर लेट गया। ७ दूसरी
बार यहोवा का दूत आया और उसे
छूकर कहा, उठकर खा, क्योंकि तुझे
बहुत भारी यात्रा करनी है। ८ तब उस
ने उठकर खाया पिया, और उसी भोजन
से बल पाकर चालीस दिन रात चलते
चलते परमेश्वर के पर्वत होरेब को पहुंचा।
९ वहां वह एक गुफा में जाकर टिका
और यहोवा का यह वचन उसके पास
पहुंचा, कि हे एलिय्याह तेरा यहां क्या
काम? १० उस ने उत्तर दिया सेनाओं

के परमेश्वर यहोवा के निमित्त मुझे
बड़ी जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने
तेरी वाचा टाल दी, तेरी वेदियों को गिरा
दिया, और तेरे नबियों को तलवार से
घात किया है, और मैं ही अकेला रह
गया हूं, और वे मेरे प्राणों के भी खोजी
हैं। ११ उस ने कहा, निकलकर यहोवा
के सम्मुख पर्वत पर खड़ा हो। और
यहोवा पास से होकर चला, और यहोवा
के साम्हने एक बड़ी प्रचण्ड आन्धी
से पहाड़ फटने और चट्टानें टूटने लगीं,
तौभी यहोवा उस आन्धी में न था,
फिर आन्धी के बाद भूईंडोल हुआ, तौभी
यहोवा उस भूईंडोल में न था। १२ फिर
भूईंडोल के बाद आग दिखाई दी, तौभी
यहोवा उस आग में न था, फिर आग
के बाद एक दबा हुआ धीमा शब्द सुनाई
दिया। १३ यह सुनते ही एलिय्याह ने
अपना मुंह चद्दर से ढांपा, और बाहर
जाकर गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ।
फिर एक शब्द उसे सुनाई दिया, कि हे
एलिय्याह तेरा यहां क्या काम? १४ उस
ने कहा, मुझे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा
के निमित्त बड़ी जलन हुई, क्योंकि इस्रा-
एलियों ने तेरी वाचा टाल दी, और
तेरी वेदियों को गिरा दिया है और तेरे
नबियों को तलवार से घात किया है,
और मैं ही अकेला रह गया हूं, और
वे मेरे प्राणों के भी खोजी हैं।
१५ यहोवा ने उस से कहा, लौटकर
दमिश्क के जंगल को जा, और वहां
पहुंचकर अराम का राजा होने के लिये
हजाएल का, १६ और इस्राएल का राजा
होने को निमशी के पोते येहू का, और
अपने स्थान पर नबी होने के लिये
आबेलमहोला के शापात के पुत्र एलीशा
का अभिषेक करना। १७ और हजाएल
की तलवार से जो कोई बच जाए उसको
येहू मार डालेगा, और जो कोई येहू
की तलवार से बच जाए उसको एलीशा
मार डालेगा। १८ तौभी मैं सात हजार
इस्राएलियों को बचा रखूंगा। ये तो
वे सब हैं, जिन्हों ने न तो बाल के आगे
घुटने टेके, और न मुंह से उसे चूमा
है॥

१९ तब वह वहां से चल दिया, और
शापात का पुत्र एलीशा उसे मिला जो
बारह जोड़ी बैल अपने आगे किए हुए
आप बारहवीं के साथ होकर हल जोत
रहा था। उसके पास जाकर एलिय्याह
ने अपनी चद्दर उस पर डाल दी। २० तब
वह बैलों को छोड़कर एलिय्याह के पीछे
दौड़ा, और कहने लगा, मुझे अपने माता-
पिता को चूमने दे, तब मैं तेरे पीछे चलूंगा।
उस ने कहा, लौट जा, मैं ने तुझ से क्या
किया है? २१ तब वह उसके पीछे से
लौट गया, और एक जोड़ी बैल लेकर
बलि किए, और बैलों का सामान जलाकर
उनका मांस पका के अपने लोगों को दे
दिया, और उन्हों ने खाया, तब वह
कमर बान्धकर एलिय्याह के पीछे चला,
और उसकी सेवा टहल करने लगा॥

(अरामियों पर विजय)

२० और अराम के राजा बेन्हदद
ने अपनी सारी सेना इकट्ठी की,
और उसके साथ बत्तीस राजा और घोड़े
और रथ थे, उन्हें संग लेकर उस ने
शोमरोन पर चढ़ाई की, और उसे घेर के
उसके विरुद्ध लड़ा। २ और उस ने
नगर में इस्राएल के राजा अहाब के
पास दूतों को यह कहने के लिये भेजा,

कि बेन्हदद तुझ से यों कहता है, ३ कि
तेरा चान्दी सोना मेरा है, और तेरी
स्त्रियों और लड़केवालों में जो जो उत्तम
है वह भी सब मेरे है। ४ इस्राएल के
राजा ने उसके पास कहला भेजा, हे मेरे
प्रभु! हे राजा! तेरे वचन के अनुसार
मैं और मेरा जो कुछ है, सब तेरा है।
५ उन्हीं दूतों ने फिर आकर कहा बेन्हदद
तुझ से यों कहता है, कि मैं ने तेरे पास
यह कहला भेजा था कि तुझे अपनी चान्दी
सोना और स्त्रियां और बालक भी मुझे
देने पड़ेंगे। ६ परन्तु कल इसी समय मैं
अपने कर्मचारियों को तेरे पास भेजूंगा
और वे तेरे और तेरे कर्मचारियों के
घरों में ढूंढ़-ढांढ़ करेंगे, और तेरी जो जो
मनभावनी वस्तुएं निकालें उन्हें वे अपने
अपने हाथ में लेकर आएंगे। ७ तब
इस्राएल के राजा ने अपने देश के सब
पुरनियों को बुलवाकर कहा, सोच विचार
करो, कि वह मनुष्य हमारी हानि ही
का अभिलाषी है, उस ने मुझ से मेरी
स्त्रियां, बालक, चान्दी सोना मंगा भेजा
है, और मैं ने इन्कार न किया। ८ तब
सब पुरनियों ने और सब साधारण लोगों
ने उस से कहा, उसकी न सुनना, और
न मानना। ९ तब राजा ने बेन्हदद के
दूतों से कहा, मेरे प्रभु राजा से मेरी
ओर से कहो, जो कुछ तू ने पहिले अपने
दास से चाहा था वह तो मैं करूंगा,
परन्तु यह मुझ से न होगा। तब बेन्हदद
के दूतों ने जाकर उसे यह उत्तर सुना
दिया। १० तब बेन्हदद ने अहाब के
पास कहला भेजा, यदि शोमरोन में इतनी
धूलि निकले कि मेरे सब पीछे चलनेहारों
की मुट्ठी भर कर अपने जाए तो देवता
मेरे साथ ऐसा ही वरन इस से भी अधिक
करें। ११ इस्राएल के राजा ने उत्तर
देकर कहा, उस से कहो, कि जो हथियार
बान्धता हो वह उसकी नाईं न फूले जो
उन्हें उतारता हो। १२ यह वचन सुनते
ही वह जो और राजाओं समेत डेरों में
पी रहा था, उस ने अपने कर्मचारियों
से कहा, पांति बान्धो, तब उन्हों ने नगर
के विरुद्ध पांति बान्धी॥

१३ तब एक नबी ने इस्राएल के
राजा अहाब के पास जाकर कहा, यहोवा
तुझ से यों कहता है, यह बड़ी भीड़
जो तू ने देखी है, उस सब को मैं आज
तेरे हाथ में कर दूंगा, इस से तू जान
लेगा, कि मैं यहोवा हूं। १४ अहाब ने
पूछा, किस के द्वारा? उस ने कहा यहोवा
यों कहता है, कि प्रदेशों के हाकिमों के
सेवकों के द्वारा! फिर उस ने पूछा,
युद्ध को कौन आरम्भ करे? उस ने
उत्तर दिया, तू ही। १५ तब उस ने
प्रदेशों के हाकिमों के सेवकों की गिनती
ली, और वे दो सौ बत्तीस निकले, और
उनके बाद उस ने सब इस्राएली लोगों
की गिनती ली, और वे सात हजार
निकले। १६ ये दोपहर को निकल गए,
उस समय बेन्हदद अपने सहायक बत्तीसों
राजाओं समेत डेरों में दारू पीकर मतवाला
हो रहा था। १७ प्रदेशों के हाकिमों
के सेवक पहिले निकले। तब बेन्हदद ने
दूत भेजे, और उन्हों ने उस से कहा,
शोमरोन से कुछ मनुष्य निकले आते हैं।
१८ उस ने कहा, चाहे वे मेल करने
को निकले हों, चाहे लड़ने को, तौभी
उन्हें जीवित ही पकड़ लाओ। १९ तब
प्रदेशों के हाकिमों के सेवक और उनके
पीछे की सेना के सिपाही नगर से निकले।
२० और वे अपने अपने साम्हने के पुरुष

को मारने लगे, और अरामी भागे, और
इस्राएल ने उनका पीछा किया, और
अराम का राजा बेन्हदद, सवारो के सग
घोडे पर चढा, और भागकर बच गया।
२१ तब इस्राएल के राजा ने भी निकलकर
घोडो और रथो को मारा, और अरामियो
को बडी मार से मारा ॥

२२ तब उस नबी ने इस्राएल के राजा
के पास जाकर कहा, जाकर लडाई के
लिये अपने को दृढ कर, और सचेत
होकर सोच, कि क्या करना है, क्योकि नये
वर्ष के लगते ही अराम का राजा फिर
तुझ पर चढाई करेगा ॥

२३ तब अराम के राजा के कर्म-
चारियो ने उस से कहा, उन लोगो का
देवता पहाडी देवता है, इस कारण वे
हम पर प्रबल हुए, इसलिये हम उन से
चौरस भूमि पर लडे तो निश्चय हम उन
पर प्रबल हो जाएगे। २४ और यह भी
काम कर, अर्थात् सब राजाओ का पद
ले ले, और उनके स्थान पर सेनापतियो
को ठहरा दे। २५ फिर एक और सेना
जो तेरी उस सेना के बराबर हो जो नष्ट
हो गई है, घोडे के बदले घोडा, और
रथ के बदले रथ, अपने लिये गिन ले,
तब हम चौरस भूमि पर उन से लडे,
और निश्चय उन पर प्रबल हो जाएगे।
उनकी यह सम्मति मानकर बेन्हदद ने
वैसा ही किया ॥

२६ और नये वर्ष के लगते ही बेन्हदद
ने अरामियो को इकट्ठा किया, और इस्राएल
से लडने के लिये अपेक को गया।
२७ और इस्राएली भी इकट्ठे किए गए,
और उनके भोजन की तैयारी हुई, तब
वे उनका साम्हना करने को गए, और
इस्राएली उनके साम्हने डेरे डालकर
बकरियो के दो छोटे झुण्ड से देख पडे,
परन्तु अरामियो से देश भर गया।
२८ तब परमेश्वर के उसी जन ने इस्राएल
के राजा के पास जाकर कहा, यहोवा
यो कहता है, अरामियो ने यह कहा है,
कि यहोवा पहाडी देवता है, परन्तु नीची
भूमि का नही है, इस कारण मै उस
बडी भीड को तेरे हाथ मे कर दूगा,
तब तुम्हे बोध हो जाएगा कि मै यहोवा
हू। २९ और वे सात दिन आम्हने
साम्हने डेरे डाले पडे रहे, तब सातवे
दिन युद्ध छिड गया, और एक दिन मे
इस्राएलियो ने एक लाख अरामी पियादे
मार डाले। ३० जो बच गए, वह अपेक
को भागकर नगर मे घुसे, और वहा उन
बचे हुए लोगो मे से सत्ताईस हजार पुरुष
शहरपनाह की दीवाल के गिरने से दब
कर मर गए। बेन्हदद भी भाग गया
और नगर की एक भीतरी कोठरी मे
गया। ३१ तब उसके कर्मचारियो ने
उस से कहा, सुन, हम ने तो सुना है,
कि इस्राएल के घराने के राजा दयालु
राजा होते है, इसलिये हमे कमर मे टाट
और सिर पर रस्सिया बान्धे हुए इस्राएल
के राजा के पास जाने दे, सम्भव है कि वह
तेरा प्राण बचा ले। ३२ तब वे कमर
मे टाट और सिर पर रस्सिया बान्ध
कर इस्राएल के राजा के पास जाकर
कहने लगे, तेरा दास बेन्हदद तुझ से कहता
है, कृपा कर के मुझे जीवित रहने दे।
राजा ने उत्तर दिया, क्या वह अब तक
जीवित है? वह तो मेरा भाई है।
३३ उन लोगो ने इसे शुभ शकुन जानकर,
फुर्ती से बूझ लेने का यत्न किया कि यह
उसके मन की बात है कि नही, और
कहा, हा तेरा भाई बेन्हदद। राजा ने

कहा, जाकर उसको ले आओ। तब
बेन्हदद उसके पास निकल आया, और
उस ने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया।
३४ तब बेन्हदद ने उस से कहा, जो नगर
मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिए थे,
उनको मै फेर दूगा, और जैसे मेरे पिता
ने शोमरोन मे अपने लिये सड़कें बनवाईं,
वैसे ही तू दमिश्क मे सड़कें बनवाना।
अहाब ने कहा, मैं इसी वाचा पर तुझे
छोड़ देता हू, तब उस ने बेन्हदद से वाचा
बान्धकर, उसे स्वतन्त्र कर दिया॥
३५ इसके बाद नबियो के चेलो मे
से एक जन ने यहोवा से वचन पाकर
अपने संगी से कहा, मुझे मार, जब उस
मनुष्य ने उसे मारने से इनकार किया,
३६ तब उस ने उस से कहा, तू ने यहोवा
का वचन नही माना, इस कारण सुन,
ज्योही तू मेरे पास से चला जाएगा,
त्योही सिंह से मार डाला जाएगा। तब
ज्योही वह उसके पास से चला गया,
त्योही उसे एक सिंह मिला, और उसको
मार डाला। ३७ फिर उसको दूसरा मनुष्य
मिला, और उस से भी उस ने कहा,
मुझे मार। और उस ने उसको ऐसा मारा
कि वह घायल हुआ। ३८ तब वह नबी
चला गया, और आखो को पगड़ी से
ढापकर राजा की बाट जोहता हुआ मार्ग
पर खड़ा रहा। ३९ जब राजा पास
होकर जा रहा था, तब उस ने उसको
दोहाई देकर कहा, कि जब तेरा दास
युद्ध क्षेत्र मे गया था तब कोई मनुष्य
मेरी ओर मुड़कर किसी मनुष्य को मेरे पास
ले आया, और मुझ से कहा, इस मनुष्य
की चौकसी कर, यदि यह किसी रीति
छूट जाए, तो उसके प्राण के बदले तुझे
अपना प्राण देना होगा, नही तो किक्कार
भर चान्दी देना पड़ेगा। ४० उसके बाद
तेरा दास इधर उधर काम मे फंस गया,
फिर वह न मिला। इस्राएल के राजा
ने उस से कहा, तेरा ऐसा ही न्याय होगा,
तू ने आप अपना न्याय किया है। ४१ नबी
ने झट अपनी आखो से पगड़ी उठाई, तब
इस्राएल के राजा ने उसे पहिचान लिया,
कि वह कोई नबी है। ४२ तब उस ने
राजा से कहा, यहोवा तुझ से यो कहता
है, इसलिये कि तू ने अपने हाथ से ऐसे
एक मनुष्य को जाने दिया, जिसे मैं ने
सत्यानाश हो जाने को ठहराया था,* तुझे
उसके प्राण की सन्ती अपना प्राण और
उसकी प्रजा की सन्ती, अपनी प्रजा देनी
पड़ेगी। ४३ तब इस्राएल का राजा उदास
और अप्रसन्न होकर घर की ओर चला,
और शोमरोन को आया॥

(नाबोत की हत्या और ईश्वर का क्रोध)

२१ नाबोत नाम एक यिज्रेली की
एक दाख की बारी शोमरोन के
राजा अहाब के राजमन्दिर के पास यिज्रेल
में थी। २ इन बातो के बाद अहाब ने
नाबोत से कहा, तेरी दाख की बारी मेरे
घर के पास है, तू उसे मुझे दे कि मै
उस मे साग पात की बारी लगाऊ, और
मै उसके बदले तुझे उस से अच्छी गन्ध
वाटिका दूगा, नही तो तेरी इच्छा हो
तो मै तुझे उसका मूल्य दे दूगा। ३ नाबोत
ने अहाब से कहा, यहोवा न करे कि मै
अपने पुरखाओ का निज भाग तुझे दू।
४ यिज्रेली नाबोत के इस वचन के
कारण कि मै तुझे अपने पुरखाओ का
निज भाग न दूगा, अहाब उदास और

* मूल में—तेरे सत्यानाश के मनुष्य को
हाथ से जाने दिया।

अप्रसन्न होकर अपने घर गया, और
बिछौने पर लेट गया और मुह फेर लिया,
और कुछ भोजन न किया। ५ तब उसकी
पत्नी ईज़ेबेल ने उसके पास आकर पूछा,
तेरा मन क्यो ऐसा उदास है कि तू कुछ
भोजन नही करता? ६ उस ने कहा,
कारण यह है, कि मै ने यिज्रेली नाबोत
से कहा कि रुपया लेकर मुझे अपनी दाख
की बारी दे, नही तो यदि तू चाहे तो
मै उसकी सन्ती दूसरी दाख की बारी
दूगा, और उसने कहा, मै अपनी दाख की
बारी तुझे न दूगा। ७ उसकी पत्नी ईज़ेबेल
ने उस से कहा, क्या तू इस्राएल पर राज्य
करता है कि नही? उठकर भोजन कर,
और तेरा मन आनन्दित हो, यिज्रेली
नाबोत की दाख की बारी मै तुझे दिलवा
दूगी। ८ तब उस ने अहाब के नाम से
चिट्ठी लिखकर उसकी अगूठी की छाप
लगाकर, उन पुरनियो और रईसो के
पास भेज दी जो उसी नगर मे नाबोत
के पडोस मे रहते थे। ९ उस चिट्ठी मे
उस ने यो लिखा, कि उपवास का प्रचार
करो, और नाबोत को लोगो के साम्हने
ऊचे स्थान पर बैठाना। १० तब दो नीच
जनो को उसके साम्हने बैठाना जो साक्षी
देकर उस से कहे, तू ने परमेश्वर और
राजा दोनो की निन्दा की*। तब तुम
लोग उसे बाहर ले जाकर उसको पत्थरवाह
करना, कि वह मर जाए। ११ ईज़ेबेल
की चिट्ठी मे की आज्ञा के अनुसार नगर
मे रहनेवाले पुरनियो और रईसो ने
उपवास का प्रचार किया, १२ और
नाबोत को लोगो के साम्हने ऊचे स्थान
पर बैठाया। १३ तब दो नीच जन आकर

* मूल में—दोनों को बिदा किया।

उसके सम्मुख बैठ गए, और उन नीच
जनो ने लोगो के साम्हने नाबोत के विरुद्ध
यह साक्षी दी, कि नाबोत ने परमेश्वर
और राजा दोनो की निन्दा की*। इस
पर उन्हो ने उसे नगर से बाहर ले जाकर
उसको पत्थरवाह किया, और वह मर
गया। १४ तब उन्हो ने ईज़ेबेल के पास
यह कहला भेजा कि नाबोत पत्थरवाह
करके मार डाला गया है। १५ यह सुनते
ही कि नाबोत पत्थरवाह करके मार
डाला गया है, ईज़ेबेल ने अहाब से कहा,
उठकर यिज्रेली नाबोत की दाख की
बारी को जिसे उस ने तुझे रुपया लेकर
देने से भी इनकार किया था अपने अधिकार
मे ले, क्योकि नाबोत जीवित नही परन्तु
वह मर गया है। १६ यिज्रेली नाबोत
की मृत्यु का समाचार पाते ही अहाब
उसकी दाख की बारी अपने अधिकार मे
लेने के लिये वहा जाने को उठ खडा हुआ॥
१७ तब यहोवा का यह वचन तिशबी
एलिय्याह के पास पहुचा, कि चल,
१८ शोमरोन मे रहनेवाले इस्राएल
के राजा अहाब से मिलने को जा, वह
तो नाबोत की दाख की बारी मे है, उसे
अपने अधिकार मे लेने को वह वहा गया
है। १९ और उस से यह कहना, कि
यहोवा यो कहता है, कि क्या तू ने घात
किया, और अधिकारी भी बन बैठा?
फिर तू उस से यह भी कहना, कि यहोवा
यो कहता है, कि जिस स्थान पर कुत्तो ने
नाबोत का लोहू चाटा, उसी स्थान पर
कुत्ते तेरा भी लोहू चाटेगे। २० एलिय्याह
को देखकर अहाब ने कहा, हे मेरे शत्रु!
क्या तू ने मेरा पता लगाया है? उस
ने कहा हा, लगाया तो है, और इसका

* मूल में—दोनों को बिदा किया।

कारण यह है, कि जो यहोवा की दृष्टि
में बुरा है, उसे करने के लिये तू ने अपने
को बेच डाला है। २१ मैं तुझ पर ऐसी
विपत्ति डालूंगा, कि तुझे पूरी रीति से
मिटा डालूंगा, और अहाब के घर के
एक एक लड़के को और क्या बन्धुए,
क्या स्वाधीन इस्राएल में हर एक रहनेवाले
को भी नाश कर डालूंगा। २२ और मैं
तेरा घराना नबात के पुत्र यारोबाम,
और अहिय्याह के पुत्र बाशा का सा कर
दूंगा, इसलिये कि तू ने मुझे क्रोधित
किया है, और इस्राएल से पाप करवाया
है। २३ और ईज़ेबेल के विषय में यहोवा
यह कहता है, कि यिज्रेल के किले के पास
कुत्ते ईज़ेबेल को खा डालेंगे। २४ अहाब
का जो कोई नगर में मर जाएगा उसको
कुत्ते खा लेंगे, और जो कोई मैदान में
मर जाएगा उसको आकाश के पक्षी खा
जाएंगे॥

२५ सचमुच अहाब के तुल्य और कोई
न था जिसने अपनी पत्नी ईज़ेबेल के
उसकाने पर वह काम करने को जो यहोवा
की दृष्टि में बुरा है, अपने को बेच डाला
था। २६ वह तो उन एमोरियों की नाईं
जिनको यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने
से देश से निकाला था बहुत ही घिनौने
काम करता था, अर्थात् मूरतों की उपासना
करने लगा था। २७ एलिय्याह के ये
वचन सुनकर अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े,
और अपनी देह पर टाट लपेटकर उपवास
करने और टाट ही ओढ़े पड़ा रहने लगा,
और दबे पांवों चलने लगा। २८ और
यहोवा का यह वचन तिश्बी एलिय्याह
के पास पहुंचा, कि क्या तू ने देखा है कि
अहाब मेरे साम्हने नम्र बन गया है?
इस कारण कि वह मेरे साम्हने नम्र
बन गया है मैं वह विपत्ति उसके जीते जी
उस पर न डालूंगा परन्तु उसके पुत्र के
दिनों में मैं उसके घराने पर वह विपत्ति
भेजूंगा॥

(अहाब की मृत्यु)

२२ और तीन वर्ष तक अरामी
और इस्राएली बिना युद्ध रहे।
२ तीसरे वर्ष में यहूदा का राजा यहोशापात
इस्राएल के राजा के पास गया। ३ तब
इस्राएल के राजा ने अपने कर्मचारियों
से कहा, क्या तुम को मालूम है, कि
गिलाद का रामोत हमारा है? फिर हम
क्यों चुपचाप रहते और उसे अराम के
राजा के हाथ से क्यों नहीं छीन लेते
हैं? ४ और उस ने यहोशापात से पूछा,
क्या तू मेरे संग गिलाद के रामोत से
लड़ने के लिये जाएगा? यहोशापात ने
इस्राएल के राजा को उत्तर दिया, जैसा
तू है वैसा मैं भी हूं। जैसी तेरी प्रजा
है वैसी ही मेरी भी प्रजा है, और जैसे
तेरे घोड़े हैं वैसे ही मेरे भी घोड़े हैं।
५ फिर यहोशापात ने इस्राएल के राजा
से कहा, ६ कि आज यहोवा की इच्छा
मालूम कर ले, तब इस्राएल के राजा ने
नबियों को जो कोई चार सौ पुरुष थे
इकट्ठा करके उन से पूछा, क्या मैं गिलाद
के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई
करूं, वा रुका रहूं? उन्हों ने उत्तर दिया,
चढ़ाई कर क्योंकि प्रभु उसको राजा के
हाथ में कर देगा। ७ परन्तु यहोशापात
ने पूछा, क्या यहां यहोवा का और भी
कोई नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें?
८ इस्राएल के राजा ने यहोशापात से
कहा, हां, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक
पुरुष और है जिसके द्वारा हम यहोवा

से पूछ सकते हैं? परन्तु मैं उस से घृणा
रखता हूं, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण
की नहीं वरन हानि ही की भविष्यद्वाणी
करता है। ९ यहोशापात ने कहा, राजा
ऐसा न कहे। तब इस्राएल के राजा ने
एक हाकिम को बुलवा कर कहा, यिम्ला
के पुत्र मीकायाह को फुर्ती से ले आ।
१० इस्राएल का राजा और यहूदा का
राजा यहोशापात, अपने अपने राजवस्त्र
पहिने हुए शोमरोन के फाटक में एक
खुले स्थान में अपने अपने सिंहासन पर
विराजमान थे और सब भविष्यद्वक्ता
उनके सम्मुख भविष्यद्वाणी कर रहे थे।
११ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने
लोहे के सींग बनाकर कहा, यहोवा यों
कहता है, कि इन से तू अरामियों को
मारते मारते नाश कर डालेगा। १२ और
सब नबियों ने इसी आशय की भविष्यद्वाणी
करके कहा, गिलाद के रामोत पर चढ़ाई
कर और तू कृतार्थ हो, क्योंकि यहोवा
उसे राजा के हाथ में कर देगा॥

१३ और जो दूत मीकायाह को बुलाने
गया था उस ने उस से कहा, सुन,
भविष्यद्वक्ता एक ही मुंह से राजा के
विषय शुभ वचन कहते हैं तो तेरी बातें
उनकी सी हों, तू भी शुभ वचन
कहना। १४ मीकायाह ने कहा, यहोवा
के जीवन की शपथ जो कुछ यहोवा मुझ
से कहे, वही मैं कहूंगा। १५ जब वह
राजा के पास आया, तब राजा ने उस से
पूछा, हे मीकायाह! क्या हम गिलाद
के रामोत से युद्ध करने के लिये चढ़ाई
करें वा रुके रहें? उस ने उसको उत्तर
दिया हां, चढ़ाई कर और तू कृतार्थ हो,
और यहोवा उसको राजा के हाथ में
कर दे। १६ राजा ने उस से कहा, मुझे
कितनी बार तुझे शपथ धराकर चिताना
होगा, कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ से
सच ही कह। १७ मीकायाह ने कहा मुझे
समस्त इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़-
बकरियों की नाईं पहाड़ों पर, तित्तर बित्तर
देख पड़ा, और यहोवा का यह वचन आया,
कि वे तो अनाथ हैं, अतएव वे अपने अपने
घर कुशल क्षेम से लौट जाएं। १८ तब
इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा,
क्या मैं ने तुझ से न कहा था, कि वह मेरे
विषय कल्याण की नहीं हानि ही की
भविष्यद्वाणी करेगा। १९ मीकायाह ने
कहा इस कारण तू यहोवा का यह वचन
सुन! मुझे सिंहासन पर विराजमान
यहोवा और उसके पास दाहिने बांये खड़ी
हुई स्वर्ग की समस्त सेना दिखाई दी
है। २० तब यहोवा ने पूछा, अहाब को
कौन ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद
के रामो पर चढ़ाई करके खेत आए तब
किसी ने कुछ, और किसी ने कुछ कहा।
२१ निदान एक आत्मा पास आकर
यहोवा के सम्मुख खड़ी हुई, और कहने
लगी, मैं उसको बहकाऊंगी यहोवा ने
पूछा, किस उपाय से? २२ उस ने कहा,
मैं जाकर उसके सब भविष्यद्वक्ताओं में
पैठकर उन में झूठ बुलवाऊंगी*। यहोवा
ने कहा, तेरा उसको बहकाना सुफल
होगा, जाकर ऐसा ही कर। २३ तो अब
सुन यहोवा ने तेरे इन सब भविष्यद्वक्ताओं
के मुंह में एक झूठ बोलनेवाली आत्मा पैठाई
है, और यहोवा ने तेरे विषय हानि की बात
कही है॥

२४ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने
मीकायाह के निकट जा, उसके गाल पर

* मूल में—झूठा आत्मा हूंगा।

थपेड़ा मारकर पूछा, यहोवा का आत्मा मुझे
छोड़कर तुझ से बातें करने को किधर गया ?
२५ मीकायाह ने कहा, जिस दिन तू छिपने
के लिये कोठरी से कोठरी में भागेगा, तब
तुझे बोध होगा। २६ तब इस्राएल के
राजा ने कहा, मीकायाह को नगर के हाकिम
आमोन और योआश राजकुमार के पास ले
जा, २७ और उन से कह, राजा यों कहता
है, कि इसको बन्दीगृह में डालो, और जब
तक मैं कुशल से न आऊं, तब तक इसे दुःख
की रोटी और पानी दिया करो। २८ और
मीकायाह ने कहा, यदि तू कभी कुशल से
लौटे, तो जान कि यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं
कहा। फिर उस ने कहा, हे लोगो तुम सब
के सब सुन लो॥

२९ तब इस्राएल के राजा और यहूदा
के राजा यहोशापात दोनों ने गिलाद के
रामोत पर चढ़ाई की। ३० और इस्राएल
के राजा ने यहोशापात से कहा, मैं तो भेष
बदलकर युद्ध क्षेत्र में जाऊंगा, परन्तु तू अपने
ही वस्त्र पहिने रहना। तब इस्राएल का
राजा भेष बदलकर युद्ध क्षेत्र में गया।
३१ और अराम के राजा ने तो अपने रथों
के बत्तीसों प्रधानों को आज्ञा दी थी, कि न
तो छोटे से लड़ो और न बड़े से, केवल
इस्राएल के राजा से युद्ध करो। ३२ तो
जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को देखा,
तब कहा, निश्चय इस्राएल का राजा वही
है। और वे उसी से युद्ध करने को मुड़े,
तब यहोशापात चिल्ला उठा। ३३ यह
देखकर कि वह इस्राएल का राजा नहीं है,
रथों के प्रधान उसका पीछा छोड़कर लौट
गए। ३४ तब किसी ने अटकल से एक
तीर चलाया और वह इस्राएल के राजा के
झिलम और निचले वस्त्र के बीच छेदकर
लगा, तब उसने अपने सारथी से कहा, मैं
घायल हो गया हूं इसलिये बागडोर* फेर
कर मुझे सेना में से बाहर निकाल ले चल।
३५ और उस दिन युद्ध बढ़ता गया और
राजा अपने रथ में औरों के सहारे अरामियों
के सम्मुख खड़ा रहा, और सांझ को मर
गया, और उसके घाव का लोहू बहकर रथ
के पौदान में भर गया। ३६ सूर्य डूबते
हुए सेना में यह पुकार हुई, कि हर एक अपने
नगर और अपने देश को लौट जाए॥

३७ जब राजा मर गया, तब शोमरोन
को पहुंचाया गया और शोमरोन में उसे
मिट्टी दी गई। ३८ और यहोवा के वचन
के अनुसार जब उसका रथ शोमरोन के
पोखरे में धोया गया, तब कुत्तों ने उसका
लोहू चाट लिया, और वेश्याएं यहीं स्नान
करती थीं। ३९ अहाब के और सब काम
जो उस ने किए, और हाथीदांत का जो
भवन उस ने बनाया, और जो जो नगर
उस ने बसाए थे, यह सब क्या इस्राएली
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं
लिखा है? ४० निदान अहाब अपने
पुरखाओं के संग सो गया और उसका पुत्र
अहज्याह उसके स्थान पर राज्य करने
लगा॥

(यहोशापात का राज्य)

४१ इस्राएल के राजा अहाब के चौथे
वर्ष में आसा का पुत्र यहोशापात यहूदा पर
राज्य करने लगा। ४२ जब यहोशापात
राज्य करने लगा, तब वह पैंतीस वर्ष का
था। और पच्चीस वर्ष तक यरूशलेम में
राज्य करता रहा। और उसकी माता का
नाम अजूबा था, जो शिल्ही की बेटी थी।
४३ और उसकी चाल सब प्रकार से उसके
पिता आसा की सी थी, अर्थात जो यहोवा

* मूल में—अपना हाथ।

इस्राएल के राजाओ के इतिहास की पुस्तक
मे नही लिखे है?

(एलिय्याह का स्वर्गारोहण)

२ जब यहोवा एलिय्याह को बवडर
के द्वारा स्वर्ग मे उठा लेने को था, तब
एलिय्याह और एलीशा दोनो सग सग गिल-
गाल से चले। २ एलिय्याह ने एलीशा से
कहा, यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इस-
लिये तू यही ठहरा रह। एलीशा ने कहा,
यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मै तुझे
नही छोडने का, इसलिये वे बेतेल को चले
गए। ३ और बेतेलवासी भविष्यद्वक्ताओ
के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे,
क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे
स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है?
उस ने कहा, हा, मुझे भी यह मालूम है, तुम
चुप रहो। ४ और एलिय्याह ने उस से
कहा, हे एलीशा, यहोवा मुझे यरीहो को
भेजता है, इसलिये तू यही ठहरा रह,
उस ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की
शपथ मै तुझे नही छोडने का, सो वे यरीहो
को आए। ५ और यरीहोवासी भविष्य-
द्वक्ताओ के चेले एलीशा के पास आकर कहने
लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा
तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है?
उस ने उत्तर दिया, हा मुझे भी मालूम है,
तुम चुप रहो। ६ फिर एलिय्याह ने उस से
कहा, यहोवा मुझे यरदन तक भेजता है, सो
तू यही ठहरा रह; उस ने कहा, यहोवा के
और तेरे जीवन की शपथ मै तुझे नही छोडने
का, सो वे दोनो आगे चले। ७ और
भविष्यद्वक्ताओ के चेलो में से पचास जन
जाकर उनके साम्हने दूर खडे हुए, और वे
दोनो यरदन के तीर खडे हुए। ८ तब एलि-
य्याह ने अपनी चद्दर पकडकर ऐंठ ली, और
जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग
हो गया, और वे दोनो स्थल ही स्थल पार
उतर गए। ९ उनके पार पहुचने पर
एलिय्याह ने एलीशा से कहा, उस से पहिले
कि मै तेरे पास से उठा लिया जाऊ जो कुछ
तू चाहे कि मै तेरे लिये करू वह माग,
एलीशा ने कहा, तुझ मे जो आत्मा है, उसका
दूना भाग मुझे मिल जाए। १० एलिय्याह
ने कहा, तू ने कठिन बात मागी है, तौभी यदि
तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो
तेरे लिये ऐसा ही होगा; नही तो न होगा।
११ वे चलते चलते बाते कर रहे थे, कि
अचानक एक अग्निमय रथ और अग्निमय
घोडो ने उनको अलग अलग किया, और
एलिय्याह बवडर मे होकर स्वर्ग पर चढ
गया। १२ और उसे एलीशा देखता और
पुकारता रहा, हाय मेरे पिता! हाय
मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और
सवारो! जब वह उसको फिर देख न पडा,
तब उस ने अपने वस्त्र पकडे और फाडकर
दो भाग कर दिए। १३ फिर उस ने एलि-
य्याह की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी
थी, और वह लौट गया, और यरदन के तीर
पर खडा हुआ। १४ और उस ने एलिय्याह
की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी, पकड
कर जल पर मारी और कहा, एलिय्याह का
परमेश्वर यहोवा कहा है? जब उस ने जल
पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो
गया और एलीशा पार हो गया। १५ उसे
देखकर भविष्यद्वक्ताओ के चेले जो यरीहो
मे उसके साम्हने थे, कहने लगे, एलिय्याह
मे जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई
है; सो वे उस से मिलने को आए और उसके
साम्हने भूमि तक झुककर दण्डवत की।
१६ तब उन्हो ने उस से कहा, सुन, तेरे दासो
के पास पचास बलवान पुरुष है, वे जाकर

तेरे स्वामी को ढूंढ़े, सम्भव है कि क्या जाने
यहोवा के आत्मा ने उसको उठाकर किसी
पहाड़ पर वा किसी तराई में डाल दिया हो,
उस ने कहा, मत भेजो। १७ जब उन्हों ने
उसको यहां तक दबाया कि वह लज्जित हो
गया, तब उस ने कहा, भेज दो, तो उन्हों ने
पचास पुरुष भेज दिए, और वे उसे तीन दिन
तक ढूंढ़ते रहे परन्तु न पाया। १८ उस
समय तक वह यरीहो में ठहरा रहा, तो जब
वे उसके पास लौट आए, तब उस ने उन से
कहा, क्या मैं ने तुम से न कहा था, कि मत
जाओ?

(एलीशा के दो आश्चर्य कर्म)

१९ उस नगर के निवासियों ने एलीशा
से कहा, देख, यह नगर मनभावने स्थान पर
बसा है, जैसा मेरा प्रभु देखता है परन्तु पानी
बुरा है, और भूमि गर्भ गिरानेवाली है।
२० उस ने कहा, एक नये प्याले में नमक
डालकर मेरे पास ले आओ, वे उसे उसके
पास ले आए। २१ तब वह जल के सोते
के पास निकल गया, और उस में नमक
डालकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि मैं
यह पानी ठीक कर देता हूं, जिस से वह फिर
कभी मृत्यु वा गर्भ गिरने का कारण न
होगा। २२ एलीशा के इस वचन के अनु-
सार पानी ठीक हो गया, और आज तक
ऐसा ही है॥

२३ वहां से वह बेतेल को चला, और
मार्ग की चढ़ाई में चल रहा था कि नगर से
छोटे लड़के निकलकर उसका ठट्ठा करके
कहने लगे, हे चन्दुए चढ़ जा, हे चन्दुए चढ़
जा। २४ तब उस ने पीछे की ओर फिर
कर उन पर दृष्टि की और यहोवा के नाम
से उनको शाप दिया, तब जंगल में से दो
रीछिनियों ने निकलकर उन में से बयालीस
लड़के फाड़ डाले। २५ वहां से वह कर्म्मेल
को गया, और फिर वहां से शोमरोन को
लौट गया॥

(यहोराम के राज्य का आरम्भ)

३ यहूदा के राजा यहोशापात के
अठारहवें वर्ष में अहाब का पुत्र यहो-
राम शोमरोन में राज्य करने लगा, और
बारह वर्ष तक राज्य करता रहा। २ उस
ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है
तौभी उस ने अपने माता-पिता के बराबर
नहीं किया वरन अपने पिता की बनवाई हुई
बाल की लाट को दूर किया। ३ तौभी वह
नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे पापों में जैसे
उस ने इस्राएल से भी कराए लिपटा रहा
और उन से न फिरा॥

(मोआब पर विजय)

४ मोआब का राजा मेशा बहुत सी
भेड़-बकरियां रखता था, और इस्राएल के
राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख
मेढ़ों का ऊन कर की रीति से दिया करता
था। ५ जब अहाब मर गया, तब मोआब
के राजा ने इस्राएल के राजा से बलवा
किया। ६ उस समय राजा यहोराम ने
शोमरोन से निकलकर सारे इस्राएल की
गिनती ली। ७ और उस ने जाकर यहूदा
के राजा यहोशापात के पास यों कहला भेजा,
कि मोआब के राजा ने मुझ से बलवा किया
है, क्या तू मेरे संग मोआब से लड़ने को
चलेगा? उस ने कहा, हां मैं चलूंगा, जैसा
तू वैसा मैं, जैसी तेरी प्रजा वैसी मेरी प्रजा,
और जैसे तेरे घोड़े वैसे मेरे भी घोड़े हैं।
८ फिर उस ने पूछा, हम किस मार्ग से
जाएं? उस ने उत्तर दिया, एदोम के जंगल
से होकर॥

की दृष्टि मे ठीक है वही वह करता रहा, और उस से कुछ न मुडा। तौभी ऊंचे स्थान ढाए न गए, प्रजा के लोग ऊंचे स्थानो पर उस समय भी बलि किया करते थे और धूप भी जलाया करते थे। ४४ यहोशापात ने इस्राएल के राजा से मेल किया। ४५ और यहोशापात के काम और जो वीरता उस ने दिखाई, और उस ने जो जो लडाइया की, यह सब क्या यहूदा के राजाओ के इतिहास की पुस्तक मे नही लिखा है? ४६ पुरुषगामियो मे से जो उसके पिता आसा के दिनो मे रह गए थे, उनको उस ने देश मे से नाश किया॥

४७ उस समय एदोम मे कोई राजा न था, एक नायब राजकाज का काम करता था। ४८ फिर यहोशापात ने तर्शीश के जहाज सोना लाने के लिये ओपीर जाने को बनवा लिए, परन्तु वे एस्योनगेबेर मे टूट गए, इसलिये वहा न जा सके। ४९ तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, मेरे जहाजियो को अपने जहाजियो के संग, जहाजो मे जाने दे, परन्तु यहोशापात ने इनकार किया। ५० निदान यहोशापात अपने पुरखाओ के संग सो गया और उसको उसके पुरखाओं के साथ उसके मूलपुरुष दाऊद के नगर मे मिट्टी दी गई। और उसका पुत्र यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(अहज्याह का राज्य)

५१ यहूदा के राजा यहोशापात के सत्रहवे वर्ष मे अहाब का पुत्र अहज्याह शोमरोन मे इस्राएल पर राज्य करने लगा और दो वर्ष तक इस्राएल पर राज्य करता रहा। ५२ और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि मे बुरा था। और उसकी चाल उसके माता पिता, और नबात के पुत्र यारोबाम की सी थी जिस ने इस्राएल से पाप करवाया था। ५३ जैसे उसका पिता बाल की उपासना और उसे दण्डवत करने से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोधित करता रहा वैसे ही अहज्याह भी करता रहा॥

राजाओं का वृत्तान्त—दूसरा भाग

(अहज्याह की मृत्यु)

१ अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के विरुद्ध हो गया। २ और अहज्याह एक जिलमिलीदार खिडकी मे से, जो शोमरोन मे उसकी अटारी मे थी, गिर पडा, और बीमार हो गया। तब उस ने दूतो को यह कहकर भेजा, कि तुम जाकर एक्रोन के बालजबूब* नाम देवता से यह पूछ आओ, कि क्या मै इस बीमारी से बचूंगा कि नही? ३ तब यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा, उठकर शोमरोन के राजा के दूतो से मिलने को जा, और उन से कह, क्या इस्राएल मे कोई परमेश्वर नही जो तुम

* अर्थात मक्खियों का नाथ।

एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने जाते
हो? ४ इसलिये अब यहोवा तुझ से यों
कहता है, कि जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस
पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।
तब एलिय्याह चला गया। ५ जब अह-
ज्याह के दूत उसके पास लौट आए, तब
उस ने उन से पूछा, तुम क्यों लौट आए हो?
६ उन्हों ने उस से कहा, कि एक मनुष्य
हम से मिलने को आया, और कहा, कि
जिस राजा ने तुम को भेजा उसके पास
लौटकर कहो, यहोवा यों कहता है, कि क्या
इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं जो तू एक्रोन
के बालजबूब देवता से पूछने को भेजता है?
इस कारण जिस पलंग पर तू पड़ा है, उस
पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा।
७ उस ने उन से पूछा, जो मनुष्य तुम से
मिलने को आया, और तुम से ये बातें कहीं,
उसका कैसा रंग-रूप था? ८ उन्हों ने
उसको उत्तर दिया, वह तो रोंआर मनुष्य
था और अपनी कमर में चमड़े का फटा
बान्धे हुए था। उस ने कहा, वह तिशबी
एलिय्याह होगा। ९ तब उस ने उसके
पास पचास सिपाहियों के एक प्रधान को,
उसके पचासों सिपाहियों समेत भेजा।
प्रधान ने उसके पास जाकर क्या देखा कि
वह पहाड़ की चोटी पर बैठा है। और
उस ने उस से कहा, हे परमेश्वर के भक्त
राजा ने कहा है, कि तू उतर आ। १० एलि-
य्याह ने उस पचास सिपाहियों के प्रधान से
कहा, यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूं तो
आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों
समेत भस्म कर डाले। तब आकाश से
आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत
भस्म कर दिया। ११ फिर राजा ने उसके
पास पचास सिपाहियों के एक और प्रधान
को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया।
प्रधान ने उस से कहा हे परमेश्वर के भक्त
राजा ने कहा है, कि फुर्ती से तू उतर आ।
१२ एलिय्याह ने उत्तर देकर उन से कहा,
यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूं तो आकाश से
आग गिरकर तुझे, तेरे पचासों समेत भस्म
कर डाले, तब आकाश से परमेश्वर की
आग उतरी और उसे उसके पचासों समेत
भस्म कर दिया। १३ फिर राजा ने तीसरी
बार पचास सिपाहियों के एक और प्रधान
को, पचासों सिपाहियों समेत भेज दिया,
और पचास का वह तीसरा प्रधान चढ़कर,
एलिय्याह के साम्हने घुटनों के बल गिरा,
और गिड़गिड़ा कर उस से कहने लगा, हे
परमेश्वर के भक्त मेरा प्राण और तेरे इन
पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल
ठहरें। १४ पचास पचास सिपाहियों के
जो दो प्रधान अपने अपने पचासों समेत
पहिले आए थे, उनको तो आग ने आकाश
से गिरकर भस्म कर डाला, परन्तु अब मेरा
प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरे। १५ तब
यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, उसके
संग नीचे जा, उस से मत डर। तब एलि-
य्याह उठकर उसके संग राजा के पास नीचे
गया। १६ और उस से कहा, यहोवा
यों कहता है, कि तू ने तो एक्रोन के
बालजबूब देवता से पूछने को दूत भेजे थे
तो क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं
कि जिस से तू पूछ सके? इस कारण तू
जिस पलंग पर पड़ा है, उस पर से कभी न
उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा। १७ यहोवा
के इस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने
कहा था, वह मर गया। और उसके सन्तान
न होने के कारण यहोराम उसके स्थान पर
यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम
के दूसरे वर्ष में राज्य करने लगा। १८ अह-
ज्याह के और काम जो उस ने किए वह क्या

ने उत्तर दिया, निश्चय उसके कोई लड़का
नहीं, और उसका पति बूढ़ा है। १५ उस
ने कहा, उसको बुला ले। और जब उस ने
उसे बुलाया, तब वह द्वार में खड़ी हुई।
१६ तब उस ने कहा, बसन्त ऋतु में दिन
पूरे होने पर तू एक बेटा छाती से लगाएगी।
स्त्री ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे परमेश्वर के
भक्त ऐसा नहीं, अपनी दासी को धोखा न
दे। १७ और स्त्री को गर्भ रहा, और
बसन्त ऋतु का जो समय एलीशा ने उस से
कहा था, उसी समय जब दिन पूरे हुए, तब
उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। १८ और जब
लड़का बड़ा हो गया, तब एक दिन वह अपने
पिता के पास लवनेवालों के निकट निकल
गया। १९ और उस ने अपने पिता से
कहा, आह! मेरा सिर, आह! मेरा सिर।
तब पिता ने अपने सेवक से कहा, इसको
इसकी माता के पास ले जा। २० वह उसे
उठाकर उसकी माता के पास ले गया, फिर
वह दोपहर तक उसके घुटनों पर बैठा रहा,
तब मर गया। २१ तब उस ने चढ़कर
उसको परमेश्वर के भक्त की खाट पर लिटा
दिया, और निकलकर किवाड़ बन्द किया,
तब उतर गई। २२ और उस ने अपने
पति से पुकारकर कहा, मेरे पास एक सेवक
और एक गदही तुरन्त भेज दे कि मैं परमेश्वर
के भक्त के यहां झट पट हो आऊं। २३ उस
ने कहा, आज तू उसके यहां क्यों जाएगी?
आज न तो नये चांद का, और न विश्राम का
दिन है, उस ने कहा, कल्याण होगा*।
२४ तब उस स्त्री ने गदही पर काठी बान्ध
कर अपने सेवक से कहा, हांके चल, और
मेरे कहे बिना हांकने में ढिलाई न करना।
२५ तो वह चलते चलते कर्मेल पर्वत को
परमेश्वर के भक्त के निकट पहुंची। उसे
दूर से देखकर परमेश्वर के भक्त ने अपने
सेवक गेहजी से कहा, देख, उधर तो वह
शूनेमिन है। २६ अब उस से मिलने को
दौड़ जा, और उस से पूछ, कि तू कुशल से
है? तेरा पति भी कुशल से है? और
लड़का भी कुशल से है? पूछने पर स्त्री ने
उत्तर दिया, हां, कुशल से हैं। २७ वह
पहाड़ पर परमेश्वर के भक्त के पास पहुंची,
और उसके पांव पकड़ने लगी, तब गेहजी
उसके पास गया, कि उसे धक्का देकर हटाए,
परन्तु परमेश्वर के भक्त ने कहा, उसे छोड़
दे, उसका मन व्याकुल है, परन्तु यहोवा ने
मुझ को नहीं बताया, छिपा ही रखा है।
२८ तब वह कहने लगी, क्या मैं ने अपने प्रभु
से पुत्र का वर मांगा था? क्या मैं ने न कहा
था मुझे धोखा न दे? २९ तब एलीशा ने
गेहजी से कहा, अपनी कमर बान्ध, और मेरी
छड़ी हाथ में लेकर चला जा, मार्ग में यदि
कोई तुझे मिले तो उसका कुशल न पूछना,
और कोई तेरा कुशल पूछे, तो उसको उत्तर
न देना, और मेरी यह छड़ी उस लड़के के मुंह
पर धर देना। ३० तब लड़के की मां ने
एलीशा से कहा, यहोवा के और तेरे जीवन
की शपथ मैं तुझे न छोड़ूंगी। तो वह उठकर
उसके पीछे पीछे चला। ३१ उन से पहिले
पहुंचकर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के
मुंह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा,
और न उस ने कान लगाया, तब वह एलीशा
से मिलने को लौट आया, और उसको बतला
दिया, कि लड़का नहीं जागा। ३२ जब
एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि
लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है।
३३ तब उस ने अकेला भीतर जाकर
[illegible] कि[illegible] [illegible]वा से प्रार्थना
[illegible] पर इस

* मूल में—उस ने कहा कुशल।

रीति से लेट गया कि अपना मुह उसके मुह
मे और अपनी आखे उसकी आखो से और
अपने हाथ उसके हाथो से मिला दिये और
वह लडके पर पसर गया, तब लडके की देह
गर्म होने लगी। ३५ और वह उसे छोडकर
घर मे इधर उधर टहलने लगा, और फिर
चढकर लडके पर पसर गया, तब लडके ने
सात बार छींका, और अपनी आखें खोलीं।
३६ तब एलीशा ने गेहजी को बुलाकर कहा,
शूनेमिन को बुला ले। जब उसके बुलाने से
वह उसके पास आई, तब उस ने कहा, अपने
बेटे को उठा ले। ३७ वह भीतर गई, और
उसके पावों पर गिर भूमि तक झुककर
दण्डवत किया, फिर अपने बेटे को
उठाकर निकल गई॥

३८ तब एलीशा गिलगाल को लौट
गया। उस समय देश मे अकाल था, और
भविष्यद्वक्ताओं के चेले उसके साम्हने बैठे
हुए थे, और उस ने अपने सेवक से कहा,
हण्डा चढाकर भविष्यद्वक्ताओं के चेलो के
लिये कुछ पका। ३९ तब कोई मैदान मे
साग तोडने गया, और कोई जगली लता
पाकर अपनी अकवार भर इन्द्रायण तोड ले
आया, और फाक फाक करके पकने के लिये
हण्डे म डाल दिया, और वे उसको न पहि-
चानते थे। ४० तब उन्हों ने उन मनुष्यों
के खाने के लिये हण्डे मे से परोसा। खाते
समय वे चिल्लाकर बोल उठे, हे परमेश्वर के
भक्त हण्डे मे माहुर * है, और वे उस में से
खा न सके। ४१ तब एलीशा ने कहा,
अच्छा, कुछ मैदा ले आओ, तब उस ने उसे
हण्डे में डाल कर कहा, उन लोगो के खाने के
लिये परोस दे, फिर हण्डे में कुछ हानि की
वस्तु न रही॥

४२ और कोई मनुष्य बालशालीशा से,
पहिले उपजे हुए जब की बीस रोटियां, और
अपनी बोरी मे हरी बालें परमेश्वर के भक्त
के पास ले आया, तो एलीशा ने कहा, उन
लोगों को खाने के लिये दे। ४३ उसके
टहलुए ने कहा, क्या मैं सौ मनुष्यों के साम्हने
इतना ही रख दू? उस ने कहा, लोगो को
दे दे कि खाए, क्योंकि यहोवा यों कहता है,
उनके खाने के बाद कुछ बच भी जाएगा।
४४ तब उस ने उनके आगे धर दिया, और
यहोवा के वचन के अनुसार उनके खाने के
बाद कुछ बच भी गया॥

(नामान कोढी का शुद्ध किया जाना)

५ अराम के राजा का नामान नाम
सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बडा
और प्रतिष्ठित पुरुष था, क्योंकि यहोवा ने
उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था,
और यह शूरवीर था, परन्तु कोढी था।
२ अरामी लोग दल बान्धकर इस्राएल के
देश में जाकर वहा से एक छोटी लडकी
बन्धुवाई म ले आए थे और वह नामान की
पत्नी की सेवा करती थी। ३ उस ने अपनी
स्वामिन से कहा, जो मेरा स्वामी शोमरोन
के भविष्यद्वक्ता के पास होता, तो क्या ही
अच्छा होता! क्योंकि वह उसको कोढ से
चंगा कर देता। ४ तो किसी ने उसके प्रभु
के पास जाकर कह दिया, कि इस्राएली
लडकी इस प्रकार कहती है। ५ अराम के
राजा ने कहा, तू जा, मै इस्राएल के राजा के
पास एक पत्र भेजूगा, तब वह दस किक्कार
चान्दी और छ हजार टुकडे सोना, और दस
जोडे कपडे साथ लेकर रवाना हो गया।
६ और वह इस्राएल के राजा के पास वह
पत्र ले गया जिस में यह लिखा था, कि जब
यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैं ने

* मूल में—मृत्यु।

९ तब इस्राएल का राजा, और यहूदा
का राजा, और एदोम का राजा चले और
जब सात दिन तक घूमकर चल चुके, तब
सेना और उसके पीछे पीछे चलनेवाले पशुओं
के लिये कुछ पानी न मिला। १० और
इस्राएल के राजा ने कहा, हाय! यहोवा ने
इन तीन राजाओं को इसलिये इकट्ठा किया,
कि उनको मोआब के हाथ में कर दे।
११ परन्तु यहोशापात ने कहा, क्या यहां
यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिसके द्वारा
हम यहोवा से पूछें? इस्राएल के राजा के
किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, हां,
शापात का पुत्र एलीशा जो एलिय्याह के
हाथों को धुलाया करता था वह तो यहां है।
१२ तब यहोशापात ने कहा, उसके पास
यहोवा का वचन पहुंचा करता है। तब
इस्राएल का राजा और यहोशापात और
एदोम का राजा उसके पास गए। १३ तब
एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, मेरा
तुझ से क्या काम है? अपने पिता के
भविष्यद्वक्ताओं और अपनी माता के नबियों
के पास जा। इस्राएल के राजा ने उस से
कहा, ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन
तीनों राजाओं को इसलिये इकट्ठा किया,
कि इनको मोआब के हाथ में कर दे।
१४ एलीशा ने कहा, सेनाओं का यहोवा
जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहा करता हूं,
उसके जीवन की शपथ यदि मैं यहूदा के राजा
यहोशापात का आदर मान न करता, तो मैं
न तो तेरी ओर मुंह करता और न तुझ पर
दृष्टि करता। १५ अब कोई बजवैय्या
मेरे पास ले आओ। जब बजवैय्या बजाने
लगा, तब यहोवा की शक्ति* एलीशा पर
हुई। १६ और उस ने कहा, इस नाले में
तुम लोग इतना खोदो, कि इस में गड्हे ही
गड्हे हो जाएं। १७ क्योंकि यहोवा यों
कहता है, कि तुम्हारे साम्हने न तो वायु
चलेगी, और न वर्षा होगी, तौभी यह नाला
पानी से भर जाएगा, और अपने गाय बैलों
और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे।
१८ और इसको हलकी सी बात जानकर
यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर
देगा। १९ तब तुम सब गढ़वाले और
उत्तम नगरों को नाश करना, और सब अच्छे
वृक्षों को काट डालना, और जल के सब
सोतों को भर देना, और सब अच्छे खेतों
में पत्थर फेंककर उन्हें बिगाड़ देना।
२० बिहान को अन्नबलि चढ़ाने के समय
एदोम की ओर से जल बह आया, और देश
जल से भर गया। २१ यह सुनकर कि
राजाओं ने हम से युद्ध करने के लिये चढ़ाई
की है, जितने मोआबियों की अवस्था
हथियार बान्धने योग्य थी, वे सब बुलाकर
इकट्ठे किए गए, और सिवाने पर खड़े हुए।
२२ बिहान को जब वे उठे उस समय सूर्य
की किरणें उस जल पर ऐसी पड़ी कि वह
मोआबियों को परली ओर से लोहू सा लाल
दिखाई पड़ा। २३ तो वे कहने लगे वह तो
लोहू होगा, निःसन्देह वे राजा एक दूसरे को
मारकर नाश हो गए हैं, इसलिये अब हे
मोआबियो लूट लेने को जाओ, २४ और
जब वे इस्राएल की छावनी के पास आए ही
थे, कि इस्राएली उठकर मोआबियों को
मारने लगे और वे उनके साम्हने से भाग
गए, और वे मोआब को मारते मारते उनके
देश में* पहुंच गए। २५ और उन्हों ने
नगरों को ढा दिया, और सब अच्छे खेतों में
एक एक पुरुष ने अपना अपना पत्थर डाल

* मूल में—हाथ।

* मूल में—उस में।

कर उन्हे भर दिया, और जल के सब सोतो
को भर दिया, और सब अच्छे अच्छे वृक्षो
को काट डाला, यहा तक कि कीर्हरेशेत के
पत्थर तो रह गए, परन्तु उसको भी चारो
ओर गोफन चलानेवालो ने जाकर मारा।
२६ यह देखकर कि हम युद्ध मे हार चले,
मोआब के राजा ने सात सौ तलवार रखने-
वाले पुरुष सग लेकर एदोम के राजा तक
पाति चीरकर पहुचने का यत्न किया परन्तु
पहुच न सका। २७ तब उस ने अपने जेठे
पुत्र को जो उसके स्थान मे राज्य करनेवाला
था पकडकर शहरपनाह पर होमबलि
चढाया। इस कारण इस्राएल पर बडा ही
क्रोध हुआ, सो वे उसे छोडकर अपने देश को
लौट गए॥

(एलीशा के चार आश्चर्य कर्म)

४ भविष्यद्वक्ताओ के चेलो की
पत्नियो मे से एक स्त्री ने एलीशा की
दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर
गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का
भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्ज-
दार था वह आया है कि मेरे दोनो पुत्रो को
अपने दास बनाने के लिये ले जाए।
२ एलीशा ने उस से पूछा, मै तेरे लिये क्या
करू? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है?
उस ने कहा, तेरी दासी के घर में एक हाडी
तेल को छोड और कुछ नही है। ३ उस ने
कहा, तू बाहर जाकर अपनी सब पडोसिनो
से खाली बरतन माग ले आ, और थोडे
बरतन न लाना। ४ फिर तू अपने बेटो
समेत अपने घर मे जा, और द्वार बन्द करके
उन सब बरतनो में तेल उण्डेल देना, और
जो भर जाए उन्हे अलग रखना। ५ तब
वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटो
समेत अपने घर जाकर द्वार बन्द किया,
तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और
वह उण्डेलती गई। ६ जब बरतन भर गए,
तब उस ने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक
और भी ले आ, उस ने उस से कहा, और
बरतन तो नही रहा। तब तेल थम गया।
७ तब उस ने जाकर परमेश्वर के भक्त को
यह बता दिया। और उस ने कहा, जा तेल
बेचकर ऋण भर दे, और जो रह जाए,
उस से तू अपने पुत्रो सहित अपना निर्वाह
करना॥

८ फिर एक दिन की बात है कि एलीशा
शूनेम को गया, जहा एक कुलीन स्त्री थी,
और उस ने उसे रोटी खाने के लिये बिनती
करके विवश किया। और जब जब वह
उधर से जाता, तब तब वह वहा रोटी खाने
को उतरता था। ९ और उस स्त्री ने अपने
पति से कहा, सुन यह जो बार बार हमारे
यहा से होकर जाया करता है वह मुझे
परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पडता
है। १० तो हम भीत पर एक छोटी उपरौठी
कोठरी बनाए, और उस में उसके लिये एक
खाट, एक मेज, एक कुर्सी और एक दीवट
रखे, कि जब जब वह हमारे यहा आए, तब
तब उसी में टिका करे। ११ एक दिन की
बात है, कि वह वहा जाकर उस उपरौठी
कोठरी में टिका और उसी में लेट गया।
१२ और उस ने अपने सेवक गेहजी से
कहा, उस शूनेमिन को बुला ले। उसके
बुलाने से वह उसके साम्हने खडी हुई।
१३ तब उस ने गेहजी से कहा, इस से कह,
कि तू ने हमारे लिये ऐसी बडी चिन्ता की है,
तो तेरे लिये क्या किया जाए? क्या तेरी
चर्चा राजा, वा प्रधान सेनापति से की
जाए? उस ने उत्तर दिया मैं तो अपने ही
लोगो मे रहती हू। १४ फिर उस ने कहा,
तो इसके लिये क्या किया जाए? गेहजी

नामान नाम अपने एक कर्मचारी को तेरे
पास इसलिये भेजा है, कि तू उसका कोढ दूर
कर दे। ७ इस पत्र के पढने पर इस्राएल
का राजा अपने वस्त्र फाडकर बोला, क्या मै
मारनेवाला और जिलानेवाला परमेश्वर
हू कि उस पुरुष ने मेरे पास किसी को
इसलिये भेजा है कि मै उसका कोढ दूर
करू? सोच विचार तो करो, वह मुझ
से झगडे का कारण ढूढता होगा। ८ यह
सुनकर कि इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र
फाडे है, परमेश्वर के भक्त एलीशा ने राजा
के पास कहला भेजा, तू ने क्यो अपने वस्त्र
फाडे है? वह मेरे पास आए, तब जान
लेगा, कि इस्राएल मे भविष्यद्वक्ता तो है।
९ तब नामान घोडो और रथो समेत
एलीशा के द्वार पर आकर खडा हुआ।
१० तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास
यह कहला भेजा, कि तू जाकर यरदन मे सात
बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यो का
त्यो हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा।
११ परन्तु नामान क्रोधित हो यह कहता
हुआ चला गया, कि मै ने तो सोचा था, कि
अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और
खडा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से
प्रार्थना करके कोढ के स्थान पर अपना हाथ
फेरकर कोढ को दूर करेगा! १२ क्या
दमिश्क की अबाना और पर्पर नदिया इस्रा-
एल के सब जलाशयो मे उत्तम नही है?
क्या मै उन मे स्नान करके शुद्ध नही हो
सकता हू? इसलिये वह जलजलाहट से
भरा हुआ लौटकर चला गया। १३ तब
उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे
पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी
काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न
करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान
करके शुद्ध हो जा तो कितना अधिक इसे
मानना चाहिये। १४ तब उस ने परमेश्वर
के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को
जाकर उस मे सात बार डुबकी मारी, और
उसका शरीर छोटे लडके का सा हो गया,
और वह शुद्ध हो गया॥

१५ तब वह अपने सब दल बल समेत
परमेश्वर के भक्त के यहा लौट आया, और
उसके सम्मुख खडा होकर कहने लगा सुन,
अब मै ने जान लिया है, कि समस्त पृथ्वी मे
इस्राएल को छोड और कही परमेश्वर नही
है। इसलिये अब अपने दास की भेट ग्रहण
कर। १६ एलीशा ने कहा, यहोवा जिसके
सम्मुख मै उपस्थित रहता हू उसके जीवन
की शपथ मै कुछ भेट न लूगा, और जब उस
ने उसको बहुत विवश किया कि भेट को
ग्रहण करे, तब भी वह इनकार ही करता
रहा। १७ तब नामान ने कहा, अच्छा, तो
तेरे दास को दो खच्चर मिट्टी मिले, क्योकि
आगे को तेरा दास यहोवा को छोड और
किसी ईश्वर को होमबलि वा मेलबलि न
चढाएगा। १८ एक बात तो यहोवा तेरे
दास के लिये क्षमा करे, कि जब मेरा स्वामी
रिम्मोन के भवन मे दण्डवत करने को जाए,
और वह मेरे हाथ का सहारा ले, और यो
मुझे भी रिम्मोन के भवन मे दण्डवत करनी
पडे, तब यहोवा तेरे दास का यह काम क्षमा
करे कि मै रिम्मोन के भवन मे दण्डवत
करू। १९ उस ने उस से कहा, कुशल से
विदा हो। २० वह उसके यहा से थोडी
दूर चला गया था, कि परमेश्वर के भक्त
एलीशा का सेवक गेहजी सोचने लगा, कि
मेरे स्वामी ने तो उस अरामी नामान को
ऐसा ही छोड दिया है कि जो वह ले आया
था उसको उस ने न लिया, परन्तु यहोवा के
जीवन की शपथ मै उसके पीछे दौडकर उस
से कुछ न कुछ ले लूगा। २१ तब गेहजी

नामान के पीछे दौडा, और नामान किसी को
अपने पीछे दौडता हुआ देखकर, उस से
मिलने को रथ से उतर पडा, और पूछा,
सब कुशल क्षेम तो है? २२ उस ने
कहा, हा, सब कुशल है, परन्तु मेरे
स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है, कि
एप्रैम के पहाडी देश से भविष्यद्वक्ताओ
के चेलो मे से दो जवान मेरे यहा
अभी आए है, इसलिये उनके लिये एक
किक्कार चान्दी और दो जोडे वस्त्र दे।
२३ नामान ने कहा, दो किक्कार लेने को
प्रसन्न हो, तब उस ने उस से बहुत बिनती
करके दो किक्कार चान्दी अलग थैलियो मे
बान्धकर, दो जोडे वस्त्र समेत अपने दो
सेवको पर लाद दिया, और वे उन्हे उसके
आगे आगे ले चले। २४ जब वह टीले के
पास पहुचा, तब उस ने उन वस्तुओ को उन
से लेकर घर मे रख दिया, और उन मनुष्यो
को विदा किया, और वे चले गए।
२५ और वह भीतर जाकर, अपने स्वामी
के साम्हने खडा हुआ। एलीशा ने उस से
पूछा, हे गेहजी तू कहा से आता है? उस ने
कहा, तेरा दास तो कही नही गया।
२६ उस ने उस से कहा, जब वह पुरुष
इधर मुह फेरकर तुझ से मिलने को
अपने रथ पर से उतरा, तब वह पूरा
हाल मुझे मालूम था*, क्या यह
समय चान्दी वा वस्त्र वा जलपाई वा
दाख की बारिया, भेड-बकरिया, गाय-
बैल और दास-दासी लेने का है?
२७ इस कारण से नामान का कोढ तुझे
और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा। तब वह
हिम सा श्वेत कोढी होकर उसके साम्हने
से चला गया॥

* मूल मे—क्या मेरा मन न गया

(एलीशा का एक आश्चर्य कर्म)

६ और भविष्यद्वक्ताओ के चेलो मे से
किसी ने एलीशा से कहा, यह स्थान
जिस मे हम तेरे साम्हने रहते है, वह हमारे
लिये सकेत है। २ इसलिये हम यरदन तक
जाए, और वहा से एक एक बल्ली लेकर,
यहा अपने रहने के लिये एक स्थान बना ले,
उस ने कहा, अच्छा जाओ। ३ तब किसी
ने कहा, अपने दासो के सग चलने को प्रसन्न
हो, उस ने कहा, चलता हू। ४ तो वह
उनके सग चला और वे यरदन के तीर पहुच-
कर लकडी काटने लगे। ५ परन्तु जब एक
जन बल्ली काट रहा था, तो कुल्हाडी बेट से
निकलकर जल मे गिर गई, सो वह चिल्ला-
कर कहने लगा, हाय! मेरे प्रभु, वह तो
मगनी की थी। ६ परमेश्वर के भक्त ने
पूछा, वह कहा गिरी? जब उस ने स्थान
दिखाया, तब उस ने एक लकडी काटकर
वहा डाल दी, और वह लोहा पानी पर तैरने
लगा। ७ उस ने कहा, उसे उठा ले, तब
उस ने हाथ बढाकर उसे ले लिया॥

(एलीशा का अरामी दल से बचना)

८ और अराम का राजा इस्राएल से युद्ध
कर रहा था, और सम्मति करके अपने कर्म-
चारियो से कहा, कि अमुक स्थान पर मेरी
छावनी होगी। ९ तब परमेश्वर के भक्त
ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि
चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न
जाना क्योकि वहा अरामी चढाई करनेवाले
है। १० तब इस्राएल के राजा ने उस
स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के
भक्त ने उसे चिताया था, भेजकर, अपनी
रक्षा की, और इस प्रकार एक दो बार नही
वरन बहुत बार हुआ। ११ इस कारण
अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया,

सो उस ने अपने कर्मचारियो को बुलाकर
उन से पूछा, क्या तुम मुझे न बताओगे कि
हम लोगो मे से कौन इस्राएल के राजा की
ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा,
हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नही,
१२ एलीशा जो इस्राएल मे भविष्यद्वक्ता
है, वह इस्राएल के राजा को वे बाते भी
बताया करता है, जो तू शयन की कोठरी मे
बोलता है। १३ राजा ने कहा, जाकर
देखो कि वह कहा है, तब मै भेजकर उसे
पकडवा मगाऊगा। और उसको यह समा-
चार मिला कि वह दोतान मे है। १४ तब
उस ने वहा घोडो और रथो समेत एक भारी
दल भेजा, और उन्हो ने रात को आकर
नगर को घेर लिया। १५ भोर को परमे-
श्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकल-
कर क्या देखता है कि घोडो और रथो समेत
एक दल नगर को घेरे हुए पडा है। और उसके
सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी,
हम क्या करे? १६ उस ने कहा, मत डर,
क्योकि जो हमारी ओर है, वह उन से अधिक
है, जो उनकी ओर है। १७ तब एलीशा ने
यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आखे
खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने
सेवक की आखे खोल दी, और जब वह देख
सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारो
ओर का पहाड अग्निमय घोडो और रथो से
भरा हुआ है। १८ जब अरामी उसके पास
आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की
कि इस दल को अन्धा कर डाल। एलीशा के
इस वचन के अनुसार उस ने उन्हे अन्धा कर
दिया। १९ तब एलीशा ने उन से कहा,
यह तो मार्ग नही है, और न यह नगर है, मेरे
पीछे हो लो, मै तुम्हे उस मनुष्य के पास
जिसे तुम ढूढ रहे हो पहुचाऊगा। तब उस ने
उन्हे शोमरोन को पहुचा दिया। २० जब
वे शोमरोन मे आ गए, तब एलीशा ने कहा,
हे यहोवा, इन लोगो की आखे खोल कि देख
सके। तब यहोवा ने उनकी आखे खोली,
और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम
शोमरोन के मध्य मे है। २१ उनको देख-
कर इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, हे
मेरे पिता, क्या मै इनको मार लू? मै उनको
मार लू? २२ उस ने उत्तर दिया, मत
मार। क्या तू उनको मार दिया करता है,
जिनको तू तलवार और धनुष से बन्धुआ
बना लेता है? तू उनको अन्न जल दे, कि खा
पीकर अपने स्वामी के पास चले जाए।
२३ तब उस ने उनके लिये बडी जेवनार
की, और जब वे खा पी चुके, तब उस ने उन्हे
विदा किया, और वे अपने स्वामी के पास
चले गए। इसके बाद अराम के दल इस्रा-
एल के देश मे फिर न आए॥

(शोमरोन में बडा अकाल और उसका दूर होना)

२४ परन्तु इसके बाद अराम के राजा
बेन्हदद ने अपनी समस्त सेना इकट्ठी करके,
शोमरोन पर चढाई कर दी और उसको घेर
लिया। २५ तब शोमरोन मे बडा अकाल
पडा और वह ऐसा घिरा रहा, कि अन्त मे
एक गदहे का सिर चान्दी के अस्सी टुकडो
मे और कब* की चौथाई भर कबूतर की
बीट पाच टुकडे चान्दी तक बिकने लगी।
२६ और इस्राएल का राजा शहरपनाह पर
टहल रहा था, कि एक स्त्री ने पुकार के उस
से कहा, हे प्रभु, हे राजा, बचा। २७ उस
ने कहा, यदि यहोवा तुझे न बचाए, तो मै
कहा से तुझे बचाऊ? क्या खलिहान मे
से, वा दाखरस के कुण्ड मे से?
२८ फिर राजा ने उस से पूछा, तुझे

* कब—नाप, पैमाना।

क्या हुआ? उस ने उत्तर दिया, इस
स्त्री ने मुझ से कहा था, मुझे अपना बेटा
दे, कि हम आज उसे खा लें, फिर कल मैं
अपना बेटा दूंगी, और हम उसे भी खाएंगी।
२९ तब मेरे बेटे को पकाकर हम ने खा
लिया, फिर दूसरे दिन जब मैं ने इस से कहा
कि अपना बेटा दे कि हम उसे खा लें, तब
इस ने अपने बेटे को छिपा रखा। ३० उस
स्त्री की ये बातें सुनते ही, राजा ने अपने वस्त्र
फाड़े (वह तो शहरपनाह पर टहल रहा
था), जब लोगों ने देखा, तब उनको यह देख
पड़ा कि वह भीतर अपनी देह पर टाट पहिने
है। ३१ तब वह बोल उठा, यदि मैं शापात
के पुत्र एलीशा का सिर आज उसके धड़ पर
रहने दूं, तो परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही वरन
इस से भी अधिक करे॥

३२ एलीशा अपने घर में बैठा हुआ था,
और पुरनिये भी उसके संग बैठे थे। सो
जब राजा ने अपने पास से एक जन भेजा,
तब उस दूत के पहुंचने से पहिले उस ने
पुरनियों से कहा, देखो, इस खूनी के बेटे ने
किसी को मेरा सिर काटने को भेजा है,
इसलिये जब वह दूत आए, तब किवाड़ बन्द
करके रोके रहना। क्या उसके स्वामी के
पांव की आहट उसके पीछे नहीं सुन पड़ती?
३३ वह उन से यों बातें कर ही रहा था कि
दूत उसके पास आ पहुंचा। और राजा
कहने लगा, यह विपत्ति यहोवा की ओर से
है, अब मैं आगे को यहोवा की बाट क्यों
जोहता रहूं?

७ तब एलीशा ने कहा, यहोवा का
वचन सुनो, यहोवा यों कहता है,
कि कल इसी समय शोमरोन के फाटक
में सआ भर मैदा एक शेकेल से और
दो सआ जव भी एक शेकेल से बिकेगा।
२ तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर
राजा तकिया करता था, परमेश्वर के भक्त
को उत्तर देकर कहा, सुन, चाहे यहोवा
आकाश के झरोखे खोले, तौभी क्या ऐसी
बात हो सकेगी? उस ने कहा, सुन, तू यह
अपनी आंखों से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न
में से कुछ खाने न पाएगा॥

३ और चार कोढ़ी फाटक के बाहर थे,
वे आपस में कहने लगे, हम क्यों यहां बैठे बैठे
मर जाएं? ४ यदि हम कहें, कि नगर में
जाएं, तो वहां मर जाएंगे, क्योंकि वहां
महंगी पड़ी है, और जो हम यहीं बैठे रहें,
तौभी मर ही जाएंगे। तो आओ हम अराम
की सेना में पकड़े जाएं, यदि वे हम को
जिलाए रखें तो हम जीवित रहेंगे, और यदि
वे हम को मार डालें, तौभी हम को मरना
ही है। ५ तब वे सांझ को अराम की
छावनी में जाने को चले, और अराम की
छावनी की छोर पर पहुंचकर क्या देखा,
कि वहां कोई नहीं है। ६ क्योंकि प्रभु ने
अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और
भारी सेना की सी आहट सुनाई थी, और वे
आपस में कहने लगे थे कि, सुनो, इस्राएल के
राजा ने हित्ती और मिस्री राजाओं को वेतन
पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें।
७ इसलिये वे सांझ को उठकर ऐसे भाग
गए, कि अपने डेरे, घोड़े, गदहे, और छावनी
जैसी की तैसी छोड़-छाड़ अपना अपना प्राण
लेकर भाग गए। ८ तो जब वे कोढ़ी
छावनी की छोर के डेरों के पास पहुंचे, तब
एक डेरे में घुसकर खाया पिया, और उस में
से चान्दी, सोना और वस्त्र ले जाकर छिपा
रखा, फिर लौटकर दूसरे डेरे में घुस गए
और उस में से भी ले जाकर छिपा रखा॥

९ तब वे आपस में कहने लगे, जो हम
कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह

आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम
किसी को नही वताते। जो हम पह फटने
तक ठहरे रहे तो हम को दण्ड मिलेगा, सो
अव आओ हम राजा के घराने के पास जाकर
यह वात वतला दे। १० तव वे चले और
नगर के चौकीदारो को वुलाकर वताया, कि
हम जो अराम की छावनी मे गए, तो क्या
देखा, कि वहा कोई नही है, और मनुष्य की
कुछ आहट नही है, केवल वन्धे हुए घोडे
और गदहे है, और डेरे जैसे के तैसे है।
११ तव चौकीदारो ने पुकार के राजभवन
के भीतर समाचार दिया। १२ और राजा
रात ही को उठा, और अपने कर्मचारियो से
कहा, मै तुम्हे वताता हू कि अरामियो ने हम
से क्या किया है? वे जानते है, कि हम लोग
भूखे है इस कारण वे छावनी मे से मैदान मे
छिपने को यह कहकर गए है, कि जव वे नगर
से निकलेगे, तव हम उनको जीवित ही
पकडकर नगर मे घुसने पाएगे। १३ परन्तु
राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर
कहा, कि जो घोडे नगर मे वच रहे है उन मे
से लोग पाच घोडे ले, और उनको भेजकर
हम हाल जान ले। (वे तो इस्राएल की सव
भीड के समान है जो नगर मे रह गए है
वरन इस्राएल की जो भीड मर मिट गई है
वे उसी के समान है।) १४ सो उन्हो ने दो
रथ और उनके घोडे लिये, और राजा ने
उनको अराम की सेना के पीछे भेजा; और
कहा, जाओ, देखो। १५ तव वे यरदन तक
उनके पीछे चले गए, और क्या देखा, कि
पूरा मार्ग वस्त्रो और पात्रो से भरा पडा है,
जिन्हे अरामियो ने उतावली के मारे फेक
दिया था, तव दूत लौट आए, और राजा से
यह कह सुनाया॥

१६ तव लोगो ने निकलकर अराम के
डेरो को लूट लिया, और यहोवा के वचन के
अनुसार एक सआ मैदा एक शेकेल मे, और
दो सआ जव एक शेकेल मे विकने लगा।
१७ और राजा ने उस सरदार को जिसके
हाथ पर वह तकिया करता था फाटक का
अधिकारी ठहराया, तव वह फाटक मे
लोगो के पावो के नीचे दवकर मर गया। यह
परमेश्वर के भक्त के उस वचन के अनुसार
हुआ जो उस ने राजा से उसके यहा आने के
समय कहा था। १८ परमेश्वर के भक्त ने
जैसा राजा से यह कहा था, कि कल इसी
समय शोमरोन के फाटक मे दो सआ जव एक
शेकेल मे, और एक सआ मैदा एक शेकेल मे
विकेगा, वैसा ही हुआ। १९ और उस
सरदार ने परमेश्वर के भक्त को, उत्तर
देकर कहा था, कि सुन चाहे यहोवा आकाश
मे झरोखे खोले तौभी क्या ऐसी वात हो
सकेगी? और उस ने कहा था, सुन, तू यह
अपनी आखो से तो देखेगा, परन्तु उस अन्न
मे से खाने न पाएगा। २० सो उसके साथ
ठीक वैसा ही हुआ, अतएव वह फाटक मे
लोगो के पावो के नीचे दवकर मर गया॥

(एलीशा के आश्चर्य कर्मों की कीर्त्ति)

८ जिस स्त्री के वेटे को एलीशा ने
जिलाया था, उस से उस ने कहा था कि
अपने घराने समेत यहा से जाकर जहा कही
तू रह सके वहा रह, क्योकि यहोवा की
इच्छा है कि अकाल पडे *, और वह इस देश
मे सात वर्ष तक वना रहेगा। २ परमेश्वर
के भक्त के इस वचन के अनुसार वह स्त्री
अपने घराने समेत पलिश्तियो के देश मे
जाकर सात वर्ष रही। ३ सात वर्ष के
वीतने पर वह पलिश्तियो के देश से लौट
आई, और अपने घर और भूमि के लिये
दोहाई देने को राजा के पास गई। ४ राजा

* मूल में—यहोवा ने अकाल बुलाया है।

परमेश्वर के भक्त के सेवक गेहजी से बातें
कर रहा था, और उस ने कहा कि जो बड़े
बड़े काम एलीशा ने किये हैं उन्हें मुझ से
वर्णन कर। ५ जब वह राजा से यह वर्णन
कर ही रहा था कि एलीशा ने एक मुर्दे को
जिलाया, तब जिस स्त्री के बेटे को उस ने
जिलाया था वही आकर अपने घर और भूमि
के लिये दोहाई देने लगी। तब गेहजी ने
कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! यह वही
स्त्री है और यही उसका बेटा है जिसे एलीशा
ने जिलाया था। ६ जब राजा ने स्त्री से
पूछा, तब उस ने उस से सब कह दिया।
तब राजा ने एक हाकिम को यह कहकर
उसके साथ कर दिया कि जो कुछ इसका था
वरन जब से इस ने देश को छोड़ दिया तब से
इसके खेत की जितनी आमदनी अब तक
हुई हो सब इसे फेर दे॥

(हजाएल का अराम की गद्दी छीन लेना)

७ और एलीशा दमिश्क को गया।
और जब अराम के राजा बेन्हदद को जो
रोगी था यह समाचार मिला, कि परमेश्वर
का भक्त यहां भी आया है, ८ तब उस ने
हजाएल से कहा, भेंट लेकर परमेश्वर के भक्त
से मिलने को जा, और उसके द्वारा यहोवा
से यह पूछ, कि क्या बेन्हदद जो रोगी है वह
बचेगा कि नहीं? ९ तब हजाएल भेंट के
लिये दमिश्क की सब उत्तम उत्तम वस्तुओं
से चालीस ऊंट लदवाकर, उस से मिलने को
चला, और उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने
लगा, तेरे पुत्र अराम के राजा बेन्हदद ने
मुझे तुझ से यह पूछने को भेजा है, कि क्या
मैं जो रोगी हूं तो बचूंगा कि नहीं?
१० एलीशा ने उस से कहा, जाकर कह,
तू निश्चय बच सकता, तौभी यहोवा ने
मुझ पर प्रगट किया है, कि तू निःसन्देह मर
जाएगा। ११ और वह उसकी ओर टक-
टकी बान्ध कर देखता रहा, यहां तक कि वह
लज्जित हुआ। और परमेश्वर का भक्त
रोने लगा। १२ तब हजाएल ने पूछा, मेरा
प्रभु क्यों रोता है? उस ने उत्तर दिया, इस-
लिये कि मुझे मालूम है कि तू इस्राएलियों
पर क्या क्या उपद्रव करेगा, उनके गढ़वाले
नगरों को तू फूंक देगा, उनके जवानों को तू
तलवार से घात करेगा, उनके बालबच्चों को
तू पटक देगा, और उनकी गर्भवती स्त्रियों
को तू चीर डालेगा। १३ हजाएल ने कहा,
तेरा दास जो कुत्ते सरीखा है, वह क्या है कि
ऐसा बड़ा काम करे? एलीशा ने कहा,
यहोवा ने मुझ पर यह प्रगट किया है कि तू
अराम का राजा हो जाएगा। १४ तब वह
एलीशा से विदा होकर अपने स्वामी के पास
गया, और उस ने उस से पूछा, एलीशा ने
तुझ से क्या कहा? उस ने उत्तर दिया,
उस ने मुझ से कहा कि बेन्हदद निःसन्देह
बचेगा। १५ दूसरे दिन उस ने रजाई को
लेकर जल में भिगो दिया, और उसको उसके
मुंह पर ऐसा ओढ़ा दिया कि वह मर गया।
तब हजाएल उसके स्थान पर राज्य करने
लगा॥

(इस्राएली योराम का राज्य)

१६ इस्राएल के राजा अहाब के पुत्र
योराम के पांचवें वर्ष में, जब यहूदा का राजा
यहोशापात जीवित था, तब यहोशापात का
पुत्र यहोराम यहूदा पर राज्य करने लगा।
१७ जब वह राजा हुआ, तब बत्तीस वर्ष का
था, और आठ वर्ष तक यरूशलेम में राज्य
करता रहा। १८ वह इस्राएल के राजाओं
की सी चाल चला, जैसे अहाब का घराना
चलता था, क्योंकि उसकी स्त्री अहाब की
बेटी थी, और वह उस काम को करता था

जो यहोवा की दृष्टि मे बुरा है। १९ तौभी
यहोवा ने यहूदा को नाश करना न चाहा, यह
उसके दास दाऊद के कारण हुआ, क्योंकि
उस ने उसको वचन दिया था, कि तेरे वंश के
निमित्त मै सदा तेरे लिये एक दीपक जलता
हुआ रखूंगा॥

२० उसके दिनो मे एदोम ने यहूदा की
अधीनता छोडकर अपना एक राजा बना
लिया। २१ तब योराम अपने सब रथ
साथ लिये हुए साईर को गया, और रात को
उठकर उन एदोमियो को जो उसे घेरे हुए थे,
और रथो के प्रधानो को भी मारा, और
लोग अपने अपने डेरे को भाग गए। २२ यो
एदोम यहूदा के वश मे छूट गया, और आज
तक वैसा ही है। उस समय लिब्ना ने भी
यहूदा की अधीनता छोड दी। २३ योराम
के और सब काम और जो कुछ उस ने किया,
वह क्या यहूदा के राजाओ के इतिहास की
पुस्तक मे नही लिखा है? २४ निदान
योराम अपने पुरखाओ के संग सो गया
और उनके बीच दाऊदपुर मे उसे मिट्टी दी
गई, और उसका पुत्र अहज्जाह उसके
स्थान पर राज्य करने लगा॥

(यहूदी अहज्याह का राज्य)

२५ अहाब के पुत्र इस्राएल के राजा
योराम के बारहवे वर्ष मे यहूदा के राजा
यहोराम का पुत्र अहज्याह राज्य करने
लगा। २६ जब अहज्याह राजा बना, तब
बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में एक ही
वर्ष राज्य किया। और उसकी माता का
नाम अतल्याह था, जो इस्राएल के राजा
ओम्री की पोती थी। २७ वह अहाब के
घराने की सी चाल चला, और अहाब के
घराने की नाई वह काम करता था, जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा है, क्योंकि वह अहाब
के घराने का दामाद था। २८ और वह
अहाब के पुत्र योराम के संग गिलाद के
रामोत मे अराम के राजा हजाएल से लड़ने
को गया, और अरामियों ने योराम को
घायल किया। २९ और राजा योराम इस-
लिये लौट गया, कि यिज्रैल मे उन घावों का
इलाज कराए, जो उसको अरामियों के हाथ
से उस समय लगे, जब वह हजाएल के साथ
लड रहा था। और अहाब का पुत्र योराम
तो यिज्रैल मे रोगी रहा, इस कारण यहूदा
के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह उसको
देखने गया॥

(येहू का अभिषेक और राज्य)

९ तब एलीशा भविष्यद्वक्ता ने
भविष्यद्वक्ताओ के चेलो मे से एक को
बुलाकर उस से कहा, कमर बान्ध, और हाथ
मे तेल की यह कुप्पी लेकर गिलाद के रामोत
को जा। २ और वहा पहुचकर येहू को जो
यहोशापात का पुत्र और निमशी का पोता
है, ढूढ लेना, तब भीतर जा, उसको खडा
कराकर उसके भाइयो से अलग एक भीतरी
कोठरी मे ले जाना। ३ तब तेल की यह
कुप्पी लेकर तेल को उसके सिर पर यह कह
कर डालना, यहोवा यो कहता है, कि मै
इस्राएल का राजा होने के लिये तेरा
अभिषेक कर देता हू। तब द्वार खोलकर
भागना, विलम्ब न करना॥

४ तब वह जवान भविष्यद्वक्ता गिलाद
के रामोत को गया। ५ वहा पहुचकर
उस ने क्या देखा, कि सेनापति बैठे हुए है,
तब उस ने कहा, हे सेनापति, मुझे तुझ से
कुछ कहना है। येहु ने पूछा, हम सभो मे
किस से? उस ने कहा हे सेनापति, तुझी
से! ६ तब वह उठकर घर मे गया, और
उस ने यह कहकर उसके सिर पर तेल डाला

कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता
है, मैं अपनी प्रजा इस्राएल पर राजा
होने के लिये तेरा अभिषेक कर देता हूं।
७ तो तू अपने स्वामी अहाब के घराने को
मार डालना, जिस से मुझे अपने दास
भविष्यद्वक्ताओं के वरन अपने सब दासों के
खून का जो ईज़ेबेल ने बहाया, पलटा मिले।
८ क्योंकि अहाब का समस्त घराना नाश हो
जाएगा, और मैं अहाब के वंश के हर एक
लड़के को और इस्राएल में के क्या बन्धुए,
क्या स्वाधीन, हर एक को नाश कर डालूंगा।
९ और मैं अहाब का घराना नबात के पुत्र
यारोबाम का सा, और अहिय्याह के पुत्र
बाशा का सा कर दूंगा। १० और ईज़ेबेल
को यिज्रैल की भूमि में कुत्ते खाएंगे, और
उसको मिट्टी देनेवाला कोई न होगा। तब
वह द्वार खोलकर भाग गया॥

११ तब येहू अपने स्वामी के कर्म-
चारियों के पास निकल आया, और एक ने
उस से पूछा, क्या कुशल है? वह बावला
क्यों तेरे पास आया था? उस ने उन से
कहा, तुम को मालूम होगा कि वह कौन है
और उस से क्या बातचीत हुई। १२ उन्हों
ने कहा झूठ है, हमें बता दे। उस ने कहा,
उस ने मुझ से कहा तो बहुत, परन्तु मतलब
यह है कि यहोवा यों कहता है कि मैं इस्राएल
का राजा होने के लिये तेरा अभिषेक कर
देता हूं। १३ तब उन्हों ने झट अपना
अपना वस्त्र उतार कर उसके नीचे सीढ़ी ही
पर बिछाया, और नरसिंगे फूंककर कहने
लगे, येहू राजा है॥

१४ यों येहू जो निमशी का पोता और
यहोशापात का पुत्र था, उस ने योराम से
राजद्रोह की गोष्ठी की। (योराम तो सब
इस्राएल समेत अराम के राजा हजाएल के
कारण गिलाद के रामोत की रक्षा कर रहा
था, १५ परन्तु राजा योराम आप अपने
घाव का जो अराम के राजा हजाएल से युद्ध
करने के समय उसको अरामियों से लगे थे,
उनका इलाज कराने के लिये यिज्रैल को
लौट गया था।) तब येहू ने कहा, यदि
तुम्हारा ऐसा मन हो, तो इस नगर में से कोई
निकल कर यिज्रैल में सुनाने को न जाने
पाए। १६ तब येहू रथ पर चढ़कर, यिज्रैल
को चला जहां योराम पड़ा हुआ था, और
यहूदा का राजा अहज्याह योराम के देखने
को वहां आया था। १७ यिज्रैल के गुम्मट
पर, जो पहरुआ खड़ा था, उस ने येहू के संग
आते हुए दल को देखकर कहा, मुझे एक दल
दीखता है, योराम ने कहा, एक सवार को
बुलाकर उन लोगों से मिलने को भेज और
वह उन से पूछे, क्या कुशल है? १८ तब
एक सवार उस से मिलने को गया, और उस
से कहा, राजा पूछता है, क्या कुशल है?
येहू ने कहा, कुशल से तेरा क्या काम? हट-
कर मेरे पीछे चल। तब पहरुए ने कहा, वह
दूत उनके पास पहुंचा तो था, परन्तु लौटकर
नहीं आया। १९ तब उसने दूसरा सवार
भेजा, और उस ने उनके पास पहुंचकर कहा,
राजा पूछता है, क्या कुशल है? येहू ने कहा,
कुशल से तेरा क्या काम? हटकर मेरे पीछे
चल। २० तब पहरुए ने कहा, वह भी
उनके पास पहुंचा तो था, परन्तु लौटकर
नहीं आया। हांकना निमशी के पोते येहू
का सा है, वह तो बौड़हे की नाईं हांकता
है॥

२१ योराम ने कहा, मेरा रथ जुतवा।
जब उसका रथ जुत गया, तब इस्राएल का
राजा योराम और यहूदा का राजा अहज्याह,
दोनों अपने अपने रथ पर चढ़कर निकल
गए, और येहू से मिलने को बाहर जाकर
यिज्रैल नाबोत की भूमि में उस से भेंट की।

२२ येहू को देखते ही योराम ने पूछा, हे
येहू क्या कुशल है? येहू ने उत्तर दिया, जब
तक तेरी माता ईजेबेल छिनालपन और
टोना करती रहे, तब तक कुशल कहा?
२३ तब योराम रास* फेर के, और
अहज्याह से यह कहकर कि हे अहज्याह
विश्वासघात है, भाग चल। २४ तब येहू
ने धनुष को कान तक खीचकर † योराम के
पखौडो के बीच ऐसा तीर मारा, कि वह
उसका हृदय फोडकर निकल गया, और वह
अपने रथ मे झुककर गिर पडा। २५ तब
येहू ने बिदकर नाम अपने एक सरदार से
कहा, उसे उठाकर यिज्रैली नाबोत की भूमि
मे फेक दे, स्मरण तो कर, कि जब मै और
तू, हम दोनो एक सग सवार होकर उसके
पिता अहाब के पीछे पीछे चल रहे थे तब
यहोवा ने उस से यह भारी वचन कहवाया
था, कि यहोवा की यह वाणी है, २६ कि
नाबोत और उसके पुत्रो का जो खून
हुआ, उसे मै ने देखा है, और यहोवा की
यह वाणी है, कि मै उसी भूमि मे तुझे
बदला दूगा। तो अब यहोवा के उस वचन
के अनुसार इसे उठाकर उसी भूमि मे
फेक दे॥

२७ यह देखकर यहूदा का राजा अह-
ज्याह बारी के भवन के मार्ग से भाग चला।
और येहू ने उसका पीछा करके कहा, उसे
भी रथ ही पर मारो, तो वह भी यिबलाम
के पास की गूर की चढाई पर मारा गया,
और मगिद्दो तक भागकर मर गया।
२८ तब उसके कर्मचारियो ने उसे रथ पर
यरूशलेम को पहुचाकर दाऊदपुर मे उसके
पुरखाओ के बीच मिट्टी दी॥

* मूल में—अपने हाथ।
† मूल में—अपना हाथ धनुष से धर के।

२९ अहज्याह तो अहाब के पुत्र योराम
के ग्यारहवे वर्ष मे यहूदा पर राज्य करने
लगा था॥

३० जब येहू यिज्रेल को आया, तब
ईजेबेल यह सुन अपनी आखो मे सुर्मा लगा,
अपना सिर सवारकर, खिडकी में से झाकने
लगी। ३१ जब येहू फाटक मे होकर आ
रहा था तब उस ने कहा, हे अपने स्वामी के
घात करने वाले जिम्री, क्या कुशल है?
३२ तब उस ने खिडकी की ओर मुह उठा-
कर पूछा, मेरी ओर कौन है? कौन? इस
पर दो तीन खोजो ने उसकी ओर झाका।
३३ तब उस ने कहा, उसे नीचे गिरा दो।
सो उन्हो ने उसको नीचे गिरा दिया, और
उसके लोहू के कुछ छीटे भीत पर और कुछ
घोडो पर पडे, और उन्हो ने उसको पाव से
लताड दिया। ३४ तब वह भीतर जाकर
खाने पीने लगा, और कहा, जाओ उस
स्रापित स्त्री को देख लो, और उसे मिट्टी
दो, वह तो राजा की बेटी है। ३५ जब वे
उसे मिट्टी देने गए, तब उसकी खोपडी पावो
और हथेलियो को छोडकर उसका और कुछ
न पाया। ३६ सो उन्हो ने लौटकर उस से
कह दिया, तब उस ने कहा, यह यहोवा का
वह वचन है, जो उस ने अपने दास तिशबी
एलिय्याह से कहलवाया था, कि ईजेबेल का
मास यिज्रैल की भूमि मे कुत्तो से खाया
जाएगा। ३७ और ईजेबेल की लोथ
यिज्रैल की भूमि पर खाद की नाई पडी
रहेगी, यहा तक कि कोई न कहेगा, यह
ईजेबेल है॥

१० अहाब के तो सत्तर बेटे, पोते,
शोमरोन मे रहते थे। सो येहू ने
शोमरोन मे उन पुरनियो के पास, और जो
यिज्रैल के हाकिम थे, और जो अहाब के

लडकेवालो के पालनेवाले थे, उनके पास
पत्र लिखकर भेजे, २ कि तुम्हारे स्वामी के
बेटे, पोते तो तुम्हारे पास रहते हैं, और
तुम्हारे रथ, और घोडे भी हैं, और तुम्हारे
एक गढवाला नगर, और हथियार भी हैं,
३ तो इस पत्र के हाथ लगते ही, अपने स्वामी
के बेटो में से जो सब मे अच्छा और योग्य हो,
उसको छाटकर, उसके पिता की गद्दी पर
बैठाओ, और अपने स्वामी के घराने के लिये
लडो। ४ परन्तु वे निपट डर गए, और
कहने लगे, उसके साम्हने दो राजा भी ठहर
न सके, फिर हम कहा ठहर सकेंगे? ५ तब
जो राजघराने के काम पर था, और जो नगर
के ऊपर था, उन्हो ने और पुरनियो और
लडकेवालो के पालनेवालो ने येहू के पास यो
कहला भेजा, कि हम तेरे दास हैं, जो कुछ तू
हम से कहे, उसे हम करेंगे, हम किसी को
राजा न बनाएंगे, जो तुझे भाए वही कर।
६ तब उस ने दूसरा पत्र लिखकर उनके
पास भेजा, कि यदि तुम मेरी ओर के हो
और मेरी मानो, तो अपने स्वामी के बेटो-
पोतो के सिर कटवाकर कल इसी समय तक
मेरे पास यिज्रैल में हाजिर होना। राजपुत्र
तो जो सत्तर मनुष्य थे, वह उस नगर के
रईसो के पास पलते थे। ७ यह पत्र उनके
हाथ लगते ही, उन्हो ने उन सत्तरो राजपुत्रो
को पकडकर मार डाला, और उनके सिर
टोकरियो मे रखकर यिज्रैल को उसके पास
भेज दिए। ८ और एक दूत ने उसके पास
जाकर बता दिया, कि राजकुमारो के सिर
आ गए हैं। तब उस ने कहा, उन्हे फाटक मे
दो ढेर करके बिहान तक रखो। ९ बिहान
को उस ने बाहर जा खडे होकर सब लोगो से
कहा, तुम तो निर्दोष हो, मैं ने अपने स्वामी
से राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे घात किया,
परन्तु इन सभो को किस ने मार डाला?
१० अब जान लो कि जो वचन यहोवा ने
अपने दास एलिय्याह के द्वारा कहा था, उसे
उस ने पूरा किया है, जो वचन यहोवा ने
अहाब के घराने के विषय कहा, उस में से
एक भी बात बिना पूरी हुए न रहेगी*।
११ तब अहाब के घराने के जितने लोग
यिज्रैल मे रह गए, उन सभो को और उसके
जितने प्रधान पुरुष और मित्र और याजक
थे, उन सभो को येहू ने मार डाला, यहा तक
कि उस ने किसी को जीवित न छोडा॥

१२ तब वह वहा से चलकर शोमरोन
को गया। और मार्ग मे चरवाहो के ऊन
कतरने के स्थान पर पहुचा ही था, १३ कि
यहूदा के राजा अहज्याह के भाई येहू से मिले
और जब उस ने पूछा, तुम कौन हो? तब
उन्हो ने उत्तर दिया, हम अहज्याह के भाई
हैं, और राजपुत्रो और राजमाता के बेटो का
कुशलक्षेम पूछने को जाते हैं। १४ तब उस
ने कहा, इन्हे जीवित पकडो। सो उन्हो ने
उनको जो बयालीस पुरुष थे, जीवित पकडा,
और ऊन कतरने के स्थान की बावली पर
मार डाला, उस ने उन में से किसी को न
छोडा॥

१५ जब वह वहा से चला, तब रेकाब
का पुत्र यहोनादाब साम्हने से आता हुआ
उसको मिला। उसका कुशल उस ने पूछकर
कहा, मेरा मन तो तेरी ओर निष्कपट है सो
क्या तेरा मन भी वैसा ही है? यहोनादाब
ने कहा, हा, ऐसा ही है। फिर उस ने कहा,
ऐसा हो, तो अपना हाथ मुझे दे। उस ने
अपना हाथ उसे दिया, और वह यह कहकर
उसे अपने पास रथ पर चढाने लगा, कि मेरे
सग चल। १६ और देख, कि मुझे यहोवा
के निमित्त कैसी जलन रहती है। तब वह

* मूल में—भूमि पर न गिरेगी।

उसके रथ पर चढा दिया गया। १७ शोम-
रोन को पहुचकर उस ने यहोवा के उस वचन
के अनुसार जो उस ने एलिय्याह् से कहा था,
अहाब के जितने शोमरोन मे बचे रहे, उन
सभो को मार के विनाश किया॥

१८ तब येहू ने सब लोगो को इकट्ठा
करके कहा, अहाब ने तो बाल की थोडी ही
उपासना की थी, अब येहू उसकी उपासना
बढके करेगा। १९ इसलिये अब बाल के
सब नबियो, सब उपासको और सब याजको
को मेरे पास बुला लाओ, उन मे से कोई भी
न रह जाए, क्योकि बाल के लिये मेरा एक
बडा यज्ञ होनेवाला है, जो कोई न आए वह
जीवित न बचेगा। येहू ने यह काम कपट
करके बाल के सब उपासको को नाश करने
के लिये किया। २० तब येहू ने कहा, बाल
की एक पवित्र महासभा का प्रचार करो।
और लोगो ने प्रचार किया। २१ और येहू
ने सारे इस्राएल मे दूत भेजे, तब बाल के
सब उपासक आए, यहा तक कि ऐसा कोई
न रह गया जो न आया हो। और वे बाल के
भवन मे इतने आए, कि वह एक सिरे से दूसरे
सिरे तक भर गया। २२ तब उस ने उस
मनुष्य से जो वस्त्र के घर का अधिकारी था,
कहा, बाल के सब उपासको के लिये वस्त्र
निकाल ले आ, सो वह उनके लिये वस्त्र
निकाल ले आया। २३ तब येहू रेकाब के
पुत्र यहोनादाब को सग लेकर बाल के भवन
मे गया, और बाल के उपासको से कहा,
ढूढकर देखो, कि यहा तुम्हारे सग यहोवा का
कोई उपासक तो नही है, केवल बाल
ही के उपासक है। तब वे मेलबलि और
होमबलि चढाने को भीतर गए॥

२४ येहू ने तो अस्सी पुरुष बाहर ठहरा
कर उन से कहा था, यदि उन मनुष्यो मे से
जिन्हें मै तुम्हारे हाथ कर दू, कोई भी बचने
पाए, तो जो उसे जाने देगा उसका प्राण,
उसके प्राण की सन्ती जाएगा। २५ फिर
जब होमबलि चढ चुका, तब येहू ने पहरुओ
और सरदारो से कहा, भीतर जाकर उन्हे
मार डालो, कोई निकलने न पाए। तब
उन्हो ने उन्हे तलवार से मारा और पहरुए
और सरदार उनको बाहर फेंककर बाल के
भवन के नगर को गए। २६ और उन्हो ने
बाल के भवन मे की लाठें निकालकर फूक
दी। २७ और बाल की लाठ को उन्हो ने
तोड डाला, और बाल के भवन को ढाकर
पायखाना बना दिया, और वह आज तक
ऐसा ही है॥

२८ यो येहू ने बाल को इस्राएल मे
से नाश करके दूर किया। २९ तौभी
नबात के पुत्र यारोबाम, जिस ने इस्राएल
मे पाप कराया था, उसके पापो के
अनुसार करने, अर्थात् बेतेल और दान
मे के सोने के बछडो की पूजा, उस
से येहू अलग न हुआ। ३० और यहोवा
ने येहू से कहा, इसलिये कि तू ने वह
किया, जो मेरी दृष्टि मे ठीक है, और अहाब
के घराने से मेरी इच्छा के अनुसार बर्ताव
किया है, तेरे परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान
इस्राएल की गद्दी पर विराजती रहेगी।
३१ परन्तु येहू ने इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की व्यवस्था पर पूर्ण मन से चलने की
चौकसी न की, वरन यारोबाम जिस ने
इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापो के
अनुसार करने से वह अलग न हुआ॥

३२ उन दिनो यहोवा इस्राएल को
घटाने लगा, इसलिये हजाएल ने इस्राएल के
उन सारे देशो मे उनको मारा ३३ यरदन
से पूरब की ओर गिलाद का सारा देश, और
गादी और रूबेनी और मनश्शेई का देश
अर्थात् अरोएर से लेकर जो अर्नोन की तराई

के पास है, गिलाद और बाशान तक।
३४ येहू के और सब काम और जो कुछ
उस ने किया, और उसकी पूर्ण वीरता, यह
सब क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास
की पुस्तक में नहीं लिखा है? ३५ निदान
येहू अपने पुरखाओं के संग सो गया, और
शोमरोन में उसको मिट्टी दी गई, और
उसका पुत्र यहोआहाज उसके स्थान पर
राजा बन गया। ३६ येहू के शोमरोन में
इस्राएल पर राज्य करने का समय तो
अट्ठाईस वर्ष का था॥

(योआश का घात से बचकर राजा
हो जाना)

११ जब अहज्याह की माता अत-
ल्याह ने देखा, कि मेरा पुत्र मर
गया, तब उस ने पूरे राजवंश को नाश कर
डाला। २ परन्तु यहोशेबा जो राजा
योराम की बेटी, और अहज्याह की बहिन
थी, उस ने अहज्याह के पुत्र योआश को घात
होनेवाले राजकुमारों के बीच में से चुराकर
धाई समेत बिछौने रखने की कोठरी में छिपा
दिया। और उन्हों ने उसे अतल्याह से ऐसा
छिपा रखा, कि वह मारा न गया। ३ और
वह उसके पास यहोवा के भवन में छः वर्ष
छिपा रहा, और अतल्याह देश पर राज्य
करती रही॥
४ सातवें वर्ष में यहोयादा ने जल्लादों
और पहरुओं के शतपतियों को बुला भेजा,
और उनको यहोवा के भवन में अपने पास ले
आया, और उन से वाचा बांधी और
यहोवा के भवन में उनको शपथ खिलाकर,
उनको राजपुत्र दिखाया। ५ और उस ने
उन्हें आज्ञा दी, कि एक काम करो अर्थात्
तुम में से एक तिहाई लोग जो विश्रामदिन
को आनेवाले हो, वह राजभवन के पहरे की
चौकसी करे। ६ और एक तिहाई लोग
सूर नाम फाटक में ठहरे रहें, और एक तिहाई
लोग पहरुओं के पीछे के फाटक में रहें, यों
तुम भवन की चौकसी करके, लोगों को रोके
रहना। ७ और तुम्हारे दो दल अर्थात्
जितने विश्राम दिन को बाहर जानेवाले हों
वह राजा के आसपास होकर यहोवा के भवन
की चौकसी करें। ८ और तुम अपने अपने
हाथ में हथियार लिये हुए राजा के चारों
ओर रहना, और जो कोई पांतियों के भीतर
घुसना चाहे वह मार डाला जाए, और तुम
राजा के आते-जाते समय उसके संग
रहना॥
९ यहोयादा याजक की इन सब
आज्ञाओं के अनुसार शतपतियों ने किया।
वे विश्रामदिन को आनेवाले और जानेवाले
दोनों दलों के अपने अपने जनों को संग लेकर
यहोयादा याजक के पास गए। १० तब
याजक ने शतपतियों को राजा दाऊद के बर्छे,
और ढालें जो यहोवा के भवन में थीं दे दीं।
११ इसलिये वे पहरुए अपने अपने हाथ में
हथियार लिए हुए भवन के दक्खिनी कोने
से लेकर उत्तरी कोने तक वेदी और भवन के
पास राजा के चारों ओर उसकी आड़ करके
खड़े हुए। १२ तब उस ने राजकुमार को
बाहर लाकर उसके सिर पर मुकुट, और
साक्षीपत्र धर दिया, तब लोगों ने उसका
अभिषेक करके उसको राजा बनाया, फिर
ताली बजा बजाकर बोल उठे, राजा जीवित
रहे।
१३ जब अतल्याह को पहरुओं और
लोगों का हलचल सुन पड़ा, तब वह उनके
पास यहोवा के भवन में गई। १४ और
उस ने क्या देखा कि राजा रीति के अनुसार
खम्भे के पास खड़ा है, और राजा के पास
प्रधान और तुरही बजानेवाले खड़े हैं। और

सब लोग आनन्द करते और तुरहिया बजा
रहे है। तब अतल्याह अपने वस्त्र फाडकर
राजद्रोह—राजद्रोह यो पुकारने लगी।
१५ तब यहोयादा याजक ने दल के अधि-
कारी शतपतियो को आज्ञा दी कि उसे अपनी
पातियो के बीच से निकाल ले जाओ, और
जो कोई उसके पीछे चले उसे तलवार से मार
डालो। क्योंकि याजक ने कहा, कि वह
यहोवा के भवन मे न मार डाली जाए।
१६ इसलिये उन्हो ने दोनो ओर से उसको
जगह दी, और वह उस मार्ग के बीच से चली
गई, जिस से घोडे राजभवन मे जाया करते
थे, और वहा वह मार डाली गई॥

१७ तब यहोयादा ने यहोवा के, और
राजा-प्रजा के बीच यहोवा की प्रजा होने की
वाचा बन्धाई, और उस ने राजा और प्रजा
के मध्य भी वाचा बन्धाई। १८ तब सब
लोगो ने बाल के भवन को जाकर ढा दिया,
और उसकी वेदिया और मूरते भली भाति
तोड दी, और मतान नाम बाल के याजक
को वेदियो के साम्हने ही घात किया। और
याजक ने यहोवा के भवन पर अधिकारी
ठहरा दिए। १९ तब वह शतपतियों,
जल्लादो और पहरुओं और सब लोगो को
साथ लेकर राजा को यहोवा के भवन से नीचे
ले गया, और पहरुओ के फाटक के मार्ग से
राजभवन को पहुचा दिया। और राजा
राजगद्दी पर विराजमान हुआ। २० तब
सब लोग आनन्दित हुए, और नगर में शान्ति
हुई। अतल्याह तो राजभवन के पास
तलवार से मार डाली गई थी॥

(योआश का राज्य)

१२ जब योआश राजा हुआ, उस
समय वह सात वर्ष का था। येहू
के सातवे वर्ष में योआश राज्य करने लगा,
और यरूशलेम मे चालीस वर्ष तक राज्य
करता रहा। उसकी माता का नाम सिब्या
था जो बेर्शेबा की थी। २ और जब तक
यहोयादा याजक योआश को शिक्षा देता
रहा, तब तक वह वही काम करता रहा जो
यहोवा की दृष्टि मे ठीक है। ३ तौभी ऊचे
स्थान गिराए न गए, प्रजा के लोग तब भी
ऊचे स्थान पर बलि चढाते और धूप जलाते
रहे॥

४ और योआश ने याजको से कहा,
पवित्र की हुई वस्तुओ का जितना रुपया
यहोवा के भवन मे पहुचाया जाए, अर्थात्
गिने हुए लोगो का रुपया और जितने रुपये
के जो कोई योग्य ठहराया जाए, और जितना
रुपया जिसकी इच्छा यहोवा के भवन मे ले
आने की हो, ५ इन सब को याजक लोग
अपनी जान पहचान के लोगो से लिया करे
और भवन मे जो कुछ टूटा फूटा हो उसको
सुधार दे। ६ तौभी याजको ने भवन मे
जो टूटा फूटा था, उसे योआश राजा
के तेईसवे वर्ष तक नही सुधारा था।
७ इसलिये राजा योआश ने यहोयादा
याजक, और और याजको को बुलवाकर
पूछा, भवन मे जो कुछ टूटा फूटा है, उसे तुम
क्यो नही सुधारते? अब से अपनी जान
पहचान के लोगो से और रुपया न लेना,
और जो तुम्हें मिले, उसे भवन के सुधारने
के लिये दे देना। ८ तब याजको ने मान
लिया कि न तो हम प्रजा से और रुपया लें
और न भवन को सुधारे॥

९ तब यहोयादा याजक ने एक सन्दूक ले,
उसके ढकने में छेद करके उसको यहोवा के
भवन में आनेवालो के दाहिने हाथ पर वेदी
के पास धर दिया, और द्वार की रखवाली
करनेवाले याजक उस में वह सब रुपया
डालने लगे जो यहोवा के भवन मे लाया

जाता था। १० जब उन्हो ने देखा, कि
सन्दूक में बहुत रुपया है, तब राजा के प्रधान
और महायाजक ने आकर उसे थैलियो में
बान्ध दिया, और यहोवा के भवन में पाए हुए
रुपये को गिन लिया। ११ तब उन्हो ने उस
तौले हुए रुपये को उन काम करानेवालो के
हाथ में दिया, जो यहोवा के भवन मे अधि-
कारी थे, और इन्हो ने उसे यहोवा के भवन
के बनानेवाले बढइयो, राजो, और संगत-
राशो को दिये। १२ और लकडी और गढे
हुए पत्थर मोल लेने मे, वरन जो कुछ भवन
के टूटे फूटे की मरम्मत में खर्च होता था, उस
में लगाया। १३ परन्तु जो रुपया यहोवा
के भवन में आता था, उस से चान्दी के तसले,
चिमटे, कटोरे, तुरहिया आदि सोने वा
चान्दी के किसी प्रकार के पात्र न बने।
१४ परन्तु वह काम करनेवाले को दिया
गया, और उन्हो ने उसे लेकर यहोवा के
भवन की मरम्मत की। १५ और जिनके
हाथ में काम करनेवालो को देने के लिये
रुपया दिया जाता था, उन से कुछ हिसाब न
लिया जाता था, क्योकि वे सच्चाई से काम
करते थे। १६ जो रुपया दोषबलियो और
पापबलियो के लिये दिया जाता था वह तो
यहोवा के भवन में न लगाया गया, वह
याजको को मिलता था॥
१७ तब अराम के राजा हजाएल ने गत
नगर पर चढाई की, और उस से लडाई करके
उसे ले लिया। तब उस ने यरूशलेम पर भी
चढाई करने को अपना मुह किया। १८ तब
यहूदा के राजा योआश ने उन सब पवित्र
वस्तुओ को जिन्हें उसके पुरखा यहोशापात,
यहोराम और अहज्याह नाम यहूदा के
राजाओ ने पवित्र किया था, और अपनी
पवित्र की हुई वस्तुओ को भी और जितना
सोना यहोवा के भवन के भण्डारो में और
राजभवन मे मिला, उस सब को लेकर
अराम के राजा हजाएल के पास भेज दिया,
और वह यरूशलेम के पास से चला गया॥
१९ योआश के और सब काम जो उस ने
किए, वह क्या यहूदा के राजाओ के इतिहास
की पुस्तक में नही लिखे है? २० योआश
के कर्मचारियो ने राजद्रोह की गोष्ठी करके,
उसको मिल्लो के भवन में जो सिल्ला की
उतराई पर था, मार डाला। २१ अर्थात्
शिमात का पुत्र योजाकार और शोमेर का
पुत्र यहोजाबाद, जो उसके कर्मचारी थे,
उन्हो ने उसे ऐसा मारा, कि वह मर गया।
तब उसे उसके पुरखाओ के बीच दाऊदपुर
में मिट्टी दी, और उसका पुत्र अमस्याह उसके
स्थान पर राज्य करने लगा॥

(यहोआहाज का राज्य)

१३ अहज्याह के पुत्र यहूदा के राजा
योआश के तेईसवें वर्ष में येहू का
पुत्र यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल पर
राज्य करने लगा, और सत्रह वर्ष तक राज्य
करता रहा। २ और उस ने वह किया, जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा था अर्थात् नबात के
पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप
कराया था, उसके पापो के अनुसार वह
करता रहा, और उनको छोड न दिया।
३ इसलिये यहोवा का क्रोध इस्राएलियो के
विरुद्ध भडक उठा, और उस ने उनको अराम
के राजा हजाएल, और उसके पुत्र बेन्हदद
के अधीन कर दिया। ४ तब यहोआहाज
यहोवा के साम्हने गिडगिडाया और यहोवा
ने उसकी सुन ली, क्योकि उस ने इस्राएल
पर अन्धेर देखा कि अराम का राजा उन पर
कैसा अन्धेर करता था। ५ इसलिये यहोवा
ने इस्राएल को एक छुडानेवाला दिया और
वे अराम के वश से छूट गए, और इस्राएली

पड़ा तब उन्हों ने उस लोथ को एलीशा की
कबर में डाल दिया, और एलीशा की हड्डियों
के छूते ही वह जी उठा, और अपने पांवों के
बल खड़ा हो गया ॥

२२ यहोआहाज के जीवन भर अराम
का राजा हजाएल इस्राएल पर अन्धेर ही
करता रहा। २३ परन्तु यहोवा ने उन पर
अनुग्रह किया, और उन पर दया करके
अपनी उस वाचा के कारण जो उस ने इब्राहीम,
इसहाक और याकूब से बान्धी थी, उन
पर कृपा दृष्टि की, और न तो उन्हें नाश
किया, और न अपने साम्हने से निकाल
दिया ॥

२४ तब अराम का राजा हजाएल मर
गया, और उसका पुत्र बेन्हदद उसके स्थान
पर राजा बन गया। २५ और यहोआहाज
के पुत्र यहोआश ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद के
हाथ से वे नगर फिर ले लिए, जिन्हें उस ने
युद्ध करके उसके पिता यहोआहाज के हाथ से
छीन लिया था। योआश ने उसको तीन
बार जीतकर इस्राएल के नगर फिर ले
लिए ॥

(अमस्याह का राज्य)

१४ इस्राएल के राजा यहोआहाज
के पुत्र योआश के दूसरे वर्ष में
यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह
राजा हुआ। २ जब वह राज्य करने
लगा। तब वह पचीस वर्ष का था, और
यरूशलेम में उनतीस वर्ष राज्य करता
रहा। और उसकी माता का नाम यहोअद्दीन
था, जो यरूशलेम की थी। ३ उस
ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में
ठीक था तौभी अपने मूल पुरुष दाऊद
की नाईं न किया, उस ने ठीक अपने
पिता योआश के से काम किए। ४ उसके
दिनों में ऊंचे स्थान गिराए न गए, लोग
तब भी उन पर बलि चढ़ाते, और धूप
जलाते रहे। ५ जब राज्य उसके हाथ
में स्थिर हो गया, तब उस ने अपने उन
कर्मचारियों को मार डाला, जिन्हों ने
उसके पिता राजा को मार डाला था।
६ परन्तु उन खूनियों के लड़केबालों को
उस ने न मार डाला, क्योंकि यहोवा की
यह आज्ञा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक
में लिखी है, कि पुत्र के कारण पिता न
मार डाला जाए, और पिता के कारण
पुत्र न मार डाला जाए जिस ने पाप
किया हो, वही उस पाप के कारण मार
डाला जाए। ७ उसी अमस्याह ने लोन
की तराई में दस हजार एदोमी पुरुष
मार डाले, और सेला नगर से युद्ध करके
उसे ले लिया, और उसका नाम योक्तेल *
रखा, और वह नाम आज तक चलता
है ॥

८ तब अमस्याह ने इस्राएल के राजा
योआश के पास जो येहू का पोता और
यहोआहाज का पुत्र था दूतों से कहला
भेजा, कि आ हम एक दूसरे का साम्हना
करें। ९ इस्राएल के राजा योआश ने
यहूदा के राजा अमस्याह के पास यों
कहला भेजा, कि लबानोन पर की एक
झड़बेरी ने लबानोन के एक देवदारु के
पास कहला भेजा, कि अपनी बेटी मेरे
बेटे को ब्याह दे, इतने में लबानोन में
का एक वनपशु पास से चला गया और
उस झड़बेरी को रौंद डाला। १० तू ने
एदोमियों को जीता तो है इसलिये तू
फूल उठा है †। उसी पर बड़ाई मारता

* अर्थात् ईश्वर का दबाया।
† मूल में—तेरे मन ने तुझे उठाया है।

हुआ घर मे रह जा, तू अपनी हानि के
लिये यहा क्यो हाथ उठाता है, जिस से
तू क्या वरन यहूदा भी नीचा खाएगा ?
११ परन्तु अमस्याह ने न माना।
तब इस्राएल के राजा योआश ने चढाई
की, और उस ने और यहूदा के राजा
अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश मे
एक दूसरे का साम्हना किया। १२ और
यहूदा इस्राएल से हार गया, और एक
एक अपने अपने डेरे को भागा। १३ तब
इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के
राजा अमस्याह को जो अहज्याह का
पोता, और योआश का पुत्र था, बेतशेमेश
मे पकड लिया, और यरूशलेम को गया,
और यरूशलेम की शहरपनाह में से एप्रैमी
फाटक से कोनेवाले फाटक तक चार सौ
हाथ गिरा दिए। १४ और जितना सोना,
चान्दी और जितने पात्र यहोवा के भवन
मे और राजभवन के भण्डारो मे मिले,
उन सब को और बन्धक लोगो को भी
लेकर वह शोमरोन को लौट गया॥
१५ योआश के और काम जो उस
ने किए, और उसकी वीरता और उस
ने किस रीति यहूदा के राजा अमस्याह
मे युद्ध किया, यह सब क्या इस्राएल के
राजाओ के इतिहास की पुस्तक मे नही
लिखा है ? १६ निदान योआश अपने
पुरखाओ के सग सो गया और उसे
इस्राएल के राजाओ के बीच शोमरोन
मे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र यारोबाम
उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥
१७ यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के
राजा यहोआश के मरने के बाद योआश
का पुत्र यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह
वर्ष जीवित रहा। १८ अमस्याह के और
काम क्या यहूदा के राजाओ के इतिहास
की पुस्तक मे नही लिखे है ? १९ जब
यरूशलेम मे उसके विरुद्ध राजद्रोह की
गोष्ठी की गई, तब वह लाकीश को भाग
गया। सो उन्हो ने लाकीश तक उसका
पीछा करके उसको वहा मार डाला।
२० तब वह घोडो पर रखकर यरूशलेम
मे पहुचाया गया, और वहा उसके पुरखाओ
के बीच उसको दाऊदपुर मे मिट्टी दी गई।
२१ तब सारी यहूदी प्रजा ने अजर्याह
को लेकर, जो सोलह वर्ष का था, उसके
पिता अमस्याह के स्थान पर राजा नियुक्त
कर दिया। २२ जब राजा **अमस्याह**
अपने पुरखाओ के सग सो गया, उसके
बाद अजर्याह ने एलत को दृढ करके
यहूदा के वश मे फिर कर लिया॥

(दूसरे यारोबाम का राज्य)

२३ यहूदा के राजा योआश के पुत्र
अमस्याह के राज्य के पन्द्रहवे वर्ष मे
इस्राएल के राजा योआश का पुत्र यारोबाम
शोमरोन मे राज्य करने लगा, और
एकतालीस वर्ष राज्य करता रहा।
२४ उस ने वह किया, जो यहोवा की
दृष्टि मे बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र
यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया
था, उसके पापो के अनुसार वह करता
रहा, और उन से वह अलग न हुआ।
२५ उस ने इस्राएल का सिवाना हमात
की घाटी से ले अराबा के ताल तक
ज्यो का त्यो कर दिया, जैसा कि इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा ने अमित्तै के पुत्र
अपने दास गथेपेरवासी योना भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा था। २६ क्योकि यहोवा
ने इस्राएल का दुःख देखा कि बहुत ही
कठिन * है, वरन क्या बन्धुआ क्या स्वाधीन

* मूल में—कड़वा।

कोई भी बचा न रहा, और न इस्राएल
के लिये कोई सहायक था। २७ यहोवा
ने नहीं कहा था, कि मैं इस्राएल का नाम
धरती पर* से मिटा डालूंगा। सो उस
ने योआश के पुत्र यारोबाम के द्वारा उनको
छुटकारा दिया॥

२८ यारोबाम के और सब काम जो
उस ने किए, और कैसे पराक्रम के साथ
उस ने युद्ध किया, और दमिश्क और
हमात को जो पहले यहूदा के राज्य में
थे इस्राएल के वश में फिर मिला लिया,
यह सब क्या इस्राएल के राजाओं के
इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है?
२९ निदान यारोबाम अपने पुरखाओं के
संग जो इस्राएल के राजा थे सो गया,
और उसका पुत्र जकर्याह उसके स्थान
पर राज्य करने लगा॥

(अजर्याह का राज्य)

१५ इस्राएल के राजा यारोबाम
के सत्ताईसवें वर्ष में यहूदा के
राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह राजा
हुआ। २ जब वह राज्य करने लगा, तब
सोलह वर्ष का था, और यरूशलेम में
बावन वर्ष राज्य करता रहा। उसकी
माता का नाम यकोल्याह था, जो यरूशलेम
की थी। ३ जैसे उसका पिता अमस्याह
किया करता था जो यहोवा की दृष्टि
में ठीक था, वैसे ही वह भी करता था।
४ तौभी ऊंचे स्थान गिराए न गए,
प्रजा के लोग उस समय भी उन पर बलि
चढ़ाते, और धूप जलाते रहे। ५ और
यहोवा ने उस राजा को ऐसा मारा, कि वह
मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और अलग
एक घर में रहता था। और योताम
नाम राजपुत्र उसके घराने के काम पर
अधिकारी होकर देश के लोगों का न्याय
करता था। ६ अजर्याह के और सब
काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में
नहीं लिखे हैं? ७ निदान अजर्याह
अपने पुरखाओं के संग सो गया और
उसको दाऊदपुर में उसके पुरखाओं के
बीच मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र
योताम उसके स्थान पर राज्य करने
लगा॥

(जकर्याह का राज्य)

८ यहूदा के राजा अजर्याह के अड़तीसवें
वर्ष में यारोबाम का पुत्र जकर्याह इस्राएल
पर शोमरोन में राज्य करने लगा, और
छः महीने राज्य किया। ९ उस ने
अपने पुरखाओं की नाईं वह किया, जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा है, अर्थात् नबात
के पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से
पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार
वह करता रहा, और उन से वह अलग
न हुआ। १० और याबेश के पुत्र शल्लूम
ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी करके
उसको प्रजा के साम्हने मारा, और उसका
घात करके उसके स्थान पर राजा हुआ।
११ जकर्याह के और काम इस्राएल के
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे
हैं। १२ सो यहोवा का वह वचन पूरा
हुआ, जो उस ने येहू से कहा था, कि तेरे
परपोते के पुत्र तक तेरी सन्तान इस्राएल
की गद्दी पर बैठती जाएगी। और वैसा
ही हुआ॥

(शल्लूम का राज्य)

१३ यहूदा के राजा उज्जिय्याह के
उनतालीसवें वर्ष में याबेश का पुत्र शल्लूम

* मूल में—आकाश के तले।

राज्य करने लगा, और महीने भर शोमरोन
में राज्य करता रहा। १४ क्योंकि गादी
के पुत्र मनहेम ने, तिर्सा से शोमरोन
को जाकर याबेश के पुत्र शल्लूम को
वहीं मारा, और उसे घात करके उसके
स्थान पर राजा हुआ। १५ शल्लूम के
और काम और उस ने राजद्रोह की जो
गोष्ठी की, यह सब इस्राएल के राजाओं
के इतिहास की पुस्तक में लिखा है।
१६ तब मनहेम ने तिर्सा से जाकर, सब
निवासियों और आस पास के देश समेत
तिप्सह को इस कारण मार लिया, कि
तिप्सहियों ने उसके लिये फाटक न खोले
थे, इस कारण उस ने उन्हें मार लिया,
और उस में जितनी गर्भवती स्त्रियां थीं,
उन सभों को चीर डाला॥

(मनहेम का राज्य)

१७ यहूदा के राजा अजर्याह के
उनतालीसवें वर्ष में गादी का पुत्र मनहेम
इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दस
वर्ष शोमरोन में राज्य करता रहा।
१८ उस ने वह किया, जो यहोवा की
दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र
यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप कराया
था, उसके पापों के अनुसार वह करता
रहा, और उन में वह जीवन भर अलग
न हुआ। १९ अश्शूर के राजा पूल ने
देश पर चढ़ाई की, और मनहेम ने उसको
हजार किक्कार चान्दी इस इच्छा से
दी, कि वह उसका सहायक होकर राज्य
को उसके हाथ में स्थिर रखे। २० यह
चान्दी अश्शूर के राजा को देने के लिये
मनहेम ने बड़े बड़े धनवान इस्राएलियों
से ले ली, एक एक पुरुष से पचास पचास
शेकेल चान्दी ली गई तब अश्शूर का
राजा देश को छोड़कर लौट गया।
२१ मनहेम के और काम जो उस ने
किए, वे सब क्या इस्राएल के राजाओं
के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे
हैं? २२ निदान मनहेम अपने पुरखाओं
के संग सो गया और उसका पुत्र पकह्याह
उसके स्थान पर राज्य करने लगा॥

(पकह्याह और पेकह का राज्य)

२३ यहूदा के राजा अजर्याह के
पचासवें वर्ष में मनहेम का पुत्र पकह्याह
शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने
लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता
रहा। २४ उस ने वह किया जो यहोवा
की दृष्टि में बुरा था, अर्थात नबात के
पुत्र यारोबाम जिस ने इस्राएल से पाप
कराया था, उसके पापों के अनुसार वह
करता रहा, और उन से वह अलग न
हुआ। २५ उसके सरदार रमल्याह के
पुत्र पेकह ने उस से राजद्रोह की गोष्ठी
करके, शोमरोन के राजभवन के गुम्मट
में उसको और उसके संग अर्गोब और
अर्ये को मारा, और पेकह के संग पचास
गिलादी पुरुष थे, और वह उसका घात
करके उसके स्थान पर राजा बन गया।
२६ पकह्याह के और सब काम जो उस
ने किए, वह इस्राएल के राजाओं के
इतिहास की पुस्तक में लिखे हैं॥

(पेकह का राज्य)

२७ यहूदा के राजा अजर्याह के
बावनवें वर्ष में रमल्याह का पुत्र पेकह
शोमरोन में इस्राएल पर राज्य करने
लगा, और बीस वर्ष तक राज्य करता
रहा। २८ उस ने वह किया, जो यहोवा
की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के
पुत्र यारोबाम, जिस ने इस्राएल से पाप

कराया था, उसके पापों के अनुसार वह
करता रहा, और उन में वह अलग न
हुआ ॥
२९ इस्राएल के राजा पेकह के दिनों
में अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर ने आकर
इय्योन, अबेल्बेतमाका, यानोह, केदेश और
हासोर नाम नगरों को और गिलाद और
गालील, वरन नप्ताली के पूरे देश को
भी ले लिया, और उनके लोगों को बन्धुआ
करके अश्शूर को ले गया। ३० उजिय्याह
के पुत्र योताम के बीसवें वर्ष में एला के
पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह से
राजद्रोह की गोष्ठी करके उसे मारा,
और उसे घात करके उसके स्थान पर
राजा बन गया। ३१ पेकह के और
सब काम जो उस ने किए वह इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में
लिखे हैं ॥

(योताम का राज्य)

३२ रमल्याह के पुत्र इस्राएल के
राजा पेकह के दूसरे वर्ष में यहूदा के
राजा उजिय्याह का पुत्र योताम राजा
हुआ। ३३ जब वह राज्य करने लगा,
तब पचीस वर्ष का था, और यरूशलेम
में सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा।
और उसकी माता का नाम यरूशा था
जो सादोक की बेटी थी। ३४ उस ने
वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक
था, अर्थात् जैसा उसके पिता उजिय्याह
ने किया था, ठीक वैसा ही उस ने भी
किया। ३५ तौभी ऊंचे स्थान गिराए न
गए, प्रजा के लोग उन पर उस समय
भी बलि चढ़ाते और धूप जलाते रहे।
यहोवा के भवन के ऊंचे फाटक को इसी
ने बनाया था। ३६ योताम के और
सब काम जो उस ने किए, वे क्या यहूदा
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में
नहीं लिखे हैं? ३७ उन दिनों में यहोवा
अराम के राजा रसीन को, और रमल्याह
के पुत्र पेकह को, यहूदा के विरुद्ध भेजने
लगा। ३८ निदान योताम अपने पुरखाओं
के संग सो गया और अपने मूलपुरुष
दाऊद के नगर में अपने पुरखाओं के
बीच उसको मिट्टी दी गई, और उसका
पुत्र आहाज उसके स्थान पर राज्य करने
लगा ॥

(आहाज का राज्य)

१६ रमल्याह के पुत्र पेकह के
सत्रहवें वर्ष में यहूदा के राजा
योताम का पुत्र आहाज राज्य करने
लगा। २ जब आहाज राज्य करने लगा,
तब वह बीस वर्ष का था, और सोलह वर्ष
तक यरूशलेम में राज्य करता रहा। और
उस ने अपने मूलपुरुष दाऊद का सा काम
नहीं किया, जो उसके परमेश्वर यहोवा
की दृष्टि में ठीक था। ३ परन्तु वह
इस्राएल के राजाओं की सी चाल चला,
वरन उन जातियों के घिनौने कामों के
अनुसार, जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों
के साम्हने से देश से निकाल दिया था,
उस ने अपने बेटे को भी आग में होम
कर दिया। ४ और ऊंचे स्थानों पर,
और पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के
तले, वह बलि चढ़ाया और धूप जलाया
करता था ॥
५ तब अराम के राजा रसीन, और
रमल्याह के पुत्र इस्राएल के राजा
पेकह ने लड़ने के लिये यरूशलेम पर
चढ़ाई की, और उन्हों ने आहाज को
घेर लिया, परन्तु युद्ध करके उन से न

कुछ वन न पडा। ६ उस समय अराम
के राजा रसीन ने, एलत को अराम के
वश मे करके, यहूदियो को वहा मे निकाल
दिया, तव अरामी लोग एलत को गए,
और आज के दिन तक वहां रहते है।
७ और आहाज ने दूत भेजकर अश्शूर
के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास कहला
भेजा कि मुझे अपना दास, वरन बेटा
जानकर चढाई कर, और मुझे अराम के
राजा और इस्राएल के राजा के हाथ
से वचा जो मेरे विरुद्ध उठे है। ८ और
आहाज ने यहोवा के भवन मे और राज-
भवन के भण्डारो मे जितना सोना-
चान्दी मिला उसे अश्शूर के राजा के
पास भेट करके भेज दिया। ९ उसकी
मानकर अश्शूर के राजा ने दमिश्क पर
चढाई की, और उसे लेकर उसके लोगो
को वन्धुआ करके, कीर को ले गया, और
रसीन को मार डाला॥

१० तव राजा आहाज अश्शूर के राजा
तिग्लत्पिलेसेर मे भेंट करने के लिये
दमिश्क को गया, और वहा की वेदी देखकर
उसकी सब बनावट के अनुसार उसका
नकशा ऊरिय्याह याजक के पास नमूना
करके भेज दिया। ११ और ठीक इसी
नमूने के अनुसार जिसे राजा आहाज ने
दमिश्क से भेजा था, ऊरिय्याह याजक
ने राजा आहाज के दमिश्क से आने तक
एक वेदी वना दी। १२ जब राजा
दमिश्क मे आया तव उस ने उस वेदी
को देखा, और उसके निकट जाकर उस
पर बलि चढाए। १३ उसी वेदी पर
उस ने अपना होमबलि और अन्नबलि
जलाया, और अर्घ दिया और मेलबलियो
का लोहू छिडक दिया। १४ और पीतल
की जो वेदी यहोवा के साम्हने रहती
थी उसको उस ने भवन के साम्हने मे
अर्थात् अपनी वेदी और यहोवा के भवन
के बीच मे हटाकर, उस वेदी की उत्तर
ओर रख दिया। १५ तव राजा आहाज
ने ऊरिय्याह याजक को यह आज्ञा दी,
कि भोर के होमबलि और साझ के
अन्नबलि, राजा के होमबलि और उसके
अन्नबलि, और सब साधारण लोगो के
होमबलि और अर्घ वडी वेदी पर चढाया
कर, और होमबलियो और मेलबलियो
का सब लोहू उस पर छिडक, और
पीतल की वेदी के विषय में विचार
करूंगा। १६ राजा आहाज की इस आज्ञा
के अनुसार ऊरिय्याह याजक ने किया।
१७ फिर राजा आहाज ने कुर्सियो की
पटरियो को काट डाला, और हौदियो
को उन पर से उतार दिया, और बडे
हौद को उन पीतल के वैलो पर से जो
उसके तले थे उतारकर, पत्थरो के फर्श
पर धर दिया। १८ और विश्राम के
दिन के लिये जो छाया हुआ स्थान भवन
मे वना था, और राजा के वाहर के
प्रवेश करने का फाटक, उनको उस ने
अश्शूर के राजा के कारण यहोवा के
भवन से अलग * कर दिया। १९ आहाज
के और काम जो उस ने किए, वे क्या
यहूदा के राजाओ के इतिहास की पुस्तक
मे नही लिखे है? २० निदान आहाज
अपने पुरखाओ के सग सो गया और
उसे उसके पुरखाओ के बीच दाऊदपुर
मे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र
हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने
लगा॥

* मूल में—घुमा दिया।

(होशे का राज्य और इस्राएली राज्य
का टूट जाना)

१७ यहूदा के राजा आहाज के
बारहवें वर्ष में एला का पुत्र
होशे शोमरोन में, इस्राएल पर राज्य
करने लगा, और नौ वर्ष तक राज्य
करता रहा। २ उस ने वही किया जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा था, परन्तु
इस्राएल के उन राजाओं के बराबर
नहीं जो उस से पहिले थे। ३ उस पर
अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने चढ़ाई की,
और होशे उसके अधीन होकर, उसको
भेंट देने लगा। ४ परन्तु अश्शूर के राजा
ने होशे को राजद्रोह की गोष्ठी करनेवाला
जान लिया, क्योंकि उस ने "सो" नाम
मिस्र के राजा के पास दूत भेजे, और
अश्शूर के राजा के पास सालियाना भेंट
भेजनी छोड़ दी, इस कारण अश्शूर
के राजा ने उसको बन्द किया, और
बेड़ी डालकर बन्दीगृह में डाल दिया।
५ तब अश्शूर के राजा ने पूरे देश पर
चढ़ाई की, और शोमरोन को जाकर
तीन वर्ष तक उसे घेरे रहा। ६ होशे
के नौवें वर्ष में अश्शूर के राजा ने शोमरोन
को ले लिया, और इस्राएल को अश्शूर
में ले जाकर, हलह में और गोजान की
नदी हाबोर के पास और मादियों के
नगरों में बसाया॥

७ इसका यह कारण है, कि यद्यपि
इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उनको
मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर
मिस्र देश से निकाल लाया था तौभी
उन्हों ने उसके विरुद्ध पाप किया, और
पराये देवताओं का भय माना। ८ और
जिन जातियों को यहोवा ने इस्राएलियों
के साम्हने से देश से निकाला था, उनकी
रीति पर, और अपने राजाओं की चलाई
हुई रीतियों पर चलते थे। ९ और
इस्राएलियों ने कपट करके अपने परमेश्वर
यहोवा के विरुद्ध अनुचित काम किए,
अर्थात् पहरुओं के गुम्मट से लेकर गढ़वाले
नगर तक अपनी सारी बस्तियों में ऊंचे
स्थान बना लिए, १० और सब ऊंची
पहाड़ियों पर, और सब हरे वृक्षों के तले
लाठें और अशेरा खड़े कर लिए। ११ और
ऐसे ऊंचे स्थानों में उन जातियों की
नाईं जिनको यहोवा ने उनके साम्हने से
निकाल दिया था, धूप जलाया, और
यहोवा को क्रोध दिलाने के योग्य बुरे
काम किए। १२ और मूरतों की उपासना
की, जिसके विषय यहोवा ने उन से
कहा था कि तुम यह काम न करना।
१३ तौभी यहोवा ने सब भविष्यद्वक्ताओं
और सब दर्शियों के द्वारा इस्राएल और
यहूदा को यह कह कर चिताया था, कि
अपनी बुरी चाल छोड़कर उस सारी
व्यवस्था के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे
पुरखाओं को दी थी, और अपने दास
भविष्यद्वक्ताओं के हाथ तुम्हारे पास
पहुंचाई है, मेरी आज्ञाओं और विधियों
को माना करो। १४ परन्तु उन्हों ने
न माना, वरन अपने उन पुरखाओं की
नाईं, जिन्हों ने अपने परमेश्वर यहोवा
का विश्वास न किया था, वे भी हठीले *
बन गए। १५ और वे उसकी विधियां,
और अपने पुरखाओं के साथ उसकी
वाचा, और जो चितौनियां उस ने उन्हें
दी थीं, उनको तुच्छ जानकर, निकम्मी
बातों के पीछे हो लिए, जिस से वे आप
निकम्मे हो गए, और अपने चारों ओर

* मूल में—कड़ा गर्दनवाले।

की उन जातियो के पीछे भी हो लिए,
जिनके विषय यहोवा ने उन्हे आज्ञा दी
थी कि उनके से काम न करना। १६ वरन
उन्हो ने अपने परमेश्वर यहोवा की सब
आज्ञाओ को त्याग दिया, और दो बछडो
की मूरते ढालकर बनाई, और अशेरा
भी बनाई, और आकाश के सारे गणो
को दण्डवत की, और बाल की उपासना
की। १७ और अपने बेटे-बेटियो को आग
मे होम करके चढाया, और भावी कहने-
वालो से पूछने, और टोना करने लगे;
और जो यहोवा की दृष्टि मे बुरा था
जिस से वह क्रोधित भी होता है, उसके
करने को अपनी इच्छा से बिक गए*।
१८ इस कारण यहोवा इस्राएल से अति
क्रोधित हुआ, और उन्हे अपने साम्हने
से दूर कर दिया, यहूदा का गोत्र छोड
और कोई बचा न रहा ॥
१९ यहूदा ने भी अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञाए न मानी, वरन जो
विधिया इस्राएल ने चलाई थी, उन पर
चलने लगे। २० तब यहोवा ने इस्राएल
की सारी सन्तान को छोड कर, उनको
दु:ख दिया, और लूटनेवालो के हाथ कर
दिया, और अन्त मे उन्हे अपने साम्हने
से निकाल दिया ॥
२१ उस ने इस्राएल को तो दाऊद
के घराने के हाथ से छीन लिया, और
उन्हो ने नबात के पुत्र यारोबाम को
अपना राजा बनाया, और यारोबाम ने
इस्राएल को यहोवा के पीछे चलने से
दूर खींचकर उन से बडा पाप कराया।
२२ सो जैसे पाप यारोबाम ने किए थे,
वैसे ही पाप इस्राएली भी करते रहे,

* मूल में—उन्हों ने अपने को बेच डाला।

और उन से अलग न हुए। २३ अन्त
मे यहोवा ने इस्राएल को अपने साम्हने
से दूर कर दिया, जैसे कि उस ने
अपने सब दास भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा
कहा था। इस प्रकार इस्राएल अपने
देश से निकालकर अश्शूर को पहुचाया
गया, जहा वह आज के दिन तक रहता
है ॥

(इस्राएल के देश में अन्य जातिवालों का बसाया जाना)

२४ और अश्शूर के राजा ने बाबेल,
कूता, अव्वा, हमात और सपर्वैम नगरो
से लोगो को लाकर, इस्राएलियो के स्थान
पर शोमरोन के नगरो मे बसाया, सो
वे शोमरोन के अधिकारी होकर उसके
नगरो मे रहने लगे। २५ जब वे वहा
पहिले पहिल रहने लगे, तब यहोवा का
भय न मानते थे, इस कारण यहोवा ने
उनके बीच सिह भेजे, जो उनको मार
डालने लगे। २६ इस कारण उन्हो ने
अश्शूर के राजा के पास कहला भेजा
कि जो जातिया तू ने उनके देशो से
निकालकर शोमरोन के नगरो मे बसा
दी है, वे उस देश के देवता की रीति
नही जानती, इस से उस ने उनके मध्य
सिह भेजे है जो उनको इसलिये मार
डालते है कि वे उस देश के देवता की
रीति नही जानते। २७ तब अश्शूर के
राजा ने आज्ञा दी, कि जिन याजको को
तुम उस देश से ले आए, उन मे से एक
को वहा पहुचा दो, और वह वहा जाकर
रहे, और वह उनको उस देश के देवता
की रीति सिखाए। २८ तब जो याजक
शोमरोन से निकाले गए थे, उन मे से
एक जाकर बेतेल मे रहने लगा, और

उनको सिखाने लगा कि यहोवा का भय
किस रीति से मानना चाहिये ॥
२९ तौभी एक एक जाति के लोगों
ने अपने अपने निज देवता बनाकर,
अपने अपने बसाए हुए नगर में उन
ऊंचे स्थानों के भवनों में रखा जो शोम-
रोनियों ने बनाए थे। ३० बाबेल के
मनुष्यों ने तो सुक्कोतबनोत को, कूत
के मनुष्यों ने नेर्गल को, हमात के मनुष्यों ने
अशीमा को, ३१ और अव्वियों ने निभज,
और तर्त्ताक को स्थापित किया, और
सपवीं लोग अपने बेटों को अद्रम्मेलेक
और अनम्मेलेक नाम सपर्वैम के देवताओं
के लिये होम करके चढ़ाने लगे। ३२ यों
वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु
सब प्रकार के लोगों में से ऊंचे स्थानों
के याजक भी ठहरा देते थे, जो ऊंचे
स्थानों के भवनों में उनके लिये बलि
करते थे। ३३ वे यहोवा का भय
मानते तो थे, परन्तु उन जातियों की
रीति पर, जिनके बीच से वे निकाले
गए थे, अपने अपने देवताओं की भी
उपासना करते रहे। ३४ आज के दिन
तक वे अपनी पहिली रीतियों पर चलते
हैं, वे यहोवा का भय नहीं मानते ॥
३५ न तो अपनी विधियों और नियमों
पर और न उस व्यवस्था और आज्ञा
के अनुसार चलते हैं, जो यहोवा ने याकूब
की सन्तान को दी थी, जिसका नाम उस
ने इस्राएल रखा था। उन से यहोवा
ने वाचा बान्धकर उन्हें यह आज्ञा दी
थी, कि तुम पराये देवताओं का भय
न मानना और न उन्हें दण्डवत करना
और न उनकी उपासना करना और न
उनको बलि चढ़ाना। ३६ परन्तु यहोवा
जो तुम को बड़े बल और बढ़ाई हुई भुजा
के द्वारा मिस्र देश से निकाल ले आया,
तुम उसी का भय मानना, उसी को दण्डवत
करना और उसी को बलि चढ़ाना।
३७ और उस ने जो जो विधियां और
नियम और जो व्यवस्था और आज्ञाएं
तुम्हारे लिये लिखीं, उन्हें तुम सदा चौकसी
से मानते रहो, और पराये देवताओं
का भय न मानना। ३८ और जो वाचा
मैं ने तुम्हारे साथ बान्धी है, उसे न
भूलना और पराये देवताओं का भय न
मानना। ३९ केवल अपने परमेश्वर
यहोवा का भय मानना, वही तुम को
तुम्हारे सब शत्रुओं के हाथ से बचाएगा।
४० तौभी उन्हों ने न माना, परन्तु वे
अपनी पहिली रीति के अनुसार करते रहे ॥
४१ अतएव वे जातियां यहोवा का
भय मानती तो थीं, परन्तु अपनी खुदी
हुई मूरतों की उपासना भी करती रहीं,
और जैसे वे * करते थे वैसे ही उनके बेटे
पोते भी आज के दिन तक करते हैं ॥

(हिजकिय्याह के राज्य का आरम्भ)

१८ एला के पुत्र इस्राएल के
राजा होशे के तीसरे वर्ष में
यहूदा के राजा आहाज का पुत्र हिजकिय्याह
राजा हुआ। २ जब वह राज्य करने
लगा तब पचीस वर्ष का था, और उनतीस
वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।
और उसकी माता का नाम अबी था,
जो जकर्याह की बेटी थी। ३ जैसे उसके
मूलपुरुष दाऊद ने किया था जो यहोवा
की दृष्टि में ठीक है वैसा ही उस ने भी
किया। ४ उस ने ऊंचे स्थान गिरा दिए,
लाठों को तोड़ दिया, अशेरा को काट
डाला। और पीतल का जो सांप मूसा

* मूल में—उनके पुरखा।

ने बनाया था, उसको उस ने इस कारण
चूर चूर कर दिया, कि उन दिनो तक
इस्राएली उसके लिये धूप जलाते थे,
और उस ने उसका नाम नहुशतान*
रखा। ५ वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
पर भरोसा रखता था, और उसके बाद
यहूदा के सब राजाओ मे कोई उसके
बराबर न हुआ, और न उस से पहिले
भी ऐसा कोई हुआ था। ६ और वह
यहोवा से लिपटा रहा और उसके पीछे
चलना न छोडा, और जो आज्ञाए यहोवा
ने मूसा को दी थी, उनका वह पालन
करता रहा। ७ इसलिये यहोवा उसके
सग रहा, और जहा कही वह जाता था,
वहा उसका काम सफल होता था। और
उस ने अश्शूर के राजा से बलवा करके,
उसकी अधीनता छोड दी। ८ उस ने
पलिश्तियो को गाज्जा और उसके सिवानो
तक, पहरुओ के गुम्मट और गढवाले
नगर तक मारा॥

९ राजा हिजकिय्याह के चौथे वर्ष
मे जो एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे
का सातवा वर्ष था, अश्शूर के राजा
शल्मनेसेर ने शोमरोन पर चढाई करके
उसे घेर लिया। १० और तीन वर्ष के
बीतने पर उन्हो ने उसको ले लिया।
इस प्रकार हिजकिय्याह के छठवे वर्ष मे
जो इस्राएल के राजा होशे का नौवा
वर्ष था, शोमरोन ले लिया गया। ११ तब
अश्शूर का राजा इस्राएल को बन्धुआ
करके अश्शूर मे ले गया, और हलह मे
और गोजान की नदी हाबोर के पास और
मादियो के नगरो मे उसे बसा दिया।
१२ इसका कारण यह था, कि उन्हो
ने अपने परमेश्वर यहोवा की बात न
मानी, वरन उसकी वाचा को तोडा, और
जितनी आज्ञाए यहोवा के दास मूसा ने
दी थी, उनको टाल दिया और न उनको
सुना और न उनके अनुसार किया॥

(सन्हेरीब की चढाई और उसकी सेना का विनाश)

१३ हिजकिय्याह राजा के चौदहवे
वर्ष मे अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा
के सब गढवाले नगरो पर चढाई करके
उनको ले लिया। १४ तब यहूदा के
राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा
के पास लाकीश को कहला भेजा, कि
मुझ से अपराध हुआ, मेरे पास से लौट
जा, और जो भार तू मुझ पर डालेगा
उसको मै उठाऊगा। तो अश्शूर के राजा
ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये
तीन सौ किक्कार चान्दी और तीस
किक्कार सोना ठहरा दिया। १५ तब
जितनी चान्दी यहोवा के भवन और
राजभवन के भण्डारो मे मिली, उस सब
को हिजकिय्याह ने उसे दे दिया। १६ उस
समय हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर
के किवाडो से और उन खम्भो से भी
जिन पर यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने
सोना मढा था, सोने को छीलकर अश्शूर
के राजा को दे दिया। १७ तौभी अश्शूर
के राजा ने तर्त्तान, रबसारीस और रबशाके
को बडी सेना देकर, लाकीश से यरूशलेम
के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज
दिया। सो वे यरूशलेम को गए और
वहा पहुचकर ऊपर के पोखरे की नाली
के पास धोबियो के खेत की सडक पर
जाकर खडे हुए। १८ और जब उन्हो ने
राजा को पुकारा, तब हिलकिय्याह का

* अर्थात् पीतल का टुकड़ा।

पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर
था, और शेब्ना जो मन्त्री था और आसाप
का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखनेवाला
था, ये तीनो उनके पास बाहर निकल
गए ॥

१६ रबशाके ने उन से कहा,
हिजकिय्याह से कहो, कि महाराजाधिराज
अर्थात् अश्शूर का राजा यो कहता है,
कि तू किस पर भरोसा करता है ? २० तू
जो कहता है, कि मेरे यहा युद्ध के लिये
युक्ति और पराक्रम है *, सो तो केवल
बात ही बात है। तू किस पर भरोसा
रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया
है ? २१ सुन, तू तो उस कुचले हुए
नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता
है, उस पर यदि कोई टेक लगाए, तो वह
उसके हाथ में चुभकर छेदेगा। मिस्र का
राजा फिरौन अपने सब भरोसा रखनेवालो
के लिये ऐसा ही है। २२ फिर यदि
तुम मुझ से कहो, कि हमारा भरोसा
अपने परमेश्वर यहोवा पर है, तो क्या
यह वही नही है जिसके ऊचे स्थानो और
वेदियो को हिजकिय्याह ने दूर करके
यहूदा और यरूशलेम से कहा, कि तुम
इसी वेदी के साम्हने जो यरूशलेम में
है दण्डवत करना ? २३ तो अब मेरे
स्वामी अश्शूर के राजा के पास कुछ
बन्धक रख, तब मैं तुझे दो हजार घोडे
दूगा, क्या तू उन पर सवार चढा सकेगा
कि नही ? २४ फिर तू मेरे स्वामी के
छोटे से छोटे कमचारी का भी कहा
न मान कर क्यो रथो और सवारो
के लिये मिस्र पर भरोसा रखता है ?

* मूल में—कर्मचारियों में से एक गवर्नर का भी मुह फेर के।

२५ क्या मैं ने यहोवा के बिना कहे,
इस स्थान को उजाडने के लिये चढाई
की है ? यहोवा ने मुझ से कहा है, कि
उस देश पर चढाई करके उसे उजाड
दे ॥

२६ तब हिलकिय्याह के पुत्र एल्याकीम
और शेब्ना योआह ने रबशाके से कहा,
अपने दासो से अरामी भाषा में बातें
कर, क्योकि हम उसे समझते है, और
हम से यहूदी भाषा में शहरपनाह पर
बैठे हुए लोगो के सुनते बातें न कर।
२७ रबशाके ने उन से कहा, क्या मेरे
स्वामी ने मुझे तुम्हारे स्वामी ही के, वा
तुम्हारे ही पास ये बातें कहने को भेजा
है ? क्या उस ने मुझे उन लोगो के पास
नही भेजा, जो शहरपनाह पर बैठे है,
ताकि तुम्हारे सग उनको भी अपनी विष्ठा
खाना और अपना मूत्र पीना पडे ?

२८ तब रबशाके ने खडे हो, यहूदी
भाषा में ऊचे शब्द से कहा, महाराजा-
धिराज अर्थात् अश्शूर के राजा की बात
सुनो। २६ राजा यो कहता है, कि
हिजकिय्याह तुम को भुलाने न पाए,
क्योकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा।
३० और वह तुम से यह कहकर यहोवा
पर भरोसा कराने न पाए, कि यहोवा
निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर
अश्शूर के राजा के वश में न पडेगा।
३१ हिजकिय्याह की मत सुनो। अश्शूर
का राजा कहता है कि भेंट भेजकर मुझे
प्रसन्न करो * और मेरे पास निकल आओ,
और प्रत्येक अपनी अपनी दाखलता और
अंजीर के वृक्ष के फल खाता और अपने
अपने कुण्ड का पानी पीता रहे। ३२ तब

* मूल में—मेरे साथ आशीर्वाद करो।

मे आकर तुम को ऐसे देश मे ले जाऊगा,
जो तुम्हारे देश के समान अनाज और
नये दाखमधु का देश, रोटी और दाख-
बारियो का देश, जलपाइयो और मधु
का देश है, वहा तुम मरोगे नही, जीवित
रहोगे, तो जब हिजकिय्याह यह कहकर
तुम को बहकाए, कि यहोवा हम को
बचाएगा, तब उसकी न सुनना। ३३ क्या
और जातियो के देवताओ ने अपने अपने
देश को अश्शूर के राजा के हाथ से कभी
बचाया है? ३४ हमात और अर्पाद के
देवता कहा रहे? सपर्वैम, हेना और
इव्वा के देवता कहा रहे? क्या उन्हो
ने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया है?
३५ देश देश के सब देवताओ मे से ऐसा
कौन है, जिस ने अपने देश को मेरे हाथ
से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यरूशलेम
को मेरे हाथ से बचाएगा॥

३६ परन्तु सब लोग चुप रहे और
उसके उत्तर मे एक बात भी न कही,
क्योकि राजा की ऐसी आज्ञा थी, कि उसको
उत्तर न देना। ३७ तब हिलकिय्याह का
पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम
पर था, और शेब्ना जो मन्त्री था, और
आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का
लिखनेवाला था, अपने वस्त्र फाडे हुए,
हिजकिय्याह के पास जाकर रवशाके की
बाते कह सुनाई॥

१९ जब हिजकिय्याह राजा ने
यह सुना, तब वह अपने वस्त्र
फाड, टाट ओढकर यहोवा के भवन मे
गया। २ और उस ने एल्याकीम को
जो राजघराने के काम पर था, और
शेब्ना मन्त्री को, और याजको के पुरनियो
को, जो सब टाट ओढे हुए थे, आमोस
के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता के पास
भेज दिया। ३ उन्हो ने उस से कहा,
हिजकिय्याह यो कहता है, आज का
दिन संकट, और उलहने, और निन्दा
का दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर
जच्चा को जन्म देने का बल न रहा।
४ कदाचित तेरा परमेश्वर यहोवा रवशाके
की सब बाते सुने, जिसे उसके स्वामी
अश्शूर के राजा ने जीवते परमेश्वर की
निन्दा करने को भेजा है, और जो बाते
तेरे परमेश्वर यहोवा ने सुनी है उन्हे
डपटे, इसलिये तू इन बचे हुओ के लिये
जो रह गए है प्रार्थना कर*। ५ जब
हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी यशायाह
के पास आए, ६ तब यशायाह ने उन
से कहा, अपने स्वामी से कहो, यहोवा
यो कहता है, कि जो वचन तू ने सुने
है, जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के जनो
ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत
डर। ७ सुन, मै उसके मन मे प्रेरणा
करूगा, कि वह कुछ समाचार सुनकर
अपने देश को लौट जाए, और मै उसको
उसी के देश मे तलवार से मरवा डालूगा॥

८ तब रवशाके ने लौटकर अश्शूर
के राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते
पाया, क्योकि उस ने सुना था कि वह
लाकीश के पास से उठ गया है। ९ और
जब उस ने कूश के राजा तिर्हाका के विषय
यह सुना, कि वह मुझ से लडने को निकला
है, तब उस ने हिजकिय्याह के पास दूतो
को यह कह कर भेजा, १० तुम यहूदा
के राजा हिजकिय्याह से यो कहना तेरा
परमेश्वर जिसका तू भरोसा करता है,
यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए,

* मूल में—प्रार्थना उठा।

कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश मे
न पडेगा। ११ देख, तू ने तो सुना है
अश्शूर के राजाओ ने सब देशो से
कैसा व्यवहार किया है उन्हें सत्यानाश
कर दिया है। फिर क्या तू बचेगा?
१२ गोजान और हारान और रेसेप और
तलस्सार में रहनेवाले एदेनी, जिन जातियो
को मेरे पुरखाओ ने नाश किया, क्या
उन में से किसी जाति के देवताओ ने
उसको बचा लिया? १३ हमात का
राजा, और अर्पाद का राजा, और सपर्वैम
नगर का राजा, और हेना और इव्वा के
राजा ये सब कहा रहे? इस पत्री को
हिजकिय्याह ने दूतो के हाथ से लेकर पढा।
१४ तब यहोवा के भवन में जाकर उसको
यहोवा के साम्हने फैला दिया। १५ और
यहोवा से यह प्रार्थना की, कि हे इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा! हे करूबो पर
विराजनेवाले! पृथ्वी के सब राज्यो के
ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है। आकाश
और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है। १६ हे
यहोवा! कान लगाकर सुन, हे यहोवा
आख खोलकर देख, और सन्हेरीब
के वचनो को सुन ले, जो उस ने जीवते
परमेश्वर की निन्दा करने को कहला
भेजे है। १७ हे यहोवा, सच तो है,
कि अश्शूर के राजाओ ने जातियो को
और उनके देशो को उजाडा है। १८ और
उनके देवताओ को आग में झोका है,
क्योकि वे ईश्वर न थे, वे मनुष्यो के
बनाए हुए काठ और पत्थर ही के थे,
इस कारण वे उनको नाश कर सके।
१६ इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर
यहोवा तू हमे उसके हाथ से बचा, कि
पृथ्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें
कि केवल तू ही यहोवा है॥

२० तब आमोस के पुत्र यशायाह ने
हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा,
कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, कि जो प्रार्थना तू ने अश्शूर
के राजा सन्हेरीब के विषय मुझ से की,
उसे मै ने सुना है। २१ उसके विषय
में यहोवा ने यह वचन कहा है, कि सिय्योन
की कुमारी कन्या तुझे तुच्छ जानती और
तुझे ठट्ठो में उडाती है, यरूशलेम की
पुत्री, तुझ पर सिर हिलाती है। २२ तू
ने जो नामधराई और निन्दा की है, वह
किसकी की है? और तू ने जो बडा
बोल बोला और घमण्ड किया* है वह
किसके विरुद्ध किया है? इस्राएल के
पवित्र के विरुद्ध तू ने किया है! २३ अपने
दूतो के द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके
कहा है, कि बहुत से रथ लेकर मै पर्वतो
की चोटियो पर, वरन लबानोन के बीच
तक चढ आया हू, और मै उसके ऊचे
ऊचे देवदारुओ और अच्छे अच्छे सनोवरो
को काट डालूगा, और उस मे जो सब
से ऊचा टिकने का स्थान होगा उस मे
और उसके वन की फलदाई बारियो में
प्रवेश करूगा। २४ मै ने तो खुदवाकर
परदेश का पानी पिया, और मिस्र की
नहरो मे पाव धरते ही उन्हें सुखा डालूगा।
२५ क्या तू ने नही सुना, कि प्राचीनकाल
से मै ने यही ठहराया? और अगले
दिनो से इसकी तैयारी की थी, उन्हें
अब मै ने पूरा भी किया है, कि तू गढवाले
नगरो को खण्डहर ही खण्डहर कर
दे, २६ इसी कारण उनके रहनेवालो
का बल घट गया, वे विस्मित और लज्जित
हुए, वे मैदान के छोटे छोटे पेडो और

* मूल में—अपनी आखे ऊपर की ओर
उठाई।

हरी घास और छत पर की घास, और
ऐसे अनाज के समान हो गए, जो बढ़ने
से पहिले सूख जाता है। २७ मैं तो
तेरा बैठा रहना, और कूच करना, और
लौट आना जानता हू, और यह भी कि
तू मुझ पर अपना क्रोध भडकाता है।
२८ इस कारण कि तू मुझ पर अपना
क्रोध भडकाता और तेरे अभिमान की
बाते मेरे कानो मे पडी है, मै तेरी नाक
मे अपनी नकेल डालकर और तेरे मुह
मे अपना लगाम लगाकर, जिस मार्ग
से तू आया है, उसी से तुझे लौटा दूगा ।।
२९ और तेरे लिये यह चिन्ह होगा,
कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो
आप से आप उगे, और दूसरे वर्ष उसे जो
उत्पन्न हो वह खाओगे, और तीसरे वर्ष
बीज बोने और उसे लवने पाओगे, और
दाख की बारिया लगाने और उनका
फल खाने पाओगे। ३० और यहूदा के
घराने के बचे हुए लोग फिर जड पकडेगे, *
और फलेगे भी। ३१ क्योकि यरूशलेम
मे से बचे हुए और सिय्योन पर्वत के
भागे हुए लोग निकलेगे। यहोवा यह
काम अपनी जलन के कारण करेगा ।।
३२ इसलिये यहोवा अश्शूर के राजा
के विषय मे यो कहता है कि वह इस
नगर मे प्रवेश करने, वरन इस पर एक
तीर भी मारने न पाएगा, और न वह
ढाल लेकर इसके साम्हने आने, वा इसके
विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा। ३३ जिस
मार्ग से वह आया, उसी से वह लौट भी
जाएगा, और इस नगर मे प्रवेश न करने
पाएगा, यहोवा की यही वाणी है।
३४ और मै अपने निमित्त और अपने
दास दाऊद के निमित्त इस नगर की
रक्षा करके इसे बचाऊगा ।।
३५ उसी रात मे क्या हुआ, कि
यहोवा के दूत ने निकलकर अश्शूरियो
की छावनी मे एक लाख पचासी हजार
पुरुषो को मारा, और भोर को जब
लोग सबेरे उठे, तब देखा, कि लोथ ही
लोथ पडी है। ३६ तब अश्शूर का राजा
सन्हेरीब चल दिया, और लौटकर नीनवे
मे रहने लगा। ३७ वहा वह अपने
देवता निस्रोक के मन्दिर मे दण्डवत
कर रहा था, कि अद्रम्मेलेक और सरेसेर
ने उसको तलवार से मारा, और अरारात
देश मे भाग गए। और उसी का पुत्र
एसर्हद्दोन उसके स्थान पर राज्य करने
लगा ।।

(हिजकिय्याह का मृत्यु से बचना)

२० उन दिनो मे हिजकिय्याह ऐसा
रोगी हुआ कि मरने पर था,
और आमोस के पुत्र यशायाह भविष्य-
द्वक्ता ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा
यो कहता है, कि अपने घराने के विषय
जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योकि तू
नही बचेगा, मर जाएगा। २ तब उस ने
भीत की ओर मुह फेर, यहोवा से प्रार्थना
करके कहा, हे यहोवा! ३ मै विन्ती
करता हू, स्मरण कर, कि मै सच्चाई
और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख
जानकर * चलता आया हू, और जो तुझे
अच्छा लगता है वही मै करता आया हू।
तब हिजकिय्याह बिलक बिलक कर रोया।
४ और ऐसा हुआ कि यशायाह नगर के
बीच तक जाने भी न पाया था कि यहोवा
का यह वचन उसके पास पहुचा, ५ कि

* मूल में—नीचे की ओर जड।

* मूल में—मेरे साम्हने।

लाटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह
से कह, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का
परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैं ने
तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे
है, देख, मैं तुझे चंगा करता हूं, परसों
तू यहोवा के भवन में जा सकेगा।
६ और मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और
बढ़ा दूंगा। और अश्शूर के राजा के
हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा,
और मैं अपने निमित्त और अपने दास
दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा
करूंगा। ७ तब यशायाह ने कहा, अंजीरों
की एक टिकिया लो। जब उन्हों ने उसे
लेकर फोड़े पर बांधा, तब वह चंगा
हो गया॥

८ हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा,
यहोवा जो मुझे चंगा करेगा और मैं
परसों यहोवा के भवन को जा सकूंगा,
इसका क्या चिन्ह होगा? ९ यशायाह
ने कहा, यहोवा जो अपने कहे हुए
वचन को पूरा करेगा, इस बात का यहोवा
की ओर से तेरे लिये यह चिन्ह होगा,
कि धूपघड़ी की छाया दस अंश आगे
बढ़ जाएगी, वा दस अंश घट जाएगी।
१० हिजकिय्याह ने कहा, छाया का
दस अंश आगे बढ़ना तो हलकी बात
है, इसलिए ऐसा हो कि छाया दस अंश पीछे
लौट जाए। ११ तब यशायाह भविष्य-
द्वक्ता ने यहोवा को पुकारा, और आहाज
की धूपघड़ी की छाया, जो दस अंश ढल
चुकी थी, यहोवा ने उसको पीछे की
ओर लौटा दिया॥

(हिजकिय्याह का गर्व और उसका दण्ड)

१२ उस समय बलदान का पुत्र
बरोदकबलदान जो बाबेल का राजा
था, उस ने हिजकिय्याह के रोगी होने
की चर्चा सुनकर, उसके पास पत्री और
भेंट भेजी। १३ उनके लानेवालों की
मानकर हिजकिय्याह ने उनको अपने
अनमोल पदार्थों का सब भण्डार, और
चान्दी और सोना और सुगन्ध द्रव्य और
उत्तम तेल और अपने हथियारों का पूरा
घर और अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं
थीं, वे सब दिखाईं, हिजकिय्याह के
भवन और राज्य भर में कोई ऐसी वस्तु
न रही, जो उस ने उन्हें न दिखाई हो।
१४ तब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने
हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा,
वे मनुष्य क्या कह गए? और कहां से तेरे
पास आए थे? हिजकिय्याह ने कहा,
वे तो दूर देश से अर्थात् बाबेल से आए
थे। १५ फिर उस ने पूछा, तेरे भवन
में उन्हों ने क्या क्या देखा है? हिज-
किय्याह ने कहा, जो कुछ मेरे भवन में
है, वह सब उन्हों ने देखा। मेरे भण्डारों
में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जो मैं ने उन्हें न
दिखाई हो। १६ यशायाह ने हिजकिय्याह
से कहा, यहोवा का वचन सुन ले।
१७ ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिन में जो
कुछ तेरे भवन में है, और जो कुछ तेरे
पुरखाओं का रखा हुआ आज के दिन तक
भण्डारों में है वह सब बाबेल को उठ
जाएगा, यहोवा यह कहता है, कि कोई
वस्तु न बचेगी। १८ और जो पुत्र तेरे वंश
में उत्पन्न हों, उन में से भी कितनों को
वे बन्धुआई में ले जाएंगे, और वे खोजे
बनकर बाबेल के राजभवन में रहेंगे।
१९ हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा,
यहोवा का वचन जो तू ने कहा है, वह
भला ही है, फिर उस ने कहा, क्या मेरे
दिनों में शांति और सच्चाई बनी न

रहेगी? २० हिजकिय्याह के और सब
काम और उसकी सारी वीरता और
किस रीति उस ने एक पोखरा और नाली
खुदवाकर नगर मे पानी पहुचा दिया,
यह सब क्या यहूदा के राजाओ के इतिहास
की पुस्तक मे नही लिखा है? २१ निदान
हिजकिय्याह अपने पुरखाओ के सग सो
गया और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान
पर राज्य करने लगा॥

(मनश्शे का राज्य)

२१ जब मनश्शे राज्य करने लगा,
तब वह बारह वर्ष का था, और
यरूशलेम मे पचपन वर्ष तक राज्य करता
रहा, और उसकी माता का नाम हेप्सीबा
था। २ उस ने उन जातियो के घिनौने
कामो के अनुसार, जिनको यहोवा ने
इस्राएलियो के साम्हने देश से निकाल
दिया था, वह किया, जो यहोवा की
दृष्टि मे बुरा था। ३ उस ने उन ऊचे
स्थानो को जिनको उसके पिता हिज-
किय्याह ने नाश किया था, फिर बनाया, और
इस्राएल के राजा अहाब की नाई बाल
के लिये वेदिया और एक अशेरा बनवाई,
और आकाश के कुल गण को दण्डवत
और उनकी उपासना करता रहा।
४ और उस ने यहोवा के उस भवन
मे वेदिया बनाई जिसके विषय यहोवा
ने कहा था, कि यरूशलेम मे मै
अपना नाम रखूगा। ५ वरन यहोवा के
भवन के दोनो आगनो मे भी उस ने
आकाश के सारे गण के लिये वेदिया
बनाई। ६ फिर उस ने अपने बेटे को
आग मे होम करके चढाया, और शुभ-
अशुभ मुहूर्त्तो को मानता, और टोना
करता और ओझो और भूत सिद्धिवालो
से व्यवहार करता था, वरन उस ने
ऐसे बहुत से काम किए जो यहोवा की
दृष्टि मे बुरे है, और जिन से वह क्रोधित
होता है। ७ और अशेरा की जो मूरत
उस ने खुदवाई, उसको उस ने उस भवन
मे स्थापित किया, जिसके विषय यहोवा
ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान से
कहा था, कि इस भवन मे और यरूशलेम
मे, जिसको मै ने इस्राएल के सब गोत्रो
मे से चुन लिया है, मै सदैव अपना नाम
रखूगा। ८ और यदि वे मेरी सब आज्ञाओ
के और मेरे दास मूसा की दी हुई पूरी
व्यवस्था के अनुसार करने की चौकसी
करे, तो मै ऐसा न करूगा कि जो देश
मै ने इस्राएल के पुरखाओ को दिया था,
उस से वे फिर निकलकर मारे मारे
फिरे। ९ परन्तु उन्हो ने न माना, वरन
मनश्शे ने उनको यहा तक भटका दिया
कि उन्हो ने उन जातियो से भी बढकर
बुराई की जिन्हे यहोवा ने इस्राएलियो
के साम्हने से विनाश किया था॥

१० इसलिये यहोवा ने अपने दास
भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा कहा, ११ कि
यहूदा के राजा मनश्शे ने जो ये घृणित
काम किए, और जितनी बुराइया एमोरियो
ने जो उस से पहिले थे की थी, उन से
भी अधिक बुराइया की, और यहूदियो से
अपनी बनाई हुई मूरतो की पूजा करवा के
उन्हे पाप मे फंसाया है। १२ इस कारण
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यो कहता
है कि सुनो, मै यरूशलेम और यहूदा पर
ऐसी विपत्ति डालना चाहता हू कि जो
कोई उसका समाचार सुनेगा वह बडे
सन्नाटे मे आ जाएगा*। १३ और जो

* मूल मे—उसके दोनो कान सनसना
जाएगे।

मापने की डोरी मैं ने शोमरोन पर डाली
है और जो साहुल मैं ने अहाब के घराने
पर लटकाया है वही यरूशलेम पर डालूंगा।
और मैं यरूशलेम को ऐसा पोछूंगा जैसे
कोई थाली को पोछता है और उसे
पोछकर उलट देता है। १४ और मैं
अपने निज भाग के बचे हुओं को त्यागकर
शत्रुओं के हाथ कर दूंगा और वे अपने सब
शत्रुओं के लिए लूट और धन बन जाएंगे।
१५ इसका कारण यह है, कि जब से
उनके पुरखा मिस्र से निकले तब से आज
के दिन तक वे वह काम करके जो मेरी
दृष्टि मे बुरा है, मुझे रिस दिलाते आ
रहे है॥

१६ मनश्शे ने तो न केवल वह काम
कराके यहूदियो से पाप कराया, जो
यहोवा की दृष्टि मे बुरा है, वरन निर्दोषो
का खून बहुत बहाया, यहा तक कि उस ने
यरूशलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे तक
खून से भर दिया। १७ मनश्शे के और
सब काम जो उस ने किए, और जो पाप
उस ने किए, वह सब क्या यहूदा के
राजाओ के इतिहास की पुस्तक मे नही
लिखा है? १८ निदान मनश्शे अपने
पुरखाओ के संग सो गया और उसे उसके
भवन की बारी मे जो उज्जर की बारी
कहलाती थी मिट्टी दी गई, और उसका
पुत्र आमोन उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(आमोन का राज्य)

१९ जब आमोन राज्य करने लगा,
तब वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम
में दो वर्ष तक राज्य करता रहा, और
उसकी माता का नाम मशुल्लेमेत था
जो योत्बावासी हारूस की बेटी थी।
२० और उस ने अपने पिता मनश्शे
की नाई वह किया, जो यहोवा की दृष्टि
मे बुरा है। २१ और वह अपने पिता के
समान पूरी चाल चला, और जिन मूरतो
की उपासना उसका पिता करता था,
उनकी वह भी उपासना करता, और
उन्हें दण्डवत करता था। २२ और
उस ने अपने पितरो के परमेश्वर यहोवा
को त्याग दिया, और यहोवा के मार्ग पर
न चला। २३ और आमोन के कर्म-
चारियो ने द्रोह की गोष्ठी करके राजा
को उसी के भवन में मार डाला। २४ तब
साधारण लोगो ने उन सभो को मार
डाला, जिन्हो ने राजा आमोन से द्रोह
की गोष्ठी की थी, और लोगो ने उसके
पुत्र योशिय्याह को उसके स्थान पर राजा
किया। २५ आमोन के और काम जो
उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओ
के इतिहास की पुस्तक मे नही लिखे
है। २६ उसे भी उज्जर की बारी मे
उसकी निज कबर मे मिट्टी दी गई,
और उसका पुत्र योशिय्याह उसके स्थान
पर राज्य करने लगा॥

(योशिय्याह के राज्य में व्यवस्था की
पुस्तक का मिलना)

२२ जब योशिय्याह राज्य करने
लगा, तब वह आठ वर्ष का था,
और यरूशलेम मे एकतीस वर्ष तक राज्य
करता रहा। और उसकी माता का नाम
यदीदा था जो बोस्कतवासी अदाया की
बेटी थी। २ उस ने वह किया, जो
यहोवा की दृष्टि मे ठीक है और जिस
मार्ग पर उसका मूलपुरुष दाऊद चला
ठीक उसी पर वह भी चला, और उस से
न तो दाहिनी ओर और न बाईं ओर
मुड़ा॥

३ अपने राज्य के अठारहवे वर्ष मे
राजा योशिय्याह ने असल्याह के पुत्र
शापान मंत्री को जो मशुल्लाम का पोता
था, यहोवा के भवन मे यह कहकर भेजा,
कि हिलकिय्याह महायाजक के पास
जाकर कह, ४ कि जो चान्दी यहोवा के
भवन मे लाई गई है, और द्वारपालो ने
प्रजा से इकट्ठी की है, ५ उसको जोडकर,
उन काम करानेवालो को सौप दे,
जो यहोवा के भवन के काम पर मुखिये
है, फिर वे उसको यहोवा के भवन मे
काम करनेवाले कारीगरो को दे, इसलिये
कि उस मे जो कुछ टूटा फूटा हो उसकी
वे मरम्मत करे। ६ अर्थात् बढइयो, राजो
और संगतराशो को दे, और भवन की
मरम्मत के लिये लकडी और गढे हुए
पत्थर मोल लेने मे लगाए। ७ परन्तु
जिनके हाथ मे वह चान्दी सौपी गई,
उन से हिसाब न लिया गया, क्योंकि वे
सच्चाई से काम करते थे। ८ और
हिलकिय्याह महायाजक ने शापान मंत्री
से कहा, मुझे यहोवा के भवन मे व्यवस्था
की पुस्तक मिली है, तब हिलकिय्याह
ने शापान को वह पुस्तक दी, और वह
उसे पढने लगा। ९ तब शापान मंत्री
ने राजा के पास लौटकर यह सन्देश
दिया, कि जो चान्दी भवन मे मिली,
उसे तेरे कर्मचारियो ने थैलियो मे डाल
कर, उनको सौप दिया जो यहोवा के
भवन मे काम करानेवाले है। १० फिर
शापान मंत्री ने राजा को यह भी बता
दिया, कि हिलकिय्याह याजक ने उसे
एक पुस्तक दी है। तब शापान उसे
राजा को पढकर सुनाने लगा॥

११ व्यवस्था की उस पुस्तक की
बाते सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाडे।
१२ फिर उस ने हिलकिय्याह याजक,
शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के
पुत्र अकबोर, शापान मंत्री और असाया
नाम अपने एक कर्मचारी को आज्ञा दी,
१३ कि यह पुस्तक जो मिली है, उसकी
बातो के विषय तुम जाकर मेरी और
प्रजा की और सब यहूदियो की ओर से
यहोवा से पूछो, क्योंकि यहोवा की बडी
ही जलजलाहट हम पर इस कारण भडकी
है, कि हमारे पुरखाओ ने इस पुस्तक की
बाते न मानी कि कुछ हमारे लिये लिखा
है, उसके अनुसार करते॥

१४ हिलकिय्याह याजक और
अहीकाम, अकबोर, शापान और असाया
ने हुल्दा नबिया के पास जाकर उस से
बाते की, वह उस शल्लूम की पत्नी
थी जो तिकवा का पुत्र और हर्हस का
पोता और वस्त्रो का रखवाला था, (और
वह स्त्री यरूशलेम के नये टोले मे रहती
थी)। १५ उस ने उन से कहा, इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा यो कहता है, कि
जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास भेजा,
उस से यह कहो, १६ यहोवा यो कहता
है, कि सुन, जिस पुस्तक को यहूदा के
राजा ने पढा है, उसकी सब बातो के
अनुसार मै इस स्थान और इसके निवासियो
पर विपत्ति डाला चाहता हू। १७ उन
लोगो ने मुझे त्याग कर पराये देवताओ
के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई
हुई सब वस्तुओ के द्वारा मुझे क्रोध
दिलाया है, इस कारण मेरी जलजलाहट
इस स्थान पर भडकेगी और फिर शात
न होगी। १८ परन्तु यहूदा का राजा
जिस ने तुम्हे यहोवा से पूछने को भेजा
है उस से तुम यो कहो, कि इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा कहता है।

१९ इसलिये कि तू वे बातें सुनकर दीन
हुआ, और मेरी वे बातें सुनकर कि इस
स्थान और इसके निवासियों को देखकर
लोग चकित होंगे, और शाप दिया करेंगे,
तू ने यहोवा के साम्हने अपना सिर
नवाया, और अपने वस्त्र फाड़कर मेरे
साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने
तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी
है। २० इसलिये देख, मैं ऐसा करूंगा,
कि तू अपने पुरखाओं के संग मिल जाएगा,
और तू शांति से अपनी कबर को पहुंचाया
जाएगा, और जो विपत्ति मैं इस स्थान
पर डाला चाहता हूं, उस में से तुझे अपनी
आंखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा।
तब उन्हों ने लौटकर राजा को यही
सन्देश दिया॥

(योशिय्याह का मूर्त्तिपूजा को बन्द करना)

२३ राजा ने यहूदा और यरूशलेम
के सब पुरनियों को अपने पास
इकट्ठा बुलवाया। २ और राजा, यहूदा
के सब लोगों और यरूशलेम के सब
निवासियों और याजकों और नबियों
वरन छोटे बड़े सारी प्रजा के लोगों को
संग लेकर यहोवा के भवन में गया।
तब उस ने जो वाचा की पुस्तक यहोवा
के भवन में मिली थी, उसकी सब बातें
उनको पढ़कर सुनाईं। ३ तब राजा ने
खम्भे के पास खड़ा होकर यहोवा से इस
आशय की वाचा बान्धी, कि मैं यहोवा
के पीछे पीछे चलूंगा, और अपने सारे
मन और सारे प्राण से उसकी आज्ञाएं,
चितौनियां और विधियों का नित पालन
किया करूंगा? और इस वाचा की
बातों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं
पूरी करूंगा। और सब प्रजा वाचा में
सम्भागी* हुई। ४ तब राजा ने हिल-
किय्याह महायाजक और उसके नीचे के
याजकों और द्वारपालों को आज्ञा दी,
कि जितने पात्र बाल और अशेरा और
आकाश के सब गण के लिये बने हैं,
उन सभों को यहोवा के मन्दिर में से
निकाल ले आओ। तब उस ने उनको
यरूशलेम के बाहर किद्रोन के खेतों में
फूंककर उनकी राख बेतेल को पहुंचा
दी। ५ और जिन पुजारियों को यहूदा
के राजाओं ने यहूदा के नगरों के ऊंचे
स्थानों में और यरूशलेम के आस पास
के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया
था, उनको और जो बाल और सूर्य-
चन्द्रमा, राशिचक्र और आकाश के कुल
गण को धूप जलाते थे, उनको भी राजा
ने दूर कर दिया। ६ और वह अशेरा
को यहोवा के भवन में से निकालकर
यरूशलेम के बाहर-किद्रोन नाले में लिवा
ले गया और वहीं उसको फूंक दिया,
और पीसकर बुकनी कर दिया। तब
वह बुकनी साधारण लोगों की कबरों
पर फेंक दी। ७ फिर पुरुषगामियों के
घर जो यहोवा के भवन में थे, जहां
स्त्रियां अशेरा के लिये पर्दे बुना करती
थीं, उनको उस ने ढा दिया। ८ और
उस ने यहूदा के सब नगरों से याजकों
को बुलवाकर गेबा से बेर्शेबा तक के
उन ऊंचे स्थानों को, जहां उन याजकों
ने धूप जलाया था, अशुद्ध कर दिया,
और फाटकों के ऊंचे स्थान अर्थात् जो
स्थान नगर के यहोशू नाम हाकिम के
फाटक पर थे, और नगर के फाटक के
भीतर जानेवाले की बाईं ओर थे, उनको

* मूल में—खड़ी।

उस ने ढा दिया। ६ तौभी ऊचे स्थानो
के याजक यरूशलेम मे यहोवा की वेदी
के पास न आए, वे अखमीरी रोटी अपने
भाइयो के साथ खाते थे। १० फिर
उस ने तोपेत को जो हिन्नोमवशियो की
तराई मे था, अशुद्ध कर दिया, ताकि कोई
अपने बेटे वा बेटी को मोलेक के लिये
आग मे होम करके न चढाए। ११ और
जो घोडे यहूदा के राजाओ ने सूर्य को
अर्पण करके, यहोवा के भवन के द्वार
पर नतन्मेलेक नाम खोजे की बाहर की
कोठरी मे रखे थे, उनको उस ने दूर
किया, और सूर्य के रथो को आग मे
फूक दिया। १२ और आहाज की अटारी
की छत पर जो वेदिया यहूदा के राजाओ
की बनाई हुई थी, और जो वेदिया मनश्शे
ने यहोवा के भवन के दोनो आगनो मे
बनाई थी, उनको राजा ने ढाकर पीस
डाला और उनकी बुकनी किद्रोन नाले
मे फेक दी। १३ और जो ऊचे स्थान
इस्राएल के राजा सुलैमान ने यरूशलेम
की पूर्व ओर और बिकारी नाम पहाडी
की दक्खिन अलग, अश्तोरेत नाम सीदोनियो
की घिनौनी देवी, और कमोश नाम
मोआबियो के घिनौने देवता, और मिल्कोम
नाम अम्मोनियो के घिनौने देवता के
लिये बनवाए थे, उनको राजा ने अशुद्ध
कर दिया। १४ और उस ने लाठो को
तोड दिया और अशेरो को काट डाला,
और उनके स्थान मनुष्यो की हड्डियो
से भर दिए। १५ फिर बेतेल मे जो
वेदी थी, और जो ऊचा स्थान नबात
के पुत्र यारोबाम ने बनाया था, जिस ने
इस्राएल मे पाप कराया था, उस वेदी
और उस ऊचे स्थान को उस ने ढा दिया,
और ऊचे स्थान को फूककर बुकनी कर
दिया और अशेरा को फूक दिया।
१६ और योशिय्याह ने फिर कर वहा
के पहाड की कबरो को देखा, और
लोगो को भेजकर उन कबरो मे हड्डिया
निकलवा दी और वेदी पर जलवाकर
उसको अशुद्ध किया। यह यहोवा के
उस वचन के अनुसार हुआ, जो
परमेश्वर के उस भक्त ने पुकारकर
कहा था जिस ने इन्ही बातो की चर्चा
की थी। १७ तब उस ने पूछा, जो खम्भा
मुझे दिखाई पडता है, वह क्या है? तब
नगर के लोगो ने उस से कहा, वह परमेश्वर
के उस भक्त जन की कबर है, जिस ने
यहूदा से आकर इसी काम की चर्चा
पुकारकर की जो तू ने बेतेल की वेदी से
किया है। १८ तब उस ने कहा, उसको
छोड दो, उसकी हड्डियो को कोई न
हटाए। तब उन्हो ने उसकी हड्डिया
उस नबी की हड्डियो के सग जो शोमरोन
से आया था, रहने दी। १९ फिर ऊचे
स्थान के जितने भवन शोमरोन के नगरो
मे थे, जिनको इस्राएल के राजाओ ने
बनाकर यहोवा को रिस दिलाई थी, उन
सभो को योशिय्याह ने गिरा दिया, और
जैसा जैसा उस ने बेतेल मे किया था,
वैसा वैसा उन से भी किया। २० और
उन ऊचे स्थानो के जितने याजक वहा
थे उन सभो को उस ने उन्ही वेदियो पर
बलि किया और उन पर मनुष्यो की
हड्डिया जलाकर यरूशलेम को लौट गया॥

(योशिय्याह का उत्तर चरित्र)

२१ और राजा ने सारी प्रजा के
लोगो को आज्ञा दी, कि इस वाचा की पुस्तक
मे जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार अपने
परमेश्वर यहोवा के लिये फसह का पर्व

मानो। २२ निश्चय ऐसा फसह न तो
न्यायियो के दिनो में माना गया था जो
इस्राएल का न्याय करते थे, और न
इस्राएल वा यहूदा के राजाओ के
दिनो में माना गया था। २३ राजा
योशिय्याह के अठारहवें वर्ष में यहोवा
के लिये यरूशलेम में यह फसह माना
गया ॥

२४ फिर ओझे, भूतसिद्धिवाले, गृह-
देवता, मूरतें और जितनी घिनौनी वस्तुए
यहूदा देश और यरूशलेम मे जहा कही
दिखाई पडी, उन सभो को योशिय्याह
ने इस मनसा से नाश किया, कि व्यवस्था
की जो बातें उस पुस्तक मे लिखी थी
जो हिलकिय्याह याजक को यहोवा के
भवन में मिली थी, उनको वह पूरी
करे। २५ और उसके तुल्य न तो उस
से पहिले कोई ऐसा राजा हुआ और
न उसके बाद ऐसा कोई राजा उठा, जो
मूसा की पूरी व्यवस्था के अनुसार अपने
पूर्ण मन और पूर्ण प्राण और पूर्ण शक्ति
से यहोवा की ओर फिरा हो ॥

२६ तौभी यहोवा का भडका हुआ बडा
कोप शान्त न हुआ, जो इस कारण
से यहूदा पर भडका था, कि मनश्शे
ने यहोवा को क्रोध पर क्रोध दिलाया
था। २७ और यहोवा ने कहा था जैसे
मैं ने इस्राएल को अपने साम्हने से दूर
किया, वैसे ही यहूदा को भी दूर करूगा,
और इस यरूशलेम नगर से जिसे मैं
ने चुना और इस भवन से जिसके विषय
मैं ने कहा, कि यह मेरे नाम का निवास
होगा, मैं हाथ उठाऊगा ॥

२८ योशिय्याह के और सब काम
जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के राजाओ
के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे
है? २९ उसके दिनो मे फिरौन-नको
नाम मिस्र का राजा, अश्शूर के राजा के
विरुद्ध परात महानद तक गया तो योशि-
य्याह राजा भी उसका साम्हना करने
को गया, और उस ने उसको देखते ही
मगिद्दो मे मार डाला। ३० तब उसके
कर्मचारियो ने उसकी लोथ एक रथ
पर रख मगिद्दो मे ले जाकर यरूशलेम
को पहुचाई और उसकी निज कबर में
रख दी। तब साधारण लोगो ने योशि-
य्याह के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसका
अभिषेक करके, उसके पिता के स्थान
पर राजा नियुक्त किया ॥

(यहोआहाज का राज्य)

३१ जब यहोआहाज राज्य करने लगा,
तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन
महीने तक यरूशलेम मे राज्य करता
रहा, और उसकी माता का नाम हमूतल
था, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी
थी। ३२ उस ने ठीक अपने पुरखाओ
की नाई वही किया, जो यहोवा की दृष्टि
में बुरा है। ३३ उसको फिरौन-नको
ने हमात देश के रिबला नगर में बान्ध
रखा, ताकि वह यरूशलेम में राज्य न
करने पाए, फिर उस ने देश पर सौ
किक्कार चान्दी और किक्कार भर सोना
जुरमाना किया। ३४ तब फिरौन-नको
ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को उसके
पिता योशिय्याह के स्थान पर राजा
नियुक्त किया, और उसका नाम बदलकर
यहोयाकीम रखा, और यहोआहाज को
ले गया। सो यहोआहाज मिस्र में जाकर
वही मर गया। ३५ यहोयाकीम ने फिरौन
को वह चान्दी और सोना तो दिया परन्तु
देश पर इसलिये कर लगाया कि फिरौन

की आज्ञा के अनुसार उसे दे सके, अर्थात्
देश के सब लोगो से जितना जिस पर
लगान लगा, उतनी चान्दी और सोना
उस से फिरौन-नको को देने के लिये
ले लिया ॥

(यहोयाकीम का राज्य)

३६ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा,
तब वह पचीस वर्ष का था, और ग्यारह
वर्ष तक यरूशलेम मे राज्य करता रहा,
और उसकी माता का नाम जबीदा था
जो रूमावासी अदायाह की बेटी थी।
३७ उस ने ठीक अपने पुरखाओ की
नाई वह किया जो यहोवा की दृष्टि मे
बुरा है ॥

२४ उसके दिनो मे बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर ने चढाई की और
यहोयाकीम तीन वर्ष तक उसके अधीन
रहा, तब उस ने फिर कर उस से
बलवा किया। २ तब यहोवा ने उसके
विरुद्ध और यहूदा को नाश करने के
लिये कसदियो, अरामियो, मोआबियो और
अम्मोनियो के दल भेजे, यह यहोवा के
उस वचन के अनुसार हुआ, जो उस
ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा
कहा था। ३ नि सन्देह यह यहूदा पर
यहोवा की आज्ञा से हुआ, ताकि वह
उनको अपने साम्हने से दूर करे। यह
मनश्शे के सब पापो के कारण हुआ।
४ और निर्दोषो के उस खून के कारण
जो उस ने किया था, क्योकि उस ने
यरूशलेम को निर्दोषो के खून मे भर
दिया था, जिसको यहोवा ने क्षमा करना
न चाहा। ५ यहोयाकीम के और सब
काम जो उस ने किए, वह क्या यहूदा के
राजाओ के इतिहास की पुस्तक मे नही
लिखे है? ६ निदान यहोयाकीम अपने
पुरखाओ के सग सो गया और उसका
पुत्र यहोयाकीन उसके स्थान पर राजा
हुआ। ७ और मिस्र का राजा अपने
देश से बाहर फिर कभी न आया, क्योकि
बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से लेकर
परात महानद तक जितना देश मिस्र के
राजा का था, सब को अपने वश मे कर
लिया था ॥

(यहोयाकीन का राज्य)

८ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा,
तब वह अठारह वर्ष का था, और तीन
महीने तक यरूशलेम मे राज्य करता
रहा, और उसकी माता का नाम नहुश्ता
था, जो यरूशलेम के एलनातान की बेटी
थी। ९ उस ने ठीक अपने पिता की
नाई वह किया, जो यहोवा की दृष्टि
मे बुरा है। १० उसके दिनो मे बाबेल
के राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारियो
ने यरूशलेम पर चढाई करके नगर को
घेर लिया। ११ और जब बाबेल के
राजा नबूकदनेस्सर के कर्मचारी नगर
को घेरे हुए थे, तब वह आप वहा आ
गया। १२ और यहूदा का राजा यहो-
याकीन अपनी माता और कर्मचारियो,
हाकिमो और खोजो को सग लेकर बाबेल
के राजा के पास गया, और बाबेल के
राजा ने अपने राज्य के आठवे वर्ष मे
उनको पकड लिया। १३ तब उस ने
यहोवा के भवन मे और राजभवन में
रखा हुआ पूरा धन वहा से निकाल
लिया और सोने के जो पात्र इस्राएल
के राजा सुलैमान ने बनाकर यहोवा के
मन्दिर मे रखे थे, उन सभो को उस ने
टुकडे टुकडे कर डाला, जैसा कि यहोवा

ने कहा था। १४ फिर वह पूरे यरूशलेम
को अर्थात् सब हाकिमो और सब धनवानो
को जो मिलकर दस हजार थे, और
सब कारीगरो और लोहारो को बन्धुआ
करके ले गया, यहा तक कि साधारण
लोगो में से कगालो को छोड और कोई
न रह गया। १५ और वह यहोयाकीन
को बाबेल मे ले गया और उसकी माता
और स्त्रियो और खोजो को और देश के
बडे लोगो को वह बन्धुआ करके यरूशलेम
से बाबेल को ले गया। १६ और सब
धनवान जो सात हजार थे, और कारीगर
और लोहार जो मिलकर एक हजार
थे, और वे सब वीर और युद्ध के योग्य
थे, उन्हे बाबेल का राजा बन्धुआ करके
बाबेल को ले गया। १७ और बाबेल
के राजा ने उसके स्थान पर उसके चाचा
मत्तन्याह को राजा नियुक्त किया और
उसका नाम बदलकर सिदकिय्याह रखा॥

(सिदकिय्याह का राज्य)

१८ जब सिदकिय्याह राज्य करने
लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था, और
यरूशलेम मे ग्यारह वर्ष तक राज्य करता
रहा, और उसकी माता का नाम हमूतल
था, जो लिब्नावासी यिर्मयाह की बेटी
थी। १९ उस ने ठीक यहोयाकीम की
लीक पर चलकर वही किया जो यहोवा
की दृष्टि मे बुरा है। २० क्योंकि यहोवा
के कोप के कारण यरूशलेम और यहूदा
की ऐसी दशा हुई, कि अन्त में उस ने
उनको अपने साम्हने से दूर किया॥

२५ और सिदकिय्याह ने बाबेल
के राजा से बलवा किया।
उसके राज्य के नौवें वर्ष के दसवे
महीने के दसवें दिन को बाबेल के राजा
नबूकदनेस्सर ने अपनी पूरी सेना लेकर
यरूशलेम पर चढाई की, और उसके पास
छावनी करके उसके चारो ओर कोट
बनाए। २ और नगर सिदकिय्याह राजा
के ग्यारहवें वर्ष तक घिरा हुआ रहा।
३ चौथे महीने के नौवे दिन से नगर
में महगी यहा तक बढ गई, कि देश के
लोगो के लिये कुछ खाने को न रहा।
४ तब नगर की शहरपनाह में दरार
की गई, और दोनो भीतो के बीच जो
फाटक राजा की बारी के निकट था उस
मार्ग से सब योद्धा रात ही रात निकल
भागे। कसदी तो नगर को घेरे हुए थे,
परन्तु राजा ने अराबा का मार्ग लिया।
५ तब कसदियो की सेना ने राजा का
पीछा किया, और उसको यरीहो के पास
के अराबा मे जा लिया, और उसकी
पूरी सेना उसके पास से तितर बितर
हो गई। ६ तब वे राजा को पकडकर
रिबला मे बाबेल के राजा के पास ले
गए, और उसे दण्ड की आज्ञा दी
गई। ७ और उन्हो ने सिदकिय्याह के
पुत्रो को उसके साम्हने घात किया और
सिदकिय्याह की आखे फोड डाली और
उसे पीतल की बेडियो से जकडकर बाबेल
को ले गए॥

(यरूशलेम का विनाश)

८ बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के
उन्नीसवें वर्ष के पाचवें महीने के सातवें
दिन को जल्लादो का प्रधान नबूजरदान
जो बाबेल के राजा का एक कर्मचारी
था, यरूशलेम में आया। ९ और उस
ने यहोवा के भवन और राजभवन
और यरूशलेम के सब घरो को अर्थात्
हर एक बडे घर को आग लगाकर फूक

दिया। १० और यरूशलेम के चारो ओर
की सव शहरपनाह को कसदियो की पूरी
सेना ने जो जल्लादो के प्रधान के सग
थी, ढा दिया। ११ और जो लोग नगर
मे रह गए थे, और जो लोग वावेल
के राजा के पास भाग गए थे, और साधारण
लोग जो रह गए थे, इन सभो को जल्लादो
का प्रधान नवूजरदान वन्धुआ करके ले
गया। १२ परन्तु जल्लादो के प्रधान ने
देश के कगालो मे से कितनो को दाख
की वारियो की सेवा और काश्तकारी
करने को छोड दिया। १३ और यहोवा
के भवन मे जो पीतल के खम्भे थे और
कुर्सिया और पीतल का हौद जो यहोवा
के भवन मे था, इनको कसदी तोडकर
उनका पीतल वावेल को ले गए। १४ और
हण्डियो, फावडियो, चिमटो, धूपदानो
और पीतल के सव पात्रो को जिन से
सेवा टहल होती थी, वे ले गए। १५ और
करछे और कटोरिया जो सोने की थी,
और जो कुछ चान्दी का था, वह सव
सोना, चान्दी, जल्लादो का प्रधान ले
गया। १६ दोनो खम्भे, एक हौद और
जो कुर्सिया सुलैमान ने यहोवा के भवन
के लिये वनाए थे, इन सव वस्तुओ का
पीतल तौल से वाहर था। १७ एक
एक खम्भे की ऊचाई अठारह अठारह
हाथ की थी और एक एक खम्भे के ऊपर
तीन तीन हाथ ऊची पीतल की एक एक
कगनी थी, और एक एक कगनी पर
चारो ओर जो जाली और अनार वने
थे, वे सव पीतल के थे॥

१८ और जल्लादो के प्रधान ने सरायाह
महायाजक और उसके नीचे के याजक
सपन्याह और तीनो द्वारपालो को पकड
लिया। १९ और नगर मे से उस ने
एक हाकिम को पकडा जो योद्धाओ के
ऊपर था, और जो पुरुष राजा के
सम्मुख रहा करते थे, उन मे से पाच
जन जो नगर मे मिले, और सेनापति
का मुन्शी जो लोगो को सेना मे भरती
किया करता था, और लोगो मे से साठ
पुरुष जो नगर मे मिले। २० इनको
जल्लादो का प्रधान नवूजरदान पकडकर
रिवला के राजा के पास ले गया। २१ तव
वावेल के राजा ने उन्हे हमात देश के
रिवला मे ऐसा मारा कि वे मर गए।
यो यहूदी वन्धुआ वनके अपने देश से
निकाल दिए गए॥

(गदल्याह की हत्या)

२२ और जो लोग यहूदा देश मे रह
गए, जिनको वावेल के राजा नवूकद-
नेस्सर ने छोड दिया, उन पर उस ने
अहीकाम के पुत्र गदल्याह को जो शापान
का पोता था अधिकारी ठहराया।
२३ जव दलो के सव प्रधानो ने अर्थात्
नतन्याह के पुत्र इश्माएल कारेह के पुत्र
योहानान, नतोपाई, तन्हूमेत के पुत्र
सरायाह और किसी माकाई के पुत्र
याजन्याह ने और उनके जनो ने यह
सुना, कि वावेल के राजा ने गदल्याह
को अधिकारी ठहराया है, तव वे अपने
अपने जनो समेत मिस्पा मे गदल्याह के
पास आए। २४ और गदल्याह ने उन
से और उनके जनो से शपथ खाकर
कहा, कसदियो के सिपाहियो से न डरो,
देश मे रहते हुए वावेल के राजा के
अधीन रहो, तव तुम्हारा भला होगा।
२५ परन्तु सातवे महीने मे नतन्याह का
पुत्र इश्माएल, जो एलीशामा का पोता
और राजवश का था, उस ने दस जन

एक का नाम पेलेग इस कारण रखा
गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बांटी गई,
और उसके भाई का नाम योक्तान था।
२० और योक्तान से अल्मोदाद, शेलेप,
हसर्मावेत, येरह्। २१ हदोराम, ऊजाल,
दिक्ला। २२ एबाल, अबीमाएल, शबा,
२३ ओपीर, हवीला और योबाब उत्पन्न
हुए, ये ही सब योक्तान के पुत्र हैं॥

२४ शेम, अर्पक्षद, शेलह्। २५ एबेर,
पेलेग, रू। २६ सरूग, नाहोर, तेरह।
२७ अब्राम, वही इब्राहीम भी कहलाता
है। २८ इब्राहीम के पुत्र इसहाक और
इश्माएल हैं॥

२९ इनकी वंशावलियां ये हैं।
इश्माएल का जेठा नबायोत, फिर केदार,
अदबेल, मिबसाम। ३० मिश्मा, दूमा,
मस्सा, हदद, तेमा। ३१ यतूर, नापीश,
केदमा। ये इश्माएल के पुत्र हुए।
३२ फिर कतूरा जो इब्राहीम की रखेली
थी, उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए, अर्थात् उस से
जिम्रान, योक्षान, मदान, मिद्यान, यिशबाक
और शूह उत्पन्न हुए। योक्षान के पुत्र
शबा और ददान। ३३ और मिद्यान के
पुत्र. एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और
एलदा, ये सब कतूरा के पुत्र हैं॥

३४ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ।
इसहाक के पुत्र एसाव और इस्राएल।
३५ एसाव के पुत्र एलीपज, रूएल, यूश,
यालाम और कोरह हैं। ३६ एलीपज
के ये पुत्र हैं तेमान, ओमार, सपी,
गाताम, कनज, तिम्ना और अमालेक।
३७ रूएल के पुत्र नहत, जेरह, शम्मा
और मिज्जा॥

३८ फिर सेईर के पुत्र: लोतान,
शोबाल, सिबोन, अना, दीशोन, एसेर
और दीशान हैं। ३९ और लोतान के
पुत्र होरी और होमाम, और लोतान
की बहिन तिम्ना थी। ४० शोबाल के
पुत्र अल्यान, मानहत, एबाल, शपी और
ओनाम। ४१ और सिबोन के पुत्र अय्या,
और अना। अना का पुत्र दीशोन।
और दीशोन के पुत्र हम्रान, एशबान,
यित्रान और करान। ४२ एसेर के पुत्र
बिल्हान, जावान और याकान। और
दीशान के पुत्र ऊस और अरान हैं॥

४३ जब किसी राजा ने इस्राएलियों
पर राज्य न किया था, तब एदोम के
देश में ये राजा हुए अर्थात् बोर का
पुत्र बेला और उसकी राजधानी का
नाम दिन्हाबा था। ४४ बेला के मरने
पर, बोस्राई जेरह् का पुत्र योबाब, उसके
स्थान पर राजा हुआ। ४५ और योबाब
के मरने पर, तेमानियों के देश का हूशाम
उसके स्थान पर राजा हुआ। ४६ फिर
हूशाम के मरने पर, बदद का पुत्र हदद,
उसके स्थान पर राजा हुआ यह वही
है, जिस ने मिद्यानियों को मोआब के
देश में मार लिया, और उसकी राजधानी
का नाम अवीत था। ४७ और हदद के
मरने पर, मस्रेकाई सम्ला उसके स्थान
पर राजा हुआ। ४८ फिर सम्ला के
मरने पर शाऊल, जो महानद के तट पर
के रहोबोत नगर का था, वह उसके
स्थान पर राजा हुआ। ४९ और शाऊल
के मरने पर अकबोर का पुत्र बाल्हानान
उसके स्थान पर राजा हुआ। ५० और
बाल्हानान के मरने पर, हदद उसके
स्थान पर राजा हुआ, और उसकी राज-
धानी का नाम पाई था। और उसकी
पत्नी का नाम महेतबेल था जो मेज़ाहाब
की नातिनी और मत्रेद की बेटी थी।
और हदद मर गया॥

५१ फिर एदोम के अधिपति ये थे
अर्थात् अधिपति तिम्ना, अधिपति अल्या,
अधिपति यतेत, अधिपति ओहोलीवामा,
५२ अधिपति एला, अधिपति पीनोन,
अधिपति कनज, ५३ अधिपति तेमान,
अधिपति मिवसार, अधिपति मग्दीएल,
अधिपति ईराम। ५४ एदोम के ये
अधिपति हुए ॥

२ इस्राएल के ये पुत्र हुए, रूबेन,
शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार,
जवूलून, दान। २ यूसुफ, विन्यामीन,
नप्ताली, गाद और आशेर ॥

(यहूदा की वंशावली)

३ यहूदा के ये पुत्र हुए एर, ओनान
और शेला, उसके ये तीनो पुत्र, वतशू
नाम एक कनानी स्त्री से उत्पन्न हुए।
और यहूदा का जेठा एर, यहोवा की
दृष्टि मे वुरा था, इस कारण उस ने
उसको मार डाला। ४ यहूदा की बहू
तामार मे पेरेम और जेरह उत्पन्न हुए।
यहूदा के सब पुत्र पाच हुए ॥

५ पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल।
६ और जेरेह के पुत्र जिम्री, एतान,
हेमान, कलकोल और दारा सब मिलकर
पाच। ७ फिर कर्मी का पुत्र आकार
जो अर्पण की हुई वस्तु के विषय में
विश्वासघात करके इस्राएलियो का कष्ट
देनेवाला हुआ। ८ और एतान का पुत्र
अजर्याह ॥

९ हेस्रोन के जो पुत्र उत्पन्न हुए
यरह्मेल, राम और कलूवै। १० और
राम से अम्मीनादाव और अम्मीनादाव
से नहशोन उत्पन्न हुआ जो यहूदियो का
प्रधान बना। ११ और नहशोन से सल्मा
और सल्मा से वोअज, १२ और वोअज
से ओवेद और ओवेद से यिशै उत्पन्न
हुआ। १३ और यिशै से उसका जेठा
एलीआब और दूसरा अवीनादाव तीसरा
शिमा। १४ चौथा नतनेल और पाचवा
रद्दै। छठा ओसेम और सातवा दाऊद
उत्पन्न हुआ। १५ इनकी वहिने सरूयाह
और अवीगैल थी। १६ और सरूयाह के
पुत्र अवीशै, योआव और असाहेल ये
तीन थे। १७ और अवीगैल से अमासा
उत्पन्न हुआ, और अमासा का पिता
इश्माएली येतेर था ॥

१८ हेस्रोन के पुत्र कालेव के अजूबा
नाम एक स्त्री से, और यरीओत से,
वेटे उत्पन्न हुए, और इसके पुत्र ये हुए*
अर्थात् येशेर, शोवाव और अर्दोन।
१९ जव अजूबा मर गई, तब कालेव
ने एप्रात को व्याह लिया, और जिससे
हूर उत्पन्न हुआ। २० और हूर से ऊरी
और ऊरी से वसलेल उत्पन्न हुआ ॥

२१ इसके वाद हेस्रोन गिलाद के पिता
माकीर की वेटी के पास गया, जिसे उस
ने तव व्याह लिया, जब वह साठ वर्ष
का था, और उस से सगूब उत्पन्न हुआ।
२२ और सगूब से याईर जन्मा, जिसके
गिलाद देश मे तेईस नगर थे। २३ और
गशूर और अराम ने याईर की बस्तियो
को और गावो समेत कनत को, उन से
ले लिया, ये सब नगर मिलकर साठ
थे। ये सब गिलाद के पिता माकीर
के पुत्र हुए। २४ और जब हेस्रोन
कालेबप्राता मे मर गया, तब उसकी
अबिय्याह नाम स्त्री से अशहूर उत्पन्न
हुआ जो तकों का पिता हुआ ॥

* वा कालेव से अजूबा नाम अपनी स्त्री के द्वारा यरीओत उत्पन्न हुआ और यरीओत के ये पुत्र हुए।

२५ और हेस्रोन के जेठे यरह्मेल के
ये पुत्र हुए अर्थात् राम जो उसका जेठा
था, और बूना, ओरेन, ओसेम और
अहिय्याह। २६ और यरह्मेल की एक
और पत्नी थी, जिसका नाम अतारा था,
वह ओनाम की माता थी। २७ और
यरह्मेल के जेठे राम के ये पुत्र हुए, अर्थात्
मास, यामीन और एकेर। २८ और
ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा हुए।
और शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर
हुए। २९ और अबीशूर की पत्नी का
नाम अबीहैल था, और उस से अहबान और
मोलीद उत्पन्न हुए। ३० और नादाब
के पुत्र सेलेद और अप्पैम हुए, सेलेद
तो निसन्तान मर गया। और अप्पैम
का पुत्र यिशी। ३१ और यिशी का पुत्र
शेशान और शेशान का पुत्र अहलै।
३२ फिर शम्मै के भाई यादा के पुत्र
येतेर और योनातान हुए, येतेर तो
निसन्तान मर गया। ३३ योनातान के
पुत्र पेलेत और जाजा, यरह्मेल के पुत्र
ये हुए। ३४ शेशान के तो बेटा न हुआ,
केवल बेटियां हुई। शेशान के पास यर्हा
नाम एक मिस्री दास था। ३५ और
शेशान ने उसको अपनी बेटी ब्याह दी,
और उस से अत्तै उत्पन्न हुआ। ३६ और
अत्तै से नातान, नातान से जाबाद।
३७ जाबाद से एपलाल, एपलाल से
ओबेद। ३८ ओबेद से येहू, येहू से
अजर्याह। ३९ अजर्याह से हेलैस, हेलैस
से एलासा। ४० एलासा से सिस्मै, सिस्मै
से शल्लूम। ४१ शल्लूम से यकम्याह और
यकम्याह से एलीशामा उत्पन्न हुए॥

४२ फिर यरह्मेल के भाई कालेब के
ये पुत्र हुए अर्थात् उसका जेठा मेशा जो
जीप का पिता हुआ। और मारेशा का
पुत्र हेब्रोन भी उसी के वंश मे हुआ।
४३ और हेब्रोन के पुत्र कोरह, तप्पूह,
रेकेम और शेमा। ४४ और शेमा से
योर्काम का पिता रहम और रेकेम से
शम्मै उत्पन्न हुआ था। ४५ और शम्मै
का पुत्र माओन हुआ, और माओन
बेत्सूर का पिता हुआ। ४६ फिर एपा
जो कालेब की रखेली थी, उस से हारान,
मोसा और गाजेज उत्पन्न हुए, और
हारान से गाजेज उत्पन्न हुआ। ४७ फिर
याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत,
एपा और शाप। ४८ और माका जो
कालेब की रखेली थी, उस से शेबेर और
तिर्हाना उत्पन्न हुए। ४९ फिर उस से
मदमन्ना का पिता शाप और मकबेना
और गिबा का पिता शवा उत्पन्न हुए।
और कालेब की बेटी अकसा थी।
कालेब के पुत्र ये हुए॥

५० एप्राता के जेठे हूर का पुत्र
किर्यत्यारीम का पिता शोबाल।
५१ बेतलेहेम का पिता सल्मा और
बेतगादेर का पिता हारेप। ५२ और
किर्यत्यारीम के पिता शोबाल के वंश
मे हारोए आधे मनुहोतवासी, ५३ और
किर्यत्यारीम के कुल अर्थात् यित्री, पूती,
शूमाती और मिश्राई और इन से सोराई
और एश्ताओली निकले। ५४ फिर सल्मा
के वंश मे बेतलेहेम और नतोपाई, अत्रोत-
बेत्योआब और आधे मानहती, सोरी।
५५ और याबेस मे रहनेवाले लेखकों के
कुल अर्थात् तिराती, शिमाती और सूकाती
हुए। ये रेकाब के घराने के मूलपुरुष
हम्मत के वंशवाले केनी है॥

३ दाऊद के पुत्र जो हेब्रोन मे उस
से उत्पन्न हुए वे ये है जेठा अम्नोन

जो यिज्रेली अहीनोअम से, दूसरा दानिय्येल
जो कर्मेली अबीगैल से उत्पन्न हुआ।
२ तीसरा अबशालोम जो गशूर के राजा
तल्मै की बेटी माका का पुत्र था, चौथा
अदोनिय्याह जो हग्गीत का पुत्र था।
३ पाचवा शपत्याह जो अबीतल से, और
छठवा यित्राम जो उसकी स्त्री एग्ला से
उत्पन्न हुआ। ४ दाऊद से हेब्रोन में
छ पुत्र उत्पन्न हुए, और वहा उस ने
साढ़े सात वर्ष राज्य किया, और यरूशलेम
में तेंतीस वर्ष राज्य किया। ५ और
यरूशलेम में उसके ये पुत्र उत्पन्न हुए
अर्थात् शिमा, शोबाब, नातान और
सुलैमान, ये चारों अम्मीएल की बेटी बतशू
से उत्पन्न हुए। ६ और यिभार, एलीशामा
एलीपेलेत। ७ नोगाह, नेपेग, यापी।
८ एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेत,
ये नौ पुत्र थे, ये सब दाऊद के पुत्र थे।
९ और इनको छोड़ रखेलियों के भी
पुत्र थे, और इनकी बहिन तामार थी।
१० फिर सुलैमान का पुत्र रहबाम उत्पन्न
हुआ, रहबाम का अबिय्याह, अबिय्याह
का आसा, आसा का यहोशापात।
११ यहोशापात का योराम, योराम का
अहज्याह, अहज्याह का योआश।
१२ योआश का अमस्याह, अमस्याह का
अजर्याह, अजर्याह का योताम।
१३ योताम का आहाज, आहाज का
हिजकिय्याह, हिजकिय्याह का मनश्शे।
१४ मनश्शे का आमोन, और आमोन का
योशिय्याह पुत्र हुआ। १५ और योशि-
य्याह के पुत्र उसका जेठा योहानान, दूसरा
यहोयाकीम, तीसरा सिदकिय्याह, चौथा
शल्लूम। १६ और यहोयाकीम का पुत्र
यकोन्याह, इसका पुत्र सिदकिय्याह।
१७ और यकोन्याह का पुत्र अस्सीर,
उसका पुत्र शालतीएल। १८ और
मल्कीराम, पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह,
होशामा और नदव्याह। १९ और
पदायाह के पुत्र जरुब्बाबेल और शिमी
हुए, और जरुब्बाबेल के पुत्र मशुल्लाम
और हनन्याह, जिनकी बहिन शलोमीत
थी। २० और हशूबा, ओहेल, बेरेक्याह,
हसद्याह और यूशब्हेसेद, पांच। २१ और
हनन्याह के पुत्र पलत्याह और यशायाह।
और रपायाह के पुत्र अर्नान के पुत्र
ओबद्याह के पुत्र और शकन्याह के पुत्र।
२२ और तकन्याह का पुत्र शमायाह।
और शमायाह के पुत्र हत्तूश और यिगाल,
बारीह, नार्याह और शापात, छ।
२३ और नार्याह के पुत्र एल्योएनै, हिज-
किय्याह और अज्रीकाम, तीन।
२४ और एल्योएनै के पुत्र होदव्याह,
एल्याशीब, पलायाह, अक्कूब, योहानान,
दलायाह और अनानी, सात॥

४ यहूदा के पुत्र पेरेस, हेस्रोन,
कर्मी, हूर और शोबाल। २ और
शोबाल के पुत्र रायाह से यहत और
यहत से अहूमै और लहद उत्पन्न हुए, ये
सोराई कुल हैं। ३ और एताम के पिता
के ये पुत्र हुए अर्थात् यिज्रेल, यिश्मा
और यिद्बाश, जिनकी बहिन का नाम
हस्सलेलपोनी था। ४ और गदोर का
पिता पनूएल, और हूशा का पिता एजेर।
ये एप्राता के जेठे हूर के सन्तान हैं, जो
बेतलेहेम का पिता हुआ। ५ और तको
के पिता अशहूर के हेला और नारा नाम
दो स्त्रियां थीं। ६ और नारा से अहु-
ज्जाम, हेपेर, तेमनी और हाहश्तारी
उत्पन्न हुए, नारा के ये ही पुत्र हुए।
७ और हेला के पुत्र, सेरेत, यिसहर

और एत्नान। ८ फिर कोस से आनूब
और सोबेबा उत्पन्न हुए और उसके वंश
में हारून के पुत्र अहर्हेल के कुल भी
उत्पन्न हुए। ९ और याबेस अपने भाइयों
से अधिक प्रतिष्ठित हुआ, और उसकी
माता ने यह कहकर उसका नाम याबेस *
रखा, कि मैं ने इसे पीडित होकर उत्पन्न
किया। १० और याबेस ने इस्राएल के
परमेश्वर को यह कहकर पुकारा, कि
भला होता, कि तू मुझे सचमुच आशीष
देता, और मेरा देश बढाता, और तेरा हाथ
मेरे साथ रहता, और तू मुझे बुराई † से
ऐसा बचा रखता कि मैं उस में पीडित
न होता! और जो कुछ उस ने मांगा,
वह परमेश्वर ने उसे दिया। ११ फिर
शूहा के भाई कलूब से एशतोन का पिता
महीर उत्पन्न हुआ। १२ और एशतोन
के वंश में रामा का घराना, और पासेह
और ईर्नाहाश का पिता तहिन्ना उत्पन्न
हुए, रेका के लोग ये ही हैं। १३ और
कनज के पुत्र, ओत्नीएल और सरायाह,
और ओत्नीएल का पुत्र हतत।
१४ मोनोतै से ओप्रा और सरायाह से
योआब जो गेहराशीम का पिता हुआ,
वे कारीगर थे। १५ और यपुन्ने के
पुत्र कालेब के पुत्र एला और नाम, और
एला के पुत्र कनज। १६ और यहल्लेल
के पुत्र, जीप, जीपा, तीरया और असरेल।
१७ और एज्रा के पुत्र येतेर, मेरेद,
एपेर और यालोन, और उसकी स्त्री से
मिर्य्याम, शम्मै और एशतमो का पिता
यिशबह उत्पन्न हुए। १८ और उसकी
यहूदिन स्त्री से गदोर का पिता येरेद,
सोको के पिता हेबेर और जानोह के
पिता यकूतीएल उत्पन्न हुए, ये फिरौन
की बेटी बित्या के पुत्र थे जिसे मेरेद ने
ब्याह लिया था। १९ और होदिय्याह की
स्त्री जो नहम की बहिन थी, उसके पुत्र
कीला का पिता एक गेरेमी और एशतमो
का पिता एक माकाई। २० और शीमोन
के पुत्र अम्नोन, रिन्ना, बेन्हानान और
तीलोन और यिशी के पुत्र जोहेत और
बेनजोहेत। २१ यहूदा के पुत्र शेला के
पुत्र लेका का पिता एर, मारेशा का पिता
लादा और अशबे के घराने के कुल जिस
में सन के कपडे का काम होता था।
२२ और योकीम और कोज़ेबा के मनुष्य
और योआश और साराप जो मोआब
में प्रभुता करते थे और याशूब, लेहेम
इनका वृत्तान्त प्राचीन है। २३ ये
कुम्हार थे, और नताईम और गदेरा में
रहते थे जहां वे राजा का कामकाज
करते हुए उसके पास रहते थे॥

(शिमोन की वंशावली)

२४ शिमोन के पुत्र नमूएल, यामीन,
यारीब, जेरह और शाऊल। २५ और
शाऊल का पुत्र शल्लूम, शल्लूम का पुत्र
मिबसाम और मिबसाम का मिश्मा हुआ।
२६ और मिश्मा का पुत्र हम्मूएल, उसका
पुत्र जक्कूर, और उसका पुत्र शिमी।
२७ शिमी के सोलह बेटे और छः बेटियां
हुईं परन्तु उसके भाइयों के बहुत बेटे न
हुए, और उनका सारा कुल यहूदियों के
बराबर न बढा। २८ वे बेर्शेबा, मोलादा,
हसर्शूआल। २९ बिल्हा, एसेम, तोलाद।
३० बतूएल, होर्मा, सिक्लग, ३१ बेत-
मर्काबोत, हसर्सूसीम, बेतबिरी और
शारैम में बस गए, दाऊद के राज्य के
समय तक उनके ये ही नगर रहे।

* अर्थात् पीडा।
† वा विपत्ति।

३२ और उनके गाव एताम, ऐन, रिम्मोन,
तोकेन और आशान नाम पाच नगर।
३३ और बाल तक जितने गाव इन नगरो
के आसपास थे, उनके बसने के स्थान
ये ही थे, और यह उनकी वंशावली है॥

३४ फिर मशोबाब और यम्लेक और
अमस्याह का पुत्र योशा। ३५ और योएल
और योशिब्याह का पुत्र येहू, जो सरायाह
का पोता, और असीएल का परपोता
था। ३६ और एल्योएनै और याकोबा,
यशोहायाह और असायाह और अदीएल
और यसीमीएल और बनायाह। ३७ और
शिपी का पुत्र जीजा जो अल्लोन का
पुत्र, यह यदायाह का पुत्र, यह शिम्री
का पुत्र, यह शमायाह का पुत्र था। ३८ ये
जिनके नाम लिखे हुए हैं, अपने अपने
कुल मे प्रधान थे, और उनके पितरो के
घराने बहुत बढ गए। ३९ ये अपनी
भेड़-बकरियो के लिये चराई ढूढने को
गदोर की घाटी की तराई की पूर्व ओर
तक गए। ४० और उनको उत्तम से
उत्तम चराई मिली, और देश लम्बा-चौडा,
चैन और शांति का था, क्योंकि वहा के
पहिले रहनेवाले हाम के वंश के थे।
४१ और जिनके नाम ऊपर लिखे हैं,
उन्हो ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के
दिनो मे वहा आकर जो मूनी वहा मिले,
उनको डेरो समेत मारकर ऐसा सत्यानाश
कर डाला कि आज तक उनका पता नही
है, और वे उनके स्थान में रहने लगे,
क्योंकि वहा उनकी भेड़-बकरियो के
लिये चराई थी। ४२ और उन में से
अर्थात् शिमोनियो में से पाच सौ पुरुष
अपने ऊपर पलत्याह, नार्याह, रपायाह
और उज्जीएल नाम यिशी के पुत्रो को
अपने प्रधान ठहराया, ४३ तब वे सेईद
पहाड को गए, और जो अमेलेकी बचकर
रह गए थे उनको मारा, और आज के
दिन तक वहा रहते हैं॥

(रूबेन और गाद की वंशावलियां और
मनश्शे के आधे गोत्र की वंशावली)

५ इस्राएल का जेठा तो रूबेन था,
परन्तु उस ने जो अपने पिता के
बिछौने को अशुद्ध किया, इस कारण
जेठे का अधिकार इस्राएल के पुत्र यूसुफ
के पुत्रो को दिया गया। वंशावली जेठे
के अधिकार के अनुसार नही ठहरी।
२ क्योंकि यहूदा अपने भाइयो पर प्रबल
हो गया, और प्रधान उसके वंश से हुआ
परन्तु जेठे का अधिकार यूसुफ का था।
३ इस्राएल के जेठे पुत्र रूबेन के पुत्र ये हुए,
अर्थात् हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी।
४ और योएल के पुत्र शमायाह, शमायाह
का गोग, गोग का शिमी। ५ शिमी का
मीका, मीका का रायाह, रायाह का बाल।
६ और बाल का पुत्र बेरा, इसको अश्शूर
का राजा तिलगतपिलनेसेर बन्धुआई
में ले गया, और वह रूबेनियो का प्रधान
था। ७ और उसके भाइयो की वंशावली
के लिखते समय वे अपने अपने कुल के
अनुसार ये ठहरे, अर्थात् मुख्य तो यीएल,
फिर जकर्याह। ८ और अजाज का पुत्र
बेला जो शेमा का पोता और योएल का
परपोता था, वह अरोएर में और नबो
और बालमोन तक रहता था। ९ और
पूर्व ओर वह उस जगल के सिवाने तक
रहा जो परात महानद तक पहुचाता है,
क्योंकि उनके पशु गिलाद देश में बढ
गए थे। १० और शाऊल के दिनो में
उन्हो ने हग्रियो से युद्ध किया, और हग्री
उनके हाथ से मारे गए, तब वे गिलाद

की सारी पूरबी अलंग में अपने डेरों
में रहने लगे ॥
११ गादी उनके साम्हने सल्का तक
बाशान देश में रहते थे। १२ अर्थात्
मुख्य तो योएल और दूसरा शापाम फिर
यानै और शापात, ये बाशान में रहते
थे। १३ और उनके भाई अपने अपने
पितरों के घरानों के अनुसार मीकाएल,
मशुल्लाम, शेबा, योरै, याकान, जी और
एबेर, सात थे। १४ ये अबीहैल के पुत्र
थे, जो हूरी का पुत्र था, यह योराह का
पुत्र, यह गिलाद का पुत्र, यह मिकाएल
का पुत्र, यह यशीशै का पुत्र, यह यहदो
का पुत्र, यह बूज का पुत्र था। १५ इनके
पितरों के घरानों का मुख्य पुरुष अब्दीएल
का पुत्र, और गूनी का पोता अही था।
१६ ये लोग बाशान में, गिलाद और
उसके गांवों में, और शारोन की सब
चराइयों में उसकी परली ओर तक रहते
थे। १७ इन सभों की वंशावली यहूदा
के राजा योतान के दिनों और इस्राएल
के राजा यारोबाम के दिनों में लिखी गई ॥
१८ रूबेनियों, गादियों और मनश्शे
के आधे गोत्र के योद्धा जो ढाल बान्धने,
तलवार चलाने, और धनुष के तीर
छोड़ने के योग्य और युद्ध करना सीखे
हुए थे, वे चौवालीस हजार सात सौ
साठ थे, जो युद्ध में जाने के योग्य थे।
१९ इन्हों ने हग्रियों और यतूर नापीश
और नोदाब से युद्ध किया था। २० उनके
विरुद्ध इनको सहायता मिली, और
हग्री उन सब समेत जो उनके साथ
थे, इनके हाथ में कर दिए गए, क्योंकि
युद्ध में इन्हों ने परमेश्वर की दोहाई
दी थी और उस ने उनकी बिनती उस
कारण सुनी, कि इन्हों ने उस पर भरोसा
रखा था। २१ और इन्हों ने उनके
पशु हर लिए, अर्थात् ऊंट तो पचास
हजार, भेड़-बकरी अढ़ाई लाख, गदहे
दो हजार, और मनुष्य एक लाख बन्धुए
करके ले गए। २२ और बहुत से मरे
पड़े थे क्योंकि वह लड़ाई परमेश्वर की
ओर से हुई। और ये उनके स्थान में
बन्धुआई के समय तक बसे रहे ॥
२३ फिर मनश्शे के आधे गोत्र की
सन्तान उस देश में बसे, और वे बाशान
से ले बाल्हेर्मोन, और सनीर और हेर्मोन
पर्वत तक फैल गए। २४ और उनके
पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये थे,
अर्थात् एपेर, यिशी, एलीएल, अज्रीएल,
यिर्मयाह, होदव्याह और यहदीएल, ये
बड़े वीर और नामी और अपने पितरों
के घरानों के मुख्य पुरुष थे ॥
२५ और उन्हों ने अपने पितरों के
परमेश्वर से विश्वासघात किया, और उस
देश के लोग जिनको परमेश्वर ने उनके
साम्हने से विनाश किया था, उनके
देवताओं के पीछे व्यभिचारिन की नाईं
हो लिए। २६ इसलिये इस्राएल के पर-
मेश्वर ने अश्शूर के राजा पूल और
अश्शूर के राजा तिलगत्पिलनेसेर का मन
उभारा, और इन्हों ने उन्हें अर्थात् रूबेनियों,
गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के
लोगों को बन्धुआ करके हलह, हाबोर
और हारा और गोजान नदी के पास
पहुंचा दिया, और वे आज के दिन
तक वहीं रहते हैं ॥

(लेवी की वंशावली और लेवियों
के वासस्थान)

६ लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात और
मरारी। २ और कहात के पुत्र,
अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल।

३ और अम्राम की सन्तान हारून, मूसा
और मरियम, और हारून के पुत्र, नादाब,
अबीहू, एलीआजर और ईतामार।
४ एलीआज़र से पीनहास, पीनहास से
अबीशू। ५ अबीशू से बुक्की, बुक्की से
उज्जी। ६ उज्जी से जरह्याह, जरह्याह
से मरायोत। ७ मरायोत से अमर्याह,
अमर्याह से अहीतूब। ८ अहीतूब से
सादोक, सादोक से अहीमास।
९ अहीमास से अजर्याह, अजर्याह से
योहानान। १० और योहानान से
अजर्याह, उत्पन्न हुआ (जो सुलैमान के
यरूशलेम में बनाए हुए भवन में याजक
का काम करता था)। ११ फिर अजर्याह
से अमर्याह, अमर्याह से यहोतूब।
१२ यहोतूब से सादोक, सादोक से शल्लूम।
१३ शल्लूम से हिलकिय्याह, हिलकिय्याह
से अजर्याह। १४ अजर्याह से सरायाह,
और सरायाह से यहोसादाक उत्पन्न हुआ।
१५ और जब यहोवा, यहूदा और यरूशलेम
को नबूकदनेस्सर के द्वारा बन्धुआ करके
ले गया, तब यहोसादाक भी बन्धुआ होकर
गया॥

१६ लेवी के पुत्र गेर्शोम, कहात और
मरारी। १७ और गेर्शोम के पुत्रों के
नाम ये थे, अर्थात् लिब्नी और शिमी।
१८ और कहात के पुत्र अम्राम, यिसहार,
हेब्रोन और उज्जीएल। १९ और मरारी
के पुत्र महली और मूशी और अपने अपने
पितरों के घरानों के अनुसार लेवियों के
कुल ये हुए। २० अर्थात्, गेर्शोन का
पुत्र-लिब्नी हुआ, लिब्नी का यहत, यहत
का जिम्मा। २१ जिम्मा का योआह,
योआह का इद्दो, इद्दो का जेरह, और
जेरह का पुत्र यातरै हुआ। २२ फिर
कहात का पुत्र अम्मीनादाब हुआ, अम्मीना-
दाब का कोरह, कोरह का अस्सीर।
२३ अस्सीर का एल्काना, एल्काना का
एब्यासाप, एब्यासाप का अस्सीर।
२४ अस्सीर का तहत, तहत का ऊरीएल,
ऊरीएल का उज्जिय्याह और उज्जिय्याह
का पुत्र शाऊल हुआ। २५ फिर एल्काना
के पुत्र अमासै और अहीमोत।
२६ एल्काना का पुत्र सोपै, सोपै का
नहत। २७ नहत का एलीआब, एलीआब
का यरोहाम, और यरोहाम का पुत्र
एल्काना हुआ। २८ और शमूएल के पुत्र,
उसका जेठा योएल * और दूसरा अबिय्याह
हुआ। २९ फिर मरारी का पुत्र महली,
महली का लिब्नी, लिब्नी का शिमी,
शिमी का उज्जा। ३० उज्जा का शिमा,
शिमा का हग्गिय्याह और हग्गिय्याह का
पुत्र असायाह हुआ॥

३१ फिर जिनको दाऊद ने सन्दूक
के ठिकाना पाने के बाद यहोवा के भवन
में गाने के अधिकारी ठहरा दिया वे ये
हैं। ३२ जब तक सुलैमान यरूशलेम में
यहोवा के भवन को बनवा न चुका, तब
तक वे मिलापवाले तम्बू के निवास के
साम्हने गाने के द्वारा सेवा करते थे,
और इस सेवा में नियम के अनुसार
उपस्थित हुआ करते थे। ३३ जो अपने
अपने पुत्रों समेत उपस्थित हुआ करते
थे वे ये हैं, अर्थात् कहातियों में से हेमान
गवैया जो योएल का पुत्र था, और योएल
शमूएल का। ३४ शमूएल एल्काना का,
एल्काना यरोहाम का, यरोहाम एलीएल
का, एलीएल तोह का। ३५ तोह सूप
का, सूप एल्काना का, एल्काना महत

* अरामी में योएल। फिर देखो पद ३३।

का, महत अमासै का। ३६ अमासै
एल्काना का, एल्काना योएल का, योएल
अजर्याह का, अजर्याह सपन्याह का।
३७ सपन्याह तहत का, तहत अस्सीर
का, अस्सीर एब्यासाप का, एब्यासाप
कोरह का। ३८ कोरह यिसहार का,
यिसहार कहात का, कहात लेवी का और
लेवी इस्राएल का पुत्र था। ३९ और
उसका भाई असाप जो उसके दाहिने
खडा हुआ करता था वह बेरेक्याह का
पुत्र था, और बेरेक्याह शिमा का।
४० शिमा मीकाएल का, मीकाएल बासे-
याह का, बासेयाह मल्किय्याह का।
४१ मल्किय्याह एत्नी का, एत्नी जेरह
का, जेरह अदायाह का। ४२ अदायाह
एतान का, एतान जिम्मा का, जिम्मा
शिमी का। ४३ शिमी यहत का, यहत
गेर्शोम का, गेर्शोम लेवी का पुत्र था।
४४ और बाईं ओर उनके भाई मरारी
खडे होते थे, अर्थात् एताव जो कीशी का
पुत्र था, और कीशी अब्दी का, अब्दी
मल्लूक का। ४५ मल्लूक हशब्याह का,
हशब्याह अमस्याह का, अमस्याह हिलकि-
य्याह का। ४६ हिलकिय्याह अमसी
का, अमसी बानी का, बानी शेमेर
का। ४७ शेमेर महली का, महली मूशी
का, मूशी मरारी का, और मरारी लेवी
का पुत्र था। ४८ और इनके भाई
जो लेवीय थे वह परमेश्वर के भवन के
निवास की सब प्रकार की सेवा के लिये
अर्पण किए * हुए थे।।

४९ परन्तु हारून और उसके पुत्र
होमबलि की वेदी, और धूप की
वेदी दोनो पर बलिदान चढाते, और
परम पवित्रस्थान का सब काम करते, और
इस्राएलियो के लिये प्रायश्चित करते थे,
जैसे कि परमेश्वर के दास मूसा ने आज्ञाए
दी थी। ५० और हारून के वश मे
ये हुए, अर्थात् उसका पुत्र एलीआजर
हुआ, और एलीआजर का पीनहास,
पीनहास का अबीशू। ५१ अबीशू का
बुक्की, बुक्की का उज्जी, उज्जी का
जरह्याह। ५२ जरह्याह का मरायोत,
मरायोत का अमर्याह, अमर्याह का अहीतूब।
५३ अहीतूब का सादोक और सादोक
का अहीमास पुत्र हुआ।।

५४ और उनके भागो मे उनकी
छावनियो के अनुसार उनकी बस्तिया
ये है, अर्थात् कहात के कुलो मे से पहिली
चिट्ठी जो हारून की सन्तान के नाम
पर निकली। ५५ अर्थात् चारो ओर की
चराइयो समेत यहूदा देश का हेब्रोन
उन्हे मिला। ५६ परन्तु उस नगर के
खेत और गाव यपुन्ने के पुत्र कालेब को
दिए गए। ५७ और हारून की सन्तान
को शरणनगर हेब्रोन, और चराइयो
समेत लिब्ना, ५८ और यत्तीर और
अपनी अपनी चराइयो समेत एशतमो।
हीलेन, दबीर। ५९ आशान और
बेतशेमेश। ६० और बिन्यामीन के
गोत्र मे से अपनी अपनी चराइयो समेत
गेबा, अल्लेमेत और अनातोत दिए गए।
उनके घरानो के सब नगर तेरह थे।।

६१ और शेष कहातियो के गोत्र के
कुल, अर्थात् मनश्शे के आधे गोत्र मे से चिट्ठी
डालकर दस नगर दिए गए। ६२ और
गेर्शोमियो के कुलो के अनुसार उन्हे
इस्साकार, आशेर और नप्ताली के गोत्र,
और बाशान मे रहनेवाले मनश्शे के गोत्र
मे से तेरह नगर मिले। ६३ मरारियो

* मूल में—दिए।

के कुलो के अनुसार उन्हे रूबेन, गाद
और जबूलून के गोत्रो में से चिट्ठी डालकर
बारह नगर दिए गए। ६४ और इस्रा-
एलियो ने लेवियो को ये नगर चराइयो
समेत दिए। ६५ और उन्हो ने यहूदियो,
शिमोनियो और बिन्यामीनियो के गोत्रो
में से वे नगर दिए, जिनके नाम ऊपर
दिए गए है ॥

६६ और कहातियो के कई कुलो को
उनके भाग के नगर एप्रैम के गोत्र में
से मिले। ६७ सो उनको अपनी अपनी
चराइयो समेत एप्रैम के पहाड़ी देश का
शकेम जो शरणनगर था, फिर गेजेर।
६८ योकमाम, बेथोरोन। ६९ अय्या-
लोन और गत्रिम्मोन। ७० और मनश्शे
के आधे गोत्र में से अपनी अपनी चराइयो
समेत आनेर और बिलाम शेष कहातियो
के कुल को मिले। ७१ फिर गेर्शोमियो
को मनश्शे के आधे गोत्र के कुल में से
तो अपनी अपनी चराइयो समेत बाशान
का गोलान और अशतारोत। ७२ और
इस्साकार के गोत्र में से अपनी अपनी
चराइयो समेत केदेश, दाबरात।
७३ रामोत और आनेम, ७४ और
आशेर के गोत्र में से अपनी अपनी चराइयो
समेत माशाल, अब्दोन। ७५ हूकोक और
रहोब। ७६ और नप्ताली के गोत्र में से
अपनी अपनी चराइयो समेत गालील का
केदेश हम्मोन और किर्यातैम मिले।
७७ फिर शेष लेवियो अर्थात् मरारियो
को जबूलून के गोत्र में से तो अपनी अपनी
चराइयो समेत रिम्मोन और ताबोर।
७८ और यरीहो के पास की यरदन नदी
की पूर्व ओर रूबेन के गोत्र में से तो अपनी
अपनी चराइयो समेत जगल का बेसेर,
यहसा। ७९ कदेमोत और मेपात।
८० और गाद के गोत्र में से अपनी अपनी
चराइयो समेत गिलाद का रामोत महनैम,
८१ हेशबोन और याजेर दिए गए ॥

(इस्साकार, बिन्यामीन, नप्ताली, मनश्शे,
एप्रैम और आशेर की वशावलिया)

७ इस्साकार के पुत्र तोला, पूआ,
याशूब और शिम्रोन, चार थे।
२ और तोला के पुत्र उज्जी, रपायाह,
यरीएल, यहमै, यिबसाम और शमूएल,
ये अपने अपने पितरो के घरानो अर्थात्
तोला की सन्तान के मुख्य पुरुष और बड़े
वीर थे, और दाऊद के दिनो में उनके
वश की गिनती बाईस हजार छ सौ
थी। ३ और उज्जी का पुत्र यिज्रह्याह,
और यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल, ओबद्याह,
योएल और यिश्शिय्याह पाच थे, ये
सब मुख्य पुरुष थे। ४ और उनके
साथ उनकी वशावलियो और पितरो
के घरानो के अनुसार सेना के दलो के
छत्तीस हजार योद्धा थे, क्योकि उनके
बहुत स्त्रिया और पुत्र थे। ५ और
उनके भाई जो इस्साकार के सब कुलो में
से थे, वे सत्तासी हजार बड़े वीर थे,
जो अपनी अपनी वशावली के अनुसार
गिने गए ॥

६ बिन्यामीन के पुत्र बेला, बेकेर
और यदीएल ये तीन थे। ७ बेला के पुत्र
एसबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत और
ईरी ये पाच थे। ये अपने अपने पितरो के
घरानो के मुख्य पुरुष और बड़े वीर
थे, और अपनी अपनी वशावली के अनुसार
उनकी गिनती बाईस हजार चौंतीस
थी। ८ और बेकेर के पुत्र जमीरा,
योआश, एलीएजेर, एल्योएनै, ओम्री, यरे-
मोत, अबिय्याह, अनातोत और आलेमेत

ये सब बेकेर के पुत्र थे। ९ ये जो
अपने अपने पितरो के घरानो के मुख्य
पुरुष और बडे वीर थे, इनके वश की
गिनती अपनी अपनी वशावली के अनुसार
बीस हजार दो सौ थी। १० और यदीएल
का पुत्र बिल्हान, और बिल्हान के पुत्र,
यूश, बिन्यामीन, एहूद, कनाना, जेतान,
तर्शीश और अहीशहर थे। ११ ये सब
जो यदीएल की सन्तान और अपने अपने
पितरो के घरानो मे मुख्य पुरुष और
बडे वीर थे, इनके वश से सेना मे युद्ध
करने के योग्य सत्रह हजार दो सौ पुरुष
थे। १२ और ईर के पुत्र शुप्पीम और
हुप्पीम और अहेर के पुत्र हूशी थे॥

१३ नप्ताली के पुत्र, एहसीएल, गूनी,
येसेर और शल्लूम थे, ये बिल्हा के पोते थे॥

१४ मनश्शे के पुत्र, अस्रीएल जो
उसकी अरामी रखेली स्त्री से उत्पन्न
हुआ था, और उस अरामी स्त्री ने
गिलाद के पिता माकीर को भी जन्म
दिया। १५ और माकीर (जिसकी बहिन
का नाम माका था) उस ने हुप्पीम और
शुप्पीम के लिये स्त्रिया ब्याह ली, और
दूसरे का नाम सलोफाद था, और सलोफाद
के बेटिया हुई। १६ फिर माकीर की
स्त्री माका के एक पुत्र उत्पन्न हुआ और
उसका नाम पेरेश रखा, और उसके
भाई का नाम शेरेश था, और इसके
पुत्र ऊलाम और राकेम थे। १७ और
ऊलाम का पुत्र बदान। ये गिलाद की
सन्तान थे जो माकीर का पुत्र और मनश्शे
का पोता था। १८ फिर उसकी बहिन
हम्मोलेकेत ने ईशहोद, अबीएजेर और
महला को जन्म दिया। १९ और शमीदा
के पुत्र अह्यान, शेकेम, लिखी और
अनीआम थे॥

२० और एप्रैम के पुत्र शूतेलह और
शूतेलह का बेरेद, बेरेद का तहत, तहत
का एलादा, एलादा का तहत। २१ तहत
का जावाद और जावाद का पुत्र शूतेलह
हुआ, और येजेर और एलाद भी जिन्हे
गत के मनुष्यो ने जो उस देश मे उत्पन्न
हुए थे इसलिये घात किया, कि वे उनके
पशु हर लेने को उतर आए थे। २२ सो
उनका पिता एप्रैम उनके लिये बहुत
दिन शोक करता रहा, और उसके भाई
उसे शाति देने को आए। २३ और वह
अपनी पत्नी के पास गया, और उस ने
गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म दिया
और एप्रैम ने उसका नाम इस कारण
बरीआ * रखा, कि उसके घराने मे विपत्ति
पडी थी। (२४ और उसकी पुत्री शेरा
थी, जिस ने निचले और ऊपरवाले दोनो
बेथोरान नाम नगरो को और उज्जेनशेरा
को दृढ कराया।) २५ और उसका पुत्र
रेपा था, और रेशेप भी, और उसका
पुत्र तेलह, तेलह का तहन, तहन का
लादान, २६ लादान का अम्मीहूद, अम्मी-
हूद का एलीशामा। २७ एलीशामा का
नून, और नून का पुत्र यहोशू था।
२८ और उनकी निज भूमि और बस्तिया
गावो समेत बेतेल और पूर्व की ओर नारान
और पश्चिम की ओर गावो समेत गेजेर, फिर
गावो समेत शकेम, और गावो समेत अज्जा
थी। २९ और मनश्शेइयो के सिवाने के
पास अपने अपने गावो समेत बेतशान,
तानाक, मगिद्दो और दोर। इन मे इस्राएल
के पुत्र यूसुफ की सन्तान के लोग रहते थे॥

३० आशेर के पुत्र, यिम्ना, यिश्वा,
यिश्वी और बरीआ, और उनकी बहिन

---

* अर्थात् विपत्ति।

सेरह हुई। ३१ और बरीआ के पुत्र,
हेबेर और मल्कीएल और यह बिर्जात
का पिता हुआ। ३२ और हेबेर ने यपलेत,
शोमेर, होताम और उनकी बहिन शूआ
को जन्म दिया। ३३ और यपलेत के
पुत्र पासक बिम्हाल और अश्वात। यपलेत
के ये ही पुत्र थे। ३४ और शेमेर के
पुत्र, अही, रोहगा, यहुब्बा और अराम
थे। ३५ और उसके भाई हेलेम के पुत्र
सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल थे।
३६ और सोपह के पुत्र, सूह, हर्नेपेर,
शूआल, बेरी, इम्रा। ३७ बेसेर, होद,
शम्मा, शिलसा, यित्रान और बेरा थे।
३८ और येतेर के पुत्र, यपुन्ने, पिस्पा
और अरा। ३९ और उल्ला के पुत्र,
आरह, हन्नीएल और रिस्या। ४० ये सब
आशेर के वंश में हुए, और अपने अपने
पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष और
बड़े से बड़े वीर थे और प्रधानों में मुख्य
थे। और ये जो अपनी अपनी वंशावली
के अनुसार सेना में युद्ध करने के लिये
गिने गए, इनकी गिनती छब्बीस हजार
थी॥

(बिन्यामीन की वंशावली)

८ बिन्यामीन से उसका जेठा बेला,
दूसरा अशबेल, तीसरा अहर्ह, २ चौथा
नोहा और पांचवा रापा उत्पन्न हुआ।
३ और बेला के पुत्र, अद्दार, गेरा, अबीहूद।
४ अबीशू, नामान, अहोह, ५ गेरा,
शपूपान और हूराम थे। ६ और एहूद के
पुत्र ये हुए (गेबा के निवासियों के पितरों के
घरानों में मुख्य पुरुष ये थे, जिन्हें बन्धुआई
में मानहत को ले गए थे)। ७ और
नामान, अहिय्याह और गेरा (इन्हें भी
बन्धुआ करके मानहत को ले गए थे), और
उस ने उज्जा और अहिलूद को जन्म दिया।
८ और शहरैम से हूशीम और बारा
नाम अपनी स्त्रियों को छोड़ देने के बाद
मोआब देश में लड़के उत्पन्न हुए। ९ और
उसकी अपनी स्त्री होदेश से योआब,
सिब्या, मेशा, मल्काम, यूस, सोक्या,
१० और मिर्मा उत्पन्न हुए उसके ये
पुत्र अपने अपने पितरों के घरानों में
मुख्य पुरुष थे। ११ और हूशीम से
अबीतूब और एल्पाल का जन्म हुआ।
१२ एल्पाल के पुत्र एबेर, मिशाम और
शेमेर, इसी ने ओनो और गावों समेत
लोद को बसाया। १३ फिर बरीआ और
शेमा जो अय्यालोन के निवासियों के
पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे, और
जिन्हों ने गत के निवासियों को भगा
दिया। १४ और अह्यो, शाशक, यरेमोत।
१५ जबद्याह, अराद, एदेर। १६ मीका-
एल, यिस्पा, योहा, जो बरीआ के पुत्र
थे। १७ जबद्याह, मशुल्लाम, हिजकी,
हेबेर। १८ यिशमरै, यिजलीआ, योबाब,
जो एल्पाल के पुत्र थे। १९ और याकीम,
जिक्री, जब्दी। २० एलीएनै, सिल्लतै,
एलीएल। २१ अदायाह, बरायाह और
शिम्रात जो शिमी के पुत्र थे। २२ और
यिशपान, एबेर, एलीएल। २३ अब्दोन,
जिक्री, हानान। २४ हनन्याह, एलाम,
अन्तोतिय्याह। २५ यिपदयाह और
पनूएल जो शाशक के पुत्र थे। २६ और
शमशरै, शहर्याह, अतल्याह। २७ योरे-
श्याह, एलिय्याह और जिक्री जो यरोहाम
के पुत्र थे। २८ ये अपनी अपनी पीढ़ी में
अपने अपने पितरों के घरानों में मुख्य
पुरुष और प्रधान थे, ये यरूशलेम में
रहते थे॥

२९ और गिवोन मे गिवोन का पिता
रहता था, जिसकी पत्नी का नाम माका था।
३० और उसका जेठा पुत्र अब्दोन था,
फिर शूर, कीश, वाल, नादाव। ३१ गदोर,
अह्यो और जेकेर हुए। ३२ और
मिकोत से शिमा उत्पन्न हुआ। और ये भी
अपने भाइयो के साम्हने यरूशलेम मे रहते
थे, अपने भाइयो ही के साथ। ३३ और
नेर से कीश उत्पन्न हुआ, कीश से शाऊल,
और शाऊल से योनातान, मलकीश,
अवीनादाव, और एशबाल उत्पन्न हुआ।
३४ और योनातन का पुत्र मरीब्वाल
हुआ, और मरीब्वाल से मीका उत्पन्न
हुआ। ३५ और मीका के पुत्र पीतोन,
मेलेक, तारे और आहाज। ३६ और
आहाज से यहोअद्दा उत्पन्न हुआ। और
यहोअद्दा से आलेमेत, अजमावेत और
जिम्री, और जिम्री से मोसा। ३७ मोसा
से विना उत्पन्न हुआ। और इसका पुत्र
रापा हुआ, रापा का एलासा और एलासा
का पुत्र आसेल हुआ। ३८ और आसेल
के छ पुत्र हुए जिनके ये नाम थे, अर्थात्
अज्रीकाम, वोकरू, यिश्माएल, शार्याह,
ओवद्याह, और हानान। ये ही सव आसेल
के पुत्र थे। ३९ और उसके भाई एशेक
के ये पुत्र हुए, अर्थात् उसका जेठा ऊलाम,
दूसरा यूश, तीसरा एलीपेलेत। ४० और
ऊलाम के पुत्र शूरवीर और धनुर्धारी
हुए, और उनके वहुत वेटे-पोते अर्थात्
डेढ सौ हुए। ये ही सव विन्यामीन के
वंश के थे॥

(यरूशलेम मे रहनेवालों का प्रबन्ध)

९ इस प्रकार सब इस्राएली अपनी
अपनी वंशावली के अनुसार, जो
इस्राएल के राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक
मे लिखी है, गिने गए। और यहूदी अपने
विश्वासघात के कारण वन्धुआई मे वावुल
को पहुचाए गए। २ जो लोग अपनी
अपनी निज भूमि अर्थात् अपने नगरो मे
रहते थे, वह इस्राएली, याजक, लेवीय
और नतीन थे। ३ और यरूशलेम मे
कुछ यहूदी, कुछ विन्यामीन, और कुछ
एप्रैमी, और मनश्शेई, रहते थे ४ अर्थात्
यहूदा के पुत्र पेरेस के वश मे से अम्मीहूद
का पुत्र ऊतै, जो ओम्री का पुत्र, और
इम्री का पोता, और वानी का परपोता
था। ५ और शीलोइयो मे से उसका
जेठा पुत्र असायाह और उसके पुत्र।
६ और जेरह के वश मे से यूएल, और
इनके भाई, ये छ सौ नव्वे हुए। ७ फिर
विन्यामीन के वश मे से सल्लू जो मशुल्लाम
का पुत्र, होदव्याह का पोता, और हस्सनूआ
का परपोता था। ८ और यिब्रिय्याह जो
यरोहाम का पुत्र था, और एला जो उज्जी
का पुत्र, और मिक्री का पोता था, और
मशुल्लाम जो शपत्याह का पुत्र, रूएल का
पोता, और यिब्निय्याह का परपोता था,
९ और इनके भाई जो अपनी अपनी
वशावली के अनुसार मिलकर नौ सौ
छप्पन। ये सव पुरुष अपने अपने पितरो के
घरानो के अनुसार पितरो के घरानो मे
मुख्य थे॥

१० और याजको मे से यदायाह, यहोया-
रीव और याकीन, ११ और अजर्याह जो
परमेश्वर के भवन का प्रधान और हिल-
किय्याह का पुत्र था, यह मशुल्लाम का
पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत
का पुत्र, यह अहीतूव का पुत्र था।
१२ और अदायाह जो यरोहाम का पुत्र
था, यह पशहूर का पुत्र, यह मल्कियाह
का पुत्र, यह मासै का पुत्र, यह अदोएल

का पुत्र, यह जेरा का पुत्र, यह मशुल्लाम
का पुत्र, यह मशिल्लीत का पुत्र, यह इम्मेर
का पुत्र था। १३ और इनके भाई थे, जो
अपने अपने पितरों के घरानों में सत्रह सौ
साठ मुख्य पुरुष थे, वे परमेश्वर के भवन की
सेवा के काम में बहुत निपुण पुरुष थे॥

१४ फिर लेवियों में से मरारी के वंश
में से शमायाह जो हश्शूब का पुत्र, अज्रीकाम
का पोता, और हशव्याह का परपोता
था। १५ और बकबक्कर, हेरेश और
गालाल और आसाप के वंश में से मत्तन्याह
जो मीका का पुत्र, और जिक्री का पोता
था। १६ और ओबद्याह जो शमायाह
का पुत्र, गालाल का पोता और यदूतून
का परपोता था, और बेरेक्याह जो आसा
का पुत्र, और एल्काना का पोता था, जो
नतोपाइयों के गांवों में रहता था॥

१७ और द्वारपालों में से अपने अपने
भाइयों सहित शल्लूम, अक्कूब, तल्मोन
और अहीमान, इन में से मुख्य तो शल्लूम
था। १८ और वह अब तक पूर्व और
राजा के फाटक के पास द्वारपाली करता
था। लेवियों की छावनी के द्वारपाल ये
ही थे। १९ और शल्लूम जो कोरे का
पुत्र, एब्यासाप का पोता, और कोरह का
परपोता था, और उसके भाई जो उसके
मूलपुरुष के घराने के अर्थात् कोरही थे,
वह इस काम के अधिकारी थे, कि वे
तम्बू के द्वारपाल हों। उनके पुरखा तो
यहोवा की छावनी के अधिकारी, और
पैठाव के रखवाले थे। २० और अगले
समय में एलीआजर का पुत्र पीनहास
जिसके संग यहोवा रहता था वह उनका
प्रधान था। २१ मेशेलेम्याह का पुत्र
जकर्याह मिलापवाले तम्बू का द्वारपाल
था। २२ ये सब जो द्वारपाल होने को
चुने गए, वह दो सौ बारह थे। ये जिनके
पुरखाओं को दाऊद और शमूएल दर्शी
ने विश्वासयोग्य जानकर ठहराया था, वह
अपने अपने गांव में अपनी अपनी वंशावली
के अनुसार गिने गए। २३ सो वे और
उनकी सन्तान यहोवा के भवन अर्थात्
तम्बू के भवन के फाटकों का अधिकार
बारी बारी रखते थे। २४ द्वारपाल पूर्व,
पश्चिम, उत्तर, दक्खिन, चारों दिशा की
ओर चौकी देते थे। २५ और उनके
भाई जो गांवों में रहते थे, उनको सात
सात दिन के बाद बारी बारी से
उनके संग रहने के लिये आना पड़ता
था। २६ क्योंकि चारों प्रधान द्वारपाल
जो लेवीय थे, वे विश्वासयोग्य जानकर
परमेश्वर के भवन की कोठरियों और
भण्डारों के अधिकारी ठहराए गए थे।
२७ और वे परमेश्वर के भवन के आस-
पास इसलिये रात बिताते थे, कि उसकी
रक्षा उन्हें सौंपी गई थी, और भोर-भोर
को उसे खोलना उन्हीं का काम था॥

२८ और उन में से कुछ उपासना के
पात्रों के अधिकारी थे, क्योंकि ये गिनकर
भीतर पहुंचाए, और गिनकर बाहर निकाले
भी जाते थे। २९ और उन में से कुछ
सामान के, और पवित्रस्थान के पात्रों के,
और मैदे, दाखमधु, तेल, लोबान और
सुगन्धद्रव्यों के अधिकारी ठहराए गए थे।
३० और याजकों के पुत्रों में से कुछ
सुगन्धद्रव्यों में गंधी का काम करते थे।
३१ और मत्तित्याह नाम एक लेवीय जो
कोरही शल्लूम का जेठा था उसे विश्वास-
योग्य जानकर तवों पर बनाई हुई वस्तुओं
का अधिकारी नियुक्त किया था।
३२ और उसके भाइयों अर्थात् कहातियों
में से कुछ तो भेंटवाली रोटी के अधिकारी

थे, कि हर एक विश्रामदिन को उसे
तैयार किया करे ॥
३३ और ये गवैये थे जो लेवीय पितरों
के घरानों में मुख्य थे, और कोठरियों में
रहते, और और काम से छूटे थे, क्योंकि
वे रात-दिन अपने काम में लगे रहते थे।
३४ ये ही अपनी अपनी पीढ़ी में लेवियों
के पितरों के घरानों में मुख्य पुरुष थे,
ये यरूशलेम में रहते थे ॥
३५ और गिबोन में गिबोन का पिता
यीएल रहता था, जिसकी पत्नी का नाम
माका था। ३६ उसका जेठा पुत्र अब्दोन
हुआ, फिर सूर, कीश, बाल, नेर, नादाब।
३७ गदोर, अह्यो, जकर्याह और
मिल्कोत। ३८ और मिल्कोत से शिमाम
उत्पन्न हुआ और ये भी अपने भाइयों के
साम्हने अपने भाइयों के संग यरूशलेम
में रहते थे। ३९ और नेर से कीश,
कीश से शाऊल, और शाऊल से योनातान,
मल्कीश, अबीनादाब और एशबाल उत्पन्न
हुए। ४० और योनातान का पुत्र मरी-
ब्बाल हुआ, और मरीब्बाल से मीका
उत्पन्न हुआ। ४१ और मीका के पुत्र
पीतोन, मेलेक, तह्रे* और अहाज थे।
४२ और अहाज से यारा और यारा से
आलेमेत, अजमावेत और जिम्री, और
जिम्री से मोसा। ४३ और मोसा से
बिना उत्पन्न हुआ और बिना का पुत्र
रपायाह हुआ, रपायाह का एलासा, और
एलासा का पुत्र आसेल हुआ। ४४ और
आसेल के छः पुत्र हुए जिनके ये नाम
थे, अर्थात् अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल,
शार्याह, ओबद्याह और हनान, आसेल
के ये ही पुत्र हुए ॥

* देखो ८.३५।

(शाऊल की मृत्यु और दाऊद के
राज्य का आरम्भ)

१० पलिश्ती इस्राएलियों से लड़े,
और इस्राएली पलिश्तियों के
साम्हने से भागे, और गिलबो नाम
पहाड़ पर मारे गए। २ और पलिश्ती
शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे
रहे, और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र
योनातान, अबीनादाब और मल्कीशू को
मार डाला। ३ और शाऊल के साथ
घमासान युद्ध होता रहा और धनुर्धारियों
ने उसे जा लिया, और वह उनके कारण
व्याकुल हो गया। ४ तब शाऊल ने
अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, अपनी
तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, कहीं ऐसा
न हो कि वे खतनारहित लोग आकर
मेरी ठट्ठा करें, परन्तु उसके हथियार
ढोनेवाले ने भयभीत होकर ऐसा करने से
इनकार किया, तब शाऊल अपनी तलवार
खड़ी करके उस पर गिर पड़ा।
५ यह देखकर कि शाऊल मर गया है
उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी तल-
वार पर आप गिरकर मर गया। ६ यों
शाऊल और उसके तीनों पुत्र, और उसके
घराने के सब लोग एक संग मर गए।
७ यह देखकर कि वे भाग गए, और
शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई
में रहनेवाले सब इस्राएली मनुष्य अपने
अपने नगर को छोड़कर भाग गए, और
पलिश्ती आकर उन में रहने लगे ॥
८ दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं
के माल को लूटने आए, तब उनको
शाऊल और उसके पुत्र गिलबो पहाड़
पर पड़े हुए मिले। ९ तब उन्हों ने
उसके वस्त्रों को उतार उसका सिर और

हथियार ले लिया और पलिश्तियो के
देश के सब स्थानो में दूतो को इसलिये
भेजा कि उनके देवताओ और साधारण
लोगो में यह शुभ समाचार देते जाए।
१० तब उन्हो ने उसके हथियार अपने
देवालय मे रखे, और उसकी खोपडी
को दागोन के मन्दिर में लटका
दिया। ११ जब गिलाद के याबेश के
सब लोगो ने सुना कि पलिश्तियो ने
शाऊल से क्या क्या किया है। १२ तब
सब शूरवीर चले और शाऊल और
उसके पुत्रो की लोथे उठाकर याबेश
में ले आए, और उनकी हड्डियो को
याबेश मे एक बाज वृक्ष के तले गाड
दिया और सात दिन तक अनशन किया ॥

१३ यो शाऊल उस विश्वासघात के
कारण मर गया, जो उस ने यहोवा से
किया था, क्योंकि उस ने यहोवा का
वचन टाल दिया था, फिर उस ने भूतसिद्धि
करनेवाली से पूछकर सम्मति ली थी।
१४ उस ने यहोवा से न पूछा था, इसलिये
यहोवा ने उसे मारकर राज्य को यिशै
के पुत्र दाऊद को दे दिया ॥

११ तब सब इस्राएली दाऊद के
पास हेब्रोन में इकट्ठे होकर
कहने लगे, सुन, हम लोग और तू एक
ही हड्डी और मास है। २ अगले दिनो
मे जब शाऊल राजा था, तब भी इस्राएलियो
का अगुआ तू ही था, और तेरे परमेश्वर
यहोवा ने तुझ से कहा, कि मेरी प्रजा
इस्राएल का चरवाहा, और मेरी प्रजा
इस्राएल का प्रधान, तू ही होगा। ३ इस-
लिये सब इस्राएली पुरनिये हेब्रोन मे
राजा के पास आए, और दाऊद ने उनके
साथ हेब्रोन मे यहोवा के साम्हने वाचा
बान्धी, और उन्हो ने यहोवा के वचन
के अनुसार, जो उस ने शमूएल से कहा
था, इस्राएल का राजा होने के लिये
दाऊद का अभिषेक किया ॥

४ तब सब इस्राएलियो समेत दाऊद
यरूशलेम गया, जो यबूस भी कहलाता
था, और वहा यबूसी नाम उस देश के
निवासी रहते थे। ५ तब यबूस के निवासियो
ने दाऊद से कहा, तू यहा आने नही
पाएगा। तौभी दाऊद ने सिय्योन नाम
गढ को ले लिया, वही दाऊदपुर भी
कहलाता है। ६ और दाऊद ने कहा, जो
कोई यबूसियो को सब से पहिले मारेगा,
वह मुख्य सेनापति होगा, तब सरूयाह
का पुत्र योआब सब से पहिले चढ गया,
और सेनापति बन गया। ७ और दाऊद
उस गढ मे रहने लगा, इसलिये उसका
नाम दाऊदपुर पडा। ८ और उस ने
नगर के चारो ओर, अर्थात् मिल्लो से
लेकर चारो ओर शहरपनाह बनवाई, और
योआब ने शेष नगर के खण्डहरो को
फिर बसाया*। ९ और दाऊद की प्रतिष्ठा
अधिक बढती गई और सेनाओ का यहोवा
उसके संग था ॥

(दाऊद के शूरवीर)

१० यहोवा ने इस्राएल के विषय जो
वचन कहा था, उसके अनुसार दाऊद के
जिन शूरवीरो ने सब इस्राएलियो समेत
उसके राज्य में उसके पक्ष में होकर,
उसे राजा बनाने को जोर दिया, उन में
से मुख्य पुरुष ये हैं। ११ दाऊद के
शूरवीरो की नामावली† यह है, अर्थात्
किसी हक्मोनी का पुत्र याशोबाम जो

* मूल में—बाकी नगर जिलाता था।
† मूल में—गिनती।

तीसो मे मुख्य था, उस ने तीन सौ पुरुषो
पर भाला चला कर, उन्हे एक ही समय
मे मार डाला। १२ उसके बाद अहोही
दोदो का पुत्र एलीआजर जो तीनो महान
वीरो मे से एक था। १३ वह पसदम्मीम
मे जहा जव का एक खेत था, दाऊद
के सग रहा जब पलिश्ती वहा युद्ध
करने को इकट्ठे हुए थे, और लोग पलि-
श्तियो के साम्हने से भाग गए। १४ तब
उन्हो ने उस खेत के बीच मे खडे होकर
उसकी रक्षा की, और पलिश्तियो को
मारा, और यहोवा ने उनका बडा उद्धार
किया ॥

१५ और तीसो मुख्य पुरुषो मे से तीन
दाऊद के पास चट्टान को, अर्थात् अदुल्लाम
नाम गुफ़ा मे गए, और पलिश्तियो की
छावनी रपाईम नाम तराई मे पडी हुई
थी। १६ उस समय दाऊद गढ मे था,
और उस समय पलिश्तियो की एक
चौकी बेतलेहेम मे थी। १७ तब दाऊद
ने बडी अभिलाषा के साथ कहा, कौन
मुझे बेतलेहेम के फाटक के पास के कुए
का पानी पिलाएगा। १८ तब वे तीनो
जन पलिश्तियो की छावनी मे टूट पडे
और बेतलेहेम के फाटक के कुए से पानी
भरकर दाऊद के पास ले आए, परन्तु
दाऊद ने पीने से इनकार किया और
यहोवा के साम्हने अर्घ करके उण्डेला।
१९ और उस ने कहा, मेरा परमेश्वर
मुझ से ऐसा करना दूर रखे, क्या मै
इन मनुष्यो का लोहू पीऊ जिन्हो ने अपने
प्राणो पर खेला है? ये तो अपने प्राण
पर खेलकर उसे ले आए है। इसलिये
उस ने वह पानी पीने से इनकार
किया। इन तीन वीरो ने ये ही काम
किए ॥

२० और अबीशै जो योआब का भाई
था, वह तीनो में मुख्य था। और उस ने
अपना भाला चलाकर तीन सौ को मार
डाला और तीनो मे नामी हो गया।
२१ दूसरी श्रेणी के तीनो मे वह
अधिक प्रतिष्ठित था, और उनका प्रधान
हो गया, परन्तु मुख्य तीनो के पद को न
पहुचा ॥

२२ यहोयादा का पुत्र बनायाह था, जो
कबजेल के एक वीर का पुत्र था, जिस ने
बडे बडे काम किए थे, उस ने सिह समान
दो मोआबियो को मार डाला, और
हिमऋतु * मे उस ने एक गडहे मे उतर के
एक सिह को मार डाला। २३ फिर
उस ने एक डीलवाले अर्थात् पाच हाथ
लम्बे मिस्री पुरुष को मार डाला, वह मिस्री
हाथ मे जुलाहो का ढेका सा एक भाला
लिए हुए था, परन्तु बनायाह एक लाठी
ही लिए हुए उसके पास गया, और मिस्री
के हाथ से भाले को छीनकर उसी के भाले
से उसे घात किया। २४ ऐसे ऐसे काम
करके यहोयादा का पुत्र बनायाह उन
तीनो वीरो मे नामी हो गया। २५ वह
तो तीसो से अधिक प्रतिष्ठित था, परन्तु
मुख्य तीनो के पद को न पहुचा। उसको
दाऊद ने अपनी निज सभा मे सभासद
किया ॥

२६ फिर दलो के वीर ये थे, अर्थात्
योआब का भाई असाहेल, बेतलेहेमी
दोदो का पुत्र एल्हानान। २७ हरोरी
शम्मोत, पलोनी हेलेस। २८ तकोई
इक्केश का पुत्र ईरा, अनातोती अबीएजेर।
२९ सिब्बके होसाती, अहोही ईलै।
३० महरै नतोपाई, एक और नतोपाई

* हिमऋतु वा बर्फ़ाला मौसम।

वाना का पुत्र हेलेद। ३१ बिन्यामीनियो
के गिबा नगरवासी रीबै का पुत्र इतै,
पिरातोनी बनायाह। ३२ गाशके नालो के
पास रहनेवाला हूरै, अराबावासी अबीएल।
३३ बहूरीमी अजमावेत, शल्बोनी
एल्यहबा। ३४ गीजोई हाशेम के पुत्र,
फिर हरारी शागे का पुत्र योनातान।
३५ हरारी सकार का पुत्र अहीआम,
ऊर का पुत्र एलीपाल। ३६ मकेराई
हेपेर, पलोनी अहिय्याह। ३७ कर्मेली
हेस्रो, एज्बै का पुत्र नारै। ३८ नातान
का भाई योएल, हग्री का पुत्र मिभार।
३९ अम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै जो
सरूयाह के पुत्र योआब का हथियार
ढोनेवाला था। ४० येतेरी ईरा और
गारेब। ४१ हित्ती ऊरिय्याह, अहलै का
पुत्र जाबाद। ४२ तीस पुरुषो समेत रूबेनी
शीजा का पुत्र अदीना जो रूबेनियो का
मुखिया था। ४३ माका का पुत्र हानान,
मेतेनी योशापात। ४४ अशतारोती
उज्जिय्याह, अरोएरी होताम के पुत्र शामा
और यीएल। ४५ शिम्री का पुत्र यदीएल
और उसका भाई तीसी, योहा। ४६ मह-
वीमी एलीएल, एलनाम के पुत्र यरीबै
और योशव्याह, ४७ मोआबी यित्मा,
एलीएल, ओबेद और मसोबाई यासीएल॥

(दाऊद के अनुचर)

१२ जब दाऊद सिकलग में कीश
के पुत्र शाऊल के डर के मारे
छिपा * रहता था, तब ये उसके पास
वहा आए, और ये उन वीरो में से थे
जो युद्ध में उसके सहायक थे। २ ये
धनुर्धारी थे, जो दाहिने-बायें, दोनो हाथो
से गोफन के पत्थर और धनुष के तीर
चला सकते थे, और ये शाऊल के भाइयो
में से बिन्यामीनी थे। ३ मुख्य तो अही-
एजेर और दूसरा योआश था जो गिबा-
वासी शमाआ का पुत्र था, फिर अजमावेत
के पुत्र यजीएल और पेलेत, फिर बराका
और अनातोती येहू। ४ और गिबोनी
यिशमायाह जो तीसो मे से एक वीर
और उनके ऊपर भी था, फिर यिर्मयाह,
यहजीएल, योहानान, गदेरावासी योजा-
वाद। ५ एलूजै, यरीमोत, बाल्याह,
शमर्याह, हारूपी शपत्याह। ६ एल्काना,
यिशिय्याह, अजरेल, योएजेर, याशोबाम,
जो सब कोरहवशी थे। ७ और
गदोरवासी यरोहाम के पुत्र योएला और
जबद्याह॥

८ फिर जब दाऊद जगल के गढ मे
रहता था, तब ये गादी जो शूरवीर थे,
और युद्ध विद्या सीखे हुए और ढाल
और भाला काम मे लानेवाले थे, और
उनके मुह सिंह के से और वे पहाडी
मृग के समान वेग से दौडनेवाले थे, ये
और गादियो से अलग होकर उसके पास
आए। ९ अर्थात् मुख्य तो एजेर, दूसरा
ओबद्याह, तीसरा एलीआब। १० चौथा
मिश्मन्ना, पाचवा यिर्मयाह। ११ छठा
अत्तै, सातवा एलीएल। १२ आठवा
योहानान, नौवा एलजाबाद। १३ दसवा
यिर्मयाह और ग्यारहवा मकबन्नै था।
१४ ये गादी मुख्य योद्धा थे, उन में से
जो सब से छोटा था वह तो एक सौ
के ऊपर, और जो सब से बडा था, वह
हजार के ऊपर था। १५ ये ही वे हैं,
जो पहिले महीने में जब यरदन नदी
सब कडाडो के ऊपर ऊपर बहती थी,
तब उसके पार उतरे, और पूर्व और

* मूल में—बन्द।

पश्चिम दोनो ओर के सब तराई के
रहनेवालो को भगा दिया ।।
१६ और कई एक बिन्यामीनी और
यहूदी भी दाऊद के पास गढ मे आए ।
१७ उन से मिलने को दाऊद निकला
और उन से कहा, यदि तुम मेरे पास
मित्रभाव से मेरी सहायता करने को आए
हो, तब तो मेरा मन तुम से लगा रहेगा,
परन्तु जो तुम मुझे धोखा देकर मेरे
शत्रुओ के हाथ पकडवाने आए हो, तो
हमारे पितरो का परमेश्वर इस पर
दृष्टि करके डाटे, क्योकि मेरे हाथ से
कोई उपद्रव नही हुआ । १८ अब आत्मा
अमासै मे समाया, जो तीसो वीरो मे
मुख्य था, और उस ने कहा, हे दाऊद !
हम तेरे है, हे यिशै के पुत्र ! हम तेरी
ओर के है, तेरा कुशल ही कुशल हो
और तेरे सहायको का कुशल हो, क्योकि
तेरा परमेश्वर तेरी सहायता किया करता
है । इसलिये दाऊद ने उनको रख लिया,
और अपने दल के मुखिये ठहरा दिए ।।
१९ फिर कुछ मनश्शेई भी उस समय
दाऊद के पास भाग गए, जब वह पलिश्तियो
के साथ होकर शाऊल से लडने को गया,
परन्तु उसकी कुछ सहायता न की, क्योकि
पलिश्तियो के सरदारो ने सम्मति लेने पर
यह कहकर उसे विदा किया, कि वह
हमारे सिर कटवाकर अपने स्वामी शाऊल
से फिर मिल जाएगा । २० जब वह
सिक्लग को जा रहा था, तब ये मनश्शेई
उसके पास भाग गए, अर्थात् अदना,
योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद,
एलीहू और सिल्लतै जो मनश्शे के हजारो
के मुखिये थे । २१ इन्हो ने लुटेरो के
दल के विरुद्ध दाऊद की सहायता की,
क्योकि ये सब शूरवीर थे, और सेना के
प्रधान भी बन गए । २२ वरन प्रतिदिन
लोग दाऊद की सहायता करने को उसके
पास आते रहे, यहा तक कि परमेश्वर की
सेना के समान एक बडी सेना बन गई ।।
२३ फिर लोग लडने के लिये हथियार
बान्धे हुए हेब्रोन मे दाऊद के पास इसलिये
आए कि यहोवा के वचन के अनुसार
शाऊल का राज्य उसके हाथ मे कर दे
उनके मुखियो की गिनती यह है ।
२४ यहूदा के ढाल और भाला लिए
हुए छ हजार आठ सौ हथियारबन्ध
लडने को आए । २५ शिमोनी सात हजार
एक सौ तैयार शूरवीर लडने को आए ।
२६ लेवीय चार हजार छ सौ आए ।
२७ और हारून के घराने का प्रधान
यहोयादा था, और उसके साथ तीन
हजार सात सौ आए । २८ और सादोक
नाम एक जवान वीर भी आया, और
उसके पिता के घराने के बाईस प्रधान
आए । २९ और शाऊल के भाई
बिन्यामीनियो मे से तीन हजार आए,
क्योकि उस समय तक आधे बिन्यामीनियो
से अधिक शाऊल के घराने का पक्ष करते
रहे । ३० फिर एप्रैमियो मे से बडे वीर
और अपने अपने पितरो के घरानो मे
नामी पुरुष बीस हजार आठ सौ आए ।
३१ और मनश्शे के आधे गोत्र मे से
दाऊद को राजा बनाने के लिये अठारह
हजार आए, जिनके नाम बताए गए
थे । ३२ और इस्साकारियो मे से जो
समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को
क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो
सौ थे, और उनके सब भाई उनकी
आज्ञा मे रहते थे । ३३ फिर जबूलून
मे से युद्ध के सब प्रकार के हथियार लिए
हुए लडने को पांति बान्धनेवाले योद्धा

पचास हजार आए, वे पांति बान्धनेवाले
थे और चंचल न थे*। ३४ फिर
नप्ताली में से प्रधान तो एक हजार,
और उनके संग ढाल और भाला लिए
सैंतीस हजार आए। ३५ और दानियों
में से लड़ने के लिये पांति बान्धनेवाले
अट्ठाईस हजार छः सौ आए। ३६ और
आशेर में से लड़ने को पांति बान्धनेवाले
चालीस हजार योद्धा आए। ३७ और
यरदन पार रहनेवाले रूबेनी, गादी और
मनश्शे के आधे गोत्रियों में से युद्ध के
सब प्रकार के हथियार लिए हुए एक
लाख बीस हजार आए। ३८ ये सब
युद्ध के लिये पांति बान्धनेवाले दाऊद को
सारे इस्राएल का राजा बनाने के लिये
हेब्रोन में सच्चे मन से आए, और और सब
इस्राएली भी दाऊद को राजा बनाने के
लिये सहमत थे। ३९ और वे वहां तीन
दिन दाऊद के संग खाते पीते रहे, क्योंकि
उनके भाइयों ने उनके लिये तैयारी
की थी। ४० और जो उनके निकट
वरन इस्साकार, जबूलून और नप्ताली
तक रहते थे, वे भी गदहों, ऊंटों, खच्चरों
और बैलों पर मैदा, अंजीरों और किशमिश
की टिकियां, दाखमधु और तेल आदि
भोजनवस्तु लादकर लाए, और बैल और
भेड़-बकरियां बहुतायत से लाए, क्योंकि
इस्राएल में आनन्द मनाया जारहा था॥

(पवित्र सन्दूक के यरूशलेम में पहुंचाए जाने का वर्णन)

१३ और दाऊद ने सहस्रपतियों,
शतपतियों और सब प्रधानों से
सम्मति ली। २ तब दाऊद ने इस्राएल
की सारी मण्डली से कहा, यदि यह
तुम को अच्छा लगे और हमारे परमेश्वर
की इच्छा हो, तो इस्राएल के सब देशों
में जो हमारे भाई रह गए हैं और उनके
साथ जो याजक और लेवीय अपने
अपने चराईवाले नगरों में रहते हैं,
उनके पास भी यह कहला भेजें कि
हमारे पास इकट्ठे हो जाओ। ३ और
हम अपने परमेश्वर के सन्दूक को अपने
यहां ले आएं, क्योंकि शाऊल के दिनों
में हम उसके समीप नहीं जाते थे।
४ और समस्त मण्डली ने कहा, हम
ऐसा ही करेंगे, क्योंकि यह बात उन
सब लोगों की दृष्टि में उचित मालूम
हुई॥

५ तब दाऊद ने मिस्र के शीहोर से
ले हमात की घाटी तक के सब इस्राएलियों
को इसलिये इकट्ठा किया, कि परमेश्वर
के सन्दूक को किर्यत्यारीम से ले आए।
६ तब दाऊद सब इस्राएलियों को संग
लेकर बाला को गया, जो किर्यत्यारीम
भी कहलाता और यहूदा के भाग में था,
कि परमेश्वर यहोवा का सन्दूक वहां से
ले आए, वह तो करूबों पर विराजनेवाला
है, और उसका नाम भी यही लिया
जाता है। ७ तब उन्हों ने परमेश्वर का
सन्दूक एक नई गाड़ी पर चढ़ाकर,
अबीनादाब के घर से निकाला, और
उज्जा और अह्यो उस गाड़ी को हांकने
लगे। ८ और दाऊद और सारे इस्राएली
परमेश्वर के साम्हने तन मन से गीत
गाते और वीणा, सारंगी, डफ, झांझ
और तुरहियां बजाते थे॥

९ जब वे कीदोन के खलिहान तक
आए, तब उज्जा ने अपना हाथ सन्दूक
थामने को बढ़ाया, क्योंकि बैलों ने ठोकर
खाई थी। १० तब यहोवा का कोप

* मूल में—मन और मन के बिना।

उज्जा पर भडक उठा, और उस ने उस
को मारा क्योंकि उस ने सन्दूक पर हाथ
लगाया था, वह वही परमेश्वर के साम्हने
मर गया। ११ तब दाऊद अप्रसन्न हुआ,
इसलिये कि यहोवा उज्जा पर टूट पडा
था, और उस ने उस स्थान का नाम
पेरेसुज्जा* रखा, यह नाम आज तक
बना है। १२ और उस दिन दाऊद
परमेश्वर से डरकर कहने लगा, मैं
परमेश्वर के सन्दूक को अपने यहा कैसे
ले आऊ? १३ तब दाऊद ने सन्दूक को
अपने यहा दाऊदपुर मे न लाया, परन्तु
ओबेदेदोम नाम गती के यहा ले गया।
१४ और परमेश्वर का सन्दूक ओबेदेदोम
के यहा उसके घराने के पास तीन महीने
तक रहा, और यहोवा ने ओबेदेदोम के
घराने पर और जो कुछ उसका था
उस पर भी आशीष दी ॥

१४ और सोर के राजा हीराम
ने दाऊद के पास दूत भेजे, और
उसका भवन बनाने को देवदारु की लकडी
और राज और बढई भेजे। २ और
दाऊद को निश्चय हो गया कि यहोवा
ने मुझे इस्राएल का राजा करके स्थिर
किया, क्योंकि उसकी प्रजा इस्राएल के
निमित्त उसका राज्य अत्यन्त बढ गया था ॥

३ और यरूशलेम में दाऊद ने और
स्त्रिया व्याह ली, और उन मे और
बेटे-बेटिया उत्पन्न हुई। ४ उसके जो
सन्तान यरूशलेम में उत्पन्न हुए, उनके
नाम ये है अर्थात् शम्मू, शोबाव, नातान,
सुलैमान, ५ यिभार, एलीशू, एलपेलेत,
६ नोगह, नेपेग, यापी, एलीशामा,
७ बेल्यादा और एलीपेलेद ॥

* अर्थात् उज्जा पर टूट पडना।

८ जब पलिश्तियो ने सुना कि पूरे
इस्राएल का राजा होने के लिये दाऊद
का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्तियो
ने दाऊद की खोज मे चढाई की, यह
सुनकर दाऊद उनका साम्हना करने को
निकल गया। ९ और पलिश्ती आए और
रपाईम नाम तराई मे धावा मारा।
१० तब दाऊद ने परमेश्वर से पूछा,
क्या मै पलिश्तियो पर चढाई करु?
और क्या तू उन्हे मेरे हाथ मे कर देगा?
यहोवा ने उस से कहा, चढाई कर, क्योंकि
मै उन्हे तेरे हाथ मे कर दूगा। ११ इस-
लिये जब वे बालपरासीम को आए, तब
दाऊद ने उन को वही मार लिया, तब
दाऊद ने कहा, परमेश्वर मेरे द्वारा मेरे
शत्रुओ पर जल की धारा की नाई टूट
पडा है। इस कारण उस स्थान का नाम
बालपरासीम* रखा गया। १२ वहा वे
अपने देवताओ को छोड गए, और दाऊद
की आज्ञा से वे आग लगाकर फूक दिए
गए ॥

१३ फिर दूसरी बार पलिश्तियो ने
उसी तराई मे धावा मारा। १४ तब
दाऊद ने परमेश्वर से फिर पूछा, और
परमेश्वर ने उस से कहा, उनका पीछा
मत कर, उन से मुडकर तूत के वृक्षो के
साम्हने से उन पर छापा मार। १५ और
जब तूत के वृक्षो की फुनगियो मे से सेना
के चलने की सी आहट तुझे सुन पडे,
तब यह जानकर युद्ध करने को निकल
जाना कि परमेश्वर पलिश्तियो की सेना
को मारने के लिये तेरे आगे जा रहा
है। १६ परमेश्वर की इस आज्ञा के
अनुसार दाऊद ने किया, और इस्राएलियो

* अर्थात् टूट पडने का स्थान।

ने पलिश्तियों की सेना को गिबोन से
लेकर गेजेर तक मार लिया। १७ तब
दाऊद की कीर्त्ति सब देशों में फैल गई,
और यहोवा ने सब जातियों के मन में
उसका भय भर दिया॥

१५ तब दाऊद ने दाऊदपुर में
भवन बनवाए, और परमेश्वर
के सन्दूक के लिये एक स्थान तैयार करके
एक तम्बू खड़ा किया। २ तब दाऊद
ने कहा, लेवियों को छोड़ और किसी को
परमेश्वर का सन्दूक उठाना नहीं चाहिये,
क्योंकि यहोवा ने उनको इसी लिये
चुना है कि वे परमेश्वर का सन्दूक उठाएं
और उसकी सेवा टहल सदा किया करें।
३ तब दाऊद ने सब इस्राएलियों को
यरूशलेम में इसलिये इकट्ठा किया कि
यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुंचाए,
जिसे उस ने उसके लिये तैयार किया
था। ४ इसलिये दाऊद ने हारून के
सन्तानों और लेवियों को इकट्ठा किया
५ अर्थात् कहातियों में से ऊरीएल नाम
प्रधान को और उसके एक सौ बीस
भाइयों को, ६ मरारियों में से असायाह
नाम प्रधान को और उसके दो सौ बीस
भाइयों को, ७ गेर्शोमियों में से योएल
नाम प्रधान को और उसके एक सौ
तीस भाइयों को, ८ एलीसापानियों में
से शमायाह नाम प्रधान को और उसके
दो सौ भाइयों को, ९ हेब्रोनियों में से
एलीएल नाम प्रधान को और उसके
अस्सी भाइयों को, १० और उज्जी-
एलियों में से अम्मीनादाब नाम प्रधान
को और उसके एक सौ बारह भाइयों
को। ११ तब दाऊद ने सादोक और
एब्यातार नाम याजकों को, और ऊरीएल,
असायाह, योएल, शमायाह, एलीएल और
अम्मीनादाब नाम लेवियों को बुलवाकर
उन से कहा, १२ तुम तो लेवीय पितरों
के घरानों में मुख्य पुरुष हो, इसलिये
अपने भाइयों समेत अपने अपने को पवित्र
करो, कि तुम इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा का सन्दूक उस स्थान पर पहुंचा
सको जिसको मैं ने उसके लिये तैयार
किया है। १३ क्योंकि पहिली बार तुम
ने उसको न उठाया इस कारण हमारा
परमेश्वर यहोवा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि
हम उसकी खोज में नियम के अनुसार न
लगे थे। १४ तब याजकों और लेवियों
ने अपने अपने को पवित्र किया, कि
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का सन्दूक
ले जा सकें। १५ तब उस आज्ञा के
अनुसार जो मूसा ने यहोवा का वचन
सुनकर दी थी, लेवियों ने सन्दूक को
डण्डों के बल अपने कन्धों पर उठा लिया॥
१६ और दाऊद ने प्रधान लेवियों
को आज्ञा दी, कि अपने भाई गवैयों को
बाजे अर्थात् सारंगी, वीणा और झांझ
देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊंचे
स्वर से गाने के लिये नियुक्त करें।
१७ तब लेवियों ने योएल के पुत्र हेमान
को, और उसके भाइयों में से बेरेक्याह
के पुत्र आसाप को, और अपने भाई
मरारियों में से कूशायाह के पुत्र एतान
को ठहराया। १८ और उनके साथ
उन्हों ने दूसरे पद के अपने भाइयों को
अर्थात् जकर्याह, बेन, याजीएल,
शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब,
बनायाह, मासेयाह, मत्तित्याह, एलीपलेह,
मिकनेयाह, और ओबेदेदोम और यीएल
को जो द्वारपाल थे ठहराया। १९ यों
हेमान, आसाप और एतान नाम के

गवैये तो पीतल की झाझ बजा बजाकर
राग चलाने को, २० और जकर्याह,
अजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी,
एलीआब, मासेयाह, और बनायाह, अला-
मोत, नाम राग मे सारगी बजाने को,
२१ और मत्तित्याह, एलीपलेह, मिक्ने-
याह ओबेदेदोम, यीएल और अजज्याह
वीणा खर्ज मे छेडने को ठहराए गए।
२२ और राग उठाने का अधिकारी
कनन्याह नाम लेवियो का प्रधान था,
वह राग उठाने के विषय शिक्षा देता
था, क्योकि वह निपुण था।
२३ और बेरेक्याह और एलकाना सन्दूक
के द्वारपाल थे। २४ और शबन्याह,
योशापात, नतनेल, अमासै, जकर्याह,
बनायाह और एलीएजेर नाम याजक
परमेश्वर के सन्दूक के आगे आगे तुरहिया
बजाते हुए चले, और ओबेदेदोम और
यहिय्याह उसके द्वारपाल थे॥
२५ और दाऊद और इस्राएलियो के
पुरनिये और सहस्त्रपति सब मिलकर
यहोवा की वाचा का सन्दूक ओबेदेदोम
के घर से आनन्द के साथ ले आने के लिए
गए। २६ जब परमेश्वर ने लेवियो
की सहायता की जो यहोवा की वाचा
का सन्दूक उठानेवाले थे, तब उन्हो ने
सात बैल और सात मेढे बलि किए।
२७ दाऊद, और यहोवा की वाचा का
सन्दूक उठानेवाले सब लेवीय और गानेवाले
और गानेवालो के साथ राग उठानेवाले
का प्रधान कनन्याह, ये सब तो सन के
कपडे के बागे पहिने थे, और दाऊद
सन के कपडे का एपोद पहिने था।
२८ इस प्रकार सब इस्राएली यहोवा की
वाचा के सन्दूक को जयजयकार करते,
और नरसिगे, तुरहिया और झाझ बजाते
और सारगिया और वीणा बजाते हुए
ले चले। २९ जब यहोवा की वाचा का
सन्दूक दाऊदपुर मे पहुचा तब दाऊद
की बेटी मीकल ने खिडकी मे से झाककर
दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए
देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना॥

१६ तब परमेश्वर का सन्दूक ले
आकर उस तम्बू मे रखा गया
जो दाऊद ने उसके लिये खडा कराया
था, और परमेश्वर के साम्हने होमबलि
और मेलबलि चढाए गए। २ जब दाऊद
होमबलि और मेलबलि चढा चुका, तब
उस ने यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद
दिया। ३ और उस ने क्या पुरुष, क्या
स्त्री, सब इस्राएलियो को एक एक रोटी
और एक एक टुकडा मास और किशमिश
की एक एक टिकिया बटवा दी॥
४ तब उस ने कई लेवियो को इसलिये
ठहरा दिया, कि यहोवा के सन्दूक के
साम्हने सेवा टहल किया करे, और
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की चर्चा
और उसका धन्यवाद और स्तुति किया
करे। ५ उनका मुखिया तो आसाप
था, और उसके नीचे जकर्याह था, फिर
यीएल, शमीरामोत, यहीएल, मत्तित्याह,
एलीआब बनायाह, ओबेदेदोम और यीएल
थे, ये तो सारगिया और वीणाए लिये
हुए थे, और आसाप झाझ पर राग
बजाता था। ६ और बनायाह और यह-
जीएल नाम याजक परमेश्वर की वाचा
के सन्दूक के साम्हने नित्य तुरहिया बजाने
के लिए नियुक्त किए गए॥
७ तब उसी दिन दाऊद ने यहोवा
का धन्यवाद करने का काम आसाप और
उसके भाइयो को सौंप दिया।

८ यहोवा का धन्यवाद करो, उस से प्रार्थना करो,
देश देश में उसके कामों का प्रचार करो।
९ उसका गीत गाओ, उसका भजन करो,
उसके सब आश्चर्य-कर्मों का ध्यान करो।
१० उसके पवित्र नाम पर घमण्ड करो,
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो।
११ यहोवा और उसकी सामर्थ की खोज करो,
उसके दर्शन के लिए लगातार खोज करो।
१२ उसके किए हुए आश्चर्यकर्म,
उसके चमत्कार और न्यायवचन स्मरण करो।
१३ हे उसके दास इस्राएल के वंश,
हे याकूब की सन्तान तुम जो उसके चुने हुए हो!
१४ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है,
उसके न्याय के काम पृथ्वी भर में होते हैं।
१५ उसकी वाचा को सदा स्मरण रखो,
यह वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहरा* दिया।
१६ वह वाचा उस ने इब्राहीम के साथ बान्धी,
और उसी के विषय उस ने इसहाक से शपथ खाई,
१७ और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके और इस्राएल के लिये सदा की वाचा बान्धकर यह कहकर दृढ़ किया, कि
१८ मैं कनान देश तुझी को दूंगा,
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा।
१९ उस समय तो तुम गिनती में थोड़े थे,
वरन बहुत ही थोड़े और उस देश में परदेशी थे।
२० और वे एक जाति से दूसरी जाति में,
और एक राज्य से दूसरे में फिरते तो रहे,
२१ परन्तु उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया,
और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था, कि
२२ मेरे अभिषिक्तों को मत छुओ,
और न मेरे नबियों की हानि करो।
२३ हे समस्त पृथ्वी के लोगो यहोवा का गीत गाओ।
प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।
२४ अन्यजातियों में उसकी महिमा का,
और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्य-कर्मों का वर्णन करो।
२५ क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है,
वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।
२६ क्योंकि देश देश के सब देवता मूर्तियां ही हैं,

* मूल में—जिसकी आज्ञा उस ने हजार पीढ़ियों के लिये दी।

परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को
वनाया है।
२७ उसके चारो ओर विभव और
ऐश्वर्य है,
उसके स्थान मे सामर्थ और
आनन्द है।
२८ हे देश देश के कुलो यहोवा का
गुणानुवाद करो,
२९ यहोवा की महिमा और सामर्थ
को मानो।
यहोवा के नाम की महिमा ऐसी
मानो जो उसके नाम के योग्य है।
भेट लेकर उसके सम्मुख आओ,
पवित्रता से शोभायमान होकर
यहोवा को दण्डवत करो॥
३० हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके
साम्हने थरथराओ! जगत
ऐसा स्थिर है, कि वह टलने
का नही।
३१ आकाश आनन्द करे और पृथ्वी
मगन हो, और जाति जाति मे
लोग कहे, कि यहोवा राजा
३२ हुआ है। समुद्र और उस
मे की सव वस्तुए गरज
उठें, मैदान और जो कुछ उस
मे है सो प्रफुल्लित हो।
३३ उसी समय वन के वृक्ष यहोवा के
साम्हने जयजयकार करे,
क्योकि वह पृथ्वी का न्याय करने
को आनेवाला है।
३४ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योकि
वह भला है,
उसकी करुणा सदा की है।
३५ और यह कहो, कि हे हमारे
उद्धार करनेवाले परमेश्वर
हमारा उद्धार कर,
और हम को इकट्ठा करके अन्य-
जातियो मे छुडा,
कि हम तेरे पवित्र नाम का
धन्यवाद करे,
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे
विषय बडाई करे।
३६ अनादिकाल मे अनन्तकाल तक
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
धन्य है।
तव सव प्रजा ने आमीन कहा
और यहोवा की स्तुति की॥
३७ तव उस ने वहा अर्थात् यहोवा
की वाचा के सन्दूक के साम्हने आसाप
और उसके भाइयो को छोड दिया, कि
प्रतिदिन के प्रयोजन के अनुसार वे सन्दूक
के साम्हने नित्य सेवा टहल किया करे।
३८ और अडसठ भाइयो समेत ओवेदेदोम
को, और द्वारपालो के लिये यदूतून के पुत्र
ओवेदेदोम और होसा को छोड दिया।
३९ फिर उस ने सादोक याजक और
उसके भाई याजको को यहोवा के निवास
के साम्हने, जो गिवोन के ऊचे स्थान मे
था, ठहरा दिया, ४० कि वे नित्य सवेरे
और साझ को होमवलि की वेदी पर
यहोवा को होमवलि चढाया करे, और उन
सव के अनुसार किया करे, जो यहोवा
की व्यवस्था मे लिखा है, जिसे उस ने
इस्राएल को दिया था। ४१ और उनके
सग उस ने हेमान और यदूतून और
दूसरो को भी जो नाम लेकर चुने गए
थे ठहरा दिया, कि यहोवा की सदा की
करुणा के कारण उसका धन्यवाद करे।
४२ और उनके सग उस ने हेमान और
यदूतून को वजानेवालो के लिये तुरहिया
और झाझे और परमेश्वर के गीत गाने
के लिये वाजे दिए, और यदूतून के वेटो

को फाटक की रखवाली करने को ठहरा
दिया। ४३ निदान प्रजा के सब लोग
अपने अपने घर चले गए, और दाऊद
अपने घराने को आशीर्वाद देने लौट
गया ॥

(दाऊद का मन्दिर बनाने की इच्छा करना और यहोवा का दाऊद के वंश में सनातन राज्य स्थिर करने का वचन देना।)

१७ जब दाऊद अपने भवन में
रहने लगा, तब दाऊद ने नातान
नबी से कहा, देख, मैं तो देवदारु के
बने हुए घर में रहता हूं, परन्तु यहोवा
की वाचा का सन्दूक तम्बू में रहता है।
२ नातान ने दाऊद से कहा, जो कुछ
तेरे मन में हो उसे कर, क्योंकि परमेश्वर
तेरे संग है ॥

३ उसी दिन रात को परमेश्वर का
यह वचन नातान के पास पहुंचा, जाकर
मेरे दास दाऊद से कह, ४ यहोवा यों
कहता है, कि मेरे निवास के लिये तू
घर बनवाने न पाएगा। ५ क्योंकि जिस
दिन से मैं इस्राएलियों को मिस्र से ले
आया, आज के दिन तक मैं कभी घर
में नहीं रहा, परन्तु एक तम्बू से दूसरे
तम्बू को और एक निवास से दूसरे
निवास को आया जाया करता हूं।
६ जहां जहां मैं ने सब इस्राएलियों के
बीच आना जाना किया, क्या मैं ने इस्राएल
के न्यायियों में से जिनको मैं ने अपनी
प्रजा की चरवाही करने को ठहराया
था, किसी से ऐसी बात कभी कही, कि
तुम लोगों ने मेरे लिये देवदारु का घर
क्यों नहीं बनवाया? ७ सो अब तू मेरे
दास दाऊद से ऐसा कह, कि सेनाओं का
यहोवा यों कहता है, कि मैं ने तो तुझ
को भेड़शाला से और भेड़-बकरियों के
पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से बुला
लिया, कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का
प्रधान हो जाए, ८ और जहां कहीं तू
आया और गया, वहां मैं तेरे संग
रहा, और तेरे सब शत्रुओं को तेरे साम्हने
से नष्ट किया है। अब मैं तेरे नाम
को पृथ्वी के बड़े बड़े लोगों के नामों
के समान बड़ा कर दूंगा। ९ और मैं
अपनी प्रजा इस्राएल के लिये एक स्थान
ठहराऊंगा, और उसको स्थिर करूंगा कि
वह अपने ही स्थान में बसी रहे और
कभी चलायमान न हो, और कुटिल
लोग उनको नाश न करने पाएंगे, जैसे
कि पहिले दिनों में करते थे, १० उस
समय भी जब मैं अपनी प्रजा इस्राएल के
ऊपर न्यायी ठहराता था, सो मैं तेरे
सब शत्रुओं को दबा दूंगा। फिर मैं
तुझे यह भी बताता हूं, कि यहोवा तेरा
घर बनाये रखेगा। ११ जब तेरी आयु
पूरी हो जायेगी और तुझे अपने पितरों
के संग जाना पड़ेगा, तब मैं तेरे बाद
तेरे वंश को जो तेरे पुत्रों में से होगा,
खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा।
१२ मेरे लिये एक घर वही बनाएगा,
और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर
रखूंगा। १३ मैं उसका पिता ठहरूंगा
और वह मेरा पुत्र ठहरेगा, और जैसे
मैं ने अपनी करुणा उस पर से जो तुझ
से पहिले था हटाई, वैसे मैं उस पर से
न हटाऊंगा, १४ वरन मैं उसको अपने
घर और अपने राज्य में सदैव स्थिर
रखूंगा और उसकी राजगद्दी सदैव अटल
रहेगी। १५ इन सब बातों और इस
दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद को
समझा दिया ॥

१६ तब दाऊद राजा भीतर जाकर
यहोवा के सम्मुख बैठा, और कहने लगा,
हे यहोवा परमेश्वर! मैं क्या हूं? और
मेरा घराना क्या है? कि तू ने मुझे
यहां तक पहुंचाया है? १७ और हे
परमेश्वर! यह तेरी दृष्टि में छोटी सी
बात हुई, क्योंकि तू ने अपने दास के
घराने के विषय भविष्य के बहुत दिनों
तक की चर्चा की है, और हे यहोवा
परमेश्वर! तू ने मुझे ऊंचे पद का मनुष्य
सा* जाना है। १८ जो महिमा तेरे दास
पर दिखाई गई है, उसके विषय दाऊद
तुझ से और क्या कह सकता है? तू
तो अपने दास को जानता है। १९ हे
यहोवा! तू ने अपने दास के निमित्त
और अपने मन के अनुसार यह बड़ा
काम किया है, कि तेरा दास उसको
जान ले। २० हे यहोवा! जो कुछ हम
ने अपने कानों से सुना है, उसके अनुसार
तेरे तुल्य कोई नहीं, और न तुझे छोड़
और कोई परमेश्वर है। २१ फिर तेरी
प्रजा इस्राएल के भी तुल्य कौन है?
वह तो पृथ्वी भर में एक ही जाति है,
उसे परमेश्वर ने जाकर अपनी निज प्रजा
करने को छुड़ाया, इसलिये कि तू बड़े
और डरावने काम करके अपना नाम
करे, और अपनी प्रजा के साम्हने से
जो तू ने मिस्र से छुड़ा ली थी, जाति
जाति के लोगों को निकाल दे। २२ क्योंकि
तू ने अपनी प्रजा इस्राएल को अपनी
सदा की प्रजा होने के लिये ठहराया,
और हे यहोवा! तू आप उसका परमेश्वर
ठहरा। २३ इसलिये, अब हे यहोवा,
तू ने जो वचन अपने दास के और उसके
घराने के विषय दिया है, वह सदैव अटल
रहे, और अपने वचन के अनुसार ही
कर। २४ और तेरा नाम सदैव अटल
रहे, और यह कहकर तेरी बड़ाई सदा
की जाए, कि सेनाओं का यहोवा इस्राएल
का परमेश्वर है वरन वह इस्राएल ही
के लिये परमेश्वर है, और तेरा दास
दाऊद का घराना तेरे साम्हने स्थिर
रहे। २५ क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तू
ने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया
है कि मैं तेरा घर बनाए रखूंगा, इस
कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना
करने का हियाव हुआ है। २६ और
अब हे यहोवा तू ही परमेश्वर है, और
तू ने अपने दास को यह भलाई करने का
वचन दिया है। २७ और अब तू ने
प्रसन्न होकर, अपने दास के घराने पर
ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे सम्मुख
सदैव बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू
आशीष दे चुका है, इसलिये वह सदैव
आशीषित बना रहे॥

(दाऊद के विजयों का संक्षेप वर्णन)

१८ इसके बाद दाऊद ने पलिश्तियों
को जीतकर अपने अधीन कर
लिया, और गांवों समेत गत नगर को
पलिश्तियों के हाथ से छीन लिया।
२ फिर उस ने मोआबियों को भी जीत
लिया, और मोआबी दाऊद के अधीन
होकर भेंट लाने लगे। ३ फिर जब सोबा
का राजा हदरेजेर परात महानद के
पास अपना राज्य* स्थिर करने को जा
रहा था, तब दाऊद ने उसको हमात के
पास जीत लिया। ४ और दाऊद ने
उससे एक हजार रथ, सात हजार सवार,

* वा ऊपर से आनेहारे आदम।

* मूल में—हाथ।

और बीस हजार पियादे हर लिए, और दाऊद ने सब रथवाले घोड़ों के सुम की नस कटवाई, परन्तु एक सौ रथवाले घोड़े बचा रखे। ५ और जब दमिश्क के अरामी, सोबा के राजा हदरेजेर की सहायता करने को आए, तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस हजार पुरुष मारे। ६ तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियां बैठाई, सो अरामी दाऊद के अधीन होकर भेंट ले आने लगे। और जहां जहां दाऊद जाता, वहां वहां यहोवा उसको जय दिलाता था। ७ और हदरेजेर के कर्मचारियों के पास सोने की जो ढालें थीं, उन्हें दाऊद लेकर यरूशलेम को आया। ८ और हदरेजेर के तिभत और कून नाम नगरों से दाऊद बहुत सा पीतल ले आया, और उसी से सुलैमान ने पीतल के हौद और खम्भों और पीतल के पात्रों को बनवाया॥

९ जब हमात के राजा तोऊ ने सुना, कि दाऊद ने सोबा के राजा हदरेजेर की समस्त सेना को जीत लिया है, १० तब उस ने हदोराम नाम अपने पुत्र को दाऊद राजा के पास उसका कुशल क्षेम पूछने और उसे बधाई देने को भेजा, इसलिये कि उस ने हदरेजेर से लड़कर उसे जीत लिया था, (क्योंकि हदरेजेर तोऊ से लड़ा करता था)। और हदोराम सोने चांदी और पीतल के सब प्रकार के पात्र लिये हुए आया। ११ इनको दाऊद राजा ने यहोवा के लिये पवित्र करके रखा, और वैसा ही उस सोने-चांदी से भी किया जिसे सब जातियों से, अर्थात् एदोमियों, मोआबियों, अम्मोनियों, पलिश्तियों, और अमालेकियों से प्राप्त किया था।

१२ फिर सरूयाह के पुत्र अबीशै ने लोन की तराई में अठारह हजार एदोमियों को मार लिया। १३ तब उस ने एदोम में सिपाहियों की चौकियां बैठाई, और सब एदोमी दाऊद के अधीन हो गए। और दाऊद जहां जहां जाता था वहां वहां यहोवा उसको जय दिलाता था॥

(दाऊद के कर्मचारियों की नामावली)

१४ दाऊद तो सारे इस्राएल पर राज्य करता था, और वह अपनी सब प्रजा के साथ न्याय और धर्म के काम करता था। १५ और प्रधान सेनापति सरूयाह का पुत्र योआब था, इतिहास का लिखनेवाला अहीलूद का पुत्र यहोशापात था। १६ प्रधान याजक, अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्यातार का पुत्र अबीमेलेक थे, मंत्री शवशा था। १७ करेतियों और पलेतियों का प्रधान यहोयादा का पुत्र बनायाह था, और दाऊद के पुत्र राजा के पास मुखिये होकर रहते थे॥

(अम्मोनियों पर विजय)

१९ इसके बाद अम्मोनियों का राजा नाहाश मर गया, और उसका पुत्र उसके स्थान पर राजा हुआ। २ तब दाऊद ने यह सोचा, कि हानून के पिता नाहाश ने जो मुझ पर प्रीति दिखाई थी, इसलिये मैं भी उस पर प्रीति दिखाऊंगा। तब दाऊद ने उसके पिता के विषय शान्ति देने के लिये दूत भेजे। और दाऊद के कर्मचारी अम्मोनियों के देश में हानून के पास उसे शान्ति देने को आए। ३ परन्तु अम्मोनियों के हाकिम हानून से कहने लगे, दाऊद ने जो तेरे पास शान्ति देनेवाले भेजे हैं, वह क्या तेरी समझ में तेरे पिता का आदर करने

की मनसा से भेजे है? क्या उसके
कर्मचारी इसी मनसा से तेरे पास नही
आए, कि ढूढ-ढाढ करे और नष्ट करे,
और देश का भेद ले? ४ तव हानून
ने दाऊद के कर्मचारियो को पकडा,
और उनके वाल मुडवाए, और आधे
वस्त्र अर्थात् नितम्व तक कटवाकर उन-
को जाने दिया। ५ तव कितनो ने जाकर
दाऊद को वता दिया, कि उन पुरुषो के
साथ कैसा वर्ताव किया गया, सो उस
ने लोगो को उन से मिलने के लिये भेजा
क्योकि वे पुरुष वहुत लजाते थे। और
राजा ने कहा, जव तक तुम्हारी दाढिया
वढ न जाए, तव तक यरीहो मे ठहरे
रहो, और वाद को लौट आना।

६ जव अम्मोनियो ने देखा, कि हम
दाऊद को घिनौने लगते है, तव हानून
और अम्मोनियो ने एक हजार किक्कार
चादी, अरम्नहरैम और अरम्माका और
सोवा को भेजी, कि रथ और सवार
किराये पर बुलाए। ७ सो उन्हो ने
वत्तीस हजार रथ, और माका के राजा
और उसकी सेना को किराये पर वुलाया,
और इन्हो ने आकर मेदवा के साम्हने,
अपने डेरे खडे किए। और अम्मोनी
अपने अपने नगर मे से इकट्ठे होकर
लडने को आए। ८ यह सुनकर दाऊद
ने योआव और शूरवीरो की पूरी सेना
को भेजा। ९ तव अम्मोनी निकले और
नगर के फाटक के पास पाति वान्धी,
और जो राजा आए थे, वे उन से अलग
मैदान मे थे। १० यह देखकर कि आगे
पीछे दोनो ओर हमारे विरुद्ध पाति वन्धी
है, योआव ने सव वडे वडे इस्राएली वीरो
मे से कितनो को छाटकर अरामियो
के साम्हने उनकी पाति वन्धाई, ११ और
शेष लोगो को अपने भाई अवीशै के हाथ
सौप दिया, और उन्हो ने अम्मोनियो के
साम्हने पाति वान्धी। १२ और उस ने
कहा, यदि अरामी मुझ पर प्रवल होने
लगे, तो तू मेरी सहायता करना, और
यदि अम्मोनी तुझ पर प्रवल होने लगे,
तो मै तेरी सहायता करूगा। १३ तू
हियाव वान्ध और हम सव अपने लोगो
और अपने परमेश्वर के नगरो के निमित्त
पुरुषार्थ करे, और यहोवा जैसा उसको
अच्छा लगे, वैसा ही करेगा। १४ तव
योआव और जो लोग उसके साथ थे,
अरामियो से युद्ध करने को उनके साम्हने
गए, और वे उसके साम्हने मे भागे।
१५ यह देखकर कि अरामी भाग गए
है, अम्मोनी भी उसके भाई अवीशै के
साम्हने से भागकर नगर के भीतर घुसे।
तव योआव यरूशलेम को लौट आया॥

१६ फिर यह देखकर कि वे इस्राएलियो
से हार गए है अरामियो ने दूत भेजकर
महानद के पार के अरामियो को बुलवाया,
और हदरेजेर के सेनापति शोपक को
अपना प्रधान वनाया। १७ इसका समा-
चार पाकर दाऊद ने सव इस्राएलियो
को इकट्ठा किया, और यरदन पार होकर
उन पर चढाई की और उनके विरुद्ध
पाति वन्धाई, तव वे उस से लडने लगे।
१८ परन्तु अरामी इस्राएलियो से भागे,
और दाऊद ने उन मे से सात हजार
रथियो और चालीस हजार प्यादो को
मार डाला, और शोपक सेनापति को भी
मार डाला। १९ यह देखकर कि वे
इस्राएलियो से हार गए है, हदरेजेर
के कर्मचारियो ने दाऊद से सधि की
और उसके अधीन हो गए, और अरामियो

ने अम्मोनियो की सहायता फिर करनी
न चाही ॥

२० फिर नये वर्ष के आरम्भ में
जब राजा लोग युद्ध करने को
निकला करते है, तब योआब ने भारी
सेना संग ले जाकर अम्मोनियो का देश
उजाड दिया और आकर रब्बा को घेर
लिया, परन्तु दाऊद यरूशलेम मे रह
गया, और योआब ने रब्बा को जीतकर
ढा दिया। २ तब दाऊद ने उनके राजा
का मुकुट उसके सिर से उतारकर क्या
देखा, कि उसका तौल किक्कार भर सोने
का है, और उस में मणि भी जडे थे,
और वह दाऊद के सिर पर रखा गया।
फिर उस ने उस नगर से बहुत सामान
लूट में पाया। ३ और उस ने उसके
रहनेवालो को निकालकर आरो और
लोहे के हेंगो और कुल्हाडियो से कटवाया,
और अम्मोनियो के सब नगरो के साथ भी
दाऊद ने वैसा ही किया। तब दाऊद सब
लोगो समेत यरूशलेम को लौट गया ॥

४ इसके बाद गेजेर में पलिश्तियो के
साथ युद्ध हुआ, उस समय हूशाई सिब्बकै
ने सिप्पै को, जो रापा की सन्तान
था, मार डाला, और वे दब गए।
५ और पलिश्तियो के साथ फिर युद्ध
हुआ, उस में याईर के पुत्र एल्हानान
ने गती गोल्यत के भाई लहमी को मार
डाला, जिसके बर्छे की छड, जुलाहे की
डोंगी के समान थी। ६ फिर गत में
भी युद्ध हुआ, और वहा एक बडे डील
का पुरुष था, जो रापा की सन्तान
था, और उसके एक एक हाथ पाव में
छ छ उगलिया अर्थात् सब मिलाकर
चौबीस उगलिया थी। ७ जब उस ने
इस्राएलियो को ललकारा, तब दाऊद
के भाई शिमा के पुत्र योनातान ने उसको
मारा। ८ ये ही गत मे रापा मे उत्पन्न
हुए थे, और वे दाऊद और उसके सेवको
के हाथ से मार डाले गए ॥

(दाऊद का अपनी प्रजा की गिनती लेना
और इस पाप के दंड और पापमोचन
के द्वारा मन्दिर का स्थान
ठहराया जाना)

२१ और शैतान ने इस्राएल के
विरुद्ध उठकर, दाऊद को उसकाया
कि इस्राएलियो की गिनती ले। २ तब
दाऊद ने योआब और प्रजा के हाकिमो
से कहा, तुम जाकर बर्शेबा से ले दान
तक के इस्राएल की गिनती लेकर मुझे
बताओ, कि मै जान लू कि वे कितने है।
३ योआब ने कहा, यहोवा की प्रजा के
कितने ही क्यो न हो, वह उनको सौ
गुना बढा दे, परन्तु हे मेरे प्रभु! हे
राजा! क्या वे सब राजा के अधीन
नही है? मेरा प्रभु ऐसी बात क्यो
चाहता है? वह इस्राएल पर दोष लगने
का कारण क्यो बने? ४ तौभी राजा
की आज्ञा योआब पर प्रबल हुई। तब
योआब विदा होकर सारे इस्राएल मे
घूमकर यरूशलेम को लौट आया। ५ तब
योआब ने प्रजा की गिनती का जोड
दाऊद को सुनाया और सब तलवारिये
पुरुष इस्राएल के तो ग्यारह लाख, और
यहूदा के चार लाख सत्तर हजार ठहरे।
६ परन्तु इन में योआब ने लेवी और
बिन्यामीन को न गिना, क्योकि वह राजा
की आज्ञा से घृणा करता था ॥

७ और यह बात परमेश्वर को बुरी
लगी, इसलिये उस ने इस्राएल को मारा।
८ और दाऊद ने परमेश्वर से कहा, यह

जो मैं ने किया, वह महापाप है।
ु अब अपने दास का अधर्म दूर कर,
मे तो बडी मूर्खता हुई है। ९ तब
ा ने दाऊद के दर्शी गाद से कहा,
जाकर दाऊद से कह, कि यहोवा
कहता है, कि मै तुझ को तीन विपत्तिया
ाता हू, उन मे से एक को चुन ले,
मैं उसे तुझ पर डालू। ११ तब
ने दाऊद के पास जाकर उस से
, यहोवा यो कहता है, कि जिसको
ाहे उसे चुन ले १२ या तो तीन
का काल पडे, वा तीन महीने तक
विरोधी तुझे नाश करते रहे, और
शत्रुओ की तलवार तुझ पर चलती
, वा तीन दिन तक यहोवा की तलवार
, अर्थात् मरी देश मे फैले और यहोवा
दूत इस्राएली देश मे चारो ओर
ाश करता रहे। अब सोच, कि मै
ने भेजनेवाले को क्या उत्तर दू।
३ दाऊद ने गाद से कहा, मैं बडे सकट
पडा हू, मैं यहोवा के हाथ मे पडू,
ोकि उसकी दया बहुत बडी है, परन्तु
ुष्य के हाथ मे मुझे पडना न पडे ।।
१४ तब यहोवा ने इस्राएल मे मरी
लाई, और इस्राएल मे सत्तर हजार
ष्य मर मिटे। १५ फिर परमेश्वर ने
क दूत यरूशलेम को भी उसे नाश
रने को भेजा, और वह नाश करने
ी पर था, कि यहोवा दुःख देने मे
ादित हुआ, और नाश करनेवाले दूत
ा रहा, बस कर, अब अपना हाथ
ींच ले। और यहोवा का दूत यबूसी
ोर्नान के खलिहान के पास खडा था।
१६ और दाऊद ने आखें उठाकर देखा,
ि यहोवा का दूत हाथ मे खींची हुई
और यरूशलेम के ऊपर बढाई हुई एक
तलवार लिये हुए आकाश के बीच खडा
है, तब दाऊद और पुरनिये टाट पहिने
हुए मुह के बल गिरे। १७ तब दाऊद
ने परमेश्वर से कहा, जिस ने प्रजा की
गिनती लेने की आज्ञा दी थी, वह क्या
मै नही हू ? हा, जिस ने पाप किया
और बहुत बुराई की है, वह तो मै ही
हू। परन्तु इन भेड-बकरियो ने क्या
किया है ? इसलिये हे मेरे परमेश्वर
यहोवा ! तेरा हाथ मेरे पिता के घराने
के विरुद्ध हो, परन्तु तेरी प्रजा के विरुद्ध
न हो, कि वे मारे जाए ।।

१८ तब यहोवा के दूत ने गाद को
दाऊद से यह कहने की आज्ञा दी, कि
दाऊद चढकर यबूसी ओर्नान के खलिहान
मे यहोवा की एक वेदी बनाए। १९ गाद
के इस वचन के अनुसार जो उस ने
यहोवा के नाम से कहा था, दाऊद चढ
गया। २० तब ओर्नान ने पीछे फिर के
दूत को देखा, और उसके चारो बेटे जो
उसके सग थे छिप गए, ओर्नान तो गेहू
दावता था। २१ जब दाऊद ओर्नान के
पास आया, तब ओर्नान ने दृष्टि करके
दाऊद को देखा और खलिहान से बाहर
जाकर भूमि तक झुककर दाऊद को
दण्डवत किया। २२ तब दाऊद ने ओर्नान
से कहा, इस खलिहान का स्थान मुझे
दे दे, कि मै इस पर यहोवा की एक वेदी
बनाऊ, उसका पूरा दाम लेकर उसे मुझ
को दे, कि यह विपत्ति प्रजा पर से दूर
की जाए। २३ ओर्नान ने दाऊद से
कहा, इसे ले ले, और मेरे प्रभु राजा को
जो कुछ भाए वह वही करे, सुन, मै
तुझे होमबलि के लिये बैल और ईधन के
लिये दावने के हथियार और अन्नबलि
के लिये गेहू, यह सब मै देता हू।

२४ राजा दाऊद ने ओर्नान से कहा,
सो नही, मै अवश्य इसका पूरा दाम ही
देकर इसे मोल लूगा, जो तेरा है, उसे
मै यहोवा के लिये नही लूगा, और न
सेंतमेंत का होमवलि चढाऊगा। २५ तव
दाऊद ने उस स्थान के लिये ओर्नान
को छ सौ शेकेल सोना तौलकर दिया।
२६ तव दाऊद ने वहा यहोवा की एक
वेदी वनाई और होमवलि और मेलवलि
चढाकर यहोवा से प्रार्थना की, और उस
ने होमवलि की वेदी पर स्वर्ग से आग
गिराकर उसकी सुन ली। २७ तव यहोवा
ने दूत को आज्ञा दी, और उस ने अपनी
तलवार फिर म्यान मे कर ली॥
२८ यह देखकर कि यहोवा ने यवूसी
ओर्नान के खलिहान में मेरी सुन ली है,
दाऊद ने उसी समय वहा वलिदान किया।
२९ यहोवा का निवास जो मूसा ने
जगल में वनाया था, और होमवलि की
वेदी, ये दोनो उस समय गिवोन के
ऊचे स्थान पर थे। ३० परन्तु दाऊद
परमेश्वर के पास उसके साम्हने न जा
सका, क्योंकि वह यहोवा के दूत की
तलवार से डर गया था॥

२२ तव दाऊद कहने लगा,
यहोवा परमेश्वर का भवन
यही है, और इस्राएल के लिये होमवलि
की वेदी यही है॥

(मन्दिर के वनाने की तैयारी और उस मे
की भांति भांति की उपासना और
उपासकों का प्रवन्ध)

२ तव दाऊद ने इस्राएल के देश मे
जो परदेशी थे उनको इकट्ठा करने की
आज्ञा दी, और परमेश्वर का भवन वनाने
को पत्थर गढने के लिये संगतराश ठहरा
दिए। ३ फिर दाऊद ने फाटको के
किवाडो की कीलो और जोडो के लिये
वहुत सा लोहा, और तौल मे वाहर वहुत
पीतल, ४ और गिनती मे वाहर देवदार
के पेड इकट्ठे किए, क्योंकि सीदोन और
सोर के लोग दाऊद के पास वहुत से
देवदार के पेड लाए थे। ५ और दाऊद
ने कहा, मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार और
लडका है, और जो भवन यहोवा के
लिये वनाना है, उसे अत्यन्त तेजोमय
और सव देशो मे प्रसिद्ध और शोभायमान
होना चाहिये, इसलिये मै उसके लिये
तैयारी करूगा। सो दाऊद ने मरने से
पहिले वहुत तैयारी की॥
६ फिर उस ने अपने पुत्र सुलैमान
को वुलाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
के लिये भवन वनाने की आज्ञा दी।
७ दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा,
मेरी मनसा तो थी, कि अपने परमेश्वर
यहोवा के नाम का एक भवन वनाऊ।
८ परन्तु यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, कि तू ने लोहू वहुत वहाया और
वडे वडे युद्ध किए है, सो तू मेरे नाम
का भवन न वनाने पाएगा, क्योंकि तू
ने भूमि पर मेरी दृष्टि मे वहुत लोहू
वहाया है। ९ देख, तुझ से एक पुत्र उत्पन्न
होगा, जो शान्त पुरुष होगा, और मै
उसको चारो ओर के शत्रुओ से शान्ति
दूगा, उसका नाम तो सुलैमान* होगा,
और उसके दिनो मे मै इस्राएल को
शान्ति और चैन दूगा। १० वही मेरे
नाम का भवन वनाएगा। और वही
मेरा पुत्र ठहरेगा और मै उसका पिता
ठहरूगा, और उसकी राजगद्दी को मै

* अर्थात् शान्तियाला।

इस्राएल के ऊपर सदा के लिये स्थिर
रखूगा। ११ अब हे मेरे पुत्र, यहोवा
तेरे सग रहे, और तू कृतार्थ होकर उस
वचन के अनुसार जो तेरे परमेश्वर
यहोवा ने तेरे विषय कहा है, उसका
भवन बनाना। १२ अब यहोवा तुझे
बुद्धि और समझ दे और इस्राएल का
अधिकारी ठहरा दे, और तू अपने परमेश्वर
यहोवा की व्यवस्था को मानता रहे।
१३ तू तब ही कृतार्थ होगा जब उन
विधियो और नियमो पर चलने की
चौकसी करेगा, जिनकी आज्ञा यहोवा
ने इस्राएल के लिये मूसा को दी थी।
हियाव बान्ध और दृढ हो। मत डर,
और तेरा मन कच्चा न हो। १४ सुन,
मैं ने अपने क्लेश के समय यहोवा के
भवन के लिये एक लाख किक्कार सोना,
और दस लाख किक्कार चान्दी, और
पीतल और लोहा इतना इकट्ठा किया
है, कि बहुतायत के कारण तौल से
बाहर है, और लकडी और पत्थर मैं
ने इकट्ठे किए है, और तू उनको बढा
सकेगा। १५ और तेरे पास बहुत कारीगर
है, अर्थात् पत्थर और लकडी के काटने
और गढनेवाले वरन सब भाति के काम
के लिये सब प्रकार के प्रवीण पुरुष हैं।
१६ सोना, चान्दी, पीतल और लोहे की
तो कुछ गिनती नही है, सो तू उस काम
में लग जा! यहोवा तेरे सग नित
रहे। १७ फिर दाऊद ने इस्राएल के
सब हाकिमो को अपने पुत्र सुलैमान की
सहायता करने की आज्ञा यह कहकर
दी, १८ कि क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
तुम्हारे सग नही है? क्या उस ने तुम्हें
चारो ओर से विश्राम नही दिया? उस
ने तो देश के निवासियों को मेरे वश
मे कर दिया है, और देश यहोवा और
उसकी प्रजा के साम्हने दबा हुआ है।
१९ अब तन मन से * अपने परमेश्वर
यहोवा के पास जाया करो, और जी
लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान
बनाना, कि तुम यहोवा की वाचा का
सन्दूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र
उस भवन मे लाओ जो यहोवा के नाम
का बननेवाला है॥

२३ दाऊद तो बूढा वरन बहुत
बूढा हो गया था, इसलिये उस
ने अपने पुत्र सुलैमान को इस्राएल पर
राजा नियुक्त कर दिया॥

२ तब उस ने इस्राएल के सब हाकिमो
और याजको और लेवियो को इकट्ठा
किया। ३ और जितने लेवीय तीस वर्ष
के और उस से अधिक अवस्था के थे,
वे गिने गए, और एक एक पुरुष के गिनने
से उनकी गिनती अडतीस हजार हुई।
४ इन मे से चौबीस हजार तो यहोवा
के भवन का काम चलाने के लिये नियुक्त
हुए, और छ हजार सरदार और न्यायी।
५ और चार हजार द्वारपाल नियुक्त
हुए, और चार हजार उन बाजो से
यहोवा की स्तुति करने के लिये ठहराए
गए जो दाऊद † ने स्तुति करने के
लिये बनाए थे। ६ फिर दाऊद ने उनको
गेर्शोन, कहात और मरारी नाम लेवी
के पुत्रो के अनुसार दलो मे अलग अलग
कर दिया॥

७ गेर्शोनियो में से तो लादान और
शिमी थे। ८ और लादान के पुत्र

* मूल में—अपना मन और अपना जीव
लेकर।

† मूल में—मैं।

सरदार यहीएल, फिर जेताम और योएल
ये तीन थे। ६ और शिमी के पुत्र
शलोमीत, हजीएल और हारान ये तीन
थे। लादान के कुल के पूर्वजो के घरानो
के मुख्य पुरुष ये ही थे। १० फिर शिमी
के पुत्र यहत, जीना, यूश, और बरीआ
के पुत्र शिमी यही चार थे। ११ यहत
मुख्य था, और जीजा दूसरा, यूश और
बरीआ के बहुत बेटे न हुए, इस कारण
वे सब मिलकर पितरो का एक ही घराना
ठहरे॥

१२ कहात के पुत्र अम्राम, यिसहार,
हेब्रोन और उज्जीएल चार। अम्राम
के पुत्र हारून और मूसा। १३ हारून
तो इसलिये अलग किया गया, कि वह
और उसके सन्तान सदा परमपवित्र
वस्तुओ को पवित्र ठहराए, और सदा
यहोवा के सम्मुख धूप जलाया करें और
उसकी सेवा टहल करे, और उसके
नाम से आशीर्वाद दिया करे। १४ परन्तु
परमेश्वर के भक्त मूसा के पुत्रो के
नाम लेवी के गोत्र के बीच गिने
गए। १५ मूसा के पुत्र, गेर्शोम और
एलीएजेर। १६ और गेर्शोम का पुत्र
शबूएल मुख्य था। १७ और एलीएजेर
के पुत्र रहब्याह मुख्य, और एलीएजेर
के और कोई पुत्र न हुआ, परन्तु रहब्याह
के बहुत से बेटे हुए। १८ यिसहार के
पुत्रो मे से शलोमीत मुख्य ठहरा।
१९ हेब्रोन के पुत्र यरीय्याह मुख्य,
दूसरा अमर्याह, तीसरा यहजीएल, और
चौथा यकमाम था। २० उज्जीएल के
पुत्रो मे से मुख्य तो मीका और दूसरा
यिश्शिय्याह था॥

२१ मरारी के पुत्र महली और
मूशी। महली के पुत्र एलीआजर और
कीश थे। २२ एलीआजर पुत्रहीन मर
गया, उसके केवल बेटिया हुई, सो कीश
के पुत्रो ने जो उनके भाई थे उन्हे ब्याह
लिया। २३ मूशी के पुत्र महली, एदेर
और यरेमोत यह तीन थे। २४ लेवीय
पितरो के घरानो के मुख्य पुरुष ये ही
थे, ये नाम ले लेकर, एक एक पुरुष करके
गिने गए, और बीस वर्ष की वा उस से
अधिक अवस्था के थे और यहोवा के भवन
मे सेवा टहल करते थे। २५ क्योकि
दाऊद ने कहा, इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा ने अपनी प्रजा को विश्राम दिया
है, और वह तो यरूशलेम मे सदा के लिये
बस गया है। २६ और लेवियो को
निवास और उस की उपासना का
सामान फिर उठाना न पडेगा।
२७ क्योकि दाऊद की पिछली आज्ञाओ
के अनुसार बीस वर्ष वा उस से अधिक
अवस्था के लेवीय गिने गए। २८ क्योकि
उनका काम तो हारून की सन्तान की
सेवा टहल करना था, अर्थात् यह कि
वे आगनो और कोठरियो में, और सब
पवित्र वस्तुओ के शुद्ध करने मे और
परमेश्वर के भवन की उपासना के सब
कामो में सेवा टहल करें। २९ और
भेंट की रोटी का, अन्नबलियो के मैदे
का, और अखमीरी पपडियो का, और
तवे पर बनाए हुए और सने हुए
का, और मापने और तौलने के सब
प्रकार का काम करें। ३० और प्रति
भोर और प्रति साझ को यहोवा का
धन्यवाद और उसकी स्तुति करने के
लिये खडे रहा करें। ३१ और विश्राम-
दिनो और नये चान्द के दिनो, और नियत
पर्व्वों मे गिनती के नियम के अनुसार
नित्य यहोवा के सब होमबलियो को

चढाए। ३२ और यहोवा के भवन की
उपासना के विषय मिलापवाले तम्बू और
पवित्रस्थान की रक्षा करे, और अपने
भाई हारूनियो के सौपे हुए काम को
चौकसी से करे ॥

२४ फिर हारून की सन्तान के
दल ये थे। हारून के पुत्र तो
नादाव, अबीहू, एलीआजर और ईतामार
थे। २ परन्तु नादाव और अबीहू अपने
पिता के साम्हने पुत्रहीन मर गए, इस
लिये याजक का काम एलीआजर और
ईतामार करते थे। ३ और दाऊद ने
एलीआजर के वश के सादोक और ईतामार
के वश के अहीमेलेक की सहायता से
उनको अपनी अपनी सेवा के अनुसार
दल दल करके वाट दिया। ४ और
एलीआजर के वश के मुख्य पुरुष, ईतामार
के वश के मुख्य पुरुषो से अधिक थे, और
वे यो वाटे गए अर्थात् एलीआजर के
वश के पितरो के घरानो के सोलह, और
ईतामार के वश के पितरो के घरानो के
आठ मुख्य पुरुष थे। ५ तव वे चिट्ठी
डालकर बराबर बराबर वाटे गए, क्योकि
एलीआजर और ईतामार दोनो के वशो
मे पवित्रस्थान के हाकिम और परमेश्वर
के हाकिम नियुक्त हुए थे। ६ और
नतनेल के पुत्र शमायाह ने जो लेवीय
था, उनके नाम राजा और हाकिमो
और सादोक याजक, और एव्यातार के
पुत्र अहीमेलेक और याजको और लेवियो
के पितरो के घरानो के मुख्य पुरुषो के
साम्हने लिखे, अर्थात् पितरो का एक
घराना तो एलीआजर के वश में से
और एक ईतामार के वश मे से लिया
गया ॥

७ पहिली चिट्ठी तो यहोयारीव के,
और दूसरी यदायाह, ८ तीसरी हारीम
के, चौथी सोरीम के, ९ पाचवी मल्कि-
य्याह के, छठवी मिय्यामीन के, १० सातवी
हक्कोस के, आठवी अविय्याह के,
११ नौवी येशू के, दसवी शकन्याह के,
१२ ग्यारहवी एल्याशीव के, वारहवी
याकीम के, १३ तेरहवी हुप्पा के, चौदहवीं
येसेवाव के, १४ पन्द्रहवी विल्गा के,
सोलहवी इम्मेर के, १५ सतरहवी हेजीर
के, अठारहवी हप्पित्सेस के, १६ उन्नीसवी
पतह्याह के, वीसवी यहेजकेल के,
१७ इक्कीसवी याकीन के, वाईसवी
गामूल के, १८ तेईसवी दलायाह के,
और चौबीसवी माज्याह के नाम पर
निकली। १९ उनकी सेवकाई के लिये
उनका यही नियम ठहराया गया कि वे
अपने उस नियम के अनुसार जो इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार
उनके मूलपुरुष हारून ने चलाया था,
यहोवा के भवन मे जाया करे ॥

२० बचे हुए लेवियो मे से अम्राम के
वश मे से शूबाएल, शूबाएल के वश मे
से येहदयाह। २१ वचा रहव्याह, सोर-
हव्याह, के वश मे से यिश्शिय्याह मुख्य
था। २२ इसहारियो मे से शलोमोत
और शलोमोत के वश मे से यहत।
२३ और हेब्रोन के वश मे से मुख्य तो
यरिय्याह, दूसरा अमर्याह, तीसरा
यहजीएल, और चौथा यकमाम।
२४ उज्जीएल के वश मे से मीका और
मीका के वश मे से शामीर। २५ मीका
का भाई यिश्शिय्याह, यिश्शिय्याह के
वश मे से जकर्याह। २६ मरारी के
पुत्र महली और मूशी और याजिय्याह
का पुत्र विनो था। २७ मरारी के पुत्र

याजिय्याह मे बिनो और शोहम, जक्कूर और इब्री थे। २८ महली मे, एलीआजर जिसके कोई पुत्र न था। २९ कीश मे कीश के वंश मे यरह्मेल। ३० और मूशी के पुत्र, महली, एदेर और यरीमोत। अपने अपने पितरो के घरानो के अनुसार ये ही लेवीय सन्तान के थे। ३१ इन्हो ने भी अपने भाई हारून की सन्तानो की नाई दाऊद राजा और सादोक और अहीमेलेक और याजको और लेवियो के पितरो के घरानो के मुख्य पुरुषो के साम्हने चिट्ठिया डाली, अर्थात् मुख्य पुरुष के पितरो का घराना उसके छोटे भाई के पितरो के घराने के बराबर ठहरा॥

२५ १ फिर दाऊद और सेनापतियो ने आसाप, हेमान और यदूतून के कितने पुत्रो को सेवकाई के लिये अलग किया कि वे वीणा, सारंगी और झांझ बजा बजाकर नबूवत करे। और इस सेवकाई के काम करनेवाले मनुष्यो की गिनती यह थी २ अर्थात् आसाप के पुत्रो मे से तो जक्कूर, योसेप, नतन्याह और अशरेला, आसाप के ये पुत्र आसाप ही की आज्ञा मे थे, जो राजा की आज्ञा के अनुसार नबूवत करता था। ३ फिर यदूतून के पुत्रो मे से गदल्याह, सरीयशायाह, हसब्याह, मत्तित्याह, ये ही छ अपने पिता यदूतून की आज्ञा मे होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नबूवत करता था, वीणा बजाते थे। ४ और हेमान के पुत्रो मे से, मुक्किय्याह, मत्तन्याह, उज्जीएल, शबूएल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी, एलीआता, गिद्दलती, रोममतीएजेर, योश्बकाशा, मल्लोती, होतीर और महजीओत। ५ परमेश्वर की प्रतिज्ञानुकूल जो उसका नाम बढाने की थी, ये सब हेमान के पुत्र थे जो राजा का दर्शी था, क्योकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह बेटे और तीन बेटिया दी थी। ६ ये सब यहोवा के भवन मे गाने के लिये अपने अपने पिता के अधीन रहकर, परमेश्वर के भवन की सेवकाई मे झांझ, सारंगी और वीणा बजाते थे। और आसाप, यदूतून और हेमान राजा के अधीन रहते थे। ७ इन सभो की गिनती भाइयो समेत जो यहोवा के गीत सीखे हुए और सब प्रकार से निपुण थे, दो सौ अठासी थी। ८ और उन्हो ने क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या गुरु, क्या चेला, अपनी अपनी बारी के लिये चिट्ठी डाली। ९ और पहिली चिट्ठी आसाप के बेटो मे से योसेप के नाम पर निकली, दूसरी गदल्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १० तीसरी जक्कूर के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। ११ चौथी यिस्री के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १२ पाचवी नतन्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १३ छठी बुक्किय्याह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १४ सातवी यसरेला के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १५ आठवी यशायाह के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत बारह थे। १६ नौवी मत्तन्याह के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और भाई समेत बारह थे। १७ दसवी शिमी के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस

समेत वारह थे। १८ ग्यारहवी अजरेल
के नाम पर निकली जिसके पुत्र और
भाई उस समेत वारह थे। १९ वारहवी
हशब्याह के नाम पर निकली, जिसके
पुत्र और भाई उस समेत वारह थे।
२० तेरहवी शूवाएल के नाम पर निकली,
जिसके पुत्र और भाई उस समेत वारह थे।
२१ चौदहवी मत्तिय्याह के नाम पर
निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत
वारह थे। २२ पन्द्रहवी यरेमोत के नाम
पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस
समेत वारह थे। २३ सोलहवी हनन्याह
के नाम पर निकली, जिसके पुत्र और
भाई उस समेत वारह थे। २४ सत्रहवी
योशबकाशा के नाम पर निकली जिसके
पुत्र और भाई उस समेत वारह थे।
२५ अठारहवी हनानी के नाम पर निकली
जिसके पुत्र और भाई उस समेत वारह
थे। २६ उन्नीसवी मल्लोती के नाम पर
निकली, जिसके पुत्र और भाई उस समेत
वारह थे। २७ वीसवी इलिय्याता के
नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई उस
समेत वारह थे। २८ इक्कीसवी होतीर
के नाम पर निकली जिसके पुत्र और भाई
उस समेत वारह थे। २९ वाईसवी गिद्द-
लती के नाम पर निकली जिसके पुत्र
और भाई उस समेत वारह थे।
३० तेईसवी महजीओत के नाम पर
निकली जिसके पुत्र और भाई उस समेत
वारह थे। ३१ और चौवीसवी चिट्ठी
रोममतीएजेर के नाम पर निकली जिसके
पुत्र और भाई उस समेत वारह थे॥

२६ फिर द्वारपालो के दल ये
थे, कोरहियो मे से तो मशेलेम्याह,
जो कोरे का पुत्र और आसाप के सन्तानो
मे से था। २ और मशेलेम्याह के पुत्र हुए,
अर्थात् उसका जेठा जकर्याह दूसरा यदीएल,
तीसरा जवद्याह, ३ चौथा यतीएल,
पाचवा एलाम, छठवा यहोहानान और
सातवा एल्यहोएनै। ४ फिर ओवेदेदोम
के भी पुत्र हुए, उसका जेठा शमायाह,
दूसरा यहोजावाद, तीसरा योआह, चौथा
साकार, पाचवा नतनेल, ५ छठवा अम्मी-
एल, सातवा इस्साकार और आठवा
पुल्लतै, क्योकि परमेश्वर ने उसे आशीष
दी थी। ६ और उसके पुत्र शमायाह
के भी पुत्र उत्पन्न हुए, जो शूरवीर होने
के कारण अपने पिता के घराने पर
प्रभुता करते थे। ७ शमायाह के पुत्र
ये थे, अर्थात् ओती, रपाएल, ओवेद,
एलजावाद और उनके भाई एलीहू और
समक्याह बलवान पुरुष थे। ८ ये सब
ओवेदेदोम की सन्तान मे से थे, वे
और उनके पुत्र और भाई इस सेवकाई
के लिये बलवान और शक्तिमान थे,
ये ओवेदेदोमी वासठ थे। ९ और मशेले-
म्याह के पुत्र और भाई अठारह थे, जो
वलवान थे। १० फिर मरारी के वश
मे से होसा के भी पुत्र थे, अर्थात् मुख्य
तो शिम्री (जिसको जेठा न होने पर
भी उसके पिता ने मुख्य ठहराया),
११ दूसरा हिल्किय्याह, तीसरा तबल्याह
और चौथा जकर्याह था, होसा के सब पुत्र
और भाई मिलकर तेरह थे॥

१२ द्वारपालो के दल इन मुख्य पुरुषो
के थे, ये अपने भाइयो के वरावर ही
यहोवा के भवन मे सेवा टहल करते
थे। १३ इन्हो ने क्या छोटे, क्या वडे,
अपने अपने पितरो के घरानो के अनुसार
एक एक फाटक के लिये चिट्ठी डाली।
१४ पूर्व की ओर की चिट्ठी शेलेम्याह के

नाम पर निकली। तब उन्हों ने उसके
पुत्र जकर्याह के नाम की चिट्ठी डाली
(वह बुद्धिमान मन्त्री था) और चिट्ठी उत्तर
की ओर के लिये निकली। १५ दक्खिन की
ओर के लिये ओबेदेदोम के नाम पर
चिट्ठी निकली, और उसके बेटों के नाम
पर खजाने की कोठरी के लिये। १६ फिर
शुप्पीम और होसा के नामों की चिट्ठी
पश्चिम की ओर के लिये निकली, कि वे
शल्लेकेत नाम फाटक के पास चढ़ाई
की सड़क पर आम्हने साम्हने चौकीदारी
किया करें। १७ पूर्व ओर तो छः लेवीय
थे, उत्तर की ओर प्रतिदिन चार, दक्खिन
की ओर प्रतिदिन चार, और खजाने की
कोठरी के पास दो दो ठहरे। १८ पश्चिम
ओर के पर्बार नाम स्थान पर ऊंची
सड़क के पास तो चार और पर्बार के
पास दो रहे। १९ ये द्वारपालों के दल
थे, जिन में से कितने तो कोरह के थे
और कितने मरारी के वंश के थे॥

२० फिर लेवियों में से अहिय्याह
परमेश्वर के भवन और पवित्र की हुई
वस्तुओं, दोनों के भण्डारों का अधिकारी
नियुक्त हुआ। २१ ये लादान की सन्तान
के थे, अर्थात् गेर्शोनियों की सन्तान जो
लादान के कुल के थे, अर्थात् लादान
और गेर्शोनी के पितरों के घरानों के
मुख्य पुरुष थे, अर्थात् यहोएली॥

२२ यहोएली के पुत्र ये थे, अर्थात्
जेताम और उसका भाई योएल जो
यहोवा के भवन के खजाने के अधिकारी
थे। २३ अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रो-
नियों और उज्जीएलियों में से।
२४ और शबूएल जो मूसा के पुत्र गेर्शोम
के वंश का था, वह खजानों का मुख्य
अधिकारी था। २५ और उसके भाइयों
का वृत्तान्त यह है, एलीआजर के कुल
में उसका पुत्र रहब्याह, रहब्याह का पुत्र
यशायाह, यशायाह का पुत्र योराम, योराम
का पुत्र जिक्री, और जिक्री का पुत्र शलोमोत
था। २६ यही शलोमोत अपने भाइयों
समेत उन सब पवित्र की हुई वस्तुओं
के भण्डारों का अधिकारी था, जो राजा
दाऊद और पितरों के घरानों के मुख्य
मुख्य पुरुषों और सहस्रपतियों और शत-
पतियों और मुख्य सेनापतियों ने पवित्र
की थीं। २७ जो लूट लड़ाइयों में मिलती
थी, उस में से उन्हों ने यहोवा का भवन
दृढ़ करने के लिये कुछ पवित्र किया।
२८ वरन जितना शमूएल दर्शी, कीश के
पुत्र शाऊल, नेर के पुत्र अब्नेर, और
सरूयाह के पुत्र योआब ने पवित्र किया
था, और जो कुछ जिस किसी ने पवित्र
कर रखा था, वह सब शलोमोत और
उसके भाइयों के अधिकार में था॥

२९ यिसहारियों में से कनन्याह और
उसके पुत्र, इस्राएल के देश का काम
अर्थात् सरदार और न्यायी का काम
करने के लिये नियुक्त हुए। ३० और
हेब्रोनियों में से हशब्याह और उसके
भाई जो सत्रह सौ बलवान पुरुष थे,
वे यहोवा के सब काम और राजा की
सेवा के विषय यरदन की पश्चिम ओर
रहनेवाले इस्राएलियों के अधिकारी ठहरे।
३१ हेब्रोनियों में से यरिय्याह मुख्य था,
अर्थात् हेब्रोनियों की पीढ़ी पीढ़ी के पितरों
के घरानों के अनुसार दाऊद के राज्य
के चालीसवें वर्ष में वे ढूंढ़े गए, और
उन में से कई शूरवीर गिलाद के याजेर
में मिले। ३२ और उसके भाई जो
वीर थे, पितरों के घरानों के दो हजार
सात सौ मुख्य पुरुष थे, इनको दाऊद

राजा ने परमेश्वर के सब विषयो और
राजा के विषय मे रूबेनियो, गादियो
और मनश्शे के आधे गोत्र का अधिकारी
ठहराया ॥

(देश का प्रबन्ध)

२७ इस्राएलियो की गिनती,
अर्थात् पितरो के घरानो के मुख्य
मुख्य पुरुषो और सहस्रपतियो और शत-
पतियो और उनके सरदारो की गिनती
जो वर्ष भर के महीने महीने उपस्थित
होने और छुट्टी पानेवाले दलो के सब
विषयो मे राजा की सेवा टहल करते
थे, एक एक दल मे चौबीस हजार थे।
२ पहिले महीने के लिये पहिले दल
का अधिकारी जब्दीएल का पुत्र याशोबाम
नियुक्त हुआ, और उसके दल मे चौबीस
हजार थे। ३ वह पेरेस के वंश का
था और पहिले महीने मे सब सेनापतियो
का अधिकारी था। ४ और दूसरे महीने
के दल का अधिकारी दोदै नाम एक
अहोही था, और उसके दल का प्रधान
मिक्लोत था, और उसके दल मे चौबीस
हजार थे। ५ तीसरे महीने के लिये
तीसरा सेनापति यहोयादा याजक का
पुत्र बनायाह था और उसके दल मे
चौबीस हजार थे। ६ यह वही बनायाह
है, जो तीसो शूरो मे वीर, और तीसो
मे श्रेष्ठ भी था, और उसके दल मे
उसका पुत्र अम्मीजाबाद था। ७ चौथे
महीने के लिये चौथा सेनापति योआब
का भाई असाहेल था, और उसके बाद
उसका पुत्र जबद्याह था और उसके दल
में चौबीस हजार थे। ८ पाचवे महीने
के लिये पाचवा सेनापति यिज्राही शम्हूत
था और उसके दल मे चौबीस हजार
थे। ९ छठवे महीने के लिये छठवा
सेनापति तकोई इक्केश का पुत्र ईरा था
और उसके दल मे चौबीस हजार थे।
१० सातवे महीने के लिये सातवा सेनापति
एप्रैम के वंश का हेलेस पलोनी था
और उसके दल मे चौबीस हजार थे।
११ आठवे महीने के लिये आठवा सेनापति
जेरह के वंश मे से हूशाई सिब्बकै था
और उसके दल मे चौबीस हजार थे।
१२ नौवे महीने के लिये नौवा सेनापति
बिन्यामीनी अबीएजेर अनातोतवासी था
और उसके दल मे चौबीस हजार थे।
१३ दसवे महीने के लिये दसवा सेनापति
जेरही महरै नतोपावासी था और उसके
दल मे चौबीस हजार थ। १४ ग्यारहवे
महीने के लिये ग्यारहवा सेनापति एप्रैम
के वंश का बनायाह पिरातोनवासी था
और उसके दल मे चौबीस हजार थे।
१५ बारहवे महीने के लिये बारहवा
सेनापति ओत्नीएल के वंश का हेल्दै
नतोपावासी था और उसके दल मे चौबीस
हजार थे ॥

१६ फिर इस्राएली गोत्रो के ये
अधिकारी थे अर्थात् रूबेनियो का प्रधान
जिक्री का पुत्र एलीआजर, शिमोनियो से
माका का पुत्र शपत्याह। १७ लेवी से
कमूएल का पुत्र हशब्याह, हारून की
सन्तान का सादोक। १८ यहूदा का एलीहू
नाम दाऊद का एक भाई, इस्साकार से
मीकाएल का पुत्र ओम्री। १९ जबूलून
से ओबद्याह का पुत्र यिशमायाह, नप्ताली
से अज्रीएल का पुत्र यरीमोत। २० एप्रैम
से अजज्याह का पुत्र होशे, मनश्शे से
आधे गोत्र का, फदायाह का पुत्र योएल।
२१ गिलाद मे आधे गोत्र मनश्शे से
जकर्याह का पुत्र इद्दो, बिन्यामीन से अस्नेर

का पुत्र यासीएल, २२ और दान में यारोहाम का पुत्र अजरेल, ठहरा। ये ही इस्राएल के गोत्रों के हाकिम थे। २३ परन्तु दाऊद ने उनकी गिनती बीस वर्ष की अवस्था के नीचे न की, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल की गिनती आकाश के तारों के बराबर बढ़ाने के लिये कहा था।
२४ सरूयाह का पुत्र योआब गिनती लेने लगा, पर निपटा न सका क्योंकि ईश्वर का क्रोध इस्राएल पर भड़का, और यह गिनती राजा दाऊद के इतिहास में नहीं लिखी गई॥

२५ फिर अदीएल का पुत्र अजमावेत राज भण्डारों का अधिकारी था, और देहात और नगरों और गांवों और गढ़ों के भण्डारों का अधिकारी उज्जियाह का पुत्र यहोनातान था। २६ और जो भूमि को जोतकर बोकर खेती करते थे, उनका अधिकारी कलूब का पुत्र एज्री था।
२७ और दाख की बारियों का अधिकारी रामाई शिमी और दाख की बारियों की उपज जो दाखमधु के भण्डारों में रखने के लिये थी, उसका अधिकारी शापामी जब्दी था। २८ और नीचे के देश के जलपाई और गूलर के वृक्षों का अधिकारी गदेरी बाल्हानान था और तेल के भण्डारों का अधिकारी योआश था। २९ और शारोन में चरनेवाले गाय-बैलों का अधिकारी शारोनी शित्रै था और तराइयों के गाय-बैलों का अधिकारी अदलै का पुत्र शापात था। ३० और ऊंटों का अधिकारी इश्माएली ओबील और गदहियों का अधिकारी मेरोनोतवासी येहदयाह। ३१ और भेड़-बकरियों का अधिकारी हग्री याजीज था। ये ही सब राजा दाऊद के धन सम्पत्ति के अधिकारी थे॥

३२ और दाऊद का भतीजा* योनातान एक समझदार मन्त्री और शास्त्री था, और किसी हक्मोनी का पुत्र यहीएल राजपुत्रों के संग रहा करता था। ३३ और अहीतोपेल राजा का मन्त्री था, और एरेकी हूशै राजा का मित्र था। ३४ और अहीतोपेल के बाद बनायाह का पुत्र यहोयादा और एब्यातार मन्त्री ठहराए गए। और राजा का प्रधान सेनापति योआब था॥

(दाऊद की अन्तिम सभा और उसकी मृत्यु)

२८ और दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अर्थात् गोत्रों के हाकिमों और राजा की सेवा टहल करनेवाले दलों के हाकिमों को और सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा और उसके पुत्रों के पशु आदि सब धन सम्पत्ति के अधिकारियों, सरदारों और वीरों और सब शूरवीरों को यरूशलेम में बुलवाया। २ तब दाऊद राजा खड़ा होकर कहने लगा, हे मेरे भाइयो! और हे मेरी प्रजा के लोगो! मेरी सुनो, मेरी मनसा तो थी कि यहोवा की वाचा के सन्दूक के लिये और हम लोगों के परमेश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्राम का एक भवन बनाऊं, और मैं ने उसके बनाने की तैयारी की थी।
३ परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा, तू मेरे नाम का भवन बनाने न पाएगा, क्योंकि तू युद्ध करनेवाला है और तू ने लोहू बहाया है। ४ तौभी इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मेरे पिता के सारे घराने में से मुझी को चुन लिया, कि इस्राएल का

* वा चचा।

राजा सदा बना रहे अर्थात् उस ने
यहूदा को प्रधान होने के लिये और यहूदा
के घराने में से मेरे पिता के घराने को
चुन लिया और मेरे पिता के पुत्रों में से
वह मुझी को सारे इस्राएल का राजा
बनाने के लिये प्रसन्न हुआ। ५ और मेरे
सब पुत्रों में से (यहोवा ने तो मुझे बहुत
पुत्र दिए हैं) उस ने मेरे पुत्र सुलैमान को
चुन लिया है, कि वह इस्राएल के ऊपर
यहोवा के राज्य की गद्दी पर विराजे।
६ और उस ने मुझ से कहा, कि तेरा
पुत्र सुलैमान ही मेरे भवन और आंगनों
को बनाएगा, क्योंकि मैं ने उसको चुन
लिया है कि मेरा पुत्र ठहरे, और मैं
उसका पिता ठहरूंगा। ७ और यदि वह
मेरी आज्ञाओं और नियमों के मानने
में आज कल की नाईं दृढ़ रहे, तो मैं
उसका राज्य सदा स्थिर रखूंगा। ८ इस-
लिये अब इस्राएल के देखते अर्थात् यहोवा
की मण्डली के देखते, और अपने परमेश्वर
के साम्हने, अपने परमेश्वर यहोवा की
सब आज्ञाओं को मानो और उन पर
ध्यान करते रहो, ताकि तुम इस अच्छे
देश के अधिकारी बने रहो, और इसे
अपने बाद अपने वंश का सदा का भाग
होने के लिये छोड़ जाओ॥
९ और हे मेरे पुत्र सुलैमान! तू
अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख,
और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी
सेवा करता रह, क्योंकि यहोवा मन को
जांचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न
होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी
खोज में रहे, तो वह तुझ को मिलेगा,
परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा
के लिये तुझ को छोड़ देगा। १० अब
चौकस रह, यहोवा ने तुझे एक ऐसा
भवन बनाने को चुन लिया है, जो पवित्र-
स्थान ठहरेगा, हियाव बान्धकर इस काम
में लग जा॥
११ तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान
को मन्दिर के ओसारे, कोठरियों, भण्डारों
अटारियों, भीतरी कोठरियों, और
प्रायश्चित के ढकने के स्थान का नमूना,
१२ और यहोवा के भवन के आंगनों
और चारों ओर की कोठरियों, और
परमेश्वर के भवन के भण्डारों और
पवित्र की हुई वस्तुओं के भण्डारों के,
जो जो नमूने ईश्वर के आत्मा की प्रेरणा
से* उसको मिले थे, वे सब दे दिए।
१३ फिर याजकों और लेवियों के दलों,
और यहोवा के भवन की सेवा के सब
कामों, और यहोवा के भवन की सेवा के
सब सामान, १४ अर्थात् सब प्रकार की
सेवा के लिये सोने के पात्रों के निमित्त
सोना तौलकर, और सब प्रकार की सेवा
के लिये चान्दी के पात्रों के निमित्त चान्दी
तौलकर, १५ और सोने की दीवटों के लिये,
और उनके दीपकों के लिये प्रति एक एक
दीवट, और उसके दीपकों का सोना
तौलकर और चान्दी के दीवटों के लिये
एक एक दीवट, और उसके दीपक की
चान्दी, प्रति एक एक दीवट के काम के
अनुसार तौलकर, १६ और भेंट की
रोटी की मेजों के लिये एक एक मेज
का सोना तौलकर, और चान्दी की मेजों
के लिये चान्दी, १७ और चोखे सोने
के कांटों, कटोरों और प्यालों और सोने
की कटोरियों के लिये एक एक कटोरी
का सोना तौलकर, और चान्दी की
कटोरियों के लिये एक एक कटोरी की

* वा अपनी आत्मा में।

चान्दी तौलकर, १८ और धूप की वेदी
के लिये तपाया हुआ सोना तौलकर, और
रथ अर्थात् यहोवा की वाचा का सन्दूक
ढाकनेवाले और पख फैलाए हुए करूबों
के नमूने के लिये सोना दे दिया। १९ मैं
ने यहोवा की शक्ति से जो मुझ को मिली,
यह सब कुछ बूझकर लिख दिया है॥
२० फिर दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान
से कहा, हियाव बान्ध और दृढ़ होकर
इस काम में लग जा। मत डर, और
तेरा मन कच्चा न हो, क्योंकि यहोवा
परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है, वह तेरे
संग है, और जब तक यहोवा के भवन
में जितना काम करना हो वह न हो
चुके, तब तक वह न तो तुझे धोखा देगा
और न तुझे त्यागेगा। २१ और देख
परमेश्वर के भवन के सब काम के लिये
याजकों और लेवियों के दल ठहराए
गए हैं, और सब प्रकार की सेवा के लिये
सब प्रकार के काम प्रसन्नता से करनेवाले
बुद्धिमान पुरुष भी तेरा साथ देंगे, और
हाकिम और सारी प्रजा के लोग भी जो
कुछ तू कहेगा वही करेंगे॥

२९ फिर राजा दाऊद ने सारी
सभा से कहा, मेरा पुत्र सुलैमान
सुकुमार लड़का है, और केवल उसी को
परमेश्वर ने चुना है, काम तो भारी है,
क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिये नहीं,
यहोवा परमेश्वर के लिये बनेगा। २ मैं
ने तो अपनी शक्ति भर, अपने परमेश्वर
के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं
के लिये सोना, चान्दी की वस्तुओं के
लिये चान्दी, पीतल की वस्तुओं के लिये
पीतल, लोहे की वस्तुओं के लिये लोहा,
और लकड़ी की वस्तुओं के लिये लकड़ी,
और सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के
योग्य मणि, और पच्ची के काम के लिये
रङ्ग रङ्ग के नग, और सब भाति के
मणि और बहुत सा सगमर्मर इकट्ठा
किया है। ३ फिर मेरा मन अपने परमेश्वर
के भवन में लगा है, इस कारण जो कुछ
मैं ने पवित्र भवन के लिये इकट्ठा किया
है, उस सब से अधिक मैं अपना निज
धन भी जो सोना चान्दी के रूप में मेरे पास
है, अपने परमेश्वर के भवन के लिये
दे देता हू। ४ अर्थात् तीन हजार किक्कार
ओपीर का सोना, और सात हजार किक्कार
तपाई हुई चान्दी, जिस से कोठरियों की
भीतें मढ़ी जाएं। ५ और सोने की
वस्तुओं के लिये सोना, और चान्दी की
वस्तुओं के लिये चान्दी, और कारीगरों
से बनानेवाले सब प्रकार के काम के
लिये मैं उसे देता हू। और कौन अपनी
इच्छा से यहोवा के लिये अपने को
अर्पण * कर देता है?
६ तब पितरों के घरानों के प्रधानों
और इस्राएल के गोत्रों के हाकिमों और
सहस्रपतियों और शतपतियों और राजा
के काम के अधिकारियों ने अपनी अपनी
इच्छा से, ७ परमेश्वर के भवन के काम
के लिये पाच हजार किक्कार और दस
हजार दर्कनोन सोना, दस हजार किक्कार
चान्दी, अठारह हजार किक्कार पीतल,
और एक लाख किक्कार लोहा दे दिया।
८ और जिनके पास मणि थे, उन्हों ने
उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिये
गेर्शोनी यहीएल के हाथ में दे दिया।
९ तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए
क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर अपने मन

* मूल में—अपना हाथ भरता है।

और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के लिये
भेंट दी थी, और दाऊद राजा बहुत ही
आनन्दित हुआ ॥
१० तब दाऊद ने सारी सभा के
सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया, और
दाऊद ने कहा, हे यहोवा! हे हमारे
मूल पुरुष इस्राएल के परमेश्वर!
अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य है।
११ हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा,
सामर्थ्य और विभव, तेरा ही है, क्योंकि
आकाश और पृथ्वी मे जो कुछ है, वह
तेरा ही है, हे यहोवा! राज्य तेरा है,
और तू सभो के ऊपर मुख्य और महान
ठहरा है। १२ धन और महिमा तेरी
ओर से मिलती है, और तू सभो के ऊपर
प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम
तेरे ही हाथ मे है, और सब लोगो को
बढाना और बल देना तेरे हाथ मे है।
१३ इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर!
हम तेरा धन्यवाद और तेरे महिमायुक्त
नाम की स्तुति करते है ॥
१४ मै क्या हू? और मेरी प्रजा
क्या है? कि हम को इस रीति से अपनी
इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले?
तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और
हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया
है। १५ तेरी दृष्टि मे हम तो अपने सब
पुरखाओं की नाई पराए और परदेशी
है, पृथ्वी पर हमारे दिन छाया की नाई
बीते जाते है, और हमारा कुछ ठिकाना
नही। १६ हे हमारे परमेश्वर यहोवा!
वह जो बड़ा सचय हम ने तेरे पवित्र नाम
का एक भवन बनाने के लिये किया
है, वह तेरे ही हाथ से हमे मिला
था, और सब तेरा ही है। १७ और
हे मेरे परमेश्वर! मै जानता हू कि तू
मन को जाचता है और सिधाई से
प्रसन्न रहता है, मै ने तो यह सब कुछ
मन की सिधाई और अपनी इच्छा से
दिया है, और अब मै ने आनन्द से
देखा है, कि तेरी प्रजा के लोग जो यहा
उपस्थित है, वह अपनी इच्छा से तेरे
लिये भेंट देते है। १८ हे यहोवा! हे
हमारे पुरखा इब्राहीम, इसहाक और
इस्राएल के परमेश्वर! अपनी प्रजा के
मन के विचारो मे यह बात बनाए रख
और उनके मन अपनी ओर लगाए
रख। १९ और मेरे पुत्र सुलैमान का
मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओ,
चितौनियो और विधियो को मानता रहे
और यह सब कुछ करे, और उस भवन
को बनाए, जिसकी तैयारी मै ने की है ॥
२० तब दाऊद ने सारी सभा से
कहा, तुम अपने परमेश्वर यहोवा का
धन्यवाद करो। तब सभा के सब लोगो
ने अपने पितरो के परमेश्वर यहोवा का
धन्यवाद किया, और अपना अपना सिर
झुकाकर यहोवा को और राजा को
दण्डवत किया। २१ और दूसरे दिन
उन्हो ने यहोवा के लिये बलिदान किए,
अर्थात् अर्घो समेत एक हजार बैल, एक
हजार मेढे और एक हजार भेड के बच्चे
होमबलि करके चढाए, और सब इस्राएल
के लिये बहुत से मेलबलि चढाए।
उसी दिन यहोवा के साम्हने उन्हो ने बडे
आनन्द से खाया और पिया ॥
२२ फिर उन्हो ने दाऊद के पुत्र सुलैमान
को दूसरी बार राजा ठहराकर यहोवा
की ओर से प्रधान होने के लिये उसका
और याजक होने के लिये सादोक का
अभिषेक किया। २३ तब सुलैमान अपने
पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर,

यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और भाग्यवान हुआ, और इस्राएल उसके अधीन हुआ। २४ और सब हाकिमों और शूरवीरों और राजा दाऊद के सब पुत्रों ने सुलैमान राजा की अधीनता अंगीकार की। २५ और यहोवा ने सुलैमान को सब इस्राएल के देखते बहुत बढ़ाया, और उसे ऐसा राजकीय ऐश्वर्य दिया, जैसा उस से पहिले इस्राएल के किसी राजा का न हुआ था॥

२६ इस प्रकार यिशै के पुत्र दाऊद ने सारे इस्राएल के ऊपर राज्य किया। २७ और उसके इस्राएल पर राज्य करने का समय चालीस वर्ष का था, उस ने सात वर्ष तो हेब्रोन में और तेंतीस वर्ष यरूशलेम में राज्य किया। २८ और वह पूरे बुढ़ापे की अवस्था में दीर्घायु होकर और धन और विभव, मनमाना भोगकर* मर गया, और उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ। २९ आदि से अन्त तक राजा दाऊद के सब कामों का वृत्तान्त, ३० और उसके सब राज्य और पराक्रम का, और उस पर और इस्राएल पर, वरन देश देश के सब राज्यों पर जो कुछ बीता, इसका भी वृत्तान्त शमूएल दर्शी और नातान नबी और गाद दर्शी की पुस्तकों में† लिखा हुआ है॥

* मूल में—दिनों धन, और विभव से तृप्त।
† मूल में—के वचनों में।

इतिहास नामक पुस्तक—दूसरा भाग

(सुलैमान के राज्य का आरम्भ)

१ दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्थिर हो गया, और उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहा और उसको बहुत ही बढ़ाया॥

२ और सुलैमान ने सारे इस्राएल से, अर्थात् सहस्रपतियों, शतपतियों, न्यायियों और इस्राएल के सब रईसों से जो पितरों के घरानों के मुख्य मुख्य पुरुष थे, बातें की। ३ और सुलैमान पूरी मण्डली समेत गिबोन के ऊंचे स्थान पर गया, क्योंकि परमेश्वर का मिलापवाला तम्बू, जिसे यहोवा के दास मूसा ने जंगल में बनाया था, वह वहीं पर था। ४ परन्तु परमेश्वर के सन्दूक को दाऊद किर्यत्यारीम से उस स्थान पर ले आया था जिसे उस ने उसके लिये तैयार किया था, उस ने तो उसके लिये यरूशलेम में एक तम्बू खड़ा कराया था। ५ और पीतल की जो वेदी ऊरी के पुत्र बसलेल ने, जो हूर का पोता था, बनाई थी, वह गिबोन में* यहोवा के निवास के साम्हने थी। इसलिये सुलैमान मण्डली समेत उसके पास गया। ६ और सुलैमान ने वहीं उस पीतल की वेदी के पास जाकर, जो

* मूल में—वहां।

यहोवा के साम्हने मिलापवाले तम्बू के
पास थी, उस पर एक हजार होमबलि
चढाए ।।
७ उसी दिन रात को परमेश्वर ने
सुलैमान को दर्शन देकर उस से कहा,
जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दू, वह माग।
८ सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, तू
मेरे पिता दाऊद पर बडी करुणा करता
रहा और मुझ को उसके स्थान पर
राजा बनाया है। ९ अब हे यहोवा
परमेश्वर! जो वचन तू ने मेरे पिता
दाऊद को दिया था, वह पूरा हो, तू ने
तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा बनाया
है जो भूमि की धूलि के किनको के समान
बहुत है। १० अब मुझे ऐसी बुद्धि और
ज्ञान दे, कि मैं इस प्रजा के साम्हने अन्दर-
बाहर आना-जाना कर सकू, क्योकि कौन
ऐसा है कि तेरी इतनी बडी प्रजा का
न्याय कर सके? ११ परमेश्वर ने
सुलैमान से कहा, तेरी जो ऐसी ही मनसा
हुई, अर्थात् तू ने न तो धन सम्पत्ति मागी
है, न ऐश्वर्य और न अपने बैरियो का
प्राण और न अपनी दीर्घायु मागी, केवल
बुद्धि और ज्ञान का वर मागा है, जिस
से तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैं ने
तुझे राजा नियुक्त किया है, न्याय कर
सके, १२ इस कारण बुद्धि और ज्ञान
तुझे दिया जाता है। और मैं तुझे इतना
धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य दूगा, जितना
न तो तुझ से पहिले किसी राजा को,
मिला और न तेरे बाद किसी राजा
को मिलेगा। १३ तब सुलैमान गिबोन
के ऊचे स्थान से, अर्थात् मिलापवाले
तम्बू के साम्हने से यरूशलेम को आया
और वहा इस्राएल पर राज्य करने
लगा ।।

१४ फिर सुलैमान ने रथ और
सवार इकट्ठे कर लिये, और उसके
चौदह सौ रथ और बारह हजार सवार
थे, और उनको उस ने रथो के नगरो
मे, और यरूशलेम मे राजा के पास
ठहरा रखा। १५ और राजा ने ऐसा
किया, कि यरूशलेम मे सोने-चान्दी का
मूल्य बहुतायत के कारण पत्थरो का
सा, और देवदारो का मूल्य नीचे के
देश के गूलरो का सा बना दिया। १६ और
जो घोडे सुलैमान रखता था, वे मिस्र
से आते थे, और राजा के व्यापारी उन्हे
झुण्ड के झुण्ड ठहराए हुए दाम पर
लिया करते थे। १७ एक रथ तो छ
सौ शेकेल चान्दी पर, और एक घोडा
डेढ सौ शेकेल पर मिस्र से आता था,
और इसी दाम पर वे हित्तियो के सब
राजाओ और अराम के राजाओ के लिये
उन्ही के द्वारा लाया करते थे ।।

(मन्दिर का बनाना)

२ और सुलैमान ने यहोवा के नाम
का एक भवन और अपना राजभवन
बनाने का विचार किया। २ इसलिये
सुलैमान ने सत्तर हजार बोझिये और
अस्सी हजार पहाड से पत्थर काटनेवाले
और वृक्ष काटनेवाले, और इन पर तीन
हजार छ सौ मुखिये गिनती करके
ठहराए। ३ तब सुलैमान ने सोर के
राजा हूराम के पास कहला भेजा, कि
जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से वर्त्ताव
किया, अर्थात् उसके रहने का भवन बनाने
को देवदार भेजे थे, वैसा ही अब मुझ
से भी वर्त्ताव कर। ४ देख, मैं अपने
परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन
बनाने पर हू, कि उसे उसके लिये पवित्र

करूं और उसके सम्मुख सुगन्धित धूप
जलाऊं, और नित्य भेंट की रोटी उस
में रखी जाए, और प्रतिदिन सवेरे और
सांझ को, और विश्राम और नये चांद
के दिनों में और हमारे परमेश्वर यहोवा
के सब नियत पर्व्वों में होमबलि चढ़ाया
जाए। इस्राएल के लिये ऐसी ही सदा
की विधि है। ५ और जो भवन मैं
बनाने पर हूं, वह महान होगा, क्योंकि
हमारा परमेश्वर सब देवताओं में महान
है। ६ परन्तु किस की इतनी शक्ति है,
कि उसके लिये भवन बनाए, वह तो स्वर्ग
में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी नहीं
समाता? मैं क्या हूं कि उसके साम्हने
धूप जलाने को छोड़ और किसी मनसा
से उसका भवन बनाऊं? ७ सो अब
तू मेरे पास एक ऐसा मनुष्य भेज दे,
जो सोने, चान्दी, पीतल, लोहे और बैंजनी,
लाल और नीले कपड़े की कारीगरी में
निपुण हो और नक्काशी भी जानता
हो, कि वह मेरे पिता दाऊद के ठहराए
हुए निपुण मनुष्यों के साथ होकर जो
मेरे पास यहूदा और यरूशलेम में रहते
हैं, काम करे। ८ फिर लबानोन से मेरे
पास देवदार, सनोवर और चंदन की
लकड़ी भेजना, क्योंकि मैं जानता हूं कि
तेरे दास लबानोन में वृक्ष काटना जानते
हैं, और तेरे दासों के संग मेरे दास भी
रहकर, ९ मेरे लिये बहुत सी लकड़ी
तैयार करेंगे, क्योंकि जो भवन मैं बनाना
चाहता हूं, वह बड़ा और अचम्भे के योग्य
होगा। १० और तेरे दास जो लकड़ी
काटेंगे, उनको मैं बीस हजार कोर कूटा
हुआ गेहूं, बीस हजार कोर जव, बीस
हजार बत दाखमधु और बीस हजार बत
तेल दूंगा॥

११ तब सोर के राजा हूराम ने
चिट्ठी लिखकर सुलैमान के पास भेजी,
कि यहोवा अपनी प्रजा से प्रेम रखता है,
इस से उस ने तुझे उनका राजा कर
दिया। १२ फिर हूराम ने यह भी लिखा*
कि धन्य है इस्राएल का परमेश्वर यहोवा,
जो आकाश और पृथ्वी का सृजनहार
है, और उस ने दाऊद राजा को एक
बुद्धिमान, चतुर और समझदार पुत्र दिया
है, ताकि वह यहोवा का एक भवन और
अपना राजभवन भी बनाए। १३ इसलिये
अब मैं एक बुद्धिमान और समझदार
पुरुष को, अर्थात् हूराम-अबी को भेजता
हूं, १४ जो एक दानी स्त्री का बेटा
है, और उसका पिता सोर का था।
और वह सोने, चान्दी, पीतल लोहे,
पत्थर, लकड़ी, बैंजनी और नीले और
लाल और सूक्ष्म सन के कपड़े का काम,
और सब प्रकार की नक्काशी को जानता
और सब भांति की कारीगरी बना सकता
है सो तेरे चतुर मनुष्यों के संग, और
मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के चतुर मनुष्यों
के संग, उसको भी काम मिले। १५ और
मेरे प्रभु ने जो गेहूं, जव, तेल और दाखमधु
भेजने की चर्चा की है, उसे अपने दासों
के पास भिजवा दे। १६ और हम लोग
जितनी लकड़ी का तुझे प्रयोजन हो उतनी
लबानोन पर से काटेंगे, और बेड़े बनवाकर
समुद्र के मार्ग से जापा को पहुंचाएंगे,
और तू उसे यरूशलेम को ले जाना॥
१७ तब सुलैमान ने इस्राएली देश
के सब परदेशियों की गिनती ली, यह उस
गिनती के बाद हुई जो उसके पिता दाऊद
ने ली थी, और वे डेढ़ लाख तीन हजार

* मूल में—कहा।

छ सौ पुरुष निकले। १८ उन मे से
उस ने सत्तर हज़ार वोझिये, अस्सी हज़ार
पहाड पर पत्थर काटनेवाले और वृक्ष
काटनेवाले और तीन हज़ार छ सौ उन
लोगो से काम करानेवाले मुखिये नियुक्त
किए ॥

३ तब सुलैमान ने यरूशलेम मे
मोरिय्याह् नाम पहाड पर उसी
स्थान मे यहोवा का भवन वनाना आरम्भ
किया, जिसे उसके पिता दाऊद ने दर्शन
पाकर यवूसी ओर्नान के खलिहान मे
तैयार किया था २ उस ने अपने राज्य
के चौथे वर्ष के दूसरे महीने के, दूसरे
दिन को वनाना आरम्भ किया।
३ परमेश्वर का जो भवन सुलैमान ने
वनाया, उसका यह ढव है, अर्थात् उसकी
लम्वाई तो प्राचीन काल की नाप के
अनुसार साठ हाथ, और उसकी चौडाई
वीस हाथ की थी। ४ और भवन के
साम्हने के ओसारे की लम्वाई तो भवन
की चौडाई के वरावर वीस हाथ की,
और उसकी ऊचाई एक सौ वीस हाथ
की थी। सुलैमान ने उसको भीतर चोखे
सोने से मढवाया। ५ और भवन के
वडे भाग की छत उस ने सनोवर की
लकडी मे पटवाई, और उसको अच्छे
सोने से मढवाया, और उस पर खजूर
के वृक्ष की और साकलो की नक्काशी
कराई। ६ फिर शोभा देने के लिये उस
ने भवन मे मणि जडवाए। और यह
सोना पर्वैम का था। ७ और उस ने
भवन को, अर्थात् उसकी कडियो, डेवढियो,
भीतो और किवाडो को सोने से
मढवाया, और भीतो पर करूव
खुदवाए ॥

८ फिर उस ने भवन के परमपवित्र
स्थान को वनाया, उसकी लम्वाई तो
भवन की चौड़ाई के वरावर वीस हाथ
की थी, और उसकी चौडाई वीस हाथ
की थी, और उस ने उसे छ सौ किक्कार
चोखे सोने से मढवाया। ९ और सोने
की कीलो का तौल पचास शेकेल था
और उस ने अटारियो को भी सोने से
मढवाया ॥

१० फिर भवन के परमपवित्र स्थान
मे उसने नक्काशी के काम के दो करूव
वनवाए और वे सोने से मढवाए गए।
११ करूवो के पख तो सव मिलकर वीस
हाथ लम्वे थे, अर्थात् एक करूव का एक
पख पाच हाथ का और भवन की भीत
तक पहुचा हुआ था, और उसका दूसरा
पख पाच हाथ का था और दूसरे करूव
के पख से मिला हुआ था। १२ और दूसरे
करूव का भी एक पख पाच हाथ का और
भवन की दूसरी भीत तक पहुचा था,
और दूसरा पख पाच हाथ का और
पहिले करूव के पख से सटा हुआ था।
१३ इन करूवो के पख वीस हाथ फैले
हुए थे, और वे अपने अपने पावो के
वल खडे थे, और अपना अपना मुख
भीतर की ओर किए हुए थे। १४ फिर
उस ने वीचवाले पर्दे को नीले, वैंजनी और
लाल रग के सन के कपडे का वनवाया,
और उस पर करूव कढवाए ॥

१५ और भवन के साम्हने उस ने
पैंतीस पैंतीस हाथ ऊचे दो खम्भे वनवाए,
और जो कगनी एक एक के ऊपर थी वह
पाच पाच हाथ की थी। १६ फिर उस
ने भीतरी कोठरी मे साकले वनवाकर
खम्भो के ऊपर लगाईं, और एक सौ
अनार भी वनाकर साकलो पर लटकाए।

१७ उस ने इन खम्भों को मन्दिर के
साम्हने, एक तो उसकी दाहिनी ओर
और दूसरा बाईं ओर खड़ा कराया, और
दाहिने खम्भे का नाम याकीन और बायें
खम्भे का नाम बोअज़ रखा ॥

४ फिर उस ने पीतल की एक वेदी
बनाई, उसकी लम्बाई और चौड़ाई
बीस बीस हाथ की और ऊंचाई दस
हाथ की थी। २ फिर उस ने एक ढाला
हुआ हौद बनवाया, जो छोर से छोर
तक दस हाथ तक चौड़ा था, उसका
आकार गोल था, और उसकी ऊंचाई पांच
हाथ की थी, और उसके चारों ओर
का घेर तीस हाथ के नाप का था। ३ और
उसके तले, उसके चारों ओर, एक एक
हाथ में दस दस बैलों की प्रतिमाएं बनी
थीं, जो हौद को घेरे थीं, जब वह ढाला
गया, तब ये बैल भी दो पांति करके
ढाले गए। ४ और वह बारह बने हुए
बैलों पर धरा गया, जिन में से तीन
उत्तर, तीन पश्चिम, तीन दक्खिन और
तीन पूर्व की ओर मुंह किए हुए थे,
और इनके ऊपर हौद धरा था, और उन
सभों के पिछले अंग भीतरी भाग में
पड़ते थे। ५ और हौद की मोटाई चौवा
भर की थी, और उसका मोहड़ा कटोरे
के मोहड़े की नाईं, सोसन के फूलों के
काम से बना था, और उस में तीन हजार
बत भरकर समाता था। ६ फिर उस
ने धोने के लिये दस हौदी बनवाकर,
पांच दाहिनी ओर पांच बाईं ओर रख
दीं। उन में होमबलि की वस्तुएं धोई
जाती थीं, परन्तु याजकों के धोने के लिये
बड़ा हौद था ॥

७ फिर उस ने सोने की दस दीवट
विधि के अनुसार बनवाईं, और पांच
दाहिनी ओर और पांच बाईं ओर मन्दिर
में रखवा दीं। ८ फिर उस ने दस मेज
बनवाकर पांच दाहिनी ओर और पांच
बाईं ओर मन्दिर में रखवा दीं। और
उस ने सोने के एक सौ कटोरे बनवाए।
९ फिर उस ने याजकों के आंगन और
बड़े आंगन को बनवाया, और इस आंगन
में फाटक* बनवाकर उनके किवाड़ों
पर पीतल मढ़वाया। १० और उस ने
हौद को भवन की दाहिनी ओर अर्थात्
पूर्व और दक्खिन के कोने की ओर रखवा
दिया ॥

११ और हूराम ने हण्डों, फावड़ियों,
और कटोरों को बनाया। और हूराम
ने राजा सुलैमान के लिये परमेश्वर के
भवन में जो काम करना था उसे निपटा
दिया १२ अर्थात् दो खम्भे और गोलों
समेत वे कंगनियां जो खम्भों के सिरों पर
थीं, और खम्भों के सिरों पर के गोलों को
ढांपने के लिए जालियों की दो दो पांति,
१३ और दोनों जालियों के लिये चार
सौ अनार और जो गोले खम्भों के सिरों
पर थे, उनको ढांपनेवाली एक एक जाली
के लिये अनारों की दो दो पांति बनाईं।
१४ फिर उस ने कुर्सियां और कुर्सियों
पर की हौदियां, १५ और उनके नीचे
के बारह बैल बनाए। १६ फिर
हूराम-अबी ने हण्डों, फावड़ियों, कांटों
और इनके सब सामान को यहोवा
के भवन के लिये राजा सुलैमान
की आज्ञा से झलकाए हुए पीतल के
बनवाए। १७ राजा ने उसको यरदन

* मूल में—किवाड़।

की तराई मे अर्थात् सुक्कोत और सरेदा
के बीच की चिकनी मिट्टीवाली भूमि मे
ढलवाया। १८ सुलैमान ने ये सब पात्र
बहुत बनवाए, यहा तक कि पीतल के
तौल का हिसाब न था ॥

१९ और सुलैमान ने परमेश्वर के
भवन के सब पात्र, सोने की वेदी,
और वे मेज जिन पर भेट की रोटी रखी
जाती थी, २० और दीपको समेत चोखे
सोने की दीवटे, जो विधि के अनुसार
भीतरी कोठरी के साम्हने जला करती थी।
२१ और सोने वरन निरे सोने के फूल,
दीपक और चिमटे, २२ और चोखे सोने
की कैंचिया, कटोरे, धूपदान और करछे
बनवाए। फिर भवन के द्वार और परम
पवित्र स्थान के भीतरी किवाड और भवन
अर्थात् मन्दिर के किवाड सोने के बने ॥

५ इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के
भवन के लिये जो जो काम बनवाया
वह सब निपट गया। तब सुलैमान ने
अपने पिता दाऊद के पवित्र किए हुए
सोने, चान्दी और सब पात्रो को भीतर
पहुचाकर परमेश्वर के भवन के भण्डारो
मे रखवा दिया ॥

(मन्दिर की प्रतिष्ठा)

२ तब सुलैमान ने इस्राएल के पुरनियो
को और गोत्रो के सब मुख्य पुरुष, जो
इस्राएलियो के पितरो के घरानो के प्रधान
थे, उनको भी यरूशलेम मे इस मनसा
से इकट्ठा किया, कि वे यहोवा की वाचा
का सन्दूक दाऊदपुर से अर्थात् सिय्योन
से ऊपर लिवा ले आए। ३ सब इस्राएली
पुरुष सातवे महीने के पर्व के समय राजा
के पास इकट्ठे हुए। ४ जब इस्राएल के
सब पुरनिये आए, तब लेवियो ने सन्दूक
को उठा लिया। ५ और लेवीय याजक
सन्दूक और मिलाप का तम्बू और
जितने पवित्र पात्र उस तम्बू मे थे उन
सभो को ऊपर ले गए। ६ और राजा
सुलैमान और सब इस्राएली मण्डली के
लोग जो उसके पास इकट्ठे हुए थे, उन्हो
ने सन्दूक के साम्हने इतनी भेड और
बैल बलि किए, जिनकी गिनती और
हिसाब बहुतायत के कारण न हो सकती
थी। ७ तब याजको ने यहोवा की वाचा
का सन्दूक उसके स्थान मे, अर्थात् भवन
की भीतरी कोठरी मे जो परमपवित्र
स्थान है, पहुचाकर, करूबो के पखो के
तले रख दिया। ८ सन्दूक के स्थान के
ऊपर करूब तो पख फैलाए हुए थे,
जिससे वे ऊपर मे सन्दूक और उसके डण्डो
को ढापे थे। ९ डण्डे तो इतने लम्बे
थे, कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए
भीतरी कोठरी के साम्हने देख पडते थे,
परन्तु बाहर से वे दिखाई न पडते थे। वे
आज के दिन तक वही है। १० सन्दूक
मे पत्थर की उन दो पटियाओ को छोड
कुछ न था, जिन्हे मूसा ने होरेब मे उसके
भीतर उस समय रखा, जब यहोवा ने
इस्राएलियो के मिस्र से निकलने के बाद
उनके साथ वाचा बान्धी थी। ११ जब
याजक पवित्रस्थान से निकले (जितने
याजक उपस्थित थे, उन सभो ने तो
अपने अपने को पवित्र किया था, और
अलग अलग दलो मे होकर सेवा न
करते थे, १२ और जितने लेवीय गवैये
थे, वे सब के सब अर्थात् पुत्रो और
भाइयो समेत आसाप, हेमान और यदूतून
सन के वस्त्र पहिने झाझ, सारगिया और
वीणाए लिये हुए, वेदी के पूर्व अलग में
खडे थे, और उनके साथ एक सौ बीस

याजक तुरहियां बजा रहे थे।) १३ तो
जब तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले
एक स्वर से यहोवा की स्तुति और
धन्यवाद करने लगे, और तुरहियां, झांझ
आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह
स्तुति ऊंचे शब्द से करने लगे, कि वह
भला है और उसकी करुणा सदा की
है, तब यहोवा के भवन में बादल छा
गया, १४ और बादल के कारण याजक
लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह
सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर
के भवन में भर गया था॥

६ तब सुलैमान कहने लगा, यहोवा
ने कहा था, कि मैं घोर अंधकार
में वास किए रहूंगा। २ परन्तु मैं ने
तेरे लिये एक वासस्थान वरन ऐसा दृढ़
स्थान बनाया है, जिस में तू युग युग
रहे। ३ और राजा ने इस्राएल की पूरी
सभा की ओर मुंह फेरकर उसको आशीर्वाद
दिया, और इस्राएल की पूरी सभा खड़ी
रही। ४ और उस ने कहा, धन्य है
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिस ने
अपने मुंह से मेरे पिता दाऊद को यह
वचन दिया था, और अपने हाथों से इसे
पूरा किया है, ५ कि जिस दिन से मैं
अपनी प्रजा को मिस्र देश से निकाल
लाया, तब से मैं ने न तो इस्राएल के
किसी गोत्र का कोई नगर चुना जिस में
मेरे नाम के निवास के लिये भवन बनाया
जाए, और न कोई मनुष्य चुना कि वह
मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रधान हो।
६ परन्तु मैं ने यरूशलेम को इसलिये
चुना है, कि मेरा नाम वहां हो, और
दाऊद को चुन लिया है कि वह मेरी प्रजा
इस्राएल पर प्रधान हो। ७ मेरे पिता
दाऊद की यह मनसा थी कि इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा के नाम का एक भवन
बनवाए। ८ परन्तु यहोवा ने मेरे पिता
दाऊद से कहा, तेरी जो मनसा है कि
यहोवा के नाम का एक भवन बनाए,
ऐसी मनसा करके तू ने भला तो किया,
९ तौभी तू उस भवन को बनाने न
पाएगा तेरा जो निज पुत्र होगा, वही
मेरे नाम का भवन बनाएगा। १० यह
वचन जो यहोवा ने कहा था, उसे उस
ने पूरा भी किया है, और मैं अपने पिता
दाऊद के स्थान पर उठकर यहोवा के
वचन के अनुसार इस्राएल की गद्दी पर
विराजमान हूं, और इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के नाम के इस भवन को बनाया
है। ११ और इस में मैं ने उस सन्दूक
को रख दिया है, जिस में यहोवा की
वह वाचा है, जो उस ने इस्राएलियों
से बान्धी थी॥

१२ तब वह इस्राएल की सारी सभा
के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा
हुआ और अपने हाथ फैलाए। १३ सुलै-
मान ने पांच हाथ लम्बी, पांच हाथ
चौड़ी और तीन हाथ ऊंची पीतल की
एक चौकी बनाकर आंगन के बीच रखवाई
थी, उसी पर खड़े होकर उस ने सारे
इस्राएल की सभा के साम्हने घुटने टेककर
स्वर्ग की ओर हाथ फैलाए हुए कहा,
१४ हे यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर,
तेरे समान न तो स्वर्ग में और न पृथ्वी
पर कोई ईश्वर है तेरे जो दास अपने
सारे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर*
चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा
पूरी करता और करुणा करता रहता

* मूल में—तेरे साम्हने।

है। १५ तू ने जो वचन मेरे पिता दाऊद
को दिया था, उसका तू ने पालन किया
है, जैसा तू ने अपने मुह से कहा था,
वैसा ही अपने हाथ से उसको हमारी
आखो के साम्हने* पूरा भी किया है।
१६ इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा इस वचन को भी पूरा कर, जो
तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया
था, कि तेरे कुल मे मेरे साम्हने इस्राएल
की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेगे,
यह हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख
जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वश
के लोग अपनी चाल चलन मे ऐसी
चौकसी करे, कि मेरी व्यवस्था पर चलें।
१७ अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
जो वचन तू ने अपने दास दाऊद को
दिया था, वह सच्चा किया जाए ॥

१८ परन्तु क्या परमेश्वर सचमुच
मनुष्यो के सग पृथ्वी पर वास करेगा?
स्वर्ग में वरन सब से ऊचे स्वर्ग मे भी
तू नही समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस
भवन में तू क्योकर समाएगा? १९ तौभी
हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपने दास की
प्रार्थना और गिडगिड़ाहट की ओर ध्यान
दे और मेरी पुकार और यह प्रार्थना सुन,
जो मै तेरे साम्हने कर रहा हू। २० वह
यह है कि तेरी आखे इस भवन की ओर,
अर्थात् इसी स्थान की ओर जिसके विषय
में तू ने कहा है कि मै उस में अपना नाम
रखूगा, रात दिन खुली रहें, और जो
प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर
करे, उसे तू सुन ले। २१ और अपने दास,
और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना
जिसको वे इस स्थान की ओर मुह किए

* मूल में—आज के दिन की नाईं।

हुए गिडगिडाकर करे, उसे सुन लेना,
स्वर्ग मे से जो तेरा निवासस्थान है,
सुन लेना, और सुनकर क्षमा करना ॥

२२ जब कोई किसी दूसरे का अपराध
करे और उसको शपथ खिलाई जाए,
और वह आकर इस भवन मे तेरी वेदी
के साम्हने शपथ खाए, २३ तब तू स्वर्ग
मे से सुनना और मानना, और अपने
दासो का न्याय करके दुष्ट को बदला
देना, और उसकी चाल उसी के सिर
लौटा देना, और निर्दोष को निर्दोष ठहरा-
कर, उसके धर्म के अनुसार उसको फल
देना ॥

२४ फिर यदि तेरी प्रजा इस्राएल तेरे
विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओ
से हार जाए, और तेरी ओर फिरकर
तेरा नाम मानें, और इस भवन मे तुझ से
प्रार्थना और गिडगिडाहट करे, तो तू
स्वर्ग मे से सुनना; २५ और अपनी
प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करना, और
उन्हे इस देश मे लौटा ले आना जिसे तू
ने उनको और उनके पुरखाओ को दिया
है ॥

२६ जब वे तेरे विरुद्ध पाप करे, और
इस कारण आकाश इतना बन्द हो जाए
कि वर्षा न हो, ऐसे समय यदि वे इस
स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम
को मानें, और तू जो उन्हे दुःख देता है,
इस कारण वे अपने पाप से फिरें, २७ तो
तू स्वर्ग में से सुनना, और अपने दासो
और अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को
क्षमा करना, तू जो उनको वह भला
मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना
चाहिये, इसलिये अपने इस देश पर जिसे
तू ने अपनी प्रजा का भाग करके दिया
है, पानी बरसा देना ॥

२८ जब इस देश में काल वा मरी
वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा
कीड़े लगें, वा उनके शत्रु उनके देश के
फाटकों में उन्हें घेर रखें, वा कोई
विपत्ति वा रोग हो, २९ तब यदि कोई
मनुष्य वा तेरी सारी प्रजा इस्राएल जो
अपना अपना दुःख और अपना अपना
खेद जान कर और गिड़गिड़ाहट के साथ
प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की
ओर फैलाए, ३० तो तू अपने स्वर्गीय
निवासस्थान से सुनकर क्षमा करना, और
एक एक के मन की जानकर उसकी
चाल के अनुसार उसे फल देना, (तू ही
तो आदमियों के मन का जाननेवाला
है), ३१ कि वे जितने दिन इस देश
में रहें, जिसे तू ने उनके पुरखाओं को
दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते
हुए तेरे मार्गों पर चलते रहें॥

३२ फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा
इस्राएल का न हो, जब वह तेरे बड़े
नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई
हुई भुजा के कारण दूर देश से आए,
और आकर इस भवन की ओर मुंह
किए हुए प्रार्थना करे, ३३ तब तू
अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुने,
और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी
तुझे पुकारे, उसके अनुसार करना, जिस
से पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम
जानकर, तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं
तेरा भय मानें, और निश्चय करें, कि
यह भवन जो मैं ने बनाया है, वह तेरा
ही कहलाता है॥

३४ जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं
तू उन्हें भेजे वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई
करने को निकल जाएं, और इस नगर
की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस
भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का
बनाया है, मुंह किए हुए तुझ से प्रार्थना करें,
३५ तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना
और गिड़गिड़ाहट सुनना, और उनका न्याय
करना॥

३६ निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है,
यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू
उन पर कोप करके उन्हें शत्रुओं के हाथ
कर दे, और वे उन्हें बन्धुआ करके किसी
देश को, चाहे वह दूर हो, चाहे निकट,
ले जाएं, ३७ तो यदि वे बन्धुआई के
देश में सोच विचार करें, और फिरकर
अपनी बन्धुआई करनेवालों के देश में
तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें, कि हम ने
पाप किया, और कुटिलता और दुष्टता
की है, ३८ सो यदि वे अपनी बन्धुआई
के देश में जहां वे उन्हें बन्धुआ करके
ले गए हों अपने पूरे मन और सारे जीव
से तेरी ओर फिरें, और अपने इस देश
की ओर जो तू ने उनके पुरखाओं को
दिया था, और इस नगर की ओर जिसे
तू ने चुना है, और इस भवन की ओर
जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, मुंह
किए हुए तुझ से प्रार्थना करें, ३९ तो
तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उनकी
प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना, और
उनका न्याय करना और जो पाप तेरी प्रजा
के लोग तेरे विरुद्ध करें, उन्हें क्षमा करना।
४० और हे मेरे परमेश्वर! जो प्रार्थना
इस स्थान में की जाए उसकी ओर अपनी
आंखें खोले रह और अपने कान लगाए
रख॥

४१ अब हे यहोवा परमेश्वर, उठकर
अपने सामर्थ्य के सन्दूक समेत अपने
विश्रामस्थान में आ, हे यहोवा परमेश्वर
तेरे याजक उद्धाररूपी वस्त्र पहिने रहें,

और तेरे भक्त लोग भलाई के कारण
आनन्द करते रहे। ४२ हे यहोवा पर-
मेश्वर, अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को
अनसुनी न कर*, तू अपने दास दाऊद
पर की गई करुणा के काम स्मरण
रख ॥

७ जब सुलैमान यह प्रार्थना कर
चुका, तब स्वर्ग से आग ने गिरकर
होमबलियों तथा और बलियों को भस्म
किया, और यहोवा का तेज भवन में
भर गया। २ और याजक यहोवा के
भवन में प्रवेश न कर सके, क्योंकि यहोवा
का तेज यहोवा के भवन में भर गया
था। ३ और जब आग गिरी और
यहोवा का तेज भवन पर छा गया, तब
सब इस्राएली देखते रहे, और फर्श पर
झुककर अपना अपना मुंह भूमि की ओर
किए हुए दण्डवत किया, और यों कहकर
यहोवा का धन्यवाद किया कि, वह भला
है, उसकी करुणा सदा की है। ४ तब
सब प्रजा समेत राजा ने यहोवा को बलि
चढाई। ५ और राजा सुलैमान ने बाईस
हजार बैल और एक लाख बीस हजार
भेड़-बकरियां चढाई। यों पूरी प्रजा समेत
राजा ने यहोवा के भवन की प्रतिष्ठा
की। ६ और याजक अपना अपना कार्य
करने को खड़े रहे, और लेवीय भी यहोवा
के गीत के गाने के लिये बाजे लिये हुए
खड़े थे, जिन्हें दाऊद राजा ने यहोवा
की सदा की करुणा के कारण उसका
धन्यवाद करने को बनाकर उनके द्वारा
स्तुति कराई थी, और इनके साम्हने
याजक लोग तुरहियां बजाते रहे, और
सब इस्राएली खड़े रहे ॥

७ फिर सुलैमान ने यहोवा के भवन
के साम्हने आंगन के बीच एक स्थान
पवित्र करके होमबलि और मेलबलियों
की चर्बी वहीं चढ़ाई, क्योंकि सुलैमान
की बनाई हुई पीतल की वेदी होमबलि
और अन्नबलि और चर्बी के लिये छोटी
थी ॥

८ उसी समय सुलैमान ने और उसके
संग हमात की घाटी से लेकर मिस्र के
नाले तक के सारे इस्राएल की एक बहुत
बड़ी सभा ने सात दिन तक पर्व को
माना। ९ और आठवें दिन को उन्हों
ने महासभा की, उन्हों ने वेदी की प्रतिष्ठा
सात दिन की, और पर्वों को भी सात
दिन माना। १० निदान सातवें महीने
के तेइसवें दिन को उस ने प्रजा के लोगों
को विदा किया, कि वे अपने अपने डेरे
को जाएं, और वे उस भलाई के कारण
जो यहोवा ने दाऊद और सुलैमान और
अपनी प्रजा इस्राएल पर की थी आनन्दित
थे ॥

११ यों सुलैमान यहोवा के भवन और
राजभवन को बना चुका, और यहोवा
के भवन में और अपने भवन में जो कुछ
उस ने बनाना चाहा, उस में उसका
मनोरथ पूरा हुआ। १२ तब यहोवा ने
रात में उसको दर्शन देकर उस से कहा,
मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और इस स्थान
को यज्ञ के भवन के लिये अपनाया है।
१३ यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूं,
कि वर्षा न हो, वा टिड्डियों को देश उजाड़ने
की आज्ञा दूं, वा अपनी प्रजा में मरी
फैलाऊं, १४ तब यदि मेरी प्रजा के लोग
जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना

* मूल में—अपने अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

करे और मेरे दर्शन के खोजी होकर
अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग
में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूंगा
और उनके देश को ज्यों का त्यों कर
दूंगा। १५ अब से जो प्रार्थना इस स्थान
में की जाएगी, उस पर मेरी आंखें खुली
और मेरे कान लगे रहेंगे। १६ और
अब मैं ने इस भवन को अपनाया और
पवित्र किया है कि मेरा नाम सदा के
लिये इस में बना रहे, मेरी आंखें और
मेरा मन दोनों नित्य यहीं लगे रहेंगे।
१७ और यदि तू अपने पिता दाऊद की
नाईं अपने को मेरे सम्मुख जानकर*
चलता रहे और मेरी सब आज्ञाओं के
अनुसार किया करे, और मेरी विधियों
और नियमों को मानता रहे, १८ तो मैं
तेरी राजगद्दी को स्थिर रखूंगा, जैसे कि
मैं ने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा
बान्धी थी, कि तेरे कुल में इस्राएल पर
प्रभुता करनेवाला सदा बना रहेगा।
१९ परन्तु यदि तुम लोग फिरो, और
मेरी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं
ने तुम को दी हैं त्यागो, और जाकर
पराये देवताओं की उपासना करो और उन्हें
दण्डवत करो, २० तो मैं उनको अपने देश
में से जो मैं ने उनको दिया है, जड़ से
उखाड़ूंगा, और इस भवन को जो मैं ने
अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी
दृष्टि से दूर करूंगा, और ऐसा करूंगा
कि देश देश के लोगों के बीच उसकी
उपमा और नामधराई चलेगी। २१ और
यह भवन जो इतना विशाल है, उसके
पास से आने जानेवाले चकित होकर पूछेंगे
कि यहोवा ने इस देश और इस भवन

* मूल में—मेरे साम्हने।

से ऐसा क्यों किया है। २२ तब लोग
कहेंगे, कि उन लोगों ने अपने पितरों के
परमेश्वर यहोवा को जो उनको मिस्र
देश से निकाल लाया था, त्यागकर पराये
देवताओं को ग्रहण किया, और उन्हें
दण्डवत की और उनकी उपासना की,
इस कारण उस ने यह सब विपत्ति उन
पर डाली है॥

(सुलैमान का चरित्र)

८ सुलैमान को यहोवा के भवन
और अपने भवन के बनाने में बीस
वर्ष लगे। २ तब जो नगर हूराम ने
सुलैमान को दिए थे, उन्हें सुलैमान ने
दृढ़ करके उन में इस्राएलियों को बसाया॥
३ तब सुलैमान सोबा के हमात को
जाकर, उस पर जयवन्त हुआ। ४ और
उस ने तदमोर को जो जंगल में है, और
हमात के सब भण्डार नगरों को दृढ़
किया। ५ फिर उस ने ऊपरवाले और
नीचेवाले दोनों बेथोरोन को शहरपनाह
और फाटकों और बेंड़ों से दृढ़ किया।
६ और उस ने बालात को और सुलैमान
के जितने भण्डार नगर थे और उसके
रथों और सवारों के जितने नगर थे
उनको, और जो कुछ सुलैमान ने यरूशलेम,
लबानोन और अपने राज्य के सब देश में
बनाना चाहा, उन सब को बनाया।
७ हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों,
हिव्वियों और यबूसियों के बचे हुए लोग
जो इस्राएल के न थे, ८ उनके वंश जो
उनके बाद देश में रह गए, और जिनका
इस्राएलियों ने अन्त न किया था, उन
में से तो कितनों को सुलैमान ने बेगार
में रखा और आज तक उनकी वही दशा
है। ९ परन्तु इस्राएलियों में से सुलैमान

ने अपने काम के लिये किसी को दास
न वनाया, वे तो योद्धा और उसके हाकिम,
उसके सरदार और उसके रथो और
सवारो के प्रधान हुए। १० और सुलैमान
के सरदारो के प्रधान जो प्रजा के लोगो
पर प्रभुता करनेवाले थे, वे अढाई सौ
थे ॥

११ फिर सुलैमान फिरौन की वेटी
को दाऊदपुर मे से उस भवन मे ले आया
जो उस ने उसके लिये वनाया था, क्योकि
उस ने कहा, कि जिस जिस स्थान मे
यहोवा का सन्दूक आया है, वे पवित्र
है, इसलिये मेरी रानी इस्राएल के राजा
दाऊद के भवन मे न रहने पाएगी ॥

१२ तव सुलैमान ने यहोवा की उस
वेदी पर जो उस ने ओसारे के आगे वनाई
थी, यहोवा को होमवलि चढाई। १३ वह
मूसा की आज्ञा के और दिन दिन के
प्रयोजन के अनुसार, अर्थात् विश्राम और
नये चाद और प्रति वर्ष तीन वार ठहराए
हुए पर्वो अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व्व,
और अठवारो के पर्व्व, और झोपडियो
के पर्व्व मे वलि चढाया करता था।
१४ और उस ने अपने पिता दाऊद के
नियम के अनुसार याजको की सेवकाई
के लिये उनके दल ठहराए, और लेवियो
को उनके कामो पर ठहराया, कि हर एक
दिन के प्रयोजन के अनुसार वे यहोवा की
स्तुति और याजको के साम्हने सेवा-टहल
किया करे, और एक एक फाटक के पास
द्वारपालो को दल दल करके ठहरा दिया,
क्योकि परमेश्वर के भक्त दाऊद ने ऐसी
आज्ञा दी थी। १५ और राजा ने
भण्डारो या किसी और वात मे याजको
और लेवियो के लिये जो जो आज्ञा दी
थी, उनको न टाला ॥

१६ और सुलैमान का सव काम जो
उस ने यहोवा के भवन की नेव डालने
से लेकर उसके पूरा करने तक किया वह
ठीक हुआ। निदान यहोवा का भवन
पूरा हुआ ॥

१७ तव सुलैमान एस्योनगेवेर और
एलोत को गया, जो एदोम के देश मे
समुद्र के तीर पर है। १८ और हूराम
ने उसके पास अपने जहाजियो के द्वारा
जहाज और समुद्र के जानकार मल्लाह
भेज दिए, और उन्हो ने सुलैमान के
जहाजियो के सग ओपीर को जाकर
वहा से साढे चार सौ किक्कार सोना
राजा सुलैमान को ला दिया ॥

(शीबा की रानी का सुलैमान का
दर्शन करना)

९ जब शीबा की रानी ने सुलैमान
की कीर्त्ति सुनी, तब वह कठिन
कठिन प्रश्नो से उसकी परीक्षा करने के
लिये यरूशलेम को चली। वह वहुत
भारी दल और मसालो और वहुत सोने
और मणि से लदे ऊट साथ लिये हुए
आई, और सुलैमान के पास पहुचकर उससे
अपने मन की सव वातो के विषय
वाते की। २ सुलैमान ने उसके सव
प्रश्नों का उत्तर दिया, कोई वात सुलैमान
की वुद्धि मे ऐसी वाहर न रही* कि
वह उसे न वता सके। ३ जव शीवा की
रानी ने सुलैमान की वुद्धिमानी और
उसका वनाया हुआ भवन और उसकी
मेज पर का भोजन देखा, ४ और उसके
कर्मचारी किस रीति वैठते और उसके
टहलुए किस रीति खडे रहते और कैसे

* मूल में—कोई वात सुलैमान से न
छिपी।

कैसे कपडे पहिने रहते है, और उसके
पिलानेवाले कैसे है, और वे कैसे कपडे
पहिने है, और वह कैसी चढाई है जिस से
वह यहोवा के भवन को जाया करता है,
जब उस ने यह सब देखा, तब वह
चकित हो गई ।।
५ तब उस ने राजा से कहा, मैं ने तेरे
कामो और बुद्धिमानी की जो कीर्त्ति
अपने देश में सुनी वह सच ही है।
६ परन्तु जब तक मैं ने आप ही आकर
अपनी आंखो से यह न देखा, तब तक
मैं ने उनकी प्रतीति न की, परन्तु तेरी
बुद्धि की आधी बडाई भी मुझे न बताई
गई थी, तू उस कीर्त्ति से बढकर है जो
मैं ने सुनी थी। ७ धन्य है तेरे जन,
धन्य है तेरे ये सेवक, जो नित्य तेरे सम्मुख
उपस्थित रहकर तेरी बुद्धि की बातें सुनते
है। ८ धन्य है तेरा परमेश्वर यहोवा,
जो तुझ से ऐसा प्रसन्न हुआ, कि तुझे
अपनी राजगद्दी पर इसलिये विराजमान
किया कि तू अपने परमेश्वर यहोवा की
ओर से राज्य करे, तेरा परमेश्वर जो
इस्राएल से प्रेम करके उन्हें सदा के लिये
स्थिर करना चाहता था, इसी कारण
उस ने तुझे न्याय और धर्म करने को
उनका राजा बना दिया। ९ और उस
ने राजा को एक सौ बीस किक्कार सोना,
बहुत सा सुगन्धद्रव्य, और मणि दिए,
जैसे सुगन्धद्रव्य शीबा की रानी ने राजा
सुलैमान को दिए, वैसे देखने मे नही
आए। १० फिर हूराम और सुलैमान
दोनो के जहाजी जो ओपीर से सोना
लाते थे, वे चन्दन की लकडी और मणि
भी लाते थे। ११ और राजा ने चन्दन
की लकडी से यहोवा के भवन और
राजभवन के लिये चबूतरे और गवैयो
के लिये वीणाए और सारंगिया बनवाईं,
ऐसी वस्तुए उस से पहिले यहूदा देश में
न देख पडी थी। १२ और शीबा की
रानी ने जो कुछ चाहा वही राजा सुलैमान
ने उसको उसकी इच्छा के अनुसार दिया,
यह उस से अधिक था, जो वह राजा के
पास ले आई थी। तब वह अपने जनो
समेत अपने देश को लौट गई ।।

(सुलैमान का माहात्म्य और मृत्यु)

१३ जो सोना प्रति वर्ष सुलैमान के
पास पहुचा करता था, उसका तौल छ
सौ छियासठ किक्कार था। १४ यह उस
से अधिक था जो सौदागर और व्यापारी
लाते थे, और अरब देश के सब राजा
और देश के अधिपति भी सुलैमान के
पास सोना चान्दी लाते थे। १५ और
राजा सुलैमान ने सोना गढाकर दो सौ
बडी बडी ढालें बनवाईं, एक एक ढाल
में छ छ सौ शेकेल गढा हुआ सोना लगा।
१६ फिर उस ने सोना गढाकर तीन सौ
छोटी ढालें और भी बनवाईं, एक एक छोटी
ढाल मे तीन सौ शेकेल सोना लगा, और
राजा ने उनको लबानोनी वन नामक भवन
में रखा दिया। १७ और राजा ने हाथी-
दात का एक बडा सिंहासन बनाया और
चोखे सोने से मढाया। १८ उस सिंहासन
में छ सीढिया और सोने का एक पावदान
था, ये सब सिंहासन से जुडे थे, और
बैठने के स्थान की दोनो अलग टेक लगी
थी और दोनो टेको के पास एक एक
सिंह खडा हुआ बना था। १९ और
छहो सीढियो की दोनो अलग में एक एक
सिंह खडा हुआ बना था, वे सब बारह
हुए। किसी राज्य में ऐसा कभी न बना।
२० और राजा सुलैमान के पीने के सब

पात्र सोने के थे, और लवानोनी वन नामक
भवन के सव पात्र भी चोखे सोने के थे,
सुलैमान के दिनो मे चान्दी का कुछ
हिसाव न था। २१ क्योकि हूराम के
जहाजियो के सग राजा के तर्शीश को
जानेवाले जहाज थे, और तीन तीन वर्ष
के वाद वे तर्शीश के जहाज सोना, चान्दी,
हाथीदात, वन्दर और मोर ले आते थे ॥

२२ यो राजा सुलैमान धन और वुद्धि
मे पृथ्वी के सव राजाओ से वढकर हो गया।
२३ और पृथ्वी के सव राजा सुलैमान
की उस वुद्धि की वाते सुनने को जो
परमेश्वर ने उसके मन मे उपजाई थी
उसका दर्शन करना चाहते थे। २४ और
वे प्रति वर्ष अपनी अपनी भेट अर्थात् चान्दी
और सोने के पात्र, वस्त्र-शस्त्र, सुगन्धद्रव्य,
घोडे और खच्चर ले आते थे। २५ और
अपने घोडो और रथो के लिये सुलैमान
के चार हजार थान और वारह हजार
सवार भी थे, जिनको उस ने रथो के
नगरो मे और यरूशलेम मे राजा के पास
ठहरा रखा। २६ और वह महानद से
ले पलिश्तियो के देश और मिस्र के
सिवाने तक के सव राजाओ पर प्रभुता
करता था। २७ और राजा ने ऐसा
किया, कि वहुतायत के कारण यरूशलेम
मे चान्दी का मूल्य पत्थरो का और
देवदार का मूल्य नीचे के देश के गूलरो
का सा हो गया। २८ और लोग मिस्र
मे और और सव देशो मे सुलैमान के
लिये घोडे लाते थे ॥

२९ आदि से अन्त तक सुलैमान के
और सव काम क्या नातान नवी की
पुस्तक * मे, और शीलोवासी अहिय्याह
की नवूवत की पुस्तक मे, और नवात के
पुत्र यारोवाम के विषय इद्दो दर्शी के
दर्शन की पुस्तक मे नही लिखे है?
३० सुलैमान ने यरूशलेम मे सारे इस्राएल
पर चालीस वर्ष तक राज्य किया।
३१ और सुलैमान अपने पुरखाओ के सग
सो गया और उसको उसके पिता दाऊद
के नगर मे मिट्टी दी गई, और उसका
पुत्र रहूवियाम उसके स्थान पर राजा
हुआ ॥

(इस्राएल के राज्य का दो भाग हो जाना)

१० रहूवियाम शकेम को गया,
क्योकि सारे इस्राएली उसको राजा
वनाने के लिये वही गए थे। २ और
नवात के पुत्र यारोवाम ने यह सुना (वह
तो मिस्र मे रहता था, जहा वह सुलैमान
राजा के डर के मारे भाग गया था),
और यारोवाम मिस्र से लौट आया।
३ तव उन्हो ने उसको वुलवा भेजा,
सो यारोवाम और सव इस्राएली आकर
रहूवियाम से कहने लगे, ४ तेरे पिता ने
तो हम लोगो पर भारी जूआ डाल रखा
था, इसलिये अव तू अपने पिता की कठिन
सेवा को और उस भारी जूए को जिसे
उस ने हम पर डाल रखा है कुछ हलका
कर, तव हम तेरे अधीन रहेगे। ५ उस
ने उन से कहा, तीन दिन के उपरान्त
मेरे पास फिर आना, सो वे चले गए ॥

६ तव राजा रहूवियाम ने उन वूढो
से जो उसके पिता सुलैमान के जीवन
भर उसके साम्हने उपस्थित रहा करते
थे, यह कहकर सम्मति ली, कि इस
प्रजा को कैसा उत्तर देना उचित है,
इस मे तुम क्या सम्मति देते हो? ७ उन्हो
ने उसको यह उत्तर दिया, कि यदि तू

* मूल में—के वचनों।

इस प्रजा के लोगो से अच्छा बर्ताव
करके उन्हें प्रसन्न करे और उन से मधुर
बातें कहे, तो वे सदा तेरे अधीन बने
रहेंगे। ८ परन्तु उस ने उस सम्मति को
जो बूढो ने उसको दी थी छोड दिया
और उन जवानो से सम्मति ली, जो
उसके संग बडे हुए थे और उसके सम्मुख
उपस्थित रहा करते थे। ९ उन से उस
ने पूछा, मैं प्रजा के लोगो को कैसा उत्तर
दू, इस में तुम क्या सम्मति देते हो?
उन्हो ने तो मुझ से कहा है, कि जो जूआ
तेरे पिता ने हम पर डाल रखा है, उसे
तू हलका कर। १० जवानो ने जो उस
के संग बडे हुए थे उसको यह उत्तर दिया,
कि उन लोगो ने तुझ से कहा है, कि तेरे
पिता ने हमारा जूआ भारी किया था,
परन्तु उसे हमारे लिये हलका कर, तू
उन से यो कहना, कि मेरी छिगुलिया
मेरे पिता की कटि से भी मोटी ठहरेगी।
११ मेरे पिता ने तुम पर जो भारी
जूआ रखा था, उसे मैं और भी भारी
करूगा, मेरा पिता तो तुम को कोडो
से ताडना देता था, परन्तु मैं बिच्छुओ से
दूगा॥

१२ तीसरे दिन जैसे राजा ने ठहराया
था, कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना,
वैसे ही यारोबाम और सारी प्रजा रहूबियाम
के पास उपस्थित हुई। १३ तब राजा
ने उस से कडी बातें की, और रहूबियाम
राजा ने बूढो की दी हुई सम्मति छोडकर
१४ जवानो की सम्मति के अनुसार उन
से कहा, मेरे पिता ने तो तुम्हारा जूआ
भारी कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी
कठिन कर दूगा, मेरे पिता ने तो तुम
को कोडो से ताडना दी, परन्तु मैं बिच्छुओ
से ताडना दूगा। १५ इस प्रकार राजा
ने प्रजा की बिनती न मानी, इसका
कारण यह है, कि जो वचन यहोवा ने
शीलोवासी अहिय्याह के द्वारा नबात के
पुत्र यारोबाम से कहा था, उसको पूरा
करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा ही
ठहराया था॥

१६ जब सब इस्राएलियो ने देखा कि
राजा हमारी नही सुनता, तब वे बोले *
कि दाऊद के साथ हमारा क्या अंश?
हमारा तो यिशै के पुत्र मे कोई भाग नही
है। हे इस्राएलियो, अपने अपने डेरे को
चले जाओ। अब हे दाऊद, अपने ही
घराने की चिन्ता कर। १७ तब सब
इस्राएली अपने डेरे को चले गए। केवल
जितने इस्राएली यहूदा के नगरो में बसे
हुए थे, उन्ही पर रहूबियाम राज्य करता
रहा। १८ तब राजा रहूबियाम ने हदो-
राम को जो सब बेगारो पर अधिकारी
था भेज दिया, और इस्राएलियो ने उसको
पत्थरवाह किया और वह मर गया।
तब रहूबियाम फुर्ती से अपने रथ पर
चढकर, यरूशलेम को भाग गया। यो
इस्राएल दाऊद के घराने से फिर गया
और आज तक फिरा हुआ है॥

(रहूबियाम का राज्य)

११ जब रहूबियाम यरूशलेम को
आया, तब उस ने यहूदा और
बिन्यामीन के घराने को जो मिलकर
एक लाख अस्सी हजार अच्छे योद्धा थे
इकट्ठा किया, कि इस्राएल के साथ युद्ध
करे जिस से राज्य रहूबियाम के वश मे
फिर आ जाए। २ तब यहोवा का यह
वचन परमेश्वर के भक्त शमायाह के
पास पहुचा, ३ कि यहूदा के राजा सुलैमान

* मूल में—राजा को उत्तर दिया।

के पुत्र रहूबियाम से और यहूदा और
बिन्यामीन के सब इस्राएलियों से कह,
४ यहोवा यों कहता है, कि अपने भाइयों
पर चढ़ाई करके युद्ध न करो। तुम अपने
अपने घर लौट जाओ, क्योंकि यह बात
मेरी ही ओर से हुई है। यहोवा के ये
वचन मानकर, वे यारोबाम पर बिना
चढ़ाई किए लौट गए॥

५ सो रहूबियाम यरूशलेम में रहने
लगा, और यहूदा में बचाव के लिये ये
नगर दृढ़ किए, ६ अर्थात् बेतलेहेम,
एताम, तको। ७ बेतसूर, सोके, अदुल्लाम।
८ गत, मारेशा, जीप। ९ अदोरैम,
लाकीश, अजेका। १० सोरा, अय्यालोन
और हेब्रोन जो यहूदा और बिन्यामीन
में हैं, दृढ़ किया। ११ और उस ने दृढ़
नगरों को और भी दृढ़ करके उन में
प्रधान ठहराए, और भोजन वस्तु और
तेल और दाखमधु के भण्डार रखवा
दिए। १२ फिर एक एक नगर में उस
ने ढालें और भाले रखवाकर उनको अत्यन्त
दृढ़ कर दिया। यहूदा और बिन्यामीन
तो उसके थे॥

१३ और सारे इस्राएल के याजक
और लेवीय भी अपने सब देश से उठकर
उसके पास गए। १४ यों लेवीय अपनी
चराइयों और निज भूमि छोड़कर, यहूदा
और यरूशलेम में आए, क्योंकि यारोबाम
और उसके पुत्रों ने उनको निकाल दिया
था कि वे यहोवा के लिये याजक का काम
न करें। १५ और उस ने ऊंचे स्थानों
और बकरों और अपने बनाए हुए बछड़ों
के लिये, अपनी ओर से याजक ठहरा
लिए। १६ और लेवियों के बाद इस्राएल
के सब गोत्रों में से जितने मन लगाकर
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के खोजी
थे वे अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा
को बलि चढ़ाने के लिये यरूशलेम को
आए। १७ और उन्हों ने यहूदा का
राज्य स्थिर किया और सुलैमान के
पुत्र रहूबियाम को तीन वर्ष तक दृढ़
कराया, क्योंकि तीन वर्ष तक वे दाऊद
और सुलैमान की लीक पर चलते रहे॥

१८ और रहूबियाम ने एक स्त्री को
ब्याह लिया, अर्थात् महलत को जिसका
पिता दाऊद का पुत्र यरीमोत और माता
यिशै के पुत्र एलीआब की बेटी अबीहैल
थी। १९ और उस से यूश शमर्याह और
जाहम नाम पुत्र उत्पन्न हुए। २० और
उसके बाद उस ने अबशलोम की नतिनी
माका को ब्याह लिया, और उस से
अबिय्याह, अत्तै, जीजा और शलोमीत
उत्पन्न हुए। २१ रहूबियाम ने अठारह
रानियां ब्याह ली और साठ रखेलियां
रखीं, और उसके अट्ठाईस बेटे और साठ
बेटियां उत्पन्न हुईं। अबशलोम की नतिनी
माका से वह अपनी सब रानियों और
रखेलियों से अधिक प्रेम रखता था,
२२ सो रहूबियाम ने माका के बेटे अबि-
य्याह को मुख्य और सब भाइयों में
प्रधान इस मनसा से ठहरा दिया, कि
उसे राजा बनाए। २३ और वह समझ
बूझकर काम करता था, और उस ने
अपने सब पुत्रों को अलग अलग करके
यहूदा और बिन्यामीन के सब देशों के
सब गढ़वाले नगरों में ठहरा दिया, और
उन्हें भोजन वस्तु बहुतायत से दी, और
उनके लिये बहुत सी स्त्रियां ढूंढीं॥

१२ परन्तु जब रहूबियाम का राज्य
दृढ़ हो गया, और वह आप
स्थिर हो गया, तब उस ने और उसके

साथ सारे इस्राएल ने यहोवा की व्यवस्था
को त्याग दिया। २ उन्हों ने जो यहोवा
से विश्वासघात किया, इस कारण राजा
रहूबियाम के पांचवें वर्ष में मिस्र के
राजा शीशक ने, ३ बारह सौ रथ और
साठ हजार सवार लिये हुए यरूशलेम
पर चढ़ाई की, और जो लोग उसके संग
मिस्र से आए, अर्थात् लूबी, सुक्किय्यी,
कूशी, ये अनगिनत थे। ४ और उस ने
यहूदा के गढ़वाले नगरों को ले लिया,
और यरूशलेम तक आया। ५ तब शमा-
याह नबी रहूबियाम और यहूदा के हाकिमों
के पास जो शीशक के डर के मारे यरूशलेम
में इकट्ठे हुए थे, आकर कहने लगा,
यहोवा यों कहता है, कि तुम ने मुझ को
छोड़ दिया है, इसलिये मैं ने तुम को
छोड़कर शीशक के हाथ में कर दिया
है। ६ तब इस्राएल के हाकिम और
राजा दीन हो गए, और कहा, यहोवा
धर्मी है। ७ जब यहोवा ने देखा कि
वे दीन हुए हैं, तब यहोवा का यह वचन
शमायाह के पास पहुंचा कि वे दीन हो
गए हैं, मैं उनको नष्ट न करूंगा, मैं
उनका कुछ बचाव करूंगा, और मेरी
जलजलाहट शीशक के द्वारा यरूशलेम पर
न भड़केगी। ८ तौभी वे उसके अधीन
तो रहेंगे, ताकि वे मेरी और देश
देश के राज्यों की भी सेवा जान लें॥
९ तब मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम
पर चढ़ाई करके यहोवा के भवन की
अनमोल वस्तुएं और राजभवन की अनमोल
वस्तुएं उठा ले गया। वह सब कुछ उठा ले
गया, और सोने की जो फरियां सुलैमान
ने बनाई थीं, उनको भी वह ले गया।
१० तब राजा रहूबियाम ने उनके बदले
पीतल की ढालें बनवाईं और उन्हें पहरुओं
के प्रधानों के हाथ सौंप दिया, जो राजभवन
के द्वार की रखवाली करते थे। ११ और
जब जब राजा यहोवा के भवन में जाता,
तब तब पहरुए आकर उन्हें उठा ले चलते,
और फिर पहरुओं की कोठरी में लौटाकर
रख देते थे। १२ जब रहूबियाम दीन
हुआ, तब यहोवा का क्रोध उस पर से उतर
गया, और उस ने उसका पूरा विनाश न
किया, और यहूदा में अच्छे गुण भी थे॥
१३ सो राजा रहूबियाम यरूशलेम में
दृढ़ होकर राज्य करता रहा। जब रहू-
बियाम राज्य करने लगा, तब एकतालीस
वर्ष की आयु का था, और यरूशलेम में
अर्थात् उस नगर में, जिसे यहोवा ने
अपना नाम बनाए रखने के लिये इस्राएल
के सारे गोत्र में से चुन लिया था, सत्रह
वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता
का नाम नामा था, जो अम्मोनी स्त्री
थी। १४ उस ने वह कर्म किया जो
बुरा है, अर्थात् उस ने अपने मन को
यहोवा की खोज में न लगाया। १५ आदि
से अन्त तक रहूबियाम के काम क्या
शमायाह नबी और इद्दो दर्शी की पुस्तकों*
में वंशावलियों की रीति पर नहीं लिखे
हैं? रहूबियाम और यारोबाम के बीच
तो लड़ाई सदा होती रही। १६ और
रहूबियाम अपने पुरखाओं के संग सो
गया और दाऊदपुर में उसको मिट्टी दी
गई। और उसका पुत्र अबिय्याह उसके
स्थान पर राज्य करने लगा॥

(अबिय्याह का राज्य)

१३ यारोबाम के अठारहवें वर्ष
में अबिय्याह यहूदा पर राज्य
करने लगा। २ वह तीन वर्ष तक

* मूल में—वचनों।

यरूशलेम मे राज्य करता रहा, और उसकी
माता का नाम मीकायाह था, जो गिबा-
वासी ऊरीएल की बेटी थी। और अबि-
य्याह और यारोबाम के बीच मे लडाई
हुई।।

३ अबिय्याह ने तो बडे योद्धाओ का
दल, अर्थात् चार लाख छटे हुए पुरुष
लेकर लडने के लिये पाति बन्धाई, और
यारोबाम ने आठ लाख छटे हुए पुरुष
जो बडे शूरवीर थे, लेकर उसके विरुद्ध
पाति बन्धाई। ४ तब अबिय्याह समारैम
नाम पहाड पर, जो एप्रैम के पहाडी देश
मे है, खडा होकर कहने लगा, हे यारोबाम,
हे सब इस्राएलियो, मेरी सुनो। ५ क्या
तुम को न जानना चाहिए, कि इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा ने लोनवाली * वाचा
बान्धकर दाऊद को और उसके वश को
इस्राएल का राज्य सदा के लिये दे दिया
है। ६ तौभी नबात का पुत्र यारोबाम
जो दाऊद के पुत्र सुलैमान का कर्मचारी
था, वह अपने स्वामी के विरुद्ध उठा
है। ७ और उसके पास हलके और ओछे
मनुष्य इकट्ठा हो गए है और जब सुलैमान
का पुत्र रहूबियाम लडका और अल्हड
मन का था और उनका साम्हना न कर
सकता था, तब वे उसके विरुद्ध सामर्थी
हो गए। ८ और अब तुम सोचते हो
कि हम यहोवा के राज्य का साम्हना
करेंगे, जो दाऊद की सन्तान के हाथ
में है, क्योकि तुम सब मिलकर बडा
समाज बन गए हो और तुम्हारे पास
वे सोने के बछडे भी है जिन्हे यारोबाम
ने तुम्हारे देवता होने के लिये बनवाया।
९ क्या तुम ने यहोवा के याजको को,
अर्थात् हारून की सन्तान और लेवियो
को निकालकर देश देश के लोगो की
नाई याजक नियुक्त नही कर लिए?
जो कोई एक बछडा और सात मेढे अपना
सस्कार कराने को ले आता, तो उनका
याजक हो जाता है जो ईश्वर नही
है। १० परन्तु हम लोगो का परमेश्वर
यहोवा है और हम ने उसको नही त्यागा,
और हमारे पास यहोवा की सेवा टहल
करनेवाले याजक हारून की सन्तान और
अपने अपने काम मे लगे हुए लेवीय
है। ११ और वे नित्य सवेरे और साझ
को यहोवा के लिये होमबलि और सुगन्ध-
द्रव्य का धूप जलाते है, और शुद्ध मेज
पर भेट की रोटी सजाते और सोने की
दीवट और उसके दीपक साझ-साझ को
जलाते है, हम तो अपने परमेश्वर यहोवा
की आज्ञाओ को मानते रहते है, परन्तु
तुम ने उसको त्याग दिया है। १२ और
देखो, हमारे सग हमारा प्रधान परमेश्वर
है, और उसके याजक तुम्हारे विरुद्ध
सास बान्धकर फूकने को तुरहिया लिये हुए
भी हमारे साथ है। हे इस्राएलियो अपने
पूर्वजो के परमेश्वर यहोवा से मत लडो,
क्योकि तुम कृतार्थ न होगे।।

१३ परन्तु यारोबाम ने घातको को
उनके पीछे भेज दिया, वे तो यहूदा के
साम्हने थे, और घातक उनके पीछे थे।
१४ और जब यहूदियो ने पीछे को मुह
फेरा, तो देखा कि हमारे आगे और
पीछे दोनो ओर से लडाई होनेवाली है,
तब उन्हो ने यहोवा की दोहाई दी, और
याजक तुरहियो को फूकने लगे। १५ तब
यहूदी पुरुषो ने जय जयकार किया, और
जब यहूदी पुरुषो ने जय जयकार किया,
तब परमेश्वर ने अबिय्याह और यहूदा

* अर्थात् अक्षय।

के साम्हने, यारोबाम और सारे इस्राएलियो
को मारा। १६ और इस्राएली यहूदा के
साम्हने से भागे, और परमेश्वर ने उन्हें
उनके हाथ मे कर दिया। १७ और
अबिय्याह और उसकी प्रजा ने उन्हे बडी
मार से मारा, यहा तक कि इस्राएल में
से पाच लाख छटे हुए पुरुष मारे गए।
१८ उस समय तो इस्राएली दब गए,
और यहूदी इस कारण प्रबल हुए कि
उन्हो ने अपने पितरो के परमेश्वर यहोवा
पर भरोसा रखा था। १९ तब अबिय्याह
ने यारोबाम का पीछा करके उस से
बेतेल, यशाना और एप्रोन नगरो और
उनके गावो को ले लिया। २० और
अबिय्याह के जीवन भर यारोबाम फिर
सामर्थी न हुआ, निदान यहोवा ने उसको
ऐसा मारा कि वह मर गया। २१ परन्तु
अबिय्याह और भी सामर्थी हो गया और
चौदह स्त्रिया व्याह ली जिन से बाइस
बेटे और सोलह बेटिया उत्पन्न हुई।
२२ और अबिय्याह के काम और
उसकी चाल चलन, और उसके वचन,
इद्दो नबी की कथा में लिखे है॥

(आसा का राज्य)

१४ निदान अबिय्याह अपने
पुरखाओ के संग सो गया, और
उसको दाऊदपुर में मिट्टी दी गई, और
उसका पुत्र आसा उसके स्थान पर राज्य
करने लगा। इसके दिनो में दस वर्ष तक
देश में चैन रहा। २ और आसा ने
वही किया जो उसके परमेश्वर यहोवा
की दृष्टि मे अच्छा और ठीक था।
३ उस ने तो पराई वेदियो को और
ऊचे स्थानो को दूर किया, और लाठो
को तुडवा डाला, और अशेरा नाम मूरतो
को तोड डाला। ४ और यहूदियो को
आज्ञा दी कि अपने पूर्वजो के परमेश्वर
यहोवा की खोज करे और व्यवस्था और
आज्ञा को मानें। ५ और उस ने ऊचे
स्थानो और सूर्य की प्रतिमाओ को यहूदा
के सब नगरो म से दूर किया, और उसके
साम्हने राज्य मे चैन रहा। ६ और
उस ने यहूदा मे गढवाले नगर बसाए,
क्योंकि देश मे चैन रहा। और उन बरसो
मे उसे किसी से लडाई न करनी पडी
क्योकि यहोवा ने उसे विश्राम दिया था।
७ उस ने यहूदियो से कहा, आओ हम
इन नगरो को बसाए और उनके चारो
ओर शहरपनाह, गढ और फाटको के
पल्ले और बेंडे बनाए, देश अब तक
हमारे साम्हने पडा है, क्योकि हम ने,
अपने परमेश्वर यहोवा की खोज की है
हमने उसकी खोज की और उस ने हमको
चारो ओर से विश्राम दिया है। तब
उन्हो ने उन नगरो को बसाया और
कृतार्थ हुए। ८ फिर आसा के पास ढाल
और बर्छी रखनेवालो की एक सेना थी,
अर्थात् यहूदा में से तो तीन लाख पुरुष
और बिन्यामीन मे से फरी रखनेवाले
और धनुर्धारी दो लाख अस्सी हजार
ये सब शूरवीर थे॥

९ और उनके विरुद्ध दस लाख पुरुषो
की सेना और तीन सौ रथ लिये हुए जेरह
नाम एक कूशी निकला और मारेशा
तक आ गया। १० तब आसा उसका
साम्हना करने को चला और मारेशा के
निकट सापता नाम तराई में युद्ध की
पाति बान्धी गई। ११ तब आसा ने
अपने परमेश्वर यहोवा की यो दोहाई दी,
कि हे यहोवा! जैसे तू सामर्थी की सहायता
कर सकता है, वैसे ही शक्तिहीन की

भी हे हमारे परमेश्वर यहोवा! हमारी
सहायता कर, क्योंकि हमारा भरोसा
तुझी पर है और तेरे नाम का भरोसा
करके हम इस भीड के विरुद्ध आए हे।
हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है, मनुष्य
तुझ पर प्रबल न होने पाएगा। १२ तब
यहोवा ने कूशियो को आसा और यहूदियो
के साम्हने मारा और कूशी भाग गए।
१३ और आसा और उसके सग के लोगो
ने उनका पीछा गरार तक किया, और
इतने कूशी मारे गए, कि वे फिर सिर न
उठा सके क्योकि वे यहोवा और उसकी
सेना से हार गए, और यहूदी बहुत सा
लूट ले गए। १४ और उन्हो ने गरार के
आस पास के सब नगरो को मार लिया,
क्योकि यहोवा का भय उनके रहनेवालो
के मन मे समा गया और उन्हो ने उन
नगरो को लूट लिया, क्योकि उन मे
बहुत सा धन था। १५ फिर पशु-शालाओ
को जीतकर बहुत सी भेड-बकरिया और
ऊट लूटकर यरूशलेम को लौटे॥

१५ तब परमेश्वर का आत्मा
ओदेद के पुत्र अजर्याह मे समा
गया, २ और वह आसा से भेट करने
निकला, और उस मे कहा, हे आसा,
और हे सारे यहूदा और बिन्यामीन मेरी
सुनो, जब तक तुम यहोवा के सग रहोगे
तब तक वह तुम्हारे सग रहेगा; और
यदि तुम उसकी खोज मे लगे रहो, तब
तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि
तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को
त्याग देगा। ३ बहुत दिन इस्राएल बिना
सत्य परमेश्वर के और बिना सिखानेवाले
याजक के और बिना व्यवस्था के रहा।
४ परन्तु जब जब वे सकट मे पडकर
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की ओर
फिरे और उसको ढूढा, तब तब वह उनको
मिला। ५ उस समय न तो जानेवाले
को कुछ शाति होती थी, और न आनेवाले
को, वरन सारे देश के सब निवासियो
मे बडा ही कोलाहल होता था। ६ और
जाति से जाति और नगर से नगर चूर
किए जाते थे, क्योंकि परमेश्वर नाना
प्रकार का कष्ट देकर उन्हे घबरा देता
था। ७ परन्तु तुम लोग हियाव बान्धो
और तुम्हारे हाथ ढीले न पडे, क्योकि
तुम्हारे काम का बदला मिलेगा॥

८ जब आसा ने ये वचन और ओदेद
नबी की नबूवत सुनी, तब उस ने हियाव
बान्धकर यहूदा और बिन्यामीन के सारे
देश मे से, और उन नगरो मे से भी जो
उस ने एप्रैम के पहाडी देश मे ले लिये
थे, सब घिनौनी वस्तुए दूर की, और
यहोवा की जो वेदी यहोवा के ओसारे
के साम्हने थी, उसको नये सिरे से बनाया।
९ और उस ने सारे यहूदा और बिन्यामीन
को, और एप्रैम, मनश्शे और शिमोन मे
से जो लोग उसके सग रहते थे, उनको
इकट्ठा किया, क्योकि वे यह देखकर कि
उसका परमेश्वर यहोवा उसके सग रहता
है, इस्राएल मे से उसके पास बहुत से
चले आए थे। १० आसा के राज्य के
पन्द्रहवे वर्ष के तीसरे महीने मे वे यरूशलेम
मे इकट्ठे हुए। ११ और उसी समय
उन्हो ने उस लूट मे से जो वे ले आए
थे, सात सौ बैल और सात हजार भेड-
बकरिया, यहोवा को बलि करके चढाई।
१२ और उन्हो ने वाचा बान्धी कि हम
अपने पूरे मन और सारे जीव से अपने
पूर्वजो के परमेश्वर यहोवा की खोज
करेगे। १३ और क्या बडा, क्या छोटा,

क्या स्त्री, क्या पुरुष जो कोई इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा की खोज न करे,
वह मार डाला जाएगा। १४ और उन्हों
ने जय जयकार के साथ तुरहियां और
नरसिंगे बजाते हुए ऊंचे शब्द से यहोवा
की शपथ खाई। १५ और यह शपथ
खाकर सब यहूदी आनन्दित हुए, क्योंकि
उन्हों ने अपने सारे मन से शपथ खाई
और बड़ी अभिलाषा से उसको ढूंढ़ा और
वह उनको मिला, और यहोवा ने चारों
ओर से उन्हें विश्राम दिया॥

१६ वरन आसा राजा की माता माका
जिस ने अशेरा के पास रखने के लिए एक
घिनौनी मूरत बनाई, उसको उस ने राज-
माता के पद से उतार दिया, और आसा ने
उसकी मूरत काटकर पीस डाली और
किद्रोन नाले में फूंक दी। १७ ऊंचे स्थान
तो इस्राएलियों में से न ढाए गए, तौभी
आसा का मन जीवन भर निष्कपट रहा।
१८ और उस ने जो सोना चान्दी,
और पात्र उसके पिता ने अर्पण किए थे,
और जो उस ने आप अर्पण किए थे, उनको
परमेश्वर के भवन में पहुंचा दिया।
१९ और राजा आसा के राज्य के पैंतीसवें
वर्ष तक फिर लड़ाई न हुई॥

१६ आसा के राज्य के छत्तीसवें
वर्ष में इस्राएल के राजा बाशा
ने यहूदा पर चढ़ाई की और रामा को
इसलिये दृढ़ किया, कि यहूदा के राजा
आसा के पास कोई आने जाने न पाए।
२ तब आसा ने यहोवा के भवन और
राजभवन के भण्डारों में से चान्दी-सोना
निकाल दमिश्कवासी अराम के राजा
बेन्हदद के पास दूत भेजकर यह कहा,
३ कि जैसे मेरे-तेरे पिता के बीच वैसे
ही मेरे-तेरे बीच भी वाचा बन्धे, देख
मैं तेरे पास चान्दी-सोना भेजता हूं, इसलिये
आ, इस्राएल के राजा बाशा के साथ की
अपनी वाचा को तोड़ दे, ताकि वह मुझ
से दूर हो। ४ बेन्हदद ने राजा आसा
की यह बात मानकर, अपने दलों के
प्रधानों से इस्राएली नगरों पर चढ़ाई
करवाकर इय्योन, दान, आबेल्मैम और
नप्ताली के सब भण्डारवाले नगरों को
जीत लिया। ५ यह सुनकर बाशा ने
रामा का दृढ़ करना छोड़ दिया, और
अपना वह काम बन्द करा दिया। ६ तब
राजा आसा ने पूरे यहूदा देश को साथ
लिया और रामा के पत्थरों और लकड़ी
को, जिन से बाशा काम करता था, उठा
ले गया, और उन से उस ने गेबा, और
मिस्पा को दृढ़ किया॥

७ उस समय हनानी दर्शी यहूदा के
राजा आसा के पास जाकर कहने लगा,
तू ने जो अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा
नहीं रखा वरन अराम के राजा ही पर
भरोसा रखा है, इस कारण अराम के
राजा की सेना तेरे हाथ से बच गई है।
८ क्या कूशियों और लूबियों की सेना
बड़ी न थी, और क्या उस में बहुत ही रथ,
और सवार न थे? तौभी तू ने यहोवा
पर भरोसा रखा था, इस कारण उस ने
उनको तेरे हाथ में कर दिया। ९ देख,
यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर
इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन
उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी
सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए।
तू ने यह काम मूर्खता से किया है, इसलिये
अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा।
१० तब आसा दर्शी पर क्रोधित हुआ और
उसे काठ में ठोकवा दिया, क्योंकि वह

उसकी ऐसी बात के कारण उस पर
क्रोधित था। और उसी समय से आसा
प्रजा के कुछ लोगों को पीसने भी लगा॥
११ आदि से लेकर अन्त तक आसा
के काम यहूदा और इस्राएल के राजाओं
के वृत्तान्त * में लिखे हैं। १२ अपने राज्य
के उनतीसवें वर्ष में आसा को पांव का
रोग हुआ, और वह रोग अत्यन्त बढ़
गया, तौभी उस ने रोगी होकर यहोवा
की नहीं वैद्यों ही की शरण ली।
१३ निदान आसा अपने राज्य के एकता-
लीसवें वर्ष में मरके अपने पुरखाओं के
साथ सो गया। १४ तब उसको उसी की
कब्र में जो उस ने दाऊदपुर में खुदवा ली
थी, मिट्टी दी गई, और वह सुगन्धद्रव्यों
और गंधी के काम के भांति भांति के
मसालों से भरे हुए एक बिछौने पर लिटा
दिया गया, और बहुत सा सुगन्धद्रव्य
उसके लिये जलाया गया॥

(यहोशापात का राज्य)

१७ और उसका पुत्र यहोशापात
उसके स्थान पर राज्य करने लगा,
और इस्राएल के विरुद्ध अपना बल बढ़ाया।
२ और उस ने यहूदा के सब गढ़वाले
नगरों में सिपाहियों के दल ठहरा दिए,
और यहूदा के देश में और एप्रैम के उन
नगरों में भी जो उसके पिता आसा ने
ले लिये थे, सिपाहियों की चौकियां बैठा
दीं। ३ और यहोवा यहोशापात के संग
रहा, क्योंकि वह अपने मूलपुरुष दाऊद
की प्राचीन चाल सी चाल चला और
बाल देवताओं की खोज में न लगा।
४ वरन वह अपने पिता के परमेश्वर
की खोज में लगा रहता था और उसी की
आज्ञाओं पर चलता था, और इस्राएल के
से काम नहीं करता था। ५ इस कारण
यहोवा ने राज्य को उसके हाथ में दृढ़
किया, और सारे यहूदी उसके पास भेंट
लाया करते थे, और उसके पास बहुत
धन और उसका विभव बढ़ गया। ६ और
यहोवा के मार्गों पर चलते चलते उसका
मन मगन हो गया, फिर उस ने यहूदा
से ऊंचे स्थान और अशेरा नाम मूरतें
दूर कर दीं॥
७ और उस ने अपने राज्य के तीसरे
वर्ष में बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल
और मीकायाह नामक अपने हाकिमों को
यहूदा के नगरों में शिक्षा देने को भेज
दिया। ८ और उनके साथ शमायाह,
नतन्याह, जबद्याह, असाहेल, शमीरामोत,
यहोनातान, अदोनिय्याह, तोबिय्याह
और तोबदोनिय्याह नाम लेवीय और
उनके संग एलीशामा और यहोराम नामक
याजक थे। ९ सो उन्हों ने यहोवा की
व्यवस्था की पुस्तक अपने साथ लिये हुए
यहूदा में शिक्षा दी, वरन वे यहूदा के सब
नगरों में प्रजा को सिखाते हुए घूमे॥
१० और यहूदा के आस पास के देशों
के राज्य राज्य में यहोवा का ऐसा डर
समा गया, कि उन्हों ने यहोशापात से
युद्ध न किया। ११ वरन कितने पलिश्ती
यहोशापात के पास भेंट और कर समझकर
चान्दी लाए, और अरबी लोग भी सात
हजार सात सौ मेढ़े और सात हजार
सात सौ बकरे ले आए। १२ और
यहोशापात बहुत ही बढ़ता गया और
उस ने यहूदा में किले और भण्डार के
नगर तैयार किए। १३ और यहूदा के
नगरों में उसका बहुत काम होता था,
और यरूशलेम में उसके योद्धा अर्थात्

* मूल में—पुस्तक।

शूरवीर रहते थे। १४ और उनके पितरों
के घरानों के अनुसार इनकी यह गिनती
थी, अर्थात् यहूदी सहस्रपति तो ये थे,
प्रधान अदना जिसके साथ तीन लाख
शूरवीर थे, १५ और उनके बाद प्रधान
यहोहानान जिसके साथ दो लाख अस्सी
हजार पुरुष थे। १६ और उसके बाद
जिक्री का पुत्र अमस्याह, जिस ने अपने
को अपनी ही इच्छा से यहोवा को अर्पण
किया था, उसके साथ दो लाख
शूरवीर थे। १७ फिर बिन्यामीन में से
एल्यादा नामक एक शूरवीर जिसके साथ
ढाल रखनेवाले दो लाख धनुर्धारी थे।
१८ और उसके नीचे यहोजाबाद जिसके
साथ युद्ध के हथियार बान्धे हुए एक लाख
अस्सी हजार पुरुष थे। १९ वे ये हैं,
जो राजा की सेवा में लवलीन थे।
और ये उन से अलग थे जिन्हें राजा ने
सारे यहूदा के गढ़वाले नगरों में ठहरा
दिया॥

१८ यहोशापात बड़ा धनवान
और ऐश्वर्य्यवान हो गया,
और उस ने अहाब के साथ समधियाना
किया। २ कुछ वर्ष के बाद वह शोमरोन
में अहाब के पास गया, तब अहाब ने
उसके और उसके संगियों के लिये बहुत सी
भेड़-बकरियां और गाय-बैल काटकर, उसे
गिलाद के रामोत पर चढ़ाई करने को
उसकाया। ३ और इस्राएल के राजा
अहाब ने यहूदा के राजा यहोशापात से
कहा, क्या तू मेरे साथ गिलाद के रामोत
पर चढ़ाई करेगा? उस ने उसे उत्तर
दिया, जैसा तू वैसा मैं भी हूं, और जैसी
तेरी प्रजा, वैसी मेरी भी प्रजा है। हम
लोग युद्ध में तेरा साथ देंगे॥

४ फिर यहोशापात ने इस्राएल के
राजा से कहा, आज यहोवा की आज्ञा
ले। ५ तब इस्राएल के राजा ने नबियों
को जो चार सौ पुरुष थे, इकट्ठा करके
उन से पूछा, क्या हम गिलाद के रामोत
पर युद्ध करने को चढ़ाई करें, अथवा मैं
रुका रहूं? उन्हों ने उत्तर दिया चढ़ाई
कर, क्योंकि परमेश्वर उसको राजा के
हाथ कर देगा। ६ परन्तु यहोशापात ने
पूछा, क्या यहां यहोवा का और भी कोई
नबी नहीं है जिस से हम पूछ लें?
७ इस्राएल के राजा ने यहोशापात से
कहा, हां, एक पुरुष और है, जिसके द्वारा
हम यहोवा से पूछ सकते हैं, परन्तु मैं
उस से घृणा करता हूं, क्योंकि वह मेरे
विषय कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि
ही की नबूवत करता है। वह यिम्ला
का पुत्र मीकायाह है। यहोशापात ने
कहा, राजा ऐसा न कहे। ८ तब इस्राएल
के राजा ने एक हाकिम को बुलवाकर
कहा, यिम्ला के पुत्र मीकायाह को फुर्ती
से ले आ। ९ इस्राएल का राजा और
यहूदा का राजा यहोशापात अपने अपने
राजवस्त्र पहिने हुए, अपने अपने सिंहासन
पर बैठे हुए थे, वे शोमरोन के फाटक
में एक खुले स्थान में बैठे थे और सब
नबी उनके साम्हने नबूवत कर रहे थे।
१० तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने
लोहे के सींग बनवाकर कहा, यहोवा यों
कहता है, कि इन से तू अरामियों को
मारते मारते नाश कर डालेगा। ११ और
सब नबियों ने इसी आशय की नबूवत
करके कहा, कि गिलाद के रामोत पर
चढ़ाई कर और तू कृतार्थ होवे, क्योंकि
यहोवा उसे राजा के हाथ कर
देगा॥

१२ और जो दूत मीकायाह को बुलाने
गया था, उस ने उस से कहा, सुन, नबी
लोग एक ही मुह से राजा के विषय
शुभ वचन कहते है, सो तेरी बात उनकी
सी हो, तू भी शुभ वचन कहना।
१३ मीकायाह ने कहा, यहोवा के जीवन
की सौह, जो कुछ मेरा परमेश्वर
कहे वही मै भी कहूगा। १४ जब वह
राजा के पास आया, तब राजा ने उस
से पूछा, हे मीकायाह, क्या हम गिलाद
के रामोत पर युद्ध करने को चढाई करे
अथवा मै रुका रहू? उस ने कहा, हा, तुम
लोग चढाई करो, और कृतार्थ होओ,
और वे तुम्हारे हाथ मे कर दिए जाएगे।
१५ राजा ने उस से कहा, मुझे कितनी
बार तुझे शपथ धराकर चिताना होगा,
कि तू यहोवा का स्मरण करके मुझ
मे सच ही कह। १६ मीकायाह ने कहा,
मुझे सारा इस्राएल बिना चरवाहे की
भेड-बकरियो की नाई पहाडो पर तितर-
बितर दिखाई पडा, और यहोवा का वचन
आया कि वे तो अनाथ है, इसलिये हर
एक अपने अपने घर कुशल क्षेम से लौट
जाए। १७ तब इस्राएल के राजा ने
यहोशापात से कहा, क्या मै ने तुझ से
न कहा था, कि वह मेरे विषय कल्याण
की नही, हानि ही की नबूवत करेगा?
१८ मीकायाह ने कहा, इस कारण तुम
लोग यहोवा का यह वचन सुनो मुझे
सिहासन पर विराजमान यहोवा और
उसके दाहिने बाए खडी हुई स्वर्ग की सारी
सेना दिखाई पडी। १९ तब यहोवा ने
पूछा, इस्राएल के राजा अहाब को कौन
ऐसा बहकाएगा, कि वह गिलाद के रामोत
पर चढाई करके खेत आए तब किसी
ने कुछ और किसी ने कुछ कहा।
२० निदान एक आत्मा पास आकर यहोवा
के सम्मुख खडी हुई, और कहने लगी, मै
उसको बहकाऊगी। २१ यहोवा ने पूछा,
किस उपाय से? उस ने कहा, मै जाकर
उसके सब नबियो मे पैठ के उन मे झूठ
बुलवाऊगी*। यहोवा ने कहा, तेरा उसको
बहकाना सफल होगा, जाकर ऐसा ही
कर। २२ इसलिये सुन अब यहोवा ने
तेरे इन नबियो के मुह मे एक झूठ बोलने-
वाली आत्मा पैठाई है, और यहोवा ने
तेरे विषय हानि की बात कही है॥

२३ तब कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने
निकट जा, मीकायाह के गाल पर थप्पड
मारकर पूछा, यहोवा का आत्मा मुझे
छोडकर तुझ से बाते करने को किधर
गया। २४ उस ने कहा, जिस दिन तू
छिपने के लिये कोठरी से कोठरी मे
भागेगा, तब जान लेगा। २५ इस पर
इस्राएल के राजा ने कहा, कि मीकायाह
को नगर के हाकिम आमोन और राजकुमार
योआश के पास लौटाकर, २६ उन से
कहो, राजा यो कहता है, कि इसको बन्दीगृह
मे डालो, और जब तक मै कुशल से न
आऊ, तब तक इसे दुःख की रोटी और
पानी दिया करो। २७ तब मीकायाह ने
कहा, यदि तू कभी कुशल से लौटे, तो
जान, कि यहोवा ने मेरे द्वारा नही कहा।
फिर उस ने कहा, हे लोगो, तुम सब के
सब सुन लो॥

२८ तब इस्राएल के राजा और यहूदा
के राजा यहोशापात दोनो ने गिलाद के
रामोत पर चढाई की। २९ और इस्राएल
के राजा ने यहोशापात से कहा, मै तो
भेष बदलकर युद्ध मे जाऊगा, परन्तु तू

* मूल में—झूठा आत्मा हूंगी।

अपने ही वस्त्र पहिने रह। इस्राएल के
राजा ने भेष बदला और वे दोनों युद्ध
में गए। ३० अराम के राजा ने तो
अपने रथों के प्रधानों को आज्ञा दी थी,
कि न तो छोटे से लड़ो और न बड़े से,
केवल इस्राएल के राजा से लड़ो। ३१ सो
जब रथों के प्रधानों ने यहोशापात को
देखा, तब कहा इस्राएल का राजा वही
है, और वे उसी से लड़ने को मुड़े। इस
पर यहोशापात चिल्ला उठा, तब यहोवा
ने उसकी सहायता की। और परमेश्वर
ने उनको उसके पास से फिर जाने की
प्रेरणा की। ३२ सो यह देखकर कि वह
इस्राएल का राजा नहीं है, रथों के प्रधान
उसका पीछा छोड़ के लौट गए। ३३ तब
किसी ने अटकल से एक तीर चलाया,
और वह इस्राएल के राजा के झिलम
और निचले वस्त्र के बीच छेदकर लगा,
तब उस ने अपने सारथी से कहा, मैं
घायल हुआ, इसलिये लगाम * फेरके मुझे
सेना में से बाहर ले चल। ३४ और उस
दिन युद्ध बढ़ता गया और इस्राएल का
राजा अपने रथ में अरामियों के सम्मुख
सांझ तक खड़ा रहा, परन्तु सूर्य अस्त
होते-होते वह मर गया॥

१९ और यहूदा का राजा
यहोशापात यरूशलेम को अपने
भवन में कुशल से लौट गया। २ तब
हनानी नाम दर्शी का पुत्र येहू यहोशापात
राजा से भेंट करने को निकला और उस
से कहने लगा, क्या दुष्टों की *सहायता*
करनी और यहोवा के बैरियों से प्रेम
रखना चाहिये? इस काम के कारण
यहोवा की ओर से तुझ पर क्रोध भड़का
है। ३ तौभी तुझ में कुछ अच्छी बातें
पाई जाती हैं। तू ने तो देश में से अशेरों
को नाश किया और अपने मन को परमेश्वर
की खोज में लगाया है॥

४ यहोशापात यरूशलेम में रहता था,
और उस ने बेर्शेबा से लेकर एप्रैम के
पहाड़ी देश तक अपनी प्रजा में फिर
दौरा करके, उनको उनके पितरों के
परमेश्वर यहोवा की ओर फेर दिया।
५ फिर उस ने यहूदा के एक एक गढ़वाले
नगर में न्यायी ठहराया। ६ और उस ने
न्यायियों से कहा, सोचो कि क्या करते
हो, क्योंकि तुम जो न्याय करोगे, वह
मनुष्य के लिये नहीं, यहोवा के लिये
करोगे, और वह न्याय करते समय
तुम्हारे साथ *रहेगा*। ७ अब यहोवा का
भय तुम में बना रहे, चौकसी से काम
करना, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा
में कुछ कुटिलता नहीं है, और न वह
किसी का पक्ष करता और न घूस लेता
है॥

८ और यरूशलेम में भी यहोशापात
ने लेवियों और याजकों और इस्राएल के
पितरों के घरानों के कुछ मुख्य पुरुषों
को यहोवा की ओर से न्याय करने और
मुकद्दमों को जांचने के लिये ठहराया।
९ और वे यरूशलेम को लौटे। और
उस ने उनको आज्ञा दी, कि यहोवा का
भय मानकर, सच्चाई और निष्कपट मन
से ऐसा करना। १० तुम्हारे भाई जो
अपने अपने नगर में रहते हैं, उन में
से जिसका कोई मुकद्दमा तुम्हारे साम्हने
आए, चाहे वह खून का हो, चाहे व्यवस्था,
अथवा किसी आज्ञा या विधि वा नियम
के विषय हो, उनको चिता देना, कि
यहोवा के विषय *दोषी* न होओ। ऐसा

* मूल में—अपना हाथ।

न हो कि तुम पर और तुम्हारे भाइयो
पर उसका क्रोध भडके। ऐसा करो तो
तुम दोषी न ठहरोगे। ११ और देखो,
यहोवा के विषय के सब मुकद्दमो मे तो
अमर्याह महायाजक और राजा के विषय
के सब मुकद्दमो मे यहूदा के घराने का
प्रधान इश्माएल का पुत्र जबद्याह तुम्हारे
ऊपर अधिकारी है, और लेवीय तुम्हारे
साम्हने सरदारो का काम करेगे। इसलिये
हियाव बान्धकर काम करो और भले
मनुष्य के साथ यहोवा रहेगा॥

२० इसके बाद मोआबियो और
अम्मोनियो ने और उनके साथ
कई मूनियो* ने युद्ध करने के लिये
यहोशापात पर चढाई की। २ तब लोगो
ने आकर यहोशापात को बता दिया, कि
ताल के पार से एदोम† देश की ओर से
एक बडी भीड तुझ पर चढाई कर रही
है, और देख, वह हसासोन्तामार तक
जो एनगदी भी कहलाता है, पहुच गई
है। ३ तब यहोशापात डर गया और
यहोवा की खोज मे लग गया, और पूरे
यहूदा मे उपवास का प्रचार करवाया।
४ सो यहूदी यहोवा से सहायता मागने
के लिये इकट्ठे हुए, वरन वे यहूदा के
सब नगरो से यहोवा से भेट करने को
आए॥

५ तब यहोशापात यहोवा के भवन
मे नये आगन के साम्हने यहूदियो और
यरूशलेमियो की मण्डली मे खडा होकर
६ यह कहने लगा, कि हे हमारे पितरो के
परमेश्वर यहोवा! क्या तू स्वर्ग मे
परमेश्वर नही है? और क्या तू जाति
जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नही
करता? और क्या तेरे हाथ मे ऐसा बल
और पराक्रम नही है कि तेरा साम्हना
कोई नही कर सकता? ७ हे हमारे
परमेश्वर! क्या तू ने इस देश के
निवासियो को अपनी प्रजा इस्राएल के
साम्हने से निकालकर इन्हे अपने मित्र
इब्राहीम के वंश को सदा के लिये नही
दे दिया? ८ वे इस मे बस गए और
इस मे तेरे नाम का एक पवित्रस्थान
बनाकर कहा, ९ कि यदि तलवार या मरी
अथवा अकाल वा और कोई विपत्ति हम
पर पडे, तौभी हम इसी भवन के साम्हने
और तेरे साम्हने (तेरा नाम तो इस
भवन मे बसा है) खडे होकर, अपने क्लेश
के कारण तेरी दोहाई देगे और तू
सुनकर बचाएगा। १० और अब अम्मोनी
और मोआबी और सेईर के पहाडी देश के
लोग जिन पर तू ने इस्राएल को मिस्र
देश से आते समय चढाई करने न दिया,
और वे उनकी ओर से मुड गए और
उनको विनाश न किया, ११ देख, वे
ही लोग तेरे दिए हुए अधिकार के
इस देश मे से जिसका अधिकार तू
ने हमे दिया है, हम को निकालकर
कैसा बदला हमे दे रहे है। १२ हे
हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय
न करेगा? यह जो बडी भीड हम पर
चढाई कर रही है, उसके साम्हने हमारा
तो बस नही चलता और हमे कुछ
सूझता नही कि क्या करना चाहिये?
परन्तु हमारी आखे तेरी ओर लगी है॥

१३ और सब यहूदी अपने अपने
बालबच्चो, स्त्रियो और पुत्रो समेत यहोवा
के सम्मुख खडे रहे। १४ तब आसाप
के वंश मे से यहजीएल नाम एक लेवीय

* मूल मे—अम्मोनियो।
† मूल मे—अराम।

जो जकर्याह का पुत्र और बनायाह का
पोता और मत्तन्याह के पुत्र यीएल का
परपोता था, उस मे मण्डली के बीच
यहोवा का आत्मा समाया। १५ और वह
कहने लगा, हे सब यहूदियो, हे यरूशलेम
के रहनेवालो, हे राजा यहोशापात, तुम
सब ध्यान दो, यहोवा तुम से यो कहता
है, तुम इस बडी भीड से मत डरो
और तुम्हारा मन कच्चा न हो, क्योकि
युद्ध तुम्हारा नही, परमेश्वर का
है। १६ कल उनका साम्हना करने को
जाना। देखो वे सीस की चढाई पर चढे
आते है और यरूएल नाम जगल के
साम्हने नाले के सिरे पर तुम्हे मिलेगे।
१७ इस लडाई मे तुम्हे लडना न होगा,
हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना,
और खडे रहकर यहोवा की ओर से
अपना बचाव देखना। मत डरो, और
तुम्हारा मन कच्चा न हो, कल उनका
साम्हना करने को चलना और यहोवा
तुम्हारे साथ रहेगा॥

१८ तब यहोशापात भूमि की ओर
मुह करके झुका और सब यहूदियो और
यरूशलेम के निवासियो ने यहोवा के
साम्हने गिरके यहोवा को दण्डवत किया।
१९ और कहातियो और कोरहियो मे से
कुछ लेवीय खडे होकर इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की स्तुति अत्यन्त ऊचे स्वर से
करने लगे॥

२० बिहान को वे सवेरे उठकर तको
के जगल की ओर निकल गए, और
चलते समय यहोशापात ने खडे होकर
कहा, हे यहूदियो, हे यरूशलेम के निवासियो,
मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर
विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे,
उसके नबियो की प्रतीत करो, तब तुम
कृतार्थ हो जाओगे॥

२१ तब उस ने प्रजा के साथ सम्मति
करके कितनो को ठहराया, जो कि पवित्रता
से शोभायमान होकर हथियारबन्दो के
आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत
गाए, और यह कहते हुए उसकी स्तुति
करे, कि यहोवा का धन्यवाद करो, क्योकि
उसकी करुणा सदा की है॥

२२ जिस समय वे गाकर स्तुति करने
लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियो,
मोआबियो और सेईर के पहाडी देश के
लोगो पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे
थे, घातको को बैठा दिया और वे मारे
गए। २३ क्योकि अम्मोनियो और मोआ-
बियो ने सेईर के पहाडी देश के निवासियो
को डराने और सत्यानाश करने के लिये
उन पर चढाई की, और जब वे सेईर
के पहाडी देश के निवासियो का अन्त
कर चुके, तब उन सभो ने एक दूसरे के
नाश करने में हाथ लगाया॥

२४ सो जब यहूदियो ने जगल की
चौकी पर पहुचकर उस भीड की ओर
दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर
पडी हुई लोथ है, और कोई नही
बचा। २५ तब यहोशापात और उसकी
प्रजा लूट लेने को गए और लोथो के
बीच बहुत सी सम्पत्ति और मनभावने
गहने मिले, उन्हो ने इतने गहने उतार
लिये कि उनको न ले जा सके, वरन
लूट इतनी मिली, कि बटोरते बटोरते
तीन दिन बीत गए। २६ चौथे दिन वे
बराका* नाम तराई में इकट्ठे हुए और
वहा यहोवा का धन्यवाद किया, इस

* अर्थात् धन्यवाद वा आशिष।

कारण उस स्थान का नाम बराका की
तराई पडा, जो आज तक है। २७ तब
वे, अर्थात् यहूदा और यरूशलेम नगर
के सब पुरुष और उनके आगे आगे यहोशा-
पात, आनन्द के साथ यरूशलेम लौटे
क्योकि यहोवा ने उन्हे शत्रुओ पर
आनन्दित किया था। २८ सो वे
सारंगिया, वीणाए और तुरहिया बजाते
हुए यरूशलेम मे यहोवा के भवन को
आए। २९ और जब देश देश के सब
राज्यो के लोगो ने सुना कि इस्राएल के
शत्रुओ से यहोवा लडा, तब उनके मन मे
परमेश्वर का डर समा गया। ३० और
यहोशापात के राज्य को चैन मिला, क्योकि
उसके परमेश्वर ने उसको चारो ओर से
विश्राम दिया ॥

३१ यो यहोशापात ने यहूदा पर
राज्य किया। जब वह राज्य करने लगा
तब वह पैंतीस वर्ष का था, और पच्चीस
वर्ष तक यरूशलेम मे राज्य करता रहा।
और उसकी माता का नाम अजूबा था,
जो शिल्ही की बेटी थी। ३२ और वह
अपने पिता आसा की लीक पर चला
और उस से न मुड़ा, अर्थात् जो यहोवा की
दृष्टि मे ठीक है वही वह करता रहा।
३३ तौभी ऊंचे स्थान ढाए न गए, वरन
अब तक प्रजा के लोगो ने अपना मन
अपने पितरो के परमेश्वर की ओर न
लगाया था। ३४ और आदि से अन्त
तक यहोशापात के और काम, हनानी
के पुत्र येहू के विषय उस वृत्तान्त मे
लिखे है, जो इस्राएल के राजाओ के
वृत्तान्त मे पाया जाता है ॥

३५ इसके बाद यहूदा के राजा
यहोशापात ने इस्राएल का राजा अहज्याह
से जो बडी दुष्टता करता था, मेल किया।
३६ अर्थात् उस ने उसके साथ इसलिये
मेल किया कि तर्शीश जाने को जहाज
बनवाए, और उन्हो ने ऐसे जहाज एस्योन
गेबेर मे बनवाए। ३७ तब दोदावाह के
पुत्र मारेशावासी एलीआजर ने यहोशापात
के विरुद्ध यह नबूवत कही, कि तू ने जो
अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा
तेरी बनवाई हुई वस्तुओ को तोड डालेगा।
सो जहाज टूट गए और तर्शीश को न
जा सके ॥

(यहोराम का राज्य)

२१ निदान यहोशापात अपने
पुरखाओ के संग सो गया,
और उसको उसके पुरखाओ के बीच
दाऊदपुर मे मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र
यहोराम उसके स्थान पर राज्य करने
लगा। २ इसके भाई जो यहोशापात के
पुत्र थे, ये थे, अर्थात् अजर्याह, यहीएल,
जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और
शपत्याह, ये सब इस्राएल के राजा
यहोशापात के पुत्र थे। ३ और उनके
पिता ने उन्हे चान्दी सोना और अनमोल
वस्तुए और बडे बडे दान और यहूदा
मे गढवाले नगर दिए थे, परन्तु यहोराम
को उस ने राज्य दे दिया, क्योकि वह जेठा
था। ४ जब यहोराम अपने पिता के
राज्य पर नियुक्त हुआ और बलवन्त
भी हो गया, तब उसने अपने सब भाइयो
को और इस्राएल के कुछ हाकिमो को
भी तलवार से घात किया। ५ जब
यहोराम राजा हुआ, तब वह बत्तीस वर्ष
का था, और वह आठ वर्ष तक यरूशलेम
मे राज्य करता रहा। ६ वह इस्राएल के
राजाओ की सी चाल चला, जैसे अहाब
का घराना चलता था, क्योकि उसकी

पत्नी अहाब की बेटी थी। और वह
उस काम को करता था, जो यहोवा की
दृष्टि में बुरा है। ७ तौभी यहोवा ने
दाऊद के घराने को नाश करना न चाहा,
यह उस वाचा के कारण था, जो उसने
दाऊद से बान्धी थी। और उस वचन
के अनुसार था, जो उस ने उसको दिया
था, कि मैं ऐसा करूंगा कि तेरा और
तेरे वंश का दीपक कभी न बुझेगा॥
८ उसके दिनों में एदोम ने यहूदा की
अधीनता छोड़कर अपने ऊपर एक राजा
बना लिया। ९ सो यहोराम अपने
हाकिमों और अपने सब रथों को साथ
लेकर उधर गया, और रथों के प्रधानों
को मारा। १० यों एदोम यहूदा के वश
से छूट गया और आज तक वैसा ही
है। उसी समय लिब्ना ने भी उसकी
अधीनता छोड़ दी, यह इस कारण हुआ,
कि उस ने अपने पितरों के परमेश्वर
यहोवा को त्याग दिया था॥
११ और उस ने यहूदा के पहाड़ों
पर ऊंचे स्थान बनाए और यरूशलेम के
निवासियों से व्यभिचार कराया, और
यहूदा को बहका दिया। १२ तब
एलिय्याह नबी का एक पत्र उसके पास
आया, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर
यहोवा यों कहता है, कि तू जो न तो
अपने पिता यहोशापात की लीक पर चला
है और न यहूदा के राजा आसा की
लीक पर, १३ वरन इस्राएल के राजाओं
की लीक पर चला है, और अहाब के
घराने की नाईं यहूदियों और यरूशलेम
के निवासियों से व्यभिचार कराया है
और अपने पिता के घराने में से
अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे,
घात किया है, १४ इस कारण यहोवा
तेरी प्रजा, पुत्रों स्त्रियों और सारी सम्पत्ति
को बड़ी मार से मारेगा। १५ और तू
अंतड़ियों के रोग से बहुत पीड़ित हो
जाएगा, यहां तक कि उस रोग के कारण
तेरी अंतड़ियां प्रतिदिन निकलती जाएंगी॥
१६ और यहोवा ने पलिश्तियों को,
और कूशियों के पास रहनेवाले अरबियों
को, यहोराम के विरुद्ध उभारा। १७ और
वे यहूदा पर चढ़ाई करके उस पर टूट
पड़े, और राजभवन में जितनी सम्पत्ति
मिली, उस सब को और राजा के पुत्रों
और स्त्रियों को भी ले गए, यहां तक कि
उसके लहुरे बेटे यहोआहाज को छोड़,
उसके पास कोई भी पुत्र न रहा॥
१८ इन सब के बाद यहोवा ने उसे
अंतड़ियों के असाध्यरोग से पीड़ित कर
दिया। १९ और कुछ समय के बाद
अर्थात् दो वर्ष के अन्त में उस रोग के
कारण उसकी अंतड़ियां निकल पड़ीं, और
वह अत्यन्त पीड़ित होकर मर गया।
और उसकी प्रजा ने जैसे उसके पुरखाओं
के लिये सुगन्धद्रव्य जलाया था, वैसा उसके
लिये कुछ न जलाया। २० वह जब राज्य
करने लगा, तब बत्तीस वर्ष का था, और
यरूशलेम में आठ वर्ष तक राज्य करता
रहा, और सब को अप्रिय होकर जाता
रहा। और उसको दाऊदपुर में मिट्टी
दी गई, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान
में नहीं॥

(यहूदा में अहज्याह का राज्य)

२२ तब यरूशलेम के निवासियों
ने उसके लहुरे पुत्र अहज्याह को
उसके स्थान पर राजा बनाया, क्योंकि
जो दल अरबियों के संग छावनी में
आया था, उस ने उसके सब बड़े बेटों

को घात किया था सो यहूदा के राजा
यहोराम का पुत्र अहज्याह राजा हुआ।
२ जब अहज्याह राजा हुआ, तब वह
बयालीस* वर्ष का था, और यरूशलेम
मे एक ही वर्ष राज्य किया, और उसकी
माता का नाम अतल्याह था, जो ओम्री
की पोती थी। ३ वह अहाब के घराने
की सी चाल चला, क्योकि उसकी माता
उसे दुष्टता करने की सम्मति देती थी।
४ और वह अहाब के घराने की नाईं
वह काम करता था जो यहोवा की दृष्टि
मे बुरा है, क्योकि उसके पिता की मृत्यु
के बाद वे उसको ऐसी सम्मति देते थे,
जिस से उसका विनाश हुआ। ५ और
वह उनकी सम्मति के अनुसार चलता
था, और इस्राएल के राजा अहाब के
पुत्र यहोराम के सग गिलाद के रामोत
मे अराम के राजा हजाएल से लडने को
गया और अरामियो ने यहोराम को
घायल किया। ६ सो राजा यहोराम
इसलिये लौट गया कि यिज्रेल मे उन
घावो का इलाज कराए जो उसको अरामियो
के हाथ से उस समय लगे थे जब वह
हजाएल के साथ लड रहा था। और
अहाब का पुत्र यहोराम जो यिज्रेल मे
रोगी था, इस कारण से यहूदा के राजा
यहोराम का पुत्र अहज्याह† उसको देखने
गया॥

७ और अहज्याह का विनाश यहोवा
की ओर से हुआ, क्योकि वह यहोराम
के पास गया था। और जब वह वहा
पहुचा, तब यहोराम के सग निमशी के
पुत्र येहू का साम्हना करने को निकल
गया, जिसका अभिषेक यहोवा ने इसलिये
कराया था कि वह अहाब के घराने को
नाश करे। ८ और जब येहू अहाब के
घराने को दण्ड दे रहा था, तब उसको
यहूदा के हाकिम और अहज्याह के भतीजे
जो अहज्याह के टहलुए थे, मिले, और
उस ने उनको घात किया। ९ तब उस
ने अहज्याह को ढूढा। वह शोमरोन
मे छिपा था, सो लोगो ने उसको पकड
लिया और येहू के पास पहुचाकर उसको
मार डाला। तब यह कहकर उसको
मिट्टी दी, कि यह यहोशापात का पोता
है, जो अपने पूरे मन से यहोवा की खोज
करता था। और अहज्याह के घराने मे
राज्य करने के योग्य कोई न रहा॥

(योआश का राज्य)

१० जब अहज्याह की माता अतल्याह
ने देखा कि मेरा पुत्र मर गया, तब उस ने
उठकर यहूदा के घराने के सारे राजवंश
को नाश किया। ११ परन्तु यहोशावत जो
राजा की बेटी थी, उस ने अहज्याह के
पुत्र योआश को घात होनेवाले राजकुमारो
के बीच से चुराकर धाई समेत बिछौने
रखने की कोठरी मे छिपा दिया। इस
प्रकार राजा यहोराम की बेटी यहोशावत
जो यहोयादा याजक की स्त्री और अहज्याह
की बहिन थी, उस ने योआश को अतल्याह
से ऐसा छिपा रखा कि वह उसे मार
डालने न पाई। १२ और वह उसके पास
परमेश्वर के भवन मे छ वर्ष छिपा
रहा, इतने दिनो तक अतल्याह देश पर
राज्य करती रही॥

२३ सातवे वर्ष मे यहोयादा ने
हियाव बान्धकर यरोहाम के पुत्र
अजर्याह, यहोहानान के पुत्र इश्माएल,

* २ राजा ८. २६ में बाईस।
† मूल में—अजर्याह।

ओबेद के पुत्र अजर्याह, अदायाह के पुत्र
मासेयाह और जिक्री के पुत्र एलीशापात,
इन शतपतियो से वाचा बान्धी। २ तब
वे यहूदा मे घूमकर यहूदा के सब नगरो
में से लेवियो को और इस्राएल के पितरो
के घरानो के मुख्य मुख्य पुरुषो को इकट्ठा
करके यरूशलेम को ले आए। ३ और
उस सारी मण्डली ने परमेश्वर के भवन
में राजा के साथ वाचा बान्धी, और
यहोयादा ने उन से कहा, सुनो, यह
राजकुमार राज्य करेगा जैसे कि यहोवा
ने दाऊद के वंश के विषय कहा है।
४ सो तुम एक काम करो, अर्थात् तुम
याजको और लेवियो की एक तिहाई
लोग जो विश्रामदिन को आनेवाले हो,
वे द्वारपाली करें, ५ और एक तिहाई
लोग राजभवन में रहे और एक तिहाई
लोग नेव के फाटक के पास रहे, और
सब लोग यहोवा के भवन के आंगनो मे
रहें। ६ परन्तु याजको और सेवा टहल
करनेवाले लेवियो को छोड और कोई
यहोवा के भवन के भीतर न आने पाए,
वे तो भीतर आए, क्योंकि वे पवित्र है
परन्तु सब लोग यहोवा के भवन की
चौकसी करें। ७ और लेवीय लोग अपने
अपने हाथ मे हथियार लिये हुए राजा
के चारो ओर रहें और जो कोई भवन
के भीतर घुसे, वह मार डाला जाए।
और तुम राजा के आते जाते उसके साथ
रहना॥

८ यहोयादा याजक की इन सब
आज्ञाओ के अनुसार लेवियो और सब
यहूदियो ने किया। उन्हो ने विश्रामदिन
को आनेवाले और विश्रामदिन को जाने-
वाले दोनो दलो के, अपने अपने जनों को
अपने साथ कर लिया, क्योंकि यहोयादा
याजक ने किसी दल के लेवियो को विदा
न किया था। ९ तब यहोयादा याजक
ने शतपतियो को राजा दाऊद के बर्छे
और भाले और ढालें जो परमेश्वर के
भवन म थी, दे दी। १० फिर उस ने
उन सब लोगो को अपने अपने हाथ में
हथियार लिये हुए भवन के दक्खिनी कोने
से लेकर, उत्तरी कोने तक वेदी और
भवन के पास राजा के चारो ओर उसकी
आड करके खडा कर दिया। ११ तब
उन्हो ने राजकुमार को बाहर ला, उसके
सिर पर मुकुट और साक्षीपत्र धरकर
उसे राजा बनाया, और यहोयादा और
उसके पुत्रो ने उसका अभिषेक किया,
और लोग बोल उठे, राजा जीवित
रहे॥

१२ जब अतल्याह को उन लोगो का
हल्ला, जो दौडते और राजा को सराहते
थे सुन पडा, तब वह लोगो के पास यहोवा
के भवन में गई। १३ और उस ने क्या
देखा, कि राजा द्वार के निकट खम्भे के
पास खडा है और राजा के पास प्रधान
और तुरही बजानेवाले खडे ह, और सब
लोग आनन्द कर रहे ह और तुरहिया
बजा रहे हैं और गाने बजानेवाले बाजे
बजाते और स्तुति करते हैं। तब अतल्याह
अपने वस्त्र फाडकर पुकारने लगी, राजद्रोह,
राजद्रोह! १४ तब यहोयादा याजक ने
दल के अधिकारी शतपतियो को बाहर
लाकर उन से कहा, कि उसे अपनी पांतियो
के बीच मे निकाल ले जाओ, और जो
कोई उसके पीछे चले, वह तलवार से
मार डाला जाए। याजक ने कहा, कि
उसे यहोवा के भवन म न मार डालो।
१५ तब उन्हो ने दोनो ओर से उसको
जगह दी, और वह राजभवन के घोडाफाटक

के द्वार तक गई, और वहा उन्हो ने उसको
मार डाला ॥

१६ तब यहोयादा ने अपने और सारी
प्रजा के और राजा के बीच यहोवा
की प्रजा होने की वाचा बन्धाई। १७ तब
सब लोगो ने बाल के भवन को जाकर
ढा दिया, और उसकी वेदियो और मूरतो
को टुकडे टुकडे किया, और मत्तान नाम
बाल के याजक को वेदियो के साम्हने
ही घात किया। १८ तब यहोयादा ने
यहोवा के भवन की सेवा के लिये उन
लेवीय याजको को ठहरा दिया, जिन्हे
दाऊद ने यहोवा के भवन पर दल दल
करके इसलिये ठहराया था, कि जैसे मूसा
की व्यवस्था मे लिखा है, वैसे ही वे यहोवा
को होमबलि चढाया करे, और दाऊद
की चलाई हुई विधि * के अनुसार आनन्द
करे और गाए। १९ और उस ने यहोवा
के भवन के फाटको पर द्वारपालो को
इसलिये खडा किया, कि जो किसी रीति
मे अशुद्ध हो, वह भीतर जाने न पाए।
२० और वह शतपतियो और रईसो और
प्रजा पर प्रभुता करनेवालो और देश
के सब लोगो को साथ करके राजा को
यहोवा के भवन मे नीचे ले गया और
ऊचे फाटक से होकर राजभवन मे आया,
और राजा को राजगद्दी पर बैठाया।
२१ तब सब लोग आनन्दित हुए और
नगर मे शान्ति हुई। अतल्याह तो
तलवार से मार ही डाली गई थी ॥

२४ जब योआश राजा हुआ, तब
वह सात वर्ष का था, और
यरूशलेम मे चालीस वर्ष तक राज्य करता
रहा, उसकी माता का नाम सिब्या था,
जो बेर्शेबा की थी। २ और जब तक
यहोयादा याजक जीवित रहा, तब तक
योआश वह काम करता रहा जो यहोवा
की दृष्टि मे ठीक है। ३ और यहोयादा
ने उसके दो ब्याह कराए और उस से
बेटे-बेटिया उत्पन्न हुई ॥

४ इसके बाद योआश के मन मे यहोवा
के भवन की मरम्मत करने की मनसा
उपजी। ५ तब उस ने याजको और
लेवियो को इकट्ठा करके कहा, प्रति वर्ष
यहूदा के नगरो मे जा जाकर सब इस्राए-
लियो से रुपये लिया करो जिस से तुम्हारे
परमेश्वर के भवन की मरम्मत हो,
देखो इस काम मे फुर्ती करो। तौभी
लेवियो ने कुछ फुर्ती न की। ६ तब
राजा ने यहोयादा महायाजक को बुलवा
कर पूछा, क्या कारण है कि तू ने लेवियो
को दृढ आज्ञा नही दी कि वे यहूदा और
यरूशलेम से उस चन्दे के रुपए ले आए
जिसका नियम यहोवा के दास मूसा और
इस्राएल की मण्डली ने साक्षीपत्र के
तम्बू के निमित्त चलाया था। ७ उस
दुष्ट स्त्री अतल्याह के बेटो ने तो परमेश्वर
के भवन को तोड दिया और यहोवा के
भवन की सब पवित्र की हुई वस्तुए बाल
देवताओ को दे दी थी ॥

८ और राजा ने एक सन्दूक बनाने
की आज्ञा दी और वह यहोवा के भवन
के फाटक के पास बाहर रखा गया। ९ तब
यहूदा और यरूशलेम मे यह प्रचार किया
गया कि जिस चन्दे का नियम परमेश्वर
के दास मूसा ने जगल मे इस्राएल मे
चलाया था, उसके रुपए यहोवा के निमित्त
ले आओ। १० तो सब हाकिम और
प्रजा के सब लोग आनन्दित हो रुपए
लाकर जब तक चन्दा पूरा न हुआ

* मूल मे—दाऊद के हाथो।

तब तक सन्दूक में डालते गए। ११ और
जब जब वह सन्दूक लेवियों के हाथ में
राजा के प्रधानों के पास पहुंचाया जाता
और यह जान पड़ता था कि उस में
रुपए बहुत हैं, तब तब राजा के प्रधान
और महायाजक का नाइब आकर सन्दूक
को खाली करते और तब उसे फिर उसके
स्थान पर रख देते थे। उन्हों ने प्रतिदिन
ऐसा किया और बहुत रुपए इकट्ठा किए।
१२ तब राजा और यहोयादा ने वह
रुपए यहोवा के भवन में काम करनेवालों
को दे दिए, और उन्हों ने राजों और
बढ़इयों को यहोवा के भवन के सुधारने
के लिये, और लोहारों और ठठेरों को
यहोवा के भवन की मरम्मत करने के
लिये मजदूरी पर रखा। १३ और कारी-
गर काम करते गए और काम पूरा
होता गया* और उन्हों ने परमेश्वर का
भवन जैसा का तैसा बनाकर दृढ़ कर
दिया। १४ जब उन्हों ने वह काम निपटा
दिया, तब वे शेष रुपए राजा और यहोयादा
के पास ले गए, और उन से यहोवा के
भवन के लिये पात्र बनाए गए, अर्थात्
सेवा टहल करने और होमबलि चढ़ाने
के पात्र और धूपदान आदि सोने चान्दी
के पात्र। और जब तक यहोयादा जीवित
रहा, तब तक यहोवा के भवन में होमबलि
नित्य चढ़ाए जाते थे॥

१५ परन्तु यहोयादा बूढ़ा हो गया
और दीर्घायु होकर मर गया। जब वह
मर गया तब एक सौ तीस वर्ष का था।
१६ और दाऊदपुर में राजाओं के बीच
उसको मिट्टी दी गई, क्योंकि उस ने
इस्राएल में और परमेश्वर के और
उसके भवन के विषय में भला किया
था॥

१७ यहोयादा के मरने के बाद
यहूदा के हाकिमों ने राजा के पास जाकर
उसे दण्डवत की, और राजा ने उनकी
मानी। १८ तब वे अपने पितरों के
परमेश्वर यहोवा का भवन छोड़कर अशेरों
और मूरतों की उपासना करने लगे।
सो उनके ऐसे दोषी होने के कारण
परमेश्वर का क्रोध यहूदा और यरूशलेम
पर भड़का। १९ तौभी उस ने उनके
पास नबी भेजे कि उनको यहोवा के पास
फेर लाएं, और इन्हों ने उन्हें चिता
दिया, परन्तु उन्हों ने कान न लगाया॥

२० और परमेश्वर का आत्मा यहोयादा
याजक के पुत्र जकर्याह में समा गया,
और वह ऊंचे स्थान पर खड़ा होकर
लोगों से कहने लगा, परमेश्वर यों कहता
है, कि तुम यहोवा की आज्ञाओं को क्यों
टालते हो? ऐसा करके तुम भाग्यवान
नहीं हो सकते, देखो तुम ने तो यहोवा
को त्याग दिया है, इस कारण उस ने
भी तुम को त्याग दिया। २१ तब लोगों
ने उस से द्रोह की गोष्ठी करके राजा
की आज्ञा से यहोवा के भवन के आंगन
में उसको पत्थरवाह किया। २२ यों राजा
योआश ने वह प्रीति भूलकर जो यहोयादा
ने उस से की थी, उसके पुत्र को घात किया।
और मरते समय उस ने कहा यहोवा इस
पर दृष्टि करके इसका लेखा ले॥

२३ नये वर्ष के लगते अरामियों की
सेना ने उस पर चढ़ाई की, और यहूदा
और यरूशलेम आकर प्रजा में से
सब हाकिमों को नाश किया और उनका
सब धन लूटकर दमिश्क के राजा के
पास भेजा। २४ अरामियों की सेना थोड़े

* मूल में—कान पर पट्टी चढ़ी।

ही पुरुषों की तो आई, परन्तु यहोवा ने
एक बहुत बड़ी सेना उनके हाथ कर दी,
क्योंकि उन्हों ने अपने पितरों के परमेश्वर
को त्याग दिया था। और योआश को
भी उन्हों ने दण्ड दिया॥
२५ और जब वे उसे बहुत ही रोगी
छोड़ गए, तब उसके कर्मचारियों ने
यहोयादा याजक के पुत्रों के खून के कारण
उस से द्रोह की गोष्ठी करके, उसे उसके
बिछौने पर ही ऐसा मारा, कि वह मर
गया, और उन्हों ने उसको दाऊदपुर में
मिट्टी दी, परन्तु राजाओं के कब्रिस्तान में
नहीं। २६ जिन्हों ने उस से राजद्रोह
की गोष्ठी की, वे ये थे, अर्थात् अम्मोनिन,
शिमात का पुत्र जाबाद और शिम्रित,
मोआबिन का पुत्र यहोजाबाद। २७ उसके
बेटों के विषय और उसके विरुद्ध, जो
बड़े दण्ड की नबूवत हुई, उसके और
परमेश्वर के भवन के बनने के विषय ये
सब बातें राजाओं के वृत्तान्त की पुस्तक
में लिखी हैं। और उसका पुत्र अमस्याह
उसके स्थान पर राजा हुआ॥

(अमस्याह का राज्य)

२५ जब अमस्याह राज्य करने लगा
तब वह पचीस वर्ष का था, और
यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक राज्य
करता रहा, और उसकी माता का नाम
यहोअद्दान था, जो यरूशलेम की थी।
२ उस ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि
में ठीक है, परन्तु खरे मन से न किया।
३ जब राज्य उसके हाथ में स्थिर हो
गया, तब उस ने अपने उन कर्मचारियों
को मार डाला जिन्हों ने उसके पिता
राजा को मार डाला था। ४ परन्तु उस ने
उनके लड़केवालों को न मारा क्योंकि
उस ने यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार
किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक
में लिखी है, कि पुत्र के कारण पिता न
मार डाला जाए, और न पिता के कारण
पुत्र मार डाला जाए, जिस ने पाप किया
हो वही उस पाप के कारण मार डाला
जाए॥
५ और अमस्याह ने यहूदा को वरन
सारे यहूदियों और बिन्यामीनियों को
इकट्ठा करके उनको, पितरों के घरानों के
अनुसार सहस्रपतियों और शतपतियों के
अधिकार में ठहराया; और उन में से
जितनों की अवस्था बीस वर्ष की अथवा
उस से अधिक थी, उनकी गिनती करके
तीन लाख भाला चलानेवाले और ढाल
उठानेवाले बड़े बड़े योद्धा पाए। ६ फिर
उस ने एक लाख इस्राएली शूरवीरों को
भी एक सौ किक्कार चान्दी देकर बुलवा
रखा। ७ परन्तु परमेश्वर के एक जन
ने उसके पास आकर कहा, हे राजा
इस्राएल की सेना तेरे साथ जाने न पाए,
क्योंकि यहोवा इस्राएल अर्थात् एप्रैम की
कुल सन्तान के संग नहीं रहता। ८ यदि
तू जाकर पुरुषार्थ करे, और युद्ध के लिये
हियाव बान्धे, तौभी परमेश्वर तुझे
शत्रुओं के साम्हने गिराएगा, क्योंकि
सहायता करने और गिरा देने दोनों में
परमेश्वर सामर्थी है। ९ अमस्याह ने
परमेश्वर के भक्त से पूछा, फिर जो
सौ किक्कार चान्दी मैं इस्राएली दल को
दे चुका हूं, उसके विषय क्या करूं?
परमेश्वर के भक्त ने उत्तर दिया, यहोवा
तुझे इस से भी बहुत अधिक दे सकता
है। १० तब अमस्याह ने उन्हें अर्थात्
उस दल को जो एप्रैम की ओर से उसके
पास आया था, अलग कर दिया, कि वे

अपने स्थान को लौट जाए। तब उनका
क्रोध यहूदियों पर बहुत भड़क उठा, और
वे अत्यन्त क्रोधित होकर अपने स्थान को
लौट गए। ११ परन्तु अमस्याह हियाव
बान्धकर अपने लोगों को ले चला, और
लोन की तराई में जाकर, दस हजार
सेईरियों को मार डाला। १२ और
यहूदियों ने दस हजार को बन्धुआ करके
चट्टान की चोटी पर ले गये, और चट्टान
की चोटी पर से गिरा दिया, सो वे सब
चूर चूर हो गए। १३ परन्तु उस दल
के पुरुष जिसे अमस्याह ने लौटा दिया कि
वे उसके साथ युद्ध करने को न जाएं,
शोमरोन से बेथोरोन तक यहूदा के सब
नगरों पर टूट पड़े, और उनके तीन
हजार निवासी मार डाले और बहुत लूट
ले ली॥

१४ जब अमस्याह एदोमियों का संहार
करके लौट आया, तब उस ने सेईरियों के
देवताओं को ले आकर अपने देवता करके
खड़ा किया, और उन्हीं के साम्हने दण्डवत
करने, और उन्हीं के लिये धूप जलाने
लगा। १५ तब यहोवा का क्रोध अमस्याह
पर भड़क उठा और उस ने उसके पास
एक नबी भेजा जिस ने उस से कहा, जो
देवता अपने लोगों को तेरे हाथ से बचा
न सके, उनकी खोज में तू क्यों लगा है?
१६ वह उस से यह कह ही रहा था कि उस ने
उस से पूछा, क्या हम ने तुझे राजमन्त्री
ठहरा दिया है? चुप रह! क्या तू
मार खाना चाहता है? तब वह नबी
यह कहकर चुप हो गया, कि मुझे मालूम
है कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने का
ठाना है, क्योंकि तू ने ऐसा किया है और
मेरी सम्मति नहीं मानी॥

१७ तब यहूदा के राजा अमस्याह ने
सम्मति लेकर, इस्राएल के राजा योआश
के पास, जो येहू का पोता और यहोआहाज
का पुत्र था, यों कहला भेजा, कि आ
हम एक दूसरे का साम्हना करें।
१८ इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा
के राजा अमस्याह के पास यों कहला
भेजा, कि लबानोन पर की एक झड़बेरी
ने लबानोन के एक देवदार के पास कहला
भेजा, कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह
दे, इतने में लबानोन का कोई वन पशु
पास से चला गया और उस झड़बेरी को
रौंद डाला। १९ तू कहता है, कि मैं ने
एदोमियों को जीत लिया है, इस कारण
तू फूल उठा और बड़ाई मारता है!
अपने घर में रह जा, तू अपनी हानि के
लिये यहां क्यों हाथ डालता है, इस में
तू क्या, वरन यहूदा भी नीचा खाएगा॥

२० परन्तु अमस्याह ने न माना। यह
तो परमेश्वर की ओर से हुआ, कि वह उन्हें
उनके शत्रुओं के हाथ कर दे, क्योंकि वे
एदोम के देवताओं की खोज में लग गए थे।
२१ तब इस्राएल के राजा योआश ने चढ़ाई
की और उस ने और यहूदा के राजा
अमस्याह ने यहूदा देश के बेतशेमेश में एक
दूसरे का साम्हना किया। २२ और यहूदा
इस्राएल से हार गया, और हर एक अपने
अपने डेरे को भागा। २३ तब इस्राएल के
राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह
को, जो यहोआहाज का पोता और योआश
का पुत्र था, बेतशेमेश में पकड़ा और
यरूशलेम को ले गया और यरूशलेम की
शहरपनाह में से एप्रैमी फाटक से कोनेवाले
फाटक तक चार सौ हाथ गिरा दिए।
२४ और जितना सोना चान्दी और जितने
पात्र परमेश्वर के भवन में ओबेदेदोम के पास

मिले, और राजभवन में जितना खजाना
था, उन सब को और बन्धक लोगों
को भी लेकर वह शोमरोन को लौट
गया ॥
२५ यहोआहाज के पुत्र इस्राएल के राजा
योआश के मरने के बाद योआश का पुत्र
यहूदा का राजा अमस्याह पन्द्रह वर्ष तक
जीवित रहा। २६ आदि से अन्त तक अम-
स्याह के और काम, क्या यहूदा और इस्राएल
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं
लिखे है? २७ जिस समय अमस्याह यहोवा
के पीछे चलना छोड़कर फिर गया था उस
समय से यरूशलेम में उसके विरुद्ध द्रोह की
गोष्ठी होने लगी, और वह लाकीश को भाग
गया। सो दूतो ने लाकीश तक उसका पीछा
कर के, उसको वही मार डाला। २८ तब
वह घोडों पर रखकर पहुंचाया गया और
उसे उसके पुरखाओ के बीच यहूदा के नगर
में मिट्टी दी गई ॥

(उज्जियाह का राज्य)

२६ तब सब यहूदी प्रजा ने उज्जि-
य्याह को लेकर जो सोलह वर्ष का
था, उसके पिता अमस्याह के स्थान पर राजा
बनाया। २ जब राजा अमस्याह अपने
पुरखाओ के संग सो गया तब उज्जिय्याह ने
एलोत नगर को दृढ कर के यहूदा में फिर
मिला लिया। ३ जब उज्जिय्याह राज्य
करने लगा, तब वह सोलह वर्ष का था।
और यरूशलेम में बावन वर्ष तक राज्य
करता रहा, और उसकी माता का नाम
यकील्याह था, जो यरूशलेम की थी।
४ जैसे उसका पिता अमस्याह, किया करता
था वैसा ही उसने भी किया जो यहोवा की
दृष्टि में ठीक था। ५ और जकर्याह के
दिनो में जो परमेश्वर के दर्शन के विषय
समझ रखता था,* वह परमेश्वर की खोज
में लगा रहता था, और जब तक वह यहोवा
की खोज में लगा रहा, तब तक परमेश्वर
उसको भाग्यवान किए रहा ॥
६ तब उस ने जाकर पलिश्तियों से युद्ध
किया, और गत, यब्ने और अशदोद की
शहरपनाह गिरा दी, और अशदोद के आस-
पास और पलिश्तियों के बीच में नगर
बसाए। ७ और परमेश्वर ने पलिश्तियों
और गूर्बालवासी अरबियों और मूनियों के
विरुद्ध उसकी सहायता की। ८ और
अम्मोनी उज्जिय्याह को भेंट देने लगे, वरन
उसकी कीर्ति मिस्र के सिवाने तक भी फैल
गई, क्योंकि वह अत्यन्त सामर्थी हो गया था।
९ फिर उज्जिय्याह ने यरूशलेम में कोने के
फाटक और तराई के फाटक और शहर-
पनाह के मोड पर गुम्मट बनवाकर दृढ
किए। १० और उसके बहुत जानवर थे
इसलिये उस ने जगल में और नीचे के देश
और चौरस देश में गुम्मट बनवाए और बहुत
से हौद खुदवाए, और पहाडो पर और कर्म्मेल
में उसके किसान और दाख की बारियो के
माली थे, क्योंकि वह खेती किसानी करने-
वाला था। ११ फिर उज्जिय्याह के
योद्धाओ की एक सेना थी जिनकी गिनती
यीएल मुशी और मासेयाह सरदार, हनन्याह
नामक राजा के एक हाकिम की आज्ञा से
करते थे, और उसके अनुसार वह दल बान्ध-
कर लडने को जाती थी। १२ पितरो के
घरानो के मुख्य मुख्य पुरुष जो शूरवीर थे,
उनकी पूरी गिनती दो हजार छ सौ थी।
१३ और उनके अधिकार में तीन लाख साढे
सात हजार की एक बडी सेना थी, जो शत्रुओ

* या जो परमेश्वर का भय मानने की
शिक्षा देता था।

के विरुद्ध राजा की सहायता करने को बड़े
बल से युद्ध करनेवाले थे। १४ उनके लिये
अर्थात् पूरी सेना के लिये उज्जिय्याह ने ढाल,
भाले, टोप, झिलम, धनुष और गोफन के
पत्थर तैयार किए। १५ फिर उस ने यरू-
शलेम में गुम्मटों और कगूरों पर रखने को
चतुर पुरुषों के निकाले हुए यन्त्र भी बनवाए
जिनके द्वारा तीर और बड़े बड़े पत्थर फेंके
जाते थे। और उसकी कीर्ति दूर दूर तक
फैल गई, क्योंकि उसे अद्भुत सहायता यहां
तक मिली कि वह सामर्थी हो गया॥

१६ परन्तु जब वह सामर्थी हो गया, तब
उसका मन फूल उठा, और उस ने बिगड़कर
अपने परमेश्वर यहोवा का विश्वासघात
किया, अर्थात् वह धूप की वेदी पर धूप जलाने
को यहोवा के मन्दिर में घुस गया। १७ और
अजर्याह याजक उसके बाद भीतर गया, और
उसके संग यहोवा के अस्सी याजक भी जो
वीर थे गए। १८ और उन्हों ने उज्जिय्याह
राजा का साम्हना करके उस से कहा, हे
उज्जिय्याह यहोवा के लिये धूप जलाना तेरा
काम नहीं, हारून की सन्तान अर्थात् उन
याजकों ही का काम है, जो धूप जलाने को
पवित्र किए गए हैं। तू पवित्रस्थान से निकल
जा, तू ने विश्वासघात किया है, यहोवा
परमेश्वर की ओर से यह तेरी महिमा का
कारण न होगा। १९ तब उज्जिय्याह धूप
जलाने को धूपदान हाथ में लिये हुए झुंझला
उठा। और वह याजकों पर झुंझला रहा
था, कि याजकों के देखते देखते यहोवा के
भवन में धूप की वेदी के पास ही उसके माथे
पर कोढ़ प्रगट हुआ। २० और अजर्याह
महायाजक और सब याजकों ने उस पर दृष्टि
की और क्या देखा कि उसके माथे पर कोढ़
निकला है। तब उन्हों ने उसको वहां से
झटपट निकाल दिया, वरन यह जानकर कि
यहोवा ने मुझे कोढ़ी कर दिया है, उस ने आप
बाहर जाने को उतावली की। २१ और
उज्जिय्याह राजा मरने के दिन तक कोढ़ी
रहा, और कोढ़ के कारण अलग एक घर में
रहता था, वह तो यहोवा के भवन में जाने
न पाता था*। और उसका पुत्र योताम
राजघराने के काम पर नियुक्त किया गया
और वह लोगों का न्याय भी करता था॥

२२ आदि से अन्त तक उज्जिय्याह के
और कामों का वर्णन तो आमोस के पुत्र
यशायाह नबी ने लिखा है। २३ निदान
उज्जिय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया,
और उसको उसके पुरखाओं के निकट
राजाओं के मिट्टी देने के खेत में मिट्टी दी
गई क्योंकि उन्हों ने कहा, कि वह कोढ़ी है।
और उसका पुत्र योताम उसके स्थान पर
राज्य करने लगा॥

(योताम का राज्य)

२७ जब योताम राज्य करने लगा
तब वह पचीस वर्ष का था, और
यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य करता
रहा। और उसकी माता का नाम यरूशा
था, जो सादोक की बेटी थी। २ उस ने वह
किया, जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है, अर्थात्
जैसा उसके पिता उज्जिय्याह ने किया था,
ठीक वैसा ही उस ने भी किया तौभी वह
यहोवा के मन्दिर में न घुसा। और प्रजा
के लोग तब भी बिगड़ी चाल चलते थे।
३ उसी ने यहोवा के भवन के ऊपरवाले
फाटक को बनाया, और ओपेल की शहरपनाह
पर बहुत कुछ बनवाया। ४ फिर उस ने
यहूदा के पहाड़ी देश में कई नगर दृढ़
किए, और जंगलों में गढ़ और गुम्मट बनाए।
५ और वह अम्मोनियों के राजा से युद्ध

* मूल में—भवन से कटा था।

करके उन पर प्रवल हो गया। उसी वर्ष
अम्मोनियो ने उसको सौ किक्कार चादी,
और दस दस हजार कोर गेहू और जव
दिया। और फिर दूसरे और तीसरे वर्ष मे
भी उन्हो ने उसे उतना ही दिया। ६ यो
योताम सामर्थी हो गया, क्योकि वह अपने
आप को अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख
जानकर सीधी चाल चलता था। ७ योताम
के और काम और उसके सव युद्ध और
उसकी चाल चलन, इन सव वातो का वर्णन
इस्राएल और यहूदा के राजाओ के इतिहास
मे लिखा है। ८ जव वह राजा हुआ, तव
पचीस वर्ष का था, और वह यरूशलेम
मे सोलह वर्ष तक राज्य करता रहा।
९ निदान योताम अपने पुरखाओ के सग सो
गया और उसे दाऊदपुर मे मिट्टी दी गई।
और उसका पुत्र आहाज उसके स्थान पर
राज्य करने लगा।।

(आहाज का राज्य)

२८ जव आहाज राज्य करने लगा
तव वह वीस वर्ष का था, और
सोलह वर्ष तक यरूशलेम मे राज्य करता
रहा। और अपने मूलपुरुष दाऊद के समान
काम नही किया, जो यहोवा की दृष्टि मे ठीक
था, २ परन्तु वह इस्राएल के राजाओ की
सी चाल चला, और वाल देवताओ की
मूर्त्तिया ढलवाकर वनाई, ३ और हिन्नोम
के वेटे की तराई मे धूप जलाया, और उन
जातियो के घिनौने कामों के अनुसार जिन्हे
यहोवा ने इस्राएलियो के साम्हने से देश से
निकाल दिया था, अपने लडकेवालो को आग
में होम कर दिया। ४ और ऊचे स्थानो
पर, और पहाडियो पर, और सव हरे वृक्षो
के तले वह वलि चढाया और धूप जलाया
करता था।।

५ इसलिये उसके परमेश्वर यहोवा ने
उसको अरामियो के राजा के हाथ कर दिया,
और वे उसको जीतकर, उसके वहुत से लोगो
को वन्धुआ वनाके दमिश्क को ले गए। और
वह इस्राएल के राजा के वश मे कर दिया
गया, जिस ने उसे वडी मार से मारा।
६ और रमल्याह के पुत्र पेकह ने, यहूदा मे
एक ही दिन मे एक लाख वीस हजार लोगो
को जो सव के सव वीर थे, घात किया,
क्योकि उन्हो ने अपने पितरो के परमेश्वर
यहोवा को त्याग दिया था। ७ और जिक्री
नामक एक एप्रैमी वीर ने मासेयाह नामक
एक राजपुत्र को, और राजभवन के प्रधान
अज्रीकाम को, और एलकाना को, जो
राजा का मत्री था, मार डाला।।

८ और इस्राएली अपने भाइयो मे से
स्त्रियो, वेटो और वेटियो को मिलाकर दो
लाख लोगो को वन्धुआ वनाके, और उनकी
वहुत लूट भी छीनकर शोमरोन की ओर ले
चले। ९ परन्तु वहा ओदेद नामक यहोवा का
एक नवी था, वह शोमरोन को आनेवाली
सेना से मिलकर उन से कहने लगा, सुनो,
तुम्हारे पितरो के परमेश्वर यहोवा ने
यहूदियो पर झुझलाकर उनको तुम्हारे हाथ
कर दिया है, और तुम ने उनको ऐसा क्रोध
करके घात किया जिसकी चिल्लाहट स्वर्ग को
पहुच गई है। १० और अव तुम ने ठाना है
कि यहूदियो और यरूशलेमियो को अपने
दास-दासी वनाकर दवाए रखो। क्या तुम
भी अपने परमेश्वर यहोवा के यहा दोषी नही
हो? ११ इसलिये अव मेरी सुनो और इन
वन्धुओ को जिन्हे तुम अपने भाइयो मे से
वन्धुआ वनाके ले आए हो, लौटा दो, यहोवा
का क्रोध तो तुम पर भडका है। १२ तव
एप्रैमियो के कितने मुख्य पुरुष अर्थात्
योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोन का

पुत्र वेरेक्याह, शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह,
और हल्दै का पुत्र अमासा, लडाई मे
आनेवालो का साम्हना करके, उन मे
कहने लगे। १३ तुम इन बन्धुओ को
यहा मत लाओ, क्योंकि तुम ने वह
बात ठानी है जिसके कारण हम यहोवा
के यहा दोषी हो जाएगे, और उस से
हमारा पाप और दोष बढ जाएगा, हमारा
दोष तो बडा है और इस्राएल पर बहुत क्रोध
भडका है। १४ तब उन हथियार बन्धो ने
बन्धुओ और लूट को हाकिमो और सारी
सभा के साम्हने छोड दिया। १५ तब जिन
पुरुषो के नाम ऊपर लिखे है, उन्हो ने उठकर
बन्धुओ को ले लिया, और लूट मे से सब नगे
लोगो को कपडे, और जूतिया पहिनाई, और
खाना खिलाया, और पानी पिलाया, और
तेल मला, और तब निर्बल लोगो को गदहो
पर चढाकर, यरीहो को जो खजूर का नगर
कहलाता है, उनके भाइयो के पास पहुचा
दिया। तब वे शोमरोन को लौट आए॥

१६ उस समय राजा आहाज ने अश्शूर
के राजाओ के पास दूत भेजकर सहायता
मागी। १७ क्योंकि एदोमियो ने यहूदा मे
आकर उसको मारा, और बन्धुओ को ले गए
थे। १८ और पलिश्तियो ने नीचे के देश
और यहूदा के दक्खिन देश के नगरो पर
चढाई करके, बेतशेमेश, अय्यालोन और गदे-
रोत को, और अपने अपने गावो समेत सोको,
तिम्ना, और गिमजो को ले लिया, और उन
में रहने लगे थे। १९ यो यहोवा ने इस्राएल
के राजा आहाज के कारण यहूदा को दबा
दिया, क्योंकि वह निरकुश होकर चला,
और यहोवा से बडा विश्वासघात किया।
२० तब अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर
उसके विरुद्ध आया, और उसको कष्ट
दिया, दृढ नही किया। २१ आहाज ने तो
यहोवा के भवन और राजभवन और
हाकिमो के घरो मे मे धन निकालकर*
अश्शूर के राजा को दिया, परन्तु इससे
उसकी कुछ सहायता न हुई॥

२२ और क्लेश के समय राजा आहाज ने
यहोवा से और भी विश्वासघात किया।
२३ और उस ने दमिश्क के देवताओ के
लिये जिन्हो ने उसको मारा था, बलि
चढाया, क्योंकि उस ने यह सोचा, कि
आरामी राजाओ के देवताओ ने उनकी
सहायता की, तो मै उनके लिये बलि
चढाऊगा कि वे मेरी सहायता करे। परन्तु
वे उसके और सारे इस्राएल के पतन का
कारण हुए। २४ फिर आहाज ने परमेश्वर
के भवन के पात्र बटोरकर तुडवा डाले, और
यहोवा के भवन के द्वारो को बन्द कर दिया,
और यरूशलेम के सब कोनो में वेदिया बनाई।
२५ और यहूदा के एक एक नगर मे उस ने
पराये देवताओ को धूप जलाने के लिये ऊचे
स्थान बनाए, और अपने पितरो के परमेश्वर
यहोवा को रिस दिलाई। २६ और उसके
और कामो, और आदि से अन्त तक उसकी
पूरी चाल चलन का वर्णन यहूदा और
इस्राएल के राजाओ के इतिहास की पुस्तक
मे लिखा है। २७ निदान आहाज अपने
पुरखाओ के सग सो गया और उसको
यरूशलेम नगर मे मिट्टी दी गई, परन्तु वह
इस्राएल के राजाओ के कब्रिस्तान में
पहुचाया न गया। और उसका पुत्र
हिजकिय्याह उसके स्थान पर राज्य करने
लगा।

(हिजकिय्याह के सुधार के काम)

२९ जब हिजकिय्याह राज्य करने
लगा तब वह पचीस वर्ष का था,

* मूल में—काटकर।

और उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य
करता रहा। और उसकी माता का नाम
अबिय्याह था, जो जकर्याह की बेटी थी।
२ जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था
अर्थात् जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था वैसा
ही उस ने भी किया॥

३ अपने राज्य के पहिले वर्ष के पहिले
महीने में उस ने यहोवा के भवन के द्वार
खुलवा दिए, और उनकी मरम्मत भी
कराई। ४ तब उस ने याजकों और लेवियों
को ले आकर पूर्व के चौक में इकट्ठा किया।
५ और उन से कहने लगा, हे लेवियो मेरी
सुनो! अब अपने अपने को पवित्र करो,
और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के
भवन को पवित्र करो, और पवित्रस्थान में
से मैल निकालो। ६ देखो हमारे पुरखाओं
ने विश्वासघात करके वह कर्म किया था,
जो हमारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा
है और उसको तज करके यहोवा के निवास
से मुंह फेरकर उसको पीठ दिखाई थी।
७ फिर उन्हों ने ओसारे के द्वार बन्द किए,
और दीपकों को बुझा दिया था, और पवित्र
स्थान में इस्राएल के परमेश्वर के लिये न तो
धूप जलाया और न होमबलि चढ़ाया था।
८ इसलिये यहोवा का क्रोध यहूदा और
यरूशलेम पर भड़का है, और उस ने ऐसा
किया, कि वे मारे मारे फिरें और चकित
होने और ताली बजाने का कारण हो जाएं,
जैसे कि तुम अपनी आंखों से देख रहे हो।
९ देखो, इस कारण हमारे बाप तलवार से
मारे गए, और हमारे बेटे-बेटियां और स्त्रियां
बन्धुआई में चली गई हैं। १० अब मेरे
मन ने यह निर्णय किया है कि इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा से वाचा बान्धूं, इसलिये
कि उसका भड़का हुआ क्रोध हम पर से दूर
हो जाए। ११ हे मेरे बेटो, ढिलाई न करो
देखो, यहोवा ने अपने सम्मुख खड़े रहने, और
अपनी सेवा टहल करने, और अपने टहलुए
और धूप जलानेवाले का काम करने के लिये
तुम्हीं को चुन लिया है॥

१२ तब लेवीय उठ खड़े हुए, अर्थात्
कहातियों में से अमासै का पुत्र महत, और
अजर्याह का पुत्र योएल, और मरारियों में
से अब्दी का पुत्र कीश, और यहल्लेलेल का
पुत्र अजर्याह, और गेर्शोनियों में से जिम्मा
का पुत्र योआह, और योआह का पुत्र एदेन।
१३ और एलीसापान की सन्तान में से
शिम्री, और यूएल और आसाप की सन्तान
में से जकर्याह और मत्तन्याह। १४ और
हेमान की सन्तान में से यहूएल और शिमी,
और यदूतून की सन्तान में से शमायाह और
उज्जीएल। १५ इन्हों ने अपने भाइयों को
इकट्ठा किया और अपने अपने को पवित्र
करके राजा की उस आज्ञा के अनुसार जो
उस ने यहोवा से वचन पाकर दी थी, यहोवा
के भवन के शुद्ध करने के लिये भीतर गए।
१६ तब याजक यहोवा के भवन के भीतरी
भाग को शुद्ध करने के लिये उस में जाकर
यहोवा के मन्दिर में जितनी अशुद्ध वस्तुएं
मिलीं उन सब को निकालकर यहोवा के
भवन के आंगन में ले गए, और लेवियों ने
उन्हें उठाकर बाहर किद्रोन के नाले में पहुंचा
दिया। १७ पहिले महीने के पहिले दिन को
उन्हों ने पवित्र करने का काम आरम्भ
किया, और उसी महीने के आठवें दिन को वे
यहोवा के ओसारे तक आ गए। इस प्रकार
उन्हों ने यहोवा के भवन को आठ दिन में
पवित्र किया, और पहिले महीने के सोलहवें
दिन को उन्हों ने उस काम को पूरा किया।
१८ तब उन्हों ने राजा हिजकिय्याह के
पास भीतर जाकर कहा, हम यहोवा के पूरे
भवन को और पात्रों समेत होमबलि की वेदी

और भेंट की रोटी की मेज को भी शुद्ध कर
चुके। १९ और जितने पात्र राजा आहाज
ने अपने राज्य में विश्वासघात करके फेंक
दिए थे, उनको भी हम ने ठीक करके पवित्र
किया है, और वे यहोवा की वेदी के साम्हने
रखे हुए हैं॥

२० तब राजा हिजकिय्याह सवेरे उठ-
कर नगर के हाकिमों को इकट्ठा करके,
यहोवा के भवन को गया। २१ तब वे
राज्य और पवित्रस्थान और यहूदा के
निमित्त सात बछड़े, सात मेढ़े, सात भेड़ के
बच्चे, और पापबलि के लिये सात बकरे ले
आए, और उस ने हारून की सन्तान के
लेवियों को आज्ञा दी कि इन सब को यहोवा
की वेदी पर चढ़ाए। २२ तब उन्हों ने
बछड़े बलि किए, और याजकों ने उनका
लोहू लेकर वेदी पर छिड़क दिया, तब उन्हों
ने मेढ़े बलि किए, और उनका लोहू भी वेदी
पर छिड़क दिया। और भेड़ के बच्चे बलि
किए, और उनका भी लोहू वेदी पर छिड़क
दिया। २३ तब वे पापबलि के बकरों को
राजा और मण्डली के समीप ले आए और
उन पर अपने अपने हाथ रखे। २४ तब
याजकों ने उनको बलि करके, उनका लोहू
वेदी पर छिड़क कर पापबलि किया, जिस से
सारे इस्राएल के लिये प्रायश्चित्त किया
जाए। क्योंकि राजा ने सारे इस्राएल के
लिये होमबलि और पापबलि किए जाने की
आज्ञा दी थी॥

२५ फिर उस ने दाऊद और राजा के
दर्शी गाद, और नातान नबी की आज्ञा के
अनुसार जो यहोवा की ओर से उसके नबियों
के द्वारा आई थी, झांझ, सारंगियां और
वीणाएं लिए हुए लेवियों को यहोवा के भवन
में खड़ा किया। २६ तब लेवीय दाऊद के
चलाए बाजे लिए हुए, और याजक तुरहियां
लिए हुए खड़े हुए। २७ तब हिजकिय्याह
ने वेदी पर होमबलि चढ़ाने की आज्ञा दी,
और जब होमबलि चढ़ने लगी, तब यहोवा
का गीत आरम्भ हुआ, और तुरहियां और
इस्राएल के राजा दाऊद के बाजे बजने लगे।
२८ और मण्डली के सब लोग दण्डवत करते
और गानेवाले गाते और तुरही फूकनेवाले
फूकते रहे, यह सब तब तक होता रहा, जब
तक होमबलि चढ़ न चुकी। २९ और जब
बलि चढ़ चुकी, तब राजा और जितने उसके
संग वहां थे, उन सभों ने सिर झुकाकर
दण्डवत किया। ३० और राजा हिज-
किय्याह और हाकिमों ने लेवियों को आज्ञा
दी, कि दाऊद और आसाप दर्शी के भजन *
गाकर यहोवा की स्तुति करें। और उन्हों ने
आनन्द के साथ स्तुति की और सिर नवाकर
दण्डवत किया॥

३१ तब हिजकिय्याह कहने लगा, अब
तुम ने यहोवा के निमित्त अपना अर्पण किया
है, इसलिये समीप आकर यहोवा के भवन में
मेलबलि और धन्यवादबलि पहुंचाओ।
तब मण्डली के लोगों ने मेलबलि और धन्य-
वादबलि पहुंचा दिए, और जितने अपनी
इच्छा से देना चाहते थे उन्हों ने भी होमबलि
पहुंचाए। ३२ जो होमबलि पशु मण्डली के
लोग ले आए, उनकी गिनती यह थी, सत्तर
बैल, एक सौ मेढ़े, और दो सौ भेड़ के बच्चे,
ये सब यहोवा के निमित्त होमबलि के काम
में आए। ३३ और पवित्र किए हुए पशु,
छः सौ बैल और तीन हजार भेड़-बकरियां
थीं। ३४ परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे, कि वे
सब होमबलि पशुओं की खालें न उतार सके,
तब उनके भाई लेवीय उस समय तक उनकी
सहायता करते रहे जब तक वह काम निपट न

* मूल में—वचन।

गया, और याजको ने अपने को पवित्र न
किया, क्योकि लेवीय अपने को पवित्र करने
के लिये पवित्र याजको से अधिक सीधे मन
के थे। ३५ और फिर होमबलि पशु बहुत
थे, और मेलबलि पशुओ की चर्बी भी बहुत
थी, और एक एक होमबलि के साथ अर्घ
भी देना पडा। यो यहोवा के भवन मे
की उपासना ठीक की गई। ३६ तब
हिजकिय्याह और सारी प्रजा के लोग उस
काम के कारण आनन्दित हुए, जो यहोवा ने
अपनी प्रजा के लिये तैयार किया था,
क्योकि वह काम एकाएक हो गया था॥

(हिजकिय्याह का माना हुआ फसह)

३० फिर हिजकिय्याह ने सारे इस्रा-
एल और यहूदा मे कहला भेजा,
और एप्रैम और मनश्शे के पास इस आशय
के पत्र लिख भेजे, कि तुम यरूशलेम को
यहोवा के भवन मे इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के लिये फसह मनाने को आओ।
२ राजा और उसके हाकिमो और यरूशलेम
की मण्डली ने सम्मति की थी कि फसह को
दूसरे महीने मे मनाए। ३ वे उसे उस समय
इस कारण न मना सकते थे, क्योकि थोडे
ही याजको ने अपने अपने को पवित्र किया
था, और प्रजा के लोग यरूशलेम मे इकट्ठे न
हुए थे। ४ और यह बात राजा और सारी
मण्डली को अच्छी लगी। ५ तब उन्हो ने
यह ठहरा दिया, कि बेर्शेबा से लेकर दान
के सारे इस्राएलियो में यह प्रचार किया
जाय, कि यरूशलेम मे इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के लिये फसह मनाने को चले आओ,
६ क्योकि उन्हो ने इतनी बडी संख्या मे
उसको इस प्रकार न मनाया था जैसा कि
लिखा है। इसलिये हरकारे राजा और
उसके हाकिमो से चिट्ठिया लेकर, राजा की
आज्ञा के अनुसार सारे इस्राएल और यहूदा
मे घूमे, और यह कहते गए, कि हे इस्रा-
एलियो! इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो, कि वह
अश्शूर के राजाओ के हाथ से बचे हुए
तुम लोगो की ओर फिरे। ७ और
अपने पुरखाओ और भाइयो के समान मत
बनो, जिन्हो ने अपने पूर्वजो के परमेश्वर
यहोवा मे विश्वासघात किया था, और उस ने
उन्हे चकित होने का कारण कर दिया, जैसा
कि तुम स्वय देख रहे हो। ८ अब अपने
पुरखाओ की नाई हठ न करो, वरन यहोवा
के अधीन होकर उसके उस पवित्रस्थान मे
आओ जिसे उस ने सदा के लिये पवित्र किया
है, और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना
करो, कि उसका भडका हुआ क्रोध तुम पर से
दूर हो जाए। ९ यदि तुम यहोवा की ओर
फिरोगे तो जो तुम्हारे भाइयो और लडके-
वालो को बन्धुआ बनाके ले गए है, वे उन पर
दया करेगे, और वे इस देश मे लौट सकेगे
क्योकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रह-
कारी और दयालु है, और यदि तुम उसकी
ओर फिरोगे तो वह अपना मुह तुम से न
मोडेगा॥

१० इस प्रकार हरकारे एप्रैम और मनश्शे
के देशो मे नगर नगर होते हुए जबूलून तक
गए, परन्तु उन्हो ने उनकी हसी की, और
उन्हे ठट्ठो मे उडाया। ११ तौभी आशेर,
मनश्शे और जबूलून मे से कुछ लोग दीन
होकर यरूशलेम को आए। १२ और यहूदा
मे भी परमेश्वर की ऐसी शक्ति* हुई, कि
वे एक मन होकर, जो आज्ञा राजा और
हाकिमो ने यहोवा के वचन के अनुसार दी
थी, उसे मानने को तैयार हुए॥

* मूल में—हाथ।

१३ इस प्रकार अधिक लोग यरूशलेम में इसलिये इकट्ठे हुए, कि दूसरे महीने में अख-मीरी रोटी का पर्व्व मानें। और बहुत बड़ी सभा इकट्ठी हो गई। १४ और उन्हों ने उठकर, यरूशलेम की वेदियों और धूप जलाने के सब स्थानों को उठाकर किद्रोन नाले में फेंक दिया। १५ तब दूसरे महीने के चौदहवें दिन को उन्हों ने फसह के पशु बलि किए तब याजक और लेवीय लज्जित हुए और अपने को पवित्र करके होमबलियों को यहोवा के भवन में ले आए। १६ और वे अपने नियम के अनुसार, अर्थात् परमेश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के अनुसार, अपने अपने स्थान पर खड़े हुए, और याजकों ने रक्त को लेवियों के हाथ में लेकर छिड़क दिया। १७ क्योंकि सभा में बहुत ऐसे थे जिन्हों ने अपने को पवित्र न किया था, इस-लिये सब अशुद्ध लोगों के फसह के पशुओं को बलि करने का अधिकार लेवियों को दिया गया, कि उनको यहोवा के लिये पवित्र करें। १८ बहुत से लोगों ने अर्थात् एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून में से बहुतों ने अपने को शुद्ध नहीं किया था, तौभी वे फसह के पशु का मांस लिखी हुई विधि के विरुद्ध खाते थे। क्योंकि हिजकिय्याह ने उनके लिये यह प्रार्थना की थी, कि यहोवा जो भला है, वह उन सभों के पाप ढांप दे, १९ जो परमेश्वर की अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की खोज में मन लगाए हुए हैं, चाहे वे पवित्र-स्थान की विधि के अनुसार शुद्ध न भी हों। २० और यहोवा ने हिजकिय्याह की यह प्रार्थना सुनकर लोगों को चंगा किया। २१ और जो इस्राएली यरूशलेम में उपस्थित थे, वे सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्व्व बड़े आनन्द से मनाते रहे, और प्रतिदिन लेवीय और याजक ऊंचे शब्द के बाजे यहोवा के लिये बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे। २२ और जितने लेवीय यहोवा का भजन बुद्धिमानी के साथ करते थे, उनको हिजकिय्याह ने शान्ति के वचन कहे। इस प्रकार वे मेलबलि चढ़ाकर और अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा के सम्मुख पापांगीकार करते रहे और उस नियत पर्व्व के सातों दिन तक खाते रहे॥

२३ तब सारी सभा ने सम्मति की कि हम और सात दिन पर्व मानेंगे, सो उन्हों ने और सात दिन आनन्द से पर्व्व मनाया। २४ क्योंकि यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने सभा को एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़-बकरियां दे दीं, और हाकिमों ने सभा को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़-बकरियां दीं*, और बहुत से याजकों ने अपने को पवित्र किया। २५ तब याजकों और लेवियों समेत यहूदा की सारी सभा, और इस्राएल से आए हुओं की सभा, और इस्राएल के देश से आए हुए, और यहूदा में रहनेवाले परदेशी, इन सभों ने आनन्द किया। २६ सो यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ, क्योंकि दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा सुलैमान के दिनों से ऐसी बात यरूशलेम में न हुई थी। २७ अन्त में लेवीय याजकों ने खड़े होकर प्रजा को आशीर्वाद दिया, और उनकी सुनी गई, और उनकी प्रार्थना उसके पवित्र धाम तक अर्थात् स्वर्ग तक पहुंची॥

(हिजकिय्याह का किया हुआ उपासना का प्रबन्ध)

३१ जब यह सब हो चुका, तब जितने इस्राएली उपस्थित थे, उन सभा ने यहूदा के नगरों में जाकर, सारे यहूदा और बिन्यामीन और एप्रैम और मनश्शे में

* मूल में—उठाईं।

की लाठो को तोड दिया, अशेरो को काट
डाला, और ऊचे स्थानो और वेदियो को
गिरा दिया, और उन्हो ने उन सब का अन्त
कर दिया। तब सब इस्राएली अपने अपने
नगर को लौटकर, अपनी अपनी निज भूमि
मे पहुचे ॥
२ और हिजकिय्याह ने याजको के दलो
को और लेवियो को वरन याजको और
लेवियो दोनो को, प्रति दल के अनुसार और
एक एक मनुष्य को उसकी सेवकाई के अनु-
सार इसलिये ठहरा दिया, कि वे यहोवा की
छावनी के द्वारो के भीतर होमबलि, मेल-
बलि, सेवा टहल, धन्यवाद और स्तुति किया
करे। ३ फिर उस ने अपनी सम्पत्ति मे मे
राजभाग को होमबलियो के लिये ठहरा
दिया, अर्थात् सवेरे और साझ की होमबलि
और विश्राम और नये चाद के दिनो और
नियत समयो की होमबलि के लिये जैसा कि
यहोवा की व्यवस्था मे लिखा है। ४ और
उस ने यरूशलेम मे रहनेवालो को याजको
और लेवियो को उनका भाग देने की आज्ञा
दी, ताकि वे यहोवा की व्यवस्था के काम मन
लगाकर कर सके*। ५ यह आज्ञा सुनते
ही† इस्राएली अन्न, नया दाखमधु, टटका
तेल, मधु आदि खेती की सब भाति की
पहिली उपज बहुतायत मे देने, और सब
वस्तुओं का दशमाश अधिक मात्रा मे लाने
लगे। ६ और जो इस्राएली और यहूदी,
यहूदा के नगरो मे रहते थे, वे भी बैलो और
भेड़-बकरियो का दशमाश, और उन पवित्र
वस्तुओ का दशमाश, जो उनके परमेश्वर
यहोवा के निमित्त पवित्र की गई थी, लाकर
ढेर ढेर करके रखने लगे। ७ इस प्रकार
ढेर का लगाना उन्हो ने तीसरे महीने मे
आरम्भ किया और सातवे महीने मे पूरा
किया। ८ जब हिजकिय्याह और हाकिमो
ने आकर उन ढेरो को देखा, तब यहोवा को
और उसकी प्रजा इस्राएल को धन्य धन्य
कहा। ९ तब हिजकिय्याह ने याजको और
लेवियो से उन ढेरो के विषय पूछा।
१० और अजर्याह महायाजक ने जो सादोक
के घराने का था, उस से कहा, जब से लोग
यहोवा के भवन में उठाई हुई भेटे लाने लगे
है, तब से हम लोग पेट भर खाने को पाते है,
वरन बहुत बचा भी करता है, क्योकि यहोवा
ने अपनी प्रजा को आशीष दी है, और जो
शेष रह गया है, उसी का यह बडा ढेर है ॥
११ तब हिजकिय्याह ने यहोवा के भवन
मे कोठरिया तैयार करने की आज्ञा दी, और
वे तैयार की गई। १२ तब लोगो ने उठाई
हुई भेटे, दशमाश और पवित्र की हुई वस्तुए,
सच्चाई से पहुचाई और उनके मुख्य
अधिकारी तो कोनन्याह नाम एक लेवीय
और दूसरा उसका भाई शिमी नायब था।
१३ और कोनन्याह और उसके भाई शिमी
के नीचे, हिजकिय्याह राजा और परमेश्वर
के भवन के प्रधान अजर्याह दोनो की आज्ञा
मे यहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल,
यरीमोत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह,
महत और बनायाह अधिकारी थे।
१४ और परमेश्वर के लिये स्वेच्छाबलियो
का अधिकारी यिम्ना लेवीय का पुत्र कोरे
था, जो पूर्व फाटक का द्वारपाल था, कि वह
यहोवा की उठाई हुई भेटे, और परमपवित्र
वस्तुए बाटा करे। १५ और उसके अधि-
कार मे एदेन, मिन्यामीन, येशू, शमायाह,
अमर्याह और शकन्याह याजको के नगरो
मे रहते थे, कि वे क्या बडे, क्या छोटे, अपने
भाइयो को उनके दलो के अनुसार सच्चाई
से दिया करे, १६ और उनके अलावा

* [illegible]
† [illegible]

उनको भी दें, जो पुरुषों की वंशावली के
अनुसार गिने जाकर तीन वर्ष की अवस्था
के वा उस से अधिक आयु के थे, और अपने
अपने दल के अनुसार अपनी अपनी सेवकाई
निबाहने को दिन दिन के काम के अनुसार
यहोवा के भवन में जाया करते थे।
१७ और उन याजकों को भी दें, जिनकी
वंशावली उनके पितरों के घरानों के
अनुसार की गई, और उन लेवियों को भी
जो बीस वर्ष की अवस्था से ले आगे को
अपने अपने दल के अनुसार, अपने अपने काम
निबाहते थे। १८ और सारी सभा में
उनके बालबच्चों, स्त्रियों, बेटों और बेटियों
को भी दें, जिनकी वंशावली थी, क्योंकि वे
सच्चाई से अपने को पवित्र करते थे।
१९ फिर हारून की सन्तान के याजकों को
भी जो अपने अपने नगरों के चराईवाले
मैदान में रहते थे, देने के लिये वे पुरुष
नियुक्त किए गए थे जिनके नाम ऊपर लिखे
हुए थे कि वे याजकों के सब पुरुषों और उन
सब लेवियों को भी उनका भाग दिया करें
जिनकी वंशावली थी॥

२० और सारे यहूदा में भी हिजकिय्याह
ने ऐसा ही प्रबन्ध किया, और जो कुछ
उसके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला
और ठीक और सच्चाई का था, उसे वह
करता था। २१ और जो जो काम उस ने
परमेश्वर के भवन की उपासना और
व्यवस्था और आज्ञा के विषय अपने
परमेश्वर की खोज में किया, वह उस ने
अपना सारा मन लगाकर किया और उस में
कृतार्थ भी हुआ॥

(सन्हेरीब की सेना की चढ़ाई
और विनाश)

३२ इन बातों और ऐसे प्रबन्ध के
बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब ने
आकर यहूदा में प्रवेश कर और गढ़वाले
नगरों के विरुद्ध डेरे डालकर उनको अपने
लाभ के लिये लेना चाहा। २ यह देखकर
कि सन्हेरीब निकट आया है और यरूशलेम
से लड़ने की मनसा* करता है, ३ हिज-
किय्याह ने अपने हाकिमों और वीरों के साथ
यह सम्मति की, कि नगर के बाहर के सोतों
को पटवा दें, और उन्हों ने उसकी सहायता
की। ४ इस पर बहुत से लोग इकट्ठे हुए,
और यह कहकर, कि अश्शूर के राजा क्यों
यहां आएं, और आकर बहुत पानी पाएं,
उन्होंने सब सोतों को पाट दिया और उस नदी
को सुखा दिया जो देश के मध्य होकर बहती
थी। ५ फिर हिजकिय्याह ने हियाव बान्ध-
कर शहरपनाह जहां कहीं टूटी थी, वहां वहां
उसको बनवाया, और उसे गुम्मटों के बराबर
ऊंचा किया और बाहर एक और शहरपनाह
बनवाई, और दाऊदपुर में मिल्लो को दृढ़
किया। और बहुत से तीर और ढालें भी
बनवाईं। ६ तब उस ने प्रजा के ऊपर
सेनापति नियुक्त किए और उनको नगर के
फाटक के चौक में इकट्ठा किया, और यह
कहकर उनको धीरज दिया, ७ कि हियाव
बान्धो और दृढ़ हो तुम न तो अश्शूर के राजा
से डरो और न उसके संग की सारी भीड़ से,
और न तुम्हारा मन कच्चा हो, क्योंकि जो
हमारे साथ है, वह उसके संगियों से बड़ा है।
८ अर्थात् उसका सहारा तो मनुष्य ही है†,
परन्तु हमारे साथ, हमारी सहायता और
हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा
परमेश्वर यहोवा है। इसलिये प्रजा के लोग
यहूदा के राजा हिजकिय्याह की बातों पर
भरोसा किए रहे॥

* मूल में—का मुख।
† मूल में—उसके संग मांस की बांह।

९ इसके बाद अश्शूर का राजा सन्हेरीब
जो सारी सेना * समेत लाकीश के साम्हने
पड़ा था, उस ने अपने कर्मचारियों को
यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह
और उन सब यहूदियों से जो यरूशलेम में थे
यों कहने के लिये भेजा, १० कि अश्शूर का
राजा सन्हेरीब कहता है, कि तुम्हें किस का
भरोसा है जिससे कि तुम घेरे हुए यरूशलेम
में बैठे हो? ११ क्या हिजकिय्याह तुम
में यह कहकर कि हमारा परमेश्वर
यहोवा हम को अश्शूर के राजा के
पंजे में बचाएगा तुम्हें नहीं भरमाता
है कि तुम को भूखों प्यासों मारे?
१२ क्या उसी हिजकिय्याह ने उसके
ऊंचे स्थान और वेदियां दूर करके यहूदा
और यरूशलेम को आज्ञा नहीं दी, कि
तुम एक ही वेदी के साम्हने दण्डवत
करना और उसी पर धूप जलाना?
१३ क्या तुम को मालूम नहीं, कि मैं ने और
मेरे पुरखाओं ने देश देश के सब लोगों से
क्या क्या किया है? क्या उन देशों की
जातियों के देवता किसी भी उपाय से अपने
देश को मेरे हाथ से बचा सके? १४ जितनी
जातियों का मेरे पुरखाओं ने सत्यानाश
किया है उनके सब देवताओं में से ऐसा कौन
था जो अपनी प्रजा को मेरे हाथ
में बचा सका हो? फिर तुम्हारा देवता
तुम को मेरे हाथ से कैसे बचा सकेगा?
१५ अब हिजकिय्याह तुम को इस रीति
भुलाने अथवा बहकाने न पाए, और तुम
उसकी प्रतीति न करो, क्योंकि किसी
जाति या राज्य का कोई देवता अपनी
प्रजा को न तो मेरे हाथ से और न
मेरे पुरखाओं के हाथ से बचा सका। यह
निश्चय है कि तुम्हारा देवता तुम को मेरे
हाथ से नहीं बचा सकेगा॥
१६ इस से भी अधिक उसके कर्म-
चारियों ने यहोवा परमेश्वर की, और उसके
दास हिजकिय्याह की निन्दा की। १७ फिर
उस ने ऐसा एक पत्र भेजा, जिस में इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा की निन्दा की ये बातें
लिखी थीं, कि जैसे देश देश की जातियों के
देवताओं ने अपनी अपनी प्रजा को मेरे हाथ
से नहीं बचाया वैसे ही हिजकिय्याह का
देवता भी अपनी प्रजा को मेरे हाथ से नहीं
बचा सकेगा। १८ और उन्हों ने ऊंचे शब्द
से उन यरूशलेमियों को जो शहरपनाह पर
बैठे थे, यहूदी बोली में पुकारा, कि उनको
डराकर घबराहट में डाल दें जिस से नगर
को ले लें। १९ और उन्हों ने यरूशलेम के
परमेश्वर की ऐसी चर्चा की, कि मानो पृथ्वी
के देश देश के लोगों के देवताओं के बराबर
हो, जो मनुष्यों के बनाए हुए हैं॥
२० तब इन घटनाओं के कारण राजा
हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह
नबी दोनों ने प्रार्थना की और स्वर्ग की ओर
दोहाई दी। २१ तब यहोवा ने एक दूत
भेज दिया, जिस ने अश्शूर के राजा की
छावनी में सब शूरवीरों, प्रधानों और
सेनापतियों को नाश किया। और वह
लज्जित होकर, अपने देश को लौट गया।
और जब वह अपने देवता के भवन में था,
तब उसके निज पुत्रों ने वहीं उसे तलवार से
मार डाला। २२ यों यहोवा ने हिज-
किय्याह और यरूशलेम के निवासियों को
अश्शूर के राजा सन्हेरीब और अपने सब
शत्रुओं के हाथ से बचाया, और चारों ओर
उनकी अगुवाई की। २३ और बहुत लोग
यरूशलेम को यहोवा के लिये भेंट और

* मूल में—राज्य।

यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लिये अन-
मोल वस्तुएं ले आने लगे, और उस समय
से वह सब जातियों की दृष्टि में महान
ठहरा॥

(हिजकिय्याह का अन्तिम चरित्र)

२४ उन दिनों हिजकिय्याह ऐसा रोगी
हुआ, कि वह मरने पर था, तब उस ने
यहोवा से प्रार्थना की, और उस ने उस से
बातें करके उसके लिये एक चमत्कार
दिखाया। २५ परन्तु हिजकिय्याह ने उस
उपकार का बदला न दिया, क्योंकि उसका
मन फूल उठा था। इस कारण उसका कोप
उस पर और यहूदा और यरूशलेम पर
भड़का। २६ तब हिजकिय्याह यरूशलेम
के निवासियों समेत अपने मन के फूलने के
कारण दीन हो गया, इसलिये यहोवा का
क्रोध उन पर हिजकिय्याह के दिनों में न
भड़का॥

२७ और हिजकिय्याह को बहुत ही
धन और विभव मिला, और उस ने
चान्दी, सोने, मणियों, सुगन्धद्रव्य, ढालों
और सब प्रकार के मनभावने पात्रों के
लिये भण्डार बनवाए। २८ फिर उस
ने अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल
के लिये भण्डार, और सब भांति के
पशुओं के लिये थान, और भेड़-बकरियों
के लिये भेड़शालाएं बनवाईं। २९ और
उस ने नगर बसाए, और बहुत ही भेड़-
बकरियों और गाय-बैलों की सम्पत्ति इकट्ठा
कर ली, क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत ही
धन दिया था। ३० उसी हिजकिय्याह ने
गीहोन नाम नदी के ऊपर के सोते को पाटकर
उस नदी को नीचे की ओर दाऊदपुर की
पच्छिम अलंग को सीधा पहुंचाया, और
हिजकिय्याह अपने सब कामों में कृतार्थ
होता था। ३१ तौभी जब बाबेल के
हाकिमों ने उसके पास उसके देश में किए
हुए चमत्कार के विषय पूछने को दूत भेजे,
तब परमेश्वर ने उसको इसलिये छोड़ दिया,
कि उसको परख कर उसके मन का सारा
भेद जान ले॥

३२ हिजकिय्याह के और काम, और
उसके भक्ति के काम आमोस के पुत्र यशायाह
नबी के दर्शन नाम पुस्तक में, और यहूदा
और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की
पुस्तक में लिखे हैं। ३३ अन्त में हिज-
किय्याह अपने पुरखाओं के संग सो गया और
उसको दाऊद की सन्तान के कब्रिस्तान की
चढ़ाई पर मिट्टी दी गई, और सब यहूदियों
और यरूशलेम के निवासियों ने उसकी मृत्यु
पर उसका आदरमान किया। और उसका
पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राज्य करने
लगा॥

(मनश्शे का राज्य)

३३ जब मनश्शे राज्य करने लगा,
तब वह बारह वर्ष का था, और
यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राज्य करता
रहा। २ उस ने वह किया, जो यहोवा की
दृष्टि में बुरा था, अर्थात् उन जातियों के
घिनौने कामों के अनुसार जिनको यहोवा ने
इस्राएलियों के साम्हने से देश से निकाल
दिया था। ३ उस ने उन ऊंचे स्थानों को
जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ दिया
था, फिर बनाया, और बाल नाम देवताओं के
लिये वेदियां और अशेरा नाम मूरतें बनाईं,
और आकाश के सारे गण को दण्डवत
करता, और उनकी उपासना करता रहा।
४ और उस ने यहोवा के उस भवन में
वेदियां बनाईं जिसके विषय यहोवा ने कहा
था कि यरूशलेम में मेरा नाम सदा बना

रक्खेगा। ५ वरन यहोवा के भवन के दोनो
आगनो मे भी उस ने आकाश के सारे गण
के लिये वेदिया वनाई। ६ फिर उस ने
हिन्नोम के वेटे की तराई मे अपने लडकेवालो
को होम करके चढाया, और शुभ-अशुभ
मुहूर्तो को मानता, और टोना और तन्त्र-मन्त्र
करता, और ओझो और भूतसिद्धिवालो से
व्यवहार करता था। वरन उस ने ऐसे बहुत
से काम किए, जो यहोवा की दृष्टि मे वुरे
है और जिन से वह अप्रसन्न होता है।
७ और उस ने अपनी खुदवाई हुई मूर्त्ति
परमेश्वर के उस भवन मे स्थापन की जिसके
विषय परमेश्वर ने दाऊद और उसके पुत्र
सुलैमान से कहा था, कि इस भवन मे, और
यरूशलेम मे, जिसको मै ने इस्राएल के सव
गोत्रो मे से चुन लिया है मै अपना नाम
सर्वदा रखूगा, ८ और मै ऐसा न करूगा कि
जो देश मै ने तुम्हारे पुरखाओ को दिया था,
उस मे से इस्राएल फिर मारा मारा फिरे,
इतना अवश्य हो कि वे मेरी सव आज्ञाओ
को अर्थात् मूसा की दी हुई सारी व्यवस्था
और विधियो और नियमो को पालन करने
की चौकसी करे। ९ और मनश्शे ने यहूदा
और यरूशलेम के निवासियो को यहा तक
भटका दिया कि उन्हो ने उन जातियो से भी
वढकर वुराई की, जिन्हे यहोवा ने इस्रा-
एलियो के साम्हने से विनाश किया था॥

१० और यहोवा ने मनश्शे और उसकी
प्रजा से वाते की, परन्तु उन्हो ने कुछ ध्यान
नही दिया। ११ तव यहोवा ने उन पर
अश्शूर के सेनापतियो से चढाई कराई, और
ये मनश्शे को नकेल डालकर, और पीतल की
वेडिया जकडकर, उसे वावेल को ले गए।
१२ तव सकट मे पडकर वह अपने परमेश्वर
यहोवा को मानने लगा, और अपने पूर्वजो
के परमेश्वर के साम्हने वहुत दीन हुआ, और
उस से प्रार्थना की। १३ तव उस ने प्रसन्न
होकर उसकी विनती सुनी, और उसको
यरूशलेम मे पहुंचाकर उसका राज्य लौटा
दिया। तव मनश्शे को निश्चय हो गया कि
यहोवा ही परमेश्वर है॥

१४ इसके वाद उस ने दाऊदपुर से
वाहर गीहोन के पश्चिम की ओर नाले मे
मच्छली फाटक तक एक शहरपनाह वनवाई,
फिर ओपेल को घेरकर वहुत ऊचा कर
दिया, और यहूदा के सव गढवाले नगरो मे
सेनापति ठहरा दिए। १५ फिर उस ने
पराये देवताओ को और यहोवा के भवन
मे की मूर्त्ति को, और जितनी वेदिया उस ने
यहोवा के भवन के पर्वत पर, और यरूशलेम
मे वनवाई थी, उन सव को दूर करके नगर
से वाहर फेकवा दिया। १६ तव उस ने
यहोवा की वेदी की मरम्मत की, और उस
पर मेलवलि और धन्यवादवलि चढाने लगा,
और यहूदियो को इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा की उपासना करने की आज्ञा दी।
१७ तौभी प्रजा के लोग ऊचे स्थानो पर
वलिदान करते रहे, परन्तु केवल अपने
परमेश्वर यहोवा के लिये॥

१८ मनश्शे के और काम, और उस ने
जो प्रार्थना अपने परमेश्वर से की, और उन
दर्शियो के वचन जो इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के नाम से उस से वाते करते थे, यह
सव इस्राएल के राजाओ के इतिहास मे
लिखा हुआ है। १९ और उसकी प्रार्थना
और वह कैसे सुनी गई, और उसका सारा
पाप और विश्वासघात और उस ने दीन होने
से पहिले कहा कहा ऊचे स्थान वनवाए, और
अशेरा नाम और खुदी हुई मूर्त्तिया खडी
कराई, यह सव होशे के वचनो मे लिखा है।
२० निदान मनश्शे अपने पुरखाओ के सग
सो गया और उसे उसी के घर में मिट्टी दी

गई, और उसका पुत्र आमोन उसके स्थान
पर राज्य करने लगा ॥

(आमोन का राज्य)

२१ जब आमोन राज्य करने लगा, तब
वह बाईस वर्ष का था, और यरूशलेम में दो
वर्ष तक राज्य करता रहा। २२ और उस
ने अपने पिता मनश्शे की नाईं वह किया जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा है। और जितनी
मूर्तियां उसके पिता मनश्शे ने खोदकर
बनवाई थीं, वह भी उन सभों के साम्हने
बलिदान करता और उन सभों की उपासना
भी करता था। २३ और जैसे उसका पिता
मनश्शे यहोवा के साम्हने दीन हुआ, वैसे वह
दीन न हुआ, बरन आमोन अधिक दोषी
होता गया। २४ और उसके कर्मचारियों
ने द्रोह की गोष्ठी करके, उसको उसी के
भवन में मार डाला। २५ तब साधारण
लोगों ने उन सभों को मार डाला, जिन्हों ने
राजा आमोन से द्रोह की गोष्ठी की थी,
और लोगों ने उसके पुत्र योशिय्याह को
उसके स्थान पर राजा बनाया ॥

(योशिय्याह का किया हुआ सुधार और
व्यवस्था की पुस्तक का मिलना)

३४ जब योशिय्याह राज्य करने
लगा तब वह आठ वर्ष का था, और
यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राज्य करता
रहा। २ उस ने वह किया जो यहोवा की
दृष्टि में ठीक है, और जिन मार्गों पर उसका
मूलपुरुष दाऊद चलता रहा, उन्हीं पर वह
भी चला करता था और उस से न तो दाहिनी
ओर मुड़ा, और न बाईं ओर। ३ वह
लड़का ही था, अर्थात उसको गद्दी पर बैठे
आठ वर्ष पूरे भी न हुए थे कि अपने मूलपुरुष
दाऊद के परमेश्वर की खोज करने लगा,
और बारहवें वर्ष में वह ऊंचे स्थानों और
अशेरा नाम मूरतों को और खुदी और ढली
हुई मूरतों को दूर करके, यहूदा और
यरूशलेम को शुद्ध करने लगा। ४ और
बालदेवताओं की वेदियां उसके साम्हने तोड़
डाली गई, और सूर्य की प्रतिमायें जो उनके
ऊपर ऊंचे पर थीं, उस ने काट डालीं, और
अशेरा नाम, और खुदी और ढली हुई मूरतों
को उस ने तोड़कर पीस डाला, और उनकी
बुकनी उन लोगों की कबरों पर छितरा दी,
जो उनको बलि चढ़ाते थे। ५ और
पुजारियों की हड्डियां उस ने उन्हीं की वेदियों
पर जलाईं। यों उस ने यहूदा और
यरूशलेम को शुद्ध किया। ६ फिर मनश्शे,
एप्रैम और शिमोन के बरन नप्ताली तक के
नगरों के खण्डहरों में, उस ने वेदियों को तोड़
डाला, ७ और अशेरा नाम और खुदी हुई
मूरतों को पीसकर बुकनी कर डाला, और
इस्राएल के सारे देश की सूर्य की सब
प्रतिमाओं को काटकर यरूशलेम को लौट
गया ॥

८ फिर अपने राज्य के अठारहवें वर्ष में
जब वह देश और भवन दोनों को शुद्ध कर
चुका, तब उस ने असल्याह के पुत्र शापान
और नगर के हाकिम मासेयाह और योआ-
हाज के पुत्र इतिहास के लेखक योआह को
अपने परमेश्वर यहोवा के भवन की मरम्मत
कराने के लिये भेज दिया। ९ सो उन्हों ने
हिल्किय्याह महायाजक के पास जाकर जो
रुपया परमेश्वर के भवन में लाया गया था,
अर्थात् जो लेवीय दरबानों ने मनश्शियों,
एप्रैमियों और सब बचे हुए इस्राएलियों से
और सब यहूदियों और बिन्यामीनियों से
और यरूशलेम के निवासियों के हाथ से
लेकर इकट्ठा किया था, उसको सौंप दिया।
१० अर्थात् उन्हों ने उसे उन काम करने-
वालों के हाथ सौंप दिया जो यहोवा के भवन

के काम पर मुखिये थे, और यहोवा के भवन
के उन काम करनेवालो ने उसे भवन मे जो
कुछ टूटा फूटा था, उसकी मरम्मत करने मे
लगाया। ११ अर्थात् उन्हो ने उसे बढइयो
और राजो को दिया कि वे गढे हुए पत्थर
और जोडो के लिये लकडी मोल ले, और उन
घरो को पाटे जो यहूदा के राजाओ ने नाश
कर दिए थे। १२ और वे मनुष्य सच्चाई
से काम करते थे, और उनके अधिकारी
मरारीय, यहत और ओबद्याह, लेवीय और
कहाती, जकर्याह और मशुल्लाम काम
चलानेवाले और गाने-बजाने का भेद सब
जाननेवाले लेवीय भी थे। १३ फिर वे
बोझियो के अधिकारी थे और भाति भाति
की सेवकाई और काम चलानेवाले थे, और
कुछ लेवीय मुशी सरदार और दरबान थे ।।

१४ जब वे उस रुपये को जो यहोवा के
भवन मे पहुचाया गया था, निकाल रहे थे,
तब हिल्किय्याह याजक को मूसा के द्वारा दी
हुई यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक मिली।
१५ तब हिल्किय्याह ने शापान मंत्री से
कहा, मुझे यहोवा के भवन मे व्यवस्था की
पुस्तक मिली है, तब हिल्किय्याह ने शापान
को वह पुस्तक दी। १६ तब शापान उस
पुस्तक को राजा के पास ले गया, और यह
सन्देश दिया, कि जो जो काम तेरे कर्म-
चारियो को सौपा गया था उसे वे कर रहे
है। १७ और जो रुपया यहोवा के भवन
मे मिला, उसको उन्हो ने उण्डेलकर मुखियो
और कारीगरो के हाथो मे सौप दिया है।
१८ फिर शापान मंत्री ने राजा को यह भी
बता दिया कि हिल्किय्याह याजक ने मुझे
एक पुस्तक दी है तब शापान ने उस मे से
राजा को पढकर सुनाया ।।

१९ व्यवस्था की वे बाते सुनकर राजा
ने अपने वस्त्र फाडे। २० फिर राजा ने
हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम, मीका
के पुत्र अब्दोन, शापान मंत्री और असायाह
नाम अपने कर्मचारी को आज्ञा दी, २१ कि
तुम जाकर मेरी ओर से और इस्राएल और
यहूदा मे रहनेवालो की ओर से इस पाई हुई
पुस्तक के वचनो के विषय यहोवा से पूछो,
क्योकि यहोवा की बडी ही जलजलाहट हम
पर इसलिये भडकी है कि हमारे पुरखाओ ने
यहोवा का वचन नही माना, और इस पुस्तक
मे लिखी हुई सब आज्ञाओ का पालन नही
किया ।।

२२ तब हिल्किय्याह ने राजा के और
और दूतो समेत हुल्दा नबिया के पास जाकर
उस से उसी बात के अनुसार बाते की, वह
तो उस शल्लूम की स्त्री थी जो तोखत का
पुत्र और हस्रा का पोता और वस्त्रालय का
रखवाला था और वह स्त्री यरूशलेम के
नये टोले मे रहती थी। २३ उस ने उन से
कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, कि जिस पुरुष ने तुम को मेरे पास
भेजा, उस से यह कहो, २४ कि यहोवा
यो कहता है, कि सुन, मै इस स्थान और
इस के निवासियो पर विपत्ति डालकर यहूदा
के राजा के साम्हने जो पुस्तक पढी गई, उस
मे जितने शाप लिखे है उन सभो को पूरा
करूगा। २५ उन लोगो ने मुझे त्यागकर
पराये देवताओ के लिये धूप जलाया है और
अपनी बनाई हुई सब वस्तुओ के द्वारा मुझे
रिस दिलाई है, इस कारण मेरी जलजलाहट
इस स्थान पर भडक उठी है, और शान्त न
होगी। २६ परन्तु यहूदा का राजा जिस ने
तुम्हे यहोवा के पूछने को भेज दिया है उस से
तुम यो कहो, कि इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, २७ कि इसलिये कि
तू वे बाते सुनकर दीन हुआ, और परमेश्वर
के साम्हने अपना सिर नवाया, और उसकी

बातें सुनकर जो उस ने इस स्थान और इस
के निवासियों के विरुद्ध कही, तू ने मेरे
साम्हने अपना सिर नवाया,और वस्त्र फाड़-
कर मेरे साम्हने रोया है, इस कारण मैं ने
तेरी सुनी है, यहोवा की यही वाणी है।
२८ सुन, मैं तुझे तेरे पुरखाओं के संग ऐसा
मिलाऊंगा कि तू शांति से अपनी कब्र को
पहुंचाया जायगा, और जो विपत्ति मैं इस
स्थान पर, और इसके निवासियों पर
डालना चाहता हूं, उस में से तुझे अपनी
आंखों से कुछ भी देखना न पड़ेगा। तब उन
लोगों ने लौटकर राजा को यही सन्देश
दिया॥

२९ तब राजा ने यहूदा और यरूशलेम
के सब पुरनियों को इकट्ठे होने को बुलवा
भेजा। ३० और राजा यहूदा के सब लोगों
और यरूशलेम के सब निवासियों और
याजकों और लेवियों वरन छोटे बड़े सारी
प्रजा के लोगों को संग लेकर यहोवा के भवन
को गया, तब उस ने जो वाचा की पुस्तक
यहोवा के भवन में मिली थी उस में की
सारी बातें उनको पढ़कर सुनाईं। ३१ तब
राजा ने अपने स्थान पर खड़ा होकर, यहोवा
से इस आशय की वाचा बान्धी कि मैं यहोवा
के पीछे पीछे चलूंगा, और अपने पूर्ण मन
और पूर्ण जीव से उसकी आज्ञाएं, चितौ-
नियों और विधियों का पालन करूंगा, और
इन वाचा की बातों को जो इस पुस्तक में
लिखी हैं, पूरी करूंगा। ३२ और उस ने
उन सभों से जो यरूशलेम में और बिन्या-
मीन में थे वैसी ही वाचा बन्धाई। और
यरूशलेम के निवासी, परमेश्वर जो उनके
पितरों का परमेश्वर था, उसकी वाचा
के अनुसार करने लगे। ३३ और योशि-
य्याह ने इस्राएलियों के सब देशों में से
सब घिनौनी वस्तुओं को दूर करके जितने
इस्राएल में मिले, उन सभों से उपासना
कराई, अर्थात् उनके परमेश्वर यहोवा की
उपासना कराई। और उसके जीवन भर
उन्हों ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा
के पीछे चलना न छोड़ा॥

(योशिय्याह का किया हुआ फसह)

३५ और योशिय्याह ने यरूशलेम
में यहोवा के लिये फसह पर्व
माना और पहिले महीने के चौदहवें दिन
को फसह का पशु बलि किया गया।
२ और उस ने याजकों को अपने अपने
काम में ठहराया, और यहोवा के भवन
में की सेवा करने को उनका हियाव
बन्धाया। ३ फिर लेवीय जो सब इस्राए-
लियों को सिखाते और यहोवा के लिये
पवित्र ठहरे थे, उन से उस ने कहा, तुम
पवित्र सन्दूक को उस भवन में रखो
जो दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा
सुलैमान ने बनवाया था, अब तुम को
कन्धों पर बोझ उठाना न होगा। अब
अपने परमेश्वर यहोवा की और उसकी
प्रजा इस्राएल की सेवा करो। ४ और
इस्राएल के राजा दाऊद और उसके पुत्र
सुलैमान दोनों की लिखी हुई विधियों के
अनुसार, अपने अपने पितरों के अनुसार,
अपने अपने दल में तैयार रहो। ५ और
तुम्हारे भाई लोगों के पितरों के घरानों
के भागों के अनुसार पवित्रस्थान में खड़े
रहो, अर्थात् उनके एक भाग के लिये
लेवियों के एक एक पितर के घराने का
एक भाग हो। ६ और फसह के पशुओं
को बलि करो, और अपने अपने को पवित्र
करके अपने भाइयों के लिये तैयारी करो,
कि वे यहोवा के उस वचन के अनुसार
कर सकें, जो उस ने मूसा के द्वारा कहा था॥

७ फिर योशिय्याह ने सब लोगो को
जो वहा उपस्थित थे, तीस हजार भेडो
और बकरियो के बच्चे और तीन हजार
बैल दिए थे, ये सब फसह के बलिदानो
के लिये राजा की सम्पत्ति मे से दिए
गए थे। ८ और उसके हाकिमो ने प्रजा
के लोगो, याजको और लेवियो को स्वेच्छा-
बलियो के लिये पशु दिए। और हिल्किय्या,
जकर्याह और यहीएल नाम परमेश्वर के
भवन के प्रधानो ने याजको को दो हजार
छ सौ भेड-बकरिया और तीन सौ बैल फसह
के बलिदानो के लिए दिए। ९ और
कोनन्याह ने और शमायाह और नतनेल
जो उसके भाई थे, और हसब्याह, यीएल
और योजाबाद नामक लेवियो के प्रधानो ने
लेवियो को पाच हजार भेड-बकरिया, और
पाच सौ बैल फसह के बलिदानो के लिये
दिए ॥

१० इस प्रकार उपासना की तैयारी हो
गई, और राजा की आज्ञा के अनुसार याजक
अपने अपने स्थान पर, और लेवीय अपने
अपने दल मे खडे हुए। ११ तब फसह के
पशु बलि किए गए, और याजक बलि करने-
वालो के हाथ से लोहू को लेकर छिडक देते
और लेवीय उनकी खाल उतारते गए।
१२ तब उन्हो ने होमबलि के पशु इसलिये
अलग किए कि उन्हे लोगो के पितरो के
घरानो के भागो के अनुसार दे, कि वे उन्हे
यहोवा के लिये चढवा दे जैसा कि मूसा की
पुस्तक मे लिखा है, और बैलो को भी
उन्हो ने वैसा ही किया। १३ तब उन्हो
ने फसह के पशुओ का मास विधि के
अनुसार आग में भूंजा, और पवित्र वस्तुए,
हडियो और हडो और थालियो में सिझा
कर फुर्ती मे लोगो को पहुचा दिया।
१४ तब उन्हो ने अपने लिये और याजको
के लिये तैयारी की, क्योंकि हारून की
सन्तान के याजक होमबलि के पशु और
चरबी रात तक चढाते रहे, इस कारण
लेवियो ने अपने लिये और हारून की
सन्तान के याजको के लिये तैयारी की।
१५ और आसाप के वंश के गवैये, दाऊद,
आसाप, हेमान और राजा के दर्शी यदूतून
की आज्ञा के अनुसार अपने अपने स्थान पर
रहे, और द्वारपाल एक एक फाटक पर
रहे। उन्हे अपना अपना काम छोडना न
पडा, क्योंकि उनके भाई लेवियो ने उनके
लिये तैयारी की ॥

१६ यो उसी दिन राजा योशिय्याह की
आज्ञा के अनुसार फसह मनाने और यहोवा
की वेदी पर होमबलि चढाने के लिये
यहोवा की सारी उपासना की तैयारी की
गई। १७ जो इस्राएली वहा उपस्थित
थे उन्हो ने फसह को उसी समय और
अखमीरी रोटी के पर्व को सात दिन तक
माना। १८ इस फसह के बराबर शमूएल
नबी के दिनो से इस्राएल मे कोई फसह
मनाया न गया था, और न इस्राएल के
किसी राजा ने ऐसा मनाया, जैसा योशिय्याह
और याजको, लेवियो और जितने यहूदी
और इस्राएली उपस्थित थे, उन्हो ने और
यरूशलेम के निवासियो ने मनाया। १९ यह
फसह योशिय्याह के राज्य के अठारहवे
वर्ष मे मनाया गया ॥

(योशिय्याह की मृत्यु)

२० इसके बाद जब योशिय्याह भवन
को तैयार कर चुका, तब मिस्र के राजा
नको ने परात के पास के कर्कमीश नगर
से लडने को चढाई की और योशिय्याह
उसका साम्हना करने को गया।
२१ परन्तु उस ने उसके पास दूतो से

कहला भेजा, कि हे यहूदा के राजा मेरा
तुझ से क्या काम! आज मैं तुझ पर
नहीं उसी कुल पर चढ़ाई कर रहा हूं,
जिसके साथ मैं युद्ध करता हूं, फिर
परमेश्वर ने मुझ से फुर्ती करने को कहा
है। इसलिये परमेश्वर जो मेरे संग है,
उससे अलग रह, कहीं ऐसा न हो कि वह
तुझे नाश करे। २२ परन्तु योशिय्याह ने
उस से मुंह न मोड़ा, वरन उस से लड़ने के
लिये भेष बदला, और नको के उन वचनों
को न माना जो उस ने परमेश्वर की ओर
से कहे थे, और मगिद्दो की तराई में उस से
युद्ध करने को गया। २३ तब धनुर्धारियों
ने राजा योशिय्याह की ओर तीर छोड़े,
और राजा ने अपने सेवकों से कहा, मैं
तो बहुत घायल हुआ, इसलिये मुझे यहां से
ले जाओ। २४ तब उसके सेवकों ने
उसको रथ पर से उतार कर उसके दूसरे
रथ पर चढ़ाया, और यरूशलेम ले गये।
और वह मर गया और उसके पुरखाओं के
कब्रिस्तान में उसको मिट्टी दी गई। और
यहूदियों और यरूशलेमियों ने योशिय्याह
के लिये विलाप किया। २५ और यिर्मयाह
ने योशिय्याह के लिये विलाप का गीत
बनाया और सब गानेवाले और गानेवालियां
अपने विलाप के गीतों में योशिय्याह की
चर्चा आज तक करती हैं। और इनका
गाना इस्राएल में एक विधि के तुल्य
ठहराया गया और ये बातें विलापगीतों में
लिखी हुई हैं। २६ योशिय्याह के और
काम और भक्ति के जो काम उस ने उसी
के अनुसार किए जो यहोवा की व्यवस्था में
लिखा हुआ है। २७ और आदि से अन्त
तक उसके सब काम इस्राएल और यहूदा
के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखे
हुए हैं॥

**(यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन
और सिदकिय्याह का राज्य)**

३६ तब देश के लोगों ने योशिय्याह
के पुत्र यहोआहाज को लेकर उसके
पिता के स्थान पर यरूशलेम में राजा
बनाया। २ जब यहोआहाज राज्य करने
लगा, तब वह तेईस वर्ष का था, और तीन
महीने तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।
३ तब मिस्र के राजा ने उसको यरूशलेम
में राजगद्दी से उतार दिया, और देश पर
सौ किक्कार चान्दी और किक्कार भर
सोना जुरमाने में दण्ड लगाया। ४ तब
मिस्र के राजा ने उसके भाई एल्याकीम को
यहूदा और यरूशलेम का राजा बनाया और
उसका नाम बदलकर यहोयाकीम रखा।
और नको उसके भाई यहोआहाज को
मिस्र में ले गया॥

५ जब यहोयाकीम राज्य करने लगा,
तब वह पचीस वर्ष का था, और ग्यारह
वर्ष तक यरूशलेम में राज्य करता रहा।
और उस ने वह काम किया, जो उसके
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में बुरा है।
६ उस पर बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने
चढ़ाई की, और बाबेल ले जाने के लिये
उसको बेड़ियां पहना दीं। ७ फिर नबूकद-
नेस्सर ने यहोवा के भवन के कुछ पात्र
बाबेल ले जाकर, अपने मन्दिर में जो
बाबेल में था, रख दिए। ८ यहोयाकीम
के और काम और उस ने जो जो घिनौने
काम किए, और उस में जो जो बुराइयां
पाई गईं, वह इस्राएल और यहूदा के
राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखी
हैं। और उसका पुत्र यहोयाकीन उसके
स्थान पर राज्य करने लगा॥

९ जब यहोयाकीन राज्य करने लगा,
तब वह आठ वर्ष का था, और तीन

महीने और दस दिन तक यरूशलेम मे
राज्य करता रहा। और उस ने वह किया,
जो परमेश्वर यहोवा की दृष्टि मे बुरा है।
१० नये वर्ष के लगते ही नबूकदनेस्सर
ने लोगो को भेजकर, उसे और यहोवा के
भवन के मनभावने पात्रो को बाबेल मे
मगवा लिया, और उसके भाई सिद-
किय्याह को यहूदा और यरूशलेम पर
राजा नियुक्त किया ॥
११ जब सिदकिय्याह राज्य करने लगा,
तब वह इक्कीस वर्ष का था, और यरूशलेम
मे ग्यारह वर्ष तक राज्य करता रहा।
१२ और उस ने वही किया, जो उसके
परमेश्वर यहोवा की दृष्टि मे बुरा है।
यद्यपि यिर्मयाह नबी यहोवा की ओर से
बाते कहता था, तौभी वह उसके साम्हने
दीन न हुआ। १३ फिर नबूकदनेस्सर
जिस ने उसे परमेश्वर की शपथ खिलाई
थी, उस मे उस ने बलवा किया, और
उस ने हठ किया * और अपना मन कठोर
किया, कि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
की ओर न फिरे ॥

(यहूदियों की बन्धुवाई)

१४ वरन सब प्रधान याजकों ने और
लोगों ने भी अन्य जातियों के से घिनौने
काम करके बहुत बड़ा विश्वासघात किया,
और यहोवा के भवन को जो उस ने यरू-
शलेम में पवित्र किया था, अशुद्ध कर डाला ॥
१५ और उनके पूर्वजों के परमेश्वर
यहोवा ने बड़ा यत्न करके † अपने दूतों
से उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह
अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस
खाता था। १६ परन्तु वे परमेश्वर के
दूतों को ठट्ठो मे उड़ाते, उसके वचनो को
तुच्छ जानते, और उसके नबियो की हसी
करते थे। निदान यहोवा अपनी प्रजा
पर ऐसा झुझला उठा, कि बचने का
कोई उपाय न रहा ॥
१७ तब उस ने उन पर कसदियो के
राजा से चढाई करवाई, और इस ने उनके
जवानो को उनके पवित्र भवन ही मे
तलवार से मार डाला। और क्या जवान,
क्या कुवारी, क्या बूढे, क्या पक्के बालवाले,
किसी पर भी कोमलता न की, यहोवा ने
सभो को उसके हाथ मे कर दिया।
१८ और क्या छोटे, क्या बडे, परमेश्वर
के भवन के सब पात्र और यहोवा के
भवन, और राजा, और उसके हाकिमो
के खजाने, इन सभो को वह बाबेल मे
ले गया। १९ और कसदियो ने परमेश्वर
का भवन फूक दिया, और यरूशलेम की
शहरपनाह को तोड डाला, और आग
लगा कर उसके सब भवनो को जलाया,
और उस मे का सारा बहुमूल्य सामान
नष्ट कर दिया। २० और जो तलवार
से बच गए, उन्हे वह बाबेल को ले गया,
और फारस के राज्य के प्रबल होने तक
वे उसके और उसके बेटो-पोतो के आधीन
रहे। २१ यह सब इसलिये हुआ कि
यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुह से
निकला था, वह पूरा हो, कि देश अपने
विश्राम कालो मे सुख भोगता रहे।
इसलिये जब तक वह सूना पडा रहा तब
तक अर्थात् सत्तर वर्ष के पूरे होने तक
उसको विश्राम मिला ॥

(यहूदियों का फिर से भाग्यवान होना)

२२ फारस के राजा कुस्रू के पहिले
वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा

* मूल में—अपनी गर्दन कठोर की।
† मूल में—तड़के उठकर।

कि जो वचन यिर्मयाह के मुह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिये उस ने अपने समस्त राज्य म यह प्रचार करवाया, और इस आशय की चिट्ठिया लिखवाइ, २३ कि फारस का राजा कुस्रू कहता है, कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरूशलेम जो यहूदा म है उस मे मेरा एक भवन बनवा, इसलिये हे उसकी प्रजा के सब लोगो, तुम में से जो कोई चाहे कि उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ रहे, तो वह वहा रवाना हो जाए * ॥

* मूल में—चढे।

एज्रा नामक पुस्तक

(बन्धुए यहूदियों का यरूशलेम को लौट आना)

१ फारस के राजा कुस्रू के पहिले
वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा
कुस्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो
वचन यिर्मयाह के मुह से निकला था
वह पूरा हो जाए, इसलिये उस ने अपने
समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और
लिखवा भी दिया
२ कि फारस का राजा कुस्रू यो कहता
है कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने
पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और
उस ने मुझे आज्ञा दी, कि यहूदा के
यरूशलेम में मेरा एक भवन बनवा।
३ उसकी समस्त प्रजा के लोगो मे से
तुम्हारे मध्य जो कोई हो, उसका परमेश्वर
उसके साथ रहे, और वह यहूदा के यरूशलेम
को जाकर इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
का भवन बनाए—जो यरूशलेम में है वही
परमेश्वर है। ४ और जो कोई किसी
स्थान मे रह गया हो, जहा वह रहता हो,
उस स्थान के मनुष्य चान्दी, सोना, धन
और पशु देकर उसकी सहायता करे और
इस से अधिक परमेश्वर के यरूशलेम के
भवन के लिये अपनी अपनी इच्छा से
भी भेट चढाए॥
५ तब यहूदा और बिन्यामीन के
जितने पितरो के घरानो के मुख्य पुरुषो
और याजको और लेवियो का मन परमेश्वर
ने उभारा था कि जाकर यरूशलेम में
यहोवा के भवन को बनाए, वे सब उठ खडे
हुए, ६ और उनके आसपास सब रहने-
वालो ने चान्दी के पात्र, सोना, धन, पशु
और अनमोल वस्तुए देकर, उनकी सहायता
की, यह उन सब से अधिक था, जो
लोगो ने अपनी अपनी इच्छा से दिया।
७ फिर यहोवा के भवन के जो पात्र
नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से निकालकर
अपने देवता के भवन मे रखे थे, ८ उनको
कुस्रू राजा ने, मिथ्रदात खजाची से
निकलवा कर, यहूदियो के शेशबस्सर नाम
प्रधान को गिनकर सौप दिया। ९ उनकी

गिनती यह थी, अर्थात् सोने के तीस और
चान्दी के एक हजार परात और उनतीस
छुरी, १० सोने के तीस और मध्यम
प्रकार के चान्दी के चार सौ दस कटोरे
तथा और प्रकार के पात्र एक हजार।
११ सोने चान्दी के पात्र सब मिलकर
पाच हजार चार सौ थे। इन सभो को
शेशबस्सर उस समय ले आया जब बन्धुए
बाबेल से यरूशलेम को आए॥

(लौटे हुए यहूदियों का वर्णन)

२ जिनको बाबेल का राजा नबूकद-
नेस्सर बाबेल को बन्धुआ करके
ले गया था, उन मे से प्रान्त के जो लोग
बन्धुआई से छूटकर यरूशलेम और यहूदा
को अपने अपने नगर मे लौटे वे ये है।
२ ये जरुब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, सरायाह,
रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै,
रहूम और बाना के साथ आए। इस्राएली
प्रजा के मनुष्यों की गिनती यह है, अर्थात्
३ परोश की सन्तान दो हजार एक सौ
बहत्तर, ४ शपत्याह की सन्तान तीन सौ
बहत्तर, ५ आरह की सन्तान सात सौ
पचहत्तर, ६ पहतमोआब की सन्तान येशू
और योआब की सन्तान मे से दो हजार
आठ सौ बारह, ७ एलाम की सन्तान बारह
सौ चौवन, ८ जत्तू की सन्तान नौ सौ
पैंतालीस, ९ जक्कै की सन्तान सात सौ
साठ, १० बानी की सन्तान छ सौ
बयालीस, ११ बेबै की सन्तान छ सौ
तेईस, १२ अजगाद की सन्तान बारह
सौ बाईस, १३ अदोनीकाम की सन्तान
छ सौ छियासठ, १४ बिगवै की सन्तान दो
हजार छप्पन, १५ आदीन की सन्तान
चार सौ चौवन, १६ हिजकिय्याह की
[illegible] आतेर की सन्तान [illegible] अट्ठानवे,
१७ बेसै की सन्तान तीन सौ तेईस,
१८ योरा के लोग एक सौ बारह,
१९ हाशूम के लोग दो सौ तेईस,
२० गिब्बार के लोग पचानवे, २१ बेत-
लेहेम के लोग एक सौ तेईस, २२ नतोपा
के मनुष्य छप्पन, २३ अनातोत के मनुष्य
एक सौ अट्ठाईस, २४ अज्मावेत के लोग
बयालीस, २५ किर्यतारीम कपीरा और
बेरोत के लोग सात सौ तैतालीस, २६ रामा
और गेबा के लोग छ सौ इक्कीस,
२७ मिकमास के मनुष्य एक सौ बाईस,
२८ बेतेल और ऐ के मनुष्य दो सौ तेईस,
२९ नबो के लोग बावन, ३० मग्बीस की
सन्तान एक सौ छप्पन, ३१ दूसरे एलाम
की सन्तान बारह सौ चौवन, ३२ हारीम
की सन्तान तीन सौ बीस, ३३ लोद,
हादीद और ओनो के लोग सात सौ पचीस,
३४ यरीहो के लोग तीन सौ पैंतालीस,
३५ सना के लोग तीन हजार छ सौ
तीस॥

३६ फिर याजको अर्थात् येशू के घराने
मे से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर,
३७ इम्मेर की सन्तान एक हजार बावन,
३८ पशहूर की सन्तान बारह सौ सैंतालीस,
३९ हारीम की सन्तान एक हजार सतरह।
४० फिर लेवीय, अर्थात् येशू की
सन्तान और कदमिएल की सन्तान होदव्याह
की सन्तान मे से चौहत्तर। ४१ फिर
गवैयो मे से आसाप की सन्तान एक सौ
अट्ठाईस। ४२ फिर दरबानो की सन्तान,
शल्लूम की सन्तान, आतेर की सन्तान,
तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की सन्तान,
हतीता की सन्तान, और शोबै की सन्तान,
ये सब मिलकर एक सौ उनतालीस हुए।
४३ फिर नतीन की सन्तान, सीहा की
सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की

सन्तान। ४४ केरोस की सन्तान, सीअहा
की सन्तान, पादोन की सन्तान, ४५ लबाना
की सन्तान, हगाबा की सन्तान, अक्कूब की
सन्तान, ४६ हागाब की सन्तान, शल्मै
की सन्तान, हानान की सन्तान, ४७ गिद्देल
की सन्तान, गहर की सन्तान, रायाह की
सन्तान, ४८ रसीन की सन्तान, नकोदा
की सन्तान, गज्जाम की सन्तान,
४९ उज्जा की सन्तान, पासेह की सन्तान,
बेसै की सन्तान, ५० अस्ना की सन्तान,
मूनीम की सन्तान, नपीसीम की सन्तान,
५१ बकबूक की सन्तान, हकूपा की सन्तान,
हर्हूर की सन्तान, ५२ बसलूत की सन्तान,
महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान,
५३ बर्कोस की सन्तान, सीसरा की
सन्तान, तेमह की सन्तान, ५४ नसीह की
सन्तान, और हतीपा की सन्तान ॥

५५ फिर सुलैमान के दासों की सन्तान,
सोतै की सन्तान, हस्सोपेरेत की सन्तान,
परूदा की सन्तान, ५६ याला की सन्तान,
दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की सन्तान,
५७ शपत्याह की सन्तान, हत्तील की
सन्तान, पोकरेतसबायीम की सन्तान, और
आमी की सन्तान। ५८ सब नतीन और
सुलैमान के दासों की सन्तान, तीन सौ
बानवे थे ॥

५९ फिर जो तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब,
अद्दान और इम्मेर से आए, परन्तु वे अपने
अपने पितरों के घराने और वंशावली*
न बता सके कि वे इस्राएल के हैं, वे ये हैं:
६० अर्थात् दलायाह की सन्तान, तोबि-
य्याह की सन्तान और नकोदा की सन्तान,
जो मिलकर छः सौ बावन थे। ६१ और
याजकों की सन्तान में से हबायाह की
सन्तान, हक्कोस की सन्तान और बर्जिल्लै
की सन्तान, जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की
एक बेटी को ब्याह लिया और उसी का
नाम रख लिया था। ६२ इन सभों ने
अपनी अपनी वंशावली का पत्र औरों की
वंशावली की पोथियों में ढूंढ़ा, परन्तु वे
न मिले, इसलिये वे अशुद्ध ठहराकर
याजकपद से निकाले गए। ६३ और
अधिपति* ने उन से कहा, कि जब तक
ऊरीम और तुम्मीम धारण करनेवाला
कोई याजक न हो, तब तक कोई परमपवित्र
वस्तु खाने न पाए ॥

६४ समस्त मण्डली मिलकर बया-
लीस हजार तीन सौ साठ की थी।
६५ इनको छोड़ इनके सात हजार तीन
सौ सैंतीस दास-दासियां और दो सौ
गानेवाले और गानेवालियां थीं। ६६ उन-
के घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर दो
सौ पैंतालीस, ऊंट चार सौ पैंतीस,
६७ और गदहे छः हजार सात सौ बीस
थे। ६८ और पितरों के घरानों के
कुछ मुख्य मुख्य पुरुषों ने जब यहोवा के
भवन को जो यरूशलेम में है, आए,
तब परमेश्वर के भवन को उसी के
स्थान पर खड़ा करने के लिये अपनी
अपनी इच्छा से कुछ दिया। ६९ उन्हों
ने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार इकसठ
हजार दर्कमोन सोना और पांच हजार
माने चान्दी और याजकों के योग्य एक
सौ अंगरखे अपनी अपनी इच्छा से उस
काम के खजाने में दे दिए। ७० तब
याजक और लेवीय और लोगों में से
कुछ और गवैये और द्वारपाल और
नतीन लोग अपने नगर में और सब

---

* मूल में—वंश।

* मूल में—तिर्शाता।

इस्राएली अपने अपने नगर मे फिर बस
गए ॥

(वेदी का बनाया जाना)

३ जब सातवा महीना आया, और
इस्राएली अपने अपने नगर मे बस
गए, तो लोग यरूशलेम मे एक मन होकर
इकट्ठे हुए। २ तब योसादाक के पुत्र
येशू ने अपने भाई याजको समेत और
शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल ने अपने
भाइयो समेत कमर बान्धकर इस्राएल
के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि
उस पर होमबलि चढाए, जैसे कि परमेश्वर
के भक्त मूसा की व्यवस्था मे लिखा है।
३ तब उन्हो ने वेदी को उसके स्थान पर
खडा किया क्योकि उन्हे उस ओर के
देशो के लोगो का भय रहा, और वे
उस पर यहोवा के लिये होमबलि अर्थात्
प्रतिदिन सबेरे और साझ के होमबलि
चढाने लगे। ४ और उन्हो ने झोपडियो
के पर्व को माना, जैसे कि लिखा है, और
प्रतिदिन के होमबलि एक एक दिन की
गिनती और नियम के अनुसार चढाए।
५ और उसके बाद नित्य होमबलि
और नये नये चान्द और यहोवा के
पवित्र किए हुए सब नियत पर्वो के बलि
और अपनी अपनी इच्छा से यहोवा के
लिये सब स्वेच्छाबलि हर एक के लिये
बलि चढाए। ६ सातवे महीने के पहिले
दिन से वे यहोवा को होमबलि चढाने
लगे। परन्तु यहोवा के मन्दिर की नेव
तब तक न डाली गई थी। ७ तब उन्हो
ने पत्थर गढनेवालो और कारीगरो को
रुपया, और सीदोनी और सोरी लोगो
को खाने-पीने की वस्तुए और तेल दिया,
कि वे फारस के राजा कुस्रू के पत्र के
अनुसार देवदार की लकडी लबानोन से
जापा के पास के समुद्र मे पहुचाए ॥

(मन्दिर की नेव का डाला जाना)

८ उनके परमेश्वर के भवन मे, जो
यरूशलेम मे है, आने के दूसरे वर्ष के
दूसरे महीने मे, शालतीएल के पुत्र जरुब्बा-
बेल ने और योसादाक के पुत्र येशू ने
और उनके और भाइयो ने जो याजक
और लेवीय थे, और जितने बन्धुआई से
यरूशलेम मे आए थे उन्हो ने भी काम
को आरम्भ किया। और बीस वर्ष अथवा
उससे अधिक अवस्था के लेवियो को
यहोवा के भवन का काम चलाने के लिये
नियुक्त किया। ९ तो येशू और उसके
बेटे और भाई और कदमीएल और
उसके बेटे, जो यहूदा की सन्तान थे, और
हेनादाद की सन्तान और उनके बेटे पर-
मेश्वर के भवन मे कारीगरो का काम
चलाने को खडे हुए ॥

१० और जब राजो ने यहोवा के
मन्दिर की नेव डाली तब अपने वस्त्र
पहिने हुए, और तुरहिया लिये हुए याजक,
और झाझ लिये हुए आसाप के वश के
लेवीय इसलिये नियुक्त किए गए कि
इस्राएलियो के राजा दाऊद की चलाई
हुई रीति * के अनुसार यहोवा की स्तुति
करे। ११ सो वे यह गा गाकर यहोवा की
स्तुति और धन्यवाद करने लगे, कि वह
भला है, और उसकी करुणा इस्राएल पर
सदैव बनी है। और जब वे यहोवा की
स्तुति करने लगे तब सब लोगो ने यह
जानकर कि यहोवा के भवन की नेव अब
पड रही है, ऊचे शब्द मे जय जयकार
किया। १२ परन्तु बहुतेरे याजक और

* मूल में—दाऊद के हाथ।

लेवीय और पूर्वजो के घरानो के मुख्य
पुरुष, अर्थात् वे बूढ़े जिन्हो ने पहिला
भवन देखा था, जब इस भवन की नेव
उनकी आंखो के साम्हने पड़ी तब फूट
फूटकर रोने लगे, और बहुतेरे आनन्द के
मारे ऊंचे शब्द से जय जयकार कर रहे
थे। १३ इसलिये लोग, आनन्द के जय
जयकार का शब्द, लोगो के रोने के शब्द
से अलग पहिचान न सके, क्योंकि लोग
ऊंचे शब्द से जय जयकार कर रहे थे, और
वह शब्द दूर तक सुनाई देता था।

(यहूदियों के शत्रुओं से मन्दिर के बनने का रोका जाना)

४ जब यहूदा और बिन्यामीन के
शत्रुओ ने यह सुना कि बन्धुआई से
छूटे हुए लोग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा
के लिये मन्दिर बना रहे है, २ तब वे
जरुब्बाबेल और पूर्वजो के घरानो के मुख्य
मुख्य पुरुषो के पास आकर उन से कहने
लगे, हमें भी अपने संग बनाने दो, क्योंकि
तुम्हारी नाई हम भी तुम्हारे परमेश्वर की
खोज में लगे हुए है, और अश्शूर का
राजा एसर्हद्दोन जिस ने हमें यहा पहुचाया,
उसके दिनो से हम उसी को बलि चढ़ाते
भी है। ३ जरुब्बाबेल, येशू और इस्राएल
के पितरो के घरानो के मुख्य पुरुषो ने
उन से कहा, हमारे परमेश्वर के लिये
भवन बनाने में तुम को हम से कुछ काम
नही, हम ही लोग एक संग मिलकर
फारस के राजा कुस्रू की आज्ञा के अनुसार
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये उसे
बनाएंगे॥

४ तब उस देश के लोग यहूदियो के
हाथ ढीला करने और उन्हे डराकर मन्दिर
बनाने में रुकावट डालने लगे। ५ और
फारस के राजा कुस्रू के जीवन भर वरन
फारस के राजा दारा के राज्य के समय
तक उनके मनोरथ को निष्फल करने के
लिये वकीलो को रुपया देते रहे॥

६ क्षयर्ष के राज्य के पहिले दिनो
में उन्हो ने यहूदा और यरूशलेम के
निवासियो का दोषपत्र उसे लिख भेजा॥

७ फिर अर्तक्षत्र के दिनो में बिशलाम,
मित्रदात और ताबेल ने और उसके सह-
चरियो ने फारस के राजा अर्तक्षत्र को
चिट्ठी लिखी, और चिट्ठी अरामी अक्षरो
और अरामी भाषा में लिखी गई।
८ अर्थात् रहूम राजमंत्री और शिमशै
मंत्री ने यरूशलेम के विरुद्ध राजा अर्तक्षत्र
को इस आशय की चिट्ठी लिखी। ९ उस
समय रहूम राजमंत्री और शिमशै मंत्री और
उनके और सहचरियो ने, अर्थात् दीनी,
अपर्सतकी, तर्पली, अफारसी, एरेकी,
बाबेली, शूशनी, देहवी, एलामी,
१० आदि जातियो ने जिन्हे महान और
प्रधान ओस्नप्पर ने पार ले आकर शोमरोन
नगर में और महानद के इस पार के
शेष देश में बसाया था, एक चिट्ठी लिखी।
११ जो चिट्ठी उन्हो ने अर्तक्षत्र राजा को
लिखी, उसकी यह नकल है—तेरे दास
जो महानद के पार के मनुष्य है, इत्यादि।
१२ राजा को यह विदित हो, कि जो
यहूदी तेरे पास से चले आए, वे हमारे
पास यरूशलेम को पहुचे है। वे उस दंगैत
और घिनौने नगर को बसा रहे है, वरन
उसकी शहरपनाह को खड़ा कर चुके है
और उसकी नेव को जोड़ चुके है।
१३ अब राजा को विदित हो कि यदि
वह नगर बस गया और उसकी शहरपनाह
बन चुकी, तब तो वे लोग कर, चुंगी
और राहदारी फिर न देंगे, और अन्त

मे राजाओ की हानि होगी। १४ हम
लोग तो राजमन्दिर का नमक खाते है
और उचित नही कि राजा का अनादर
हमारे देखते हो, इस कारण हम यह
चिट्ठी भेजकर राजा को चिता देते है।
१५ तेरे पुरखाओ के इतिहास की पुस्तक
मे खोज की जाए, तब इतिहास की
पुस्तक मे तू यह पाकर जान लेगा कि वह
नगर बलवा करनेवाला और राजाओ और
प्रान्तो की हानि करनेवाला है, और प्राचीन
काल से उस मे बलवा मचता आया है।
और इसी कारण वह नगर नष्ट भी
किया गया था। १६ हम राजा को
निश्चय करा देते है कि यदि वह नगर
बसाया जाए और उसकी शहरपनाह
बन चुके, तब इसके कारण महानद के
इस पार तेरा कोई भाग न रह जाएगा॥

१७ तब राजा ने रहूम राजमत्री और
शिमशै मत्री और शोमरोन और महानद
के इस पार रहनेवाले उनके और सहचरियो
के पास यह उत्तर भेजा, कुशल, इत्यादि।
१८ जो चिट्ठी तुम लोगो ने हमारे पास
भेजी वह मेरे साम्हने पढ कर साफ साफ
सुनाई गई। १९ और मेरी आज्ञा से
खोज किये जाने पर जान पडा है, कि वह
नगर प्राचीनकाल से राजाओ के विरुद्ध
सिर उठाता आया है और उसमे दगा
और बलवा होता आया है। २० यरूशलेम
के सामर्थी राजा भी हुए जो महानद के
पार से समस्त देश पर राज्य करते थे,
और कर, चुगी और राहदारी उनको
दी जाती थी। २१ इसलिये अब इस
आज्ञा का प्रचार कर कि वे मनुष्य रोके
जाए, और जब तक मेरी ओर से आज्ञा न
मिले, तब तक वह नगर बनाया न जाए।
२२ और चौकस रहो, कि इस बात मे
ढीले न होना, राजाओ की हानि करनेवाली
वह बुराई क्यो बढने पाए?

२३ जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिट्ठी
रहूम और शिमशै मत्री और उनके सह-
चरियो को पढकर सुनाई गई, तब वे
उतावली करके यरूशलेम को यहूदियो
के पास गए और भुजबल और बरियाई
से उनको रोक दिया। २४ तब परमेश्वर
के भवन का काम जो यरूशलेम मे है,
रुक गया, और फारस के राजा दारा
के राज्य के दूसरे वर्ष तक रुका रहा॥

(मन्दिर के बनाने का कार्य राजा की आज्ञा से निपटाया जाना)

५ तब हाग्गै नामक नबी और इद्दो
का पोता जकर्याह यहूदा और यरू-
शलेम के यहूदियो से नबूवत करने लगे,
उन्हो ने इस्राएल के परमेश्वर के नाम से
उन से नबूवत की। २ तब शालतीएल
का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का
पुत्र येशू, कमर बान्धकर परमेश्वर के भवन
को जो यरूशलेम मे है बनाने लगे, और
परमेश्वर के वे नबी उनका साथ देते रहे॥

३ उसी समय महानद के इस पार का
तत्तनै नाम अधिपति और शतर्बोजनै अपने
सहचरियो समेत उनके पास जाकर यो
पूछने लगे, कि इस भवन के बनाने और
इस शहरपनाह के खडे करने की किस ने
तुम को आज्ञा दी है? ४ तब हम लोगो
से यह कहा, कि इस भवन के बनानेवालो
के क्या क्या नाम है? ५ परन्तु यहूदियो
के पुरनियो के परमेश्वर की दृष्टि उन
पर रही, इसलिये जब तक इस बात की
चर्चा दारा से न की गई और इसके विषय
चिट्ठी के द्वारा उत्तर न मिला, तब तक
उन्हो ने इनको न रोका॥

६ जो चिट्ठी महानद के इस पार के
अधिपति तत्तनै और शतर्बोजनै और
महानद के इस पार के उनके सहचरी
अपार्सकियों ने राजा दारा के पास भेजी
उसकी नकल यह है, ७ उन्हों ने उसको
एक चिट्ठी लिखी, जिस में यह लिखा
था कि राजा दारा का कुशल क्षेम सब
प्रकार से हो। ८ राजा को विदित हो,
कि हम लोग यहूदा नाम प्रान्त में महान
परमेश्वर के भवन के पास गए थे, वह
बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है, और
उसकी भीतों में कड़ियां जुड़ रही हैं,
और यह काम उन लोगों से फुर्ती के
साथ हो रहा है, और सुफल भी होता
जाता है। ९ इसलिये हम ने उन पुरनियों
से यों पूछा, कि यह भवन बनवाने, और
यह शहरपनाह खड़ी करने की आज्ञा
किस ने तुम्हें दी? १० और हम ने
उनके नाम भी पूछे, कि हम उनके मुख्य
पुरुषों के नाम लिखकर तुझ को जता
सकें। ११ और उन्हों ने हमें यों उत्तर
दिया, कि हम तो आकाश और पृथ्वी
के परमेश्वर के दास हैं, और जिस भवन
को बहुत वर्ष हुए इस्राएलियों के एक
बड़े राजा ने बनाकर तैयार किया था,
उसी को हम बना रहे हैं। १२ जब
हमारे पुरखाओं ने स्वर्ग के परमेश्वर को
रिस दिलाई थी, तब उस ने उन्हें बाबेल के
कसदी राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में
कर दिया था, और उस ने इस भवन
का नाश किया और लोगों को बन्धुआ
करके बाबेल को ले गया। १३ परन्तु
बाबेल के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष
में उसी कुस्रू राजा ने परमेश्वर के
इस भवन के बनाने की आज्ञा दी।
१४ और परमेश्वर के भवन के जो
सोने और चान्दी के पात्र नबूकदनेस्सर
यरूशलेम के मन्दिर में से निकलवाकर
बाबेल के मन्दिर में ले गया था, उनको
राजा कुस्रू ने बाबेल के मन्दिर में से
निकलवाकर शेशबस्सर नामक एक पुरुष
को जिसे उस ने अधिपति ठहरा दिया
था, सौंप दिया। १५ और उस ने उससे
कहा, ये पात्र ले जाकर यरूशलेम के
मन्दिर में रख, और परमेश्वर का वह
भवन अपने स्थान पर बनाया जाए।
१६ तब उसी शेशबस्सर ने आकर पर-
मेश्वर के भवन की जो यरूशलेम में है
नेव डाली, और तब से अब तक यह
बन रहा है, परन्तु अब तक नहीं बन
पाया। १७ अब यदि राजा को अच्छा
लगे तो बाबेल के राजभण्डार में इस
बात की खोज की जाए, कि राजा कुस्रू
ने सचमुच परमेश्वर के भवन के जो
यरूशलेम में है बनवाने की आज्ञा दी
थी, या नहीं। तब राजा इस विषय में
अपनी इच्छा हम को बताए॥

६ तब राजा दारा की आज्ञा से
बाबेल के पुस्तकालय में जहां खजाना
भी रहता था, खोज की गई। २ और
मादे नाम प्रान्त के अहमता नगर के
राजगढ़ में एक पुस्तक मिली, जिस में
यह वृत्तान्त लिखा था ३ कि राजा
कुस्रू के पहिले वर्ष में उसी कुस्रू राजा ने
यह आज्ञा दी, कि परमेश्वर के भवन के
विषय जो यरूशलेम में है, अर्थात् वह
भवन जिस में बलिदान किए जाते थे,
वह बनाया जाए और उसकी नेव दृढ़ता
से डाली जाए, उसकी ऊंचाई और चौड़ाई
साठ साठ हाथ की हो, ४ उस में तीन
रद्दे भारी भारी पत्थरों के हों, और

एक परत नई लकडी का हो, और
इनकी लागत राजभवन मे से दी जाए।
५ और परमेश्वर के भवन के जो सोने
और चान्दी के पात्र नबूकदनेस्सर ने
यरूशलेम के मन्दिर मे से निकलवाकर
बाबेल को पहुचा दिए थे वह लौटाकर
यरूशलेम के मन्दिर मे अपने अपने स्थान
पर पहुचाए जाए, और तू उन्हे परमेश्वर
के भवन मे रख देना ॥

६ अब हे महानद के पार के अधिपति
तत्तनै ! हे शतबोजनै ! तुम अपने सह-
चरी महानद के पार के अपार्सकियो
समेत वहा से अलग रहो, ७ परमेश्वर
के उस भवन के काम को रहने दो,
यहूदियो का अधिपति और यहूदियो के
पुरनिये परमेश्वर के उस भवन को उसी
के स्थान पर बनाए। ८ वरन मै आज्ञा
देता हू कि तुम्हे यहूदियो के उन पुरनियो
से ऐसा बर्ताव करना होगा, कि परमेश्वर
का वह भवन बनाया जाए, अर्थात् राजा
के धन मे से, महानद के पार के कर मे से,
उन पुरुषो को फुर्ती के साथ खर्चा दिया
जाए, ऐसा न हो कि उनको रुकना पडे।
९ और क्या बछडे ! क्या मेढे ! क्या
मेम्ने ! स्वर्ग के परमेश्वर के होमबलियो
के लिये जिस जिस वस्तु का उन्हे प्रयोजन
हो, और जितना गेहू, नमक, दाखमधु
और तेल यरूशलेम के याजक कहे, वह
सब उन्हे बिना भूल चूक प्रतिदिन दिया
जाए, १० इसलिये कि वे स्वर्ग के पर-
मेश्वर को सुखदायक सुगन्धवाले बलि
चढाकर, राजा और राजकुमारो के दीर्घायु
के लिये प्रार्थना किया करे। ११ फिर
मै ने आज्ञा दी है, कि जो कोई यह आज्ञा
टाले, उसके घर मे से कडी निकाली
जाए, और उस पर वह स्वय चढाकर
जकडा जाए, और उसका घर इस अपराध
के कारण घूरा बनाया जाए। १२ और
परमेश्वर जिस ने वहा अपने नाम का
निवास ठहराया है, वह क्या राजा क्या
प्रजा, उन सभो को जो यह आज्ञा टालने
और परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम
मे है नाश करने के लिये हाथ बढाए,
नष्ट करे। मुझ दारा ने यह आज्ञा दी
है फुर्ती से ऐसा ही करना ॥

१३ तब महानद के इस पार के
अधिपति तत्तनै और शतबोजनै और उनके
सहचरियो ने दारा राजा के चिट्ठी भेजने
के कारण, उसी के अनुसार फुर्ती से
काम किया। १४ तब यहूदी पुरनिये,
हाग्गै नबी और इद्दो के पोते जकर्याह के
नबूवत करने से मन्दिर को बनाते रहे,
और कृतार्थ भी हुए। और इस्राएल के
परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार और
फारस के राजा कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र
की आज्ञाओ के अनुसार बनाते बनाते
उसे पूरा कर लिया। १५ इस प्रकार
वह भवन राजा दारा के राज्य के छठवे
वर्ष मे अदार महीने के तीसरे दिन को
बनकर समाप्त हुआ ॥

१६ इस्राएली, अर्थात् याजक लेवीय
और और जितने बन्धुआई से आए थे उन्हो
ने परमेश्वर के उस भवन की प्रतिष्ठा
उत्सव के साथ की। १७ और उस भवन
की प्रतिष्ठा मे उन्हो ने एक सौ बैल और
दो सौ मेढे और चार सौ मेम्ने और
फिर सब इस्राएल के निमित्त पापबलि
करके इस्राएल के गोत्रो की गिनती के
अनुसार बारह बकरे चढाए। १८ तब
जैसे मूसा की पुस्तक मे लिखा है, वैसे
ही उन्हो ने परमेश्वर की आराधना के
लिये जो यरूशलेम मे है, बारी बारी मे

याजको और दल दल के लेवियो को
नियुक्त कर दिया ॥
१९ फिर पहिले महीने के चौदहवे
दिन को बन्धुआई मे आए हुए लोगो
ने फसह माना। २० क्योकि याजको
और लेवियो ने एक मन होकर, अपने
अपने को शुद्ध किया था, इसलिये वे
सब के सब शुद्ध थे। और उन्हो ने
बन्धुआई से आए हुए सब लोगो और
अपने भाई याजको के लिये और अपने
अपने लिये फसह के पशु बलि किए।
२१ तब बन्धुआई से लौटे हुए इस्राएली
और जितने और देश की अन्य जातियो
की अशुद्धता मे इसलिये अलग हो गए
थे कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की
खोज करें, उन सभो ने भोजन किया।
२२ और अखमीरी रोटी का पर्व सात
दिन तक आनन्द के साथ मनाते रहे,
क्योकि यहोवा ने उन्हे आनन्दित किया
था, और अश्शूर के राजा का मन उनकी
ओर ऐसा फेर दिया कि वह परमेश्वर
अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर के भवन के
काम में उनकी सहायता करे ॥

(एज्रा का राजा की ओर से यरूशलेम
को भेजा जाना)

७ इन बातो के बाद अर्थात् फारस
के राजा अर्तक्षत्र के दिनो में, एज्रा
बाबेल से यरूशलेम को गया। वह सरायाह
का पुत्र था। और सरायाह अजर्याह का
पुत्र था, अजर्याह हिल्किय्याह का,
२ हिल्किय्याह शल्लूम का, शल्लूम सादोक
का, सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमर्याह
का, अमर्याह अजर्याह का, ३ अजर्याह
मरायोत का, ४ मरायोत जरह्याह का,
जरह्याह उज्जी का, उज्जी बुक्की का,
५ बुक्की अबीशू का, अबीशू पीनहास का,
पीनहास एलीआजर का और एलीआजर
हारून महायाजक का पुत्र था। ६ यही
एज्रा मूसा की व्यवस्था के विषय जिसे
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी,
निपुण शास्त्री था। और उसके परमेश्वर
यहोवा की कृपादृष्टि* जो उस पर रही,
इसके कारण राजा ने उसका मुह मागा
वर दे दिया ॥
७ और कितने इस्राएली, और याजक
लेवीय, गवैये, और द्वारपाल और नतीन
के कुछ लोग अर्तक्षत्र राजा के सातवे
वर्ष मे यरूशलेम को ले गए। ८ और
वह राजा के सातवे वर्ष के पाचवें महीने
मे यरूशलेम को पहुचे। ९ पहिले महीने
के पहिले दिन को वह बाबेल से चल
दिया, और उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि†
उस पर रही, इस कारण पाचवें महीने
के पहिले दिन वह यरूशलेम को पहुचा।
१० क्योकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था
का अर्थ बूझ लेने, और उसके अनुसार
चलने, और इस्राएल मे विधि और नियम
सिखाने के लिये अपना मन लगाया था ॥
११ जो चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा
याजक और शास्त्री को दी थी जो यहोवा
की आज्ञाओ के वचनो का, और उसकी
इस्राएलियो मे चलाई हुई विधियो का
शास्त्री था, उसकी नकल यह है
१२ अर्थात्, एज्रा याजक जो स्वर्ग के
परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री
है, उसको अर्तक्षत्र महाराजाधिराज की
ओर से, इत्यादि। १३ मैं यह आज्ञा
देता हू, कि मेरे राज्य मे जितने इस्राएली
और उनके याजक और लेवीय अपनी

* मूल में—हाथ।
† मूल में—भला हाथ।

इच्छा से यरूशलेम जाना चाहे, वे तेरे
साथ जाने पाए। १४ तू तो राजा और
उसके सातो मन्त्रियो की ओर से इसलिये
भेजा जाता है, कि अपने परमेश्वर की
व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहूदा
और यरूशलेम की दशा बूझ ले, १५ और
जो चान्दी-सोना, राजा और उसके मन्त्रियो
ने इस्राएल के परमेश्वर को जिसका
निवास यरूशलेम मे है, अपनी इच्छा से
दिया है, १६ और जितना चान्दी-सोना
कुल बाबेल प्रान्त मे तुझे मिलेगा, और
जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा
से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो
यरूशलेम मे है देंगे, उसको ले जाए।
१७ इस कारण तू उस रुपये से फुर्ती
के साथ बैल, मेढे और मेम्ने उनके योग्य
अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओ समेत मोल
लेना और उस वेदी पर चढाना, जो
तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेमवाले भवन
मे है। १८ और जो चान्दी-सोना बचा
रहे, उस से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयो
को उचित जान पडे, वही अपने परमेश्वर
की इच्छा के अनुसार करना। १९ और
तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के
लिये जो पात्र तुझे सौपे जाते है, उन्हे
यरूशलेम के परमेश्वर के साम्हने दे
देना। २० और इन से अधिक जो कुछ
तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये
आवश्यक जानकर देना पडे, वह राज-
खजाने में से दे देना॥

२१ मैं अर्तक्षत्र राजा यह आज्ञा देता
हू, कि तुम महानद के पार के सब
खजानचियो से जो कुछ एज्रा याजक, जो
स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का शास्त्री
है, तुम लोगो से चाहे, वह फुर्ती के साथ
किया जाए। २२ अर्थात् सौ किक्कार तक
चान्दी, सौ कोर तक गेहू, सौ बत तक
दाखमधु, सौ बत तक तेल और नमक
जितना चाहिये उतना दिया जाए।
२३ जो जो आज्ञा स्वर्ग के परमेश्वर की
ओर से मिले, ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग
के परमेश्वर के भवन के लिये किया
जाय, राजा और राजकुमारो के राज्य पर
परमेश्वर का क्रोध क्यो भडकने पाए।
२४ फिर हम तुम को चिता देते है, कि
परमेश्वर के उस भवन के किसी याजक,
लेवीय, गवैये, द्वारपाल, नतीन या और
किसी सेवक से कर, चुगी, अथवा राहदारी
लेने की आज्ञा नही है॥

२५ फिर हे एज्रा! तेरे परमेश्वर से
मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो तुझ मे
है, न्यायियो और विचार करनेवालो को
नियुक्त कर जो महानद के पार रहनेवाले
उन सब लोगो मे जो तेरे परमेश्वर की
व्यवस्था जानते हो न्याय किया करे, और
जो जो उन्हे न जानते हो, उनको तुम
सिखाया करो। २६ और जो कोई तेरे
परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की
व्यवस्था न माने, उसको फुर्ती से दण्ड
दिया जाए, चाहे प्राणदण्ड, चाहे देश-
निकाला, चाहे माल जप्त किया जाना, चाहे
कैद करना॥

२७ धन्य है हमारे पितरो का परमेश्वर
यहोवा, जिस ने ऐसी मनसा राजा के
मन मे उत्पन्न की है, कि यहोवा के यरूशलेम
के भवन को सवारे, २८ और मुझ पर
राजा और उसके मन्त्रियो और राजा के
सब बडे बडे हाकिमो को दयालु किया।
मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि * जो
मुझ पर हुई, इसके अनुसार मैं ने हियाव

* मूल में—हाथ।

बान्धा, और इस्राएल में से मुख्य पुरुषों
को इकट्ठा किया, कि वे मेरे संग चलें॥

(एज्रा का सहचरियों समेत यरूशलेम
को पहुंचना)

८ उनके पूर्वजों के घरानों के मुख्य
मुख्य पुरुष ये हैं, और जो लोग राजा
अर्तक्षत्र के राज्य में बाबेल से मेरे संग
यरूशलेम को गए उनकी वंशावली यह
है॥ २ अर्थात् पीनहास के वंश में से
गेर्शोम, ईतामार के वंश में से दानिय्येल,
दाऊद के वंश में से हत्तूश। ३ शकन्याह
के वंश के परोश के गोत्र में से जकर्याह,
जिसके संग डेढ़ सौ पुरुषों की वंशावली
हुई। ४ पहत्मोआब के वंश में से जरह्याह
का पुत्र एल्यहोएनै, जिसके संग दो सौ
पुरुष थे। ५ शकन्याह के वंश में से
यहजीएल का पुत्र, जिसके संग तीन सौ
पुरुष थे। ६ आदीन के वंश में से योनातान
का पुत्र एबेद, जिसके संग पचास पुरुष
थे। ७ एलाम के वंश में से अतल्याह
का पुत्र यशायाह, जिसके संग सत्तर
पुरुष थे। ८ शपत्याह के वंश में से
मीकाएल का पुत्र जबद्याह, जिसके संग
अस्सी पुरुष थे। ९ योआब के वंश में से
यहीएल का पुत्र ओबद्याह, जिसके संग
दो सौ अठारह पुरुष थे। १० शलोमीत
के वंश में से योसिय्याह का पुत्र, जिसके
संग एक सौ साठ पुरुष थे। ११ बेबै
के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह, जिसके
संग अट्ठाईस पुरुष थे। १२ अजगाद के
वंश में से हक्कातान का पुत्र योहानान,
जिसके संग एक सौ दस पुरुष थे।
१३ अदोनीकाम के वंश में से जो पीछे
गए उनके ये नाम हैं, अर्थात् एलीपेलेत,
यीएल, और शमायाह, और उनके संग
साठ पुरुष थे। १४ और बिग्वै के वंश
में से ऊतै और जब्बूद थे, और उनके
संग सत्तर पुरुष थे॥

१५ इनको मैं ने उस नदी के पास जो
अहवा की ओर बहती है इकट्ठा कर लिया,
और वहां हम लोग तीन दिन डेरे डाले
रहे, और मैं ने वहां लोगों और याजकों
को देख लिया परन्तु किसी लेवीय को
न पाया। १६ मैं ने एलीएजेर, अरीएल,
शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान,
नातान, जकर्याह और मशुल्लाम को जो
मुख्य पुरुष थे, और योयारीब और एल-
नातान को जो बुद्धिमान थे। १७ बुलवा-
कर, इद्दो के पास जो कासिप्या नाम
स्थान का प्रधान था, भेज दिया, और
उनको समझा दिया, कि कासिप्या स्थान
में इद्दो और उसके भाई नतीन लोगों
से क्या क्या कहना, कि वे हमारे पास
हमारे परमेश्वर के भवन के लिये सेवा
टहल करनेवालों को ले आएं। १८ और
हमारे परमेश्वर की कृपादृष्टि* जो हम पर
हुई इसके अनुसार वे हमारे पास ईश्सेकेल†
के जो इस्राएल के परपोता और लेवी के
पोता महली के वंश में से था, और शेरेब्याह
को, और उसके पुत्रों और भाइयों को,
अर्थात् अठारह जनों को, १९ और हश-
ब्याह को, और उसके संग मरारी के
वंश में से यशायाह को, और उसके
पुत्रों और भाइयों को, अर्थात् बीस जनों
को, २० और नतीन लोगों में से जिन्हें
दाऊद और हाकिमों ने लेवियों की सेवा
करने को ठहराया था दो सौ बीस नतिनों
को ले आए। इन सभों के नाम लिखे
हुए थे॥

* मूल में—भला हाथ।
† वा एक बुद्धिमान पुरुष।

२१ तब मै ने वहा अर्थात् अहवा
नदी के तीर पर उपवास का प्रचार इस
आशय से किया, कि हम परमेश्वर के
साम्हने दीन हो, और उस से अपने
और अपने बालबच्चो और अपनी समस्त
सम्पत्ति के लिये सरल यात्रा मागे।
२२ क्योकि मै मार्ग के शत्रुओ से बचने
के लिये सिपाहियो का दल और सवार
राजा से मागने से लजाता था, क्योकि
हम राजा से यह कह चुके थे कि हमारा
परमेश्वर अपने सब खोजियो पर, भलाई
के लिये कृपादृष्टि * रखता है और जो
उसे त्याग देते है, उसका बल और कोप
उनके विरुद्ध है। २३ इसी विषय पर
हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से
प्रार्थना की, और उस ने हमारी सुनी॥
२४ तब मै ने मुख्य याजको मे से
बारह पुरुषो को, अर्थात् शेरेब्याह, हशब्याह
और इनके दस भाइयो को अलग करके,
जो चान्दी, सोना और पात्र, २५ राजा
और उसके मंत्रियो और उसके हाकिमो
और जितने इस्राएली उपस्थित थे उन्हो
ने हमारे परमेश्वर के भवन के लिये भेट
दिए थे, उन्हे तौलकर उनको दिया।
२६ अर्थात् मै ने उनके हाथ मे साढे
छ सौ किक्कार चान्दी, सौ किक्कार
चान्दी के पात्र, २७ सौ किक्कार सोना,
हजार दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे,
और सोने सरीखे अनमोल चोखे चमकने-
वाले पीतल के दो पात्र तौलकर दे दिये।
२८ और मै ने उन से कहा, तुम तो
यहोवा के लिये पवित्र हो, और ये पात्र
भी पवित्र है, और यह चान्दी और
सोना भेट का है, जो तुम्हारे पितरो के

* मूल मे—हाथ।

परमेश्वर यहोवा के लिये प्रसन्नता से दी
गई। २९ इसलिये जागते रहो, और
जब तक तुम उन्हे यरूशलेम मे प्रधान
याजको और लेवियो और इस्राएल के
पितरो के घरानो के प्रधानो के साम्हने
यहोवा के भवन की कोठरियो मे तौलकर
न दो, तब तक उनकी रक्षा करते रहो।
३० तब याजको और लेवियो ने चान्दी,
सोने और पात्रो को तौलकर ले लिया कि
उन्हे यरूशलेम को हमारे परमेश्वर के
भवन मे पहुचाए॥
३१ पहिले महीने के बारहवे दिन को
हम ने अहवा नदी से कूच करके यरूशलेम
का मार्ग लिया, और हमारे परमेश्वर
की कृपादृष्टि * हम पर रही, और उस
ने हम को शत्रुओ और मार्ग पर घात
लगानेवालो के हाथ से बचाया।
३२ निदान हम यरूशलेम को पहुचे और
वहा तीन दिन रहे। ३३ फिर चौथे दिन
वह चान्दी-सोना और पात्र हमारे परमेश्वर
के भवन मे ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत
याजक के हाथ मे तौलकर दिए गए।
और उसके संग पीनहास का पुत्र एलीआजर
था, और उनके साथ येशू का पुत्र योजाबाद
लेवीय और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह
लेवीय थे। ३४ वे सब वस्तुए गिनी
और तौली गई, और उनका तौल उसी
समय लिखा गया॥
३५ जो बन्धुआई से आए थे, उन्हो ने
इस्राएल के परमेश्वर के लिये होमबलि
चढाए, अर्थात् समस्त इस्राएल के निमित्त
बारह बछडे, छियानवे मेढे और सतहत्तर
मेम्ने और पापबलि के लिये बारह बकरे,
यह सब यहोवा के लिये होमबलि था।

* मूल मे—हाथ।

३६ तब उन्हो ने राजा की आज्ञाए महानद
के इस पार के अधिकारियो और अधि-
पतियो को दी, और उन्हो ने इस्राएली
लोगो और परमेश्वर के भवन के काम
मे सहायता की ॥

(यहूदा के पाप के कारण एज्रा की प्रार्थना)

६ जब ये काम हो चुके, तब हाकिम
मेरे पास आकर कहने लगे, न तो
इस्राएली लोग, न याजक, न लेवीय इस
ओर के देशो के लोगो से अलग हुए,
वरन उनके से, अर्थात् कनानियो, हित्तियो,
परिज्जियो, यबूसियो, अम्मोनियो, मोआ-
बियो, मिस्रियो और एमोरियो के से
घिनौने काम करते है। २ क्योकि उन्हो
ने उनकी बेटियो में से अपने और अपने
बेटो के लिये स्त्रिया कर ली है, और
पवित्र वश इस ओर के देशो के लोगो
में मिल गया है। वरन हाकिम और
सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए
है। ३ यह बात सुनकर म ने अपने वस्त्र
और बागे को फाडा, और अपने सिर
और दाढी के बाल नोचे, और विस्मित
होकर बैठा रहा। ४ तब जितने लोग
इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर
बन्धुआई मे आए हुए लोगो के विश्वासघात
के कारण थरथराते थे, सब मेरे पास
इकट्ठे हुए, और मै साझ की भेंट के समय
तक विस्मित होकर बैठा रहा।
५ परन्तु साझ की भेंट के समय मै
वस्त्र और बागा फाडे हुए उपवास की
दशा मे उठा, फिर घुटनो के बल झुका,
और अपने हाथ अपने परमेश्वर यहोवा
की ओर फैलाकर कहा, ६ हे मेरे पर-
मेश्वर! मुझे तेरी ओर अपना मुह उठाते
लाज आती है, और हे मेरे परमेश्वर!
मेरा मुह काला है, क्योकि हम लोगो के
अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ गए
है, और हमारा दोष बढते बढते आकाश
तक पहुचा है। ७ अपने पुरखाओ के
दिनो से लेकर आज के दिन तक हम
बडे दोषी है, और अपने अधर्म के कामो
के कारण हम अपने राजाओ और याजको
समेत देश देश के राजाओ के हाथ मे
किए गए कि तलवार, बन्धुआई, लूटे
जाने, और मुह काला हो जाने की विपत्तियो
मे पडे जैसे कि आज हमारी दशा है।
८ और अब थोडे दिन से हमारे परमेश्वर
यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि
हम मे से कोई कोई बच निकले, और
हम को उसके पवित्र स्थान मे एक खूटी
मिले, और हमारा परमेश्वर हमारी आखो
मे ज्योति आने दे, और दासत्व में हम को
कुछ विश्रान्ति मिले। ९ हम दास तो
है ही, परन्तु हमारे दासत्व मे हमारे
परमेश्वर ने हम को नही छोड दिया,
वरन फारस के राजाओ को हम पर
ऐसे कृपालु किया, कि हम नया जीवन
पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने,
और इसके खडहरो को सुधारने पाए,
और हमें यहूदा और यरूशलेम मे आड
मिली ॥

१० और अब हे हमारे परमेश्वर
इसके बाद हम क्या कहे, यही कि हम ने
तेरी उन आज्ञाओ को तोड दिया है,
११ जो तू ने यह कहकर अपने दास
नबियो के द्वारा दी, कि जिस देश के
अधिकारी होने को तुम जाने पर हो,
वह तो देश देश के लोगो की अशुद्धता
के कारण और उनके घिनौने कामो के
कारण अशुद्ध देश है, उन्हो ने उसे एक
सिवाने से दूसरे सिवाने तक अपनी अशुद्धता

से भर दिया है। १२ इसलिये अब तू
न तो अपनी बेटियां उनके बेटों को व्याह
देना और न उनकी बेटियों से अपने
बेटों का व्याह करना, और न कभी उनका
कुशल क्षेम चाहना, इसलिये कि तुम
बलवान बनो और उस देश के अच्छे
अच्छे पदार्थ खाने पाओ, और उसे ऐसा
छोड़ जाओ, कि वह तुम्हारे वंश के अधिकार
में सदैव बना रहे। १३ और उस सब
के बाद जो हमारे बुरे कामों और बड़े
दोष के कारण हम पर बीता है, जब कि
हे हमारे परमेश्वर तू ने हमारे अधर्म
के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया, वरन
हम में से कितनों को बचा रखा है, १४ तो
क्या हम तेरी आज्ञाओं को फिर से उल्लंघन
करके इन घिनौने काम करनेवाले लोगों
से समधियाना का सम्बन्ध करें? क्या तू
हम पर यहां तक कोप न करेगा जिस से
हम मिट जाएं और न तो कोई बचे और
न कोई रह जाए? १५ हे इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा! तू तो धर्मी है, हम
बचकर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान
है। देख, हम तेरे साम्हने दोषी हैं, इस
कारण कोई तेरे साम्हने खड़ा नहीं रह
सकता॥

(यहूदियों का अन्यजाति स्त्रियों को
दूर करना)

१० जब एज्रा परमेश्वर के भवन
के साम्हने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना
और पाप का अंगीकार कर रहा था,
तब इस्राएल में से पुरुषों, स्त्रियों और
लड़केवालों की एक बहुत बड़ी मण्डली
उसके पास इकट्ठी हुई, और लोग बिलक
बिलक कर रो रहे थे। २ तब यहीएल
का पुत्र शकन्याह जो एलाम के वंश
में का था, एज्रा से कहने लगा, हम लोगों
ने इस देश के लोगों में से अन्यजाति
स्त्रियां व्याह कर अपने परमेश्वर का
विश्वासघात तो किया है, परन्तु इस
दशा में भी इस्राएल के लिये आशा है।
३ अब हम अपने परमेश्वर से यह वाचा
बान्धें, कि हम अपने प्रभु की सम्मति
और अपने परमेश्वर की आज्ञा सुनकर
थरथरानेवालों की सम्मति के अनुसार
ऐसी सब स्त्रियों को और उनके लड़केवालों
को दूर करें, और व्यवस्था के अनुसार
काम किया जाए। ४ तू उठ, क्योंकि
यह काम तेरा ही है, और हम तेरे साथ
हैं, इसलिये हियाव बान्धकर इस काम
में लग जा। ५ तब एज्रा उठा, और
याजकों, लेवियों और सब इस्राएलियों के
प्रधानों को यह शपथ खिलाई कि हम
इसी वचन के अनुसार करेंगे, और उन्हों
ने वैसी ही शपथ खाई॥

६ तब एज्रा परमेश्वर के भवन के
साम्हने से उठा, और एल्याशीब के पुत्र
योहानान की कोठरी में गया, और वहां
पहुंचकर न तो रोटी खाई, न पानी पिया,
क्योंकि वह बन्धुआई में से निकल आए
हुओं के विश्वासघात के कारण शोक
करता रहा। ७ तब उन्हों ने यहूदा और
यरूशलेम में रहनेवाले बन्धुआई में से आए
हुए सब लोगों में यह प्रचार कराया, कि
तुम यरूशलेम में इकट्ठे हो, ८ और जो
कोई हाकिमों और पुरनियों की सम्मति
न मानेगा और तीन दिन के भीतर न
आए तो उसकी समस्त धन-सम्पत्ति नष्ट
की जाएगी और वह आप बन्धुआई से
आए हुओं की सभा से अलग किया
जाएगा॥

९ तब यहूदा और बिन्यामीन के
सब मनुष्य तीन दिन के भीतर यरूशलेम
में इकट्ठे हुए, यह नौवें महीने के
बीसवें दिन में हुआ, और सब लोग
परमेश्वर के भवन के चौक में उस विषय
के कारण और झड़ी के मारे कांपते
हुए बैठे रहे। १० तब एज्रा याजक खड़ा
होकर उन से कहने लगा, तुम लोगों ने
विश्वासघात करके अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह
ली, और इस से इस्राएल का दोष बढ़
गया है। ११ सो अब अपने पितरों के
परमेश्वर यहोवा के साम्हने अपना पाप
मान लो, और उसकी इच्छा पूरी करो,
और इस देश के लोगों से और अन्यजाति-
स्त्रियों से न्यारे हो जाओ। १२ तब
पूरी मण्डली के लोगों ने ऊंचे शब्द से
कहा, जैसा तू ने कहा है, वैसा ही हमें
करना उचित है। १३ परन्तु लोग बहुत
हैं, और झड़ी का समय है, और हम बाहर
खड़े नहीं रह सकते, और यह दो एक
दिन का काम नहीं है, क्योंकि हम ने
इस बात में बड़ा अपराध किया है।
१४ समस्त मण्डली की ओर से हमारे
हाकिम नियुक्त किए जाएं, और जब तक
हमारे परमेश्वर का भड़का हुआ कोप
हम से दूर न हो, और यह काम निपट
न जाए, तब तक हमारे नगरों के जितने
निवासियों ने अन्यजाति-स्त्रियां ब्याह ली
हों, वे नियत समयों पर आया करें,
और उनके संग एक एक नगर के पुरनिये
और न्यायी आएं। १५ इसके विरुद्ध केवल
असाहेल के पुत्र योनातान और तिकवा के
पुत्र यहजयाह खड़े हुए, और मशुल्लाम और
शब्बतै लेवियों ने उनकी सहायता की॥

१६ परन्तु बंधुआई से आए हुए लोगों
ने वैसा ही किया। तब एज्रा याजक
और पितरों के घरानों के कितने मुख्य
पुरुष अपने अपने पितरों के घराने के
अनुसार अपने सब नाम लिखाकर अलग
किए गए, और दसवें महीने के पहिले
दिन को इस बात की तहकीकात के लिये
बैठे। १७ और पहिले महीने के पहिले
दिन तक उन्हों ने उन सब पुरुषों की बात
निपटा दी, जिन्हों ने अन्यजाति-स्त्रियों
को ब्याह लिया था॥

१८ और याजकों की सन्तान में से,
ये जन पाए गए जिन्हों ने अन्यजाति-स्त्रियों
को ब्याह लिया था, अर्थात् येशू के पुत्र,
योसादाक के पुत्र, और उसके भाई मासेयाह,
एलीआजर, यारीब और गदल्याह।
१९ इन्हों ने हाथ मारकर वचन दिया,
कि हम अपनी स्त्रियों को निकाल देंगे,
और उन्हों ने दोषी ठहरकर, अपने अपने
दोष के कारण एक एक मेढ़ा बलि किया।
२० और इम्मेर की सन्तान में से, हनानी
और जबद्याह, २१ और हारीम की सन्तान
में से, मासेयाह, एलीयाह, शमायाह,
यहीएल और उज्जियाह। २२ और
पशहूर की सन्तान में से, एल्योएनै,
मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद
और एलासा॥

२३ फिर लेवियों में से, योजाबाद,
शिमी, केलायाह जो कलीता कहलाता
है, पतह्याह, यहूदा और एलीआजर।
२४ और गवैयों में से, एल्याशीब और
द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम और ऊरी॥

२५ और इस्राएल में से, परोश की
सन्तान में रम्याह, यिज्जियाह, मल्कि-
याह, मियामीन, एलीआजर, मल्कियाह
और बनायाह। २६ और एलाम की
सन्तान में से, मत्तन्याह जकर्याह, यहीएल,
अब्दी यरेमोत और एलियाह। २७ और

जत्तू की सन्तान मे से, एल्योएनै, एल्याशीब,
मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीजा।
२८ और बेबै की सन्तान मे से, यहोहा-
नान, हनन्याह, जब्बै और अतलै।
२९ और बानी की सन्तान मे से, मशुल्लाम,
मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और
यरामोत। ३० और पहतमोआब की
सन्तान मे से, अदना, कलाल, बनायाह,
मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और
मनश्शे। ३१ और हारीम की सन्तान मे
से, एलीआजर, यिश्शियाह, मल्कियाह,
शमायाह, शिमोन, ३२ बिन्यामीन,
मल्लूक और शमर्याह। ३३ और हाशूम
की सन्तान मे से, मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद,
एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी।
३४ और बानी की सन्तान मे से, मादै,
अम्राम, ऊएल, ३५ बनायाह, बेदयाह,
कलूही, ३६ वन्याह, मरेमोत, एल्याशीब,
३७ मत्तन्याह, मत्तनै, यासू, ३८ बानी,
बिन्नूई, शिमी, ३९ शेलेम्याह, नातान,
अदायाह, ४० मक्नदबै, शाशै, शारै,
४१ अजरेल, शेलेमाह, शेमर्याह;
४२ शल्लूम, अमर्याह और योसेफ।
४३ और नबो की सन्तान मे से; यीएल,
मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, इद्दो, योएल
और बनायाह। ४४ इन सभो ने अन्य-
जाति-स्त्रिया व्याह ली थी, और कितनो
की स्त्रियो से लडके भी उत्पन्न हुए थे॥

नहेमायाह

(नहेमायाह का राजा से आज्ञा पाकर
यरूशलेम को जाना)

१ हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के
वचन। बीसवे वर्ष के किसलवे नाम
महीने मे, जब मै शूशन नाम राजगढ मे
रहता था, २ तब हनानी नाम मेरा एक
भाई और यहूदा से आए हुए कई एक
पुरुष आए, तब मै ने उन से उन बचे
हुए यहूदियो के विषय जो बन्धुआई से
छूट गए थे, और यरूशलेम के विषय मे
पूछा। ३ उन्हो ने मुझ से कहा, जो बचे
हुए लोग बन्धुआई से छूटकर उस प्रान्त
मे रहते है, वे बडी दुर्दशा मे पडे है,
और उनकी निन्दा होती है, क्योकि
यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और
उसके फाटक जले हुए है॥
४ ये बाते सुनते ही मै बैठकर रोने
लगा और कितने दिन तक विलाप करता,
और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास
करता और यह कहकर प्रार्थना करता
रहा। ५ हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा,
हे महान और भययोग्य ईश्वर! तू जो
अपने प्रेम रखनेवाले और आज्ञा माननेवाले
के विषय अपनी वाचा पालता और उन
पर करुणा करता है, ६ तू कान लगाए
और आखे खोले रह, कि जो प्रार्थना मै
तेरा दास इस समय तेरे दास इस्राएलियो
के लिये दिन रात करता रहता हू, उसे

तू सुन ले। मै इस्राएलियो के पापो को
जो हम लोगो ने तेरे विरुद्ध किए है, मान
लेता हू। मै और मेरे पिता के घराने
दोनो ने पाप किया है। ७ हम ने तेरे
साम्हने बहुत बुराई की है, और जो आज्ञाए,
विधिया और नियम तू ने अपने दास मूसा
को दिए थे, उनको हम ने नही माना।
८ उस वचन की सुधि ले, जो तू ने अपने
दास मूसा से कहा था, कि यदि तुम लोग
विश्वासघात करो, तो मै तुम को देश देश
के लोगो मे तितर बितर करूगा। ९ परन्तु
यदि तुम मेरी ओर फिरो, और मेरी
आज्ञाए मानो, और उन पर चलो, तो
चाहे तुम में से निकाले हुए लोग आकाश
की छोर मे भी हो, तौभी मै उनको वहा
से इकट्ठा करके उस स्थान में पहुचाऊगा,
जिसे मै ने अपने नाम के निवास के लिये
चुन लिया है। १० अब वे तेरे दास और
तेरी प्रजा के लोग है जिनको तू ने अपनी
बडी सामर्थ और बलवन्त हाथ के द्वारा
छुडा लिया है। ११ हे प्रभु विनती यह
है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और
अपने उन दासो की प्रार्थना पर, जो तेरे
नाम का भय मानना चाहते है, कान लगा,
और आज अपने दास का काम सुफल कर,
और उस पुरुष को उस पर दयालु कर।
(मै तो राजा का पियाऊ था।।)

२ अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के
नीसान नाम महीने मे, जब उसके
साम्हने दाखमधु था, तब मै ने दाखमधु
उठाकर राजा को दिया। इस से पहिले
मै उसके साम्हने कभी उदास न हुआ
था। २ तब राजा ने मुझ से पूछा, तू
तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुह क्यो उतरा
है? यह तो मन ही की उदासी होगी।
३ तब मै अत्यन्त डर गया। और राजा
से कहा, राजा सदा जीवित रहे! जब वह
नगर जिस मे मेरे पुरखाओ की कबरे है,
उजाड पडा है और उसके फाटक जले हुए
है, तो मेरा मुह क्यो न उतरे? ४ राजा
ने मुझ से पूछा, फिर तू क्या मागता
है? तब मै ने स्वर्ग के परमेश्वर से
प्रार्थना करके, राजा से कहा, ५ यदि
राजा को भाए, और तू अपने दास से
प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओ
की कबरो के नगर को भेज, ताकि मै
उसे बनाऊ। ६ तब राजा ने जिसके
पास रानी भी बैठी थी, मुझ से पूछा, तू
कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और
कब लौटेगा? सो राजा मुझे भेजने को
प्रसन्न हुआ, और मै ने उसके लिये एक
समय नियुक्त किया। ७ फिर मै ने
राजा से कहा, यदि राजा को भाए, तो
महानद के पार के अधिपतियो के लिये
इस आशय की चिट्ठिया मुझे दी जाए कि
जब तक मै यहूदा को न पहुचू, तब तक
वे मुझे अपने अपने देश में से होकर जाने
दें। ८ और सरकारी जगल के रखवाले
आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी
मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से
लगे हुए राजगढ की कडियो के लिये, और
शहरपनाह के, और उस घर के लिये,
जिस में मै जाकर रहूगा, लकडी दे।
मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि * मुझ पर थी,
इसलिये राजा ने यह विनती ग्रहण किया।।
९ तब मै ने महानद के पार के अधि-
पतियो के पास जाकर उन्हे राजा की
चिट्ठिया दी। राजा ने मेरे संग सेनापति
और सवार भी भेजे थे। १० यह सुनकर

* मूल में—भला हाथ।

कि एक मनुष्य इस्राएलियो के कल्याण का
उपाय करने को आया है, होरोनी सम्बल्लत
और तोबियाह् नाम कर्मचारी जो अम्मोनी
था, उन दोनो को बहुत बुरा लगा॥
११ जब मैं यरूशलेम पहुच गया, तब
वहा तीन दिन रहा। १२ तब मैं थोड़े
पुरुषो को लेकर रात को उठा, मैं ने
किसी को नही बताया कि मेरे परमेश्वर
ने यरूशलेम के हित के लिये मेरे मन में
क्या उपजाया था। और अपनी सवारी
के पशु को छोड कोई पशु मेरे संग
न था। १३ मैं रात को तराई के फाटक
मे होकर निकला और अजगर के सोते
की ओर, और कूडाफाटक के पास गया,
और यरूशलेम की टूटी पडी हुई शहरपनाह
और जले फाटको को देखा। १४ तब मैं
आगे बढकर सोते के फाटक और राजा के
कुण्ड के पास गया, परन्तु मेरी सवारी
के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न
था। १५ तब मैं रात ही रात नाले से
होकर शहरपनाह को देखता हुआ चढ गया,
फिर घूमकर तराई के फाटक से भीतर
आया, और इस प्रकार लौट आया।
१६ और हाकिम न जानते थे कि मैं
कहा गया और क्या करता था, वरन मैं
ने तब तक न तो यहूदियो को कुछ बताया
था और न याजको और न रईसो और
न हाकिमो और न दूसरे काम करनेवालो
को॥
१७ तब मैं ने उन से कहा, तुम तो
आप देखते हो कि हम कैसी दुर्दशा मे
है, कि यरूशलेम उजाड पडा है और उसके
फाटक जले हुए है। तो आओ, हम
यरूशलेम की शहरपनाह को बनाए, कि
भविष्य मे हमारी नामधराई न रहे।
१८ फिर मैं ने उनको बतलाया, कि मेरे
परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर कैसी हुई
और राजा ने मुझ से क्या क्या बातें कहीं
थी। तब उन्हो ने कहा, आओ हम कमर
बान्धकर बनाने लगें। और उन्हो ने इस
भले काम को करने के लिये हियाव बान्ध
लिया। १९ यह सुनकर होरोनी सम्बल्लत
और तोबियाह नाम कर्मचारी जो अम्मोनी
था, और गेशेम नाम एक अरबी, हमें
ठट्ठों में उड़ाने लगे, और हमें तुच्छ
जानकर कहने लगे, यह तुम क्या काम
करते हो। २० क्या तुम राजा के विरुद्ध
बलवा करोगे? तब मैं ने उनको उत्तर
देकर उन से कहा, स्वर्ग का परमेश्वर
हमारा काम सुफल करेगा, इसलिये हम
उसके दास कमर बान्धकर बनाएंगे,
परन्तु यरूशलेम मे तुम्हारा न तो कोई
भाग, न हक्क, न स्मारक है॥

(यरूशलेम की शहरपनाह का फिर
बनाया जाना)

३ तब एल्याशीब महायाजक ने अपने
भाई याजको समेत कमर बान्धकर
भेडफाटक को बनाया। उन्हो ने उसकी
प्रतिष्ठा की, और उसके पल्लो को भी
लगाया, और हम्मेआ नाम गुम्मट तक
वरन हननेल के गुम्मट के पास तक उन्हो
ने शहरपनाह की प्रतिष्ठा की। २ उस से
आगे यरीहो के मनुष्यो ने बनाया। और
इन से आगे इम्री के पुत्र जक्कूर ने बनाया॥
३ फिर मछलीफाटक को हस्सना के
बेटो ने बनाया, उन्हो ने उसकी कड़िया
लगाई, और उसके पल्ले, ताले और बेंडे
लगाए। ४ और उन से आगे मरेमोत
ने जो हक्कोस का पोता और ऊरियाह
का पुत्र था, मरम्मत की। और इन से
आगे मशुल्लाम ने जो मशेजबेल का पोता,

और बरेक्याह का पुत्र था, मरम्मत की।
और इस से आगे बाना के पुत्र सादोक ने
मरम्मत की। ५ और इन से आगे
तकोइयों ने मरम्मत की, परन्तु उनके
रईसों ने अपने प्रभु की सेवा का जूआ
अपनी गर्दन पर न लिया ॥
६ फिर पुराने फाटक की मरम्मत
पासेह के पुत्र योयादा और बसोदयाह के
पुत्र मशुल्लाम ने की, उन्हों ने उसकी
कड़ियां लगाईं, और उसके पल्ले, ताले
और बेंड़े लगाए। ७ और उन से आगे
गिबोनी मलत्याह और मेरोनोती यादोन
ने और गिबोन और मिस्पा के मनुष्यों ने
महानद के पार के अधिपति के सिंहासन
की ओर से मरम्मत की। ८ उन से आगे
हर्हयाह के पुत्र उज्जीएल ने और और
सुनारों ने मरम्मत की। और इस से आगे
हनन्याह ने, जो गन्धियों के समाज का
था*, मरम्मत की, और उन्हों ने चौड़ी
शहरपनाह तक यरूशलेम को दृढ़ किया।
९ और उन से आगे हूर के पुत्र रपायाह
ने, जो यरूशलेम के आधे जिले का हाकिम
था, मरम्मत की। १० और उन से आगे
हरूमप के पुत्र यदायाह ने अपने ही घर के
साम्हने मरम्मत की, और इस से आगे
हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने मरम्मत
की। ११ हारीम के पुत्र मल्कियाह और
पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने एक और
भाग की, और भट्ठों के गुम्मट की मरम्मत
की। १२ इस से आगे यरूशलेम के आधे
जिले के हाकिम हल्लोहेश के पुत्र शल्लूम
ने अपनी बेटियों समेत मरम्मत की ॥
१३ तराई के फाटक की मरम्मत हानून
और जानोह के निवासियों ने की, उन्हों
ने उसको बनाया, और उसके ताले, बेंड़े
और पल्ले लगाए, और हजार हाथ की
शहरपनाह को भी अर्थात् कूड़ाफाटक तक
बनाया ॥
१४ और कूड़ाफाटक की मरम्मत
रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने की, जो
बेथक्केरेम के जिले का हाकिम था, उसी
ने उसको बनाया, और उसके ताले, बेंड़े
और पल्ले लगाए ॥
१५ और सोताफाटक की मरम्मत
कोल्होजे के पुत्र शल्लूम ने की, जो मिस्पा
के जिले का हाकिम था, उसी ने उसको
बनाया और पाटा, और उसके ताले,
बेंड़े और पल्ले लगाए, और उसी ने
राजा की बारी के पास के शेलह नाम
कुण्ड की शहरपनाह को भी दाऊदपुर
से उतरनेवाली सीढ़ी तक बनाया।
१६ उसके बाद अजबूक के पुत्र नहेमायाह
ने जो बेतसूर के आधे जिले का हाकिम था,
दाऊद के कब्रिस्तान के साम्हने तक और
बनाए हुए पोखरे तक, वरन वीरों के
घर तक भी मरम्मत की। १७ इसके
बाद बानी के पुत्र रहूम ने कितने लेवियों
समेत मरम्मत की। इस से आगे कीला
के आधे जिले के हाकिम हशब्याह ने
अपने जिले की ओर से मरम्मत की।
१८ उसके बाद उनके भाइयों समेत कीला
के आधे जिले के हाकिम हेनादाद के पुत्र
बव्वै ने मरम्मत की। १९ उस से आगे
एक और भाग की मरम्मत जो शहरपनाह
के मोड़ के पास शस्त्रों के घर की चढ़ाई के
साम्हने है, येशू के पुत्र एजेर ने की, जो
मिस्पा का हाकिम था। २० फिर एक
और भाग की अर्थात् उसी मोड़ से ले
एल्याशीब महायाजक के घर के द्वार तक
की मरम्मत जब्बै के पुत्र बारूक ने तन

* मूल में—जो गन्धियों का बेटा था।

मन से की। २१ इसके बाद एक और
भाग की अर्थात् एल्याशीब के घर के
द्वार से ले उसी घर के सिरे तक की
मरम्मत, मरेमोत ने की, जो हक्कोस का
पोता और ऊरियाह का पुत्र था।
२२ उसके बाद उन याजको ने मरम्मत
की जो तराई के मनुष्य थे। २३ उनके
बाद बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घर के
साम्हने मरम्मत की, और इनके पीछे
अजर्याह ने जो मासेयाह का पुत्र और
अनन्याह का पोता था अपने घर के पास
मरम्मत की। २४ तब एक और भाग
की, अर्थात् अजर्याह के घर से लेकर
शहरपनाह के मोड तक वरन उसके कोने
तक की मरम्मत हेनादाद के पुत्र बिन्नूई
ने की। २५ फिर उसी मोड के साम्हने
जो ऊंचा गुम्मट राजभवन से बाहर निकला
हुआ बन्दीगृह के आंगन के पास है, उसके
साम्हने ऊजै के पुत्र पालाल ने मरम्मत
की। इसके बाद परोश के पुत्र पदायाह
ने मरम्मत की। २६ नतीन लोग तो
ओपेल मे पूरब की ओर जलफाटक के
साम्हने तक और बाहर निकले हुए गुम्मट
तक रहते थे। २७ पदायाह के बाद
तकोइयो ने एक और भाग की मरम्मत
की, जो बाहर निकले हुए बडे गुम्मट के
साम्हने और ओपेल की शहरपनाह तक
है॥

२८ फिर घोडाफाटक के ऊपर याजको
ने अपने अपने घर के साम्हने मरम्मत
की। २९ इनके बाद इम्मेर के पुत्र
सादोक ने अपने घर के साम्हने मरम्मत
की, और तब पूरबी फाटक के रखवाले
शकन्याह के पुत्र समयाह ने मरम्मत की।
३० इसके बाद शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह
और सालाप के छठवे पुत्र हानून ने एक
और भाग की मरम्मत की। तब बेरेक्याह
के पुत्र मशुल्लाम ने अपनी कोठरी के
साम्हने मरम्मत की। ३१ उसके बाद
मल्कियाह ने जो सुनार था* नतिनों और
व्यापारियों के स्थान तक ठहराए हुए
स्थान के फाटक† के साम्हने और कोने
के कोठे तक मरम्मत की। ३२ और
कोनेवाले कोठे से लेकर भेडफाटक तक
सुनारों और व्यापारियों ने मरम्मत की॥

(यहूदियों के शत्रुओं का विरोध करना)

४ जब सम्बल्लत ने सुना कि यहूदी
लोग शहरपनाह को बना रहे है, तब
उस ने बुरा माना, और बहुत रिसियाकर
यहूदियो का ठट्ठो मे उडाने लगा। २ वह
अपने भाइयो के और शोमरोन की सेना
के साम्हने यो कहने लगा, वे निर्बल यहूदी
क्या किया चाहते है? क्या वे वह काम
अपने बल से करेंगे‡? क्या वे अपना
स्थान दृढ करेंगे? क्या वे यज्ञ करेंगे?
क्या वे आज ही सब काम निपटा डालेंगे?
क्या वे मिट्टी के ढेरो मे के जले हुए पत्थरो
को फिर नये सिरे से बनाएंगे§? ३ उसके
पास तो अम्मोनी तोबियाह था, और
वह कहने लगा, जो कुछ वे बना रहे है,
यदि कोई गीदड भी उस पर चढे, तो
वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह
को तोड देगा। ४ हे हमारे परमेश्वर
सुन ले, कि हमारा अपमान हो रहा है,
और उनका किया हुआ अपमान उन्ही के
सिर पर लौटा दे, और उन्हे बन्धुआई के
देश मे लुटवा दे। ५ और उनका अधर्म

* मूल में—जो सुनारों का बेटा था।
† वा हम्मिफकद नाम फाटक।
‡ मूल में—अपने लिये छोडेंगे।
§ मूल में—जिलाएंगे।

तू न ढांप, और न उनका पाप तेरे सम्मुख
से मिटाया जाए*, क्योंकि उन्हों ने तुझे
शहरपनाह बनानेवालों के साम्हने क्रोध
दिलाया है ॥

६ और हम लोगों ने शहरपनाह को
बनाया, और सारी शहरपनाह आधी
ऊंचाई तक जुड़ गई। क्योंकि लोगों का
मन उस काम में नित लगा रहा ॥

७ जब सम्बल्लत और तोबियाह और
अरबियों, अम्मोनियों और अशदोदियों ने
सुना, कि यरूशलेम की शहरपनाह की
मरम्मत होती जाती है†, और उस में के
नाके बन्द होने लगे हैं, तब उन्हों ने बहुत
ही बुरा माना, ८ और सभों ने एक
मन से गोष्ठी की, कि जाकर यरूशलेम से
लड़ें, और उस में गड़बड़ी डालें। ९ परन्तु
हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना
की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध
दिन रात के पहरुए ठहरा दिए ॥

१० और यहूदी कहने लगे, ढोनेवालों
का बल घट गया, और मिट्टी बहुत पड़ी
है, इसलिये शहरपनाह हम से नहीं बन
सकती। ११ और हमारे शत्रु कहने
लगे, कि जब तक हम उनके बीच में न
पहुंचे, और उन्हें घात करके वह काम बन्द
न करें, तब तक उनको न कुछ मालूम
होगा, और न कुछ दिखाई पड़ेगा।
१२ फिर जो यहूदी उनके आस पास
रहते थे, उन्हों ने सब स्थानों से दस बार
आ आकर, हम लोगों से कहा, तुम को
हमारे पास लौट आना चाहिये। १३ इस
कारण मैं ने लोगों को तलवारें, बर्छियां
और धनुष देकर शहरपनाह के पीछे सब से
नीचे के खुले स्थानों में घराने घराने के
अनुसार बैठा दिया। १४ तब मैं देखकर
उठा, और रईसों और हाकिमों और और
सब लोगों से कहा, उन से मत डरो,
प्रभु जो महान और भययोग्य है, उसी को
स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों,
स्त्रियों और घरों के लिये युद्ध करना ॥

१५ जब हमारे शत्रुओं ने सुना, कि
यह बात हम को मालूम हो गई है और
परमेश्वर ने उनकी युक्ति निष्फल की
है, तब हम सब के सब शहरपनाह के
पास अपने अपने काम पर लौट गए।
१६ और उस दिन से मेरे आधे सेवक तो
उस काम में लगे रहे और आधे बर्छियों,
तलवारों, धनुषों और झिलमों को धारण
किए रहते थे, और यहूदा के सारे घराने
के पीछे हाकिम रहा करते थे। १७ शहर-
पनाह के बनानेवाले और बोझ के ढोनेवाले
दोनों भार उठाते थे, अर्थात् एक हाथ से
काम करते थे और दूसरे हाथ से हथियार
पकड़े रहते थे। १८ और राज अपनी
अपनी जांघ पर तलवार लटकाए हुए
बनाते थे। और नरसिंगे का फूंकनेवाला
मेरे पास रहता था। १९ इसलिये मैं ने
रईसों, हाकिमों और सब लोगों से कहा,
काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और
हम लोग शहरपनाह पर अलग अलग एक
दूसरे से दूर रहते हैं। २० इसलिये
जिधर से नरसिंगा तुम्हें सुनाई दे, उधर
ही हमारे पास इकट्ठे हो जाना। हमारा
परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेगा ॥

२१ यों हम काम में लगे रहे, और
उन में आधे, पौ फटने से तारों के निकलने
तक बर्छियां लिये रहते थे। २२ फिर
उसी समय मैं ने लोगों से यह भी कहा,
कि एक एक मनुष्य अपने दास समेत
यरूशलेम के भीतर रात बिताया करे,

---

* मूल में—तेरे साम्हने से न मिटे।

† मूल में—शहरपनाह पर पट्टी चढ़ी।

कि वे रात को तो हमारी रखवाली करें,
और दिन को काम मे लगे रहे। २३ और
न तो मै अपने कपडे उतारता था, और
न मेरे भाई, न मेरे सेवक, न वे पहरुए
जो मेरे अनुचर थे, अपने कपडे उतारते
थे, सब कोई पानी के पास हथियार
लिये हुए जागते थे।।

(यहूदियो मे अन्धेर पाया जाना)

५ तब लोग और उनकी स्त्रियो की
ओर से उनके भाई यहूदियो के विरुद्ध
बडी चिल्लाहट मची। २ कितने तो कहते
थे, हम अपने बेटे-बेटियो समेत बहुत
प्राणी है, इसलिये हमे अन्न मिलना चाहिये
कि उसे खाकर जीवित रहे। ३ और
कितने कहते थे, कि हम अपने अपने खेतो,
दाख की बारियो और घरो को महगी
के कारण बन्धक रखते है, कि हमे अन्न
मिले। ४ फिर कितने यह कहते थे, कि हम
ने राजा के कर के लिये अपने अपने खेतो
और दाख की बारियो पर रुपया उधार
लिया। ५ परन्तु हमारा और हमारे
भाइयो का शरीर और हमारे और उनके
लडकेबाले एक ही समान है, तौभी हम
अपने बेटे-बेटियो को दास बनाते है, वरन
हमारी कोई कोई बेटी दासी भी हो चुकी
है, और हमारा कुछ बस नही चलता,
क्योकि हमारे खेत और दाख की बारिया
औरो के हाथ पडी है।।

६ यह चिल्लाहट और ये बाते सुनकर
मै बहुत क्रोधित हुआ। ७ तब अपने मन
मे सोच विचार करके मै ने रईसो और
हाकिमो को घुडककर कहा, तुम अपने
अपने भाई से ब्याज लेते हो। तब मै ने
उनके विरुद्ध एक बडी सभा की। ८ और
मै ने उन से कहा, हम लोगो ने तो अपनी
शक्ति भर अपने यहूदी भाइयो को जो
अन्यजातियो के हाथ बिक गए थे, दाम
देकर छुडाया है, फिर क्या तुम अपने
भाइयो को बेचोगे? क्या वे हमारे हाथ
बिकेगे? तब वे चुप रहे और कुछ न
कह सके। ९ फिर मै कहता गया, जो
काम तुम करते हो वह अच्छा नही है,
क्या तुम को इस कारण हमारे परमेश्वर
का भय मानकर चलना न चाहिये कि
हमारे शत्रु जो अन्यजाति है, वे
हमारी नामधराई न करे? १० मै भी
और मेरे भाई और सेवक उनको रुपया
और अनाज उधार देते है, परन्तु हम
इसका ब्याज छोड दे। ११ आज ही
उनको उनके खेत, और दाख, और जलपाई
की बारिया, और घर फेर दो, और जो
रुपया, अन्न, नया दाखमधु, और टटका
तेल तुम उन से ले लेते हो, उसका सौवा
भाग फेर दो? १२ उन्हो ने कहा, हम
उन्हे फेर देगे, और उन से कुछ न लेगे,
जैसा तू कहता है, वैसा ही हम करेगे।
तब मै ने याजको को बुलाकर उन लोगो
को यह शपथ खिलाई, कि वे इसी वचन
के अनुसार करेगे। १३ फिर मै ने अपने
कपडे की छोर झाडकर कहा, इसी रीति से
जो कोई इस वचन को पूरा न करे, उसको
परमेश्वर झाडकर, उसका घर और कमाई
उस से छुडाए, और इसी रीति से वह
झाडा जाए, और छूछा हो जाए। तब
सारी सभा ने कहा, आमेन! और यहोवा
की स्तुति की। और लोगो ने इस वचन के
अनुसार काम किया।।

१४ फिर जब से मै यहूदा देश मे
उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात्
राजा अर्तक्षत्र के बीसवे वर्ष से ले उसके
बत्तीसवे वर्ष तक, अर्थात् बारह वर्ष तक

मैं और मेरे भाई अधिपति के हक का भोजन
खाते रहे। १५ परन्तु पहिले अधिपति
जो मुझ से आगे थे, वह प्रजा पर भार
डालते थे, और उन से रोटी, और दाखमधु,
और इस से अधिक * चालीस शेकेल चान्दी
लेते थे, वरन उनके सेवक भी प्रजा के
ऊपर अधिकार जताते थे, परन्तु मैं ऐसा
नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय
मानता था। १६ फिर मैं शहरपनाह के
काम में लिपटा रहा, और हम लोगों ने
कुछ भूमि मोल न ली, और मेरे सब
सेवक काम करने के लिये वहां इकट्ठे
रहते थे। १७ फिर मेरी मेज पर खानेवाले
एक सौ पचास यहूदी और हाकिम और वे
भी थे, जो चारों ओर की अन्यजातियों
में से हमारे पास आए थे। १८ और जो
प्रतिदिन के लिये तैयार किया जाता था
वह एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें व
बकरियां थीं, और मेरे लिये चिड़ियें
भी तैयार की जाती थीं, दस दस दिन के
बाद भांति भांति का बहुत दाखमधु भी
तैयार किया जाता था, परन्तु तौभी मैं
ने अधिपति के हक का भोज नहीं लिया,
१९ क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी
था। हे मेरे परमेश्वर! जो कुछ मैं ने
इस प्रजा के लिये किया है, उसे तू मेरे हित
के लिये स्मरण रख॥

(शत्रुओं के विरोध करने पर भी
शहरपनाह का बन चुकना)

६ जब सम्बल्लत, तोबियाह और
अरबी गेशेम और हमारे और शत्रुओं
को यह समाचार मिला, कि मैं शहरपनाह
को बनवा चुका, और यद्यपि उस समय
तक भी मैं फाटकों में पल्ले न लगा चुका
था, तौभी शहरपनाह में कोई दरार न
रह गया था। २ तब सम्बल्लत और
गेशेम ने मेरे पास यों कहला भेजा, कि
आ, हम ओनो के मैदान के किसी गांव में
एक दूसरे से भेंट करें। परन्तु वे मेरी
हानि करने की इच्छा करते थे। ३ परन्तु
मैं ने उनके पास दूतों से कहला भेजा, कि
मैं तो भारी काम में लगा हूं, वहां नहीं
जा सकता, मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास
जाने से वह काम क्यों बन्द रहे? ४ फिर
उन्हों ने चार बार मेरे पास वैसी ही बात
कहला भेजी, और मैं ने उनको वैसा ही
उत्तर दिया। ५ तब पांचवीं बार
सम्बल्लत ने अपने सेवक को खुली हुई
चिट्ठी देकर मेरे पास भेजा, ६ जिस में
यों लिखा था, कि जाति जाति के लोगों में
यह कहा जाता है, और गेशेम भी यही
बात कहता है, कि तुम्हारी और यहूदियों
की मनसा बलवा करने की है, और इस
कारण तू उस शहरपनाह को बनवाता है,
और तू इन बातों के अनुसार उनका राजा
बनना चाहता है। ७ और तू ने यरूशलेम
में नबी ठहराए हैं, जो यह कहकर तेरे
विषय प्रचार करें, कि यहूदियों में एक
राजा है। अब ऐसा ही समाचार राजा
को दिया जाएगा। इसलिये अब आ, हम
एक साथ सम्मति करें। ८ तब मैं ने
उसके पास कहला भेजा कि जैसा तू कहता
है, वैसा तो कुछ भी नहीं हुआ, तू ये बातें
अपने मन से गढ़ता है। ९ वे सब लोग
यह सोचकर हमें डराना चाहते थे, कि
उनके हाथ ढीले पड़ें, और काम बन्द हो
जाए। परन्तु अब हे परमेश्वर तू मुझे
हियाव दे॥

१० और मैं शमायाह के घर में गया,
जो दलायाह का पुत्र और महेतबेल का

* मूल में—पीछे।

पोता था, वह तो वन्द घर मे था, उस ने कहा, आ, हम परमेश्वर के भवन अर्थात् मन्दिर के भीतर आपस मे भेट करे, और मन्दिर के द्वार वन्द करे, क्योकि वे लोग तुझे घात करने आएगे, रात ही को वे तुझे घात करने आएगे। ११ परन्तु मै ने कहा, क्या मुझ ऐसा मनुष्य भागे? और तुझ ऐसा कौन है जो अपना प्राण वचाने को मन्दिर मे घुसे*? मै नही जाने का। १२ फिर मै ने जान लिया कि वह परमेश्वर का भेजा नही है परन्तु उस ने हर वात ईश्वर का वचन कहकर† मेरी हानि के लिये कही, क्योकि तोवियाह और सम्वल्लत ने उसे रुपया दे रखा था। १३ उन्हो ने उसे इस कारण रुपया दे रखा था कि मै डर जाऊ, और वैसा ही काम करके पापी ठहरू, और उनको अपवाद लगाने का अवसर मिले और वे मेरी नामधराई कर सके। १४ हे मेरे परमेश्वर! तोवियाह, सम्वल्लत, और नोअद्याह, नविया और और जितने नवी मुझे डराना चाहते थे, उन सव के ऐसे ऐसे कामो की सुधि रख॥

१५ एलूल महीने के पचीसवे दिन को अर्थात् वावन दिन के भीतर शहरपनाह वन चुकी। १६ जव हमारे सव शत्रुओ ने यह सुना, तव हमारे चारो ओर रहनेवाले सव अन्यजाति डर गए, और वहुत लज्जित हुए, क्योकि उन्हो ने जान लिया कि यह काम हमारे परमेश्वर की ओर से हुआ। १७ उन दिनो मे भी यहूदी रईसो और तोवियाह के वीच चिट्ठी वहुत आया जाया करती थी। १८ क्योकि वह आरह के पुत्र शकन्याह का दामाद था, और उसके पुत्र यहोहानान ने वेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम की वेटी को व्याह लिया था, इस कारण वहुत से यहूदी उसका पक्ष करने की शपथ खाए हुए थे। १९ और वे मेरे सुनते उसके भले कामों की चर्चा किया करते, और मेरी वाते भी उसको सुनाया करते थे। और तोवियाह मुझे डराने के लिये चिट्ठियां भेजा करता था॥

* वा जो मन्दिर में घुसकर जीता रहे।
† मूल में—नवूवत।

(यरूशलेम का वसाया जाना)

७ जव शहरपनाह वन गई, और मै ने उसके फाटक खडे किए, और द्वारपाल, और गवैये, और लेवीय लोग ठहराये गए, २ तव मै ने अपने भाई हनानी और राजगढ के हाकिम हनन्याह को यरूशलेम का अधिकारी ठहराया, क्योकि यह सच्चा पुरुष और वहुतेरो से अधिक परमेश्वर का भय माननेवाला था। ३ और मै ने उन से कहा, जव तक घाम कडा न हो, तव तक यरूशलेम के फाटक न खोले जाए और जव पहरुए पहरा देते रहे, तव ही फाटक वन्द किए जाए और वेडे लगाए जाए। फिर यरूशलेम के निवासियो मे से तू रखवाले ठहरा जो अपना अपना पहरा अपने अपने घर के साम्हने दिया करे। ४ नगर तो लम्वा चौडा था, परन्तु उस मे लोग थोडे थे, और घर नही वने थे॥

५ तव मेरे परमेश्वर ने मेरे मन मे यह उपजाया कि रईसो, हाकिमो और प्रजा के लोगो को इसलिये इकट्ठे करू, कि वे अपनी अपनी वंशावली के अनुसार गिने जाए। और मुझे पहिले पहिल यरूशलेम को आए हुओ का वंशावलीपत्र मिला, और उस मे मै ने यो लिखा हुआ पाया: ६ जिनको वावेल का राजा,

नबूकदनेस्सर बन्धुआ करके ले गया था,
उन में से प्रान्त के जो लोग बन्धुआई से
छूटकर, यरूशलेम और यहूदा के अपने
अपने नगर को आए। ७ वे जरुब्बाबेल,
येशू, नहेमायाह, अजर्याह, राम्याह,
नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत,
बिग्वै, नहूम और बाना के संग आए॥
८ इस्राएली प्रजा के लोगों की गिनती
यह है अर्थात् परोश की सन्तान दो
हजार एक सौ बहत्तर, ९ सपत्याह की
सन्तान तीन सौ बहत्तर, आरह की सन्तान
छ सौ बावन। १० पहत्मोआब की
सन्तान याने येशू और योआब की सन्तान,
११ दो हजार आठ सौ अठारह।
१२ एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन,
१३ जत्तू की सन्तान आठ सौ पैंतालीस।
१४ जक्कै की सन्तान सात सौ साठ।
१५ बिन्नूई की सन्तान छ सौ अड़तालीस।
१६ बेबै की सन्तान छ सौ अट्ठाईस।
१७ अजगाद की सन्तान दो हजार तीन
सौ बाईस। १८ अदोनीकाम की सन्तान
छ सौ सड़सठ। १९ बिग्वै की सन्तान
दो हजार सड़सठ। २० आदीन की सन्तान
छ सौ पचपन। २१ हिजकिय्याह की
सन्तान आतेर के वंश में से अट्ठानवे।
२२ हाशम की सन्तान तीन सौ अट्ठाईस।
२३ बेसै की सन्तान तीन सौ चौबीस।
२४ हारीप की सन्तान एक सौ बारह।
२५ गिबोन के लोग पचानवे। २६ बेत-
लेहेम और नतोपा के मनुष्य एक सौ
अट्ठासी। २७ अनातोत के मनुष्य एक
सौ अट्ठाईस। २८ बेतजमावेत के मनुष्य
बयालीस। २९ किर्यत्यारीम, कपीर, और
बेरोत के मनुष्य सात सौ तैंतालीस।
३० रामा और गेबा के मनुष्य छ सौ
इक्कीस। ३१ मिकमास के मनुष्य एक
सौ बाईस। ३२ बेतेल और ऐ के मनुष्य
एक सौ तेईस। ३३ दूसरे नबो के मनुष्य
बावन। ३४ दूसरे एलाम की सन्तान
बारह सौ चौवन। ३५ हारीम की सन्तान
तीन सौ बीस। ३६ यरीहो के लोग तीन
सौ पैंतालीस। ३७ लोद हादीद और ओनो
के लोग सात सौ इक्कीस। ३८ सना के
लोग तीन हजार नौ सौ तीस॥
३९ फिर याजक अर्थात् येशू के घराने
में से यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर।
४० इम्मेर की सन्तान एक हजार बावन।
४१ पशहूर की सन्तान बारह सौ
सैंतालीस। ४२ हारीम की सन्तान एक
हजार सत्रह॥
४३ फिर लेवीय ये थे अर्थात् होदवा
के वंश में से कदमीएल की सन्तान येशू
की सन्तान चौहत्तर। ४४ फिर गवैये ये
थे अर्थात् आसाप की सन्तान एक सौ
अड़तालीस। ४५ फिर द्वारपाल ये थे
अर्थात् शल्लूम की सन्तान, आतेर की
सन्तान, तल्मोन की सन्तान, अक्कूब की
सन्तान, हतीता की सन्तान, और शोबै की
सन्तान, जो सब मिलकर एक सौ अड़तीस
हुए॥
४६ फिर नतीन अर्थात् सीहा की
सन्तान, हसूपा की सन्तान, तब्बाओत की
सन्तान, ४७ केरोस की सन्तान, सीआ
की सन्तान, पादोन की सन्तान,
४८ लबाना की सन्तान, हगाबा की सन्तान,
शल्मै की सन्तान। ४९ हानान की सन्तान,
गिद्देल की सन्तान, गहर की सन्तान,
५० राया की सन्तान, रसीन की सन्तान,
नकोदा की सन्तान, ५१ गज्जाम की
सन्तान, उज्जा की सन्तान, पासेह की
सन्तान, ५२ बेसै की सन्तान, मूनीम की
सन्तान, नपूशस की सन्तान, ५३ बकबूक

की सन्तान, हकूपा की सन्तान, हर्हूर की
सन्तान, ५४ बसलीत की सन्तान, महीदा
की सन्तान, हर्शा की सन्तान, ५५ बर्कोस
की सन्तान, सीसरा की सन्तान, तेमेह
की सन्तान, ५६ नसीह की सन्तान, और
हतीपा की सन्तान ।।

५७ फिर सुलैमान के दासों की सन्तान,
अर्थात् सोतै की सन्तान, सोपेरेत की
सन्तान, परीदा की सन्तान, ५८ याला की
सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की
सन्तान, ५९ शपत्याह की सन्तान, हत्तील
की सन्तान, पोकेरेत सबायीम की सन्तान,
और आमोन की सन्तान। ६० नतीन और
सुलैमान के दासों की सन्तान मिलकर तीन
सौ बानवे थे ।।

६१ और ये वे हैं, जो तेलमेलह,
तेलहर्शा, करूब, अद्दोन, और इम्मेर से
यरूशलेम को गए, परन्तु अपने अपने
पितरों के घराने और वंशावली न बता
सके, कि इस्राएल के हैं, वा नहीं
६२ अर्थात् दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह
की सन्तान, और नकोदा की सन्तान, जो
सब मिलकर छः सौ बयालीस थे।
६३ और याजकों में से होबायाह की
सन्तान, हक्कोस की सन्तान, और बर्जिल्लै
की सन्तान, जिस ने गिलादी बर्जिल्लै की
बेटियों में से एक को व्याह लिया, और
उन्हीं का नाम रख लिया था। ६४ इन्हों
ने अपना अपना वंशावलीपत्र और और
वंशावलीपत्रों में ढूंढा, परन्तु न पाया,
इसलिये वे अशुद्ध ठहरकर याजकपद से
निकाले गए। ६५ और अधिपति * ने उन
से कहा, कि जब तक ऊरीम और तुम्मीम
धारण करनेवाला कोई याजक न उठे, तब
तक तुम कोई परमपवित्र वस्तु खाने न
पाओगे ।।

६६ पूरी मण्डली के लोग मिलकर
बयालीस हजार तीन सौ साठ ठहरे।
६७ इनको छोड़ उनके सात हजार तीन
सौ सैंतीस दास-दासियां, और दो सौ
पैंतालीस गानेवाले और गानेवालियां थीं।
६८ उनके घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर
दो सौ पैंतालीस, ६९ ऊंट चार सौ पैंतीस
और गदहे छः हजार सात सौ बीस थे ।।

७० और पितरों के घरानों के कई एक
मुख्य पुरुषों ने काम के लिये दिया।
अधिपति * ने तो चन्दे में हजार दर्कमोन
सोना, पचास कटोरे और पांच सौ तीस
याजकों के अंगरखे दिए। ७१ और पितरों
के घरानों के कई मुख्य मुख्य पुरुषों ने
उस काम के चन्दे में बीस हजार दर्कमोन
सोना और दो हजार दो सौ माने चान्दी
दी। ७२ और शेष प्रजा ने जो दिया,
वह बीस हजार दर्कमोन सोना, दो हजार
माने चान्दी और सड़सठ याजकों के
अंगरखे हुए। ७३ इस प्रकार याजक,
लेवीय, द्वारपाल, गवैये, प्रजा के कुछ लोग
और नतीन और सब इस्राएली अपने अपने
नगर में बस गए ।।

(यहूदियों को व्यवस्था का सुनाया जाना)

८ जब सातवां महीना निकट आया,
उस समय सब इस्राएली अपने अपने
नगर में थे। तब उन सब लोगों ने
एक मन होकर, जलफाटक के साम्हने के
चौक में इकट्ठे होकर, एज्रा शास्त्री से
कहा, कि मूसा की जो व्यवस्था यहोवा ने
इस्राएल को दी थी, उसकी पुस्तक ले

* मूल में—तिर्शाता।

* मूल में—तिर्शाता।

आ। २ तब एज्रा याजक सातवें महीने
के पहिले दिन को क्या स्त्री, क्या पुरुष,
जितने सुनकर समझ सकते थे, उन सभों
के साम्हने व्यवस्था को ले आया। ३ और
वह उसकी बातें भोर से दो पहर तक उस
चौक के साम्हने जो जलफाटक के साम्हने
था, क्या स्त्री, क्या पुरुष और सब समझने
वालों को पढ़कर सुनाता रहा, और लोग
व्यवस्था की पुस्तक पर कान लगाए रहे।
४ एज्रा शास्त्री काठ के एक मचान पर
जो इसी काम के लिये बना था, खड़ा
हो गया, और उसकी दाहिनी अलंग
मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह,
हिल्किय्याह और मासेयाह, और बाईं
अलंग, पदायाह, मीशाएल, मल्किय्याह,
हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम
खड़े हुए। ५ तब एज्रा ने जो सब लोगों
से ऊंचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक
को खोल दिया, और जब उस ने उसको
खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए।
६ तब एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा
को धन्य कहा, और सब लोगों ने अपने
अपने हाथ उठाकर आमेन, आमेन, कहा,
और सिर झुकाकर अपना अपना माथा
भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत
किया। ७ और येशू, बानी, शेरेब्याह,
यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह, मासे-
याह, कलीता, अजर्याह, योजाबाद, हानान
और पलायाह नाम लेवीय, लोगों को
व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने
अपने स्थान पर खड़े रहे। ८ और उन्हों
ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से
पढ़कर अर्थ समझा दिया, और लोगों ने
पाठ को समझ लिया॥

९ तब नहेमायाह जो अधिपति था,
और एज्रा जो याजक और शास्त्री था, और
जो लेवीय लोगों को समझा रहे थे, उन्हों ने
सब लोगों से कहा, आज का दिन तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा के लिये पवित्र है, इसलिये
विलाप न करो और न रोओ। क्योंकि
सब लोग व्यवस्था के वचन सुनकर रोते
रहे। १० फिर उस ने उन से कहा, कि
जाकर चिकना चिकना भोजन करो और
मीठा मीठा रस पियो, और जिनके लिये
कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना भेजो,
क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये
पवित्र है, और उदास मत रहो, क्योंकि
यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।
११ यों लेवियों ने सब लोगों को यह
कहकर चुप करा दिया, कि चुप रहो क्योंकि
आज का दिन पवित्र है, और उदास मत
रहो। १२ तब सब लोग खाने, पीने,
बैना भेजने और बड़ा आनन्द मनाने को
चले गए, क्योंकि जो वचन उनको समझाए
गए थे, उन्हें वे समझ गए थे॥

१३ और दूसरे दिन को भी समस्त
प्रजा के पितरों के घराने के मुख्य मुख्य
पुरुष और याजक और लेवीय लोग,
एज्रा शास्त्री के पास व्यवस्था के वचन
ध्यान से सुनने के लिये इकट्ठे हुए।
१४ और, उन्हें व्यवस्था में यह लिखा
हुआ मिला, कि यहोवा ने मूसा से यह
आज्ञा दिलाई थी, कि इस्राएली सातवें
महीने के पर्ब्ब के समय झोपड़ियों में रहा
करें, १५ और अपने सब नगरों और
यरूशलेम में यह सुनाया और प्रचार किया
जाए, कि पहाड़ पर जाकर जलपाई,
तैलवृक्ष, मेंहदी, खजूर और घने घने वृक्षों
की डालियां ले आकर झोपड़ियां बनाओ,
जैसे कि लिखा है। १६ सो सब लोग
बाहर जाकर डालियां ले आए, और अपने
अपने घर की छत पर, और अपने आंगनों में,

और परमेश्वर के भवन के आगनो मे,
और जलफाटक के चौक मे, और एप्रैम
के फाटक के चौक मे, झोपडिया बना ली।
१७ वरन सब मण्डली के लोग जितने
बन्धुआई से छूटकर लौट आए थे, झोपडिया
बनाकर उन मे टिके। नून के पुत्र यहोशू के
दिनो से लेकर उस दिन तक इस्राएलियो ने
ऐसा नही किया था। और उस समय
बहुत बडा आनन्द हुआ। १८ फिर
पहिले दिन से पिछले दिन तक एज्रा ने
प्रतिदिन परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक
मे से पढ पढकर सुनाया। यो वे सात
दिन तक पर्व को मानते रहे, और आठवे
दिन नियम के अनुसार महासभा हुई॥

(पाप का अंगीकार)

९ फिर उसी महीने के चौबीसवे
दिन को इस्राएली उपवास का टाट
पहिने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे
हो गए। २ तब इस्राएल के वंश के
लोग सब अन्यजाति लोगो से अलग हो
गए, और खडे होकर, अपने अपने पापो
और अपने पुरखाओ के अधर्म के कामो
को मान लिया। ३ तब उन्हो ने अपने
अपने स्थान पर खडे होकर दिन के एक
पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की
व्यवस्था की पुस्तक पढते, और एक और
पहर अपने पापो को मानते, और अपने
परमेश्वर यहोवा को दण्डवत करते रहे।
४ और येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह,
बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और कनानी ने
लेवियो की सीढी पर खडे होकर ऊचे
स्वर मे अपने परमेश्वर यहोवा की दोहाई
दी। ५ फिर येशू, कदमीएल, बानी,
हशब्नयाह, शेरेब्याह, होदिय्याह, शब-
न्याह, और पतह्याह नाम लेवियो ने कहा,
खडे हो, अपने परमेश्वर यहोवा को
अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य कहो।
तेरा महिमायुक्त नाम धन्य कहा जाए,
जो सब धन्यवाद और स्तुति से परे है।
६ तू ही अकेला यहोवा है, स्वर्ग वरन सब
से ऊचे स्वर्ग और उसके सब गण, और
पृथ्वी और जो कुछ उस मे है, और समुद्र
और जो कुछ उस मे है, सभो को तू ही
ने बनाया, और सभो की रक्षा तू ही करता
है, और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को
दण्डवत करती है। ७ हे यहोवा! तू
वही परमेश्वर है, जो अब्राहाम को चुनकर
कसदियो के ऊर नगर मे से निकाल लाया,
और उसका नाम इब्राहीम रखा, ८ और
उसके मन को अपने साथ सच्चा पाकर,
उस से वाचा बान्धी, कि मै तेरे वंश को
कनानियो, हित्तियो, एमोरियो, परिज्जियो,
यबूसियो, और गिर्गाशियो का देश दूगा,
और तू ने अपना वह वचन पूरा भी किया,
क्योकि तू धर्मी है। ९ फिर तू ने मिस्र
मे हमारे पुरखाओ के दु ख पर दृष्टि की,
और लाल समुद्र के तट पर उनकी दोहाई
सुनी। १० और फिरौन और उसके सब
कर्मचारी वरन उसके देश के सब लोगों
को दण्ड देने के लिये चिन्ह और चमत्कार
दिखाए, क्योकि तू जानता था कि वे उन
से अभिमान करते है, और तू ने अपना
ऐसा बडा नाम किया, जैसा आज तक
वर्तमान है। ११ और तू ने उनके आगे
समुद्र को ऐसा दो भाग किया, कि वे
समुद्र के बीच स्थल ही स्थल चलकर पार
हो गए, और जो उनके पीछे पडे थे,
उनको तू ने गहिरे स्थानो मे ऐसा डाल दिया,
जैसा पत्थर महाजलराशि मे डाला जाए।
१२ फिर तू ने दिन को बादल के खम्भे
में होकर और रात को आग के खम्भे मे

होकर उनकी अगुआई की, कि जिस मार्ग
पर उन्हें चलना था, उस में उनको उजियाला
मिले। १३ फिर तू ने सीनै पर्वत पर
उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें
की, और उनको सीधे नियम, सच्ची
व्यवस्था, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं
दीं। १४ और उन्हें अपने पवित्र विश्राम-
दिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा
के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और
व्यवस्था दीं। १५ और उनकी भूख
मिटाने को आकाश से उन्हें भोजन दिया
और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में
से उनके लिये पानी निकाला, और उन्हें
आज्ञा दी कि जिस देश को तुम्हें देने की
मैं ने शपथ खाई है* उसके अधिकारी
होने को तुम उस में जाओ। १६ परन्तु
उन्हों ने और हमारे पुरखाओं ने अभिमान
किया, और हठीले बने और तेरी आज्ञाएं
न मानीं, १७ और आज्ञा मानने से इनकार
किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके
बीच किए थे, उनका स्मरण न किया,
वरन हठ करके यहां तक बलवा करनेवाले
बने, कि एक प्रधान ठहराया, कि अपने
दासत्व की दशा में लौटें। परन्तु तू क्षमा
करनेवाला अनुग्रहकारी और दयालु,
विलम्ब से कोप करनेवाला, और अति-
करुणामय ईश्वर है, तू ने उनको न
त्यागा। १८ वरन जब उन्हों ने बछड़ा
ढालकर कहा, कि तुम्हारा परमेश्वर जो
तुम्हें मिस्र देश से छुड़ा लाया है, वह यही
है, और तेरा बहुत तिरस्कार किया,
१९ तब भी तू जो अति दयालु है, उनको
जंगल में न त्यागा, न तो दिन को अगुआई
करनेवाला बादल का खम्भा उन पर से
हटा, और न रात को उजियाला देनेवाला
और उनका मार्ग दिखानेवाला आग का
खम्भा। २० वरन तू ने उन्हें समझाने
के लिये अपने आत्मा को जो भला है
दिया, और अपना मान उन्हें खिलाना
न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को
पानी देता रहा। २१ चालीस वर्ष तक
तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण
करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हुई,
न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके
पांव में सूजन हुई। २२ फिर तू ने राज्य
राज्य और देश देश के लोगों को उनके वश
में कर दिया, और दिशा दिशा में उनको
बांट दिया, यों वे हेशबोन के राजा
सीहोन और बाशान के राजा ओग दोनों
के देशों के अधिकारी हो गए। २३ फिर
तू ने उनकी सन्तान को आकाश के तारों
के समान बढ़ाकर उन्हें उस देश में पहुंचा
दिया, जिसके विषय तू ने उनके पूर्वजों
से कहा था, कि वे उस में जाकर उसके
अधिकारी हो जाएंगे। २४ सो यह सन्तान
जाकर उसकी अधिकारिन हो गई, और
तू ने उनके द्वारा देश के निवासी कनानियों
को दबाया, और राजाओं और देश के
लोगों समेत उनको, उनके हाथ में कर
दिया, कि वे उन से जो चाहें सो करें।
२५ और उन्हों ने गढ़वाले नगर और
उपजाऊ भूमि ले ली, और सब भांति
की अच्छी वस्तुओं से भरे हुए घरों के,
और खुदे हुए हौदों के, और दाख और
जलपाई बारियों के, और खाने के फलवाले
बहुत से वृक्षों के अधिकारी हो गए, वे
उसे खा खाकर तृप्त हुए, और हृष्ट-पुष्ट
हो गए, और तेरी बड़ी भलाई के कारण
सुख भोगते रहे॥

* मूल में—हाथ उठाया है।

२६ परन्तु वे तुझ से फिरकर बलवा
करनेवाले बन गए और तेरी व्यवस्था को
त्याग दिया, और तेरे जो नबी तेरी ओर
उन्हे फेरने के लिये उनको चिताते रहे
उनको उन्हो ने घात किया, और तेरा
बहुत तिरस्कार किया। २७ इस कारण
तू ने उनको उनके शत्रुओ के हाथ मे कर
दिया, और उन्हो ने उनको सकट मे डाल
दिया, तौभी जब जब वे सकट मे पडकर
तेरी दोहाई देते रहे तब तब तू स्वर्ग मे
उनकी सुनता रहा, और तू जो अतिदयालु
है, इसलिये उनके छुडानेवाले को भेजता
रहा जो उनको शत्रुओ के हाथ से छुडाते
थे। २८ परन्तु जब जब उनको चैन
मिला, तब तब वे फिर तेरे साम्हने बुराई
करते थे, इस कारण तू उनको शत्रुओ के
हाथ मे कर देता था, और वे उन पर प्रभुता
करते थे, तौभी जब वे फिरकर तेरी
दोहाई देते, तब तू स्वर्ग से उनकी सुनता
और तू जो दयालु है, इसलिये बार बार
उनको छुडाता, २९ और उनको चिताता
था कि उनको फिर अपनी व्यवस्था के
अधीन कर दे। परन्तु वे अभिमान करते
रहे और तेरी आज्ञाए नही मानते थे,
और तेरे नियम, जिनको यदि मनुष्य माने,
तो उनके कारण जीवित रहे, उनके विरुद्ध
पाप करते, और हठ करके अपना कन्धा
हटाते और न सुनते थे। ३० तू तो बहुत
वर्ष तक उनकी सहता रहा, और अपने
आत्मा से नबियो के द्वारा उन्हे चिताता
रहा, परन्तु वे कान नही लगाते थे, इसलिये
तू ने उन्हे देश देश के लोगो के हाथ मे कर
दिया। ३१ तौभी तू ने जो अतिदयालु
है, उनका अन्त नही कर डाला और न
उनको त्याग दिया, क्योकि तू अनुग्रहकारी
और दयालु ईश्वर है॥

३२ अब तो हे हमारे परमेश्वर!
हे महान पराक्रमी और भययोग्य ईश्वर!
जो अपनी वाचा पालता और करुणा
करता रहा है, जो बडा कष्ट, अश्शूर के
राजाओ के दिनो से ले आज के दिन तक
हमे और हमारे राजाओ, हाकिमो, याजको,
नबियो, पुरखाओ, बरन तेरी समस्त प्रजा
को भोगना पडा है, वह तेरी दृष्टि मे थोडा
न ठहरे। ३३ तौभी जो कुछ हम पर
बीता है उसके विषय तू तो धर्मी है, तू ने
तो सच्चाई से काम किया है, परन्तु हम ने
दुष्टता की है। ३४ और हमारे राजाओ
और हाकिमो, याजको और पुरखाओ ने,
न तो तेरी व्यवस्था को माना है और न
तेरी आज्ञाओ और चितौनियो की ओर
ध्यान दिया है जिन से तू ने उनको चिताया
था। ३५ उन्हो ने अपने राज्य मे, और
उस बडे कल्याण के समय जो तू ने उन्हे
दिया था, और इस लम्बे चौडे और
उपजाऊ देश मे तेरी सेवा नही की,
और न अपने बुरे कामो से पश्चाताप
किया। ३६ देख, हम आज कल दास है,
जो देश तू ने हमारे पितरो को दिया था कि
उसकी उत्तम उपज खाए, इसी मे हम
दास है। ३७ इसकी उपज से उन राजाओ
को जिन्हे तू ने हमारे पापो के कारण
हमारे ऊपर ठहराया है, बहुत धन मिलता
है, और वे हमारे शरीरो और हमारे
पशुओ पर अपनी अपनी इच्छा के अनुसार
प्रभुता जताते है, इसलिये हम बडे सकट
मे पडे है॥

३८ इस सब के कारण, हम सच्चाई
के साथ वाचा बान्धते, और लिख भी
देते है, और हमारे हाकिम, लेवीय और
याजक उस पर छाप लगाते है॥

(व्यवस्था के अनुसार चलने की वाचा का बान्धा जाना)

१० जिन्हों ने छाप लगाई वे ये
थे, अर्थात् हकल्याह का पुत्र
नहेमायाह जो अधिपति * था, और सिद-
किय्याह, २ सरायाह, अजर्याह, यिर्म-
याह, ३ पशहूर, अमर्याह, मल्किय्याह,
४ हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक, ५ हारीम,
मरेमोत, ओबद्याह, ६ दानिय्येल, गिन्न-
तोन, बारूक, ७ मशुल्लाम, अबिय्याह,
मिय्यामीन, ८ माज्याह, बिलगै और
शमायाह, ये ही तो याजक थे। ९ और
लेवी ये थे आजन्याह का पुत्र येशू,
हेनादाद की सन्तान में से बिन्नूई और
कदमीएल, १० और उनके भाई शब-
न्याह, होदिय्याह, कलीता, पलायाह,
हानान, ११ मीका, रहोब, हशब्याह,
१२ जक्कूर, शेरेब्याह, शबन्याह।
१३ होदिय्याह, बानी और बनीनू,
१४ फिर प्रजा के प्रधान ये थे परोश,
पहत्मोआब, एलाम, जत्तू, बानी,
१५ बुन्नी, अजगाद, बेबै, १६ अदो-
निय्याह, बिग्वै, आदीन, १७ आतेर,
हिजकिय्याह, अज्जूर, १८ होदिय्याह,
हाशूम, बेसै, १९ हारीफ, अनातोत,
नोबै, २० मग्पीआश, मशुल्लाम, हेजीर,
२१ मशेजबेल, सादोक, यद्दू, २२ पल-
त्याह, हानान, अनायाह, २३ होशे,
हनन्याह, हश्शूब, २४ हल्लोहेश, पिल्हा,
शोबेक, २५ रहूम, हशब्ना, मासेयाह,
२६ अहिय्याह, हानान, आनान,
२७ मल्लूक, हारीम और बाना॥
२८ शेष लोग अर्थात् याजक, लेवीय,
द्वारपाल, गवैये और नतीन लोग, निदान
जितने परमेश्वर की व्यवस्था मानने के
लिये देश देश के लोगों से अलग हुए थे,
उन सभों ने अपनी स्त्रियों और उन
बेटे-बेटियों समेत जो समझनेवाले थे,
२९ अपने भाई रईसों से मिलकर शपथ
खाई *, कि हम परमेश्वर की उस व्यवस्था
पर चलेंगे जो उसके दास मूसा के द्वारा
दी गई है, और अपने प्रभु यहोवा की सब
आज्ञाएं, नियम और विधियां मानने में
चौकसी करेंगे। ३० और हम न तो
अपनी बेटियां इस देश के लोगों को ब्याह
देंगे, और न अपने बेटों के लिये उनकी
बेटियां ब्याह लेंगे। ३१ और जब इस
देश के लोग विश्रामदिन को अन्न वा और
बिकाऊ वस्तुएं बेचने को ले आयेंगे तब
हम उन से न तो विश्रामदिन को न किसी
पवित्र दिन को कुछ लेंगे, और सातवें
वर्ष में भूमि पड़ी रहने देंगे, और अपने
अपने ऋण की वसूली छोड़ देंगे॥
३२ फिर हम लोगों ने ऐसा नियम
बान्ध लिया जिस से हम को अपने परमेश्वर
के भवन की उपासना के लिये एक एक
तिहाई शेकेल देना पड़ेगा ३३ अर्थात्
भेंट की रोटी और नित्य अन्नबलि और
नित्य होमबलि के लिये, और विश्रामदिनों
और नये चान्द और नियत पर्व्वों के
बलिदानों और और पवित्र भेंटों और
इस्राएल के प्रायश्चित्त के निमित्त पाप-
बलियों के लिये, निदान अपने परमेश्वर
के भवन के सारे काम के लिये। ३४ फिर
क्या याजक, क्या लेवीय, क्या साधारण
लोग, हम सभों ने इस बात के ठहराने के
लिये चिट्ठियां डालीं, कि अपने पितरों के

* मूल में—तिर्शाता।

* मूल में—स्राप और किरिया में प्रवेश किया।

घरानो के अनुसार प्रति वर्ष मे ठहराए
हुए समयो पर लकडी की भेंट व्यवस्था मे
लिखी हुई बात के अनुसार हम अपने
परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाने के
लिये अपने परमेश्वर के भवन मे लाया
करेंगे। ३५ और अपनी अपनी भूमि की
पहिली उपज और सब भांति के वृक्षो के
पहिले फल प्रति वर्ष यहोवा के भवन मे
ले आएंगे। ३६ और व्यवस्था मे लिखी
हुई बात के अनुसार, अपने अपने पहिलौठे
बेटो और पशुओं, अर्थात् पहिलौठे बछडों
और मेम्नो को अपने परमेश्वर के भवन
मे उन याजको के पास लाया करेंगे, जो
हमारे परमेश्वर के भवन मे सेवा टहल
करते है। ३७ और अपना पहिला गूधा
हुआ आटा, और उठाई हुई भेंटे, और
सब प्रकार के वृक्षो के फल, और नया
दाखमधु, और टटका तेल, अपने परमेश्वर
के भवन की कोठरियो मे याजको के पास,
और अपनी अपनी भूमि की उपज का
दशमाश लेवियो के पास लाया करेंगे,
क्योकि वे लेवीय है, जो हमारी खेती के
सब नगरो मे दशमाश लेते है। ३८ और
जब जब लेवीय दशमाश ले, तब तब
उनके संग हारून की सन्तान का कोई
याजक रहा करे, और लेवीय दशमाशो
का दशमाश हमारे परमेश्वर के भवन
की कोठरियो मे अर्थात् भण्डार मे
पहुचाया करेंगे। ३९ क्योकि जिन कोठ-
रियो मे पवित्र स्थान के पात्र और सेवा
टहल करनेवाले याजक और द्वारपाल और
गवैये रहते है, उन मे इस्राएली और
लेवीय, अनाज, नये दाखमधु, और टटके
तेल की उठाई हुई भेंटे पहुचाएंगे। निदान
हम अपने परमेश्वर के भवन को न
छोडेंगे॥

(यहूदा कहां कहां बस गए)

११ प्रजा के हाकिम तो यरूशलेम
मे रहते थे, और शेष लोगो ने
यह ठहराने के लिये चिट्ठियां डालीं, कि
दस में से एक मनुष्य यरूशलेम मे, जो
पवित्र नगर है, बस जाए, और नौ मनुष्य
और और नगरो मे बसे। २ और जिन्हों
ने अपनी ही इच्छा से यरूशलेम में वास
करना चाहा उन सभो को लोगो ने
आशिर्वाद दिया॥

३ उस प्रान्त के मुख्य मुख्य पुरुष जो
यरूशलेम मे रहते थे, वे ये है; (परन्तु
यहूदा के नगरो मे एक एक मनुष्य अपनी
निज भूमि मे रहता था, अर्थात् इस्राएली,
याजक, लेवीय, नतीन और सुलैमान के
दासो के सन्तान)। ४ यरूशलेम मे तो
कुछ यहूदी और बिन्यामीनी रहते थे।
यहूदियो मे से तो पेरेस के वंश का अतायाह
जो उज्जिय्याह का पुत्र था, यह जकर्याह
का पुत्र, यह अमर्याह का पुत्र, यह शपत्याह
का पुत्र, यह महललेल का पुत्र था।
५ और मासेयाह जो बारूक का पुत्र
था, यह कोलहोजे का पुत्र, यह हजायाह
का पुत्र, यह अदायाह का पुत्र, यह योयारीब
का पुत्र, यह जकर्याह का पुत्र और यह
शीलोई का पुत्र था। ६ पेरेस के वंश
के जो यरूशलेम मे रहते थे, वह सब
मिलाकर चार सौ अडसठ शूरवीर थे॥

७ और बिन्यामीनियो मे से सल्लू जो
मशुल्लाम का पुत्र था, यह योएद का पुत्र,
यह पदायाह का पुत्र, यह कोलायाह का
पुत्र, यह मासेयाह का पुत्र, यह इतीएल
का पुत्र, यह यशायाह का पुत्र था।
८ और उसके बाद गब्बै सल्लै जिनके
साथ नौ सौ अट्ठाईस पुरुष थे। ९ इनका
रखवाल जिक्री का पुत्र योएल था, और

हम्मनूआ का पुत्र यहूदा नगर के प्रधान
का नायब था ॥
१० फिर याजकों में से योयारीब का
पुत्र यदायाह और याकीन। ११ और
सरायाह जो परमेश्वर के भवन का प्रधान
और हिल्किय्याह का पुत्र था, यह मशुल्लाम
का पुत्र, यह सादोक का पुत्र, यह मरायोत
का पुत्र, यह अहीतूब का पुत्र था।
१२ और इनके आठ सौ बाईस भाई जो
उस भवन का काम करते थे, और
अदायाह, जो यरोहाम का पुत्र था, यह
पलल्याह का पुत्र, यह अम्सी का पुत्र,
यह जकर्याह का पुत्र, यह पशहूर का पुत्र,
यह मल्किय्याह का पुत्र था। १३ और
इसके दो सौ बयालीस भाई जो पितरों के
घरानों के प्रधान थे, और अमशै जो
अजरेल का पुत्र था, यह अहजै का पुत्र,
यह मशिल्लेमोत का पुत्र, यह इम्मेर का
पुत्र था। १४ और इनके एक सौ अट्ठाईस
शूरवीर भाई थे और इनका रखवाल
हग्गदोलीम का पुत्र जब्दीएल था ॥
१५ फिर लेवियों में से शमायाह जो
हश्शूब का पुत्र था, यह अज्रीकाम का पुत्र,
यह हशब्याह का पुत्र, यह बुन्नी का पुत्र
था। १६ और शब्बत और योजाबाद
मुख्य लेवियों में से परमेश्वर के भवन के
बाहरी काम पर ठहरे थे। १७ और
मत्तन्याह जो मीका का पुत्र और जब्दी
का पोता, और आसाप का परपोता था,
वह प्रार्थना में धन्यवाद करनेवालों का
मुखिया था, और बकबुक्याह अपने भाइयों
में दूसरा पद रखता था, और अब्दा
जो शम्मू का पुत्र, और गालाल का पोता,
और यदूतून का परपोता था। १८ जो
लेवीय पवित्र नगर में रहते थे, वह सब
मिलाकर दो सौ चौरासी थे ॥
१९ और अक्कूब और तल्मोन नाम
द्वारपाल और उनके भाई जो फाटकों के
रखवाले थे, एक सौ बहत्तर थे। २० और
शेष इस्राएली याजक और लेवीय, यहूदा
के सब नगरों में अपने अपने भाग पर
रहते थे। २१ और नतीन लोग ओपेल
में रहते, और नतिनों के ऊपर सीहा,
और गिश्पा ठहराए गए थे ॥
२२ और जो लेवीय यरूशलेम में रहकर
परमेश्वर के भवन के काम में लगे रहते
थे, उनका मुखिया आसाप के वंश के
गवैयों में का उज्जी था, जो बानी का पुत्र
था, यह हशब्याह का पुत्र, यह मत्तन्याह
का पुत्र और यह हशब्याह का पुत्र था।
२३ क्योंकि उनके विषय राजा की आज्ञा
थी, और गवैयों के प्रतिदिन के प्रयोजन
के अनुसार ठीक प्रबन्ध था। २४ और
प्रजा के सब काम के लिये मशेजबेल का
पुत्र पतह्याह जो यहूदा के पुत्र जेरह के
वंश में था, वह राजा के पास रहता था ॥
२५ बच गए गांव और उनके खेत,
सो कुछ यहूदी किर्यतर्बा, और उनके गांव
में, कुछ दीबोन, और उसके गांवों में,
कुछ यकब्सेल और उसके गांवों में रहते
थे। २६ फिर येशू, मोलादा, बेत्पेलेत,
२७ हसर्शूआल, और बेर्शेबा और और
उसके गांवों में, २८ और सिकलग और
मकोना और उनके गांवों में, २९ एन्रि-
म्मोन, सोरा, यर्मूत, ३० जानोह और
अदुल्लाम और उनके गांवों में, लाकीश,
और उसके खेतों में अजेका, और उसके
गांवों में वे बेर्शेबा से ले हिन्नोम की तराई
तक डेरे डाले हुए रहते थे। ३१ और
बिन्यामीनी गेबा से लेकर मिकमश, अय्या
और बेतेल और उसके गांवों में,
३२ अनातोत, नोब, अनन्याह, ३३ हासोर,

रामा, गित्तैम, ३४ हादीद, सबोईम,
नबल्लत, ३५ लोद, ओनो और कारीगरों
की तराई तक रहते थे। ३६ और कितने
लेवियों के दल यहूदा और बिन्यामीन के
प्रान्तों में बस गए॥

(याजकों और लेवियों का ब्योरा)

१२ जो याजक और लेवीय शाल-
तीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और
येशू के संग यरूशलेम को गए* थे, वे
ये थे: अर्थात् सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा,
२ अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश, ३ शकन्याह,
रहूम, मरेमोत, ४ इद्दो, गिन्नतोई, अबि-
य्याह, ५ मीय्यामीन, माद्याह, बिलगा,
६ शमायाह, योयारीब, यदायाह,
७ सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और
यदायाह। येशू के दिनों में याजकों और
उनके भाइयों के मुख्य मुख्य पुरुष, ये ही
थे॥
८ फिर ये लेवीय गए: अर्थात् येशू,
बिन्नूई, कदमीएल, शेरेब्याह, यहूदा और
वह मत्तन्याह जो अपने भाइयों समेत
धन्यवाद के काम पर ठहराया गया था।
९ और उनके भाई बकबुक्याह और उन्नो
उनके साम्हने अपनी अपनी सेवकाई में
लगे रहते थे॥
१० और येशू से योयाकीम उत्पन्न
हुआ और योयाकीम से एल्याशीब और
एल्याशीब से योयादा, ११ और योयादा
से योनातान और योनातान से यद्दू उत्पन्न
हुआ। १२ और योयाकीम के दिनों में
ये याजक अपने अपने पितरों के घराने के
मुख्य पुरुष थे, अर्थात् सरायाह का तो
मरायाह, यिर्मयाह का हनन्याह।
१३ एज्रा का मशुल्लाम, अमर्याह का
यहोहानान। १४ मल्लूकी का योना-
तान, शबन्याह का योसेप। १५ हारीम
का अदना, मरायोत का हेलकै। १६ इद्दो
का जकर्याह, गिन्नतोन का मशुल्लाम।
१७ अबिय्याह का जिक्री, मिन्यामीन के
मोअद्याह का पिल्तै। १८ बिलगा का
शम्मू, शमायाह का यहोनातान।
१९ योयारीब का मत्तनै, यदायाह का
उज्जी। २० सल्लै का कल्लै, आमोक
का एबेर। २१ हिल्किय्याह का हश-
ब्याह, और यदायाह का नतनेल॥
२२ एल्याशीब, योयादा, योहानान
और यद्दू के दिनों में लेवीय पितरों के
घरानों के मुख्य पुरुषों के नाम लिखे जाते
थे, और दारा फारसी के राज्य में याजकों
के भी नाम लिखे जाते थे। २३ जो
लेवीय पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष
थे, उनके नाम एल्याशीब के पुत्र योहानान
के दिनों तक इतिहास की पुस्तक में लिखे
जाते थे। २४ और लेवियों के मुख्य
पुरुष ये थे: अर्थात् हशब्याह, शेरेब्याह और
कदमीएल का पुत्र येशू, और उनके साम्हने
उनके भाई परमेश्वर के भक्त दाऊद की
आज्ञा के अनुसार आम्हने-साम्हने स्तुति
और धन्यवाद करने पर नियुक्त थे।
२५ मत्तन्याह, बकबुक्याह, ओबद्याह,
मशुल्लाम, तल्मोन और अक्कूब फाटकों
के पास के भण्डारों का पहरा देनेवाले
द्वारपाल थे। २६ योयाकीम के दिनों में
जो योसादाक का पोता और येशू का
पुत्र था, और नहेमायाह अधिपति और
एज्रा याजक और शास्त्री के दिनों में ये
ही थे॥

(यरूशलेम की शहरपनाह की प्रतिष्ठा)

२७ और यरूशलेम की शहरपनाह की
प्रतिष्ठा के समय लेवीय अपने सब स्थानों

* मूल में—चढ़ गए।

मे ढूंढे गए, कि यरूशलेम को पहुंचाए जाए,
जिस से आनन्द और धन्यवाद करके और
झांझ, सारंगी और वीणा बजाकर, और
गाकर उसकी प्रतिष्ठा करें। २८ तो
गवैयो के सन्तान यरूशलेम के चारो ओर
के देश मे और नतोपातियो के गावो मे,
२९ और बेतगिलगाल मे, और गेबा और
अज्मावेत के खेतो मे इकट्ठे हुए, क्योंकि
गवैयो ने यरूशलेम के आस-पास गाव
बसा लिये थे। ३० तब याजको और
लेवियो ने अपने अपने को शुद्ध किया,
और उन्हो ने प्रजा को, और फाटको और
शहरपनाह को भी शुद्ध किया ॥

३१ तब मै ने यहूदी हाकिमो को
शहरपनाह पर चढाकर दो बडे दल
ठहराए, जो धन्यवाद करते हुए धूमधाम के
साथ चलते थे। इनमें से एक दल तो
दक्खिन ओर, अर्थात् कूडाफाटक की ओर
शहरपनाह के ऊपर ऊपर मे चला,
३२ और उसके पीछे पीछे ये चले, अर्थात्
होशायाह और यहूदा के आधे हाकिम,
३३ और अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम,
३४ यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और
यिर्मयाह, ३५ और याजको के कितने
पुत्र तुरहियां लिये हुए अर्थात् जकर्याह
जो योनातान का पुत्र था, यह शमायाह
का पुत्र, यह मत्तन्याह का पुत्र, यह
मीकायाह का पुत्र, यह जक्कूर का पुत्र,
यह आसाप का पुत्र था। ३६ और उसके
भाई शमायाह, अजरेल, मिललै, गिललै,
माऐ, नतनेल, यहूदा और हनानी परमेश्वर
के भक्त दाऊद के बाजे लिये हुए थे,
और उनके आगे आगे एज्रा शास्त्री चला।
३७ ये सोताफाटक से हो सीधे दाऊदपुर
की सीढी पर चढ, शहरपनाह की ऊंचाई
पर से चलकर, दाऊद के भवन के ऊपर
से होकर, पूरब की ओर जलफाटक तक
पहुंचे ॥

३८ और धन्यवाद करने और धूमधाम
से चलनेवालो का दूसरा दल, और उनके
पीछे पीछे मै, और आधे लोग उन से
मिलने को शहरपनाह के ऊपर ऊपर से
भट्ठो के गुम्मट के पास से चौडी शहरपनाह
तक। ३९ और एप्रैम के फाटक और
पुराने फाटक, और मछलीफाटक, और
हननेल के गुम्मट, और हम्मेआ नाम गुम्मट
के पास से होकर भेड फाटक तक चले,
और पहरुओ के फाटक के पास खडे
हो गए। ४० तब धन्यवाद करनेवालो के
दोनो दल और मै और मेरे साथ आधे
हाकिम परमेश्वर के भवन में खडे हो
गए। ४१ और एल्याकीम, मासेयाह,
मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह
और हनन्याह नाम याजक तुरहियां लिये
हुए थे। ४२ और मासेयाह, शमायाह,
एलीआजर, उज्जी, यहोहानान, मल्कि-
य्याह, एलाम, और एजेर (खडे हुए थे)
और गवैये जिनका मुखिया यिज्रह्याह था,
वह ऊंचे स्वर से गाते बजाते रहे।
४३ उसी दिन लोगों ने बडे बडे मेलबलि
चढाए, और आनन्द किया, क्योंकि पर-
मेश्वर ने उनको बहुत ही आनन्दित किया
था, स्त्रियो ने और बालबच्चो ने भी
आनन्द किया। और यरूशलेम के आनन्द
की ध्वनि दूर दूर तक फैल गई ॥

(उपासना आदि का प्रबन्ध)

४४ उसी दिन खजानो के, उठाई हुई
भेंटो के, पहिली पहिली उपज के, और
दशमांशो की कोठरियो के अधिकारी
ठहराए गए, कि उन में नगर नगर के
खेतो के अनुसार उन वस्तुओ को जमा

करे, जो व्यवस्था के अनुसार याजकों और
लेवियों के भाग में की थी, क्योंकि यहूदी
उपस्थित याजकों और लेवियों के कारण
आनन्दित थे। ४५ इसलिये वे अपने
परमेश्वर के काम और शुद्धता के विषय
चौकसी करते रहे, और गवैये और
द्वारपाल भी दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान
की आज्ञा के अनुसार वैसा ही करते रहे।
४६ प्राचीनकाल, अर्थात् दाऊद और
आसाप के दिनों में तो गवैयों के प्रधान
थे, और परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद
के गीत गाए जाते थे। ४७ और जरुब्बा-
बेल और नहेमायाह के दिनों में सारे
इस्राएली, गवैयों और द्वारपालों के प्रतिदिन
का भाग देते रहे, और वे लेवियों के
अंश पवित्र करके देते थे, और लेवीय
हारून की सन्तान के अंश पवित्र करके
देते थे॥

(कुरीतियों का सुधारा जाना)

१३ उसी दिन मूसा की पुस्तक
लोगों को पढ़कर सुनाई गई, और
उस में यह लिखा हुआ मिला, कि कोई
अम्मोनी वा मोआबी परमेश्वर की सभा
में कभी न आने पाए, २ क्योंकि उन्हों
ने अन्न जल लेकर इस्राएलियों से भेंट नहीं
की, वरन बिलाम को उन्हें शाप देने के
लिये दक्षिणा देकर बुलवाया था—तौभी
हमारे परमेश्वर ने उस शाप को आशीष से
बदल दिया। ३ यह व्यवस्था सुनकर,
उन्हों ने इस्राएल में से मिली जुली भीड़
को अलग अलग कर दिया॥

४ इस से पहिले एल्याशीब याजक जो
हमारे परमेश्वर के भवन की कोठरियों का
अधिकारी और तोबिय्याह का सम्बन्धी
था। ५ उस ने तोबिय्याह के लिये एक
बड़ी कोठरी तैयार की थी जिस में पहिले
अन्नबलि का सामान और लोबान और
पात्र और अनाज, नये दाखमधु और टटके
तेल के दशमांश, जिन्हें लेवियों, गवैयों
और द्वारपालों को देने की आज्ञा थी,
रखी हुई थी, और याजकों के लिये उठाई
हुई भेंट भी रखी जाती थी। ६ परन्तु
मैं इस समय यरूशलेम में नहीं था, क्योंकि
बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के बत्तीसवें वर्ष
में मैं राजा के पास चला गया। फिर
कितने दिनों के बाद राजा से छुट्टी मांगी,
७ और मैं यरूशलेम को आया, तब मैं ने
जान लिया, कि एल्याशीब ने तोबिय्याह
के लिये परमेश्वर के भवन के आंगनों
में एक कोठरी तैयार कर, क्या ही बुराई
की है। ८ इसे मैं ने बहुत बुरा माना,
और तोबिय्याह का सारा घरेलू सामान
उस कोठरी में से फेंक दिया। ९ तब मेरी
आज्ञा से वे कोठरियां शुद्ध की गईं, और
मैं ने परमेश्वर के भवन के पात्र और
अन्नबलि का सामान और लोबान उन में
फिर से रखवा दिया॥

१० फिर मुझे मालूम हुआ कि लेवियों
का भाग उन्हें नहीं दिया गया है, और
इस कारण काम करनेवाले लेवीय और
गवैये अपने अपने खेत को भाग गए हैं।
११ तब मैं ने हाकिमों को डांटकर कहा,
परमेश्वर का भवन क्यों त्यागा गया है?
फिर मैं ने उनको इकट्ठा करके, एक एक
को उसके स्थान पर नियुक्त किया।
१२ तब से सब यहूदी अनाज, नये दाखमधु
और टटके तेल के दशमांश भण्डारों में
लाने लगे। १३ और मैं ने भण्डारों के
अधिकारी शेलेम्याह याजक और सादोक
मुंशी को, और लेवियों में से पदायाह को,
और उनके नीचे हानान को, जो मत्तन्याह

का पोता और जक्कूर का पुत्र था, नियुक्त
किया, वे तो विश्वासयोग्य गिने जाते थे,
और अपने भाइयों के मध्य बांटना उनका
काम था। १४ हे मेरे परमेश्वर! मेरा
यह काम मेरे हित के लिये स्मरण रख,
और जो जो सुकर्म मैं ने अपने परमेश्वर
के भवन और उस में की आराधना के
विषय किए हैं उन्हें मिटा न डाल॥

१५ उन्ही दिनो मे मै ने यहूदा मे
कितनो को देखा जो विश्रामदिन को हौदो
में दाख रौंदते, और पूलियो को ले आते,
और गदहो पर लादते थे, वैसे ही वे
दाखमधु, दाख, अंजीर और भांति भांति
के बोझ विश्रामदिन को यरूशलेम मे लाते
थे, तब जिस दिन वे भोजनवस्तु बेचते
थे, उसी दिन मै ने उनको चिता दिया।
१६ फिर उस में सोरी लोग रहकर मछली
और भांति भांति का सौदा ले आकर,
यहूदियों के हाथ यरूशलेम मे विश्रामदिन
को बेचा करते थे। १७ तब मै ने यहूदा
के रईसो को डांटकर कहा, तुम लोग यह
क्या बुराई करते हो, जो विश्रामदिन को
अपवित्र करते हो? १८ क्या तुम्हारे
पुरखा ऐसा नही करते थे? और क्या
हमारे परमेश्वर ने यह सब विपत्ति हम
पर और इस नगर पर न डाली? तौभी
तुम विश्रामदिन को अपवित्र करने से
इस्राएल पर परमेश्वर का क्रोध और भी
भड़काते जाते हो॥

१९ सो जब विश्रामवार के पहिले दिन
को यरूशलेम के फाटको के आस-पास
अन्धेरा होने लगा, तब मैं ने आज्ञा दी,
कि उनके पल्ले बन्द किए जाए, और
यह भी आज्ञा दी, कि वे विश्रामवार के
पूरे होने तक खोले न जाए। तब मैं ने
अपने कितने सेवको को फाटको का अधि-
कारी ठहरा दिया, कि विश्रामवार को
कोई बोझ भीतर आने न पाए। २० इस-
लिये व्योपारी और भांति भांति के सौदे
के बेचनेवाले यरूशलेम के बाहर दो एक
बेर टिके। २१ तब मैं ने उनको चिताकर
कहा, तुम लोग शहरपनाह के साम्हने
क्यो टिकते हो? यदि तुम फिर ऐसा
करोगे तो मैं तुम पर हाथ बढ़ाऊंगा।
इसलिये उस समय से वे फिर विश्रामवार
को नही आए। २२ तब मैं ने लेवियो
को आज्ञा दी, कि अपने अपने को शुद्ध करके
फाटको की रखवाली करने के लिये आया
करो, ताकि विश्रामदिन पवित्र माना जाए।
हे मेरे परमेश्वर! मेरे हित के लिये यह
भी स्मरण रख और अपनी बड़ी करुणा
के अनुसार मुझ पर तरस खा॥

२३ फिर उन्ही दिनो मे मुझ को ऐसे
यहूदी दिखाई पड़े, जिन्हो ने अशदोदी,
अम्मोनी और मोआबी स्त्रियां ब्याह ली
थी। २४ और उनके लड़केबालो की
आधी बोली अशदोदी थी, और वे यहूदी
बोली न बोल सकते थे, दोनो जाति की
बोली बोलते थे। २५ तब मैं ने उनको
डांटा और कोसा, और उन मे से कितनो
को पिटवा दिया और उनके बाल
नुचवाए, और उनको परमेश्वर की यह
शपथ खिलाई, कि हम अपनी बेटियां
उनके बेटो के साथ ब्याह मे न देंगे और न
अपने लिये वा अपने बेटो के लिये उनकी
बेटियां ब्याह मे लेगे। २६ क्या इस्राएल
का राजा सुलैमान इसी प्रकार के पाप मे
न फंसा था? बहुतेरी जातियो मे उसके
तुल्य कोई राजा नही हुआ, और वह अपने
परमेश्वर का प्रिय भी था, और परमेश्वर
ने उसे सारे इस्राएल के ऊपर राजा नियुक्त

किया, परन्तु उसको भी अन्यजाति स्त्रियो
ने पाप मे फसाया। २७ तो क्या हम
तुम्हारी सुनकर, ऐसी बडी बुराई करे कि
अन्यजाति की स्त्रिया व्याह कर अपने
परमेश्वर के विरुद्ध पाप करे?

२८ और एल्याशीव महायाजक के पुत्र
योयादा का एक पुत्र, होरोनी सम्बल्लत
का दामाद था, इसलिये मै ने उसको अपने
पास से भगा दिया। २९ हे मेरे परमेश्वर
उनकी हानि के लिये याजकपद और
याजकों और लेवियो की वाचा का तोडा
जाना स्मरण रख॥

३० इस प्रकार मै ने उनको सब
अन्यजातियो से शुद्ध किया, और एक एक
याजक और लेवीय की वारी और काम
ठहरा दिया। ३१ फिर मै ने लकडी
की भेट ले आने के विशेष समय ठहरा
दिए, और पहिली पहिली उपज के देने
का प्रवन्ध भी किया। हे मेरे परमेश्वर!
मेरे हित के लिये मुझे स्मरण कर॥

एस्तेर

(क्षयर्ष की जेवनार के समय वश्ती का
पटरानी के पद से उतारा जाना)

१ क्षयर्ष नाम राजा के दिनो मे ये
वाते हुई यह वही क्षयर्ष है, जो एक
सौ सताईस प्रान्तो पर, अर्थात् हिन्दुस्तान
से लेकर कूश देश तक राज्य करता था।
२ उन्ही दिनो मे जव क्षयर्ष राजा अपनी
उस राजगद्दी पर विराजमान था जो शूशन
नाम राजगढ मे थी। ३ वहा उस ने
अपने राज्य के तीसरे वर्ष मे अपने सव
हाकिमो और कर्मचारियो की जेवनार
की। फारस और मादै के सेनापति और
प्रान्त-प्रान्त के प्रधान और हाकिम उसके
सम्मुख आ गए। ४ और वह उन्हें वहुत
दिन वरन एक सौ अस्सी दिन तक अपने
राजविभव का धन और अपने माहात्म्य के
अनमोल पदार्थ दिखाता रहा। ५ इतने
दिनो के वीतने पर राजा ने क्या छोटे
क्या वडे उन सभो की भी जो शूशन नाम
राजगढ मे इकट्ठे हुए थे, राजभवन की
वारी के आगन मे सात दिन तक जेवनार
की। ६ वहा के पर्दे श्वेत और नीले सूत
के थे, और सन और वैजनी रग की डोरियो
से चान्दी के छल्लो मे, सगमर्मर के खम्भो
से लगे हुए थे, और वहा की चौकिया
सोने-चान्दी की थी, और लाल और श्वेत
और पीले और काले सगमर्मर के वने हुए
फर्श पर धरी हुई थी। ७ उस जेवनार
मे राजा के योग्य दाखमधु भिन्न भिन्न रूप
के सोने के पात्रो मे डालकर राजा की
उदारता से वहुतायत के साथ पिलाया
जाना था। ८ पीना तो नियम के अनुसार
होता था, किसी को वरवस नही पिलाया
जाता था, क्योकि राजा ने तो अपने
भवन के सव भण्डारियो को आज्ञा दी
थी, कि जो पाहुन जैसा चाहे उसके साथ

वैसा ही वर्ताव करना। ९ रानी वशती ने भी राजा क्षयर्ष के भवन में स्त्रियों की जेवनार की॥

१० सातवें दिन, जब राजा का मन दाखमधु में मग्न था, तब उस ने महूमान, विजता, हर्बोना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस नाम सातों खोजों को जो क्षयर्ष राजा के सम्मुख सेवा टहल किया करते थे, आज्ञा दी, ११ कि रानी वशती को राजमुकुट धारण किए हुए राजा के सम्मुख ले आओ, जिस से कि देश देश के लोगों और हाकिमों पर उसकी सुन्दरता प्रगट हो जाए, क्योंकि वह देखने में सुन्दर थी। १२ खोजों के द्वारा राजा की यह आज्ञा पाकर रानी वशती ने आने से इनकार किया। इस पर राजा बड़े क्रोध से जलने लगा॥

१३ तब राजा ने समय समय का भेद जाननेवाले पण्डितों से पूछा (राजा तो नीति और न्याय के सब ज्ञानियों से ऐसा ही किया करता था। १४ और उसके पास कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना, और ममूकान नाम फारस, और मादै के सातों खोजे थे, जो राजा का दर्शन करते, और राज्य में मुख्य मुख्य पदों पर नियुक्त किए गए थे।) १५ राजा ने पूछा कि रानी वशती ने राजा क्षयर्ष की खोजों द्वारा दिलाई हुई आज्ञा का उलंघन किया, तो नीति के अनुसार उसके साथ क्या किया जाए? १६ तब ममूकान ने राजा और हाकिमों की उपस्थिति में उत्तर दिया, रानी वशती ने जो अनुचित काम किया है, वह न केवल राजा से परन्तु सब हाकिमों से और उन सब देशों के लोगों से भी जो राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में रहते हैं। १७ क्योंकि रानी के इस काम की चर्चा सब स्त्रियों में होगी और जब यह कहा जाएगा, कि राजा क्षयर्ष ने रानी वशती को अपने साम्हने ले आने की आज्ञा दी परन्तु वह न आई, तब वे भी अपने अपने पति को तुच्छ जानने लगेंगी। १८ और आज के दिन फारसी और मादी हाकिमों की स्त्रियां जिन्हों ने रानी की यह बात सुनी है तो वे भी राजा के सब हाकिमों से ऐसा ही कहने लगेंगी, इस प्रकार बहुत ही घृणा और क्रोध उत्पन्न होगा। १९ यदि राजा को स्वीकार हो, तो यह आज्ञा निकाले, और फारसियों और मादियों के कानून में लिखी भी जाए, जिस से कभी बदल न सके, कि रानी वशती राजा क्षयर्ष के सम्मुख फिर कभी आने न पाए, और राजा पटरानी का पद किसी दूसरी को दे दे जो उस से अच्छी हो। २० और जब राजा की यह आज्ञा उसके सारे राज्य में सुनाई जाएगी, तब सब पत्नियां छोटे, बड़े, अपने अपने पति का आदरमान करती रहेंगी। २१ यह बात राजा और हाकिमों को पसन्द आई और राजा ने ममूकान की सम्मति मान ली और अपने राज्य में, २२ अर्थात् प्रत्येक प्रान्त के अक्षरों में और प्रत्येक जाति की भाषा में चिट्ठियां भेजीं, कि सब पुरुष अपने अपने घर में अधिकार चलाएं, और अपनी जाति की भाषा बोला करें॥

(एस्तेर का पटरानी बन जाना)

२ इन बातों के बाद जब राजा क्षयर्ष की जलजलाहट ठंडी हो गई, तब उस ने रानी वशती की, और जो काम उस ने किया था, और जो उसके विषय में आज्ञा निकली थी उसकी भी सुधि ली। २ तब राजा के सेवक जो उसके

टहलुए थे, कहने लगे, राजा के लिये सुन्दर
तथा युवती कुवारिया ढूढी जाए। ३ और
राजा ने अपने राज्य के सब प्रान्तो मे
लोगो को इसलिये नियुक्त किया कि वे
सब सुन्दर युवती कुवारियो को शूशन
गढ के रनवास मे इकट्ठा करे और स्त्रियो
के रखवाले हेगे को जो राजा का खोजा
था सौप दे, और शुद्ध करने के योग्य
वस्तुए उन्हे दी जाए। ४ तव उन मे
से जो कुवारी राजा की दृष्टि मे उत्तम
ठहरे, वह रानी वशती के स्थान पर पटरानी
बनाई जाए। यह बात राजा को पसन्द
आई और उस ने ऐसा ही किया ॥

५ शूशन गढ मे मोर्दकै नाम एक
यहूदी रहता था, जो कीश नाम के एक
बिन्यामीनी का परपोता, शिमी का पोता,
और याईर का पुत्र था। ६ वह उन
बन्धुओ के साथ यरूशलेम से बन्धुआई
मे गया था, जिन्हे बाबेल का राजा
नबूकदनेस्सर, यहूदा के राजा यकोन्याह
के सग बन्धुआ करके ले गया था। ७ उस
ने हदस्सा नाम अपनी चचेरी बहिन को,
जो एस्तेर भी कहलाती थी, पाला-पोसा
था, क्योकि उसके माता-पिता कोई न
थे, और वह लडकी सुन्दर और रूपवती
थी, और जब उसके माता-पिता मर गए,
तब मोर्दकै ने उसको अपनी बेटी करके
पाला। ८ जब राजा की आज्ञा और
नियम सुनाए गए, और बहुत सी युवती
स्त्रिया, शूशन गढ मे हेगे के अधिकार मे
इकट्ठी की गई, तब एस्तेर भी राजभवन
मे स्त्रियो के रखवाले हेगे के अधिकार मे
सौंपी गई। ९ और वह युवती स्त्री उसकी
दृष्टि मे अच्छी लगी, और वह उस से
प्रसन्न हुआ, तब उस ने बिना विलम्ब उसे
राजभवन मे से शुद्ध करने की वस्तुए,
और उसका भोजन, और उसके लिये चुनी
हुई सात सहेलिया भी दी, और उसको
और उसकी सहेलियों को रनवास मे सब
से अच्छा रहने का स्थान दिया।
१० एस्तेर ने न अपनी जाति बताई थी,
न अपना कुल, क्योकि मोर्दकै ने उसको
आज्ञा दी थी, कि उसे न बताना।
११ मोर्दकै तो प्रतिदिन रनवास के
आगन के साम्हने टहलता था ताकि जाने
की एस्तेर कैसी है और उसके साथ क्या
होगा? १२ जब एक एक कन्या की
बारी हुई, कि वह क्षयर्ष राजा के पास
जाए, (और यह उस समय हुआ जब
उसके साथ स्त्रियो के लिये ठहराए हुए
नियम के अनुसार बारह माह तक व्यवहार
किया गया था, अर्थात् उनके शुद्ध करने
के दिन इस रीति से बीत गए, कि छः
माह तक गन्धरस का तेल लगाया जाता
था, और छः माह तक सुगन्धद्रव्य, और
स्त्रियो के शुद्ध करने का और और सामान
लगाया जाता था)। १३ इस प्रकार से
वह कन्या जब राजा के पास जाती
थी, तब जो कुछ वह चाहती कि रनवास
से राजभवन मे ले जाए, वह उसको दिया
जाता था। १४ साझ को तो वह जाती
थी और बिहान को वह लौटकर रनवास
के दूसरे घर मे जाकर रखेलियो के रखवाले
राजा के खोजे शाशगज के अधिकार में
हो जाती थी, और राजा के पास फिर
नही जाती थी। और यदि राजा उस से
प्रसन्न हो जाता था, तब वह नाम लेकर
बुलाई जाती थी ॥

१५ जब मोर्दकै के चाचा अबीहैल की
बेटी एस्तेर, जिसको मोर्दकै ने बेटी मानकर
रखा था, उसकी बारी आई कि राजा के
पास जाए, तब जो कुछ स्त्रियो के रखवाले

राजा के खोजे हेगे ने उसके लिये ठहराया
था, उस से अधिक उस ने और कुछ न
मांगा। और जितनों ने एस्तेर को देखा,
वे सब उस से प्रसन्न हुए। १६ यों एस्तेर
राजभवन में राजा क्षयर्ष के पास उसके
राज्य के सातवें वर्ष के तेबेत नाम दसवें
महीने में पहुंचाई गई। १७ और राजा
ने एस्तेर को और सब स्त्रियों से अधिक
प्यार किया, और और सब कुंवारियों से
अधिक उसके अनुग्रह और कृपा की दृष्टि
उसी पर हुई, इस कारण उस ने उसके
सिर पर राजमुकुट रखा और उसको वशती
के स्थान पर रानी बनाया। १८ तब राजा
ने अपने सब हाकिमों और कर्मचारियों
की बड़ी जेवनार करके, उसे एस्तेर की
जेवनार कहा, और प्रान्तों में छुट्टी दिलाई,
और अपनी उदारता के योग्य इनाम भी
बांटे॥

१९ जब कुंवारियां दूसरी बार इकट्ठी
की गईं, तब मोर्दकै राजभवन के फाटक
में बैठा था। २० और एस्तेर ने अपनी
जाति और कुल का पता नहीं दिया था,
क्योंकि मोर्दकै ने उसको ऐसी आज्ञा दी
थी कि न बताए, और एस्तेर मोर्दकै की
बात ऐसी मानती थी जैसे कि उसके यहां
अपने पालन पोषण के समय मानती थी।
२१ उन्हीं दिनों में जब मोर्दकै राजा के
राजभवन के फाटक में बैठा करता था, तब
राजा के खोजे जो द्वारपाल भी थे, उन में
से बिकतान और तेरेश नाम दो जनों ने
राजा क्षयर्ष से रूठकर उस पर हाथ चलाने
की युक्ति की। २२ यह बात मोर्दकै को
मालूम हुई, और उस ने एस्तेर रानी को
यह बात बताई, और एस्तेर ने मोर्दकै का
नाम लेकर राजा को चितौनी दी।
२३ तब जांच पड़ताल होने पर यह बात
सच निकली और वे दोनों वृक्ष पर लटका
दिए गए, और यह वृत्तान्त राजा के साम्हने
इतिहास की पुस्तक में लिख लिया गया॥

(हामान के द्रोह के कारण यहूदियों को
सत्यानाश करने की आज्ञा का
दिया जाना)

३ इन बातों के बाद राजा क्षयर्ष ने
अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान
को उच्च पद दिया, और उसको महत्व देकर
उसके लिये उसके साथी हाकिमों के
सिंहासनों से ऊंचा सिंहासन ठहराया।
२ और राजा के सब कर्मचारी जो
राजभवन के फाटक में रहा करते थे, वे
हामान के साम्हने झुककर दण्डवत किया
करते थे क्योंकि राजा ने उसके विषय
ऐसी ही आज्ञा दी थी, परन्तु मोर्दकै न तो
झुकता था और न उसको दण्डवत करता
था। ३ तब राजा के कर्मचारी जो
राजभवन के फाटक में रहा करते थे,
उन्हों ने मोर्दकै से पूछा, ४ तू राजा की
आज्ञा क्यों उल्लंघन करता है? जब वे
उस से प्रतिदिन ऐसा ही कहते रहे, और
उस ने उनकी एक न मानी, तब उन्हों ने
यह देखने की इच्छा से कि मोर्दकै की
यह बात चलेगी कि नहीं, हामान को
बता दिया, उस ने तो उनको *बता दिया*
था कि मैं यहूदी हूं। ५ जब हामान ने
देखा, कि मोर्दकै नहीं झुकता, और न
मुझ को दण्डवत करता है, तब हामान
बहुत ही क्रोधित हुआ। ६ उस ने केवल
मोर्दकै पर हाथ चलाना अपनी मर्यादा के
नीचे जाना। क्योंकि उन्हों ने हामान को
यह बता दिया था, कि मोर्दकै किस जाति
का है, इसलिये हामान ने क्षयर्ष के साम्राज्य
में रहनेवाले सारे यहूदियों को भी मोर्दकै

की जाति जानकर, विनाश कर डालने की युक्ति निकाली ॥

७ राजा क्षयर्ष के बारहवे वर्ष के नीसान नाम पहिले महीने मे, हामान ने अदार नाम बारहवे महीने तक के एक एक दिन और एक एक महीने के लिये "पूर" अर्थात् चिट्ठी अपने साम्हने डलवाई। ८ और हामान ने राजा क्षयर्ष से कहा, तेरे राज्य के सब प्रान्तो मे रहनेवाले देश देश के लोगो के मध्य मे तितर बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगो के नियमो से भिन्न है, और वे राजा के कानून पर नही चलते, इसलिये उन्हे रहने देना राजा को लाभदायक नही है। ९ यदि राजा को स्वीकार हो तो उन्हे नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मै राज के भण्डारियो के हाथ मे राजभण्डार मे पहुचाने के लिये, दस हजार किक्कार चान्दी दूगा। १० तब राजा ने अपनी अगूठी अपने हाथ से उतारकर अगागी हम्मदाता के पुत्र हामान को, जो यहूदियो का बैरी था दे दी। ११ और राजा ने हामान से कहा, ह चान्दी तुझे दी गई है, और वे लोग ी, ताकि तू उन से जैसा तेरा जी चाहे ीसा ही व्यवहार करे ॥

१२ यो उसी पहिले महीने के तेरहवे दिन को राजा के लेखक बुलाए गए, और हामान की आज्ञा के अनुसार राजा के सब अधिपतियो, और सब प्रान्तो के प्रधानो, और देश देश के लोगो के हाकिमो के लिये चिट्ठिया, एक एक प्रान्त के अक्षरो में, और एक एक देश के लोगो की भाषा में राजा क्षयर्ष के नाम मे लिखी गई, और उन में राजा की अगूठी की छाप लगाई गई। १३ और राज्य के सब प्रान्तों मे इस आशय की चिट्ठिया हर डाकियो के द्वारा भेजी गई कि एक ही दिन मे, अर्थात् अदार नाम बारहवे महीने के तेरहवे दिन को, क्या जवान, क्या बूढा, क्या स्त्री, क्या बालक, सब यहूदी विध्वसघात और नाश किए जाए, और उनकी धन सम्पत्ति लूट ली जाए। १४ उस आज्ञा के लेख की नकले सब प्रान्तो मे खुली हुई भेजी गई कि सब देशो के लोग उस दिन के लिये तैयार हो जाए। १५ यह आज्ञा शूशन गढ मे दी गई, और डाकिए राजा की आज्ञा से तुरन्त निकल गए। और राजा और हामान तो जेवनार मे बैठ गए, परन्तु शूशन नगर मे घबराहट फैल गई ॥

(मोर्दकै एस्तेर को बिनती करने के लिये उसकाता है)

४ जब मोर्दकै ने जान लिया कि क्या क्या किया गया है तब मोर्दकै वस्त्र फाड, टाट पहिन, राख डालकर, नगर के मध्य जाकर ऊचे और दुखभरे शब्द से चिल्लाने लगा, २ और वह राजभवन के फाटक के साम्हने पहुचा, परन्तु टाट पहिने हुए राजभवन के फाटक के भीतर तो किसी के जाने की आज्ञा न थी। ३ और एक एक प्रान्त मे, जहा जहा राजा की आज्ञा और नियम पहुचा, वहा वहा यहूदी बडा विलाप करने और उपवास करने और रोने पीटने लगे, वरन बहुतेरे टाट पहिने और राख डाले हुए पडे रहे ॥

४ और एस्तेर रानी की सहेलियो और खोजो ने जाकर उसको बता दिया, तब रानी शोक मे भर गई*, और मोर्दकै के

* मूल में—पीड़ा से ऐठ गई।

पास वस्त्र भेजकर यह कहलाया कि टाट
उतारकर इन्हें पहिन ले, परन्तु उस ने
उन्हें न लिया। ५ तब एस्तेर ने राजा
के खोजों में से हताक को जिसे राजा ने
उसके पास रहने को ठहराया था, बुलवाकर
आज्ञा दी, कि मोर्दकै के पास जाकर मालूम
कर ले, कि क्या बात है और इसका क्या
कारण है। ६ तब हताक नगर के उस
चौक में, जो राजभवन के फाटक के
साम्हने था, मोर्दकै के पास निकल गया।
७ मोर्दकै ने उसको सब कुछ बता दिया
कि मेरे ऊपर क्या क्या बीता है, और
हामान ने यहूदियों के नाश करने की
अनुमति पाने के लिये राजभण्डार में
कितनी चान्दी भर देने का वचन दिया है,
यह भी ठीक ठीक बतला दिया। ८ फिर
यहूदियों को विनाश करने की जो आज्ञा
शूशन में दी गई थी, उसकी एक नकल भी
उस ने हताक के हाथ में, एस्तेर को
दिखाने के लिये दी, और उसे सब हाल
बताने, और यह आज्ञा देने को कहा, कि
भीतर राजा के पास जाकर अपने लोगों
के लिये गिड़गिड़ाकर बिनती करे। ९ तब
हताक ने एस्तेर के पास जाकर मोर्दकै
की बातें कह सुनाईं। १० तब एस्तेर
ने हताक को मोर्दकै से यह कहने की आज्ञा
दी, ११ कि राजा के सब कर्मचारियों,
वरन राजा के प्रान्तों के सब लोगों को
भी मालूम है, कि क्या पुरुष क्या स्त्री
कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए
भीतरी आंगन में राजा के पास जाएगा
उसके मार डालने ही की आज्ञा है, केवल
जिसकी ओर राजा सोने का राजदण्ड
बढ़ाए वही बचता है। परन्तु मैं अब तीस
दिन से राजा के पास नहीं बुलाई गई हूं।
१२ एस्तेर की ये बातें मोर्दकै को सुनाई
गईं। १३ तब मोर्दकै ने एस्तेर के पास
यह कहला भेजा, कि तू मन ही मन यह
विचार न कर, कि मैं ही राजभवन में
रहने के कारण और सब यहूदियों में
से बची रहूंगी। १४ क्योंकि जो तू इस
समय चुपचाप रहे, तो और किसी न
किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और
उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता
के घराने समेत नाश होगी। फिर
क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के
लिये राजपद मिल गया हो? १५ तब
एस्तेर ने मोर्दकै के पास यह कहला भेजा,
१६ कि तू जाकर शूशन के सब यहूदियों
को इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर
मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात
न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ।
और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी
रीति उपवास करूंगी। और ऐसी ही
दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास
भीतर जाऊंगी, और यदि नाश हो गई तो
हो गई। १७ तब मोर्दकै चला गया और
एस्तेर की आज्ञा के अनुसार ही उस ने
किया॥

५ तीसरे दिन एस्तेर अपने राजकीय
वस्त्र पहिनकर राजभवन के भीतरी
आंगन में जाकर, राजभवन के साम्हने
खड़ी हो गई। राजा तो राजभवन में
राजगद्दी पर भवन के द्वार के साम्हने
विराजमान था, २ और जब राजा ने
एस्तेर रानी को आंगन में खड़ी हुई देखा,
तब उस से प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड
जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया।
तब एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की
नोक छुई। ३ तब राजा ने उस से पूछा,
हे एस्तेर रानी, तुझे क्या चाहिये? और

हानि भर न सकता। ५ तव राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से पूछा, वह कौन है? और कहा है जिस ने ऐसा करने की मनसा की है? ६ एस्तेर ने उत्तर दिया है कि वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है। तव हामान राजा-रानी के साम्हने भयभीत हो गया। ७ राजा तो जलजलाहट में आ, मधु पीन से उठकर, राजभवन की वारी में निकल गया, और हामान यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठानी होगी, एस्तेर रानी से प्राणदान मागने को खडा हुआ। ८ जव राजा राजभवन की वारी से दाखमधु पीने के स्थान में लौट आया तव क्या देखा, कि हामान उसी चौकी पर जिस पर एस्तेर वैठी है पडा है, और राजा ने कहा, क्या यह घर ही में मेरे साम्हने ही रानी से वरवस करना चाहता है? राजा के मुह से यह वचन निकला ही था, कि सेवको ने हामान का मुह ढाप दिया। ९ तव राजा के साम्हने उपस्थित रहनेवाले खोजो में से हर्वोना नाम एक ने राजा से कहा, हामान के यहा पचास हाथ ऊचा फासी का एक खम्भा खड़ा है, जो उस ने मोर्दकै के लिये वनवाया है, जिस ने राजा के हित की वात कही थी। राजा ने कहा, उसको उसी पर लटका दो। १० तव हामान उसी खम्भे पर जो उस ने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया। इस पर राजा की जलजलाहट ठंडी होगई॥

(यहूदियों को अपने शत्रुओं के घात करने की अनुमति मिलनी)

८ उसी दिन राजा क्षयर्ष ने यहूदियो के विरोधी हामान का घरवार एस्तेर रानी को दे दिया। और मोर्दकै राजा के साम्हने आया, क्योंकि एस्तेर ने राजा को वताया था, कि उस से उसका क्या नाता था। २ तव राजा ने अपनी वह अगूठी जो उस ने हामान से ले ली थी, उतार कर, मोर्दकै को दे दी। और एस्तेर ने मोर्दकै को हामान के घरवार पर अधिकारी नियुक्त कर दिया॥

३ फिर एस्तेर दूसरी वार राजा से वोली, और उसके पाव पर गिर, आसू वहा वहाकर उस से गिड़गिड़ाकर विन्ती की, कि अगागी हामान की वुराई और यहूदियो की हानि की उसकी युक्ति निष्फल की जाए। ४ तव राजा ने एस्तेर की ओर सोने का राजदण्ड वढाया। ५ तव एस्तेर उठकर राजा के साम्हने खडी हुई, और कहने लगी कि यदि राजा को स्वीकार हो और वह मुझ से प्रसन्न है और यह वात उसको ठीक जान पडे, और मैं भी उसको अच्छी लगती हू, तो जो चिट्ठिया हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान ने राजा के सव प्रान्तो के यहूदियो को नाश करने की युक्ति करके लिखाई थी, उनको पलटने के लिये लिखा जाए। ६ क्योंकि मैं अपने जाति के लोगो पर पडनेवाली उस विपत्ति को किस रीति से देख सकूगी? और मैं अपने भाइयो के विनाश को क्योकर देख सकूगी? ७ तव राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से और मोर्दकै यहूदी से कहा, मैं हामान का घरवार तो एस्तेर को दे चुका हू, और वह फासी के खम्भे पर लटका दिया गया है, इसलिये कि उस ने यहूदियो पर हाथ वढाया था। ८ सो तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियो के नाम पर लिखो, और राजा की अगूठी की छाप भी लगाओ, क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर

तू क्या मागती है ? माग और तुझे आधा
राज्य तक दिया जाएगा। ४ एस्तेर ने
कहा, यदि राजा को स्वीकार हो, तो
आज हामान को साथ लेकर उस जेवनार
मे आए, जो मै ने राजा के लिये तैयार
की है। ५ तब राजा ने आज्ञा दी कि
हामान को तुरन्त ले आओ, कि एस्तेर का
निमत्रण ग्रहण किया जाए। सो राजा
और हामान एस्तेर की तैयार की हुई
जेवनार मे आए। ६ जेवनार के समय
जब दाखमधु पिया जाता था, तब राजा
ने एस्तेर से कहा, तेरा क्या निवेदन है ?
वह पूरा किया जाएगा। और तू क्या
मागती है ? माग, और आधा राज्य तक
तुझे दिया जाएगा। ७ एस्तेर ने उत्तर
दिया, मेरा निवेदन और जो मै मागती
हू वह यह है, ८ कि यदि राजा मुझ पर
प्रसन्न है और मेरा निवेदन सुनना और
जो वरदान मै मागू वही देना राजा को
स्वीकार हो, तो राजा और हामान कल
उस जेवनार मे आए जिसे मै उनके लिये
करूगी, और कल मै राजा के इस वचन
के अनुसार करूगी ।।

९ उस दिन हामान आनन्दित और
मन मे प्रसन्न होकर बाहर गया। परन्तु
जब उस ने मोर्दकै को राजभवन के फाटक
मे देखा, कि वह उसके साम्हने न तो
खडा हुआ, और न हटा, तब वह मोर्दकै
के विरुद्ध क्रोध से भर गया। १० तौभी
वह अपने को रोककर अपने घर गया,
और अपने मित्रो और अपनी स्त्री जेरेश
को बुलवा भेजा। ११ तब हामान ने, उन
से अपने धन का विभव, और अपने लडके-
वालो की बढती और राजा ने उसको
कैसे कैसे बढाया, और और सब हाकिमो
और अपने और सब कर्मचारियो से ऊचा
पद दिया था, इन सब का वर्णन किया।
१२ हामान ने यह भी कहा, कि एस्तेर
रानी ने भी मुझे छोड और किसी को
राजा के सग, अपनी की हुई जेवनार मे
आने न दिया, और कल के लिये भी
राजा के सग उस ने मुझी को नेवता दिया
है। १३ तौभी जब जब मुझे वह यहूदी
मोर्दकै राजभवन के फाटक मे बैठा हुआ
दिखाई पडता है, तब तब यह सब मेरी
दृष्टि मे व्यर्थ है*। १४ उसकी पत्नी
जेरेश और उसके सब मित्रो ने उस से कहा,
पचास हाथ ऊचा फासी का एक खम्भा,
बनाया जाए, और बिहान को राजा से
कहना, कि उस पर मोर्दकै लटका दिया
जाए, तब राजा के सग आनन्द से जेवनार
मे जाना। इस बात मे प्रसन्न होकर
हामान ने वैसा ही फासी का एक खम्भा
बनवाया ।।

६ उस रात राजा को नीद नही आई,
इसलिये उसकी आज्ञा मे इतिहास की
पुस्तक लाई गई, और पढकर राजा को
सुनाई गई। २ और यह लिखा हुआ
मिला, कि जब राजा क्षयर्ष के हाकिम जो
द्वारपाल भी थे, उन मे से बिगताना और
तेरेश नाम दो जनो ने उस पर हाथ
चलाने की युक्ति की थी उसे मोर्दकै ने
प्रगट किया था। ३ तब राजा ने पूछा,
इसके बदले मोर्दकै की क्या प्रतिष्ठा और
बडाई की गई ? राजा के जो सेवक उसकी
सेवा टहल कर रहे थे, उन्हो ने उसको
उत्तर दिया, उसके लिये कुछ भी नही
किया गया। ४ राजा ने पूछा, आगन मे
कौन है ? उसी समय तो हामान राजा के
भवन मे बाहरी आगन मे इस मनसा से

* मूल में—यह सब मेरे बराबर नही

आया था, कि जो खम्भा उस ने मोर्दकै
के लिये तैयार कराया था, उस पर उसको
लटका देने की चर्चा राजा से करे। ५ तब
राजा के सेवकों ने उस से कहा, आंगन में तो
हामान खड़ा है। राजा ने कहा, उसे भीतर
बुलवा लाओ। ६ जब हामान भीतर
आया, तब राजा ने उस से पूछा, जिस
मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता
हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा?
हामान ने यह सोचकर, कि मुझ से अधिक
राजा किस की प्रतिष्ठा करना चाहता
होगा? ७ राजा को उत्तर दिया, जिस
मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे,
८ तो उसके लिये राजकीय वस्त्र लाया
जाए, जो राजा पहिनता है, और एक
घोड़ा भी, जिस पर राजा सवार होता
है, और उसके सिर पर जो राजकीय
मुकुट धरा जाता है वह भी लाया जाए।
९ फिर वह वस्त्र, और वह घोड़ा राजा
के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए,
और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता
हो, उसको वह वस्त्र पहिनाया जाए, और
उस घोड़े पर सवार करके, नगर के चौक
में उसे फिराया जाए, और उसके आगे
आगे यह प्रचार किया जाए, कि जिसकी
प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके
साथ ऐसा ही किया जाएगा। १० राजा
ने हामान से कहा, फुर्ती करके अपने
कहने के अनुसार उस वस्त्र और उस
घोड़े को लेकर, उस यहूदी मोर्दकै से जो
राजभवन के फाटक में बैठा करता है,
वैसा ही कर। जैसा तू ने कहा है उस में
कुछ भी कमी होने न पाए। ११ तब
हामान ने उस वस्त्र, और उस घोड़े को
लेकर, मोर्दकै को पहिनाया, और उसे
घोड़े पर चढ़ाकर, नगर के चौक में इस
प्रकार पुकारता हुआ घुमाया कि जिसकी
प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके
साथ ऐसा ही किया जाएगा॥

१२ तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक
में लौट गया परन्तु हामान शोक करता
हुआ और सिर ढांपे हुए झट अपने घर
को गया। १३ और हामान ने अपनी
पत्नी जेरेश और अपने सब मित्रों से
सब कुछ जो उस पर बीता था वर्णन
किया। १४ तब उसके बुद्धिमान मित्र
और उसकी पत्नी जेरेश ने उस से कहा,
मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है,
यदि वह यहूदियों के वंश में का है, तो
तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उस से
पूरी रीति नीचा ही खाएगा। १५ वे उस
से बातें कर ही रहे थे, कि राजा के खोजे
आकर, हामान को एस्तेर की की हुई
जेवनार में फुर्ती से लिवा ले गए॥

७ सो राजा और हामान एस्तेर रानी
की जेवनार में आ गए। २ और
राजा ने दूसरे दिन दाखमधु पीते पीते
एस्तेर से फिर पूछा, हे एस्तेर रानी!
तेरा क्या निवेदन है? [illegible]
जाएगा। और तू क्या [illegible]
और आधा राज्य तक [illegible]
३ एस्तेर रानी ने [illegible]
यदि तू मुझ पर [illegible]
यह स्वीकार [illegible]
और मेरे [illegible]
मिले। ४ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

क्योंकि उनके मन में मोर्दकै का भय समा
गया था। ४ मोर्दकै तो राजा के यहां
बहुत प्रतिष्ठित था, और उसकी कीर्त्ति
सब प्रान्तों में फैल गई, वरन उस पुरुष
मोर्दकै की महिमा बढ़ती चली गई।
५ और यहूदियों ने अपने सब शत्रुओं को
तलवार से मारकर और घात करके नाश
कर डाला, और अपने बैरियों से अपनी
इच्छा के अनुसार बर्ताव किया। ६ और
शूशन राजगढ़ में यहूदियों ने पांच सौ
मनुष्यों को घात करके नाश किया।
७ और उन्हों ने पर्शन्दाता, दल्पोन,
अस्पाता, ८ पोराता, अदल्या, अरीदाता,
९ पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता,
१० अर्थात् हम्मदाता के पुत्र यहूदियों के
विरोधी हामान के दसों पुत्रों को भी घात
किया, परन्तु उनके धन को न लूटा॥
११ उसी दिन शूशन राजगढ़ में घात
किए हुओं की गिनती राजा को सुनाई
गई। १२ तब राजा ने एस्तेर रानी से
कहा, यहूदियों ने शूशन राजगढ़ ही में
पांच सौ मनुष्य और हामान के दसों पुत्रों
को भी घात करके नाश किया है, फिर
राज्य के और और प्रान्तों में उन्हों ने
न जाने क्या क्या किया होगा! अब
इस से अधिक तेरा निवेदन क्या है? वह
भी पूरा किया जाएगा। और तू क्या
मांगती है? वह भी तुझे दिया जाएगा।
१३ एस्तेर ने कहा, यदि राजा को स्वीकार
हो तो शूशन के यहूदियों को आज की
नाईं कल भी करने की आज्ञा दी जाए,
और हामान के दसों पुत्र फांसी के खम्भों
पर लटकाए जाएं। १४ राजा ने कहा,
ऐसा किया जाए, यह आज्ञा शूशन में
दी गई, और हामान के दसों पुत्र लटकाए
गए। १५ और शूशन के यहूदियों ने
अदार महीने के चौदहवें दिन को भी
इकट्ठे होकर शूशन में तीन सौ पुरुषों
को घात किया, परन्तु धन को न लूटा॥
१६ राज्य के और और प्रान्तों के
यहूदी इकट्ठे होकर अपना अपना प्राण
बचाने के लिये खड़े हुए, और अपने
बैरियों में से पचहत्तर हजार मनुष्यों को
घात करके अपने शत्रुओं से विश्राम पाया,
परन्तु धन को न लूटा। १७ यह अदार
महीने के तेरहवें दिन को किया गया, और
चौदहवें दिन को उन्हों ने विश्राम करके
जेवनार की और आनन्द का दिन ठहराया।
१८ परन्तु शूशन के यहूदी अदार महीने
के तेरहवें दिन को, और उसी महीने के
चौदहवें दिन को इकट्ठे हुए, और उसी
महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्हों ने विश्राम
करके जेवनार का और आनन्द का दिन
ठहराया। १९ इस कारण देहाती यहूदी
जो बिना शहरपनाह की बस्तियों में रहते
हैं, वे अदार महीने के चौदहवें दिन को
आनन्द और जेवनार और खुशी और
आपस में बैना भेजने का दिन नियुक्त
करके मानते हैं॥
२० इन बातों का वृत्तान्त लिखकर,
मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में,
क्या निकट क्या दूर रहनेवाले सारे यहूदियों
के पास चिट्ठियां भेजीं, २१ और यह
आज्ञा दी, कि अदार महीने के चौदहवें
और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को
प्रति वर्ष माना करें। २२ जिन में यहूदियों
ने अपने शत्रुओं से विश्राम पाया, और
यह महीना जिस में शोक आनन्द से, और
विलाप खुशी से बदला गया, (माना करें)
और उनको जेवनार और आनन्द और
एक दूसरे के पास बैना भेजने और कंगालों
को दान देने के दिन मानें॥

२३ और यहूदियो ने जैसा आरम्भ
किया था, और जैसा मोर्दकै ने उन्हें लिखा,
वैसा ही करने का निश्चय कर लिया।
२४ क्योंकि हम्मदाता अगागी का पुत्र
हामान जो सब यहूदियो का विरोधी था,
उस ने यहूदियो के नाश करने की युक्ति
की, और उन्हे मिटा डालने और नाश
करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली
थी। २५ परन्तु जब राजा ने यह जान
लिया, तब उस ने आज्ञा दी और लिखवाई
कि जो दुष्ट युक्ति हामान ने यहूदियो के
विरुद्ध की थी वह उसी के सिर पर पलट
आए, तब वह और उसके पुत्र फांसी के
खम्भो पर लटकाए गए। २६ इस कारण
उन दिनो का नाम पूर शब्द से पूरीम रखा
गया। इस चिट्ठी की सब बातो के कारण,
और जो कुछ उन्हो ने इस विषय मे देखा
और जो कुछ उन पर बीता था, उसके
कारण भी २७ यहूदियो ने अपने अपने
लिये और अपनी सन्तान के लिये, और
उन सभो के लिये भी जो उन मे मिल
गए थे यह अटल प्रण किया, कि उस
लेख के अनुसार प्रति वर्ष उसके ठहराए
हुए समय मे वे ये दो दिन माने। २८ और
पीढी पीढी, कुल कुल, प्रान्त प्रान्त, नगर
नगर में ये दिन स्मरण किए और माने
जाएगे। और पूरीम नाम के दिन यहूदियो
में कभी न मिटेगे और उनका स्मरण
उनके वश से जाता न रहेगा।।
२९ फिर अबीहैल की बेटी एस्तेर
रानी, और मोर्दकै यहूदी ने, पूरीम के
विषय यह दूसरी चिट्ठी बडे अधिकार के
साथ लिखी। ३० इसकी नकले मोर्दकै ने
क्षयर्ष के राज्य के, एक सौ सत्ताईसो
प्रान्तो के सब यहूदियो के पास शान्ति
देनेवाली और सच्ची बातो के साथ इस
आशय से भेजी, ३१ कि पूरीम के उन
दिनो के विशेष ठहराए हुए समयो में
मोर्दकै यहूदी और एस्तेर रानी की आज्ञा
के अनुसार, और जो यहूदियो ने अपने
और अपनी सन्तान के लिये ठान लिया
था, उसके अनुसार भी उपवास और
विलाप किए जाए। ३२ और पूरीम के
विषय का यह नियम एस्तेर की आज्ञा
से भी स्थिर किया गया, और उनकी चर्चा
पुस्तक मे लिखी गई।।

(मोर्दकै का माहात्म्य)

१० और राजा क्षयर्ष ने देश और
समुद्र के टापू दोनो पर कर
लगाया। २ और उसके माहात्म्य और
पराक्रम के कामो, और मोर्दकै की उस
बडाई का पूरा ब्योरा, जो राजा ने उसकी
की थी, क्या वह मादै और फारस के
राजाओ के इतिहास की पुस्तक में नही
लिखा है? ३ निदान यहूदी मोर्दकै, क्षयर्ष
राजा ही के नीचे था, और यहूदियो की
दृष्टि में बडा था, और उसके सब भाई
उस से प्रसन्न थे, क्योंकि वह अपने लोगो
की भलाई की खोज में रहा करता था
और अपने सब लोगो से शान्ति की बातें
कहा करता था।।

से उसके पास चले। १२ जब उन्हों ने
दूर से आंख उठाकर अय्यूब को देखा और
उसे न चीन्ह सके, तब चिल्लाकर रो
उठे, और अपना अपना बागा फाड़ा,
और आकाश की ओर धूलि उड़ाकर अपने
अपने सिर पर डाली। १३ तब वे सात
दिन और सात रात उसके संग भूमि
पर बैठे रहे, परन्तु उसका दुःख बहुत ही
बड़ा जान कर किसी ने उस से एक भी
बात न कही॥

(अय्यूब का अपने जन्मदिन को धिक्कारना)

३ इसके बाद अय्यूब मुंह खोलकर
अपने जन्मदिन को धिक्कारने २ और
कहने लगा,

३ वह दिन जल जाए जिस में मैं उत्पन्न हुआ,
और वह रात भी जिस में कहा गया, कि बेटे का गर्भ रहा।
४ वह दिन अन्धियारा हो जाए!
ऊपर से ईश्वर उसकी सुधि न ले,
और न उस में प्रकाश होए।
५ अन्धियारा और मृत्यु की छाया उस पर रहे*।
बादल उस पर छाए रहें,
और दिन को अन्धेरा कर देनेवाली चीजें उसे डराएं॥
६ घोर अन्धकार उस रात को पकड़े,
वर्ष के दिनों के बीच वह आनन्द न करने पाए,
और न महीनों में उसकी गिनती की जाए।
७ सुनो, वह रात बांझ हो जाए,
उस में गाने का शब्द न सुन पड़े।
८ जो लोग किसी दिन को धिक्कारते हैं,
और लिव्यातान को छेड़ने में निपुण हैं, उसे धिक्कारें।
९ उसकी संध्या के तारे प्रकाश न दें,
वह उजियाले की बाट जोहे पर वह उसे न मिले,
वह भोर की पलकों को भी देखने न पाए,
१० क्योंकि उस ने मेरी माता की कोख को बन्द न किया* और कष्ट को मेरी दृष्टि से न छिपाया॥
११ मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया?
पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?
१२ मैं घुटनों पर क्यों लिया गया?
मैं छातियों को क्यों पीने पाया?
१३ ऐसा न होता तो मैं चुपचाप पड़ा रहता, मैं सोता रहता और विश्राम करता,
१४ और मैं पृथ्वी के उन राजाओं और मन्त्रियों के साथ होता
जिन्हों ने अपने लिये सुनसान स्थान बनवा लिए,
१५ वा मैं उन राजकुमारों के साथ होता जिनके पास सोना था जिन्हों ने अपने घरों को चान्दी से भर लिया था,
१६ वा मैं असमय गिरे हुए गर्भ की नाईं हुआ होता,
वा ऐसे बच्चों के समान होता जिन्हों ने उजियाले को कभी देखा ही न हो।
१७ उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुःख नहीं देते,

* मूल में—उसका दाम देकर उसे अपना ले।

* मूल में—उस ने मेरी कोख के किवाड़ बन्द न किए न मेरी आंखों से कष्ट छिपाया।

२१ हाय उन पर जो अपनी दृष्टि में
ज्ञानी और अपने लेखे बुद्धिमान हैं!
२२ हाय उन पर जो दाखमधु पीने
में वीर और मदिरा को तेज बनाने में
बहादुर हैं, २३ जो घूस लेकर दुष्टों को
निर्दोष, और निर्दोषों को दोषी ठहराते
हैं!

२४ इस कारण जैसे अग्नि की लौ से
खूंटी भस्म होती है और सूखी घास जलकर
बैठ जाती है, वैसे ही उनकी जड़ सड़
जाएगी और उनके फूल धूल होकर उड़
जाएंगे, क्योंकि उन्हों ने सेनाओं के यहोवा
की व्यवस्था को निकम्मी जाना, और
इस्राएल के पवित्र के वचन को तुच्छ जाना
है। २५ इस कारण यहोवा का क्रोध
अपनी प्रजा पर भड़का है, और उस ने
उनके विरुद्ध हाथ बढ़ाकर उनको मारा
है, और पहाड़ कांप उठे, और लोगों
की लोथें सड़कों के बीच कूड़ा सी पड़ी
हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त
नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक
बढ़ा हुआ है॥

२६ वह दूर दूर की जातियों के लिये
झण्डा खड़ा करेगा, और सीटी बजाकर
उनको पृथ्वी की छोर से बुलाएगा,
देखो, वे फुर्ती करके वेग से आएंगे!
२७ उन में कोई थका नहीं न कोई ठोकर
खाता है, कोई ऊंघने वा सोनेवाला नहीं,
किसी का फेंटा नहीं खुला, और किसी के
जूतों का बन्धन नहीं टूटा; २८ उनके
तीर चोखे और धनुष चढ़ाए हुए हैं,
उनके घोड़ों के खुर वज्र के से और रथों
के पहिये बवण्डर सरीखे हैं। २९ वे
सिंह वा जवान सिंह की नाईं गरजते हैं,
वे गुर्राकर अहेर को पकड़ लेते और
उसको ले भागते हैं, और कोई उसे उन से
नहीं छुड़ा सकता। ३० उस समय वे
उन पर समुद्र के गर्जन की नाईं गर्जेंगे और
यदि कोई देश की ओर देखे, तो उसे
अन्धकार और संकट देख पड़ेगा और
ज्योति मेघों से छिप जाएगी॥

६ जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा,
मैं ने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन
पर विराजमान देखा, और उसके वस्त्र
के घेर से मन्दिर भर गया। २ उस से
ऊंचे पर साराप दिखाई दिए, उनके छः
छः पंख थे, दो पंखों से वे अपने मुंह को
ढांपे थे और दो से अपने पांवों को, और
दो से उड़ रहे थे। ३ और वे एक दूसरे
से पुकार पुकारकर कह रहे थे सेनाओं
का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है,
सारी पृथ्वी उसके तेज से भरपूर है।
४ और पुकारनेवाले के शब्द से डेवढ़ियों
की नेवें डोल उठीं, और भवन धूएं से
भर गया। ५ तब मैं ने कहा, हाय!
हाय! मैं नाश हुआ, क्योंकि मैं अशुद्ध
होंठवाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध होंठवाले
मनुष्यों के बीच में रहता हूं, क्योंकि
मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज
को अपनी आंखों से देखा है!

६ तब एक साराप हाथ में अंगारा
लिए हुए, जिसे उस ने चिमटे से वेदी
पर से उठा लिया था, मेरे पास उड़
कर आया। ७ और उस ने उस से मेरे
मुंह को छूकर कहा, देख, इस ने तेरे
होंठों को छू लिया है, इसलिये तेरा
अधर्म दूर हो गया और तेरे पाप क्षमा
हो गए। ८ तब मैं ने प्रभु का यह
वचन सुना, मैं किस को भेजूं, और
हमारी ओर से कौन जाएगा? तब
मैं ने कहा, मैं यहां हूं! मुझे भेज।

९ उस ने कहा, जा, और इन लोगो से
कह, सुनते ही रहो, परन्तु न समझो,
देखते ही रहो, परन्तु न बूझो। १० तू
इन लोगो के मन को मोटे और उनके
कानो को भारी कर, और उनकी आखो
को बन्द कर, ऐसा न हो कि वे आखो
से देखे, और कानो से सुने, और मन से
बूझे, और मन फिरावे और चगे हो जाए।
११ तब मैं ने पूछा, हे प्रभु कब तक ?
उस ने कहा, जब तक नगर न उजडे
और उन मे कोई रह न जाए, और घरो
मे कोई मनुष्य न रह जाए, और देश
उजाड और सुनसान हो जाए, १२ और
यहोवा मनुष्यो को उस मे से दूर कर दे,
और देश के बहुत से स्थान निर्जन हो
जाए। १३ चाहे उसके निवासियो * का
दसवा अश भी रह जाए, तौभी वह
नाश किया जाएगा †, परन्तु जैसे छोटे
वा बड़े बाजवृक्ष को काट डालने पर भी
उसका ठूठ बना रहता है, वैसे ही पवित्र
वश उसका ठूठ ठहरेगा ॥

७ यहूदा का राजा आहाज जो योताम
का पुत्र और उज्जिय्याह का पोता
था, उसके दिनो मे आराम के राजा
रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह के
पुत्र पेकह ने यरूशलेम से लडने के लिये
चढाई की, परन्तु युद्ध करके उन से कुछ
बन न पडा। २ जब दाऊद के घराने को
यह समाचार मिला कि अरामियो ने
एप्रैमियो से सन्धि की है, तब उसका और
प्रजा का भी मन ऐसा काप उठा जैसे वन
के वृक्ष वायु चलने से काप जाते है।
३ तब यहोवा ने यशायाह से कहा, अपने

* मूल में—उस में।
† मूल में—फिर खा डाला जाएगा।

पुत्र शार्याशूब * को लेकर धोबियो
के खेत की सडक से ऊपरली पोखरे की
नाली के सिरे पर आहाज से भेट करने
के लिये जा, ४ और उस से कह, सावधान
और शान्त हो, और उन दोनो धूआ
निकलती लुकटियो से † अर्थात् रसीन और
अरामियो के भडके हुए कोप से, और
रमल्याह के पुत्र से मत डर, और न
तेरा मन कच्चा हो। ५ क्योकि अरामियो
और रमल्याह के पुत्र समेत एप्रैमियो ने
यह कहकर तेरे विरुद्ध बुरी युक्ति ठानी
है कि आओ, ६ हम यहूदा पर चढाई
करके उसको घबरा दें, और उसको अपने
वश में लाकर ‡ ताबेल के पुत्र को राजा
नियुक्त कर दें। ७ इसलिये प्रभु यहोवा
ने यह कहा है कि यह युक्ति न तो सफल
होगी और न पूरी। ८ क्योकि आराम
का सिर दमिश्क, और दमिश्क का सिर
रसीन है। फिर एप्रैम का सिर शोमरोन
और शोमरोन का सिर रमल्याह का पुत्र
है। ९ पैसठ वर्ष के भीतर एप्रैम का
बल इतना टूट जाएगा कि वह जाति
बनी न रहेगी। यदि तुम लोग इस बात
की प्रतीति न करो, तो निश्चय तुम
स्थिर न रहोगे ॥

१० फिर यहोवा ने आहाज से कहा,
११ अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिन्ह
माग, चाहे वह गहिरे स्थान का हो,
वा ऊपर आसमान का हो। १२ आहाज
ने कहा, मैं नही मागने का, और मैं यहोवा
की परीक्षा नही करूगा। १३ तब उस ने
कहा, हे दाऊद के घराने सुनो! क्या
तुम मनुष्यो को उकता देना छोटी बात

* अर्थात् बचा हुआ भाग फिरेगा।
† मूल में—लुकटियों के पुच्छों से।
‡ मूल में—अपने निमित्त फाड़कर।

समझकर अब मेरे परमेश्वर को भी उकता
दोगे? १४ इस कारण प्रभु आप ही
तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक
कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी,
और उसका नाम इम्मानूएल* रखेगी।
१५ और जब † तक वह बुरे को त्यागना
और भले को ग्रहण करना न जाने तब तक
वह मक्खन और मधु खाएगा। १६ क्योंकि
उस से पहिले कि वह लडका बुरे को
त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने,
वह देश जिसके दोनो राजाओं से तू घबरा
रहा है निर्जन हो जाएगा। १७ यहोवा
तुझ पर, तेरी प्रजा पर और तेरे पिता
के घराने पर ऐसे दिनो को ले आएगा
कि जब से एप्रैम यहूदा से अलग हो गया,
तब से वैसे दिन कभी नही आए—अर्थात्
अश्शूर के राजा के दिन॥

१८ उस समय यहोवा उन मक्खियो
को जो मिस्र की नदियों के सिरो पर रहती
है, और उन मधुमक्खियों को जो अश्शूर
देश में रहती है, सीटी बजाकर बुलाएगा।
१९ और वे सब की सब आकर इस
देश के पहाडी नालों मे, और चट्टानो
की दरारो में, और सब भटकटैयो और
सब चराइयो पर बैठ जाएगी॥

२० उसी समय प्रभु महानद के पारवाले
अश्शूर के राजारूपी भाडे के छुरे से
सिर और पावो के रोंए मूडेगा, उस से
दाढी भी पूरी मुड जाएगी॥

२१ उस समय ऐसा होगा कि मनुष्य
केवल एक कलोर और दो भेडो को
पालेगा, २२ और वे इतना दूध देगी
कि वह मक्खन खाया करेगा, क्योंकि
जितने इस देश में रह जाएगे वह सब
मक्खन और मधु खाया करेंगे॥

२३ उस समय जिन जिन स्थानों में
हजार टुकडे चान्दी की हजार दाखलताए
है, उन सब स्थानों में कटीले ही कटीले
पेड होंगे। २४ तीर और धनुष लेकर
लोग वहा जाया करेंगे, क्योंकि सारे देश
मे कटीले पेड हो जाएगे; और जितने
पहाड कुदाल से खोदे जाते है, उन सभो
पर कटीले पेडो के डर के मारे कोई न
जाएगा, वे गाये बैलो के चरने के, और
भेड-बकरियो के रौंदने के लिये होंगे॥

८ फिर यहोवा ने मुझ से कहा,
एक बडी पटिया लेकर उस
पर साधारण अक्षरो से* यह लिख
महेर्शालाल्हाशबज † के लिये। २ और मै
विश्वासयोग्य पुरुषो को अर्थात् ऊरिय्याह
याजक और जेबेरेक्याह के पुत्र
जकर्याह को इस बात की साक्षी
करूगा। ३ और मै अपनी पत्नी ‡ के
पास गया, और वह गर्भवती हुई और
उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। तब यहोवा ने मुझ
से कहा, उसका नाम महेर्शालाल्हाशबज †
रख, ४ क्योंकि इस से पहिले कि वह
लडका बापू और माँ पुकारना जाने, दमिश्क
और शोमरोन दोनो की धन-सम्पत्ति
लूटकर अश्शूर का राजा अपने देश को
भेजेगा॥

५ यहोवा ने फिर मुझ से दूसरी बार
कहा, ६ इसलिये कि लोग शीलोह के
धीरे धीरे बहनेवाले सोते को निकम्मा

* अर्थात् ईश्वर हमारे संग है।
† वा इसलिये कि।

* मूल में—मनुष्य के कलम से।
† अर्थात् लूट शीघ्र आती, छिन जाना फुर्ती करता है।
‡ मूल में—नबियैन।

जानते हैं, और रसीन और रमल्याह के
पुत्र के संग एका करके आनन्द करते हैं,
७ इस कारण सुन, प्रभु उन पर उस
प्रबल और गहिरे महानद को, अर्थात्
अश्शूर के राजा को उसके सारे प्रताप
के साथ चढ़ा लाएगा, और वह उनके
सब नालों को भर देगा, और सारे कड़ाड़ों
से छलककर बहेगा, ८ और वह यहूदा
पर भी चढ़ आएगा, और बढ़ते बढ़ते
उस पर चढ़ेगा और गले तक पहुंचेगा,
और हे इम्मानुएल, तेरा समस्त देश
उसके पंखों के फैलने से ढप जाएगा॥

९ हे लोगो, हल्ला करो तो करो,
परन्तु तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा।
हे पृथ्वी के दूर दूर देश के सब लोगो कान
लगाकर सुनो, अपनी अपनी कमर कसो
तो कसो, परन्तु तुम्हारे टुकड़े टुकड़े किए
जाएंगे, अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु
तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। १० तुम
युक्ति करो तो करो, परन्तु वह निष्फल
हो जाएगी, तुम कुछ भी कहो, परन्तु
तुम्हारा कहा हुआ ठहरेगा नहीं, क्योंकि
परमेश्वर हमारे संग है॥

११ क्योंकि यहोवा दृढ़ता के साथ
मुझ से बोला और इन लोगों की सी
चाल चलने को मुझे मना किया, १२ और
कहा, जिस बात को यह लोग राजद्रोह
कहें, उसको तुम राजद्रोह न कहना, और
जिस बात से वे डरते हैं उस से तुम न
डरना और न भय खाना। १३ सेनाओं
के यहोवा ही को पवित्र जानना, उसी का
डर मानना, और उसी का भय रखना।
१४ और वह शरणस्थान होगा, परन्तु
इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर
का पत्थर और ठेस की चट्टान, और
यरूशलेम के निवासियों के लिये फन्दा
और जाल होगा। १५ और बहुत से लोग
ठोकर खाएंगे, वे गिरेंगे और चकनाचूर
होंगे, वे फन्दे में फसेंगे और पकड़े जाएंगे॥

१६ चितौनी का पत्र बन्द कर दो,
मेरे चेलों के बीच शिक्षा पर छाप लगा
दो। १७ मैं उस यहोवा की बाट जोहता
रहूंगा जो अपने मुख को याकूब के घराने
से छिपाये है, और मैं उसी पर आशा
लगाए रहूंगा। १८ देख, मैं और जो लड़के
यहोवा ने मुझे सौंपे हैं, उसी सेनाओं के
यहोवा की ओर से जो सिय्योन पर्वत
पर निवास किए रहता है इस्राएलियों के
लिये चिन्ह और चमत्कार हैं। १९ जब
लोग तुम से कहें कि ओझाओं और टोन्हों
के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और
फुसफुसाते हैं, तब तुम यह कहना कि
क्या प्रजा को अपने परमेश्वर ही के पास
जाकर न पूछना चाहिये? क्या जीवतों
के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये?
२० व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा
किया करो! यदि वे लोग इन वचनों
के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये
पौ न फटेगी। २१ वे इस देश में क्लेशित
और भूखे फिरते रहेंगे, और जब वे भूखे
होंगे, तब वे क्रोध में आकर अपने राजा और
अपने परमेश्वर को शाप देंगे, और अपना
मुख ऊपर आकाश की ओर उठाएंगे,
२२ तब वे पृथ्वी की ओर दृष्टि करेंगे
परन्तु उन्हें सकेती और अन्धियारा अर्थात्
सकट भरा अन्धकार ही देख पड़ेगा, और
वे घोर अन्धकार में ढकेल दिए जाएंगे॥

९ तौभी सकट-भरा अन्धकार जाता
रहेगा। पहिले तो उस ने जबूलून
और नप्ताली के देशों का अपमान किया,
परन्तु अन्तिम दिनों में ताल की ओर

यरदन के पार की अन्यजातियों के गालील
को महिमा देगा ॥
२ जो लोग अन्धियारे में चल रहे थे
उन्हों ने बड़ा उजियाला देखा; और जो
लोग घोर अन्धकार से भरे हुए मृत्यु के
देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी।
३ तू ने जाति को बढ़ाया, तू ने उसको
बहुत आनन्द दिया; वे तेरे साम्हने कटनी
के समय का सा आनन्द करते हैं, और
ऐसे मगन हैं जैसे लोग लूट बांटने के समय
मगन रहते हैं। ४ क्योंकि तू ने उसकी
गर्दन पर के भारी जूए और उसके बहंगे
के बांस, उस पर अंधेर करनेवाले की
लाठी, इन सभों को ऐसा तोड़ दिया है
जैसे मिद्यानियों के दिन में किया था।
५ क्योंकि युद्ध में लड़नेवाले सिपाहियों
के जूते और लोहू में लथड़े हुए कपड़े
सब आग का कौर हो जाएंगे। ६ क्योंकि
हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ,
हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता
उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम
अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर,
अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का
राजकुमार रखा जाएगा। ७ उसकी
प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी
शान्ति का अन्त न होगा *, इसलिये वह
उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस
समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और
धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले
रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन
के द्वारा यह हो जाएगा ॥
८ प्रभु ने याकूब के पास एक सन्देश
भेजा है, और वह इस्राएल पर प्रगट
हुआ है; ९ और सारी प्रजा को, एप्रैमियों

* मूल में—प्रभुता की बढ़ती और शान्ति
का अन्त नहीं।

और शोमरोनवासियों को मालूम हो
जाएगा जो गर्व और कठोरता से बोलते
हैं. ईंटें तो गिर गई हैं, १० परन्तु हम
गढ़े हुए पत्थरों से घर बनाएंगे, गूलर
के वृक्ष तो कट गए हैं, परन्तु हम उनकी
सन्ती देवदारों से काम लेंगे। ११ इस
कारण यहोवा उन पर रसीन के बैरियों
को प्रबल करेगा, १२ और उनके शत्रुओं
को अर्थात् पहिले आराम को और तब
पलिश्तियों को उभारेगा, और वे मुंह
खोलकर इस्राएलियों को निगल लेंगे।
इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं
हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा
हुआ है ॥
१३ तौभी ये लोग अपने मारनेवाले की
ओर नहीं फिरे और न सेनाओं के यहोवा
की खोज करते हैं। १४ इस कारण
यहोवा इस्राएल में से सिर और पूंछ को,
खजूर की डालियों और सरकंडे को, एक
ही दिन में काट डालेगा। १५ पुरनिया
और प्रतिष्ठित पुरुष तो सिर हैं, और
झूठी बातें सिखानेवाला नबी पूंछ है,
१६ क्योंकि जो इन लोगों की अगुवाई
करते हैं वे इनको भटका देते हैं, और
जिनकी अगुवाई होती है वे नाश हो जाते
हैं। १७ इस कारण प्रभु न तो इनके
जवानों से प्रसन्न होगा, और न इनके
अनाथ बालकों और विधवाओं पर दया
करेगा, क्योंकि हर एक भक्तिहीन और
कुकर्मी है, और हर एक के मुख से मूर्खता
की बातें निकलती हैं। इतने पर भी उसका
क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ
अब तक बढ़ा हुआ है ॥
१८ क्योंकि दुष्टता आग की नाईं
धधकती है, वह ऊंटकटारों और कांटों को
भस्म करती है, वरन वह घने वन की

झाडियो मे आग लगाती है और वह
धुआ में चकरा चकराकर ऊपर की ओर
उठती है। १६ सेनाओ के यहोवा के
रोष के मारे यह देश जलाया गया है, और
ये लोग आग की ईंधन के समान है, वे
आपस में एक दूसरे से दया का व्यवहार नही
करते। २० वे दहिनी ओर से भोजनवस्तु
छीनकर भी भूखे रहते, और बाये ओर मे
खाकर भी तृप्त नही होते, उन मे से प्रत्येक
मनुष्य अपनी अपनी बाहो का मास खाता
है, २१ मनश्शे एप्रैम को और एप्रैम
मनश्शे को खाता है, और वे दोनो मिलकर
यहूदा के विरुद्ध है। इतने पर भी उसका
क्रोध शान्त नही हुआ, और उसका हाथ
अब तक बढा हुआ है॥

१० हाय उन पर जो दुष्टता से न्याय
करते, और उन पर जो उत्पात करने
की आज्ञा लिख देते है, २ कि वे कगालो
का न्याय बिगाडे और मेरी प्रजा के दीन
लोगो का हक मारे, कि वे विधवाओ
को लूटे और अनाथो का माल अपना
ले। ३ तुम दण्ड के दिन और उस
आपत्ति के दिन जो दूर मे आएगी क्या
करोगे? तुम सहायता के लिये किसके
पास भाग कर जाओगे? ४ और तुम
अपने विभव को कहा रख छोडोगे?
वे केवल बधुओ के पैरो के पास* गिर
पडेंगे और मरे हुओ के नीचे दबे पडे रहेगे।
इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नही हुआ
और उसका हाथ अब तक बढा हुआ है॥

५ अश्शूर पर हाय, जो मेरे क्रोध
का लठ और मेरे हाथ में का सोटा है।
वह मेरा क्रोध है। ६ मैं उसको एक
भक्तिहीन जाति के विरुद्ध भेजूगा, और
जिन लोगो पर मेरा रोष भडका है उनके
विरुद्ध उसको आज्ञा दूगा कि छीन छान
करे और लूट ले, और उनको सडकों की
कीच के समान लताडे। ७ परन्तु उसकी
ऐसी मनसा न होगी, न उसके मन में
ऐसा विचार है, क्योकि उसके मन में
यही है कि मैं बहुत सी जातियो का नाश
और अन्त कर डालू। ८ क्योकि वह
कहता है, क्या मेरे सब हाकिम राजा के
तुल्य नही? ९ क्या कलनो कर्कमीश के
समान नही है? क्या हमात अर्पद के
और शोमरोन दमिश्क के समान नही?
१० जिस प्रकार मेरा हाथ मूरतो से
भरे हुए उन राज्यो पर पहुचा जिनकी
मूरते यरूशलेम और शोमरोन की मूरतो
से बढकर थी, और जिस प्रकार मैं ने
शोमरोन और उसकी मूरतो से किया,
११ क्या उसी प्रकार मैं यरूशलेम से और
उसकी मूरतो से भी न करू?

१२ इस कारण जब प्रभु सिय्योन
पर्वत पर और यरूशलेम मे अपना सब
काम कर चुकेगा, तब मैं अश्शूर के राजा
के गर्व की बातो का, और उसकी घमण्ड
भरी आखो का पलटा दूगा। १३ उस ने
कहा है, अपने ही बाहुबल और बुद्धि से मैं
ने यह काम किया है, क्योकि मैं चतुर हू,
मैं ने देश देश के सिवानो को हटा दिया,
और उनके रखे हुए धन को लूट लिया,
मैं ने वीर की नाईं गद्दी पर विराजनेहारो
को उतार दिया है। १४ देश देश के
लोगो की धनसम्पत्ति, चिडियो के घोसलो
की नाईं, मेरे हाथ आई है, और जैसे कोई
छोडे हुए अण्डो को बटोर ले वैसे ही
मैं ने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है,
और कोई पख फडफडाने वा चोच खोलने
वा ची ची करनेवाला न था॥

* मूल में—बधुओं के नीचे।

१५ क्या कुल्हाडा उसके विरुद्ध जो
उस से काटता हो डींग मारे, वा आरी
उसके विरुद्ध जो उसे खीचता हो बडाई
करे ? क्या सोटा अपने चलानेवाले को
चलाए वा छडी उसे उठाए जो काठ नहीं
है ! १६ इस कारण प्रभु अर्थात् सेनाओ
का प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओ
को दुबला कर देगा, और उसके ऐश्वर्य
के नीचे आग की सी जलन होगी।
१७ इस्राएल की ज्योति तो आग ठहरेगी,
और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा,
और वह उसके झाड झंखार को एक ही
दिन मे भस्म करेगा। १८ और जैसे रोगी
के क्षीण हो जाने पर उसकी दशा होती है
वैसी ही वह उसके वन और फलदाई
बारी की शोभा पूरी रीति से* नाश
करेगा। १९ उस वन के वृक्ष इतने थोडे
रह जाएगे कि लडका भी उनको गिन
कर लिख लेगा ॥

२० उस समय इस्राएल के बचे हुए
लोग और याकूब के घराने के भागे हुए,
अपने मारनेवाले पर फिर कभी भरोसा न
रखेंगे, परन्तु यहोवा जो इस्राएल का
पवित्र है, उसी पर वे सच्चाई से भरोसा
रखेंगे। २१ याकूब मे से बचे हुए लोग
पराक्रमी परमेश्वर की ओर फिरेंगे।
२२ क्योकि हे इस्राएल, चाहे तेरे लोग
समुद्र की बालू के किनको के समान भी
बहुत हो, तौभी निश्चय है कि उन मे
से केवल बचे लोग ही लौटेंगे। सत्यानाश
तो पूरे न्याय के साथ† ठाना गया है।
२३ क्योकि प्रभु सेनाओ के यहोवा ने सारे
देश का सत्यानाश कर देना ठाना है ॥

* मूल में—जीव से मास तक।
† मूल में—धर्म से उमण्डता।

२४ इसलिये प्रभु सेनाओ का यहोवा
यो कहता है, हे सिय्योन में रहनेवाली
मेरी प्रजा, अश्शूर से मत डर, चाहे वह
सोंटे से तुझे मारे और मिस्र की नाई
तेरे ऊपर छडी उठाए। २५ क्योकि
अब थोडी ही देर है कि मेरी जलन और
क्रोध उनका सत्यानाश करके शान्त होगा*।
२६ और सेनाओ का यहोवा उसके
विरुद्ध कोडा उठाकर उसको ऐसा मारेगा
जैसा उस ने ओरेब नाम चट्टान पर
मिद्यानियो को मारा था, और जैसा
उस ने मिस्रियो के विरुद्ध समुद्र पर लाठी
बढाई, वैसा ही उसकी ओर भी बढाएगा।
२७ उस समय ऐसा होगा कि उसका
बोझ तेरे कंधे पर से और उसका जूआ
तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और
अभिषेक के कारण वह जूआ तोड डाला
जाएगा ॥

२८ वह अय्यात् मे आया है, और
मिग्रोन मे से होकर आगे बढ गया
है, मिकमाश मे उस ने अपना सामान
रखा है। २९ वे घाटी से पार हो गए,
उन्हो ने गेबा मे रात काटी, रामा थरथरा
उठा है, शाऊल का गिबा भाग निकला
है। ३० हे गल्लीम की बेटी चिल्ला !
हे लैशा के लोगो कान लगाओ ! हाय
बेचारा अनातोत ! ३१ मदमेना मारा
मारा फिरता है, गेबीम के निवासी भागने
के लिये अपना अपना सामान इकट्ठा
कर रहे है। ३२ आज ही के दिन वह
नोब मे टिकेगा, तब वह सिय्योन† पहाड
पर, और यरूशलेम की पहाडी पर हाथ
उठाकर धमकाएगा ॥

* मूल में—करने से चुकेगा।
† मूल में—सिय्योन की बेटी।

३३ देखो, प्रभु सेनाओं का यहोवा
पेड़ों को भयानक रूप से छांट डालेगा,
ऊंचे ऊंचे वृक्ष काटे जाएंगे, और जो ऊंचे
हैं सो नीचे किए जाएंगे। ३४ वह घने
वन को लोहे से काट डालेगा, और लबानोन
एक प्रतापी के हाथ से नाश किया जाएगा॥

११ तब यिशै के ठूंठ में से एक डाली
फूट निकलेगी और उसकी जड़ में
से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी।
२ और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और
समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम
की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के
भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।
३ और उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा
भाएगा॥

वह मुंह देखा न्याय न करेगा और
न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय
करेगा, ४ परन्तु वह कंगालों का न्याय
धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का
निर्णय खराई से करेगा, और वह पृथ्वी
को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और
अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा
डालेगा। ५ उसकी कटि का फेंटा धर्म
और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी॥

६ तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग
रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे
के साथ बैठा करेगा, और बछड़ा और
जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल
तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का
उनको अगुवाई करेगा। ७ गाय और
रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे
इकट्ठे बैठेंगे, और सिंह बैल की नाईं
भूसा खाया करेगा। ८ दूधपिउवा बच्चा
करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया
हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा।
९ मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई
दुःख देगा और न हानि करेगा, क्योंकि
पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर
जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता
है*॥

१० उस समय यिशै की जड़ देश देश
के लोगों के लिये एक झण्डा होगी,
सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगे, और
उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा॥

११ उस समय प्रभु अपना हाथ दूसरी
बार बढ़ाकर बचे हुओं को, जो उसकी
प्रजा के रह गए हैं, अश्शूर से, मिस्र से,
पत्रोस से, कूश से, एलाम से, शिनार से,
हमात से, और समुद्र के द्वीपों से मोल
लेकर छुड़ाएगा। १२ वह अन्यजातियों
के लिये झण्डा खड़ा करके इस्राएल के
सब निकाले हुओं को, और यहूदा के
सब बिखरे हुओं को पृथ्वी की चारों
दिशाओं से इकट्ठा करेगा। १३ एप्रैम
फिर डाह न करेगा और यहूदा के तंग
करनेवाले काट डाले जाएंगे, न तो एप्रैम
यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रैम
को तंग करेगा। १४ परन्तु वे पश्चिम
की ओर पलिश्तियों के कंधे पर झपट्टा
मारेंगे, और मिलकर पूर्वियों को लूटेंगे।
वे एदोम और मोआब पर हाथ बढ़ाएंगे,
और अम्मोनी उनके अधीन हो जाएंगे।
१५ और यहोवा मिस्र के समुद्र की खाड़ी
को सुखा डालेगा, और महानद पर अपना
हाथ बढ़ाकर प्रचण्ड लू से ऐसा सुखाएगा
कि वह सात धार हो जाएगा, और लोग
जूता पहिने हुए भी पार हो जाएंगे।
और उसकी प्रजा के बचे हुओं के लिये
अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग होगा जैसा

* मूल में—जैसा जल समुद्र को ढांपता है।

मिस्र देश से चले आने के समय इस्राएल
के लिये हुआ था ॥

१२ उस दिन तू कहेगा, हे यहोवा,
मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, क्योंकि
यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित हुआ था,
परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हुआ *, और
तू ने मुझे शान्ति दी है ॥
२ परमेश्वर मेरा उद्धार है, मैं भरोसा
रखूंगा और न थरथराऊंगा; क्योंकि
प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का
विषय है, और वह मेरा उद्धारकर्त्ता हो
गया है ॥
३ तुम आनन्दपूर्वक उद्धार के सोतो
से जल भरोगे। ४ और उस दिन तुम
कहोगे, यहोवा की स्तुति करो, उस से
प्रार्थना करो, सब जातियो में उसके
बड़े कामो का प्रचार करो, और कहो
कि उसका नाम महान है ॥
५ यहोवा का भजन गाओ, क्योंकि
उस ने प्रतापमय काम किए हैं; इसे सारी
पृथ्वी पर प्रगट करो। ६ हे सिय्योन
में बसनेवाली तू जयजयकार कर और
ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का
पवित्र तुझ मे महान है ॥

१३ बाबुल के विषय की भारी
भविष्यवाणी जिसको आमोस के
पुत्र यशायाह ने दर्शन में पाया। २ मुंडे
पहाड पर एक झंडा खडा करो, हाथ से
सैन करो और उन से ऊंचे स्वर से पुकारो
कि वे सरदारो के फाटकों में प्रवेश करें।
३ मैं ने स्वयं अपने पवित्र किए हुओ को
आज्ञा दी है, मैं ने अपने क्रोध के लिये
अपने वीरो को बुलाया है जो मेरे प्रताप
के कारण प्रसन्न है ॥

* मूल में—फिर गया।

४ पहाडो पर एक बडी भीड़ का सा
कोलाहल हो रहा है, मानो एक बड़ी
फौज की हलचल हो। राज्य राज्य की
इकट्ठी की हुई जातिया हलचल मचा
रही है। सेनाओ का यहोवा युद्ध के लिये
अपनी सेना इकट्ठी कर रहा है। ५ वे
दूर देश से, आकाश की छोर से आए
है, हां, यहोवा अपने क्रोध के हथियारों
समेत सारे देश को नाश करने के लिये
आया है ॥
६ हाय-हाय करो, क्योंकि यहोवा का
दिन समीप है; वह सर्वशक्तिमान् की
ओर से मानो सत्यानाश करने के लिये
आता है। ७ इस कारण सब के हाथ
ढीले पड़ेंगे, और हर एक मनुष्य का हृदय
पिघल जाएगा *, ८ और वे घबरा जाएंगे।
उनको पीड़ा और शोक होगा; उनको
जच्चा की सी पीडाए उठेंगी। वे चकित
होकर एक दूसरे को ताकेंगे, उनके मुंह
जल जायेंगे † ॥
९ देखो, यहोवा का वह दिन रोष
और क्रोध और निर्दयता के साथ आता
है कि वह पृथ्वी को उजाड डाले और
पापियो को उस में से नाश करे।
१० क्योंकि आकाश के तारागण और
बडे बडे नक्षत्र अपना प्रकाश न देंगे,
और सूर्य उदय होते होते अन्धेरा हो
जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न
देगा। ११ मैं जगत के लोगो को उनकी
बुराई के कारण, और दुष्टो को उनके
अधर्म का दण्ड दूंगा, मैं अभिमानियो
के अभिमान को नाश करूंगा, और उपद्रव
करनेवालो के घमण्ड को तोडूंगा।

* मूल में—मनुष्य का सारा हृदय गल
जाएगा।
† मूल में—उनके लौवाले मुंह होंगे।

१२ मैं मनुष्य को कुन्दन से, और आदमी
को ओपीर के सोने से भी अधिक महंगा
करूंगा। १३ इसलिये मैं आकाश को
कंपाऊंगा, और पृथ्वी अपने स्थान से
टल जाएगी, यह सेनाओं के यहोवा के
रोष के कारण और उसके भड़के हुए
क्रोध के दिन होगा। १४ और वे खदेड़े
हुए हरिण, वा बिन चरवाहे की भेड़ों
की नाईं अपने अपने लोगों की ओर फिरेंगे,
और अपने अपने देश को भाग जाएंगे।
१५ जो कोई मिले सो बेधा जाएगा,
और जो कोई पकड़ा जाए, वह तलवार
से मार डाला जाएगा। १६ उनके बाल-
बच्चे उनके साम्हने पटक दिए जाएंगे,
और उनके घर लूटे जाएंगे, और उनकी
स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी॥

१७ देखो, मैं उनके विरुद्ध मादी
लोगों को उभारूंगा जो न तो चान्दी
का कुछ विचार करेंगे और न सोने का
लालच करेंगे। १८ वे तीरों से जवानों
को मारेंगे, और बच्चों पर कुछ दया न
करेंगे, वे लड़कों पर कुछ तरस न खाएंगे।
१९ और बाबुल जो सब राज्यों का
शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर
कसदी लोग फूलते हैं, वह ऐसा हो जाएगा
जैसे सदोम और अमोरा, जब परमेश्वर
ने उन्हें उलट दिया था। २० वह फिर
कभी न बसेगा और युग युग उस में कोई
वास न करेगा, अरबी लोग भी उस में
डेरा खड़ा न करेंगे, और न चरवाहे
उस में अपने पशु बैठाएंगे। २१ वहां
जंगली जन्तु बैठेंगे, और उल्लू उनके
घरों में भरे रहेंगे, वहां शुतुर्मुर्ग बसेंगे,
और छगलमानस वहां नाचेंगे। उस नगर
के राज-भवनों में हुंडार, २२ और उसके
सुख-विलास के मन्दिरों में गीदड़ बोला
करेंगे, उसके नाश होने का समय निकट
आ गया है, और उसके दिन अब बहुत
नहीं रहे॥

१४ यहोवा याकूब पर दया करेगा,
और इस्राएल को फिर अपनाकर,
उन्हीं के देश में बसाएगा, और परदेशी
उन से मिल जाएंगे और अपने अपने को
याकूब के घराने से मिला लेंगे*। २ और
देश देश के लोग उनको उन्हीं के स्थान
में पहुंचाएंगे, और इस्राएल का घराना
यहोवा की भूमि पर उनका अधिकारी
होकर उनको दास और दासियां बनाएगा,
क्योंकि वे अपने बंधुआई में ले जानेवालों
को बंधुआ करेंगे, और जो उन पर
अत्याचार करते थे उन पर वे शासन
करेंगे॥

३ और जिस दिन यहोवा तुझे तेरे
सन्ताप और घबराहट से, और उस
कठिन श्रम से जो तुझ से लिया गया
विश्राम देगा, ४ उस दिन तू बाबुल के
राजा पर ताना मारकर कहेगा कि परिश्रम
करानेवाला कैसा नाश हो गया है, सुनहले
मन्दिरों से भरी नगरी† कैसी नाश हो
गई है! ५ यहोवा ने दुष्टों के सोंटे को
और अन्याय से शासन करनेवालों के लठ
को तोड़ दिया है, ६ जिस से वे मनुष्यों
को लगातार रोष से मारते रहते थे,
और जाति जाति पर क्रोध से प्रभुता
करते और लगातार उनके पीछे पड़े
रहते थे। ७ अब सारी पृथ्वी को विश्राम
मिला है, वह चैन से है, लोग ऊंचे स्वर
से गा उठे हैं। ८ सनोवर और लबानोन
के देवदार भी तुझ पर आनन्द करके

* मूल में—यह कहावत उठाएगी कि।
† मूल में—सोने का ढेर।

कहते है, जब से तू गिराया गया तब से
कोई हमे काटने को नही आया।
९ पाताल के नीचे अधोलोक मे तुझ से
मिलने के लिये हलचल हो रही है; वह
तेरे लिये मुर्दों को अर्थात् पृथ्वी के सब
सरदारो को जगाता है, और वह जाति
जाति के सब राजाओ को उनके सिंहासन
पर से उठा खड़ा करता है। १० वे सब
तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी नाईं
निर्बल हो गया है? क्या तू हमारे समान
ही बन गया? ११ तेरा विभव और
तेरी सारंगियो का शब्द अधोलोक मे
उतारा गया है, कीड़े तेरा बिछौना और
केंचुए तेरा ओढना है॥

१२ हे भोर के चमकनेवाले तारे* तू
क्योंकर आकाश से गिर पडा है? तू
जो जाति जाति को हरा देता था, तू
अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया
है? १३ तू मन में कहता तो था कि
में स्वर्ग पर चढूंगा, मै अपने सिंहासन
को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा
करूंगा, और उत्तर दिशा की छोर पर
सभा के पर्वत पर विराजूंगा; १४ मै
मेघो से भी ऊंचे ऊंचे स्थानो के ऊपर
चढूंगा, मै परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।
१५ परन्तु तू अधोलोक में उस गड़हे की
तह तक उतारा जाएगा। १६ जो तुझे
देखेंगे तुझ को ताकते हुए तेरे विषय मे
सोच सोचकर कहेंगे, क्या यह वही पुरुष
है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था
और राज्य राज्य में घबराहट डाल देता
था; १७ जो जगत को जंगल बनाता
और उसके नगरो को ढा देता था, और
अपने बंधुओं को घर जाने नहीं देता था?

* मूल में—बेटे।

१८ जाति जाति के सब राजा अपने अपने
घर पर महिमा के साथ आराम से पड़े
है, १९ परन्तु तू निकम्मी शाख की
नाईं अपनी कबर मे से फेंका गया, तू
उन मारे हुओ की लोथो से घिरा है* जो
तलवार से बिधकर गड़हे मे पत्थरो के
बीच मे लताड़ी हुई लोथ के समान पड़े
है। २० तू उनके साथ कब्र मे न गाड़ा
जाएगा, क्योंकि तू ने अपने देश को
उजाड़ दिया, और अपनी प्रजा का घात
किया है॥

कुकर्मियो के वंश का नाम भी कभी
न लिया जाएगा। २१ उनके पूर्वजो के
अधर्म के कारण पुत्रो के घात की तैयारी
करो, ऐसा न हो कि वे फिर उठकर पृथ्वी
के अधिकारी हो जाएं, और जगत मे
बहुत से नगर बसाएं॥

२२ सेनाओ के यहोवा की यह वाणी
है कि मै उनके विरुद्ध उठूंगा, और बाबुल
का नाम और निशान मिटा डालूंगा,
और बेटों-पोतो को काट डालूंगा †, यहोवा
की यही वाणी है। २३ मै उसको साही
की मान्द और जल की झीले कर दूंगा,
और मै उसे सत्यानाश के झाड़ू से झाड़
डालूंगा, सेनाओ के यहोवा की यही वाणी
है॥

२४ सेनाओ के यहोवा ने यह शपथ
खाई है, निःसन्देह जैसा मै ने ठाना है,
वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मै ने युक्ति
की है, वैसी ही पूरी होगी, २५ कि मै
अश्शूर को अपने ही देश मे तोड़ दूंगा,
और अपने पहाड़ो पर उसे कुचल डालूंगा,
तब उसका जूआ उनकी गर्दनो पर से

* मूल में—लोथें पहिने है।

† मूल में—बाबुल का नाम और बस्ती और बेटे-पोते को काट डालूंगा।

और उसका बोझ उनके कंधो पर से
उतर जाएगा। २६ यही युक्ति सारी
पृथ्वी के लिये ठहराई गई है, और यह
वही हाथ है जो सब जातियो पर बढा
हुआ है। २७ क्योंकि सेनाओ के यहोवा
ने युक्ति की है और कौन उसको टाल
सकता है? उसका हाथ बढाया गया है,
उसे कौन रोक सकता है?

२८ जिस वर्ष में आहाज राजा मर
गया उसी वर्ष यह भारी भविष्यद्वाणी हुई

२९ हे सारे पलिश्तीन तू इसलिये
आनन्द न कर, कि तेरे मारनेवाले की
लाठी टूट गई, क्योंकि सर्प की जड से
एक काला नाग उत्पन्न होगा, और उसका
फल एक उडनेवाला और तेज विषवाला
अग्निसर्प होगा। ३० तब कंगालो के
जेठे खाएंगे और दरिद्र लोग निडर बैठने
पाएंगे, परन्तु मैं तेरे वंश को भूख से
मार डालूगा, और तेरे बचे हुए लोग
घात किए जाएंगे। ३१ हे फाटक, तू
हाय हाय कर, हे नगर, तू चिल्ला, हे
पलिश्तीन तू सब का सब पिघल जा।
क्योंकि उत्तर से एक धूआ उठेगा और
उसकी सेना में से कोई पीछे न रहेगा॥

३२ तब अन्यजातियो के दूतो को क्या
उत्तर दिया जाएगा? यह कि 'यहोवा
ने सिय्योन की नेव डाली है, और उसकी
प्रजा के दीन लोग उस मे शरण लेंगे॥

१५ मोआब के विषय भारी
भविष्यद्वाणी। निश्चय मोआब
का आर नगर एक ही रात मे उजाड
और नाश हो गया है, निश्चय मोआब
का कीर नगर एक ही रात मे उजाड
और नाश हो गया है। २ बैत और
दीबोन ऊंचे स्थानो पर रोने के लिये
चढ गए है, नबो और मेदबा के ऊपर
मोआब हाय हाय करता है। उन सभो
के सिर मुडे हुए, और सभो की दाढिया
मुढी हुई है, ३ सडको मे लोग टाट
पहिने है, छतो पर और चौको में सब
कोई आसू बहाते हुए हाय हाय करते
है। ४ हेशबोन और एलाले चिल्ला रहे
है, उनका शब्द यहस तक सुनाई पडता
है, इस कारण मोआब के हथियारबन्द
चिल्ला रहे है, उसका जी अति उदास
है। ५ मेरा मन मोआब के लिये दोहाई
देता है, उसके रईस सोअर और
एग्लतशलीशिय्या तक भागे जाते है। देखो,
लूहीत की चढाई पर वे रोते हुए चढ
रहे है, सुनो, होरोनैम के मार्ग मे वे
नाश होने की चिल्लाहट मचा रहे है।
६ निम्रीम का जल सूख गया, घास
कुम्हला गई और हरियाली मुर्झा गई,
और नमी कुछ भी नही रही। ७ इसलिये
जो धन उन्हो ने बचा रखा, और जो
कुछ उन्हो ने इकट्ठा किया है, उस सब
को वे उस नाले के पार लिये जा रहे है
जिस मे मजनूवृक्ष है। ८ इस कारण
मोआब के चारो ओर के सिवाने मे
चिल्लाहट हो रही है, उस मे का हाहाकार
एग्लैम और बेरेलीम मे भी सुन पडता
है। ९ क्योंकि दीमोन का सोता लोहू
मे भरा हुआ है, तौभी मैं दीमोन पर
और दु:ख डालूगा, मैं बचे हुए मोआबियो
और उनके देश से भागे हुओ के विरुद्ध
सिंह भेजूगा॥

१६ जंगल की ओर के सेला नगर
से सिय्योन* की बेटी के पर्वत पर
देश के हाकिम के लिये भेडो के बच्चो

* मूल में—सिय्योन की बेटी।

से काट डालेगा, और फैली हुई डालियो
को तोड तोडकर अलग फेक देगा।
६ वे पहाडो के मासाहारी पक्षियो और
वन-पशुओ के लिये इकट्ठे पड़े रहेगे। और
मासाहारी पक्षी तो उनको नोचते नोचते *
धूपकाल विताएगे, और सब भाति के †
वनपशु उनको खाते खाते * जाडा काटेगे ॥
७ उस समय जिस जाति के लोग
वलिष्ट और सुन्दर है, और जो आदि
ही से डरावने होते आए है, और मापने
और रौदनेवाले है, और जिनका देश
नदियो से विभाजित किया हुआ है, उस
जाति से सेनाओ के यहोवा के नाम के
स्थान सिय्योन पर्वत पर सेनाओ के यहोवा
के पास भेट पहुचाई जाएगी ॥

१९ मिस्र के विषय मे भारी
भविष्यवाणी। देखो, यहोवा
शीघ्र उडनेवाले वादल पर सवार होकर
मिस्र मे आ रहा है, २ और मिस्र की
मूरते उसके आने से थरथरा उठेंगी, और
मिस्रियों का हृदय पानी-पानी हो जाएगा।
और मै मिस्रियो को एक दूसरे के विरुद्ध
उभारूगा, और वे आपस मे लडेंगे, प्रत्येक
अपने भाई से और हर एक अपने पडोसी
से लडेगा, नगर नगर में और राज्य राज्य
में युद्ध छिडेगा, ३ और मिस्रियो की वुद्धि
मारी जाएगी ‡ और मै उनकी युक्तियो
को व्यर्थ कर दूगा, और वे अपनी मूरतो
के पास और ओझो और फुसफुसानेवाले
टोनहो § के पास जा जाकर उन से पूछेंगे,
४ परन्तु मै मिस्रियो को एक कठोर
स्वामी के हाथ में कर दूगा, और एक
क्रूर राजा उन पर प्रभुता करेगा, प्रभु,
सेनाओ के यहोवा की यही वाणी है ॥
५ और समुद्र का जल सूख जाएगा,
और महानदी सूख कर खाली हो जाएगी;
६ और नाले वसाने लगेंगे, और मिस्र *
की नहरें भी सूख जाएगी, और नरकट और
हूगले कुम्हला जाएगे। ७ नील नदी के
तीर पर के कछार की घास, और जो
कुछ नील नदी के पास बोया जाएगा वह
सूखकर नष्ट हो जाएगा †, और उसका
पता तक न लगेगा। ८ सव मछुवे जितने
नील नदी मे वसी डालते है विलाप करेगे
और लम्वी लम्वी सासे लेगे, और जो
जल के ऊपर जाल फेकते है वे निर्वल हो
जाएगे ‡। ९ फिर जो लोग धुने हुए सन
से काम करते है और जो सूत से वुनते है
उनकी आशा टूट जाएगी। १० मिस्र के
रईस तो निराश § और उसके सब मज़दूर
उदास हो जाएगे ॥
११ निश्चय सोअन के सब हाकिम
मूर्ख है, और फिरौन के वुद्धिमान मन्त्रियो
की युक्ति पशु की सी ठहरी। फिर तुम
फिरौन से कैसे कह सकते हो कि मै
वुद्धिमानो का पुत्र और प्राचीन राजाओ
की सन्तान हू? १२ अव तेरे वुद्धिमान
कहा है? सेनाओ के यहोवा ने मिस्र के
विपय जो युक्ति की है, उसको यदि वे
जानते हो तो तुझे वताए। १३ सोअन
के हाकिम मूढ वन गए है, नोप के हाकिमो
ने धोखा खाया है, और जिन पर मिस्र के

* मूल में—उन पर।
† मूल में—और भूमि के सब।
‡ मूल में—मिस्र की आत्मा उसके भीतर छूछी होगी।
§ मूल में—और फुसफुसानेहारों और ओझों और टोनहों।

* मूल में—मासोर।
† मूल में—सूखकर भगाया जाएगा।
‡ मूल में—सो कुम्हलाएंगे।
§ मूल में—उसके खम्भे तो टूट पड़ेंगे।

गोत्रों के प्रधान लोगों* का भरोसा था
उन्हों ने मिस्र को भरमा दिया है।
१४ यहोवा ने उस में भ्रमता उत्पन्न की
है, उन्हों ने मिस्र को उसके सारे कामों
में वमन करते हुए मतवाले की नाईं
डगमगा दिया है। १५ और मिस्र के
लिये कोई ऐसा काम न रहेगा जो सिर
वा पूंछ से अथवा प्रधान वा साधारण
से हो सके ॥

१६ उस समय मिस्री, स्त्रियों के
समान हो जाएंगे, और सेनाओं का यहोवा
जो अपना हाथ उन पर बढ़ाएगा उसके
डर के मारे वे थरथराएंगे और कांप
उठेंगे। १७ और यहूदा का देश मिस्र
के लिये यहां तक भय का कारण होगा
कि जो कोई उसकी चर्चा सुनेगा वह
थरथरा उठेगा, सेनाओं के यहोवा की
उस युक्ति का यही फल होगा जो वह
मिस्र के विरुद्ध करता है ॥

१८ उस समय मिस्र देश में पांच
नगर होंगे जिनके लोग कनान की भाषा
बोलेंगे और यहोवा की शपथ खायेंगे।
उन में से एक का नाम नाशनगर† रखा
जाएगा ॥

१९ उस समय मिस्र देश के बीच में
यहोवा के लिये एक वेदी होगी, और उसके
सिवाने के पास यहोवा के लिये एक खंभा
खड़ा होगा। २० वह मिस्र देश में
सेनाओं के यहोवा के लिये चिन्ह और
साक्षी ठहरेगा, और जब वे अंधेर करनेवाले
के कारण यहोवा की दोहाई देंगे, तब
वह उनके पास एक उद्धारकर्त्ता और
रक्षक भेजेगा, और उन्हें मुक्त करेगा।
२१ तब यहोवा अपने आप को मिस्रियों
पर प्रगट करेगा, और मिस्री उस समय
यहोवा को पहिचानेंगे और मेलबलि और
अन्नबलि चढ़ाकर उसकी उपासना करेंगे,
और यहोवा के लिये मन्नत मानकर पूरी
भी करेंगे। २२ और यहोवा मिस्रियों
को मारेगा, वह मारेगा और चंगा भी
करेगा, और वे यहोवा की ओर फिरेंगे,
और वह उनकी विनती सुनकर उनको
चंगा करेगा ॥

२३ उस समय मिस्र से अश्शूर जाने
का एक राजमार्ग होगा, और अश्शूरी मिस्र
में आएंगे, और मिस्री लोग अश्शूर को
जाएंगे, और मिस्री अश्शूरियों के संग
मिलकर आराधना करेंगे ॥

२४ उस समय इस्राएल, मिस्र और
अश्शूर तीनों मिलकर पृथ्वी के लिये
आशीष का कारण होंगे। २५ क्योंकि
सेनाओं का यहोवा उन तीनों को यह
कहकर आशीष देगा, धन्य हो मेरी प्रजा
मिस्र, और मेरा रचा हुआ अश्शूर, और
मेरा निज भाग इस्राएल ॥

२० जिस वर्ष में अश्शूर के राजा
सर्गोन की आज्ञा से तर्तान ने
अशदोद आकर उस से युद्ध किया और
उसको ले भी लिया, २ उसी वर्ष यहोवा
ने आमोस के पुत्र यशायाह से कहा,
जाकर अपनी कमर का टाट खोल और
अपनी जूतियां उतार, सो उस ने वैसा
ही किया, और वह नंगा और नंगे पांव
घूमता फिरता था। ३ और यहोवा ने
कहा, जिस प्रकार मेरा दास यशायाह
तीन वर्ष से उघाड़ा और नंगे पांव चलता
आया है, कि मिस्र और कूश के लिये
चिन्ह और चमत्कार हो, ४ उसी प्रकार
अश्शूर का राजा मिस्री और कूश के

* मूल में—गोत्रों के कोने।
† अर्थात् ढह जानेवाला नगर।

लोगो को बधुआ करके देश-निकाल
करेगा, क्या लडके क्या बूढे, सभो को
बधुए करके उघाडे और नगे पाव और
नितम्ब खुले ले जाएगा, जिस से मिस्र
लज्जित हो। ५ तब वे कूश के कारण
जिस पर उनकी आशा थी, और मिस्र के
हेतु जिस पर वे फूलते थे व्याकुल और
लज्जित हो जाएगे। ६ और समुद्र के
इस पार के बसनेवाले उस समय यह
कहेंगे, देखो, जिन पर हम आशा रखते
थे और जिनके पास हम अश्शूर के राजा
से बचने के लिये भागने को थे उनकी
ऐसी दशा हो गई है। तो फिर हम लोग
कैसे बचेगे?

२१ समुद्र के पास के जगल के
विषय भारी वचन। जैसे दक्खिनी
प्रचण्ड बवण्डर चला आता है, वह
जगल से अर्थात् डरावने देश से निकट
आ रहा है। २ कष्ट की बातो का
मुझे दर्शन दिखाया गया है, विश्वासघाती
विश्वासघात करता है, और नाशक नाश
करता है। हे एलाम, चढाई कर, हे
मादै, घेर ले, उसका सब कराहना मै
बन्द करता हू। ३ इस कारण मेरी
कटि मे कठिन पीडा है, मुझ को मानो
जच्चा पीडे हो रही है, मै ऐसे सकट मे
पड गया हू कि कुछ सुनाई नही देता,
मै ऐसा घबरा गया हू कि कुछ दिखाई
नही देता। ४ मेरा हृदय धडकता है,
मैं अत्यन्त भयभीत हू, जिस साझ की
मै बाट जोहता था उसे उस ने मेरी
थरथराहट का कारण कर दिया है।
५ भोजन* की तैयारी हो रही है, पहरुए
बैठाए जा रहे है, खाना-पीना हो रहा है।
हे हाकिमो, उठो, ढाल मे तेल मलो।
६ क्योकि प्रभु ने मुझ से यो कहा है,
जाकर एक पहरुआ खडा कर दे, और
वह जो कुछ देखे उसे बताए। ७ जब
वह सवार देखे जो दो-दो करके आते
हो, और गदहो और ऊटो के सवार, तब
बहुत ही ध्यान देकर सुने। ८ और
उस ने सिंह के से शब्द से पुकारा, हे प्रभु
मै दिन भर खडा पहरा देता रहा और
मै ने पूरी राते पहरे पर काटा। ९ और
क्या देखता हू कि मनुष्यो का दल और
दो-दो करके सवार चले आ रहे है।
और वह बोल उठा, गिर पडा, बाबुल
गिर पडा, और उसके देवताओ के सब
खुदी हुई मूरते भूमि पर चकनाचूर कर
डाली गई है। १० हे मेरे दाए हुए, और
मेरे खलिहान के अन्न, जो बाते मै ने
इस्राएल के परमेश्वर सेनाओ के यहोवा से
सुनी है, उनको मै ने तुम्हे जता दिया है।।
११ दूमा के विषय भारी वचन।
सेईर मे से कोई मुझे पुकार रहा है,
हे पहरुए, रात का क्या समाचार है?
हे पहरुए, रात की क्या खबर है?
१२ पहरुए ने कहा, भोर होती है और
रात भी। यदि तुम पूछना चाहते हो तो
पूछो, फिर लौटकर आना।।
१३ अरब के विरुद्ध भारी वचन।
हे ददानी बटोहियो, तुम को अरब के
जगल मे रात बितानी पडेगी। १४ वे
प्यासे के पास जल लाए, तेमा देश के
रहनेवाले रोटी लेकर भागनेवाले से मिलने
के लिये निकले आ रहे है। १५ क्योकि
वे तलवारो के साम्हने से वरन नगी
तलवार से और ताने हुए धनुष से और
घोर युद्ध से भागे है। १६ क्योकि प्रभु
ने मुझ से यो कहा है, मजदूर के वर्षो

* मूल में—मेज।

के अनुसार एक वर्ष में केदार का सारा
विभव मिटाया जाएगा, १७ और केदार
के धनुर्धारी शूरवीरों में से थोड़े ही रह
जाएंगे, क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

२२ दर्शन की तराई के विषय
भारी वचन। तुम्हें क्या हुआ
कि तुम सब के सब छतों पर चढ़ गए
हो, २ हे कोलाहल और ऊधम से भरी
प्रसन्न नगरी? तुझ में जो मारे गए
हैं वे न तो तलवार से और न लड़ाई
में मारे गए हैं। ३ तेरे सब न्यायी एक
संग भाग गए और धनुर्धारियों से बान्धे
गए हैं। और तेरे जितने शेष पाए गए
वे एक संग बान्धे गए, वे दूर भागे थे।
४ इस कारण मैं ने कहा, मेरी ओर से
मुंह फेर लो कि मैं बिलक बिलककर
रोऊं, मेरे नगर* के सत्यानाश होने
के शोक में मुझे शान्ति देने का यत्न मत
करो ॥

५ क्योंकि सेनाओं के प्रभु यहोवा का
ठहराया हुआ दिन होगा, जब दर्शन की
तराई में कोलाहल और रौंदा जाना
और बेचैनी होगी, शहरपनाह में सुरंग
लगाई जाएगी और दोहाई का शब्द
पहाड़ों तक पहुंचेगा। ६ और एलाम
पैदलों के दल और सवारों समेत तर्कश
बान्धे हुए है, और कीर ढाल खोले हुए
है। ७ तेरी उत्तम उत्तम तराइयां रथों
से भरी हुई होंगी और सवार फाटक के
साम्हने पांति बान्धेंगे। उस ने यहूदा का
घूंघट खोल दिया है ॥

८ उस दिन तू ने वन नाम भवन
के अस्त्र-शस्त्र का स्मरण किया, ९ और
तू ने दाऊदपुर की शहरपनाह की दरारों
को देखा कि वे बहुत हैं, और तू ने निचले
पोखरे के जल को इकट्ठा किया १० और
यरूशलेम के घरों को गिनकर शहरपनाह
के दृढ़ करने के लिये घरों को ढा दिया।
११ तू ने दोनों भीतों के बीच पुराने
पोखरे के जल के लिये एक कुंड खोदा।
परन्तु तू ने उसके कर्त्ता को स्मरण नहीं
किया, जिस ने प्राचीनकाल से उसको ठहरा
रखा* था, और न उसकी ओर तू ने
दृष्टि की ॥

१२ उस समय सेनाओं के प्रभु यहोवा
ने रोने-पीटने, सिर मुड़ाने और टाट
पहिनने के लिये कहा था, १३ परन्तु
क्या देखा कि हर्ष और आनन्द मनाया
जा रहा है, गाय-बैल का घात और भेड़-
बकरी का वध किया जा रहा है, मांस
खाया और दाखमधु पीया जा रहा है।
और कहते हैं, आओ खाएं-पीएं, क्योंकि
कल तो हमें मरना है। १४ सेनाओं के
यहोवा ने मेरे कान में कहा और अपने
मन की बात प्रगट की, निश्चय तुम लोगों
के इस अधर्म का कुछ भी प्रायश्चित्त
तुम्हारी मृत्यु तक न हो सकेगा, सेनाओं
के प्रभु यहोवा का यही कहना है ॥

१५ सेनाओं का प्रभु यहोवा यों कहता
है, शेबना नाम उस भण्डारी के पास
जो राजघराने के काम पर नियुक्त है
जाकर कह, यहां तू क्या करता है?
१६ और यहां तेरा कौन है कि तू ने
अपनी कबर यहां खुदवाई है? तू अपनी
कबर ऊंचे स्थान में खुदवाता और अपने
रहने का स्थान चट्टान में खुदवाता है?
१७ देख, यहोवा तुझ को बड़ी शक्ति से

* मूल में—बेटी।

* मूल में—उसे रचा।

पकडकर बहुत दूर फेक देगा। १८ वह
तुझे मरोडकर गेन्द की नाई लम्बे चौडे
देश मे फेक देगा, हे अपने स्वामी के
घराने को लज्जित करनेवाले वहा तू
मरेगा और तेरे विभव के रथ वही रह
जाएगे। १९ मै तुझ को तेरे स्थान पर
से ढकेल दूगा, और तू अपने पद से उतार
दिया जायेगा। २० उस समय मै
हिल्कियाह के पुत्र अपने दास एल्याकीम
को बुलाकर, उसे तेरा अगरखा पहनाऊगा,
२१ और उसकी कमर मे तेरी पेटी
कसकर बान्धूगा, और तेरी प्रभुता उसके
हाथ मे दूगा। और वह यरूशलेम के
रहनेवालो और यहूदा के घराने का पिता
ठहरेगा। २२ और मै दाऊद के घराने
की कुजी उसके कधे पर रखूगा, और वह
खोलेगा और कोई बन्द न कर सकेगा,
वह बन्द करेगा और कोई खोल न सकेगा।
२३ और मै उसको दृढ स्थान मे खूटी
की नाई गाडूगा, और वह अपने पिता के
घराने के लिये विभव का कारण * होगा।
२४ और उसके पिता से घराने का सारा
विभव, वश और सन्तान, सब छोटे-छोटे
पात्र, क्या कटोरे क्या सुराहिया, सब
उस पर टागी जाएगी। २५ सेनाओ के
यहोवा की यह वाणी है कि उस समय
वह खूटी जो दृढ स्थान मे गाडी गई थी,
वह ढीली हो जाएगी, और काटकर गिराई
जाएगी, और उस पर का बोझ गिर
जाएगा, क्योकि यहोवा ने यह कहा है॥

२३ सोर के विषय भारी वचन।
हे तर्शीश के जहाजो हाय, हाय,
करो, क्योकि वह उजड गया, वहा न
तो कोई घर और न कोई शरण का

* मूल में—महिमायुक्त सिंहासन।

स्थान है! यह बात उनको कित्तियो के
देश मे से प्रगट की गई है। २ हे समुद्र
के तीर के रहनेवालो, जिनको समुद्र के
पार जानेवाले सीदोनी व्योपारियो ने
धन से भर दिया है, चुप रहो! ३ शीहोर *
का अन्न, और नील नदी के पास की
उपज महासागर के मार्ग से उसको मिलती
थी, क्योकि वह और जातियो के लिये
व्योपार का स्थान था। ४ हे सीदोन,
लज्जित हो, क्योकि समुद्र ने अर्थात् समुद्र
के दृढ स्थान ने यह कहा है, मै ने न तो
कभी जन्माने की पीडा जानी और न बालक
को जन्म दिया, और न बेटो को पाला
और न बेटियो को पोसा है। ५ जब
सोर का समाचार मिस्र मे पहुचे, तब वे
सुनकर सकट मे पडेगे। ६ हे समुद्र
के तीर के रहनेवालो हाय, हाय, करो!
पार होकर तर्शीश को जाओ। ७ क्या
यह तुम्हारी प्रसन्नता से भरी हुई
नगरी है जो प्राचीनकाल से बसी थी,
जिसके पाव उसे बसने को दूर ले जाते
थे? ८ सोर जो राजाओ को गद्दी पर
बैठाती थी †, जिसके व्योपारी हाकिम थे,
और जिसके महाजन पृथ्वी भर मे प्रतिष्ठित
थे, उसके विरुद्ध किस ने ऐसी युक्ति
की है? ९ सेनाओ के यहोवा ही ने
ऐसी युक्ति की है कि समस्त गौरव के
घमण्ड को तुच्छ कर दे और पृथ्वी के
प्रतिष्ठितो का अपमान करवाए। १० हे
तर्शीश के निवासियो ‡ नील नदी की नाई
अपने देश मे फैल जाओ, अब कुछ बन्धन §
नही रहा। ११ उस ने अपना हाथ

* अर्थात् मिस्र का उत्तरवाला भाग।
† मूल में—मुकुट। रखनेहारी सोर।
‡ मूल में—तर्शीश की बेटी।
§ मूल में—फेंटा।

समुद्र पर बढ़ाकर राज्यों को हिला दिया
है, यहोवा ने कनान के दृढ़ किलों के
नाश करने की आज्ञा दी है। १२ और
उस ने कहा है, हे सीदोन, हे भ्रष्ट की
हुई कुमारी, तू फिर प्रसन्न होने की नहीं,
उठ, पार होकर कित्तियों के पास जा,
परन्तु वहां भी तुझे चैन न मिलेगा॥

१३ कसदियों के देश को देखो, वह
जाति अब न रही, अश्शूर ने उस देश
को जंगली जन्तुओं का स्थान बनाया।
उन्हों ने अपने गुम्मट उठाए और राजभवनों
को ढा दिया, और उसको खण्डहर कर
दिया। १४ हे तर्शीश के जहाजो, हाय,
हाय, करो, क्योंकि तुम्हारा दृढ़स्थान
उजड़ गया है। १५ उस समय एक राजा
के दिनों के अनुसार सत्तर वर्ष तक सोर
बिसरा हुआ रहेगा। सत्तर वर्ष के बीतने
पर सोर वेश्या की नाईं गीत गाने लगेगा।
१६ हे बिसरी हुई वेश्या, वीणा लेकर
नगर में घूम, भली भांति बजा, बहुत
गीत गा, जिस से लोग फिर तुझे याद
करें। १७ सत्तर वर्ष के बीतने पर यहोवा
सोर की सुधि लेगा, और वह फिर छिनाले
की कमाई पर मन लगाकर धरती भर
के सब राज्यों के संग छिनाला करेगी।
१८ उसके व्योपार की प्राप्ति, और उसके
छिनाले की कमाई, यहोवा के लिये पवित्र
की जाएगी, वह न भण्डार में रखी जाएगी
न संचय की जाएगी, क्योंकि उसके व्योपार
की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो
यहोवा के साम्हने रहा करेंगे, कि उनको
भरपूर भोजन और चमकीला वस्त्र मिले॥

२४ सुनो, यहोवा पृथ्वी को निर्जन
और सुनसान करने के पर है,
वह उसको उलटकर उसके रहनेवालों को
तितर बितर करेगा। २ और जैसी
यजमान की वैसी याजक की, जैसी दास
की वैसा स्वामी की, जैसी दासी की
वैसी स्वामिनी की, जैसी लेनेवाले की
वैसी बेचनेवाले की, जैसी उधार देनेवाले
की वैसी उधार लेनेवाले की, जैसी ब्याज
लेनेवाले की वैसी ब्याज देनेवाले की,
सभों की एक ही दशा होगी। ३ पृथ्वी
शून्य और सत्यानाश हो जाएगी, क्योंकि
यहोवा ही ने यह कहा है॥

४ पृथ्वी विलाप करेगी और मुर्झाएगी,
जगत कुम्हलाएगा और मुर्झा जाएगा,
पृथ्वी के महान लोग भी कुम्हला जाएंगे।
५ पृथ्वी अपने रहनेवालों के कारण*
अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्हों ने व्यवस्था
का उल्लंघन किया और विधि को पलट
डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया
है। ६ इस कारण पृथ्वी को शाप ग्रसेगा
और उस में रहनेवाले दोषी ठहरेंगे, और
इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे
और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे। ७ नया
दाखमधु जाता रहेगा†, दाखलता मुर्झा
जाएगी, और जितने मन में आनन्द करते
हैं सब लम्बी लम्बी सांस लेंगे। ८ डफ
का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा, प्रसन्न
होनेवालों का कोलाहल जाता रहेगा, वीणा
का सुखदाई शब्द शान्त हो जाएगा। ९ वे
गाकर फिर दाखमधु न पीएंगे, पीनेवाले
को मदिरा कड़वी लगेगी। १० गड़बड़ी
मचानेवाली नगरी नाश होगी, उसका हर
एक घर ऐसा बन्द किया जाएगा कि
कोई पैठ न सकेगा। ११ सड़कों में लोग
दाखमधु के लिये चिल्लाएंगे, आनन्द

* मूल में—नीचे।
† मूल में—विलाप करेगा।

मिट जाएगा * देश का सारा हर्ष जाता
रहेगा। १२ नगर उजाड ही उजाड
रहेगा, और उसके फाटक तोडकर नाश
किए जाएगे। १३ क्योकि पृथ्वी पर देश
देश के लोगो मे ऐसा होगा जैसा कि
जलपाइयो के झाडने के समय, वा दाख
तोडने के वाद कोई कोई फल रह जाते
है ।।

१४ वे लोग गला खोलकर जयजयकार
करेगे, और यहोवा के माहात्म्य को देखकर
समुद्र से ललकारेगे। १५ इस कारण
पूर्व मे यहोवा की महिमा करो, और
समुद्र के द्वीपो मे इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो।
१६ पृथ्वी की छोर से हमे ऐसे गीत की
ध्वनि सुन पडती है, कि धर्मी की महिमा
और वडाई हो। परन्तु मै ने कहा, हाय,
हाय! मै नाश हो गया, नाश † ! क्योकि
विश्वासघाती विश्वासघात करते, वे वडा
ही विश्वासघात करते है ।।

१७ हे पृथ्वी के रहनेवालो तुम्हारे लिये
भय और गडहा और फन्दा है! १८ जो
कोई भय के शब्द से भागे वह गडहे मे
गिरेगा, और जो कोई गडहे मे से निकले
वह फन्दे मे फसेगा। क्योकि आकाश के
झरोखे खुल जाएगे, और पृथ्वी की नेव
डोल उठेगी। पृथ्वी फटकर टुकडे टुकडे
हो जाएगी, पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान
होगी। १९ वह मतवाले की नाईं बहुत
डगमगाएगी २० और मचान की नाईं
डोलेगी, वह अपने पाप के बोझ से दवकर
गिरेगी और फिर न उठेगी ।।

२१ उस समय ऐसा होगा कि यहोवा
आकाश की सेना को आकाश मे और पृथ्वी
के राजाओ को पृथ्वी ही पर दण्ड देगा।
२२ वे वधुओ की नाईं गड्हे में इकट्ठे किए
जाएगे और बन्दीगृह में बन्द किए जाएगे,
और बहुत दिनो के वाद उनकी सुधि ली
जाएगी। २३ तव चन्द्रमा सकुचित * हो
जाएगा और सूर्य लज्जित होगा, क्योकि
सेनाओ का यहोवा सिय्योन पर्वत पर
और यरूशलेम मे अपनी प्रजा के पुरनियो
के साम्हने प्रताप के साथ राज्य करेगा ।।

२५ हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर
है; मै तुझे सराहूगा, मै तेरे
नाम का धन्यवाद करूंगा, क्योकि तू
ने आश्चर्य कर्म किए है, तू ने प्राचीनकाल
से पूरी सच्चाई के साथ युक्तिया की हैं।
२ तू ने नगर को डीह, और उस गढवाले
नगर को खण्डहर कर डाला है; तू
ने परदेशियों की राजपुरी को ऐसा उजाडा
कि वह नगर नही रहा, वह फिर कभी
वसाया न जाएगा। ३ इस कारण वल-
वन्त राज्य के लोग तेरी महिमा करेंगे;
भयकर अन्यजातियो के नगरो में तेरा
भय माना जाएगा। ४ क्योकि तू सकट
मे दीनो के लिये गढ, और जव भयानक
लोगो का झोका भीत पर बौछार के
समान होता था, तब तू दरिद्रो के लिये
उनकी शरण, और तपन मे छाया का
स्थान हुआ। ५ जैसे निर्जल देश में
वादल की छाया से तपन ठण्डी होती है
वैसे ही तू परदेशियो का कोलाहल और
क्रूर लोगो का जयजयकार बन्द करता †
है ।।

६ सेनाओ का यहोवा इसी पर्वत
पर सब देशो के लोगो के लिये ऐसी

* मूल में—अन्धेरा होगा।
† मूल में—क्षीण हो गया क्षीण।

* मूल में—चन्द्रमा का मुह काला।
† मूल में—झुका देता।

जेवनार करेगा जिस में भाति भाति का
चिकना भोजन और नियरा हुआ दाखमधु
होगा, उत्तम से उत्तम चिकना भोजन
और बहुत ही नियरा हुआ दाखमधु होगा।
७ और जो पर्दा * सब देशों के लोगों
पर पड़ा है, जो घूघट सब अन्यजातियों
पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत
पर नाश करेगा। ८ वह मृत्यु को सदा
के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा
सभों के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा,
और अपनी प्रजा की नामधराई सारी
पृथ्वी पर से दूर करेगा, क्योंकि यहोवा
ने ऐसा कहा है॥

९ और उस समय यह कहा जाएगा,
देखो, हमारा परमेश्वर यही है, हम
इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह
हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है,
हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम
उस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित
होंगे॥

१० क्योंकि इस पर्वत पर यहोवा का
हाथ सर्वदा बना रहेगा और मोआब
अपने ही स्थान में ऐसा लताड़ा जाएगा
जैसा घूरे में पुआल लताड़ा जाता है।
११ और वह उस में अपने हाथ इस
प्रकार फैलाएगा, जैसे कोई तैरते हुए
फैलाए, परन्तु वह उसके गर्व को तोड़ेगा,
और उसकी चतुराई † को निष्फल कर
देगा ‡। १२ और उसकी ऊंची ऊंची और
दृढ़ शहरपनाहों को वह झुकाएगा और
नीचा करेगा, वरन भूमि पर गिराकर
मिट्टी में मिला देगा॥

* मूल में—परदे का जो मुख।
† मूल में—उसके हाथों की चतुर युक्तियों।
‡ मूल में—नीचा कर देगा।

२६ उस समय यहूदा देश में
यह गीत गाया जाएगा, हमारा
एक दृढ़ नगर है, उद्धार का काम देने
के लिये वह उसकी शहरपनाह और गढ़
को नियुक्त करता है। २ फाटकों को
खोलो कि सच्चाई का पालन करनेवाली
एक धर्मी जाति प्रवेश करे। ३ जिसका
मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू
पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि
वह तुझ पर भरोसा रखता है। ४ यहोवा
पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा
सनातन चट्टान है। ५ वह ऊंचे पदवाले
को झुका देता, जो नगर ऊंचे पर बसा
है उसको वह नीचे कर देता। वह उसको
भूमि पर गिराकर मिट्टी में मिला देता
है। ६ वह पांवों से, वरन दरिद्रों के
पैरों से रौंदा जाएगा *॥

७ धर्मी का मार्ग सच्चाई है, तू
जो स्वयं सच्चाई है, तू धर्मी की अगुवाई
करता है। ८ हे यहोवा, तेरे न्याय के
मार्ग में हम लोग तेरी बाट जोहते आए
हैं, तेरे नाम के स्मरण की हमारे प्राणों
में लालसा बनी रहती है। ९ रात के
समय मैं जी से तेरी लालसा करता हूं,
मेरा सम्पूर्ण मन से यत्न के साथ तुझे
ढूंढ़ता है। क्योंकि जब तेरे न्याय के काम
पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के
रहनेवाले धर्म को सीखते हैं। १० दुष्ट
पर चाहे दया भी की जाए तौभी वह
धर्म को न सीखेगा, धर्मराज्य † में भी
वह कुटिलता करेगा, और यहोवा का
माहात्म्य उसे सूझ न पड़ेगा॥

* मूल में—उसको पांव से रौंदेगा, दीन के
पांव कंगालों के कदम।
† मूल में—धर्म के देश।

११ हे यहोवा, तेरा हाथ बढा हुआ
है, पर वे नही देखते। परन्तु वे जानेंगे
कि तुझे प्रजा के लिये कैसी जलन है,
और लजाएंगे। १२ तेरे बैरी आग से
भस्म होंगे। हे यहोवा, तू हमारे लिये
शान्ति ठहराएगा, हम ने जो कुछ किया
है उसे तू ही ने हमारे लिये किया है।
१३ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तेरे
सिवाय और स्वामी भी हम पर प्रभुता
करते थे, परन्तु तेरी कृपा से हम केवल
तेरे ही नाम का गुणानुवाद करेंगे।
१४ वे मर गए है, फिर कभी जीवित
नही होंगे, उनको मरे बहुत दिन हुए,
वे फिर नहीं उठने के, तू ने उनका विचार
करके उनको ऐसा नाश किया कि वे
फिर स्मरण मे न आएंगे। १५ परन्तु
तू ने जाति को बढाया, हे यहोवा, तू
ने जाति को बढाया है, तू ने अपनी महिमा
दिखाई है और उस देश के सब सिवानो
को तू ने बढाया है ॥

१६ हे यहोवा, दुःख मे वे तुझे स्मरण
करते थे, जब तू उन्हे ताडना देता था
तब वे दबे स्वर से अपने मन की बात
तुझ पर प्रगट करते थे*। १७ जैसे
गर्भवती स्त्री जनने के समय ऐंठती और
पीडो के कारण चिल्ला उठती है, हम
लोग भी, हे यहोवा, तेरे साम्हने वैसे
ही हो गए है। १८ हम भी गर्भवती
हुए, हम भी ऐंठे, हम ने मानो वायु ही
को जन्म दिया। हम ने देश के लिये
कोई उद्धार का काम नही किया, और न
जगत के रहनेवाले उत्पन्न हुए। १९ तेरे
मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ
खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसनेवालो, जागकर
जयजयकार करो! क्योंकि तेरी ओस
ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी
मुर्दो को लौटा देगी ॥

२० हे मेरे लोगो, आओ, अपनी
अपनी कोठरी मे प्रवेश करके किवाडो
को बन्द करो, थोडी देर तक जब तक
क्रोध शान्त न हो* तब तक अपने को
छिपा रखो। २१ क्योंकि देखो, यहोवा
पृथ्वी के निवासियो को अधर्म का दण्ड
देने के लिये अपने स्थान से चला आता
है, और पृथ्वी अपना खून प्रगट करेगी
और घात किए हुओ को और अधिक न
छिपा रखेगी ॥

२७ उस समय यहोवा अपनी कडी,
बडी, और पोड तलवार से
लिव्यातान नाम वेग और टेढे चलनेवाले
सर्प को दण्ड देगा, और जो अजगर
समुद्र मे रहता है उसको भी घात करेगा ॥

२ उस समय एक सुन्दर दाख की
बारी होगी, तुम उसका यश गाना!
३ मै यहोवा उसकी रक्षा करता हू,
मै क्षण क्षण उसको सीचता रहूगा।
मै रात-दिन उसकी रक्षा करता रहूगा,
ऐसा न हो कि कोई उसकी हानि करे।
४ मेरे मन मे जलजलाहट नही है।
यदि कोई भाति भाति के कटीले पेड
मुझ से लडने को खडे करता, तो मै उन
पर पाव बढाकर उनको पूरी रीति से
भस्म कर देता। ५ वा मेरे साथ मेल
करने को वे मेरी शरण ले, वे मेरे साथ
मेल कर ले ॥

६ भविष्य मे याकूब जड पकडेगा,
और इस्राएल फूले-फलेगा, और उसके
फलो से जगत भर जाएगा ॥

* मूल मे—उपदेश था। † [illegible]

* मूल मे—निकल न जाए।

७ क्या उस ने उसे मारा जैसा उस
ने उसके मारनेवालों को मारा था?
क्या वह घात किया गया जैसे उसके घात
किए हुए घात हुए? ८ जब तू ने उसे
निकाला, तब सोच-विचार कर उसको
दुःख दिया* उस ने पुरवाई के दिन
उसको प्रचण्ड वायु से उड़ा दिया है।
९ इस से याकूब के अधर्म का प्रायश्चित्त
किया जाएगा और उसके पाप के दूर
होने का प्रतिफल यह होगा कि वे वेदी
के सब पत्थरों को चूना बनाने के पत्थरों
के समान चकनाचूर करेंगे, और अशेरा
और सूर्य की प्रतिमाएं फिर खड़ी न
रहेंगी। १० क्योंकि गढ़वाला नगर निर्जन
हुआ है, वह छोड़ी हुई बस्ती के समान
निर्जन और जंगल हो गया है, वहां बछड़े
चरेंगे और वहीं बैठेंगे, और पेड़ों की
डालियों की फुनगी को खा लेंगे। ११ जब
उसकी शाखाएं सूख जाएं तब तोड़ी
जाएंगी, और स्त्रियां आकर उनको
तोड़कर जला देंगी। क्योंकि ये लोग निर्बुद्धि
हैं, इसलिये उनका कर्त्ता उन पर दया न
करेगा, और उनका रचनेवाला उन पर
अनुग्रह न करेगा॥

१२ उस समय यहोवा महानद से
लेकर मिस्र के नाले तक अपने अन्न को
फटकेगा, और हे इस्राएलियो तुम एक
एक करके इकट्ठे किए जाओगे। १३ उस
समय बड़ा नरसिंगा फूंका जाएगा, और
जो अश्शूर देश में नाश हो रहे थे और
जो मिस्र देश में बरबस बसाए हुए थे
वे यरूशलेम में आकर पवित्र पर्वत पर
यहोवा को दण्डवत् करेंगे॥

* मूल में—उसके साथ झगड़ा करता
है।

२८ घमण्ड के मुकुट पर हाय!
जो एप्रैम के मतवालों का है,
और उनकी भड़कीली सुन्दरता पर जो
मुर्झानेवाला फूल है, जो अति उपजाऊ
तराई के सिरे पर दाखमधु से मतवालों
की है। २ देखो, प्रभु के पास एक बलवन्त
और सामर्थी है जो ओले की वर्षा वा
उजाड़नेवाली आंधी या बाढ़ की प्रचण्ड
धार की नाईं है वह उसको कठोरता से
भूमि पर गिरा देगा। ३ एप्रैमी मतवालों
के घमण्ड का मुकुट पांव से लताड़ा
जाएगा, ४ और उनकी भड़कीली सुन्दरता
का मुर्झानेवाला फूल जो अति उपजाऊ
तराई के सिरे पर है, वह ग्रीष्मकाल से
पहिले पके अंजीर के समान होगा, जिसे
देखनेवाला देखते ही हाथ में ले और
निगल जाए॥

५ उस समय सेनाओं का यहोवा स्वयं
अपनी प्रजा के बचे हुओं के लिये सुन्दर
और प्रतापी मुकुट ठहरेगा, ६ और जो
न्याय करने को बैठते हैं उनके लिये
न्याय करनेवाली आत्मा और जो चढ़ाई
करते हुए शत्रुओं को* नगर के फाटक
से हटा देते हैं, उनके लिये वह बल
ठहरेगा॥

७ ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते
और मदिरा से लड़खड़ाते हैं, याजक
और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते
हैं, दाखमधु ने उनको भुला दिया है,
वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते और दर्शन
पाते हुए भटक जाते, और न्याय में
भूल करते हैं। ८ क्योंकि सब भोजन-
आसन वमन और मल से भरे हैं, कोई
शुद्ध स्थान नहीं बचा॥

* मूल में—लड़ाई को।

९ वह किसको ज्ञान सिखाएगा, और
किसको अपने समाचार का अर्थ
समझाएगा? क्या उनको जो दूध छुड़ाए
हुए और स्तन से अलगाए हुए हैं?
क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा,
१० नियम पर नियम, नियम पर नियम,
थोड़ा यहां, थोड़ा वहां॥

११ वह तो इन लोगों से परदेशी
होठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा
बातें करेगा, १२ जिन से उस ने कहा,
विश्राम इसी से मिलेगा, इसी के द्वारा
थके हुए को विश्राम दो, परन्तु उन्हों ने
सुनना न चाहा। १३ इसलिये यहोवा
का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा,
आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम
पर नियम है, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां,
जिस से वे ठोकर खाकर चित्त गिरें और
घायल हो जाएं, और फन्दे में फंसकर
पकड़े जाएं॥

१४ इस कारण हे ठट्ठा करनेवालो,
यरूशलेमवासी प्रजा के हाकिमो, यहोवा
का वचन सुनो! १५ तुम ने कहा है
कि हम ने मृत्यु से वाचा बान्धी और
अधोलोक से प्रतिज्ञा कराई है, इस कारण
विपत्ति जब बाढ़ की नाईं बढ़ आए तब
हमारे पास न आएगी, क्योंकि हम ने
झूठ की शरण ली और मिथ्या की आड़
में छिपे हुए हैं। १६ इसलिये प्रभु यहोवा
यों कहता है, देखो, मैं ने सिय्योन में
नेव का एक पत्थर रखा है, एक परखा
हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और
अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थर: और जो
कोई विश्वास रखे वह उतावली न करेगा।
१७ और मैं न्याय को डोरी और धर्म
को साहुल ठहराऊंगा, और तुम्हारा
झूठ का शरणस्थान ओलों से बह जाएगा,
और तुम्हारे छिपने का स्थान जल से
डूब जाएगा। १८ तब जो वाचा तुम ने
मृत्यु से बान्धी है वह टूट जाएगी, और
जो प्रतिज्ञा तुम ने अधोलोक से कराई
वह न ठहरेगी, जब विपत्ति बाढ़ की
नाईं बढ़ आए, तब तुम उस में डूब* ही
जाओगे। १९ जब जब वह बढ़ आए,
तब तब वह तुम को ले जाएगी, वह
प्रति दिन वरन रात दिन बढ़ा करेगी,
और इस समाचार का सुनना ही व्याकुल
होने का कारण होगा। २० क्योंकि
बिछौना टांग फैलाने के लिये छोटा, और
ओढ़ना ओढ़ने के लिये सकरा है॥

२१ क्योंकि यहोवा ऐसा उठ खड़ा
होगा जैसा वह पराजीम नाम पर्वत पर
खड़ा हुआ और जैसा गिबोन की तराई
में उस ने क्रोध दिखाया था, वह अब
फिर क्रोध दिखाएगा, जिस से वह अपना
काम करे, जो अचम्भित काम है, और
वह कार्य करे जो अनोखा है। २२ इसलिये
अब तुम ठट्ठा मत करो, नहीं तो तुम्हारे
बन्धन कसे जाएंगे, क्योंकि मैं ने सेनाओं
के प्रभु यहोवा से यह सुना है कि सारे
देश का सत्यानाश ठाना गया है॥

२३ कान लगाकर मेरी सुनो, ध्यान
धरकर मेरा वचन सुनो। २४ क्या हल
जोतनेवाला बीज बोने के लिये लगातार
जोतता रहता है? क्या वह सदा धरती
को चीरता और हेंगाता रहता है?
२५ क्या वह उसको चौरस करके सौंफ
को नहीं छितराता, जीरे को नहीं बखेरता
और गेहूं को पांति पांति करके और जव
को उसके निज स्थान पर, और कठिये
गेहूं को खेत की छोर पर नहीं बोता?

* मूल में—लताड़े।

२६ क्योंकि उसका परमेश्वर उसको ठीक ठीक काम करना सिखलाता और बतलाता है ॥

२७ दावने की गाड़ी से तो सौंफ दाई नहीं जाती, और गाड़ी का पहिया जीरे के ऊपर नहीं चलाया जाता, परन्तु सौंफ छड़ी से, और जीरा सोंटे से झाड़ा जाता है। २८ रोटी के अन्न पर दांय की जाती है, परन्तु कोई उसका सदा दावता नहीं रहता, और न गाड़ी के पहिये न घोड़े उस पर चलाता है, वह उसे चूर चूर नहीं करता। २९ यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है, वह अद्भुत युक्तिवाला और महाबुद्धिमान है ॥

२९ हाय, अरीएल*, अरीएल, हाय उस नगर पर जिस में दाऊद छावनी किए हुए रहा! वर्ष पर वर्ष जोड़ते जाओ, उत्सव के पर्व अपने अपने समय पर मनाते जाओ। २ तौभी मैं तो अरीएल को सकेती में डालूंगा, वहां रोना पीटना रहेगा, और वह मेरी दृष्टि में सचमुच अरीएल सा ठहरेगा। ३ और मैं चारों ओर तेरे विरुद्ध छावनी करके तुझे कोटों से घेर लूंगा, और तेरे विरुद्ध गढ़ भी बनाऊंगा। ४ तब तू गिराकर भूमि में डाला जाएगा, और धूल पर से बोलेगा, और तेरी बात भूमि से धीमी धीमी सुनाई देगी, तेरा बोल भूमि पर से प्रेत का सा होगा, और तू धूल से गुनगुनाकर बोलेगा ॥

५ तब तेरे परदेशी बैरियों की भीड़ सूक्ष्म धूलि की नाईं, और उन भयानक लोगों की भीड़ भूसे की नाईं उड़ाई जाएगी। ६ और सेनाओं का यहोवा अचानक बादल गरजाता, भूमि को कम्पाता, और महाध्वनि करता, बवण्डर और आंधी चलाता, और नाश करनेवाली अग्नि भड़काता हुआ उसके पास आएगा। ७ और जातियों की सारी भीड़ जो अरीएल से युद्ध करेगी, और जितने लोग उसके और उसके गढ़ के विरुद्ध लड़ेंगे और उसको सकेती में डालेंगे, वे सब रात के देखे हुए स्वप्न के समान ठहरेंगे। ८ और जैसा कोई भूखा स्वप्न में तो देखता है कि वह खा रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका पेट भूखा ही है, वा कोई प्यासा स्वप्न में देखे कि वह पी रहा है, परन्तु जागकर देखता है कि उसका गला सूखा जाता* है और वह प्यासा मर रहा है†, वैसी ही उन सब जातियों की भीड़ की दशा होगी जो सिय्योन पर्वत से युद्ध करेंगी ॥

९ ठहर जाओ और चकित होओ, भोगविलास करो और अन्धे हो जाओ! वे मतवाले तो हैं, परन्तु दाखमधु से नहीं, वे डगमगाते तो हैं, परन्तु मदिरा पीने से नहीं! १० यहोवा ने तुम को भारी नींद में डाल दिया‡ है और उस ने तुम्हारी नबीरूपी आंखों को बन्द कर दिया है और तुम्हारे दर्शीरूपी सिरों पर पर्दा डाला है। ११ इसलिये सारे दर्शन तुम्हारे लिये एक लपेटी और मुहर की हुई पुस्तक की बातों के समान हैं, जिसे कोई पढ़े-लिखे मनुष्य को यह कहकर दे,

* अर्थात् ईश्वर का अग्निकुण्ड वा ईश्वर का सिंह।

* मूल में—कि मैं थका।

† मूल में—मेरा जीव लालसा करता है।

‡ मूल में—तुम पर भारी नींद की आत्मा उण्डेली।

इसे पढ, और वह कहे, मै नही पढ सकता
क्योंकि इस पर मुहर की हुई है। १२ तब
वही पुस्तक अनपढे को यह कहकर दी
जाए, इसे पढ, और वह कहे, मै तो अनपढ
हू ॥

१३ और प्रभु ने कहा, ये लोग जो
मुह* से मेरा आदर करते हुए समीप
आते परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते
है, और जो केवल मनुष्यो की आज्ञा
सुन सुनकर मेरा भय मानते है†, १४ इस
कारण सुन, मै इनके साथ अद्भुत काम
वरन अति अद्भुत और अचम्भे का काम
करूगा, तब इनके बुद्धिमानो की बुद्धि
नष्ट होगी, और इनके प्रवीणो की प्रवीणता
जाती रहेगी‡ ॥

१५ हाय उन पर जो अपनी युक्ति को
यहोवा से छिपाने का बडा यत्न करते§,
और अपने काम अन्धेरे मे करके कहते
है, हम को कौन देखता है? हम को कौन
जानता है? १६ तुम्हारी कैसी उलटी
समझ है! क्या कुम्हार मिट्टी के तुल्य
गिना जाएगा? क्या बनाई हुई वस्तु
अपने कर्त्ता के विषय कहे कि उस ने
मुझे नही बनाया, वा रची हुई वस्तु अपने
रचनेवाले के विषय कहे, कि वह कुछ
समझ नही रखता?

१७ क्या अब थोडे ही दिनो के बीतने
पर लबानोन फिर फलदाई बारी न बन
जाएगा, और फलदाई बारी जगल न
गिनी जाएगी? १८ उस समय बहिरे
पुस्तक की बाते सुनने लगेगे, और अन्धे
जिन्हे अब कुछ नही सूझता, वे देखने
लगेगे*। १९ नम्र लोग यहोवा के कारण
फिर आनन्दित होगे, और दरिद्र मनुष्य
इस्राएल के पवित्र के कारण मगन होगे।
२० क्योंकि उपद्रवी फिर न रहेगे और
ठट्ठा करनेवालो का अन्त होगा, और
जो अनर्थ करने के लिये जागते रहते है,
जो मनुष्यो को वचन मे फसाते है,
२१ और जो सभा† मे उलहना देते
उनके लिये फदा लगाते, और धर्म को
व्यर्थ बात के द्वारा बिगाड देते है, वे
सब मिट जाएगे ॥

२२ इस कारण इब्राहीम का छुडाने-
वाला यहोवा, याकूब के घराने के विषय
यो कहता है, याकूब को फिर लज्जित
होना न पडेगा, उसका मुख फिर नीचा‡
न होगा। २३ क्योंकि जब उसके सन्तान
मेरा काम देखेगे, जो मै उनके बीच मे
करूगा, तब वे मेरे नाम को पवित्र
ठहराएगे, वे याकूब के पवित्र को पवित्र
मानेगे, और इस्राएल के परमेश्वर का
अति भय मानेगे। २४ उस समय जिनका
मन भटका हो वे बुद्धि प्राप्त करेगे, और
जो कुडकुडाते है वह शिक्षा ग्रहण करेगे ॥

३० यहोवा की यह वाणी है,
हाय उन बलवा करनेवाले लडको
पर जो युक्ति तो करते परन्तु मेरी ओर
से नही, वाचा तो बान्धते परन्तु मेरे
आत्मा के सिखाये नही, और इस प्रकार
पाप पर पाप बढाते है। २ वे मुझ से
बिन पूछे मिस्र को जाते है कि फिरौन

* मूल में—मुह और होंठों।
† मूल में—सो मनुष्यों की सिखाई हुई आज्ञा है।
‡ मूल में—छिप जाएगी।
§ मूल में—नीचे जाते है।

* मूल में—अन्धों की आखें तिमिर और अन्धकार में से देखेंगी।
† मूल मे—फाटक।
‡ मूल में—फीका वा पीला।

की रक्षा में रहे और मिस्र की छाया में
शरण लें। ३ इसलिये फिरौन का शरण-
स्थान तुम्हारी लज्जा का, और मिस्र की
छाया में शरण लेना तुम्हारी निन्दा का
कारण होगा। ४ उसके हाकिम सोअन में
आए तो हैं और उसके दूत अब हानेस में
पहुंचे हैं। ५ वे सब एक ऐसी जाति के
कारण लज्जित होंगे जिस से उनका कुछ
लाभ न होगा, जो सहायता और लाभ के
बदले लज्जा और नामधराई का कारण
होगी॥

६ दक्खिन देश के पशुओं के विषय
भारी वचन। वे अपनी धन सम्पत्ति को
जवान गदहों की पीठ पर, और अपने
खजानों को ऊंटों के कूबड़ों पर लादे हुए,
संकट और सकेती के देश में होकर, जहां *
सिंह और सिंहनी, नाग और उड़नेवाले
तेज़ विषधर सर्प रहते हैं, उन लोगों के
पास जा रहे हैं जिन से उनको लाभ न
होगा। ७ क्योंकि मिस्र की सहायता व्यर्थ
और निकम्मी है, इस कारण मैं ने उसको
बैठी रहनेवाली रहब † कहा है॥

८ अब जाकर इसको उनके साम्हने
पत्थर पर खोद, और पुस्तक में लिख,
कि वह भविष्य के लिये वरन सदा के
लिये साक्षी बनी रहे। ९ क्योंकि वे बलवा
करनेवाले लोग और झूठ बोलनेवाले
लड़के हैं जो यहोवा की शिक्षा को सुनना
नहीं चाहते। १० वे दर्शियों से कहते हैं,
दर्शी मत बनो, और नबियों से कहते हैं,
हमारे लिये ठीक नबूवत मत करो, हम से
चिकनी चुपड़ी बातें बोलो, धोखा देनेवाली
नबूवत करो। ११ मार्ग से मुड़ो, पथ से
हटो, और इस्राएल के पवित्र को हमारे

* मूल में—जिन से।
† अर्थात् अभिमान।

साम्हने से दूर * करो। १२ इस कारण
इस्राएल का पवित्र यों कहता है, तुम लोग
जो मेरे इस वचन को निकम्मा जानते
और अन्धेर और कुटिलता पर भरोसा
करके उन्हीं पर टेक लगाते हो, १३ इस
कारण यह अधर्म तुम्हारे लिये ऊंची भीत
का टूटा हुआ भाग होगा जो फटकर
गिरने पर हो, और वह अचानक पल भर
में टूटकर गिर पड़ेगा, १४ और कुम्हार
के बर्तन की नाईं फूटकर ऐसा चकनाचूर
होगा कि उसके टुकड़ों का एक ठीकरा भी
न मिलेगा जिस से अंगेठी में से आग ली
जाए वा हौद में से जल निकाला जाए॥

१५ प्रभु यहोवा, इस्राएल का पवित्र
यों कहता है, लौट आने और शान्त रहने
में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहने और
भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है।
परन्तु तुम ने ऐसा नहीं किया, १६ तुम ने
कहा, नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़कर
भागेंगे, इसलिये तुम भागोगे, और यह
भी कहा कि हम तेज़ सवारी पर चलेंगे,
सो तुम्हारा पीछा करनेवाले उस से भी
तेज़ होंगे। १७ एक ही की धमकी से
एक हजार भागेंगे, और पांच की धमकी
से तुम ऐसा भागोगे कि अन्त में तुम
पहाड़ की चोटी के डण्डे वा टीले के
ऊपर की ध्वजा के समान रह जाओगे
जो चिन्ह के लिये गाड़े जाते हैं॥

१८ तौभी यहोवा इसलिये विलम्ब
करता है कि तुम पर अनुग्रह करे, और
इसलिये ऊंचे उठेगा कि तुम पर दया
करे। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर
है; क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर आशा
लगाए रहते हैं॥

* मूल में—बन्द।

१९ हे सिय्योन के लोगो तुम यरूशलेम
मे वसे रहो, तुम फिर कभी न रोओगे,
वह तुम्हारी दोहाई सुनते ही तुम पर
निश्चय अनुग्रह करेगा वह सुनते ही
तुम्हारी मानेगा। २० और चाहे प्रभु तुम्हे
विपत्ति की रोटी और दु ख का जल भी दे,
तौभी तुम्हारे उपदेशक फिर न छिपे, और
तुम अपनी आखो से अपने उपदेशको को
देखते रहोगे। २१ और जव कभी तुम
दहिनी वा वाई ओर मुडने लगो, तव तुम्हारे
पीछे से यह वचन तुम्हारे कानो में पडेगा,
मार्ग यही है, इसी पर चलो। २२ तव तुम
वह चान्दी जिस से तुम्हारी खुदी हुई
मूर्त्तिया मढी है, और वह सोना जिस से
तुम्हारी ढली हुई मूर्त्तिया आभूषित है,
अशुद्ध करोगे। तुम उनको मैले कुचैले
वस्त्र की नाई फेक दोगे और कहोगे,
दूर हो। २३ और वह तुम्हारे लिये
जल वरसाएगा कि तुम खेत मे वीज वो
सको, और भूमि की उपज भी उत्तम और
वहुतायत से होगी। उस समय तुम्हारे
जानवरो को लम्वी-चौडी चराई मिलेगी
२४ और वैल और गदहे जो तुम्हारी खेती
के काम मे आएगे, वे सूप और डलिया से
फटका हुआ स्वादिष्ट चारा खाएगे।
२५ और उस महासहार के समय जव
गुम्मट गिर पडेगे, सव ऊचे ऊचे पहाडो और
पहाडियो पर नालिया और सोते पाए
जाएगे। २६ उस समय यहोवा अपनी
प्रजा के लोगो का घाव वान्धेगा और उनकी
चोट चङ्गा करेगा, तव चन्द्रमा का प्रकाश
सूर्य का सा, और सूर्य का प्रकाश सातगुना
होगा, अर्थात् अठवारे भर का प्रकाश
एक दिन मे होगा ॥

२७ देखो, यहोवा दूर से चला आता
है, उसका प्रकोप भड़क उठा है, और
धूए का वादल उठ रहा है, उसके होंठ
क्रोध से भरे हुए और उसकी जीभ भस्म
करनेवाली आग के समान है। २८ उसकी
सास ऐसी उमण्डनेवाली नदी के समान
है जो गले तक पहुचती है, वह सव
जातियो को नाश के सूप से फटकेगा,
और देश देश के लोगो को भटकाने
के लिये उनके जभडो मे लगाम
लगाएगा ॥

२९ तव तुम पवित्र पर्व की रात का
सा गीत गाओगे, और जैसा लोग यहोवा
के पर्वत की ओर उस से मिलने को,
जो इस्राएल की चट्टान है, वासुली वजाते
हुए जाते है, वैसे ही तुम्हारे मन में भी
आनन्द होगा। ३० और यहोवा अपनी
प्रतापीवाणी सुनाएगा, और अपना क्रोध
भडकाता और आग की लौ से भस्म करता
हुआ, और प्रचण्ड आन्धी और अति
वर्षा और ओलो के साथ अपना भुजवल *
दिखाएगा। ३१ अश्शूर यहोवा के शब्द
की शक्ति से नाश हो जाएगा, वह उसे
सोटे से मारेगा। ३२ और जव जव
यहोवा उसको दण्ड देगा †, तव तव साथ
ही डफ और वीणा वजेंगी, और वह
हाथ वढाकर उसको लगातार मारता
रहेगा। ३३ वहुत काल से तोपेत ‡ तैयार
किया गया है, वह राजा ही के लिये
ठहराया गया है, वह लम्वा-चौडा और
गहिरा भी वनाया गया है, वहा की
चिता मे आग और वहुत सी लकडी
है, यहोवा की सास जलती हुई गन्धक
की धारा की नाई उसको सुलगाएगी ॥

* मूल में—अपनी भुजा का उतरना।
† मूल में—उस पर नेववाला दण्ड रखेगा।
‡ अर्थात् फूकने का स्थान।

३१ हाय उन पर जो सहायता
पाने के लिये मिस्र को जाते है
और घोडो का आसरा करते है, जो
रथो पर भरोसा रखते क्योकि वे बहुत
है, और सवारो पर, क्योकि वे अति
बलवान है, पर इस्राएल के पवित्र की
ओर दृष्टि नही करते और न यहोवा
की खोज करते है। २ परन्तु वह भी
बुद्धिमान है और दु:ख देगा, वह अपने
वचन न टालेगा, परन्तु उठकर कुकर्मियो के
घराने पर और अनर्थकारियों के सहायको
पर भी चढाई करेगा। ३ मिस्री लोग
ईश्वर नही, मनुष्य ही है, और उनके
घोडे आत्मा नही, मास ही है। जब
यहोवा हाथ बढाएगा, तब सहायता करने-
वाले और सहायता चाहनेवाले दोनो
ठोकर खाकर गिरेंगे, और वे सब के सब
एक सग नष्ट हो जाएगे॥

४ फिर यहोवा ने मुझ से यो कहा,
जिस प्रकार सिह वा जवान सिह जब
अपने अहेर पर गुर्राता हो, और चरवाहे
इकट्ठे होकर उसके विरुद्ध बडी भीड
लगाए, तौभी वह उनके बोल से न घबराएगा
और न उनके कोलाहल के कारण दबेगा,
उसी प्रकार सेनाओ का यहोवा, सिय्योन
पर्वत और यरूशलेम की पहाडी पर,
युद्ध करने को उतरेगा। ५ पख फैलाई
हुई चिडियो की नाईं सेनाओ का यहोवा
यरूशलेम की रक्षा करेगा, वह उसकी
रक्षा करके बचाएगा, और उसको बिन
छूए ही * उद्धार करेगा॥

६ हे इस्राएलियो, जिसके विरुद्ध तुम
ने भारी † बलवा किया है, उसी की ओर
फिरो। ७ उस समय तुम लोग सोने
चान्दी की अपनी अपनी मूर्त्तियो से जिन्हें
तुम * बनाकर पापी हो गए हो घृणा
करोगे। ८ तब अश्शूर उस तलवार से
गिराया जाएगा जो मनुष्य की नही,
वह उस तलवार का कौर हो जाएगा
जो आदमी की नही, और वह तलवार
के साम्हने से भागेगा और उसके जवान
बेगार में पकडे जाएगे। ९ वह भय के
मारे अपने सुन्दर भवन से जाता रहेगा,
और उसके हाकिम घबराहट के कारण
ध्वजा त्याग कर भाग जाएगे, यहोवा जिस
की अग्नि सिय्योन में और जिसका भट्ठा
यरूशलेम में है, उसी की यह वाणी है॥

३२ देखो, एक राजा धर्म से राज्य
करेगा, और राजकुमार न्याय से
हुकूमत करेंगे। २ हर एक मानो आधी
से छिपने का स्थान, और बौछार से
आड होगा, या निर्जल देश में जल के
झरने, व तप्त भूमि में बडी चट्टान की
छाया। ३ उस समय देखनेवालो की
आखें धुधली न होगी, और सुननेवालो
के कान लगे रहेंगे। ४ उतावलो के मन
ज्ञान की बातें समझेंगे, और तुतलानेवालो
की जीभ फुर्ती से और साफ बोलेगी।
५ मूढ फिर उदार न कहलाएगा और न
कजूस दानी कहा जाएगा। ६ क्योकि
मूढ तो मूढता ही की बातें बोलता और
मन मे अनर्थ ही गढता रहता है कि वह
बिन भक्ति के काम करे और यहोवा के
विरुद्ध झूठ कहे, भूखे को भूखा ही रहने
दे और प्यासे का जल रोक रखे। ७ छली
की चालें बुरी होती है, वह दुष्ट युक्तिया
निकालता है कि दरिद्र को भी झूठी
बातो में लूटे जब कि वे ठीक और नम्रता

* मूल में—और लांघकर।
† मूल में—गहिरा करके।

* मूल में—जिन्हें तुम्हारे हाथ।

से भी बोलते हो। ८ परन्तु उदार मनुष्य
उदारता ही की युक्तिया निकालता है, वह
उदारता मे स्थिर भी रहेगा ।।

९ हे सुखी स्त्रियो, उठकर मेरी सुनो,
हे निश्चिन्त पुत्रियो, मेरे वचन की ओर
कान लगाओ। १० हे निश्चिन्त स्त्रियो,
वर्ष भर से कुछ ही अधिक समय मे तुम
विकल हो जाओगी, क्योकि तोडने को
दाखे न होगी और न किसी भाति के
फल हाथ लगेगे। ११ हे सुखी स्त्रियो,
थरथराओ, हे निश्चिन्त स्त्रियो, विकल
हो, अपने अपने वस्त्र उतारकर अपनी
अपनी कमर मे टाट कसो। १२ वे
मनभाऊ खेतो और फलवन्त दाखलताओ
के लिये छाती पीटेगी। १३ मेरे लोगो
के वरन प्रसन्न नगर के सब हर्ष भरे
घरो मे भी भाति भाति के कटीले पेड
उपजेगे। १४ क्योकि राजभवन त्यागा
जाएगा, कोलाहल से भरा नगर सुनसान
हो जाएगा, और पहाडी और उन पर के
पहरुओ के घर सदा के लिये मादे और
जगली गदहो का विहारस्थान और घरैलू
पशुओ की चराई उस समय तक बने
रहेंगे १५ जब तक आत्मा ऊपर से
हम पर उण्डेला न जाए, और जगल
फलदायक वारी न वने, और फलदायक
वारी फिर वन न गिनी जाए। १६ तब
उस जगल मे न्याय बसेगा, और उस
फलदायक वारी मे धर्म रहेगा। १७ और
धर्म का फल शान्ति और उसका परिणाम
सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा।
१८ मेरे लोग शान्ति के स्थानो में निश्चिन्त
रहेंगे, और विश्राम के स्थानो में सुख से
रहेंगे। १९ और वन के विनाश के
समय ओले गिरेंगे, और नगर पूरी रीति
से चौपट हो जाएगा। २० क्या ही
धन्य हो तुम जो सब जलाशयो के पास
बीज बोते, और बैलो और गदहो को
स्वतन्त्रता से चराते* हो ।।

३३ हाय तुझ नाश करनेवाले पर
जो नाश नही गया था, हाय
तुझ विश्वासघाती पर, जिसके साथ
विश्वासघात नही किया गया! जब तू
नाश कर चुके, तब तू नाश किया जाएगा,
और जब तू विश्वासघात कर चुके, तब
तेरे साथ विश्वासघात किया जाएगा ।।

२ हे यहोवा, हम लोगो पर अनुग्रह
कर, हम तेरी ही बाट जोहते हैं। भोर
को तू उनका भुजबल, सकट के समय
हमारा उद्धारकर्त्ता ठहर। ३ हुल्लड सुनते
ही देश देश के लोग भाग गए, तेरे
उठने पर अन्यजातिया तितर-बितर हुईं।
४ और जैसे टिड्डिया चट करती है वैसे
ही तुम्हारी लूट चट की जाएगी, और जैसे
टिड्डिया टूट पडती है, वैसे ही वे उस पर
टूट पडेंगे ।।

५ यहोवा महान हुआ है, वह ऊंचे
पर रहता है, उस ने सिय्योन को न्याय
और धर्म से परिपूर्ण किया है; ६ और
उद्धार, बुद्धि और ज्ञान की बहुतायत
तेरे दिनो का आधार होगी, यहोवा का
भय उसका धन होगा ।।

७ देख, उनके शूरवीर बाहर चिल्ला
रहे है, सधि के दूत बिलक बिलककर
रो रहे है। ८ राजमार्ग सुनसान पडे
है, उन पर बटोही अब नही चलते।
उस ने वाचा को टाल दिया, नगरो को
तुच्छ जाना, उस ने मनुष्य को कुछ न
समझा। ९ पृथ्वी विलाप करती और
मुर्झा गई है; लबानोन कुम्हला गया और

* मूल में—गदहों के पैर भेजते।

उस पर सियाही छा गई है, शारोन
मरुभूमि के समान हो गया, बाशान
और कर्मेल में पतझड़ हो रहा है ॥

१० यहोवा कहता है, अब मैं उठूंगा,
मैं अपना प्रताप दिखाऊंगा*, अब मैं
महान ठहरूंगा। ११ तुम में सूखी घास
का गर्भ रहेगा, तुम से भूसी उत्पन्न होगी,
तुम्हारी सांस आग है जो तुम्हें भस्म करेगी।
१२ देश देश के लोग फूंके हुए चूने के
समान हो जाएंगे, और कटे हुए कटीले
पेड़ों की नाईं आग में जलाए जाएंगे ॥

१३ हे दूर दूर के लोगो, सुनो कि
मैं ने क्या किया है? और तुम भी जो
निकट हो, मेरा पराक्रम जान लो।
१४ सिय्योन के पापी थरथरा गए हैं
भक्तिहीनों को कपकपी लगी है: हम में
से कौन प्रचण्ड आग में रह सकता?
हम में से कौन उस आग में बना रह
सकता है जो कभी नहीं बुझेगी? १५ जो
धर्म से चलता और सीधी बातें बोलता,
जो अन्धेर के लाभ से घृणा करता, जो
घूस नहीं लेता†, जो खून की बात सुनने
से कान बन्द करता, और बुराई देखने से
आंख मूंद लेता है। वही ऊंचे स्थानों
में निवास करेगा। १६ वह चट्टानों के
गढ़ों में शरण लिए हुए रहेगा, उसको
रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी
न होगी‡ ॥

१७ तू अपनी आंखों से राजा को
उसकी शोभा सहित देखेगा, और लम्बे
चौड़े देश पर दृष्टि करेगा। १८ तू
भय के दिनों को स्मरण करेगा: लेखा
लेनेवाला और कर तौल कर लेनेवाला
कहां रहा? गुम्मटों का गिननेवाला कहां
रहा? १९ जिनकी कठिन भाषा* तू
नहीं समझता, और जिनकी लड़बड़ाती
जीभ की बात तू नहीं बूझ सकता उन
निर्दय लोगों को तू फिर न देखेगा।
२० हमारे पर्व के नगर सिय्योन पर दृष्टि
कर! तू अपनी आंखों से यरूशलेम को
देखेगा, वह विश्राम का स्थान, और ऐसा
तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा,
जिसका कोई खूंटा कभी उखाड़ा न
जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी।
२१ वहां महाप्रतापी यहोवा हमारे लिये
रहेगा, वह बहुत बड़ी बड़ी नदियों और
नहरों का स्थान होगा, जिस में डांडवाली
नाव न चलेगी और न शोभायमान जहाज़
उस में होकर जाएगा। २२ क्योंकि
यहोवा हमारा न्यायी, यहोवा हमारा
हाकिम, यहोवा हमारा राजा है; वही
हमारा उद्धार करेगा ॥

२३ तेरी रस्सियां ढीली हो गईं, वे
मस्तूल की जड़ को दृढ़ न रख सकीं,
और न पाल को तान सकीं ॥

तब बड़ी लूट छीनकर बांटी गई,
लंगड़े लोग भी लूट के भागी हुए।
२४ कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी
हूं; और जो लोग उस में बसेंगे, उनका
अधर्म क्षमा किया जाएगा ॥

३४ हे जाति जाति के लोगो,
सुनने के लिये निकट आओ,
और हे राज्य राज्य के लोगो, ध्यान से
सुनो! पृथ्वी भी, और जो कुछ उस में
है, जगत और जो कुछ उस में उत्पन्न
होता है, सब सुनो। २ यहोवा सब

* मूल में—अपने को ऊंचा करूंगा।
† मूल में—घूस थामने से अपने हाथ झटक देता।
‡ मूल में—उसका पानी अटल है।
* मूल में—गहिरे होंठवाले लोग।

जातियो पर क्रोध कर रहा है, और उनकी
सारी सेना पर उसकी जलजलाहट भडकी
हुई है, उस ने उनको सत्यानाश होने,
और सहार होने को छोड दिया है।
३ उनके मारे हुए फेक दिये जाएगे, और
उनकी लोथो की दुर्गन्ध उठेगी, उनके
लोहू से पहाड गल जाएगे। ४ आकाश
के सारे गण जाते रहेंगे और आकाश
कागज की नाई लपेटा जाएगा। और
जैसे दाखलता वा अजीर के वृक्ष के पत्ते
मुर्झाकर गिर जाते है, वैसे ही उसके
सारे गण धुधले होकर जाते रहेंगे ।।

५ क्योकि मेरी तलवार आकाश मे
पीकर तृप्त हुई है, देखो, वह न्याय
करने को एदोम पर, और जिन पर मेरा
शाप है उन पर पडेगी। ६ यहोवा की
तलवार लोहू से भर गई है, वह चर्बी
से और भेडो के बच्चो और बकरो के
लोहू से, और मेढो के गुर्दो की चर्बी से
तृप्त हुई है। क्योकि बोस्रा नगर मे
यहोवा का एक यज्ञ और एदोम देश मे
बडा सहार हुआ है। ७ उनके सग
जगली साढ और बछडे और बैल वध
होगे, और उनकी भूमि लोहू से भीग
जाएगी और वहा की मिट्टी चर्बी से
अघा जाएगी ।।

८ क्योकि पलटा लेने को यहोवा का
एक दिन और सिय्योन का मुकद्दमा
चुकाने का एक वर्ष नियुक्त है। ९ और
एदोम की नदिया राल से और उसकी
मिट्टी गन्धक से बदल जाएगी, उसकी
भूमि जलती हुई राल बन जाएगी।
१० वह रात-दिन न बुझेगी, उसका
धूआ सदैव उठता रहेगा। युग युग वह
उजाड पडा रहेगा, कोई उस मे से होकर
कभी न चलेगा। ११ उस मे धनेशपक्षी
और साही पाए जाएगे और वह उल्लू
और कौवे का बसेरा होगा। वह उस पर
गडबड की डोरी और सुनसानी का
साहूल * तानेगा। १२ वहा न तो रईस
होगे और न ऐसा कोई होगा जो राज्य
करने को ठहराया † जाए, उसके सब
हाकिमो का अन्त होगा ।।

१३ उसके महलो मे कटीले पेड,
गढो मे बिच्छू पौधे और झाड उगेगे।
वह गीदडो का वासस्थान और शुतुर्मुर्गों
का आगन हो जाएगा। १४ वहा निर्जल
देश के जन्तु सियारो के सग मिलकर
बसेंगे और रोआर जन्तु एक दूसरे को
बुलाएगे, वहा लीलीत नाम जन्तु वास-
स्थान पाकर चैन से रहेगा ।।

१५ वहा उडनेवाली सापिन का बिल
होगा, वे अण्डे देकर उन्हे सेवेगी और
अपनी छाया मे बटोर लेगी, वहा गिद्ध
अपनी साथिन के साथ इकट्ठे रहेंगे।
१६ यहोवा की पुस्तक से ढूढकर पढो
इन मे से एक भी बात बिना पूरा हुए न
रहेगी, कोई बिना जोडा न रहेगा।
क्योकि मै ने अपने मुह से यह आज्ञा दी
है और उसी की आत्मा ने उन्हे इकट्ठा
किया है। १७ उसी ने उनके लिये चिट्ठी
डाली, उसी ने अपने हाथ से डोरी डालकर
उस देश को उनके लिये बाट दिया है,
वह सर्वदा उनका ही बना रहेगा और वे
पीढी से पीढी तक उस मे बसे रहेंगे ।।

३५ जगल और निर्जल देश
प्रफुल्लित होगे, मरुभूमि मगन
होकर केसर की नाई फूलेगी, २ वह
अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के
साथ जयजयकार करेगी। उसकी शोभा

* मूल में—पत्थर। † मूल में—बुलाया।

लबानोन की सी होगी और वह कर्मेल
और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी।
वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर
का तेज देखेंगे।।

३ ढीले हाथों को दृढ़ करो और
थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।
४ घबरानेवालों से कहो, हियाव बान्धो,
मत डरो! देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा
लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हां,
परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा।।

५ तब अन्धों की आंखें खोली जाएंगी
और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे,
६ तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियां
भरेगा और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार
करेंगे। क्योंकि जंगल में जल के सोते
फूट निकलेंगे और मरुभूमि में नदियां
बहने लगेंगी, ७ मृगतृष्णा ताल बन
जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे,
और जिस स्थान में सियार बैठा करते
हैं उस में घास और नरकट और
सरकण्डे होंगे।।

८ और वहां एक सड़क अर्थात् राजमार्ग
होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा,
कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने
पाएगा, वह तो उन्हीं के लिये रहेगा
और उस मार्ग पर जो चलेंगे वह चाहे
मूर्ख भी हों तौभी कभी न भटकेंगे।
९ वहां सिंह न होगा और कोई हिंसक
जन्तु उस पर न चढ़ेगा न वहां पाया
जाएगा, परन्तु छुड़ाए हुए उस में नित
चलेंगे। १० और यहोवा के छुड़ाए हुए
लोग लौटकर जयजयकार करते हुए
सिय्योन में आएंगे, और उनके सिर पर
सदा का आनन्द होगा, वे हर्ष और
आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी
सांस का लेना जाता रहेगा।।

३६ हिजकिय्याह राजा के चौदहवें
वर्ष में, अश्शूर के राजा सन्हेरीब
ने यहूदा के सब गढ़वाले नगरों पर चढ़ाई
करके उनको ले लिया। २ और अश्शूर
के राजा ने रबशाके को बड़ी सेना देकर
लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह
राजा के विरुद्ध भेज दिया। और वह
उत्तरी पोखरे की नाली के पास धोबियों
के खेत की सड़क पर जाकर खड़ा हुआ।
३ तब हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम
जो राजघराने के काम पर नियुक्त था,
और शेब्ना जो मन्त्री था, और आसाप
का पुत्र योआह जो इतिहास का लेखक
था, ये तीनों उस से मिलने को बाहर
निकल गए।।

४ रबशाके ने उन से कहा, हिजकिय्याह
से कहो, महाराजाधिराज अश्शूर का
राजा यों कहता है कि तू किसका भरोसा
किए बैठा है? ५ मेरा कहना है कि
क्या मुंह से बातें बनाना ही युद्ध के लिये
पराक्रम और युक्ति है? तू किस पर
भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा
किया है? ६ सुन, तू तो उस कुचले
हुए नरकट अर्थात् मिस्र पर भरोसा
रखता है, उस पर यदि कोई टेक लगाए
तो वह उसके हाथ में चुभकर छेद कर
देगा। मिस्र का राजा फिरौन उन सब
के साथ ऐसा ही करता है जो उस पर
भरोसा रखते हैं। ७ फिर यदि तू मुझ
से कहे, हमारा भरोसा अपने परमेश्वर
यहोवा पर है, तो क्या वह वही नहीं है
जिसके ऊंचे स्थानों और वेदियों को
ढा कर हिजकिय्याह ने यहूदा और यरूशलेम
के लोगों से कहा कि तुम इस वेदी
के साम्हने दण्डवत् किया करो?
८ इसलिये अब मेरे स्वामी अश्शूर के

राजा के साथ वाचा बान्ध तब मैं तुझे
दो हजार घोड़े दूगा यदि तू उन पर
सवार चढा सके। ९ फिर तू रथो और
सवारों के लिये मिस्र पर भरोसा रखकर
मेरे स्वामी के छोटे से छोटे कर्मचारी *
को भी कैसे हरा सकेगा? १० क्या
मैं ने यहोवा के बिना कहे इस देश को
उजाडने के लिये चढाई की है? यहोवा
ने मुझ से कहा है, उस देश पर चढाई
करके उसे उजाड दे॥

११ तब एल्याकीम, शेब्ना और योआह
ने रबशाके से कहा, अपने दासो से अरामी
भाषा मे बात कर क्योकि हम उसे समझते
हैं, हम से यहूदी भाषा मे शहरपनाह
पर बैठे हुए लोगो के सुनते बाते न कर।
१२ रबशाके ने कहा, क्या मेरे स्वामी
ने मुझे तेरे स्वामी ही के वा तुम्हारे
ही पास ये बाते कहने को भेजा है?
क्या उस ने मुझे उन लोगो के पास नही
भेजा जो शहरपनाह पर बैठे हैं जिन्हे
तुम्हारे सग अपनी विष्ठा खाना और
अपना मूत्र पीना पड़ेगा?

१३ तब रबशाके ने खड़े होकर यहूदी
भाषा में ऊंचे शब्द से कहा, महाराजाधिराज
अश्शूर के राजा की बाते सुनो! १४ राजा
यो कहता है, हिजकिय्याह तुम को धोखा
न दे, क्योकि वह तुम्हे बचा न सकेगा।
१५ ऐसा न हो कि हिजकिय्याह तुम से
यह कहकर भुलवा दे कि यहोवा निश्चय
हम को बचाएगा कि यह नगर अश्शूर
के राजा के वश मे न पड़ेगा। १६ हिज-
किय्याह की मत सुनो, अश्शूर का राजा
कहता है, भेंट भेजकर मुझे प्रसन्न करो †

* मूल में—मेरे स्वामी के दासों में से एक अधिपति
का भी मुह फेर।

† मूल में—मेरे साथ आशीर्वाद करो।

और मेरे पास निकल आओ, तब तुम
अपनी अपनी दाखलता और अजीर के
वृक्ष के फल खा पाओगे, और अपने अपने
कुण्ड का पानी पिया करोगे, १७ जब
तक मैं आकर तुम को ऐसे देश मे न
ले जाऊ जो तुम्हारे देश के समान अनाज
और नये दाखमधु का देश और रोटी
और दाख की बारियो का देश है।
१८ ऐसा न हो कि हिजकिय्याह यह
कहकर तुम को बहकाए कि यहोवा हम
को बचाएगा। क्या और जातियो के
देवताओ ने अपने अपने देश को अश्शूर
के राजा के हाथ से बचाया है?
१९ हमात और अर्पाद के देवता कहा
रहे? सपर्वैम के देवता कहा रहे? क्या
उन्हो ने शोमरोन को मेरे हाथ से बचाया?
२० देश देश के सब देवताओ में से ऐसा
कौन है जिस ने अपने देश को मेरे हाथ
से बचाया हो? फिर क्या यहोवा यरूशलेम
को मेरे हाथ से बचाएगा?

२१ परन्तु वे चुप रहे और उसके
उत्तर मे एक बात भी न कही, क्योकि
राजा की ऐसी आज्ञा थी कि उसको
उत्तर न देना। २२ तब हिल्किय्याह का
पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम
पर नियुक्त था और शेब्ना जो मन्त्री था
और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास
का लेखक था, इन्हो ने हिजकिय्याह के
पास वस्त्र फाडे हुए जाकर रबशाके की
बातें कह सुनाई॥

३७ जब हिजकिय्याह राजा ने यह
सुना, तब वह अपने वस्त्र फाड
और टाट ओढकर यहोवा के भवन मे
गया। २ और उस ने एल्याकीम को
जो राजघराने के काम पर नियुक्त था

और शेब्ना मन्त्री को और याजकों के
पुरनियों को जो सब टाट ओढ़े हुए थे,
आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास
भेज दिया। ३ उन्हों ने उस से कहा,
हिजकिय्याह यों कहता है कि आज का
दिन संकट और उलहने और निन्दा का
दिन है, बच्चे जन्मने पर हुए पर जच्चा को
जनने का बल न रहा। ४ सम्भव है
कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने रबशाके की
बातें सुनीं जिसे उसके स्वामी अश्शूर के
राजा ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने
को भेजा है, और जो बातें तेरे परमेश्वर
यहोवा ने सुनी हैं उन्हें दपटे, सो तू
इन बचे हुओं के लिये जो रह गए हैं,
प्रार्थना कर* ॥

५ जब हिजकिय्याह राजा के कर्मचारी
यशायाह के पास आए। ६ तब यशायाह
ने उन से कहा, अपने स्वामी से कहो,
यहोवा यों कहता है कि जो वचन तू ने
सुने हैं जिनके द्वारा अश्शूर के राजा के
जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण
मत डर। ७ सुन, मैं उसके मन में
प्रेरणा करूंगा जिस से वह कुछ समाचार
सुनकर अपने देश को लौट जाए, और
मैं उसको उसी के देश में तलवार से
मरवा डालूंगा ॥

८ तब रबशाके ने लौटकर अश्शूर के
राजा को लिब्ना नगर से युद्ध करते पाया,
क्योंकि उस ने सुना था कि वह लाकीश
के पास से उठ गया है। ९ उस ने
कूश के राजा तिर्हाका के विषय यह
सुना कि वह उस से लड़ने को निकला
है। तब उस ने हिजकिय्याह के पास
दूतों को यह कहकर भेजा १० कि तुम

* मूल में—प्रार्थना उठा।

यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यों कहना,
तेरा परमेश्वर जिस पर तू भरोसा करता
है, यह कहकर तुझे धोखा न देने पाए
कि यरूशलेम अश्शूर के राजा के वश में
न पड़ेगा। ११ देख, तू ने सुना है कि
अश्शूर के राजाओं ने सब देशों से कैसा
व्यवहार किया कि उन्हें सत्यानाश ही
कर दिया। १२ फिर क्या तू बच
जाएगा? गोज़ान और हारान और रेसेप में
रहनेवाली जिन जातियों को और तलस्सार
में रहनेवाले एदेनी लोगों को मेरे पुरखाओं
ने नाश किया, क्या उनके देवताओं ने
उन्हें बचा लिया? १३ हमात का राजा,
अर्पाद का राजा, सपर्वैम नगर का राजा,
और हेना और इव्वा के राजा, ये सब
कहां गए?

१४ इस पत्री को हिजकिय्याह ने
दूतों के हाथ से लेकर पढ़ा, तब उस ने
यहोवा के भवन में जाकर उस पत्री को
यहोवा के साम्हने फैला दिया। १५ और
यहोवा से यह प्रार्थना की, १६ हे सेनाओं
के यहोवा, हे करूबों पर विराजमान
इस्राएल के परमेश्वर, पृथ्वी के सब राज्यों
के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है,
आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया
है। १७ हे यहोवा, कान लगाकर सुन,
यहोवा आंख खोलकर देख, और
सन्हेरीब के सब वचनों को सुन ले, जिस
ने जीवते परमेश्वर की निन्दा करने को
लिख भेजा है। १८ हे यहोवा, सच तो
है कि अश्शूर के राजाओं ने सब जातियों
के देशों को* उजाड़ा है १९ और उनके
देवताओं को आग में झोंका है, क्योंकि
वे ईश्वर न थे, वे केवल मनुष्यों की

* मूल में—सब देशों और उनकी भूमि को।

कारीगरी, काठ और पत्थर ही थे, इस
कारण वे उनको नाश कर सके। २० अब
हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू हमें उसके
हाथ से बचा जिस से पृथ्वी के राज्य
राज्य के लोग जान ले कि केवल तू ही
यहोवा है ॥

२१ तब आमोस के पुत्र यशायाह ने
हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा,
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यो कहता
है, तू ने जो अश्शूर के राजा सन्हेरीब
के विषय मे मुझ से प्रार्थना की है,
२२ उसके विषय यहोवा ने यह वचन
कहा है, सिय्योन की कुमारी कन्या तुझे
तुच्छ जानती है और ठट्ठो मे उडाती है,
यरूशलेम की पुत्री तुझ पर सिर हिलाती
है ॥

२३ तू ने किस की नामधराई और
निन्दा की है? और तू जो बडा बोल
बोला और घमण्ड किया है,* वह किस
के विरुद्ध किया है? इस्राएल के पवित्र
के विरुद्ध! २४ अपने कर्मचारियो के
द्वारा तू ने प्रभु की निन्दा करके कहा
है कि वहुत से रथ लेकर मै पर्वतो की
चोटियो पर वरन लबानोन के बीच तक
चढ आया हू, मै उसके ऊचे ऊचे देवदारो
और अच्छे अच्छे सनौबरो को काट
डालूगा और उसके दूर दूर के ऊचे स्थानो
मे और उसके वन की फलदाई बारियो
में प्रवेश करूगा। २५ मै ने खुदवाकर
पानी पिया और मिस्र की नहरो मे पाव
धरते ही उन्हे सुखा दिया। २६ क्या
तू ने नही सुना कि प्राचीनकाल से मै ने
यही ठाना और पूर्वकाल से इसकी तैयारी
की थी? इसलिये अब मै ने यह पूरा भी
किया है कि तू गढवाले नगरो को खण्डहर
ही खण्डहर कर दे। २७ इसी कारण
उनके रहनेवालो का वल घट गया और
वे विस्मित और लज्जित हुए वे मैदान
के छोटे छोटे पेडो और हरी घास और
छत पर की घास और ऐसे अनाज* के
समान हो गए जो बढने से पहिले ही
सूख जाता है ॥

२८ मै तो तेरा बैठना, कूच करना
और लौट आना जानता हू, और यह
भी कि तू मुझ पर अपना क्रोध भडकाता
है। २९ इस कारण कि तू मुझ पर
अपना क्रोध भडकाता और तेरे अभिमान
की बाते मेरे कानो मे पडी है, मै तेरी
नाक मे नकेल डालकर और तेरे मुह मे
अपनी लगाम लगाकर जिस मार्ग से तू
आया है उसी मार्ग से तुझे लौटा दूगा॥

३० और तेरे लिये यह चिन्ह होगा
कि इस वर्ष तो तुम उसे खाओगे जो आप
से आप उगे, और दूसरे वर्ष वह जो उस से
उत्पन्न हो, और तीसरे वर्ष बीज बोकर
उसे लवने पाओगे और दाख की बारिया
लगाने और उनका फल खाने पाओगे।
३१ और यहूदा के घराने के वचे हुए लोग
फिर जड † पकडेगे और फूले-फलेगे ‡,
३२ क्योकि यरूशलेम से वचे हुए और
सिय्योन पर्वत से भागे हुए लोग निकलेगे।
सेनाओ का यहोवा अपनी जलन के कारण
यह काम करेगा § ॥

३३ इसलिये यहोवा अश्शूर के राजा
के विषय यो कहता है कि वह इस नगर

* मूल में—अपनी आंखें ऊपर की ओर उठाईं।

* मूल में—खेत।
† मूल में—नीचे की ओर जड़।
‡ मूल में—ऊपर की ओर फलेंगे।
§ मूल में—सेनाओं के यहोवा की जलन यह करेगी।

मे प्रवेश करने, वरन इस पर एक तीर
भी मारने न पाएगा, और न वह ढाल
लेकर इसके साम्हने आने वा इसके विरुद्ध
दमदमा वान्धने पाएगा। ३४ जिस मार्ग
से वह आया ह उसी से वह लौट भी
जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने
पाएगा, यहोवा की यही वाणी है।
३५ क्योंकि मैं अपने निमित्त और अपने
दास दाऊद के निमित्त, इस नगर की
रक्षा करके उसे बचाऊगा॥

३६ तब यहोवा के दूत ने निकलकर
अश्शूरियो की छावनी में एक लाख
पचासी हजार पुरुषो को मारा, और
भोर को जब लोग सवेरे उठे तब क्या
देखा कि लोथ ही लोथ पडी है। ३७ तब
अश्शूर का राजा सन्हेरीब चल दिया
और लौटकर नीनवे मे रहने लगा।
३८ वहा वह अपने देवता निस्रोक के
मन्दिर में दण्डवत् कर रहा था कि इतने
में उसके पुत्र अद्रम्मेलेक और शरेसेर ने
उसको तलवार से मारा और अरारात
देश में भाग गए। और उसका पुत्र
एसर्हद्दोन उसके स्थान पर राज्य करने
लगा॥

३८ उन दिनो में हिजकिय्याह
ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने
पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह
नबी ने उसके पास जाकर कहा, यहोवा
यों कहता है, अपने घराने के विषय जो
आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा
मर ही जाएगा। २ तब हिजकिय्याह
ने भीत की ओर मुह फेरकर यहोवा से
प्रार्थना करके कहा, ३ हे यहोवा, मैं
विनती करता हू, स्मरण कर कि मैं
सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे
सम्मुख जानकर * चलता आया हू और जो
तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया
हू। और हिजकिय्याह बिलक बिलक-
कर रोने लगा। ४ तब यहोवा का यह
वचन यशायाह के पास पहुचा, ५ जाकर
हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष
दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
म ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आसू
देखे ह, सुन, म तेरी आयु पन्द्रह वर्ष
और बढा दूगा। ६ अश्शूर के राजा के
हाथ से म तेरी और इस नगर की रक्षा
करके बचाऊगा॥

७ यहोवा अपने इस कहे हुए वचन को
पूरा करेगा, ८ और यहोवा की ओर से
इस बात का तेरे लिये यह चिन्ह होगा
कि धूप की छाया जो आहाज की धूपघडी
में ढल गई है, मैं दस अंश पीछे की ओर
लौटा दूगा। सो वह छाया जो दस अंश
ढल चुकी थी लौट गई॥

९ यहूदा के राजा हिजकिय्याह का
लेख जो उस ने लिखा जब वह रोगी
होकर चगा हो गया था, वह यह है

१० मैं ने कहा, अपनी आयु के बीच † ही
मैं अधोलोक के फाटको मे प्रवेश
करूगा,
क्योंकि मेरी शेष आयु हर ली गई
है।
११ मैं ने कहा, मैं याह को जीवितो की
भूमि में फिर न देखने पाऊगा,
इस लोक के निवासियो को म फिर
न देखूगा।
१२ मेरा घर ‡ चरवाहे के तम्बू की नाईं
उठा लिया गया है,

---

* मूल में—तेरे साम्हने।
† मूल में—मौन में।
‡ वा मेरी आयु।

मैं ने जोलाहे की नाईं अपने जीवन
को लपेट दिया है, वह मुझे तान
से काट लेगा,
एक ही दिन में* तू मेरा अन्त कर
डालेगा।
१३ मैं भोर तक अपने मन को शान्त
करता रहा,
वह सिंह की नाईं मेरी सब हड्डियों
को तोड़ता है;
एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर
डालता है॥
१४ मैं सूपाबेने वा सारस की नाईं च्यूं
च्यूं करता,
मैं पिण्डुक की नाईं विलाप करता
हूं। मेरी आंखें ऊपर देखते देखते
पत्थरा गई हैं।
हे यहोवा, मुझ पर अन्धेर हो रहा
है, तू मेरा सहारा हो!
१५ मैं क्या कहूं? उसी ने मुझ से
प्रतिज्ञा की और पूरा भी किया
है।
मैं जीवन भर कड़ुआहट के साथ
धीरे धीरे चलता रहूंगा॥
१६ हे प्रभु, इन्हीं बातों से लोग जीवित हैं,
और इन सभों से मेरी आत्मा को
जीवन मिलता है।
तू मुझे चंगा कर और मुझे जीवित
रख!
१७ देख, शान्ति ही के लिये मुझे बड़ी
कड़ुआहट मिली,
परन्तु तू ने स्नेह करके मुझे विनाश
के गड़हे से निकाला है,
क्योंकि मेरे सब पापों को तू ने
अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

* मूल में—दिन से रात लों।

१८ क्योंकि अधोलोक तेरा धन्यवाद नहीं
कर सकता, न मृत्यु तेरी स्तुति
कर सकती है,
जो कबर में पड़ें वे तेरी सच्चाई
की आशा नहीं रख सकते
१९ जीवित*, हां जीवित ही तेरा धन्यवाद
करता है, जैसा मैं आज कर रहा
हूं,
पिता तेरी सच्चाई का समाचार
पुत्रों को देता है॥
२० यहोवा मेरा उद्धार करेगा,
इसलिये हम जीवन भर यहोवा के
भवन में
तारवाले बाजों पर अपने† रचे हुए
गीत गाते रहेंगे॥
२१ यशायाह ने कहा था, अंजीरों की
एक टिकिया बनाकर हिजकिय्याह के फोड़े
पर बान्धी जाए, तब वह बचेगा।
२२ और हिजकिय्याह ने पूछा था कि
इसका क्या चिन्ह है कि मैं यहोवा के
भवन को फिर जाने पाऊंगा?

३९ उस समय बलदान का पुत्र
मरोदक बलदान, जो बाबुल का
राजा था, उस ने हिजकिय्याह के रोगी
होने और फिर चंगे हो जाने की चर्चा
सुनकर उसके पास पत्री और भेंट भेजी।
२ इन से हिजकिय्याह ने प्रसन्न होकर
अपने अनमोल पदार्थों का भण्डार और
चान्दी, सोना, सुगन्ध द्रव्य, उत्तम तेल
और अपने हथियारों का सब घर और
अपने भण्डारों में जो जो वस्तुएं थीं,
वे सब उनको दिखलाईं। हिजकिय्याह
के भवन और राज्य भर में कोई ऐसी

* मूल में—जीवता जीवता।
† मूल में—मेरे।

वस्तु नहीं रह गई जो उस ने उन्हें न
दिखाई हो। ३ तब यशायाह नबी ने
हिजकिय्याह राजा के पास जाकर पूछा,
वे मनुष्य क्या कह गए? और वे कहां
से तेरे पास आए थे? हिजकिय्याह ने
कहा, वे तो दूर देश से अर्थात् बाबुल से
मेरे पास आए थे। ४ फिर उस ने पूछा,
तेरे भवन में उन्हों ने क्या क्या देखा है?
हिजकिय्याह ने कहा, जो कुछ मेरे भवन
में है वह सब उन्हों ने देखा है, मेरे
भण्डारों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो
मैं ने उन्हें न दिखाई हो॥

५ तब यशायाह ने हिजकिय्याह से
कहा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन
सुन ले: ६ ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिन
में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ
आज के दिन तक तेरे पुरखाओं का रखा
हुआ तेरे भण्डारों में है, वह सब बाबुल
को उठ जाएगा, यहोवा यह कहता है कि
कोई वस्तु न बचेगी। ७ और जो पुत्र
तेरे वंश में उत्पन्न हों, उन में से भी कितनों
को वे बंधुआई में ले जाएंगे, और वे खोजे
बनकर बाबुल के राजभवन में रहेंगे।
८ हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा,
यहोवा का वचन जो तू ने कहा है वह
भला ही है। फिर उस ने कहा, मेरे दिनों
में तो शान्ति और सच्चाई बनी रहेगी॥

४० तुम्हारा परमेश्वर यह कहता
है, मेरी प्रजा को शान्ति दो,
शान्ति! २ यरूशलेम से शान्ति की बातें
कहो, और उस से पुकारकर कहो कि
तेरी कठिन सेवा पूरी हुई है, तेरे अधर्म
का दण्ड अंगीकार किया गया है: यहोवा
के हाथ से तू अपने सब पापों का दूना
दण्ड पा चुका है॥

३ किसी की पुकार सुनाई देती है,
जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे
परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग
चौरस करो। ४ हर एक तराई भर दी
जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी
गिरा दी जाए, जो टेढ़ा है वह सीधा
और जो ऊंचा-नीचा है वह चौरस किया
जाए। ५ तब यहोवा का तेज प्रगट होगा
और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे,
क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा
है॥

६ बोलनेवाले का वचन सुनाई दिया,
प्रचार कर! मैं ने कहा, मैं क्या प्रचार
करूं? सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा
मैदान के फूल के समान है। ७ जब
यहोवा की सांस उस पर चलती है, तब
घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता
है; निःसन्देह प्रजा घास है। ८ घास
तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है,
परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव
अटल रहेगा॥

९ हे सिय्योन को शुभ समाचार
सुनानेवाली, ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा,
हे यरूशलेम को शुभ समाचार सुनानेवाली,
बहुत ऊंचे शब्द से सुना, ऊंचे शब्द से
सुना, मत डर, यहूदा के नगरों से कह,
अपने परमेश्वर को देखो! १० देखो,
प्रभु यहोवा सामर्थ दिखाता हुआ रहा
है, वह अपने भुजबल से प्रभुता करेगा*,
देखो, जो मजदूरी देने की है वह उसके
पास है और जो बदला देने का है वह
उसके हाथ में है। ११ वह चरवाहे
की नाईं अपने झुण्ड को चराएगा, वह
भेड़ों के बच्चों को अंकवार में लिए

* मूल में—उसकी भुजा उसके लिये प्रभुता
करेगी।

रहेगा और दूध पिलानेवालियो को धीरे-
धीरे ले चलेगा ॥

१२ किस ने महासागर को चुल्लू मे
मापा और किस के बित्ते से आकाश का
नाप हुआ, किस ने पृथ्वी की मिट्टी को
नपवे मे भरा और पहाडो को तराजू मे
और पहाडियो को काटे मे तौला है ?
१३ किस ने यहोवा की आत्मा को
मार्ग बताया वा उसका मन्त्री होकर उसको
ज्ञान सिखाया है ? १४ उस ने किस मे
सम्मति ली और किस ने उसे समझाकर
न्याय का पथ बता दिया और ज्ञान
सिखाकर बुद्धि का मार्ग जता दिया है ?
१५ देखो, जातिया तो डोल की एक
बून्द वा पलडो पर की धूलि के तुल्य ठहरी,
देखो, वह द्वीपो को धूलि के किनको
सरीखे उठाता है। १६ लबानोन भी
ईंधन के लिये थोडा होगा और उस मे
के जीव-जन्तु होमबलि के लिये बस न
होगे। १७ सारी जातिया उसके साम्हने
कुछ नही है, वे उसकी दृष्टि मे लेश और
शून्य से भी घट ठहरी है ॥

१८ तुम ईश्वर को किस के समान
बताओगे और उसकी उपमा किस से
दोगे ? १९ मूरत! कारीगर ढालता है,
सोनार उसको सोने से मढता और उसके
लिये चान्दी की साकले ढालकर बनाता
है। २० जो कगाल इतना अर्पण नही
कर सकता, वह ऐसा वृक्ष चुन लेता है
जो न घुने, तब एक निपुण कारीगर
ढूढकर मूरत खुदवाता और उसे ऐसा
स्थिर कराता है कि वह हिल न सके ॥

२१ क्या तुम नही जानते ? क्या तुम
ने नही सुना ? क्या तुम को आरम्भ ही
से नही बताया गया ? क्या तुम ने पृथ्वी
की नेव पडने के समय ही से विचार
नही किया ? २२ यह वह है जो पृथ्वी
के घेरे के ऊपर आकाशमण्डल पर
विराजमान है, और पृथ्वी के रहनेवाले
टिड्डी के तुल्य है, जो आकाश को मलमल
की नाई फैलाता और ऐसा तान देता
है जैसा रहने के लिये तम्बू ताना जाता है,
२३ जो बडे बडे हाकिमो को तुच्छ कर
देता है, और पृथ्वी के अधिकारियो को
शून्य के समान कर देता है ॥

२४ वे रोपे ही जाते, वे बोए ही जाते,
उनके ठूठ भूमि मे जड ही पकड पाते कि
वह उन पर पवन बहाता और वे सूख
जाते, और आधी उन्हे भूसे की नाईं
उडा ले जाती है ॥

२५ सो तुम मुझे किस के समान
बताओगे कि मै उसके तुल्य ठहरू ?
उस पवित्र का यही वचन है। २६ अपनी
आखे ऊपर उठाकर देखो, किस ने इनको
सिरजा ? वह इन गणो को गिन गिनकर
निकालता, उन सब को नाम ले लेकर
बुलाता है ? वह ऐसा सामर्थी और
अत्यन्त बली है कि उन में के कोई बिना
आए नही रहता ॥

२७ हे याकूब, तू क्यो कहता है, हे
इस्राएल तू क्यो बोलता है, मेरा मार्ग
यहोवा के छिपा हुआ है, मेरा परमेश्वर
मेरे न्याय की कुछ चिन्ता नही करता * ?
२८ क्या तुम नही जानते ? क्या तुम ने
नही सुना ? यहोवा जो सनातन परमेश्वर
और पृथ्वी भर का सिरजनहार है, वह न
थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि
अगम है। २९ वह थके हुए को बल
देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ
देता है। ३० तरुण तो थकते और

* मूल में—मेरा न्याय मेरे परमेश्वर के पास होकर निकल गया।

श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर
खाकर गिरते हैं, ३१ परन्तु जो यहोवा
की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त
करते जाएंगे, वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे *,
वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे
और थकित न होंगे ॥

४१ हे द्वीपो, मेरे साम्हने चुप रहो,
देश देश के लोग नया बल प्राप्त
करें, वे समीप आकर बोलें, हम आपस में
न्याय के लिये एक दूसरे के समीप आएं ॥
२ किस ने पूर्व दिशा से एक को
उभारा है, जिसे वह धर्म के साथ अपने
पांव के पास बुलाता है? वह जातियों
को उसके वश में कर देता और उसको
राजाओं पर अधिकारी ठहराता है,
उसकी तलवार वह उन्हें धूल के समान,
और उसके धनुष से उड़ाए हुए भूसे के
समान कर देता है। ३ वह उन्हें खदेड़ता
और ऐसे मार्ग से, जिस पर वह कभी
न चला था, बिना रोक टोक आगे बढ़ता
है। ४ किस ने यह काम किया है और
आदि से पीढ़ियों को बुलाता आया है?
मैं यहोवा, जो सब से पहिला, और अन्त
के समय रहूंगा, मैं वहीं हूं ॥
५ द्वीप देखकर डरते हैं, पृथ्वी के
दूर देश कांप उठे और निकट आ गए हैं।
६ वे एक दूसरे की सहायता करते हैं
और उन में से एक अपने भाई से कहता
है, हियाव बान्ध। ७ बढ़ई सोनार को
और हथौड़े से बराबर करनेवाला निहाई
पर मारनेवाले को यह कहकर हियाव
बन्धा रहा है, जोड़ तो अच्छी है, सो
वह कील ठोंक ठोंककर उसको ऐसा दृढ़
करता है कि वह स्थिर रहे ॥

* मूल में—चढ़ेंगे।

८ हे मेरे दास इस्राएल, हे मेरे चुने
हुए याकूब, हे मेरे प्रेमी इब्राहीम के वंश,
९ तू जिसे मैं ने पृथ्वी के दूर दूर देशों से
लिया और पृथ्वी की छोर से बुलाकर
यह कहा, तू मेरा दास है, मैं ने तुझे चुना
है और तजा नहीं, १० मत डर, क्योंकि
मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक,
क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं, मैं तुझे
दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा,
अपने धर्ममय दहिने हाथ से मैं तुझे
सम्हाले रहूंगा ॥
११ देख, जो तुझ से क्रोधित हैं वे
सब लज्जित होंगे, जो तुझ से झगड़ते
हैं उनके मुंह काले होंगे और वे नाश
होकर मिट जाएंगे। १२ जो तुझ से
लड़ते हैं उन्हें ढूंढने पर भी तू न पाएगा,
जो तुझ से युद्ध करते हैं वे नाश होकर मिट
जाएंगे। १३ क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर
यहोवा, तेरा दहिना हाथ पकड़कर कहूंगा,
मत डर, मैं तेरी सहायता करूंगा ॥
१४ हे कीड़े सरीखे याकूब, हे इस्राएल
के मनुष्यो, मत डरो। यहोवा की यह
वाणी है, मैं तेरी सहायता करूंगा,
इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है।
१५ देख, मैं ने तुझे छूरीवाले दांवने
का एक नया और चोखा यन्त्र ठहराया
है, तू पहाड़ों को दांय दांयकर सूक्ष्म
धूलि कर देगा, और पहाड़ियों को तू
भूसे के समान कर देगा। १६ तू उनको
फटकेगा, और पवन उन्हें उड़ा ले जाएगी,
और आंधी उन्हें तितर-बितर कर देगी।
परन्तु तू यहोवा के कारण मगन होगा,
और इस्राएल के पवित्र के कारण बड़ाई
मारेगा ॥
१७ जब दीन और दरिद्र लोग जल
ढूंढने पर भी न पायें और उनका तालू

प्यास के मारे सूख जाये; मैं यहोवा
उनकी विनती सुनूगा, मैं इस्राएल का
परमेश्वर उनको त्याग न दूगा। १८ मैं
मुण्डे टीलो से भी नदिया और मैदानो
के बीच मे सोते बहाऊगा *, मैं जगल को
ताल और निर्जल देश को सोते ही सोते कर
दूगा। १९ मैं जगल मे देवदार, बबूल,
मेंहदी, और जलपाई उगाऊगा †, मैं
अरावा मे सनौवर, तिधार वृक्ष, और
सीधा सनौवर इकट्ठे लगाऊगा, २० जिस
से लोग देखकर जान ले, और सोचकर
पूरी रीति से समझ ले कि यह यहोवा के
हाथ का किया हुआ और इस्राएल के
पवित्र का सृजा हुआ है ॥

२१ यहोवा कहता है, अपना
मुकद्दमा लडो, याकूब का राजा कहता
है, अपने प्रमाण दो। २२ वे उन्हे देकर
हम को बताए कि भविष्य मे क्या होगा?
पूर्वकाल की घटनाए बताओ कि आदि
मे क्या क्या हुआ, जिस से हम उन्हे
सोचकर जान सकें कि भविष्य मे उनका
क्या फल होगा, वा होनेवाली घटनाए
हम को सुना दो। २३ भविष्य मे जो कुछ
घटेगा वह बताओ, तब हम मानेंगे कि
तुम ईश्वर हो, भला वा बुरा, कुछ तो
करो कि हम देखकर एक चकित हो
जाए। २४ देखो, तुम कुछ नही हो,
तुम से कुछ नही बनता, जो कोई तुम्हे
चाहता है वह घृणित है ॥

२५ मैं ने एक को उत्तर दिशा से
उभारा, वह आ भी गया है, वह पूर्व
दिशा मे है और मेरा नाम लेता है,
जैसा कुम्हार गिली मिट्टी को लताडता
है, वैसा ही वह हाकिमो को कीच के
समान लताड़ देगा *। २६ किस ने इस
बात को पहिले से बताया था, जिस से
हम यह जानते? किस ने पूर्वकाल से
यह प्रगट किया जिस से हम कहे कि वह
सच्चा है? कोई भी बतानेवाला नही,
कोई भी सुनानेवाला नही, तुम्हारी बातो
का कोई भी सुननेवाला नही है। २७ मैं
ही ने पहिले सिय्योन से कहा, देख, उन्हे
देख, और मै ने यरूशलेम को एक शुभ
समाचार देनेवाला भेजा। २८ मैं ने
देखने पर भी किसी को न पाया, उन
मे कोई मन्त्री नही जो मेरे पूछने पर
कुछ उत्तर दे सके। २९ सुनो, उन सभो
के काम अनर्थ है, उनके काम तुच्छ है,
और उनकी ढली हुई मूर्त्तिया वायु और
मिथ्या है ॥

४२ मेरे दास को देखो जिसे मैं
सभाले हू, मेरे चुने हुए को,
जिस से मेरा जी प्रसन्न है; मैं ने उस पर
अपना आत्मा रखा है, वह अन्यजातियो
के लिये न्याय प्रगट करेगा। २ न वह
चिल्लाएगा और न ऊचे शब्द से बोलेगा,
न सडक मे अपनी वाणी सुनायेगा।
३ कुचले हुए नरकट को वह न तोडेगा
और न टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा,
वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा। ४ वह
न थकेगा और न हियाव छोडेगा जब तक
वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे;
और द्वीपो के लोग उसकी व्यवस्था की
बाट जोहेगे ॥

५ ईश्वर जो आकाश का सृजने और
ताननेवाला है, जो उपज सहित पृथ्वी
का फैलानेवाला और उस पर के लोगो
को सास और उस पर के चलनेवालो

* मूल में—खोलूगा। † मूल में—दूगा।

* मूल में—को आएगा।

को आत्मा देनेवाला यहोवा है, वह यों
कहता है ६ मुझ यहोवा ने तुझ को
धर्म से बुला लिया है, मैं तेरा हाथ थाम
कर तेरी रक्षा करूंगा, मैं तुझे प्रजा के
लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश
ठहराऊंगा, कि तू अन्धों की आंखें खोले,
७ बंधुओं को बन्दीगृह से निकाले और
जो अन्धियारे में बैठे हैं उनको कालकोठरी
से निकाले। ८ मैं यहोवा हूं, मेरा नाम
यही है, अपनी महिमा मैं दूसरे को
न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह
खुदी हुई मूरतों को न दूंगा। ९ देखो,
पहिली बातें तो हो चुकी हैं, अब मैं नई
बातें बताता हूं, उनके होने से पहिले
मैं तुम को सुनाता हूं॥

१० हे समुद्र पर चलनेवालो*, हे
समुद्र के सब रहनेवालो, हे द्वीपो, तुम
सब अपने रहनेवालों समेत यहोवा के
लिये नया गीत गाओ और पृथ्वी की छोर
से उसकी स्तुति करो। ११ जंगल और
उस में की बस्तियां और केदार के बसे
हुए गांव जयजयकार करें, सेला के
रहनेवाले जयजयकार करें, वे पहाड़ों
की चोटियों पर से ऊंचे शब्द से ललकारें।
१२ वे यहोवा की महिमा प्रगट करें
और द्वीपों में उसका गुणानुवाद करें।
१३ यहोवा वीर की नाईं निकलेगा और
योद्धा के समान अपनी जलन भड़काएगा,
वह ऊंचे शब्द से ललकारेगा और अपने
शत्रुओं पर जयवन्त होगा॥

१४ बहुत काल से तो मैं चुप रहा
और मौन साधे अपने को रोकता रहा,
परन्तु अब जच्चा की नाईं चिल्लाऊंगा,
मैं हांफ हांफकर सांस भरूंगा। १५ पहाड़ों
और पहाड़ियों को मैं सुखा डालूंगा और
उनकी सब हरियाली झुलसा दूंगा, मैं
नदियों को द्वीप कर दूंगा और तालों को
सुखा डालूंगा। १६ मैं अन्धों को एक
मार्ग से ले चलूंगा जिसे वे नहीं जानते
और उनको ऐसे पथों से चलाऊंगा जिन्हें वे
नहीं जानते। उनके आगे मैं अन्धियारे
को उजियाला करूंगा और टेढ़े मार्गों
को सीधा करूंगा। मैं ऐसे ऐसे काम
करूंगा और उनको न त्यागूंगा।
१७ जो लोग खुदी हुई मूरतों पर भरोसा
रखते और ढली हुई मूरतों से कहते हैं
कि तुम हमारे ईश्वर हो, उनको पीछे
हटना और अत्यन्त लज्जित होना पड़ेगा॥

१८ हे बहिरो, सुनो, हे अन्धो, आंख
खोलो कि तुम देख सको! १९ मेरे दास
के सिवाय कौन अन्धा है? और मेरे भेजे
हुए दूत के तुल्य कौन बहिरा है? मेरे
मित्र के समान कौन अन्धा या यहोवा के
दास के तुल्य अन्धा कौन है? २० तू
बहुत सी बातों पर दृष्टि करता है परन्तु
उन्हें देखता नहीं है, कान तो खुले
हैं परन्तु सुनता नहीं है॥

२१ यहोवा को अपनी धार्मिकता के
निमित्त ही यह भाया है कि व्यवस्था की
बड़ाई अधिक करे। २२ परन्तु ये लोग
लुट गए हैं, ये सब के सब गड़हियों में
फंसे हुए और कालकोठरियों में बन्द किए
हुए हैं, ये पकड़े गए और कोई इन्हें नहीं
छुड़ाता, ये लुट गए और कोई आज्ञा नहीं
देता कि फेर दो। २३ तुम में से कौन इस
पर कान लगाएगा? कौन ध्यान धरके
होनहार के लिये सुनेगा? २४ किस ने
याकूब को लुटवाया और इस्राएल को
लुटेरों के वश में कर दिया? क्या यहोवा
ने यह नहीं किया जिसके विरुद्ध हम ने

* मूल में—उतरनेवालो।

पाप किया, जिसके मार्गों पर उन्हो ने
चलना न चाहा और न उसकी व्यवस्था
को माना? २५ इस कारण उस पर
उस ने अपने क्रोध की आग भडकाई*
और युद्ध का बल चलाया, और यद्यपि
आग उसके चारो ओर लग गई, तौभी
वह न समझा, वह जल भी गया, तौभी
न चेता ।।

४३ हे इस्राएल तेरा रचनेवाला,
और हे याकूब, तेरा सृजनहार
यहोवा अब यो कहता है, मत डर, क्योकि
मै ने तुझे छुडा लिया है, मै ने तुझे नाम
लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है। २ जब
तू जल मे होकर जाए, मै तेरे सग सग
रहूगा और जब तू नदियो मे होकर चले,
तब वे तुझे न डुबा सकेगी, जब तू आग
मे चले तब तुझे आच न लगेगी, और
उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। ३ क्योकि
मै यहोवा तेरा परमेश्वर हू, इस्राएल
का पवित्र मै तेरा उद्धारकर्त्ता हू। तेरी
छुडौती मे मै मिस्र को और तेरी सन्ती
कूश और सबा को देता हू। ४ मेरी दृष्टि
मे तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है
और मै तुझ से प्रेम रखता हू, इस कारण
मै तेरी सन्ती मनुष्यो को और तेरे प्राण
के बदले मे राज्य राज्य के लोगो को
दे दूगा। ५ मत डर, क्योकि मै तेरे
साथ हू, मै तेरे वश को पूर्व से ले आऊगा,
और पच्छिम से भी इकट्ठा करूगा।
६ मै उत्तर से कहूगा, दे दे, और दक्खिन
से कि रोक मत रख, मेरे पुत्रो को दूर
से और मेरी पुत्रियो को पृथ्वी की छोर
से ले आओ, ७ हर एक को जो मेरा
कहलाता है, जिसको मै ने अपनी महिमा
के लिये सृजा, जिसको मै ने रचा और
बनाया है ।।

८ आख रखते हुए अन्धो को और
कान रखते हुए बहिरो को निकाल ले
आओ! ९ जाति जाति के लोग इकट्ठे
किए जाए और राज्य राज्य के लोग
एकत्रित हो। उन मे से कोन यह बात
बता सकता वा बीती हुई बाते हमे सुना
सकता है? वे अपने साक्षी ले आए
जिस से वे सच्चे ठहरे, वे सुन ले और कहें,
यह सत्य है। १० यहोवा की वाणी
है कि तुम मेरे साक्षी हो और मेरे दास
हो, जिन्हे मै ने इसलिये चुना है कि
समझकर मेरी प्रतीति करो और यह
जान लो कि मै वही हू। मुझ से पहिले
कोई ईश्वर न हुआ और न मेरे बाद भी
कोई होगा। ११ मै ही यहोवा हू और
मुझे छोड कोई उद्धारकर्त्ता नही। १२ मै
ही ने समाचार दिया और उद्धार किया
और वर्णन भी किया, जब तुम्हारे बीच
मे कोई पराया देवता न था, इसलिये
तुम ही मेरे साक्षी हो, यहोवा की यह
वाणी है। १३ मै ही ईश्वर हू और
भविष्य मे भी मै ही हू, मेरे हाथ से कोई
छुडा न सकेगा, जब मै काम करना चाहू
तब कौन मुझे रोक* सकेगा ।।

१४ तुम्हारा छुडानेवाला और इस्राएल
का पवित्र यहोवा यो कहता है, तुम्हारे
निमित्त मै ने बाबुल को भेजा है, और
उसके सब रहनेवालो को भगोडो की
दशा मे और कसदियो को भी उन्ही
के जहाजो पर चढाकर ले आऊगा†
जिन के विषय वे बडा बोल बोलते है‡।

* मूल में—उण्डेली।

* मूल में—करे।
† मूल में—भगोड़े करके उतारूगा।
‡ मूल में—ऊंचे शब्द से बोलते हैं।

१५ मैं यहोवा तुम्हारा पवित्र, इस्राएल
का सृजनहार, तुम्हारा राजा हूं।
१६ यहोवा जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड
धारा में पथ बनाता है, १७ जो रथों और
घोड़ों को और शूरवीरों समेत सेना को
निकाल लाता है, (वे तो एक संग वहीं
रह गए और फिर नहीं उठ सक्ते, वे
बुझ गए, वे सन की बत्ती की नाईं बुझ
गए हैं।) वह यों कहता है, १८ अब
बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो,
न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ।
१९ देखो, मैं एक नई बात करता हूं,
वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से
अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग
बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां
बहाऊंगा। २० गीदड़ और शुतर्मुर्ग आदि
जंगली जन्तु मेरी महिमा करेंगे, क्योंकि
मैं अपनी चुनी हुई प्रजा के पीने के लिये
जंगल में जल और निर्जल देश में नदियां
बहाऊंगा। २१ इस प्रजा को मैं ने अपने
लिये बनाया है कि वे मेरा गुणानुवाद
करें॥

२२ तौभी हे याकूब, तू ने मुझ से
प्रार्थना नहीं की, वरन हे इस्राएल तू
मुझ से उकता गया है! २३ मेरे लिये
होमबलि करने को तू मेम्ने नहीं लाया
और न मेलबलि चढ़ाकर मेरी महिमा
की है। देख, मैं ने अन्नबलि चढ़ाने की
कठिन सेवा तुझ से नहीं कराई, न तुझ
से धूप लेकर तुझे थका दिया है। २४ तू
मेरे लिये सुगन्धित नरकट रुपए से मोल
नहीं लाया और न मेलबलियों की चर्बी
से मुझे तृप्त किया। परन्तु तू ने अपने
पापों के कारण मुझ पर बोझ लाद दिया
है, और अपने अधर्म के कामों से मुझे
थका दिया है॥

२५ मैं वही हूं जो अपने नाम के
निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं
और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा।
२६ मुझे स्मरण करो, हम आपस में
विवाद करें, तू अपनी बात का वर्णन
कर जिस से तू निर्दोष ठहरे। २७ तेरा
मूलपुरुष पापी हुआ और जो जो मेरे
और तुम्हारे बीच बिचवई हुए, वे मुझ
से बलवा करते चले आए हैं। २८ इस
कारण मैं ने पवित्रस्थान के हाकिमों
को अपवित्र ठहराया, मैं ने याकूब को
सत्यानाश और इस्राएल को निन्दित
होने दिया है॥

४४ परन्तु अब हे मेरे दास याकूब,
हे मेरे चुने हुए इस्राएल, सुन ले!
२ तेरा कर्त्ता यहोवा, जो तुझे गर्भ ही से
बनाता आया और तेरी सहायता करेगा,
यों कहता है, हे मेरे दास याकूब, हे मेरे
चुने हुए यशूरून*, मत डर! ३ क्योंकि
मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि
पर धाराएं बहाऊंगा, मैं तेरे वंश पर
अपनी आत्मा और तेरी सन्तान पर
अपनी आशीष उण्डेलूंगा। ४ वे उन
मजनुओं की नाईं बढ़ेंगे जो धाराओं के
पास घास के बीच में होते हैं। ५ कोई
कहेगा, मैं यहोवा का हूं, कोई अपना नाम
याकूब रखेगा, कोई अपने हाथ पर लिखेगा,
मैं यहोवा का हूं, और अपना कुलनाम
इस्राएली बताएगा॥

६ यहोवा, जो इस्राएल का राजा है,
अर्थात् सेनाओं का यहोवा जो उसका
छुड़ानेवाला है, वह यों कहता है, मैं
सब से पहिला हूं, और मैं ही अन्त तक
रहूंगा, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही

* मूल में—सीधा।

नही। ७ और जब से मैं ने प्राचीनकाल
के मनुष्यों को ठहराया, तब से कौन हुआ
जो मेरी नाईं उसको प्रचार करे, वा
बताए वा मेरे लिये रचे अथवा होनहार
बातें पहिले ही से प्रगट करे? ८ मत डरो
और न भयमान हो, क्या मैं ने प्राचीनकाल
ही से ये बातें तुम्हें नही सुनाईं और तुम पर
प्रगट नही की? तुम मेरे साक्षी हो। क्या
मुझे छोड कोई और परमेश्वर है? नही,
मुझे छोड कोई चट्टान नही, मैं किसी
और को नही जानता॥

९ जो मूरत खोदकर बनाते है, वे
सब के सब व्यर्थ है * और जिन वस्तुओं
मे वे आनन्द ढूंढते उन से कुछ लाभ न
होगा, उनके साक्षी, न तो आप कुछ
देखते और न कुछ जानते है, इसलिये
उनको लज्जित होना पडेगा। १० किस
ने देवता वा निष्फल मूरत ढाली है?
११ देख, उसके सब संगियों को तो
लज्जित होना पडेगा, कारीगर तो मनुष्य
ही है, वे सब के सब इकट्ठे होकर खडे
हों, वे डर जाएंगे, वे सब के सब लज्जित
होंगे। १२ लोहार एक बसूला अंगारों मे
बनाता और हथौडों से गढकर तैयार करता
है, अपने भुजबल से वह उसको बनाता
है, फिर वह भूखा हो जाता है और उसका
बल घटता है, वह पानी नही पीता और
थक जाता है। १३ बढई सूत लगाकर
टांकी से रेखा करता है और रन्दनी से
काम करता और परकार से रेखा खींचता
है, वह उसका आकार और मनुष्य की
सी सुन्दरता बनाता है ताकि लोग
उसे घर में रखें †। १४ वह देवदार को
काटता वा वन के वृक्षों में से जाति जाति
के बांजवृक्ष चुनकर सेवता है, वह एक
तूस का वृक्ष लगाता है जो वर्षा का जल
पाकर बढता है। १५ तब वह मनुष्य
के ईंधन के काम मे आता है, वह उस
मे से कुछ सुलगाकर तापता है, वह
उसको जलाकर रोटी बनाता है, उसी से
वह देवता भी बनाकर उसको दण्डवत्
करता है, वह मूरत खुदवाकर उसके
साम्हने प्रणाम करता है। १६ उसका
एक भाग तो वह आग में जलाता और
दूसरे भाग से मांस पकाकर खाता है,
वह मांस भूनकर तृप्त होता, फिर तापकर
कहता है, अहा, मैं गर्म हो गया, मैं ने
आग देखी है। १७ और उसके बचे
हुए भाग को लेकर वह एक देवता अर्थात्
एक मूरत खोदकर बनाता है, तब वह
उसके साम्हने प्रणाम और दण्डवत् करता
और उस से प्रार्थना करके कहता है,
मुझे बचा ले, क्योंकि तू मेरा देवता है।

वे कुछ नही जानते, न कुछ समझ
रखते है, १८ क्योंकि उनकी आंखें ऐसी
मून्दी * गई है कि वे देख नही सकते,
और उनकी बुद्धि ऐसी कि वे बूझ नही
सकते। १९ कोई इस पर ध्यान नही
करता, और न किसी को इतना ज्ञान
वा समझ रहती है कि कह सके, उसका
एक भाग तो मैं ने जला दिया और उसके
कोयलों पर रोटी बनाई, और मांस
भूनकर खाया है, फिर क्या मैं उसके
बचे हुए भाग को घिनौनी वस्तु बनाऊं?
क्या मैं काठ † को प्रणाम करूं? २० वह
राख खाता है, भरमाई हुई बुद्धि के कारण
वह भटकाया गया है और वह न अपने
को बचा सकता और न यह कह सकता

* मूल में—सो सब शून्यता है।
† मूल में—जिस से घर में रहे।

* मूल में—लेस दी।
† मूल में—पेड़ के ठूठ को।

है, क्या मेरे दहिने हाथ में मिथ्या
नही ?

२१ हे याकूब, हे इस्राएल, इन बातो
को स्मरण कर, तू मेरा दास है, मै ने तुझे
रचा है, हे इस्राएल, तू मेरा दास है,
मै तुझ को न बिसराऊगा। २२ मै ने
तेरे अपराधो को काली घटा के समान
और तेरे पापो को बादल के समान मिटा
दिया है, मेरी ओर फिर लौट आ, क्योकि
मै ने तुझे छुडा लिया है ॥

२३ हे आकाश, ऊचे स्वर से गा,
क्योकि यहोवा ने यह काम किया है,
हे पृथ्वी के गहिरे स्थानो, जयजयकार
करो, हे पहाडो, हे वन, हे वन के सब
वृक्षो, गला खोलकर ऊचे स्वर से गाओ।
क्योकि यहोवा ने याकूब को छुडा लिया
है और इस्राएल में महिमावान होगा ॥

२४ यहोवा, तेरा उद्धारकर्त्ता, जो तुझे
गर्भ ही मे बनाता आया है, यो कहता
है, मै यहोवा ही सब का बनानेवाला
हू जिस ने अकेले ही आकाश को ताना
और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया
है। २५ मै झूठे लोगो के कहे हुए चिन्हो
को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेवालो
को बावला कर देता हू, जो बुद्धिमानो
को पीछे हटा देता और उनकी पण्डिताई
को मूर्खता बनाता हू, २६ और अपने
दास के वचन को पूरा करता और अपने
दूतो की युक्ति को सुफल करता हू,
जो यरूशलेम के विषय कहता है, वह फिर
बसाई जाएगी और यहूदा के नगरो के
विषय, वे फिर बनाए जाएगे और मै
उनके खण्डहरो को सुधारूगा, २७ जो
गहिरे जल से कहता है, तू सूख जा, मै
तेरी नदियो को सुखाऊगा, २८ जो कुस्रू
के विषय मे कहता है, वह मेरा ठहराया
हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी
करेगा, यरूशलेम के विषय कहता है,
वह बसाई जाएगी और मन्दिर के विषय
कि तेरी नेव डाली जाएगी ॥

४५ यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू
के विषय यो कहता है, मै ने
उस* के दहिने हाथ को इसलिये थाम
लिया है कि उसके साम्हने जातियो को दबा
दू और राजाओ की कमर ढीली करू,
उसके साम्हने फाटको को ऐसा खोल दू
कि वे फाटक बन्द न किए जाए। २ मै
तेरे आगे आगे चलूगा और ऊची ऊची
भूमि को चौरस करूगा, मै पीतल के
किवाडो को तोड डालूगा और लोहे के
बेडो को टुकडे टुकडे कर दूगा। ३ मै
तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त
स्थानो में गडा हुआ धन दूगा, जिस से
तू जाने कि मै इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा हू जो तुझे नाम लेकर बुलाता है।
४ अपने दास याकूब और अपने चुने हुए
इस्राएल के निमित्त मै ने नाम लेकर
तुझे बुलाया है, यद्यपि तू मुझे नही
जानता, तौभी मै ने तुझे पदवी दी है।
५ मै यहोवा हू और दूसरा कोई नही,
मुझे छोड कोई परमेश्वर नही, यद्यपि
तू मुझे नही जानता, तौभी मै तेरी कमर
कसूगा, ६ जिस से उदयाचल से लेकर
अस्ताचल तक लोग जान ले कि मुझ
बिना कोई है ही नही, मै यहोवा हू और
दूसरा कोई नही है। ७ मै उजियाले का
बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार
हू, मै शान्ति का दाता और विपत्ति को
रचता हू, मै यहोवा ही इन सभो का
कर्त्ता हू। ८ हे आकाश, ऊपर से धर्म

* मूल में—जिस।

वरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा
हो *, पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो,
और धर्म भी उसके सग उगाए, मैं यहोवा
ही ने उसे उत्पन्न किया है ॥
६ हाय उस पर जो अपने रचनेवाले
से झगडता है! वह तो मिट्टी के ठीकरो
मे से एक ठीकरा ही है! क्या मिट्टी
कुम्हार से कहेगी, तू यह क्या करता है?
क्या कारीगर का† बनाया हुआ कार्य
उसके विषय कहेगा कि उसके हाथ नही
है? १० हाय उस पर जो अपने पिता
से कहे, तू क्या जन्माता है? और माँ
से कहे, तू किस की माता है‡?
११ यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और
उसका बनानेवाला है, वह यो कहता है,
क्या तुम आनेवाली घटनाए मुझ से पूछोगे?
क्या मेरे पुत्रो और मेरे कामो के विषय
मुझे आज्ञा दोगे? १२ मैं ही ने पृथ्वी को
बनाया और उसके ऊपर मनुष्यो को
सृजा है, मैं ने अपने ही हाथो से आकाश
को ताना और उसके सारे गणो को
आज्ञा दी है। १३ मैं ही ने उस पुरुष
को धार्मिकता मे उभारा है और मैं उसके
सब मार्गो को सीधा करूगा, वह मेरे
नगर को फिर बसाएगा और मेरे बधुओ
को बिना दाम या बदला लिए छुडा देगा,
सेनाओ के यहोवा का यही वचन है ॥
१४ यहोवा यो कहता है, मिस्रियो
की कमाई और कूशियो के व्योपार का
लाभ और सबाई लोग जो डील-डौलवाले
है, तेरे पास चले आएगे, और तेरे ही
हो जाएगे, वे तेरे पीछे पीछे चलेगे, वे
सांकलो मे बन्धे हुए चले आएगे और तेरे
साम्हने दण्डवत् कर तुझ से बिनती करके
कहेगे, निश्चय परमेश्वर तेरे ही साथ
है और दूसरा कोई नही, उसके सिवाय
कोई और परमेश्वर नही ॥
१५ हे इस्राएल के परमेश्वर, हे
उद्धारकर्त्ता! निश्चय तू ऐसा ईश्वर है
जो अपने को गुप्त रखता है। १६ मूर्त्तियो
के गढनेवाले सब के सब लज्जित और
चकित होगे, वे सब के सब व्याकुल होगे।
१७ परन्तु इस्राएल यहोवा के द्वारा युग
युग का उद्धार पाएगा, तुम युग युग
वरन अनन्तकाल तक न तो कभी लज्जित
और न कभी व्याकुल होगे ॥
१८ क्योकि यहोवा जो आकाश का
सृजनहार है वही परमेश्वर है, उसी ने
पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने
उसको स्थिर भी किया, उस ने उसे
सुनसान रहने के लिये नही परन्तु बसने
के लिये उसे रचा है। वही यो कहता
है, मैं यहोवा हू, मेरे सिवा दूसरा और
कोई नही है। १९ मैं ने न किसी गुप्त
स्थान मे, न अन्धकार देश के किसी
स्थान मे बाते की, मैं ने याकूब के वश
से नही कहा, मुझे व्यर्थ मे ढूढो *। मैं
यहोवा सत्य ही कहता हू, मैं उचित बाते
ही बताता आया हू ॥
२० हे अन्यजातियो मे से बचे हुए
लोगो, इकट्ठे होकर आओ, एक सग
मिलकर निकट आओ! वह जो अपनी
लकडी की खोदी हुई मूरते लिए फिरते
है और ऐसे देवता से जिस से उद्धार नही
हो सकता, प्रार्थना करते है, वे अज्ञान
है। २१ तुम प्रचार करो और उनको
लाओ, हा, वे आपस मे सम्मति करे,
किस ने प्राचीनकाल से यह प्रगट किया?

* मूल में—धर्म बहे। † मूल में—तेरा।
‡ मूल में—तुझे किस से पीड़ें उठीं।

* मूल में—सुनसान स्थान में ढूढो।

किस ने प्राचीनकाल में इसकी सूचना
पहिले ही से दी? क्या मैं यहोवा ही
ने यह नहीं किया? इसलिये मुझे छोड़
कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी
और उद्धारकर्त्ता ईश्वर मुझे छोड़ और
कोई नहीं है॥

२२ हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के
रहनेवालो, तुम मेरी ओर फिरो और
उद्धार पाओ। क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं
और दूसरा कोई और नहीं है। २३ मैं
ने अपनी ही शपथ खाई, धर्म के अनुसार
मेरे मुख से यह वचन निकला है और
वह नहीं * टलेगा, प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख
झुकेगा और प्रत्येक के मुख से मेरी ही
शपथ खाई जाएगी॥

२४ लोग मेरे विषय में कहेंगे, केवल
यहोवा ही में धर्म और शक्ति है। उसी
के पास लोग आएंगे। और जो उस से
रूठे रहेंगे, उन्हें लज्जित होना पड़ेगा।
२५ इस्राएल के सारे वंश के लोग यहोवा
ही के कारण धर्मी ठहरेंगे, और उसकी
महिमा करेंगे॥

४६ बेल देवता झुक गया, नबो
देवता नव गया है, उनकी प्रतिमाएं
पशुओं वरन घरैलू पशुओं पर लदी हैं,
जिन वस्तुओं को तुम उठाए फिरते थे,
वे अब भारी बोझ हो गईं और थकित
पशुओं पर लदी हैं। २ वे नव गए, वे
एक संग झुक गए, वे उस भार को छुड़ा
नहीं सके, और आप भी बंधुआई में चले
गए हैं॥

३ हे याकूब के घराने, हे इस्राएल
के घराने के सब बचे हुए लोगो, मेरी
ओर कान लगाकर सुनो, तुम को मैं
तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाए रहा और
जन्म ही से लिए फिरता आया हूं।
४ तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना
रहूंगा और तुम्हारे बाल पकने के समय
तक तुम्हें उठाए रहूंगा। मैं ने तुम्हें बनाया
और तुम्हें लिए फिरता रहूंगा, ५ मैं
तुम्हें उठाए रहूंगा और छुड़ाता भी रहूंगा॥

तुम किस से मेरी उपमा दोगे और
मुझे किस के समान बताओगे, किस से
मेरा मिलान करोगे कि हम एक
समान ठहरें? ६ जो थैली से सोना
उण्डेलते वा कांटे में चान्दी तौलते हैं,
जो सुनार को मजदूरी देकर उस से देवता
बनवाते हैं, तब वे उसे प्रणाम करते वरन
दण्डवत् भी करते हैं। ७ वे उसको
कन्धे पर उठाकर लिए फिरते हैं, वे
उसे उसके स्थान में रख देते और वह
वहीं खड़ा रहता है, वह अपने स्थान से
हट नहीं सकता, यदि कोई उसकी दोहाई
भी दे, तौभी न वह सुन सकता है और
न विपत्ति से उसका उद्धार कर सकता है॥

८ हे अपराधियो, इस बात को स्मरण
करो और ध्यान * दो, इस पर फिर मन
लगाओ। ९ प्राचीनकाल की बातें स्मरण
करो जो आरम्भ ही से हैं, क्योंकि ईश्वर
मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं, मैं ही परमेश्वर
हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है।
१० मैं तो अन्त की बात आदि से और
प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया
हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं,
मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी
इच्छा को पूरी करूंगा। ११ मैं पूर्व
से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से
अपनी युक्ति के पूरा करनेवाले पुरुष

* मूल में—न लौटेगा।

* या स्थिर रहो।

को वुलाता हू। मै ही ने यह वात कही
है और उसे पूरी भी करूगा, मै ने यह
विचार बान्धा है और उसे सुफल भी
करूगा। १२ हे कठोर मनवालो तुम जो
धर्म से दूर हो, कान लगाकर मेरी सुनो।
१३ मै अपनी धार्मिकता को समीप ले
आने पर हू * वह दूर नही है †, और मेरे
उद्धार करने मे विलम्व न होगा, मै
सिय्योन का उद्धार करूगा और इस्राएल
को महिमा दूगा ‡ ॥

४७ हे वावुल की कुमारी वेटी, उतर
आ और धूलि पर वैठ, हे कसदियो
की वेटी तू विना सिंहासन भूमि पर वैठ।
क्योकि तू अव फिर कोमल और सुकुमार न
कहलाएगी। २ चक्की लेकर आटा पीस,
अपना घूघट हटा और घाघरा समेट ले
और उघारी टाँगो से नदियो को पार
कर। ३ तेरी नग्नता उघाडी जाएगी और
तेरी लज्जा प्रगट होगी। मै वदला लूगा
और किसी मनुष्य को ग्रहण न करूगा § ॥
४ हमारा छुटकारा देनेवाले का नाम
सेनाओ का यहोवा और इस्राएल का
पवित्र है ॥
५ हे कसदियो की वेटी, चुपचाप वैठी
रह और अन्धियारे मे जा, क्योकि तू
अव राज्य राज्य की स्वामिन न कहलाएगी।
६ मै ने अपनी प्रजा से क्रोधित होकर
अपने निज भाग को अपवित्र ठहराया
और तेरे वश मे कर दिया, तू ने उन पर
कुछ दया न की; वूढो पर तू ने अपना
अत्यन्त भारी जूआ रख दिया। ७ तू ने
कहा, मै सर्वदा स्वामिन वनी रहूगी, सो
तू ने अपने मन मे इन वातो पर विचार
न किया और यह भी न सोचा कि उनका
क्या फल होगा ॥
८ इसलिये सुन, तू जो राग-रग मे
उलझी हुई निडर वैठी रहती है और
मन मे कहती है कि मै ही हू, और मुझे
छोड कोई दूसरा नही, मै विधवा की
नाईं न वैठूगी और न मेरे लडकेवाले
मिटेगे। ९ सुन, ये दोनो दुःख अर्थात्
लडको का जाता रहना और विधवा हो
जाना, अचानक एक ही दिन तुझ पर आ
पडेगे। तेरे वहुत से टोनो और तेरे भारी
भारी तन्त्र-मन्त्रो के रहते भी ये तुझ
पर अपने पूरे वल से आ पडेगे ॥
१० तू ने अपनी दुष्टता पर भरोसा
रखा, तू ने कहा, मुझे कोई नही देखता,
तेरी वुद्धि और ज्ञान ने तुझे वहकाया
और तू ने अपने मन मे कहा, मै ही हू
और मेरे सिवाय कोई दूसरा नही।
११ परन्तु तेरी ऐसी दुर्गती होगी जिसका
मन्त्र तू नही जानती, और तुझ पर ऐसी
विपत्ति पडेगी कि तू प्रायश्चित करके
उसका निवारण न कर सकेगी, अचानक
विनाश तुझ पर आ पडेगा जिसका तुझे
कुछ भी पता नही ॥
१२ अपने तन्त्र-मन्त्र और वहुत से
टोनहो को, जिनका तू ने वाल्यावस्था ही
मे अभ्यास किया है उपयोग मे ला,
सम्भव है तू उन से लाभ उठा सके या
उनके वल मे स्थिर रह सके। १३ तू
तो युक्ति करते करते थक गई है, अव
तेरे ज्योतिषी जो नक्षत्रो को ध्यान से
देखते और नये नये चान्द को देखकर
होनहार वताते है, वे खडे होकर तुझे

* मूल मे—निकट ले आने।
† मूल में—दूर।
‡ मूल मे—मैं सिय्योन में उद्धार के द्वारा इस्राएल के लिये अपनी शोभा दूंगा।
§ मूल में—मनुष्य से न मिलूंगा।

इन बातों से बचाए जो तुझ पर
घटेंगी ॥
१४ देख, वे भूसे के समान होकर
आग से भस्म हो जाएंगे, वे अपने प्राणों
को ज्वाला से न बचा सकेंगे। वह आग
तापने के लिये नही, न ऐसी होगी जिसके
साम्हने कोई बैठ सके। १५ जिनके लिये
तू परिश्रम करती आई है वे सब तेरे लिये
वैसे ही होंगे, और जो तेरी युवावस्था से
तेरे संग व्योपार करते आए हैं, उन मे
से प्रत्येक अपनी अपनी दिशा की ओर
चले जाएंगे, तेरा बचानेवाला कोई न
रहेगा ॥

४८ हे याकूब के घराने, यह बात
सुन, तुम जो इस्राएली कहलाते
और यहूदा के सोतों के जल से उत्पन्न हुए
हो, जो यहोवा के नाम की शपथ खाते
हो और इस्राएल के परमेश्वर की चर्चा
तो करते हो, परन्तु सच्चाई और धर्म
से नही करते। २ क्योंकि वे अपने
को पवित्र नगर के बताते हैं, और
इस्राएल के परमेश्वर पर जिसका नाम
सेनाओं का यहोवा है भरोसा करते
हैं ॥
३ होनेवाली बातों को तो मैं ने प्राचीन-
काल ही से बताया है, और उनकी चर्चा
मेरे मुंह से निकली, मैं ने अचानक उन्हें
प्रगट किया और वे बातें सचमुच हुईं।
४ मैं जानता था कि तू हठीला है और
तेरी गर्दन लोहे की नस और तेरा माथा
पीतल का है। ५ इस कारण मैं ने
इन बातों को प्राचीनकाल ही से तुझे
बताया उनके होने से पहिले ही मैं ने
तुझे बता दिया, ऐसा न हो कि तू यह कह
पाए कि यह मेरे देवता का काम है,
मेरी खोदी और ढली हुई मूर्तियों की
आज्ञा मे यह हुआ ॥
६ तू ने सुना है, सो अब इन सब
बातों पर ध्यान कर, और देखो, क्या
तुम उसका प्रचार न करोगे? अब से
मैं तुझे नई नई बातें और ऐसी गुप्त बातें
सुनाऊंगा जिन्हें तू नहीं जानता। ७ वे
अभी अभी सृजी गई हैं, प्राचीनकाल से
नही, परन्तु आज से पहिले तू ने उन्हें
सुना भी न था, ऐसा न हो कि तू कहे कि
देख मैं तो इन्हें जानता था। ८ हां
निश्चय तू ने उन्हें न तो सुना, न जाना,
न इस से पहिले तेरे कान ही खुले थे।
क्योंकि मैं जानता था कि तू निश्चय
विश्वासघात करेगा, और गर्भ ही से तेरा
नाम अपराधी पड़ा है ॥
९ अपने ही नाम के निमित्त मैं क्रोध
करने में विलम्ब करता हूं, और अपनी
महिमा के निमित्त अपने तईं रोक रखता
हूं, ऐसा न हो कि मैं तुझे काट डालूं।
१० देख, मैं ने तुझे निर्मल तो किया,
परन्तु, चान्दी की नाईं नही, मैं ने दुःख
की भट्ठी में परखकर तुझे चुन लिया है।
११ अपने निमित्त, हां अपने ही निमित्त
मैं ने यह किया है, मेरा नाम क्यों अपवित्र
ठहरे? अपनी महिमा मैं दूसरे को नही
दूंगा ॥
१२ हे याकूब, हे मेरे बुलाए हुए
इस्राएल, मेरी ओर कान लगाकर सुन।
मैं वही हूं, मैं ही आदि * और मैं ही अन्त
हूं †। १३ निश्चय मेरे ही हाथ ने पृथ्वी
की नेव डाली, और मेरे ही दहिने हाथ
ने आकाश फैलाया, जब मैं उनको बुलाता
हूं, वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं

* मूल में—पहिला।
† मूल में—पिछला।

१४ तुम सब के सब इकट्ठे होकर
सुनो। उन मे से किस ने कभी इन बातो
का समाचार दिया? यहोवा उस से
प्रेम रखता है वह बाबुल पर अपनी
इच्छा पूरी करेगा, और कसदियो पर उसका
हाथ पडेगा। १५ मै ने, हा मै ही ने
कहा और उसको बुलाया है, मै उसको ले
आया हू, और, उसका काम सुफल होगा।
१६ मेरे निकट आकर इस बात को
सुनो आदि से लेकर अब तक मै ने
कोई भी बात गुप्त मे नही कही, जब
से वह हुआ तब से मै वहा हू। और
अब प्रभु यहोवा ने और उसकी आत्मा
ने मुझे भेज दिया है * ॥

१७ यहोवा जो तेरा छुडानेवाला और
इस्राएल का पवित्र है, वह यो कहता है,
मै ही तेरा परमेश्वर यहोवा हू जो तुझे
तेरे लाभ के लिये शिक्षा देता हू, और
जिस मार्ग से तुझे जाना है उसी मार्ग पर
तुझे ले चलता हू। १८ भला होता कि
तू ने मेरी आज्ञाओ को ध्यान से सुना
होता। तब तेरी शान्ति नदी के समान
और तेरा धर्म समुद्र की लहरो के नाई
होता, १९ तेरा वश बालू के किनको
के तुल्य होता, और तेरी निज सन्तान उसके
कणो के समान होती, उनका नाम मेरे
सम्मुख से न कभी काटा और न मिटाया
जाता ॥

२० बाबुल मे से निकल जाओ,
कसदियो के बीच मे से भाग जाओ,
जयजयकार करते हुए इस बात को प्रचार
करके सुनाओ, पृथ्वी की छोर तक इसकी
चर्चा फैलाओ, कहते जाओ कि यहोवा ने
अपने दास याकूब को छुडा लिया है।

२१ जब वह उन्हे निर्जल देशो मे ले
गया, तब वे प्यासे न हुए, उस ने उनके
लिये चट्टान मे से पानी निकाला, उस ने
चट्टान को चीरा और जल बह निकला।
२२ दुष्टो के लिये कुछ शान्ति नही,
यहोवा का यही वचन है॥

४९ हे द्वीपो, मेरी ओर कान
लगाकर सुनो, हे दूर दूर के
राज्यो के लोगो, ध्यान लगाकर मेरी
सुनो। यहोवा ने मुझे गर्भ ही मे से
बुलाया, जब मै माता के पेट मे था, तब
ही उस ने मेरा नाम बताया। २ उस ने
मेरे मुह को चोखी तलवार के समान
बनाया और अपने हाथ की आड मे
मुझे छिपा रखा, उस ने मुझ को चमकीला
तीर बनाकर अपने तर्कश मे गुप्त
रखा। ३ और मुझ से कहा, तू मेरा
दास इस्राएल है, मै तुझ मे अपनी महिमा
प्रगट करूगा। ४ तब मै ने कहा, मै ने
तो व्यर्थ परिश्रम किया, मै ने व्यर्थ ही
अपना बल खो दिया है, तौभी निश्चय
मेरा न्याय यहोवा के पास है और मेरे
परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ
मे है॥

५ और अब यहोवा जिस ने मुझे
जन्म ही से इसलिये रचा कि मै उसका
दास होकर याकूब को उसकी ओर फेर
ले आऊ अर्थात् इस्राएल को उसके पास
इकट्ठा करू, क्योकि यहोवा की दृष्टि मे मै
आदरयोग्य हू और मेरा परमेश्वर मेरा बल
है, ६ उसी ने मुझ से यह भी कहा है, यह
तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के
गोत्रो का उद्धार करने और इस्राएल के
रक्षित लोगो को लौटा ले आने के लिये
मेरा सेवक ठहरे, मै तुझे अन्यजातियो

* या प्रभु यहोवा ने मुझे और अपने
आत्मा को भेज दिया है।

के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार
पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक
फैल जाए ॥

७ जो मनुष्यों में तुच्छ जाना जाता,
जिस से जातियों को घृणा है, और, जो
अपराधियों का दास है, इस्राएल का छुड़ाने-
वाला और उसका पवित्र अर्थात् यहोवा
यों कहता है, कि राजा उसे देखकर खड़े
हो जाएंगे और हाकिम दण्डवत् करेंगे,
यह यहोवा के निमित्त होगा, जो सच्चा
और इस्राएल का पवित्र है और जिस ने
तुझे चुन लिया है ॥

८ यहोवा यों कहता है, अपनी प्रसन्नता
के समय मैं ने तेरी सुन ली, उद्धार करने
के दिन मैं ने तेरी सहायता की है, मैं
तेरी रक्षा करके तुझे लोगों के लिये एक
वाचा ठहराऊंगा, ताकि देश को स्थिर*
करे और उजड़े हुए स्थानों को उनके
अधिकारियों के हाथ में दे दे, और,
बंधुओं से कहे, बन्दीगृह से निकल आओ,
९ और जो अन्धियारे में हैं उन से कहे,
अपने आप को दिखलाओ†। वे मार्गों
के किनारे किनारे पेट भरने पाएंगे, सब
मुण्डे टीलों पर भी उनको चराई मिलेगी।
१० वे भूखे और प्यासे न होंगे, न
लूह और न घाम उन्हें लगेगा, क्योंकि,
वह जो उन पर दया करता है, वही उनका
अगुवा होगा, और जल के सोतों के पास
उन्हें ले चलेगा। ११ और, मैं अपने
सब पहाड़ों को मार्ग बना दूंगा, और मेरे
राजमार्ग ऊंचे किए जाएंगे। १२ देखो,
ये दूर से आएंगे, और, ये उत्तर और
पच्छिम से और सीनियों के देश से आएंगे।
१३ हे आकाश, जयजयकार कर, हे
पृथ्वी, मगन हो, हे पहाड़ो, गला खोलकर
जयजयकार करो! क्योंकि यहोवा ने
अपनी प्रजा को शान्ति दी है और अपने
दीन लोगों पर दया की है ॥

१४ परन्तु सिय्योन ने कहा, यहोवा
ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे
भूल गया है। १५ क्या यह हो सकता
है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे
को भूल जाए और अपने जन्माए हुए
लड़के पर दया न करे? हां, वह तो
भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल
सकता। १६ देख, मैं ने तेरा चित्र अपनी
हथेलियों पर खोदकर बनाया है, तेरी
शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के साम्हने
बनी रहती है। १७ तेरे लड़के फुर्ती से
आ रहे हैं और खण्डहर बनानेवाले और
उजाड़नेवाले तेरे बीच से निकले जा रहे
हैं। १८ अपनी आंखें उठाकर चारों ओर
देख, वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे पास
आ रहे हैं। यहोवा की यह वाणी है
कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन
सभों को गहने के समान पहिन लेगी,
तू दुल्हिन की नाईं अपने शरीर में उन सब
को बान्ध लेगी ॥

१९ तेरे जो स्थान सुनसान और
उजड़े हैं, और तेरे जो देश खण्डहर ही
खण्डहर हैं, उन* में अब निवासी न
समाएंगे, और, तुझे नष्ट करनेवाले दूर
हो जाएंगे। २० तेरे पुत्र जो तुझ से
ले लिए गए† वे फिर तेरे कान में कहने
पाएंगे कि यह स्थान हमारे लिये सकेत
है, हमें और स्थान दे कि उस में रहें।
२१ तब तू मन में कहेगी, किस ने इनको

* मूल में—बहाल।
† मूल में—अपने को प्रगट करो।

* मूल में—तुझ।
† मूल में—तेरे लड़कों के जाते रहने के बेटे।

मेरे लिये जन्माया ? मैं तो पुत्रहीन और
बांझ हो गई थी, दासत्व में और यहां
वहां मैं घूमती रही, इनको किस ने पाला ?
देख, मैं अकेली रह गई थी, फिर ये
कहां थे ?

२२ प्रभु यहोवा यों कहता है, देख, मैं
अपना हाथ जाति जाति के लोगों की ओर
उठाऊंगा, और देश देश के लोगों के
साम्हने अपना झण्डा खड़ा करूंगा,
तब वे तेरे पुत्रों को अपनी गोद में लिए
आएंगे, और तेरी पुत्रियों को अपने कन्धे
पर चढ़ाकर तेरे पास पहुंचाएंगे।
२३ राजा तेरे बच्चों के निज-सेवक और
उनकी रानियां दूध पिलाने के लिये
तेरी धाइयां होंगी। वे अपनी नाक भूमि
पर रगड़कर तुझे दण्डवत् करेंगे और
तेरे पांवों की धूलि चाटेंगे। तब तू
यह जान लेगी कि मैं ही यहोवा हूं,
मेरी बाट जोहनेवाले कभी लज्जित न
होंगे ॥

२४ क्या वीर के हाथ से शिकार छीना
जा सकता है ? क्या दुष्ट के बंधुए
छुड़ाए जा सकते हैं ? २५ तौभी यहोवा
यों कहता है, हां, वीर के बंधुए उस से
छीन लिए जाएंगे, और बलात्कारी का
शिकार उसके हाथ से छुड़ा लिया जाएगा,
क्योंकि जो तुझ से लड़ते हैं उन से मैं
आप मुकद्दमा लड़ूंगा, और तेरे लड़केवालों
का मैं उद्धार करूंगा। २६ जो तुझ पर
अन्धेर करते हैं उनको मैं उन्हीं का मांस
खिलाऊंगा, और, वे अपना लोहू पीकर
ऐसे मतवाले होंगे जैसे नये दाखमधु
से होते हैं। तब सब प्राणी जान लेंगे
कि तेरा उद्धारकर्ता यहोवा और तेरा
छुड़ानेवाला, याकूब का शक्तिमान मैं
ही हूं ॥

५० तुम्हारी माता का *त्यागपत्र*
कहां है, जिसे मैं ने उसे त्यागते
समय दिया था ? या मैं ने किस व्योपारी
के हाथ तुम्हें बेचा ? यहोवा यों कहता
है, सुनो, तुम अपने ही अधर्म के कामों
के कारण बिक गए, और तुम्हारे ही
अपराधों के कारण तुम्हारी माता छोड़
दी गई। २ इसका क्या कारण है कि
जब मैं आया तब कोई न मिला ? और
जब मैं ने पुकारा, तब कोई न बोला ?
क्या मेरा हाथ ऐसा छोटा हो गया है
कि छुड़ा नहीं सकता ? क्या मुझ में
उद्धार करने की शक्ति नहीं ? देखो,
मैं एक धमकी से समुद्र को सुखा देता हूं,
मैं महानदों को रेगिस्तान बना देता हूं,
उनकी मछलियां जल बिना मर जातीं
और बसातीं हैं। ३ मैं आकाश को मानो
शोक का काला कपड़ा पहिनाता, और
टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूं ॥

४ प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की
जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन
के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित
मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि
मैं शिष्य के समान सुनूं। ५ प्रभु यहोवा
ने मेरा कान खोला है, और मैं ने विरोध न
किया, न पीछे हटा। ६ मैं ने मारनेवालों
को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों
की ओर अपने गाल किए, अपमानित होने
और उनके थूकने से मैं ने मुंह न छिपाया ॥

७ क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता
करता है, इस कारण मैं ने संकोच नहीं
किया, वरन अपना माथा चकमक की
नाईं कड़ा किया क्योंकि मुझे निश्चय था
कि मुझे लज्जित होना न पड़ेगा। ८ जो
मुझे धर्मी ठहराता है वह मेरे निकट है।
मेरे साथ कौन मुकद्दमा करेगा ? हम

आमने-साम्हने खड़े हों। मेरा विरोधी
कौन है? वह मेरे निकट आए। ९ सुनो,
प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, मुझे
कौन दोषी ठहरा सकेगा? देखो, वे
सब कपड़े के समान पुराने हो जाएंगे,
उनको कीड़े खा जाएंगे॥
१० तुम में से कौन है जो यहोवा का
भय मानता और उसके दास की बात
सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो
और उसके पास ज्योति न हो? वह
यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और
अपने परमेश्वर पर आशा लगाए रहे।
११ देखो, तुम सब जो आग जलाते
और अग्निबाणों को कमर में बान्धते
हो! तुम सब अपनी जलाई हुई आग में
और अपने जलाए हुए अग्निबाणों के
बीच आप ही चलो। तुम्हारी यह दशा
मेरी ही ओर से होगी, तुम सन्ताप में
पड़े रहोगे॥

५१ हे धर्म पर चलनेवालो, हे
यहोवा के ढूंढ़नेवालो, कान लगा-
कर मेरी सुनो, जिस चट्टान में से तुम
खोदे गए और जिस खानि में से तुम
निकाले गए, उस पर ध्यान करो।
२ अपने मूलपुरुष इब्राहीम और अपनी
माता सारा पर ध्यान करो, जब वह
अकेला था, तब ही से मैं ने उसको बुलाया
और आशीष दी और बढ़ा दिया।
३ यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है,
उस ने उसके सब खण्डहरों को शान्ति
दी है, वह उसके जंगल को अदन के
समान और उसके निर्जल देश को यहोवा
की वाटिका के समान बनाएगा, उस में
हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और
भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा॥

४ हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर
ध्यान धरो, हे मेरे लोगो, कान लगाकर
मेरी सुनो, क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था
दी जाएगी *, और मैं अपना नियम देश
देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर
करूंगा। ५ मेरा छुटकारा निकट है,
मेरा उद्धार प्रगट हुआ है †, मैं अपने
भुजबल से देश देश के लोगों का न्याय
करूंगा। द्वीप मेरी बाट जोहेंगे और मेरे
भुजबल पर आशा रखेंगे। ६ आकाश
की ओर अपनी आंखें उठाओ, और पृथ्वी
को निहारो, क्योंकि आकाश धूएं की
नाईं लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान
पुरानी हो जाएगी, और उसके रहनेवाले
यों ही जाते रहेंगे, परन्तु जो उद्धार मैं
करूंगा वह सर्वदा ठहरेगा, और मेरे धर्म
का अन्त न होगा॥
७ हे धर्म के जाननेवालो, जिनके
मन में मेरी व्यवस्था है, तुम कान लगाकर
मेरी सुनो, मनुष्यों की नामधराई से मत
डरो, और उनके निन्दा करने से विस्मित न
हो। ८ क्योंकि घुन उन्हें कपड़े की नाईं
और कीड़ा उन्हें ऊन की नाईं खाएगा,
परन्तु मेरा धर्म अनन्तकाल तक, और मेरा
उद्धार पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा॥
९ हे यहोवा की भुजा, जाग! जाग
और बल धारण कर, जैसे प्राचीनकाल में
और बीते हुए पीढ़ियों में, वैसे ही अब
भी जाग। क्या तू वही नहीं है जिस ने
रहब को टुकड़े टुकड़े किया और मगरमच्छ
को छेदा? १० क्या तू वही नहीं जिस
ने समुद्र को अर्थात् गहिरे सागर के जल
को सुखा डाला और उसकी गहराई में
अपने छुड़ाए हुओं के पार जाने के लिये

* मूल में—निकलेगी।
† मूल में—मेरा उद्धार निकला है।

मार्ग निकाला था ? ११ सो यहोवा के
छुडाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते
हुए सिय्योन मे आएगे, और उनके सिरो
पर अनन्त आनन्द गूजता रहेगा *; वे
हर्ष और आनन्द प्राप्त करेगे, और शोक
और सिसकियो का अन्त हो जाएगा ॥

१२ मै, मै ही तेरा शान्तिदाता हू,
तू कौन है जो मरनेवाले मनुष्य से, और
घास के समान मुर्झानेवाले † आदमी से
डरता है, १३ और आकाश के ताननेवाले
और पृथ्वी की नेव डालनेवाले अपने
कर्त्ता यहोवा को भूल गया है, और जब
द्रोही नाश करने को तैयार होता है
तब उसकी जलजलाहट से दिन भर
लगातार थरथराता है ? परन्तु द्रोही
की जलजलाहट कहा रही ? १४ बधुआ
शीघ्र ही स्वतन्त्र किया जाएगा, वह
गड्हे में न मरेगा और न उसे रोटी
की कमी होगी। १५ जो समुद्र को
उथल-पुथल करता जिस से उसकी लहरो
में गरजन होती है, वह मै ही तेरा परमेश्वर
यहोवा हू मेरा नाम सेनाओ का यहोवा
है। और मै ने तेरे मुह मे अपने वचन
डाले, १६ और तुझे अपने हाथ की आड
मे छिपा रखा है, कि मै आकाश को
तानू ‡ और पृथ्वी की नेव डालू, और
सिय्योन से कहू, तुम मेरी प्रजा हो ॥

१७ हे यरूशलेम जाग ! जाग उठ !
खडी हो जा, तू ने यहोवा के हाथ से उसकी
जलजलाहट के कटोरे में से पिया है, तू
ने कटोरे का लडखडा देनेवाला मद पूरा
पूरा ही पी लिया है। १८ जितने
लडको ने उस से जन्म लिया उन में से
कोई न रहा जो उसकी अगुवाई करके ले
चले, और जितने लडके उस ने पाले-पोसे
उन मे से कोई न रहा जो उसके हाथ को
थाम ले। १९ ये दो विपत्तिया तुझ पर
आ पडी है, कौन तेरे सग विलाप करेगा ?
उजाड और विनाश और महगी और
तलवार आ पडी है, कौन तुझे शान्ति
देगा ? २० तेरे लडके मूर्च्छित होकर
हर एक सडक के सिरे पर, महाजाल में
फसे हुए हरिण की नाई पडे है, यहोवा
की जलजलाहट और तेरे परमेश्वर की
धमकी के कारण वे अचेत पडे है * ॥

२१ इस कारण हे दुखियारी सुन, तू
मतवाली तो है, परन्तु दाखमधु पीकर
नही, २२ तेरा प्रभु यहोवा जो अपनी
प्रजा का मुकद्दमा लडनेवाला तेरा परमेश्वर
है, वह यो कहता है, सुन, मै लडखडा
देनेवाले मद के कटोरे को अर्थात् अपनी
जलजलाहट के कटोरे को तेरे हाथ से
ले लेता हू, तुझे उस मे से फिर कभी पीना
न पडेगा। २३ और मै उसे तेरे उन
दु ख देनेवालो के हाथ मे दूगा, जिन्हो ने
तुझ से कहा, लेट जा, कि हम तुझ पर
पाव धरकर आगे चले †, और तू ने औंधे
मुह गिरकर अपनी पीठ को भूमि और आगे
चलनेवालो के लिये सडक बना दिया ‡ ॥

५२ हे सिय्योन, जाग, जाग !
अपना बल धारण कर, हे
पवित्र नगर यरूशलेम, अपने शोभायमान

* मूल में—उसके सिर पर सदा का आनन्द होगा।

† मूल में—मरीखे बननेहारे।

‡ मूल में—आकाश को पौधे की नाई लगाऊ।

* मूल में—घुड़की से भरे हैं।

† मूल में—कि हम आगे चलें।

‡ मूल में—तू ने आगे चलनेहारे के लिये अपनी पीठ भूमि और सड़क के समान रखी।

वस्त्र पहिन ले, क्योंकि तेरे बीच खतना-
रहित और अशुद्ध लोग फिर कभी प्रवेश
न करने पाएंगे। २ अपने ऊपर से धूल
झाड दे, हे यरूशलेम, उठ, हे सिय्योन
की बन्दी बेटी अपने गले के बन्धन को
खोल दे ॥

३ क्योंकि यहोवा यों कहता है, तुम
जो सेंतमेंत बिक गए थे, इसलिये अब बिना
रुपया दिए छुडाए भी जाओगे। ४ प्रभु
यहोवा यों भी कहता है, मेरी प्रजा पहिले
तो मिस्र में परदेशी होकर रहने को गई
थी, और अश्शूरियों ने भी बिना कारण
उन पर अत्याचार किया। ५ इसलिये
यहोवा की यह वाणी है कि मैं अब यहां
क्या करूं जब कि मेरी प्रजा सेंतमेंत हर
ली गई है? यहोवा यह भी कहता है
कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे ऊधम
मचा रहे हैं, और, मेरे नाम की निन्दा
लगातार दिन भर होती रहती है। ६ इस
कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी,
वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता
है वह यहोवा ही है, देखो, मैं ही हूं ॥

७ पहाडों पर उसके पांव क्या ही
सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो
शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण
का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश
देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा
परमेश्वर राज्य करता है। ८ सुन, तेरे
पहरुए पुकार रहे हैं, वे एक साथ जयजय-
कार कर रहे हैं, क्योंकि वे साक्षात् देख रहे
हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है।
९ हे यरूशलेम के खण्डहरो, एक संग
उमंग में आकर जयजयकार करो, क्योंकि
यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है,
उस ने यरूशलेम को छुडा लिया है।
१० यहोवा ने सारी जातियों के साम्हने
अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है, और
पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे
परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय
देख लेंगे ॥

११ दूर हो, दूर, वहां से निकल जाओ,
कोई अशुद्ध वस्तु मत छुओ, उसके बीच
से निकल जाओ, हे यहोवा के पात्रों के
ढोनेवालो, अपने को शुद्ध करो।
१२ क्योंकि तुम को उतावली से निकलना
नहीं, और न भागते हुए चलना पडेगा,
क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे अगुवाई
करता हुआ चलेगा, और, इस्राएल का
परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा करता
चलेगा ॥

१३ देखो, मेरा दास बुद्धि से काम
करेगा, वह ऊंचा, महान और अति महान
हो जाएगा। १४ जैसे बहुत से लोग
उसे * देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका
रूप यहां तक बिगडा हुआ था कि मनुष्य
का सा न जान पडता था और उसकी
सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई
थी), १५ वैसे ही वह बहुत सी जातियों
को पवित्र करेगा और उसको देखकर
राजा शान्त रहेंगे †, क्योंकि वे ऐसी बात
देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी
नहीं आया, और, ऐसी बात उनकी समझ
में आएगी जो उन्हों ने अभी तक सुनी
भी न थी ॥

५३ जो समाचार हमें दिया गया,
उसका किस ने विश्वास किया?
और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट
हुआ? २ क्योंकि वह उसके साम्हने
अंकुर की नाईं, और ऐसी जड के समान

* मूल में—तुझे।
† मूल में—राजा अपने मुंह बन्द करेंगे।

उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले,
उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम
उसको देखते, और न उसका रूप ही
हमें ऐसा दिखाई पडा कि हम उसको
चाहते। ३ वह तुच्छ जाना जाता और
मनुष्यो का त्यागा हुआ था, वह दुखी
पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान
थी; और लोग उस से मुख फेर लेते
थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने
उसका मूल्य न जाना ॥

४ निश्चय उस ने हमारे रोगो को सह
लिया और हमारे ही दुखो को उठा
लिया, तौभी हम ने उसे परमेश्वर का
मारा-कूटा और दुर्दशा में पडा हुआ
समझा। ५ परन्तु वह हमारे ही अपराधो
के कारण घायल किया गया, वह हमारे
अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया,
हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना
पडी, कि उसके कोडे खाने से हम लोग
चगे हो जाए *। ६ हम तो सब के सब
भेडो की नाईं भटक गए थे; हम मे से
हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया;
और यहोवा ने हम सभो के अधर्म का
बोझ उसी पर लाद दिया ॥

७ वह सताया गया, तौभी वह सहता
रहा और अपना मुह न खोला, जिस
प्रकार भेड वध होने के समय वा भेडी
ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती
है, वैसे ही उस ने भी अपना मुह न खोला।
८ अत्याचार करके और दोष लगाकर वे
उसे ले गए, उस समय के लोगो मे से
किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह
जीवतो के बीच मे से उठा लिया गया?
मेरे ही लोगो के अपराधो के कारण
उस पर मार पडी। ९ और उसकी
कब्र भी दुष्टो के सग ठहराई गई, और,
मृत्यु के समय वह धनवान का सगी हुआ,
यद्यपि * उस ने किसी प्रकार का उपद्रव
न किया था और उसके मुह से कभी
छल की बात नही निकली थी ॥

१० तौभी यहोवा को यही भाया कि
उसे कुचले, उसी ने उसको रोगी कर
दिया, जब तू उसका प्राण दोषबलि करे,
तब वह अपना वश देखने पाएगा, वह
बहुत दिन जीवित रहेगा, उसके हाथ
से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।
११ वह अपने प्राणो का दुख उठाकर
उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान
के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरो को
धर्मी ठहराएगा, और उनके अधर्म के
कामो का बोझ आप उठा लेगा। १२ इस
कारण मै उसे महान लोगो के सग भाग
दूगा, और, वह सामर्थियो के सग लूट
बाट लेगा, क्योकि उस ने अपना प्राण
मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियो
के सग गिना गया, तौभी उस ने बहुतो
के पाप का बोझ उठा लिया, और,
अपराधियो के लिये विनती करता है ॥

५४ हे बाझ, तू जो पुत्रहीन है
जयजयकार कर, तू जिसे जन्माने
की पीडे नही हुई, गला खोलकर जयजयकार
कर और पुकार! क्योकि त्यागी हुई
के लडके सुहागिन के लडको से अधिक
होगे, यहोवा का यही वचन है। २ अपने
तम्बू का स्थान चौडा कर, और तेरे डेरे
के पट लम्बे किए जाए, हाथ मत रोक,
रस्सियो को लम्बी और खूटो को दृढ
कर। ३ क्योकि तू दहिने-बाए फैलेगी,

* मूल में—हमारे लिये चगापन है।

* वा, क्योकि।

और तेरा वंश जाति-जाति का अधिकारी
होगा और उजड़े हुए नगरों को फिर
से बसाएगा ॥
४ मत डर, क्योंकि तेरी आशा फिर
नहीं टूटेगी; मत घबरा, क्योंकि तू फिर
लज्जित न होगी और तुझ पर सियाही
न छाएगी; क्योंकि तू अपनी जवानी
की लज्जा भूल जाएगी, और, अपने
विधवापन की नामधराई को फिर स्मरण
न करेगी। ५ क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा
पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा
है; और इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ाने-
वाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर
कहलाएगा। ६ क्योंकि यहोवा ने तुझे
ऐसा बुलाया है, मानो तू छोड़ी हुई और
मन की दुखिया और जवानी की त्यागी
हुई स्त्री हो, तेरे परमेश्वर का यही वचन
है। ७ क्षण भर ही के लिये मैं ने तुझे
छोड़ दिया था, परन्तु अब बड़ी दया करके
मैं फिर तुझे रख लूंगा। ८ क्रोध के
झकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिये
तुझ से मुंह छिपाया था, परन्तु अब
अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूंगा,
तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन है।
९ यह मेरी दृष्टि में नूह के समय के
जलप्रलय के समान है; क्योंकि जैसे मैं
ने शपथ खाई थी कि नूह के समय के
जलप्रलय से पृथ्वी फिर न डूबेगी, वैसे
ही मैं ने यह भी शपथ खाई है कि फिर
कभी तुझ पर क्रोध न करूंगा और न
तुझ को धमकी दूंगा। १० चाहे पहाड़
हट जाएं और पहाड़ियां टल जाएं, तौभी
मेरी करुणा तुझ पर से कभी न हटेगी,
और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी,
यहोवा, जो तुझ पर दया करता है,
उसका यही वचन है ॥
११ हे दुखियारी, तू जो आंधी की
सताई है और जिस को शान्ति नहीं मिली,
सुन, मैं तेरे पत्थरों की पच्चीकारी करके
बैठाऊंगा, और तेरी नेव नीलमणि से
डालूंगा। १२ तेरे कलश मैं माणिकों से,
तेरे फाटक लालड़ियों से और तेरे सब
सिवानों को मनोहर रत्नों से बनाऊंगा।
१३ तेरे सब लड़के यहोवा के सिखलाए
हुए होंगे, और उनको बड़ी शान्ति मिलेगी।
१४ तू धार्मिकता के द्वारा स्थिर होगी,
तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना
न पड़ेगा, और तू भयभीत होने से बचेगी,
क्योंकि भय का कारण तेरे पास न
आएगा। १५ सुन, लोग भीड़ लगाएंगे,
परन्तु मेरी ओर से नहीं; जितने तेरे
विरुद्ध भीड़ लगाएंगे वे तेरे कारण गिरेंगे।
१६ सुन, एक लोहार कोएले की आग
धोंककर इसके लिये हथियार बनाता है,
वह मेरा ही सृजा हुआ है। उजाड़ने के
लिये भी मेरी ओर से एक नाश करनेवाला
सृजा गया है। १७ जितने हथियार तेरी
हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से
कोई सफल न होगा, और, जितने लोग
मुद्दई होकर तुझ पर नालिश करें* उन
सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों
का यही भाग होगा, और वे मेरे ही कारण
धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है ॥

५५ अहो सब प्यासे लोगो, पानी
के पास आओ; और जिनके
पास रुपया न हो, तुम भी आकर मोल
लो और खाओ! दाखमधु और दूध
बिन रुपए और बिना दाम ही आकर ले
लो। २ जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके
लिये तुम क्यों रुपया लगाते हो, और,

* मूल में—जितनी जीभें तेरे साथ उठें।

जिस से पेट नही भरता उसके लिये क्यो
परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन
लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुए खाने
पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुए
खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे। ३ कान
लगाओ, और मेरे पास आओ, सुनो,
तब तुम जीवित रहोगे*, और मै तुम्हारे
साथ सदा की वाचा बान्धूगा अर्थात्
दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा।
४ सुनो, मै ने उसको राज्य राज्य के
लोगो के लिये साक्षी और प्रधान और
आज्ञा देनेवाला ठहराया है। ५ सुन, तू
ऐसी जाति को जिसे तू नही जानता
बुलाएगा, और ऐसी जातिया जो तुझे
नही जानती तेरे पास दौडी आएगी, वे
तेरे परमेश्वर यहोवा और इस्राएल के
पवित्र के निमित्त यह करेंगी, क्योकि उस
ने तुझे शोभायमान किया है॥

६ जब तक यहोवा मिल सकता है
तब तक उसकी खोज मे रहो, जब तक
वह निकट है तब तक उसे पुकारो,
७ दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी
अपने सोच विचार छोडकर यहोवा ही
की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा,
वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और
वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।
८ क्योकि यहोवा कहता है, मेरे विचार
और तुम्हारे विचार एक समान नही है,
न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी
है। ९ क्योकि मेरी और तुम्हारी गति
मे और मेरे और तुम्हारे सोच विचारो
मे, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है†॥

१० जिस प्रकार से वर्षा और हिम
आकाश से गिरते है और वहा यो ही
लौट नही जाते, वरन भूमि पर पडकर*
उपज उपजाते है जिस से बोनेवाले को
बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है,
११ उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा
जो मेरे मुख से निकलता है, वह व्यर्थ
ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु, जो
मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और
जिस काम के लिये मै ने उसको भेजा
है उसे वह सुफल करेगा†॥

१२ क्योकि तुम आनन्द के साथ
निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुचाए
जाओगे, तुम्हारे आगे आगे पहाड और
पहाडिया गला खोलकर जयजयकार करेंगी,
और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे
ताली बजाएगे। १३ तब भटकटैयो की
सन्ती सनोवर उगेगे, और बिच्छू पेडो
की सन्ती मेहदी उगेगी, और इस से
यहोवा का नाम होगा, जो सदा का चिन्ह
होगा और कभी न मिटेगा।

५६ यहोवा यो कहता है, न्याय
का पालन करो, और, धर्म के
काम करो, क्योकि मै शीघ्र तुम्हारा
उद्धार करूगा‡, और मेरा धर्मी होना
प्रगट होगा। २ क्या ही धन्य है वह मनुष्य
जो ऐसा ही करता, और वह आदमी जो
इस पर स्थिर रहता है, जो विश्रामदिन
को पवित्र मानता और अपवित्र करने से
बचा रहता है, और अपने हाथ को सब
भाति की बुराई करने से रोकता है।
३ जो परदेशी यहोवा से मिल गए है,

* मूल में—तुम्हारे प्राण बने रहेंगे।

† मूल में—आकाश पृथ्वी से ऊंचा है वैसे ही मेरी गति तुम्हारी गति से और मेरे सोच विचार तुम्हारे सोच विचारों से ऊंचे हैं।

* मूल में—भूमि को सींचकर।

† मूल में—उस में सुफल होगा।

‡ मूल में—मेरा उद्धार आने को निकट है।

वे न कहें कि यहोवा हमें अपनी प्रजा से
निश्चय अलग करेगा, और खोजे भी
न कहें कि हम तो सूखे वृक्ष हैं। ४ क्योंकि
जो खोजे मेरे विश्रामदिन को मानते
और जिस बात से मैं प्रसन्न रहता हूं
उसी को अपनाते और मेरी वाचा को
पालते हैं, उनके विषय यहोवा यों कहता
है ५ कि मैं अपने भवन और अपनी शहर-
पनाह के भीतर उनको ऐसा नाम दूंगा जो
पुत्र-पुत्रियों से कहीं उत्तम होगा, मैं उनका
नाम सदा बनाए रखूंगा* और वह कभी
न मिटाया जाएगा॥

६ परदेशी भी जो यहोवा के साथ इस
इच्छा से मिले हुए हैं कि उसकी सेवा
टहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति
रखें और उसके दास हो जाएं, जितने
विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे
रहते और मेरी वाचा को पालते हैं,
७ उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले
आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित
करूंगा, उनके होमबलि और मेलबलि
मेरी वेदी पर ग्रहण किए जाएंगे, क्योंकि
मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये
प्रार्थना का घर कहलाएगा। ८ प्रभु
यहोवा, जो निकाले हुए इस्राएलियों को
इकट्ठे करनेवाला है, उसकी यह वाणी
है कि जो इकट्ठे किए गए हैं उनके साथ
मैं औरों को भी इकट्ठे करके मिला दूंगा॥

९ हे मैदान के सब जन्तुओ, हे वन के
सब पशुओ, खाने के लिये आओ।
१० उसके पहरुए अन्धे हैं, वे सब के
सब अज्ञानी हैं, वे सब के सब गूंगे कुत्ते
हैं जो भूंक नहीं सकते, वे स्वप्न देखनेवाले
और लेटे रहकर सोते रहना चाहते हैं।

* मूल में—उनको सदा का नाम दूंगा।

११ वे मरभूखे कुत्ते हैं जो कभी तृप्त नहीं
होते*। वे चरवाहे हैं जिन में समझ
ही नहीं, उन सभों ने अपने अपने लाभ
के लिये अपना अपना मार्ग लिया है।
१२ वे कहते हैं कि आओ, हम दाखमधु
ले आएं, आओ मदिरा पीकर छक जाएं,
कल का दिन भी तो आज ही के समान
अत्यन्त सुहावना होगा॥

५७ धर्मी जन नाश होता है, और
कोई इस बात की चिन्ता नहीं
करता, भक्त मनुष्य उठा लिए जाते हैं,
परन्तु कोई नहीं सोचता। धर्मी जन
इसलिये उठा लिया गया कि आनेवाली
आपत्ति से बच जाए, २ वह शान्ति को
पहुंचता है, जो सीधी चाल चलता है
वह अपनी खाट पर विश्राम करता है॥

३ परन्तु तुम, हे जादूगरनी के पुत्रो,
हे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की
सन्तान, यहां निकट आओ। ४ तुम किस
पर हंसी करते हो? तुम किस पर मुंह
खोलकर जीभ निकालते हो†? क्या तुम
पाखण्डी और झूठे‡ के वंश नहीं हो,
५ तुम, जो सब हरे वृक्षों के तले देवताओं
के कारण कामातुर होते और नालों में
और चट्टानों की दरारों के बीच§ बाल-
बच्चों को बध करते हो? ६ नालों के
चिकने पत्थर ही तेरा भाग और अंश
ठहरे‖, तू ने उनके लिये तपावन दिया और
अन्नबलि चढ़ाया है। क्या मैं इन बातों

* मूल में—फिर कुत्ते मरभूखे हैं, वे तृप्ति नहीं जानते।
† मूल में—मुंह खोलकर जीभ बढ़ाते हो।
‡ मूल में—तुम अपराध की सन्तान, झूठ का वंश।
§ मूल में—के नीचे।
‖ मूल में—वे ही तेरी चिट्ठी।

से शान्त हो जाऊ? ७ एक बडे ऊचे
पहाड पर तू ने अपना विछौना विछाया
है, वही तू वलि चढाने को चढ गई।
८ तू ने अपनी चिन्हानी अपने द्वार के
किवाड और चौखट की आड ही मे रखी,
मुझे छोडकर तू औरो को अपने तई
दिखाने के लिये चढी, तू ने अपनी खाट
चौडी की और उन से वाचा वान्ध ली, तू ने
उनकी खाट को जहा देखा, पसन्द किया।
९ तू तेल लिए हुए राजा के पास गई
और वहुत सुगन्धित तेल अपने काम मे
लाई, अपने दूत तू ने दूर तक भेजे और
अधोलोक तक अपने को नीचा किया।
१० तू अपनी यात्रा की लम्बाई के कारण
थक गई, तौभी तू ने न कहा कि यह
व्यर्थ है, तेरा वल कुछ अधिक हो
गया *, इसी कारण तू नही थकी ॥

११ तू ने किस के डर से झूठ कहा,
और किसका भय मानकर ऐसा किया
कि मुझ को स्मरण नही रखा न मुझ पर
ध्यान दिया? क्या मै वहुत काल से चुप
नही रहा? इस कारण तू मेरा भय
नही मानती। १२ मै आप तेरे धर्म और
कर्मो का वर्णन करूगा, परन्तु, उन से
तुझे कुछ लाभ न होगा। १३ जव तू
दोहाई दे, तव जिन मूर्त्तियो को तू ने
जमा किया है वे ही तुझे छुडाए! वे
तो सव की सव वायु से वरन एक ही
फूक से उड जाएगी। परन्तु जो मेरी
शरण लेगा वह देश का अधिकारी होगा,
और मेरे पवित्र पर्वत का भी अधिकारी
होगा ॥

१४ और यह कहा जाएगा, पाति वान्ध
वान्धकर राजमार्ग वनाओ, मेरी प्रजा के
मार्ग मे से हर एक ठोकर दूर करो।
१५ क्योकि जो महान और उत्तम और
सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम
पवित्र है, वह यो कहता है, मै ऊचे पर
और पवित्र स्थान मे निवास करता हू,
और उसके सग भी रहता हू, जो खेदित
और नम्र है, कि, नम्र लोगो के हृदय और
खेदित लोगो के मन को हर्षित करू*।
१६ मै सदा मुकद्दमा न लडता रहूगा,
न सर्वदा क्रोधित रहूगा, क्योकि आत्मा
मेरे वनाए हुए है और जीव मेरे साम्हने
मूर्च्छित हो जाते है। १७ उसके लोभ
के पाप के कारण मै ने क्रोधित होकर
उसको दुख दिया था, और क्रोध के
मारे उस से मुह छिपाया था, परन्तु वह
अपने मनमाने मार्ग मे दूर भटकता चला
गया था। १८ मै उसकी चाल देखता
आया हू, तौभी अव उसको चगा करूगा,
मै उसे ले चलूगा और विशेष करके
उसके शोक करनेवालो को शान्ति दूगा।
१९ मै मुह के फल का सृजनहार हू,
यहोवा ने कहा है, जो दूर और जो निकट
है, दोनो को पूरी शान्ति मिले, और
मै उसको चगा करूगा। २० परन्तु दुष्ट
तो लहराते हुए समुद्र के समान है जो
स्थिर नही रह सकता, और उसका जल
मैल और कीच उछालता है। २१ दुष्टों
के लिये शान्ति नही है, मेरे परमेश्वर
का यही वचन है ॥

५८ गला खोलकर पुकार, कुछ
न रख छोड, नरसिंगे का सा ऊचा
शब्द कर, मेरी प्रजा को उसका अपराध
अर्थात् याकूब के घराने को उसका पाप

* मूल में—तू ने अपने हाथ का जीवन पाया।

* मूल में—नम्रों की आत्मा और चूर मन जिलाने को।

जता दे। २ वे प्रति दिन मेरे पास आते
और मेरी गति बूझने की इच्छा ऐसी
रखते है मानो वे धर्मी लोग है जिन्हो
ने अपने परमेश्वर के नियमो को नहीं
टाला, वे मुझ से धर्म के नियम पूछते
और परमेश्वर के निकट आने से प्रसन्न
होते है। ३ वे कहते है, क्या कारण
है कि हम ने तो उपवास रखा, परन्तु
तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हम ने दु ख
उठाया, परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं
दिया? सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी
ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवको
से कठिन कामो को कराते हो। ४ सुनो,
तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि
तुम आपस मे लडते और झगडते और
दुष्टता से घूसे मारते हो। जैसा उपवास
तुम आजकल रखते हो, उस से तुम्हारी
प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी। ५ जिस
उपवास से म प्रसन्न होता हू अर्थात् जिस
में मनुष्य स्वय को दीन करे, क्या तुम
इस प्रकार करते हो? क्या सिर को
झाऊ की नाईं झुकाना, अपने नीचे टाट
बिछाना, और राख फैलाने ही को तुम
उपवास और यहोवा को प्रसन्न करने का
दिन कहते हो?

६ जिस उपवास से मै प्रसन्न होता हू,
वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए
हुए दासो, और अन्धेर सहनेवालो का
जूआ तोडकर* उनको छुडा लेना, और,
सब जूओ को टुकडे टुकडे कर देना?
७ क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी
भूखो को बाट देना, अनाथ और मारे-मारे
फिरते हुओ को अपने घर ले आना,
किसी को नगा देखकर वस्त्र पहिनाना,

* मूल में—कि दुष्टता के बन्धन खोलूगा और जूए की रस्सिया खोलना।

और अपने जातिभाइयो से अपने को न
छिपाना? ८ तब तेरा प्रकाश पौ फटने
की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चगा हो
जाएगा, तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा,
यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते
चलेगा। ९ तब तू पुकारेगा और यहोवा
उत्तर देगा, तू दोहाई देगा और वह कहेगा,
मै यहा हू*। यदि तू अन्धेर करना†
और उगली मटकाना, और, दुष्ट बातें
बोलना छोड दे, १० उदारता से भूखे
की सहायता करे‡ और दीन दु खियो को
सन्तुष्ट करे, तब अन्धियारे म तेरा प्रकाश
चमकेगा, और तेरा घोर अन्धकार दोपहर
का सा उजियाला हो जाएगा। ११ और
यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और
काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियो
को हरी भरी करेगा, और तू सींची हुई
बारी और ऐसे सोते के समान होगा
जिसका जल कभी नही सूखता। १२ और
तेरे वश के लोग बहुत काल के उजडे
हुए स्थानो को फिर बसाएगे, तू पीढी
पीढी की पडी हुई नेव पर घर उठाएगा,
तेरा नाम टूटे हुए बाडे का सुधारक
और पथो§ का ठीक करनेवाला पडेगा॥

१३ यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध
न करे‖ अर्थात् मेरे उस पवित्र दिन मे
अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे,
और विश्रामदिन को आनन्द का दिन
और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन

* मूल में—मुझे देख।

† मूल मं—जूआ।

‡ मूल में—आर भूखे के लिये अपना जीव खींच निकाले।

§ मूल में—रहने के लिये पथों।

‖ मूल में—यदि विश्राम दिन से अपना पाव मोडे।

समझकर माने; यदि तू उसका सन्मान
करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले,
अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही
बाते न बोले, १४ तो तू यहोवा के
कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के
ऊंचे स्थानो पर चलने दूगा, मैं तेरे
मूलपुरुष याकूब के भाग की उपज में से
तुझे खिलाऊंगा, क्योंकि यहोवा ही के
मुख से यह वचन निकला है ॥

५९ सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा
छोटा नही हो गया कि उद्धार
न कर सके, न वह ऐसा बहिरा*
हो गया है कि सुन न सके, २ परन्तु
तुम्हारे अधर्म के कामो ने तुम को तुम्हारे
परमेश्वर से अलग कर दिया है, और
तुम्हारे पापो के कारण उसका मुह तुम
से ऐसा छिपा है कि वह नही सुनता ।
३ क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और
तुम्हारी अगुलिया अधर्म के कर्मों से अपवित्र
हो गई है, तुम्हारे मुह से तो झूठ और
तुम्हारी जीभ से कुटिल बाते निकलती है ।
४ कोई धर्म के साथ नालिश नही करता,
न कोई सच्चाई से मुकद्दमा लडता है, वे
मिथ्या पर भरोसा रखते है और झूठ
बाते बकते है, उसको मानो उत्पात का
गर्भ रहता, और वे अनर्थ को जन्म देते
है । ५ वे सापिन के अण्डे सेते और
मकडी के जाले बनाते है, जो कोई उनके
अण्डे खाता वह मर जाता है, और जब
कोई एक को फोडता तब उस मे से सपोला
निकलता है† । ६ उनके जाले कपडे का
काम न देगे, न वे अपने कामो से अपने

* मूल में—उसका कान ऐसा भारी ।
† मूल में—और कुचला हुआ सपोला फूटता है ।

को ढांप सकेंगे । क्योंकि उनके काम
अनर्थ ही के होते है, और उनके हाथो से
उपद्रव का काम होता है । ७ वे बुराई*
करने को दौडते है, और निर्दोष की हत्या
करने को तत्पर रहते है; उनकी युक्तिया
व्यर्थ है, उजाड और विनाश ही उनके
मार्गों में हैं । ८ शान्ति का मार्ग वे
जानते ही नही और न उनके व्यवहार
में न्याय है, उनके पथ टेढे है, जो कोई
उन पर चले वह शान्ति न पाएगा ॥
९ इस कारण न्याय हम से दूर है,
और धर्म हमारे समीप ही नहीं आता,
हम उजियाले की बाट तो जोहते हैं,
परन्तु, देखो अन्धियारा ही बना रहता
है, हम प्रकाश की आशा तो लगाए है,
परन्तु, घोर अन्धकार ही में चलते है ।
१० हम अन्धो के समान भीत टटोलते
है, हा, हम बिना आख के लोगों की नाईं
टटोलते है, हम दिन-दोपहर रात की
नाईं ठोकर खाते है, हृष्टपुष्टो के बीच
हम मुर्दों के समान हैं । ११ हम सब के
सब रीछो की नाईं चिल्लाते है और
पण्डुको के समान च्यूं च्यूं करते हैं,
हम न्याय की बाट तो जोहते है, पर वह
कही नही; और उद्धार की बाट जोहते
है पर वह हम से दूर ही रहता है ।
१२ क्योंकि हमारे अपराध तेरे साम्हने
बहुत हुए है, हमारे पाप हमारे विरुद्ध
साक्षी दे रहे है; हमारे अपराध हमारे
सग है और हम अपने अधर्म के काम
जानते है · १३ हम ने यहोवा का अपराध
किया है, हम उस से मुकर गए और
अपने परमेश्वर के पीछे चलना छोड
दिया, हम अन्धेर करने लगे और उलट

* मूल में—उनके पाव बुराई ।

फेर की बातें कहीं, हम ने झूठी बातें मन
में गढ़ीं और कहीं भी हैं। १४ न्याय
तो पीछे हटाया गया और धर्म दूर खड़ा
रह गया, सच्चाई बाज़ार में गिर पड़ी *,
और सिधाई प्रवेश नहीं करने पाती।
१५ हां, सच्चाई खो गई, और जो बुराई
से भागता है सो शिकार हो जाता है॥

यह देखकर यहोवा ने बुरा माना,
क्योंकि न्याय जाता रहा, १६ उस ने
देखा कि कोई भी पुरुष नहीं, और इस
से अचम्भा किया कि कोई बिनती
करनेवाला नहीं, तब उस ने अपने ही
भुजबल से उद्धार किया †, और अपने
धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया।
१७ उस ने धर्म को झिलम की नाईं
पहिन लिया, और उसके सिर पर उद्धार
का टोप रखा गया, उस ने पलटा लेने
का वस्त्र धारण किया, और जलजलाहट
को बागे की नाईं पहिन लिया है।
१८ उनके कर्मों के अनुसार वह उनको
फल देगा, अपने द्रोहियों पर वह अपना
क्रोध भड़काएगा और अपने शत्रुओं को
उनकी कमाई देगा, वह द्वीपवासियों को
भी उनकी कमाई भर देगा। १९ तब
पश्चिम की ओर लोग यहोवा के
नाम का, और पूर्व की ओर उसकी
महिमा का भय मानेंगे, क्योंकि जब
शत्रु महानद की नाईं चढ़ाई करेंगे तब
यहोवा का आत्मा उसके विरुद्ध झण्डा
खड़ा करेगा॥

२० और याकूब में जो अपराध से
मन फिराते हैं उनके लिये सिय्योन में एक
छुड़ानेवाला आएगा, यहोवा की यही वाणी
है। २१ और यहोवा यह कहता है, जो
वाचा मैं ने उन से बान्धी है वह यह है,
कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और
अपने वचन जो मैं ने तेरे मुंह में डाले हैं
अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुंह से,
और, तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी
कभी न हटेंगे॥

६० उठ, प्रकाशमान हो, क्योंकि
तेरा प्रकाश आ गया है, और
यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
२ देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और
राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार
छाया हुआ है, परन्तु तेरे ऊपर यहोवा
उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर
प्रगट होगा। ३ और अन्यजातियां तेरे
पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे
आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥

४ अपनी आंखें चारों ओर उठाकर
देख, वे सब के सब इकट्ठे होकर तेरे
पास आ रहे हैं, तेरे पुत्र दूर से आ रहे
हैं, और तेरी पुत्रियां हाथों-हाथ पहुंचाई
जा रही हैं। ५ तब तू इसे देखेगी और
तेरा मुख चमकेगा, तेरा हृदय थरथराएगा
और आनन्द से भर जाएगा *, क्योंकि
समुद्र का सारा धन और अन्यजातियों की
धन-सम्पत्ति तुझ को मिलेगी। ६ तेरे
देश † में ऊंटों के झुण्ड और मिद्यान और
एपा देशों की साडनियां इकट्ठी होंगी,
शिबा के सब लोग आकर सोना और
लोबान भेंट लाएंगे और यहोवा का
गुणानुवाद आनन्द से सुनाएंगे। ७ केदार
की सब भेड़-बकरियां इकट्ठी होकर तेरी हो

* मूल में—सच्चाई ने चौक में ठोकर
खाई।

† मूल में—उसी की भुजा ने उसके लिये
उद्धार किया।

* मूल में—और बढ़ेगा।

† मूल में—तुझ में।

जाएगी, नवायोत के मेढे तेरी सेवा टहल
के काम में आएगे, मेरी वेदी पर वे ग्रहण
किए जाएगे और मैं अपने शोभायमान
भवन को और भी प्रतापी कर दूगा ॥
८ ये कौन है जो बादल की नाई
और दर्बाओ की ओर उडते हुए कबूतरो
की नाई चले आते है? ९ निश्चय द्वीप
मेरी ही बाट देखेगे, पहिले तो तर्शीश के
जहाज आएगे, कि, तेरे पुत्रो को सोने-
चान्दी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात्
इस्राएल के पवित्र के नाम के निमित्त
दूर से पहुचाए, क्योकि उस ने तुझे
शोभायमान किया है ॥
१० परदेशी लोग तेरी शहरपनाह को
उठाएगे, और उनके राजा तेरी सेवा
टहल करेगे, क्योकि मैं ने क्रोध में आकर
तुझे दु ख दिया था, परन्तु अब तुझ से
प्रसन्न होकर तुझ पर दया की है। ११ तेरे
फाटक सदैव खुले रहेगे, दिन और रात
वे बन्द न किए जाएगे जिस से अन्य-
जातियो की धन-सम्पत्ति और उनके राजा
बधुए होकर तेरे पास पहुचाए जाए।
१२ क्योकि जो जाति और राज्य के
लोग तेरी सेवा न करे वे नष्ट हो जाएगे,
हा ऐसी जातिया पूरी रीति से सत्यानाश
हो जाएगी। १३ लबानोन का विभव
अर्थात् सनौवर और देवदार और सीधे
सनौवर के पेड एक साथ तेरे पास आएगे
कि मेरे पवित्रस्थान को सुशोभित करे,
और मैं अपने चरणो के स्थान को महिमा
दूगा। १४ तेरे दु ख देनेवालो की सन्तान
तेरे पास सिर झुकाए हुए आएगे, और
जिन्हो ने तेरा तिरस्कार किया सब तेरे
पावों पर* गिरकर दण्डवत् करेगे, वे
तेरा नाम यहोवा का नगर, इस्राएल के
पवित्र का सिय्योन रखेगे ॥
१५ तू जो त्यागी गई और घृणित
ठहरी, यहा तक कि कोई तुझ में से
होकर नहीं जाता था, इसकी सन्ती मैं
तुझे सदा के घमण्ड का और पीढी पीढी
के हर्ष का कारण ठहराऊगा। १६ तू
अन्यजातियो का दूध पी लेगी, तू राजाओ
की छातिया चूसेगी, और तू जान लेगी
कि मैं यहोवा तेरा उद्धारकर्त्ता और तेरा
छुडानेवाला, याकूब का सर्वशक्तिमान हू ॥
१७ मैं पीतल की सन्ती सोना, लोहे
की सन्ती चान्दी, लकडी की सन्ती पीतल
और पत्थर की सन्ती लोहा लाऊगा।
मैं तेरे हाकिमो को मेल-मिलाप और तेरे
चौधरियो को धार्मिकता ठहराऊगा।
१८ तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और
तेरे सिवानो के भीतर उत्पात वा अन्धेर
की चर्चा न सुनाई पडेगी, परन्तु तू
अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और
अपने फाटको का नाम यश रखेगी।
१९ फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला
न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु
यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और
तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा।
२० तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा
और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन
होगी*, क्योकि यहोवा तेरी सदैव की
ज्योति होगा और तेरे विलाप के दिन
समाप्त हो जाएगे। २१ और तेरे लोग
सब के सब धर्मी होगे, वे सर्वदा देश के
अधिकारी रहेगे, वे मेरे लगाए हुए पौधे
और मेरे हाथो का काम ठहरेगे, जिस से
मेरी महिमा प्रगट हो। २२ छोटे से

* मूल में—तेरे पावों के तलुए पर।

* मूल में—और तेरा चन्द्रमा न सिमटेगा।

छोटा एक हजार हो जाएगा और सब से
दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा।
मैं यहोवा हूं, ठीक समय पर यह सब
कुछ शीघ्रता से पूरा करूंगा ॥

६१ प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ
पर है, क्योंकि यहोवा ने सुसमा-
चार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया
और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित
मन के लोगों को शान्ति दूं, कि बंधुओं
के लिये स्वतन्त्रता का और कैदियों के
लिये छुटकारे का प्रचार करूं, २ कि
यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और
हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन
का प्रचार करूं, कि सब विलाप करनेवालों
को शान्ति दूं ३ और सिय्योन के विलाप
करनेवालों के सिर पर की राख दूर
करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं, कि उनका
विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और
उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना
ओढ़ाऊं, जिस से वे धर्म के बांजवृक्ष
और यहोवा के लगाए हुए कहलाएं और
जिस से उसकी महिमा प्रगट हो। ४ तब
वे बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को
फिर बसाएंगे, पूर्वकाल में पड़े हुए खण्डहरों
में वे फिर घर बनाएंगे, उजड़े हुए नगरों
को जो पीढ़ी पीढ़ी में उजड़े हुए हों वे
फिर नये सिरे से बसाएंगे ॥

५ परदेशी आ खड़े होंगे और तुम्हारी
भेड़-बकरियों को चराएंगे और विदेशी
लोग तुम्हारे हरवाहे और दाख की बारी
के माली होंगे, ६ पर तुम यहोवा के
याजक कहलाओगे, वे तुम को हमारे
परमेश्वर के सेवक कहेंगे, और तुम
अन्यजातियों की धन-सम्पत्ति को खाओगे,
उनके विभव की वस्तुएं पाकर तुम बड़ाई
करोगे। ७ तुम्हारी नामधराई की सन्ती
दूना भाग मिलेगा, अनादर की सन्ती
तुम * अपने भाग के कारण जयजयकार
करोगे, तुम * अपने देश में दूने भाग के
अधिकारी होगे, और सदा आनन्दित
बने रहोगे ॥

८ क्योंकि, मैं यहोवा न्याय से प्रीति
रखता हूं, मैं अन्याय और डकैती से
घृणा करता हूं, इसलिये मैं उनको उनका
प्रतिफल सच्चाई से दूंगा, और, उनके
साथ सदा की वाचा बान्धूंगा। ९ उनका
वंश अन्यजातियों में और उनकी सन्तान
देश देश के लोगों के बीच प्रसिद्ध होगी,
जितने उनको देखेंगे, पहिचान लेंगे कि
यह वह वंश है जिसको परमेश्वर ने
आशीष दी है ॥

१० मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित
होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण
मगन रहेगा, क्योंकि उस ने मुझे उद्धार
के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर
ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की
माला से अपने आपको सजाता और
दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार
करती है। ११ क्योंकि जैसे भूमि अपनी
उपज को उगाती, और बारी में जो कुछ
बोया जाता है उसको वह उपजाती है,
वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के साम्हने
धार्मिकता और धन्यवाद को बढ़ाएगा ॥

६२ सिय्योन के निमित्त मैं चुप न
रहूंगा, और यरूशलेम के निमित्त
मैं चैन न लूंगा, जब तक कि उसकी
धार्मिकता प्रकाश की नाईं और उसका
उद्धार जलते हुए पलीते के समान दिखाई
न दे। २ तब अन्यजातियां तेरा धर्म

* मूल में—ो।

और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे, और
तेरा एक नया नाम रखा जाएगा जो
यहोवा के मुख से निकलेगा। ३ तू
यहोवा के हाथ मे एक शोभायमान मुकुट
और अपने परमेश्वर की हथेली मे राज-
मुकुट ठहरेगी। ४ तू फिर त्यागी हुई न
कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजडी
हुई न कहलाएगी, परन्तु तू हेप्सीबा*
और तेरी भूमि ब्यूला† कहलाएगी;
क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी
भूमि सुहागिन होगी। ५ क्योंकि जिस
प्रकार जवान पुरुष एक कुमारी को ब्याह
लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे,
और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के कारण
हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे
कारण हर्षित होगा ।।

६ हे यरूशलेम, मै ने तेरी शहरपनाह
पर पहरुए बैठाए है, वे दिन-रात कभी
चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण
करनेवालो, चुप न रहो, ७ और, जब
तक वह यरूशलेम को स्थिर करके उसकी
प्रशसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे
भी चैन न लेने दो। ८ यहोवा ने अपने
दहिने हाथ की और अपनी बलवन्त भुजा
की शपथ खाई है निश्चय मै भविष्य
मे तेरा अन्न अब फिर तेरे शत्रुओ को
खाने के लिये न दूगा, और परदेशियो के
पुत्र तेरा नया दाखमधु जिसके लिये तू
ने परिश्रम किया है, नही पीने पाएगे,
९ केवल वे ही, जिन्हो ने उसे खत्ते में
रखा हो, उस से खाकर यहोवा की स्तुति
करेंगे, और जिन्हों ने दाखमधु भण्डारो
में रखा हो, वे ही उसे मेरे पवित्रस्थान
के आगनों में पीने पाएगे ।।

* अर्थात् जिस से मैं प्रसन्न हू।
† अर्थात् सुहागिन।

१० जाओ, फाटकों में से निकल जाओ,
प्रजा के लिये मार्ग सुधारो, राजमार्ग
सुधारकर ऊचा करो, उस में के पत्थर
बीन बीनकर फेंक दो, देश देश के लोगों
के लिये झण्डा खडा करो। ११ देखो,
यहोवा ने पृथ्वी की छोर तक इस आज्ञा
का प्रचार किया है सिय्योन की बेटी
से कहो, देख, तेरा उद्धारकर्त्ता आता है,
देख, जो मज़दूरी उसको देनी है वह
उसके पास है और उसका काम उसके
सामने है। १२ और लोग उनको पवित्र
प्रजा और यहोवा के छुडाए हुए कहेंगे,
और तेरा नाम ग्रहण की हुई अर्थात्
न-त्यागी हुई नगरी पडेगा ।।

६३ यह कौन है जो एदोम देश
के बोस्रा नगर से बैंजनी वस्त्र
पहिने हुए चला आता है, जो अति बलवान
और भड़कीला पहिरावा पहिने हुए झूमता
चला आता है?

यह मै ही हू, जो धर्म से बोलता और
पूरा उद्धार करने की शक्ति रखता हू*।

२ तेरा पहिरावा क्यो लाल है? और
क्या कारण है कि तेरे वस्त्र हौद मे दाख
रौदनेवाले के समान है?

३ मै ने तो अकेले ही हौद मे दाखे रौंदी
है, और देश के लोगो मे से किसी ने मेरा
साथ नही दिया, हा, मै ने अपने क्रोध
मे आकर उन्हे रौदा और जलकर उन्हे
लताडा, उनके लोहू के छींटे मेरे वस्त्रो
पर पडे है, इस से मेरा सारा पहिरावा
धब्बेदार हो गया है। ४ क्योंकि पलटा
लेने का दिन मेरे मन मे था, और मेरी
छुडाई हुई प्रजा का वर्ष आ पहुचा है।
५ मै ने खोजा, पर कोई सहायक न

* मूल में—उद्धार करने को बड़ा।

दिखाई पडा, मै ने इस मे अचम्भा भी
किया कि कोई सम्भालनेवाला नही था,
तब मै ने अपने ही भुजबल से उद्धार
किया, और मेरी जलजलाहट ही ने मुझे
सम्हाला। ६ हा, मै ने अपने क्रोध मे
आकर देश देश के लोगो को लताडा,
अपनी जलजलाहट से मै ने उन्हे मतवाला
कर दिया, और उनके लोहू को भूमि
पर बहा दिया॥
७ जितना उपकार यहोवा ने हम लोगो
का किया अर्थात् इस्राएल के घराने पर
दया और अत्यन्त करुणा करके उस ने
हम से जितनी भलाई की, उस सब के
अनुसार मै यहोवा के करुणामय कामो
का वर्णन और उसका गुणानुवाद करूगा।
८ क्योकि उस ने कहा, नि सन्देह ये मेरी
प्रजा के लोग है, ऐसे लडके है जो धोखा
न देगे, और वह उनका उद्धारकर्त्ता हो
गया। ९ उनके सारे सकट मे उस ने
भी कष्ट उठाया*, और उसके सम्मुख
रहनेवाले दूत ने उनका उद्धार किया,
प्रेम और कोमलता से उस ने आप ही
उनको छुडाया, उस ने उन्हे उठाया और
प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिए फिरा॥
१० तौभी उन्हो ने बलवा किया और
उसके पवित्र आत्मा को खेदित किया,
इस कारण वह पलटकर उनका शत्रु हो
गया, और स्वय उन से लडने लगा।
११ तब उसके लोगो को उनके प्राचीन
दिन अर्थात् मूसा के दिन स्मरण आए,
वे कहने लगे कि जो अपनी भेडो को
उनके चरवाहे समेत समुद्र मे से निकाल
लाया वह कहा है? जिस ने उनके बीच
अपना पवित्र आत्मा डाला, वह कहा है?

* वा वह सकट देनेवाला न था।

१२ जिस ने अपने प्रतापी भुजबल को
मूसा के दहिने हाथ के साथ कर दिया*,
जिस ने उनके साम्हने जल को दो भाग
करके अपना सदा का नाम कर लिया,
१३ जो उनको गहिरे समुद्र मे से ले
चला, जैसा घोडे को जगल मे वैसे ही
उनको भी ठोकर न लगी, वह कहा है?
१४ जैसे घरैलू पशु तराई मे उतर जाता
है, वैसे ही यहोवा के आत्मा ने उनको
विश्राम दिया। इसी प्रकार से तू ने अपनी
प्रजा की अगुवाई की ताकि अपना नाम
महिमायुक्त बनाए॥
१५ स्वर्ग से, जो तेरा पवित्र और
महिमापूर्ण वासस्थान है, दृष्टि कर।
तेरी जलन और पराक्रम कहा रहे?
तेरी दया और करुणा मुझ पर से हट†
गई है। १६ निश्चय तू हमारा पिता है,
यद्यपि इब्राहीम हमे नही पहिचानता,
और इस्राएल हमें ग्रहण नही करता,
तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और
हमारा छुडानेवाला है, प्राचीनकाल से
यही तेरा नाम है। १७ हे यहोवा, तू
क्यो हम को अपने मार्गों से भटका देता,
और हमारे मन ऐसे कठोर करता है
कि हम तेरा भय नही मानते? अपने
दास, अपने निज भाग के गोत्रो के निमित्त
लौट आ। १८ तेरी पवित्र प्रजा तो थोडे
ही काल तक तेरे पवित्रस्थान की अधिकारी
रही, हमारे द्रोहियो ने उसे लताड दिया
है। १९ हम लोग तो ऐसे हो गए है, मानो
तू ने हम‡ पर कभी प्रभुता नही की, और
उनके समान जो कभी तेरे न कहलाए॥

* मूल में—जो अपनी शोभायमान भुजा को मूसा के दहिने हाथ पर चलाता था।
† मूल में—रुक।
‡ मूल में—उन।

६४ भला हो कि तू आकाश को
फाड़कर उतर आए और पहाड़
तेरे साम्हने कांप उठें। २ जैसे आग
झाड़-झंखाड़ को जला देती वा जल को
उबालती है, उसी रीति से तू अपने
शत्रुओं पर अपना नाम ऐसा प्रगट कर
कि जाति जाति के लोग तेरे प्रताप से
कांप उठें! ३ जब तू ने ऐसे भयानक
काम किए जो हमारी आशा से भी बढ़कर
थे, तब तू उतर आया, पहाड़ तेरे प्रताप
से कांप उठे। ४ क्योंकि प्राचीनकाल
ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर
न तो कभी देखा * गया और न कान से
उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट
जोहनेवालों के लिये काम करे। ५ तू
तो उन्हीं से मिलता है जो धर्म के काम
हर्ष के साथ करते, और तेरे मार्गों पर
चलते हुए तुझे स्मरण करते हैं। देख, तू
क्रोधित हुआ था, क्योंकि हम ने पाप
किया, हमारी यह दशा तो बहुत काल
से है, क्या हमारा उद्धार हो सकता है?
६ हम तो सब के सब अशुद्ध मनुष्य के
से हैं, और हमारे धर्म के काम सब के सब
मैले चिथड़ों के समान हैं। हम सब के
सब पत्ते की नाईं मुर्झा जाते हैं, और
हमारे अधर्म के कामों ने हमें वायु की
नाईं उड़ा दिया है। ७ कोई भी तुझ से
प्रार्थना नहीं करता, न कोई तुझ से
सहायता लेने के लिये चौकसी करता है
कि तुझ से लिपटा रहे †; क्योंकि हमारे
अधर्म के कामों के कारण तू ने हम से
अपना मुंह छिपा लिया है, और हमें
हमारी बुराइयों के वश में छोड़ दिया
है॥

* मूल में—आंख से देखा।
† मूल में—छिपा।

८ तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता
है; देख, हम तो मिट्टी हैं, और तू हमारा
कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथ
के काम हैं। ९ इसलिये हे यहोवा,
अत्यन्त क्रोधित न हो, और अनन्तकाल
तक हमारे अधर्म को स्मरण न रख।
विचार करके देख, हम तेरी बिनती करते
हैं, हम सब तेरी प्रजा हैं। १० देख,
तेरे पवित्र नगर जंगल हो गए, सिय्योन
सुनसान हो गया है, यरूशलेम उजड़
गया है। ११ हमारा पवित्र और शोभाय-
मान मन्दिर, जिस में हमारे पूर्वज तेरी
स्तुति करते थे, आग से जलाया गया,
और हमारी मनभावनी वस्तुएं सब नष्ट
हो गई हैं। १२ हे यहोवा, क्या इन
बातों के होते भी तू अपने को रोके रहेगा?
क्या तू हम लोगों को इस अत्यन्त दुर्दशा
में रहने देगा?

६५ जो मुझ को पूछते भी न
थे वे मेरे खोजी हैं, जो मुझे
ढूंढ़ते भी न थे उन्हों ने मुझे पा लिया;
और जो जाति मेरी नहीं कहलाई थी,
उस से भी मैं कहता हूं, देख, मैं उपस्थित
हूं *। २ मैं एक हठीली जाति के लोगों
की ओर दिन भर हाथ फैलाए रहा, जो
अपनी युक्तियों के अनुसार बुरे मार्गों
में चलते हैं। ३ ऐसे लोग, जो मेरे साम्हने
ही बारियों में बलि चढ़ा चढ़ाकर और
ईंटों पर धूप जला जलाकर, मुझे लगातार
क्रोध दिलाते हैं। ४ ये कब्र के बीच
बैठते और छिपे हुए स्थानों में रात
बिताते, जो सूअर का मांस खाते, और
घृणित वस्तुओं का रस अपने बर्तनों
में रखते, ५ जो कहते हैं, हट जा, मेरे

* मूल में—कि मुझे देख मुझे देख।

निकट मत आ, क्योंकि मैं तुझ से पवित्र
हूं। ये मेरी नाक में धूएं व उस आग
के समान हैं जो दिन भर जलती रहती
है। ६ देखो, यह बात मेरे साम्हने लिखी
हुई है मैं चुप न रहूंगा, मैं निश्चय बदला
दूंगा वरन तुम्हारे और तुम्हारे पुरखाओं
के भी अधर्म के कामों का बदला तुम्हारी
गोद में भर दूंगा। ७ क्योंकि उन्हों ने
पहाड़ों पर धूप जलाया और पहाड़ियों
पर मेरी निन्दा की है, इसलिये मैं यहोवा
कहता हूं, कि, उनके पिछले कामों के
बदले को मैं इनकी गोद में तौलकर
दूंगा॥

८ यहोवा यों कहता है, जिस भांति
दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु
भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे
नाश मत कर, क्योंकि उस में आशीष
है, उसी भांति मैं अपने दासों के निमित्त
ऐसा करूंगा कि सभों को नाश न करूंगा।
९ मैं याकूब में से एक वंश, और यहूदा
में से अपने पर्वतों का एक वारिस उत्पन्न
करूंगा, मेरे चुने हुए उसके वारिस होंगे,
और मेरे दास वहां निवास करेंगे।
१० मेरी प्रजा जो मुझे ढूंढ़ती है, उसकी
भेड़-बकरियां तो शारोन में चरेंगी, और
उसके गाय-बैल आकोर नाम तराई में
विश्राम करेंगे। ११ परन्तु तुम जो यहोवा
को त्याग देते और मेरे पवित्र पर्वत को
भूल जाते हो, जो भाग्य देवता के लिये
मेज पर भोजन की वस्तुएं सजाते और
भावी देवी के लिये मसाला मिला हुआ
दाखमधु भर देते हो, १२ मैं तुम्हें
गिन गिनकर तलवार का कौर बनाऊंगा,
और तुम सब घात होने के लिये झुकोगे,
क्योंकि, जब मैं ने तुम्हें बुलाया तुम ने
उत्तर न दिया, जब मैं बोला, तब तुम ने
मेरी न सुनी, वरन जो मुझे बुरा लगता
है वही तुम ने नित किया, और जिस से
मैं अप्रसन्न होता हूं, उसी को तुम ने
अपनाया॥

१३ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता
है, देखो, मेरे दास तो खाएंगे, पर तुम
भूखे रहोगे, मेरे दास पीएंगे, पर तुम
प्यासे रहोगे, मेरे दास आनन्द करेंगे,
पर तुम लज्जित होगे, १४ देखो, मेरे
दास हर्ष के मारे जयजयकार करेंगे, परन्तु
तुम शोक से चिल्लाओगे और खेद के
मारे हाय हाय, करोगे। १५ मेरे चुने
हुए लोग तुम्हारी उपमा दे देकर शाप
देंगे *, और प्रभु यहोवा तुझ को नाश
करेगा, परन्तु अपने दासों का दूसरा
नाम रखेगा। १६ तब सारे देश में जो
कोई अपने को धन्य कहेगा वह सच्चे
परमेश्वर † का नाम लेकर अपने को धन्य
कहेगा, और जो कोई देश में शपथ खाए
वह सच्चे परमेश्वर † के नाम से शपथ
खाएगा, क्योंकि पिछला कष्ट दूर हो
गया और वह मेरी आंखों से छिप गया
है॥

१७ क्योंकि देखो, मैं नया आकाश
और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूं, और
पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच
विचार में भी न आएंगी। १८ इसलिये
जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण
तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो,
क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और
उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा ‡।

---

* मूल में—तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं की किरिया के लिये छोड़ोगे।

† मूल में—आमेन [अर्थात सत्य वचन] के परमेश्वर।

‡ मूल में—सिरजूंगा।

१९ मै आप यरूशलेम के कारण मगन,
और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूगा,
उस मे फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द
न सुनाई पडेगा। २० उस मे फिर न तो
थोडे दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढा
जाता रहेगा जिस ने अपनी आयु पूरी न की
हो, क्योकि जो लडकपन मे मरनेवाला है
वह सौ वर्ष का होकर मरेगा, परन्तु पापी
सौ वर्ष का होकर श्रापित ठहरेगा।
२१ वे घर बनाकर उन मे बसेगे, वे
दाख की बारियां लगाकर उनका फल
खाएगे। २२ ऐसा नही होगा कि वे
बनाए और दूसरा बसे, वा वे लगाए,
और दूसरा खाए, क्योकि मेरी प्रजा की
आयु वृक्षो की सी होगी, और मेरे चुने
हुए अपने कामो का पूरा लाभ उठाएगे।
२३ उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न
उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न
होगे, क्योकि वे यहोवा के धन्य लोगो
का वश ठहरेगे, और उनके बालबच्चे
उन से अलग न होगे। २४ उनके पुकारने
से पहिले ही मै उनको उत्तर दूगा, और
उनके मागते ही मै उनकी सुन लूगा।
२५ भेडिया और मेम्ना एक सग चरा
करेगे, और सिह बैल की नाई भूसा
खाएगा, और सर्प का आहार मिट्टी ही
रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो
कोई किसी को दु ख देगा और न कोई
किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही
वचन है॥

६६ यहोवा यो कहता है, आकाश
मेरा सिहासन और पृथ्वी मेरे
चरणो की चौकी है, तुम मेरे लिये कैसा
भवन बनाओगे, और मेरे विश्राम का
कौन सा स्थान होगा? २ यहोवा की
यह वाणी है, ये सब वस्तुए मेरे ही हाथ
की बनाई हुई है, सो ये सब मेरी ही है।
परन्तु मै उसी की ओर दृष्टि करूगा जो
दीन और खेदित मन का हो, और मेरा
वचन सुनकर थरथराता हो॥

३ बैल का बलि करनेवाला मनुष्य
के मार डालनेवाले के समान है, जो
भेड का चढानेवाला है वह उसके समान
है जो कुत्ते का गला काटता है, जो
अन्नबलि चढाता है वह मानो सूअर का
लोहू चढानेवाले के समान है, और
जो लोबान जलाता है*, वह उसके समान
है जो मूरत को धन्य कहता है। इन
सभो ने अपना अपना मार्ग चुन लिया है,
और घिनौनी वस्तुओ मे उनके मन प्रसन्न
होते है। ४ इसलिये मै भी उनके लिये
दु ख की बाते निकालूगा, और जिन बातो
मे वे डरते है उन्ही को उन पर लाऊगा,
क्योकि जब मै ने उन्हे बुलाया, तब कोई
न बोला, और जब मै ने उन से बाते की,
तब उन्हो ने मेरी न सुनी; परन्तु जो मेरी
दृष्टि मे बुरा था वही वे करते रहे, और
जिस से मै अप्रसन्न होता था उसी को
उन्हो ने अपनाया॥

तुम जो यहोवा का वचन सुनकर
थरथराते हो यहोवा का वचन सुनो
५ तुम्हारे भाई जो तुम से बैर रखते
और मेरे नाम के निमित्त तुम को अलग
कर देते है उन्हो ने कहा है, यहोवा की
महिमा तो बढे, जिस से हम तुम्हारा
आनन्द देखने पाए, परन्तु उन्ही को
लज्जित होना पडेगा॥

६ सुनो, नगर से कोलाहल की धूम,
मन्दिर से एक शब्द, सुनाई देता है।

* मूल में—स्मरण करानेवाला।

वह यहोवा का शब्द है, वह अपने शत्रुओं
को उनकी करनी का फल दे रहा है।
७ उसकी पीड़ाएं उठने से पहले ही
उस ने जन्मा दिया, उसको पीड़ाएं होने
से पहिले ही उस से बेटा जन्मा। ८ ऐसी
बात किस ने कभी सुनी? किस ने कभी
ऐसी बातें देखी? क्या देश एक ही दिन
में उत्पन्न हो सकता है? क्या एक जाति
क्षणमात्र में ही उत्पन्न हो सकती है?
क्योंकि सिय्योन की पीड़ाएं उठीं ही थीं
कि उस से सन्तान उत्पन्न हो गए।
९ यहोवा कहता है, क्या मैं उसे जन्माने
के समय तक पहुंचाकर न जन्माऊं?
तेरा परमेश्वर कहता है, मैं जो गर्भ देता
हूं क्या मैं कोख बन्द करूं?
१० हे यरूशलेम से सब प्रेम रखनेवालो,
उसके साथ आनन्द करो और उसके
कारण मगन हो; हे उसके विषय सब
विलाप करनेवालो उसके साथ हर्षित हो।
११ जिस से तुम उसके शान्तिरूपी स्तन
में दूध पी पीकर तृप्त हो, और दूध
पीकर उसकी महिमा की बहुतायत से
अत्यन्त सुखी हो॥
१२ क्योंकि यहोवा यों कहता है, देखो,
मैं उसकी ओर शान्ति को नदी की नाईं,
और अन्यजातियों के धन को नदी की
बाढ़ समान बहा दूंगा, और तुम उस से
पीओगे, तुम उसकी गोद में उठाए जाओगे
और उसके घुटनों पर कुदाए जाओगे।
१३ जिस प्रकार माता अपने पुत्र को*
शान्ति देती है, वैसे ही मैं भी तुम्हें शान्ति
दूंगा; तुम को यरूशलेम ही में शान्ति
मिलेगी। १४ तुम यह देखोगे और प्रफु-
ल्लित होगे, तुम्हारी हड्डियां घास की नाईं
हरी भरी होंगी; और यहोवा का हाथ
उसके दासों के लिये प्रगट होगा, और,
उसके शत्रुओं के ऊपर उसका क्रोध
भड़केगा॥
१५ क्योंकि देखो, यहोवा आग के
साथ आएगा, और उसके रथ बवण्डर के
समान होंगे, जिस से वह अपने क्रोध को
जलजलाहट के साथ और अपनी चितौनी
को भस्म करनेवाली आग की लपट से
प्रगट करे। १६ क्योंकि यहोवा सब
प्राणियों का न्याय आग से और अपनी
तलवार से करेगा; और यहोवा के मारे
हुए बहुत होंगे॥
१७ जो लोग अपने को इसलिये पवित्र
और शुद्ध करते हैं कि बारियों में जाएं
और किसी के पीछे खड़े होकर सूअर
वा चूहे का मांस और और घृणित वस्तुएं
खाते हैं, वे एक ही संग नाश हो जाएंगे,
यहोवा की यही वाणी है॥
१८ क्योंकि मैं उनके काम और उनकी
कल्पनाएं, दोनों अच्छी रीति से जानता
हूं। और वह समय आता है जब मैं
सारी जातियों और भिन्न भिन्न भाषा
बोलनेवालों को इकट्ठा करूंगा; और वे
आकर मेरी महिमा देखेंगे। १९ और
मैं उन में एक चिन्ह प्रगट करूंगा; और
उनके बचे हुओं को मैं उन अन्यजातियों
के पास भेजूंगा जिन्हों ने न तो मेरा
समाचार सुना है और न मेरी महिमा
देखी है, अर्थात्, तर्शीशियों और धनुर्धारी
पूलियों और लूदियों के पास, और तबालियों
और यूनानियों और दूर द्वीपवासियों के
पास भी भेज दूंगा और वे अन्यजातियों
में मेरी महिमा का वर्णन करेंगे। २० और
जैसे इस्राएली लोग अन्नबलि को शुद्ध
पात्र में धरकर यहोवा के भवन में ले

* मूल में—पुरुष को।

आते हैं, वैसे ही वे तुम्हारे सब भाइयों
को घोड़ों, रथों, पालकियों, खच्चरों और
साड़नियों पर चढ़ा चढ़ाकर मेरे पवित्र
पर्वत यरूशलेम पर यहोवा की भेंट के
लिये ले आएंगे, यहोवा का यही वचन है।
२१ और उन में से मैं कितने लोगों को
याजक और लेवीय पद के लिये भी चुन
लूंगा॥

२२ क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश
और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे
सम्मुख बनी रहेगी, उसी प्रकार तुम्हारा
वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा,
यहोवा की यही वाणी है। २३ फिर
ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे
नये चांद के दिन तक और एक विश्राम
दिन से दूसरे विश्राम दिन तक समस्त
प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत् करने को
आया करेंगे, यहोवा का यही वचन है॥

२४ तब वे निकलकर उन लोगों
की लोथों पर जिन्हों ने मुझ से बलवा
किया दृष्टि डालेंगे, क्योंकि उन में पड़े
हुए कीड़े कभी न मरेंगे, उनकी आग
कभी न बुझेगी, और सारे मनुष्यों को
उन से अत्यन्त घृणा होगी॥

यिर्मयाह नामक पुस्तक

१ हिल्किय्याह का पुत्र यिर्मयाह जो
बिन्यामीन देश के अनातोत में
रहनेवाले याजकों में से था, उसी के ये
वचन हैं। २ यहोवा का वचन उसके
पास आमोन के पुत्र यहूदा के राजा
योशिय्याह के दिनों में उसके राज्य के
तेरहवें वर्ष में पहुंचा। ३ इसके बाद
योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा
यहोयाकीम के दिनों में, और योशिय्याह
के पुत्र यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
राज्य के ग्यारहवें वर्ष के अन्त तक भी
प्रगट होता रहा जब तक उसी वर्ष के
पांचवें महीने में यरूशलेम के निवासी
बंधुआई में न चले गए॥

४ तब यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, ५ गर्भ में रचने से पहिले
ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और
उत्पन्न होने से पहिले ही मैं ने तुझे अभिषेक
किया, मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता
ठहराया। ६ तब मैं ने कहा, हाय, प्रभु
यहोवा! देख, मैं तो बोलना ही नहीं
जानता, क्योंकि मैं लड़का ही हूं। ७ परन्तु
यहोवा ने मुझ से कहा, मत कह कि मैं
लड़का हूं, क्योंकि जिस किसी के पास
मैं तुझे भेजूं वहां तू जाएगा, और जो
कुछ मैं तुझे आज्ञा दूं वही तू कहेगा।
८ तू उनके मुख को देखकर मत डर,
क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिये मैं तेरे साथ
हूं, यहोवा की यही वाणी है। ९ तब
यहोवा ने हाथ बढ़ाकर मेरे मुंह को
छुआ, और यहोवा ने मुझ से कहा,
देख, मैं ने अपने वचन तेरे मुंह में डाल

दिये है। १० सुन, मै ने आज के दिन
तुझे जातियो और राज्यो पर अधिकारी
ठहराया है, उन्हे गिराने और ढा देने
के लिये, नाश करने और काट डालने के
लिये, या उन्हे बनाने और रोपने के
लिये ॥

११ और यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, हे यिर्मयाह, तुझे क्या दिखाई
पडता है? मै ने कहा, मुझे बादाम की
एक टहनी दिखाई पडती है। १२ तब
यहोवा ने मुझ से कहा, तुझे ठीक दिखाई
पडता है, क्योकि मै अपने वचन को पूरा
करने के लिये जागृत हू ॥

१३ फिर यहोवा का वचन दूसरी
बार मेरे पास पहुचा, और उस ने पूछा,
तुझे क्या दिखाई पडता है? मै ने कहा,
मुझे उबलता हुआ एक हण्डा दिखाई
पडता है जिसका मुह उत्तर दिशा की
ओर से है। १४ तब यहोवा ने मुझ से
कहा, इस देश के सब रहनेवालो पर
उत्तर दिशा से विपत्ति आ पडेगी।
१५ यहोवा की यह वाणी है, मै उत्तर
दिशा के राज्यो और कुलो को बुलाऊगा,
और वे आकर यरूशलेम के फाटको मे
और उसके चारो ओर की शहरपनाह,
और यहूदा के और सब नगरो के साम्हने
अपना अपना सिहासन लगाएगे।
१६ और उनकी सारी बुराई के कारण
मै उन पर दण्ड की आज्ञा दूगा, क्योकि
उन्हो ने मुझे त्यागकर दूसरे देवताओ
के लिये धूप जलाया और अपनी बनाई
हुई वस्तुओ को दण्डवत् किया है।
१७ इसलिये तू अपनी कमर कसकर
उठ, और जो कुछ कहने की मै तुझे
आज्ञा दू वही उन से कह। तू उनके
मुख को देखकर न घबराना, ऐसा न
हो कि मै तुझे उनके साम्हने घबरा दू।
१८ क्योकि सुन, मै ने आज तुझे इस
सारे देश और यहूदा के राजाओ, हाकिमो,
और याजको और साधारण लोगो के
विरुद्ध गढवाला नगर, और लोहे का
खम्भा, और पीतल की शहरपनाह बनाया
है। १९ वे तुझ से लडेगे तो सही, परन्तु
तुझ पर प्रबल न होगे, क्योकि बचाने के
लिये मै तेरे साथ हू, यहोवा की यही
वाणी है ॥

२ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, २ और यरूशलेम मे पुकार-
कर यह सुना दे, यहोवा यह कहता है,
तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह
के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है
कि तू कैसे जगल मे मेरे पीछे पीछे चली
जहा भूमि जोती-बोई न गई थी।
३ इस्राएल, यहोवा के लिये पवित्र और
उसकी पहली उपज थी। उसे खानेवाले
सब दोषी ठहरेगे और विपत्ति मे पडेगे,
यहोवा की यही वाणी है ॥

४ हे याकूब के घराने, हे इस्राएल के
घराने के कुलो के लोगो, यहोवा का
वचन सुनो। ५ यहोवा यो कहता है,
तुम्हारे पुरखाओ ने मुझ मे कौन ऐसी
कुटिलता पाई कि मुझ से दूर हट गए
और निकम्मी वस्तुओ के पीछे होकर स्वय
निकम्मे हो गए? ६ उन्हो ने इतना
भी न कहा कि जो हमे मिस्र देश से
निकाल ले आया वह यहोवा कहा है?
जो हमें जगल म से और रेत और गडहो
से भरे हुए निर्जल और घोर अन्धकार के
देश से जिस म होकर कोई नही चलता,
और जिस म कोई मनुष्य नही रहता,
हमे निकाल ले आया। ७ और मै तुम

को इस उपजाऊ देश मे ले आया कि
उसका फल और उत्तम उपज खाओ,
परन्तु मेरे इस देश मे आकर तुम ने उसे
अशुद्ध किया, और मेरे इस निज भाग
को घृणित कर दिया है। ८ याजकों ने
भी नही पूछा कि यहोवा कहा है,
जो व्यवस्था सिखाते थे वे भी मुझ को
न जानते थे, चरवाहो ने भी मुझ से
बलवा किया, भविष्यद्वक्ताओ ने बाल
देवता के नाम से भविष्यद्वाणी की और
निष्फल बातो के पीछे चले ॥

९ इस कारण यहोवा यह कहता है,
मै फिर तुम से विवाद, और तुम्हारे बेटे और
पोतो से भी प्रश्न करूगा। १० कित्तियो
के द्वीपो मे पार जाकर देखो, या केदार
मे दूत भेजकर भली भाति विचार करो
और देखो, देखो, कि ऐसा काम कही
और भी हुआ है? क्या किसी जाति ने
अपने देवताओ को बदल दिया जो परमेश्वर
भी नही है? ११ परन्तु मेरी प्रजा ने
अपनी महिमा को निकम्मी वस्तु से बदल
दिया है। १२ हे आकाश, चकित हो,
बहुत ही थरथरा और सुनसान हो जा*,
यहोवा की यह वाणी है। १३ क्योकि
मेरी प्रजा ने दो बुराइया की है उन्हो ने
मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया
है, और, उन्हो ने हौद बना लिए, वरन
ऐसे हौद जो टूट गए है, और जिन मे
जल नही रह सकता ॥

१४ क्या इस्राएल दास है? क्या
वह घर मे जन्मा हुआ दास है†? फिर
वह क्यो शिकार बना? १५ जवान सिहो
ने उसके विरुद्ध गरजकर नाद किया।
उन्हो ने उसके देश को उजाड दिया,
उन्हो ने उसके नगरो को ऐसा उजाड
दिया कि उन मे कोई बसनेवाला ही
न रहा। १६ और नोप और तहपन्हेस के
निवासी भी तेरे देश की उपज* चट कर
गए है। १७ क्या यह तेरी ही करनी
का फल नही, जो तू ने अपने परमेश्वर
यहोवा को छोड दिया जो तुझे मार्ग मे
लिए चला? १८ और अब तुझे मिस्र के
मार्ग से क्या लाभ है कि तू सीहोर† का
जल पीए? अथवा अश्शूर के मार्ग मे
भी तुझे क्या लाभ कि तू महानद का जल
पीए? १९ तेरी बुराई ही तेरी ताडना
करेगी, और तेरा भटक जाना तुझे उला-
हना देगा। जान ले और देख कि अपने
परमेश्वर यहोवा को त्यागना, यह बुरी
और कडवी बात है, तुझे मेरा भय ही
नही रहा, प्रभु सेनाओ के यहोवा की
यही वाणी है ॥

२० क्योकि बहुत समय पहिले
मै ने तेरा जूआ तोड डाला और
तेरे बन्धन खोल दिए, परन्तु तू ने
कहा, मै सेवा न करूगी। और सब
ऊचे-ऊचे टीलो पर और सब हरे पेडो के
नीचे तू व्यभिचारिण का सा काम करती
रही। २१ मै ने तो तुझे उत्तम जाति
की दाखलता और उत्तम बीज करके
लगाया था‡, फिर तू क्यो मेरे लिये जगली
दाखलता बन गई? २२ चाहे तू अपने
को सज्जी से धोए और बहुत सा साबुन
भी प्रयोग करे, तौभी तेरे अधर्म का

* मूल में—इस कारण हे आकाश चकित हो, रोमाञ्चित हो, और बहुत सूख जा।

† वा क्या इस्राएल दास है? क्या वह घर में उत्पन्न हुआ?

* मूल में—तेरा चोन्डा।

† अर्थात् नील नदी।

‡ मूल में—मै ने तुझे उत्तम जाति की दाखलता का बिल्कुल सच्चा बीज लगाया।

धब्बा मेरे साम्हने बना रहेगा, प्रभु यहोवा
की यही वाणी है। २३ तू क्योंकर कह
सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं, मैं बाल
देवताओं के पीछे नहीं चली? तराई में
की अपनी चाल देख और जान ले कि तू
ने क्या किया है? तू वेग से चलनेवाली
और इधर उधर फिरनेवाली साडनी है,
२४ जंगल में पली हुई जंगली गदही
जो कामातुर होकर वायु सूंघती फिरती
है तब कौन उसे वश में कर सकता है?
जितने उसको ढूंढते है वे व्यर्थ परिश्रम
न करें, क्योंकि वे उसे उसकी ऋतु में*
पाएंगे। २५ अपने पांव नंगे और गला
सुखाए न रह। परन्तु तू ने कहा, नहीं,
ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि मेरा प्रेम
दूसरों से लग गया है और मैं उनके पीछे
चलती रहूंगी॥

२६ जैसे चोर पकडे जाने पर लज्जित
होता है, वैसे ही इस्राएल का घराना
राजाओं, हाकिमों, याजकों और
भविष्यद्वक्ताओं समेत लज्जित होगा।
२७ वे काठ से कहते हैं, तू मेरा बाप है,
और पत्थर से कहते हैं, तू ने मुझे जन्म
दिया है। इस प्रकार उन्हों ने मेरी ओर
मुंह नहीं पीठ ही फेरी है, परन्तु विपत्ति
के समय वे कहते हैं, उठकर हमें बचा!
२८ परन्तु जो देवता तू ने बना लिए हैं,
वे कहां रहे? यदि वे तेरी विपत्ति के
समय तुझे बचा सकते है तो अभी उठें,
क्योंकि हे यहूदा, तेरे नगरों के बराबर
तेरे देवता भी बहुत है॥

२९ तुम क्यों मुझ से वादविवाद
करते हो? तुम सभों ने मुझ से बलवा
किया है, यहोवा की यही वाणी है।
३० मैं ने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों की ताडना
की, उन्हों ने कुछ भी नहीं माना, तुम
ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को अपनी ही
तलवार से ऐसा काट डाला है जैसा
सिंह फाडता* है। ३१ हे लोगो, यहोवा
के वचन पर ध्यान दो! क्या मैं
इस्राएल के लिये जंगल वा घोर अन्धकार
का देश बना? तब मेरी प्रजा क्यों
कहती है कि हम तो आजाद हो गए हैं
सो तेरे पास फिर न आएंगे? ३२ क्या
कुमारी अपने सिंगार वा दुल्हिन अपनी
सजावट भूल सकती है? तौभी मेरी
प्रजा ने युगों से मुझे बिसरा दिया
है॥

३३ प्रेम लगाने के लिये तू कैसी
सुन्दर चाल चलती है! बुरी स्त्रियों
को भी तू ने अपनी सी चाल सिखाई है।
३४ तेरे घाघरे में निर्दोष और दरिद्र
लोगों के लोहू का चिन्ह पाया जाता है,
तू ने उन्हें सेंध लगाते नहीं पकडा। परन्तु
इन सब के होते हुए भी तू कहती है, मैं
निर्दोष हूं, ३५ निश्चय उसका क्रोध
मुझ पर से हट जाएगा। देख, तू जो
कहती है कि मैं ने पाप नहीं किया, इसलिये
मैं तेरा न्याय कराऊंगा। ३६ तू क्यों
नया मार्ग पकडने के लिये इतनी डांवाडोल
फिरती है? जैसे अश्शूरियों से तू लज्जित
हुई वैसे ही मिस्रियों से भी होगी।
३७ वहां से भी तू सिर पर हाथ रखे
हुए यों ही चली आएगी, क्योंकि जिन पर
तू ने भरोसा रखा है उनको यहोवा ने
निकम्मा ठहराया है, और उनके कारण
तू सफल न होगी॥

* मूल में—अपने महीने में।

* मूल में—तुम्हारी तलवार ने नाशक की नाईं।

३ वे कहते हैं, यदि कोई अपनी
पत्नी को त्याग दे, और वह उसके
पास से जाकर दूसरे पुरुष की हो जाए,
तो वह पहिला क्या उसके पास फिर
जाएगा? क्या वह देश अति अशुद्ध न
हो जाएगा? यहोवा की यह वाणी है
कि तू ने बहुत से प्रेमियों के साथ व्यभिचार
किया है, क्या तू अब मेरी ओर फिरेगी?
२ मुण्डे टीलों की ओर आंखें उठाकर
देख! ऐसा कौन सा स्थान है जहां तू
ने कुकर्म न किया हो? मार्गों में तू ऐसी
बैठी जैसे एक अरबी जंगल में। तू ने
देश को अपने व्यभिचार से अशुद्ध कर
दिया है। ३ इसी कारण झड़ियां और
बरसात की पिछली वर्षा नहीं होती, तौभी
तेरा माथा वेश्या का सा है, तू लज्जित
होना ही नहीं* जानती। ४ क्या तू अब
मुझे पुकारकर कहेगी, हे मेरे पिता, तू
ही मेरी जवानी का साथी है? ५ क्या
वह मन में सदा क्रोध रखे रहेगा? क्या
वह उसको सदा बनाए रहेगा? तू ने
ऐसा कहा तो है, परन्तु तू ने बुरे काम
प्रबलता के साथ किए हैं॥

६ फिर योशिय्याह राजा के दिनों
में यहोवा ने मुझ से यह भी कहा, क्या
तू ने देखा कि भटकनेवाली इस्राएल ने
क्या किया है? उस ने सब ऊंचे पहाड़ों
पर और सब हरे पेड़ों के तले जा जाकर
व्यभिचार किया है। ७ तब मैं ने सोचा,
जब ये सब काम वह कर चुके तब मेरी
ओर फिरेगी; परन्तु वह न फिरी, और
उसकी विश्वासघाती बहिन यहूदा ने
यह देखा। ८ फिर मैं ने देखा, जब मैं
ने भटकनेवाली इस्राएल को उसके
व्यभिचार करने के कारण त्यागकर उसे
त्यागपत्र दे दिया, तौभी उसकी विश्वास-
घाती बहिन यहूदा न डरी, वरन जाकर
वह भी व्यभिचारिणी बन गई। ९ उसके
निर्लज्ज-व्यभिचारिणी होने के कारण
देश भी अशुद्ध हो गया, उस ने पत्थर
और काठ के साथ भी व्यभिचार किया।
१० इतने पर भी उसकी विश्वासघाती
बहिन यहूदा पूर्ण मन से मेरी ओर नहीं
फिरी, परन्तु कपट से, यहोवा की यही
वाणी है। ११ और यहोवा ने मुझ से
कहा, भटकनेवाली इस्राएल, विश्वासघातिन
यहूदा से कम दोषी निकली है। १२ तू
जाकर उत्तर दिशा में ये बातें प्रचार कर,
यहोवा की यह वाणी है, हे भटकनेवाली
इस्राएल लौट आ, मैं तुझ पर क्रोध की
दृष्टि न करूंगा, क्योंकि यहोवा की यह
वाणी है, मैं करुणामय हूं, मैं सर्वदा
क्रोध न रखे रहूंगा। १३ केवल अपना
यह अधर्म मान ले कि तू अपने परमेश्वर
यहोवा से फिर गई और सब हरे पेड़ों
के तले इधर उधर दूसरों के पास गई,
और मेरी बातों को नहीं माना, यहोवा
की यह वाणी है॥

१४ हे भटकनेवाले लड़को लौट आओ,
क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं; यहोवा की
यह वाणी है। तुम्हारे प्रत्येक नगर पीछे
एक, और प्रत्येक कुल पीछे दो को लेकर
मैं सिय्योन में पहुंचा दूंगा। १५ और
मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे
दूंगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएंगे।
१६ उन दिनों में जब तुम इस देश
में बढ़ो, और फूलो-फलो, तब लोग फिर
ऐसा न कहेंगे, 'यहोवा की वाचा का
सन्दूक'; यहोवा की यह भी वाणी है।
उसका विचार भी उनके मन में न आएगा,

* मूल में—लजाने का नकारा।

न लोग उसके न रहने से चिन्ता करेंगे,
और न उसकी मरम्मत होगी। १७ उस
समय यरूशलेम यहोवा का सिंहासन
कहलाएगा, और सब जातियां उसी यरू-
शलेम में मेरे नाम के निमित्त इकट्ठी
हुआ करेंगी, और, वे फिर अपने बुरे मन
के हठ पर न चलेंगी। १८ उन दिनों
में यहूदा का घराना इस्राएल के घराने
के साथ चलेगा और वे दोनों मिलकर
उत्तर के देश से इस देश में आएंगे जिसे
मैं ने उनके पूर्वजों को निज भाग करके
दिया था। १९ मैं ने सोचा था, मैं
कैसे तुझे लड़कों में गिनकर वह मनभावना
देश दूं जो सब जातियों के देशों का
शिरोमणि है। और मैं ने सोचा कि तू
मुझे पिता कहेगी, और मुझ से फिर
न भटकेगी। २० इस में तो सन्देह नहीं
कि जैसे विश्वासघाती स्त्री अपने प्रिय
से मन फेर लेती है, वैसे ही हे इस्राएल के
घराने, तू मुझ से फिर गया है, यहोवा
की यही वाणी है॥

२१ मुण्डे टीलों पर से इस्राएलियों
के रोने और गिड़गिड़ाने का शब्द सुनाई
दे रहा है, क्योंकि वे टेढ़ी चाल चलते
रहे हैं और अपने परमेश्वर यहोवा को
भूल गए हैं। २२ हे भटकनेवाले लड़को,
लौट आओ, मैं तुम्हारा भटकना सुधार
दूंगा। देख, हम तेरे पास आए हैं, क्योंकि
तू ही हमारा परमेश्वर यहोवा है।
२३ निश्चय पहाड़ों और पहाड़ियों पर
का कोलाहल व्यर्थ ही है। इस्राएल का
उद्धार निश्चय हमारे परमेश्वर यहोवा
ही के द्वारा है। २४ परन्तु हमारी
जवानी ही से उस बदनामी की वस्तु ने
हमारे पुरखाओं की कमाई अर्थात् उनकी
भेड़-बकरी और गाय-बैल और उनके
बेटे-बेटियों को निगल लिया है। २५ हम
लज्जित होकर लेट जाएं, और हमारा
संकोच हमारी ओढ़नी बन जाए, क्योंकि
हमारे पुरखा और हम भी युवा अवस्था
से लेकर आज के दिन तक अपने परमेश्वर
यहोवा के विरुद्ध पाप करते आए हैं,
और हम ने अपने परमेश्वर यहोवा की
बातों को नहीं माना है॥

४ यहोवा की यह वाणी है, हे
इस्राएल यदि तू लौट आये, तो मेरे
पास लौट आ। यदि तू घिनौनी वस्तुओं
को मेरे साम्हने से दूर करे, तो तुझे
आवारा फिरना न पड़ेगा, २ और यदि
तू सच्चाई और न्याय और धर्म से यहोवा
के जीवन की शपथ खाए, तो अन्यजातियां
उसके कारण अपने आपको धन्य कहेंगी,
और उसी पर घमण्ड करेंगी॥

३ क्योंकि यहूदा और यरूशलेम के
लोगों से यहोवा ने यों कहा है, अपनी
पड़ती भूमि को जोतो, और कटीले झाड़ों
में बीज मत बोओ। ४ हे यहूदा के
लोगो और यरूशलेम के निवासियो,
यहोवा के लिये अपना खतना करो, हां,
अपने मन का खतना करो, नहीं तो
तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा क्रोध
आग की नाईं भड़केगा, और ऐसा होगा
कि कोई उसे बुझा न सकेगा॥

५ यहूदा में प्रचार करो और यरूशलेम
में यह सुनाओ, पूरे देश में नरसिंगा फूंको,
गला खोलकर ललकारो और कहो, आओ,
हम इकट्ठे हों और गढ़वाले नगरों में जाएं।
६ सिय्योन के मार्ग में झण्डा खड़ा
करो, अपना सामान उठाके भागो, खड़े
मत रहो, क्योंकि मैं उत्तर की दिशा से
विपत्ति और सत्यानाश ले आया चाहता

हू। ७ एक सिह अपनी झाडी से निकला,
जाति जाति का नाश करनेवाला चढाई
करके आ रहा है, वह कूच करके अपने
स्थान से इसलिये निकला है कि तुम्हारे
देश को उजाड दे और तुम्हारे नगरो को
ऐसा सुनसान कर दे कि उन मे कोई
बसनेवाला न रहने पाए। ८ इसलिये
कमर मे टाट बान्धो, विलाप और हाय
हाय करो, क्योकि यहोवा का भडका
हुआ कोप हम पर से टला नही है॥

९ उस समय राजा और हाकिमो का
कलेजा काप उठेगा, याजक चकित होगे
और नबी अचम्भित हो जाएगे, यहोवा
की यह वाणी है। १० तब मै ने कहा,
हाय, प्रभु यहोवा, तू ने तो यह कहकर
कि तुम को शान्ति मिलेगी निश्चय अपनी
इस प्रजा को और यरूशलेम को भी बडा
धोखा दिया है, क्योकि तलवार प्राणो
को मिटाने पर है॥

११ उस समय तेरी इस प्रजा से
और यरूशलेम से भी कहा जाएगा, जगल
के मुण्डे टीलो पर से प्रजा के लोगो
की ओर* लू बह रही है, वह ऐसी वायु
नही जिस से ओसाना वा फरछाना हो,
१२ परन्तु मेरी ओर से ऐसे कामो के
लिये अधिक प्रचण्ड वायु बहेगी। अब
मै उनको दण्ड की आज्ञा दूगा।
१३ देखो, वह बादलो की नाई चढाई
करके आ रहा है, उसके रथ बवण्डर
के समान और उसके घोडे उकाबो से
भी अधिक वेग से चलते है। हम पर
हाय, हम नाश हुए! १४ हे यरूशलेम,
अपना हृदय बुराई से धो, कि, तुम्हारा
उद्धार हो जाए। तुम कब तक व्यर्थ
कल्पनाए करते रहोगे*? १५ क्योकि
दान से शब्द सुन पड रहा है और एप्रैम के
पहाडी देश से विपत्ति का समाचार आ
रहा है। १६ अन्यजातियो मे सुना दो,
यरूशलेम को भी इसका समाचार दो,
पहरुए दूर देश से आकर यहूदा के नगरो
के विरुद्ध ललकार रहे है। १७ वे खेत
के रखवालो की नाई उसको चारो ओर
से घेर रहे है, क्योकि उस ने मुझ से बलवा
किया है, यहोवा की यही वाणी है।
१८ यह तेरी चाल और तेरे कामो ही
का फल है। यह तेरी दुष्टता है और
अति दुखदाई है, इस से तेरा हृदय छिद
जाता है॥

१९ हाय! हाय†! मेरा हृदय
भीतर ही भीतर तडपता है! और मेरा
मन घबराता है! मै चुप नही रह सकता,
क्योंकि हे मेरे प्राण, नरसिगे का शब्द
और युद्ध की ललकार तुझ तक पहुची
है। २० नाश पर नाश का समाचार
आ रहा है, सारा देश लूट लिया गया है।
मेरे डेरे अचानक और मेरे तम्बू एकाएक
लूटे गए है। २१ और कितने दिन तक
मुझे उनका झण्डा देखना और नरसिगे
का शब्द सुनना पडेगा? २२ क्योकि
मेरी प्रजा मूढ है, वे मुझे नही जानते,
वे ऐसे मूर्ख लडके है जिन मे कुछ भी
समझ नही। बुराई करने को तो वे
बुद्धिमान है, परन्तु भलाई करना वे
नही जानते॥

२३ मै ने पृथ्वी पर देखा, वह सूनी
और सुनसान पडी थी, और आकाश को,
और उस मे कोई ज्योति नही थी।
२४ मै ने पहाडो को देखा, वे हिल रहे

* मूल में—मेरी प्रजा की बेटी की ओर।

* मूल में—कब तक तुझ में बनी रहेंगी।
† मूल में—मेरी अन्तड़िया मेरी।

थे, और सब पहाड़ियों को कि वे डोल
रही थीं। २५ फिर मैं ने क्या देखा
कि कोई मनुष्य भी न था और सब पक्षी
भी उड़ गए थे। २६ फिर मैं क्या देखता
हूं कि यहोवा के प्रताप और उस भड़के
हुए प्रकोप के कारण उपजाऊ देश जंगल,
और उसके सारे नगर खण्डहर हो गए
थे। २७ क्योंकि यहोवा ने यह बताया
कि सारा देश उजाड़ हो जाएगा, तौभी
मैं उसका अन्त न कर डालूंगा। २८ इस
कारण पृथ्वी विलाप करेगी, और आकाश
शोक का काला वस्त्र पहिनेगा, क्योंकि मैं
ने ऐसा ही करने को ठाना और कहा
भी है, मैं इस से नहीं पछताऊंगा और
न अपने प्रण को छोड़ूंगा॥

२९ नगर के सारे लोग सवारों और
धनुर्धारियों का कोलाहल सुनकर भागे
जाते हैं, वे झाड़ियों में घुसते और चट्टानों
पर चढ़े जाते हैं, सब नगर निर्जन हो
गए, और उन में कोई बाकी न रहा।
३० और तू जब उजड़ेगी तब क्या करेगी?
चाहे तू लाल रङ्ग के वस्त्र पहिने और
सोने के आभूषण धारण करे और अपनी
आंखों में अंजन लगाए, परन्तु व्यर्थ ही
तू अपना शृंगार करेगी। क्योंकि तेरे
मित्र तुझे निकम्मी जानते हैं, वे तेरे
प्राणों के खोजी हैं। ३१ क्योंकि मैं ने
जच्चा का शब्द, पहिलौठा जनती हुई स्त्री
की सी चिल्लाहट सुनी है, यह सिय्योन की
बेटी का शब्द है, जो हांफती और हाथ
फैलाए हुए यों कहती है, हाय मुझ पर, मैं
हत्यारों के हाथ पड़कर मूर्छित हो चली हूं॥

५ यरूशलेम की सड़कों में इधर
उधर दौड़कर देखो! उसके चौकों
में ढूंढ़ो यदि कोई ऐसा मिल सके जो
न्याय से काम करे और सच्चाई का
खोजी हो, तो मैं उसका पाप क्षमा
करूंगा। २ यद्यपि उसके निवासी यहोवा
के जीवन की शपथ भी खाएं, तौभी
निश्चय वे झूठी शपथ खाते हैं। ३ हे
यहोवा, क्या तेरी दृष्टि सच्चाई पर नहीं
है? तू ने उनको दुःख दिया, परन्तु वे
शोकित नहीं हुए, तू ने उनको नाश
किया, परन्तु उन्हों ने ताड़ना से भी
नहीं माना। उन्हों ने अपना मन चट्टान
से भी अधिक कठोर किया है, उन्हों ने
पश्चात्ताप करने से इनकार किया है॥

४ फिर मैं ने सोचा, ये लोग तो
कङ्गाल और अबोध ही हैं, क्योंकि ये
यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का
नियम नहीं जानते। ५ इसलिये मैं बड़े
लोगों के पास जाकर उनको सुनाऊंगा,
क्योंकि वे तो यहोवा का मार्ग और अपने
परमेश्वर का नियम जानते हैं। परन्तु उन
सभों ने मिलकर जूए को तोड़ दिया है
और बन्धनों को खोल डाला है॥

६ इस कारण वन में से एक सिंह
आकर उन्हें मार डालेगा, निर्जल देश
का एक भेड़िया उनको नाश करेगा।
और एक चीता उनके नगरों के पास
घात लगाए रहेगा, और जो कोई उन में
से निकले वह फाड़ा जाएगा, क्योंकि
उनके अपराध बहुत बढ़ गए हैं और वे
मुझ से बहुत ही दूर हट गए हैं॥

७ मैं क्योंकर तेरा पाप क्षमा करूं?
तेरे लड़कों ने* मुझ को छोड़कर उनकी
शपथ खाई है जो परमेश्वर नहीं है।
जब मैं ने उनका पेट भर दिया, तब उन्हों
ने व्यभिचार किया और वेश्याओं के घरों

* मूल में—तेरे लड़के।

उकता गया हू। बाजारो मे बच्चो पर
और जवानो की सभा मे भी उसे उडेल
दे, क्योकि पति अपनी पत्नी के साथ
और अधेड बूढ़े के साथ पकडा जाएगा।
१२ उन लोगो के घर और खेत और
स्त्रिया सब औरो की हो जाएगी; क्योकि
मै इस देश के रहनेवालो पर हाथ बढाऊगा,
यहोवा की यही वाणी है। १३ क्योकि
उन मे छोटे से लेकर बडे तक सब के सब
लालची है, और क्या भविष्यद्वक्ता क्या
याजक सब के सब छल से काम करते है।
१४ वे, "शान्ति है, शान्ति," ऐसा कह
कहकर मेरी प्रजा× के घाव को ऊपर
ही ऊपर चगा करते है, परन्तु शान्ति
कुछ भी नही। १५ क्या वे कभी अपने
घृणित कामो के कारण लज्जित हुए?
नही, वे कुछ भी लज्जित नही हुए, वे
लज्जित होना जानते ही नही, इस कारण
जब और लोग नीचे गिरे, तब वे भी
गिरेंगे, और जब मै उनको दण्ड देने
लगूगा, तब वे ठोकर खाकर गिरेंगे, यहोवा
का यही वचन है॥

वह विपत्ति ले आऊगा जो उनकी कल्पनाओ
का फल है, क्योकि इन्हो ने मेरे वचनों
पर ध्यान नही लगाया, और मेरी शिक्षा
को इन्हो ने निकम्मी जाना है। २० मेरे
लिये जो लोबान शबा से, और सुगन्धित
नरकट जो दूर देश से आता है, इसका
क्या प्रयोजन है? तुम्हारे होमबलियो से
मै प्रसन्न नही हू, और न तुम्हारे मेलबलि
मुझे मीठे लगते है। २१ इस कारण
यहोवा ने यों कहा है, देखो, मै इस प्रजा
के आगे ठोकर खाऊगा, और बाप और
बेटा, पडोसी और मित्र, सब के सब
ठोकर खाकर नाश होगे॥

२२ यहोवा यो कहता है, देखो, उत्तर
से वरन पृथ्वी की छोर से एक बडी
जाति के लोग इस देश के विरोध में
उभारे जाएगे। २३ वे धनुष और बर्छी
धारण किए हुए आएगे, वे क्रूर और
निर्दय है, और जब वे बोलते है तब मानो
समुद्र गरजता है, वे घोडो पर चढे हुए
आएगे, हे सिय्योन×, वे वीर की नाई
सशस्त्र होकर† तुझ पर चढाई करेगे।
२४ इनका समाचार सुनते ही हमारे हाथ

२७ मैं ने इसलिये तुझे अपनी प्रजा
के बीच गुम्मट वा गढ ठहरा दिया कि
तू उनकी चाल परखे और जान ले।
२८ वे सब बहुत ही हठी हैं, वे लुतराई
करते फिरते हैं, उन सभो की चाल
बिगडी है, वे निरा ताम्बा और लोहा ही
हैं। २९ धौंकनी जल गई, शीशा आग
में जल गया, ढालनेवाले ने व्यर्थ ही ढाला
है, क्योंकि बुरे लोग नहीं निकाले गए।
३० उनका नाम खोटी चान्दी पडेगा,
क्योंकि यहोवा ने उनको खोटा पाया है॥

७ जो वचन यहोवा की ओर से
यिर्मयाह के पास पहुंचा वह यह है
२ यहोवा के भवन के फाटक मे खडा हो,
और यह वचन प्रचार कर, और कह,
हे सब यहूदियो, तुम जो यहोवा को दण्डवत्
करने के लिये इन फाटको मे प्रवेश करते
हो, यहोवा का वचन सुनो। ३ सेनाओं का
यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है,
यो कहता है, अपनी अपनी चाल और
काम सुधारो, तब मैं तुम को इस स्थान
में बसे रहने दूगा। ४ तुम लोग यह कहकर
झूठी बातो पर भरोसा मत रखो, कि
यही यहोवा का मन्दिर है, यही यहोवा
का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर॥

५ यदि तुम सचमुच अपनी अपनी चाल
और काम सुधारो, और सचमुच मनुष्य-
मनुष्य के बीच न्याय करो, ६ परदेशी
और अनाथ और विधवा पर अन्धेर न
करो, इस स्थान मे निर्दोष की हत्या
न करो, और दूसरे देवताओ के पीछे न
चलो जिस मे तुम्हारी हानि होती है,
७ तो मैं तुम को इस नगर मे, और
इस देश में जो मैं ने तुम्हारे पूर्वजो को
दिया था, युग युग के लिये रहने दूगा॥

८ देखो, तुम झूठी बातो पर भरोसा
रखते हो जिन से कुछ लाभ नहीं हो
सकता। ९ तुम जो चोरी, हत्या और
व्यभिचार करते, झूठी शपथ खाते, बाल
देवता के लिये धूप जलाते, और दूसरे
देवताओ के पीछे जिन्हें तुम पहिले नहीं
जानते थे चलते हो, १० तो क्या यह उचित
है कि तुम इस भवन मे आओ जो मेरा कह-
लाता है, और मेरे साम्हने खडे होकर यह
कहो कि हम इसलिये छूट गए हैं कि ये सब
घृणित काम करें? ११ क्या यह भवन
जो मेरा कहलाता है, तुम्हारी दृष्टि में
डाकुओ की गुफा हो गया है? मैं ने
स्वय यह देखा है, यहोवा की यह वाणी
है। १२ मेरा जो स्थान शीलो मे था,
जहा मैं ने पहिले अपने नाम का निवास
ठहराया था, वहा जाकर देखो कि मैं ने
अपनी प्रजा इस्राएल की बुराई के कारण
उसकी क्या दशा कर दी है? १३ अब
यहोवा की यह वाणी है, कि तुम जो
ये सब काम करते आए हो, और यद्यपि
मैं तुम से बडे यत्न से* बातें करता रहा
हू, तौभी तुम ने नहीं सुना, और तुम्हें
बुलाता आया परन्तु तुम नहीं बोले,
१४ इसलिये यह भवन जो मेरा कहलाता
है, जिस पर तुम भरोसा रखते हो, और
यह स्थान जो मैं ने तुम को और तुम्हारे
पूर्वजो को दिया था, इसकी दशा मैं
शीलो की सी कर दूगा। १५ और जैसा
मैं ने तुम्हारे सब भाइयो को अर्थात् सारे
एप्रैमियो को अपने साम्हने से दूर कर दिया
है, वैसा ही तुम को भी दूर कर दूगा॥

१६ इस प्रजा के लिये तू प्रार्थना मत
कर, न इन लोगो के लिये ऊचे स्वर से

* मूल में—तड़के उठकर।

मे भीड की भीड जाते थे। ८ वे खिलाए-
पिलाए वे-लगाम घोडो के समान हो
गए, वे अपने अपने पडोसी की स्त्री पर
हिनहिनाने लगे। ९ क्या मै ऐसे कामो
का उन्हे दण्ड न दू? यहोवा की यह
वाणी है, क्या मै ऐसी जाति से अपना
पलटा न लू?

१० शहरपनाह पर चढके उसका
नाश तो करो, तौभी उसका अन्त मत
कर डालो, उसकी जड रहने दो परन्तु
उसकी डालियो को तोडकर फेक दो,
क्योकि वे यहोवा की नही है। ११ यहोवा
की यह वाणी है कि इस्राएल और यहूदा
के घरानो ने मुझ से बडा विश्वासघात
किया है। १२ उन्हो ने यहोवा की बाते
झुठलाकर कहा, वह ऐसा नही है, विपत्ति
हम पर न पडेगी, न हम तलवार को
और न महगी को देखेगे। १३ भविष्यद्वक्ता
हवा हो जाएगे, उन मे ईश्वर का वचन
नही है। उनके साथ ऐसा ही किया
जाएगा।

१४ इस कारण सेनाओ का परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, ये लोग जो ऐसा कहते
है, इसलिये देख, मै अपना वचन तेरे मुह
मे आग, और इस प्रजा को काठ बनाऊगा,
और वह उनको भस्म करेगी। १५ यहोवा
की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने,
देख, मै तुम्हारे विरुद्ध दूर से ऐसी जाति
को चढा लाऊगा जो सामर्थी और प्राचीन
है, उसकी भाषा तुम न समझोगे, और
न यह जानोगे कि वे लोग क्या कह रहे
है। १६ उनका तर्कश खुली कब्र है
और वे सब के सब शूरवीर है।
१७ तुम्हारे पक्के खेत और भोजनवस्तुए
जो तुम्हारे बेटे-बेटियो के खाने के लिये
है, उन्हे वे खा जाएगे। वे तुम्हारी भेड-
बकरियो और गाय-बैलो को खा डालेगे,
वे तुम्हारी दाखो और अजीरो को खा
जाएगे, और जिन गढवाले नगरो पर
तुम भरोसा रखते हो उन्हे वे तलवार के
बल से नाश कर देगे॥

१८ तौभी, यहोवा की यह वाणी है,
उन दिनो मे भी मै तुम्हारा अन्त न कर
डालूगा। १९ और जब तुम पूछोगे कि
हमारे परमेश्वर यहोवा ने हम से ये सब
काम किस लिये किए है, तब तुम उन से
कहना, जिस प्रकार से तुम ने मुझ को
त्यागकर अपने देश म दूसरे देवताओ की
सेवा की है, उसी प्रकार से तुम को पराये
देश मे परदेशियो की सेवा करनी पडेगी॥

२० याकूब के घराने मे यह प्रचार
करो, और यहूदा मे यह सुनाओ २१ हे
मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो, तुम जो आखे
रहते हुए नही देखते, जो कान रहते हुए
नही सुनते, यह सुनो। २२ यहोवा की
यह वाणी है, क्या तुम लोग मेरा भय नही
मानते? क्या तुम मेरे सम्मुख नही
थरथराते? मै ने बालू को समुद्र का
सिवाना ठहराकर युग युग का ऐसा बान्ध
ठहराया कि वह उसे लाघ न सके, और
चाहे उसकी लहरे भी उठे, तौभी वे प्रबल
न हो सके, या जब वे गरजे तौभी उसको
न लाघ सके। २३ पर इस प्रजा का
हठीला और बलवा करनेवाला मन है,
इन्हो ने बलवा किया और दूर हो गए
है। २४ वे मन मे इतना भी नही सोचते
कि हमारा परमेश्वर यहोवा तो बरसात
के आरम्भ और अन्त दोनो समयो का
जल समय पर बरसाता है, और कटनी
के नियत सप्ताहो को हमारे लिये रखता
है, इसलिये हम उसका भय माने।
२५ परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामो ही के

कारण वे रुक गए, और तुम्हारे पापों ही
के कारण तुम्हारी भलाई नहीं होती *।
२६ मेरी प्रजा में दुष्ट लोग पाए जाते
हैं, जैसे चिड़ीमार ताक में रहते हैं, वैसे
ही वे भी घात लगाए रहते हैं। वे फन्दा
लगाकर मनुष्यों को अपने वश में कर
लेते हैं। २७ जैसा पिजड़ा चिड़ियों से
भरा हो, वैसे ही उनके घर छल से भरे
रहते हैं, इसी प्रकार वे बढ़ गए और
धनी हो गए हैं। २८ वे मोटे और
चिकने हो गए हैं। बुरे कामों में वे सीमा
को लांघ गए हैं, वे न्याय, विशेष करके
अनाथों का न्याय नहीं चुकाते, इस से
उनका काम सफल नहीं होता वे कंगालों
का हक भी नहीं दिलाते। २९ इसलिये,
यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं इन
बातों का दण्ड न दूं? क्या मैं ऐसी
जाति से पलटा न लूं?

३० देश में ऐसा काम होता है जिस
से चकित और रोमांचित होना चाहिये।
३१ भविष्यद्वक्ता झूठमूठ भविष्यद्वाणी
करते हैं, और याजक उनके सहारे से
प्रभुता करते हैं, मेरी प्रजा को यह भाता
भी है, परन्तु अन्त के समय तुम क्या
करोगे?

६ हे बिन्यामीनियो, यरूशलेम में से
अपना अपना सामान लेकर भागो!
तकोआ में नरसिंगा फूंको, और बेथक्केरेम
पर झण्डा ऊंचा करो, क्योंकि उत्तर
की दिशा से आनेवाली विपत्ति बड़ी और
विनाश लानेवाली है। २ सिय्योन की
सुन्दर और सुकुमार बेटी को मैं नाश
करने पर हूं। ३ चरवाहे अपनी अपनी
भेड़-बकरियां संग लिए हुए उस पर चढ़कर
उसके चारों ओर अपने तम्बू खड़े करेंगे,
वे अपने अपने पास की घास चरा लेंगे।
४ आओ, उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी
करो, उठो, हम दो पहर को चढ़ाई करें!
हाय, हाय, दिन ढलता जाता है, और
सांझ की परछाईं लम्बी हो चली है!
५ उठो, हम रात ही रात चढ़ाई करें और
उसके महलों को ढा दें॥

६ सेनाओं का यहोवा तुम से कहता
है, वृक्ष काट काटकर यरूशलेम के विरुद्ध
दमदमा बान्धो! यह वही नगर है जो
दण्ड के योग्य है, इस में अन्धेर ही
अन्धेर भरा हुआ है। ७ जैसा कूए में से
नित्य नया जल निकला करता है, वैसा
ही इस नगर में से नित्य नई बुराई निकलती
है, इस में उत्पात और उपद्रव का कोलाहल
मचा रहता है, चोट और मारपीट मेरे
देखने में निरन्तर आती हैं। ८ हे
यरूशलेम, ताड़ना से ही मान ले, नहीं तो
तू मेरे मन से भी उतर जाएगी, और,
मैं तुझ को उजाड़कर निर्जन कर डालूंगा॥

९ सेनाओं का यहोवा यों कहता है,
इस्राएल के सब बचे हुए दाखलता की
नाईं ढूंढ़कर तोड़े जाएंगे, दाख के तोड़ने-
वाले की नाईं उस लता की डालियों पर
फिर अपना हाथ लगा॥

१० मैं किस से बोलूं और किसको
चिताकर कहूं कि वे मानें? देख, ये
ऊंचा सुनते हैं*, वे ध्यान भी नहीं दे
सकते, देख, यहोवा के वचन की वे
निन्दा करते और उसे नहीं चाहते हैं।
११ इस कारण यहोवा का कोप मेरे
मन में भर गया है, मैं उसे रोकते रोकते

* मूल में—तुम्हारे अधर्मों ने इन्हें मोड़ा और तुम्हारे पापों ने भलाई तुम से रोकी।

* मूल में—उनका कान खतनारहित

पुकार न मुझ से बिनती कर, क्योकि
मै तेरी नही सुनूगा। १७ क्या तू नही
देखता कि ये लोग यहूदा के नगरो और
यरूशलेम की सडको मे क्या कर रहे है?
१८ देख, लडके वाले तो ईधन बटोरते,
वाप आग सुलगाते और स्त्रिया आटा
गूधती है, कि स्वर्ग की रानी के लिये
रोटिया चढाए, और मुझे क्रोधित करने
के लिये दूसरे देवताओ के लिये तपावन
दे। १९ यहोवा की यह वाणी है, क्या
वे मुझी को क्रोध दिलाते है? क्या वे
अपने ही को नही जिस से उनके मुह पर
सियाही छाए? २० सो प्रभु यहोवा ने
यो कहा है, क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या
मैदान के वृक्ष, क्या भूमि की उपज, उन
सब पर जो इस स्थान मे है, मेरे कोप की
आग भडकने पर है, वह नित्य जलती
रहेगी और कभी न बुझेगी॥

२१ सेनाओ का यहोवा जो इस्राएल
का परमेश्वर है, यो कहता है, अपने
मेलबलियो के साथ अपने होमबलि भी
बढाओ और मास खाओ। २२ क्योकि
जिस समय मै ने तुम्हारे पूर्वजो को मिस्र
देश मे से निकाला, उस समय मै ने उन्हे
होमबलि और मेलबलि के विषय कुछ
आज्ञा न दी थी। २३ परन्तु मै ने तो
उनको यह आज्ञा दी कि मेरे वचन को
मानो, तब मै तुम्हारा परमेश्वर हूगा, और
तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और जिस मार्ग
की मै तुम्हे आज्ञा दू उसी मे चलो, तब
तुम्हारा भला होगा। २४ पर उन्हो ने
मेरी न सुनी और न मेरी बातो पर कान
लगाया, वे अपनी ही युक्तियो और अपने
बुरे मन के हठ पर चलते रहे और पीछे
हट गए पर आगे न बढे। २५ जिस दिन
तुम्हारे पुरखा मिस्र देश से निकले, उस
दिन से आज तक मै तो अपने सारे दासो,
भविष्यद्वक्ताओ को, तुम्हारे पास बडे यत्न
से लगातार भेजता रहा, २६ परन्तु
उन्हो ने मेरी नही सुनी, न अपना कान
लगाया, उन्हो ने हठ किया, और अपने
पुरखाओ से बढकर बुराइया की है॥

२७ तू सब बातें उन से कहेगा पर
वे तेरी न सुनेगे; तू उनको बुलाएगा,
पर वे न बोलेगे। २८ तब तू उन से
कह देना, यह वही जाति है जो अपने
परमेश्वर यहोवा की नही सुनती और
ताडना से भी नही मानती सच्चाई
नाश हो गई, और उनके मुह से दूर हो
गई है॥

२९ अपने बाल मुडाकर फेक दे,
मुण्डे टीलो पर चढकर विलाप का गीत
गा, क्योकि यहोवा ने इस समय के
निवासियो पर क्रोध किया और उन्हे*
निकम्मा जानकर त्याग दिया है।
३० यहोवा की यह वाणी है, इसका
कारण यह है कि यहूदियो ने वह काम
किया है, जो मेरी दृष्टि मे बुरा है, उन्हो
ने उस भवन मे जो मेरा कहलाता है,
अपनी घृणित वस्तुए रखकर उसे अशुद्ध
कर दिया है। ३१ और उन्हो ने हिन्नोम-
वशियो की तराई मे तोपेत नाम ऊचे
स्थान बनाकर, अपने बेटे-बेटियो को आग
मे जलाया है, जिसकी आज्ञा मै ने कभी
नही दी और न मेरे मन मे वह कभी
आया। ३२ यहोवा की यह वाणी है,
इसलिये ऐसे दिन आते है कि वह तराई
फिर न तो तोपेत की और न हिन्नोमवशियो
की कहलाएगी, वरन घात की तराई
कहलाएगी, और तोपेत मे इतनी कब्रे

* मूल में—यहोवा ने अपनी जलजलाहट की पीडा को।

होगी कि और स्थान न रहेगा।
३३ इसलिये इन लोगो की लोथें आकाश
के पक्षियो और पृथ्वी के पशुओ का आहार
होगी, और उनको भगानेवाला कोई न
रहेगा। ३४ उस समय मै ऐसा करूंगा कि
यहूदा के नगरो और यरूशलेम की सडको
में न तो हर्ष और आनन्द का शब्द सुन
पडेगा, और न दुल्हे वा दुल्हिन का,
क्योकि देश उजाड ही उजाड हो जाएगा॥

८ यहोवा की यह वाणी है, उस
समय यहूदा के राजाओ, हाकिमो,
याजको, भविष्यद्वक्ताओ और यरूशलेम के
रहनेवालो की हड्डिया कब्रो में से निकाल-
कर, २ सूर्य, चन्द्रमा और आकाश के
सारे गणो के साम्हने फैलाई जाएगी,
क्योकि वे उन्ही से प्रेम रखते, उन्ही की
सेवा करते, उन्ही के पीछे चलते, और
उन्ही के पास जाया करते और उन्ही को
दण्डवत् करते थे, और न वे इकट्ठी की
जाएगी न कब्र में रखी जाएगी, वे भूमि
के ऊपर खाद के समान पडी रहेगी।
३ तब इस बुरे कुल के बचे हुए लोग उन
सब स्थानो में जिस में मै ने उन्हे निकाल
दिया है, जीवन से मृत्यु ही को अधिक
चाहेंगे, सेनाओ के यहोवा की यही वाणी
है॥

४ तू उन से यह भी कह, यहोवा यो
कहता है कि जब मनुष्य गिरते हैं तो
क्या फिर नही उठते? ५ जब कोई भटक
जाता है तो क्या वह लौट नही आता?
फिर क्या कारण है कि ये यरूशलेमी सदा
दूर ही दूर भटकते जाते है? ये छल
नही छोडते, और फिर लौटने से इनकार
करते है। ६ मै ने ध्यान देकर सुना
परन्तु ये ठीक नही बोलते, इन में से
किसी ने अपनी बुराई से पछताकर नही
कहा, हाय! मै ने यह क्या किया है?
जैसा घोडा लडाई में वेग से दौडता है,
वैसे ही इन में से हर एक जन अपनी ही
दौड में दौडता है। ७ आकाश में लगलग
भी अपने नियत समयो को जानता है,
और पण्डुकी, सूपावेनी, और सारस भी
अपने आने का समय रखते है, परन्तु
मेरी प्रजा यहोवा का नियम नही जानती॥

८ तुम क्योकर कह सकते हो कि
हम बुद्धिमान है, और यहोवा की दी हुई
व्यवस्था हमारे साथ है? परन्तु उनके
शास्त्रियो ने उसका झूठा विवरण लिखकर
उसको* झूठ बना दिया है। ९ बुद्धिमान
लज्जित हो गए, वे विस्मित हुए और
पकडे गए, देखो, उन्हो ने यहोवा के
वचन को निकम्मा जाना है, उन मे बुद्धि
कहा रही? १० इस कारण मै उनकी
स्त्रियो को दूसरे पुरुषो को और उनके
खेत दूसरे अधिकारियो के वश में कर
दूगा, क्योकि छोटे से लेकर बडे तक वे
सब के सब लालची है, क्या भविष्यद्वक्ता
क्या याजक, वे सब के छल से काम करते
है। ११ उन्हो ने, 'शान्ति है, शान्ति'
ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा† के घाव को
ऊपर ही ऊपर चगा किया, परन्तु शान्ति
कुछ भी नही है। १२ क्या वे घृणित
काम करके लज्जित हुए? नही, वे कुछ
भी लज्जित नही हुए, वे लज्जित होना
जानते ही नही। इस कारण जब और
लोग नीचे गिरे, तब वे भी गिरेंगे, जब
उनके दण्ड का समय आएगा, तब वे
भी ठोकर खाकर गिरेंगे, यहोवा का यही

* मूल में—शास्त्रियों के झूठे कलम ने उसको।

† मूल में—प्रजा की बेटी।

वचन है। १३ यहोवा की यह भी वाणी
है, मै उन सभो का अन्त कर दूगा।
न तो उनकी दाखलताओ में दाख पाई
जाएंगी, और न अंजीर के वृक्ष में अजीर
वरन उनके पत्ते भी सूख जाएगे, और
जो कुछ मै ने उन्हें दिया है वह उनके
पास से जाता रहेगा॥

१४ हम क्यो चुप-चाप बैठे है?
आओ, हम चलकर गढवाले नगरो में
इकट्ठे नाश हो जाए, क्योंकि हमारा
परमेश्वर यहोवा हम को नाश करना
चाहता है, और हमे विष पीने को दिया है;
क्योंकि हम ने यहोवा के विरुद्ध पाप
किया है। १५ हम शान्ति की बाट
जोहते थे, परन्तु कुछ कल्याण नही मिला,
और चंगाई की आशा करते थे, परन्तु
घबराना ही पडा है॥

१६ उनके घोडों का फुर्राना दान से
सुन पडता है, और बलवन्त घोडों के
हिनहिनाने के शब्द से सारा देश काप
उठा है। उन्हों ने आकर हमारे देश को
और जो कुछ उस में है, और हमारे नगर
को निवासियों समेत नाश किया है।
१७ क्योंकि देखो, मै तुम्हारे बीच में
ऐसे सांप और नाग भेजूंगा जिन पर मंत्र
न चलेगा, और वे तुम को डसेंगे, यहोवा
की यही वाणी है॥

१८ हाय! हाय! इस शोक की
दशा में मुझे शान्ति कहां से मिलेगी?
मेरा हृदय भीतर ही भीतर तडपता है!
१९ मुझे अपने लोगों* की चिल्लाहट
दूर के देश से सुनाई देती है: क्या यहोवा
सिय्योन में नही है? क्या उसका राजा
उस में नही? उन्हो ने क्यो मुझ को
अपनी खोदी हुई मूरतो और परदेश की
व्यर्थ वस्तुओ के द्वारा क्यो क्रोध दिलाया
है? २० कटनी का समय बीत गया,
फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गई,
और हमारा उद्धार नही हुआ। २१ अपने
लोगो के* दुःख से मै भी दुःखित हुआ,
मैं शोक का पहिरावा पहिने अति अचम्भे
में डूबा हू॥

२२ क्या गिलाद देश मे कुछ बलसान
की औषधि नही? क्या उस मे कोई
वैद्य नही? यदि है, तो मेरे लोगो† के
घाव क्यो चगे नही हुए?

९ भला होता, कि मेरा सिर जल
ही जल, और मेरी आखे आशुओ
का सोता होती, कि मै रात दिन अपने
मारे हुए लोगो‡ के लिये रोता रहता।
२ भला होता कि मुझे जगल मे बटोहियो
का कोई टिकाव मिलता कि मै अपने लोगो
को छोड़कर वही चला जाता! क्योंकि
वे सब व्यभिचारी है, वे विश्वासघातियो
का समाज है। ३ अपनी अपनी जीभ
को वे धनुष की नाई झूठ बोलने के लिये
तैयार करते है, और देश में बलवन्त तो
हो गए, परन्तु सच्चाई के लिये नही;
वे बुराई पर बुराई बढाते जाते है, और वे
मुझ को जानते ही नही, यहोवा की यही
वाणी है॥

४ अपने अपने सगी से चौकस रहो,
अपने भाई पर भी भरोसा न रखो,
क्योंकि सब भाई निश्चय अडगा मारेगे,
और हर एक पडोसी लुतराई करते फिरेगे।

* मूल में—अपने लोगों की बेटी।

* मूल में—अपने लोगों की बेटी के।
† मूल में—मेरे लोगों की बेटी के।
‡ मूल में—मेरे लोगों की बेटी के मारे हुओं के।

५ वे एक दूसरे को ठगेंगे और मच नही
बोलेंगे, उन्हो ने झूठ ही बोलना सीखा
है *, और कुटिलता ही में परिश्रम करते
है। ६ तेरा निवास छल के बीच है,
छल ही के कारण वे मेरा ज्ञान नही
चाहते, यहोवा की यही वाणी है ॥

७ इसलिये सेनाओ का यहोवा यो
कहता है, देख, मै उनको तपाकर परखूगा,
क्योकि अपनी प्रजा † के कारण मै उन
से और क्या कर सकता हू ? ८ उनकी
जीभ काल के तीर के समान वेधनेवाली
है, उस से छल की बातें निकलती है,
वे मुह से तो एक दूसरे से मेल की बात
बोलते है पर मन ही मन एक दूसरे की
घात में लगे रहते है। ९ क्या म ऐसी
बातो का दण्ड न दू ? यहोवा की यह
वाणी है, क्या मै ऐसी जाति से अपना
पलटा न लू ?

१० मै पहाडो के लिये रो उठूगा और
शोक का गीत गाऊगा, और जगल की
चराइयो के लिये विलाप का गीत गाऊगा,
क्योकि वे ऐसे जल गए है कि कोई उन
में से होकर नही चलता, और उन में
ढोर का शब्द भी नही सुनाई पडता,
पशु-पक्षी सब भाग गए है। ११ मै
यरूशलेम को डीह ही डीह करके गीदडो
का स्थान बनाऊगा, और यहूदा के नगरो
को ऐसा उजाड दूगा कि उन में कोई न
बसेगा ॥

१२ जो बुद्धिमान पुरुष हो वह इसका
भेद समझ ले, और जिस ने यहोवा के
मुख से इसका कारण सुना हो वह बता
दे। देश का नाश क्यो हुआ ? क्यो वह

* मूल में—उन्होंने अपनी जीभ को झूठ
बोलना सिखाया है।
† मूल में—प्रजा की बेटी।

जगल की नाई ऐसा जल गया कि उस
में से होकर कोई नही चलता ? १३ और
यहोवा ने कहा, क्योकि उन्हो ने मेरी
व्यवस्था को जो मैं ने उनके आगे रखी
थी छोड दिया, और न मेरी बात मानी
और न उसके अनुसार चले है, १४ वरन
वे अपने हठ पर बाल नाम देवताओं के
पीछे चले, जैसा उनके पुरखाओं ने उनको
सिखलाया। १५ इस कारण, सेनाओ का
यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यो कहता
है, सुन, मैं अपनी इस प्रजा को कडवी
वस्तु खिलाऊगा और विष पिलाऊगा।
१६ और मै उन लोगो को ऐसी जातियो
में तितर बितर करूगा जिन्हे न तो वे
न उनके पुरखा जानते थे, और जब तक
उनका अन्त न हो जाए तब तक मेरी
ओर से तलवार उनके पीछे पडेगी ॥

१७ सेनाओ का यहोवा यो कहता है,
सोचो, और विलाप करनेवालियो को
बुलाओ, बुद्धिमान स्त्रियो को बुलवा
भेजो, १८ वे फुर्ती करके हम लोगो के
लिये शोक का गीत गाए कि हमारी
आखो से आसू बह चलें और हमारी
पलकें जल बहाए। १९ सिय्योन से शोक
का यह गीत सुन पडता है, हम कैसे नाश
हो गए ! हम क्यो लज्जा में पड गए
है, क्योकि हम को अपना देश छोडना
पडा और हमारे घर गिरा दिए गए है ॥

२० इसलिये, हे स्त्रियो, यहोवा का
यह वचन सुनो, और उसकी यह आज्ञा
मानो, तुम अपनी अपनी बेटियों को
शोक का गीत, और अपनी अपनी पडो-
सिना को विलाप का गीत सिखाओ।
२१ क्योंकि मृत्यु हमारी खिडकियो से
होकर हमारे महलो में घुस आई है, कि,
हमारी सडको में बच्चो को और चौको

में जवानो को मिटा दे। २२ तू कह,
यहोवा यो कहता है, मनुष्यो की लोथें
ऐसी पडी रहेगी जैसा खाद खेत के ऊपर,
और पूलिया काटनेवाले के पीछे पडी
रहती है, और उनका कोई उठानेवाला
न होगा ।।

२३ यहोवा यो कहता है, बुद्धिमान
अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर
अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर
घमण्ड करे, २४ परन्तु जो घमण्ड करे
वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह
मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही
वह यहोवा हू, जो पृथ्वी पर करुणा,
न्याय और धर्म के काम करता है, क्योकि
मैं इन्ही बातो से प्रसन्न रहता हू ।।

२५ देखो, यहोवा की यह वाणी है कि
ऐसे दिन आनेवाले है कि जिनका खतना
हुआ हो, उनको खतनारहितो के समान
दण्ड दूगा, २६ अर्थात् मिस्रियो,
यहूदियो, एदोमियो, अम्मोनियो, मोआबियो
को, और उन रेगिस्तान के निवासियो के
समान जो अपने गाल के बालो को मुडा
डालते है, क्योकि ये सब जातिये तो
खतनारहित है, और इस्राएल का सारा
घराना भी मन मे खतनारहित है ।।

१० यहोवा यो कहता है, हे इस्राएल
के घराने जो वचन यहोवा तुम
से कहता है उसे सुनो। २ अन्यजातियो
की चाल मत सीखो, न उनकी नाईं
आकाश के चिन्हो से विस्मित हो, इसलिये
कि अन्यजाति लोग उन से विस्मित होते
है। ३ क्योकि देशो के लोगो की रीतिया
तो निकम्मी है। मूरत तो वन मे से
किसी का काटा हुआ काठ है जिसे कारीगर
ने बसूले से बनाया है। ४ लोग उसको
सोने-चान्दी से सजाते और हथौडे से
कील ठोक ठोककर दृढ करते है कि वह
हिल-डुल न सके। ५ वे खरादकर ताड
के पेड के समान गोल बनाई जाती है,
पर बोल नही सकती, उन्हे उठाए फिरना
पडता है, क्योकि वे चल नही सकती।
उन से मत डरो, क्योकि, न तो वे कुछ
बुरा कर सकती है और न कुछ भला ।।

६ हे यहोवा, तेरे समान कोई नही है;
तू महान है, और तेरा नाम पराक्रम में
बडा है। ७ हे सब जातियो के राजा,
तुझ से कौन न डरेगा? क्योकि यह
तेरे योग्य है, अन्यजातियो के सारे
बुद्धिमानो में, और उनके सारे राज्यो मे
तेरे समान कोई नही है। ८ परन्तु वे
पशु सरीखे निरे मूर्ख है, मूर्त्तियो से
क्या शिक्षा? वे तो काठ ही है। ९ पत्तर
बनाई हुई चान्दी तर्शीश से लाई जाती
है, और उफाज़ से सोना। वे कारीगर
और सुनार के हाथो की कारीगरी है,
उनके पहिरावे नीले और बैजनी रग के
वस्त्र है, उन मे जो कुछ है वह निपुण
कारीगरो की कारीगरी ही है। १० परन्तु
यहोवा वास्तव मे परमेश्वर है, जीवित
परमेश्वर और सदा का राजा वही है।
उसके प्रकोप से पृथ्वी कापती है, और
जाति जाति के लोग उसके क्रोध को सह
नही सकते ।।

११ तुम उन से यह कहना, ये देवता
जिन्हो ने आकाश और पृथ्वी को नही
बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और आकाश
के नीचे से नष्ट हो जाएगे ।।

१२ उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ
से बनाया, उस ने जगत को अपनी बुद्धि
से स्थिर किया, और आकाश को अपनी
प्रवीणता से तान दिया है। १३ जब वह

बोलता है तब आकाश में जल का बडा
शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से
वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के
लिये बिजली चमकाता, और अपने भण्डार
में से पवन चलाता है। १४ सब मनुष्य
पशु सरीखे ज्ञानरहित है, अपनी खोदी
हुई मूरतो के कारण सब सुनारो की
आशा टूटती है, क्योकि उनकी ढाली हुई
मूरतें झूठी है, और उन मे सास ही नही
है। १५ वे व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य
है, जब उनके दण्ड का समय आएगा*
तब वे नाश हो जाएगी। १६ परन्तु
याकूब का निज भाग उनके समान नही
है, क्योकि वह तो सब का सृजनहार
है, और इस्राएल उसके निज भाग का
गोत्र है, सेनाओं का यहोवा उसका नाम
है ॥

१७ हे घेरे हुए नगर की रहनेवाली,
अपनी गठरी भूमि पर से उठा।
१८ क्योकि यहोवा यो कहता है, मै
अब की बेर इस देश के रहनेवालो को
मानो गोफन मे धरके फेंक दूगा, और
उन्हें ऐसे ऐसे सकट में डालूगा कि उनकी
समझ में भी नही आएगा ॥

१९ मुझ पर हाय! मेरा घाव चगा
होने का नही। फिर मैं ने सोचा, यह तो
रोग ही है, इसलिये मुझ को इसे सहना
चाहिये। २० मेरा तम्बू लूटा गया, और
सब रस्सिया टूट गई हैं, मेरे लडकेवाले
मेरे पास से चले गए, और नही है,
अब कोई नही रहा जो मेरे तम्बू को ताने
और मेरी कनातें खडी करे। २१ क्योकि
चरवाहे पशु सरीखे हैं, और वे यहोवा
को नही पुकारते, इसी कारण वे बुद्धि
से नही चलते, और उनकी सब भेडें
तितर-बितर हो गई है ॥

२२ सुन, एक शब्द सुनाई देता है!
देख, वह आ रहा है! उत्तर दिशा से
बडा हुल्लड मच रहा है ताकि यहूदा के
नगरो को उजाडकर गीदडो का स्थान
बना दे ॥

२३ हे यहोवा, मै जान गया हू, कि
मनुष्य का मार्ग उसके वश मे नही है,
मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग
उसके अधीन नही है। २४ हे यहोवा,
मेरी ताडना कर, पर न्याय से, क्रोध में
आकर नही, कही ऐसा न हो कि मै नाश
हो जाऊ* ॥

२५ जो जाति तुझे नही जानती, और
जो तुझ से प्रार्थना नही करते, उन्ही पर
अपनी जलजलाहट उण्डेल, क्योकि उन्हो
ने याकूब को निगल लिया, वरन, उसे
खाकर अन्त कर दिया है, और उसके
निवासस्थान को उजाड दिया है ॥

११ यहोवा का यह वचन यिर्मयाह
के पास पहुचा २ इस वाचा
के वचन सुनो, और यहूदा के पुरुषो और
यरूशलेम के रहनेवालो से कहो। ३ उन
से कहो, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
यो कहता है, स्रापित है वह मनुष्य, जो
इस वाचा के वचन न माने ४ जिसे
मैं ने तुम्हारे पुरखाओ के साथ लोहे की
भट्ठी अर्थात् मिस्र देश में से निकालने
के समय, यह कहके बान्धी थी, मेरी सुनो,
और जितनी आज्ञाए मैं तुम्हें देता हू उन
सभो का पालन करो। इस से तुम मेरी
प्रजा ठहरोगे, और मै तुम्हारा परमेश्वर
ठहरूगा, ५ और जो शपथ मै ने तुम्हारे

* मूल में—उनके दण्ड होने के समय।

* मूल में—तू मुझे घटाएगा।

पितरो से खाई थी कि जिस देश मे दूध
और मधु की धाराए वहती है, उसे मै
तुम को दूगा, उसे पूरी करूगा; और
देखो, वह पूरी हुई है। यह सुनकर मै ने
कहा, हे यहोवा, ऐसा ही हो * ॥

६ तब यहोवा ने मुझ से कहा, ये सब
वचन यहूदा के नगरों और यरूशलेम
की सड़को मे प्रचार करके कह, इस वाचा
के वचन सुनो और उसके अनुसार चलो।
७ क्योंकि जिस समय से मै तुम्हारे पुरखाओं
को मिस्र देश से छुडा ले आया तब से
आज के दिन तक उनको दृढता से चिताता
आया हू, मेरी बात सुनो। ८ परन्तु
उन्हो ने न सुनी और न मेरी बातो पर
कान लगाया, किन्तु अपने अपने बुरे मन
के हठ पर चलते रहे। इसलिये मै ने
उनके विषय इस वाचा की सब बातो को
पूर्ण किया है जिसके मानने की मै ने
उन्हें आज्ञा दी थी और उन्हो ने न
मानी ॥

९ फिर यहोवा ने मुझ से कहा,
यहूदियो और यरूशलेम के निवासियो में
विद्रोह पाया गया है। १० जैसे इनके
पुरखा मेरे वचन सुनने से इनकार करते
थे, वैसे ही ये भी उनके अधर्मो का अनुसरण
करके दूसरे देवताओ के पीछे चलते और
उनकी उपासना करते है, इस्राएल और
यहूदा के घरानो ने उस वाचा को जो
मै ने उनके पूर्वजो के बान्धी थी, तोड
दिया है। ११ इसलिये यहोवा यो कहता
है, देख, मै इन पर ऐसी विपत्ति डालने
पर हू जिस से ये बच न सकेंगे, और
चाहे ये मेरी दोहाई दे तौभी मै इनकी
न सुनूगा। १२ उस समय यरूशलेम और
यहूदा के नगरो के निवासी उन देवताओ
की दोहाई देगे जिनके लिये वे धूप जलाते
है, परन्तु वे उनकी विपत्ति के समय
उनको कभी न बचा सकेंगे। १३ हे
यहूदा, जितने तेरे नगर है उतने ही तेरे
देवता भी है; और यरूशलेम के निवासियो
ने हर एक सड़क में उस लज्जापूर्ण बाल
की वेदिया बना बनाकर उसके लिये
धूप जलाया है। १४ इसलिये तू मेरी
इस प्रजा के लिये प्रार्थना न करना, न
कोई इन लोगो के लिये ऊचे स्वर से
विनती करे, क्योकि जिस समय ये अपनी
विपत्ति के मारे मेरी दोहाई देंगे, तब
मै उनकी न सुनूगा ॥

१५ मेरी प्रिया को मेरे घर मे क्या
काम है? उस ने तो बहुतो के साथ
कुकर्म किया, और तेरी पवित्रता पूरी
रीति से जाती रही है*। जब तू बुराई
करती है, तब प्रसन्न होती है। १६ यहोवा
ने तुझ को हरी, मनोहर, सुन्दर फलवाली
जलपाई तो कहा था, परन्तु उस ने बड़े
हुल्लड के शब्द होते ही उस मे आग
लगाई गई, और उसकी डालिया तोड़
डाली गईं। १७ सेनाओ का यहोवा,
जिस ने तुझे लगाया, उस ने तुझ पर
विपत्ति डालने के लिये कहा है†, इसका
कारण इस्राएल और यहूदा के घरानो
की यह बुराई है कि उन्हो ने मुझे रिस
दिलाने के लिये बाल के निमित्त धूप
जलाया ॥

१८ यहोवा ने मुझे बताया और यह
बात मुझे मालूम हो गई, क्योकि यहोवा
ही ने उनकी युक्तिया मुझ पर प्रगट की।

* मूल में—हे यहोवा, आमीन।

* मूल में—पवित्र मास तुझ पर से चला गया।

† मूल में—उस ने तेरे विषय बुराई कही।

१९ मैं तो वध होनेवाले * भेड़ के बच्चे
के समान अनजान था। मैं न जानता
था कि वे लोग मेरी हानि की युक्तियां
यह कहकर करते हैं, आओ, हम फल †
समेत इस वृक्ष को उखाड़ दें, और जीवितों
के बीच में से काट डालें, तब इसका नाम
तक फिर स्मरण न रहे। २० परन्तु,
अब हे सेनाओं के यहोवा, हे धर्मी न्यायी,
हे अन्तःकरण की बातों के ज्ञाता, तू
उनका पलटा ले और मुझे दिखा, क्योंकि
मैं ने अपना मुकद्दमा तेरे हाथ में छोड़
दिया है ‡। २१ इसलिये यहोवा ने मुझ
से कहा, अनातोत के लोग जो तेरे प्राण
के खोजी हैं और यह कहते हैं कि तू
यहोवा का नाम लेकर भविष्यद्वाणी न कर,
नहीं तो हमारे हाथों से मरेगा। २२ इस-
लिये सेनाओं का यहोवा उनके विषय
यों कहता है, मैं उनको दण्ड दूंगा,
उनके जवान तलवार से, और उनके
लड़के-लड़कियां भूखों मरेंगे, २३ और
उन में से कोई भी न बचेगा। मैं अनातोत
के लोगों पर यह विपत्ति डालूंगा, उनके
दण्ड का दिन § आनेवाला है॥

१२ हे यहोवा, यदि मैं तुझ से
मुकद्दमा लड़ूं, तौभी तू धर्मी है,
मुझे अपने साथ इस विषय पर वादविवाद
करने दे। दुष्टों की चाल क्यों सफल
होती है? क्या कारण है कि विश्वासघाती
बहुत सुख से रहते हैं? २ तू उनको
बोता और वे जड़ भी पकड़ते, वे बढ़ते
और फलते भी हैं, तू उनके मुंह के निकट
है परन्तु उनके मनों से दूर है। ३ हे
यहोवा तू मुझे जानता है, तू मुझे देखता
है, और तू ने मेरे मन की परीक्षा करके
देखा कि मैं तेरी ओर किस प्रकार रहता
हूं। जैसे भेड़-बकरियां घात होने के लिये
झुण्ड में से निकाली जाती हैं, वैसे ही
उनको भी निकाल ले और वध के दिन
के लिये तैयार * कर। ४ कब तक देश
विलाप करता रहेगा, और सारे मैदान
की घास सूखी रहेगी? देश के निवासियों
की बुराई के कारण पशु-पक्षी सब नाश
हो गए हैं, क्योंकि उन लोगों ने कहा,
वह हमारे अन्त को न देखेगा॥

५ तू जो प्यादों ही के संग दौड़कर
थक गया है तो घोड़ों के संग क्योंकर
बराबरी कर सकेगा? और यद्यपि तू
शान्ति के इस देश में निडर है, परन्तु
यरदन के आसपास के घने जंगल में †
तू क्या करेगा? ६ क्योंकि तेरे भाई
और तेरे घराने के लोगों ने भी तेरा
विश्वासघात किया है, वे तेरे पीछे
ललकारते हैं, यदि वे तुझ से मीठी बातें
भी कहें, तौभी उनकी प्रतीति न करना॥
७ मैं ने अपना घर छोड़ दिया, अपना
निज भाग मैं ने त्याग दिया है, मैं ने
अपनी प्राणप्रिया को शत्रुओं के वश में
कर दिया है। ८ क्योंकि मेरा निज भाग
मेरे देखने में वन के सिंह के समान हो
गया और मेरे विरुद्ध गरजा है, इस कारण
मैं ने उस से बैर किया है। ९ क्या
मेरा निज भाग मेरी दृष्टि में चित्तीवाले
शिकारी पक्षी के समान नहीं है? क्या
शिकारी पक्षी चारों ओर से उसे घेरे
हुए हैं? जाओ सब जंगली पशुओं को

* मूल में—वध के लिये पहुंचाए जानेवाले।
† मूल में—भोजनवस्तु।
‡ मूल में—तुझी को प्रगट किया है।
§ मूल में—बरस।

* मूल में—पवित्र।
† मूल में—यरदन की बाढ़ में।

कट्ठा करो; उनको लाम्रो कि खा जाए।
१० बहुत से चरवाहो ने मेरी दाख की
बारी को बिगाड कर दिया, उन्हो ने
मेरे भाग को लताडा, वरन मेरे मनोहर
भाग के खेत को सुनसान जगल बना
दिया है। ११ उन्हो ने उसको उजाड
दिया, वह उजडकर मेरे साम्हने विलाप
कर रहा है। सारा देश उजड गया है,
तौभी कोई नही सोचता। १२ जगल के
सब मुडे टीलो पर नाशक चढ आए है,
क्योकि यहोवा की तलवार देश के एक छोर
से लेकर दूसरी छोर तक निगलती जाती
है, किसी मनुष्य को शान्ति नही मिलती।
१३ उन्हो ने गेहू तो बोया, परन्तु कटीले
पेड काटे, उन्हो ने कष्ट तो उठाया, परन्तु
उस से कुछ लाभ न हुआ। यहोवा के
क्रोध के भडकने के कारण तुम अपने खेतो
की उपज के विषय मे लज्जित हो॥

१४ मेरे दुष्ट पडोसी उस भाग पर
हाथ लगाते है, जिसका भागी मै ने अपनी
प्रजा इस्राएल को बनाया है। उनके
विषय यहोवा यो कहता है कि मै उनको
उनकी भूमि मे से उखाड डालूगा, और
यहूदा के घराने को भी उनके बीच मे
से उखाडूगा। १५ उन्हे उखाडने के बाद
मै फिर उन पर दया करूगा, और उन मे
से हर एक को उसके निज भाग और भूमि
मे फिर से लगाऊगा। १६ और यदि
वे मेरी प्रजा की चाल सीखकर मेरे ही
नाम की सौगन्ध, यहोवा के जीवन की
सौगन्ध, खाने लगे, जिस प्रकार से उन्हो
ने मेरी प्रजा को बाल की सौगन्ध खाना
सिखलाया था, तब मेरी प्रजा के बीच
उनका भी वश बढेगा*। १७ परन्तु यदि
वे न माने, तो मै उस जाति को ऐसा
उखाडूगा कि वह फिर कभी न पनपेगी,
यहोवा की यही वाणी है॥

१३ यहोवा ने मुझ से यो कहा,
जाकर सनी की एक पेटी मोल
ले, उसे कमर मे बान्ध और जल में मत
भीगने दे। २ तब मै ने एक पेटी मोल
लेकर यहोवा के वचन के अनुसार अपनी
कमर मे बान्ध ली। ३ तब दूसरी बार
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुचा कि
४ जो पेटी तू ने मोल लेकर कटि मे कस
ली है, उसे परात के तीर पर ले जा और
वहा उसे कडाडे पर की एक दरार मे छिपा
दे। ५ यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार
मै ने उसको परात के तीर पर ले जाकर
छिपा दिया। ६ बहुत दिनो के बाद
यहोवा ने मुझ से कहा, उठ, फिर परात
के पास जा, और जिस पेटी को मै ने
तुझे वहा छिपाने की आज्ञा दी उसे वहा
से ले ले। ७ तब मै परात के पास गया
और खोदकर जिस स्थान मे मै ने पेटी
को छिपाया था, वहा से उसको निकाल
लिया। और देखो, पेटी बिगड गई थी,
वह किसी काम की न रही॥

८ तब यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, यहोवा यो कहता है, ९ इसी प्रकार
से मै यहूदियो का गर्व, और यरूशलेम
का बडा गर्व नष्ट कर दूगा। १० इस
दुष्ट जाति के लोग जो मेरे वचन सुनने
से इनकार करते है जो अपने मन के
हठ पर चलते, दूसरे देवताओ के पीछे
चलकर उनकी उपासना करते और उनको
दण्डवत् करते है, वे इस पेटी के समान
हो जाएगे जो किसी काम की नही रही।
११ यहोवा की यह वाणी है कि जिस

* मूल में—वे बस जाएगे।

प्रकार से पेटी मनुष्य की कमर में कसी
जाती है, उसी प्रकार से मैं ने इस्राएल के
सारे घराने और यहूदा के सारे घराने
को अपनी कटि मे बान्ध लिया था कि
वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और
कीर्ति और शोभा का कारण हों, परन्तु
उन्हों ने न माना। १२ इसलिये तू उन
से यह वचन कह, इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यों कहता है, दाखमधु के सब
कुप्पे दाखमधु से भर दिए जाएंगे। तब
वे तुझ से कहेंगे, क्या हम नहीं जानते
कि दाखमधु के सब कुप्पे दाखमधु मे
भर दिए जाएंगे? १३ तब तू उन मे
कहना, यहोवा यों कहता है, देखो, मैं
इस देश के सब रहनेवालों को, विशेष
करके दाऊदवंश की गद्दी पर विराजमान
राजा और याजक और भविष्यद्वक्ता आदि
यरूशलेम के सब निवासियों को अपनी
कोपरूपी मदिरा पिलाकर अचेत कर
दूंगा*। १४ तब मैं उन्हें एक दूसरे से
टकरा दूंगा, अर्थात् बाप को बेटे से, और
बेटे को बाप से, यहोवा की यह वाणी है।
मैं उन पर कोमलता नहीं दिखाऊंगा,
न तरस खाऊंगा और न दया करके
उनको नष्ट होने से बचाऊंगा।।

१५ देखो, और कान लगाओ, गर्व
मत करो, क्योंकि यहोवा ने यों कहा है।
१६ अपने परमेश्वर यहोवा की बड़ाई
करो, इस मे पहिले कि वह अन्धकार लाए
और तुम्हारे पांव अन्धेरे पहाड़ों पर ठोकर
खाए, और जब तुम प्रकाश का आसरा
देखो, तब वह उसको मृत्यु की छाया से
बदल और उसे घोर अन्धकार बना दे।
१७ और यदि तुम इसे न सुनो, तो मैं

* मूल में—निवासियों को मतवालेपन से भरूंगा।

अकेले मे तुम्हारे गर्व के कारण
रोऊंगा, और मेरी आंखों से आंसुओं की
धारा बहती रहेगी, क्योंकि यहोवा की
भेड़ें बंधुआ कर ली गई हैं।।

१८ राजा और राजमाता से कह,
नीचे बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारे सिरों
के शोभायमान मुकुट उतार लिए गए
हैं। १९ दक्खिन देश के नगर घेरे गए
हैं, कोई उन्हें बचा* न सकेगा, सम्पूर्ण
यहूदी जाति बन्दी हो गई है, वह पूरी
रीति से बंधुआई मे चली गई है।।

२० अपनी आंखें उठाकर उनको देख
जो उत्तर दिशा से आ रहे हैं। वह सुन्दर
झुण्ड जो तुझे सौंपा गया था कहां है?
२१ जब वह तेरे उन मित्रों को तेरे ऊपर
प्रधान ठहराएगा जिन्हें तू ने अपनी हानि
करने की शिक्षा दी है, तब तू क्या कहेगी?
क्या उस समय तुझे जच्चा की सी पीड़ाएं
न उठेंगी? २२ और यदि तू अपने मन
में सोचे कि ये बातें किस कारण मुझ पर
पड़ी हैं, तो तेरे बड़े अधर्म के कारण
तेरा आंचल उठाया गया है और तेरी
एड़ियां बरियाई से नंगी की गई हैं।
२३ क्या हबशी अपना चमड़ा, वा चीता
अपने धब्बे बदल सकता है? यदि वे
ऐसा कर सकें, तो तू भी, जो बुराई करना
सीख गई है, भलाई कर सकेगी। २४ इस
कारण मैं उनको ऐसा तितर-बितर
करूंगा, जैसा भूसा जंगल के पवन मे
तितर-बितर किया जाता है। २५ यहोवा
की यह वाणी है, तेरा हिस्सा और मुझ
से ठहराया हुआ तेरा भाग यही है, क्योंकि
तू ने मुझे भूलकर झूठ पर भरोसा रखा
है। २६ इसलिये मैं भी तेरा आंचल

* मूल में—खोल।

तेरे मुह तक उठाऊगा, तब तेरी लाज
जानी जाएगी। २७ व्यभिचार और
चोचला * और छिनालपन आदि तेरे
घिनौने काम जो तू ने मैदान और टीलो
पर किए है, वे सब मैं ने देखे है। हे
यरूशलेम, तुझ पर हाय! तू अपने
आप को कब तक शुद्ध न करेगी? और
कितने दिन तक तू बनी रहेगी?

१४ यहोवा का वचन जो यिर्मयाह
के पास सूखे वर्ष के विषय मे
पहुचा २ यहूदा विलाप करता और
फाटको मे लोग शोक का पहिरावा पहिने
हुए भूमि पर उदास बैठे है, और यरूशलेम
की चिल्लाहट आकाश तक पहुच गई
है †। ३ और उनके बडे लोग उनके
छोटे लोगो को पानी के लिये भेजते है,
वे गडहो पर आकर पानी नही पाते,
इसलिये छूछे बर्तन लिए हुए घर लौट
जाते है, वे लज्जित और निराश होकर
सिर ढाप लेते है। ४ देश मे पानी न
बरसने मे भूमि मे दरार पड गए है,
इस कारण किसान लोग निराश होकर
सिर ढाप लेते है। ५ हरिणी भी मैदान
मे बच्चा जनकर छोड जाती है क्योकि
हरी घास नही मिलती। ६ जगली गदहे
भी मुडे टीलो पर खडे हुए गीदडो की
नाईं हाफते है, उनकी आखे धुधला
जाती है क्योकि हरियाली कुछ भी नही
है॥

७ हे यहोवा, हमारे अधर्म के काम
हमारे विरुद्ध साक्षी दे रहे है, हम तेरा
सग छोडकर बहुत दूर भटक गए है,
और हम ने तेरे विरुद्ध पाप किया है,

* मूल में—हिनहिनाना।

† मूल में—चिल्लाहट चढ गई है।

तौभी, तू अपने नाम के निमित्त कुछ कर।
८ हे इस्राएल के आधार, सकट के समय
उसका बचानेवाला तू ही है, तू क्यो इस
देश मे परदेशी की नाई है? तू क्यो
उस बटोही के समान है जो रात भर रहने
के लिये कही टिकता हो? ९ तू क्यो एक
विस्मित पुरुष या ऐसे वीर के समान
है जो बचा न सके? तौभी हे यहोवा
तू हमारे बीच मे है, और हम तेरे कहलाते
है, इसलिये हमको न तज॥

१० यहोवा ने इन लोगो के विषय
यो कहा उनको ऐसा भटकना अच्छा
लगता है, ये कुकर्म मे चलने मे नही
रुके, इसलिये यहोवा इन मे प्रसन्न नही
है, वह इनका अधर्म स्मरण करेगा और
उनके पाप का दण्ड देगा॥

११ फिर यहोवा ने मुझ से कहा,
इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना
मत कर। १२ चाहे वे उपवास भी
करे, तौभी मै इनकी दुहाई न सुनूगा,
और चाहे वे होमबलि और अन्नबलि
चढाए, तौभी मै उन से प्रसन्न न होऊगा,
मै तलवार, महगी और मरी के द्वारा
इनका अन्त कर डालूगा॥

१३ तब मै ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा,
देख, भविष्यद्वक्ता इन से कहते है कि
न तो तुम पर तलवार चलेगी और न
महगी होगी, यहोवा तुम को इस स्थान
मे सदा की शान्ति * देगा। १४ और
यहोवा ने मुझ से कहा, ये भविष्यद्वक्ता
मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यद्वाणी करते
है, मै ने उनको न तो भेजा और न कुछ
आज्ञा दी और न उन से कोई भी बात
कही। वे तुम लोगो से दर्शन का झूठा

* मूल में—सचाई की शान्ति।

दावा करके अपने ही मन से व्यर्थ और
धाखे की भविष्यद्वाणी करते हैं। १५ इस
कारण जो भविष्यद्वक्ता मेरे विना भेजे
मेरा नाम लेकर भविष्यद्वाणी करते हैं
कि इस देश में न तो तलवार चलेगी और
न महंगी होगी, उनके विषय यहोवा यों
कहता है, कि, वे भविष्यद्वक्ता आप
तलवार और महंगी के द्वारा नाश किए
जाएंगे। १६ और जिन लोगों से वे
भविष्यद्वाणी कहते हैं, वे महंगी और
तलवार के द्वारा मर जाने पर इस प्रकार
यरूशलेम की सड़कों में फेंक दिए जाएंगे,
कि न तो उनका, न उनकी स्त्रियों का
और न उनके बेटे-बेटियों का कोई मिट्टी
देनेवाला रहेगा। क्योंकि मैं उनकी बुराई
उन्हीं के ऊपर उण्डेलूंगा*॥

१७ तू उन से यह बात कह, मेरी
आंखों से दिन रात आंसू लगातार बहते
रहें, वे न रुकें क्योंकि मेरे लोगों की
कुंवारी बेटी बहुत ही कुचली गई और
घायल हुई है। १८ यदि मैं मैदान में
जाऊं, तो देखो, तलवार के मारे हुए पड़े
हैं! और यदि मैं नगर के भीतर आऊं, तो
देखो, भूख से अधमूए पड़े हैं†! क्योंकि
भविष्यद्वक्ता और याजक देश में कमाई
करते फिरते और समझ नहीं रखते हैं॥

१९ क्या तू ने यहूदा से बिलकुल
हाथ उठा लिया? क्या तू सिय्योन से
घिन करता है? नहीं, तू ने क्यों हम को
ऐसा मारा है कि हम चंगे हो ही नहीं
सकते? हम शान्ति की बाट जोहते
रहे, तौभी कुछ कल्याण नहीं हुआ,
और यद्यपि हम अच्छे हो जाने की आशा
करते रहे, तौभी घबराना ही पड़ा है।

* मूल में—उन्हीं पर उण्डेलूंगा।
† मूल में—भूख के रोगी हैं।

२० हे यहोवा, हम अपनी दुष्टता और
अपने पुरखाओं के अधर्म को भी मान
लेते हैं, क्योंकि हम ने तेरे विरुद्ध पाप
किया है। २१ अपने नाम के निमित्त
हमें न ठुकरा, अपने तेजोमय सिंहासन
का अपमान न कर, जो वाचा तू ने हमारे
साथ बान्धी, उसे स्मरण कर और उसे
न तोड़। २२ क्या अन्यजातियों की मूरतों
में से कोई वर्षा कर सकता है? क्या
आकाश झड़ियां लगा सकता है? हे
हमारे परमेश्वर यहोवा, क्या तू ही इन
सब बातों का करनेवाला नहीं है? हम
तेरा ही आसरा देखते रहेंगे, क्योंकि इन
सारी वस्तुओं का सृजनहार तू ही है॥

१५ फिर यहोवा ने मुझ से कहा,
यदि मूसा और शमूएल भी मेरे
साम्हने खड़े होते, तौभी मेरा मन इन
लोगों की ओर न फिरता। इनको मेरे
साम्हने से निकाल दो कि वे निकल जाएं!
२ और यदि वे तुझ से पूछें कि हम कहां
निकल जाएं? तो कहना कि यहोवा यों
कहता है, जो मरनेवाले हैं, वे मरने को
चले जाएं, जो तलवार से मरनेवाले हैं,
वे तलवार से मरने को, जो आकाल से
मरनेवाले हैं, वे आकाल से मरने को,
और जो बंधुए होनेवाले हैं, वे बंधुआई
में चले जाएं। ३ मैं उनके विरुद्ध चार
प्रकार के विनाश* ठहराऊंगा मार
डालने के लिये तलवार, फाड़ डालने के
लिये कुत्ते, नोच डालने के लिये आकाश के
पक्षी, और फाड़कर खाने के लिये मैदान
के हिंसक जन्तु, यहोवा की यह वाणी है।
४ यह हिजकिय्याह के पुत्र, यहूदा के
राजा मनश्शे के उन कामों के कारण

* मूल में—चार कुल।

होगा जो उस ने यरूशलेम मे किए है,
और मै उन्हे ऐसा करूगा कि वे पृथ्वी के
राज्य राज्य मे मारे मारे फिरेगे ।।

५ हे यरूशलेम, तुझ पर कौन तरस
खाएगा, और कौन तेरे लिये शोक करेगा ?
कौन तेरा कुशल पूछने को तेरी ओर
मुडेगा ? ६ यहोवा की यह वाणी है कि
तू मुझ को त्यागकर पीछे हट गई है,
इसलिये मै तुझ पर हाथ बढाकर तेरा
नाश करूगा, क्योकि, मै तरस खाते
खाते उकता गया हू। ७ मै ने उनको
देश के फाटको मे सूप से फटक दिया है,
उन्हो ने कुमार्ग को नही छोडा, इस कारण
मै ने अपनी प्रजा को निर्वंश कर दिया,
और नाश भी किया है। ८ उनकी
विधवाए मेरे देखने मे समुद्र की बालू के
किनको से अधिक हो गई है, उनके
जवानो की माताओ के विरुद्ध दुपहरी ही
को मै ने लुटेरो को ठहराया है, मै ने
उनको अचानक सकट मे डाल दिया
और घबरा दिया है। ९ सात लडको
की माता भी बेहाल हो गई और प्राण
भी छोड दिया, उसका सूर्य दोपहर ही को
अस्त हो गया, उसकी आशा टूट गई
और उसका मुह काला हो गया। और
जो रह गए है उनको भी मै शत्रुओ की
तलवार से मरवा डालूगा, यहोवा की
यही वाणी है ।।

१० हे मेरी माता, मुझ पर हाय,
कि तू ने मुझ ऐसे मनुष्य को उत्पन्न किया
जो ससार भर मे झगडा और वादविवाद
करनेवाला ठहरा है ! न तो मै ने ब्याज
के लिये रुपये दिए, और न किसी से
उधार लिए है, तौभी लोग मुझे कोसते
है। ११ यहोवा ने कहा, निश्चय मै
तेरी भलाई के लिये तुझे दृढ करूगा,
विपत्ति और कष्ट के समय मे शत्रु से
भी तेरी विनती कराऊगा। १२ क्या
कोई पीतल वा लोहा, उत्तर दिशा का
लोहा तोड सकता है ? १३ तेरे सब
पापो के कारण जो सर्वत्र देश मे हुए है
मै तेरी धन-सम्पत्ति और खजाने, बिना
दाम दिए लुट जाने दूगा। १४ मै ऐसा
करूगा कि वह शत्रुओ के हाथ ऐसे देश मे
चला जाएगा जिसे तू नही जानती है,
क्योकि मेरे क्रोध की आग भडक उठी
है, और वह तुम को जलाएगी ।।

१५ हे यहोवा, तू तो जानता है,
मुझे स्मरण कर और मेरी सुधि लेकर
मेरे सतानेवालो से मेरा पलटा ले। तू
धीरज के साथ क्रोध करनेवाला है, इसलिये
मुझे न उठा ले, तेरे ही निमित्त मेरी
नामधराई हुई है। १६ जब तेरे वचन
मेरे पास पहुचे, तब मै ने उन्हे मानो खा
लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष
और आनन्द का कारण हुए, क्योकि,
हे सेनाओ के परमेश्वर यहोवा, मै तेरा
कहलाता हू। १७ तेरी छाया मुझ पर
हुई, मै मन बहलानेवालो के बीच बैठकर
प्रसन्न नही हुआ, तेरे हाथ के दबाव से
मै अकेला बैठा, क्योकि तू ने मुझे क्रोध
से भर दिया था। १८ मेरी पीडा क्यो
लगातार बनी रहती है ? मेरी चोट की
क्यो कोई औषधि नही है ? क्या तू
सचमुच मेरे लिये धोखा देनेवाली नदी
और सूखनेवाले जल के समान होगा ?

१९ यह सुनकर यहोवा ने यो कहा,
यदि तू फिरे, तो मै फिरसे तुझे अपने
साम्हने खडा करूगा। यदि तू अनमोल को
कहे और निकम्मे को न कहे, तब तू मेरे
मुख के समान होगा। वे लोग तेरी ओर
फिरेगे, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना।

२० और मैं तुझ को उन लोगों के साम्हने
पीतल की दृढ़ शहरपनाह बनाऊंगा, वे
तुझ से लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न
होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और तेरा
उद्धार करने के लिये तेरे साथ हूं, यहोवा
की यह वाणी है। मैं तुझे दुष्ट लोगों
के हाथ से बचाऊंगा, २१ और उपद्रवी
लोगों के पंजे से छुड़ा लूंगा॥

१६ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, २ इस स्थान में विवाह
करके बेटे-बेटियां मत जन्मा। ३ क्योंकि
जो बेटे-बेटियां इस स्थान में उत्पन्न हों
और जो माताएं उन्हें जनें और जो पिता
उन्हें इस देश में जन्माएं, ४ उनके
विषय यहोवा यों कहता है, वे बुरी
बुरी बीमारियों से मरेंगे। उनके लिये कोई
छाती न पीटेगा, न उनको मिट्टी देगा,
वे भूमि के ऊपर खाद की नाईं पड़े रहेंगे।
वे तलवार और महंगी से मर मिटेंगे,
और उनकी लोथें आकाश के पक्षियों और
मैदान के पशुओं का आहार होंगी।
५ यहोवा ने कहा, जिस घर में रोना-
पीटना हो उस में न जाना, न छाती
पीटने के लिये कहीं जाना और न इन लोगों
के लिये शोक करना, क्योंकि यहोवा की
यह वाणी है कि मैं ने अपनी शान्ति
और करुणा और दया इन लोगों पर से
उठा ली है। ६ इस कारण इस देश के
छोटे-बड़े सब मरेंगे, न तो इनको मिट्टी
दी जाएगी, न लोग छाती पीटेंगे, न
अपना शरीर चीरेंगे, और न सिर मुड़ाएंगे।
इनके लिये कोई शोक करनेवालों को
रोटी न बांटेंगे कि शोक में उन्हें शान्ति
दें, ७ और न लोग पिता वा माता के
मरने पर किसी को शान्ति के लिये कटोरे
में दाखमधु पिलाएंगे। ८ तू जेवनार के
घर में इनके साथ खाने-पीने के लिये न
जाना। ९ क्योंकि सेनाओं का यहोवा,
इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, देख,
तुम लोगों के देखते और तुम्हारे ही
दिनों में मैं ऐसा करूंगा कि इस स्थान
में न तो हर्ष और न आनन्द का शब्द
सुनाई पड़ेगा, न दुल्हे और न दुल्हिन का
शब्द। १० और जब तू इन लोगों से
ये सब बातें कहे, और वे तुझ से पूछें कि
यहोवा ने हमारे ऊपर यह सारी बड़ी
विपत्ति डालने के लिये क्यों कहा है?
हमारा अधर्म क्या है और हम ने अपने
परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध कौन सा पाप
किया है? ११ तो तू इन लोगों से
कहना, यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि
तुम्हारे पुरखा मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं
के पीछे चले, और उनकी उपासना करके
उनको दण्डवत् की, और मुझ को त्याग
दिया और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं
किया, १२ और जितनी बुराई तुम्हारे
पुरखाओं ने की थी, उस से भी अधिक
तुम करते हो, क्योंकि तुम अपने बुरे मन
के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सुनते,
१३ इस कारण मैं तुम को इस देश से
उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूंगा, जिसको
न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरखा
जानते थे, और वहां तुम रात-दिन दूसरे
देवताओं की उपासना करते रहोगे, क्योंकि
वहां मैं तुम पर कुछ अनुग्रह न करूंगा॥
१४ फिर यहोवा की यह वाणी हुई,
देखो, ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में फिर
यह न कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्रा-
एलियों को मिस्र देश से छुड़ा ले आया
उसके जीवन की सौगन्ध, १५ वरन यह
कहा जाएगा कि यहोवा जो इस्राएलियों

को उत्तर के देश से और उन सब देशो से
जहा उस ने उनको बरबस कर दिया
था छुडा ले आया, उसके जीवन की
सौगन्ध। क्योकि मै उनको उनके निज
देश मे जो मै ने उनके पूर्वजो को दिया
था, लौटा ले आऊगा ॥

१६ देखो, यहोवा की यह वाणी है
कि मै बहुत से मछुओ को बुलवा भेजूगा
कि वे इन लोगो को पकड ले, और, फिर
मै बहुत से बहेलियो को बुलवा भेजूगा
कि वे इनको अहेर करके सब पहाडो
और पहाड़ियो पर से और चट्टानो की
दरारो मे से निकाले। १७ क्योकि उनका
पूरा चाल-चलन मेरी आखो के साम्हने
प्रगट है, वह मेरी दृष्टि से छिपा नही है,
न उनका अधर्म मेरी आखो से गुप्त है।
सो मै उनके अधर्म और पाप का दूना
दण्ड दूगा, १८ क्योकि उन्हो ने मेरे
देश को अपनी घृणित वस्तुओ की लोथो
से अशुद्ध किया, और मेरे निज भाग को
अपनी अशुद्धता से भर दिया है ॥

१९ हे यहोवा, हे मेरे बल और दृढ
गढ, सकट के समय मेरे शरणस्थान, जाति-
जाति के लोग पृथ्वी की चहुओर से तेरे
पास आकर कहेगे, निश्चय हमारे पुरखा
झूठी, व्यर्थ और निष्फल वस्तुओ को
अपनाते आए है। २० क्या मनुष्य ईश्वरो
को बनाए? नही, वे ईश्वर नही हो सकते!

२१ इस कारण, एक इस बार, मै
इन लोगो को अपना भुजबल और पराक्रम
दिखाऊगा, और वे जानेगे कि मेरा नाम
यहोवा है ॥

१७ यहूदा का पाप लोहे की टाकी
और हीरे की नोक से लिखा
हुआ है, वह उनके हृदयरूपी पटिया और
उनकी वेदियो के सीगो पर भी खुदा
हुआ है। २ उनकी वेदिया और अशेरा
नाम देविया जो हरे पेडो के पास और
ऊचे टीलो के ऊपर है, वे उनके लडको
को भी स्मरण रहती है। ३ हे मेरे पर्वत,
तू जो मैदान मे है, तेरी धन-सम्पत्ति और
भण्डार मै तेरे पाप के कारण लुट जाने
दूगा, और तेरे पूजा के ऊचे स्थान भी
जो तेरे देश मे पाए जाते है। ४ तू
अपने ही दोष के कारण अपने उस भाग
का अधिकारी न रहने पाएगा जो मै ने
तुझे दिया है, और मै ऐसा करूगा कि
तू अनजाने देश में अपने शत्रुओ की
सेवा करेगा, क्योकि तू ने मेरे क्रोध की
आग ऐसी भडकाई है जो सर्वदा जलती
रहेगी ॥

५ यहोवा यो कहता है, स्रापित है
वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता
है, और उसका * सहारा लेता है, जिसका
मन यहोवा से भटक जाता है। ६ वह
निर्जल देश के अधमूए पेड के समान होगा
और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल
और निर्जन तथा लोनछाई भूमि पर
बसेगा ॥

७ धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर
भरोसा रखता है, जिस ने परमेश्वर को
अपना आधार माना हो। ८ वह उस
वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर
पर लगा हो और उसकी जड जल के
पास फैली हो, जब घाम होगा तब
उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेगे,
और सूखे वर्ष मे भी उनके विषय में
कुछ चिन्ता न होगी, क्योकि वह तब भी
फलता रहेगा ॥

* मूल में—मास का।

६ मन तो सब वस्तुओ से अधिक
धोखा देनेवाला होता है, उस मे
असाध्य रोग लगा है, उसका भेद कौन
समझ सकता है? १० मै यहोवा मन
की खोजता और हृदय को जाचता हू
ताकि प्रत्येक जन को उसकी चाल-चलन
के अनुसार अर्थात् उसके कामो का फल
दू ॥

११ जो अन्याय से धन बटोरता
है वह उस तीतर के समान होता है जो
दूसरी चिडिया के* दिए हुए अडो को
सेती है, उसकी आधी आयु मे ही वह
उस धन को छोड जाता है, और अन्त में
वह मूढ ही ठहरता है ॥

१२ हमारा पवित्र आराधनालय आदि
से ऊचे स्थान पर रखे हुए एक तेजोमय
सिहासन के समान है। १३ हे यहोवा,
हे इस्राएल के आधार, जितने तुझे छोड
देते है वे सब लज्जित होगे, जो तुझ†
से भटक जाते है उनके नाम भूमि ही पर
लिखे जाएगे, क्योकि उन्हो ने बहते जल
के सोते यहोवा को त्याग दिया है ॥

१४ हे यहोवा मुझे चगा कर, तब
मै चगा हो जाऊगा, मुझे बचा, तब
मै बच जाऊगा, क्योकि मै तेरी ही स्तुति
करता हू‡। १५ सुन, वे मुझ से कहते
है, यहोवा का वचन कहा रहा? वह
अभी पूरा हो जाए! १६ परन्तु तू
मेरा हाल जानता है, मै ने तेरे पीछे
चलते हुए उतावली करके चरवाहे का
काम नही छोडा, न मै ने उस आनेवाली
विपत्ति के दिन की लालसा की है, जो
कुछ मै बोला वह तुझ पर प्रगट था।
१७ मुझे न घबरा, सकट के दिन तू ही
मेरा शरणस्थान है। १८ हे यहोवा,
मेरी आशा टूटने न दे, मेरे सतानेवालो
ही की आशा टूटे, उन्ही को विस्मित
कर, परन्तु मुझे निराशा से बचा, उन
पर विपत्ति डाल और उनको चकनाचूर
कर दे!

१९ यहोवा ने मुझ से यो कहा,
जाकर सदर फाटक मे खडा हो जिस से
यहूदा के राजा वरन यरूशलेम के सब
रहनेवाले भीतर-बाहर आया जाया करते
है, २० और उन से कह, हे यहूदा के
राजाओ और सब यहूदियो, हे यरूशलेम
के सब निवासियो, और सब लोगो जो
इन फाटको मे से होकर भीतर जाते हो,
यहोवा का वचन सुनो। २१ यहोवा यो
कहता है, सावधान रहो, विश्राम के दिन
कोई बोझ मत उठाओ, और न कोई
बोझ यरूशलेम के फाटको के भीतर ले
आओ। २२ विश्राम के दिन अपने अपने
घर से भी कोई बोझ बाहर मत ले‌ओ
और न किसी रीति का काम काज करो,
वरन उस आज्ञा के अनुसार जो मै ने
तुम्हारे पुरखाओ को दी थी, विश्राम के
दिन को पवित्र माना करो। २३ परन्तु
उन्हो ने न सुना और न कान लगाया,
परन्तु इसके विपरीत हठ किया कि न
सुनें और ताडना से भी न मानें ॥

२४ परन्तु यदि तुम सचमुच मेरी सुनो,
यहोवा की यह वाणी है, और विश्राम
के दिन इस नगर के फाटको के भीतर
कोई बोझ न ले आओ और विश्रामदिन
को पवित्र मानो, और उस मे किसी
रीति का काम काज न करो, २५ तब तो
दाऊद की गद्दी पर विराजमान राजा,
रथो और घोडो पर चढे हुए हाकिम और
यहूदा के लोग और यरूशलेम के निवासी

* मूल मे—अपने। † मूल मे—मुझ।
‡ मूल मे—तू ही मेरी स्तुति है।

इस नगर के फाटकों से होकर प्रवेश
किया करेंगे और यह नगर सर्वदा बसा
रहेगा। २६ और लोग होमबलि, मेलबलि
अन्नबलि, लोबान और धन्यवादबलि लिए
हुए यहूदा के नगरों से और यरूशलेम के
आसपास मे, बिन्यामीन के देश और
नीचे के देश से, पहाड़ी देश और दक्खिन
देश से, यहोवा के भवन मे आया करेंगे।
२७ परन्तु यदि तुम मेरी सुनकर विश्राम
के दिन को पवित्र न मानो, और उस दिन
यरूशलेम के फाटकों से बोझ लिए हुए
प्रवेश करते रहो, तो मै यरूशलेम के
फाटकों मे आग लगाऊगा, और उस से
यरूशलेम के महल भी भस्म हो जाएगे
और वह आग फिर न बुझेगी॥

१८ यहोवा की ओर से यह वचन
यिर्मयाह के पास पहुचा, उठकर
कुम्हार के घर जा, २ और वहा मै तुझे
अपने वचन सुनवाऊगा। ३ सो मै कुम्हार
के घर गया और क्या देखा कि वह चाक
पर कुछ बना रहा है। ४ और जो
मिट्टी का बासन वह बना रहा था वह
बिगड गया, तब उस ने उसी का दूसरा
बासन अपनी समझ के अनुसार बना
दिया॥

५ तब यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, हे इस्राएल के घराने,
६ यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार
की नाई तुम्हारे साथ क्या मै भी काम
नही कर सकता? देख, जैसा मिट्टी
कुम्हार के हाथ मे रहती है, वैसा ही हे
इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ मे
हो। ७ जब मै किसी जाति वा राज्य
के विषय कहू कि उसे उखाड़ूगा वा ढा
दूगा अथवा नाश करूगा, ८ तब यदि
उस जाति के लोग जिसके विषय मै ने
कह बात कही हो अपनी बुराई से फिरे, तो
मै उस विपत्ति के विषय जो मै ने उन पर
डालने को ठाना हो पछताऊगा। ९ और
जब मै किसी जाति वा राज्य के विषय
कहू कि मै उसे बनाऊगा और रोपूगा,
१० तब यदि वे उस काम को करे जो मेरी
दृष्टि मे बुरा है और मेरी बात न माने,
तो मै उस भलाई के विषय जिसे मै
ने उनके लिये करने को कहा हो,
पछताऊगा। ११ इसलिये अब तू यहूदा
और यरूशलेम के निवासियो से यह कह,
यहोवा यो कहता है, देखो, मै तुम्हारी
हानि की युक्ति और तुम्हारे विरुद्ध प्रबन्ध
कर रहा हू। इसलिये तुम अपने अपने बुरे
मार्ग से फिरो और अपना अपना चालचलन
और काम सुधारो। १२ परन्तु वे कहते
है, ऐसा नही होने का, हम तो अपनी ही
कल्पनाओ के अनुसार चलेगे और अपने
बुरे मन के हठ पर बने रहेगे॥

१३ इस कारण प्रभु यहोवा यो कहता
है, अन्यजातियो से पूछ कि ऐसी बाते क्या
कभी किसी के सुनने में आई है? इस्राएल
की कुमारी ने जो काम किया है उसके
सुनने से रोम रोम खडे हो जाते है।
१४ क्या लबानोन का हिम जो चट्टान
पर से मैदान मे बहता है बन्द हो सकता
है? क्या वह ठण्डा जल जो दूर से * बहता
है कभी सूख † सकता है? १५ परन्तु
मेरी प्रजा मुझे भूल गई है, वे निकम्मी
वस्तुओ के लिये धूप जलाते है, उन्हो
ने अपने प्राचीनकाल के मार्गो मे ठोकर
खाई है, और पगडण्डियो और बेहड ‡

* मूल में—जो परदेश।
† मूल में—उखड।
‡ मूल में—अनबने।

मार्गों मे भटक गए है। १६ इस से उनका
देश ऐसा उजाड हो गया है कि लोग
उस पर सदा ताली वजाते रहेंगे, और
जो कोई उसके पास से चले वह चकित
होगा और सिर हिलाएगा। १७ मै उनको
पुरवाई से उडाकर शत्रु के साम्हने से
तितर-वितर कर दूगा। उनकी विपत्ति
के दिन मै उनको मुह नही परन्तु पीठ
दिखाऊगा॥

१८ तब वे कहने लगे, चलो, यिर्मयाह
के विरुद्ध युक्ति करे, क्योकि न याजक से
व्यवस्था, न ज्ञानी से सम्मति, न
भविष्यद्वक्ता से वचन दूर होगे। आओ,
हम उसकी कोई बात पकडकर उसको
नाश कराए* और फिर उसकी किसी
बात पर ध्यान न दे॥

१९ हे यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे,
और जो लोग मेरे साथ झगडते है उनकी
बाते सुन। २० क्या भलाई के बदले मे
बुराई का व्यवहार किया जाए? तू
इस बात का स्मरण कर कि मै उनकी
भलाई के लिये तेरे साम्हने प्रार्थना करने
को खडा हुआ जिस से तेरी जलजलाहट
उन पर से उतर जाए, और अब उन्हो ने
मेरे प्राण लेने के लिये गडहा खोदा है।
२१ इसलिये उनके लडकेवालो को भूख
से मरने दे, वे तलवार से कट मरे†, और
उनकी स्त्रिया निर्वंश और विधवा हो
जाए। उनके पुरुष मरी से मरे, और
उनके जवान लडाई मे तलवार से मारे
जाए। २२ जब तू उन पर अचानक
शत्रुदल चढाए, तब उनके घरो मे चिल्लाहट
सुनाई दे। क्योकि उन्हो ने मेरे लिये
गडहा खोदा और मेरे फसाने को फन्दे
लगाए है। २३ हे यहोवा, तू उनकी सब
युक्तिया जानता है जो वे मेरी मृत्यु के
लिये करते है। इस कारण तू उनके
इस अधर्म को न ढाप, न उनके पाप को
अपने साम्हने से मिटा। वे तेरे देखते
ही ठोकर खाकर गिर जाए, अपने क्रोध
मे आकर उन से इसी प्रकार का व्यवहार
कर॥

१९ यहोवा ने यो कहा, तू जाकर
कुम्हार से मिट्टी की बनाई हुई
एक सुराही मोल ले, और प्रजा के कुछ
पुरनियो में मे और याजको मे से भी
कुछ प्राचीनो को साथ लेकर, २ हिन्नोमियो
की तराई की ओर उस फाटक के निकट
चला जा जहा ठीकरे फेंक दिए जाते है,
और जो वचन म कहू, उसे वहा प्रचार
कर। ३ तू यह कहना, हे यहूदा के राजाओ
और यरूशलेम के सब निवासियो, यहोवा
का वचन सुनो। इस्राएल का परमेश्वर
सेनाओ का यहोवा यो कहता है, इस
स्थान पर म ऐसी विपत्ति डालने पर हू
कि जो कोई उसका समाचार सुने, उस
पर सन्नाटा छा जाएगा*। ४ क्योकि यहा
के लोगो ने मुझे त्याग दिया, और इस
स्थान में दूसरे देवताओ के लिये जिनका
न तो वे जानते है, और न उनके पुरखा
वा यहूदा के पुराने राजा जानते थे धूप
जलाया है और इसका पराया कर दिया
है, और उन्हो ने इस स्थान को निर्दोषो
के लोहू मे भर दिया, ५ और बाल की
पूजा के ऊचे स्थानो को बनाकर अपने
लडकेवालो को बाल के लिये होम कर
दिया, यद्यपि म ने कभी भी जिसका आज्ञा
नही दी, न उसकी चर्चा की और न वह

* मूल म—उनकी जीभ मारें।
† [illegible] के हाथ में सौंप दे।

* मूल मे—उसके कान झनझनाएगे।

कभी मेरे मन मे आया। ६ इस कारण
यहोवा की यह वाणी है कि ऐसे दिन
आते है कि यह स्थान फिर तोपेत वा
हिन्नोमियो की तराई न कहलाएगा, वरन
घात ही की तराई कहलाएगा। ७ और
मै इस स्थान मे यहूदा और यरूशलेम
की युक्तियो को निष्फल कर दूगा, और
उन्हे उनके प्राणो के शत्रुओ के हाथ की
तलवार चलवाकर गिरा दूगा। उनकी
लोथो को मै आकाश के पक्षियो और भूमि
के जीवजन्तुओ का आहर कर दूगा।
८ और मै इस नगर को ऐसा उजाड दूगा
कि लोग इसे देखकर डरेगे, जो कोई
इसके पास से होकर जाए वह इसकी सब
विपत्तियो के कारण चकित होगा और
घबराएगा। ९ और घिर जाने और उस
सकेती के समय जिस मे उनके प्राण के
शत्रु उन्हे डाल देंगे, मै उनके बेटे-बेटियो का
मास उन्हे खिलाऊगा और एक दूसरे
का भी मास खिलाऊगा ॥

१० तब तू उस सुराही को उन मनुष्यो
के साम्हने तोड देना जो तेरे सग जाएगे,
११ और उन से कहना, सेनाओ का
यहोवा यो कहता है कि जिस प्रकार यह
मिट्टी का बासन जो टूट गया कि फिर
बनाया न जा सके, इसी प्रकार मै इस
देश के लोगो को और इस नगर को तोड
डालूगा। और तोपेत नाम तराई मे इतनी
कब्रे होगी कि कब्र के लिये और स्थान
न रहेगा। १२ यहोवा की यह वाणी है
कि मै इस स्थान और इसके रहनेवालो
के साथ ऐसा ही काम करूगा, मै इस नगर
को तोपेत के समान बना दूगा। १३ और
यरूशलेम के घर और यहूदा के राजाओ
के भवन, जिनकी छतो पर आकाश की
सारी सेना के लिये धूप जलाया गया,
और अन्य देवताओ के लिये तपावन
दिया गया है, वे सब तोपेत के समान
अशुद्ध हो जाएगे ॥

१४ तब यिर्मयाह तोपेत से लौटकर,
जहा यहोवा ने उसे भविष्यद्वाणी करने को
भेजा था, यहोवा के भवन के आगन में
खडा हुआ, और सब लोगो से कहने लगा;
१५ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओ का
यहोवा यो कहता है, देखो, सब गावो
समेत इस नगर पर वह सारी विपत्ति
डालना चाहता हू जो मै ने इस पर लाने
को कहा है, क्योकि उन्हो ने हठ करके
मेरे वचन को नही माना है ॥

२० जब यिर्मयाह यह भविष्यद्वाणी
कर रहा था, तब इम्मेर का पुत्र
पशहूर ने जो याजक और यहोवा के भवन
का प्रधान रखवाला था, वह सब सुना।
२ सो पशहूर ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
को मारा और उसे उस काठ मे डाल
दिया जो यहोवा के भवन के ऊपर बिन्यामीन
के फाटक के पास है। ३ बिहान को जब
पशहूर ने यिर्मयाह को काठ मे से निकल-
वाया, तब यिर्मयाह ने उस से कहा, यहोवा
ने तेरा नाम पशहूर नही मागोर्मिस्साबीब *
रखा है। ४ क्योकि यहोवा ने यो
कहा है, देख, मै तुझे तेरे लिये और
तेरे सब मित्रो के लिये भी भय का कारण
ठहराऊगा। वे अपने शत्रुओ की तलवार
से तेरे देखते ही वध किए जाएगे। और
मै सब यहूदियो को बाबुल के राजा के
वश में कर दूगा, वह उनको बधुआ
करके बाबुल मे ले जाएगा, और तलवार
से मार डालेगा। ५ फिर मै इस नगर
के सारे धन को और इस मे की कमाई और

* अर्थात् चारों ओर भय ही भय।

सब अनमोल वस्तुओ को और यहूदा के
राजाओ का जितना रखा हुआ धन है,
उस सब को उनके शत्रुओ के वश मे
कर दूगा, और वे उसको लूटकर अपना
कर लेगे और बाबुल मे ले जाएगे।
६ और, हे पशहूर, तू उन सब समेत जो
तेरे घर मे रहते है बधुआई में चला
जाएगा, अपने उन मित्रो समेत जिन से
तू ने झूठी भविष्यद्वाणी की, तू बाबुल
में जाएगा और वही मरेगा, और वही
तुझे और उन्हे भी मिट्टी दी जाएगी॥
७ हे यहोवा, तू ने मुझे धोखा दिया,
और मै ने धोखा खाया, तू मुझ से
बलवन्त है, इस कारण तू मुझ पर प्रबल
हो गया। दिन भर मेरी हसी होती है, सब
कोई मुझ से ठट्ठा करते है। ८ क्योकि जब
मै बातें करता हू, तब मै जोर से पुकार
पुकारकर ललकारता हूं कि उपद्रव और
उत्पात हुआ, हा उत्पात! क्योकि यहोवा
का वचन दिन भर मेरे लिये निन्दा और
ठट्ठा का कारण होता रहता है। ९ यदि
मै कहू, मै उसकी चर्चा न करूगा न
उसके नाम से बोलूगा, तो मेरे हृदय की
ऐसी दशा होगी मानो मेरी हड्डियो मे
धधकती हुई आग हो, और मै अपने को
रोकते रोकते थक गया पर मुझ से रहा
नही जाता। १० मै ने बहुतो के मुह से
अपना अपवाद सुना है। चारो ओर
भय ही भय है! मेरी जान पहचान के
सब जो मेरे ठोकर खाने की बाट जोहते
है, वे कहते ह, उसके दोष बताओ, तब
हम उनकी चर्चा फैला देगे। कदाचित वह
धोखा खाए, तो हम उस पर प्रबल होकर,
उस से बदला लेगे। ११ परन्तु यहोवा
मेरे साथ है, वह भयकर वीर के समान है,
इस कारण मेरे सतानेवाले प्रबल न होगे,
वे ठोकर खाकर गिरेगे। वे बुद्धि से काम
नही करते, इसलिये उन्हे बहुत लज्जित
होना पडेगा। उनका अपमान सदैव बना
रहेगा और कभी भूला न जाएगा।
१२ हे सेनाओ के यहोवा, हे धर्मियो के
परखनेवाले और हृदय और मन के ज्ञाता,
जो बदला तू उन से लेगा, उसे मै देखू,
क्योकि मै ने अपना मुकद्दमा तेरे ऊपर
छोड दिया है॥
१३ यहोवा के लिये गाओ, यहोवा
की स्तुति करो! क्योकि वह दरिद्र
जन के प्राण को कुकर्मियो के हाथ से
बचाता है॥
१४ स्रापित हो वह दिन जिस मे म
उत्पन्न हुआ! जिस दिन मेरी माता ने
मुझ को जन्म दिया वह धन्य न हो!
१५ स्रापित हो वह जन जिस ने मेरे
पिता को यह समाचार देकर उसको
बहुत आनन्दित किया कि तेरे लडका
उत्पन्न हुआ है। १६ उस जन की दशा
उन नगरो की सी हो जिन्हे यहोवा ने बिन
दया ढा दिया, उसे सवेरे तो चिल्लाहट
और दोपहर को युद्ध की ललकार सुनाई
दिया करे, १७ क्योकि उस ने मुझे गर्भ
ही मे न मार डाला कि मेरी माता का
गर्भाशय ही मेरी कब्र होती, और मै
उसी मे सदा पडा रहता। १८ म क्यो
उत्पात और शोक भोगने के लिये जन्मा
और कि अपने जीवन मे परिश्रम और
दु ख देखू, और अपने दिन नामधराई
मे व्यतीत करू?

२१ यह वचन यहोवा की ओर
से यिर्मयाह के पास उस समय
पहुचा जब सिदकिय्याह राजा ने उसके
पास मल्किय्याह के पुत्र पशहूर और

मासेयाह याजक के पुत्र सपन्याह के हाथ
से यह कहला भेजा कि, २ हमारे लिये
यहोवा से पूछ, क्योंकि बाबुल का राजा
नबूकदनेस्सर हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहा
है; कदाचित यहोवा हम से अपने सब
आश्चर्यकर्मों के अनुसार ऐसा व्यवहार
करे कि वह हमारे पास से उठ जाए ।।

३ तब यिर्मयाह ने उन से कहा, तुम
सिदकिय्याह से यों कहो, इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा यों कहता है, ४ देखो,
युद्ध के जो हथियार तुम्हारे हाथों में हैं,
जिन से तुम बाबुल के राजा और शहरपनाह
के बाहर घेरनेवाले कसदियों से लड़ रहे
हो, उनको मैं लौटाकर इस नगर के
बीच में इकट्ठा करूंगा, ५ और मैं स्वयं
हाथ बढ़ाकर और बलवन्त भुजा से, और
क्रोध और जलजलाहट और बड़े क्रोध
में आकर तुम्हारे विरुद्ध लड़ूंगा। ६ और
मैं इस नगर के रहनेवालों को क्या मनुष्य,
क्या पशु सब को मार डालूंगा, वे
बड़ी मरी से मरेंगे। ७ और उसके बाद,
यहोवा की यह वाणी है, हे यहूदा के राजा
सिदकिय्याह, मैं तुझे, तेरे कर्मचारियों और
लोगों को वरन जो लोग इस नगर में
मरी, तलवार और महंगी से बचे रहेंगे,
उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और
उनके प्राण के शत्रुओं के वश में कर दूंगा।
वह उनको तलवार से मार डालेगा,
उन पर न तो वह तरस खाएगा, न कुछ
कोमलता दिखाएगा और न कुछ दया
करेगा ।।

८ और इस प्रजा के लोगों से कह कि
यहोवा यों कहता है, देखो, मैं तुम्हारे
साम्हने जीवन का मार्ग और मृत्यु का
मार्ग भी बताता हूं। ९ जो कोई इस
नगर में रहे वह तलवार, महंगी और
मरी से मरेगा, परन्तु जो कोई निकलकर
उन कसदियों के पास जो तुम को घेर
रहे हैं भाग जाए वह जीवित रहेगा,
और उसका प्राण बचेगा। १० क्योंकि
यहोवा की यह वाणी है कि मैं ने इस
नगर की ओर अपना मुख भलाई के
लिये नहीं, वरन बुराई ही के लिये किया
है, यह बाबुल के राजा के वश में पड़
जाएगा, और वह इसको फुंकवा देगा ।।

११ और यहूदा के राजकुल के लोगों
से कह, यहोवा का वचन सुनो, १२ हे
दाऊद के घराने! यहोवा यों कहता है,
भोर को न्याय चुकाओ, और लुटे हुए को
अन्धेर करनेवाले के हाथ से छुड़ाओ,
नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरे
क्रोध की आग भड़केगी, और ऐसी जलती
रहेगी कि कोई उसे बुझा न सकेगा ।।

१३ हे तराई में रहनेवाली और
समथर देश की चट्टान, तुम जो कहते
हो कि हम पर कौन चढ़ाई कर सकेगा,
और हमारे वासस्थान में कौन प्रवेश कर
सकेगा? यहोवा कहता है कि मैं तुम्हारे
विरुद्ध हूं। १४ और यहोवा की वाणी
है कि मैं तुम्हें दण्ड देकर तुम्हारे कामों
का फल तुम्हें भुगताऊंगा। मैं उसके
वन में आग लगाऊंगा, और उसके चारों
ओर सब कुछ भस्म हो जाएगा ।।

२२ यहोवा ने यों कहा, यहूदा के
राजा के भवन में उतरकर यह
वचन कह, २ हे दाऊद की गद्दी पर
विराजमान यहूदा के राजा, तू अपने कर्म-
चारियों और अपनी प्रजा के लोगों समेत
जो इन फाटकों से आया करते हैं, यहोवा
का वचन सुन। ३ यहोवा यों कहता
है, न्याय और धर्म के काम करो, और

लुटे हुए को अन्धेर करनेवाले के हाथ से
छुड़ाओ। और परदेशी, अनाथ और
विधवा पर अन्धेर व उपद्रव मत करो,
न इस स्थान में निर्दोषों का लोहू बहाओ।
४ देखो, यदि तुम ऐसा करोगे, तो इस
भवन के फाटकों में होकर दाऊद की
गद्दी पर विराजमान राजा रथों और
घोड़ों पर चढ़े हुए अपने अपने कर्मचारियों
और प्रजा समेत प्रवेश किया करेंगे।
५ परन्तु, यदि तुम इन बातों को न मानो
तो, मैं अपनी ही सौगन्ध खाकर कहता
हूं, यहोवा की यह वाणी है, कि यह भवन
उजाड़ हो जाएगा। ६ क्योंकि यहोवा
यहूदा के राजा के इस भवन के विषय में
यों कहता है, तू मुझे गिलाद देश सा
और लबानोन के शिखर सा दिखाई
पड़ता है, परन्तु निश्चय मैं तुझे मरुस्थल
व एक निर्जन नगर बनाऊंगा। ७ मैं
नाश करनेवालों को हथियार देकर तेरे
विरुद्ध भेजूंगा, वे तेरे सुन्दर देवदारों
को काटकर आग में झोंक देंगे। ८ और
जाति जाति के लोग जब इस नगर के
पास से निकलेंगे तब एक दूसरे से पूछेंगे,
यहोवा ने इस बड़े नगर की ऐसी दशा
क्यों की है? ९ तब लोग कहेंगे, इसका
कारण यह है कि उन्हों ने अपने परमेश्वर
यहोवा की वाचा को तोड़कर दूसरे देवताओं
को दण्डवत् की और उनकी उपासना
भी की॥

१० मरे हुओं के लिये मत रोओ, उसके
लिये विलाप मत करो। उसी के लिये
फूट फूटकर रोओ जो परदेश चला गया
है, क्योंकि वह लौटकर अपनी जन्मभूमि
को फिर कभी देखने न पाएगा।
११ क्योंकि यहूदा के राजा योशिय्याह का
पुत्र शल्लूम, जो अपने पिता योशिय्याह
के स्थान पर राजा था और इस स्थान
से निकल गया, उसके विषय में यहोवा यों
कहता है कि वह फिर यहां लौटकर न
आने पाएगा। १२ वह जिस स्थान में
बंधुआ होकर गया है उसी में मर जाएगा,
और इस देश को फिर कभी देखने न
पाएगा॥

१३ उस पर हाय जो अपने घर को
अधर्म से और अपनी उपरौठी कोठरियों
को अन्याय से बनवाता है, जो अपने
पड़ोसी से बेगारी में काम कराता है और
उसकी मजदूरी नहीं देता। १४ वह कहता
है, मैं अपने लिये लम्बा-चौड़ा घर और
हवादार कोठा बना लूंगा, और वह
खिड़कियां बनाकर उन्हें देवदार की लकड़ी
से पाट लेता है, और सिन्दूर से रंग देता
है। १५ तू जो देवदार की लकड़ी का
अभिलाषी है, क्या इस रीति से तेरा
राज्य स्थिर रहेगा। देख, तेरा पिता
न्याय और धर्म के काम करता था, और
वह खाता पीता और सुख से भी रहता था।
१६ वह इस कारण सुख से रहता था
क्योंकि वह दीन और दरिद्र लोगों का
न्याय चुकाता था। क्या यही मेरा ज्ञान
रखना नहीं है? यहोवा की यह वाणी है।
१७ परन्तु तू केवल अपना ही लाभ देखता
है, और निर्दोषों की हत्या करने और
अन्धेर और उपद्रव करने में अपना मन
और दृष्टि लगाता है। १८ इसलिये
योशिय्याह के पुत्र यहूदा के राजा
यहोयाकीम के विषय में यहोवा यह कहता
है, कि जैसे लोग इस रीति से कहकर रोते
हैं, हाय मेरे भाई, हाय मेरी बहिन!
इस प्रकार कोई हाय मेरे प्रभु वा हाय
तेरा विभव कहकर उसके लिये विलाप
न करेगा। १९ वरन उसको गदहे की

नाई मिट्टी दी जाएगी, वह घसीटकर
यरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक दिया
जाएगा ॥
२० लबानोन पर चढ़कर हाय हाय
कर, तब बाशान जाकर ऊंचे स्वर से
चिल्ला, फिर अबारीम पहाड़ पर जाकर
हाय-हाय कर, क्योंकि तेरे सब मित्र नाश
हो गए हैं। २१ तेरे सुख के समय में ने
तुझ को चिताया था, परन्तु तू ने कहा,
मैं तेरी न सुनूंगी। युवावस्था ही से
तेरी चाल ऐसी है कि तू मेरी बात नहीं
सुनती। २२ तेरे सब चरवाहे वायु से
उड़ाए जाएंगे, और तेरे मित्र बंधुआई मे
चले जाएंगे, निश्चय तू उस समय अपनी
सारी बुराइयों के कारण लज्जित होगी
और तेरा मुह काला हो जाएगा। २३ हे
लबानोन की रहनेवाली, हे देवदार मे
अपना घोंसला बनानेवाली, जब तुझ को
जच्चा की सी पीडाए उठे तब तू व्याकुल
हो जाएगी।
२४ यहोवा की यह वाणी है, मेरे
जीवन की सौगन्ध, चाहे यहोयाकीम का
पुत्र यहूदा का राजा कोन्याह, मेरे दहिने
हाथ की अंगूठी भी होता, तौभी मैं उसे
उतार फेंकता। २५ मैं तुझे तेरे प्राण के
खोजियो के हाथ, और जिन से तू डरता है
उनके अर्थात् बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
और कसदियो के हाथ मे कर दूंगा।
२६ मैं तुझे तेरी जननी समेत एक पराए
देश मे जो तुम्हारी जन्मभूमि नही है
फेंक दूंगा, और तुम वही मर जाओगे।
२७ परन्तु जिस देश मे वे लौटने की
बडी लालसा करते हैं, वहा कभी लौटने
न पाएंगे ॥
२८ क्या, यह पुरुष कोन्याह तुच्छ
और टूटा हुआ बर्तन है? क्या यह
निकम्मा बर्तन है? फिर वह वंश समेत
अनजाने देश में क्यों निकालकर फेंक
दिया जाएगा? २९ हे पृथ्वी, पृथ्वी,
हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन!
३० यहोवा यों कहता है कि इस पुरुष को
निर्वंश लिखो, उसका जीवनकाल कुशल
से न बीतेगा, और न उसके वंश में से
कोई भाग्यवान होकर दाऊद की गद्दी
पर विराजमान वा यहूदियों पर प्रभुता
करनेवाला होगा ॥

२३ उन चरवाहों पर हाय जो
मेरी चराई की भेड़-बकरियों को
तितर-बितर करते और नाश करते हैं,
यहोवा यह कहता है। २ इसलिये इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा अपनी प्रजा के
चरवाहों से यों कहता है, तुम ने मेरी
भेड़-बकरियो की सुधि नही ली, वरन
उनको तितर-बितर किया और बरबस
निकाल दिया है, इस कारण यहोवा की
यह वाणी है कि मैं तुम्हारे बुरे कामों
का दण्ड दूंगा। ३ तब मेरी भेड़-
बकरिया जो बची है, उनको मैं उन सब
देशों मे से जिन मे मैं ने उन्हे बरबस
भेज दिया है, स्वयं ही उन्हे लौटा लाकर
उन्ही की भेड़शाला मे इकट्ठा करूंगा,
और वे फिर फूले-फलेंगी। ४ मैं उनके
लिये ऐसे चरवाहे नियुक्त करूंगा जो
उन्हे चराएंगे, और तब वे न तो फिर
डरेंगी, न विस्मित होंगी और न उन मे
से कोई खो जाएगी, यहोवा की यह वाणी
है ॥
५ यहोवा की यह भी वाणी है, देख
ऐसे दिन आते है जब मैं दाऊद के कुल
मे एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह
राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और

अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता
करेगा। ६ उसके दिनों में यहूदी लोग
बचे रहेंगे, और इस्राएली लोग निडर
बसे रहेंगे। और यहोवा उसका नाम
"हमारी धार्मिकता" रखेगा॥
७ सो देख, यहोवा की यह वाणी है
कि ऐसे दिन आएंगे जिन में लोग फिर
न कहेंगे, कि "यहोवा जो हम इस्राएलियों
को मिस्र देश से छुड़ा ले आया, उसके
जीवन की सौगन्ध," ८ परन्तु वे यह
कहेंगे, "यहोवा जो इस्राएल के घराने
को उत्तर देश से और उन सब देशों से भी
जहां उस ने हमें बरबस निकाल दिया,
छुड़ा ले आया, उसके जीवन की सौगन्ध।"
तब वे अपने ही देश में बसे रहेंगे॥
९ भविष्यद्वक्ताओं के विषय मेरा हृदय
भीतर ही भीतर फटा जाता है, मेरी सब
हड्डियां थरथराती हैं, यहोवा ने जो पवित्र
वचन कहे हैं, उन्हें सुनकर, मैं ऐसे मनुष्य
के समान हो गया हूं जो दाखमधु के
नशे में चूर हो गया हो, १० क्योंकि यह
देश व्यभिचारियों से भरा है, इस पर
ऐसा शाप पड़ा है कि यह विलाप कर
रहा है, वन की चराइयां भी सूख गईं।
लोग बड़ी दौड़ तो दौड़ते हैं, परन्तु बुराई
ही की ओर, और वीरता तो करते हैं,
परन्तु अन्याय ही के साथ*। ११ क्योंकि
भविष्यद्वक्ता और याजक दोनों भक्तिहीन
हो गए हैं, अपने भवन में भी मैं ने उनकी
बुराई पाई है, यहोवा की यही वाणी है।
१२ इस कारण उनका मार्ग अन्धेरा और
फिसलाहा होगा जिस में वे ढकेलकर
गिरा दिए जाएंगे, क्योंकि, यहोवा की
यह वाणी है कि मैं उनके दण्ड के वर्ष
में उन पर विपत्ति डालूंगा। १३ शोमरोन
के भविष्यद्वक्ताओं में मैं ने यह मूर्खता देखी
थी कि वे बाल के नाम से भविष्यद्वाणी
करते और मेरी प्रजा इस्राएल को भटका
देते थे। १४ परन्तु यरूशलेम के नबियों
में मैं ने ऐसे काम देखे हैं, जिन से रोंगटे
खड़े हो जाते हैं, अर्थात् व्यभिचार और
पाखण्ड, वे कुकर्मियों को ऐसा हियाव
बन्धाते हैं कि वे अपनी अपनी बुराई से
पश्चात्ताप भी नहीं करते, सब निवासी
मेरी दृष्टि में सदोमियों और अमोरियों
के समान हो गए हैं। १५ इस कारण
सेनाओं का यहोवा यरूशलेम के
भविष्यद्वक्ताओं के विषय में यों कहता
है, देख, मैं उनको कड़वी वस्तुएं खिलाऊंगा
और विष पिलाऊंगा, क्योंकि उनके
कारण सारे देश में भक्तिहीनता फैल गई
है॥
१६ सेनाओं के यहोवा ने तुम से यों
कहा है, इन भविष्यद्वक्ताओं की बातों की
ओर जो तुम से भविष्यद्वाणी करते हैं
कान मत लगाओ, क्योंकि ये तुम को
व्यर्थ बातें सिखाते हैं, ये दर्शन का दावा
करके यहोवा के मुख की नहीं, अपने ही
मन की बातें कहते हैं। १७ जो लोग
मेरा तिरस्कार करते हैं उन से ये
भविष्यद्वक्ता सदा कहते रहते हैं कि यहोवा
कहता है, तुम्हारा कल्याण होगा, और
जितने लोग अपने हठ ही पर चलते हैं,
उन से ये कहते हैं, तुम पर कोई विपत्ति
न पड़ेगी॥
१८ भला कौन यहोवा की गुप्त सभा
में खड़ा होकर उसका वचन सुनने और
समझने* पाया है? १९ [illegible] ने ध्यान

* मूल में—और उनकी दौड़ बुरी और उनकी वीरता नायक है।

* मूल में—[illegible] उसने भार सुना।

देकर मेरा वचन सुना है? देखो, यहोवा
की जलजलाहट का प्रचण्ड बवण्डर और
आंधी चलने लगी है, और उसका झोंका
दुष्टों के सिर पर जोर से लगेगा।
२० जब तक यहोवा अपना काम और
अपनी युक्तियों को पूरी न कर चुके, तब
तक उसका क्रोध शान्त न होगा। अन्त के
दिनों में तुम इस बात को भली भांति
समझ सकोगे॥

२१ ये भविष्यद्वक्ता बिना मेरे भेजे
दौड़ जाते और बिना मेरे कुछ कहे
भविष्यद्वाणी करने लगते हैं। २२ यदि
ये मेरी शिक्षा में स्थिर रहते, तो मेरी
प्रजा के लोगों को मेरे वचन सुनाते,
और वे अपनी बुरी चाल और कामों से
फिर जाते॥

२३ यहोवा की यह वाणी है, क्या
मैं ऐसा परमेश्वर हूं, जो दूर नहीं, निकट
ही रहता हूं? २४ फिर यहोवा की
यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों
में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं?
क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण
नहीं हैं? २५ मैं ने इन भविष्यद्वक्ताओं
की बातें भी सुनी हैं जो मेरे नाम से यह
कहकर झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं कि
मैं ने स्वप्न देखा है, स्वप्न! २६ जो
भविष्यद्वक्ता झूठमूठ भविष्यद्वाणी करते
और अपने मन ही के छल के भविष्यद्वक्ता
हैं, यह बात कब तक उनके मन में समाई
रहेगी? २७ जैसे मेरी प्रजा के लोगों
के पुरखा मेरा नाम भूलकर बाल का नाम
लेने लगे थे, वैसे ही अब ये भविष्यद्वक्ता
उन्हें अपने अपने स्वप्न बता बताकर मेरा
नाम भुलाना चाहते हैं। २८ यदि किसी
भविष्यद्वक्ता ने स्वप्न देखा हो, तो वह
उसे बताए, परन्तु जिस किसी ने मेरा
वचन सुना हो तो वह मेरा वचन सच्चाई
से सुनाए। यहोवा की यह वाणी है,
कहां भूसा और कहां गेहूं? २९ यहोवा
की यह भी वाणी है कि क्या मेरा वचन
आग सा नहीं है? फिर क्या वह ऐसा
हथौड़ा नहीं जो पत्थर को फोड़ डाले?
३० यहोवा की यह वाणी है, देखो, जो
भविष्यद्वक्ता मेरे वचन औरों से चुरा
चुराकर बोलते हैं, मैं उनके विरुद्ध हूं।
३१ फिर यहोवा की यह भी वाणी है
कि जो भविष्यद्वक्ता "उसकी यह वाणी
है", ऐसी झूठी वाणी कहकर अपनी
अपनी जीभ डुलाते हैं, मैं उनके भी
विरुद्ध हूं। ३२ यहोवा की यह भी वाणी
है कि जो बिना मेरे भेजे वा बिना मेरी
आज्ञा पाए स्वप्न देखने का झूठा दावा
करके भविष्यद्वाणी करते हैं, और उसका
वर्णन करके मेरी प्रजा को झूठे घमण्ड
में आकर भरमाते हैं, उनके भी मैं विरुद्ध
हूं, और उन से मेरी प्रजा के लोगों का
कुछ लाभ न होगा॥

३३ यदि साधारण लोगों में से कोई
जन वा कोई भविष्यद्वक्ता वा याजक
तुम से पूछे कि यहोवा ने क्या प्रभावशाली
वचन कहा है, तो उस से कहना, क्या
प्रभावशाली वचन? यहोवा की यह वाणी
है, मैं तुम को त्याग दूंगा। ३४ और जो
भविष्यद्वक्ता वा याजक वा साधारण
मनुष्य "यहोवा का कहा हुआ भारी
वचन' ऐसा कहता रहे, उसको घराने
समेत मैं दण्ड दूंगा। ३५ तुम लोग एक
दूसरे से और अपने अपने भाई से यों
पूछना, यहोवा ने क्या उत्तर दिया?
३६ वा, यहोवा ने क्या कहा है?
"यहोवा का कहा हुआ भारी वचन',
इस प्रकार तुम भविष्य में न कहना नहीं

तो तुम्हारा ऐसा कहना ही दण्ड का
कारण हो जाएगा, क्योकि हमारा
परमेश्वर सेनाओ का यहोवा जो जीवित
परमेश्वर है, तुम लोगो ने उसके वचन
बिगाड दिए है। ३७ तू भविष्यद्वक्ता
से यो पूछ कि यहोवा ने तुझे क्या उत्तर
दिया ? ३८ वा, यहोवा ने क्या कहा
है ? यदि तुम "यहोवा का कहा हुआ
प्रभावशाली वचन" इसी प्रकार कहोगे,
तो यहोवा का यह वचन सुनो, मै ने
तो तुम्हारे पास कहला भेजा है, भविष्य
में ऐसा न कहना कि "यहोवा का कहा
हुआ प्रभावशाली वचन।" परन्तु तुम
यह कहते ही रहते हो, कि "यहोवा का
कहा हुआ प्रभावशाली वचन।" ३९ इस
कारण देखो, मै तुम को बिलकुल भूल
जाऊगा और तुम को और इस नगर को
जिसे मै ने तुम्हारे पुरखाओ को, और
तुम को भी दिया है, ४० त्यागकर अपने
साम्हने से दूर कर दूगा। और मै ऐसा
करूगा कि तुम्हारी नामधराई और अनादर
सदा बना रहेगा, और कभी भूला न
जाएगा ॥

२४ जब बाबुल का राजा नबूकद-
नेस्सर, यहोयाकीम के पुत्र यहूदा
के राजा यकोन्याह को, और यहूदा के
हाकिमो और लोहारो और और कारीगरो
को बधुआ करके यरूशलेम से बाबुल को
ले गया, तो उसके बाद यहोवा ने मुझ
को अपने मन्दिर के साम्हने रखे हुए अजीरो
के दो टोकरे दिखाए। २ एक टोकरे
में तो पहिले से पके अच्छे अच्छे अजीर थे,
और दूसरे टोकरे मे बहुत निकम्मे अजीर
थे, बरन वे ऐसे निकम्मे थे कि खाने के
योग्य भी न थे। ३ फिर यहोवा ने मुझ
से पूछा, हे यिर्मयाह, तुझे क्या देख पडता
है ? मै ने कहा, अजीर, जो अजीर
अच्छे ह सो तो बहुत ही अच्छे है, परन्तु
जो निकम्मे है, सो बहुत ही निकम्मे है,
बरन ऐसे निकम्मे है कि खाने के योग्य
भी नही है ॥

४ तब यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, ५ कि इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, जैसे अच्छे अजीरो
को, वैसे ही मै यहूदी बधुओ को जिन्हे
मै ने इस स्थान से कसदियो के देश मे
भेज दिया है, देखकर प्रसन्न हूगा। ६ मै
उन पर कृपादृष्टि रखूगा और उनको
इस देश मे लौटा ले आऊगा, और उन्हे
नाश न करूगा परन्तु बनाऊगा, उन्हे
उखाड न डालूगा, परन्तु लगाए रखूगा।
७ मै उनका ऐसा मन कर दूगा कि वे
मुझे जानेगे कि मै यहोवा हू, और वे
मेरी प्रजा ठहरेगे और म उनका परमेश्वर
ठहरूगा, क्योकि वे मेरी ओर सारे मन
से फिरेंगे ॥

८ परन्तु जैसे निकम्मे अजीर, निकम्मे
होने के कारण खाए नही जाते, उसी
प्रकार से मै यहूदा के राजा सिदकिय्याह
और उसके हाकिमो और बचे हुए
यरूशलेमियो को, जो इस देश मे वा मिस्र
में रह गए ह, छोड दूगा। ९ इस कारण
वे पृथ्वी के राज्य राज्य में मारे मारे
फिरते हुए दु ख भोगते रहेगे, और जितने
स्थानो में मै उन्हें बरबस निकाल दूगा, उन
सभो में वे नामधराई और दृष्टात और
स्राप का विषय होगे। १० और म उन
मे तलवार चलाऊगा, और महगी और
मरी फैलाऊगा, और अन्त म इस देश
में से जिसे म ने उनके पुरखाओ को और
उनको दिया, वे मिट जाएगे ॥

२५ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज्य के
चौथे वर्ष मे जो बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
के राज्य का पहिला वर्ष था, २ यहोवा
का जो वचन यिर्मयाह नबी के पास पहुचा,
और जिसे यिर्मयाह नबी ने सब यहूदियो
और यरूशलेम के सब निवासियो से कहा,
वह यह है ३ आमोन के पुत्र यहूदा
के राजा योशिय्याह के राज्य के तेरहवे
वर्ष से लेकर आज के दिन तक अर्थात्
तेईस वर्ष से यहोवा का वचन मेरे पास
पहुचता आया है, और मैं उसे बडे यत्न
के साथ * तुम से कहता आया हू, परन्तु
तुम ने उसे नही सुना। ४ और यद्यपि
यहोवा तुम्हारे पास अपने सारे दासो
अथवा भविष्यद्वक्ताओ को भी यह कहने
के लिये बडे यत्न से भेजता आया है
५ कि अपनी अपनी बुरी चाल और अपने
अपने बुरे कामो से फिरो तब जो देश
यहोवा ने प्राचीनकाल मे तुम्हारे पितरो
को और तुम को भी सदा के लिये दिया
है उस पर बसे रहने पाओगे, परन्तु तुम
ने न तो सुना और न कान लगाया है।
६ और दूसरे देवताओ के पीछे होकर
उनकी उपासना और उनको दण्डवत् मत
करो, और न अपनी बनाई हुई वस्तुओ
के द्वारा मुझे रिस दिलाओ, तब मैं
तुम्हारी कुछ हानि न करूगा। ७ यह
सुनने पर भी तुम ने मेरी नही मानी, वरन
अपनी बनाई हुई वस्तुओ के द्वारा मुझे रिस
दिलाते आए हो जिस से तुम्हारी हानि ही
हो सकती है, यहोवा की यही वाणी है॥
८ इसलिये सेनाओ का यहोवा यो
कहता है कि तुम ने जो मेरे वचन नही माने,
९ इसलिये सुनो, मैं उत्तर मे रहनेवाले
सब कुलो को बुलाऊगा, और अपने दास
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा
भेजूगा, और उन सभो को इस देश
और इसके निवासियो के विरुद्ध और
इसके आस पास की सब जातियो के
विरुद्ध भी ले आऊगा, और इन सब
देशो का मैं सत्यानाश करके उन्हे ऐसा
उजाड दूगा कि लोग इन्हे देखकर ताली
बजाएगे, वरन ये सदा उजडे ही रहेंगे,
यहोवा की यही वाणी है। १० और
मैं ऐसा करूगा कि इन में न तो हर्ष और
न आनन्द का शब्द सुनाई पडेगा, और
न दुल्हे वा दुल्हिन का, और न चक्की का
भी शब्द सुनाई पडेगा और न इन मे
दिया जलेगा। ११ सारी जातियो का
यह देश उजाड ही उजाड होगा, और ये
सब जातिया सत्तर वर्ष तक बाबुल के
राजा के आधीन रहेंगी। १२ जब सत्तर
वर्ष बीत चुके, तब मैं बाबुल के राजा और
उस जाति के लोगो और कसदियो के
देश के सब निवासियो को अधर्म का
दण्ड दूगा, यहोवा की यह वाणी है,
और उस देश को सदा के लिये उजाड
दूगा। १३ मैं उस देश मे अपने वे सब
वचन पूरे करूगा जो मैं ने उसके विषय
मे कहे है, और जितने वचन यिर्मयाह
ने सारी जातियो के विरुद्ध भविष्यद्वाणी
करके पुस्तक मे लिखे है। १४ क्योकि
बहुत सी जातियो के लोग और बडे बडे
राजा भी उन से अपनी सेवा कराएगे,
और मैं उनको उनकी करनी का फल
भुगताऊगा॥
१५ इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने
मुझ से यो कहा, मेरे हाथ से इस जलजलाहट
के दाखमधु का कटोरा लेकर उन सब

* मूल में—तड़के उठकर।

जातियो को पिला दे जिनके पास मै
तुझे भेजता हू। १६ वे उसे पीकर उस
तलवार के कारण जो मै उनके बीच मे
चलाऊगा लडखडाएगे और बावले हो
जाएगे ॥

१७ सो मै ने यहोवा के हाथ से वह
कटोरा लेकर उन सब जातियो को जिनके
पास यहोवा ने मुझे भेजा, पिला दिया।
१८ अर्थात् यरूशलेम और यहूदा के
नगरो के निवासियो को, और उनके
राजाओ और हाकिमो को पिलाया, ताकि
उनका देश उजाड हो जाए और लोग
ताली बजाए, और उसकी उपमा देकर
शाप दिया करे, जैसा आजकल होता है।
१९ और मिस्र के राजा फिरौन और उसके
कर्मचारियो, हाकिमो, और सारी प्रजा
को, २० और सब दोगले मनुष्यो की
जातियो को और उस देश के सब राजाओ
को, और पलिश्तियो के देश के सब
राजाओ को और अश्कलोन अज्जा और
एक्रोन के और अशदोद के बचे हुए लोगो
को, २१ और एदोमियो, मोआबियो और
अम्मोनियो को और सारे राजाओ को,
२२ और सीदोन के सब राजाओ को,
और समुद्र पार के देशो के राजाओ को,
२३ फिर ददानियो, तेमाइयो और बूजियो
को और जितने अपने गाल के बालो को
मुडा डालते है, उन सभो को भी,
२४ और अरब के सब राजाओ को और
जगल में रहनेवाले दोगले मनुष्यो के सब
राजाओ को, २५ और जिम्री, एलाम
और माद के सब राजाओ को, २६ और
क्या निकट क्या दूर के उत्तर दिशा के
सब राजाओ को एक सग पिलाया, निदान
धरती भर में रहनेवाले जगत के राज्यो
के सब लोगो को मै ने पिलाया। और
इन सब के पीछे शेषक * के राजा को
भी पीना पडेगा ॥

२७ तब तू उन से यह कहना, सेनाओ
का यहोवा जो इस्राएल का परमेश्वर है,
यो कहता है, पीओ, और मतवाले हो
और छाँट करो, गिर पडो और फिर
कभी न उठो, क्योकि यह उस तलवार
के कारण से होगा जो मै तुम्हारे बीच
मे चलाऊगा ॥

२८ और यदि वे तेरे हाथ से यह
कटोरा लेकर पीने से इनकार करे तो
उन से कहना, सेनाओ का यहोवा यो
कहता है कि तुम को निश्चय पीना पडेगा।
२९ देखो, जो नगर मेरा कहलाता है,
मै पहिले उसी में विपत्ति डालने लगूगा,
फिर क्या तुम लोग निर्दोष ठहरके
बचोगे ? तुम निर्दोष ठहरके न बचोगे,
क्योकि मै पृथ्वी के सब रहनेवालो
पर तलवार चलाने पर हू, सेनाओ के
यहोवा की यही वाणी है। ३० इतनी
बाते भविष्यद्वाणी की रीति पर उन से
कहकर यह भी कहना, यहोवा ऊपर से
गरजेगा, और अपने उसी पवित्र धाम में
से अपना शब्द सुनाएगा, वह अपनी
चराई के स्थान के विरुद्ध जोर से गरजेगा,
वह पृथ्वी के सारे निवासियो के विरुद्ध भी
दाख लताडनेवालो की नाई ललकारेगा।
३१ पृथ्वी की छोर लो भी कोलाहल
होगा, क्योकि सब जातियो से यहोवा
का मुकद्दमा है, वह सब मनुष्यो से
वादविवाद करेगा, और दुष्टो को तलवार
के वश में कर देगा ॥

३२ सेनाओ का यहोवा यो कहता है,
देखो, विपत्ति एक जाति से दूसरी जाति

* अनुमान है कि यह बाबुल का गुप्त
नाम है।

वश मे वध होने के लिये नही दिया
गया ।।

२७ योशिय्याह के पुत्र, यहूदा के
राजा यहोयाकीम * के राज्य के
आरम्भ मे यहोवा की ओर से यह वचन
यिर्मयाह के पास पहुचा। २ यहोवा ने
मुझ से यह कहा, बन्धन और जूए बनवाकर
अपनी गर्दन पर रख। ३ तब उन्हे
एदोम और मोआब और अम्मोन और
सोर और सीदोन के राजाओ के पास,
उन दूतो के हाथ भेजना जो यहूदा के
राजा सिदकिय्याह के पास यरूशलेम मे
आए है। ४ और उनको उनके स्वामियो
के लिये यह कहकर आज्ञा देना, कि,
इस्राएल का परमेश्वर सेनाओ का यहोवा
यो कहता है, ५ अपने अपने स्वामी से
यो कहो कि पृथ्वी को और पृथ्वी पर के
मनुष्यो और पशुओ को अपनी बडी शक्ति
और बढाई हुई भुजा के द्वारा मै ने बनाया,
और जिस किसी को मै चाहता हू उसी
को मै उन्हे दिया करता हू। ६ अब
मै ने ये सब देश, अपने दास बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर को आप ही दे दिए
है, और मैदान के जीवजन्तुओ को भी
मै ने उसे दिया है कि वे उसके आधीन
रहे। ७ ये सब जातिया उसके और
उसके बाद उसके बेटे और पोते के आधीन
उस समय तक रहेंगी जब तक उसके
भी देश का दिन न आए, तब बहुत सी
जातिया और बडे बडे राजा उस से
भी अपनी सेवा करवाएगे ।।

८ सो जो जाति वा राज्य बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर के आधीन न हो और
उसका जूआ अपनी गर्दन पर न ले ले,
उस जाति को मै तलवार, महगी और
मरी का दण्ड उस समय तक देता रहूगा
जब तक उसको उसके हाथ के द्वारा मिटा
न दू यहोवा की यही वाणी है। ९ इसलिये
तुम लोग अपने भविष्यद्वक्ताओ और
भावी कहनेवालो और टोनहो और तान्त्रिको
की ओर चित्त मत लगाओ जो तुम से
कहते है कि तुम को बाबुल के राजा के
आधीन नही होना पडेगा। १० क्योकि
वे तुम से झूठी भविष्यद्वाणी करते है,
जिस से तुम अपने अपने देश से दूर हो
जाओ और मै आप तुम को दूर करके
नष्ट कर दू। ११ परन्तु जो जाति
बाबुल के राजा का जूआ अपनी गर्दन
पर लेकर उसके आधीन रहेगी उसको
मै उसी के देश मे रहने दूगा, और वह
उस मे खेती करती हुई बसी रहेगी,
यहोवा की यही वाणी है ।।

१२ और यहूदा के राजा सिदकिय्याह
से भी मै ने ये बाते कही, अपनी प्रजा
समेत तू बाबुल के राजा का जूआ अपनी
गर्दन पर ले, और उसके और उसकी
प्रजा के आधीन रहकर जीवित रह।
१३ जब यहोवा ने उस जाति के विषय
जो बाबुल के राजा के आधीन न हो,
यह कहा है कि वह तलवार, महगी और
मरी से नाश होगी, तो फिर तू क्यो
अपनी प्रजा समेत मरना चाहता है?
१४ जो भविष्यद्वक्ता तुझ से कहते है कि
तुझ को बाबुल के राजा के आधीन न
होना पडेगा, उनकी मत सुन, क्योकि
वे तुझ से झूठी भविष्यद्वाणी करते है।
१५ यहोवा की यह वाणी है कि मै ने
उन्हे नही भेजा, वे मेरे नाम से झूठी
भविष्यद्वाणी करते है, और इसका फल

* जान पड़ता है कि यहोयाकीम की सन्ती सिदकिय्याह समझना चाहिये।

यही होगा कि मैं तुझ को देश से निकाल
दूगा, और तू उन नबियो समेत जो तुझ
से भविष्यद्वाणी करते हैं नष्ट हो जाएगा ॥
१६ तब याजको और साधारण लोगो
से भी मैं ने कहा, यहोवा यो कहता है,
तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता तुम से यह
भविष्यद्वाणी करते है कि यहोवा के भवन
के पात्र अब शीघ्र ही बाबुल मे लौटा
दिए जाएगे, उनके वचनो की ओर कान
मत धरो, क्योकि वे तुम से झूठी भविष्य-
द्वाणी करते है। १७ उनकी मत सुनो,
बाबुल के राजा के आधीन होकर और
उसकी सेवा करके जीवित रहो। १८ यह
नगर क्यो उजाड हो जाए? यदि वे
भविष्यद्वक्ता भी हो, और यदि यहोवा
का वचन उनके पास हो, तो वे सेनाओ
के यहोवा से विनती करे कि जो पात्र
यहोवा के भवन मे और यहूदा के राजा
के भवन में और यरूशलेम मे रह गए है,
वे बाबुल न जाने पाए। १९ क्योकि
सेनाओ का यहोवा यो कहता है कि जो
खम्भे और पीतल की नान्द, गगाल और
कुर्सिया और और पात्र इस नगर में
रह गए ह, २० जिन्हें बाबुल का राजा
नबूकदनेस्सर उस समय न ले गया जब
वह यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा
यकोन्याह को और यहूदा और यरूशलेम
के सब कुलीनो को बधुआ करके यरूशलेम
से बाबुल को ले गया था, २१ जो पात्र
यहोवा के भवन मे और यहूदा के राजा
के भवन में और यरूशलेम में रह गए ह,
उनके विषय मे इस्राएल का परमेश्वर
सेनाओ का यहोवा यो कहता है कि वे
भी बाबुल में पहुचाए जाएगे, २२ और
जब तक म उनकी सुधि न लू तब तक
वही रहेगे, और तब म उन्हें लाकर इस
स्थान मे फिर रख दूगा, यहोवा की यही
वाणी ह ॥

२८ फिर उसी वर्ष, अर्थात् यहूदा
के राजा सिदकिय्याह के राज्य के
चौथे वर्ष के पाचवे महीने मे, अज्जूर
का पुत्र हनन्याह जो गिबोन का एक
भविष्यद्वक्ता था, उस ने मुझ से यहोवा
के भवन मे, याजको और सब लोगो के
साम्हने कहा, २ इस्राएल का परमेश्वर
सेनाओ का यहोवा यो कहता है कि
मैं ने बाबुल के राजा के जूए को तोड
डाला है। ३ यहोवा के भवन के जितने
पात्र बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर इस
स्थान से उठाकर बाबुल ले गया, उन्हें
मैं दो वर्ष के भीतर फिर इसी स्थान में
ले आऊगा। ४ और म यहूदा के राजा
यहोयाकीम का पुत्र यकोन्याह और सब
यहूदी बधुए जो बाबुल को गए ह, उनको
भी इस स्थान मे लौटा ले आऊगा
क्योकि मैं न बाबुल के राजा के जूए को
तोड दिया ह, यहोवा की यही वाणी है ॥
५ तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी
से, याजको और उन सब लोगो के साम्हने
जो यहोवा के भवन मे खडे हुए थे कहा,
६ आमीन! यहोवा ऐसा ही करे, जो
बातें तू ने भविष्यद्वाणी करके कही ह
कि यहोवा के भवन के पात्र और सब
बधुए बाबुल से इस स्थान में फिर आएगे,
उन्हे यहोवा पूरा करे। ७ तौभी मेरा
यह वचन सुन, जो म तुझे और सब लोगो
को कह सुनाता हू। ८ जो भविष्यद्वक्ता
प्राचीनकाल से मेरे और तेरे पहिले होते
आए थे, उन्हो ने तो बहुत से देशो और
बडे बडे राज्यो के विरुद्ध युद्ध और विपत्ति
और मरी के विषय भविष्यद्वाणी की

में फैलेगी, और बडी आधी पृथ्वी की
छोर से उठेगी। ३३ उस समय यहोवा
के मारे हुओ की लोथे पृथ्वी की एक
छोर से दूसरी छोर तक पडी रहेगी।
उनके लिये कोई रोने-पीटनेवाला न रहेगा,
और उनकी लोथे न तो बटोरी जाएगी
और न कबरो मे रखी जाएगी, वे भूमि
के ऊपर खाद की नाईं पडी रहेगी।
३४ हे चरवाहो, हाय हाय करो और
चिल्लाओ, हे बलवन्त मेढो और बकरो,
राख मे लोटो, क्योकि तुम्हारे वध होने
के दिन आ पहुचे हैं, और मैं मनभाऊ
बरतन की नाईं तुम्हारा सत्यानाश करूगा।
३५ उस समय न तो चरवाहो के भागने
के लिये कोई स्थान रहेगा, और न बलवन्त
मेढे और बकरे भागने पाएगे। ३६ चर-
वाहो की चिल्लाहट और बलवन्त मेढो
और बकरो के मिमियाने का शब्द सुनाई
पडता है। क्योकि यहोवा उनकी चराई
को नाश करेगा, ३७ और यहोवा के क्रोध
भडकने के कारण शान्ति के स्थान नष्ट
हो जाएगे, जिन वासस्थानो मे अब शान्ति
है, वे नष्ट हो जाएगे। ३८ युवा सिंह
की नाईं वह अपने ठौर को छोडकर
निकलता है, क्योकि अधेर करनेहारी
तलवार और उसके भडके हुए कोप के
कारण उनका देश उजाड हो गया है॥

२६ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज्य के
आरम्भ मे, यहोवा की ओर से यह वचन
पहुचा, यहोवा यो कहता है, २ यहोवा के
भवन के आगन मे खडा होकर, यहूदा
के सब नगरो के लोगो के साम्हने जो
यहोवा के भवन मे दडवत् करने को
आए, ये वचन जिनके विषय उन से कहने
की आज्ञा मैं तुझे देता हू कह दे; उन मे
से कोई वचन मत रख छोड। ३ सम्भव
है कि वे सुनकर अपनी अपनी बुरी चाल से
फिरे और मैं उनकी हानि करने से पछताऊ
जो उनके बुरे कामो के कारण मैं ने
ठाना था। ४ इसलिये तू उन से कह,
यहोवा यो कहता है, यदि तुम मेरी
सुनकर मेरी व्यवस्था के अनुसार जो
मैं ने तुम को सुनवा दी है* न चलो,
५ और न मेरे दास भविष्यद्वक्ताओ के
वचनो पर कान लगाओगे, (जिन्हे मैं
तुम्हारे पास बडा यत्न करके† भेजता
आया हू, परन्तु तुम ने उनकी नही सुनी),
६ तो मैं इस भवन को शीलो के समान
उजाड दूगा, और इस नगर का ऐसा
सत्यानाश कर दूगा कि पृथ्वी की सारी
जातियो के लोग उसकी उपमा दे देकर
शाप दिया करेगे॥

७ जब यिर्मयाह ये वचन यहोवा के
भवन मे कह रहा था, तब याजक और
भविष्यद्वक्ता और सब साधारण लोग
सुन रहे थे। ८ और जब यिर्मयाह सब
कुछ जिसे सारी प्रजा से कहने की आज्ञा
यहोवा ने दी थी कह चुका, तब याजको
और भविष्यद्वक्ताओ और सब साधारण
लोगो ने यह कहकर उसको पकड लिया,
निश्चय तुझे प्राणदण्ड होगा। ९ तू ने
क्यो यहोवा के नाम से यह भविष्यद्वाणी
की कि यह भवन शीलो के समान उजाड
हो जाएगा, और यह नगर ऐसा उजडेगा
कि उस मे कोई न रह जाएगा? इतना
कहकर सब साधारण लोगो ने यहोवा
के भवन मे यिर्मयाह के विरुद्ध भीड
लगाई॥

* मूल में—तुम्हारे साम्हने रखी है।
† मूल में—तड़के उठके।

१० यहूदा के हाकिम ये बातें सुनकर,
राजा के भवन से यहोवा के भवन में
चढ़ आए और उसके नये फाटक में बैठ
गए। ११ तब याजकों और भविष्य-
द्वक्ताओं ने हाकिमों और सब लोगों से
कहा, यह मनुष्य प्राणदण्ड के योग्य है,
क्योंकि इस ने इस नगर के विरुद्ध ऐसी
भविष्यद्वाणी की है जिसे तुम भी अपने
कानों से सुन चुके हो। १२ तब यिर्मयाह
ने सब हाकिमों और सब लोगों से कहा,
जो वचन तुम ने सुने हैं, उसे यहोवा ही
ने मुझे इस भवन और इस नगर के
विरुद्ध भविष्यद्वाणी की रीति पर कहने
के लिये भेज दिया है। १३ इसलिये अब
अपना चालचलन और अपने काम सुधारो,
और अपने परमेश्वर यहोवा की बात
मानो, तब यहोवा उस विपत्ति के विषय
में जिसकी चर्चा उस ने तुम से की है,
पछताएगा। १४ देखो, मैं तुम्हारे वश
में हूं, जो कुछ तुम्हारी दृष्टि में भला
और ठीक हो वही मेरे साथ करो।
१५ पर यह निश्चय जानो, कि, यदि
तुम मुझे मार डालोगे, तो अपने को और
इस नगर को और इसके निवासियों को
निर्दोष के हत्यारे बनाओगे, क्योंकि
सचमुच यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास ये सब
वचन सुनाने के लिये भेजा है॥

१६ तब हाकिमों और सब लोगों ने
याजकों और नबियों से कहा, यह मनुष्य
प्राणदण्ड के योग्य नहीं है क्योंकि उस
ने हमारे परमेश्वर यहोवा के नाम से
हम से कहा है। १७ और देश के पुरनियों
में से कितनों ने उठकर प्रजा की सारी
मण्डली से कहा, १८ यहूदा के राजा
हिजकिय्याह के दिनों में मोरसेती मीकायाह
भविष्यद्वाणी कहता था, उस ने यहूदा
के सारे लोगों से कहा, सेनाओं का यहोवा
यों कहता है कि सिय्योन जोतकर खेत
बनाया जाएगा और यरूशलेम खण्डहर
हो जाएगा, और भवनवाला पर्वत जंगली
स्थान हो जाएगा*। १९ क्या यहूदा के
राजा हिजकिय्याह ने वा किसी यहूदी
ने उसको कहीं मरवा डाला? क्या उस
राजा ने यहोवा का भय न माना और
उस से बिनती न की? और तब यहोवा
ने जो विपत्ति उन पर डालने के लिये कहा
था, उसके विषय क्या वह न पछताया?
ऐसा करके हम अपने प्राणों की बड़ी
हानि करेंगे॥

२० फिर शमायाह का पुत्र ऊरिय्याह
नाम किर्यत्यारीम का एक पुरुष जो यहोवा
के नाम से भविष्यद्वाणी कहता था उस
ने भी इस नगर और इस देश के विरुद्ध
ठीक ऐसी ही भविष्यद्वाणी की जैसी
यिर्मयाह ने अभी की है। २१ और जब
यहोयाकीम राजा और उसके सब वीरों
और सब हाकिमों ने उसके वचन सुने,
तब राजा ने उसे मरवा डालने का यत्न
किया, और ऊरिय्याह यह सुनकर डर
के मारे मिस्र को भाग गया। २२ तब
यहोयाकीम राजा ने मिस्र को लोग भेजे
अर्थात् अकबोर के पुत्र एलनातान को
कितने और पुरुषों के साथ मिस्र को भेजा।
२३ और वे ऊरिय्याह को मिस्र से
निकालकर यहोयाकीम राजा के पास
ले आए, और उस ने उसे तलवार से
मरवाकर उसकी लोथ को साधारण लोगों
की कबरों में फिंकवा दिया। २४ परन्तु
शापान का पुत्र अहीकाम यिर्मयाह की
सहायता करने लगा और वह लोगों के

* मूल में—और भवन का पर्वत, अरण्य के ऊंचे स्थान।

थी। ९ परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के
विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका
वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता
के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि
यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है ।।
१० तब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने उस
जूए को जो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की
गर्दन पर था, उतारकर तोड दिया।
११ और हनन्याह ने सब लोगो के साम्हने
कहा, यहोवा यो कहता है कि इसी प्रकार
से मै पूरे दो वर्ष के भीतर बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर के जूए को सब जातियो की
गर्दन पर से उतारकर तोड दूगा। तब
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता चला गया ।।
१२ जब हनन्याह भविष्यद्वक्ता ने
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता की गर्दन पर से
जूआ उतारकर तोड दिया, उसके बाद
यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास
पहुचा १३ जाकर हनन्याह से यह कह,
यहोवा यो कहता है कि तू ने काठ का
जूआ तो तोड दिया, परन्तु ऐसा करके
तू ने उसकी सन्ती लोहे का जूआ बना
लिया है। १४ क्योकि इस्राएल का
परमेश्वर, सेनाओ का यहोवा यो कहता है
कि मै इन सब जातियो की गर्दन पर लोहे
का जूआ रखता हू और वे बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर के आधीन रहेगे,
और इनको उसके अधीन होना पडेगा,
क्योकि मैदान के जीवजन्तु भी मै उसके
वश में कर देता हू। १५ और यिर्मयाह
नबी ने हनन्याह नबी से यह भी कहा,
हे हनन्याह, देख यहोवा ने तुझे नही
भेजा, तू ने इन लोगो को झूठी आशा
दिलाई है। १६ इसलिये यहोवा तुझ से
यो कहता है, कि देख, मै तुझ को पृथ्वी
के ऊपर से उठा दूगा, इसी वर्ष में तू
मरेगा, क्योकि तू ने यहोवा की ओर से
फिरने की बातें कही हैं। १७ इस वचन
के अनुसार हनन्याह उसी वर्ष के सातवें
महीने में मर गया ।।

२९ उसी वर्ष यिर्मयाह नबी ने इस
आशय की पत्री, उन पुरनियो और
भविष्यद्वक्ताओ और साधारण लोगो के
पास भेजी जो बंधुओ मे से बचे थे,
जिनको नबूकदनेस्सर यरूशलेम से बाबुल
को ले गया था। २ यह पत्री उस समय
भेजी गई, जब यकोन्याह राजा और
राजमाता, खोजे, यहूदा और यरूशलेम
के हाकिम, लोहार और अन्य कारीगर
यरूशलेम से चले गए थे। ३ यह पत्री
शापान के पुत्र एलासा और हिल्किय्याह
के पुत्र गमर्याह के हाथ भेजी गई, जिन्हें
यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर के पास बाबुल को
भेजा। ४ उस में लिखा था कि जितने
लोगो को मै ने यरूशलेम से बधुआ
करके बाबुल मे पहुचवा दिया है, उन
सभो से इस्राएल का परमेश्वर सेनाओ
का यहोवा यों कहता है ५ घर बनाकर
उन मे बस जाओ, बारिया लगाकर
उनके फल खाओ। ६ ब्याह करके बेटे-
बेटिया जन्माओ, और अपने बेटो के
लिये स्त्रिया ब्याह लो और अपनी बेटिया
पुरुषो को ब्याह दो, कि वे भी बेटे-बेटियां
जन्माए, और वहा घटो नही वरन
बढते जाओ। ७ परन्तु जिस नगर में
मै ने तुम को बधुआ कराके भेज दिया
है, उसके कुशल का यत्न किया करो,
और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना
किया करो। क्योकि उसके कुशल से
तुम [illegible] के साथ रहोगे। ८ क्योकि

इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा
तुम से यों कहता है कि तुम्हारे जो
भविष्यद्वक्ता और भावी कहनेवाले तुम्हारे
बीच में हैं, वे तुम को बहकाने न पाएं,
और जो स्वप्न वे तुम्हारे निमित्त देखते
हैं उनकी ओर कान मत धरो, ९ क्योंकि
वे मेरे नाम से तुम को झूठी भविष्यद्वाणी
सुनाते हैं, मैं ने उन्हें नहीं भेजा, मुझ
यहोवा की यह वाणी है ।।

१० यहोवा यों कहता है कि बाबुल
के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी
सुधि लूंगा, और अपना यह मनभावना
वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा
ले आऊंगा, पूरा करूंगा। ११ क्योंकि
यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं
मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता
हूं, वे हानि की नहीं, वरन कुशल ही की
हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी
करूंगा*। १२ तब उस समय तुम मुझ
को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना
करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा। १३ तुम
मुझे ढूंढोगे और पाओगे भी, क्योंकि
तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास
आओगे। १४ मैं तुम्हें मिलूंगा, यहोवा
की यह वाणी है, और बंधुआई से लौटा
ले आऊंगा, और तुम को उन सब
जातियों और स्थानों में से जिन में मैं ने
तुम को बरबस निकाल दिया है, और
तुम्हें इकट्ठा करके इस स्थान में लौटा
ले आऊंगा जहां से मैं ने तुम्हें बंधुआ
करवाके निकाल दिया था, यहोवा की
यही वाणी है ।।

१५ तुम कहते तो हो कि यहोवा ने
हमारे लिये बाबुल में भविष्यद्वक्ता प्रगट
किए हैं। १६ परन्तु जो राजा दाऊद
की गद्दी पर विराजमान है, और जो
प्रजा इस नगर में रहती है, अर्थात् तुम्हारे
जो भाई तुम्हारे संग बंधुआई में नहीं
गए, उन सभों के विषय सेनाओं का
यहोवा यह कहता है, १७ सुनो, मैं
उनके बीच तलवार चलाऊंगा और महंगी
करूंगा, और मरी फैलाऊंगा, और उन्हें
ऐसे घिनौने अंजीरों के समान करूंगा जो
निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते।
१८ मैं तलवार, महंगी और मरी लिए
हुए उनका पीछा करूंगा, और ऐसा करूंगा
कि वे पृथ्वी के राज्य राज्य में मारे मारे
फिरेंगे, और उन सब जातियों में जिन के
बीच में उन्हें बरबस कर दूंगा, उनकी
ऐसी दशा करूंगा कि लोग उन्हें देखकर
चकित होंगे और ताली बजाएंगे और
उनका अपमान करेंगे, और उनकी उपमा
देकर शाप दिया करेंगे। १९ क्योंकि जो
वचन मैं ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं
के द्वारा उनके पास बड़ा यत्न करके*
कहला भेजे हैं, उनको उन्हों ने नहीं सुना,
यहोवा की यही वाणी है ।।

२० इसलिये हे सारे बंधुओ, जिन्हें
मैं ने यरूशलेम से बाबुल को भेजा है, तुम
उसका यह वचन सुनो २१ कोलायाह
का पुत्र अहाब और मासेयाह का पुत्र
सिदकिय्याह जो मेरे नाम से तुम को झूठी
भविष्यद्वाणी सुनाते हैं, उनके विषय
इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का यहोवा
यों कहता है कि सुनो, मैं उनको बाबुल
के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में कर
दूंगा, और वह उनको तुम्हारे साम्हने
मार डालेगा। २२ और सब यहूदी बंधुए

* मूल में—तुम्हें अन्त फल और आशा देने को।

* मूल में—तड़के उठके।

जो बाबुल मे रहते है, उनकी उपमा
देकर यह शाप दिया करेगे यहोवा तुझे
सिदकिय्याह और अहाब के समान करे,
जिन्हे बाबुल के राजा ने आग में भून
डाला, २३ क्योकि उन्हो ने इस्राएलियो
मे मूढता के काम किए, अर्थात् अपने
पडोसियो की स्त्रियो के साथ व्यभिचार
किया, और बिना मेरी आज्ञा पाए मेरे
नाम से झूठे वचन कहे। इसका जानने-
वाला और गवाह मै आप ही हू, यहोवा
की यही वाणी है ॥

२४ और नेहेलामी शमायाह से तू यह
कह, कि, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यो
कहा है, २५ इसलिये कि तू ने यरूशलेम
के सब रहनेवालो और सब याजको को
और मासेयाह के पुत्र सपन्याह याजक
को अपने ही नाम की इस आशय की
पत्री भेजी, २६ कि, यहोवा ने यहोयादा
याजक के स्थान पर तुझे याजक ठहरा
दिया ताकि तू यहोवा के भवन मे रखवाल
होकर जितने वहा पागलपन करते और
भविष्यद्वक्ता बन बैठे है उन्हे काठ मे
ठोके और उनके गले मे लोहे के पट्टे डाले।
२७ सो यिर्मयाह अनातोती जो तुम्हारा
भविष्यद्वक्ता बन बैठा है, उसको तू ने
क्यो नही घुडका? २८ उस ने तो हम
लोगो के पास बाबुल मे यह कहला भेजा
है कि बधुआई तो बहुत काल तक रहेगी,
सो घर बनाकर उन मे रहो, और बारिया
लगाकर उनके फल खाओ। २९ यह पत्री
सपन्याह याजक ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
को पढ सुनाई। ३० तब यहोवा का यह
वचन यिर्मयाह के पास पहुचा कि सब
बधुओ के पास यह कहला भेज, ३१ यहोवा
नेहेलामी शमायाह के विषय यो कहता
है कि शमायाह ने मेरे बिना भेजे तुम
से जो भविष्यद्वाणी की और तुम को
झूठ पर भरोसा दिलाया है, ३२ इसलिये
यहोवा यो कहता है, कि सुनो, मै उस
नेहेलामी शमायाह और उसके वंश को
दण्ड दिया चाहता हू, उसके घर में
से कोई इन प्रजाओ में न रह जाएगा।
३३ और जो भलाई मै अपनी प्रजा की
करनेवाला हू, उसको वह देखने न पाएगा,
क्योकि उस ने यहोवा मे फिर जाने की
बाते कही है, यहोवा की यही वाणी
है ॥

३० यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के
पास पहुचा वह यह है : २ इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है,
जो वचन मै ने तुझ से कहे है उन सभो
को पुस्तक मे लिख ले। ३ क्योकि यहोवा
की यह वाणी है, ऐसे दिन आते है कि
मै अपनी इस्राएली और यहूदी प्रजा को
बधुआई से लौटा लाऊगा, और जो
देश मै ने उनके पितरो को दिया था
उस मे उन्हे फेर ले आऊगा, और वे फिर
उसके अधिकारी होगे, यहोवा का यही
वचन है ॥

४ जो वचन यहोवा ने इस्राएलियो और
यहूदियो के विषय कहे थे, वे ये है :
५ यहोवा यो कहता है थरथरा देनेवाला
शब्द सुनाई दे रहा है, शान्ति नही,
भय ही का है। ६ पूछो तो भला, और
देखो, क्या पुरुष को भी कही जनने की
पीडा उठती है? फिर क्या कारण है
कि सब पुरुष जच्चा की नाईं अपनी
अपनी कमर अपने हाथो से दबाए हुए
देख पडते है? क्यो सब के मुख फीके
रग के हो गए है? ७ हाय, हाय, वह
दिन क्या ही भारी होगा। उसके

समान और कोई दिन नही, वह याकूब
के सकट का समय होगा, परन्तु वह
उस से भी छुडाया जाएगा। ८ और
सेनाओ के यहोवा की यह वाणी है, कि
उस दिन म उसका रखा हुआ जूआ
तुम्हारी गर्दन पर से तोड दूगा, और
तुम्हारे बन्धनो को टुकडे-टुकडे कर
डालूगा, और परदेशी फिर उन से अपनी
सेवा न कराने पाएगे। ९ परन्तु वे अपने
परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद
की सेवा करेगे जिसको मै उन पर राज्य
करने के लिये ठहराऊगा ॥

१० इसलिये हे मेरे दास याकूब,
तेरे लिये यहोवा की यह वाणी है, मत
डर, हे इस्राएल, विस्मित न हो, क्योकि
मै दूर देश से तुझे और तेरे वश को वधुआई
के देश से छुडा ले आऊगा। तब याकूब
लौटकर, चैन और सुख से रहेगा, और कोई
उसको डराने न पाएगा। ११ क्योकि
यहोवा की यह वाणी है, तुम्हारा
उद्धार करने के लिये मै तुम्हारे सग हू,
इसलिये मै उन सब जातियो का अन्त कर
डालूगा, जिन मे मै ने उन्हे तितर-बितर
किया है, परन्तु तुम्हारा अन्त न करूगा।
तुम्हारी ताडना मै विचार करके करूगा,
और तुम्हे किसी प्रकार से निर्दोष न
ठहराऊगा ॥

१२ यहोवा यो कहता है तेरे दुख
की कोई औषध नही, और तेरी चोट
गहिरी और दुखप्रद है। १३ तेरा मुकद्दमा
लडने के लिये कोई नही, तेरा घाव बान्धने
के लिये न पट्टी, न मलहम है। १४ तेरे
सब मित्र तुझे भूल गए, वे तुम्हारी
सुधि नही लेते, क्योकि तेरे बडे अधर्म
और भारी पापो के कारण, मै ने शत्रु
बनकर तुझे मारा है, म ने क्रूर बनकर
ताडना दी है। १५ तू अपने घाव के
मारे क्यो चिल्लाती है? तेरी पीडा की
कोई औषध नही। तेरे बडे अधर्म और
भारी पापो के कारण मै ने तुझ से ऐसा
व्यवहार किया है। १६ परन्तु जितने
तुझे अब खाए लेते ह, वे आप ही खाए
जाएगे, और तेरे द्रोही आप सब के सब
बधुआई मे जाएगे, और तेरे लूटनेवाले
आप लुटेगे और जितने तेरा धन छीनते
है, उनका धन मै छिनवाऊगा। १७ मै
तेरा इलाज करके तेरे घावो को चगा
करूगा, यहोवा की यह वाणी है, क्योकि
तेरा नाम ठुकराई हुई पडा है वह तो
सिय्योन है, उसकी चिन्ता कौन करता
है?

१८ यहोवा कहता है म याकूब के
तम्बू को वधुआई मे लौटाता हू और
उसके घरो पर दया करूगा, और नगर
अपने ही खण्डहर पर फिर बसेगा, और
राजभवन पहिले के अनुसार फिर बन
जाएगा। १९ तब उन मे से धन्य कहने,
और आनन्द करने का शब्द सुनाई पडेगा।
२० म उनका विभव बढाऊगा, और
वे थोडे न होगे। उनके लडकेवाले प्राचीन-
काल के समान होगे, और उनकी मण्डली
मेरे साम्हने स्थिर रहेगी, और जितने
उन पर अन्धेर करते ह उनको म दण्ड
दूगा। २१ उनका महापुरुष उन्ही म से
होगा, और जो उन पर प्रभुता करेगा,
वह उन्ही मे से उत्पन्न होगा, मै उसे अपने
निकट बुलाऊगा, और वह मेरे समीप
आ भी जाएगा, क्योकि कौन ह जो अपने
आप मेरे समीप आ सकता है? यहोवा की
यही वाणी है। २२ उस समय तुम
मेरी प्रजा ठहरोगे, और मै तुम्हारा
परमेश्वर ठहरूगा ॥

२३ देखो, यहोवा की जलजलाहट की
आंधी चल रही है! वह अति प्रचण्ड
आंधी है, दुष्टों के सिर पर वह ज़ोर
से लगेगी। २४ जब तक यहोवा अपना
काम न कर चुके और अपनी युक्तियों
को पूरी न कर चुके, तब तक उसका
भड़का हुआ क्रोध शान्त न होगा*।
अन्त के दिनों में तुम इस बात को समझ
सकोगे॥

३१ उन दिनों में मैं सारे इस्राएली
कुलों का परमेश्वर ठहरूंगा और
वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही
वाणी है। २ यहोवा यों कहता है:
जो प्रजा तलवार से बच निकली, उन पर
जंगल में अनुग्रह हुआ, मैं इस्राएल को
विश्राम देने के लिये तैयार हुआ†॥

३ यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर
कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया
हूं, इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा
बनाए रखी है। ४ हे इस्राएली कुमारी
कन्या! मैं तुझे फिर बसाऊंगा, वहां
तू फिर सिंगार करके डफ बजाने लगेगी,
और आनन्द करनेवालों के बीच में नाचती
हुई निकलेगी। ५ तू शोमरोन के पहाड़ों
पर अंगूर की बारियां फिर लगाएगी,
और जो उन्हें लगाएंगे, वे उनके फल
भी खाने पाएंगे‡। ६ क्योंकि ऐसा दिन
आएगा, जिस में एप्रैम के पहाड़ी देश के
पहरुए पुकारेंगे: उठो, हम अपने परमेश्वर
यहोवा के पास सिय्योन को चलें॥

७ क्योंकि यहोवा यों कहता है:
याकूब के कारण आनन्द से जयजयकार
करो; जातियों में जो श्रेष्ठ है उसके लिये
ऊंचे शब्द से स्तुति करो, और कहो,
हे यहोवा, अपनी प्रजा इस्राएल के बचे
हुए लोगों का भी उद्धार कर। ८ देखो,
मैं उनको उत्तर देश से ले आऊंगा, और
पृथ्वी के कोने कोने से इकट्ठे करूंगा, और
उनके बीच अन्धे, लंगड़े, गर्भवती, और
जच्चा स्त्रियां भी आएंगी, एक बड़ी
मण्डली यहां लौट आएगी। ९ वे आंसू
बहाते हुए आएंगे और गिड़गिड़ाते हुए
मेरे द्वारा पहुंचाए जाएंगे, मैं उन्हें नदियों
के किनारे किनारे से और ऐसे चौरस मार्ग
से ले आऊंगा, जिस से वे ठोकर न खाने
पाएंगे; क्योंकि मैं इस्राएल का पिता
हूं, और एप्रैम मेरा जेठा है॥

१० हे जाति जाति के लोगो, यहोवा
का वचन सुनो, और दूर दूर के द्वीपों
में भी इसका प्रचार करो; कहो, कि
जिस ने इस्राएलियों को तितर-बितर
किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा,
और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी
चरवाहा अपने झुण्ड की करता है।
११ क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा
लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उस
से अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया
है। १२ इसलिये वे सिय्योन की चोटी
पर आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा
से अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल,
भेड़-बकरियां और गाय-बैलों के बच्चे
आदि उत्तम उत्तम दान पाने के लिये
ताता बान्धकर* चलेंगे; और उनका
प्राण सींची हुई बारी के समान होगा,
और वे फिर कभी उदास न होंगे।
१३ उस समय उनकी कुमारियां नाचती

* मूल में—न फिरेगा।
† मूल में—चलूंगा।
‡ मूल में—साधारण भी ठहराएंगे।

* मूल में—महानद की नाईं बहेंगे।

हुई हर्ष करेगी, और जवान और बूढ़े
एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके
शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूंगा,
मैं उन्हें शान्ति दूंगा, और दुःख के बदले
आनन्द दूंगा। १४ मैं याजकों को चिकनी
वस्तुओं से अति तृप्त करूंगा, और मेरी
प्रजा मेरे उत्तम दानों से सन्तुष्ट होगी,
यहोवा की यही वाणी है॥

१५ यहोवा यह भी कहता है: सुन,
रामा नगर में विलाप और बिलक बिलक-
कर रोने का शब्द सुनने में आता है।
राहेल अपने लड़कों के लिये रो रही है,
और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं
होती, क्योंकि वे जाते रहे॥

१६ यहोवा यों कहता है: रोने-पीटने
और आंसू बहाने से रुक जा, क्योंकि
तेरे परिश्रम का फल मिलनेवाला है,
और वे शत्रुओं के देश से लौट आएंगे।
१७ अन्त में तेरी आशा पूरी होगी, यहोवा
की यह वाणी है, तेरे वंश के लोग अपने
देश में लौट आएंगे। १८ निश्चय मैं ने
एप्रैम को ये बातें कहकर विलाप करते
सुना है कि तू ने मेरी ताड़ना की, और
मेरी ताड़ना ऐसे बछड़े की सी हुई जो
निकाला न गया हो; परन्तु अब तू मुझे
फेर, तब मैं फिरूंगा, क्योंकि तू मेरा
परमेश्वर है। १९ भटक जाने के बाद
मैं पछताया, और सिखाए जाने के बाद
मैं ने छाती पीटी; पुराने पापों को स्मरण
कर मैं लज्जित हुआ और मेरा मुंह
काला हो गया। २० क्या एप्रैम मेरा
प्रिय पुत्र नहीं है? क्या वह मेरा दुलारा
लड़का नहीं है? जब जब मैं उसके
विरुद्ध बातें करता हूं, तब तब मुझे उसका
स्मरण हो आता है। इसलिये मेरा मन
उसके कारण भर आता है; और मैं
निश्चय उस पर दया करूंगा, यहोवा
की यही वाणी है॥

२१ हे इस्राएली कुमारी, जिस राजमार्ग
से तू गई थी, उसी में खम्भे और झण्डे
खड़े कर; और अपने इन नगरों में लौट
आने पर मन लगा। २२ हे भटकनेवाली
कन्या, तू कब तक इधर उधर फिरती
रहेगी? यहोवा की एक नई सृष्टि पृथ्वी
पर प्रगट होगी, अर्थात् नारी पुरुष की
सहायता करेगी॥

२३ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं का
यहोवा यों कहता है: जब मैं यहूदी बंधुओं
को उनके देश के नगरों में लौटाऊंगा, तब
उन में यह आशीर्वाद* फिर दिया जाएगा:
हे धर्मभरे वासस्थान, हे पवित्र पर्वत, यहोवा
तुझे आशीष दे! २४ और यहूदा और
उसके सब नगरों के लोग और किसान और
चरवाहे† भी उस में इकट्ठे बसेंगे।
२५ क्योंकि मैं ने थके हुए लोगों का
प्राण तृप्त किया, और उदास लोगों के
प्राण को भर दिया है॥

२६ इस पर मैं जाग उठा, और देखा,
और मेरी नींद मुझे मीठी लगी॥

२७ देख, यहोवा की यह वाणी है,
कि ऐसे दिन आनेवाले हैं जिन में मैं
इस्राएल और यहूदा के घरानों के लड़के-
वाले और पशु दोनों को बहुत बढ़ाऊंगा‡।
२८ और जिस प्रकार से मैं सोच सोचकर§
उनको गिराता और ढाता, नष्ट करता,
काट डालता और सत्यानाश ही करता

---

* मूल में—वचन।

† मूल में—घूम घूमकर झुण्ड के चरानेहारे।

‡ मूल में—घरानों में मनुष्य का बीज और पशु का बीज बोऊंगा।

§ मूल में—जाग जागकर।

था, उसी प्रकार से मैं अब सोच सोचकर
उनको रोपूगा और बढाऊगा, यहोवा
की यही वाणी है। २६ उन दिनो मे
वे फिर न कहेगे कि पुरखा लोगो ने तो
जगली दाख खाई, परन्तु उनके वश के
दात खट्टे हो गए है। ३० क्योकि जो
कोई जगली दाख खाए उसी के दात
खट्टे हो जाएगे, और हर एक मनुष्य अपने
ही अधर्म के कारण मारा जाएगा ॥

३१ फिर यहोवा की यह भी वाणी है,
सुन, ऐसे दिन आनेवाले है जब मैं इस्राएल
और यहूदा के घरानो से नई वाचा बान्धूगा।
३२ वह उस वाचा के समान न होगी
जो मै ने उनके पुरखाओ से उस समय
बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकडकर
उन्हे मिस्र देश से निकाल लाया, क्योकि
यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्हो ने
मेरी वह वाचा तोड डाली। ३३ परन्तु
जो वाचा मैं उन दिनो के बाद इस्राएल
के घराने से बान्धूगा, वह यह है मैं
अपनी व्यवस्था उनके मन मे समवाऊगा,
और उसे उनके हृदय पर लिखूगा,
और मैं उनका परमेश्वर ठहरूगा, और
वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी
है। ३४ और तब उन्हे फिर एक
दूसरे से यह न कहना पडेगा कि यहोवा को
जानो, क्योकि, यहोवा की यह वाणी है
कि छोटे से लेकर बडे तक, सब के सब
मेरा ज्ञान रखेगे, क्योकि मैं उनका अधर्म
क्षमा करूगा, और उनका पाप फिर
स्मरण न करूगा ॥

३५ जिस ने दिन को प्रकाश देने के लिये
सूर्य को और रात को प्रकाश देने के लिये
चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराए
है, जो समुद्र को उछालता और उसकी
लहरो को गरजाता है, और जिसका नाम
सेनाओ का यहोवा है, वही यहोवा यो
कहता है ३६ यदि ये नियम मेरे साम्हने
से टल जाए तब ही यह हो सकेगा कि
इस्राएल का वश मेरी दृष्टि में सदा के
लिये एक जाति ठहरने की अपेक्षा मिट
सकेगा ॥

३७ यहोवा यो भी कहता है, यदि
ऊपर से आकाश मापा जाए और नीचे
से पृथ्वी की नेव खोद खोदकर पता
लगाया जाए, तब ही मै इस्राएल के
सारे वश को उनके सब पापो के कारण
उन से हाथ उठाऊगा ॥

३८ देख, यहोवा की यह वाणी है,
ऐसे दिन आ रहे हैं जिन मे यह नगर
हननेल के गुम्मट से लेकर कोने के फाटक
तक यहोवा के लिये बनाया जाएगा।
३९ और मापने की रस्सी फिर आगे
बढकर सीधी गारेब पहाडी तक, और
वहा से घूमकर गोआ को पहुचेगी।
४० और लोथो और राख की सब तराई
और किद्रोन नाले तक जितने खेत है,
घोडो के पूर्वी फाटक के कोने तक जितनी
भूमि है, वह सब यहोवा के लिये पवित्र
ठहरेगी। सदा तक वह नगर फिर कभी
न तो गिराया जाएगा और न ढाया
जाएगा ॥

३२ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
राज्य के दसवे वर्ष मे जो नबूकद-
नेस्सर के राज्य का अठारहवा वर्ष था,
यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह
के पास पहुचा। २ उस समय बाबुल
के राजा की सेना ने यरूशलेम को घेर
लिया था और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
यहूदा के राजा के पहरे के भवन के
आगन में कैदी था। ३ क्योकि यहूदा के

राजा सिदकिय्याह ने यह कहकर उसे
कैद किया था, कि, तू ऐसी भविष्यद्वाणी
क्यों करता है कि यहोवा यों कहता है
देखो, मैं यह नगर बाबुल के राजा के
वश में कर दूंगा, वह इसको ले लेगा,
४ और यहूदा का राजा सिदकिय्याह
कसदियों के हाथ से न बचेगा परन्तु
वह बाबुल के राजा के वश में अवश्य
ही पड़ेगा, और वह और बाबुल का
राजा आपस में आम्हने-साम्हने बातें
करेंगे, और अपनी अपनी आंखों से एक
दूसरे को देखेंगे। ५ और वह सिदकिय्याह
को बाबुल में ले जाएगा, और जब तक मैं
उसकी सुधि न लूं, तब तक वह वहीं
रहेगा, यहोवा की यह वाणी है। चाहे
तुम लोग कसदियों से लड़ो भी, तौभी
तुम्हारे लड़ने से कुछ बन न पड़ेगा॥

६ यिर्मयाह ने कहा, यहोवा का वचन
मेरे पास पहुंचा, ७ देख, शल्लूम का पुत्र
हनमेल जो तेरा चचेरा भाई है, सो तेरे
पास यह कहने को आने पर है कि मेरा
खेत जो अनातोत में है उसे मोल ले,
क्योंकि उसे मोल लेकर छुड़ाने का अधिकार
तेरा ही है। ८ सो यहोवा के वचन के
अनुसार मेरा चचेरा भाई हनमेल पहरे के
आंगन में मेरे पास आकर कहने लगा,
मेरा जो खेत बिन्यामीन देश के अनातोत
में है उसे मोल ले, क्योंकि उसके स्वामी
होने और उसके छुड़ा लेने का अधिकार
तेरा ही है, इसलिये तू उसे मोल ले।
तब मैं ने जान लिया कि वह यहोवा का
वचन था॥

९ इसलिये मैं ने उस अनातोत के
खेत को अपने चचेरे भाई हनमेल से
मोल ले लिया, और उसका दाम चान्दी
के सत्तरह शेकेल तौलकर दे दिए।
१० और मैं ने दस्तावेज़ में दस्तखत और
मुहर हो जाने पर, गवाहों के साम्हने वह
चान्दी कांटे में तौलकर उसे दे दी।
११ तब मैं ने मोल लेने की दोनों दस्तावेज़ें
जिन में सब शर्तें लिखी हुई थीं, और
जिन में से एक पर मुहर थी और दूसरी
खुली थी, १२ उन्हें लेकर अपने चचेरे
भाई हनमेल के और उन गवाहों के
साम्हने जिन्हों ने दस्तावेज़ में दस्तखत
किए थे, और उन सब यहूदियों के साम्हने
भी जो पहरे के आंगन में बैठे हुए थे,
नेरिय्याह के पुत्र बारूक को जो महसेयाह
का पोता था, सौंप दिया। १३ तब मैं
ने उनके साम्हने बारूक को यह आज्ञा दी
१४ कि इस्राएल के परमेश्वर सेनाओं के
यहोवा यों कहता है, इन मोल लेने की
दस्तावेज़ों को जिन पर मुहर की हुई है और
जो खुली हुई हैं, इन्हें लेकर मिट्टी के बर्तन
में रख, ताकि ये बहुत दिन तक रहें।
१५ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर सेनाओं
का यहोवा यों कहता है, इस देश में घर
और खेत और दाख की बारियां फिर
बेची और मोल ली जाएंगी॥

१६ जब मैं ने मोल लेने की वह
दस्तावेज़ नेरिय्याह के पुत्र बारूक के
हाथ में दी, तब मैं ने यहोवा से यह प्रार्थना
की, १७ हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ
और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और
पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई
काम कठिन नहीं है। १८ तू हज़ारों
पर करुणा करता रहता परन्तु पूर्वजों
के अधर्म का बदला उनके बाद उनके
वंश के लोगों को भी देता है, हे महान
और पराक्रमी परमेश्वर, जिसका नाम
सेनाओं का यहोवा है, १९ तू बड़ी युक्ति
करनेवाला और सामर्थ के काम करनेवाला

है; तेरी दृष्टि मनुष्यो के सारे चालचलन
पर लगी रहती है, और तू हर एक को
उसके चालचलन और कर्म का फल
भुगताता है। २० तू ने मिस्र देश मे
चिन्ह और चमत्कार किए, और आज
तक इस्राएलियो वरन सब मनुष्यो के
बीच वैसा करता आया है, और इस
प्रकार तू ने अपना ऐसा नाम किया है
जो आज के दिन तक बना है। २१ तू
अपनी प्रजा इस्राएल को मिस्र देश मे
से चिन्हो और चमत्कारो और सामर्थी
हाथ और बढाई हुई भुजा के द्वारा, और
बडे भयानक कामो के साथ निकाल लाया।
२२ फिर तू ने यह देश उन्हे दिया जिसके
देने की शपथ तू ने उनके पूर्वजो से खाई
थी, जिसमे दूध और मधु की धाराए
बहती है, और वे आकर इसके अधिकारी
हुए। २३ तौभी उन्हो ने तेरी नही मानी,
और न तेरी व्यवस्था पर चले, वरन
जो कुछ तू ने उनको करने की आज्ञा दी
थी, उस मे से उन्हो ने कुछ भी नही
किया। इस कारण तू ने उन पर यह
सब विपत्ति डाली है। २४ अब इन
दमदमो को देख, वे लोग इस नगर को
ले लेने के लिये आ गए है, और यह नगर
तलवार, महगी और मरी के कारण इन
चढे हुए कसदियो के वश मे किया गया है।
जो तू ने कहा था वह अब पूरा हुआ है,
और तू इसे देखता भी है। २५ तौभी,
हे प्रभु यहोवा, तू ने मुझ से कहा है कि
गवाह बुलाकर उस खेत को मोल ले,
यद्यपि कि यह नगर कसदियो के वश मे
कर दिया गया है॥

२६ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह
के पास पहुचा, मै तो सब प्राणियो का
परमेश्वर यहोवा हू, २७ क्या मेरे लिये
कोई भी काम कठिन है? २८ सो यहोवा
यो कहता है, देख, मै यह नगर कसदियो
और बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के
वश मे कर देने पर हू, और वह इसको
ले लेगा। २९ जो कसदी इस नगर से
युद्ध कर रहे है, वे आकर इस में आग
लगाकर फूक देगे, और जिन घरो की
छतो पर उन्हो ने बाल के लिये धूप जलाकर
और दूसरे देवताओ को तपावन देकर
मुझे रिस दिलाई है, वे घर जला दिए
जाएगे। ३० क्योकि इस्राएल और यहूदा,
जो काम मुझे बुरा लगता है, वही लडकपन
से करते आए है, इस्राएली अपनी बनाई
हुई वस्तुओ से मुझ को रिस ही रिस
दिलाते आए है, यहोवा की यह वाणी
है। ३१ यह नगर जब से बसा है
तब से आज के दिन तक मेरे क्रोध और
जलजलाहट के भडकने का कारण हुआ
है, इसलिये अब मै इसको अपने साम्हने
से इस कारण दूर करूगा ३२ क्योकि
इस्राएल और यहूदा अपने राजाओ,
हाकिमो, याजको और भविष्यद्वक्ताओ
समेत, क्या यहूदा देश के, क्या यरूशलेम
के निवासी, सब के सब बुराई पर बुराई
करके मुझ को रिस दिलाते आए है।
३३ उन्हो ने मेरी ओर मुह नही वरन
पीठ ही फेर दी है, यद्यपि मै उन्हे बडे
यत्न से * सिखाता आया हू, तौभी उन्हो ने
मेरी शिक्षा को नही माना। ३४ वरन
जो भवन मेरा कहलाता है, उस मे भी
उन्हो ने अपनी घृणित वस्तुए स्थापन
करके उसे अशुद्ध किया है। ३५ उन्हो ने
हिन्नोमियो की तराई मे बाल के ऊचे
ऊचे स्थान बनाकर अपने बेटे-बेटियो को

* मूल में—तड़के उठकर।

मोलक के लिये होम किया, जिसकी आज्ञा मैं ने कभी नहीं दी, और न यह बात कभी मेरे मन में आई कि ऐसा घृणित काम किया जाए और जिस से यहूदी लोग पाप में फंसे ॥

३६ परन्तु अब इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के विषय में, जिसके लिये तुम लोग कहते हो कि वह तलवार, महंगी और मरी के द्वारा बाबुल के राजा के वश में पड़ा हुआ है यों कहता है
३७ देखो, मैं उनको उन सब देशों में
जिन में मैं ने क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें बरबस निकाल दिया था, लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूंगा, और निडर करके बसा दूंगा।
३८ और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं
उनका परमेश्वर ठहरूंगा। ३९ मैं उनको
एक ही मन और एक ही चाल कर दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहें, जिस से उनका और उनके बाद उनके वंश का
भी भला हो। ४० मैं उन से यह वाचा
बान्धूंगा, कि मैं कभी उनका संग* छोड़कर उनका भला करना न छोड़ूंगा, और अपना भय मैं उनके मन से ऐसा उपजाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे।
४१ मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका
भला करता रहूंगा, और सचमुच उन्हें इस देश में अपने सारे मन और प्राण से बसा दूंगा ॥

४२ देख, यहोवा यों कहता है कि जैसे मैं ने अपनी इस प्रजा पर यह सब बड़ी विपत्ति डाल दी, वैसे ही निश्चय इन से वह सब भलाई भी करूंगा जिसके करने का वचन मैं ने दिया है। सो यह

* मूल में—पीछा।

देश जिसके विषय तुम लोग कहते हो
४३ कि यह उजाड़ हो गया है, इस में
न तो मनुष्य रह गए हैं और न पशु, यह तो कसदियों के वश में पड़ चुका है, इसी में फिर से खेत मोल लिए जाएंगे,
४४ और बिन्यामीन के देश में, यरूशलेम
के आस पास, और यहूदा देश के अर्थात् पहाड़ी देश, नीचे के देश और दक्खिन देश के नगरों में लोग गवाह बुलाकर खेत मोल लेंगे, और दस्तावेज़ में दस्तखत और मुहर करेंगे, क्योंकि मैं उनके दिनों को लौटा ले आऊंगा, यहोवा की यही वाणी है ॥

३३ जिस समय यिर्मयाह पहरे के
आंगन में बन्द था, उस समय
यहोवा का वचन दूसरी बार उसके पास
पहुंचा, २ यहोवा जो पृथ्वी का रचनेवाला
है, जो उसको स्थिर करता है*, उसका
नाम यहोवा है, वह यह कहता है, ३ मुझ
से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी-बड़ी और कठिन† बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता ॥

४ क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस नगर के घरों और यहूदा के राजाओं के भवनों के विषय में जो इसलिये गिराए जाते हैं कि दमदमों और तलवार के साथ सुभीते से लड़ सकें, यों कहता है,
५ कसदियों से युद्ध करने को वे लोग
आते तो हैं, परन्तु मैं क्रोध और जलजलाहट में आकर उनको मरवाऊंगा और उनकी लोथें उसी स्थान में भर दूंगा, क्योंकि उनकी दुष्टता के कारण मैं ने इस नगर
से मुख फेर लिया है। ६ देख, मैं इस

* मूल में—गढ़ता।
† मूल में—कोठों से घिरी।

नगर का इलाज करके इसके निवासियो
को चगा करूगा, और उन पर पूरी
शान्ति और सच्चाई प्रगट करूगा। ७ मै
यहूदा और इस्राएल के बधुओ को लौटा
ले आऊगा, और उन्हे पहिले की नाई
बसाऊगा। ८ मै उनको उनके सारे अधर्म
और पाप के काम से शुद्ध करूगा जो
उन्हो ने मेरे विरुद्ध किए है, और उन्हो ने
जितने अधर्म और अपराध के काम मेरे
विरुद्ध किए है, उन सब को मै क्षमा
करूगा। ९ क्योकि वे वह सब भलाई
के काम सुनेगे जो मै उनके लिये करूगा
और वे सब कल्याण और शान्ति की
चर्चा सुनकर जो मै उन से करूगा, डरेगे
और थरथराएगे, वे पृथ्वी की उन जातियो
की दृष्टि मे मेरे लिये हर्षानेवाले और
स्तुति और शोभा का कारण हो जाएगे॥

१० यहोवा यो कहता है, यह स्थान
जिसके विषय तुम लोग कहते हो कि
यह तो उजाड हो गया है, इस मे न तो
मनुष्य रह गया है और न पशु, अर्थात्
यहूदा देश के नगर और यरूशलेम की
सडकें जो ऐसी सुनसान पडी है कि उन
में न तो कोई मनुष्य रहता है और न
कोई पशु, ११ इन्ही मे हर्ष और आनन्द
का शब्द, दुल्हे-दुल्हिन का शब्द, और
इस बात के कहनेवालो का शब्द फिर
सुनाई पडेगा कि सेनाओ के यहोवा का
धन्यवाद करो, क्योकि यहोवा भला है,
और उसकी करुणा सदा की है। और
यहोवा के भवन में धन्यवादबलि लानेवालो
का भी शब्द सुनाई देगा, क्योकि मै
इस देश की दशा पहिले की नाईं ज्यो की
त्यो कर दूगा *, यहोवा का यही वचन है।

* मूल में—क्योंकि मैं देश की बधुआई को लौटा लाऊगा।

१२ सेनाओ का यहोवा कहता है सब
गावो समेत यह स्थान जो ऐसा उजाड
है कि इस में न तो मनुष्य रह गया है
और न पशु, इसी मे भेड-बकरिया बैठाने-
वाले चरवाहे फिर बसेगे। १३ पहाडी
देश मे और नीचे के देश में, दक्खिन देश
के नगरो में, बिन्यामीन देश में, और
यरूशलेम के आस पास, निदान यहूदा
देश के सब नगरो में भेड-बकरिया फिर
गिन-गिनकर चराई * जाएगी, यहोवा का
यही वचन है॥

१४ यहोवा की यह भी वाणी है, देख,
ऐसे दिन आनेवाले है कि कल्याण का
जो वचन मै ने इस्राएल और यहूदा के
घरानो के विषय मे कहा है, उसे पूरा
करूगा। १५ उन दिनो मे और उन
समयो मे मै दाऊद के वंश मे धर्म की एक
डाल उगाऊगा, और वह इस देश में
न्याय और धर्म के काम करेगा। १६ उन
दिनो मे यहूदा बचा रहेगा और यरूशलेम
निडर बसा रहेगा, और उसका नाम यह
रखा जाएगा अर्थात् यहोवा हमारी
धार्मिकता॥

१७ यहोवा यो कहता है, दाऊद के
कुल मे इस्राएल के घराने की गद्दी पर
विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, १८ और
लेवीय याजको के कुलो मे प्रतिदिन मेरे
लिये होमबलि चढानेवाले और अन्नबलि
जलानेवाले और मेलबलि चढानेवाले सदैव
बने रहेगे॥

१९ फिर यहोवा का यह वचन यिर्मयाह
के पास पहुचा, यहोवा यो कहता है,
२० मै ने दिन और रात के विषय में
जो वाचा बान्धी है, जब तुम उसको ऐसा

* मूल में—आगे चलाई।

तोड सको कि दिन और रात अपने अपने
समय में न हो, २१ तब ही जो वाचा
मैं ने अपने दास दाऊद के सग बान्धी है
टूट सकेगी, कि तेरे वश की गद्दी पर
विराजनेवाले सदैव बने रहेंगे, और मेरी
वाचा मेरी सेवा टहल करनेवाले लेवीय
याजको के सग बन्धी रहेगी। २२ जैसा
आकाश की सेना की गिनती और समुद्र
की बालू के किनको का परिमाण नही
हो सकता है उसी प्रकार में अपने दास
दाऊद के वश और अपने सेवक लेविया
को बढाकर अनगिनित कर दूगा ।।

२३ यहोवा का यह वचन यिर्मयाह
के पास पहुचा, क्या तू ने नही देखा
२४ कि ये लोग क्या कहते हैं, कि, जो
दो कुल यहोवा ने चुन लिए थे उन दोनो
मे उस ने अब हाथ उठाया है? यह
कहकर कि ये मेरी प्रजा को तुच्छ जानते
है और कि यह जाति उनकी दृष्टि में
गिर गई है। २५ यहोवा यो कहता है,
यदि दिन और रात के विपय मेरी वाचा
अटल न रहे, और यदि आकाश और
पृथ्वी के नियम मेरे ठहराए हुए न रह
जाए, २६ तब ही मैं याकूब के वश से
हाथ उठाऊगा, और इब्राहीम, इसहाक
और याकूब के वश पर प्रभुता करने के
लिये अपने दास दाऊद के वश में से
किसी को फिर न ठहराऊगा। परन्तु
इसके विपरीत मैं उन पर दया करके
उनको बधुआई मे लौटा लाऊगा ।।

३४ जब बाबुल का राजा नबूकद-
नेस्सर अपनी सारी सेना समेत
और पृथ्वी के जितने राज्य उसके वश
मे थे, उन सभो के लोगो समेत यरूशलेम
और उसके सब गावो से लड रहा था,
तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के
पास पहुचा, २ इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, जाकर यहूदा के
राजा सिदकिय्याह से कह, यहोवा यो
कहता है, कि देख, मैं इस नगर को बाबुल
के राजा के वश में कर देने पर हू, और
वह इसे फुकवा देगा। ३ और तू उसके
हाथ से न बचेगा, निश्चय पकडा जाएगा
और उसके वश में कर दिया जाएगा,
और तेरी आखें बाबुल के राजा को देखेंगी,
और तुम आम्हने-साम्हने बातें करोगे,
और तू बाबुल को जाएगा। ४ तौभी
हे यहूदा के राजा सिदकिय्याह, यहोवा
का यह भी वचन सुन जिसे यहोवा तेरे
विपय में कहता है, कि तू तलवार से
मारा न जाएगा। ५ तू शान्ति के साथ
मरेगा। और जैसा तेरे पितरो के लिये
अर्थात् जो तुझ से पहिले राजा थे, उनके
लिये सुगन्ध द्रव्य जलाया गया, वैसा ही
तेरे लिये भी जलाया जाएगा, और लोग
यह कहकर, हाय मेरे प्रभु! तेरे लिये
छाती पीटेंगे, यहोवा की यही वाणी है ।।

६ ये सब वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह से यरूशलेम
में उस समय कहे, ७ जब बाबुल के
राजा की सेना यरूशलेम से और यहूदा
के जितने नगर बच गए थे, उन से अर्थात्
लाकीश और अजेका से लड रही थी,
क्योकि यहूदा के जो गढवाले नगर थे उन
मे से केवल वे ही रह गए थे ।।

८ यहोवा का वह वचन यिर्मयाह के
पास उस समय आया जब सिदकिय्याह
राजा ने सारी प्रजा से जो यरूशलेम में
थी यह वाचा बन्धाई कि दासो के स्वाधीन
होने का प्रचार किया जाए, ९ कि सब
लोग अपने अपने दास-दासी को जो इब्री

वा इब्रिन हो स्वाधीन करके जाने दे,
और कोई अपने यहूदी भाई से फिर
अपनी सेवा न कराए। १० तब सब
हाकिमो और सारी प्रजा ने यह प्रण
किया कि हम अपने अपने दास-दासियो
को स्वतत्र कर देगे और फिर उन से
अपनी सेवा न कराएगे, सो उस प्रण
के अनुसार उनको स्वतत्र कर दिया।
११ परन्तु इसके बाद वे फिर गए और
जिन दास-दासियो को उन्हो ने स्वतत्र
करके जाने दिया था उनको फिर अपने
वश मे लाकर दास और दासी बना लिया।
१२ तब यहोवा की ओर से यह वचन
यिर्मयाह के पास पहुचा, १३ इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा तुम से यो कहता है,
जिस समय मै तुम्हारे पितरो को दासत्व
के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल ले
आया, उस समय मै ने आप उन से यह
कहकर वाचा बान्धी १४ कि तुम्हारा
जो इब्री भाई तुम्हारे हाथ मे बेचा जाए
उसको तुम सातवे बरस मे छोड देना,
छ बरस तो वह तुम्हारी सेवा करे परन्तु
इसके बाद तुम उसको स्वतत्र करके अपने
पास से जाने देना। परन्तु तुम्हारे पितरो
ने मेरी न सुनी, न मेरी ओर कान लगाया।
१५ तुम अभी फिरे तो थे और अपने
अपने भाई को स्वतत्र कर देने का प्रचार
कराके जो काम मेरी दृष्टि मे भला है
उसे तुम ने किया भी था, और जो भवन
मेरा कहलाता है उस मे मेरे साम्हने
वाचा भी बान्धी थी, १६ पर तुम
भटक गए और मेरा नाम इस रीति मे
अशुद्ध किया कि जिन दास-दासियो को
तुम स्वतत्र करके उनकी इच्छा पर छोड
चुके थे उन्हे तुम ने फिर अपने वश मे
कर लिया है, और वे फिर तुम्हारे दास-
दासिया बन गए है। १७ इस कारण
यहोवा यो कहता है कि तुम ने जो मेरी
आज्ञा के अनुसार अपने अपने भाई के
स्वतत्र होने का प्रचार नही किया, सो
यहोवा का यह वचन है, सुनो, मै तुम्हारे
इस प्रकार से स्वतत्र होने का प्रचार
करता हू कि तुम तलवार, मरी और
महगी मे पडोगे, और मै ऐसा करूगा
कि तुम पृथ्वी के राज्य राज्य मे मारे
मारे फिरोगे। १८ और जो लोग मेरी
वाचा का उल्लघन करते है और जो
प्रण उन्हो ने मेरे साम्हने और बछडे
को दो भाग करके उसके दोनो भागो के
बीच होकर किया परन्तु उसे पूरा न
किया, १९ अर्थात् यहूदा देश और यरू-
शलेम नगर के हाकिम, खोजे, याजक
और साधारण लोग जो बछडे के भागो
के बीच होकर गए थे, २० उनको मै
उनके शत्रुओ अर्थात् उनके प्राण के
खोजियो के वश मे कर दूगा और उनकी
लोथ आकाश के पक्षियो और मैदान के
पशुओ का आहार हो जाएगी। २१ और
मै यहूदा के राजा सिदकिय्याह और
उसके हाकिमो को उनके शत्रुओ और
उनके प्राण के खोजियो अर्थात् बाबुल
के राजा की सेना के वश मे कर दूगा
जो तुम्हारे साम्हने से चली गई है।
२२ यहोवा का यह वचन है कि देखो, मै
उनको आज्ञा देकर इस नगर के पास लौटा
ले आऊगा और वे लडकर इसे ले लेगे और
फूक देगे, और यहूदा के नगरो को मै ऐसा
उजाड दूगा कि कोई उन मे न रहेगा॥

३५ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज्य मे
यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के

पास पहुंचा २ रेकाबियों के घराने के
पास जाकर उन से बात कर और उन्हें
यहोवा के भवन की एक कोठरी में ले
जाकर दाखमधु पिला। ३ तब मैं ने
याजन्याह को जो हबस्सिन्याह का पोता
और यिर्मयाह का पुत्र था, और उसके
भाइयों और सब पुत्रों को, निदान रेकाबियों
के सारे घराने को साथ लिया। ४ और
मैं उनको परमेश्वर के भवन में, यिग्दल्याह
के पुत्र हानान, जो परमेश्वर का एक
जन था, उसकी कोठरी में ले आया जो
हाकिमों की उस कोठरी के पास थी और
शल्लूम के पुत्र डेवढ़ी के रखवाले मासेयाह
की कोठरी के ऊपर थी। ५ तब मैं ने
रेकाबियों के घराने को दाखमधु से भरे
हुए हडे और कटोरे देकर कहा, दाखमधु
पीओ। ६ उन्हों ने कहा, हम दाखमधु
न पीएंगे क्योंकि रेकाब के पुत्र योनादाब
ने जो हमारा पुरखा था हम को यह
आज्ञा दी थी कि तुम कभी दाखमधु न
पीना, न तुम, न तुम्हारे पुत्र। ७ न
घर बनाना, न बीज बोना, न दाख की
बारी लगाना, और न उनके अधिकारी
होना, परन्तु जीवन भर तम्बुओं ही में
रहना जिस से जिस देश में तुम परदेशी
हो, उस में बहुत दिन तक जीते रहो।
८ इसलिये हम रेकाब के पुत्र अपने
पुरखा योनादाब की बात मानकर, उसकी
सारी आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं, न
हम और न हमारी स्त्रियां वा पुत्र-पुत्रियां
कभी दाखमधु पीती हैं, ९ और न हम
घर बनाकर उन में रहते हैं। हम न
दाख की बारी, न खेत, और न बीज
रखते हैं, १० हम तम्बुओं ही में रहा
करते हैं, और अपने पुरखा योनादाब की
बात मानकर उसकी सारी आज्ञाओं के
अनुसार काम करते हैं। ११ परन्तु जब
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने इस देश
पर चढ़ाई की, तब हम ने कहा, चलो,
कसदियों और अरामियों के दलों के डर
के मारे यरूशलेम में जाएं। इस कारणों
हम अब यरूशलेम में रहते हैं॥

१२ तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह
के पास पहुंचा। १३ इस्राएल का
परमेश्वर सेनाओं का यहोवा यों कहता है
कि जाकर यहूदा देश के लोगों और
यरूशलेम नगर के निवासियों से कह,
यहोवा की यह वाणी है, क्या तुम शिक्षा
मानकर मेरी न सुनोगे? १४ देखो,
रेकाब के पुत्र योनादाब ने जो आज्ञा
अपने वंश को दी थी कि तुम दाखमधु
न पीना सो तो मानी गई है यहां तक कि
आज के दिन भी वे लोग कुछ नहीं पीते,
वे अपने पुरखा की आज्ञा मानते हैं,
पर यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से कहता
आया हूं, तौभी तुम ने मेरी नहीं सुनी।
१५ मैं तुम्हारे पास अपने सारे दास
नबियों को बड़ा यत्न करके* यह कहने
को भेजता आया हूं कि अपनी बुरी चाल
से फिरो, और अपने काम सुधारो, और
दूसरे देवताओं के पीछे जाकर उनकी
उपासना मत करो तब तुम इस
देश में जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया
था और तुम को भी दिया है, बसने
पाओगे। पर तुम ने मेरी ओर कान
नहीं लगाया न मेरी सुनी है। १६ देखो
रेकाब के पुत्र योनादाब के वंश ने तो
अपने पुरखा की आज्ञा को मान लिया पर
तुम ने मेरी नहीं सुनी। १७ इसलिये
सेनाओं का परमेश्वर यहोवा, जो इस्राएल

* मूल में—तड़के उठकर।

का परमेश्वर है, यो कहता है कि देखो,
यहूदा देश और यरूशलेम नगर के सारे
निवासियो पर जितनी विपत्ति डालने
की मै ने चर्चा की है वह उन पर अव
डालता हू, क्योकि मै ने उनको सुनाया
पर उन्हो ने नही सुना, मै ने उनको
वुलाया पर उन्हो ने उत्तर न दिया ॥
१८ और रेकावियो के घराने से
यिर्मयाह ने कहा, इस्राएल का परमेश्वर
सेनाओ का यहोवा तुम से यो कहता है,
इसलिये कि तुम ने जो अपने पुरखा
योनादाव की आज्ञा मानी, वरन उसकी
सव आज्ञाओ को मान लिया और जो
कुछ उस ने कहा उसके अनुसार काम
किया है, १९ इसलिये इस्राएल का
परमेश्वर सेनाओ का यहोवा यो कहता
है, रेकाव के पुत्र योनादाव के वश मे
सदा ऐसा जन पाया जाएगा जो मेरे
सम्मुख खडा रहे ॥

३६ फिर योशिय्याह के पुत्र यहूदा
के राजा यहोयाकीम के राज्य
के चौथे वरस मे यहोवा की ओर से यह
वचन यिर्मयाह के पास पहुचा, २ एक
पुस्तक लेकर जितने वचन मै ने तुझ से
योशिय्याह के दिनो से लेकर अर्थात् जव
मै तुझ से वाते करने लगा उस समय से
आज के दिन तक इस्राएल और यहूदा
और सव जातियो के विपय मे कहे है,
सव को उस मे लिख। ३ क्या जाने
यहूदा का घराना उस सारी विपत्ति का
समाचार सुनकर जो मै उन पर डालने
की कल्पना कर रहा हू अपनी वुरी चाल
मे फिरे और मै उनके अधर्म और पाप को
क्षमा करू। ४ सो यिर्मयाह ने नेरिय्याह
के पुत्र वारूक को वुलाया, और वारूक
ने यहोवा के सव वचन जो उस ने यिर्मयाह
से कहे थे, उसके मुख से सुनकर पुस्तक
मे लिख दिए। ५ फिर यिर्मयाह ने
वारूक को आज्ञा दी और कहा, मै तो
वन्धा हुआ हू, मै यहोवा के भवन मे नही
जा सकता। ६ सो तू उपवास के दिन
यहोवा के भवन मे जाकर उसके जो वचन
तू ने मुझ से सुनकर लिखे है, पुस्तक मे
से लोगो को पढकर सुनाना, और जितने
यहूदी लोग अपने अपने नगरो मे आएगे,
उनको भी पढकर सुनाना। ७ क्या जाने
वे यहोवा से गिडगिडाकर प्रार्थना करें
और अपनी अपनी वुरी चाल से फिरे,
क्योकि जो क्रोध और जलजलाहट यहोवा
ने अपनी इस प्रजा पर भड़काने को कहा
है, वह वडी है। ८ यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
की इस आज्ञा के अनुसार नेरिय्याह के
पुत्र वारूक ने, यहोवा के भवन मे उस
पुस्तक मे से उसके वचन पढकर सुनाए ॥
९ और योशिय्याह के पुत्र यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज्य के पाचवे वरस
के नौवे महीने मे यरूशलेम मे जितने
लोग थे, और यहूदा के नगरो से जितने
लोग यरूशलेम मे आए थे, उन्हो ने यहोवा
के साम्हने उपवास करने का प्रचार
किया। १० तव वारूक ने यहोवा के
भवन मे सव लोगो को शापान के पुत्र
गमर्याह जो प्रधान था, उसकी कोठरी
मे जो ऊपर के आगन मे यहोवा के भवन
के नये फाटक के पास थी, यिर्मयाह के
सव वचन पुस्तक मे से पढ सुनाए ॥
११ तव शापान के पुत्र गमर्याह के
वेटे मीकायाह ने यहोवा के सारे वचन
पुस्तक मे से सुने। १२ और वह राजभवन
के प्रधान की कोठरी मे उतर गया, और
क्या देखा कि वहा एलीशामा प्रधान और

शमायाह का पुत्र दलायाह और अवबोर
का पुत्र एलनातान और शापान का पुत्र
गमर्याह और हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह
और सब हाकिम बैठे हुए हैं। १३ और
मीकायाह ने जितने वचन उस समय सुने,
जब बारूक ने पुस्तक में से लोगों को पढ
सुनाए थे, वे सब वर्णन किए। १४ उन्हें
सुनकर सब हाकिमों ने यहूदी को जो
नतन्याह का पुत्र और शेलेम्याह का पोता
और कूशी का परपोता था, बारूक के पास
यह कहने को भेजा, कि जिस पुस्तक में
से तू ने सब लोगों को पढ सुनाया है,
उसे अपने हाथ में लेता आ। सो नेरिय्याह
का पुत्र बारूक वह पुस्तक हाथ में लिए
हुए उनके पास आया। १५ तब उन्हों
ने उस से कहा, अब बैठ जा और हमें यह
पढकर सुना। तब बारूक ने उनको
पढ़कर सुना दिया। १६ जब वे उन
सब वचनों को सुन चुके, तब थरथराते
हुए एक दूसरे को देखने लगे, और उन्हों
ने बारूक से कहा, हम निश्चय राजा से इन
सब वचनों का वर्णन करेंगे। १७ फिर
उन्हों ने बारूक से कहा, हम से कह,
क्या तू ने ये सब वचन उसके मुख से
सुनकर लिखे? १८ बारूक ने उन से
कहा, वह ये सब वचन अपने मुख से
मुझे सुनाता गया और मैं इन्हें पुस्तक में
स्याही से लिखता गया। १९ तब हाकिमों
ने बारूक से कहा, जा, तू अपने आपको
और यिर्मयाह को छिपा, और कोई न
जानने पाए कि तुम कहां हो। २० तब
वे पुस्तक को एलीशामा प्रधान की कोठरी
में रखकर राजा के पास आंगन में आए,
और राजा को वे सब वचन कह सुनाए।
२१ तब राजा ने यहूदी को पुस्तक ले
आने के लिये भेजा, उस ने उसे एलीशामा
प्रधान की कोठरी में से लेकर राजा को
और जो हाकिम राजा के आस पास खडे
थे उनको भी पढ सुनाया। २२ राजा
शीतकाल के भवन में बैठा हुआ था,
क्योंकि नौवां महीना था और उसके
साम्हने अंगीठी जल रही थी। २३ जब
यहूदी तीन चार पृष्ठ पढ चुका, तब
उस ने उसे चाकू से काटा और जो आग
अंगीठी में थी उस में फेंक दिया, सो
अंगीठी की आग में पूरी पुस्तक जलकर
भस्म हो गई। २४ परन्तु न कोई डरा
और न किसी ने अपने कपडे फाडे, अर्थात् न
तो राजा ने और न उसके कर्मचारियों में से
किसी ने ऐसा किया, जिन्हों ने वे सब वचन
सुने थे। २५ एलनातान, और दलायाह,
और गमर्याह ने तो राजा से बिनती भी
की थी कि पुस्तक को न जलाए, परन्तु
उस ने उनकी एक न सुनी। २६ और राजा
ने राजपुत्र यरहमेल को और अज्रीएल
के पुत्र सरायाह को और अब्देल के पुत्र
शेलेम्याह को आज्ञा दी कि बारूक लेखक
और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को पकड
लें, परन्तु यहोवा ने उनको छिपा रखा॥
२७ जब राजा ने उन वचनों की
पुस्तक को जो बारूक ने यिर्मयाह के
मुख से सुन सुनकर लिखी थी, जला दिया,
तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के
पास पहुंचा कि २८ फिर एक और पुस्तक
लेकर उस में यहूदा के राजा यहोयाकीम
की जलाई हुई पहिली पुस्तक के सब
वचन लिख दे। २९ और यहूदा के
राजा यहोयाकीम के विषय में कह कि
यहोवा यों कहता है, तू ने उस पुस्तक को
यह कहकर जला दिया है कि तू ने उस में
यह क्यों लिखा है कि बाबुल का राजा
निश्चय आकर इस देश को नाश करेगा,

और उस में न तो मनुष्य को छोडेगा और
न पशु को। ३० इसलिये यहोवा यहूदा
के राजा यहोयाकीम के विषय मे यों कहता
है, कि उसका कोई दाऊद की गद्दी पर
विराजमान न रहेगा, और उसकी लोथ
ऐसी फेंक दी जाएगी कि दिन को घाम
में और रात को पाले मे पडी रहेगी।
३१ और मैं उसको और उसके वंश
और कर्मचारियो को उनके अधर्म का
दण्ड दूगा, और जितनी विपत्ति मैं ने
उन पर और यरूशलेम के निवासियो
और यहूदा के सब लोगो पर डालने को
कहा है, और जिसको उन्हो ने सच नही
माना, उन सब को मैं उन पर डालूंगा।
३२ तब यिर्मयाह ने दूसरी पुस्तक लेकर
नेरिय्याह के पुत्र बारूक लेखक को दी,
और जो पुस्तक यहूदा के राजा यहोयाकीम
ने आग मे जला दी थी, उस में के सब
वचनो को बारूक ने यिर्मयाह के मुख
से सुन सुनकर उस मे लिख दिए, और
उन वचनों में उनके समान और भी बहुत
सी बातें बढा दी गईं॥

३७ और यहोयाकीम के पुत्र
कोन्याह के स्थान पर योशिय्याह
का पुत्र सिदकिय्याह राज्य करने लगा,
क्योंकि बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने
उसी को यहूदा देश मे राजा ठहराया था।
२ परन्तु न तो उस ने, न उसके कर्मचारियो
ने, और न साधारण लोगो ने यहोवा के
वचनो को माना जो उस ने यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था॥

३ सिदकिय्याह राजा ने शेलेम्याह के
पुत्र यहूकल और मासेयाह के पुत्र सपन्याह
याजक को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास
यह कहला भेजा, कि, हमारे निमित्त
हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर।
४ उस समय यिर्मयाह बन्दीगृह मे न
डाला गया था, और लोगों के बीच आया
जाया करता था। ५ उस समय फिरौन
की सेना चढाई के लिये मिस्र से निकली;
तब कसदी जो यरूशलेम को घेरे हुए थे,
उसका समाचार सुनकर यरूशलेम के
पास से चले गए। ६ तब यहोवा का
यह वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास
पहुचा, ७ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
यों कहता है, यहूदा के जिस राजा ने
तुम को प्रार्थना करने के लिये मेरे पास
भेजा है, उस से यों कहो, कि देख, फिरौन
की जो सेना तुम्हारी सहायता के लिये
निकली है वह अपने देश मिस्र मे लौट
जाएगी। ८ और कसदी फिर वापिस
आकर इस नगर से लडेंगे, वे इसको ले
लेंगे और फूक देंगे। ९ यहोवा यों कहता
है, यह कहकर तुम अपने अपने मन मे
धोखा न खाओ कि कसदी हमारे पास से
निश्चय चले गए हैं, क्योंकि वे नही
चले गए। १० क्योंकि यदि तुम ने
कसदियो की सारी सेना को जो तुम से
लडती है, ऐसा मार भी लिया होता
कि उन मे से केवल घायल लोग रह जाते,
तौभी वे अपने अपने तम्बू मे से उठकर
इस नगर को फूक देते॥

११ जब कसदियो की सेना फिरौन
की सेना के डर के मारे यरूशलेम के पास
से कूच कर गई, १२ तब यिर्मयाह यरू-
शलेम से निकलकर बिन्यामीन के देश की
ओर इसलिये जा निकला कि वहा से
और लोगों के संग अपना अंश ले।
१३ जब वह बिन्यामीन के फाटक मे
पहुचा, तब यिरिय्याह नामक पहरुओ का
एक सरदार वहा था जो शेलेम्याह का

पुत्र और हनन्याह का पोता था, और
उस ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को यह
कहकर पकड लिया, तू कसदियो के पास
भागा जाता है। १४ तब यिर्मयाह ने
कहा, यह झूठ है, मै कसदियो के पास
नही भागा जाता हू। परन्तु यिरिय्याह
ने उसकी एक न मानी, सो वह उसे
पकडकर हाकिमो के पास ले गया।
१५ तब हाकिमो ने यिर्मयाह से क्रोधित
होकर उसे पिटवाया, और योनातान
प्रधान के घर में बन्दी बनाकर डलवा
दिया, क्योकि उन्हो ने उसको साधारण
बन्दीगृह बना दिया था॥

१६ यिर्मयाह उस तलघर में जिस में
कई एक कोठरिया थी, रहने लगा।
१७ उसके बहुत दिन बीतने पर
सिदकिय्याह राजा ने उसको बुलवा भेजा,
और अपने भवन में उस से छिपकर यह
प्रश्न किया, क्या यहोवा की ओर से कोई
वचन पहुचा है? यिर्मयाह ने कहा, हा,
पहुचा है। वह यह है, कि तू बाबुल के
राजा के वश में कर दिया जाएगा।
१८ फिर यिर्मयाह ने सिदकिय्याह राजा
से कहा, मै ने तेरा, तेरे कर्मचारियो का,
व तेरी प्रजा का क्या अपराध किया है,
कि तुम लोगो ने मुझ को बन्दीगृह में डल-
वाया है? १९ तुम्हारे जो भविष्यद्वक्ता
तुम से भविष्यद्वाणी करके कहा
करते थे कि बाबुल का राजा तुम पर
और इस देश पर चढाई नही करेगा, वे
अब कहा है? २० अब, हे मेरे प्रभु, हे
राजा, मेरी प्रार्थना ग्रहण कर कि मुझे
योनातान प्रधान के घर में फिर न भेज,
नही तो मै वहा मर जाऊगा। २१ तब
सिदकिय्याह राजा की आज्ञा से यिर्मयाह
पहरे के आगन में रखा गया, और जब
तक नगर की सब रोटी न चुक गई, तब
तक उसको रोटीवालो की दूकान में से
प्रतिदिन एक रोटी दी जाती थी। और
यिर्मयाह पहरे के आगन मे रहने लगा॥

३८ फिर जो वचन यिर्मयाह सब
लोगो से कहता था, उनको मत्तान
के पुत्र शपन्याह, पशहूर के पुत्र गदल्याह,
शेलेम्याह के पुत्र यूकल और मल्किय्याह
के पुत्र पशहूर ने सुना, २ कि, यहोवा
यो कहता है कि जो कोई इस नगर में
रहेगा वह तलवार, महगी और मरी से
मरेगा, परन्तु जो कोई कसदियो के पास
निकल भागे वह अपना प्राण बचाकर
जीवित रहेगा। ३ यहोवा यो कहता है,
यह नगर बाबुल के राजा की सेना के
वश में कर दिया जाएगा और वह इसको
ले लेगा। ४ इसलिये उन हाकिमो ने
राजा से कहा कि उस पुरुष को मरवा डाल,
क्योकि वह जो इस नगर में बचे हुए योद्धाओ
और अन्य सब लोगो से ऐसे ऐसे वचन
कहता है जिस से उनके हाथ पाव ढीले
हो जाते है। क्योकि वह पुरुष इस प्रजा
के लोगो की भलाई नही वरन बुराई ही
चाहता है। ५ सिदकिय्याह राजा ने कहा,
सुनो, वह तो तुम्हारे वश में है, क्योकि
ऐसा नही हो सकता कि राजा तुम्हारे
विरुद्ध कुछ कर सके। ६ तब उन्हो ने
यिर्मयाह को लेकर राजपुत्र मल्किय्याह
के उस गडहे में जो पहरे के आगन में
था, रस्सियो से उतारकर डाल दिया।
और उस गडहे मे पानी नही केवल दलदल
था, और यिर्मयाह कीचड में धस गया॥

७ उस समय राजा बिन्यामीन के
फाटक के पास बैठा था सो जब एबेदमेलेक
कूशी ने जो राजभवन मे एक खोजा था,

सुना, कि उन्हो ने यिर्मयाह को गडहे
मे डाल दिया है—८ तब एबेदमेलेक
राजभवन से निकलकर राजा से कहने
लगा, ९ हे मेरे स्वामी, हे राजा, उन
लोगो ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से जो
कुछ किया है वह बुरा किया है, क्योकि
उन्हो ने उसको गडहे मे डाल दिया है,
वहा वह भूख से मर जाएगा क्योकि नगर
मे कुछ रोटी नही रही है। १० तब राजा
ने एबेदमेलेक कूशी को यह आज्ञा दी कि
यहा से तीस पुरुष साथ लेकर यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता को मरने से पहिले गडहे
मे से निकाल। ११ सो एबेदमेलेक उतने
पुरुषो को साथ लेकर राजभवन के भण्डार
के तलघर मे गया, और वहा से फटे-
पुराने कपडे और चिथडे लेकर यिर्मयाह
के पास उस गडहे मे रस्सियो से उतार
दिए। १२ और एबेदमेलेक कूशी ने
यिर्मयाह से कहा, ये पुराने कपडे और
चिथडे अपनी काखो मे रस्सियो के नीचे
रख ले। सो यिर्मयाह ने वैसा ही किया।
१३ तब उन्हो ने यिर्मयाह को रस्सियो
से खीचकर, गडहे मे से निकाला। और
यिर्मयाह पहरे के आगन मे रहने लगा॥

१४ सिदकिय्याह राजा ने यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता को यहोवा के भवन के
तीसरे द्वार मे अपने पास बुलवा भेजा।
और राजा ने यिर्मयाह से कहा, मै तुझ
से एक बात पूछता हू, मुझ से कुछ न
छिपा। १५ यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से
कहा, यदि मै तुझे बताऊ, तो क्या तू
मुझे मरवा न डालेगा? और चाहे मै तुझे
सम्मति भी दू, तौभी तू मेरी न मानेगा।
१६ तब सिदकिय्याह राजा ने अकेले मे
यिर्मयाह से शपथ खाई, यहोवा जिस ने
हमारा यह जीव रचा है, उसके जीवन
की सौगन्ध न मै तो तुझे मरवा डालूगा,
और न उन मनुष्यो के वश मे कर दूगा
जो तेरे प्राण के खोजी है॥

१७ यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा,
सेनाओ का परमेश्वर यहोवा जो इस्राएल
का परमेश्वर है, वह यो कहता है, यदि
तू बाबुल के राजा के हाकिमो के पास
सचमुच निकल जाए, तब तो तेरा प्राण
बचेगा, और यह नगर फूका न जाएगा,
और तू अपने घराने समेत जीवित रहेगा।
१८ परन्तु, यदि तू बाबुल के राजा के
हाकिमो के पास न निकल जाए, तो यह
नगर कसदियो के वश मे कर दिया
जाएगा, और वे इसे फूक देगे, और तू
उनके हाथ से बच न सकेगा। १९ सिद-
किय्याह ने यिर्मयाह से कहा, जो यहूदी
लोग कसदियो के पास भाग गए है, मै
उन से डरता हू, ऐसा न हो कि मै उनके
वश मे कर दिया जाऊ और वे मुझ से
ठट्ठा करे। २० यिर्मयाह ने कहा, तू
उनके वश मे न कर दिया जाएगा, जो
कुछ मै तुझ से कहता हू उसे यहोवा की
बात समझकर मान ले तब तेरा भला
होगा, और तेरा प्राण बचेगा। २१ और
यदि तू निकल जाना स्वीकार न करे
तो जो बात यहोवा ने मुझे दर्शन के द्वारा
बताई है, वह यह है २२ देख, यहूदा
के राजा के रनवास मे जितनी स्त्रिया
रह गई है, वे बाबुल के राजा के हाकिमो
के पास निकाल कर पहुचाई जाएगी, और
वे तुझ से कहेगी, तेरे मित्रो ने तुझे बहकाया,
और उनकी इच्छा पूरी हो गई, और
जब तेरे पाव कीच मे धस गए तो वे
पीछे फिर गए है॥

२३ तेरी सब स्त्रिया और लडकेवाले
कसदियो के पास निकाल कर पहुचाए

जाएंगे, और तू भी कसदियों के हाथ
से न बचेगा, वरन तू पकड़कर बाबुल
के राजा के वश में कर दिया जाएगा
और इस नगर के फूंके जाने का कारण
तू ही होगा ॥

२४ तब सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से
कहा, इन बातों को कोई न जानने पाए,
तो तू मारा न जाएगा। २५ यदि हाकिम
लोग यह सुनकर कि मैं ने तुझ से बातचीत
की है तेरे पास आकर कहने लगें, हमें
बता कि तू ने राजा से क्या कहा, हम से
कोई बात न छिपा, और हम तुझे न
मरवा डालेंगे, और यह भी बता, कि
राजा ने तुझ से क्या कहा, २६ तो तू
उन से कहना, कि मैं ने राजा से गिड़गिड़ा-
कर बिनती की थी कि मुझे योनातान
के घर में फिर वापिस न भेज नहीं तो वहां
मर जाऊंगा। २७ फिर सब हाकिमों ने
यिर्मयाह के पास आकर पूछा, और जैसा
राजा ने उसको आज्ञा दी थी, ठीक वैसा
ही उस ने उनको उत्तर दिया। सो वे
उस से और कुछ न बोले और न वह
भेद खुला। २८ इस प्रकार जिस दिन
यरूशलेम ले लिया गया उस दिन तक
वह पहरे के आंगन ही में रहा ॥

३९ यहूदा के राजा सिदकिय्याह
के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें
महीने में, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने अपनी सारी सेना समेत यरूशलेम पर
चढ़ाई करके उसे घेर लिया। २ और
सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष
के चौथे महीने के नौवें दिन को उस
नगर की शहरपनाह तोड़ी गई। ३ सो
जब यरूशलेम ले लिया गया, तब
नेर्गलसरेसेर, और समगर्नबो, और खोजों
का प्रधान सर्सकीम, और मगों का प्रधान
नेर्गलसरेसेर आदि, बाबुल के राजा के
सब हाकिम बीच के फाटक में प्रवेश करके
बैठ गए। ४ जब यहूदा के राजा सिद-
किय्याह और सब योद्धाओं ने उन्हें देखा
तब रात ही रात राजा की बारी के
मार्ग से दोनों भीतों के बीच के फाटक से
होकर नगर से निकलकर भाग चले और
अराबा का मार्ग लिया। ५ परन्तु
कसदियों की सेना ने उनको खदेड़कर
सिदकिय्याह को यरीहो के अराबा में
जा लिया और उनको बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर के पास हमात देश के रिबला
में ले गए, और उस ने वहां उसके दण्ड
की आज्ञा दी। ६ तब बाबुल के राजा
ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसकी आंखों
के साम्हने रिबला में घात किया, और
सब कुलीन यहूदियों को भी घात किया।
७ उस ने सिदकिय्याह की आंखों को
फुड़वा डाला और उसको बाबुल ले जाने
के लिये बेड़ियों से जकड़वा रखा।
८ कसदियों ने राजभवन और प्रजा के
घरों को आग लगाकर फूंक दिया, और
यरूशलेम की शहरपनाह को ढा दिया।
९ तब जल्लादों का प्रधान नबूजरदान
प्रजा के बचे हुओं को जो नगर में रह
गए थे, और जो लोग उसके पास भाग
आए थे उनको अर्थात् प्रजा में से जितने
रह गए उन सब को बंधुआ करके बाबुल
को ले गया। १० परन्तु प्रजा में से जो ऐसे
कंगाल थे जिनके पास कुछ न था, उनको
जल्लादों का प्रधान नबूजरदान यहूदा देश
में छोड़ गया, और जाते समय उनको
दाख की बारियां और खेत दे दिए ॥

११ बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने
जल्लादों के प्रधान नबूजरदान को यिर्मयाह

के विषय मे यह आज्ञा दी, १२ कि उसको
लेकर उस पर कृपादृष्टि बनाए रखना और
उसकी कुछ हानि न करना, जैसा वह तुझ
से कहे वैसा ही उस से व्यवहार करना।
१३ सो जल्लादो के प्रधान नबूजरदान
और खोजो के प्रधान नबूसजबान और
मगो के प्रधान नेर्गलसरेसेर ज्योतिषियो के
सरदार, १४ और बाबुल के राजा के सब
प्रधानो ने, लोगो को भेजकर यिर्मयाह
को पहरे के आगन मे से बुलवा लिया
और गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र
और शापान का पोता था सौप दिया
कि वह उसे घर पहुचाए। तब से वह
लोगो के साथ रहने लगा॥

१५ जब यिर्मयाह पहरे के आगन मे
कैद था, तब यहोवा का यह वचन उसके
पास पहुचा, १६ कि, जाकर एबेदमेलेक
कूशी से कह कि इस्राएल का परमेश्वर
सेनाओ का यहोवा तुझ से यो कहता है,
देख, मै अपने वे वचन जो मै ने इस नगर के
विषय मे कहे है इस प्रकार पूरा करूगा कि
इसका कुशल न होगा, हानि ही होगी, और
उस समय उनका पूरा होना तुझे दिखाई
पडेगा। १७ परन्तु यहोवा की यह वाणी
है कि उस समय मै तुझे बचाऊगा, और
जिन मनुष्यो से तू भय खाता है, तू उनके
वश मे नहीं किया जाएगा। १८ क्योकि
मै तुझे निश्चय बचाऊगा, और तू तलवार
से न मरेगा, तेरा प्राण बचा रहेगा, यहोवा
की यह वाणी है। यह इस कारण होगा,
कि तू ने मुझ पर भरोसा रखा है॥

४० जब जल्लादो के प्रधान
नबूजरदान ने यिर्मयाह को रामा
मे उन सब यरूशलेमी और यहूदी बंधुओ
के बीच हथकडियो से बन्धा हुआ पाकर
जो बाबुल जाने को थे छुडा लिया, उसके
बाद यहोवा का वचन उसके पास पहुचा।
२ जल्लादो के प्रधान नबूजरदान ने
यिर्मयाह को उस समय अपने पास बुला
लिया, और कहा, इस स्थान पर यह जो
विपत्ति पडी है वह तेरे परमेश्वर यहोवा
की कही हुई थी। ३ और जैसा यहोवा
ने कहा था वैसा ही उस ने पूरा भी किया
है। तुम लोगो ने जो यहोवा के विरुद्ध
पाप किया और उसकी आज्ञा नही मानी,
इस कारण तुम्हारी यह दशा हुई है।
४ अब मै तेरी इन हथकडियो को काटे
देता हू, और यदि मेरे सग बाबुल मे जाना
तुझे अच्छा लगे तो चल, वहा मै तुझ पर
कृपादृष्टि रखूगा, और यदि मेरे सग
बाबुल जाना तुझे न भाए, तो यही रह
जा। देख, सारा देश तेरे साम्हने पडा है,
जिधर जाना तुझे अच्छा और ठीक जचे
उधर ही चला जा। ५ वह वही था
कि नबूजरदान ने फिर उस से कहा,
गदल्याह जो अहीकाम का पुत्र और
शापान का पोता है, जिसको बाबुल के
राजा ने यहूदा के नगरो पर अधिकारी
ठहराया है, उसके पास लौट जा और
उसके सग लोगो के बीच रह, वा जहा
कही तुझे जाना ठीक जान पडे वही चला
जा। सो जल्लादो के प्रधान ने उसको
सीधा और कुछ द्रव्य भी देकर विदा
किया। ६ तब यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र
गदल्याह के पास मिस्पा को गया, और
वहा उन लोगो के बीच जो देश मे रह गए
थे, रहने लगा॥

७ योद्धाओ के जो दल दिहात मे थे,
जब उनके सब प्रधानो ने अपने जनो
समेत सुना कि बाबुल के राजा ने अहीकाम
के पुत्र गदल्याह को देश का अधिकारी

ठहराया है, और देश के जिन कंगाल
लोगों को वह बाबुल को नहीं ले गया,
क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बालबच्चे,
उन सभों को उसे सौंप दिया है, ८ तब
नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह के
पुत्र योहानान, योनातान और तन्हूमेत का
पुत्र सरायाह, एपै नतोपावासी के पुत्र
और किसी माकावासी का पुत्र याजन्याह
अपने जनों समेत गदल्याह के पास मिस्पा
में आए। ९ और गदल्याह जो अहीकाम
का पुत्र और शापान का पोता था, उस ने
उन से और उनके जनों से शपथ खाकर
कहा, कसदियों के आधीन रहने से मत
डरो। इसी देश में रहते हुए बाबुल के
राजा के आधीन रहो तब तुम्हारा भला
होगा। १० मैं तो इसीलिये मिस्पा में
रहता हूं कि जो कसदी लोग हमारे यहां
आए, उनके साम्हने हाज़िर हुआ करूं,
परन्तु तुम दाखमधु और धूपकाल के फल
और तेल को बटोरके अपने बरतनों में
रखो और अपने लिए हुए नगरों में बसे
रहो। ११ फिर जब मोआबियों, अम्मो-
नियों, एदोमियों और अन्य सब जातियों
के बीच रहनेवाले सब यहूदियों ने सुना
कि बाबुल के राजा ने यहूदियों में से
कुछ लोगों को बचा लिया और उन पर
गदल्याह को जो अहीकाम का पुत्र और
शापान का पोता है अधिकारी नियुक्त
किया है, १२ तब सब यहूदी जिन जिन
स्थानों में तितर-बितर हो गए थे, वहां
से लौटकर यहूदा देश के मिस्पा नगर में
गदल्याह के पास आए, और बहुत दाखमधु
और धूपकाल के फल बटोरने लगे॥

१३ तब कारेह का पुत्र योहानान और
मैदान में रहनेवाले योद्धाओं के सब दलों
के प्रधान मिस्पा में गदल्याह के पास आकर
कहने लगे, क्या तू जानता है १४ कि
अम्मोनियों के राजा बालीस ने नतन्याह
के पुत्र इश्माएल को तुझे जान से मारने
के लिये भेजा है? परन्तु अहीकाम के
पुत्र गदल्याह ने उनकी प्रतीति न की।
१५ फिर कारेह के पुत्र योहानान ने
गदल्याह से मिस्पा में छिपकर कहा, मुझे
जाकर नतन्याह के पुत्र इश्माएल को
मार डालने दे और कोई इसे न जानेगा।
वह क्यों तुझे मार डाले, और जितने
यहूदी लोग तेरे पास इकट्ठे हुए हैं वे
क्यों तितर-बितर हो जाएं और बचे
हुए यहूदी क्यों नाश हों? १६ अहीकाम
के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान
से कहा, ऐसा काम मत कर, तू इश्माएल
के विषय में झूठ बोलता है॥

४१ और सातवें महीने में ऐसा
हुआ कि इश्माएल जो नतन्याह
का पुत्र और एलीशामा का पोता और
राजवंश का और राजा के प्रधान पुरुषों
में से था, सो दस जन संग लेकर मिस्पा
में अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास
आया। वहां मिस्पा में उन्हों ने एक
संग भोजन किया। २ तब नतन्याह के
पुत्र इश्माएल और उसके संग के दस जनों
ने उठकर गदल्याह को, जो अहीकाम का
पुत्र और शापान का पोता था, और जिसे
बाबुल के राजा ने देश का अधिकारी
ठहराया था, उसे तलवार से ऐसा मारा
कि वह मर गया। ३ और इश्माएल
ने गदल्याह के संग जितने यहूदी मिस्पा
में थे, और जो कसदी योद्धा वहां मिले,
उन सभों को मार डाला॥

४ गदल्याह के मार डालने के दूसरे
दिन जब कोई इसे न जानता था, ५ तब

शकेम और शीलो और शोमरोन से अस्सी
पुरुष डाढी मुडाए, वस्त्र फाडे, शरीर
चीरे हुए और हाथ मे अन्नवलि और
लोवान लिए हुए, यहोवा के भवन मे
जाने को आते दिखाई दिए। ६ तब
नतन्याह का पुत्र इश्माएल उन से मिलने
को मिस्पा से निकला, और रोता हुआ
चला। जव वह उन से मिला, तव कहा,
अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास चलो।
७ जव वे उस नगर मे आए तव नतन्याह
के पुत्र इश्माएल ने अपने सगी जनो समेत
उनको घात करके गडहे मे फेक दिया।
८ परन्तु उन मे से दस मनुष्य इश्माएल
से कहने लगे, हम को न मार, क्योकि
हमारे पास मैदान मे रखा हुआ गेहू, जव,
तेल और मधु है। सो उस ने उन्हे छोड
दिया और उनके भाइयो के साथ नही
मारा।।

९ जिस गडहे मे इश्माएल ने उन लोगो
की सव लोथें जिन्हे उस ने मारा था,
गदल्याह की लोथ के पास फेक दी थी,
(यह वही गडहा है जिसे आसा राजा
ने इस्राएल के राजा वाशा के डर के मारे
खुदवाया था), उसको नतन्याह के पुत्र
इश्माएल ने मारे हुओ से भर दिया।
१० तव जो लोग मिस्पा मे वचे हुए
थे, अर्थात् राजकुमारिया और जितने और
लोग मिस्पा में रह गए थे जिन्हें जल्लादो
के प्रधान नवूजरदान ने अहीकाम के पुत्र
गदल्याह को सोप दिया था, उन सभो
को नतन्याह का पुत्र इश्माएल वधुआ
करके अम्मोनियो के पास ले जाने को
चला।।

११ जव कारेह के पुत्र योहानान ने
और योद्धाओ के दलो के उन सव प्रधानो
ने जो उसके सग थे, सुना, कि नतन्याह
के पुत्र इश्माएल ने यह सव वुराई की है,
१२ तव वे सव जनो को लेकर नतन्याह
के पुत्र इश्माएल से लडने को निकले
और उसको उस वडे जलाशय के पास
पाया जो गिवोन मे है। १३ कारेह के
पुत्र योहानान को, और दलो के सव
प्रधानो को देखकर जो उसके सग थे,
इश्माएल के साथ जो लोग थे, वे सव
आनन्दित हुए। १४ और जितने लोगो
को इश्माएल मिस्पा से वधुआ करके
लिए जाता था, वे पलटकर कारेह के
पुत्र योहानान के पास चले आए।
१५ परन्तु नतन्याह का पुत्र इश्माएल
आठ पुरुष समेत योहानान के हाथ से
वचकर अम्मोनियो के पास चला गया।
१६ तव प्रजा मे से जितने वच गए थे,
अर्थात् जिन योद्धाओ, स्त्रियो, वालवच्चो
और खोजो को कारेह का पुत्र योहानान,
अहीकाम के पुत्र गदल्याह के मिस्पा मे
मारे जाने के वाद नतन्याह के पुत्र इश्माएल
के पास से छुडाकर गिवोन से फेर ले
आया था, उनको वह अपने सव सगी
दलो के प्रधानो समेत लेकर चल दिया।
१७ और वेतलेहेम के निकट जो किम्हाम
की सराय है, उस मे वे इसलिये टिक
गए कि मिस्र मे जाए। १८ क्योकि
वे कसदियो से डरते थे, इसका कारण
यह था कि अहीकाम का पुत्र गदल्याह जिसे
वावुल के राजा ने देश का अधिकारी
ठहराया था, उसे नतन्याह के पुत्र इश्माएल
ने मार डाला था।।

४२ तव कारेह का पुत्र योहानान,
होशायाह का पुत्र याजन्याह, दलो
के सव प्रधान और छोटे से लेकर वडे तक,
सव लोग यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के निकट

आकर कहने लगे, २ हमारी विनती ग्रहण
करके अपने परमेश्वर यहोवा से हम सब
बचे हुओ के लिये प्रार्थना कर, क्योकि
तू अपनी आखो से देख रहा है कि हम जो
पहले बहुत थे, अब थोडे ही बच गए है।
३ इसलिये प्रार्थना कर कि तेरा परमेश्वर
यहोवा हम को बताए कि हम किस मार्ग
से चले, और कौन सा काम करे?
४ सो यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उन से
कहा, मै ने तुम्हारी सुनी है, देखो, मै
तुम्हारे वचनो के अनुसार तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा से प्रार्थना करूगा और जो उत्तर
यहोवा तुम्हारे लिये देगा मै तुम को
बताऊगा, मै तुम से कोई बात न
छिपाऊगा। ५ तब उन्हो ने यिर्मयाह
से कहा, यदि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे
द्वारा हमारे पास कोई वचन पहुचाए
और हम उसके अनुसार न करें, तो
यहोवा हमारे बीच में सच्चा और विश्वास-
योग्य साक्षी ठहरे। ६ चाहे वह भली
बात हो, चाहे बुरी, तौभी हम अपने
परमेश्वर यहोवा की आज्ञा, जिसके पास
हम तुझे भेजते है, मानेगे, क्योकि जब
हम अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानें
तब हमारा भला हो॥

७ दस दिन के बीतने पर यहोवा का
वचन यिर्मयाह के पास पहुचा। ८ तब
उस ने कारेह के पुत्र योहानान को,
उसके साथ के दलो के प्रधानो को, और
छोटे से लेकर बडे तक जितने लोग थे,
उन सभो को बुलाकर उन से कहा,
९ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके
पास तुम ने मुझ को इसलिये भेजा कि
मैं तुम्हारी विनती उसके आगे कह सुनाऊ,
वह यो कहता है, १० यदि तुम इसी
देश में रह जाओ, तब तो मै तुम को
नाश नही करूगा वरन बनाए रखूगा,
और तुम्हें न उखाडूगा, वरन रोपे रखूगा,
क्योकि तुम्हारी जो हानि मैं ने की है उस
से मै पछताता हू। ११ तुम बाबुल के
राजा से डरते हो, सो उस से मत डरो,
यहोवा की यह वाणी है, उस से मत डरो,
क्योकि मैं तुम्हारी रक्षा करने और तुम
को उसके हाथ से बचाने के लिये तुम्हारे
साथ हू। १२ मै तुम पर दया करूगा,
कि वह भी तुम पर दया करके तुम को
तुम्हारी भूमि पर फिर से बसा देगा।
१३ परन्तु यदि तुम यह कहकर कि हम
इस देश में न रहेंगे अपने परमेश्वर यहोवा
की बात न मानो, और कहो कि हम तो
मिस्र देश जाकर वही रहेंगे, १४ क्योकि
वहा न हम युद्ध देखेंगे, न नरसिगे का
शब्द सुनेगे और न हम को भोजन की
घटी होगा, तो, हे बचे हुए यहूदियो,
यहोवा का यह वचन सुनो १५ इस्राए
का परमेश्वर सेनाओ का यहोवा यो कहत
है, कि यदि तुम सचमुच मिस्र की ओ
जाने का मुह करो, और वहा रहने वे
लिये जाओ, १६ तो ऐसा होगा वि
जिस तलवार से तुम डरते हो, वही वहा
मिस्र देश मे तुम को जा लेगी, और जिस
महगी का भय तुम खाते हो, वह मिस्र
में तुम्हारा पीछा न छोडेगी, और वही
तुम मरोगे। १७ जितने मनुष्य मिस्र
में रहने के लिये उसकी ओर मुह करें,
वे सब तलवार, महगी और मरी से मरेंगे,
और जो विपत्ति मैं उनके बीच डालूगा,
उस से कोई बचा न रहेगा॥

१८ इस्राएल का परमेश्वर सेनाओ
का यहोवा यो कहता है, कि जिस प्रकार
से मेरा कोप और जलजलाहट यरूशलेम
के निवासियो पर भडक उठी थी, उसी

प्रकार से यदि तुम मिस्र म जाओ, तो
मेरी जलजलाहट तुम्हारे ऊपर ऐसी भडक
उठेगी कि लोग चकित होगे, और तुम्हारी
उपमा देकर शाप दिया करेगे और तुम्हारी
निन्दा किया करेगे। तुम इस स्थान को फिर
न देखने पाओगे। १९ हे बचे हुए यहूदियो,
यहोवा ने तुम्हारे विषय मे कहा है, मिस्र
मे मत जाओ। तुम निश्चय जानो कि
मै ने आज तुम को चिताकर यह बात
बता दी है। २० क्योकि जब तुम ने
मुभ को यह कहकर अपने परमेश्वर
यहोवा के पास भेज दिया कि हमारे
निमित्त हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना
कर और जो कुछ हमारा परमेश्वर यहोवा
कहे उसी के अनुसार हम को बता और
हम वैसा ही करेगे, तब तुम जान बूझके
अपने ही को धोखा देते थे। २१ देखो,
मै आज तुम को बताए देता हू, परन्तु,
और जो कुछ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
ने तुम से कहने के लिये मुभ को भेजा है,
उस मे से तुम कोई बात नही मानते।
२२ अब तुम निश्चय जानो, कि जिस
स्थान मे तुम परदेशी होके रहने की
इच्छा करते हो, उस मे तुम तलवार,
महगी और मरी से मर जाओगे ॥

४३ जब यिर्मयाह उनके परमेश्वर
यहोवा के वे सब वचन कह
चुका, जिनके कहने के लिये उस ने उसको
उन सब लोगो के पास भेजा था, २ तब
होशायाह के पुत्र अजर्याह और कारेह के
पुत्र योहानान और सब अभिमानी पुरुषो
ने यिर्मयाह से कहा, तू झूठ बोलता है।
हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुझे यह कहने
के लिये नही भेजा कि मिस्र म रहने के
लिये मत जाओ, ३ परन्तु नेरिय्याह का
पुत्र बारूक तुभ को हमारे विरुद्ध उसकाता
है कि हम कसदियो के हाथ मे पडे और
वे हम को मार डाले वा बधुआ करके
बाबुल को ले जाए। ४ सो कारेह का
पुत्र योहानान और दलो के सब प्रधानो
और सब लोगो ने यहोवा की यह आज्ञा
न मानी कि वे यहूदा के देश मे ही रहे।
५ और कारेह का पुत्र योहानान और
दलो के और सब प्रधान उन सब यहूदियो
को जो अन्यजातियो के बीच तितर-
बितर हो गए थे, और उन मे से लौटकर
यहूदा देश मे रहने लगे थे, वे उनको ले
गए—६ पुरुष, स्त्री, बालबच्चे, राज-
कुमारिया, और जितने प्राणियो को
जल्लादो के प्रधान नबूजरदान ने गदल्याह
को जो अहीकाम का पुत्र और शापान
का पोता था, सौप दिया था, उनको और
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता और नेरिय्याह के
पुत्र बारूक को वे ले गए, ७ और यहोवा
की आज्ञा न मानकर वे मिस्र देश मे
तहपन्हेस नगर तक आ गए ॥

८ तब यहोवा का यह वचन तहपन्हेस
मे यिर्मयाह के पास पहुचा ९ अपने
हाथ से बडे पत्थर ले, और यहूदी पुरुषो
के साम्हने उस ईंट के चबूतरे मे जो
तहपन्हेस मे फिरौन के भवन के द्वार के
पास है, चूना फेर के छिपा दे, १० और
उन पुरुषो से कह, कि इस्राएल का परमेश्वर,
सेनाओ का यहोवा, यो कहता है, देखो,
मै बाबुल के राजा अपने सेवक नबूकदनेस्सर
को बुलवा भेजूगा, और वह अपना सिंहासन
इन पत्थरो के ऊपर जो मै ने छिपा रखे
है, रखेगा, और अपना छत्र इनके ऊपर
तनवाएगा। ११ वह आके मिस्र देश को
मारेगा, तब जो मरनेवाले हो वे मृत्यु
के वश मे, जो बधुए होनेवाले हो वे

वधुआई में, और जो तलवार के लिये हैं वे
तलवार के वश में कर दिए जाएंगे। १२ मैं
मिस्र के देवालयो मे आग लगाऊंगा,
और वह उन्हें फुकवा देगा और वधुआई
मे ले जाएगा, और जैसा कोई चरवाहा
अपना वस्त्र ओढ़ता है, वैसा ही वह
मिस्र देश को समेट लेगा, और तब
वेखटके चला जाएगा। १३ वह मिस्र
देश के सूर्यगृह के खम्भो को तुड़वा डालेगा,
और मिस्र के देवालयो को आग लगाकर
फुकवा देगा॥

४४ जितने यहूदी लोग मिस्र देश
में मिग्दोल, तहपन्हेस और नोप
नगरो और पत्रोस देश मे रहते थे, उनके
विषय यिर्मयाह के पास यह वचन पहुचा,
२ इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओ का
यहोवा यो कहता है कि जो विपत्ति मैं
यरूशलेम और यहूदा के सब नगरो पर
डाल चुका हू, वह सब तुम लोगो ने
देखी है। देखो, वे आज के दिन कैसे
उजड़े हुए और निर्जन हैं, ३ क्योंकि
उनके निवासियो ने वह बुराई की जिस
से उन्हो ने मुझे रिस दिलाई थी वे जाकर
दूसरे देवताओ के लिये धूप जलाते थे
और उनकी उपासना करते थे, जिन्हे न
तो तुम और न तुम्हारे पुरखा जानते
थे। ४ तौभी मैं अपने सब दास
भविष्यद्वक्ताओ को वडे यत्न से* यह
कहने के लिये तुम्हारे पास भेजता रहा
कि यह घृणित काम मत करो, जिस से
म घृणा रखता हू। ५ पर उन्हो ने
मेरी न सुनी और न मेरी ओर कान
लगाया कि अपनी बुराई से फिरें और
दूसरे देवताओं के लिये धूप न जलाए।
६ इस कारण मेरी जलजलाहट और कोप
की आग यहूदा के नगरो और यरूशलेम
की सड़को पर भड़क* गई, और वे
आज के दिन तक उजाड़ और सुनसान
पड़े है। ७ अब यहोवा, सेनाओ का
परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है,
यो कहता है, तुम लोग क्यो अपनी यह
बड़ी हानि करते हो, कि क्या पुरुष, क्या
स्त्री, क्या बालक, क्या दूधपिउवा बच्चा,
तुम सब यहूदा के बीच से नाश किए
जाओ, और कोई न रहे? ८ क्योंकि
इस मिस्र देश में जहा तुम परदेशी होकर
रहने के लिये आए हो, तुम अपने कामो
के द्वारा, अर्थात् दूसरे देवताओ के लिये
धूप जलाकर मुझे रिस दिलाते हो जिस
से तुम नाश हो जाओगे और पृथ्वी भर
की सब जातियो के लोग तुम्हारी जाति
की नामधराई करेंगे और तुम्हारी उपमा
देकर शाप दिया करेंगे। ९ जो जो
बुराइया तुम्हारे पुरखा, यहूदा के राजा
और उनकी स्त्रिया, और तुम्हारी स्त्रिया,
वरन तुम आप यहूदा देश और यरूशलेम
की सड़को म करते थे, क्या उसे तुम
भूल गए हो? १० आज के दिन तक
उनका मन चूर नही हुआ और न वे
डरते है, और न मेरी उस व्यवस्था और
उन विधियो पर चलते हैं जो म ने तुम्हारे
पूर्वजो को और तुम को भी सुनवाई है।
११ इस कारण इस्राएल का परमेश्वर,
सेनाओ का यहोवा, यो कहता है, देखो,
म तुम्हारे विरुद्ध होकर तुम्हारी हानि
करूगा, ताकि सब यहूदियो का अन्त कर
दू। १२ और बचे हुए यहूदी जो हठ
करके मिस्र देश में आकर रहने लगे है,

* मूल में—तड़के उठकर।

* मूल म—उण्डेली।

वे सव मिट जाएगे*, इस मिस्र देश में
छोटे से लेकर वडे तक वे तलवार और
महगी के द्वारा मरके मिट जाएगे, और
लोग उन्हे कोसेगे और चकित होगे;
और उनकी उपमा देकर शाप दिया
करेगे और निन्दा भी करेगे। १३ सो
जैसा मै ने यरूशलेम को तलवार, महगी
और मरी के द्वारा दण्ड दिया है, वैसा ही
मिस्र देश मे रहनेवालो को भी दण्ड
दूगा, १४ कि जो वचे हुए यहूदी मिस्र
देश मे परदेशी होकर रहने के लिये आए
है, यद्यपि वे यहूदा देश मे रहने के लिये
लौटने की वडी अभिलाषा रखते है, तौभी
उन मे से एक भी वचकर वहा लौटने
न पाएगा, केवल कुछ ही भागे हुओ को
छोड कोई भी वहा न लौटने पाएगा ।।

१५ तव मिस्र देश के पत्रोस मे
रहनेवाले जितने पुरुष जानते थे कि
उनकी स्त्रिया दूसरे देवताओ के लिये
धूप जलाती है, और जितनी स्त्रिया वडी
मण्डली मे पास खडी थी, उन सभो ने
यिर्मयाह को यह उत्तर दिया, १६ जो
वचन तू ने हम को यहोवा के नाम से
सुनाया है, उसको हम नही सुनने की।
१७ जो जो मन्नते हम मान चुके है उन्हे
हम निश्चय पूरी करेगी, हम स्वर्ग की
रानी के लिये धूप जलाएगे और तपावन
देंगे, जैसे कि हमारे पुरखा लोग और हम
भी अपने राजाओ और और हाकिमो समेत
यहूदा के नगरो में और यरूशलेम की
सडको मे करते थे, क्योकि उस समय
हम पेट भरके खाते और भले चगे रहते
और किसी विपत्ति मे नही पडते थे।
१८ परन्तु जव से हम ने स्वर्ग की रानी
के लिये धूप जलाना और तपावन देना
छोड़ दिया, तव से हम को सव वस्तुओ
की घटी है, और हम तलवार और
महगी के द्वारा मिट चले है। १९ और
स्त्रियो ने कहा, जव हम स्वर्ग की रानी के
लिये धूप जलाती और चन्द्राकार रोटिया
वनाकर तपावन देती थी, तव अपने अपने
पति के विन जाने ऐसा नही करती थी ।।

२० तव यिर्मयाह ने, क्या स्त्री, क्या
पुरुष, जितने लोगो ने यह उत्तर दिया,
उन सव से कहा, २१ तुम्हारे पुरखा
और तुम जो अपने राजाओ और हाकिमो
और लोगो समेत यहूदा देश के नगरो
और यरूशलेम की सड़को मे धूप जलाते
थे, क्या वह यहोवा के ध्यान में नही
आया? २२ क्या उस ने उसको स्मरण
न किया? सो जव यहोवा तुम्हारे बुरे
और सव घृणित कामो को और अधिक
न सह सका, तव तुम्हारा देश उजडकर
निर्जन और सुनसान हो गया, यहा तक कि
लोग उसकी उपमा देकर शाप दिया करते
है, जैसे कि आज होता है। २३ क्योकि तुम
धूप जलाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते
और उसकी नही सुनते थे, और उसकी
व्यवस्था और विधियो और चितौनियो के
अनुसार नही चले, इस कारण यह विपत्ति
तुम पर आ पडी है, जैसे कि आज है ।।

२४ फिर यिर्मयाह ने उन सव लोगो
से और उन सव स्त्रियो से कहा, हे सारे
मिस्र देश मे रहनेवाले यहूदियो, यहोवा
का वचन सुनो २५ इस्राएल का पर-
मेश्वर, सेनाओ का यहोवा, यो कहता है,
कि तुम ने और तुम्हारी स्त्रियो ने मन्नते
मानी* और यह कहकर उन्हे पूरी करते

* मूल में—मैं उन्हें लूगा और वे सब मिट जायेंगे।

* मूल में—अपने अपने मुंह से कहा।

हो कि हम ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप
जलाने और तपावन देने की जो जो मन्नतें
मानी हैं उन्हें हम अवश्य ही पूरी करेंगे,
और तुम ने अपने हाथों से ऐसा ही किया।
सो अब तुम अपनी अपनी मन्नतों को
मानकर पूरी करो! २६ परन्तु हे मिस्र
देश में रहनेवाले सारे यहूदियो यहोवा का
वचन सुनो सुनो, मैं ने अपने बड़े नाम
की शपथ खाई है कि अब पूरे मिस्र देश में
कोई यहूदी मनुष्य मेरा नाम लेकर फिर
कभी यह न कहने पाएगा कि "प्रभु
यहोवा के जीवन की सौगन्ध"। २७ सुनो,
अब मैं उनकी भलाई नहीं, हानि ही की
चिन्ता* करूंगा, सो मिस्र देश में रहने-
वाले सब यहूदी, तलवार और महंगी के
द्वारा मिटकर नाश हो जाएंगे जब तक कि
उनका सर्वनाश न हो जाए। २८ और जो
तलवार से बचकर और मिस्र देश से
लौटकर यहूदा देश में पहुंचेंगे, वे थोड़े
ही होंगे, और मिस्र देश में रहने के
लिये आए हुए सब यहूदियों में से जो
बच पाएंगे, वे जान लेंगे कि किसका
वचन पूरा हुआ, मेरा वा उनका। २९ इस
बात का मैं यह चिन्ह देता हूं, यहोवा
की यह वाणी है, कि मैं तुम्हें इसी स्थान में
दण्ड दूंगा, जिस से तुम जान लोगे कि
तुम्हारी हानि करने में मेरे वचन निश्चय
पूरे होंगे। ३० यहोवा यों कहता है, देखो,
जैसा मैं ने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को
उसके शत्रु अर्थात् उसके प्राण के खोजी
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ में
कर दिया, वैसे ही मैं मिस्र के राजा फिरौन
होप्रा को भी उसके शत्रुओं के, अर्थात् उसके
प्राण के खोजियों के हाथ में कर दूंगा॥

* मूल में—जागता हुआ।

४५ योशिय्याह के पुत्र यहूदा के
राजा यहोयाकीम के राज्य के
चौथे वर्ष में, जब नेरिय्याह का पुत्र बारूक
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से भविष्यद्वाणी के
ये वचन सुनकर पुस्तक में लिख चुका था,
२ तब उस ने उस से यह वचन कहा,
कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा, तुझ
से यों कहता है, ३ हे बारूक, तू ने कहा,
हाय मुझ पर! क्योंकि यहोवा ने
मुझे दुःख पर दुःख दिया है*, मैं कराहते
कराहते थक गया और मुझे कुछ चैन
नहीं मिलता। ४ तू यों कह, यहोवा यों
कहता है, कि देख, इस सारे देश को जिसे
मैं ने बनाया था, उसे मैं आप ढा दूंगा,
और जिन को मैं ने रोपा था, उन्हें स्वयं
उखाड़ फेंकूंगा। ५ इसलिये सुन, क्या तू
अपने लिये बड़ाई खोज रहा है?
उसे मत खोज, क्योंकि यहोवा की यह
वाणी है, कि मैं सारे मनुष्यों पर विपत्ति
डालूंगा, परन्तु जहां कहीं तू जाएगा
वहां मैं तेरा प्राण बचाकर तुझे जीवित
रखूंगा†॥

४६ अन्यजातियों के विषय यहोवा
का जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्-
वक्ता के पास पहुंचा, वह यह है॥

२ मिस्र के विषय। मिस्र के राजा
फिरौन निको की सेना जो परात महानद
के तीर पर कर्कमीश में थी, और जिसे
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने योशिय्याह
के पुत्र यहूदा के राजा यहोयाकीम के
राज्य के चौथे वर्ष में जीत लिया था,
३ उस सेना के विषय —ढालें और फरियां

* मेरी पीड़ा पर खेद बढ़ाया है।
† मूल में—तेरे प्राण को लूट समझकर
तुझे दूंगा।

तैयार करके लडने को निकट चले आओ।
४ घोडो को जुतवाओ, और हे सवारो,
घोडो पर चढकर टोप पहिने हुए खडे
हो जाओ, भालो को पैना करो, झिलमो
को पहिन लो! ५ मै क्यो उनको व्याकुल
देखता हू? वे विस्मित होकर पीछे हट
गए। उनके शूरवीर गिराए गए और
उतावली करके भाग गए, वे पीछे देखते
भी नही, क्योकि यहोवा की यह वाणी
है, कि चारो ओर भय ही भय है!
६ न वेग चलनेवाला भागने पाएगा और
न वीर बचने पाएगा, क्योकि उत्तर
दिशा मे परात महानद के तीर पर वे
सब ठोकर खाकर गिर पडे॥

७ यह कौन है, जो नील नदी की
नाईं, जिसका जल महानदो का सा उछलता
है, बढा चला आता है? ८ मिस्र नील
नदी की नाईं बढता है, उसका जल
महानदो का सा उछलता है। वह कहता
है, मै चढकर पृथ्वी को भर दूगा, मै
नगरो को उनके निवासियो समेत नाश कर
दूगा। ९ हे मिस्री सवारो आगे बढो,
हे रथियो बहुत ही वेग से चलाओ!
हे ढाल पकडनेवाले कूशी और पूती वीरो,
हे धनुर्धारी लूदियो चले आओ।
१० क्योकि वह दिन सेनाओ के यहोवा
प्रभु के बदला लेने का दिन होगा जिस
मे वह अपने द्रोहियो से बदला लेगा।
सो तलवार खाकर तृप्त होगी, और
उनका लोहू पीकर छक जाएगी। क्योकि,
उत्तर के देश मे परात महानद के तीर
पर, सेनाओ के यहोवा प्रभु का यज्ञ है।
११ हे मिस्र की कुमारी कन्या, गिलाद
को जाकर बलसान औषधि ले, तू व्यर्थ
ही बहुत इलाज करती है, तू चगी नही
होगी! १२ क्योकि सब जाति के लोगो
ने सुना है कि तू नीच हो गई और पृथ्वी
तेरी चिल्लाहट से भर गई है, वीर से
वीर ठोकर खाकर गिर पडे, वे दोनो
एक सग गिर गए है॥

१३ यहोवा ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
से यह वचन भी कहा कि बाबुल का राजा
नबूकदनेस्सर क्योकर आकर मिस्र देश
को मार लेगा १४ मिस्र मे वर्णन करो,
और मिग्दोल मे सुनाओ, हा, और नोप
और तहपन्हेस मे सुनाकर यह कहो कि
खडे होकर तैयार हो जाओ, क्योकि
तुम्हारे चारो ओर सब कुछ तलवार खा
गई है। १५ तेरे बलवन्त जन क्यो
विलाय गए है? वे इस कारण
खडे न रह सके क्योकि यहोवा ने उन्हे
ढकेल दिया। १६ उस ने बहुतो को
ठोकर खिलाई, वे एक दूसरे पर गिर
पडे, और वे कहने लगे, उठो, चलो,
हम अन्धेर करनेवाले की तलवार के
डर के मारे अपने अपने लोगो और अपनी
अपनी जन्मभूमि मे फिर लौट जाए।
१७ वहा वे पुकार के कहते है, मिस्र का
राजा फिरौन सत्यानाश हुआ, क्योकि
उस ने अपना बहुमूल्य अवसर खो दिया॥

१८ वह राजाधिराज जिसका नाम
सेनाओ का यहोवा है, उसकी यह वाणी
है कि मेरे जीवन की सौगन्ध, जैसा ताबोर
अन्य पहाडो मे, और जैसा कर्मेल समुद्र
के किनारे है, वैसा ही वह आएगा।
१९ हे मिस्र की रहनेवाली पुत्री! बधु-
आई मे जाने का सामान तैयार कर, क्योकि
नोप नगर उजाड और ऐसा भस्म हो
जाएगा कि उस मे कोई भी न रहेगा॥

२० मिस्र बहुत ही सुन्दर बछिया तो
है, परन्तु उत्तर दिशा से नाश चला आता
है, वह आ ही गया है। २१ उसके जो

सिपाही किराये पर आए हैं वह पोसे
हुए बछडो के समान हैं, उन्हो ने मुह
मोडा, और एक सग भाग गए, वे खडे
नही रहे, क्योकि उनकी विपत्ति का
दिन और दण्ड पाने का समय आ गया॥
२२ उसकी आहट सप के भागने की
सी होगी, क्योकि वे वृक्षो के काटनेवालो
की सेना और कुल्हाडिया लिए हुए उसके
विरुद्ध चढ आएगे। २३ यहोवा की यह
वाणी है, कि चाहे उसका वन बहुत ही
घना हो, परन्तु वे उसको काट डालेगे,
क्योकि वे टिड्डियो से भी अधिक अनगिनित
हैं। २४ मिस्री कन्या लज्जित होगी,
वह उत्तर दिशा के लोगो के वश मे कर
दी जाएगी॥
२५ इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओ
का यहोवा कहता है, देखो, मैं नगरवासी
आमोन और फिरौन राजा और मिस्र को
उसके सब देवताओं और राजाओ समेत
और फिरौन को उन समेत जो उस पर
भरोसा रखते हैं दण्ड देने पर हू।
२६ मैं उनको बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
और उसके कर्मचारियो के वश मे कर
दूगा जो उनके प्राण के खोजी है। उसके
बाद वह प्राचीनकाल की नाईं फिर बसाया
जाएगा, यहोवा की यह वाणी है॥
२७ परन्तु हे मेरे दास याकूब, तू
मत डर, और हे इस्राएल, विस्मित न हो,
क्योकि मैं तुझे और तेरे वश को बधुआई के
दूर देश से छुडा ले आऊगा। याकूब
लौटकर चैन और सुख से रहेगा, और
कोई उसे डराने न पाएगा। २८ हे मेरे
दास याकूब, यहोवा की यह वाणी है,
कि तू मत डर, क्योकि मै तेरे साथ हू।
और यद्यपि मैं उन सब जातियो का अन्त
कर डालूगा जिन मे मै ने तुझे बरबस
निकाल दिया है, तौभी तेरा अन्त न
करूगा। मैं तेरी ताडना विचार करके
करूगा, परन्तु तुझे किसी प्रकार से निर्दोष
न ठहराऊगा॥

४७ फिरौन के गज्जा नगर को
जीत लेने से पहिले यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता के पास पलिश्तियों के विषय
यहोवा का यह वचन पहुचा २ यहोवा
यो कहता है कि देखो, उत्तर दिशा मे
उमण्डनेवाली नदी देश को उस सब समेत
जो उस मे है, और निवासियो समेत
नगर को डुबो लेगी। तब मनुष्य
चिल्लाएगे, वरन देश के सब रहनेवाले
हाय-हाय करेंगे। ३ शत्रुओ के बलवन्त
घोडो की टाप, रथो के वेग चलने और
उनके पहियो के चलने का कोलाहल
सुनकर पिता के हाथ-पाव ऐसे ढीले पड
जाएगे, कि वह मुह मोडकर अपने लडको
को भी न देखेगा। ४ क्योंकि सब पलि-
श्तियो के नाश होने का दिन आता है,
और सोर और सिदोन के सब बचे हुए
सहायक मिट जाएगे। क्योकि यहोवा
पलिश्तियों को जो कप्तोर नाम समुद्र
तीर के बचे हुए रहनेवाले है, उनको
भी नाश करने पर है। ५ गज्जा
के लोग सिर मुडाए है, अश्कलोन जो
पलिश्तियो के नीचान में अकेला रह
गया है, वह भी मिटाया गया है, तू
कब तक अपनी देह चीरता रहेगा?
६ हे यहोवा की तलवार! तू कब
तक शान्त न होगी? तू अपनी मियान में
घुस जा, शान्त हो, और थमी रह! ७ तू
क्योंकर थम सकती है? क्योंकि यहोवा
ने तुझ को आज्ञा देकर अश्कलोन और
समुद्रतीर के विरुद्ध ठहराया है॥

४८ मोआब के विषय इस्राएल
का परमेश्वर, सेनाओ का यहोवा
यो कहता है नबू पर हाय, क्योकि वह
नाश हो गया! किर्यातैम की आशा
टूट गई, वह ले लिया गया है; ऊचा
गढ निराश और विस्मित हो गया है।
२ मोआब की प्रशसा जाती रही। हेशबोन
मे उसकी हानि की कल्पना की गई है:
आओ, हम उसको ऐसा नाश करे कि
वह राज्य न रह जाए। हे मदमेन, तू भी
सुनसान हो जाएगा; तलवार तेरे पीछे
पडेगी ॥

३ होरोनैम से चिल्लाहट का शब्द
सुनो! नाश और बडे दुःख का शब्द
सुनाई देता है! ४ मोआब का सत्यानाश
हो रहा है, उसके नन्हे बच्चो की चिल्लाहट
सुन पडी। ५ क्योकि लूहीत की चढाई
मे लोग लगातार रोते हुए चढेगे, और
होरोनैम की उतार मे नाश की चिल्लाहट
का सकट हुआ* है। ६ भागो! अपना
अपना प्राण बचाओ! उस अधमूए पेड़
के समान हो जाओ जो जगल मे होता
है! ७ क्योकि तू जो अपने कामो और
सम्पत्ति पर भरोसा रखता है, इस कारण
तू भी पकडा जाएगा, और कमोश देवता
भी अपने याजको और हाकिमो समेत
बधुआई मे जाएगा। ८ यहोवा के वचन
के अनुसार नाश करनेवाले तुम्हारे हर एक
नगर पर चढाई करेंगे, और कोई नगर
न बचेगा, नीचानवाले और पहाड पर
की चौरस भूमिवाले दोनो नाश किए
जाएगे ॥

९ मोआब के पख लगा दो ताकि वह
उडकर दूर हो जाए; क्योकि उसके नगर
ऐसे उजाड हो जाएगे कि उन मे कोई
भी न बसने पाएगा ॥

१० शापित है वह जो यहोवा का
काम आलस्य से करता है; और वह भी
जो अपनी तलवार लोहू बहाने से रोक
रखता है ॥

११ मोआब बचपन ही से सुखी है,
उसके नीचे तलछट है, वह एक बरतन से
दूसरे बरतन मे उण्डेला नही गया और
न बधुआई मे गया, इसलिये उसका स्वाद
उस मे स्थिर है, और उसकी गन्ध ज्यो
की त्यो बनी रहती है। १२ इस कारण
यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आएगे,
कि मै लोगो को उसके उण्डेलने के लिये
भेजूगा, और वे उसको उण्डेलेगे, और
जिन घडो मे वह रखा हुआ है, उनको
छूछे करके फोड डालेगे। १३ तब जैसे
इस्राएल के घराने को बेतेल से लज्जित
होना पडा, जिस पर वे भरोसा रखते थे,
वैसे ही मोआबी लोग कमोश से लज्जित
होगे ॥

१४ तुम कैसे कह सकते हो कि हम
वीर और पराक्रमी योद्धा है? १५ मोआब
तो नाश हुआ, उसके नगर भस्म हो गए
और उसके चुने हुए जवान घात होने को
उतर गए, राजाधिराज, जिसका नाम
सेनाओ का यहोवा है, उसकी यही वाणी
है। १६ मोआब की विपत्ति निकट आ
गई, और उसके सकट मे पडने का दिन
बहुत ही वेग से आता है। १७ उसके
आस पास के सब रहनेवालो, और उसकी
कीर्त्ति के सब जाननेवालो, उसके लिये
विलाप करो, कहो हाय! वह मजबूत
सोटा और सुन्दर छडी कैसे टूट गई
है?

* मूल मे—सुना गया।

१८ हे दीबोन की रहनेवाली* तू
अपना विभव छोडकर प्यासी बैठी रह!
क्योंकि मोआब के नाश करनेवाले ने तुझ
पर चढाई करके तेरे दृढ गढों को नाश
किया है। १९ हे अरोएर की रहनेवाली*
तू मार्ग में खडी होकर ताकती रह!
जो भागता है उस से, और जो बच
निकलती है उस से पूछ, कि, क्या हुआ है?
२० मोआब की आशा टूटेगी, वह विस्मित
हो गया, तुम हाय हाय करो और
चिल्लाओ, अर्नोन में भी यह बताओ कि
मोआब नाश हुआ है॥

२१ चौरस भूमि के देश में होलोन,
२२ यहसा, मेपात, दीबोन, नबो,
बेतदिबलातैम, २३ और किर्यातैम,
बेतगामूल, बेतमोन, २४ और करिय्योत,
बोस्रा, और क्या दूर क्या निकट, मोआब
देश के सारे नगरों में दण्ड की आज्ञा
पूरी हुई है। २५ यहोवा की यह वाणी
है, मोआब का सींग कट गया, और भुजा
टूट गई है॥

२६ उसको मतवाला करो, क्योंकि
उस ने यहोवा के विरुद्ध बडाई मारी है,
इसलिये मोआब अपनी छाँट में लोटेगा,
और ठट्ठों मे उडाया जाएगा। २७ क्या
तू ने भी इस्राएल को ठट्ठों में नही उडाया?
क्या वह चोरों के बीच पकडा गया
था कि जब तू उसकी चर्चा करता तब
तू सिर हिलाता था?

२८ हे मोआब के रहनेवालो अपने
अपने नगर को छोडकर ढाग की दरार
में बसो! उस पण्डुकी के समान हो
जो गुफा के मुह की एक ओर घोसला बनाती
हो। २९ हम ने मोआब के गर्व के
विषय में सुना है कि वह अत्यन्त अभिमानी
है, उसका गर्व, अभिमान और अहकार,
और उसका मन फूलना प्रसिद्ध है।
३० यहोवा की यह वाणी है, मैं उसके
रोष को भी जानता हू कि वह व्यर्थ ही
है, उसके बडे बोल से कुछ बन न पडा।
३१ इस कारण मैं मोआबियो के लिये
हाय-हाय करूगा, हा मैं सारे मोआबियो
के लिये चिल्लाऊगा, कीर्हेरेस के लोगो
के लिये विलाप किया जाएगा। ३२ हे
सिबमा की दाखलता, मैं तुम्हारे लिये याजेर
से भी अधिक विलाप करूगा! तेरी
डालिया तो ताल के पार बढ गईं, वरन
याजेर के ताल तक भी पहुची थी, पर
नाश करनेवाला तेरे धूपकाल के फलो
पर, और तोडी हुई दाखो पर भी टूट
पडा है। ३३ फलवाली बारियो से और
मोआब के देश से आनन्द और मगन
होना उठ गया है, मैं ने ऐसा किया
कि दाखरस के कुण्डो मे कुछ दाखमधु
न रहा, लोग फिर ललकारते हुए दाख
न रौंदेंगे, जो ललकार होनेवाली है,
वह अब नही होगी॥

३४ हेशबोन की चिल्लाहट सुनकर
लोग एलाले और यहस तक, और सोआर
से होरोनैम और एग्लतशलीशिया तक
भी चिल्लाते हुए भागे चले गए है।
क्योंकि निम्रीम का जल भी सूख गया है।
३५ और यहोवा की यह वाणी है, कि
मैं ऊचे स्थान पर चढावा चढाना, और
देवताओ के लिये धूप जलाना, दोनो को
मोआब में बन्द कर दूगा। ३६ इस
कारण मेरा मन मोआब और कीर्हेरेस के
लोगो के लिये बासुली सा रो रोकर
आलापता है, क्योंकि जो कुछ उन्हो ने
कमाकर बचाया है, वह नाश हो गया है।

* मूल में—दीबोन की रहनेहारी बेटी।

३७ क्योकि सब के सिर मुडे गए और
सब की दाढिया नोची गई, सब के हाथ
चीरे हुए, और सब की कमरो मे टाट
बन्धा हुआ है। ३८ मोआब के सब घरो
की छतो पर और सब चौको मे रोना
पीटना हो रहा है, क्योकि मै ने मोआब
को तुच्छ बरतन की नाई तोड डाला है
यहोवा की यह वाणी है। ३९ मोआब
कैसे विस्मित हो गया! हाय, हाय,
करो! क्योकि उस ने कैसे लज्जित होकर
पीठ फेरी है! इस प्रकार मोआब के
चारो ओर के सब रहनेवाले उसका ठट्ठा
करेगे और विस्मित हो जाएगे।
४० क्योकि यहोवा यो कहता है, देखो,
वह उकाब सा उडेगा और मोआब के
ऊपर अपने पख फैलाएगा। ४१ करिय्योत
ले लिया गया, और गढवाले नगर दूसरो
के वश मे पड गए। उस दिन मोआबी
वीरो के मन जच्चा स्त्री के से हो जाएगे,
४२ और मोआब ऐसा तितर-बितर हो
जाएगा कि उसका दल टूट जाएगा, क्योकि
उस ने यहोवा के विरुद्ध बडाई मारी है।
४३ यहोवा की यह वाणी है कि हे
मोआब के रहनेवाले, तेरे लिये भय
और गड्हा और फन्दे ठहराए गए है।
४४ जो कोई भय से भागे वह गड्हे
मे गिरेगा, और जो कोई गड्हे मे से
निकले, वह फन्दे मे फसेगा। क्योकि मै
मोआब के दण्ड का दिन उस पर ले
आऊगा, यहोवा की यही वाणी है॥

४५ जो भागे हुए है वह हेशबोन मे
शरण लेकर खडे हो गए है, परन्तु
हेशबोन मे आग और सीहोन के बीच मे
लौ निकली, जिस से मोआब देश के कोने
और बलवैयो के चोण्डे भस्म हो गए है।
४६ हे मोआब तुझ पर हाय! कमोश
की प्रजा नाश हो गई; क्योकि तेरे स्त्री-
पुरुष दोनो बधुआई मे गए है। ४७ तौभी
यहोवा की यह वाणी है, कि अन्त के दिनो
मे मै मोआब को बधुआई से लौटा ले
आऊगा। मोआब के दण्ड का वचन
यही तक हुआ॥

४९ अम्मोनियो के विषय यहोवा
यो कहता है, क्या इस्राएल के
पुत्र नही है? क्या उसका कोई वारिस
नही रहा? फिर मल्काम क्यो गाद के
देश का अधिकारी हुआ? और उसकी
प्रजा क्यो उसके नगरो मे बसने पाई है?
२ यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन
आनेवाले है, कि मै अम्मोनियो के रब्बा नाम
नगर के विरुद्ध युद्ध की ललकार सुनवाऊगा,
और वह उजडकर खण्डहर हो जाएगा,
और उसकी बस्तिया* फूक दी जाएगी,
तब जिन लोगो ने इस्राएलियो के देश को
अपना लिया है, उनके देश को इस्राएली
अपना लेगे, यहोवा का यही वचन है॥

३ हे हेशबोन हाय-हाय कर, क्योकि ऐ
नगर नाश हो गया। हे रब्बा की बेटियो
चिल्लाओ! और कमर मे टाट बान्धो,
छाती पीटती हुई बाडो मे इधर उधर
दौडो! क्योकि मल्काम अपने याजको
और हाकिमो समेत बधुआई मे जाएगा।
४ हे भटकनेवाली बेटी! तू अपने देश
की तराइयो पर, विशेष कर अपने बहुत
ही उपजाऊ तराई पर क्यो फूलती है?
तू क्यो यह कहकर अपने रखे हुए धन
पर भरोसा रखती है, कि मेरे विरुद्ध
कौन चढाई कर सकेगा? ५ प्रभु सेनाओ
के यहोवा की यह वाणी है, देख, मै तेरे
चारो ओर के सब रहनेवालो की ओर से

* मूल मे—बेटियां।

तेरे मन मे भय उपजाने पर हू, और तेरे
लोग अपने अपने साम्हने की ओर ढकेल
दिए जाएगे, और जब वे मारे मारे
फिरेंगे, तब कोई उन्हें इकट्ठा न करेगा।
६ परन्तु उसके बाद मैं अम्मोनियो को
बधुआई से लौटा लाऊगा, यहोवा की
यही वाणी है ॥

७ एदोम के विषय, सेनाओ का यहोवा
यो कहता है, क्या तेमान में अब कुछ
बुद्धि नही रही? क्या वहा के ज्ञानियो
की युक्ति निष्फल हो गई? क्या उनकी
बुद्धि जाती रही है? ८ हे ददान के
रहनेवाला भागो, लौट जाओ, वहा छिपकर
बसो! क्योकि जब मैं एसाव को दण्ड
देने लगूगा, तब उस पर भारी विपत्ति
पडेगी। ९ यदि दाख के तोडनेवाले तेरे
पास आते, तो क्या वे कही कही दाख
न छोड जाते? और यदि चोर रात को
आते तो क्या वे जितना चाहते उतना
धन लूटकर न ले जाते? १० क्योकि
मैं ने एसाव को उघारा है, मैं ने उसके
छिपने के स्थानो को प्रगट किया है,
यहा तक कि वह छिप न सका। उसके
वश और भाई और पडोसी सब नाश हो
गए हैं और उसका अन्त हो गया।
११ अपने अनाथ बालको को छोड़ जाओ,
मैं उनको जिलाऊगा, और तुम्हारी
विधवाए मुझ पर भरोसा रखे।
१२ क्योकि यहोवा यो कहता है, देखो,
जो इसके योग्य न थे कि कटोरे में से
पीए, उनको तो निश्चय पीना पडेगा,
फिर क्या तू किसी प्रकार से निर्दोष
ठहरकर बच जाएगा? तू निर्दोष ठहरकर
न बचेगा, तुझे अवश्य ही पीना पडेगा।
१३ क्योकि यहोवा की यह वाणी है,
मैं ने अपनी सौगन्ध खाई है, कि बोस्रा
ऐसा उजड जाएगा कि लोग चकित होगे,
और उसकी उपमा देकर निन्दा किया
करेंगे और शाप दिया करेंगे, और उसके
सारे गाव सदा के लिये उजाड हो
जाएगे ॥

१४ मैं ने यहोवा की ओर से समाचार
सुना है, वरन जाति जाति मे यह कहने को
एक दूत भी भेजा गया है, इकट्ठे होकर
एदोम पर चढाई करो, और उस से
लडने के लिये उठो। १५ क्योकि मैं ने
तुझे जातियो में छोटा, और मनुष्यो में
तुच्छ कर दिया है। १६ हे चट्टान की
दरारो में बसे हुए, हे पहाडी की चोटी पर
किला बनानेवाले*। तेरे भयानक रूप
और मन के अभिमान ने तुझे धोखा दिया
है। चाहे तू उकाब की नाईं अपना बसेरा
ऊचे स्थान पर बनाए, तौभी मैं वहा से
तुझे उतार लाऊगा, यहोवा की यही
वाणी है। १७ एदोम यहा तक उजड
जाएगा कि जो कोई उसके पास से चले
वह चकित होगा, और उसके सारे दु खो
पर ताली बजाएगा। १८ यहोवा का
यह वचन है, कि जैसी सदोम और अमोरा
और उनके आस पास के नगरो के उलट
जाने से उनकी दशा हुई थी, वैसी ही
उसकी दशा होगी, वहा न कोई मनुष्य
रहेगा, और न कोई आदमी उस में
टिकेगा। १९ देखो, वह सिंह की नाईं
यरदन के आस पास के घने जगलो से†
सदा की चराई पर चढेगा, और मै उनको
उसके साम्हने से झट भगा दूगा, तब
जिसको मैं चुन लू, उसको उन पर
अधिकारी ठहराऊगा। मेरे तुल्य कौन है?

* मूल में—चोटी को पकडनेवाली।
† मूल में—यरदन की बढाई से।

और कौन मुझ पर मुकद्दमा चलाएगा * ?
वह चरवाहा कहा है जो मेरा साम्हना
कर सकेगा ? २० देखो, यहोवा ने एदोम
के विरुद्ध क्या युक्ति की है, और तेमान
के रहनेवालो के विरुद्ध कैसी कल्पना की
है ? निश्चय वह भेड-बकरियो के बच्चो
को घसीट ले जाएगा, वह चराई को
भेड-बकरियो से निश्चय खाली कर देगा।
२१ उनके गिरने के शब्द से पृथ्वी काप
उठेगी, और ऐसी चिल्लाहट मचेगी जो
लाल समुद्र तक सुनाई पडेगी। २२ देखो,
वह उकाब की नाईं निकलकर उड आएगा,
और बोस्रा पर अपने पख फैलाएगा,
और उस दिन एदोमी शूरवीरो का मन
जच्चा स्त्री का सा हो जाएगा।।

२३ दमिश्क के विषय, हमात और
अर्पद की आशा टूटी है, क्योकि उन्हो ने
बुरा समाचार सुना है, वे गल गए है,
समुद्र पर चिन्ता है, वह शान्त नही हो
सकता। २४ दमिश्क बलहीन होकर
भागने को फिरती है, परन्तु कपकपी ने
उसे पकडा है, जच्चा की सी पीडे उसे
उठी है। २५ हाय, वह नगर, वह प्रशसा
योग्य पुरी, जो मेरे हर्ष का कारण है,
वह छोडा जाएगा! २६ सेनाओ के यहोवा
की यह वाणी है, कि उसके जवान चौको मे
गिराए जाएगे, और सब योद्धाओ का
बोलना बन्द हो जाएगा। २७ और मै
दमिश्क की शहरपनाह मे आग लगाऊगा
जिस से बेन्हदद के राजभवन भस्म हो
जाएगे।।

२८ केदार और हासोर के राज्यो के
विषय जिन्हे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने मार लिया। यहोवा यो कहता है,
उठकर केदार पर चढाई करो! पूरबियो
को नाश करो! २९ वे उनके डेरे और
भेड-बकरिया ले जाएगे, उनके तम्बू और
सब बरतन उठाकर ऊटो को भी हाक
ले जाएगे, और उन लोगो से पुकारके
कहेगे, चारो ओर भय ही भय है।
३० यहोवा की यह वाणी है, हे हासोर
के रहनेवालो भागो! दूर दूर मारे मारे
फिरो, कही जाकर छिपके बसो। क्योकि
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे
विरुद्ध युक्ति और कल्पना की है।।

३१ यहोवा की यह वाणी है, उठकर
उस चैन से रहनेवाली जाति के लोगो पर
चढाई करो, जो निडर रहते है, और
बिना किवाड और बेण्डे के यो ही बसे
हुए है। ३२ उनके ऊट और अनगिनित
गाय-बैल और भेड-बकरिया लूट मे जाएगी,
क्योकि मै उनके गाल के बाल मुडानेवालो
को उडाकर सब दिशाओ * मे तितर-बितर
करूगा, और चारो ओर से उन पर विपत्ति
लाकर डालूगा, यहोवा की यह वाणी है।
३३ हासोर गीदडो का वासस्थान होगा
और सदा के लिये उजाड हो जाएगा, वहा
न कोई मनुष्य रहेगा, और न कोई आदमी
उस मे टिकेगा।।

३४ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
राज्य के आरम्भ मे यहोवा का यह वचन
यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के पास एलाम के
विषय पहुचा। ३५ सेनाओ का यहोवा
यो कहता है, कि मै एलाम के धनुप को
जो उनके पराक्रम का मुख्य कारण है,
तोडूगा, ३६ और मै आकाश के चारो
ओर से वायु बहाकर उन्हे चारो दिशाओ *
की ओर यहा तक तितर-बितर करूगा,

* मूल मे—कौन मेरे लिये समय ठहराएगा।

* मूल में—वायुओं।

कि ऐसी कोई जाति न रहेगी जिस में
एलामी भागते हुए न आए। ३७ मैं
एलाम को उनके शत्रुओं और उनके प्राण
के खोजियों के साम्हने विस्मित करूंगा,
और उन पर अपना कोप भड़काकर
विपत्ति डालूंगा। और यहोवा की यह
वाणी है, कि तलवार को उन पर चलवाते
चलवाते मैं उनका अन्त कर डालूंगा,
३८ और मैं एलाम में अपना सिंहासन
रखकर उनके राजा और हाकिमों को
नाश करूंगा, यहोवा की यही वाणी है।
३९ परन्तु यहोवा की यह भी वाणी है,
कि अन्त के दिनों में मैं एलाम को बंधुआई
से लौटा ले आऊंगा॥

५० बाबुल और कसदियों के देश
के विषय में यहोवा ने यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह वचन कहा
२ जातियों में बताओ, सुनाओ और
झण्डा खड़ा करो, सुनाओ, मत छिपाओ
कि बाबुल ले लिया गया, बेल का मुंह
काला हो गया, मरोदक विस्मित हो
गया। बाबुल की प्रतिमाएं लज्जित हुईं
और उसकी बेडौल मूरतें विस्मित हो गईं।
३ क्योंकि उत्तर दिशा से एक जाति
उस पर चढ़ाई करके उसके देश को यहां
तक उजाड़ कर देगी, कि क्या मनुष्य,
क्या पशु, उस में कोई भी न रहेगा, सब
भाग जाएंगे। ४ यहोवा की यह वाणी
है, कि उन दिनों में इस्राएली और यहूदा
एक संग आएंगे, वे रोते हुए अपने परमेश्वर
यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चले आएंगे।
५ वे सिय्योन की ओर मुंह किए हुए
उसका मार्ग पूछते और आपस में यह कहते
आएंगे, कि आओ हम यहोवा से मेल
कर लें, उसके साथ ऐसी वाचा बान्धें
जो कभी भूली न जाए, परन्तु सदा स्थिर
रहे॥

६ मेरी प्रजा खोई हुई भेड़ें हैं, उनके
चरवाहों ने उनको भटका दिया और
पहाड़ों पर भटकाया है, वे पहाड़-पहाड़
और पहाड़ी-पहाड़ी घूमते-घूमते अपने
बैठने के स्थान को भूल गई हैं। ७ जितनों
ने उन्हें पाया वे उनको खा गए, और
उनके सतानेवालों ने कहा, इस में हमारा
कुछ दोष नहीं, क्योंकि उन्हों ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया है जो धर्म का आधार
है, और उनके पूर्वजों का आश्रय था॥

८ बाबुल के बीच में से भागो, कसदियों
के देश से जैसे बकरे अपने झुण्ड के अगुवे
होते हैं, वैसे ही निकल आओ। ९ क्योंकि
देखो, मैं उत्तर के देश से बड़ी जातियों
को उभारकर उनकी मण्डली बाबुल पर
चढ़ा ले आऊंगा, और वे उसके विरुद्ध
पांति बान्धेंगे, और उसी दिशा से वह
ले लिया जाएगा। उनके तीर चतुर
वीर के से होंगे, उन में से कोई अकारथ
न जाएगा। १० और कसदिया का देश
ऐसा लुटेगा कि सब लूटनेवालों का पेट
भर जाएगा, यहोवा की यह वाणी है॥

११ हे मेरे भाग के लूटनेवालो, तुम
जो मेरी प्रजा पर आनन्द करते और
हुलसते हो, और घास चरनेवाली बछिया
की नाईं उछलते और बलवन्त घोड़ों के
समान हिनहिनाते हो, १२ तुम्हारी माता
अत्यन्त लज्जित होगी और तुम्हारी जननी
का मुंह काला होगा। क्योंकि वह सब
जातियों में नीच होगी, वह जंगल और
मरु और निर्जल देश हो जाएगी।
१३ यहोवा के क्रोध के कारण, वह देश
निर्जन रहेगा, वह उजाड़ ही उजाड़
होगा, जो कोई बाबुल के पास से चलेगा

वह चकित होगा, और उसके सब दु:ख
देखकर ताली बजाएगा। १४ हे सब
धनुर्धारियो, बाबुल के चारो ओर उसके
विरुद्ध पांति बान्धो; उस पर तीर चलाओ,
उन्हें मत रख छोड़ो, क्योंकि उस ने यहोवा
के विरुद्ध पाप किया है। १५ चारो
ओर से उस पर ललकारो, उस ने हार
मानी, उसके कोट गिराए गए, उसकी
शहरपनाह ढाई गई। क्योंकि यहोवा उस
से अपना बदला लेने पर है, सो तुम भी
उस से अपना अपना बदला लो, जैसा
उस ने किया है, वैसा ही तुम भी उस से
करो। १६ बाबुल में से बोनेवाले और
काटनेवाले दोनो को नाश करो, वे दुखदाई
तलवार के डर के मारे अपने अपने लोगो
की ओर फिरे, और अपने अपने देश को
भाग जाए ।।

१७ इस्राएल भगाई हुई भेड़ है, सिंहो
ने उसको भगा दिया है। पहिले तो
अश्शूर के राजा ने उसको खा डाला,
और तब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने उसकी हड्डियो को तोड़ दिया है।
१८ इस कारण इस्राएल का परमेश्वर,
सेनाओ का यहोवा यो कहता है, देखो,
जैसे मैं ने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया
था, वैसे ही अब देश समेत बाबुल के
राजा को दण्ड दूगा। १९ मैं इस्राएल
को उसकी चराई मे लौटा लाऊगा, और
वह कर्मेल और बाशान मे फिर चरेगा,
और एप्रैम के पहाड़ो पर और गिलाद मे
फिर भर पेट खाने पाएगा। २० यहोवा
की यह वाणी है, कि उन दिनो मे *
इस्राएल का अधर्म ढूढने पर भी नही
मिलेगा, और यहूदा के पाप खोजने पर
भी नही मिलेंगे; क्योंकि जिन्हें मैं बचाऊ,
उनके पाप भी क्षमा कर दूगा ।।

२१ तू मरातैम * देश और पकोद †
नगर के निवासियो पर चढ़ाई कर।
मनुष्यो को तो मार डाल, और धन का
सत्यानाश कर, यहोवा की यह वाणी है,
और जो जो आज्ञा मैं तुझे देता हू, उन
सभो के अनुसार कर। २२ सुनो, उस
देश मे युद्ध और सत्यानाश का सा शब्द
हो रहा है। २३ जो हथौड़ा सारी पृथ्वी
के लोगो को चूर चूर करता था, वह
कैसा काट डाला गया है! बाबुल सब
जातियो के बीच मे कैसा उजाड़ हो गया
है! २४ हे बाबुल, मैं ने तेरे लिये फन्दा
लगाया, और तू अनजाने उस मे फंस
भी गया; तू ढूढकर पकड़ा गया है,
क्योंकि तू यहोवा का विरोध करता था।
२५ प्रभु, सेनाओ के यहोवा ने अपने
शस्त्रो का घर खोलकर, अपने क्रोध प्रगट
करने का सामान निकाला है; क्योंकि
सेनाओ के प्रभु यहोवा को कसदियो के देश
मे एक काम करना है। २६ पृथ्वी की
छोर से आओ, और उसकी बखरियो को
खोलो, उसको ढेर ही ढेर बना दो;
ऐसा सत्यानाश करो कि उस मे कुछ
भी न बचा रहे। २७ उसके सब बैलो
को नाश करो, वे घात होने के स्थान
मे उतर जाए। उन पर हाय! क्योंकि
उनके दण्ड पाने का दिन आ पहुचा है ।।

२८ सुनो, बाबुल के देश मे से भागने-
वालो का सा बोल सुनाई पड़ता है
जो सिय्योन मे यह समाचार देने को
दौड़े आते है, कि हमारा परमेश्वर यहोवा
अपने मन्दिर का बदला ले रहा है ।।

* मूल में—उन दिनों और उस समय में।

* अर्थात् अत्यन्त बलवैये।
† अर्थात् दण्डयोग्य।

२६ सब धनुर्धारियो को बाबुल के
विरुद्ध इकट्ठे करो, उसके चारो ओर
छावनी डालो, कोई जन भागकर निकलने
न पाए। उसके काम का बदला उसे
देओ, जैसा उस ने किया है, ठीक वैसा
ही उसके साथ करो, क्योंकि उस ने
यहोवा इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध
अभिमान किया है। ३० इस कारण
उसके जवान चौको मे गिराए जाएगे,
और सब योद्धाओ का बोल बन्द हो जाएगा,
यहोवा की यही वाणी है ॥

३१ प्रभु सेनाओ के यहोवा की यह
वाणी है, हे अभिमानी, मैं तेरे विरुद्ध
हू, तेरे दण्ड पाने का दिन आ गया है।
३२ अभिमानी ठोकर खाकर गिरेगा और
कोई उसे फिर न उठाएगा, और मैं
उसके नगरो मे आग लगाऊगा जिस मे
उसके चारो ओर सब कुछ भस्म हो
जाएगा ॥

३३ सेनाओ का यहोवा यो कहता है,
इस्राएल और यहूदा दोनो बराबर पिसे
हुए है, और जितनो ने उनको बधुआ
किया वे उन्हें पकडे रहते है, और जाने
नही देते। ३४ उनका छुडानेवाला सामर्थी
है, सेनाओ का यहोवा, यही उसका नाम
है। वह उनका मुकद्दमा भली भाति लडेगा
कि पृथ्वी को चैन दे परन्तु बाबुल के
निवासियो को व्याकुल करे ॥

३५ यहोवा की यह वाणी है, कसदियो
और बाबुल के हाकिम, पण्डित आदि
सब निवासियो पर तलवार चलेगी!
३६ बडा बोल बोलनेवालो पर तलवार
चलेगी, और वे मूर्ख बनेगे! उसके
शूरवीरो पर भी तलवार चलेगी, और
वे विस्मित हो जाएगे! ३७ उसके सवारो
और रथियो* पर और सब मिले जुले
लोगो पर भी तलवार चलेगी, और वे
स्त्रियें बन जाएगे! उसके भण्डारो पर
तलवार चलेगी, और वे लुट जाएगे!
३८ उसके जलाशयो पर सूखा पडेगा,
और वे सूख जाएगे! क्योंकि वह खुदी
हुई मूरतो से भरा हुआ देश है, और वे
अपनी भयानक प्रतिमाओ पर बावले है ॥

३९ इसलिये निर्जल देश के जन्तु
सियारो के सग मिलकर वहा बसेंगे, और
शुतुर्मुर्ग उस मे वास करेंगे, और वह
फिर सदा तक बसाया न जाएगा, न
युग युग उस मे कोई वास कर सकेगा।
४० यहोवा की यह वाणी है, कि सदोम
और अमोरा और उनके आस पास के
नगरो की जैसी दशा उस समय हुई थी
जब परमेश्वर ने उनको उलट दिया था,
वैसी ही दशा बाबुल की भी होगी, यहा
तक कि कोई मनुष्य उस मे न रह सकेगा,
और न कोई आदमी उस मे टिकेगा ॥

४१ सुनो, उत्तर दिशा से एक देश
के लोग आते है, और पृथ्वी की छोर से
एक बडी जाति और बहुत से राजा उठकर
चढाई करेंगे। ४२ वे धनुष और बर्छी
पकडे हुए है, वे क्रूर और निर्दय है,
वे समुद्र की नाईं गरजेंगे, और घोडो
पर चढे हुए तुझ बाबुल की बेटी के विरुद्ध
पाति बान्धे हुए युद्ध करनेवालो की नाईं
आएगे। ४३ उनका समाचार सुनते ही
बाबुल के राजा के हाथ पाव ढीले पड
गए, और उसको जच्चा की सी पीडें
उठी ॥

४४ सुनो, वह सिंह की नाईं आएगा
जो यर्दन† के आस पास के घने जगल मे

* मूल मे—घोडो और रथो।
† मूल मे—यरदन की बढाई से।

निकलकर दृढ भेड़शाले पर चढे, परन्तु
मैं उनको उसके साम्हने से झट भगा
दूगा, तब जिसको मैं चुन लू, उसी को
उन पर अधिकारी ठहराऊगा। देखो,
मेरे तुल्य कौन है? कौन मुझ पर मुकद्दमा
चलाएगा*? वह चरवाहा कहा है जो
मेरा साम्हना कर सकेगा? ४५ सो सुनो
कि यहोवा ने बाबुल के विरुद्ध क्या युक्ति
की है और कसदियो के देश के विरुद्ध
कोन सी कल्पना की है निश्चय वह
भेड-बकरियो के बच्चो को घसीट ले
जाएगा, निश्चय वह उनकी चराइयो को
भेड-बकरियो से खाली कर देगा।
४६ बाबुल के लूट लिए जाने के शब्द से
पृथ्वी काप उठी है, और उसकी चिल्लाहट
जातियों मे सुनाई पडती है॥

५१ यहोवा यो कहता है, मैं
बाबुल के और लेवकामै† के
रहनेवालो के विरुद्ध एक नाश करनेवाली
वायु चलाऊगा, २ और मैं बाबुल के
पास ऐसे लोगो को भेजूगा जो उसको
फटक-फटककर उडा देगे, और इस रीति
उसके देश को सुनसान करेगे, और
विपत्ति के दिन चारो ओर से उसके विरुद्ध
होगे। ३ धनुर्धारी के विरुद्ध और जो
अपना झिलम पहिने है धनुर्धारी धनुप
चढाए हुए उठे, उसके जवानो से कुछ
कोमलता न करना, उसकी सारी सेना को
सत्यानाश करो। ४ कसदियो के देश मे
मरे हुए और उसकी सडको मे छिदे हुए
लोग गिरेगे। ५ क्योकि, यद्यपि इस्राएल
और यहूदा के देश, इस्राएल के पवित्र
के विरुद्ध किए हुए पापो से भरपूर हो
गए है, तौभी उनके परमेश्वर, सेनाओ
के यहोवा ने उनको त्याग नही दिया॥

६ बाबुल मे से भागो, अपना अपना
प्राण बचाओ! उसके अधर्म मे भागी
होकर तुम भी न मिट जाओ; क्योकि
यह यहोवा के बदला लेने का समय है,
वह उसको बदला देने पर है। ७ बाबुल
यहोवा के हाथ मे सोने का कटोरा था,
जिस से सारी पृथ्वी के लोग मतवाले
होते थे, जाति जाति के लोगो ने उसके
दाखमधु मे से पिया, इस कारण वे भी
बावले हो गए। ८ बाबुल अचानक ले
ली गई और नाश की गई है। उसके
लिये हाय-हाय करो! उसके घावो के
लिये बलसान ओषधि लाओ, सम्भव
है वह चगी हो सके। ९ हम बाबुल का
इलाज करते तो थे, परन्तु वह चगी नही
हुई। सो आओ, हम उसको तजकर अपने
अपने देश को चले जाए, क्योकि उस पर
किए हुए न्याय का निर्णय आकाश वरन
स्वर्ग तक भी पहुच गया है। १० यहोवा ने
हमारे धर्म के काम प्रगट किए है, सो
आओ, हम सिय्योन मे अपने परमेश्वर
यहोवा के काम का वर्णन करे॥

११ तीरो को पैना करो! ढाले थामे
रहो! क्योकि यहोवा ने मादी राजाओ
के मन को उभारा है, उस ने बाबुल को
नाश करने की कल्पना की है, क्योकि
यहोवा अर्थात् उसके मन्दिर का यही
बदला है। १२ बाबुल की शहरपनाह
के विरुद्ध झण्डा खडा करो, बहुत पहरुए
बैठाओ, घात लगानेवालो को बैठाओ;
क्योकि यहोवा ने बाबुल के रहनेवालो के
विरुद्ध जो कुछ कहा था, वह अब करने

* मूल मे—कौन मेरे लिए समय ठहराएगा।

† अर्थात् मेरे विरोधियों का हृदय। यह कसदियों के देश का एक नाम जान पड़ता है।

पर है वरन किया भी है। १३ हे बहुत
जलाशयों के बीच बसी हुई और बहुत
भण्डार रखनेवाली, तेरा अन्त आ गया,
तेरे लोभ की सीमा पहुंच गई है।
१४ सेनाओं के यहोवा ने अपनी ही शपथ
खाई है, कि निश्चय मैं तुझ को टिड्डियों
के समान अनगिनित मनुष्यों से भर दूंगा,
और वे तेरे विरुद्ध ललकारेंगे॥

१५ उसी ने पृथ्वी को अपने सामर्थ
से बनाया, और जगत को अपनी बुद्धि
से स्थिर किया, और आकाश को अपनी
प्रवीणता से तान दिया है। १६ जब
वह बोलता है तब आकाश में जल का
बड़ा शब्द होता है, वह पृथ्वी की छोर से
कुहरा उठाता है। वह वर्षा के लिये
बिजली बनाता, और अपने भण्डार में
से पवन निकाल ले आता है। १७ सब
मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं, सब
सोनारों को अपनी खोदी हुई मूरतों के
कारण लज्जित होना पड़ेगा, क्योंकि
उनकी ढाली हुई मूरतें धोखा देनेवाली
हैं, और उनके कुछ भी सांस नहीं चलती।
१८ वे तो व्यर्थ और ठट्ठे ही के योग्य हैं,
जब उनके नाश किए जाने का समय
आएगा, तब* वे नाश ही होंगी।
१९ परन्तु जो याकूब का निज भाग है,
वह उनके समान नहीं, वह तो सब का
बनानेवाला है, और इस्राएल उसका
निज भाग है, उसका नाम सेनाओं का
यहोवा है॥

२० तू मेरा फरसा और युद्ध के लिये
हथियार ठहराया गया है, तेरे द्वारा
मैं जाति जाति को तितर-बितर करूंगा,
और तेरे ही द्वारा राज्य राज्य का नाश
करूंगा। २१ तेरे ही द्वारा मैं सवार
समेत घोड़ों को टुकड़े टुकड़े करूंगा,
२२ तेरे ही द्वारा रथी समेत रथ को
भी टुकड़े टुकड़े करूंगा, तेरे ही द्वारा मैं
स्त्री पुरुष दोनों को टुकड़े टुकड़े करूंगा,
तेरे ही द्वारा मैं बूढ़े और लड़के दोनों को
टुकड़े टुकड़े करूंगा, और जवान पुरुष
और जवान स्त्री दोनों को मैं तेरे ही
द्वारा टुकड़े टुकड़े करूंगा, २३ तेरे ही
द्वारा मैं भेड़-बकरियों समेत चरवाहे को
टुकड़े टुकड़े करूंगा, तेरे ही द्वारा मैं
किसान और उसके जोड़े बैलों को भी
टुकड़े टुकड़े करूंगा, अधिपतियों और
हाकिमों को भी मैं तेरे ही द्वारा टुकड़े
टुकड़े करूंगा॥

२४ मैं बाबुल को और सारे कसदियों
को भी उन सब बुराइयों का बदला दूंगा,
जो उन्हों ने तुम लोगों के साम्हने सिय्योन
में की है, यहोवा की यही वाणी है॥

२५ हे नाश करनेवाले पहाड़ जिसके
द्वारा सारी पृथ्वी नाश हुई है, यहोवा की
यह वाणी है कि मैं तेरे विरुद्ध हूं और
हाथ बढ़ाकर तुझे ढांगों पर से लुढ़का
दूंगा और जला हुआ पहाड़ बनाऊंगा।
२६ लोग तुझ से न तो घर के कोने के
लिये पत्थर लेंगे, और न नेव के लिये,
क्योंकि तू सदा उजाड़ रहेगा, यहोवा की
यही वाणी है॥

२७ देश में झण्डा खड़ा करो, जाति
जाति में नरसिंगा फूंको, उसके विरुद्ध
जाति जाति को तैयार करो, अरारात,
मिन्नी और अश्कनज नाम राज्यों को
उसके विरुद्ध बुलाओ, उसके विरुद्ध सेनापति
भी ठहराओ, घोड़ों को शिखरवाली
टिड्डियों के समान अनगिनित चढ़ा ले
आओ। २८ उसके विरुद्ध जातियों को

* मूल में—उनके दण्ड पाने के समय।

तैयार करो, मादी राजाओं को उनके
अधिपतियों सब हाकिमों सहित और उस
राज्य के सारे देश को तैयार करो।
२६ यहोवा ने विचारा है कि वह बाबुल
के देश को ऐसा उजाड़ करे कि उस में
कोई भी न रहे, इसलिये पृथ्वी कांपती है
और दुःखित होती है। ३० बाबुल के
शूरवीर गढ़ों में रहकर लड़ने से इनकार
करते हैं, उनकी वीरता जाती रही है,
और यह देखकर कि उनके वासस्थानों में
आग लग गई वे स्त्री बन गए हैं,
उसके फाटकों के बेण्डे तोड़े गए हैं।
३१ एक हरकारा दूसरे हरकारे से और
एक समाचार देनेवाला दूसरे समाचार
देनेवाले से मिलने और बाबुल के राजा
को यह समाचार देने के लिये दौड़ेगा कि
तेरा नगर चारों ओर से ले लिया गया है,
३२ और घाट शत्रुओं के वश में हो गए
हैं*, ताल भी सुखाये† गए, और योद्धा
घबरा उठे हैं। ३३ क्योंकि इस्राएल का
परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यों कहता
है बाबुल की बेटी दावते समय के
खलिहान के समान है, थोड़े ही दिनों में
उसकी कटनी का समय आएगा॥

३४ बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने
मुझ को खा लिया, मुझ को पीस डाला,
उस ने मुझे छूछे बर्तन के समान कर दिया,
उस ने मगरमच्छ की नाईं मुझ को निगल
लिया है, और मुझ को स्वादिष्ट भोजन
जानकर अपना पेट मुझ से भर लिया है,
उस ने मुझ को बरबस निकाल दिया है।
३५ सिय्योन की रहनेवाली कहेगी, कि
जो उपद्रव मुझ पर और मेरे शरीर पर
हुआ है, वह बाबुल पर पलट जाए।
और यरूशलेम कहेगी कि मुझ में की
हुई हत्याओं का दोष कसदियों के देश के
रहनेवालों पर लगे। ३६ इसलिये यहोवा
कहता है, मैं तेरा मुकद्दमा लड़ूंगा और
तेरा बदला लूंगा। मैं उसके ताल को
और उसके सोतों को सुखा दूंगा,
३७ और बाबुल खण्डहर, और गीदड़ों
का वासस्थान होगा, और लोग उसे
देखकर चकित होंगे और ताली बजाएंगे,
और उस में कोई न रहेगा॥

३८ लोग एक संग ऐसे गरजेंगे और
गुर्राएंगे, जैसे युवा सिंह व सिंह के बच्चे
आहेर पर करते हैं। ३९ परन्तु जब जब
वे उत्तेजित हों, तब मैं जेवनार तैयार
करके उन्हें ऐसा मतवाला करूंगा, कि
वे हुलसकर सदा की नींद में पड़ेंगे और
कभी न जागेंगे, यहोवा की यही वाणी है।
४० मैं उनको, भेड़ों के बच्चों, और
मेढ़ों और बकरों की नाईं घात करा
दूंगा॥

४१ शेशक, जिसकी प्रशंसा सारे पृथ्वी
पर होती थी कैसे ले लिया गया? वह
कैसे पकड़ा गया? बाबुल जातियों के
बीच कैसे सुनसान हो गया है? ४२ बाबुल
के ऊपर समुद्र चढ़ आया है, वह उसकी
बहुत सी लहरों में डूब गया है। ४३ उसके
नगर उजड़ गए, उसका देश निर्जन और
निर्जल हो गया है, उस में कोई मनुष्य
नहीं रहता, और उस से होकर कोई
आदमी नहीं चलता। ४४ मैं बाबुल में
बेल को दण्ड दूंगा, और उस ने जो
कुछ निगल लिया है, वह उसके मुंह से
उगलवाऊंगा। जातियों के लोग फिर
उसकी ओर तांता बान्धे हुए न चलेंगे,
बाबुल की शहरपनाह गिराई जाएगी।

---

* मूल में—घाट पकड़े गए।

† मूल में—नरकटों का स्थान आग से जलाया गया।

४५ हे मेरी प्रजा, उस में से निकल
आओ। अपने अपने प्राण को यहोवा
के भड़के हुए कोप से बचाओ। ४६ जब
उड़ती हुई बात उस देश मे सुनी जाए,
तब तुम्हारा मन न घबराए, और जो
उड़ती हुई चर्चा पृथ्वी पर सुनी जाएगी
तुम उस से न डरना उसके एक वर्ष
बाद एक और बात उड़ती हुई आएगी,
तब उसके बाद दूसरे वर्ष मे एक और बात
उड़ती हुई आएगी, और उस देश में उपद्रव
होगा, और एक हाकिम दूसरे के विरुद्ध
होगा॥

४७ इसलिये देख, वे दिन आते हैं
जब मैं बाबुल की खुदी हुई मूरतो पर
दण्ड की आज्ञा करूंगा, उस सारे देश
के लोगो का मुंह काला हो जाएगा,
और उसके सब मारे हुए लोग उसी मे
पड़े रहेंगे। ४८ तब स्वर्ग और पृथ्वी
के सारे निवासी बाबुल पर जयजयकार
करेंगे, क्योंकि उत्तर दिशा से नाश
करनेवाले उस पर चढ़ाई करेंगे, यहोवा
की यही वाणी है। ४९ जैसे बाबुल ने
इस्राएल के लोगो को मारा, वैसे ही सारे
देश के लोग उसी में मार डाले जाएंगे॥

५० हे तलवार से बचे हुओ, भागो, खड़े
मत रहो! यहोवा को दूर से स्मरण करो,
और यरूशलेम की भी सुधि लो ५१ हम
व्याकुल हैं, क्योंकि हम ने अपनी नामधराई
सुनी है, यहोवा के पवित्र भवन में विधर्मी
घुस आए हैं, इस कारण हम लज्जित हैं॥

५२ सो देखो, यहोवा की यह वाणी है,
ऐसे दिन आनेवाले हैं कि मैं उसकी खुदी
हुई मूरतो पर दण्ड भेजूंगा, और उसके
सारे देश में लोग घायल होकर कराहते
रहेंगे। ५३ चाहे बाबुल ऐसा ऊंचा बन
जाए कि आकाश से बातें करे और उसके
ऊंचे गढ़ और भी दृढ़ किए जाएं, तौभी
मैं उसे नाश करने के लिये, लोगो को
भेजूंगा, यहोवा की यह वाणी है॥

५४ बाबुल से चिल्लाहट का शब्द
सुनाई पड़ता है! कसदियो के देश से
सत्यानाश का बड़ा कोलाहल सुनाई देता
है। ५५ क्योंकि यहोवा बाबुल का नाश
कर रहा है और उसके बड़े कोलाहल को
बन्द कर रहा है। इस से उनका कोलाहल
महासागर का सा सुनाई देता है।
५६ बाबुल पर भी नाश करनेवाले चढ़
आए हैं, और उसके शूरवीर पकड़े गए
हैं और उनके धनुष तोड़ डाले गए,
क्योंकि यहोवा बदला देनेवाला परमेश्वर
है, वह अवश्य ही बदला लेगा। ५७ मैं
उसके हाकिमो, पण्डितो, अधिपतियो,
रईसो, और शूरवीरो को ऐसा मतवाला
करूंगा कि वे सदा की नींद मे पड़ेंगे और
फिर न जागेंगे, सेनाओ के यहोवा, जिसका
नाम राजाधिराज है, उसकी यही वाणी
है॥

५८ सेनाओ का यहोवा यों भी कहता
है, बाबुल की चौड़ी शहरपनाह नेव
से ढाई जाएगी, और उसके ऊंचे फाटक
आग लगाकर जलाए जाएंगे। और उस
में राज्य राज्य के लोगो का परिश्रम व्यर्थ
ठहरेगा, और जातियो का परिश्रम आग
का कौर हो जाएगा और वे थक जाएंगे॥

५९ यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
राज्य के चौथे वर्ष मे जब उसके साथ
सरायाह भी बाबुल को गया था, जो
नेरिय्याह का पुत्र और महसेयाह का पोता
और राजभवन का अधिकारी भी था,
६० तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने उसको
ये बातें बताईं अर्थात् वे सब बातें जो
बाबुल पर पड़नेवाली विपत्ति के विषय

लिखी हुई है, उन्हे यिर्मयाह ने पुस्तक मे
लिख दिया। ६१ और यिर्मयाह ने
सरायाह से कहा, जब तू बाबुल मे पहुचे,
तब अवश्य ही ये सब वचन पढना,
६२ और यह कहना, हे यहोवा तू ने तो
इस स्थान के विषय मे यह कहा है कि मै
इसे ऐसा मिटा दूगा कि इस मे क्या
मनुष्य, क्या पशु, कोई भी न रहेगा,
वरन यह सदा उजाड पडा रहेगा।
६३ और जब तू इस पुस्तक को पढ
चुके, तब इसे एक पत्थर के सग बान्धकर
परात महानद के बीच मे फेक देना,
६४ और यह कहना, यो ही बाबुल डूब
जाएगा और मै उस पर ऐसी विपत्ति
डालूगा कि वह फिर कभी न उठेगा।
यो उसका सारा परिश्रम व्यर्थ ही ठहरेगा
और वे थके रहेगे ॥

यहा तक यिर्मयाह के वचन है ॥

५२ जब सिदकिय्याह राज्य करने
लगा, तब वह इक्कीस वर्ष का था,
और यरूशलेम मे ग्यारह वर्ष तक राज्य
करता रहा। उसकी माता का नाम
हमूतल था जो लिब्नावासी यिर्मयाह की
बेटी थी। २ और उस ने यहोयाकीम के
सब कामो के अनुसार वही किया जो
यहोवा की दृष्टि मे बुरा है। ३ निश्चय
यहोवा के कोप के कारण यरूशलेम और
और उस ने उसके पास छावनी करके
उसके चारो ओर किला बनाया। ५ यो
नगर घेरा गया, और सिदकिय्याह राजा
के ग्यारहवे वर्ष तक घिरा रहा। ६ चौथे
महीने के नौवे दिन से नगर मे महगी यहा
तक बढ गई, कि लोगो के लिये कुछ रोटी
न रही। ७ तब नगर की शहरपनाह मे
दरार की गई, और दोनो भीतो के बीच
जो फाटक राजा की बारी के निकट था,
उस से सब योद्धा भागकर रात ही रात
नगर से निकल गए, और अराबा का
मार्ग लिया। (उस समय कसदी लोग
नगर को घेरे हुए थे)। ८ परन्तु उनकी
सेना ने राजा का पीछा किया, और उसको
यरीहो के पास के अराबा मे जा पकडा,
तब उसकी सारी सेना उसके पास से तितर-
बितर हो गई। ९ सो वे राजा को पकड-
कर हमात देश के रिबला मे बाबुल के राजा
के पास ले गए, और वहा उस ने उसके
दण्ड की आज्ञा दी। १० बाबुल के राजा
ने सिदकिय्याह के पुत्रो को उसके साम्हने
घात किया, और यहूदा के सारे हाकिमो
को भी रिबला मे घात किया। ११ फिर
बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह की आखो
को फुडवा डाला, और उसको बेडियो से
जकडकर बाबुल तक ले गया, और उसको
बन्दीगृह मे डाल दिया। सो वह मृत्यु
के दिन तक वही रहा ॥

फुकवा दिया। १४ और कसदियो की
सारी सेना ने जो जल्लादो के प्रधान के
सग थी, यरूशलेम के चारो ओर की सब
शहरपनाह को ढा दिया। १५ और
जल्लादो का प्रधान नबूजरदान कगाल
लोगो में मे कितनो को, और जो लोग
नगर मे रह गए थे, और जो लोग बाबुल
के राजा के पास भाग गए थे, और जो
कारीगर रह गए थे, उन सब को बधुआ
करके ले गया। १६ परन्तु, दिहात के
कगाल लोगो मे से कितनो को जल्लादो के
प्रधान नबूजरदान ने दाख की बारियो की
सेवा और किमानी करने को छाड दिया॥

१७ और यहोवा के भवन मे जो पीतल
के खम्भे थे, और कुर्सियो और पीतल के
हौज जो यहोवा के भवन मे थे, उन
सभो को कसदी लोग तोडकर उनका
पीतल बाबुल को ले गए। १८ और
हाडियो, फावडियो, कैंचियो, कटोरो, धूप-
दानो, निदान पीतल के और सब पात्रो
को, जिन से लोग सेवा टहल करते थे,
वे ले गए। १९ और तमलो, करछो,
कटोरियो, हाडियो, दीवटो, धूपदानो, और
कटोरो में से जो कुछ सोने का था, उनके
सोने को, और जो कुछ चान्दी का था
उनकी चान्दी को भी जल्लादो का प्रधान
ले गया। २० दोनो खम्भे, एक हौज
और पीतल के बारहो बैल जो पायो के
नीचे थे, इन सब को तो सुलैमान राजा
ने यहोवा के भवन के लिये बनवाया था,
और इन सब का पीतल तौल से बाहर था।
२१ जो खम्भे थे, उन में से एक एक
की ऊचाई अठारह हाथ, और घेरा बारह
हाथ, और मोटाई चार अगुल की थी,
और वे खोखले थे। २२ एक एक की
कगनी पीतल की थी, और एक एक कगनी
की ऊचाई पाच हाथ की थी, और उस पर
चारो ओर जो जाली और अनार बने थे
वे सब पीतल के थे। २३ कगनियो के
चारो अलगो पर छियानवे अनार बने
थे, और जाली के ऊपर चारो ओर एक
सौ अनार थे॥

२४ और जल्लादो के प्रधान ने सरायाह
महायाजक और उसके नीचे के सपन्याह
याजक, और तीनो डेवढीदारो को पकड
लिया, २५ और नगर में से उस ने
एक खोजा पकड लिया, जो योद्धाओ के
ऊपर ठहरा था, और जो पुरुष राजा के
सम्मुख रहा करते थे, उन म से सात जन
जो नगर मे मिले, और सेनापति का मुन्शी
जो साधारण लोगो को सेना मे भरती
करता था, और साधारण लोगो मे से
साठ पुरुष जो नगर मे मिले, २६ इन
सब को जल्लादो का प्रधान नबूजरदान
रिबला में बाबुल के राजा के पास ले
गया। २७ तब बाबुल के राजा ने उन्हे
हमात देश के रिबला में ऐसा मारा कि
वे मर गए। २८ सो यहूदी अपने देश
से बधुए होकर चले गए॥

जिन लोगो को नबूकदनेस्सर बधुआ
करके ले गया, सो ये है, अर्थात् उसके
राज्य के सातवे वर्ष में तीन हजार तेईस
यहूदी, २९ फिर अपने राज्य के अठारहवे
वर्ष मे नबूकदनेस्सर यरूशलेम से आठ
सौ बत्तीस प्राणियो को बधुआ करके
ले गया, ३० फिर नबूकदनेस्सर के राज्य
के तेईसवे वर्ष मे जल्लादो का प्रधान
नबूजरदान सात सौ पैंतालीस यहूदी जनो
को बधुए करके ले गया सब प्राणी
मिलकर चार हजार छ सौ हुए॥

३१ फिर यहूदा के राजा यहोयाकीन
की बधुआई के सैंतीसवे वर्ष मे अर्थात्

जिस वर्ष बाबुल का राजा एवीलमरोदक राजगद्दी पर विराजमान हुआ, उसी के बारहवें महीने के पचीसवे दिन को उस ने यहूदा के राजा यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकालकर बड़ा पद दिया,
३२ और उस से मधुर मधुर वचन कहकर, जो राजा उसके साथ बाबुल मे बधुए थे, उनके सिंहासनो से उसके सिंहासन को अधिक ऊंचा किया।
३३ और उसके बन्दीगृह के वस्त्र बदल दिए, और वह जीवन भर नित्य राजा के सम्मुख भोजन करता रहा,
३४ और प्रति दिन के खर्च के लिये बाबुल के राजा के यहा से उसको नित्य कुछ मिलने का प्रबन्ध हुआ। यह प्रबन्ध उसकी मृत्यु के दिन तक उसके जीवन भर लगातार बना रहा॥

विलापगीत

१ जो नगरी लोगो से भरपूर थी
वह अब कैसी अकेली बैठी हुई है!
वह क्यो एक विधवा के समान बन गई?
वह जो जातियो की दृष्टि मे महान
और प्रान्तो मे रानी थी, अब क्यों कर देनेवाली हो गई है।
२ रात को वह फूट फूटकर रोती है,
उसके आसू गालो पर ढलकते है,
उसके सब यारो मे से अब कोई उसे शान्ति नही देता;
उसके सब मित्रों ने उस से विश्वासघात किया, और उसके शत्रु बन गए है॥
३ यहूदा दु:ख और कठिन दासत्व से बचने के लिये परदेश चली गई;
परन्तु अन्यजातियो में रहती हुई वह चैन नहीं पाती,
उसके सब खदेडनेवालो ने उसकी सकेती में उसे पकड लिया है॥
४ सिय्योन के मार्ग विलाप कर रहे है, क्योकि नियत पर्वों मे कोई नही आता है,
उसके सब फाटक सुनसान पडे है,
उसके याजक कराहते है,
उसकी कुमारिया शोकित है, और वह आप कठिन दु:ख भोग रही है॥
५ उसके द्रोही प्रधान हो गए, उसके शत्रु उन्नति कर रहे है,
क्योकि यहोवा ने उसके बहुत से अपराधो के कारण उसे दु:ख दिया है,
उसके बालबच्चो को शत्रु हाक हाक कर बधुआई मे ले गए॥
६ सिय्योन की पुत्री का सारा प्रताप जाता रहा है।
उसके हाकिम ऐसे हरिणो के समान हो गए है जो कुछ चराई नही पाते,
वे खदेडनेवालो के साम्हने से बलहीन होकर भागते है॥

७ यरूशलेम ने, इन दु ख भरे और सकट के दिनो में,
जब उसके लोग द्रोहियो के हाथ में पडे और उसका कोई सहायक न रहा,
तब अपनी सब मनभावना वस्तुओ को जो प्राचीनकाल से उसकी थी, स्मरण किया है।
उसके द्रोहियो ने उसको उजडा देखकर ठट्ठो में उडाया है ॥
८ यरूशलेम ने बडा पाप किया, इसलिये वह अशुद्ध स्त्री सी हो गई है,
जितने उसका आदर करते थे वे उसका निरादर करते हैं, क्योकि उन्हो ने उसकी नगाई देखी है,
हा, वह कराहती हुई मुह फेर लेती है ॥
९ उसकी अशुद्धता उसके वस्त्र पर है, उस ने अपने अन्त का स्मरण न रखा,
इसलिये वह भयकर रीति से गिराई गई, और कोई उसे शान्ति नही देता है।
हे यहोवा, मेरे दु ख पर दृष्टि कर, क्योकि शत्रु मेरे विरुद्ध सफल हुआ है।
१० द्रोहियो ने उसकी सब मनभावनी वस्तुओ पर हाथ बढाया है,
हा, अन्यजातियो को, जिनके विषय में तू ने आज्ञा दी थी कि वे तेरी सभा में भागी न होने पाएगी,
उनको उस ने तेरे पवित्रस्थान में घुसा हुआ देखा है ॥
११ उसके सब निवासी कराहते हुए भोजनवस्तु ढूढ रहे है,
उन्हो ने अपना प्राण बचाने के लिये अपनी मनभावनी वस्तुए बेचकर भोजन मोल लिया है।
हे यहोवा, दृष्टि कर, और ध्यान से देख, क्याकि मैं तुच्छ हो गई हू ॥
१२ हे सब बटोहियो, क्या तुम्हें इस बात की कुछ भी चिन्ता नही ?
दृष्टि करके देखो, क्या मेरे दु ख से बढकर कोई और पीडा है जो यहोवा ने अपने क्रोध के दिन मुझ पर डाल दी है ?
१३ उस ने ऊपर से मेरी हड्डियो में आग लगाई है, और वे उस से भस्म हो गई,
उस ने मेरे पैरो के लिये जाल लगाया, और मुझ को उलटा फेर दिया है,
उस ने ऐसा किया कि मैं त्यागी हुई सी और रोग से लगातार निर्बल रहती हू ॥
१४ उस ने जूए की रस्सियो की नाई मेरे अपराधो को अपने हाथ से कसा है,
उस ने उन्हे बटकर मेरी गर्दन पर चढाया, और मेरा बल घटा दिया है,
जिनका मैं साम्हना भी नही क[illegible] सकती, उन्ही के वश में यहोवा [illegible] मुझे कर दिया है ॥
१५ यहोवा ने मेरे सब पराक्रमी पुरुष को तुच्छ जाना,
उस ने नियत पर्व का प्रचार करवे लोगो को मेरे विरुद्ध बुलाया वि मेरे जवानो को पीस डालें,
यहूदा की कुमारी कन्या को यहोवा ने मानो कोल्हू में पेरा है ॥

१६ इन बातो के कारण मै रोती हू,
मेरी आखो से आसू की धारा
बहती रहती है,
क्योकि जिस शान्तिदाता के कारण
मेरा जी हरा भरा हो जाता था,
वह मुझ से दूर हो गया,
मेरे लडकेवाले अकेले हो गए, क्योकि
शत्रु प्रबल हुआ है ॥
१७ सिय्योन हाथ फैलाए हुए है, उसे
कोई शान्ति नही देता,
यहोवा ने याकूब के विषय मे यह
आज्ञा दी है कि उसके चारो ओर
के निवासी उसके द्रोही हो जाए,
यरूशलेम उनके बीच अशुद्ध स्त्री के
समान हो गई है ॥
१८ यहोवा सच्चाई पर है, क्योकि मै ने
उसकी आज्ञा का उल्लघन किया
है,
हे सब लोगो, सुनो, और मेरी पीडा
को देखो !
मेरे कुमार और कुमारिया बधुआई
मे चली गई है ॥
१९ मै ने अपने मित्रो को पुकारा परन्तु
उन्हो ने भी मुझे धोखा दिया,
जब मेरे याजक और पुरनिये इसलिये
भोजनवस्तु ढूढ रहे थे कि खाने
से उनका जी हरा हो जाए,
तब नगर ही में उनके प्राण छूट
गए ॥
२० हे यहोवा, दृष्टि कर, क्योकि मै सकट
मे हू, मेरी अन्तडिया ऐठी जाती है,
मेरा हृदय उलट गया है, क्योकि मै ने
बहुत बलवा किया है।
बाहर तो मै तलवार से निर्वंश होती
हू, और घर मे मृत्यु विराज
रही है ॥
२१ उन्हो ने सुना है कि मै कराहती हू,
परन्तु कोई मुझे शान्ति नही
देता।
मेरे सब शत्रुओ ने मेरी विपत्ति
का समाचार सुना है, वे इस से
हर्षित हो गए कि तू ही ने यह
किया है।
परन्तु जिस दिन की चर्चा तू ने प्रचार
करके सुनाई है उसको तू दिखा,
तब वे भी मेरे समान हो जाएगे ॥
२२ उनकी सारी दुष्टता की ओर दृष्टि
कर,
और जैसा मेरे सारे अपराधो के कारण
तू ने मुझे दण्ड दिया, वैसा ही
उनको भी दण्ड दे,
क्योकि मै बहुत ही कराहती हू, और
मेरा हृदय रोग से निर्बल हो गया
है ॥

२ यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को
किस प्रकार अपने कोप के बादलो
से ढाप दिया है !
उस ने इस्राएल की शोभा को आकाश
से धरती पर पटक दिया,
और कोप के दिन अपने पावो की
चौकी को स्मरण नही किया ॥
२ यहोवा ने याकूब की सब बस्तियो को
निठुरता से नष्ट किया है,
उस ने रोष मे आकर यहूदा की
पुत्री के दृढ गढो को ढाकर मिट्टी
मे मिला दिया है,
उस ने हाकिमो समेत राज्य को
अपवित्र ठहराया है ॥
३ उस ने क्रोध मे आकर इस्राएल के
सीग को जड से * काट डाला है,

* मूल में—सारे सींग को।

अपने प्राण अपनी अपनी माता की
गोद में छोड़ते हैं ॥
१३ हे यरूशलेम की पुत्री, मैं तुझ से
क्या कहूं? मैं तेरी उपमा किस
से दूं?
हे सिय्योन की कुमारी कन्या, मैं
कौन सी वस्तु तेरे समान ठहराकर
तुझे शान्ति दूं?
क्योंकि तेरा दु:ख समुद्र सा अपार है,
तुझे कौन चंगा कर सकता है?
१४ तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने दर्शन का
दावा करके तुझ से व्यर्थ और मूर्खता
की बातें कही हैं;
उन्हों ने तेरा अधर्म प्रगट नहीं किया,
नहीं तो तेरी बंधुआई न होने पाती,
परन्तु उन्हों ने तुझे व्यर्थ के और
झूठे वचन बताए।
जो तेरे लिये देश से निकाल दिए
जाने का कारण हुए ॥
१५ सब बटोही तुझ पर ताली बजाते हैं,
वे यरूशलेम की पुत्री पर यह कहकर
ताली बजाते और सिर हिलाते हैं,
क्या यह वही नगरी है जिसे परम-
सुन्दरी और सारी पृथ्वी के हर्ष
का कारण कहते थे?
१६ तेरे सब शत्रुओं ने तुझ पर मुंह
पसारा है,
वे ताली बजाते और दांत पीसते
हैं, वे कहते हैं, हम उसे निगल
गए हैं।
जिस दिन की बाट हम जोहते थे,
वह यही है,
वह हम को मिल गया, हम उसको
देख चुके हैं।
१७ यहोवा ने जो कुछ ठाना था वही किया
भी है,
जो वचन वह प्राचीनकाल से कहता
आया है वही उस ने पूरा भी किया
है,
उस ने निठुरता से तुझे ढा दिया है,
उस ने शत्रुओं को तुझ पर आनन्दित
किया,
और तेरे द्रोहियों के सींग को ऊंचा
किया है ॥
१८ वे प्रभु की ओर तन मन से पुकारते
हैं।
हे सिय्योन की कुमारी (की शहर-
पनाह), अपने आंसू रात दिन नदी
की नाईं बहाती रह।
तनिक भी विश्राम न ले, न तेरी आंख
की पुतली चैन ले!
१९ रात के हर पहर के आरम्भ में
उठकर चिल्लाया कर।
प्रभु के सम्मुख अपने मन की बातों
को धारा की नाईं उण्डेल *।
तेरे बालबच्चे जो हर एक सड़क
के सिरे पर भूख के कारण मूर्च्छित
हो रहे हैं,
उनके प्राण के निमित्त अपने हाथ
उसकी ओर फैला ॥
२० हे यहोवा दृष्टि कर, और ध्यान से
देख कि तू ने यह सब दु:ख किस
को दिया है?
क्या स्त्रियां अपना फल अर्थात् अपनी
गोद † के बच्चों को खा डालें?
हे प्रभु, क्या याजक और भविष्यद्वक्ता
तेरे पवित्रस्थान में घात किए जाएं?
२१ सड़कों में लड़के और बूढ़े दोनों भूमि
पर पड़े हैं,

* मूल में—अपना हृदय जल की नाईं उण्डेल।
† मूल में—हथेली।

मेरी कुमारिया और जवान लोग
तलवार से गिर गए है,
तू ने कोप करने के दिन उन्हें घात
किया, तू ने निठुरता के साथ
उनका वध किया है ।।
२२ तू ने मेरे भय के कारणो को नियत
पर्व की भीड के समान चारो
ओर से बुलाया है,
और यहोवा के कोप के दिन न तो
कोई भाग निकला और न कोई
बच रहा है,
जिन को मै ने गोद* में लिया
और पाल-पोसकर बढाया था, मेरे
शत्रु ने उनका अन्त कर डाला
है ।।

३ उसके रोष की छडी से दुःख
भोगनेवाला पुरुष मै ही हू,
२ वह मुझे ले जाकर उजियाले में नही,
अन्धियारे ही मे चलाता है,
३ उसका हाथ दिन भर मेरे ही विरुद्ध
उठता† रहता है ।।
४ उस ने मेरा मास और चमडा गला
दिया है, और मेरी हड्डियो को
तोड दिया है,
५ उस ने मुझे रोकने के लिये किला
बनाया, और मुझ को कठिन दुःख‡
और श्रम से घेरा है,
६ उस ने मुझे बहुत दिन के मरे हुए
लोगो के समान अन्धेरे स्थानो मे
बसा दिया है ।।
७ मेरे चारो ओर उस ने बाडा बान्धा
है कि मै निकल नही सकता,

* मूल में—हथेली।
† मूल में—उलटता।
‡ मूल में—विष।

उस ने मुझे भारी साकल से जकडा
है*,
८ मैं चिल्ला चिल्लाके दोहाई देता हू,
तौभी वह मेरी प्रार्थना नही सुनता,
९ मेरे मार्गो को उस ने गढे हुए पत्थरो
से रोक रखा है, मेरी डगरो को
उस ने टेढी कर दिया है ।
१० वह मेरे लिये घात में बैठे हुए रीछ
और घात लगाए हुए सिंह के
समान है,
११ उस ने मुझे मेरे मार्गों से भुला दिया,
और मुझे फाड डाला, उस ने
मुझ को उजाड दिया है ।
१२ उस ने धनुष चढाकर मुझे अपने
तीर का निशाना बनाया है ।।
१३ उस ने अपनी तीरो से मेरे हृदय को
बेध दिया है,
१४ सब लोग मुझ पर हसते है और दिन
भर मुझ पर ढालकर गीत गाते है,
१५ उस ने मुझे कठिन दुःख से† भर
दिया, और नागदौना पिलाकर तृप्त
किया है ।।
१६ उस ने मेरे दातो को ककरी से तोड
डाला, और मुझे राख से ढाप
दिया है,
१७ और मुझ को मन से उतारकर कुशल
से रहित किया है, मै कल्याण
भूल गया हू,
१८ इसलिये मै ने कहा, मेरा बल नाश
हुआ, और मेरी आशा जो यहोवा
पर थी, वह टूट गई है ।।
१९ मेरा दुःख और मारा मारा फिरना,
मेरा नागदौने और-और विष का
पीना स्मरण कर !

* मूल में—[illegible]।
† मूल में—[illegible]।

२० मैं उन्ही पर सोचता रहता हूं, इस से
मेरा प्राण ढला जाता है।
२१ परन्तु मैं यह स्मरण करता हूं,
इसीलिये मुझे आशा है
२२ हम मिट नही गए, यह यहोवा की
महाकरुणा का फल है, क्योंकि
उसकी दया अमर है।
२३ प्रति भोर वह नई होती रहती है,
तेरी सच्चाई महान है।
२४ मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग
है, इस कारण मैं उस मे आशा
रखूंगा ॥
२५ जो यहोवा की बाट जोहते और *
उसके पास जाते है, उनके लिये
यहोवा भला है।
२६ यहोवा से उद्धार पाने की आशा
रखकर चुपचाप रहना भला है।
२७ पुरुष के लिये जवानी मे जूआ उठाना
भला है।
२८ वह यह जानकर अकेला चुपचाप
रहे, कि परमेश्वर ही ने उस पर
यह बोझ डाला है,
२९ वह अपना मुह धूल मे रखे †, क्या
जाने इस मे कुछ आशा हो,
३० वह अपना गाल अपने मारनेवाले
की ओर फेरे, और नामधराई सहता
रहे ॥
३१ क्योंकि प्रभु मन से सर्वदा उतारे
नही रहता,
३२ चाहे वह दुःख भी दे, तौभी अपनी
करुणा की बहुतायत के कारण
वह दया भी करता है,
३३ क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न
तो दबाता है और न दुःख देता है ॥

* [illegible] में—और [illegible]।
† मूल में—वह अपना मुह मिट्टी में दे।

३४ पृथ्वी भर के बंधुओ को पांव के
तले दलित करना,
३५ किसी पुरुष का हक परमप्रधान के
साम्हने मारना,
३६ और किसी मनुष्य का मुकद्दमा
बिगाडना, इन तीन कामो को
यहोवा देख नही सकता ॥
३७ यदि यहोवा ने आज्ञा न दी हो, तब
कौन है कि वचन कहे और वह
पूरा हो जाए ?
३८ विपत्ति और कल्याण, क्या दोनो
परमप्रधान की आज्ञा से नही
होते ?
३९ सो जीवित मनुष्य क्यो कुडकुडाए ?
और पुरुष अपने पाप के दण्ड को
क्यो बुरा माने ?
४० हम अपने चालचलन को ध्यान से
परखे, और यहोवा की ओर फिरे।
४१ हम स्वर्गवासी परमेश्वर की ओर
मन लगाए और हाथ फैलाए
और कहे
४२ हम ने तो अपराध और बलवा किया
है, और तू ने क्षमा नही किया ॥
४३ तेरा कोप हम पर है, तू हमारे पीछे
पडा है, तू ने बिना तरस खाए घात
किया है ॥
४४ तू ने अपने को मेघ मे घेर लिया है
कि तुझ तक प्रार्थना न पहुंच
सके।
४५ तू ने हम को जाति जाति के लोगो
के बीच मे कूडा-कर्कट सा ठहराया
है।
४६ हमारे सब शत्रुओ ने हम पर अपना
अपना मुह फैलाया है,
४७ भय और गड्हा, उजाड और विनाश,
हम पर आ पडे है,

४८ मेरी आंखों से मेरी प्रजा की पुत्री
के विनाश के कारण जल की
धाराएं बह रही हैं ॥
४९ मेरी आंख से लगातार आंसू बहते
रहेंगे,
५० जब तक यहोवा स्वर्ग से मेरी ओर
न देखे,
५१ अपनी नगरी की सब स्त्रियों का
हाल देखने पर मेरा दुःख बढ़ता
है * ॥
५२ जो व्यर्थ मेरे शत्रु बने हैं, उन्हों ने
निर्दयता से चिड़िया के समान मेरा
आहेर किया है,
५३ उन्हों ने मुझे गड़हे में डालकर मेरे
जीवन का अन्त करने के लिये मेरे
ऊपर पत्थर लुढ़काए हैं,
५४ मेरे सिर पर से जल बह गया, मैं
ने कहा, मैं अब नाश हो गया ॥
५५ हे यहोवा, गहिरे गड़हे में से मैं ने
तुझ से प्रार्थना की,
५६ तू ने मेरी सुनी कि जो दोहाई देकर
मैं चिल्लाता हूं उस से कान न
फेर † ले !
५७ जब मैं ने तुझे पुकारा, तब तू ने
मुझ से कहा, मत डर !
५८ हे यहोवा, तू ने मेरा मुकद्दमा लड़कर
मेरा प्राण बचा लिया है ।
५९ हे यहोवा, जो अन्याय मुझ पर हुआ
है उसे तू ने देखा है, तू मेरा
न्याय चुका ।
६० जो बदला उन्हों ने मुझ से लिया,
और जो कल्पनाएं मेरे विरुद्ध
की, उन्हें भी तू ने देखा है ॥

* मूल में—मेरी आंख मेरे मन को दुःख
देती है।
† मूल में—छिपा।

६१ हे यहोवा, जो कल्पनाएं और निन्दा
वे मेरे विरुद्ध करते हैं, वे भी तू
ने सुनी हैं ।
६२ मेरे विरोधियों के वचन *, और जो
कुछ भी वे मेरे विरुद्ध लगातार
सोचते हैं, उन्हें तू जानता है ।
६३ उनका उठना-बैठना ध्यान से देख,
वे मुझ पर लगते हुए गीत गाते हैं ।
६४ हे यहोवा, तू उनके कामों के अनुसार
उनको बदला देगा ।
६५ तू उनका मन सुन्न कर देगा, तेरा
शाप उन पर होगा ।
६६ हे यहोवा, तू अपने कोप से उनको
खदेड़-खदेड़कर धरती पर से †
नाश कर देगा ॥

४ सोना कैसे खोटा ‡ हो गया, अत्यन्त
खरा सोना कैसे बदल गया है ?
पवित्रस्थान के पत्थर तो हर एक
सड़क के सिरे पर फेंक दिए
गए हैं ॥
२ सिय्योन के उत्तम पुत्र § जो कुन्दन
के तुल्य थे,
वे कुम्हार के बनाए हुए मिट्टी के
घड़ों के समान कैसे तुच्छ गिने
गए हैं !
३ गीदड़िन भी अपने बच्चों को थन
से लगाकर पिलाती है,
परन्तु मेरे लोगों की बेटी वन के
शुतुर्मुर्गों के तुल्य निर्दयी हो गई है ॥
४ दूधपीउवे बच्चों की जीभ प्यास के
मारे तालू में चिपट गई है,

* मूल में—होंठ।
† मूल में—आकाश के तले से।
‡ मूल में—फीके रंग का।
§ मूल में—बेटे।

बालबच्चे रोटी मागते हैं, परन्तु
कोई उनको नही देता ॥
५ जो स्वादिष्ट भोजन खाते थे, वे
अब सडको में व्याकुल फिरते हैं,
जो मखमल के वस्त्रो में पले थे अब
घूरो पर लोटते है* ॥
६ मेरे लोगो की बेटी का अधर्म सदोम
के पाप से भी अधिक हो गया
जो किसी के हाथ डाले बिना भी
क्षण भर में उलट गया था ॥
७ उसके कुलीन हिम से निर्मल और
दूध से भी अधिक उज्ज्वल थे,
उनकी देह मूगो से अधिक लाल,
और उनकी सुन्दरता नीलमणि
की सी थी ॥
८ परन्तु अब उनका रूप अन्धकार से
भी अधिक काला है, वे सडको में
चीन्हें नही जाते,
उनका चमडा हड्डियो में सट गया,
और लकडी के समान सूख गया है ॥
९ तलवार के मारे हुए भूख के मारे
हुओ से अधिक अच्छे थे
जिनका प्राण खेत की उपज बिना
भूख के मारे सूखता जाता है ॥
१० दयालु स्त्रियो ने अपने ही हाथो
से अपने बच्चो को पकाया है,
मेरे लोगो के विनाश के समय वे
ही उनका आहार बन गए ॥
११ यहोवा ने अपनी पूरी जलजलाहट
प्रगट की, उस ने अपना कोप बहुत
ही भडकाया†,
और सिय्योन में ऐसी आग लगाई
जिस से उसकी नेव तक भस्म
हो गई है ॥

* मूल में—घूरों को गले लगाते हैं।
† मूल में—उण्डेला।

१२ पृथ्वी का कोई राजा वा जगत का
कोई वासी इसकी कभी प्रतीति
न कर सकता था,
कि द्रोही और शत्रु यरूशलेम के
फाटको के भीतर घुसने पाएगे ॥
१३ यह उसके भविष्यद्वक्ताओं के पापो
और उसके याजको के अधर्म के
कामो के कारण हुआ है;
क्योकि वे उसके बीच धर्मियो की
हत्या करते आए है ॥
१४ वे अब सडको में अन्धे सरीखे मारे
मारे फिरते हैं, और मानो लोहू
की छीटो से यहा तक अशुद्ध है
कि कोई उनके वस्त्र नही छू सकता ॥
१५ लोग उनको पुकारकर कहते है, अरे
अशुद्ध लोगो, हट जाओ! हट
जाओ! हम को मत छूओ!
जब वे भागकर मारे मारे फिरने लगे,
तब अन्यजाति लोगो ने कहा,
भविष्य में वे यहा टिकने नही
पाएगे ॥
१६ यहोवा ने अपने कोप से उन्हें तितर-
बितर किया, वह फिर उन पर
दया दृष्टि न करेगा,
न तो याजको का सन्मान हुआ, और
न पुरनियो पर कुछ अनुग्रह किया
गया ॥
१७ हमारी आखे व्यर्थ ही सहायता की
बाट जोहते जोहते रह गई है,
हम लगातार एक ऐसी जाति की ओर
ताकते रहे जो बचा नही सकी ॥
१८ लोग हमारे पीछे ऐसे पडे कि हम अपने
नगर के चौको में भी नही चल सके,
हमारा अन्त निकट आया, हमारी
आयु पूरी हुई, क्योकि हमारा
अन्त आ गया था ॥

१६ हमारे खदेडनेवाले आकाश के उकाबो
से भी अधिक वेग से चलते थे,
वे पहाडो पर हमारे पीछे पड गए
और जगल में हमारे लिये घात
लगाकर बैठ गए ॥
२० यहोवा का अभिषिक्त जो हमारा
प्राण * था, और जिसके विषय
हम ने सोचा था कि अन्यजातियो
के बीच हम उसकी शरण में †
जीवित रहेंगे,
वह उनके खोदे हुए गड्हो में पकडा
गया ॥
२१ हे एदोम की पुत्री, तू जो ऊज देश में
रहती है, हर्षित और आनन्दित रह,
परन्तु यह कटोरा तुझ तक भी पहुचेगा,
और तू मतवाली होकर अपने
आप को नगा करेगी ॥
२२ हे सिय्योन की पुत्री, तेरे अधम का
दण्ड समाप्त हुआ, वह फिर तुझे
बधुआई में न ले जाएगा,
परन्तु हे एदोम की पुत्री, तेरे अधम
का दण्ड वह तुझे देगा, वह तेरे
पापो को प्रगट कर देगा ॥

५ हे यहोवा, स्मरण कर कि हम
पर क्या क्या बीता है,
हमारी ओर दृष्टि करके हमारी
नामधराई को देख !
२ हमारा भाग परदेशियो का हो गया
और
हमारे घर परायो के हो गए हैं।
३ हम अनाथ और पिताहीन हो गए,
हमारी माताए विधवा सी हो गई
हैं।

* मूल में—हमारे नयनों का प्राण।
† मूल में—की छाया में।

४ हम मोल लेकर पानी पीते है,
हम को लकडी भी दाम से मिलती
है।
५ खदेडनेवाले हमारी गर्दन पर टूट
पडे है,
हम थक गए है, हमें विश्राम नही
मिलता।
६ हम स्वय मिस्र के अधीन हो गए,
और अश्शूर के भी, ताकि पेट भर
सकें।
७ हमारे पुरखाओ ने पाप किया, और
मर मिटे है,
परन्तु उनके अधर्म के कामो का भार
हम को उठाना पडा है ॥
८ हमारे ऊपर दास * अधिकार रखते
हैं,
उनके हाथ से कोई हम नही छुडाता ॥
९ जगल में की तलवार के कारण
हम अपने प्राण जोखिम में डालकर
भोजनवस्तु ले आते हैं।
१० भूख की झुलसाने वाली आग के
कारण,
हमारा चमडा तदूर की नाई काला
हो गया है।
११ सिय्योन में स्त्रिया,
और यहूदा के नगरो में कुमारिया
भ्रष्ट की गई ह।
१२ हाकिम हाथ के बल टागे गए है,
और पुरनियो का कुछ भी आदर
नही किया गया।
१३ जवानो को चक्की चलानी पडती
है,
और लडकेवाले लकडी का बोझ
उठाते हुए लडखडाते है।

* वा गुलाम।

१४ अब फाटक पर पुरनिये नही बैठते,
न जवानो का गीत सुनाई पडता है।
१५ हमारे मन का हर्ष जाता रहा,
हमारा नाचना विलाप मे बदल गया है।
१६ हमारे सिर पर का मुकुट गिर पडा है,
हम पर हाय, क्योकि हम ने पाप किया है!
१७ इस कारण हमारा हृदय निर्बल हो गया है,
इन्ही बातो से हमारी आखे धुधली पड गई है,
१८ क्योकि सिय्योन पर्वत उजाड पडा है,
उस मे सियार घूमते है॥
१९ परन्तु हे यहोवा, तू तो सदा तक विराजमान रहेगा,
तेरा राज्य पीढी-पीढी बना रहेगा।
२० तू ने क्यो हम को सदा के लिये भुला दिया है,
और क्यो बहुत काल के लिये हमे छोड दिया है?
२१ हे यहोवा, हम को अपनी ओर फेर, तब हम फिर सुधर जाएगे।
प्राचीनकाल की नाई हमारे दिन बदलकर ज्यो के त्यो कर दे!
२२ क्या तू ने हमे बिल्कुल त्याग दिया है?
क्या तू हम से अत्यन्त क्रोधित है?

यहेजकेल नामक पुस्तक

के से थे, और वे झलकाए हुए पीतल की
नाईं चमकते थे। ८ उनकी चारो अलग
पर पखो के नीचे मनुष्य के से हाथ थे।
और उन चारो के मुख और पख इस
प्रकार के थे ९ उनके पख एक दूसरे
से परस्पर मिले हुए थे, वे अपने अपने
साम्हने सीधे ही चलते हुए मुडते नही थे।
१० उनके साम्हने के मुखो का रूप मनुष्य
का सा था, और उन चारो के दहिनी
ओर के मुख सिह के से, बाइं ओर के
मुख बैल के से थे, और चारो के पीछे
के मुख उकाब पक्षी के से थे। ११ उनके
चेहरे ऐसे थे। और उनके मुख और
पख ऊपर की ओर अलग अलग थे,
हर एक जीवधारी के दो दो पख थे,
जो एक दूसरे के पखो से मिले हुए थे,
और दो दो पखो से उनका शरीर ढपा
हुआ था। १२ और वे सीधे अपने अपने
साम्हने ही चलते थे, जिधर आत्मा जाना
चाहता था वे उधर ही जाते थे, और
चलते समय मुडते नही थे। १३ और
जीवधारियो के रूप अगारो और जलते
हुए पलीतो के समान दिखाई देते थे,
और वह आग जीवधारियो के बीच इधर
उधर चलती फिरती हुई बडा प्रकाश
देती रही, और उस आग से बिजली
निकलती थी। १४ और जीवधारियो का
चलना-फिरना बिजली का सा था॥

१५ जब मैं जीवधारियो को देख ही
रहा था, तो क्या देखा कि भूमि पर उनके
पास चारो मुखो की गिनती के अनुसार,
एक एक पहिया था। १६ पहियो का
रूप और बनावट फीरोजे की सी थी,
और चारो का एक ही रूप था, और
उनका रूप और बनावट ऐसी थी जैसे
एक पहिये के बीच दूसरा पहिया हो।
१७ चलते समय वे अपनी चारो अलगो
की ओर चल सकते थे, और चलने में
मुडते नही थे। १८ और उन चारो
पहियो के घेरे बहुत बडे और डरावने
थे, और उनके घेरो मे चारो ओर आखें
ही आखे भरी हुई थी। १९ और जब
जीवधारी चलते थे, तब पहिये भी उनके
साथ चलते थे, और जब जीवधारी भूमि
पर से उठते थे, तब पहिये भी उठते थे।
२० जिधर आत्मा जाना चाहती थी,
उधर ही वे जाते, और और पहिये जीव-
धारियो के साथ उठते थे, क्योकि उनकी
आत्मा पहियो मे थी। २१ जब वे चलते
थे तब ये भी चलते थे, और जब जब वे
खडे होते थे तब ये भी खडे होते थे, और
जब वे भूमि पर से उठते थे तब पहिये
भी उनके साथ उठते थे, क्योकि जीव-
धारियो की आत्मा पहियो मे थी॥

२२ जीवधारियो के सिरो के ऊपर
आकाशमण्डल सा कुछ था जो बर्फ
की नाइं भयानक रीति से चमकता था,
और वह उनके सिरो के ऊपर फैला हुआ
था। २३ और आकाशमण्डल के नीचे,
उनके पख एक दूसरे की ओर सीधे फैले
हुए थे, और हर एक जीवधारी के दो
दो और पख थे जिन से उनके शरीर
ढपे हुए थे। २४ और उनके चलते समय
उनके पखो की फडफडाहट की आहट
मुझे बहुत से जल, वा सर्वशक्तिमान की
वाणी, वा सेना के हलचल की सी सुनाई
पडती थी, और जब वे खडे होते थे,
तब अपने पख लटका लेते थे। २५ फिर
उनके सिरो के ऊपर जो आकाशमण्डल
था, उसके ऊपर से एक शब्द सुनाई पडता
था, और जब वे खडे होते थे, तब अपने
पख लटका लेते थे॥

२६ और जो आकाशमण्डल उनके
सिरों के ऊपर था, उसके ऊपर मानो
कुछ नीलम का बना हुआ सिंहासन था,
इस सिंहासन के ऊपर मनुष्य के समान
कोई दिखाई देता था। २७ और उसकी
मानो कमर से लेकर ऊपर की ओर मुझे
झलकाया हुआ पीतल सा दिखाई पडा,
और उसके भीतर और चारो ओर आग
सी दिखाई पडती थी, फिर उस मनुष्य
की कमर से लेकर नीचे की ओर भी
मुझे कुछ आग सी दिखाई पडती थी;
और उसके चारो ओर प्रकाश था।
२८ जैसे वर्षा के दिन बादल मे धनुष
दिखाई पडता है, वैसे ही चारों ओर का
प्रकाश दिखाई देता था॥

यहोवा के तेज का रूप ऐसा ही था।
और उसे देखकर, मै मुह के बल गिरा,
तब मै ने एक शब्द सुना जैसे कोई बाते
करता है॥

२ और उस ने मुझ से कहा, हे
मनुष्य के सन्तान, अपने पावो के
बल खडा हो, और मै तुझ से बाते करूगा।
२ जैसे ही उस ने मुझ से यह कहा, त्योही
आत्मा ने मुझ मे समाकर मुझे पावो
के बल खडा कर दिया, और जो मुझ
मे बातें करता था मै ने उसकी सुनी।
३ और उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य
के सन्तान, मै तुझे इस्राएलियो के पास
अर्थात् बलवा करनेवाली जाति के पास
भेजता हू, जिन्हो ने मेरे विरुद्ध बलवा
किया है, उनके पुरखा और वे भी आज
के दिन तक मेरा अपराध करते चले
आए है। ४ इस पीढी के लोग * जिनके
पास मैं तुझे भेजता हू, वे निर्लज्ज और

* मूल में—फिर लडके।

हठीले * है; ५ और तू उन से कहना,
प्रभु यहोवा यो कहता है, इस से वे, जो
बलवा करनेवाले घराने के है, चाहे वे
सुने व न सुने, तौभी वे इतना जान लेगे
कि हमारे बीच एक भविष्यद्वक्ता प्रगट
हुआ है। ६ और हे मनुष्य के सन्तान,
तू उन से न डरना, चाहे तुझे काटो,
ऊटकटारो और बिच्छुओ के बीच भी
रहना पडे, तौभी उनके वचनो से न डरना;
यद्यपि वे बलवई घराने के है, तौभी न
तो उनके वचनो से डरना, और न उनके
मुह देखकर तेरा मन कच्चा हो। ७ सो
चाहे वे सुने या न सुने, तौभी तू मेरे
वचन उन से कहना, वे तो बडे बलवई
है। ८ परन्तु हे मनुष्य के सन्तान, जो
मै तुझ से कहता हू, उसे तू सुन ले, उस
बलवई घराने के समान तू भी बलवई
न बनना, जो मै तुझे देता हू, उसे मुह
खोलकर खा ले। ९ तब मै ने दृष्टि की
और क्या देखा, कि मेरी ओर एक हाथ
बढा हुआ है और उस मे एक पुस्तक † है।
१० उसको उस ने मेरे साम्हने खोलकर
फैलाया, और वह दोनो ओर लिखी हुई
थी; और जो उस मे लिखा था, वे
विलाप और शोक और दु खभरे वचन थे।

३ तब उस ने मुझ से कहा हे
मनुष्य के सन्तान, जो तुझे मिला
है उसे खा ले, अर्थात् इस पुस्तक को खा,
तब जाकर इस्राएल के घराने से बाते कर।
२ सो मै ने मुह खोला और उस ने वह
पुस्तक मुझे खिला दी। ३ तब उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, यह
पुस्तक जो मै तुझे देता हू उसे पचा ले,

* मूल में—कठोर मुखवाले। और बलवन्त हृदयवाले।

† वा लपेटा हुआ तूमार।

ग्रोर ग्रपनी ग्रन्तडिया इस से भर ले।
सो मैं ने उसे खा लिया, ग्रोर मेरे मुह
में वह मधु के तुल्य मीठी लगी ।।

४ फिर उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य
के सन्तान, तू इस्राएल के घराने के पास
जाकर उनको मेरे वचन सुना। ५ क्योंकि
तू किसी ग्रनोखी बोली वा कठिन भाषा-
वाली जाति के पास नही भेजा जाता है,
परन्तु इस्राएल ही के घराने के पास भेजा
जाता है। ६ ग्रनोखी बोली वा कठिन
भाषावाली बहुत सी जातियो के पास जो
तेरी बात समझ न सके, तू नही भेजा
जाता। नि सन्देह यदि मैं तुझे ऐसो के
पास भेजता तो वे तेरी सुनते। ७ परन्तु
इस्राएल के घरानेवाले तेरी सुनने से
इनकार करेंगे, वे मेरी भी सुनने से
इनकार करते हैं, क्योकि इस्राएल का सारा
घराना ढीठ* ग्रोर कठोर मन का है।
८ देख, मैं तेरे मुख को उनके मुख के
साम्हने, ग्रोर तेरे माथे को उनके माथे
के साम्हने, ढीठ कर देता हू। ९ मैं तेरे
माथे को हीरे के तुल्य कडा कर देता हू
जो चकमक पत्थर से भी कडा होता है,
सो तू उन से न डरना, ग्रोर न उनके मुह
देखकर तेरा मन कच्चा हो, क्योकि वे
बलवई घराने के हैं। १० फिर उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, जितने
वचन मैं तुझ से कहू, वे सब हृदय में रख
ग्रोर कानो से सुन। ११ ग्रोर उन बधुग्रो
के पास जाकर, जो तेरे जाति भाई ह, उन
से बातें करना ग्रोर कहना, कि प्रभु यहोवा
यो कहता है, चाहे वे सुनें, व न सुनें ।।

१२ तब ग्रात्मा ने मुझे उठाया, ग्रोर
मैं ने ग्रपने पीछे बडी घडघडाहट के साथ

* मूल में—बलवन्त माथे का।

एक शब्द सुना, कि यहोवा के भवन
से उसका तेज धन्य है। १३ ग्रोर उसके
साथ ही उन जीवधारियो के पखो का
शब्द, जो एक दूसरे से लगते थे, ग्रोर
उनके सग के पहियो का शब्द ग्रोर एक
बडी ही घडघडाहट सुन पडी। १४ सो
ग्रात्मा मुझे उठाकर ले गई, ग्रोर मैं
कठिन दु ख से भरा* हुग्रा, ग्रोर मन में
जलता हुग्रा चला गया, ग्रोर यहोवा की
शक्ति मुझ में प्रबल थी†, १५ ग्रोर
मैं उन बधुग्रो के पास ग्राया जो कबार
नदी के तीर पर तेलाबीब में रहते थे।
ग्रोर वहा मैं सात दिन तक उनके बीच
व्याकुल होकर बैठा रहा ।।

१६ सात दिन के व्यतीत होने पर
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुचा,
१७ हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे
इस्राएल के घराने के लिये पहरुग्रा नियुक्त
किया है, तू मेरे मुह की बात सुनकर,
उन्हें मेरी ग्रोर से चिताना। १८ जब मैं
दुष्ट से कहू कि तू निश्चय मरेगा, ग्रोर
यदि तू उसको न चिताए, ग्रोर न दुष्ट
से ऐसी बात कहे जिस से कि वह सचेत
हो ग्रोर ग्रपना दुष्ट मार्ग छोडकर जीवित
रहे, तो वह दुष्ट ग्रपने ग्रधर्म मे फसा हुग्रा
मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं
तुझी से लूगा। १९ पर यदि तू दुष्ट
को चिताए, ग्रोर वह ग्रपनी दुष्टता ग्रोर
दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो ग्रपने
ग्रधर्म मे फसा हुग्रा मर जाएगा, परन्तु
तू ग्रपने प्राणो को बचाएगा। २० फिर
जब धर्मी जन ग्रपने धर्म मे फिरकर
कुटिल काम करने लगे, ग्रोर मैं उसके

* मूल में—मैं कडुवा।

† मूल में—यहोवा का हाथ मुझ पर
प्रबल था।

साम्हने ठोकर रखू, तो वह मर जाएगा,
क्योकि तू ने जो उसको नही चिताया,
इसलिये वह अपने पाप मे फसा हुआ
मरेगा, और जो धर्म के कर्म उस ने
किए हो, उनकी सुधि न ली जाएगी,
पर उसके खून का लेखा मै तुझी से लूगा।
२१ परन्तु यदि तू धर्मी को ऐसा कहकर
चिताए, कि वह पाप न करे, और वह
पाप से बच जाए, तो वह चितौनी
को ग्रहण करने के कारण निश्चय
जीवित रहेगा, और तू अपने प्राण को
बचाएगा ॥

२२ फिर यहोवा की शक्ति* वही
मुझ पर प्रगट हुई, और उस ने मुझ से
कहा, उठकर मैदान मे जा, और वहा मै
तुझ से बाते करूगा। २३ तब मै उठकर
मैदान मे गया, और वहा क्या देखा, कि
यहोवा का प्रताप जैसा मुझे कबार नदी
के तीर पर, वैसा ही यहा भी दिखाई
पडता है, और मै मुह के बल गिर पडा।
२४ तब आत्मा ने मुझ मे समाकर मुझे
पावो के बल खडा कर दिया, फिर वह
मुझ से कहने लगा, जा अपने घर के
भीतर द्वार बन्द करके बैठ रह। २५ और
हे मनुष्य के सन्तान, देख, वे लोग तुझे
रस्सियो मे जकडकर बान्ध रखेगे, और
तू निकलकर उनके बीच जाने नही पाएगा।
२६ और मै तेरी जीभ तेरे तालू से
लगाऊगा, जिस से तू मौन रहकर उनका
डाटनेवाला न हो, क्योकि वे बलवई
घराने के है। २७ परन्तु जब जब मै
तुझ से बाते करू, तब तब तेरे मुह को
खोलूगा, और तू उन से ऐसा कहना, कि
प्रभु यहोवा यो कहता है, जो सुनता है
वह सुन ले और जो नही सुनता वह न
सुने, वे तो बलवई घराने के है ही ॥

४ और हे मनुष्य के सन्तान, तू
एक ईट ले और उसे अपने साम्हने
रखकर उस पर एक नगर, अर्थात् यरूशलेम
का चित्र खीच, २ तब उसे घेर अर्थात्
उसके विरुद्ध किला बना और उसके
साम्हने दमदमा बान्ध, और छावनी डाल,
और उसके चारो ओर युद्ध के यंत्र लगा।
३ तब तू लोहे की थाली लेकर उसको
लोहे की शहरपनाह मानकर अपने और
उस नगर के बीच खडा कर, तब अपना
मुह उसके साम्हने करके उसे घेरवा,
इस रीति से तू उसे घेर रखना।
यह इस्राएल के घराने के लिये चिन्ह
ठहरेगा ॥

४ फिर तू अपने बाये पाजर के बल
लेटकर इस्राएल के घराने का अधर्म अपने
ऊपर रख, क्योकि जितने दिन तू उस
पाजर के बल लेटा रहेगा, उतने दिन तक
उन लोगो के अधर्म का भार सहता रह।
५ मै ने उनके अधर्म के वर्षो के तुल्य
तेरे लिये दिन ठहराए है, अर्थात् तीन सौ
नब्बे दिन, उतने दिन तक तू इस्राएल
के घराने के अधर्म का भार सहता रह।
६ और जब इतने दिन पूरे हो जाए, तब
अपने दहिने पाजर के बल लेटकर यहूदा
के घराने के अधर्म का भार सह लेना,
मै ने उसके लिये भी और तेरे लिये एक
वर्ष की सन्ती एक दिन अर्थात् चालीस
दिन ठहराए है। ७ और तू यरूशलेम
के घेरने के लिये बाह उघाडे हुए अपना
मुह उधर करके उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी
करना। ८ और देख, मै तुझे रस्सियो
से जकड़ूगा, और जब तक उसके घेरने के

* मूल में—का हाथ।

दिन पूरे न हो, तब तक तू करवट न ले
सकेगा ॥
९ और तू गेहू, जव, सेम, मसूर,
बाजरा, और कठिया गेहू लेकर, एक
बासन मे रखकर उन से रोटी बनाया
करना। जितने दिन तू अपने पाजर के
बल लेटा रहेगा, उतने अर्थात् तीन सौ
नब्बे दिन तक उसे खाया करना।
१० और जो भोजन तू खाए, उसे तौल
तौलकर खाना, अर्थात् प्रति दिन बीस
बीस शेकेल भर खाया करना, और उसे
समय समय पर खाना। ११ पानी भी
तू मापकर पिया करना, अर्थात् प्रति दिन
हीन का छठवा अश पीना, और उसको
समय समय पर पीना। १२ और अपना
भोजन जव की रोटियो की नाई बनाकर
खाया करना, और उसको मनुष्य की
विष्ठा से उनके देखते बनाया करना।
१३ फिर यहोवा ने कहा, इसी प्रकार से
इस्राएल उन जातियो के बीच अपनी
अपनी रोटी अशुद्धता मे खाया करेगे,
जहा मैं उन्हें बरबस पहुचाऊगा। १४ तब
मैं ने कहा, हाय, यहोवा परमेश्वर देख,
मेरा मन कभी अशुद्ध नही हुआ, और न
मैं ने बचपन से लेकर अब तक अपनी
मृत्यु से मरे हुए वा फाडे हुए पशु का
मास खाया, और न किसी प्रकार का
घिनौना मास मेरे मुह मे कभी गया है।
१५ तब उस ने मुझ से कहा, देख, मैं
ने तेरे लिये मनुष्य की विष्ठा की सन्ती
गोबर ठहराया है, और उसी से तू अपनी
रोटी बनाना। १६ फिर उस ने मुझ से
कहा, हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं यरूशलेम
मे अन्नरूपी आधार को दूर करूगा, सो
वहा के लोग तौल तौलकर और चिन्ता
कर करके रोटी खाया करेगे, और माप
मापकर और विस्मित हो होकर पानी
पिया करेगे। १७ और इस से उन्हें रोटी
और पानी की घटी होगी, और वे सब
के सब घबराएगे, और अपने अधम मे
फसे हुए सूख जाएगे* ॥

५ और हे मनुष्य के सन्तान, एक
पैनी तलवार ले, और उसे नाऊ के
छुरे के काम में लाकर अपने सिर और
दाढी के बाल मूड डाल, तब तौलने का
काटा लेकर बालो के भाग कर। २ जब
नगर के घिरने के दिन पूरे हो, तब नगर
के भीतर एक तिहाई आग मे डालकर
जलाना, और एक तिहाई लेकर चारो
ओर तलवार से मारना, और एक तिहाई
को पवन मे उडाना, और मैं तलवार
खीचकर उसके पीछे चलाऊगा। ३ तब
इन में से थोडे से बाल लेकर अपने कपडे
की छोर मे बान्धना। ४ फिर इन मे
से भी थोडे से लेकर आग के बीच डालना
कि वे आग मे जल जाए, तब उसी मे से
एक लौ भडककर इस्राएल के सारे घराने
मे फैल जाएगी ॥
५ प्रभु यहोवा यो कहता है, यरूशलेम
ऐसी ही है, मैं ने उसको अन्यजातियो के
बीच में ठहराया, और वह चारो ओर
देशो से घिरी है। ६ उस ने मेरे नियमो
के विरुद्ध काम करके अन्यजातियो से
अधिक दुष्टता की, और मेरी विधियो
के विरुद्ध चारो ओर के देशो के लोगो से
अधिक बुराई की है, क्योकि उन्हो ने
मेरे नियम तुच्छ जाने, और वे मेरी
विधियो पर नही चले। ७ इस कारण
प्रभु यहोवा यो कहता है, तुम लोग जो
अपने चारो ओर की जातियो से अधिक

* मूल में—गल जाएगे।

हुल्लड मचाते, और न मेरी विधियो पर
चलते, न मेरे नियमो को मानते और
अपने चारो ओर की जातियो के नियमो के
अनुसार भी न किया, ८ इस कारण प्रभु
यहोवा यो कहता है, देख, मै स्वय तेरे विरुद्ध
हू, और अन्यजातियो के देखते मे तेरे बीच
न्याय के काम करूगा। ९ और तेरे
सब घिनौने कामो के कारण मै तेरे बीच
ऐसा करूगा, जैसा न अब तक किया है,
और न भविष्य मे फिर करूगा। १० सो
तेरे बीच लडकेवाले अपने अपने बाप का,
और बाप अपने अपने लडकेवालो का मास
खाएगे, और मै तुझ को दण्ड दूगा,
११ और तेरे सब बचे हुओ को चारो
ओर तितर-बितर करूगा। इसलिये प्रभु
यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन
की सौगन्ध, इसलिये कि तू ने मेरे पवित्र-
स्थान को अपनी सारी घिनौनी मूरतो
और सारे घिनौने कामो से अशुद्ध किया
है, मै तुझे घटाऊगा, और तुझ पर दया
की दृष्टि न करूगा, और तुझ पर कुछ
भी कोमलता न करूगा। १२ तेरी एक
तिहाई तो मरी से मरेगी, और तेरे बीच
भूख से मर मिटेगी, एक तिहाई तेरे
आस पास तलवार से मारी जाएगी,
और एक तिहाई को मै चारो ओर तितर-
बितर करूगा और तलवार खीचकर उनके
पीछे चलाऊगा। १३ इस प्रकार से मेरा
कोप शान्त होगा, और अपनी जलजलाहट
उन पर पूरी रीति से भडकाकर* मै
शान्ति पाऊगा, और जब मै अपनी
जलजलाहट उन पर पूरी रीति से भडका
चुकू, तब वे जान लेगे कि मुझ यहोवा ही
ने जलन मे आकर यह कहा है। १४ और
मै तुझे तेरे चारो ओर की जातियो के
बीच, सब बटोहियो के देखते हुए
उजाडूगा, और तेरी नामधराई कराऊगा।
१५ सो जब मै तुझ को कोप और जल-
जलाहट और रिसवाली घुडकियो के साथ
दण्ड दूगा, तब तेरे चारो ओर की जातियो
के साम्हने नामधराई, ठट्ठा, शिक्षा और
विस्मय होगा, क्योकि मुझ यहोवा ने यह
कहा है। १६ यह उस समय होगा, जब
मै उन लोगो को नाश करने के लिये तुम
पर महगी के तीखे तीर चलाकर, तुम्हारे
बीच महगी बढाऊगा, और तुम्हारे अन्नरूपी
आधार को दूर करूगा। १७ और मै
तुम्हारे बीच महगी और दुष्ट जन्तु भेजूगा
जो तुम्हे नि सन्तान करेगे, और मरी और
खून तुम्हारे बीच चलते रहेगे, और मै
तुम पर तलवार चलवाऊगा, मुझ यहोवा
ने यह कहा है॥

६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा। २ हे मनुष्य के सन्तान
अपना मुख इस्राएल के पहाडो की ओर
करके उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर,
३ और कह, हे इस्राएल के पहाडो, प्रभु
यहोवा का वचन सुनो। प्रभु यहोवा
पहाडो और पहाडियो से, और नालो
और तराइयो से यो कहता है, देखो,
मै तुम पर तलवार चलवाऊगा, और
तुम्हारे पूजा के ऊचे स्थानो को नाश
करूगा। ४ तुम्हारी वेदिया उजडेगी और
तुम्हारी सूर्य की प्रतिमाए तोडी जाएगी,
और मै तुम मे से मारे हुओ को तुम्हारी
मूरतो के आगे फेक दूगा। ५ मै
इस्राएलियो की लोथो को उनकी मूरतों
के साम्हने रखूगा, और उनकी* हड्डियो

* जलजलाहट को विश्राम देकर।

* मूल मे—तुम्हारी।

को तुम्हारी वेदियो के आस पास छितरा
दूगा। ६ तुम्हारे जितने बसाए हुए नगर
हैं, वे सब ऐसे उजड जाएगे, कि तुम्हारे
पूजा के ऊचे स्थान भी उजाड हो जाएगे,
तुम्हारी वेदिया उजडेगी और ढाई जाएगी,
तुम्हारी मूरतें जाती रहेगी और तुम्हारी
सूर्य की प्रतिमाए काटी जाएगी, और
तुम्हारी सारी कारीगरी मिटाई जाएगी।
७ और तुम्हारे बीच मारे हुए गिरेंगे,
और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हू ॥

८ तौभी मैं कितनो को बचा रखूगा।
सो जब तुम देश देश मे तितर-बितर
होगे, तब अन्यजातियो के बीच तुम्हारे
कुछ लोग तलवार से बच जाएगे। ९ और
वे बचे हुए लोग, उन जातियो के बीच,
जिन में वे बधुए होकर जाएगे, मुझे स्मरण
करेंगे, और यह भी कि हमारा व्यभिचारी
हृदय यहोवा से कैसे हट गया है और
व्यभिचारिणी की सी हमारी आखें मूरतो
पर कैसी लगी हैं जिस से यहोवा का मन
टूटा है। इस रीति से उन बुराइयो के
कारण, जो उन्हो ने अपने सारे घिनौने
काम करके की हैं, वे अपनी दृष्टि मे
घिनौने ठहरेंगे। १० तब वे जान लेगे
कि मैं यहोवा हू, और उनकी सारी हानि
करने को मैं ने जो यह कहा है, उसे व्यर्थ
नही कहा ॥

११ प्रभु यहोवा यो कहता है, कि
अपना हाथ मारकर और अपना पाव
पटककर कह, इस्राएल के घराने के सारे
घिनौने कामो पर हाय, हाय, क्योकि
वे तलवार, भूख, और मरी से नाश हो
जाएगे। १२ जो दूर हो वह मरी से
मरेगा, और जो निकट हो वह तलवार से
मार डाला जाएगा, और जो बचकर
नगर मे रहते हुए घेरा जाए, वह भूख
से मरेगा। इस भाति मैं अपनी जलजलाहट
उन पर पूरी रीति से उतारूगा। १३ और
जब हर एक ऊची पहाडी और पहाडो
की हर एक चोटी पर, और हर एक हरे
पेड के नीचे, और हर एक घने बाजवृक्ष
की छाया मे, जहा जहा वे अपनी सब मूरतो
को सुखदायक सुगन्ध द्रव्य चढाते हैं,
वहा उनके मारे हुए लोग अपनी वेदियो
के आस पास अपनी मूरतो के बीच में
पडे रहेंगे, तब तुम लोग जान लोगे
कि मैं यहोवा हू। १४ मैं अपना हाथ
उनके विरुद्ध बढाकर उस देश को सारे
घरो समेत जगल से ले दिबला की ओर
तक उजाड ही उजाड कर दूगा। तब
वे जान लेगे कि मैं यहोवा हू ॥

७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
प्रभु यहोवा इस्राएल की भूमि के विषय
मे यो कहता है, कि अन्त हुआ, चारो
कोनो समेत देश का अन्त आ गया है।
३ तेरा अन्त भी आ गया, और मैं अपना
कोप तुझ पर भडकाकर तेरे चालचलन
के अनुसार तुझे दण्ड दूगा, और तेरे
सारे घिनौने कामो का फल तुझे दूगा।
४ मेरी दयादृष्टि तुझ पर न होगी, और
न मैं कोमलता करूगा, और जब तक
तेरे घिनौने पाप तुझ में बने रहेंगे तब तक
मैं तेरे चालचलन का फल तुझे दूगा।
तब तू जान लेगा कि मैं यहोवा हू ॥

५ प्रभु यहोवा यो कहता है, विपत्ति
है, एक बडी विपत्ति है। देखो, वह
आती है। ६ अन्त आ गया है, सब का
अन्त आया है, वह तेरे विरुद्ध जागा है।
देखो, वह आता है। ७ हे देश के निवासी,
तेरे लिये चक्र घूम चुका, समय आ गया,

दिन निकट है, पहाडो पर आनन्द के
शब्द का दिन नही, हुल्लड ही का होगा।
८ अब थोडे दिनो मे मै अपनी जलजलाहट
तुझ पर भडकाऊगा *, और तुझ पर पूरा
कोप उण्डेलूगा और तेरे चालचलन के
अनुसार तुझे दण्ड दूगा। और तेरे
सारे घिनौने कामो का फल तुझे
भुगताऊगा। ९ मेरी दयादृष्टि तुझ पर
न होगी और न मै तुझ पर कोमलता
करूगा। मै तेरी चालचलन का फल तुझे
भुगताऊगा, और तेरे घिनौने पाप तुझ
मे बने रहेगे। तब तुम जान लोगे कि
मै यहोवा दण्ड देनेवाला हू॥

१० देखो, उस दिन को देखो, वह
आता है! चक्र घूम चुका, छडी फूल
चुकी, अभिमान फूला है। ११ उपद्रव
बढते बढते दुष्टता का दण्ड बन गया,
उन मे से कोई न बचेगा, और न उनकी
भीड-भाड, न उनके धन मे से कुछ रहेगा,
और न उन मे से किसी के लिये विलाप
सुन पडेगा। १२ समय आ गया, दिन
निकट आ गया है, न तो मोल लेनेवाला
आनन्द करे और न बेचनेवाला शोक करे,
क्योकि उनकी सारी भीड पर कोप भडक
उठा है। १३ चाहे वे जीवित रहे, तौभी
बेचनेवाला बेची हुई वस्तु के पास कभी
लौटने न पाएगा, क्योकि दर्शन की यह
बात देश की सारी भीड पर घटेगी,
कोई न लौटेगा, कोई भी मनुष्य, जो
अधर्म मे जीवित रहता है, बल न पकड
सकेगा॥

१४ उन्हो ने नरसिंगा फूका और
सब कुछ तैयार कर दिया, परन्तु युद्ध
मे कोई नही जाता क्योकि देश की सारी
भीड पर मेरा कोप भडका हुआ है।
१५ बाहर तलवार और भीतर महगी
और मरी है, जो मैदान मे हो वह तलवार
से मरेगा, और जो नगर मे हो वह भूख
और मरी से मारा जाएगा। १६ और
उन मे से जो बच निकलेगे वे बचेगे तो
सही परन्तु अपने अपने अधर्म मे फसे
रहकर तराइयो मे रहनेवाले कबूतरो की
नाई पहाडो के ऊपर विलाप करते रहेगे।
१७ सब के हाथ ढीले और सब के घुटने
अति निर्बल हो जाएगे *। १८ और वे
कमर मे टाट कसेंगे, और उनके रोए
खडे होगे, सब के मुह सूख जाएगे
और सब के सिर मुडे जाएगे।
१९ वे अपनी चान्दी सडको मे फेक देगे,
और उनका सोना अशुद्ध वस्तु ठहरेगा,
यहोवा की जलन के दिन उनका सोना
चान्दी उनको बचा न सकेगी, न उस से
उनका जी सन्तुष्ट होगा, न उनके पेट
भरेगे। क्योकि वह उनके अधर्म के ठोकर
का कारण हुआ है। २० उनका देश जो
शोभायमान और शिरोमणि था, उसके
विषय मे उन्हो ने गर्व ही गर्व करके
उस मे अपनी घृणित वस्तुओ की मूरते,
और घृणित वस्तुए बना रखी, इस
कारण मै ने उसे उनके लिये अशुद्ध वस्तु
ठहराया है। २१ और मै उसे लूटने
के लिये परदेशियो के हाथ, और धन
छीनने के लिये पृथ्वी के दुष्ट लोगो के
वश मे कर दूगा, और वे उसे अपवित्र
कर डालेगे। २२ मै उन से मुह फेर
लूगा, तब वे मेरे रक्षित स्थान को अपवित्र
करेगे, डाकू उस मे घुसकर उसे अपवित्र
करेगे॥

* मूल में—उण्डेलूगा।

* मूल में—जल ही [बनकर बह] जाएगे।

२३ एक साकल बना दे, क्योंकि देश
अन्याय की हत्या से, और नगर उपद्रव
से भरा हुआ है। २४ मै अन्यजातियो
के बुरे से बुरे लोगो को लाऊगा, जो उनके
घरो के स्वामी हो जाएगे, और मै
सामर्थियो का गर्व तोड दूगा और उनके
पवित्रस्थान अपवित्र किए जाएगे।
२५ सत्यानाश होने पर है तव ढूढने पर भी
उन्हें शान्ति न मिलेगी। २६ विपत्ति
पर विपत्ति आएगी और उडती हुई चर्चा
पर चर्चा सुनाई पडेगी, और लोग
भविष्यद्वक्ता से दर्शन की बात पूछेंगे, परन्तु
याजक के पास से व्यवस्था, और पुरनिये
के पास से सम्मति देने की शक्ति जाती
रहेगी। २७ राजा तो शोक करेगा, और
रईस उदासीरूपी वस्त्र पहिनेंगे, और
देश के लोगो के हाथ ढीले पडेंगे। मै
उनके चलन के अनुसार उन मे बर्ताव
करूगा, और उनकी कमाई के समान
उनको दण्ड दूगा, तब वे जान लेगे कि
मै यहोवा हू॥

८ फिर छठवे वर्ष के छठवे महीने
के पाचवे दिन को जब मै अपने
घर मे बैठा था, और यहूदियो के पुरनिये
मेरे साम्हने बैठे थे, तब प्रभु यहोवा की
शक्ति * वही मुझ पर प्रगट हुई। २ और
मै ने देखा कि आग का सा एक रूप
दिखाई देता है, उसकी कमर से नीचे की
ओर आग है, और उसकी कमर से ऊपर की
ओर झलकाए हुए पीतल की झलक सी
कुछ है। ३ उस ने हाथ सा कुछ बढाकर
मेरे सिर के बाल पकडे, तब आत्मा ने
मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच में उठाकर
परमेश्वर के दिखाए हुए दर्शनो मे यरूशलेम
के मन्दिर के भीतर, आगन के उस फाटक
के पास पहुचा दिया जिसका मुह उत्तर
की ओर है, और जिस मे उस जलन
उपजानेवाली प्रतिमा का स्थान था जिसके
कारण द्वेष उपजता है। ४ फिर वहा
इस्राएल के परमेश्वर का तेज वैसा ही
था जैसा मै ने मैदान मे देखा था॥

५ उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य
के सन्तान, अपनी आखें उत्तर की ओर
उठाकर देख। सो मै ने अपनी आखे
उत्तर की ओर उठाकर देखा कि वेदी
के फाटक की उत्तर की ओर उसके प्रवेश-
स्थान ही मे वह डाह उपजानेवाली प्रतिमा
है। ६ तब उस ने मुझ से कहा, हे
मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये
लोग क्या कर रहे है? इस्राएल का
घराना क्या ही बडे घृणित काम यहा
करता है, ताकि मै अपने पवित्रस्थान
से दूर हो जाऊ, परन्तु तू इन से भी
अधिक घृणित काम देखेगा॥

७ तब वह मुझे आगन के द्वार पर ले
गया, और मै ने देखा, कि भीत में एक
छेद है। ८ तब उस ने मुझ से कहा,
हे मनुष्य के सन्तान, भीत को फोड,
सो मै ने भीत को फोडकर क्या देखा कि
एक द्वार है। ९ उस ने मुझ से कहा,
भीतर जाकर देख कि ये लोग यहा कैसे
कैसे और अति घृणित काम कर रहे है।
१० सो मै ने भीतर जाकर देखा कि
चारो ओर की भीत पर जाति जाति
के रेंगनेवाले जन्तुओ और घृणित पशुओ
और इस्राएल के घराने की सब मूरता
के चित्र खिचे हुए है। ११ और इस्राएल
के घराने के पुरनियो मे से सत्तर पुरुष
जिन के बीच में शापान का पुत्र याजन्याह
भी है, वे उन चित्रो के साम्हने खडे है,

* मूल में—का हाथ।

उसके पीछे चलते है और चलते समय वे
मुडते नही। १२ और पीठ हाथ और
पखो समेत करूबो का सारा शरीर और
जो पहिये उनके है, वे भी सब के सब
चारों ओर आंखो से भरे हुए है। १३ मेरे
सुनते हुए इन पहियो को चक्कर कहा गया,
अर्थात् घूमनेवाले पहिये। १४ और एक
एक के चार चार मुख थे, एक मुख तो
करूब का सा, दूसरा मनुष्य का सा, तीसरा
सिंह का सा, और चौथा उकाब पक्षी
का सा॥

१५ और करूब भूमि पर से उठ गए।
ये वे ही जीवधारी है, जो मै ने कबार
नदी के पास देखे थे। १६ और जब जब
वे करूब चलते थे तब तब वे पहिये उनके
पास पास चलते थे, और जब जब करूब
पृथ्वी पर से उठने के लिये अपने पख
उठाते तब तब पहिये उनके पास से नही
मुडते थे। १७ जब वे खडे होते तब ये
भी खडे होते थे, और जब वे उठते तब ये
भी उनके सग उठते थे; क्योकि जीवधारियो
की आत्मा इन मे भी रहती थी॥

१८ यहोवा का तेज भवन की डेवढी
पर से उठकर करूबो के ऊपर ठहर गया।
१९ और करूब अपने पख उठाकर मेरे
देखते देखते पृथ्वी पर से उठकर निकल
गए, और पहिये भी उनके सग सग गए,
और वे सब यहोवा के भवन के पूर्वी
फाटक मे खडे हो गए, और इस्राएल के
परमेश्वर का तेज उनके ऊपर ठहरा
रहा॥

२० ये वे ही जीवधारी है जो मै ने
कबार नदी के पास इस्राएल के परमेश्वर
के नीचे देखे थे, और मै ने जान लिया कि
वे भी करूब है। २१ हर एक के चार
मुख और चार पख और पखो के नीचे
मनुष्य के से हाथ भी थे। २२ और
उनके मुखो का रूप वही है जो मै ने कबार
नदी के तीर पर देखा था। और उनके
मुख ही क्या वरन उनकी सारी देह भी
वैसी ही थी। वे सीधे अपने अपने साम्हने
ही चलते थे॥

११ तब आत्मा ने मुझे उठाकर
यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक
के पास जिसका मुह पूर्वी दिशा की ओर
है, पहुचा दिया, और वहा मै ने क्या
देखा, कि फाटक ही मे पच्चीस पुरुष है।
और मै ने उनके बीच अज्जूर के पुत्र
याजन्याह् को और बनायाह् के पुत्र पलत्याह
को देखा, जो प्रजा के प्रधान थे। २ तब
उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान,
जो मनुष्य इस नगर मे अनर्थ कल्पना और
बुरी युक्ति करते है वे ये ही है। ३ ये
कहते है, घर बनाने का समय निकट
नही, यह नगर हडा और हम उस मे
का मास है। ४ इसलिये हे मनुष्य के
सन्तान, इनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर,
भविष्यद्वाणी॥

५ तब यहोवा का आत्मा मुझ पर
उतरा, और मुझ से कहा, ऐसा कह,
यहोवा यो कहता है, कि हे इस्राएल के
घराने तुम ने ऐसा ही कहा है, जो कुछ
तुम्हारे मन मे आता है, उसे मै जानता
हू। ६ तुम ने तो इस नगर मे बहुतो
को मार डाला वरन उसकी सडको को
लोथो से भर दिया है। ७ इस कारण
प्रभु यहोवा यो कहता है, कि जो मनुष्य
तुम ने इस मे मार डाले है, उनकी लोथे
ही इस नगररूपी हडे मे का मास है,
और तुम इसके बीच से निकाले जाओगे।
८ तुम तलवार से [illegible] और मै

तुम पर तलवार चलाऊंगा, प्रभु यहोवा की
यही वाणी है। ९ मैं तुम को इस में
से निकालकर परदेशियों के हाथ में कर
दूंगा, और तुम को दण्ड दिलाऊंगा।
१० तुम तलवार से मरकर गिरोगे, और
मैं तुम्हारा मुकद्दमा इस्राएल के देश के
सिवाने पर चुकाऊंगा, तब तुम जान
लोगे कि मैं यहोवा हूं। ११ यह नगर
तुम्हारे लिये हंडा न बनेगा, और न तुम
इस में का मांस होगे, मैं तुम्हारा मुकद्दमा
इस्राएल के देश के सिवाने पर चुकाऊंगा।
१२ तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा
हूं, तुम तो मेरी विधियों पर नहीं चले,
और मेरे नियमों को तुम ने नहीं माना,
परन्तु अपने चारों ओर की अन्यजातियों
की रीतियों पर चले हो॥

१३ मैं इस प्रकार की भविष्यद्वाणी
कर रहा था, कि बनायाह का पुत्र पलत्याह
मर गया। तब मैं मुंह के बल गिरकर
ऊंचे शब्द से चिल्ला उठा, और कहा,
हाय प्रभु यहोवा, क्या तू इस्राएल के बचे
हुओं को सत्यानाश कर डालेगा?

१४ तब यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, १५ हे मनुष्य के सन्तान, यरू-
शलेम के निवासियों ने तेरे निकट भाइयों
से* वरन इस्राएल के सारे घराने से भी
कहा है कि तुम यहोवा के पास से दूर
हो जाओ, यह देश हमारे ही अधिकार
में दिया गया है। १६ परन्तु तू उन से
कह, प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं ने
तुम को दूर दूर की जातियों में बसाया
और देश देश में तितर-बितर कर दिया
तो है, तौभी जिन देशों में तुम आए हुए
हो, उन में मैं स्वयं तुम्हारे लिये थोड़े

* मूल में—तेरे भाइयों वा तेरे समीपी
जनों से।

दिन तक पवित्रस्थान ठहरूंगा। १७ इस-
लिये, उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है,
कि मैं तुम को जाति जाति के लोगों के
बीच से बटोरूंगा, और जिन देशों में तुम
तितर-बितर किए गए हो, उन में से तुम
को इकट्ठा करूंगा, और तुम्हें इस्राएल की
भूमि दूंगा। १८ और वे वहां पहुंचकर
उस देश की सब घृणित मूरतें और सब
घृणित काम भी उस में से दूर करेंगे।
१९ और मैं उनका हृदय एक कर दूंगा,
और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न
करूंगा, और उनकी देह में से पत्थर का
सा हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय
दूंगा, २० जिस से वे मेरी विधियों पर
नित चला करें और मेरे नियमों को मानें,
और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका
परमेश्वर ठहरूंगा। २१ परन्तु वे लोग
जो अपनी घृणित मूरतों और घृणित कामों
में मन लगाकर चलते रहते हैं, उनको मैं
ऐसा करूंगा कि उनकी चाल उन्हीं के सिर
पर पड़ेगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

२२ इस पर करूबों ने अपने पंख
उठाए, और पहिये उनके संग संग चले,
और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके
ऊपर था। २३ तब यहोवा का तेज
नगर के बीच में से उठकर उस पर्वत पर
ठहर गया जो नगर की पूर्व ओर है।
२४ फिर आत्मा ने मुझे उठाया, और
परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से दर्शन
में मुझे कसदियों के देश में बंधुओं के
पास पहुंचा दिया। और जो दर्शन मैं ने
पाया था वह लोप हो गया*। २५ तब
जितनी बातें यहोवा ने मुझे दिखाई थीं,
वे मैं ने बंधुओं को बता दीं॥

* मूल में—मुझ पर से उठ गया।

और हर एक पुरुष अपने हाथ में धूपदान
लिए हुए है, और धूप के धूए के बादल
की सुगन्ध उठ रही है। १२ तब उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या
तू ने देखा है कि इस्राएल के घराने के
पुरनिये अपनी अपनी नक्काशीवाली
कोठरियो के भीतर अर्थात् अन्धियारे
मे क्या कर रहे है? वे कहते है कि यहोवा
हम को नही देखता, यहोवा ने देश को
त्याग दिया है। १३ फिर उस ने मुझ
से कहा, तू इन से और भी अति घृणित
काम देखेगा जो वे करते है।।

१४ तब वह मुझे यहोवा के भवन के
उस फाटक के पास ले गया जो उत्तर
की ओर था और वहा स्त्रिया बैठी हुई
तम्मूज के लिये रो रही थी। १५ तब उस
ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान,
क्या तू ने यह देखा है? फिर इन से
भी बडे घृणित काम तू देखेगा।।

१६ तब वह मुझे यहोवा के भवन के
भीतरी आगन मे ले गया, और वहा
यहोवा के भवन के द्वार के पास ओसारे
और वेदी के बीच कोई पच्चीस पुरुष
अपनी पीठ यहोवा के भवन की ओर
और अपने मुख पूर्व की ओर किए हुए
थे, और वे पूर्व दिशा की ओर सूर्य को
दण्डवत् कर रहे थे। १७ तब उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या
तू ने यह देखा? क्या यहूदा के घराने
के लिये घृणित कामो का करना जो
वे यहा करते है छोटी बात है? उन्हो ने
अपने देश को उपद्रव से भर दिया, और
फिर यहा आकर मुझे रिस दिलाते है।
वरन वे डाली को अपनी नाक के आगे
लिए रहते है। १८ इसलिये मै भी
जलजलाहट के साथ काम करूगा, न
मै दया करूगा और न मै कोमलता
करूगा, और चाहे वे मेरे कानो मे ऊचे
शब्द से पुकारे, तौभी मै उनकी बात न
सुनूगा।।

९ फिर उस ने मेरे कानो मे ऊचे
शब्द से पुकारकर कहा, नगर के
अधिकारियो को अपने अपने हाथ मे
नाश करने का हथियार लिए हुए निकट
लाओ। २ इस पर छ पुरुष, उत्तर की
ओर ऊपरी फाटक के मार्ग से अपने अपने
हाथ मे घात करने का हथियार लिए
हुए आए; और उनके बीच सन का
वस्त्र पहिने, कमर मे लिखने की दवात
बान्धे हुए एक और पुरुष था; और वे
सब भवन के भीतर जाकर पीतल की
वेदी के पास खडे हुए।।

३ और इस्राएल के परमेश्वर का
तेज करूबो पर से, जिनके ऊपर वह रहा
करता था, भवन की डेवढी पर उठ आया
था, और उस ने उस सन के वस्त्र पहिने
हुए पुरुष को जो कमर मे दवात बान्धे
हुए था, पुकारा। ४ और यहोवा ने उस
से कहा, इस यरूशलेम नगर के भीतर
इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन
सब घृणित कामो के कारण जो उस मे
किए जाते है, साँसे भरते और दु:ख के
मारे चिल्लाते है, उनके माथो पर चिन्ह कर
दे। ५ तब उस ने मेरे सुनते हुए दूसरो
से कहा, नगर मे उनके पीछे पीछे चलकर
मारते जाओ; किसी पर दया न करना
और न कोमलता से काम करना। ६ बूढे,
युवा, कुवारी, बालबच्चे, स्त्रिया, सब को
मारकर नाश करो, परन्तु जिस किसी
मनुष्य के माथे पर वह चिन्ह हो, उसके
निकट न जाना। और मेरे पवित्रस्थान

ही से आरम्भ करो। और उन्हो ने उन
पुरनियों से आरम्भ किया जो भवन के
साम्हने थे। ७ फिर उस ने उन से कहा,
भवन को अशुद्ध करो, और आंगनों को
लोथों से भर दो। चलो, बाहर निकलो।
तब वे निकलकर नगर में मारने लगे।
८ जब वे मार रहे थे, और मैं अकेला
रह गया, तब मैं मुंह के बल गिरा और
चिल्लाकर कहा, हाय प्रभु यहोवा! क्या
तू अपनी जलजलाहट यरूशलेम पर
भड़काकर* इस्राएल के सब बचे हुओं
को भी नाश करेगा?

९ तब उस ने मुझ से कहा, इस्राएल
और यहूदा के घरानों का अधर्म अत्यन्त
ही अधिक है, यहां तक कि देश हत्या से
और नगर अन्याय से भर गया है, क्योंकि
वे कहते हैं कि यहोवा ने पृथ्वी† को
त्याग दिया और यहोवा कुछ नहीं देखता।
१० इसलिये उन पर दया न होगी, न मैं
कोमलता करूंगा, वरन उनकी चाल उन्हीं
के सिर लौटा दूंगा॥

११ तब मैं ने क्या देखा, कि जो पुरुष
सन का वस्त्र पहिने हुए और कमर में
दवात बान्धे था, उस ने यह कहकर
समाचार दिया, जैसे तू ने आज्ञा दी,
मैं ने वैसे ही किया है॥

१० इसके बाद मैं ने देखा कि करूबों
के सिरों के ऊपर जो आकाशमण्डल
है, उस में नीलमणि का सिंहासन सा
कुछ दिखाई देता है। २ तब यहोवा ने
उस सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष से कहा,
घूमनेवाले पहियों के बीच करूबों के नीचे
जा और अपनी दोनों मुट्ठियों को करूबों
के बीच के अंगारों से भरकर नगर पर
छितरा दे॥

सो वह मेरे देखते देखते उनके बीच
में गया। ३ जब वह पुरुष भीतर गया,
तब वे करूब भवन की दक्खिन ओर खड़े
थे, और बादल भीतरवाले आंगन में
भरा हुआ था। ४ तब यहोवा का तेज
करूबों के ऊपर से उठकर भवन की
डेवढ़ी पर आ गया, और बादल भवन
में भर गया, और वह आंगन यहोवा के
तेज के प्रकाश से भर गया। ५ और
करूबों के पंखों का शब्द बाहरी आंगन
तक सुनाई देता था, वह सर्वशक्तिमान्
परमेश्वर के बोलने का सा शब्द था॥

६ जब उस ने सन के वस्त्र पहिने हुए
पुरुष को घूमनेवाले पहियों के भीतर
करूबों के बीच में से आग लेने की आज्ञा
दी, तब वह उनके बीच में जाकर एक
पहिये के पास खड़ा हुआ। ७ तब करूबों
के बीच में एक करूब ने अपना हाथ बढ़ाकर,
उस आग में से जो करूबों के बीच में थी,
कुछ उठाकर सन के वस्त्र पहिने हुए पुरुष
की मुट्ठी में दे दी, और वह उसे लेकर
बाहर चला गया। ८ करूबों के पंखों
के नीचे तो मनुष्य का हाथ सा कुछ
दिखाई देता था॥

९ तब मैं ने देखा, कि करूबों के पास
चार पहिये हैं, अर्थात् एक एक करूब
के पास एक एक पहिया है, और पहियों
का रूप फीरोज़ा का सा है। १० और
उनका ऐसा रूप है, कि चारों एक से
दिखाई देते हैं, जैसे एक पहिये के बीच
दूसरा पहिया हो। ११ चलने के समय
वे अपनी चारों अलंगों के बल से चलते
हैं, और चलते समय मुड़ते नहीं, वरन
जिधर उनका सिर रहता है वे उधर ही

---

* मूल में—उण्डेलते उण्डेलते।
† वा इस देश।

१२ फिर यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, तू बलवा करनेवाले घराने के
बीच मे रहता है, जिनके देखने के लिये
आखे तो है, परन्तु नही देखते, और
सुनने के लिये कान तो है परन्तु नही
सुनते, क्योकि वे बलवा करनेवाले घराने
के है। ३ इसलिये हे मनुष्य के सन्तान
दिन को बधुआई का सामान तैयार
करके उनके देखते हुए उठ जाना, उनके
देखते हुए अपना स्थान छोडकर दूसरे
स्थान को जाना। यद्यपि वे बलवा करने-
वाले घराने के है, तौभी सम्भव है कि
वे ध्यान दे। ४ सो तू दिन को उनके
देखते हुए बधुआई के सामान की नाईं
अपना सामान निकालना, और तब तू
साझ को बधुआई मे जानेवाले के समान
उनके देखते हुए उठ जाना। ५ उनके
देखते हुए भीत को फोडकर उसी से अपना
सामान निकालना। ६ उनके देखते हुए
उसे अपने कधे पर उठाकर अन्धेरे मे
निकालना, और अपना मुह ढापे रहना कि
भूमि तुझे न देख पडे, क्योकि मै ने
तुझे इस्राएल के घराने के लिये एक
चिन्ह ठहराया है।।

७ उस आज्ञा के अनुसार मै ने वैसा
ही किया। दिन को मै ने अपना सामान
बधुआई के सामान की नाईं निकाला,
और साझ को अपने हाथ से भीत को
फोडा, फिर अन्धेरे में सामान को निकाल-
कर, उनके देखते हुए अपने कधे पर उठाए
हुए चला गया।।

८ बिहान को यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, ९ हे मनुष्य के सन्तान,
क्या इस्राएल के घराने ने अर्थात् उस
बलवा करनेवाले घराने ने तुझ से यह नही
पूछा, कि यह तू क्या करता है? १० तू
उन से कह कि प्रभु यहोवा यो कहता है,
यह प्रभावशाली वचन यरूशलेम के प्रधान
पुरुष और इस्राएल के सारे घराने के
विषय मे है जिसके बीच मे वे रहते है।
११ तू उन से कह, मै तुम्हारे लिये चिन्ह
हू, जैसा मै ने किया है, वैसा ही इस्राएली
लोगो से भी किया जाएगा, उनको उठकर
बधुआई मे जाना पडेगा। १२ उनके
बीच मे जो प्रधान है, सो अन्धेरे मे अपने
कधे पर बोझ उठाए हुए निकलेगा;
वह अपना सामान निकालने के लिये भीत
को फोडेगा, और अपना मुह ढापे रहेगा कि
उसको भूमि न देख पडे। १३ और मै
उस पर अपना जाल फैलाऊगा, और
वह मेरे फदे मे फसेगा, और मै उसे
कसदियो के देश के बाबुल मे पहुचा दूगा;
यद्यपि वह उस नगर मे मर जाएगा,
तौभी उसको न देखेगा। १४ और जितने
उसके सहायक उसके आस पास होगे,
उनको और उसकी सारी टोलियो को
मै सब दिशाओ मे तितर-बितर कर
दूगा; और तलवार खीचकर उनके पीछे
चलवाऊगा। १५ और जब मै उन्हे जाति
जाति मे तितर-बितर कर दूगा, और
देश देश में छिन्न भिन्न कर दूगा, तब वे
जान लेगे कि मै यहोवा हू। १६ परन्तु
मै उन मे से थोडे से लोगो को तलवार,
भूख और मरी से बचा रखूगा, और वे
अपने घृणित काम उन जातियो मे बखान
करेंगे जिनके बीच मे वे पहुचेगे, तब वे
जान लेंगे कि मै यहोवा हू।।

१७ तब यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान,
कापते हुए अपनी रोटी खाना और थरथराते
और चिन्ता करते हुए अपना पानी पीना,

१९ और इस देश के लोगों से यों कहना,
कि प्रभु यहोवा यरूशलेम और इस्राएल
के देश के निवासियों के विषय में यों
कहता है, वे अपनी रोटी चिन्ता के
साथ खाएंगे, और अपना पानी विस्मय
के साथ पीएंगे, क्योंकि देश अपने सब
रहनेवालों के उपद्रव के कारण अपनी सारी
भरपूरी से रहित हो जाएगा। २० और
बसे हुए नगर उजड़ जाएंगे, और देश भी
उजाड़ हो जाएगा, तब तुम लोग जान
लोगे कि मैं यहोवा हूं॥

२१ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, २२ हे मनुष्य के सन्तान यह
क्या कहावत है जो तुम लोग इस्राएल
के देश में कहा करते हो, कि दिन अधिक
हो गए हैं, और दर्शन की कोई बात पूरी
नहीं हुई*? २३ इसलिये उन से कह,
प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं इस कहावत
को बन्द करूंगा, और यह कहावत इस्राएल
पर फिर न चलेगी। और तू उन से कह
कि वह दिन निकट आ गया है, और
दर्शन की सब बातें पूरी होने पर हैं।
२४ क्योंकि इस्राएल के घराने में न तो
और अधिक झूठे दर्शन की कोई बात
और न कोई चिकनी-चुपड़ी बात फिर
कही जाएगी। २५ क्योंकि मैं यहोवा
हूं, जब मैं बोलूं, तब जो वचन मैं कहूं,
वह पूरा हो जाएगा। उस में विलम्ब
न होगा, परन्तु, हे बलवा करनेवाले घराने
तुम्हारे ही दिनों में मैं वचन कहूंगा,
और वह पूरा हो जाएगा, प्रभु यहोवा की
यही वाणी है॥

२६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, २७ हे मनुष्य के सन्तान,
देख, इस्राएल के घराने के लोग यह कह
रहे हैं कि जो दर्शन वह देखता है, वह
बहुत दिन के बाद पूरा होनेवाला है,
और कि वह दूर के समय के विषय में
भविष्यद्वाणी करता है। २८ इसलिये तू
उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है,
मेरे किसी वचन के पूरा होने में फिर
विलम्ब न होगा, वरन जो वचन मैं कहूं,
सो वह निश्चय पूरा होगा, प्रभु यहोवा की
यही वाणी है॥

१३ यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, इस्राएल के जो भविष्यद्वक्ता
अपने ही मन से भविष्यवाणी करते हैं,
उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करके तू कह,
यहोवा का वचन सुनो। ३ प्रभु यहोवा
यों कहता है, हाय, उन मूढ़ भविष्यद्वक्ताओं
पर जो अपनी ही आत्मा के पीछे भटक
जाते हैं, और कुछ दर्शन नहीं पाया!
४ हे इस्राएल, तेरे भविष्यद्वक्ता खण्डहरों
में की लोमड़ियों के समान बने हैं।
५ तुम ने नाकों में चढ़कर इस्राएल के
घराने के लिये भीत नहीं सुधारी, जिस से
वे यहोवा के दिन युद्ध में स्थिर रह सकते।
६ वे लोग जो कहते हैं, यहोवा की यह
वाणी है, उन्हों ने भावी का व्यर्थ और
झूठा दावा किया है, और तब भी यह
आशा दिलाई कि यहोवा यह वचन पूरा
करेगा, तौभी यहोवा ने उन्हें नहीं भेजा।
७ क्या तुम्हारा दर्शन झूठा नहीं है, और
क्या तुम झूठमूठ भावी नहीं कहते?
तुम कहते हो, कि यहोवा की यह वाणी
है, परन्तु मैं ने कुछ नहीं कहा है॥

८ इस कारण प्रभु यहोवा तुम से
यों कहता है, तुम ने जो व्यर्थ बात कही

* मूल में—सब दर्शन नाश हुए।

और झूठे दर्शन देखे है, इसलिये मै तुम्हारे
विरुद्ध हू, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ।।
९ जो भविष्यद्वक्ता झूठे दर्शन देखते
और झूठमूठ भावी कहते हैं, मेरा हाथ
उनके विरुद्ध होगा, और वे मेरी प्रजा
की गोष्ठी मे भागी न होगे, न उनके
नाम इस्राएल की नामावली मे लिखे
जाएगे, और न वे इस्राएल के देश मे
प्रवेश करने पाएगे, इस से तुम लोग
जान लोगे कि मै प्रभु यहोवा हू।
१० क्योकि, हा, क्योकि उन्हो ने "शान्ति
है", ऐसा कहकर मेरी प्रजा को बहकाया
है जब कि शान्ति नही है, और इसलिये
कि जब कोई भीत बनाता है तब वे
उसकी कच्ची लेसाई करते है। ११ उन
कच्ची लेसाई करनेवालो से कह कि वह
गिर जाएगी। क्योकि बडे जोर की
वर्षा होगी, और बडे बडे ओले भी गिरेगे,
और प्रचण्ड आधी उसे गिराएगी।
१२ सो जब भीत गिर जाएगी, तब क्या
लोग तुम से यह न कहेगे कि जो लेसाई
तुम ने की वह कहा रही? १३ इस
कारण प्रभु यहोवा तुम से यो कहता है,
मै जलकर उसको प्रचण्ड आधी के द्वारा
गिराऊगा, और मेरे कोप से भारी वर्षा
होगी, और मेरी जलजलाहट से बडे बडे
ओले गिरेगे कि भीत को नाश करे।
१४ इस रीति जिस भीत पर तुम ने
कच्ची लेसाई की है, उसे मै ढा दूगा,
वरन मिट्टी मे मिलाऊगा, और उसकी
नेव खुल जाएगी, और जब वह गिरेगी,
तब तुम भी उसके नीचे दबकर नाश
होगे, और तुम जान लोगे कि मै यहोवा
हू। १५ इस रीति मै भीत और उसकी
कच्ची लेसाई करनेवाले दोनो पर अपनी
जलजलाहट पूर्ण रीति से भडकाऊगा,
फिर तुम से कहूगा, न तो भीत रही, और
न उसके लेसनेवाले रहे, १६ अर्थात्
इस्राएल के वे भविष्यद्वक्ता जो यरूशलेम के
विषय मे भविष्यद्वाणी करते और उनकी
शान्ति का दर्शन बताते थे, परन्तु प्रभु
यहोवा की यह वाणी है, कि शान्ति है ही
नही ।।
१७ फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू
अपने लोगो की स्त्रियो * से विमुख होकर,
जो अपने ही मन से भविष्यद्वाणी करती
है, उनके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके
कह, १८ प्रभु यहोवा यो कहता है,
जो स्त्रिया हाथ के सब जोड़ो के लिये
तकिया सीती और प्राणियो का अहेर
करने को सब प्रकार के मनुष्यो की आख
ढापने के लिये कपडे बनाती है, उन पर
हाय! क्या तुम मेरी प्रजा के प्राणो का
अहेर करके अपने निज प्राण बचा
रखोगी? १९ तुम ने तो मुट्ठी मुट्ठी भर जव
और रोटी के टुकडो के बदले मुझे मेरी
प्रजा की दृष्टि मे अपवित्र ठहराकर, और
अपनी उन झूठी बातो के द्वारा, जो मेरी
प्रजा के लोग तुम से सुनते है, जो नाश
के योग्य न थे, उनको मार डाला; और
जो बचने के योग्य न थे उन प्राणो को
बचा रखा है ।।
२० इस कारण प्रभु यहोवा तुम से
यो कहता है, देखो, मै तुम्हारे उन तकियो
के विरुद्ध हू, जिनके द्वारा तुम प्राणो का
अहेर करती हो, इसलिये जिन्हे तुम अहेर
कर करके उडाती हो उनको मै तुम्हारी
बाह पर से छीनकर उनको छुडा दूगा।
२१ मै तुम्हारे सिर के बुर्के को फाडकर
अपनी प्रजा के लोगो को तुम्हारे हाथ

* मूल में—बेटियों।

से छुड़ाऊंगा, और आगे को वे तुम्हारे
वश में न रहेंगे कि तुम उनका अहेर कर
सको, तब तुम जान लोगी कि मैं यहोवा
हूं। २२ तुम ने जो झूठ कहकर धर्मी
के मन को उदास किया है, यद्यपि मैं ने
उसको उदास करना नहीं चाहा, और
तुम ने दुष्ट जन को हियाव बन्धाया हैं,
ताकि वह अपने बुरे मार्ग से न फिरे और
जीवित रहे। २३ इस कारण तुम फिर
न तो झूठा दर्शन देखोगी, और न भावी
कहोगी, क्योंकि मैं अपनी प्रजा को तुम्हारे
हाथ से छुड़ाऊंगा। तब तुम जान लोगी
कि मैं यहोवा हूं॥

१४ फिर इस्राएल के कितने पुरनिये
मेरे पास आकर मेरे साम्हने
बैठ गए। २ तब यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुंचा, ३ हे मनुष्य के सन्तान,
इन पुरुषों ने तो अपनी मूरतें अपने मन
में स्थापित कीं, और अपने अधर्म की
ठोकर अपने साम्हने रखी है, फिर क्या
वे मुझ से कुछ भी पूछने पाएंगे? ४ सो
तू उन से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है,
कि इस्राएल के घराने में से जो कोई
अपनी मूरतें अपने मन में स्थापित करके,
और अपने अधर्म की ठोकर अपने साम्हने
रखकर भविष्यद्वक्ता के पास आए, उसको,
मैं यहोवा, उसकी बहुत सी मूरतों के
अनुसार ही उत्तर दूंगा, ५ जिस से
इस्राएल का घराना, जो अपनी मूरतों के
द्वारा मुझे त्यागकर दूर हो गया है,
उन्हें मैं उन्हीं के मन के द्वारा फंसाऊंगा॥
६ सो इस्राएल के घराने से कह,
प्रभु यहोवा यों कहता है, फिरो और
अपनी मूरतों को पीठ के पीछे करो,
और अपने सब घृणित कामों से मुंह
मोड़ो। ७ क्योंकि इस्राएल के घराने में
से और उसके बीच रहनेवाले परदेशियों
में से भी कोई क्यों न हो, जो मेरे पीछे हो
लेना छोड़कर अपनी मूरतें अपने मन में
स्थापित करे, और अपने अधर्म की ठोकर
अपने साम्हने रखे, और तब मुझ से
अपनी कोई बात पूछने के लिये भविष्यद्वक्ता
के पास आए, तो उसको, मैं यहोवा आप
ही उत्तर दूंगा। ८ और मैं उस मनुष्य
के विरुद्ध होकर उसको विस्मित करूंगा,
और चिन्ह ठहराऊंगा, और उसकी
कहावत चलाऊंगा और उसे अपनी प्रजा
में से नाश करूंगा, तब तुम लोग जान
लोगे कि मैं यहोवा हूं। ९ और यदि
भविष्यद्वक्ता ने धोखा खाकर कोई वचन
कहा हो, तो जानो कि मुझ यहोवा ने
उस भविष्यद्वक्ता को धोखा दिया है,
और मैं अपना हाथ उसके विरुद्ध बढ़ाकर
उसे अपनी प्रजा इस्राएल में से नाश
करूंगा। १० वे सब लोग अपने अप
अधर्म का बोझ उठाएंगे, अर्थात् जैस
भविष्यद्वक्ता से पूछनेवाले का अध
ठहरेगा, वैसा ही भविष्यद्वक्ता का भं
अधर्म ठहरेगा। ११ ताकि इस्राएल क
घराना आगे को मेरे पीछे हो लेना न छो
और न अपने भांति भांति के अपराधो
के द्वारा आगे को अशुद्ध बने, वरन वे
मेरी प्रजा बनें और मैं उनका परमेश्वर
ठहरूं, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥
१२ और यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, १३ हे मनुष्य के सन्तान,
जब किसी देश के लोग मुझ से विश्वासघात
करके पापी हो जाएं, और मैं अपना हाथ
उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर उसका अन्नरूपी
आधार दूर करूं, और उस में अकाल
डालकर उस में से मनुष्य और पशु [illegible]॥

को नाश करू, १४ तव चाहे उस मे
नूह, दानिय्येल और अय्यूव ये तीनो पुरुप
हो, तौभी वे अपने धर्म के द्वारा केवल
अपने ही प्राणो को वचा सकेंगे, प्रभु
यहोवा की यही वाणी है। १५ यदि मै
किसी देश मे दुप्ट जन्तु भेजू जो उसको
निर्जन करके उजाड कर डाले, और
जन्तुओ के कारण कोई उस मे होकर न
जाए, १६ तो चाहे उस मे वे तीन पुरुष
हो, तौभी प्रभु यहोवा की यह वाणी
है, मेरे जीवन की सौगन्ध, न वे पुत्रो को
और न पुत्रियो को वचा सकेंगे, वे ही अकेले
वचेंगे, परन्तु देश उजाड हो जाएगा।
१७ और यदि मै उस देश पर तलवार
खीचकर कहू, हे तलवार उस देश मे
चल, और इस रीति मै उस मे से मनुष्य
और पशु नाश करू, १८ तव चाहे उस
मे वे तीन पुरुप भी हो, तौभी प्रभु यहोवा
की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध,
न तो वे पुत्रो को और न पुत्रियो को वचा
सकेंगे, वे ही अकेले वचेंगे। १९ यदि मै
उस देश मे मरी फैलाऊ और उस पर अपनी
जलजलाहट भडकाकर * उसका लोहू ऐसा
वहाऊ कि वहा के मनुष्य और पशु दोनो
नाश हो, २० तो चाहे नूह, दानिय्येल
और अय्यूव भी उस मे हो, तौभी, प्रभु
यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की
सौगन्ध, वे न पुत्रो को और न पुत्रियो को
वचा सकेंगे, अपने धर्म के द्वारा वे केवल
अपने ही प्राणो को वचा सकेंगे॥

२१ क्योकि प्रभु यहोवा यो कहता है,
मै यरूशलेम पर अपने चारो दण्ड पहुचा-
ऊगा, अर्थात् तलवार, अकाल, दुप्ट
जन्तु और मरी, जिन से मनुष्य और पशु
सव उस मे से नाश हो। २२ तौभी
उस मे थोडे से पुत्र-पुत्रिया वचेंगी जो
वहा से निकालकर तुम्हारे पास पहुचाई
जाएगी, और तुम उनके चालचलन और
कामो को देखकर उस विपत्ति के विपय
मे जो मै यरूशलेम पर डालूगा, वरन
जितनी विपत्ति मै उस पर डालूगा, उस सव
के विपय मे शान्ति पाओगे। २३ जव
तुम उनका चालचलन और काम देखो,
तव वे तुम्हारी शान्ति के कारण होंगे,
और तुम जान लोगे कि मै ने यरूशलेम मे
जो कुछ किया, वह विना कारण नही
किया, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१५ फिर यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, २ हे मनुष्य
के सन्तान, सव वृक्षो मे अगूर की लता
की क्या श्रेष्ठता है? अगूर की शाखा जो
जगल के पेडो के वीच उत्पन्न होती है,
उस मे क्या गुण है? ३ क्या कोई वस्तु
वनाने के लिये उस मे से लकडी ली
जाती, वा कोई वर्तन टागने के लिये उस
मे से खूटी वन सकती है? ४ वह
तो ईन्धन वनाकर आग मे झोकी
जाती है, उसके दोनो सिरे आग से जल
जाते, और उसके वीच का भाग भस्म
हो जाता है, क्या वह किसी भी काम की
है? ५ देख, जव वह वनी थी, तव भी
वह किसी काम की न थी, फिर जव वह
आग का ईन्धन होकर भस्म हो गई है,
तव किस काम की हो सकती है? ६ सो
प्रभु यहोवा यो कहता है, जैसे जगल के
पेडो मे से मै अगूर की लता को आग का
ईन्धन कर देता हू, वैसे ही मै यरूशलेम के
निवासियो को नाश कर दूगा। ७ मै
उन से विरुद्ध हूगा, और वे एक आग मे से

* मूल मे—उण्डेलकर।

निकलकर फिर दूसरी आग का ईन्धन हो
जाएंगे, और जब मैं उन से विमुख हूंगा,
तब तुम लोग जान लोगे कि मैं यहोवा हूं।
८ और मैं उनका देश उजाड़ दूंगा, क्योंकि
उन्हों ने मुझ से विश्वासघात किया है, प्रभु
यहोवा की यही वाणी है॥

१६ फिर यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, यरूशलेम को उसके सब घृणित
काम जता दे। ३ और उस से कह, हे
यरूशलेम, प्रभु यहोवा तुझ से यों कहता
है, तेरा जन्म और तेरी उत्पत्ति कनानियों
के देश से हुई, तेरा पिता तो एमोरी और
तेरी माता हित्तिन थी। ४ और तेरा
जन्म ऐसे हुआ कि जिस दिन तू जन्मी,
उस दिन न तेरा नाल काटा गया, न तू
शुद्ध होने के लिये धोई गई, न तेरे कुछ
लोन मला गया और न तू कुछ कपड़ों
में लपेटी गई। ५ किसी की दयादृष्टि
तुझ पर नहीं हुई कि इन कामों में से
तेरे लिये एक भी काम किया जाता,
वरन अपने जन्म के दिन तू घृणित होने
के कारण खुले मैदान में फेंक दी गई थी॥
६ और जब मैं तेरे पास से होकर
निकला, और तुझे लोहू में लोटते हुए
देखा, तब मैं ने तुझ से कहा, हे लोहू में
लोटती हुई जीवित रह, हां, तुझ ही से
मैं ने कहा, हे लोहू में लोटती हुई, जीवित
रह। ७ फिर मैं ने तुझे खेत के बिरूले की
नाईं बढ़ाया, और तू बढ़ते बढ़ते बड़ी हो
गई और अति सुन्दर हो गई, तेरी छातियां
सुडौल हुईं, और तेरे बाल बढ़े, तौभी तू
नंगी थी॥
८ मैं ने फिर तेरे पास से होकर जाते
हुए तुझे देखा, और अब तू पूरी स्त्री हो
गई थी, सो मैं ने तुझे अपना वस्त्र ओढ़ाकर
तेरा तन ढांप दिया, और सौगन्ध खाकर
तुझ से वाचा बान्धी, और तू मेरी हो गई,
प्रभु यहोवा की यही वाणी है। ९ तब
मैं ने तुझे जल से नहलाकर तुझ पर से लोहू
धो दिया, और तेरी देह पर तेल मला।
१० फिर मैं ने तुझे बूटेदार वस्त्र और
सूइसों के चमड़े की जूतियां पहिनाईं,
और तेरी कमर में सूक्ष्म सन बान्धा, और
तुझे रेशमी कपड़ा ओढ़ाया। ११ तब
मैं ने तेरा शृंगार किया, और तेरे हाथों
में चूड़ियां और गले में तोड़ा पहिनाया।
१२ फिर मैं ने तेरी नाक में नत्थ और तेरे
कानों में बालियां पहिनाईं, और तेरे सिर
पर शोभायमान मुकुट धरा। १३ तेरे
आभूषण सोने चान्दी के और तेरे वस्त्र
सूक्ष्म सन, रेशम और बूटेदार कपड़े के
बने, फिर तेरा भोजन मैदा, मधु और तेल
हुआ, और तू अत्यन्त सुन्दर, वरन रानी
होने के योग्य हो गई। १४ और तेरी
सुन्दरता की कीर्त्ति अन्यजातियों में फैल
गई, क्योंकि उस प्रताप के कारण, जो मैं
ने अपनी ओर से तुझे दिया था, तू अत्यन्त
सुन्दर थी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥
१५ परन्तु तू अपनी सुन्दरता पर
भरोसा करके अपनी नामवरी के कारण
व्यभिचार करने लगी, और सब यात्रियों
के संग बहुत कुकर्म किया, और जो कोई
तुझे चाहता था तू उसी से मिलती थी।
१६ तू ने अपने वस्त्र लेकर रंग बिरंग
के ऊंचे स्थान बना लिए, और उन पर
व्यभिचार किया, ऐसे कुकर्म किए जो
न कभी हुए और न होंगे। १७ और तू
ने अपने सुशोभित गहने लेकर जो मेरे
दिए हुए सोने-चान्दी के थे, उन से पुरुषों
की मूरतें बना लीं, और [illegible] भी व्यभिचार

करने लगी, १८ और अपने बूटेदार
वस्त्र लेकर उनको पहिनाए, और मेरा
तेल और मेरा धूप उनके साम्हने चढाया।
१९ और जो भोजन मैं ने तुझे दिया था,
अर्थात् जो मैदा, तेल और मधु मैं तुझे
खिलाता था, वह सब तू ने उनके साम्हने
सुखदायक सुगन्ध करके रखा, प्रभु यहोवा
की यही वाणी है कि यो ही हुआ।
२० फिर तू ने अपने पुत्र-पुत्रिया लेकर
जिन्हे तू ने मेरे लिये जन्म दिया, उन
मूरतो को नैवेद्य करके चढाईं। क्या
तेरा व्यभिचार ऐसी छोटी बात थी,
२१ कि तू ने मेरे लडकेवाले उन मूरतो
के आगे आग मे चढाकर घात किए हैं?
२२ और तू ने अपने सब घृणित कामो मे
और व्यभिचार करते हुए, अपने बचपन
के दिनो की कभी सुधि न ली, जब कि
तू नगी अपने लोहू मे लोटती थी॥

२३ और तेरी उस सारी बुराई के पीछे
क्या हुआ? २४ प्रभु यहोवा की यह
वाणी है, हाय, तुझ पर हाय! कि तू ने
एक गुम्मट बनवा लिया, और हर एक
चौक मे एक ऊचा स्थान बनवा लिया,
२५ और एक एक सडक के सिरे पर
भी तू ने अपना ऊचा स्थान बनवाकर
अपनी सुन्दरता घृणित करा दी, और
हर एक यात्री को कुकर्म के लिये बुलाकर
महाव्यभिचारिणी हो गई। २६ तू ने
अपने पडोसी मिस्री लोगो से भी, जो
मोटे-ताजे है, व्यभिचार किया और
मुझे क्रोध दिलाने के लिये अपना व्यभिचार
बढाती गई। २७ इस कारण मै ने
अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढाकर, तेरा
प्रति दिन का खाना घटा दिया, और
तेरी बैरिन पलिश्ती स्त्रिया जो तेरे महापाप
की चाल [illegible] है, उनकी इच्छा पर
मैं ने तुझे छोड दिया है। २८ फिर भी
तेरी तृष्णा न बुझी, इसलिये तू ने अश्शूरी
लोगो से भी व्यभिचार किया; और उन से
व्यभिचार करने पर भी तेरी तृष्णा न
बुझी। २९ फिर तू लेन देन के देश मे
व्यभिचार करते करते कसदियो के देश
तक पहुची, और वहा भी तेरी तृष्णा न
बुझी॥

३० प्रभु यहोवा की यह वाणी है,
कि तेरा हृदय कैसा चचल है कि तू ये
सब काम करती है, जो निर्लज्ज वेश्या ही
के काम है? ३१ तू ने हर एक सडक के
सिरे पर जो अपना गुम्मट, और हर
चौक मे अपना ऊचा स्थान बनवाया है,
क्या इसी मे तू वेश्या के समान नही
ठहरी? क्योकि तू ऐसी कमाई पर हसती
है। ३२ तू व्यभिचारिणी पत्नी है। तू
पराये पुरुषो को अपने पति की सन्ती
ग्रहण करती है। ३३ सब वेश्याओ को
तो रुपया मिलता है, परन्तु तू ने अपने
सब मित्रो को स्वय रुपए देकर, और
उनको लालच दिखाकर बुलाया है कि
वे चारो ओर से आकर तुझ से व्यभिचार
करे। ३४ इस प्रकार तेरा व्यभिचार
और व्यभिचारियो से उलटा है। तेरे
पीछे कोई व्यभिचारी नही चलता, और
तू किसी से दाम लेती नही, वरन तू ही
देती है, इसी कारण तू उलटी ठहरी॥

३५ इस कारण, हे वेश्या, यहोवा का
वचन सुन, ३६ प्रभु यहोवा यो कहता है,
कि तू ने जो व्यभिचार मे अति
निर्लज्ज होकर, अपनी देह अपने मित्रो
को दिखाई, और अपनी मूरतो से घृणित
काम किए, और अपने लडकेवालो का
लोहू बहाकर उन्हे बलि चढाया है,
३७ इस कारण देख, मैं तेरे सब मित्रो

को जो तेरे प्रेमी हैं और जितनों से तू
ने प्रीति लगाई, और जितनों से तू ने
बैर रखा, उन सभों को चारों ओर से
तेरे विरुद्ध इकट्ठा करके उनको तेरी देह
नंगी करके दिखाऊंगा, और वे तेरा तन
देखेंगे। ३८ तब मैं तुझ को ऐसा दण्ड
दूंगा, जैसा व्यभिचारिणियों और लोहू
बहानेवाली स्त्रियों को दिया जाता है,
और क्रोध और जलन के साथ तेरा लोहू
बहाऊंगा। ३९ इस रीति मैं तुझे उनके
वश में कर दूंगा, और वे तेरे गुम्मटों को
ढा देंगे, और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़
देंगे, वे तेरे वस्त्र बरबस उतारेंगे, और
तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे, और तुझे
नंगा करके छोड़ देंगे। ४० तब तेरे
विरुद्ध एक सभा इकट्ठी करके वे तुझ को
पत्थरवाह करेंगे, और अपनी कटारों से
वारपार छेदेंगे। ४१ तब वे आग लगाकर
तेरे घरों को जला देंगे, और तुझे बहुत
सी स्त्रियों के देखते दण्ड देंगे, और मैं
तेरा व्यभिचार बन्द करूंगा, और तू
फिर छिनाले के लिये दाम न देगी।
४२ और जब मैं तुझ पर पूरी जलजलाहट
प्रगट कर चुकूंगा, तब तुझ पर और न
जलूंगा वरन शान्त हो जाऊंगा, और
फिर न रिसियाऊंगा। ४३ तू ने जो
अपने बचपन के दिन स्मरण नहीं रखे,
वरन इन सब बातों के द्वारा मुझे चिढ़ाया,
इस कारण मैं तेरा चालचलन तेरे सिर
पर डालूंगा और तू अपने सब पिछले
घृणित कामों से और अधिक महापाप
न करेगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी
है॥

४४ देख, सब कहावत कहनेवाले तेरे
विषय यह कहावत कहेंगे, कि जैसी मां
वैसी पुत्री। ४५ तेरी मां जो अपने पति
और लड़केवालों से घृणा करती थी,
तू भी ठीक उसकी पुत्री ठहरी, और
तेरी बहिनें जो अपने अपने पति और
लड़केवालों से घृणा करती थीं, तू भी
ठीक उनकी बहिन निकली। तेरी माता
हित्तिन और पिता एमोरी था। ४६ तेरी
बड़ी बहिन शोमरोन है, जो अपनी पुत्रियों
समेत तेरी बाईं ओर रहती है, और तेरी
छोटी बहिन, जो तेरी दहिनी ओर रहती
है वह पुत्रियों समेत सदोम है। ४७ तू
उनकी सी चाल नहीं चली, और न उनके
से घृणित कामों ही से सन्तुष्ट हुई, यह
तो बहुत छोटी बात ठहरती, परन्तु तेरा
सारा चालचलन उन से भी अधिक बिगड़
गया। ४८ प्रभु यहोवा की यह वाणी
है, मेरे जीवन की सौगन्ध, तेरी बहिन
सदोम ने अपनी पुत्रियों समेत तेरे और
तेरी पुत्रियों के समान काम नहीं किए।
४९ देख, तेरी बहिन सदोम का अधर्म यह
था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड
करती, पेट भर भरके खाती, और सुख
चैन से रहती थी, और दीन दरिद्र को
न संभालती थी। ५० सो वह गर्व
करके मेरे साम्हने घृणित काम करने लगी,
और यह देखकर मैं ने उन्हें दूर कर दिया।
५१ फिर शोमरोन ने तेरे पापों के आधे
भी पाप नहीं किए, तू ने तो उस से बढ़कर
घृणित काम किए, और अपने घोर घृणित
कामों के द्वारा अपनी बहिनों को जीत
लिया*। ५२ सो तू ने जो अपनी बहिनों
का न्याय किया, इस कारण लज्जित
हो क्योंकि तू ने उन से बढ़कर घृणित
पाप किए हैं, इस कारण वे तुझ से कम
दोषी ठहरी हैं। सो तू इस बात से लज्जा

* मूल में—निर्दोष ठहराया।

कर और लजाती रह, क्योंकि तू ने अपनी
बहिनो को कम दोषी ठहराया है ।।
५३ जब मैं उनको अर्थात् पुत्रियों
सहित सदोम और शोमरोन को बधुआई
से फेर लाऊगा, तब उनके बीच ही तेरे
बधुओ को भी फेर लाऊगा, ५४ जिस
से तू लजाती रहे, और अपने सब कामो
को देखकर लजाए, क्योंकि तू उनकी
शान्ति ही का कारण हुई है। ५५ और
तेरी बहिनें सदोम और शोमरोन अपनी
अपनी पुत्रियो समेत अपनी पहिली दशा
को फिर पहुचेगी, और तू भी अपनी
पुत्रियो सहित अपनी पहिली दशा को फिर
पहुचेगी। ५६ जब तक तेरी बुराई प्रगट
न हुई थी, अर्थात् जिस समय तक तू
आस पास के लोगो समेत अरामी और
पलिश्ती स्त्रियो की जो अब चारो ओर
से तुझे तुच्छ जानती है, नामधराई करती
थी, ५७ उन अपने घमण्ड के दिनो मे तो
तू अपनी बहिन सदोम का नाम भी न
लेती थी। ५८ परन्तु अब तुझ को अपने
महापाप और घृणित कामो का भार
आप ही उठाना पडा है, यहोवा की यही
वाणी है ।।
५९ प्रभु यहोवा यह कहता है, मै
तेरे साथ ऐसा ही बर्ताव करूगा, जैसा
तू ने किया है, क्योंकि तू ने तो वाचा तोडकर
शपथ तुच्छ जानी है, ६० तौभी मै
तेरे बचपन के दिनो की अपनी वाचा
स्मरण करूगा, और तेरे साथ सदा की
वाचा बान्धूगा। ६१ और जब तू अपनी
बहिनो को अर्थात् अपनी बडी और छोटी
बहिनो को ग्रहण करे, तब तू अपना चाल-
चलन स्मरण करके लज्जित होगी,
और मै उन्हें तेरी पुत्रिया ठहरा दूगा;
परन्तु यह तेरी वाचा के अनुसार न करूगा।
६२ मै तेरे साथ अपनी वाचा स्थिर
करूगा, और तब तू जान लेगी कि मै
यहोवा हू, ६३ जिस से तू स्मरण करके
लज्जित हो, और लज्जा के मारे फिर कभी
मुह न खोले। यह उस समय होगा, जब
मै तेरे सब कामो को ढापूगा, प्रभु यहोवा
की यही वाणी है ।।

१७ यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, इस्राएल के घराने से यह पहेली
और दृष्टान्त कह, प्रभु यहोवा यो कहता
है, ३ एक लम्बे पखवाले, परो से भरे
और रङ्ग बिरङ्गे बडे उकाब पक्षी ने
लबानोन जाकर एक देवदार की फुनगी
नोच ली। ४ तब उस ने उस फुनगी
की सब से ऊपर की पतली टहनी को
तोड लिया, और उसे लेन देन करनेवालो
के देश मे ले जाकर ब्योपारियो के एक
नगर मे लगाया। ५ तब उस ने देश
का कुछ बीज लेकर एक उपजाऊ खेत मे
बोया, और उसे बहुत जल भरे स्थान मे
मजनू की नाई लगाया। ६ और वह
उगकर छोटी फैलनेवाली अगूर की लता
हो गई जिसकी डालिया उसकी ओर
झुकी, और उसकी सोर उसके नीचे
फैली, इस प्रकार से वह अगूर की लता
होकर कनखा फोडने और पत्तो से भरने
लगी ।।
७ फिर और एक लम्बे पखवाला और
परो से भरा हुआ बडा उकाब पक्षी था,
और वह अगूर की लता उस स्थान से
जहा वह लगाई गई थी, उस दूसरे उकाब
की ओर अपनी सोर फैलाने और अपनी
डालिया झुकाने लगी कि वह उसे खीचा
करे। ८ वह तो [illegible]

भूमि में बहुत जल के पास लगाई गई थी,
कि कनखाए फोडे, और फले, और उत्तम
अगूर की लता बने। ६ सो तू यह कह,
कि प्रभु यहोवा यो पूछता है, क्या वह
फूले फलेगी? क्या वह उसको जड मे
न उखाडेगा, और उसके फलो को न
झाड डालेगा कि वह अपनी सब हरी नई
पत्तियो समेत सूख जाए? इसे जड से
उखाडने के लिये अधिक बल और बहुत
से मनुष्यो की आवश्यकता न होगी।
१० चाहे, वह लगी भी रहे, तौभी क्या
वह फूले फलेगी? जब पुरवाई उसे लगे,
तब क्या वह बिलकुल सूख न जाएगी?
वह तो जहा उगी है उसी क्यारी में
सूख जाएगी॥

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, उस बलवा करनेवाले घराने
से कह, १२ क्या तुम इन बातो का अर्थ
नही समझते? फिर उन से कह, बाबुल के
राजा ने यरूशलेम को जाकर उसके राजा
और और प्रधानो को लेकर अपने यहा
बाबुल मे पहुचाया। १३ तब राजवश
में से एक पुरुष को लेकर उस से वाचा
बान्धी, और उसको वश मे रहने की शपथ
खिलाई, और देश के सामर्थी पुरुषो को
ले गया १४ कि वह राज्य निर्बल रहे
और सिर न उठा सके, वरन वाचा पालने
से स्थिर रहे। १५ तौभी इस ने घोडे
और बडी सेना मागने को अपने दूत मिस्र
में भेजकर उस से बलवा किया। क्या
वह फूले फलेगा? क्या ऐसे कामो का
करनेवाला बचेगा? क्या वह अपनी वाचा
तोडने पर भी बच जाएगा? १६ प्रभु
यहोवा यो कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध,
जिस राजा की खिलाई हुई शपथ उस ने
तुच्छ जानी, और जिसकी वाचा उस ने
तोडी, उसके यहा जिस ने उसे राजा
बनाया था, अर्थात् बाबुल में ही वह उसके
पास ही मर जाएगा। १७ और जब वे
बहुत से प्राणियो को नाश करने के लिये
दमदमा बान्धे, और गढ बनाए, तब
फिरौन अपनी बडी सेना और बहुतो की
मण्डली रहते भी युद्ध मे उसकी सहायता
न करेगा। १८ क्योकि उस ने शपथ को
तुच्छ जाना, और वाचा को तोडा, देखो,
उस ने वचन देने पर भी ऐसे ऐसे काम
किए है, सो वह बचने न पाएगा। १९ प्रभु
यहोवा यो कहता है कि मेरे जीवन की
सौगन्ध, उस ने मेरी शपथ तुच्छ जानी,
और मेरी वाचा तोडी है, यह पाप मैं
उसी के सिर पर डालूगा। २० और मैं
अपना जाल उस पर फैलाऊगा और वह
मेरे फन्दे में फसेगा, और मैं उसको
बाबुल में पहुचाकर उस विश्वासघात
का मुकद्दमा उस से लडूगा, जो उस ने
मुझ से किया है। २१ और उसके सब
दलो में से जितने भागे वे सब तलवार से
मारे जाएगे, और जो रह जाए सो चारो
दिशाओ में तितर-बितर हो जाएगे।
तब तुम लोग जान लोगे कि मुझ यहोवा
ही ने ऐसा कहा है॥

२२ फिर प्रभु यहोवा यो कहता है,
मैं भी देवदार की ऊची फुनगी में से कुछ
लेकर लगाऊगा, और उसकी सब से
ऊपरवाली कनखाओ मे से एक कोमल
कनखा तोडकर एक अति ऊचे पर्वत पर
लगाऊगा। २३ अर्थात् इस्राएल के ऊचे
पर्वत पर लगाऊगा, सो वह डालिया फोड-
कर बलवन्त और उत्तम देवदार बन
जाएगा, और उसके नीचे अर्थात् उसकी
डालियो की छाया मे भाति भाति के सब
पक्षी बसेरा करेगे। २४ तब मैदान के

सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने
ऊंचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को
ऊंचा किया, हरे वृक्ष को सुखा दिया, और
सूखे वृक्ष को फुलाया फलाया है। मुझ
यहोवा ही ने यह कहा और वैसा ही कर
भी दिया है॥

१८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, २ तुम लोग जो
इस्राएल के देश के विषय में यह कहावत
कहते हो, कि जंगली अंगूर तो पुरखा लोग
खाते, परन्तु दांत खट्टे होते हैं लड़केबालों
के। इसका क्या अर्थ है? ३ प्रभु यहोवा
यों कहता है कि मेरे जीवन की शपथ, तुम
को इस्राएल में फिर यह कहावत कहने
का अवसर न मिलेगा। ४ देखो, सभों
के प्राण तो मेरे हैं, जैसा पिता का प्राण,
वैसा ही पुत्र का भी प्राण है, दोनों मेरे
ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही
मर जाएगा॥

५ जो कोई धर्मी हो, और न्याय और
धर्म के काम करे, ६ और न तो पहाड़ों पर
भोजन किया हो, न इस्राएल के घराने
की मूरतों की ओर आंखें उठाई हों,
न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, और न
ऋतुमती के पास गया हो, ७ और न
किसी पर अन्धेर किया हो वरन ऋणी
को उसकी बन्धक फेर दी हो, न किसी को
लूटा हो, वरन भूखे को अपनी रोटी दी
हो और नंगे को कपड़ा ओढ़ाया हो,
८ न ब्याज पर रुपया दिया हो, न रुपए
की बढ़ती ली हो, और अपना हाथ कुटिल
काम से रोका हो, मनुष्य के बीच सच्चाई
से न्याय किया हो, ९ और मेरी विधियों
पर चलता और मेरे नियमों को मानता
हुआ सच्चाई से काम किया हो, ऐसा
मनुष्य धर्मी है, वह निश्चय जीवित रहेगा,
प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥

१० परन्तु यदि उसका पुत्र डाकू,
हत्यारा, वा ऊपर कहे हुए पापों में से
किसी का करनेवाला हो, ११ और ऊपर
कहे हुए उचित कामों का करनेवाला न हो,
और पहाड़ों पर भोजन किया हो, पराई
स्त्री को बिगाड़ा हो, १२ दीन दरिद्र
पर अन्धेर किया हो, औरों को लूटा हो,
बन्धक न फेर दी हो, मूरतों की ओर आंख
उठाई हो, घृणित काम किया हो,
१३ ब्याज पर रुपया दिया हो, और
बढ़ती ली हो, तो क्या वह जीवित रहेगा?
वह जीवित न रहेगा, इसलिये कि उस
ने ये सब घिनौने काम किए हैं वह निश्चय
मरेगा और उसका खून उसी के सिर
पड़ेगा॥

१४ फिर यदि ऐसे मनुष्य के पुत्र हो
और वह अपने पिता के ये सब पाप
देखकर भय के मारे उनके समान न
करता हो। १५ अर्थात् न तो पहाड़ों पर
भोजन किया हो, न इस्राएल के
घराने की मूरतों की ओर आंख उठाई
हो, न पराई स्त्री को बिगाड़ा हो, १६ न
किसी पर अन्धेर किया हो, न कुछ बन्धक
लिया हो, न किसी को लूटा हो, वरन
अपनी रोटी भूखे को दी हो, नंगे को
कपड़ा ओढ़ाया हो, १७ दीन जन की
हानि करने से हाथ रोका हो, ब्याज और
बढ़ती न ली हो, मेरे नियमों को माना
हो, और मेरी विधियों पर चला हो,
तो वह अपने पिता के अधर्म के कारण
न मरेगा, वरन जीवित ही रहेगा।
१८ उसका पिता, जिस ने अन्धेर किया
और लूटा, और अपने भाइयों के बीच
अनुचित काम किया है, वही अपने अधर्म

के कारण मर जाएगा। १९ तौभी तुम
लोग कहते हो, क्यों? क्या पुत्र पिता के
अधर्म का भार नहीं उठाता? जब पुत्र
ने न्याय और धर्म के काम किए हों,
और मेरी सब विधियों का पालन कर उन
पर चला हो, तो वह जीवित ही रहेगा।
२० जो प्राणी पाप करे वही मरेगा,
न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा
और न पिता पुत्र का, धर्मी को अपने ही
धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही
दुष्टता का फल मिलेगा। २१ परन्तु
यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर,
मेरी सब विधियों का पालन करे और
न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न
मरेगा वरन जीवित ही रहेगा। २२ उस
ने जितने अपराध किए हों, उन में से
किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया
जाएगा, जो धर्म का काम उस ने किया
हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा।
२३ प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या
मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता
हूं? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि
वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?
२४ परन्तु जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर
टेढ़े काम, वरन दुष्ट के सब घृणित कामों
के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित
रहेगा? जितने धर्म के काम उस ने
किए हों, उन में से किसी का स्मरण न
किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप
उस ने किया हो, उसके कारण वह मर
जाएगा॥

२५ तौभी तुम लोग कहते हो, कि
प्रभु की गति एकसी नहीं। हे इस्राएल
के घराने, देख, क्या मेरी गति एकसी
नहीं? क्या तुम्हारी ही गति अनुचित
नहीं है? २६ जब धर्मी अपने धर्म से
फिरकर, टेढ़े काम करने लगे, तो वह
उनके कारण मरेगा, अर्थात् वह अपने
टेढ़े काम ही के कारण मर जाएगा।
२७ फिर जब दुष्ट अपने दुष्ट कामों से
फिरकर, न्याय और धर्म के काम करने
लगे, तो वह अपना प्राण बचाएगा।
२८ वह जो सोच विचार कर अपने सब
अपराधों से फिरा, इस कारण न मरेगा,
जीवित ही रहेगा। २९ तौभी इस्राएल
का घराना कहता है कि प्रभु की गति
एकसी नहीं। हे इस्राएल के घराने,
क्या मेरी गति एकसी नहीं? क्या तुम्हारी
ही गति अनुचित नहीं?

३० प्रभु यहोवा की यह वाणी है,
हे इस्राएल के घराने, मैं तुम में से हर
एक मनुष्य का न्याय उसकी चालचलन
के अनुसार ही करूंगा। पश्चात्ताप करो
और अपने सब अपराधों को छोड़ो, तभी
तुम्हारा अधर्म तुम्हारे ठोकर खाने का
कारण न होगा। ३१ अपने सब अपराधों
को जो तुम ने किए हैं, दूर करो, अपना
मन और अपनी आत्मा बदल डालो!
हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरो?
३२ क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है
जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं
होता, इसलिये पश्चात्ताप करो, तभी तुम
जीवित रहोगे॥

१९ और इस्राएल के प्रधानों के
विषय तू यह विलापगीत सुना,
२ तेरी माता एक कैसी सिंहनी थी! वह
सिंहों के बीच बैठा करती और अपने बच्चों
को जवान सिंहों के बीच पालती पोसती
थी। ३ अपने बच्चों में से उस ने एक
को पाला और वह जवान सिंह हो गया,
और अहेर पकड़ना सीख गया, उस ने

मनुष्यों को भी फाड खाया। ४ और
जाति जाति के लोगो ने उसकी चर्चा
सुनी, और उसे अपने खोदे हुए गडहे
में फसाया, और उसके नकेल डालकर उसे
मिस्र देश में ले गए। ५ जब उसकी
मा ने देखा कि वह धीरज धरे रही तौभी
उसकी आशा टूट गई, तब अपने एक
और बच्चे को लेकर उसे जवान सिंह
कर दिया। ६ तब वह जवान सिंह होकर
सिंहो के बीच चलने फिरने लगा, और
वह भी अहेर पकडना सीख गया, और
मनुष्यो को भी फाड खाया। ७ और
उस ने उनके भवनो को बिगाडा, और
उनके नगरो को उजाडा वरन उसके
गरजने के डर के मारे देश और जो कुछ
उस में था सब उजड गया। ८ तब चारो
ओर के जाति जाति के लोग अपने अपने
प्रान्त मे उसके विरुद्ध निकल आए, और
उसके लिये जाल लगाया, और वह उनके
खोदे हुए गडहे में फस गया। ९ तब वे
उसके नकेल डालकर और कठघरे में
बन्द करके बाबुल के राजा के पास ले
गए, और गढ में बन्द किया, कि उसका
बोल इस्राएल के पहाड़ी देश मे फिर
सुनाई न दे॥

१० तेरी माता जिस से तू उत्पन्न
हुआ*, वह तीर पर लगी हुई दाखलता
के समान थी, और गहिरे जल के कारण
फलो और शाखाओ से भरी हुई थी।
११ और प्रभुता करनेवालो के राजदण्डो
के लिये उस मे मोटी मोटी टहनिया थी,
और उसकी ऊचाई इतनी हुई कि वह
बादलो के बीच तक पहुची, और अपनी
बहुत सी डालियो समेत बहुत ही लम्बी
दिखाई पडी। १२ तौभी वह जलजलाहट
के साथ उखाडकर भूमि पर गिराई गई,
और उसके फल पुरवाई हवा के लगने
से सूख गए, और उसकी मोटी टहनिया
टूटकर सूख गईं, और वे आग से भस्म
हो गईं। १३ अब वह जगल में, वरन
निर्जल देश में लगाई गई है। १४ और
उसकी शाखाओं की टहनियो में से आग
निकली, जिस से उसके फल भस्म हो
गए, और प्रभुता करने के योग्य राजदण्ड
के लिये उस में अब कोई मोटी टहनी न
रही॥

यही विलापगीत है, और यह विलापगीत
बना रहेगा॥

२० सातवें वर्ष के पाचवे महीने
के दसवे दिन को इस्राएल के
कितने पुरनिये यहोवा मे प्रश्न करने को
आए, और मेरे साम्हने बैठ गए। २ तब
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुचा,
३ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएली पुरनियो
से यह कह, प्रभु यहोवा यो कहता है,
क्या तुम मुझ से प्रश्न करने को आए हो?
प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि मेरे
जीवन की सौगन्ध, तुम मुझ से प्रश्न
करने न पाओगे। ४ हे मनुष्य के सन्तान,
क्या तू उनका न्याय न करेगा? क्या
तू उनका न्याय न करेगा? उनके पुरखाओ
के घिनौने काम उन्हे जता दे, ५ और
उन से कह, प्रभु यहोवा यो कहता है,
जिस दिन मै ने इस्राएल को चुन लिया,
और याकूब के घराने के वंश मे शपथ
खाई, और मिस्र देश मे अपने को उन पर
प्रगट किया, और उन से शपथ खाकर कहा,
मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू, ६ उसी
दिन मैं ने उन से यह भी शपथ खाई, कि

* मूल में—मेरे लोहू में।

में तुम को मिस्र देश से निकालकर एक
देश में पहुंचाऊगा, जिसे मैं ने तुम्हारे
लिये चुन लिया है, वह सब देशो का
शिरोमणि है, और उस में दूध और मधु
की धाराए बहती हैं। ७ फिर मैं ने
उन से कहा, जिन घिनौनी वस्तुओ पर तुम
में से हर एक की आखें लगी हैं, उन्हें फेंक
दो, और मिस्र की मूरतो से अपने को
अशुद्ध न करो, मैं ही तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हू। ८ परन्तु वे मुझ से बिगड
गए और मेरी सुननी न चाही, जिन
घिनौनी वस्तुओ पर उनकी आखें लगी
थी, उनको किसी ने फेंका नही, और न
मिस्र की मूरतो को छोडा ॥

तब मैं ने कहा, मैं यही, मिस्र देश के
बीच तुम पर अपनी जलजलाहट भडका-
ऊगा* और पूरा कोप दिखाऊगा।
९ तौभी मैं ने अपने नाम के निमित्त
ऐसा किया कि जिनके बीच वे थे, और
जिनके देखते हुए मैं ने उनको मिस्र देश
से निकलने के लिये अपने को उन पर प्रगट
किया था उन जातियो के साम्हने वे
अपवित्र न ठहरे। १० मैं उनको मिस्र
देश से निकालकर जगल में ले आया।
११ वहा उनको मैं ने अपनी विधिया
बताई और अपने नियम भी बताए कि
जो मनुष्य उनको माने, वह उनके कारण
जीवित रहेगा। १२ फिर मैं ने उनके
लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे
और उनके बीच चिन्ह ठहरे, कि वे
जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करनेवाला
हू। १३ तौभी इस्राएल के घराने ने
जगल में मुझ से बलवा किया, वे मेरी
विधियो पर न चले, और मेरे नियमो को

* मूल में—उण्डेलूगा।

तुच्छ जाना, जिन्हें यदि मनुष्य माने तो वह
उनके कारण जीवित रहेगा, और उन्हों
ने मेरे विश्रामदिनो को अति अपवित्र
किया ॥

तब मैं ने कहा, मैं जगल में इन पर
अपनी जलजलाहट भडकाकर* इनका
अन्त कर डालूगा। १४ परन्तु मैं ने अपने
नाम के निमित्त ऐसा किया कि वे उन
जातियो के साम्हने, जिनके देखते मैं
उनको निकाल लाया था, अपवित्र न
ठहरे। १५ फिर मैं ने जगल में उन से
शपथ खाई कि जो देश मैं ने उनको दे
दिया, और जो सब देशो का शिरोमणि
है, जिस में दूध और मधु की धाराए
बहती है, उस में उन्हें न पहुंचाऊगा,
१६ क्योकि उन्हो ने मेरे नियम तुच्छ
जाने और मेरी विधियो पर न चले, और
मेरे विश्रामदिन अपवित्र किए थे, इसलिये
कि उनका मन उनकी मूरतो की ओर
लगा रहा। १७ तौभी मैं ने उन पर
कृपा की दृष्टि की, और उन्हें नाश न
किया, और न जगल में पूरी रीति से
उनका अन्त कर डाला ॥

१८ फिर मैं ने जगल में उनकी सन्तान
से कहा, अपने पुरखाओ की विधियो
पर न चलो, न उनकी रीतियो को मानो
और न उनकी मूरतें पूजकर अपने को
अशुद्ध करो। १९ मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हू, मेरी विधियो पर चलो, और
मेरे नियमो के मानने में चौकसी करो,
२० और मेरे विश्रामदिनो को पवित्र
मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह
ठहरें, और जिस से तुम जानो कि मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हू। २१ परन्तु

* मूल में—उण्डेलकर।

उनकी सन्तान ने भी मुझ से बलवा किया,
वे मेरी विधियो पर न चले, न मेरे नियमो
के मानने मे चौकसी की, जिन्हे यदि मनुष्य
माने तो वह उनके कारण जीवित रहेगा,
मेरे विश्रामदिनो को उन्हो ने अपवित्र
किया ।।

तब मै ने कहा, मै जगल मे उन पर
अपनी जलजलाहट भडकाकर* अपना
कोप दिखलाऊगा। २२ तौभी मै ने हाथ
खीच लिया, और अपने नाम के निमित्त
ऐसा किया, कि उन जातियो के साम्हने
जिनके देखते हुए मै उन्हे निकाल लाया
था, वे अपवित्र न ठहरे। २३ फिर मै
ने जगल मे उन से शपथ खाई, कि मै
तुम्हे जाति जाति मे तितर-बितर करूगा,
और देश देश मे छितरा दूगा, २४ क्योकि
उन्हो ने मेरे नियम न माने, मेरी विधियो
को तुच्छ जाना, मेरे विश्रामदिनो को
अपवित्र किया, और अपने पुरखाओ की
मूरतो की ओर उनकी आखे लगी रही।
२५ फिर मै ने उनके लिये ऐसी ऐसी
विधिया ठहराईं जो अच्छी न थी और
ऐसी ऐसी रीतिया जिनके कारण वे
जीवित न रह सके, २६ अर्थात् वे अपने
सब पहिलौठो को आग मे होम करने लगे,
इस रीति मै ने उन्हे उन्ही की भेटो के
द्वारा अशुद्ध किया जिस से उन्हे निर्वंश कर
डालू, और तब वे जान ले कि मै यहोवा
हू ।।

२७ हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल
के घराने से कह, प्रभु यहोवा यो कहता है,
तुम्हारे पुरखाओ ने इस मे भी मेरी
निन्दा की कि उन्हो ने मेरा विश्वासघात
किया। २८ क्योकि जब मै ने उनको

* मूल मे—उण्डेलकर।

उस देश मे पहुचाया, जिसके उन्हे देने की
शपथ मै ने उन से खाई थी, तब वे हर एक
ऊचे टीले और हर एक घने वृक्ष पर दृष्टि
करके वही अपने मेलबलि करने लगे,
और वही रिस दिलानेवाली अपनी भेटे
चढाने लगे और वही अपना सुखदायक
सुगन्धद्रव्य जलाने लगे, और वही अपने
तपावन देने लगे। २९ तब मै ने उन
से पूछा, जिस ऊचे स्थान को तुम लोग
जाते हो, उस से क्या प्रयोजन है? इसी
से उसका नाम आज तक बामा* कहलाता
है। ३० इसलिये इस्राएल के घराने से
कह, प्रभु यहोवा तुम से यह पूछता है,
क्या तुम भी अपने पुरखाओ की रीति पर
चलकर अशुद्ध होकर, और उनके घिनौने
कामो के अनुसार व्यभिचारिणी की नाईं
काम करते हो? ३१ आज तक जब
जब तुम अपनी भेटे चढाते और अपने
लडकेबालो को होम करके आग मे चढाते
हो, तब तब तुम अपनी मूरतो के निमित्त
अशुद्ध ठहरते हो। हे इस्राएल के घराने,
क्या तुम मुझ से पूछने पाओगे? प्रभु
यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की
शपथ तुम मुझ से पूछने न पाओगे ।।

३२ जो बात तुम्हारे मन मे आती है
कि हम काठ और पत्थर के उपासक होकर
अन्यजातियो और देश देश के कुलो के
समान हो जाएगे, वह किसी भाति पूरी
नही होने की ।।

३३ प्रभु यहोवा यो कहता है, मेरे
जीवन की शपथ मै निश्चय बली हाथ
और बढाई हुई भुजा से, और भडकाई†
हुई जलजलाहट के साथ तुम्हारे ऊपर
राज्य करूगा। ३४ मै बली हाथ और

* मूल मे—ऊचा स्थान।
† अर्थात् उण्डेली।

बढ़ाई हुई भुजा से, और भड़काई* हुई
जलजलाहट के साथ तुम्हें देश देश के लोगों
में से अलग करूंगा, और उन देशों से जिन
में तुम तितर-बितर हो गए थे, इकट्ठा
करूंगा, ३५ और मैं तुम्हें देश देश के
लोगों के जंगल में ले जाकर, वहां
आम्हने-साम्हने तुम से मुकद्दमा लड़ूंगा।
३६ जिस प्रकार मैं तुम्हारे पूर्वजों
से मिस्र देशरूपी जंगल में मुकद्दमा
लड़ता था, उसी प्रकार तुम से मुकद्दमा
लड़ूंगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।
३७ मैं तुम्हें लाठी के तले चलाऊंगा,
और तुम्हें वाचा के बन्धन में डालूंगा।
३८ मैं तुम में से सब बलवाइयों को
निकालकर जो मेरा अपराध करते हैं,
तुम्हें शुद्ध करूंगा, और जिस देश में
वे टिकते हैं उस में से मैं उन्हें निकाल दूंगा,
परन्तु इस्राएल के देश में घुसने न दूंगा।
तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं॥

३९ और हे इस्राएल के घराने तुम से
तो प्रभु यहोवा यों कहता है कि जाकर
अपनी अपनी मूरतों की उपासना करो,
और यदि तुम मेरी न सुनोगे, तो आगे को
भी यही किया करो, परन्तु मेरे पवित्र नाम
को अपनी भेंटों और मूरतों के द्वारा फिर
अपवित्र न करना॥

४० क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी
है कि इस्राएल का सारा घराना अपने देश
में मेरे पवित्र पर्वत पर, इस्राएल के
ऊंचे पर्वत पर, सब का सब मेरी उपासना
करेगा, वहीं मैं उन से प्रसन्न हूंगा,
और वहीं मैं तुम्हारी उठाई हुई भेंट और
चढ़ाई हुई उत्तम उत्तम वस्तुएं, और
तुम्हारी सब पवित्र की हुई वस्तुएं तुम से
लिया करूंगा। ४१ जब मैं तुम्हें देश
देश के लोगों में से अलग करूं और उन
देशों से जिन में तुम तितर-बितर हुए
हो, इकट्ठा करूं, तब तुम को सुखदायक
सुगन्ध जानकर ग्रहण करूंगा, और अन्य
जातियों के साम्हने तुम्हारे द्वारा पवित्र
ठहराया जाऊंगा। ४२ और जब मैं तुम्हें
इस्राएल के देश में पहुंचाऊं, जिसके देने
की शपथ मैं ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी,
तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं।
४३ और वहां तुम अपनी चालचलन और
अपने सब कामों को जिनके करने से तुम
अशुद्ध हुए हो स्मरण करोगे, और अपने
सब बुरे कामों के कारण अपनी दृष्टि में
घिनौने ठहरोगे। ४४ और हे इस्राएल
के घराने, जब मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे
बुरे चालचलन और बिगड़े हुए कामों के
अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही नाम के
निमित्त बर्ताव करूं, तब तुम जान लोगे
कि मैं यहोवा हूं, प्रभु यहोवा की यही
वाणी है॥

४५ और यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, ४६ हे मनुष्य के सन्तान,
अपना मुख दक्खिन की ओर कर, दक्खिन
की ओर वचन सुना, और दक्खिन देश
के वन के विषय में भविष्यद्वाणी कर,
४७ और दक्खिन देश के वन से कह,
यहोवा का यह वचन सुन, प्रभु यहोवा
यों कहता है, मैं तुझ में आग लगाऊंगा,
और तुझ में क्या हरे, क्या सूखे, जितने
पेड़ हैं, सब को वह भस्म करेगी, उसकी
धधकती ज्वाला न बुझेगी, और उसके
कारण दक्खिन से उत्तर तक सब के
मुख झुलस जाएंगे। ४८ तब सब प्राणियों
को सूझ पड़ेगा कि यह आग यहोवा
की लगाई हुई है, और वह कभी न

* अर्थात् उण्डेली।

बुझेंगी। ४६ तब मैं ने कहा, हाय
परमेश्वर यहोवा! लोग तो मेरे विषय
मे कहा करते है कि क्या वह दृष्टान्त
ही का कहनेवाला नही है?

२१ यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, अपना मुख यरूशलेम की ओर
कर और पवित्रस्थानो की ओर वचन
सुना*, इस्राएल देश के विषय मे
भविष्यद्वाणी कर और उस से कह,
३ प्रभु यहोवा यो कहता है, देख, मै
तेरे विरुद्ध हू, और अपनी तलवार मियान
मे से खीचकर तुझ मे से धर्मी और अधर्मी
दोनो को नाश करूगा। ४ इसलिये कि
मै तुझ मे से धर्मी और अधर्मी सब को
नाश करनेवाला हू, इस कारण मेरी
तलवार मियान से निकलकर दक्खिन
से उत्तर तक सब प्राणियो के विरुद्ध
चलेगी; ५ तब सब प्राणी जान लेगे
कि यहोवा ने मियान मे से अपनी तलवार
खीची है; और वह उस मे फिर रखी
न जाएगी। ६ सो हे मनुष्य के सन्तान,
तू आह मार, भारी खेद कर, और टूटी
कमर लेकर लोगो के साम्हने आह मार।
७ और जब वे तुझ से पूछे कि तू क्यो
आह मारता है, तब कहना, समाचार के
कारण। क्योकि ऐसी बात आनेवाली है
कि सब के मन टूट जाएगे और सब के
हाथ ढीले पडेगे, सब की आत्मा बेबस
और सब के घुटने निर्बल† हो जाएगे।
देखो, ऐसी ही बात आनेवाली है, और
वह अवश्य पूरी होगी, परमेश्वर यहोवा
की यही वाणी है॥

* मूल में—फिरकर टपका।
† मूल में—जल की नाईं निर्बल।

८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, हे मनुष्य के सन्तान,
भविष्यद्वाणी करके कह, ९ परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, देख, सान चढाई
हुई तलवार, और झलकाई हुई तलवार!
१० वह इसलिये सान चढाई गई कि
उस से घात किया जाए, और इसलिये
झलकाई गई कि बिजली की नाई चमके!
तो क्या हम हर्षित हो? वह तो यहोवा
के* पुत्र का राजदण्ड है और सब पेडो
को तुच्छ जाननेवाला है। ११ और वह
झलकाने को इसलिये दी गई कि हाथ
मे ली जाए, वह इसलिये सान चढाई
और झलकाई गई कि घात करनेवालो
के हाथ मे दी जाए। १२ हे मनुष्य के
सन्तान चिल्ला, और हाय, हाय, कर!
क्योकि वह मेरी प्रजा पर चला चाहती
है, वह इस्राएल के सारे प्रधानो पर चला
चाहती है, मेरी प्रजा के सग वे भी
तलवार के वश मे आ गए। इस
कारण तू अपनी छाती† पीट। १३ क्योकि
सचमुच उसकी जाच हुई है, और यदि
उसे तुच्छ जाननेवाला राजदण्ड भी न
रहे, तो क्या? परमेश्वर यहोवा की
यही वाणी है॥

१४ सो हे मनुष्य के सन्तान,
भविष्यद्वाणी कर, और हाथ पर हाथ दे
मार, और तीन बार तलवार का बल
दुगुना किया जाए, वह तो घात करने की
तलवार वरन बडे से बडे के घात करने
की तलवार है, जिस से कोठरियो मे भी
कोई नही बच सकता‡। १५ मै ने घात
करनेवाली तलवार को उनके सब फाटको

* मूल में—मेरे। † मूल में—जाघ।
‡ मूल में—जो उनकी कोठरियों में पैठती है।

के विरुद्ध इसलिये चलाया है कि लोगो के
मन टूट जाए, और वे बहुत ठोकर खाए।
हाय, हाय! वह तो बिजली के समान
बनाई गई, और घात करने को सान
चढाई गई है। १६ सिकुडकर दहिनी
ओर जा, फिर तैयार होकर बाई ओर
मुड, जिधर भी तेरा मुख हो। १७ मै भी
ताली बजाऊगा और अपनी जलजलाहट को
ठडा करूगा, मुझ यहोवा ने ऐसा कहा है ॥

१८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, १९ हे मनुष्य के सन्तान,
दो माग ठहरा ले कि बाबुल के राजा की
तलवार आए, दोनो माग एक ही देश
से निकले। फिर एक चिन्ह कर, अर्थात्
नगर के मार्ग के सिर पर एक चिन्ह कर,
२० एक माग ठहरा कि तलवार
अम्मोनिया के रब्बा नगर पर, और यहूदा
देश के गढवाले नगर यरूशलेम पर भी
चले। २१ क्योकि बाबुल का राजा
तिर्मुहाने अर्थात् दोनो मार्गो के निकलने
के स्थान पर भावी बूझने को खडा हुआ
है, उस ने तीरो को हिला दिया, और
गृहदेवताओ से प्रश्न किया, और कलेजे
को भी देखा। २२ उसके दहिने हाथ
मे यरूशलेम का नाम * है कि वह उसकी
ओर युद्ध के यन्त्र लगाए, और गला
फाडकर घात करने की आज्ञा दे और ऊचे
शब्द से ललकारे, फाटको की ओर युद्ध के
यन्त्र लगाए और दमदमा बान्धे और
कोट बनाए। २३ परन्तु लोग तो उस
भावी कहने को मिथ्या समझेगे, उन्हो ने
जो उनकी शपथ खाई है, इस कारण
वह उनके अधर्म का स्मरण कराकर
उन्हे पकड लेगा ॥

२४ इस कारण प्रभु यहोवा यो कहता
है, इसलिये कि तुम्हारा अधर्म जो स्मरण
किया गया है, और तुम्हारे अपराध जो
खुल गए है, क्योकि तुम्हारे सब कामो
मे पाप ही पाप दिखाई पडा है, और
तुम स्मरण मे आए हो, इसलिये तुम
उन्ही से पकडे जाओगे। २५ और हे
इस्राएल दुष्ट प्रधान, तेरा दिन आ गया
है, अधर्म के अन्त का समय पहुच गया
है। २६ तेरे विषय मे परमेश्वर यहोवा
यो कहता है, पगडी उतार, और मुकुट
भी उतार दे, वह ज्यो का त्यो नही
रहने का, जो नीचा है उसे ऊचा कर
और जो ऊचा है उसे नीचा कर। २७ मै
इसको उलट दूगा और उलट पुलट कर
दूगा, हा उलट दूगा और जब तक
उसका अधिकारी न आए तब तक
वह उलटा हुआ रहेगा, तब मै उसे दे
दूगा ॥

२८ फिर हे मनुष्य के सन्तान,
भविष्यद्वाणी करके कह कि प्रभु यहोवा
अम्मोनियो और उनकी की हुई नामधराई
के विषय मे यो कहता है, तू यो कह,
खीची हुई तलवार है, वह तलवार घात
के लिये झलकाई हुई है कि नाश करे
और बिजली के समान हो—२९ जब
तक कि वे तेरे विषय मे झूठे दर्शन पाते,
और झूठे भावी तुझ को बताते है—कि
तू उन दुष्ट असाध्य घायलो की गर्दनो
पर पडे जिनका दिन आ गया, और जिनके
अधर्म के अन्त का समय आ पहुचा है।
३० उसको मियान मे फिर रख। जिस
स्थान मे तू सिरजी गई और जिस देश
मे तेरी उत्पत्ति हुई, उसी मे मै तेरा न्याय
करूगा। ३१ और मै तुझ पर अपना

* मूल में—भावी।

क्रोध भड़काऊंगा * और तुझ पर अपनी
जलजलाहट की आग फूंक दूंगा, और
तुझे पशु सरीखे मनुष्य के हाथ कर दूंगा
जो नाश करने मे निपुण है। ३२ तू
आग का कौर होगी, तेरा खून देश मे
बना रहेगा, तू स्मरण मे न रहेगी
क्योकि मुझ यहोवा ही ने ऐसा कहा है ।।

२२ और यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, क्या तू उस हत्यारे नगर का
न्याय न करेगा? क्या तू उसका न्याय
न करेगा? उसको उसके सब घिनौने
काम जता दे, ३ और कह, परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, हे नगर तू अपने
बीच मे हत्या करता है जिस से तेरा
समय आए, और अपनी ही हानि करने
और अशुद्ध होने के लिये मूरतें बनाता
है। ४ जो हत्या तू ने की है, उस से
तू दोषी ठहरी, और जो मूरते तू ने बनाई
हैं, उनके कारण तू अशुद्ध हो गई है,
तू ने अपने अन्त के दिन को समीप कर
लिया, और अपने पिछले वर्षो तक पहुच
गई है। इस कारण मै ने तुझे जाति
जाति के लोगो की ओर से नामधराई
का, और सब देशो के ठट्ठे का कारण
कर दिया है। ५ हे बदनाम, हे हुल्लड
से भरे हुए नगर, जो निकट और जो
दूर है, वे सब तुझे ठट्ठो मे उडाएगे ।।

६ देख, इस्राएल के प्रधान लोग
अपने अपने बल के अनुसार तुझ मे हत्या
करनेवाले हुए है। ७ तुझ मे माता-
पिता तुच्छ जाने गए है, तेरे बीच परदेशी
पर अन्धेर किया गया, और अनाथ
और विधवा तुझ मे पीसी गई हैं। ८ तू
ने मेरी पवित्र वस्तुओ को तुच्छ जाना,
और मेरे विश्रामदिनो को अपवित्र किया
है। ९ तुझ मे लुच्चे लोग हत्या करने
का तत्पर हुए, और तेरे लोगो ने पहाडो
पर भोजन किया है, तेरे बीच महापाप
किया गया है। १० तुझ मे पिता की
देह उघारी गई, तुझ मे ऋतुमती स्त्री
से भी भोग किया गया है। ११ किसी
ने तुझ मे पडोसी की स्त्री के साथ घिनौना
काम किया, और किसी ने अपनी बहू
को बिगाडकर महापाप किया है, और
किसी ने अपनी बहिन अर्थात् अपने पिता
की बेटी को भ्रष्ट किया है। १२ तुझ
मे हत्या करने के लिये उन्हो ने घूस ली
है, तू ने व्याज और सूद लिया और अपने
पडोसियो को पीस पीसकर अन्याय से
लाभ उठाया, और मुझ को तू ने भुला
दिया है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है ।।

१३ सो देख, जो लाभ तू ने अन्याय से
उठाया और अपने बीच हत्या की है,
उस से मै ने हाथ पर हाथ दे मारा है।
१४ सो जिन दिनो मै तेरा न्याय करूगा,
क्या उन मे तेरा हृदय दृढ और तेरे
हाथ स्थिर रह सकेगे? मुझ यहोवा ने
यह कहा है, और ऐसा ही करूगा।
१५ मै तेरे लोगो को जाति जाति मे
तितर-बितर करूगा, और देश देश मे
छितरा दूगा, और तेरी अशुद्धता को तुझ
मे से नाश करूगा। १६ और तू जाति
जाति के देखते हुए अपनी ही दृष्टि मे
अपवित्र ठहरेगी, तब तू जान लेगी कि
मै यहोवा हू ।।

१७ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल
का घराना मेरी दृष्टि मे धातु का मैल
हो गया है, वे सब के सब भट्ठी के बीच

* मूल में—उण्डेलूगा।

के पीतल और रांगे और लोहे और शीशे
के समान बन गए, वे चान्दी के मैल के
समान हो गए हैं। १६ इस कारण
प्रभु यहोवा उन से यों कहता है, इसलिये
कि तुम सब के सब धातु के मैल के समान
बन गए हो, सो देखो, मैं तुम को यरूशलेम
के भीतर इकट्ठा करने पर हूं। २० जैसे
लोग चान्दी, पीतल, लोहा, शीशा, और
रांगा इसलिये भट्ठी के भीतर बटोरकर
रखते हैं कि उन्हें आग फूंककर पिघलाएं,
वैसे ही मैं तुम को अपने कोप और जल-
जलाहट से इकट्ठा करके वहीं रखकर
पिघला दूंगा। २१ मैं तुम को वहां
बटोरकर अपने रोष की आग से फूंकूंगा,
और तुम उसके बीच पिघलाए जाओगे।
२२ जैसे चान्दी भट्ठी के बीच में पिघलाई
जाती है, वैसे ही तुम उसके बीच में
पिघलाए जाओगे, तब तुम जान लोगे
कि जिस ने हम पर अपनी जलजलाहट
भड़काई* है, वह यहोवा है॥

२३ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, २४ हे मनुष्य के सन्तान,
उस देश से कह, तू ऐसा देश है जो शुद्ध
नहीं हुआ, और जलजलाहट के दिन में
तुझ पर वर्षा नहीं हुई। २५ तेरे
भविष्यद्वक्ताओं ने तुझ में राजद्रोह की
गोष्ठी की, उन्हों ने गरजनेवाले सिंह की
नाईं अहेर पकड़ा और प्राणियों को खा
डाला है, वे रखे हुए अनमोल धन को
छीन लेते हैं और तुझ में बहुत स्त्रियों
को विधवा कर दिया है। २६ उसके
याजकों ने मेरी व्यवस्था का अर्थ खींच-
खांचकर लगाया है, और मेरी पवित्र
वस्तुओं को अपवित्र किया है, उन्हों ने
पवित्र-अपवित्र का कुछ भेद नहीं माना,
और न औरों को शुद्ध-अशुद्ध का भेद
सिखाया है, और वे मेरे विश्रामदिनों के
विषय में निश्चिन्त रहते हैं*, जिस से
मैं उनके बीच अपवित्र ठहरता हूं।
२७ उसके प्रधान हुंडारों की नाईं अहेर
पकड़ते, और अन्याय से लाभ उठाने के
लिये हत्या करते हैं और प्राण घात करने
को तत्पर रहते हैं। २८ और उसके
भविष्यद्वक्ता उनके लिये कच्ची लेसाई
करते हैं, उनका दर्शन पाना मिथ्या है,
यहोवा के बिना कुछ कहे भी वे यह कहकर
झूठी भावी बताते हैं कि "प्रभु यहोवा
यों कहता है"। २९ देश के साधारण
लोग भी अन्धेर करते और पराया धन
छीनते हैं, वे दीन दरिद्र को पीसते और
न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर
अन्धेर करते हैं। ३० और मैं ने उन में
ऐसा मनुष्य ढूंढ़ना चाहा जो बाड़े को
सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे
साम्हने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको
नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न
मिला। ३१ इस कारण मैं ने उन पर
अपना रोष भड़काया† और अपनी
जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर
दिया है, मैं ने उनकी चाल उन्हीं के सिर
पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की
यही वाणी है॥

२३ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
दो स्त्रियां थीं, जो एक ही मां की बेटी
थीं। ३ वे अपने बचपन ही में वेश्या
का काम मिस्र में करने लगीं, उनकी

* मूल में—उण्डेली।

* मूल में—अपनी आंखें छिपाते हैं।
† मूल में—उण्डेला।

छातिया कुवारपन मे पहिले वही मीजी
गई और उनका मरदन भी हुआ। ४ उन
लडकियो मे से बडी का नाम ओहोला
और उसकी बहिन का नाम ओहोलीबा
था। वे मेरी हो गई, और उनके पुत्र
पुत्रिया उत्पन्न हुई। उनके नामो मे मे
ओहोला तो शोमरोन, और ओहोलीबा
यरूशलेम है ॥

५ ओहोला जब मेरी थी, तब ही
व्यभिचारिणी होकर अपने मित्रो पर
मोहित होने लगी जो उसके पडोसी
अश्शूरी थे। ६ वे तो सब के सब नीले
वस्त्र पहिननेवाले मनभावने जवान, अधि-
पति और प्रधान थे, और घोडो पर सवार
थे। ७ सो उस ने उन्ही के साथ व्यभिचार
किया जो सब के सब सर्वोत्तम अश्शूरी
थे, और जिस किसी पर वह मोहित
हुई, उसी की मूरतो मे वह अशुद्ध हुई।
८ जो व्यभिचार उस ने मिस्र मे सीखा
था, उसको भी उस ने न छोडा, क्योकि
बचपन मे मनुष्यो ने उसके साथ कुकर्म
किया, और उसकी छातिया मीजी, और
तन-मन से उसके साथ व्यभिचार किया
गया था। ९ इस कारण मै ने उसको
उन्ही अश्शूरी मित्रो के हाथ कर दिया
जिन पर वह मोहित हुई थी। १० उन्हो
ने उसको नगी किया, उसके पुत्र-पुत्रिया
छीनकर उसको तलवार मे घात किया,
इस प्रकार उनके हाथ से दण्ड पाकर वह
स्त्रियो मे प्रसिद्ध हो गई ॥

११ उसकी बहिन ओहोलीबा ने यह
देखा, तौभी वह मोहित होकर व्यभिचार
करने म अपनी बहिन मे भी अधिक बढ
गई। १२ वह अपने अश्शूरी पडोसियो
पर मोहित होती थी, जो सब के सब
अति सुन्दर वस्त्र पहिननेवाले और घोडो
के सवार मनभावने, जवान अधिपति
और और प्रकार के प्रधान थे। १३ तब
मै ने देखा कि वह भी अशुद्ध हो गई,
उन दोनो बहिनो की एक ही चाल थी।
१४ परन्तु ओहोलीबा अधिक व्यभिचार
करती गई, सो जब उस ने भीत पर
सेंदूर से खीचे हुए ऐसे कसदी पुरुषो के
चित्र देखे १५ जो कटि मे फेटे बान्धे
हुए, सिर मे छोर लटकती हुई रगीली
पगडिया पहिने हुए, और सब के सब
अपनी कसदी जन्मभूमि अर्थात् बाबुल
के लोगो * की रीति पर प्रधानो का रूप
धरे हुए थे, १६ तब उनको देखते ही
वह उन पर मोहित हुई और उनके पास
कसदियो के देश मे दूत भेजे। १७ सो
बाबुली लोग उसके पास पलग पर आए,
और उसके साथ व्यभिचार करके उसे
अशुद्ध किया, और जब वह उन से
अशुद्ध हो गई, तब उसका मन उन मे
फिर गया। १८ तौभी जब वह तन
उघाडती और व्यभिचार करती गई,
तब मेरा मन जैसे उसकी बहिन से फिर
गया था, वैसे ही उस से भी फिर गया।
१९ इस पर भी वह मिस्र देश के अपने
बचपन के दिन स्मरण करके जब वह
वेश्या का काम करती थी, और अधिक
व्यभिचार करती गई, २० और ऐसे
मित्रो पर मोहित हुई, जिनका मास गदहो
का सा, और वीर्य घोडो का सा था।
२१ तू इस प्रकार मे अपने बचपन के उस
समय के महापाप का स्मरण कराती है जब
मिस्री लोग तेरी छातिया मीजते थे ॥

२२ इस कारण हे ओहोलीबा, पर-
मेश्वर यहोवा तुझ से यो कहता है, देख,

---

* मूल में—बेटों।

म तेरे मित्रो को उभारकर जिन से तेरा
मन फिर गया चारो ओर से तेरे विरुद्ध
ले आऊगा। २३ अर्थात् बाबुलियो और
सब कसदियो को, और पकोद, शो और
कोआ के लोगो को, और उनके साथ सब
अश्शूरियो को लाऊगा जो सब के सब
घोडो के सवार मनभावने जवान अधिपति,
और कई प्रकार के प्रतिनिधि, प्रधान और
नामी पुरुष है। २४ वे लोग हथियार,
रथ, छकडे और देश देश के लोगो का
दल लिए हुए तुझ पर चढाई करेंगे,
और ढाल और फरी और टोप धारण
किए हुए तेरे विरुद्ध चारो ओर पाति
बाधेंगे, और मै उन्ही के हाथ न्याय का
काम सौपूगा, और वे अपने अपने नियम
के अनुसार तेरा न्याय करेंगे। २५ और
म तुझ पर जलूगा, जिस से वे जलजलाहट
के साथ तुझ से बर्ताव करेंगे। वे तेरी
नाक और कान काट लगे, और तेरा जो
भी बचा रहेगा वह तलवार से मारा
जाएगा। वे तेरे पुत्र-पुत्रियो को छीन
ले जाएगे, और तेरा जो भी बचा रहेगा,
वह आग से भस्म हो जाएगा। २६ वे
तेरे वस्त्र भी उतारकर तेरे सुन्दर-सुन्दर
गहने छीन ले जाएगे। २७ इस रीति
से म तेरा महापाप और जो वेश्या का
काम तू ने मिस्र देश मे सीखा था, उसे
भी तुझ से छुडाऊगा, यहा तक कि तू
फिर अपनी आख उनकी ओर न लगाएगी
और न मिस्र देश को फिर स्मरण करेगी।
२८ क्योकि प्रभु यहोवा तुझ से यो कहता
है, देख, म तुझे उनके हाथ सौपूगा जिन
से तू बैर रखती है और जिन से तेरा मन
फिर गया है, २९ और वे तुझ से बैर
के साथ बर्ताव करेंगे, और तेरी सारी
कमाई को उठा लेंगे, और तुझे नगा करके
छोड देंगे, और तेरे तन के उघाडे जाने
से तेरा व्यभिचार और महापाप प्रगट
हो जाएगा। ३० ये काम तुझ से इस
कारण किए जाएगे क्योकि तू अन्यजातियो
के पीछे व्यभिचारिणी की नाईं हो गई,
और उनकी मूरते पूजकर अशुद्ध हो गई
है। ३१ तू अपनी बहिन की लीक पर
चली है, इस कारण म तेरे हाथ मे उसका
सा कटोरा दूगा। ३२ प्रभु यहोवा यो
कहता है, अपनी बहिन के कटोरे से
तुझे पीना पडेगा जो गहिरा और चौडा
है, तू हसी और ठट्ठो मे उडाई जाएगी,
क्योकि उस कटोरे मे बहुत कुछ समाता
है। ३३ तू मतवालेपन और दु ख से
छक जाएगी। तू अपनी बहिन शोमरोन
के कटोरे को, अर्थात् विस्मय और उजाड
को पीकर छक जाएगी। ३४ उस मे से
तू गार गारकर पीएगी, और उसके ठिकरो
को भी चबाएगी और अपनी छातिया
घायल करेगी, क्योकि मै ही ने ऐसा
कहा है, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।
३५ तू ने जो मुझे भुला दिया है और
अपना मुह मुझ से फेर लिया है, इसलिये तू
आप ही अपने महापाप और व्यभिचार
का भार उठा, परमेश्वर यहोवा का यही
वचन है॥

३६ यहोवा ने मुझ से कहा, हे मनुष्य
के सन्तान, क्या तू ओहोला और ओहोलीबा
का न्याय करेगा? तो फिर उनके घिनौने
काम उन्हे जता दे। ३७ क्योकि उन्हो
ने व्यभिचार किया है, और उनके हाथो
मे खून लगा है, उन्हो ने अपनी मूरतो
के साथ व्यभिचार किया, और अपने
लडकेबाले जो मुझ से उत्पन्न हुए थे,
उन मूरतो के आगे भस्म होने के लिये
चढाए है। ३८ फिर उन्हो ने मुझ से

ऐसा बर्ताव भी किया कि उसी के साथ
मेरे पवित्रस्थान को भी अशुद्ध किया और
मेरे विश्रामदिनो को अपवित्र किया है।
३९ वे अपने लडकेवाले अपनी मूरतो के
साम्हने बलि चढाकर उसी दिन मेरा
पवित्रस्थान अपवित्र करने को उस मे
घुसी। देख, उन्हो ने इस भाति का काम
मेरे भवन के भीतर किया है। ४० और
उन्हो ने दूर से पुरुषो को बुलवा भेजा,
और वे चले भी आए। उनके लिये तू
नहा धो, आखो मे अजन लगा, गहने
पहिनकर, ४१ सुन्दर पलग पर बैठी
रही, और तेरे साम्हने एक मेज बिछी
हुई थी, जिस पर तू ने मेरा धूप और
मेरा तेल रखा था। ४२ तब उसके साथ
निश्चिन्त लोगो की भीड का कोलाहल
सुन पडा, और उन साधारण लोगो के
पास जगल से बुलाए हुए पियक्कड लोग
भी थे, उन्हो ने उन दोनो बहिनो के
हाथो मे चूडिया पहिनाई, और उनके
सिरो पर शोभायमान मुकुट रखे ॥

४३ तब जो व्यभिचार करते करते
बुढिया हो गई थी, उसके विषय मै बोल
उठा, अब तो वे उसी के साथ व्यभिचार
करेगे। ४४ क्योकि वे उसके पास ऐसे
गए जैसे लोग वेश्या के पास जाते है।
वैसे ही वे ओहोला और ओहोलीबा नाम
महापापिनी स्त्रियो के पास गए। ४५ सो
धर्मी लोग व्यभिचारिणियो और हत्यारो
के योग्य उसका न्याय करे, क्योकि वे
व्यभिचारिणी है, और उनके हाथो मे खून
लगा है ॥

४६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, मै एक भीड से उन पर चढाई
कराकर उन्हे ऐसा करूगा कि वे मारी मारी
फिरेगी और लूटी जाएगी। ४७ और
उस भीड के लोग उनको पत्थरवाह करके
उन्हे अपनी तलवारो से काट डालेगे,
तब वे उनके पुत्र-पुत्रियो को घात करके
उनके घर भी आग लगाकर फूक देगे।
४८ इस प्रकार मै महापाप को देश मे से
दूर करूगा, और सब स्त्रिया शिक्षा पाकर
तुम्हारा सा महापाप करने मे बची रहेगी।
४९ तुम्हारा महापाप तुम्हारे ही सिर
पडेगा, और तुम निश्चय अपनी मूरतो
की पूजा के पापो का भार उठाओगे,
और तब तुम जान लोगे कि मै परमेश्वर
यहोवा हू ॥

२४ नवे वर्ष के दसवे महीने के
दसवे दिन को, यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
आज का दिन लिख रख, क्योकि आज
ही के दिन बाबुल के राजा ने यरूशलेम
आ घेरा है। ३ और इस बलवई घराने
से यह दृष्टान्त कह, प्रभु यहोवा कहता
है, हण्डे को आग पर धर दो, उसे धरकर
उस मे पानी डाल दो, ४ तब उस मे
जाघ, कन्धा और सब अच्छे अच्छे टुकडे
बटोरकर रखो, और उसे उत्तम उत्तम
हड्डियो से भर दो। ५ झुड मे से सब
से अच्छे पशु लेकर उन हड्डियो को हण्डे
के नीचे ढेर करो, और उनको भली-भाति
पकाओ ताकि भीतर ही हड्डिया भी पक
जाए ॥

६ इसलिये प्रभु यहोवा यो कहता है,
हाय, उस हत्यारी नगरी पर! हाय उस
हण्डे पर! जिसका मोर्चा उस मे बना
है और छूटा नही, उस मे से टुकडा
टुकडा करके निकाल लो, उस पर चिट्ठी
न डाली जाए। ७ क्योकि उस नगरी
मे किया हुआ खून उस मे है, उस ने

उसे भूमि पर डालकर धूलि से नही
ढापा, परन्तु नगी चट्टान पर रख दिया।
८ इसलिये म ने भी उसका खून नगी
चट्टान पर रखा है कि वह ढप न सके और
कि वदला लेने को जलजलाहट भडके।
९ प्रभु यहोवा यो कहता है, हाय, उस
खूनी नगरी पर! मैं भी ढेर को वडा
करूगा। १० और अधिक लकडी डाल,
आग का वहुत तेज़ कर, मास को भली
भाति पका और मसाला मिला, और हड्डिया
भी जला दो। ११ तव हण्डे को छूछा
करके अगारा पर रख जिस मे वह गम
हो और उसका पीतल जले और उम मे
का मैल गले, और उसका मोर्चा नष्ट
हो जाए। १२ म उसके कारण परिश्रम
करते करते थक गया, परन्तु उसका भारी
मोर्चा उस से छूटता नही, उसका मोर्चा
आग के द्वारा भी नही छूटता। १३ हे
नगरी तेरी अशुद्धता महापाप की है।
म तो तुझे शुद्ध करना चाहता था, परन्तु
तू शुद्ध नही हुई, इस कारण जव तक मै
अपनी जलजलाहट तुझ पर शान्त न कर
लू, तव तक तू फिर शुद्ध न की जाएगी।
१४ मुझ यहोवा ही ने यह कहा है,
और वह हो जाएगा, म ऐसा ही करूगा,
मैं तुझे न छोडूगा, न तुझ पर तरस
खाऊगा न पछताऊगा, तेरे चालचलन
और कामो ही के अनुसार तेरा न्याय किया
जाएगा, प्रभु यहोवा की यही वाणी है॥
१५ यहोवा का यह भी वचन मेरे पास
पहुचा, १६ हे मनुष्य के मन्तान, देख,
मै तेरी आखो की प्रिय को * मारकर तेरे
पास से ले लेने पर हू, परन्तु न तू रोना-
पीटना और न आसू वहाना। १७ लम्बी
सासें ले तो ले, परन्तु वे सुनाई न पडे,
मरे हुओ के लिये भी विलाप न करना।
सिर पर पगडी वान्धे और पावो में जूती
पहने रहना, और न तो अपने होठ को
ढापना न शोक के योग्य रोटी खाना।
१८ तव मैं सवेरे लोगो से वोला, और
साझ को मेरी स्त्री मर गई। और विहान
को मैं ने आज्ञा के अनुसार किया॥
१९ तव लोग मुझ मे कहने लगे,
क्या तू हमे न वताएगा कि यह जो तू
करता है, इसका हम लोगो के लिये क्या
अर्थ है? २० मैं ने उनको उत्तर दिया,
यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुचा,
२१ तू इस्राएल के घराने से कह, प्रभु
यहोवा यो कहता है, देखो, मैं अपने पवित्र-
स्थान को जिसके गढ होने पर तुम फूलते
हो, और जो तुम्हारी आखो का चाहा
हुआ है, और जिसको तुम्हारा मन चाहता
है, उसे मैं अपवित्र करने पर हू, और
अपने जिन वेटे-वेटियो को तुम वहा छोड
आए हो, वे तलवार से मारे जाएगे।
२२ और जैसा म ने किया है वैसा ही
तुम लोग करोगे, तुम भी अपने होठ
न ढापोगे, न शोक के योग्य रोटी खाओगे।
२३ तुम सिर पर पगडी वान्धे और
पावो मे जूती पहिने रहोगे, न तुम रोओगे,
न छाती पीटोगे, वरन अपने अधम के
कामो मे फसे हुए गलते जाओगे और
एक दूसरे की ओर कराहते रहोगे।
२४ इस रीति यहेजकेल तुम्हारे लिये
चिन्ह ठहरेगा, जैसा उस ने किया, ठीक
वैसा ही तुम भी करोगे। और जव यह
हो जाए, तव तुम जान लोगे कि म
परमेश्वर यहोवा हू॥
२५ और हे मनुष्य के सन्तान, क्या
यह सच नही, कि जिस दिन मै उनका

* मूल में—तेरी आख के चाहे हुए को।

दृढ गढ, उनकी शोभा, और हर्ष का
कारण, और उनके बेटे-बेटिया जो उनकी
शोभा, उनकी आखो का आनन्द, और
मन की चाह है, उनको मै उन से ले
लूगा, २६ उसी दिन जो भागकर बचेगा,
वह तेरे पास आकर तुझे समाचार
सुनाएगा। २७ उसी दिन तेरा मुह
खुलेगा, और तू फिर चुप न रहेगा परन्तु
उस बचे हुए के साथ बाते करेगा। सो
तू इन लोगो के लिये चिन्ह ठहरेगा,
और ये जान लेगे कि मै यहोवा हू ॥

२५ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
अम्मोनियो की ओर मुह करके उनके
विषय मे भविष्यद्वाणी कर। ३ उन से
कह, हे अम्मोनियो, परमेश्वर यहोवा का
वचन सुनो, परमेश्वर यहोवा यो कहता
है कि तुम ने जो मेरे पवित्रस्थान के विषय
जब वह अपवित्र किया गया, और इस्राएल
के देश के विषय जब वह उजड गया, और
यहूदा के घराने के विषय जब वे बधुआई
मे गए, अहा, अहा! कहा। ४ इस
कारण देखो, मै तुझ को पूरबियो के
अधिकार मे करने पर हू, और वे तेरे
बीच अपनी छावनिया डालेगे और अपने
घर बनाएगे, वे तेरे फल खाएगे और तेरा
दूध पीएगे। ५ और मै रब्बा नगर को
ऊटो के रहने और अम्मोनियो के देश को
भेड-बकरियो के बैठने का स्थान कर
दूगा, तब तुम जान लोगे कि मै यहोवा
हू। ६ क्योकि परमेश्वर यहोवा यो कहता
है, तुम ने जो इस्राएल के देश के कारण
ताली बजाई और नाचे, और अपने सारे
मन के अभिमान से आनन्द किया, ७ इस
कारण देख, मै ने अपना हाथ तेरे ऊपर
बढाया है, और तुझ को जाति जाति की
लूट कर दूगा, और देश देश के लोगो मे
से तुझे मिटाऊगा, और देश देश मे से
नाश करूगा। मै तेरा सत्यानाश कर
डालूगा, तब तू जान लेगा कि मै यहोवा
हू ॥

८ परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
मोआब और सेईर जो कहते है, देखो,
यहूदा का घराना और सब जातियो के
समान हो गया है। ९ इस कारण देख,
मोआब के देश के किनारे के नगरों को
बेत्यशीमोत, बालमोन, और किर्यातैम,
जो उस देश के शिरोमणि है, मैं उनका
मार्ग* खोलकर १० उन्हे पूरबियो के वश
मे ऐसा कर दूगा कि वे अम्योनियो पर
चढाई करे, और मै अम्मोनियो को यहा
तक उनके अधिकार मे कर दूगा कि
जाति जाति के बीच उनका स्मरण फिर
न रहेगा। ११ और मै मोआब को भी
दण्ड दूगा। और वे जान लेगे कि मै
यहोवा हू ॥

१२ परमेश्वर यहोवा यो भी कहता
है, एदोम ने जो यहूदा के घराने से पलटा
लिया, और उन से बदला लेकर बडा
दोषी हो गया है, १३ इस कारण
परमेश्वर यहोवा यो कहता है, मै एदोम के
देश के विरुद्ध अपना हाथ बढाकर उस
मे से मनुष्य और पशु दोनो को मिटाऊगा,
और तेमान से लेकर ददान तक उसको
उजाड कर दूगा, और वे तलवार से
मारे जाएगे। १४ और मै अपनी प्रजा
इस्राएल के द्वारा एदोम से अपना बदला
लूगा, और वे उस देश मे मेरे कोप और
जलजलाहट के अनुसार काम करेगे। तब

* मूल में—कन्धा।

वे मेरा पलटा लेना जान लेंगे, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है ॥
१५ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
क्योंकि पलिश्ती लोगों ने पलटा लिया, वरन
अपनी युग युग की शत्रुता के कारण अपने
मन के अभिमान से बदला लिया कि नाश
करे, १६ इस कारण परमेश्वर यहोवा यों
कहता है, देख, मैं पलिश्तियों के विरुद्ध
अपना हाथ बढ़ाने पर हूं, और करेतियों
को मिटा डालूंगा, और समुद्रतीर के
बचे हुए रहनेवालों को नाश करूंगा।
१७ और मैं जलजलाहट के साथ मुकद्दमा
लड़कर, उन से कड़ाई के साथ पलटा लूंगा।
और जब मैं उन से बदला ले लूंगा, तब
वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं ॥

२६ ग्यारहवें वर्ष के पहिले महीने
के पहिले दिन को यहोवा का
यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य
के सन्तान, सोर ने जो यरूशलेम के
विषय में कहा है, अहा, अहा! जो देश
देश के लोगों के फाटक के समान थी,
वह नाश हो गई! ३ उसके उजड़
जाने से मैं भरपूर हो जाऊंगा। इस कारण
परमेश्वर यहोवा कहता है, हे सोर, देख,
मैं तेरे विरुद्ध हूं, और ऐसा करूंगा कि
बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसी उठेंगी
जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। ४ और
वे सोर की शहरपनाह को गिराएंगी,
और उसके गुम्मटों को तोड़ डालेंगी,
और मैं उस पर से उसकी मिट्टी खुरचकर
उसे नंगी चट्टान कर दूंगा। ५ वह समुद्र
के बीच का जाल फैलाने ही का स्थान
हो जाएगा, क्योंकि परमेश्वर यहोवा की
यह वाणी है, और वह जाति जाति से
लुट जाएगा, ६ और उसकी जो बेटियां
मैदान में हैं, वे तलवार से मारी
जाएंगी। तब वे जान लेंगे कि मैं यहोवा
हूं ॥
७ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यह कहता
है, देख, मैं सोर के विरुद्ध राजाधिराज
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को घोड़ों,
रथों, सवारों, बड़ी भीड़, और दल समेत
उत्तर दिशा से ले आऊंगा। ८ और
तेरी जो बेटियां मैदान में हों, उनको
वह तलवार से मारेगा, और तेरे विरुद्ध
कोट बनाएगा और दमदमा बान्धेगा,
और ढाल उठाएगा। ९ और वह तेरी
शहरपनाह के विरुद्ध युद्ध के यन्त्र चलाएगा
और तेरे गुम्मटों को फरसों से ढा देगा।
१० उसके घोड़े इतने होंगे, कि तू उनकी
धूलि से ढप जाएगा, और जब वह तेरे
फाटकों में ऐसे घुसेगा जैसे लोग नाकेवाले
नगर में घुसते हैं, तब तेरी शहरपनाह
सवारों, छकड़ों, और रथों के शब्द से
कांप उठेगी। ११ वह अपने घोड़ों की
टापों से तेरी सब सड़कों को रौन्द डालेगा,
और तेरे निवासियों को तलवार से मार
डालेगा, और तेरे बल के खंभे भूमि पर
गिराए जाएंगे। १२ और लोग तेरा
धन लूटेंगे और तेरे व्योपार की वस्तुएं
छीन लेंगे, वे तेरी शहरपनाह ढा देंगे
और तेरे मनभाऊ घर तोड़ डालेंगे,
तेरे पत्थर और काठ, और तेरी धूलि
वे जल में फेंक देंगे। १३ और मैं तेरे
गीतों का सुरताल बन्द करूंगा, और तेरी
वीणाओं की ध्वनि फिर सुनाई न देगी।
१४ मैं तुझे नंगी चट्टान कर दूंगा, तू
जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा,
और फिर बसाया न जाएगा, क्योंकि
मुझ यहोवा ही ने यह कहा है, परमेश्वर
यहोवा की यह वाणी है ॥

१५ परमेश्वर यहोवा सोर से यो कहता
है, तेरे गिरने के शब्द से जब घायल लोग
कराहेगे और तुझ मे घात ही घात होगा,
तब क्या टापू न काप उठेगे ? १६ तब
समुद्रतीर के सब प्रधान लोग अपने अपने
सिंहासन पर से उतरेंगे, और अपने बागे
और बूटेदार वस्त्र उतारकर थरथराहट
के वस्त्र पहिनेगे और भूमि पर बैठकर
क्षण क्षण मे कापेंगे, और तेरे कारण
विस्मित रहेंगे। १७ और वे तेरे विषय
मे विलाप का गीत बनाकर तुझ से कहेंगे,
हाय ! मल्लाहो की * बसाई हुई हाय !
सराही हुई नगरी जो समुद्र के बीच
निवासियो समेत सामर्थी रही और सब
टिकनेवालो की डरानेवाली नगरी थी, तू
कैसी नाश हुई है ? १८ तेरे गिरने के दिन
टापू काप उठेंगे, और तेरे जाते रहने के
कारण समुद्र से सब टापू घबरा जाएगे।
१९ क्योकि परमेश्वर यहोवा यो कहता
है, जब मै तुझे निर्जन नगरो के समान
उजाड करूगा और तेरे ऊपर महासागर
चढाऊगा, और तू गहिरे जल मे डूब
जाएगा, २० तब गडहे मे और गिरनेवालो
के सग मै तुझे भी प्राचीन लोगो मे उतार
दूगा, और गडहे मे और गिरनेवालो
के सग तुझे भी नीचे के लोक में† रखकर
प्राचीनकाल के उजडे हुए स्थानो के समान
कर दूगा, यहा तक कि तू फिर न बसेगा
और न जीवन के लोक मे कोई स्थान
पाएगा। २१ मैं तुझे घबराने का कारण
करूगा, और तू भविष्य मे फिर न
रहेगा, वरन ढूढने पर भी तेरा पता न
लगेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी
है ॥

* मूल में—समुद्रों से।
† मूल में—निचले स्थानों के देश में।

२७ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
सोर के विषय एक विलाप का गीत बनाकर
उस से यो कह, ३ हे समुद्र के पैठाव पर
रहनेवाली, हे बहुत से द्वीपो के लिये देश
देश के लोगो के साथ व्योपार करनेवाली,
परमेश्वर यहोवा यो कहता है, हे सोर
तू ने कहा है कि मै सर्वांग सुन्दर हू।
४ तेरे सिवाने समुद्र के बीच है, तेरे
बनानेवाले ने तुझे सर्वांग सुन्दर बनाया।
५ तेरी सब पटरिया सनीर पर्वत के
सनोवर की लकडी की बनी है, तेरे
मस्तूल के लिये लबानोन के देवदार लिए
गए है। ६ तेरे डाड बाशान के बाजवृक्षो
के बने, तेरे जहाजो का पटाव कित्तियो
के द्वीपो से लाए हुए सीधे सनौवर की
हाथीदात जडी हुई लकडी का बना।
७ तेरे जहाजो के पाल मिस्र से लाए
हुए बूटेदार सन के कपडे के बने कि तेरे
लिये झण्डे का काम दे, तेरी चादनी
एलीशा के द्वीपो से लाए हुए नीले और
बैंजनी रग के कपडो की बनी। ८ तेरे
खेनेवाले सीदोन और अर्वद के रहनेवाले
थे, हे सोर, तेरे ही बीच के बुद्धिमान
लोग तेरे माझी थे। ९ तेरे कारीगर
जोडाई करनेवाले गबल नगर के पुरनिये
और बुद्धिमान लोग थे, तुझ मे व्योपार
करने के लिये मल्लाहो समेत समुद्र पर
के सब जहाज तुझ मे आ गए थे। १० तेरी
सेना मे फारसी, लूदी, और पूती लोग
भरती हुए थे, उन्हो ने तुझ मे ढाल,
और टोपी टागी, और उन्ही के कारण
तेरा प्रताप बढा था। ११ तेरी शहरपनाह
पर तेरी सेना के साथ अर्वद के लोग चारो
ओर थे, और तेरे गुम्मटो मे शूरवीर खडे
थे, उन्हो ने अपनी ढाले तेरी चारो ओर

की शहरपनाह पर टांगी थी, तेरी
सुन्दरता उनके द्वारा पूरी हुई थी ॥
१२ अपनी सब प्रकार की सम्पत्ति
की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग
तेरे व्योपारी थे, उन्हों ने चान्दी, लोहा,
रांगा और सीसा देकर तेरा माल मोल
लिया। १३ यावान, तूबल, और मेशेक
के लोग तेरे माल के बदले दास-दासी
और पीतल के पात्र तुझ से व्योपार करते
थे। १४ तोगर्मा के घराने के लोगों ने
तेरी सम्पत्ति लेकर घोड़े, सवारी के घोड़े
और खच्चर दिए। १५ ददानी तेरे
व्योपारी थे, बहुत से द्वीप तेरे हाट बने थे,
वे तेरे पास हाथीदांत की सींग और
आबनूस की लकड़ी व्योपार में लाते थे।
१६ तेरी बहुत कारीगरी के कारण
आराम तेरा व्योपारी था, मरकत, बैंजनी
रंग का और बूटेदार वस्त्र, सन, मूंगा,
और लालड़ी देकर वे तेरा माल लेते थे।
१७ यहूदा और इस्राएल भी तेरे व्योपारी
थे, उन्हों ने मिन्नीत का गेहूं, पन्नग, और
मधु, तेल, और बलसान देकर तेरा माल
लिया। १८ तुझ में बहुत कारीगरी हुई
और सब प्रकार का धन इकट्ठा हुआ,
इस से दमिश्क तेरा व्योपारी हुआ, तेरे
पास हेलबोन का दाखमधु और उजला
ऊन पहुंचाया गया। १९ वदान और
यावान ने तेरे माल के बदले में सूत
दिया, और उनके कारण फौलाद, तज
और अगर में भी तेरा व्योपार हुआ।
२० सवारी के चार-जामे के लिये ददान
तेरा व्योपारी हुआ। २१ अरब और
केदार के सब प्रधान तेरे व्योपारी
ठहरे, उन्हों ने भेम्ने, मेढ़े, और बकरे
लाकर तेरे साथ लेन-देन किया। २२ शबा
और रामा के व्योपारी तेरे व्योपारी
ठहरे, उन्हों ने उत्तम उत्तम जाति का
सब भांति का मसाला, सब भांति के
मणि, और सोना देकर तेरा माल
लिया। २३ हारान, कन्ने, एदेन, शबा
के व्योपारी, और अश्शूर और कलमद,
ये सब तेरे व्योपारी ठहरे। २४ इन्हों ने
उत्तम उत्तम वस्तुएं अर्थात् ओढ़ने के
नीले और बूटेदार वस्त्र और डोरियों से
बन्धी और देवदार की बनी हुई चित्र
विचित्र कपड़ों की पेटियां लाकर तेरे साथ
लेन-देन किया। २५ तर्शीश के जहाज तेरे
व्योपार के माल के ढोनेवाले हुए ॥

उनके द्वारा तू समुद्र के बीच रहकर
बहुत धनवान् और प्रतापी हो गई थी।
२६ तेरे खिवैयों ने तुझे गहिरे जल में
पहुंचा दिया है, और पुरवाई ने तुझे
समुद्र के बीच तोड़ दिया है। २७ जिस
दिन तू डूबेगी, उसी दिन तेरा धन-सम्पत्ति,
व्योपार का माल, मल्लाह, मांझी, जुड़ाई
का काम करनेवाले, व्योपारी लोग, और
तुझ में जितने सिपाही हैं, और तेरी
सारी भीड़-भाड़ समुद्र के बीच गिर
जाएगी। २८ तेरे मांझियों की चिल्लाहट
के शब्द के मारे तेरे आस पास के स्थान
कांप उठेंगे। २९ और सब खेनेवाले
और मल्लाह, और समुद्र में जितने मांझी
रहते हैं, वे अपने अपने जहाज पर से
उतरेंगे, ३० और वे भूमि पर खड़े होकर
तेरे विषय में ऊंचे शब्द से बिलक बिलक-
कर रोएंगे। वे अपने अपने सिर पर
धूलि उड़ाकर राख में लोटेंगे, ३१ और
तेरे शोक में अपने सिर मुड़वा देंगे, और
कमर में टाट बान्धकर अपने मन के कड़े
दुःख * के साथ तेरे विषय में रोएंगे और

* मूल में—मन की कड़ुवाहट।

छाती पीटेंगे। ३२ वे विलाप करते हुए
तेरे विषय में विलाप का यह गीत बनाकर
गाएंगे, सोर जो अब समुद्र के बीच चुपचाप
पड़ी है, उसके तुल्य कौन नगरी है?
३३ जब तेरा माल समुद्र पर से निकलता
था, तब बहुत सी जातियों के लोग तृप्त
होते थे, तेरे धन और व्योपार के माल की
बहुतायत से पृथ्वी के राजा धनी होते थे।
३४ जिस समय तू अथाह जल में लहरों
से टूटी, उस समय तेरे व्योपार का माल,
और तेरे सब निवासी भी तेरे भीतर रहकर
नाश हो गए। ३५ टापुओं के सब रहने-
वाले तेरे कारण विस्मित हुए; और उनके
सब राजाओं के रोएं खड़े हो गए, और
उनके मुंह उदास देख पड़े हैं। ३६ देश
देश के व्योपारी तेरे विरुद्ध हथौड़ी बजा
रहे हैं, तू भय का कारण हो गई है
और फिर स्थिर न रह सकेगी॥

२८ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
सोर के प्रधान से कह, परमेश्वर यहोवा
यों कहता है कि तू ने मन में फूलकर
यह कहा है, मैं ईश्वर हूं, मैं समुद्र के
बीच परमेश्वर के आसन पर बैठा हूं,
परन्तु, यद्यपि तू अपने आपको परमेश्वर
सा दिखाता है, तौभी तू ईश्वर नहीं,
मनुष्य ही है। ३ तू दानिय्येल से अधिक
बुद्धिमान तो है, कोई भेद तुझ से छिपा
न होगा, ४ तू ने अपनी बुद्धि और
समझ के द्वारा धन प्राप्त किया, और
अपने भण्डारों में सोना-चान्दी रखा
है, ५ तू ने बड़ी बुद्धि से लेन-देन किया
जिस से तेरा धन बढ़ा, और धन के कारण
तेरा मन फूल उठा है। ६ इस कारण
परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू जो अपना
मन परमेश्वर सा दिखाता है, ७ इसलिये
देख, मैं तुझ पर ऐसे परदेशियों से चढ़ाई
कराऊंगा, जो सब जातियों में अधिक
बलात्कारी हैं, वे अपनी तलवारें तेरी
बुद्धि की शोभा पर चलाएंगे और तेरी
चमक-दमक को बिगाड़ेंगे। ८ वे तुझे
कबर में उतारेंगे, और तू समुद्र के बीच
के मारे हुओं की रीति पर मर जाएगा।
९ तब, क्या तू अपने घात करनेवाले के
साम्हने कहता रहेगा कि तू परमेश्वर है?
तू अपने घायल करनेवाले के हाथ में
ईश्वर नहीं, मनुष्य ही ठहरेगा। १० तू
परदेशियों के हाथ से खतनाहीन लोगों की
नाईं मारा जाएगा, क्योंकि मैं ही ने ऐसा
कहा है, परमेश्वर यहोवा की यह वाणी
है॥

११ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, १२ हे मनुष्य के सन्तान,
सोर के राजा के विषय में विलाप का
गीत बनाकर उस से कह, परमेश्वर यहोवा
यों कहता है, तू तो उत्तम से भी उत्तम
है*, तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर
है। १३ तू परमेश्वर की एदेन नाम
बारी में था, तेरे पास आभूषण, माणिक,
पद्मराग, हीरा, फीरोज़ा, सुलैमानी मणि,
यशब, नीलमणि मरकद, और लाल सब
भांति के मणि और सोने के पहिरावे थे,
तेरे डफ और बांसुलियां तुझी में बनाई
गई थीं, जिस दिन तू सिरजा गया था,
उस दिन वे भी तैयार की गई थीं।
१४ तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था,
मैं ने तुझे ऐसा ठहराया कि तू परमेश्वर
के पवित्र पर्वत पर रहता था, तू आग
सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच

* मूल में—तू पूर्णता पर छाप देता है।

चलता फिरता था। १५ जिस दिन से
तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ
में कुटिलता न पाई गई, उस समय तक
तू अपनी सारी चालचलन मे निर्दोष रहा।
१६ परन्तु लेन-देन की बहुतायत के
कारण तू उपद्रव से भरकर पापी हो
गया, इसी से म ने तुझे अपवित्र जानकर
परमेश्वर के पर्वत पर से उतारा, और
हे छानेवाले करूब मं ने तुझे आग सरीखे
चमकनेवाले मणियो के बीच से नाश
किया है। १७ सुन्दरता के कारण तेरा
मन फूल उठा था, और विभव के कारण
तेरी बुद्धि बिगड गई थी। मं ने तुझे
भूमि पर पटक दिया, और राजाओ के
साम्हने तुझे रखा कि वे तुझ को देखें।
१८ तेरे अधम के कामो की बहुतायत से
और तेरे लेन-देन की कुटिलता से तेरे
पवित्रस्थान अपवित्र हो गए, सो मं ने
तुझ मे से ऐसी आग उत्पन्न की जिस से
तू भस्म हुआ, और मं ने तुझे सब देखनेवालो
के साम्हने भूमि पर भस्म कर डाला है।
१९ देश देश के लोगो में से जितने तुझे
जानते है सब तेरे कारण विस्मित हुए,
तू भय का कारण हुआ है और फिर कभी
पाया न जाएगा ।।

२० यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, २१ हे मनुष्य के सन्तान, अपना
मुख सीदोन की ओर करके उसके विरुद्ध
भविष्यद्वाणी कर, २२ और कह, प्रभु
यहोवा यों कहता हैं, हे सीदोन, म तेरे
विरुद्ध हू, मं तेरे बीच अपनी महिमा
कराऊगा। जब म उसके बीच दण्ड
दूगा और उस मे अपने को पवित्र ठहराऊगा,
तब लोग जान लेंगे कि म यहोवा हू।
२३ मं उस मे मरी फलाऊगा, और उसकी
सडको में लोहू बहाऊगा, और उसके
चारो ओर तलवार चलेगी, तब उसके
बीच घायल लोग गिरेंगे, और वे जान
लेगे कि मै यहोवा हू ।।

२४ और इस्राएल के घराने के चारो
ओर की जितनी जातिया उनके साथ
अभिमान का बर्ताव करती ह, उन मे से
कोई उनका चुभनेवाला कांटा वा बेधनेवाला
शूल फिर न ठहरेगी, तब वे जान लेगी
कि मं परमेश्वर यहोवा हू ।।

२५ परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
जब मं इस्राएल के घराने को उन सब
लोगो मे से इकट्ठा करूगा, जिनके बीच
वे तितर-बितर हुए है, और देश देश के
लोगो के साम्हने उनके द्वारा पवित्र
ठहरूगा, तब वे उस देश मे बास करेंगे
जो मं ने अपने दास याकूब को दिया था।
२६ वे उस मे निडर बसे रहेंगे, वे घर
बनाकर और दाख की बारिया लगाकर
निडर रहेंगे, तब मं उनके चारो ओर
के सब लोगो को दण्ड दूगा जो उन
से अभिमान का बर्ताव करते हं, तब वे
जान लेंगे कि उनका परमेश्वर यहोवा
ही है ।।

२९ दसवें वर्ष के दसवे महीने के
बारहवें दिन को यहोवा का
यह वचन मेरे पास पहुचा, २ ह मनुष्य
के सन्तान, अपना मुख मिस्र के राजा
फिरौन की ओर करके उनके और सारे
मिस्र के विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, ३ यह
कह, परमेश्वर यहोवा यो कहता है, हे
मिस्र के राजा फिरौन, म तेरे विरुद्ध हू,
हे बडे नगर, तू जा अपनी नदियों के बीच
पडा रहता ह, जिस ने कहा ह कि मेरी
नदी मेरी निज की हैं, और म ही ने
उसको अपने लिये बनाया ह। ४ म

तेरे जबड़ों में आँकड़े डालूंगा, और तेरी
नदियों की मछलियों को तेरी खाल में
चिपटाऊंगा, और तेरी खाल में चिपटी
हुई तेरी नदियों की सब मछलियों समेत
तुझ को तेरी नदियों में से निकालूंगा।
५ तब मैं तुझे तेरी नदियों की सारी
मछलियों समेत जंगल में निकाल दूंगा,
और तू मैदान में पड़ा रहेगा, किसी भी
प्रकार से तेरी सुधि न ली जाएगी*।
मैं ने तुझे वनपशुओं और आकाश के
पक्षियों का आहार कर दिया है॥

६ तब मिस्र के सारे निवासी जान लेंगे
कि मैं यहोवा हूं। वे तो इस्राएल के
घराने के लिये नरकट की टेक ठहरे थे।
७ जब उन्हों ने तुझ पर हाथ का बल
दिया तब तू टूट गया और उनके पखौड़े
उखड़ ही गए, और जब उन्हों ने तुझ
पर टेक लगाई, तब तू टूट गया, और
उनकी कमर की सारी नसें चढ़ गईं।
८ इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है,
देख, मैं तुझ पर तलवार चलवाकर, तेरे
मनुष्य और पशु, सभों को नाश करूंगा।
९ तब मिस्र देश उजाड़ ही उजाड़ होगा,
और वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूं॥

उस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी
अपनी ही है, और मैं ही ने उसे बनाया।
१० इस कारण देख, मैं तेरे और तेरी
नदियों के विरुद्ध हूं, और मिस्र देश को
मिग्दोल से लेकर सवेने तक वरन कूश
देश के सिवाने तक उजाड़ ही उजाड़
कर दूंगा। ११ चालीस वर्ष तक उस में
मनुष्य वा पशु का पांव तक न पड़ेगा,
और न उस में कोई बसेगा। १२ चालीस
वर्ष तक मैं मिस्र देश को उजड़े हुए देशों
के बीच उजाड़ कर रखूंगा, और उसके
नगर उजड़े हुए नगरों के बीच खण्डहर
ही रहेंगे। मैं मिस्रियों को जाति जाति में
छिन्न-भिन्न कर दूंगा, और देश देश में
तितर-बितर कर दूंगा॥

१३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है
कि चालीस वर्ष के बीतने पर मैं मिस्रियों
को उन जातियों के बीच में इकट्ठा करूंगा,
जिन में वे तितर-बितर हुए, १४ और
मैं मिस्रियों को बंधुआई में छुड़ाकर पत्रोस
देश में, जो उनकी जन्मभूमि है, फिर
पहुंचाऊंगा; और वहां उनका छोटा सा
राज्य हो जाएगा। १५ वह सब राज्यों
में से छोटा होगा, और फिर अपना सिर
और जातियों के ऊपर न उठाएगा,
क्योंकि मैं मिस्रियों को ऐसा घटाऊंगा
कि वे अन्यजातियों पर फिर प्रभुता न
करने पाएंगे। १६ और वह फिर इस्राएल
के घराने के भरोसे का कारण न होगा,
क्योंकि जब वे फिर उनकी ओर देखने
लगें, तब वे उनके अधर्म को स्मरण
करेंगे। और तब वे जान लेंगे कि मैं
परमेश्वर यहोवा हूं॥

१७ फिर सत्ताइसवें वर्ष के पहले
महीने के पहिले दिन को यहोवा का यह
वचन मेरे पास पहुंचा, १८ हे मनुष्य
के सन्तान, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने सोर के घेरने में* अपनी सेना से बड़ा
परिश्रम कराया, हर एक का सिर चन्दला
हो गया, और हर एक के कन्धों का चमड़ा
उड़ गया, तौभी उसको सोर में न तो
इस बड़े परिश्रम की मजदूरी कुछ मिली
और न उसकी सेना को। १९ इस कारण

* मूल में—तू न तो इकट्ठा किया जाएगा और न बटोरा जाएगा।

* मूल में—सोर के विरुद्ध।

परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देख, मैं
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र
देश दूंगा, और वह उसकी भीड़ को ले
जाएगा, और उसकी धन सम्पत्ति को
लूटकर अपना कर लेगा, सो यही मजदूरी
उसकी सेना को मिलेगी। २० मैं ने
उसके परिश्रम के बदले में उसको मिस्र
देश इस कारण दिया है कि उन लोगों
ने मेरे लिये काम किया था, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है॥

२१ उसी समय मैं इस्राएल के घराने
का एक सींग उगाऊंगा, और उनके बीच
तेरा मुंह खोलूंगा। और वे जान लेंगे कि
मैं यहोवा हूं॥

३० फिर यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य
के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह,
परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हाय, हाय
करो, हाय उस दिन पर! ३ क्योंकि
वह दिन अर्थात् यहोवा का दिन निकट
है, वह बादलों का दिन, और जातियों
के दण्ड का समय होगा। ४ मिस्र में
तलवार चलेगी, और जब मिस्र में लोग
मारे जाकर गिरेंगे, तब कूश में भी संकट
पड़ेगा, लोग मिस्र को लूट ले जाएंगे,
और उसकी नेवें उलट दी जाएंगी।
५ कूश, पूत, लूद और सब दोगले, और
कूब लोग, और वाचा बान्धे हुए देश के
निवासी, मिस्रियों के संग तलवार से
मारे जाएंगे॥

६ यहोवा यों कहता है, मिस्र के
सम्भालनेवाले भी गिर जाएंगे, और अपनी
जिस सामर्थ पर मिस्री फूलते हैं, वह
टूटेगी *, मिग्दोल से लेकर सवेने तक
उसके निवासी तलवार से मारे जाएंगे,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।
७ और वे उजड़े हुए देशों के बीच उजड़े
ठहरेंगे, और उनके नगर खण्डहर किए
हुए नगरों में गिने जाएंगे। ८ जब मैं
मिस्र में आग लगाऊंगा और उसके सब
सहायक नाश होंगे, तब वे जान लेंगे कि
मैं यहोवा हूं॥

९ उस समय मेरे साम्हने से दूत
जहाजों पर चढ़कर निडर निकलेंगे और
कूशियों को डराएंगे, और उन पर ऐसा
संकट पड़ेगा जैसा कि मिस्र के दण्ड के
समय, क्योंकि देख, वह दिन आता है!

१० परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ
से मिस्र की भीड़-भाड़ को नाश करा दूंगा।
११ वह अपनी प्रजा समेत, जो सब
जातियों में भयानक है, उस देश के
नाश करने को पहुंचाया जाएगा, और
वे मिस्र के विरुद्ध तलवार खींचकर देश
को मरे हुओं से भर देंगे। १२ और मैं
नदियों को सुखा डालूंगा, और देश को
बुरे लोगों के हाथ कर दूंगा, और मैं
परदेशियों के द्वारा देश को, और जो
कुछ उस में है, उजाड़ करा दूंगा, मुझ
यहोवा ही ने यह कहा है॥

१३ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
मैं नोप में से मूरतों को नाश करूंगा
और उस में की मूरतों को रहने न दूंगा,
फिर कोई प्रधान मिस्र देश में न उठेगा,
और मैं मिस्र देश में भय उपजाऊंगा।
१४ मैं पत्रोस को उजाड़ूंगा, और सोअन
में आग लगाऊंगा, और नो को दण्ड
दूंगा। १५ और सीन जो मिस्र का दृढ़
स्थान है, उस पर मैं अपनी जलजलाहट

* मूल में—उतरेगा।

भडकाऊगा *, और नो की भीड-भाड का
अन्त कर डालूगा। १६ और मै मिस्र
मे आग लगाऊगा, सीन बहुत थरथराएगा,
और नो फाडा जाएगा और नोप के
विरोधी दिन दहाडे उठेगे। १७ आवेन
और पीवेसेत के जवान तलवार से गिरेगे,
और ये नगर बधुआई मे चले जाएगे।
१८ जब मै मिस्रियो के जुओ को तहपन्हेस
मे तोडूगा, तब उस मे दिन को अन्धेरा
होगा, और उसकी सामर्थ जिस पर वह
फूलता है, वह नाश हो जाएगी, उस पर
घटा छा जाएगी और उसकी बेटिया
बधुआई मे चली जाएगी। १९ इस
प्रकार मै मिस्रियो को दण्ड दूगा। और
वे जान लेगे कि मै यहोवा हू ॥

२० फिर ग्यारहवे वर्ष के पहिले महीने
के सातवे दिन को यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, २१ हे मनुष्य के सन्तान,
मै ने मिस्र के राजा फिरौन की भुजा
तोड दी है, और देख, न तो वह जोडी
गई, न उस पर लेप लगाकर पट्टी चढाई
गई कि वह बान्धने से तलवार पकडने
के योग्य बन सके। २२ सो प्रभु यहोवा
यो कहता है, देख, मै मिस्र के राजा फिरौन
के विरुद्ध हू, और उसकी अच्छी और
टूटी दोनो भुजाओ को तोडूगा, और
तलवार को उसके हाथ से गिराऊगा।
२३ मै मिस्रियो को जाति जाति मे तितर-
बितर करूगा, और देश देश मे छित-
राऊगा। २४ और मै बाबुल के राजा
की भुजाओ को बली करके अपनी तलवार
उसके हाथ में दूगा, परन्तु फिरौन की
भुजाओ को तोडूगा, और वह उसके
साम्हने ऐसा कराहेगा जैसा मरनहार
घायल कराहता है। २५ मै बाबुल के
राजा की भुजाओ को सम्भालूगा, और
फिरौन की भुजाए ढीली पडेगी, तब वे
जानेगे कि मै यहोवा हू। जब मै बाबुल
के राजा के हाथ मे अपनी तलवार दूगा,
तब वह उसे मिस्र देश पर चलाएगा,
२६ और मै मिस्रियो को जाति जाति में
तितर-बितर करूगा और देश देश मे
छितरा दूगा। तब वे जान लेगे कि मै
यहोवा हू ॥

३१

ग्यारहवे वर्ष के तीसरे महीने
के पहिले दिन को यहोवा का
यह वचन मेरे पास पहुचा, २ हे मनुष्य
के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन और
उसकी भीड से कह, अपनी बडाई मे तू
किस के समान है। ३ देख, अश्शूर तो
लबानोन का एक देवदार था जिसकी
सुन्दर सुन्दर शाखे, घनी छाया देती और
बडी ऊची थी, और उसकी फुनगी बादलो
तक पहुचती थी। ४ जल ने उसे बढाया,
उस गहिरे जल के कारण वह ऊचा हुआ,
जिस से नदिया उसके स्थान के चारो
ओर बहती थी, और उसकी नालिया
निकलकर मैदान के सारे वृक्षो के पास
पहुचती थी। ५ इस कारण उसकी ऊचाई
मैदान के सब वृक्षो से अधिक हुई, उसकी
टहनिया बहुत हुई, और उसकी शाखाए
लम्बी हो गई, क्योकि जब वे निकली,
तब उनको बहुत जल मिला। ६ उसकी
टहनियो मे आकाश के सब प्रकार के
पक्षी बसेरा करते थे, और उसकी शाखाओ
के नीचे मैदान के सब भाति के जीवजन्तु
जन्मते थे, और उसकी छाया मे सब
बडी जातिया रहती थी। ७ वह अपनी
बडाई और अपनी डालियो की लम्बाई

* मूल में—उण्डेलूगा।

के कारण सुन्दर हुआ, क्योंकि उसकी
जड बहुत जल के निकट थी। ८ परमेश्वर
की बारी के देवदार भी उसको न छिपा
सकते थे, सनोवर उसकी टहनियों के
समान भी न थे, और न अर्मोन वृक्ष
उसकी शाखाओं के तुल्य थे, परमेश्वर
की बारी का भी कोई वृक्ष सुन्दरता में
उसके बराबर न था। ९ मैं ने उसे
डालियों की बहुतायत से सुन्दर बनाया
था, यहां तक कि एदेन के सब वृक्ष जो
परमेश्वर की बारी में थे, उस से डाह
करते थे॥

१० इस कारण परमेश्वर यहोवा ने
यों कहा है, उसकी * ऊंचाई जो बढ गई,
और उसकी फुनगी जो बादलों तक पहुंची
है, और अपनी ऊंचाई के कारण उसका
मन जो फूल उठा है, ११ इसलिये जातियों
में जो सामर्थी है, मैं उसी के हाथ उसको
कर दूंगा, और वह निश्चय उस से बुरा
व्यवहार करेगा। उसकी दुष्टता के कारण
मैं ने उसको निकाल दिया है।
१२ परदेशी, जो जातियों में भयानक लोग
हैं, वे उसको काटकर छोड देंगे, उसकी
डालियां पहाडों पर, और सब तराइयों
में गिराई जाएंगी, और उसकी शाखाएं
देश के सब नालों में टूटी पडी रहेंगी, और
जाति जाति के सब लोग उसकी छाया
को छोडकर चले जाएंगे। १३ उस गिरे
हुए वृक्ष पर आकाश के सब पक्षी बसेरा
करते हैं, और उसकी शाखाओं के ऊपर
मैदान के सब जीवजन्तु चढने पाते हैं।
१४ यह इसलिये हुआ है कि जल के पास
के सब वृक्षों में से कोई अपनी ऊंचाई न
बढाए, न अपनी फुनगी को बादलों तक
पहुंचाए, और उन में से जितने जल पाकर
दृढ हो गए हैं वे ऊंचे होने के कारण
सिर न उठाए, क्योंकि वे भी सब के सब
कबर में गडे हुए मनुष्यों के समान मृत्यु
के वश करके अधोलोक में डाल दिए
जाएंगे॥

१५ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
जिस दिन वह अधोलोक में उतर गया,
उस दिन मैं ने विलाप कराया और गहिरे
समुद्र को ढांप दिया, और नदियों का
बहुत जल रुक गया, और उसके कारण
मैं ने लबानोन पर उदासी छा दी, और
मैदान के सब वृक्ष मूर्छित हुए। १६ जब
मैं ने उसको कबर में गडे हुओं के पास
अधोलोक में फेंक दिया, तब उसके गिरने
के शब्द से जाति जाति थरथरा गईं,
और एदेन के सब वृक्ष अर्थात् लबानोन
के उत्तम उत्तम वृक्षों ने, जितने उस में
जल पाते हैं, उन सभों ने अधोलोक में
शान्ति पाई। १७ वे भी उसके संग
तलवार से मारे हुओं के पास अधोलोक
में उतर गए, अर्थात् वे जो उसकी भुजा
थे, और जाति जाति के बीच उसकी
छाया में रहते थे॥

१८ सो महिमा और बडाई के विषय
में एदेन के वृक्षों में से तू किस के समान
है? तू तो एदेन के और वृक्षों के साथ
अधोलोक में उतारा जाएगा, और खतना-
हीन लोगों के बीच तलवार से मारे हुओं
के संग पडा रहेगा। फिरौन अपनी सारी
भीड-भाड समेत यों ही होगा, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है॥

३२ बारहवें वर्ष के बारहवें महीने
के पहिले दिन को यहोवा का
यह वचन मेरे पास पहुंचा, २ हे मनुष्य

* मूल में—तेरी।

के सन्तान, मिस्र के राजा फिरौन के
विषय विलाप का गीत बनाकर उसको
सुना जाति जाति मे तेरी उपमा जवान
सिंह से दी गई थी, परन्तु तू समुद्र के
मगर के समान है, तू अपनी नदियो मे
टूट पडा, और उनके जल को पावो से
मथकर गदला * कर दिया। ३ परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, मै बहुत सी जातियो
की सभा के द्वारा तुझ पर अपना जाल
फैलाऊगा और वे तुझे मेरे महाजाल मे
खीच लेगे। ४ तब मै तुझे भूमि पर
छोड़ूगा, और मैदान मे फेककर आकाश
के सब पक्षियो को तुझ पर बैठाऊगा,
और तेरे मास से सारी पृथ्वी के जीवजन्तुओ
को तृप्त करूगा। ५ मै तेरे मास को
पहाडो पर रखूगा, और तराइयो को
तेरी ऊचाई से भर दूगा। ६ और जिस
देश मे तू तैरता है, उसको पहाडो तक
मै तेरे लोहू से सीचूगा, और उसके नाले
तुझ से भर जाएगे। ७ जिस समय मै
तुझे मिटाने लगू, उस समय मै आकाश
को ढापूगा और तारो को धुन्धला कर
दूगा, मै सूर्य को बादल से छिपाऊगा,
और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा।
८ आकाश मे जितनी प्रकाशमान ज्योतिया
है, उन सब को मै तेरे कारण धुन्धला
कर दूगा, और तेरे देश मे अन्धकार कर
दूगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी
है॥

९ जब मै तेरे विनाश का समाचार
जाति जाति मे और तेरे अनजाने देशो
मे फैलाऊगा, तब बडे बड़े देशो के लोगो
के मन मे रिस उपजाऊगा। १० मै
बहुत सी जातियो को तेरे कारण विस्मित
कर दूगा, और जब मै उनके राजाओ के
साम्हने अपनी तलवार भंजूगा, तब तेरे
कारण उनके रोए खड़े हो जाएगे, और
तेरे गिरने के दिन वे अपने अपने प्राण
के लिये कापते रहेंगे। ११ क्योंकि पर-
मेश्वर यहोवा यो कहता है, बाबुल के
राजा की तलवार तुझ पर चलेगी।
१२ मै तेरी भीड को ऐसे शूरवीरो की
तलवारो के द्वारा गिराऊगा जो सब
जातियो मे भयानक है॥

वे मिस्र के घमण्ड को तोडेंगे, और
उसकी सारी भीड का सत्यानाश होगा।
१३ मै उसके सब पशुओ को उसके बहुतेरे
जलाशयो के तीर पर से नाश करूगा,
और भविष्य मे वे न तो मनुष्य के पाव
से और न पशुओ के खुरो से गदले किए
जाएगे। १४ तब मै उनका जल निर्मल
कर दूगा, और उनकी नदिया तेल की
नाईं बहेगी, परमेश्वर यहोवा की यही
वाणी है। १५ जब मै मिस्र देश को
उजाड कर दूगा और जिस से वह भरपूर
है, उस से छूछा कर दूगा, और जब मै
उसके सब रहनेवालो को मारूगा, तब
वे जान लेगे कि मै यहोवा हू॥

१६ लोगो के विलाप करने के लिये
विलाप का गीत यही है, जाति-जाति की
स्त्रिया इसे गाएगी, मिस्र और उसकी
सारी भीड के विषय वे यही विलापगीत
गाएगी, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी
है॥

१७ फिर बारहवे वर्ष के पहिले महीने
के पन्द्रहवे दिन को यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, १८ हे मनुष्य के सन्तान,
मिस्र की भीड के लिये हाय-हाय कर,
और उसको प्रतापी जातियो की बेटियो
समेत कबर मे गड़े हुओ के पास अधोलोक

* मूल में—उनकी नदियों को मैली।

में उतार। १६ तू किस से मनोहर है?
तू उतरकर खतनाहीनों के संग पड़ा रह॥
२० वे तलवार से मरे हुओं के बीच
गिरेंगे, उन* के लिये तलवार ही ठहराई
गई है, सो मिस्र को उसकी सारी भीड़
समेत घसीट ले जाओ। २१ सामर्थी
शूरवीर उस से और उसके सहायकों से
अधोलोक में बातें करेंगे, वे खतनाहीन
लोग वहां तलवार से मरे पड़े हैं॥
२२ अपनी सारी सभा समेत अश्शूर
भी वहां है, उसकी कबरें उसके चारों
ओर हैं, सब के सब तलवार से मारे
गए हैं। २३ उसकी कबरें गड़हे के
कोनों में बनी हुई हैं, और उसकी कबर
के चारों ओर उसकी सभा है, वे सब के
सब जो जीवनलोक में भय उपजाते थे,
अब तलवार से मरे पड़े हैं॥
२४ वहां एलाम है, और उसकी कबर
की चारों ओर उसकी सारी भीड़ है,
वे सब के सब तलवार से मारे गए हैं, वे
खतनाहीन अधोलोक में उतर गए हैं,
वे जीवनलोक में भय उपजाते थे, परन्तु
अब कबर में और गड़े हुओं के संग
उनके मुंह पर भी सियाही छाई हुई है।
२५ उसकी सारी भीड़ समेत उसे मारे
हुओं के बीच सेज मिली, उसकी कबरें
उसी के चारों ओर हैं, वे सब के सब
खतनाहीन तलवार से मारे गए, उन्हों
ने जीवनलोक में भय उपजाया था, परन्तु
अब कबर में और गड़े हुओं के संग उनके
मुंह पर सियाही छाई हुई है, और वे
मरे हुओं के बीच रखे गए हैं॥
२६ वहां सारी भीड़ समेत मेशेक
और तूबल हैं, उनके चारों ओर कबरें
हैं, वे सब के सब खतनाहीन तलवार से
मारे गए, क्योंकि जीवनलोक में वे भय
उपजाते थे। २७ और उन गिरे हुए
खतनाहीन शूरवीरों के संग वे पड़े न
रहेंगे जो अपने अपने युद्ध के हथियार
लिए हुए अधोलोक में उतर गए हैं, वहां
उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रखी
हुई हैं, और उनके अधर्म के काम उनकी
हड्डियों में व्याप हैं, क्योंकि जीवनलोक में
उन से शूरवीरों को भी भय उपजता
था। २८ इसलिये तू भी खतनाहीनों के
संग अंग-भंग होकर तलवार से मरे हुओं
के संग पड़ा रहेगा॥
२६ वहां एदोम और उसके राजा
और उसके सारे प्रधान हैं, जो पराक्रमी
होने पर भी तलवार से मरे हुओं के संग
रखे हैं, गड़हे में गड़े हुए खतनाहीन
लोगों के संग वे भी पड़े रहेंगे॥
३० वहां उत्तर दिशा के सारे प्रधान
और सारे सीदोनी भी हैं जो मरे हुओं
के संग उतर गए, उन्हों ने अपने पराक्रम
से भय उपजाया था, परन्तु अब वे लज्जित
हुए और तलवार से और मरे हुओं के
साथ वे भी खतनाहीन पड़े हुए हैं, और
कबर में अन्य गड़े हुओं के संग उनके मुंह
पर भी सियाही छाई हुई है॥
३१ इन्हें देखकर फिरौन भी अपनी
सारी भीड़ के विषय में शान्ति पाएगा,
हां फिरौन और उसकी सारी सेना जो
तलवार से मारी गई है, परमेश्वर यहोवा
की यही वाणी है। ३२ क्योंकि मैं ने
उसके कारण जीवनलोक में भय उपजाया
था, इसलिये वह सारी भीड़ समेत तलवार
से और मरे हुओं के सहित खतनाहीनों
के बीच लिटाया जाएगा, परमेश्वर यहोवा
की यही वाणी है॥

* मूल में—उस।

३३ यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, २ हे मनुष्य के
सन्तान, अपने लोगो से कह, जब मै किसी
देश पर तलवार चलाने लगू, और उस
देश के लोग किसी को अपना पहरुआ
करके ठहराए, ३ तब यदि वह यह
देखकर कि इस देश पर तलवार चला
चाहती है, नरसिगा फूककर लोगो को
चिता दे, ४ तो जो कोई नरसिगे का
शब्द सुनने पर न चेते और तलवार के
चलने से मर जाए, उसका खून उसी के
सिर पडेगा। ५ उस ने नरसिगे का शब्द
सुना, परन्तु न चेता, सो उसका खून
उसी को लगेगा। परन्तु, यदि वह चेत
जाता, तो अपना प्राण बचा लेता।
६ परन्तु यदि पहरुआ यह देखने पर कि
तलवार चला चाहती है नरसिगा फूककर
लोगो को न चिताए, और तलवार के
चलने से उन मे से कोई मर जाए, तो
वह तो अपने अधर्म मे फसा हुआ मर
जाएगा, परन्तु उसके खून का लेखा मै
पहरुए ही से लूगा ॥

७ इसलिये, हे मनुष्य के सन्तान, मै ने
तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ ठहरा
दिया है, तू मेरे मुह से वचन सुन सुनकर
उन्हे मेरी ओर से चिता दे। ८ यदि मै दुष्ट
से कहू, हे दुष्ट, तू निश्चय मरेगा, तब
यदि तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय
न चिताए, तो वह दुष्ट अपने अधर्म मे
फसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का
लेखा मै तुझी से लूगा। ९ परन्तु यदि
तू दुष्ट को उसके मार्ग के विषय चिताए
कि वह अपने मार्ग से फिरे और वह अपने
मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म
मे फसा हुआ मरेगा, परन्तु तू अपना
प्राण बचा लेगा ॥

१० फिर हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल
के घराने से यह कह, तुम लोग कहते हो,
हमारे अपराधो और पापो का भार हमारे
ऊपर लदा हुआ है और हम उसके कारण
गलते जाते है, हम कैसे जीवित रहे?
११ सो तू ने उन से यह कह, परमेश्वर
यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की
सौगन्ध, मै दुष्ट के मरने से कुछ भी
प्रसन्न नही होता, परन्तु इस से कि दुष्ट
अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे, हे
इस्राएल के घराने, तुम अपने अपने बुरे
मार्ग से फिर जाओ, तुम क्यो मरो?
१२ और हे मनुष्य के सन्तान, अपने लोगो
से यह कह, जब धर्मी जन अपराध करे
तब उसका धर्म उसे बचा न सकेगा, और
दुष्ट की दुष्टता भी जो हो, जब वह उस से
फिर जाए, तो उसके कारण वह न
गिरेगा, और धर्मी जन जब वह पाप करे,
तब अपने धर्म के कारण जीवित न रहेगा।
१३ यदि मै धर्मी से कहू कि तू निश्चय
जीवित रहेगा, और वह अपने धर्म पर
भरोसा करके कुटिल काम करने लगे,
तब उसके धर्म के कामो मे से किसी का
स्मरण न किया जाएगा, जो कुटिल काम
उस ने किए हो वह उन्ही मे फसा हुआ
मरेगा। १४ फिर जब मै दुष्ट से कहू,
तू निश्चय मरेगा, और वह अपने पाप से
फिरकर न्याय और धर्म के काम करने
लगे, १५ अर्थात् यदि दुष्ट जन बन्धक
फेर दे, अपनी लूटी हुई वस्तुए भर दे,
और बिना कुटिल काम किए जीवनदायक
विधियो पर चलने लगे, तो वह न मरेगा,
वह निश्चय जीवित रहेगा। १६ जितने
पाप उस ने किए हो, उन मे से किसी का
स्मरण न किया जाएगा, उस ने न्याय

ग्रौर धर्म के काम किए ग्रौर वह निश्चय
जीवित रहेगा ॥

१७ तौभी तुम्हारे लोग कहते हैं,
प्रभु की चाल ठीक नहीं, परन्तु उन्हीं
की चाल ठीक नहीं है। १८ जब धर्मी
ग्रपने धर्म से फिरकर कुटिल काम करने
लगे, तब निश्चय वह उन में फंसा हुग्रा
मर जाएगा। १९ ग्रौर जब दुष्ट ग्रपनी
दुष्टता से फिरकर न्याय ग्रौर धर्म के
काम करने लगे, तब वह उनके कारण
जीवित रहेगा। २० तौभी तुम कहते
हो कि प्रभु की चाल ठीक नहीं? हे
इस्राएल के घराने, मैं हर एक व्यक्ति
का न्याय उसकी चाल ही के ग्रनुसार
करूंगा ॥

२१ फिर हमारी बंधुग्राई के ग्यारहवें
वर्ष के दसवें महीने के पांचवें दिन को,
एक व्यक्ति जो यरूशलेम से भागकर
बच गया था, वह मेरे पास ग्राकर कहने
लगा, नगर ले लिया गया। २२ उस
भागे हुए के ग्राने से पहिले सांझ को
यहोवा की शक्ति* मुझ पर हुई थी,
ग्रौर भोर तक ग्रर्थात् उस मनुष्य के ग्राने
तक उस ने मेरा मुंह खोल दिया, सो
मेरा मुंह खुला ही रहा, ग्रौर मैं फिर
गूंगा न रहा। २३ तब यहोवा का यह
वचन मेरे पास पहुंचा, २४ हे मनुष्य
के सन्तान, इस्राएल की भूमि के उन
खण्डहरों के रहनेवाले यह कहते हैं,
इब्राहीम एक ही मनुष्य था, तौभी देश
का ग्रधिकारी हुग्रा, परन्तु हम लोग
बहुत से हैं, इसलिये देश निश्चय हमारे
ही ग्रधिकार में दिया गया है। २५ इस
कारण तू उन से कह, परमेश्वर यहोवा
यों कहता है, तुम लोग तो मांस लोहू
समेत खाते ग्रौर ग्रपनी मूरतों की ग्रोर
दृष्टि करते, ग्रौर हत्या करते हो, फिर
क्या तुम उस देश के ग्रधिकारी रहने
पाग्रोगे? २६ तुम ग्रपनी ग्रपनी तलवार
पर भरोसा करते ग्रौर घिनौने काम करते,
ग्रौर ग्रपने ग्रपने पड़ोसी की स्त्री को
ग्रशुद्ध करते हो; फिर क्या तुम उस देश
के ग्रधिकारी रहने पाग्रोगे? २७ तू उन
से यह कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता
है, मेरे जीवन की सौगन्ध, निःसन्देह जो
लोग खण्डहरों में रहते हैं, वे तलवार
से गिरेंगे, ग्रौर जो खुले मैदान में रहता
है, उसे मैं जीवजन्तुग्रों का ग्राहार कर
दूंगा, ग्रौर जो गढ़ों ग्रौर गुफाग्रों में रहते
हैं, वे मरी से मरेंगे। २८ ग्रौर मैं उस
देश को उजाड़ ही उजाड़ कर दूंगा,
ग्रौर उसके बल का घमण्ड जाता रहेगा,
ग्रौर इस्राएल के पहाड़ ऐसे उजड़ेंगे कि
उन पर होकर कोई न चलेगा। २९ सो
जब मैं उन लोगों के किए हुए सब घिनौने
कामों के कारण उस देश को उजाड़ ही
उजाड़ कर दूंगा, तब वे जान लेंगे कि
मैं यहोवा हूं ॥

३० ग्रौर हे मनुष्य के सन्तान, तेरे
लोग भीतों के पास ग्रौर घरों के द्वारों
में तेरे विषय में बातें करते ग्रौर एक
दूसरे से कहते हैं, ग्राग्रो, सुनो, कि यहोवा
की ग्रोर से कौन सा वचन निकलता है।
३१ वे प्रजा की नाईं तेरे पास ग्राते ग्रौर
मेरी प्रजा बनकर तेरे साम्हने बैठकर
तेरे वचन सुनते हैं, परन्तु वे उन पर
चलते नहीं, मुंह से तो वे बहुत प्रेम दिखाते
हैं, परन्तु उनका मन लालच ही में लगा
रहता है। ३२ ग्रौर तू उनकी दृष्टि
में प्रेम के मधुर गीत गानेवाले ग्रौर ग्रच्छे

* मूल में—हाथ।

बजानेवाले का सा ठहरा है, क्योंकि वे
तेरे वचन सुनते तो है, परन्तु उन पर
चलते नही। ३३ सो जब यह बात
घटेगी, और वह निश्चय घटेगी ! तब
वे जान लेगे कि हमारे बीच एक
भविष्यद्वक्ता आया था ॥

३४ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
इस्राएल के चरवाहो के विरुद्ध भविष्यद्वाणी
करके उन चरवाहो से कह, परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, हाय इस्राएल के
चरवाहो पर जो अपने अपने पेट भरते
है ! क्या चरवाहो को भेड-बकरियो का
पेट न भरना चाहिए ? ३ तुम लोग
चर्बी खाते, ऊन पहिनते और मोटे मोटे
पशुओ को काटते हो, परन्तु भेड-बकरियो
को तुम नही चराते। ४ तुम ने बीमारो
को बलवान न किया, न रोगियो को
चगा किया, न घायलो के घावो को बान्धा,
न निकाली हुई को फेर लाए, न खोई
हुई को खोजा, परन्तु तुम ने बल और
जबरदस्ती से अधिकार चलाया है।
५ वे चरवाहे के न होने के कारण तितर-
बितर हुई, और सब वनपशुओ का आहार
हो गई। ६ मेरी भेड-बकरिया तितर-
बितर हुई है, वे सारे पहाडो और ऊचे
ऊचे टीलो पर भटकती थी, मेरी भेड-
बकरिया सारी पृथ्वी के ऊपर तितर-बितर
हुई, और न तो कोई उनकी सुधि लेता
था, न कोई उनको ढूढता था ॥

७ इस कारण, हे चरवाहो, यहोवा
का वचन सुनो। ८ परमेश्वर यहोवा की
यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध,
मेरी भेड-बकरिया जो लुट गई, और
मेरी भेड-बकरिया जो चरवाहे के न
होने के कारण सब वनपशुओ का आहार
हो गई, और इसलिये कि मेरे चरवाहो
ने मेरी भेड-बकरियो की सुधि नही ली,
और मेरी भेड-बकरियो का पेट नही,
अपना ही अपना पेट भरा, ९ इस कारण
हे चरवाहो, यहोवा का वचन सुनो,
१० परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
देखो, मै चरवाहो के विरुद्ध हू, और
मै उन से अपनी भेड-बकरियो का लेखा
लूगा, और उनको फिर उन्हे चराने न
दूगा, वे फिर अपना अपना पेट भरने
न पाएगे। मै अपनी भेड-बकरिया उनके
मुह से छुडाऊगा कि आगे को वे उनका
आहार न हो ॥

११ क्योकि परमेश्वर यहोवा यो कहता
है, देखो, मै आप ही अपनी भेड-बकरियो
की सुधि लूगा, और उन्हे ढूढूगा।
१२ जैसे चरवाहा अपनी भेड-बकरियो
मे से भटकी हुई को फिर से अपने झुण्ड
में बटोरता है, वैसे ही मै भी अपनी भेड-
बकरियो को बटोरूगा, मै उन्हे उन सब
स्थानो से निकाल ले आऊगा, जहा जहा
वे बादल और घोर अन्धकार के दिन
तितर-बितर हो गई हो। १३ और मै
उन्हे देश देश के लोगो मे से निकालूगा,
और देश देश से इकट्ठा करूगा, और
उन्ही की निज भूमि मे ले आऊगा, और
इस्राएल के पहाडो पर और नालो मे
और उस देश के सब बसे हुए स्थानो मे
चराऊगा। १४ मै उन्हे अच्छी चराई
मे चराऊगा, और इस्राएल के ऊचे ऊचे
पहाडो पर उनको चराई मिलेगी,
वहा वे अच्छी हरियाली मे बैठा करेगी,
और इस्राएल के पहाडो पर उत्तम से
उत्तम चराई चरेगी। १५ मै आप ही
अपनी भेड-बकरियो का चरवाहा हूगा,

और मै आप ही उन्हे बैठाऊगा, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। १६ मै खोई
हुई को ढूढूगा, और निकाली हुई
को फेर लाऊगा, और घायल के घाव
बान्धूगा, और बीमार को बलवान् करूगा,
और जो मोटी और बलवन्त है उन्हे मै
नाश करूगा, मै उनकी चरवाही न्याय से
करूगा ॥

१७ और हे मेरे झुण्ड, तुम से
परमेश्वर यहोवा यो कहता है, देखो,
मै भेड-भेड के बीच और मेढो और बकरो
के बीच न्याय करता हू। १८ क्या तुम्हे
यह छोटी बात जान पडती है कि तुम
अच्छी चराई चर लो और शेष चराई को
अपने पावो से रौदो, और क्या तुम्हे यह
छोटी बात जान पडती है कि तुम निर्मल
जल पी लो और शेष जल को अपने पावो
से गदला करो? १९ और क्या मेरी
भेड-बकरियो को तुम्हारे पावो से रौदे हुए
को चरना, और तुम्हारे पावो से गदले
किए हुए को पीना पडेगा?

२० इस कारण परमेश्वर यहोवा उन
से यो कहता है, देखो, मै आप मोटी और
दुबली भेड-बकरियो के बीच न्याय करूगा।
२१ तुम जो सब बीमारो को पाजर और
कन्धे से यहा तक ढकेलते और सीग से
यहा तक मारते हो कि वे तितर-बितर
हो जाती है, २२ इस कारण मै अपनी
भेड-बकरियो को छुडाऊगा, और वे फिर
न लुटेगी, और मै भेड-भेड के और बकरी-
बकरी के बीच न्याय करूगा। २३ और
मै उन पर ऐसा एक चरवाहा ठहराऊगा
जो उनकी चरवाही करेगा, वह मेरा
दास दाऊद होगा, वही उनको चराएगा,
और वही उनका चरवाहा होगा। २४ और
मै, यहोवा, उनका परमेश्वर ठहरूगा,
और मेरा दास दाऊद उनके बीच प्रधान
होगा, मुझ यहोवा ही ने यह कहा है॥

२५ मै उनके साथ शान्ति की वाचा
बान्धूगा, और दुष्ट जन्तुओ को देश मे न
रहने दूगा, सो वे जगल मे निडर रहेगे,
और वन मे सोएगे। २६ और मै उन्हे
और अपनी पहाडी के आस पास के स्थानो
को आशीष का कारण बना दूगा, और
मेह को मै ठीक समय मे बरसाया करूगा,
और वे आशीषो की वर्षा होगी।
२७ और मैदान के वृक्ष फलेगे और भूमि
अपनी उपज उपजाएगी, और वे अपने
देश मे निडर रहेगे, जब मै उनके जूए
को तोडकर उन लोगो के हाथ से छुडाऊगा,
जो उन से सेवा कराते है, तब वे जान
लेगे कि मै यहोवा हू। २८ वे फिर
जाति-जाति से लूटे न जाएगे, और न
वनपशु उन्हे फाड खाएगे, वे निडर रहेगे,
और उनको कोई न डराएगा। २९ और
मै उनके लिये महान वारिये उपजाऊगा,
और वे देश मे फिर भूखो न मरेगे, और
न जाति-जाति के लोग फिर उनकी निन्दा
करेगे। ३० और वे जानेगे कि मै पर-
मेश्वर यहोवा, उनके सग हू, और वे जो
इस्राएल का घराना है, वे मेरी प्रजा है,
मुझ परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।
३१ तुम तो मेरी भेड-बकरिया, मेरी
चराई की भेड-बकरिया हो, तुम तो
मनुष्य हो, और मै तुम्हारा परमेश्वर हू,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

३५ यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुचा, २ हे मनुष्य के सन्तान,
अपना मुह सेईर पहाड की ओर करके
उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर, ३ और
उस से कह, परमेश्वर यहोवा यो कहता है,

हे सेईर पहाड, मैं तेरे विरुद्ध हू, और
अपना हाथ तेरे विरुद्ध बढाकर तुझे उजाड
ही उजाड कर दूगा। ४ मैं तेरे नगरो
को खण्डहर कर दूगा, और तू उजाड़
हो जाएगा, तब तू जान लेगा कि मैं
यहोवा हू। ५ क्योंकि तू इस्राएलियो से
युग-युग की शत्रुता रखता था, और उनकी
विपत्ति के समय जब उनके अधर्म के
दण्ड का समय पहुचा, तब उन्हे तलवार
से मारे जाने को दे दिया *। ६ इसलिये
परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे
जीवन की सौगन्ध, मैं तुझे हत्या किए
जाने के लिये तैयार करूगा और खून
तेरा पीछा करेगा, तू तो खून से न घिनाता
था, इस कारण खून तेरा पीछा करेगा।
७ इस रीति मैं सेईर पहाड को उजाड ही
उजाड कर दूगा, और जो उस मे आता-
जाता हो, मैं उसको नाश करूगा। ८ और
मैं उसके पहाडो को मारे हुओ से भर
दूगा, तेरे टीलो, तराइयो और सब
नालो मे तलवार से मारे हुए गिरेंगे।
९ मैं तुझे युग युग के लिये उजाड कर
दूगा, और तेरे नगर फिर न बसेंगे।
तब तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हू॥

१० क्योंकि तू ने कहा है, कि ये
दोनो जातिया और ये दोनो देश मेरे होंगे,
और हम ही उनके स्वामी हो जाएगे,
यद्यपि यहोवा वहां था। ११ इस कारण,
परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, मेरे
जीवन की सौगन्ध, तेरे कोप के अनुसार,
और जो जलजलाहट तू ने उन पर अपने
बैर के कारण की है, उसी के अनुसार
मैं तुझ से बर्ताव करूगा, और जब मैं
तेरा न्याय करू, तब तुम में अपने को प्रगट

* मूल में—तलवार के हाथो पर सौंप
दिया।

करूगा। १२ और तू जानेगा, कि मुझ
यहोवा ने तेरी सब तिरस्कार की बातें
सुनी हैं, जो तू ने इस्राएल के पहाडो
के विषय में कहीं, कि, वे तो उजड गए,
वे हम ही को दिए गए हैं कि हम उन्हें
खा डालें। १३ तुम ने अपने मुह से मेरे
विरुद्ध बडाई मारी, और मेरे विरुद्ध बहुत
बातें कही हैं, इसे मैं ने सुना है। १४ पर-
मेश्वर यहोवा यो कहता है, जब पृथ्वी
भर मे आनन्द होगा, तब मैं तुझे उजाड़
करूगा। १५ तू इस्राएल के घराने के
निज भाग के उजड जाने के कारण
आनन्दित हुआ, सो मैं भी तुझ से वैसा
ही करूगा, हे सेईर पहाड, हे एदोम के
सारे देश, तू उजाड हो जाएगा। तब
वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हू॥

३६ फिर हे मनुष्य के सन्तान, तू
इस्राएल के पहाडो से भविष्यद्वाणी
करके कह, हे इस्राएल के पहाडो,
यहोवा का वचन सुनो। २ परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, शत्रु ने तो तुम्हारे
विषय मे कहा है, आहा! प्राचीनकाल
के ऊचे स्थान अब हमारे अधिकार मे
आ गए। ३ इस कारण भविष्यद्वाणी
करके कह, परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
लोगो ने जो तुम्हे उजाडा और चारो
ओर से तुम्हे ऐसा निगल लिया कि तुम
बची हुई जातियो का अधिकार हो जाओ,
और लुतरे तुम्हारी चर्चा करते और
साधारण लोग तुम्हारी निन्दा करते है,
४ इस कारण, हे इस्राएल के पहाडो,
परमेश्वर यहोवा का वचन सुनो, परमेश्वर
यहोवा तुम से यो कहता है, अर्थात् पहाडो
और पहाडियो से और नालो और तराइयो
से, और उजडे हुए खण्डहरो और निर्जन

नगरों से जो चारों ओर की बची हुई
जातियों से लुट गए और उनके हंसने के
कारण हो गए हैं, ५ परमेश्वर यहोवा
यों कहता है, निश्चय मैं ने अपनी जलन
की आग में बची हुई जातियों के और
सारे एदोम के विरुद्ध में कहा है कि
जिन्हों ने मेरे देश को अपने मन के पूरे
आनन्द और अभिमान से अपने अधिकार
में किया है कि वह पराया होकर लूटा
जाए। ६ इस कारण इस्राएल के देश
के विषय में भविष्यद्वाणी करके पहाड़ों,
पहाड़ियों, नालों, और तराइयों से कह,
परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो,
तुम ने जातियों की निन्दा सही है, इस
कारण मैं अपनी बड़ी जलजलाहट से
बोला हूं। ७ परमेश्वर यहोवा यों कहता
है, मैं ने यह शपथ खाई है * कि निःसन्देह
तुम्हारे चारों ओर जो जातियां हैं, उनको
अपनी निन्दा आप ही सहनी पड़ेगी॥

८ परन्तु, हे इस्राएल के पहाड़ो, तुम
पर डालियां पनपेंगी और उनके फल मेरी
प्रजा इस्राएल के लिये लगेंगे, क्योंकि
उसका लौट आना निकट है। ९ और
देखो, मैं तुम्हारे पक्ष में हूं, और तुम्हारी
ओर कृपादृष्टि करूंगा, और तुम जोते-
बोए जाओगे, १० और मैं तुम पर
बहुत मनुष्य अर्थात् इस्राएल के सारे
घराने को बसाऊंगा, और नगर फिर
बसाए और खण्डहर फिर बनाए जाएंगे।
११ और मैं तुम पर मनुष्य और पशु दोनों
को बहुत बढ़ाऊंगा, और वे बढ़ेंगे और
फूलें-फलेंगे, और मैं तुम को प्राचीनकाल
की नाईं बसाऊंगा, और पहिले से अधिक
तुम्हारी भलाई करूंगा। तब तुम जान

* मूल में—मैं ने हाथ उठाया है।

लोगे कि मैं यहोवा हूं। १२ और मैं
ऐसा करूंगा कि मनुष्य अर्थात् मेरी प्रजा
इस्राएल तुम पर चले-फिरेगी, और
वे तुम्हारे स्वामी होंगे, और तुम उनका
निज भाग होगे, और वे फिर तुम्हारे
कारण निर्वंश न हो जाएंगे। १३ पर-
मेश्वर यहोवा यों कहता है, जो लोग
तुम से कहा करते हैं, कि तू मनुष्यों का
खानेवाला है, और अपने पर बसी हुई
जाति को निर्वंश कर देता है, १४ सो
फिर तू मनुष्यों को न खाएगा, और न
अपने पर बसी हुई जाति को निर्वंश
करेगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी
है। १५ और मैं फिर जाति-जाति के
लोगों से तेरी निन्दा न सुनवाऊंगा, और
तुझे जाति-जाति की ओर से फिर नाम-
धराई न सहनी पड़ेगी, और तुझ पर बसी
हुई जाति को तू फिर ठोकर न खिलाएगा,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

१६ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुंचा, १७ हे मनुष्य के सन्तान,
जब इस्राएल का घराना अपने देश में
रहता था, तब अपनी चालचलन और
कामों के द्वारा वे उसको अशुद्ध करते
थे, उनकी चालचलन मुझे ऋतुमती की
अशुद्धता सी जान पड़ती थी। १८ सो जो
हत्या उन्हों ने देश में की, और देश को
अपनी मूरतों के द्वारा अशुद्ध किया, इसके
कारण मैं ने उन पर अपनी जलजलाहट
भड़काई *। १९ और मैं ने उन्हें जाति-
जाति में तितर-बितर किया, और वे
देश देश में छितर गए, उनके चालचलन
और कामों के अनुसार मैं ने उनको दण्ड
दिया। २० परन्तु जब वे उन जातियों

* मूल में—उंडेली।

मे पहुचे जिन मे वे पहुचाए गए, तब
उन्हो ने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र
ठहराया, क्योकि लोग उनके विषय मे
यह कहने लगे, ये यहोवा की प्रजा है,
परन्तु उसके देश से निकाले गए है।
२१ परन्तु मै ने अपने पवित्र नाम की
सुधि* ली, जिसे इस्राएल के घराने ने
उन जातियो के बीच अपवित्र ठहराया
था, जहा वे गए थे ।।

२२ इस कारण तू इस्राएल के घराने
मे कह, परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
हे इस्राएल के घराने, मै इस को तुम्हारे
निमित्त नही, परन्तु अपने पवित्र नाम के
निमित्त करता हू जिसे तुम ने उन जातियो
मे अपवित्र ठहराया जहा तुम गए थे।
२३ और मै अपने बडे नाम को पवित्र
ठहराऊगा, जो जातियो मे अपवित्र ठहराया
गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र
किया, और जब मै उनकी दृष्टि में
तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूंगा, तब वे जातिया
जान लेगी कि मै यहोवा हू, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। २४ मै तुम
को जातियो मे से ले लूगा, और देशो मे
से इकट्ठा करूगा, और तुम को तुम्हारे
निज देश मे पहुचा दूगा। २५ मै तुम
पर शुद्ध जल छिडकूगा, और तुम शुद्ध
हो जाओगे, और मै तुम को तुम्हारी
सारी अशुद्धता और मूरतो से शुद्ध करूगा।
२६ मै तुम को नया मन दूगा, और
तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूगा,
और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय
निकालकर तुम को मास का हृदय दूगा।
२७ और मै अपना आत्मा तुम्हारे भीतर
देकर ऐसा करूगा कि तुम मेरी विधियो
पर चलोगे और मेरे नियमो को मानकर
उनके अनुसार करोगे। २८ तुम उस
देश मे बसोगे जो मै ने तुम्हारे पितरो को
दिया था, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे,
और मै तुम्हारा परमेश्वर ठहरूगा।
२९ और मै तुम को तुम्हारी सारी
अशुद्धता से छुडाऊगा, और अन्न उपजने
की आज्ञा देकर, उसे बढाऊगा और
तुम्हारे बीच अकाल न डालूगा। ३० मै
वृक्षो के फल और खेत की उपज बढाऊगा,
कि जातियो मे अकाल के कारण फिर
तुम्हारी नामधराई न होगी। ३१ तब
तुम अपने बुरे चालचलन और अपने
कामो को जो अच्छे नही थे, स्मरण
करके अपने अधर्म और घिनौने कामो के
कारण अपने आप से घृणा करोगे।
३२ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, तुम
जान लो कि मै इसको तुम्हारे निमित्त
नही करता। हे इस्राएल के घराने अपने
चालचलन के विषय मे लज्जित हो और
तुम्हारा मुख काला हो जाए ।।

३३ परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
जब मै तुम को तुम्हारे सब अधर्म के कामो
से शुद्ध करूगा, तब तुम्हारे नगरो को
बसाऊगा, और तुम्हारे खण्डहर फिर
बनाए जाएगे। ३४ और तुम्हारा देश
जो सब आने जानेवालो के साम्हने उजाड
है, वह उजाड होने की सन्ती जोता बोया
जाएगा। ३५ और लोग कहा करेंगे,
यह देश जो उजाड था, सो एदेन की बारी
सा हो गया, और जो नगर खण्डहर और
उजाड हो गए और ढाए गए थे, सो
गढवाले हुए, और बसाए गए है। ३६ तब
जो जातिया तुम्हारे आस पास बची रहेगी,
सो जान लेगी कि मुझ यहोवा ने ढाए
हुए को फिर बनाया, और उजाड मे पेड

* मूल में—उस पर मैं ने दया की है।

रोपे है, मुझ यहोवा ने यह कहा, और
ऐसा ही करूंगा॥

३७ परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
इस्राएल के घराने मे फिर मुझ से बिनती
की जाएगी कि मैं उनके लिये यह करूं,
अर्थात् मैं उन मे मनुष्यो की गिनती भेड़-
बकरियो की नाईं बढ़ाऊं। ३८ जैसे पवित्र
समयो की भेड़-बकरिया, अर्थात् नियत
पर्वो के समय यरूशलेम मे की भेड़-
बकरिया अनगिनित होती है वैसे ही जो
नगर अब खण्डहर है वे अनगिनित
मनुष्यो के झुण्डो से भर जाएंगे। तब
वे जान लेगे कि मैं यहोवा हूं॥

३७ यहोवा की शक्ति * मुझ पर
हुई, और वह मुझ मे अपना
आत्मा समवाकर बाहर ले गया और
मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया,
वह तराई हड्डियो से भरी हुई थी।
२ तब उस ने मुझे उनके चारो ओर
घुमाया, और तराई की तह पर बहुत
ही हड्डिया थी, और वे बहुत सूखी थी।
३ तब उस ने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के
सन्तान, क्या ये हड्डिया जी सकती है?
म ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, तू ही
जानता है। ४ तब उस ने मुझ से कहा,
इन हड्डियो से भविष्यद्वाणी करके कह,
हे सूखी हड्डियो, यहोवा का वचन सुनो।
५ परमेश्वर यहोवा तुम † हड्डियो से
यो कहता है, देखो, म आप तुम मे सास
समवाऊगा, और तुम जी उठोगी। ६ और
मे तुम्हारी नसें उपजाकर मास चढाऊगा,
और तुम को चमडे से ढापूगा, और
तुम में सास समवाऊगा और तुम जी
जाओगी, और तुम जान लोगी कि म
यहोवा हू॥

७ इस आज्ञा के अनुसार म
भविष्यद्वाणी करने लगा, और म
भविष्यद्वाणी कर ही रहा था, कि एक
आहट आई, और भूईडोल हुआ, और
वे हड्डिया इकट्ठी होकर हड्डी से हड्डी
जुड़ गईं। ८ और मैं देखता रहा, कि
उन मे नसे उत्पन्न हुई और मास चढा,
और वे ऊपर चमडे से ढप गईं, परन्तु
उन मे सास कुछ न थी। ९ तब उस ने
मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान सास
से भविष्यद्वाणी कर, और सास से
भविष्यद्वाणी करके कह, हे सास,
परमेश्वर यहोवा यो कहता है कि चारो
दिशाओ से आकर इन घात किए हुओ मे
समा जा कि ये जी उठे। १० उसकी इस
आज्ञा के अनुसार म ने भविष्यद्वाणी की,
तब सास उन मे आ गई, और वे जीकर
अपने अपने पावो के बल खडे हो गए,
और एक बहुत बडी सेना हो गई॥

११ फिर उस ने मुझ से कहा, हे
मनुष्य के सन्तान, ये हड्डिया इस्राएल
के सारे घराने की उपमा है। वे कहते
है, हमारी हड्डिया सूख गईं, और
हमारी आशा जाती रही, हम पूरी
रीति से कट चुके है। १२ इस कारण
भविष्यद्वाणी करके उन से कह, परमेश्वर
यहोवा यो कहता है, हे मेरी प्रजा के लोगो,
देखो, मैं तुम्हारी कबरे खोलकर तुम को
उन से निकालूगा, और इस्राएल के देश में
पहुचा दूगा। १३ सो जब म तुम्हारी
कबरे खोलू, और तुम को उन से निकालू,
तब हे मेरी प्रजा के लोगो, तुम जान
लोगे कि म यहोवा हू। १४ और मैं
तुम मे अपना आत्मा समवाऊगा, और

* मूल में—यहोवा का हाथ।
† मूल में—इन।

तुम जीओगे, और तुम को तुम्हारे निज
देश मे बसाऊगा, तब तुम जान लोगे
कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा, और
किया भी है, यहोवा की यही वाणी है ।।
१५ फिर यहोवा का यह वचन मेरे
पास पहुचा, १६ हे मनुष्य के सन्तान,
एक लकडी लेकर उस पर लिख, यहूदा
की और उसके सगी इस्राएलियो की,
तब दूसरी लकडी लेकर उस पर लिख,
यूसुफ की अर्थात् एप्रैम की, और उसके
सगी इस्राएलियो की लकडी। १७ फिर
उन लकडियो को एक दूसरी मे जोडकर
एक ही कर ले कि वे तेरे हाथ मे एक ही
लकडी बन जाए। १८ और जब तेरे
लोग तुझ से पूछे, क्या तू हमे न बताएगा
कि इन से तेरा क्या अभिप्राय है?
१९ तब उन से कहना, परमेश्वर यहोवा
यो कहता है, देखो, मै यूसुफ की लकडी
को जो एप्रैम के हाथ मे है, और इस्राएल
के जो गोत्र उसके सगी है, उनको लेकर
यहूदा की लकडी से जोडकर उसके साथ
एक ही लकडी कर दूगा, और दोनो मेरे
हाथ मे एक ही लकडी बनेगी। २० और
जिन लकडियो पर तू ऐसा लिखेगा, वे
उनके साम्हने तेरे हाथ मे रहे। २१ और
तू उन लोगो मे कह, परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, देखो, मै इस्राएलियो को उन
जातियो में से लेकर जिन मे वे चले गए
है, चारो ओर से इकट्ठा करूगा, और
उनके निज देश मे पहुचाऊगा। २२ और
मै उनको उस देश अर्थात् इस्राएल के
पहाडो पर एक ही जाति कर दूगा,
और उन सभो का एक ही राजा होगा,
और वे फिर दो न रहेगे और न दो राज्यो
में कभी बटेगे। २३ वे फिर अपनी
मूरतो, और घिनौने कामो वा अपने
किसी प्रकार के पाप के द्वारा अपने को
अशुद्ध न करेगे, परन्तु मै उनको उन
सब बस्तियो से, जहा वे पाप करते थे,
निकालकर शुद्ध करूगा, और वे मेरी प्रजा
होगे, और मै उनका परमेश्वर हूगा ।।
२४ मेरा दास दाऊद उनका राजा
होगा, सो उन सभो का एक ही चरवाहा
होगा। वे मेरे नियमो पर चलेगे और
मेरी विधियो को मानकर उनके अनुसार
चलेगे। २५ वे उस देश में रहेगे जिसे मैं
ने अपने दास याकूब को दिया था, और
जिस मे तुम्हारे पुरखा रहते थे, उसी में
वे और उनके बेटे-पोते सदा बसे रहेंगे,
और मेरा दास दाऊद सदा उनका प्रधान
रहेगा। २६ मै उनके साथ शान्ति की
वाचा बान्धूगा, वह सदा की वाचा
ठहरेगी, और मै उन्हे स्थान देकर गिनती
मे बढाऊगा, और उनके बीच अपना
पवित्रस्थान सदा बनाए रखूगा। २७ मेरे
निवास का तम्बू उनके ऊपर तना रहेगा,
और मै उनका परमेश्वर हूगा, और वे
मेरी प्रजा होगे। २८ और जब मेरा
पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये
रहेगा, तब सब जातिया जान लेगी कि
मै यहोवा इस्राएल का पवित्र करनेवाला
हू ।।

३८ फिर यहोवा का यह वचन
मेरे पास पहुचा, २ हे मनुष्य
के सन्तान, अपना मुह मागोग देश के
गोग की ओर करके, जो रोश, मेशेक
और तूबल का प्रधान है, उसके विरुद्ध
भविष्यद्वाणी कर। ३ और यह कह,
हे गोग, हे रोश, मेशेक, और तूबल के
प्रधान, परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
देख, मै तेरे विरुद्ध हू। ४ मै तुझे घुमा

ले आऊंगा, और तेरे जबड़ों में आंकड़े
डालकर तुझे निकालूंगा, और तेरी
सारी सेना को भी अर्थात् घोड़ों और
सवारों को जो सब के सब कवच पहिने
हुए एक बड़ी भीड़ हैं, जो फरी और ढाल
लिए हुए सब के सब तलवार चलानेवाले
होंगे, ५ और उनके संग फारस, कूश
और पूत को, जो सब के सब ढाल लिए
और टोप लगाए होंगे, ६ और गोमेर
और उसके सारे दलों को, और उत्तर
दिशा के दूर दूर देशों के तोगर्मा के घराने,
और उसके सारे दलों को निकालूंगा,
तेरे संग बहुत से देशों के लोग होंगे॥

७ इसलिये तू तैयार हो जा, तू और
जितनी भीड़ तेरे पास इकट्ठी हो, तैयार
रहना, और तू उनका अगुवा बनना।
८ बहुत दिनों के बीतने पर तेरी सुधि
ली जाएगी, और अन्त के वर्षों में तू
उस देश में आएगा, जो तलवार के वश से
छूटा हुआ होगा, और जिसके निवासी *
बहुत सी जातियों में से इकट्ठे होंगे,
अर्थात् तू इस्राएल के पहाड़ों पर आएगा
जो निरन्तर उजाड़ रहे हैं, परन्तु वे †
देश देश के लोगों के वश से छुड़ाए जाकर
सब के सब निडर रहेंगे। ९ तू चढ़ाई
करेगा, और आंधी की नाईं आएगा,
और अपने सारे दलों और बहुत देशों
के लोगों समेत मेघ के समान देश पर
छा जाएगा॥

१० परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
उस दिन तेरे मन में ऐसी ऐसी बातें
आएंगी कि तू एक बुरी युक्ति भी
निकालेगा, ११ और तू कहेगा कि मैं
बिन शहरपनाह के गांवों के देश पर
चढ़ाई करूंगा, मैं उन लोगों के पास
जाऊंगा जो चैन से निडर रहते हैं, जो
सब के सब बिना शहरपनाह और बिना
बेंड़ों और पल्लों के बसे हुए हैं, १२ ताकि
छीनकर तू उन्हें लूटे और अपना हाथ
उन खण्डहरों पर बढ़ाए जो फिर बसाए
गए, और उन लोगों के विरुद्ध फेरे जो
जातियों में से इकट्ठे हुए थे और पृथ्वी
की नाभी पर बसे हुए ढोर और और
सम्पत्ति रखते हैं। १३ शबा और ददान
के लोग और तर्शीश के व्योपारी अपने
देश के सब जवान सिंहों समेत तुझ से
कहेंगे, क्या तू लूटने को आता है? क्या तू
ने धन छीनने, सोना-चांदी उठाने, ढोर
और और सम्पत्ति ले जाने, और बड़ी लूट
अपना लेने को अपनी भीड़ इकट्ठी की है?

१४ इस कारण, हे मनुष्य के सन्तान,
भविष्यद्वाणी करके गोग से कह, परमेश्वर
यहोवा यों कहता है, जिस समय मेरी
प्रजा इस्राएल निडर बसी रहेगी, क्या
तुझे इसका समाचार न मिलेगा?
१५ और तू उत्तर दिशा के दूर दूर
स्थानों से आएगा, तू और तेरे साथ
बहुत सी जातियों के लोग, जो सब के
सब घोड़ों पर चढ़े हुए होंगे, अर्थात्
एक बड़ी भीड़ और बलवन्त सेना।
१६ और जैसे बादल भूमि पर छा जाता
है, वैसे ही तू मेरी प्रजा इस्राएल के देश
पर ऐसे चढ़ाई करेगा। इसलिये हे गोग,
अन्त के दिनों में ऐसा ही होगा, कि मैं
तुझ से अपने देश पर इसलिये चढ़ाई
कराऊंगा, कि जब मैं जातियों के देखते
तेरे द्वारा अपने को पवित्र ठहराऊं, तब
वे मुझे पहिचान लेंगे॥

१७ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
क्या तू वही नहीं जिसकी चर्चा मैं ने

* मूल में—जो।   † मूल में—वह।

प्राचीनकाल मे अपने दासो के, अर्थात्
इस्राएल के उन भविष्यद्वक्ताओ द्वारा
की थी, जो उन दिनो मे वर्षो तक यह
भविष्यद्वाणी करते गए, कि यहोवा गोग *
से इस्राएलियो पर चढाई कराएगा ?
१८ और जिस दिन इस्राएल के देश पर
गोग चढाई करेगा, उसी दिन मेरी जल-
जलाहट मेरे मुख मे प्रगट होगी, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। १९ और
मै ने जलजलाहट और क्रोध की आग मे
कहा कि नि सन्देह उस दिन इस्राएल के
देश मे बडा भुईडोल होगा। २० और
मेरे दर्शन से समुद्र की मछलिया और
आकाश के पक्षी, मैदान के पशु और
भूमि पर जितने जीवजन्तु रेगते है, और
भूमि के ऊपर जितने मनुष्य रहते है, सब
काप उठेगे, और पहाड गिराए जाएगे,
और चढाइया नाश होगी †, और सब भीते
गिरकर मिट्टी मे मिल जाएगी। २१ पर-
मेश्वर यहोवा की यह वाणी है कि मै
उसके विरुद्ध तलवार चलाने के लिये
अपने सब पहाडो को पुकारूगा और हर
एक की तलवार उसके भाई के विरुद्ध
उठेगी। २२ और मै मरी और खून के
द्वारा उस से मुकद्दमा लडूगा, और उस
पर और उसके दलो पर, और उन बहुत
सी जातियो पर जो उसके पास होगी, मै
बडी झडी लगाऊगा, और ओले और
आग और गन्धक बरसाऊगा। २३ इस
प्रकार मै अपने को महान और पवित्र
ठहराऊगा और बहुत सी जातियो के
साम्हने अपने को प्रगट करूगा। तब वे
जान लेगी कि मै यहोवा हू ॥

* मूल मे—तुझे।
† मूल में—गिर जायगी।

३९ फिर हे मनुष्य के सन्तान,
गोग के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करके
यह कह, हे गोग, हे रोश, मेशेक और
तूबल के प्रधान, परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, मै तेरे विरुद्ध हू। २ मै तुझे
घुमा ले आऊगा, और उत्तर दिशा के
दूर दूर देशो मे चढा ले आऊगा, और
इस्राएल के पहाडो पर पहुचाऊगा।
३ वहा मै तेरा धनुष तेरे बाए हाथ से
गिराऊगा, और तेरे तीरो को तेरे दहिने
हाथ से गिरा दूगा। ४ तू अपने सारे
दलो और अपने साथ की सारी जातियो
समेत इस्राएल के पहाडो पर मार डाला
जाएगा, मै तुझे भाति भाति के मासाहारी
पक्षियो और वनपशुओ का आहार कर
दूगा। ५ तू खेत मे गिरेगा, क्योकि मै
ही ने ऐसा कहा है, परमेश्वर यहोवा की
यही वाणी है। ६ मै मागोग मे और
द्वीपो के निडर रहनेवालो के बीच आग
लगाऊगा, और वे जान लेगे कि मै
यहोवा हू ॥

७ और मै अपनी प्रजा इस्राएल के
बीच अपना नाम प्रगट करूगा, और
अपना पवित्र नाम फिर अपवित्र न होने
दूगा, तब जाति-जाति के लोग भी जान
लेगे कि मै यहोवा, इस्राएल का पवित्र
हू। ८ यह घटना हुआ चाहती है और
वह हो जाएगी, परमेश्वर यहोवा की
यही वाणी है। यह वही दिन है जिसकी
चर्चा मै ने की है ॥

९ तब इस्राएल के नगरो के रहनेवाले
निकलेगे और हथियारो मे आग लगाकर
जला देगे, ढाल, और फरी, धनुष, और
तीर, लाठी, बर्छे, सब को वे सात वर्ष तक
जलाते रहेगे। १० और इसके कारण वे
मैदान मे लकडी न बीनेगे, न जगल मे

काटेंगे, क्योकि वे हथियारो ही को जलाया
करेंगे, वे अपने लूटनेवाले को लूटेंगे,
और अपने छीननेवालो से छीनेंगे, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी हैं ॥

११ उस समय मैं गोग को इस्राएल
के देश मे कब्रिस्तान दूगा, वह ताल की
पूव ओर होगा, वह आने जानेवालो की
तराई कहलाएगी, और आने जानेवालो
को वहा रुकना पडेगा, वहा सब भीड
समेत गोग को मिट्टी दी जाएगी और
उस स्थान का नाम गोग की भीड की
तराई पडेगा। १२ इस्राएल का घराना
उनको सात महीने तक मिट्टी देता रहेगा
ताकि अपने देश को शुद्ध करे। १३ देश
के सब लोग मिलकर उनको मिट्टी देंगे,
और जिस समय मेरी महिमा होगी, उस
समय उनका भी नाम बडा होगा, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। १४ तव वे
मनुष्यो को नियुक्त करेंगे, जो निरन्तर
इसी काम में लगे रहेंगे, अर्थात् देश में
घूम-घामकर आने जानेवालो के सग
होकर देश को शुद्ध करने के लिये
उनको जो भूमि के ऊपर पडे हो,
मिट्टी देंगे, और सात महीने के बीतने
तक वे ढूढ ढूढकर यह काम करते रहेंगे।
१५ और देश मे आने जानेवालो म से
जब कोई मनुष्य की हड्डी देखे, तब उसके
पास एक चिन्ह खडा करेगा, यह उस समय
तक बना रहेगा जब तक मिट्टी देनेवाले
उसे गोग की भीड की तराई मे गाड न दे।
१६ वहा के नगर का नाम भी "हमोना
है"। यो देश शुद्ध किया जाएगा ॥

१७ फिर, हे मनुष्य के सन्तान,
परमेश्वर यहोवा यो कहता हैं, भाति भाति
के सब पक्षियो और सब वनपशुओ को
आज्ञा दे, इकट्ठे होकर आओ, मेरे इस
बडे यज्ञ मे जो मैं तुम्हारे लिये इस्राएल
के पहाडो पर करता हू, हर एक दिशा से
इकट्ठे हो कि तुम मास खाओ और लोहू
पीओ। १८ तुम शूरवीरो का मास
खाओगे, और पृथ्वी के प्रधानो का लोहू
पीओगे और मेढो, मेम्नो, बकरो और
बलो का भी जो सब के सब बाशान के
तैयार किए हुए होगे। १९ और मेरे
उस भोज की चर्बी से जो म तुम्हारे लिये
करता हू, तुम खाते-खाते अघा जाओगे,
और उसका लोहू पीते-पीते छक जाओगे।
२० तुम मेरी मेज पर घोडो, सवारो,
शूरवीरो, और सब प्रकार के योद्धाओ
से तृप्त होगे, परमेश्वर यहोवा की यही
वाणी है ॥

२१ और म जाति-जाति के बीच
अपनी महिमा प्रगट करूगा, और जाति-
जाति के सब लोग मेरे न्याय के काम जो
मैं करूगा, और मेरा हाथ जो उन पर
पडेगा, देख लेगे। २२ उस दिन से आगे
इस्राएल का घराना जान लेगा कि यहोवा
हमारा परमेश्वर है। २३ और जाति-
जाति के लोग भी जान लेगे कि इस्राएल
का घराना अपने अधम के कारण बधुआई
में गया था, क्योकि उन्हो ने मुझ से ऐसा
विश्वासघात किया कि म ने अपना मुह
उन से फेर* लिया और उनको उनके
वैरियो के वश कर दिया, और वे सब
तलवार से मारे गए। २४ म ने उनकी
अशुद्धता और अपराधो ही के अनुसार
उन से वर्ताव करके उन से अपना मुह
फेर* लिया था ॥

२५ इसलिये परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, अब मैं याकूब को बधुआई से

* मूल में—छिपा।

फेर लाऊगा, और इस्राएल के सारे घराने
पर दया करूगा, और अपने पवित्र नाम
के लिये मुझे जलन होगी। २६ तब
उस सारे विश्वासघात के कारण जो
उन्हो ने मेरे विरुद्ध किया वे लज्जित
होगे, और अपने देश मे निडर रहेंगे,
और कोई उनको न डराएगा। २७ और
जब मै उनको जाति-जाति के बीच से
फेर लाऊगा, और उन शत्रुओ के देशो
से इकट्ठा करूगा, तब बहुत जातियो की
दृष्टि मे उनके द्वारा पवित्र ठहरूगा।
२८ और तब वे जान लेंगे कि यहोवा
हमारा परमेश्वर है, क्योकि मै ने उनको
जाति-जाति मे बधुआ करके फिर उनके
निज देश मे इकट्ठा किया है। मै उन मे
से किसी को फिर परदेश मे * न छोड़ूंगा,
२९ और उन से अपना मुह फिर कभी न
फेर † लूगा, क्योकि मै ने इस्राएल के
घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

४० हमारी बधुआई के पच्चीसवे
वर्ष अर्थात् यरूशलेम नगर के
ले लिए जाने के बाद चौदहवे वर्ष के
पहिले महीने के दसवे दिन को, यहोवा
की शक्ति ‡ मुझ पर हुई, और उस ने
मुझे वहा पहुचाया। २ अपने दर्शनो मे
परमेश्वर ने मुझे इस्राएल के देश मे
पहुचाया और वहा एक बहुत ऊचे पहाड
पर खडा किया, जिस पर दक्खिन ओर
मानो किसी नगर का आकार था।
३ जब वह मुझे वहा ले गया, तो मै ने
क्या देखा कि पीतल का रूप धरे हुए
और हाथ मे सन का फीता और मापने
का बास लिए हुए एक पुरुष फाटक में
खडा है। ४ उस पुरुष ने मुझ से कहा,
हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आखो से देख,
और अपने कानो से सुन, और जो कुछ
मै तुझे दिखाऊगा उस सब पर ध्यान दे,
क्योकि तू इसलिये यहा पहुचाया गया है
कि मै तुझे ये बाते दिखाऊ, और जो
कुछ तू देखे वह इस्राएल के घराने को
बताए॥

५ और देखो, भवन के बाहर चारों
ओर एक भीत थी, और उस पुरुष के
हाथ मे मापने का बास था, जिसकी लम्बाई
ऐसे छ हाथ की थी जो साधारण हाथो
से चौवा भर अधिक है, सो उस ने भीत *
की मोटाई मापकर बास भर की पाई,
फिर उसकी ऊचाई भी मापकर बास भर
की पाई। ६ तब वह उस फाटक के
पास आया जिसका मुह पूर्व की ओर
था, और उसकी सीढी पर चढकर फाटक
की दोनो डेवढियो की चौडाई मापकर
एक एक बास भर की पाई। ७ और
पहरेवाली कोठरिया बास भर लम्बी और
बास भर चौडी थी, और दो दो कोठरियो
का अन्तर पाच हाथ का था, और फाटक
की डेवढी जो फाटक के ओसारे के पास
भवन की ओर थी, वह भी बास भर की
थी। ८ तब उस ने फाटक का वह
ओसारा जो भवन के साम्हने था, मापकर
बास भर का पाया। ९ और उस ने
फाटक का ओसारा मापकर आठ हाथ
का पाया, और उसके खम्भे दो दो हाथ
के पाए, और फाटक का ओसारा भवन के
साम्हने था। १० और पूर्वी फाटक की
दोनो ओर तीन तीन पहरेवाली कोठरिया

* मूल में—वश। † मूल में—छिपा।
‡ मूल में—यहोवा का हाथ।

* मूल में—बनाई हुई वस्तु।

थी जो सब एक ही माप की थी, और
दोनों ओर के खम्भे भी एक ही माप के
थे। ११ फिर उस ने फाटक के द्वार की
चौडाई मापकर दस हाथ की पाई, और
फाटक की लम्बाई मापकर तेरह हाथ
की पाई। १२ और दोनों ओर की पहरे-
वाली कोठरियों के आगे हाथ भर का
स्थान था और दोनों ओर कोठरियां छ
छ हाथ की थीं। १३ फिर उस ने फाटक
को एक ओर की पहरेवाली कोठरी की
छत से लेकर दूसरी ओर की पहरेवाली
कोठरी की छत तक मापकर पच्चीस
हाथ की दूरी पाई, और द्वार आम्हने-
साम्हने थे। १४ फिर उस ने साठ हाथ
के खम्भे मापे *, और आंगन, फाटक के
आस पास, खम्भों तक था। १५ और
फाटक के बाहरी द्वार के आगे से लेकर
उसके भीतरी ओसारे के आगे तक पचास
हाथ का अन्तर था। १६ और पहरेवाली
कोठरियों में, और फाटक के भीतर चारों
ओर कोठरियों के बीच के खम्भे के बीच
बीच में झिलमिलीदार खिडकियां थीं,
और खम्भों के ओसारे में भी वैसी ही थीं,
और फाटक के भीतर के चारों ओर
खिडकियां थीं, और हर एक खम्भे पर
खजूर के पेड खुदे हुए थे॥

१७ तब वह मुझे बाहरी आंगन में
ले गया, और उस आंगन के चारों ओर
कोठरियां थीं, और एक फर्श बना हुआ
था जिस पर तीस कोठरियां बनी थीं।
१८ और यह फर्श अर्थात् निचला फर्श
फाटकों से लगा हुआ था और उनकी
लम्बाई के अनुसार था। १९ फिर उस ने
निचले फाटक के आगे से लेकर भीतरी
आंगन के बाहर के आगे तक मापकर
सौ हाथ पाए, वह पूर्व और उत्तर दोनों
ओर ऐसा ही था॥

२० तब बाहरी आंगन के उत्तरमुखी
फाटक की लम्बाई और चौडाई उस ने
मापी। २१ और उसकी दोनों ओर तीन
तीन पहरेवाली कोठरियां थीं, और इसके
भी खम्भों के ओसारे की माप पहिले
फाटक के अनुसार थी, इसकी लम्बाई
पचास और चौडाई पच्चीस हाथ की थी।
२२ और इसकी भी खिडकियों और
खम्भों के ओसारे और खजूरों की माप
पूर्वमुखी फाटक की सी थी, और इस पर
चढने को सात सीढियां थीं, और उनके
साम्हने इसका ओसारा था। २३ और
भीतरी आंगन की उत्तर और पूर्व और
दूसरे फाटकों के साम्हने फाटक थे और
उस ने फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ
की पाई॥

२४ फिर वह मुझे दक्खिन ओर ले गया,
और दक्खिन ओर एक फाटक था, और
उस ने इसके खम्भे और खम्भों का
ओसारा मापकर इनकी वैसी ही माप
पाई। २५ और उन खिडकियों की नाईं
इसके और इसके खम्भों के ओसारों के
चारों ओर भी खिडकियां थीं, इसकी भी
लम्बाई पचास और चौडाई पच्चीस हाथ
की थी। २६ और इस में भी चढने
के लिये सात सीढियां थीं और उनके
साम्हने खम्भों का ओसारा था, और
उसके दोनों ओर के खम्भों पर खजूर
के पेड खुदे हुए थे। २७ और दक्खिन
ओर भी भीतरी आंगन का एक फाटक
था, और उस ने दक्खिन ओर के दोनों
फाटकों की दूरी मापकर सौ हाथ
की पाई॥

* मूल में—बनाए।

२८ तब वह दक्खिनी फाटक से होकर
मुझे भीतरी आगन मे ले गया, और उस
ने दक्खिनी फाटक को मापकर वैसा ही
पाया। २९ अर्थात् इसकी भी पहरेवाली
कोठरिया, और खम्भे, और खम्भो का
ओसारा, सब वैसे ही थे, और इसके
और इसके खम्भो के ओसारे के भी चारो
ओर भी खिडकिया थी, और इसकी
लम्बाई पचास और चौडाई पच्चीस हाथ
की थी। ३० और इसके चारो ओर के
खम्भो का ओसारा भी पच्चीस हाथ लम्बा,
और पचास हाथ चौडा था। ३१ और
इसका खम्भो का ओसारा बाहरी आगन
की ओर था, और इसके खम्भो पर भी
खजूर के पेड खुदे हुए थे, और इस पर
चढने को आठ सीढिया थी ॥

३२ फिर वह पुरुष मुझे पूर्व की
ओर भीतरी आगन मे ले गया, और उस
ओर के फाटक को मापकर वैसा ही पाया।
३३ और इसकी भी पहरेवाली कोठरिया
और खम्भे और खम्भो का ओसारा, सब
वैसे ही थे, और इसके और इसके खम्भो
के ओसारे के चारो ओर भी खिडकिया
थी, इसकी लम्बाई पचास और चौडाई
पच्चीस हाथ की थी। ३४ इसका ओसारा
भी बाहरी आगन की ओर था, और
उसके दोनो ओर के खम्भो पर खजूर
के पेड खुदे हुए थे, और इस पर भी
चढने को आठ सीढिया थी ॥

३५ फिर उस पुरुष ने मुझे उत्तरी
फाटक के पास ले जाकर उसे मापा,
और उसकी भी माप वैसी ही पाई।
३६ उसके भी पहरेवाली कोठरिया और
खम्भे और उनका ओसारा था, और
उसके भी चारो ओर खिडकिया थी,
उसकी लम्बाई पचास और चौडाई पच्चीस
हाथ की थी। ३७ उसके खम्भे बाहरी
आगन की ओर थे, और उन पर भी
दोनो ओर खजूर के पेड खुदे हुए थे,
और उस मे चढने को आठ सीढिया थी ॥

३८ फिर फाटको के पास के खम्भो
के निकट द्वार समेत कोठरी थी, जहा
होमबलि धोया जाता था। ३९ और
होमबलि, पापबलि, और दोषबलि के
पशुओ के वध करने के लिये फाटक के
ओसारे के पास उसके दोनो ओर दो
दो मेजे थी। ४० और फाटक की एक
बाहरी अलग पर अर्थात् उत्तरी फाटक
के द्वार की चढाई पर दो मेजे थी, और
उसकी दूसरी बाहरी अलग पर भी, जो
फाटक के ओसारे के पास थी, दो मेजे थी।
४१ फाटक की दोनो अलगो पर चार
चार मेजे थी, सो सब मिलकर आठ
मेजे थी, जो बलिपशु बध करने के लिये
थी। ४२ फिर होमबलि के लिये तराशे
हुए पत्थर की चार मेजे थी, जो डेढ हाथ
लम्बी, डेढ हाथ चौडी, और हाथ भर
ऊची थी, उन पर होमबलि और मेलबलि
के पशुओ को बध करने के हथियार रखे
जाते थे। ४३ भीतर चारो ओर चौबे
भर की अकडिया लगी थी, और मेजो
पर चढावे का मास रखा हुआ था।
४४ और भीतरी आगन की उत्तरी फाटक
की अलग के बाहर गानेवालो की कोठरिया
थी जिनके द्वार दक्खिन ओर थे, और
पूर्वी फाटक की अलग पर एक कोठरी
थी, जिसका द्वार उत्तर ओर था। ४५ उस
ने मुझ से कहा, यह कोठरी, जिसका
द्वार दक्खिन की ओर है, उन याजको के
लिये है जो भवन की चौकसी करते है,
४६ और जिस कोठरी का द्वार उत्तर
ओर है, वह उन याजको के लिये है जो

वेदी की चौकसी करते हैं, ये सादोक की
सन्तान हैं, और लेवियों में से यहोवा की
सेवा टहल करने को केवल ये ही उसके
समीप जाते हैं। ४७ फिर उस ने आंगन
को मापकर उसे चौकोना अर्थात् सौ हाथ
लम्बा और सौ हाथ चौड़ा पाया, और
भवन के साम्हने वेदी थी॥

४८ फिर वह मुझे भवन के ओसारे में
ले गया, और ओसारे के दोनों ओर के
खम्भों को मापकर पांच पांच हाथ का
पाया, और दोनों ओर फाटक की चौड़ाई
तीन तीन हाथ की थी। ४९ ओसारे
की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह
हाथ की थी, और उस पर चढ़ने को
सीढ़ियां थीं, और दोनों ओर के खम्भों
के पास लाटें थीं॥

४१ फिर वह मुझे मन्दिर के पास
ले गया, और उसके दोनों ओर
के खम्भों को मापकर छः छः हाथ चौड़े
पाया, यह तो तम्बू की चौड़ाई थी।
२ और द्वार की चौड़ाई दस हाथ की
थी, और द्वार की दोनों अलंगें पांच पांच
हाथ की थीं, और उस ने मन्दिर की
लम्बाई मापकर चालीस हाथ की, और
उसकी चौड़ाई बीस हाथ की पाई।
३ तब उस ने भीतर जाकर द्वार के
खम्भों को मापा, और दो दो हाथ का
पाया, और द्वार छः हाथ का था, और
द्वार की चौड़ाई सात हाथ की थी।
४ तब उस ने भीतर के भवन की लम्बाई
और चौड़ाई मन्दिर के साम्हने मापकर
बीस बीस हाथ की पाई, और उस ने मुझ
से कहा, यह तो परमपवित्र स्थान है॥
५ फिर उस ने भवन की भीत को
मापकर छः हाथ की पाया, और भवन के
आस पास चार चार हाथ चौड़ी बाहरी
कोठरियां थीं। ६ और ये बाहरी
कोठरियां तिमहली थीं, और एक एक
महल में तीस तीस कोठरियां थीं। भवन के
आस पास की भीत इसलिये थी कि बाहरी
कोठरियां उसके सहारे में हों, और
उसी में कोठरियों की कड़ियां पैठाई हुई
थीं और भवन की भीत के सहारे में न थीं।
७ और भवन के आस पास जो कोठरियां
बाहर थीं, उन में से जो ऊपर थीं, वे
अधिक चौड़ी थीं, अर्थात् भवन के आस
पास जो कुछ बना था, वह जैसे जैसे
ऊपर की ओर चढ़ता गया, वैसे वैसे
चौड़ा होता गया, इस रीति, इस घर की
चौड़ाई ऊपर की ओर बढ़ी हुई थी,
और लोग नीचले महल के बीच से उपरले
महल को चढ़ सकते थे। ८ फिर मैं ने
भवन के आस पास ऊंची भूमि देखी, और
बाहरी कोठरियों की ऊंचाई जोड़ तक छः
हाथ के बांस की थी। ९ बाहरी कोठरियों
के लिये जो भीत थी, वह पांच हाथ मोटी
थी, और जो स्थान खाली रह गया था,
वह भवन की बाहरी कोठरियों का स्थान
था। १० बाहरी कोठरियों के बीच बीच
भवन के आस पास बीस हाथ का अन्तर
था। ११ और बाहरी कोठरियों के द्वार
उस स्थान की ओर थे, जो खाली था,
अर्थात् एक द्वार उत्तर की ओर और
दूसरा दक्खिन की ओर था, और जो
स्थान रह गया, उसकी चौड़ाई चारों
ओर पांच पांच हाथ की थी॥

१२ फिर जो भवन मन्दिर के पश्चिमी
आंगन के साम्हने था, वह सत्तर हाथ
चौड़ा था, और भवन के आस पास की
भीत पांच हाथ मोटी थी, और उसकी
लम्बाई नब्बे हाथ की थी॥

१३ तब उस ने भवन की लम्बाई
मापकर सौ हाथ की पाई, और भीतों
समेत आंगन की भी लम्बाई मापकर
सौ हाथ की पाई। १४ और भवन का
पूर्वी साम्हना और उसका आंगन सौ
हाथ चौड़ा था॥

१५ फिर उस ने पीछे के आंगन के
साम्हने की भीत की लम्बाई जिसके
दोनों ओर छज्जे थे, मापकर सौ हाथ
की पाई, और भीतरी भवन और आंगन
के ओसारों को भी मापा। १६ तब
उस ने डेवढ़ियों और झिलमिलीदार
खिड़कियों, और आस पास के तीनों
महलों के छज्जों को मापा जो डेवढ़ी के
साम्हने थे, और चारों ओर उनकी तखता-
बन्दी हुई थी, और भूमि से खिड़कियों तक
और खिड़कियों के आस पास सब कहीं
तखताबन्दी हुई थी। १७ फिर उस ने
द्वार के ऊपर का स्थान भीतरी भवन तक
और उसके बाहर भी और आस पास की
सारी भीत के भीतर और बाहर भी
मापा। १८ और उस में करूब और
खजूर के पेड़ ऐसे खुदे हुए थे कि दो दो
करूबों के बीच एक एक खजूर का पेड़
था, और करूबों के दो दो मुख थे।
१९ इस प्रकार से एक एक खजूर की
एक ओर मनुष्य का मुख बनाया हुआ
था, और दूसरी ओर जवान सिंह का मुख
बनाया हुआ था। इसी रीति सारे भवन के
चारों ओर बना था। २० भूमि से लेकर
द्वार के ऊपर तक करूब और खजूर के
पेड़ खुदे हुए थे, मन्दिर की भीत इसी
भांति बनी हुई थी॥

२१ भवन के द्वारों के खम्भे चौपहल
थे, और पवित्रस्थान के साम्हने का रूप
मन्दिर का सा था। २२ वेदी काठ की
बनी थी, और उसकी ऊंचाई तीन हाथ,
और लम्बाई दो हाथ की थी, और उसके
कोने और उसका सारा पाट और अलंगें
भी काठ की थीं। और उस ने मुझ से
कहा, यह तो यहोवा के सम्मुख की मेज़
है। २३ और मन्दिर और पवित्रस्थान
के द्वारों के दो दो किवाड़ थे। २४ और
हर एक किवाड़ में दो दो मुड़नेवाले पल्ले
थे, हर एक किवाड़ के लिये दो दो पल्ले।
२५ और जैसे मन्दिर की भीतों में करूब
और खजूर के पेड़ खुदे हुए थे, वैसे ही
उसके किवाड़ों में भी थे, और ओसारे
की बाहरी ओर लकड़ी की मोटी मोटी
धरनें थीं। २६ और ओसारे के दोनों
ओर झिलमिलीदार खिड़कियां थीं और
खजूर के पेड़ खुदे थे, और भवन की
बाहरी कोठरियां और मोटी मोटी धरनें
भी थीं॥

४२ फिर वह मुझे बाहरी आंगन
में उत्तर की ओर ले गया, और
मुझे उन दो कोठरियों के पास लाया जो
भवन के आंगन के साम्हने और उसकी
उत्तर ओर थीं। २ सौ हाथ की दूरी
पर उत्तरी द्वार था, और चौड़ाई पचास
हाथ की थी। ३ भीतरी आंगन के बीस
हाथ साम्हने और बाहरी आंगन के फ़र्श
के साम्हने तीनों महलों में छज्जे थे।
४ और कोठरियों के साम्हने भीतर की
ओर जानेवाला दस हाथ चौड़ा एक मार्ग
था, और हाथ भर का एक और मार्ग था;
और कोठरियों के द्वार उत्तर ओर थे।
५ और उपरली कोठरियां छोटी थीं, अर्थात्
छज्जों के कारण वे निचली और बिचली
कोठरियों से छोटी थीं। ६ क्योंकि वे
तिमहली थीं, और आंगनों के समान उनके

खम्भे न थे, इस कारण उपरली कोठरिया
निचली और बिचली कोठरियां में छोटी
थीं। ७ और जो भीत कोठरियों के
बाहर उनके पास पास थी अर्थात् कोठरियों
के साम्हने बाहरी आंगन की ओर थी,
उसकी लम्बाई पचास हाथ की थी।
८ क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियां
पचास हाथ लम्बी थीं, और मन्दिर के
साम्हने की अलंग सौ हाथ की थी।
९ और इन कोठरियों के नीचे पूर्व की
ओर मार्ग था, जहा लोग बाहरी आंगन
से इन में जाते थे ॥

१० आंगन की भीत की चौड़ाई में पूर्व
की ओर अलग स्थान और भवन दोनों के
साम्हने कोठरियां थीं। ११ और उनके
साम्हने का मार्ग उत्तरी कोठरियों के
मार्ग सा था, उनकी लम्बाई-चौड़ाई
बराबर थी और निकास और ढंग उनके
द्वार के से थे। १२ और दक्खिनी
कोठरियों के द्वारों के अनुसार मार्ग के
सिरे पर द्वार था, अर्थात् पूर्व की ओर
की भीत के साम्हने, जहां से लोग उन में
प्रवेश करते थे ॥

१३ फिर उस ने मुझ से कहा, ये
उत्तरी और दक्खिनी कोठरियां जो आंगन
के साम्हने हैं, वे ही पवित्र कोठरियां हैं,
जिन में यहोवा के समीप जानेवाले याजक
परमपवित्र वस्तुएं खाया करेंगे, वे परम-
पवित्र वस्तुएं, और अन्नबलि, और पापबलि,
और दोषबलि, वहीं रखेंगे, क्योंकि वह
स्थान पवित्र है। १४ जब जब याजक
लोग भीतर जाएंगे, तब तब निकलने के
समय वे पवित्रस्थान से बाहरी आंगन में
यों ही न निकलेंगे, अर्थात् वे पहिले अपनी
सेवा टहल के वस्त्र पवित्रस्थान में रख
देंगे, क्योंकि ये कोठरियां पवित्र हैं।
तब वे और वस्त्र पहिनकर साधारण
लोगों के स्थान में जाएंगे ॥

१५ जब वह भीतरी भवन को माप
चुका, तब मुझे पूर्व दिशा के फाटक के
मार्ग से बाहर ले जाकर बाहर का स्थान
चारों ओर मापने लगा। १६ उस ने
पूर्वी अलंग को मापने के बांस से मापकर
पांच सौ बांस का पाया। १७ तब उस
ने उत्तरी अलंग को मापने के बांस से माप-
कर पांच सौ बांस का पाया। १८ तब
उस ने दक्खिनी अलंग को मापने के बांस से
मापकर पांच सौ बांस का पाया।
१९ और पच्छिमी अलंग को मुड़कर उस
ने मापने के बांस से मापकर उसे पांच
सौ बांस का पाया। २० उस ने उस
स्थान की चारों अलंगें मापीं, और उसकी
चारों ओर एक भीत थी, वह पांच सौ
बांस लम्बी और पांच सौ बांस चौड़ी
थी, और इसलिये बनी थी कि पवित्र
और सर्वसाधारण को अलग अलग
करे ॥

४३ फिर वह मुझ को उस फाटक
के पास ले गया जो पूर्वमुखी था।
२ तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज
पूर्व दिशा से आया, और उसकी वाणी
बहुत से जल की घरघराहट सी हुई,
और उसके तेज से पृथ्वी प्रकाशित हुई।
३ और यह दर्शन उस दर्शन के तुल्य था,
जो मैं ने उसे नगर के नाश करने को
आते समय देखा था, और उस दर्शन
के समान, जो मैं ने कबार नदी के तीर
पर देखा था, और मैं मुंह के बल गिर
पड़ा। ४ तब यहोवा का तेज उस फाटक
से होकर जो पूर्वमुखी था, भवन में आ
गया। ५ तब आत्मा ने मुझे उठाकर

भीतरी आगन मे पहुचाया; और यहोवा
का तेज भवन मे भरा था ।।
६ तब मै ने एक जन का शब्द सुना,
जो भवन मे से मुझ से बोल रहा था,
और वह पुरुष मेरे पास खडा था। ७ उस
ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा
की यह वाणी है, यह तो मेरे सिहासन
का स्थान और मेरे पाव रखने की जगह
है, जहा मै इस्राएल के बीच सदा वास
किए रहूगा। और न तो इस्राएल का
घराना, और न उसके राजा अपने व्यभिचार
से, वा अपने ऊचे स्थानो मे अपने राजाओ
की लोथो के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर
अशुद्ध ठहराएगे। ८ वे अपनी डेवढी
मेरी डेवढी के पास, और अपने द्वार के
खम्भे मेरे द्वार के खम्भो के निकट बनाते
थे, और मेरे और उनके बीच केवल
भीत ही थी, और उन्हो ने अपने घिनोने
कामो से मेरा पवित्र नाम अशुद्ध ठहराया
था, इसलिये मै ने कोप करके उन्हे
नाश किया। ९ अब वे अपना व्यभिचार
और अपने राजाओ की लोथे मेरे सम्मुख
से दूर कर दे, तब मै उनके बीच सदा वास
किए रहूगा ।।
१० हे मनुष्य के सन्तान, तू इस्राएल
के घराने को इस भवन का नमूना दिखा
कि वे अपने अधर्म के कामो से लज्जित
होकर उस नमूने को मापे। ११ और यदि
वे अपने सारे कामो से लज्जित हो, तो
उन्हे इस भवन का आकार और स्वरूप,
और इसके बाहर भीतर आने जाने के
मार्ग, और इसके सब आकार और विधिया,
और नियम बतलाना, और उनके साम्हने
लिख रखना, जिस से वे इसका सब
आकार और इसकी सब विधिया स्मरण
करके उनके अनुसार करे। १२ भवन
का नियम यह है कि पहाड की चोटी के
चारो ओर का सम्पूर्ण भाग परमपवित्र है।
देख, भवन का नियम यही है ।।
१३ और ऐसे हाथ के माप मे जो
साधारण हाथ से चोवा भर अधिक हो,
वेदी की माप यह है, अर्थात् उसका
आधार * एक हाथ का, और उसकी चौडाई
एक हाथ की, और उसके चारो ओर की
छोर पर की पटरी एक चोवे की। और
वेदी की ऊचाई यह है १४ भूमि पर
धरे हुए आधार * से लेकर निचली कुर्सी
तक दो हाथ की ऊचाई रहे, और उसकी
चौडाई हाथ भर की हो, और छोटी कुर्सी
से लेकर बडी कुर्सी तक चार हाथ हो
और उसकी चौडाई हाथ भर की हो,
१५ और उपरला भाग चार हाथ ऊचा
हो, और वेदी पर जलाने के स्थान के
चार सींग ऊपर की ओर निकले हो।
१६ और वेदी पर जलाने का स्थान
चौकोर अर्थात् बारह हाथ लम्बा और
बारह हाथ चौडा हो। १७ और निचली
कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह चौडी
हो, और उसके चारो ओर की पटरी आधे
हाथ की हो, और उसका आधार चारो
ओर हाथ भर का हो। उसकी सीढी
उसकी पूर्व ओर हो ।।
१८ फिर उस ने मुझ से कहा, हे
मनुष्य के सन्तान, परमेश्वर यहोवा यो
कहता है, जिस दिन होमबलि चढाने
और लोहू छिडकने के लिये वेदी बनाई
जाए, उस दिन की विधिया ये ठहरे:
१९ अर्थात् लेवीय याजक लोग, जो
सादोक की सन्तान है, और मेरी सेवा
टहल करने को मेरे समीप रहते है, उन्हें

* मूल मे—गोद।

तू पापबलि के लिये एक बछड़ा देना,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।
२० तब तू उसके लोहू में से कुछ लेकर
वेदी के चारों सींगों और कुर्सी के चारों
कोनों और चारों ओर की पटरी पर
लगाना, इस प्रकार से उसके लिये
प्रायश्चित्त करने के द्वारा उसको पवित्र
करना। २१ तब पापबलि के बछड़े को
लेकर, भवन के पवित्रस्थान के बाहर
ठहराए हुए स्थान में जला देना। २२ और
दूसरे दिन एक निर्दोष बकरा पापबलि करके
चढ़ाना, और जैसे बछड़े के द्वारा वेदी
पवित्र की जाए, वैसे ही वह इस बकरे
के द्वारा भी पवित्र की जाएगी। २३ जब
तू उसे पवित्र कर चुके, तब एक
निर्दोष बछड़ा और एक निर्दोष मेढ़ा
चढ़ाना। २४ तू उन्हें यहोवा के
साम्हने ले आना, और याजक लोग उन
पर लोन डालकर उन्हें यहोवा को होमबलि
करके चढ़ाए। २५ सात दिन तक तू
प्रति दिन पापबलि के लिये एक बकरा
तैयार करना, और निर्दोष बछड़ा और
भेड़ों में से निर्दोष मेढ़ा भी तैयार किया
जाए। २६ सात दिन तक याजक लोग
वेदी के लिये प्रायश्चित्त करके उसे शुद्ध
करते रहें, इसी भांति उसका सस्कार
हो। २७ और जब वे दिन समाप्त हों,
तब आठवें दिन के बाद से याजक लोग
तुम्हारे होमबलि और मेलबलि वेदी पर
चढ़ाया करें, तब मैं तुम से प्रसन्न हूंगा,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

४४ फिर वह मुझे पवित्रस्थान के
उस बाहरी फाटक के पास लौटा
ले गया, जो पूर्वमुखी है, और वह बन्द
था। २ तब यहोवा ने मुझ से कहा,
यह फाटक बन्द रहे और खोला न जाए,
कोई इस से होकर भीतर जाने न पाए,
क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस
से होकर भीतर आया है, इस कारण
यह बन्द रहे। ३ केवल प्रधान ही, प्रधान
होने के कारण, मेरे साम्हने भोजन करने
को वहां बैठेगा, वह फाटक के ओसारे
से होकर भीतर जाए, और इसी से होकर
निकले॥

४ फिर वह उत्तरी फाटक के पास
होकर मुझे भवन के साम्हने ले गया,
तब मैं ने देखा कि यहोवा का भवन
यहोवा के तेज से भर गया है, और मैं
मुंह के बल गिर पड़ा। ५ तब यहोवा
ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान,
ध्यान देकर अपनी आंखों से देख, और
जो कुछ मैं तुझ से अपने भवन की सब
विधियों और नियमों के विषय में कहूं,
वह सब अपने कानों से सुन, और भवन
के पैठाव और पवित्रस्थान के सब निकासों
पर ध्यान दे। ६ और उन बलवाइयों
अर्थात् इस्राएल के घराने से कहना,
परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल
के घराने, अपने सब घृणित कामों से अब
हाथ उठा। ७ जब तुम मेरा भोजन
अर्थात् चर्बी और लोहू चढ़ाते थे, तब
तुम बिराने लोगों को जो मन और तन
दोनों के खतनाहीन थे, मेरे पवित्रस्थान
में आने देते थे कि वे मेरा भवन अपवित्र
करें, और उन्हों ने मेरी वाचा को तोड़
दिया जिस से तुम्हारे सब घृणित काम
बढ़ गए। ८ और तुम ने मेरी पवित्र
वस्तुओं की रक्षा न की, परन्तु तुम ने
अपने ही मन से अन्य लोगों को मेरे
पवित्रस्थान में मेरी वस्तुओं की रक्षा
करनेवाले ठहराया॥

९ इसलिये परमेश्वर यहोवा यों कहता
है, कि इस्राएलियों के बीच जितने अन्य लोग
हों, जो मन और तन दोनों के खतनाहीन
हैं, उन में से कोई मेरे पवित्रस्थान में
न आने पाए। १० परन्तु लेवीय लोग
जो उस समय मुझ से दूर हो गए थे, जब
इस्राएली लोग मुझे छोड़कर अपनी मूरतों
के पीछे भटक गए थे, वे अपने अधर्म
का भार उठाएंगे। ११ परन्तु वे मेरे
पवित्रस्थान में टहलुए होकर भवन के
फाटकों का पहरा देनेवाले और भवन
के टहलुए रहें, वे होमबलि और मेलबलि
के पशु लोगों के लिये वध करें, और
उनकी सेवा टहल करने को उनके साम्हने
खड़े हुआ करें। १२ क्योंकि इस्राएल के
घराने की सेवा टहल वे उनकी मूरतों
के साम्हने करते थे, और उनके ठोकर
खाने और अधर्म में फसने का कारण
हो गए थे, इस कारण मैं ने उनके विषय
में शपथ खाई है कि वे अपने अधर्म का
भार उठाएं, परमेश्वर यहोवा की यही
वाणी है। १३ वे मेरे समीप न आएं,
और न मेरे लिये याजक का काम करें,
और न मेरी किसी पवित्र वस्तु, वा
किसी परमपवित्र वस्तु को छूने पाएं,
वे अपनी लज्जा का और जो घृणित काम
उन्हों ने किए, उनका भी भार उठाएं।
तौभी मैं उन्हें भवन में की सौंपी हुई
वस्तुओं का रक्षक ठहराऊंगा, १४ उस
में सेवा का जितना काम हो, और जो
कुछ उस में करना हो, उसके करनेवाले
वे ही हों॥

१५ फिर लेवीय याजक जो सादोक
की सन्तान हैं, और जिन्हों ने उस समय
मेरे पवित्रस्थान की रक्षा की जब इस्राएली
मेरे पास से भटक गए थे, वे मेरी सेवा
टहल करने को मेरे समीप आया करें,
और मुझे चर्बी और लोहू चढ़ाने को
मेरे सम्मुख खड़े हुआ करें, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है। १६ वे मेरे
पवित्रस्थान में आया करें, और मेरी मेज़
के पास मेरी सेवा टहल करने को आएं
और मेरी वस्तुओं की रक्षा करें।
१७ और जब वे भीतरी आंगन के फाटकों
से होकर जाया करें, तब सन के वस्त्र
पहिने हुए जाएं, और जब वे भीतरी
आंगन के फाटकों में वा उसके भीतर
सेवा टहल करते हों, तब कुछ ऊन के
वस्त्र न पहिनें। १८ वे सिर पर सन की
सुन्दर टोपियां पहिनें और कमर में सन
की जांघिया बान्धे हों; किसी ऐसे कपड़े
से वे कमर न बांधें जिस से पसीना
होता है। १९ और जब वे बाहरी आंगन
में लोगों के पास निकलें, तब जो वस्त्र
पहिने हुए वे सेवा टहल करते थे, उन्हें
उतारकर और पवित्र कोठरियों में रखकर
दूसरे वस्त्र पहिनें, जिस से लोग उनके
वस्त्रों के कारण पवित्र न ठहरें। २० और
न तो वे सिर मुण्डाएं, और न बाल लम्बे
होने दें, वे केवल अपने बाल कटाएं।
२१ और भीतरी आंगन में जाने के समय
कोई याजक दाखमधु न पीए। २२ वे
विधवा वा छोड़ी हुई स्त्री को ब्याह न
लें, केवल इस्राएल के घराने के वंश में
से कुंवारी वा ऐसी विधवा ब्याह लें जो
किसी याजक की स्त्री हुई हो। २३ वे
मेरी प्रजा को पवित्र अपवित्र का भेद
सिखाया करें, और शुद्ध अशुद्ध का अन्तर
बताया करें। २४ और जब कोई मुकद्दमा
हो तब न्याय करने को भी वे ही बैठें*,

* मूल में—खड़े हों।

और मेरे नियमों के अनुसार न्याय करें।
मेरे सब नियत पर्वों के विषय भी वे मेरी
व्यवस्था और विधियां पालन करें, और
मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानें। २५ वे
किसी मनुष्य की लोथ के पास न जाएं
कि अशुद्ध हो जाएं, केवल माता-पिता,
बेटे-बेटी, भाई, और ऐसी बहिन की
लोथ के कारण जिसका विवाह न हुआ
हो वे अपने को अशुद्ध कर सकते हैं।
२६ और जब वे अशुद्ध हो जाएं, तब
उनके लिये सात दिन गिने जाएं और
तब वे शुद्ध ठहरें, २७ और जिस दिन वे
पवित्रस्थान अर्थात् भीतरी आंगन में
सेवा टहल करने को फिर प्रवेश करें,
उस दिन अपने लिये पापबलि चढ़ाएं,
परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

२८ और उनका एक ही निज भाग
होगा, अर्थात् उनका भाग मैं ही हूं,
तुम उन्हें इस्राएल के बीच कुछ ऐसी
भूमि न देना जो उनकी निज हो, उनकी
निज भूमि मैं ही हूं। २९ वे अन्नबलि,
पापबलि और दोषबलि खाया करें, और
इस्राएल में जो वस्तु अर्पण की जाए,
वह उनको मिला करे। ३० और सब
प्रकार की सब से पहिली उपज और सब
प्रकार की उठाई हुई वस्तु जो तुम उठाकर
चढ़ाओ, याजकों को मिला करे, और
नये अन्न का पहिला गूंधा हुआ आटा भी
याजक को दिया करना, जिस से तुम लोगों
के घर में आशीष हो। ३१ जो कुछ अपने
आप मरे वा फाड़ा गया हो, चाहे पक्षी हो
या पशु उसका मांस याजक न खाए॥

४५ जब तुम चिट्ठी डालकर देश
को बांटो, तब देश में से एक
भाग पवित्र जानकर यहोवा को अर्पण
करना, उसकी लम्बाई पच्चीस हजार
बांस की और चौड़ाई दस हजार बांस की
हो, वह भाग अपने चारों ओर के सिवाने
तक पवित्र ठहरे। २ उस में से पवित्र-
स्थान के लिये पांच सौ बांस लम्बी और
पांच सौ बांस चौड़ी चौकोनी भूमि हो,
और उसकी चारों ओर पचास पचास
हाथ चौड़ी भूमि छूटी पड़ी रहे। ३ उस
पवित्र भाग में तुम पच्चीस हजार बांस
लम्बी और दस हजार बांस चौड़ी भूमि
को मापना, और उसी में पवित्रस्थान
बनाना, जो परमपवित्र ठहरे। ४ जो
याजक पवित्रस्थान की सेवा टहल करें
और यहोवा की सेवा टहल करने को
समीप आएं, वह उन्हीं के लिये हो,
वहां उनके घरों के लिये स्थान हो और
पवित्रस्थान के लिये पवित्र ठहरे। ५ फिर
पच्चीस हजार बांस लम्बा, और दस
हजार बांस चौड़ा एक भाग, भवन की
सेवा टहल करनेवाले लेवियों की बीस
कोठरियों के लिये हो॥

६ फिर नगर के लिये, अर्पण किए
हुए पवित्र भाग के पास, तुम पांच हजार
बांस चौड़ी और पच्चीस हजार बांस
लम्बी, विशेष भूमि ठहराना, वह इस्राएल
के सारे घराने के लिये हो॥

७ और प्रधान का निज भाग पवित्र
अर्पण किए हुए भाग और नगर की
विशेष भूमि की दोनों ओर अर्थात् दोनों
की पश्चिम और पूर्व दिशाओं में दोनों
भागों के साम्हने हो, और उसकी लम्बाई
पश्चिम से लेकर पूर्व तक उन दो भागों
में से किसी भी एक के तुल्य हो।
८ इस्राएल के देश में प्रधान की यही
निज भूमि हो। और मेरे ठहराए हुए
प्रधान मेरी प्रजा पर फिर अन्धेर न करें,

परन्तु इस्राएल के घराने को उसके गोत्रो
के अनुसार देश मिले ॥
९ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
हे इस्राएल के प्रधानो ! बस करो, उपद्रव
और उत्पात को दूर करो, और न्याय
और धर्म के काम किया करो, मेरी
प्रजा के लोगो को निकाल देना छोड़
दो, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है ॥
१० तुम्हारे पास सच्चा तराजू, सच्चा
एपा, और सच्चा बत रहे। ११ एपा
और बत दोनो एक ही नाप के हो, अर्थात्
दोनो मे होमेर का दसवा अंश समाए,
दोनो की नाप होमेर के हिसाब से हो।
१२ और शेकेल बीस गेरा का हो;
और तुम्हारा माना बीस, पच्चीस, या
पन्द्रह शेकेल का हो ॥
१३ तुम्हारी उठाई हुई भेंट यह हो,
अर्थात् गेहू के होमेर से एपा का छठवा
अंश, और जव के होमेर मे से एपा का
छठवा अंश देना। १४ और तेल का
नियत अंश कोर मे से बत का दसवा
अंश हो, कोर तो दस बत अर्थात् एक
होमेर के तुल्य है, क्योंकि होमेर दस बत
का होता है। १५ और इस्राएल की
उत्तम उत्तम चराइयों से दो दो सौ भेड़-
बकरियों में से एक भेड वा बकरी दी
जाए। ये सब वस्तुएं अन्नबलि, होमबलि
और मेलबलि के लिये दी जाए जिस से
उनके लिये प्रायश्चित्त किया जाए, पर-
मेश्वर यहोवा की यही वाणी है।
१६ इस्राएल के प्रधान के लिये देश के
सब लोग यह भेंट दें। १७ पर्वों, नये
चाद के दिनो, विश्रामदिनो और इस्राएल
के घराने के सब नियत समयों मे होमबलि,
अन्नबलि, और अर्घ देना प्रधान ही का काम
हो। इस्राएल के घराने के लिये प्रायश्चित्त
करने को वह पापबलि, अन्नबलि, होमबलि,
और मेलबलि तैयार करे ॥
१८ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
पहिले महीने के पहले दिन को तू एक
निर्दोष बछड़ा लेकर पवित्रस्थान को
पवित्र करना। १९ इस पापबलि के लोहू
मे से याजक कुछ लेकर भवन के चौखट
के खम्भो, और वेदी की कुर्सी के चारों
कोनो, और भीतरी आंगन के फाटक के
खम्भो पर लगाए। २० फिर महीने के
सातवे दिन को सब भूल मे पडे हुओ और
भोलो के लिये भी यों ही करना, इसी
प्रकार से भवन के लिये प्रायश्चित्त
करना ॥
२१ पहिले महीने के चौदहवे दिन को
तुम्हारा फसह हुआ करे, वह सात दिन का
पर्व हो और उस मे अखमीरी रोटी खाई
जाए। २२ उस दिन प्रधान अपने और
प्रजा के सब लोगों के निमित्त एक बछडा
पापबलि के लिये तैयार करे। २३ और
पर्व के सातो दिन वह यहोवा के लिये
होमबलि तैयार करे, अर्थात् हर एक
दिन सात सात निर्दोष बछडे और सात
सात निर्दोष मेढे और प्रति दिन एक
एक बकरा पापबलि के लिये तैयार करे।
२४ और हर एक बछडे और मेढे के
साथ वह एपा भर अन्नबलि, और एपा पीछे
हीन भर तेल तैयार करे। २५ सातवे
महीने के पन्द्रहवे दिन से लेकर सात दिन
तक अर्थात् पर्व के दिनो में वह पापबलि,
होमबलि, अन्नबलि, और तेल इसी विधि
के अनुसार किया करे ॥

४६ परमेश्वर यहोवा यों कहता है,
भीतरी आंगन का पूर्वमुखी फाटक
काम काज के छओ दिन बन्द रहे, परन्तु

विश्रामदिन को खुला रहे। और नये
चाद के दिन भी खुला रहे। २ प्रधान
बाहर से फाटक के ओसारे के मार्ग से
आकर फाटक के एक खम्भे के पास खडा
हो जाए, और याजक उसका होमबलि
और मेलबलि तैयार करे, और वह
फाटक की डेवढी पर दण्डवत् करे,
तब वह बाहर जाए, और फाटक साझ
से पहिले बन्द न किया जाए। ३ और
लोग विश्राम और नये चाद के दिनो मे
उस फाटक के द्वार में यहोवा के साम्हने
दण्डवत् करे। ४ और विश्रामदिन में
जो होमबलि प्रधान यहोवा के लिये चढाए,
वह भेड के छ निर्दोष बच्चे और एक
निर्दोष मेढे का हो। ५ और अन्नबलि
यह हो, अर्थात् मेढे के साथ एपा भर
अन्न और भेड के बच्चों के साथ यथाशक्ति
अन्न और एपा पीछे हीन भर तेल।
६ और नये चाद के दिन वह एक निर्दोष
बछडा और भेड के छ बच्चे और एक
मेढा चढाए, ये सब निर्दोष हो। ७ और
बछडे और मेढे दोनो के साथ वह एक
एक एपा अन्नबलि तैयार करे, और भेड
के बच्चो के साथ यथाशक्ति अन्न, और
एपा पीछे हीन भर तेल। ८ और जब
प्रधान भीतर जाए तब वह फाटक के
ओसारे मे होकर जाए, और उसी माग
से निकल जाए॥

९ जब साधारण लोग नियत समयो
में यहोवा के साम्हने दण्डवत् करने आए,
तब जो उत्तरी फाटक से होकर दण्डवत्
करने को भीतर आए, वह दक्खिनी फाटक
से होकर निकले, और जो दक्खिनी फाटक
से होकर भीतर आए, वह उत्तरी फाटक
से होकर निकले, अर्थात् जो जिस फाटक
से भीतर आया हो, वह उसी फाटक से
न लौटे, अपने साम्हने ही निकल जाए।
१० और जब वे भीतर आए तब प्रधान
उनके बीच होकर आए, और जब वे
निकले, तब वे एक साथ निकले॥

११ और पर्वो और अन्य नियत समयो
का अन्नबलि बछडे पीछे एपा भर, और
मेढे पीछे एपा भर का हो, और भेड के
बच्चो के साथ यथाशक्ति अन्न और एपा
पीछे हीन भर तेल। १२ फिर जब
प्रधान होमबलि वा मेलबलि को स्वेच्छा-
बलि करके यहोवा के लिये तैयार करे,
तब पूवमुखी फाटक उनके लिये खोला
जाए, और वह अपना होमबलि वा मेलबलि
वैसे ही तैयार करे जैसे वह विश्रामदिन को
करता है, तब वह निकले, और उसके
निकलने के पीछे फाटक बन्द किया जाए॥

१३ और प्रति दिन तू वप भर का
एक निर्दोष भेड का बच्चा यहोवा के
होमबलि के लिये तैयार करना, यह प्रति
भोर को तैयार किया जाए। १४ और
प्रति भोर को उसके साथ एक अन्नबलि
तैयार करना, अर्थात् एपा का छठवा अश
और मैदा मे मिलाने के लिये हीन भर
तेल की तिहाई यहोवा के लिये सदा का
अन्नबलि निन्य विधि के अनुसार चढाया
जाए। १५ भेड का बच्चा, अन्नबलि
और तेल, प्रति भोर को नित्य होमबलि
करके चढाया जाए॥

१६ परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
यदि प्रधान अपने किसी पुत्र को कुछ दे,
तो वह उसका भाग होकर उसके पोतो
को भी मिले, भाग के नियम के अनुसार
वह उनका भी निज धन ठहरे। १७ परन्तु
यदि वह अपने भाग में से अपने किसी
कर्मचारी को कुछ दे, तो छुट्टी के वर्ष तक
तो वह उसका बना रहे, परन्तु उसके बाद

प्रधान को लौटा दिया जाए, और उसका
निज भाग ही उसके पुत्रों को मिले।
१८ और प्रजा का ऐसा कोई भाग प्रधान
न ले, जो अन्धेर से उनकी निज भूमि
से छीना हो, अपने पुत्रो को वह अपनी ही
निज भूमि मे से भाग दे, ऐसा न हो कि
मेरी प्रजा के लोग अपनी अपनी निज
भूमि से तितर-बितर हो जाए ॥

१९ फिर वह मुझे फाटक की एक
अलग मे द्वार से होकर याजको की
उत्तरमुखी पवित्र कोठरियो मे ले गया,
वहा पश्चिम ओर के कोने मे एक स्थान
था। २० तब उस ने मुझ से कहा,
यह वह स्थान है जिस मे याजक लोग
दोषबलि और पापबलि के मास को पकाए
और अन्नबलि को पकाए, ऐसा न हो कि
उन्हे बाहरी आगन मे ले जाने से साधारण
लोग पवित्र ठहरे ॥

२१ तब उस ने मुझे बाहरी आगन
मे ले जाकर उस आगन के चारो कोनो
मे फिराया, और आगन के हर एक कोने
मे एक एक ओट बना था, २२ अर्थात्
आगन के चारो कोनो मे चालीस हाथ
लम्बे और तीस हाथ चौडे ओट थे,
चारो कोनो के ओटो की एक ही माप थी।
२३ और भीतर चारो ओर भीत * थी,
और भीतो † के नीचे पकाने के चूल्हे बने
हुए थे। २४ तब उस ने मुझ से कहा,
पकाने के घर, जहा भवन के टहलुए लोगो
के बलिदानो को पकाए, वे ये ही है ॥

४७ फिर वह मुझे भवन के द्वार पर
लौटा ले गया, और भवन की
डेवढी के नीचे से एक सोता निकलकर
पूर्व ओर बह रहा था। भवन का द्वार
तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन के
पूर्व और वेदी के दक्खिन, नीचे से निकलता
था। २ तब वह मुझे उत्तर के फाटक
से होकर बाहर ले गया, और बाहर बाहर
से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूर्वमुखी फाटक
के पास पहुचा दिया, और दक्खिनी
अलग से जल पसीजकर बह रहा था।
३ जब वह पुरुष हाथ मे मापने की डोरी
लिए हुए पूर्व ओर निकला, तब उस ने
भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते
को मापा, और मुझे जल मे से चलाया,
और जल टखनो तक था। ४ उस ने
फिर हजार हाथ मापकर मुझे जल मे से
चलाया, और जल घुटनो तक था, फिर
और हजार हाथ मापकर मुझे जल मे से
चलाया, और जल कमर तक था। ५ तब
फिर उस ने एक हजार हाथ मापे, और
ऐसी नदी हो गई जिसके पार मै न जा
सका, क्योकि जल बढकर तैरने के योग्य
था, अर्थात् ऐसी नदी थी जिसके पार
कोई न जा सकता था। ६ तब उस ने
मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान,
क्या तू ने यह देखा है?

फिर उस ने मुझे नदी के तीर लौटाकर
पहुचा दिया। ७ लौटकर मै ने क्या
देखा, कि नदी के दोनो तीरो पर बहुत
से वृक्ष है। ८ तब उस ने मुझ से कहा,
यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है,
और अराबा मे उतरकर ताल की ओर
बहेगा, और यह भवन से निकला हुआ
सीधा ताल मे मिल जाएगा, और उसका
जल मीठा हो जाएगा। ९ और जहा
जहा यह नदी * बहे, वहा वहा सब प्रकार
के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएगे

* मूल में—पाति। † [illegible] मूल में—दो नदियां।

और मछलिया भी बहुत हो जाएगी,
क्योंकि इस सोते का जल वहा पहुचा है,
और ताल का जल मीठा हो जाएगा,
और जहा कही यह नदी पहुचेगी वहा
सब जन्तु जीएगे। १० ताल के तीर
पर मछवे खडे रहेंगे, और एनगदी से
लेकर ऐनेग्लैम तक वे जाल फैलाए जाएगे,
और उन्हे महासागर की सी भाति भाति की
अनगिनित मछलिया मिलेंगी। ११ परन्तु
ताल के पास जो दलदल और गड्हे है,
उनका जल मीठा न होगा, वे खारे ही
रहेंगे। १२ और नदी के दोनो तीरो पर
भाति भाति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष
उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएगे और
उनका फलना भी कभी बन्द न होगा,
क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से
निकला है। उन में महीने महीने, नये
नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के,
और पत्ते औषधि के काम आएगे॥

१३ परमेश्वर यहोवा यो कहता है,
जिस सिवाने के भीतर तुम को यह देश
अपने बारहो गोत्रो के अनुसार बाटना
पडेगा, वह यह है यूसुफ को दो
भाग मिले। १४ और उसे तुम एक
दूसरे के समान निज भाग मे पाओगे,
क्योंकि मै ने शपथ खाई* कि उसे तुम्हारे
पितरो को दूगा, सो यह देश तुम्हारा निज
भाग ठहरेगा॥

१५ देश का सिवाना यह हो, अर्थात्
उत्तर ओर का सिवाना महासागर से
लेकर हेतलोन के पास से सदाद की घाटी
तक पहुचे, १६ और उस सिवाने के पास
हमात बेरोता, और सिब्रैम जो दमिश्क
और हमात के सिवानो के बीच में है,

* मूल में—मै ने हाथ उठाया था।

और हसहत्तीकोन तक, जो हौरान के
सिवाने पर है। १७ और यह सिवाना
समुद्र से लेकर दमिश्क के सिवाने के पास के
हसरेनोन तक पहुचे, और उसकी उत्तर
ओर हमात हो। उत्तर का सिवाना यही
हो। १८ और पूर्वी सिवाना जिसकी
एक ओर हौरान दमिश्क, और यरदन
की ओर गिलाद और इस्राएल का देश
हो, उत्तरी सिवाने से लेकर पूर्वी ताल
तक उसे मापना। पूर्वी सिवाना तो यही
हो। १९ और दक्खिनी सिवाना तामार
से लेकर कादेश के मरीबोत नाम सोते
तक अर्थात् मिस्र के नाले तक, और महा-
सागर तक पहुचे। दक्खिनी सिवाना यही
हो। २० और पश्चिमी सिवाना दक्खिनी
सिवाने से लेकर हमात की घाटी के
साम्हने तक का महासागर हो। पच्छिमी
सिवाना यही हो॥

२१ इस प्रकार देश को इस्राएल
के गोत्रो के अनुसार आपस में बाट लेना।
२२ और इसको आपस में और उन
परदेशियो के साथ बाट लेना, जो तुम्हारे
बीच रहते हुए बालको को जन्माए। वे
तुम्हारी दृष्टि मे देशी इस्राएलियो की नाई
ठहरे, और तुम्हारे गोत्रो के बीच अपना
अपना भाग पाए। २३ जो परदेशी जिस
गोत्र के देश में रहता हो, उसको वही भाग
देना, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है॥

४८ गोत्रो के भाग* ये हो उत्तर
सिवाने से लगा हुआ हेतलोन
के मार्ग के पास से हमात की घाटी तक,
और दमिश्क के सिवाने के पास के हसरेनान
से उत्तर ओर हमात के पास तक एक
भाग दान का हो, और उसके पूर्वी और

* मूल में—नाम।

पश्चिमी सिवाने भी हो। २ दान के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक
आशेर का एक भाग हो। ३ आशेर
के सिवाने से लगा हुआ, पूर्व से पश्चिम
तक नप्ताली का एक भाग हो। ४ नप्ताली
के सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक
मनश्शे का एक भाग। ५ मनश्शे के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक
एप्रैम का एक भाग हो। ६ एप्रैम के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पच्छिम तक
रूबेन का एक भाग हो। ७ और रूबेन के
सिवाने से लगा हुआ, पूर्व से पच्छिम तक
यहूदा का एक भाग हो॥

८ यहूदा के सिवाने से लगा हुआ
पूर्व से पच्छिम तक वह अर्पण किया हुआ
भाग हो, जिसे तुम्हें अर्पण करना होगा,
वह पच्चीस हजार बांस चौड़ा और पूर्व
से पच्छिम तक किसी एक गोत्र के भाग
के तुल्य लम्बा हो, और उसके बीच मे
पवित्रस्थान हो। ९ जो भाग तुम्हें यहोवा
को अर्पण करना होगा, उसकी लम्बाई
पच्चीस हजार बांस और चौड़ाई दस
हजार बांस की हो। १० यह अर्पण
किया हुआ पवित्र भाग याजकों को मिले,
वह उत्तर ओर पच्चीस हजार बांस लम्बा,
पच्छिम ओर दस हजार बांस चौड़ा,
पूर्व ओर दस हजार बांस चौड़ा और
दक्खिन ओर पच्चीस हजार बांस लम्बा
हो, और उसके बीचोबीच यहोवा का
पवित्रस्थान हो। ११ यह विशेष पवित्र
भाग सादोक की सन्तान के उन याजकों
का हो जो मेरी आज्ञाओं को पालते रहे,
और इस्राएलियों के भटक जाने के समय
लेवियों की नाईं न भटके थे। १२ सो
देश के अर्पण किए हुए भाग में से यह उनके
लिये अर्पण किया हुआ भाग, अर्थात्
परमपवित्र देश ठहरे, और लेवियों के
सिवाने से लगा रहे। १३ और याजकों
के सिवाने से लगा हुआ लेवियों का भाग
हो, वह पच्चीस हजार बांस लम्बा और
दस हजार बांस चौड़ा हो। सारी लम्बाई
पच्चीस हजार बांस की और चौड़ाई दस
हजार बांस की हो। १४ वे उस में
से न तो कुछ बेचें, न दूसरी भूमि से बदलें,
और न भूमि की पहिली उपज और किसी
को दी जाए। क्योंकि वह यहोवा के
लिये पवित्र है॥

१५ और चौड़ाई के पच्चीस हजार
बांस के साम्हने जो पांच हजार बचा
रहेगा, वह नगर और बस्ती और चराई
के लिये साधारण भाग हो, और नगर
उसके बीच में हो। १६ और नगर की
यह माप हो, अर्थात् उत्तर, दक्खिन, पूर्व
और पच्छिम ओर साढ़े चार चार हजार
हाथ। १७ और नगर के पास उत्तर,
दक्खिन, पूर्व, पच्छिम, चराइयां हों
जो अढ़ाई अढ़ाई सौ बांस चौड़ी हों।
१८ और अर्पण किए हुए पवित्र भाग के
पास की लम्बाई में से जो कुछ बचे,
अर्थात् पूर्व और पच्छिम दोनों ओर दस
दस बांस जो अर्पण किए हुए भाग के
पास हो, उसकी उपज नगर में परिश्रम
करनेवालों के खाने के लिये हो। १९ और
इस्राएल के सारे गोत्रों में से जो नगर
में परिश्रम करे, वे उसकी खेती किया
करें। २० सारा अर्पण किया हुआ भाग
पच्चीस हजार बांस लम्बा और पच्चीस
हजार बांस चौड़ा हो, तुम्हें चौकोना
पवित्र भाग अर्पण करना होगा जिस में
नगर की विशेष भूमि हो॥

२१ और जो भाग रह जाए, वह
प्रधान को मिले। पवित्र अर्पण किए हुए

भाग की, और नगर की विशेष भूमि की
दोनों ओर अर्थात् उनकी पूर्व और पश्चिम
अलंगों के पच्चीस पच्चीस हजार बांस
की चौड़ाई के पास, जो और गोत्रों के
भागों के पास रहें, वह प्रधान को मिले।
और अर्पण किया हुआ पवित्र भाग और
भवन का पवित्रस्थान उनके बीच में हो।
२२ जो प्रधान का भाग होगा, वह लेवियों
के भाग और नगरों की विशेष भूमि हो।
प्रधान का भाग यहूदा और बिन्यामीन
के सिवानों के बीच में हो॥
२३ अन्य गोत्रों के भाग इस प्रकार
हों पूर्व से पश्चिम तक बिन्यामीन का
एक भाग हो। २४ बिन्यामीन के सिवाने
से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक शिमोन
का एक भाग। २५ शिमोन के सिवाने
से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक इस्साकार
का एक भाग। २६ इस्साकार के सिवाने
से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक
जबूलून का एक भाग। २७ जबूलून के
सिवाने से लगा हुआ पूर्व से पश्चिम तक
गाद का एक भाग। २८ और गाद के
सिवाने के पास दक्खिन ओर का सिवाना
तामार से लेकर कादेश के मरीबात नाम
सोते तक, और मिस्र के नाले और महा-
सागर तक पहुंचे। २९ जो देश तुम्हें
इस्राएल के गोत्रों को बांटना होगा वह
यही है, और उनके भाग भी ये ही
हैं, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी
है॥
३० नगर के निकास ये हों, अर्थात्
उत्तर की अलंग जिसकी लम्बाई साढ़े
चार हजार बांस की हो। ३१ उस में
तीन फाटक हों, अर्थात् एक रूबेन का
फाटक, एक यहूदा का फाटक, और एक
लेवी का फाटक हो, क्योंकि नगर के
फाटकों के नाम इस्राएल के गोत्रों के
नामों पर रखने होंगे। ३२ और पूरब
की अलंग साढ़े चार हजार बांस लम्बी
हो, और उस में तीन फाटक हों, अर्थात्
एक यूसुफ का फाटक, एक बिन्यामीन
का फाटक, और एक दान का फाटक
हो। ३३ और दक्खिन की अलंग साढ़े
चार हजार बांस लम्बी हो, और उस में
तीन फाटक हों, अर्थात् एक शिमोन का
फाटक, एक इस्साकार का फाटक, और
एक जबूलून का फाटक हो। ३४ और
पश्चिम की अलंग साढ़े चार हजार बांस
लम्बी हो, और उस में तीन फाटक हों,
अर्थात् एक गाद का फाटक, एक आशेर
का फाटक और नप्ताली का फाटक हो।
३५ नगर की चारों अलंगों का घेरा
अठारह हजार बांस का हो, और उस
दिन से आगे को नगर का नाम "यहोवा
शाम्मा *" रहेगा॥

* अर्थात् यहोवा वहां है।

दानिय्येल नामक पुस्तक

१ यहूदा के राजा यहोयाकीम के
राज्य के तीसरे वर्ष में बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर
चढ़ाई करके उसको घेर लिया। २ तब
परमेश्वर ने यहूदा के राजा यहोयाकीम
को परमेश्वर के भवन के कई पात्रों
सहित उसके हाथ में कर दिया;
और उस ने उन पात्रों को शिनार
देश में अपने देवता के मन्दिर में
ले जाकर, अपने देवता के भण्डार
में रख दिया। ३ तब उस राजा ने
अपने खोजों के प्रधान अशपनज को
आज्ञा दी कि इस्राएली राजपुत्रों और
प्रतिष्ठित पुरुषों में से ऐसे कई जवानों
को ला, ४ जो निर्दोष, सुन्दर और
सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और
ज्ञान में निपुण और विद्वान् और राजमन्दिर
में हाज़िर रहने के योग्य हों, और उन्हें
कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा
दे। ५ और राजा ने आज्ञा दी कि
उसके भोजन और पीने के दाखमधु में
से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया
जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका
पालन पोषण होता रहे, तब उसके बाद
वे राजा के साम्हने हाज़िर किए जाएं।
६ उन में यहूदा की सन्तान से चुने
हुए, दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल, और
अजर्याह नाम यहूदी थे। ७ और खोजों
के प्रधान ने उनके दूसरे नाम रखे,
अर्थात् दानिय्येल का नाम उस ने
बेलतशस्सर, हनन्याह का शद्रक, मीशाएल
का मेशक, और अजर्याह का नाम अबेदनगो
रखा॥

८ परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान
लिया कि वह राजा का भोजन खाकर,
और उसके पीने का दाखमधु पीकर
अपवित्र न होए, इसलिये उस ने खोजों
के प्रधान से बिनती की कि उसे अपवित्र
न होना पड़े। ९ परमेश्वर ने खोजों के
प्रधान के मन में दानिय्येल के प्रति कृपा
और दया भर दी। १० और खोजों के
प्रधान ने दानिय्येल से कहा, मैं अपने स्वामी
राजा से डरता हूं, क्योंकि तुम्हारा खाना-
पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो
कि वह तेरा मुंह तेरे संगी के जवानों से
उतरा हुआ और उदास देखे और तुम मेरा
सिर राजा के साम्हने जोखिम में डालो।
११ तब दानिय्येल ने उस मुखिये से,
जिसको खोजों के प्रधान ने दानिय्येल,
हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह के
ऊपर देखभाल करने के लिये नियुक्त किया
था, कहा, १२ मैं तेरी बिनती करता
हूं, अपने दासों को दस दिन तक जांच,
हमारे खाने के लिये सागपात और पीने
के लिये पानी ही दिया जाए। १३ फिर
दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो
जवान राजा का भोजन खाते हैं उनके
मुंह को देख; और जैसा तुझे देख पड़े,
उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार
करना। १४ उनकी यह बिनती उस ने
मान ली, और दस दिन तक उनको
जांचता रहा। १५ दस दिन के बाद

उनके मुह राजा के भोजन के खानेवाले
सब जवानो मे अधिक अच्छे और चिकने
देख पडे। १६ तब वह मुखिया उनका
भोजन और उनके पीने के लिये ठहराया
हुआ दाखमधु दोनो छुडाकर, उनको
सागपात देने लगा ॥

१७ और परमेश्वर ने उन चारो
जवानो को सब शास्त्रो, और सब प्रकार
की विद्याओ में बुद्धिमानी और प्रवीणता
दी, और दानिय्येल सब प्रकार के दर्शन
और स्वप्न के अर्थ का ज्ञानी हो गया।
१८ तब जितने दिन के बाद नबूकदनेस्सर
राजा ने जवानो को भीतर ले आने की
आज्ञा दी थी, उतने दिन के बीतने पर
खोजो का प्रधान उन्हें उसके सामने ले
गया। १९ और राजा उन से बातचीत
करने लगा, और दानिय्येल, हनन्याह,
मीशाएल, और अजर्याह के तुल्य उन सब
में से कोई न ठहरा, इसलिये वे राजा
के सम्मुख हाजिर रहने लगे। २० और
बुद्धि और हर प्रकार की समझ के विषय
में जो कुछ राजा उन से पूछता था उस
में वे राज्य भर के सब ज्योतिषियो और
तन्त्रियो से दसगुणे निपुण ठहरते थे।
२१ और दानिय्येल कुस्रू राजा के पहिले
वर्ष तक बना रहा ॥

२ अपने राज्य के दूसरे वर्ष में
नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा
जिस से उसका मन बहुत ही व्याकुल
हो गया और उसको नींद न आई।
२ तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी,
तन्त्री, टोनहे और कसदी बुलाए जाए कि
वे राजा को उसका स्वप्न बताए, सो वे
आए और राजा के साम्हने हाजिर हुए।
३ तब राजा ने उन से कहा, मैं ने एक
स्वप्न देखा है, और मेरा मन व्याकुल
है कि स्वप्न को कैसे समझू। ४ कसदियो
ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे
राजा, तू चिरजीव रहे। अपने दासो
को स्वप्न बता, और हम उसका फल
बताएगे। ५ राजा ने कसदियो को उत्तर
दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हू कि यदि
तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे
तो तुम टुकडे टुकडे किए जाओगे, और
तुम्हारे घर फुकवा दिए जाएगे। ६ और
यदि तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो
मुझ से भाति भाति के दान और भारी
प्रतिष्ठा पाओगे। ७ इसलिये तुम मुझे
फल समेत स्वप्न को बताओ। उन्हो ने
दूसरी बार कहा, हे राजा स्वप्न तेरे दासो
को बताया जाए, और हम उसका फल
समझा देंगे। ८ राजा ने उत्तर दिया,
मैं निश्चय जानता हू कि तुम यह देखकर,
कि राजा के मुह से आज्ञा निकल चुकी है,
समय बढाना चाहते हो। ९ इसलिये
यदि तुम मुझे स्वप्न न बताओ तो तुम्हारे
लिये एक ही आज्ञा है। क्योंकि तुम ने
गोष्ठी की होगी कि जब तक समय न
बदले, तब तक हम राजा के साम्हने
झूठी और गपशप की बातें कहा करेंगे।
इसलिये तुम मुझे स्वप्न को बताओ,
तब मैं जानूगा कि तुम उसका फल भी
समझा सकते हो। १० कसदियो ने राजा
से कहा, पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य
नहीं जो राजा के मन की बात बता सके,
और न कोई ऐसा राजा, वा प्रधान, वा
हाकिम कभी हुआ है जिस ने किसी ज्योतिषी
वा तन्त्री, वा कसदी से ऐसी बात पूछी
हो। ११ जो बात राजा पूछता है, वह
अनोखी है, और देवताओ को छोडकर
जिनका निवास मनुष्यो के संग नहीं है,

और कोई दूसरा नही, जो राजा को यह
बता सके ।।
१२ इस पर राजा ने झुंझलाकर,
और बहुत ही क्रोधित होकर, बाबुल के
सब पण्डितो के नाश करने की आज्ञा दे
दी। १३ सो यह आज्ञा निकली, और
पण्डित लोगो का घात होने पर था,
और लोग दानिय्येल और उसके संगियो
को ढूढ रहे थे कि वे भी घात किए जाए।
१४ तब दानिय्येल ने, जल्लादो के प्रधान
अर्योक से, जो बाबुल के पण्डितो को
घात करने के लिये निकला था, सोच
विचारकर और बुद्धिमानी के साथ कहा,
१५ और राजा के हाकिम अर्योक से
पूछने लगा, यह आज्ञा राजा की
ओर से ऐसी उतावली के साथ क्यो
निकली? तब अर्योक ने दानिय्येल को
इसका भेद बता दिया। १६ और
दानिय्येल ने भीतर जाकर राजा से विनती
की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया
जाए, तो वह महाराज को स्वप्न का
फल बता देगा ।।
१७ तब दानिय्येल ने अपने घर जाकर,
अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और
अजर्याह को यह हाल बताकर कहा,
१८ इस भेद के विषय मे स्वर्ग के परमेश्वर
की दया के लिये यह कहकर प्रार्थना करो,
कि बाबुल के और सब पण्डितो के संग,
दानिय्येल और उसके संगी भी नाश न
किए जाए। १९ तब वह भेद दानिय्येल
को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट
किया गया। सो दानिय्येल ने स्वर्ग के
परमेश्वर का यह कहकर धन्यवाद किया,
२० परमेश्वर का नाम युगानयुग धन्य
है, क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के
है। २१ समयो और ऋतुओ को वही
पलटता है, राजाओ का अस्त और उदय
भी वही करता है, बुद्धिमानो को बुद्धि
और समझवालो को समझ भी वही
देता है, २२ वही गूढ और गुप्त बातो
को प्रगट करता है, वह जानता है कि
अन्धियारे मे क्या है, और उसके संग
सदा प्रकाश बना रहता है। २३ हे मेरे
पूर्वजो के परमेश्वर, मै तेरा धन्यवाद और
स्तुति करता हू, क्योकि तू ने मुझे बुद्धि
और शक्ति दी है, और जिस भेद का
खुलना हम लोगो ने तुझ से मागा था,
उसे तू ने मुझ पर प्रगट किया है, तू ने
हम को राजा की बात बताई है ।।
२४ तब दानिय्येल ने अर्योक के
पास, जिसे राजा ने बाबुल के पण्डितो के
नाश करने के लिये ठहराया था, भीतर
जाकर कहा, बाबुल के पण्डितो का नाश
न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल,
मै फल बताऊगा ।।
२५ तब अर्योक ने दानिय्येल को
राजा के सम्मुख शीघ्र भीतर ले जाकर
उस से कहा, यहूदी बंधुओ मे से एक
पुरुष मुझ को मिला है, जो राजा को
स्वप्न का फल बताएगा। २६ राजा ने
दानिय्येल से, जिसका नाम बेलतशस्सर
भी था, पूछा, क्या तुझ मे इतनी शक्ति
है कि जो स्वप्न मै ने देखा है, उसे
फल समेत मुझे बताए? २७ दानिय्येल
ने राजा को उत्तर दिया, जो भेद
राजा पूछता है, वह न तो पण्डित
न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी
बतानेवाले राजा को बता सकते है,
२८ परन्तु भेदो का प्रगटकर्त्ता परमेश्वर
स्वर्ग मे है, और उसी ने नबूकदनेस्सर
राजा को जताया है कि अन्त के दिनो मे
क्या क्या होनेवाला है। तेरा स्वप्न और

जो कुछ तू ने पलग पर पडे हुए देखा,
वह यह है २९ हे राजा, जब तुझ को
पलग पर यह विचार हुआ कि भविष्य
में क्या क्या होनेवाला है, तब भेदो को
खोलनेवाले ने तुझ को बताया, कि क्या
क्या होनेवाला है। ३० मुझ पर यह
भेद इस कारण नही खोला गया कि मैं
और सब प्राणियो से अधिक बुद्धिमान्
हू, परन्तु केवल इसी कारण खोला गया
है कि स्वप्न का फल राजा को बताया
जाए, और तू अपने मन के विचार समझ
सके ।।

३१ हे राजा, जब तू देख रहा था, तब
एक बडी मूर्त्ति देख पडी, और वह मूर्त्ति
जो तेरे साम्हने खडी थी, सो लम्बी चौडी
थी, उसकी चमक अनुपम थी, और
उसका रूप भयकर था। ३२ उस मूर्त्ति
का सिर तो चोखे सोने का था, उसकी
छाती और भुजाए चान्दी की, उसका
पेट और जाघे पीतल की, ३३ उसकी
टागें लोहे की और उसके पाव कुछ तो
लोहे के और कुछ मिट्टी के थे। ३४ फिर
देखते देखते, तू ने क्या देखा, कि एक
पत्थर ने, बिना किसी के खोदे, आप ही
आप उखडकर उस मूर्त्ति के पावो पर
लगकर जो लोहे और मिट्टी के थे, उनको
चूर चूर कर डाला। ३५ तब लोहा,
मिट्टी, पीतल, चान्दी और सोना भी सब
चूर चूर हो गए, और धूपकाल मे खलिहानों
के भूसे की नाईं हवा से ऐसे उड गए
कि उनका कही पता न रहा, और वह
पत्थर जो मूर्त्ति पर लगा था, वह बडा
पहाड बनकर सारी पृथ्वी मे फैल
गया ।।

३६ स्वप्न तो यो ही हुआ, और
अब हम उसका फल राजा को समझा
देते है। ३७ हे राजा, तू तो महाराजा-
धिराज है, क्योकि स्वर्ग के परमेश्वर ने
तुझ को राज्य, सामर्थ, शक्ति और
महिमा दी है, ३८ और जहा कही मनुष्य
पाए जाते है, वहा उस ने उन सभो को,
और मैदान के जीवजन्तु, और आकाश
के पक्षी भी तेरे वश मे कर दिए है,
और तुझ को उन सब का अधिकारी
ठहराया है। यह सोने का सिर तू ही
है। ३९ तेरे बाद एक राज्य और उदय
होगा जो तुझ से छोटा होगा, फिर एक
और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिस
मे सारी पृथ्वी आ जाएगी। ४० और
चौथा राज्य लोहे के तुल्य मज़बूत होगा,
लोहे मे तो सब वस्तुए चूर चूर हो जाती
और पिस जाती है, इसलिये जिस भाति
लोहे से वे सब कुचली जाती है उसी
भाति, उस चौथे राज्य मे सब कुछ चूर
चूर होकर पिस जाएगा। ४१ और तू ने
जो मूर्त्ति के पावो और उनकी उगलिया
को देखा, जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की
और कुछ लोहे की थी, इस मे वह चौथा
राज्य बटा हुआ होगा, तौभी उस मे
लोहे का सा कडापन रहेगा, जैसे कि तू
ने कुम्हार की मिट्टी के सग लोहा भी
मिला हुआ देखा था। ४२ और जैसे
पावो की उगलिया कुछ तो लोहे की और
कुछ मिट्टी की थी, इसका अर्थ यह है,
कि वह राज्य कुछ तो दृढ और कुछ
निबल * होगा। ४३ और तू ने जो लोहे
को कुम्हार की मिट्टी के सग मिला हुआ
देखा, इसका अर्थ यह है, कि उस राज्य
के लोग एक दूसरे मनुष्यो से † मिले जुले
तो रहेंगे, परन्तु जैसे लोहा मिट्टी के साथ

* मूल में—भुरभुरा।
† मूल में—बिनाशी मनुष्यों के वंश से।

मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने
रहेंगे। ४४ और उन राजाओं के दिनों
में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य
उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा,
और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ
में किया जाएगा। वरन वह उन सब
राज्यों को चूर चूर करेगा, और उनका
अन्त कर डालेगा, और वह सदा स्थिर
रहेगा, ४५ जैसा तू ने देखा कि एक पत्थर
किसी के हाथ के बिन खोदे पहाड में से
उखडा, और उस ने लोहे, पीतल, मिट्टी,
चान्दी, और सोने को चूर चूर किया,
इसी रीति महान् परमेश्वर ने राजा को
जताया है कि इसके बाद क्या क्या
होनेवाला है। न स्वप्न में और न उसके
फल में कुछ सन्देह है॥

४६ इतना सुनकर नबूकदनेस्सर राजा
ने मुंह के बल गिरकर दानिय्येल को
दण्डवत् की, और आज्ञा दी कि उसको
भेंट चढाओ, और उसके साम्हने सुगन्ध
वस्तु जलाओ। ४७ फिर राजा ने
दानिय्येल से कहा, सच तो यह है कि
तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का
ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का
खोलनेवाला है, इसीलिये तू यह भेद
प्रगट कर पाया। ४८ तब राजा ने
दानिय्येल का पद बडा किया, और उसको
बहुत से बडे बडे दान दिए, और यह
आज्ञा दी कि वह बाबुल के सारे प्रान्त
पर हाकिम और बाबुल के सब पण्डितों
पर मुख्य प्रधान बने। ४९ तब दानिय्येल
के बिनती करने से राजा ने शद्रक, मेशक,
और अबेदनगो को बाबुल के प्रान्त के
कार्य के ऊपर नियुक्त कर दिया, परन्तु
दानिय्येल आप ही राजा के दरबार में
रहा करता था॥

३ नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की
एक मूरत बनवाई, जिसकी ऊंचाई
साठ हाथ, और चौडाई छः हाथ की थी।
और उस ने उसको बाबुल के प्रान्त के
दूरा नाम मैदान में खडा कराया।
२ तब नबूकदनेस्सर राजा ने अधिपतियों,
हाकिमों, गवर्नरों, जजों, खजानचियों,
न्यायियों, शास्त्रियों आदि प्रान्त-प्रान्त के
सब अधिकारियों को बुलवा भेजा कि वे
उस मूरत की प्रतिष्ठा में आएं जो उस
ने खडी कराई थी। ३ तब अधिपति,
हाकिम, गवर्नर, जज, खजानची, न्यायी,
शास्त्री आदि प्रान्त-प्रान्त के सब अधिकारी
नबूकदनेस्सर राजा की खडी कराई हुई
मूरत की प्रतिष्ठा के लिये इकट्ठे हुए,
और उस मूरत के साम्हने खडे हुए।
४ तब ढिंढोरिये ने ऊंचे शब्द से पुकारकर
कहा, हे देश-देश और जाति-जाति के
लोगो, और भिन्न-भिन्न भाषा के बोलने-
वालो, तुम को यह आज्ञा सुनाई जाती
है कि, ५ जिस समय तुम नरसिंगे,
बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई
आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो,
तुम उसी समय गिरकर नबूकदनेस्सर
राजा की खडी कराई हुई सोने की मूरत
को दण्डवत् करो। ६ और जो कोई
गिरकर दण्डवत् न करेगा वह उसी घडी
धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया
जाएगा। ७ इस कारण उस समय ज्यों
ही सब जाति के लोगों को नरसिंगे,
बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार शहनाई
आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द
सुन पडा, त्यों ही देश-देश और जाति-
जाति के लोगों और भिन्न-भिन्न भाषा
बोलनेवालों ने गिरकर उस सोने की

मूरत को, जो नबूकदनेस्सर राजा ने
खड़ी कराई थी दण्डवत् की ॥
८ उसी समय कई एक कसदी पुरुष
राजा के पास गए, और कपट से यहूदियों
की चुगली खाई। ९ वे नबूकदनेस्सर
राजा से कहने लगे, हे राजा, तू चिरंजीव
रहे। १० हे राजा, तू ने तो यह आज्ञा
दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बांसुली,
वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि
सब प्रकार के बाजों का शब्द सुने, वह
गिरकर उस सोने की मूरत को दण्डवत्
करे, ११ और जो कोई गिरकर दण्डवत्
न करे वह धधकते हुए भट्ठे के बीच में
डाल दिया जाए। १२ देख शद्रक, मेशक,
और अबेदनगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं,
जिन्हें तू ने बाबुल के प्रान्त के कार्य के
ऊपर नियुक्त किया है। उन पुरुषों ने,
हे राजा तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं
की वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते,
और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई
है, उसको दण्डवत् नहीं करते ॥
१३ तब नबूकदनेस्सर ने रोष और
जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक,
मेशक और अबेदनगो को लाओ। तब
वे पुरुष राजा के साम्हने हाजिर किए
गए। १४ नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा,
हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग
जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते,
और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत
को दण्डवत् नहीं करते सो क्या तुम
जान बूझकर ऐसा करते हो? १५ यदि
तुम अभी तैयार हो, कि जब नरसिंगे,
बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई
आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो,
और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई
हुई मूरत को दण्डवत् करो, तो बचोगे
और यदि तुम दण्डवत् न करो तो इसी
घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाले
जाओगे, फिर ऐसा कौन देवता है, जो
तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?
१६ शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने
राजा से कहा, हे नबूकदनेस्सर, इस विषय
में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन
नहीं जान पड़ता। १७ हमारा परमेश्वर,
जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम
को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से
बचाने की शक्ति रखता है, वरन हे
राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा
सकता है। १८ परन्तु, यदि नहीं, तो
हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग
तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और
न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत
को दण्डवत् करेंगे ॥
१९ तब नबूकदनेस्सर झुंझला उठा,
और उसके चेहरे का रंग शद्रक, मेशक
और अबेदनगो की ओर बदल गया।
और उस ने आज्ञा दी कि भट्ठे को सातगुणा
अधिक धधका दो। २० फिर अपनी सेना
में के कई एक बलवान् पुरुषों को उस ने
आज्ञा दी, कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो
को बान्धकर उन्हें धधकते हुए भट्ठे में
डाल दो। २१ तब वे पुरुष अपने मोजों
अंगरखों, बागों और और वस्त्रों सहित
बान्धकर, उस धधकते हुए भट्ठे में डाल
दिए गए। २२ वह भट्ठा तो राजा की
दृढ़ आज्ञा होने के कारण अत्यन्त धधकाया
गया था, इस कारण जिन पुरुषों ने
शद्रक, मेशक और अबेदनगो को उठाया वे
ही आग की आंच से जल मरे। २३ और
उसी धधकते हुए भट्ठे के बीच ये तीनों
पुरुष, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बन्धे
हुए फेंक दिए गए ॥

२४ तब नबूकदनेस्सर राजा अचम्भित
हुआ और घबराकर उठ खड़ा हुआ।
और अपने मन्त्रियो से पूछने लगा, क्या
हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष
बन्धे हुए नहीं डलवाए? उन्हो ने राजा
को उत्तर दिया, हा राजा, सच बात तो
है। २५ फिर उस ने कहा, अब मै
देखता हू कि चार पुरुष आग के बीच
खुले हुए टहल रहे है, और उनको कुछ
भी हानि नही पहुची, और चौथे पुरुष
का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य
है।।

२६ फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते
हुए भट्ठे के द्वार के पास जाकर कहने
लगा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो,
हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो, निकलकर
यहा आओ! यह सुनकर शद्रक, मेशक
और अबेदनगो आग के बीच से निकल
आए। २७ जब अधिपति, हाकिम, गवर्नर
और राजा के मन्त्रियो ने, जो इकट्ठे
हुए थे, उन पुरुषो की ओर देखा, तब
उनकी देह मे आग का कुछ भी प्रभाव
नही पाया, और उनके सिर का एक
बाल भी न झुलसा, न उनके मोजे कुछ
बिगडे, न उन मे जलने की कुछ गन्ध
पाई गई। २८ नबूकदनेस्सर कहने लगा,
धन्य है शद्रक, मेशक, और अबेदनगो का
परमेश्वर, जिस ने अपना दूत भेजकर
अपने इन दासो को इसलिये बचाया,
क्योकि इन्हो ने राजा की आज्ञा न मानकर,
उसी पर भरोसा रखा, और यह सोचकर
अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम
अपने परमेश्वर को छोड, किसी देवता
की उपासना वा दण्डवत् न करेंगे।
२९ इसलिये अब मै यह आज्ञा देता हू
कि देश-देश और जाति-जाति के लोगो
और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवालो मे
से जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो
के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह
टुकडे टुकडे किया जाएगा, और उसका
घर घूरा बनाया जाएगा, क्योकि ऐसा
कोई और देवता नही जो इस रीति से
बचा सके। ३० तब राजा ने बाबुल
के प्रान्त मे शद्रक, मेशक, अबेदनगो का
पद और ऊचा किया।।

४ नबूकदनेस्सर राजा की ओर से
देश-देश और जाति-जाति के लोगो,
और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले जितने
सारी पृथ्वी पर रहते है, उन सभो को
यह वचन मिला, तुम्हारा कुशल क्षेम
बढे! २ मुझे यह अच्छा लगा, कि
परमप्रधान परमेश्वर ने मुझे जो जो चिन्ह
और चमत्कार दिखाए है, उनको प्रगट
करू। ३ उसके दिखाए हुए चिन्ह क्या
ही बडे, और उसके चमत्कारो मे क्या
ही बडी शक्ति प्रगट होती है! उसका
राज्य तो सदा का और उसकी प्रभुता
पीढी से पीढी तक बनी रहती है।।

४ मै नबूकदनेस्सर अपने भवन मे
चैन से और प्रफुल्लित रहता था। ५ मै
ने ऐसा स्वप्न देखा जिसके कारण मै
डर गया, और पलग पर पडे पडे जो
विचार मेरे मन मे आए और जो बाते
मै ने देखी, उनके कारण मै घबरा गया
था। ६ तब मै ने आज्ञा दी कि बाबुल
के सब पण्डित मेरे स्वप्न का फल मुझे
बताने के लिये मेरे साम्हने हाजिर किए
जाए। ७ तब ज्योतिषी, तन्त्री, कसदी
और होनहार बतानेवाले भीतर आए,
और मै ने उनको अपना स्वप्न बताया,
परन्तु वे उसका फल न बता सके।

८ निदान दानिय्येल मेरे सम्मुख आया,
जिसका नाम मेरे देवता के नाम के
कारण बेलतशस्सर रखा गया था, और
जिस में पवित्र ईश्वरो की आत्मा रहती
है, और मैं ने उसको अपना स्वप्न यह
कहकर बता दिया, ९ कि, हे बेलतशस्सर
तू तो सब ज्योतिषियो का प्रधान है,
मैं जानता हू कि तुझ में पवित्र ईश्वरो
की आत्मा रहती है, और तू किसी भेद
के कारण नही घबराता, इसलिये जो
स्वप्न मैं ने देखा है उसे फल समेत मुझे
बताकर समझा दे। १० जो दर्शन मैं
ने पलग पर पाया वह यह है मैं ने देखा,
कि पृथ्वी के बीचोबीच एक वृक्ष लगा
है, उसकी ऊचाई बहुत बडी है। ११ वह
वृक्ष बडा होकर दृढ हो गया, और उसकी
ऊचाई स्वर्ग तक पहुची, और वह सारी
पृथ्वी की छोर तक देख पडता था।
१२ उसके पत्ते सुन्दर, और उस में बहुत
फल थे, यहा तक कि उस मे सभो के
लिये भोजन था। उसके नीचे मैदान के
सब पशुओ को छाया मिलती थी, और
उसकी डालियो मे आकाश की सब चिडिया
बसेरा करती थी, और सब प्राणी उस
से आहार पाते थे॥

१३ मैं ने पलग पर दर्शन पाते समय
क्या देखा, कि एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग
से उतर आया। १४ उस ने ऊचे शब्द
से पुकारकर यह कहा, वृक्ष को काट डालो,
उसकी डालियो को छाट दो, उसके पत्ते
झाड दो और उसके फल छितरा डालो,
पशु उसके नीचे से हट जाए, और चिडियें
उसकी डालियो पर से उड जाए।
१५ तौभी उसके ठूठ को जड समेत
भूमि में छोडो, और उसको लोहे और
पीतल के बन्धन से बान्धकर मैदान की
हरी घास के बीच रहने दो। वह आकाश
की ओस से भीगा करे और भूमि की
घास खाने में मैदान के पशुओ के सग
भागी हो। १६ उसका मन बदले और
मनुष्य का न रहे, परन्तु पशु का सा बन
जाए, और उस पर सात काल बीते।
१७ यह आज्ञा पहरुओ के निर्णय से,
और यह बात पवित्र लोगो के वचन से
निकली, कि जो जीवित है वे जान ले कि
परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यो के राज्य
में प्रभुता करता है, और उसको जिसे
चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से
छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर
देता है। १८ मुझ नबूकदनेस्सर राजा
ने यही स्वप्न देखा। सो हे बेलतशस्सर,
तू इसका फल बता, क्योकि मेरे राज्य मे
और कोई पण्डित इसका फल मुझे समझा
नही सकता, परन्तु तुझ में तो पवित्र
ईश्वरो की आत्मा रहती है, इस कारण
तू उसे समझा सकता है॥

१९ तब दानिय्येल जिसका नाम बेल
तशस्सर भी था, घडी भर घबराता रहा
और सोचते सोचते व्याकुल हो गया
तब राजा कहने लगा, हे बेलतशस्सर
इस स्वप्न से, वा इसके फल से तू व्याकुल
मत हो। बेलतशस्सर ने कहा, हे मेरे
प्रभु, यह स्वप्न तेरे बैरियो पर, और
इसका अर्थ तेरे द्रोहियो पर फले।
२० जिस वृक्ष को तू ने देखा, जो बडा
और दृढ हो गया, और जिसकी ऊचाई
स्वर्ग तक पहुची और जो पृथ्वी के सिरे
तक दिखाई देता था, २१ जिसके पत्ते
सुन्दर और फल बहुत थे, और जिस में
सभो के लिये भोजन था, जिसके नीचे
मैदान के सब पशु रहते थे, और जिसकी
डालियो में आकाश की चिडिया बसेरा

करती थी, २२ हे राजा, वह तू ही है।
तू महान और सामर्थी हो गया, तेरी
महिमा बढ़ी और स्वर्ग तक पहुंच गई,
और तेरी प्रभुता पृथ्वी की छोर तक
फैली है। २३ और हे राजा, तू ने जो
एक पवित्र पहरुए को स्वर्ग से उतरते
और यह कहते देखा कि वृक्ष को काट
डालो और उसका नाश करो, तौभी
उसके ठूठ को जड़ समेत भूमि मे छोडो,
और उसको लोहे और पीतल के बन्धन
से बान्धकर मैदान की हरी घास के बीच
मे रहने दो, वह आकाश की ओस से
भीगा करे, और उसको मैदान के पशुओ के
सग ही भाग मिले, और जब तक सात
युग उस पर बीत न चुकें, तब तक उसकी
ऐसी ही दशा रहे। २४ हे राजा, इसका
फल जो परमप्रधान ने ठाना है कि राजा
पर घटे, वह यह है, २५ कि तू मनुष्यो
के बीच मे निकाला जाएगा, और मैदान
के पशुओ के सग रहेगा, तू बैलों की नाईं
घास चरेगा और आकाश की ओस से
भीगा करेगा, और सात युग तुझ पर
बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि
मनुष्यो के राज्य मे परमप्रधान ही प्रभुता
करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता
है। २६ और उस वृक्ष के ठूठ को जड
समेत छोडने की आज्ञा जो हुई है, इसका
अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिये बना
रहेगा, और जब तू जान लेगा कि जगत
का प्रभु स्वर्ग ही मे है*, तब तू फिर से
राज्य करने पाएगा। २७ इस कारण,
हे राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर,
कि यदि तू पाप छोडकर धर्म करने लगे,
और अधर्म छोड़कर दीन-हीनो पर दया
करने लगे, तो सम्भव है कि ऐसा करने से
तेरा चैन बना रहे॥

२८ यह सब कुछ नबूकदनेस्सर राजा
पर घट गया। २९ बारह महीने के
बीतने पर जब वह बाबुल के राजभवन
की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने
लगा, ३० क्या यह बडा बाबुल नही है,
जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ
से राजनिवास होने को और अपने प्रताप
की बड़ाई के लिये बसाया है? ३१ यह
वचन राजा के मुह से निकलने भी न पाया
था कि आकाशवाणी हुई, हे राजा नबूक-
दनेस्सर तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती
है कि राज्य तेरे हाथ से निकल गया,
३२ और तू मनुष्यो के बीच से निकाला
जाएगा, और मैदान के पशुओं के सग
रहेगा, और बैलो की नाई घास चरेगा,
और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक
कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यो
के राज्य मे प्रभुता करता है और जिसे
चाहे वह उसे दे देता है। ३३ उसी
घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय मे
पूरा हुआ। वह मनुष्यो मे से निकाला गया,
और बैलो की नाईं घास चरने लगा,
और उसकी देह आकाश की ओस से
भीगती थी, यहा तक कि उसके बाल
उकाब पक्षियों के परो से और उसके
नाखून चिड़ियो के चगुलों के समान बढ
गए॥

३४ उन दिनो के बीतने पर, मुझ
नबूकदनेस्सर ने अपनी आखे स्वर्ग की
ओर उठाईं, और मेरी बुद्धि फिर ज्यो
की त्यों हो गई, तब मैं ने परमप्रधान को
धन्य कहा, और जो सदा जीवित है
उसकी स्तुति और महिमा यह कहकर
करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है,

* मूल में—कि स्वर्ग प्रभुता करता है।

और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तक बना
रहनेवाला है। ३५ पृथ्वी के सब रहनेवाले
उसके साम्हने तुच्छ गिने जाते हैं, और
वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों
के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम
करता है, और कोई उसको रोककर *
उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या
किया है?

३६ उसी समय, मेरी बुद्धि फिर
ज्यों की त्यों हो गई, और मेरे राज्य
की महिमा के लिये मेरा प्रताप और
मुकुट मुझ पर फिर आ गया। और मेरे
मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने
के लिये आने लगे, और मैं अपने राज्य
में स्थिर हो गया, और मेरी और अधिक
प्रशंसा होने लगी। ३७ अब मैं नबूकद-
नेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं,
और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं
क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके
सब व्यवहार न्याय के हैं, और जो लोग
घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर
सकता है॥

५ बेलशस्सर नाम राजा ने अपने
हजार प्रधानों के लिये बड़ी जेवनार
की, और उन हजार लोगों के साम्हने
दाखमधु पिया॥

२ दाखमधु पीते पीते बेलशस्सर ने
आज्ञा दी, कि सोने-चान्दी के जो पात्र
मेरे पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के
मन्दिर में से निकाले थे, उन्हें ले आओ
कि राजा अपने प्रधानों, और रानियों
और रखेलियों समेत उन में से पीए।
३ तब जो सोने के पात्र यरूशलेम में
परमेश्वर के भवन के मन्दिर में से निकाले
गए थे, वे लाए गए, और राजा अपने
प्रधानों, और रानियों, और रखेलियों
समेत उन में से पीने लगा॥

४ वे दाखमधु पी पीकर सोने, चान्दी,
पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवताओं
की स्तुति कर ही रहे थे, ५ कि उसी घड़ी
मनुष्य के हाथ की सी कई उंगलियां
निकलकर दीवट के साम्हने राजमन्दिर
की भीत के चूने पर कुछ लिखने लगीं,
और हाथ का जो भाग लिख रहा था,
वह राजा को दिखाई पड़ा। ६ उसे
देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह
अपने सोच में घबरा गया, और उसकी
कटि के जोड़ ढीले हो गए, और कांपते
कांपते उसके घुटने एक दूसरे से लगने
लगे। ७ तब राजा ने ऊंचे शब्द से पुकार-
कर तन्त्रियों, कसदियों और और होनहार
बतानेवालों को हाजिर करवाने की आज्ञा
दी। जब बाबुल के पण्डित पास आए,
तब राजा उन से कहने लगा, जो कोई वह
लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्थ मुझे
समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र, और
उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई
जाएगी, और मेरे राज्य में तीसरा वही
प्रभुता करेगा। ८ तब राजा के सब
पण्डित लोग भीतर आए, परन्तु उस
लिखे हुए को न पढ़ सके और न राजा
को उसका अर्थ समझा सके। ९ इस पर
बेलशस्सर राजा निपट घबरा गया और
भयातुर हो गया, और उसके प्रधान भी
बहुत व्याकुल हुए॥

१० राजा और प्रधानों के वचनों को
सुनकर, रानी जेवनार के घर में आई
और कहने लगी, हे राजा, तू युगयुग
जीवित रहे, अपने मन में न घबरा और
न उदास हो। ११ तेरे राज्य में दानिय्येल

* मूल में—उसका हाथ मार के।

एक पुरुष है जिसका नाम तेरे पिता ने
बेलतशस्सर रखा था, उस मे पवित्र
ईश्वरो की आत्मा रहती है, और उस राजा
के दिनो में उस में प्रकाश, प्रवीणता और
ईश्वरो के तुल्य बुद्धि पाई गई। और हे
राजा, तेरा पिता जो राजा था, उस ने
उसको सब ज्योतिषियो, तन्त्रियो, कसदियो
और और होनहार बतानेवालों का प्रधान
ठहराया था, १२ क्योंकि उस मे उत्तम
आत्मा, ज्ञान और प्रवीणता, और स्वप्नो
का फल बताने और पहेलिया खोलने,
और सन्देह दूर करने की शक्ति पाई गई।
इसलिये अब दानिय्येल बुलाया जाए,
और वह इसका अर्थ बताएगा॥

१३ तब दानिय्येल राजा के साम्हने
भीतर बुलाया गया। राजा दानिय्येल
से पूछने लगा, क्या तू वही दानिय्येल है
जो मेरे पिता नबूकदनेस्सर राजा के
यहूदा देश से लाए हुए यहूदी बधुओ मे से
है? १४ मैं ने तेरे विषय मे सुना है कि
ईश्वर की आत्मा तुझ मे रहती है, और
प्रकाश, प्रवीणता और उत्तम बुद्धि तुझ
में पाई जाती है। १५ देख, अभी पण्डित
और तन्त्री लोग मेरे साम्हने इसलिये लाए
गए थे कि यह लिखा हुआ पढ़े और उसका
अर्थ मुझे बताए, परन्तु वे उस बात का
अर्थ न समझा सके। १६ परन्तु मैं ने
तेरे विषय मे सुना है कि दानिय्येल भेद
खोल सकता और सन्देह दूर कर सकता
है। इसलिये अब यदि तू उस लिखे हुए
को पढ़ सके और उसका अर्थ भी मुझे
समझा सके, तो तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र,
और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला
पहिनाई जाएगी, और राज्य मे तीसरा
तू ही प्रभुता करेगा॥

१७ दानिय्येल ने राजा से कहा, अपने
दान अपने ही पास रख, और जो बदला
तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे, वह
लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़ सुनाऊगा,
और उसका अर्थ भी तुझे समझाऊगा।
१८ हे राजा, परमप्रधान परमेश्वर ने
तेरे पिता नबूकदनेस्सर को राज्य, बड़ाई,
प्रतिष्ठा और प्रताप दिया था, १९ और
उस बड़ाई के कारण जो उस ने उसको
दी थी, देश-देश और जाति-जाति के सब
लोग, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले
उसके साम्हने कापते और थरथराते थे,
जिसे वह चाहता उसे वह घात करता था,
और जिसको वह चाहता उसे वह जीवित
रखता था; जिसे वह चाहता उसे वह
ऊंचा पद देता था, और जिसको वह
चाहता उसे वह गिरा देता था। २० परन्तु,
जब उसका मन फूल उठा, और उसकी
आत्मा कठोर हो गई, यहा तक कि वह
अभिमान करने लगा, तब वह अपने
राजसिंहासन पर से उतारा गया, और
उसकी प्रतिष्ठा भंग की गई, २१ वह
मनुष्यो मे से निकाला गया, और उसका
मन पशुओ का सा, और उसका निवास
जंगली गदहों के बीच हो गया, वह बैलो
की नाईं घास चरता, और उसका शरीर
आकाश की ओस से भीगा करता था,
जब तक कि उस ने जान न लिया कि
परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यो के राज्य
मे प्रभुता करता है और जिसे चाहता
उसी को उस पर अधिकारी ठहराता है।
२२ तौभी, हे बेलशस्सर, तू जो उसका
पुत्र है, और यह सब कुछ जानता था,
तौभी तेरा मन नम्र न हुआ। २३ वरन
तू ने स्वर्ग के प्रभु के विरुद्ध सिर उठाकर
उसके भवन के पात्र मंगवाकर अपने

माम्हने धरवा लिए, और अपने प्रधानों
और रानियों और रखेलियों समेत तू
ने उन में दाखमधु पिया, और चान्दी-
सोने, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के
देवता, जो न देखते न सुनते, न कुछ
जानते हैं, उनकी तो स्तुति की, परन्तु
परमेश्वर, जिसके हाथ में तेरा प्राण है,
और जिसके वश में तेरा सब चलना
फिरना है, उसका सन्मान तू ने नहीं
किया ॥

२४ तब ही यह हाथ का एक भाग
उसी की ओर से प्रगट किया गया है
और वे शब्द लिखे गए हैं। २५ और
जो शब्द लिखे गए वे ये हैं, मने *, मने,
तकेल †, और ऊपर्सीन ‡। २६ इस वाक्य
का अर्थ यह है, मने, अर्थात् परमेश्वर
ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका
अन्त कर दिया है। २७ तकेल, तू मानो
तराजू में तौला गया और हलका पाया
गया है। २८ परेस §, अर्थात् तेरा राज्य
बांटकर मादियों और फारसियों को दिया
गया है ॥

२९ तब बेलशस्सर ने आज्ञा दी,
और दानिय्येल को बैंजनी रंग का वस्त्र
और उसके गले में सोने की कण्ठमाला
पहिनाई गई, और ढिंढोरिये ने उसके
विषय में पुकारा, कि राज्य में तीसरा
दानिय्येल ही प्रभुता करेगा ॥

३० उसी रात कसदियों का राजा
बेलशस्सर मार डाला गया। ३१ और
दारा मादी जो कोई बासठ वर्ष का था
राजगद्दी पर विराजमान हुआ ॥

* अर्थात् गिना। † अर्थात् तौला।
‡ अर्थात् और बांटते हैं।
§ अर्थात् बांट दिया।

६ दारा को यह अच्छा लगा कि
अपने राज्य के ऊपर एक सौ बीस
ऐसे अधिपति ठहराए, जो पूरे राज्य
में अधिकार रखें। २ और उनके ऊपर
उस ने तीन अध्यक्ष, जिन में से दानिय्येल
एक था, इसलिये ठहराए, कि वे उन
अधिपतियों से लेखा लिया करें, और इस
रीति राजा की कुछ हानि न होने पाए।
३ जब यह देखा गया कि दानिय्येल में
उत्तम आत्मा रहती है, तब उसको उन
अध्यक्षों और अधिपतियों से अधिक प्रतिष्ठा
मिली, वरन राजा यह भी सोचता था
कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराए।
४ तब अध्यक्ष और अधिपति राजकार्य
के विषय में दानिय्येल के विरुद्ध दोष
ढूंढने लगे, परन्तु वह विश्वासयोग्य था,
और उसके काम में कोई भूल वा दोष
न निकला, और वे ऐसा कोई अपराध वा
दोष न पा सके। ५ तब वे लोग कहने
लगे, हम उस दानिय्येल के परमेश्वर
की व्यवस्था को छोड़, और किसी विषय
में उसके विरुद्ध कोई दोष न पा सकेंगे ॥

६ तब वे अध्यक्ष और अधिपति राजा
के पास उतावली से आए, और उस से
कहा, हे राजा दारा, तू युगयुग जीवित
रहे। ७ राज्य के सारे अध्यक्षों ने, और
हाकिमों, अधिपतियों, न्यायियों, और
गवर्नरों ने भी आपस में सम्मति की है,
कि राजा ऐसी आज्ञा दे और ऐसी कड़ी
आज्ञा निकाले, कि तीस दिन तक जो कोई,
हे राजा, तुझे छोड़ किसी और मनुष्य
वा देवता से बिनती करे, वह सिंहों की
मान्द में डाल दिया जाए। ८ इसलिये
अब हे राजा, ऐसी आज्ञा दे, और इस
पत्र पर हस्ताक्षर कर, जिस से यह बात
मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था

के अनुसार अदल-बदल न हो सके।
६ तब दारा राजा ने उस आज्ञापत्र पर
हस्ताक्षर कर दिया ॥

१० जब दानिय्येल को मालूम हुआ
कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है,
तब वह अपने घर में गया जिसकी
उपरौठी कोठरी की खिड़कियां यरूशलेम
के सामने खुली रहती थीं, और अपनी
रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन
बार अपने परमेश्वर के साम्हने घुटने
टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था,
वैसा ही तब भी करता रहा। ११ तब उन
पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल
को अपने परमेश्वर के सामने बिनती
करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया। १२ सो
वे राजा के पास जाकर, उसकी राजआज्ञा
के विषय में उस से कहने लगे, हे राजा,
क्या तू ने ऐसे आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर
नहीं किया कि तीस दिन तक जो कोई
तुझे छोड़, किसी मनुष्य वा देवता से
बिनती करेगा, वह सिंहों की मान्द में
डाल दिया जाएगा? राजा ने उत्तर
दिया, हां, मादियों और फारसियों की
अटल व्यवस्था के अनुसार यह बात स्थिर
है। १३ तब उन्हों ने राजा से कहा,
यहूदी बंधुओं में से जो दानिय्येल है, उस
ने, हे राजा, न तो तेरी और कुछ ध्यान
दिया, और न तेरे हस्ताक्षर किए हुए
आज्ञापत्र की ओर, वह दिन में तीन
बार बिनती किया करता है ॥

१४ यह वचन सुनकर, राजा बहुत
उदास हुआ, और दानिय्येल के बचाने के
उपाय सोचने लगा, और सूर्य के अस्त
होने तक उसके बचाने का यत्न करता रहा।
१५ तब वे पुरुष राजा के पास उतावली
से आकर कहने लगे, हे राजा, यह जान रख,
कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था
है कि जो जो मनाही वा आज्ञा राजा
ठहराए, वह नहीं बदल सकती ॥

१६ तब राजा ने आज्ञा दी, और
दानिय्येल लाकर सिंहों की मान्द में डाल
दिया गया। उस समय राजा ने दानिय्येल
से कहा, तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य
उपासना करता है, वही तुझे बचाए!
१७ तब एक पत्थर लाकर उस गड़हे के
मुंह पर रखा गया, और राजा ने उस पर
अपनी अंगूठी से, और अपने प्रधानों की
अंगूठियों से मुहर लगा दी कि दानिय्येल
के विषय में कुछ बदलने न पाए। १८ तब
राजा अपने महल में चला गया, और
उस रात को बिना भोजन पड़ा रहा,
और उसके पास सुख विलास की कोई
वस्तु नहीं पहुंचाई गई, और उसे नींद भी
नहीं आई ॥

१९ भोर को पौ फटते ही राजा उठा,
और सिंहों के गड़हे की ओर फुर्ती से चला
गया। २० जब राजा गड़हे के निकट
आया, तब शोकभरी वाणी से चिल्लाने
लगा और दानिय्येल से कहा, हे दानिय्येल,
हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा
परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता
है, तुझे सिंहों से बचा सका है? २१ तब
दानिय्येल ने राजा से कहा, हे राजा, तू
युगयुग जीवित रहे! २२ मेरे परमेश्वर
ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुंह को
ऐसा बन्द कर रखा कि उन्हों ने मेरी
कुछ भी हानि नहीं की, इसका कारण
यह है, कि मैं उसके साम्हने निर्दोष पाया
गया, और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैं ने
कोई भूल नहीं की। २३ तब राजा ने
बहुत आनन्दित होकर, दानिय्येल को
गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी।

सो दानिय्येल गड़हे में से निकाला गया,
और उस पर हानि का कोई चिन्ह न
पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर
पर विश्वास रखता था। २४ और राजा
ने आज्ञा दी कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल
की चुगली खाई थी, वे अपने अपने
लड़केबालों और स्त्रियों समेत लाकर सिंहों
के गड़हे में डाल दिए जाएं; और वे
गड़हे की पेंदी तक भी न पहुंचे कि सिंहों
ने उन पर झपटकर सब हड्डियों समेत
उनको चबा डाला॥

२५ तब दारा राजा ने सारी पृथ्वी
के रहनेवाले देश-देश और जाति जाति
के सब लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा
बोलनेवालों के पास यह लिखा, तुम्हारा
बहुत कुशल हो। २६ मैं यह आज्ञा देता
हूं कि जहां जहां मेरे राज्य का अधिकार
है, वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर
के सम्मुख कांपते और थरथराते रहें,
क्योंकि जीवता और युगानयुग तक रहने-
वाला परमेश्वर वही है; उसका राज्य
अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर
रहेगी। २७ जिस ने दानिय्येल को सिंहों
से बचाया है, वही बचाने और छुड़ानेवाला
है; और स्वर्ग में और पृथ्वी पर चिन्हों
और चमत्कारों का प्रगट करनेवाला है।
२८ और दानिय्येल, दारा और कुस्रू
फ़ारसी, दोनों के राज्य के दिनों में
भाग्यवान् रहा॥

७ बाबुल के राजा बेलशस्सर के
पहिले वर्ष में, दानिय्येल ने पलंग
पर स्वप्न देखा। तब उस ने वह स्वप्न
लिखा, और बातों का सारांश भी वर्णन
किया। २ दानिय्येल ने यह कहा, मैं ने
रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर
पर चौमुखी आंधी चलने लगी। ३ तब
समुद्र में से चार बड़े बड़े जन्तु, जो एक
दूसरे से भिन्न थे, निकल आए। ४ पहिला
जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख
उकाब के से थे। और मेरे देखते देखते
उसके पंखों के पर नोचे गए और वह
भूमि पर से उठाकर, मनुष्य की नाईं
पांवों के बल खड़ा किया गया; और
उसको मनुष्य का हृदय दिया गया।
५ फिर मैं ने एक और जन्तु देखा जो
रीछ के समान था, और एक पांजर के
बल उठा हुआ था, और उसके मुंह में
दांतों के बीच तीन पसुली थीं; और लोग
उस से कह रहे थे, उठकर बहुत मांस
खा। ६ इसके बाद मैं ने दृष्टि की और
देखा, कि चीते के समान एक और जन्तु
है जिसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख
हैं; और उस जन्तु के चार सिर थे;
और उसको अधिकार दिया गया। ७ फिर
इसके बाद मैं ने स्वप्न में दृष्टि की और
देखा, कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर
और डरावना और बहुत सामर्थी है;
और उसके बड़े बड़े लोहे के दांत हैं;
वह सब कुछ खा डालता है और चूर चूर
करता है, और जो बच जाता है, उसे
पैरों से रौंदता है। और वह सब पहिले
जन्तुओं से भिन्न है; और उसके दस सींग
हैं। ८ मैं उन सींगों को ध्यान से देख
रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच
एक और छोटा सा सींग निकला, और
उसके बल से उन पहिले सींगों में से तीन
उखाड़े गए; फिर मैं ने देखा कि इस
सींग में मनुष्य की सी आंखें, और बड़ा
बोल बोलनेवाला मुंह भी है। ९ मैं ने
देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन
रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान

हुआ, उसका वस्त्र हिम सा उजला,
और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे,
उसका सिहासन अग्निमय और उसके
पहिये धधकती हुई आग के से देख पडते
थे। १० उस प्राचीन के सम्मुख से आग
की धारा निकलकर वह रही थी, फिर
हजारो हजार लोग उसकी सेवा टहल
कर रहे थे, और लाखो लाख लोग उसके
साम्हने हाजिर थे, फिर न्यायी बैठ गए,
और पुस्तके खोली गई। ११ उस समय
उस सीग का वडा बोल सुनकर मै देखता
रहा, और देखते देखते अन्त मे देखा कि
वह जन्तु घात किया गया, और उसका
शरीर धधकती हुई आग से भस्म किया
गया। १२ और रहे हुए जन्तुओ का
अधिकार ले लिया गया, परन्तु उनका
प्राण कुछ समय के लिये * बचाया गया।
१३ मै ने रात मे स्वप्न मे देखा, और
देखो, मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश
के बादलों समेत आ रहा था, और वह
उस अति प्राचीन के पास पहुचा, और
उसको वे उसके समीप लाए। १४ तब
उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य
दिया गया, कि देश-देश और जाति-जाति
के लोग और भिन्न-भिन्न भाषा बोलनेवाले
सब उसके अधीन हो, उसकी प्रभुता
सदा तक अटल, और उसका राज्य
अविनाशी ठहरा ॥

१५ और मुझ दानिय्येल का मन
विकल हो गया †, और जो कुछ मै ने
देखा था उसके कारण मै घबरा गया ‡।
१६ तब जो लोग पास खडे थे, उन मे से
एक के पास जाकर मै ने उन सारी बातों
का भेद पूछा, उस ने यह कहकर मुझे
उन बातो का अर्थ बताया, १७ उन चार
बडे बडे जन्तुओ का अर्थ चार राज्य *
है, जो पृथ्वी पर उदय होगे। १८ परन्तु
परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को
पाएगे, और युगानयुग उसके अधिकारी
बने रहेगे ॥

१९ तब मेरे मन मे यह इच्छा हुई कि
उस चौथे जन्तु का भेद भी जान लू जो
और तीनो से भिन्न और अति भयकर
था और जिसके दात लोहे के और नख
पीतल के थे, वह सब कुछ खा डालता,
और चूर चूर करता, और बचे हुए को
पैरो से रौंद डालता था। २० फिर उसके
सिर मे के दस सीगो का भेद, और जिस
नये सीग के निकलने से तीन सीग गिर
गए, अर्थात् जिस सीग की आखे और
वडा बोल बोलनेवाला मुह और सब और
सीगो से अधिक भयकर था, उसका भी
भेद जानने की मुझे इच्छा हुई। २१ और
मै ने देखा था कि वह सीग पवित्र लोगो
के सग लडाई करके उन पर उस समय
तक प्रबल भी हो गया, २२ जब तक
वह अति प्राचीन न आया, और परमप्रधान
के पवित्र लोग न्यायी न ठहरे, और उन
पवित्र लोगो के राज्याधिकारी होने का
समय न आ पहुचा ॥

२३ उस ने कहा, उस चौथे जन्तु का
अर्थ, एक चौथा राज्य है, जो पृथ्वी पर
होकर और सब राज्यो से भिन्न होगा,
और सारी पृथ्वी को नाश करेगा, और
दावकर चूर-चूर करेगा। २४ और उन
दस सीगो का अर्थ यह है, कि उस राज्य

* मूल में—समय और काल के लिये।
† मूल में—आत्मा देह के बीच घबरा गई।
‡ मूल मे—मेरे सिर के दर्शनों ने मुझे घबरा दिया।

* मूल में—राजा।

में से दस राजा उठेंगे, और उनके बाद
उन पहिलों से भिन्न एक और राजा
उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा।
२५ और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें
कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों
को पीस डालेगा, और समयों और व्यवस्था
के बदल देने की आशा करेगा, वरन साढ़े
तीन काल तक वे सब उसके वश में
कर दिए जाएंगे। २६ परन्तु, तब न्यायी
बैठेंगे*, और उसकी प्रभुता छीनकर
मिटाई और नाश की जाएगी, यहां तक कि
उसका अन्त ही हो जाएगा। २७ तब
राज्य और प्रभुता और धरती पर के
राज्य† की महिमा, परमप्रधान ही की
प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी
जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है,
और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन
होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे। २८ इस
बात का वर्णन मैं अब कर चुका, परन्तु
मुझ दानिय्येल के मन में बड़ी घबराहट
बनी रही, और मैं भयभीत हो गया,
और इस बात को मैं अपने मन में रखे
रहा॥

८ बेलशस्सर राजा के राज्य के
तीसरे वर्ष में उस पहिले दर्शन के
बाद एक और बात मुझ दानिय्येल को
दर्शन के द्वारा दिखाई गई। २ जब मैं
एलाम नाम प्रान्त में, शूशन नाम राजगढ़
में रहता था, तब मैं ने दर्शन में देखा कि
मैं ऊलै नदी के किनारे पर हूं। ३ फिर
मैं ने आंख उठाकर देखा, कि उस नदी
के साम्हने दो सींगवाला एक मेढ़ा खड़ा
है, उसके दोनों सींग बड़े हैं, परन्तु उन

* मूल में—न्याय बैठेगा।
† मूल में—आकाश भर के नीचे के राज्य।

में से एक अधिक बड़ा है, और जो बड़ा
है, वह दूसरे के बाद निकला। ४ मैं ने
उस मेढ़े को देखा कि वह पश्चिम, उत्तर
और दक्खिन की ओर सींग मारता है,
और कोई जन्तु उसके साम्हने खड़ा नहीं
रह सकता, और न उसके हाथ से कोई
किसी को बचा सकता है, और वह अपनी
ही इच्छा के अनुसार काम करके बढ़ता
जाता था॥

५ मैं सोच ही रहा था, तो फिर
क्या देखा कि एक बकरा पश्चिम
दिशा से निकलकर सारी पृथ्वी के ऊपर
ऐसा फिरा कि चलते समय भूमि पर
पांव न छुआया और उस बकरे की आंखों
के बीच एक देखने योग्य सींग था।
६ वह उस दो सींगवाले मेढ़े के पास
जाकर, जिसको मैं ने नदी के साम्हने
खड़ा देखा था, उस पर जलकर अपने पूरे
बल से लपका। ७ मैं ने देखा कि वह
मेढ़े के निकट आकर उस पर झुंझलाया,
और मेढ़े को मारकर उसके दोनों सींगों
को तोड़ दिया, और उसका साम्हना
करने को मेढ़े का कुछ भी वश न चला,
तब बकरे ने उसको भूमि पर गिराकर
रौंद डाला, और मेढ़े को उसके हाथ से
छुड़ानेवाला कोई न मिला। ८ तब बकरा
अत्यन्त बड़ाई मारने लगा, और जब
बलवन्त हुआ, तब उसका बड़ा सींग टूट
गया, और उसकी सन्ती देखने योग्य चार
सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर
बढ़ने लगे॥

९ फिर इन में से एक छोटा सा सींग
और निकला, जो दक्खिन, पूरब और
शिरोमणि देश की ओर बहुत ही बढ़
गया। १० वह स्वर्ग की सेना तक बढ़
गया, और उस में से और तारों में से

भी कितनो को भूमि पर गिराकर रौद
डाला। ११ वरन वह उस सेना के
प्रधान तक भी बढ़ गया, और उसका
नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया,
और उसका पवित्र वासस्थान गिरा दिया
गया। १२ और लोगो के अपराध के
कारण नित्य होमबलि के साथ सेना भी
उसके हाथ में कर दी गई, और उस सींग
ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया, और
वह काम करते करते सफल हो गया।
१३ तब मैं ने एक पवित्र जन को बोलते
सुना, फिर एक और पवित्र जन ने उस
पहिले बोलनेवाले से पूछा, नित्य होमबलि
और उजड़वानेवाले अपराध के विषय
में जो कुछ दर्शन देखा गया, वह कब तक
फलता रहेगा, अर्थात् पवित्रस्थान और
सेना दोनों का रौंदा जाना कब तक होता
रहेगा? १४ और उस ने मुझ से कहा,
जब तक सांझ और सवेरा दो हजार
तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता
रहेगा, तब पवित्रस्थान शुद्ध किया
जाएगा॥

१५ यह बात दर्शन में देखकर, मैं,
दानिय्येल, इसके समझने का यत्न करने
लगा, इतने में पुरुष का रूप धरे हुए
कोई मेरे सम्मुख खड़ा हुआ देख पड़ा।
१६ तब मुझे ऊलै नदी के बीच में एक
मनुष्य का शब्द सुन पड़ा, जो पुकारकर
कहता था, हे जिब्राएल, उस जन को
उसकी देखी हुई बातें समझा दे। १७ तब
जहां मैं खड़ा था, वहां वह मेरे निकट
आया, और उसके आते ही मैं घबरा
गया, और मुंह के बल गिर पड़ा। तब
उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान,
उन देखी हुई बातों को समझ ले, क्योंकि
उनका अर्थ अन्त ही के समय में फलेगा॥

१८ जब वह मुझ से बातें कर रहा
था, तब मैं अपना मुंह भूमि की ओर किए
हुए भारी नींद में पड़ा था, परन्तु उस ने
मुझे छूकर सीधा खड़ा कर दिया।
१९ तब उस ने कहा, क्रोध भड़कने के
अन्त के दिनों में जो कुछ होगा, वह मैं
तुझे जताता हूं, क्योंकि अन्त के ठहराए
हुए समय में वह सब पूरा हो जाएगा।
२० जो दो सींगवाला मेढ़ा तू ने देखा है,
उसका अर्थ मादियों और फारसियों के
राज्य* से है। २१ और वह रोंआर
बकरा यूनान का राज्य† है, और उसकी
आंखों के बीच जो बड़ा सींग निकला,
वह पहिला राजा ठहरा। २२ और वह
सींग जो टूट गया और उसकी सन्ती जो
चार सींग निकले, इसका अर्थ यह है कि
उस जाति में चार राज्य उदय होंगे,
परन्तु उनका बल उस पहिले का सा न
होगा। २३ और उन राज्यों के अन्त
समय में जब अपराधी पूरा बल पकड़ेंगे,
तब क्रूर दृष्टिवाला और पहेली बूझनेवाला
एक राजा उठेगा। २४ उसका सामर्थ्य
बड़ा होगा, परन्तु उस पहिले राजा का सा
नहीं, और वह अद्भुत रीति से लोगों को
नाश करेगा, और सफल होकर काम
करता जाएगा, और सामर्थियों और पवित्र
लोगों के समुदाय को नाश करेगा॥
२५ उसकी चतुराई के कारण उसका छल
सफल होगा, और वह मन में फूलकर
निडर रहते हुए बहुत लोगों को नाश
करेगा। वह सब हाकिमों के हाकिम के
विरुद्ध भी खड़ा होगा, परन्तु अन्त को
वह किसी के हाथ से बिना मार खाए
टूट जाएगा। २६ सांझ और सवेरे के

* मूल में—के राजा।
† मूल में—का राजा।

विषय में जो कुछ तू ने देखा और सुना
है वह सच है, परन्तु जो कुछ तू ने दर्शन
में देखा है उसे बन्द रख, क्योंकि वह बहुत
दिनों के बाद फलेगा ।।

२७ तब मुझ दानिय्येल का बल जाता
रहा, और मैं कुछ दिन तक बीमार पड़ा
रहा, तब मैं उठकर राजा का कामकाज
फिर करने लगा, परन्तु जो कुछ मैं ने
देखा था उस से मैं चकित रहा, क्योंकि
उसका कोई समझानेवाला न था ।।

९ मादी क्षयर्ष का पुत्र दारा, जो
कसदियों के देश पर राजा ठहराया
गया था, २ उसके राज्य के पहिले वर्ष
में, मुझ दानिय्येल ने शास्त्र के द्वारा
समझ लिया कि यरूशलेम की उजड़ी
हुई दशा यहोवा के उस वचन के अनुसार,
जो यिर्मयाह नबी के पास पहुंचा था,
कुछ वर्षों के बीतने पर अर्थात् सत्तर
वर्ष के बाद पूरी हो जाएगी। ३ तब मैं
अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके
गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा,
और उपवास कर, टाट पहिन, राख में
बैठकर वरदान मांगने लगा। ४ मैं ने
अपने परमेश्वर यहोवा से इस प्रकार
प्रार्थना की और पाप का अंगीकार किया, हे
प्रभु, तू महान् और भययोग्य परमेश्वर है,
जो अपने प्रेम रखने और आज्ञा माननेवालों
के साथ अपनी वाचा को पूरा करता और
करुणा करता रहता है, ५ हम लोगों ने
तो पाप, कुटिलता, दुष्टता और बलवा
किया है, और तेरी आज्ञाओं और नियमों
को तोड़ दिया है। ६ और तेरे जो दास
नबी लोग, हमारे राजाओं, हाकिमों,
पूर्वजों और सब साधारण लोगों से तेरे
नाम से बातें करते थे, उनकी हम ने
नहीं सुनी। ७ हे प्रभु, तू धर्मी है, परन्तु
हम लोगों को आज के दिन लज्जित होना
पड़ता है, अर्थात् यरूशलेम के निवासी
आदि सब यहूदी, क्या समीप, क्या दूर
के सब इस्राएली लोग, जिन्हें तू ने उस
विश्वासघात के कारण जो उन्हों ने तेरा
किया था, दश देश में बरबस कर दिया है,
उन सभों को लज्जित होना पड़ता है।
८ हे यहोवा हम लोगों ने अपने राजाओं,
हाकिमों और पूर्वजों समेत तेरे विरुद्ध
पाप किया है, इस कारण हम को लज्जित
होना पड़ता है। ९ परन्तु, यद्यपि हम
अपने परमेश्वर प्रभु से फिर गए, तौभी
तू दयासागर और क्षमा की खानि है
१० हम तो अपने परमेश्वर यहोवा की
शिक्षा सुनने पर भी उस पर नहीं चले
जो उस ने अपने दास नबियों से हमको
सुनाई। ११ वरन सब इस्राएलियों ने
तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया, और ऐसे
हट गए कि तेरी नहीं सुनी। इस कारण
जिस शाप की चर्चा * परमेश्वर के दास
मूसा की व्यवस्था में लिखी हुई है, वह शाप
हम पर घट † गया, क्योंकि हम ने उसके
विरुद्ध पाप किया है। १२ सो उस ने
हमारे और न्यायियों के विषय जो वचन कहे
थे, उन्हें हम पर यह बड़ी विपत्ति डालकर
पूरा किया है, यहां तक कि जैसी विपत्ति
यरूशलेम पर पड़ी है, वैसी सारी धरती
पर ‡ और कहीं नहीं पड़ी। १३ जैसे
मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही
यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है,
तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा को
मनाने के लिये न तो अपने अधर्म के

---

* मूल में—जिस शाप और किरिया।
† मूल में—उण्डेला।
‡ मूल में—सारे आकाश के तले।

कामो से फिरे, और न तेरी सत्य बातो
पर ध्यान दिया। १४ इस कारण यहोवा
ने सोच विचारकर* हम पर विपत्ति
डाली है, क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा
जितने काम करता है उन सभों में धर्मी
ठहरता है, परन्तु हम ने उसकी नही
सुनी। १५ और अब, हे हमारे परमेश्वर,
हे प्रभु, तू ने अपनी प्रजा को मिस्र देश से,
बली हाथ के द्वारा निकाल लाकर अपना
ऐसा बडा नाम किया, जो आज तक
प्रसिद्ध है, परन्तु हम ने पाप किया है
और दुष्टता ही की है। १६ हे प्रभु,
हमारे पापो और हमारे पुरखाओ के
अधर्म के कामो के कारण यरूशलेम की
और तेरी प्रजा की, और हमारे आस पास
के सब लोगो की ओर से नामधराई हो
रही है, तौभी तू अपने सब धर्म के कामो
के कारण अपना क्रोध और जलजलाहट
अपने नगर यरूशलेम पर से उतार दे,
जो तेरे पवित्र पर्वत पर बसा है। १७ हे
हमारे परमेश्वर, अपने दास की प्रार्थना
और गिडगिडाहट सुनकर, अपने उजडे
हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का प्रकाश
चमका, हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त
यह कर। १८ हे मेरे परमेश्वर, कान
लगाकर सुन, आख खोलकर हमारी
उजडी हुई दशा और उस नगर को भी
देख जो तेरा कहलाता है, क्योकि हम
जो तेरे साम्हने गिडगिडाकर प्रार्थना
करते है, सो अपने धर्म के कामो पर नही,
वरन तेरी बडी दया ही के कामो पर
भरोसा रखकर करते है। १९ हे प्रभु,
सुन ले, हे प्रभु, पाप क्षमा कर, हे प्रभु,
ध्यान देकर जो करना है उसे कर, विलम्ब
न कर; हे मेरे परमेश्वर, तेरा नगर और
तेरी प्रजा तेरी ही कहलाती है; इसलिये
अपने नाम के निमित्त ऐसा ही कर॥

२० इस प्रकार मै प्रार्थना करता,
और अपने और अपने इस्राएली जाति-
भाइयो के पाप का अंगीकार करता हुआ,
अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख उसके
पवित्र पर्वत के लिये गिडगिडाकर बिनती
करता ही था, २१ तब वह पुरुष जिब्राएल
जिसे मै ने उस समय देखा जब मुझे
पहिले-दर्शन हुआ था, उस ने वेग से
उडने की आज्ञा पाकर, साझ के अन्नबलि
के समय मुझ को छू लिया, और मुझे
समझाकर मेरे साथ बाते करने लगा।
२२ उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल,
मै तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को अभी
निकल आया हू। २३ जब तू गिडगिडा-
कर बिनती करने लगा, तब ही इसकी
आज्ञा निकली, इसलिये मै तुझे बताने
आया हू, क्योकि तू अति प्रिय ठहरा है;
इसलिये उस विषय को समझ ले और
दर्शन की बात का अर्थ बूझ ले॥

२४ तेरे लोगो और तेरे पवित्र नगर
के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए है
कि उनके अन्त तक अपराध का होना
बन्द हो, और पापो का अन्त और अधर्म
का प्रायश्चित्त किया जाए, और युगयुग
की धार्मिकता प्रगट होए*, और दर्शन
की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप
दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक
किया जाए। २५ सो यह जान और
समझ ले, कि यरूशलेम के फिर बसाने
की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त†
प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे।

* मूल में—जाग जागकर।

* मूल में—लाया जाए।

† अथवा मसीह।

फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक
और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय
में फिर बसाया जाएगा। २६ और उन
बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त *
पुरुष काटा जाएगा और उसके हाथ
कुछ न लगेगा, और आनेवाले प्रधान
की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नाश
तो करेगी। परन्तु उस प्रधान का अन्त
ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है, तौभी
उसके अन्त तक लडाई होती रहेगी,
क्योंकि उसका उजड जाना निश्चय ठाना
गया है। २७ और वह प्रधान एक सप्ताह
के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा,
परन्तु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह
मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा,
और कंगूरे पर उजाडनेवाली घृणित
वस्तुएं दिखाई देंगी और निश्चय से ठनी
हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का
क्रोध उजाडनेवाले पर पडा रहेगा † ॥

१० फारस देश के राजा कुस्रू के
राज्य के तीसरे वर्ष में दानिय्येल
पर, जो बेलतशस्सर भी कहलाता है,
एक बात प्रगट की गई। और वह बात
सच थी कि बडा युद्ध होगा। उस ने
इस बात को बूझ लिया, और उसको
इस देखी हुई बात की समझ आ गई॥
२ उन दिनों में, दानिय्येल, तीन
सप्ताह तक शोक करता रहा। ३ उन
तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, मैं ने न तो
स्वादिष्ट भोजन किया और न मांस वा
दाखमधु अपने मुंह में रखा, और न अपनी
देह में कुछ भी तेल लगाया। ४ फिर
पहले महीने के चौबीसवें दिन को जब मैं
हिद्देकेल नाम नदी के तीर पर था, ५ तब
मैं ने आंखें उठाकर देखा, कि सन का
वस्त्र पहिने हुए, और ऊफाज़ देश के
कुन्दन से कमर बान्धे हुए एक पुरुष
खडा है। ६ उसका शरीर फीरोज़ा के
समान, उसका मुख बिजली की नाईं,
उसकी आंखें जलते हुए दीपक की सी,
उसकी बाहें और पांव चमकाए हुए पीतल
के से, और उसके वचनों का शब्द भीड़ों
के शब्द का सा था। ७ उसको केवल
मुझ दानिय्येल ही ने देखा, और मेरे
संगी मनुष्यों को उसका कुछ भी दर्शन
न हुआ, परन्तु वे बहुत ही थरथराने
लगे, और छिपने के लिये भाग गए।
८ तब मैं अकेला रहकर यह अद्भुत *
दर्शन देखता रहा, इस से मेरा बल जाता
रहा, मैं भयातुर हो गया, और मुझ में
कुछ भी बल न रहा। ९ तौभी मैं ने उस
पुरुष के वचनों का शब्द सुना, और जब
वह मुझे सुन पडा, तब मैं मुंह के बल
गिर गया और गहरी नींद में भूमि पर
औंधे मुंह पडा रहा॥
१० फिर किसी ने अपने हाथ से मेरी
देह को छूआ, और मुझे उठाकर घुटनों
और हथेलियों के बल थरथराते हुए बैठा
दिया। ११ तब उस ने मुझ से कहा,
हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन
मैं तुझ से कहता हूं उसे समझ ले, और
सीधा खडा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास
भेजा गया हूं। जब उस ने मुझ से यह
वचन कहा, तब मैं खडा तो हो गया
परन्तु थरथराता रहा। १२ फिर उस
ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, मत डर,
क्योंकि पहिले ही दिन को जब तू ने

* अथवा मसीह।
† मूल में—उण्डेला जाएगा।

* मूल में—बडा।

समझने-बूझने के लिये मन लगाया और
अपने परमेश्वर के साम्हने अपने को
दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए,
और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया
हूं। १३ फारस के राज्य का प्रधान
इक्कीस दिन तक मेरा साम्हना किए रहा;
परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से
है, वह मेरी सहायता के लिये आया,
इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास
रहा, १४ और अब मैं तुझे समझाने
आया हूं, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों
की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन
तू ने देखा है वह कुछ दिनों के बाद पूरा
होगा॥

१५ जब वह पुरुष मुझ से ऐसी बातें
कह चुका, तब मैं ने भूमि की ओर मुंह
किया और चुपका रह गया। १६ तब
मनुष्य के सन्तान के समान किसी ने मेरे
होंठ छूए, और मैं मुंह खोलकर बोलने
लगा। और जो मेरे साम्हने खड़ा था
उस से मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु, दर्शन की
बातों के कारण मुझ को पीड़ा सी उठी,
और मुझ में कुछ भी बल नहीं रहा।
१७ सो प्रभु का दास, अपने प्रभु के साथ
क्योंकर बातें कर सके? क्योंकि मेरी
देह में न तो कुछ बल रहा, और न कुछ
सांस ही रह गई॥

१८ तब मनुष्य के समान किसी
ने मुझे छूकर फिर मेरा हियाव
बन्धाया। १९ और उस ने कहा, हे
अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शान्ति
मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बन्धा
रहे। जब उस ने यह कहा, तब मैं ने
हियाव बान्धकर कहा, हे मेरे प्रभु, अब
कह, क्योंकि तू ने मेरा हियाव बन्धाया है।
२० तब उस ने कहा, क्या तू जानता है
कि मैं किस कारण तेरे पास आया हूं?
अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को
लौटूंगा, और जब मैं निकलूंगा, तब
यूनान का प्रधान आएगा। २१ और जो
कुछ सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में
लिखा हुआ है, वह मैं तुझे बताता हूं;
उन प्रधानों के विरुद्ध, तुम्हारे प्रधान
मीकाएल को छोड़, मेरे संग स्थिर रहने-
वाला और कोई भी नहीं है॥

११ और दारा नाम मादी राजा के
राज्य के पहिले वर्ष में उसको
हियाव दिलाने और बल देने के लिये
मैं ही खड़ा हो गया॥

२ और अब मैं तुझ को सच्ची बात
बताता हूं। देख, फारस के राज्य में
अब तीन और राजा उठेंगे, और चौथा
राजा उन सभों से अधिक धनी होगा;
और जब वह धन के कारण सामर्थी
होगा, तब सब लोगों को यूनान के राज्य
के विरुद्ध उभारेगा। ३ उसके बाद एक
पराक्रमी राजा उठकर अपना राज्य
बहुत बढ़ाएगा, और अपनी इच्छा के
अनुसार ही काम किया करेगा। ४ और
जब वह बड़ा होगा, तब उसका राज्य
टूटेगा और चारों दिशाओं में बटकर अलग
अलग हो जाएगा; और न तो उसके
राज्य की शक्ति ज्यों की त्यों रहेगी और
न उसके वंश को कुछ मिलेगा; क्योंकि
उसका राज्य उखड़कर, उनकी अपेक्षा
और लोगों को प्राप्त होगा॥

५ तब दक्खिन देश का राजा बल
पकड़ेगा; परन्तु उसका एक हाकिम उस
से अधिक बल पकड़कर प्रभुता करेगा;
यहां तक कि उसकी प्रभुता बड़ी हो
जाएगी। ६ कई वर्षों के बीतने पर, वे

दोनों आपस में मिलेंगे, और दक्खिन
देश के राजा की बेटी उत्तर देश के
राजा के पास शान्ति की वाचा बान्धने
को आएगी, परन्तु उसका बाहुबल
बना न रहेगा, और न वह राजा और
न उसका नाम रहेगा, परन्तु वह स्त्री
अपने पहुंचानेवालों और अपने पिता और
अपने सम्भालनेवालों समेत अलग कर
दी जाएगी ॥

७ फिर उसकी जड में से एक डाल
उत्पन्न होकर * उसके स्थान में बढेगी,
वह सेना समेत उत्तर के राजा के गढ में
प्रवेश करेगा, और उन से युद्ध करके
प्रबल होगा। ८ तब वह उनके देवताओं
की ढली हुई मूरतों, और सोने-चान्दी
के मनभाऊ पात्रों को छीनकर मिस्र में
ले जाएगा, इसके बाद वह कुछ वर्ष तक
उत्तर देश के राजा के विरुद्ध हाथ रोके
रहेगा। ९ तब वह राजा दक्खिन देश
के राजा के देश में आएगा, परन्तु फिर
अपने देश में लौट जाएगा ॥

१० उसके पुत्र झगडा मचाकर बहुत
से बडे बडे दल इकट्ठे करेंगे, और उमण्डने-
वाली नदी की नाईं आकर देश के बीच
होकर जाएंगे, फिर लौटते हुए उसके
गढ तक झगडा मचाते जाएंगे। ११ तब
दक्खिन देश का राजा चिढेगा, और
निकलकर उत्तर देश के उस राजा से युद्ध
करेगा, और वह राजा लडने के लिए बडी
भीड इकट्ठी करेगा, परन्तु वह भीड
उसके हाथ में कर दी जाएगी। १२ उस
भीड को जीत करके उसका मन फूल
उठेगा, और वह लाखों लोगों को गिराएगा,
परन्तु वह प्रबल न होगा। १३ क्योंकि
उत्तर देश का राजा लौटकर पहिली से
भी बडी भीड इकट्ठी करेगा, और कई
दिनों वरन वर्षों के बीतने पर वह निश्चय
बडी सेना और सम्पत्ति लिए हुए आएगा ॥

१४ उन दिनों में बहुत से लोग दक्खिन
देश के राजा के विरुद्ध उठेंगे, वरन तेरे
लोगों में से भी बलात्कारी लोग उठ
खडे होंगे, जिस से इस दर्शन की बात पूरी
हो जाएगी, परन्तु वे ठोकर खाकर गिरेंगे।
१५ तब उत्तर देश का राजा आकर किला
बान्धेगा और दृढ नगर ले लेगा। और
दक्खिन देश के न तो प्रधान * खडे रहेंगे
और न बडे वीर, क्योंकि किसी के खडे
रहने का बल न रहेगा। १६ तब जो भी
उनके विरुद्ध आएगा, वह अपनी इच्छा
पूरी करेगा, और वह हाथ में सत्यानाश
लिए हुए शिरोमणि देश में भी खडा
होगा और उसका साम्हना करनेवाला
कोई न रहेगा। १७ तब वह अपने राज्य
के पूर्ण बल समेत, कई सीधे लोगों को
संग लिए हुए आने लगेगा, और अपनी
इच्छा के अनुसार काम किया करेगा।
और वह उसको एक स्त्री † इसलिये देगा
कि उसका राज्य बिगाडा जाए, परन्तु
वह स्थिर न रहेगी, न उस राजा की
होगी। १८ तब वह द्वीपों की ओर मुह
करके बहुतों को ले लेगा, परन्तु एक
सेनापति उसके अहंकार को मिटाएगा ‡,
वरन उसके अहंकार के अनुकूल उसे
बदला देगा। १९ तब वह अपने देश
के गढों की ओर मुह फेरेगा, और वह
ठोकर खाकर गिरेगा, और कहीं उसका
पता न रहेगा।

* मूल में—उस की शाख में से।

* मूल में—बाहें।
† मूल में—स्त्रियों की बेटी।
‡ मूल में—बन्द करेगा।

२० तब उसके स्थान मे कोई ऐसा
उठेगा, जो शिरोमणि राज्य मे अन्धेर
करनेवाले को घुमाएगा, परन्तु थोडे दिन
बीतने पर वह क्रोध वा युद्ध किए बिना
ही नाश हो जाएगा। २१ उसके स्थान
मे एक तुच्छ मनुष्य उठेगा, जिसकी राज-
प्रतिष्ठा पहिले तो न होगी, तौभी वह
चैन के समय आकर चिकनी-चुपडी
बातो के द्वारा राज्य को प्राप्त करेगा।
२२ तब उसकी भुजारूपी बाढ से लोग,
वरन वाचा का प्रधान भी उसके साम्हने से
बहकर नाश होगे। २३ क्योकि वह उसके
सग वाचा बान्धने पर भी छल करेगा, और
थोडे ही लोगो को सग लिए हुए चढकर
प्रबल होगा। २४ चैन के समय वह
प्रान्त के उत्तम से उत्तम स्थानो पर
चढ़ाई करेगा, और जो काम न उसके
पुरखा और न उसके पुरखाओ के पुरखा
करते थे, उसे वह करेगा, और लूटी
हुई धन-सम्पत्ति उन मे बहुत बाटा
करेगा। वह कुछ काल तक दृढ नगरो
के लेने की कल्पना करता रहेगा। २५ तब
वह दक्खिन देश के राजा के विरुद्ध
बडी सेना लिए हुए अपने बल और हियाव
को बढाएगा, और दक्खिन देश का राजा
अत्यन्त बडी और सामर्थी सेना लिए हुए
युद्ध तो करेगा, परन्तु ठहर न सकेगा,
क्योकि लोग उसके विरुद्ध कल्पना करेगे।
२६ उसके भोजन के खानेवाले भी उसको
हरवाएगे, और यद्यपि उसकी सेना
बाढ की नाई चढेगी, तौभी उसके बहुत
से लोग मर मिटेगे। २७ तब उन दोनो
राजाओ के मन बुराई करने मे लगेगे,
यहा तक कि वे एक ही मेज़ पर बैठे हुए
आपस मे झूठ बोलेंगे, परन्तु इस से कुछ
बन न पड़ेगा, क्योकि इन सब बातो का
अन्त नियत ही समय मे होनेवाला है।
२८ तब उत्तर देश का राजा बडी लूट
लिए हुए अपने देश को लौटेगा, और
उसका मन पवित्र वाचा के विरुद्ध उभरेगा,
और वह अपनी इच्छा पूरी करके अपने
देश को लौट जाएगा॥

२९ नियत समय पर वह फिर दक्खिन
देश की ओर जाएगा, परन्तु उस पिछली
बार के समान इस बार उसका वश न
चलेगा। ३० क्योकि कित्तियो के जहाज़
उसके विरुद्ध आएगे, और वह उदास
होकर लौटेगा, और पवित्र वाचा पर
चिढकर अपनी इच्छा पूरी करेगा। वह
लौटकर पवित्र वाचा के तोडनेवालो
की सुधि लेगा। ३१ तब उसके सहायक *
खडे होकर, दृढ पवित्र स्थान को अपवित्र
करेगे, और नित्य होमबलि को बन्द
करेगे। और वे उस घृणित वस्तु को
खड़ा करेगे जो उजाड करा देती है।
३२ और जो लोग दुष्ट होकर उस वाचा
को तोडेगे, उनको वह चिकनी-चुपडी
बाते कह कहकर भक्तिहीन कर देगा,
परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान
रखेगे, वे हियाव बान्धकर बडे काम करेगे।
३३ और लोगो के सिखानेवाले बुद्धिमान
जन बहुतो को समझाएगे, तौभी वे बहुत
दिन तक तलवार से छिदकर और आग
मे जलकर, और बधुए होकर और
लुटकर, बडे दु ख मे पडे रहेगे। ३४ जब
वे दु ख मे पडेगे तब थोडा बहुत सम्भलेगे,
परन्तु बहुत से लोग चिकनी-चुपडी बाते
कह कहकर उन से मिल जाएगे, ३५ और
सिखानेवालो मे से कितने गिरेगे, और
इसलिये गिरने पाएगे कि जाचे जाए,

* मूल में—बाहें।

ग्रौर निर्मल ग्रौर उजले किए जाए। यह दशा ग्रन्त के समय तक बनी रहेगी, क्योंकि इन सब बातों का ग्रन्त नियत समय में होनेवाला है ।।

३६ तब वह राजा ग्रपनी इच्छा के
ग्रनुसार काम करेगा, ग्रौर ग्रपने ग्राप को
सारे देवताग्रों से ऊंचा ग्रौर बड़ा ठहराएगा,
वरन सब देवताग्रों के परमेश्वर के विरुद्ध
भी ग्रनोखी बातें कहेगा। ग्रौर जब तक
परमेश्वर का क्रोध न हो जाए तब तक
उस राजा का कार्य सफल होता रहेगा,
क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठना हुग्रा
है वह ग्रवश्य ही पूरा होनेवाला है।
३७ वह ग्रपने पुरखाग्रों के देवताग्रों की
चिन्ता न करेगा, न स्त्रियों की प्रीति की
कुछ चिन्ता करेगा ग्रौर न किसी देवता
की, क्योंकि वह ग्रपने ग्राप ही को सभों
के ऊपर बड़ा ठहराएगा। ३८ वह ग्रपने
राजपद पर स्थिर रहकर दृढ़ गढ़ों ही के
देवता का सम्मान करेगा, एक ऐसे देवता
का जिसे उसके पुरखा भी न जानते थे,
वह सोना, चान्दी, मणि ग्रौर मनभावनी
वस्तुएं चढ़ाकर उसका सम्मान करेगा।
३९ उस बिराने देवता के सहारे से वह
ग्रति दृढ़ गढ़ों में लड़ेगा, ग्रौर जो कोई
उसको माने उसे वह बड़ी प्रतिष्ठा देगा।
ऐसे लोगों को वह बहुतों के ऊपर प्रभुता
देगा, ग्रौर ग्रपने लाभ के लिए ग्रपने
देश की भूमि को बांट देगा ।।

४० ग्रन्त के समय दक्खिन देश का
राजा उसको सींग मारने लगेगा, परन्तु
उत्तर देश का राजा उस पर बवण्डर
की नाईं बहुत से रथ-सवार ग्रौर जहाज
लेकर चढ़ाई करेगा, इस रीति से वह
बहुत से देशों में फैल जाएगा, ग्रौर उन
में से निकल जाएगा। ४१ वह शिरोमणि
देश में भी ग्राएगा। ग्रौर बहुत से देश
उजड़ जाएंगे, परन्तु एदोमी, मोग्राबी
ग्रौर मुख्य मुख्य ग्रम्मोनी ग्रादि जातियों के
देश उसके हाथ से बच जाएंगे। ४२ वह
कई देशों पर हाथ बढ़ाएगा ग्रौर मिस्र देश
भी न बचेगा। ४३ वह मिस्र के सोने
चान्दी के खज़ानों ग्रौर सब मनभावनी
वस्तुग्रों का स्वामी हो जाएगा, ग्रौर लूबी
ग्रौर कूशी लोग भी उसके पीछे हो लेंगे।
४४ उसी समय वह पूरब ग्रौर उत्तर
दिशाग्रों से समाचार सुनकर घबराएगा,
ग्रौर बड़े क्रोध में ग्राकर बहुतों को सत्या-
नाश करने के लिए निकलेगा। ४५ ग्रौर
वह दोनों समुद्रों के बीच पवित्र शिरोमणि
पर्वत के पास ग्रपना राजकीय तम्बू खड़ा
कराएगा, इतना करने पर भी उसका
ग्रन्त ग्रा जाएगा, ग्रौर कोई उसका
सहायक न रहेगा ।।

१२ उसी समय मीकाएल नाम
बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति-
भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है,
वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय
होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने
के समय से लेकर ग्रब तक कभी न हुग्रा
होगा, परन्तु उस समय तेरे लोगों में से
जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में
लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। २ ग्रौर
जो भूमि के नीचे * सोए रहेंगे उन में से
बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा
के जीवन के लिये, ग्रौर कितने ग्रपनी
नामधराई ग्रौर सदा तक ग्रत्यन्त घिनौने
ठहरने के लिये। ३ तब सिखानेवालों
की चमक ग्राकाशमण्डल की सी होगी,
ग्रौर जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे

* मूल में—धूलि की भूमि में।

श्रौर उसके लिए वह चान्दी सोना जिसको
वे बाल देवता के काम मे ले आते है, मै
ही बढाता था। ९ इस कारण मै अन्न
की ऋतु मे अपने अन्न को, और नये
दाखमधु के होने के समय मे अपने नये
दाखमधु को हर लूगा, और अपना ऊन
और सन भी जिन से वह अपना तन
ढापती है, मै छीन लूगा। १० अब मै
उसके यारो के साम्हने उसके तन को
उघाडूगा, और मेरे हाथ से कोई उसे छुडा
न सकेगा। ११ और मै उसके पर्व, नये
चाद और विश्रामदिन आदि सब नियत
समयो के उत्सवो का अन्त कर दूगा।
१२ और मै उसकी दाखलताओ और
अजीर के वृक्षो को, जिनके विषय वह
कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति
है जिसे मेरे यारो ने मुझे दी है, उन्हे
ऐसा उजाडूगा कि वे जगल से हो जाएगे,
और वन-पशु उन्हे चर डालेगे। १३ और
वे दिन जिन मे वह बाल देवताओ के लिये
धूप जलाती, और नत्थ और हार पहिने
अपने यारो के पीछे जाती और मुझको
भूले रहती थी, उन दिनो का दण्ड मै
उसे दूगा, यहोवा की यही वाणी है॥

१४ इसलिये देखो, मै उसे मोहित
करके जगल मे ले जाऊगा, और वहा
उस से शान्ति की बाते कहूगा। १५ और
वही * मै उसको दाख की बारिया दूगा,
और आकोर † की तराई को आशा का
द्वार कर दूगा और वहा वह मुझ से ऐसी
बातें कहेगी जैसी अपनी जवानी के दिनो
में अर्थात् मिस्र देश से चले आने के समय
कहती थी। १६ और यहोवा की यह
वाणी है कि उस समय तू मुझे ईशी ‡
कहेगी और फिर बाली न कहेगी।
१७ क्योकि भविष्य मे मै उसे बाल
देवताओ के नाम न लेने दूगा, और न
उनके नाम फिर स्मरण मे रहेगे।
१८ और उस समय मै उनके लिये वन-
पशुओ और आकाश के पक्षियो और भूमि
पर के रेगनेवाले जन्तुओ के साथ वाचा
बान्धूगा, और धनुष और तलवार तोडकर
युद्ध को उनके देश से दूर कर दूगा,
और ऐसा करूगा कि वे लोग निडर सोया
करेगे। १९ और मै सदा के लिये तुझे
अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूगा,
और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और
करुणा, और दया के साथ करूगा।
२० और यह सच्चाई के साथ की जाएगी,
और तू यहोवा को जान लेगी॥

२१ और यहोवा की यह वाणी है
कि उस समय मै आकाश की सुनकर उसको
उत्तर दूगा, और वह पृथ्वी की सुनकर उसे
उत्तर देगा, २२ और पृथ्वी अन्न, नये
दाखमधु, और ताज़े तेल की सुनकर उनको
उत्तर देगी, और वे यिज्रेल को उत्तर
देगे। २३ और मै अपने लिये उसे देश
मे बोऊगा, और लोरुहामा पर दया
करूगा, और लोअम्मी से कहूगा, तू मेरी
प्रजा है, और वह कहेगा, "हे मेरे
परमेश्वर"॥

३ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, अब
जाकर एक ऐसी स्त्री से प्रीति कर,
जो व्यभिचारिणी होने पर भी अपने
प्रिय की प्यारी हो, क्योकि उसी भाति
यद्यपि इस्राएली पराए देवताओ की ओर
फिरे, और दाख की टिकियो से प्रीति
रखते है, तौभी यहोवा उन से प्रीति
रखता है॥

* मूल में—वहीं से। † अर्थात् कष्ट।
‡ अर्थात मेरे पति।

२ तब मैं ने एक स्त्री को चान्दी के
पन्द्रह टुकड़े और डेढ़ होमेर जव देकर
मोल लिया। ३ और मैं ने उस से कहा,
तू बहुत दिन तक मेरे लिये बैठी रहना,
और न तो छिनाला करना, और न किसी
पुरुष की स्त्री हो जाना, और मैं भी तेरे
लिये ऐसा ही रहूंगा। ४ क्योंकि इस्राएली
बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम,
बिना यज्ञ, बिना लाठ, और बिना एपोद
वा गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। ५ उसके
बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने
राजा दाऊद को फिर ढूंढ़ने लगेंगे, और
अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और
उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते
हुए आएंगे॥

४ हे इस्राएलियो, यहोवा का वचन
सुनो, इस देश के निवासियों के
साथ यहोवा का मुकद्दमा है। इस देश
में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करुणा
और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है।
२ यहां शाप देने, झूठ बोलने, वध करने,
चुराने, और व्यभिचार करने को छोड़
कुछ नहीं होता, वे व्यवस्था की सीमा को
लांघकर कुकर्म करते हैं और खून ही खून
होता रहता है*। ३ इस कारण यह देश
विलाप करेगा, और मैदान के जीव-जन्तुओं,
और आकाश के पक्षियों समेत उसके सब
निवासी कुम्हला जाएंगे, और समुद्र की
मछलियां भी नाश हो जाएंगी॥
४ देखो, कोई वाद-विवाद न करे,
न कोई उलहना दे, क्योंकि तेरे लोग
तो याजकों से वाद-विवाद करनेवालों के
समान हैं। ५ तू दिनदुपहरी ठोकर
खाएगा, और रात को भविष्यद्वक्ता भी
तेरे साथ ठोकर खाएगा, और मैं तेरी
माता को नाश करूंगा। ६ मेरे ज्ञान के
न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई, तू ने
मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिये मैं
तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य
ठहराऊंगा। और इसलिये कि तू ने अपने
परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है,
मैं भी तेरे लड़केवालों को छोड़ दूंगा॥
७ जैसे वे बढ़ते गए, वैसे ही वे मेरे
विरुद्ध पाप करते गए, मैं उनके विभव
के बदले उनका अनादर करूंगा। ८ वे
मेरी प्रजा के पापबलियों को खाते हैं,
और प्रजा के पापी होने की लालसा
करते हैं। ९ इसलिये जो प्रजा की दशा
होगी, वही याजक की भी होगी, मैं
उनके चालचलन का दण्ड दूंगा, और
उनके कामों के अनुकूल उन्हें बदला दूंगा।
१० वे खाएंगे तो सही, परन्तु तृप्त न
होंगे, और वेश्यागमन तो करेंगे, परन्तु
न बढ़ेंगे, क्योंकि उन्हों ने यहोवा की ओर
मन लगाना छोड़ दिया है॥
११ वेश्यागमन और दाखमधु और
ताजा दाखमधु, ये तीनों बुद्धि* को भ्रष्ट
करते हैं। १२ मेरी प्रजा के लोग काठ
के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी
छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि
छिनाला करानेवाली आत्मा ने उन्हें
बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की
अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं।
१३ बांज, चिनार और छोटे बांज वृक्षों
की छाया अच्छी होती है, इसलिये वे
उनके नीचे और पहाड़ों की चोटियों पर
यज्ञ करते, और टीलों पर धूप जलाते
हैं॥

* मूल में—लोहू को पहुंचाता है।

* मूल में—हृदय।

सर्वदा तारो की नाईं प्रकाशमान रहेगे।
४ परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर
मुहर करके इन वचनो को अन्त समय तक
के लिए बन्द रख। और बहुत लोग
पूछ-पाछ और ढूढ-ढाढ करेगे, और इस
से ज्ञान बढ भी जाएगा ॥
५ यह सब सुन, मुझ दानिय्येल ने
दृष्टि करके क्या देखा कि और दो पुरुष
खडे है, एक तो नदी के इस तीर पर,
और दूसरा नदी के उस तीर पर है।
६ तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए
नदी के जल के ऊपर था, उस से उन
पुरुषो मे से एक ने पूछा, इन आश्चर्य
कर्मों का अन्त कब तक होगा? ७ तब
जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के
जल के ऊपर था, उस ने मेरे सुनते दहिना
और बाया अपने दोनो हाथ स्वर्ग की ओर
उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपथ
खाकर कहा, यह दशा साढे तीन काल
तक ही रहेगी, और जब पवित्र प्रजा
की शक्ति टूटते टूटते समाप्त हो जाएगी,
तब ये सब बाते पूरी होगी। ८ यह बात
मै सुनता तो था परन्तु कुछ न समझा।
तब मै ने कहा, हे मेरे प्रभु, इन बातो का
अन्तफल क्या होगा? ९ उस ने कहा, हे
दानिय्येल चला जा, क्योकि ये बाते
अन्तसमय के लिये बन्द है और इन पर
मुहर दी हुई है। १० बहुत लोग तो
अपने अपने को निर्मल और उजले करेंगे,
और स्वच्छ हो जाएगे, परन्तु दुष्ट लोग
दुष्टता ही करते रहेगे, और दुष्टो मे
से कोई ये बाते न समझेगा, परन्तु
जो बुद्धिमान है वे ही समझेगे। ११ और
जब से नित्य होमबलि उठाई जाएगी,
और वह घिनौनी वस्तु जो उजाड करा
देती है, स्थापित की जाएगी, तब से बारह
सौ नब्बे दिन बीतेंगे। १२ क्या ही धन्य है
वह, जो धीरज धरकर तेरह सौ पैंतीस दिन
के अन्त तक भी पहुचे। १३ अब तू जाकर
अन्त तक ठहरा रह, और तू विश्राम
करता रहेगा, और उन दिनो के अन्त मे
तू अपने निज भाग पर खडा होगा ॥

होशे

१ यहूदा के राजा उज्जियाह, योताम,
आहाज, और हिजकिय्याह के दिनो
मे और इस्राएल के राजा योआश के
पुत्र यारोबाम के दिनो मे, यहोवा का वचन
बेरी के पुत्र होशे के पास पहुचा ॥
२ जब यहोवा ने होशे के द्वारा पहिले
पहिल बात की, तब उस ने होशे से यह
कहा, जाकर एक वेश्या को अपनी पत्नी
बना ले, और उसके कुकर्म के लडकेबालो
को अपने लडकेबाले कर ले, क्योकि यह
देश यहोवा के पीछे चलना छोडकर वेश्या
का सा बहुत काम करता है। ३ सो उस
ने जाकर दिबलैम की बेटी गोमेर को
अपनी पत्नी कर लिया, और वह उस से

गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न
हुआ। ४ तब यहोवा ने उस से कहा,
उसका नाम यिज्रेल * रख, क्योंकि थोड़े
ही काल में मैं येहू के घराने को यिज्रेल
की हत्या का दण्ड दूंगा, और मैं इस्राएल
के घराने के राज्य का अन्त कर दूंगा।
५ और उस समय में यिज्रेल की तराई में
इस्राएल के धनुष को तोड़ डालूंगा॥

६ और वह स्त्री फिर गर्भवती हुई
और उसके एक बेटी उत्पन्न हुई। तब
यहोवा ने होशे से कहा, उसका नाम
लोरुहामा † रख, क्योंकि मैं इस्राएल के
घराने पर फिर कभी दया करके उनका
अपराध किसी प्रकार से क्षमा न करूंगा।
७ परन्तु यहूदा के घराने पर मैं दया
करूंगा, और उनका उद्धार करूंगा,
उनका उद्धार मैं धनुष वा तलवार वा युद्ध
वा घोड़ों वा सवारों के द्वारा नहीं, परन्तु
उनके परमेश्वर यहोवा के द्वारा करूंगा॥

८ जब उस स्त्री ने लोरुहामा का
दूध छुड़ाया, तब वह गर्भवती हुई और
उस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ९ तब
यहोवा ने कहा, इसका नाम लोअम्मी ‡
रख, क्योंकि तुम लोग मेरी प्रजा नहीं
हो, और न मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूंगा॥

१० तौभी इस्राएलियों की गिनती
समुद्र की बालू की सी हो जाएगी, जिनका
मापना-गिनना अनहोना है, और जिस
स्थान में उन से यह कहा जाता था कि
तुम मेरी प्रजा नहीं हो, उसी स्थान में वे
जीवित परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
११ तब यहूदी और इस्राएली दोनों इकट्ठे
हो अपना एक प्रधान ठहराकर देश से
चले आएंगे, क्योंकि यिज्रेल का दिन
प्रसिद्ध * होगा॥

२ इसलिये तुम लोग अपने भाइयों
से अम्मी † और अपनी बहिनों से
रुहामा ‡ कहो॥

२ अपनी माता से विवाद करो,
विवाद—क्योंकि वह मेरी स्त्री नहीं,
और न मैं उसका पति हूं। वह अपने
मुंह पर से अपने छिनालपन को और
अपनी छातियों के बीच से व्यभिचारों
को अलग करे, ३ नहीं तो मैं उसके वस्त्र
उतारकर उसको जन्म के दिन के समान
नंगी कर दूंगा, और उसको मरुस्थल
के समान और मरुभूमि सरीखी बनाऊंगा,
और उसे प्यास से मार डालूंगा। ४ उसके
लड़केवालों पर भी मैं कुछ दया न करूंगा,
क्योंकि वे कुकर्म के लड़के हैं। ५ उनकी
माता ने छिनाला किया है, जिसके गर्भ
में वे पड़े, उस ने लज्जा के योग्य काम
किया है। उस ने कहा, मेरे यार जो मुझे
रोटी-पानी, ऊन, सन, तेल और मद्य
देते हैं, मैं उन्हीं के पीछे चलूंगी। ६ इस-
लिए देखो, मैं उसके मार्ग को कांटों से
घेरूंगा, और ऐसा बाड़ा खड़ा करूंगा कि
वह राह न पा सकेगी। ७ वह अपने
यारों के पीछे चलने से भी उन्हें न पाएगी,
और उन्हें ढूंढ़ने से भी न पाएगी। तब
वह कहेगी, मैं अपने पहिले पति के पास
फिर जाऊंगी, क्योंकि मेरी पहिली दशा
इस समय की दशा से अच्छी थी। ८ वह
यह नहीं जानती थी, कि अन्न, नया
दाखमधु और तेल मैं ही उसे देता था,

* अर्थात् ईश्वर बोएगा वा तितर बितर करेगा। यिज्रेल एक नगर का भी नाम है।
† अर्थात् जिस पर दया नहीं हुई।
‡ अर्थात् मेरी प्रजा नहीं।

* मूल में—बड़ा। † अर्थात् मेरी प्रजा।
‡ अर्थात् जिस पर दया हुई है।

और उसके लिए वह चान्दी सोना जिसको
वे बाल देवता के काम मे ले आते है, मै
ही बढ़ाता था। ९ इस कारण मै अन्न
की ऋतु मे अपने अन्न को, और नये
दाखमधु के होने के समय मे अपने नये
दाखमधु को हर लूगा, और अपना ऊन
और सन भी जिन से वह अपना तन
ढापती है, मै छीन लूगा। १० अब मै
उसके यारो के साम्हने उसके तन को
उघाडूगा, और मेरे हाथ से कोई उसे छुडा
न सकेगा। ११ और मै उसके पर्व, नये
चाद और विश्रामदिन आदि सब नियत
समयो के उत्सवो का अन्त कर दूगा।
१२ और मै उसकी दाखलताओ और
अजीर के वृक्षो को, जिनके विषय वह
कहती है कि यह मेरे छिनाले की प्राप्ति
है जिसे मेरे यारो ने मुझे दी है, उन्हे
ऐसा उजाडूगा कि वे जगल से हो जाएगे,
और वन-पशु उन्हे चर डालेगे। १३ और
वे दिन जिन मे वह बाल देवताओ के लिये
धूप जलाती, और नथ और हार पहिने
अपने यारो के पीछे जाती और मुझको
भूले रहती थी, उन दिनो का दण्ड मै
उसे दूगा, यहोवा की यही वाणी है॥

१४ इसलिये देखो, मै उसे मोहित
करके जगल में ले जाऊगा, और वहा
उस से शान्ति की बाते कहूगा। १५ और
वही * मै उसको दाख की बारिया दूगा,
और आकोर † की तराई को आशा का
द्वार कर दूगा और वहा वह मुझ से ऐसी
बातें कहेगी जैसी अपनी जवानी के दिनो
में अर्थात् मिस्र देश से चले आने के समय
कहती थी। १६ और यहोवा की यह
वाणी है कि उस समय तू मुझे ईशी ‡
कहेगी और फिर बाली न कहेगी।
१७ क्योकि भविष्य मे मै उसे बाल
देवताओ के नाम न लेने दूगा, और न
उनके नाम फिर स्मरण मे रहेगे।
१८ और उस समय मै उनके लिये वन-
पशुओ और आकाश के पक्षियो और भूमि
पर के रेंगनेवाले जन्तुओ के साथ वाचा
बान्धूगा, और धनुष और तलवार तोडकर
युद्ध को उनके देश से दूर कर दूगा,
और ऐसा करूगा कि वे लोग निडर सोया
करेगे। १९ और मै सदा के लिये तुझे
अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूगा,
और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और
करुणा, और दया के साथ करूगा।
२० और यह सच्चाई के साथ की जाएगी,
और तू यहोवा को जान लेगी॥

२१ और यहोवा की यह वाणी है
कि उस समय मै आकाश की सुनकर उसको
उत्तर दूगा, और वह पृथ्वी की सुनकर उसे
उत्तर देगा, २२ और पृथ्वी अन्न, नये
दाखमधु, और ताज़े तेल की सुनकर उनको
उत्तर देगी, और वे यिज्रेल को उत्तर
देगे। २३ और मै अपने लिये उसे देश
मे बोऊगा, और लोरुहामा पर दया
करूगा, और लोअम्मी से कहूगा, तू मेरी
प्रजा है, और वह कहेगा, "हे मेरे
परमेश्वर"॥

३ फिर यहोवा ने मुझ से कहा, अब
जाकर एक ऐसी स्त्री से प्रीति कर,
जो व्यभिचारिणी होने पर भी अपने
प्रिय की प्यारी हो, क्योकि उसी भाति
यद्यपि इस्राएली पराए देवताओ की ओर
फिरे, और दाख की टिकियो से प्रीति
रखते है, तौभी यहोवा उन से प्रीति
रखता है॥

* मूल में—वहीं से। † अर्थात् कष्ट।
‡ अर्थात मेरे पति।

२ तब मैं ने एक स्त्री को चान्दी के
पन्द्रह टुकड़े और डेढ़ होमेर जव देकर
मोल लिया। ३ और मैं ने उस से कहा,
तू बहुत दिन तक मेरे लिये बैठी रहना,
और न तो छिनाला करना, और न किसी
पुरुष की स्त्री हो जाना, और मैं भी तेरे
लिये ऐसा ही रहूंगा। ४ क्योंकि इस्राएली
बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम,
बिना यज्ञ, बिना लाठ, और बिना एपोद
वा गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे। ५ उसके
बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने
राजा दाऊद को फिर ढूंढने लगेंगे, और
अन्त के दिनों में यहोवा के पास, और
उसकी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते
हुए आएंगे॥

४ हे इस्राएलियो, यहोवा का वचन
सुनो, इस देश के निवासियों के
साथ यहोवा का मुकद्दमा है। इस देश
में न तो कुछ सच्चाई है, न कुछ करुणा
और न कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है।
२ यहां शाप देने, झूठ बोलने, वध करने,
चुराने, और व्यभिचार करने को छोड़
कुछ नहीं होता, वे व्यवस्था की सीमा को
लांघकर कुकर्म करते हैं और खून ही खून
होता रहता है*। ३ इस कारण यह देश
विलाप करेगा, और मैदान के जीव-जन्तुओं,
और आकाश के पक्षियों समेत उसके सब
निवासी कुम्हला जाएंगे, और समुद्र की
मछलियां भी नाश हो जाएंगी॥

४ देखो, कोई वाद-विवाद न करे,
न कोई उलहना दे, क्योंकि तेरे लोग
तो याजकों से वाद-विवाद करनेवालों के
समान हैं। ५ तू दिनदुपहरी ठोकर
खाएगा, और रात को भविष्यद्वक्ता भी
तेरे साथ ठोकर खाएगा, और मैं तेरी
माता को नाश करूंगा। ६ मेरे ज्ञान के
न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई, तू ने
मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिये मैं
तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य
ठहराऊंगा। और इसलिये कि तू ने अपने
परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है,
मैं भी तेरे लड़केवालों को छोड़ दूंगा॥

७ जैसे वे बढ़ते गए, वैसे ही वे मेरे
विरुद्ध पाप करते गए, मैं उनके विभव
के बदले उनका अनादर करूंगा। ८ वे
मेरी प्रजा के पापबलियों को खाते हैं,
और प्रजा के पापी होने की लालसा
करते हैं। ९ इसलिये जो प्रजा की दशा
होगी, वही याजक की भी होगी, मैं
उनके चालचलन का दण्ड दूंगा, और
उनके कामों के अनुकूल उन्हें बदला दूंगा।
१० वे खाएंगे तो सही, परन्तु तृप्त न
होंगे, और वेश्यागमन तो करेंगे, परन्तु
न बढ़ेंगे, क्योंकि उन्हों ने यहोवा की ओर
मन लगाना छोड़ दिया है॥

११ वेश्यागमन और दाखमधु और
ताज़ा दाखमधु, ये तीनों बुद्धि* को भ्रष्ट
करते हैं। १२ मेरी प्रजा के लोग काठ
के पुतले से प्रश्न करते हैं, और उनकी
छड़ी उनको भविष्य बताती है। क्योंकि
छिनाला करानेवाली आत्मा ने उन्हें
बहकाया है, और वे अपने परमेश्वर की
अधीनता छोड़कर छिनाला करते हैं।
१३ बांज, चिनार और छोटे बांज वृक्षों
की छाया अच्छी होती है, इसलिये वे
उनके नीचे और पहाड़ों की चोटियों पर
यज्ञ करते, और टीलों पर धूप जलाते
हैं॥

* मूल में—लोहू को पहुंचाता है।

* मूल में—हृदय।

इस कारण तुम्हारी बेटिया छिनाल
और तुम्हारी बहुए व्यभिचारिणी हो
गई है। १४ जब तुम्हारी बेटिया छिनाला
और तुम्हारी बहुए व्यभिचार करे, तब
मैं उनको दण्ड न दूगा, क्योकि मनुष्य
आप ही वेश्याओ के साथ एकान्त मे जाते,
और देवदासियो के साथी होकर यज्ञ
करते है, और जो लोग समझ नही
रखते, वे नाश हो जाएगे ॥

१५ हे इस्राएल, यद्यपि तू छिनाला
करता है, तौभी यहूदा दोषी न बने।
गिलगाल को न आओ, और न बेतावेन
को चढ जाओ, और यहोवा के जीवन की
सौगन्ध कहकर शपथ न खाओ।
१६ क्योकि इस्राएल ने हठीली कलोर
की नाई हठ किया है, क्या अब यहोवा उन्हे
भेड के बच्चे की नाई लम्बे चौडे मैदान मे
चराएगा ?

१७ एप्रैम मूरतो का सगी हो गया है,
इसलिये उसको रहने दे। १८ वे जब
दाखमधु पी चुकते है तब वेश्यागमन करने
मे लग जाते है, उनके प्रधान लोग
निरादर होने से अधिक प्रीति रखते है।
१९ आधी उनको अपने पखो मे बान्धकर
उडा ले जाएगी, और उनके बलिदानो के
कारण उनकी आशा टूट जाएगी ॥

५ हे याजको, यह बात सुनो। हे
इस्राएल के सारे घराने, ध्यान देकर
सुनो। हे राजा के घराने, तुम भी कान
लगाओ। क्योकि तुम पर न्याय किया
जाएगा, क्योकि तुम मिसपा मे फन्दा, और
ताबोर पर लगाया हुआ जाल बन गए हो।
२ उन बिगडे हुओ ने घोर हत्या की है*,
इसलिये मै उन सभो को ताडना दूगा ॥

* मूल में—हत्या में गहिराई की।

३ मै एप्रैम का भेद जानता हू, और
इस्राएल की दशा मुझ से छिपी नही है,
हे एप्रैम, तू ने छिनाला किया, और इस्राएल
अशुद्ध हुआ है। ४ उनके काम उन्हे अपने
परमेश्वर की ओर फिरने नही देते, क्योकि
छिनाला करनेवाली आत्मा उन मे रहती
है, और वे यहोवा को नही जानते है ॥

५ इस्राएल का गर्व उसी के विरुद्ध
साक्षी देता है, और इस्राएल और एप्रैम
अपने अधर्म के कारण ठोकर खाएगे,
और यहूदा भी उनके सग ठोकर खाएगा।
६ वे अपनी भेड-बकरिया और गाय-बैल
लेकर यहोवा को ढूढने चलेगे, परन्तु वह
उनको न मिलेगा, क्योकि वह उन से
दूर हो गया है। ७ वे व्यभिचार के
लडके जने है, इस से उन्हो ने यहोवा का
विश्वासघात किया है। इस कारण अब
चाद उनका और उनके भागो के नाश
का कारण होगा ॥

८ गिबा मे नरसिगा, और रामा मे
तुरही फूको। बेतावेन मे ललकार कर
कहो, हे बिन्यामीन, अपने पीछे देख।
९ न्याय के दिन मे एप्रैम उजाड हो
जाएगा, जिस बात का होना निश्चय है, मै
ने उसी का सन्देश इस्राएल के सब गोत्रो
को दिया है। १० यहूदा के हाकिम उनके
समान हुए है जो सिवाना बढा लेते है,
मै उन पर अपनी जलजलाहट जल की
नाई उण्डेलूगा। ११ एप्रैम पर अन्धेर
किया गया है, वह मुकद्दमा हार गया है,
क्योकि वह जी लगाकर उस आज्ञा पर
चला। १२ इसलिये मै एप्रैम के लिये
कीडे के समान और यहूदा के घराने के
लिये सडाहट के समान हूगा ॥

१३ जब एप्रैम ने अपना रोग, और
यहूदा ने अपना घाव देखा, तब एप्रैम

अश्शूर के पास गया, और यारेब* राजा
को कहला भेजा। परन्तु न वह तुम्हें
चंगा कर सकता और न तुम्हारा घाव
अच्छा कर सकता है। १४ क्योंकि मैं
एप्रैम के लिये सिंह, और यहूदा के घराने
के लिये जवान सिंह बनूंगा। मैं आप ही
उन्हें फाड़कर ले जाऊंगा, जब मैं उठा
ले जाऊंगा, तब मेरे पंजे से कोई न छुड़ा
सकेगा॥
१५ जब तक वे अपने को अपराधी
मानकर मेरे दर्शन के खोजी न होंगे तब तक
मैं अपने स्थान को लौटूंगा, और जब वे
संकट में पड़ेंगे, तब जी लगाकर मुझे
ढूंढ़ने लगेंगे॥

६ चलो, हम यहोवा की ओर फिरें,
क्योंकि उसी ने फाड़ा, और वही
चंगा भी करेगा, उसी ने मारा, और
वही हमारे घावों पर पट्टी बान्धेगा।
२ दो दिन के बाद वह हम को जिलाएगा,
और तीसरे दिन वह हमको उठाकर खड़ा
करेगा, तब हम उसके सम्मुख जीवित
रहेंगे। ३ आओ, हम ज्ञान ढूंढ़ें, वरन
यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये
यत्न भी करें†, क्योंकि यहोवा का प्रगट
होना भोर का सा निश्चित है, वह वर्षा
की नाईं हमारे ऊपर आएगा, वरन बरसात
के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि
सिंचती है॥
४ हे एप्रैम, मैं तुझ से क्या करूं?
हे यहूदा, मैं तुझ से क्या करूं? तुम्हारा
स्नेह तो भोर के मेघ के समान, और
सवेरे उड़ जानेवाली ओस के समान है।
५ इस कारण मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के
द्वारा मानो उन पर कुल्हाड़ी चलाकर
उन्हें काट डाला, और अपने वचनों से
उनको घात किया, और मेरा न्याय प्रकाश
के समान चमकता है*। ६ क्योंकि मैं
बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न
होता हूं, और होमबलियों से अधिक यह
चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का ज्ञान
रखें॥
७ परन्तु उन लोगों ने आदम की
नाईं वाचा को तोड़ दिया, उन्हों ने
वहां मुझ से विश्वासघात किया है।
८ गिलाद नाम गढ़ी तो अनर्थकारियों से
भरी है, वह खून से भरी हुई है। ९ जैसे
डाकुओं के दल किसी की घात में बैठते हैं,
वैसे ही याजकों का दल शकेम के मार्ग में
वध करता है, वरन उन्हों ने महापाप भी
किया है। १० इस्राएल के घराने में
मैं ने रोएं खड़े होने का कारण देखा है,
उस में एप्रैम का छिनाला और इस्राएल
की अशुद्धता पाई जाती है॥
११ और हे यहूदा, जब मैं अपनी
प्रजा को बंधुआई से लौटा ले आऊंगा,
उस समय के लिये तेरे निमित्त भी बदला
ठहराया हुआ है॥

७ जब मैं इस्राएल को चंगा करता
हूं तब एप्रैम का अधर्म और शोमरोन
की बुराइयां प्रगट हो जाती हैं, वे छल
से काम करते हैं, चोर भीतर घुसता,
और डाकुओं का दल बाहर छीन लेता
है। २ तौभी वे नहीं सोचते कि यहोवा
हमारी सारी बुराई का स्मरण रखता
है। इसलिये अब वे अपने कामों के जाल
में फंसेंगे, क्योंकि उनके कार्य मेरी दृष्टि
में बने हैं। ३ वे राजा को बुराई करने से,

* अर्थात् झगड़नेवाले।
† मूल में—पीछा भी करें।

* मूल में—निकलनेवाले हैं।

ग्रोर हाकिमो को भूठ बोलने से आनन्दित
करते है। ४ वे सब के सब व्यभिचारी
है, वे उस तन्दूर के समान है जिसको
पकानेवाला गर्म करता है, पर जब तक
आटा गूधा नही जाता और खमीर से
फूल नही चुकता, तब तक वह आग को
नही उसकाता। ५ हमारे राजा के जन्म
दिन मे हाकिम दाखमधु पीकर चूर हुए,
उस ने ठट्ठा करनेवालो से अपना हाथ
मिलाया। ६ जब तक वे घात लगाए
रहते है, तब तक वे अपना मन तन्दूर
की नाई तैयार किए रहते है, उनका
पकानेवाला रात भर सोता रहता है,
वह भोर को तन्दूर की धधकती लौ के
समान लाल हो जाता है। ७ वे सब के
सब तन्दूर की नाई धधकते, और अपने
न्यायियो को भस्म करते है। उनके
सब राजा मारे गए है, और उन मे से
कोई मेरी दोहाई नही देता है ॥

८ एप्रैम देश देश के लोगो से मिला-
जुला रहता है, एप्रैम ऐसी चपाती ठहरा
है जो उलटी न गई हो। ९ परदेशियो
ने उसका बल तोड डाला *, परन्तु वह
इसे नही जानता, उसके सिर मे कही कही
पके बाल है, परन्तु वह इसे भी नही
जानता। १० इस्राएल का गर्व उसी के
विरुद्ध साक्षी देता है, इन सब बातो के
रहते हुए भी वे अपने परमेश्वर यहोवा
की ओर नही फिरे, और न उसको ढूढा
है ॥

११ एप्रैम एक भोली पण्डुकी के
समान हो गया है जिस के कुछ बुद्धि
नही, वे मिस्रियो की दोहाई देते, और
अश्शूर को चले जाते है। १२ जब वे जाए,
तब उनके ऊपर मै अपना जाल फैलाऊगा,
मै उन्हें ऐसा खीच लूगा जैसे आकाश के
पक्षी खीचे जाते है, मै उनको ऐसी
ताडना दूगा, जैसी उनकी मण्डली सुन
चुकी है। १३ उन पर हाय, क्योकि
वे मेरे पास से भटक गए! उनका सत्या-
नाश होए, क्योकि उन्हो ने मुझ से बलवा
किया है! मै तो उन्हे छुडाता रहा,
परन्तु वे मुझ से भूठ बोलते आए है ॥

१४ वे मन से मेरी दोहाई नही देते,
परन्तु अपने बिछौने पर पड़े हुए हाय,
हाय, करते है, वे अन्न और नये दाखमधु
पाने के लिये भीड लगाते, और मुझ
से बलवा करते है। १५ मै उनको शिक्षा
देता रहा और उनकी भुजाओ को बलवन्त
करता आया हू, तौभी वे मेरे विरुद्ध बुरी
कल्पना करते है। १६ वे फिरते तो है,
परन्तु परमप्रधान की ओर नही, वे धोखा
देनेवाले धनुप के समान है, इसलिये उनके
हाकिम अपनी क्रोधभरी बातो के कारण
तलवार से मारे जाएगे। मिस्र देश मे
उनके ठट्ठो मे उडाए जाने का यही कारण
होगा ॥

८ अपने मुह मे नरसिगा लगा।
वह उकाब की नाईं यहोवा के घर
पर झपटेगा, क्योकि मेरे घर के लोगो ने
मेरी वाचा तोड़ी, और मेरी व्यवस्था
का उल्लघन किया है। २ वे मुझ से
पुकारकर कहेगे, हे हमारे परमेश्वर, हम
इस्राएली लोग तुझे जानते है। ३ परन्तु
इस्राएल ने भलाई को मन से उतार
दिया है, शत्रु उसके पीछे पडेगा ॥

४ वे राजाओ को ठहराते रहे,
परन्तु मेरी इच्छा से नही। वे हाकिमो
को भी ठहराते रहे, परन्तु मेरे अनजाने

* मूल में—खा लिया।

में। उन्हों ने अपना सोना-चान्दी लेकर
मूरतें बना ली जिस से वे ही नाश हो जाए।
५ हे शोमरोन, उस ने तेरे बछड़े का मन
में उतार दिया है, मेरा क्रोध उन पर
भड़का है। वे निर्दोष होने में कब तक
विलम्ब करेंगे? ६ यह इस्राएल से हुआ
है॥

एक कारीगर ने उसे बनाया, वह
परमेश्वर नहीं है। इस कारण शोमरोन
का वह बछड़ा टुकड़े टुकड़े हो जाएगा॥
७ वे वायु बोते हैं, और वे बवण्डर
लवेंगे। उनके लिये कुछ खेत रहेगा नहीं,
न उनकी उपज से कुछ आटा होगा,
और यदि हो भी तो परदेशी उसको खा
डालेंगे। ८ इस्राएल निगला गया, अब
वे अन्यजातियों में ऐसे निकम्मे ठहरे जैसे
तुच्छ बरतन ठहरता है। ९ क्योंकि वे
अश्शूर को ऐसे चले गए, जैसा जंगली
गदहा झुण्ड में बिछुड़ के रहता है,
एप्रैम ने यारों को मज़दूरी पर रखा है।
१० यद्यपि वे अन्यजातियों में से मज़दूर
बनाकर रखें, तौभी मैं उनको इकट्ठा
करूंगा। और वे हाकिमों और राजा
के बोझ के कारण घटने लगेंगे॥

११ एप्रैम ने पाप करने को बहुत
सी वेदियां बनाई हैं, वे ही वेदियां उसके
पापी ठहरने का कारण भी ठहरीं।
१२ मैं तो उनके लिये अपनी व्यवस्था
की लाखों बातें लिखता आया हूं, परन्तु
वे उन्हें पराया समझते हैं। १३ वे मेरे
लिये बलिदान तो करते हैं, और पशु बलि
भी करते हैं, परन्तु उसका फल मांस
ही है, वे आप ही उसे खाते हैं, परन्तु
यहोवा उन से प्रसन्न नहीं होता। अब वह
उनके अधर्म की सुधि लेकर उनके पाप
का दण्ड देगा, वे मिस्र में लौट जाएंगे।
१४ क्योंकि इस्राएल ने अपने कर्त्ता को
बिसरा कर महल बनाए, और यहूदा
ने बहुत से गढ़वाले नगरों को बसाया
है, परन्तु मैं उनके नगरों में आग
लगाऊंगा, और उस से उनके गढ़ भस्म हो
जाएंगे॥

९ हे इस्राएल, तू देश देश के लोगों
की नाईं आनन्द में मगन मत हो!
क्योंकि तू अपने परमेश्वर को छोड़कर
वेश्या बनी। तू ने अन्न के हर एक खलिहान
पर छिनाले की कमाई आनन्द से ली है।
२ वे न तो खलिहान के अन्न से तृप्त
होंगे, और न कुण्ड के दाखमधु से, और
नये दाखमधु के घटने से वे धोखा खाएंगे।
३ वे यहोवा के देश में रहने न पाएंगे,
परन्तु एप्रैम मिस्र में लौट जाएगा, और
वे अश्शूर में अशुद्ध वस्तुएं खाएंगे॥

४ वे यहोवा के लिये दाखमधु का
अर्घ न देंगे, और न उनके बलिदान उसको
भाएंगे। उनकी रोटी शोक करनेवालों
का सा भोजन ठहरेगी, जितने उसे खाएंगे
सब अशुद्ध हो जाएंगे, क्योंकि उनकी
भोजनवस्तु उनकी भूख बुझाने ही के
लिये होगी, वह यहोवा के भवन में न
आ सकेगी॥

५ नियत समय के पर्व और यहोवा के
उत्सव के दिन तुम क्या करोगे? ६ देखो,
वे सत्यानाश होने के डर के मारे चले
गए, परन्तु वहां मर जाएंगे और मिस्री
उनकी लोथ इकट्ठी करेंगे, और मोप
के निवासी उनको मिट्टी देंगे। उनकी
मनभावनी चान्दी की वस्तुएं बिच्छू पेड़ों
के बीच में* पड़ेंगी, और उनके तम्बुओं में
झड़बेरी उगेगी॥

* मूल में—के अधिकार में।

७ दण्ड के दिन आए है, वदला
लेने के दिन आए है, और इस्राएल यह
जान लेगा। उनके बहुत से अधर्म और
बडे द्वेप के कारण भविष्यद्वक्ता तो मूर्ख,
और जिस पुरुप पर आत्मा उतरता है,
वह वावला ठहरेगा ॥

८ एप्रैम मेरे परमेश्वर की ओर से
पहरुआ है, भविष्यद्वक्ता सव मार्गों मे
वहेलिये का फन्दा है, और वह अपने
परमेश्वर के घर मे वैरी हुआ है।
९ वे गिवा के दिनो की भाति अत्यन्त
बिगडे* है, सो वह उनके अधर्म की सुधि
लेकर उनके पाप का दण्ड देगा ॥

१० मै ने इस्राएल को ऐसा पाया
जैसे कोई जगल मे दाख पाए, और
तुम्हारे पुरखाओ पर ऐसे दृष्टि की जैसे
अजीर के पहिले फलो पर दृष्टि की जाती
है। परन्तु उन्हो ने पोर के वाल के पास
जाकर अपने तई को लज्जा का कारण
होने के लिये अर्पण कर दिया, और जिस
पर मोहित हो गए थे, वे उसी के समान
घिनौने हो गए। ११ एप्रैम का विभव
पक्षी की नाई उड जाएगा, न तो किसी
का जन्म होगा, न किसी को गर्भ रहेगा,
और न कोई स्त्री गर्भवती होगी।
१२ चाहे वे अपने लडकेवालो का पालन-
पोपण कर वडे भी करे, तौभी मै उन्हे
यहा तक निर्वंश करूगा कि कोई भी
न वचेगा। जव मै उन से दूर हो जाऊगा,
तव उन पर हाय! १३ जैसा मै ने
सोर को देखा, वैसा एप्रैम को भी मनभाऊ
स्यान मे वसा हुआ देखा, तौभी उसे
अपने लडकेवालो को घातक के साम्हने
ले जाना पडेगा। १४ हे यहोवा, उनको
दण्ड दे! तू क्या देगा? यह, कि
उनकी स्त्रियो के गर्भ गिर जाए, और
स्तन सूखे रहे ॥

१५ उनकी सारी वुराई गिलगाल मे
है, वही मै ने उन से घृणा की।
उनके वुरे कामो के कारण मै उनको
अपने घर से निकाल दूगा। और उन से
फिर प्रीति न रखूगा, क्योकि उनके सव
हाकिम वलवा करनेवाले है ॥

१६ एप्रैम मारा हुआ है, उनकी जड
सूख गई, उन मे फल न लगेगा। और
चाहे उनकी स्त्रिया वच्चे भी जने तौभी मै
उनके जन्मे हुए दुलारो को मार डालूगा ॥

१७ मेरा परमेश्वर उनको निकम्मा
ठहराएगा, क्योकि उन्हो ने उसकी नही
सुनी। वे अन्यजातियो के वीच मारे मारे
फिरेगे ॥

१० इस्राएल एक लहलहाती हुई
दाखलता सी है, जिस मे वहुत से
फल भी लगे, परन्तु ज्यो ज्यो उसके फल
वढे, त्यो त्यो उस ने अधिक वेदिया वनाई,
जैसे जैसे उसकी भूमि सुधरी, वैसे ही
वे सुन्दर लाटे वनाते गये। २ उनका
मन वटा हुआ है, अव वे दोपी ठहरेगे।
वह उनकी वेदियो को तोड़ डालेगा, और
उनकी लाटो को टुकडे टुकडे करेगा।
३ अव वे कहेगे, हमारे कोई राजा नही
है, क्योकि हम ने यहोवा का भय नही
माना, सो राजा हमारा क्या कर सकता
है? ४ वे वाते वनाते और झूठी शपथ
खाकर वाचा वान्धते है, इस कारण
खेत की रेघारियो मे धतूरे की नाई दण्ड
फूले फलेगा। ५ सामरिया के निवासी
वेतावेन के वछडे* के लिये डरते रहेंगे,

* मूल में—गहिराई करके विगड़े।

* मूल में—वछियों के कारण।

और उसके लोग उसके लिये विलाप करेंगे,
और उसके पुजारी जो उसके कारण
मगन होते थे उसके प्रताप के लिये इस
कारण विलाप करेंगे क्योंकि वह उन में
से उठ गया है। ६ वह यारेब * राजा की
भेंट ठहरने के लिये अश्शूर देश में पहुंचाया
जाएगा। एप्रैम लज्जित होगा, और
इस्राएल भी अपनी युक्ति से लजाएगा॥
७ सामरिया अपने राजा समेत जल
के बुलबुले की नाईं मिट जाएगा। ८ और
आवेन के ऊंचे स्थान जो इस्राएल का
पाप है, वे नाश होंगे। उनकी वेदियों पर
झड़बेरी, पेड़ और ऊंटकटारे उगेंगे, और
उस समय लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे,
हम को छिपा लो, और टीलों से कि
हम पर गिर पड़ो॥
९ हे इस्राएल, तू गिबा के दिनों से पाप
करता आया है; वे उसी में बने रहें,
क्या वे गिबा में कुटिल मनुष्यों के संग
लड़ाई में न फंसें? १० जब मेरी इच्छा
होगी तब मैं उन्हें ताड़ना दूंगा, और
देश देश के लोग उनके विरुद्ध इकट्ठे
हो जाएंगे, क्योंकि वे अपने दोनों अधर्मों
में फंसे हुए हैं॥
११ एप्रैम सीखी हुई बछिया है, जो
अन्न दावने से प्रसन्न होती है, परन्तु मैं ने
उसकी सुन्दर गर्दन पर जुआ रखा है, मैं
एप्रैम पर सवार चढ़ाऊंगा, यहूदा हल,
और याकूब हेंगा खींचेगा। १२ अपने लिये
धर्म का बीज बोओ, तब करुणा के अनुसार
खेत काटने पाओगे, अपनी पड़ती भूमि
को जोतो, देखो, अभी यहोवा के पीछे
हो लेने का समय है, कि वह आए और
तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए॥

* अर्थात् झगड़नेवाले।

१३ तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता
और अन्याय का खेत काटा है, और तुम ने
धोखे का फल खाया है। और यह इसलिये
हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर,
और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा
रखा था। १४ इस कारण तुम्हारे लोगों
में हुल्लड़ उठेगा, और तुम्हारे सब गढ़ ऐसे
नाश किए जाएंगे जैसा बेतर्बेल नगर युद्ध
के समय शल्मन के द्वारा नाश किया
गया, उस समय माताएं अपने बच्चों
समेत पटक दी गई थीं। १५ तुम्हारी
अत्यन्त बुराई के कारण बेतेल से भी
इसी प्रकार का व्यवहार किया जायेगा।
भोर होते ही इस्राएल का राजा पूरी
रीति से मिट जाएगा॥

११ जब इस्राएल बालक था, तब
मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने
पुत्र को मिस्र से बुलाया। २ परन्तु
जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही
वे भागे जाते थे, वे बाल देवताओं के
लिये बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों
के लिये धूप जलाते गए॥
३ मैं ही एप्रैम को पांव-पांव चलाता
था, और उनको गोद में लिए फिरता
था, परन्तु वे न जानते थे कि उनका
चंगा करनेवाला मैं हूं। ४ मैं उनको
मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता
था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत
खोलकर उसके साम्हने आहार रख दे,
वैसा ही मैं ने उन से किया॥
५ वह मिस्र देश में लौटने न पाएगा,
अश्शूर ही उसका राजा होगा, क्योंकि
उस ने मेरी ओर फिरने से इनकार कर
दिया है। ६ तलवार उनके नगरों में
चलेगी, और उनके बेंड़ों को पूरा नाश

करेगी, और यह उनकी युक्तियो के
कारण होगा। ७ मेरी प्रजा मुझ से
फिर जाने मे लगी रहती है, यद्यपि
वे उनको परमप्रधान की ओर बुलाते है,
तौभी उन मे से कोई भी मेरी महिमा
नही करता ।।

८ हे एप्रैम, मै तुझे क्योकर छोड दू ?
हे इस्राएल, मै क्योकर तुझे शत्रु के वश मे
कर दू ? मै क्योकर तुझे अदमा की नाई
छोड दू, और सबोयीम के समान कर
दू ? मेरा हृदय तो उलट पुलट हो गया,
मेरा मन स्नेह के मारे पिघल गया है*।
९ मै अपने क्रोध को भडकने न दूगा,
और न मै फिर एप्रैम को नाश करूगा,
क्योकि मै मनुष्य नही परमेश्वर हू, मै
तेरे बीच मे रहनेवाला पवित्र हू, मै
क्रोध करके न आऊगा ।।

१० वे यहोवा के पीछे पीछे चलेगे,
वह तो सिह की नाई गरजेगा, और
तेरे लडके पश्चिम दिशा से थरथराते
हुए आएगे। ११ वे मिस्र से चिडियो
की नाई और अश्शूर के देश से पण्डुकी
की भाति थरथराते हुए आएगे, और मै
उनको उन्ही के घरो मे बसा दूगा, यहोवा
की यही वाणी है ।।

१२ एप्रैम ने मिथ्या से, और इस्राएल
के घराने ने छल से मुझे घेर रखा है,
और यहूदा अब तक पवित्र और विश्वास-
योग्य परमेश्वर की ओर चचल बना
रहता है ।।

१२ एप्रैम पानी पीटता और
पुरवाई का पीछा करता रहता
है, वह लगातार झूठ और उत्पात को
बढाता रहता है, वे अश्शूर के साथ
वाचा बान्धते और मिस्र मे तेल भेजते
है ।।

२ यहूदा के साथ भी यहोवा का
मुकद्दमा है, और वह याकूब को उसके
चालचलन के अनुसार दण्ड देगा; उसके
कामो के अनुसार वह उसको बदला देगा।
३ अपनी माता की कोख ही मे उस ने
अपने भाई को अडगा मारा, और बडा
होकर वह परमेश्वर के साथ लडा।
४ वह दूत से लडा, और जीत भी गया,
वह रोया और उस से गिडगिडाकर बिनती
की। बेतेल मे वह उसको मिला, और
वही उस ने हम से बाते की। ५ यहोवा,
सेनाओ का परमेश्वर, जिसका स्मरण
यहोवा नाम से होता है। ६ इसलिये
तू अपने परमेश्वर की ओर फिर, कृपा
और न्याय के काम करता रह, और अपने
परमेश्वर की बाट निरन्तर जोहता रह ।।

७ वह व्योपारी है, और उसके हाथ
मे छल का तराजू है, अन्धेर करना ही
उसको भाता है। ८ एप्रैम कहता है, मै
धनी हो गया, मै ने सम्पत्ति प्राप्त की है,
मेरे किसी काम मे ऐसा अधर्म नही पाया
गया जिस से पाप लगे। ९ मै यहोवा,
मिस्र देश ही से तेरा परमेश्वर हू, मै
फिर तुझे तम्बुओ मे ऐसा बसाऊगा जैसा
नियत पर्व के दिनो मे हुआ करता है ।।

१० मै ने भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा बाते
की, और बार बार दर्शन देता रहा, और
भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा दृष्टान्त कहता
आया हू। ११ क्या गिलाद कुकर्मी नही ?
वे पूरे छली हो गए है। गिलगाल मे बैल
बलि किए जाते है, वरन उनकी वेदिया
उन ढेरो के समान है जो खेत की रेघारियो
के पास हो। १२ याकूब अराम के मैदान
मे भाग गया था, वहा इस्राएल ने एक

* मूल मे—मेरे पछतावे एक सग उबले है।

पत्नी के लिये सेवा की, और पत्नी के लिये
वह चरवाही करता था। १३ एक
भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहोवा इस्राएल को
मिस्र से निकाल ले आया, और भविष्यद्वक्ता
ही के द्वारा उसकी रक्षा हुई। १४ एप्रैम
ने अत्यन्त रिस दिलाई है, इसलिये उसका
किया हुआ खून उसी के ऊपर बना रहेगा,
और उस ने अपने परमेश्वर के नाम में
जो बट्टा लगाया है, वह उसी को लौटाया
जाएगा॥

१३ जब एप्रैम बोलता था, तब
लोग कांपते थे, और वह इस्राएल
में बड़ा था, परन्तु जब वह बाल के कारण
दोषी हो गया, तब वह मर गया। २ और
अब वे लोग पाप पर पाप बढ़ाते जाते हैं,
और अपनी बुद्धि से चान्दी ढालकर ऐसी
मूरतें बनाई हैं जो कारीगरों ही से बनीं।
उन्हीं के विषय लोग कहते हैं, जो नरमेध
करें, वे बछड़ों को चूमें! ३ इस कारण
वे भोर के मेघ, तड़के सूख जानेवाली
ओस, खलिहान पर से आंधी के मारे
उड़नेवाली भूसी, या चिमनी में से निकलते
हुए धूएं के समान होंगे॥

४ मिस्र देश ही से मैं यहोवा, तेरा
परमेश्वर हूं, तू मुझे छोड़ किसी को
परमेश्वर करके न जानना, क्योंकि मेरे
सिवा कोई तेरा उद्धारकर्ता नहीं है।
५ मैं ने उस समय तुझ पर मन लगाया
जब तू जंगल में वरन अत्यन्त सूखे देश में
था। ६ परन्तु जब इस्राएली चराए जाते
थे और वे तृप्त हो गए, तब तृप्त होने
पर उनका मन घमण्ड से भर गया,
इस कारण वे मुझ को भूल गए। ७ सो
मैं उनके लिये सिंह सा बना हूं, मैं चीते
की नाईं उनके मार्ग में घात लगाए रहूंगा।
८ मैं बच्चे छीनी हुई रीछनी के समान
बनकर उनको मिलूंगा, और उनके हृदय
की झिल्ली को फाड़ूंगा, और सिंह की
नाईं उनको वहीं खा डालूंगा, जैसे बन-पशु
उनको फाड़ डाले॥

९ हे इस्राएल, तेरे विनाश का कारण
यह है, कि तू मेरा अर्थात् अपने सहायक
का विरोधी है। १० अब तेरा राजा
कहां रहा कि तेरे सब नगरों में वह तुझे
बचाए? और तेरे न्यायी कहां रहे,
जिनके विषय में तू ने कहा था कि मेरे लिये
राजा और हाकिम ठहरा दे? ११ मैं ने
क्रोध में आकर तेरे लिये राजा बनाये,
और फिर जलजलाहट में आकर उनको
हटा भी दिया। १२ एप्रैम का अधर्म
गठा हुआ है, उसका पाप संचय किया
हुआ है। १३ उसको जच्चा की सी
पीड़ाएं उठेंगी, परन्तु वह निर्बुद्धि लड़का
है जो जन्म के समय* ठीक से
नहीं आता॥

१४ मैं उसको अधोलोक के वश से
छुड़ा लूंगा और मृत्यु से उसको छुटकारा
दूंगा। हे मृत्यु, तेरी मारने की शक्ति†
कहां रही? हे अधोलोक, तेरी नाश
करने की शक्ति कहां रही? मैं फिर
कभी नहीं पछताऊंगा॥

१५ चाहे वह अपने भाइयों से अधिक
फूले-फले, तौभी पुरवाई उस पर चलेगी,
और यहोवा की ओर से मरुस्थल से
आएगी, और उसका कुण्ड सूखेगा,
और उसका सोता निर्जल हो जाएगा।
उसकी रखी हुई सब मनभावनी वस्तुएं
वह लूट ले जाएगा। १६ सामरिया दोषी

* मूल में—लड़कों के टूट पड़ने के
स्थान में।

† मूल में—तेरी मरियां।

ठहरेगा, क्योकि उस ने अपने परमेश्वर से
बलवा किया है, वे तलवार से मारे जाएगे,
उनके बच्चे पटके जाएगे, और उनकी
गर्भवती स्त्रिया चीर डाली जाएगी ॥

१४ हे इस्राएल, अपने परमेश्वर
यहोवा के पास लौट आ, क्योकि
तू ने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई
है। २ बाते सीखकर * और यहोवा की
ओर फिरकर, उस से कह, सब अधर्म
दूर कर, अनुग्रह से हम को ग्रहण कर,
तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढाएगे †।
३ अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम
घोडो पर सवार न होगे, और न हम
फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओ से कहेगे,
तुम हमारे ईश्वर हो, क्योकि अनाथ पर
तू ही दया करता है ॥
४ मै उनकी भटक जाने की आदत को
दूर करूगा, मै सेतमेत उन से प्रेम करूगा,
क्योकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया
है। ५ मै इस्राएल के लिये ओस के
समान हूगा, वह सोसन की नाईं फूले-
फलेगा, और लबानोन की नाईं जड
फैलाएगा। ६ उसकी जड से पौधे फूटकर
निकलेगे, उसकी शोभा जलपाई की सी,
और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी
होगी। ७ जो उसकी छाया मे बैठेगे,
वे अन्न की नाई बढेगे, वे दाखलता की
नाई फूले-फलेगे, और उसकी कीर्त्ति
लबानोन के दाखमधु की सी होगी ॥
८ एप्रैम कहेगा, मूरतों से अब मेरा
और क्या काम ? मै उसकी सुनकर उस
पर दृष्टि बनाए रखूगा। मै हरे सनौवर
सा हू, मुझी से तू फल पाया करेगा ॥
९ जो बुद्धिमान हो, वही इन बातो
को समझेगा, जो प्रवीण हो, वही इन्हे
बूझ सकेगा, क्योकि यहोवा के मार्ग
सीधे है, और धर्मी उन मे चलते रहेगे,
परन्तु अपराधी उन मे ठोकर खाकर
गिरेगे ॥

* मूल में—अपने साथ बातें लो।
† मूल में—हम बैल अपने होंठ फेर देंगे।

योएल

१ यहोवा का वचन जो पतूएल के
पुत्र योएल के पास पहुचा, वह यह
है २ हे पुरनियो, सुनो, हे देश के सब
रहनेवालो, कान लगाकर सुनो! क्या
ऐसी बात तुम्हारे दिनो मे, वा तुम्हारे
पुरखाओ के दिनो मे कभी हुई है ?
३ अपने लडकेवालो से इसका वर्णन करो,
और वे अपने लडकेवालो से, और फिर
उनके लडकेवाले आनेवाली पीढी के लोगो
से ॥
४ जो कुछ गाजाम नाम टिड्डी से
बचा, उसे अर्बे नाम टिड्डी ने खा लिया।
और जो कुछ अर्बे नाम टिड्डी से बचा,
उसे येलेक नाम टिड्डी ने खा लिया, और

जो कुछ येलेक नाम टिड्डी से बचा, उसे
हासील नाम टिड्डी ने खा लिया है।
५ हे मतवालो, जाग उठो, और रोओ,
और हे सब दाखमधु पीनेवालो, नये
दाखमधु के कारण हाय, हाय, करो,
क्योंकि वह तुम को अब न मिलेगा *।।
६ देखो, मेरे देश पर एक जाति ने
चढ़ाई की है, वह सामर्थी है, और उसके
लोग अनगिनित हैं, उसके दांत सिंह के
से, और डाढ़ें सिंहनी की सी हैं। ७ उस
ने मेरी दाखलता को उजाड़ दिया, और
मेरे अंजीर के वृक्ष को तोड़ डाला है,
उस ने उसकी सब छाल छीलकर उसे
गिरा दिया है, और उसकी डालियां
छिलने से सफेद हो गई हैं।।
८ जैसे युवती अपने पति के लिये कटि
में टाट बान्धे हुए विलाप करती है, वैसे
ही तुम भी विलाप करो। ९ यहोवा के
भवन में न तो अन्नबलि और न अर्घ
आता है। उसके टहलुए जो याजक हैं,
वे विलाप कर रहे हैं। १० खेती मारी
गई, भूमि विलाप करती है, क्योंकि
अन्न नाश हो गया, नया दाखमधु सूख
गया, तेल भी सूख गया है।।
११ हे किसानो, लज्जित हो, हे दाख
की बारी के मालियो, गेहूं और जव के
लिये हाय, हाय, करो, क्योंकि खेती
मारी गई है। १२ दाखलता सूख गई,
और अंजीर का वृक्ष कुम्हला गया है।
अनार, ताड़, सेब, वरन मैदान के सब वृक्ष
सूख गए हैं, और मनुष्यों का हर्ष जाता
रहा है †।।
१३ हे याजको, कटि में टाट बान्धकर
छाती पीट-पीट के रोओ! हे वेदी के
टहलुओ, हाय, हाय, करो। हे मेरे परमेश्वर
के टहलुओ, आओ, टाट ओढ़े हुए रात
बिताओ! क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के
भवन में अन्नबलि और अर्घ अब नहीं
आते।।
१४ उपवास का दिन ठहराओ *, महा-
सभा का प्रचार करो। पुरनियों को,
वरन देश के सब रहनेवालों को भी अपने
परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठे करके
उसकी दोहाई दो।।
१५ उस दिन के कारण हाय! क्योंकि
यहोवा का दिन निकट है। वह सर्वशक्ति-
मान की ओर से सत्यानाश का दिन होकर
आएगा। १६ क्या भोजनवस्तुएं हमारे
देखते नाश नहीं हुईं? क्या हमारे
परमेश्वर के भवन का आनन्द और मगन
जाता नहीं रहा?
१७ बीज ढेलों के नीचे झुलस गए,
भण्डार सूने पड़े हैं, खत्ते गिर पड़े हैं,
क्योंकि खेती मारी गई। १८ पशु कैसे
कराहते हैं? झुण्ड के झुण्ड गाय-बैल
विकल हैं, क्योंकि उनके लिये चराई नहीं
रही, और झुण्ड के झुण्ड भेड़-बकरियां
पाप का फल भोग रही हैं।।
१९ हे यहोवा, मैं तेरी दोहाई देता
हूं, क्योंकि जंगल की चराइयां आग का
कौर हो गईं, और मैदान के सब वृक्ष
ज्वाला से जल गए। २० वन-पशु भी
तेरे लिये हांफते हैं, क्योंकि जल के सोते
सूख गए, और जंगल की चराइयां आग
का कौर हो गईं।।

२ सिय्योन में नरसिंगा फूंको, मेरे
पवित्र पर्वत पर सांस बान्धकर फूंको!
देश के सब रहनेवाले कांप उठें, क्योंकि

* मूल में—वह तुम्हारे मुंह से कट गया।
† मूल में—लजा गया है।
* मूल में—उपवास पवित्र करो।

यहोवा का दिन आता है, वरन वह निकट
ही है। २ वह अन्धकार और तिमिर
का दिन है, वह बदली का दिन है और
अन्धियारे का सा फैलता है। जैसे भोर
का प्रकाश पहाड़ों पर फैलता है, वैसे ही
एक बड़ी और सामर्थी जाति आएगी;
प्राचीनकाल में वैसी कभी न हुई, और
न उसके बाद भी फिर किसी पीढ़ी में*
होगी ॥

३ उसके आगे आगे तो आग भस्म
करती जाएगी, और उसके पीछे पीछे
लौ जलाती जाएगी। उसके आगे की
भूमि तो एदेन की बारी के समान होगी,
परन्तु उसके पीछे की भूमि उजाड़
मरुस्थल बन जाएगी, और उस से कुछ न
बचेगा ॥

४ उनका रूप घोड़ों का सा है, और वे
सवारी के घोड़ों की नाईं दौड़ते हैं।
५ उनके कूदने का शब्द ऐसा होता है
जैसा पहाड़ों की चोटियों पर रथों के
चलने का, वा खूटी भस्म करती हुई
लौ का, या जैसे पांति बान्धे हुए बली
योद्धाओं† का शब्द होता है ॥

६ उनके सामने जाति जाति के लोग
पीड़ित होते हैं, सब के मुख मलीन होते हैं।
७ वे शूरवीरों की नाईं दौड़ते, और
योद्धाओं की भांति शहरपनाह पर चढ़ते
हैं। वे अपने अपने मार्ग पर चलते हैं, और
कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा।
८ वे एक दूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे
अपनी अपनी राह पर चलते हैं, शस्त्रों
का साम्हना करने से भी उनकी पांति नहीं
टूटती। ९ वे नगर में इधर-उधर दौड़ते,
और शहरपनाह पर चढ़ते हैं, वे घरों में
ऐसे घुसते हैं जैसे चोर खिड़कियों से
घुसते हैं ॥

१० उनके आगे पृथ्वी कांप उठती है,
और आकाश थरथराता है। सूर्य और
चन्द्रमा काले हो जाते हैं, और तारे नहीं
झलकते*। ११ यहोवा अपने उस दल
के आगे अपना शब्द सुनाता है, क्योंकि
उसकी सेना बहुत ही बड़ी है; जो अपना
वचन पूरा करनेवाला है, वह सामर्थी
है। क्योंकि यहोवा का दिन बड़ा और
अति भयानक है, उसको कौन सह
सकेगा ?

१२ तौभी यहोवा की यह वाणी है,
अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते
अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।
१३ अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को
फाड़कर अपने परमेश्वर यहोवा की ओर
फिरो, क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु,
विलम्ब से क्रोध करनेवाला, करुणानिधान
और दु:ख देकर पछतानेहारा है।
१४ क्या जाने वह फिरकर पछताए और
ऐसी आशीष दे जिस से तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा का अन्नबलि और अर्घ दिया
जाए ॥

१५ सिय्योन में नरसिंगा फूंको, उपवास
का दिन ठहराओ†, महासभा का प्रचार
करो, १६ लोगों को इकट्ठा करो। सभा
को पवित्र करो, पुरनियों को बुला लो;
बच्चों और दूधपीउवों को भी इकट्ठा
करो। दुल्हा अपनी कोठरी से, और
दुल्हिन भी अपने कमरे से निकल आए ॥

१७ याजक जो यहोवा के टहलुए हैं,
वे आंगन और वेदी के बीच में रो रोकर
कहें, हे यहोवा अपनी प्रजा पर तरस

* मूल में—पीढ़ी पीढ़ी के बरसों तक।
† मूल में—बली लोगों।

* मूल में—तारे अपनी झलक समेटेंगे।
† मूल में—उपवास पवित्र करो।

था, और अपने निज भाग की नामधराई
न होने दे, न अन्यजातियां उसकी
उपमा देने पाएं। जाति जाति के लोग
आपस में क्यों कहने पाएं, कि उनका
परमेश्वर कहां रहा?

१८ तब यहोवा को अपने देश के विषय
में जलन हुई, और उस ने अपनी प्रजा
पर तरस खाया। १९ यहोवा ने अपनी
प्रजा के लोगों को उत्तर दिया, सुनो,
मैं अन्न और नया दाखमधु और ताजा
तेल तुम्हें देने पर हूं, और तुम उन्हें पाकर
तृप्त होगे, और मैं भविष्य में अन्यजातियों
से तुम्हारी नामधराई न होने दूंगा॥

२० मैं उत्तर की ओर से आई हुई
सेना को तुम्हारे पास से दूर करूंगा,
और उसे एक निर्जल और उजाड़ देश में
निकाल दूंगा, उसका आगा तो पूरब
के ताल की ओर और उसका पीछा
पश्चिम के समुद्र की ओर होगा, उस से
दुर्गन्ध उठेगी, और उसकी सड़ी गन्ध
फैलेगी, क्योंकि उस ने बहुत बुरे काम
किए हैं॥

२१ हे देश, तू मत डर, तू मगन
हो और आनन्द कर, क्योंकि यहोवा ने
बड़े बड़े काम किए हैं! २२ हे मैदान
के पशुओ, मत डरो, क्योंकि जंगल में
चराई उगेगी, और वृक्ष फलने लगेंगे,
अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना
अपना बल दिखाने लगेंगी॥

२३ हे सिय्योनियो*, तुम अपने
परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो, और
आनन्द करो, क्योंकि तुम्हारे लिये वह
वर्षा, अर्थात् बरसात की पहिली वर्षा
बहुतायत से† देगा, और पहिले के
समान अगली और पिछली वर्षा को भी
बरसाएगा॥

२४ तब खलिहान अन्न से भर जाएंगे,
और रसकुण्ड नये दाखमधु और ताज़े
तेल से उमड़ेंगे। २५ और जिन वर्षों
की उपज अर्बे नाम टिड्डियों, और येलेक,
और हासील ने, और गाजाम नाम टिड्डियों
ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिसको मैं ने
तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी
हानि तुम को भर दूंगा॥

२६ तुम पेट भरकर खाओगे, और
तृप्त होगे, और अपने परमेश्वर यहोवा के
नाम की स्तुति करोगे, जिस ने तुम्हारे
लिये आश्चर्य के काम किए हैं। और
मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी।
२७ तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल
के बीच में हूं, और मैं, यहोवा, तुम्हारा
परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं है।
और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न
टूटेगी॥

२८ उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों
पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा, तुम्हारे
बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और
तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे
जवान दर्शन देखेंगे। २९ तुम्हारे दास
और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना
आत्मा उण्डेलूंगा॥

३० और मैं आकाश में और पृथ्वी पर
चमत्कार, अर्थात् लोहू और आग और
धूएं के खम्भे दिखाऊंगा। ३१ यहोवा
के उस बड़े और भयानक दिन के आने से
पहिले सूर्य अन्धियारा होगा और चन्द्रमा
रक्त सा हो जाएगा। ३२ उस समय
जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह
छुटकारा पाएगा, और यहोवा के वचन

* मूल में—सिय्योन के लड़को।
† मूल में—धर्म के लिये।

के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और
यरूशलेम मे जिन बचे हुओ को यहोवा
बुलाएगा, वे उद्धार पाएगे ॥

३ क्योकि सुनो, जिन दिनो मे और
जिस समय मे यहूदा और यरूशलेम-
वासियो को बंधुआई से लौटा ले आऊगा,
२ उस समय मे सब जातियो को इकट्ठी
करके यहोशापात की तराई मे ले जाऊगा,
और वहा उनके साथ अपनी प्रजा अर्थात्
अपने निज भाग इस्राएल के विषय मे
जिसे उन्हो ने अन्यजातियो मे तितर-बितर
करके मेरे देश को बाट लिया है, उन से
मुकद्दमा लडूगा। ३ उन्हो ने तो मेरी
प्रजा पर चिट्ठी डाली, और एक लडका
वेश्या के बदले मे दे दिया, और एक
लडकी बेचकर दाखमधु पीया है ॥

४ हे सोर, और सीदोन और पलिश्तीन
के सब प्रदेशो, तुम को मुझ से क्या काम?
क्या तुम मुझ को बदला दोगे? यदि तुम
मुझे बदला भी दो, तो मै शीघ्र ही तुम्हारा
दिया हुआ बदला, तुम्हारे ही सिर पर
डाल दूगा। ५ क्योकि तुम ने मेरी
चान्दी-सोना ले लिया, और मेरी अच्छी
और मनभावनी वस्तुए अपने मन्दिरो मे
ले जाकर रखी है, ६ और यहूदियो और
यरूशलेमियो को यूनानियो के हाथ इस-
लिये बेच डाला है कि वे अपने देश से
दूर किए जाए। ७ इसलिये सुनो, मै
उनको उस स्थान से, जहा के जानेवालो के
हाथ तुम ने उनको बेच दिया, बुलाने*
पर हू, और तुम्हारा दिया हुआ बदला,
तुम्हारे ही सिर पर डाल दूगा। ८ मै
तुम्हारे बेटे-बेटियो को यहूदियो के हाथ
बिकवा दूगा, और वे उनको शबाइयो

* मूल मे—जगाऊगा।

के हाथ बेच देगे जो दूर देश के रहनेवाले
है; क्योकि यहोवा ने यह कहा है ॥

९ जाति जाति मे यह प्रचार करो,
युद्ध की तैयारी करो*, अपने शूरवीरो
को उभारो। सब योद्धा निकट आकर
लडने को चढे। १० अपने अपने हल
की फाल को पीटकर तलवार, और अपनी
अपनी हसिया को पीटकर बर्छी बनाओ,
जो बलहीन हो वह भी कहे, मै वीर हू ॥

११ हे चारो ओर के जाति जाति के
लोगो, फुर्ती करके आओ और इकट्ठे
हो जाओ। हे यहोवा, तू भी अपने शूरवीरों
को वहा ले जा। १२ जाति जाति के
लोग उभरकर चढ जाए और यहोशापात
की तराई मे जाए, क्योकि वहा मै चारो
ओर की सारी जातियो का न्याय करने
को बैठूगा ॥

१३ हसुआ लगाओ, क्योकि खेत पक
गया है। आओ, दाख रौदो, क्योकि
हौज़ भर गया है। रसकुण्ड उमण्डने
लगे, क्योकि उनकी बुराई बहुत बडी है ॥

१४ निबटारे की तराई मे भीड की
भीड है! क्योकि निबटारे की तराई मे
यहोवा का दिन निकट है। १५ सूर्य
और चन्द्रमा अपना अपना प्रकाश न देगे,
और न तारे चमकेगे ॥

१६ और यहोवा सिय्योन से गरजेगा,
और यरूशलेम से बडा शब्द सुनाएगा,
और आकाश और पृथ्वी थरथराएगे।
परन्तु यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरण-
स्थान और इस्राएलियो के लिये गढ
ठहरेगा ॥

१७ इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा
जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास

* मूल मे—युद्ध पवित्र करो।

किए रहता है, वही हमारा परमेश्वर है।
और यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और परदेशी
उस में होकर फिर न जाने पाएंगे॥
१८ और उस समय पहाड़ों से नया
दाखमधु टपकने लगेगा, और टीलों से
दूध बहने लगेगा, और यहूदा देश के
सब नाले जल से भर जाएंगे, और यहोवा
के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा,
जिस से शित्तीम का नाम नाला सींचा
जाएगा॥
१९ यहूदियों पर उपद्रव करने के
कारण, मिस्र उजाड़ और एदोम उजड़ा
हुआ मरुस्थल हो जाएगा, क्योंकि उन्हों ने
उनके देश में निर्दोष की हत्या की थी।
२० परन्तु यहूदा सर्वदा और यरूशलेम
पीढ़ी पीढ़ी तक बना रहेगा। २१ क्योंकि
उनका खून, जो अब तक मैं ने पवित्र
नहीं ठहराया था, उसे अब पवित्र
ठहराऊंगा, क्योंकि यहोवा सिय्योन में वास
किए रहता है॥

आमोस

१ आमोस तकोई जो भेड़-बकरियों
के चरानेवालों में से था, उसके ये
वचन हैं जो उस ने यहूदा के राजा
उज्जिय्याह के और योआश के पुत्र
इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में,
भुईंडोल से दो वर्ष पहिले, इस्राएल के
विषय में दर्शन देखकर कहे॥
२ यहोवा सिय्योन से गरजेगा, और
यरूशलेम से अपना शब्द सुनाएगा, तब
चरवाहों की चराइयां विलाप करेंगी,
और कर्म्मेल की चोटी झुलस जाएगी॥
३ यहोवा यों कहता है, दमिश्क के
तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण
मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*, क्योंकि
उन्हों ने गिलाद को लोहे के दांवनेवाले
यन्त्रों से रौंद डाला है। ४ इसलिये मैं
हजाएल के राजभवन में आग लगाऊंगा,
और उस से बेन्हदद के राजभवन भी
भस्म हो जाएंगे। ५ मैं दमिश्क के बेण्डों
को तोड़ डालूंगा, और आवेन नाम तराई
के रहनेवालों को और एदेन के घर में
रहनेवाले राजदण्डधारी को नाश करूंगा,
और अराम के लोग बंधुए होकर कीर
को जाएंगे, यहोवा का यही वचन है॥
६ यहोवा यों कहता है, अज्जा के तीन
क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं
उसका दण्ड न छोड़ूंगा*, क्योंकि वे सब
लोगों को बंधुआ करके ले गए कि उन्हें
एदोम के वश में कर दें। ७ इसलिये मैं
अज्जा की शहरपनाह में आग लगाऊंगा,
और उस से उसके भवन भस्म हो जाएंगे।
८ मैं अशदोद के रहनेवालों को और

---

* मूल में—मैं उसको न फेरूंगा।

* मूल में—मैं उसको न करूंगा।

अस्कलोन के राजदण्डधारी को भी नाश
करूंगा, मैं अपना हाथ एक्रोन के विरुद्ध
चलाऊंगा, और शेष पलिश्ती लोग नाश
होंगे, परमेश्वर यहोवा का यही वचन है ॥
९ यहोवा यों कहता है, सोर के तीन
क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं
उसका दण्ड न छोड़ूंगा, क्योंकि उन्हों ने
सब लोगों को बंधुआ करके एदोम के
वश में कर दिया और भाई की सी वाचा
का स्मरण न किया। १० इसलिये मैं
सोर की शहरपनाह पर आग लगाऊंगा,
और उस से उसके भवन भी भस्म हो
जाएंगे ॥
११ यहोवा यों कहता है, एदोम के
तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण
मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*, क्योंकि
उस ने अपने भाई को तलवार लिए हुए
खदेड़ा और कुछ भी दया न की†, परन्तु
क्रोध से उनको लगातार फाड़ता ही रहा,
और अपने रोष को अनन्त काल के लिये
बनाए रहा। १२ इसलिये मैं तेमान में
आग लगाऊंगा, और उस से बोस्रा के
भवन भस्म हो जाएंगे ॥
१३ यहोवा यों कहता है, अम्मोन के
तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण
मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा‡, क्योंकि उन्हों
ने अपने सिवाने को बढ़ा लेने के लिये गिलाद
की गर्भिणी स्त्रियों का पेट चीर डाला।
१४ इसलिये मैं रब्बा की शहरपनाह में
आग लगाऊंगा, और उस से उसके भवन
भी भस्म हो जाएंगे। उस युद्ध के दिन में
ललकार होगी, वह आंधी वरन बवण्डर
का दिन होगा, और उनका राजा अपने
हाकिमों समेत बंधुआई में जाएगा, यहोवा
का यही वचन है ॥

२ यहोवा यों कहता है, मोआब के
तीन क्या, वरन चार अपराधों के
कारण, मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*,
क्योंकि उस ने एदोम के राजा की हड्डियों
को जलाकर चूना कर दिया। २ इसलिये
मैं मोआब में आग लगाऊंगा, और उस
से करिय्योत के भवन भस्म हो जाएंगे,
और मोआब हुल्लड़ और ललकार, और
नरसिंगे के शब्द होते-होते मर जाएगा।
३ मैं उसके बीच में से न्यायी का नाश
करूंगा, और साथ ही साथ उसके सब
हाकिमों को भी घात करूंगा, यहोवा का
यही वचन है ॥
४ यहोवा यों कहता है, यहूदा के
तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण,
मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा, क्योंकि उन्हों
ने यहोवा की व्यवस्था को तुच्छ जाना,
और मेरी विधियों को नहीं माना, और
अपने झूठे देवताओं के कारण जिनके पीछे
उनके पुरखा चलते थे, वे भी भटक गए
हैं। ५ इसलिये मैं यहूदा में आग
लगाऊंगा, और उस से यरूशलेम के भवन
भस्म हो जाएंगे ॥
६ यहोवा यों कहता है, इस्राएल के
तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण,
मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा*, क्योंकि
उन्हों ने निर्दोष को रुपये के लिये और
दरिद्र को एक जोड़ी जूतियों के लिये बेच
डाला है। ७ वे कंगालों के सिर पर की
धूलि का भी लालच करते, और नम्र
लोगों को मार्ग से हटा देते हैं, और
बाप-बेटा दोनों एक ही कुमारी के पास

* मूल में—मैं उसको न करूंगा।
† मूल में—अपनी दया को बिगाड़ा।
‡ मूल में—मैं उसको न फेरूंगा।

* मूल में—मैं उसको न फेरूंगा।

जाते हैं, जिस से मेरे पवित्र नाम को
अपवित्र ठहराए। ८ वे हर एक वेदी के
पास बन्धक के वस्त्रों पर सोते हैं, और
दण्ड के रुपये से मोल लिया हुआ दाखमधु
अपने देवता के घर में पी लेते हैं॥

९ मैं ने उनके साम्हने से एमोरियों
को नाश किया था, जिनकी लम्बाई
देवदारों की सी, और जिनका बल बांज
वृक्षों का सा था, तौभी मैं ने ऊपर से
उसके फल, और नीचे से उसकी जड़
नाश की। १० और मैं तुम को मिस्र देश
से निकाल लाया, और जंगल में चालीस
वर्ष तक लिए फिरता रहा, कि तुम
एमोरियों के देश के अधिकारी हो जाओ।
११ और मैं ने तुम्हारे पुत्रों में से नबी
होने के लिये और तुम्हारे कुछ जवानों में
से नाज़ीर होने के लिये ठहराया। हे
इस्राएलियो, क्या यह सब सच नहीं है?
यहोवा की यह वाणी है। १२ परन्तु
तुम ने नाज़ीरों को दाखमधु पिलाया,
और नबियों को आज्ञा दी कि भविष्यद्वाणी
न करें॥

१३ देखो, मैं तुम को ऐसा दबाऊंगा,
जैसी पूलों से भरी हुई गाड़ी नीचे को
दबाई जाती है*। १४ इसलिये वेग
दौड़नेवाले को भाग जाने का स्थान न
मिलेगा, और सामर्थी का सामर्थ कुछ
काम न देगा, और न पराक्रमी अपना
प्राण बचा सकेगा, १५ धनुर्धारी खड़ा
न रह सकेगा, और फुर्ती से दौड़नेवाला
न बचेगा, सवार भी अपना प्राण न बचा
सकेगा, १६ और शूरवीरों में जो अधिक
धीर हो, वह भी उस दिन नंगा होकर
भाग जाएगा, यहोवा की यही वाणी है॥

* वा तुम्हारे नीचे ऐसा दबा हूं जैसे गाड़ी
जो पूलों से भरी हो दबी रहती है।

३ हे इस्राएलियो, यह वचन सुनो
जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में
अर्थात् उस सारे कुल के विषय में कहा है
जिसे मैं मिस्र देश से लाया हूं २ पृथ्वी
के सारे कुलों में से मैं ने केवल तुम्हीं पर
मन लगाया है, इस कारण मैं तुम्हारे
सारे अधर्म के कामों का दण्ड दूंगा॥

३ यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न
हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?
४ क्या सिंह बिना आहेर पाए वन में
गरजेंगे? क्या जवान सिंह बिना कुछ
पकड़े अपनी मांद में से गुर्राएगा?
५ क्या चिड़िया बिना फन्दा लगाए
फंसेगी? क्या बिना कुछ फंसे फन्दा
भूमि पर से उचकेगा? ६ क्या किसी
नगर में नरसिंगा फूंकने पर लोग न
थरथराएंगे? क्या यहोवा के बिना भेजे
किसी नगर में कोई विपत्ति पड़ेगी?
७ इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास
भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म बिना
प्रगट किए कुछ भी न करेगा। ८ सिंह
गरजा, कौन न डरेगा? परमेश्वर
यहोवा बोला, कौन भविष्यद्वाणी न
करेगा?

९ अशदोद के भवन और मिस्र देश के
राजभवन पर प्रचार करके कहो, सामरिया
के पहाड़ों पर इकट्ठे होकर देखो कि उस में
क्या ही बड़ा कोलाहल और उसके बीच
क्या ही अन्धेर के काम हो रहे हैं।
१० यहोवा की यह वाणी है, कि जो लोग
अपने भवनों में उपद्रव और डकैती का धन
बटोर रखते हैं, वे सीधाई से काम करना
जानते ही नहीं। ११ इस कारण पर-
मेश्वर यहोवा यों कहता है, देश का घेरने-
वाला एक शत्रु होगा, और वह तेरा बल
तोड़ेगा, और तेरे भवन लूटे जाएंगे॥

१२ यहोवा यों कहता है, जिस
भांति चरवाहा सिंह के मुंह में दो टांगें वा
कान का एक टुकड़ा छुड़ाता है, वैसे ही
इस्राएली लोग, जो सामरिया में बिछौने के
एक कोने वा रेशमी गद्दी पर बैठा करते हैं,
वे भी छुड़ाए जाएंगे ।।

१३ सेनाओं के परमेश्वर, प्रभु यहोवा
की यह वाणी है, देखो, और याकूब के
घराने में यह बात चिताकर कहो, १४ जिस
समय मैं इस्राएल को उसके अपराधों का
दण्ड दूंगा, उसी समय मैं बेतेल की वेदियों
को भी दण्ड दूंगा, और वेदी के सींग टूटकर
भूमि पर गिर पड़ेंगे। १५ और मैं जाड़े
के भवन को और धूपकाल के भवन, दोनों
को गिराऊंगा, और हाथीदांत के बने भवन
भी नाश होंगे, और बड़े बड़े घर नाश हो
जाएंगे, यहोवा की यही वाणी है ।।

४ हे बाशान की गायो, यह वचन
सुनो, तुम जो सामरिया पर्वत पर हो,
जो कंगालों पर अन्धेर करती, और दरिद्रों
को कुचल डालती हो, और अपने अपने पति
से कहती हो कि ला, दे हम पीएं! २ पर-
मेश्वर यहोवा अपनी पवित्रता की शपथ
खाकर कहता है, देखो, तुम पर ऐसे दिन
आनेवाले हैं, कि तुम कटियाओं से, और
तुम्हारी सन्तान मछली की बन्सियों से खींच
लिए जाएंगे। ३ और तुम बाड़े के नाकों
से होकर सीधी निकल जाओगी और
हर्मोन में डाली जाओगी, यहोवा की यही
वाणी है ।।

४ बेतेल में आकर अपराध करो, और
गिलगाल में आकर बहुत से अपराध करो,
अपने चढ़ावे भोर को, और अपने दशमांश
हर तीसरे दिन ले आया करो, ५ धन्य-
वादबलि खमीर मिलाकर चढ़ाओ, और
अपने स्वेच्छाबलियों की चर्चा चलाकर
उनका प्रचार करो, क्योंकि हे इस्राएलियो,
ऐसा करना तुमको भावता है, परमेश्वर
यहोवा की यही वाणी है ।।

६ मैं ने तो तुम्हारे सब नगरों में दांत
की सफाई करा दी, और तुम्हारे सब स्थानों
में रोटी की घटी की है, तौभी तुम मेरी
ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही
वाणी है ।।

७ और जब कटनी के तीन महीने रह
गए, तब मैं ने तुम्हारे लिये वर्षा न की,
मैं ने एक नगर में जल बरसाकर दूसरे में
न बरसाया, एक खेत में जल बरसा, और
दूसरा खेत जिस में न बरसा, वह सूख गया।
८ इसलिये दो तीन नगरों के लोग पानी
पीने को मारे मारे फिरते हुए एक ही नगर
में आए, परन्तु तृप्त न हुए, तौभी तुम
मेरी ओर न फिरे, यहोवा की यही
वाणी है ।।

९ मैं ने तुमको लूह और गेरुई से मारा
है, और जब तुम्हारी वाटिकाएं और दाख
की बारियां, और अंजीर और जलपाई के
वृक्ष बहुत हो गए, तब टिड्डियां उन्हें खा
गईं, तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,
यहोवा की यही वाणी है ।।

१० मैं ने तुम्हारे बीच में मिस्र देश की
सी मरी फैलाई, मैं ने तुम्हारे घोड़ों को
छिनवा कर तुम्हारे जवानों को तलवार से
घात करा दिया, और तुम्हारी छावनी
की दुर्गन्ध तुम्हारे पास पहुंचाई, तौभी तुम
मेरी ओर फिरकर न आए, यहोवा की यही
वाणी है ।।

११ मैं ने तुम में से कई एक को ऐसा
उलट दिया, जैसे परमेश्वर ने सदोम और
अमोरा को उलट दिया था, और तुम आग
से निकाली हुई लुकटी के समान ठहरे,

तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आए,
यहोवा की यही वाणी है ॥
१२ इस कारण, हे इस्राएल, मैं तुझ से
ऐसा ही करूंगा, और इसलिये कि मैं तुझ
में यह काम करने पर हूं, हे इस्राएल, अपने
परमेश्वर के साम्हने आने के लिये तैयार
हो जा ॥
१३ देख, पहाड़ों का बनानेवाला और
पवन का सिरजनेवाला, और मनुष्य को
उसके मन का विचार बतानेवाला और
भोर को अन्धकार करनेवाला, और जो
पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर चलनेवाला है,
उसी का नाम सेनाओं का परमेश्वर यहोवा
है ॥

५ हे इस्राएल के घराने, इस विलाप
के गीत के वचन सुन जो मैं तुम्हारे
विषय में कहता हूं २ इस्राएल की कुमारी
कन्या गिर गई, और फिर उठ न सकेगी,
वह अपनी ही भूमि पर पटक दी गई है,
और उसका उठानेवाला कोई नहीं ॥
३ क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता
है, जिस नगर से हजार निकलते थे, उस में
इस्राएल के घराने के सौ ही बचे रहेंगे,
और जिस से सौ निकलते थे, उस में दस
बचे रहेंगे ॥
४ यहोवा, इस्राएल के घराने से यों
कहता है, मेरी खोज में लगो, तब जीवित
रहोगे। ५ बेतेल की खोज में न लगो,
न गिलगाल में प्रवेश करो, और न बेर्शेबा
को जाओ, क्योंकि गिलगाल निश्चय बंधु-
आई में जाएगा, और बेतेल सूना पड़ेगा ॥
६ यहोवा की खोज करो, तब जीवित
रहोगे, नहीं तो वह यूसुफ के घराने पर आग
की नाईं भड़केगा, और वह उसे भस्म करेगी,
और बेतेल में कोई उसका बुझानेवाला
न होगा। ७ हे न्याय के बिगाड़नेवालो *
और धर्म को मिट्टी में मिलानेवालो !
८ जो कचपचिया और मृगशिरा का
बनानेवाला है, जो घोर अन्धकार को भोर
का प्रकाश बनाता है, जो दिन को अन्धकार
करके रात बना देता है, और समुद्र का
जल स्थल के ऊपर बहा देता है, उसका
नाम यहोवा है। ९ वह तुरन्त ही बलवन्त
को विनाश कर देता, और गढ़ का भी
सत्यानाश करता है ॥
१० जो सभा में † उलाहना देता है
उस से वे बैर रखते हैं, और खरी बात
बोलनेवाले से घृणा करते हैं। ११ तुम
जो कंगालों को लताड़ा करते, और भेंट
कहकर उन से अन्न हर लेते हो, इसलिये
जो घर तुम ने गढ़े हुए पत्थरों के बनाए हैं,
उन में रहने न पाओगे, और जो मन-
भावनी दाख की बारियां तुम ने लगाई
हैं, उनका दाखमधु न पीने पाओगे।
१२ क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे पाप
भारी हैं। तुम धर्मी को सताते और घूस
लेते, और फाटक में दरिद्रों का न्याय
बिगाड़ते हो। १३ इस कारण जो बुद्धि-
मान् हो, वह ऐसे समय चुपका रहे, क्योंकि
समय बुरा है ॥
१४ हे लोगो, बुराई को नहीं, भलाई
को ढूंढ़ो, ताकि तुम जीवित रहो, और
तुम्हारा यह कहना सच ठहरे कि सेनाओं
का परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग है।
१५ बुराई से बैर और भलाई से प्रीति
रखो, और फाटक में न्याय को स्थिर
करो, क्या जाने सेनाओं का परमेश्वर
यहोवा यूसुफ के बचे हुओं पर अनुग्रह
करे ॥

---

* मूल में—न्याय को नागदौना बनाने।
† मूल में—फाटक।

१६ इस कारण सेनाओ का परमेश्वर,
प्रभु यहोवा यो कहता है, सब चौको मे रोना-
पीटना होगा, और सब सडको मे लोग
हाय, हाय, करेगे। वे किसानो को शोक
करने के लिये, और जो लोग विलाप करने
मे निपुण है, उन्हे रोने-पीटने को बुलाएगे।
१७ और सब दाख की बारियो मे रोना-
पीटना होगा, क्योकि यहोवा यो कहता है,
मै तुम्हारे बीच मे से होकर जाऊगा ॥

१८ हाय तुम पर, जो यहोवा के दिन
की अभिलाषा करते हो। यहोवा के दिन से
तुम्हारा क्या लाभ होगा? वह तो उजि-
याले का नही, अन्धियारे का दिन होगा।
१९ जैसा कोई सिंह से भागे और उसे
भालू मिले, वा घर मे आकर भीत पर
हाथ टेके और साप उसको डसे। २० क्या
यह सच नही है कि यहोवा का दिन उजि-
याले का नही, वरन अन्धियारे ही का
होगा? हा, ऐसे घोर अन्धकार का जिस
मे कुछ भी चमक न हो ॥

२१ मै तुम्हारे पर्वो से बैर रखता, और
उन्हे निकम्मा जानता हू, और तुम्हारी महा-
सभाओ से मै प्रसन्न नही*। २२ चाहे
तुम मेरे लिये होमबलि और अन्नबलि
चढाओ, तौभी मै प्रसन्न न हूगा, और
तुम्हारे पाले हुए पशुओ के मेलबलियो की
ओर न ताकूगा। २३ अपने गीतो का
कोलाहल मुझ से दूर करो, तुम्हारी
सारगियो का सुर मै न सुनूगा। २४ परन्तु
न्याय को नदी की नाई, और धर्म महानद
की नाई बहने दो ॥

२५ हे इस्राएल के घराने, तुम जगल
मे चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि
क्या मुझी को चढाते रहे? २६ नही, तुम
तो अपने राजा का तम्बू, और अपनी मूरतो
की चरणपीठ, और अपने देवता का तारा
लिए फिरते रहे। २७ इस कारण मै तुम
को दमिश्क के उस पार बधुआई मे कर
दूगा, सेनाओ के परमेश्वर यहोवा का यही
वचन है ॥

६ हाय उन पर जो सिय्योन मे सुख
से रहते, और उन पर जो सामरिया
के पर्वत पर निश्चिन्त रहते है, वे जो श्रेष्ठ
जाति मे प्रसिद्ध है, जिन के पास इस्राएल
का घराना आता है। २ कलने नगर को
जाकर देखो, और वहा से हमात नाम बडे
नगर को जाओ, फिर पलिश्तियो के गत
नगर को जाओ। क्या वे इन राज्यो से
उत्तम है? क्या उनका देश तुम्हारे देश से
कुछ बडा है? ३ तुम बुरे दिन को दूर कर
देते, और उपद्रव की गद्दी को निकट ले
आते हो ॥

४ तुम हाथी दात के पलगो पर लेटते,
और अपने अपने बिछौने पर पाव फैलाए
सोते हो, और भेड-बकरियो मे से मेम्ने और
गौशालाओ मे से बछडे खाते हो। ५ तुम
सारगी के साथ गीत गाते, और दाऊद की
नाई भाति भाति के बाजे बुद्धि से निकालते
हो, ६ और कटोरो मे से दाखमधु पीते,
और उत्तम उत्तम तेल लगाते हो, परन्तु
यूसुफ पर आनेवाली विपत्ति का हाल
सुनकर शोकित नही होते। ७ इस कारण
वे अब बधुआई मे पहिले जाएगे, और जो
पाव फैलाए सोते थे, उनकी धूम जाती
रहेगी ॥

८ सेनाओ के परमेश्वर यहोवा की
यह वाणी है, (परमेश्वर यहोवा ने अपनी
ही शपथ खाकर कहा है) जिस पर याकूब
घमण्ड करता है, उस से मै घृणा, और

* मूल मे—मै न सूघूगा।

उसके राजभवनो से बैर रखता हू, और
मै इस नगर को उन सब समेत जो उस मे
है, शत्रु के वश मे कर दूगा ॥

९ और यदि किसी घर में दस पुरुष
बच रहें, तौभी वे मर जाएगे। १० और
जब किसी का चचा, जो उसका जलानेवाला
हो, उसकी हड्डियो को घर के निकालने के
लिये उठाएगा, और जो घर के कोने मे
हो उस से कहेगा, क्या तेरे पास कोई और
है? तब वह कहेगा, कोई नहीं, तब वह
कहेगा, चुप रह! हमें यहोवा का नाम
नहीं लेना चाहिए ॥

११ क्योकि यहोवा की आज्ञा से बड़े
घर में छेद, और छोटे घर मे दरार होगी।
१२ क्या घोड़े चट्टान पर दौड़े? क्या
कोई ऐसे स्थान मे बैलो से जोते जहा तुम
लोगो ने न्याय को विष से, और धर्म के
फल को कड़वे फल से बदल डाला है?
१३ तुम ऐसी वस्तु के कारण आनन्द करते
हो जो व्यर्थ है, और कहते हो, क्या
हम अपने ही यत्न से सामर्थी नही हो गए?
१४ इस कारण सेनाओं के परमेश्वर
यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के
घराने, देख, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक ऐसी
जाति खड़ी करूगा, जो हमात की घाटी से
लेकर अराबा की नदी तक तुमको सकट
मे डालेगी ॥

७ परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह
दिखाया, और मै क्या देखता हू कि
उस ने पिछली घास के उगने के आरम्भ
मे टिड्डिया उत्पन्न की, और वह राजा की
कटनी के बाद की पिछली घास थी। २ जब
वे घास खा चुकी, तब मै ने कहा, हे पर-
मेश्वर यहोवा, क्षमा कर! नही तो याकूब
कैसे स्थिर रह सकेगा? वह कितना
निर्बल* है! ३ इसके विषय मे यहोवा
पछताया, और उस ने कहा, ऐसी बात अब
न होगी ॥

४ परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह
दिखाया और क्या देखता हू कि परमेश्वर
यहोवा ने आग के द्वारा मुकद्दमा लड़ने को
पुकारा, और उस आग से महासागर सूख
गया, और देश भी भस्म हुआ चाहता था।
५ तब मैं ने कहा, हे परमेश्वर यहोवा, थम
जा! नही तो याकूब कैसे स्थिर रह
सकेगा? वह कैसा निर्बल* है। ६ इसके
विषय मे भी यहोवा पछताया, और
परमेश्वर यहोवा ने कहा, ऐसी बात
फिर न होगी ॥

७ उस ने मुझे यह भी दिखाया मै ने
देखा कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई
किसी भीत पर खड़ा है, और उसके हाथ
मे साहुल है। ८ और यहोवा ने मुझ से
कहा, हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है?
मै ने कहा, एक साहुल। तब परमेश्वर
ने कहा, देख, मै अपनी प्रजा इस्राएल
के बीच मे साहुल लगाऊगा। ९ मै
अब उनको न छोड़ूगा। इसहाक के ऊचे
स्थान उजाड़, और इस्राएल के पवित्रस्थान
सुनसान हो जाएगे, और मै यारोबाम
के घराने पर तलवार खींचे हुए चढ़ाई
करूगा ॥

१० तब बेतेल के याजक अमस्याह ने
इस्राएल के राजा यारोबाम के पास कहला
भेजा, कि, आमोस ने इस्राएल के घराने के
बीच मे तुझ से राजद्रोह की गोष्ठी की है,
उसके सारे वचनो को देश नही सह सकता।
११ क्योकि आमोस यो कहता है, कि,
यारोबाम तलवार से मारा जाएगा, और

* मूल में—छोटा।

इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय बंधु-
आई में जाएगा ॥
१२ और अमस्याह ने आमोस से कहा, हे
दर्शी, यहां से निकलकर यहूदा देश में भाग
जा, और वहीं रोटी खाया कर, और वहीं
भविष्यद्वाणी किया कर, १३ परन्तु बेतेल
में फिर कभी भविष्यद्वाणी न करना,
क्योंकि यह राजा का पवित्रस्थान और
राज-नगर है। १४ आमोस ने उत्तर देकर
अमस्याह से कहा, मैं न तो भविष्यद्वक्ता
था, और न भविष्यद्वक्ता का बेटा, मैं तो
गाय-बैल का चरवाहा, और गूलर के वृक्षों
का छांटनेहारा था, १५ और यहोवा ने
मुझे भेड़-बकरियों के पीछे पीछे फिरने से
बुलाकर कहा, जा, मेरी प्रजा इस्राएल से
भविष्यद्वाणी कर। १६ इसलिये अब तू
यहोवा का वचन सुन, तू कहता है कि
इस्राएल के विरुद्ध भविष्यद्वाणी मत कर,
और इसहाक के घराने के विरुद्ध बार बार
वचन मत सुना*। १७ इस कारण
यहोवा यों कहता है, तेरी स्त्री नगर में
वेश्या हो जाएगी, और तेरे बेटे-बेटियां
तलवार से मारी जाएंगी, और तेरी भूमि
डोरी डालकर बांट ली जाएगी, और तू
आप अशुद्ध देश में मरेगा, और
इस्राएल अपनी भूमि पर से निश्चय
बंधुआई में जाएगा ॥

८ परमेश्वर यहोवा ने मुझ को यों
दिखाया कि, धूपकाल के फलों से
भरी हुई एक टोकरी है। २ और उस ने
कहा, हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है?
मैं ने कहा, धूपकाल के फलों से भरी एक
टोकरी। तब यहोवा ने मुझ से कहा, मेरी
प्रजा इस्राएल का अन्त आ गया है, मैं अब
उसको और न छोड़ूंगा। ३ परमेश्वर
यहोवा की वाणी है, कि उस दिन राज-
मन्दिर के गीत हाहाकार* में बदल
जाएंगे, और लोथों का बड़ा ढेर लगेगा,
और सब स्थानों में वे चुपचाप फेंक दी
जाएंगी ॥
४ यह सुनो, तुम जो दरिद्रों को निगलना
और देश के नम्र लोगों को नाश करना
चाहते हो, ५ जो कहते हो नया चांद कब
बीतेगा कि हम अन्न बेच सकें? और
विश्रामदिन कब बीतेगा, कि हम अन्न के
खत्ते खोलकर एपा को छोटा और शेकेल
को भारी कर दें, और छल से दण्डी मारें,
६ कि हम कंगालों को रुपया देकर, और
दरिद्रों को एक जोड़ी जूतियां देकर मोल
लें, और निकम्मा अन्न बेचें?
७ यहोवा, जिस पर याकूब को घमण्ड
करना उचित है, वही अपनी शपथ खाकर
कहता है, मैं तुम्हारे किसी काम को कभी
न भूलूंगा। ८ क्या इस कारण भूमि न
कांपेगी? और क्या उन पर के सब रहने-
वाले विलाप न करेंगे? यह देश सब का
सब मिस्र की नील नदी के समान होगा,
जो बढ़ती है, फिर लहरें मारती, और घट
जाती है ॥
९ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है,
उस समय मैं सूर्य को दोपहर के समय अस्त
करूंगा, और इस देश को दिन दुपहरी
अन्धियारा कर दूंगा। १० मैं तुम्हारे पर्वों
के उत्सव को दूर करके विलाप कराऊंगा,
और तुम्हारे सब गीतों को दूर करके विलाप
के गीत गवाऊंगा, मैं तुम सब की कटि में
टाट बंधाऊंगा, और तुम सब के सिरों को
मुंड़ाऊंगा, और ऐसा विलाप कराऊंगा

* मूल में—हाहाकार करेंगे।

* मूल में—हाहाकार करेंगे।

जैसा एकलौते के लिये होता है, और उसका
अन्त कठिन दुःख के दिन का सा होगा *॥
११ परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है,
देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में
महंगी करूंगा, उस में न तो अन्न की भूख
और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा
के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी।
१२ और लोग यहोवा के वचन की खोज में
समुद्र से समुद्र तक और उत्तर से पूरब तक
मारे मारे फिरेंगे, परन्तु उसको न पाएंगे॥
१३ उस समय सुन्दर कुमारियां और
जवान पुरुष दोनों प्यास के मारे मूर्छा
खाएंगे। १४ जो लोग सामरिया के पाप-
मूल देवता की शपथ खाते हैं, और जो कहते
हैं कि दान के † देवता के जीवन की शपथ,
और बेर्शेबा के पन्थ की शपथ, वे सब गिर
पड़ेंगे, और फिर न उठेंगे॥

९ मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खड़ा
देखा, और उस ने कहा, खम्भे की
कंगनियों पर मार जिस से डेवढ़ियां हिलें,
और उनको सब लोगों के सिर पर गिराकर
टुकड़े टुकड़े कर, और जो नाश होने से
बचें, उन्हें मैं तलवार से घात करूंगा, उन
में से एक भी न भाग निकलेगा, और जो
अपने को बचाए, वह बचने न पाएगा॥
२ क्योंकि चाहे वे खोदकर अधोलोक
में उतर जाएं, तो वहां से मैं हाथ बढ़ाकर
उन्हें लाऊंगा; चाहे वे आकाश पर चढ़
जाएं, तो वहां से मैं उन्हें उतार लाऊंगा।
३ चाहे वे कर्म्मेल में छिप जाएं, परन्तु वहां
भी मैं उन्हें ढूंढ-ढूंढकर पकड़ लूंगा, और
चाहे वे समुद्र की थाह में मेरी दृष्टि से ओट
हों, वहां भी मैं सर्प को उन्हें डसने की
आज्ञा दूंगा। ४ और चाहे शत्रु उन्हें हांक-
कर बंधुआई में ले जाएं, वहां भी मैं आज्ञा
देकर तलवार से उन्हें घात कराऊंगा,
और मैं उन पर भलाई करने के लिये नहीं,
बुराई ही करने के लिये दृष्टि करूंगा॥
५ सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के
स्पर्श करने से पृथ्वी पिघलती है, और उसके
सारे रहनेवाले विलाप करते हैं, और वह
सब की सब मिस्र की नदी के समान हो
जाती है, जो बढ़ती है फिर लहरें मारती,
और घट जाती है। ६ जो आकाश में
अपनी कोठरियां बनाता, और अपने
आकाशमण्डल की नेव पृथ्वी पर डालता,
और समुद्र का जल धरती पर बहा देता
है, उसी का नाम यहोवा है॥
७ हे इस्राएलियो, यहोवा की यह वाणी
है, क्या तुम मेरे लेखे कूशियों के समान नहीं
हो? क्या मैं इस्राएल को मिस्र देश से और
पलिश्तियों को कप्तोर से नहीं निकाल
लाया? और अरामियों को कीर से नहीं
लाया? ८ देखो, परमेश्वर यहोवा की
दृष्टि इस पाप-मय राज्य पर लगी है, और
मैं इसको धरती पर से नाश करूंगा, तौभी
मैं पूरी रीति से याकूब के घराने को नाश
न करूंगा, यहोवा की यही वाणी है।
९ मेरी आज्ञा से इस्राएल का घराना सब
जातियों में ऐसा चाला जाएगा जैसा अन्न
चलनी में चाला जाता है, परन्तु उसका एक
भी पुष्ट दाना भूमि पर न गिरेगा।
१० मेरी प्रजा में के सब पापी जो कहते
हैं कि वह विपत्ति हम पर न पड़ेगी, और
न हमें घेरेगी, वे सब तलवार से मारे
जाएंगे॥
११ उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई
झोपड़ी को खड़ा करूंगा, और उसके
बाड़े के नाकों को सुधारूंगा, और उसके

* मूल में—कड़वा दिन।
† मूल में—हे दान तेरे।

खण्डहरो को फिर बनाऊगा, और जैसा
वह प्राचीनकाल मे था, उसको वैसा ही बना
दूगा, १२ जिस से वे बचे हुए एदोमियो
को वरन सब अन्यजातियो को जो मेरी
कहलाती है, अपने अधिकार मे ले, यहोवा
जो यह काम पूरा करता है, उसकी यही
वाणी है॥
१३ यहोवा की यह भी वाणी है, देखो,
ऐसे दिन आते है, कि हल जोतनेवाला
लवनेवाले को और दाख रौदनेवाला बीज
बोनेवाले को जा लेगा, और पहाड़ो से नया
दाखमधु टपकने लगेगा, और सब पहाड़ियो
से वह निकलेगा। १४ मै अपनी प्रजा
इस्राएल के बधुओ को फेर ले आऊगा,
और वे उजड़े हुए नगरो को सुधारकर
उन मे बसेगे, वे दाख की बारिया लगाकर
दाखमधु पीएगे, और बगीचे लगाकर उनके
फल खाएगे। १५ मै उन्हे, उन्ही की
भूमि में बोऊगा, और वे अपनी भूमि मे से
जो मै ने उन्हे दी है, फिर कभी उखाड़े
न जाएगे, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का
यही वचन है॥

ओबद्याह

१ ओबद्याह का दर्शन॥
हम लोगो ने यहोवा की ओर से
समाचार सुना है, और एक दूत अन्यजातियो
मे यह कहने को भेजा गया है २ उठो!
हम उस से लड़ने को उठे! मै तुझे जातियो
मे छोटा कर दूगा, तू बहुत तुच्छ गिना
जाएगा। ३ हे पहाड़ो की दरारो मे बसने-
वाले, हे ऊचे स्थान मे रहनेवाले, तेरे अभि-
मान ने तुझे धोखा दिया है, तू मन मे
कहता है, ४ कौन मुझे भूमि पर उतार
देगा? परन्तु चाहे तू उकाब की नाई ऊचा
उड़ता हो, वरन तारागण के बीच अपना
घोसला बनाए हो, तौभी मै तुझे वहा से
नीचे गिराऊगा, यहोवा की यही वाणी है॥
५ यदि चोर-डाकू रात को तेरे पास
आते, (हाय, तू कैसे मिटा दिया गया है!)
तो क्या वे चुराए हुए धन से तृप्त होकर चले
न जाते? और यदि दाख के तोड़नेवाले
तेरे पास आते, तो क्या वे कही कही दाख
न छोड़ जाते? ६ परन्तु एसाव का धन
कैसे खोजकर लूटा गया है, उसका गुप्त
धन कैसे पता लगा लगाकर निकाला गया
है! ७ जितनो ने तुझ से वाचा बान्धी
थी, उन सभो ने तुझे सिवाने तक ढकेल
दिया है, जो लोग तुझ से मेल रखते थे,
वे तुझ को धोका देकर तुझ पर प्रबल हुए
है, और जो तेरी रोटी खाते है, वे तेरे लिये
फन्दा लगाते है—उस मे कुछ समझ नही
है। ८ यहोवा की यह वाणी है, क्या मै उस
समय एदोम मे से बुद्धिमानो को, और एसाव
के पहाड़ मे से चतुराई को नाश न करूगा?
९ और हे तेमान, तेरे शूरवीरो का मन
कच्चा हो जाएगा, और यो एसाव के पहाड़
पर का हर एक पुरुष घात होकर नाश हो

जाएगा। १० हे एसाव, उस उपद्रव के
कारण जो तू ने अपने भाई याकूब पर किया,
तू लज्जा से ढपेगा, और सदा के लिये नाश
हो जाएगा। ११ जिस दिन परदेशी लोग
उसकी धन सम्पत्ति छीनकर ले गए, और
बिराने लोगों ने उसके फाटकों से घुसकर
यरूशलेम पर चिट्ठी डाली, उस दिन तू भी
उन में से एक था। १२ परन्तु तुझे उचित
न था कि तू अपने भाई के दिन में, अर्थात्
उसकी विपत्ति के दिन में उसकी ओर
देखता रहता, और यहूदियों के नाश होने के
दिन उनके ऊपर आनन्द करता, और उनके
संकट के दिन बड़ा बोल बोलता। १३ तुझे
उचित न था कि मेरी प्रजा की विपत्ति के
दिन तू उसके फाटक से घुसता, और उसकी
विपत्ति के दिन उसकी दुर्दशा को देखता
रहता, और उसकी विपत्ति के दिन उसकी
धन सम्पत्ति पर हाथ लगाता। १४ तुझे
उचित न था कि तिरमुहाने पर उसके
भागनेवालों को मार डालने के लिये खड़ा
होता, और संकट के दिन उसके बचे हुओं
को पकड़ाता॥

१५ क्योंकि सारी अन्यजातियों पर
यहोवा के दिन का आना निकट है। जैसा
तू ने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया
जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर
पर पड़ेगा। १६ जिस प्रकार तू ने मेरे
पवित्र पर्वत पर पिया, उसी प्रकार से सारी
अन्यजातिया लगातार पीती रहेंगी, वरन
वे सुड़क-सुड़ककर पीएगी, और ऐसी हो
जाएगी जैसी कभी हुई ही नही। १७ परन्तु
उस समय सिय्योन पर्वत पर बचे हुए लोग
रहेंगे, और वह पवित्रस्थान ठहरेगा, और
याकूब का घराना अपने निज भागों का
अधिकारी होगा। १८ तब याकूब का
घराना आग, और यूसुफ का घराना लौ,
और एसाव का घराना खूटी बनेगा, और
वे उन में आग लगाकर उनको भस्म
करेंगे, और एसाव के घराने का कोई न
बचेगा, क्योंकि यहोवा ही ने ऐसा कहा
है॥

१९ दक्खिन देश के लोग एसाव के
पहाड़ के अधिकारी हो जाएगे, और नीचे
के देश के लोग पलिश्तियों के अधिकारी
होंगे, और यहूदी, एप्रैम और सामरिया के
देहात को अपने भाग में कर लेंगे, और
बिन्यामीन गिलाद का अधिकारी होगा।
२० इस्राएलियों के उस दल में से जो लोग
बधुआई में जाकर कनानियों के बीच
सारपत तक रहते हैं, और यरूशलेमियों में
से जो लोग बधुआई में जाकर सपाराद में
रहते हैं, वे सब दक्खिन देश के नगरों के
अधिकारी हो जाएगे। २१ और उद्धार
करनेवाले एसाव के पहाड़ का न्याय करने
के लिये सिय्योन पर्वत पर चढ़ आएगे, और
राज्य यहोवा ही का हो जाएगा॥

योना

१ यहोवा का यह वचन अमित्तै के
पुत्र योना के पास पहुचा, २ उठकर
उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके
विरुद्ध प्रचार कर, क्योंकि उसकी बुराई
मेरी दृष्टि मे बढ गई है *। ३ परन्तु योना
यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने
के लिये उठा, और यापो नगर को जाकर
तर्शीश जानेवाला एक जहाज़ पाया; और
भाडा देकर उस पर चढ † गया कि उनके
साथ होकर यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को
चला जाए।।

४ तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड
आंधी चलाई, और समुद्र में बडी आंधी उठी,
यहा तक कि जहाज़ टूटने पर था। ५ तब
मल्लाह लोग डरकर अपने अपने देवता की
दोहाई देने लगे, और जहाज़ में जो ब्योपार
की सामग्री थी उसे समुद्र मे फेंकने लगे कि
जहाज़ हल्का हो जाए। परन्तु योना जहाज़
के निचले भाग मे उतरकर सो गया था,
और गहरी नींद में पड़ा हुआ था। ६ तब
माझी उसके निकट आकर कहने लगा, तू
भारी नींद में पडा हुआ क्या करता है?
उठ, अपने देवता की दोहाई दे! सम्भव है
कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करे, और
हमारा नाश न हो।।

७ तब उन्हो ने आपस मे कहा, आओ,
हम चिट्ठी डालकर जान लें कि यह विपत्ति
हम पर किस के कारण पडी है। तब उन्हों
ने चिट्ठी डाली, और चिट्ठी योना के नाम पर
निकली। ८ तब उन्हों ने उस से कहा, हमें
बता कि किस के कारण यह विपत्ति हम
पर पड़ी है? तेरा उद्यम क्या है? और
तू कहा से आया है? तू किस देश और
किस जाति का है? ९ उस ने उन से कहा,
मैं इब्री हू; और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा
जिस ने जल स्थल दोनो को बनाया है, उसी
का भय मानता हू। १० तब वे निपट
डर गए, और उस से कहने लगे, तू ने
यह क्या किया है? वे जान गए थे कि
वह यहोवा के सम्मुख से भाग आया है,
क्योंकि उस ने आप ही उनको बता दिया
था।।

११ तब उन्हों ने उस से पूछा, हम तेरे
साथ क्या करें जिस से समुद्र शान्त हो
जाए? उस समय समुद्र की लहरें बढती
ही जाती थीं। १२ उस ने उन से कहा,
मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो; तब
समुद्र शान्त पड जाएगा, क्योंकि मैं
जानता हू, कि यह भारी आंधी तुम्हारे
ऊपर मेरे ही कारण आई है। १३ तौभी
वे बडे यत्न से खेते रहे कि उसको किनारे
पर लगाए, परन्तु पहुच न सके, क्योंकि
समुद्र की लहरें उनके विरुद्ध बढती ही
जाती थी। १४ तब उन्हो ने यहोवा
को पुकारकर कहा, हे यहोवा हम विनती
करते हैं, कि इस पुरुष के प्राण की सन्ती
हमारा नाश न हो, और न हमें निर्दोष की
हत्या का दोषी ठहरा, क्योंकि हे यहोवा,
जो कुछ तेरी इच्छा थी वही तू ने किया है।
१५ तब उन्हो ने योना को उठाकर समुद्र
में फेंक दिया, और समुद्र की भयानक
लहरें थम गईं। १६ तब उन मनुष्यो ने

---

* मूल में—चढ आई है।
† मूल में—उस में उतरा।

यहोवा का बहुत ही भय माना, और उसको
भेंट चढ़ाई और मन्नतें मानीं ॥

१७ यहोवा ने एक बड़ा सा मगरमच्छ
ठहराया था कि योना को निगल ले, और
योना उस मगरमच्छ के पेट में तीन दिन
और तीन रात पड़ा रहा ॥

२ तब योना ने उसके पेट में से अपने
परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके
कहा,

२ मैं ने संकट में पड़े हुए यहोवा की
दोहाई दी,
और उस ने मेरी सुन ली है,
अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला
उठा,
और तू ने मेरी सुन ली।
३ तू ने मुझे गहिरे सागर में समुद्र की
थाह तक डाल दिया,
और मैं धाराओं के बीच में पड़ा था,
तेरी भड़काई हुई सब तरंग और
लहरें मेरे ऊपर से बह गईं।
४ तब मैं ने कहा, मैं तेरे साम्हने से
निकाल दिया गया हूं,
तौभी तेरे पवित्र मन्दिर की ओर फिर
ताकूंगा।
५ मैं जल से यहां तक घिरा हुआ था
कि मेरे प्राण निकले जाते थे,
गहिरा सागर मेरे चारों ओर था,
और मेरे सिर में सिवार लिपटा हुआ
था।
६ मैं पहाड़ों की जड़ तक पहुंच गया
था,
मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो
गया था,
तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने
मेरे प्राणों को गड़हे में से उठाया है।
७ जब मैं मूर्छा खाने लगा, तब मैं ने
यहोवा को स्मरण किया,
और मेरी प्रार्थना तेरे पास वरन तेरे
पवित्र मन्दिर में पहुंच गई।
८ जो लोग धोखे की व्यर्थ वस्तुओं पर
मन लगाते हैं,
वे अपने करुणानिधान को छोड़ देते
हैं।
९ परन्तु मैं ऊंचे शब्द से धन्यवाद करके
तुझे बलिदान चढ़ाऊंगा,
जो मन्नत मैं ने मानी, उसको पूरी
करूंगा।
उद्धार यहोवा ही से होता है।
१० और यहोवा ने मगरमच्छ को आज्ञा
दी,
और उस ने योना को स्थल पर उगल
दिया ॥

३ तब यहोवा का यह वचन दूसरी
बार योना के पास पहुंचा, २ उठकर
उस बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात
मैं तुझ से कहूंगा, उसका उस में प्रचार कर।
३ तब योना यहोवा के वचन के अनुसार
नीनवे को गया। नीनवे एक बहुत बड़ा
नगर था, वह तीन दिन की यात्रा का था।
४ और योना ने नगर में प्रवेश करके एक
दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार
करता गया, अब से चालीस दिन के बीतने
पर नीनवे उलट दिया जाएगा। ५ तब
नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की
प्रतीति की, और उपवास का प्रचार किया
गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने
टाट ओढ़ा ॥

६ तब यह समाचार नीनवे के राजा के
कान में पहुंचा, और उस ने सिंहासन पर
से उठ, अपना राजकीय ओढ़ना उतारकर

टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया।
७ और राजा ने प्रधानो से सम्मति लेकर
नीनवे मे इस आज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया,
कि क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-
बकरी, या और पशु, कोई कुछ भी न
खाए, वे न खाए और न पानी पीवे।
८ और मनुष्य और पशु दोनो टाट ओढ़े,
और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला
कर दे, और अपने कुमार्ग से फिरे, और
उस उपद्रव से, जो वे करते है, पश्चात्ताप
करे। ९ सम्भव है, परमेश्वर दया करे
और अपनी इच्छा बदल दे, और उसका
भड़का हुआ कोप शान्त हो जाए और हम
नाश होने से बच जाए।।

१० जब परमेश्वर ने उनके कामो को
देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे है, तब
परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और
उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको
न किया।।

४ यह बात योना को बहुत ही बुरी
लगी, और उसका क्रोध भड़का।
२ और उस ने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना
की, हे यहोवा जब मै अपने देश मे था, तब
क्या मै यही बात न कहता था? इसी
कारण मै ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को
भाग जाने के लिये फुर्ती की, क्योकि मै
जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु
परमेश्वर है, और विलम्ब से कोप करने-
वाला करुणानिधान है, और दु:ख देने से
प्रसन्न नही होता। ३ सो अब हे यहोवा,
मेरा प्राण ले ले, क्योकि मेरे लिये जीवित
रहने से मरना ही भला है। ४ यहोवा ने
कहा, तेरा जो क्रोध भड़का है, क्या वह
उचित है? ५ इस पर योना उस नगर से
निकलकर, उसकी पूरब ओर बैठ गया;
और वहां एक छप्पर बनाकर उसकी छाया
मे बैठा हुआ यह देखने लगा कि नगर को
क्या होगा?

६ तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का
पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर
पर छाया हो, जिस से उसका दु:ख दूर हो।
योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण बहुत ही
आनन्दित हुआ। ७ बिहान को जब पौ
फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को
भेजा, जिस ने रेंड़ का पेड़ ऐसा काटा कि
वह सूख गया। ८ जब सूर्य उगा, तब
परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई,
और घाम योना के सिर पर ऐसा लगा कि
वह मूर्च्छा खाने लगा, और उस ने यह
कहकर मृत्यु मांगी, मेरे लिये जीवित रहने
से मरना ही अच्छा है। ९ परमेश्वर ने
योना से कहा, तेरा क्रोध, जो रेंड़ के
पेड़ के कारण भड़का है, क्या वह उचित
है? उस ने कहा, हा, मेरा जो क्रोध
भड़का है वह अच्छा ही है, वरन क्रोध के
मारे मरना भी अच्छा होता। १० तब
यहोवा ने कहा, जिस रेंड़ के पेड़ के
लिये तू ने कुछ परिश्रम नही किया,
न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात मे
हुआ, और एक ही रात मे नाश भी
हुआ, उस पर तू ने तरस खाई है।
११ फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिस मे
एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य है
जो अपने दहिने बाए हाथो का भेद नही
पहिचानते, और बहुत घरैलू पशु भी उस
मे रहते है, तो क्या मै उस पर तरस न
खाऊ?

मीका

१ यहोवा का वचन, जो यहूदा के
राजा योताम, आहाज और हिज-
किय्याह के दिनों में मीका मोरेशेती को
पहुंचा, जिस को उस ने शोमरोन और
यरूशलेम के विषय में पाया ॥
२ हे जाति-जाति के सब लोगो, सुनो।
हे पृथ्वी तू उस सब समेत जो तुझ में है,
ध्यान दे। और प्रभु यहोवा तुम्हारे विरुद्ध,
वरन परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में से
तुम पर साक्षी दे। ३ क्योंकि देख, यहोवा
अपने पवित्रस्थान से बाहर निकल रहा है,
और वह उतरकर पृथ्वी के ऊंचे स्थानों पर
चलेगा। ४ और पहाड़ उसके नीचे गल
जाएंगे, और तराई ऐसे फटेंगी, जैसे मोम
आग की आंच से, और पानी जो घाट से
नीचे बहता है। ५ यह सब याकूब के
अपराध, और इस्राएल के घराने के पाप के
कारण से होता है। याकूब का अपराध
क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहूदा
के ऊंचे स्थान क्या हैं? क्या यरूशलेम
नहीं? ६ इस कारण मैं सामरिया को
मैदान के खेत का ढेर कर दूंगा, और दाख
का बगीचा बनाऊंगा और मैं उसके पत्थरों
को खड्ड में लुढ़का दूंगा, और उसकी नेव
उखाड़ दूंगा। ७ उसकी सब खुदी हुई
मूरतें टुकड़े टुकड़े की जाएंगी, और जो
कुछ उस ने छिनाला करके कमाया है
वह आग से भस्म किया जाएगा, और
उसकी सब प्रतिमाओं को मैं चकनाचूर
करूंगा, क्योंकि छिनाले ही की कमाई
से उस ने उनको सञ्चय किया है, और
वह फिर छिनाले की सी कमाई हो
जाएगी ॥
८ इस कारण मैं छाती पीटकर हाय,
हाय, करूंगा, मैं लुटा हुआ सा और नंगा
चला फिरा करूंगा, मैं गीदड़ों की नाईं
चिल्लाऊंगा, और शुतुर्मुर्गों की नाईं रोऊंगा।
९ क्योंकि उसका घाव असाध्य है, और
विपत्ति यहूदा पर भी आ पड़ी, वरन वह
मेरे जातिभाइयों पर पड़कर यरूशलेम के
फाटक तक पहुंच गई है ॥
१० गत नगर में इसकी चर्चा मत
करो, और मत रोओ, बेतआप्रा * में धूलि
में लोटपोट करो। ११ हे शापीर की
रहनेवाली नंगी होकर निर्लज्ज चली जा,
सानान † की रहनेवाली नहीं निकल
सकती, बेतेसेल के रोने पीटने के कारण
उसका शरणस्थान तुम से ले लिया जाएगा।
१२ क्योंकि मारोत की रहनेवाली तो
कुशल की बाट जोहते-जोहते तड़प गई है,
क्योंकि यहोवा की ओर से यरूशलेम के
फाटक तक विपत्ति आ पहुंची है। १३ हे
लाकीश की रहनेवाली अपने रथों में वेग
चलनेवाले घोड़े जोत, तुझी से सिय्योन की
प्रजा के ‡ पाप का आरम्भ हुआ, क्योंकि
इस्राएल के अपराध तुझी में पाए गए।
१४ इस कारण तू गत के मोरेशेत को
दान देकर दूर कर देगा, अकजीब § के घर

* अर्थात् धूलि के घर।
† अर्थात् निकलना।
‡ मूल में—सिय्योन की बेटी का।
§ अर्थात् धोखे।

जातियो के झगडो को मिटाएगा, सो वे अपनी तलवारे पीटकर हल के फाल, और अपने भालो से हसिया बनाएगे, तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर न चलाएगी,
४ और लोग आगे को युद्ध-विद्या न सीखेंगे। परन्तु वे अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे, और कोई उनको न डराएगा, सेनाओ के यहोवा ने यही वचन दिया है ॥

५ सब राज्यो के लोग तो अपने अपने देवता का नाम लेकर चलते है, परन्तु हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर सदा सर्वदा चलते रहेंगे ॥

६ यहोवा की यह वाणी है, उस समय मैं प्रजा के लगडो* को, और बरबस निकाले हुओ† को, और जिन को मैं ने दु ख दिया है उन सब को इकट्ठे करूगा।
७ और लगडो* को मैं बचा रखूगा, और दूर किए हुओ‡ को एक सामर्थी जाति कर दूगा, और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा ॥

८ और हे एदेर के गुम्मट, हे सिय्योन§ की पहाडी, पहिली प्रभुता अर्थात् यरूशलेम|| का राज्य तुझे मिलेगा ॥

९ अब तू क्यो चिल्लाती है? क्या तुझ मे कोई राजा नही रहा? क्या तेरा युक्ति करनेवाला नाश हो गया, जिस से जच्चा स्त्री की नाई तुझे पीडा उठती है?
१० हे सिय्योन की बेटी, जच्चा स्त्री की नाई पीडा उठाकर उत्पन्न कर, क्योकि अब तू गढी मे से निकलकर मैदान मे बसेगी, वरन बाबुल तक जाएगी, वही तू छुडाई जाएगी, अर्थात् वही यहोवा तुझे तेरे शत्रुओ के वश मे से छुडा लेगा ॥

११ और अब बहुत सी जातिया तेरे विरुद्ध इकट्ठी होकर तेरे विषय मे कहेंगी, सिय्योन अपवित्र की जाए, और हम अपनी आखो से उसको निहारे।
१२ परन्तु वे यहोवा की कल्पनाए नही जानते, न उसकी युक्ति समझते है, कि वह उन्हे ऐसा बटोर लेगा जैसे खलिहान मे पूले बटोरे जाते है।
१३ हे सिय्योन*, उठ और दाव कर, मैं तेरे सीगो को लोहे के, और तेरे खुरो को पीतल के बना दूगा, और तू बहुत सी जातियो को चूरचूर करेगी, और उनकी कमाई यहोवा को और उनकी धन-सम्पत्ति पृथ्वी के प्रभु के लिये अर्पण करेगी ॥

५ अब हे बहुत दलो की स्वामिनी†, दल बान्ध-बान्धकर इकट्ठी हो, क्योंकि उस ने हम लोगो को घेर लिया है, वे इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोंटा मारेंगे ॥

२ हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारो मे गिना नही जाता,‡ तौभी तुझ मे से मेरे लिये एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियो मे प्रभुता करनेवाला होगा, और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि काल से होता आया है।
३ इस कारण वह उनको उस समय तक त्यागे रहेगा, जब तक जच्चा उत्पन्न न करे,

---

* मूल में—लगड़ानेवाली।
† मूल में—निकाली हुई।
‡ मूल में—की हुई।
§ मूल में—सिय्योन की बेटी।
|| मूल में—यरूशलेम की बेटी।

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—बेटी।
‡ मूल में—तू यहूदा के हजारों में से छोटा है।

तब इस्राएलियों के पास उसके बचे
हुए भाई लौटकर उन से मिल जाएगे।
४ और वह खडा होकर यहोवा की दी हुई
शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के
नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा।
और वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि अब वह
पृथ्वी की छोर तक महान् ठहरेगा॥
५ और वह शान्ति का मूल होगा, जब
अश्शूरी हमारे देश पर चढाई करे, और
हमारे राजभवनों * मे पाव धरे, तब हम
उनके विरुद्ध सात चरवाहे वरन आठ प्रधान
मनुष्य खडे करेंगे। ६ और वे अश्शूर के
देश को वरन पैठाव के स्थानों तक निम्रोद
के देश को तलवार चलाकर मार लेगे,
और जब अश्शूरी लोग हमारे देश मे
आए, और उसके सिवाने के भीतर
पाव धरे, तब वही पुरुष हम को उन
से बचाएगा। ७ और याकूब के बचे
हुए लोग बहुत राज्यों के बीच ऐसा
काम देंगे, जैसा यहोवा की ओर से
पडनेवाली ओस, और घास पर की
वर्षा, जो किसी के लिये नही ठहरती और
मनुष्यों की बाट नही जोहती। ८ और
याकूब के बचे हुए लोग जातियों मे और
देश देश के लोगों के बीच ऐसे होंगे जैसे
वनपशुओं मे सिंह, वा भेड-बकरियों के
झुण्डों मे जवान सिंह होता है, क्योंकि जब
वह उनके बीच में से जाए, तो लताडता
और फाडता जाएगा, और कोई बचा न
सकेगा। ९ तेरा हाथ तेरे द्रोहियों पर
पडे, और तेरे सब शत्रु नाश हो जाए॥
१० यहोवा की यह वाणी है, उस समय
मे तेरे घोडों को तेरे बीच में से नाश
` ` ्यों का विनाश करूगा।

११ और मैं तेरे देश के नगरों को भी नाश
करूगा, और तेरे किलों को ढा दूगा।
१२ और मैं तेरे तन्त्र-मन्त्र नाश करूगा,
और तुझ मे टोनहे आगे को न रहेंगे।
१३ और मैं तेरी खुदी हुई मूरत, और तेरी
लाठे, तेरे बीच मे से नाश करूगा, और तू
आगे को अपने हाथ की बनाई हुई वस्तुओं
को दण्डवत न करेगा। १४ और मैं तेरी
अशेरा नाम मूरतों को तेरी भूमि मे से
उखाड डालूगा, और तेरे नगरों का विनाश
करूगा। १५ और म अन्यजातियों से जो
मेरा कहा नही मानती, क्रोध और जल-
जलाहट के साथ पलटा लूगा॥

६ जो बात यहोवा कहता है, उसे
सुनो उठकर, पहाडों के साम्हने
वादविवाद कर, और टीले भी तेरी सुनने
पाए। २ हे पहाडो, और हे पृथ्वी की
अटल नेव, यहोवा का वादविवाद सुनो,
क्योंकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ
मुकद्दमा है, और वह इस्राएल से वादविवाद
करता है॥
३ हे मेरी प्रजा, मैं ने तेरा क्या
किया, और क्या करके मैं ने तुझे उकता
दिया है? ४ मेरे विरुद्ध साक्षी दे!
म तो तुझे मिस्र देश से निकाल ले
आया, और दासत्व के घर मे से तुझे
छुडा लाया, और तेरी अगुवाई करने
को मूसा, हारून और मरियम को
भेज दिया। ५ हे मेरी प्रजा, स्मरण कर,
कि मोआब के राजा बालाक ने तेरे विरुद्ध
कौन सी युक्ति की? और बोर के पुत्र
बिलाम ने उसको क्या सम्मति दी? और
शित्तीम से गिलगाल तक की बातों का
स्मरण कर, जिस से तू यहोवा के धर्म के
काम समझ सके॥

से इस्राएल के राजा धोखा ही खाएंगे।
१५ हे मारेशा की रहनेवाली मैं फिर तुझ
पर एक अधिकारी ठहराऊंगा, और
इस्राएल के प्रतिष्ठित लोगों को* अदुल्लाम
में आना पड़ेगा। १६ अपने दुलारे लड़कों
के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुड़ा,
वरन अपना पूरा सिर गिद्ध के समान
गंजा कर दे, क्योंकि वे बंधुए होकर तेरे
पास से चले गए हैं॥

२ हाय उन पर, जो बिछौनों पर पड़े
हुए बुराइयों की कल्पना करते और
दुष्ट कर्म की इच्छा करते हैं, और बलवन्त
होने के कारण भोर को दिन निकलते ही वे
उसको पूरा करते हैं। २ वे खेतों का
लालच करके उन्हें छीन लेते हैं, और घरों
का लालच करके उन्हें भी ले लेते हैं, और
उसके घराने समेत पुरुष पर, और उसके
निज भाग समेत किसी पुरुष पर अन्धेर
और अत्याचार करते हैं। ३ इस कारण,
यहोवा यों कहता है, मैं इस कुल पर ऐसी
विपत्ति डालने पर हूं, जिस के नीचे से तुम
अपनी गर्दन हटा न सकोगे, न अपने सिर
ऊंचे किए हुए चल सकोगे, क्योंकि वह
विपत्ति का समय होगा। ४ उस समय
यह अत्यन्त शोक का गीत दृष्टान्त की रीति
पर गाया जाएगा हम तो सर्वनाश हो
गए; वह मेरे लोगों के भाग को बिगाड़ता
है, हाय, वह उसे मुझ से कितनी दूर कर
देता है! वह हमारे खेत बलवा करनेवाले
को दे देता है। ५ इस कारण तेरा ऐसा
कोई न होगा, जो यहोवा की मण्डली में
चिट्ठी डालकर नापने की डोरी डाले॥
६ बकवासी कहा करते हैं, कि बकवास
न करो। इन बातों के लिये न कहा करो,
ऐसे लोगों में से अपमान न मिटेगा। ७ हे
याकूब के घराने, क्या यह कहा जाए कि
यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है*?
क्या ये काम उसी के किए हुए हैं? क्या
मेरे वचनों से उसका भला नहीं होता जो
सीधाई से चलता है? ८ परन्तु कल की
बात है कि मेरी प्रजा शत्रु बनकर मेरे विरुद्ध
उठी है, तुम शान्त और भोले-भाले
राहियों के तन पर से चादर छीन लेते
हो जो लड़ाई का विचार न करके निधड़क
चले जाते हैं। ९ मेरी प्रजा की स्त्रियों को
तुम उनके सुखधामों से निकाल देते हो,
और उनके नन्हे बच्चों से तुम मेरी दी हुई
उत्तम वस्तुएं† सर्वदा के लिये छीन लेते
हो। १० उठो, चले जाओ! क्योंकि यह
तुम्हारा विश्रामस्थान नहीं है, इसका
कारण वह अशुद्धता है जो कठिन दुःख के
साथ तुम्हारा नाश करेगी। ११ यदि कोई
झूठी आत्मा में चलता हुआ झूठी और व्यर्थ
बातें कहे और कहे कि मैं तुम्हें नित्य दाख-
मधु और मदिरा के लिये प्रचार सुनाता
रहूंगा, तो वही इन लोगों का भविष्यद्वक्ता
ठहरेगा॥

१२ हे याकूब, मैं निश्चय तुम सभों को
इकट्ठा करूंगा, मैं इस्राएल के बचे हुओं को
निश्चय इकट्ठा करूंगा, और बोस्रा की भेड़-
बकरियों की नाईं एक संग रखूंगा। उस
झुण्ड की नाईं जो अच्छी चराई में हो, वे
मनुष्यों की बहुतायत के मारे कोलाहल
मचाएंगे। १३ उनके आगे आगे बाड़े का
तोड़नेवाला गया है, इसलिये वे भी उसे
तोड़ रहे हैं, और फाटक से होकर निकले
जा रहे हैं, उनका राजा उनके आगे आगे

* मूल में—इस्राएल की महिमा को।

* वा हे याकूब का घराना कहानेवाले, क्या यहोवा का आत्मा अधीर हो गया है?
† मूल में—मेरा प्रताप।

गया अर्थात् यहोवा उनका सरदार और
अगुवा है ॥

३ और मैं ने कहा, हे याकूब के
प्रधानो, हे इस्राएल के घराने के
न्याइयो, सुनो! क्या न्याय का भेद जानना
तुम्हारा काम नहीं? २ तुम तो भलाई से
बैर, और बुराई से प्रीति रखते हो, मानो,
तुम, लोगों पर से उनकी खाल, और उनकी
हड्डियों पर से उनका मांस उधेड़ लेते हो,
३ वरन तुम मेरे लोगों का मांस खा भी
लेते, और उनकी खाल उधेड़ते हो, तुम
उनकी हड्डियों को हांडी में पकाने के लिये
तोड़ डालते और उनका मांस हंडे में पकाने
के लिये टुकड़े टुकड़े करते हो। ४ वे उस
समय यहोवा की दोहाई देंगे, परन्तु वह
उनकी न सुनेगा, वरन उस समय वह उनके
बुरे कामों के कारण उन से मुंह फेर लेगा ॥

५ यहोवा का यह वचन है कि जो
भविष्यद्वक्ता मेरी प्रजा को भटका देते हैं,
और जब उन्हें खाने को मिलता है तब
शान्ति, शान्ति, पुकारते हैं, और यदि कोई
उनके मुंह में कुछ न दे, तो उसके विरुद्ध
युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं*।
६ इस कारण तुम-पर ऐसी रात आएगी,
कि तुम को दर्शन न मिलेगा, और तुम
ऐसे अन्धकार में पड़ोगे कि भावी न कह
सकोगे। भविष्यद्वक्ताओं के लिये सूर्य
अस्त होगा, और दिन रहते उन पर
अन्धियारा† छा जाएगा। ७ दर्शी
लज्जित होंगे, और भावी कहनेवालों के
मुंह काले होंगे, और वे सब के सब अपने
ओठों को इसलिये ढांपेंगे कि परमेश्वर
की ओर से उत्तर नहीं मिलता। ८ परन्तु
मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय
और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूं कि मैं
याकूब को उसका अपराध और इस्राएल
को उसका पाप जता सकूं ॥

९ हे याकूब के घराने के प्रधानो, हे
इस्राएल के घराने के न्यायियो, हे न्याय से
घृणा करनेवालो और सब सीधी बातों को
टेढ़ी-मेढ़ी करनेवालो, यह बात सुनो।
१० तुम सिय्योन को हत्या करके और
यरूशलेम को कुटिलता करके दृढ़ करते
हो। ११ उसके प्रधान घूस ले लेकर
विचार करते, और याजक दाम ले लेकर
व्यवस्था देते हैं, और भविष्यद्वक्ता रुपये के
लिये भावी कहते हैं, तौभी वे यह कहकर
यहोवा पर भरोसा रखते हैं, यहोवा हमारे
बीच में है, इसलिये कोई विपत्ति हम पर
न आएगी। १२ इसलिये तुम्हारे कारण
सिय्योन जोतकर खेत बनाया जाएगा,
और यरूशलेम डीह ही डीह हो जाएगा,
और जिस पर्वत पर भवन बना है, वह
वन के ऊंचे स्थान सा हो जाएगा ॥

४ अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि
यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों
पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों
से अधिक ऊंचा किया जाएगा, और हर
जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर
चलेंगे। २ और बहुत जातियों के लोग
जाएंगे, और आपस में कहेंगे, आओ, हम
यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के
परमेश्वर के भवन में जाएं, तब वह हम को
अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों
पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था
सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से
निकलेगा। ३ वह बहुत देशों के लोगों का
न्याय करेगा, और दूर दूर तक की सामर्थी

* मूल में—युद्ध पवित्र करते हो।
† मूल में—काला।

जातियो के झगडो को मिटाएगा, सो वे
अपनी तलवारे पीटकर हल के फाल, और
अपने भालो से हसिया बनाएगे, तब एक
जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार फिर
न चलाएगी, ४ और लोग आगे को युद्ध-
विद्या न सीखेगे। परन्तु वे अपनी अपनी
दाखलता और अजीर के वृक्ष तले बैठा
करेंगे, और कोई उनको न डराएगा,
सेनाओ के यहोवा ने यही वचन दिया है ।।

५ सब राज्यो के लोग तो अपने अपने
देवता का नाम लेकर चलते है, परन्तु हम
लोग अपने परमेश्वर यहोवा का नाम लेकर
सदा सर्वदा चलते रहेंगे ।।

६ यहोवा की यह वाणी है, उस
समय मै प्रजा के लगडो * को, और बरबस
निकाले हुओ † को, और जिन को मै ने
दु ख दिया है उन सब को इकट्ठे करूगा।
७ और लगडो * को मै बचा रखूगा, और
दूर किए हुओ ‡ को एक सामर्थी जाति
कर दूगा, और यहोवा उन पर सिय्योन
पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता
रहेगा ।।

८ और हे एदेर के गुम्मट, हे सिय्योन §
की पहाडी, पहिली प्रभुता अर्थात्
यरूशलेम || का राज्य तुझे मिलेगा ।।

९ अब तू क्यो चिल्लाती है ? क्या तुझ
मे कोई राजा नही रहा ? क्या तेरा युक्ति
करनेवाला नाश हो गया, जिस से जच्चा
स्त्री की नाई तुझे पीडा उठती है ?
१० हे सिय्योन की बेटी, जच्चा स्त्री की
नाई पीडा उठाकर उत्पन्न कर, क्योकि
अब तू गढी मे से निकलकर मैदान मे
बसेगी, वरन बाबुल तक जाएगी; वही तू
छुडाई जाएगी, अर्थात् वही यहोवा तुझे
तेरे शत्रुओ के वश मे मे छुडा लेगा ।।

११ और अब बहुत सी जातिया तेरे
विरुद्ध इकट्ठी होकर तेरे विषय मे कहेगी,
सिय्योन अपवित्र की जाए, और हम अपनी
आखो से उसको निहारे। १२ परन्तु वे
यहोवा की कल्पनाए नही जानते, न उसकी
युक्ति समझते है, कि वह उन्हे ऐसा बटोर
लेगा जैसे खलिहान मे पूले बटोरे जाते है।
१३ हे सिय्योन *, उठ और दाव कर, मै
तेरे सीगो को लोहे के, और तेरे खुरो को
पीतल के बना दूगा, और तू बहुत सी
जातियो को चूरचूर करेगी, और उनकी
कमाई यहोवा को और उनकी धन-सम्पत्ति
पृथ्वी के प्रभु के लिये अर्पण करेगी ।।

५ अब हे बहुत दलो की स्वामिनी †,
दल बान्ध-बान्धकर इकट्ठी हो, क्योकि
उस ने हम लोगो को घेर लिया है, वे
इस्राएल के न्यायी के गाल पर सोटा
मारेगे ।।

२ हे बेतलेहेम एप्राता, यदि तू ऐसा
छोटा है कि यहूदा के हजारो मे गिना नही
जाता, ‡ तौभी तुझ मे से मेरे लिये
एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियो मे
प्रभुता करनेवाला होगा, और उसका
निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादि
काल से होता आया है। ३ इस
कारण वह उनको उस समय तक त्यागे
रहेगा, जब तक जच्चा उत्पन्न न करे,

* मूल में—लगड़ानेवाली।
† मूल में—निकाली हुई।
‡ मूल में—की हुई।
§ मूल में—सिय्योन की बेटी।
|| मूल में—यरूशलेम की बेटी।

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—बेटी।
‡ मूल में—तू यहूदा के हजारों में से छोटा है।

तब इस्राएलियो के पास उसके बचे
हुए भाई लौटकर उन से मिल जाएगे।
४ और वह खडा होकर यहोवा की दी हुई
शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के
नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा।
और वे सुरक्षित रहेगे, क्योकि अब वह
पृथ्वी की छोर तक महान् ठहरेगा॥

५ और वह शान्ति का मूल होगा, जब
अश्शूरी हमारे देश पर चढाई करे, और
हमारे राजभवनो* मे पाव धरे, तब हम
उनके विरुद्ध सात चरवाहे वरन आठ प्रधान
मनुष्य खडे करेगे। ६ और वे अश्शूर के
देश को वरन पैठाव के स्थानो तक निम्रोद
के देश को तलवार चलाकर मार लेगे,
और जब अश्शूरी लोग हमारे देश मे
आए, और उसके सिवाने के भीतर
पाव धरे, तब वही पुरुष हम को उन
से बचाएगा। ७ और याकूब के बचे
हुए लोग बहुत राज्यो के बीच ऐसा
काम देगे, जैसा यहोवा की ओर से
पडनेवाली ओस, और घास पर की
वर्षा, जो किसी के लिये नही ठहरती और
मनुष्यो की बाट नही जोहती। ८ और
याकूब के बचे हुए लोग जातियो मे और
देश देश के लोगो के बीच ऐसे होगे जैसे
वनपशुओ मे सिंह, वा भेड-बकरियो के
झुण्डो मे जवान सिंह होता है, क्योकि जब
वह उनके बीच मे से जाए, तो लताडता
और फाडता जाएगा, और कोई बचा न
सकेगा। ९ तेरा हाथ तेरे द्रोहियो पर
पडे, और तेरे सब शत्रु नाश हो जाए॥

१० यहोवा की यह वाणी है, उस समय
मै तेरे घोडो को तेरे बीच मे से नाश
करूगा, और तेरे रथो का विनाश करूगा।
११ और मै तेरे देश के नगरो को भी नाश
करूगा, और तेरे किलो को ढा दूगा।
१२ और मै तेरे तन्त्र-मन्त्र नाश करूगा,
और तुझ मे टोनहे आगे को न रहेगे।
१३ और मै तेरी खुदी हुई मूरत, और तेरी
लाठे, तेरे बीच मे से नाश करूगा, और तू
आगे को अपने हाथ की बनाई हुई वस्तुओ
को दण्डवत् न करेगा। १४ और मै तेरी
अशेरा नाम मूरतो को तेरी भूमि मे से
उखाड डालूगा, और तेरे नगरो का विनाश
करूगा। १५ और मै अन्यजातियो से जो
मेरा कहा नही मानती, क्रोध और जल-
जलाहट के साथ पलटा लूगा॥

६ जो बात यहोवा कहता है, उसे
सुनो उठकर, पहाडो के साम्हने
वादविवाद कर, और टीले भी तेरी सुनने
पाए। २ हे पहाडो, और हे पृथ्वी की
अटल नेव, यहोवा का वादविवाद सुनो,
क्योकि यहोवा का अपनी प्रजा के साथ
मुकद्दमा है, और वह इस्राएल से वादविवाद
करता है॥

३ हे मेरी प्रजा, मै ने तेरा क्या
किया, और क्या करके मै ने तुझे उकता
दिया है? ४ मेरे विरुद्ध साक्षी दे!
मै तो तुझे मिस्र देश मे निकाल ले
आया, और दासत्व के घर मे से तुझे
छुडा लाया, और तेरी अगुवाई करने
को मूसा, हारून और मरियम को
भेज दिया। ५ हे मेरी प्रजा, स्मरण कर,
कि मोआब के राजा बालाक ने तेरे विरुद्ध
कौन सी युक्ति की? और बोर के पुत्र
बिलाम ने उसको क्या सम्मति दी? और
शित्तीम से गिल्गाल तक की बाते का
स्मरण कर, जिस से तू यहोवा के धर्म के
काम समझ सके॥

---
* मूल मे—फाटको।

६ मैं क्या लेकर यहोवा के सम्मुख
आऊं, और ऊपर रहनेवाले परमेश्वर के
साम्हने झुकूं? क्या मैं होमबलि के लिये
एक एक वर्ष के बछड़े लेकर उसके सम्मुख
आऊं? ७ क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से, वा
तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या
मैं अपने अपराध के प्रायश्चित्त में अपने
पहिलौठे को वा अपने पाप के बदले में अपने
जन्माए हुए किसी को दूं? ८ हे मनुष्य,
वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है,
और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या
चाहता है, कि तू न्याय से काम करे, और
कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के
साथ नम्रता से चले?

९ यहोवा इस नगर को पुकार रहा है,
और सम्पूर्ण ज्ञान, तेरे नाम का भय मानना
है: राजदण्ड की, और जो उसे देनेवाला
है उसकी बात सुनो! १० क्या अब तक
दुष्ट के घर में दुष्टता से पाया हुआ धन और
छोटा एपा घृणित नहीं है? ११ क्या मैं
कपट का तराजू और घटबढ़ के बटखरों
की थैली लेकर पवित्र ठहर सकता हूं?
१२ यहां के धनवान् लोग उपद्रव का काम
देखा करते हैं, और यहां के सब रहनेवाले
झूठ बोलते हैं और उनके मुंह से छल की
बातें निकलती हैं*। १३ इस कारण मैं
तुझे मारते मारते बहुत ही घायल करता हूं,
और तेरे पापों के कारण तुझ को उजाड़
डालता हूं। १४ तू खाएगा, परन्तु तृप्त
न होगा, तेरा पेट जलता ही रहेगा, और
तू अपनी सम्पत्ति लेकर चलेगा, परन्तु न
बचा सकेगा, और जो कुछ तू बचा भी ले,
उसको मैं तलवार चलाकर लुटवा दूंगा।
१५ तू बोएगा, परन्तु लवेगा नहीं, तू
जलपाई का तेल निकालेगा, परन्तु लगाने
न पाएगा, और दाख रौंदेगा, परन्तु
दाखमधु पीने न पाएगा। १६ क्योंकि वे
ओम्री की विधियों पर, और अहाब के
घराने के सब कामों पर चलते हैं, और
तुम उनकी युक्तियों के अनुसार चलते हो;
इसलिये मैं तुझे उजाड़ दूंगा, और इस नगर
के रहनेवालों पर ताली बजवाऊंगा, और
तुम मेरी प्रजा की नामधराई सहोगे॥

७ हाय मुझ पर! क्योंकि मैं उस जन
के समान हो गया हूं जो धूपकाल के
फल तोड़ने पर, वा रही हुई दाख बीनने के
समय के अन्त में आ जाए, मुझे तो पक्की
अंजीरों की लालसा थी, परन्तु खाने के लिये
कोई गुच्छा नहीं रहा। २ भक्त लोग
पृथ्वी पर से नाश हो गए हैं, और मनुष्यों
में एक भी सीधा जन नहीं रहा, वे सब के
सब हत्या के लिये घात लगाते, और जाल
लगाकर अपने अपने भाई का आहेर करते
हैं। ३ वे अपने दोनों हाथों से मन लगाकर
बुराई करते हैं, हाकिम घूस मांगता, और
न्यायी घूस लेने को तैयार रहता है, और
रईस अपने मन की दुष्टता वर्णन करता है,
इसी प्रकार से वे सब मिलकर जालसाजी
करते हैं। ४ उन में से जो सब से उत्तम
है, वह कटीली झाड़ी के समान दुःखदाई
है, जो सब से सीधा है, वह कांटेवाले बाड़े
से भी बुरा है। तेरे पहरुओं का कहा हुआ
दिन, अर्थात् तेरे दण्ड का दिन आ गया है।
अब वे शीघ्र चौंधिया जाएंगे। ५ मित्र
पर विश्वास मत करो, परममित्र पर भी
भरोसा मत रखो, वरन अपनी अर्द्धांगिन*
से भी सभलकर बोलना! ६ क्योंकि पुत्र
पिता का अपमान करता, और बेटी माता

* मूल में—उनके मुंह में उनकी जीभ धोखा देनेवाली है।

* मूल में—अपनी गोद में सोनेवाली।

के, और पतोह सास के विरुद्ध उठती है,
मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होते हैं।
७ परन्तु मैं यहोवा की ओर ताकता रहूंगा,
मैं अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की बाट
जोहता रहूंगा, मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।।
८ हे मेरी बैरिन, मुझ पर आनन्द मत
कर, क्योंकि ज्योंही मैं गिरूंगा त्योंही
उठूंगा, और ज्योंही मैं अन्धकार में पड़ूंगा
त्योंही यहोवा मेरे लिये ज्योति का काम
देगा। ९ मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया
है, इस कारण मैं उस समय तक उसके क्रोध
को सहता रहूंगा जब तक कि वह मेरा
मुक़द्दमा लडकर मेरा न्याय न चुकाएगा।
उस समय वह मुझे उजियाले में निकाल ले
आएगा, और मैं उसका धर्म देखूंगा।
१० तब मेरी बैरिन जो मुझ से यह कहती
है कि तेरा परमेश्वर यहोवा कहां रहा, वह
भी उसे देखेगी और लज्जा से मुंह ढांपेगी।
मैं अपनी आंखों से उसे देखूंगा, तब वह
सडकों की कीच की नाईं लताडी जाएगी।।
११ तेरे बाडों के बान्धने के दिन उसकी
सीमा बढ़ाई जाएगी। १२ उस दिन अश्शूर
से, और मिस्र के नगरों से, और मिस्र
और महानद के बीच के, और समुद्र-समुद्र
और पहाड-पहाड के बीच के देशों से लोग
तेरे पास आएंगे। १३ तौभी यह देश
अपने रहनेवालों के कामों के कारण
उजाड ही रहेगा।।
१४ तू लाठी लिये हुए अपनी प्रजा की
चरवाही कर, अर्थात् अपने निज भाग की
भेड-बकरियों की, जो कर्म्मेल * के वन में
अलग बैठती हैं, वे पूर्वकाल की नाईं
बाशान और गिलाद में चरा करें।।
१५ जैसे कि मिस्र देश से तेरे निकल
आने के दिनों में, वैसी ही अब मैं उसको
अद्भुत काम दिखाऊंगा। १६ अन्य-
जातियां देखकर अपने सारे पराक्रम के
विषय में लजाएंगी, वे अपने मुंह को हाथ
से छिपाएंगी, और उनके कान बहिरे हो
जाएंगे। १७ वे सर्प की नाईं मिट्टी
चाटेंगी, और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं
की भांति अपने बिलों में से कांपती हुई
निकलेंगी, वे हमारे परमेश्वर यहोवा के
पास थरथराती हुई आएंगी, और वे तुझ
से डरेंगी।।
१८ तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है
जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज
भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दे?
वह अपने क्रोध को सदा बनाए नहीं रहता,
क्योंकि वह करुणा से प्रीति रखता है।
१९ वह फिर हम पर दया करेगा, और
हमारे अधर्म के कामों को लताड डालेगा।
तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल
देगा। २० तू याकूब के विषय में वह
सच्चाई, और इब्राहीम के विषय में वह
करुणा पूरी करेगा, जिस की शपथ तू
प्राचीनकाल के दिनों से लेकर अब तक
हमारे पितरों से खाता आया है।।

* मूल में—कर्म्मेल के बीच।

नहूम

1 नीनवे के विषय मे भारी वचन।
एल्कोशी नहूम के दर्शन की पुस्तक ॥
२ यहोवा जल उठनेवाला और बदला
लेनेवाला ईश्वर है; यहोवा बदला लेनेवाला
और जलजलाहट करनेवाला है; यहोवा
अपने द्रोहियो से बदला लेता है, और अपने
शत्रुओ का पाप नही भूलता *। ३ यहोवा
विलम्ब से क्रोध करनेवाला और बडा
शक्तिमान है, वह दोषी को किसी प्रकार
निर्दोष न ठहराएगा ॥

यहोवा बवडर और आधी मे होकर
चलता है, और बादल उसके पावो की धूलि
है। ४ उसके घुडकने से महानद सूख
जाते है, और समुद्र भी निर्जल हो जाता है;
बाशान और कर्म्मेल कुम्हलाते और
लबानोन की हरियाली जाती रहती है।
५ उसके स्पर्श से पहाड कांप उठते है और
पहाड़िया गल जाती है; उसके प्रताप से
पृथ्वी वरन सारा ससार अपने सब रहने-
वालों समेत थरथरा उठता है ॥

६ उसके क्रोध का साम्हना कौन कर
सकता है? और जब उसका क्रोध भडकता
है, तब कौन ठहर सकता है? उसकी जल-
जलाहट आग की नाईं भडक जाती है, और
चट्टानें उसकी शक्ति से फट फटकर गिरती
है। ७ यहोवा भला है, सकट के दिन में
वह दृढ गढ ठहरता है, और अपने शरणा-
गतों की सुधी रखता है। ८ परन्तु वह
उमडती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त
कर देगा, और अपने शत्रुओ को खदेड़कर
अन्धकार मे भगा देगा। ९ तुम यहोवा
के विरुद्ध क्या कल्पना कर रहे हो? वह
तुम्हारा अन्त कर देगा; विपत्ति दूसरी बार
पडने न पाएगी। १० क्योकि चाहे वे
काटो से उलझे हुए हो, और मदिरा के नशे
मे चूर भी हो *, तौभी वे सूखी खूटी की
नाईं भस्म किए जाएगे। ११ तुझ में से
एक निकला है, जो यहोवा के विरुद्ध
कल्पना करता और नीचता की युक्ति
बान्धता है ॥

१२ यहोवा यो कहता है, चाहे वे सब
प्रकार से सामर्थी हो, और बहुत भी हो,
तौभी पूरी रीति से काटे जाएगे और शून्य
हो जाएगे। मै ने तुझे दु.ख दिया है, परन्तु
फिर न दूगा। १३ क्योकि अब मै उसका
जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड
डालूगा, और तेरा बन्धन फाड डालूगा ॥

१४ यहोवा ने तेरे विषय मे यह आज्ञा
दी है कि आगे को तेरा वश न चले, मै
तेरे देवालयो मे से ढली और गढी हुई
मूरतो को काट डालूगा, मै तेरे लिये
कबर खोदूगा, क्योकि तू नीच है ॥

१५ देखो, पहाडों पर शुभसमाचार का
सुनानेवाला और शान्ति का प्रचार करने-
वाला आ रहा है। अब हे यहूदा, अपने पर्व
मान, और अपनी मन्नते पूरी कर, क्योकि
वह ओछा फिर कभी तेरे बीच में होकर
न चलेगा, वह पूरी रीति से नाश हुआ
है ॥

* मूल में—अपने शत्रुओं के लिये रख छोड़ता है।

* मूल में—अपने पीने में खूब मस्त हों।

२ सत्यानाश करनेवाला तेरे विरुद्ध
चढ़ आया है। गढ़ को दृढ़ कर, मार्ग
देखता हुआ चौकस रह, अपनी कमर
कस, अपना बल बढ़ा दे॥

२ यहोवा याकूब की बडाई इस्राएल
की बडाई के समान ज्यो की त्यो कर
रहा है, क्योंकि उजाडनेवाला ने उनको
उजाड दिया है और दाखलता की डालियो
को नाश किया है॥

३ उसके शूरवीरो की ढालें लाल रग
से रगी गईं, और उसके योद्धा लाल रग के
वस्त्र पहिने हुए हैं। तैयारी के दिन रथो
का लोहा आग की नाईं चमकता है,
और भाले* हिलाए जाते है। ४ रथ
सडको में बहुत वेग से हाके जाते और
चौको में इधर उधर चलाए जाते है, वे
पलीतो के समान दिखाई देते है, और
उनका वेग बिजली का सा है। ५ वह
अपने शूरवीरों को स्मरण करता है,
वे चलते चलते ठोकर खाते हैं, वे शहरपनाह
की ओर फुर्ती से जाते है, और काठ का
गुम्मट तैयार किया जाता है। ६ नहरो के
द्वार खुल जाते है, और राजभवन गलकर
बैठा जाता है। ७ हुसेब नगी करके बधु-
आई में ले ली जाएगी, और उसकी दासिया
छाती पीटती हुई पिण्डुकों की नाईं विलाप
करेगी। ८ नीनवे जब से बनी है, तब से
तालाब के समान है, तौभी वे भागे जाते है,
और "खडे हो, खडे हो", ऐसा पुकारे
जाने पर भी कोई मुह नही फेरता।
९ चादी को लूटो, सोने को लूटो, उसके
रखे हुए धन की बहुतायत, और विभव की
सब प्रकार की मनभावनी सामग्री का कुछ
परिमाण नही॥

१० वह खाली, छूछी और सूनी हो
गई है। मन कच्चा हो गया, और पाव
कापते है, और उन सभो की कटियों में
बडी पीडा उठी, और सभो के मुख का रग
उड गया है। ११ सिहो की वह माद,
और जवान सिंह के आखेट का वह स्थान
कहा रहा जिस में सिंह और सिहनी अपने
बच्चो समेत बेखटके फिरते थे? १२ सिंह
तो अपने डावरुओ के लिये बहुत आहेर
को फाडता था, और अपनी सिहनियो
के लिये आहेर का गला घोट घोटकर ले
जाता था, और अपनी गुफाओ और मादों
को आहेर से भर लेता था॥

१३ सेनाओ के यहोवा की यह वाणी
है, मैं तेरे विरुद्ध हू, और उसके रथो को
भस्म करके धुए में उडा दूगा, और उसके
जवान सिंह सरीखे वीर तलवार से मारे
जाएगे, मैं तेरे आहेर को पृथ्वी पर से
नाश करूगा, और तेरे दूतो का बोल फिर
सुना न जाएगा॥

३ हाय उस हत्यारी नगरी पर, वह
तो छल और लूट के धन से भरी हुई
है, लूट कम नही होती है। २ कोडो की
फटकार और पहियो की घडघडाहट हो
रही है, घोडे कूदते-फादते और रथ उछलते
चलते हैं। ३ सवार चढ़ाई करते, तलवारे
और भाले बिजली की नाईं चमकते है, मारे
हुओ की बहुतायत और लोथो का बडा ढेर
है, मुर्दों की कुछ गिनती नही, लोग मुर्दों
से ठोकर खा खाकर चलते है। ४ यह
सब उस अति सुन्दर वेश्या, और निपुण
टोनहिन के छिनाले की बहुतायत के कारण
हुआ, जो छिनाले के द्वारा जाति-जाति के
लोगो को, और टोने के द्वारा कुल-कुल के
लोगो को बेच डालती है॥

* मूल में—सनौवर।

५ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी
है, मै तेरे विरुद्ध हूं, और तेरे वस्त्र को
उठाकर, तुझे जाति-जाति के साम्हने
नंगी और राज्य-राज्य के साम्हने नीचा
दिखाऊंगा। ६ मै तुझ पर घिनौनी
वस्तुएं फेंककर तुझे तुच्छ कर दूंगा, और
सब से तेरी हंसी कराऊंगा। ७ और
जितने तुझे देखेंगे, सब तेरे पास से
भागकर कहेंगे, नीनवे नाश हो गई; कौन
उसके कारण विलाप करे? हम उसके
लिये शान्ति देनेवाला कहां से ढूंढ़कर ले
आए? ८ क्या तू अमोन नगरी से बढ़कर
है, जो नहरों के बीच बसी थी, और उसके
चारों ओर जल था, और महानद उसके
लिये किला और शहरपनाह का काम देता
था? ९ कूश और मिस्री उसको अन-
गिनित बल देते थे, पूत और लूबी तेरे
सहायक थे॥

१० तौभी लोग उसको बंधुआई में ले
गए, और उसके नन्हें बच्चे सड़कों के सिरे
पर पटक दिए गए; और उसके प्रतिष्ठित
पुरुषों के लिये उन्हों ने चिट्ठी डाली,
और उसके सब रईस बेड़ियों से जकडे गए।
११ तू भी मतवाली होगी, तू घबरा*
जाएगी; तू भी शत्रु के डर के मारे शरण
का स्थान ढूंढेगी। १२ तेरे सब गढ़ ऐसे
अंजीर के वृक्षों के समान होंगे जिन में
पहिले पक्के अंजीर लगे हों, यदि वे हिलाए
जाए तो फल खानेवाले के मुंह में गिरेंगे।
१३ देख, तेरे लोग जो तेरे बीच में हैं, वे
स्त्रियां बन गये हैं। तेरे देश में प्रवेश करने
के मार्ग तेरे शत्रुओं के लिये बिलकुल खुले
पड़े हैं; और रुकावट की छड़ें आग के कौर
हो गई हैं॥

१४ घिर जाने के दिनों के लिये पानी
भर ले, और गढ़ों को अधिक दृढ़ कर;
कीचड़ में आकर गारा लताड़, और भट्ठे
को सजा! १५ वहां तू आग में भस्म
होगी, और तलवार से तू नाश हो जाएगी।
वह येलेक नाम टिड्डी की नाईं तुझे निगल
जाएगी॥

यद्यपि तू अर्बे नाम टिड्डी के समान अन-
गिनिती भी हो जाए! १६ तेरे व्योपारी
आकाश के तारागण से भी अधिक अन-
गिनित हुए। टिड्डी चट करके उड़ जाती
है। १७ तेरे मुकुटधारी लोग टिड्डियों के
समान, और तेरे सेनापति टिड्डियों के
दलों सरीखे ठहरेंगे जो जाड़े के दिन में
बाड़ों पर टिकते हैं, परन्तु जब सूर्य दिखाई
देता है तब भाग जाते हैं; और कोई नहीं
जानता कि वे कहां गए॥

१८ हे अश्शूर के राजा, तेरे ठहराए हुए
चरवाहे ऊंघते हैं; तेरे शूरवीर भारी नींद
में पड़ गए हैं। तेरी प्रजा पहाड़ों पर
तितर-बितर हो गई है, और कोई उनको
फिर इकट्ठे नहीं करता। १९ तेरा घाव न
भर सकेगा, तेरा रोग असाध्य है। जितने
तेरा समाचार सुनेंगे, वे तेरे ऊपर ताली
बजाएंगे। क्योंकि ऐसा कौन है जिस पर
तेरी लगातार दुष्टता का प्रभाव न पड़ा
हो?

* मूल में—छिप।

हबक्कूक

१ भारी वचन जिसको हबक्कूक नबी
ने दर्शन में पाया ॥
२ हे यहोवा मैं कब तक तेरी दोहाई
देता रहूंगा, और तू न सुनेगा? मैं कब
तक तेरे सम्मुख "उपद्रव", "उपद्रव",
चिल्लाता रहूंगा? क्या तू उद्धार नहीं
करेगा? ३ तू मुझे अनर्थ काम क्यों
दिखाता है? और क्या कारण है कि तू
उत्पात को देखता ही रहता है? मेरे
साम्हने लूट-पाट और उपद्रव होते रहते हैं,
और झगड़ा हुआ करता है और वादविवाद
बढ़ता जाता है। ४ इसलिये व्यवस्था
ढीली हो गई और न्याय कभी नहीं प्रगट
होता। दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं,
सो न्याय का खून हो रहा है ॥
५ अन्यजातियों की ओर चित्त लगा-
कर देखो, और बहुत ही चकित हो। क्योंकि
मैं तुम्हारे ही दिनों में ऐसा काम करने पर
हूं कि जब वह तुम को बताया जाए तो
तुम उसकी प्रतीति न करोगे। ६ देखो,
मैं कसदियों को उभारने पर हूं, वे क्रूर और
उतावली करनेवाली जाति हैं, जो पराए
वासस्थानों के अधिकारी होने के लिये पृथ्वी
भर में फैल गए हैं। ७ वे भयानक और
डरावने हैं, वे आप ही अपने न्याय की बड़ाई
और प्रशंसा का कारण हैं। ८ उनके घोड़े
चीतों से भी अधिक वेग चलनेवाले हैं, और
सांझ को आहेर करनेवाले हुंडारों से
भी अधिक क्रूर हैं, उनके सवार दूर
दूर कूदते-फांदते आते हैं। हां, वे दूर से
चले आते हैं, और आहेर पर झपटनेवाले
उकाब की नाईं झपट्टा मारते हैं। ९ वे
सब के सब उपद्रव करने के लिये आते
हैं, साम्हने की ओर मुख किए हुए वे
सीधे बढ़े चले जाते हैं, और बंधुओं
को बालू के किनकों के समान बटोरते
हैं। १० राजाओं को वे ठट्ठों में उड़ाते
और हाकिमों का उपहास करते हैं, वे
सब दृढ़ गढ़ों को तुच्छ जानते हैं, क्योंकि
वे दमदमा बान्धकर* उनको जीत लेते हैं।
११ तब वे वायु की नाईं चलते और मर्यादा
छोड़कर दोषी ठहरते हैं, क्योंकि उनका
बल ही उनका देवता है ॥
१२ हे मेरे प्रभु यहोवा, हे मेरे पवित्र
परमेश्वर, क्या तू अनादि काल से नहीं
है? इस कारण हम लोग नहीं मरने के।
हे यहोवा, तू ने उनको न्याय करने
के लिये ठहराया है, हे चट्टान, तू
ने उलाहना देने के लिये उनको बैठाया
है। १३ तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि
तू बुराई को देख ही नहीं सकता,
और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह
सकता, फिर तू विश्वासघातियों को क्यों
देखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को
निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता
है? १४ तू क्यों मनुष्यों को समुद्र की
मछलियों के समान और उन रेंगनेवाले
जन्तुओं के समान बनाता है जिन पर कोई
शासन करनेवाला नहीं है। १५ वह उन
सब मनुष्यों को बन्सी से पकड़कर उठा
लेता और जाल में घसीटता और महाजाल

* मूल में—धूलि का ढेर लगाकर।

मे फसा लेता है, इस कारण वह
आनन्दित और मगन है। १६ इसीलिये
वह अपने जाल के साम्हने बलि चढ़ाता
और अपने महाजाल के आगे धूप जलाता
है, क्योंकि इन्ही के द्वारा उसका भाग
पुष्ट होता, और उसका भोजन चिकना
होता है। १७ परन्तु क्या वह जाल को
खाली करने और जाति जाति के लोगों को
लगातार निर्दयता से घात करने से
हाथ न रोकेगा ?

२ मै अपने पहरे पर खडा रहूंगा, और
गुम्मट पर चढ़कर ठहरा रहूंगा, और
ताकता रहूंगा कि मुझ से वह क्या कहेगा ?
और मै अपने दिए हुए उलाहने के विषय
क्या उत्तर दू ? २ यहोवा ने मुझ से कहा,
दर्शन की बाते लिख दे; वरन पटियाओ पर
साफ साफ लिख दे कि दौडते हुए भी वे
सहज से पढी जाए*। ३ क्योकि इस
दर्शन की बात नियत समय मे पूरी होनेवाली
है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से
आता† है; इस मे धोखा न होगा। चाहे
इस में विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट
जोहते रहना, क्योकि वह निश्चय पूरी
होगी‡ और उस में देर न होगी। ४ देख,
उसका मन फूला हुआ है, उसका मन सीधा
नही है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास के द्वारा
जीवित रहेगा। ५ दाखमधु से धोखा होता
है; अहकारी पुरुष घर में नही रहता, और
उसकी लालसा अधोलोक के समान पूरी
नही होती, और मृत्यु की नाई उसका पेट
नही भरता। वह सब जातियो को अपने
पास खीच लेता, और सब देशो के लोगो
को अपने पास इकट्ठे कर रखता है॥

६ क्या वे सब उसका दृष्टान्त चलाकर,
और उस पर ताना मारकर न कहेंगे कि
हाय उस पर जो पराया धन छीन छीनकर
धनवान हो जाता है? कब तक? हाय
उस पर जो अपना घर बन्धक की वस्तुओ
से भर लेता है। ७ जो तुझ से कर्ज़ लेते
है, क्या वे लोग अचानक न उठेंगे? और
क्या वे न जागेंगे जो तुझ को सकट में
डालेंगे? ८ और क्या तू उन से लूटा न
जाएगा? तू ने बहुत सी जातियो को लूट
लिया है, सो सब बचे हुए लोग तुझे भी
लूट लेंगे। इसका कारण मनुष्यों की हत्या
है, और वह उपद्रव भी जो तू ने इस देश
और राजधानी और इसके सब रहनेवालों
पर किया है॥

९ हाय उस पर, जो अपने घर के लिये
अन्याय के लाभ का लोभी है ताकि वह
अपना घोसला ऊचे स्थान में बनाकर
विपत्ति से बचे। १० तू ने बहुत सी
जातियो को काटकर अपने घर लिये
लज्जा की युक्ति बान्धी, और अपने ही
प्राण का दोषी ठहरा है। ११ क्योकि
घर की भीत का पत्थर दोहाई देता है,
और उसके छत की कडी उनके स्वर
में स्वर मिलाकर उत्तर देती है॥

१२ हाय उस पर जो हत्या करके नगर
को बनाता, और कुटिलता करके गढ को
दृढ करता है। १३ देखो, क्या सेनाओ के
यहोवा की ओर से यह नही होता कि देश-
देश के लोग परिश्रम तो करते है परन्तु वे
आग का कौर होते है, और राज्य-राज्य के
लोगों का परिश्रम व्यर्थ ही ठहरता है?
१४ क्योकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के

* मूल में—जिस से उसका पढ़नेवाला दौड़े।

† मूल में—वरन वह अन्त की ओर हांफती है।

‡ मूल में—निश्चय आएगी।

ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से
भर जाता है * ॥
१५ हाय उस पर, जो अपने पड़ोसी को
मदिरा पिलाता, और उस में विष मिलाकर
उसको मतवाला कर देता है कि उसको नंगा
देखे। १६ तू महिमा की सन्ती अपमान ही
से भर गया है। तू भी पी, और अपने को
खतनाहीन प्रगट कर! जो कटोरा यहोवा
के दहिने हाथ में रहता है, सो घूमकर
तेरी ओर भी जाएगा, और तेरा विभव
तेरी छांट से अशुद्ध हो जाएगा। १७ क्योंकि
लबानोन में तेरा किया हुआ उपद्रव और
वहां के पशुओं पर तेरा किया हुआ उत्पात,
जिन से वे भयभीत हो गए थे, तुझी पर आ
पड़ेंगे। यह मनुष्यों की हत्या और उस
उपद्रव के कारण होगा, जो इस देश और
राजधानी और इसके सब रहनेवालों पर
किया गया है ॥
१८ खुदी हुई मूरत में क्या लाभ देखकर
बनानेवाले ने उसे खोदा है? फिर झूठ
सिखानेवाली और ढली हुई मूरत में क्या
लाभ देखकर ढालनेवाले ने उस पर इतना
भरोसा रखा है कि न बोलनेवाली और
निकम्मी मूरत बनाए? १९ हाय उस
पर जो काठ से कहता है, जाग, वा
अबोल पत्थर से, उठ! क्या वह
सिखाएगा? देखो, वह सोने चान्दी में मढ़ा
हुआ है, परन्तु उस में आत्मा नहीं है ॥
२० परन्तु यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में
है, समस्त पृथ्वी उसके साम्हने शान्त रहे ॥

३ शिग्योनीत की रीति पर हबक्कूक
नबी की प्रार्थना ॥
२ हे यहोवा, मैं तेरी कीर्ति सुनकर डर
गया।

* मूल में—जैसे जल समुद्र को ढापता है।

हे यहोवा, वर्तमान युग में अपने काम
को पूरा कर,
इसी युग में तू उसको प्रकट कर,
क्रोध करते हुए भी दया करना स्मरण
कर ॥
३ ईश्वर तेमान से आया,
पवित्र ईश्वर पारान पर्वत से आ रहा
है।
उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है,
और पृथ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण
हो गई है ॥ (सेला)
४ उसकी ज्योति सूर्य के तुल्य थी,
उसके हाथ से किरणें निकल रही
थीं,
और इन में उसका सामर्थ छिपा हुआ
था।
५ उसके आगे आगे मरी फैलती गई,
और उसके पांवों से महाज्वर निकलता
गया।
६ वह खड़ा होकर पृथ्वी को नाप रहा
था,
उस ने देखा और जाति जाति के लोग
घबरा गए,
तब सनातन पर्वत चकनाचूर हो गए,
और सनातन की पहाड़ियां झुक गईं।
उसकी गति अनन्त काल से एक सी
है।
७ मुझे कूशान के तम्बू में रहनेवाले दुःख
से दबे दिखाई पड़े,
और मिद्यान देश के डेरे डगमगा गए।
८ हे यहोवा, क्या तू नदियों पर रिसियाया
था?
क्या तेरा क्रोध नदियों पर भड़का
था,
अथवा क्या तेरी जलजलाहट समुद्र पर
भड़की थी,

जब तू अपने घोड़ो पर और उद्धार
करनेवाले विजयी रथो पर चढ़कर
आ रहा था ?
९ तेरा धनुष खोल में से निकल गया,
तेरे दण्ड का वचन शपथ के साथ हुआ
था। (सेला)
तू ने धरती को नदियो से चीर डाला।
१० पहाड़ तुझे देखकर काप उठे,
आधी और जलप्रलय निकल गए,
गहिरा सागर बोल उठा और अपने
हाथों अर्थात् लहरो को ऊपर
उठाया।
११ तेरे उड़नेवाले तीरो के चलने की
ज्योति से,
और तेरे चमकीले भाले की झलक के
प्रकाश से
सूर्य और चन्द्रमा अपने अपने स्थान
पर ठहर गए॥
१२ तू क्रोध में आकर पृथ्वी पर चल
निकला,
तू ने जाति जाति को क्रोध से नाश
किया।
१३ तू अपनी प्रजा के उद्धार के लिये
निकला,
हा, अपने अभिषिक्त के सग होकर
उद्धार के लिये निकला।
तू ने दुष्ट के घर के सिर को घायल
करके
उसे गले से नेव तक नगा कर
दिया। (सेला)
१४ तू ने उसके योद्धाओ के सिरो को उसी
की बर्छी से छेदा है,
वे मुझ को तितर-बितर करने के लिये
बवडर की आधी की नाईं आए,
और दीन लोगों को घात लगाकर
मार डालने की आशा से आनन्दित
थे।
१५ तू अपने घोड़ों पर सवार होकर समुद्र
से
हा, जलप्रलय से पार हो गया॥
१६ यह सब सुनते ही मेरा कलेजा काप
उठा,
मेरे ओठ थरथराने लगे,
मेरी हड्डिया सड़ने लगी, और मैं खड़े
खड़े कापने लगा।
मैं शान्ति से उस दिन की बाट जोहता
रहूगा जब दल बाधकर प्रजा चढ़ाई
करे॥
१७ क्योंकि चाहे अजीर के वृक्षो में फूल न
लगें,
और न दाखलताओ मे फल लगें,
जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया
जाए
और खेतो मे अन्न न उपजे,
भेड़शालाओ मे भेड़-बकरिया न रहें,
और न थानो मे गाय बैल हो,
१८ तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित
और मगन रहूगा,
और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के
द्वारा अति प्रसन्न रहूगा॥
१९ यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है,
वह मेरे पाव हरिणो के समान बना
देता है,
वह मुझ को मेरे ऊचे स्थानों पर
चलाता है॥

(प्रधान बजानेवालों के लिये मेरे
तारवाले बाजों के साथ।)

सपन्याह

१ आमोन के पुत्र यहूदा के राजा
योशिय्याह के दिनों में, सपन्याह के
पास जो हिजकिय्याह के पुत्र अमर्याह का
परपोता और गदल्याह का पोता और कूशी
का पुत्र था, यहोवा का यह वचन पहुंचा
२ मैं धरती के ऊपर से सब का अन्त
कर दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। ३ मैं
मनुष्य और पशु दोनों का अन्त कर दूंगा,
मैं आकाश के पक्षियों और समुद्र की
मछलियों का, और दुष्टों समेत उनकी रखी
हुई ठोकरों के कारण का भी अन्त कर
दूंगा, मैं मनुष्य जाति को भी धरती पर
से नाश कर डालूंगा, यहोवा की यही वाणी
है। ४ मैं यहूदा पर और यरूशलेम के
सब रहनेवालों पर हाथ उठाऊंगा, और इस
स्थान में बाल के बचे हुओं को और याजकों
समेत देवताओं के पुजारियों के नाम को
नाश कर दूंगा। ५ जो लोग अपने अपने
घर की छत पर आकाश के गण को
दण्डवत् करते हैं, और जो लोग दण्डवत्
करते हुए यहोवा की सेवा करने की शपथ
खाते और अपने मोलेक की भी शपथ खाते
हैं, ६ और जो यहोवा के पीछे चलने से
लौट गए हैं, और जिन्हों ने न तो यहोवा
को ढूंढा, और न उसकी खोज में लगे,
उनको भी मैं सत्यानाश कर डालूंगा॥
७ परमेश्वर यहोवा के साम्हने शान्त
रहो! क्योंकि यहोवा का दिन निकट है,
यहोवा ने यज्ञ सिद्ध किया है, और अपने
पाहुनों को पवित्र किया है। ८ और
यहोवा के यज्ञ के दिन, मैं हाकिमों और
राजकुमारों को और जितने परदेश के वस्त्र
पहिना करते हैं, उनको भी दण्ड दूंगा।
९ उस दिन मैं उन सभों को दण्ड दूंगा
जो डेवढ़ी को लांघते, और अपने स्वामी के
घर को उपद्रव और छल से भर देते हैं॥
१० यहोवा की यह वाणी है, कि उस
दिन मछली फाटक के पास चिल्लाहट का,
और नये टोले मिश्नाह में हाहाकार का,
और टीलों पर बड़े धमाके का शब्द होगा।
११ हे मक्तेश के रहनेवालो, हाय, हाय,
करो! क्योंकि सब व्योपारी मिट गए,
जितने चान्दी से लदे थे, उन सब का नाश
हो गया है। १२ उस समय मैं दीपक लिए
हुए यरूशलेम में ढूंढ़-ढांढ़ करूंगा, और जो
लोग दाखमधु के तलछट तथा मैल के समान
बैठे हुए मन में कहते हैं कि यहोवा न तो
भला करेगा और न बुरा, उनको मैं दण्ड
दूंगा। १३ तब उनकी धन सम्पत्ति लूटी
जाएगी, और उनके घर उजाड़ होंगे, वे
घर तो बनाएंगे, परन्तु उन में रहने न
पाएंगे, और वे दाख की बारियां लगाएंगे,
परन्तु उन से दाखमधु न पीने पाएंगे॥
१४ यहोवा का भयानक दिन निकट है,
वह बहुत वेग से समीप चला आता है,
यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है, वहां
वीर दुःख के मारे चिल्लाता है। १५ वह
रोष का दिन होगा, वह संकट और सकेती
का दिन, वह उजाड़ और उधेड़ का दिन,
वह अन्धेर और घोर अन्धकार का दिन,
वह बादल और काली घटा का दिन होगा।
१६ वह गढ़वाले नगरों और ऊंचे गुम्मटों
के विरुद्ध नरसिंगा फूंकने और ललकारने
का दिन होगा। १७ मैं मनुष्यों को संकट

में डालूगा, और वे अन्धों की नाईं चलेंगे,
क्योंकि उन्हों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया
है; उनका लोहू धूलि के समान, और
उनका मास विष्ठा की नाईं फेंक* दिया
जाएगा। १८ यहोवा के रोष के दिन में, न
तो चान्दी से उनका बचाव होगा, और न
सोने से; क्योंकि उसके जलन की आग
से सारी पृथ्वी† भस्म हो जाएगी, वह
पृथ्वी के सारे रहनेवालो को घबराकर
उनका अन्त कर डालेगा॥

२ हे निर्लज्ज जाति के लोगो, इकट्ठे
हो! २ इस से पहिले कि दण्ड की
आज्ञा पूरी हो और बचाव का दिन भूसी
की नाईं निकले, और यहोवा का भड़कता
हुआ क्रोध तुम पर आ पडे, और यहोवा के
क्रोध का दिन तुम पर आए, तुम इकट्ठे हो।
३ हे पृथ्वी के सब नम्र लोगो, हे यहोवा
के नियम के माननेवालो, उसको ढूढते रहो,
धर्म को ढूढो, नम्रता को ढूढो; सम्भव
है तुम यहोवा के क्रोध के दिन मे शरण
पाओ। ४ क्योकि अज्जा तो निर्जन और
अश्कलोन उजाड हो जाएगा; अशदोद के
निवासी दिनदुपहरी निकाल दिए जाएगे,
और एक्रोन‡ उखाडा जाएगा॥

५ समुद्रतीर के रहनेवालों पर हाय,
करेती जाति पर हाय; हे कनान, हे
पलिश्तियों के देश, यहोवा का वचन तेरे
विरुद्ध है; और मै तुझ को ऐसा नाश
करूगा कि तुझ में कोई न बचेगा।
६ और उसी समुद्रतीर पर चरवाहो
के घर होगे और भेड़शालाओं समेत
चराई ही चराई होगी। ७ अर्थात्
वही समुद्रतीर यहूदा के घराने के बचे

* मूल में—उण्डेल। † वा देश।
‡ एक्रोन शब्द का अर्थ उखाड है।

हुओ को मिलेगी, वे उस पर चराएगे;
वे अश्कलोन के छोड़े हुए घरों में
साझ को लेटेंगे, क्योंकि उनका परमेश्वर
यहोवा उनकी सुधि लेकर उनके बधुओं
को लौटा ले जाएगा॥

८ मोआब ने जो मेरी प्रजा की नाम-
धराई और अम्मोनियों ने जो उसकी निन्दा
करके उसके देश की सीमा पर चढ़ाई की,
वह मेरे कानो तक पहुची है। ९ इस
कारण इस्राएल के परमेश्वर, सेनाओ के
यहोवा की यह वाणी है, मेरे जीवन की
शपथ, निश्चय मोआब सदोम के समान,
और अम्मोनी अमोरा की नाई बिच्छू पेडों
के स्थान और नमक की खानिया हो जाएगे,
और सदैव उजडे रहेगे। मेरी प्रजा के
बचे हुए उनको लूटेंगे*, और मेरी जाति
के शेष लोग उनको अपने भाग मे पाएगे।
१० यह उनके गर्व का पलटा होगा, क्योंकि
उन्हो ने सेनाओ के यहोवा की प्रजा की
नामधराई की, और उस पर बडाई मारी
है। ११ यहोवा उनको डरावना दिखाई
देगा, वह पृथ्वी भर के देवताओं को भूखो
मार डालेगा, और अन्यजातियो के सब
द्वीपों के निवासी अपने अपने स्थान से
उसको दण्डवत् करेगे॥

१२ हे कूशियो, तुम भी मेरी तलवार
से मारे जाओगे। १३ वह अपना हाथ
उत्तर दिशा की ओर बढाकर अश्शूर को
नाश करेगा, और नीनवे को उजाड
कर जगल के समान निर्जल कर देगा।
१४ उसके बीच में सब जाति के वनपशु
झुड के झुड बैठेंगे; उसके खम्भों की
कगनियो पर धनेश और साही दोनों रात
को बसेरा करेगे और उसकी खिड़कियो में

* मूल में—अपना लेंगे।

बोला करेंगे, उसकी डेवढ़िया सूनी पड़ी
रहेंगी, और देवदार की लकड़ी उघारी
जाएगी। १५ यह वही नगरी है, जो मगन
रहती और निडर बैठी रहती थी, और
सोचती थी कि मैं ही हूं, और मुझे छोड़
कोई है ही नहीं। परन्तु अब यह उजाड़
और वनपशुओं के बैठने का स्थान बन गया
है, यहां तक कि जो कोई इसके पास होकर
चले, वह ताली बजाएगा और हाथ
हिलाएगा॥

३ हाय बलवा करनेवाली और अशुद्ध
और अन्धेर से भरी हुई नगरी!
२ उस ने मेरी नहीं सुनी, उस ने ताड़ना
से भी नहीं माना, उस ने यहोवा पर
भरोसा नहीं रखा, वह अपने परमेश्वर
के समीप नहीं आई॥

३ उसके हाकिम गरजनेवाले सिंह
ठहरे, उसके न्यायी सांझ को आहेर करने-
वाले हुंडार हैं जो बिहान के लिये कुछ नहीं
छोड़ते। ४ उसके भविष्यद्वक्ता व्यर्थ
बकनेवाले और विश्वासघाती हैं, उसके
याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध किया
और व्यवस्था में खींच-खांच की है।
५ यहोवा जो उसके बीच में है, वह धर्मी
है, वह कुटिलता न करेगा, वह अपना
न्याय प्रति भोर प्रगट करता है और
चूकता नहीं, परन्तु कुटिल जन को
लज्जा आती ही नहीं। ६ मैं ने अन्य-
जातियों को यहां तक नाश किया, कि
उनके कोनेवाले गुम्मट उजड़ गए, मैं ने
उनकी सड़कों को यहां तक सूनी किया,
कि कोई उन पर नहीं चलता, उनके
नगर यहां तक नाश हुए कि उन में कोई
मनुष्य वरन कोई भी प्राणी * नहीं रहा।

* मूल में—रहनेवाला।

७ मैं ने कहा, अब तू मेरा भय मानेगी, और
मेरी ताड़ना अंगीकार करेगी जिस से उसका
धाम उस सब के अनुसार जो मैं ने ठहराया
था, नाश न हो। परन्तु वे सब प्रकार
के बुरे बुरे काम यत्न से * करने लगे॥

८ इस कारण यहोवा की यह वाणी है,
कि जब तक मैं नाश करने को न उठूं, तब
तक तुम मेरी बाट जोहते रहो। मैं ने यह
ठाना है कि जाति-जाति के और राज्य-
राज्य के लोगों को मैं इकट्ठा करूं, कि उन
पर अपने क्रोध की आग पूरी रीति से
भड़काऊं, क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन
की आग से भस्म हो जाएगी॥

९ और उस समय मैं देश-देश के लोगों
से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊंगा, कि
वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें, और
एक मन † से कन्धे से कन्धा मिलाए हुए
उसकी सेवा करें। १० मेरी तितर-बितर
की हुई प्रजा ‡ मुझ से बिनती करती हुई
मेरी भेंट बनकर आएगी॥

११ उस दिन, तू अपने सब बड़े से बड़े
कामों से, जिन्हें करके तू मुझ से फिर गई
थी, फिर लज्जित न होगी। उस समय मैं
तेरे बीच से सब फूले हुए घमण्डियों को दूर
करूंगा, और तू मेरे पवित्र पर्वत पर फिर
कभी अभिमान न करेगी। १२ क्योंकि मैं
तेरे बीच में दीन और कंगाल लोगों का एक
दल बचा रखूंगा, और वे यहोवा के नाम की
शरण लेंगे। १३ इस्राएल के बचे हुए
लोग न तो कुटिलता करेंगे और न झूठ
बोलेंगे, और न उनके मुंह से छल की
बातें निकलेंगी §। वे चरेंगे और विश्राम

* मूल में—तड़के उठकर।
† मूल में—एक कन्धे या पीठ में।
‡ मूल में—कि‍प कुओं की बेटी।
§ मूल में—मुंह से छली जीभ पाई जाएगी।

करेंगे, और कोई उनको डरानेवाला न
होगा ॥
१४ हे सिय्योन *, ऊंचे स्वर से गा, हे
इस्राएल, जयजयकार कर! हे यरूशलेम †
अपने सम्पूर्ण मन से आनन्द कर, और प्रसन्न
हो! १५ यहोवा ने तेरा दण्ड दूर कर
दिया और तेरा शत्रु भी दूर किया गया है।
इस्राएल का राजा यहोवा तेरे बीच में है,
इसलिये तू फिर विपत्ति न भोगेगी।
१६ उस समय यरूशलेम से यह कहा
जाएगा, हे सिय्योन मत डर, तेरे हाथ ढीले
न पड़ने पाएं। १७ तेरा परमेश्वर यहोवा
तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी
है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा,
वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा, फिर
ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन
होगा ॥
१८ जो लोग नियत पर्वों में सम्मिलित
न होने के कारण खेदित रहते हैं, उनको

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—यरूशलेम की बेटी।

मैं इकट्ठा करूंगा, क्योंकि वे तेरे हैं, और
उसकी नामधराई उनको बोझ जान पड़ती
है। १९ उस समय मैं उन सभों से जो
तुझे दुःख देते हैं, उचित बर्ताव करूंगा।
और मैं लंगड़ों * को चंगा करूंगा, और
बरबस निकाले † हुओं को इकट्ठा करूंगा,
और जिनकी लज्जा की चर्चा सारी पृथ्वी
पर फैली है, उनकी प्रशंसा और कीर्त्ति सब
कहीं फैलाऊंगा ‡। २० उसी समय मैं
तुम्हें ले जाऊंगा, और उसी समय मैं तुम्हें
इकट्ठा करूंगा; और जब मैं तुम्हारे साम्हने
तुम्हारे बंधुओं को लौटा लाऊंगा, तब
पृथ्वी की सारी जातियों के बीच में तुम्हारी
कीर्त्ति और प्रशंसा फैला § दूंगा, यहोवा
का यही वचन है ॥

* मूल में—लंगड़ानेवाली।
† मूल में—निकाली हुई।
‡ मूल में—उनकी प्रशंसा और कीर्त्ति ठहराऊंगा।
§ मूल में—तुम को कीर्त्ति और प्रशंसा ठहराऊंगा।

हाग्गै

१ दारा राजा के दूसरे वर्ष के छठवें
महीने के पहिले दिन, यहोवा का यह
वचन, हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा,
शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल के पास,
जो यहूदा का अधिपति था, और
यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के
पास पहुंचा: २ सेनाओं का यहोवा यों
कहता है, ये लोग कहते हैं कि यहोवा
का भवन बनाने का समय नहीं आया
है। ३ फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै
भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुंचा, ४ क्या
तुम्हारे लिये अपने छतवाले घरों
में रहने का समय है, जब कि यह भवन
उजाड़ पड़ा है? ५ इसलिये अब सेनाओं

का यहोवा यों कहता है, अपनी अपनी चाल-
चलन पर ध्यान करो। ६ तुम ने बहुत
बोया परन्तु थोडा काटा, तुम खाते हो,
परन्तु पेट नहीं भरता, तुम पीते हो, परन्तु
प्यास नहीं बुझती, तुम कपडे पहिनते हो,
परन्तु गरमाते नहीं, और जो मजदूरी
कमाता है, वह अपनी मजदूरी की कमाई
को छेदवाली थैली में रखता है ॥

७ सेनाओ का यहोवा तुम से यों कहता
है, अपने अपने चालचलन पर सोचो।
८ पहाड पर चढ जाओ और लकडी ले
आओ और इस भवन को बनाओ, और मैं
उसको देखकर प्रसन्न हूंगा, और मेरी
महिमा होगी, यहोवा का यही वचन
है। ९ तुम ने बहुत उपज की आशा
रखी, परन्तु देखो थोडी ही है, और जब
तुम उसे घर ले आए, तब मैं ने उसको उडा
दिया। सेनाओ के यहोवा की यह वाणी है,
ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिये नहीं, कि
मेरा भवन उजाड पडा है और तुम में से
प्रत्येक अपने अपने घर को दौडा चला जाता
है? १० इस कारण आकाश से ओस
गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनो
बन्द हैं। ११ और मेरी आज्ञा से पृथ्वी
और पहाडो पर, और अन्न और नये दाख-
मधु पर और ताजे तेल पर, और जो कुछ
भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यो
और घरैलू पशुओ पर, और उनके परिश्रम
की सारी कमाई पर भी अकाल पडा है ॥

१२ तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल
और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक
ने सब बचे हुए लोगो समेत अपने परमेश्वर
यहोवा की बात मानी, और जो वचन उनके
परमेश्वर यहोवा ने उन से कहने के लिये
हाग्गै भविष्यद्वक्ता को भेज दिया था, उसे
उन्हो ने मान लिया, और लोगो ने यहोवा
का भय माना। १३ तब यहोवा के दूत
हाग्गै ने यहोवा से आज्ञा पाकर उन लोगो
से यह कहा, यहोवा की यह वाणी है, मैं
तुम्हारे संग हूं। १४ और यहोवा ने
शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल को जो
यहूदा का अधिपति था, और यहोसादाक
के पुत्र यहोशू महायाजक को, और
सब बचे हुए लोगो के मन को उभार
कर उत्साह से भर दिया कि वे
आकर अपने परमेश्वर, सेनाओ के यहोवा
के भवन को बनाने में लग जाए। १५ यह
दारा राजा के दूसरे वर्ष के छठवें महीने के
चौबीसवें दिन हुआ ॥

२ फिर सातवें महीने के इक्कीसवें
दिन को यहोवा का यह वचन हाग्गै
भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा, २ शालती-
एल के पुत्र यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल,
और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक,
और सब बचे हुए लोगो से यह बात कह,
३ तुम में से कौन है, जिस ने इस भवन
की पहिली महिमा देखी है? अब तुम इसे
कैसी दशा में देखते हो? क्या यह सच
नहीं कि यह तुम्हारी दृष्टि में उस पहिले
की अपेक्षा कुछ भी अच्छा नहीं है?
४ तौभी, अब यहोवा की यह वाणी है, हे
जरुब्बाबेल, हियाव बान्ध, और हे यहोसा-
दाक के पुत्र यहोशू महायाजक, हियाव
बान्ध, और यहोवा की यह भी वाणी है कि
हे देश के सब लोगो हियाव बान्धकर काम
करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं, सेनाओ के
यहोवा की यही वाणी है। ५ तुम्हारे मिस्र
से निकलने के समय जो वाचा मैं ने तुम से
बान्धी थी, उसी वाचा के अनुसार मेरा
आत्मा तुम्हारे बीच में बना है, इसलिये तुम
मत डरो। ६ क्योंकि सेनाओं का यहोवा

यों कहता है, अब थोडी ही देर बाकी है कि
मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र और स्थल
सब को कम्पित करूगा। ७ और मैं सारी
जातियो को कम्पकपाऊगा, और सारी
जातियो की मनभावनी वस्तुए आएगी;
और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज
से भर दूगा, सेनाओं के यहोवा का यही
वचन है। ८ चान्दी तो मेरी है, और सोना
भी मेरा ही है, सेनाओ के यहोवा की यही
वाणी है। ९ इस भवन की पिछली महिमा
इसकी पहिली महिमा से वडी होगी,
सेनाओ के यहोवा का यही वचन है, और
इस स्थान मे मैं शान्ति दूगा, सेनाओ के
यहोवा की यही वाणी है ॥

१० दारा के दूसरे वर्ष के नौवें महीने
के चौबीसवें दिन को, यहोवा का यह
वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के पास पहुचा,
११ सेनाओं का यहोवा यो कहता है
याजको से इस बात की व्यवस्था पूछ,
१२ यदि कोई अपने वस्त्र के आचल
मे पवित्र मास बान्धकर, उसी आचल
से रोटी वा पकाए हुए भोजन वा दाखमधु
वा तेल वा किसी प्रकार के भोजन को
छुए, तो क्या वह भोजन पवित्र
ठहरेगा? याजकों ने उत्तर दिया, नही।
१३ फिर हाग्गै ने पूछा, यदि कोई जन
मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध होकर
ऐसी किसी वस्तु को छुए, तो क्या वह अशुद्ध
ठहरेगी? याजको ने उत्तर दिया, हा,
अशुद्ध ठहरेगी। १४ फिर हाग्गै ने कहा,
यहोवा की यही वाणी है, कि मेरी दृष्टि मे
यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है, और
इनके सब काम भी वैसे है, और जो कुछ
वे वहा चढाते है, वह भी अशुद्ध है,
१५ अब सोच-विचार करो कि आज से
पहिले अर्थात् जब यहोवा के मन्दिर में
पत्थर पर पत्थर रखा ही नही गया था,
१६ उन दिनो में जब कोई अन्न के बीस
नपुओ की आशा से जाता, तब दस ही
पाता था, और जब कोई दाखरस के कुण्ड
के पास इस आशा से जाता कि पचास
बर्तन भर निकालें, तब बीस ही निकलते
थे। १७ मैं ने तुम्हारी सारी खेती को
लू और गेरुई और ओलो से मारा,
तौभी तुम मेरी ओर न फिरे, यहोवा
की यही वाणी है। १८ अब सोच-विचार
करो, कि आज से पहिले अर्थात् जिस दिन
यहोवा के मन्दिर की नेव डाली गई, उस
दिन से लेकर नौवे महीने के इसी चौबीसवे
दिन तक क्या दशा थी? इसका सोच-
विचार करो। १९ क्या अब तक बीज
खत्ते मे है? अब तक दाखलता और
अजीर और अनार और जलपाई के वृक्ष
नही फले, परन्तु आज के दिन से मैं तुम को
आशीष देता रहूगा ॥

२० उसी महीने के चौबीसवे दिन को
दूसरी बार यहोवा का यह वचन हाग्गै के
पास पहुचा, यहूदा के अधिपति जरुब्बाबेल
से यो कह २१ मैं आकाश और पृथ्वी
दोनो को कम्पाऊगा, २२ और मैं राज्य-
राज्य की गद्दी को उलट दूगा, मैं अन्य-
जातियो के राज्य-राज्य का बल तोड़ूगा,
और रथो को चढवैयो समेत उलट दूगा,
और घोडो समेत सवार एक दूसरे की
तलवार से गिरेंगे। २३ सेनाओ के यहोवा
की यह वाणी है, उस दिन, हे शालतीएल
के पुत्र मेरे दास जरुब्बाबेल, मैं तुझे लेकर
अगूठी के समान रखूगा, यहोवा की यही
वाणी है, क्योकि मैं ने तुझी को चुन लिया
है, सेनाओ के यहोवा की यही वाणी है ॥

जकर्याह

१ दारा के राज्य के दूसरे वर्ष के
आठवें महीने में जकर्याह भविष्यद्वक्ता
के पास जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का
पोता था, यहोवा का यह वचन पहुंचा
२ यहोवा तुम लोगों के पुरखाओं से बहुत
ही क्रोधित हुआ था। ३ इसलिये तू इन
लोगों से कह, सेनाओं का यहोवा यों कहता
है तुम मेरी ओर फिरो, सेनाओं के यहोवा
की यही वाणी है, तब मैं तुम्हारी ओर
फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है। ४ अपने पुरखाओं के समान न बनो,
उन से तो अगले भविष्यद्वक्ता यह पुकार
पुकारकर कहते थे कि सेनाओं का यहोवा
यों कहता है, अपने बुरे मार्गों से, और अपने
बुरे कामों से फिरो, परन्तु उन्हों ने न तो
सुना, और न मेरी ओर ध्यान दिया, यहोवा
की यही वाणी है। ५ तुम्हारे पुरखा
कहां रहे? और भविष्यद्वक्ता क्या
सदा जीवित रहते हैं? ६ परन्तु मेरे वचन
और मेरी आज्ञाएं जिन को मैं ने अपने दास
नबियों को दिया था, क्या वे तुम्हारे
पुरखाओं पर पूरी न हुई*? तब उन्हों ने
मन फिराया और कहा, सेनाओं के
यहोवा ने हमारे चालचलन और कामों के
अनुसार हम से जैसा व्यवहार करने को
कहा था, वैसा ही उस ने हम को बदला
दिया है॥

७ दारा के दूसरे वर्ष के शबात नाम
ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन को
जकर्याह नबी के पास जो बेरेक्याह का
पुत्र और इद्दो का पोता था, यहोवा
का वचन यों पहुंचा ८ मैं ने रात को
स्वप्न में क्या देखा कि एक पुरुष लाल
घोड़े पर चढ़ा हुआ उन मेंहदियों के
बीच खड़ा है जो नीचे स्थान में हैं, और
उसके पीछे लाल और सुरंग और श्वेत
घोड़े भी खड़े हैं। ९ तब मैं ने कहा,
हे मेरे प्रभु ये कौन हैं? तब जो दूत मुझ
से बातें करता था, उस ने मुझ से कहा, मैं
तुझे बताऊंगा कि ये कौन हैं। १० फिर
जो पुरुष मेंहदियों के बीच खड़ा था, उस ने
कहा, यह वे हैं जिन को यहोवा ने पृथ्वी
पर सैर अर्थात् घूमने के लिये भेजा है।
११ तब उन्हों ने यहोवा के उस दूत से जो
मेंहदियों के बीच खड़ा था, कहा, हम ने
पृथ्वी पर सैर किया है, और क्या देखा कि
सारी पृथ्वी में शान्ति और चैन है।
१२ तब यहोवा के दूत ने कहा, हे सेनाओं
के यहोवा, तू जो यरूशलेम और यहूदा के
नगरों पर सत्तर वर्ष से क्रोधित है, सो तू
उन पर कब तक दया न करेगा? १३ और
यहोवा ने उत्तर में उस दूत से जो मुझ से
बातें करता था, अच्छी अच्छी और शान्ति
की बातें कहीं। १४ तब जो दूत मुझ से
बातें करता था, उस ने मुझ से कहा, तू
पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा यों
कहता है, मुझे यरूशलेम और सिय्योन के
लिये बड़ी जलन हुई है। १५ और जो
जातियां सुख से रहती हैं, उन से मैं क्रोधित
हूं, क्योंकि मैं ने तो थोड़ा सा क्रोध किया

---

* मूल में—उन्हों ने तुम्हारे पुरखाओं को न जा लिया।

था, परन्तु उन्हों ने विपत्ति को बढा दिया।
१६ इस कारण यहोवा यों कहता है, अब
मैं दया करके यरूशलेम को लौट आया हू;
मेरा भवन उस में बनेगा, और यरूशलेम
पर नापने की डोरी डाली जाएगी, सेनाओ
के यहोवा की यही वाणी है। १७ फिर
यह भी पुकारकर कह कि सेनाओं का यहोवा
यों कहता है, मेरे नगर फिर उत्तम वस्तुओ
से भर जाएगे, और यहोवा फिर सिय्योन
को शान्ति देगा, और यरूशलेम को फिर
अपना ठहराएगा ॥

१८ फिर मैं ने जो आखे उठाई, तो क्या
देखा कि चार सीग है। १९ तब जो दूत
मुझ से बाते करता था, उस से मैं ने पूछा,
ये क्या है? उस ने मुझ से कहा, ये वे ही
सीग है, जिन्हो ने यहूदा और इस्राएल और
यरूलेशम को तितर-बितर किया है।
२० फिर यहोवा ने मुझे चार लोहार
दिखाए। २१ तब मैं ने पूछा, ये क्या करने
को आए है? उस ने कहा, ये वे ही सीग
है, जिन्हो ने यहूदा को ऐसा तितर-बितर
किया कि कोई सिर न उठा सका, परन्तु
ये लोग उन्हे भगाने के लिये और उन
जातियो के सीगो को काट डालने के लिये
आए है जिन्हो ने यहूदा के देश को तितर-
बितर करने के लिये उनके विरुद्ध अपने
अपने सीग उठाए थे ॥

२ फिर मैं ने आखे उठाई तो क्या
देखा, कि हाथ मे नापने की
डोरी लिए हुए एक पुरुष है। २ तब
मै ने उस से पूछा, तू कहा जाता है?
उस ने मुझ से कहा, यरूशलेम को
नापने को जाता हू कि देखू उसकी
चौडाई कितनी, और लम्बाई कितनी है।
३ तब मैं ने क्या देखा, कि जो दूत मुझ से
बातें करता था वह चला गया, और दूसरा
दूत उस से मिलने के लिये आकर, ४ उस
से कहता है, दौडकर इस जवान से कह,
यरूशलेम मनुष्यो और घरैलू पशुओं की
बहुतायत के मारे शहरपनाह के बाहर
बाहर भी बसेगी *। ५ और यहोवा की
यह वाणी है, कि मैं आप उसके चारों ओर
आग की सी शहरपनाह ठहरूगा, और उसके
बीच में तेजोमय होकर दिखाई दूगा † ॥

६ यहोवा की यह वाणी है, देखो, सुनो,
उत्तर के देश मे से भाग जाओ, क्योकि
मैं ने तुम को आकाश की चारो वायुओं के
समान तितर-बितर किया है। ७ हे
बाबुलवाली जाति ‡ के सग रहने-
वाली, सिय्योन को बचकर निकल भाग।
८ क्योकि सेनाओ का यहोवा यो कहता
है, उस तेज के प्रगट होने के बाद
उस ने मुझे उन जातियो के पास भेजा है
जो तुम्हे लूटती थी, क्योकि जो तुम को
छूता है, वह मेरी आख की पुतली ही
को छूता है। ९ देखो, मैं अपना हाथ
उन पर उठाऊगा §, तब वे उन्ही से लूटे
जाएगे जो उनके दास हुए थे। तब तुम
जानोगे कि सेनाओ के यहोवा ने मुझे भेजा
है। १० हे सिय्योन ‖, ऊचे स्वर से गा
और आनन्द कर, क्योकि देख, मै आकर
तेरे बीच मे निवास करूगा, यहोवा की यही
वाणी है। ११ उस समय बहुत सी
जातिया यहोवा से मिल जाएगी, और मेरी
प्रजा हो जाएगी, और मै तेरे बीच में वास

* मूल में—बिना शहरपनाह के गाव होकर बसेगी।
† मूल में—तेज हूगा।
‡ मूल में—बाबेल की बेटी।
§ मूल में—हिलाऊगा।
‖ मूल में—सिय्योन की बेटी।

करूगा, १२ और तू जानेगी कि सेनाओ
के यहोवा ने मुझे तेरे पास भेज दिया है।
और यहोवा यहूदा को पवित्र देश में अपना
भाग कर लेगा, और यरूशलेम को फिर
अपना ठहराएगा ॥

१३ हे सव प्राणियो। यहोवा के
साम्हने चुपके रहो, क्योंकि वह जागकर
अपने पवित्र निवासस्थान से निकला है ॥

३ फिर उस ने यहोशू महायाजक को
यहोवा के दूत के साम्हने खडा हुआ
मुझे दिखाया, और शैतान उसकी दहिनी
ओर उसका विरोध करने को खडा था।
२ तव यहोवा ने शैतान से कहा, हे
शैतान यहोवा तुझ को घुडके। यहोवा
जो यरूशलेम को अपना लेता है, वही
तुझे घुडके। क्या यह आग से
निकाली हुई लुकटी सी नही है?
३ उस समय यहोशू तो दूत के साम्हने
मैला वस्त्र पहिने हुए खडा था। ४ तव
दूत ने उन से जो साम्हने खडे थे कहा,
इसके ये मैले वस्त्र उतारो। फिर उस ने
उस से कहा, देख, मै ने तेरा अधर्म दूर
किया है, और मै तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना
देता हू। ५ तव मै ने कहा, इसके सिर पर
एक शुद्ध पगडी रखी जाए। और उन्हो ने
उसके सिर पर याजक के योग्य शुद्ध पगडी
रखी, और उसको वस्त्र पहिनाए, उस
समय यहोवा का दूत पास खडा रहा ॥
६ तव यहोवा के दूत ने यहोशू को
चिताकर कहा, ७ सेनाओ का यहोवा तुझ
से यो कहता है यदि तू मेरे मार्गों पर
चले, और जो कुछ मै ने तुझे सौंप दिया है
उसकी रक्षा करे, तो तू मेरे भवन का
न्यायी और मेरे आगनो का रक्षक होगा,
और मै तुझ को इनके वीच में आने जाने
दूगा जो पास खडे हैं। ८ हे यहोशू महा-
याजक, तू सुन ले, और तेरे भाईबन्धु जो
तेरे साम्हने खडे है वे भी सुनें, क्योंकि वे
मनुष्य शुभ शकुन है सुनो, मै अपने दास
शाख *को प्रगट करूगा। ९ उस पत्थर को
देख जिसे मै ने यहोशू के आगे रखा है, उस
एक ही पत्थर के ऊपर सात आखें वनी हैं,
सेनाओ के यहोवा की यह वाणी है, देख,
मै उस पत्थर पर खोद देता हू, और इस
देश के अधम को एक ही दिन में दूर कर
दूगा। १० उसी दिन तुम अपने अपने
भाईवन्धुओ को दाखलता और अजीर के
वृक्ष के नीचे आने के लिये वुलाओगे, सेनाओ
के यहोवा की यही वाणी है ॥

४ फिर जो दूत मुझ से वातें करत
था, उस ने आकर मुझे ऐसा जगाय
जैसा कोई नीद से जगाया जाए। २ औ
उस ने मुझ से पूछा, तुझे क्या देख पडता
है? मै ने कहा, एक दीवट है, जो सम्पूर्ण
सोने की है, और उसका कटोरा उसकी
चोटी पर है, और उस पर उसके सात
दीपक है, जिन के ऊपर वत्ती के लिये
सात सात नालिया है। ३ और दीवट के
पास जलपाई के दो वृक्ष हैं, एक उस कटोरे
की दहिनी ओर, और दूसरा उसकी वाईं
ओर। ४ तव मै ने उस दूत से जो मुझ से
वातें करता था, पूछा, हे मेरे प्रभु, ये क्या
है? ५ जो दूत मुझ से वातें करता था,
उस ने मुझ को उत्तर दिया, क्या तू नही
जानता कि ये क्या हैं? मै ने कहा, हे मेरे
प्रभु मै नही जानता। ६ तव उस ने मुझे
उत्तर देकर कहा, जरुब्बावेल के लिये
यहोवा का यह वचन है " न तो वल से,
और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा

* या डाली।

होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही
वचन है। ७ हे बड़े पहाड़, तू क्या है?
जरुब्बाबेल के साम्हने तू मैदान हो जाएगा;
और वह चोटी का पत्थर यह पुकारते हुए
आएगा, उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह!
८ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा, ९ जरुब्बाबेल ने अपने हाथों से
इस भवन की नेव डाली है, और वही अपने
हाथों से उसको तैयार भी करेगा। तब तू
जानेगा कि सेनाओं के यहोवा ने मुझे
तुम्हारे पास भेजा है। १० क्योंकि किस
ने छोटी बातों का दिन तुच्छ जाना है?
यहोवा अपनी इन सातों आंखों से सारी
पृथ्वी पर दृष्टि करके साहुल को जरुब्बाबेल
के हाथ में देखेगा, और आनन्दित होगा।
११ तब मैं ने उस से फिर पूछा, ये
दो जलपाई के वृक्ष क्या हैं जो दीवट
की दहिनी-बाईं ओर हैं? १२ फिर मैं
ने दूसरी बार उस से पूछा, जलपाई
की दोनों डालियें क्या हैं जो सोने की दोनों
नालियों के द्वारा अपने में से सोनहला तेल
उण्डेलती हैं? १३ उस ने मुझ से कहा,
क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं?
मैं ने कहा, हे मेरे प्रभु मैं नहीं जानता।
१४ तब उस ने कहा, इनका अर्थ ताजे
तेल से भरे हुए वे दो पुरुष हैं * जो सारी
पृथ्वी के परमेश्वर के पास हाज़िर रहते
हैं॥

५ मैं ने फिर आंखें उठाईं तो क्या
देखा, कि एक लिखा हुआ पत्र उड़
रहा है। २ दूत ने मुझ से पूछा, तुझे क्या
देख पड़ता है? मैं ने कहा, मुझे एक लिखा
हुआ पत्र उड़ता हुआ देख पड़ता है, जिस
की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ
की है। ३ तब उस ने मुझ से कहा, यह
वह शाप है जो इस सारे देश पर पड़ने-
वाला है *; क्योंकि जो कोई चोरी करता
है, वह उसकी एक ओर लिखे हुए के अनु-
सार मैल की नाईं निकाल दिया जाएगा;
और जो कोई शपथ खाता है, वह उसकी
दूसरी ओर लिखे हुए के अनुसार मैल की
नाईं निकाल दिया जाएगा। ४ सेनाओं
के यहोवा की यही वाणी है, मैं उसको ऐसा
चलाऊंगा † कि वह चोर के घर में और
मेरे नाम की झूठी शपथ खानेवाले के घर
में घुसकर ठहरेगा, और उसको लकड़ी
और पत्थरों समेत नाश कर देगा॥

५ तब जो दूत मुझ से बातें करता था,
उस ने बाहर जाकर मुझ से कहा, आंखें
उठाकर देख कि वह क्या वस्तु निकली जा
रही है? ६ मैं ने पूछा, वह क्या है?
उस ने कहा, वह वस्तु जो निकली जा रही
है वह एक एपा का नाप है। और उस ने
फिर कहा, सारे देश में लोगों का यही रूप
है। ७ फिर मैं ने क्या देखा कि किक्कार
भर शीशे का एक बटखरा उठाया जा रहा
है, और एक स्त्री है जो एपा के बीच में
बैठी है। ८ और दूत ने कहा, इसका अर्थ
दुष्टता है। और उस ने उस स्त्री को एपा
के बीच में दबा दिया, और शीशे के उस
बटखरे को लेकर उस से एपा का मुंह ढांप
दिया। ९ तब मैं ने आंखें उठाईं, तो क्या
देखा कि दो स्त्रियें चली जाती हैं जिन के
पंख पवन में फैले हुए हैं, और उनके पंख
लगलग के से हैं, और वे एपा को आकाश
और पृथ्वी के बीच में उड़ाए लिए जा रही
हैं। १० तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से
बातें करता था, पूछा, कि वे एपा को कहां

* मूल में—टटके तेल के पुत्र।

* मूल में—देश पर निकलता है।
† मूल में—मैं उसको निकालूंगा।

लिए जाती है? ११ उस ने कहा, शिनार
देश में लिए जाती है कि वहां उसके लिये
एक भवन बनाए, और जब वह तैयार
किया जाए, तब वह एपा वहां अपने ही
पाए पर खड़ा किया जाएगा ॥

६ मैं ने फिर आंखें उठाईं, और क्या
देखा कि दो पहाड़ों के बीच से चार
रथ चले आते हैं, और वे पहाड़ पीतल के
हैं। २ पहिले रथ में लाल घोड़े, और
दूसरे रथ में काले, ३ तीसरे रथ में
श्वेत और चौथे रथ में चितकबरे और
बादामी घोड़े हैं। ४ तब मैं ने उस दूत से
जो मुझ से बातें करता था, पूछा, हे मेरे
प्रभु, ये क्या हैं? ५ दूत ने मुझ से कहा,
ये आकाश के चारों वायु * हैं जो सारी
पृथ्वी के प्रभु के पास उपस्थित रहते हैं,
परन्तु अब निकल आए हैं। ६ जिस रथ
में काले घोड़े हैं, वह उत्तर देश की ओर
जाता है, और श्वेत घोड़े उनके पीछे पीछे
चले जाते हैं, और चितकबरे घोड़े दक्खिन
देश की ओर जाते हैं। ७ और बादामी
घोड़ों ने निकलकर चाहा कि जाकर पृथ्वी
पर फेरा करें। सो दूत ने कहा, जाकर
पृथ्वी पर फेरा करो। तब वे पृथ्वी पर
फेरा करने लगे। ८ तब उस ने मुझ से
पुकारकर कहा, देख, वे जो उत्तर के
देश की ओर जाते हैं, उन्हों ने वहां मेरे
प्राण को ठण्डा किया है ॥

९ फिर यहोवा का यह वचन मेरे पास
पहुंचा १० बंधुआई के लोगों में से,
हेल्दै, तोबिय्याह और यदायाह से कुछ ले
और उसी दिन तू सपन्याह के पुत्र योशियाह
के घर में जा जिस में वे बाबुल से आकर
उतरे हैं। ११ उनके हाथ से सोना चान्दी
ले, और मुकुट बनाकर उन्हें यहोसादाक
के पुत्र यहोशू महायाजक के सिर पर रख,
१२ और उस से यह कह, सेनाओं का
यहोवा यों कहता है, उस पुरुष को देख जिस
का नाम शाख † है, वह अपने ही स्थान
में उगकर यहोवा के मन्दिर को बनाएगा।
१३ वही यहोवा के मन्दिर को बनाएगा,
और महिमा पाएगा ‡, और अपने
सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता
करेगा। और उसके सिंहासन के पास एक
याजक भी रहेगा, और दोनों के बीच मेल
की सम्मति होगी। १४ और वे मुकुट
हेलेम, तोबिय्याह, यदायाह, और सपन्याह
के पुत्र हेन को मिलें, और वे यहोवा के
मन्दिर में स्मरण के लिये बने रहें ॥

१५ फिर दूर दूर के लोग आ आकर
यहोवा के मन्दिर बनाने में सहायता करेंगे,
और तुम जानोगे कि सेनाओं के यहोवा ने
मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और यदि तुम
मन लगाकर अपने परमेश्वर यहोवा की
आज्ञाओं का पालन करो तो यह बात पूरी
होगी ॥

७ फिर दारा राजा के चौथे वर्ष के
किसलेव नाम नौवें महीने के चौथे
दिन को, यहोवा का वचन जकर्याह के पास
पहुंचा। २ बेतेलवासियों ने शरेसेर और
रेगेम्मेलेक को इसलिये भेजा था कि यहोवा
से विनती करें, ३ और सेनाओं के यहोवा
के भवन के याजकों से और भविष्यद्वक्ताओं
से भी यह पूछें, क्या हमें उपवास करके
रोना चाहिये जैसे कि कितने वर्षों से हम
पांचवें महीने में करते आए हैं? ४ तब
सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास

* या आत्मा।

† या डाली।
‡ मूल में—उठाएगा।

पहुचा; ५ सब साधारण लोगों से और
याजकों से कह, कि जब तुम इन सत्तर
वर्षों के बीच पाचवे और सातवे महीनो
में उपवास और विलाप करते थे, तब
क्या तुम सचमुच मेरे ही लिये उपवास
करते थे? ६ और जब तुम खाते-पीते
हो, तो क्या तुम अपने ही लिये नही
खाते, और क्या अपने ही लिये नही
पीते हो? ७ क्या यह वही वचन नही
है, जो यहोवा अगले भविष्यद्वक्ताओ के
द्वारा उस समय पुकारकर कहता रहा
जब यरूशलेम अपने चारो ओर के नगरो
समेत चैन से बसा हुआ था, और दक्खिन
देश और नीचे का देश भी बसा हुआ
था?

८ फिर यहोवा का यह वचन जकर्याह
के पास पहुचा, सेनाओ के यहोवा ने यो
कहा है, ९ खराई से न्याय चुकाना, और
एक दूसरे के साथ कृपा और दया से काम
करना, १० न तो विधवा पर अन्धेर
करना, न अनाथो पर, न परदेशी पर, और
न दीन जन पर, और न अपने अपने मन
में एक दूसरे की हानि की कल्पना करना।
११ परन्तु उन्हों ने चित्त लगाना न चाहा,
और हठ किया, और अपने कानो को मूद
लिया ताकि सुन न सके। १२ वरन उन्हो
ने अपने हृदय को इसलिये वज्र सा बना
लिया, कि वे उस व्यवस्था और उन वचनो
को न मान सकें जिन्हें सेनाओ के यहोवा ने
अपने आत्मा के द्वारा अगले भविष्यद्वक्ताओ
से कहला भेजा था। इस कारण सेनाओ
के यहोवा की ओर से उन पर बडा क्रोध
भडका। १३ और सेनाओ के यहोवा का
यह वचन हुआ, कि जैसे मेरे पुकारने पर
उन्हों ने नही सुना, वैसे ही उनके पुकारने
पर मैं भी न सुनूगा; १४ वरन मैं उन्हें
उन सब जातियों के बीच जिन्हें वे नही
जानते, आधी के द्वारा तितर-बितर कर
दूगा, और उनका देश उनके पीछे ऐसा
उजाड पडा रहेगा कि उस में किसी का
आना जाना न होगा; इसी प्रकार से
उन्हो ने मनोहर देश को उजाड कर
दिया॥

८ फिर सेनाओ के यहोवा का यह
वचन मेरे पास पहुचा, २ सेनाओ
का यहोवा यो कहता है. सिय्योन के लिये
मुझे बडी जलन हुई वरन बहुत ही जल-
जलाहट मुझे मे उत्पन्न हुई है। ३ यहोवा
यों कहता है, मै सिय्योन मे लौट आया
हू, और यरूशलेम के बीच मे वास किए
रहूगा, और यरूशलेम सच्चाई का नगर
कहलाएगा, और सेनाओ के यहोवा
का पर्वत, पवित्र पर्वत कहलाएगा।
४ सेनाओ का यहोवा यो कहता है,
यरूशलेम के चौको मे फिर बूढे और
बूढिया बहुत आयु की होने के कारण,
अपने अपने हाथ मे लाठी लिए हुए बैठा
करेगी। ५ और नगर के चौक खेलनेवाले
लडको और लडकियो से भरे रहेंगे।
६ सेनाओ का यहोवा यो कहता है, चाहे
उन दिनो मे यह बात इन बचे हुओ
की दृष्टि मे अनोखी ठहरे, परन्तु क्या
मेरी दृष्टि मे भी यह अनोखी ठहरेगी,
सेनाओ के यहोवा की यही वाणी है?
७ सेनाओ का यहोवा यो कहता है, देखो,
मै अपनी प्रजा का उद्धार करके उसे पूरब
से और पच्छिम से ले आऊगा, ८ और मै
उन्हें ले आकर यरूशलेम के बीच में
बसाऊगा; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और
मैं उनका परमेश्वर ठहरूगा, यह तो सच्चाई
और धर्म के साथ होगा॥

९ सेनाओं का यहोवा यों कहता है,
तुम इन दिनों में ये वचन उन भविष्य-
द्वक्ताओं के मुख से सुनते हो जो सेनाओं के
यहोवा के भवन की नेव डालने के समय
अर्थात् मन्दिर के बनने के समय में थे।
१० उन दिनों के पहिले, न तो मनुष्य की
मजदूरी मिलती थी और न पशु का भाड़ा,
वरन सतानेवालों के कारण न तो आनेवाले
को चैन मिलता था और न जानेवाले को,
क्योंकि मैं सब मनुष्यों से एक दूसरे पर
चढ़ाई कराता था। ११ परन्तु अब मैं
इस प्रजा के बचे हुओं से ऐसा बर्ताव न
करूंगा जैसा कि अगले दिनों में करता था,
सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।
१२ क्योंकि अब शान्ति के समय की उपज
अर्थात् दाखलता फला करेगी, पृथ्वी अपनी
उपज उपजाया करेगी, और आकाश से
ओस गिरा करेगी, क्योंकि मैं अपनी इस
प्रजा के बचे हुओं को इन सब का
अधिकारी कर दूंगा। १३ और हे यहूदा
के घराने, और इस्राएल के घराने, जिस
प्रकार तुम अन्यजातियों के बीच शाप के
कारण थे उसी प्रकार मैं तुम्हारा उद्धार
करूंगा, और तुम आशीष के कारण होगे।
इसलिये तुम मत डरो, और न तुम्हारे
हाथ ढीले पड़ने पाएं॥

१४ क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों
कहता है, जिस प्रकार जब तुम्हारे पुरखा
मुझे रिस दिलाते थे, तब मैं ने उनकी हानि
करने के लिये ठान लिया था और फिर न
पछताया, १५ उसी प्रकार मैं ने इन दिनों
में यरूशलेम की और यहूदा के घराने की
भलाई करने को ठाना है, इसलिये तुम
मत डरो। १६ जो जो काम तुम्हें करना
चाहिये, वे ये हैं: एक दूसरे के साथ सत्य
बोला करना, अपनी कचहरियों* में
सच्चाई का और मेलमिलाप की नीति का
न्याय करना, १७ और अपने अपने मन
में एक दूसरे की हानि की कल्पना न
करना, और झूठी शपथ से प्रीति न रखना,
क्योंकि इन सब कामों से मैं घृणा करता
हूं, यहोवा की यही वाणी है॥

१८ फिर सेनाओं के यहोवा का यह
वचन मेरे पास पहुंचा, १९ सेनाओं का
यहोवा यों कहता है: चौथे, पांचवें, सातवें
और दसवें महीने में जो जो उपवास
के दिन होते हैं, वे यहूदा के घराने के
लिये हर्ष और आनन्द और उत्सव के
पर्वों के दिन हो जाएंगे, इसलिये अब
तुम सच्चाई और मेलमिलाप से प्रीति
रखो॥

२० सेनाओं का यहोवा यों कहता है,
ऐसा समय आनेवाला है कि देश देश के
लोग और बहुत नगरों के रहनेवाले
आएंगे। २१ और एक नगर के रहनेवाले
दूसरे नगर के रहनेवालों के पास जाकर
कहेंगे, यहोवा से विनती करने और
सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने के लिये चलो,
मैं भी चलूंगा। २२ बहुत से देशों के
वरन सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम
में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और
यहोवा से विनती करने के लिये आएंगे।
२३ सेनाओं का यहोवा यों कहता है:
उन दिनों में भांति भांति की भाषा
बोलनेवाली सब जातियों में से दस मनुष्य,
एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को
यह कहकर पकड़ लेंगे, कि, हम तुम्हारे
संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना है कि
परमेश्वर तुम्हारे साथ है॥

* मूल में—फाटकों।

९ हद्राक देश के विषय में यहोवा
का कहा हुआ भारी वचन जो
दमिश्क पर भी पड़ेगा *। क्योंकि यहोवा
की दृष्टि मनुष्य जाति की, और इस्राएल
के सब गोत्रों की ओर लगी है; २ हमात
की ओर जो दमिश्क के निकट है,
और सोर और सीदोन की ओर,
ये तो बहुत ही बुद्धिमान् हैं। ३ सोर
ने अपने लिये एक गढ़ बनाया, और धूलि
के किनको की नाईं चान्दी, और सड़को की
कीच के समान चोखा सोना बटोर रखा है।
४ देखो, परमेश्वर उसको औरो के
अधिकार मे कर देगा, और उसके घमण्ड
को तोड़कर समुद्र मे डाल देगा; और वह
नगर आग का कौर हो जाएगा॥

५ यह देखकर अश्कलोन डरेगा,
अज्जा को दुख होगा, और एक्रोन भी
डरेगा, क्योंकि उसकी आशा टूटेगी, और
अज्जा मे फिर राजा न रहेगा और
अश्कलोन फिर बसी न रहेगी। ६ और
अश्दोद मे अनजाने लोग बसेंगे, इसी
प्रकार मैं पलिश्तियो के गर्व को तोड़ूगा।
७ मैं उसके मुह मे से आहेर का
लोहू और घिनौनी वस्तुए † निकाल
दूगा, तब उन मे से जो बचा रहेगा,
वह हमारे परमेश्वर का जन ‡ होगा, और
यहूदा मे अधिपति सा होगा, और एक्रोन
के लोग यबूसियो के समान बनेंगे। ८ तब
मैं उस सेना के कारण जो पास से होकर
जाएगी और फिर लौट आएगी, अपने भवन
के आस पास छावनी किए रहूगा, और
कोई सतानेवाला फिर उनके पास से
होकर न जाएगा, क्योंकि मैं ये बाते अब
भी देखता हू॥

९ हे सिय्योन * बहुत ही मगन हो!
हे यरूशलेम † जयजयकार कर! क्योंकि
तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी
और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और
गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ
आएगा। १० मैं एप्रैम के रथ और यरू-
शलेम के घोड़े नाश करूगा, और युद्ध के
धनुष तोड डाले जाएगे, और वह अन्य-
जातियो से शान्ति की बाते कहेगा, वह
समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी
के दूर दूर के देशो तक प्रभुता करेगा॥

११ और तू भी सुन, क्योंकि मेरी
वाचा के लोहू के कारण, मैं ने तेरे
बन्दियो को बिना जल के गड़हे मे से
उबार लिया है। १२ हे आशा धरे
हुए बन्दियो! गढ़ की ओर फिरो; मैं
आज ही बताता हू कि मैं तुम को
बदले मे दूना सुख दूगा। १३ क्योंकि
मैं ने धनुष की नाईं यहूदा को चढ़ाकर उस
पर तीर की नाईं एप्रैम को लगाया है।
मैं सिय्योन के निवासियो को यूनान के
निवासियो के विरुद्ध उभारूगा, और उन्हे
वीर की तलवार सा कर दूगा। १४ तब
यहोवा उनके ऊपर दिखाई देगा, और
उसका तीर बिजली की नाईं छूटेगा, और
परमेश्वर यहोवा नरसिंगा फूककर दक्खिन
देश की सी आंधी मे होके चलेगा।
१५ सेनाओं का यहोवा ढाल से उन्हे
बचाएगा, और वे अपने शत्रुओ का नाश
करेंगे, और उनके गोफन के पत्थरो पर
पाव धरेंगे, और वे पीकर ऐसा कोलाहल
करेंगे जैसा लोग दाखमधु पीकर करते है,

* मूल में—दमिश्क उसका विश्रामस्थान।
† मूल में—और उसके दातों के बीच से उसकी घिनौनी वस्तुएं।
‡ मूल में—सिय्योन की बेटी।

* मूल में—सिय्योन की बेटी।
† मूल में—यरूशलेम की बेटी।

और वे कटोरे की नाईं वा वेदी के कोने
की नाईं भरे जाएंगे ॥
१६ उस समय उनका परमेश्वर यहोवा
उनको अपनी प्रजारूपी भेड़-बकरियां
जानकर उनका उद्धार करेगा, और वे
मुकुटमणि ठहरके, उसकी भूमि से बहुत
ऊंचे पर चमकते रहेंगे। १७ उसका क्या
ही कुशल, और क्या ही शोभा उसकी
होगी! उसके जवान लोग अन्न खाकर,
और कुमारियां नया दाखमधु पीकर
हृष्टपुष्ट हो जाएंगी ॥

१० बरसात के अन्त में यहोवा से
वर्षा मांगो, यहोवा से जो बिजली
चमकाता है, और वह उनको वर्षा देगा
और हर एक के खेत में हरियाली उप-
जाएगा। २ क्योंकि गृहदेवता अनर्थ बात
कहते और भावी कहनेवाले झूठा दर्शन
देखते और झूठे स्वप्न सुनाते, और व्यर्थ
शान्ति देते हैं। इस कारण लोग भेड़-
बकरियों की नाईं भटक गए, और चरवाहे
न होने के कारण दुर्दशा में पड़े हैं ॥
३ मेरा क्रोध चरवाहों पर भड़का है,
और मैं उन बकरों को दण्ड दूंगा, क्योंकि
सेनाओं का यहोवा अपने झुण्ड अर्थात्
यहूदा के घराने का हाल देखने को आएगा,
और लड़ाई में उनको अपना हृष्टपुष्ट घोड़ा
सा बनाएगा। ४ उसी में से कोने का
पत्थर, उसी में से खूंटी, उसी में से युद्ध का
धनुष, उसी में से सब प्रधान प्रगट होंगे।
५ और वे ऐसे वीरों के समान होंगे जो
लड़ाई में अपने बैरियों को सड़कों की कीच
की नाईं रौंदते हों, वे लड़ेंगे, क्योंकि
यहोवा उनके संग रहेगा, इस कारण वे
वीरता से लड़ेंगे और सवारों की आशा
टूटेगी ॥

६ मैं यहूदा के घराने को पराक्रमी
करूंगा, और यूसुफ के घराने का उद्धार
करूंगा। और मुझे उन पर दया आई है,
इस कारण मैं उन्हें लौटा लाकर उन्हीं के
देश में बसाऊंगा, और वे ऐसे होंगे, मानो
मैं ने उनको मन से नहीं उतारा, मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूं, इसलिये उनकी सुन
लूंगा। ७ एप्रैमी लोग वीर के समान होंगे,
और उनका मन ऐसा आनन्दित होगा जैसे
दाखमधु से होता है। यह देखकर उनके
लड़केवाले आनन्द करेंगे और उनका मन
यहोवा के कारण मगन होगा ॥
८ मैं सीटी बजाकर उनको इकट्ठा
करूंगा, क्योंकि मैं उनका छुड़ानेवाला हूं,
और वे ऐसे बढ़ेंगे जैसे पहिले बढ़े थे।
९ यद्यपि मैं उन्हें जाति-जाति के लोगों के
बीच छितराऊंगा * तौभी वे दूर दूर देशों
में मुझे स्मरण करेंगे, और अपने बालकों
समेत जीवित लौट आएंगे। १० मैं उन्हें
मिस्र देश से लौटा लाऊंगा, और अश्शूर से
इकट्ठा करूंगा, और गिलाद और लबानोन
के देशों में ले आकर इतना बढ़ाऊंगा कि
वहां उनकी समाई न होगी। ११ वह उस
कष्टदाई समुद्र में से होकर उसकी लहरें
दबाता हुआ जाएगा और नील नदी † का
सब गहिरा जल सूख जाएगा। और अश्शूर
का घमण्ड तोड़ा जाएगा और मिस्र का
राजदण्ड जाता रहेगा। १२ मैं उन्हें यहोवा
द्वारा पराक्रमी करूंगा, और वे उसके नाम
से चले फिरेंगे, यहोवा की यही वाणी है ॥

११ हे लबानोन, आग को रास्ता
दे ‡ कि वह आकर तेरे देवदारों
को भस्म करे! २ हे सनौवरो, हाय, हाय,

* मूल में—बो दूंगा। † मूल में—योर।
‡ मूल में—अपने किवाड़ खोल।

करो! क्योकि देवदार गिर गया है और
बड़े से बड़े वृक्ष नाश हो गए हैं! हे बाशान
के बांज वृक्षो, हाय, हाय, करो! क्योकि
अगम्य वन काटा गया है! ३ चरवाहो
के हाहाकार का शब्द हो रहा है, क्योकि
उनका विभव नाश हो गया है! जवान
सिंहो का गरजना सुनाई देता है, क्योकि
यरदन के तीर का घना वन* नाश
किया गया है!

४ मेरे परमेश्वर यहोवा ने यह आज्ञा
दी: घात होनेवाली भेड़-बकरियो का
चरवाहा हो जा। ५ उनके मोल लेनेवाले
उन्हे घात करने पर भी अपने को दोषी
नही जानते, और उनके बेचनेवाले कहते
है, यहोवा धन्य है, हम धनी हो गए है;
और उनके चरवाहे उन पर कुछ दया नही
करते। ६ यहोवा की यह वाणी है,
मै इस देश के रहनेवालों पर फिर दया न
करूगा। देखो, मै मनुष्यो को एक दूसरे के
हाथ में, और उनके राजा के हाथ में
पकड़वा दूगा, और वे इस देश को नाश
करेंगे, और मै उसके रहनेवालो को उनके
वश से न छुड़ाऊगा।।

७ सो मै घात होनेवाली भेड़-बकरियो
को और विशेष करके उन मे से जो दीन
थी उनको चराने लगा। और मै ने दो
लाठिया ली, एक का नाम मै ने अनुग्रह
रखा, और दूसरी का नाम एकता। इनको
लिए हुए मै उन भेड़-बकरियो को चराने
लगा। ८ और मै ने उनके तीनो चरवाहो
को एक महीने मे नाश कर दिया। परन्तु
मै उनके कारण अधीर था, और वे मुझ से
घृणा करती थी। ९ तब मै ने उन से कहा,
मै तुम को न चराऊगा। तुम मे से जो मरे
वह मरे, और जो नाश हो वह नाश हो,
और जो बची रहें वे एक दूसरे का मास
खाए। १० और मै ने अपनी वह लाठी
तोड़ डाली, जिसका नाम अनुग्रह था, कि
जो वाचा मै ने सब अन्यजातियो के साथ
बान्धी थी उसे तोड़ू। ११ वह उसी दिन
तोड़ी गई, और इस से दीन भेड़-बकरिया
जो मुझे ताकती थी, उन्हो ने जान लिया
कि यह यहोवा का वचन है। १२ तब
मै ने उन से कहा, यदि तुम को अच्छा
लगे तो मेरी मज़दूरी दो, और नही तो
मत दो। तब उन्हो ने मेरी मजदूरी मे
चान्दी के तीस टुकड़े तौल दिए। १३ तब
यहोवा ने मुझ से कहा, इन्हें कुम्हार के
आगे फेंक दे, यह क्या ही भारी दाम है जो
उन्हो ने मेरा ठहराया है? तब मै ने
चान्दी के उन तीस टुकड़ो को लेकर यहोवा
के घर मे कुम्हार के आगे फेंक दिया।
१४ तब मै ने अपनी दूसरी लाठी जिस
का नाम एकता था, इसलिये तोड़ डाली कि
मै उस भाईचारे के नाते को तोड़ डालू
जो यहूदा और इस्राएल के बीच मे है।।

१५ तब यहोवा ने मुझ से कहा, अब
तू मूढ़ चरवाहे के हथियार ले ले।
१६ क्योकि मै इस देश मे एक ऐसा
चरवाहा ठहराऊगा, जो खोई हुई को न
ढूढेगा, न तितर-बितर को इकट्ठी करेगा,
न घायलो को चगा करेगा, न जो
भली चगी है उनका पालन-पोषण
करेगा, वरन मोटियो का मास खाएगा
और उनके खुरो को फाड़ डालेगा।
१७ हाय उस निकम्मे चरवाहे पर जो
भेड़-बकरियो को छोड़ जाता है! उसकी
बाह और दहिनी आख दोनो पर तलवार
लगेगी, तब उसकी बाह सूख जाएगी
और उसकी दहिनी आख फूट जाएगी।।

* मूल में—गर्व।

१२ इस्राएल के विषय में यहोवा
का कहा हुआ भारी वचन यहोवा
जो आकाश का ताननेवाला, पृथ्वी की नेव
डालनेवाला और मनुष्य की आत्मा का
रचनेवाला है, उसकी यह वाणी है,
२ देखो, मै यरूशलेम को चारो ओर की
सब जातियो के लिये लडखडा देने के मद
का कटोरा ठहरा दूगा, और जब यरूशलेम
घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा भी
ऐसी ही होगी। ३ और उस समय पृथ्वी
की सारी जातिया यरूशलेम के विरुद्ध
इकट्ठी होगी, तब मै उसको इतना भारी
पत्थर बनाऊगा, कि जो उसको उठाएगे वे
बहुत ही घायल होगे। ४ यहोवा की
यह वाणी है, उस समय मे हर एक घोडे
को घबरा दूगा, और उसके सवार को
घायल करूगा। परन्तु मै यहूदा के घराने
पर कृपादृष्टि रखूगा, जब मै अन्यजातियो
के सब घोडो को अन्धा कर डालूगा।
५ तब यहूदा के अधिपति सोचेंगे कि
यरूशलेम के निवासी अपने परमेश्वर,
सेनाओ के यहोवा की सहायता से मेरे
सहायक बनेंगे ॥

६ उस समय मै यहूदा के अधिपतियो
को ऐसा कर दूगा, जैसी लकडी के ढेर मे
आग भरी अगेठी वा पूले मे जलती हुई
मशाल होती है, अर्थात् वे दहिने बाए चारो
ओर के सब लोगो को भस्म कर डालेगे,
और यरूशलेम जहा अब बसी है, वही
बसी रहेगी, यरूशलेम मे ॥

७ और यहोवा पहिले यहूदा के तम्बुओ
का उद्धार करेगा, कही ऐसा न हो कि दाऊद
का घराना और यरूशलेम के निवासी अपने
अपने विभव के कारण यहूदा के विरुद्ध
बडाई मारें। ८ उस समय यहोवा यरू-
शलेम के निवासियो को मानो ढाल से बचा
लेगा, और उस समय उन में से जो ठोकर
खानेवाला हो वह दाऊद के समान होगा,
और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान
होगा, अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान
जो उनके आगे आगे चलता था। ९ और
उस समय मै उन सब जातियो को नाश
करने का यत्न करूगा जो यरूशलेम पर
चढाई करेंगी ॥

१० और मै दाऊद के घराने और
यरूशलेम के निवासियो पर अपना अनुग्रह
करनेवाली * और प्रार्थना सिखानेवाली †
आत्मा उण्डेलूगा, तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात्
जिसे उन्हो ने बेधा है, और उसके लिये ऐसे
रोएगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते-पीटते
है, और ऐसा भारी शोक करेगे, जैसा
पहिलौठे के लिये करते है। ११ उस समय
यरूशलेम में इतना रोना-पीटना होगा जैसा
मगिद्दोन की तराई मे हदद्रिम्मोन मे हुआ
था। १२ सारे देश में विलाप होगा, हर
एक परिवार मे अलग अलग, अर्थात् दाऊद
के घराने का परिवार अलग, और उनकी
स्त्रिया अलग, नातान के घराने का
परिवार अलग, और उनकी स्त्रिया अलग,
१३ लेवी के घराने का परिवार अलग और
उनकी स्त्रिया अलग, शिमीयो का परिवार
अलग, और उनकी स्त्रिया अलग,
१४ और जितने परिवार रह गए हो, हर
एक परिवार अलग अलग, और उनकी
स्त्रिया भी अलग अलग ॥

१३ उसी समय दाऊद के घराने
और यरूशलेम के निवासियो के
लिये पाप और मलिनता धोने के निमित्त
एक बहता हुआ सोता होगा ॥

---

* मूल में—का।
† मूल में—ऐसे कडवे होगे।

२ और सेनाओं के यहोवा की यह
वाणी है, कि उस समय मैं इस देश में
से मूर्तों के नाम मिटा डालूंगा, और वे
फिर स्मरण में न रहेंगी; और मैं
भविष्यद्वक्ताओं और अशुद्ध आत्मा को
इस देश में से निकाल दूंगा। ३ और
यदि कोई फिर भविष्यद्वाणी करे, तो
उसके माता-पिता जिन से वह उत्पन्न
हुआ, उस से कहेंगे, तू जीवित न बचेगा,
क्योंकि तू ने यहोवा के नाम से झूठ
कहा है, सो जब वह भविष्यद्वाणी करे,
तब उसके माता-पिता जिन से वह उत्पन्न
हुआ उसको बेध डालेंगे। ४ उस समय
हर एक भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करते
हुए अपने अपने दर्शन से लज्जित होंगे, और
धोखा देने के लिये कम्बल का वस्त्र
न पहिनेंगे, ५ परन्तु वह कहेगा, मैं
भविष्यद्वक्ता नहीं, किसान हूं, क्योंकि
लड़कपन ही से मैं औरों का दास हूं।
६ तब उस से यह पूछा जाएगा, तेरी छाती
में ये घाव कैसे हुए *; तब वह कहेगा, ये
वे ही हैं जो मेरे प्रेमियों के घर में मुझे
लगे हैं॥

७ सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है,
हे तलवार, मेरे ठहराए हुए चरवाहे के
विरुद्ध अर्थात् जो पुरुष मेरा स्वजाति है,
उसके विरुद्ध चल। तू उस चरवाहे को
काट, तब भेड़-बकरियां तितर-बितर हो
जाएंगी; और बच्चों पर मैं अपने
हाथ बढ़ाऊंगा। ८ यहोवा की यह भी
वाणी है, कि इस देश के सारे निवासियों
की दो तिहाई मार डाली जाएगी,
और बची हुई तिहाई उस में बनी रहेगी।
९ उस तिहाई को मैं आग में डालकर
ऐसा निर्मल करूंगा, जैसा रूपा निर्मल
किया जाता है, और ऐसा जाचूंगा जैसा
सोना जाचा जाता है। वे मुझ से प्रार्थना
किया करेंगे, और मैं उनकी सुनूंगा। मैं
उनके विषय में कहूंगा, ये मेरी प्रजा हैं,
और वे मेरे विषय में कहेंगे, यहोवा
हमारा परमेश्वर है॥

१४ सुनो, यहोवा का एक ऐसा दिन
आनेवाला है जिस में तेरा धन
लूटकर तेरे बीच में बांट लिया जाएगा।
२ क्योंकि मैं सब जातियों को यरूशलेम से
लड़ने के लिये इकट्ठा करूंगा, और वह नगर
ले लिया जाएगा। और घर लूटे जाएंगे
और स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी; नगर के
आधे लोग बंधुआई में जाएंगे, परन्तु प्रजा के
शेष लोग नगर ही में रहने पाएंगे। ३ तब
यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा
लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था।
४ और उस समय वह जलपाई के पर्वत
पर पांव धरेगा, जो पूरब ओर यरूशलेम के
साम्हने है; तब जलपाई का पर्वत पूरब से
लेकर पच्छिम तक बीचोबीच से फटकर
बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा; तब आधा
पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्खिन
की ओर हट जाएगा। ५ तब तुम मेरे
बनाए हुए उस खड्ड से होकर भाग जाओगे,
क्योंकि वह खड्ड आसेल तक पहुंचेगा, वरन
तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भुईंडोल के डर
से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जिय्याह
के दिनों में हुआ था। तब मेरा परमेश्वर
यहोवा आएगा, और सब पवित्र लोग उसके
साथ होंगे॥

६ उस समय कुछ उजियाला न रहेगा,
क्योंकि ज्योतिगण सिमट जाएंगे।
७ और लगातार एक ही दिन होगा जिसे

* मूल में—तेरे हाथों के बीच ये क्या
घाव हैं।

यहोवा ही जानता है, न तो दिन होगा,
और न रात होगी, परन्तु साझ के समय
उजियाला होगा ॥

८ उस समय यरूशलेम से बहता हुआ
जल फूट निकलेगा उसकी एक शाखा पूरब
के ताल और दूसरी पच्छिम के समुद्र की
ओर बहेगी, और धूप के दिनो में और जाडे
के दिनो में भी बराबर बहती रहेंगी ॥

९ तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा
होगा, और उस समय एक ही यहोवा और
उसका नाम भी एक ही माना जाएगा ॥

१० गेबा से लेकर यरूशलेम की
दक्खिन ओर के रिम्मोन तक सब भूमि
अराबा के समान हो जाएगी। परन्तु वह
ऊंची होकर बिन्यामीन के फाटक से
लेकर पहिले फाटक के स्थान तक, और
कोनेवाले फाटक तक, और हननेल के
गुम्मट से लेकर राजा के दाखरसकुण्डो
तक अपने स्थान में बसेगी। ११ और
लोग उस में बसेंगे क्योकि फिर सत्यानाश
का शाप न होगा, और यरूशलेम
बेखटके बसी रहेगी। १२ और जितनी
जातियो ने यरूशलेम से युद्ध किया है उन
सभो को यहोवा ऐसी मार से मारेगा, कि
खडे खडे उनका मास सड जाएगा, और
उनकी आखें अपने गोलको में सड जाएगी,
और उनकी जीभ उनके मुह में सड जाएगी।
१३ और उस समय यहोवा की ओर से
उन में बडी घबराहट पैठेगी, और वे एक
दूसरे के हाथ को पकडेंगे, और एक दूसरे
पर अपने अपने हाथ उठाएगे। १४ यहूदा
भी यरूशलेम में लडेगा, और सोना, चान्दी,
वस्त्र आदि चारो ओर की सब जातियों
की धन सम्पत्ति उस में बटोरी जाएगी।
१५ और घोडे, खच्चर, ऊंट और गदहे
वरन जितने पशु उनकी छावनियो में
होगे वे भी ऐसी ही बीमारी से मारे
जाएगे ॥

१६ तब जितने लोग यरूशलेम पर
चढनेवाली सब जातियो में से बचे रहेंगे,
वे प्रति वर्ष राजा को अर्थात् सेनाओ के
यहोवा को दण्डवत् करने, और झोपडियो
का पर्ब मानने के लिये यरूशलेम को
जाया करेंगे। १७ और पृथ्वी के कुलो
में से जो लोग यरूशलेम में राजा, अर्थात्
सेनाओ के यहोवा को दण्डवत् करने
के लिये न जाएगे, उनके यहा वर्षा न
होगी। १८ और यदि मिस्र का कुल
वहा न आए, तो क्या उन पर वह मरी न
पडेगी जिस से यहोवा उन जातियो को
मारेगा जो झोपडियो का पर्ब मानने के
लिये न जाएगे? १९ यह मिस्र का और
उन सब जातियो का पाप ठहरेगा, जो
झोपडियो का पर्ब मानने के लिये न जाएगे।
२० उस समय घोडो की घटियो पर भी
यह लिखा रहेगा, यहोवा के लिये पवित्र।
और यहोवा के भवन की हडिया उन
कटोरो के तुल्य पवित्र ठहरेगी, जो
वेदी के साम्हने रहते हैं। २१ वरन
यरूशलेम में और यहूदा देश में सब
हडिया सेनाओ के यहोवा के लिये
पवित्र ठहरेगी, और सब मेलबलि
करनेवाले आ आकर उन हडियो में मास
सिझाया करेंगे। और तब सेनाओ के
यहोवा के भवन में फिर कोई व्योपारी
न पाया जाएगा ॥

मलाकी

१ मलाकी के द्वारा इस्राएल के विषय
में कहा हुआ यहोवा का भारी
वचन ।।

२ यहोवा यह कहता है, मैं ने तुम से
प्रेम किया है, परन्तु तुम पूछते हो, तू ने
किस बात मे हम से प्रेम किया है? यहोवा
की यह वाणी है, क्या एसाव याकूब का
भाई न था? ३ तौभी मैं ने याकूब से प्रेम
किया परन्तु एसाव को अप्रिय जानकर
उसके पहाडो को उजाड डाला, और उसकी
बपौती को जगल के गीदडो का कर दिया
है। ४ एदोम कहता है, हमारा देश उजड
गया है, परन्तु हम खण्डहरो को फिरकर
बसाएगे, सेनाओ का यहोवा यो कहता है,
यदि वे बनाए भी, परन्तु मैं ढा दूगा, उनका
नाम दुष्ट जाति पडेगा, और वे ऐसे लोग
कहलाएगे जिन पर यहोवा सदैव क्रोधित
रहे। ५ तुम्हारी आखे इसे देखेंगी, और
तुम कहोगे, यहोवा का प्रताप इस्राएल
के सिवाने की परली ओर भी बढता
जाए।।

६ पुत्र पिता का, और दास स्वामी का
आदर करता है। यदि मैं पिता हू, तो मेरा
आदर मानना कहा है? और यदि मैं
स्वामी हू, तो मेरा भय मानना कहा?
सेनाओ का यहोवा, तुम याजकों से भी जो
मेरे नाम का अपमान करते हो यही बात
पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो, हम ने
किस बात में तेरे नाम का अपमान किया
है? तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध भोजन चढ़ाते
हो। ७ तौभी तुम पूछते हो कि हम किस
बात मे तुझे अशुद्ध ठहराते है? इस बात
में भी, कि तुम कहते हो, यहोवा की मेज़
तुच्छ है। ८ जब तुम अन्धे पशु को बलि
करने के लिये समीप ले आते हो तो क्या
यह बुरा नही? और जब तुम लंगडे वा
रोगी पशु को ले आते हो, तो क्या यह
बुरा नही? अपने हाकिम के पास ऐसी
भेंट ले जाओ, क्या वह तुम से प्रसन्न होगा
वा तुम पर अनुग्रह करेगा? सेनाओ के
यहोवा का यही वचन है।।

९ और अब मैं तुम से कहता हू, ईश्वर
से प्रार्थना करो कि वह हम लोगो पर अनुग्रह
करे। यह तुम्हारे हाथ से हुआ है, तब क्या
तुम समझते हो कि परमेश्वर तुम मे से
किसी का पक्ष करेगा? सेनाओ के यहोवा
का यही वचन है। १० भला होता कि
तुम मे से कोई मन्दिर के किवाडो को बन्द
करता कि तुम मेरी वेदी पर व्यर्थ आग
जलाने न पाते! सेनाओ के यहोवा का
यह वचन है, मैं तुम से कदापि प्रसन्न
नही हू, और न तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण
करूगा। ११ क्योकि उदयाचल से लेकर
अस्ताचल तक अन्यजातियो मे मेरा नाम
महान है, और हर कही मेरे नाम पर धूप
और शुद्ध भेंट चढाई जाती है, क्योकि अन्य-
जातियो में मेरा नाम महान है, सेनाओ के
यहोवा का यही वचन है। १२ परन्तु तुम
लोग उसको यह कहकर अपवित्र ठहराते
हो कि यहोवा की मेज़ अशुद्ध है, और जो
भोजनवस्तु उस पर से मिलती है वह भी
तुच्छ है। १३ फिर तुम यह भी कहते हो,

कि यह कैसा बड़ा उपद्रव है। सेनाओं के
यहोवा का यह वचन है। तुम ने उस
भोजनवस्तु के प्रति नाक-भौं सिकोड़ी*, और
अत्याचार से प्राप्त किए हुए और लगड़े
और रोगी पशु की भेंट ले आते हो। क्या
मैं ऐसी भेंट तुम्हारे हाथ से ग्रहण करूं?
यहोवा का यही वचन है। १४ जिस छली
के झुण्ड में नरपशु हो परन्तु वह मन्नत
मानकर परमेश्वर को वर्जा हुआ पशु
चढ़ाए, वह शापित है, मैं तो महाराजा हूं,
और मेरा नाम अन्यजातियों में भययोग्य
है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है॥

२ और अब हे याजको, यह आज्ञा
तुम्हारे लिये है। २ यदि तुम इसे न
सुनो, और मन लगाकर मेरे नाम का आदर
न करो, तो सेनाओं का यहोवा यों कहता
है कि मैं तुम को शाप दूंगा, और जो
वस्तुएं मेरी आशीष से तुम्हें मिली हैं, उन
पर मेरा शाप पड़ेगा, वरन तुम जो मन
नहीं लगाते हो इस कारण मेरा शाप उन
पर पड़ चुका है। ३ देखो, मैं तुम्हारे
कारण बीज को झिड़कूंगा *, और तुम्हारे
मुंह पर तुम्हारे पर्वों के यज्ञपशुओं का मल
फैलाऊंगा, और उसके संग तुम भी उठाकर
फेंक दिए जाओगे। ४ तब तुम जानोगे
कि मैं ने तुम को यह आज्ञा इसलिये दिलाई
है कि लेवी के साथ मेरी बन्धी हुई वाचा
बनी रहे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है। ५ मेरी जो वाचा उसके साथ बन्धी
थी वह जीवन और शान्ति की थी, और
मैं ने यह इसलिये उसको दिया कि वह भय
मानता रहे, और उस ने मेरा भय मान

भी लिया और मेरे नाम से अत्यन्त भय
खाता था। ६ उसको मेरी सच्ची व्यवस्था
कण्ठ थी, और उसके मुंह से कुटिल बात न
निकलती थी। वह शान्ति और सीधाई से
मेरे संग संग चलता था, और बहुतों को
अधर्म से लौटा ले आया था। ७ क्योंकि
याजक को चाहिये कि वह अपने ओठों से
ज्ञान की रक्षा करे, और लोग उसके मुंह
से व्यवस्था पूछें, क्योंकि वह सेनाओं के
यहोवा का दूत है। ८ परन्तु तुम लोग
धर्म के मार्ग से ही हट गए, तुम बहुतों
के लिये व्यवस्था के विषय में ठोकर का
कारण हुए, तुम ने लेवी की वाचा को
तोड़ दिया है, सेनाओं के यहोवा का यही
वचन है। ९ इसलिये मैं ने भी तुम को सब
लोगों के साम्हने तुच्छ और नीचा कर दिया
है, क्योंकि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते,
वरन व्यवस्था देने में मुंह देखा विचार
करते हो॥

१० क्या हम सभों का एक ही पिता
नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम को
उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक दूसरे
का विश्वासघात करके अपने पूर्वजों की
वाचा को तोड़ देते हैं? ११ यहूदा ने
विश्वासघात किया है, और इस्राएल में
और यरूशलेम में घृणित काम किया गया
है, क्योंकि यहूदा ने बिराने देवता की कन्या
से विवाह करके यहोवा के पवित्र स्थान को
जो उसका प्रिय है, अपवित्र किया है।
१२ जो पुरुष ऐसा काम करे, उसके
तम्बुओं में से याकूब का परमेश्वर उसके
घर के रक्षक और सेनाओं के यहोवा
की भेंट चढ़ानेवाले को यहूदा से काट
डालेगा।

१३ फिर तुम ने यह दूसरा काम किया
है कि तुम ने यहोवा की वेदी को रोनेवालों

* मूल में—मैं तुम्हारे कारण बीज को
घुड़कूंगा।

ओर आहें भरनेवालों के आसुओं से भिगो
दिया है, यहा तक कि वह तुम्हारी भेंट की
ओर दृष्टि तक नही करता, और
न प्रसन्न होकर उसको तुम्हारे हाथ
से ग्रहण करता है। तुम पूछते हो,
ऐसा क्यो? १४ इसलिये, क्योकि यहोवा
तेरे और तेरी उस जवानी की सगिनी
और व्याही हुई स्त्री के वीच साक्षी
हुआ था जिस का तू ने विश्वासघात किया
है। १५ क्या उस ने एक ही को नही
वनाया जब कि और आत्माए उसके पास
थीं*? और एक ही को क्यों वनाया?
इसलिये कि वह परमेश्वर के योग्य सन्तान
चाहता है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के
विषय में चौकस रहो, और तुम में से कोई
अपनी जवानी की स्त्री से विश्वासघात न
करे। १६ क्योकि इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा यह कहता है, कि मै स्त्री-त्याग से
घृणा करता हू, और उस से भी जो अपने
वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है। इसलिये
तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो
और विश्वासघात मत करो, सेनाओ के
यहोवा का यही वचन है॥

१७ तुम लोगों ने अपनी बातो से
यहोवा को उकता दिया है। तौभी पूछते
हो, कि हम ने किस बात में उसे उकता
दिया? इस में, कि तुम कहते हो कि जो
कोई बुरा करता है, वह यहोवा की
दृष्टि में अच्छा लगता है, और वह ऐसे
लोगों से प्रसन्न रहता है, और यह, कि
न्यायी परमेश्वर कहा है?

३ देखो, मै अपने दूत को भेजता हूं,
और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा,
और प्रभु, जिसे तुम ढूढ़ते हो, वह अचानक
अपने मन्दिर में आ जाएगा; हा वाचा का
वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह
आता है, सेनाओ के यहोवा का यही वचन
है। २ परन्तु उसके आने के दिन की कौन
सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब
कौन खडा रह सकेगा?

क्योकि वह सोनार की आग और धोबी
के साबुन के समान है। ३ वह रूपे का
तानेवाला और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और
लेवियो को शुद्ध करेगा और उनको सोने
रूपे की नाईं निर्मल करेगा, तब वे यहोवा
की भेंट धर्म से चढ़ाएगे। ४ तब यहूदा
और यरूशलेम की भेंट यहोवा को ऐसी
भाएगी, जैसी पहिले दिनो मे और प्राचीन-
काल मे भावती थी॥

५ तब मै न्याय करने को तुम्हारे निकट
आऊगा; और टोनहो, और व्यभिचारियो,
और झूठी किरिया खानेवालो के विरुद्ध,
और जो मज़दूर की मज़दूरी को दबाते,
और विधवा और अनाथों पर अन्धेर करते,
और परदेशी का न्याय बिगाड़ते, और मेरा
भय नही मानते, उन सभों के विरुद्ध मं
तुरन्त साक्षी दूगा, सेनाओ के यहोवा का
यही वचन है॥

६ क्योकि मै यहोवा बदलता नही;
इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम
नाश नही हुए। ७ अपने पुरखाओ के
दिनों से तुम लोग मेरी विधियो से हटते
आए हो, और उनका पालन नही करते।
तुम मेरी ओर फिरो, तब मै भी तुम्हारी
ओर फिरूगा, सेनाओ के यहोवा का यही
वचन है; परन्तु तुम पूछते हो, हम किस
बात में फिरें? ८ क्या मनुष्य परमेश्वर
को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ

* वा क्या एक ही पुरुष ने ऐसा किया
जिस में आत्मा का कुछ प्रभाव रह गया था।

को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो
कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है?
दशमांश और उठाने की भेंटों में। ९ तुम
पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम
मुझे लूटते हो, वरन सारी जाति ऐसा
करती है। १० सारे दशमांश भण्डार में
ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु
रहे, और सेनाओं का यहोवा यह
कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो
कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये
खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष
की वर्षा करता हूं कि नहीं। ११ मैं
तुम्हारे लिये नाश करनेवाले को ऐसा
घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की
उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी
दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे,
सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।
१२ तब सारी जातियां तुम को धन्य
कहेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश * मनोहर देश
होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है॥

१३ यहोवा यह कहता है, तुम ने
मेरे विरुद्ध ढिठाई की बातें कही हैं। परन्तु
तुम पूछते हो, हम ने तेरे विरुद्ध में क्या
कहा है? १४ तुम ने कहा है कि
परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्थ है।
हम ने जो उसके बताए हुए कामों
को पूरा किया और सेनाओं के यहोवा
के डर के मारे शोक का पहिरावा पहिने
हुए चले हैं, इस से क्या लाभ हुआ?
१५ अब से हम अभिमानी लोगों को धन्य
कहते हैं, क्योंकि दुराचारी तो सफल बन
गए हैं, वरन वे परमेश्वर की परीक्षा करने
पर भी बच गए हैं॥

* मूल में—तुम।

१६ तब यहोवा का भय माननेवालों ने
आपस में बातें कीं, और यहोवा ध्यान धर-
कर उनकी सुनता था, और जो यहोवा का
भय मानते और उसके नाम का सम्मान
करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके
साम्हने एक पुस्तक लिखी जाती थी।
१७ सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि
जो दिन मैं ने ठहराया है, उस दिन वे
लोग मेरे वरन मेरे निज भाग ठहरेंगे,
और मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा
जैसी कोई अपने सेवा करनेवाले पुत्र से
करे। १८ तब तुम फिरकर धर्मी और
दुष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की
सेवा करता है, और जो उसकी सेवा
नहीं करता, उन दोनों का भेद पहिचान
सकोगे॥

४ क्योंकि देखो, वह धधकते भट्ठे
का सा दिन आता है, जब सब अभि-
मानी और सब दुराचारी लोग अनाज की
खूंटी बन जाएंगे, और उस आनेवाले दिन
में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता
तक न रहेगा *, सेनाओं के यहोवा का यही
वचन है। २ परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे
नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य
उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा
तुम चंगे हो जाओगे †, और तुम निकल-
कर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदोगे और
फांदोगे। ३ तब तुम दुष्टों को लताड़
डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन
में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन
जाएंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन
है॥

* मूल में—उनकी न जड़ न डालियां
छोड़ेगा।

† मूल में—उसके पंखों में चंगापन।

४ मेरे दास मूसा की व्यवस्था अर्थात्
जो जो विधि और नियम मैं ने सारे
इस्राएलियों के लिये उसको होरेब में दिए
थे, उनको स्मरण रखो ॥

५ देखो, यहोवा के उस बड़े और
भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे
पास एलिय्याह नबी को भेजूंगा। ६ और
वह माता-पिता के मन को उनके
पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को
उनके माता-पिता की ओर फेरेगा;
ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को
सत्यानाश करूं ॥

धर्मपुस्तक का

नया नियम

अर्थात्

प्रभु यीशु का

सुसमाचार

मत्ती रचित सुसमाचार

१ इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की
सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली।
२ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ, इस-
हाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और याकूब
से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए।
३ यहूदा से फिरिस, और यहूदा और
तामार से जोरह उत्पन्न हुए, और फिरिस
से हिस्रोन उत्पन्न हुआ, और हिस्रोन
से एराम उत्पन्न हुआ। ४ और एराम
से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ, और
अम्मीनादाब से नहशोन और नहशोन से
सलमोन उत्पन्न हुआ। ५ और सलमोन
और राहब से बोअज उत्पन्न हुआ। और
बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ,
और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। ६ और
यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ॥
७ और दाऊद से सुलैमान उस स्त्री
से उत्पन्न हुआ जो पहिले उरिय्याह की
पत्नी थी। ८ और सुलैमान से रहबाम
उत्पन्न हुआ, और रहबाम से अबिय्याह
उत्पन्न हुआ, और अबिय्याह से आसा
उत्पन्न हुआ, और आसा से यहोशाफात
उत्पन्न हुआ, और यहोशाफात से योराम
उत्पन्न हुआ, और योराम से उज्जिय्याह
उत्पन्न हुआ। ९ और उज्जिय्याह से
योताम उत्पन्न हुआ, और योताम से
आहाज उत्पन्न हुआ, और आहाज से
हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ। १० और
हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुआ।
और मनश्शिह से आमोन उत्पन्न हुआ,
और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ।
११ और बन्दी होकर बाबुल जाने के
समय में योशिय्याह से यकुन्याह, और उस
के भाई उत्पन्न हुए॥
१२ बन्दी होकर बाबुल पहुचाए जाने
के बाद यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न
हुआ, और शालतिएल से जरुब्बाबिल
उत्पन्न हुआ। १३ और जरुब्बाबिल से
अबीहूद उत्पन्न हुआ, और अबीहूद से
इल्याकीम उत्पन्न हुआ, और इल्याकीम
से अजोर उत्पन्न हुआ। १४ और अजोर
से सदोक उत्पन्न हुआ, और सदोक से
अखीम उत्पन्न हुआ, और अखीम से
इलीहूद उत्पन्न हुआ। १५ और इलीहूद
से इलियाजार उत्पन्न हुआ, और इलिया-
जार से मत्तान उत्पन्न हुआ, और मत्तान
से याकूब उत्पन्न हुआ। १६ और याकूब
से यूसुफ उत्पन्न हुआ, जो मरियम का
पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता
है उत्पन्न हुआ॥
१७ इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह
पीढी हुई और दाऊद से बाबुल को बन्दी
होकर पहुचाए जाने तक चौदह पीढी और
बन्दी होकर बाबुल को पहुचाए जाने के
समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढी
हुईं॥
१८ अब यीशु मसीह का जन्म इस
प्रकार से हुआ, कि जब उस की माता
मरियम की मगनी यूसुफ के साथ हो गई,
तो उन के इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र
आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।
१९ सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था
और उसे बदनाम करना नही चाहता था,
उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।

२० जब वह इन बातो के सोच ही मे था
तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न मे दिखाई
देकर कहने लगा, हे यूसुफ दाऊद की
सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने
यहा ले आने से मत डर, क्योंकि जो उमके
गर्भ मे है, वह पवित्र आत्मा की ओर से
है। २१ वह पुत्र जनेगी और तू उसका
नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने
लोगो का उन के पापो से उद्धार करेगा।
२२ यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो
वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा
था, वह पूरा हो। २३ कि, देखो एक
कुवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी
और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा
जिस का अर्थ यह है "परमेश्वर हमारे
साथ"। २४ सो यूसुफ नीद से जागकर
प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी
को अपने यहा ले आया। २५ और जब
तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके
पास न गया और उस ने उसका नाम
यीशु रखा॥

२ हेरोदेस राजा के दिनो मे जब
यहूदिया के बैतलहम मे यीशु का जन्म
हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरू-
शलेम मे आकर पूछने लगे। २ कि यहू-
दियो का राजा जिस का जन्म हुआ है, कहा
है? क्योंकि हम ने पूर्व मे उसका तारा
देखा है और उस को प्रणाम करने आए है।
३ यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके
साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। ४ और
उस ने लोगो के सब महायाजको और
शास्त्रियो को इकट्ठे करके उन से पूछा,
कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए?
५ उन्हो ने उस से कहा, यहूदिया के
बैतलहम में, क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा
यो लिखा गया है। ६ कि हे बैतलहम,
जो यहूदा के देश मे है, तू किसी रीति से
यहूदा के अधिकारियो मे सब से छोटा
नही, क्योंकि तुझ मे से एक अधिपति
निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की
रखवाली करेगा। ७ तब हेरोदेस ने
ज्योतिषियो को चुपके से बुलाकर उन से
पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई
दिया था। ८ और उस ने यह कहकर उन्हे
बैतलहम भेजा, कि जाकर उस बालक के
विषय मे ठीक ठीक मालूम करो और जब
वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि
मैं भी आकर उस को प्रणाम करू। ९ वे
राजा की बात सुनकर चले गए, और देखो,
जो तारा उन्हो ने पूर्व मे देखा था, वह उन
के आगे आगे चला, और जहा बालक था,
उस जगह के ऊपर पहुचकर ठहर गया।
१० उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित
हुए। ११ और उस घर मे पहुचकर
उस बालक को उस की माता मरियम
के साथ देखा, और मुह के बल गिरकर उसे
प्रणाम किया, और अपना अपना थैला
खोलकर उस को सोना, और लोहबान,
और गन्धरस की भेट चढाई। १२ और
स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस
के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से
होकर अपने देश को चले गए॥

१३ उन के चले जाने के बाद देखो, प्रभु
के एक दूत ने स्वप्न मे यूसुफ को दिखाई
देकर कहा, उठ, उस बालक को और उस
की माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा,
और जब तक मै तुझ से न कहू, तब तक वही
रहना, क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूढने
पर है कि उसे मरवा डाले। १४ वह रात
ही को उठकर बालक और उस की माता
को लेकर मिस्र को चल दिया। १५ और

हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा, इसलिये
कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के
द्वारा कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिस्र
से बुलाया पूरा हो। १६ जब हेरोदेस ने
यह देखा, कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा
किया है, तब वह क्रोध से भर गया; और
लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक
पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और
उसके आस पास के सब लड़कों को जो दो
वर्ष के, वा उस से छोटे थे, मरवा डाला।
१७ तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ,
१८ कि रामाह में एक करुण-नाद सुनाई
दिया, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने
बालकों के लिये रो रही थी, और शान्त
होना न चाहती थी, क्योंकि वे हैं नहीं॥
१९ हेरोदेस के मरने के बाद देखो,
प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में
दिखाई देकर कहा। २० कि उठ, बालक
और उस की माता को लेकर इस्राएल के
देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के
प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए। २१ वह
उठा, और बालक और उस की माता को
साथ लेकर इस्राएल के देश में आया।
२२ परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस
अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर
राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा; और
स्वप्न में चितौनी पाकर गलील देश में
चला गया। २३ और नासरत नाम नगर
में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था,
कि वह नासरी कहलाएगा॥

३ उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने-
वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह
प्रचार करने लगा। कि २ मन फिराओ,
क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
३ यह वही है जिस की चर्चा यशायाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल
में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि
प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें
सीधी करो। ४ यह यूहन्ना ऊंट के रोम
का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर
में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था, और
उसका भोजन टिड्डियां और बनमधु था।
५ तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के,
और यरदन के आस पास के सारे देश के
लोग उसके पास निकल आए। ६ और
अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी
में उस से बपतिस्मा लिया। ७ जब उस
ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को
बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा,
तो उन से कहा, कि हे सांप के बच्चो,
तुम्हें किस ने जता दिया, कि आनेवाले
क्रोध से भागो? ८ सो मन फिराव के
योग्य फल लाओ। ९ और अपने अपने
मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता
इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि
परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये
सन्तान उत्पन्न कर सकता है। १० और
अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा
हुआ है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल
नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका
जाता है। ११ मैं तो पानी से तुम्हें मन
फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो
मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्ति
शाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य
नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग
से बपतिस्मा देगा। १२ उसका सूप उस
के हाथ में है, और वह अपना खलिहान
अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं
को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी

को उस आग मे जलाएगा जो बुझने की नही ॥

१३ उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया। १४ परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? १५ यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योकि हमे इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली। १६ और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी मे से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया, और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा। १७ और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मै अत्यन्त प्रसन्न हू॥

४ तब उस समय आत्मा यीशु को जगल मे ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो। २ वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त मे उसे भूख लगी। ३ तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटिया बन जाए। ४ उस ने उत्तर दिया, कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नही, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। ५ तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कगूरे पर खडा किया। ६ और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योकि लिखा है, कि वह तेरे विषय मे अपने स्वर्गदूतो को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथो हाथ उठा लेगे, कही ऐसा न हो कि तेरे पावो में पत्थर से ठेस लगे। ७ यीशु ने उस से कहा, यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। ८ फिर शैतान* उसे एक बहुत ऊचे पहाड पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर। ९ उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मै यह सब कुछ तुझे दे दूगा। १० तब यीशु ने उस से कहा, हे शैतान दूर हो जा, क्योकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर। ११ तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥

१२ जब उस ने यह सुना कि यूहन्ना पकडवा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। १३ और नासरत को छोडकर कफरनहूम मे जो झील के किनारे जबूलून और नपताली के देश मे है जाकर रहने लगा। १४ ताकि जो यशायाह भविष्यद्‌वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। १५ कि जबूलून और नपताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार अन्यजातियो का गलील। १६ जो लोग अन्धकार मे बैठे थे उन्हो ने बडी ज्योति देखी, और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी॥

१७ उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है। १८ उस ने गलील की झील

* अर्थात् इब्लीस।

के किनारे फिरते हुए दो भाइयो अर्थात्
शमौन को जो पतरस कहलाता है, और
उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल
डालते देखा, क्योंकि वे मछुवे थे। १६ और
उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ,
तो मैं तुम को मनुष्यो के पकडनेवाले
बनाऊगा। २० वे तुरन्त जालो को छोड-
कर उसके पीछे हो लिए। २१ और वहा
से आगे बढकर, उस ने और दो भाइयो
अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उसके
भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के
साथ नाव पर अपने जालो को सुधारते
देखा, और उन्हें भी बुलाया। २२ वे
तुरन्त नाव और अपने पिता को छोडकर
उसके पीछे हो लिए॥

२३ और यीशु सारे गलील में फिरता
हुआ उन की सभाओ में उपदेश करता और
राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और
लोगो की हर प्रकार की बीमारी और
दुर्बलता को दूर करता रहा। २४ और
सारे सूरिया में उसका यश फैल गया,
और लोग सब बीमारो को, जो नाना
प्रकार की बीमारियो और दुखो में जकडे
हुए थे, और जिन में दुष्टात्माए थी और
मिर्गीवालो और झोले के मारे हुओ को
उसके पास लाए और उस ने उन्हें चगा
किया। २५ और गलील और दिका-
पुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से
और यरदन के पार से भीड की भीड
उसके पीछे हो ली॥

५ वह इस भीड को देखकर, पहाड
पर चढ गया, और जब बैठ गया,
तो उसके चेले उसके पास आए। २ और
वह अपना मुह खोलकर उन्हें यह उपदेश
देने लगा, ३ धन्य हैं वे, जो मन के दीन
है, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्ही का है।
४ धन्य हैं वे, जो शोक करते है, क्योंकि वे
शांति पाएगे। ५ धन्य हैं वे, जो नम्र है,
क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होगे। ६ धन्य
हैं वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं,
क्योंकि वे तृप्त किए जाएगे। ७ धन्य हैं
वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की
जाएगी। ८ धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध
है, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। ९ धन्य
हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे
परमेश्वर के पुत्र कहलाएगे। १० धन्य है
वे, जो धर्म के कारण सताए जाते है, क्योंकि
स्वर्ग का राज्य उन्ही का है। ११ धन्य हो
तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा
करें, और सताए और झूठ बोल बोलकर
तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात
कहे। १२ आनन्दित और मगन होना
क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग मे बडा फल है
इसलिये कि उन्हो ने उन भविष्यद्वक्ताओ
को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से
सताया था॥

१३ तुम पृथ्वी के नमक हो, परन्तु
यदि नमक का स्वाद बिगड जाए, तो वह
फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ?
फिर वह किसी काम का नही, केवल इस के
कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यो के पैरो
तले रौंदा जाए। १४ तुम जगत की ज्योति
हो, जो नगर पहाड पर बसा हुआ है वह
छिप नही सकता। १५ और लोग दिया
जलाकर पैमाने * के नीचे नही परन्तु दीवट
पर रखते है, तब उस से घर के सब लोगो
को प्रकाश पहुचता है। १६ उसी प्रकार
तुम्हारा उजियाला मनुष्यो के साम्हने चमके

* एक बरतन जिस में डेढ मन अनाज
नापा जाता था।

कि वे तुम्हारे भले कामो को देखकर तुम्हारे
पिता की, जो स्वर्ग मे है, बडाई करे ।।
१७ यह न समझो कि मै व्यवस्था या
भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने
आया हू। १८ लोप करने नही, परन्तु पूरा
करने आया हू, क्योकि मै तुम से सच
कहता हू, कि जब तक आकाश और पृथ्वी
टल न जाए, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा
या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नही
टलेगा। १९ इसलिये जो कोई इन छोटी
से छोटी आज्ञाओं मे से किसी एक को
तोडे, और वैसा ही लोगो को सिखाए, वह
स्वर्ग के राज्य मे सब से छोटा कहलाएगा,
परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और
उन्हे सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य मे
महान कहलाएगा। २० क्योकि मै तुम से
कहता हू, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता
शास्त्रियों और फरीसियो की धार्मिकता से
बढकर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य मे
कभी प्रवेश करने न पाओगे ।।
२१ तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के
लोगो से कहा गया था कि हत्या न करना,
और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी
मे दण्ड के योग्य होगा। २२ परन्तु मै तुम
से यह कहता हू, कि जो कोई अपने भाई पर
क्रोध करेगा, वह कचहरी मे दण्ड के योग्य
होगा और जो कोई अपने भाई को
निकम्मा * कहेगा वह महासभा मे दण्ड के
योग्य होगा, और जो कोई कहे "अरे
मूर्ख" वह नरक की आग के दण्ड के योग्य
होगा। २३ इसलिये यदि तू अपनी भेट
बेदी पर लाए, और वहा तू स्मरण करे,
कि मेरे भाई के मन मे मेरी ओर से कुछ
विरोध है, तो अपनी भेट वही बेदी के
सामहने छोड दे। २४ और जाकर पहिले
अपने भाई से मेल मिलाप कर, तब
आकर अपनी भेट चढा। २५ जब तक तू
अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही मे है, उस से
झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न
हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौपे, और
हाकिम तुझे सिपाही को सौप दे और तू
बन्दीगृह मे डाल दिया जाए। २६ मै तुझ
से सच कहता हू कि जब तक तू कौडी
कौडी भर न दे तब तक वहा से छूटने न
पाएगा ।।
२७ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था,
कि व्यभिचार न करना। २८ परन्तु मै
तुम से यह कहता हू, कि जो कोई किसी स्त्री
पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन मे उस से
व्यभिचार कर चुका। २९ यदि तेरी
दहिनी आख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे
निकालकर अपने पास से फेंक दे, क्योकि
तेरे लिये यही भला है कि तेरे अङ्गो मे से
एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर
नरक मे न डाला जाए। ३० और यदि
तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो
उस को काटकर अपने पास से फेंक दे,
क्योकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे
अङ्गो मे से एक नाश हो जाए और तेरा
सारा शरीर नरक मे न डाला जाए ।।
३१ यह भी कहा गया था, कि जो कोई
अपनी पत्नी को त्याग दे तो उसे त्यागपत्र
दे। ३२ परन्तु मै तुम से यह कहता हू
कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार
के सिवा किसी और कारण से छोड दे,
तो वह उस से व्यभिचार करवाता है,
और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह
करे, वह व्यभिचार करता है ।।
३३ फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्व-
काल के लोगो से कहा गया था कि झूठी

* यू० अर्थात यूनानी भाषा मे, राका।

शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिये अपनी
शपथ को पूरी करना। ३४ परन्तु मैं तुम
से यह कहता हूं, कि कभी शपथ न खाना,
न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का
सिंहासन है। ३५ न धरती की, क्योंकि
वह उसके पांवों की चौकी है, न यरू-
शलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर
है। ३६ अपने सिर की भी शपथ न
खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न
उजला, न काला कर सकता है। ३७ परन्तु
तुम्हारी बात हां की हां, या नहीं की नहीं
हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता
है वह बुराई से होता है॥

३८ तुम सुन चुके हो, कि कहा गया
था, कि आंख के बदले आंख, और दांत के
बदले दांत। ३९ परन्तु मैं तुम से यह
कहता हूं, कि बुरे का सामना न करना,
परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़
मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे।
४० और यदि कोई तुझ पर नालिश करके
तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले
लेने दे। ४१ और जो कोई तुझे कोस
भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो
कोस चला जा। ४२ जो कोई तुझ से
मांगे, उसे दे, और जो तुझ से उधार लेना
चाहे, उस से मुंह न मोड़॥

४३ तुम सुन चुके हो, कि कहा गया
था, कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और
अपने बैरी से बैर। ४४ परन्तु मैं तुम से
यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो
और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना
करो। ४५ जिस से तुम अपने स्वर्गीय
पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों
और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता
है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर
मेंह बरसाता है। ४६ क्योंकि यदि तुम
अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो
तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल
लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते?

४७ और यदि तुम केवल अपने
भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन
सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति
भी ऐसा नहीं करते? ४८ इसलिये चाहिये
कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय
पिता सिद्ध है॥

६ सावधान रहो! तुम मनुष्यों को
दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न
करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ
भी फल न पाओगे॥

२ इसलिये जब तू दान करे, तो अपने
आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं
और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उन
की बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं
कि वे अपना फल पा चुके। ३ परन्तु जब
तू दान करे, तो जो तेरा दहिना हाथ
करता है, उसे तेरा बायां हाथ न जानने
पाए। ४ ताकि तेरा दान गुप्त रहे, और
तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे
प्रतिफल देगा॥

५ और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों
के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने
के लिये सभाओं में और सड़कों की मोड़ों
पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को
अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं,
कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। ६ परन्तु
जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी
में जा; और द्वार बन्द कर के अपने
पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर;
और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है,
तुझे प्रतिफल देगा। ७ प्रार्थना करते
समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न

करो, क्योकि वे समझते हैं कि उनके बहुत
बोलने से उन की सुनी जाएगी। ८ सो
तुम उन की नाईं न बनो, क्योकि
तुम्हारा पिता तुम्हारे मागने से पहिले ही
जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्य-
कता है। ९ सो तुम इस रीति से प्रार्थना
किया करो, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग
मे है, तेरा नाम पवित्र माना जाए।
१० तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी
स्वर्ग मे पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी
हो। ११ हमारी दिन भर की रोटी आज
हमें दे। १२ और जिस प्रकार हम ने अपने
अपराधियो * को क्षमा किया है, वैसे ही
तू भी हमारे अपराधो † को क्षमा कर।
१३ और हमे परीक्षा मे न ला, परन्तु
बुराई से बचा, क्योकि राज्य और पराक्रम
और महिमा सदा तेरे ही है।" आमीन।
१४ इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध
क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी
तुम्हे क्षमा करेगा। १५ और यदि तुम
मनुष्यो के अपराध क्षमा न करोगे, तो
तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा
न करेगा॥

१६ जब तुम उपवास करो, तो कप-
टियो की नाईं तुम्हारे मुह पर उदासी न
छाई रहे, क्योकि वे अपना मुह बनाए रहते
हैं, ताकि लोग उन्हे उपवासी जाने, मै तुम
से सच कहता हू, कि वे अपना प्रतिफल पा
चुके। १७ परन्तु जब तू उपवास करे तो
अपने सिर पर तेल मल और मुह धो।
१८ ताकि लोग नही परन्तु तेरा पिता जो
गुप्त मे है, तुझे उपवासी जाने, इस दशा
में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे
प्रतिफल देगा॥

१९ अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा
न करो, जहा कीडा और काई बिगाडते
है, और जहा चोर सेंध लगाते और चुराते
है। २० परन्तु अपने लिये स्वर्ग मे धन
इकट्ठा करो, जहा न तो कीडा, और न काई
बिगाडते है, और जहा चोर न सेंध लगाते
और न चुराते है। २१ क्योकि जहा तेरा
धन है वहा तेरा मन भी लगा रहेगा।
२२ शरीर का दिया आख है इसलिये यदि
तेरी आख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर
भी उजियाला होगा। २३ परन्तु यदि तेरी
आख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी
अन्धियारा होगा, इस कारण वह उजियाला
जो तुझ मे है यदि अन्धकार हो तो वह
अन्धकार कैसा बडा होगा! २४ कोई
मनुष्य दो स्वामियो की सेवा नही कर
सकता, क्योकि वह एक से बैर और दूसरे
से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और
दूसरे को तुच्छ जानेगा, "तुम परमेश्वर
और धन दोनो की सेवा नही कर सकते"।
२५ इसलिये मै तुम से कहता हू, कि
अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना
कि हम क्या खाएगे? और क्या पीएगे?
और न अपने शरीर के लिये कि क्या
पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर
वस्त्र से बढकर नही? २६ आकाश के
पक्षियो को देखो! वे न बोते है, न
काटते है, और न खत्तो मे बटोरते है,
तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को
खिलाता है, क्या तुम उन से अधिक मूल्य
नही रखते। २७ तुम मे कौन है, जो
चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घडी *
भी बढा सकता है? २८ और वस्त्र के
लिये क्यो चिन्ता करते हो? जगली

* यू० कर्ज़दार। † यू० कर्ज़।

* यू० हाथ।

सोसनो पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढते है,
वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं।
२६ तौभी म तुम से कहता हू, कि सुलैमान
भी, अपने सारे विभव में उन मे से किसी के
समान वस्त्र पहिने हुए न था। ३० इस-
लिये जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो
आज है, और कल भाड मे झोकी जाएगी,
ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्प-
विश्वासियो, तुम को वह क्योकर न पहि-
नाएगा? ३१ इसलिये तुम चिन्ता करके
यह न कहना, कि हम क्या खाएगे, या क्या
पीएगे, या क्या पहिनेंगे? ३२ क्योकि अन्य-
जाति इन सब वस्तुओ की खोज मे रहते हैं,
और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है,
कि तुम्हें ये सब वस्तुए चाहिए। ३३ इस-
लिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म
की खोज करो तो ये सब वस्तुए भी तुम्हे
मिल जाएगी। ३४ सो कल के लिये
चिन्ता न करो, क्योकि कल का दिन अपनी
चिन्ता आप कर लेगा, आज के लिये आज
ही का दुख बहुत है॥

७ दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी
दोष न लगाया जाए। २ क्योकि
जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार
तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और
जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे
लिये भी नापा जाएगा। ३ तू क्यो अपने
भाई की आख के तिनके को देखता है, और
अपनी आख का लट्ठा तुझे नही सूझता?
४ और जब तेरी ही आख मे लट्ठा है, तो तू
अपने भाई से क्योकर कह सकता है, कि ला
मे तेरी आख से तिनका निकाल दू। ५ हे
कपटी, पहले अपनी आख मे से लट्ठा निकाल
ले, तब तू अपने भाई की आख का तिनका
भली भाति देखकर निकाल सकेगा॥

६ पवित्र वस्तु कुत्तो को न दो, और
अपने मोती सूअरो के आगे मत डालो,
ऐसा न हो कि वे उन्हे पावो तले रौंदे और
पलटकर तुम को फाड डाले॥

७ मागो, तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूढो,
तो तुम पाओगे, खटखटाओ, तो तुम्हारे
लिये खोला जाएगा। ८ क्योकि जो कोई
मागता है, उसे मिलता है, और जो ढूढता
है, वह पाता है? और जो खटखटाता है,
उसके लिये खोला जाएगा। ९ तुम मे से
ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र
उस से रोटी मागे, तो वह उसे पत्थर दे?
१० वा मछली मागे, तो उसे साप दे?
११ सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चो
को अच्छी वस्तुए देना जानते हो, तो
तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मागनेवालो
को अच्छी वस्तुए क्या न देगा? १२ इस
कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य
तुम्हारे साथ करे, तुम भी उन के साथ वैसा
ही करो, क्योकि व्यवस्था और भविष्यद्-
वक्ताओ की शिक्षा यही है॥

१३ सकेत फाटक से प्रवेश करो,
क्योकि चौडा है वह फाटक और चाकल
है वह माग जो विनाश को पहुचाता है,
और बहुतेरे है जो उस से प्रवेश करते ह।
१४ क्योकि सकेत है वह फाटक और
सकरा है वह माग जो जीवन को पहुचाता
है, और थोडे ह जो उसे पाते है॥

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओ से सावधान
रहो, जो भेडो के भेष में तुम्हारे पास आते
ह, परन्तु अन्तर मे फाडनेवाले भेडिए है।
१६ उन के फलो से तुम उन्हें पहचान लोगे
क्या झाडियो से अगूर, वा ऊटकटारो से
अजीर तोडते है? १७ इसी प्रकार हर
एक अच्छा पेड अच्छा फल लाता है
और निकम्मा पेड बुरा फल लाता है।

१८ अच्छा पेड बुरा फल नही ला सकता,
और न निकम्मा पेड अच्छा फल ला सकता
है। १९ जो जो पेड अच्छा फल नही लाता,
वह काटा और आग में डाला जाता है।
२० सो उन के फलो से तुम उन्हे पहचान
लोगे। २१ जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु
कहता है, उन मे से हर एक स्वर्ग के राज्य मे
प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय
पिता की इच्छा पर चलता है। २२ उस
दिन बहुतेरे मुझ से कहेगे; हे प्रभु, हे प्रभु,
क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नही
की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओ को नही
निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के
काम नही किए? २३ तब मैं उन से
खुलकर कह दूगा कि मैं ने तुम को कभी
नही जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास
से चले जाओ। २४ इसलिये जो कोई
मेरी ये बाते सुनकर उन्हे मानता है वह
उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस
ने अपना घर चटान पर बनाया। २५ और
मेह बरसा और बाढें आईं, और आन्धिया
चली, और उस घर पर टक्करे लगी, परन्तु
वह नही गिरा, क्योकि उस की नेव चटान
पर डाली गई थी। २६ परन्तु जो कोई
मेरी ये बाते सुनता है और उन पर नही
चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं
ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया।
२७ और मेंह बरसा, और बाढे आईं,
और आन्धिया चली, और उस घर पर
टक्करें लगी और वह गिरकर सत्यानाश
हो गया॥

२८ जब यीशु ये बाते कह चुका, तो
ऐसा हुआ कि भीड उसके उपदेश से चकित
हुई। २९ क्योकि वह उन के शास्त्रियो
के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं
उन्हे उपदेश देता था॥

८ जब वह उस पहाड से उतरा, तो
एक बडी भीड उसके पीछे हो ली।
२ और देखो, एक कोढी ने पास आकर उसे
प्रणाम किया और कहा, कि हे प्रभु यदि तू
चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है। ३ यीशु
ने हाथ बढाकर उसे छूआ, और कहा, मैं
चाहता हू, तू शुद्ध हो जा और वह तुरन्त
कोढ़ से शुद्ध हो गया। ४ यीशु ने उस से
कहा; देख, किसी से न कहना परन्तु जाकर
अपने आप को याजक को दिखला और जो
चढावा मूसा ने ठहराया है उसे चढा, ताकि
उन के लिये गवाही हो॥

५ और जब वह कफरनहूम मे आया
तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस
से बिनती की। ६ कि हे प्रभु, मेरा सेवक
घर मे झोले का मारा बहुत दुखी पडा है।
७ उस ने उस से कहा, मैं आकर उसे चगा
करूगा। ८ सूबेदार ने उत्तर दिया, कि
हे प्रभु मैं इस योग्य नही, कि तू मेरी छत के
तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा
सेवक चगा हो जाएगा। ९ क्योकि मैं भी
पराधीन मनुष्य हू, और सिपाही मेरे हाथ
मे है, और जब एक से कहता हू, जा, तो वह
जाता है, और दूसरे को कि आ, तो वह
आता है, और अपने दास से कहता हू, कि
यह कर, तो वह करता है। १० यह सुन-
कर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके
पीछे आ रहे थे उन से कहा, मैं तुम से सच
कहता हू, कि मै ने इस्राएल मे भी ऐसा
विश्वास नही पाया। ११ और मैं तुम से
कहता हू, कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से
आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब
के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेगे। १२ परन्तु
राज्य के सन्तान बाहर अन्धियारे मे डाल
दिए जाएगे वहा रोना और दातो का
पीसना होगा। १३ और यीशु ने सूबेदार

से कहा, जा, जैसा तेरा विश्वास है, वैसा
ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी
घड़ी चंगा हो गया॥

१४ और यीशु ने पतरस के घर में
आकर उस की सास को ज्वर में पड़ी देखा।
१५ उस ने उसका हाथ छूआ और उसका
ज्वर उतर गया, और वह उठकर उस की
सेवा करने लगी। १६ जब संध्या हुई
तब वे उसके पास बहुत से लोगों को
लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने
उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल
दिया: और सब बीमारों को चंगा किया।
१७ ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उस
ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया
और हमारी बीमारियों को उठा लिया॥

१८ यीशु ने अपनी चारों ओर एक
बड़ी भीड़ देखकर उस पार जाने की आज्ञा
दी। १९ और एक शास्त्री ने पास आकर
उस से कहा, हे गुरु, जहां कहीं तू जाएगा,
मैं तेरे पीछे पीछे हो लूंगा। २० यीशु ने
उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश
के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य
के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह
नहीं है। २१ एक और चेले ने उस से
कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे, कि अपने
पिता को गाड़ * दूं। २२ यीशु ने उस से
कहा, तू मेरे पीछे हो ले; और मुरदों को
अपने मुरदे गाड़ने दे॥

२३ जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके
चेले उसके पीछे हो लिए। २४ और
देखो, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा
कि नाव लहरों से ढपने लगी; और वह
सो रहा था। २५ तब उन्हों ने पास आकर
उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा,
हम नाश हुए जाते हैं। २६ उस ने उन
से कहा, हे अल्पविश्वासियो, क्यों डरते
हो? तब उस ने उठकर आंधी और पानी
को डांटा, और सब शान्त हो गया।
२७ और लोग अचम्भा करके कहने लगे
कि यह कैसा मनुष्य है, कि आन्धी और
पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं॥

२८ जब वह उस पार गदरेनियों के
देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिन में
दुष्टात्माएं थीं कब्रों से निकलते हुए उसे
मिले, जो इतने प्रचण्ड थे कि कोई उस
मार्ग से जा नहीं सकता था। २९ और
देखो, उन्हों ने चिल्लाकर कहा, हे
परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या
काम? क्या तू समय से पहिले हमें दुःख
देने यहां आया है? ३० उन से कुछ दूर
बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था।
३१ दुष्टात्माओं ने उस से यह कहकर
बिनती की, कि यदि तू हमें निकालता है, तो
सूअरों के झुण्ड में भेज दे। ३२ उस ने
उन से कहा, जाओ, वे निकलकर सूअरों में
पैठ गए और देखो, सारा झुण्ड कड़ाड़े पर
से झपटकर पानी में जा पड़ा, और डूब
मरा। ३३ और चरवाहे भागे, और नगर
में जाकर ये सब बातें और जिन में
दुष्टात्माएं थीं उन का सारा हाल कह
सुनाया। ३४ और देखो, सारे नगर के
लोग यीशु से भेंट करने को निकल आए
और उसे देखकर बिनती की, कि हमारे
सिवानों में से बाहर निकल जा॥

९ फिर वह नाव पर चढ़कर पार
गया, और अपने नगर में आया।
२ और देखो, कई लोग एक झोले के
मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास॥

* वा, दफ़न कर दूं।

लाए, यीशु ने उन का विश्वास देखकर,
उस झोले के मारे हुए से कहा, हे पुत्र,
ढाढस बान्ध, तेरे पाप क्षमा हुए। ३ और
देखो, कई शास्त्रियो ने सोचा, कि यह तो
परमेश्वर की निन्दा करता है। ४ यीशु
ने उन के मन की बाते मालूम करके कहा,
कि तुम लोग अपने अपने मन मे बुरा विचार
क्यो कर रहे हो? ५ सहज क्या है, यह
कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह
कहना कि उठ और चल फिर। ६ परन्तु
इसलिये कि तुम जान लो कि मनुष्य के
पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का
अधिकार है (उस ने झोले के मारे हुए से
कहा) उठ अपनी खाट उठा, और अपने
घर चला जा। ७ वह उठकर अपने घर
चला गया। ८ लोग यह देखकर डर
गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे
जिस ने मनुष्यो को ऐसा अधिकार दिया
है॥

६ वहा से आगे बढकर यीशु ने मत्ती
नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर
बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो
ले। वह उठकर उसके पीछे हो लिया॥

१० और जब वह घर मे भोजन करने
के लिये बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवाले
और पापी आकर यीशु और उसके चेलो
के साथ खाने बैठे। ११ यह देखकर
फरीसियो ने उसके चेलो से कहा, तुम्हारा
गुरु महसूल लनेवालो और पापियो के साथ
क्यो खाता है? १२ उस ने यह सुनकर
उन से कहा, वैद्य भले चगो को नही परन्तु
बीमारो को अवश्य है। १३ सो तुम जाकर
इस का अर्थ सीख लो, कि मै बलिदान
नही परन्तु दया चाहता हू, क्योकि मै
धर्मियो को नही परन्तु पापियो को बुलाने
आया हू॥

१४ तब यूहन्ना के चेलो ने उसके पास
आकर कहा, क्या कारण है कि हम और
फरीसी इतना उपवास करते है, पर तेरे
चेले उपवास नही करते? १५ यीशु ने
उन से कहा, क्या बराती, जब तक दूल्हा
उन के साथ है शोक कर सकते है? पर
वे दिन आएगे कि दूल्हा उन से अलग
किया जाएगा, उस समय वे उपवास
करेगें। १६ कोरे कपडे का पैवन्द पुराने
पहिरावन पर कोई नही लगाता, क्योकि
वह पैवन्द पहिरावन से और कुछ खीच
लेता है, और वह अधिक फट जाता है।
१७ और नया दाखरस पुरानी मशको मे
नही भरते है, क्योकि ऐसा करने से मशके
फट जाती है, और दाखरस बह जाता है
और मशके नाश हो जाती है, परन्तु नया
दाखरस नई मशको मे भरते है और वह
दोनो बची रहती है॥

१८ वह उन से ये बाते कह ही रहा था,
कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम
किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है;
परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख,
तो वह जीवित हो जाएगी। १९ यीशु
उठकर अपने चेलो समेत उसके पीछे हो
लिया। २० और देखो, एक स्त्री ने जिस
के बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके
पीछे से आकर उसके वस्त्र के आचल को
छू लिया। २१ क्योकि वह अपने मन में
कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को
छू लूगी तो चगी हो जाऊगी। २२ यीशु
ने फिरकर उसे देखा, और कहा, पुत्री ढाढस
बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चगा किया है,
सो वह स्त्री उसी घडी चगी हो गई।
२३ जब यीशु उस सरदार के घर में पहुचा
और बासली बजानेवालो और भीड को
हुल्लड मचाते देखा तब कहा। २४ हट

जाओ, लडकी मरी नही, पर सोती है,
इस पर वे उस की हसी करने लगे।
२५ परन्तु जब भीड निकाल दी गई, तो
उस ने भीतर जाकर लडकी का हाथ पकडा,
और वह जी उठी। २६ और इस बात
की चर्चा उस सारे देश में फैल गई॥

२७ जब यीशु वहा से आगे बढा, तो
दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले,
कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
२८ जब वह घर मे पहुचा, तो वे अन्धे उस
के पास आए, और यीशु ने उन से कहा,
क्या तुम्हे विश्वास है, कि मैं यह कर सकता
हू? उन्हो ने उस से कहा, हा, प्रभु।
२९ तब उस ने उन की आखें छूकर कहा,
तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये
हो। ३० और उन की आखें खुल गईं और
यीशु ने उन्हें चिताकर कहा, सावधान,
कोई इस बात को न जाने। ३१ पर
उन्हो ने निकलकर सारे देश मे उसका
यश फैला दिया॥

३२ जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो,
लोग एक गूगे को जिस में दुष्टात्मा थी
उसके पास लाए। ३३ और जब दुष्टात्मा
निकाल दी गई, तो गूगा बोलने लगा, और
भीड ने अचम्भा करके कहा कि इस्राएल
में ऐसा कभी नही देखा गया। ३४ परन्तु
फरीसियों ने कहा, यह तो दुष्टात्माओ के
सरदार की सहायता से दुष्टात्माओ को
निकालता है॥

३५ और यीशु सब नगरो और गावो
मे फिरता रहा और उन की सभाओ मे
उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार
प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी
और दुर्बलता को दूर करता रहा।
३६ जब उस ने भीड को देखा तो उस को
लोगो पर तरस आया, क्योकि वे उन भेडो
की नाईं जिनका कोई रखवाला * न हो,
व्याकुल और भटके हुए से थे। ३७ तब
उस ने अपने चेलो से कहा, पक्के खेत तो
बहुत है पर मजदूर थोडे है। ३८ इसलिये
खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने
खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे॥

१० फिर उस ने अपने बारह चेलो को
पास बुलाकर, उन्हे अशुद्ध आत्माओ
पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें
और सब प्रकार की बीमारियो और सब
प्रकार की दुर्बलताओ को दूर करे॥

२ और बारह प्रेरितो के नाम ये हैं
पहिला शमौन, जो पतरस कहलाता है,
और उसका भाई अन्द्रियास, जब्दी का
पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना,
३ फिलिप्पुस और बर-तुल्मै थोमा और
महसूल लेनेवाला मत्ती, हलफै का पुत्र
याकूब और तद्दै। ४ शमौन कनानी, और
यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकडवा
भी दिया॥

५ इन बारहो को यीशु ने यह आज्ञा
देकर भेजा कि अन्यजातियो की ओर न
जाना, और सामरियो के किसी नगर में
प्रवेश न करना। ६ परन्तु इस्राएल के
घराने ही की खोई हुई भेडो के पास जाना
७ और चलते चलते प्रचार कर कहो कि
स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
८ बीमारो को चगा करो मरे हुओ को
जिलाओ कोढियो को शुद्ध करो
दुष्टात्माओ को निकालो तुम ने सेंतमेंत
पाया है, सेंतमेंत दो। ९ अपने पटुको में
न तो सोना, और न रूपा, और न तांबा
रखना। १० मार्ग के लिये न झोली रखो,
न दो कुरते, न जूते और न लाठी लो, क्योकि

* अर्थात् चरवाहा।

मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए।
११ जिस किसी नगर या गाव में जाओ,
तो पता लगाओ कि वहा कौन योग्य है ?
और जब तक वहा से न निकलो, उसी के
यहा रहो। १२ और घर मे प्रवेश करते
हुए उस को आशीष देना। १३ यदि उस
घर के लोग योग्य होगे तो तुम्हारा कल्याण
उन पर पहुचेगा परन्तु यदि वे योग्य न
हो तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट
आएगा। १४ और जो कोई तुम्हे ग्रहण
न करे, और तुम्हारी बाते न सुने, उस घर
या उस नगर से निकलते हुए अपने पावो
की धूल झाड डालो। १५ मैं तुम से सच
कहता हू, कि न्याय के दिन उस नगर की
दशा से सदोम और अमोरा के देश की
दशा अधिक सहने योग्य होगी॥

१६ देखो, मैं तुम्हे भेडो की नाई भेडियो
के बीच मे भेजता हू सो सापो की नाई बुद्धि-
मान और कबूतरो की नाई भोले बनो।
१७ परन्तु लोगो से सावधान रहो, क्योकि
वे तुम्हे महा सभाओ मे सौपेगे, और अपनी
पचायतो मे तुम्हे कोडे मारेगे। १८ तुम
मेरे लिये हाकिमो और राजाओ के साम्हने
उन पर, और अन्यजातियो पर गवाह होने
के लिये पहुचाए जाओगे। १९ जब वे
तुम्हे पकडवाएगे तो यह चिन्ता न करना,
कि हम किस रीति से, या क्या कहेगे
क्योकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह
उसी घडी तुम्हे बता दिया जाएगा।
२० क्योकि बोलनेवाले तुम नही हो परन्तु
तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है।
२१ भाई, भाई को और पिता पुत्र को, घात
के लिये सौपेगे, और लडकेवाले माता-पिता
के विरोध मे उठकर उन्हे मरवा डालेगे।
२२ मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से
बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे
रहेगा उसी का उद्धार होगा। २३ जब
वे तुम्हें एक नगर में सताए, तो दूसरे को
भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हू, तुम
इस्राएल के सब नगरो मे न फिर चुकोगे,
कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा॥

२४ चेला अपने गुरु से बडा नही,
और न दास अपने स्वामी से। २५ चेले
का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर
होना ही बहुत है, जब उन्हो ने घर के स्वामी
को शैतान * कहा तो उसके घरवालो को
क्यो न कहेगे ? २६ सो उन से मत डरना,
क्योकि कुछ ढपा नही, जो खोला न जाएगा,
और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।
२७ जो मैं तुम से अन्धियारे मे कहता हू,
उसे उजियाले मे कहो, और जो कानो कान
सुनते हो, उसे कोठो पर से प्रचार करो।
२८ जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा
को घात नही कर सकते, उन से मत डरना,
पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर
दोनो को नरक मे नाश कर सकता है।
२९ क्या पैसे मे दो गौरैये नही बिकती ?
तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन
मे से एक भी भूमि पर नही गिर सकती।
३० तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए
हैं। ३१ इसलिये, डरो नही, तुम बहुत
गौरैयो से बढकर हो। ३२ जो कोई
मनुष्यो के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं
भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान
लूगा। ३३ पर जो कोई मनुष्यो के साम्हने
मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने
स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूगा।
३४ यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप
कराने को आया हू, मैं मिलाप कराने को
नही, पर तलवार चलवाने आया हू।

* यू० इबलीस वा बालजबूल।

३५ मैं तो आया हूं, कि मनुष्य को उसके
पिता से, और बेटी को उस की मा से,
और बहू को उस की सास से अलग कर दूं।
३६ मनुष्य के वैरी उसके घर ही के लोग
होंगे। ३७ जो माता या पिता को मुझ से
अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं
और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक
प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।
३८ और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे
न चले वह मेरे योग्य नहीं। ३९ जो
अपने प्राण बचाता * है, वह उसे खोएगा,
और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है,
वह उसे पाएगा। ४० जो तुम्हें ग्रहण
करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और
जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले
को ग्रहण करता है। ४१ जो भविष्यद्वक्ता
को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह
भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा, और जो
धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह
धर्मी का बदला पाएगा। ४२ जो कोई
इन छोटों में से एक को चेला जानकर
केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं
तुम से सच कहता हूं, वह किसी रीति से
अपना प्रतिफल न खोएगा॥

११ जब यीशु अपने बारह चेलों
को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के
नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां
से चला गया॥

२ यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के
कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को
उस से यह पूछने भेजा। ३ कि क्या
आनेवाला तू ही है या हम दूसरे की बाट
जोहें? ४ यीशु ने उत्तर दिया, कि जो
कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब
जाकर यूहन्ना से कह दो। ५ कि अन्धे
देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी
शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे
जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सु-
समाचार सुनाया जाता है। ६ और धन्य है
वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए। ७ जब
वे वहां से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के
विषय में लोगों से कहने लगा, तुम जंगल
में क्या देखने गए थे? क्या हवा से
हिलते हुए सरकण्डे को? ८ फिर तुम
क्या देखने गये थे? क्या कोमल वस्त्र
पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो कोमल
वस्त्र पहिनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं।
९ तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी
भविष्यद्वक्ता को देखने को? हां मैं तुम
से कहता हूं, वरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े
को। १० यह वही है, जिस के विषय में
लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे
आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे तेरा मार्ग
तैयार करेगा। ११ मैं तुम से सच कहता
हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ,
पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है
वह उस से बड़ा है। १२ यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य
पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे
छीन लेते हैं। १३ यूहन्ना तक सारे
भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी
करते रहे। १४ और चाहो तो मानो,
एलिय्याह जो आनेवाला था, वह यही है।
१५ जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले।
१६ मैं इस समय के लोगों की उपमा किस
से दूं? वे उन बालकों के समान हैं, जो
बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर
कहते हैं। १७ कि हम ने तुम्हारे लिये
बांसली बजाई, और तुम न नाचे, हम ने

* यू० पाता।

विलाप किया, और तुम ने छाती नही पीटी।
१८ क्योकि यूहन्ना न खाता आया और न
पीता, और वे कहते है कि उस में दुष्टात्मा
है। १६ मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया,
और वे कहते है कि देखो, पेटू और पियक्कड
मनुष्य, महसूल लेनेवालो और पापियो का
मित्र, पर ज्ञान अपने कामो से सच्चा
ठहराया गया है॥

२० तब वह उन नगरो को उलाहना
देने लगा, जिन मे उस ने बहुतेरे सामर्थ के
काम किए थे, क्योकि उन्हो ने अपना मन
नही फिराया था। २१ हाय, खुराजीन,
हाय, बैतसैदा, जो सामर्थ के काम तुम
में किए गए, यदि वे सूर और सैदा मे
किए जाते, तो टाट ओढकर, और राख
में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते।
२२ परन्तु मै तुम से कहता हू, कि न्याय
के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की
दशा अधिक सहने योग्य होगी। २३ और
हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊचा किया
जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे
जाएगा, जो सामर्थ के काम तुझ में किए
गए है, यदि सदोम मे किए जाते, तो वह
आज तक बना रहता। २४ पर मै तुम से
कहता हू, कि न्याय के दिन तेरी दशा
से सदोम के देश की दशा अधिक सहने
योग्य होगी॥

२५ उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता,
स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मै तेरा धन्यवाद
करता हू, कि तू ने इन बातो को ज्ञानियो
और समझदारो से छिपा रखा, और बालको
पर प्रगट किया है। २६ हा, हे पिता,
क्योकि तुझे यही अच्छा लगा। २७ मेरे
पिता ने मुझे सब कुछ सौपा है, और कोई
पुत्र को नही जानता, केवल पिता, और
कोई पिता को नही जानता, केवल पुत्र;
और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना
चाहे। २८ हे सब परिश्रम करनेवालो
और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ,
में तुम्हे विश्राम दूगा। २६ मेरा जूआ
अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो,
क्योकि मै नम्र और मन में दीन हू, और
तुम अपने मन मे विश्राम पाओगे।
३० क्योकि मेरा जूआ सहज और मेरा
बोझ हलका है॥

१२ उस समय यीशु सब्त के
दिन खेतो में से होकर जा रहा
था, और उसके चेलो को भूख लगी,
सो वे बाले तोड तोडकर खाने लगे।
२ फरीसियो ने यह देखकर उस मे कहा,
देख, तेरे चेले वह काम कर रहे है,
जो सब्त के दिन करना उचित नही।
३ उस ने उन से कहा, क्या तुम ने नही
पढा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके
साथी भूखे हुए तो क्या किया? ४ वह
क्योकर परमेश्वर के घर मे गया, और भेट
की रोटिया खाई, जिन्हे खाना न तो उसे
और न उसके साथियो को, पर केवल
याजको को उचित था? ५ या तुम ने
व्यवस्था मे नही पढा, कि याजक सब्त के
दिन मन्दिर मे सब्त के दिन की विधि
को तोडने पर भी निर्दोष ठहरते है।
६ पर मै तुम से कहता हू, कि यहा वह है,
जो मन्दिर से भी बडा है। ७ यदि तुम
इस का अर्थ जानते कि मै दया से प्रसन्न हू,
बलिदान से नही, तो तुम निर्दोष को दोषी
न ठहराते। ८ मनुष्य का पुत्र तो सब्त
के दिन का भी प्रभु है॥

६ वहा से चलकर वह उन की सभा के
घर मे आया। १० और देखो, एक मनुष्य
था, जिस का हाथ सूखा हुआ था, और

उन्हो ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से
पूछा, कि क्या सब्त के दिन चगा करना
उचित है? ११ उस ने उन से कहा,
तुम मे ऐसा कौन है, जिस की एक ही भेड
हो, और वह सब्त के दिन गड्हे में गिर
जाए, तो वह उसे पकडकर न निकाले?
१२ भला, मनुष्य का मूल्य भेड से कितना
बढ कर है, इसलिये सब्त के दिन भलाई
करना उचित है तब उस ने उस मनुष्य से
कहा, अपना हाथ बढा। १३ उस ने
बढाया, और वह फिर दूसरे हाथ की नाई
अच्छा हो गया। १४ तब फरीसियो ने
बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की,
कि उसे किस प्रकार नाश करे? १५ यह
जानकर यीशु वहा से चला गया, और
बहुत लोग उसके पीछे हो लिए, और उस
ने सब को चगा किया। १६ और उन्हे
चिताया, कि मुझे प्रगट न करना।
१७ कि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।
१८ कि देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे
मै ने चुना है, मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन
प्रसन्न है म अपना आत्मा उस पर डालूगा,
और वह अन्यजातियो को न्याय का
समाचार देगा। १९ वह न झगडा करेगा,
और न धूम मचाएगा, और न बाजारो
में कोई उसका शब्द सुनेगा। २० वह
कुचले हुए सरकण्डे को न तोडेगा, और
धूआ देती हुई बत्ती को न बुझाएगा,
जब तक न्याय को प्रबल न कराए।
२१ और अन्यजातिया उसके नाम पर
आशा रखेंगी॥

२२ तब लोग एक अन्धे-गूगे को जिस म
दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए, और उस
ने उसे अच्छा किया, और वह गूगा बोलने
और देखने लगा। २३ इस पर सब लोग
चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद
की सन्तान का है? २४ परन्तु फरीसियो
ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओ के
सरदार शैतान * की सहायता के बिना
दुष्टात्माओ को नही निकालता। २५ उस
ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा,
जिस किसी राज्य मे फूट होती है, वह उजड
जाता है, और कोई नगर या घराना जिस
में फूट होती है, बना न रहेगा। २६ और
यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह
अपना ही विरोधी हो गया है, फिर उसका
राज्य क्योकर बना रहेगा? २७ भला,
यदि मै शैतान की सहायता से दुष्टात्माओ
को निकालता हू, तो तुम्हारे वश किस की
सहायता से निकालते है? इसलिये वे ही
तुम्हारा न्याय चुकाएगे। २८ पर यदि
मै परमेश्वर के आत्मा की सहायता से
दुष्टात्माओ को निकालता हू, तो परमेश्वर
का राज्य तुम्हारे पास आ पहुचा है।
२९ या क्योकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त
के घर मे घुसकर उसका माल लूट सकता
है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न
बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट
लेगा। ३० जो मेरे साथ नही, वह मेरे
विरोध में है, और जो मेरे साथ नही
बटोरता, वह बिथराता है। ३१ इसलिये
म तुम से कहता हू, कि मनुष्य का सब प्रकार
का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर
आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी।
३२ जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध मे
कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा
किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा
के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध
न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा

* यू० इबलीन वा बालजबूल।

किया जाएगा। ३३ यदि पेड को अच्छा
कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो,
या पेड को निकम्मा कहो, तो उसके फल
को भी निकम्मा कहो, क्योंकि पेड फल ही
से पहचाना जाता है। ३४ हे साप के
बच्चो, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बाते
कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा
है, वही मुह पर आता है। ३५ भला,
मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बाते
निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार
से बुरी बाते निकालता है। ३६ और मै
तुम से कहता हू, कि जो जो निकम्मी बाते
मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात
का लेखा देगे। ३७ क्योंकि तू अपनी बातो
के कारण निर्दोष और अपनी बातो ही के
कारण दोषी ठहराया जाएगा॥

३८ इस पर कितने शास्त्रियो और
फरीसियो ने उस से कहा, हे गुरु, हम तुझ से
एक चिन्ह देखना चाहते है। ३९ उस ने
उन्हे उत्तर दिया, कि इस युग के बुरे और
व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूढते है, परन्तु
यूनुस भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई
और चिन्ह उन को न दिया जाएगा।
४० यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट
मे रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन
पृथ्वी के भीतर रहेगा। ४१ नीनवे के
लोग न्याय के दिन इस युग के लोगो के साथ
उठकर उन्हे दोषी ठहराएगे, क्योंकि उन्हो
ने यूनुस का प्रचार सुनकर, मन फिराया
और देखो, यहा वह है जो यूनुस से भी बडा
है। ४२ दक्खिन की रानी न्याय के दिन
इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हे
दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का
ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई,
और देखो, यहा वह है जो सुलैमान से भी
बडा है। ४३ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में
से निकल जाती है, तो सूखी जगहो मे
विश्राम ढूढती फिरती है, और पाती नहीं।
४४ तब कहती है, कि मैं अपने उसी घर मे
जहा से निकली थी, लौट जाऊगी, और
आकर उसे सूना, झाडा-बुहारा और सजा-
सजाया पाती है। ४५ तब वह जाकर
अपने से और बुरी सात आत्माओ को अपने
साथ ले आती है, और वे उस मे पैठकर
वहा वास करती है, और उस मनुष्य की
पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती
है, इस युग के बुरे लोगो की दशा भी ऐसी
ही होगी॥

४६ जब वह भीड से बाते कर ही रहा
था, तो देखो, उस की माता और भाई बाहर
खडे थे, और उस से बाते करना चाहते थे।
४७ किसी ने उस से कहा, देख तेरी माता
और तेरे भाई बाहर खडे है, और तुझ से
बाते करना चाहते है। ४८ यह सुन उस
ने कहनेवाले को उत्तर दिया, कौन है मेरी
माता? ४९ और कौन है मेरे भाई?
और अपने चेलो की ओर अपना हाथ बढा
कर कहा, देखो, मेरी माता और मेरे भाई
ये है। ५० क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय
पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई
और बहिन और माता है॥

१३ उसी दिन यीशु घर से निकल-
कर झील के किनारे जा बैठा।
२ और उसके पास ऐसी बडी भीड इकट्ठी
हुई कि वह नाव पर चढ गया, और सारी
भीड किनारे पर खडी रही। ३ और उस
ने उन से दृष्टान्तो मे बहुत सी बाते कही,
कि देखो, एक बोनेवाला बीज बोने निकला।
४ बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे
गिरे और पक्षियो ने आकर उन्हे चुग लिया।
५ कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरे, जहा

उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी
न मिलने के कारण वे जल्द उग आए।
६ पर सूरज निकलने पर वे जल गए, और
जड़ न पकड़ने से सूख गए। ७ कुछ
झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर
उन्हें दबा डाला। ८ पर कुछ अच्छी भूमि
पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना
कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। ९ जिस
के कान हों वह सुन ले॥

१० और चेलों ने पास आकर उस से
कहा, तू उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता
है? ११ उस ने उत्तर दिया, कि तुम को
स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है,
पर उन को नहीं। १२ क्योंकि जिस के
पास है, उसे दिया जाएगा, और उसके
पास बहुत हो जाएगा, पर जिस के पास
कुछ नहीं है, उस से जो कुछ उसके पास है,
वह भी ले लिया जाएगा। १३ मैं उन से
दृष्टान्तों में इसलिये बात करता हूं, कि वे
देखते हुए नहीं देखते, और सुनते हुए नहीं
सुनते, और नहीं समझते। १४ और
उन के विषय में यशायाह की यह भविष्यद्-
वाणी पूरी होती है, कि तुम कानों से तो
सुनोगे, पर समझोगे नहीं, और आंखों से
तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। १५ क्योंकि
इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे
कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्हों ने अपनी
आंखें मूंद ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे
आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन
से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा
करूं। १६ पर धन्य हैं तुम्हारी आंखें, कि
वे देखती हैं, और तुम्हारे कान, कि वे सुनते
हैं। १७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं,
कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं ने और धर्मियों
ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें,
पर न देखीं, और जो बातें तुम सुनते हो,
सुनें, पर न सुनीं। १८ सो तुम बोनेवाले
का दृष्टान्त सुनो। १९ जो कोई राज्य
का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन
में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट
आकर छीन ले जाता है, यह वही है, जो
मार्ग के किनारे बोया गया था। २० और
जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया, यह वह
है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ
मान लेता है। २१ पर अपने में जड़ न
रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है
और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव
होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है। २२ जो
झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन
को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और
धन का धोखा वचन को दबाता है, और
वह फल नहीं लाता। २३ जो अच्छी
भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को
सुनकर समझता है, और फल लाता है
कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस
गुना।

२४ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त
दिया कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के
समान है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज
बोया। २५ पर जब लोग सो रहे थे तो
उसका बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली
बीज* बोकर चला गया। २६ जब अंकुर
निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने भी
दिखाई दिए। २७ इस पर गृहस्थ के
दासों ने आकर उस से कहा, हे स्वामी, क्या
तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था?
फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहां से
आए? २८ उस ने उन से कहा, यह किसी
बैरी का काम है। दासों ने उस से कहा,
क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उन को

* यू० जिजयानियुन।

बटोर लें? २९ उस ने कहा, ऐसा नही,
न हो कि जगली दाने के पौधे बटोरते हुए
उन के साथ गेहू भी उखाड लो। ३० कटनी
तक दोनो को एक साथ बढने दो, और
कटनी के समय मै काटनेवालो से कहूगा,
पहिले जगली दाने के पौधे बटोरकर
जलाने के लिए उन के गट्ठे बान्ध लो, और
गेहू को मेरे खत्ते मे इकट्ठा करो॥

३१ उस ने उन्हे एक और दृष्टान्त
दिया, कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने
के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर
अपने खेत मे बो दिया। ३२ वह सब
बीजो से छोटा तो है पर जब बढ जाता है
तब सब साग पात से बडा होता है, और
ऐसा पेड हो जाता है, कि आकाश के पक्षी
आकर उस की डालियो पर बसेरा करते
है॥

३३ उस ने एक और दृष्टान्त उन्हे
सुनाया, कि स्वर्ग का राज्य खमीर के
समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन
पसेरी आटे मे मिला दिया और होते होते
वह सब खमीर हो गया॥

३४ ये सब बाते यीशु ने दृष्टान्तो मे
लोगो से कही, और बिना दृष्टान्त वह उन
से कुछ न कहता था। ३५ कि जो वचन
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह
पूरा हो कि मै दृष्टान्त कहने को अपना मुह
खोलूगा मै उन बातो को जो जगत की
उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रगट करूगा॥

३६ तब वह भीड को छोडकर घर
मे आया, और उसके चेलो ने उसके पास
आकर कहा, खेत के जगली दाने का दृष्टान्त
हमें समझा दे। ३७ उस ने उन को उत्तर
दिया, कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य
का पुत्र है। ३८ खेत ससार है, अच्छा
बीज राज्य के सन्तान, और जगली बीज
दुष्ट के सन्तान है। ३९ जिस बैरी ने उन
को बोया वह शैतान * है, कटनी जगत का
अन्त है और काटनेवाले स्वर्गदूत है।
४० सो जैसे जगली दाने बटोरे जाते और
जलाए जाते है वैसा ही जगत के अन्त में
होगा। ४१ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्ग-
दूतो को भेजेगा, और वे उसके राज्य में
से सब ठोकर के कारणो को और कुकर्म
करनेवालो को इकट्ठा करेंगे। ४२ और
उन्हे आग के कुड मे डालेंगे, वहा रोना और
दात पीसना होगा। ४३ उस समय धर्मी
अपने पिता के राज्य मे सूर्य की नाईं
चमकेंगे, जिस के कान हो वह सुन ले॥

४४ स्वर्ग का राज्य खेत मे छिपे हुए
धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर
छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर
और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को
मोल लिया॥

४५ फिर स्वर्ग का राज्य एक ब्योपारी
के समान है जो अच्छे मोतियो की खोज मे
था। ४६ जब उसे एक बहुमूल्य मोती
मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच
डाला और उसे मोल ले लिया॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य उस बडे जाल
के समान है, जो समुद्र मे डाला गया, और
हर प्रकार की मछलियो को समेट लाया।
४८ और जब भर गया, तो उस को किनारे
पर खीच लाए, और बैठकर अच्छी अच्छी
तो बरतनो मे इकट्ठा किया और निकम्मी,
निकम्मी फेंक दी। ४९ जगत के अन्त
मे ऐसा ही होगा स्वर्गदूत आकर दुष्टो
को धर्मियो से अलग करेंगे, और उन्हें
आग के कुड मे डालेंगे। ५० वहा रोना
और दात पीसना होगा।

* यू० इब्लीस।

५१ क्या तुम ने ये सब बातें समझीं?
५२ उन्हों ने उस से कहा, हां, उस ने उन
से कहा, इसलिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग
के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के
समान है जो अपने भण्डार से नई और
पुरानी वस्तुएं निकालता है॥

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका,
तो वहां से चला गया। ५४ और अपने
देश में आकर उन की सभा में उन्हें ऐसा
उपदेश देने लगा, कि वे चकित होकर कहने
लगे, कि इस को यह ज्ञान और सामर्थ के
काम कहां से मिले? ५५ क्या यह बढ़ई
का बेटा नहीं? और क्या इस की माता का
नाम मरियम और इस के भाइयों के नाम
याकूब और यूसुफ और शमौन और यहूदा
नहीं? ५६ और क्या इस की सब बहिनें
हमारे बीच में नहीं रहतीं? फिर इस को
यह सब कहां से मिला? ५७ सो उन्हों ने
उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु ने उन
से कहा, भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने
घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।
५८ और उस ने वहां उन के अविश्वास के
कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए॥

१४ उस समय चौथाई देश के राजा
हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी।
२ और अपने सेवकों से कहा, यह यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला है वह मरे हुओं में से
जी उठा है, इसी लिये उस से सामर्थ के काम
प्रगट होते हैं। ३ क्योंकि हेरोदेस ने अपने
भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के
कारण, यूहन्ना को पकड़कर बान्धा, और
जेलखाने में डाल दिया था। ४ क्योंकि
यूहन्ना ने उस से कहा था, कि इस को रखना
तुझे उचित नहीं है। ५ और वह उसे मार
डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था,
क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे।
६ पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया,
तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच
दिखाकर हेरोदेस को खुश किया। ७ इस-
लिये उस ने शपथ खाकर वचन दिया, कि
जो कुछ तू मांगेगी, मैं तुझे दूंगा। ८ वह
अपनी माता की उस्काई हुई बोली, यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाल में यहीं
मुझे मंगवा दे। ९ राजा दुखित हुआ, पर
अपनी शपथ के, और साथ बैठनेवालों के
कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए।
१० और जेलखाने में लोगों को भेजकर
यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ११ और
उसका सिर थाल में लाया गया, और लड़की
को दिया गया, और वह उस को अपनी मां
के पास ले गई। १२ और उसके चेलों ने
आकर और उस की लोथ को ले जाकर गाड़
दिया और जाकर यीशु को समाचार
दिया॥

१३ जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर
चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह एकान्त
में चला गया, और लोग यह सुनकर नगर
नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए।
१४ उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी,
और उन पर तरस खाया, और उस ने उन
के बीमारों को चंगा किया। १५ जब
सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास
आकर कहा, यह तो सुनसान जगह है
और देर हो रही है, लोगों को विदा किया
जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये
भोजन मोल लें। १६ यीशु ने उन से कहा
उन का जाना आवश्यक नहीं! तुम ही
इन्हें खाने को दो। १७ उन्हों ने उस से
कहा, यहां हमारे पास पांच रोटी और दो
मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है
१८ उस ने कहा, उन को यहां मेरे पास ले

आओ। १९ तब उस ने लोगो को घास
पर बैठने को कहा, और उन पाच रोटियां
और दो मछलियो को लिया, और स्वर्ग की
ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटिया
तोड तोडकर चेलो को दी, और चेलो ने
लोगो को। २० और सब खाकर तृप्त हो
गए, और उन्हो ने बचे हुए टुकडो से भरी
हुई बारह टोकरिया उठाई। २१ और
खानेवाले स्त्रियो और बालको को छोडकर
पाच हजार पुरुषो के अटकल थे॥

२२ और उस ने तुरन्त अपने चेलो को
बरबस नाव पर चढाया, कि वे उस मे
पहिले पार चले जाए, जब तक कि वह
लोगो को विदा करे। २३ वह लोगो को
विदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड
पर चढ गया, और साझ को वहा अकेला
था। २४ उस समय नाव झील के बीच
लहरो मे डगमगा रही थी, क्योकि हवा
साम्हने की थी। २५ और वह रात के
चौथे पहर झील पर चलते हुए उन के पास
आया। २६ चेले उस को झील पर चलते
हुए देखकर घबरा गए। और कहने लगे,
वह भूत है, और डर के मारे चिल्ला उठे।
२७ यीशु ने तुरन्त उन से बाते की, और
कहा, ढाढस बान्धो, मै हू, डरो मत।
२८ पतरस ने उस को उत्तर दिया, हे प्रभु,
यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर
चलकर आने की आज्ञा दे। २९ उस ने
कहा, आ तब पतरस नाव पर से उतरकर
यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।
३० पर हवा को देखकर डर गया, और
जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा, हे
प्रभु, मुझे बचा। ३१ यीशु ने तुरन्त हाथ
बढाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा,
हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यो सन्देह किया ?
३२ जब वे नाव पर चढ गए, तो हवा थम
गई। ३३ इस पर जो नाव पर थे, उन्हो
ने उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू
परमेश्वर का पुत्र है॥

३४ वे पार उतरकर गन्नेसरत देश मे
पहुचे। ३५ और वहा के लोगो ने उसे
पहचानकर आस पास के सारे देश मे
कहला भेजा, और सब बीमारो को उसके
पास लाए। ३६ और उस से बिनती
करने लगे, कि वह उन्हे अपने वस्त्र के
आचल ही को छूने दे और जितनो ने उसे
छूआ, वे चगे हो गए॥

१५ तब यरूशलेम से कितने फरीसी
और शास्त्री यीशु के पास आकर
कहने लगे। २ तेरे चेले पुरनियो की रीतो
को क्यो टालते है, कि बिना हाथ धोए रोटी
खाते है ? उस ने उन को उत्तर दिया, कि
तुम भी अपनी रीतो के कारण क्यो परमेश्वर
की आज्ञा टालते हो ? ४ क्योकि परमेश्वर
ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता
का आदर करना और जो कोई पिता या
माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए।
५ पर तुम कहते हो, कि यदि कोई अपने
पिता या माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ
से लाभ पहुच सकता था, वह परमेश्वर को
भेट चढाई जा चुकी। ६ तो वह अपने
पिता का आदर न करे, सो तुम ने अपनी रीतो
के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया।
७ हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय
मे यह भविष्यद्वाणी ठीक की। ८ कि ये
लोग होठो से तो मेरा आदर करते है, पर
उन का मन मुझ से दूर रहता है। ९ और
ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है, क्योकि
मनुष्यो की विधियो को धर्मोपदेश करके
सिखाते है। १० और उस ने लोगो को
अपने पास बुलाकर उन से कहा, सुनो,

और समझो। ११ जो मुह में जाता है,
वह मनुष्य को अशुद्ध नही करता, पर जो
मुह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध
करता है। १२ तब चेलो ने आकर उस से
कहा, क्या तू जानता है कि फरीसियो ने यह
वचन सुनकर ठोकर खाई? १३ उस ने
उत्तर दिया, हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता
ने नही लगाया, उखाडा जाएगा। १४ उन
को जाने दो, वे अन्धे माग दिखानेवाले हैं
और अन्धा यदि अन्धे को माग दिखाए, तो
दोनो गडहे में गिर पडेंगे। १५ यह सुन-
कर, पतरस ने उस से कहा, यह दृष्टान्त हमे
समझा दे। १६ उस ने कहा, क्या तुम भी
अब तक ना समझ हो? १७ क्या नही
समझते, कि जो कुछ मुह मे जाता, वह पेट
मे पडता है, और सण्डास मे निकल जाता
है? १८ पर जो कुछ मुह से निकलता है,
वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य
को अशुद्ध करता है। १९ क्योंकि कुचिन्ता,
हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी,
झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती
हैं। २० येही ह जो मनुष्य को अशुद्ध
करती ह, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन
करना मनुष्य को अशुद्ध नही करता॥

२१ यीशु वहा से निकलकर, सूर और
सैदा के देशो की ओर चला गया। २२ और
देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली,
और चिल्लाकर कहने लगी, हे प्रभु दाऊद
के सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को
दुष्टात्मा बहुत सता रहा ह। २३ पर
उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके
चेलो ने आकर उस से विनती कर कहा,
इसे विदा कर, क्योंकि वह हमारे पीछे
चिल्लाती आती है। २४ उस ने उत्तर
दिया, कि इस्राएल के घराने की खोई हुई
भेडो को छोड म किसी के पास नही भेजा
गया। २५ पर वह आई, और उसे प्रणाम
करके कहने लगी, हे प्रभु, मेरी सहायता
कर। २६ उस ने उत्तर दिया, कि लडको
की रोटी लेकर कुत्तो के आगे डालना अच्छा
नही। २७ उस ने कहा, सत्य है प्रभु, पर
कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उन के
स्वामियो की मेज से गिरते हैं। २८ इस
पर यीशु ने उस को उत्तर देकर कहा, कि
हे स्त्री, तेरा विश्वास बडा है जैसा तू
चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो, और उस
की बेटी उसी घडी से चगी हो गई॥

२९ यीशु वहा से चलकर, गलील की
झील के पास आया, और पहाड पर चढकर
वहा बैठ गया। ३० और भीड पर भीड
लगडो, अन्धो, गूगो, टुडो और बहुत औरो
को लेकर उसके पास आए, और उन्हें उसके
पावो पर डाल दिया, और उस ने उन्हें
चगा किया। ३१ सो जब लोगो ने देखा,
कि गूगे बोलते और टुण्डे चगे होते और
लगडे चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचम्भा
करके इस्राएल के परमेश्वर की बडाई की॥

३२ यीशु ने अपने चेलो को बुलाकर
कहा, मुझे इस भीड पर तरस आता है,
क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ ह और उन
के पास कुछ खाने को नही, और म उन्हें
भूखा विदा करना नही चाहता, कही ऐसा
न हो कि मार्ग में थककर रह जाएं।
३३ चेलो ने उस से कहा, हमें इस जगल में
कहा से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी
बडी भीड को तृप्त करें? ३४ यीशु ने
उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटिया
ह? उन्हो ने कहा, सात और थोडी सी
छोटी मछलिया। ३५ तब उस ने लोगो
को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। ३६ और
उन सात रोटियो और मछलियो को ले
धन्यवाद करके तोडा और अपने चेलो को

देता गया, और चेले लोगो को। ३७ सो
सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ो
से भरे हुए सात टोकरे उठाए। ३८ और
खानेवाले स्त्रियो और बालको को छोड़
चार हजार पुरुष थे। ३९ तब वह भीड़ो
को विदा करके नाव पर चढ गया, और
मगदन देश के सिवानो में आया॥

१६ और फरीसियो और सदूकियो
ने पास आकर उसे परखने के लिये
उस से कहा, कि हमे आकाश का कोई चिन्ह
दिखा। २ उस ने उन को उत्तर दिया,
कि साझ को तुम कहते हो कि खुला रहेगा
क्योकि आकाश लाल है। ३ और भोर को
कहते हो, कि आज आन्धी आएगी क्योकि
आकाश लाल और धुमला है, तुम आकाश
का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो पर
समयो के चिन्हो का भेद नही बता सकते?
४ इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग
चिन्ह ढूढते है पर यूनुस के चिन्ह को छोड़
कोई और चिन्ह उन्हे न दिया जाएगा, और
वह उन्हे छोडकर चला गया॥

५ और चेले पार जाते समय रोटी लेना
भूल गए थे। ६ यीशु ने उन से कहा,
देखो, फरीसियो और सदूकियो के खमीर
से चौकस रहना। ७ वे आपस में विचार
करने लगे, कि हम तो रोटी नही लाए।
८ यह जानकर, यीशु ने उन से कहा, हे अल्प-
विश्वासियो, तुम आपस में क्यो विचार करते
हो कि हमारे पास रोटी नही? ९ क्या
तुम अब तक नही समझे? और उन पाच
हजार की पाच रोटी स्मरण नही करते,
और न यह कि कितनी टोकरिया उठाई
थी? १० और न उन चार हजार की
सात रोटी, और न यह कि कितने टोकरे
उठाए गए थे? ११ तुम क्यो नही समझते
कि मैं ने तुम से रोटियो के विषय में नही
कहा? फरीसियो और सदूकियो के खमीर
से चौकस रहना। १२ तब उन को समझ
में आया, कि उस ने रोटी के खमीर से
नही, पर फरीसियो और सदूकियो की
शिक्षा से चौकस रहने को कहा था।

१३ यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में
आकर अपने चेलो से पूछने लगा, कि लोग
मनुष्य के पुत्र को क्या कहते है? १४ उन्हो
ने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला कहते है और कितने एलिय्याह,
और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओ
में से कोई एक कहते है। १५ उस ने उन
से कहा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
१६ शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू
जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
१७ यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि
हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योकि
मास और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता
ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट
की है। १८ और मैं भी तुझ से कहता
हू, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर
अपनी कलीसिया बनाऊगा और अधोलोक
के फाटक उस पर प्रबल न होगे। १९ मैं
तुझे स्वर्ग के राज्य की कुजिया दूगा: और
जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में
बन्धेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा,
वह स्वर्ग में खुलेगा। २० तब उस ने चेलो
को चिताया, कि किसी से न कहना! कि
मैं मसीह हू।

२१ उस समय से यीशु अपने चेलो को
बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम
को जाऊ, और पुरनियो और महायाजको
और शास्त्रियो के हाथ से बहुत दुख उठाऊ,
और मार डाला जाऊ, और तीसरे दिन
जी उठू। २२ इस पर पतरस उसे अलग

ले जाकर झिडकने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर
न करे, तुझ पर ऐसा कभी न होगा।
२३ उस ने फिरकर पतरस से कहा, हे
शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो तू मेरे लिये
ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर
की बातें नही, पर मनुष्यो की बातो पर
मन लगाता है। २४ तब यीशु ने अपने
चेलो से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना
चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और
अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
२५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना
चाहे, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे
लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
२६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे,
और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे
क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण
के बदले मे क्या देगा? २७ मनुष्य का
पुत्र अपने स्वर्गदूतो के साथ अपने पिता की
महिमा में आएगा, और उस समय वह हर
एक को उसके कामो के अनुसार प्रतिफल
देगा। २८ मैं तुम से सच कहता हू, कि जो
यहा खडे हैं, उन में से कितने ऐसे है, कि
जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य मे
आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद
कभी न चखेंगे।

१७ छ दिन के बाद यीशु ने पतरस
और याकूब और उसके भाई यूहन्ना
को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में
किसी ऊचे पहाड पर ले गया। २ और
उन के साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और
उसका मुह सूर्य की नाईं चमका और उसका
वस्त्र ज्योति की नाइं उजला हो गया।
३ और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके
साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।
४ इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु,
हमारा यहा रहना अच्छा है, इच्छा हो तो
यहा तीन मण्डप बनाऊ, एक तेरे लिये,
एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के
लिये। ५ वह बोल ही रहा था, कि देखो,
एक उजले बादल ने उन्हे छा लिया, और
देखो, उस बादल मे से यह शब्द निकला,
कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से म प्रसन्न
हू इस की सुनो। ६ चेले यह सुनकर
मुह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए।
७ यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और
कहा, उठो, डरो मत। ८ तब उन्हो ने
अपनी आखें उठाकर यीशु को छोड और
किसी को न देखा॥

९ जब वे पहाड से उतर रहे थे तब यीशु
ने उन्हे यह आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य
का पुत्र मरे हुओ मे से न जी उठे तब तक
जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।
१० और उसके चेलो ने उस से पूछा, फिर
शास्त्री क्यो कहते है, कि एलिय्याह का पहले
आना अवश्य है? ११ उस ने उत्तर दिया,
कि एलिय्याह तो आएगा और सब कुछ
सुधारेगा। १२ परन्तु मैं तुम से कहता
हू, कि एलिय्याह आ चुका, और उन्हो ने
उसे नही पहचाना, परन्तु जैसा चाहा
वैसा ही उसके साथ किया इसी रीति से
मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ मे दुख
उठाएगा। १३ तब चेला ने समझा कि
उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के
विषय में कहा है॥

१४ जब वे भीड के पास पहुचे, तो एक
मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक-
कर कहने लगा। १५ हे प्रभु, मेरे पुत्र
पर दया कर, क्योंकि उस को मिर्गी आती
है और वह बहुत दुख उठाता है, और
बार बार आग में और बार बार पानी मे
गिर पडता है। १६ और म उस का तर

चेलो के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा
नही कर सके। १७ यीशु ने उत्तर दिया,
कि हे अविश्वासी और हठीले लोगो * मैं कब
तक तुम्हारे साथ रहूगा? कब तक तुम्हारी
सहूगा? उसे यहा मेरे पास लाओ।
१८ तब यीशु ने उसे घुडका, और दुष्टात्मा
उस मे से निकला, और लडका उसी घडी
अच्छा हो गया। १९ तब चेलो ने एकान्त
मे यीशु के पास आकर कहा, हम इसे क्यो
नही निकाल सके? २० उस ने उन से
कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण
क्योकि मैं तुम से सच कहता हू, यदि तुम्हारा
विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो
इस पहाड से कह सकोगे, कि यहा से सरककर
वहा चला जा, तो वह चला जाएगा, और
कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।
२१ जब वे गलील मे थे, तो यीशु ने
उन से कहा, मनुष्य का पुत्र मनुष्यो के हाथ
मे पकडवाया जाएगा। २२ और वे उसे
मार डालेगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।
२३ इस पर वे बहुत उदास हुए॥
२४ जब वे कफरनहूम मे पहुचे, तो
मन्दिर के लिये कर लेनेवालो ने पतरस के
पास आकर पूछा, कि क्या तुम्हारा गुरु
मन्दिर का कर नही देता? उस ने कहा,
हा देता तो है। २५ जब वह घर मे आया,
तो यीशु ने उसके पूछने से पहिले उस से
कहा, हे शमौन तू क्या समझता है? पृथ्वी
के राजा महसूल या कर किन से लेते है?
अपने पुत्रो से या परायो से? पतरस ने
उन से कहा, परायो से। २६ यीशु ने उस
से कहा, तो पुत्र बच गए। २७ तौभी इस
लिये कि हम उन्हे ठोकर न खिलाए, तू झील
के किनारे जाकर बसी डाल, और जो मछली
पहिले निकले, उसे ले, तो तुझे उसका
मुह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा, उसी
को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हे दे
देना॥

१८ उसी घडी चेले यीशु के पास
आकर पूछने लगे, कि स्वर्ग के
राज्य मे बडा कौन है? २ इस पर उस ने
एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच
मे खडा किया। ३ और कहा, मैं तुम से
सच कहता हू, यदि तुम न फिरो और
बालको के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य
मे प्रवेश करने नही पाओगे। ४ जो कोई
अपने आप को इस बालक के समान छोटा
करेगा, वह स्वर्ग के राज्य मे बडा होगा।
५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे
बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण
करता है। ६ पर जो कोई इन छोटो मे
से जो मुझ पर विश्वास करते है एक को
ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता,
कि बडी चक्की का पाट उसके गले मे
लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र मे
डुबाया जाता। ७ ठोकरो के कारण ससार
पर हाय! ठोकरो का लगना अवश्य है,
पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा
ठोकर लगती है। ८ यदि तेरा हाथ या
तेरा पाव तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर
फेक दे, टुण्डा या लगडा होकर जीवन मे
प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि
दो हाथ या दो पाव रहते हुए तू अनन्त आग
मे डाला जाए। ९ और यदि तेरी आख
तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर
फेक दे। १० काना होकर जीवन मे
प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि
दो आख रहते हुए तू नरक की आग * मे

* यू० पीढी।

* यू० आग के नरक में।

डाला जाए। ११ देखो, तुम इन छोटों
में से किसी को तुच्छ न जानना, क्योंकि
म तुम से कहता हू, कि स्वर्ग मे उन के दूत
मेरे स्वर्गीय पिता का मुह सदा देखते हैं।
१२ तुम क्या समझते हो? यदि किसी
मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक
भटक जाए, तो क्या निन्नानवे को छोडकर,
और पहाडो पर जाकर, उस भटकी हुई को
न ढूंढेगा? १३ और यदि ऐसा हो कि
उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हू, कि वह
उन निन्नानवे भेडो के लिये जो भटकी नही
थी इतना आनन्द नही करेगा, जितना कि
इस भेड के लिये करेगा। १४ ऐसा ही
तुम्हारे पिता की जो स्वग मे है यह इच्छा
नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो॥

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे,
तो जा और अकेले मे बातचीत करके
उसे समझा, यदि वह तेरी सुने तो तू ने
अपने भाई को पा लिया। १६ और
यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को
अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या
तीन गवाहो के मुह से ठहराई जाए।
१७ यदि वह उन की भी न माने, तो
कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह
कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्य-
जाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान।
१८ म तुम से सच कहता हू, जो कुछ तुम
पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वग में बन्धेगा और
जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वग
म खुलेगा। १९ फिर मैं तुम से कहता हू,
यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात
के लिये जिसे वे मागें, एक मन के हों, तो
वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन
के लिये हो जाएगी। २० क्योंकि जहा
दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते ह, वहा
म उन के बीच में होता हू॥

२१ तब पतरस ने पास आकर, उस से
कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता
रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करू, क्या
सात बार तक? २२ यीशु ने उस से कहा,
मैं तुझ से यह नही कहता, कि सात बार,
बरन सात बार के सत्तर गुने तक। २३ इस-
लिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान
है, जिस ने अपने दासो से लेखा लेना चाहा।
२४ जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन
उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार
तोडे धारता था। २५ जब कि चुकाने को
उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने
कहा, कि यह और इस की पत्नी और
लडकेवाले और जो कुछ इस का है सब बेचा
जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।
२६ इस पर उस दास ने गिरकर उसे
प्रणाम किया, और कहा, हे स्वामी, धीरज
धर, म सब कुछ भर दूगा। २७ तब उस
दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड
दिया, और उसका धार क्षमा किया।
२८ परन्तु जब वह दास बाहर निकला,
तो उसके सगी दासो मे से एक उस को
मिला, जो उसके सौ दीनार * धारता था,
उस ने उसे पकडकर उसका गला घोंटा,
और कहा, जो कुछ तू धारता है भर दे।
२९ इस पर उसका सगी दास गिरकर,
उस से विनती करने लगा, कि धीरज धर
म सब भर दूगा। ३० उस ने न माना,
परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया
कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक
वही रहे। ३१ उसके सगी दास यह जो
हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और
जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता
दिया। ३२ तब उसके स्वामी ने उस को

* दीनार लगभग आठ आने के था।

बुलाकर उस से कहा, हे दुष्ट दास, तू ने
जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा
वह पूरा कर्ज क्षमा किया। ३३ सो जैसा
मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे
भी अपने सगी दास पर दया करना नही
चाहिए था? ३४ और उसके स्वामी ने
क्रोध मे आकर उसे दण्ड देनेवालो के हाथ
मे सौप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा
भर न दे, तब तक उन के हाथ मे रहे।
३५ इसी प्रकार यदि तुम मे से हर एक
अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो
मेरा पिता जो स्वर्ग मे है, तुम से भी वैसा
ही करेगा॥

१९ जब यीशु ये बाते कह चुका,
तो गलील से चला गया, और
यहूदिया के देश मे यरदन के पार आया।
२ और बडी भीड उसके पीछे हो ली, और
उस ने उन्हे वहा चगा किया॥

३ तब फरीसी उस की परीक्षा करने
के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक
कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित
है? ४ उस ने उत्तर दिया, क्या तुम ने
नही पढा, कि जिस ने उन्हे बनाया, उस ने
आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा।
५ कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता
से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा
और वे दोनो एक तन होगे? ६ सो वे
अब दो नही, परन्तु एक तन है इसलिये
जिसे परमेश्वर ने जोडा है, उसे मनुष्य अलग
न करे। ७ उन्हो ने उस से कहा, फिर
मूसा ने क्यो यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर
उसे छोड दे? ८ उस ने उन से कहा, मूसा
ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हे
अपनी अपनी पत्नी को छोड देने की आज्ञा
दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नही था।
९ और मैं तुम से कहता हू, कि जो कोई
व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से,
अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से व्याह
करे, वह व्यभिचार करता है और जो उस
छोडी हुई से व्याह करे, वह भी व्यभिचार
करता है। १० चेलो ने उस से कहा, यदि
पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है,
तो व्याह करना अच्छा नही। ११ उस ने
उन से कहा, सब यह वचन ग्रहण नही कर
सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया
गया है। १२ क्योकि कुछ नपुसक ऐसे
है जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और
कुछ नपुसक ऐसे है, जिन्हे मनुष्य ने नपुसक
बनाया और कुछ नपुसक ऐसे है, जिन्हो
ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को
नपुसक बनाया है, जो इस को ग्रहण कर
सकता है, वह ग्रहण करे॥

१३ तब लोग बालको को उसके पास
लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और
प्रार्थना करे, पर चेलो ने उन्हे डाटा।
१४ यीशु ने कहा, बालको को मेरे पास
आने दो और उन्हे मना न करो, क्योकि
स्वर्ग का राज्य ऐसो ही का है। १५ और
वह उन पर हाथ रखकर, वहा से चला
गया॥

१६ और देखो, एक मनुष्य ने पास
आकर उस से कहा, हे गुरु, मै कौन सा
भला काम करू, कि अनन्त जीवन पाऊ?
१७ उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई
के विषय मे क्यो पूछता है? भला तो एक
ही है, पर यदि तू जीवन मे प्रवेश करना
चाहता है, तो आज्ञाओ को माना कर।
१८ उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाए?
यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना, व्यभि-
चार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही
न देना। १९ अपने पिता और अपनी

माता का आदर करना, और अपने पडोसी
से अपने समान प्रेम रखना। २० उस
जवान ने उस से कहा, इन सब को तो मैं ने
माना है अब मुझ में किस बात की घटी है?
२१ यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध
होना चाहता है, तो जा, अपना माल बेच-
कर कगालो को दे, और तुझे स्वर्ग में धन
मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।
२२ परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास
होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी
था॥

२३ तब यीशु ने अपने चेलो से कहा,
मैं तुम से सच कहता हू, कि धनवान का
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।
२४ फिर तुम से कहता हू, कि परमेश्वर
के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊट
का सूई के नाके में से निकल जाना सहज
है। २५ यह सुनकर, चेलो ने बहुत चकित
होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता
है? २६ यीशु ने उन की ओर देखकर
कहा, मनुष्यो से तो यह नही हो सकता,
परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।
२७ इस पर पतरस ने उस से कहा, कि
देख, हम तो सब कुछ छोड के तेरे पीछे हो
लिए हैं तो हमें क्या मिलेगा? २८ यीशु
ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हू, कि
नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी
महिमा के सिहासन पर बैठेगा, तो तुम भी
जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिहासनो
पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रो का
न्याय करोगे। २६ और जिस किसी ने
घरो या भाइयो या बहिनो या पिता या
माता या लडकेवालो या खेतो को मेरे नाम
के लिये छोड दिया है, उस को सौ गुना
मिलेगा और वह अनन्त जीवन का अधि-
कारी होगा। ३० परन्तु बहुतेरे जो पहिले
हैं, पिछले होगे, और जो पिछले है, पहिले
होगे॥

२० स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ
के समान है, जो सवेरे निकला,
कि अपने दाख की बारी में मजदूरो को
लगाए। २ और उस ने मजदूरो से एक
दीनार* रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने
दाख की बारी में भेजा। ३ फिर पहर
एक दिन चढे, निकलकर, और औरो को
बाजार में बेकार खडे देखकर, ४ उन से
कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ,
और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूगा, सो वे भी
गए। ५ फिर उस ने दूसरे और तीसरे
पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया।
६ और एक घटा दिन रहे फिर निकल-
कर औरो को खडे पाया, और उन से
कहा, तुम क्यो यहा दिन भर बेकार खडे
रहे? उन्हो ने उस से कहा, इसलिये कि
किसी ने हमें मजदूरी पर नही लगाया।
७ उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की
बारी में जाओ। ८ साझ को दाख की
बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा,
मजदूरो को बुलाकर पिछलो से लेकर
पहिलो तक उन्हें मजदूरी दे दे। ९ सो
जब वे आए, जो घटा भर दिन रहे लगाए
गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला।
१० जो पहिले आए, उन्हो ने यह
समझा, कि हमें अधिक मिलेगा, परन्तु
उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला।
११ जब मिला, तो वे गृहस्थ पर कुडकुडा
के कहने लगे। १२ कि इन पिछलो ने एक
ही घटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे
बराबर कर दिया, जिन्हो ने दिन भर का
भार उठाया और घाम सहा? १३ उस

* एक अठन्नी के लगभग था।

ने उन मे से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र,
मै तुझ से कुछ अन्याय नही करता, क्या तू
ने मुझ से एक दीनार न ठहराया?
१४ जो तेरा है, उठा ले, और चला जा,
मेरी इच्छा यह है, कि जितना तुझे, उतना
ही इस पिछले को भी दू। १५ क्या उचित
नही कि मै अपने माल से जो चाहू सो करू?
क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि
से देखता है? १६ इसी रीति से जो
पिछले है, वे पहिले होगे, और जो पहिले
है, वे पिछले होगे॥

१७ यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह
चेलो को एकान्त मे ले गया, और मार्ग मे
उन से कहने लगा। १८ कि देखो, हम
यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र
महायाजको और शास्त्रियो के हाथ पकड-
वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य
ठहराएगे। १९ और उस को अन्यजातियो
के हाथ सौपेगे, कि वे उसे ठट्ठो मे उडाए,
और कोडे मारे, और क्रूस पर चढाए, और
वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा॥

२० तब जब्दी के पुत्रो की माता ने,
अपने पुत्रो के साथ उसके पास आकर
प्रणाम किया, और उस से कुछ मागने लगी।
२१ उस ने उस से कहा, तू क्या चाहती
है? वह उस से बोली, यह कह, कि मेरे ये
दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दहिने और
एक तेरे बाए बैठे। २२ यीशु ने उत्तर
दिया, तुम नही जानते कि क्या मागते हो?
जो कटोरा मै पीने पर हू क्या तुम पी सकते
हो? उन्हो ने उस से कहा, पी सकते है।
२३ उस ने उन से कहा, तुम मेरा कटोरा
तो पीओगे पर अपने दहिने बाए किसी को
बिठाना मेरा काम नही, पर जिन के लिये
मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया,
उन्ही के लिये है। २४ यह सुनकर, दसो
चेले उन दोनो भाइयो पर क्रुद्ध हुए।
२५ यीशु ने उन्हे पास बुलाकर कहा, तुम
जानते हो, कि अन्य जातियो के हाकिम उन
पर प्रभुता करते है, और जो बडे है, वे उन
पर अधिकार जताते है। २६ परन्तु तुम
मे ऐसा न होगा, परन्तु जो कोई तुम मे
बडा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने।
२७ और जो तुम मे प्रधान होना चाहे,
वह तुम्हारा दास बने। २८ जैसे कि
मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नही आया कि
उस की सेवा टहल किई जाए, परन्तु इस-
लिये आया कि आप सेवा टहल करे, और
बहुतो की छुडौती के लिये अपने प्राण दे॥

२९ जब वे यरीहो से निकल रहे थे,
तो एक बडी भीड उसके पीछे हो ली।
३० और देखो, दो अन्धे, जो सडक के
किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा
रहा है, पुकारकर कहने लगे, कि हे प्रभु,
दाऊद के सन्तान, हम पर दया कर।
३१ लोगो ने उन्हे डाटा, कि चुप रहे, पर
वे और भी चिल्लाकर बोले, हे प्रभु, दाऊद
के सन्तान, हम पर दया कर। ३२ तब
यीशु ने खडे होकर, उन्हे बुलाया, और कहा,
३३ तुम क्या चाहते हो कि मै तुम्हारे लिये
करू? उन्हो ने उस से कहा, हे प्रभु, यह
कि हमारी आखे खुल जाए। ३४ यीशु ने
तरस खाकर उन की आखे छूई, और वे
तुरन्त देखने लगे, और उसके पीछे हो
लिए॥

२१ जब वे यरूशलेम के निकट
पहुचे और जैतून पहाड पर बैतफगे
के पास आए, तो यीशु ने दो चेलो को यह
कहकर भेजा। २ कि अपने साम्हने के
गाव में जाओ, वहा पहुचते ही एक गदही
बन्धी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हे

मिलेगा, उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ।
३ यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि
प्रभु को इन का प्रयोजन है तब वह तुरन्त
उन्हें भेज देगा। ४ यह इसलिये हुआ, कि
जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया
था, वह पूरा हो, ५ कि सिय्योन की बेटी
से कहो, देख, तेरा राजा तेरे पास आता है,
वह नम्र है और गदहे पर बैठा है, वरन
लादू के बच्चे पर। ६ चेलों ने जाकर, जैसा
यीशु ने उन से कहा था, वैसा ही किया।
७ और गदही और बच्चे को लाकर, उन
पर अपने कपडे डाले, और वह उन पर
बैठ गया। ८ और बहुतेरे लोगों ने अपने
कपडे मार्ग में बिछाए, और और लोगों ने
पेडों से डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं।
९ और जो भीड आगे आगे जाती और
पीछे पीछे चली आती थी, पुकार पुकार-
कर कहती थी, कि दाऊद के सन्तान को
होशाना *, धन्य है वह जो प्रभु के नाम से
आता है, आकाश † में होशाना। १० जब
उस ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो सारे
नगर में हलचल मच गई और लोग कहने
लगे यह कौन है? ११ लोगों ने कहा,
यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता
यीशु है॥

१२ यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में
जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन
कर रहे थे, निकाल दिया, और सर्राफों
के पीढे और कबूतरों के बेचनेवालों की
चौकियां उलट दीं। १३ और उन से कहा,
लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर
कहलाएगा, परन्तु तुम उसे डाकुओं की
खोह बनाते हो। १४ और अन्धे और
लंगडे, मन्दिर में उसके पास आए और
उस ने उन्हें चंगा किया। १५ परन्तु जब
महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्भुत
कामों को, जो उस ने किए, और लडकों को
मन्दिर में दाऊद के सन्तान को होशाना
पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस
से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या
कहते हैं? १६ यीशु ने उन से कहा, हां,
क्या तुम ने यह कभी नहीं पढा, कि बालकों
और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति
सिद्ध कराई? १७ तब वह उन्हें छोडकर
नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया, और
वहां रात बिताई॥

१८ भोर को जब वह नगर को लौट
रहा था, तो उसे भूख लगी। १९ और
अंजीर का एक पेड सडक के किनारे देखकर
वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड
उस में और कुछ न पाकर उस से कहा, अब
से तुझ में फिर कभी फल न लगे, और
अंजीर का पेड तुरन्त सूख गया। २० यह
देखकर चेलों ने अचम्भा किया, और कहा,
यह अंजीर का पेड क्योंकर तुरन्त सूख
गया? २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया,
कि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम
विश्वास रखो, और सन्देह न करो, तो न
केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड से
किया गया है, परन्तु यदि इस पहाड से भी
कहोगे, कि उखड जा, और समुद्र में जा
पड, तो यह हो जायगा। २२ और जो
कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह
सब तुम को मिलेगा॥

२३ वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर
रहा था, कि महायाजकों और लोगों के
पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये
काम किस के अधिकार से करता है?
और तुझे यह अधिकार किस ने दिया
है? २४ यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि

* भजन संहिता ११८ : २५ को देखो।
† यू० ऊंचे से ऊंचे स्थान।

मैं भी तुम से एक बात पूछता हू, यदि वह
मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हे बताऊगा,
कि ये काम किस अधिकार से करता हू।
२५ यूहन्ना का बपतिस्मा कहा से था?
स्वर्ग की ओर से या मनुष्यो की ओर से था?
तब वे आपस मे विवाद करने लगे, कि यदि
हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह हम से
कहेगा, फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यो न
की? २६ और यदि कहे मनुष्यो की
ओर से तो हमे भीड का डर है, क्योंकि वे
सब यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता जानते है।
२७ सो उन्हो ने यीशु को उत्तर दिया, कि
हम नही जानते, उस ने भी उन से कहा,
तो मैं भी तुम्हे नही बताता, कि ये काम
किस अधिकार से करता हू। २८ तुम क्या
समझते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे,
उस ने पहिले के पास जाकर कहा, हे पुत्र,
आज दाख की बारी मे काम कर। २९ उस
ने उत्तर दिया, मै नही जाऊगा, परन्तु पीछे
पछता कर गया। ३० फिर दूसरे के पास
जाकर ऐसा ही कहा, उस ने उत्तर दिया,
जी हा जाता हू, परन्तु नही गया। ३१ इन
दोनो मे से किस ने पिता की इच्छा पूरी
की? उन्हो ने कहा, पहिले ने. यीशु ने
उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हू, कि
महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले
परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करते है।
३२ क्योकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे
पास आया, और तुम ने उस की प्रतीति न
की पर महसूल लेनेवालो और वेश्याओ ने
उस की प्रतीति की और तुम यह देखकर
पीछे भी न पछताए कि उस की प्रतीति
कर लेते॥

३३ एक और दृष्टान्त सुनो: एक
गृहस्थ था, जिस ने दाख की बारी लगाई,
और उसके चारो ओर बाडा बान्धा, और
उस मे रस का कुड खोदा, और गुम्मट
बनाया, और किसानो को उसका ठीका
देकर परदेश चला गया। ३४ जब फल
का समय निकट आया, तो उस ने अपने
दासो को उसका फल लेने के लिये किसानो
के पास भेजा। ३५ पर किसानो ने उसके
दासो को पकड़ के, किसी को पीटा, और
किसी को मार डाला, और किसी को
पत्थरवाह किया। ३६ फिर उस ने और
दासो को भेजा, जो पहिलो से अधिक थे,
और उन्हो ने उन से भी वैसा ही किया।
३७ अन्त में उस ने अपने पुत्र को उन के
पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का
आदर करेंगे। ३८ परन्तु किसानो ने पुत्र
को देखकर आपस मे कहा, यह तो वारिस
है, आओ, उसे मार डाले. और उस की
मीरास ले लें। ३९ और उन्हो ने उसे पकडा
और दाख की बारी से बाहर निकालकर
मार डाला। ४० इसलिये जब दाख की
बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानो
के साथ क्या करेगा? ४१ उन्होंने उस से
कहा, वह उन बुरे लोगो को बुरी रीति से
नाश करेगा, और दाख की बारी का ठीका
और किसानो को देगा, जो समय पर उसे
फल दिया करेंगे। ४२ यीशु ने उन से कहा,
क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नही
पढा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियो ने
निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का
पत्थर हो गया? ४३ यह प्रभु की ओर
से हुआ, और हमारे देखने मे अद्भुत है,
इसलिये मैं तुम से कहता हू, कि परमेश्वर
का राज्य तुम से ले लिया जाएगा, और
ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया
जाएगा। ४४ जो इस पत्थर पर गिरेगा,
वह चकनाचूर हो जाएगा. और जिस पर
वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा।

४५ महायाजक और फरीसी उसके दृष्टान्तो
को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे
विषय में कहता है। ४६ और उन्हो ने उसे
पकडना चाहा, परन्तु लोगो से डर गए
क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे॥

२२ इस पर यीशु फिर उन से
दृष्टान्तो में कहने लगा। २ स्वर्ग
का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने
अपने पुत्र का व्याह किया। ३ और उस
ने अपने दासो को भेजा, कि नेवताहारियो
को व्याह के भोज में बुलाए, परन्तु उन्हो ने
आना न चाहा। ४ फिर उस ने और दासो
को यह कहकर भेजा, कि नेवताहारियो से
कहो, देखो, मै भोज तैयार कर चुका हू,
और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए है
और सब कुछ तैयार है, व्याह के भोज में
आओ। ५ परन्तु वे बेपरवाई करके चल
दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने
व्योपार को। ६ औरो ने जो बच रहे थे
उसके दासो को पकडकर उन का अनादर
किया और मार डाला। ७ राजा ने क्रोध
किया, और अपनी सेना भेजकर उन हत्यारो
को नाश किया, और उन के नगर को फूक
दिया। ८ तब उस ने अपने दासो से कहा,
व्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु
नेवताहारी योग्य नही ठहरे। ९ इसलिये
चौराहो में जाओ, और जितने लोग तुम्हें
मिलें, सब को व्याह के भोज में बुला लाओ।
१० सो उन दासो ने सडको पर जाकर क्या
बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे
किया, और व्याह का घर जेवनहारो से
भर गया। ११ जब राजा जेवनहारो के
देखने को भीतर आया, तो उस ने वहा
एक मनुष्य को देखा, जो व्याह का वस्त्र नही
पहिने था। १२ उस ने उस से पूछा हे
मित्र, तू व्याह का वस्त्र पहिने बिना यहा
क्यो आ गया? उसका मुह बन्द हो गया।
१३ तब राजा ने सेवको से कहा, इस के
हाथ पाव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में
डाल दो, वहा रोना, और दात पीसना
होगा। १४ क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत
परन्तु चुने हुए थोडे है॥

१५ तब फरीसियो ने जाकर आपस में
विचार किया, कि उस को किस प्रकार
बातो में फसाए। १६ सो उन्हो ने अपने
चेलो को हेरोदियो के साथ उसके पास यह
कहने को भेजा, कि हे गुरु, हम जानते है,
कि तू सच्चा है, और परमेश्वर का मार्ग
सच्चाई से सिखाता है, और किसी की
परवा नही करता, क्योंकि तू मनुष्यो का
मुह देखकर बातें नही करता। १७ इस-
लिये हमें बता तू क्या समझता है? कैसर
को कर देना उचित है, कि नही। १८ यीशु
ने उन की दुष्टता जानकर कहा, हे कपटियो,
मुझे क्यो परखते हो? १९ कर का सिक्का
मुझे दिखाओ: तब वे उसके पास एक
दीनार* ले आए। २० उस ने, उन से
पूछा, यह मूर्त्ति और नाम किस का है?
२१ उन्हो ने उस से कहा, कैसर का, तब
उस ने, उन से कहा, जो कैसर का है, वह
कैसर को, और जो परमेश्वर का है वह
परमेश्वर को दो। २२ यह सुनकर उन्हो
ने अचम्भा किया, और उसे छोडकर चले
गए॥

२३ उसी दिन सदूकी जो कहते है कि
मरे हुओ का पुनरुत्थान है ही नही उसके
पास आए, और उस से पूछा। २४ कि हे
गुरु, मूसा ने कहा था, कि यदि कोई
बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई

* अठन्नी के लगभग।

उस की पत्नी को व्याह करके अपने भाई के
लिये वंश उत्पन्न करे। २५ अब हमारे
यहां सात भाई थे, पहिला व्याह करके मर
गया, और सन्तान न होने के कारण अपनी
पत्नी को अपने भाई के लिये छोड़ गया।
२६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी
किया, और सातों तक यही हुआ।
२७ सब के बाद वह स्त्री भी मर गई।
२८ सो जी उठने पर, वह उन सातों में से
किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब
की पत्नी हो चुकी थी। २९ यीशु ने उन्हें
उत्तर दिया, कि तुम पवित्र शास्त्र और
परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते, इस
कारण भूल में पड़ गए हो। ३० क्योंकि
जी उठने पर व्याह शादी न होगी, परन्तु
वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों की नाईं होंगे।
३१ परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय
में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा जो
परमेश्वर ने तुम से कहा। ३२ कि मैं
इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का
परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?
वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का
परमेश्वर है। ३३ यह सुनकर लोग उसके
उपदेश से चकित हुए॥

३४ जब फरीसियों ने सुना, कि उस ने
सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया, तो वे
इकट्ठे हुए। ३५ और उन में से एक
व्यवस्थापक ने परखने के लिये, उस से
पूछा। ३६ हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी
आज्ञा बड़ी है? ३७ उस ने उस से कहा, तू
परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और
अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के
साथ प्रेम रख। ३८ बड़ी और मुख्य आज्ञा
तो यही है। ३९ और उसी के समान यह
दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने
समान प्रेम रख। ४० ये ही दो आज्ञाएं
सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का
आधार है॥

४१ जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने
उन से पूछा। ४२ कि मसीह के विषय में
तुम क्या समझते हो? वह किस का सन्तान
है? उन्हों ने उस से कहा, दाऊद का।
४३ उस ने उन से पूछा, तो दाऊद आत्मा
में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?
४४ कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा, मेरे
दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को
तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। ४५ भला,
जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका
पुत्र क्योंकर ठहरा? ४६ उसके उत्तर में
कोई भी एक बात न कह सका, परन्तु उस
दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का
हियाव न हुआ॥

२३ तब यीशु ने भीड़ से और अपने
चेलों से कहा। २ शास्त्री और
फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। ३ इस-
लिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और
मानना, परन्तु उन के से काम मत करना;
क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।
४ वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को
उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के
कन्धों पर रखते हैं, परन्तु आप उन्हें अपनी
उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते। ५ वे
अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये
करते हैं वे अपने तावीजों को चौड़े करते,
और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं।
६ जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें, और सभा
में मुख्य मुख्य आसन। ७ और बाजारों
में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी
कहलाना उन्हें भाता है। ८ परन्तु, तुम
रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक
ही गुरु है और तुम सब भाई हो। ९ और

पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना,
क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग
में है। १० और स्वामी भी न कहलाना,
क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात्
मसीह। ११ जो तुम में बड़ा हो, वह
तुम्हारा सेवक बने। १२ जो कोई अपने
आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया
जाएगा और जो कोई अपने आप को
छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा॥

१३ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो
तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में
स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो
आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस
में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते
हो॥

१५ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो
तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत
में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते
हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो
उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो॥

१६ हे अन्धे अगुवो, तुम पर हाय, जो
कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ
खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर
के सोने की सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध
जाएगा। १७ हे मूर्खो, और अन्धो, कौन
बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से
सोना पवित्र होता है? १८ फिर कहते
हो कि यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो
कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि
कोई उस की शपथ खाए तो बन्ध जाएगा।
१९ हे अन्धो, कौन बड़ा है, भेंट या वेदी
जिस से भेंट पवित्र होता है? २० इस-
लिये जो वेदी की शपथ खाता है, वह उस
की, और जो कुछ उस पर है, उस की भी
शपथ खाता है। २१ और जो मन्दिर की
शपथ खाता है, वह उस की और उस में
रहनेवाले की भी शपथ खाता है। २२ और
जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर
के सिहासन की और उस पर बैठनेवाले की
भी शपथ खाता है॥

२३ हे कपटी शास्त्रियो, और फरी-
सियो, तुम पर हाय, तुम पोदीने और
सौफ और जीरे का दसवा अश देते हो,
परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों
को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास
को छोड़ दिया है, चाहिये था कि इन्हें भी
करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।
२४ हे अन्धे अगुवो, तुम मच्छड़ को तो
छान डालते हो, परन्तु ऊट को निगल
जाते हो॥

२५ हे कपटी शास्त्रियो, और फरी-
सियो, तुम पर हाय, तुम कटोरे और
थाली को ऊपर ऊपर से तो माजते हो परन्तु
वे भीतर अन्धेर असयम से भरे हुए हैं।
२६ हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और
थाली को भीतर से माज कि वे बाहर से भी
स्वच्छ हो॥

२७ हे कपटी शास्त्रियो, और फरी-
सियो, तुम पर हाय, तुम चूना फिरी
हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर
दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की
हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से
भरी हैं। २८ इसी रीति से तुम भी ऊपर
से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु
भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो॥

२९ हे कपटी शास्त्रियो, और फरी-
सियो, तुम पर हाय, तुम भविष्यद्वक्ताओं
की कब्रें सवारते और धर्मियों की कब्रें
बनाते हो। ३० और कहते हो, कि यदि
हम अपने बापदादों के दिनों में होते
तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उन के
साझी न होते। ३१ इस से तो तुम

अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम
भविष्यद्वक्ताओं के घातकों की सन्तान हो।
३२ सो तुम अपने बापदादों के पाप का
घडा भर दो। ३३ हे सांपो, हे करैतों के
बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर
बचोगे? ३४ इसलिये देखो, मै तुम्हारे
पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और
शास्त्रियो को भेजता हू, और तुम उन मे
से कितनो को मार डालोगे, और क्रूस पर
चढाओगे, और कितनो को अपनी सभाओं
मे कोडे मारोगे, और एक नगर से दूसरे
नगर मे खदेडते फिरोगे। ३५ जिस से
धर्मी हाबील से लेकर बिरिकयाह के पुत्र
जकरयाह तक, जिसे तुम ने मन्दिर* और
वेदी के बीच मे मार डाला था, जितने
धर्मियो का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया
है, वह सब तुम्हारे सिर पर पडेगा।
३६ मै तुम से सच कहता हू, ये सब बाते
इस समय के लोगो पर आ पडेगी॥

३७ हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तू जो
भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और
जो तेरे पास भेजे गए, उन्हे पत्थरवाह करता
है, कितनी ही बार मै ने चाहा कि जैसे मुर्गी
अपने बच्चो को अपने पंखो के नीचे इकट्ठे
करती है, वैसे ही मै भी तेरे बालको को
इकट्ठे कर लू, परन्तु तुम ने न चाहा।
३८ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड
छोडा जाता है। ३९ क्योंकि मै तुम
से कहता हू, कि अब से जब तक तुम न
कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम
से आता है; तब तक तुम मुझे फिर कभी
न देखोगे॥

२४ जब यीशु मन्दिर से निकलकर
जा रहा था, तो उसके चेले उस
को मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उस-
के पास आए। २ उस ने उन से कहा,
क्या तुम यह सब नही देखते? मै तुम से
सच कहता हू, यहा पत्थर पर पत्थर भी न
छूटेगा, जो ढाया न जाएगा॥

३ और जब वह जैतून पहाड पर बैठा
था, तो चेलो ने अलग उसके पास आकर
कहा, हम से कह कि ये बाते कब होगी?
और तेरे आने का, और जगत के अन्त*
का क्या चिन्ह होगा? ४ यीशु ने उन को
उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हे
न भरमाने पाए। ५ क्योंकि बहुत से ऐसे
होगे जो मेरे नाम से आकर कहेगे, कि मै
मसीह हू: और बहुतो को भरमाएगे।
६ तुम लडाइयो और लडाइयो की चर्चा
सुनोगे, देखो घबरा न जाना क्योंकि इन
का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त
न होगा। ७ क्योंकि जाति पर जाति,
और राज्य पर राज्य चढाई करेगा, और
जगह जगह अकाल पडेगे, और भुईडोल
होगे। ८ ये सब बाते पीडाओ का आरम्भ
होगी। ९ तब वे क्लेश दिलाने के लिये
तुम्हे पकडवाएगे, और तुम्हे मार डालेंगे
और मेरे नाम के कारण सब जातियो के
लोग तुम से बैर रखेगे। १० तब बहुतेरे
ठोकर खाएगे, और एक दूसरे को पकडवा-
एगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।
११ और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ
खडे होगे, और बहुतो को भरमाएगे।
१२ और अधर्म के बढने से बहुतो का
प्रेम ठण्डा हो जाएगा। १३ परन्तु जो
अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार
होगा। १४ और राज्य का यह सुसमाचार
सारे जगत मे प्रचार किया जाएगा, कि सब

* अर्थात् पवित्रस्थान।

* यू० युग की समाप्ति।

जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ
जाएगा ॥
१५ सो जब तुम उस उजाडनेवाली
घृणित वस्तु को जिस की चर्चा दानिय्येल
भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान
में खडी हुई देखो, (जो पढ़े वह समझे)।
१६ तब जो यहूदिया में हो वे पहाडों पर
भाग जाए। १७ जो कोठे पर हो, वह
अपने घर में से सामान लेने को न उतरे।
१८ और जो खेत में हो, वह अपना कपडा
लेने को पीछे न लौटे। १६ उन दिनों में
जो गर्भवती और दूध पिलाती होगी, उन
के लिये हाय, हाय। २० और प्रार्थना
किया करो, कि तुम्हें जाडे में या सब्त
के दिन भागना न पडे। २१ क्योंकि उस
समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत
के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी
होगा। २२ और यदि वे दिन घटाए न
जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने
हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे।
२३ उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि
देखो, मसीह यहां है। या वहां है तो
प्रतीति न करना। २४ क्योंकि झूठे मसीह
और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खडे होंगे, और
बडे चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाएंगे,
कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा
दें। २५ देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह
सब कुछ कह दिया है। २६ इसलिये यदि
वे तुम से कहें, देखो, वह जङ्गल में है, तो
बाहर न निकल जाना, देखो, वह कोठरियों
में है, तो प्रतीति न करना। २७ क्योंकि
जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक
चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का
भी आना होगा। २८ जहां लोथ हो, वहीं
गिद्ध इकट्ठे होंगे ॥
२६ उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त
सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चान्द का
प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से
गिर पडेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई
जाएंगी। ३० तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह
आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के
सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे, और
मनुष्य के पुत्र को बडी सामर्थ और ऐश्वर्य
के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।
३१ और वह तुरही के बडे शब्द के साथ,
अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के
इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से
उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे ॥
३२ अंजीर के पेड से यह दृष्टान्त
सीखो जब उस की डाली कोमल हो जाती
और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान
लेते हो, कि ग्रीष्म काल निकट है।
३३ इसी रीति से जब तुम इन सब बातों
को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है,
वरन द्वार ही पर है। ३४ मैं तुम से सच
कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न
हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।
३५ आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु
मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३६ उस दिन
और उस घडी के विषय में कोई नहीं
जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र,
परन्तु केवल पिता। ३७ जैसे नूह के दिन
थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी
होगा। ३८ क्योंकि जैसे जल-प्रलय से
पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह
जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग
खाते-पीते थे, और उन में ब्याह शादी
होती थी। ३६ और जब तक जल-प्रलय
आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक
उन को कुछ भी मालूम न पडा, वैसे ही
मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
४० उस समय दो जन खेत में होंगे, एक

ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया
जाएगा। ४१ दो स्त्रियां चक्की पीसती
रहेंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़
दी जाएगी। ४२ इसलिये जागते रहो,
क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु
किस दिन आएगा। ४३ परन्तु यह जान
लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता
कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता
रहता; और अपने घर में सेंध लगने न
देता। ४४ इसलिये तुम भी तैयार रहो,
क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते
भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र
आ जाएगा। ४५ सो वह विश्वासयोग्य
और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी
ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया,
कि समय पर उन्हें भोजन दे? ४६ धन्य
है, वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर
ऐसा ही करते पाए। ४७ मैं तुम से सच
कहता हूं, वह उसे अपनी सारी संपत्ति पर
सरदार ठहराएगा। ४८ परन्तु यदि वह
दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के
आने में देर है। ४९ और अपने साथी
दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के
साथ खाए पीए। ५० तो उस दास का
स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उस की
बाट न जोहता हो। ५१ और ऐसी घड़ी
कि वह न जानता हो, और उसे भारी
ताड़ना देकर, उसका भाग कपटियों के
साथ ठहराएगा वहां रोना और दांत
पीसना होगा॥

२५ तब स्वर्ग का राज्य उन दस
कुंवारियों के समान होगा जो
अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को
निकलीं। २ उन में पांच मूर्ख और पांच
समझदार थीं। ३ मूर्खों ने अपनी मशालें
तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया।
४ परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के
साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया।
५ जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब
ऊंघने लगीं, और सो गईं। ६ आधी रात
को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है,
उस से भेंट करने के लिये चलो। ७ तब
वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक
करने लगीं। ८ और मूर्खों ने समझदारों
से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो,
क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं।
९ परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि
कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न
हो, भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के
पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।
१० जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो
दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे
उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और
द्वार बन्द किया गया। ११ इसके बाद वे
दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं,
हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल
दे। १२ उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम
से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।
१३ इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न
उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को॥

१४ क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा
है जिस ने परदेश को जाते समय अपने
दासों को बुलाकर, अपनी सम्पत्ति उन को
सौंप दी। १५ उस ने एक को पांच तोड़,
दूसरे को दो, और तीसरे को एक,
अर्थात् हर एक को उस की सामर्थ के
अनुसार दिया, और तब परदेश चला
गया। १६ तब जिस को पांच तोड़े मिले
थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन देन
किया, और पांच तोड़े और कमाए।
१७ इसी रीति से जिस को दो मिले थे,

उस ने भी दो और कमाए। १८ परन्तु
जिस को एक मिला था, उस ने जाकर
मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपये
छिपा दिए। १९ बहुत दिनों के बाद उन
दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने
लगा। २० जिस को पांच तोड़े मिले थे,
उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा, हे
स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख,
मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं। २१ उसके
स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और
विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य
रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी
बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में
सम्भागी हो। २२ और जिस को दो तोड़े
मिले थे, उस ने भी आकर कहा, हे स्वामी,
तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने दो
तोड़े और कमाए। २३ उसके स्वामी ने
उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वास-
योग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा,
मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी
बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में
सम्भागी हो। २४ तब जिस को एक
तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा, हे
स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर
मनुष्य है तू जहां कहीं नहीं बोता वहां
काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से
बटोरता है। २५ सो मैं डर गया और
जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया,
देख, जो तेरा है, वह यह है। २६ उसके
स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और
आलसी दास, जब यह तू जानता था, कि
जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता
हूं, और जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से
बटोरता हूं। २७ तो तुझे चाहिए था, कि
मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं
आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।
२८ इसलिये वह तोड़ा उस से ले लो,
और जिस के पास दस तोड़े हैं, उस को दे
दो। २९ क्योंकि जिस किसी के पास है,
उसे और दिया जाएगा, और उसके पास
बहुत हो जाएगा परन्तु जिस के पास नहीं
है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले
लिया जाएगा। ३० और इस निकम्मे
दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां
रोना और दांत पीसना होगा॥

३१ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा
में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ
आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन
पर विराजमान होगा। ३२ और सब
जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी,
और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से
अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक
दूसरे से अलग करेगा। ३३ और वह
भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों
को बाईं ओर खड़ी करेगा। ३४ तब राजा
अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे
पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के
अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से
तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।
३५ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे
खाने को दिया, मैं पियासा था, और तुम
ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम
ने मुझे अपने घर में ठहराया। ३६ मैं
नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए,
मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं
बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए।
३७ तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि हे
प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और
खिलाया? या पियासा देखा, और
पिलाया? ३८ हम ने कब तुझे परदेशी
देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा
देखा, और कपड़े पहिनाए? ३९ हम ने

कब तुझे बीमार या बन्दीगृह मे देखा और
तुझ से मिलने आए? ४० तब राजा
उन्हें उत्तर देगा, मै तुम से सच कहता हू,
कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयो
मे से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही
साथ किया। ४१ तब वह बाई ओर वालो
से कहेगा, हे स्रापित लोगो, मेरे साम्हने से
उस अनन्त आग मे चले जाओ, जो शैतान *
और उसके दूतो के लिये तैयार की गई है।
४२ क्योकि मै भूखा था, और तुम ने मुझे
खाने को नही दिया, मै पियासा था, और
तुम ने मुझे पानी नही पिलाया। ४३ मै
परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में
नही ठहराया, मै नगा था, और तुम ने मुझे
कपडे नही पहिनाए, बीमार और बन्दीगृह
मे था, और तुम ने मेरी सुधि न ली।
४४ तब वे उत्तर देगे, कि हे प्रभु, हम ने
तुझे कब भूखा, या पियासा, या परदेशी,
या नगा, या बीमार, या बन्दीगृह मे देखा,
और तेरी सेवा टहल न की? ४५ तब
वह उन्हे उत्तर देगा, मै तुम से सच कहता
हू कि तुम ने जो इन छोटे से छोटो मे से
किसी एक के साथ नही किया, वह मेरे
साथ भी नही किया। ४६ और यह अनन्त
दण्ड भोगेगे † परन्तु धर्मी अनन्त जीवन मे
प्रवेश करेगे।

२६ जब यीशु ये सब बाते कह चुका,
तो अपने चेलो से कहने लगा।
२ तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद
फसह का पर्व्व होगा, और मनुष्य का पुत्र
क्रूस पर चढाए जाने के लिये पकडवाया
जाएगा। ३ तब महायाजक और प्रजा
के पुरनिए काइफा नाम महायाजक के
आगन मे इकट्ठे हुए। ४ और आपस मे
विचार करने लगे कि यीशु को छल से
पकडकर मार डाले। ५ परन्तु वे कहते
थे, कि पर्व्व के समय नही, कही ऐसा न हो
कि लोगो मे बलवा मच जाए॥

६ जब यीशु बैतनिय्याह मे शमौन
कोढी के घर मे था। ७ तो एक
स्त्री सगमरमर के पात्र मे बहुमोल इत्र
लेकर उसके पास आई, और जब वह
भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर
उण्डेल दिया। ८ यह देखकर, उसके चेले
रिसियाए और कहने लगे, इस का क्यो
सत्यानाश किया गया? ९ यह तो अच्छे
दाम पर बिककर कगालो को बाटा जा
सकता था। १० यह जानकर यीशु ने
उन से कहा, स्त्री को क्यो सताते हो?
उस ने मेरे साथ भलाई की है। ११ कगाल
तुम्हारे साथ सदा रहते है, परन्तु मै तुम्हारे
साथ सदैव न रहूगा। १२ उस ने मेरी
देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाडे
जाने के लिये किया है। १३ मै तुम से सच
कहता हू, कि सारे जगत मे जहा कही यह
सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहा उसके
इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण मे
किया जाएगा॥

१४ तब यहूदा इस्करियोती नाम बारह
चेलो मे से एक ने महायाजको के पास
जाकर कहा, १५ यदि मै उसे तुम्हारे
हाथ पकडवा दू, तो मुझे क्या दोगे?
उन्हो ने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर
दे दिए। १६ और वह उसी समय से उसे
पकडवाने का अवसर ढूढने लगा॥

१७ अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले
दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे,
तू कहा चाहता है कि हम तेरे लिये फसह
खाने की तैयारी करे? १८ उस ने कहा,
नगर मे फुलाने के पास जाकर उस से कहो,

* यू० इब्लीस　　　† यू० मे जाएगे।

कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट
है, मैं अपने चेलो के साथ तेरे यहा पर्व्व
मनाऊगा। १९ सो चेलो ने यीशु की
आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।
२० जब साझ हुई, तो वह बारहो के साथ
भोजन करने के लिये बैठा। २१ जब वे
खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच
कहता हू, कि तुम में से एक मुझे
पकडवाएगा। २२ इस पर वे बहुत उदास
हुए, और हर एक उस से पूछने लगा,
हे गुरु, क्या वह मैं हू? २३ उस ने उत्तर
दिया, कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ
डाला है, वही मुझे पकडवाएगा।
२४ मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय
मे लिखा है, जाता ही है, परन्तु उस मनुष्य
के लिये शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का
पुत्र पकडवाया जाता है यदि उस मनुष्य
का जन्म न होता, तो उसके लिये भला
होता। २५ तब उसके पकडवानेवाले यहूदा
ने कहा कि हे रब्बी, क्या वह मैं हू?
२६ उस ने उस से कहा, तू कह चुका
जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली,
और आशीष मागकर तोडी, और चेलो
को देकर कहा, लो, खाओ, यह मेरी देह
है। २७ फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्य-
वाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब
इस में से पीओ। २८ क्योंकि यह वाचा
का मेरा वह लोहू है, जो बहुतो के लिये
पापो की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।
२९ मैं तुम से कहता हू, कि दाख का यह
रस उस दिन तक कभी न पीऊगा, जब तक
तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया
न पीऊ॥

३० फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड
पर गए॥

३१ तब यीशु ने उन से कहा, तुम
सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर
खाओगे, क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे
को मारूगा, और झुण्ड की भेडें तित्तर
बित्तर हो जाएगी। ३२ परन्तु मैं अपने
जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को
जाऊगा। ३३ इस पर पतरस ने उस से
कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाए तो
खाए, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊगा।
३४ यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से सच
कहता हू, कि आज ही रात को मुर्गे के बाग
देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर
जाएगा। ३५ पतरस ने उस से कहा,
यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी
मैं तुझ से कभी न मुकरूगा और ऐसा ही
सब चेलो ने भी कहा॥

३६ तब यीशु अपने चेलो के साथ
गतसमनी नाम एक स्थान में आया और
अपने चेलो से कहने लगा कि यहीं बैठे
रहना, जब तक कि मैं वहा जाकर प्रार्थना
करू। ३७ और वह पतरस और जब्दी
के दोनों पुत्रो को साथ ले गया, और उदास
और व्याकुल होने लगा। ३८ तब उस ने
उन से कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहा
तक कि मेरे प्राण निकला चाहते है तुम
यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
३९ फिर वह थोडा और आगे बढकर
मुह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने
लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो
यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा
मैं चाहता हू वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू
चाहता है वैसा ही हो। ४० फिर चेलो के
पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस
से कहा, क्या तुम मेरे साथ एक घडी भी
न जाग सके? ४१ जागते रहो, और
प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न
पडो आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर

दुर्बल है। ४२ फिर उस ने दूसरी बार
जाकर यह प्रार्थना की, कि हे मेरे पिता,
यदि यह मेरे पीए बिना नही हट सकता तो
तेरी इच्छा पूरी हो। ४३ तब उस ने
आकर उन्हे फिर सोते पाया, क्योंकि उन
की आंखे नीद से भरी थी। ४४ और
उन्हे छोडकर फिर चला गया, और वही
बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना
की। ४५ तब उस ने चेलो के पास आकर
उन से कहा, अब सोते रहो, और विश्राम
करो देखो, घडी आ पहुची है, और मनुष्य
का पुत्र पापियो के हाथ पकडवाया जाता
है। ४६ उठो, चले, देखो, मेरा पकडवाने-
वाला निकट आ पहुचा है॥

४७ वह यह कह ही रहा था, कि देखो,
यहूदा जो बारहो मे से एक था, आया,
और उसके साथ महायाजको और लोगो
के पुरनियो की ओर से बडी भीड, तलवारे
और लाठिया लिए हुए आई। ४८ उसके
पकडवानेवाले ने उन्हे यह पता दिया था
कि जिस को मै चूम लू वही है, उसे पकड
लेना। ४९ और तुरन्त यीशु के पास आकर
कहा, हे रब्बी नमस्कार, और उस को
बहुत चूमा। ५० यीशु ने उस से कहा,
हे मित्र, जिस काम के लिये तू आया है,
उसे कर ले। तब उन्हो ने पास आकर
यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड लिया।
५१ और देखो, यीशु के साथियो मे से एक
ने हाथ बढाकर अपनी तलवार खीच ली
और महायाजक के दास पर चलाकर उस
का कान उडा दिया। ५२ तब यीशु ने
उस से कहा, अपनी तलवार काठी मे रख
ले क्योंकि जो तलवार चलाते है, वे सब
तलवार से नाश किए जाएगे। ५३ क्या
तू नही समझता, कि मै अपने पिता से
विनती कर सकता हू, और वह स्वर्गदूतो
की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी
उपस्थित कर देगा? ५४ परन्तु पवित्र
शास्त्र की वे बाते कि ऐसा ही होना अवश्य
है, क्योंकर पूरी होगी? ५५ उसी घडी
यीशु ने भीड से कहा, क्या तुम तलवारें
और लाठिया लेकर मुझे डाकू के समान
पकडने के लिये निकले हो? मै हर दिन
मन्दिर मे बैठकर उपदेश दिया करता था,
और तुम ने मुझे नही पकडा। ५६ परन्तु
यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्-
वक्ताओं के वचन * पूरे हो तब सब चेले
उसे छोडकर भाग गए॥

५७ और यीशु के पकडनेवाले उस को
काइफा नाम महायाजक के पास ले गए,
जहा शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे।
५८ और पतरस दूर से उसके पीछे पीछे
महायाजक के आगन तक गया, और भीतर
जाकर अन्त देखने को प्यादो के साथ बैठ
गया। ५९ महायाजक और सारी महा-
सभा यीशु को मार डालने के लिये उसके
विरोध मे झूठी गवाही की खोज मे थे।
६० परन्तु बहुत से झूठे गवाहो के आने
पर भी न पाई। ६१ अन्त मे दो जनो ने
आकर कहा, कि इस ने कहा है, कि मै
परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हू और
उसे तीन दिन मे बना सकता हू। ६२ तब
महायाजक ने खडे होकर उस से कहा, क्या
तू कोई उत्तर नही देता? ये लोग तेरे
विरोध मे क्या गवाही देते है? परन्तु यीशु
चुप रहा महायाजक ने उस से कहा।
६३ मै तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ
देता हू, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह
है, तो हम से कह दे। ६४ यीशु ने उस
से कहा, तू ने आप ही कह दिया, बरन मै

* यू० पवित्रशास्त्र।

तुम से यह भी कहता हू, कि अब से तुम
मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान * की
दहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलो
पर आते देखोगे। ६५ तब महायाजक ने
अपने वस्त्र फाडकर कहा, इस ने परमेश्वर
की निन्दा की है, अब हमें गवाहो का क्या
प्रयोजन? ६६ देखो, तुम ने अभी यह
निन्दा सुनी है! तुम क्या समझते हो?
उन्हो ने उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य
है। ६७ तब उन्हो ने उस के मुह पर थूका,
और उसे घूसे मारे, औरो ने थप्पड मार
के कहा। ६८ हे मसीह, हम से भविष्यद्-
वाणी करके कह कि किस ने तुझे
मारा?

६९ और पतरस बाहर आगन मे बैठा
हुआ था, कि एक लौंडी ने उसके पास
आकर कहा, तू भी यीशु गलीली के साथ
था। ७० उस ने सब के साम्हने यह कह-
कर इन्कार किया और कहा, मैं नही जानता
तू क्या कह रही है। ७१ जब वह बाहर
डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर
उन से जो वहा थे कहा, यह भी तो यीशु
नासरी के साथ था। ७२ उस ने शपथ
खाकर फिर इन्कार किया कि मैं उस मनुष्य
को नही जानता। ७३ थोडी देर के बाद,
जो वहा खडे थे, उन्हो ने पतरस के पास
आकर उस से कहा, सचमुच तू भी उन में
से एक है, क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद
खोल देती है। ७४ तब वह धिक्कार देने
और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य
को नही जानता, और तुरन्त मुर्ग ने बाग
दी। ७५ तब पतरस को यीशु की कही
हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग के बाग देने
से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा

* यू० सामथ।

और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने
लगा॥

२७ जब भोर हुई, तो सब महा-
याजको और लोगों के पुरनियो ने
यीशु के मार डालने की सम्मति की।
२ और उन्हो ने उसे बान्धा और ले जाकर
पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया॥

३ जब उसके पकडवानेवाले यहूदा ने
देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह
पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महा-
याजको और पुरनियो के पास फेर लाया।
४ और कहा, मैं ने निर्दोषी को घात के लिये
पकडवाकर पाप किया है? उन्हो ने कहा,
हमें क्या? तू ही जान। ५ तब वह उन
सिक्को को मन्दिर * में फेंककर चला गया,
और जाकर अपने आप को फासी दी।
६ महायाजको ने उन सिक्को को लेकर
कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नही,
क्योंकि यह लोहू का दाम है। ७ सो उन्हो
ने सम्मति करके उन सिक्को से परदेशियो
के गाडने के लिये कुम्हार का खेत मोल ले
लिया। ८ इस कारण वह खेत आज तक
लोहू का खेत कहलाता है। ९ तब जो
वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा
गया था वह पूरा हुआ, कि उन्हो ने वे तीस
सिक्के अर्थात् उस ठहराए हुए मूल्य को
(जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनो
ने ठहराया था) ले लिए। १० और जैसे
प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें
कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया॥

११ जब यीशु हाकिम के साम्हने खडा
था, तो हाकिम ने उस से पूछा, कि क्या तू
यहूदियों का राजा है? यीशु ने उस से
कहा, तू आप ही कह रहा है। १२ जब

* यू० पवित्रस्थान।

महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा
रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नही दिया।
१३ इस पर पीलातुस ने उस से कहा
क्या तू नही सुनता, कि ये तेरे विरोध मे
कितनी गवाहिया दे रहे है? १४ परन्तु
उस ने उस को एक बात का भी उत्तर
नही दिया, यहा तक कि हाकिम को बडा
आश्चर्य हुआ। १५ और हाकिम की यह
रीति थी, कि उस पर्व्व मे लोगो के लिये
किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे,
छोड देता था। १६ उस समय बरअब्बा
नाम उन्ही मे का एक नामी बन्धुआ था।
१७ सो जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने
उन से कहा, तुम किस को चाहते हो, कि
मै तुम्हारे लिये छोड दू? बरअब्बा को,
या यीशु को जो मसीह कहलाता है?
१८ क्योकि वह जानता था कि उन्हो ने
उसे डाह से पकडवाया है। १९ जब वह
न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उस की
पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस धर्मी
के मामले मे हाथ न डालना, क्योकि मै ने
आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख
उठाया है। २० महायाजको और पुरनियो
ने लोगो को उभारा, कि वे बरअब्बा को
माग ले, और यीशु को नाश कराए।
२१ हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनो
में से किस को चाहते हो, कि तुम्हारे लिये
छोड दू? उन्हो ने कहा, बरअब्बा को।
२२ पीलातुस ने उन से पूछा, फिर यीशु
को जो मसीह कहलाता है, क्या करू? सब
ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढाया जाए।
२३ हाकिम ने कहा, क्यो उस ने क्या
बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला,
चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर
चढाया जाए"। २४ जब पीलातुस ने
देखा, कि कुछ बन नही पडता परन्तु इस के
विपरीत हुल्लड होता जाता है, तो उस ने
पानी लेकर भीड के साम्हने अपने हाथ
धोए, और कहा, मै इस धर्मी के लोहू से
निर्दोष हू, तुम ही जानो। २५ सब लोगो
ने उत्तर दिया, कि इस का लोहू हम पर
और हमारी सन्तान पर हो। २६ इस पर
उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड दिया,
और यीशु को कोडे लगवाकर सौप दिया,
कि क्रूस पर चढाया जाए॥

२७ तब हाकिम के सिपाहियो ने यीशु
को किले मे ले जाकर सारी पलटन उसके
चहु ओर इकट्ठी की। २८ और उसके
कपडे उतारकर उसे किरमिजी बागा
पहिनाया। २९ और काटो का मुकुट
गूथकर उसके सिर पर रखा, और उसके
दहिने हाथ मे सरकण्डा दिया और उसके
आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे मे उडाने
लगे, कि हे यहूदियो के राजा नमस्कार।
३० और उस पर थूका, और वही
सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने
लगे। ३१ जब वे उसका ठट्ठा कर चुके,
तो वह बागा उस पर से उतारकर फिर
उसी के कपडे उसे पहिनाए, और क्रूस पर
चढाने के लिये ले चले॥

३२ बाहर जाते हुए उन्हे शमौन नाम
एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होने उसे बेगार
मे पकडा कि उसका क्रूस उठा ले चले।
३३ और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम
की जगह अर्थात् खोपडी का स्थान कहलाता
है पहुचकर। ३४ उन्हो ने पित्त मिलाया
हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु
उस ने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब
उन्हो ने उसे क्रूस पर चढाया, और
चिट्ठिया डालकर उसके कपडे बाट लिए।
३६ और वहा बैठकर उसका पहरा देने
लगे। ३७ और उसका दोषपत्र, उसके

सिर के ऊपर लगाया, कि "**यह यहूदियों
का राजा यीशु है**"। ३८ तब उनके
साथ दो डाकू एक दहिने और एक बाएं
क्रूसों पर चढ़ाए गए। ३९ और आने जाने
वाले सिर हिला हिलाकर उस की निन्दा
करते थे। ४० और यह कहते थे, कि हे
मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में
बनानेवाले, अपने आप को तो बचा यदि
तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर
आ। ४१ इसी रीति से महायाजक भी
शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर
करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया,
और अपने को नहीं बचा सकता। ४२ यह
तो "इस्राएल का राजा है"। अब क्रूस पर
से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास
करें। ४३ उस ने परमेश्वर पर भरोसा
रखा है, यदि वह इस को चाहता है,
तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा
था, कि "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं"।
४४ इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ
क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उस की निन्दा
करते थे॥

४५ दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक
उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा।
४६ तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े
शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा
शबक्तनी? अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे
मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?
४७ जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने
यह सुनकर कहा, वह तो एलिय्याह को
पुकारता है। ४८ उन में से एक तुरन्त
दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया,
और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया।
४९ औरों ने कहा, रह जाओ, देखें,
एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।
५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्ला-
कर प्राण* छोड़ दिए। ५१ और देखो,
मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट-
कर दो टुकड़े हो गया और धरती डोल
गई और चटानें तड़क गईं। ५२ और
कब्रें खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों
की बहुत लोथें जी उठीं। ५३ और उसके
जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर
पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई
दिए। ५४ तब सूबेदार और जो उसके
साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और
जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए,
और कहा, सचमुच "यह परमेश्वर का
पुत्र था"। ५५ वहां बहुत सी स्त्रियां
जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके
साथ आई थीं, दूर से यह देख रही थीं।
५६ उन में मरियम मगदलीनी और याकूब
और योसेस की माता मरियम और जब्दी
के पुत्रों की माता थीं॥

५७ जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम
अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप
ही यीशु का चेला था आया उस ने पीलातुस
के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी।
५८ इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा
दी। ५९ यूसुफ ने लोथ को लेकर उसे
उज्ज्वल चादर में लपेटा। ६० और उसे
अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान
में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा
पत्थर लुढ़काकर चला गया। ६१ और
मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां
कब्र के साम्हने बैठी थीं॥

६२ दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के
बाद का दिन था, महायाजकों और
फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर
कहा। ६३ हे महाराज, हमें स्मरण है,

* यू॰ आत्मा।

कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा
था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूगा।
६४ सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र
की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके
चेले आकर उसे चुरा ले जाए, और
लोगो से कहने लगे, कि वह मरे हुओ मे से
जी उठा है तब पिछला धोखा पहिले से भी
बुरा होगा। ६५ पीलातुस ने उन से कहा,
तुम्हारे पास पहरुए तो है जाओ, अपनी
समझ के अनुसार रखवाली करो। ६६ सो
वे पहरुओ को साथ ले कर गए, और पत्थर
पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की॥

२८ सब्त के दिन के बाद सप्ताह
के पहिले दिन पह फटते ही मरियम
मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को
देखने आई। २ और देखो एक बडा
भुईडोल हुआ, क्योकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग
से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर
को लुढका दिया, और उस पर बैठ
गया। ३ उसका रूप बिजली का सा और
उसका वस्त्र पाले की नाई उज्ज्वल था।
४ उसके भय से पहरुए काप उठे, और
मृतक समान हो गए। ५ स्वर्गदूत ने
स्त्रियो से कहा, कि तुम मत डरो मै जानता
हू कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढाया गया
था ढूढती हो। ६ वह यहा नही है, परन्तु
अपने वचन के अनुसार जी उठा है, आओ,
यह स्थान देखो, जहा प्रभु पडा था।
७ और शीघ्र जाकर उसके चेलो से कहो,
कि वह मृतको में से जी उठा है, और
देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है,
वहा उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम
से कह दिया। ८ और वे भय और बडे
आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर
उसके चेलो को समाचार देने के लिये दौड
गई। ९ और देखो, यीशु उन्हे मिला
और कहा, 'सलाम' और उन्हो ने पास
आकर और उसके पाव पकडकर उसको
दण्डवत किया। १० तब यीशु ने उन से
कहा, मत डरो, मेरे भाइयो से जाकर
कहो, कि गलील को चले जाए वहा मुझे
देखेगे॥

११ वे जा ही रही थी, कि देखो, पहरुओ
मे से कितनो ने नगर मे आकर पूरा हाल
महायाजको से कह सुनाया। १२ तब
उन्हो ने पुरनियो के साथ इकट्ठे होकर
सम्मति की, और सिपाहियो को बहुत
चान्दी देकर कहा। १३ कि यह कहना,
कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके
चेले आकर उसे चुरा ले गए। १४ और
यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुचेगी,
तो हम उसे समझा लेगे और तुम्हे जोखिम
से बचा लेगे। १५ सो उन्हो ने रुपए लेकर
जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया,
और यह बात आज तक यहूदियो में
प्रचलित है॥

१६ और ग्यारह चेले गलील मे उस
पहाड पर गए, जिसे यीशु ने उन्हे बताया
था। १७ और उन्हो ने उसके दर्शन पाकर
उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को
सन्देह हुआ। १८ यीशु ने उन के पास
आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा
अधिकार मुझे दिया गया है। १९ इस-
लिये तुम जाकर सब जातियो के लोगो को
चेला बनाओ और उन्हे पिता और पुत्र
और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।
२० और उन्हें सब बाते जो मैं ने तुम्हे
आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो,
मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग
हू॥

मरकुस रचित सुसमाचार

१ परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के
सुसमाचार का आरम्भ। २ जैसे
यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में लिखा
है कि देख, मै अपने दूत को तेरे आगे भेजता
हू, जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा। ३ जगल
में एक पुकारनेवाले का शब्द सुनाई दे रहा
है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उस
की सडकें सीधी करो। ४ यूहन्ना आया,
जो जगल में बपतिस्मा देता, और पापो की
क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का
प्रचार करता था। ५ और सारे यहूदिया
देश के, और यरूशलेम के सब रहनेवाले
निकलकर उसके पास गए, और अपने
पापो को मानकर यरदन नदी में उस से
बपतिस्मा लिया। ६ यूहन्ना ऊट के रोम
का वस्त्र पहिने और अपनी कमर में चमडे
का पटुका बान्धे रहता था और टिड्डिया
और बन मधु खाया करता था। ७ और
यह प्रचार करता था, कि मेरे बाद वह
आने वाला है, जो मुझ से शक्तिमान है,
मैं इस योग्य नही कि झुककर उसके जूतो
का बन्ध खोलू। ८ मैं ने तो तुम्हें पानी
से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र
आत्मा से * बपतिस्मा देगा॥

९ उन दिनो में यीशु ने गलील के
नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से
बपतिस्मा लिया। १० और जब वह
पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त
उस ने आकाश को खुलते और आत्मा को
कबूतर की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा।
११ और यह आकाशवाणी हुई, कि तू
मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हू॥

१२ तब आत्मा ने तुरन्त उस को
जगल की ओर भेजा। १३ और जगल
में चालीस दिन तक शैतान ने उस की
परीक्षा की, और वह बन पशुओ के साथ
रहा, और स्वर्गदूत उस की सेवा करते
रहे॥

१४ यूहन्ना के पकडवाए जाने के बाद
यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के
राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
१५ और कहा, समय पूरा हुआ है, और
परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है,
मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास
करो॥

१६ गलील की झील के किनारे किनारे
जाते हुए, उस ने शमौन और उसके भाई
अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा,
क्योकि वे मछुवे थे। १७ और यीशु ने
उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम
को मनुष्यो के मछुवे बनाऊगा। १८ वे
तुरन्त जालो को छोडकर उसके पीछे हो
लिए। १९ और कुछ आगे बढकर, उस
ने जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई
यूहन्ना को, नाव पर जालो को सुधारते
देखा। २० उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया,
और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरो के
साथ नाव पर छोडकर, उसके पीछे चले
गए॥

२१ और वे कफरनहूम में आए, और
वह तुरन्त सब्त के दिन सभा के घर में
जाकर उपदेश करने लगा। २२ और

---

* यू० में।

लोग उसके उपदेश से चकित हुए, क्योकि
वह उन्हे शास्त्रियो की नाईं नही, परन्तु
अधिकारी की नाई उपदेश देता था।
२३ और उसी समय, उन की सभा के घर
मे एक मनुष्य था, जिस मे एक अशुद्ध आत्मा
थी। २४ उस ने चिल्लाकर कहा, हे यीशु
नासरी, हमे तुझ से क्या काम? क्या तू
हमे नाश करने आया है? मैं तुझे जानता
हू, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!
२५ यीशु ने उसे डाटकर कहा, चुप रह,
और उस मे से निकल जा। २६ तब
अशुद्ध आत्मा उस को मरोडकर, और बडे
शब्द से चिल्लाकर उस मे से निकल गई।
२७ इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए
आपस मे वाद-विवाद करने लगे कि यह
क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश
है! वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओ
को भी आज्ञा देता है, और वे उस की आज्ञा
मानती है। २८ सो उसका नाम तुरन्त
गलील के आस पास के सारे देश मे हर
जगह फैल गया॥

२९ और वह तुरन्त आराधनालय मे
से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के साथ
शमौन और अन्द्रियास के घर आया।
३० और शमौन की सास ज्वर से पीडित
थी, और उन्हो ने तुरन्त उसके विषय मे
उस से कहा। ३१ तब उस ने पास जाकर
उसका हाथ पकड के उसे उठाया, और
उसका ज्वर उस पर से उतर गया, और
वह उन की सेवा-टहल करने लगी॥

३२ सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया
तो लोग सब बीमारो को और उन्हे जिन
में दुष्टात्माए थी उसके पास लाए।
३३ और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ।
३४ और उस ने बहुतो को जो नाना प्रकार
की बीमारियो से दुखी थे, चगा किया,
और बहुत से दुष्टात्माओ को निकाला;
और दुष्टात्माओ को बोलने न दिया,
क्योकि वे उसे पहचानती थी॥

३५ और भोर को दिन निकलने से
बहुत पहिले, वह उठकर निकला, और
एक जगली स्थान मे गया और वहा प्रार्थना
करने लगा। ३६ तब शमौन और उसके
साथी उस की खोज मे गए। ३७ जब वह
मिला, तो उस से कहा; कि सब लोग तुझे
ढूढ रहे है। ३८ उस ने उन से कहा,
आओ, हम और कहीं आस पास की
बस्तियो मे जाए, कि मैं वहा भी प्रचार
करू, क्योकि मै इसी लिये निकला हू।
३९ सो वह सारे गलील मे उन की सभाओ
मे जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओ
को निकालता रहा॥

४० और एक कोढी ने उसके पास
आकर, उस से बिनती की, और उसके
साम्हने घुटने टेककर, उस से कहा, यदि
तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
४१ उस ने उस पर तरस खाकर हाथ
बढाया, और उसे छूकर कहा, मैं चाहता
हू तू शुद्ध हो जा। ४२ और तुरन्त उसका
कोढ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।
४३ तब उस ने उसे चिताकर तुरन्त विदा
किया। ४४ और उस से कहा, देख, किसी
से कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने
आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध
होने के विषय मे जो कुछ मूसा ने ठहराया
है उसे भेट चढा, कि उन पर गवाही हो।
४५ परन्तु वह बाहर जाकर इस बात को
बहुत प्रचार करने और यहा तक फैलाने
लगा, कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर मे
न जा सका, परन्तु बाहर जगली स्थानो मे
रहा, और चहुओर से लोग उसके पास
आते रहे॥

२ कई दिन के बाद वह फिर कफर-
नहूम में आया और सुना गया, कि
वह घर में है। २ फिर इतने लोग इकट्ठे
हुए, कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली,
और वह उन्हें वचन सुना रहा था। ३ और
लोग एक झोले के मारे हुए को चार
मनुष्यों से उठवाकर उसके पास ले आए।
४ परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके
निकट न पहुंच सके, तो उन्हों ने उस छत
को जिस के नीचे वह था, खोल दिया,
और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस खाट को
जिस पर झोले का मारा हुआ पड़ा था,
लटका दिया। ५ यीशु ने, उन का विश्वास
देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा,
हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए। ६ तब कई
एक शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने अपने
मन में विचार करने लगे। ७ कि यह
मनुष्य क्यों ऐसा कहता है? यह तो
परमेश्वर की निन्दा करता है, परमेश्वर
को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता
है? ८ यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में
जान लिया, कि वे अपने अपने मन में ऐसा
बिचार कर रहे हैं, और उन से कहा, तुम
अपने अपने मन में यह बिचार क्यों कर रहे
हो? ९ सहज क्या है? क्या झोले के
मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए,
या यह कहना, कि उठ अपनी खाट उठा
कर चल फिर? १० परन्तु जिस से तुम
जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर
पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उस
ने उस झोले के मारे हुए से कहा)। ११ मैं
तुझ से कहता हूं, उठ, अपनी खाट उठाकर
अपने घर चला जा। १२ और वह उठा,
और तुरन्त खाट उठाकर और सब के साम्हने
से निकलकर चला गया, इस पर सब
चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके
कहने लगे, कि हम ने ऐसा कभी नहीं
देखा॥

१३ वह फिर निकलकर झील के
किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास
आई, और वह उन्हें उपदेश देने लगा।
१४ जाते हुए उस ने हलफई के पुत्र लेवी
को चुङ्गी की चौकी पर बैठे देखा, और उस
से कहा, मेरे पीछे हो ले। १५ और वह
उठकर, उसके पीछे हो लिया और वह
उसके घर में भोजन करने बैठा, और बहुत
से चुङ्गी लेनेवाले और पापी यीशु और उसके
चेलों के साथ भोजन करने बैठे, क्योंकि
वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिए थे।
१६ और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह
देखकर, कि वह तो पापियों और चुङ्गी
लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके
चेलों से कहा, वह तो चुङ्गी लेनेवालों
और पापियों के साथ खाता पीता है॥
१७ यीशु ने यह सुनकर, उन से कहा, भले
चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु
बीमारों को है: मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु
पापियों को बुलाने आया हूं॥

१८ यूहन्ना के चेले, और फरीसी
उपवास करते थे, सो उन्हों ने आकर उस
से यह कहा, कि यूहन्ना के चेले और
फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं?
परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते।
१९ यीशु ने उन से कहा, जब तक दूल्हा
बरातियों के साथ रहता है क्या वे उपवास
कर सकते हैं? सो जब तक दूल्हा उन के
साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते।
२० परन्तु वे दिन आएंगे, कि दूल्हा उन से
अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास
करेंगे। २१ कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने
पहिरावन पर कोई नहीं लगाता, नहीं तो
वह पैवन्द उस में से कुछ खींच लेगा, अर्थात्

नया, पुराने से, और वह और फट जाएगा।
२२ नये दाखरस को पुरानी मशको में कोई
नही रखता, नही तो दाखरस मश्को को
फाड देगा, और दाखरस और मश्के दोनो
नष्ट हो जाएगी, परन्तु दाख का नया रस
नई मश्को मे भरा जाता है॥

२३ और ऐसा हुआ कि वह सब्त के
दिन खेतो में से होकर जा रहा था, और
उसके चेले चलते हुए बाले तोड़ने लगे।
२४ तव फरीसियो ने उस से कहा, देख,
ये सब्त के दिन वह काम क्यो करते है
जो उचित नही? २५ उस ने उन से कहा,
क्या तुम ने कभी नही पढा, कि जब दाऊद
को आवश्यकता हुई और जब वह और
उसके साथी भूखे हुए, तब उस ने क्या किया
था? २६ उस ने क्योकर अबियातार
महायाजक के समय, परमेश्वर के भवन में
जाकर, भेट की रोटिया खाईं, जिसका
खाना याजको को छोड और किसी को भी
उचित नही, और अपने साथियो को भी
दी? २७ और उस ने उन से कहा,
सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया
है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।
२८ इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन
का भी स्वामी है॥

३ और वह आराधनालय मे फिर
गया, और वहा एक मनुष्य था, जिस
का हाथ सूख गया था। २ और वे उस पर
दोष लगाने के लिये उस की घात में लगे
हुए थे, कि देखे, वह सब्त के दिन में उसे
चगा करता है कि नही। ३ उस ने सूखे
हाथवाले मनुष्य से कहा, बीच मे खडा हो।
४ और उन से कहा, क्या सब्त के दिन
भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण
को बचाना या मारना? पर वे चुप रहे।
५ और उस ने उन के मन की कठोरता से
उदास होकर, उन को क्रोध से चारो ओर
देखा, और उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ
बढा उस ने बढाया, और उसका हाथ अच्छा
हो गया। ६ तब फरीसी बाहर जाकर
तुरन्त हेरोदियो के साथ उसके विरोध में
सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार
नाश करे॥

७ और यीशु अपने चेलो के साथ झील
की ओर चला गया और गलील से एक
बडी भीड उसके पीछे हो ली। ८ और
यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया से,
और यरदन के पार, और सूर और सैदा के
आसपास से एक बडी भीड यह सुनकर, कि
वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके
पास आई। ९ और उस ने अपने चेलो से
कहा, भीड के कारण एक छोटी नाव मेरे
लिये तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें।
१० क्योकि उस ने बहुतो को चगा किया
था, इसलिये जितने लोग रोग से ग्रसित
थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पडते थे।
११ और अशुद्ध आत्माए भी, जब उसे
देखती थी, तो उसके आगे गिर पडती थी,
और चिल्लाकर कहती थी कि तू परमेश्वर
का पुत्र है। १२ और उस ने उन्हे बहुत
चिताया, कि मुझे प्रगट न करना॥

१३ फिर वह पहाड पर चढ गया, और
जिन्हे वह चाहता था उन्हे अपने पास
बुलाया, और वे उसके पास चले आए।
१४ तब उस ने बारह पुरुषो को नियुक्त
किया, कि वे उसके साथ साथ रहे, और
वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करे। १५ और
दुष्टात्माओ के निकालने का अधिकार
रखे। १६ और वे ये है शमौन जिस का
नाम उस ने पतरस रखा। १७ और जब्दी
का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना,

जिनका नाम उस ने बूअनरगिस, अर्थात्
गर्जन के पुत्र रखा। १८ और अन्द्रियास,
और फिलिप्पुस, और बरतुलमै, और मत्ती,
और थोमा, और हलफई का पुत्र याकूब,
और तद्दी, और शमौन कनानी। १९ और
यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वा
भी दिया॥

२० और वह घर में आया और ऐसी
भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी भी न खा
सके। २१ जब उसके कुटुम्बियों ने यह
सुना, तो उसे पकड़ने के लिये निकले,
क्योंकि कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने
नहीं है। २२ और शास्त्री जो यरूशलेम
से आए थे, यह कहते थे, कि उस में शैतान *
है, और यह भी, कि वह दुष्टात्माओं के
सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को
निकालता है। २३ और वह उन्हें पास
बुलाकर, उन से दृष्टान्तों में कहने लगा,
शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता
है? २४ और यदि किसी राज्य में फूट
पड़े, तो वह राज्य क्योंकर स्थिर रह
सकता है? २५ और यदि किसी घर में फूट
पड़े, तो वह घर क्योंकर स्थिर रह सकेगा?
२६ और यदि शैतान अपना ही विरोधी
होकर अपने में फूट डाले, तो वह क्योंकर
बना रह सकता है? उसका तो अन्त ही
हो जाता है। २७ किन्तु कोई मनुष्य किसी
बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल
लूट नहीं सकता, जब तक कि वह पहिले
उस बलवन्त को न बान्ध ले, और तब
उसके घर को लूट लेगा। २८ मैं तुम से
सच कहता हूं, कि मनुष्यों की सन्तान के
सब पाप और निन्दा जो वे करते हैं, क्षमा
की जाएगी। २९ परन्तु जो कोई
पवित्रात्मा के विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी
भी क्षमा न किया जाएगा वरन वह अनन्त
पाप का अपराधी ठहरता है। ३० क्योंकि
वे यह कहते थे, कि उस में अशुद्ध आत्मा
है॥

३१ और उस की माता और उसके
भाई आए, और बाहर खड़े होकर उसे
बुलवा भेजा। ३२ और भीड़ उसके
आसपास बैठी थी, और उन्हों ने उस से
कहा, देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर
तुझे ढूंढते हैं। ३३ उस ने उन्हें उत्तर
दिया, कि मेरी माता और मेरे भाई कौन
हैं? ३४ और उन पर जो उसके आस-
पास बैठे थे, दृष्टि करके कहा, देखो, मेरी
माता और मेरे भाई यह हैं। ३५ क्योंकि
जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही
मेरा भाई, और बहिन और माता है॥

४ वह फिर झील के किनारे उपदेश
देने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उसके
पास इकट्ठी हो गई, कि वह झील में एक
नाव पर चढ़कर बैठ गया और सारी भीड़
भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही।
२ और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें
सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उन से
कहा। ३ सुनो देखो, एक बोनेवाला,
बीज बोने के लिये निकला। ४ और बोते
समय कुछ तो मार्ग के किनारे गिरा और
पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया। ५ और
कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहां उस को
बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न
मिलने के कारण जल्द उग आया। ६ और
जब सूर्य निकला, तो जल गया, और जड़
न पकड़ने के कारण सूख गया। ७ और
कुछ तो झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने
बढ़कर उसे दबा लिया, और वह फल न

* यू० बालजबूल।

लाया। ८ परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर
गिरा, और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त
हुआ, और कोई तीस गुणा, कोई साठ
गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया।
९ और उस ने कहा, जिस के पास सुनने
के लिये कान हों वह सुन ले॥

१० जब वह अकेला रह गया, तो उसके
साथियों ने उन बारह समेत उस से इन
दृष्टान्तों के विषय में पूछा। ११ उस ने
उन से कहा, तुम को तो परमेश्वर के राज्य
के भेद की समझ* दी गई है, परन्तु बाहर-
वालों के लिये सब बातें दृष्टान्तों में होती
हैं। १२ इसलिये कि वे देखते हुए देखें
और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए
सुनें भी और न समझें; ऐसा न हो कि वे
फिरें, और क्षमा किए जाएं। १३ फिर
उस ने उन से कहा, क्या तुम यह दृष्टान्त
नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों
को क्योंकर समझोगे? १४ बोनेवाला
वचन बोता है। १५ जो मार्ग के किनारे
के हैं जहां वचन बोया जाता है, ये वे हैं, कि
जब उन्हों ने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर
वचन को जो उन में बोया गया था, उठा
ले जाता है। १६ और वैसे ही जो
पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं,
कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से
ग्रहण कर लेते हैं। १७ परन्तु अपने
भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही
दिनों के लिये रहते हैं, इस के बाद जब
वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव
होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।
१८ और जो झाड़ियों में बोए गए ये वे
हैं जिन्हों ने वचन सुना। १९ और संसार
की चिन्ता, और धन का धोखा, और और
वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को
दबा देता है। और वह निष्फल रह जाता
है। २० और जो अच्छी भूमि में बोए
गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते
और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई
साठ गुणा, और कोई सौ गुणा॥

२१ और उस ने उन से कहा, क्या दिये
को इसलिये लाते हैं कि पैमाने* या खाट
के नीचे रखा जाए? क्या इसलिये नहीं,
कि दीवट पर रखा जाए? २२ क्योंकि
कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिये कि
प्रगट हो जाए, २३ और न कुछ गुप्त
है पर इसलिये कि प्रगट हो जाए।
यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन
ले। २४ फिर उस ने उन से कहा,
चौकस रहो, कि क्या सुनते हो? जिस
नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये
भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक
दिया जाएगा। २५ क्योंकि जिस के पास
है, उस को दिया जाएगा; परन्तु जिस के
पास नहीं है उस से वह भी जो उसके पास
है; ले लिया जाएगा॥

२६ फिर उस ने कहा; परमेश्वर का
राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर
बीज छींटे। २७ और रात को सोए, और
दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और
बढ़े कि वह न जाने। २८ पृथ्वी आप से
आप फल लाती है पहिले अंकुर, तब बाल,
और तब बालों में तैयार दाना। २९ परन्तु
जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त
हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ
पहुंची है॥

३० फिर उस ने कहा, हम परमेश्वर
के राज्य की उपमा किस से दें, और किस

* मूल में, का भेद दिया गया।

* एक बरतन जिस में डेढ़ मन अनाज नापा जाता है।

दृष्टान्त से उसका वर्णन करें? ३१ वह
राई के दाने के समान है, कि जब भूमि में
बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से
छोटा होता है। ३२ परन्तु जब बोया
गया, तो उगकर सब साग पात से बड़ा
हो जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी डालियां
निकलती हैं, कि आकाश के पक्षी उसकी
छाया में बसेरा कर सकते हैं॥

३३ और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत
से दृष्टान्त दे देकर उन की समझ के अनुसार
वचन सुनाता था। ३४ और बिना दृष्टान्त
कहे उन से कुछ भी नहीं कहता था, परन्तु
एकान्त में वह अपने निज चेलों को सब
बातों का अर्थ बताता था॥

३५ उसी दिन जब सांझ हुई, तो उस
ने उन से कहा, आओ, हम पार चलें।
३६ और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह
था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले,
और उसके साथ, और भी नावें थीं।
३७ तब बड़ी आन्धी आई, और लहरें नाव
पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से
भरी जाती थी। ३८ और वह आप
पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था, तब
उन्हों ने उसे जगाकर उस से कहा, हे गुरु,
क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए
जाते हैं? ३९ तब उस ने उठकर आन्धी
को डांटा, और पानी से कहा, "शान्त रह,
थम जा" और आन्धी थम गई और बड़ा
चैन हो गया। ४० और उन से कहा, तुम
क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास
नहीं? ४१ और वे बहुत ही डर गए और
आपस में बोले, यह कौन है, कि आन्धी
और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं?

५ और वे झील के पार गिरासेनियों
के देश में पहुंचे। २ और जब वह
नाव पर से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य
जिस में अशुद्ध आत्मा थी कब्रों से निकल-
कर उसे मिला। ३ वह कब्रों में रहा
करता था। और कोई उसे सांकलों से भी
न बान्ध सकता था। ४ क्योंकि वह बार
बार बेड़ियों और सांकलों से बान्धा गया
था, पर उस ने सांकलों को तोड़ दिया,
और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए थे,
और कोई उसे वश में नहीं कर सकता
था। ५ वह लगातार रात-दिन कब्रों और
पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को पत्थरों
से घायल करता था। ६ वह यीशु को
दूर ही से देखकर दौड़ा, और उसे प्रणाम
किया। ७ और ऊंचे शब्द से चिल्लाकर
कहा, हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के
पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे
परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि मुझे पीड़ा
न दे। ८ क्योंकि उस ने उस से कहा था,
हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल
आ। ९ उस ने उस से पूछा, तेरा क्या
नाम है? उस ने उस से कहा, मेरा नाम
सेना * है, क्योंकि हम बहुत हैं। १० और
उस ने उस से बहुत बिनती की, हमें इस
देश से बाहर न भेज। ११ वहां पहाड़ पर
सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।
१२ और उन्हों ने उस से बिनती करके
कहा, कि हमें उन सूअरों में भेज दे, कि हम
उन के भीतर जाएं। १३ सो उस ने उन्हें
आज्ञा दी और अशुद्ध आत्मा निकलकर
सूअरों के भीतर पैठ गई और झुण्ड, जो
कोई दो हजार का था, कड़ाड़े पर से
झपटकर झील में जा पड़ा, और डूब मरा।
१४ और उन के चरवाहों ने भागकर
नगर और गांवों में समाचार सुनाया।

* यू० लिगियोन अर्थात् ६,००० सिपाहियों
की सेना।

१५ और जो हुआ था, लोग उसे देखने
आए। और यीशु के पास आकर, वे उस
को जिस मे दुष्टात्माए थी, अर्थात् जिस
मे सेना समाई थी, कपडे पहिने और
सचेत बैठे देखकर, डर गए। १६ और
देखनेवालो ने उसका जिस मे दुष्टात्माए
थी, और सूअरो का पूरा हाल, उन को कह
सुनाया। १७ और वे उस से विनती कर
के कहने लगे, कि हमारे सिवानो से चला
जा। १८ और जब वह नाव पर चढने
लगा, तो वह जिस मे पहिले दुष्टात्माए थी,
उस से विनती करने लगा, कि मुझे अपने
साथ रहने दे। १९ परन्तु उस ने उसे
आज्ञा न दी, और उस से कहा, अपने घर
जाकर अपने लोगो को बता, कि तुझ पर
दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बडे काम
किए है। २० वह जाकर दिकपुलिस में
इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु
ने मेरे लिये कैसे बडे काम किए, और सब
अचम्भा करते थे॥

२१ जब यीशु फिर नाव से पार गया,
तो एक बडी भीड उसके पास इकट्ठी हो
गई, और वह झील के किनारे था।
२२ और याईर नाम आराधनालय के
सरदारो मे से एक आया, और उसे देखकर,
उसके पावो पर गिरा। २३ और उस ने
यह कहकर बहुत बिनती की, कि मेरी
छोटी बेटी मरने पर है तू आकर उस पर
हाथ रख, कि वह चगी होकर जीवित रहे।
२४ तब वह उसके साथ चला, और बडी
भीड उसके पीछे हो ली, यहा तक कि लोग
उस पर गिरे पडते थे॥

२५ और एक स्त्री, जिस को बारह वर्ष
से लोहू बहने का रोग था। २६ और
जिस ने बहुत वैद्यो से बडा दुख उठाया
और अपना सब माल व्यय करने पर भी
कुछ लाभ न उठाया था, परन्तु और भी
रोगी हो गई थी। २७ यीशु की चर्चा
सुनकर, भीड में उसके पीछे से आई, और
उसके वस्त्र को छू लिया। २८ क्योकि
वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को
छू लूगी, तो चगी हो जाऊगी। २९ और
तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया,
और उस ने अपनी देह में जान लिया, कि
मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई। ३० यीशु
ने तुरन्त अपने मे जान लिया, कि मुझ में
से सामर्थ निकली है, और भीड मे पीछे
फिरकर पूछा, मेरा वस्त्र किस ने छूआ?
३१ उसके चेलो ने उस से कहा, तू देखता
है, कि भीड तुझ पर गिरी पडती है, और
तू कहता है, कि किस ने मुझे छूआ?
३२ तब उस ने उसे देखने के लिये जिस ने
यह काम किया था, चारो ओर दृष्टि की।
३३ तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी
कैसी भलाई हुई है, डरती और कापती
हुई आई, और उसके पावो पर गिरकर,
उस से सब हाल सच सच कह दिया।
३४ उस ने उस से कहा, पुत्री तेरे विश्वास
ने तुझे चगा किया है कुशल से जा, और
अपनी इस बीमारी से बची रह॥

३५ वह यह कह ही रहा था, कि
आराधनालय के सरदार के घर से लोगो
ने आकर कहा, कि तेरी बेटी तो मर गई,
अब गुरु को क्यो दुख देता है? ३६ जो
बात वे कह रहे थे, उस को यीशु ने अनसुनी
करके, आराधनालय के सरदार से कहा,
मत डर, केवल विश्वास रख। ३७ और
उस ने पतरस और याकूब और याकूब के
भाई यूहन्ना को छोड, और किसी को अपने
साथ आने न दिया। ३८ और आराधना-
लय के सरदार के घर मे पहुचकर, उस ने
लोगो को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।

३९ तब उस ने भीतर जाकर उस से कहा,
तुम क्या हल्ला मचाते और रोते हो?
लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।
४० वे उस की हंसी करने लगे, परन्तु
उस ने सब को निकालकर लड़की के माता-
पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर
जहां लड़की पड़ी थी, गया। ४१ और
लड़की का हाथ पकड़कर उस से कहा,
'तलीता कूमी', जिस का अर्थ यह है कि
'हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ'।
४२ और लड़की तुरन्त उठकर चलने
फिरने लगी, क्योंकि वह बारह वर्ष की
थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो
गए। ४३ फिर उस ने उन्हें चिताकर
आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए
और कहा, कि उसे कुछ खाने को दिया
जाए॥

६ वहां से निकलकर वह अपने देश
में आया, और उसके चेले उसके
पीछे हो लिए। २ सब्त के दिन वह
आराधनालय में उपदेश करने लगा, और
बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने
लगे, इस को ये बातें कहां से आ गईं?
और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया
गया है? और कैसे सामर्थ के काम इसके
हाथों से प्रगट होते हैं? ३ क्या यह वही
बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब
और योसेस और यहूदा और शमौन का
भाई है? और क्या उस की बहिनें यहां
हमारे बीच में नहीं रहतीं? इसलिये
उन्हों ने उसके विषय में ठोकर खाई।
४ यीशु ने उन से कहा, कि भविष्यद्वक्ता
अपने देश और अपने कुटुम्ब और अपने घर
को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता।
५ और वह वहां कोई सामर्थ का काम न
कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ
रखकर उन्हें चंगा किया॥

६ और उस ने उन के अविश्वास पर
आश्चर्य किया और चारों ओर के गावों में
उपदेश करता फिरा॥

७ और वह बारहों को अपने पास
बुलाकर उन्हें दो दो करके भेजने लगा,
और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार
दिया। ८ और उस ने उन्हें आज्ञा दी,
कि मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ न
लो, न तो रोटी, न झोली, न पटुके में
पैसे। ९ परन्तु जूतियां पहिनो और दो
दो कुरते न पहिनो। १० और उस ने उन
से कहा, जहां कहीं तुम किसी घर में
उतरो तो जब तक वहां से विदा न हो, तब
तक उसी में ठहरे रहो। ११ जिस स्थान
के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, और तुम्हारी
न सुनें, वहां से चलते ही अपने तलवों की
धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही
हो। १२ और उन्हों ने जाकर प्रचार
किया, कि मन फिराओ। १३ और
बहुतेरे दुष्टात्माओं को निकाला, और
बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा
किया॥

१४ और हेरोदेस राजा ने उस की
चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम फैल गया
था, और उस ने कहा, कि यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसी
लिये उस से ये सामर्थ के काम प्रगट होते
हैं। १५ और औरों ने कहा, यह एलिय्याह
है, परन्तु औरों ने कहा, भविष्यद्वक्ता या
भविष्यद्वक्ताओं में से किसी एक के समान
है। १६ हेरोदेस ने यह सुन कर कहा,
जिस यूहन्ना का सिर मैं ने कटवाया था,
वही जी उठा है। १७ क्योंकि हेरोदेस ने
आप अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी

हेरोदियास के कारण, जिस से उस ने ब्याह
किया था, लोगो को भेजकर यूहन्ना को
पकड़वाकर बन्दीगृह मे डाल दिया था।
१८ क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था,
कि अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे
उचित नही। १९ इसलिये हेरोदियास
उस से बैर रखती थी और यह चाहती थी,
कि उसे मरवा डाले, परन्तु ऐसा न हो
सका। २० क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को
धर्मी और पवित्र पुरुष जानकर उस से
डरता था, और उसे बचाए रखता था, और
उस की सुनकर बहुत घबराता था, पर
आनन्द से सुनता था। २१ और ठीक
अवसर पर जब हेरोदेस ने अपने जन्म दिन
में अपने प्रधानो और सेनापतियो, और
गलील के बडे लोगो के लिये जेवनार की।
२२ और उसी हेरोदियास की बेटी भीतर
आई, और नाचकर हेरोदेस को और
उसके साथ बैठनेवालो को प्रसन्न किया, तब
राजा ने लड़की से कहा, तू जो चाहे मुझ
से माग मै तुझे दूगा। २३ और उस से
शपथ खाई, कि मै अपने आधे राज्य तक
जो कुछ तू मुझ से मागेगी मै तुझे दूगा।
२४ उस ने बाहर जाकर अपनी माता से
पूछा, कि मै क्या मागू? वह बोली,
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।
२५ वह तुरन्त राजा के पास भीतर आई,
और उस से बिनती की, मै चाहती हू, कि
तू अभी यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर
एक थाल मे मुझे मगवा दे। २६ तब
राजा बहुत उदास हुआ, परन्तु अपनी शपथ
के कारण और साथ बैठनेवालो के कारण
उसे टालना न चाहा। २७ और राजा ने
तुरन्त एक सिपाही को आज्ञा देकर भेजा,
कि उसका सिर काट लाए। २८ उस ने
जेलखाने में जाकर उसका सिर काटा,
और एक थाल मे रखकर लाया और लड़की
को दिया, और लडकी ने अपनी मा को
दिया। २९ यह सुनकर उसके चेले आए,
और उस की लोथ को उठाकर कब्र में
रखा॥

३० प्रेरितो ने यीशु के पास इकट्ठे होकर,
जो कुछ उन्हो ने किया, और सिखाया था,
सब उस को बता दिया। ३१ उस ने उन
से कहा, तुम आप अलग किसी जगली
स्थान मे आकर थोडा विश्राम करो;
क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे, और उन्हे
खाने का अवसर भी नहीं मिलता था।
३२ इसलिये वे नाव पर चढकर, सुनसान
जगह में अलग चले गए। ३३ और बहुतो
ने उन्हे जाते देखकर पहिचान लिया, और
सब नगरो से इकट्ठे होकर वहा पैदल दौडे
और उन से पहिले जा पहुचे। ३४ उस ने
निकलकर बडी भीड़ देखी, और उन पर
तरस खाया, क्योंकि वे उन भेडो के समान
थे, जिन का कोई रखवाला न हो; और
वह उन्हें बहुत सी बाते सिखाने लगा।
३५ जब दिन बहुत ढल गया, तो उसके
चेले उसके पास आकर कहने लगे, यह
सुनसान जगह है, और दिन बहुत ढल गया
है। ३६ उन्हें विदा कर, कि चारो ओर
के गावो और बस्तियो मे जाकर, अपने
लिये कुछ खाने को मोल ले। ३७ उस
ने उन्हे उत्तर दिया, कि तुम ही उन्हे खाने
को दो उन्हो ने उस से कहा, क्या हम
सौ दीनार* की रोटिया मोल ले, और
उन्हें खिलाए? ३८ उस ने उन से कहा,
जाकर देखो तुम्हारे पास कितनी रोटिया
है? उन्हो ने मालूम करके कहा, पाच
और दो मछली भी। ३९ तब उस ने उन्हें

* या दीनार आठ आने के लगभग।

आज्ञा दी, कि सब को हरी घास पर पाति-
पाति से बैठा दो। ४० वे सौ सौ और
पचास पचास करके पाति-पाति बैठ गए।
४१ और उस ने उन पाच रोटियो को
और दो मछलियो को लिया, और स्वर्ग की
ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटिया
तोड़ तोड़ कर चेलो को देता गया, कि वे
लोगो को परोसें, और वे दो मछलिया भी
उन सब में बाट दी। ४२ और सब
खाकर तृप्त हो गए। ४३ और उन्हो ने
टुकडो से बारह टोकरिया भर कर उठाइ,
और कुछ मछलियो से भी। ४४ जिन्हो
ने रोटिया खाई, वे पाच हजार पुरुष
थे॥

४५ तब उस ने तुरन्त अपने चेलो को
बरबस नाव पर चढाया, कि वे उस से पहिले
उस पार बैतसैदा को चले जाए, जब तक
कि वह लोगो को विदा करे। ४६ और
उन्हें विदा करके पहाड पर प्राथना करने
को गया। ४७ और जब साझ हुई, तो
नाव झील के बीच में थी, और वह अकेला
भूमि पर था। ४८ और जब उस ने देखा,
कि वे खेते खेते घबरा गए हैं, क्योकि हवा
उन के विरुद्ध थी, तो रात के चौथे पहर के
निकट वह झील पर चलते हुए उन के पास
आया, और उन से आगे निकल जाना
चाहता था। ४९ परन्तु उन्हो ने उसे झील
पर चलते देखकर समझा, कि भूत है, और
चिल्ला उठे, क्योकि सब उसे देखकर घबरा
गए थे। ५० पर उस ने तुरन्त उन से बातें
की और कहा, ढाढस बान्धो म हू, डरो
मत। ५१ तब वह उन के पास नाव पर
आया, और हवा थम गई और वे बहुत
ही आश्चय करने लगे। ५२ क्योकि वे
उन रोटियो के विपय मे न समझे थे परन्तु
उन के मन कठोर हो गए थे॥

५३ और वे पार उतरकर गन्नेसरत
में पहुचे, और नाव घाट पर लगाई।
५४ और जब वे नाव पर से उतरे, तो
लोग तुरन्त उस को पहचान कर।
५५ आसपास के सारे देश में दौडे, और
बीमारो को खाटो पर डालकर, जहा जहा
समाचार पाया कि वह है, वहा वहा लिए
फिरे। ५६ और जहा कही वह गावो,
नगरो, या बस्तियो में जाता था, तो लोग
बीमारो को बाजारो में रखकर उस से
बिनती करते थे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र
के आचल ही को छू लेने दे और जितने
उसे छूते थे, सब चगे हो जाते थे॥

७ तब फरीसी और कई एक शास्त्री
जो यरूशलेम से आए थे, उसके पास
इकट्ठे हुए। २ और उन्हो ने उसके कई
एक चेलो को अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ
धोए रोटी खाते देखा। ३ क्योकि फरीसी
और सब यहूदी, पुरनियो की रीति पर
चलते हैं और जब तक भली भाति हाथ
नही धो लेते तब तक नही खाते। ४ और
बाजार से आकर, जब तक स्नान नही कर *
लेते, तब तक नही खाते, और बहुत सी
और बाते ह, जो उन के पास मानने के लिये
पहुचाई गई ह, जैसे कटोरो, और लोटो,
और ताबे के बरतनो को धोना-माजना।
५ इसलिये उन फरीसियो और शास्त्रियो
ने उस से पूछा, कि तेरे चेले क्यो पुरनियो
की रीतो पर नही चलते, और बिना हाथ
धोए रोटी खाते हैं? ६ उस ने उन से
कहा, कि यशायाह ने तुम कपटियो के
विपय में बहुत ठीक भविष्यद्वाणी की,
जैसा लिखा ह, कि ये लोग होठो से तो
मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ

* यू० अपने ऊपर पानी न छिड़क लेते।

से दूर रहता है। ७ और ये व्यर्थ मेरी
उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की
आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।
८ क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को
टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते
हो। ९ और उस ने उन से कहा, तुम
अपनी रीतियों को मानने के लिये परमेश्वर
की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो!
१० क्योंकि मूसा ने कहा है कि अपने पिता
और अपनी माता का आदर कर, और
जो कोई पिता वा माता को बुरा कहे, वह
अवश्य मार डाला जाए। ११ परन्तु तुम
कहते हो कि यदि कोई अपने पिता वा माता
से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच
सकता था, वह कुरबान अर्थात् संकल्प हो
चुका। १२ तो तुम उस को उसके पिता
वा उस की माता की कुछ सेवा करने नहीं
देते। १३ इस प्रकार तुम अपनी रीतियों
से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का
वचन टाल देते हो, और ऐसे ऐसे बहुत से
काम करते हो। १४ और उस ने लोगों
को अपने पास बुलाकर उन से कहा, तुम
सब मेरी सुनो, और समझो। १५ ऐसी
तो कोई वस्तु नहीं जो मनुष्य में बाहर से
समाकर अशुद्ध करे, परन्तु जो वस्तुएं
मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे
अशुद्ध करती हैं। [१६ यदि किसी के
सुनने के कान हों तो सुन ले।] १७ जब
वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके
चेलों ने इस दृष्टान्त के विषय में उस से
पूछा। १८ उस ने उन से कहा; क्या तुम
भी ऐसे ना समझ हो? क्या तुम नहीं
समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के
भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर
सकती? १९ क्योंकि वह उसके मन में
नहीं, परन्तु पेट में जाती है, और सण्डास में
निकल जाती है? यह कहकर उस ने सब
भोजन वस्तुओं को शुद्ध ठहराया।
२० फिर उस ने कहा, जो मनुष्य में से
निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता
है। २१ क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य
के मन से, बुरी बुरी चिन्ता व्यभिचार।
२२ चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ,
दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा,
अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं।
२३ ये सब बुरी बातें भीतर ही से
निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती
हैं॥

२४ फिर वह वहां से उठकर सूर और
सैदा के देशों में आया, और एक घर में
गया, और चाहता था, कि कोई न जाने;
परन्तु वह छिप न सका। २५ और तुरन्त
एक स्त्री जिस की छोटी बेटी में अशुद्ध
आत्मा थी, उस की चर्चा सुन कर आई,
और उसके पांवों पर गिरी। २६ यह
यूनानी और सूरूफिनीकी जाति की थी;
और उस ने उस से बिनती की, कि मेरी
बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे। २७ उस
ने उस से कहा, पहिले लड़कों को तृप्त
होने दे, क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर
कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं है।
२८ उस ने उस को उत्तर दिया, कि सच
है प्रभु, तौभी कुत्ते भी तो मेज के नीचे
बालकों की रोटी का चूर चार खा लेते हैं।
२९ उस ने उस से कहा, इस बात के
कारण चली जा, दुष्टात्मा तेरी बेटी में
से निकल गई है। ३० और उस ने अपने
घर आकर देखा कि लड़की खाट पर पड़ी
है, और दुष्टात्मा निकल गई है॥

३१ फिर वह सूर और सैदा के देशों से
निकलकर दिकपुलिस देश से होता हुआ
गलील की झील पर पहुंचा। ३२ और

तुम्हे स्मरण नही। १९ कि जब मैं ने
पाच हज़ार के लिये पाच रोटी तोड़ी थी
तो तुम ने टुकडो की कितनी टोकरिया
भरकर उठाई? उन्हो ने उस से कहा,
बारह टोकरियाँ। २० और जब चार
हज़ार के लिये सात रोटी थी तो तुम ने
टुकड़ो के कितने टोकरे भरकर उठाए थे?
उन्हो ने उस से कहा, सात टोकरे।
२१ उस ने उन से कहा, क्या तुम अब तक
नही समझते?

२२ और वे बैतसैदा मे आए, और
लोग एक अन्धे को उसके पास ले आए
और उस से विनती की, कि उस को छूए।
२३ वह उस अन्धे का हाथ पकडकर उसे
गाव के बाहर ले गया, और उस की आखो
मे थूककर उस पर हाथ रखे, और उस से
पूछा; क्या तू कुछ देखता है? २४ उस
ने आख उठा कर कहा, मैं मनुष्यो को
देखता हू, क्योकि वे मुझे चलते हुए दिखाई
देते है, जैसे पेड। २५ तब उस ने फिर
दोबारा उस की आखो पर हाथ रखे, और
उस ने ध्यान से देखा, और चगा हो गया,
और सब कुछ साफ साफ देखने लगा।
२६ और उस ने उस से यह कहकर घर
भेजा, कि इस गाव के भीतर पाव भी न
रखना॥

२७ यीशु और उसके चेले कैसरिया
फिलिप्पी के गावो मे चले गए और मार्ग
मे उस ने अपने चेलो से पूछा कि लोग मुझे
क्या कहते है? २८ उन्हो ने उत्तर दिया,
कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, पर कोई
कोई, एलिय्याह, और कोई कोई भविष्यद्-
वक्ताओ मे से एक भी कहते है। २९ उस
ने उन से पूछा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते
हो? पतरस ने उस को उत्तर दिया, तू
मसीह है। ३० तब उस ने उन्हे चिताकर
कहा, कि मेरे विषय मे यह किसी से न
कहना। ३१ और वह उन्हे सिखाने लगा,
कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह
बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महा-
याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर
मार डाले और वह तीन दिन के बाद जी
उठे। ३२ उस ने यह बात उन से साफ
साफ कह दी इस पर पतरस उसे अलग
ले जाकर झिडकने लगा। ३३ परन्तु उस
ने फिरकर, और अपने चेलो की ओर
देखकर पतरस को झिडक कर कहा, कि
हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो, क्योकि
तू परमेश्वर की बातो पर नही, परन्तु
मनुष्यो की बातो पर मन लगाता है।
३४ उस ने भीड को अपने चेलो समेत पास
बुलाकर उन से कहा, जो कोई मेरे पीछे
आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे
और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।
३५ क्योकि जो कोई अपना प्राण बचाना
चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे
और सुसमाचार के लिये अपना प्राण
खोएगा, वह उसे बचाएगा। ३६ यदि
मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने
प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ
होगा? ३७ और मनुष्य अपने प्राण के
बदले क्या देगा? ३८ जो कोई इस व्यभि-
चारी और पापी जाति * के बीच मुझ से
और मेरी बातो से लजाएगा, मनुष्य का
पुत्र भी जब वह पवित्र दूतो के साथ अपने
पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस
से भी लजाएगा।

९ और उस ने उन से कहा, मैं तुम
से सच कहता हू, कि जो यहा खड़े हैं,
उन मे से कोई कोई ऐसे है, कि जब तक

* यू० पीढ़ी।

परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख ले, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे॥

२ छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और उन के साम्हने उसका रूप बदल गया। ३ और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहां तक अति उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता। ४ और उन्हें मूसा के साथ एलिय्याह दिखाई दिया, और वे यीशु के साथ बातें करते थे। ५ इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे रब्बी, हमारा यहां रहना अच्छा है इसलिये हम तीन मण्डप बनाएं, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये। ६ क्योंकि वह न जानता था, कि क्या उत्तर दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे। ७ तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, उस की सुनो। ८ तब उन्हों ने एकाएक चारों ओर दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने साथ और किसी को न देखा॥

९ पहाड़ से उतरते हुए, उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। १० उन्हों ने इस बात को स्मरण रखा, और आपस में वाद-विवाद करने लगे, कि मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है? ११ और उन्हों ने उस से पूछा, शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है? १२ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि एलिय्याह सचमुच पहिले आकर सब कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय में यह क्यों लिखा है, कि वह बहुत दुख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा? १३ परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्हों ने जो कुछ चाहा उसके साथ किया॥

१४ और जब वह चेलों के पास आया, तो देखा कि उन के चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है और शास्त्री उन के साथ विवाद कर रहे हैं। १५ और उसे देखते ही सब बहुत ही आश्चर्य करने लगे, और उस की ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया। १६ उस ने उन से पूछा, तुम इन से क्या विवाद कर रहे हो? १७ भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया, कि हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिस में गूंगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था। १८ जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, वहीं पटक देती है और वह मुंह में फेन भर लाता, और दांत पीसता, और सूखता जाता है और मैं ने तेरे चेलों से कहा था कि वे उसे निकाल दें परन्तु वह निकाल न सके। १९ यह सुनकर उस ने उन से उत्तर देके कहा कि हे अविश्वासी लोगो,* मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? और कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे मेरे पास लाओ। २० तब वे उसे उसके पास ले आए और जब उस ने उसे देखा, तो उस आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा, और वह भूमि पर गिरा, और मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा। २१ उस ने उसके पिता से पूछा, इस की यह दशा कब से है? २२ उस ने कहा, बचपन से उस ने इसे नाश करने के लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया,

* यू० पीढ़ी।

परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया
हुआ न देख ले, तब तक मृत्यु का स्वाद
कदापि न चक्खेंगे ॥
२ छ दिन के बाद यीशु ने पतरस और
याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और
एकान्त मे किसी ऊचे पहाड पर ले गया,
और उन के साम्हने उसका रूप बदल
गया। ३ और उसका वस्त्र ऐसा चमकने
लगा और यहा तक अति उज्ज्वल हुआ,
कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल
नही कर सकता। ४ और उन्हें मूसा के
साथ एलिय्याह दिखाई दिया, और वे
यीशु के साथ बाते करते थे। ५ इस पर
पतरस ने यीशु से कहा, हे रब्बी, हमारा
यहा रहना अच्छा है इसलिये हम तीन
मण्डप बनाए, एक तेरे लिये, एक मूसा के
लिये, और एक एलिय्याह के लिये।
६ क्योंकि वह न जानता था, कि क्या उत्तर
दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे।
७ तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और
उस बादल मे से यह शब्द निकला, कि यह
मेरा प्रिय पुत्र है, उस की सुनो। ८ तब
उन्हो ने एकाएक चारो ओर दृष्टि की,
और यीशु को छोड अपने साथ और किसी
को न देखा ॥
९ पहाड से उतरते हुए, उस ने उन्हें
आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे
हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम
ने देखा है वह किसी से न कहना।
१० उन्हो ने इस बात को स्मरण रखा,
और आपस मे वाद विवाद करने लगे, कि
मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?
११ और उन्हो ने उस से पूछा, शास्त्री क्यो
कहते है, कि एलिय्याह का पहिले आना
अवश्य है? १२ उस ने उन्हे
कि एलिय्याह सचमुच
कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र के विषय
में यह क्यो लिखा है, कि वह बहुत दुख
उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा?
१३ परन्तु मैं तुम से कहता हू, कि एलिय्याह
तो आ चुका, और जैसा उसके विषय मे
लिखा है, उन्हो ने जो कुछ चाहा उसके
साथ किया ॥
१४ और जब वह चेलो के पास आया,
तो देखा कि उन के चारो ओर बडी भीड
लगी है और शास्त्री उन के साथ विवाद कर
रहे है। १५ और उसे देखते ही सब बहुत
ही आश्चर्य करने लगे, और उस की ओर
दौडकर उसे नमस्कार किया। १६ उस ने
उन से पूछा, तुम इन से क्या विवाद कर
रहे हो? १७ भीड मे से एक ने उसे उत्तर
दिया, कि हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिस में
गूगी आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था।
१८ जहा कही वह उसे पकडती है, वही
पटक देती है और वह मुह मे फेन भर
लाता, और दात पीसता, और सूखता जाता
है और मैं ने तेरे चेलो से कहा था कि वे
उसे निकाल दें परन्तु वह निकाल न सके।
१९ यह सुनकर उस ने उन से उत्तर देके
कहा कि हे अविश्वासी लोगो, * मैं कब
तक तुम्हारे साथ रहूगा? और कब तक
तुम्हारी सहूगा? उसे मेरे पास लाओ।
२० तब वे उसे उसके पास ले आए और
जब उस ने उसे देखा, तो उस आत्मा ने
तुरन्त उसे मरोडा, और वह भूमि पर
गिरा, और मुह से फेन बहाते हुए लोटने
लगा। २१ उस ने उसके पिता से पूछा,
इस की यह दशा कब से है? २२ उस ने
कहा, बचपन से उस ने इसे नाश करने के
लिये कभी आग और कभी पानी में गिराया,

* यू० पीढ़ी।

परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर
तरस खाकर हमारा उपकार कर।
२३ यीशु ने उस से कहा, यदि तू कर
सकता है, यह क्या बात है? विश्वास
करनेवाले के लिए सब कुछ हो सकता है।
२४ बालक के पिता ने तुरन्त गिडगिडाकर
कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हू, मेरे
अविश्वास का उपाय कर। २५ जब यीशु
ने देखा, कि लोग दौडकर भीड लगा रहे है,
तो उस ने अशुद्ध आत्मा को यह कहकर
डाटा, कि हे गूगी और बहिरी आत्मा, मैं
तुझे आज्ञा देता हू, उस मे से निकल आ,
और उस मे फिर कभी प्रवेश न कर।
२६ तब वह चिल्लाकर, और उसे बहुत
मरोड कर, निकल आई, और बालक मरा
हुआ सा हो गया, यहा तक कि बहुत लोग
कहने लगे, कि वह मर गया। २७ परन्तु
यीशु ने उसका हाथ पकड के उसे उठाया,
और वह खडा हो गया। २८ जब वह घर
में आया, तो उसके चेलो ने एकान्त में उस
से पूछा, हम उसे क्यो न निकाल सके?
२९ उस ने उन से कहा, कि यह जाति
बिना प्रार्थना किसी और उपाय से निकल
नही सकती॥

३० फिर वे वहा से चले, और गलील
मे होकर जा रहे थे, और वह नही चाहता
था, कि कोई जाने। ३१ क्योकि वह
अपने चेलो को उपदेश देता और उन से
कहता था, कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यो के
हाथ मे पकडवाया जाएगा, और वे उसे
मार डालेगे, और वह मरने के तीन दिन
बाद जी उठेगा। ३२ पर यह बात उन
की समझ मे नही आई, और वे उस से
पूछने से डरते थे॥

३३ फिर वे कफरनहूम मे आए, और
घर में आकर उस ने उन से पूछा कि रास्ते
मे तुम किस बात पर विवाद करते थे?
३४ वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्हों ने
आपस मे यह वाद-विवाद किया था, कि
हम मे से बडा कौन है? ३५ तब उस ने
बैठकर बारहों को बुलाया, और उन से कहा,
यदि कोई बडा होना चाहे, तो सब मे छोटा
और सब का सेवक बने। ३६ और उस ने
एक बालक को लेकर उन के बीच मे खडा
किया, और उसे गोद में लेकर उन से कहा।
३७ जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालको में
से किसी एक को भी ग्रहण करता है, वह
मुझे ग्रहण करता है, और जो कोई मुझे
ग्रहण करता, वह मुझे नही, वरन मेरे
भेजनेवाले को ग्रहण करता है॥

३८ तब यूहन्ना ने उस से कहा, हे गुरु,
हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं
को निकालते देखा और हम उसे मना करने
लगे, क्योकि वह हमारे पीछे नही हो लेता
था। ३९ यीशु ने कहा, उस को मत मना
करो, क्योकि ऐसा कोई नही जो मेरे नाम
से सामर्थ का काम करे, और जल्दी से मुझे
बुरा कह सके। ४० क्योकि जो हमारे
विरोध मे नही, वह हमारी ओर है।
४१ जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हे इस-
लिये * पिलाए कि तुम मसीह के हो तो मैं
तुम से सच कहता हू कि वह अपना प्रतिफल
किसी रीति से न खोएगा। ४२ पर जो
कोई इन छोटो मे से जो मुझ पर विश्वास
करते है, किसी को ठोकर खिलाए तो उसके
लिये भला यह है कि एक बडी चक्की का
पाट उसके गले मे लटकाया जाए और वह
समुद्र मे डाल दिया जाए। ४३ यदि तेरा
हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल
टुण्डा होकर जीवन मे प्रवेश करना, तेरे

* यू० इस नाम से।

लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए
नरक के बीच उस आग में डाला जाए जो
कभी बुझने की नही। ४५ और यदि तेरा
पाव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल।
४६ लगडा होकर जीवन में प्रवेश करना
तेरे लिये इस से भला है, कि दो पाव रहते
हुए नरक में डाला जाए। ४७ और यदि
तेरी आख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे
निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला
है, कि दो आख रहते हुए तू नरक में डाला
जाए। ४८ जहा उन का कीडा नही मरता
और आग नही बुझती। ४९ क्योंकि हर
एक जन आग से नमकीन किया जाएगा।
५० नमक अच्छा है, पर यदि नमक की
नमकीनी जाती रहे, तो उसे किस से स्वादित
करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस
में मेल मिलाप से रहो॥

१० फिर वह वहा से उठकर यहू-
दिया के सिवानो में और यरदन
के पार आया, और भीड उसके पास फिर
इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के
अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा।
२ तब फरीसियो ने उसके पास आकर
उस की परीक्षा करने को उस से पूछा, क्या
यह उचित है, कि पुरुष अपनी पत्नी को
त्यागे? ३ उस ने उन को उत्तर दिया,
कि मूसा ने तुम्हे क्या आज्ञा दी है?
४ उन्हो ने कहा, मूसा ने त्याग पत्र लिखने
और त्यागने की आज्ञा दी है। ५ यीशु ने
उन से कहा, कि तुम्हारे मन की कठोरता
के कारण उस ने तुम्हारे लिये यह आज्ञा
लिखी। ६ पर सृष्टि के आरम्भ से परमे-
श्वर ने नर और नारी करके उन को बनाया
है। ७ इस कारण मनुष्य अपने माता-
पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के
साथ रहेगा, और वे दोनो एक तन होंगे।
८ इसलिये वे अब दो नही पर एक तन है।
९ इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोडा है उसे
मनुष्य अलग न करे। १० और घर में
चेलो ने इस के विषय में उस से फिर पूछा।
११ उस ने उन से कहा, जो कोई अपनी
पत्नी को त्यागकर दूसरी से व्याह करे तो
वह उस पहिली के विरोध में व्यभिचार
करता है। १२ और यदि पत्नी अपने पति
को छोडकर दूसरे से व्याह करे, तो वह
व्यभिचार करती है॥

१३ फिर लोग बालको को उसके पास
लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे, पर
चेलो ने उनको डाटा। १४ यीशु ने यह
देख क्रुध होकर उन से कहा, बालको को
मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो,
क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसो ही का है।
१५ मैं तुम से सच कहता हू, कि जो कोई
परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं
ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने
न पाएगा। १६ और उस ने उन्हें गोद में
लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें
आशीष दी॥

१७ और जब वह निकलकर मार्ग
में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास
दौडता हुआ आया, और उसके आगे घुटने
टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त
जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या
करू? १८ यीशु ने उस से कहा, तू मुझे
उत्तम क्यो कहता है? कोई उत्तम नही,
केवल एक अर्थात् परमेश्वर। १९ तू
आज्ञाओ को तो जानता है, हत्या न करना,
व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी
गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता
और अपनी माता का आदर करना।

२० उस ने उस से कहा, हे गुरु, इन सब
को मैं लडकपन से मानता आया हूं।
२१ यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से
प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक
बात की घटी है, जा, जो कुछ तेरा है,
उसे बेच कर कगालो को दे, और तुझे स्वर्ग
में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो
ले। २२ इस बात से उसके चिहरे पर
उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ
चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था॥

२३ यीशु ने चारो ओर देखकर अपने
चेलो से कहा, धनवानो को परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!
२४ चेले उस की बातो से अचम्भित हुए,
इस पर यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया,
हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते है,
उन के लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश
करना कैसा कठिन है! २५ परमेश्वर के
राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का
सूई के नाके में से निकल जाना सहज है!
२६ वे बहुत ही चकित होकर आपस मे
कहने लगे तो फिर किस का उद्धार हो
सकता है? २७ यीशु ने उन की ओर
देखकर कहा, मनुष्यो से तो यह नही हो
सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है,
क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता
है। २८ पतरस उस से कहने लगा, कि
देख, हम तो सब कुछ छोडकर तेरे पीछे
हो लिए है। २९ यीशु ने कहा, मैं तुम से
सच कहता हू, कि ऐसा कोई नही, जिस ने
मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयो
या बहिनो या माता या पिता या लडके-बालो
या खेतो को छोड दिया हो। ३० और
अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरो और
भाइयो और बहिनो और माताओ और
लडके-बालों और खेतो को पर उपद्रव के
साथ और परलोक में अनन्त जीवन।
३१ पर बहुतेरे जो पहिले है, पिछले होंगे,
और जो पिछले है, वे पहिले होंगे॥

३२ और वे यरूशलेम को जाते हुए
मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा
रहा था और वे अचम्भा करने लगे और
जो उसके पीछे पीछे चलते थे डरने लगे,
तब वह फिर उन बारहो को लेकर उन से
वे बाते कहने लगा, जो उस पर आनेवाली
थी। ३३ कि देखो, हम यरूशलेम को
जाते है, और मनुष्य का पुत्र महायाजको
और शास्त्रियो के हाथ पकडवाया जाएगा,
और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे,
और अन्य जातियो के हाथ मे सौंपेंगे।
३४ और वे उस को ठट्ठो में उडाएंगे, और
उस पर थूकेंगे, और उसे कोडे मारेंगे, और
उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह
जी उठेगा॥

३५ तब जब्दी के पुत्र याकूब और
यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, हे गुरु,
हम चाहते है, कि जो कुछ हम तुझ से मांगे,
वही तू हमारे लिये करे। ३६ उस ने उन
से कहा, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे
लिये करूं? ३७ उन्हो ने उस से कहा,
कि हमें यह दे, कि तेरी महिमा मे हम मे
से एक तेरे दहिने और दूसरा तेरे बाएं बैठे।
३८ यीशु ने उन से कहा, तुम नही जानते,
कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने
पर हू, क्या पी सकते हो? और जो
बपतिस्मा मैं लेने पर हू, क्या ले सकते हो?
३९ उन्हो ने उस से कहा, हम से हो सकता
है यीशु ने उन से कहा, जो कटोरा मैं
पीने पर हू, तुम पीओगे, और जो बपतिस्मा
मैं लेने पर हू, उसे लोगे। ४० पर जिन के
लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड और
किसी को अपने दहिने और अपने बाएं

बिठाना मेरा काम नही *। ४१ यह सुन-
कर दसो याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने
लगे। ४२ और यीशु ने उन को पास बुला
कर उन से कहा, तुम जानते हो, कि जो अन्य
जातियो के हाकिम समझे जाते है, वे
उन पर प्रभुता करते है, और उन मे जो बडे
है, उन पर अधिकार जताते है। ४३ पर
तुम मे ऐसा नही है, वरन जो कोई तुम मे
बडा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने।
४४ और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे,
वह सब का दास बने। ४५ क्योकि मनुष्य
का पुत्र इसलिये नही आया, कि उस की
सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया,
कि आप सेवा टहल करे, और बहुतो की
छुडौती के लिये अपना प्राण दे॥

४६ और वे यरीहो में आए, और जब
वह और उसके चेले, और एक बडी भीड
यरीहो से निकलती थी, तो तिमाई का पुत्र
बरतिमाई एक अन्धा भिखारी सडक के
किनारे बैठा था। ४७ वह यह सुनकर कि
यीशु नासरी है, पुकार पुकार कर कहने
लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ
पर दया कर। ४८ बहुतो ने उसे डाटा
कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा,
कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया
कर। ४९ तब यीशु ने ठहरकर कहा, उसे
बुलाओ, और लोगो ने उस अन्धे को बुला-
कर उस से कहा, ढाढस बान्ध, उठ, वह
तुझे बुलाता है। ५० वह अपना कपडा
फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास
आया। ५१ इस पर यीशु ने उस से कहा,
तू क्या चाहता है कि मै तेरे लिये करू?
अन्धे ने उस से कहा, हे रब्बी, यह कि मै
देखने लगू। ५२ यीशु ने उस से कहा,
चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चगा कर
दिया है और वह तुरन्त देखने लगा, और
मार्ग मे उसके पीछे हो लिया॥

११ जब वे यरूशलेम के निकट
जैतून पहाड पर बैतफगे और
बैतनिय्याह के पास आए, तो उस ने अपने
चेलो में से दो को यह कहकर भेजा। २ कि
अपने साम्हने के गाव मे जाओ, और उस
मे पहुचते ही एक गदही का बच्चा जिस
पर कभी कोई नही चढा, बन्धा हुआ तुम्हे
मिलेगा, उसे खोल लाओ। ३ यदि तुम से
कोई पूछे, यह क्यो करते हो? तो कहना,
कि प्रभु को इस का प्रयोजन है, और वह
शीघ्र उसे यहा भेज * देगा। ४ उन्हो ने
जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास
चौक में बन्धा हुआ पाया, और खोलने लगे।
५ और उन मे से जो वहा खडे थे, कोई
कोई कहने लगे कि यह क्या करते हो, गदही
के बच्चे को क्यो खोलते हो? ६ उन्हो ने
जैसा यीशु ने कहा था, वैसा ही उन से कह
दिया, तब उन्हो ने उन्हें जाने दिया।
७ और उन्हो ने बच्चे को यीशु के पास
लाकर उस पर अपने कपडे डाले और वह
उस पर बैठ गया। ८ और बहुतो ने अपने
कपडे मार्ग में बिछाए और औरो ने खेतो
मे से डालिया काट काट कर फैला दीं।
९ और जो उसके आगे आगे जाते और
पीछे पीछे चले आते थे, पुकार पुकार कर
कहते जाते थे, कि होशाना, धन्य है वह
जो प्रभु के नाम से आता है। १० हमारे
पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है, धन्य
है आकाश में† होशाना॥

* या पर अपने दहिने बाए किसी को बिठाना मेरा काम नहा पर जिन के लिये तैयार किया गया है उन्हीं के लिये है।

* यू० लौटा देगा।

† यू० ऊंचे से ऊंचे स्थान में।

११ और वह यरूशलेम पहुचकर मन्दिर
में आया, और चारो ओर सब वस्तुओ को
देखकर वारहो के साथ वैतनिय्याह गया
क्योकि साझ हो गई थी ॥

१२ दूसरे दिन जब वे वैतनिय्याह से
निकले तो उस को भूख लगी। १३ और
वह दूर से अजीर का एक हरा पेड देखकर
निकट गया, कि क्या जाने उस मे कुछ पाए:
पर पत्तो को छोड कुछ न पाया, क्योकि
फल का समय न था। १४ इस पर उस ने
उस से कहा अब से कोई तेरा फल कभी
न खाए। और उसके चेले सुन रहे थे ॥

१५ फिर वे यरूशलेम में आए, और
वह मन्दिर मे गया, और वहा जो लेन-देन
कर रहे थे उन्हे वाहर निकालने लगा, और
सर्राफो के पीढे और कबूतर के वेचनेवालो
की चौकिया उलट दी। १६ और मन्दिर में
से होकर किसी को वरतन लेकर आने जाने
न दिया। १७ और उपदेश करके उन से
कहा, क्या यह नही लिखा है, कि मेरा घर
सब जातियो के लिये प्रार्थना का घर कह-
लाएगा? पर तुम ने इसे डाकुओ की खोह
बना दी है। १८ यह सुनकर महायाजक और
शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूढने
लगे, क्योकि उस से डरते थे, इसलिये कि
सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे ॥

१९ और प्रति दिन साझ होते ही वह
नगर से वाहर जाया करता था। २० फिर
भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्हो ने
उस अजीर के पेड को जड तक सूखा हुआ
देखा। २१ पतरस को वह वात स्मरण
आई, और उस ने उस से कहा, हे रब्बी,
देख, यह अजीर का पेड जिसे तू ने स्राप
दिया था सूख गया है। २२ यीशु ने उस
को उत्तर दिया, कि परमेश्वर पर विश्वास
रखो। २३ मैं तुम से सच कहता हू कि
जो कोई इस पहाड से कहे, कि तू उखड
जा, और समुद्र में जा पड, और अपने मन
में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो
कहता हू वह हो जाएगा, तो उसके लिये
वही होगा। २४ इसलिये मैं तुम से कहता
हू, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मागो,
तो प्रतीति कर लो कि तुम्हे मिल गया,
और तुम्हारे लिये हो जाएगा। २५ और
जब कभी तुम खडे हुए प्रार्थना करते हो,
तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से
कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो इसलिये
कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे
अपराध क्षमा करे॥ २६ [और यदि तुम
क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग
मे है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।]

२७ वे फिर यरूशलेम मे आए, और जब
वह मन्दिर मे टहल रहा था तो महायाजक
और शास्त्री और पुरनिए उसके पास आकर
पूछने लगे। २८ कि तू ये काम किस
अधिकार से करता है? और यह अधिकार
तुझे किस ने दिया है कि तू ये काम करे?
२९ यीशु ने उस से कहा: मैं भी तुम से एक
बात पूछता-हू, मुझे उत्तर दो: तो मैं तुम्हे
बताऊगा कि ये काम किस अधिकार से
करता हू। ३० यूहन्ना का बपतिस्मा क्या
स्वर्ग की ओर से था वा मनुष्यो की ओर से
था? मुझे उत्तर दो। ३१ तब वे आपस मे
विवाद करने लगे कि यदि हम कहे, स्वर्ग की
ओर से, तो वह कहेगा, फिर तुम ने उस की
प्रतीति क्यो नही की? ३२ और यदि हम
कहे, मनुष्यो की ओर से तो लोगो का डर
है, क्योकि सब जानते है कि यूहन्ना सचमुच
भविष्यद्वक्ता है। ३३ सो उन्हो ने यीशु को
उत्तर दिया, कि हम नही जानते यीशु ने
उन से कहा, मैं भी तुम को नही बताता,
कि ये काम किस अधिकार से करता हू ॥

१२ फिर वह दृष्टान्त मे उन से
बातें करने लगा कि किसी मनुष्य
ने दाख की बारी लगाई, और उसके चारो
ओर बाडा बान्धा, और रस का कुंड खोदा,
और गुम्मट बनाया, और किसानो को
उसका ठीका देकर परदेश चला गया।
२ फिर फल के मौसम मे उस ने किसानो
के पास एक दास को भेजा कि किसान से
दाख की बारी के फलो का भाग ले।
३ पर उन्हो ने उसे पकडकर पीटा और
छूछे हाथ लौटा दिया। ४ फिर उस ने
एक और दास को उन के पास भेजा और
उन्हो ने उसका सिर फोड डाला और
उसका अपमान किया। ५ फिर उस ने एक
और को भेजा, और उन्हो ने उसे मार
डाला तब उस ने और बहुतो को भेजा
उन मे से उन्हो ने कितनो को पीटा, और
कितनो को मार डाला। ६ अब एक ही
रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था, अन्त
मे उस ने उसे भी उन के पास यह सोचकर
भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ७ पर
उन किसानो ने आपस मे कहा, यही तो
वारिस है, आओ, हम उसे मार डाले, तब
मीरास हमारी हो जाएगी। ८ और उन्हो
ने उसे पकडकर मार डाला, और दाख
की बारी के बाहर फेक दिया। ९ इसलिये
दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा?
वह आकर उन किसानो को नाश करेगा,
और दाख की बारी औरो को दे देगा।
१० क्या तुम ने पवित्र शास्त्र मे यह वचन
नही पढा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियो
ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा
हो गया? ११ यह प्रभु की ओर से हुआ,
और हमारी दृष्टि मे अद्भुत है। १२ तब
उन्हो ने उसे पकडना चाहा, क्योकि समझ
गए थे, कि उस ने हमारे विरोध में यह
दृष्टान्त कहा है पर वे लोगो से डरे,
और उसे छोड कर चले गए॥

१३ तब उन्हो ने उसे बातो में फसाने
के लिये कई एक फरीसियो और हेरोदियो
को उसके पास भेजा। १४ और उन्हो ने
आकर उस से कहा, हे गुरु, हम जानते हैं,
कि तू सच्चा है, और किसी की परवा नही
करता, क्योकि तू मनुष्यो का मुह देख कर
बातें नही करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग
सच्चाई से बताता है। १५ तो क्या कैसर
को कर देना उचित है, कि नही? हम दें,
या न दें? उस ने उन का कपट जानकर
उन से कहा, मुझे क्यो परखते हो?
एक दीनार* मेरे पास लाओ, कि मैं देखूं।
१६ वे ले आए, और उस ने उन से कहा,
यह मूर्ति और नाम किस का है? उन्हो ने
कहा, कैसर का। १७ यीशु ने उन से
कहा, जो कैसर का है वह कैसर को, और
जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो तब
वे उस पर बहुत अचम्भा करने लगे॥

१८ फिर सदूकियो ने भी, जो कहते हैं
कि मरे हुओ का जी उठना है ही नही,
उसके पास आकर उस से पूछा। १९ कि
हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि
यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर
जाए, और उस की पत्नी रह जाए, तो
उसका भाई उस की पत्नी का ब्याह ले
और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे
सात भाई थे। २० पहिला भाई ब्याह
करके बिना सन्तान मर गया। २१ तब
दूसरे भाई ने उस स्त्री को ब्याह लिया और
बिना सन्तान मर गया, और वैसे ही
तीसरे ने भी। २२ और सातो से सन्तान
न हुई सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।

* देखो मत्ती १८ २८।

२३ सो जी उठने पर वह उन मे से किस
की पत्नी होगी? क्योकि वह सातो की
पत्नी हो चुकी थी। २४ यीशु ने उन से
कहा, क्या तुम इस कारण से भूल मे नही
पड़े हो, कि तुम न तो पवित्र शास्त्र ही को
जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ
को। २५ क्योकि जब वे मरे हुओ में से
जी उठेंगे, तो उन मे ब्याह शादी न होगी,
पर स्वर्ग मे दूतो की नाई होगे। २६ मरे
हुओ के जी उठने के विषय मे क्या तुम ने
मूसा की पुस्तक में झाडी की कथा मे नही
पढा, कि परमेश्वर ने उस से कहा, मै
इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का
परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हू?
२७ परमेश्वर मरे हुओ का नही, बरन
जीवतो का परमेश्वर है सो तुम बडी
भूल मे पडे हो॥

२८ और शास्त्रियो मे से एक ने आकर
उन्हे विवाद करते सुना, और यह जानकर
कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर
दिया, उस से पूछा, सब से मुख्य आज्ञा
कौन सी है? २९ यीशु ने उसे उत्तर दिया,
सब आज्ञाओ मे से यह मुख्य है, हे इस्राएल
सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु
है। ३० और तू प्रभु अपने परमेश्वर से
अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से,
और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी
शक्ति से प्रेम रखना। ३१ और दूसरी
यह है, कि तू अपने पडोसी से अपने समान
प्रेम रखना इस से बडी और कोई आज्ञा
नही। ३२ शास्त्री ने उस से कहा, हे
गुरु, बहुत ठीक! तू ने सच कहा, कि वह
एक ही है, और उसे छोड और कोई नही।
३३ और उस से सारे मन और सारी
बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के
साथ प्रेम रखना और पडोसी से अपने
समान प्रेम रखना, सारे होमो और बलि-
दानो से बढकर है। ३४ जब यीशु ने
देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो
उस से कहा, तू परमेश्वर के राज्य से
दूर नही और किसी को फिर उस से
कुछ पूछने का साहस न हुआ॥

३५ फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश
करते हुए यह कहा, कि शास्त्री क्योकर
कहते है, कि मसीह दाऊद का पुत्र है?
३६ दाऊद ने आपही पवित्र आत्मा में
होकर कहा है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा;
मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मै तेरे बैरियो को
तेरे पावो की पीढी न कर दू। ३७ दाऊद
तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह
उसका पुत्र कहा से ठहरा? और भीड के
लोग उस की आनन्द से सुनते थे॥

३८ उस ने अपने उपदेश मे उन से
कहा, शास्त्रियो से चौकस रहो, जो लम्बे
वस्त्र पहिने हुए फिरना। ३९ और
बाजारो मे नमस्कार, और आराधनालयो
मे मुख्य मुख्य आसन और जेवनारो मे मुख्य
मुख्य स्थान भी चाहते है। ४० वे
विधवाओ के घरो को खा जाते है, और
दिखाने के लिये बडी देर तक प्रार्थना करते
रहते है, ये अधिक दण्ड पाएगें॥

४१ और वह मन्दिर के भण्डार के
साम्हने बैठकर देख रहा था, कि लोग
मन्दिर के भण्डार मे किस प्रकार पैसे
डालते है और बहुत धनवानो ने बहुत कुछ
डाला। ४२ इतने में एक कगाल विधवा
ने आकर दो दमडिया, जो एक अधेले के
बराबर होती है, डाली। ४३ तब उस ने
अपने चेलो को पास बुलाकर उन से कहा,
मै तुम से सच कहता हू, कि मन्दिर के
भण्डार मे डालने वालो में से इस कगाल
विधवा ने सब से बढकर डाला है।

४४ क्योंकि सब ने अपने धन की बढ़ती
में से डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी
में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी
सारी जीविका डाल दी है ॥

१३ जब वह मन्दिर से निकल रहा
था, तो उसके चेलों में से एक ने उस
से कहा, हे गुरु, देख, कैसे कैसे पत्थर और
कैसे कैसे भवन है! २ यीशु ने उस से
कहा, क्या तुम ये बड़े बड़े भवन देखते हो
यहां पत्थर पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो
ढाया न जाएगा ॥

३ जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर
के साम्हने बैठा था, तो पतरस और याकूब
और यूहन्ना और अन्द्रियास ने अलग जाकर
उस से पूछा। ४ कि हमें बता कि ये बातें
कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी
होने पर होंगी उस समय का क्या चिन्ह
होगा? ५ यीशु उन से कहने लगा,
चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमाए।
६ बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि
मैं वही हूं और बहुतों को भरमाएंगे।
७ और जब तुम लड़ाइयां, और लड़ाइयों
की चर्चा सुनो, तो न घबराना क्योंकि
इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय
अन्त न होगा। ८ क्योंकि जाति पर जाति,
और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और
हर कहीं भुईंडोल होंगे, और अकाल पड़ेंगे,
यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा ॥

९ परन्तु तुम अपने विषय में चौकस
रहो, क्योंकि लोग तुम्हें महासभाओं में
सौंपेंगे और तुम पंचायतों में पीटे जाओगे,
और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के
आगे खड़े किए जाओगे, ताकि उन के लिये
गवाही हो। १० पर अवश्य है कि पहिले
सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया
जाए। ११ जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे,
तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम क्या
कहेंगे, पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया
जाए, वही कहना, क्योंकि बोलनेवाले
तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है।
१२ और भाई को भाई, और पिता को
पुत्र घात के लिये सौंपेंगे, और लड़केवाले
माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा
डालेंगे। १३ और मेरे नाम के कारण सब
लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक
धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा ॥

१४ सो जब तुम उस उजाड़नेवाली
घृणित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां
खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो
यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएं।
१५ जो कोठे पर हो, वह अपने घर से
कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर
जाए। १६ और जो खेत में हो, वह
अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।
१७ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध
पिलाती होंगी, उन के लिये हाय हाय!
१८ और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े
में न हो। १९ क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश
के होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो
परमेश्वर ने सृजी है अब तक न तो हुए,
और न फिर कभी होंगे। २० और यदि
प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई
प्राणी भी न बचता, परन्तु उन चुने
हुओं के कारण जिन को उस ने चुना
है, उन दिनों को घटाया। २१ उस
समय यदि कोई तुम से कहे, देखो, मसीह
यहां है, या देखो, वहां है, तो प्रतीति न
करना। २२ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे
भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और
अद्भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो
चुने हुओं को भी भरमा दें। २३ पर तुम

चौकस रहो देखो, मैं ने तुम्हे सब बाते
पहिले ही से कह दी हैं ॥
२४ उन दिनो मे, उस क्लेश के बाद
सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चान्द प्रकाश
न देगा। २५ और आकाश से तारागण
गिरने लगेगे और आकाश की शक्तिया
हिलाई जाएगी। २६ तब लोग मनुष्य के
पुत्र को बडी सामर्थ और महिमा के साथ
बादलो मे आते देखेगे। २७ उस समय वह
अपने दूतो को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से
आकाश की उस छोर तक चारो दिशा से
अपने चुने हुए लोगो को इकट्ठे करेगा ॥
२८ अंजीर के पेड से यह दृष्टान्त
सीखो जब उस की डाली कोमल हो
जाती, और पत्ते निकलने लगते है, तो
तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है।
२९ इसी रीति से जब तुम इन बातो को
होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है,
बरन द्वार ही पर है। ३० मै तुम से सच
कहता हू, कि जब तक ये सब बाते न हो
लेंगी, तब तक यह लोग* जाते न रहेगे।
३१ आकाश और पृथ्वी टल जाएगे, परन्तु
मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३२ उस दिन
या उस घडी के विषय मे कोई नही जानता,
न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल
पिता। ३३ देखो, जागते और प्रार्थना
करते रहो, क्योकि तुम नही जानते कि
वह समय कब आएगा। ३४ यह उस
मनुष्य की सी दशा है, जो परदेश जाते
समय अपना घर छोड जाए, और अपने
दासो को अधिकार दे और हर एक को
उसका काम जता दे, और द्वारपाल को
जागते रहने की आज्ञा दे। ३५ इसलिये
जागते रहो, क्योकि तुम नही जानते कि
घर का स्वामी कब आएगा, सांझ को या
आधी रात को, या मुर्ग के बाग देने के
समय या भोर को। ३६ ऐसा न हो कि
वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए।
३७ और जो मै तुम से कहता हू, वही
सब से कहता हू, जागते रहो ॥

१४ दो दिन के बाद फसह और
अखमीरी रोटी का पर्ब्ब होनेवाला
था और महायाजक और शास्त्री इस बात
की खोज मे थे कि उसे क्योकर छल से
पकड कर मार डाले। २ परन्तु कहते थे,
कि पर्ब्ब के दिन नही, कहीं ऐसा न हो कि
लोगो में बलवा मचे ॥
३ जब वह बैतनिय्याह मे शमौन कोढी
के घर भोजन करने बैठा हुआ था तब एक
स्त्री संगमरमर के पात्र मे जटामासी का
बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई, और पात्र
तोड कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला।
४ परन्तु कोई कोई अपने मन मे रिसिया-
कर कहने लगे, इस इत्र को क्यो सत्यानाश
किया गया? ५ क्योकि यह इत्र तो तीन
सौ दीनार* से अधिक मूल्य मे बेचकर
कंगालो को बाटा जा सकता था, और वे
उस को झिडकने लगे। ६ यीशु ने कहा,
उसे छोड दो, उसे क्यो सताते हो? उस
ने तो मेरे साथ भलाई की है। ७ कंगाल
तुम्हारे साथ सदा रहते है और तुम जब
चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो,
पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूंगा। ८ जो
कुछ वह कर सकी, उस ने किया, उस ने
मेरे गाडे जाने की तैयारी मे पहिले से मेरी
देह पर इत्र मला है। ९ मै तुम से सच
कहता हू, कि सारे जगत मे जहा कही
सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहा उसके

* यू० यह पीढ़ी जाती न रहेगी।

* देखो मत्ती १८ २८।

इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की
जाएगी ॥
१० तब यहूदा इसकरियोती जो बारह
में से एक था, महायाजकों के पास गया, कि
उसे उन के हाथ पकड़वा दे। ११ वे यह
सुनकर आनन्दित हुए, और उस को रुपये
देना स्वीकार किया, और यह अवसर ढूंढने
लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे ॥
१२ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले
दिन, जिस में वे फसह का बलिदान करते
थे, उसके चेलों ने उस से पूछा, तू कहां
चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिये फसह
खाने की तैयारी करें? १३ उस ने अपने
चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, कि
नगर में जाओ, और एक मनुष्य जल का
घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे
हो लेना। १४ और वह जिस घर में जाए,
उस घर के स्वामी से कहना, गुरु कहता
है, कि मेरी पाहुनशाला जिस में मैं अपने
चेलों के साथ फसह खाऊं कहां है?
१५ वह तुम्हें एक सजी सजाई, और तैयार
की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा, वहां हमारे
लिये तैयारी करो। १६ सो चेले निकल-
कर नगर में आये और जैसा उस ने उन से
कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार
किया ॥
१७ जब सांझ हुई, तो वह बारहों के
साथ आया। १८ और जब वे बैठे भोजन
कर रहे थे, तो यीशु ने कहा, मैं तुम से
सच कहता हूं, कि तुम में से एक, जो मेरे
साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।
१९ उन पर उदासी छा गई और वे एक
एक करके उस से कहने लगे, क्या वह मैं
हूं? २० उस ने उन से कहा, वह बारहों
में से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ
डालता है। २१ क्योंकि मनुष्य का पुत्र
तो, जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता
ही है, परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिस के
द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है।
यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो
उसके लिये भला होता ॥
२२ और जब वे खा ही रहे थे तो
उस ने रोटी ली, और आशीष मांगकर
तोड़ी, और उन्हें दी, और कहा, लो, यह
मेरी देह है। २३ फिर उस ने कटोरा
लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया,
और उन सब ने उस में से पीया। २४ और
उस ने उन से कहा, यह वाचा का मेरा वह
लोहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता
है। २५ मैं तुम से सच कहता हूं, कि दाख
का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊंगा,
जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न
पीऊं ॥
२६ फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून
के पहाड़ पर गए ॥
२७ तब यीशु ने उन से कहा, तुम सब
ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है, कि मैं
रखवाले को मारूंगा, और भेड़ें तित्तर-
बित्तर हो जाएंगी। २८ परन्तु मैं अपने
जी उठने के बाद तुम से पहिले गलील को
जाऊंगा। २९ पतरस ने उस से कहा,
यदि सब ठोकर खाएं तो खाएं, पर मैं ठोकर
नहीं खाऊंगा। ३० यीशु ने उस से कहा,
मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही इसी
रात को मुर्गे के दो बार बांग देने से पहिले,
तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।
३१ पर उस ने और भी जोर देकर कहा,
यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तौभी
तेरा इन्कार कभी न करूंगा इसी प्रकार
और सब ने भी कहा ॥
३२ फिर वे गतसमने नाम एक जगह में
आए, और उस ने अपने चेलों से कहा,

यहा बैठे रहो, जब तक मै प्रार्थना करू।
३३ और वह पतरस और याकूब और
यूहन्ना को अपने साथ ले गया और बहुत
ही अधीर, और व्याकुल होने लगा।
३४ और उन से कहा, मेरा मन बहुत
उदास है, यहा तक कि मै मरने पर हू
तुम यहा ठहरो, और जागते रहो।
३५ और वह थोडा आगे बढा, और भूमि
पर गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि यदि
हो सके तो यह घडी मुझ पर से टल जाए।
३६ और कहा, हे अब्बा, हे पिता, तुझ से
सब कुछ हो सकता है, इस कटोरे को मेरे
पास से हटा ले तौभी जैसा मै चाहता हू
वैसा नही, पर जो तू चाहता है वही हो।
३७ फिर वह आया, और उन्हे सोते पाकर
पतरस से कहा, हे शमौन तू सो रहा है?
क्या तू एक घडी भी न जाग सका?
३८ जागते और प्रार्थना करते रहो कि
तुम परीक्षा मे न पडो आत्मा तो तैयार
है, पर शरीर दुर्बल है। ३९ और वह फिर
चला गया, और वही बात कहकर प्रार्थना
की। ४० और फिर आकर उन्हे सोते
पाया, क्योकि उन की आखे नीद से भरी
थी, और नही जानते थे कि उसे क्या
उत्तर दे। ४१ फिर तीसरी बार आकर
उन से कहा, अब सोते रहो और विश्राम
करो, बस, घडी आ पहुची, देखो मनुष्य का
पुत्र पापियो के हाथ पकडवाया जाता है।
४२ उठो, चले देखो, मेरा पकडवानेवाला
निकट आ पहुचा है॥

४३ वह यह कह ही रहा था, कि
यहूदा जो बारहो मे से था, अपने साथ
महायाजको और शास्त्रियो और पुरनियो
की ओर से एक बडी भीड तलवारे और
लाठिया लिए हुए तुरन्त आ पहुची।
४४ और उसके पकडवानेवाले ने उन्हे
यह पता दिया था, कि जिस को मै चूमू
वही है, उसे पकडकर यतन से ले जाना।
४५ और वह आया, और तुरन्त उसके
पास जाकर कहा, हे रब्बी और उस को
बहुत चूमा। ४६ तब उन्हो ने उस पर
हाथ डालकर उसे पकड लिया। ४७ उन
मे से जो पास खडे थे, एक ने तलवार खीच
कर महायाजक के दास पर चलाई, और
उसका कान उडा दिया। ४८ यीशु ने
उन से कहा, क्या तुम डाकू जानकर मेरे
पकडने के लिये तलवारे और लाठिया
लेकर निकले हो? ४९ मै तो हर दिन
मन्दिर मे तुम्हारे साथ रहकर उपदेश दिया
करता था, और तब तुम ने मुझे न पकडा
परन्तु यह इसलिये हुआ है कि पवित्र
शास्त्र की बाते पूरी हो। ५० इस पर सब
चेले उसे छोडकर भाग गए॥

५१ और एक जवान अपनी नगी देह
पर चादर ओढे हुए उसके पीछे हो लिया,
और लोगो ने उसे पकडा। ५२ पर वह
चादर छोडकर नगा भाग गया॥

५३ फिर वे यीशु को महायाजक के
पास ले गए, और सब महायाजक और
पुरनिए और शास्त्री उसके यहा इकट्ठे हो
गए। ५४ पतरस दूर ही दूर से उसके
पीछे पीछे महायाजक के आगन के भीतर
तक गया, और प्यादो के साथ बैठ कर आग
तापने लगा। ५५ महायाजक और सारी
महासभा यीशु के मार डालने के लिये
उसके विरोध मे गवाही की खोज मे थे,
पर न मिली। ५६ क्योकि बहुतेरे उसके
विरोध मे झूठी गवाही दे रहे थे, पर उन की
गवाही एक सी न थी। ५७ तब कितनो
ने उठकर उस पर यह झूठी गवाही दी।
५८ कि हम ने इसे यह कहते सुना है कि
मै इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को

ढा दूगा, और तीन दिन मे दूसरा बनाऊंगा,
जो हाथ से न बना हो। ५६ इस पर भी
उन की गवाही एक सी न निकली।
६० तब महायाजक ने बीच मे खडे होकर
यीशु से पूछा, कि तू कोई उत्तर नही देता?
ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते
है? ६१ परन्तु वह मौन साधे रहा, और
कुछ उत्तर न दिया महायाजक ने उस से
फिर पूछा, क्या तू उस परम धन्य का पुत्र
मसीह है? ६२ यीशु ने कहा, हा मै
हू और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व-
शक्तिमान * की दहिनी ओर बैठे, और
आकाश के बादलो के साथ आते देखोगे।
६३ तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाडकर
कहा, अब हम गवाहो का और क्या प्रयो-
जन है? ६४ तुम ने यह निन्दा सुनी
तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने कहा,
वह वध के योग्य है। ६५ तब कोई तो
उस पर थूकने, और कोई उसका मुह
ढापने और उसे घूसे मारने, और उस से
कहने लगे, कि भविष्यद्वाणी कर और
प्यादो ने उसे लेकर थप्पड मारे॥

६६ जब पतरस नीचे आगन मे था,
तो महायाजक की लौंडियो मे से एक वहा
आई। ६७ और पतरस को आग तापते
देखकर उस पर टकटकी लगाकर देखा
और कहने लगी, तू भी तो उस नासरी
यीशु के साथ था। ६८ वह मुकर गया,
और कहा, कि मै तो नही जानता और
नही समझता कि तू क्या कह रही है
फिर वह बाहर डेवढी में गया, और मुर्गे
ने बाग दी। ६९ वह लौडी उसे देखकर
उन से जो पास खडे थे, फिर कहने लगी,
यह उन मे से एक है। ७० परन्तु वह फिर

* यू० सामर्थ।

मुकर गया और थोडी देर बाद उन्हो ने
जो पास खडे थे फिर पतरस से कहा,
निश्चय तू उन मे से एक है, क्योकि तू
गलीली भी है। ७१ तब वह धिक्कार देने
और शपथ खाने लगा, कि मै उस मनुष्य
को, जिस की तुम चर्चा करते हो, नही
जानता। ७२ तब तुरन्त दूसरी बार मुर्गे
ने बाग दी पतरस को वह बात जो यीशु ने
उस से कही थी स्मरण आई, कि मुर्गे के
दो बार बाग देने से पहिले तू तीन बार
मेरा इन्कार करेगा वह इस बात को
सोचकर रोने लगा॥

१५ और भोर होते ही तुरन्त महा-
याजको, पुरनियो, और शास्त्रियो
ने बरन सारी महासभा ने सलाह करके
यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर
पीलातुस के हाथ सौंप दिया। २ और
पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियो
का राजा है? उस ने उस को उत्तर दिया,
कि तू आप ही कह रहा है। ३ और महा-
याजक उस पर बहुत बातो का दोष लगा
रहे थे। ४ पीलातुस ने उस से फिर पूछा,
क्या तू कुछ उत्तर नही देता, देख ये तुझ
पर कितनी बातो का दोष लगाते है?
५ यीशु ने फिर कुछ उत्तर नही दिया,
यहा तक कि पीलातुस को बडा आश्चर्य
हुआ॥

६ और वह उस पर्ब्ब मे किसी एक
बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, उन के लिये
छोड दिया करता था। ७ और बरअब्बा
नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयो के साथ
बन्धुआ था, जिन्हो ने बलवे में हत्या की
थी। ८ और भीड ऊपर जाकर उस से
बिनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये
करता आया है वैसा ही कर। ९ पीलातुस

ने उन को यह उत्तर दिया, क्या तुम चाहते
हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा
को छोड दू? १० क्योंकि वह जानता था,
कि महायाजकों ने उसे डाह से पकडवाया
था। ११ परन्तु महायाजकों ने लोगों को
उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उन के लिये
छोड दे। १२ यह सुन पीलातुस ने उन से
फिर पूछा, तो जिसे तुम यहूदियों का राजा
कहते हो, उस को मैं क्या करूं? वे फिर
चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे।
१३ पीलातुस ने उन से कहा, क्यों, इस ने
क्या बुराई की है? १४ परन्तु वे और भी
चिल्लाए, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे।
१५ तब पीलातुस ने भीड को प्रसन्न करने
की इच्छा से, बरअब्बा को उन के लिये छोड
दिया, और यीशु को कोडे लगवाकर सौंप
दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए। १६ और
सिपाही उसे किले के भीतर के आंगन में
ले गए जो प्रीटोरियुन कहलाता है, और
सारी पलटन को बुला लाए। १७ और
उन्हों ने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और
कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर
रखा। १८ और यह कहकर उसे नमस्कार
करने लगे, कि हे यहूदियों के राजा,
नमस्कार! १९ और वे उसके सिर पर
सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और
घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे।
२० और जब वे उसका ठट्ठा कर चुके,
तो उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसी
के कपडे पहिनाए, और तब उसे क्रूस पर
चढ़ाने के लिये बाहर ले गए॥

२१ और सिकन्दर और रूफुस का
पिता, शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य, जो
गांव से आ रहा था उधर से निकला,
उन्हों ने उसे बेगार में पकड़ा, कि उसका
क्रूस उठा ले चले। २२ और वे उसे
गुलगुता नाम जगह पर जिस का अर्थ खोपड़ी
की जगह है लाए। २३ और उसे मुर्र
मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उस ने
नहीं लिया। २४ तब उन्हों ने उस को
क्रूस पर चढ़ाया, और उसके कपडों पर
चिट्ठियां डालकर, कि किस को क्या मिले,
उन्हें बांट लिया। २५ और पहर दिन
चढ़ा था, जब उन्हों ने उस को क्रूस पर
चढ़ाया। २६ और उसका दोषपत्र लिख-
कर उसके ऊपर लगा दिया गया कि
"**यहूदियों का राजा**"। २७ और
उन्हों ने उसके साथ दो डाकू, एक उस की
दहिनी और एक उस की बाईं ओर क्रूस
पर चढ़ाए। २८ [तब धर्मशास्त्र का वह
वचन कि वह अपराधियों के संग गिना
गया, पूरा हुआ।] २९ और मार्ग में
जानेवाले सिर हिला हिलाकर और यह
कहकर उस की निन्दा करते थे, कि वाह!
मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में
बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने
आप को बचा ले। ३० इसी रीति से महा-
याजक भी, शास्त्रियों समेत, ३१ आपस में
ठट्ठे से कहते थे, कि इस ने औरों को
बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता।
३२ इस्राएल का राजा मसीह अब क्रूस
पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास
करें और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए
गए थे, वे भी उस की निन्दा करते थे॥

३३ और दोपहर होने पर, सारे देश में
अन्धियारा छा गया, और तीसरे पहर तक
रहा। ३४ तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से
पुकार कर कहा, इलोई, इलोई, लमा
शबक्तनी? जिस का अर्थ यह है, हे मेरे
परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों
छोड दिया? ३५ जो पास खडे थे, उन
में से कितनों ने यह सुनकर कहा देखो

यह एलिय्याह को पुकारता है। ३६ और
एक ने दौड़कर इस्पंज को सिरके में डुबोया,
और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया,
और कहा, ठहर जाओ, देखें, कि एलिय्याह
उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं।
३७ तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर
प्राण छोड़ दिये। ३८ और मन्दिर का
पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े
हो गया। ३९ जो सूबेदार उसके साम्हने
खड़ा था, जब उसे यूं चिल्लाकर प्राण
छोड़ते हुए देखा, तो उस ने कहा, सचमुच
यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था।
४० कई स्त्रियां भी दूर से देख रही थीं
उन में मरियम मगदलीनी और छोटे याकूब
की और योसेस की माता मरियम और
शलोमी थीं। ४१ जब वह गलील में था,
तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उस
की सेवाटहल किया करती थीं, और
और भी बहुत सी स्त्रियां थीं, जो उसके
साथ यरूशलेम में आई थीं॥

४२ जब सन्ध्या हो गई, तो इसलिये
कि तैयारी का दिन था, जो सब्त * के एक
दिन पहिले होता है। ४३ अरिमतिया का
रहनेवाला यूसुफ आया, जो प्रतिष्ठित मंत्री
और आप भी परमेश्वर के राज्य की बाट
जोहता था, वह हियाव करके पीलातुस के
पास गया और यीशु की लोथ मांगी।
४४ पीलातुस ने आश्चर्य किया, कि वह
इतना शीघ्र मर गया, और सूबेदार को
बुलाकर पूछा, कि क्या उस को मरे हुए
देर हुई? ४५ सो जब सूबेदार के द्वारा
हाल जान लिया, तो लोथ यूसुफ को दिला
दी। ४६ तब उस ने एक पतली चादर
मोल ली, और लोथ को उतारकर उस
चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो
चट्टान में खोदी गई थी रखा, और कब्र के
द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया।
४७ और मरियम मगदलीनी और योसेस
की माता मरियम देख रही थीं, कि वह कहां
रखा गया है॥

१६ जब सब्त का दिन बीत गया,
तो मरियम मगदलीनी और याकूब
की माता मरियम और शलोमी ने सुगन्धित
वस्तुएं मोल लीं, कि आकर उस पर मलें।
२ और सप्ताह के पहिले दिन बड़ी भोर,
जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर
आईं। ३ और आपस में कहती थीं,
कि हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर
कौन लुढ़काएगा? ४ जब उन्हों ने आंख
उठाई, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है!
क्योंकि वह बहुत ही बड़ा था। ५ और
कब्र के भीतर जाकर, उन्हों ने एक जवान
को श्वेत वस्त्र पहिने हुए दहिनी ओर बैठे
देखा, और बहुत चकित हुईं। ६ उस ने
उन से कहा, चकित मत हो, तुम यीशु
नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था,
ढूंढ़ती हो वह जी उठा है, यहां नहीं है,
देखो, यही वह स्थान है, जहां उन्हों ने उसे
रखा था। ७ परन्तु तुम जाओ, और
उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह
तुम से पहिले गलील को जाएगा, जैसा
उस ने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे
देखोगे। ८ और वे निकलकर कब्र से
भाग गईं, क्योंकि कपकपी और घबराहट
उन पर छा गई थी और उन्हों ने किसी से
कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं॥

९ सप्ताह के पहिले दिन भोर होते ही
वह जी उठ कर पहिले पहिल मरियम
मगदलीनी को जिस में से उस ने सात

* सब्त—यहूदियों का विश्रामदिन कह-
लाता है।

दुष्टात्माए निकाली थी, दिखाई दिया।
१० उस ने जाकर उसके साथियों को जो
शोक मे डूबे हुए थे और रो रहे थे,
समाचार दिया। ११ और उन्हो ने यह
सुनकर कि वह जीवित है, और उस ने
उसे देखा है, प्रतीति न की॥

१२ इस के बाद वह दूसरे रूप मे
उन मे से दो को जब वे गाव की ओर
जा रहे थे, दिखाई दिया। १३ उन्हो
ने भी जाकर औरो को समाचार दिया,
परन्तु उन्हो ने उन की भी प्रतीति न
की॥

१४ पीछे वह उन ग्यारहो को भी, जब
वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और
उन के अविश्वास और मन की कठोरता
पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्हो ने उसके
जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्हो ने
उन की प्रतीति न की थी। १५ और
उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत मे
जाकर सारी सृष्टि के लोगो को सुसमाचार
प्रचार करो। १६ जो विश्वास करे और
बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु
जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया
जाएगा। १७ और विश्वास करनेवालो में
ये चिन्ह होगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओ
को निकालेंगे। १८ नई नई भाषा बोलेंगे,
सापो को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक
वस्तु भी पी जाए तौभी उन की कुछ हानि
न होगी, वे बीमारो पर हाथ रखेंगे, और वे
चगे हो जाएगे॥

१९ निदान प्रभु यीशु उन से बाते करने
के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और
परमेश्वर की दहिनी ओर बैठ गया।
२० और उन्हो ने निकलकर हर जगह
प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम
करता रहा, और उन चिन्हो के द्वारा जो
साथ साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता
रहा। आमीन॥

लूका रचित सुसमाचार

१ इसलिये कि बहुतो ने उन बातो
का जो हमारे बीच मे बीती है इतिहास
लिखने में हाथ लगाया है। २ जैसा कि
उन्हो ने जो पहिले ही से इन बातो के
देखनेवाले और वचन के सेवक थे हम तक
पहुचाया। ३ इसलिये हे श्रीमान् थियु-
फिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ
कि उन सब बातो का सम्पूर्ण हाल आरम्भ
से ठीक ठीक जाच करके उन्हे तेरे लिये
क्रमानुसार लिखू। ४ कि तू यह जान ले,
कि वे बाते जिनकी तू ने शिक्षा पाई है,
कैसी अटल है॥

५ यहूदियो के राजा हेरोदेस के समय
अबिय्याह के दल * मे जकरयाह नाम का
एक याजक था, और उस की पत्नी हारून
के वश की थी, जिस का नाम इलीशिबा
था। ६ और वे दोनो परमेश्वर के साम्हने
धर्मी थे और प्रभु की सारी आज्ञाओ
और विधियो पर निर्दोष चलनेवाले थे।

* इतिहास २३ ६–२३ को देखो।

उन के कोई भी सन्तान न थी, ७ क्योंकि
इलीशिबा बांझ थी, और वे दोनों बूढ़े
थे॥

८ जब वह अपने दलकी पारी पर
परमेश्वर के साम्हने याजक का काम करता
था। ९ तो याजकों की रीति के अनुसार
उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के
मन्दिर में जाकर धूप जलाए। १० और
धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली
बाहर प्रार्थना कर रही थी। ११ कि प्रभु
का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दहिनी
ओर खड़ा हुआ उस को दिखाई दिया।
१२ और जकरयाह देखकर घबराया और
उस पर बड़ा भय छा गया। १३ परन्तु
स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकरयाह, भय-
भीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई
है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिये
एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम
यूहन्ना रखना। १४ और तुझे आनन्द
और हर्ष होगा और बहुत लोग उसके
जन्म के कारण आनन्दित होंगे।
१५ क्योंकि वह प्रभु के साम्हने महान
होगा, और दाखरस और मदिरा कभी न
पिएगा, और अपनी माता के गर्भ ही से
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा।
१६ और इस्राएलियों में से बहुतेरों को
उन के प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा।
१७ वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ
में हो कर उसके आगे आगे चलेगा, कि
पितरों का मन लड़केवालों की ओर फेर
दे, और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों
की समझ पर लाए, और प्रभु के लिये
एक योग्य प्रजा तैयार करे। १८ जकरयाह
ने स्वर्गदूत से पूछा, यह मैं कैसे जानूं?
क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूं, और मेरी पत्नी भी
बूढ़ी हो गई है। १९ स्वर्गदूत ने उस को
उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर
के साम्हने खड़ा रहता हूं, और मैं तुझ से
बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने
को भेजा गया हूं। २० और देख जिस
दिन तक ये बातें पूरी न हो लें, उस दिन
तक तू मौन रहेगा, और बोल न सकेगा,
इसलिये कि तू ने मेरी बातों की जो अपने
समय पर पूरी होंगी, प्रतीति न की।
२१ और लोग जकरयाह की बाट देखते
रहे और अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर
में ऐसी देर क्यों लगी? २२ जब वह
बाहर आया, तो उन से बोल न सका सो
वे जान गए, कि उस ने मन्दिर में कोई
दर्शन पाया है, और वह उन से संकेत करता
रहा, और गूंगा रह गया। २३ जब उस
की सेवा के दिन पूरे हुए, तो वह अपने घर
चला गया॥

२४ इन दिनों के बाद उस की पत्नी
इलीशिबा गर्भवती हुई, और पांच महीने
तक अपने आप को यह कह के छिपाए
रखा। २५ कि मनुष्यों में मेरा अपमान
दूर करने के लिये प्रभु ने इन दिनों में
कृपादृष्टि करके मेरे लिये ऐसा किया है॥

२६ छठवें महीने में परमेश्वर की ओर
से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत
नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया।
२७ जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के
घराने के एक पुरुष से हुई थी उस कुंवारी
का नाम मरियम था। २८ और स्वर्गदूत
ने उसके पास भीतर आकर कहा, आनन्द
और जय* तेरी हो, जिस पर ईश्वर का
अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। २९ वह
उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने
लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन

---

* अर्थात् सलाम तुझ को।

है? ३० स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे
मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर
का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। ३१ और
देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र
उत्पन्न होगा, तू उसका नाम यीशु रखना।
३२ वह महान होगा, और परमप्रधान
का पुत्र कहलाएगा, और प्रभु परमेश्वर
उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को
देगा। ३३ और वह याकूब के घराने पर
सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का
अन्त न होगा। ३४ मरियम ने स्वर्गदूत
से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष
को जानती ही नही। ३५ स्वर्गदूत ने
उस को उत्तर दिया, कि पवित्र आत्मा
तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की
सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह
पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर
का पुत्र कहलाएगा। ३६ और देख, और
तेरी कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी बुढ़ापे मे
पुत्र होनेवाला है, यह उसका, जो
बाझ कहलाती थी छठवा महीना है।
३७ क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर
से होता है वह प्रभावरहित नही होता।
३८ मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की
दासी हू, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो
तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया॥
३९ उन दिनो मे मरियम उठकर शीघ्र
ही पहाडी देश मे यहूदा के एक नगर को
गई। ४० और जकरयाह के घर मे
जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया।
४१ ज्योंही इलीशिबा ने मरियम का
नमस्कार सुना, त्योंही बच्चा उसके पेट
में उछला, और इलीशिबा पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण हो गई। ४२ और उस ने बडे
शब्द से पुकार कर कहा, तू स्त्रियो मे धन्य
है, और तेरे पेट का फल धन्य है। ४३ और
यह अनुग्रह मुझे कहा से हुआ, कि मेरे प्रभु
की माता मेरे पास आई? ४४ और देख,
ज्योंही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानो में
पडा, त्योंही बच्चा मेरे पेट मे आनन्द से
उछल पडा। ४५ और धन्य है, वह जिस
ने विश्वास किया कि जो बाते प्रभु की
ओर से उस से कही गई, वे पूरी होगी।
४६ तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु
की बडाई करता है। ४७ और मेरी आत्मा
मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित
हुई। ४८ क्योंकि उस ने अपनी दासी की
दीनता पर दृष्टि की है, इसलिये देखो,
अब से सब युग युग के लोग मुझे धन्य
कहेंगे। ४९ क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे
लिये बडे बडे काम किए है, और उसका
नाम पवित्र है। ५० और उस की दया
उन पर, जो उस से डरते है, पीढी से पीढी
तक बनी रहती है। ५१ उस ने अपना
भुजबल दिखाया, और जो अपने आप को
बडा समझते थे, उन्हे तित्तर-बित्तर किया।
५२ उस ने बलवानो को सिंहासनो से
गिरा दिया, और दीनो को ऊचा किया।
५३ उस ने भूखो को अच्छी वस्तुओ से
तृप्त किया, और धनवानो को छूछे हाथ
निकाल दिया। ५४ उस ने अपने सेवक
इस्राएल को सम्भाल लिया। ५५ कि
अपनी उस दया को स्मरण करे, जो इब्राहीम
और उसके वंश पर सदा रहेगी, जैसा
उस ने हमारे बाप-दादो से कहा था।
५६ मरियम लगभग तीन महीने उसके
साथ रहकर अपने घर लौट गई॥
५७ तब इलीशिबा के जनने का समय
पूरा हुआ, और वह पुत्र जनी। ५८ उसके
पडोसियो और कुटुम्बियो ने यह सुन कर,
कि प्रभु ने उस पर बडी दया की है, उसके
साथ आनन्दित हुए। ५९ और ऐसा हुआ

कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने
आए और उसका नाम उसके पिता के
नाम पर जकरयाह रखने लगे। ६० और
उस की माता ने उत्तर दिया कि नहीं,
वरन उसका नाम यूहन्ना रखा जाए।
६१ और उन्हों ने उस से कहा, तेरे कुटुम्ब
में किसी का यह नाम नहीं। ६२ तब
उन्हों ने उसके पिता से संकेत करके पूछा।
६३ कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता
है? और उस ने लिखने की पट्टी मंगाकर
लिख दिया, कि उसका नाम यूहन्ना है: और
सभों ने अचम्भा किया। ६४ तब उसका
मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई; और वह
बोलने और परमेश्वर का धन्यवाद करने
लगा। ६५ और उसके आस पास के सब
रहनेवालों पर भय छा गया; और उन
सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी
देश में फैल गई। ६६ और सब सुननेवालों
ने अपने अपने मन में विचार करके कहा,
यह बालक कैसा होगा क्योंकि प्रभु का हाथ
उसके साथ था॥

६७ और उसका पिता जकरयाह
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और
भविष्यद्वाणी करने लगा। ६८ कि प्रभु
इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, कि उस ने
अपने लोगों पर दृष्टि की और उन का
छुटकारा किया है। ६९ और अपने सेवक
दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का
सींग निकाला। ७० [जैसे उस ने अपने
पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा जो जगत के
आदि से होते आए हैं, कहा था]।
७१ अर्थात् हमारे शत्रुओं से, और हमारे
सब बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया
है। ७२ कि हमारे बाप दादों पर दया
करके अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे।
७३ और वह शपथ जो उस ने हमारे पिता
इब्राहीम से खाई थी। ७४ कि वह हमें
यह देगा, कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से
छुटकर। ७५ उसके साम्हने पवित्रता और
धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर
उस की सेवा करते रहें। ७६ और
तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता
कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार
करने के लिये उसके आगे आगे चलेगा,
७७ कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान
दे, जो उन के पापों की क्षमा से प्राप्त होता
है। ७८ यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी
करुणा से होगा; जिस के कारण ऊपर से
हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा।
७९ कि अन्धकार और मृत्यु की छाया
में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे
पांवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए॥

८० और वह बालक बढ़ता और आत्मा
में बलवन्त होता गया, और इस्राएल
पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में
रहा॥

२ उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की
ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत
के लोगों के नाम लिखे जाएं। २ यह
पहिली नाम लिखाई उस समय हुई, जब
क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था।
३ और सब लोग नाम लिखवाने के लिये
अपने अपने नगर को गए। ४ सो यूसुफ
भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और
वंश का था, गलील के नासरत नगर से
यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को
गया। ५ कि अपनी मंगेतर मरियम के
साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए।
६ उन के वहां रहते हुए उसके जनने के
दिन पूरे हुए। ७ और वह अपना पहिलौठा
पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी

में रखा, क्योकि उन के लिये सराय मे
जगह न थी ॥
८ और उस देश मे कितने गडेरिये थे,
जो रात को मैदान मे रहकर अपने झुण्ड का
पहरा देते थे। ९ और प्रभु का एक दूत
उन के पास आ खडा हुआ, और प्रभु का
तेज उन के चारो ओर चमका, और वे बहुत
डर गए। १० तब स्वर्गदूत ने उन से कहा,
मत डरो, क्योंकि देखो मैं तुम्हे बडे आनन्द
का सुसमाचार सुनाता हू जो सब लोगों के
लिये होगा। ११ कि आज दाऊद के नगर
मे तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है,
और यही मसीह प्रभु है। १२ और इस का
तुम्हारे लिये यह पता है, कि तुम एक बालक
को कपडे मे लिपटा हुआ और चरनी में
पडा पाओगे। १३ तब एकाएक उस स्वर्ग-
दूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की
स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई
दिया। १४ कि आकाश* मे परमेश्वर
की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यो मे
जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो ॥
१५ जब स्वर्गदूत उन के पास से स्वर्ग
को चले गए, तो गडेरियो ने आपस मे कहा,
आओ, हम बैतलहम जाकर यह बात जो
हुई है, और जिसे प्रभु ने हमे बताया है,
देखे। १६ और उन्हो ने तुरन्त जाकर
मरियम और यूसुफ को और चरनी मे उस
बालक को पडा देखा। १७ इन्हे देखकर
उन्हो ने वह बात जो इस बालक के विषय
मे उन से कही गई थी, प्रगट की।
१८ और सब सुननेवालो ने उन बातो से
जो गडेरियों ने उन से कही आश्चर्य किया।
१९ परन्तु मरियम ये सब बाते अपने मन
मे रखकर सोचती रही। २० और गडेरिये
जैसा उन से कहा गया था, वैसा ही सब
सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा
और स्तुति करते हुए लौट गए ॥
२१ जब आठ दिन पूरे हुए और उसके
खतने का समय आया, तो उसका नाम
यीशु रखा गया, जो स्वर्गदूत ने उसके पेट
मे आने से पहिले कहा था ॥
२२ और जब मूसा की व्यवस्था के
अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए,
तो वे उसे यरूशलेम मे ले गए, कि प्रभु के
साम्हने लाए। २३ (जैसा कि प्रभु की
व्यवस्था मे लिखा है कि हर एक पहिलौठा
प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा)। २४ और
प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार पडुको
का एक जोडा, या कबूतर के दो बच्चे ला
कर बलिदान करे। २५ और देखो, यरू-
शलेम मे शमौन नाम एक मनुष्य था, और
वह मनुष्य धर्मी और भक्त था; और
इस्राएल की शान्ति की बाट जोह रहा था,
और पवित्र आत्मा उस पर था। २६ और
पवित्र आत्मा से उस को चितावनी हुई थी,
कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न
लेगा, तब तक मृत्यु को न देखेगा।
२७ और वह आत्मा के सिखाने से*
मन्दिर मे आया, और जब माता-पिता उस
बालक यीशु को भीतर लाए, कि उसके
लिये व्यवस्था की रीति के अनुसार करे।
२८ तो उस ने उसे अपनी गोद मे लिया,
और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा,
२९ हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने
वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है।
३० क्योकि मेरी आखो ने तेरे उद्धार को
देख लिया है। ३१ जिसे तू ने सब देशो के
लोगो के साम्हने तैयार किया है। ३२ कि

* यू० ऊचे से ऊचे स्थान मे।

* यू० मे।

वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिये
ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की
महिमा हो। ३३ और उसका पिता और
उस की माता इन बातों से जो उसके
विषय में कही जाती थीं, आश्चर्य करते थे।
३४ तब शमौन ने उन को आशीष देकर,
उस की माता मरियम से कहा; देख, वह
तो इस्राएल में बहुतों के गिरने, और उठने
के लिये, और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये
ठहराया गया है, जिस के विरोध में बातें
की जाएगी—३५ वरन तेरा प्राण भी
तलवार से वार पार छिद जाएगा—इस से
बहुत हृदयों के विचार प्रगट होंगे।
३६ और अशेर के गोत्र में से हन्नाह नाम
फनूएल की बेटी एक भविष्यद्वक्तिन थी:
वह बहुत बूढ़ी थी, और ब्याह होने के बाद
सात वर्ष अपने पति के साथ रह पाई थी।
३७ वह चौरासी वर्ष से विधवा थी: और
मन्दिर को नहीं छोड़ती थी पर उपवास
और प्रार्थना कर करके रात दिन उपासना
किया करती थी। ३८ और वह उस घड़ी
वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी,
और उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे
की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें
करने लगी। ३९ और जब वे प्रभु की
व्यवस्था के अनुसार सब कुछ निपटा चुके
तो गलील में अपने नगर नासरत को फिर
चले गए॥

४० और बालक बढ़ता, और बलवन्त
होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया;
और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था॥
४१ उसके माता-पिता प्रति वर्ष फसह
के पर्ब्ब में यरूशलेम को जाया करते थे।
४२ जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे
पर्ब्ब की रीति के अनुसार यरूशलेम को
गए। ४३ और जब वे उन दिनों को पूरा
करके लौटने लगे, तो वह लड़का यीशु
यरूशलेम में रह गया; और यह उसके
माता पिता नहीं जानते थे। ४४ वे यह
समझकर, कि वह और यात्रियों के साथ
होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए:
और उसे अपने कुटुम्बियों और जान-
पहचानों में ढूंढ़ने लगे। ४५ पर जब नहीं
मिला, तो ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यरूशलेम को फिर
लौट गए। ४६ और तीन दिन के बाद
उन्हों ने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच
में बैठे, उन की सुनते और उन से प्रश्न
करते हुए पाया। ४७ और जितने उस की
सुन रहे थे, वे सब उस की समझ और
उसके उत्तरों से चकित थे। ४८ तब वे
उसे देखकर चकित हुए और उस की
माता ने उस से कहा; हे पुत्र, तू ने हम से
क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा
पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे।
४९ उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्यों
ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे
अपने पिता के भवन में होना * अवश्य है?
५० परन्तु जो बात उस ने उन से कही,
उन्हों ने उसे नहीं समझा। ५१ तब वह
उन के साथ गया, और नासरत में आया,
और उन के वश में रहा; और उस की
माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं॥

५२ और यीशु बुद्धि और डील-डौल
में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह
में बढ़ता गया॥

३ तिबिरियुस कैसर के राज्य के
पन्द्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस पीलातुस
यहूदिया का हाकिम था, और गलील में
हेरोदेस नाम चौथाई का इतूरैया, और
त्रखोनीतिस में, उसका भाई फिलिप्पुस,

* या कामों में लगे रहना।

और अविलेने मे लिसानियास चौथाई के
राजा थे। २ और जब हन्ना और कैफा
महायाजक थे, उस समय परमेश्वर का
वचन जगल मे जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के
पास पहुचा। ३ और वह यरदन के आस
पास के सारे देश मे आकर, पापो की क्षमा
के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार
करने लगा। ४ जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता
के कहे हुए वचनो की पुस्तक मे लिखा है,
कि जगल मे एक पुकारनेवाले का शब्द हो
रहा है कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की
सडकें सीधी बनाओ। ५ हर एक घाटी
भर दी जाएगी, और हर एक पहाड और
टीला नीचा किया जाएगा, और जो टेढा
है सीधा, और जो ऊचा नीचा है वह चौरस
मार्ग बनेगा। ६ और हर प्राणी परमेश्वर
के उद्धार को देखेगा॥

७ जो भीड की भीड उस से बपतिस्मा
लेने को निकल कर आती थी, उन से वह
कहता था, हे साप के बच्चो, तुम्हें किस ने
जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो।
८ सो मन फिराव के योग्य फल लाओ
और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि
हमारा पिता इब्राहीम है, क्योंकि मै तुम
से कहता हू, कि परमेश्वर इन पत्थरो से
इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता
है। ९ और अब ही कुल्हाडा पेडो की
जड पर धरा है, इसलिये जो जो पेड अच्छा
फल नही लाता, वह काटा और आग में
झोंका जाता है। १० और लोगो ने उस से
पूछा, तो हम क्या करें? ११ उस ने उन्हे
उत्तर दिया, कि जिस के पास दो कुरते हो,
वह उसके साथ जिस के पास नही है
बाट दे और जिस के पास भोजन हो, वह
भी ऐसा ही करे। १२ और महसूल लेने-
वाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उस से
पूछा, कि हे गुरु, हम क्या करें? १३ उस
ने उन से कहा, जो तुम्हारे लिये ठहराया
गया है, उस से अधिक न लेना। १४ और
सिपाहियो ने भी उस से यह पूछा, हम क्या
करे? उस ने उन से कहा, किसी पर उपद्रव
न करना, और न झूठा दोष लगाना, और
अपनी मजदूरी पर सन्तोष करना॥

१५ जब लोग आस लगाए हुए थे,
और सब अपने अपने मन में यूहन्ना के विषय
मे विचार कर रहे थे, कि क्या यही मसीह
तो नही है। १६ तो यूहन्ना ने उन सब मे
उत्तर मे कहा कि मै तो तुम्हे पानी से*
बपतिस्मा देता हू, परन्तु वह आनेवाला
है, जो मुझ से शक्तिमान है, मै तो इस
योग्य भी नही, कि उसके जूतो का बन्ध
खोल सकू, वह तुम्हे पवित्र आत्मा और
आग से बपतिस्मा देगा। १७ उसका
सूप, उसके हाथ मे है, और वह अपना
खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा,
और गेहू को अपने खत्ते मे इकट्ठा करेगा,
परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की
नही जला देगा॥

१८ सो वह बहुत सी शिक्षा दे देकर
लोगो को सुसमाचार सुनाता रहा।
१९ परन्तु उस ने चौथाई देश के राजा
हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी
हेरोदियास के विषय, और सब कुकर्मो
के विषय मे जो उस ने किए थे, उलाहना
दिया। २० इसलिये हेरोदेस ने उन सब
से बढकर यह कुकर्म भी किया, कि यूहन्ना
को बन्दीगृह मे डाल दिया॥

२१ जब सब लोगो ने बपतिस्मा लिया,
और यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर
रहा था, तो आकाश खुल गया। २२ और

* यू० में।

पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की
नाईं उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी
हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से
प्रसन्न हूं॥
२३ जब यीशु आप उपदेश करने लगा,
तो लगभग तीस वर्ष की आयु का था और
(जैसा समझा जाता था) यूसुफ का पुत्र
था और वह एली का। २४ और वह
मत्तात का, और वह लेवी का, और वह
मलकी का, और वह यन्ना का, और वह
यूसुफ का। २५ और वह मत्तित्याह का,
और वह आमोस का, और वह नहूम का,
और वह असल्याह का, और वह नोगह का।
२६ और वह मात का, और वह मत्तित्याह
का, और वह शिमी का, और वह योसेख
का, और वह योदाह का। २७ और वह
यूहन्ना का, और वह रेसा का, और वह
जरुब्बाबिल का, और वह शालतियल का,
और वह नेरी का। २८ और वह मलकी
का, और वह अद्दी का, और वह कोसाम का,
और वह इलमोदाम का, और वह एर का।
२९ और वह येशू का, और वह इलाजार
का, और वह योरीम का, और वह मत्तात
का, और वह लेवी का। ३० और वह
शमौन का, और वह यहूदाह का और वह
यूसुफ का, और वह योनान का, और वह
इलयाकीम का। ३१ और वह मलेआह
का, और वह मिन्नाह का, और वह मत्तता
का, और वह नातान का, और वह दाऊद
का। ३२ और वह यिशै का, और वह
ओबेद का, और वह बोअज का, और वह
सलमोन का, और वह नहशोन का।
३३ और वह अम्मीनादाब का, और वह
अरनी का, और वह हिस्रोन का, और वह
फिरिस का, और वह यहूदाह का।
३४ और वह याकूब का, और वह इसहाक
का, और वह इब्राहीम का, और वह तिरह
का, और वह नाहोर का। ३५ और वह
सरूग का, और वह रऊ का, और वह
फिलिग का, और वह एबिर का, और वह
शिलह का। ३६ और वह केनान का,
वह अरफक्षद का, और वह शेम का, वह
नूह का, वह लिमिक का। ३७ और वह
मथूशिलह का, और वह हनोक का, और
वह यिरिद का, और वह महललेल का,
और वह केनान का। ३८ और वह इनोश
का, और वह शेत का, और वह आदम का,
और वह परमेश्वर का था॥

४ फिर यीशु पवित्रात्मा से भरा
हुआ, यरदन से लौटा, और चालीस
दिन तक आत्मा के सिखाने से जंगल में
फिरता रहा, और शैतान * उस की परीक्षा
करता रहा। २ उन दिनों में उस ने कुछ
न खाया और जब वे दिन पूरे हो गए,
तो उसे भूख लगी। ३ और शैतान ने
उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है,
तो इस पत्थर से कह, कि रोटी बन जाए
४ यीशु ने उसे उत्तर दिया, कि लिखा
है, मनुष्य केवल रोटी से जीवित न रहेगा।
५ तब शैतान उसे ले गया और उस को
पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए।
६ और उस से कहा, मैं यह सब अधिकार,
और इन का विभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह
मुझे सौंपा गया है और जिसे चाहता हूं,
उसी को दे देता हूं। ७ इसलिये, यदि तू
मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो
जाएगा। ८ यीशु ने उसे उत्तर दिया,
लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को
प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना
कर। ९ तब उस ने उसे यरूशलेम में ले

* यू० इब्लीस।

जाकर मन्दिर के कगूरे पर खडा किया,
और उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का
पुत्र है, तो अपने आप को यहा से नीचे गिरा
दे। १० क्योकि लिखा है, कि वह तेरे
विषय मे अपने स्वर्गदूतो को आज्ञा देगा,
कि वे तेरी रक्षा करें। ११ और वे तुझे
हाथो हाथ उठा लेगे ऐसा न हो कि तेरे
पाव में पत्थर से ठेस लगे। १२ यीशु ने
उस को उत्तर दिया, यह भी कहा गया
है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न
करना। १३ जब शैतान* सब परीक्षा
कर चुका, तब कुछ समय के लिये उसके
पास से चला गया॥

१४ फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से
भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की
चर्चा आस पास के सारे देश मे फैल गई।
१५ और वह उन की आराधनालयो मे
उपदेश करता रहा, और सब उस की
बडाई करते थे॥

१६ और वह नासरत मे आया, जहा
पाला पोसा गया था, और अपनी रीति के
अनुसार सब्त† के दिन आराधनालय मे
जा कर पढने के लिये खडा हुआ।
१७ यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे
दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह
जगह निकाली जहा यह लिखा था।
१८ कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इस-
लिये कि उस ने कगालो को सुसमाचार
सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है,
और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओ को
छुटकारे का और अन्धो को दृष्टि पाने का
सुसमाचार प्रचार करू और कुचले हुओ
को छुडाऊ। १९ और प्रभु के प्रसन्न रहने
के वर्ष का प्रचार करू। २० तब उस ने
पुस्तक बन्द करके सेवक का हाथ मे दे दी,
और बैठ गया और आराधनालय के सब
लोगो की आख उस पर लगी थी। २१ तब
वह उन से कहने लगा, कि आज ही यह
लेख तुम्हारे साम्हने* पूरा हुआ है।
२२ और सब ने उसे सराहा, और जो
अनुग्रह की बातें उसके मुह से निकलती
थी, उन से अचम्भा किया, और कहने
लगे, क्या यह यूसुफ का पुत्र नही?
२३ उस ने उस से कहा, तुम मुझ पर
यह कहावत अवश्य कहोगे, कि हे वैद्य,
अपने आप को अच्छा कर! जो कुछ हम ने
सुना है कि कफरनहूम मे किया गया है
उसे यहा अपने देश मे भी कर। २४ और
उस ने कहा, मै तुम से सच कहता हू,
कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश मे मान-सम्मान
नही पाता। २५ और मै तुम से सच
कहता हू, कि एलिय्याह के दिनो मे जब
साढे तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा,
यहा तक कि सारे देश मे बडा अकाल पडा,
तो इस्राएल मे बहुत सी विधवाए थी।
२६ पर एलिय्याह उन मे से किसी के
पास नही भेजा गया, केवल सैदा के सारफत
मे एक विधवा के पास। २७ और इलीशा
भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल मे बहुत से
कोढी थे, पर नामान सूरयानी को छोड
उन मे से कोई शुद्ध नही किया गया।
२८ ये बाते सुनते ही जितने आराधनालय
मे थे, सब क्रोध से भर गए। २९ और
उठकर उसे नगर से बाहर निकाला, और
जिस पहाड पर उन का नगर बसा हुआ
था, उस की चोटी पर ले चले, कि उसे वहा
से नीचे गिरा दे। ३० पर वह उन के
बीच मे से निकलकर चला गया॥

* यू० इब्लीस।
† यू० विश्राम के दिन।

* यू० कानों में।

३१ फिर वह गलील के कफरनहूम
नगर में गया, और सब्त * के दिन लोगों
को उपदेश दे रहा था। ३२ वे उस
के उपदेश से चकित हो गए क्योंकि
उसका वचन अधिकार सहित था।
३३ आराधनालय में एक मनुष्य था,
जिस में अशुद्ध आत्मा थी। ३४ वह ऊंचे
शब्द से चिल्ला उठा, हे यीशु नासरी, हमें
तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश
करने आया है? मैं तुझे जानता हूं तू
कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
३५ यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह
और उस में से निकल जा: तब दुष्टात्मा
उसे बीच में पटककर बिना हानि पहुंचाए
उस में से निकल गई। ३६ इस पर सब
को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें
करके कहने लगे, यह कैसा वचन है?
कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ
अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और
वे निकल जाती हैं। ३७ सो चारों ओर
हर जगह उस की धूम मच गई॥

३८ वह आराधनालय में से उठकर
शमौन के घर में गया और शमौन की
सास को ज्वर चढ़ा हुआ था, और उन्हों ने
उसके लिये उस से विनती की। ३९ उस
ने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा
और वह उस पर से उतर गया और वह
तुरन्त उठकर उन की सेवा-टहल करने
लगी॥

४० सूरज डूबते समय जिन जिन के
यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में
पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए,
और उस ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें
चंगा किया। ४१ और दुष्टात्मा भी
चिल्लाती और यह कहती हुई कि तू
परमेश्वर का पुत्र है, बहुतों में से निकल
गईं पर वह उन्हें डांटता और बोलने नहीं
देता था, क्योंकि वे जानते थे, कि यह
मसीह है॥

४२ जब दिन हुआ तो वह निकलकर
एक जंगली जगह में गया, और भीड़ की
भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई उसके पास आई,
और उसे रोकने लगी, कि हमारे पास से
न जा। ४३ परन्तु उस ने उन से कहा,
मुझे और और नगरों में भी परमेश्वर के
राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है,
क्योंकि मैं इसी लिये भेजा गया हूं॥

४४ और वह गलील के आराधनालयों
में प्रचार करता रहा॥

५ जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती
थी, और परमेश्वर का वचन सुनती
थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे
पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ। २ कि उस
ने झील के किनारे दो नावें लगी हुई
देखीं, और मछुवे उन पर से उतरकर जाल
धो रहे थे। ३ उन नावों में से एक पर
जो शमौन की थी, चढ़कर, उस ने उस से
विनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले
चले, तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से
उपदेश देने लगा। ४ जब वह बातें कर
चुका, तो शमौन से कहा, गहिरे में ले चल,
और मछलियां पकड़ने के लिये अपने जाल
डालो। ५ शमौन ने उसको उत्तर दिया,
कि हे स्वामी, हम ने सारी रात मिहनत
की और कुछ न पकड़ा, तौभी तेरे कहने
से जाल डालूंगा। ६ जब उन्हों ने ऐसा
किया, तो बहुत मछलियां घेर लाए, और
उन के जाल फटने लगे। ७ इस पर
उन्हों ने अपने साथियों को जो दूसरी नाव

* यू० विश्राम के दिन।

पर थे, सकेत किया, कि आकर हमारी
सहायता करो. और उन्हो ने आकर, दोनो
नाव यहा तक भर ली कि वे डूबने लगी।
८ यह देखकर शमौन पतरस यीशु के
पावो पर गिरा, और कहा, हे प्रभु, मेरे
पास से जा, क्योकि मै पापी मनुष्य हू।
९ क्योकि इतनी मछलियो के पकडे जाने
से उसे और उसके साथियो को वहुत
अचम्भा हुआ। १० और वैसे ही जव्दी के
पुत्र याकूव और यूहन्ना को भी, जो शमौन
के सहभागी थे, अचम्भा हुआ तव यीशु ने
शमौन से कहा, मत डर अव से तू मनुष्यो
को जीवता पकडा करेगा। ११ और वे
नावो को किनारे पर ले आए और सव
कुछ छोडकर उसके पीछे हो लिए॥

१२ जव वह किसी नगर में था, तो
देखो, वहा कोढ से भरा हुआ एक मनुष्य
था, और वह यीशु को देखकर मुह के वल
गिरा, और विनती की, कि हे प्रभु यदि
तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
१३ उस ने हाथ वढाकर उसे छूआ और
कहा मै चाहता हू तू शुद्ध हो जा. और
उसका कोढ तुरन्त जाता रहा। १४ तव
उस ने उसे चिताया, कि किसी से न कह,
परन्तु जाके अपने आप को याजक को
दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय मे
जो कुछ मूसा ने चढावा ठहराया है उसे
चढा, कि उन पर गवाही हो। १५ परन्तु
उस की चर्चा और भी फैलती गई, और
भीड की भीड उस की सुनने के लिये और
अपनी वीमारियो से चगे होने के लिये
इकट्ठी हुई। १६ परन्तु वह जगलो मे
अलग जाकर प्रार्थना किया करता था॥

१७ और एक दिन ऐसा हुआ कि वह
उपदेश दे रहा था, और फरीसी और
व्यवस्थापक वहा वैठे हुए थे, जो गलील
और यहूदिया के हर एक गाव से, और
यरूशलेम से आए थे, और चगा करने के
लिये प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।
१८ और देखो कई लोग एक मनुष्य को
जो झोले का मारा हुआ था, खाट पर
लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और
यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूढ रहे
थे। १९ और जव भीड के कारण उसे
भीतर न ले जा सके तो उन्हो ने कोठे पर
चढ कर और खप्रैल हटाकर, उसे खाट
समेत वीच मे यीशु के साम्हने उतार दिया।
२० उस ने उन का विश्वास देखकर उस
से कहा, हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।
२१ तव शास्त्री और फरीसी विवाद करने
लगे, कि यह कौन है, जो परमेश्वर की
निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड कौन
पापो को क्षमा कर सकता है? २२ यीशु
ने उन के मन की वाते जानकर, उन से
कहा कि तुम अपने मनो मे क्या विवाद
कर रहे हो? २३ सहज क्या है? क्या
यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह
कहना कि उठ, और चल फिर? २४ परन्तु
इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के
पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी
अधिकार है (उस ने उस झोले के मारे
हुए से कहा), मै तुझ से कहता हू, उठ
और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला
जा। २५ वह तुरन्त उन के साम्हने उठा,
और जिस पर वह पडा था उसे उठाकर,
परमेश्वर की वडाई करता हुआ अपने
घर चला गया। २६ तव सव चकित
हुए और परमेश्वर की वडाई करने लगे,
और वहुत डरकर कहने लगे, कि आज
हम ने अनोखी वाते देखी है॥

२७ और इसके वाद वह वाहर गया,
और लेवी नाम एक चुङ्गी लेनेवाले को

चुङ्गी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से
कहा, मेरे पीछे हो ले। २८ तब वह सब कुछ
छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।
२९ और लेवी ने अपने घर में उसके
लिये बड़ी जेवनार की, और चुङ्गी लेने-
वालों की और औरों की जो उसके साथ
भोजन करने बैठे थे एक बड़ी भीड़ थी।
३० और फरीसी और उन के शास्त्री उस
के चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे,
कि तुम चुङ्गी लेनेवालों और पापियों के
साथ क्यों खाते-पीते हो? ३१ यीशु ने
उन को उत्तर दिया, कि वैद्य भले चंगों
के लिये नहीं, परन्तु बीमारों के लिये अवश्य
है। ३२ मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु
पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने
आया हूं। ३३ और उन्हों ने उस से कहा,
यूहन्ना के चेले तो बराबर उपवास रखते
और प्रार्थना किया करते हैं, और वैसे ही
फरीसियों के भी, परन्तु तेरे चेले तो खाते-
पीते हैं। ३४ यीशु ने उन से कहा, क्या
तुम बरातियों से जब तक दूल्हा उन के
साथ रहे, उपवास करवा सकते हो?
३५ परन्तु वे दिन आएंगे, जिन में दूल्हा
उन से अलग किया जाएगा, तब वे उन
दिनों में उपवास करेंगे। ३६ उस ने एक
और दृष्टान्त भी उन से कहा, कि कोई
मनुष्य नये पहिरावन में से फाड़कर पुराने
पहिरावन में पैवन्द नहीं लगाता, नहीं तो
नया फट जाएगा और वह पैवन्द पुराने
में मेल भी नहीं खाएगा। ३७ और कोई
नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता,
नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर
बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो
जाएंगी। ३८ परन्तु नया दाखरस नई
मशकों में भरना चाहिये। ३९ कोई
मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं
चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना
ही अच्छा है॥

६ फिर सब्त* के दिन वह खेतों
में से होकर जा रहा था, और उसके
चेले बालें तोड़ तोड़कर, और हाथों से
मल मल कर खाते जाते थे। २ तब
फरीसियों में से कई एक कहने लगे, तुम
वह काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन
करना उचित नहीं? ३ यीशु ने उन को
उत्तर दिया, क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा,
कि दाऊद ने जब वह और उसके साथी
भूखे थे तो क्या किया? ४ वह क्योंकर
परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की
रोटियां लेकर खाईं, जिन्हें खाना याजकों
को छोड़ और किसी को उचित नहीं, और
अपने साथियों को भी दीं? ५ और उस
ने उन से कहा, मनुष्य का पुत्र सब्त के
दिन का भी प्रभु है॥

६ और ऐसा हुआ कि किसी और
सब्त के दिन को वह आराधनालय में
जाकर उपदेश करने लगा, और वहां एक
मनुष्य था, जिस का दहिना हाथ सूखा
था। ७ शास्त्री और फरीसी उस पर
दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उस
की ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के
दिन चंगा करता है कि नहीं। ८ परन्तु
वह उन के विचार जानता था, इसलिये
उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, उठ,
बीच में खड़ा हो: वह उठ खड़ा हुआ।
९ यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से यह
पूछता हूं कि सब्त के दिन क्या उचित
है, भला करना या बुरा करना, प्राण को
बचाना या नाश करना? १० और उस ने
चारों ओर उन सभों को देखकर उस मनुष्य

* यू० विश्राम के दिन।

से कहा, अपना हाथ बढा उस ने ऐसा
ही किया, और उसका हाथ फिर चगा
हो गया। ११ परन्तु वे आपे से बाहर
होकर आपस मे विवाद करने लगे कि हम
यीशु के साथ क्या करे?

१२ और उन दिनो मे वह पहाड पर
प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर
से प्राथना करने मे सारी रात बिताई।
१३ जब दिन हुआ, तो उस ने अपने चेलो
को बुलाकर उन मे से बारह चुन लिए,
और उन को प्रेरित कहा। १४ और वे
ये है शमौन जिस का नाम उस ने पतरस
भी रखा, और उसका भाई अन्द्रियास
और याकूब और यूहन्ना और फिलिप्पुस
और बरतुलमै। १५ और मत्ती और
थोमा और हलफई का पुत्र याकूब और
शमौन जो जेलोतेस कहलाता है। १६ और
याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इस-
करियोती, जो उसका पकडवानेवाला
बना। १७ तब वह उन के साथ उतरकर
चौरस जगह मे खडा हुआ, और उसके
चेलो की बडी भीड, और सारे यहूदिया
और यरूशलेम और सूर और सैदा के
समुद्र के किनारे से बहुतेरे लोग, जो उस
की सुनने और अपनी बीमारियो से चगा
होने के लिये उसके पास आए थे, वहा थे।
१८ और अशुद्ध आत्माओ के सताए हुए
लोग भी अच्छे किए जाते थे। १९ और
सब उसे छूना चाहते थे, क्योकि उस मे
से सामर्थ निकलकर सब को चगा करती
थी॥

२० तब उस ने अपने चेलो की ओर
देखकर कहा, धन्य हो तुम, जो दीन हो,
क्योकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।
२१ धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो,
क्योकि तृप्त किए जाओगे, धन्य हो तुम,
जो अब रोते हो, क्योकि हसोगे। २२ धन्य
हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग
तुम से बैर करेंगे, और तुम्हे निकाल देगे,
और तुम्हारी निन्दा करेगे, और तुम्हारा
नाम बुरा जानकर काट देगे। २३ उस
दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योकि
देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग मे बडा प्रतिफल
है उन के बाप-दादे भविष्यद्वक्ताओ
के साथ भी वैसा ही किया करते थे।
२४ परन्तु हाय तुम पर, जो धनवान हो,
क्योकि तुम अपनी शान्ति पा चुके।
२५ हाय, तुम पर, जो अब तृप्त हो,
क्योकि भूखे होगे हाय, तुम पर, जो
अब हसते हो, क्योकि शोक करोगे और
रोओगे। २६ हाय, तुम पर, जब सब
मनुष्य तुम्हे भला कहे, क्योकि उन के बाप-
दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओ के साथ भी ऐसा
ही किया करते थे॥

२७ परन्तु मै तुम सुननेवालो से कहता
हू, कि अपने शत्रुओ से प्रेम रखो, जो तुम
से बैर करे, उन का भला करो। २८ जो
तुम्हें स्राप दे, उन को आशीष दो जो
तुम्हारा अपमान करे, उन के लिये प्रार्थना
करो। २९ जो तेरे एक गाल पर थप्पड
मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे, और
जो तेरी दोहर छीन ले, उस को कुरता
लेने से भी न रोक। ३० जो कोई तुझ
से मागे, उसे दे, और जो तेरी वस्तु छीन
ले, उस से न माग। ३१ और जैसा तुम
चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करे,
तुम भी उन के साथ वैसा ही करो।
३२ यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालो के
साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बडाई?
क्योकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालो के
साथ प्रेम रखते है। ३३ और यदि तुम
अपने भलाई करनेवालो ही के साथ भलाई

करते हो, तो तुम्हारी क्या बडाई? क्योंकि
पापी भी ऐसा ही करते है। ३४ और
यदि तुम उन्हे उधार दो, जिन से फिर
पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या
बडाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार
देते है, कि उतना ही फिर पाए। ३५ बरन
अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई
करो और फिर पाने की आस न रखकर
उधार दो, और तुम्हारे लिये बडा फल
होगा और तुम परमप्रधान के सन्तान
ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद
नही करते और बुरो पर भी कृपालु है।
३६ जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे
ही तुम भी दयावन्त बनो। ३७ दोष मत
लगाओ, तो तुम पर भी दोष नही लगाया
जाएगा दोषी न ठहराओ, तो तुम भी
दोषी नही ठहराए जाओगे क्षमा करो,
तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी।
३८ दिया करो, तो तुम्हे भी दिया जाएगा
लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला
हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद
मे डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते
हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा
जाएगा॥

३९ फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त
कहा, क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता
सकता है? क्या दोनो गड्हे मे नही गिरेंगे?
४० चेला अपने गुरु से बडा नही, परन्तु
जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के
समान होगा। ४१ तू अपने भाई की
आंख के तिनके को क्यो देखता है, और
अपनी ही आंख का लट्ठा तुझे नही सूझता?
४२ और जब तू अपनी ही आंख का लट्ठा
नही देखता, तो अपने भाई से क्योंकर कह
सकता है, हे भाई, ठहर जा तेरी आंख से
तिनके को निकाल दूं? हे कपटी, पहिले
अपनी आंख से लट्ठा निकाल, तब जो
तिनका तेरे भाई की आंख में है, भली
भांति देखकर निकाल सकेगा। ४३ कोई
अच्छा पेड नही जो निकम्मा फल लाए,
और न तो कोई निकम्मा पेड है, जो अच्छा
फल लाए। ४४ हर एक पेड अपने फल
से पहचाना जाता है, क्योंकि लोग झाडियों
से अंजीर नही तोडते, और न झडबेरी से
अंगूर। ४५ भला मनुष्य अपने मन के
भले भण्डार से भली बातें निकालता है,
और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार
से बुरी बातें निकालता है, क्योंकि जो मन
मे भरा है वही उसके मुंह पर आता है॥

४६ जब तुम मेरा कहना नही मानते,
तो क्यो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?
४७ जो कोई मेरे पास आता है, और
मेरी बातें सुनकर उन्हे मानता है, मैं तुम्हें
बताता हूं कि वह किस के समान है?
४८ वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने
घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान
पर नेव डाली, और जब बाढ आई तो
धारा उस घर पर लगी, परन्तु उसे हिला
न सकी, क्योंकि वह पक्का बना था।
४९ परन्तु जो सुनकर नही मानता, वह
उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर
बिना नेव का घर बनाया। जब उस पर
धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पडा, और
वह गिरकर सत्यानाश हो गया॥

७ जब वह लोगों को अपनी सारी
बातें सुना चुका, तो कफरनहूम में
आया। २ और किसी सूबेदार का एक
दास जो उसका प्रिय था, बीमारी से मरने
पर था। ३ उस ने यीशु की चर्चा सुन-
कर यहूदियों के कई पुरनियों को उस से
यह बिनती करने को उसके पास भेजा,

कि आकर मेरे दास को चगा कर। ४ वे
यीशु के पास आकर उस से बडी विनती
करके कहने लगे, कि वह इस योग्य है, कि
तू उसके लिये यह करे। ५ क्योंकि वह
हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने
हमारे आराधनालय को बनाया है।
६ यीशु उन के साथ साथ चला, पर जब
वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके
पास कई मित्रो के द्वारा कहला भेजा, कि
हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मै इस योग्य
नही, कि तू मेरी छत के तले आए। ७ इसी
कारण मै ने अपने आप को इस योग्य भी
न समझा, कि तेरे पास आऊ, पर वचन
ही कह दे तो मेरा सेवक चगा हो जाएगा।
८ मै भी पराधीन मनुष्य हू, और सिपाही
मेरे हाथ मे है, और जब एक को कहता
हू, जा, तो वह जाता है, और दूसरे से
कहता हू कि आ, तो आता है, और अपने
किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे
करता है। ९ यह सुनकर यीशु ने अचम्भा
किया, और उस ने मुह फेरकर उस भीड
से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, मै
तुम से कहता हू, कि मै ने इस्राएल मे भी
ऐसा विश्वास नही पाया। १० और भेजे
हुए लोगों ने घर लौटकर, उस दास को
चगा पाया॥

११ थोडे दिन के बाद वह नाईन नाम
के एक नगर को गया, और उसके चेले,
और बडी भीड उसके साथ जा रही थी।
१२ जब वह नगर के फाटक के पास पहुचा,
तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए
जा रहे थे, जो अपनी मा का एकलौता
पुत्र था, और वह विधवा थी और नगर
के बहुत से लोग उसके साथ थे। १३ उसे
देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से
कहा, मत रो। १४ तब उस ने पास
आकर अर्थी को छूआ, और उठानेवाले
ठहर गए, तब उस ने कहा, हे जवान, मै
तुझ से कहता हू, उठ। १५ तब वह
मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा और
उस ने उसे उस की मा को सौप दिया।
१६ इस से सब पर भय छा गया, और
वे परमेश्वर की बडाई करके कहने लगे
कि हमारे बीच मे एक बडा भविष्यद्वक्ता
उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर
कृपा दृष्टि की है। १७ और उसके विषय
मे यह बात सारे यहूदिया और आस पास
के सारे देश मे फैल गई॥

१८ और यूहन्ना को उसके चेलो ने
इन सब बातो का समाचार दिया।
१९ तब यूहन्ना ने अपने चेलो मे से दो को
बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने के लिये
भेजा, कि क्या आनेवाला तू ही है, या
हम किसी और दूसरे की बाट देखे?
२० उन्हो ने उसके पास आकर कहा,
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमे तेरे पास
यह पूछने को भेजा है, कि क्या आनेवाला
तू ही है, या हम दूसरे की बाट जोहे?
२१ उसी घडी उस ने बहुतो को बीमारियो,
और पीडाओ, और दुष्टात्माओ से छुडाया,
और बहुत से अन्धो को आखे दी। २२ और
उस ने उन से कहा, जो कुछ तुम ने देखा
और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो,
कि अन्धे देखते है, लगडे चलते फिरते है,
कोढी शुद्ध किए जाते है, बहिरे सुनते है,
मुरदे जिलाए जाते है, और कगालो को
सुसमाचार सुनाया जाता है। २३ और
धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न
खाए॥

२४ जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चल
दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय मे लोगो से
कहने लगा, तुम जगल मे क्या देखने गए

थे ? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को ?
२५ तो फिर तुम क्या देखने गए थे ?
क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को ?
देखो, जो भडकीला वस्त्र पहिनते, और
सुख विलास से रहते ह, वे राजभवनो मे
रहते हैं। २६ तो फिर क्या देखने गए
थ ? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को ? हा, मैं
तुम से कहता हू, वरन भविष्यद्वक्ता से भी
बडे को। २७ यह वही है, जिस के विषय
में लिखा है, कि देख, म अपने दूत
को तेरे आगे आगे भेजता हू, जो तेरे आगे
मार्ग सीधा करेगा। २८ मैं तुम से कहता
हूं, कि जो स्त्रियो से जन्मे हैं, उन में से
यूहन्ना से बडा कोई नही पर जो परमेश्वर
के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से
भी बडा हैं। २९ और सब साधारण
लोगा ने सुनकर और चुङ्गी लेनेवाला ने भी
यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को
सच्चा मान लिया। ३० पर फरीसियो
और व्यवस्थापको ने उस से बपतिस्मा न
लेकर परमेश्वर की मनसा को अपने विषय
में टाल दिया। ३१ सो म इस युग के
लोगो की उपमा किस से दू कि वे किस के
समान हे ? ३२ वे उन बालको के समान
हैं जो बाजार मे बैठे हुए एक दूसरे से
पुकारकर कहते हैं, हम ने तुम्हारे लिये
बासली बजाई, और तुम न नाचे, हम ने
विलाप किया, और तुम न रोए।
३३ क्योकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला
न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता
आया, और तुम कहते हो, उस मे दुष्टात्मा
है। ३४ मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया
हैं, और तुम कहते हो, देखो, पेटू और
पियक्कड मनुष्य, चुङ्गी लेनेवालो का और
पापियो का मित्र। ३५ पर ज्ञान अपनी
सब सन्तानो से सच्चा ठहराया गया हैं॥

३६ फिर किसी फरीसी ने उस से
बिनती की, कि मेरे साथ भोजन कर,
सो वह उस फरीसी के घर मे जाकर भोजन
करने बैठा। ३७ और देखो, उस नगर
की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि
वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा
हैं, सगमरमर के पात्र म इत्र लाई।
३८ और उसके पावो के पास, पीछे खडी
होकर, रोती हुई, उसके पावो को आसुओ
से भिगाने और अपने सिर के बालो से
पोछने लगी और उसके पाव बार बार
चूमकर उन पर इत्र मला। ३९ यह
देखकर, वह फरीसी जिस ने उसे बुलाया
था, अपने मन मे सोचने लगा, यदि यह
भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता, कि यह
जो उसे छू रही हैं, वह कौन और कैसी
स्त्री है ? क्योकि वह तो पापिनी हैं।
४० यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में
कहा, कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ
कहना है वह बोला, हे गुरु कह। ४१ किसी
महाजन के दो देनदार थे, एक पाच सौ,
और दूसरा पचास दीनार* धारता था।
४२ जब कि उन के पास पटान को कुछ
न रहा, तो उस ने दोनो को क्षमा कर दिया
सो उन में से कौन उस से अधिक प्रेम
रखेगा। ४३ शमौन ने उत्तर दिया, मेरी
समझ मे वह, जिस का उस ने अधिक
छोड दिया† उस ने उस से कहा, तू
ने ठीक विचार किया है। ४४ और उस
स्त्री की ओर फिरकर उस ने शमौन से
कहा, क्या तू इस स्त्री को देखता ह ?
मै तेरे घर म आया परन्तु तू ने मेरे पाव
धोने के लिये पानी न दिया, पर इस ने
मेरे पाव आसुओ से भिगाए और अपन

* देखो मत्ती १८ २८।
† यू० क्षमा किया।

वालो से पोछा। ४५ तू ने मुझे चूमा न
दिया, पर जब से मैं आया हू तब से इस ने
मेरे पावो का चूमना न छोडा। ४६ तू ने
मेरे सिर पर तेल नही मला, पर इस ने
मेरे पावो पर इत्र मला है। ४७ इसलिये
मैं तुझ से कहता हू, कि इस के पाप जो
बहुत थे, क्षमा हुए, क्योकि इस ने बहुत प्रेम
किया, पर जिस का थोडा क्षमा हुआ है, वह
थोडा प्रेम करता है। ४८ और उस ने स्त्री
से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए। ४९ तब
जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे,
वे अपने अपने मन मे सोचने लगे, यह कौन
है जो पापो को भी क्षमा करता है?
५० पर उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास
ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा॥

८ इस के बाद वह नगर नगर और
गाव गाव प्रचार करता हुआ, और
परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता
हुआ, फिरने लगा। २ और वे बारह उसके
साथ थे और कितनी स्त्रिया भी जो
दुष्टात्माओ से और बीमारियो से छुडाई
गई थी, और वे यह है, मरियम जो
मगदलीनी कहलाती थी, जिस मे से सात
दुष्टात्माए निकली थी। ३ और हेरोदेस के
भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना और
सूसन्नाह और बहुत सी और स्त्रिया ये
तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती
थी॥

४ जब बडी भीड इकट्ठी हुई, और नगर
नगर के लोग उसके पास चले आते थे,
तो उस ने दृष्टान्त मे कहा। ५ कि एक
बोने वाला बीज बोने निकला बोते हुए
कुछ मार्ग के किनारे गिरा, और रौदा गया,
और आकाश के पक्षियो ने उसे चुग लिया।
६ और कुछ चट्टान पर गिरा, और उपजा,
परन्तु तरी न मिलने से सूख गया। ७ कुछ
झाडियो के बीच मे गिरा, और झाड़ियो ने
साथ साथ बढकर उसे दबा लिया।
८ और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और
उगकर सौ गुणा फल लाया यह कहकर,
उस ने ऊचे शब्द से कहा, जिस के सुनने के
कान हो वह सुन ले॥

९ उसके चेलो ने उस से पूछा, कि
यह दृष्टान्त क्या है? उस ने कहा,
१० तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदो
की समझ दी गई है, पर औरो को दृष्टान्तो
मे सुनाया जाता है, इसलिये कि वे देखते
हुए भी न देखे, और सुनते हुए भी न समझे।
११ दृष्टान्त यह है, बीज तो परमेश्वर
का वचन है। १२ मार्ग के किनारे के वे
है, जिन्हो ने सुना, तब शैतान * आकर उन
के मन मे से वचन उठा ले जाता है, कि
कही ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार
पाए। १३ चट्टान पर के वे है, कि जब
सुनते है, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो
करते है, परन्तु जड न पकडने से वे थोडी
देर तक विश्वास रखते है, और परीक्षा के
समय बहक जाते है। १४ जो झाडियो
मे गिरा, सो वे है, जो सुनते है, पर होते
होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख
विलास मे फस जाते है, और उन का फल
नही पकता। १५ पर अच्छी भूमि मे के
वे है, जो वचन सुनकर भले और उत्तम
मन मे सम्भाले रहते है, और धीरज से
फल लाते है॥

१६ कोई दीया बार के बरतन से नही
छिपाता, और न खाट के नीचे रखता है,
परन्तु दीवट पर रखता है, कि भीतर आने-
वाले प्रकाश पाए। १७ कुछ छिपा नही,

* यू० इब्लीस।

जो प्रगट न हो, और न कुछ गुप्त है, जो
जाना न जाए, और प्रगट न हो। १८ इस-
लिये चौकस रहो, कि तुम किस रीति से
सुनते हो? क्योंकि जिस के पास है, उसे
दिया जाएगा, और जिस के पास नहीं है,
उस से वह भी ले लिया जाएगा, जिसे वह
अपना समझता है॥

१९ उस की माता और उसके भाई
उसके पास आए, पर भीड के कारण उस
से भेंट न कर सके। २० और उस से कहा
गया, कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर
खडे हुए तुझ से मिलना चाहते हैं।
२१ उस ने उसके उत्तर में उन से कहा,
कि मेरी माता और मेरे भाई ये ही है,
जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते
है॥

२२ फिर एक दिन वह और उसके
चेले नाव पर चढे, और उस ने उन से कहा,
कि आओ, झील के पार चलें सो उन्हो ने
नाव खोल दी। २३ पर जब नाव चल रही
थी, तो वह सो गया और झील पर आन्धी
आई, और नाव पानी से भरने लगी और
वे जोखिम मे थे। २४ तब उन्हो ने पास
आकर उसे जगाया, और कहा, स्वामी!
स्वामी! हम नाश हुए जाते है तब उस
ने उठकर आन्धी को और पानी की लहरो
को डाटा और वे थम गए, और चैन हो
गया। २५ और उस ने उन से कहा,
तुम्हारा विश्वास कहा था? पर वे डर गए,
और अचम्भित होकर आपस मे कहने लगे,
यह कौन है? जो आन्धी और पानी को भी
आज्ञा देता है, और वे उस की मानते
है॥

२६ फिर वे गिरासेनियो के देश मे
पहुचे, जो उस पार गलील के साम्हने है।
२७ जब वह किनारे पर उतरा, तो उस
नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिस में
दुष्टात्माए थी और बहुत दिनो से न कपडे
पहिनता था और न घर में रहता था वरन
कब्रो में रहा करता था। २८ वह यीशु
को देखकर चिल्लाया, और उसके साम्हने
गिरकर ऊचे शब्द से कहा, हे परम प्रधान
परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या
काम! मै तेरी विनती करता हू, मुझे पीडा
न दे। २९ क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा
को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा
दे रहा था, इसलिये कि वह उस पर बार
बार प्रबल होती थी, और यद्यपि लोग उसे
साकलो और बेडियो से बाधते थे, तौभी
वह बन्धनो को तोड डालता था, और
दुष्टात्मा उसे जगल में भगाए फिरती थी।
३० यीशु ने उस से पूछा, तेरा क्या नाम
है? उस ने कहा, सेना, क्योंकि बहुत
दुष्टात्माए उस में पैठ गई थी। ३१ और
उन्हो ने उस से विनती की, कि हमें अथाह
गडहे में जाने की आज्ञा न दे। ३२ वहा
पहाड पर सूअरो का एक बडा झुण्ड चर
रहा था, सो उन्हो ने उस से विनती की,
कि हमें उन में पैठने दे, सो उस ने उन्हें
जाने दिया। ३३ तब दुष्टात्माए उस मनुष्य
से निकलकर सूअरो में गई और वह झुण्ड
कडाडे पर से झपटकर झील मे जा गिरा
और डूब मरा। ३४ चरवाहे यह जो हुआ
था देखकर भागे, और नगर में, और
गावो में जाकर उसका समाचार कहा।
३५ और लोग यह जो हुआ था उसके
देखने को निकले, और यीशु के पास आकर
जिस मनुष्य से दुष्टात्माए निकली थी,
उसे यीशु के पावो के पास कपडे पहिने और
सचेत बैठे हुए पाकर डर गए। ३६ और
देखनेवालो ने उन को बताया, कि वह
दुष्टात्मा का सताया हुआ मनुष्य किस

प्रकार अच्छा हुआ। ३७ तब गिरासेनियो
के आस पास के सब लोगो ने यीशु से बिनती
की, कि हमारे यहा से चला जा, क्योकि
उन पर बडा भय छा गया था सो वह नाव
पर चढकर लौट गया। ३८ जिस मनुष्य
से दुष्टात्माए निकली थी वह उस से बिनती
करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे,
परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा।
३९ अपने घर को लौट जा और लोगो से
कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बडे
बडे काम किए है वह जाकर सारे नगर
में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये
कैसे बडे बडे काम किए॥

४० जब यीशु लौट रहा था, तो लोग
उस से आनन्द के साथ मिले; क्योकि वे
सब उस की बाट जोह रहे थे। ४१ और
देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो
आराधनालय का सरदार था, आया, और
यीशु के पावो पर गिर के उस से बिनती
करने लगा, कि मेरे घर चल। ४२ क्योकि
उसके बारह वर्ष की एकलौती बेटी थी,
और वह मरने पर थी जब वह जा रहा
था, तब लोग उस पर गिरे पडते थे॥

४३ और एक स्त्री ने जिस को बारह
वर्ष से लोहू बहने का रोग था, और जो
अपनी सारी जीविका वैद्यो के पीछे व्यय
कर चुकी थी और तौभी किसी के हाथ से
चगी न हो सकी थी। ४४ पीछे से आकर
उसके वस्त्र के आचल को छूआ, और तुरन्त
उसका लोहू बहना थम गया। ४५ इस
पर यीशु ने कहा, मुझे किस ने छूआ?
जब सब मुकरने लगे, तो पतरस और
उसके साथियो ने कहा, हे स्वामी, तुझे तो
भीड दबा रही है और तुझ पर गिरी पडती
है। ४६ परन्तु यीशु ने कहा, किसी ने
मुझे छूआ है क्योकि मै ने जान लिया है कि
मुझ मे से सामर्थ निकली है। ४७ जब
स्त्री ने देखा, कि मै छिप नही सकती, तब
कापती हुई आई, और उसके पावो पर गिर-
कर सब लोगो के साम्हने बताया, कि मै ने
किस कारण से तुझे छूआ, और क्योकर
तुरन्त चगी हो गई। ४८ उस ने उस से
कहा, बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चगा किया
है, कुशल से चली जा॥

४९ वह यह कह ही रहा था, कि किसी
ने आराधनालय के सरदार के यहा से आकर
कहा, तेरी बेटी मर गई गुरु को दुख न दे।
५० यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया, मत
डर, केवल विश्वास रख, तो वह बच
जाएगी। ५१ घर मे आकर उस ने पतरस
और यूहन्ना और याकूब और लडकी के
माता-पिता को छोड और किसी को अपने
साथ भीतर आने न दिया। ५२ और सब
उसके लिये रो पीट रहे थे, परन्तु उस ने
कहा, रोओ मत, वह मरी नही परन्तु सो
रही है। ५३ वे यह जानकर, कि मर गई
है, उस की हसी करने लगे। ५४ परन्तु
उस ने उसका हाथ पकडा, और पुकारकर
कहा, हे लडकी उठ! ५५ तब उसके प्राण
फिर आए और वह तुरन्त उठी, फिर उस ने
आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।
५६ उसके माता-पिता चकित हुए, परन्तु
उस ने उन्हे चिताया, कि यह जो हुआ है,
किसी से न कहना॥

९ फिर उस ने बारहो को बुलाकर
उन्हे सब दुष्टात्माओ और बीमारियो
को दूर करने की सामर्थ और अधिकार
दिया। २ और उन्हे परमेश्वर के राज्य
का प्रचार करने, और बीमारो को अच्छा
करने के लिये भेजा। ३ और उस ने उन
से कहा, मार्ग के लिये कुछ न लेना न तो

लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपये और न दो
दो कुरते। ४ और जिस किसी घर में तुम
उतरो, वहीं रहो, और वहीं से विदा हो।
५ जो कोई तुम्हें ग्रहण न करेगा उस नगर
से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़
डालो, कि उन पर गवाही हो। ६ सो वे
निकलकर गांव गांव सुसमाचार सुनाते,
और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए
फिरते रहे॥

७ और देश की चौथाई का राजा
हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया, क्योंकि
कितनों ने कहा, कि यूहन्ना मरे हुओं में से
जी उठा है। ८ और कितनों ने यह, कि
एलिय्याह दिखाई दिया है और औरों ने
यह, कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई
जी उठा है। ९ परन्तु हेरोदेस ने कहा,
यूहन्ना का तो मैं ने सिर कटवाया अब यह
कौन है, जिस के विषय में ऐसी बातें सुनता
हूं? और उस ने उसे देखने की इच्छा
की॥

१० फिर प्रेरितों ने लौटकर जो कुछ
उन्हों ने किया था, उस को बता दिया,
और वह उन्हें अलग करके बैतसैदा नाम
एक नगर को ले गया। ११ यह जानकर
भीड़ उसके पीछे हो ली और वह आनन्द
के साथ उन से मिला, और उन से परमेश्वर
के राज्य की बातें करने लगा और जो
चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया।
१२ जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने
आकर उस से कहा, भीड़ को विदा कर,
कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में
जाकर टिकें, और भोजन का उपाय करें,
क्योंकि हम यहां सुनसान जगह में हैं।
१३ उस ने उन से कहा, तुम ही उन्हें खाने
को दो उन्हों ने कहा, हमारे पास पांच
रोटियां और दो मछली को छोड़ और कुछ
नहीं परन्तु हां, यदि हम जाकर इन सब
लोगों के लिये भोजन मोल लें, तो हो सकता
है वे लोग तो पांच हजार पुरुषों के लगभग
थे। १४ तब उस ने अपने चेलों से कहा,
उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठा
दो। १५ उन्हों ने ऐसा ही किया, और
सब को बैठा दिया। १६ तब उस ने वे
पांच रोटियां और दो मछली लीं, और स्वर्ग
की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़
तोड़कर चेलों को देता गया, कि लोगों को
परोसें। १७ सो सब खाकर तृप्त हुए,
और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरी भरकर
उठाईं॥

१८ जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा
था, और चेले उसके साथ थे, तो उस ने
उन से पूछा, कि लोग मुझे क्या कहते हैं?
१९ उन्हों ने उत्तर दिया, यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला, और कोई कोई एलिय्याह, और
कोई यह कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से
कोई जी उठा है। २० उस ने उन से पूछा,
परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? पतरस ने
उत्तर दिया, परमेश्वर का मसीह।
२१ तब उस ने उन्हें चिताकर कहा, कि यह
किसी से न कहना। २२ और उस ने कहा,
मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह
बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महा-
याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर
मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे।
२३ उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे
आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे
और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे
पीछे हो ले। २४ क्योंकि जो कोई अपना
प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु
जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही
उसे बचाएगा। २५ यदि मनुष्य सारे जगत
को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या

उस की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ
होगा? २६ जो कोई मुझ से और मेरी
बातो से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब
अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र
स्वर्ग दूतो की, महिमा सहित आएगा, तो
उस से लजाएगा। २७ मै तुम से सच
कहता हू, कि जो यहा खडे है, उन मे से कोई
कोई ऐसे है कि जब तक परमेश्वर का राज्य
न देख ले, तब तक मृत्यु का स्वाद न
चखेगें॥

२८ इन बातो के कोई आठ दिन बाद
वह पतरस और यूहन्ना और याकूब को
साथ लेकर प्रार्थना करने के लिये पहाड पर
गया। २९ जब वह प्रार्थना कर ही रहा
था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया.
और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने
लगा। ३० और देखो, मूसा और
एलिय्याह, ये दो पुरुष उसके साथ बाते कर
रहे थे। ३१ ये महिमा सहित दिखाई
दिए, और उसके मरने* की चर्चा कर
रहे थे, जो यरूशलेम मे होनेवाला था।
३२ पतरस और उसके साथी नीद से भरे
थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो
उस की महिमा, और उन दो पुरुषो को,
जो उसके साथ खडे थे, देखा। ३३ जब
वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने
यीशु से कहा, हे स्वामी, हमारा यहा रहना
भला है सो हम तीन मण्डप बनाए, एक
तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक
एलिय्याह के लिये। वह जानता न था, कि
क्या कह रहा है। ३४ वह यह कह ही
रहा था, कि एक बादल ने आकर उन्हे छा
लिया, और जब वे उस बादल से घिरने
लगे, तो डर गए। ३५ और उस बादल

* यू० विदा होने।

मे से यह शब्द निकला, कि यह मेरा पुत्र
और मेरा चुना हुआ है, इस की सुनो।
३६ यह शब्द होने ही यीशु अकेला पाया
गया और वे चुप रहे, और जो कुछ देखा
था, उस की कोई बात उन दिनो मे किसी
से न कही॥

३७ और दूसरे दिन जब वे पहाड से
उतरे, तो एक बडी भीड उस से आ मिली।
३८ और देखो, भीड मे से एक मनुष्य ने
चिल्ला कर कहा, हे गुरु, मै तुझ से बिनती
करता हू, कि मेरे पुत्र पर कृपादृष्टि कर,
क्योकि वह मेरा एकलौता है। ३९ और
देख, एक दुष्टात्मा उसे पकडता है, और
वह एकाएक चिल्ला उठता है, और वह
उसे ऐसा मरोडता है, कि वह मुह मे फेन
भर लाता है, और उसे कुचलकर कठिनाई
से छोडता है। ४० और मै ने तेरे चेलो से
बिनती की, कि उसे निकाले, परन्तु वे न
निकाल सके। ४१ यीशु ने उत्तर दिया,
हे अविश्वासी और हठिले लोगो*, मै कब
तक तुम्हारे साथ रहूगा, और तुम्हारी
सहूगा? अपने पुत्र को यहा ले आ।
४२ वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने
उसे पटककर मरोडा, परन्तु यीशु ने अशुद्ध
आत्मा को डाटा और लडके को अच्छा करके
उसके पिता को सौप दिया। ४३ तब सब
लोग परमेश्वर के महासामर्थ से चकित
हुए॥

४४ परन्तु जब सब लोग उन सब कामो
से जो वह करता था, अचम्भा कर रहे थे,
तो उस ने अपने चेलो से कहा, ये बाते
तुम्हारे कानो मे पडी रहे, क्योकि मनुष्य
का पुत्र मनुष्यो के हाथ मे पकडवाया जाने
को है। ४५ परन्तु वे इस बात को न

* यू० पीढी।

समझते थे, और यह उन से छिपी रही,
कि वे उसे जानने न पाए, और वे इस बात
के विषय में उस से पूछने से डरते थे॥
४६ फिर उन में यह विवाद होने लगा,
कि हम में से बड़ा कौन है? ४७ पर यीशु
ने उन के मन का विचार जान लिया
और एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा
किया। ४८ और उन से कहा, जो कोई
मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करता है,
वह मुझे ग्रहण करता है, और जो कोई
मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले
को ग्रहण करता है क्योंकि जो तुम में सब से
छोटे से छोटा है, वही बड़ा है॥
४९ तब यूहन्ना ने कहा, हे स्वामी,
हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं
को निकालते देखा, और हम ने उसे मना
किया, क्योंकि वह हमारे साथ होकर तेरे
पीछे नहीं हो लेता। ५० यीशु ने उस से
कहा, उसे मना मत करो, क्योंकि जो
तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारी ओर
है॥
५१ जब उसके ऊपर उठाए जाने के
दिन पूरे होने पर थे, तो उस ने यरूशलेम
को जाने का विचार* दृढ़ किया।
५२ और उस ने अपने आगे दूत भेजे: वे
सामरियों के एक गांव में गए, कि उसके
लिए जगह तैयार करें। ५३ परन्तु उन
लोगों ने उसे उतरने न दिया, क्योंकि वह
यरूशलेम को जा रहा था। ५४ यह देख-
कर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा,
हे प्रभु, क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें,
कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर
दे। ५५ परन्तु उस ने फिरकर उन्हें डांटा
और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी
आत्मा के हो। ५६ क्योंकि मनुष्य का
पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं
वरन बचाने के लिए आया है: और वे
किसी और गांव में चले गए॥
५७ जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो
किसी ने उस से कहा, जहां जहां तू जाएगा,
मैं तेरे पीछे हो लूंगा। ५८ यीशु ने उस से
कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के
पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र
को सिर धरने की भी जगह नहीं। ५९ उस
ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे हो ले, उस ने
कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने
पिता को गाड़ दूं। ६० उस ने उस से कहा,
मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू
जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।
६१ एक और ने भी कहा, हे प्रभु, मैं तेरे
पीछे हो लूंगा, पर पहिले मुझे जाने दे कि
अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं।
६२ यीशु ने उस से कहा, जो कोई अपना
हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह
परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं॥

१० और इन बातों के बाद प्रभु ने
सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए
और जिस जिस नगर और जगह को वह
आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके
अपने आगे भेजा। २ और उस ने उन से
कहा, पक्के खेत बहुत हैं, परन्तु मजदूर
थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से विनती
करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर
भेज दे। ३ जाओ, देखो मैं तुम्हें भेड़ों की
नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। ४ इस-
लिये न बटुआ, न झोली, न जूते लो, और
न मार्ग में किसी को नमस्कार करो।
५ जिस किसी घर में जाओ, पहिले कहो,
कि इस घर पर कल्याण हो। ६ यदि वहां

* यू० मुंह।

कोई कल्याण के योग्य होगा, तो तुम्हारा
कल्याण उस पर ठहरेगा, नही तो तुम्हारे
पास लौट आएगा। ७ उसी घर मे रहो,
और जो कुछ उन से मिले, वही खाओ पीओ,
क्योकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी
चाहिए घर घर न फिरना। ८ और
जिस नगर मे जाओ, और वहा के लोग
तुम्हे उतारें, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने
रखा जाए वही खाओ। ९ वहा के बीमारो
को चगा करो और उन से कहो, कि
परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ
पहुचा है। १० परन्तु जिस नगर मे जाओ,
और वहा के लोग तुम्हे ग्रहण न करे, तो
उसके बाजारो मे जाकर कहो। ११ कि
तुम्हारे नगर की धूल भी, जो हमारे पावो
मे लगी है, हम तुम्हारे साम्हने झाड देते है,
तौभी यह जान लो, कि परमेश्वर का राज्य
तुम्हारे निकट आ पहुचा है। १२ मै तुम
से कहता हू, कि उस दिन उस नगर की दशा
से सदोम की दशा सहने योग्य होगी।
१३ हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा! जो
सामर्थ के काम तुम मे किए गए, यदि वे सूर
और सैदा मे किए जाते, तो टाट ओढकर
और राख मे बैठकर वे कब के मन फिराते।
१४ परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी दशा से
सूर और सैदा की दशा सहने योग्य होगी।
१५ और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक
ऊचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक
नीचे जाएगा। १६ जो तुम्हारी सुनता
है, वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हे तुच्छ
जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है, और
जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले
को तुच्छ जानता है॥

१७ वे सत्तर आनन्द से फिर आकर
कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी
हमारे वश में है। १८ उस ने उन से कहा,
मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा
हुआ देख रहा था। १९ देखो, मैंने तुम्हें सापो
और बिच्छुओ को रौदने का, और शत्रु की
सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है, और
किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।
२० तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि
आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से
आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर
लिखे हैं॥

२१ उसी घडी वह पवित्र आत्मा में
होकर आनन्द से भर गया, और कहा; हे
पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्य-
वाद करता हू, कि तू ने इन बातो को ज्ञानियो
और समझदारो से छिपा रखा, और बालकों
पर प्रगट किया हा, हे पिता, क्योंकि तुझे
यही अच्छा लगा। २२ मेरे पिता ने मुझे
सब कुछ सौंप दिया है और कोई नही जानता
कि पुत्र कौन है केवल पिता और पिता कौन
है यह भी कोई नही जानता, केवल पुत्र के
और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना
चाहे। २३ और चेलो की ओर फिरकर
निराले मे कहा, धन्य है वे आखे, जो ये
बाते जो तुम देखते हो देखती हैं।
२४ क्योकि मैं तुम से कहता हू, कि बहुत से
भविष्यद्वक्ताओ और राजाओ ने चाहा, कि
जो बाते तुम देखते हो, देखे, पर न देखी
और जो बाते तुम सुनते हो सुनें, पर न
सुनी॥

२५ और देखो, एक व्यवस्थापक उठा,
और यह कहकर, उस की परीक्षा करने
लगा, कि हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस
होने के लिये मैं क्या करू? २६ उस ने उस
से कहा, कि व्यवस्था मे क्या लिखा है?
तू कैसे पढता है? २७ उस ने उत्तर दिया,
कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे
मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी

शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम
रख, और अपने पडोसी से अपने समान
प्रेम रख। २८ उस ने उस से कहा, तू ने
ठीक उत्तर दिया, यही कर तो तू जीवित
रहेगा। २९ परन्तु उस ने अपनी तई धर्मी
ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो मेरा
पडोसी कौन है? ३० यीशु ने उत्तर दिया,
कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा
रहा था, कि डाकुओ ने घेरकर उसके कपडे
उतार लिए, और मारपीटकर उसे अधमूआ
छोडकर चले गए। ३१ और ऐसा हुआ,
कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था
परन्तु उसे देख के कतराकर चला गया।
३२ इसी रीति से एक लेवी उस जगह पर
आया, वह भी उसे देख के कतराकर चला
गया। ३३ परन्तु एक सामरी यात्री वहा
आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया।
३४ और उसके पास आकर और उसके
घावो पर तेल और दाखरस ढालकर पट्टिया
बान्धी, और अपनी सवारी पर चढाकर सराय
में ले गया, और उस की सेवा टहल की।
३५ दूसरे दिन उस ने दो दीनार* निकाल-
कर भटियारे को दिए, और कहा, इस की
सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और
लगेगा, वह मै लौटने पर तुझे भर दूगा।
३६ अब तेरी समझ में जो डाकुओ मे
घिर गया था, इन तीनो में से उसका पडोसी
कौन ठहरा? ३७ उस ने कहा, वही जिस
ने उस पर तरस खाया यीशु ने उस से
कहा, जा, तू भी ऐसा ही कर॥

३८ फिर जब वे जा रहे थे, तो वह
एक गाव में गया, और मार्था नाम एक स्त्री
ने उसे अपने घर में उतारा। ३९ और
मरियम नाम उस की एक बहिन थी, वह
प्रभु के पावो के पास बैठकर उसका वचन
सुनती थी। ४० पर मार्था सेवा करते
करते घबरा गई और उसके पास आकर
कहने लगी, हे प्रभु, क्या तुझे कुछ
भी सोच नही कि मेरी बहिन ने मुझे
सेवा करने के लिये अकेली ही छोड दिया
है? सो उस से कह, कि मेरी सहायता करे।
४१ प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे
मार्था, तू बहुत बातो के लिये चिन्ता करती
और घबराती है। ४२ परन्तु एक बात*
अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम
ने चुन लिया है जो उस से छीना न
जाएगा॥

११ फिर वह किसी जगह प्रार्थना
कर रहा था और जब वह प्रार्थना
कर चुका, तो उसके चेलो में से एक ने
उस से कहा, हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने
चेलो को प्रार्थना करना सिखलाया वैसे
ही हमे भी तू सिखा दे। २ उस ने उन से
कहा, जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो, हे
पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा
राज्य आए। ३ हमारी दिन भर की रोटी
हर दिन हमें दिया कर। ४ और हमारे
पापो को क्षमा कर, क्योकि हम भी अपने
हर एक अपराधी को क्षमा करते है, और
हमें परीक्षा मे न ला॥

५ और उस ने उन से कहा, तुम में से
कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह
आधी रात को उसके पास जाकर उस से
कहे, कि हे मित्र, मुझे तीन रोटिया दे†।
६ क्योकि एक यात्री मित्र मेरे पास आया
है, और उसके आगे रखने के लिये मेरे
पास कुछ नही है। ७ और वह भीतर से

* देखो मत्ती १८ २८।

* या पर थोडी या एक ही वस्तु अवश्य है।
† यू० उधार दे।

उत्तर दे, कि मुझे दुख न दे, अब तो द्वार बन्द है, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं, इसलिये मैं उठकर तुझे दे नही सकता? ८ मैं तुम से कहता हू, यदि उसका मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे, तौभी उसके लज्जा छोडकर मागने के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उठकर देगा। ९ और मैं तुम से कहता हू, कि मागो, तो तुम्हे दिया जाएगा, ढूढो, तो तुम पाओगे, खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। १० क्योकि जो कोई मागता है, उसे मिलता है, और जो ढूढता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। ११ तुम मे से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मागे, तो उसे पत्थर दे या मछली मागे, तो मछली के बदले उसे साप दे? १२ या अण्डा मागे तो उसे बिच्छू दे? १३ सो जब तुम बुरे होकर अपने लडकेवालो को अच्छी वस्तुए देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मागनेवालो को पवित्र आत्मा क्यो न देगा॥

१४ फिर उस ने एक गूंगी दुष्टात्मा को निकाला जब दुष्टात्मा निकल गई, तो गूगा बोलने लगा, और लोगो ने अचम्भा किया। १५ परन्तु उन मे से कितनो ने कहा, यह तो शैतान * नाम दुष्टात्माओ के प्रधान की सहायता से दुष्टात्माओ को निकालता है। १६ औरो ने उस की परीक्षा करने के लिये उस से आकाश का एक चिन्ह मागा। १७ परन्तु उस ने, उन के मन की बाते जानकर, उन से कहा, जिस जिस राज्य मे फूट होती है, वह राज्य उजड जाता है और जिस घर में फूट होता है, वह नाश हो जाता है। १८ और यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा? क्योंकि तुम मेरे विषय मे तो कहते हो, कि यह शैतान की सहायता से दुष्टात्मा निकालता है। १९ भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओ को निकालता हू, तो तुम्हारी सन्तान किस की सहायता से निकालते है? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएगे। २० परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ * से दुष्टात्माओ को निकालता हू, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुचा। २१ जब बलवन्त मनुष्य हथियार बान्धे हुए अपने घर की रखवाली करता है, तो उस की सपत्ति बची रहती है। २२ पर जब उस से बढकर कोई और बलवन्त चढाई करके उसे जीत लेता है, तो उसके वे हथियार जिन पर उसका भरोसा था, छीन लेता है और उस की सपत्ति लूटकर बाट देता है। २३ जो मेरे साथ नही वह मेरे विरोध मे है और जो मेरे साथ नही बटोरता वह बिथराता है। २४ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य मे से निकल जाती है तो सूखी जगहो मे विश्राम ढूढती फिरती है, और जब नही पाती तो कहती है, कि मै अपने उसी घर मे जहा से निकली थी लौट जाऊगी। २५ और आकर उसे झाडा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। २६ तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओ को अपने साथ ले आती है, और वे उस मे पैठकर बास करती है, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है॥

* यू० बालजबूल।

* यू० उगली।

२७ जब वह ये बातें कह ही रहा था तो भीड में से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से कहा, धन्य वह गर्भ जिस में तू रहा, और वे स्तन, जो तू ने चूसे। २८ उस ने कहा, हां, परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं॥

२९ जब बडी भीड इकट्ठी होती जाती थी तो वह कहने लगा, कि इस युग के लोग * बुरे हैं, वे चिन्ह ढूंढते है, पर यूनुस के चिन्ह को छोड कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा। ३० जैसा यूनुस नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस युग के लोगों के लिये ठहरेगा। ३१ दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर, उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बडा है। ३२ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस समय के लोगों के साथ खडे होकर, उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुनकर मन फिराया और देखो, यहां वह है, जो यूनुस से भी बडा है॥

३३ कोई मनुष्य दीया बार के तलघरे में, या पैमाने † के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएं। ३४ तेरे शरीर का दीया तेरी आंख है, इसलिये जब तेरी आंख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है, परन्तु जब वह बुरी है, तो तेरा शरीर भी अन्धेरा है। ३५ इसलिये चौकस रहना, कि जो उजियाला तुझ में है वह अन्धेरा न हो जाए। ३६ इसलिये यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, और उसका कोई भाग अन्धेरा न रहे, तो सब का सब ऐसा उजियाला होगा, जैसा उस समय होता है, जब दीया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है॥

३७ जब वह बातें कर रहा था, तो किसी फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे यहां भोजन कर, और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा। ३८ फरीसी ने यह देखकर अचम्भा किया कि उस ने भोजन करने से पहिले स्नान नहीं किया। ३९ प्रभु ने उस से कहा, हे फरीसियो, तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर तो मांजते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर अन्धेर और दुष्टता भरी है। ४० हे निर्बुद्धियो, जिस ने बाहर का भाग बनाया, क्या उस ने भीतर का भाग नहीं बनाया? ४१ परन्तु हां, भीतरवाली वस्तुओं को दान कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा॥

४२ पर हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो: चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोडते। ४३ हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो। ४४ हाय तुम पर! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते॥

४५ तब एक व्यवस्थापक ने उस को उत्तर दिया, कि हे गुरु, इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है। ४६ उस ने कहा, हे व्यवस्थापको, तुम पर भी हाय! तुम ऐसे बोझ जिन को उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन

* यू० पीढी।
† देखो मत्ती ५ १५।

बोझो को अपनी एक उगली से भी नही
छूते। ४७ हाय तुम पर ! तुम उन भविष्यद्-
वक्ताओ की कब्रें बनाते हो, जिन्हें तुम्हारे
ही बाप-दादो ने मार डाला था। ४८ सो
तुम गवाह हो, और अपने बाप-दादो के
कामो में सम्मत हो, क्योकि उन्हो ने तो
उन्हें मार डाला और तुम उन की कब्रें
बनाते हो। ४९ इसलिये परमेश्वर की
बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उन के पास
भविष्यद्वक्ताओ और प्रेरितो को भेजूगी
और वे उन में से कितनो को मार डालेंगे,
और कितनो को सताएगे। ५० ताकि जितने
भविष्यद्वक्ताओ का लोहू जगत की उत्पत्ति
से बहाया गया है, सब का लेखा, इस युग
के लोगो* से लिया जाए। ५१ हाबील
की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या
तक जो वेदी और मन्दिर† के बीच
मे घात किया गया मैं तुम से सच
कहता हू, उसका लेखा इसी समय के
लोगों से लिया जाएगा। ५२ हाय तुम
व्यवस्थापको पर ! कि तुम ने ज्ञान की
कुजी ले तो ली, परन्तु तुम ने आपही प्रवेश
नही किया, और प्रवेश करनेवालो को भी
रोक दिया॥

५३ जब वह वहा से निकला, तो शास्त्री
और फरीसी बहुत पीछे पड गए और छेडने
लगे, कि वह बहुत सी बातो की चर्चा करे।
५४ और उस की घात में लगे रहे, कि
उसके मुह की कोई बात पकडें॥

१२ इतने मे जब हजारो की भीड
लग गई, यहा तक कि एक दूसरे
पर गिरे पडते थे, तो वह सब से पहिले अपने
चेलो से कहने लगा, कि फरीसियो के
कपटरूपी खमीर से चौकस रहना। २ कुछ
ढपा नही, जो खोला न जाएगा, और न
कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।
३ इसलिये जो कुछ तुम ने अन्धेरे में कहा
है, वह उजाले में सुना जाएगा: और जो
तुम ने कोठरियो में कानो कान कहा है,
वह कोठो पर प्रचार किया जाएगा।
४ परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता
हू, कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु
उसके पीछे और कुछ नही कर सकते,
उन से मत डरो। ५ मैं तुम्हें चिताता हू
कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, घात करने
के बाद जिस को नरक में डालने का अधिकार
है, उसी से डरो बरन मैं तुम से कहता हू,
उसी से डरो। ६ क्या दो पैसे की पाच
गौरैया नही बिकती ? तौभी परमेश्वर
उन में से एक को भी नही भूलता। ७ बरन
तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए है,
सो डरो नही, तुम बहुत गौरैयो से बढकर
हो। ८ मैं तुम से कहता हू जो कोई मनुष्यो
के साम्हने मुझे मान लेगा उसे मनुष्य का
पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतो के साम्हने
मान लेगा। ९ परन्तु जो मनुष्यो के साम्हने
मुझे इन्कार करे उसका परमेश्वर के स्वर्ग-
दूतो के साम्हने इन्कार किया जाएगा।
१० जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में
कोई बात कहे, उसका वह अपराध क्षमा
किया जाएगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा
की निन्दा करे, उसका अपराध क्षमा न
किया जाएगा। ११ जब लोग तुम्हें
सभाओ और हाकिमो और अधिकारियो
के साम्हने ले जाए, तो चिन्ता न करना
कि हम किस रीति से या क्या उत्तर दें,
या क्या कहें। १२ क्योकि पवित्र आत्मा
उसी घडी तुम्हें सिखा देगा, कि क्या कहना
चाहिए॥

* यू० पीढ़ी।
† यू० पवित्रस्थान।

१३ फिर भीड़ में से एक ने उस से
कहा, हे गुरु, मेरे भाई से कह, कि पिता की
सपत्ति मुझे बाट दे। १४ उस ने उस से
कहा, हे मनुष्य, किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी
या बाटनेवाला नियुक्त किया है?
१५ और उस ने उन से कहा, चौकस रहो,
और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को
बचाए रखो क्योंकि किसी का जीवन
उस की सपत्ति की बहुतायत से नहीं होता।
१६ उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि
किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई।
१७ तब वह अपने मन में विचार करने
लगा, कि मैं क्या करू, क्योंकि मेरे यहा
जगह नही, जहा अपनी उपज इत्यादि रखू।
१८ और उस ने कहा, मैं यह करूगा
मैं अपनी बखारिया तोड कर उन से बडी
बनाऊगा, १९ और वहा अपना सब अन्न
और सपत्ति रखूगा और अपने प्राण से
कहूगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के
लिये बहुत सपत्ति रखी है, चैन कर, खा,
पी, सुख से रह। २० परन्तु परमेश्वर ने
उस से कहा, हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण
तुझ से ले लिया जाएगा तब जो कुछ तू ने
इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?
२१ ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने
लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की
दृष्टि में धनी नही॥

२२ फिर उस ने अपने चेलो से कहा,
इसलिये मैं तुम से कहता हू, अपने प्राण की
चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएगे, न अपने
शरीर की कि क्या पहिनेगे। २३ क्योंकि
भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर
है। २४ कौवो पर ध्यान दो वे न बोते
है, न काटते, न उन के भण्डार और न
खत्ता होता है, तौभी परमेश्वर उन्हें पालता
है, तुम्हारा मूल्य पक्षियो से कही अधिक
है। २५ तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता
करने से अपनी अवस्था में एक घडी * भी
बढा सकता है? २६ इसलिये यदि तुम
सब से छोटा काम भी नही कर सकते, तो
और बातो के लिये क्यो चिन्ता करते हो?
२७ सोसनो के पेडो पर ध्यान करो कि वे
कैसे बढते है, वे न परिश्रम करते, न
कातते है, तौभी मैं तुम से कहता हू, कि
सुलैमान भी, अपने सारे विभव में, उन में
से किसी एक के समान वस्त्र पहिने हुए न
था। २८ इसलिये यदि परमेश्वर मैदान
की घास को जो आज है, और कल भाड में
झोकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है, तो हे
अल्प विश्वासियो, वह तुम्हें क्यो न
पहिनाएगा? २९ और तुम इस बात
की खोज में न रहो, कि क्या खाएगे और
क्या पीएगे, और न सन्देह करो।
३० क्योंकि ससार की जातिया इन सब
वस्तुओ की खोज में रहती हैं, और तुम्हारा
पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की
आवश्यकता है। ३१ परन्तु उसके राज्य
की खोज में रहो, तो ये वस्तुए भी तुम्हें मिल
जाएगी। ३२ हे छोटे झुण्ड, मत डर,
क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि
तुम्हें राज्य दे। ३३ अपनी सपत्ति बेचकर
दान कर दो, और अपने लिये ऐसे बटुए
बनाओ, जो पुराने नही होते, अर्थात् स्वर्ग
पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नही
और जिस के निकट चोर नही जाता,
और कीडा नही बिगाडता। ३४ क्योंकि
जहा तुम्हारा धन है, वहा तुम्हारा मन भी
लगा रहेगा॥

३५ तुम्हारी कमरें बन्धी रहे, और
तुम्हारे दीये जलते रहें। ३६ और तुम

* यू० हाथ।

उन मनुष्यो के समान बनो, जो अपने स्वामी की बाट देख रहे हो, कि वह ब्याह से कब लौटेगा, कि जब वह आकर द्वार खटखटाए, तो तुरन्त उसके लिये खोल दे।
३७ धन्य हैं वे दास, जिन्हे स्वामी आकर जागते पाए, मै तुम से सच कहता हू, कि वह कमर बान्ध कर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उन की सेवा करेगा।
३८ यदि वह रात के दूसरे पहर या तीसरे पहर मे आकर उन्हे जागते पाए, तो वे दास धन्य है।
३९ परन्तु तुम यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता, कि चोर किस घडी आएगा, तो जागता रहता, और अपने घर मे सेंध लगने न देता।
४० तुम भी तैयार रहो, क्योकि जिस घडी तुम सोचते भी नही, उस घडी मनुष्य का पुत्र आ जावेगा ॥

४१ तब पतरस ने कहा, हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या सब से कहता है।
४२ प्रभु ने कहा, वह विश्वास-योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरो पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा दे।
४३ धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
४४ मै तुम से सच कहता हू, वह उसे अपनी सब सपत्ति पर सरदार ठहराएगा।
४५ परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासो और दासियो को मारने-पीटने और खाने-पीने और पियक्कड होने लगे।
४६ तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन कि वह उस की बाट जोहता न रहे, और ऐसी घडी जिसे वह जानता न हो आएगा, और उसे भारी ताडना देकर उसका भाग अविश्वासियो के साथ ठहराएगा।
४७ और वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उस की इच्छा के अनुसार चला बहुत मार खाएगा।
४८ परन्तु जो नही जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोडी मार खाएगा, इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मागा जाएगा, और जिसे बहुत सौपा गया है, उस से बहुत मागेंगे ॥

४९ मै पृथ्वी पर आग लगाने आया हू, और क्या चाहता हू केवल यह कि अभी सुलग जाती।
५० मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह न हो ले तब तक मै कैसी सकेती मे रहूगा?
५१ क्या तुम समझते हो कि मै पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हू? मै तुम से कहता हू, नही, बरन अलग कराने आया हू।
५२ क्योकि अब से एक घर मे पाच जन आपस मे विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से।
५३ पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा, मा बेटी से, और बेटी मा से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी ॥

५४ और उस ने भीड से भी कहा, जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो, तो तुरन्त कहते हो, कि वर्षा होगी, और ऐसा ही होता है।
५५ और जब दक्खिना चलती देखते हो तो कहते हो, कि लूह चलेगी, और ऐसा ही होता है।
५६ हे कपटियो, तुम धरती और आकाश के रूप मे भेद कर सकते हो, परन्तु इस युग के विषय मे क्यो भेद करना नही जानते?
५७ और तुम आप ही निर्णय क्यो नही कर लेते, कि उचित क्या है?
५८ जब तू अपने मुद्दई के साथ हाकिम के पास जा रहा है, तो मार्ग ही मे उस से छूटने का यत्न कर ले ऐसा न हो, कि वह तुझे न्यायी के पास खीच ले जाए, और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे

और प्यादा तुझे बन्दीगृह में डाल दे।
५६ मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक तू
दमडी दमडी भर न देगा तब तक वहां से
छूटने न पाएगा ॥

१३ उस समय कुछ लोग आ पहुंचे,
और उस से उन गलीलियों की
चर्चा करने लगे जिन का लोहू पीलातुस ने
उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया था।
२ यह सुन उस ने उन से उत्तर में यह कहा,
क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली, और
सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर
ऐसी विपत्ति पडी? ३ मैं तुम से कहता
हूं, कि नहीं परन्तु यदि तुम मन न
फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से
नाश होगे। ४ या क्या तुम समझते हो,
कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का
गुम्मट गिरा, और वे दब कर मर गए
यरूशलेम के और सब रहनेवालों से
अधिक अपराधी थे? ५ मैं तुम से कहता
हूं, कि नहीं, परन्तु यदि तुम मन न
फिराओगे तो तुम भी सब इसी रीति से
नाश होगे ॥

६ फिर उस ने यह दृष्टान्त भी कहा,
कि किसी की अंगूर की बारी में एक अंजीर
का पेड लगा हुआ था वह उस में फल
ढूंढने आया, परन्तु न पाया। ७ तब उस
ने बारी के रखवाले से कहा, देख तीन वर्ष
से मैं इस अंजीर के पेड में फल ढूंढने आता
हूं, परन्तु नहीं पाता, इसे काट डाल कि यह
भूमि को भी क्यों रोके रहे। ८ उस ने उस
को उत्तर दिया, कि हे स्वामी, इसे इस वर्ष
तो और रहने दे, कि मैं इस के चारों
ओर खोदकर खाद डालूं। ९ सो आगे
को फल तो भला, नहीं तो उसे काट
डालना ॥

१० सब्त* के दिन वह एक आराधना-
लय में उपदेश कर रहा था। ११ और
देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से
एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी,
और वह कुबडी हो गई थी, और किसी
रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।
१२ यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा,
हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।
१३ तब उस ने उस पर हाथ रखे, और
वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर
की बडाई करने लगी। १४ इसलिये
कि यीशु ने सब्त के दिन उसे अच्छा किया
था, आराधनालय का सरदार रिसियाकर
लोगों से कहने लगा, छः दिन हैं, जिन
में काम करना चाहिए, सो उन ही दिनों
में आकर चंगे होओ, परन्तु सब्त के
दिन में नहीं। १५ यह सुन कर प्रभु ने
उत्तर देकर कहा, हे कपटियो, क्या सब्त के
दिन तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे
को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं
ले जाता? १६ और क्या उचित न था,
कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है जिसे
शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था,
सब्त के दिन इस बन्धन से छुडाई जाती?
१७ जब उस ने ये बातें कहीं, तो उसके
सब विरोधी लज्जित हो गए, और सारी
भीड उन महिमा के कामों से जो वह करता
था, आनन्दित हुई ॥

१८ फिर उस ने कहा, परमेश्वर का
राज्य किस के समान है? और मैं उस
की उपमा किस से दूं? १९ वह राई के
एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य
ने लेकर अपनी बारी में बोया और वह
बढकर पेड हो गया, और आकाश के

* यू० विश्राम के दिन।

पक्षियो ने उस की डालियो पर बसेरा किया।
२० उस ने फिर कहा, मैं परमेश्वर के
राज्य की उपमा किस से दू? २१ वह
खमीर के समान है, जिस को किसी स्त्री ने
लेकर तीन पसेरी आटे मे मिलाया, और
होते होते सब आटा खमीर हो गया॥

२२ वह नगर नगर, और गाव गाव
होकर उपदेश करता हुआ यरूशलेम की
ओर जा रहा था। २३ और किसी ने उस
से पूछा, हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोडे
है? २४ उस ने उन से कहा, सकेत द्वार
से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योकि मै
तुम से कहता हू, कि बहुतेरे प्रवेश करना
चाहेंगे, और न कर सकेंगे। २५ जब घर
का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो,
और तुम बाहर खडे हुए द्वार खटखटाकर
कहने लगो, हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे,
और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नही जानता,
तुम कहां के हो? २६ तब तुम कहने
लगोगे, कि हम ने तेरे साम्हने खाया-पीया
और तू ने हमारे बाजारो में उपदेश किया।
२७ परन्तु वह कहेगा, मै तुम से कहता हू,
मैं नहीं जानता तुम कहा से हो, हे कुकर्म्म
करनेवालो, तुम सब मुझ से दूर हो।
२८ वहा रोना और दात पीसना होगा
जब तुम इब्राहीम और इसहाक और याकूब
और सब भविष्यद्वक्ताओ को परमेश्वर के
राज्य मे बैठे, और अपने आप को बाहर
निकाले हुए देखोगे। २९ और पूर्व और
पच्छिम, उत्तर और दक्खिन से लोग आकर
परमेश्वर के राज्य के भोज मे भागी होगे।
३० और देखो, कितने पिछले है वे प्रथम
होगे, और कितने जो प्रथम है, वे पिछले
होगे॥

३१ उसी घडी कितने फरीसियो ने
आकर उस से कहा, यहा से निकलकर
चला जा, क्योकि हेरोदेस तुझे मार डालना
चाहता है। ३२ उस ने उन से कहा;
जाकर उस लोमडी से कह दो, कि देख,
मै आज और कल दुष्टात्माओ को निकालता
और बीमारो को चगा करता हू और तीसरे
दिन पूरा करूगा। ३३ तौभी मुझे आज
और कल और परसो चलना अवश्य है,
क्योकि हो नही सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता
यरूशलेम के बाहर मारा जाए। ३४ हे
यरूशलेम! हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्-
वक्ताओ को मार डालती है, और जो तेरे
पास भेजे गए उन्हे पत्थरवाह करती है;
कितनी ही बार मै ने यह चाहा, कि जैसे
मुर्गी अपने बच्चो को अपने पखो के
नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मै भी तेरे
बालको को इकट्ठे करू, पर तुम ने यह
न चाहा। ३५ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे
लिये उजाड छोड़ा जाता है, और मै तुम
से कहता हू, जब तक तुम न कहोगे,
कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से
आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न
देखोगे॥

१४ फिर वह सब्त के दिन फरीसियो
के सरदारो में से किसी के घर में
रोटी खाने गया और वे उस की घात
में थे। २ और देखो, एक मनुष्य उसके
साम्हने था, जिसे जलन्धर का रोग था।
३ इस पर यीशु ने व्यवस्थापको और
फरीसियो से कहा, क्या सब्त के दिन अच्छा
करना उचित है, कि नही? परन्तु वे
चुपचाप रहे। ४ तब उस ने उसे हाथ
लगा कर चगा किया, और जाने दिया।
५ और उन से कहा, कि तुम में से ऐसा
कौन है, जिस का गदहा या बैल कुए मे गिर
जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर

न निकाल ले? ६ वे इन बातों का कुछ
उत्तर न दे सके॥

७ जब उस ने देखा, कि नेवताहारी
लोग क्योंकर मुख्य मुख्य जगहें चुन लेते
हैं तो एक दृष्टान्त देकर उन से कहा।
८ जब कोई तुझे ब्याह में बुलाए, तो मुख्य
जगह में न बैठना, कहीं ऐसा न हो, कि
उस ने तुझ से भी किसी बड़े को नेवता दिया
हो। ९ और जिस ने तुझे और उसे दोनों
को नेवता दिया है आकर तुझ से कहे, कि
इस को जगह दे, और तब तुझे लज्जित
होकर सब से नीची जगह में बैठना पड़े।
१० पर जब तू बुलाया जाए तो सब से
नीची जगह जा बैठ, कि जब वह, जिस ने
तुझे नेवता दिया है आए, तो तुझ से कहे
कि हे मित्र, आगे बढ़कर बैठ, तब तेरे
साथ बैठनेवालों के साम्हने तेरी बड़ाई
होगी। ११ क्योंकि जो कोई अपने आप
को बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जाएगा,
और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा
वह बड़ा किया जाएगा॥

१२ तब उस ने अपने नेवता देनेवाले से
भी कहा, जब तू दिन का या रात का भोज
करे, तो अपने मित्रों या भाइयों या कुटुम्बियों
या धनवान पड़ोसियों को न बुला कहीं
ऐसा न हो, कि वे भी तुझे नेवता दें, और
तेरा बदला हो जाए। १३ परन्तु जब तू
भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और
अन्धों को बुला। १४ तब तू धन्य होगा,
क्योंकि उन के पास तुझे बदला देने को
कुछ नहीं, परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने
पर इस का प्रतिफल मिलेगा॥

१५ उसके साथ भोजन करनेवालों में
से एक ने ये बातें सुनकर उस से कहा, धन्य
है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी
खाएगा। १६ उस ने उस से कहा, किसी
मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुतों को
बुलाया। १७ जब भोजन तैयार हो गया,
तो उस ने अपने दास के हाथ नेवतहारियों
को कहला भेजा, कि आओ, अब भोजन
तैयार है। १८ पर वे सब के सब क्षमा
मांगने लगे, पहिले ने उस से कहा, मैं ने खेत
मोल लिया है, और अवश्य है कि उसे
देखूं मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे
क्षमा करा दे। १९ दूसरे ने कहा, मैं ने
पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं, और उन्हें
परखने जाता हूं मैं तुझ से बिनती करता
हूं, मुझे क्षमा करा दे। २० एक और ने
कहा मैं ने ब्याह किया है, इसलिये मैं
नहीं आ सकता। २१ उस दास ने आकर
अपने स्वामी को ये बातें कह सुनाईं, तब
घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास
से कहा नगर के बाजारों और गलियों में
तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और
अन्धों को यहां ले आओ। २२ दास ने फिर
कहा, हे स्वामी, जैसे तू ने कहा था, वैसे
ही किया गया है, और फिर भी जगह है।
२३ स्वामी ने दास से कहा, सड़कों पर
और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस
ले ही आ* ताकि मेरा घर भर जाए।
२४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि उन
नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार को न
चखेगा॥

२५ और जब बड़ी भीड़ उसके साथ
जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर
उन से कहा। २६ यदि कोई मेरे पास
आए, और अपने पिता और माता और पत्नी
और लड़केबालों और भाइयों और बहिनों
बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने,
तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

* या बिन लाए मत छोड़।

२७ और जो कोई अपना क्रूस न उठाए,
और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला
नही हो सकता। २८ तुम मे से कौन
है कि गढ बनाना चाहता हो, और पहिले
बैठकर खर्च न जोडे, कि पूरा करने की
विसात मेरे पास है कि नही? २९ कही
ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार
न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर
उसे ठट्ठो मे उडाने लगे। ३० कि यह
मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर
सका? ३१ या कौन ऐसा राजा है,
कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो,
और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो
बीस हजार लेकर मुझ पर चढा आता है,
क्या मैं दस हजार लेकर उसका साम्हना
कर सकता हू, कि नही? ३२ नही तो
उसके दूर रहते ही, वह दूतो को भेजकर
मिलाप करना चाहेगा। ३३ इसी रीति
से तुम मे से जो कोई अपना सब कुछ त्याग
न दे, तो वह मेरा चेला नही हो सकता।
३४ नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक
का स्वाद बिगड जाए, तो वह किस वस्तु से
स्वादिष्ट किया जाएगा। ३५ वह न तो
भूमि के और न खाद के लिये काम मे आता
है उसे तो लोग बाहर फेंक देते है
जिस के सुनने के कान हो वह सुन ले॥

१५ सब चुङ्गी लेनेवाले और पापी
उसके पास आया करते थे ताकि
उस की सुने। २ और फरीसी और शास्त्री
कुडकुडाकर कहने लगे, कि यह तो पापियो
से मिलता है और उन के साथ खाता भी
है॥

३ तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा।
४ तुम में से कौन है जिस की सौ भेडे हो,
और उन मे से एक खो जाए तो निन्नानवे
को जगल मे छोडकर, उस खोई हुई को
जब तक मिल न जाए खोजता न रहे?
५ और जब मिल जाती है, तब वह बडे
आनन्द से उसे काधे पर उठा लेता है।
६ और घर मे आकर मित्रो और पडोसियो
को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द
करो, क्योकि मेरी खोई हुई भेड मिल गई
है। ७ मैं तुम से कहता हू, कि इसी रीति
से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में
भी स्वर्ग मे इतना ही आनन्द होगा, जितना
कि निन्नानवे ऐसे धर्मियो के विषय नही
होता, जिन्हे मन फिराने की आवश्यकता
नही॥

८ या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिस के
पास दस सिक्के* हो, और उन मे से एक
खो जाए, तो वह दीया बारकर और घर
झाड बुहारकर जब तक मिल न जाए,
जी लगाकर खोजती न रहे? ९ और जब
मिल जाता है, तो वह अपने सखियो और
पडोसिनियो को इकट्ठी करके कहती है,
कि मेरे साथ आनन्द करो, क्योकि मेरा
खोया हुआ सिक्का मिल गया है। १० मैं
तुम से कहता हू, कि इसी रीति से एक मन
फिरानेवाले पापी के विषय मे परमेश्वर के
स्वर्गदूतो के साम्हने आनन्द होता है॥

११ फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के
दो पुत्र थे। १२ उन मे से छुटके ने पिता
से कहा कि हे पिता सपत्ति मे से जो भाग
मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को
अपनी सपत्ति बाट दी। १३ और बहुत
दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ
इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया
और वहा कुकर्म मे अपनी सपत्ति उडा दी।
१४ जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो

* यू० द्राखमा। उसका मोल लगभग आठ
आने के था।

उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल
हो गया। १५ और वह उस देश के
निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा उस
ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये
भेजा। १६ और वह चाहता था, कि उन
फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट
भरे, और उसे कोई कुछ नहीं देता था।
१७ जब वह अपने आपे में आया, तब
कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही
मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती
है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। १८ मैं
अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा
और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग
के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया
है। १९ अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा
पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की
नाईं रख ले। २० तब वह उठकर, अपने
पिता के पास चला वह अभी दूर ही था,
कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया,
और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत
चूमा। २१ पुत्र ने उस से कहा, पिता
जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि
में पाप किया है, और अब इस योग्य नहीं
रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं। २२ परन्तु
पिता ने अपने दासों से कहा, झट अच्छे से
अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ,
और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में
जूतियां पहिनाओ। २३ और पला हुआ
बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और
आनन्द मनावें। २४ क्योंकि मेरा यह पुत्र
मर गया था, फिर जी गया है खो गया
था, अब मिल गया है और वे आनन्द
करने लगे। २५ परन्तु उसका जेठा पुत्र
खेत में था और जब वह आते हुए घर के
निकट पहुंचा, तो उस ने गाने बजाने और
नाचने का शब्द सुना। २६ और उस ने
एक दास को बुलाकर पूछा, यह क्या हो
रहा है? २७ उस ने उस से कहा, तेरा
भाई आया है, और तेरे पिता ने पला हुआ
बछड़ा कटवाया है, इसलिये कि उसे भला
चंगा पाया है। २८ यह सुनकर वह क्रोध
से भर गया, और भीतर जाना न चाहा
परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे
मनाने लगा। २९ उस ने पिता को उत्तर
दिया, कि देख, मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा
कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं
टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का
बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के
साथ आनन्द करता। ३० परन्तु जब तेरा
यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में
उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने
पला हुआ बछड़ा कटवाया। ३१ उस ने
उस से कहा, पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है,
और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।
३२ परन्तु अब आनन्द करना और मगन
होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर
गया था फिर जी गया है, खो गया था,
अब मिल गया है॥

१६ फिर उस ने चेलों से भी कहा,
किसी धनवान का एक भण्डारी
था, और लोगों ने उसके साम्हने उस पर
यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति
उड़ाए देता है। २ सो उस ने उसे बुलाकर
कहा, यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा
हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे, क्योंकि
तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।
३ तब भण्डारी सोचने लगा, कि अब मैं
क्या करूं? क्योंकि मेरा स्वामी अब
भण्डारी का काम मुझ से छीन ले रहा है
मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती और
भीख मांगने से मुझे लज्जा आती है।

४ मैं समझ गया, कि क्या करूंगा : ताकि
जब मैं भण्डारी के काम से छुडाया जाऊं
तो लोग मुझे अपने घरो में ले लें। ५ और
उस ने अपने स्वामी के देनदारो में से एक
एक को बुलाकर पहिले से पूछा, कि तुझ
पर मेरे स्वामी का क्या आता है? ६ उस
ने कहा, सौ मन तेल, तब उस ने उस से
कहा, कि अपनी खाता-बही ले और बैठकर
तुरन्त पचास लिख दे। ७ फिर दूसरे से
पूछा, तुझ पर क्या आता है? उस ने कहा,
सौ मन गेहूं, तब उस ने उस से कहा,
अपनी खाता-बही लेकर अस्सी लिख दे।
८ स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को
सराहा, कि उस ने चतुराई से काम किया
है; क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय
के लोगो के साथ रीति व्यवहारो मे ज्योति
के लोगो से अधिक चतुर हैं। ९ और मैं
तुम से कहता हूं, कि अधर्म के धन से अपने
लिये मित्र बना लो, ताकि जब वह जाता
रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासो में ले लें।
१० जो थोडे से थोडे मे सच्चा * है, वह
बहुत में भी सच्चा है और जो थोडे से
थोडे मे अधर्मी है, वह बहुत मे भी अधर्मी
है। ११ इसलिये जब तुम अधर्म के धन
में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हे कौन
सौंपेगा। १२ और यदि तुम पराये धन
में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे
तुम्हें कौन देगा? १३ कोई दास दो
स्वामियो की सेवा नही कर सकता : क्योंकि
वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम
रखेगा, या एक से मिला रहेगा और
दूसरे को तुच्छ जानेगा तुम परमेश्वर
और धन दोनो की सेवा नही कर
सकते॥

* यू० विश्वासयोग्य।

१४ फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें
सुनकर उसे ठट्ठो में उडाने लगे। १५ उस
ने उन से कहा, तुम तो मनुष्यो के साम्हने
अपने आप को धर्मी ठहराते हो: परन्तु
परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि
जो वस्तु मनुष्यो की दृष्टि में महान है,
वह परमेश्वर के निकट घृणित है।
१६ व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक
रहे, उस समय से परमेश्वर के राज्य का
सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर
कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है।
१७ आकाश और पृथ्वी का टल जाना
व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से
सहज है। १८ जो कोई अपनी पत्नी को
त्यागकर दूसरी से ब्याह करता है, वह
व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी
त्यागी हुई स्त्री से ब्याह करता है, वह भी
व्यभिचार करता है॥

१९ एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी
कपडे और मलमल पहिनता और प्रति दिन
सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता
था। २० और लाजर नाम का एक कंगाल
घावो से भरा हुआ उस की डेवढी पर छोड
दिया जाता था। २१ और वह चाहता
था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से
अपना पेट भरे, बरन कुत्ते भी आकर
उसके घावो को चाटते थे। २२ और ऐसा
हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्ग-
दूतो ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में
पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा,
और गाडा गया। २३ और अधोलोक मे
उस ने पीडा में पडे हुए अपनी आंखे उठाईं,
और दूर से इब्राहीम की गोद मे लाजर को
देखा। २४ और उस ने पुकार कर कहा,
हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर
को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का

सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी
करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हू।
२५ परन्तु इब्राहीम ने कहा, हे पुत्र स्मरण
कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं
ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं
परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और
तू तड़प रहा है। २६ और इन सब बातों
को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी
गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस
पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें,
और न कोई वहां से इस पार हमारे पास
आ सके। २७ उस ने कहा, तो हे पिता
मैं तुझ से बिनती करता हू, कि तू उसे मेरे
पिता के घर भेज। २८ क्योंकि मेरे पांच
भाई है, वह उन के साम्हने इन बातों की
गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीडा
की जगह में आए। २९ इब्राहीम ने उस
से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्
वक्ताओं की पुस्तकें है, वे उन की सुनें।
३० उस ने कहा, नहीं, हे पिता इब्राहीम,
पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास
जाए, तो वे मन फिराएंगे। ३१ उस ने
उस से कहा, कि जब वे मूसा और
भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि
मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी
उस की नहीं मानेंगे॥

१७ फिर उस ने अपने चेलों से
कहा, हो नहीं सक्ता कि ठोकरें
न लगें, परन्तु हाय, उस मनुष्य पर जिस के
कारण वे आती हैं। २ जो इन छोटों में
से किसी एक को ठोकर खिलाता है, उसके
लिये यह भला होता, कि चक्की का पाट
उसके गले में लटकाया जाता, और वह
समुद्र में डाल दिया जाता। ३ सचेत
रहो, यदि तेरा भाई अपराध करे तो उसे
समझा, और यदि पछताए तो उसे क्षमा
कर। ४ यदि दिन भर में वह सात बार
तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे पास
फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हू, तो
उसे क्षमा कर॥

५ तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, हमारा
विश्वास बढ़ा। ६ प्रभु ने कहा, कि यदि
तुम को राई के दाने के बराबर भी विश्वास
होता, तो तुम इस तूत के पेड़ से कहते कि
जड़ से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो वह
तुम्हारी मान लेता। ७ पर तुम में से
ऐसा कौन है, जिस का दास हल जोतता,
या भेड़ चराता हो, और जब वह खेत से
आए, तो उस से कहे तुरन्त आकर भोजन
करने बैठ? ८ और यह न कहे, कि मेरा
खाना तैयार कर और जब तक मैं खाऊ-
पीऊ तब तक कमर बान्धकर मेरी सेवा
कर, इस के बाद तू भी खा पी लेना।
९ क्या वह उस दास का निहोरा मानेगा,
कि उस ने वे ही काम किए जिस की आज्ञा
दी गई थी? १० इसी रीति से तुम भी,
जब उन सब कामों को कर चुको जिस
की आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, हम
निकम्मे दास हैं, कि जो हमें करना चाहिए
था वही किया है॥

११ और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम
को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच
से होकर जा रहा था। १२ और किसी
गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी
मिले। १३ और उन्हों ने दूर खड़े होकर,
ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम
पर दया कर। १४ उस ने उन्हें देखकर
कहा, जाओ, और अपने तईं याजकों को
दिखाओ, और जाते ही जाते वे शुद्ध हो
गए। १५ तब उन में से एक यह देखकर
कि मैं चंगा हो गया हू, ऊंचे शब्द से

परमेश्वर की बडाई करता हुआ लौटा।
१६ और यीशु के पावो पर मुह के बल
गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा,
और वह सामरी था। १७ इस पर यीशु
ने कहा, क्या दसो शुद्ध न हुए तो फिर वे
नौ कहा है? १८ क्या इस परदेशी को
छोड कोई और न निकला, जो परमेश्वर
की बडाई करता? १९ तब उस ने उस से
कहा, उठकर चला जा, तेरे विश्वास ने
तुझे चगा किया है॥

२० जब फरीसियो ने उस से पूछा, कि
परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो
उस ने उन को उत्तर दिया, कि परमेश्वर
का राज्य प्रगट रूप मे नही आता।
२१ और लोग यह न कहेंगे, कि देखो,
यहा है, या वहा है, क्योंकि देखो, परमेश्वर
का राज्य तुम्हारे बीच मे है॥

२२ और उस ने चेलो से कहा, वे
दिन आएगे, जिन मे तुम मनुष्य के पुत्र के
दिनो मे से एक दिन को देखना चाहोगे,
और नही देखने पाओगे। २३ लोग तुम
से कहेगे, देखो, वहा है, या देखो यहा
है, परन्तु तुम चले न जाना और न उन के
पीछे हो लेना। २४ क्योंकि जैसे बिजली
आकाश की एक ओर से कौन्धकर आकाश
की दूसरी ओर चमकती है, वैसे ही मनुष्य
का पुत्र भी अपने दिन मे प्रगट होगा।
२५ परन्तु पहिले अवश्य है, कि वह बहुत
दुख उठाए, और इस युग के लोग उसे तुच्छ
ठहराए। २६ जैसा नूह के दिनो मे हुआ
था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनो मे भी
होगा। २७ जिस दिन तक नूह जहाज पर
न चढा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे,
और उन मे ब्याह-शादी होती थी, तब
जल-प्रलय ने आकर उन सब को नाश
किया। २८ और जैसा लूत के दिनो मे
हुआ था, कि लोग खाते-पीते लेन-देन करते,
पेड लगाते और घर बनाते थे। २९ परन्तु
जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन
आग और गन्धक आकाश से बरसी और
सब को नाश कर दिया। ३० मनुष्य के
पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही
होगा। ३१ उस दिन जो कोठे पर हो,
और उसका सामान घर मे हो, वह उसे
लेने को न उतरे, और वैसे ही जो खेत मे
हो वह पीछे न लौटे। ३२ लूत की पत्नी
को स्मरण रखो। ३३ जो कोई अपना
प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और
जो कोई उसे खोए वह उसे जीवित रखेगा।
३४ मै तुम से कहता हू, उस रात दो
मनुष्य एक खाट पर होगे, एक ले लिया
जाएगा, और दूसरा छोड दिया जाएगा।
३५ दो स्त्रिया एक साथ चक्की पीसती
होगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी
छोड दी जाएगी। ३६ [दो जन खेत मे
होगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोडा
जाएगा*।] ३७ यह सुन उन्हो ने उस से
पूछा, हे प्रभु यह कहा होगा? उस ने उन
से कहा, जहा लोथ है, वहा गिद्ध इकट्ठे
होगे॥

१८ फिर उस ने इस के विषय मे
कि नित्य प्रार्थना करना और
हियाव न छोडना चाहिए उन से यह दृष्टान्त
कहा। २ कि किसी नगर मे एक न्यायी
रहता था, जो न परमेश्वर से डरता था
और न किसी मनुष्य की परवाह करता
था। ३ और उसी नगर मे एक विधवा भी
रहती थी जो उसके पास आ आकर
कहा करती थी, कि मेरा न्याय चुकाकर

* यह पद सब से पुराने हस्तलेखों में नहीं
मिलता।

मुझे मुद्दई से बचा। ४ उस ने कितने समय
तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में
विचारकर कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से
डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह
करता हूं। ५ तौभी यह विधवा मुझे
सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय
चुकाऊंगा कहीं ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी
आकर अन्त को मेरा नाक में दम करे।
६ प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी
क्या कहता है? ७ सो क्या परमेश्वर अपने
चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-
दिन उस की दुहाई देते रहते, और क्या वह
उन के विषय में देर करेगा? ८ मैं तुम से
कहता हूं, वह तुरन्त उन का न्याय चुका-
एगा, तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा,
तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

९ और उस ने कितनो से जो अपने
ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं,
और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त
कहा। १० कि दो मनुष्य मन्दिर में
प्रार्थना करने के लिये गए, एक फरीसी
था और दूसरा चुंगी लेनेवाला।
११ फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों
प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं
तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों
की नाईं अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और
व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले
के समान हूं। १२ मैं सप्ताह में दो बार
उपवास करता हूं, मैं अपनी सब कमाई
का दसवां अंश भी देता हूं। १३ परन्तु
चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की
ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी
छाती पीट-पीटकर कहा, हे परमेश्वर मुझ
पापी पर दया कर*। १४ मैं तुम से
कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं, परन्तु यही
मनुष्य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर
गया, क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा
बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और
जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह
बड़ा किया जाएगा॥

१५ फिर लोग अपने बच्चों को भी
उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर
हाथ रखे, और चेलों ने देखकर उन्हें
डांटा। १६ यीशु ने बच्चों को पास
बुलाकर कहा, बालकों को मेरे पास आने दो,
और उन्हें मना न करो क्योंकि परमेश्वर
का राज्य ऐसों ही का है। १७ मैं तुम से
सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के
राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करेगा
वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा॥

१८ किसी सरदार ने उस से पूछा,
हे उत्तम गुरु, अनन्तजीवन का अधिकारी
होने के लिये मैं क्या करूं? १९ यीशु
ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता
है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात
परमेश्वर। २० तू आज्ञाओं को तो जानता
है, कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना
और चोरी न करना, झूठी गवाही न देना
अपने पिता और अपनी माता का आदर
करना। २१ उस ने कहा, मैं तो इन सब
को लड़कपन ही से मानता आया हूं।
२२ यह सुन, यीशु ने उस से कहा, तुझ में
अब भी एक बात की घटी है, अपना सब
कुछ बेचकर कंगालों को बांट दे और
तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे
पीछे हो ले। २३ वह यह सुनकर बहुत
उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था।
२४ यीशु ने उसे देखकर कहा धनवानों
का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा
कठिन है? २५ [illegible]

* या प्रायश्चित्त के कारण मुझ पापी
पर दया कर।

धनवान के प्रवेश करने से ऊट का सूई के
नाके मे से निकल जाना सहज है।
२६ और सुननेवालो ने कहा, तो फिर
किस का उद्धार हो सकता है? २७ उस
ने कहा, जो मनुष्य से नही हो सकता, वह
परमेश्वर से हो सकता है। २८ पतरस ने
कहा, देख, हम तो घर बार छोडकर तेरे
पीछे हो लिये है। २९ उस ने उन से कहा;
मै तुम से सच कहता हू, कि ऐसा कोई नही
जिस ने परमेश्वर के राज्य के लिये घर
या पत्नी या भाइयो या माता पिता या
लडके-वालो को छोड दिया हो। ३० और
इस समय कई गुणा अधिक न पाए, और
परलोक में अनन्त जीवन॥

३१ फिर उस ने बारहो को साथ लेकर
उन से कहा, देखो, हम यरूशलेम को जाते
है, और जितनी बाते मनुष्य के पुत्र के लिये
भविष्यद्वक्ताओ के द्वारा लिखी गई है वे
सब पूरी होगी। ३२ क्योकि वह अन्य
जातियो के हाथ में सौपा जाएगा, और वे
उसे ठट्ठो में उडाएगे, और उसका अपमान
करेगे, और उस पर थूकेगे। ३३ और
उसे कोडे मारेगे, और घात करेगे, और वह
तीसरे दिन जी उठेगा। ३४ और उन्हो ने
इन बातो मे से कोई बात न समझी और
यह बात उन से छिपी रही, और जो कहा
गया था वह उन की समझ मे न आया॥

३५ जब वह यरीहो के निकट पहुचा,
तो एक अन्धा सडक के किनारे बैठा हुआ
भीख माग रहा था। ३६ और वह भीड
के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा,
यह क्या हो रहा है? ३७ उन्हो ने उस को
बताया, कि यीशु नासरी जा रहा है।
३८ तब उस ने पुकार के कहा, हे यीशु
दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
३९ जो आगे जाते थे, वे उसे डाटने लगे,
कि चुप रहे, परन्तु वह और भी चिल्लाने
लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर
दया कर। ४० तब यीशु ने खडे होकर
आज्ञा दी कि उसे मेरे पास लाओ, और
जब वह निकट आया, तो उस ने उस से
यह पूछा। ४१ तू क्या चाहता है, कि मै
तेरे लिये करू? उस ने कहा, हे प्रभु यह
कि मै देखने लगू। ४२ यीशु ने उस से
कहा, देखने लग, तेरे विश्वास ने तुझे
अच्छा कर दिया है। ४३ और वह तुरन्त
देखने लगा; और परमेश्वर की बडाई
करता हुआ उसके पीछे हो लिया, और
सब लोगो ने देखकर परमेश्वर की स्तुति
की॥

१९ वह यरीहो में प्रवेश करके जा
रहा था। २ और देखो, जक्कई
नाम एक मनुष्य था जो चुङ्गी लेनेवालो का
सरदार और धनी था। ३ वह यीशु को
देखना चाहता था कि वह कौन सा है?
परन्तु भीड के कारण देख न सकता था।
क्योकि वह नाटा था। ४ तब उस को
देखने के लिये वह आगे दौडकर एक गूलर
के पेड पर चढ गया, क्योकि वह उसी मार्ग
से जाने वाला था। ५ जब यीशु उस जगह
पहुचा, तो ऊपर दृष्टि कर के उस से कहा,
हे जक्कई झट उतर आ, क्योकि आज
मुझे तेरे घर मे रहना अवश्य है। ६ वह
तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे अपने घर
को ले गया। ७ यह देखकर सब लोग
कुडकुडाकर कहने लगे, वह तो एक पापी
मनुष्य के यहा जा उतरा है। ८ जक्कई ने
खडे होकर प्रभु से कहा, हे प्रभु, देख, मै
अपनी आधी सम्पत्ति कगालो को देता हू,
और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके
ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हू।

९ तब यीशु ने उस से कहा, आज इस
घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी
इब्राहीम का एक पुत्र है। १० क्योंकि
मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढने और
उन का उद्धार करने आया है॥

११ जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो उस
ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिये कि वह
यरूशलेम के निकट था, और वे समझते
थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट
हुआ चाहता है। १२ सो उस ने कहा,
एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि
राजपद पाकर फिर आए। १३ और उस
ने अपने दासों में से दस को बुलाकर उन्हें
दस मुहरें दीं, और उन से कहा, मेरे लौट
आने तक लेन-देन करना। १४ परन्तु उसके
नगर के रहनेवाले उस से बैर रखते थे,
और उसके पीछे दूतों के द्वारा कहला भेजा,
कि हम नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य
करे। १५ जब वह राजपद पाकर लौट
आया, तो ऐसा हुआ कि उस ने अपने दासों
को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने पास बुलवाया
ताकि मालूम करे कि उन्हों ने लेन-देन से
क्या क्या कमाया। १६ तब पहिले ने
आकर कहा, हे स्वामी तेरे मोहर से दस
और मोहरें कमाई हैं। १७ उस ने उस
से कहा, धन्य हे उत्तम दास, तुझे धन्य है,
तू बहुत ही थोड़े में विश्वासी निकला अब
दस नगरों पर अधिकार रख। १८ दूसरे
ने आकर कहा, हे स्वामी तेरी मोहर से
पांच और मोहरें कमाई हैं। १९ उस ने
उस से भी कहा, कि तू भी पांच नगरों पर
हाकिम हो जा। २० तीसरे ने आकर
कहा, हे स्वामी देख, तेरी मोहर यह है,
जिसे मैं ने अंगोछे में बान्ध रखी।
२१ क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिये
कि तू कठोर मनुष्य है जो तू ने नहीं रखा
उसे उठा लेता है, और जो तू ने नहीं बोया,
उसे काटता है। २२ उस ने उस से कहा,
हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी
ठहराता हूं तू मुझे जानता था कि कठोर
मनुष्य हूं, जो मैं ने नहीं रखा उसे उठा
लेता, और जो मैं ने नहीं बोया, उसे काटता
हूं। २३ तो तू ने मेरे रुपये कोठी में क्यों
नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज समेत
ले लेता? २४ और जो लोग निकट खड़े
थे, उस ने उन से कहा, वह मोहर उस से
ले लो, और जिस के पास दस मोहरें हैं
उसे दे दो। २५ (उन्हों ने उस से कहा,
हे स्वामी, उसके पास दस मोहरें तो हैं)।
२६ मैं तुम से कहता हूं, कि जिस के पास है,
उसे दिया जाएगा, और जिस के पास नहीं,
उस से वह भी जो उसके पास है ले लिया
जाएगा। २७ परन्तु मेरे उन बैरियों को
जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य
करूं, उन को यहां लाकर मेरे सामने घात
करो॥

२८ ये बातें कहकर वह यरूशलेम की
ओर उन के आगे आगे चला॥

२९ और जब वह जैतून नाम पहाड़
पर बैतफगे और बैतनियाह के पास पहुंचा,
तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहके
भेजा। ३० कि साम्हने के गांव में जाओ,
और उस में पहुंचते ही एक गदही का बच्चा
जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ, बन्धा
हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोलकर लाओ।
३१ और यदि कोई तुम से पूछे, कि क्या
खोलते हो, तो यह कह देना, कि प्रभु को
इस का प्रयोजन है। ३२ जो भेजे गए थे,
उन्हों ने जाकर जैसा उस ने उन से कहा
था, वैसा ही पाया। ३३ जब वे गदहे के
बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने
उन से पूछा, इस बच्चे को क्यों खोलते हो?

३४ उन्हो ने कहा, प्रभु को इस का प्रयोजन
है। ३५ वे उस को यीशु के पास ले आए,
और अपने कपडे उस बच्चे पर डालकर
यीशु को उस पर सवार किया। ३६ जब
वह जा रहा था, तो वे अपने कपडे मार्ग मे
बिछाते जाते थे। ३७ और निकट आते
हुए जब वह जैतून पहाड की ढलान पर
पहुचा, तो चेलो की सारी मण्डली उन सब
सामर्थ के कामो के कारण जो उन्हो ने
देखे थे, आनन्दित होकर बडे शब्द से
परमेश्वर की स्तुति करने लगी। ३८ कि
धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता
है, स्वर्ग मे शान्ति और आकाश * मण्डल
मे महिमा हो। ३९ तब भीड मे से कितने
फरीसी उस से कहने लगे, हे गुरु अपने चेलो
को डाट। ४० उस ने उत्तर दिया, कि
तुम में से कहता हू, यदि ये चुप रहे, तो
पत्थर चिल्ला उठेगे॥

४१ जब वह निकट आया तो नगर को
देखकर उस पर रोया। ४२ और कहा,
क्या ही भला होता, कि तू, हा, तू ही,
इसी दिन में कुशल की बाते जानता,
परन्तु अब वे तेरी आखो से छिप गई है।
४३ क्योकि वे दिन तुझ पर आएगे, कि
तेरे बैरी मोर्चा बान्धकर तुझे घेर लेगे, और
चारो ओर से तुझे दबाएगे। ४४ और
तुझे और तेरे बालको को जो तुझ में है,
मिट्टी में मिलाएगे, और तुझ मे पत्थर पर
पत्थर भी न छोडेंगे, क्योकि तू ने वह
अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई
न पहिचाना॥

४५ तब वह मन्दिर में जाकर बेचने-
वालो को बाहर निकालने लगा। ४६ और
उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना
का घर होगा' परन्तु तुम ने उसे डाकुओ
की खोह बना दिया है॥

४७ और वह प्रति दिन मन्दिर मे
उपदेश करता था' और महायाजक और
शास्त्री और लोगो के रईस उसे नाश करने
का अवसर ढूढते थे। ४८ परन्तु कोई
उपाय न निकाल सके, कि यह किस प्रकार
करे क्योकि सब लोग बडी चाह से उस की
सुनते थे॥

२० एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह
मन्दिर मे लोगो को उपदेश देता
और सुसमाचार सुना रहा था, तो महा-
याजक और शास्त्री, पुरनियो के साथ पास
आकर खडे हुए। २ और कहने लगे, कि
हमे बता, तू इन कामो को किस अधिकार
से करता है, और वह कौन है, जिस ने तुझे
यह अधिकार दिया है? ३ उस ने उन को
उत्तर दिया, कि मै भी तुम से एक बात
पूछता हू, मुझे बताओ। ४ यूहन्ना का
बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यो
की ओर से था? ५ तब वे आपस मे कहने
लगे, कि यदि हम कहे स्वर्ग की ओर से,
तो वह कहेगा, फिर तुम ने उस की प्रतीति
क्यो न की? ६ और यदि हम कहें, मनुष्यो
की ओर से, तो सब लोग हमे पत्थरवाह
करेगे, क्योकि वे सचमुच जानते है, कि
यूहन्ना भविष्यद्वक्ता था। ७ सो उन्हो ने
उत्तर दिया, हम नही जानते, कि वह किस
की ओर से था। ८ यीशु ने उन से कहा,
तो मै भी तुम को नही बताता, कि मै ये
काम किस अधिकार से करता हू॥

९ तब वह लोगो से यह दृष्टान्त कहने
लगा, कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी
लगाई, और किसानो को उसका ठेका दे
दिया और बहुत दिनो के लिये परदेश चला

* यू० ऊचे से ऊचे स्थान।

गया। १० समय पर उस ने किसानो के
पास एक दास को भेजा, कि वे दाख की
बारी के कुछ फलो का भाग उसे दें, पर
किसानो ने उसे पीटकर छूछे हाथ लौटा
दिया। ११ फिर उस ने एक और दास को
भेजा, और उन्हो ने उसे भी पीटकर और
उसका अपमान करके छूछे हाथ लौटा
दिया। १२ फिर उस ने तीसरा भेजा,
और उन्हो ने उसे भी घायल करके निकाल
दिया। १३ तब दाख की बारी के स्वामी
ने कहा, मैं क्या करू? मैं अपने प्रिय पुत्र को
भेजूगा क्या जाने वे उसका आदर करें।
१४ जब किसानो ने उसे देखा तो आपस में
विचार करने लगे, कि यह तो वारिस है,
आओ, हम उसे मार डालें, कि मीरास
हमारी हो जाए। १५ और उन्हो ने उसे
दाख की बारी से बाहर निकालकर मार
डाला इसलिये दाख की बारी का स्वामी
उन के साथ क्या करेगा? १६ वह आकर
उन किसानो को नाश करेगा, और दाख की
बारी औरो को सौंपेगा यह सुनकर उन्हो
कहा, परमेश्वर ऐसा न करे। १७ उस ने
उन की ओर देखकर कहा, फिर यह क्या
लिखा है, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियो
ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा
हो गया। १८ जो कोई उस पत्थर पर
गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस
पर वह गिरेगा, उस को पीस डालेगा॥
१९ उसी घडी शास्त्रियो और महा-
याजको ने उसे पकडना चाहा, क्योकि समझ
गए, कि उस ने हम पर यह दृष्टान्त कहा,
परन्तु वे लोगो से डरे। २० और वे उस
की ताक में लगे और भेदिए भेजे, कि धर्म
का भेष धरकर उस की कोई न कोई बात
पकडें, कि उसे हाकिम के हाथ और अधिकार
मे सौंप दे। २१ उन्हो ने उस से यह पूछा,
कि हे गुरु, हम जानते है कि तू ठीक कहता,
और सिखाता भी है, और किसी का पक्षपात
नही करता, वरन परमेश्वर का मार्ग
सच्चाई से बताता है। २२ क्या हमें कैसर
को कर देना उचित है, कि नही। २३ उस
ने उन की चतुराई को ताडकर उन से कहा,
एक दीनार* मुझे दिखाओ। २४ इस
पर किस की मूर्ति और नाम है? उन्हो ने
कहा, कैसर का। २५ उस ने उन से कहा,
तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो और
जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।
२६ वे लोगो के साम्हने उस बात को पकड
न सके, वरन उसके उत्तर से अचम्भित
होकर चुप रह गए॥
२७ फिर सदूकी जो कहते हैं, कि मरे
हुओ का जी उठना है ही नही, उन में
से कितनो ने उसके पास आकर पूछा।
२८ कि हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये यह
लिखा है, कि यदि किसी का भाई अपनी
पत्नी के रहते हुए बिना सन्तान मर जाए,
तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले,
और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे।
२९ सो सात भाई थे, पहिला भाई ब्याह
करके बिना सन्तान मर गया। ३० फिर
दूसरे और तीसरे ने भी उस स्त्री को ब्याह
लिया। ३१ इसी रीति से सातो बिना
सन्तान मर गए। ३२ सब के पीछे वह
स्त्री भी मर गई। ३३ सो जी उठने पर
वह उन मे से किस की पत्नी होगी, क्योकि
वह सातो की पत्नी हो चुकी थी। ३४ यीशु
ने उन से कहा, कि इस युग के सन्तानो में
तो ब्याह शादी होती है। ३५ पर जो
लोग इस योग्य ठहरेंगे, कि उस युग को और
मरे हुओ में से जी उठना † प्राप्त करें, उन

* देखो मत्ती १८ : २८।
† या मृतकोत्थान।

में व्याह शादी न होगी। ३६ वे फिर मरने
के भी नही, क्योकि वे स्वर्गदूतो के ममान
होगे, और जी उठने के सन्तान होने से
परमेश्वर के भी सन्तान होगे। ३७ परन्तु
इस बात को कि मरे हुए जी उठते है,
मूसा ने भी झाडी की कथा मे प्रगट की
है, कि वह प्रभु को इब्राहीम का परमेश्वर,
और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का
परमेश्वर कहता है। ३८ परमेश्वर तो
मुरदो का नहीं परन्तु जीवतो का परमेश्वर
है क्योकि उसके निकट सब जीवित है।
३९ तब यह सुनकर शास्त्रियो मे से
कितनो ने यह कहा, कि हे गुरु, तू ने अच्छा
कहा। ४० और उन्हें फिर उस मे कुछ
और पूछने का हियाव न हुआ॥

४१ फिर उस ने उन से पूछा, मसीह को
दाऊद का सन्तान क्योकर कहते है?
४२ दाऊद आप भजनसहिता की पुस्तक
में कहता है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा।
४३ मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मै तेरे
बैरियो को तेरे पावो के तले न कर दू।
४४ दाऊद तो उसे प्रभु कहता है, तो फिर
वह उस की सन्तान क्योकर ठहरा?

४५ जब सब लोग सुन रहे थे, तो उस ने
अपने चेलो से कहा। ४६ शास्त्रियो से
चौकस रहो, जिन को लम्बे लम्बे वस्त्र पहिने
हुए फिरना भाता है, और जिन्हें बाजारो में
नमस्कार, और सभाओ में मुख्य आसन
और जेवनारो में मुख्य स्थान प्रिय लगते
हें। ४७ वे विधवाओ के घर खा जाते है,
और दिखाने के लिये बडी देर तक प्रार्थना
करते रहते है ये बहुत ही दण्ड पाएगे॥

२१ फिर उस ने आख उठाकर
धनवानो को अपना अपना दान
भण्डार में डालते देखा। २ और उस ने
एक कगाल विधवा को भी उस मे दो
दमडिया डालते देखा। ३ तब उस ने
कहा, मै तुम से सच कहता हू कि इस कगाल
विधवा ने सब से बढकर डाला है।
४ क्योकि उन सब ने अपनी अपनी बढती
में से दान में कुछ डाला है, परन्तु इस ने
अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका
डाल दी है॥

५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय में
कह रहे थे, कि वह कैसे सुन्दर पत्थरो
और भेंट की वस्तुओ से सवारा गया है
तो उस ने कहा। ६ वे दिन आएगे,
जिन में यह सब जो तुम देखते हो, उन में
से यहा किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा,
जो ढाया न जाएगा। ७ उन्हो ने उस से
पूछा, हे गुरु, यह सब कब होगा? और ये
बातें जब पूरी होने पर होगी, तो उस समय
का क्या चिन्ह होगा? ८ उस ने कहा,
चौकस रहो, कि भरमाए न जाओ, क्योकि
बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मै
वही हू, और यह भी कि समय निकट आ
पहुचा है तुम उन के पीछे न चले जाना।
९ और जब तुम लडाइयो और बलवो की
चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना, क्योकि
इन का पहिले होना अवश्य है, परन्तु उस
समय तुरन्त अन्त न होगा॥

१० तब उस ने उन से कहा, कि
जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढाई
करेगा। ११ और बडे बडे भूईंडोल होगे,
और जगह जगह अकाल और मरिया पडेंगी,
और आकाश से भयकर बातें और बडे बडे
चिन्ह प्रगट होगे। १२ परन्तु इन सब बातो
से पहिले वे मेरे नाम के कारण तुम्हे पकडेंगे,
और सताएगे, और पचायतो में सौपेंगे,
और बन्दीगृह मे डलवाएगे, और राजाओ
और हाकिमो के साम्हने ले जाएगे।

१३ पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का
अवसर हो जाएगा। १४ इसलिये अपने
अपने मन में ठान रखो कि हम पहिले से
उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे। १५ क्योंकि
मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि
तुम्हारे सब विरोधी साम्हना या खण्डन न
कर सकेंगे। १६ और तुम्हारे माता पिता
और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी
तुम्हें पकड़वाएंगे, यहां तक कि तुम में से
कितनों को मरवा डालेंगे। १७ और मेरे
नाम के कारण सब लोग तुम से बैर
करेंगे। १८ परन्तु तुम्हारे सिर का एक
बाल भी बांका न होगा। १९ अपने धीरज
से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे॥

२० जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से
घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका
उजड़ जाना निकट है। २१ तब जो
यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएं,
और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर
निकल जाएं, और जो गावों में हों वे उस
में न जाएं। २२ क्योंकि यह पलटा लेने
के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें
पूरी हो जाएंगी। २३ उन दिनों में जो
गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के
लिये हाय, हाय, क्योंकि देश में बड़ा क्लेश
और इन लोगों पर बड़ी आपत्ति होगी।
२४ वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और
सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए
जाएंगे, और जब तक अन्य जातियों का
समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य
जातियों से रौंदा जाएगा। २५ और सूरज
और चान्द और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे,
और पृथ्वी पर, देश देश के लोगों को संकट
होगा, क्योंकि वे समुद्र के गरजने और
लहरों के कोलाहल से घबरा जाएंगे।
२६ और भय के कारण और संसार पर
आनेवाली घटनाओं की बाट देखते देखते
लोगों के जी में जी न रहेगा क्योंकि आकाश
की शक्तियां हिलाई जाएंगी। २७ तब वे
मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा
के साथ बादल पर आते देखेंगे। २८ जब
ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर
ऊपर उठाना, क्योंकि तुम्हारा छुटकारा
निकट होगा॥

२९ उस ने उन से एक दृष्टान्त भी कहा,
कि अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो।
३० ज्योंहि उन की कोंपलें निकलती हैं,
तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो, कि
ग्रीष्मकाल निकट है। ३१ इसी रीति से
जब तुम ये बातें होते देखो, तब जान लो
कि परमेश्वर का राज्य निकट है। ३२ मैं
तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब
बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी* का
कदापि अन्त न होगा। ३३ आकाश और
पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न
टलेंगी॥

३४ इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो
कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन,
और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो
जाएं, और वह दिन तुम पर फन्दे की नाईं
अचानक आ पड़े। ३५ क्योंकि वह सारी
पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ
पड़ेगा। ३६ इसलिये जागते रहो और
हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब
आनेवाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य
के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो॥

३७ और वह दिन को मन्दिर में उपदेश
करता था, और रात को बाहर जाकर
जैतून नाम पहाड़ पर रहा करता था।
३८ और भोर को तड़के सब लोग उस की

* या यह पीढ़ी जाती न रहेगी।

अच्छा किया। ५२ तव यीशु ने महा-
याजको, और मन्दिर के पहरुओं के सरदारो
और पुरनियो से, जो उस पर चढ आए थे,
कहा, क्या तुम मुझे डाकू जानकर तलवारें
और लाठिया लिए हुए निकले हो?
५३ जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे साथ
था, तो तुम ने मुझ पर हाथ न डाला, पर
यह तुम्हारी घडी है, और अन्धकार का
अधिकार है॥

५४ फिर वे उसे पकडकर ले चले,
और महायाजक के घर में लाए और पतरस
दूर ही दूर उसके पीछे पीछे चलता था।
५५ और जब वे आगन में आग सुलगाकर
इकट्ठे बैठे, तो पतरस भी उन के बीच में
बैठ गया। ५६ और एक लौंडी उसे आग
के उजियाले मे बैठे देखकर और उस की
ओर ताककर कहने लगी, यह भी तो उसके
साथ था। ५७ परन्तु उस ने यह कहकर
इन्कार किया, कि हे नारी, मैं उसे नही
जानता। ५८ थोडी देर बाद किसी और
ने उसे देखकर कहा, तू भी तो उन्ही मे से
है: पतरस ने कहा, हे मनुष्य मैं नही हू।
५९ कोई घटे भर के वाद एक और मनुष्य
दृढता से कहने लगा; निश्चय यह भी तो
उसके साथ था, क्योकि यह गलीली है।
६० पतरस ने कहा, हे मनुष्य, मैं नहीं
जानता कि तू क्या कहता है? वह कह ही
रहा था कि तुरन्त मुर्ग ने वाग दी। ६१ तव
प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा, और
पतरस को प्रभु की वह वात याद आई जो
उस ने कही थी, कि आज मुर्ग के वाग देने से
पहिले, तू तीन वार मेरा इन्कार करेगा।
६२ और वह वाहर निकलकर फूट फूट
कर रोने लगा॥

६३ जो मनुष्य यीशु को पकडे हुए थे,
वे उसे ठट्ठों मे उडाकर पीटने लगे।
६४ और उस की आखें ढापकर उस से
पूछा, कि भविष्यद्वाणी करके वता कि तुझे
किसने मारा। ६५ और उन्हों ने वहुत सी
और भी निन्दा की वातें उसके विरोध में
कही॥

६६ जब दिन हुआ तो लोगों के पुरनिए
और महायाजक और शास्त्री इकट्ठे हुए,
और उसे अपनी महासभा में लाकर पूछा,
६७ यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे!
उस ने उन से कहा, यदि मैं तुम से कहूं,
तो प्रतीति न करोगे। ६८ और यदि पूछू,
तो उत्तर न दोगे। ६९ परन्तु अब से
मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की
दहिनी ओर बैठा रहेगा। ७० इस पर सब
ने कहा, तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?
उस ने उन से कहा; तुम आप ही कहते हो,
क्योकि मैं हू। ७१ तव उन्हो ने कहा,
अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है, क्योकि
हम ने आप ही उसके मुँह से सुन लिया
है॥

२३ तव सारी सभा उठकर उसे
पीलातुस के पास ले गई। २ और
वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे,
कि हम ने इसे लोगो को वहकाते और कैसर
को कर देने से मना करते, और अपने आप
को मसीह राजा कहते हुए सुना है।
३ पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियो
का राजा है? उस ने उसे उत्तर दिया, कि
तू आप ही कह रहा है। ४ तव पीलातुस
ने महायाजको और लोगो से कहा, मैं इस
मनुष्य में कुछ दोष नही पाता। ५ पर वे
और भी दृढता से कहने लगे, यह गलील से
लेकर यहा तक सारे यहूदिया मे उपदेश दे दे-
कर लोगो को उसकाता है। ६ यह सुनकर
पीलातुस ने पूछा, क्या यह मनुष्य गलीली

है? ७ और यह जानकर कि वह हेरोदेस
की रियासत का है, उसे हेरोदेस के पास
भेज दिया, क्योंकि उन दिनों में वह भी
यरूशलेम में था॥

८ हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही
प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उस
को देखना चाहता था इसलिये कि उसके
विषय में सुना था, और उसका कुछ चिन्ह
देखने की आशा रखता था। ९ वह उस से
बहुतेरी बातें पूछता रहा, पर उस ने उस को
कुछ भी उत्तर न दिया। १० और महा-
याजक और शास्त्री खड़े हुए तन मन से
उस पर दोष लगाते रहे। ११ तब हेरोदेस
ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान
करके ठट्ठों में उड़ाया, और भड़कीला वस्त्र
पहिनाकर उसे पीलातुस के पास लौटा
दिया। १२ उसी दिन पीलातुस और
हेरोदेस मित्र हो गए। इसके पहिले वे एक
दूसरे के बैरी थे॥

१३ पीलातुस ने महायाजकों और
सरदारों और लोगों को बुलाकर उन से
कहा। १४ तुम इस मनुष्य को लोगों का
बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो,
और देखो, मैं ने तुम्हारे साम्हने उस की
जांच की, पर जिन बातों का तुम उस पर
दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैं ने
उस में कुछ भी दोष नहीं पाया है। १५ न
हेरोदेस ने, क्योंकि उस ने उसे हमारे पास
लौटा दिया है और देखो, उस से ऐसा
कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य
ठहराया जाए। १६ इसलिये मैं उसे
पिटवाकर छोड़ देता हूं। १८ तब सब
मिलकर चिल्ला उठे, कि इस का काम तमाम
कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।
१९ यही किसी बलवे के कारण जो नगर
में हुआ था, और हत्या के कारण बन्दीगृह
में डाला गया था। २० पर पीलातुस ने
यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को
फिर समझाया। २१ परन्तु उन्हों ने
चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा,
क्रूस पर। २२ उस ने तीसरी बार उन से
कहा, क्यों उस ने कौन सी बुराई की है?
मैं ने उस में मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात
नहीं पाई! इसलिये मैं उसे पिटवाकर
छोड़ देता हूं। २३ परन्तु वे चिल्ला-
चिल्लाकर पीछे पड़ गए, कि वह क्रूस पर
चढ़ाया जाए, और उन का चिल्लाना प्रबल
हुआ। २४ सो पीलातुस ने आज्ञा दी, कि
उन की बिनती के अनुसार किया जाए।
२५ और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे
और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया
था, और जिसे वे मांगते थे, छोड़ दिया,
और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार
सौंप दिया॥

२६ जब वे उसे लिए जाते थे, तो
उन्हों ने शमौन नाम एक कुरेनी को जो
गांव से आ रहा था, पकड़कर उस पर
क्रूस को लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे
पीछे ले चले॥

२७ और लोगों की बड़ी भीड़ उसके
पीछे हो ली और बहुत सी स्त्रियां भी,
जो उसके लिये छाती-पीटती और विलाप
करती थीं। २८ यीशु ने उन की ओर
फिरकर कहा, हे यरूशलेम की पुत्रियो,
मेरे लिये मत रोओ, परन्तु अपने और
अपने बालकों के लिये रोओ। २९ क्योंकि
देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, धन्य
हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जने
और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया।
३० उस समय वे पहाड़ों से कहने लगेंगे,
कि हम पर गिरो, और टीलों से कि हमें
ढांप लो। ३१ क्योंकि जब वे हरे पेड़ के

साथ ऐसा करते है, तो सूखे के साथ क्या
कुछ न किया जाएगा ?

३२ वे और दो मनुष्यो को भी जो
कुकर्मी थे उसके साथ घात करने को
ले चले ।।

३३ जब वे उस जगह जिसे खोपडी
कहते है पहुचे, तो उन्हो ने वहा उसे और
उन कुकर्मियो को भी एक को दहिनी और
दूसरे को बाई और क्रूसो पर चढाया ।
३४ तब यीशु ने कहा, हे पिता, इन्हे क्षमा
कर, क्योकि ये जानते नही कि क्या कर
रहे है ? और उन्हो ने चिट्ठिया डालकर
उसके कपडे बाट लिए । ३५ लोग खडे
खडे देख रहे थे, और सरदार भी ठट्ठा कर
करके कहते थे, कि इस ने औरो को बचाया,
यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका
चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा
ले । ३६ सिपाही भी पास आकर और
सिरका देकर उसका ठट्ठा करके कहते थे ।
३७ यदि तू यहूदियो का राजा है, तो
अपने आप को बचा । ३८ और उसके
ऊपर एक पत्र भी लगा था, कि यह
यहूदियों का राजा है ।।

३९ जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन
मे से एक ने उस की निन्दा करके कहा,
क्या तू मसीह नही ? तो फिर अपने आप
को और हमे बचा । ४० इस पर दूसरे ने
उसे डाटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से भी
नही डरता ? तू भी तो वही दण्ड पा रहा
है । ४१ और हम तो न्यायानुसार दण्ड
पा रहे है, क्योकि हम अपने कामो का ठीक
फल पा रहे है, पर इस ने कोई अनुचित
काम नही किया । ४२ तब उस ने कहा,
हे यीशु, जब तू अपने राज्य मे आए, तो
मेरी सुधि लेना । ४३ उस ने उस से कहा,
मै तुझ से सच कहता हू, कि आज ही तू
मेरे साथ स्वर्गलोक मे होगा ।।

४४ और लगभग दो पहर से तीसरे
पहर तक सारे देश मे अन्धियारा छाया
रहा । ४५ और सूर्य का उजियाला जाता
रहा, और मन्दिर का परदा बीच से फट
गया । ४६ और यीशु ने बडे शब्द से पुकार
कर कहा, हे पिता, मै अपनी आत्मा तेरे
हाथो मे सौपता हू और यह कहकर प्राण
छोड दिए । ४७ सूबेदार ने, जो कुछ हुआ
था देखकर, परमेश्वर की बडाई की, और
कहा, निश्चय यह मनुष्य धर्मी था ।
४८ और भीड जो यह देखने को इकट्ठी
हुई थी, इस घटना को, देखकर छाती-
पीटती हुई लौट गई । ४९ और उसके
सब जान पहचान, और जो स्त्रिया गलील
से उसके साथ आई थी, दूर खडी हुई यह
सब देख रही थी ।।

५० और देखो यूसुफ नाम एक मन्त्री
जो सज्जन और धर्मी पुरुष था ।
५१ और उन के विचार और उन के इस
काम से प्रसन्न न था, और वह यहूदियो के
नगर अरिमतीया का रहनेवाला और
परमेश्वर के राज्य की बाट जोहनेवाला
था । ५२ उस ने पीलातुस के पास जाकर
यीशु की लोथ माग ली । ५३ और उसे
उतारकर चादर मे लपेटा, और एक कब्र
मे रखा, जो चट्टान मे खोदी हुई थी, और
उस मे कोई कभी न रखा गया था ।
५४ वह तैयारी का दिन था, और सब्त का
दिन आरम्भ होने पर था । ५५ और उन
स्त्रियो ने जो उसके साथ गलील मे आई
थी, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा,
और यह भी कि उस की लोथ किस रीति
से रखी गई है । ५६ और लौटकर
सुगन्धित वस्तुए और इत्र तैयार किया

और सब्त के दिन तो उन्हों ने आज्ञा के
अनुसार विश्राम किया ॥

२४ परन्तु सप्ताह के पहिले दिन
बड़े भोर को वे उन सुगन्धित
वस्तुओं को जो उन्हों ने तैयार की थीं,
ले कर कब्र पर आईं। २ और उन्हों ने
पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया।
३ और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ
न पाई। ४ जब वे इस बात से भौचक्की
हो रही थीं तो देखो, दो पुरुष झलकते वस्त्र
पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। ५ जब
वे डर गईं, और धरती की ओर मुंह झुकाए
रहीं, तो उन्हों ने उन से कहा, तुम जीवते
को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ती हो? ६ वह
यहां नहीं, परन्तु जी उठा है, स्मरण करो,
कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा
था। ७ कि अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र
पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और
क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन
जी उठे। ८ तब उस की बातें उन को
स्मरण आईं। ९ और कब्र से लौटकर
उन्हों ने उन ग्यारहों को, और, और सब
को, ये सब बातें कह सुनाईं। १० जिन्हों
ने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम
मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की
माता मरियम और उन के साथ की और
स्त्रियां भी थीं। ११ परन्तु उन की बातें
उन्हें कहानी सी समझ पड़ीं, और उन्हों ने
उन की प्रतीति न की। १२ तब पतरस
उठकर कब्र पर दौड़ गया, और झुककर
केवल कपड़े पड़े देखे, और जो हुआ था,
उस से अचम्भा करता हुआ, अपने घर
चला गया ॥

१३ देखो, उसी दिन उन में से दो जन
इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे,
जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी
पर था। १४ और वे इन सब बातों पर
जो हुई थीं, आपस में बातचीत करते जा
रहे थे। १५ और जब वे आपस में बात-
चीत और पूछपाछ कर रहे थे, तो यीशु आप
पास आकर उन के साथ हो लिया।
१६ परन्तु उन की आंखें ऐसी बन्द कर दी
गई थीं, कि उसे पहिचान न सके। १७ उस
ने उन से पूछा, ये क्या बातें हैं, जो तुम
चलते चलते आपस में करते हो? वे उदास
से खड़े रह गए। १८ यह सुनकर, उनमें
से क्लियुपास नाम एक व्यक्ति ने कहा,
क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है,
जो नहीं जानता, कि इन दिनों में उस में
क्या क्या हुआ है? १९ उस ने उन से
पूछा, कौन सी बातें? उन्हों ने उस से
कहा, यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर
और सब लोगों के निकट काम और वचन में
सामर्थी भविष्यद्वक्ता था। २० और
महायाजकों और हमारे सरदारों ने उसे
पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की आज्ञा
दी जाए, और उसे क्रूस पर चढ़वाया।
२१ परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्राएल
को छुटकारा देगा, और इन सब बातों के
सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है।
२२ और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें
आश्चर्य में डाल दिया है, जो भोर को कब्र
पर गई थीं। २३ और जब उस की लोथ
न पाई, तो यह कहती हुई आईं, कि हम ने
स्वर्गदूतों का दर्शन पाया, जिन्हों ने कहा
कि वह जीवित है। २४ तब हमारे
साथियों में से कई एक कब्र पर गए,
और जैसा स्त्रियों ने कहा था, वैसा ही
पाया, परन्तु उस को न देखा। २५ तब
उस ने उन से कहा, हे निर्बुद्धियो, और
भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास

उस को दण्डवत् करके बड़े आनन्द से
यरूशलेम को लौट गए। ५३ और
लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर
परमेश्वर की स्तुति किया करते थे॥

यूहन्ना रचित सुसमाचार

१ आदि में वचन * था, और वचन
परमेश्वर के साथ था, और वचन पर-
मेश्वर था। २ यही आदि में परमेश्वर के
साथ था। ३ सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न
हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस
में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न
न हुई। ४ उस में जीवन था, और वह
जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। ५ और
ज्योति अन्धकार में चमकती है, और
अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया †। ६ एक
मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित
हुआ जिस का नाम यूहन्ना था। ७ यह
गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही
दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं।
८ वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु
उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया
था। ९ सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य
को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली
थी। १० वह जगत में था, और जगत
उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने
उसे नहीं पहिचाना। ११ वह अपने घर
आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण
नहीं किया। १२ परन्तु जितनों ने उसे
ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के
सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात्
उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते
हैं। १३ वे न तो लोहू से, न शरीर की
इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु
परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। १४ और
वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और
सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में
डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी
महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की
महिमा। १५ यूहन्ना ने उसके विषय में
गवाही दी, और पुकारकर कहा, कि यह
वही है, जिस का मैं ने वर्णन किया, कि
जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़-
कर है क्योंकि वह मुझ से पहिले था।
१६ क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब
ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।
१७ इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के
द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई
यीशु मसीह के द्वारा पहुंची। १८ पर-
मेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा,
एकलौता पुत्र * जो पिता की गोद में है,
उसी ने उसे प्रगट किया॥

१९ यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब
यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और
लेवीयों को उस से यह पूछने के लिये

---

* या शब्द।
† या अन्धकार उस पर बलवन्त न हुआ।

* और पढ़ते हैं। परमेश्वर एकलौता।

भेजा, कि तू कौन है? २० तो उस ने
यह मान लिया, और इन्कार नही किया
परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नही हू।
२१ तब उन्हो ने उस से पूछा, तो फिर
कौन है? क्या तू एलिय्याह है? उस ने
कहा, मै नही हू तो क्या तू वह भविष्यद्-
वक्ता है? उस ने उत्तर दिया, कि नही।
२२ तब उन्हो ने उस से पूछा, फिर तू
है कौन? ताकि हम अपने भेजनेवालो
को उत्तर दे, तू अपने विषय मे क्या
कहता है? २३ उस ने कहा, मै जैसा
यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, जङ्गल
मे एक पुकारनेवाले का शब्द हू कि तुम
प्रभु का मार्ग सीधा करो। २४ ये फरी-
सियो की ओर से भेजे गए थे। २५ उन्हो
ने उस से यह प्रश्न पूछा, कि यदि तू न
मसीह है, और न एलिय्याह, और न वह
भविष्यद्वक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यो
देता है? २६ यूहन्ना ने उन को उत्तर
दिया, कि मै तो जल से* बपतिस्मा देता
हू, परन्तु तुम्हारे बीच मे एक व्यक्ति
खडा है, जिसे तुम नही जानते।
२७ अर्थात् मेरे बाद आनेवाला है, जिस
की जूती का बन्ध मै खोलने के योग्य नही।
२८ ये बाते यरदन के पार बैतनिय्याह मे
हुई, जहा यूहन्ना बपतिस्मा देता था।।

२९ दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी
ओर आते देखकर कहा, देखो, यह पर-
मेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप
उठा ले जाता है। ३० यह वही है, जिस
के विषय मे मैं ने कहा था, कि एक
पुरुष मेरे पीछे आता है, जो मुझ से
श्रेष्ठ है, क्योकि वह मुझ से पहिले था।
३१ और मैं तो उसे पहिचानता न था,
परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा
देता हुआ आया, कि वह इस्राएल पर
प्रगट हो जाए। ३२ और यूहन्ना ने यह
गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर
की नाई आकाश से उतरते देखा है, और
वह उस पर ठहर गया। ३३ और मैं
तो उसे पहिचानता नही था, परन्तु जिस
ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा,
उसी ने मुझ से कहा, कि जिस पर तू
आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही
पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।
३४ और मैं ने देखा, और गवाही दी है,
कि यही परमेश्वर का पुत्र है।।

३५ दूसरे दिन फिर यूहन्ना और
उसके चेलो मे से दो जन खडे हुए थे।
३६ और उस ने यीशु पर जो जा रहा
था दृष्टि करके कहा, देखो, यह पर-
मेश्वर का मेम्ना है। ३७ तब वे दोनो
चेले उस की यह सुनकर यीशु के पीछे
हो लिए। ३८ यीशु ने फिरकर और उन
को पीछे आते देखकर उन से कहा, तुम
किस की खोज मे हो? उन्हो ने उस से
कहा, हे रब्बी, अर्थात् (हे गुरु) तू कहा
रहता है? उस ने उन से कहा, चलो,
तो देख लोगे। ३९ तब उन्हो ने आकर
उसके रहने का स्थान देखा, और उस
दिन उसी के साथ रहे, और यह दसवे
घटे के लगभग था। ४० उन दोनो मे से
जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे
हो लिए थे, एक तो शमौन पतरस का
भाई अन्द्रियास था। ४१ उस ने पहिले
अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से
कहा, कि हम को ख्रिस्तस अर्थात् मसीह
मिल गया। ४२ वह उसे यीशु के पास
लाया यीशु ने उस पर दृष्टि करके

* या में।

कहा, कि तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू
केफा अर्थात् पतरस कहलाएगा ॥
४३ दूसरे दिन यीशु ने गलील को
जाना चाहा, और फिलिप्पुस से मिलकर
कहा, मेरे पीछे हो ले। ४४ फिलिप्पुस
तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा
का निवासी था। ४५ फिलिप्पुस ने नत-
नएल से मिलकर उस से कहा, कि जिस
का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और
भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को
मिल गया, वह यूसुफ का पुत्र, यीशु
नासरी है। ४६ नतनएल ने उस से कहा,
क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से
निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से
कहा, चलकर देख ले। ४७ यीशु ने
नतनएल को अपनी ओर आते देखकर
उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच
इस्राएली है इस में कपट नहीं।
४८ नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे
कहां से जानता है? यीशु ने उस को
उत्तर दिया, उस से पहले कि फिलिप्पुस
ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के
तले था, तब मैं ने तुझे देखा था।
४९ नतनएल ने उस को उत्तर दिया, कि
हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू
इस्राएल का महाराजा है। ५० यीशु ने
उस को उत्तर दिया, मैं ने जो तुझ से
कहा, कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले
देखा, क्या तू इसी लिये विश्वास करता
है? तू इस से बड़े बड़े काम देखेगा।
५१ फिर उस से कहा, मैं तुम से सच
सच कहता हूं कि तुम स्वर्ग को खुला
हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को
ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर
उतरते देखोगे ॥

२ फिर तीसरे दिन गलील के काना
में किसी का ब्याह था, और यीशु
की माता भी वहां थी। २ और यीशु
और उसके चेले भी उस ब्याह में नेवते
गए थे। ३ जब दाखरस घट गया, तो
यीशु की माता ने उस से कहा, कि उन
के पास दाखरस नहीं रहा। ४ यीशु ने
उस से कहा, हे महिला मुझे तुझ से क्या
काम? अभी मेरा समय नहीं आया।
५ उस की माता ने सेवकों से कहा, जो
कुछ वह तुम से कहे, वही करना।
६ वहां यहूदियों के शुद्ध करने की रीति
के अनुसार पत्थर के छः मटके धरे थे,
जिन में दो दो, तीन तीन मन समाता था।
७ यीशु ने उन से कहा, मटकों में पानी भर
दो सो उन्हों ने उन्हें मुहांमुंह भर दिया।
८ तब उस ने उन से कहा, अब निकालकर
भोज के प्रधान के पास ले जाओ। ९ वे ले
गए, जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा,
जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता
था, कि वह कहां से आया है, (परन्तु जिन
सेवकों ने पानी निकाला था, वे जानते थे)
तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर,
उस से कहा। १० हर एक मनुष्य पहिले
अच्छा दाखरस देता है और जब लोग
पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है,
परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख
छोड़ा है। ११ यीशु ने गलील के काना में
अपना यह पहिला चिन्ह * दिखाकर अपनी
महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस
पर विश्वास किया ॥
१२ इस के बाद वह और उस की माता
और उसके भाई और उसके चेले कफरनहूम
को गए और वहां कुछ दिन रहे ॥

* या आश्चर्य्यकर्म।

१३ यहूदियों का फसह का पर्व्व निकट
था और यीशु यरूशलेम को गया।
१४ और उस ने मन्दिर में बैल और भेंड
और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों
को बैठे हुए पाया। १५ और रस्सियों का
कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को
मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के
पैसे बिथरा दिए, और पीढ़ों को उलट दिया।
१६ और कबूतर बेचनेवालों से कहा,
इन्हें यहां से ले जाओ मेरे पिता के भवन
को ब्योपार का घर मत बनाओ। १७ तब
उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है,
'तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी'।
१८ इस पर यहूदियों ने उस से कहा, तू
जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह
दिखाता है? १९ यीशु ने उन को उत्तर
दिया, कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं
उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।
२० यहूदियों ने कहा, इस मन्दिर के बनाने
में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे
तीन दिन में खड़ा कर देगा? २१ परन्तु
उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में
कहा था। २२ सो जब वह मुर्दों में से जी
उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया,
कि उस ने यह कहा था, और उन्हों ने
पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने
कहा था, प्रतीति की॥

२३ जब वह यरूशलेम में फसह के समय
पर्व्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो
वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर
विश्वास किया। २४ परन्तु यीशु ने अपने
आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा,
क्योंकि वह सब को जानता था। २५ और
उसे प्रयोजन न था, कि मनुष्य के विषय में
कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता
था, कि मनुष्य के मन में क्या है?

३ फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक
मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार
था। २ उस ने रात को यीशु के पास आकर
उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू
परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है,
क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता
है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो
नहीं दिखा सकता। ३ यीशु ने उस को
उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता
हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो
परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
४ नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब
बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता
है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी
बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?
५ यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच
सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल
और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। ६ क्योंकि
जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और
जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
७ अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा,
कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
८ हवा जिधर चाहती है उधर चलती है,
और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं
जानता, कि वह कहां से आती और किधर
को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है
वह ऐसा ही है। ९ नीकुदेमुस ने उस को
उत्तर दिया, कि ये बातें क्योंकर हो सकती
हैं? १० यह सुनकर यीशु ने उस से कहा,
तू इस्राएलियों का गुरु हो कर भी क्या इन
बातों को नहीं समझता। ११ मैं तुझ से
सच सच कहता हूं कि हम जो जानते हैं,
वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है,
उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी
गवाही ग्रहण नहीं करते। १२ जब मैं ने

तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम
प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग
की बातें कहूं, तो फिर क्योंकर प्रतीति
करोगे? १३ और कोई स्वर्ग पर नहीं
चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात्
मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। १४ और
जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को
ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है
कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया
जाए। १५ ताकि जो कोई विश्वास करे
उस में अनन्त जीवन पाए॥

१६ क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा
प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र
दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास
करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन
पाए। १७ परमेश्वर ने अपने पुत्र को
जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर
दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत
उसके द्वारा उद्धार पाए। १८ जो उस
पर विश्वास करता है, उस पर दंड की
आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास
नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका, इस-
लिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र
के नाम पर विश्वास नहीं किया। १९ और
दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति
जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को
ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के
काम बुरे थे। २० क्योंकि जो कोई बुराई
करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और
ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो
कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।
२१ परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह
ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके
काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर
से किए गए हैं॥

२२ इस के बाद यीशु और उसके चेले
यहूदिया देश में आए, और वह वहां उन
के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।
२३ और यूहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन
में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहां बहुत
जल था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।
२४ क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने
में नहीं डाला गया था। २५ वहां यूहन्ना के
चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय
में वाद विवाद हुआ। २६ और उन्हों ने
यूहन्ना के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी,
जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था,
और जिस की तू ने गवाही दी है देख, वह
बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास
आते हैं। २७ यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब
तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब
तक वह कुछ नहीं पा सकता। २८ तुम तो
आप ही मेरे गवाह हो, कि मैं ने कहा, मैं
मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया
हूं। २९ जिस की दुलहिन है, वही दूल्हा
है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ
उस की सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत
हर्षित होता है, अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ
है। ३० अवश्य है कि वह बढ़े और मैं
घटूं॥

३१ जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम
है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है,
और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग
से आता है, वह सब के ऊपर है। ३२ जो
कुछ उस ने देखा, और सुना है, उसी की
गवाही देता है, और कोई उस की गवाही
ग्रहण नहीं करता। ३३ जिस ने उस की
गवाही ग्रहण कर ली उस ने इस बात पर
छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है।
३४ क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है,
वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि

वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।
३५ पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उस ने
सब वस्तुए उसके हाथ में दे दी हैं। ३६ जो
पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन
उसका है, परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता,
वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर
का क्रोध उस पर रहता है॥

४ फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि
फरीसियो ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना
से अधिक चेले बनाता, और उन्हें बपतिस्मा
देता है। २ (यद्यपि यीशु आप नही बरन
उसके चेले बपतिस्मा देते थे)। ३ तब
वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को
चला गया। ४ और उस को सामरिया से
होकर जाना अवश्य था। ५ सो वह सूखार
नाम सामरिया के एक नगर तक आया,
जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने
अपने पुत्र यूसुफ को दिया था। ६ और
याकूब का कूआं भी वही था; सो यीशु मार्ग
का थका हुआ उस कूए पर योंही बैठ गया,
और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई।
७ इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को
आई· यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी
पिला। ८ क्योंकि उसके चेले तो नगर में
भोजन मोल लेने को गए थे। ९ उस
सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर
मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यो मागता है?
(क्योंकि यहूदी सामरियो के साथ किसी
प्रकार का व्यवहार नही रखते)।
१० यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर
के वरदान को जानती, और यह भी जानती
कि वह कौन है जो तुझ से कहता है, मुझे
पानी पिला तो तू उस से मागती, और वह
तुझे जीवन का जल देता। ११ स्त्री ने
उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को
तो कुछ है भी नहीं, और कूआ गहिरा है·
तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहा
से आया? १२ क्या तू हमारे पिता याकूब
से बडा है, जिस ने हमें यह कूआ दिया;
और आपही अपने सन्तान, और अपने ढोरो
समेत उस में से पीया? १३ यीशु ने उस
को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा
वह फिर पियासा होगा। १४ परन्तु जो
कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा,
वह फिर अनन्तकाल तक पियासा न होगा·
बरन जो जल मैं उसे दूगा, वह उस में एक
सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये
उमडता रहेगा। १५ स्त्री ने उस से कहा,
हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं पियासी
न होऊ और न जल भरने को इतनी दूर
आऊ। १६ यीशु ने उस से कहा, जा,
अपने पति को यहा बुला ला। १७ स्त्री ने
उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हू यीशु
ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं
बिना पति की हूं। १८ क्योंकि तू पाच
पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब
है वह भी तेरा पति नही, यह तू ने सच
कहा है। १९ स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु,
मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।
२० हमारे बापदादो ने इसी पहाड पर
भजन किया: और तुम कहते हो कि वह
जगह जहा भजन करना चाहिए यरूशलेम
में है। २१ यीशु ने उस से कहा, हे नारी,
मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय
आता है कि तुम न तो इस पहाड पर पिता
का भजन करोगे न यरूशलेम में। २२ तुम
जिसे नही जानते, उसका भजन करते हो;
और हम जिसे जानते है उसका भजन
करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।
२३ परन्तु वह समय आता है, बरन अब
भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन

आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढता है। २४ परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें। २५ स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है, जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा। २६ यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूं, वही हूं॥

२७ इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे, कि वह स्त्री से बातें कर रहा है, तौभी किसी ने न कहा, कि तू क्या चाहता है? या किस लिये उस से बातें करता है। २८ तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी। २९ आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: कहीं यही तो मसीह नहीं है? ३० सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे। ३१ इतने में उसके चेले यीशु से यह बिनती करने लगे, कि हे रब्बी, कुछ खा ले। ३२ परन्तु उस ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते। ३३ तब चेलों ने आपस में कहा, क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है? ३४ यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं। ३५ क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूं, अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं। ३६ और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें। ३७ क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है कि बोनेवाला और है और काटनेवाला और। ३८ मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: औरों ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए॥

३९ और उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी थी, कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया। ४० तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उस से बिनती करने लगे, कि हमारे यहां रह: सो वह वहां दो दिन तक रहा। ४१ और उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया। ४२ और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते, क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्त्ता है॥

४३ फिर उन दो दिनों के बाद वह वहां से कूच करके गलील को गया। ४४ क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता। ४५ जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उस से मिले, क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्व्व के समय किए थे, उन्हों ने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व्व में गए थे॥

४६ तब वह फिर गलील के काना में आया, जहां उस ने पानी को दाख रस बनाया था: और राजा का एक कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था। ४७ वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उस से

विनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को
चगा कर दे क्योकि वह मरने पर था।
४८ यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम
चिन्ह और अद्भुत काम न देखोगे तब तक
कदापि विश्वास न करोगे। ४९ राजा के
कर्मचारी ने उस से कहा, हे प्रभु, मेरे बालक
की मृत्यु होने से पहिले चल। ५० यीशु ने
उस से कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित है उस
मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति
की, और चला गया। ५१ वह मार्ग मे
जा रहा था, कि उसके दास उस से आ
मिले और कहने लगे कि तेरा लडका
जीवित है। ५२ उस ने उन से पूछा कि
किस घडी वह अच्छा होने लगा? उन्हो ने
उस से कहा, कल सातवे घण्टे मे उसका
ज्वर उतर गया। ५३ तब पिता जान गया,
कि यह उसी घडी हुआ जिस घडी यीशु ने
उस से कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उस ने
और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।
५४ यह दूसरा आश्चर्यकर्म था, जो यीशु ने
यहूदिया से गलील मे आकर दिखाया॥

५ इन बातो के पीछे यहूदियो का
एक पर्व्व हुआ और यीशु यरूशलेम
को गया॥

२ यरूशलेम मे भेड-फाटक के पास
एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा मे बेतहसदा
कहलाता है, और उसके पाच ओसारे है।
३ इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लगडे
और सूखे अगवाले (पानी के हिलने की
आशा मे) पडे रहते थे। ४ (क्योकि
नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत
कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते
थे पानी हिलते ही जो कोई पहिले उतरता
वह चगा हो जाता था चाहे उसकी कोई
बीमारी क्यो न हो।) ५ वहा एक मनुष्य
था, जो अडतीस वर्ष से बीमारी में पडा
था। ६ यीशु ने उसे पडा हुआ देखकर
और जानकर कि वह बहुत दिनो से इस
दशा मे पडा है, उस से पूछा, क्या तू चगा
होना चाहता है? ७ उस बीमार ने उस
को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई
मनुष्य नही, कि जब पानी हिलाया जाए,
तो मुझे कुण्ड मे उतारे, परन्तु मेरे पहुचते
पहुचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पडता
है। ८ यीशु ने उस से कहा, उठ, अपनी
खाट उठाकर चल फिर। ९ वह मनुष्य
तुरन्त चगा हो गया, और अपनी खाट
उठाकर चलने फिरने लगा॥

१० वह सब्त का दिन था। इसलिये
यहूदी उस से, जो चगा हुआ था, कहने लगे,
कि आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट
उठानी उचित नही। ११ उस ने उन्हे
उत्तर दिया, कि जिस ने मुझे चगा किया,
उसी ने मुझ से कहा, अपनी खाट उठाकर
चल फिर। १२ उन्हो ने उस से पूछा,
वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा,
खाट उठाकर चल फिर? १३ परन्तु जो
चगा हो गया था, वह नही जानता था वह
कौन है, क्योकि उस जगह मे भीड होने के
कारण यीशु वहा से हट गया था। १४ इन
बातो के बाद वह यीशु को मन्दिर मे मिला,
तब उस ने उस से कहा, देख, तू तो चगा
हो गया है, फिर से पाप मत करना, ऐसा
न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ
पर आ पडे। १५ उस मनुष्य ने जाकर
यहूदियो से कह दिया, कि जिस ने मुझे चगा
किया, वह यीशु है। १६ इस कारण यहूदी
यीशु को सताने लगे, क्योकि वह ऐसे ऐसे
काम सब्त के दिन करता था। १७ इस
पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता
अब तक काम करता है, और मैं भी काम

करता हूं। १८ इस कारण यहूदी और भी
अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने
लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की
विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना
पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के
तुल्य ठहराता था॥

१९ इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं
तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ
नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को
करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों
को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से
करता है। २० क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति
रखता है और जो जो काम वह आप करता
है, वह सब उसे दिखाता है, और वह इन से
भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम
अचम्भा करो। २१ क्योंकि जैसा पिता
मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा
ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता
है। २२ और पिता किसी का न्याय भी
नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब
काम पुत्र को सौंप दिया है। २३ इसलिये
कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं
वैसे ही पुत्र का भी आदर करें जो पुत्र का
आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने
उसे भेजा है, आदर नहीं करता। २४ मैं
तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन
सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता
है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर
दंड की आज्ञा नहीं होती * परन्तु वह मृत्यु
के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
२५ मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय
आता है, और अब है, जिस में मृतक
परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो
सुनेंगे वे जीएंगे। २६ क्योंकि जिस रीति
से पिता अपने आप में जीवन रखता है,
उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार
दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।
२७ वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार
दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र
है। २८ इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि
वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं
उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। २९ जिन्हों
ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान *
के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई
की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी
उठेंगे॥

३० मैं अपने आप से कुछ नहीं कर
सकता, जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता
हूं, और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं
अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले
की इच्छा चाहता हूं। ३१ यदि मैं आप
ही अपनी गवाही दूं, तो मेरी गवाही सच्ची
नहीं। ३२ एक और है जो मेरी गवाही
देता है, और मैं जानता हूं कि मेरी जो गवाही
देता है वह सच्ची है। ३३ तुम ने यूहन्ना
से पुछवाया और उस ने सच्चाई की गवाही
दी है। ३४ परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य
की गवाही नहीं चाहता, तौभी मैं ये बातें
इसलिये कहता हूं, कि तुम्हें उद्धार मिले।
३५ वह तो जलता और चमकता हुआ
दीपक था, और तुम्हें कुछ देर तक उस की
ज्योति में, मगन होना अच्छा लगा।
३६ परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह
यूहन्ना की गवाही से बड़ी है क्योंकि जो
काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है
अर्थात् यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे
गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।
३७ और पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी

* या वह न्याय में नहीं आता।

* या मृतकोत्थान।

ने मेरी गवाही दी है तुम ने न कभी
उसका शब्द सुना, और न उसका रूप
देखा है। ३८ और उसके वचन को मन
में स्थिर नही रखते क्योंकि जिसे उस ने
भेजा उस की प्रतीति नही करते। ३९ तुम
पवित्रशास्त्र में ढूंढते हो*, क्योंकि समझते
हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हे मिलता
है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता
है। ४० फिर भी तुम जीवन पाने के लिये
मेरे पास आना नही चाहते। ४१ मैं
मनुष्यो से आदर नही चाहता। ४२ परन्तु
मैं तुम्हें जानता हू, कि तुम मे परमेश्वर का
प्रेम नही। ४३ मैं अपने पिता के नाम से
आया हू, और तुम मुझे ग्रहण नही करते,
यदि कोई और अपने ही नाम से आए, तो
उसे ग्रहण कर लोगे। ४४ तुम जो एक
दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर
जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नही
चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?
४५ यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने
तुम पर दोष लगाऊंगा तुम पर दोष
लगानेवाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर
तुम ने भरोसा रखा है। ४६ क्योंकि यदि
तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी
प्रतीति करते, इसलिये कि उस ने मेरे
विषय में लिखा है। ४७ परन्तु यदि तुम
उस की लिखी हुई बातो की प्रतीति नही
करते, तो मेरी बातो की क्योंकर प्रतीति
करोगे।।

६ इन बातो के बाद यीशु गलील की
झील अर्थात् तिबिरियास की झील के
पास गया। २ और एक बडी भीड उसके
पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्य कर्म†
वह बीमारो पर दिखाता था वे उन को
देखते थे। ३ तब यीशु पहाड पर चढकर
अपने चेलो के साथ वहा बैठा। ४ और
यहूदियो के फसह का पर्व्व निकट था।
५ तब यीशु ने अपनी आखें उठाकर एक
बडी भीड को अपने पास आते देखा, और
फिलिप्पुस से कहा, कि हम इन के भोजन
के लिये कहा से रोटी मोल लाए? ६ परन्तु
उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही,
क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या
करूगा। ७ फिलिप्पुस ने उस को उत्तर
दिया, कि दो सौ दीनार* की रोटी उन के
लिये पूरी भी न होगी कि उन में से हर एक
को थोडी थोडी मिल जाए। ८ उसके
चेलो मे से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास
ने उस से कहा। ९ यहा एक लडका है
जिस के पास जव की पाच रोटी और दो
मछलिया हैं परन्तु इतने लोगो के लिये वे
क्या है। १० यीशु ने कहा, कि लोगो को
बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी. तब
वे लोग जो गिनती में लगभग पाच हजार
के थे, बैठ गए। ११ तब यीशु ने रोटिया
ली, और धन्यवाद करके बैठनेवालो को
बाट दी और वैसे ही मछलियो में से
जितनी वे चाहते थे बाट दिया। १२ जब
वे खाकर तृप्त हो गए तो उस ने अपने चेलो
से कहा, कि बचे हुए टुकडे बटोर लो, कि
कुछ फेका† न जाए। १३ सो उन्हो ने
बटोरा, और जव की पाच रोटियो के टुकडे
जो खानेवालो से बच रहे थे उन की बारह
टोकरिया भरी। १४ तब जो आश्चर्य
कर्म उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर
कहने लगे, कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत
में आनेवाला था निश्चय यही है।

* या ढूंढो। † यू० चिन्ह।

* देखो मत्ती १८:२८। † यू० खोया न जाए।

१५ यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा
बनाने के लिये आकर पकडना चाहते हैं,
फिर पहाड पर अकेला चला गया॥

१६ फिर जब संध्या हुई, तो उसके
चेले झील के किनारे गए। १७ और नाव
पर चढकर झील के पार कफरनहूम को
जाने लगे उस समय अन्धेरा हो गया था,
और यीशु अभी तक उन के पास नही आया
था। १८ और आन्धी के कारण झील में
लहरे उठने लगीं। १९ सो जब वे खेते
खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए,
तो उन्हो ने यीशु को झील पर चलते, और
नाव के निकट आते देखा, और डर गए।
२० परन्तु उस ने उन से कहा, कि मैं हू,
डरो मत। २१ सो वे उसे नाव पर चढा
लेने के लिये तयार हुए और तुरन्त वह
नाव उस स्थान पर जा पहुची जहा वह
जाते थे॥

२२ दूसरे दिन उस भीड ने, जो झील
के पार खडी थी, यह देखा, कि यहा एक
को छोडकर और कोई छोटी नाव न थी,
और यीशु अपने चेलो के साथ उस नाव
पर न चढा, परन्तु केवल उसके चेले चले
गए थे। २३ (तौभी और छोटी नावें
तिबिरियास से उस जगह के निकट आई,
जहा उन्हो ने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद
रोटी खाई थी)। २४ सो जब भीड ने
देखा, कि यहा न यीशु है, और न उसके
चेले, तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ के
यीशु को ढूढते हुए कफरनहूम को पहुचे।
२५ और झील के पार उस से मिलकर
कहा, हे रब्बी, तू यहा कब आया?
२६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम
से सच सच कहता हू, तुम मुझे इसलिये
नही ढूढते हो कि तुम ने अचम्भित काम
देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटिया खाकर
तृप्त हुए। २७ नाशमान भोजन के लिये
परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये
जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे
मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता,
अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी
है। २८ उन्हो ने उस से कहा, परमेश्वर
के कार्य्य करने के लिये हम क्या करें?
२९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, परमेश्वर
का कार्य्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे
उस ने भेजा है, विश्वास करो। ३० तब
उन्हो ने उस से कहा, फिर तू कौन सा चिन्ह
दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति
करें, तू कौन सा काम दिखाता है?
३१ हमारे बापदादो ने जंगल में मन्ना*
खाया, जैसा लिखा है, कि उस ने उन्हें
खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी। ३२ यीशु
ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हू
कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी,
परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग
से देता है। ३३ क्योंकि परमेश्वर की
रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत
को जीवन देती है। ३४ तब उन्हो ने
उस से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा
दिया कर। ३५ यीशु ने उन से कहा,
जीवन की रोटी मैं हू जो मेरे पास आएगा
वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर
विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा।
३६ परन्तु मैं ने तुम से कहा, कि तुम ने
मुझे देख भी लिया है, तौभी विश्वास नही
करते। ३७ जो कुछ पिता मुझे देता है
वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई
मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूगा।
३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा नही, बरन
अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के

* देखो निर्ग० १६ १५।

लिये स्वर्ग से उतरा हू। ३९ और मेरे
भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ
उस ने मुझे दिया है, उस मे से मै कुछ न
खोऊ परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला
उठाऊ। ४० क्योकि मेरे पिता की इच्छा
यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस
पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए,
और मै उसे अंतिम दिन फिर जिला
उठाऊगा।।

४१ सो यहूदी उस पर कुडकुडाने लगे,
इसलिये कि उस ने कहा था, कि जो रोटी
स्वर्ग से उतरी, वह मै हू। ४२ और उन्हो
ने कहा, क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नही,
जिस के माता-पिता को हम जानते है?
तो वह क्योकर कहता है कि मै स्वर्ग से
उतरा हू। ४३ यीशु ने उन को उत्तर
दिया, कि आपस में मत कुडकुडाओ।
४४ कोई मेरे पास नही आ सकता, जब
तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खीच
न ले, और मैं उस को अंतिम दिन फिर
जिला उठाऊगा। ४५ भविष्यद्वक्ताओ के
लेखो मे यह लिखा है, कि वे सब परमेश्वर
की ओर से सिखाए हुए होगे। जिस किसी
ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे
पास आता है। ४६ यह नही, कि किसी ने
पिता को देखा परन्तु जो परमेश्वर की
ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा है।
४७ मै तुम से सच सच कहता हू, कि जो
कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी
का है। ४८ जीवन की रोटी मैं हू।
४९ तुम्हारे बापदादो ने जगल मे मन्ना
खाया और मर गए। ५० यह वह रोटी
है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस
में से खाए और न मरे। ५१ जीवन की
रोटी जो स्वर्ग से उतरी मै हू। यदि कोई
इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित
रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के
लिये दूगा, वह मेरा मास है।।

५२ इस पर यहूदी यह कहकर आपस
में झगडने लगे, कि यह मनुष्य क्योकर हमे
अपना मास खाने को दे सकता है?
५३ यीशु ने उन से कहा, मै तुम से सच
सच कहता हू जब तक मनुष्य के पुत्र का
मास न खाओ, और उसका लोहू न पीओ,
तुम में जीवन नही। ५४ जो मेरा मास
खाता, और मेरा लोहू पीता है, अनन्त
जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन
फिर उसे जिला उठाऊगा। ५५ क्योकि
मेरा मास वास्तव में खाने की वस्तु है और
मेरा लोहू वास्तव मे पीने की वस्तु है।
५६ जो मेरा मास खाता और मेरा लोहू
पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है,
और मै उस मे। ५७ जैसा जीवते पिता ने
मुझे भेजा और मै पिता के कारण जीवित
हू वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे
कारण जीवित रहेगा। ५८ जो रोटी स्वर्ग
से उतरी यही है, बापदादो के समान नही
कि खाया, और मर गए जो कोई यह
रोटी खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा।
५९ ये बाते उस ने कफरनहूम के एक
आराधनालय मे उपदेश देते समय कही।।

६० इसलिये उसके चेलो मे से बहुतो
ने यह सुनकर कहा, कि यह बात नागवार *
है, इसे कौन सुन सकता है? ६१ यीशु ने
अपने मन मे यह जान कर कि मेरे चेले
आपस मे इस बात पर कुडकुडाते है, उन से
पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती
है? ६२ और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को
जहा वह पहिले था, वहा ऊपर जाते देखोगे,
तो क्या होगा? ६३ आत्मा तो जीवन-

* या कठिन।

दायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं जो
बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा है,
और जीवन भी है। ६४ परन्तु तुम में से
कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते
क्योंकि यीशु तो पहिले ही से जानता था
कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं?
और कौन मुझे पकड़वाएगा। ६५ और
उस ने कहा, इसी लिये मैं ने तुम से कहा
था कि जब तक किसी को पिता की ओर से
यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे
पास नहीं आ सकता॥

६६ इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे
उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके
साथ न चले। ६७ तब यीशु ने उन बारहों
से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?
६८ शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया,
कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त
जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।
६९ और हम ने विश्वास किया, और जान
गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही
है। ७० यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या
मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया?
तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान * है।
७१ यह उस ने शमौन इस्करियोती के पुत्र
यहूदाह के विषय में कहा, क्योंकि यही जो
उन बारहों में से था, उसे पकड़वाने को
था॥

७ इन बातों के बाद यीशु गलील में
फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार
डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिये वह
यहूदिया में फिरना न चाहता था। २ और
यहूदियों का मण्डपों का पर्व्व निकट था।
३ इसलिये उसके भाइयों ने उस से कहा,
यहां से कूच करके यहूदिया में चला जा,

* यू० इब्लीस।

कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चेले भी
देखें। ४ क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो
प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे
यदि तू यह काम करता है, तो अपने तईं
जगत पर प्रगट कर। ५ क्योंकि उसके
भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।
६ तब यीशु ने उन से कहा, मेरा समय
अभी तक नहीं आया, परन्तु तुम्हारे लिये
सब समय है। ७ जगत तुम से बैर नहीं
कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता
है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही
देता हूं, कि उसके काम बुरे हैं। ८ तुम
पर्व्व में जाओ मैं अभी इस पर्व्व में नहीं
जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा
नहीं हुआ। ९ वह उन से ये बातें कहकर
गलील ही में रह गया॥

१० परन्तु जब उसके भाई पर्व्व में
चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं,
परन्तु मानो गुप्त होकर गया। ११ सो
यहूदी पर्व्व में उसे यह कहकर ढूंढ़ने लगे
कि वह कहां है? १२ और लोगों में उसके
विषय में चुपके चुपके बहुत सी बातें हुई
कितने कहते थे, वह भला मनुष्य है और
कितने कहते थे, नहीं, वह लोगों को
भरमाता है। १३ तौभी यहूदियों के भय
के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर
नहीं बोलता था॥

१४ और जब पर्व्व के आधे दिन बीत
गए, तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने
लगा। १५ तब यहूदियों ने अचम्भा करके
कहा, कि इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?
१६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा
उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का
है। १७ यदि कोई उस की इच्छा पर
चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय
में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर

से है, या मैं अपनी ओर से कहता हू।
१८ जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह
अपनी ही बडाई चाहता है, परन्तु जो अपने
भेजनेवाले की वडाई चाहता है वही सच्चा
है, और उस में अधर्म नही। १९ क्या
मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नही दी? तौभी तुम
में से कोई व्यवस्था पर नही चलता।
तुम क्यो मुझे मार डालना चाहते हो?
२० लोगो ने उत्तर दिया, कि तुझ में
दुष्टात्मा है, कौन तुझे मार डालना चाहता
है? २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि
मैं ने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा
करते हो। २२ इसी कारण मूसा ने तुम्हे
खतने की आज्ञा दी है (यह नही कि वह
मूसा की ओर से है परन्तु बाप-दादो से चली
आई है), और तुम सब्त के दिन को मनुष्य
का खतना करते हो। २३ जब सब्त के दिन
मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा
की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम
मुझ पर क्यो इसलिये क्रोध करते हो, कि मैं
ने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति
से चगा किया। २४ मुह देखकर न्याय न
चुकाओ, परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ॥

२५ तब कितने यरूशलेमी कहने लगे,
क्या यह वही नही, जिस के मार डालने का
प्रयत्न किया जा रहा है। २६ परन्तु देखो,
वह तो खुल्लमखुल्ला बाते करता है और
कोई उस से कुछ नही कहता, क्या सम्भव
है कि सरदारो ने सच सच जान लिया है,
कि यही मसीह है। २७ इस को तो हम
जानते है, कि यह कहा का है, परन्तु मसीह
जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहा
का है। २८ तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश
देते हुए पुकार के कहा, तुम मुझे जानते हो
और यह भी जानते हो कि मैं कहा का हू
मैं तो आप से नही आया परन्तु मेरा भेजने-
वाला सच्चा है, उस को तुम नही जानते।
२९ मैं उसे जानता हू, क्योकि मैं उस की
ओर से हू और उसी ने मुझे भेजा है।
३० इस पर उन्हो ने उसे पकडना चाहा
तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योकि
उसका समय अब तक न आया था।
३१ और भीड में से बहुतेरो ने उस पर
विश्वास किया, और कहने लगे, कि मसीह
जब आएगा, तो क्या इस से अधिक आश्चर्य-
कर्म दिखाएगा जो इस ने दिखाए?
३२ फरीसियो ने लोगो को उसके विषय
मे ये बाते चुपके चुपके करते सुना, और
महायाजको और फरीसियो ने उसके पकडने
को सिपाही भेजे। ३३ इस पर यीशु ने
कहा, मैं थोडी देर तक और तुम्हारे साथ हू,
तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊगा।
३४ तुम मुझे ढूढोगे, परन्तु नही पाओगे
और जहा मैं हू, वहा तुम नही आ सकते।
३५ यहूदियो ने आपस मे कहा, यह कहा
जाएगा, कि हम इसे न पाएगे क्या वह
उन के पास जाएगा, जो यूनानियो मे तित्तर
बित्तर होकर रहते है, और यूनानियो को
भी उपदेश देगा? ३६ यह क्या बात है
जो उस ने कही, कि तुम मुझे ढूढोगे, परन्तु
न पाओगे और जहा मै हू, वहा तुम नही
आ सकते?

३७ फिर पर्व्व के अतिम दिन, जो मुख्य
दिन है, यीशु खडा हुआ और पुकार कर
कहा, यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास
आकर पीए। ३८ जो मुझ पर विश्वास
करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके
हृदय * में से जीवन के जल की नदिया बह
निकलेगी। ३९ उस ने यह वचन उस
आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर

* यू० पेट।

विश्वास करनेवाले पाने पर थे, क्योकि
आत्मा अब तक न उतरा था, क्योकि यीशु
अब तक अपनी महिमा को न पहुचा था।
४० तब भीड मे से किसी किसी ने ये बातें
सुन कर कहा, सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता
है। ४१ औरो ने कहा, यह मसीह है,
परन्तु किसी ने कहा, क्यो? क्या मसीह
गलील से आएगा? ४२ क्या पवित्र शास्त्र
में यह नही आया, कि मसीह दाऊद के वश
से और बतलहम गाव से आएगा जहा दाऊद
रहता था? ४३ सो उसके कारण लोगो
में फूट पडी। ४४ उन में से कितने उसे
पकडना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर
हाथ न डाला॥

४५ तब सिपाही महायाजको और
फरीसियो के पास आए, और उन्हो ने उन से
कहा, तुम उसे क्यो नही लाए?
४६ सिपाहियो ने उत्तर दिया, कि किसी
मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की। ४७ फरी-
सियो ने उन को उत्तर दिया, क्या तुम भी
भरमाए गए हो? ४८ क्या सरदारो या
फरीसियो में से किसी ने भी उस पर
विश्वास किया है? ४९ परन्तु ये लोग
जो व्यवस्था नहीं जानते, स्रापित है।
५० नीकुदेमुस ने, (जो पहिले उसके पास
आया था और उन में से एक था), उन से
कहा। ५१ क्या हमारी व्यवस्था किसी
व्यक्ति को जब तक पहिले उस की सुनकर
जान न ले, कि वह क्या करता है, दोषी
ठहराती है? ५२ उन्हो ने उसे उत्तर
दिया, क्या तू भी गलील का है ढूढ और
देख, कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट
नही होने का। ५३ [तब* सब कोई
अपने अपने घर को गए॥

८ परन्तु यीशु जैतून के पहाड पर
गया। २ और भोर को फिर मन्दिर
में आया, और सब लोग उसके पास आए,
और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
३ तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को
लाए, जो व्यभिचार में पकडी गई थी, और
उस को बीच में खडी करके यीशु से कहा।
४ हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते ही
पकडी गई है। ५ व्यवस्था में मूसा ने हमें
आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियो को पत्थरवाह
करें सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता
है? ६ उन्हो ने उस को परखने के लिये
यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के
लिये कोई बात पाए, परन्तु यीशु झुककर
उगली से भूमि पर लिखने लगा। ७ जब
वे उस से पूछते ही रहे, तो उस ने सीधे होकर
उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो,
वही पहिले उसको पत्थर मारे। ८ और
फिर झुककर भूमि पर उगली से लिखने
लगा। ९ परन्तु वे यह सुनकर बडो से
लेकर छोटो तक एक एक करके निकल गए,
और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वही
बीच में खडी रह गई। १० यीशु ने सीधे
होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहा गए?
क्या किसी ने तुझ पर दड की आज्ञा न दी।
११ उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नही
यीशु ने कहा, म भी तुझ पर दड की आज्ञा
नही देता, जा, और फिर पाप न
करना]॥

१२ तब यीशु ने फिर लोगो से कहा,
जगत की ज्योति म हू, जो मेरे पीछे हो
लेगा, वह अन्धकार मे न चलेगा, परन्तु
जीवन की ज्योति पाएगा। १३ फरीसियो
ने उस से कहा, तू अपनी गवाही आप देता
है, तेरी गवाही ठीक नही। १४ यीशु ने उन
को उत्तर दिया, कि यदि म अपनी गवाही

* ७ ५३ से ८ ११ तक का वाक्य अक्सर पुराने हस्तलेखो में नही मिलता।

आप देता हू, तौभी मेरी गवाही ठीक है,
क्योकि मे जानता हू, कि मै कहा से आया
हू और कहा को जाता हू ? परन्तु तुम नही
जानते कि मै कहा से आता हू या कहा को
जाता हू। १५ तुम शरीर के अनुसार न्याय
करते हो, मे किसी का न्याय नही करता।
१६ और यदि मै न्याय करू भी, तो मेरा
न्याय सच्चा है, क्योकि मे अकेला नही,
परन्तु मै हू, और पिता है जिस ने मुझे भेजा।
१७ और तुम्हारी व्यवस्था मे भी लिखा
है, कि दो जनो की गवाही मिलकर ठीक
होती है। १८ एक तो मे आप अपनी
गवाही देता हू, और दूसरा पिता मेरी गवाही
देता है जिस ने मुझे भेजा। १९ उन्हो ने
उस से कहा, तेरा पिता कहा है ? यीशु ने
उत्तर दिया, कि न तुम मुझे जानते हो, न
मेरे पिता को, यदि मुझे जानते, तो मेरे
पिता को भी जानते। २० ये बाते उस ने
मन्दिर मे उपदेश देते हुए भण्डार घर
मे कही, और किसी ने उसे न पकडा,
क्योकि उसका समय अब तक नही आया
था॥

२१ उस ने फिर उन से कहा, मै जाता
हू और तुम मुझे ढूढोगे और अपने पाप मे
मरोगे जहा मै जाता हू, वहा तुम नही आ
सकते। २२ इस पर यहूदियो ने कहा, क्या
वह अपने आप को मार डालेगा, जो कहता
है, कि जहा मै जाता हू वहा तुम नही आ
सकते ? २३ उस ने उन से कहा, तुम नीचे
के हो, मै ऊपर का हू, तुम ससार के हो, मै
ससार का नही। २४ इसलिये मै ने तुम
से कहा, कि तुम अपने पापो मे मरोगे,
क्योकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मै
वही हू, तो अपने पापो मे मरोगे।
२५ उन्हो ने उस से कहा, तू कौन है ?
यीशु ने उन से कहा, वही * हू जो प्रारम्भ
से तुम से कहता आया हू। २६ तुम्हारे
विषय मे मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय
करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है,
और जो मै ने उस से सुना है, वही जगत से
कहता हू। २७ वे न समझे कि हम से
पिता के विषय मे कहता है। २८ तब यीशु
ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊचे
पर चढाओगे, तो जानोगे कि मै वही हू,
और अपने आप से कुछ नही करता, परन्तु
जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये
बाते कहता हू। २९ और मेरा भेजनेवाला
मेरे साथ है, उस ने मुझे अकेला नही छोडा,
क्योकि मै सर्वदा वही काम करता हू, जिस
से वह प्रसन्न होता है। ३० वह ये बाते
कह ही रहा था, कि बहुतेरो ने उस पर
विश्वास किया॥

३१ तब यीशु ने उन यहूदियो से जिन्हो
ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम
मेरे वचन मे बने रहोगे, तो सचमुच मेरे
चेले ठहरोगे। ३२ और सत्य को जानोगे,
और सत्य तुम्हे स्वतत्र करेगा। ३३ उन्हो
ने उस को उत्तर दिया, कि हम तो इब्राहीम
के वश से है और कभी किसी के दास नही
हुए, फिर तू क्योकर कहता है, कि तुम
स्वतत्र हो जाओगे ? ३४ यीशु ने उन को
उत्तर दिया, मै तुम से सच सच कहता हू,
कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास
है। ३५ और दास सदा घर मे नही रहता,
पुत्र सदा रहता है। ३६ सो यदि पुत्र तुम्हे
स्वतत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतत्र हो
जाओगे। ३७ मै जानता हू कि तुम
इब्राहीम के वश से हो, तौभी मेरा वचन

* या यह क्या बात है कि मै तुम से बातें करता हू।

तुम्हारे हृदय * मे जगह नहीं पाता, इसलिये
तुम मुझे मार डालना चाहते हो। ३८ म
वही कहता हूं, जो अपने पिता के यहा देखा
ह, और तुम वही करते रहते हो जो तुमने
अपने पिता से सुना है। ३९ उन्हो ने उन
को उत्तर दिया, कि हमारा पिता तो इब्रा-
हीम है यीशु ने उन से कहा, यदि तुम
इब्राहीम की सन्तान होते, तो इब्राहीम के
समान काम करते। ४० परन्तु अब तुम
मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो,
जिस ने तुम्हे वह सत्य वचन बताया जो
परमेश्वर से सुना, यह तो इब्राहीम ने नही
किया था। ४१ तुम अपने पिता के समान
काम करते हो उन्हो ने उस से कहा, हम
व्यभिचार से नही जन्मे, हमारा एक पिता
है अर्थात् परमेश्वर। ४२ यीशु ने उन से
कहा, यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता,
तो तुम मुझ से प्रेम रखते, क्योकि म
परमेश्वर में से निकल कर आया हूं, म
आप से नही आया, परन्तु उसी ने मुझे
भेजा। ४३ तुम मेरी बात क्यो नही
समझते ? इसलिये कि मेरा वचन सुन नही
सकते। ४४ तुम अपने पिता शैतान † से
हो, और अपने पिता की लालसाओ को पूरा
करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से
हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा,
क्योकि सत्य उस मे है ही नही जब वह
झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता
ह, क्योकि वह झूठा है, बरन झूठ का पिता
है। ४५ परन्तु मै जो सच बोलता हूं, इसी
लिये तुम मेरी प्रतीति नही करते। ४६ तुम
में से कौन मुझे पापी ठहराता ह ? और यदि
म सच बोलता हूं, तो तुम मेरी प्रतीति क्यो
नही करते ? ४७ जो परमेश्वर से होता
है, वह परमेश्वर की बाते सुनता ह, और
तुम इसलिय नही सुनते कि परमेश्वर की
ओर से नही हो। ४८ यह सुन यहूदियो ने
उस से कहा, क्या हम ठीक नही कहते, कि
तू सामरी है, और तुझ म दुष्टात्मा ह ?
४९ यीशु ने उत्तर दिया, कि मुझ मे
दुष्टात्मा नही, परन्तु मै अपने पिता का
आदर करता हूं, और तुम मेरा निरादर
करते हो। ५० परन्तु म अपनी प्रतिष्ठा
नही चाहता, हा, एक तो है जो चाहता है,
और न्याय करता है। ५१ म तुम से सच
सच कहता हूं, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे
वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक
मृत्यु को न देखेगा। ५२ यहूदियो ने उस
से कहा, कि अब हम ने जान लिया कि तुझ
में दुष्टात्मा है इब्राहीम मर गया, और
भविष्यद्वक्ता भी मर गए ह और तू कहता
है, कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो
वह अनन्त काल तक मृत्यु का स्वाद न
चखेगा। ५३ हमारा पिता इब्राहीम तो
मर गया, क्या तू उस स बडा है ? और
भविष्यद्वक्ता भी मर गए, तू अपने आप को
क्या ठहराता है। ५४ यीशु ने उत्तर
दिया, यदि म आप अपनी महिमा करू, तो
मेरी महिमा कुछ नही, परन्तु मेरी महिमा
करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते
हो, कि वह हमारा परमेश्वर है। ५५ और
तुम ने तो उसे नही जाना परन्तु म उसे
जानता हूं, और यदि कहू कि म उसे नही
जानता, तो म तुम्हारी नाई झूठा ठहरूगा
परन्तु म उसे जानता, और उसके वचन पर
चलता हूं। ५६ तुम्हारा पिता इब्राहीम
मेरा दिन देखने की आशा म बहुत मगन था,
और उस ने देखा, और आनन्द किया।
५७ यहूदियो ने उस से कहा, अब तक तू
पचास वर्ष का नही, फिर भी तू ने इब्राहीम

* या बढ़ने पाता।
† यू० इब्लीस।

को देखा है? ५८ यीशु ने उन से कहा,
मै तुम से सच सच कहता हू, कि पहिले
इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मै हू।
५९ तब उन्हो ने उसे मारने के लिये
पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर
से निकल गया॥

९ फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य
को देखा, जो जन्म का अन्धा था।
२ और उसके चेलो ने उस से पूछा, हे
रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा
जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता-पिता
ने? ३ यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो
इस ने पाप किया था, न इस के माता-पिता
ने परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर
के काम उस मे प्रगट हो। ४ जिस ने मुझे
भेजा है, हमे उसके काम दिन ही दिन मे
करना अवश्य है वह रात आनेवाली है
जिस मे कोई काम नही कर सकता।
५ जब तक मै जगत मे हू, तब तक जगत
की ज्योति हू। ६ यह कहकर उस ने भूमि
पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और
वह मिट्टी उस अन्धे की आखो पर लगाकर।
७ उस से कहा, जा शीलोह के कुण्ड में धो
ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने
जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।
८ तब पड़ोसी और जिन्हो ने पहिले उसे
भीख मागते देखा था, कहने लगे, क्या यह
वही नही, जो बैठा भीख मागा करता था?
९ कितनो ने कहा, यह वही है औरो ने
कहा, नही, परन्तु उसके समान है उस ने
कहा, मै वही हू। १० तब वे उस से पूछने
लगे, तेरी आखें क्योकर खुल गईं? ११ उस
ने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने
मिट्टी सानी, और मेरी आखो पर लगाकर
मुझ से कहा, कि शीलोह मे जाकर धो ले,
सो मै गया, और धोकर देखने लगा।
१२ उन्हो ने उस से पूछा, वह कहा है?
उस ने कहा, मै नही जानता॥

१३ लोग उसे जो पहिले अन्धा था
फरीसियो के पास ले गए। १४ जिस दिन
यीशु ने मिट्टी सानकर उस की आखें खोली
थी वह सब्त का दिन था। १५ फिर
फरीसियो ने भी उस से पूछा, तेरी आखें
किस रीति से खुल गईं? उस ने उन से
कहा, उस ने मेरी आखो पर मिट्टी लगाई,
फिर मै ने धो लिया, और अब देखता हू।
१६ इस पर कई फरीसी कहने लगे, यह
मनुष्य परमेश्वर की ओर से नही, क्योकि
वह सब्त का दिन नही मानता। औरो ने
कहा, पापी मनुष्य क्योकर ऐसे चिन्ह दिखा
सकता है? सो उन में फूट पडी।
१७ उन्हो ने उस अन्धे से फिर कहा, उस ने
जो तेरी आखे खोली, तू उसके विषय में क्या
कहता है? उस ने कहा, वह भविष्यद्वक्ता
है। १८ परन्तु यहूदियो को विश्वास न
हुआ कि यह अन्धा था और अब देखता है
जब तक उन्हो ने उसके माता-पिता को जिस
की आखे खुल गईं थी, बुलाकर। १९ उन
से न पूछा, कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे
तुम कहते हो कि अन्धा जन्मा था? फिर
अब वह क्योकर देखता है? २० उसके
माता-पिता ने उत्तर दिया, हम तो जानते
है कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्मा
था। २१ परन्तु हम यह नही जानते है
कि अब क्योकर देखता है, और न यह
जानते है, कि किस ने उस की आखें खोली,
वह सयाना है, उसी से पूछ लो, वह अपने
विषय मे आप कह देगा। २२ ये बातें
उसके माता-पिता ने इसलिये कही क्योकि
वे यहूदियों से डरते थे, क्योकि यहूदी एका
कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह

है, तो आराधनालय से निकाला जाए।
२३ इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा,
कि वह सयाना है, उसी से पूछ लो।
२४ तब उन्हो ने उस मनुष्य को जो अन्धा
था दूसरी बार बुलाकर उस से कहा,
परमेश्वर की स्तुति कर हम तो जानते हैं
कि वह मनुष्य पापी है। २५ उस ने उत्तर
दिया मैं नही जानता कि वह पापी है या
नही म एक बात जानता हू कि मैं अन्धा
था और अब देखता हू। २६ उन्हो ने उस
से फिर कहा, कि उस ने तेरे साथ क्या
किया? और किस तरह तेरी आखें खोली?
२७ उस ने उन से कहा, म तो तुम से कह
चुका, और तुम ने न सुना, अब दूसरी बार
क्या सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके
चेले होना चाहते हो? २८ तब वे उसे
बुरा-भला कहकर बोले, तू ही उसका चेला
है, हम तो मूसा के चेले हैं। २९ हम
जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें की,
परन्तु इस मनुष्य को नही जानते कि कहा
का है। ३० उस ने उन को उत्तर दिया,
यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नही
जानते कि कहा का है तौभी उस ने मेरी
आखें खोल दी। ३१ हम जानते हैं कि
परमेश्वर पापियो की नही सुनता परन्तु यदि
कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस की
इच्छा पर चलता है, तो वह उस की सुनता
है। ३२ जगत के आरम्भ से यह कभी
सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के
अन्धे की आखें खोली हो। ३३ यदि यह
व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता,
तो कुछ भी नही कर सकता। ३४ उन्हो ने
उस को उत्तर दिया, कि तू तो बिलकुल
पापो में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता
है? और उन्हो ने उसे बाहर निकाल
दिया॥

३५ यीशु ने सुना, कि उन्हो ने उसे बाहर
निकाल दिया है, और जब उस से भेंट हुई
तो कहा, कि क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर
विश्वास करता है? ३६ उस ने उत्तर
दिया, कि हे प्रभु, वह कौन है कि म उस पर
विश्वास करू? ३७ यीशु ने उस से कहा,
तू ने उसे देखा भी है, और जो तेरे साथ
बातें कर रहा है वही है। ३८ उस ने कहा,
हे प्रभु, मैं विश्वास करता हू और उसे
दडवत किया। ३९ तब यीशु ने कहा, म
इस जगत में न्याय के लिये आया हू, ताकि
जो नही देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे
अन्धे हो जाए। ४० जो फरीसी उसके
साथ थे, उन्हो ने ये बातें सुन कर उस से
कहा, क्या हम भी अन्धे हैं? ४१ यीशु
ने उन से कहा, यदि तुम अन्धे होते तो
पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम
देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता
है॥

१० म तुम से सच सच कहता हू,
कि जो कोई द्वार से भेडशाला में
प्रवेश नही करता, परन्तु और किसी ओर
से चढ जाता है, वह चोर और डाकू है।
२ परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है
वह भेडो का चरवाहा है। ३ उसके लिये
द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेडें उसका
शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेडो को
नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता
है। ४ और जब वह अपनी सब भेडो को
बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे
आगे चलता है, और भेडें उसके पीछे पीछे
हो लेती हैं, क्योकि वे उसका शब्द
पहचानती हैं। ५ परन्तु वे पराये के पीछे
नही जाएगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योकि
वे परायो का शब्द नही पहचानती।

६ यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु
वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम
से कहता है॥
७ तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम
से सच सच कहता हूं, कि भेड़ों का द्वार मैं
हूं। ८ जितने मुझ से पहिले आए, वे सब
चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न
सुनी। ९ द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा
भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और
भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा
पाएगा। १० चोर किसी और काम के
लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और
घात करने और नष्ट करने को आता है।
मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और
बहुतायत से पाएं। ११ अच्छा चरवाहा
मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना
प्राण देता है। १२ मजदूर जो न चरवाहा
है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को
आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता
है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर-
बित्तर कर देता है। १३ वह इसलिये भाग
जाता है कि वह मजदूर है, और उस को
भेड़ों की चिन्ता नहीं। १४ अच्छा
चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता
है, और मैं पिता को जानता हूं। १५ इसी
तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और
मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के
लिये अपना प्राण देता हूं। १६ और मेरी
और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं
मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा
शब्द सुनेंगी, तब एक ही झुण्ड और एक ही
चरवाहा होगा। १७ पिता इसलिये मुझ
से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं,
कि उसे फिर ले लूं। १८ कोई उसे मुझ से
छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूं:
मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और
उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह
आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है॥
१९ इन बातों के कारण यहूदियों में
फिर फूट पड़ी। २० उन में से बहुतेरे कहने
लगे, कि उस में दुष्टात्मा है और वह पागल
है, उस की क्यों सुनते हो? २१ औरों ने
कहा, ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में
दुष्टात्मा हो: क्या दुष्टात्मा अन्धों की
आंखें खोल सकती है?
२२ यरूशलेम में स्थापन-पर्ब्ब हुआ,
और जाड़े की ऋतु थी। २३ और यीशु
मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा
था। २४ तब यहूदियों ने उसे आ घेरा
और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा
में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से
साफ कह दे। २५ यीशु ने उन्हें उत्तर
दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम
प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने
पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे गवाह
हैं। २६ परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं
करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
२७ मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं
उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे
चलती हैं। २८ और मैं उन्हें अनन्त जीवन
देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और
कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
२९ मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया
है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के
हाथ से छीन नहीं सकता। ३० मैं और
पिता एक हैं। ३१ यहूदियों ने उसे
पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए।
३२ इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने
तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले
काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के
लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?
३३ यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि

नले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं
करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण
और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप
को परमेश्वर बनाता है। ३४ यीशु ने
उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्था में
नहीं लिखा है कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर
हो? ३५ यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा
जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा
(और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो
सकती) ३६ तो जिसे पिता ने पवित्र
ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उस से कहते
हो कि तू निन्दा करता है, इसलिये कि मैं ने
कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं। ३७ यदि मैं
अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी
प्रतीति न करो। ३८ परन्तु यदि मैं करता
हूं, तो चाहे मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु
उन कामों की तो प्रतीति करो, ताकि तुम
जानो, और समझो, कि पिता मुझ में है,
और मैं पिता में हूं। ३९ तब उन्हों ने फिर
उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन
के हाथ से निकल गया॥

४० फिर वह यर्दन के पार उस स्थान
पर चला गया, जहां यूहन्ना पहिले बपतिस्मा
दिया करता था, और वहीं रहा। ४१ और
बहुतेरे उसके पास आकर कहते थे, कि
यूहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु
जो कुछ यूहन्ना ने इस के विषय में कहा था,
वह सब सच था। ४२ और वहां बहुतेरों
ने उस पर विश्वास किया॥

११ मरियम और उस की बहिन
मरथा के गांव बैतनिय्याह का
लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था। २ यह
वही मरियम थी जिस ने प्रभु पर इत्र डाल-
कर उसके पांवों को अपने बालों से पोंछा था,
इसी का भाई लाजर बीमार था। ३ सो
उस की बहिनों ने उसे कहला भेजा, कि हे
प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह
बीमार है। ४ यह सुनकर यीशु ने कहा,
यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर
की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा
परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। ५ और
यीशु मरथा और उस की बहन और लाजर
से प्रेम रखता था। ६ सो जब उस ने सुना,
कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था,
वहां दो दिन और ठहर गया। ७ फिर
इस के बाद उस ने चेलों से कहा, कि आओ,
हम फिर यहूदिया को चलें। ८ चेलों ने
उस से कहा, हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे
पत्थरवाह करना चाहते थे, और क्या तू
फिर भी वहीं जाता है? ९ यीशु ने उत्तर
दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते?
यदि कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता
क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है।
१० परन्तु यदि कोई रात को चले, तो
ठोकर खाता है, क्योंकि उस में प्रकाश नहीं।
११ उस ने ये बातें कहीं, और इस के बाद
उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र लाजर
सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।
१२ तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि
वह सो गया है, तो बच जायगा। १३ यीशु
ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था
परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने
के विषय में कहा। १४ तब यीशु ने उन से
साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।
१५ और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं
कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो,
परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।
१६ तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है,
अपने साथ के चेलों से कहा, आओ, हम भी
उसके साथ मरने को चलें॥

१७ सो यीशु को आकर यह मालूम
हुआ कि उसे कब्र मे रखे चार दिन हो चुके
है। १८ बैतनिय्याह् यरूशलेम के समीप
कोई दो मील की दूरी पर था। १९ और
बहुत से यहूदी मरथा और मरियम के पास
उन के भाई के विषय मे शान्ति देने के लिये
आए थे। २० सो मरथा यीशु के आने का
समाचार सुनकर उस से भेंट करने को गई,
परन्तु मरियम घर मे बैठी रही। २१ मरथा
ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहा होता,
तो मेरा भाई कदापि न मरता। २२ और
अब भी मै जानती हू, कि जो कुछ तू
परमेश्वर से मागेगा, परमेश्वर तुझे देगा।
२३ यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी
उठेगा। २४ मरथा ने उस से कहा, मैं
जानती हू, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान *
के समय वह जी उठेगा। २५ यीशु ने उस
से कहा, पुनरुत्थान † और जीवन मै ही हू
जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि
मर भी जाए, तौभी जीएगा। २६ और
जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास
करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा,
क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
२७ उस ने उस से कहा, हा हे प्रभु, मै
विश्वास कर चुकी हू, कि परमेश्वर का पुत्र
मसीह जो जगत मे आनेवाला था, वह तू ही
है। २८ यह कहकर वह चली गई, और
अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर
कहा, गुरु यही है, और तुझे बुलाता है।
२९ वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके पास
आई। ३० (यीशु अभी गाव मे नही
पहुचा था, परन्तु उसी स्थान मे था जहा
मरथा ने उस से भेंट की थी)। ३१ तब
जो यहूदी उसके साथ घर मे थे, और उसे
शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम
तुरन्त उठके बाहर गई है और यह समझकर
कि वह कब्र पर रोने को जाती है, उसके
पीछे हो लिए। ३२ जब मरियम वहा
पहुची जहा यीशु था, तो उसे देखते ही उसके
पावो पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहा
होता तो मेरा भाई न मरता। ३३ जब
यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो
उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो
आत्मा मे बहुत ही उदास हुआ, और घबरा
कर * कहा, तुम ने उसे कहा रखा है?
३४ उन्हो ने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर
देख ले। ३५ यीशु के आसू बहने लगे।
३६ तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उस से
कैसी प्रीति रखता था। ३७ परन्तु उन मे
से कितनो ने कहा, क्या यह जिस ने अन्धे
की आखे खोली, यह भी न कर सका कि
यह मनुष्य न मरता? ३८ यीशु मन मे
फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया,
वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर
धरा था। ३९ यीशु ने कहा, पत्थर को
उठाओ उस मरे हुए की बहिन मरथा उस
से कहने लगी, हे प्रभु, उस मे से अब तो
दुर्गंध आती है क्योकि उसे मरे चार दिन हो
गए। ४० यीशु ने उस से कहा, क्या मै ने
तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास
करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को
देखेगी। ४१ तब उन्हो ने उस पत्थर को
हटाया, फिर यीशु ने आखे उठाकर कहा,
हे पिता, मै तेरा धन्यवाद करता हू कि तू ने
मेरी सुन ली है। ४२ और मै जानता था,
कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड
आस पास खडी है, उन के कारण मै ने यह
कहा, जिस से कि वे विश्वास करे, कि तू

* यू० जी उठन में। या मृतकोत्थान में।
† यू० जी उठना।

* यू० अपने आपको बेचैन करके।

ने मुझे भेजा है। ४३ यह कहकर उस ने
बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल
आ। ४४ जो मर गया था, वह कफन
से हाथ पांव बंधे हुए निकल आया, और
उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था
यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने
दो॥

४५ तब जो यहूदी मरियम के पास आए
थे, और उसका यह काम देखा था, उन में
से बहुतों ने उस पर विश्वास किया।
४६ परन्तु उन में से कितनों ने फरीसियों
के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार
दिया॥

४७ इस पर महायाजकों और फरीसियों
ने मुख्य सभा * के लोगों को इकट्ठा करके
कहा, हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो
बहुत चिन्ह दिखाता है। ४८ यदि हम उसे
योंही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले
आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और
जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे।
४९ तब उन में से काइफा नाम एक व्यक्ति
ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उन से
कहा, तुम कुछ नहीं जानते। ५० और न
यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिये यह भला
है, कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे,
और न यह, कि सारी जाति नाश हो।
५१ यह बात उस ने अपनी ओर से न कही,
परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर
भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के
लिये मरेगा। ५२ और न केवल उस
जाति के लिये, वरन इसलिये भी, कि
परमेश्वर की तित्तर-बित्तर सन्तानों को
एक कर दे। ५३ सो उसी दिन से वे उसके
मार डालने की सम्मति करने लगे॥

५४ इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों
में प्रगट होकर न फिरा, परन्तु वहां से
जंगल के निकट के देश में इफ्राईम नाम,
एक नगर को चला गया, और अपने चेलों
के साथ वहीं रहने लगा। ५५ और यहू-
दियों का फसह निकट था, और बहुतेरे लोग
फसह से पहिले दिहात से यरूशलेम को गए,
कि अपने आप को शुद्ध करें। ५६ सो वे
यीशु को ढूंढ़ने और मन्दिर में खड़े होकर
आपस में कहने लगे, तुम क्या समझते हो?
५७ क्या वह पर्ब्ब में नहीं आएगा?
और महायाजकों और फरीसियों ने
भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह
जाने कि यीशु कहां है तो बताए, कि उसे
पकड़ लें॥

१२ फिर यीशु फसह से छः दिन
पहिले बैतनिय्याह में आया, जहां
लाजर था जिसे यीशु ने मरे हुओं में से
जिलाया था। २ वहां उन्हों ने उसके लिये
भोजन तैय्यार किया, और मरथा सेवा कर
रही थी, और लाजर उन में से एक था,
जो उसके साथ भोजन करने के लिये बैठे
थे। ३ तब मरियम ने जटामासी का आध
सेर बहुमोल इत्र लेकर यीशु के पावों पर
डाला, और अपने बालों से उसके पांव पोंछे,
और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया।
४ परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्क-
रियोती नाम एक चेला जो उसे पकड़वाने
पर था, कहने लगा। ५ यह इत्र तीन सौ
दीनार * में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया
गया? ६ उस ने यह बात इसलिये न कही,
कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इस-
लिये कि वह चोर था और उसके पास उन
की थैली रहती थी, और उस में जो कुछ

* अर्थात्। सदर अदालत वा बड़ी कचहरी।

* देखो मत्ती १८ २८।

डाला जाता था, वह निकाल लेता था।
७ यीशु ने कहा, उसे मेरे गाड़े जाने के दिन
के लिये रहने दे। ८ क्योंकि कंगाल तो
तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे
साथ सदा न रहूंगा॥

९ यहूदियों में से साधारण लोग जान
गए, कि वह वहां है, और वे न केवल यीशु के
कारण आए परन्तु इसलिये भी कि लाजर
को देखें, जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया
था। १० तब महायाजकों ने लाजर
को भी मार डालने की सम्मति की।
११ क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी
चले गए, और यीशु पर विश्वास किया॥

१२ दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो
पर्ब्ब में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु
यरूशलेम में आता है। १३ खजूर की
डालियां लीं, और उस से भेंट करने को
निकले, और पुकारने लगे, कि होशाना,
धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से
आता है। १४ जब यीशु को एक गदहे का
बच्चा मिला, तो उस पर बैठा। १५ जैसा
लिखा है, कि हे सिय्योन की बेटी, मत डर,
देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा
हुआ चला आता है। १६ उसके चेले, ये
बातें पहिले न समझे थे, परन्तु जब यीशु
की महिमा प्रगट हुई, तो उन को स्मरण
आया, कि ये बातें उसके विषय में लिखी
हुई थीं, और लोगों ने उस से इस प्रकार का
व्योहार किया था। १७ तब भीड़ के
लोगों ने जो उस समय उसके साथ थे यह
गवाही दी कि उस ने लाजर को कब्र में से
बुलाकर, मरे हुओं में से जिलाया था।
१८ इसी कारण लोग उस से भेंट करने को
आए थे क्योंकि उन्हों ने सुना था, कि उस ने
यह आश्चर्यकर्म दिखाया है। १९ तब
फरीसियों ने आपस में कहा, सोचो तो सही
कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता देखो,
संसार उसके पीछे हो चला है॥

२० जो लोग उस पर्ब्ब में भजन करने
आए थे उन में से कई यूनानी थे। २१ उन्हों
ने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस
के पास आकर उस से बिनती की, कि
श्रीमान् हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।
२२ फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से
कहा, तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने
यीशु से कहा। २३ इस पर यीशु ने उन
से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के
पुत्र की महिमा हो। २४ मैं तुम से सच
सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना
भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला
रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत
फल लाता है। २५ जो अपने प्राण को
प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है, और
जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय
जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उस
की रक्षा करेगा। २६ यदि कोई मेरी सेवा
करे, तो मेरे पीछे हो ले, और जहां मैं हूं,
वहां मेरा सेवक भी होगा, यदि कोई मेरी
सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।
२७ अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है।
इसलिये अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे
इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण
इस घड़ी को पहुंचा हूं। २८ हे पिता,
अपने नाम की महिमा कर तब यह
आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा
की है, और फिर भी करूंगा। २९ तब जो
लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्हों ने कहा,
कि बादल गरजा, औरों ने कहा, कोई स्वर्ग-
दूत उस से बोला। ३० इस पर यीशु ने
कहा, यह शब्द मेरे लिये नहीं, परन्तु
तुम्हारे लिये आया है। ३१ अब इस जगत
का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार

निकाल दिया जाएगा। ३२ और मैं यदि
पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो
सब को अपने पास खींचूंगा। ३३ ऐसा
कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह
कैसी मृत्यु से मरेगा। ३४ इस पर लोगों
ने उस से कहा, कि हम ने व्यवस्था की यह
बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा फिर
तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे
पर चढ़ाया जाना अवश्य है? ३५ यह
मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उन से
कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे
बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है
तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार
तुम्हें आ घेरे, जो अन्धकार में चलता है वह
नहीं जानता कि किधर जाता है। ३६ जब
तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर
विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान
होओ॥

ये बातें कहकर यीशु चला गया और
उन से छिपा रहा। ३७ और उस ने उन के
साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्हों ने
उस पर विश्वास न किया। ३८ ताकि
यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो
जो उस ने कहा कि हे प्रभु हमारे समाचार
की किस ने प्रतीति की है? और प्रभु का
भुजबल किस पर प्रगट हुआ? ३९ इस
कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि
यशायाह ने फिर भी कहा। ४० कि उस ने
उन की आंखें अन्धी, और उन का मन कठोर
किया है, कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से
देखें, और मन से समझें, और फिरें, और
मैं उन्हें चंगा करूं। ४१ यशायाह ने ये
बातें इसलिये कहीं, कि उस ने उस की
महिमा देखी, और उस ने उसके विषय में
बातें कीं। ४२ तौभी सरदारों में से भी
बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु
फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे,
ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले
जाएं। ४३ क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन
को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय
लगती थी॥

४४ यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ
पर विश्वास करता है वह मुझ पर नहीं
वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।
४५ और जो मुझे देखता है वह मेरे
भेजनेवाले को देखता है। ४६ मैं जगत में
ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ
पर विश्वास करे वह अन्धकार में न रहे।
४७ यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने
तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं
जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं परन्तु
जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं।
४८ जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी
बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी
ठहरानेवाला तो एक है अर्थात् जो वचन
मैं ने कहा है वही पिछले दिन में उसे दोषी
ठहराएगा। ४९ क्योंकि मैं ने अपनी ओर
से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे
भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि
क्या क्या कहूं? और क्या क्या बोलूं?
५० और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा
अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं,
वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही
बोलता हूं॥

१३ फसह के पर्ब्ब से पहिले जब
यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह
घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के
पास जाऊं तो अपने लोगों से, जो जगत में
थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा
ही प्रेम रखता रहा। २ और जब शैतान *

* यू० इब्लीस।

शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में
यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो
भोजन के समय। ३ यीशु ने यह जानकर
कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया
है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं,
और परमेश्वर के पास जाता हूं। ४ भोजन
पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और
अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी। ५ तब
बरतन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने
और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी
उसी से पोंछने लगा। ६ जब वह शमौन
पतरस के पास आया तब उस ने उस से
कहा, हे प्रभु, ७ क्या तू मेरे पांव धोता
है? यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो
मैं करता हूं, तू अब नहीं जानता, परन्तु
इस के बाद समझेगा। ८ पतरस ने उस से
कहा, तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा
यह सुनकर यीशु ने उस से कहा, यदि मैं
तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी
साझा नहीं। ९ शमौन पतरस ने उस से
कहा, हे प्रभु, तो मेरे पांव ही नहीं, बरन
हाथ और सिर भी धो दे। १० यीशु ने
उस से कहा, जो नहा चुका है, उसे पांव के
सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं,
परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है और तुम शुद्ध
हो, परन्तु सब के सब नहीं। ११ वह तो
अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसी
लिये उस ने कहा, तुम सब के सब शुद्ध
नहीं॥

१२ जब वह उन के पांव धो चुका,
और अपने कपड़े पहिनकर फिर बैठ गया
तो उन से कहने लगा, क्या तुम समझे कि
मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया? १३ तुम
मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला
कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। १४ यदि मैं
ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए,
तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए।
१५ क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया
है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है,
तुम भी वैसा ही किया करो। १६ मैं तुम
से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से
बड़ा नहीं, और न भेजा हुआ* अपने
भेजनेवाले से। १७ तुम तो ये बातें जानते
हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।
१८ मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता
जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूं
परन्तु यह इसलिये है, कि पवित्र शास्त्र का
यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता
है, उस ने मुझ पर लात उठाई। १९ अब
मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जताए देता
हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो
कि मैं वही हूं। २० मैं तुम से सच सच
कहता हूं, कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण
करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो
मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को
ग्रहण करता है॥

२१ ये बातें कहकर यीशु आत्मा में
व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, कि मैं
तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम में से एक
मुझे पकड़वाएगा। २२ चेले यह सन्देह
करते हुए, कि वह किस के विषय में कहता
है, एक दूसरे की ओर देखने लगे।
२३ उसके चेलों में से एक जिस से यीशु
प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर
झुका हुआ बैठा† था। २४ तब शमौन
पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा, कि
बता तो, वह किस के विषय में कहता है?
२५ तब उस ने उसी तरह यीशु की छाती
की ओर झुक कर पूछा, हे प्रभु, वह कौन
है? यीशु ने उत्तर दिया, जिसे मैं यह रोटी

* या प्रेरित। † यू० लेटा।

का टुकडा डुबोकर दूगा, वही है। २६ और
उस ने टुकडा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा
इस्करियोती को दिया। २७ और टुकडा
लते ही शैतान उस मे समा गया तव यीशु
ने उस से कहा, जो तू करता है, तुरन्त कर।
२८ परन्तु बैठनेवालो * मे से किसी ने न
जाना कि उस ने यह बात उस से किस लिये
कही। २९ यहूदा के पास थैली रहती थी,
इसलिये किसी किसी न समझा, कि यीशु
उस से कहता है, कि जो कुछ हम पर्व्व के
लिये चाहिए वह मोल ल, या यह कि कगालो
को कुछ दे। ३० तव वह टुकडा लकर
तुरन्त बाहर चला गया और रात्रि का
समय था॥

३१ जब वह बाहर चला गया तो यीशु
न कहा, अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई,
और परमेश्वर की महिमा उस में हुई।
३२ और परमेश्वर भी अपने मे उस की
महिमा करेगा, वरन तुरन्त करेगा।
३३ ह बालको, म और थोडी देर तुम्हारे
पास हू फिर तुम मुझे ढूढोगे, और जैसा
मैं ने यहूदियो से कहा, कि जहा म जाता हू,
वहा तुम नही आ सकते वैसा ही मै अब तुम
से भी कहता हू। ३४ म तुम्हें एक नई
आज्ञा दता हू, कि एक दूसरे से प्रेम रखो
जैसा म ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम
भी एक दूसरे से प्रेम रखो। ३५ यदि
आपस मे प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे,
कि तुम मेरे चेले हो॥

३६ शमौन पतरस ने उस से कहा, ह
प्रभु, तू कहा जाता ह? यीशु ने उत्तर दिया,
कि जहा मे जाता हू, वहा तू अब मेरे पीछे
आ नही सकता! परन्तु इस के बाद मेरे
पीछे आएगा। ३७ पतरस ने उस से कहा,
हे प्रभु अभी म तेरे पीछे क्यो नही आ
सकता? मै तो तेरे लिये अपना प्राण
दूगा। ३८ यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू
मेरे लिये अपना प्राण देगा? म तुझ से सच
सच कहता हू कि मुर्ग बाग न देगा जब तक
तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा॥

१४ तुम्हारा मन व्याकुल न हो,
तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते
हो * मुझ पर भी विश्वास रखो। २ मेरे
पिता के घर मे बहुत से रहने के स्थान ह,
यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योकि
म तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता
हू। ३ और यदि म जाकर तुम्हारे लिये
जगह तैयार करू, तो फिर आकर तुम्हें
अपने यहा ले जाऊगा, कि जहा म रहू वहा
तुम भी रहो। ४ और जहा मे जाता हू
तुम वहा का मार्ग जानते हो। ५ थोमा ने
उस से कहा, हे प्रभु, हम नही जानते कि तू
कहा जाता है? तो मार्ग कैसे जानें?
६ यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई
और जीवन मै ही हू, बिना मेरे द्वारा कोई
पिता के पास नही पहुच सकता। ७ यदि
तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को
भी जानते, और अब उसे जानते हो, और
उसे देखा भी है। ८ फिलिप्पुस न उस से
कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे यही
हमारे लिये बहुत है। ९ यीशु ने उस से
कहा, हे फिलिप्पुस, म इतने दिन से तुम्हारे
साथ हू, और क्या तू मुझे नही जानता?
जिस ने मुझे देखा ह उस ने पिता को देखा
है तू क्यो कहता है कि पिता को हमें
दिखा। १० क्या तू प्रतीति नही करता,
कि म पिता में हू और पिता मुझ में ह?
ये बातें जो म तुम से कहता हू, अपनी ओर

* मू० लेटनेवालो।

* या रखो।

से नही कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर
अपने काम करता है। ११ मेरी ही प्रतीति
करो, कि मैं पिता मे हू, और पिता मुझ में
है, नही तो कामो ही के कारण मेरी प्रतीति
करो। १२ मैं तुम से सच सच कहता हू,
कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम
जो मैं करता हू वह भी करेगा, बरन इन से
भी बडे काम करेगा, क्योकि मैं पिता के पास
जाता हू। १३ और जो कुछ तुम मेरे
नाम से मागोगे, वही मैं करूगा कि पुत्र के
द्वारा पिता की महिमा हो। १४ यदि तुम
मुझ से मेरे नाम से कुछ मागोगे, तो मैं उसे
करूगा। १५ यदि तुम मुझ से प्रेम रखते
हो, तो मेरी आज्ञाओ को मानोगे। १६ और
मैं पिता से बिनती करूगा, और वह तुम्हे
एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा
तुम्हारे साथ रहे। १७ अर्थात् सत्य का
आत्मा, जिसे ससार ग्रहण नही कर सकता,
क्योकि वह न उसे देखता है और न उसे
जानता है तुम उसे जानते हो, क्योकि
वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम मे
होगा। १८ मैं तुम्हें अनाथ न छोडूगा,
मैं तुम्हारे पास आता हू। १९ और थोडी
देर रह गई है कि फिर ससार मुझे न देखेगा,
परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं
जीवित हू, तुम भी जीवित रहोगे। २० उस
दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता मे हू,
और तुम मुझ में, और मैं तुम मे। २१ जिस
के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता
है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ
से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम
रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूगा, और
अपने आप को उस पर प्रगट करूगा।
२२ उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था,
उस से कहा, हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने
आप को हम पर प्रगट किया चाहता है,
और ससार पर नही। २३ यीशु ने उस
को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे,
तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा
पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके
पास आएगे, और उसके साथ वास करेगे।
२४ जो मुझ से प्रेम नही रखता, वह मेरे
वचन नही मानता, और जो वचन तुम सुनते
हो, वह मेरा नही वरन पिता का है, जिस ने
मुझे भेजा॥

२५ ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए
तुम से कही। २६ परन्तु सहायक अर्थात्
पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा,
वह तुम्हे सब बाते सिखाएगा, और जो कुछ
मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण
कराएगा। २७ मैं तुम्हे शान्ति दिए जाता
हू, अपनी शान्ति तुम्हे देता हू, जैसे ससार
देता है, मैं तुम्हे नही देता तुम्हारा मन न
घबराए और न डरे। २८ तुम ने सुना, कि
मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हू, और तुम्हारे
पास फिर आता हू यदि तुम मुझ से प्रेम
रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि
मैं पिता के पास जाता हू क्योकि पिता मुझ
से बडा है। २९ और मैं ने अब इस के
होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब
वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो। ३० मैं
अब से तुम्हारे साथ और बहुत बाते न
करूगा, क्योकि इस ससार का सरदार आता
है, और मुझ मे उसका कुछ नही।
३१ परन्तु यह इसलिये होता है कि ससार
जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हू, और
जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे
ही करता हू उठो, यहा से चले॥

१५ सच्ची दाखलता मैं हू, और
मेरा पिता किसान है। २ जो
डाली मुझ मे है, और नही फलती, उसे वह

काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह
छांटता है ताकि और फले। ३ तुम तो
उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा
है, शुद्ध हो। ४ तुम मुझ में बने रहो, और
मैं तुम में जैसे डाली यदि दाखलता में
बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल
सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न
रहो तो नहीं फल सकते। ५ मैं दाखलता
हूं तुम डालियां हो, जो मुझ में बना
रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल
फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम
कुछ भी नहीं कर सकते। ६ यदि कोई
मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं
फेंक दिया जाता, और सूख जाता है, और
लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं,
और वे जल जाती हैं। ७ यदि तुम मुझ में
बने रहो, और मेरी बात तुम में बनी रहे तो
जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो
जाएगा। ८ मेरे पिता की महिमा इसी
से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ,
तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। ९ जैसा
पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने
तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
१० यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे,
तो मेरे प्रेम में बने रहोगे जैसा कि मैं ने
अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और
उसके प्रेम में बना रहता हूं। ११ मैं ने ये
बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द
तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा
हो जाए। १२ मेरी आज्ञा यह है, कि
जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम
भी एक दूसरे से प्रेम रखो। १३ इस से
बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने
मित्रों के लिये अपना प्राण दे। १४ जो
कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो,
तो तुम मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें
दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता,
कि उसका स्वामी क्या करता है परन्तु
मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो
बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता
दीं। १६ तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने
तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम
जाकर फल लाओ, और तुम्हारा फल बना
रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से
मांगो, वह तुम्हें दे। १७ इन बातों की
आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूं, कि तुम एक
दूसरे से प्रेम रखो। १८ यदि संसार तुम
से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने
तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा।
१९ यदि तुम संसार के होते, तो संसार
अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण
कि तुम संसार के नहीं, वरन मैं ने तुम्हें
संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार
तुम से बैर रखता है। २० जो बात मैं ने
तुम से कही थी, कि दास अपने स्वामी से
बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो यदि
उन्हों ने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे,
यदि उन्हों ने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी
भी मानेंगे। २१ परन्तु यह सब कुछ वे
मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे
क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।
२२ यदि मैं न आता और उन से बातें न
करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब
उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं।
२३ जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता
से भी बैर रखता है। २४ यदि मैं उन में
वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं
किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो
उन्हों ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा,
और दोनों से बैर किया। २५ और यह
इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो
उन की व्यवस्था में लिखा है, कि उन्हों ने

मुझ से व्यर्थ वैर किया। २६ परन्तु जब
वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास
पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का
आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है,
तो वह मेरी गवाही देगा। २७ और तुम
भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे
साथ रहे हो॥

१६ ये बातें मैं ने तुम से इसलिये
कहीं कि तुम ठोकर न खाओ।
२ वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल
देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई
तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं
परमेश्वर की सेवा करता हूं। ३ और यह
वे इसलिये करेंगे कि उन्हों ने न पिता को
जाना है और न मुझे जानते हैं। ४ परन्तु
ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं, कि जब
उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए,
कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया था
और मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिये
नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।
५ अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता
हूं और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता,
कि तू कहां जाता है? ६ परन्तु मैं ने जो
ये बातें तुम से कही हैं, इसलिये तुम्हारा मन
शोक से भर गया। ७ तौभी मैं तुम से सच
कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा
है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक
तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं
जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।
८ और वह आकर संसार को पाप और
धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर *
करेगा। ९ पाप के विषय में इसलिये कि
वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। १० और
धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता
के पास जाता हूं, ११ और तुम मुझे फिर
न देखोगे. न्याय के विषय में इसलिये कि
संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।
१२ मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें
कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं
सकते। १३ परन्तु जब वह अर्थात् सत्य
का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का
मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से
न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा,
और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।
१४ वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह
मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
१५ जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है,
इसलिये मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से
लेकर तुम्हें बताएगा। १६ थोड़ी देर में
तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में
मुझे देखोगे। १७ तब उसके कितने चेलों
ने आपस में कहा, यह क्या है, जो वह हम से
कहता है, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न
देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?
और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता
हूं? १८ तब उन्हों ने कहा, यह थोड़ी देर
जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं
जानते, कि क्या कहता है। १९ यीशु ने
यह जानकर, कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं,
उन से कहा, क्या तुम आपस में मेरी इस
बात के विषय में पूछ पाछ करते हो, कि
थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर
थोड़ी देर में मुझे देखोगे। २० मैं तुम से
सच सच कहता हूं, कि तुम रोओगे और
विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा.
तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द
बन जाएगा। २१ जब स्त्री जनने लगती
है तो उस को शोक होता है, क्योंकि उस की
दु:ख की घड़ी आ पहुंची, परन्तु जब वह
बालक जन्म चुकी तो इस आनन्द से कि

* वा [illegible]।

जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस कष्ट
को फिर स्मरण नहीं करती। २२ और
तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से
फिर मिलूंगा* और तुम्हारे मन में आनन्द
होगा, और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से
छीन न लेगा। २३ उस दिन तुम मुझ से
कुछ न पूछोगे: मैं तुम से सच सच कहता
हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे
नाम से तुम्हें देगा। २४ अब तक तुम ने
मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा, मांगो तो
पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो
जाए॥

२५ मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में
कही हैं, परन्तु वह समय आता है, कि मैं
तुम से दृष्टान्तों में और फिर नहीं कहूंगा,
परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में
बताऊंगा। २६ उस दिन तुम मेरे नाम से
मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि
मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा।
२७ क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति
रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रीति
रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं
पिता की ओर से निकल आया। २८ मैं
पिता से निकलकर जगत में आया हूं, फिर
जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं।
२९ उसके चेलों ने कहा, देख, अब तो तू
खोलकर कहता है, और कोई दृष्टान्त नहीं
कहता। ३० अब हम जान गए, कि तू
सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं,
कि कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति
करते हैं, कि तू परमेश्वर से निकला है।
३१ यह सुन यीशु ने उन से कहा, क्या तुम
अब प्रतीति करते हो? ३२ देखो, वह
घड़ी आती है वरन आ पहुंची कि तुम सब
तितर बितर होकर अपना अपना मार्ग
लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी
मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।
३३ मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं,
कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले, संसार में
तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो,
मैं ने संसार को जीत लिया है॥

१७ यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी
आंखें आकाश की ओर उठाकर
कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने
पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा
करे। २ क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों
पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को
दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
३ और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ
अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह
को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। ४ जो काम
तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके
मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। ५ और
अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा
उस महिमा से कर जो जगत के होने से
पहिले, मेरी तेरे साथ थी। ६ मैं ने तेरा
नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने
जगत में से मुझे दिया: वे तेरे थे और तू ने
उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे वचन को
मान लिया है। ७ अब वे जान गए हैं, कि
जो कुछ तू ने मुझे दिया है, सब तेरी ओर से
है। ८ क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा
दीं, मैं ने उन्हें उनको पहुंचा दिया और
उन्हों ने उन को ग्रहण किया: और सच
सच जान लिया है, कि मैं तेरी ओर से
निकला हूं: और प्रतीति कर ली है कि तू
ही ने मुझे भेजा। ९ मैं उन के लिये बिनती
करता हूं, संसार के लिये बिनती नहीं करता
हूं परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया

* यू० तुम्हें फिर देखूंगा।

है, क्योंकि वे तेरे हैं। १० और जो कुछ
मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है,
वह मेरा है, और इन से मेरी महिमा प्रगट
हुई है। ११ मैं आगे को जगत मे न रहूगा,
परन्तु ये जगत मे रहेंगे, और मैं तेरे पास
आता हू, हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से
जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि
वे हमारी नाई एक हो। १२ जब मैं उन के
साथ था, तो मै ने तेरे उस नाम से, जो तू
ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन
की चौकसी की और विनाश के पुत्र को
छोड उन मे से कोई नाश न हुआ, इसलिये
कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।
१३ परन्तु अब मैं तेरे पास आता हू, और
ये बाते जगत मे कहता हू, कि वे मेरा आनन्द
अपने मे पूरा पाए। १४ मैं ने तेरा वचन
उन्हे पहुचा दिया है, और ससार ने उन से
बैर किया, क्योंकि जैसा मैं ससार का नही,
वैसे ही वे भी ससार के नही। १५ मैं यह
बिनती नही करता, कि तू उन्हे जगत से
उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हे उस दुष्ट *
से बचाए रख। १६ जैसे मैं ससार का
नही, वैसे ही वे भी ससार के नही।
१७ सत्य के द्वारा उन्हे पवित्र कर तेरा
वचन सत्य है। १८ जैसे तू ने जगत मे
मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हे जगत मे
भेजा। १९ और उन के लिये मैं अपने
आप को पवित्र करता हू ताकि वे भी सत्य
के द्वारा पवित्र किए जाए। २० मैं केवल
इन्ही के लिये बिनती नही करता, परन्तु
उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा
मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो।
२१ जैसा तू हे पिता मुझ मे है, और मैं तुझ
मे हू, वैसे ही वे भी हम मे हो, इसलिये कि
जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।
२२ और वह महिमा जो तू ने मुझे दी,
मै ने उन्हे दी है कि वे वैसे ही एक हो
जैसे कि हम एक है। २३ मैं उन मे और
तू मुझ मे कि वे सिद्ध होकर एक हो जाए,
और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा,
और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही
उन से प्रेम रखा। २४ हे पिता, मैं चाहता
हू कि जिन्हे तू ने मुझे दिया है, जहा मैं
हू, वहा वे भी मेरे साथ हो कि वे मेरी
उस महिमा को देखे जो तू ने मुझे दी है,
क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले
मुझ से प्रेम रखा। २५ हे धार्मिक पिता,
ससार ने मुझे नही जाना, परन्तु मैं ने तुझे
जाना और इन्हो ने भी जाना कि तू ही ने
मुझे भेजा। २६ और मैं ने तेरा नाम
उन को बताया और बताता रहूगा कि जो
प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन मे रहे
और मैं उन मे रहू॥

१८ यीशु ये बाते कहकर अपने
चेलो के साथ किद्रोन के नाले के
पार गया, वहा एक बारी थी, जिस मे वह
और उसके चेले गए। २ और उसका
पकडवानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता
था, क्योंकि यीशु अपने चेलो के साथ वहा
जाया करता था। ३ तब यहूदा पलटन
को और महायाजको और फरीसियो की
ओर से प्यादो को लेकर दीपको और मशालो
और हथियारो को लिए हुए वहा आया।
४ तब यीशु उन सब बातो को जो उस पर
आनेवाली थी, जानकर निकला, और उन
से कहने लगा, किसे ढूढते हो ? ५ उन्हो ने
उस को उत्तर दिया, यीशु नासरी को
यीशु ने उन से कहा, मैं ही हू और उसका
पकडवानेवाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा

* या बुराई।

था। ६ उसके यह कहते ही, कि मैं हूं,
वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े। ७ तब
उस ने फिर उन से पूछा, तुम किस को
ढूंढ़ते हो। ८ वे बोले, यीशु नासरी को।
यीशु ने उत्तर दिया, मैं तो तुम से कह चुका
हूं कि मैं ही हूं, यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें
जाने दो। ९ यह इसलिये हुआ, कि वह
वचन पूरा हो, जो उस ने कहा था कि
जिन्हें तू ने मुझे दिया, उन में से मैं ने एक
को भी न खोया। १० शमौन पतरस
ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची
और महायाजक के दास पर चलाकर, उसका
दहिना कान उड़ा दिया, उस दास का नाम
मलखुस था। ११ तब यीशु ने पतरस से
कहा, अपनी तलवार काठी में रख: जो
कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे
न पीऊं?

१२ तब सिपाहियों और उन के सूबेदार
और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर
बान्ध लिया। १३ और पहिले उसे हन्ना
के पास ले गए क्योंकि वह उस वर्ष के
महायाजक काइफा का ससुर था। १४ यह
वही काइफा था, जिस ने यहूदियों को सलाह
दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का
मरना अच्छा है॥

१५ शमौन पतरस और एक और चेला
भी यीशु के पीछे हो लिए: यह चेला
महायाजक का जाना पहचाना था और यीशु
के साथ महायाजक के आंगन में गया।
१६ परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा,
तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का
जाना पहचाना था, बाहर निकला, और
द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले
आया। १७ उस दासी ने जो द्वारपालिन
थी, पतरस से कहा, क्या तू भी इस मनुष्य के
चेलों में से है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं।
१८ दास और प्यादे जाड़े के कारण कोयले
धधकाकर खड़े ताप रहे थे और पतरस भी
उन के साथ खड़ा ताप रहा था॥

१९ तब महायाजक ने यीशु से उसके
चेलों के विषय में और उसके उपदेश के
विषय में पूछा। २० यीशु ने उस को उत्तर
दिया, कि मैं ने जगत से खोलकर बातें कीं,
मैं ने सभाओं और आराधनालय में जहां
सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपदेश
किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा।
२१ तू मुझ से क्यों पूछता है? सुननेवालों
से पूछ: कि मैं ने उन से क्या कहा? देख,
वे जानते हैं, कि मैं ने क्या क्या कहा?
२२ जब उस ने यह कहा, तो प्यादों में से
एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़
मारकर कहा, क्या तू महायाजक को इस
प्रकार उत्तर देता है। २३ यीशु ने उसे
उत्तर दिया, यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस
बुराई पर गवाही दे, परन्तु यदि भला कहा,
तो मुझे क्यों मारता है? २४ हन्ना ने उसे
बन्धे हुए काइफा महायाजक के पास भेज
दिया॥

२५ शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा
था। तब उन्हों ने उस से कहा, क्या तू
भी उसके चेलों में से है? उस ने इन्कार
करके कहा, मैं नहीं हूं। २६ महायाजक
के दासों में से एक जो उसके कुटुम्ब में से
था, जिसका कान पतरस ने काट डाला था,
बोला, क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में
न देखा था? २७ पतरस फिर इन्कार
कर गया और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी॥

२८ और वे यीशु को काइफा के पास
से किले को ले गए और भोर का समय था,
परन्तु वे आप किले के भीतर न गए ताकि
अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें। २९ तब
पीलातुस उन के पास बाहर निकल आया

हुआ वर्तन धरा था, सो उन्हो ने सिरके मे
भिगोए हुए इस्पज को जूफे पर रखकर
उसके मुह से लगाया। ३० जब यीशु ने
वह सिरका लिया, तो कहा, पूरा हुआ और
सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए॥

३१ और इसलिये कि वह तैयारी का
दिन था, यहूदियो ने पीलातुस से विनती
की कि उन की टागे तोड दी जाए और वे
उतारे जाए ताकि सब्त के दिन वे क्रूसो
पर न रहे, क्योकि वह सब्त का दिन बडा
दिन था। ३२ सो सिपाहियो ने आकर
पहिले की टागे तोडी तब दूसरे की भी,
जो उसके साथ क्रूसो पर चढाए गए थे।
३३ परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा
कि वह मर चुका है, तो उस की टागे न
तोडी। ३४ परन्तु सिपाहियो मे से एक ने
बरछे से उसका पजर बेधा और उस मे से
तुरन्त लोहू और पानी निकला। ३५ जिस
ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और
उस की गवाही सच्ची है, और वह जानता
है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास
करो। ३६ ये बाते इसलिये हुई कि पवित्र
शास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस की कोई
हड्डी तोडी न जाएगी। ३७ फिर एक
और स्थान पर यह लिखा है, कि जिसे
उन्हो ने बेधा है, उस पर दृष्टि करेगे॥

३८ इन बातो के बाद अरमतियाह के
यूसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु
यहूदियो के डर से इस बात को छिपाए
रखता था), पीलातुस से विनती की, कि मै
यीशु की लोथ को ले जाऊ, और पीलातुस ने
उस की विनती सुनी, और वह आकर उस
की लोथ ले गया। ३९ निकुदेमुस भी
जो पहिले यीशु के पास रात को गया था
पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस
और एलवा ले आया। ४० तब उन्हो ने
यीशु की लोथ को लिया और यहूदियो के
गाडने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य
के साथ कफन में लपेटा। ४१ उस स्थान
पर जहा यीशु क्रूस पर चढाया गया था,
एक बारी थी, और उस बारी में एक नई
कब्र थी, जिस मे कभी कोई न रखा गया
था। ४२ सो यहूदियो की तैयारी के दिन
के कारण, उन्हो ने यीशु को उसी में रखा,
क्योकि वह कब्र निकट थी॥

२० सप्ताह के पहिले दिन मरियम
मगदलीनी भोर को अधेरा रहते
ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से
हटा हुआ देखा। २ तब वह दौडी और
शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास
जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा,
वे प्रभु को कब्र मे से निकाल ले गए है;
और हम नही जानती, कि उसे कहा रख
दिया है। ३ तब पतरस और वह दूसरा
चेला निकलकर कब्र की और चले।
४ और दोनो साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु
दूसरा चेला पतरस से आगे बढकर कब्र
पर पहिले पहुचा। ५ और झुककर कपड़े
पडे देखे तौभी वह भीतर न गया।
६ तब शमौन पतरस उसके पीछे पीछे
पहुचा और कब्र के भीतर गया और कपडे
पडे देखे। ७ और वह अगोछा जो उसके
सिर से बन्धा हुआ था, कपडो के साथ पडा
हुआ नही परन्तु अलग एक जगह लपेटा
हुआ देखा। ८ तब दूसरा चेला भी जो
कब्र पर पहिले पहुचा था, भीतर गया
और देखकर विश्वास किया। ९ वे तो
अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते
थे, कि उसे मरे हुओ मे से जी उठना
होगा। १० तब ये चेले अपने घर लौट
गए॥

११ परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के
पास ही बाहर खडी रही और रोते रोते
कब्र की ओर झुककर, १२ दो स्वर्गदूतो को
उज्ज्वल कपडे पहिने हुए एक को सिरहाने
और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहा यीशु
की लोथ पडी थी। १३ उन्हो ने उस से
कहा, हे नारी, तू क्यो रोती है? उस ने
उन से कहा, वे मेरे प्रभु को उठा ले गए
और मैं नही जानती कि उसे कहा रखा है।
१४ यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु
को खडे देखा और न पहचाना कि यह यीशु
है। १५ यीशु ने उस से कहा, हे नारी,
तू क्यो रोती है? किस को ढूढती है?
उस ने माली समझकर उस से कहा, हे
महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो
मुझ से कह कि उसे कहा रखा है और मैं
उसे ले जाऊगी। १६ यीशु ने उस से कहा,
मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से
इब्रानी में कहा, रब्बूनी अर्थात् हे गुरु।
१७ यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू*
क्योकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नही
गया, परन्तु मेरे भाइयो के पास जाकर उन
से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे
पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे
परमेश्वर के पास ऊपर जाता हू।
१८ मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलो को
बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा और उस ने
मुझ से ये बातें कही॥

१९ उसी दिन जो सप्ताह का पहिला
दिन था, सन्ध्या के समय जब वहा के द्वार
जहा चेले थे, यहूदियो के डर के मारे बन्द थे,
तब यीशु आया और बीच में खडा होकर
उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले। २० और
यह कहकर उस ने अपना हाथ और अपना

* या मत पकड़े रह।

पजर उन को दिखाए तब चेले प्रभु को
देखकर आनन्दित हुए। २१ यीशु ने फिर
उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले, जैसे पिता
ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता
हू। २२ यह कहकर उस ने उन पर फूका
और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।
२३ जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के
लिये क्षमा किए गए हैं जिन के तुम रखो,
वे रखे गए हैं॥

२४ परन्तु बारहो में से एक व्यक्ति
अर्थात् थोमा जो दिदुमुस* कहलाता है,
जब यीशु आया तो उन के साथ न था।
२५ जब और चेले उस से कहने लगे कि
हम ने प्रभु को देखा है तब उस ने उन से
कहा, जब तक मैं उस के हाथो में कीलो के
छेद न देख लू, और किलो के छेदो में अपनी
उगली न डाल लू और उसके पजर में अपना
हाथ न डाल लू, तब तक म प्रतीति नही
करूगा॥

२६ आठ दिन के बाद उस के चेले फिर
घर के भीतर थे, और थोमा उन के साथ
था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर
और बीच में खडा होकर कहा, तुम्हें शान्ति
मिले। २७ तब उस ने थोमा से कहा,
अपनी उगली यहा लाकर मेरे हाथो को
देख और अपना हाथ लाकर मेरे पजर में
डाल और अविश्वासी नही परन्तु विश्वासी
हो। २८ यह सुन थोमा ने उत्तर दिया,
हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर! २९ यीशु
ने उस से कहा, तू ने तो मुझे देखकर विश्वास
किया है, धन्य वे हैं जिन्हो ने बिना देखे
विश्वास किया॥

३० यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलो
के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे

* या थोमा या जुड़वा।

क्रूस पर चढाने का भी मुझे अधिकार है।
११ यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे
ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर
कुछ अधिकार न होता, इसलिये जिस ने
मुझे तेरे हाथ पकडवाया है, उसका पाप
अधिक है। १२ इस से पीलातुस ने उसे
छोड देना चाहा, परन्तु यहूदियो ने चिल्ला
चिल्लाकर कहा, यदि तू इस को छोड देगा
तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं, जो
कोई अपने आप को राजा बनाता है वह
कैसर का साम्हना करता है। १३ ये बातें
सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया
और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी
में गब्बता कहलाता है, और न्याय-आसन
पर बैठा। १४ यह फसह की तैयारी का
दिन था और छठे घटे के लगभग था तब
उस ने यहूदियो से कहा, देखो, यही है,
तुम्हारा राजा! १५ परन्तु वे चिल्लाए,
कि ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढा
पीलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे
राजा को क्रूस पर चढाऊ? महायाजको ने
उत्तर दिया, कि कैसर को छोड हमारा और
कोई राजा नही। १६ तब उस ने उसे
उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर
चढाया जाए॥

१७ तब वे यीशु को ले गए। और वह
अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर
गया, जो खोपडी का स्थान कहलाता है
और इब्रानी में गुलगुता। १८ वहा उन्हो
ने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यो को
क्रूस पर चढाया, एक को इधर और एक को
उधर, और बीच में यीशु को। १९ और
पीलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस
पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ
था, **यीशु नासरी यहूदियों का राजा।**
२० यह दोष-पत्र बहुत यहूदियो ने पढा
क्योकि वह स्थान जहा यीशु क्रूस पर चढाया
गया था नगर के पास था और पत्र इब्रानी
और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ
था। २१ तब यहूदियो के महायाजको ने
पीलातुस से कहा, यहूदियो का राजा मत
लिख परन्तु यह कि "उस ने कहा, मैं
यहूदियो का राजा हू"। २२ पीलातुस ने
उत्तर दिया, कि मैं ने जो लिख दिया, वह
लिख दिया॥

२३ जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढा
चुके, तो उसके कपडे लेकर चार भाग किए,
हर सिपाही के लिये एक भाग और कुरता
भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर
से नीचे तक बुना हुआ था इसलिये उन्हो
ने आपस में कहा, हम इस को न फाडें, परन्तु
इस पर चिट्ठी डाले कि वह किस का होगा।
२४ यह इसलिये हुआ, कि पवित्र शास्त्र
की बात पूरी हो कि उन्हो ने मेरे कपडे आपस
में बाट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी
डाली सो सिपाहियो ने ऐसा ही किया।
२५ परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की
माता और उस की माता की बहिन मरियम,
क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी
खडी थी। २६ यीशु ने अपनी माता और
उस चेले को जिस से वह प्रेम रखता था,
पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा,
हे नारी *, देख, यह तेरा पुत्र है। २७ तब
उस चेले से कहा, यह तेरी माता है, और
उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर
ले गया॥

२८ इस के बाद यीशु ने यह जानकर
कि अब सब कुछ हो चुका, इसलिये कि
पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं
पियासा हू। २९ वहा एक सिरके से भरा

* या महिला।

नही गए। ३१ परन्तु ये इसलिये लिखे
गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही
परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास
करके उसके नाम से जीवन पाओ।।

२१ इन वातो के वाद यीशु ने अपने
आप को तिविरियास झील के
किनारे चेलो पर प्रगट किया और इस रीति
से प्रगट किया। २ शमौन पतरस और
थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील
के काना नगर का नतनएल और जव्दी के
पुत्र, और उसके चेलो मे से दो और जन
इकट्ठे थे। ३ शमौन पतरस ने उन से कहा,
मैं मछली पकडने को जाता हू उन्हो ने
उस से कहा, हम भी तेरे साथ चलते है
सो वे निकलकर नाव पर चढे, परन्तु उस
रात कुछ न पकडा। ४ भोर होते ही
यीशु किनारे पर खडा हुआ, तौभी चेलो ने
न पहचाना कि यह यीशु है। ५ तव
यीशु ने उन से कहा, हे वालको, क्या तुम्हारे
पास कुछ खाने को है? उन्हो ने उत्तर दिया
कि नही। ६ उस ने उन से कहा, नाव की
दहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तव
उन्हो ने जाल डाला, और अव मछलियो की
वहुतायत के कारण उसे खीच न सके।
७ इसलिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम
रखता था पतरस से कहा, यह तो प्रभु है
शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है,
कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह
नगा था, और झील मे कूद पडा।
८ परन्तु और चेले डोगी पर मछलियो से
भरा हुआ जाल खीचते हुए आए, क्योंकि
वे किनारे से अधिक दूर नही, कोई दो सौ
हाथ पर थे। ९ जव किनारे पर उतरे,
तो उन्हो ने कोएले की आग, और उस पर
मछली रखी हुई, और रोटी देखी।
१० यीशु ने उन से कहा, जो मछलिया
तुम ने अभी पकडी है, उन मे से कुछ लाओ।
११ शमौन पतरस ने डोगी पर चढकर
एक सौ तिर्पन वडी मछलियो से भरा हुआ
जाल किनारे पर खीचा, और इतनी
मछलिया होने से भी जाल न फटा।
१२ यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन
करो और चेलो मे से किसी को हियाव
न हुआ, कि उस से पूछे, कि तू कौन है?
क्योंकि वे जानते थे, कि हो न हो यह
प्रभु ही है। १३ यीशु आया, और रोटी
लेकर उन्हे दी, और वैसे ही मछली भी।
१४ यह तीसरी वार है, कि यीशु ने मरे
हुओ मे से जी उठने के वाद चेलो को दर्शन
दिए।।

१५ भोजन करने के वाद यीशु ने
शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के
पुत्र, क्या तू इन से वढ़कर मुझ से प्रेम
रखता है? उस ने उस से कहा, हा, प्रभु,
तू तो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता
हू उस ने उस से कहा, मेरे मेमनो को
चरा। १६ उस ने फिर दूसरी वार उस से
कहा, हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ
से प्रेम रखता है? उस ने उन से कहा, हा,
प्रभु तू जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता
हू. उस ने उस से कहा, मेरी भेडो की
रखवाली कर। १७ उस ने तीसरी वार
उस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या
तू मुझ से प्रीति रखता है? पतरस उदास
हुआ, कि उस ने उसे तीसरी वार ऐसा
कहा, कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है?
और उस से कहा, हे प्रभु, तू तो सब कुछ
जानता है तू यह जानता है कि मैं तुझ से
प्रीति रखता हूं यीशु ने उस से कहा, मेरी
भेडो को चरा। १८ मैं तुझ से सच सच
कहता हू, जव तू जवान था, तो अपनी कमर

बान्धकर जहा चाहता था, वहा फिरता था, परन्तु जब तू बूढा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बान्धकर जहा तू न चाहेगा वहा तुझे ले जाएगा।
१६ उस ने इन बातो से पता दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा, और यह कहकर, उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। २० पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा, जिस से यीशु प्रेम रखता था, और जिस ने भोजन के समय उस की छाती की ओर झुककर पूछा, हे प्रभु, तेरा पकडवानेवाला कौन है?
२१ उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इस का क्या हाल होगा? २२ यीशु न उस से कहा, यदि मैं चाहू कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे हो ले। २३ इसलिये भाइयो में यह बात फल गई, कि वह चेला न मरेगा, तौभी यीशु ने उस से यह नही कहा, कि यह न मरेगा, परन्तु यह कि यदि मैं चाहू कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?

२४ यह वही चेला है, जो इन बातो की गवाही देता है और जिस ने इन बातो को लिखा है और हम जानते है, कि उस की गवाही सच्ची है॥

२५ और भी बहुत से काम है, जो यीशु ने किए, यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हू, कि पुस्तके जो लिखी जाती वे जगत में भी न समाती॥

प्रेरितों के कामों का वर्णन

१ हे थियुफिलुस, मैं ने पहिली पुस्तिका उन सब बातो के विषय में लिखी, जो यीशु ने आरम्भ मे किया और करता और सिखाता रहा।
२ उस दिन तक जब वह उन प्रेरितो को जिन्हे उस ने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया।
३ और उस ने दु ख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणो से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हे दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। ४ और उन से मिलकर उन्हे आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोडो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो।
५ क्योकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोडे दिनो के बाद तुम पवित्रात्मा से * बपतिस्मा पाओगे॥

६ सो उन्हा ने इकट्ठे होकर उस से पूछा, कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा? ७ उस ने उन से कहा, उन समयो या कालो को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नही।
८ परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और

* यू० में।

यरूशलेम और सारे यहूदिया और
सामरिया मे, और पृथ्वी की छोर तक
मेरे गवाह होगे। ९ यह कहकर वह उन
के देखते देखते ऊपर उठा लिया गया,
और बादल ने उसे उन की आखो से
छिपा लिया। १० और उसके जाते
समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे
थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने
हुए उन के पास आ खडे हुए। ११ और
कहने लगे, हे गलीली पुरुषो, तुम क्यो
खडे स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही
यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा
लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे
स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह
फिर आएगा॥

१२ तब वे जैतून नाम के पहाड से
जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन
की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।
१३ और जब वहा पहुचे तो वे उस
अटारी पर गए, जहा पतरस और यूहन्ना
और याकूब और अन्द्रियास और फिलिप्पुस
और थोमा और बरतुलमाई और मत्ती
और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन
जेलोतेस और याकूब का पुत्र* यहूदा
रहते थे। १४ ये सब कई स्त्रियो और
यीशु की माता मरियम और उसके
भाइयो के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना मे
लगे रहे॥

१५ और उन्ही दिनो मे पतरस भाइयो
के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के
लगभग इकट्ठे थे, खडा होकर कहने लगा।
१६ हे भाइयो, अवश्य था कि पवित्र
शास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र
आत्मा ने दाऊद के मुख मे यहूदा के विषय
मे जो यीशु के पकडनेवालो का अगुवा
था, पहिले से कही थी। १७ क्योकि
वह तो हम मे गिना गया, और इस
सेवकाई मे सहभागी हुआ। १८ (उस ने
अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया,
और सिर के बल गिरा, और उसका
पेट फट गया, और उस की सब अन्तडिया
निकल पडी। १९ और इस बात को
यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए,
यहा तक कि उस खेत का नाम उन की
भाषा मे हकलदमा अर्थात् लोहू का खेत
पड गया।) २० क्योकि भजन संहिता मे
लिखा है, कि उसका घर उजड जाए,
और उस मे कोई न बसे और उसका
पद कोई दूसरा ले ले। २१ इसलिये
जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ
आता जाता रहा, अर्थात् यूहन्ना के
बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से
उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे
साथ रहे। २२ उचित है कि उन मे से
एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने
का गवाह हो जाए। २३ तब उन्हो ने
दो को खडा किया, एक यूसुफ को, जो
बर-सबा कहलाता है, जिस का उपनाम
यूसतुस है, दूसरा मत्तिय्याह को। २४ और
यह कहकर प्रार्थना की, कि हे प्रभु, तू
जो सब के मन जानता है, यह प्रगट
कर कि इन दोनो मे से तू ने किस को
चुना है। २५ कि वह इस सेवकाई और
प्रेरिताई का पद ले जिसे यहूदा छोड
कर अपने स्थान को गया। २६ तब उन्हो
ने उन के बारे में चिट्ठिया डाली, और
चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली,
सो वह उन ग्यारह प्रेरितो के साथ गिना
गया॥

* या भाई।

२ जब पिन्तेकुस्त का दिन आया,
तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
२ और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी
की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और
उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज
गया। ३ और उन्हें आग की सी जीभें
फटती हुई दिखाई दीं, और उन में से
हर एक पर आ ठहरीं। ४ और वे सब
पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस
प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी,
वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे॥

५ और आकाश के नीचे की हर एक
जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में
रहते थे। ६ जब वह शब्द हुआ तो
भीड़ लग गई और लोग घबरा गए,
क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था,
कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।
७ और वे सब चकित और अचम्भित
होकर कहने लगे, देखो, ये जो बोल रहे
हैं क्या सब गलीली नहीं? ८ तो फिर
क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी
जन्म भूमि की भाषा सुनता है? ९ हम
जो पारथी और मेदी और एलामी लोग
और मिसुपुतामिया और यहूदिया और
कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया।
१० और फ्रूगिया और पमफूलिया और
मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के
आस पास है, इन सब देशों के रहनेवाले
और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी क्या यहूदी
मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी
भी हैं। ११ परन्तु अपनी अपनी भाषा में
उन से परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की
चर्चा सुनते हैं। १२ और वे सब चकित
हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने
लगे कि यह क्या हुआ चाहता है?
१३ परन्तु औरों ने ठट्ठा करके कहा,
कि वे तो नई मदिरा के नशे में हैं॥

१४ पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा
हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, कि
हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब
रहनेवालो, यह जान लो और कान
लगाकर मेरी बातें सुनो। १५ जैसा तुम
समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि
अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है। १६ परन्तु
यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कही गई है। १७ कि परमेश्वर
कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा
होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों
पर उंडेलूंगा* और तुम्हारे बेटे और
तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और
तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे
पुरनिए स्वप्न देखेंगे। १८ वरन मैं
अपने दासों और अपनी दासियों पर
भी उन दिनों में अपने आत्मा में से
उंडेलूंगा,* और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।
१९ और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत
काम, और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात्
लोहू, और आग और धूएं का बादल
दिखाऊंगा। २० प्रभु के महान और
प्रसिद्ध दिन के आने से पहिले सूर्य अंधेरा
और चान्द लोहू हो जाएगा। २१ और
जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार
पाएगा। २२ हे इस्राएलियो, ये बातें
सुनो कि यीशु नासरी एक मनुष्य था
जिस का परमेश्वर की ओर से होने का
प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य
के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो
परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा
कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते

* या बहाऊंगा।

हो। २३ उसी को, जब वह परमेश्वर
की ठहराई हुई मनसा और होनहार के
ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम
ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर
चढ़वाकर मार डाला। २४ परन्तु उसी
को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों* से
छुड़ाकर जिलाया क्योंकि यह अनहोना
था कि वह उसके वश में रहता।
२५ क्योंकि दाऊद उसके विषय में
कहता है, कि मैं प्रभु को सर्वदा अपने
साम्हने देखता रहा क्योंकि वह मेरी
दहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊं।
२६ इसी कारण मेरा मन आनन्द हुआ,
और मेरी जीभ मगन हुई, वरन मेरा
शरीर भी आशा में बसा रहेगा।
२७ क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक
में न छोड़ेगा, और न अपने पवित्र जन
को सड़ने ही देगा! २८ तू ने मुझे
जीवन का मार्ग बताया है, तू मुझे अपने
दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।
२९ हे भाइयो, मैं उस कुलपति दाऊद
के विषय में तुम से साहस के साथ कह
सकता हूं कि वह तो मर गया और
गाड़ा भी गया और उस की कब्र आज
तक हमारे यहां वर्तमान है। ३० सो
भविष्यद्वक्ता होकर और यह जानकर कि
परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि
मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे
सिंहासन पर बैठाऊंगा। ३१ उस ने होन-
हार को पहिले ही से देखकर मसीह के
जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की
कि न तो उसका प्राण अधोलोक में
छोड़ा गया, और न उस की देह सड़ने
पाई। ३२ इसी यीशु को परमेश्वर ने
जिलाया, जिस के हम सब गवाह हैं।
३३ इस प्रकार परमेश्वर के दहिने हाथ
से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से
वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिस की
प्रतिज्ञा की गई थी, उस ने यह उंडेल*
दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।
३४ क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं
चढ़ा, परन्तु वह आप कहता है, कि
प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; ३५ मेरे
दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को
तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं।
३६ सो अब इस्राएल का सारा घराना
निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी
यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया,
प्रभु भी ठहराया और मसीह भी॥

३७ तब सुननेवालों के हृदय छिद
गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से
पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें?
३८ पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ,
और तुम में से हर एक अपने अपने पापों
की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से
बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का
दान पाओगे। ३९ क्योंकि यह प्रतिज्ञा
तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन
सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है
जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने
पास बुलाएगा। ४० उस ने बहुत और
बातों से भी गवाही दे देकर समझाया
कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति† से
बचाओ। ४१ सो जिन्हों ने उसका
वचन ग्रहण किया उन्हों ने बपतिस्मा
लिया, और उसी दिन तीन हजार
मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।
४२ और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और

* यू० की पीड़ाओं।

* या बहा। † यू० पीढ़ी।

सगति रखने में और रोटी तोडने* में
और प्रार्थना करने में लौलीन रहे॥
४३ और सब लोगो पर भय छा गया,
और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह
प्रेरितो के द्वारा प्रगट होते थे। ४४ और
वे सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे,
और उन की सब वस्तुए साझे की थी।
४५ और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और
सामान बेच बेचकर जैसी जिस की
आवश्यकता होती थी बाट दिया करते
थे। ४६ और वे प्रति दिन एक मन
होकर मन्दिर मे इकट्ठे होते थे, और घर
घर रोटी तोडते* हुए आनन्द और मन
की सीधाई से भोजन किया करते थे।
४७ और परमेश्वर की स्तुति करते थे,
और सब लोग उन से प्रसन्न थे और जो
उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन
में मिला देता था॥

३ पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर
प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे
थे। २ और लोग एक जन्म के लगडे
को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन
मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता
है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर मे जाने-
वालो से भीख मागे। ३ जब उस ने
पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते
देखा, तो उन से भीख मागी। ४ पतरस
ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से
देखकर कहा, हमारी ओर देख। ५ सो
वह उन से कुछ पाने की आशा रखते
हुए उन की ओर ताकने लगा। ६ तब
पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे
पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है, वह
तुझे देता हू यीशु मसीह नासरी के
नाम से चल फिर। ७ और उस ने
उसका दहिना हाथ पकड के उसे उठाया
और तुरन्त उसके पावो और टखनो में
बल आ गया। ८ और वह उछलकर
खडा हो गया, और चलने फिरने लगा
और चलता, और कूदता, और परमेश्वर
की स्तुति करता हुआ उन के साथ
मन्दिर में गया। ९ सब लोगो ने उसे
चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति
करते देखकर। १० उस को पहचान
लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर
फाटक पर बैठ कर भीख मागा करता था,
और उस घटना से जो उसके साथ हुई
थी, वे बहुत अचम्भित और चकित
हुए॥
११ जब वह पतरस और यूहन्ना को
पकडे हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा
करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का
कहलाता है, उन के पास दौडे आए।
१२ यह देखकर पतरस ने लोगो से कहा,
हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यो
अचम्भा करते हो, और हमारी ओर क्यो
इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हम
ही ने अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे
चलता-फिरता कर दिया। १३ इब्राहीम
और इसहाक और याकूब के परमेश्वर,
हमारे बापदादो के परमेश्वर ने अपने
सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने
पकडवा दिया, और जब पीलातुस ने उसे
छोड देने का विचार किया, तब तुम ने
उसके साम्हने उसका इन्कार किया।
१४ तुम ने उस पवित्र और धर्मी का
इन्कार किया, और बिनती की, कि एक
हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड दिया जाए।
१५ और तुम ने जीवन के कर्त्ता को मा

* मत्ती २६ २६, और इस पुस्तक के २० अ० ७ पद को देखो।

डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओ में से
जिलाया, और इस बात के हम गवाह
है। १६ और उसी के नाम ने, उस
विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है,
इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और
जानते भी हो सामर्थ दी है, और निश्चय
उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है,
इस को तुम सब के साम्हने बिलकुल
भला चगा कर दिया है। १७ और अब
हे भाइयो, मैं जानता हू कि यह काम
तुम ने अज्ञानता से किया, और वैसा ही
तुम्हारे सरदारो ने भी किया। १८ परन्तु
जिन बातो को परमेश्वर ने सब भविष्यद्-
वक्ताओ के मुख से पहिले ही बताया था,
कि उसका मसीह दुख उठाएगा, उन्हें
उस ने इस रीति से पूरी किया। १९ इस-
लिये, मन फिराओ और लौट आओ कि
तुम्हारे पाप मिटाए जाए, जिस से प्रभु
के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आए।
२० और वह उस मसीह यीशु को भेजे
जो तुम्हारे लिये पहिले ही से ठहराया
गया है। २१ अवश्य है कि वह स्वर्ग मे
उस समय तक रहे* जब तक कि वह
सब बातो का सुधार न कर ले जिस की
चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्-
वक्ताओ के मुख से की है, जो जगत की
उत्पत्ति से होते आए है। २२ जैसा कि
मूसा ने कहा, प्रभु परमेश्वर तुम्हारे
भाइयो मे से तुम्हारे लिये मुझ सा एक
भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से
कहे, उस की सुनना। २३ परन्तु प्रत्येक
मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने,
लोगो में से नाश किया जाएगा। २४ और
सामुएल से लेकर उसके बाद वालो तक
जितने भविष्यद्वक्ताओ ने बात कही उन
सब ने इन दिनो का सन्देश दिया है।
२५ तुम भविष्यद्वक्ताओ की सन्तान और
उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने
तुम्हारे बापदादो से बान्धी, जब उस ने
इब्राहीम से कहा, कि तेरे वंश के द्वारा
पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएंगे।
२६ परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर
पहिले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से
हर एक को उस की बुराइयो से फेरकर
आशीष दे॥

४ जब वे लोगो से यह कह रहे थे,
तो याजक और मन्दिर के सरदार
और सदूकी उन पर चढ आए। २ क्योंकि
वे बहुत क्रोधित हुए कि वे लोगो को
सिखाते थे और यीशु का उदाहरण दे
देकर* मरे हुओ के जी उठने† का
प्रचार करते थे। ३ और उन्हो ने उन्हे
पकडकर दूसरे दिन तक हवालात मे रखा
क्योकि सन्ध्या हो गई थी। ४ परन्तु
वचन के सुननेवालो मे से बहुतो ने विश्वास
किया, और उन की गिनती पाच हजार
पुरुषो के लगभग हो गई॥

५ दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उन के
सरदार और पुरनिये और शास्त्री।
६ और महायाजक हन्ना और कैफा और
यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महा-
याजक के घराने के थे, सब यरूशलेम मे
इकट्ठे हुए। ७ और उन्हे बीच मे खडा
करके पूछने लगे, कि तुम ने यह काम
किस सामर्थ से और किस नाम से किया
है? ८ तब पतरस ने पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण होकर उन से कहा। ९ हे लोगो
के सरदारो और पुरनियो, इस दुर्बल

* यू० स्वर्ग उसे उस समय तक लिए रहे।

* यू० में। † या मृतकोत्थान।

मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है,
यदि आज हम से उसके विषय में पूछ
पाछ की जाती है, कि वह क्योंकर अच्छा
हुआ। १० तो तुम सब और सारे इस्राएली
लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी
के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया,
और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया,
यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा
खड़ा है। ११ यह वही पत्थर है जिसे
तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और
वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया।
१२ और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार
नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में
और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया,
जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें॥

१३ जब उन्हों ने पतरस और यूहन्ना
का हियाव देखा, और यह जाना कि ये
अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो
अचम्भा किया, फिर उन को पहचाना,
कि ये यीशु के साथ रहे हैं। १४ और
उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था उन के
साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न
कह सके। १५ परन्तु उन्हें सभा के
बाहर जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में
विचार करने लगे, १६ कि हम इन
मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरू-
शलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है,
कि इन के द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया
गया है, और हम उसका इन्कार नहीं
कर सकते। १७ परन्तु इसलिये कि यह
बात लोगों में और अधिक फैल न जाए,
हम उन्हें धमकाएं, कि वे इस नाम से
फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।
१८ तब उन्हें बुलाया और चितौनी देकर
यह कहा, कि यीशु के नाम से कुछ भी न
बोलना और न सिखलाना। १९ परन्तु
पतरस और यूहन्ना ने उन को उत्तर
दिया, कि तुम ही न्याय करो, कि क्या
यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम
परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी
बात मानें। २० क्योंकि यह तो हम से
हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और
सुना है, वह न कहें। २१ तब उन्हों ने
उन को और धमकाकर छोड़ दिया,
क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने
का कोई दांव नहीं मिला, इसलिये कि
जो घटना हुई थी उसके कारण सब लोग
परमेश्वर की बड़ाई करते थे। २२ क्योंकि
वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का
चिन्ह दिखाया गया था, चालीस वर्ष से
अधिक आयु का था॥

२३ वे छूटकर अपने साथियों के पास
आए, और जो कुछ महायाजकों और
पुरनियों ने उन से कहा था, उनको सुना
दिया। २४ यह सुनकर, उन्हों ने एक
चित्त होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से
कहा, हे स्वामी, तू वही है जिस ने स्वर्ग
और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ
उन में है बनाया। २५ तू ने पवित्र आत्मा
के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद
के मुख से कहा, कि अन्य जातियों ने
हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश के लोगों
ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? २६ प्रभु और
उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा
खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे
हो गए। २७ क्योंकि सचमुच तेरे सेवक
यीशु के विरोध में, जिसे तू ने अभिषेक
किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस
भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ
इस नगर में इकट्ठे हुए। २८ कि जो कुछ

पहिले से तेरी सामर्थ* और मति से
ठहरा था वही करें। २९ अब, हे प्रभु,
उन की धमकियों को देख, और अपने दासों
को यह वरदान दे, कि तेरा वचन बड़े
हियाव से सुनाए। ३० और चंगा करने
के लिये तू अपना हाथ बढ़ा, कि चिन्ह
और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु
के नाम से किए जाएं। ३१ जब वे
प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे
इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र
आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर
का वचन हियाव से सुनाते रहे॥

३२ और विश्वास करनेवालों की
मण्डली एक चित्त और एक मन के थे
यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी
नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का
था। ३३ और प्रेरित बड़ी सामर्थ से
प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते
रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।
३४ और उन में कोई भी दरिद्र न था,
क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे
उन को बेच बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का
दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों
पर रखते थे। ३५ और जैसी जिसे
आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर
एक को बांट दिया करते थे॥

३६ और यूसुफ नाम, कुप्रुस का एक
लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बर-नबा
अर्थात् (शान्ति का पुत्र) रखा था।
३७ उस की कुछ भूमि थी, जिसे उस ने
बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के
पांवों पर रख दिए॥

५ और हनन्याह नाम एक मनुष्य,
और उस की पत्नी सफीरा ने कुछ
भूमि बेची। २ और उसके दाम में से
कुछ रख छोड़ा, और यह बात उस की
पत्नी भी जानती थी, और उसका एक
भाग लाकर प्रेरितों के पांवों के आगे रख
दिया। ३ परन्तु पतरस ने कहा, हे
हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात
क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से
झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ
रख छोड़े? ४ जब तक वह तेरे पास
रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक
गई तो क्या तेरे वश में न थी? तू ने
यह बात अपने मन में क्यों विचारी?
तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से
झूठ बोला। ५ ये बातें सुनते ही हनन्याह
गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए, और
सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।
६ फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी
बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया॥

७ लगभग तीन घंटे के बाद उस की
पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर,
भीतर आई। ८ तब पतरस ने उस से
कहा, मुझे बता क्या तुम ने वह भूमि
इतने ही में बेची थी? उस ने कहा,
हां, इतने ही में। ९ पतरस ने उस से
कहा, यह क्या बात है, कि तुम दोनों ने
प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिये एका
किया? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले
द्वार ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर
ले जाएंगे। १० तब वह तुरन्त उसके
पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़
दिए और जवानों ने भीतर आकर उसे
मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके
पति के पास गाड़ दिया। ११ और सारी
कलीसिया पर और इन बातों के सब
सुननेवालों पर, बड़ा भय छा गया॥

* यू० तेरा हाथ।

१२ और प्रेरितों के हाथों से बहुत
चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में
दिखाए जाते थे, (और वे सब एक
चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे
हुआ करते थे। १३ परन्तु औरों में से
किसी को यह हियाव न होता था, कि
उन में जा मिले, तौभी लोग उन की
बड़ाई करते थे। १४ और विश्वास करने-
वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की
कलीसिया में और भी अधिक आकर
मिलते रहे।) १५ यहां तक कि लोग
बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों
और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब
पतरस आए, तो उस की छाया ही उन
में से किसी पर पड़ जाए। १६ और
यरूशलेम के आस पास के नगरों से भी
बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं
के सताए हुओं को ला लाकर, इकट्ठे
होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते
थे॥

१७ तब महायाजक और उसके सब
साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, डाह से
भर कर उठे। १८ और प्रेरितों को
पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया।
१९ परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने
बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर
लाकर कहा। २० कि जाओ, मन्दिर में
खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें
लोगों को सुनाओ। २१ वे यह सुनकर
भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश
देने लगे, परन्तु महायाजक और उसके
साथियों ने आकर महासभा को और
इस्राएलियों के सब पुरनियों को इकट्ठे
किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि
उन्हें लाएं। २२ परन्तु प्यादों ने वहां
पहुंचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, और
लौटकर सन्देश दिया। २३ कि हम ने
बन्दीगृह को बड़ी चौकसी से बन्द किया
हुआ, और पहरेवालों को बाहर द्वारों पर
खड़े हुए पाया, परन्तु जब खोला, तो
भीतर कोई न मिला। २४ जब मन्दिर के
सरदार और महायाजकों ने ये बातें सुनीं,
तो उन के विषय में भारी चिन्ता में पड़
गए कि यह क्या हुआ चाहता है?
२५ इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया,
कि देखो, जिन्हें तुम ने बन्दीगृह में बन्द
रखा था, वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए
लोगों को उपदेश दे रहे हैं। २६ तब
सरदार, प्यादों के साथ जाकर, उन्हें ले
आया, परन्तु बरबस नहीं, क्योंकि वे
लोगों से डरते थे, कि हमें पत्थरवाह न
करें। २७ उन्हों ने उन्हें फिर लाकर
महासभा के साम्हने खड़ा कर दिया
और महायाजक ने उन से पूछा। २८ क्या
हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी,
कि तुम इस नाम से उपदेश न करना?
तौभी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को
अपने उपदेश से भर दिया है और उस
व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना
चाहते हो। २९ तब पतरस और, और
प्रेरितों ने उत्तर दिया, कि मनुष्यों की
आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का
पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।
३० हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु
को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटका-
कर मार डाला था। ३१ उसी को
परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर,
अपने दहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया,
कि वह इस्राएलियों को मन फिराव की
शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे।
३२ और हम इन बातों के गवाह हैं,
और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर

ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते
हैं॥
३३ यह सुनकर वे जल गए,* और
उन्हें मार डालना चाहा। ३४ परन्तु
गमलीएल नाम एक फरीसी ने जो
व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय
था, न्यायालय में खड़े होकर प्रेरितों को
थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की
आज्ञा दी। ३५ तब उस ने कहा, हे
इस्राएलियो, जो कुछ इन मनुष्यों से किया
चाहते हो, सोच समझ के करना।
३६ क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास
यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ
हूं, और कोई चार सौ मनुष्य उसके
साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया,
और जितने लोग उसे मानते थे, सब
तित्तर बित्तर हुए और मिट गए।
३७ उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में
यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपनी
ओर कर लिए. वह भी नाश हो गया,
और जितने लोग उसे मानते थे, सब
तित्तर बित्तर हो गए। ३८ इसलिये अब
मैं तुम से कहता हूं, इन मनुष्यों से दूर
ही रहो और उन से कुछ काम न रखो,
क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की
ओर से हो तब तो मिट जाएगा।
३९ परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो
तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे, कहीं
ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी
लड़नेवाले ठहरो। ४० तब उन्हों ने उस की
बात मान ली, और प्रेरितों को बुलाकर
पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़
दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न
करना। ४१ वे इस बात से आनन्दित
होकर महासभा के साम्हने से चले गए,
कि हम उसके नाम के लिये निरादर
होने के योग्य तो ठहरे। ४२ और प्रति
दिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश
करने, और इस बात का सुसमाचार
सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके॥

६ उन दिनों में जब चेले बहुत होते
जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलनेवाले
इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रति
दिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं
की सुधि नहीं ली जाती। २ तब उन
बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने
पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम
परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-
पिलाने की सेवा में रहें। ३ इसलिये,
हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों
को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से
परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस
काम पर ठहरा दें। ४ परन्तु हम तो
प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे
रहेंगे। ५ यह बात सारी मण्डली को
अच्छी लगी, और उन्हों ने स्तिफनुस नाम
एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र
आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस
और प्रखुरुस और नीकानोर और तीमोन
और परमिनास और अन्ताकीवाला नीकु-
लाउस को जो यहूदी मत में आ गया था,
चुन लिया। ६ और इन्हें प्रेरितों के
साम्हने खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना
करके उन पर हाथ रखे॥
७ और परमेश्वर का वचन फैलता
गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती
बहुत बढ़ती गई; और याजकों का
एक बड़ा समाज इस मत के आधीन हो
गया॥

* यू० फट गए।

८ स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से
परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्भुत
काम और चिन्ह दिखाया करता था।
९ तब उस आराधनालय में से जो
लिबिर्तीनों की कहलाती थी, और कुरेनी
और सिकन्दरिया और किलिकिया और
एशीया के लोगों में से कई एक उठकर
स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे।
१० परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का
जिस से वह बात करता था, वे साम्हना
न कर सके। ११ इस पर उन्हों ने कई
लोगों को उभारा जो कहने लगे, कि हम
ने इस को मूसा और परमेश्वर के विरोध
में निन्दा की बातें कहते सुना है।
१२ और लोगों और प्राचीनों और
शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए और
उसे पकड़कर महासभा में ले आए।
१३ और झूठे गवाह खड़े किए, जिन्हों ने
कहा कि यह मनुष्य इस पवित्र स्थान
और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं
छोड़ता। १४ क्योंकि हम ने उसे यह
कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस
जगह को ढा देगा, और उन रीतों को
बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।
१५ तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे
थे, उस की ओर ताककर उसका मुखड़ा
स्वर्गदूत का सा देखा॥

७ तब महायाजक ने कहा, क्या ये
बातें यों ही हैं? २ उस ने कहा, हे
भाइयो, और पितरो सुनो, हमारा पिता
इब्राहीम हारान में बसने से पहिले जब
मिसुपुतामिया में था, तो तेजोमय परमेश्वर
ने उसे दर्शन दिया। ३ और उस से
कहा कि तू अपने देश और अपने कुटुम्ब
से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे
मैं तुझे दिखाऊंगा। ४ तब वह कसदियों
के देश से निकलकर हारान में जा बसा,
और उसके पिता की मृत्यु के बाद पर-
मेश्वर ने उसको वहां से इस देश में
लाकर बसाया जिस में अब तुम बसते हो।
५ और उसको कुछ मीरास वरन पैर
रखने भर की भी उस में जगह न दी,
परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश, तेरे
और तेरे बाद तेरे वंश के हाथ कर दूंगा,
यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी
न था। ६ और परमेश्वर ने यों कहा,
कि तेरी सन्तान के लोग पराये देश में
परदेशी होंगे, और वे उन्हें दास बनाएंगे,
और चार सौ वर्ष तक दुख देंगे। ७ फिर
परमेश्वर ने कहा, जिस जाति के वे
दास होंगे, उस को मैं दण्ड दूंगा; और
इस के बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी
सेवा करेंगे। ८ और उस ने उस से
खतने की वाचा बान्धी, और इसी दशा में
इसहाक उस से उत्पन्न हुआ, और आठवें
दिन उसका खतना किया गया, और
इसहाक से याकूब और याकूब से बारह
कुलपति उत्पन्न हुए। ९ और कुलपतियों
ने यूसुफ से डाह करके उसे मिसर देश
जानेवालों के हाथ बेचा, परन्तु परमेश्वर
उसके साथ था। १० और उसे उसके
सब क्लेशों से छुड़ाकर मिसर के राजा
फिरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी,
और उस ने उसे मिसर पर और अपने
सारे घर पर हाकिम ठहराया। ११ तब
मिसर और कनान के सारे देश में अकाल
पड़ा, जिस से भारी क्लेश हुआ, और
हमारे बापदादों को अन्न नहीं मिलता
था। १२ परन्तु याकूब ने यह सुनकर,
कि मिसर में अनाज है, हमारे बापदादों
को पहिली बार भेजा। १३ और दूसरी

बार यूसुफ अपने भाइयो पर प्रगट हो
गया, और यूसुफ की जाति फिरौन को
मालूम हो गई। १४ तब यूसुफ ने अपने
पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को,
जो पचहत्तर व्यक्ति थे, बुला भेजा।
१५ तब याकूब मिसर मे गया; और वहा
वह और हमारे बापदादे मर गए।
१६ और वे शिकिम मे पहुचाए जाकर
उस कब्र मे रखे गए, जिसे इब्राहीम ने
चान्दी देकर शिकिम में हमोर की सन्तान
से मोल लिया था। १७ परन्तु जब उस
प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट
आया, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की
थी, तो मिसर मे वे लोग बढ गए,
और बहुत हो गए। १८ जब तक कि
मिसर मे दूसरा राजा न हुआ जो यूसुफ
को नही जानता था। १९ उस ने हमारी
जाति से चतुराई करके हमारे बापदादो
के साथ यहा तक कुव्योहार किया, कि
उन्हे अपने बालको को फेंक देना पडा
कि वे जीवित न रहे। २० उस समय
मूसा उत्पन्न हुआ जो बहुत ही सुन्दर
था, और वह तीन महीने तक अपने
पिता के घर मे पाला गया। २१ परन्तु
जब फेंक दिया गया तो फिरौन की बेटी
ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके
पाला। २२ और मूसा को मिसरियो की
सारी विद्या पढाई गई, और वह बातो
और कामो मे सामर्थी था। २३ जब
वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके
मन मे आया कि मैं अपने इस्राएली
भाइयो से भेंट करू। २४ और उस ने
एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे
बचाया, और मिसरी को मारकर सताए
हुए का पलटा लिया। २५ उस ने सोचा,
कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे
हाथो से उन का उद्धार करेगा, परन्तु
उन्हो ने न समझा। २६ दूसरे दिन जब
वे आपस मे लड रहे थे, तो वह वहा
आ निकला*, और यह कहके उन्हें
मेल करने के लिये समझाया, कि हे
पुरुषो, तुम तो भाई भाई हो, एक दूसरे
पर क्यो अन्याय करते हो? २७ परन्तु
जो अपने पडोसी पर अन्याय कर रहा
था, उस ने उसे यह कहकर हटा दिया,
कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और
न्यायी ठहराया है? २८ क्या जिस रीति
से तू ने कल मिसरी को मार डाला
मुझे भी मार डालना चाहता है?
२९ यह बात सुनकर, मूसा भागा;
और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने
लगा और वहा उसके दो पुत्र उत्पन्न
हुए। ३० जब पूरे चालीस वर्ष बीत
गए, तो एक स्वर्ग दूत ने सीनै पहाड
के जगल मे उसे जलती हुई झाडी की
ज्वाला मे दर्शन दिया। ३१ मूसा ने उस
दर्शन को देखकर अचम्भा किया, और
जब देखने के लिये पास गया, तो प्रभु
का यह शब्द हुआ। ३२ कि मैं तेरे
बापदादो, इब्राहीम, इसहाक और याकूब
का परमेश्वर हू तब तो मूसा काप
उठा, यहा तक कि उसे देखने का हियाव
न रहा। ३३ तब प्रभु ने उस से कहा,
अपने पावो से जूती उतार ले, क्योंकि
जिस जगह तू खडा है, वह पवित्र भूमि
है। ३४ मैं ने सचमुच अपने लोगो की
दुर्दशा को जो मिसर मे है, देखी है,
और उन की आह और उन का रोना सुन
लिया है, इसलिये उन्हे छुडाने के लिये
उतरा हू। अब आ, मैं तुझे मिसर मे

* यू० उन्हें दिखाई दिया।

भेजूंगा। ३५ जिस मूसा का उन्हों ने
यह कहकर नकारा था कि तुझे किस ने
हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है,
उसी को परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ाने-
वाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा
जिस ने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था,
भेजा। ३६ यही व्यक्ति मिसर और
लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष
तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा दिखाकर
उन्हें निकाल लाया। ३७ यह वही मूसा
है, जिस ने इस्राएलियों से कहा, कि
परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे
लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा।
३८ यह वही है, जिस ने जंगल में
कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ
सीना पहाड़ पर उस से बातें कीं, और
हमारे बापदादों के साथ था उसी को
जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुंचाए।
३९ परन्तु हमारे बापदादों ने उस की
मानना न चाहा, वरन उसे हटाकर अपने
मन मिसर की ओर फेरे। ४० और
हारून से कहा, हमारे लिये ऐसे देवता
बना, जो हमारे आगे आगे चलें, क्योंकि
यह मूसा जो हमें मिसर देश से निकाल
लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ?
४१ उन दिनों में उन्हों ने एक बछड़ा
बनाकर, उस की मूरत के आगे बलि
चढ़ाया, और अपने हाथों के कामों में
मगन होने लगे। ४२ सो परमेश्वर ने
मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, कि आकाश-
गण पूजें, जैसा भविष्यद्वक्ताओं की
पुस्तक में लिखा है, कि हे इस्राएल के
घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष
तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही
को चढ़ाते रहे? ४३ और तुम मोलेक
के तम्बू और रिफान देवता के तारे को
लिए फिरते थे, अर्थात् उन आकारों को
जिन्हें तुम ने दण्डवत करने के लिये
बनाया था सो मैं तुम्हें बाबुल के परे
ले जाकर बसाऊंगा। ४४ साक्षी का तम्बू
जंगल में हमारे बापदादों के बीच में
था, जैसा उस ने ठहराया, जिस ने
मूसा से कहा, कि जो आकार तू ने देखा
है, उसके अनुसार इसे बना। ४५ उसी
तम्बू को हमारे बापदादे पूर्वकाल से
पाकर यहोशू के साथ यहां ले आए,
जिस समय कि उन्हों ने उन अन्यजातियों
का अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने
हमारे बापदादों के साम्हने से निकाल
दिया, और वह दाऊद के समय तक रहा।
४६ उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया,
सो उस ने विनती की, कि मैं याकूब
के परमेश्वर के लिये निवास स्थान
ठहराऊं। ४७ परन्तु सुलैमान ने उसके
लिये घर बनाया। ४८ परन्तु परमप्रधान
हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा
कि भविष्यद्वक्ता ने कहा। ४९ कि प्रभु
कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी
मेरे पांवों तले की पीढ़ी है, मेरे लिये
तुम किस प्रकार का घर बनाओगे?
और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान
होगा? ५० क्या ये सब वस्तुएं मेरे हाथ
की बनाई नहीं?

हे हठीले, और मन और कान के
खतनारहित लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा
का साम्हना करते हो। ५१ जैसा तुम्हारे
बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते
हो। ५२ भविष्यद्वक्ताओं में से किस
को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया,
और उन्हों ने उस धर्मी के आगमन का
पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला,
और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले

और मार डालनेवाले हुए। ५३ तुम ने
स्वर्गदूतो के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो
पाई, परन्तु उसका पालन नही किया ॥

५४ ये बाते सुनकर वे जल गए*
और उस पर दात पीसने लगे। ५५ परन्तु
उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर
स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की
महिमा को और यीशु को परमेश्वर की
दहिनी ओर खडा देखकर। ५६ कहा;
देखो, मै स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य
के पुत्र को परमेश्वर की दहिनी ओर
खडा हुआ देखता हू। ५७ तव उन्हो ने
बडे शब्द से चिल्लाकर कान वन्द कर
लिए, और एक चित्त होकर उस पर
झपटे। ५८ और उसे नगर के बाहर
निकालकर पत्थरवाह करने लगे, और
गवाहो ने अपने कपडे शाऊल नामक एक
जवान के पावो के पास उतार रखे।
५९ और वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते
रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता
रहा, कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा
को ग्रहण कर। ६० फिर घुटने टेककर
ऊचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप
उन पर मत लगा, और यह कहकर सो
गया. और शाऊल उसके बध मे सहमत
था ॥

८ उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया
पर वडा उपद्रव होने लगा और
प्रेरितो को छोड़ सव के सब यहूदिया और
सामरिया देशो मे तित्तर वित्तर हो गए।
२ और भक्तो ने स्तिफनुस को कब्र मे
रखा, और उसके लिये बडा विलाप
किया। ३ शाऊल कलीसिया को उजाड
रहा था, और घर घर घुसकर पुरुषो और
स्त्रियो को घसीट घसीटकर बन्दीगृह में
डालता था ॥

४ जो तित्तर वित्तर हुए थे, वे
सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। ५ और
फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर
लोगो में मसीह का प्रचार करने लगा।
६ और जो बाते फिलिप्पुस ने कही उन्हे
लोगो ने सुनकर और जो चिन्ह वह
दिखाता था उन्हे देख देखकर, एक चित्त
होकर मन लगाया। ७ क्योकि बहुतो मे से
अशुद्ध आत्माए बडे शब्द से चिल्लाती हुई
निकल गईं, और बहुत से झोले के मारे
हुए और लगडे भी अच्छे किए गए।
८ और उस नगर मे वडा आनन्द हुआ ॥

९ इस से पहिले उस नगर मे शमौन
नाम एक मनुष्य था, जो टोना करके
सामरिया के लोगो को चकित करता और
अपने आप को कोई बडा पुरुष बनाता
था। १० और सब छोटे से बडे तक उसे
मान कर कहते थे, कि यह मनुष्य परमेश्वर
की वह शक्ति है, जो महान कहलाती
है। ११ उस ने बहुत दिनो से उन्हे
अपने टोने के कामो से चकित कर रखा
था, इसी लिये वे उस को बहुत मानते थे।
१२ परन्तु जब उन्हो ने फिलिप्पुस की
प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और
यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था
तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा
लेने लगे। १३ तब शमौन ने आप भी
प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस
के साथ रहने लगा और चिन्ह और बडे
बडे सामर्थ के काम होते देखकर चकित
होता था ॥

१४ जब प्रेरितो ने जो यरूशलेम मे
थे सुना कि सामरियो ने परमेश्वर का
वचन मान लिया है तो पतरस और

* यू० मन में फट गए।

यूहन्ना को उन के पास भेजा। १५ और
उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की
कि पवित्र आत्मा पाएं। १६ क्योंकि वह
अब तक उन में से किसी पर न उतरा
था, उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में
बपतिस्मा लिया था। १७ तब उन्हों ने
उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र
आत्मा पाया। १८ जब शमौन ने देखा
कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा
दिया जाता है, तो उन के पास रुपये
लाकर कहा। १९ कि यह अधिकार मुझे
भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूं,
वह पवित्र आत्मा पाए। २० पतरस ने
उस से कहा, तेरे रुपये तेरे साथ नाश
हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान
रुपयों से मोल लेने का विचार किया।
२१ इस बात में न तेरा हिस्सा है, न
बांटा, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे
सीधा नहीं। २२ इसलिये अपनी इस
बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर,
सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया
जाए। २३ क्योंकि मैं देखता हूं, कि तू
पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के
बन्धन में पड़ा है। २४ शमौन ने उत्तर
दिया, कि तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना
करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उन में से
कोई मुझ पर न आ पड़े॥

२५ सो वे गवाही देकर और प्रभु
का वचन सुनाकर, यरूशलेम को लौट
गए, और सामरिया के बहुत गावों में
सुसमाचार सुनाते गए॥

२६ फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने
फिलिप्पुस से कहा, उठकर दक्खिन की
ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से
अज्जाह को जाता है, और जंगल में है।
२७ वह उठकर चल दिया, और देखो,
कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था
जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके
का मन्त्री और खजांची था, और भजन
करने को यरूशलेम आया था। २८ और
वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और
यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता
हुआ लौटा जा रहा था। २९ तब आत्मा
ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस
रथ के साथ हो ले। ३० फिलिप्पुस ने
उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्-
वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और
पूछा, कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे
समझता भी है? ३१ उस ने कहा, जब
तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर
समझूं? और उस ने फिलिप्पुस से
बिनती की, कि चढ़कर मेरे पास बैठ।
३२ पवित्र शास्त्र का जो अध्याय वह पढ़
रहा था, वह यह था, कि वह भेड़ की
नाईं बध होने को पहुंचाया गया, और
जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के
साम्हने चुपचाप रहता है, वैसे ही उस ने
भी अपना मुंह न खोला। ३३ उस की
दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया,
और उसके समय के लोगों* का वर्णन
कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण
उठाया जाता है। ३४ इस पर खोजे ने
फिलिप्पुस से पूछा, मैं तुझ से बिनती
करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह
किस के विषय में कहता है, अपने या
किसी दूसरे के विषय में। ३५ तब
फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी
शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का
सुसमाचार सुनाया। ३६ मार्ग में चलते
चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब

* या पीढ़ी।

खोजे ने कहा, देख यहा जल है, अब
मुझे बपतिस्मा लेने मे क्या रोक है।
३७ फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन
से विश्वास करता है तो हो सकता है
उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता
हू कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।
३८ तब उस ने रथ खडा करने की आज्ञा
दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनो
जल मे उतर पडे, और उस ने उसे
बपतिस्मा दिया। ३९ जब वे जल में से
निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा
फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने
उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता
हुआ अपने मार्ग चला गया। ४० और
फिलिप्पुस अशदोद मे आ निकला, और
जब तक कैसरिया मे न पहुचा, तब तक
नगर नगर सुसमाचार सुनाता गया॥

९ और शाऊल जो अब तक प्रभु के
चेलो को धमकाने और घात करने
की धुन मे था, महायाजक के पास गया।
२ और उस मे दमिश्क की आराधनालयो
के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठिया
मागी, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हे
वह इस पथ पर पाए उन्हे बान्धकर यरू-
शलेम मे ले आए। ३ परन्तु चलते चलते
जब वह दमिश्क के निकट पहुचा, तो
एकाएक आकाश से उसके चारो और
ज्योति चमकी। ४ और वह भूमि पर
गिर पडा, और यह शब्द सुना, कि हे
शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यो सताता
है? ५ उस ने पूछा, हे प्रभु, तू कौन है?
उस ने कहा, मैं यीशु हू, जिसे तू सताता
है। ६ परन्तु अब उठकर नगर मे जा,
और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा
जाएगा। ७ जो मनुष्य उसके साथ थे,
वे चुपचाप रह गए, क्योकि शब्द तो
सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे।
८ तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु
जब आखे खोली तो उसे कुछ दिखाई न
दिया और वे उसका हाथ पकडके दमिश्क
मे ले गए। ९ और वह तीन दिन तक न
देख सका, और न खाया और न पीया॥

१० दमिश्क मे हनन्याह नाम एक
चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन मे कहा,
हे हनन्याह! उस ने कहा, हा, प्रभु।
११ तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस
गली मे जा जो सीधी कहलाती है, और
यहूदा के घर मे शाऊल नाम एक तारसी
को पूछ ले, क्योकि देख, वह प्रार्थना कर
रहा है। १२ और उस ने हनन्याह नाम
एक पुरुष को भीतर आते, और अपने
ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकि फिर से
दृष्टि पाए। १३ हनन्याह ने उत्तर दिया,
कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय मे
बहुतो से सुना है, कि इस ने यरूशलेम मे
तेरे पवित्र लोगो के साथ बडी बडी
बुराइया की है। १४ और यहा भी इस
को महायाजको की ओर से अधिकार
मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते
है, उन सब को बान्ध ले। १५ परन्तु
प्रभु ने उस से कहा, कि तू चला जा,
क्योकि यह, तो अन्यजातियो और राजाओ,
और इस्राएलियो के साम्हने मेरा नाम
प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र
है। १६ और मैं उसे बताऊगा, कि मेरे
नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना
पडेगा। १७ तब हनन्याह उठकर उस
घर मे गया, और उस पर अपना हाथ
रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात्
यीशु, जो उस रास्ते मे, जिस से तू आया
तुझे दिखा[illegible] था, उसी ने मुझे भेजा

है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र
आत्मा से परिपूर्ण हो जाए। १८ और
तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिरे,
और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा
लिया, फिर भोजन करके बल पाया॥

१९ और वह कई दिन उन चेलों के
साथ रहा जो दमिश्क में थे। २० और
वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का
प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का
पुत्र है। २१ और सब सुननेवाले चकित
होकर कहने लगे, क्या यह वही व्यक्ति
नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस
नाम को लेते थे नाश करता था, और
यहां भी इसी लिये आया था, कि उन्हें
बान्धकर महायाजकों के पास ले जाए?
२२ परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता
गया, और इस बात का प्रमाण दे देकर
कि मसीह यही है, दमिश्क के रहनेवाले
यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा॥

२३ जब बहुत दिन बीत गए, तो
यहूदियों ने मिलकर उसके मार डालने की
युक्ति निकाली। २४ परन्तु उन की युक्ति
शाऊल को मालूम हो गई: वे तो उसके
मार डालने के लिये रात दिन फाटकों पर
लगे रहे थे। २५ परन्तु रात को उसके
चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया,
और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार
दिया॥

२६ यरूशलेम में पहुंचकर उस ने चेलों
के साथ मिल जाने का उपाय किया:
परन्तु सब उस से डरते थे, क्योंकि उन को
प्रतीति न होता था, कि वह भी चेला
है। २७ परन्तु बरनबा उसे अपने साथ
प्रेरितों के पास ले जाकर उन से कहा,
कि इस ने किस रीति से मार्ग में प्रभु को
देखा, और उस ने इस से बातें कीं, फिर
दमिश्क में इस ने कैसे हियाव से यीशु
के नाम से प्रचार किया। २८ वह उन के
साथ यरूशलेम में आता जाता रहा।
२९ और निधड़क होकर प्रभु के नाम से
प्रचार करता था: और यूनानी भाषा
बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत
और वाद-विवाद करता था, परन्तु वे
उसके मार डालने का यत्न करने लगे।
३० यह जानकर भाई उसे कैसरिया में ले
आए, और तरसुस को भेज दिया॥

३१ सो सारे यहूदिया, और गलील,
और सामरिया में कलीसिया को चैन
मिला, और उसकी उन्नति होती गई,
और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की
शान्ति में चलती और बढ़ती जाती थी॥

३२ और ऐसा हुआ कि पतरस हर
जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के
पास भी पहुंचा, जो लुद्दा में रहते थे।
३३ वहां उसे ऐनियास नाम झोले का
मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ
वर्ष से खाट पर पड़ा था। ३४ पतरस ने
उस से कहा, हे ऐनियास! यीशु मसीह
तुझे चंगा करता है, उठ, अपना बिछौना
बिछा, तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ।
३५ और लुद्दा और शारोन के सब रहने-
वाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे॥

३६ याफा में तबीता अर्थात् दोरकास*
नाम एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुतेरे
भले भले काम और दान किया करती
थी। ३७ उन्हीं दिनों में वह बीमार
होकर मर गई, और उन्हों ने उसे नहला-
कर अटारी पर रख दिया। ३८ और इस-
लिये कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों
ने यह सुनकर कि पतरस वहां है दो

* अर्थात् हिरनी।

मनुष्य भेजकर उस से विनती की कि
हमारे पास आने मे देर न कर। ३९ तब
पतरस उठकर उन के साथ हो लिया,
और जब पहुच गया, तो वे उसे उस
अटारी पर ले गए, और सब विधवाए
रोती हुई उसके पास आ खडी हुई
और जो कुरते और कपडे दोरकास ने
उन के साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने
लगी। ४० तब पतरस ने सब को बाहर
कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की;
और लोथ की ओर देखकर कहा, हे
तबीता उठ तब उस ने अपनी आखे खोल
दी, और पतरस को देखकर उठ बैठी।
४१ उस ने हाथ देकर उसे उठाया,
और पवित्र लोगो और विधवाओ को
बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा
दिया। ४२ यह बात सारे याफा मे फैल
गई और बहुतेरो ने प्रभु पर विश्वास
किया। ४३ और पतरस याफा मे शमौन
नाम किसी चमडे के धन्धा करनेवाले के
यहा बहुत दिन तक रहा॥

१० कैसरिया मे कुरनेलियुस नाम
एक मनुष्य था, जो इतालियानी
नाम पलटन का सूबेदार था। २ वह
भक्त था, और अपने सारे घराने समेत
परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगो *
को बहुत दान देता, और बराबर पर-
मेश्वर से प्रार्थना करता था। ३ उस ने
दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन मे
स्पष्ट रूप से देखा, कि परमेश्वर का एक
स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता
है, कि हे कुरनेलियुस। ४ उस ने उसे
ध्यान से देखा, और डरकर कहा, हे प्रभु
क्या है? उस ने उस से कहा, तेरी
प्रार्थनाए और तेरे दान स्मरण के लिये
परमेश्वर के साम्हने पहुचे है। ५ और
अब याफा मे मनुष्य भेजकर शमौन को,
जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।
६ वह शमौन चमडे के धन्धा करनेवाले
के यहा पाहुन है, जिस का घर समुद्र के
किनारे है। ७ जब वह स्वर्गदूत जिस ने
उस से बाते की थी चला गया, तो उस ने
दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित
रहा करते थे उन मे से एक भक्त सिपाही
को बुलाया। ८ और उन्हे सब बाते
बताकर याफा को भेजा॥

९ दूसरे दिन, जब वे चलते चलते
नगर के पास पहुचे, तो दो पहर के निकट
पतरस कोठे पर प्रार्थना करने चढा।
१० और उसे भूख लगी, और कुछ
खाना चाहता था; परन्तु जब वे तैयार
कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया।
११ और उस ने देखा, कि आकाश खुल
गया, और एक पात्र बडी चादर के
समान चारो कोनो से लटकता हुआ,
पृथ्वी की ओर उतर रहा है। १२ जिस मे
पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और
रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।
१३ और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई
दिया, कि हे पतरस उठ, मार और खा।
१४ परन्तु पतरस ने कहा, नही प्रभु,
कदापि नही, क्योकि मैं ने कभी कोई
अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नही खाई है।
१५ फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई
दिया, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध
ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।
१६ तीन बार ऐसा ही हुआ, तब तुरन्त
वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया॥

१७ जब पतरस अपने मन मे दुबधा
कर रहा था, कि यह दर्शन जो मैं ने

* यू० समाज या प्रजा।

देखा क्या है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हे
कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर
का पता लगाकर डेवढी पर आ खडे
हुए। १८ और पुकारकर पूछने लगे,
क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं
पाहुन है? १९ पतरस तो उस दर्शन
पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने
उस से कहा, देख, तीन मनुष्य तेरी खोज
में है। २० सो उठकर नीचे जा, और
बेखटके उन के साथ हो ले, क्योकि मै
ही ने उन्हे भेजा है। २१ तब पतरस ने
उतरकर उन मनुष्यो से कहा, देखो,
जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मै ही
हू, तुम्हारे आने का क्या कारण है?
२२ उन्हो ने कहा, कुरनेलियुस सूबेदार
जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और
सारी यहूदी जाति मे सुनामी मनुष्य है,
उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह चितावनी
पाई है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से
वचन सुने। २३ तब उस ने उन्हे भीतर
बुलाकर उन की पहुनाई की॥

और दूसरे दिन, वह उनके साथ
गया, और याफा के भाइयो में से कई
उसके साथ हो लिए। २४ दूसरे दिन वे
कैसरिया मे पहुचे, और कुरनेलियुस
अपने कुटुम्बियो और प्रिय मित्रो को
इकट्ठे करके उन की बाट जोह रहा था।
२५ जब पतरस भीतर आ रहा था, तो
कुरनेलियुस ने उस से भेंट की, और
पावो पडके प्रणाम किया। २६ परन्तु
पतरस ने उसे उठाकर कहा, खडा हो, मैं
भी तो मनुष्य हू। २७ और उसके साथ
बातचीत करता हुआ भीतर गया, और
बहुत से लोगो को इकट्ठे देखकर।
२८ उन से कहा, तुम जानते हो, कि
अन्यजाति की सगति करना या उसके
यहा जाना यहूदी के लिये अधर्म है,
परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि
किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न
कहू। २९ इसी लिये मै जब बुलाया
गया, तो बिना कुछ कहे चला आया
अब मै पूछता हू कि मुझे किस काम के
लिये बुलाया गया है? ३० कुरनेलियुस ने
कहा, कि इस घडी पूरे चार दिन हुए,
कि मै अपने घर मे तीसरे पहर को
प्रार्थना कर रहा था, कि देखो, एक
पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे
साम्हने आ खडा हुआ। ३१ और कहने
लगा, हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन
ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के
साम्हने स्मरण किए गए है। ३२ इस-
लिये किसी को याफा भेजकर शमौन को
जो पतरस कहलाता है, बुला, वह समुद्र
के किनारे शमौन चमडे के धन्धा करने-
वाले के घर में पाहुन है। ३३ तब मैं ने
तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने
भला किया, जो आ गया अब हम सब
यहा परमेश्वर के साम्हने है, ताकि जो
कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे
सुनें। ३४ तब पतरस ने मुह खोलकर
कहा,

३५ अब मुझे निश्चय हुआ, कि
परमेश्वर किसी का पक्ष नही करता,
वरन हर जाति में जो उस से डरता
और धर्म के काम करता है, वह उसे
भाता है। ३६ जो वचन उस ने इस्राएलियो
के पास भेजा, जब कि उस ने यीशु
मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है)
शान्ति का सुसमाचार सुनाया। ३७ वह
बात तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा
के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ
करके सारे यहूदिया मे फैल गई। ३८ कि

परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी
को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक
किया वह भलाई करता, और सब को
जो शैतान* के सताए हुए थे, अच्छा
करता फिरा, क्योकि परमेश्वर उसके
साथ था। ३९ और हम उन सब कामो
के गवाह है, जो उस ने यहूदिया के देश
और यरूशलेम मे भी किए, और उन्हो ने
उसे काठ पर लटकाकर मार डाला।
४० उस को परमेश्वर ने तीसरे दिन
जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है।
४१ सब लोगो को नही वरन उन गवाहो
को जिन्हे परमेश्वर ने पहिले से चुन लिया
था, अर्थात् हमको जिन्हो ने उसके मरे
हुओ मे से जी उठने के बाद उसके साथ
खाया पीया। ४२ और उस ने हमें
आज्ञा दी, कि लोगो मे प्रचार करो,
और गवाही दो, कि यह वही है, जिसे
परमेश्वर ने जीवतो और मरे हुओ का
न्यायी ठहराया है। ४३ उस की सब
भविष्यद्वक्ता गवाही देते है, कि जो कोई
उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके
नाम के द्वारा पापो की क्षमा मिलेगी॥
४४ पतरस ये बाते कह ही रहा था,
कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालो
पर उतर आया। ४५ और जितने खतना
किए हुए विश्वासी पतरस के साथ
आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्य-
जातियो पर भी पवित्र आत्मा का दान
उडेला† गया है। ४६ क्योकि उन्हो ने
उन्हे भाति भाति की भाषा बोलते और
परमेश्वर की बडाई करते सुना। ४७ इस
पर पतरस ने कहा, क्या कोई जल की
रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न
पाए, जिन्हो ने हमारी नाई पवित्र आत्मा
पाया है? ४८ और उस ने आज्ञा दी कि
उन्हे यीशु मसीह के नाम मे बपतिस्मा
दिया जाए तब उन्हो ने उस से बिनती
की कि कुछ दिन हमारे साथ रह॥

११ और प्रेरितो और भाइयो ने
जो यहूदिया मे थे सुना, कि
अन्यजातियो ने भी परमेश्वर का वचन
मान लिया है। २ और जब पतरस
यरूशलेम मे आया, तो खतना किए हुए
लोग उस से वाद-विवाद करने लगे।
३ कि तू ने खतनारहित लोगो के यहा
जाकर उन के साथ खाया। ४ तब
पतरस ने उन्हे आरम्भ से क्रमानुसार
कह सुनाया, ५ कि मै याफा नगर मे
प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर
एक दर्शन देखा, कि एक पात्र, बडी
चादर के समान चारो कोनो से लटकाया
हुआ, आकाश से उतरकर मेरे पास
आया। ६ जब मै ने उस पर ध्यान
किया, तो पृथ्वी के चौपाए और बनपशु
और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के
पक्षी देखे। ७ और यह शब्द भी सुना
कि हे पतरस उठ मार और खा। ८ मै ने
कहा, नही प्रभु, नही, क्योकि कोई अपवित्र
या अशुद्ध वस्तु मेरे मुह मे कभी नही
गई। ९ इस के उत्तर मे आकाश से
दूसरी बार शब्द हुआ, कि जो कुछ
परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध
मत कह। १० तीन बार ऐसा ही हुआ,
तब सब कुछ फिर आकाश पर खींच
लिया गया। ११ और देखो, तुरन्त तीन
मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे
गए थे, उस घर पर जिस मे हम थे,
आ खडे हुए। १२ तब आत्मा ने मुझ से

* यू० इब्लीस। † यू० बहाया।

उन के साथ बेखटके हो लेने को कहा,
और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए,
और हम उस मनुष्य के घर में गए।
१३ और उस ने बताया, कि मैं ने एक
स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा,
जिस ने मुझ से कहा, कि याफा में मनुष्य
भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता
है, बुलवा ले। १४ वह तुम से ऐसी
बातें कहेगा जिन के द्वारा तू और तेरा
सारा घराना उद्धार पाएगा। १५ जब मैं
बात करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन
पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से
आरम्भ में हम पर उतरा था। १६ तब
मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया,
जो उस ने कहा, कि यूहन्ना ने तो पानी से
बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा पाओगे। १७ सो जब कि
परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया,
जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास
करने से मिला था, तो मैं कौन था जो
परमेश्वर को रोक सकता? १८ यह
सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की
बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर
ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये
मन फिराव का दान दिया है॥

१९ सो जो लोग उस क्लेश के मारे
जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तित्तर
बित्तर हो गए थे, वे फिरते फिरते फीनीके
और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे,
परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को
वचन न सुनाते थे। २० परन्तु उन में से
कितने कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो अन्ता-
किया में आकर यूनानियों को भी प्रभु
यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे।
२१ और प्रभु का हाथ उन पर था,
और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की
ओर फिरे। २२ तब उन की चर्चा
यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में
आई, और उन्हों ने बरनबास को अन्ता-
किया भेजा। २३ वह वहां पहुंचकर, और
परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित
हुआ, और सब को उपदेश दिया कि
तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो।
२४ क्योंकि वह एक भला मनुष्य था,
और पवित्र आत्मा और विश्वास से
परिपूर्ण था और और बहुत से लोग
प्रभु में आ मिले। २५ तब वह शाऊल को
ढूंढने के लिये तरसुस को चला गया।
२६ और जब उस से मिला तो उसे
अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि
वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते
और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे,
और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में
मसीही कहलाए॥

२७ उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता
यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। २८ उन
में से अगबुस नाम एक ने खड़े होकर
आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि
सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और
वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा।
२९ तब चेलों ने ठहराया, कि हर एक
अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में
रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ
भेजे। ३० और उन्हों ने ऐसा ही किया,
और बरनबास और शाऊल के हाथ
प्राचीनों * के पास कुछ भेज दिया॥

१२ उस समय हेरोदेस राजा ने
कलीसिया के कई एक व्यक्तियों
को दुख देने के लिये उन पर हाथ डाले।
२ उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को

* या प्रिसबुतिरों।

तलवार से मरवा डाला। ३ और जब
उस ने देखा, कि यहूदी लोग इस से
आनन्दित होते है, तो उस ने पतरस को
भी पकड लिया वे दिन अखमीरी रोटी
के दिन थे। ४ और उस ने उसे पकड
के बन्दीगृह मे डाला, और रखवाली के
लिये, चार चार सिपाहियो के चार
पहरो मे रखा इस मनसा से कि फसह
के बाद उसे लोगो के साम्हने लाए।
५ सो बन्दीगृह मे पतरस की रखवाली
हो रही थी, परन्तु कलीसिया उसके
लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना
कर रही थी। ६ और जब हेरोदेस उसे
उन के साम्हने लाने को था, तो उसी
रात पतरस दो जंजीरो से बन्धा हुआ,
दो सिपाहियो के बीच मे सो रहा था
और पहरुए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली
कर रहे थे। ७ तो देखो, प्रभु का
एक स्वर्गदूत आ खडा हुआ और उस
कोठरी मे ज्योति चमकी और उस ने
पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे
जगाया, और कहा, उठ, फुरती कर,
और उसके हाथो से जंजीरे खुलकर गिर
पडी। ८ तब स्वर्गदूत ने उस से कहा,
कमर बान्ध, और अपने जूते पहिन ले
उस ने वैसा ही किया, फिर उस ने उस से
कहा, अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे
हो ले। ९ वह निकलकर उसके पीछे
हो लिया, परन्तु यह न जानता था,
कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह
सचमुच है, बरन यह समझा, कि मैं
दर्शन देख रहा हू। १० तब वे पहिले
और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे
के फाटक पर पहुचे, जो नगर की ओर
है, वह उन के लिये आप से आप खुल
गया और वे निकलकर एक ही गली
होकर गए, इतने मे स्वर्गदूत उसे छोड-
कर चला गया। ११ तब पतरस ने
सचेत होकर कहा, अब मैं ने सच जान
लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर
मुझे हेरोदेस के हाथ से छुडा लिया,
और यहूदियो की सारी आशा तोड दी।
१२ और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना
की माता मरियम के घर आया, जो
मरकुस कहलाता है, वहा बहुत लोग
इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे। १३ जब
उस ने फाटक की खिडकी खटखटाई,
तो रुदे नाम एक दासी सुनने को आई।
१४ और पतरस का शब्द पहचानकर,
उस ने आनन्द के मारे फाटक न खोला,
परन्तु दौडकर भीतर गई, और बताया,
कि पतरस द्वार पर खडा है। १५ उन्हो ने
उस से कहा, तू पागल है, परन्तु वह
दृढता से बोली, कि ऐसा ही है तब
उन्हो ने कहा, उसका स्वर्गदूत होगा।
१६ परन्तु पतरस खटखटाता ही रहा
सो उन्हो ने खिडकी खोली, और उसे
देखकर चकित हो गए। १७ तब उस ने
उन्हे हाथ से सैन किया, कि चुप रहे,
और उन को बताया, कि प्रभु किस रीति से
मुझे बन्दीगृह से निकाल लाया है फिर
कहा, कि याकूब और भाइयो को यह
बात कह देना, तब निकलकर दूसरी
जगह चला गया। १८ भोर को सिपाहियो
मे बडी हलचल होने लगी, कि पतरस
क्या हुआ। १९ जब हेरोदेस ने उस की
खोज की, और न पाया, तो पहरुओ की
जाच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले
जाए और वह यहूदिया को छोडकर
कैसरिया मे जा रहा॥

२० और वह सूर और सैदा के लोगो से
बहुत अप्रसन्न था, सो वे एक चित्त

होकर उसके पास आए और बलास्तुस
को, जो राजा का एक कर्मचारी * था,
मनाकर मेल करना चाहा, क्योंकि राजा
के देश से उन के देश का पालन पोषण
होता था। २१ और ठहराए हुए दिन
हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर
बैठा, और उन को व्याख्यान देने लगा।
२२ और लोग पुकार उठे, कि यह तो
मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है।
२३ उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने
तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उस ने परमेश्वर
की महिमा न की और वह कीड़े पड़के
मर गया॥

२४ परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता
और फैलता गया॥

२५ जब बरनबास और शाऊल अपनी
सेवा पूरी कर चुके, तो यूहन्ना को जो
मरकुस कहलाता है साथ लेकर यरूशलेम से
लौटे॥

१३ अन्ताकिया की कलीसिया में
कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक
थे, अर्थात् बरनबास और शमौन जो
नीगर कहलाता है, और लूकियुस कुरेनी,
और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का
दूधभाई मनाहेम और शाऊल। २ जब
वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर
रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, मेरे
निमित्त बरनबास और शाऊल को उस
काम के लिये अलग करो जिस के लिये
मैं ने उन्हें बुलाया है। ३ तब उन्हों ने
उपवास और प्रार्थना करके और उन पर
हाथ रखकर उन्हें विदा किया॥

४ सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए
सिलूकिया को गए, और वहां से जहाज
पर चढ़कर कुप्रुस को चले। ५ और
सलमीस में पहुंचकर, परमेश्वर का वचन
यहूदियों की आराधनालयों में सुनाया,
और यूहन्ना उन का सेवक था। ६ और
उस सारे टापू में होते हुए, पाफुस तक
पहुंचे वहां उन्हें बार-यीशु नाम एक
यहूदी टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता
मिला। ७ वह सिरगियुस पौलुस सूबे *
के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था
उस ने बरनबास और शाऊल को अपने
पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना
चाहा। ८ परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि
यही उसके नाम का अर्थ है उन का
साम्हना करके, सूबे को विश्वास करने से
रोकना चाहा। ९ तब शाऊल ने जिस का
नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण हो उस की ओर टकटकी लगाकर
कहा। १० हे सारे कपट और सब
चतुराई से भरे हुए शैतान † की सन्तान,
सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे
मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?
११ अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर
लगा है, और तू कुछ समय तक अन्धा
रहेगा और सूर्य को न देखेगा तब
तुरन्त धुन्धलाई और अन्धेरा उस पर
छा गया, और वह इधर उधर टटोलने
लगा, ताकि कोई उसका हाथ पकड़के
ले चले। १२ तब सूबे ने जो हुआ था,
देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित
होकर विश्वास किया॥

१३ पौलुस और उसके साथी पाफुस से
जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में
आए और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम
को लौट गया। १४ और पिरगा से

* या कंचुकी।

* यू० प्रतिनिधि। † यू० इब्लीस।

दिए। ३ और वे बहुत दिन तक वहा
रहे, और प्रभु के भरोसे पर हियाव से
बाते करते थे और वह उन के हाथो से
चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर अपने
अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।
४ परन्तु नगर के लोगो मे फूट पड गई
थी, इस से कितने तो यहूदियो की ओर,
और कितने प्रेरितो की ओर हो गए।
५ परन्तु जब अन्यजाति और यहूदी
उन का अपमान और उन्हें पत्थरवाह करने
के लिये अपने सरदारो समेत उन पर
दौडे। ६ तो वे इस बात को जान गए,
और लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे
नगरो मे, और आसपास के देश में भाग
गए। ७ और वहा सुसमाचार सुनाने
लगे॥

८ लुस्त्रा मे एक मनुष्य बैठा था, जो
पावो का निर्बल था वह जन्म ही से
लगडा था, और कभी न चला था।
९ वह पौलुस को बाते करते सुन रहा
था और इस ने उस की ओर टकटकी
लगाकर देखा कि इस को चगा हो जाने
का विश्वास है। १० और ऊचे शब्द से
कहा, अपने पांवो के बल सीधा खडा हो
तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।
११ लोगो ने पौलुस का यह काम देखकर
लुकाउनिया की भाषा मे ऊचे शब्द से
कहा, देवता मनुष्यो के रूप मे होकर
हमारे पास उतर आए है। १२ और
उन्हो ने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस
को हिरमेस कहा, क्योकि यह बाते करने मे
मुख्य था। १३ और ज्यूस के उस मन्दिर
का पुजारी जो उन के नगर के साम्हने
था, बैल और फूलो के हार फाटको पर
लाकर लोगो के साथ बलिदान करना
चाहता था। १४ परन्तु बरनबास और
पौलुस प्रेरितो ने जब सुना, तो अपने
कपडे फाडे, और भीड मे लपक गए,
और पुकारकर कहने लगे; हे लोगो तुम
क्या करते हो? १५ हम भी तो तुम्हारे
समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य है, और
तुम्हे सुसमाचार सुनाते है, कि तुम इन
व्यर्थ वस्तुओ से अलग होकर जीवते
परमेश्वर की ओर फिरो, जिस ने स्वर्ग
और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ
उन मे है बनाया। १६ उस ने बीते
समयो मे सब जातियो को अपने अपने
मार्गों मे चलने दिया। १७ तौभी उस ने
अपने आप को बे-गवाह न छोडा, किन्तु
वह भलाई करता रहा, और आकाश से
वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे
मन को भोजन और आनन्द से भरता
रहा। १८ यह कहकर भी उन्हो ने
लोगो को कठिनता से रोका कि उन के
लिये बलिदान न करे॥

१९ परन्तु कितने यहूदियो ने अन्ताकिया
और इकुनियुम से आकर लोगो को
अपनी ओर कर लिया, और पौलुस को
पत्थरवाह किया, और मरा समझकर
उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।
२० पर जब चेले उस की चारो ओर
आ खडे हुए, तो वह उठकर नगर मे
गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ
दिरबे को चला गया। २१ और वे उस
नगर के लोगो को सुसमाचार सुनाकर,
और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और
इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए।
२२ और चेलो के मन को स्थिर करते
रहे और यह उपदेश देते थे, कि विश्वास मे
बने रहो, और यह कहते थे, कि हमें
बडे क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य मे
प्रवेश करना होगा। २३ और उन्हो ने

हर एक कलीसिया में उन के लिये प्राचीन *
ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना
करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर
उन्हो ने विश्वास किया था। २४ और
पिसिदिया से होते हुए वे पफूलिया में
पहुचे, २५ और पिरगा में वचन सुनाकर
अत्तलिया में आए। २६ और वहा से
जहाज पर अन्ताकिया में आए, जहा से
वे उस काम के लिये जो उन्हो ने पूरा
किया था परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपे
गए थे। २७ वहा पहुचकर, उन्हो ने
कलीसिया इकट्ठी की और बताया, कि
परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बडे
बडे काम किए! और अन्यजातियो के
लिये विश्वास का द्वार खोल दिया।
२८ और वे चेलो के साथ बहुत दिन
तक रहे॥

१५ फिर कितने लोग यहूदिया से
आकर, भाइयो को सिखाने लगे
कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा
खतना न हो तो तुम उद्धार नही पा
सकते। २ जब पौलुस और बरनबास का
उन से बहुत झगडा और वाद-विवाद
हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलुस
और बरनबास, और हम में से कितने
और व्यक्ति इस बात के विषय में यरू-
शलेम को प्रेरितो और प्राचीनो † के
पास जाए। ३ सो मण्डली ने उन्हें
कुछ दूर तक पहुचाया, और वे फीनीके
और सामरिया से होते हुए अन्यजातियो
के मन फेरने ‡ का समाचार सुनाते गए,
और सब भाइयो को बहुत आनन्दित
किया। ४ जब यरूशलेम में पहुचे, तो

* या प्रिसबुतिर। † या प्रिसबुतिरों।
‡ अथात् दीक्षित होने।

कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उन से
आनन्द के साथ मिले, और उन्हो ने बताया,
कि परमेश्वर ने उन के साथ होकर कैसे
कैसे काम किए थे। ५ परन्तु फरीसियो
के पथ में से जिन्हो ने विश्वास किया था,
उन में से कितनो ने उठकर कहा, कि उन्हें
खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को
मानने की आज्ञा देना चाहिए॥

६ तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के
विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए।
७ तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद के बाद
खडे होकर उन से कहा॥

हे भाइयो, तुम जानते हो, कि बहुत
दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे
चुन लिया, कि मेरे मुह से अन्यजाति
सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास
करें। ८ और मन के जाचनेवाले परमेश्वर
ने उन को भी हमारी नाईं पवित्र आत्मा
देकर उन की गवाही दी। ९ और विश्वास
के द्वारा उन के मन शुद्ध करके हम में
और उन में कुछ भेद न रखा। १० तो
अब तुम क्यो परमेश्वर की परीक्षा करते
हो? कि चेलो की गरदन पर ऐसा
जूआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा
सके थे और न हम उठा सकते। ११ हा,
हमारा यह तो निश्चय है, कि जिस रीति से
वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएगे,
उसी रीति से हम भी पाएगे॥

१२ तब सारी सभा चुपचाप होकर
बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, कि
परमेश्वर ने उन के द्वारा अन्यजातियो में
कैसे कैसे बडे चिन्ह, और अद्भुत काम
दिखाए। १३ जब वे चुप हुए, तो याकूब
कहने लगा, कि॥

१४ हे भाइयो, मेरी सुनो शमौन ने
बताया, कि परमेश्वर ने पहिले पहिल

आगे बढकर वे पिसिदिया के अन्ताकिया मे
पहुचे, और सब्त के दिन आराधनालय मे
जाकर बैठ गए। १५ और व्यवस्था और
भविष्यद्वक्ताओ की पुस्तक से पढने के
बाद सभा के सरदारो ने उन के पास
कहला भेजा, कि हे भाइयो, यदि लोगो
के उपदेश के लिये तुम्हारे मन मे कोई
बात हो तो कहो। १६ तब पौलुस ने
खडे होकर और हाथ से सैन करके कहा,
हे इस्राएलियो, और परमेश्वर से
डरनेवालो, सुनो। १७ इन इस्राएली लोगो
के परमेश्वर ने हमारे बापदादो को
चुन लिया, और जब ये लोग मिसर
देश मे परदेशी होकर रहते थे, तो उन की
उन्नति की, और बलवन्त भुजा से निकाल
लाया। १८ और वह कोई चालीस वर्ष
तक जगल मे उन की सहता रहा।
१९ और कनान देश मे सात जातियो का
नाश करके उन का देश कोई साढे चार सौ
वर्ष मे इन की मीरास मे कर दिया।
२० इस के बाद उस ने सामुएल भविष्यद्-
वक्ता तक उन मे न्यायी ठहराए।
२१ उसके बाद उन्हो ने एक राजा मागा
तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये
बिनयामीन के गोत्र मे से एक मनुष्य,
अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर
राजा ठहराया। २२ फिर उसे अलग
करके दाऊद को उन का राजा बनाया,
जिस के विषय मे उस ने गवाही दी, कि
मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद,
मेरे मन के अनुसार मिल गया है,
वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।
२३ इसी के वश में से परमेश्वर ने अपनी
प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के पास एक
उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा।
२४ जिस के आने से पहिले यूहन्ना ने
सब इस्राएलियो को मन फिराव के
बपतिस्मा का प्रचार किया। २५ और
जब यूहन्ना अपना दौर पूरा करने पर था,
तो उस ने कहा, तुम मुझे क्या समझते
हो? मै वह नही। बरन देखो, मेरे
बाद एक आनेवाला है, जिस के पावो
की जूती मै खोलने के योग्य नही।
२६ हे भाइयो, तुम जो इब्राहीम की
सन्तान हो, और तुम जो परमेश्वर से
डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का
वचन भेजा गया है। २७ क्योकि यरूशलेम
के रहनेवालो और उन के सरदारो ने,
न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वक्ताओ
की बाते समझी, जो हर सब्त के दिन
पढी जाती है, इसलिये उसे दोषी ठहराकर
उन को पूरा किया। २८ उन्हो ने मार
डालने के योग्य कोई दोष उस मे न
पाया, तौभी पीलातुस से बिनती की, कि
वह मार डाला जाए। २९ और जब
उन्हो ने उसके विषय मे लिखी हुई सब
बाते पूरी की, तो उसे क्रूस पर से उतार-
कर कब्र मे रखा। ३० परन्तु परमेश्वर
ने उसे मरे हुओ मे से जिलाया। ३१ और
वह उन्हे जो उसके साथ गलील से यरूशलेम
आए थे, बहुत दिनो तक दिखाई देता
रहा, लोगो के साम्हने अब वे ही उसके
गवाह है। ३२ और हम तुम्हे उस
प्रतिज्ञा के विषय मे, जो बापदादो से
की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते है।
३३ कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर,
वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये
पूरी की, जैसा दूसरे भजन मे भी लिखा
है, कि तू मेरा पुत्र है, आज मै ही ने
तुझे जन्माया है। ३४ और उसके इस
रीति से मरे हुओ मे से जिलाने के विषय मे
भी, कि वह कभी न सडे, उस ने यों

कहा है, कि मैं दाऊद पर की पवित्र
और अचल कृपा तुम पर करूंगा।
३५ इसलिये, उस ने एक और भजन में
भी कहा है, कि तू अपने पवित्र जन को
सड़ने न देगा। ३६ क्योंकि दाऊद तो
परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने
समय में सेवा करके सो गया, और अपने
बापदादों में जा मिला, और सड़ भी
गया। ३७ परन्तु जिस को परमेश्वर ने
जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया। ३८ इस-
लिये, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी
के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें
दिया जाता है। ३९ और जिन बातों से
तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष
नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब में हर एक
विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष
ठहरता है। ४० इसलिये चौकस रहो,
ऐसा न हो, कि जो भविष्यद्वक्ताओं की
पुस्तक में आया है, ४१ तुम पर भी
आ पड़े कि हे निन्दा करनेवालो, देखो
और चकित हो, और मिट जाओ,
क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम
करता हूं, ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से
उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी प्रतीति
न करोगे॥

४२ उन के बाहर निकलते समय लोग
उन से बिनती करने लगे, कि अगले सब्त
के दिन हम ये बातें फिर सुनाई जाएं।
४३ और जब सभा उठ गई तो यहूदियों
और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से
बहुतेरे पौलुस और बरनबास के पीछे
हो लिए, और उन्हों ने उन से बातें
करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में
बने रहो॥

४४ अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः
सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को
इकट्ठे हो गए। ४५ परन्तु यहूदी भीड़ को
देखकर डाह से भर गए, और निन्दा
करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में
बोलने लगे। ४६ तब पौलुस और बरन-
बास ने निडर होकर कहा, अवश्य था,
कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें
सुनाया जाता परन्तु जब कि तुम उसे
दूर करते हो, और अपने को अनन्त
जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो,
हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं।
४७ क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है,
कि मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिये
ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की
छोर तक उद्धार का द्वार हो। ४८ यह
सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और
परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे
और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए
गए थे, उन्हों ने विश्वास किया। ४९ तब
प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने
लगा। ५० परन्तु यहूदियों ने भक्त और
कुलीन स्त्रियों को और नगर के बड़े
लोगों को उसकाया, और पौलुस और
बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें
अपने सिवानों से निकाल दिया। ५१ तब
वे उन के साम्हने अपने पांवों की धूल
झाड़कर इकुनियुम को गए। ५२ और
चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण होते रहे॥

१४ इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे
यहूदियों की आराधनालय में साथ
साथ गए, और ऐसी बातें कीं, कि यहूदियों
और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने
विश्वास किया। २ परन्तु न माननेवाले
यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों
के विरोध में उसकाए और बिगाड़ कर

अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि
उन में से अपने नाम के लिये एक लोग
बना ले। १५ और इस से भविष्यद्वक्ताओं
की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है, कि।
१६ इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का
गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, और उसके
खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे
खड़ा करूंगा। १७ इसलिये कि शेष मनुष्य,
अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के
कहलाते हैं, प्रभु को ढूंढें। १८ यह वही
प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से
इन बातों का समाचार देता आया है।
१९ इसलिये मेरा विचार यह है, कि
अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की
ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें।
२० परन्तु उन्हें लिख भेजें, कि वे मूरतों
की अशुद्धताओं और व्यभिचार और
गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से
परे रहें। २१ क्योंकि पुराने समय से
नगर नगर मूसा की व्यवस्था के प्रचार
करनेवाले होते चले आए हैं, और वह हर
सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी
जाती है॥

२२ तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितों
और प्राचीनों * को अच्छा लगा, कि
अपने में से कई मनुष्यों को चुनें, अर्थात्
यहूदा, जो बरसब्बा कहलाता है, और
सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे,
और उन्हें पौलुस और बरनबास के साथ
अन्ताकिया को भेजें। २३ और उन के
हाथ यह लिख भेजा, कि अन्ताकिया
और सूरिया और किलिकिया के रहनेवाले
भाइयों को जो अन्यजातियों में से हैं,
प्रेरितों और प्राचीन † भाइयों का
नमस्कार। २४ हम ने सुना है, कि
हम में से कितनों ने वहां जाकर, तुम्हें
अपनी बातों से घबरा दिया, और तुम्हारे
मन उलट दिए हैं परन्तु हम ने उन को
आज्ञा नहीं दी थी। २५ इसलिये हम ने
एक चित्त होकर ठीक समझा, कि चुने हुए
मनुष्यों को अपने प्यारे बरनबास और
पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें। २६ ये
तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन्हों ने अपने प्राण
हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये
जोखिम में डाले हैं। २७ और हम ने
यहूदा और सीलास को भेजा है, जो
अपने मुंह से भी ये बातें कह देंगे।
२८ पवित्र आत्मा को, और हम को
ठीक जान पड़ा, कि इन आवश्यक बातों
को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें,
२९ कि तुम मूरतों के बलि किए हुओं से,
और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के
मांस से, और व्यभिचार से, परे रहो।
इन से परे रहो, तो तुम्हारा भला होगा।
आगे शुभ॥

३० फिर वे विदा होकर अन्ताकिया में
पहुंचे, और सभा को इकट्ठी करके वह
उन्हें पत्री दे दी। ३१ और वे पढ़कर
उस उपदेश की बात से अति आनन्दित
हुए। ३२ और यहूदा और सीलास ने
जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत
बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर
किया। ३३ वे कुछ दिन रहकर भाइयों से
शान्ति के साथ विदा हुए, कि अपने
भेजनेवालों के पास जाएं। ३४ (परन्तु
सीलास को वहां रहना अच्छा लगा।)
३५ और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया
में रह गए और बहुत और लोगों के
साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और
सुसमाचार सुनाते रहे॥

* या प्रिसबुतिरों। † या प्रिसबुतिर।

३६ कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से
कहा, कि जिन जिन नगरों में हम ने
प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर
उन में चलकर अपने भाइयों को देखें,
कि कैसे हैं। ३७ तब बरनबास ने यूहन्ना
को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का
विचार किया। ३८ परन्तु पौलुस ने उस
जो पफूलिया में उन से अलग हो गया
था, और काम पर उन के साथ न गया,
साथ ले जाना अच्छा न समझा। ३९ सो
ऐसा टंटा हुआ, कि वे एक दूसरे से
अलग हो गए और बरनबास, मरकुस को
लेकर जहाज पर कुप्रुस को चला गया।
४० परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन
लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह
पर सौंपा जाकर वहां से चला गया।
४१ और कलीसियाओं को स्थिर करता
हुआ, सूरिया और किलिकिया से होते
हुए निकला॥

१६ फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में
भी गया, और देखो, वहां तीमु-
थियुस नाम एक चेला था, जो किसी
विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु
उसका पिता यूनानी था। २ वह लुस्त्रा
और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था।
३ पौलुस ने चाहा, कि यह मेरे साथ
चले, और जो यहूदी लोग उन जगहों में
थे उन के कारण उसे लेकर उसका
खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे,
कि उसका पिता यूनानी था। ४ और
नगर नगर जाते हुए वे उन विधियों को
जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने *
ठहराई थीं, मानने के लिये उन्हें पहुंचाते
जाते थे। ५ इस प्रकार कलीसिया विश्वास
में स्थिर होती गईं और गिनती में प्रति
दिन बढ़ती गईं॥

६ और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों
में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने
उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना
किया। ७ और उन्हों ने मूसिया के
निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना
चाहा, परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें
जाने न दिया। ८ सो मूसिया से होकर
वे त्रोआस में आए। ९ और पौलुस ने
रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी
पुरुष खड़ा हुआ, उस से बिनती करके
कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में
आ, और हमारी सहायता कर। १० उसके
यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया
जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर
ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये
बुलाया है॥

११ सो त्रोआस से जहाज खोलकर
हम सीधे सुमात्राके और दूसरे दिन
नियापुलिस में आए। १२ वहां से हम
फिलिप्पी में पहुंचे, जो मकिदुनिया प्रान्त
का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ती
है, और हम उस नगर में कुछ दिन
तक रहे। १३ सब्त के दिन हम नगर के
फाटक के बाहर नदी के किनारे यह
समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का
स्थान होगा, और बैठकर उन स्त्रियों से
जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे।
१४ और लुदिया नाम थुआथीरा नगर की
बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री
सुनती थी, और प्रभु ने उसका मन खोला,
ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।
१५ और जब उस ने अपने घराने समेत
बपतिस्मा लिया, तो उस ने बिनती की,
कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी

* या प्रिसबुतिरों।

समझते हो, तो चलकर मेरे घर मे रहो,
और वह हमे मनाकर ले गई ॥
१६ जब हम प्रार्थना करने की जगह
जा रहे थे, तो हमे एक दासी मिली
जिस में भावी कहनेवाली आत्मा थी,
और भावी कहने से अपने स्वामियो के
लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। १७ वह
पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने
लगी कि ये मनुष्य परम प्रधान परमेश्वर
के दास है, जो हमें उद्धार के मार्ग की
कथा सुनाते है। १८ वह बहुत दिन तक
ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दु खित
हुआ, और मुह फेरकर उस आत्मा से
कहा, मै तुझे यीशु मसीह के नाम से
आज्ञा देता हू, कि उस मे से निकल जा
और वह उसी घडी निकल गई ॥
१६ जब उसके स्वामियो ने देखा, कि
हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो
पौलुस और सीलास को पकड के चौक मे
प्रधानो के पास खीच ले गए। २० और
उन्हे फौजदारी के हाकिमो के पास ले
जाकर कहा, ये लोग जो यहूदी है,
हमारे नगर मे बडी हलचल मचा रहे है।
२१ और ऐसे व्यवहार बता रहे है, जिन्हे
ग्रहण करना या मानना हम रोमियो के
लिये ठीक नही। २२ तब भीड के लोग
उन के विरोध मे इकट्ठे होकर चढ आए,
और हाकिमो ने उन के कपडे फाडकर उतार
डाले, और उन्हे बेत मारने की आज्ञा दी।
२३ और बहुत बेत लगवाकर उन्हें बन्दी-
गृह में डाला, और दारोगा को आज्ञा दी,
कि उन्हें चौकसी से रखे। २४ उस ने
ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी
में रखा और उन के पाव काठ में ठोक दिए।
२५ आधी रात के लगभग पौलुस और
सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन
गा रहे थे, और बन्धुए उन की सुन रहे थे।
२६ कि इतने मे एकाएक बडा भुईंडोल
हुआ, यहा तक कि बन्दीगृह की नेव हिल
गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए, और
सब के बन्धन खुल पडे। २७ और दारोगा
जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देख-
कर समझा कि बन्धुए भाग गए, सो उस ने
तलवार खीचकर अपने आप को मार डालना
चाहा। २८ परन्तु पौलुस ने ऊचे शब्द मे
पुकारकर कहा, अपने आप को कुछ हानि
न पहुचा, क्योकि हम सब यहा है। २६ तब
वह दीया मगवाकर भीतर लपक गया,
और कापता हुआ पौलुस और सीलास के
आगे गिरा। ३० और उन्हे बाहर लाकर
कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मै
क्या करू? ३१ उन्हो ने कहा, प्रभु यीशु
मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा
घराना उद्धार पाएगा। ३२ और उन्हो ने
उस को, और उसके सारे घर के लोगो को
प्रभु का वचन सुनाया। ३३ और रात को
उसी घडी उस ने उन्हें ले जाकर उन के
घाव धोए, और उस ने अपने सब लोगो
समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया। ३४ और
उस ने उन्हे अपने घर मे ले जाकर, उन के
आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत
परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द
किया ॥
३५ जब दिन हुआ तब हाकिमो ने
प्यादो के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यो
को छोड दो। ३६ दारोगा ने ये बाते पौलुस
से कह सुनाईं, कि हाकिमो ने तुम्हारे छोड
देने की आज्ञा भेज दी है, सो अब निकलकर
कुशल से चले जाओ। ३७ परन्तु पौलुस ने
उन से कहा, उन्हो ने हमें जो रोमी मनुष्य
है, दोषी ठहराए बिना, लोगो के साम्हने
मारा, और बन्दीगृह में डाला, और अब

क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा
नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले
जाएं। ३८ प्यादों ने ये बातें हाकिमों से
कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं,
डर गए। ३९ और आकर उन्हें मनाया,
और बाहर ले जाकर बिनती की कि नगर
से चले जाएं। ४० वे बन्दीगृह से निकल-
कर लुदिया के यहां गए, और भाइयों से
भेंट करके उन्हें शान्ति दी,* और चले
गए॥

१७ फिर वे अम्फिपुलिस और
अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके
में आए, जहां यहूदियों का एक आराधनालय
था। २ और पौलुस अपनी रीति के
अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के
दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद
किया। ३ और उन का अर्थ खोल खोलकर
समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना,
और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था,
और यही यीशु जिस की मैं तुम्हें कथा सुनाता
हूं, मसीह है। ४ उन में से कितनों ने,
और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और
बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया,
और पौलुस और सीलास के साथ मिल
गए। ५ परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर
बाजारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को
अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर
नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के
घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के साम्हने
लाना चाहा। ६ और उन्हें न पाकर, वे
यह चिल्लाते हुए यासोन और कितने और
भाइयों को नगर के हाकिमों के साम्हने
खींच लाए, कि ये लोग जिन्हों ने जगत को
उलटा पुलटा कर दिया है, यहां भी आए

* या उपदेश किया।

हैं। ७ और यासोन ने उन्हें अपने यहां
उतारा है, और ये सब के सब यह कहते हैं
कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं
का विरोध करते हैं। ८ उन्हों ने लोगों को
और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा
दिया। ९ और उन्हों ने यासोन और बाकी
लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया॥

१० भाइयों ने तुरन्त रात ही रात
पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज
दिया और वे वहां पहुंचकर यहूदियों के
आराधनालय में गए। ११ ये लोग तो
थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और
उन्हों ने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया,
और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि
ये बातें योंही हैं, कि नहीं। १२ सो उन में
से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में
से, और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास
किया। १३ किन्तु जब थिस्सलुनीके के
यहूदी जान गए, कि पौलुस बिरीया में भी
परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहां भी
आकर लोगों को उसकाने और हलचल
मचाने लगे। १४ तब भाइयों ने तुरन्त
पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे
चला जाए, परन्तु सीलास और तीमुथियुस
वहीं रह गए। १५ पौलुस के पहुंचानेवाले
उसे अथेने तक ले गए, और सीलास और
तीमुथियुस के लिये यह आज्ञा लेकर विदा
हुए, कि मेरे पास बहुत शीघ्र आओ॥

१६ जब पौलुस अथेने में उन की बाट
जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा
हुआ देखकर उसका जी जल गया।
१७ सो वह आराधनालय में यहूदियों
और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते
थे, उन से हर दिन वाद-विवाद किया करता
था। १८ तब इपिकूरी और स्तोईकी
पण्डितों में से कितने उस से तर्क करने लगे,

और कितनो ने कहा, यह बकवादी क्या
कहना चाहता है? परन्तु औरो ने कहा,
वह अन्य देवताओ का प्रचारक मालूम
पडता है, क्योकि वह यीशु का, और
पुनरुत्थान* का सुसमाचार सुनाता था।
१९ तब वे उसे अपने साथ अरियुपगुस
पर ले गए और पूछा, क्या हम जान सकते
है, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या
है? २० क्योकि तू अनोखी बाते हमें
सुनाता है, इसलिये हम जानना चाहते हैं
कि इन का अर्थ क्या है? २१ (इसलिये
कि सब अथेनवी और परदेशी जो वहा रहते
थे नई नई बाते कहने और सुनने के सिवाय
और किसी काम में समय नही बिताते थे)।
२२ तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में
खडा होकर कहा,

हे अथेने के लोगो मैं देखता हू, कि तुम
हर बात मे देवताओ के बडे माननेवाले हो।
२३ क्योकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने
की वस्तुओ को देख रहा था, तो एक ऐसी
वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि
"अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम
विना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समा-
चार सुनाता हू। २४ जिस परमेश्वर ने
पृथ्वी और उस की सब वस्तुओ को बनाया,
वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ
के बनाए हुए मन्दिरो में नही रहता।
२५ न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर
मनुष्यो के हाथो की सेवा लेता है, क्योकि
वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास
और सब कुछ देता है। २६ उस ने एक
ही मूल से मनुष्यो की सब जातिया सारी
पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं, और
उन के ठहराए हुए समय, और निवास के
सिवानो को इसलिये बान्धा है। २७ कि वे
परमेश्वर को ढूढे, कदाचित उसे टटोलकर
पा जाए तौभी वह हम में से किसी से दूर
नही! २८ क्योकि हम उसी मे जीवित
रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते
है, जैसे तुम्हारे कितने कवियो ने भी कहा
है, कि हम तो उसी के वश भी हैं। २९ सो
परमेश्वर का वश होकर हमें यह समझना
उचित नही, कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या
पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी
और कल्पना से गढे गए हो। ३० इसलिये
परमेश्वर अज्ञानता के समयो से आनाकानी
करके, अब हर जगह सब मनुष्यो को मन
फिराने की आज्ञा देता है। ३१ क्योकि
उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह
उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय
करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे
मरे हुओ में से जिलाकर, यह बात सब पर
प्रमाणित कर दी है॥

३२ मरे हुओ के पुनरुत्थान की बात
सुनकर कितने तो ठट्ठा करने लगे, और
कितनो ने कहा, यह बात हम तुझ से फिर
कभी सुनेगे। ३३ इस पर पौलुस उन के
बीच में से निकल गया। ३४ परन्तु कई
एक मनुष्य उसके साथ मिल गए, और
विश्वास किया, जिन में दियुनुसियुस अरियु-
पगी था, और दमरिस नाम एक स्त्री थी,
और उन के साथ और भी कितने लोग
थे॥

१८ इस के बाद पौलुस अथेने को
छोडकर कुरिन्थुस में आया।
२ और वहा अक्विला नाम एक यहूदी
मिला, जिस का जन्म पुन्तुस का था, और
अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला समेत इतालिया
से नया आया था, क्योकि क्लौदियुस ने

* या मृतकोत्थान, अर्थात् जी उठने।

सब यहूदियो को रोम से निकल जाने की
आज्ञा दी थी, सो वह उन के यहा गया।
३ और उसका और उन का एक ही उद्यम
था, इसलिये वह उन के साथ रहा, और
वे काम करने लगे, और उन का उद्यम तम्बू
बनाने का था। ४ और वह हर एक सब्त
के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके
यहूदियो और यूनानियो को भी समझाता
था॥

५ जब सीलास और तीमुथियुस मकि-
दुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की
धुन में लगकर यहूदियो को गवाही देता
था कि यीशु ही मसीह है। ६ परन्तु जब
वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उस ने
अपने कपडे झाडकर उन से कहा, तुम्हारा
लोहू तुम्हारी ही गर्दन पर रहे मैं निर्दोष
हू अब से मैं अन्यजातियो के पास
जाऊगा। ७ और वहा से चलकर वह
तितुस युस्तुस नाम परमेश्वर के एक भक्त
के घर मे आया, जिस का घर आराधनालय
से लगा हुआ था। ८ तब आराधनालय के
सरदार क्रिस्पुस ने अपने सारे घराने समेत
प्रभु पर विश्वास किया, और बहुत से
कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और
बपतिस्मा लिया। ९ और प्रभु ने रात को
दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, वरन
कहे जा, और चुप मत रह। १० क्योकि
मैं तेरे साथ हू और कोई तुझ पर चढाई
करके तेरी हानि न करेगा, क्योकि इस
नगर में मेरे बहुत से लोग है। ११ सो वह
उन में परमेश्वर का वचन सिखाते हुए
डेढ वर्ष तक रहा॥

१२ जब गल्लियो अखाया देश का
हाकिम* था तो यहूदी लोग एका करके
पौलुस पर चढ आए, और उसे न्याय आसन
के साम्हने लाकर, कहने लगे। १३ कि
यह लोगो को समझाता है, कि परमेश्वर
की उपासना ऐसी रीति से करे, जो व्यवस्था
के विपरीत है। १४ जब पौलुस बोलने
पर था, तो गल्लियो ने यहूदियो से कहा,
हे यहूदियो, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता
की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी
सुनता। १५ परन्तु यदि यह वाद-विवाद
शब्दो, और नामो, और तुम्हारे यहा की
व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो,
क्योकि मैं इन बातो का न्यायी बनना नही
चाहता। १६ और उस ने उन्हें न्याय
आसन के साम्हने से निकलवा दिया।
१७ तब सब लोगो ने आराधनालय के
सरदार सोस्थिनेस को पकड के न्याय आसन
के साम्हने मारा परन्तु गल्लियो ने इन
बातो की कुछ भी चिन्ता न की॥

१८ सो पौलुस बहुत दिन तक वहा रहा,
फिर भाइयो से विदा होकर किंख्रिया मे
इसलिये सिर मुण्डाया क्योकि उस ने मन्नत
मानी थी और जहाज पर सूरिया को चल
दिया और उसके साथ प्रिस्किल्ला और
अक्विला थे। १९ और उस ने इफिसुस
में पहुचकर उन को वहा छोडा, और आप
ही आराधनालय में जाकर यहूदियो से
विवाद करने लगा। २० जब उन्हो ने
उस से विनती की, कि हमारे साथ और
कुछ दिन रह, तो उस ने स्वीकार न किया।
२१ परन्तु यह कहकर उन से विदा हुआ,
कि यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास
फिर आऊगा। २२ तब इफिसुस से जहाज
खोलकर चल दिया, और कैसरिया मे उतर-
कर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया
को नमस्कार करके अन्ताकिया मे आया।
२३ फिर कुछ दिन रहकर वहा से चला

* या प्रतिनिधि।

गया, और एक ओर से गलतिया और
फ्रूगिया मे सब चेलो को स्थिर करता
फिरा॥

२४ अपुल्लोस नाम एक यहूदी जिस का
जन्म सिकन्दरिया मे हुआ था, जो विद्वान
पुरुष था और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह
से जानता था इफिसुस मे आया। २५ उस
ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और
मन लगाकर यीशु के विषय मे ठीक ठीक
सुनाता, और सिखाता था, परन्तु वह केवल
यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था।
२६ वह आराधनालय मे निडर होकर
बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला
उस की बाते सुनकर, उसे अपने यहा ले
गए, और परमेश्वर का मार्ग उस को और
भी ठीक ठीक बताया। २७ और जब
उस ने निश्चय किया कि पार उतरकर
अखाया को जाए तो भाइयो ने उसे ढाढस
देकर चेलो को लिखा कि वे उस से अच्छी
तरह मिले और उस ने पहुचकर वहा उन
लोगो की बडी सहायता की जिन्हो ने अनुग्रह
के कारण विश्वास किया था। २८ क्योकि
वह पवित्र शास्त्र से प्रमाण दे देकर, कि
यीशु ही मसीह है, बडी प्रबलता से यहूदियो
को सब के साम्हने निरुत्तर करता रहा॥

१९ और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस
मे था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश
से होकर इफिसुस मे आया, और कई चेलो
को देखकर। २ उन से कहा, क्या तुम ने
विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?
उन्हो ने उस से कहा, हम ने तो पवित्र आत्मा
की चर्चा भी नही सुनी। ३ उस ने उन से
कहा, तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा
लिया? उन्हो ने कहा, यूहन्ना का बप-
तिस्मा। ४ पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने यह
कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया,
कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर
अर्थात् यीशु पर विश्वास करना। ५ यह
सुनकर उन्हो ने प्रभु यीशु के नाम का
बपतिस्मा लिया। ६ और जब पौलुस ने
उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा
उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने
और भविष्यद्वाणी करने लगे। ७ ये सब
लगभग बारह पुरुष थे॥

८ और वह आराधनालय मे जाकर
तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा,
और परमेश्वर के राज्य के विषय मे विवाद
करता और समझाता रहा। ९ परन्तु जब
कितनो ने कठोर होकर उस की नही मानी
बरन लोगो के साम्हने इस मार्ग को बुरा
कहने लगे, तो उस ने उन को छोडकर चेलो
को अलग कर लिया, और प्रति दिन तुरन्नुस
की पाठशाला मे विवाद किया करता था।
१० दो वर्ष तक यही होता रहा, यहा तक
कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी, क्या
यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।
११ और परमेश्वर पौलुस के हाथो से
सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था।
१२ यहा तक कि रूमाल और अगोछे
उस की देह से छुलवाकर बीमारो पर
डालते थे, और उन की बीमारिया जाती
रहती थी, और दुष्टात्माए उन मे से निकल
जाया करती थी। १३ परन्तु कितने यहूदी
जो झाडा फूकी करते फिरते थे, यह करने
लगे, कि जिन मे दुष्टात्मा हो उन पर प्रभु
यीशु का नाम यह कहकर फूके कि जिस
यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मै तुम्हे
उसी की शपथ देता हू। १४ और स्क्किवा
नाम के एक यहूदी महायाजक के सात पुत्र
थे जो ऐसा ही करते थे। १५ पर दुष्टात्मा
ने उत्तर दिया, कि यीशु को मै जानती हू,

और पौलुस को भी पहचानती हूं, परन्तु
तुम कौन हो? १६ और उस मनुष्य ने
जिस में दुष्ट आत्मा थी, उन पर लपक-
कर, और उन्हें वश में लाकर, उन पर ऐसा
उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर
उस घर से निकल भागे। १७ और यह
बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और
यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर
भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम की
बड़ाई हुई। १८ और जिन्हों ने विश्वास
किया था, उन में से बहुतेरों ने आकर अपने
अपने कामों को मान लिया और प्रगट
किया। १९ और जादू करनेवालों में से
बहुतों ने अपनी अपनी पोथियां इकट्ठी करके
सब के साम्हने जला दीं, और जब उन का
दाम जोड़ा गया, तो पचास हजार रुपये की
निकलीं। २० यों प्रभु का वचन बल पूर्वक
फैलता गया और प्रबल होता गया॥

२१ जब ये बातें हो चुकीं, तो पौलुस ने
आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया
से होकर यरूशलेम को जाऊं, और कहा,
कि वहां जाने के बाद मुझे रोमा को भी
देखना अवश्य है। २२ सो अपनी सेवा
करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस
को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन
आसिया में रह गया॥

२३ उस समय उस पन्थ के विषय में
बड़ा हुल्लड़ हुआ। २४ क्योंकि देमेत्रियुस
नाम का एक सुनार अरतिमिस के चान्दी के
मन्दिर बनवाकर कारीगरों को बहुत काम
दिलाया करता था। २५ उस ने उन को,
और, और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को
इकट्ठे करके कहा, हे मनुष्यो, तुम जानते
हो, कि इस काम से हमें कितना धन मिलता
है। २६ और तुम देखते और सुनते हो,
कि केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन प्राय
सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस
ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया
भी है, कि जो हाथ की कारीगरी हैं, वे ईश्वर
नहीं। २७ और अब केवल इसी एक बात
का ही डर नहीं, कि हमारे इस धन्धे की
प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन यह कि महान
देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा
जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत
पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा।
२८ वे यह सुनकर क्रोध से भर गए, और
चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, "इफिसियों
की अरतिमिस महान है!" २९ और
सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया और
लोगों ने गयुस और अरिस्तरखुस मकि-
दुनिया को जो पौलुस के संगी यात्री थे,
पकड़ लिया, और एकचित्त होकर रंगशाला
में दौड़ गए। ३० जब पौलुस ने लोगों के
पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे
जाने न दिया। ३१ आसिया के हाकिमों
में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास
कहला भेजा, और बिनती की, कि रंगशाला
में जाकर जोखिम न उठाना। ३२ सो
कोई कुछ चिल्लाया, और कोई कुछ,
क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी,
और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं
थे कि हम किस लिये इकट्ठे हुए हैं। ३३ तब
उन्हों ने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा
किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया, और
सिकन्दर हाथ से सैन करके लोगों के साम्हने
उत्तर दिया चाहता था। ३४ परन्तु जब
उन्हों ने जान लिया कि वह यहूदी है, तो
सब के सब एक शब्द से कोई दो घंटे तक
चिल्लाते रहे, कि इफिसियों की अरतिमिस
महान है। ३५ तब नगर के मन्त्री ने
लोगों को शान्त करके कहा, हे इफिसियो,
कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का नगर

बड़ी देवी अरतिमिस के मन्दिर, और ज्यूस
की ओर से गिरी हुई मूरत का टहलुआ है।
३६ सो जब कि इन बातों का खण्डन ही
नहीं हो सकता, तो उचित है, कि तुम चुपके
रहो, और बिना सोचे विचारे कुछ न करो।
३७ क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो,
जो न मन्दिर के लूटनेवाले हैं, और न हमारी
देवी के निन्दक हैं। ३८ यदि देमेत्रियुस
और उसके साथी कारीगरों को किसी से
विवाद हो तो कचहरी खुली है, और
हाकिम * भी हैं, वे एक दूसरे पर नालिश
करें। ३९ परन्तु यदि तुम किसी और
बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो
नियत सभा में फैसला किया जाएगा।
४० क्योंकि आज के बलवे के कारण हम
पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिये कि
इस का कोई कारण नहीं, सो हम इस भीड़
के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे।
४१ और यह कह के उस ने सभा को विदा
किया॥

२० जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस
ने चेलों को बुलवाकर समझाया,
और उन से विदा होकर मकिदुनिया की
ओर चल दिया। २ और उस सारे देश में
से होकर और उन्हें बहुत समझाकर, वह
यूनान में आया। ३ जब तीन महीने रह-
कर जहाज पर सूरिया की ओर जाने पर था,
तो यहूदी उस की घात में लगे, इसलिये
उस ने यह सलाह की कि मकिदुनिया होकर
लौट जाए। ४ बिरीया के पुर्रुस का पुत्र
सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से
अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का
गयुस, और तीमुथियुस और आसिया का
तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके
साथ हो लिए। ५ वे आगे जाकर त्रोआस
में हमारी बाट जोहते रहे। ६ और हम
अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी
से जहाज पर चढ़कर पांच दिन में त्रोआस
में उन के पास पहुंचे, और सात दिन तक
वहीं रहे॥

७ सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी
तोड़ने * के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने
जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से
बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता
रहा। ८ जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे,
उस में बहुत दीये जल रहे थे। ९ और
यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर
बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और
जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो
वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से
गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
१० परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट
गया, और गले लगाकर कहा, घबराओ
नहीं, क्योंकि उसका प्राण उसी में है।
११ और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और
खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता
रहा, कि पौ फट गई, फिर वह चला गया।
१२ और वे उस लड़के को जीवित ले आए,
और बहुत शान्ति पाई॥

१३ हम पहले से जहाज पर चढ़कर
अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि
वहां से हम पौलुस को चढ़ा लें क्योंकि उस ने
यह इसलिये ठहराया था, कि आप ही पैदल
जानेवाला था। १४ जब वह अस्सुस में
हमें मिला तो हम उसे चढ़ाकर मितुलेने में
आए। १५ और वहां से जहाज खोलकर
हम दूसरे दिन खियुस के साम्हने पहुंचे,
और अगले दिन सामुस में लगान किया,

* या प्रतिनिधि।

* देखो २ अध्याय ४२ पद।

फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए।
१६ क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के पास से
होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न
हो, कि उसे आसिया में देर लगे, क्योंकि
वह जल्दी करता था, कि यदि हो सके, तो
उसे पिन्तेकुस्त का दिन यरूशलेम में कटे॥
१७ और उस ने मीलेतुस से इफिसुस
में कहला भेजा और कलीसिया के
प्राचीनों * को बुलवाया। १८ जब वे उस
के पास आए, तो उन से कहा,
तुम जानते हो, कि पहिले ही दिन से
जब मैं आसिया में पहुंचा, मैं हर समय
तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा। १९ अर्थात्
बड़ी दीनता से और आंसू बहा बहाकर
और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के
षडयन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी, मैं
प्रभु की सेवा करता ही रहा। २० और
जो जो बात तुम्हारे लाभ की थीं, उन को
बताने और लोगों के साम्हने और घर घर
सिखाने से कभी न झिझका। २१ वरन
यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही
देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन
फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर
विश्वास करना चाहिए। २२ और अब
देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को
जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ
पर क्या क्या बीतेगा? २३ केवल यह
कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे
देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश
तेरे लिये तैयार हैं। २४ परन्तु मैं अपने
प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे
प्रिय जानूं, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को,
और उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैं ने
परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर
गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।
२५ और अब देखो, मैं जानता हूं, कि तुम
सब जिन में मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार
करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे।
२६ इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही
देकर कहता हूं, कि मैं सब के लोहू से निर्दोष
हूं। २७ क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी
मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न
झिझका। २८ इसलिये अपनी और पूरे
झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र
आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष * ठहराया है; कि
तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली
करो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया
है। २९ मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद
फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड
को न छोड़ेंगे। ३० तुम्हारे ही बीच में
से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को
अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें
कहेंगे। ३१ इसलिये जागते रहो, और
स्मरण करो, कि मैं ने तीन वर्ष तक रात
दिन आंसू बहा बहाकर हर एक को चितौनी
देना न छोड़ा। ३२ और अब मैं तुम्हें
परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन
को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर
सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके
मीरास दे सकता है। ३३ मैं ने किसी की
चान्दी सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।
३४ तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों
ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं
पूरी कीं। ३५ मैं ने तुम्हें सब कुछ करके
दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए
निर्बलों को सम्भालना, और प्रभु यीशु की
बातें स्मरण रखना अवश्य है, कि उस ने
आप ही कहा है; कि लेने से देना धन्य है॥

* या प्रिसबुतिरों।

* या बिशप।

३६ यह कहकर उस ने घुटने टेके और
उन सब के साथ प्रार्थना की। ३७ तब वे
सब बहुत रोए और पौलुस के गले में लिपट
कर उसे चूमने लगे। ३८ वे विशेष करके
इस बात का शोक करते थे, जो उस ने कही
थी, कि तुम मेरा मुह फिर न देखोगे, और
उन्हो ने उसे जहाज तक पहुचाया॥

२१ जब हम ने उन से अलग होकर
जहाज खोला, तो सीधे मार्ग से
कोस में आए, और दूसरे दिन रुदुस में, और
वहा से पतरा में। २ और एक जहाज
फीनीके को जाता हुआ मिला, और उस पर
चढ़कर, उसे खोल दिया। ३ जब कुप्रुस
दिखाई दिया, तो हम ने उसे बाए हाथ
छोडा, और सूरिया को चलकर सूर मे
उतरे, क्योकि वहा जहाज का बोझ
उतारना था। ४ और चेलो को पाकर
हम वहा सात दिन तक रहे उन्हो ने
आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा, कि
यरूशलेम में पाव न रखना। ५ जब वे
दिन पूरे हो गए, तो हम वहा से चल दिए,
और सब ने स्त्रियो और बालको समेत हमे
नगर के बाहर तक पहुचाया और हम ने
किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की।
६ तब एक दूसरे मे विदा होकर, हम तो
जहाज पर चढे, और वे अपने अपने घर
लौट गए॥

७ तब हम सूर से जलयात्रा पूरी करके
पतुलिमयिस में पहुचे, और भाइयो को
नमस्कार करके उन के साथ एक दिन रहे।
८ दूसरे दिन हम वहा से चलकर कैसरिया
में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक
के घर में जो सातो मे से एक था, जाकर
उसके यहा रहे। ९ उस की चार कुवारी
पुत्रिया थी, जो भविष्यद्वाणी करती थी।
१० जब हम वहा बहुत दिन रह चुके, तो
अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से
आया। ११ उस ने हमारे पास आकर
पौलुस का पटका लिया, और अपने हाथ पाव
बान्धकर कहा, पवित्र आत्मा यह कहता है,
कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उस को
यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे,
और अन्यजातियो के हाथ में सोपेंगे।
१२ जब ये बातें सुनी, तो हम और वहा के
लोगो ने उस से बिनती की, कि यरूशलेम
को न जाए। १३ परन्तु पौलुस ने उत्तर
दिया, कि तुम क्या करते हो, कि रो रोकर
मेरा मन तोडते हो, मैं तो प्रभु यीशु के
नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बान्धे
जाने ही के लिये बरन मरने के लिये भी
तैयार हू। १४ जब उस ने न माना तो
हम यह कहकर चुप हो गए, कि प्रभु की
इच्छा पूरी हो॥

१५ उन दिनो के बाद हम बान्ध छान्ध-
कर यरूशलेम को चल दिए। १६ कैसरिया
के भी कितने चेले हमारे साथ हो लिए,
और मनासोन नाम कुप्रुस के एक पुराने
चेले को साथ ले आए, कि हम उसके यहा
टिके॥

१७ जब हम यरूशलेम मे पहुचे, तो
भाई बडे आनन्द के साथ हम से मिले।
१८ दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब
के पास गया, जहा सब प्राचीन * इकट्ठे थे।
१९ तब उस ने उन्हे नमस्कार करके, जो
जो काम परमेश्वर ने उस की सेवकाई के
द्वारा अन्यजातियो में किए थे, एक एक
करके सब बताया। २० उन्हो ने यह सुन-
कर परमेश्वर की महिमा की, फिर उस से
कहा, हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियो मे

* या प्रिसबुतिर।

से कई हजार ने विश्वास किया है, और
सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं।
२१ और उन को तेरे विषय में सिखाया
गया है, कि तू अन्यजातियों में रहनेवाले
यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता
है और कहता है, कि न अपने बच्चों का
खतना कराओ और न रीतियों पर चलो
सो क्या किया जाए? २२ लोग अवश्य
सुनेंगे, कि तू आया है। २३ इसलिये जो
हम तुझ से कहते हैं, वह कर हमारे यहां
चार मनुष्य हैं जिन्हों ने मन्नत मानी है।
२४ उन्हें लेकर उन के साथ अपने आप को
शुद्ध कर, और उन के लिये खर्चा दे, कि वे
सिर मुड़ाएं तब सब जान लेंगे, कि जो
बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उन की
कुछ जड़ नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था
को मानकर उसके अनुसार चलता है।
२५ परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में
जिन्हों ने विश्वास किया है, हम ने यह निर्णय
करके लिख भेजा है कि वे मूरतों के साम्हने
बलि किए हुए मांस से, और लोहू से, और
गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार
से बचे रहें। २६ तब पौलुस उन मनुष्यों
को लेकर, और दूसरे दिन उन के साथ शुद्ध
होकर मन्दिर में गया, और बता दिया, कि
शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उन में से हर एक
के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब
पूरे होंगे॥

२७ जब वे सात दिन पूरे होने पर थे
तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर
में देखकर सब लोगों को उसकाया, और
यों चिल्लाकर उस को पकड़ लिया।
२८ कि हे इस्राएलियो, सहायता करो,
यह वही मनुष्य है जो लोगों के, और
व्यवस्था के और इस स्थान के विरोध में
हर जगह सब लोगों को सिखाता है, यहां
तक कि यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर
उस ने इस पवित्र स्थान को अपवित्र किया
है। २९ उन्हों ने तो इस से पहिले
त्रुफिमुस इफिसी को उसके साथ नगर में
देखा था, और समझते थे, कि पौलुस उसे
मन्दिर में ले आया है। ३० तब सारे नगर
में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर
इकट्ठे हुए, और पौलुस को पकड़कर मन्दिर
के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द
किए गए। ३१ जब वे उसे मार डालना
चाहते थे, तो पलटन के सरदार को सन्देश
पहुंचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच
रहा है। ३२ तब वह तुरन्त सिपाहियों
और सूबेदारों को लेकर उन के पास नीचे
दौड़ आया, और उन्हों ने पलटन के सरदार
को और सिपाहियों को देख कर पौलुस को
मारने पीटने से हाथ उठाया। ३३ तब
पलटन के सरदार ने पास आकर उसे पकड़
लिया, और दो जंजीरों से बान्धने की आज्ञा
देकर पूछने लगा, यह कौन है, और इस ने
क्या किया है? ३४ परन्तु भीड़ में से कोई
कुछ और कोई कुछ चिल्लाते रहे और
जब हुल्लड़ के मारे ठीक सच्चाई न जान
सका तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी।
३५ जब वह सीढ़ी पर पहुंचा, तो ऐसा
हुआ, कि भीड़ के दबाव के मारे सिपाहियों
को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। ३६ क्योंकि
लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके
पीछे पड़ी, कि उसका अन्त कर दो॥

३७ जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर
थे, तो उस ने पलटन के सरदार से कहा,
क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ से कुछ कहूं?
उस ने कहा, क्या तू यूनानी जानता है?
३८ क्या तू वह मिसरी नहीं, जो इन दिनों
से पहिले बलवाई बनाकर चार हजार
कटारबन्द लोगों को जंगल में ले गया?

३९ पौलुस ने कहा, मैं तो तरसुस का यहूदी
मनुष्य हूं ! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का
निवासी हूं और मैं तुझ से विनती करता
हूं, कि मुझे लोगों से बातें करने दे। ४० जब
उस ने आज्ञा दी, तो पौलुस ने सीढ़ी पर
खड़े होकर लोगों को हाथ से सैन किया
जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में
बोलने लगा, कि,

२२ हे भाइयो, और पितरो, मेरा
प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे
साम्हने कहता हूं ॥
२ वे यह सुनकर कि वह हम से इब्रानी
भाषा में बोलता है, और भी चुप रहे।
तब उस ने कहा,
३ मैं तो यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया
के तरसुस में जन्मा, परन्तु इस नगर में
गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया
गया, और बापदादों की व्यवस्था की ठीक
रीति पर सिखाया गया, और परमेश्वर के
लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब
आज लगाए हो। ४ और मैं ने पुरुष और
स्त्री दोनों को बान्ध बान्धकर, और बन्दीगृह
में डाल डालकर, इस पंथ को यहां तक
सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला। ५ इस
बात के लिये महायाजक और सब पुरनिये
गवाह हैं, कि उन में से मैं भाइयों के नाम
पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा
था, कि जो वहां हों उन्हें भी दण्ड दिलाने
के लिये बान्धकर यरूशलेम में लाऊं।
६ जब मैं चलते चलते दमिश्क के निकट
पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दो पहर के लगभग
एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे
चारों ओर चमकी। ७ और मैं भूमि पर
गिर पड़ा और यह शब्द सुना, कि * हे
शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?
मैं ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है ?
८ उस ने मुझ से कहा, मैं यीशु नासरी हूं,
जिसे तू सताता है ? ९ और मेरे साथियों
ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझ से बोलता
था उसका शब्द न सुना। १० तब मैं ने
कहा, हे प्रभु मैं क्या करूं ? प्रभु ने मुझ से
कहा, उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ
तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां
तुझ से सब कह दिया जाएगा। ११ जब
उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई
न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े
हुए दमिश्क में आया। १२ और हनन्याह
नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त
मनुष्य, जो वहां के रहनेवाले सब यहूदियों
में सुनाम था, मेरे पास आया। १३ और
खड़ा होकर मुझ से कहा, हे भाई शाऊल
फिर देखने लग उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल
गए और मैं ने उसे देखा। १४ तब उस ने
कहा, हमारे बापदादों के परमेश्वर ने
तुझे इसलिये ठहराया है, कि तू उस की
इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और
उसके मुंह से बातें सुने। १५ क्योंकि तू
उस की ओर से सब मनुष्यों के साम्हने उन
बातों का गवाह होगा, जो तू ने देखी और
सुनी है। १६ अब क्यों देर करता है ?
उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर
अपने पापों को धो डाल। १७ जब मैं फिर
यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर
रहा था, तो बेसुध हो गया। १८ और
उस को देखा कि मुझ से कहता है, जल्दी
करके यरूशलेम से झट निकल जा क्योंकि
वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे।
१९ मैं ने कहा, हे प्रभु वे तो आप जानते
हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को
बन्दीगृह में डालता और जगह जगह

* यू० जो मुझ में चलता था।

भाग्यमनालय में पिटवाता था। २० और
जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाया
जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा था, और
इस बात में सहमत था, और उसके घातकों
के कपड़ों की रखवाली करता था।
२१ और उस ने मुझ से कहा, चला जा
क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर दूर
भेजूंगा॥

२२ वे इस बात तक उस की सुनते रहे,
तब ऊंचे शब्द से चिल्लाए, कि ऐसे मनुष्य
का अन्त करो, उसका जीवित रहना उचित
नहीं। २३ जब वे चिल्लाते और कपड़े
फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे,
२४ तो पलटन के सूबेदार ने कहा; कि
इसे गढ़ में ले जाओ, और कोड़े मारकर
जांचो, कि मैं जानूं कि लोग किस कारण
उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं।
२५ जब उन्हों ने उसे तसमों से बान्धा तो
पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा था,
कहा, क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी
मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए
हुए कोड़े मारो? २६ सूबेदार ने यह सुन-
कर पलटन के सरदार के पास जाकर कहा,
तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य
है। २७ तब पलटन के सरदार ने उसके
पास आकर कहा, मुझे बता, क्या तू रोमी
है? उस ने कहा, हां। २८ यह सुनकर
पलटन के सरदार ने कहा, कि मैं ने रोमी
होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है
पौलुस ने कहा, मैं तो जन्म से रोमी हूं।
२९ तब जो लोग उसे जांचने पर थे, वे
तुरन्त उसके पास से हट गए, और पलटन
का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी
है, और मैं ने उसे बान्धा है, डर गया॥

३० दूसरे दिन वह ठीक ठीक जानने की
इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते
हैं, उसके बन्धन खोल दिए, और महा-
याजकों और सारी महासभा को इकट्ठे होने
की आज्ञा दी, और पौलुस को नीचे ले जाकर
उन के साम्हने खड़ा कर दिया॥

२३ पौलुस ने महासभा की ओर
टकटकी लगाकर देखा, और कहा,
हे भाइयो, मैं ने आज तक परमेश्वर के लिये
बिलकुल सच्चे विवेक * से जीवन बिताया
है। २ हनन्याह महायाजक ने, उन को जो
उसके पास खड़े थे, उसके मुंह पर थप्पड़
मारने की आज्ञा दी। ३ तब पौलुस ने उस
से कहा, हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर
तुझे मारेगा तू व्यवस्था के अनुसार मेरा
न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या
व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा
देता है? ४ जो पास खड़े थे, उन्हों ने कहा,
क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा
कहता है? ५ पौलुस ने कहा, हे भाइयो,
मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है,
क्योंकि लिखा है, कि अपने लोगों के प्रधान
को बुरा न कह। ६ तब पौलुस ने यह जान-
कर, कि कितने सदूकी और कितने फरीसी
हैं, सभा में पुकारकर कहा, हे भाइयो, मैं
फरीसी और फरीसियों के वंश का हूं, मरे
हुओं की आशा और पुनरुत्थान † के विषय
में मेरा मुकद्दमा हो रहा है। ७ जब उस ने
यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों
में झगड़ा होने लगा, और सभा में फूट पड़
गई। ८ क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं,
कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न
आत्मा है, परन्तु फरीसी दोनों मानते हैं।
९ तब बड़ा हल्ला मचा और कितने
शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर

---

* अर्थात् मन या कान्शन्स।

† या मृतकोत्थान।

यो कहकर झगडने लगे, कि हम इस मनुष्य
में कुछ बुराई नही पाते, और यदि कोई
आत्मा या स्वर्गदूत उस से बोला है तो फिर
क्या ? १० जब बहुत झगडा हुआ, तो
पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस
के टुकडे टुकडे न कर डालें पलटन को आज्ञा
दी, कि उतरकर उस को उन के बीच में से
बरबस निकालो, और गढ में ले आओ ।।

११ उसी रात प्रभु ने उसके पास आ
खड़े होकर कहा, हे पौलुस, ढाढस बान्ध;
क्योकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही
दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी
होगी ।।

१२ जब दिन हुआ, तो यहूदियो ने एका
किया, और शपथ खाई कि जब तक हम
पौलुस को मार न डाले, तब तक खाए या
पीए तो हम पर धिक्कार। १३ जिन्हो ने
आपस मे यह शपथ खाई थी, वे चालीस
जनो के ऊपर थे। १४ उन्हो ने महायाजको
और पुरनियो के पास आकर कहा, हम ने
यह ठाना है, कि जब तक हम पौलुस को
मार न डाले, तब तक यदि कुछ चखें भी,
तो हम पर धिक्कार पर धिक्कार है।
१५ इसलिये अब महासभा समेत पलटन के
सरदार को समझाओ, कि उसे तुम्हारे पास
ले आए, मानो कि तुम उसके विषय में और
भी ठीक जाच करना चाहते हो, और हम
उसके पहुचने से पहिले ही उसे मार डालने
के लिये तैयार रहेंगे। १६ और पौलुस के
भाजे ने सुना, कि वे उस की घात में हैं, तो
गढ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया।
१७ पौलुस ने सूबेदारो मे से एक को अपने
पास बुलाकर कहा, इस जवान को पलटन
के सरदार के पास ले जाओ, यह उस से कुछ
कहना चाहता है। १८ सो उस ने उसको
पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा,
पौलुस बन्धुए ने मुझे बुलाकर बिनती की,
कि यह जवान पलटन के सरदार से कुछ
कहना चाहता है, उसे उसके पास ले जा।
१९ पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़-
कर, और अलग ले जाकर पूछा; मुझ से
क्या कहना चाहता है ? २० उस ने कहा,
यहूदियो ने एका किया है, कि तुझ से बिनती
करे, कि कल पौलुस को महासभा में लाए,
मानो तू और ठीक से उस की जाच करना
चाहता है। २१ परन्तु उन की मत मानना,
क्योकि उन मे से चालीस के ऊपर मनुष्य
उस की घात में हैं, जिन्हो ने यह ठान लिया
है, कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें,
तब तक खाए, पीए, तो हम पर धिक्कार,
और अभी वे तैयार हैं और तेरे वचन की
आस देख रहे हैं। २२ तब पलटन के
सरदार ने जवान को यह आज्ञा देकर विदा
किया, कि किसी से न कहना कि तू ने मुझ
को ये बाते बताई हैं। २३ और दो
सूबेदारो को बुलाकर कहा, दो सौ सिपाही,
सत्तर सवार, और दो सौ भालैत, पहर रात
बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार कर
रखो। २४ और पौलुस की सवारी के लिये
घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स हाकिम
के पास कुशल से पहुचा दे। २५ उस ने
इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी,

२६ महाप्रतापी फेलिक्स हाकिम को
क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार'
२७ इस मनुष्य को यहूदियो ने पकडकर
मार डालना चाहा, परन्तु जब मैं ने जाना,
कि रोमी है, तो पलटन लेकर छुडा लाया।
२८ और मैं जानना चाहता था, कि वे
उस पर किस कारण दोष लगाते है, इसलिये
उसे उन की महासभा में ले गया। २९ तब
मैं ने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के
विवादो के विषय मे उस पर दोष लगाते

हैं, परन्तु मार डाले जाने या बान्धे जाने के
योग्य उस मे कोई दोष नही। ३० और
जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य की
घात मे लगे है तो मैं ने तुरन्त उस को तेर
पास भेज दिया, और मुद्दइयो को भी आज्ञा
दी, कि तेरे साम्हने उस पर नालिश करें॥

३१ सो जैसे सिपाहियो को आज्ञा दी
गई थी वैसे ही पौलुस को लेकर रातो-रात
अन्तिपत्रिस में लाए। ३२ दूसरे दिन
वे सवारो को उसके साथ जाने के लिये
छोडकर आप गढ को लौटे। ३३ उन्हो ने
कैसरिया में पहुचकर हाकिम को चिट्ठी
दी और पौलुस को भी उसके साम्हने
खडा किया। ३४ उस ने पढकर पूछा,
यह किस देश का है? ३५ और जब जान
लिया कि किलकिया का है, तो उस से
कहा, जब तेरे मुद्दई भी आएगे, तो मैं तेरा
मुकद्दमा करूगा और उस ने उसे हेरोदेस
के किले * म, पहरे मे रखने की आज्ञा दी॥

२४ पाच दिन के बाद हनन्याह
महायाजक कई पुरनिया और
तिरतुल्लुस नाम किसी वकील को साथ
लेकर आया, उन्हो ने हाकिम के साम्हने
पौलुस पर नालिश की। २ जब वह बुलाया
गया तो तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाकर
कहने लगा, कि,

हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हमें
जो बडा कुशल होता है, और तेरे प्रबन्ध से
इस जाति के लिये कितनी बुराइया सुधरती
जाती हैं। ३ इस को हम हर जगह और
हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते है।
४ परन्तु इसलिये कि तुझे और दुख नही
देना चाहता, मैं तुझ से बिनती करता हू,
कि कृपा करके हमारी दो एक बात सुन ले।

* यू० प्रितोरियुम।

५ क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी
और जगत के सारे यहूदियो में बलवा
करानेवाला, और नासरियो के कुपन्थ का
मुखिया पाया है। ६ उस ने मन्दिर को
अशुद्ध करना चाहा, और हम ने उसे पकडा।
८ इन सब बातो को जिन के विषय मे हम
उस पर दोष लगाते है, तू आपही उस को
जाच करके जान लेगा। ९ यहूदियो ने भी
उसका साथ देकर कहा, ये बातें इसी प्रकार
की है॥

१० जब हाकिम ने पौलुस को बोलने
के लिये सैन किया तो उस ने उत्तर दिया,

म यह जानकर कि तू बहुत वर्षों से इस
जाति का न्याय करता है, आनन्द से अपना
प्रत्युत्तर देता हू। ११ तू आप जान
सकता है, कि जब से म यरूशलेम में भजन
करने को आया, मुझे बारह दिन से ऊपर
नहीं हुए। १२ और उन्हो ने मुझे न
मन्दिर मे न सभा के घरो में, न नगर में
किसी से विवाद करते या भीड लगाते
पाया। १३ और न तो वे उन बातो को,
जिन का वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं,
तेरे साम्हने सच ठहरा सकते ह। १४ परन्तु
यह म तेरे साम्हने मान लेता हू, कि जिस
पन्थ को वे कुपन्थ कहते ह, उसी की रीति
पर म अपने बापदादो के परमेश्वर की
सेवा करता हू और जो बातें व्यवस्था
और भविष्यद्वक्ताओ की पुस्तको में लिखी
ह, उन सब की प्रतीति करता हू। १५ और
परमेश्वर से आशा रखता हू जो वे आप भी
रखते ह, कि धर्मी और अधर्मी दोनो का जी
उठना होगा। १६ इस से म आप भी
यतन करता हू, कि परमेश्वर की, और
मनुष्यो की ओर मेरा विवेक * सदा निर्दोष

* अर्थात् मन या कान्शन्स।

रहे। १७ बहुत वर्षों के बाद मैं अपने
लोगों को दान पहुचाने, और भेंट चढ़ाने
आया था। १८ उन्हों ने मुझे मन्दिर में,
शुद्ध दशा में बिना भीड़ के साथ, और बिना
दंगा करते हुए इस काम में पाया—हा
आसिया के कई यहूदी थे—उन को उचित
था, १९ कि यदि मेरे विरोध में उन की
कोई बात हो तो यहा तेरे साम्हने आकर
मुझ पर दोष लगाते। २० या ये आप ही
कहें, कि जब मैं महासभा के साम्हने खड़ा
था, तो उन्हो ने मुझ मे कौन सा अपराध
पाया? २१ इस एक बात को छोड़ जो
मैं ने उन के बीच मे खड़े होकर पुकारकर
कहा था, कि मरे हुओं के जी उठने के विषय
में आज मेरा तुम्हारे साम्हने मुकद्दमा हो
रहा है॥

२२ फेलिक्स ने जो इस पन्थ की बातें
ठीक ठीक जानता था, उन्हें यह कहकर
टाल दिया, कि जब पलटन का सरदार
लूसियास आएगा, तो तुम्हारी बात का
निर्णय करूगा। २३ और सूबेदार को
आज्ञा दी, कि पौलुस को सुख से रखकर
रखवाली करना, और उसके मित्रो मे से
किसी को भी उस की सेवा करने से न
रोकना॥

२४ कितने दिनो के बाद फेलिक्स अपनी
पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ
लेकर आया, और पौलुस को बुलवाकर
उस विश्वास * के विषय म जो मसीह यीशु
पर है, उस से सुना। २५ और जब वह
धर्म और सयम और आनेवाले न्याय की
चर्चा करता था, तो फेलिक्स ने भयमान
होकर उत्तर दिया, कि अभी तो जा
अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊगा।

* या धर्म।

२६ उसे पौलुस से कुछ रुपये मिलने की
भी आस थी, इसलिये और भी बुला बुला-
कर उस से बातें किया करता था।
२७ परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो
पुरकियुस फेस्तुस फेलिक्स की जगह पर
आया, और फेलिक्स यहूदियो को खुश करने
की इच्छा से पौलुस को बन्धुआ छोड़
गया॥

२५ फेस्तुस उस प्रान्त में पहुचकर
तीन दिन के बाद कैसरिया से
यरूशलेम को गया। २ तब महायाजकों
ने, और यहूदियो के बड़े लोगो ने, उसके
साम्हने पौलुस की नालिश की। ३ और
उस से विनती करके उसके विरोध में यह
वर चाहा, कि वह उसे यरूशलेम मे बुलवाए,
क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की
घात लगाए हुए थे। ४ फेस्तुस ने उत्तर
दिया, कि पौलुस कैसरिया में पहरे मे है,
और मै आप जल्द वहा जाऊगा। ५ फिर
कहा, तुम मे जो अधिकार रखते हैं, वे साथ
चले, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित
काम किया है, तो उस पर दोष लगाए॥

६ और उन के बीच कोई आठ दस दिन
रहकर वह कैसरिया गया और दूसरे दिन
न्याय आसन पर बैठकर पौलुस के लाने की
आज्ञा दी। ७ जब वह आया, तो जो यहूदी
यरूशलेम से आए थे, उन्हो ने आस पास
खड़े होकर उस पर बहुतेरे भारी दोष
लगाए, जिन का प्रमाण वे नही दे सकते थे।
८ परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने
न तो यहूदियो की व्यवस्था का और न
मन्दिर का, और न कैसर का कुछ अपराध
किया है। ९ तब फेस्तुस ने यहूदियो को
खुश करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर
दिया, क्या तू चाहता है, कि यरूशलेम को

जाए, और वहा मेरे साम्हने तेरा यह
मुकद्दमा तय किया जाए? १० पौलुस ने
कहा, मैं कैसर के न्याय आसन के साम्हने
खड़ा हू मेरे मुकद्दमे का यही फैसला होना
चाहिए जैसा तू अच्छी तरह जानता है,
यहूदियो का मैं ने कुछ अपराध नही किया।
११ यदि अपराधी हू और मार डाले जाने
योग्य कोई काम किया है, तो मरने से नही
मुकरता, परन्तु जिन बातो का ये मुझ पर
दोष लगाते हैं, यदि उन में से कोई बात
सच न ठहरे, तो कोई मुझे उन के हाथ नही
सौंप सकता मैं कैसर की दोहाई देता हू।
१२ तब फेस्तुस ने मन्त्रियो की सभा के
साथ बाते करके उत्तर दिया, तू ने कैसर की
दोहाई दी है, तू कैसर के पास जाएगा॥

१३ और कुछ दिन बीतने के बाद
अग्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया
में आकर फेस्तुस से भेंट की। १४ और
उन के बहुत दिन वहा रहने के बाद फेस्तुस
ने पौलुस की कथा राजा को बताई, कि
एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स बन्धुआ छोड
गया है। १५ जब मैं यरूशलेम में था, तो
महायाजक और यहूदियो के पुरनियो ने
उस की नालिश की, और चाहा, कि उस
पर दण्ड की आज्ञा दी जाए। १६ परन्तु
मैं ने उन को उत्तर दिया कि रोमियो की
यह रीति नही, कि किसी मनुष्य को दण्ड के
लिये सौंप दें, जब तक मुद्दाअलैह को अपने
मुद्दइयो के आमने-सामने खडे होकर दोष के
उत्तर देने का अवसर न मिले। १७ सो
जब वे यहा इकट्ठे हुए, तो मैं ने कुछ देर न
की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर
बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी।
१८ जब उसके मुद्दई खडे हुए, तो उन्हो ने
ऐसी बुरी बातो का दोष नही लगाया, जैसा
मैं समझता था। १९ परन्तु अपने मत के,
और यीशु नाम किसी मनुष्य के विषय में
जो मर गया था, और पौलुस उस को जीवित
बताता था, विवाद करते थे। २० और
मैं उलझन में था, कि इन बातो का पता कैसे
लगाऊ? इसलिये मैं ने उस से पूछा, क्या
तू यरूशलेम जाएगा, कि वहा इन बातो का
फैसला हो? २१ परन्तु जब पौलुस ने
दोहाई दी, कि मेरे मुकद्दमे का फैसला महा-
राजाधिराज के यहा हो, तो मैं ने आज्ञा दी,
कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजू, उस
की रखवाली की जाए। २२ तब अग्रिप्पा
ने फेस्तुस से कहा, मैं भी उस मनुष्य की
सुनना चाहता हू उस ने कहा, तू कल सुन
लेगा॥

२३ सो दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और
बिरनीके बडी धूमधाम से आकर पलटन के
सरदारो और नगर के बडे लोगो के साथ
दरबार में पहुचे, तो फेस्तुस ने आज्ञा दी,
कि वे पौलुस को ले आए। २४ फेस्तुस ने
कहा, हे महाराजा अग्रिप्पा, और हे सब
मनुष्यो जो यहा हमारे साथ हो, तुम इस
मनुष्य को देखते हो, जिस के विषय में सारे
यहूदियो ने यरूशलेम में और यहा भी चिल्ला
चिल्लाकर मुझ से बिनती की, कि इस का
जीवित रहना उचित नही। २५ परन्तु मैं
ने जान लिया, कि उस ने ऐसा कुछ नही
किया कि मार डाला जाए, और जब कि
उस ने आप ही महाराजाधिराज की दोहाई
दी, तो मैं ने उसे भेजने का उपाय निकाला।
२६ परन्तु मैं ने उसके विषय में कोई ठीक
बात नही पाई कि अपने स्वामी के पास
लिखू, इसलिये मैं उसे तुम्हारे साम्हने और
विशेष करके हे महाराजा अग्रिप्पा तेरे
साम्हने लाया हू, कि जाचने के बाद मुझे
कुछ लिखने को मिले। २७ क्योंकि बन्धुए
को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए,

उन्हे न बताना, मुझे व्यर्थ समझ पडता
है॥

२६ अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा,
तुझे अपने विषय मे बोलने की
आज्ञा है· तब पौलुस हाथ बढ़ाकर उत्तर
देने लगा, कि,
२ हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातो का
यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज तेरे
साम्हने उन का उत्तर देने मे मैं अपने को
धन्य समझता हू। ३ विशेष करके इसलिये
कि तू यहूदियो के सब व्यवहारो और विवादो
को जानता है, सो मैं बिनती करता हू,
धीरज से मेरी सुन ले। ४ जैसा मेरा चाल
चलन आरम्भ से अपनी जाति के बीच
और यरूशलेम में था, यह सब यहूदी जानते
हैं। ५ वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो
आरम्भ से मुझे पहिचानते हैं, कि मैं फरीसी
होकर अपने धर्म के सब से खरे पन्थ के
अनुसार चला। ६ और अब उस प्रतिज्ञा
की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे
बापदादो से की थी, मुझ पर मुकद्दमा चल
रहा है। ७ उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की
आशा लगाए हुए, हमारे बारहो गोत्र अपने
सारे मन से रात दिन परमेश्वर की सेवा
करते आए है हे राजा, इसी आशा के
विषय मे यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं।
८ जब कि परमेश्वर मरे हुओ को जिलाता
है, तो तुम्हारे यहा यह बात क्यो विश्वास के
योग्य नही समझी जाती? ९ मैं ने भी
समझा था कि यीशु नासरी के नाम के
विरोध मे मुझे बहुत कुछ करना चाहिए।
१० और मैं ने यरूशलेम मे ऐसा ही किया,
और महायाजको से अधिकार पाकर बहुत
से पवित्र लोगो को बन्दीगृह मे डाला, और
जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उन के
विरोध में अपनी सम्मति देता था।
११ और हर आराधनालय में मैं उन्हें
ताड़ना दिला दिलाकर यीशु की निन्दा
करवाता था, यहा तक कि क्रोध के मारे
ऐसा पागल हो गया, कि बाहर के नगरो में
भी जाकर उन्हें सताता था। १२ इसी
धुन मे जब मैं महायाजको से अधिकार
और परवाना लेकर दमिश्क को जा रहा
था। १३ तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के
समय मैं ने आकाश से सूर्य के तेज से भी
बढ़कर एक ज्योति अपने और अपने साथ
चलनेवालो के चारो ओर चमकती हुई
देखी। १४ और जब हम सब भूमि पर
गिर पडे, तो मैं ने इब्रानी भाषा में, मुझ से
यह कहते हुए यह शब्द सुना, कि हे शाऊल,
हे शाऊल, तू मुझे क्यो सताता है? पैने पर
लात मारना तेरे लिये कठिन है। १५ मैं ने
कहा, हे प्रभु तू कौन है? प्रभु ने कहा, मैं
यीशु हू· जिसे तू सताता है। १६ परन्तु
तू उठ, अपने पावो पर खडा हो, क्योकि
मैं ने तुझे इसलिये दर्शन दिया है, कि तुझे
उन बातो का भी सेवक और गवाह ठहराऊ,
जो तू ने देखी है, और उन का भी जिन के
लिये मैं तुझे दर्शन दूगा। १७ और मैं तुझे
तेरे लोगो से और अन्यजातियो से बचाता
रहूगा, जिन के पास मैं अब तुझे इसलिये
भेजता हू। १८ कि तू उन की आखे खोले,
कि वे अधकार से ज्योति की ओर, और
शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर
फिरे, कि पापो की क्षमा, और उन लोगो के
साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र
किए गए है, मीरास पाए। १९ सो हे
राजा अग्रिप्पा, मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की
बात न टाली। २० परन्तु पहिले दमिश्क
के, फिर यरूशलेम के रहनेवालो को, तब

यहूदिया के सारे देश में और अन्यजातियों
को समझाता रहा, कि मन फिराओ और
परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के
योग्य काम करो। २१ इन बातों के कारण
यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने
का यत्न करते थे। २२ सो परमेश्वर की
सहायता से मैं आज तक बना हूं और छोटे
बड़े सभी के साम्हने गवाही देता हूं और
उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो
भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि
होनेवाली हैं। २३ कि मसीह को दुख
उठाना होगा, और वही सब से पहिले मरे
हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में
और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार
करेगा॥

२४ जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा
था, तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा, हे
पौलुस, तू पागल है बहुत विद्या ने तुझे
पागल कर दिया है। २५ परन्तु उस ने
कहा, हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं,
परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बात कहता
हूं। २६ राजा भी जिस के साम्हने मैं
निडर होकर बोल रहा हूं, ये बातें जानता
है, और मुझे प्रतीति है, कि इन बातों में
से कोई उस से छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना
तो कोने में नहीं हुई। २७ हे राजा अग्रिप्पा,
क्या तू भविष्यद्वक्ताओं की प्रतीति करता
है? हां, मैं जानता हूं, कि तू प्रतीति करता
है। २८ तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा,
तू थोड़े ही समझाने से* मुझे मसीही
बनाना चाहता है? २९ पौलुस ने कहा,
परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या
थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं,
परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं,
इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो
जाएं॥

३० तब राजा और हाकिम और
बिरनीके और उन के साथ बैठनेवाले उठ
खड़े हुए। ३१ और अलग जाकर आपस
में कहने लगे, यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं
करता, जो मृत्यु या बन्धन के योग्य हो।
३२ अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, यदि यह
मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट
सकता था॥

२७ जब यह ठहराया गया, कि
हम जहाज पर इतालिया को जाएं,
तो उन्हों ने पौलुस और कितने और बन्धुओं
को भी यूलियुस नाम औगुस्तुस की पलटन
के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया।
२ और अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर जो
आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर
था, चढ़कर हम ने उसे खोल दिया, और
अरिस्तर्खुस नाम थिस्सलुनीके का एक
मकिदूनी हमारे साथ था। ३ दूसरे दिन
हम ने सैदा में लंगर डाला और यूलियुस ने
पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहां
जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए।
४ वहां से जहाज खोलकर हवा विरुद्ध होने
के कारण हम कुप्रुस की आड़ में होकर चले।
५ और किलिकिया और पंफूलिया के
निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में
उतरे। ६ वहां सूबेदार को सिकन्दरिया
का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला,
और उस ने हमें उस पर चढ़ा दिया।
७ और जब हम बहुत दिनों तक धीरे धीरे
चलकर कठिनता से कनिदुस के साम्हने
पहुंचे, तो इसलिये कि हवा हमें आगे बढ़ने
न देती थी, सलमोने के साम्हने से होकर
क्रेते की आड़ में चले। ८ और उसके

* यू० थोड़े में।

किनारे किनारे कठिनता से चलकर शुभ-
लगरवारी नाम एक जगह पहुंचे, जहां से
लसया नगर निकट था॥

९ जब बहुत दिन बीत गए, और जल-
यात्रा में जोखिम इसलिये होती थी कि
उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस
ने उन्हें यह कहकर समझाया। १० कि हे
सज्जनो मुझे ऐसा जान पड़ता है, कि इस
यात्रा में विपत्ति और बहुत हानि न केवल
माल और जहाज की वरन हमारे प्राणों की
भी होनेवाली है। ११ परन्तु सूबेदार
ने पौलुस की बातों से मांझी और जहाज के
स्वामी की बढ़कर मानी। १२ और वह
बन्दर स्थान जाड़ा काटने के लिये अच्छा न
था, इसलिये बहुतों का विचार हुआ, कि
वहां से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से
हो सके, तो फीनिक्स में पहुंचकर जाड़ा
काटें यह तो क्रेते का एक बन्दर स्थान है
जो दक्खिन-पच्छिम और उत्तर-पच्छिम की
ओर खुलता है। १३ जब कुछ कुछ दक्खिनी
हवा बहने लगी, तो यह समझकर कि
हमारा मतलब पूरा हो गया, लगर उठाया
और किनारा धरे हुए क्रेते के पास से जाने
लगे। १४ परन्तु थोड़ी देर में वहां से एक
बड़ी आंधी उठी, जो यूरकुलीन कहलाती
है। १५ जब यह जहाज पर लगी, तब
वह हवा के साम्हने ठहर न सका, सो हम ने
उसे बहने दिया, और इसी तरह बहते हुए
चले गए। १६ तब कौदा नाम एक छोटे से
टापू की आड़ में बहते बहते हम कठिनता से
डोंगी को वश में कर सके। १७ मल्लाहों
ने उसे उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज
को नीचे से बान्धा, और सुरतिस के चोर-
बालू पर टिक जाने के भय से पाल और
सामान उतार कर, बहते हुए चले गए।
१८ और जब हम ने आंधी से बहुत हिच-
कोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे
जहाज का माल फेंकने लगे। १९ और
तीसरे दिन उन्हों ने अपने हाथों से जहाज
का सामान फेंक दिया। २० और जब
बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए,
और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में
हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।
२१ जब वे बहुत उपवास कर चुके, तो
पौलुस ने उन के बीच में खड़ा होकर कहा,
हे लोगो, चाहिए था कि तुम मेरी बात
मानकर क्रेते से न जहाज खोलते और न
यह विपत और हानि उठाते। २२ परन्तु
अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो,
क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि
न होगी, केवल जहाज की। २३ क्योंकि
परमेश्वर जिस का मैं हूं, और जिस की सेवा
करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे
पास आकर कहा। २४ हे पौलुस, मत
डर, तुझे कैसर के साम्हने खड़ा होना
अवश्य है और देख, परमेश्वर ने सब को
जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।
२५ इसलिये, हे सज्जनो ढाढ़स बान्धो,
क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं,
कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही
होगा। २६ परन्तु हमें किसी टापू पर जा
टिकना होगा॥

२७ जब चौदहवीं रात हुई, और हम
अद्रिया समुद्र में टकराते फिरते थे, तो
आधी रात के निकट मल्लाहों ने अटकल से
जाना, कि हम किसी देश के निकट पहुंच
रहे हैं। २८ और थाह लेकर उन्हों ने
बीस पुरसा गहरा पाया और थोड़ा आगे
बढ़कर फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा
पाया। २९ तब पत्थरीली जगहों पर
पड़ने के डर से उन्हों ने जहाज की पिछाड़ी
चार लगर डाले, और भोर का होना मनाते

रहे। ३० परन्तु जब मल्लाह जहाज पर
से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर
डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी।
३१ तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों
से कहा, यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम
नहीं बच सकते। ३२ तब सिपाहियों ने
रस्से काटकर डोंगी गिरा दी। ३३ जब
भोर होने पर था, तो पौलुस ने यह कहके,
सब को भोजन करने को समझाया, कि
आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते
देखते भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया।
३४ इसलिये तुम्हें समझाता हूं, कि कुछ
खा लो, जिस से तुम्हारा बचाव हो,
क्योंकि तुम में से किसी के सिर का एक बाल
भी न गिरेगा। ३५ और यह कहकर
उस ने रोटी लेकर सब के साम्हने परमेश्वर
का धन्यवाद किया, और तोड़कर खाने
लगा। ३६ तब वे सब भी ढाढ़स बान्धकर
भोजन करने लगे। ३७ हम सब मिलकर
जहाज पर दो सौ छिहत्तर जन थे। ३८ जब
वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेहूं को समुद्र
में फेंक कर जहाज हलका करने लगे।
३९ जब बिहान हुआ, तो उन्हों ने उस देश
को नहीं पहिचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी
जिस का चौरस किनारा था, और विचार
किया, कि यदि हो सके, तो इसी पर जहाज
को टिकाएं। ४० तब उन्हों ने लंगरों को
खोलकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी
समय पतवारों के बन्धन खोल दिए और
हवा के साम्हने अगला पाल चढ़ाकर किनारे
की ओर चले। ४१ परन्तु दो समुद्र के
संगम की जगह पड़कर उन्हों ने जहाज को
टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर गड़
गई और टल न सकी, परन्तु पिछाड़ी
लहरों के बल से टूटने लगी। ४२ तब
सिपाहियों का यह विचार हुआ, कि बन्धुओं
को मार डालें, ऐसा न हो, कि कोई पैरके
निकल भागे। ४३ परन्तु सूबेदार ने पौलुस
को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से
रोका, और यह कहा, कि जो तैर सकते हैं,
पहिले कूदकर किनारे पर निकल जाएं।
४४ और बाकी कोई पटरों पर, और कोई
जहाज की और वस्तुओं के सहारे निकल
जाएं, और इस रीति से सब कोई भूमि पर
बच निकले॥

२८ जब हम बच निकले, तो जाना
कि यह टापू मिलिते कहलाता है।
२ और उन जंगली लोगों ने हम पर
अनोखी कृपा की, क्योंकि मेंह के कारण
जो बरस रहा था और जाड़े के कारण
उन्हों ने आग सुलगाकर हम सब को
ठहराया। ३ जब पौलुस ने लकड़ियों का
गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तो एक सांप
आंच पाकर निकला और उसके हाथ से
लिपट गया। ४ जब उन जंगलियों ने सांप
को उसके हाथ में लटके हुए देखा, तो आपस
में कहा, सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि
यद्यपि समुद्र से बच गया, तौभी न्याय ने
जीवित रहने न दिया। ५ तब उस ने सांप
को आग में झटक दिया, और उसे कुछ
हानि न पहुंची। ६ परन्तु वे बाट जोहते
थे, कि वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरके
मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक
देखते रहे, और देखा, कि उसका कुछ भी
नहीं बिगड़ा, तो और ही विचार कर कहा,
यह तो कोई देवता है॥

७ उस जगह के आसपास पुबलियुस
नाम उस टापू के प्रधान की भूमि थी: उस
ने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्र-
भाव से पहुनाई की। ८ पुबलियुस का

पिता ज्वर और आव लोहू से रोगी पडा
था सो पौलुस ने उसके पास घर में जाकर
प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे
चगा किया। ६ जव ऐसा हुआ, तो उस
टापू के वाकी बीमार आए, और चगे किए
गए। १० और उन्हो ने हमारा वहुत
आदर किया, और जव हम चलने लगे, तो
जो कुछ हमे अवश्य था, जहाज पर रख
दिया ॥

११ तीन महीने के वाद हम सिकन्दरिया
के एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू
मे जाडे भर रहा था, और जिस का चिन्ह
दियुसकूरी था। १२ सुरकूमा में लगर
डाल करके हम तीन दिन टिके रहे।
१३ वहा से हम घूमकर रेगियुम मे आए·
और एक दिन के वाद दक्खिनी हवा चली,
तव दूमरे दिन पुतियुली मे आए। १४ वहा
हम को भाई मिले, और उन के कहने मे
हम उन के यहा सात दिन तक रहे, और
इस रीति से रोम को चले। १५ वहा से
भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के
चौक और तीन-सराए तक हमारी भेट करने
को निकल आए जिन्हे देखकर पौलुस ने
परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढस
वान्धा ॥

१६ जव हम रोम मे पहुचे, तो पौलुस
को एक सिपाही के साथ जो उस की रख-
वाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा
हुई ॥

१७ तीन दिन के वाद उस ने यहूदियो
के वडे लोगो को वुलाया, और जव वे इकट्ठे
हुए, तो उन से कहा, हे भाइयो, मैं ने अपने
लोगो के या वापदादो के व्यवहारो के
विरोध मे कुछ भी नही किया, तौभी वन्धुआ
होकर यरूशलेम से रोमियो के हाथ सौपा
गया। १८ उन्हो ने मुझे जाच कर छोड
देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य
कोई दोष न था। १९ परन्तु जब यहूदी
इस के विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर
की दोहाई देनी पडी न यह कि मुझे अपने
लोगो पर कोई दोष लगाना था। २० इस-
लिये मैं ने तुम को वुलाया है, कि तुम से
मिलू और वातचीत करू; क्योंकि इस्राएल
की आशा के लिये मैं इस जजीर से जकडा
हुआ हू। २१ उन्हो ने उस से कहा, न
हम ने तेरे विषय में यहूदियो से चिट्ठिया
पाईं, और न भाइयो में से किसी ने आकर
तेरे विषय में कुछ वताया, और न वुरा
कहा। २२ परन्तु तेरा विचार क्या है?
वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि
हम जानते हैं, कि हर जगह इस मत के
विरोध मे लोग वाते कहते हैं ॥

२३ तव उन्हो ने उसके लिये एक दिन
ठहराया, और वहुत लोग उसके यहा इकट्ठे
हुए, और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही
देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और
भविष्यद्वक्ताओ की पुस्तको से यीशु के
विषय मे समझा समझाकर भोर से साझ
तक वर्णन करता रहा। २४ तब कितनो
ने उन वातो को मान लिया, और कितनो
ने प्रतीति न की। २५ जव आपस मे एक
मत न हुए, तो पौलुस के इस एक वात के
कहने पर चले गए, कि पवित्र आत्मा ने
यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे
वापदादो से अच्छा कहा, कि जाकर इन
लोगो से कह। २६ कि सुनते तो रहोगे,
परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे,
परन्तु न वुझोगे। २७ क्योंकि इन लोगो
का मन मोटा, और उन के कान भारी हो
गए, और उन्हो ने अपनी आखे बन्द की हैं,
ऐसा न हो कि वे कभी आखो से देखें, और
कानो से सुने, और मन से समझे और फिरे,

ग्रोर मैं उन्हे चगा करू। २८ सो तुम
जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा
अन्यजातियो के पास भेजी गई है, और वे
सुनेंगे। २६ जब उस ने यह कहा तो यहूदी
आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहा
से चले गए॥

३० और वह पूरे दो वर्ष अपने भाडे के
घर मे रहा। ३१ और जा उसके पास
आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना
रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के
राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह
की बातें सिखाता रहा॥

रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह
का दास है, और प्रेरित होने के लिये
बुलाया गया, और परमेश्वर के उस
सुसमाचार के लिये अलग किया गया है।
२ जिस की उस ने पहिले ही से अपने
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में।
३ अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के
विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर के भाव
से तो दाऊद के वश से उत्पन्न हुआ।
४ और पवित्रता की आत्मा के भाव मे
मरे हुआ में से जी उठने के कारण सामर्थ
के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।
५ जिस के द्वारा हमे अनुग्रह और प्रेरिताई
मिली, कि उसके नाम के कारण सब
जातियो के लोग विश्वास करके उस की
माने। ६ जिन में से तुम भी यीशु मसीह
के होने के लिये बुलाए गए हो। ७ उन
सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के
प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए
गए है॥

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु
मसीह की ओर से तुम्हे अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे॥

८ पहिले मैं तुम सब के लिये यीशु
मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद
करता हू कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा
सारे जगत मे हो रही है। ६ परमेश्वर
जिस की सेवा मैं अपनी आत्मा से उसके
पुत्र के सुसमाचार के विषय मे करता हू,
वही मेरा गवाह है, कि मैं तुम्हे किस प्रकार
लगातार स्मरण करता रहता हू। १० और
नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिनती करता हू,
कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने
को मेरी यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सुफल
हो। ११ क्योकि मैं तुम से मिलने की
लालसा करता हू, कि मै तुम्हे कोई आत्मिक
वरदान दू जिस से तुम स्थिर हो जाओ।
१२ अर्थात् यह कि मै तुम्हारे बीच में
होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा
जो मुझ मे, और तुम में है शान्ति पाऊ।
१३ और हे भाइयो मै नही चाहता, कि
तुम इस से अनजान रहो, कि मैं ने बार बार
तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे और
अन्यजातियो में फल मिला, वैसा ही तुम में
भी मिले, परन्तु अब तक रुका रहा। १४ मै
यूनानियो और अन्यभाषियो का और

बुद्धिमानो और निर्बुद्धियो का कर्जदार हूं।
१५ सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो,
सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं।
१६ क्योंकि मै सुसमाचार से नही लजाता,
इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले
के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के
लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ
है। १७ क्योंकि उस में परमेश्वर की
धार्मिकता विश्वास से, और विश्वास के
लिये प्रगट होती है, जैसा लिखा है, कि
विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा॥

१८ परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों
की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से
प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए
रखते हैं। १९ इसलिये कि परमेश्वर के
विषय का ज्ञान उन के मनो में प्रगट है,
क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है।
२० क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात्
उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व
जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के
द्वारा देखने में आते हैं, यहा तक कि वे
निरुत्तर है। २१ इस कारण कि परमेश्वर
को जानने पर भी उन्हो ने परमेश्वर के
योग्य बडाई और धन्यवाद न किया, परन्तु
व्यर्थ विचार करने लगे, यहा तक कि उन
का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। २२ वे
अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन
गए। २३ और अविनाशी परमेश्वर की
महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियो,
और चौपायो, और रेंगनेवाले जन्तुओ की
मूरत की समानता मे बदल डाला॥

२४ इस कारण परमेश्वर ने उन्हे उन के
मन के अभिलाषो के अनुसार अशुद्धता के
लिये छोड दिया, कि वे आपस मे अपने
शरीरो का अनादर करे। २५ क्योंकि
उन्हो ने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर
झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना
और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो
सदा धन्य है। आमीन॥

२६ इसलिये परमेश्वर ने उन्हे नीच
कामनाओ के वश म छोड दिया, यहा तक
कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक
व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरुद्ध
है, बदल डाला। २७ वैसे ही पुरुष भी
स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड-
कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे,
और पुरुषो ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम
करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया॥

२८ और जब उन्हो ने परमेश्वर को
पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने
भी उन्हे उन के निकम्मे मन पर छोड दिया,
कि वे अनुचित काम करें। २९ सो वे सब
प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ,
और बैरभाव, से भर गए, और डाह, और
हत्या, और झगडे, और छल, और ईर्षा से
भरपूर हो गए, और चुगलखोर। ३० बद-
नाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में
घृणित, औरो का अनादर करनेवाले, अभि-
मानी, डींगमार, बुरी बुरी बातो के बनाने-
वाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले।
३१ निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित
और निर्दय हो गए। ३२ वे तो परमेश्वर
की यह विधि जानते है, कि ऐसे ऐसे काम
करनेवाले मृत्यु के दण्ड के योग्य है, तौभी न
केवल आप ही ऐसे काम करते है, वरन
करनेवालो से प्रसन्न भी होते है॥

२ सो हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यो
न हो, तू निरुत्तर है। क्योंकि जिस
बात मे तू दूसरे पर दोष लगाता है, उसी
बात मे अपने आप को भी दोषी ठहराता है,
इसलिये कि तू जो दोष लगाता है, आप ही

वही काम करता है। २ और हम जानते
हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवालों पर पर-
मेश्वर की ओर से ठीक ठीक दण्ड की आज्ञा
होती है। ३ और हे मनुष्य, तू जो ऐसे
ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है,
और आप वे ही काम करता है; क्या यह
समझता है कि तू परमेश्वर की दण्ड की
आज्ञा से बच जाएगा? ४ क्या तू उस की
कृपा और सहनशीलता और धीरजरूपी
धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह
नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे
मन फिराव को सिखाती है? ५ पर अपनी
कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके
क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का
सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त
क्रोध कमा रहा है। ६ वह हर एक को
उसके कामों के अनुसार बदला देगा।
७ जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और
आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें
वह अनन्त जीवन देगा। ८ पर जो विवादी
हैं, और सत्य को नहीं मानते, बरन अधर्म
को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा।
९ और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य
के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा,
पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। १० पर
महिमा और आदर और कल्याण हर एक
को मिलेगा, जो भला करता है, पहिले
यहूदी को फिर यूनानी को। ११ क्योंकि
परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता।
१२ इसलिये कि जिन्हों ने बिना व्यवस्था
पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश
भी होंगे, और जिन्हों ने व्यवस्था पाकर पाप
किया, उन का दण्ड व्यवस्था के अनुसार
होगा। १३ (क्योंकि परमेश्वर के यहां
व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर
व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए
जाएंगे। १४ फिर जब अन्यजाति लोग
जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से
व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था
उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये
आप ही व्यवस्था हैं। १५ वे व्यवस्था की
बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते
हैं और उन के विवेक* भी गवाही देते हैं,
और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती,
या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं।) १६ जिस
दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार
यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों
का न्याय करेगा॥

१७ यदि तू यहूदी कहलाता है, और
व्यवस्था पर भरोसा रखता है, और
परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है।
१८ और उस की इच्छा जानता और
व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम उत्तम
बातों को प्रिय जानता है। १९ और अपने
पर भरोसा रखता है, कि मैं अंधों का
अगुवा, और अंधकार में पड़े हुओं की
ज्योति। २० और बुद्धिहीनों का सिखाने-
वाला, और बालकों का उपदेशक हूं, और
ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में
है, मुझे मिला है। २१ सो क्या तू जो
औरों को सिखाता है, अपने आप को नहीं
सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का
उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है?
२२ तू जो कहता है, व्यभिचार न करना,
क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो
मूरतों से घृणा करता है, क्या आप
ही मन्दिरों को लूटता है। २३ तू जो
व्यवस्था के विषय में घमण्ड करता है, क्या
व्यवस्था न मानकर, परमेश्वर का अनादर
करता है? २४ क्योंकि तुम्हारे कारण

* अर्थात् मन या कान्शन्स।

अन्यजातियो में परमेश्वर के नाम की निन्दा
की जाती है जैसा लिखा भी है। २५ यदि
तू व्यवस्था पर चले, तो खतने से लाभ तो
है, परन्तु यदि तू व्यवस्था को न माने, तो
तेरा खतना बिन खतना की दशा ठहरा।
२६ सो यदि खतनारहित मनुष्य व्यवस्था
की विधियो को माना करे, तो क्या उस की
बिन खतना की दशा खतने के बराबर न
गिनी जाएगी? २७ और जो मनुष्य जाति
के कारण बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्था
को पूरा करे, तो क्या तुझे जो लेख पाने
और खतना किए जाने पर भी व्यवस्था को
माना नही करता है, दोषी न ठहराएगा?
२८ क्योकि वह यहूदी नही, जो प्रगट मे
यहूदी है, और न वह खतना है, जो प्रगट मे
है, और देह मे है। २९ पर यहूदी वही है,
जो मन मे है, और खतना वही है, जो हृदय
का और आत्मा मे है, न कि लेख का ऐसे
की प्रशसा मनुष्यो की ओर से नही, परन्तु
परमेश्वर की ओर से होती है॥

३ सो यहूदी की क्या बडाई, या खतने
का क्या लाभ? २ हर प्रकार से
बहुत कुछ। पहिले तो यह कि परमेश्वर के
वचन उन को सौपे गए। ३ यदि कितने
विश्वासघाती निकले भी तो क्या हुआ।
क्या उन के विश्वासघाती होने से परमेश्वर
की सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी? ४ कदापि
नही, वरन परमेश्वर सच्चा और हर एक
मनुष्य झूठा ठहरे, जैसा लिखा है, कि जिस
से तू अपनी बातो में धर्मी ठहरे और न्याय
करते समय तू जय पाए। ५ सो यदि
हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा
देता है, तो हम क्या कहे? क्या यह कि
परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है?
(यह तो मै मनुष्य की रीति पर कहता हू)।
६ कदापि नही, नही तो परमेश्वर क्योकर
जगत का न्याय करेगा? ७ यदि मेरे झूठ
के कारण परमेश्वर की सच्चाई उस की
महिमा के लिये अधिक करके प्रगट हुई, तो
फिर क्यो पापी की नाई मै दण्ड के योग्य
ठहराया जाता हू? ८ और हम क्यो बुराई
न करे, कि भलाई निकले? जब हम पर
यही दोष लगाया भी जाता है, और कितने
कहते है, कि इन का यही कहना है. परन्तु
ऐसो का दोषी ठहराना ठीक है॥

९ तो फिर क्या हुआ? क्या हम उन से
अच्छे है? कभी नही, क्योकि हम यहूदियो
और यूनानियो दोनो पर यह दोष लगा चुके
है कि वे सब के सब पाप के वश मे है।
१० जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नही,
एक भी नही। ११ कोई समझदार नही,
कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नही।
१२ सब भटक गए है, सब के सब निकम्मे
बन गए, कोई भलाई करनेवाला नही, एक
भी नही। १३ उन का गला खुली हुई
कब्र है उन्हो ने अपनी जीभो से छल
किया है उन के होठो मे सापो का विष
है। १४ और उन का मुह श्राप और
कडवाहट से भरा है। १५ उन के पाव
लोहू बहाने को फुर्तीले है। १६ उन के
मार्गो मे नाश और क्लेश है। १७ उन्हो ने
कुशल का मार्ग नही जाना। १८ उन की
आखो के साम्हने परमेश्वर का भय नही॥

१९ हम जानते है, कि व्यवस्था जो कुछ
कहती है उन्ही से कहती है, जो व्यवस्था के
आधीन है इसलिये कि हर एक मुह बन्द
किया जाए, और सारा ससार परमेश्वर के
दण्ड के योग्य ठहरे। २० क्योकि व्यवस्था
के कामो से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी
नही ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा
पाप की पहिचान होती है। २१ पर अब

बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता
प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और
भविष्यद्वक्ता देते हैं। २२ अर्थात् परमेश्वर
की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर
विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के
लिये है, क्योंकि कुछ भेद नहीं। २३ इस-
लिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर
की महिमा से रहित हैं। २४ परन्तु उसके
अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह
यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।
२५ उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण
एक ऐसा प्रायश्चित्त ठहराया, जो विश्वास
करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप
पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने
अपनी सहनशीलता से आनाकानी की,
उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट
करे। २६ वरन इसी समय उस की
धार्मिकता प्रगट हो, कि जिस से वह आप ही
धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे,
उसका भी धर्मी ठहरानेवाला हो। २७ तो
घमण्ड करना कहां रहा? उस की तो जगह
ही नहीं कौन सी व्यवस्था के कारण से?
क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, वरन
विश्वास की व्यवस्था के कारण। २८ इस-
लिये हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि
मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास
के द्वारा धर्मी ठहरता है। २९ क्या
परमेश्वर केवल यहूदियों ही का है? क्या
अन्यजातियों का नहीं? हां, अन्यजातियों
का भी है। ३० क्योंकि एक ही परमेश्वर
है, जो खतनावालों को विश्वास से और
खतनारहितों को भी विश्वास के द्वारा
धर्मी ठहराएगा। ३१ तो क्या हम व्यवस्था
को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं?
कदापि नहीं, वरन व्यवस्था को स्थिर
करते हैं॥

४ सो हम क्या कहें, कि हमारे शारी-
रिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त
हुआ? २ क्योंकि यदि इब्राहीम कामों से
धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने
की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट
नहीं। ३ पवित्र शास्त्र क्या कहता है?
यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास
किया *, और यह उसके लिये धार्मिकता
गिना गया। ४ काम करनेवाले की मजदूरी
देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता
है। ५ परन्तु जो काम नहीं करता वरन
भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास
करता है, उसका विश्वास उसके लिये
धार्मिकता गिना जाता है। ६ जिसे
परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है,
उसे दाऊद भी धन्य कहता है। ७ कि धन्य
वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के
पाप ढांपे गए। ८ धन्य है वह मनुष्य जिसे
परमेश्वर पापी न ठहराए। ९ तो यह
धन्य कहना, क्या खतनावालों ही के लिये है,
या खतनारहितों के लिये भी? हम यह
कहते हैं, कि इब्राहीम के लिये उसका
विश्वास धार्मिकता गिना गया। १० तो
वह क्योंकर गिना गया? खतने की दशा में
या बिना खतने की दशा में? खतने की
दशा में नहीं परन्तु बिना खतने की दशा में।
११ और उस ने खतने का चिन्ह पाया, कि
उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो
जाए, जो उस ने बिना खतने की दशा में रखा
था जिस से वह उन सब का पिता ठहरे,
जो बिना खतने की दशा में विश्वास करते
हैं, और कि वे भी धर्मी ठहरें। १२ और
उन खतना किए हुओं का पिता हो, जो न
केवल खतना किए हुए हैं, परन्तु हमारे पिता

* यू० की प्रतीति की।

इब्राहीम के उस विश्वास की लीक पर चा
लते हैं, जो उसे बिन खतने की दशा
में था। १३ क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि
वह जगत का वारिस होगा, न इब्राहीम को,
न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई
थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा
मिली। १४ क्योंकि यदि व्यवस्थावाले
वारिस हैं तो विश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा
निष्फल ठहरी। १५ व्यवस्था तो क्रोध
उपजाती है और जहां व्यवस्था नहीं वहां
उसका टालना भी नहीं। १६ इसी कारण
वह विश्वास के द्वारा मिलती है, कि अनुग्रह
की रीति पर हो, कि प्रतिज्ञा सब वंश के लिये
दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्था-
वाला है, वरन उन के लिये भी जो इब्राहीम
के समान विश्वासवाले हैं वही तो हम
सब का पिता है। १७ (जैसा लिखा है,
कि मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता
ठहराया है), उस परमेश्वर के साम्हने जिस
पर उस ने विश्वास किया और जो मरे हुओं
को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं,
उन का नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं।
१८ उस ने निराशा में भी आशा रखकर
विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के
अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी
जातियों का पिता हो। १९ और वह जो
एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर
और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा
जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ।
२० और न अविश्वासी होकर परमेश्वर
की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में
दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की।
२१ और निश्चय जाना, कि जिस बात की
उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को
भी सामर्थी है। २२ इस कारण, यह उसके
लिये धार्मिकता गिना गया। २३ और
यह वचन, कि विश्वास उसके लिये
धार्मिकता गिना गया, न केवल उसी के
लिये लिखा गया। २४ वरन हमारे लिये
भी जिन के लिये विश्वास धार्मिकता गिना
जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर
विश्वास करते हैं जिस ने हमारे प्रभु यीशु
को मरे हुओं में से जिलाया। २५ वह
हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया,
और हमारे धर्मी ठहरने के लिये जिलाया
भी गया॥

५ सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे
तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा
परमेश्वर के साथ मेल रखें। २ जिस के
द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक,
जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई,
और परमेश्वर की महिमा की आशा पर
घमण्ड करें। ३ केवल यही नहीं, वरन हम
क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि
क्लेश से धीरज। ४ और धीरज से खरा
निकलना, और खरे निकलने से आशा
उत्पन्न होती है। ५ और आशा से लज्जा
नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें
दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम
हमारे मन में डाला गया है। ६ क्योंकि
जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय
पर भक्तिहीनों के लिये मरा। ७ किसी
धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ
है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के
लिये कोई मरने का भी हियाव करे।
८ परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की
भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब
हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये
मरा। ९ सो जब कि हम, अब उसके लोहू
के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध
से क्यों न बचेंगे? १० क्योंकि बैरी होने

की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा
हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर
मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम
उद्धार क्यों न पाएंगे? ११ और केवल
यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह
के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ
है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी
करते हैं॥

१२ इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा
पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु
आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में
फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।
१३ क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप
जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं,
वहां पाप गिना नहीं जाता। १४ तौभी
आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों
पर भी राज्य किया, जिन्हों ने उस आदम के
अपराध की नाईं जो उस आनेवाले का
चिन्ह है, पाप न किया। १५ पर जैसा
अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के वरदान
की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध
से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह
और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात्
यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुतेरे लोगों
पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ। १६ और
जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ,
वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही
के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ,
परन्तु बहुतेरे अपराधों से ऐसा वरदान
उत्पन्न हुआ, कि लोग धर्मी ठहरे।
१७ क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के
कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य
किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी
वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के,
अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त
जीवन में राज्य करेंगे। १८ इसलिये जैसा
एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की
आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का
काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के
निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।
१९ क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न
मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक
मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी
ठहरेंगे। २० और व्यवस्था बीच में आ
गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप
बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं
अधिक हुआ। २१ कि जैसा पाप ने मृत्यु
फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त
जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य
करे॥

६ सो हम क्या कहें? क्या हम पाप
करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?
२ कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर
गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन
बिताएं? ३ क्या तुम नहीं जानते, कि हम
जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया,
तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? ४ सो
उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके
साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की
महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया,
वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।
५ क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की
समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो
निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी
जुट जाएंगे। ६ क्योंकि हम जानते हैं, कि
हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर
चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो
जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में
न रहें। ७ क्योंकि जो मर गया, वह पाप
से छूटकर धर्मी ठहरा। ८ सो यदि हम

मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास
यह है, कि उसके साथ जीएंगे भी।
९ क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं
में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस
पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की।
१० क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के
लिये एक ही बार मर गया, परन्तु जो
जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।
११ ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के
लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये
मसीह यीशु में जीवित समझो॥

१२ इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार
शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की
लालसाओं के आधीन रहो। १३ और न
अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के
लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे
हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर
को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के
हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
१४ और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी,
क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन
अनुग्रह के आधीन हो॥

१५ तो क्या हुआ? क्या हम इसलिये
पाप करें, कि हम व्यवस्था के आधीन नहीं
बरन अनुग्रह के आधीन हैं? कदापि
नहीं। १६ क्या तुम नहीं जानते, कि जिस
की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को
दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो
और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस
का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के,
जिस का अन्त धार्मिकता है? १७ परन्तु
परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप
के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के
माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले
गए थे। १८ और पाप से छुड़ाए जाकर
धर्म के दास हो गए। १९ मैं तुम्हारी
शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की
रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगों
को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के
दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों
को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप
दो। २० जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म
की ओर से स्वतंत्र थे। २१ सो जिन बातों
से अब तुम लज्जित होते हो, उन से उस
समय तुम क्या फल पाते थे? २२ क्योंकि
उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से
स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर
तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त
होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।
२३ क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है,
परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु
मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥

७ हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते
(मैं व्यवस्था के जाननेवालों से कहता
हूं), कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है,
तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती
है? २ क्योंकि विवाहिता स्त्री व्यवस्था के
अनुसार अपने पति के जीते जी उस से बन्धी
है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो वह पति
की व्यवस्था से छूट गई। ३ सो यदि पति
के जीते जी वह किसी दूसरे पुरुष की हो
जाए, तो व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु
यदि पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से
छूट गई, यहां तक कि यदि किसी दूसरे पुरुष
की हो जाए तौभी व्यभिचारिणी न ठहरेगी।
४ सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की
देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन
गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं
में से जी उठा ताकि हम परमेश्वर के लिये
फल लाएं। ५ क्योंकि जब हम शारीरिक
थे, तो पापों की अभिलाषायें जो व्यवस्था के

द्वारा थी, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिये
हमारे अंगों में काम करती थी। ६ परन्तु
जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर,
अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की
पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की
नई रीति पर सेवा करते हैं॥

७ तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप
है? कदापि नहीं! वरन बिना व्यवस्था के
मैं पाप को नहीं पहिचानता: व्यवस्था यदि
न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच
को न जानता। ८ परन्तु पाप ने अवसर
पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का
लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था
पाप मुर्दा है। ९ मैं तो व्यवस्था बिना
पहिले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई,
तो पाप जी गया, और मैं मर गया।
१० और वही आज्ञा जो जीवन के लिये
थी, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी।
११ क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के
द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा
मुझे मार भी डाला। १२ इसलिये
व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक
और अच्छी है। १३ तो क्या वह जो
अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि
नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा
मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ
कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा
के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।
१४ क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो
आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक और पाप के
हाथ बिका हुआ हूं। १५ और जो मैं करता
हूं, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो मैं
चाहता हूं, वह नहीं किया करता, परन्तु
जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता
हूं। १६ और यदि, जो मैं नहीं चाहता
वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि
व्यवस्था भली है। १७ तो ऐसी दशा में
उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन पाप है,
जो मुझ में बसा हुआ है। १८ क्योंकि मैं
जानता हूं, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में
कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा
तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन
नहीं पड़ते। १९ क्योंकि जिस अच्छे काम
की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता,
परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता,
वही किया करता हूं। २० परन्तु यदि मैं
वही करता हूं, जिस की इच्छा नहीं करता,
तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप
जो मुझ में बसा हुआ है। २१ सो मैं यह
व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की
इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती
है। २२ क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से
तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न
रहता हूं। २३ परन्तु मुझे अपने अंगों में
दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है,
जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है,
और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में
डालती है जो मेरे अंगों में है। २४ मैं कैसा
अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से
कौन छुड़ाएगा? २५ मैं अपने प्रभु यीशु
मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता
हूं: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की
व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की
व्यवस्था का सेवन करता हूं॥

८ सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन
पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे
शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के
अनुसार चलते हैं। २ क्योंकि जीवन की
आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे
पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र
कर दिया। ३ क्योंकि जो काम व्यवस्था

शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी,
उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही
पुत्र को पापमय शरीर की समानता में,
और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर,
शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
४ इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में
जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के
अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए। ५ क्योंकि
शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन
लगाते हैं, परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की
बातों पर मन लगाते हैं। ६ शरीर पर मन
लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन
लगाना जीवन और शान्ति है। ७ क्योंकि
शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर
रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की
व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता
है। ८ और जो शारीरिक दशा में हैं, वे
परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
९ परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम
में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं,
परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में
मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन
नहीं। १० और यदि मसीह तुम में है,
तो देह पाप के कारण मरी हुई है, परन्तु
आत्मा धर्म के कारण जीवित है। ११ और
यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे
हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है,
तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से
जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी
अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ
है जिलाएगा॥

१२ सो हे भाइयो, हम शरीर के
कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन
काटें। १३ क्योंकि यदि तुम शरीर के
अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा
से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित
रहोगे। १४ इसलिये कि जितने लोग
परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे
ही परमेश्वर के पुत्र हैं। १५ क्योंकि तुम
को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर
भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा
मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता
कहकर पुकारते हैं। १६ आत्मा आप ही
हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि
हम परमेश्वर की सन्तान हैं। १७ और
यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन
परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी
वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख
उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥

१८ क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय
के दुःख और क्लेश उस महिमा के साम्हने,
जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं
हैं। १९ क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी
दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की
बाट जोह रही है। २० क्योंकि सृष्टि
अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करनेवाले
की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से
की गई। २१ कि सृष्टि भी आप ही विनाश
के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की
सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त
करेगी। २२ क्योंकि हम जानते हैं, कि
सारी सृष्टि अब तक मिलकर कहरती
और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। २३ और
केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास
आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में
कहरते हैं, और लेपालक होने की, अर्थात्
अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।
२४ आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ
है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है,
जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहां
रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा
है उस की आशा क्या करेगा? २५ परन्तु

जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की
आशा रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट
जोहते भी हैं॥
२६ इसी रीति से आत्मा भी हमारी
दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम
नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना
चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें
भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे
लिये बिनती करता है। २७ और मनों का
जांचनेवाला जानता है, कि आत्मा की मनसा
क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये
परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती
करता है। २८ और हम जानते हैं, कि जो
लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये
सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न
करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की
इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।
२९ क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान
लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि
उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत
भाइयों में पहिलौठा ठहरे। ३० फिर जिन्हें
उस ने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी,
और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया
है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा
भी दी है॥
३१ सो हम इन बातों के विषय में क्या
कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो
हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
३२ जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख
छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया
वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर
न देगा? ३३ परमेश्वर के चुने हुओं पर
दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो
उनको धर्मी ठहरानेवाला है। ३४ फिर
कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह
है जो मर गया वरन मुर्दों में से जी भी उठा,
और परमेश्वर की दहिनी ओर है, और
हमारे लिये निवेदन भी करता है। ३५ कौन
हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?
क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल,
या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार?
३६ जैसा लिखा है, कि तेरे लिये हम दिन
भर घात किए जाते हैं, हम वध होनेवाली
भेड़ों की नाईं गिने गए हैं। ३७ परन्तु इन
सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से
प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।
३८ क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न
मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं,
न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
३९ न गहिराई और न कोई और सृष्टि,
हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु
मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

९ मैं मसीह में सच कहता हूं, झूठ नहीं
बोलता और मेरा विवेक * भी पवित्र
आत्मा में गवाही देता है। २ कि मुझे बड़ा
शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता
है। ३ क्योंकि मैं यहां तक चाहता था, कि
अपने भाइयों के लिये जो शरीर के भाव से
मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह से शापित हो
जाता। ४ वे इस्त्राएली हैं, और लेपालकपन
का हक्क और महिमा और वाचाएं और
व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएं उन्हीं
की हैं। ५ पुरखे भी उन्हीं के हैं, और
मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ,
जो सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग
धन्य है। आमीन। ६ परन्तु यह नहीं, कि
परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिये कि
जो इस्त्राएल के वंश हैं, वे सब इस्त्राएली
नहीं। ७ और न इब्राहीम के वंश होने के
कारण सब उस की सन्तान ठहरे, परन्तु

* अर्थात् मन या कानशन्स।

(लिखा है) कि इसहाक ही से तेरा वश
कहलाएगा। ८ अर्थात् शरीर की सन्तान
परमेश्वर की सन्तान नही, परन्तु प्रतिज्ञा के
सन्तान वश गिने जाते हैं। ९ क्योंकि
प्रतिज्ञा का वचन यह है, कि मैं इस समय के
अनुसार आऊगा, और सारा के पुत्र होगा।
१० और केवल यही नही, परन्तु जव
रिवका भी एक से अर्थात् हमारे पिता
इसहाक से गर्भवती थी। ११ और अभी
तक न तो वालक जन्मे थे, और न उन्हो ने
कुछ भला या वुरा किया था कि उस ने कहा,
कि जेठा छुटके का दास होगा। १२ इस-
लिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके
चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण
नही, परन्तु वुलानेवाले पर वनी रहे।
१३ जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूव से प्रेम
किया, परन्तु एसौ को अप्रिय जाना॥

१४ सो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर
के यहा अन्याय है? कदापि नही!
१५ क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस
किसी पर दया करना चाहू, उस पर दया
करूगा, और जिस किसी पर कृपा करना
चाहू उसी पर कृपा करूगा। १६ सो यह
न तो चाहनेवाले की, न दौड़नेवाले की
परन्तु दया करनेवाले परमेश्वर की वात
है। १७ क्योंकि पवित्र शास्त्र में फिरौन
से कहा गया, कि मैं ने तुझे इसी लिये खडा
किया है, कि तुझ मे अपनी सामर्थ दिखाऊ,
और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर
हो। १८ सो वह जिस पर चाहता है,
उस पर दया करता है, और जिसे चाहता
है, उसे कठोर कर देता है॥

१९ सो तू मुझ से कहेगा, वह फिर क्यो
दोष लगाता है? कौन उस की इच्छा का
साम्हना करता है? २० हे मनुष्य, भला
तू कौन है, जो परमेश्वर का साम्हना करता
है? क्या गढी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह
सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यो वनाया
है? २१ क्या कुम्हार को मिट्टी पर
अधिकार नही, कि एक ही लोदे मे से, एक
वरतन आदर के लिये, और दूसरे को
अनादर के लिये वनाए? तो इस में कौन
सी अचम्भे की वात है? २२ कि परमेश्वर
ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी सामर्थ
प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के वरतनो
की, जो विनाश के लिये तैयार किए गए
थे वडे धीरज से सही। २३ और दया के
वरतनो पर जिन्हे उस ने महिमा के लिये
पहिले से तैयार किया, अपने महिमा के धन
को प्रगट करने की इच्छा की? २४ अर्थात्
हम पर जिन्हें उस ने न केवल यहूदियो मे से,
वरन अन्यजातियो मे से भी वुलाया।
२५ जैसा वह होशे की पुस्तक मे भी कहता
है, कि जो मेरी प्रजा न थी, उन्हे मै अपनी
प्रजा कहूगा, और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया
कहूगा। २६ और ऐसा होगा कि जिस
जगह मे उन से यह कहा गया था, कि तुम
मेरी प्रजा नही हो, उसी जगह वे जीवते
परमेश्वर की सन्तान कहलाएगे। २७ और
यशायाह इस्राएल के विषय में पुकारकर
कहता है, कि चाहे इस्राएल की सन्तानो की
गिनती समुद्र के वालू के वरावर हो, तौभी
उन में से थोडे ही वचेगे। २८ क्योंकि प्रभु
अपना वचन पृथ्वी पर पूरा करके, धार्मिकता
से शीघ्र उसे सिद्ध करेगा। २९ जैसा
यशायाह ने पहिले भी कहा था, कि यदि
सेनाओ का प्रभु हमारे लिये कुछ वश न
छोडता, तो हम सदोम की नाई हो जाते,
और अमोरा के सरीखे ठहरते॥

३० सो हम क्या कहे? यह कि अन्य-
जातियो ने जो धार्मिकता की खोज नही
करते थे, धार्मिकता प्राप्त की अर्थात् उस

धार्मिकता को जो विश्वास से है। ३१ परन्तु
इस्राएली, जो धर्म की व्यवस्था की खोज
करते हुए उस व्यवस्था तक नहीं पहुंचे।
३२ किस लिये? इसलिये कि वे विश्वास
से नहीं, परन्तु मानो कर्मों से उस की खोज
करते थे: उन्हों ने उस ठोकर के पत्थर पर
ठोकर खाई। ३३ जैसा लिखा है, देखो
मैं सिय्योन में एक ठेस लगने का पत्थर,
और ठोकर खाने की चटान रखता हूं,
और जो उस पर विश्वास करेगा, वह
लज्जित न होगा॥

१० हे भाइयो, मेरे मन की अभि-
लाषा और उन के लिये परमेश्वर
से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं।
२ क्योंकि मैं उन की गवाही देता हूं, कि
उन को परमेश्वर के लिये धुन रहती है,
परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं। ३ क्योंकि
वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान
होकर, और अपनी धार्मिकता स्थापन करने
का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के
आधीन न हुए। ४ क्योंकि हर एक
विश्वास करनेवाले के लिये धार्मिकता के
निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।
५ क्योंकि मूसा ने यह लिखा है, कि जो
मनुष्य उस धार्मिकता पर जो व्यवस्था से
है, चलता है, वह इसी कारण जीवित
रहेगा। ६ परन्तु जो धार्मिकता विश्वास
से है, वह यों कहती है, कि तू अपने मन में
यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा?
(अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिये!)
७ या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात्
मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर
लाने के लिये!) ८ परन्तु क्या कहती
है? यह, कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह
में और तेरे मन में है, यह वही विश्वास का
वचन है, जो हम प्रचार करते हैं। ९ कि
यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर
अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास
करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से
जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।
१० क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से
विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये
मुंह से अंगीकार किया जाता है।
११ क्योंकि पवित्र शास्त्र यह कहता है,
कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह
लज्जित न होगा। १२ यहूदियों और
यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि
वह सब का प्रभु है, और अपने सब नाम*
लेनेवालों के लिये उदार है। १३ क्योंकि
जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार
पाएगा। १४ फिर जिस पर उन्हों ने
विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम†
क्योंकर लें? और जिस की नहीं सुनी उस
पर क्योंकर विश्वास करें? १५ और
प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि
भेजे न जाएं, तो क्योंकर प्रचार करें?
जैसा लिखा है, कि उन के पांव क्या ही
सोहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार
सुनाते हैं!

१६ परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर
कान न लगाया: यशायाह कहता है, कि
हे प्रभु, किस ने हमारे समाचार की प्रतीति
की है? १७ सो विश्वास सुनने से, और
सुनना मसीह के वचन से होता है।
१८ परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्हों ने नहीं
सुना? सुना तो सही क्योंकि लिखा है कि
उन के स्वर सारी पृथ्वी पर, और उन के
वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं।
१९ फिर मैं कहता हूं। क्या इस्राएली

* प्रार्थना करनेवाला।
† यू० समाचार।

नही जानते थे ? पहिले तो मूसा कहता है,
कि मैं उन के द्वारा जो जाति नही, तुम्हारे
मन मे जलन उपजाऊगा, मैं एक मूढ जाति
के द्वारा तुम्हे रिस दिलाऊगा। २० फिर
यशायाह बडे हियाव के साथ कहता है, कि
जो मुझे नही ढूढते थे, उन्हो ने मुझे पा
लिया और जो मुझे पूछते भी न थे, उन
पर मैं प्रगट हो गया। २१ परन्तु इस्राएल
के विषय मे वह यह कहता है कि मैं सारे
दिन अपने हाथ एक आज्ञा न माननेवाली
और विवाद करनेवाली प्रजा की ओर पसारे
रहा ॥

११ इसलिये मै कहता हू, क्या
परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग
दिया ? कदापि नही, मैं भी तो इस्राएली
हू इब्राहीम के वश और बिन्यामीन के
गोत्र में से हू। २ परमेश्वर ने अपनी उस
प्रजा को नही त्यागा, जिसे उस ने पहिले
ही से जाना क्या तुम नही जानते, कि
पवित्र शास्त्र एलियाह की कथा मे क्या
कहता है, कि वह इस्राएल के विरोध मे
परमेश्वर से विनती करता है। ३ कि हे
प्रभु, उन्हो ने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात
किया, और तेरी वेदियो को ढा दिया है,
और मैं ही अकेला बच रहा हू, और वे मेरे
प्राण के भी खोजी है। ४ परन्तु परमेश्वर
से उसे क्या उत्तर मिला कि मैं ने अपने लिये
सात हजार पुरुषो को रख छोडा है जिन्हो ने
बाअल के आगे घुटने नही टेके है। ५ सो
इसी रीति से इस समय भी, अनुग्रह से चुने
हुए कितने लोग बाकी है। ६ यदि यह
अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मो से नही,
नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नही रहा।
७ सो परिणाम क्या हुआ ? यह कि
इस्राएली जिस की खोज में है, वह उन को
नही मिला, परन्तु चुने हुओं को मिला,
और शेष लोग कठोर किए गए है। ८ जैसा
लिखा है, कि परमेश्वर ने उन्हे आज के
दिन तक भारी नीद मे डाल रखा * है और
ऐसी आखे दी जो न देखें और ऐसे कान जो
न सुनें। ९ और दाऊद कहता है, उन का
भोजन उन के लिये जाल, और फन्दा, और
ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए।
१० उन की आखो पर अन्धेरा छा जाए
ताकि न देखे, और तू सदा उन की पीठ को
झुकाए रख। ११ सो मैं कहता हू क्या
उन्हो ने इसलिये ठोकर खाई, कि गिर पडे ?
कदापि नही परन्तु उन के गिरने के
कारण अन्यजातियो को उद्धार मिला, कि
उन्हे जलन † हो। १२ सो यदि उन का
गिरना जगत के लिये धन और उन की घटी
अन्यजातियो के लिये सम्पत्ति का कारण
हुआ, तो उन की भरपूरी से कितना न
होगा ॥

१३ मैं तुम अन्यजातियो से यह बातें
कहता हू जब कि मैं अन्यजातियो के लिये
प्रेरित हू, तो मैं अपनी सेवा की बडाई करता
हू। १४ ताकि किसी रीति से मैं अपने
कुटुम्बियो मे जलन † करवाकर उन मे से
कई एक का उद्धार कराऊ। १५ क्योकि
जब कि उन का त्याग दिया जाना जगत के
मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उन का
ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने
के बराबर न होगा ? १६ जब भेट का
पहिला पेडा पवित्र ठहरा, तो पूरा गुधा
हुआ आटा भी पवित्र है और जब जड
पवित्र ठहरी, तो डालिया भी ऐसी ही है।
१७ और यदि कई एक डाली तोड दी गई,

* यू० भारी नींद का आत्मा दिया।
† या उत्साह, ईर्षा, गैरत।

और तू जंगली जलपाई होकर उन में *
साटा गया, और जलपाई की जड़ की
चिकनाई का भागी हुआ है। १८ तो
डालियों पर घमण्ड न करना और यदि
तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को
नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है।
१९ फिर तू कहेगा डालियां इसलिये तोड़ी
गईं, कि मैं साटा जाऊं। २० भला, वे तो
अविश्वास के कारण तोड़ी गईं, परन्तु तू
विश्वास से बना रहता है इसलिये अभि-
मानी न हो, परन्तु भय कर। २१ क्योंकि
जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियां न
छोड़ीं, तो तुझे भी न छोड़ेगा। २२ इसलिये
परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख!
जो गिर गए, उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर
कृपा, यदि तू उस में बना रहे, नहीं तो, तू
भी काट डाला जाएगा। २३ और वे भी
यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएंगे
क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता
है। २४ क्योंकि यदि तू उस जलपाई से,
जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और
स्वभाव के विरुद्ध अच्छी जलपाई में साटा
गया तो ये जो स्वाभाविक डालियां हैं,
अपने ही जलपाई में साटे क्यों न जाएंगे॥
२५ हे भाइयो, कहीं ऐसा न हो, कि तुम
अपने आप को बुद्धिमान समझ लो, इस-
लिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से
अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां
पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक
इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा।
२६ और इस रीति से सारा इस्राएल
उद्धार पाएगा, जैसा लिखा है, कि छुड़ाने-
वाला सिय्योन से आएगा, और अभक्ति को
याकूब से दूर करेगा। २७ और उन के

* या की जगह।

साथ मेरी यही वाचा होगी, जब कि मैं
उन के पापों को दूर कर दूंगा। २८ वे
सुसमाचार के भाव से तो तुम्हारे बैरी हैं,
परन्तु चुन लिए जाने के भाव से बापदादों
के प्यारे हैं। २९ क्योंकि परमेश्वर अपने
वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं
हटता। ३० क्योंकि जैसे तुम ने पहिले
परमेश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु अभी
उन के आज्ञा न मानने से तुम पर दया हुई।
३१ वैसे ही उन्हों ने भी अब आज्ञा न मानी
कि तुम पर जो दया होती है इस से उन पर
भी दया हो। ३२ क्योंकि परमेश्वर ने
सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर
रखा ताकि वह सब पर दया करे॥
३३ आहा! परमेश्वर का धन और
बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके
विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे
अगम हैं! ३४ प्रभु की बुद्धि को किस ने
जाना? या उसका मंत्री कौन हुआ?
३५ या किस ने पहिले उसे कुछ दिया है
जिस का बदला उसे दिया जाए।
३६ क्योंकि उस की ओर से, और उसी के
द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है
उस की महिमा युगानुयुग होती रहे
आमीन॥

१२ इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से
परमेश्वर की दया स्मरण दिला
कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को
जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को
भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ यही
तुम्हारी आत्मिक * सेवा है। २ और इस
संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी
बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन
भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की

* या मानसिक।

भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव
से मालूम करते रहो॥
३ क्योंकि मै उस अनुग्रह के कारण जो
मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता
हू, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढकर
कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा
परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के
अनुसार बाट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के
साथ अपने को समझे। ४ क्योंकि जैसे
हमारी एक देह में बहुत से अग है, और सब
अगो का एक ही सा काम नही। ५ वैसा
ही हम जो बहुत है, मसीह मे एक देह होकर
आपस मे एक दूसरे के अग है। ६ और
जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमे
दिया गया है, हमे भिन्न भिन्न वरदान मिले
है, तो जिस को भविष्यद्वाणी का दान मिला
हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार
भविष्यद्वाणी करे। ७ यदि सेवा करने का
दान मिला हो, तो सेवा मे लगा रहे, यदि
कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा
रहे। ८ जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने
में लगा रहे, दान देनेवाला उदारता* से
दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे, जो
दया करे, वह हर्ष से करे। ९ प्रेम निष्कपट
हो, बुराई से घृणा करो, भलाई में लगे
रहो। १० भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे
पर मया रखो, परस्पर आदर करने में
एक दूसरे से बढ चलो। ११ प्रयत्न करने
में आलसी न हो, आत्मिक उन्माद मे भरे
रहो, प्रभु की सेवा करते रहो। १२ आशा
में आनन्दित रहो, क्लेश में स्थिर रहो,
प्रार्थना में नित्य लगे रहो। १३ पवित्र
लोगो को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की
सहायता करो, पहुनाई करने मे लगे रहो।

* या सिधाई।

१४ अपने सतानेवालों को आशीष दो;
आशीष दो स्राप न दो। १५ आनन्द
करनेवालो के साथ आनन्द करो, और
रोनेवालो के साथ रोओ। १६ आपस में
एक सा मन रखो, अभिमानी न हो,
परन्तु दीनो के साथ सगति रखो, अपनी
दृष्टि मे बुद्धिमान न हो। १७ बुराई के
बदले किसी से बुराई न करो, जो बातें सब
लोगो के निकट भली है, उन की चिन्ता
किया करो। १८ जहा तक हो सके, तुम
अपने भरसक सब मनुष्यो के साथ मेल
मिलाप रखो। १९ हे प्रियो अपना पलटा
न लेना, परन्तु क्रोध* को अवसर दो,
क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है,
प्रभु कहता है मै ही बदला दूगा। २० परन्तु
यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना
खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी
पिला, क्योंकि ऐसा करने से तू उसके
सिर पर आग के अगारो का ढेर लगाएगा।
२१ बुराई से न हारो परन्तु भलाई से
बुराई को जीत लो॥

१३ हर एक व्यक्ति प्रधान अधि-
कारियो के आधीन रहे, क्योंकि
कोई अधिकार ऐसा नही, जो परमेश्वर की
ओर से न हो, और जो अधिकार है, वे
परमेश्वर के ठहराए हुए है। २ इस से जो
कोई अधिकार का विरोध करता है, वह
परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है,
और साम्हना करनेवाले दण्ड पाएगे।
३ क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नही,
परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण है,
सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता
है, तो अच्छा काम कर और उस की ओर से
तेरी सराहना होगी, ४ क्योंकि वह तेरी

* या परमेश्वर का क्रोध।

भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है।
परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर, क्योंकि
वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नही और
परमेश्वर का सेवक है, कि उसके क्रोध के
अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे।
५ इसलिये आधीन रहना न केवल उस
क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन
विवेक * भी यही गवाही देता है। ६ इस-
लिये कर भी दो, क्योंकि वे परमेश्वर के
सेवक है, और सदा इसी काम मे लगे रहते
है। ७ इसलिये हर एक का हक्क चुकाया
करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो, जिसे
महसूल चाहिए, उसे महसूल दो, जिस से
डरना चाहिए, उस से डरो, जिस का आदर
करना चाहिए उसका आदर करो॥
८ आपस के प्रेम को छोड और किसी
बात मे किसी के कर्जदार न हो, क्योंकि
जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था
पूरी की है। ९ क्योंकि यह कि व्यभिचार
न करना, हत्या न करना, चोरी न करना,
लालच न करना, और इन को छोड और
कोई भी आज्ञा हो तो सब का साराश इस
बात मे पाया जाता है, कि अपने पडोसी से
अपने समान प्रेम रख। १० प्रेम पडोसी
की कुछ बुराई नही करता, इसलिये प्रेम
रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥
११ और समय को पहिचान कर ऐसा
ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नीद
से जाग उठने की घडी आ पहुची है, क्योंकि
जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस
समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट
है। १२ रात बहुत बीत गई है, और दिन
निकलने पर है, इसलिये हम अन्धकार के
कामो को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध
ले। १३ जैसा दिन को सोहता है, वैसा
ही हम सीधी चाल चलें, न कि लीला क्रीडा,
और पियक्कडपन, न व्यभिचार, और
लुचपन मे, और न झगडे और डाह में।
१४ वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो,
और शरीर के अभिलाषो को पूरा करने का
उपाय न करो॥

१४ जो विश्वास मे निर्बल है, उसे
अपनी सगति में ले लो, परन्तु
उस की शकाओ पर विवाद करने के लिये
नही। २ क्योंकि एक को विश्वास है, कि
सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास
मे निर्बल है, वह साग पात ही खाता है।
३ और खानेवाला न-खानेवाले को तुच्छ
न जाने, और न-खानेवाला खानेवाले पर
दोष न लगाए, क्योंकि परमेश्वर ने उसे
ग्रहण किया है। ४ तू कौन है जो दूसरे
के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर
रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से
सम्बन्ध रखता है, वरन वह स्थिर ही कर
दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख
सकता है। ५ कोई तो एक दिन को दूसरे
से बढकर जानता है, और कोई सब दिन एक
सा जानता है हर एक अपने ही मन मे
निश्चय कर ले। ६ जो किसी दिन को
मानता है, वह प्रभु के लिये मानता है
जो खाता है, वह प्रभु के लिये खाता है,
क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता
है, और जो नही खाता, वह प्रभु के लिये
नही खाता और परमेश्वर का धन्यवाद
करता है। ७ क्योंकि हम में से न तो कोई
अपने लिये जीता है और न कोई अपने लिये
मरता है। ८ क्योंकि यदि हम जीवित है,
तो प्रभु के लिये जीवित है, और यदि मरते
है तो प्रभु के लिये मरते है, सो हम जीए

* अर्थात मन या कानशन्स।

ा मरे, हम प्रभु ही के है। ९ क्योंकि
मसीह इसी लिये मरा और जी भी उठा
कि वह मरे हुओ और जीवतो, दोनो का
प्रभु हो। १० तू अपने भाई पर क्यो दोष
लगाता है? या तू फिर क्यो अपने भाई को
तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर
के न्याय सिहासन के साम्हने खडे होगे।
११ क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है,
मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना
मेरे साम्हने टिकेगा, और हर एक जीभ
परमेश्वर को अगीकार करेगा। १२ सो
हम मे से हर एक परमेश्वर को अपना अपना
लेखा देगा॥

१३ सो आगे को हम एक दूसरे पर
दोष न लगाए पर तुम यही ठान लो कि
कोई अपने भाई के साम्हने ठेस या ठोकर
खाने का कारण न रखे। १४ मै जानता
हू, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है,
कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नही,
परन्तु जो उस को अशुद्ध समझता है, उसके
लिये अशुद्ध है। १५ यदि तेरा भाई तेरे
भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर
तू प्रेम की रीति से नही चलता जिस के
लिये मसीह मरा उस को तू अपने भोजन
के द्वारा नाश न कर। १६ अब तुम्हारी
भलाई की निन्दा न होने पाए। १७ क्योंकि
परमेश्वर का राज्य खानापीना नही,
परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द
है, १८ जो पवित्र आत्मा से * होता है और
जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता
है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यो
मे ग्रहणयोग्य ठहरता है। १९ इसलिये
हम उन बातो का प्रयत्न करे जिनसे मेल
मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।

* यू० मे।

२० भोजन के लिये परमेश्वर का काम न
बिगाड सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस
मनुष्य के लिये बुरा है, जिस को उसके भोजन
करने से ठोकर लगती है। २१ भला तो
यह है, कि तू न मास खाए और न दाख रस
पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा
भाई ठोकर खाए। २२ तेरा जो विश्वास
हो, उसे परमेश्वर के साम्हने अपने ही मन
मे रख धन्य है वह, जो उस बात मे, जिसे
वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी
नही ठहराता। २३ परन्तु जो सन्देह कर
के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका,
क्योंकि वह निश्चय धारणा से नही खाता,
और जो कुछ विश्वास * से नही, वह
पाप है॥

१५ निदान हम बलवानो को
चाहिए, कि निर्बलो की निर्बलताओ
को सहे, न कि अपने आप को प्रसन्न करे।
२ हम मे से हर एक अपने पडोसी को
उस की भलाई के लिये सुधारने के निमित्त
प्रसन्न करे। ३ क्योंकि मसीह ने अपने
आप को प्रसन्न नही किया, पर जैसा लिखा
है, कि तेरे निन्दको की निन्दा मुझ पर आ
पडी। ४ जितनी बाते पहिले से लिखी
गई, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई
है कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की
शान्ति के द्वारा आशा रखे। ५ और
धीरज, और शान्ति का दाता † परमेश्वर
तुम्हे यह वरदान दे, कि मसीह यीशु के
अनुसार आपस मे एक मन रहो। ६ ताकि
तुम एक मन और एक मुह होकर हमारे
प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की
बडाई करो। ७ इसलिये, जैसा मसीह ने
भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हे ग्रहण

* यू० निश्चय। † यू० सोत।

लिया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को
ग्रहण करो। ८ मैं कहता हूं, कि जो
प्रतिज्ञाएं बापदादों को दी गई थीं उन्हें दृढ़
करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई
का प्रमाण देने के लिये खतना किए हुए
लोगों का सेवक बना। ९ और अन्यजाति
भी दया के कारण परमेश्वर की बड़ाई करें,
जैसा लिखा है, कि इसलिये मैं जाति जाति
में तेरा धन्यवाद करूंगा और तेरे नाम के
भजन गाऊंगा। १० फिर कहा है, हे जाति
जाति के सब लोगो, उस की प्रजा के साथ
आनन्द करो। ११ और फिर हे जाति जाति
के सब लोगो, प्रभु की स्तुति करो; और हे
राज्य राज्य के सब लोगो; उसे सराहो।
१२ और फिर यशायाह कहता है, कि यिशै
की एक जड़ प्रगट होगी, और अन्यजातियों
का हाकिम होने के लिये एक उठेगा, उस
पर अन्यजातियां आशा रखेंगी। १३ सो
परमेश्वर जो आशा का दाता * है तुम्हें
विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द
और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र
आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती
जाए॥

१४ हे मेरे भाइयो, मैं आप भी तुम्हारे
विषय में निश्चय जानता हूं, कि तुम भी
आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान
से भरपूर हो और एक दूसरे को चिता
सकते हो। १५ तौभी मैं ने कहीं कहीं याद
दिलाने के लिये तुम्हें जो बहुत हियाव करके
लिखा, यह उस अनुग्रह के कारण हुआ, जो
परमेश्वर ने मुझे दिया है। १६ कि मैं
अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का सेवक
होकर परमेश्वर के सुसमाचार की सेवा
याजक की नाईं करूं, जिस से अन्यजातियों
का मानो चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से
पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए। १७ सो
उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से
सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई
कर सकता हूं। १८ क्योंकि उन बातों को
छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में
कहने का हियाव नहीं, जो मसीह ने अन्य-
जातियों की अधीनता के लिये वचन, और
कर्म। १९ और चिन्हों और अद्भुत
कामों की सामर्थ से, और पवित्र आत्मा की
सामर्थ से मेरे ही द्वारा किए; यहां तक कि
मैं ने यरूशलेम से लेकर चारों ओर
इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार का
पूरा पूरा प्रचार किया। २० पर मेरे मन
की उमंग यह है, कि जहां जहां मसीह का
नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार
सुनाऊं; ऐसा न हो, कि दूसरे की नेव पर
घर बनाऊं। २१ परन्तु जैसा लिखा है,
वैसा ही हो, कि जिन्हें उसका सुसमाचार
नहीं पहुंचा, वे ही देखेंगे और जिन्हों ने नहीं
सुना वे ही समझेंगे॥

२२ इसी लिये मैं तुम्हारे पास आने से
बार बार रुका रहा। २३ परन्तु अब मुझे
इन देशों में और जगह नहीं रही, और बहुत
वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा
है। २४ इसलिये जब इसपानिया को
जाऊंगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊंगा
क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम
से भेंट करूं, और जब तुम्हारी संगति से
मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर
आगे पहुंचा दो। २५ परन्तु अभी तो
पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये
यरूशलेम को जाता हूं। २६ क्योंकि
मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह
अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों
के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें।

---
* व० स्रोत।

२७ अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के
कर्जदार भी है, क्योकि यदि अन्यजाति उन
की आत्मिक बातो मे भागी हुए, तो उन्हे भी
उचित है, कि शारीरिक बातो मे उन की
सेवा करे। २८ सो मै यह काम पूरा करके
और उन को यह चन्दा सौपकर तुम्हारे
पास होता हुआ इसपानिया को जाऊगा।
२९ और मै जानता हू, कि जब मै तुम्हारे
पास आऊगा, तो मसीह की पूरी आशीष के
साथ आऊगा।।

३० और हे भाइयो, मै यीशु मसीह
का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के
प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से बिनती
करता हू, कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना
करने मे मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।
३१ कि मै यहूदिया के अविश्वासियो से
बचा रहू, और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम
के लिये है, पवित्र लोगो को भाए। ३२ और
मै परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास
आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम
पाऊ। ३३ शान्ति का परमेश्वर तुम सब
के साथ रहे। आमीन।।

१६ मै तुम से फीबे की, जो हमारी
बहिन और किंख्रिया की कलीसिया
की सेविका है, बिनती करता हू। २ कि
तुम जैसा कि पवित्र लोगो को चाहिए, उसे
प्रभु मे ग्रहण करो; और जिस किसी बात
मे उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की
सहायता करो, क्योकि वह भी बहुतो की
वरन मेरी भी उपकारिणी हुई है।।

३ प्रिसका और अक्विला को जो यीशु
मे मेरे सहकर्मी है, नमस्कार। ४ उन्हो ने
मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा
था और केवल मै ही नही, वरन अन्य-
जातियो की सारी कलीसियाए भी उन का
धन्यवाद करती है। ५ और उस कलीसिया
को भी नमस्कार जो उन के घर मे है।
मेरे प्रिय इपैनितुस को जो मसीह के लिये
आसिया का पहिला फल है, नमस्कार।
६ मरियम को जिस ने तुम्हारे लिये बहुत
परिश्रम किया, नमस्कार। ७ अन्द्रुनीकुस
और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी है, और
मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितो मे नामी
है, और मुझ से पहिले मसीह मे हुए थे,
नमस्कार। ८ अम्पलियातुस को, जो प्रभु
मे मेरा प्रिय है, नमस्कार। ९ उरबानुस
को, जो मसीह मे हमारा सहकर्मी है,
और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार।
१० अपिल्लेस को जो मसीह मे खरा
निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने
को नमस्कार। ११ मेरे कुटुम्बी हेरो-
दियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने
के जो लोग प्रभु मे है, उन को नमस्कार।
१२ त्रूफैना और त्रूफोसा को जो प्रभु मे
परिश्रम करती है, नमस्कार। प्रिया पिर-
सिस को जिस ने प्रभु मे बहुत परिश्रम किया,
नमस्कार। १३ रूफुस को जो प्रभु मे चुना
हुआ है, और उस की माता जो मेरी भी है,
दोनो को नमस्कार। १४ असुक्रितुस और
फिलगोन और हिमस और पत्रुबास और
हिमास और उन के साथ के भाइयो को
नमस्कार। १५ फिलुलुगुस और यूलिया
और नेर्युस और उस की बहिन, और
उलुम्पास और उन के साथ के सब पवित्र
लोगो को नमस्कार। १६ आपस मे पवित्र
चुम्बन से नमस्कार करो तुम को मसीह
की सारी कलीसियाओ की ओर से
नमस्कार।।

१७ अब हे भाइयो, मै तुम से बिनती
करता हू, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत
जो तुम ने पाई है, फूट पडने, और ठोकर

खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड लिया
करो, और उन से दूर रहो। १८ क्योंकि
ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु
अपने पेट की सेवा करते हैं, और चिकनी
चुपडी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को
बहका देते हैं। १९ तुम्हारे आज्ञा मानने
की चर्चा सब लोगों में फैल गई है, इसलिये
मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं,
परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के
लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले
बने रहो। २० शान्ति का परमेश्वर शैतान
को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा॥

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम
पर होता रहे*।

२१ तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और
लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस मेरे
कुटुम्बियों का, तुम को नमस्कार। २२ मुझ
पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु में
तुम को नमस्कार। २३ गयुस का जो मेरी
और कलीसिया का पहुनाई करनेवाला है
उसका तुम्हें नमस्कार इरास्तुस जो नगर
का भण्डारी है, और भाई क्वारतुस का,
तुम को नमस्कार*॥

२५ अब जो तुम को मेरे सुसमाचार
अर्थात् यीशु मसीह के विषय के प्रचार के
अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के
प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा
रहा। २६ परन्तु अब प्रगट होकर सनातन
परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की
पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया
गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले
हो जाएं। २७ उसी अद्वैत बुद्धिमान
परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग
महिमा होती रहे। आमीन॥

* यह वाक्य पहिले २४ पद गिना जाता था सब से पुराने हस्तलेखों में इसी जगह लिखा हुआ है।

* देखो २० पद को।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर
की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित
होने के लिये बुलाया गया और भाई
सोस्थिनेस की ओर से। २ परमेश्वर की
उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है,
अर्थात् उन के नाम जो मसीह यीशु में पवित्र
किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए
गए हैं, और उन सब के नाम भी जो हर
जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के
नाम की प्रार्थना करते हैं॥

३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और
शान्ति मिलती रहे॥

४ मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर
का धन्यवाद सदा करता हूं, इसलिये कि
परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह

यीशु मे हुआ। ५ कि उस में होकर तुम
हर बात मे अर्थात् सारे वचन और सारे
ज्ञान मे धनी किए गए। ६ कि मसीह की
गवाही तुम में पक्की निकली। ७ यहा तक
कि किसी वरदान मे तुम्हे घटी नही, और
तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने
की बाट जोहते रहते हो। ८ वह तुम्हे
अन्त तक दृढ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु
यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।
९ परमेश्वर सच्चा * है, जिस ने तुम को
अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की सगति
मे बुलाया है॥

१० हे भाइयो, मैं तुम से यीशु मसीह
जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती
करता हू, कि तुम सब एक ही बात कहो,
और तुम मे फूट न हो, परन्तु एक ही मन
और एक ही मत होकर मिले रहो।
११ क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के
घराने के लोगो ने मुझे तुम्हारे विषय में
बताया है, कि तुम में झगडे हो रहे हैं।
१२ मेरा कहना यह है, कि तुम मे से कोई
तो अपने आप को पौलुस का, कोई
अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह
का कहता है। १३ क्या मसीह बट गया?
क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर
चढाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर
बपतिस्मा मिला? १४ मैं परमेश्वर का
धन्यवाद करता हू, कि क्रिस्पुस और गयुस
को छोड, मैं ने तुम मे से किसी को भी
बपतिस्मा नही दिया। १५ कही ऐसा न
हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर
बपतिस्मा मिला। १६ और मैं ने स्तिफनास
के घराने को भी बपतिस्मा दिया, इन को
छोड़, मैं नही जानता कि मैं ने और किसी
को बपतिस्मा दिया। १७ क्योकि मसीह
ने मुझे बपतिस्मा देने को नही, वरन
सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी
शब्दो के ज्ञान के अनुसार नही, ऐसा न हो
कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे॥

१८ क्योकि क्रूस की कथा नाश होने-
वालो के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार
पानेवालो के निकट परमेश्वर की सामर्थ
है। १९ क्योकि लिखा है, कि मैं ज्ञानवानो
के ज्ञान को नाश करूगा, और समझदारो
की समझ को तुच्छ कर दूगा। २० कहा
रहा ज्ञानवान? कहा रहा शास्त्री? कहा
इस ससार का विवादी? क्या परमेश्वर ने
ससार के ज्ञान को मूर्खता नही ठहराया?
२१ क्योकि जब परमेश्वर के ज्ञान के
अनुसार ससार ने ज्ञान से परमेश्वर को न
जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा,
कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास
करनेवालो को उद्धार दे। २२ यहूदी तो
चिन्ह चाहते है, और यूनानी ज्ञान की खोज
मे है। २३ परन्तु हम तो उस क्रूस पर
चढाए हुए मसीह का प्रचार करते है जो
यहूदियो के निकट ठोकर का कारण, और
अन्यजातियो के निकट मूर्खता है।
२४ परन्तु जो बुलाए हुए है क्या यहूदी,
क्या यूनानी, उन के निकट मसीह परमेश्वर
की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है।
२५ क्योकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यो
के ज्ञान से ज्ञानवान है, और परमेश्वर की
निर्बलता मनुष्यो के बल से बहुत बलवान
है॥

२६ हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को
तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत
ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न
बहुत कुलीन बुलाए गए। २७ परन्तु
परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया

* यू० विश्वासयोग्य।

है, कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और
परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया
है, कि बलवानों को लज्जित करे।
२८ और परमेश्वर ने जगत के नीचों और
तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी
चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए।
२९ ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने
घमण्ड न करने पाए। ३० परन्तु उसी की
ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर
की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात्
धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।
३१ ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि
जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे॥

२ और हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर
का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास
आया, तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के
साथ नहीं आया। २ क्योंकि मैं ने यह ठान
लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह,
वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़
और किसी बात को न जानूं। ३ और
मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत
थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा। ४ और
मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की
लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और
सामर्थ का प्रमाण था। ५ इसलिये कि
तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं,
परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो॥
६ फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान
सुनाते हैं: परन्तु इस संसार का और इस
संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का ज्ञान
नहीं। ७ परन्तु हम परमेश्वर का वह
गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे
परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के
लिये ठहराया। ८ जिसे इस संसार के
हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि
यदि जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न
चढ़ाते। ९ परन्तु जैसा लिखा है, कि जो
आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना,
और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं,
वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने-
वालों के लिये तैयार की हैं। १० परन्तु
परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा
हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब
बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी
जांचता है। ११ मनुष्यों में से कौन किसी
मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की
आत्मा जो उस में है? वैसी ही परमेश्वर की
बात भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर
का आत्मा। १२ परन्तु हम ने संसार की
आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो
परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों
को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।
१३ जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की
सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की
सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक
बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।
१४ परन्तु शारीरिक* मनुष्य परमेश्वर
के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता,
क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें
हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि
उन की जांच आत्मिक रीति से होती है।
१५ आत्मिक जन सब कुछ जांचता है,
परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।
१६ क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है,
कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह
का मन है॥

३ हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से
बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों
से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और

* यू० प्राणिक।

उन से जो मसीह मे बालक है। २ मै ने
तुम्हे दूध-पिलाया, अन्न न खिलाया, क्योकि
तुम उस को न खा सकते थे, बरन अब तक
भी नही खा सकते हो। ३ क्योकि अब
तक शारीरिक हो, इसलिये कि जब तुम मे
डाह और झगडा है, तो क्या तुम शारीरिक
नही? और मनुष्य की रीति पर नही
चलते? ४ इसलिये कि जब एक कहता
है, मै पौलुस का हू, और दूसरा कि मै
अपुल्लोस का हू, तो क्या तुम मनुष्य नही?
५ अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या?
केवल सेवक, जिन के द्वारा तुम ने विश्वास
किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।
६ मै ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु
परमेश्वर ने बढाया। ७ इसलिये न तो
लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला,
परन्तु परमेश्वर जो बढानेवाला है।
८ लगानेवाला और सींचनेवाला दोनो
एक हे, परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही
परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी
पाएगा। ९ क्योकि हम परमेश्वर के
सहकर्मी है, तुम परमेश्वर की खेती और
परमेश्वर की रचना हो॥

१० परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनु-
सार, जो मुझे दिया गया, मै ने बुद्धिमान
राजमिस्त्री की नाई नेव डाली, और दूसरा
उस पर रद्दा रखता है, परन्तु हर एक
मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा
रद्दा रखता है। ११ क्योकि उस नेव को
छोड जो पडी है, और वह यीशु मसीह है
कोई दूसरी नेव नही डाल सकता। १२ और
यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या
बहुमोल पत्थर या काठ या घास या फूस
का रद्दा रखे। १३ तो हर एक का काम
प्रगट हो जाएगा, क्योकि वह दिन उसे
बताएगा, इसलिये कि आग के साथ प्रगट
होगा और वह आग हर एक का काम
परखेगी कि कैसा है? १४ जिस का काम
उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी
पाएगा। १५ और यदि किसी का काम
जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा, पर
वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते॥

१६ क्या तुम नही जानते, कि तुम
परमेश्वर का मन्दिर * हो, और परमेश्वर
का आत्मा तुम म बास करता है? १७ यदि
कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा
तो परमेश्वर उसे नाश करेगा, क्योकि
परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह
तुम हो॥

१८ कोई अपने आप को धोखा न दे.
यदि तुम मे से कोई इस ससार मे अपने आप
को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने, कि ज्ञानी
हो जाए। १९ क्योकि इस ससार का ज्ञान
परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा
है, कि वह ज्ञानियो को उन की चतुराई मे
फसा देता है। २० और फिर प्रभु ज्ञानियो
की चिन्ताओ को जानता है, कि व्यर्थ है।
२१ इसलिये मनुष्यो पर कोई घमण्ड न
करे, क्योकि सब कुछ तुम्हारा है। २२ क्या
पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या
जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान,
क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, २३ और
तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर
का है॥

४ मनुष्य हमे मसीह के सेवक और
परमेश्वर के भेदो के भण्डारी समझे।
२ फिर यहा भण्डारी मे यह बात देखी
जाती है, कि विश्वास योग्य निकले।
३ परन्तु मेरी दृष्टि मे यह बहुत छोटी बात
है, कि तुम या मनुष्यो का कोई न्यायी मुझे

* यू० पवित्रस्थान।

परखे, वरन मै आप ही अपने आप को नहीं
परखता। ४ क्योंकि मेरा मन मुझे किसी
बात मे दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इस से
मै निर्दोष नहीं ठहरता, क्योकि मेरा परखने-
वाला प्रभु है। ५ सो जब तक प्रभु न आए,
समय से पहिले किसी बात का न्याय न करो
वही तो अन्धकार की छिपी बात ज्योति में
दिखाएगा, और मनो की मतियो को प्रगट
करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक
की प्रशसा होगी ॥

६ हे भाइयो, मैं ने इन बातो में तुम्हारे
लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा,
दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम
हमारे द्वारा यह सीखो, कि लिखे हुए से
आगे न बढना, और एक के पक्ष मे और
दूसरे के विरोध मे गर्व न करना। ७ क्योंकि
तुझ में और दूसरे मे कौन भेद करता है?
और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से)
नहीं पाया और जब कि तू ने (दूसरे से)
पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यो करता है, कि
मानो नहीं पाया? ८ तुम तो तृप्त हो
चुके, तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना
राज्य किया, परन्तु भला होता कि तुम
राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य
करते। ९ मेरी समझ में परमेश्वर ने
हम प्रेरितो को सब के बाद उन लोगो की
नाईं ठहराया है, जिन की मृत्यु की आज्ञा
हो चुकी हो, क्योकि हम जगत और स्वर्ग-
दूतो और मनुष्यो के लिये एक तमाशा ठहरे
हैं। १० हम मसीह के लिये मूर्ख है, परन्तु
तुम मसीह में बुद्धिमान हो हम निर्बल है
परन्तु तुम बलवान हो तुम आदर पाते
हो, परन्तु हम निरादर होते हैं। ११ हम
इस घडी तक भूखे-प्यासे और नङ्गे है, और
घूसे खाते हैं और मारे मारे फिरते है,
और अपने ही हाथो के काम करके परिश्रम
करते हैं। १२ लोग बुरा कहते है, हम
आशीष देते हैं, वे सताते है, हम सहते है।
१३ वे बदनाम करते है हम बिनती करते
है हम आज तक जगत के कूडे और सब
वस्तुओ की खुरचन की नाई ठहरे है ॥

१४ मै तुम्हे लज्जित करने के लिये ये
बात नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक
जानकर उन्हे चिताता हू। १५ क्योंकि
यदि मसीह मे तुम्हारे सिखानेवाले दस
हजार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से
नही, इसलिये कि मसीह यीशु मे सुसमाचार
के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ। १६ सो
मैं तुम से बिनती करता हू, कि मेरी सी चाल
चलो। १७ इसलिये मैं ने तीमुथियुस को
जो प्रभु मे मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य
पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हे
मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा,
जैसे कि मै हर जगह हर एक कलीसिया में
उपदेश करता हू। १८ कितने तो ऐसे फूल
गए है, मानो मै तुम्हारे पास आने ही का
नहीं। १९ परन्तु प्रभु चाहे तो मै तुम्हारे
पास शीघ्र ही आऊगा, और उन फूले हुओ
की बातो को नही, परन्तु उन की सामर्थ को
जान लूगा। २० क्योंकि परमेश्वर का
राज्य बातो में नही, परन्तु सामर्थ मे है।
२१ तुम क्या चाहते हो? क्या मै छडी
लेकर तुम्हारे पास आऊ या प्रेम और
नम्रता की आत्मा के साथ?

५ यहा तक सुनने मे आता है कि तुम
मे व्यभिचार होता है, वरन ऐसा
व्यभिचार जो अन्यजातियो में भी नही
होता, कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी
को रखता है। २ और तुम शोक तो नहीं
करते, जिस से ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे
बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड

करते हो। ३ मैं तो शरीर के भाव से दूर
था, परन्तु आत्मा के भाव मे तुम्हारे साथ
होकर, मानो उपस्थिति की दशा मे ऐसे
काम करनेवाले के विषय मे यह आज्ञा दे
चुका हू। ४ कि जब तुम, और मेरी
आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ
इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु
के नाम से। ५ शरीर के विनाश के लिये
शैतान को सौपा जाए, ताकि उस की आत्मा
प्रभु यीशु के दिन मे उद्धार पाए।
६ तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नही,
क्या तुम नही जानते, कि थोडा सा खमीर
पूरे गूधे हुए आटे को खमीर कर देता है।
७ पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप
को शुद्ध करो कि नया गूधा हुआ आटा
बन जाओ, ताकि तुम अखमीरी हो, क्योकि
हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान
हुआ है। ८ सो आओ, हम उत्सव मे
आनन्द मनावे, न तो पुराने खमीर से और
न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु
सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी
से॥

९ मैं ने अपनी पत्री मे तुम्हे लिखा है,
कि व्यभिचारियो की सगति न करना।
१० यह नही, कि तुम बिल्कुल इस जगत
के व्यभिचारियो, या लोभियो, या अन्धेर
करनेवालो, या मूर्त्तिपूजको की सगति न
करो, क्योंकि इस दशा मे तो तुम्हे जगत
मे से निकल जाना ही पडता। ११ मेरा
कहना यह है, कि यदि कोई भाई कहलाकर,
व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्त्तिपूजक, या
गाली देनेवाला, या पियक्कड, या अन्धेर
करनेवाला हो, तो उस की सगति मत
करना, बरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी
न खाना। १२ क्योंकि मुझे बाहरवालो
का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम
भीतरवालो का न्याय नही करते?
१३ परन्तु बाहरवालो का न्याय परमेश्वर
करता है. इसलिये उस कुकर्मी को अपने
बीच मे से निकाल दो॥

६ क्या तुम मे से किसी को यह हियाव
है, कि जब दूसरे के साथ झगडा हो,
तो फैसले के लिये अधर्मियो के पास जाए,
और पवित्र लोगो के पास न जाए? २ क्या
तुम नही जानते, कि पवित्र लोग जगत का
न्याय करेगे? सो जब तुम्हे जगत का न्याय
करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगडो
का भी निर्णय करने के योग्य नही? ३ क्या
तुम नही जानते, कि हम स्वर्गदूतो का न्याय
करेगे? तो क्या सासारिक बातो का निर्णय
न करे? ४ सो यदि तुम्हे सासारिक बातो
का निर्णय करना हो, तो क्या उन्ही को
बैठाओगे जो कलीसिया मे कुछ नही समझे
जाते है? ५ मैं तुम्हे लज्जित करने के लिये
यह कहता हू क्या सचमुच तुम मे एक
भी बुद्धिमान नही मिलता, जो अपने
भाइयो का निर्णय कर सके? ६ बरन
भाई भाई मे मुकद्दमा होता है, और वह
भी अविश्वासियो के साम्हने। ७ परन्तु
सचमुच तुम मे बडा दोष तो यह है, कि
आपस मे मुकद्दमा करते हो, बरन अन्याय
क्यो नही सहते? अपनी हानि क्यो नही
सहते? ८ बरन अन्याय करते और हानि
पहुचाते हो, और वह भी भाइयो को।
९ क्या तुम नही जानते, कि अन्यायी लोग
परमेश्वर के राज्य के वारिस न होगे?
धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्त्ति-
पूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुष-
गामी। १० न चोर, न लोभी, न पियक्कड,
न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले
परमेश्वर के राज्य के वारिस होगे।

११ और तुम में से कितने ऐसे ही थे,
परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और
हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए,
और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे॥

१२ सब वस्तुए मेरे लिये उचित तो ह,
परन्तु सब वस्तुए लाभ की नही, सब वस्तुए
मेरे लिये उचित ह, परन्तु मैं किसी बात के
आधीन न हूगा। १३ भोजन पेट के लिये,
और पेट भोजन के लिये है, परन्तु परमेश्वर
इस को और उस को दोनो को नाश करेगा,
परन्तु देह व्यभिचार के लिये नही, वरन
प्रभु के लिये, और प्रभु देह के लिये है।
१४ और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से
प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा।
१५ क्या तुम नही जानते, कि तुम्हारी देह
मसीह के अग है? सो क्या मैं मसीह के
अग लेकर उन्हें वेश्या के अग बनाऊ?
कदापि नही। १६ क्या तुम नही जानते,
कि जो कोई वेश्या से सगति करता है, वह
उसके साथ एक तन हो जाता है क्योकि वह
कहता है, कि वे दोनो एक तन होंगे।
१७ और जो प्रभु की सगति में रहता है,
वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।
१८ व्यभिचार से बचे रहो जितने और
पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर ह,
परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह
के विरुद्ध पाप करता है। १९ क्या तुम
नही जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा
का मन्दिर* है, जो तुम मे बसा हुआ है
और तुम्हे परमेश्वर की ओर से मिला है,
और तुम अपने नही हो? २० क्योकि
दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये
अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा
करो॥

* यू० पवित्रस्थान।

७ उन बातो के विषय में जो तुम ने
लिखी, यह अच्छा है, कि पुरुष स्त्री को
न छूए। २ परन्तु व्यभिचार के डर से
हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री
का पति हो। ३ पति अपनी पत्नी का हक्क
पूरा करे, और वैसे ही पत्नी भी अपने पति
का। ४ पत्नी को अपनी देह पर अधिकार
नही पर उसके पति का अधिकार है, वैसे
ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नही,
परन्तु पत्नी को। ५ तुम एक दूसरे से
अलग न रहो, परन्तु केवल कुछ समय तक
आपस की सम्मति से कि प्रार्थना के लिये
अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो,
ऐसा न हो, कि तुम्हारे असयम के कारण
शैतान तुम्हें परखे। ६ परन्तु म जो यह
कहता हू वह अनुमति है न कि आज्ञा।
७ म यह चाहता हू, कि जसा म हू, वसा ही
सब मनुष्य हो, परन्तु हर एक को परमेश्वर
की ओर से विशेष विशेष वरदान मिले ह,
किसी को किसी प्रकार का, और किसी को
किसी और प्रकार का॥

८ परन्तु मैं अविवाहितो और विधवाओ
के विषय में कहता हू, कि उन के लिये ऐसा
ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हू। ९ परन्तु
यदि वे सयम न कर सक, तो विवाह करें,
क्योकि विवाह करना कामातुर रहने से
भला है। १० जिन का ब्याह हो गया है,
उन को मैं नही, वरन प्रभु आज्ञा देता है,
कि पत्नी अपने पति से अलग न हो।
११ (और यदि अलग भी हो जाए, तो
बिन दूसरा ब्याह किए रहे या अपने पति
से फिर मेल कर ले) और न पति अपनी
पत्नी को छोडे। १२ दूसरो से प्रभु नही,
परन्तु मैं ही कहता हू, यदि किसी भाई की
पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके
साथ रहने से प्रसन्न हो, तो वह उसे न

छोडे। १३ और जिस स्त्री का पति
विश्वास न रखता हो, और उसके साथ
रहने से प्रसन्न हो, वह पति को न छोडे।
१४ क्योकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता
हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है,
और ऐसी पत्नी जो विश्वास नही रखती, पति
के कारण पवित्र ठहरती है, नही तो तुम्हारे
लडकेवाले अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र
है। १५ परन्तु जो पुरुष विश्वास नही
रखता, यदि वह अलग हो, तो अलग होने
दो, ऐसी दशा मे कोई भाई या बहिन बन्धन
मे नही, परन्तु परमेश्वर ने तो हमे मेल
मिलाप के लिये बुलाया है। १६ क्योकि
हे स्त्री, तू क्या जानती है, कि तू अपने पति
का उद्धार करा ले? और हे पुरुष, तू क्या
जानता है कि तू अपनी पत्नी का उद्धार
करा ले? १७ पर जैसा प्रभु ने हर एक
को बाटा है, और जैसा परमेश्वर ने हर एक
को बुलाया है, वैसा ही वह चले और मै
सब कलीसियाओ में ऐसा ही ठहराता हू।
१८ जो खतना किया हुआ बुलाया गया
हो, वह खतनारहित न बने जो खतना-
रहित बुलाया गया हो, वह खतना न कराए।
१९ न खतना कुछ है, और न खतनारहित
परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओ को मानना
ही सब कुछ है। २० हर एक जन जिस
दशा मे बुलाया गया हो, उसी मे रहे।
२१ यदि तू दास की दशा मे बुलाया गया
हो तो चिन्ता न कर, परन्तु यदि तू स्वतत्र
हो सके, तो ऐसा ही काम कर। २२ क्योकि
जो दास की दशा मे प्रभु मे बुलाया गया है,
वह प्रभु का स्वतत्र किया हुआ है और
वैसे ही जो स्वतत्रता की दशा मे बुलाया
गया है, वह मसीह का दास है। २३ तुम
दाम देकर मोल लिए गए हो, मनुष्यो के
दास न बनो। २४ हे भाइयो, जो कोई
जिस दशा में बुलाया गया हो, वह उसी में
परमेश्वर के साथ रहे॥

२५ कुवारियो के विषय में प्रभु की
कोई आज्ञा मुझे नही मिली, परन्तु विश्वास-
योग्य होने के लिये जैसी दया प्रभु ने मुझ
पर की है, उसी के अनुसार सम्मति देता हूं।
२६ सो मेरी समझ मे यह अच्छा है, कि
आजकल क्लेश के कारण मनुष्य जैसा है,
वैसा ही रहे। २७ यदि तेरे पत्नी है, तो
उस से अलग होने का यत्न न कर और
यदि तेरे पत्नी नही *, तो पत्नी की खोज
न कर २८ परन्तु यदि तू ब्याह भी करे,
तो पाप नही, और यदि कुवारी ब्याही जाए
तो कोई पाप नही, परन्तु ऐसो को शारीरिक
दुख होगा, और मै बचाना चाहता हू।
२९ हे भाइयो, मै यह कहता हू, कि समय
कम किया गया है, इसलिये चाहिए कि
जिन के पत्नी हो, वे ऐसे हो मानो उन के
पत्नी नही। ३० और रोनेवाले ऐसे हो,
मानो रोते नही, और आनन्द करनेवाले
ऐसे हो, मानो आनन्द नही करते, और
मोल लेनेवाले ऐसे हो, कि मानो उन के
पास कुछ है नही। ३१ और इस ससार
के बरतनेवाले ऐसे हो, कि ससार ही के न
हो ले †, क्योकि इस ससार की रीति और
व्यवहार बदलते जाते है। ३२ सो मै यह
चाहता हू, कि तुम्हे चिन्ता न हो अवि-
वाहित पुरुष प्रभु की बातो की चिन्ता मे
रहता है, कि प्रभु को क्योकर प्रसन्न रखे।
३३ परन्तु विवाहित मनुष्य ससार की
बातो की चिन्ता मे रहता है, कि अपनी पत्नी
को किस रीति से प्रसन्न रखे। ३४ विवा-
हिता और अविवाहिता मे भी भेद है
अविवाहिता प्रभु की चिन्ता में रहती है,

* या यदि तू पत्नी से छूट गया है।
† यू० उसे अधिक न वर्ते।

कि वह देह और आत्मा दोनो में पवित्र हो,
परन्तु विवाहिता ससार की चिन्ता में रहती
है, कि अपने पति को प्रसन्न रखे। ३५ यह
बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हू,
न कि तुम्हे फसाने के लिये, वरन इसलिये
कि जैसा सोहता है, वैसा ही किया जाए,
कि तुम एक चित्त होकर प्रभु की सेवा में
लगे रहो। ३६ और यदि कोई यह समझे,
कि मैं अपनी उस कुवारी का हक्क मार
रहा हू, जिस की जवानी ढल चली है, और
प्रयोजन भी होए, तो जैसा चाहे, वैसा करे,
इस में पाप नही, वह उसका ब्याह होने
दे*। ३७ परन्तु जो मन में दृढ रहता है,
और उस को प्रयोजन न हो, वरन अपनी
इच्छा पूरी करने में अधिकार रखता हो,
और अपने मन में यह बात ठान ली हो, कि
मैं अपनी कुवारी लडकी को बिन ब्याही
रखूगा, वह अच्छा करता है। ३८ सो जो
अपनी कुवारी का ब्याह कर देता है, वह
अच्छा करता है, और जो ब्याह नही कर
देता, वह और भी अच्छा करता है।
३९ जब तक किसी स्त्री का पति जीवित
रहता है, तब तक वह उस से बन्धी हुई है,
परन्तु जब उसका पति मर जाए, तो जिस
से चाहे विवाह कर सकती है, परन्तु केवल
प्रभु में। ४० परन्तु जैसी है यदि वैसी ही
रहे, तो मेरे विचार में और भी धन्य है,
और मैं समझता हू, कि परमेश्वर का आत्मा
मुझ में भी है॥

८ अब मूरतो के साम्हने बलि की हुई
वस्तुओ के विषय में—हम जानते हैं,
कि हम सब को ज्ञान है ज्ञान घमण्ड
उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती
है। २ यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता
हू, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक
नही जानता। ३ परन्तु यदि कोई
परमेश्वर से प्रेम रखता है, तो उसे परमेश्वर
पहिचानता है। ४ सो मूरतो के साम्हने
बलि की हुई वस्तुओ के खाने के विषय में—
हम जानते हैं, कि मूरत जगत में कोई वस्तु
नही, और एक को छोड और कोई परमेश्वर
नही। ५ यद्यपि आकाश में और पृथ्वी
पर बहुत से ईश्वर कहलाते है, (जैसा कि
बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)।
६ तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर
है अर्थात् पिता जिस की ओर से सब
वस्तुए है, और हम उसी के लिये है, और
एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के
द्वारा सब वस्तुए हुई, और हम भी उसी के
द्वारा हैं। ७ परन्तु सब को यह ज्ञान नही,
परन्तु कितने तो अब तक मूरत को कुछ
समझने के कारण मूरतो के साम्हने बलि
की हुई को कुछ वस्तु समझकर खाते हैं,
और उन का विवेक* निबल होकर अशुद्ध
होता है। ८ भोजन हमें परमेश्वर के
निकट नही पहुचाता, यदि हम न खाए, तो
हमारी कुछ हानि नही, और यदि खाए,
तो कुछ लाभ नही। ९ परन्तु चौकस रहो,
ऐसा न हो, कि तुम्हारी यह स्वतन्त्रता कही
निर्बलो के लिये ठोकर का कारण हो जाए।
१० क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूरत
के मन्दिर में भोजन करते देखे, और वह
निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक में
मूरत के साम्हने बलि की हुई वस्तु के
खाने का हियाव न हो जाएगा। ११ इस
रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल
भाई जिस के लिये मसीह मरा नाश हो
जाएगा। १२ सो भाइयो का अपराध

* यू० वे ब्याहे जाए।

* अर्थात् मन या कानशस।

करने से और उन के निर्बल विवेक * को
चोट देने से तुम मसीह का अपराध करते
हो। १३ इस कारण यदि भोजन मेरे भाई
को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति
से मांस न खाऊंगा, न हो कि मैं अपने भाई
के ठोकर का कारण बनूं॥

९ क्या मैं स्वतंत्र नहीं? क्या मैं प्रेरित
नहीं? क्या मैं ने यीशु को जो हमारा
प्रभु है, नहीं देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे
बनाए हुए नहीं? २ यदि मैं औरों के लिये
प्रेरित नहीं, तौभी तुम्हारे लिये तो हूं,
क्योंकि तुम प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप
हो। ३ जो मुझे जांचते हैं, उन के लिये
यही मेरा उत्तर है। ४ क्या हमें खाने-पीने
का अधिकार नहीं? ५ क्या हमें यह
अधिकार नहीं, कि किसी मसीही बहिन को
ब्याह कर के लिए फिरें, जैसा और प्रेरित
और प्रभु के भाई और कैफा करते हैं?
६ या केवल मुझे और बरनबास को
अधिकार नहीं कि कमाई करना छोड़ें।
७ कौन कभी अपनी गिरह से खाकर
सिपाही का काम करता है कौन दाख की
बारी लगाकर उसका फल नहीं खाता?
कौन भेड़ों की रखवाली करके उन का दूध
नहीं पीता? ८ क्या मैं ये बातें मनुष्य ही
की रीति पर बोलता हूं? ९ क्या व्यवस्था
भी यही नहीं कहती? क्योंकि मूसा की
व्यवस्था में लिखा है कि दाएं में चलते हुए
बैल का मुंह न बान्धना· क्या परमेश्वर बैलों
ही की चिन्ता करता है? या विशेष करके
हमारे लिये कहता है। १० हां, हमारे
लिये ही लिखा गया, क्योंकि उचित है, कि
जोतनेवाला आशा से जोते, और दावनेवाला
भागी होने की आशा से दावनी करे।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

११ सो जब कि हम ने तुम्हारे लिये
आत्मिक वस्तुएं बोईं, तो क्या यह कोई
बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं
की फसल काटें। १२ जब औरों का तुम
पर यह अधिकार है, तो क्या हमारा इस से
अधिक न होगा? परन्तु हम यह अधिकार
काम में नहीं लाए, परन्तु सब कुछ सहते हैं,
कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की
कुछ रोक न हो। १३ क्या तुम नहीं जानते
कि जो पवित्र वस्तुओं की सेवा करते हैं,
वे मन्दिर में से खाते हैं, और जो वेदी की
सेवा करते हैं, वे वेदी के साथ भागी होते
हैं? १४ इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया,
कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की
जीविका सुसमाचार से हो। १५ परन्तु
मैं इन में से कोई भी बात काम में न लाया,
और मैं ने तो ये बातें इसलिये नहीं लिखीं,
कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि
इस से तो मेरा मरना ही भला है; कि कोई
मेरा घमण्ड व्यर्थ ठहराए। १६ और यदि
मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड
नहीं, क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है,
और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ
पर हाय। १७ क्योंकि यदि अपनी इच्छा
से यह करता हूं, तो मजदूरी मुझे मिलती
है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता,
तौभी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।
१८ सो मेरी कौन सी मजदूरी है? यह
कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का
सुसमाचार सेंत मेंत कर दूं, यहां तक कि
सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उस को
मैं पूरी रीति से काम में लाऊं। १९ क्योंकि
सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप
को सब का दास बना दिया है, कि अधिक
लोगों को खींच लाऊं। २० मैं यहूदियों के

लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं,
जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं उन के लिये
मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी
व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो
व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं।
२१ व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो पर-
मेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु
मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं) व्यवस्था-
हीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच
लाऊं। २२ मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा
बना, कि निर्बलों को खींच लाऊं, मैं सब
मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूं, कि किसी
न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं।
२३ और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये
करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी
हो जाऊं। २४ क्या तुम नहीं जानते,
कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम
एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो,
कि जीतो। २५ और हर एक पहलवान
सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक
मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह
सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के
लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं।
२६ इसलिये मैं तो इसी रीति से दौड़ता
हूं, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति
से मुक्कों से लड़ता हूं, परन्तु उस की नाईं
नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।
२७ परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता,
और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों
को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से
निकम्मा ठहरूं॥

१० हे भाइयो, मैं नहीं चाहता, कि
तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि
हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे,
और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो
गए। २ और सब ने बादल में, और समुद्र
में, मूसा का बपतिस्मा लिया। ३ और
सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया।
४ और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया,
क्योंकि वे उस आत्मिक चटान से पीते थे,
जो उन के साथ-साथ चलती थी, और वह
चटान मसीह था। ५ परन्तु परमेश्वर
उन में से बहुतेरों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये
वे जङ्गल में ढेर हो गए। ६ ये बातें हमारे
लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्हों ने लालच
किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न
करें। ७ और न तुम मूरत पूजनेवाले
बनो, जैसे कि उन में से कितने बन गए थे,
जैसा लिखा है, कि लोग खाने-पीने बैठे,
और खेलने-कूदने उठे। ८ और न हम
व्यभिचार करें, जैसा उन में से कितनों ने
किया: और एक दिन में तेईस हजार मर
गये। ९ और न हम प्रभु को परखें,
जैसा उन में से कितनों ने किया, और सांपों
के द्वारा नाश किए गए। १० और न तुम
कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उन में से कितने
कुड़कुड़ाए, और नाश करनेवाले के द्वारा
नाश किए गए। ११ परन्तु ये सब बातें,
जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं:
और वे हमारी चितावनी के लिये जो जगत
के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।
१२ इसलिये जो समझता है, कि मैं स्थिर
हूं, वह चौकस रहे, कि कहीं गिर न पड़े।
१३ तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े,
जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और
परमेश्वर सच्चा * है: वह तुम्हें सामर्थ
से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन
परीक्षा के साथ निकास भी करेगा, कि
तुम सह सको॥

* यू० विश्वासयोग्य।

१४ इस कारण, हे मेरे प्यारो मूर्त्ति
पूजा से बचे रहो। १५ मैं बुद्धिमान जान-
कर, तुम से कहता हू' जो मैं कहता हू,
उसे तुम परखो। १६ वह धन्यवाद का
कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं,
क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नही?
वह रोटी जिसे हम तोडते है, क्या वह मसीह
की देह की सहभागिता नही? १७ इस-
लिये, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो
बहुत है, एक देह है क्योकि हम सब उसी
एक रोटी में भागी होते है। १८ जो शरीर
के भाव से इस्राएली है, उन को देखो
क्या बलिदानो के खानेवाले वेदी के सहभागी
नही? १९ फिर मैं क्या कहता हू?
क्या यह कि मूरत का बलिदान कुछ है,
या मूरत कुछ है? २० नही, वरन यह,
कि अन्यजाति जो बलिदान करते है, वे
परमेश्वर के लिये नही, परन्तु दुष्टात्माओं
के लिये बलिदान करते हैं' और मैं नही
चाहता, कि तुम दुष्टात्माओ के सहभागी
हो। २१ तुम प्रभु के कटोरे, और
दुष्टात्माओ के कटोरे दोनो में से नही पी
सकते! तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओ
की मेज दोनो के साझी नही हो सकते।
२२ क्या हम प्रभु को रिस दिलाते है?
क्या हम उस से शक्तिमान है?

२३ सब वस्तुए मेरे लिये उचित तो
है, परन्तु सब लाभ की नही' सब वस्तुए
मेरे लिये उचित तो है, परन्तु सब वस्तुओ
से उन्नति नही। २४ कोई अपनी ही भलाई
को न ढूढे, वरन औरो की। २५ जो कुछ
कस्साइयों के यहा बिकता है, वह खाओ
और विवेक* के कारण कुछ न पूछो।
२६ क्योकि पृथ्वी और उस की भरपूरी
प्रभु की है। २७ और यदि अविश्वासियो
में से कोई तुम्हे नेवता दे, और तुम जाना
चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए,
वही खाओ और विवेक के कारण
कुछ न पूछो। २८ परन्तु यदि कोई तुम से
कहे, यह तो मूरत को बलि की हुई वस्तु
है, तो उसी बतानेवाले के कारण, और
विवेक के कारण न खाओ। २९ मेरा
मतलब, तेरा विवेक नही, परन्तु उस
दूसरे का। भला, मेरी स्वतन्त्रता दूसरे के
विचार से क्यो परखी जाए ३० यदि मैं
धन्यवाद करके साझी होता हू, तो जिस पर
मैं धन्यवाद करता हू, उसके कारण मेरी
बदनामी क्यो होती है? ३१ सो तुम चाहे
खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो,
सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।
३२ तुम न यहूदियो, न यूनानियो, और न
परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के
कारण बनो। ३३ जैसा मैं भी सब बातो
में सब को प्रसन्न रखता हू, और अपना नही,
परन्तु बहुतो का लाभ ढूढता हू, कि वे उद्धार
पाए॥

११ तुम मेरी सी चाल चलो जैसा
मैं मसीह की सी चाल चलता हू॥
२ हे भाइयो, मैं तुम्हे सराहता हू, कि
सब बातो में तुम मुझे स्मरण करते हो:
और जो व्यवहार मैं ने तुम्हें सौंप दिए है,
उन्हें धारण करते हो। ३ सो मैं चाहता
हू, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष
का सिर मसीह है और स्त्री का सिर
पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर
है। ४ जो पुरुष सिर ढाके हुए प्रार्थना
या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर
का अपमान करता है। ५ परन्तु जो स्त्री
उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती

* अर्थात् मन या कानशन्स।

है, वह अपने सिर का अपमान करती है,
क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है।
६ यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी
कटा ले, यदि स्त्री के लिये बाल कटाना
या मुण्डाना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी
ओढ़े। ७ हां पुरुष को अपना सिर ढांकना
उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का
स्वरूप और महिमा है, परन्तु स्त्री पुरुष
की महिमा है। ८ क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं
हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। ९ और
पुरुष स्त्री के लिये नहीं सिरजा गया, परन्तु
स्त्री पुरुष के लिये सिरजी गई है। १० इसी
लिये स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है,
कि अधिकार* अपने सिर पर रखे।
११ तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष,
और न पुरुष बिना स्त्री के है। १२ क्योंकि
जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के
द्वारा है, परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से
है। १३ तुम आप ही विचार करो, क्या
स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना
करना सोहता है? १४ क्या स्वाभाविक
रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरुष
लम्बे बाल रखे, तो उसके लिये अपमान
है। १५ परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे,
तो उसके लिये शोभा है क्योंकि बाल उस
को ओढ़नी के लिये दिए गए हैं। १६ परन्तु
यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जाने
कि न हमारी और न परमेश्वर की कली-
सियाओं की ऐसी रीति है॥

१७ परन्तु यह आज्ञा देते हुए, मैं तुम्हें
नहीं सराहता, इसलिये कि तुम्हारे इकट्ठे
होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है।
१८ क्योंकि पहिले तो मैं यह सुनता हूं, कि
जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो
तुम में फूट होती है और मैं कुछ कुछ प्रतीति
भी करता हूं। १९ क्योंकि विधर्म भी
तुम में अवश्य होंगे, इसलिये कि जो लोग
तुम में खरे निकले हैं, वे प्रगट हो जाएं।
२० सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते
हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं।
२१ क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से
पहिले अपना भोज खा लेता है, सो कोई
तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो
जाता है। २२ क्या खाने पीने के लिये
तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कली-
सिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के
पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं
तुम से क्या कहूं? क्या इस बात में तुम्हारी
प्रशंसा करूं? मैं प्रशंसा नहीं करता।
२३ क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची,
और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु
यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया
रोटी ली। २४ और धन्यवाद करके उसे
तोड़ी, और कहा, कि यह मेरी देह है, जो
तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही
किया करो। २५ इसी रीति से उस ने
बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और
कहा, यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा
है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के
लिये यही किया करो। २६ क्योंकि जब
कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में
से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक
वह न आए, प्रचार करते हो। २७ इस-
लिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की
रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह
प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा।
२८ इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच
ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए,
और इस कटोरे में से पीए। २९ क्योंकि
जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न

* या आधीनता का चिन्ह।

१३ पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनो
स्थाई हैं, पर इन में सब से बडा प्रेम है।।

१४ प्रेम का अनुकरण करो, और
आत्मिक वरदानो की भी धुन मे
रहो विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी
करो। २ क्योकि जो अन्य भाषा मे बातें
करता है, वह मनुष्यो से नही, परन्तु
परमेश्वर से बातें करता है, इसलिये कि
उस की कोई नही समझता, क्योकि वह
भेद की बाते आत्मा मे होकर बोलता है।
३ परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह
मनुष्यो से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति
की बाते कहता है। ४ जो अन्य भाषा मे
बाते करता है, वह अपनी ही उन्नति करता
है, परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह
कलीसिया की उन्नति करता है। ५ मै
चाहता हू, कि तुम सब अन्य भाषाओ मे
बाते करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हू
कि भविष्यद्वाणी करो क्योकि यदि
अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की
उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्-
वाणी करनेवाला उस से बढकर है। ६ इस-
लिये हे भाइयो, यदि मै तुम्हारे पास आकर
अन्यान्य भाषा मे बाते करू, और प्रकाश,
या ज्ञान, या भविष्यद्वाणी, या उपदेश की
बाते तुम से न कहू, तो मुझ से तुम्हे क्या
लाभ होगा? ७ इसी प्रकार यदि निर्जीव
वस्तुए भी, जिन से ध्वनि निकलती है जैसे
बासुरी, या बीन, यदि उन के स्वरो मे भेद
न हो तो जो फूका या बजाया जाता है, वह
क्योकर पहिचाना जाएगा? ८ और यदि
तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लडाई
के लिये तैयारी करेगा? ९ ऐसे ही तुम भी
यदि जीभ से साफ साफ बाते न कहो, तो जो
कुछ कहा जाता है, वह क्योकर समझा
जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले
ठहरोगे। १० जगत मे कितने ही प्रकार
की भाषाए क्यो न हो, परन्तु उन में से कोई
भी बिना अर्थ की न होगी। ११ इसलिये
यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझू, तो
बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूगा,
और बोलनेवाला मेरे दृष्टि में परदेशी
ठहरेगा। १२ इसलिये तुम भी जब
आत्मिक वरदानो की धुन में हो, तो ऐसा
प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानो की उन्नति
से कलीसिया की उन्नति हो। १३ इस
कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना
करे, कि उसका अनुवाद भी कर सके।
१४ इसलिये यदि मै अन्य भाषा में प्रार्थना
करू, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है,
परन्तु मेरी बुद्धि काम नही देती। १५ सो
क्या करना चाहिए? मै आत्मा से भी
प्रार्थना करूगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना
करूगा, मै आत्मा से गाऊगा, और बुद्धि से
भी गाऊगा। १६ नही तो यदि तू आत्मा
ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे
धन्यवाद पर आमीन क्योकर कहेगा?
इसलिये कि वह तो नही जानता, कि तू
क्या कहता है? १७ तू तो भली भाति से
धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति
नही होती। १८ मै अपने परमेश्वर का
धन्यवाद करता हू, कि मै तुम सब से अधिक
अन्यान्य भाषा मे बोलता हू। १९ परन्तु
कलीसिया मे अन्य भाषा में दस हजार बाते
कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पडता
है, कि औरो के सिखाने के लिये बुद्धि से पाच
ही बाते कहू।।

२० हे भाइयो, तुम समझ मे बालक न
बनो तौभी बुराई मे तो बालक रहो,
परन्तु समझ मे सियाने बनो। २१ व्यवस्था
मे लिखा है, कि प्रभु कहता है, मै अन्य

भाषा बोलनेवालो के द्वारा, और पराए मुख
के द्वारा इन लोगो से बातें करूगा तौभी वे
मेरी न सुनेंगे। २२ इसलिये अन्यान्य
भाषाए विश्वासियो के लिये नही, परन्तु
अविश्वासियो के लिये चिन्ह है, और
भविष्यद्वाणी अविश्वासियो के लिये नही
परन्तु विश्वासियो के लिये चिन्ह है।
२३ सो यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी
हो, और सब के सब अन्यान्य भाषा बोलें,
और अनपढे या अविश्वासी लोग भीतर आ
जाए तो क्या वे तुम्हे पागल न कहेंगे?
२४ परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने
लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढा
मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी
ठहरा देंगे और परख लेंगे। २५ और
उसके मन के भेद प्रगट हो जाएगे, और तब
वह मुह के बल गिरकर परमेश्वर को
दण्डवत करेगा, और मान लेगा, कि
सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है॥

२६ इसलिये हे भाइयो क्या करना
चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर
एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य
भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ
बताना रहता है सब कुछ आत्मिक उन्नति
के लिये होना चाहिए। २७ यदि अन्य
भाषा में बातें करनी हो, तो दो दो, या
बहुत हो तो तीन तीन जन बारी बारी
बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे।
२८ परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो,
तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में
शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर
से बातें करे। २९ भविष्यद्वक्ताओ में से
दो या तीन बोलें, और शेष लोग उन के
वचन को परखें। ३० परन्तु यदि दूसरे
पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो,
तो पहिला चुप हो जाए। ३१ क्योकि तुम
सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते
हो ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाए।
३२ और भविष्यद्वक्ताओ की आत्मा
भविष्यद्वक्ताओ के वश में है। ३३ क्योकि
परमेश्वर गडबडी का नही, परन्तु शान्ति का
कर्त्ता है, जैसा पवित्र लोगो की सब
कलीसियाओ में है॥

३४ स्त्रिया कलीसिया की सभा में चुप
रहे, क्योकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नही,
परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है जैसा
व्यवस्था में लिखा भी है। ३५ और यदि
वे कुछ सीखना चाहे, तो घर में अपने अपने
पति से पूछें, क्योकि स्त्री का कलीसिया में
बातें करना लज्जा की बात है। ३६ क्या
परमेश्वर का वचन तुम में से निकला?
या केवल तुम ही तक पहुचा है?

३७ यदि कोई मनुष्य अपने आप को
भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो
यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हू,
वे प्रभु की आज्ञाए हैं। ३८ परन्तु यदि
कोई न जाने, तो न जाने॥

३९ सो हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने
की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से
मना न करो। ४० पर सारी बातें सभ्यता
और क्रमानुसार की जाए॥

१५ हे भाइयो, मैं तुम्हे वही
सुसमाचार बताता हू जो पहिले
सुना चुका हू, जिसे तुम ने अगीकार भी किया
था और जिस में तुम स्थिर भी हो। २ उसी
के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि
उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था
स्मरण रखते हो, नही तो तुम्हारा विश्वास
करना व्यर्थ हुआ। ३ इसी कारण मैं ने
सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुचा दी, जो
मुझे पहुची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के

पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने
ऊपर दण्ड लाता है। ३० इसी कारण
तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और
बहुत से सो भी गए। ३१ यदि हम अपने
आप को जांचते, तो दण्ड न पाते।
३२ परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी
ताड़ना करता है इसलिये कि हम संसार के
साथ दोषी न ठहरें। ३३ इसलिये, हे मेरे
भाइयो, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते
हो, तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो।
३४ यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में
खा ले जिस से तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड
का कारण न हो और शेष बातों को मैं
आकर ठीक कर दूंगा॥

१२ हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि
तुम आत्मिक वरदानों के विषय में
अज्ञान रहो। २ तुम जानते हो, कि जब
तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे
जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। ३ इस-
लिये मैं तुम्हें चितौनी देता हूं कि जो कोई
परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता
है, वह नहीं कहता कि यीशु स्रापित है,
और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह
सकता है कि यीशु प्रभु है॥

४ वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु
आत्मा एक ही है। ५ और सेवा भी कई
प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है।
६ और प्रभावशाली कार्य्य कई प्रकार के
हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में
हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।
७ किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिये हर
एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।
८ क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की
बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी
आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। ९ और
किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और
किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने
का वरदान दिया जाता है। १० फिर
किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति,
और किसी को भविष्यद्वाणी की; और
किसी को आत्माओं की परख, और किसी
को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को
भाषाओं का अर्थ बताना। ११ परन्तु ये
सब प्रभावशाली कार्य्य वही एक आत्मा
करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह
बांट देता है॥

१२ क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है,
और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक
देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब
मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह
भी है। १३ क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी
हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र,
एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये
बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही
आत्मा पिलाया गया। १४ इसलिये कि
देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं।
१५ यदि पांव कहे, कि मैं हाथ नहीं, इस-
लिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण
देह का नहीं? १६ और यदि कान कहे;
कि मैं आंख नहीं, इसलिये देह का नहीं,
तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है।
१७ यदि सारी देह आंख ही होती तो
सुनना कहां होता? यदि सारी देह कान
ही होती, तो सूंघना कहां होता? १८ परन्तु
सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा
के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।
१९ यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह
कहां होती? २० परन्तु अब अंग तो बहुत
से हैं, परन्तु देह एक ही है। २१ आंख
हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा
प्रयोजन नहीं, और न सिर पांवों से कह

सकता है, कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नही।
२२ परन्तु देह के वे अग जो औरो से
निर्बल देख पडते है, बहुत ही आवश्यक है।
२३ और देह के जिन अगो को हम आदर
के योग्य नही समझते हैं उन्ही को हम
अधिक आदर देते है, और हमारे शोभाहीन
अग और भी बहुत शोभायमान हो जाते है।
२४ फिर भी हमारे शोभायमान अगो को
इस का प्रयोजन नही, परन्तु परमेश्वर ने देह
को ऐसा बना दिया है, कि जिस अग को
घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो।
२५ ताकि देह मे फूट न पडे, परन्तु अग
एक दूसरे की बराबर चिन्ता करे। २६ इस-
लिये यदि एक अग दु ख पाता है, तो सब
अग उसके साथ दु ख पाते है, और यदि
एक अग की बडाई होती है, तो उसके साथ
सब अग आनन्द मनाते हैं। २७ इसी
प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो,
और अलग अलग उसके अग हो। २८ और
परमेश्वर ने कलीसिया मे अलग अलग
व्यक्ति नियुक्त किए है, प्रथम प्रेरित, दूसरे
भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक *, फिर सामर्थ
के काम करनेवाले, फिर चगा करनेवाले,
और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और
नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।
२९ क्या सब प्रेरित है? क्या सब भविष्यद्-
वक्ता है? क्या सब उपदेशक हैं? क्या
सब सामर्थ के काम करनेवाले है? ३० क्या
सब को चगा करने का बरदान मिला है?
क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते है?
३१ क्या सब अनुवाद करते है? तुम बडी
से बडी बरदानो के धुन में रहो! परन्तु मैं
तुम्हे और भी सब से उत्तम मार्ग बताता
हू॥

* या उपदेशक।

१३ यदि मैं मनुष्यो और स्वर्गदूतो
की बोलिया बोलू, और प्रेम न रखू,
तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झझनाती
हुई झाझ हू। २ और यदि मैं भविष्यद्वाणी
कर सकू, और सब भेदो और सब प्रकार के
ज्ञान को समझू, और मुझे यहा तक पूरा
विश्वास हो, कि मैं पहाडो को हटा दू, परन्तु
प्रेम न रखू, तो मैं कुछ भी नही। ३ और
यदि मै अपनी सम्पूर्ण सपत्ति कगालो को
खिला दू, या अपनी देह जलाने के लिये दे
दू, और प्रेम न रखू, तो मुझे कुछ भी लाभ
नही। ४ प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल
है, प्रेम डाह नही करता, प्रेम अपनी बडाई
नही करता, और फूलता नही। ५ वह
अनरीति नही चलता, वह अपनी भलाई
नही चाहता, झुझलाता नही, बुरा नही
मानता। ६ कुकर्म से आनन्दित नही
होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
७ वह सब बातें सह लेता है, सब बातो की
प्रतीति करता है, सब बातो की आशा रखता
है, सब बातो मे धीरज धरता है। ८ प्रेम
कभी टलता नही, *भविष्यद्वाणिया हो, तो*
समाप्त हो जाएगी, भाषाए हो, तो जाती
रहेगी, ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
९ क्योकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और
हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी। १० परन्तु
जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट
जाएगा। ११ जब मैं बालक था, तो मैं
बालको की नाई बोलता था, बालको का
सा मन था बालको की सी समझ थी,
परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालको की
बातें छोड दी। १२ अब हमें दर्पण में
धुधला सा दिखाई देता है, परन्तु उस समय
आमने साम्हने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान
अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति
से पहिचानूगा, जैसा मै पहिचाना गया हू।

१३ पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनो
स्थाई है, पर इन में सब से बडा प्रेम है॥

१४ प्रेम का अनुकरण करो, और
आत्मिक वरदानो की भी धुन में
रहो विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी
करो। २ क्योंकि जो अन्य भाषा मे बातें
करता है, वह मनुष्यो से नही, परन्तु
परमेश्वर से बातें करता है, इसलिये कि
उस की कोई नही समझता, क्योकि वह
भेद की बाते आत्मा में होकर बोलता है।
३ परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह
मनुष्यो से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति
की बाते कहता है। ४ जो अन्य भाषा मे
बाते करता है, वह अपनी ही उन्नति करता
है, परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह
कलीसिया की उन्नति करता है। ५ मैं
चाहता हू, कि तुम सब अन्य भाषाओ में
बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हू
कि भविष्यद्वाणी करो क्योकि यदि
अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की
उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्-
वाणी करनेवाला उस से बढकर है। ६ इस-
लिये हे भाइयो, यदि मै तुम्हारे पास आकर
अन्यान्य भाषा में बाते करू, और प्रकाश,
या ज्ञान, या भविष्यद्वाणी, या उपदेश की
बातें तुम से न कहू, तो मुझ से तुम्हें क्या
लाभ होगा? ७ इसी प्रकार यदि निर्जीव
वस्तुए भी, जिन से ध्वनि निकलती है जैसे
बासुरी, या बीन, यदि उन के स्वरो में भेद
न हो तो जो फूका या बजाया जाता है, वह
क्योकर पहिचाना जाएगा? ८ और यदि
तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लडाई
के लिये तैयारी करेगा? ९ ऐसे ही तुम भी
यदि जीभ से साफ साफ बातें न कहो, तो जो
कुछ कहा जाता है, वह क्योकर समझा
जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले
ठहरोगे। १० जगत मे कितने ही प्रकार
की भाषाए क्यो न हो, परन्तु उन में से कोई
भी बिना अर्थ की न होगी। ११ इसलिये
यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझू, तो
बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूगा,
और बोलनेवाला मेरे दृष्टि में परदेशी
ठहरेगा। १२ इसलिये तुम भी जब
आत्मिक वरदानो की धुन में हो, तो ऐसा
प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानो की उन्नति
से कलीसिया की उन्नति हो। १३ इस
कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना
करे, कि उसका अनुवाद भी कर सके।
१४ इसलिये यदि मै अन्य भाषा में प्रार्थना
करू, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है,
परन्तु मेरी बुद्धि काम नही देती। १५ सो
क्या करना चाहिए? मै आत्मा से भी
प्रार्थना करूगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना
करूगा, मै आत्मा से गाऊगा, और बुद्धि से
भी गाऊगा। १६ नही तो यदि तू आत्मा
ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे
धन्यवाद पर आमीन क्योकर कहेगा?
इसलिये कि वह तो नही जानता, कि तू
क्या कहता है? १७ तू तो भली भाति से
धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति
नही होती। १८ मै अपने परमेश्वर का
धन्यवाद करता हू, कि मै तुम सब से अधिक
अन्यान्य भाषा में बोलता हू। १९ परन्तु
कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें
कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पडता
है, कि औरो के सिखाने के लिये बुद्धि से पाच
ही बाते कहू॥

२० हे भाइयो, तुम समझ में बालक न
बनो तौभी बुराई में तो बालक रहो,
परन्तु समझ मे सियाने बनो। २१ व्यवस्था
में लिखा है, कि प्रभु कहता है, मै अन्य

भाषा बोलनेवालों के द्वारा, और पराए मुख
के द्वारा इन लोगों से बातें करूंगा तौभी वे
मेरी न सुनेंगे। २२ इसलिये अन्यान्य
भाषाएं विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु
अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं, और
भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं
परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह हैं।
२३ सो यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी
हो, और सब के सब अन्यान्य भाषा बोलें,
और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ
जाएं तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे?
२४ परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने
लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा
मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी
ठहरा देंगे और परख लेंगे। २५ और
उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब
वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को
दण्डवत करेगा, और मान लेगा, कि
सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है॥

२६ इसलिये हे भाइयो क्या करना
चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर
एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य
भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ
बताना रहता है सब कुछ आत्मिक उन्नति
के लिये होना चाहिए। २७ यदि अन्य
भाषा में बातें करनी हों, तो दो दो, या
बहुत हों तो तीन तीन जन बारी बारी
बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे।
२८ परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला न हो,
तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में
शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर
से बातें करे। २९ भविष्यद्वक्ताओं में से
दो या तीन बोलें, और शेष लोग उन के
वचन को परखें। ३० परन्तु यदि दूसरे
पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो,
तो पहिला चुप हो जाए। ३१ क्योंकि तुम
सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते
हो ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं।
३२ और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा
भविष्यद्वक्ताओं के वश में है। ३३ क्योंकि
परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का
कर्त्ता है, जैसा पवित्र लोगों की सब
कलीसियाओं में है॥

३४ स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप
रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं,
परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है जैसा
व्यवस्था में लिखा भी है। ३५ और यदि
वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने
पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में
बातें करना लज्जा की बात है। ३६ क्या
परमेश्वर का वचन तुम में से निकला?
या केवल तुम ही तक पहुंचा है?

३७ यदि कोई मनुष्य अपने आप को
भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो
यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं,
वे प्रभु की आज्ञाएं हैं। ३८ परन्तु यदि
कोई न जाने, तो न जाने॥

३९ सो हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने
की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से
मना न करो। ४० पर सारी बातें सभ्यता
और क्रमानुसार की जाएं॥

१५ हे भाइयो, मैं तुम्हें वही
सुसमाचार बताता हूं जो पहिले
सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया
था और जिस में तुम स्थिर भी हो। २ उसी
के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि
उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था
स्मरण रखते हो, नहीं तो तुम्हारा विश्वास
करना व्यर्थ हुआ। ३ इसी कारण मैं ने
सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो
मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के

अनुसार यीशु मसीह हमारे पापो के लिये
मर गया। ४ और गाड़ा गया; और
पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी
उठा। ५ और कैफा को तब बारहो को
दिखाई दिया। ६ फिर पाच सौ से अधिक
भाइयो को एक साथ दिखाई दिया, जिन में
से बहुतेरे अब तक वर्तमान हैं पर कितने सो
गए। ७ फिर याकूब को दिखाई दिया तब
सब प्रेरितो को दिखाई दिया। ८ और
सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो
मानो अधूरे दिनो का जन्मा हू। ९ क्योकि
मैं प्रेरितो मे सब से छोटा हू, बरन प्रेरित
कहलाने के योग्य भी नही, क्योकि मैं ने
परमेश्वर की कलीसिया को सताया था।
१० परन्तु मैं जो कुछ भी हू, परमेश्वर के
अनुग्रह से हू और उसका अनुग्रह जो मुझ
पर हुआ, वह व्यर्थ नही हुआ, परन्तु मैं ने
उन सब मे बढकर परिश्रम भी किया.
तौभी यह मेरी ओर से नही हुआ परन्तु
परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।
११ सो चाहे मैं हू, चाहे वे हो, हम यही
प्रचार करते हैं, और इसी पर तुम ने विश्वास
भी किया॥

१२ सो जब कि मसीह का यह प्रचार
किया जाता है, कि वह मरे हुओ में से जी
उठा, तो तुम में से कितने क्योकर कहते है,
कि मरे हुओं का पुनरुत्थान * है ही नही ?
१३ यदि मरे हुओ का पुनरुत्थान ही
नही, तो मसीह भी नही जी उठा।
१४ और यदि मसीह नही जी उठा, तो
हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और
तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है। १५ बरन
हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरे, क्योकि
हम ने परमेश्वर के विषय मे यह गवाही दी,
कि उस ने मसीह को जिला दिया यद्यपि
नही जिलाया, यदि मरे हुए नही जी उठते।
१६ और यदि मुर्दे नही जी उठते, तो
मसीह भी नही जी उठा। १७ और यदि
मसीह नही जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास
व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापो
मे फसे हो। १८ बरन जो मसीह में सो
गए हैं, वे भी नाश हुए। १९ यदि हम
केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते
हैं तो हम सब मनुष्यो से अधिक अभागे
हैं॥

२० परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी
उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला
फल हुआ। २१ क्योकि जब मनुष्य के
द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य ही के द्वारा
मरे हुओ का पुनरुत्थान भी आया।
२२ और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा
ही मसीह मे सब जिलाए जाएगे।
२३ परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से;
पहिला फल मसीह, फिर मसीह के आने
पर उसके लोग। २४ इस के बाद अन्त
होगा, उस समय वह सारी प्रधानता और
सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके
राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौप
देगा। २५ क्योकि जब तक कि वह अपने
वैरियो को अपने पावो तले न ले आए, तब
तक उसका राज्य करना अवश्य है।
२६ सब से अन्तिम वैरी जो नाश किया
जाएगा वह मृत्यु है। २७ क्योकि परमेश्वर
ने सब कुछ उसके पावों तले कर दिया है,
परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके
आधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि
जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया,
वह आप अलग रहा। २८ और जब सब
कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र
आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिस ने

* या मृतकोत्थान।

सब कुछ उसके आधीन कर दिया, ताकि
सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो॥
२९ नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिये
बपतिस्मा लेते हैं, वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे
जी उठते ही नहीं, तो फिर क्यों उन के लिये
बपतिस्मा लेते हैं? ३० और हम भी क्यों
हर घड़ी जोखिम में पड़े रहते हैं? ३१ हे
भाइयो, मुझे उस घमण्ड की सोंह जो हमारे
मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूं,
कि मैं प्रति दिन मरता हूं। ३२ यदि मैं
मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन-पशुओं
से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि
मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाएं-
पीएं, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे।
३३ धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे
चरित्र को बिगाड़ देती है। ३४ धर्म के
लिये जाग उठो और पाप न करो, क्योंकि
कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते,
मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता
हूं॥
३५ अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस
रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ
आते हैं? ३६ हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता
है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता।
३७ और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं
जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना
है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज
का। ३८ परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के
अनुसार उस को देह देता है, और हर एक
बीज को उस की विशेष देह। ३९ सब
शरीर एक सरीखे नहीं, परन्तु मनुष्यों का
शरीर और है, पशुओं का शरीर और है,
पक्षियों का शरीर और है, मछलियों का
शरीर और है। ४० स्वर्गीय देह हैं, और
पार्थिव देह भी हैं परन्तु स्वर्गीय देहों का
तेज और है, और पार्थिव का और।
४१ सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और
है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि
एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर
है)। ४२ मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही
है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता
है, और अविनाशी रूप में जी उठता है।
४३ वह अनादर के साथ बोया जाता है,
और तेज के साथ जी उठता है, निर्बलता के
साथ बोया जाता है, और सामर्थ के साथ
जी उठता है। ४४ स्वाभाविक देह बोई
जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है
जब कि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह
भी है। ४५ ऐसा ही लिखा भी है, कि
प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित प्राणी
बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक
आत्मा बना। ४६ परन्तु पहिले आत्मिक
न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद
आत्मिक हुआ। ४७ प्रथम मनुष्य धरती
से, अर्थात् मिट्टी का था, दूसरा मनुष्य
स्वर्गीय है। ४८ जैसा वह मिट्टी का था,
वैसे ही और मिट्टी के हैं, और जैसा वह
स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय हैं।
४९ और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी
का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय
का रूप भी धारण करेंगे॥
५० हे भाइयो, मैं यह कहता हूं कि
मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के
अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश
अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
५१ देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता
हूं कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब
बदल जाएंगे। ५२ और यह क्षण भर में,
पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही
होगा क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और
मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और
हम बदल जाएंगे। ५३ क्योंकि अवश्य है,

कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन
ले, और यह मरनहार देह अमरता को
पहिन ले। ५४ और जब यह नाशमान
अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरन-
हार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन
जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने
मृत्यु को निगल लिया। ५५ हे मृत्यु तेरी
जय कहा रही? ५६ हे मृत्यु तेरा डक
कहा रहा? मृत्यु का डक पाप है, और
पाप का बल व्यवस्था है। ५७ परन्तु
परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा हमे जयवन्त करता है।
५८ सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ और अटल
रहो, और प्रभु के काम मे सर्वदा बढते जाओ,
क्योकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम
प्रभु मे व्यर्थ नही है॥

१६ अब उस चन्दे के विषय मे जो
पवित्र लोगो के लिये किया जाता
है, जैसी आज्ञा मै ने गलतिया की कली-
सियाओ को दी, वैसा ही तुम भी करो।
२ सप्ताह के पहिले दिन तुम मे से हर एक
अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास
रख छोडा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न
करना पडे। ३ और जब मै आऊगा, तो
जिन्हे तुम चाहोगे उन्हे मै चिट्ठिया देकर
भेज दूगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुचा
दें। ४ और यदि मेरा भी जाना उचित
हुआ, तो वे मेरे साथ जाएगे। ५ और मै
मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊगा,
क्योकि मुझे मकिदुनिया होकर तो जाना ही
है। ६ परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहा ही
ठहर जाऊ और शरद ऋतु तुम्हारे यहा
काटू, तब जिस ओर मेरा जाना हो, उस
ओर तुम मुझे पहुचा दो। ७ क्योकि मै
अब मार्ग में तुम से भेंट करना नही चाहता,
परन्तु मुझे आशा है, कि यदि प्रभु चाहे
तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहूगा।
८ परन्तु मै पेन्तिकुस्त तक इफिसुस में
रहूगा। ९ क्योकि मेरे लिये एक बडा
और उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी
बहुत से हैं॥

१० यदि तीमुथियुस आ जाए, तो
देखना, कि वह तुम्हारे यहा निडर रहे,
क्योकि वह मेरी नाई प्रभु का काम करता
है। ११ इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने,
परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुचा देना,
कि मेरे पास आ जाए, क्योकि मै उस की
बाट जोह रहा हू, कि वह भाइयो के साथ
आए। १२ और भाई अपुल्लोस से मै ने
बहुत बिनती की है कि तुम्हारे पास भाइयो
के साथ जाए, परन्तु उस ने इस समय जाने
की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर
पाएगा, तब आ जाएगा॥

१३ जागते रहो, विश्वास में स्थिर
रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ।
१४ जो कुछ करते हो प्रेम से करो॥

१५ हे भाइयो, तुम स्तिफनास के घराने
को जानते हो, कि वे अखया के पहिले फल
है, और पवित्र लोगो की सेवा के लिये तैयार
रहते हैं। १६ सो मै तुम से बिनती करता
हू कि ऐसो के आधीन रहो, बरन हर एक के
जो इस काम में परिश्रमी और सहकर्मी है।
१७ और मै स्तिफनास और फूरतूनातुस
और अखइकुस के आने से आनन्दित हू,
क्योकि उन्हो ने तुम्हारी घटी को पूरी की
है। १८ और उन्हो ने मेरी और तुम्हारी
आत्मा को चैन दिया है इसलिये ऐसो को
मानो॥

१९ आसिया की कलीसियाओ की ओर
से तुम को नमस्कार, अक्विला और प्रिसका
का और उन के घर की कलीसिया का भी

तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार।
२० सब भाइयों का तुम को नमस्कार
पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो॥
२१ मुझ पौलुस का अपने हाथ का
लिखा हुआ नमस्कार यदि कोई प्रभु से
प्रेम न रखे तो वह स्रापित हो। २२ हमारा
प्रभु आनेवाला है। २३ प्रभु यीशु मसीह
का अनुग्रह तुम पर होता रहे। २४ मेरा
प्रेम मसीह यीशु में तुम सब से रहे।
आमीन॥

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर
की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित
है, और भाई तीमुथियुस की ओर से
परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो
कुरिन्थुस में है, और सारे अखया के सब
पवित्र लोगों के नाम॥
२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और
शान्ति मिलती रहे॥
३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर,
और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का
पिता, और सब प्रकार की शान्ति का
परमेश्वर है। ४ वह हमारे सब क्लेशों में
शान्ति देता है, ताकि हम उस शान्ति
के कारण जो परमेश्वर हमें देता है,
उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार
के क्लेश में हों। ५ क्योंकि जसे मसीह
के दुख हम को अधिक होते है, वैसे ही
हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिक
होती है। ६ यदि हम क्लेश पाते हैं,
तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के
लिये है और यदि शान्ति पाते हैं, तो यह
तुम्हारी शान्ति के लिये है, जिस के
प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन क्लेशों
को सह लेते हो, जिन्हें हम भी सहते
हैं। ७ और हमारी आशा तुम्हारे विषय में
दृढ है, क्योंकि हम जानते है, कि तुम
जैसे दुखो के वैसे ही शान्ति के भी
सहभागी हो। ८ हे भाइयो, हम नही
चाहते कि तुम हमारे उस क्लेश से अनजान
रहो, जो आसिया में हम पर पडा, कि
ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी
सामर्थ से बाहर था, यहा तक कि हम
जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। ९ वरन
हम ने अपने मन में समझ लिया था,
कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है
कि हम अपना भरोसा न रखें, वरन
परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता
है। १० उसी ने हमें ऐसी बडी मृत्यु से
बचाया, और बचाएगा, और उस से
हमारी यह आशा है, कि वह आगे को
भी बचाता रहेगा। ११ और तुम भी
मिलकर प्रार्थना के द्वारा हमारी सहायता
करोगे, कि जो वरदान बहुतो के द्वारा

हमे मिला, उसके कारण बहुत लोग
हमारी ओर से धन्यवाद करे॥
१२ क्योकि हम अपने विवेक* की
इस गवाही पर घमण्ड करते है, कि
जगत मे और विशेष करके तुम्हारे बीच
हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी
पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो
शारीरिक ज्ञान से नही, परन्तु परमेश्वर
के अनुग्रह के साथ था। १३ हम तुम्हे
और कुछ नही लिखते, केवल वह जो
तुम पढते या मानते भी हो, और मुझे
आशा है, कि अन्त तक भी मानते रहोगे।
१४ जैसा तुम मे से कितनो ने† मान
लिया है, कि हम तुम्हारे घमण्ड का
कारण है, वैसे तुम भी प्रभु यीशु के दिन
हमारे लिये घमण्ड का कारण ठहरोगे॥
१५ और इस भरोसे से मै चाहता
था कि पहिले तुम्हारे पास आऊ, कि
तुम्हे एक और दान मिले। १६ और
तुम्हारे पास से होकर मकिदुनिया को
जाऊ, और फिर मकिदुनिया से तुम्हारे
पास आऊ, और तुम मुझे यहूदिया की
ओर कुछ दूर तक पहुचाओ। १७ इस-
लिये मै ने जो यह इच्छा की थी तो क्या
मै ने चचलता दिखाई? या जो करना
चाहता हू क्या शरीर के अनुसार करना
चाहता हू, कि मै बात मे हा, हा भी
करू, १८ और नही नही भी करू?
परमेश्वर सच्चा‡ गवाह है, कि हमारे
उस वचन मे जो तुम से कहा हा और
नही दोनो पाई नही जाती। १९ क्योकि
परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिस का
हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सिलवानुस
और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में
प्रचार हुआ, उस मे हा और नही दोनो
न थी, परन्तु, उस मे हा ही हा हुई।
२० क्योकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाए
है, वे सब उसी मे हा के साथ है इसलिये
उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि हमारे
द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। २१ और
जो हमे तुम्हारे साथ मसीह मे दृढ करता
है, और जिस ने हमे अभिषेक किया
वही परमेश्वर है। २२ जिस ने हम पर
छाप भी कर दी है और बयाने मे आत्मा
को हमारे मनो मे दिया॥
२३ मै परमेश्वर को गवाह* करता
हू, कि मै अब तक कुरिन्थुस मे इसलिये
नही आया, कि मुझे तुम पर तरस आता
था। २४ यह नही, कि हम विश्वास के
विषय मे तुम पर प्रभुता जताना चाहते
है, परन्तु तुम्हारे आनन्द मे सहायक है
क्योकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

२ मै ने अपने मन मे यही ठान लिया
था कि फिर तुम्हारे पास उदास
होकर न आऊ। २ क्योकि यदि मै तुम्हे
उदास करू, तो मुझे आनन्द देनेवाला
कौन होगा, केवल वही जिस को मै ने
उदास किया? ३ और मै ने यही बात
तुम्हे इसलिये लिखी, कि कही ऐसा न
हो, कि मेरे आने पर जिन से आनन्द
मिलना चाहिए, मै उन से उदास होऊ,
क्योकि मुझे तुम सब पर इस बात का
भरोसा है, कि जो मेरा आनन्द है, वही
तुम सब का भी है। ४ बडे क्लेश, और
मन के कष्ट से, मैं ने बहुत से आसू बहा
बहाकर तुम्हे लिखा, इसलिये नही, कि
तुम उदास हो, परन्तु इसलिये कि तुम

* अर्थात मन या कानशन्स।
† या थोडा बहुत।
‡ या विश्वासी।

* यू० अपने प्राण पर गवाह।

उस वडे प्रेम को जान लो, जो मुझे
तुम से है ।।

५ और यदि किसी ने उदास किया
है, तो मुझे ही नही वरन (कि उसके
साथ वहुत कडाई न करू) कुछ कुछ
तुम सब को भी उदास किया है। ६ ऐसे
जन के लिये यह दण्ड जो भाइयो में से
वहुतो ने दिया, वहुत है। ७ इसलिये
इस से यह भला है कि उसका अपराध
क्षमा करो, और शान्ति दो, न हो कि
ऐसा मनुष्य वहुत उदासी में डूब जाए।
८ इस कारण म तुम से विनती करता
हू, कि उस को अपने प्रेम का प्रमाण दो।
९ क्योकि मैं ने इसलिये भी लिखा था,
कि तुम्हे परख लू, कि सव वातो के
मानने के लिये तैयार हो, कि नही।
१० जिस का तुम कुछ क्षमा करते हो
उसे मैं भी क्षमा करता हू, क्योकि मैं ने
भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया
हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में
होकर * क्षमा किया है। ११ कि शैतान
का हम पर दाव न चले, क्योकि हम
उस की युक्तियो से अनजान नही ।।

१२ और जव मैं मसीह का सुसमाचार
सुनाने को त्रोआस में आया, और प्रभु ने
मेरे लिये एक द्वार खोल दिया। १३ तो
मेरे मन में चैन न मिला, इसलिये कि
मैं ने अपने भाई तितुस को नही पाया,
सो उन से विदा होकर मैं मकिदुनिया को
चला गया। १४ परन्तु परमेश्वर का
धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को
जय के उत्सव में लिये फिरता है, और
अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर
जगह फैलाता है। १५ क्योकि हम पर-
मेश्वर के निकट उद्धार पानेवालो, और
नाश होनेवालो, दोनो के लिये मसीह के
सुगन्ध है। १६ कितनो के लिये तो
मरने के निमित्त मृत्यु की गन्ध, और
कितनो के लिये जीवन के निमित्त जीवन
की सुगन्ध, और इन वातो के योग्य
कौन है? १७ क्योकि हम उन वहुतो के
समान नही, जो परमेश्वर के वचन में
मिलावट करते है, परन्तु मन की
सच्चाई से, और परमेश्वर की ओर से
परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में
वोलते हैं ।।

३ क्या हम फिर अपनी वडाई करने
लगे? या हमें कितनो की नाईं
सिफारिश की पत्रिया तुम्हारे पास लानी
या तुम से लेनी है? २ हमारी पत्री तुम
ही हो, जो हमारे हृदयो पर लिखी
हुई है, और उसे सव मनुष्य पहिचानते
और पढते हैं। ३ यह प्रगट है, कि तुम
मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने
सेवको की नाईं लिखा, और जो सियाही से
नही, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से
पत्थर की पटियो पर नही, परन्तु हृदय
की मास रूपी पटियो पर लिखी है।
४ हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा
ही भरोसा रखते हैं। ५ यह नही, कि
हम अपने आप से इस योग्य हैं, कि अपनी
ओर से किसी वात का विचार कर
सके, पर हमारी योग्यता परमेश्वर की
ओर से है। ६ जिस ने हमें नई वाचा
के सेवक होने के योग्य भी किया, शब्द *
के सेवक नही वरन आत्मा के, क्योकि
शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।
७ और यदि मृत्यु की वह वाचा जिस के

* या मसीह को हाजिर जानकर।

* यू० अक्षर।

अक्षर पत्थरो पर खोदे गए थे, यहा तक
तेजोमय हुई, कि मूसा के मुह पर के
तेज के कारण जो घटता भी जाता था,
इस्राएल उसके मुह पर दृष्टि नही कर
सकते थे। ८ तो आत्मा की वाचा और
भी तेजोमय क्यो न होगी? ९ क्योकि
जव दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय
थी, तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी
तेजोमय क्यो न होगी? १० और जो
तेजोमय था, वह भी उस तेज के कारण
जो उस से वढकर तेजोमय था, कुछ
तेजोमय न ठहरा। ११ क्योकि जब वह
जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह
जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यो
न होगा?

१२ सो ऐसी आशा रखकर हम हियाव
के साथ वोलते हैं। १३ और मूसा की
नाईं नही, जिस ने अपने मुह पर परदा*
डाला था ताकि इस्राएली उस घटनेवाली
वस्तु के अन्त को न देखे। १४ परन्तु वे
मतिमन्द हो गए, क्योकि आज तक पुराने
नियम के पढते समय उन के हृदयो पर
वही परदा पडा रहता है, पर वह
मसीह मे उठ जाता है। १५ और आज
तक जव कभी मूसा की पुस्तक पढी जाती
है, तो उन के हृदय पर परदा पडा
रहता है। १६ परन्तु जव कभी उन का
हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तव वह
परदा उठ जाएगा। १७ प्रभु तो आत्मा
है: और जहा कही प्रभु का आत्मा है
वहा स्वतत्रता है। १८ परन्तु जव हम
सव के उघाडे चेहरे से प्रभु का प्रताप इस
प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में,
तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी
तेजस्वी रूप में अश अश कर के वदलते
जाते है॥

४ इसलिये जव हम पर ऐसी दया
हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो
हम हियाव नही छोड़ते। २ परन्तु हम ने
लज्जा के गुप्त कामो को त्याग दिया,
और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर
के वचन मे मिलावट करते हैं, परन्तु
सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के साम्हने
हर एक मनुष्य के विवेक* मे अपनी
भलाई वैठाते हैं। ३ परन्तु यदि हमारे
सुसमाचार पर परदा पडा है, तो यह नाश
होनेवालो ही के लिये पडा है। ४ और
उन अविश्वासियो के लिये, जिन की
वुद्धि को इस ससार के ईश्वर ने अन्धी
कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का
प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का
प्रकाश उन पर न चमके। ५ क्योकि हम
अपने को नही, परन्तु मसीह यीशु को
प्रचार करते है, कि वह प्रभु है, और
अपने विषय मे यह कहते है, कि हम
यीशु के कारण तुम्हारे सेवक है। ६ इस-
लिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा,
कि अन्धकार में से ज्योति चमके, और
वही हमारे हृदयो मे चमका, कि परमेश्वर
की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु
मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥

७ परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी
के वरतनो में रखा है, कि यह असीम
सामर्थ हमारी ओर से नही, वरन परमेश्वर
ही की ओर से ठहरे। ८ हम चारो
ओर से क्लेश तो भोगते है, पर सकट में
नही पडते, निरुपाय तो हैं, पर निराश
नही होते। ९ सताए तो जाते हैं, पर

* या ओढ़ना।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

त्यागे नही जाते, गिराए तो जाते हैं, पर
नाश नही होते। १० हम यीशु की मृत्यु को
अपनी देह में हर समय लिए फिरते है, कि
यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।
११ क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के
कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि
यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर
में प्रगट हो। १२ सो मृत्यु तो हम पर
प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर।
१३ और इसलिये कि हम में वही विश्वास
की आत्मा है, (जिस के विषय में लिखा
है, कि मै ने विश्वास किया, इसलिये मैं
बोला) सो हम भी विश्वास करते है, इसी
लिये बोलने है। १४ क्योंकि हम जानते
है, कि जिस ने प्रभु यीशु को जिलाया, वही
हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा,
और तुम्हारे साथ अपने साम्हने उपस्थित
करेगा। १५ क्योंकि सब वस्तुए तुम्हारे
लिये है, ताकि अनुग्रह बहुतो के द्वारा
अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये
धन्यवाद भी बढाए॥

१६ इसलिये हम हियाव नही छोडते,
यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी
होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी
मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता
है। १७ क्योंकि हमारा पल भर का
हलका सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही
महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न
करता जाता है। १८ और हम तो देखी
हुई वस्तुओ को नही परन्तु अनदेखी
वस्तुओ को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी
हुई वस्तुए थोडे ही दिन की हैं, परन्तु
अनदेखी वस्तुए सदा बनी रहती हं॥

५ क्योंकि हम जानते हैं, कि जब
हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा
घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर
की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन
मिलेगा, जो हाथो से बना हुआ घर नही,
परन्तु चिरस्थाई है। २ इस में तो हम
कहरते, और बडी लालसा रखते हैं, कि
अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें। ३ कि
इस के पहिनने से हम नङ्गे न पाए जाए।
४ और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से
दबे कहरते रहते हैं, क्योंकि हम उतारना
नही, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि
वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।
५ और जिस ने हमें इसी बात के लिये
तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने
हमें बयाने में आत्मा भी दिया है। ६ सो
हम सदा ढाढस बान्धे रहते हैं और यह
जानते हैं, कि जब तक हम देह में रहते
हैं, तब तक प्रभु से अलग हं। ७ क्योंकि
हम रूप को देखकर नही, पर विश्वास से
चलते हैं। ८ इसलिये हम ढाढस बान्धे
रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु
के साथ रहना और भी उत्तम समझते
हं। ९ इस कारण हमारे मन की उमग
यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग
रहें पर हम उसे भाते रहें। १० क्योकि
अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह
के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए,
कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे
कामो का बदला जो उस ने देह के द्वारा
किए हो पाए॥

११ सो प्रभु का भय मानकर हम
लोगो को समझाते हैं और परमेश्वर पर
हमारा हाल प्रगट है, और मेरी आशा
यह है, कि तुम्हारे विवेक * पर भी प्रगट
हुआ होगा। १२ हम फिर भी अपनी

* अर्थात् मन या कानशन्स।

वडाई तुम्हारे साम्हने नही करते वरन
हम अपने विषय में तुम्हे घमण्ड करने का
अवसर देते हैं, कि तुम उन्हें उत्तर दे
सको, जो मन पर नही, वरन दिखावटी
वातो पर घमण्ड करते है। १३ यदि
हम वेसुध है, तो परमेश्वर के लिये,
और यदि चैतन्य हैं, तो तुम्हारे लिये है।
१४ क्योकि मसीह का प्रेम हमें विवश
कर देता है, इसलिये कि हम यह समझते
हैं, कि जव एक सव के लिये मरा तो
सव मर गए। १५ और वह इस निमित्त
सव के लिये मरा, कि जो जीवित है,
वे आगे को अपने लिये न जीए परन्तु
उसके लिये जो उन के लिये मरा और
फिर जी उठा। १६ सो अव से हम
किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे,
और यदि हम ने मसीह को भी शरीर
के अनुसार जाना था, तौभी अव से
उस को ऐसा नही जानेगे। १७ सो यदि
कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है
पुरानी वाते वीत गई है, देखो, वे सव
नई हो गईं। १८ और सव वाते परमेश्वर
की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा
अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर
लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें
सौप दी है। १९ अर्थात् परमेश्वर ने
मसीह मे होकर अपने साथ ससार का
मेल मिलाप कर लिया, और उन के
अपराधो का दोष उन पर नही लगाया
और उस ने मेल मिलाप का वचन हमे
सौप दिया है ॥

२० सो हम मसीह के राजदूत है,
मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता *
है. हम मसीह की ओर से निवेदन करते
हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप
कर लो। २१ जो पाप से अज्ञात था,
उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया,
कि हम उस में होकर परमेश्वर की
धार्मिकता वन जाए॥

६ और हम जो उसके सहकर्मी हैं
यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का
अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने
दो *। २ क्योकि वह तो कहता है, कि
अपनी प्रसन्नता के समय में ने तेरी सुन
ली, और उद्धार के दिन मे ने तेरी सहायता
की देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय
है, देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।
३ हम किसी वात में ठोकर खाने का
कोई भी अवसर नही देते, कि हमारी
सेवा पर कोई दोष न आए। ४ परन्तु
हर वात से परमेश्वर के सेवको की नाई
अपने सद्गुणो को प्रगट करते है, वडे
धैर्य से, क्लेशो से, दरिद्रता से, सकटो से।
५ कोडे खाने से, कैद होने से, हुल्लडो से,
परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास
करने से। ६ पवित्रता से, ज्ञान से,
धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।
७ सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से,
परमेश्वर की सामर्थ से; धार्मिकता के
हथियारो से जो दहिने, वाए है। ८ आदर
और निरादर से, दुरनाम और सुनाम से,
यद्यपि भरमानेवालो के ऐसे मालूम होते
है तौभी सच्चे है। ९ अनजानों के
सदृश्य है, तौभी प्रसिद्ध है, मरते हुओ
के ऐसे है और देखो जीवित हैं, मारखाने-
वालो के सदृश्य है परन्तु प्राण से मारे
नही जाते। १० शोक करनेवाले के समान
है, परन्तु सर्वदा आनन्द करते है, कगालो

* या बिनती करता।

* या व्यर्थ होने के लिये न ले लो।

के ऐसे ह, परन्तु बहुतो को धनवान बना
देते है, ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नही
तौभी सब कुछ रखते है ॥

११ हे कुरिन्थियो, हम ने खुलकर
तुम से बातें की हैं, हमारा हृदय तुम्हारी
ओर खुला हुआ है। १२ तुम्हारे लिये
हमारे मन मे कुछ सकेती नही, पर तुम्हारे
ही मनो मे सकेती है। १३ पर अपने
लडकेबाले जानकर तुम से कहता हू,
कि तुम भी उसके बदले में अपना हृदय
खोल दो ॥

१४ अविश्वासियो के साथ असमान
जूए मे न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और
अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति
और अन्धकार की क्या सगति? १५ और
मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव?
या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या
नाता? १६ और मूरतो के साथ परमेश्वर
के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम
तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर ह, जैसा
परमेश्वर ने कहा है कि मै उन मे बसूगा
और उन मे चला फिरा करूगा, और
मैं उन का परमेश्वर हूगा, और वे मेरे
लोग होगे। १७ इसलिये प्रभु कहता है,
कि उन के बीच मे से निकलो और अलग
रहो, और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ,
तो मै तुम्हे ग्रहण करूगा। १८ और
तुम्हारा पिता हूगा, और तुम मेरे बेटे
और बेटिया होगे यह सर्वशक्तिमान प्रभु
परमेश्वर का वचन है ॥

७ सो हे प्यारो जब कि ये प्रतिज्ञाए
हमे मिली है, तो आओ, हम अपने
आप को शरीर और आत्मा की सब
मलिनता से शुद्ध करे, और परमेश्वर का
भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करे ॥

२ हमे अपने हृदय मे जगह दो
हम ने न किसी से अन्याय किया, न
किसी को बिगाडा, और न किसी को
ठगा। ३ मै तुम्हे दोषी ठहराने के लिये
यह नही कहता क्योंकि मैं पहिले ही
कह चुका हू, कि तुम हमारे हृदय में ऐसे
बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने
जीने के लिये तैयार हैं। ४ मैं तुम से
बहुत हियाव के साथ बोल रहा हू, मुझे
तुम पर बडा घमण्ड है मैं शान्ति से
भर गया हू, अपने सारे क्लेश मे मैं
आनन्द से अति भरपूर रहता हू ॥

५ क्योंकि जब हम मकिदुनिया में
आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नही
मिला, परन्तु हम चारो ओर से क्लेश
पाते थे, बाहर लडाइया थी, भीतर
भयकर बाते थी। ६ तौभी दीनो को
शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तितुस के
आने से हम को शान्ति दी। ७ और न
केवल उसके आने से परन्तु उस की उस
शान्ति से भी, जो उस को तुम्हारी ओर से
मिली थी, और उस ने तुम्हारी लालसा,
और तुम्हारे दुख और मेरे लिये तुम्हारी
धुन का समाचार हमे सुनाया, जिस से
मुझे और भी आनन्द हुआ। ८ क्योंकि
यद्यपि मै ने अपनी पत्री से तुम्हे शोकित
किया, परन्तु उस से पछताता नही जैसा
कि पहिले पछताता था क्योंकि मैं देखता
हू, कि उस पत्री से तुम्हें शोक तो हुआ
परन्तु वह थोडी देर के लिये था। ९ अब
मै आनन्दित हू पर इसलिये नही कि
तुम को शोक पहुचा वरन इसलिये कि
तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया,
क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा
के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुम्हें
किसी बात में हानि न पहुचे। १० क्योंकि

परमेश्वर-भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप
उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार
है और फिर उस से पछताना नही पडता.
परन्तु ससारी शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।
११ सो देखो, इसी बात से कि तुम्हे
परमेश्वर-भक्ति का शोक हुआ तुम में
कितनी उत्तेजना और प्रत्युत्तर* और
रिस, और भय, और लालसा, और धुन
और पलटा लेने का विचार उत्पन्न
हुआ? तुम ने सब प्रकार से यह सिद्ध
कर दिखाया, कि तुम इस बात मे निर्दोष
हो। १२ फिर मै ने जो तुम्हारे पास
लिखा था, वह न तो उसके कारण लिखा,
जिस ने अन्याय किया, और न उसके
कारण जिस पर अन्याय किया गया,
परन्तु इसलिये कि तुम्हारी उत्तेजना जो
हमारे लिये है, वह परमेश्वर के साम्हने
तुम पर प्रगट हो जाए। १३ इसलिये हमे
शान्ति हुई, और हमारी इस शान्ति के
साथ तितुस के आनन्द के कारण और
भी आनन्द हुआ क्योकि उसका जी तुम
सब के कारण हरा भरा हो गया है।
१४ क्योकि यदि मै ने उसके साम्हने
तुम्हारे विषय मे कुछ घमण्ड दिखाया, तो
लज्जित नही हुआ, परन्तु जैसे हम ने तुम
से सब बाते सच सच कह दी थी, वैसे ही
हमारा घमण्ड दिखाना तितुस के साम्हने
भी सच निकला। १५ और जब उस को
तुम सब के आज्ञाकारी होने का स्मरण
आता है, कि क्योकर तुम ने डरते और
कापते हुए उस से भेंट की, तो उसका प्रेम
तुम्हारी ओर और भी बढता जाता है।
१६ मै आनन्द करता हू, कि तुम्हारी ओर
से मुझे हर बात मे ढाढस होता है॥

* या बचाव के लिये उत्तर।

८ अब हे भाइयो, हम तुम्हे परमेश्वर
के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं
जो मकिदुनिया की कलीसियाओ पर
हुआ है। २ कि क्लेश की बडी परीक्षा में
उन के बडे आनन्द और भारी कगालपन
के बढ जाने से उन की उदारता बहुत
बढ गई। ३ और उन के विषय में मेरी
यह गवाही है, कि उन्हो ने अपनी सामर्थ
भर बरन सामर्थ से भी बाहर मन से
दिया। ४ और इस दान में और पवित्र
लोगो की सेवा में भागी होने के अनुग्रह
के विषय मे हम से बार बार बहुत विनती
की। ५ और जैसी हम ने आशा की
थी, वैसी ही नही, वरन उन्हो ने प्रभु
को, फिर परमेश्वर की इच्छा से हम
को भी अपने तईं दे दिया। ६ इसलिये
हम ने तितुस को समझाया, कि जैसा
उस ने पहिले आरम्भ किया था, वैसा
ही तुम्हारे बीच मे इस दान के काम को
पूरा भी कर ले। ७ सो जैसे हर बात में
अर्थात् विश्वास, वचन, ज्ञान और सब
प्रकार के यत्न मे, और उस प्रेम मे, जो
हम से रखते हो, बढते जाते हो, वैसे ही
इस दान के काम मे भी बढते जाओ।
८ मै आज्ञा की रीति पर तो नही,
परन्तु औरो के उत्साह से तुम्हारे प्रेम की
सच्चाई को परखने के लिये कहता हू।
९ तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर
भी तुम्हारे लिये कगाल बन गया ताकि
उसके कगाल हो जाने से तुम धनी हो
जाओ। १० और इस बात मे मेरा
विचार यही है, क्योकि यह तुम्हारे लिये
अच्छा है, जो एक वर्ष से न तो केवल इस
काम को करने ही मे, परन्तु इस बात के
चाहने मे भी प्रथम हुए थे। ११ इसलिये

अब यह काम पूरा करो, कि जिस प्रकार इच्छा
करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी
अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो।
१२ क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो
दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है
जो उसके पास है न कि उसके अनुसार
जो उसके पास नहीं। १३ यह नहीं, कि
औरों को चैन और तुम को क्लेश मिले।
१४ परन्तु बराबरी के विचार से इस
समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम
आए, ताकि उन की बढ़ती भी तुम्हारी
घटी में काम आए, कि बराबरी हो जाए।
१५ जैसा लिखा है, कि जिस ने बहुत
बटोरा उसका कुछ अधिक न निकला और
जिस ने थोड़ा बटोरा उसका कुछ कम
न निकला॥

१६ और परमेश्वर का धन्यवाद हो,
जिस ने तुम्हारे लिये वही उत्साह तितुस
के हृदय में डाल दिया है। १७ कि उस ने
हमारा समझाना मान लिया वरन बहुत
उत्साही होकर वह अपनी इच्छा से तुम्हारे
पास गया है। १८ और हम ने उसके
साथ उस भाई को भेजा है जिस का नाम
सुसमाचार के विषय में सब कलीसिया में
फैला हुआ है। १९ और इतना ही नहीं,
परन्तु वह कलीसिया से ठहराया भी गया
कि इस दान के काम के लिये हमारे
साथ जाए और हम यह सेवा इसलिये
करते हैं, कि प्रभु की महिमा और हमारे
मन की तैयारी प्रगट हो जाए। २० हम
इस बात में चौकस रहते हैं, कि इस
उदारता के काम के विषय में जिस की
सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न
लगाने पाए। २१ क्योंकि जो बातें केवल
प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के
निकट भी भली हैं हम उन की चिन्ता
करते हैं। २२ और हम ने उसके साथ
अपने भाई को भेजा है, जिस को हम ने
बार बार परख के बहुत बातों में उत्साही
पाया है, परन्तु अब तुम पर उस को
बड़ा भरोसा है, इस कारण वह और भी
अधिक उत्साही है। २३ यदि कोई तितुस
के विषय में पूछे, तो वह मेरा साथी,
और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी है, और
यदि हमारे भाइयों के विषय में पूछे, तो
वे कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह
की महिमा हैं। २४ सो अपना प्रेम और
हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में
है कलीसियाओं के साम्हने उन्हें सिद्ध करके
दिखाओ॥

९ अब उस सेवा के विषय में जो
पवित्र लोगों के लिये की जाती है,
मुझे तुम को लिखना अवश्य नहीं।
२ क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को
जानता हूं, जिस के कारण मैं तुम्हारे
विषय में मकिदुनिया के साम्हने घमण्ड
दिखाता हूं कि अखया के लोग एक वर्ष से
तैयार हुए हैं, और तुम्हारे उत्साह ने
और बहुतों को भी उभारा है। ३ परन्तु
मैं ने भाइयों को इसलिये भेजा है, कि
हम ने जो घमण्ड तुम्हारे विषय में
दिखाया, वह इस बात में व्यर्थ न ठहरे,
परन्तु जैसा मैं ने कहा, वैसे ही तुम
तैयार हो रहो। ४ ऐसा न हो, कि यदि
कोई मकिदुनी मेरे साथ आए, और तुम्हें
तैयार न पाए, तो क्या जानें, इस भरोसे
के कारण हम (यह नहीं कहते कि तुम)
लज्जित हों। ५ इसलिये मैं ने भाइयों से
यह बिनती करना अवश्य समझा कि वे
पहिले से तुम्हारे पास जाएं, और तुम्हारी
उदारता का फल जिस के विषय में

पहिले से वचन दिया गया था, तैयार कर रखें, कि यह दबाव * से नहीं परन्तु उदारता के फल की नाईं तैयार हो ॥

६ परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा † बोता है वह थोड़ा काटेगा भी, और जो बहुत ‡ बोता है, वह बहुत काटेगा। ७ हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे, न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। ८ और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। ९ जैसा लिखा है, उस ने बिथराया, उस ने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा। १० सो जो बोनेवाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा, और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। ११ कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ। १२ क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। १३ क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो। १४ और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। १५ परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो ॥

१० मैं वही पौलुस जो तुम्हारे साम्हने दीन हूं, परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं, तुम को मसीह की नम्रता, और कोमलता के कारण समझाता हूं। २ मैं यह बिनती करता हूं, कि तुम्हारे साम्हने मुझे निर्भय होकर * साहस करना न पड़े, जैसा मैं कितनों पर जो हम को शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते हैं, वीरता दिखाने का विचार करता हूं। ३ क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। ४ क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा † सामर्थी हैं। ५ सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। ६ और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें। ७ तुम इन्हीं बातों को देखते हो, जो आंखों के साम्हने हैं, यदि किसी का अपने पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह का हूं, तो वह यह भी जान ले, कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं। ८ क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के

* यू० लोभ। † या कंजूसी से। ‡ या उदारता से।

* यू० भरोसे से। † या लिए।

विषय मे और भी घमण्ड दिखाऊ, जो
प्रभु ने तुम्हारे बिगाडने के लिये नही पर
बनाने के लिये हमे दिया है, तो लज्जित
न हूगा। ९ यह मै इसलिये कहता हू,
कि पत्रियो के द्वारा तुम्हें डरानेवाला न
ठहरू। १० क्योकि कहते है, कि उस की
पत्रिया तो गम्भीर और प्रभावशाली है,
परन्तु जब देखते है, तो वह देह का निर्बल
और वक्तव्य में हल्का जान पडता है।
११ सो जो ऐसा कहता है, वह यह
समझ रखे, कि जैसे पीठ पीछे पत्रियो मे
हमारे वचन है, वसे ही तुम्हारे साम्हने
हमारे काम भी होगे। १२ क्योकि हमें
यह हियाव नही कि हम अपने आप को
उन मे से ऐसे कितनो के साथ गिन, या
उन से अपने को मिलाए, जो अपनी
प्रशसा करते है, और अपने आप को
आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से
मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं। १३ हम
तो सीमा से बाहर घमण्ड कदापि न
करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक जो परमेश्वर
ने हमारे लिये ठहरा दी है, और उस मे
तुम भी आ गए हो और उसी के अनुसार
घमण्ड भी करेगे। १४ क्योकि हम अपनी
सीमा से बाहर अपने आप को बढाना
नही चाहते, जैसे कि तुम तक न पहुचने
की दशा में होता, वरन मसीह का
सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुच चुके
हैं। १५ और हम सीमा से बाहर औरो
के परिश्रम पर घमण्ड नही करते, परन्तु
हमे आशा है, कि ज्यो ज्यो तुम्हारा
विश्वास बढता जाएगा त्यो त्यो हम अपनी
सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण और
भी बढते जाएगे। १६ कि हम तुम्हारे
सिवानो से आगे बढकर सुसमाचार सुनाए,
और यह नही, कि हम औरो की सीमा के
भीतर बने बनाए कामो पर घमण्ड करें।
१७ परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु पर
घमण्ड करे। १८ क्योकि जो अपनी बडाई
करता है, वह नही, परन्तु जिस की बडाई
प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है॥

११ यदि तुम मेरी थोडी मूर्खता
सह लेते तो क्या ही भला होता,
हा, मेरी सह भी लेते हो। २ क्योकि मैं
तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए
रहता हू, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरुष से
तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हे पवित्र
कुवारी की नाई मसीह को सौप दू।
३ परन्तु मै डरता हू कि जैसे साप ने
अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया,
वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और
पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी
चाहिए कही भ्रष्ट न किए जाए। ४ यदि
कोई तुम्हारे पास आकर, किसी दूसरे
यीशु का प्रचार करे, जिस का प्रचार हम ने
नही किया या कोई और आत्मा तुम्हे
मिले, जो पहिले न मिला था, या और
कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहिले न
माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता।
५ मै तो समझता हू, कि मै किसी बात मे
बड से बडे प्रेरितो से कम नही हू। ६ यदि
मै वक्तव्य मे अनाडी हू, तौभी ज्ञान मे
नही, वरन हम ने इस को हर बात मे
सब पर तुम्हारे लिये प्रगट किया है।
७ क्या इस मे मै ने कुछ पाप किया,
कि मै ने तुम्हे परमेश्वर का सुसमाचार
सेंत मेंत सुनाया, और अपने आप को
नीचा किया, कि तुम ऊचे हो जाओ?
८ मै ने और कलीसियाओ को लूटा
अर्थात् मै ने उन से मजदूरी ली, ताकि
तुम्हारी सेवा करू। ९ और जब तुम्हारे

साथ था, और मुझे घटी हुई, तो मैं ने
किसी पर भार नही दिया, क्योकि भाइयो
ने, मकिदुनिया से आकर मेरी घटी को
पूरी की और मै ने हर वात में अपने
आप को तुम पर भार होने से रोका,
और रोके रहूगा। १० यदि मसीह की
सच्चाई मुझ में है, तो अखया देश में
कोई मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा।
११ किस लिये? क्या इसलिये कि मै
तुम से प्रेम नही रखता? परमेश्वर यह
जानता है। १२ परन्तु जो मै करता हू,
वही करता रहूगा, कि जो लोग दाव
ढूढते है, उन्हे मैं दाव पाने दू, ताकि जिस
बात मे वे घमण्ड करते है, उस में वे
हमारे ही समान ठहरें। १३ क्योकि ऐसे
लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करने-
वाले, और मसीह के प्रेरितो का रूप
धरनेवाले है। १४ और यह कुछ अचम्भे
की बात नही क्योकि शैतान आप भी
ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता
है। १५ सो यदि उसके सेवक भी धर्म
के सेवको का सा रूप धरें, तो कुछ बडी
बात नही परन्तु उन का अन्त उन के
कामो के अनुसार होगा॥

१६ मै फिर कहता हू, कोई मुझे मूर्ख
न समझे, नही तो मूर्ख ही समझकर
मेरी सह लो, ताकि थोडा सा मै भी
घमण्ड करू। १७ इस बेधडक घमण्ड से
बोलने में जो कुछ मै कहता हू वह प्रभु
की आज्ञा के अनुसार* नही पर मानो
मूर्खता से ही कहता हू। १८ जब कि
बहुत लोग शरीर के अनुसार घमण्ड करते
हैं, तो मै भी घमण्ड करूगा। १९ तुम तो
समझदार होकर आनन्द से मूर्खो की सह
लेते हो। २० क्योकि जब तुम्हें कोई दास
बना लेता है, या खा जाता है, या फसा
लेता है, या अपने आप को बडा बनाता
है, या तुम्हारे मुह पर थप्पड मारता है,
तो तुम सह लेते हो। २१ मेरा कहना
अनादर ही की रीति पर है, मानो कि
हम निर्बल से थे, परन्तु जिस किसी
बात मे कोई हियाव करता है (मै मूर्खता से
कहता हू) तो मै भी हियाव करता हू।
२२ क्या वे ही इब्रानी है? मै भी हू:
क्या वे ही इस्राएली है? मैं भी हू क्या
वे ही इब्राहीम के वश है? मै भी हू.
क्या वे ही मसीह के सेवक है? २३ (मै
पागल की नाईं कहता हू) मै उन से
बढकर हू! अधिक परिश्रम करने मे,
बार बार कैद होने में, कोडे खाने में, बार
बार मृत्यु के जोखिमो मे। २४ पाच बार
मैं ने यहूदियो के हाथ से उन्तालीस उन्ता-
लीस कोडे खाए। २५ तीन बार मै ने बेतें
खाईं, एक बार पत्थरवाह किया गया,
तीन बार जहाज जिन पर मै चढा था,
टूट गए, एक रात दिन मै ने समुद्र मे
काटा। २६ मै बार बार यात्राओ मे,
नदियो के जोखिमो में, डाकुओ के
जोखिमो मे, अपने जातिवालो से जोखिमो
मे, अन्यजातियो से जोखिमो मे, नगरो मे
के जोखिमो मे, जगल के जोखिमो में,
समुद्र के जोखिमो में, झूठे भाइयो के
बीच जोखिमो में। २७ परिश्रम और
कष्ट मे, बार बार जागते रहने में, भूख-
पियास में, बार बार उपवास करने में,
जाडे में, उघाडे रहने मे। २८ और और
बातो को छोडकर जिन का वर्णन मैं नही
करता सब कलीसियाओ की चिन्ता प्रतिदिन
मुझे दबाती है। २९ किस की निर्बलता से
मैं निर्बल नही होता? किस के ठोकर

* यू० प्रभु की रीति पर।

खाने से मेरा जी नही दुखता? ३० यदि
घमण्ड करना अवश्य है, तो मैं अपनी
निर्बलता की बातों पर करूंगा। ३१ प्रभु
यीशु का परमेश्वर और पिता जो सदा
धन्य है, जानता है, कि मैं झूठ नही
बोलता। ३२ दमिश्क में अरितास राजा
की ओर से जो हाकिम था, उस ने मेरे
पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर पहरा
बैठा रखा था। ३३ और मैं टोकरे में
खिड़की से होकर भीत पर से उतारा
गया, और उसके हाथ से बच निकला॥

१२ यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे
लिये ठीक नही तौभी करना
पड़ता है, सो मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों
और प्रकाशों की चर्चा करूंगा। २ मैं
मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं,
चौदह वर्ष हुए कि न जाने देहसहित,
न जाने देहरहित, परमेश्वर जानता है,
ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया
गया। ३ मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं न
जाने देहसहित, न जाने देहरहित परमेश्वर
ही जानता है। ४ कि स्वर्ग लोक पर
उठा लिया गया, और ऐसी बातें सुनीं
जो कहने की नहीं, और जिन का मुंह
पर लाना मनुष्य को उचित नहीं। ५ ऐसे
मनुष्य पर तो मैं घमण्ड करूंगा, परन्तु
अपने पर अपनी निर्बलताओं को छोड़,
अपने विषय में घमण्ड न करूंगा।
६ क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना चाहूं भी
तो मूर्ख न हूंगा, क्योंकि सच बोलूंगा,
तौभी रुक जाता हूं, ऐसा न हो, कि जैसा
कोई मुझे देखता है, या मुझ से सुनता है,
मुझे उस से बढ़कर समझे। ७ और
इसलिये कि मैं प्रकाशों की बहुतायत से
फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा
चुभाया* गया अर्थात् शैतान का एक
दूत कि मुझे घूसे मारे ताकि मैं फूल न
जाऊं। ८ इस के विषय में मैं ने प्रभु से
तीन बार बिनती की, कि मुझ से यह
दूर हो जाए। ९ और उस ने मुझ से
कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है,
क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध
होती है, इसलिये मैं बड़े आनन्द से
अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, कि
मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती
रहे। १० इस कारण मैं मसीह के लिये
निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और
दरिद्रता में और उपद्रवों में, और संकटों में,
प्रसन्न हूं, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं,
तभी बलवन्त होता हूं॥

११ मैं मूर्ख तो बना, परन्तु तुम ही ने
मुझ से यह बरबस करवाया तुम्हें तो
मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी, क्योंकि
यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, तौभी उन बड़े से
बड़े प्रेरितों से किसी बात में कम नहीं
हूं। १२ प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच
सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों, और
अद्भुत कामों, और सामर्थ के कामों से
दिखाए गए। १३ तुम कौन सी बात में
और कलीसिया से कम थे, केवल इस में
कि मैं ने तुम पर अपना भार न रखा
मेरा यह अन्याय क्षमा करो॥

१४ देखो, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास
आने को तैयार हूं, और मैं तुम पर कोई
भार न रखूंगा, क्योंकि मैं तुम्हारी
सम्पत्ति नहीं, वरन तुम ही को चाहता
हूं क्योंकि लड़के-वालों को माता-पिता
के लिये धन बटोरना न चाहिए, पर
माता-पिता को लड़के-वालों के लिये।

* यू० दिया।

१५ मैं तुम्हारी आत्माओ के लिये बहुत
आनन्द से खर्च करूगा, वरन आप भी
खर्च हो जाऊगा क्या जितना बढ़कर
मैं तुम से प्रेम रखता हू, उतना ही घटकर
तुम मुझ से प्रेम रखोगे? १६ ऐसा हो
सकता है, कि मैं ने तुम पर बोझ नही डाला,
परन्तु चतुराई से तुम्हे धोखा देकर फसा
लिया। १७ भला, जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास
भेजा, क्या उन में से किसी के द्वारा मैं ने
छल करके तुम से कुछ ले लिया? १८ मैं ने
तितुस को समझाकर उसके साथ उस भाई
को भेजा, तो क्या तितुस ने छल करके तुम
से कुछ लिया? क्या हम एक ही आत्मा के
चलाए न चले? क्या एक ही लीक पर न
चले?

१९ तुम अभी तक समझ रहे होगे कि
हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे है, हम
तो परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह
मे बोलते है, और हे प्रियो, सब बातें तुम्हारी
उन्नति ही के लिये कहते है। २० क्योकि
मुझे डर है, कही ऐसा न हो, कि मैं आकर
जैसे चाहता हू, वैसे तुम्हें न पाऊ, और मुझे
भी जैसा तुम नही चाहते वैसा ही पाओ,
कि तुम मे झगडा, डाह, क्रोध, विरोध,
ईर्ष्या, चुगली, अभिमान और बखेडे हो।
२१ और मेरा परमेश्वर कही मेरे फिर से
तुम्हारे यहा आने पर मुझ पर दबाव डाले
और मुझे बहुतो के लिये फिर शोक करना
पडे, जिन्हो ने पहिले पाप किया था, और
उस गन्दे काम, और व्यभिचार, और लुचपन
से, जो उन्हो ने किया, मन नही फिराया॥

१३ अब तीसरी बार तुम्हारे पास
आता हू दो या तीन गवाहो के
मुह से हर एक बात ठहराई जाएगी।
२ जैसे मैं जब दूसरी बार तुम्हारे साथ था,
सो * वैसे ही अब दूर रहते हुए उन लोगो
से जिन्हो ने पहिले पाप किया, और और
सब लोगो से अब पहिले से कहे देता हू,
कि यदि मै फिर आऊगा, तो नही छोडूगा।
३ तुम तो इस का प्रमाण चाहते हो, कि
मसीह मुझ मे बोलता है, जो तुम्हारे लिये
निर्बल नही, परन्तु तुम में सामर्थी है।
४ वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया
तो गया, तौभी परमेश्वर की सामर्थ से
जीवित है, हम भी तो उस में निर्बल हैं,
परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से जो तुम्हारे
लिये है, उसके साथ जीएगे। ५ अपने आप
को परखो, कि विश्वास में हो कि नही;
अपने आप को जाचो, क्या तुम अपने विषय
मे यह नही जानते, कि यीशु मसीह तुम में
है? नही तो तुम निकम्मे निकले हो।
६ पर मेरी आशा है, कि तुम जान लोगे,
कि हम निकम्मे नही। ७ और हम अपने
परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं, कि तुम
कोई बुराई न करो, इसलिये नही, कि
हम खरे देख पडे, पर इसलिये कि तुम भलाई
करो, चाहे हम निकम्मे ही ठहरे। ८ क्योकि
हम सत्य के विरोध मे कुछ नही कर सकते,
पर सत्य के लिये कर सकते हैं। ९ जब
हम निर्बल है, और तुम बलवन्त हो, तो हम
आनन्दित होते है, और यह प्रार्थना भी
करते है, कि तुम सिद्ध हो जाओ। १० इस
कारण मे तुम्हारे पीठ पीछे ये बाते लिखता
हू, कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार
के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिये
नही पर बनाने के लिये मुझे दिया है,
कड़ाई से कुछ करना न पडे॥

११ निदान, हे भाइयो, आनन्दित रहो,
सिद्ध बनते जाओ, ढाढस रखो, एक ही

* या मानो दूसरी बार उपस्थित होकर।

मन रखो, मेल से रहो, और प्रेम और शान्ति
का दाता * परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।
१२ एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार
करो। १३ सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार
करते हैं। १४ प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह
और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा
की सहभागिता * तुम सब के साथ होती
रहे॥

* यू० स्रोत।

* या सगति।

गलतियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की, जो न मनुष्यों की ओर
से, और न मनुष्य के द्वारा, वरन यीशु
मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा, जिस ने
उस को मरे हुओं में से जिलाया, प्रेरित है।
२ और सारे भाइयों की ओर से, जो मेरे
साथ हं, गलतिया की कलीसियाओं के
नाम। ३ परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और
शान्ति मिलती रहे। ४ उसी ने अपने आप
को हमारे पापों के लिये दे दिया, ताकि
हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के
अनुसार हमें इस वतमान बुरे ससार से
छुड़ाए। ५ उस की स्तुति और बडाई
युगानुयुग होती रहे। आमीन॥
६ मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने
तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से
तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार
के सुसमाचार की ओर झुकने लगे।
७ परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नही
पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें
घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को
बिगाडना चाहते ह। ८ परन्तु यदि हम
या स्वग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को
छोड जो हम ने तुम को सुनाया ह, कोई
और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित
हो। ९ जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा
ही म अब फिर कहता हू, कि उस सुसमाचार
को छोड जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि
कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित
हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हू
या परमेश्वर को? क्या म मनुष्यों को
प्रसन करना चाहता हू? १० यदि मं अब
तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता,
तो मसीह का दास न होता॥
११ हे भाइयो, म तुम्हें जताए देता हू,
कि जो सुसमाचार म ने सुनाया है, वह
मनुष्य का सा नही। १२ क्योंकि वह
मुझे मनुष्य की ओर से नही पहुचा, और
न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के
प्रकाश से मिला। १३ यहूदी मत में जो
पहिले मेरा चाल चलन था, तुम सुन चुके
हो, कि मं परमेश्वर की कलीसिया को
बहुत ही सताता और नाश करता था।
१४ और अपने बहुत से जातिवालो से जो
मेरी अवस्था के थे यहूदी मत म बढता
जाता था और अपने बापदादो के व्यवहारो
में बहुत ही उत्तेजित था। १५ परन्तु
परमेश्वर की, जिस ने मेरी माता के गभ

ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से
बुला लिया, १६ जब इच्छा हुई, कि मुझ
में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्य-
जातियो में उसका सुसमाचार सुनाऊ;
तो न मै ने मास और लोहू से सलाह ली;
१७ और न यरूशलेम को उन के पास गया
जो मुझ से पहिले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब
को चला गया और फिर वहा से दमिश्क
को लौट आया॥

१८ फिर तीन वरस के बाद मै कैफा
से भेंट करने के लिये यरूशलेम को गया,
और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा।
१९ परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड
और प्रेरितो में से किसी से न मिला।
२० जो बातें मै तुम्हें लिखता हू, देखो,
परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता
हू, कि वे झूठी नही। २१ इस के बाद
मै सूरिया और किलिकिया के देशो में
आया। २२ परन्तु यहूदिया की कलो-
सियाओ ने जो मसीह में थी, मेरा मुह तो
कभी नही देखा था। २३ परन्तु यही सुना
करती थी, कि जो हमे पहिले सताता था,
वह अब उसी धर्म का सुसमाचार सुनाता
है, जिसे पहिले नाश करता था। २४ और
मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती
थी॥

२ चौदह वर्ष के बाद मै बरनबास के
साथ फिर यरूशलेम को गया, और
तितुस को भी साथ ले गया। २ और मेरा
जाना ईश्वरीय प्रकाश के अनुसार हुआ
और जो सुसमाचार मै अन्यजातियो में
प्रचार करता हू, उस को मै ने उन्हे बता
दिया, पर एकान्त में उन्ही को जो बडे
समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी
इस समय की, या अगली दौड़ धूप व्यर्थ
ठहरे। ३ परन्तु तितुस भी जो मेरे साथ
था और जो यूनानी है; खतना कराने के
लिये विवश नही किया गया। ४ और यह
उन झूठे भाइयो के कारण हुआ, जो चोरी
से घुस आए थे, कि उस स्वतन्त्रता का जो
मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें
दास बनाए। ५ उन के आधीन होना हम ने
एक घडी भर न माना, इसलिये कि
सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे।
६ फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे
(वे चाहे कैसे ही थे, मुझे इस से कुछ काम
नही, परमेश्वर किसी का पक्षपात नही
करता) उन से जो कुछ भी समझे जाते थे,
मुझे कुछ भी नही प्राप्त हुआ। ७ परन्तु
इसके विपरीत जब उन्हो ने देखा, कि जैसा
खतना किए हुए लोगो के लिये सुसमाचार
का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही
खतनारहितो के लिये मुझे सुसमाचार
सुनाना सौंपा गया। ८ (क्योकि जिस ने
पतरस से खतना किए हुओ में प्रेरिताई का
कार्य्य बडे प्रभाव सहित करवाया, उसी ने
मुझ से भी अन्यजातियो में प्रभावशाली
कार्य्य करवाया)। ९ और जब उन्हो ने
उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान
लिया, तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने
जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ
को और बरनबास को दहिना हाथ देकर
सग कर लिया, कि हम अन्यजातियो के पास
जाए, और वे खतना किए हुओ के पास।
१० केवल यह कहा, कि हम कगालो की
सुधि लें, और इसी काम के करने का मै आप
भी यत्न कर रहा था॥

११ पर जब कैफा अन्ताकिया में आया,
तो मै ने उसके मुह पर उसका साम्हना किया,
क्योकि वह दोषी ठहरा था। १२ इसलिये
कि याकूब की ओर से कितने लोगो के

आने से पहिले वह अन्यजातियों के साथ
खाया करता था, परन्तु जब वे आए, तो
खतना किए हुए लोगो के डर के मारे उन से
हट गया और किनारा करने लगा।
१३ और उसके साथ शेष यहूदियो ने भी
कपट किया, यहा तक कि बरनबास भी
उन के कपट में पड गया। १४ पर जब
मै ने देखा, कि वे सुसमाचार की सच्चाई
पर सीधी चाल नही चलते, तो मै ने सब के
साम्हने कैफा से कहा, कि जब तू यहूदी
होकर अन्यजातियो की नाई चलता है,
और यहूदियो की नाई नही तो तू अन्य-
जातियो को यहूदियो की नाई चलने को
क्यो कहता है? १५ हम तो जन्म के यहूदी
हैं, और पापी अन्यजातियो में से नही।
१६ तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था
के कामो से नही, पर केवल यीशु मसीह पर
विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है,
हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास
किया, कि हम व्यवस्था के कामो से नही,
पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें,
इसलिये कि व्यवस्था के कामो से कोई
प्राणी धर्मी न ठहरेगा। १७ हम जो मसीह
में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही
पापी निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक
है? कदापि नही। १८ क्योंकि जो कुछ
मैं ने गिरा दिया, यदि उसी को फिर बनाता
हू, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हू।
१९ मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के
लिये मर गया, कि परमेश्वर के लिये जीऊ।
२० मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढाया गया
हू, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह
मुझ में जीवित है और मैं शरीर में अब
जो जीवित हू, तो केवल उस विश्वास से
जीवित हू, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस
ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने
आप को दे दिया। २१ मैं परमेश्वर के
अनुग्रह को व्यर्थ नही ठहराता, क्योकि यदि
व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह
का मरना व्यर्थ होता॥

३ हे निर्बुद्धि गलतियो, किस ने तुम्हें
मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो
आखो के साम्हने यीशु मसीह क्रूस पर
दिखाया गया! २ मैं तुम से केवल यह
जानना चाहता हू, कि तुम ने आत्मा को,
क्या व्यवस्था के कामो से, या विश्वास के
समाचार से पाया? ३ क्या तुम ऐसे
निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ
करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?
४ क्या तुम ने इतना दुख योंही उठाया?
परन्तु कदाचित व्यर्थ नही। ५ सो जो
तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में
सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था
के कामो से या विश्वास के सुसमाचार से
ऐसा करता है? ६ इब्राहीम ने तो
परमेश्वर पर विश्वास किया* और यह
उसके लिये धार्मिकता गिनी गई। ७ तो
यह जान लो, कि जो विश्वास करनेवाले हैं,
वे ही इब्राहीम की सन्तान हैं। ८ और
पवित्र शास्त्र ने पहिले ही से यह जानकर,
कि परमेश्वर अन्यजातियो को विश्वास से
धर्मी ठहराएगा, पहिले ही से इब्राहीम को
यह सुसमाचार सुना दिया, कि तुझ में सब
जातियां आशीष पाएगी। ९ तो जो
विश्वास करनेवाले है, वे विश्वासी इब्राहीम
के साथ आशीष पाते हैं। १० सो जितने
लोग व्यवस्था के कामो पर भरोसा रखते
हैं, वे सब स्राप के आधीन है, क्योंकि लिखा
है, कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में
लिखी हुई सब बातो के करने में स्थिर नही

* यू० की प्रतीति की।

रहता, वह स्रापित है। ११ पर यह वात
प्रगट है, कि व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के
यहा कोई धर्मी नही ठहरता क्योकि धर्मी
जन विश्वास से जीवित रहेगा। १२ पर
व्यवस्था का विश्वास से कुछ सम्वन्ध नही,
पर जो उन को मानेगा, वह उन के कारण
जीवित रहेगा। १३ मसीह ने जो हमारे
लिये स्रापित वना, हमे मोल लेकर व्यवस्था
के स्राप से छुडाया क्योकि लिखा है, जो
कोई काठ पर लटकाया जाता है वह स्रापित
है। १४ यह इसलिये हुआ, कि इब्राहीम
की आशीष मसीह यीशु मे अन्यजातियो
तक पहुचे, और हम विश्वास के द्वारा उस
आत्मा को प्राप्त करे, जिस की प्रतिज्ञा
हुई है॥

१५ हे भाइयो, मैं मनुष्य की रीति पर
कहता हू, कि मनुष्य की वाचा भी जो पक्की
हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और
न उस मे कुछ वढाता है। १६ निदान,
प्रतिज्ञाए इब्राहीम को, और उसके वश को
दी गईं वह यह नही कहता, कि वशो
को, जैसे वहुतो के विषय मे कहा, पर जैसे
एक के विषय मे कि तेरे वश को और
वह मसीह है। १७ पर मैं यह कहता हू,
कि जो वाचा परमेश्वर ने पहिले से पक्की
की थी, उस को व्यवस्था चार सौ तीस वरस
के वाद आकर नही टाल देती, कि प्रतिज्ञा
व्यर्थ ठहरे। १८ क्योकि यदि मीरास
व्यवस्था से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से
नही, परन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम को
प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है। १९ तव फिर
व्यवस्था क्या रही? वह तो अपराधो के
कारण वाद मे दी गई, कि उस वश के आने
तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी, और
वह स्वर्गदूतो के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ
ठहराई गई। २० मध्यस्थ तो एक का नही
होता, परन्तु परमेश्वर एक ही है। २१ तो
क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओ के
विरोध में है? कदापि न हो? क्योकि
यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे
सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से
होती। २२ परन्तु पवित्र शास्त्र ने सब
को पाप के आधीन कर दिया, ताकि वह
प्रतिज्ञा जिस का आधार यीशु मसीह पर
विश्वास करना है, विश्वास करनेवालो के
लिये पूरी हो जाए॥

२३ पर विश्वास के आने से पहिले
व्यवस्था की आधीनता मे हमारी रखवाली
होती थी, और उस विश्वास के आने तक
जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के वन्धन
मे रहे। २४ इसलिये व्यवस्था मसीह तक
पहुचाने को हमारा शिक्षक हुई है, कि हम
विश्वास से धर्मी ठहरें। २५ परन्तु जव
विश्वास आ चुका, तो हम अव शिक्षक के
आधीन न रहे। २६ क्योकि तुम सव उस
विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर
है, परमेश्वर की सन्तान हो। २७ और
तुम में से जितनो ने मसीह में वपतिस्मा
लिया है उन्हो ने मसीह को पहिन लिया है।
२८ अव न कोई यहूदी रहा और न
यूनानी, न कोई दास, न स्वतत्र, न कोई
नर, न नारी, क्योकि तुम सब मसीह
यीशु में एक हो। २९ और यदि तुम
मसीह के हो, तो इब्राहीम के वश और
प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो॥

४ मैं यह कहता हू, कि वारिस जब
तक वालक है, यद्यपि सब वस्तुओ का
स्वामी है, तौभी उस मे और दास मे
कुछ भेद नही। २ परन्तु पिता के ठहराए
हुए समय तक रक्षको और भण्डारियो के
वश में रहता है। ३ वैसे ही हम भी,

जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा
के वश में होकर दास बने हुए थे।
४ परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर
ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से
जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न
हुआ। ५ ताकि व्यवस्था के आधीनों को
मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक
होने का पद मिले। ६ और तुम जो
पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र
के आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता
कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा
है। ७ इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु
पुत्र है, और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर
के द्वारा वारिस भी हुआ॥

८ भला, तब तो तुम परमेश्वर को न
जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से
परमेश्वर नहीं। ९ पर अब जो तुम ने
परमेश्वर को पहचान लिया वरन पर-
मेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल
और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की
ओर क्यों फिरते हो, जिन के तुम दोबारा
दास होना चाहते हो? १० तुम दिनों
और महीनों और नियत समयों और वर्षों
को मानते हो। ११ मैं तुम्हारे विषय में
डरता हूं, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्रम
मैं ने तुम्हारे लिये किया है, व्यर्थ ठहरे॥

१२ हे भाइयो, मैं तुम से विनती
करता हूं, तुम मेरे समान हो जाओ
क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं,
तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। १३ पर
तुम जानते हो, कि पहिले पहिल मैं ने
शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें
सुसमाचार सुनाया। १४ और तुम ने
मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी
परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना,
न उस से घृणा की, और परमेश्वर के
दूत वरन मसीह के समान मुझे ग्रहण
किया। १५ तो वह तुम्हारा आनन्द
मनाना कहां गया? मैं तुम्हारा गवाह हूं,
कि यदि हो सकता, तो तुम अपनी आंखें
भी निकालकर मुझे दे देते। १६ तो क्या
तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा
बैरी बन गया हूं। १७ वे तुम्हें मित्र
बनाना तो चाहते हैं, पर भली मनसा से
नहीं, वरन तुम्हें अलग करना चाहते हैं,
कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो। १८ पर
यह भी अच्छा है, कि भली बात में हर
समय मित्र बनाने का यत्न किया जाए,
न केवल उसी समय, कि जब मैं तुम्हारे
साथ रहता हूं। १९ हे मेरे बालको
जब तक तुम में मसीह का रूप न बन
जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा
की सी पीड़ाएं सहता हूं। २० इच्छा
तो यह होती है, कि अब तुम्हारे पास
आकर और ही प्रकार से बोलूं, क्योंकि
तुम्हारे विषय में मुझे सन्देह है॥

२१ तुम जो व्यवस्था के आधीन होना
चाहते हो, मुझ से कहो, क्या तुम व्यवस्था
की नहीं सुनते? २२ यह लिखा है,
कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए, एक दासी से,
और एक स्वतन्त्र स्त्री से। २३ परन्तु
जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से
जन्मा, और जो स्वतन्त्र स्त्री से हुआ,
वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। २४ इन
बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियां मानो
दो वाचाएं हैं, एक तो सीना पहाड़ की
जिस से दास ही उत्पन्न होते हैं, और
वह हाजिरा है। २५ और हाजिरा मानो
अरब का सीना पहाड़ है, और आधुनिक
यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने
बालकों समेत दासत्व में है। २६ पर
ऊपर की यरूशलेम स्वतन्त्र है, और वह

हमारी माता है। २७ क्योकि लिखा है,
कि हे बाझ, तू जो नही जनती आनन्द
कर, तू जिस को पीड़ाए नही उठती
गला खोलकर जय जयकार कर, क्योकि
त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान
से भी अधिक है। २८ हे भाइयो, हम
इसहाक की नाई प्रतिज्ञा की सन्तान है।
२९ और जैसा उस समय शरीर के अनुसार
जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को
सताता था, वैसा ही अब भी होता है।
३० परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है?
दासी और उसके पुत्र को निकाल दे,
क्योकि दासी का पुत्र स्वतत्र स्त्री के पुत्र
के साथ उत्तराधिकारी नही होगा।
३१ इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नही,
परन्तु स्वतत्र स्त्री की सन्तान है।

५ मसीह ने स्वतन्त्रता के लिये हमें
स्वतत्र किया है, सो इसी मे स्थिर
रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न
जुतो॥

२ देखो, मै पौलुस तुम से कहता हू, कि
यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हे कुछ
लाभ न होगा। ३ फिर भी मै हर एक खतना
करानेवाले को जताए देता हू, कि उसे
सारी व्यवस्था माननी पडेगी। ४ तुम जो
व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो,
मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए
हो। ५ क्योकि आत्मा के कारण, हम
विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की
बाट जोहते है। ६ और मसीह यीशु मे
न खतना, न खतनारहित कुछ काम का
है, परन्तु केवल विश्वास का जो प्रेम
के द्वारा प्रभाव करता है। ७ तुम
तो भली भाति दौड रहे थे, अब
किस ने तुम्हे रोक दिया, कि सत्य को
न मानो। ८ ऐसी सीख तुम्हारे बुलाने-
वाले की ओर से नही। ९ थोडा सा
खमीर सारे गूधे हुए आटे को खमीर कर
डालता है। १० मै प्रभु पर तुम्हारे
विषय मे भरोसा रखता हू, कि तुम्हारा
कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो
तुम्हे घबरा देता है, वह कोई क्यो न
हो दण्ड पाएगा। ११ परन्तु हे भाइयो,
यदि मै अब तक खतना का प्रचार करता
हू, तो क्यो अब तक सताया जाता हू,
फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही।
१२ भला होता, कि जो तुम्हे डावाडोल
करते है, वे काट डाले जाते!

१३ हे भाइयो, तुम स्वतत्र होने के
लिये बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो,
कि यह स्वतत्रता शारीरिक कामो के
लिये अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे
के दास बनो। १४ क्योकि सारी व्यवस्था
इस एक ही बात मे पूरी हो जाती है,
कि तू अपने पडोसी से अपने समान प्रेम
रख। १५ पर यदि तुम एक दूसरे को
दांत से काटते और फाड खाते हो, तो
चौकस रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश
न कर दो॥

१६ पर मै कहता हू, आत्मा के
अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा
किसी रीति से पूरी न करोगे। १७ क्योकि
शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा
शरीर के विरोध मे लालसा करती है,
और ये एक दूसरे के विरोधी है, इस-
लिये कि जो तुम करना चाहते हो वह
न करने पाओ। १८ और यदि तुम
आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था
के आधीन न रहे। १९ शरीर के काम
तो प्रगट है, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम,
लुचपन। २० मूर्त्ति पूजा, टोना, बैर,

झगड़ा, ईर्प्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म।
२१ डाह, मतवालपन, लीलाक्रीड़ा, और
इन के ऐसे और और काम हैं, इन के
विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता
हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे
ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य
के वारिस न होंगे। २२ पर आत्मा का
फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, २३ कृपा,
भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है,
ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी
व्यवस्था नहीं। २४ और जो मसीह यीशु
के हैं, उन्हों ने शरीर को उस की लालसाओं
और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ा दिया
है॥

२५ यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित
हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।
२६ हम घमण्डी होकर न एक दूसरे
को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह
करें॥

६ हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी
अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम
जो आत्मिक हो, नम्रता * के साथ ऐसे
को संभालो, और अपनी भी चौकसी
रखो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।
२ तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और
इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी
करो। ३ क्योंकि यदि कोई कुछ न होने
पर भी अपने आप को कुछ समझता है,
तो अपने आप को धोखा देता है। ४ पर
हर एक अपने ही काम को जांच ले, और
तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने
ही विषय में उसको घमण्ड करने का
अवसर होगा। ५ क्योंकि हर एक व्यक्ति
अपना ही बोझ उठाएगा॥

६ जो वचन की शिक्षा पाता है, वह
सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को
भागी करे। ७ धोखा न खाओ, परमेश्वर
ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य
जो कुछ बोता है, वही काटेगा। ८ क्योंकि
जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह
शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा,
और जो आत्मा के लिये बोता है, वह
आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी
काटेगा। ९ हम भले काम करने में
हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले
न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।
१० इसलिये जहां तक अवसर मिले हम
सब के साथ भलाई करें, विशेष करके
विश्वासी भाइयों के साथ॥

११ देखो, मैं ने कैसे बड़े बड़े अक्षरों में
तुम को अपने हाथ से लिखा है।
१२ जितने लोग शारीरिक दिखाव चाहते
हैं वे तुम्हारा खतना करवाने के लिये
दबाव देते हैं, केवल इसलिये कि वे मसीह
के क्रूस के कारण सताए न जाएं।
१३ क्योंकि खतना करानेवाले आप तो,
व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुम्हारा
खतना कराना इसलिये चाहते हैं, कि
तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें।
१४ पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी
बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु
यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा
संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की
दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।
१५ क्योंकि न खतना, और न खतना-
रहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। १६ और
जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और
परमेश्वर के इस्राएल पर, शांति और दया
होती रहे॥

* यू० नम्रता की आत्मा।

१७ आगे को कोई मुझे दुख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं॥

१८ हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमीन॥

इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥

३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर
और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने
हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब
प्रकार की आशीष* दी है। ४ जैसा
उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले
उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट
प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। ५ और
अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें
अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु
मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र
हों, ६ कि उसके उस अनुग्रह की महिमा
की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस
प्यारे में सेंत मेंत दिया। ७ हम को उस में
उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात्
अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के
धन के अनुसार मिला है। ८ जिसे उस ने
सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर
बहुतायत से किया। ९ कि उस ने अपनी
इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार
हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में
ठान लिया था। १० कि समयों के पूरे
होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ
स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है,
सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।
११ उसी में जिस में हम भी उसी की
मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के
अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से
ठहराए जाकर मीरास बने। १२ कि हम
जिन्हों ने पहिले से मसीह पर आशा रखी
थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण
हों। १३ और उसी में तुम पर भी जब
तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे
उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर
तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए
पवित्र आत्मा की छाप लगी। १४ वह
उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये
हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की
महिमा की स्तुति हो॥

१५ इस कारण, मैं भी उस विश्वास
का समाचार सुनकर जो तुम लोगों में
प्रभु यीशु पर है और* सब पवित्र लोगों

* यू० आशीष से आशीष।

* या तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों से है।

पर प्रगट है। १६ तुम्हारे लिये धन्यवाद
करना नही छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं
में तुम्हें स्मरण किया करता हू। १७ कि
हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो
महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में,
ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे। १८ और
तुम्हारे मन की आखें ज्योतिर्मय हो
कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से
कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगो में
उस की मीरास की महिमा का धन कैसा
है। १९ और उस की सामर्थ हमारी ओर
जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है,
उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य्य
के अनुसार। २० जो उस ने मसीह के
विषय में किया, कि उस को मरे हुओ
में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानो में अपनी
दहिनी ओर। २१ सब प्रकार की
प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ,
और प्रभुता के, और हर एक नाम के
ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर
आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा,
बैठाया। २२ और सब कुछ उसके पावो
तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं
पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे
दिया। २३ यह उसकी देह है, और
उसी की परिपूर्णता है, जो सब मे सब कुछ
पूर्ण करता है॥

२ और उस ने तुम्हें भी जिलाया,
जो अपने अपराधो और पापो के
कारण मरे हुए थे। २ जिन में तुम
पहिले इस ससार की रीति पर, और
आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात्
उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब
भी आज्ञा न माननेवालो में कार्य्य करता
है। ३ इन में हम भी सब के सब पहिले
अपने शरीर की लालसाओ में दिन बिताते
थे, और शरीर, और मन की मनसाए
पूरी करते थे, और और लोगो के समान
स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।
४ परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी
है, अपने उस बडे प्रेम के कारण, जिस
से उस ने हम से प्रेम किया। ५ जब हम
अपराधो के कारण मरे हुए थे, तो हमें
मसीह के साथ जिलाया, (अनुग्रह ही
से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। ६ और
मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और
स्वर्गीय स्थानो में उसके साथ बैठाया।
७ कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह
यीशु में हम पर है, आनेवाले समयो में
अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।
८ क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से
तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी
ओर से नही, वरन परमेश्वर का दान है।
९ और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो
कि कोई घमण्ड करे। १० क्योंकि हम
उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में
उन भले कामो के लिये सृजे गए जिन्हें
परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये
तैयार किया॥

११ इस कारण स्मरण करो, कि तुम
जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो,
(और जो लोग शरीर में हाथ के किए
हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं, वे
तुम को खतनारहित कहते हैं)। १२ तुम
लोग उस समय मसीह से अलग और
इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए
हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओ के भागी
न थे, और आशाहीन और जगत में
ईश्वररहित थे। १३ पर अब तो मसीह
यीशु में तुम जो पहिले दूर थे, मसीह के
लोहू के द्वारा निकट हो गए हो।

बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए ॥

१७ इसलिये मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।
१८ क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं। १९ और वे सुन्न होकर, लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें। २० पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई।
२१ वरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। २२ कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। २३ और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
२४ और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है ॥

२५ इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं।
२६ क्रोध तो करो, पर पाप मत करो सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।
२७ और न शैतान * को अवसर दो।
२८ चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे, वरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करे, इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो।

* यू० इबलीस।

२९ कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उस से सुननेवालों पर अनुग्रह हो। ३० और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से * तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। ३१ सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। ३२ और एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो ॥

५ इसलिये प्रिय, बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो। २ और प्रेम में चलो, जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।
३ और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। ४ और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की, क्योंकि ये बातें सोहती नहीं, वरन धन्यवाद ही सुना जाए। ५ क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य की, जो मूरत पूजनेवाले के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं। ६ कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है। ७ इसलिये

* यू० में।

१४ क्योकि वही हमारा मेल है, जिस ने
दोनो को एक कर लिया और अलग
करनेवाली दीवार को जो बीच मे थी,
ढा दिया। १५ और अपने शरीर मे वैर
अर्थात् वह व्यवस्था जिस की आज्ञाए
विधियो की रीति पर थी, मिटा दिया,
कि दोनो से अपने मे एक नया मनुष्य
उत्पन्न करके मेल करा दे। १६ और
क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा
दोनो को एक देह बनाकर परमेश्वर मे
मिलाए। १७ और उस ने आकर तुम्हे
जो दूर थे, और उन्हे जो निकट थे,
दोनो को मेल-मिलाप का सुसमाचार
सुनाया। १८ क्योकि उस ही के द्वारा
हम दोनो की एक आत्मा मे पिता के
पास पहुच होती है। १९ इसलिये तुम
अब विदेशी और मुसाफिर नही रहे,
परन्तु पवित्र लोगो के सगी स्वदेशी और
परमेश्वर के घराने के हो गए। २० और
प्रेरितो और भविष्यद्वक्ताओ की नेव पर
जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु
आप ही है, बनाए गए हो। २१ जिस मे
सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु मे
एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।
२२ जिस मे तुम भी आत्मा के द्वारा
परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिये
एक साथ बनाए जाते हो।।

३ इसी कारण मै पौलुस जो तुम
अन्यजातियो के लिये मसीह यीशु का
बन्धुआ हू—२ यदि तुम ने परमेश्वर के
उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना
हो, जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया।
३ अर्थात् यह, कि वह भेद मुझ पर प्रकाश
के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मै पहिले
सक्षेप मे लिख चुका हू। ४ जिस से तुम
पढकर जान सकते हो, कि मै मसीह का
वह भेद कहा तक समझता हू। ५ जो
और और समयो मे मनुष्यो की सन्तानो
को ऐसा नही बताया गया था, जैसा कि
आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितो
और भविष्यद्वक्ताओ पर प्रगट किया गया
है। ६ अर्थात् यह, कि मसीह यीशु मे
सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग
मीरास मे साझी, और एक ही देह के
और प्रतिज्ञा के भागी है। ७ और मै
परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के
अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के
अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार
का सेवक बना। ८ मुझ पर जो सब
पवित्र लोगो मे से छोटे से भी छोटा हू,
यह अनुग्रह हुआ, कि मै अन्यजातियो को
मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार
सुनाऊ। ९ और सब पर यह बात
प्रकाशित करू, कि उस भेद का प्रबन्ध
क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर मे
आदि से गुप्त था। १० ताकि अब
कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना
प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानो और अधि-
कारियो पर, जो स्वर्गीय स्थानो मे है
प्रगट किया जाए। ११ उस सनातन
मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु
मसीह यीशु मे की थी। १२ जिस मे
हम को उस पर विश्वास रखने से हियाव
और भरोसे से निकट आने का अधिकार
है। १३ इसलिये मै विनती करता हू कि
जो क्लेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे है,
उनके कारण हियाव न छोडो, क्योकि
उन मे तुम्हारी महिमा है।।
१४ मै इसी कारण उस पिता के
साम्हने घुटने टेकता हू, १५ जिस से स्वर्ग

और पृथ्वी पर, हर एक * घराने का नाम
रखा जाता है। १६ कि वह अपनी
महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान
दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी
मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते
जाओ। १७ और विश्वास के द्वारा मसीह
तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड
पकडकर और नेव डाल कर। १८ सब
पवित्र लोगो के साथ भली भांति समझने
की शक्ति पाओ, कि उसकी चौडाई,
और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई
कितनी है। १९ और मसीह के उस प्रेम
को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम
परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण
हो जाओ॥

२० अब जो ऐसा सामर्थी है, कि
हमारी बिनती और समझ से कही अधिक
काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार
जो हम में कार्य्य करता है, २१ कलीसिया
में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा
पीढी से पीढी तक युगानुयुग होती रहे।
आमीन॥

४ सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हू
तुम से बिनती करता हू, कि जिस
बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य
चाल चलो। २ अर्थात् सारी दीनता और
नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से
एक दूसरे की सह लो। ३ और मेल के
बन्ध में आत्मा की एकता रखने का
यत्न करो। ४ एक ही देह है, और एक
ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे
अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।
५ एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक
ही बपतिस्मा। ६ और सब का एक ही
परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर,
और सब के मध्य में, और सब में है।
७ पर हम में से हर एक को मसीह के
दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।
८ इसलिये वह कहता है, कि वह ऊंचे
पर चढा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया,
और मनुष्यो को दान दिए। ९ (उसके
चढने से, और क्या पाया जाता है केवल
यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहो में
उतरा भी था। १० और जो उतर गया
यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ
भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे)।
११ और उस ने कितनो को प्रेरित नियुक्त
करके, और कितनो को भविष्यद्वक्ता
नियुक्त करके, और कितनो को सुसमाचार
सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनो को
रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे
दिया। १२ जिस से पवित्र लोग सिद्ध
हो जाए, और सेवा का काम किया जाए,
और मसीह की देह उन्नति पाए। १३ जब
तक कि हम सब के सब विश्वास, और
परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न
हो जाए, और एक सिद्ध मनुष्य न बन
जाए और मसीह के पूरे डील डौल तक
न बढ जाए। १४ ताकि हम आगे को
बालक न रहें, जो मनुष्यो की ठग-विद्या
और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियो
की, और उपदेश की, हर एक बयार से
उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हो।
१५ बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए,
सब बातो में उस में जो सिर है, अर्थात्
मसीह में बढते जाए। १६ जिस से सारी
देह हर एक जोड की सहायता से एक
साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस
प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के
परिमाण से उस में होता है, अपने आप को

* या सारे।

और पृथ्वी पर, हर एक * घराने का नाम
रखा जाता है। १६ कि वह अपनी
महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान
दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी
मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते
जाओ। १७ और विश्वास के द्वारा मसीह
तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड
पकडकर और नेव डाल कर। १८ सब
पवित्र लोगो के साथ भली भाति समझने
की शक्ति पाओ, कि उसकी चौडाई,
और लम्बाई, और ऊचाई, और गहराई
कितनी है। १९ और मसीह के उस प्रेम
को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम
परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण
हो जाओ॥

२० अब जो ऐसा सामर्थी है, कि
हमारी विनती और समझ से कही अधिक
काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार
जो हम में कार्य्य करता है, २१ कलीसिया
में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा
पीढी से पीढी तक युगानुयुग होती रहे।
आमीन॥

४ सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हू
तुम से विनती करता हू, कि जिस
बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य
चाल चलो। २ अर्थात् सारी दीनता और
नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से
एक दूसरे की सह लो। ३ और मेल के
बन्ध में आत्मा की एकता रखने का
यत्न करो। ४ एक ही देह है, और एक
ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे
अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।
५ एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक
ही बपतिस्मा। ६ और सब का एक ही
परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर,
और सब के मध्य में, और सब में है।
७ पर हम में से हर एक को मसीह के
दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।
८ इसलिये वह कहता है, कि वह ऊचे
पर चढा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया,
और मनुष्यो को दान दिए। ९ (उसके
चढने से, और क्या पाया जाता है केवल
यह, कि वह पृथ्वी की निचली जगहो में
उतरा भी था। १० और जो उतर गया
यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ
भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे)।
११ और उस ने कितनो को प्रेरित नियुक्त
करके, और कितनो को भविष्यद्वक्ता
नियुक्त करके, और कितनो को सुसमाचार
सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनो को
रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे
दिया। १२ जिस से पवित्र लोग सिद्ध
हो जाए, और सेवा का काम किया जाए
और मसीह की देह उन्नति पाए। १३ जब
तक कि हम सब के सब विश्वास, और
परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न
हो जाए, और एक सिद्ध मनुष्य न बन
जाए और मसीह के पूरे डील डौल तक
न बढ जाए। १४ ताकि हम आगे को
बालक न रहें, जो मनुष्यो की ठग-विद्या
और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियो
की, और उपदेश की, हर एक बयार से
उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हो।
१५ वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए,
सब बातो में उस में जो सिर है, अर्थात्
मसीह मे बढते जाए। १६ जिस से सारी
देह हर एक जोड की सहायता से एक
साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस
प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के
परिमाण से उस में होता है, अपने आप को

* या सारे।

का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है,
जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। ३ कि तेरा
भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन
जीवित रहे। ४ और हे बच्चेवालो अपने
बच्चो को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की
शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उन का
पालन-पोषण करो॥

५ हे दासो, जो लोग शरीर के अनुसार
तुम्हारे स्वामी है, अपने मन की सीधाई से
डरते, और कापते हुए, जैसे मसीह की,
वैसे ही उन की भी आज्ञा मानो। ६ और
मनुष्यो को प्रसन्न करनेवालो की नाई
दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह
के दासो की नाई मन से परमेश्वर की
इच्छा पर चलो। ७ और उस सेवा को
मनुष्यो की नही, परन्तु प्रभु की जानकर
सुइच्छा से करो। ८ क्योकि तुम जानते
हो, कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा,
चाहे दास हो, चाहे स्वतत्र, प्रभु से वैसा
ही पाएगा। ९ और हे स्वामियो, तुम भी
धमकिया छोडकर उन के साथ वैसा ही
व्यवहार करो, क्योकि जानते हो, कि उन
का और तुम्हारा दोनो का स्वामी स्वर्ग मे
है, और वह किसी का पक्ष नही करता॥

१० निदान, प्रभु में और उस की शक्ति
के प्रभाव में बलवन्त बनो। ११ परमेश्वर
के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम
शैतान * की युक्तियो के साम्हने खडे रह
सको। १२ क्योकि हमारा यह मल्लयुद्ध,
लोहू और मास से नही, परन्तु प्रधानो से
और अधिकारियो से, और इस ससार के
अन्धकार के हाकिमो से, और उस दुष्टता
की आत्मिक सेनाओ से है जो आकाश
में है। १३ इसलिये परमेश्वर के सारे
हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में
साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा
करके स्थिर रह सको। १४ सो सत्य से
अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की
झिलम पहिन कर। १५ और पावों में
मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते
पहिन कर। १६ और उन सब के साथ
विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से
तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरो को
बुझा सको। १७ और उद्धार का टोप,
और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का
वचन है, ले लो। १८ और हर समय
और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और
विनती करते रहो, और इसी लिये जागते
रहो, कि सब पवित्र लोगो के लिये लगातार
विनती किया करो। १९ और मेरे लिये
भी, कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल
वचन दिया जाए, कि मै हियाव से
सुसमाचार का भेद बता सकू जिस के
लिये मैं जजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हू।
२० और यह भी कि मैं उस के विषय मे
जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलू॥

२१ और तुखिकुस जो प्रिय भाई और
प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब
बातें बताएगा, कि तुम भी मेरी दशा जानो
कि मैं कैसा रहता हू। २२ उसे मैं ने
तुम्हारे पास इसी लिये भेजा है, कि तुम
हमारी दशा को जानो, और वह तुम्हारे
मनो को शान्ति दे॥

२३ परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु
मसीह की ओर से भाइयो को शान्ति और
विश्वास सहित प्रेम मिले। २४ जो हमारे
प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखते हैं,
उन सब पर अनुग्रह होता रहे॥

* यू० इब्लीस।

फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ मसीह यीशु के दास पौलुस और
तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र
लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर
फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों* और
सेवकों† समेत। २ हमारे पिता परमेश्वर
और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें
अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥
३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं,
तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद
करता हूं। ४ और जब कभी तुम सब के
लिये बिनती करता हूं, तो सदा आनन्द
के साथ बिनती करता हूं। ५ इसलिये,
कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक
सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी
रहे हो। ६ और मुझे इस बात का
भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा
काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु
मसीह के दिन तक पूरा करेगा। ७ उचित
है, कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही
विचार करूं क्योंकि तुम मेरे मन में आ
बसे हो, और मेरी कैद में और सुसमाचार
के लिये उत्तर और प्रमाण देने में तुम
सब मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी हो।
८ इस में परमेश्वर मेरा गवाह है, कि
मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम
सब की लालसा करता हूं। ९ और मैं
यह प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हारा प्रेम,
ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और
भी बढ़ता जाए। १० यहां तक कि तुम
उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो,

* या बिशपों।
† या डीकनों।

और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो,
और ठोकर न खाओ। ११ और उस
धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के
द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिस से
परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती
रहे॥
१२ हे भाइयो, मैं चाहता हूं, कि तुम
यह जान लो, कि मुझ पर जो बीता है,
उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है।
१३ यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी
पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रगट
हो गया है कि मैं मसीह के लिये कैद
हूं। १४ और प्रभु में जो भाई हैं, उन
में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण,
हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन
निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते
हैं। १५ कितने तो डाह और झगड़े के
कारण मसीह का प्रचार करते हैं और
कितने भली मनसा से। १६ कई एक
तो यह जान कर कि मैं सुसमाचार के
लिये उत्तर देने को ठहराया गया हूं
प्रेम से प्रचार करते हैं। १७ और कई
एक तो सीधाई से नहीं पर विरोध से
मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर
कि मेरी कैद में मेरे लिये क्लेश उत्पन्न
करें। १८ सो क्या हुआ? केवल यह,
कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे
सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती
है, और मैं इस से आनन्दित हूं, और
आनन्दित रहूंगा भी। १९ क्योंकि मैं
जानता हूं, कि तुम्हारी बिनती के द्वारा,
और यीशु मसीह की आत्मा के दान के

द्वारा, इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा।
२० मैं तो यही हार्दिक लालसा और
आशा रखता हू, कि मैं किसी बात मे
लज्जित न होऊ, पर जैसे मेरे प्रवल साहस
के कारण मसीह की बडाई मेरी देह के
द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब
भी हो चाहे म जीवित रहू वा मर जाऊ।
२१ क्योकि मेरे लिये जीवित रहना
मसीह है, और मर जाना लाभ है।
२२ पर यदि शरीर मे जीवित रहना ही
मेरे काम के लिये लाभदायक है तो
मैं नही जानता, कि किस को चुनू।
२३ क्योकि मैं दोनो के बीच अधर मे
लटका हू, जी तो चाहता है कि कूच
करके मसीह के पास जा रहू, क्योकि यह
वहुत ही अच्छा है। २४ परन्तु शरीर मे
रहना तुम्हारे कारण और भी आवश्यक
है। २५ और इसलिये कि मुझे इस का
भरोसा है सो मै जानता हू कि मै जीवित
रहूगा, बरन तुम सब के साथ रहूगा जिस से
तुम विश्वास मे दृढ होते जाओ और
उस मे आनन्दित रहो। २६ और जो
घमण्ड तुम मेरे विषय मे करते हो, वह
मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह
यीशु मे अधिक बढ जाए। २७ केवल
इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह
के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं
आकर तुम्हे देखू, चाहे न भी आऊ,
तुम्हारे विषय मे यह सुनू, कि तुम एक
ही आत्मा मे स्थिर हो, और एक चित्त
होकर सुसमाचार के विश्वास के लिये
परिश्रम करते रहते हो। २८ और किसी
बात मे विरोधियो मे भय नही खाते?
यह उन के लिये विनाश का स्पष्ट चिन्ह
है, परन्तु तुम्हारे लिये उद्धार का, और
यह परमेश्वर की ओर से है। २९ क्योकि
मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ,
कि न केवल उस पर विश्वास करो पर
उसके लिये दुख भी उठाओ। ३० और
तुम्हे वैसा ही परिश्रम करना है, जैसा
तुम ने मुझे करते देखा है, और अब भी
सुनते हो, कि मै वैसा ही करता हू॥

२ सो यदि मसीह मे कुछ शान्ति,
और प्रेम से ढाढस और आत्मा की
सहभागिता, और कुछ करुणा और दया
है। २ तो मेरा यह आनन्द पूरा करो
कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक
ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।
३ विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ
न करो पर दीनता से एक दूसरे को
अपने से अच्छा समझो। ४ हर एक
अपनी ही हित की नही, बरन दूसरो की
हित की भी चिन्ता करे। ५ जैसा मसीह
यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी
स्वभाव हो। ६ जिस ने परमेश्वर के
स्वरूप मे होकर भी परमेश्वर के तुल्य
होने को अपने वश मे रखने की वस्तु
न समझा। ७ बरन अपने आप को ऐसा
शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप
धारण किया, और मनुष्य की समानता में
हो गया। ८ और मनुष्य के रूप मे प्रगट
होकर अपने आप को दीन किया, और
यहा तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हा,
क्रूस की मृत्यु भी सह ली। ९ इस कारण
परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया,
और उसको वह नाम दिया जो सब
नामो मे श्रेष्ठ है। १० कि जो स्वर्ग मे
और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे
है, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
११ और परमेश्वर पिता की महिमा के

लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि
यीशु मसीह ही प्रभु है ॥
१२ सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम
सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही
अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर
विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी
डरते और कापते हुए अपने अपने उद्धार
का कार्य्य पूरा करते जाओ। १३ क्योंकि
परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा
निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम,
दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।
१४ सब काम बिना कुडकुडाए और बिना
विवाद के किया करो। १५ ताकि तुम
निर्दोष और भोले होकर टेढे और हठीले
लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलङ्क
सन्तान बने रहो, (जिन के बीच में तुम
जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते
दीपकों की नाईं दिखाई देते हो)।
१६ कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने
का कारण हो, कि न मेरा दौडना और
न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ।
१७ और यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के
बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू
भी बहाना पडे तौभी मै आनन्दित हू,
और तुम सब के साथ आनन्द करता हू।
१८ वैसे ही तुम भी आनन्दित हो, और
मेरे साथ आनन्द करो ॥

१९ मुझे प्रभु यीशु में आशा है, कि
मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त
भेजूगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे
शान्ति मिले। २० क्योंकि मेरे पास ऐसे
स्वभाव का कोई नही, जो शुद्ध मन से
तुम्हारी चिन्ता करे। २१ क्योंकि सब
अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि
यीशु मसीह की। २२ पर उसको तो
तुम ने परखा और जान भी लिया है,
कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है,
वैसा ही उस ने सुसमाचार के फैलाने में
मेरे साथ परिश्रम किया। २३ सो मुझे
आशा है, कि ज्यों ही मुझे जान पडेगा
कि मेरी क्या दशा होगी, त्यों ही मैं उसे
तुरन्त भेज दूगा। २४ और मुझे प्रभु में
भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊगा।
२५ पर मैं ने इपफ्रुदीतुस को जो मेरा
भाई, और सहकर्मी और सगी योद्धा और
तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में
मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे
पास भेजना अवश्य समझा। २६ क्योंकि
उसका मन तुम सब में लगा हुआ था, इस
कारण वह व्याकुल रहता था क्योंकि
तुम ने उस की बीमारी का हाल सुना था।
२७ और निश्चय वह बीमार तो हो गया
था, यहा तक कि मरने पर था, परन्तु
परमेश्वर ने उस पर दया की, और
केवल उस ही पर नही, पर मुझ पर भी,
कि मुझे शोक पर शोक न हो। २८ इस-
लिये मैं ने उसे भेजने का और भी यत्न
किया कि तुम उस से फिर भेंट करके
आनन्दित हो जाओ और मेरा भी शोक
घट जाए। २९ इसलिये तुम प्रभु में
उस से बहुत आनन्द के साथ भेंट करना,
और ऐसों का आदर किया करना।
३० क्योंकि वह मसीह के काम के लिये
अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर मरने
के निकट हो गया था, ताकि जो घटी
तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई, उसे
पूरा करे ॥

३ निदान, हे मेरे भाइयो, प्रभु में
आनन्दित रहो वे ही बातें तुम को
बार बार लिखने में मुझे तो कुछ कष्ट
नही होता, और इस में तुम्हारी कुशलता

है। २ कुत्तो से चौकस रहो, उन बुरे
काम करनेवालो से चौकस रहो, उन काट
कूट करनेवालो से चौकस रहो। ३ क्योंकि
खतनावाले तो हम ही है जो परमेश्वर
के आत्मा की अगुआई से उपासना करते
है, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते है,
और शरीर पर भरोसा नही रखते।
४ पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख
सकता हू यदि किसी और को शरीर पर
भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उस
से भी बढकर रख सकता हू। ५ आठवे
दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश,
और बिन्यामीन के गोत्र का हू, इब्रानियो
का इब्रानी हू, व्यवस्था के विषय में यदि
कहो तो फरीसी हू। ६ उत्साह के विषय मे
यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला,
और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय मे
यदि कहो तो निर्दोष था। ७ परन्तु जो
जो बाते मेरे लाभ की थी, उन्ही को
मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया
है। ८ वरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु
की पहिचान की उत्तमता के कारण सब
बातो को हानि समझता हू जिस के
कारण मैं ने सब वस्तुओ की हानि उठाई,
और उन्हे कूडा समझता हू, जिस से मैं
मसीह को प्राप्त करू। ९ और उस में
पाया जाऊ, न कि अपनी उस धार्मिकता
के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन उस
धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास
करने के कारण है, और परमेश्वर की
ओर से विश्वास करने पर मिलती है।
१० और मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय
की सामर्थ को, और उसके साथ दुखो में
सहभागी होने के मर्म को जानू, और
उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करू।
११ ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओ
में से जी उठने के पद तक पहुचू। १२ यह
मतलब नही, कि मैं पा चुका हू, या सिद्ध
हो चुका हू पर उस पदार्थ को पकड़ने
के लिये दौडा चला जाता हू, जिस के लिये
मसीह यीशु ने मुझे पकडा था। १३ हे
भाइयो, मेरी भावना यह नही कि मैं
पकड चुका हू परन्तु केवल यह एक
काम करता हू, कि जो बाते पीछे रह
गई है उन को भूल कर, आगे की बातो की
ओर बढता हुआ। १४ निशाने की ओर
दौडा चला जाता हू, ताकि वह इनाम पाऊ,
जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह
यीशु मे ऊपर बुलाया है। १५ सो हम
मे से जितने सिद्ध है, यही विचार रखे,
और यदि किसी बात मे तुम्हारा और ही
विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर
प्रगट कर देगा। १६ सो जहा तक हम
पहुचे है, उसी के अनुसार चले॥

१७ हे भाइयो, तुम सब मिलकर मेरी सी
चाल चलो, और उन्हे पहिचान रखो, जो
इस रीति पर चलते है जिस का उदाहरण
तुम हम मे पाते हो। १८ क्योंकि बहुतेरे
ऐसी चाल चलते है, जिन की चर्चा मैं ने
तुम से बार बार किया है, और अब भी
रो रोकर कहता हू, कि वे अपनी चाल-
चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं।
१९ उन का अन्त विनाश है, उन का ईश्वर
पेट है, वे अपनी लज्जा की बातो पर
घमण्ड करते है, और पृथ्वी की वस्तुओ
पर मन लगाए रहते है। २० पर हमारा
स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धार-
कर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहा से आने
की बाट जोह रहे हैं। २१ वह अपनी
शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिस के
द्वारा वह सब वस्तुओ को अपने वश मे
कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का

रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के
अनुकूल बना देगा ॥

४ इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो,
जिन में मेरा जी लगा रहता है जो
मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो,
प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो ॥
२ मैं यूओदिया को भी समझाता हू,
और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक
मन रहें। ३ और हे सच्चे सहकर्मी मैं
तुझ से भी विनती करता हू, कि तू उन
स्त्रियो की सहायता कर, क्योकि उन्हो ने
मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस
और मेरे उन और सहकर्मियो समेत
परिश्रम किया, जिन के नाम जीवन की
पुस्तक में लिखे हुए हैं ॥
४ प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर
कहता हू, आनन्दित रहो। ५ तुम्हारी
कोमलता सब मनुष्यो पर प्रगट हो
प्रभु निकट है। ६ किसी भी बात की
चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बात में
तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के
द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख
उपस्थित किए जाए। ७ तब परमेश्वर की
शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है,
तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारो को
मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी ॥
८ निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य
हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और
जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें
पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं,
और जो जो बातें मनभावनी * हैं, निदान,
जो जो सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं
उन्ही पर ध्यान लगाया करो। ९ जो बातें
तुम ने मुझ से सीखी, और ग्रहण की,
और सुनी, और मुझ में देखी, उन्ही का
पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति
का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा ॥
१० मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हू कि
अब इतने दिनो के बाद तुम्हारा विचार
मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है, निश्चय
तुम्हें आरम्भ में भी इस का विचार था,
पर तुम्हें अवसर न मिला। ११ यह नही
कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता
हू, क्योंकि मैं ने यह सीखा है कि जिस
दशा में हू, उसी में सन्तोष करू। १२ मैं
दीन होना भी जानता हू और बढना भी
जानता हू हर एक बात और सब
दशाओ में मैं ने तृप्त होना, भूखा रहना,
और बढना-घटना सीखा है। १३ जो मुझे
सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर
सकता हू। १४ तौभी तुम ने भला किया,
कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए।
१५ और हे फिलिप्पियो, तुम आप भी
जानते हो, कि सुसमाचार प्रचार के
आरम्भ में जब मैं ने मकिदुनिया से कूच
किया तब तुम्हें छोड और किसी मण्डली
ने लेने देने के विषय में मेरी सहायता
नही की। १६ इसी प्रकार जब मैं
थिस्सलुनीके में था, तब भी तुम ने मेरी
घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या
वरन दो बार कुछ भेजा था। १७ यह
नही कि मैं दान चाहता हू परन्तु मैं ऐसा
फल चाहता हू, जो तुम्हारे लाभ के लिये
बढता जाए। १८ मेरे पास सब कुछ है,
वरन बहुतायत से भी है जो वस्तुए तुम ने
इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें
पाकर मैं तृप्त हो गया हू, वह तो सुगन्ध
और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है,
जो परमेश्वर को भाता है। १९ और मेरा
परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार

* या सुख्यात।

जो महिमा सहित मसीह यीशु मे हैं तुम्हारी
हर एक घटी को पूरी करेगा। २० हमारे
परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग
होती रहे। आमीन ॥

२१ हर एक पवित्र जन को जो यीशु
मसीह में है नमस्कार कहो। जो भाई
मेरे साथ है, तुम्हे नमस्कार कहते हैं।
२२ सब पवित्र लोग, विशेष करके जो
कैसर के घराने के है तुम को नमस्कार
कहते है॥

२३ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह
तुम्हारी आतमा के साथ रहे॥

कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर
की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित
है, और भाई तीमुथियुस की ओर से।
२ मसीह मे उन पवित्र और विश्वासी
भाइयो के नाम जो कुलुस्से में रहते है॥

हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हे
अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे॥

३ हम तुम्हारे लिये नित प्रार्थना करके
अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात्
परमेश्वर का धन्यवाद करते है। ४ क्योकि
हम ने सुना है, कि मसीह यीशु पर तुम्हारा
विश्वास है, और सब पवित्र लोगो से प्रेम
रखते हो। ५ उस आशा की हुई वस्तु
के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग म रखी
हुई है, जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार
के सत्य वचन मे सुन चुके हो। ६ जो
तुम्हारे पास पहुचा है और जैसा जगत मे
भी फल लाता, और बढता जाता है,
अर्थात् जिम दिन से तुम ने उस को सुना,
और मच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह
पहिचाना है, तुम मे भी ऐमा ही करता
है। ७ उसी की शिक्षा तुम ने हमारे प्रिय
सहकर्मी इपफ्रास से पाई, जो हमारे लिये
मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है।
८ उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आतमा मे है
हम पर प्रगट किया॥

९ इसी लिये जिस दिन से यह सुना
है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने
और विनती करने से नही चूकते कि तुम
सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित
परमेश्वर की इच्छा की पहिचान मे
परिपूर्ण हो जाओ। १० ताकि तुम्हारा
चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब
प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम मे हर प्रकार
के भले कामो का फल लगे, और परमेश्वर
की पहिचान मे बढते जाओ। ११ और
उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब
प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ,
यहा तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से
धीरज और सहनशीलता दिखा सको।
१२ और पिता का धन्यवाद करते रहो,
जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति मे
पवित्र लोगो के साथ मीरास में सम्भागी
हों। १३ उसी ने हमे अन्धकार के वश से
छुडाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य मे
प्रवेश कराया। १४ जिस मे हमे छुटकारा

अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।
१५ वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रति-
रूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।
१६ क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की
सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की,
देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या
प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार,
सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के
लिये सृजी गई हैं। १७ और वही सब
वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं
उसी में स्थिर रहती हैं। १८ और वही
देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है, वही
आदि है और मरे हुओं में से जी उठने-
वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही
प्रधान ठहरे। १९ क्योंकि पिता की
प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परि-
पूर्णता वास करे। २० और उसके क्रूस
पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप
करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से
अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर
की हों, चाहे स्वर्ग में की। २१ और उस ने
अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा
तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले
निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण
मन से बैरी थे। २२ ताकि तुम्हें अपने
सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष
बनाकर उपस्थित करे। २३ यदि तुम
विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो, और
उस सुसमाचार की आशा का जिसे तुम ने
सुना है न छोड़ो, जिस का प्रचार आकाश
के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया,
और जिस का मैं पौलुस सेवक बना॥

२४ अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द
करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूं,
और मसीह के क्लेशों की घटी उस की
देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये,
अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।
२५ जिस का मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के
अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे
सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन
का पूरा पूरा प्रचार करूं। २६ अर्थात्
उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से
गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र
लोगों पर प्रगट हुआ है। २७ जिन पर
परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें
ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की
महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है,
कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में
रहता है। २८ जिस का प्रचार करके
हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और
सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते
हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में
सिद्ध करके उपस्थित करें। २९ और इसी
के लिये मैं उस की उस शक्ति के अनुसार
जो मुझ में सामर्थ के साथ प्रभाव
डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी
करता हूं।

२ मैं चाहता हूं कि तुम जान
लो, कि तुम्हारे और उन के जो
लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये
जिन्हों ने मेरा शारीरिक मुंह नहीं देखा मैं
कैसा परिश्रम करता हूं। २ ताकि उन के
मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में
गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा
धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के
भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें।
३ जिस में बुद्धि और ज्ञान से सारे
भण्डार* छिपे हुए हैं। ४ यह मैं इस-
लिये कहता हूं, कि कोई मनुष्य तुम्हें
लुभानेवाली बातों से धोखा न दे।

* या धन।

५ क्योंकि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से
दूर हू, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे
निकट हू, और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र
और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है
दृढता देखकर प्रसन्न होता हू ॥

६ सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को
प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही
उसी मे चलते रहो। ७ और उसी मे जड
पकडते और बढते जाओ, और जैसे तुम
सिखाए गए वैसे ही विश्वास मे दृढ होते
जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो ॥

८ चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस
तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर *
न कर ले, जो मनुष्यो के परम्पराई मत
और ससार की आदि शिक्षा के अनुसार
है, पर मसीह के अनुसार नही। ९ क्योंकि
उस मे ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता
सदेह वास करती है। १० और तुम
उसी मे भरपूर हो गए हो जो सारी
प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि
है। ११ उसी मे तुम्हारा ऐसा खतना
हुआ है, जो हाथ से नही होता, अर्थात्
मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह
उतार दी जाती है। १२ और उसी के
साथ बपतिस्मा मे गाडे गए, और उसी में
परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके,
जिस ने उस को मरे हुओ मे से जिलाया,
उसके साथ जी भी उठे। १३ और उस ने
तुम्हे भी, जो अपने अपराधो, और अपने
शरीर की खतनारहित दशा मे मुर्दा थे,
उसके साथ जिलाया, और हमारे सब
अपराधो को क्षमा किया। १४ और
विधियो का वह लेख जो हमारे नाम पर,
और हमारे विरोध में था मिटा डाला,
और उस को क्रूस पर कीलो से जडकर
साम्हने से हटा दिया है। १५ और उस ने
प्रधानताओ और अधिकारो को अपने
ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला
तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर
जय-जय-कार की ध्वनि सुनाई ॥

१६ इसलिये खाने पीने या पर्ब्ब या
नए चान्द, या सब्तो के विषय मे तुम्हारा
कोई फैसला न करे। १७ क्योंकि ये सब
आनेवाली बातो की छाया हैं, पर मूल *
वस्तुए मसीह की है। १८ कोई मनुष्य
दीनता और स्वर्गदूतो की पूजा करके तुम्हें
दौड के प्रतिफल से वचित न करे।
ऐसा मनुष्य देखी हुई बातो मे लगा रहता
है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ
फूलता है। १९ और उस शिरोमणि को
पकडे नही रहता जिस से सारी देह जोडो
और पट्ठो के द्वारा पालन-पोषण पाकर
और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से
बढती जाती है ॥

२० जब कि तुम मसीह के साथ ससार
की आदि शिक्षा की ओर से मर गए
हो, तो फिर उन के समान जो ससार में
जीवन बिताते है मनुष्यो की आज्ञाओ
और शिक्षानुसार २१ और ऐसी विधियो
के वश मे क्यो रहते हो? कि यह न छूना,
उसे न चखना, और उसे हाथ न लगाना।
२२ (क्योंकि ये सब वस्तु काम मे लाते
लाते नाश हो जाएगी)। २३ इन विधियो
मे अपनी इच्छा के अनुसार गढी हुई भक्ति
की रीति, और दीनता, और शारीरिक
योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो
है, परन्तु शारीरिक लालसाओ के रोकने में
इन से कुछ भी लाभ नही होता ॥

* या लूट न लें।

* यू० देह।

३ सो जब तुम मसीह के साथ
जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की
खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और
परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है।
२ पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय
वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। ३ क्योंकि
तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन
मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ
है। ४ जब मसीह जो हमारा जीवन है,
प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा
सहित प्रगट किए जाओगे॥

५ इसलिये अपने उन अंगों को मार
डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार,
अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और
लोभ को जो मूर्त्ति पूजा के बराबर है*।
६ इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप
आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता है।
७ और तुम भी, जब इन बुराइयों में
जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार
चलते थे। ८ पर अब तुम भी इन सब को
अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और
मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़
दो। ९ एक दूसरे से झूठ मत बोलो
क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके
कामों समेत उतार डाला है। १० और
नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो
अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान
प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता
है। ११ उस में न तो यूनानी रहा, न
यहूदी, न खतना, न खतनारहित, न
जङ्गली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र
केवल मसीह सब कुछ और सब में है॥

१२ इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं
की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी
करुणा, और भलाई, और दीनता, और
नम्रता, और सहनशीलता धारण करो।
१३ और यदि किसी को किसी पर दोष
देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे
की सह लो, और एक दूसरे के अपराध
क्षमा करो जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध
क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।
१४ और इन सब के ऊपर प्रेम को जो
सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो।
१५ और मसीह की शान्ति जिस के लिये
तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो,
तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम
धन्यवादी बने रहो। १६ मसीह के वचन
को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो,
और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को
सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने
मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये
भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत
गाओ। १७ और वचन से या काम से
जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से
करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का
धन्यवाद करो॥

१८ हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है,
वैसा ही अपने अपने पति के आधीन रहो।
१९ हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से
प्रेम रखो, और उन से कठोरता न करो।
२० हे बालको, सब बातों में अपने अपने
माता-पिता की आज्ञा का पालन करो,
क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।
२१ हे बच्चेवालो, अपने बालकों को
तंग न करो, न हो कि उन का साहस टूट
जाए। २२ हे सेवको, जो शरीर के
अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में
उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों
को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के
लिये नहीं, परन्तु मन की सीधाई और

* या मूरतपूजा है।

परमेश्वर के भय से। २३ और जो कुछ
तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ-
कर कि मनुष्यो के लिये नही परन्तु प्रभु
के लिये करते हो। २४ क्योकि तुम
जानते हो कि तुम्हे इस के बदले प्रभु से
मीरास मिलेगी तुम प्रभु मसीह की सेवा
करते हो। २५ क्योकि जो बुरा करता
है, वह अपनी बुराई का फल पाएगा,
वहा किसी का पक्षपात नही।

४ हे स्वामियो, अपने अपने दासो के
साथ न्याय और ठीक ठीक व्यवहार
करो, यह समझकर कि स्वर्ग मे तुम्हारा
भी एक स्वामी है॥

२ प्रार्थना मे लगे रहो, और धन्यवाद
के साथ उस मे जागृत रहो। ३ और
इस के साथ ही साथ हमारे लिये भी
प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे
लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे,
कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर
सके जिस के कारण मै कैद मे हू। ४ और
उसे ऐसा प्रगट करू, जैसा मुझे करना
उचित है। ५ अवसर को बहुमूल्य समझ-
कर बाहरवालो के साथ बुद्धिमानी से
बर्ताव करो। ६ तुम्हारा वचन सदा
अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हे
हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर
देना आ जाए॥

७ प्रिय भाई और विश्वासयोग्य सेवक,
तुखिकुस जो प्रभु मे मेरा सहकर्मी है,
मेरी सब बाते तुम्हे बता देगा। ८ उसे
मै ने इसलिये तुम्हारे पास भेजा है, कि
तुम्हे हमारी दशा मालूम हो जाए और
वह तुम्हारे हृदयो को शान्ति दे। ९ और
उसके साथ उनेसिमुस को भी भेजा है जो
विश्वासयोग्य और प्रिय भाई और तुम
ही मे से है, ये तुम्हे यहा की सारी बातें
बता देगे॥

१० अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी है,
और मरकुस जो बरनबा का भाई लगता
है (जिस के विषय मे तुम ने आज्ञा पाई
थी कि यदि वह तुम्हारे पास आए, तो
उस से अच्छी तरह व्यवहार करना।)
११ और यीशु जो यूस्तुस कहलाता है,
तुम्हे नमस्कार कहते है। खतना किए हुए
लोगो मे से केवल ये ही परमेश्वर के
राज्य के लिये मेरे सहकर्मी और मेरी
शान्ति का कारण रहे है। १२ इपफ्रास
जो तुम मे से है, और मसीह यीशु का
दास है, तुम से नमस्कार कहता है और
सदा तुम्हारे लिये प्रार्थनाओ मे प्रयत्न
करता है, ताकि तुम सिद्ध होकर पूर्ण
विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर
स्थिर रहो। १३ मै उसका गवाह हू,
कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया और
हियरापुलिसवालो के लिये बडा यत्न
करता रहता है। १४ प्रिय वैद्य लूका और
देमास का तुम्हे नमस्कार। १५ लौदीकिया
के भाइयो को और नुमफास और उन के
घर की कलीसिया को नमस्कार कहना।
१६ और जब यह पत्र तुम्हारे यहा पढ
लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया
की कलीसिया मे भी पढा जाए, और वह
पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी
पढना। १७ फिर अर्खिप्पुस से कहना कि
जो सेवा प्रभु मे तुझे सौपी गई है, उसे
सावधानी के साथ पूरी करना॥

१८ मुझ पौलुस का अपने हाथ से
लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जजीरो को
स्मरण रखना, तुम पर अनुग्रह होता रहे।
आमीन॥

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

१ पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है॥
अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे॥
२ हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें
स्मरण करते और सदा तुम सब के
विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।
३ और अपने परमेश्वर और पिता के
साम्हने तुम्हारे विश्वास के काम, और
प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु
मसीह में आशा की धीरता को लगातार
स्मरण करते हैं। ४ और हे भाइयो,
परमेश्वर के प्रिय लोगो हम जानते हैं कि
तुम चुने हुए हो। ५ क्योंकि हमारा
सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन
मात्र ही में वरन सामर्थ और पवित्र
आत्मा और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा
है, जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे
लिये तुम में कैसे बन गए थे। ६ और
तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द
के साथ वचन को मानकर हमारी और
प्रभु की सी चाल चलने लगे। ७ यहां
तक कि मकिदुनिया और अखया के सब
विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।
८ क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल
मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन
सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो
परमेश्वर पर है हर जगह ऐसी चर्चा
फैल गई है कि हमें कहने की आवश्यकता
ही नहीं। ९ क्योंकि वे आप ही हमारे
विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा
आना कैसा हुआ, और तुम क्योंकर
मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि
जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।
१० और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने
की बाट जोहते रहो जिसे उस ने मरे
हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो
हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है॥

२ हे भाइयो, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना
व्यर्थ न हुआ। २ वरन तुम आप ही
जानते हो कि पहिले पहिल फिलिप्पी में
दुख उठाने और उपद्रव सहने पर भी
हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा हियाव दिया,
कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी
विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाए।
३ क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है
और न अशुद्धता से और न छल के साथ
है। ४ पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य
ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही
वर्णन करते हैं, और इस में मनुष्यों को
नहीं, परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे
मनों को जांचता है प्रसन्न करते हैं।
५ क्योंकि तुम जानते हो कि हम न तो
कभी लल्लोपत्तो की बातें किया करते थे,
और न लोभ के लिये बहाना करते थे,
परमेश्वर गवाह है। ६ और यद्यपि हम
मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर

बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यो से
आदर नही चाहते थे, और न तुम से,
न और किसी से। ७ परन्तु जिस तरह
माता अपने बालको का पालन-पोषण
करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे
बीच मे रहकर कोमलता दिखाई है।
८ और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा
करते हुए, न केवल परमेश्वर का
सुसमाचार, पर अपना अपना प्राण भी तुम्हे
देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे
प्यारे हो गए थे। ९ क्योंकि, हे भाइयो,
तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण
रखते हो, कि हम ने इसलिये रात दिन
काम धन्धा करते हुए तुम मे परमेश्वर का
सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम मे से
किसी पर भार न हो। १० तुम आप ही
गवाह हो और परमेश्वर भी, कि तुम्हारे
बीच मे जो विश्वास रखते हो हम कैसी
पवित्रता और धार्मिकता और निर्दोषता से
रहे। ११ जैसे तुम जानते हो, कि जैसा
पिता अपने बालको के साथ बर्ताव करता
है, वैसे ही हम तुम मे से हर एक को भी
उपदेश करते, और शान्ति देते, और
समझाते थे*। १२ कि तुम्हारा चाल-
चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हे अपने
राज्य और महिमा मे बुलाता है॥

१३ इसलिये हम भी परमेश्वर का
धन्यवाद निरन्तर करते है, कि जब हमारे
द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन
तुम्हारे पास पहुचा, तो तुम ने उसे
मनुष्यो का नही, परन्तु परमेश्वर का
वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा
ही है) ग्रहण किया और वह तुम मे
जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है।
१४ इसलिये कि तुम, हे भाइयो, परमेश्वर
की उन कलीसियाओ की सी चाल चलने
लगे, जो यहूदिया मे मसीह यीशु में हैं,
क्योकि तुम ने भी अपने लोगो से वैसा
ही दुख पाया, जैसा उन्हो ने यहूदियो से
पाया था। १५ जिन्हो ने प्रभु यीशु को
और भविष्यद्वक्ताओ को भी मार डाला
और हम को सताया, और परमेश्वर उन से
प्रसन्न नही, और वे सब मनुष्यो का विरोध
करते हैं। १६ और वे अन्यजातियो से
उन के उद्धार के लिये बाते करने से हमे
रोकते है, कि सदा अपने पापो का नपुआ
भरते रहे, पर उन पर भयानक प्रकोप
आ पहुचा है॥

१७ हे भाइयो, जब हम थोडी देर के
लिये मन मे नही बरन प्रगट मे तुम से
अलग हो गए थे, तो हम ने बडी लालसा
के साथ तुम्हारा मुह देखने के लिये और
भी अधिक यत्न किया। १८ इसलिये
हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार
नही, बरन दो बार तुम्हारे पास आना
चाहा, परन्तु शैतान हमे रोके रहा।
१९ भला हमारी आशा, या आनन्द या
बडाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु
यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम
ही न होगे? २० हमारी बडाई और
आनन्द तुम ही हो॥

३ इसलिये जब हम से और न रहा
गया, तो हम ने यह ठहराया कि
एथेन्स मे अकेले रह जाए। २ और हम ने
तीमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार मे
हमारा भाई, और परमेश्वर का सेवक है,
इसलिये भेजा, कि वह तुम्हे स्थिर करे,
और तुम्हारे विश्वास के विषय मे तुम्हे
समझाए। ३ कि कोई इन क्लेशो के

* यू० गवाही देते थे।

कारण डगमगा न जाए, क्योंकि तुम आप
जानते हो, कि हम इन ही के लिये ठहराए
गए हैं। ४ क्योंकि पहिले भी, जब हम
तुम्हारे यहा थे, तो तुम से कहा करते थे,
कि हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा ही
हुआ है, और तुम जानते भी हो। ५ इस
कारण जब मुझ से और न रहा गया, तो
तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिये
भेजा, कि कहीं ऐसा न हो, कि परीक्षा
करनेवाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो,
और *हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।*
६ पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे
पास से हमारे यहा आकर तुम्हारे विश्वास
और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस
बात को भी सुनाया, कि तुम सदा प्रेम के
साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे
देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी
तुम्हें देखने की। ७ इसलिये हे भाइयो,
हम ने अपनी सारी सकेती और क्लेश में
तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में
शान्ति पाई। ८ क्योंकि अब यदि तुम
प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं।
९ और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण
अपने परमेश्वर के साम्हने है, उसके बदले
तुम्हारे विषय में हम किस रीति से
परमेश्वर का धन्यवाद करें? १० हम रात
दिन बहुत ही प्रार्थना करते रहते हैं, कि
तुम्हारा मुह देखें, और तुम्हारे विश्वास की
घटी पूरी करें॥

११ अब हमारा परमेश्वर और पिता
आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे
यहा आने के लिये हमारी अगुआई करे।
१२ और प्रभु ऐसा करे, कि जैसा हम
तुम से प्रेम रखते हैं, वैसा ही तुम्हारा प्रेम
भी आपस में, और सब मनुष्यों के साथ
बढ़े, और उन्नति करता जाए। १३ ताकि
वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे, कि
जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र
लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर
और पिता के साम्हने पवित्रता में निर्दोष
ठहरें॥

४ निदान, हे भाइयो, हम तुम से
विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु
यीशु में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से
योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को
प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम
चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते
जाओ। २ क्योंकि तुम जानते हो, कि
हम ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन
कौन सी आज्ञा पहुंचाई। ३ क्योंकि पर-
मेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र
बनो अर्थात व्यभिचार से बचे रहो।
४ और तुम में से हर एक पवित्रता और
आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना
जाने। ५ और यह काम अभिलाषा से
नहीं, और न उन जातियों की नाईं, जो
परमेश्वर को नहीं जानतीं। ६ कि इस
बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और
न उस पर दांव चलाए, क्योंकि प्रभु इन
सब बातों का पलटा लेनेवाला है, जैसा
कि हम ने पहिले तुम से कहा, और चिताया
भी था। ७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें
अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र
होने के लिये बुलाया है। ८ इस कारण
जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं,
परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है,
जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है॥

९ किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में
यह अवश्य नहीं, कि मैं तुम्हारे पास
कुछ लिखूं, क्योंकि आपस में प्रेम रखना
तुम ने आप ही परमेश्वर से सीखा है।

१० और सारे मकिदुनिया के सब भाइयो
के साथ ऐसा करते भी हो, पर हे भाइयो,
हम तुम्हे समझाते है, कि और भी बढते
जाओ। ११ और जैसी हम ने तुम्हे
आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और
अपना अपना काम काज करने, और अपने
अपने हाथो से कमाने का प्रयत्न करो।
१२ कि बाहरवालो के साथ सभ्यता से
बर्ताव करो, और तुम्हे किसी वस्तु की
घटी न हो॥

१३ हे भाइयो, हम नही चाहते, कि
तुम उनके विषय मे जो सोते है, अज्ञान
रहो, ऐसा न हो, कि तुम औरो की
नाई शोक करो जिन्हे आशा नही।
१४ क्योकि यदि हम प्रतीति करते है, कि
यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही
परमेश्वर उन्हे भी जो यीशु मे सो गए है,
उसी के साथ ले आएगा। १५ क्योकि हम
प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह
कहते है, कि हम जो जीवित है, और प्रभु
के आने तक बचे रहेगे तो सोए हुओ से
कभी आगे न बढेगे। १६ क्योकि प्रभु आप
ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार,
और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा,
और परमेश्वर की तुरही फूकी जाएगी,
और जो मसीह मे मरे है, वे पहिले जी
उठेगे। १७ तब हम जो जीवित और
बचे रहेगे, उन के साथ बादलो पर उठा
लिए जाएगे, कि हवा मे प्रभु से मिले,
और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ
रहेगे। १८ सो इन बातो से एक दूसरे को
शान्ति दिया करो॥

५ पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन
नही, कि समयो और कालो के
विषय मे तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए।
२ क्योकि तुम आप ठीक जानते हो कि
जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही
प्रभु का दिन आनेवाला है। ३ जब लोग
कहते होगे, कि कुशल है, और कुछ भय
नही, तो उन पर एकाएक विनाश आ
पडेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीडा,
और वे किसी रीति से न बचेगे। ४ पर
हे भाइयो, तुम तो अन्धकार मे नही हो,
कि वह दिन तुम पर चोर की नाई आ
पडे। ५ क्योकि तुम सब ज्योति की
सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम
न रात के है, न अन्धकार के है। ६ इस-
लिये हम औरो की नाई सोते न रहे, पर
जागते और सावधान रहे। ७ क्योकि जो
सोते है, वे रात ही को सोते है, और जो
मतवाले होते है, वे रात ही को मतवाले
होते है। ८ पर हम जो दिन के है,
विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर
और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर
सावधान रहे। ९ क्योकि परमेश्वर ने
हमे क्रोध के लिये नही, परन्तु इसलिये
ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के
द्वारा उद्धार प्राप्त करे। १० वह हमारे
लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे
जागते हों, चाहें सोते हो सब मिलकर
उसी के साथ जीए। ११ इस कारण एक
दूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की
उन्नति के कारण बनो *, निदान, तुम ऐसा
करते भी हो॥

१२ और हे भाइयो, हम तुम से बिनती
करते है, कि जो तुम मे परिश्रम करते है,
और प्रभु मे तुम्हारे अगुवे है, और तुम्हे
शिक्षा देते है, उन्हे मानो। १३ और
उन के काम के कारण प्रेम के साथ उन को

* यू० को स्थापन करो।

बहुत ही आदर के योग्य समझो आपस मे
मेल-मिलाप से रहो। १४ और हे भाइयो,
हम तुम्हे समझाते ह, कि जो ठीक चाल नही
चलते, उन को समझाओ, कायरो को ढाढस
दो, निबलो को सभालो, सब की ओर सहन-
शीलता दिखाओ। १५ सावधान! कोई
किसी से बुराई के बदले बुराई न करे, पर
सदा भलाई करने पर तत्पर रहो आपस मे
और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करो।
१६ सदा आनन्दित रहो। १७ निरन्तर
प्राथना मे लगे रहो। १८ हर बात मे धन्य-
वाद करो क्योकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु
मे परमेश्वर की यही इच्छा है। १९ आत्मा
को न बुझाओ। २० भविष्यद्वाणियो को
तुच्छ न जानो। २१ सब बातो को
परखो जो अच्छी है उसे पकडे रहो।
२२ सब प्रकार की बुराई से बचे रहो॥

२३ शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हे
पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी
आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु
यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और
निर्दोष सुरक्षित रहे। २४ तुम्हारा बुलाने-
वाला सच्चा* है, और वह ऐसा ही
करेगा॥

२५ हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना
करो॥

२६ सब भाइयो को पवित्र चुम्बन से
नमस्कार करो। २७ मै तुम्हे प्रभु की
शपथ देता हू, कि यह पत्री सब भाइयो को
पढकर सुनाई जाए॥

२८ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह
तुम पर होता रहे॥

* यू० विश्वासयोग्य।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

१ पौलुस और सिलवानुस और तीमु-
थियुस की ओर से थिस्सलुनीकियो
की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता
परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह मे है॥

२ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु
मसीह से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती
रहे॥

३ हे भाइयो, तुम्हारे विषय मे हमें हर
समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए,
और यह उचित भी है इसलिये कि तुम्हारा
विश्वास बहुत बढता जाता है, और तुम
सब का प्रेम आपस मे बहुत ही होता
जाता ह। ४ यहा तक कि हम आप
परमेश्वर की कलीसिया म तुम्हारे विषय म
घमण्ड करते ह, कि जितने उपद्रव और
क्लेश तुम सहते हो, उन सब मे तुम्हारा
धीरज और विश्वास प्रगट होता ह।
५ यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट
प्रमाण ह कि तुम परमेश्वर के राज्य
के योग्य ठहरो, जिस के लिये तुम दुख भी

उठाते हो। ६ क्योंकि परमेश्वर के निकट
यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं,
उन्हें बदले में क्लेश दे। ७ और तुम्हें जो
क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे, उस
समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी
दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से
प्रगट होगा। ८ और जो परमेश्वर को
नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के
सुसमाचार को नहीं मानते उन से पलटा
लेगा। ९ वे प्रभु के साम्हने से, और
उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त
विनाश का दण्ड पाएंगे। १० यह उस
दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में
महिमा पाने, और सब विश्वास करने-
वालों में आश्चर्य का कारण होने को
आएगा, क्योंकि तुम ने हमारी गवाही
की प्रतीति की। ११ इसी लिये हम सदा
तुम्हारे निमित्त प्रार्थना भी करते हैं, कि
हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के
योग्य समझे, और भलाई की हर एक
इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को
सामर्थ सहित पूरा करे। १२ कि हमारे
परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह
के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम
तुम में महिमा पाए, और तुम उस में॥

२ हे भाइयो, हम अपने प्रभु यीशु
मसीह के आने, और उसके पास अपने
इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती
करते हैं। २ कि किसी आत्मा, या वचन,
या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी
ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का
दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक
अस्थिर न हो जाए, और न तुम घबराओ।
३ किसी रीति से किसी के धोखे में न
आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब
तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह
पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र
प्रगट न हो। ४ जो विरोध करता है,
और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य
कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता
है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर * में
बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट
करता है। ५ क्या तुम्हें स्मरण नहीं, कि
जब मैं तुम्हारे यहां था, तो तुम से ये बातें
कहा करता था? ६ और अब तुम उस
वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है,
कि वह अपने ही समय में प्रगट हो।
७ क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य्य
करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला
है, और जब तक वह दूर न हो जाए,
वह रोके रहेगा। ८ तब वह अधर्मी प्रगट
होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की
फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन
के तेज से भस्म करेगा। ९ उस अधर्मी का
आना शैतान के कार्य्य के अनुसार सब
प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और
अद्भुत काम के साथ। १० और नाश
होनेवालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के
धोखे के साथ होगा, क्योंकि उन्होंने सत्य
के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से
उन का उद्धार होता। ११ और इसी
कारण परमेश्वर उन में एक भटका
देनेवाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ
की प्रतीति करें। १२ और जितने लोग
सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन अधर्म से
प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं॥

१३ पर हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय
लोगो चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में
सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि

* यू० पवित्रस्थान।

परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया, कि
आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य
की प्रतीति करके उद्धार पाओ। १४ जिस
के लिये उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार
के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु
यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।
१५ इसलिये, हे भाइयो, स्थिर रहो, और
जो जो बातें तुम ने क्या वचन, क्या पत्री के
द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो॥

१६ हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही,
और हमारा पिता परमेश्वर जिस ने हम
से प्रेम रखा, और अनुग्रह से अनन्त शान्ति
और उत्तम आशा दी है। १७ तुम्हारे
मनों में शान्ति दे, और तुम्हें हर एक
अच्छे काम, और वचन में दृढ़ करे॥

३ निदान, हे भाइयो, हमारे लिये
प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन
ऐसा शीघ्र फैले, और महिमा पाए, जैसा
तुम में हुआ। २ और हम टेढ़े और दुष्ट
मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि हर एक में
विश्वास नहीं॥

३ परन्तु प्रभु सच्चा* है, वह तुम्हें
दृढ़ता से स्थिर करेगा और उस दुष्ट† से
सुरक्षित रखेगा। ४ और हमें प्रभु में
तुम्हारे ऊपर भरोसा है, कि जो जो आज्ञा
हम तुम्हें देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और
मानते भी रहोगे। ५ परमेश्वर के प्रेम
और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे
मन की अगुआई करे॥

६ हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु
मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं, कि हर
एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित
चाल चलता, और जो शिक्षा उस ने
हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता।
७ क्योंकि तुम आप जानते हो, कि किस
रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए,
क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल
न चले। ८ और किसी की रोटी सेंत में
न खाई, पर परिश्रम और कष्ट से रात
दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से
किसी पर भार न हो। ९ यह नहीं, कि
हमें अधिकार नहीं, पर इसलिये कि अपने
आप को तुम्हारे लिये आदर्श ठहराए, कि
तुम हमारी सी चाल चलो। १० और जब
हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा
तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना
न चाहे, तो खाने भी न पाए। ११ हम
सुनते हैं, कि कितने लोग तुम्हारे बीच में
अनुचित चाल चलते हैं, और कुछ काम
नहीं करते, पर औरों के काम में हाथ
डाला करते हैं। १२ ऐसों को हम प्रभु
यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते
हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही
रोटी खाया करें। १३ और तुम, हे भाइयो,
भलाई करने में हियाव न छोड़ो।
१४ यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को
न माने, तो उस पर दृष्टि रखो, और
उस की संगति न करो, जिस से वह लज्जित
हो, १५ तौभी उसे बैरी मत समझो पर
भाई जानकर चिताओ॥

१६ अब प्रभु जो शान्ति का सोता है
आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति
दे प्रभु तुम सब के साथ रहे॥

१७ मैं पौलुस अपने हाथ से नमस्कार
लिखता हूं हर पत्री में मेरा यही चिन्ह
है मैं इसी प्रकार से लिखता हूं।
१८ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम
सब पर होता रहे॥

* यू० विश्वासयोग्य। † या बुराई।

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की पहिली पत्री

१ पौलुस की ओर से जो हमारे
उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, और हमारी
आशा-स्थान मसीह यीशु की आज्ञा से
मसीह यीशु का प्रेरित है, तीमुथियुस के
नाम जो विश्वास मे मेरा सच्चा पुत्र है ।।
२ पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु
मसीह यीशु से, तुझे अनुग्रह, और दया, और
शान्ति मिलती रहे ।।
३ जैसे मैं ने मकिदुनिया को जाते
समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस मे
रहकर कितनो को आज्ञा दे कि और
प्रकार की शिक्षा न दे। ४ और उन
ऐसी कहानियो और अनन्त वशावलियो पर
मन न लगाए, जिन से विवाद होते है,
और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार
नही, जो विश्वास से सम्बन्ध रखता है,
वैसे ही फिर भी कहता हू। ५ आज्ञा का
साराश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे
विवेक *, और कपटरहित विश्वास से
प्रेम उत्पन्न हो। ६ इन को छोडकर कितने
लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए
है। ७ और व्यवस्थापक तो होना चाहते
है, पर जो बाते कहते और जिन को
दृढता से बोलते है, उन को समझते भी
नही। ८ पर हम जानते है, कि यदि कोई
व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम मे
लाए, तो वह भली है। ९ यह जानकर
कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नही, पर
अधर्मियो, निरकुशो, भक्तिहीनो, पापियो,
अपवित्रो और अशुद्धो, मा-बाप के घात
करनेवालो, हत्यारो। १० व्यभिचारियो,
पुरुषगामियो, मनुष्य के बेचनेवालो, झूठो,
और झूठी शपथ खानेवालो, और इन को
छोड खरे उपदेश के सब विरोधियो के लिये
ठहराई गई है। ११ यही परमधन्य पर-
मेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के
अनुसार है, जो मुझे सौपा गया है ।।
१२ और मै, अपने प्रभु मसीह यीशु का,
जिस ने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता
हू, कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझकर
अपनी सेवा के लिये ठहराया। १३ मै तो
पहिले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला,
और अन्धेर करनेवाला था, तौभी मुझ
पर दया हुई, क्योकि मै ने अविश्वास की
दशा मे बिन समझे बूझे, ये काम किए थे।
१४ और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस
विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह
यीशु मे है, बहुतायत से हुआ। १५ यह
बात सच * और हर प्रकार से मानने के
योग्य है, कि मसीह यीशु पापियो का उद्धार
करने के लिये जगत मे आया, जिन मे
सब से बडा मै हू। १६ पर मुझपर
इसलिये दया हुई, कि मुझ सब से बडे
पापी मे यीशु मसीह अपनी पूरी सहन-
शीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर
अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेगे,
उन के लिये मै एक आदर्श बनू। १७ अब
सनातन राजा अर्थात् अविनाशी अनदेखे

* अर्थात् मन या कानशन्स।

* यू० विश्वासयोग्य।

अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा
युगानुयुग होती रहे। आमीन॥
१८ हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्-
वाणियों के अनुसार जो पहिले तेरे विषय में
की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं, कि
तू उन के अनुसार अच्छी लडाई को
लडता रहे। १९ और विश्वास और उस
अच्छे विवेक* को थामे रहे, जिसे दूर
करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी
जहाज डूब गया। २० उन्ही में से
हुमिनयुस और सिकन्दर है जिन्हें मैं ने
शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना
न सीखें॥

२ अब मैं सब से पहिले यह उपदेश
देता हूं, कि विनती, और प्रार्थना,
और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों
के लिये किए जाए। २ राजाओं और सब
ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि
हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति
और गम्भीरता से जीवन बिताएं। ३ यह
हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा
लगता, और भाता भी है। ४ वह यह
चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो,
और वे सत्य को भली भांति पहचान लें।
५ क्योंकि परमेश्वर एक ही है और
परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी
एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु
जो मनुष्य है। ६ जिस ने अपने आप को
सब के छुटकारे के दाम में दे दिया,
ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी
जाए। ७ मैं सच कहता हूं, झूठ नहीं
बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और
प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास
और सत्य का उपदेशक ठहराया गया॥

* अर्थात मन या कानशंस।

८ सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरुष
बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को
उठाकर प्रार्थना किया करें। ९ वैसे ही
स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ
सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारें,
न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों,
और बहुमोल कपडों से, पर भले कामों से।
१० क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण
करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।
११ और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता
से सीखना चाहिए। १२ और मैं कहता
हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष
पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।
१३ क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद
हव्वा बनाई गई। १४ और आदम बहकाया
न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर
अपराधिनी हुई। १५ तौभी बच्चे जनने
के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वे संयम सहित
विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर
रहें॥

३ यह बात सत्य* है, कि जो
अध्यक्ष† होना चाहता है, तो वह भले
काम की इच्छा करता है। २ सो चाहिए,
कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी
का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, पहुनाई
करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो।
३ पियक्कड या मारपीट करनेवाला न
हो, बरन कोमल हो, और न झगडालू,
और न लोभी हो। ४ अपने घर का
अच्छा प्रबन्ध करता हो, और लडके-
वालों को सारी गम्भीरता से आधीन रखता
हो। ५ (जब कोई अपने घर ही का
प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर
की कलीसिया की रखवाली क्योंकर

* यू० विश्वासयोग्य।   † या बिशप।

करेगा) : ६ फिर यह कि नया चेला न
हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान *
का सा दण्ड पाए। ७ और बाहर-
वालो मे भी उसका सुनाम हो ऐसा न
हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में
फस जाए। ८ वैसे ही सेवको † को भी
गम्भीर होना चाहिए, दो रगी, पियक्कड़,
और नीच कमाई के लोभी न हो। ९ पर
विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक ‡ से
सुरक्षित रखे। १० और ये भी पहिले
परखे जाए, तब यदि निर्दोष निकले, तो
सेवक का काम करे। ११ इसी प्रकार से
स्त्रियो को भी गम्भीर होना चाहिए, दोष
लगानेवाली न हो, पर सचेत और सब
बातो मे विश्वासयोग्य हो। १२ सेवक §
एक ही पत्नी के पति हो और लडकेवालो
और अपने घरो का अच्छा प्रबन्ध करना
जानते हो। १३ क्योकि जो सेवक का
काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने
लिये अच्छा पद और उस विश्वास मे, जो
मसीह यीशु पर है, बडा हियाव प्राप्त
करते है॥

१४ मै तेरे पास जल्द आने की आशा
रखने पर भी ये बाते तुझे इसलिये लिखता
हू। १५ कि यदि मेरे आने मे देर हो,
तो तू जान ले, कि परमेश्वर का घर,
जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है,
और जो सत्य का खंभा, और नेव है,
उस मे कैसा बर्ताव करना चाहिए।
१६ और इस मे सन्देह नही, कि भक्ति का
भेद गम्भीर है, अर्थात् वह जो शरीर मे
प्रगट हुआ, आत्मा मे धर्मी ठहरा, स्वर्ग-
दूतो को दिखाई दिया, अन्यजातियो मे
उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर
विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर
उठाया गया॥

४ परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है,
कि आनेवाले समयों में कितने लोग
भरमानेवाली आत्माओ, और दुष्टात्माओ
की शिक्षाओ पर मन लगाकर विश्वास से
बहक जाएगे। २ यह उन झूठे मनुष्यो
के कपट के कारण होगा, जिन का विवेक *
मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है।
३ जो ब्याह करने से रोकेगें, और भोजन
की कुछ वस्तुओ से परे रहने की आज्ञा
देगें, जिन्हे परमेश्वर ने इसलिये सृजा
कि विश्वासी, और सत्य के पहिचाननेवाले
उन्हें धन्यवाद के साथ खाए। ४ क्योकि
परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु
अच्छी है और कोई वस्तु अस्वीकार करने
के योग्य नही; पर यह कि धन्यवाद के साथ
खाई जाए। ५ क्योकि परमेश्वर के वचन
और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है॥

६ यदि तू भाइयो को इन बातो की
सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह यीशु का
अच्छा सेवक ठहरेगा और विश्वास और
उस अच्छे उपदेश की बातो से, जो तू
मानता आया है, तेरा पालन-पोषण होता
रहेगा। ७ पर अशुद्ध और बूढियो की सी
कहानियो से अलग रह, और भक्ति के
लिये अपना साधन कर। ८ क्योकि देह
की साधना से कम लाभ होता है, पर
भक्ति सब बातो के लिये लाभदायक है,
क्योकि इस समय के और आनेवाले जीवन
की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है। ९ और
यह बात सच † और हर प्रकार से मानने

* यू० इब्लीस। † या डीकनों।
‡ अर्थात् मन या कानशन्स।
§ या डीकन।

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† यू० विश्वासयोग्य।

के योग्य है। १० क्योंकि हम परिश्रम
और यत्न इसी लिये करते हैं, कि हमारी
आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो
सब मनुष्यों का, और निज करके
विश्वासियों का उद्धारकर्ता है। ११ इन
बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह।
१२ कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने
पाए, पर वचन, और चाल चलन, और
प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में
विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।
१३ जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने,
और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह।
१४ उस वरदान से जो तुझ में है, और
भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों * के हाथ
रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त
मत रह। १५ उन बातों को सोचता रह
और उन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह,
ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।
अपनी और अपने उपदेश की चौकसी
रख। १६ इन बातों पर स्थिर रह,
क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू
अपने, और अपने सुननेवालों के लिये भी
उद्धार का कारण होगा॥

५ किसी बूढ़े को न डांट, पर उसे
पिता जानकर समझा दे, और जवानों
को भाई जानकर, बूढ़ी स्त्रियों को माता
जानकर। २ और जवान स्त्रियों को पूरी
पवित्रता से बहिन जानकर, समझा दे।
३ उन विधवाओं का जो सचमुच विधवा
हैं आदर कर। ४ और यदि किसी
विधवा के लड़केवाले या नातीपोते हों,
तो वे पहिले अपने ही घराने के साथ
भक्ति का बर्ताव करना, और अपने माता-
पिता आदि को उन का हक्क देना सीखें,
क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है।
५ जो सचमुच विधवा है, और उसका
कोई नहीं, वह परमेश्वर पर आशा रखती
है, और रात दिन विनती और प्रार्थना में
लौलीन रहती है। ६ पर जो भोग-
विलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई
है। ७ इन बातों की भी आज्ञा दिया
कर, ताकि वे निर्दोष रहें। ८ पर यदि
कोई अपनों की और निज करके अपने
घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से
मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा
बन गया है। ९ उसी विधवा का नाम
लिखा जाए, जो साठ वर्ष से कम की
न हो, और एक ही पति की पत्नी रही
हो। १० और भले काम में सुनाम रही
हो, जिस ने बच्चों का पालन-पोषण किया
हो, पाहुनों की सेवा की हो, पवित्र लोगों
के पांव धोए हों, दुखियों की सहायता
की हो, और हर एक भले काम में मन
लगाया हो। ११ पर जवान विधवाओं
के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह
का विरोध करके सुख-विलास में पड़
जाती हैं, तो ब्याह करना चाहती हैं।
१२ और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्हों ने
अपने पहिले विश्वास को छोड़ दिया है।
१३ और इस के साथ ही साथ वे
घर घर फिरकर आलसी होना सीखती
हैं, और केवल आलसी नहीं, पर बकबक
करती रहती और औरों के काम में हाथ
भी डालती हैं और अनुचित बातें बोलती
हैं। १४ इसलिये मैं यह चाहता हूं, कि
जवान विधवाएं ब्याह करें, और बच्चे
जनें और घरबार संभालें, और किसी
विरोधी को बदनाम करने का अवसर न
दें। १५ क्योंकि कई एक तो बहककर
शैतान के पीछे हो चुकी हैं। १६ यदि

* या प्रिसबुतिरों।

किसी विश्वासिनी के यहा विधवाए हो,
तो वही उन की सहायता करे, कि कलीसिया
पर भार न हो ताकि वह उन की सहायता
कर सके, जो सचमुच विधवाए हैं॥

१७ जो प्राचीन * अच्छा प्रबन्ध करते
हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और
सिखाने मे परिश्रम करते हैं, दो गुने
आदर के योग्य समझे जाए। १८ क्योकि
पवित्र शास्त्र कहता है, कि दावनेवाले
बैल का मुह न बान्धना, क्योकि मजदूर
अपनी मजदूरी का हक्कदार है। १९ कोई
दोष किसी प्राचीन * पर लगाया जाए
तो बिना दो या तीन गवाहो के उस को
न सुन। २० पाप करनेवालो को सब के
साम्हने समझा दे, ताकि और लोग भी
डरें। २१ परमेश्वर, और ममीह यीशु,
और चुने हुए स्वर्गदूतो को उपस्थित
जानकर मै तुझे चितौनी देता हू कि तू
मन खोलकर इन बातों को माना कर, और
कोई काम पक्षपात से न कर। २२ किसी
पर शीघ्र हाथ न रखना और दूसरो के
पापो मे भागी न होना अपने आप को
पवित्र बनाए रख। २३ भविष्य मे केवल
जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने
पेट के और अपने बार बार बीमार होने
के कारण थोडा थोडा दाखरस भी काम मे
लाया कर। २४ कितने मनुष्यो के पाप
प्रगट हो जाते है, और न्याय के लिये
पहिले से पहुच जाते है, पर कितनों के
पीछे से आते है। २५ वैसे ही कितने भले
काम भी प्रगट होते है, और जो ऐसे नही
होते, वे भी छिप नही सकते॥

६ जितने दास जूए के नीचे है, वे
अपने अपने स्वामी को बडे आदर के
योग्य जाने, ताकि परमेश्वर के नाम और
उपदेश की निन्दा न हो। २ और जिन के
स्वामी विश्वासी है, इन्हे वे भाई होने के
कारण तुच्छ न जाने, बरन उन की और
भी सेवा करें, क्योकि इस से लाभ उठाने-
वाले विश्वासी और प्रेमी है इन बातो
का उपदेश किया कर और समझाता
रह॥

३ यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश
देता है, और खरी बातो को, अर्थात्
हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातो को और
उस उपदेश को नही मानता, जो भक्ति
के अनुसार है। ४ तो वह अभिमानी हो
गया, और कुछ नही जानता, बरन उसे
विवाद और शब्दो पर तर्क करने का
रोग है, जिन से डाह, और झगडे, और
निन्दा की बाते, और बुरे बुरे सन्देह।
५ और उन मनुष्यो मे व्यर्थ रगडे झगडे
उत्पन्न होते है, जिन की बुद्धि बिगड गई
है और वे मत्य से विहीन हो गए है,
जो समझते है कि भक्ति कमाई का द्वार
है। ६ पर सन्तोष सहित भक्ति बडी
कमाई है। ७ क्योकि न हम जगत मे
कुछ लाए है और न कुछ ले जा सकते है।
८ और यदि हमारे पास खाने और
पहिनने को हो, तो इन्ही पर सन्तोष
करना चाहिए। ९ पर जो धनी होना
चाहते है, वे ऐसी परीक्षा, और फदे और
बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओ मे
फसते है, जो मनुष्यो को बिगाड देती है
और विनाश के समुद्र मे डूबा देती है।
१० क्योकि रुपये का लोभ सब प्रकार की
बुराइयो की जड है, जिसे प्राप्त करने का
प्रयत्न करते हुए कितनो ने विश्वास से
भटककर अपने आप को नाना प्रकार के
दुखो मे छलनी बना लिया है॥

* या प्रिसबुतिर।

११ पर हे परमेश्वर के जन, तू इन
बातों से भाग, और धर्म, भक्ति, विश्वास,
प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर।
१२ विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़,
और उस अनन्त जीवन का धर ले, जिस के
लिये तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों
के साम्हने अच्छा अंगीकार किया था।
१३ मैं तुझे परमेश्वर को जो सब को
जीवित रखता है, और मसीह यीशु को
गवाह करके जिस ने पुन्तियुस पीलातुस के
साम्हने अच्छा अंगीकार किया, यह आज्ञा
देता हूं, १४ कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह
के प्रगट होने तक इस आज्ञा को निष्कलंक
और निर्दोष रख। १५ जिसे वह ठीक
समयों में दिखाएगा, जो परमधन्य और
अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा,
और प्रभुओं का प्रभु है। १६ और अमरता
केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में
रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने
देखा, और न कभी देख सकता है
उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग
रहेगा। आमीन॥
१७ इस संसार के धनवानों को आज्ञा
दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल
धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर
जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत
से देता है। १८ और भलाई करें, और
भले कामों में धनी बनें, और उदार और
सहायता देने में तत्पर हों। १९ और
आगे के लिये एक अच्छी नेव डाल रखें,
कि सत्य जीवन को वश में कर लें॥
२० हे तीमुथियुस इस थाती की रख-
वाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना
ही भूल है उसके अशुद्ध बकवाद और
विरोध की बातों से परे रह। २१ कितने
इस ज्ञान का अंगीकार करके, विश्वास से
भटक गए हैं॥

तुम पर अनुग्रह होता रहे॥

तीमुथियुस के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

१ पौलुस की ओर से जो उस जीवन
की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह
यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह
यीशु का प्रेरित है। २ प्रिय पुत्र तीमुथियुस
के नाम॥

परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह
यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया
और शान्ति मिलती रहे॥
३ जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने
बापदादों की रीति पर शुद्ध विवेक* से
करता हूं, उसका धन्यवाद हो कि अपनी
प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता
हूं। ४ और तेरे आंसुओं की सुधि कर
करके रात दिन तुझ से भेंट करने की
लालसा रखता हूं कि आनन्द से भर

* अर्थात् मन या कानशन्स।

जाऊ। ५ और मुझे तेरे उस निष्कपट
विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले
तेरी नानी लोइस, और तेरी माता
यूनीके मे थी, और मुझे निश्चय हुआ है,
कि तुझ मे भी है। ६ इसी कारण मै
तुझे सुधि दिलाता हू, कि तू परमेश्वर के
उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के
द्वारा तुझे मिला है चमका दे। ७ क्योकि
परमेश्वर ने हमे भय की नही पर सामर्थ,
और प्रेम, और सयम की आत्मा दी है।
८ इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से,
और मुझ से जो उसका कैदी हू, लज्जित
न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के
अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ
दुख उठा। ९ जिस ने हमारा उद्धार
किया, और पवित्र बुलाहट से, बुलाया,
और यह हमारे कामो के अनुसार नही,
पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के
अनुसार है जो मसीह यीशु मे सनातन से
हम पर हुआ है। १० पर अब हमारे
उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के
द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश
किया, और जीवन और अमरता को उस
सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।
११ जिस के लिये मै प्रचारक, और प्रेरित,
और उपदेशक भी ठहरा। १२ इस कारण
मै इन दुखो को भी उठाता हू, पर लजाता
नही, क्योकि मै उसे जिस की मै ने
प्रतीति की है, जानता हू; और मुझे
निश्चय है, कि वह मेरी थाती की उस
दिन तक रखवाली कर सकता है।
१३ जो खरी बाते तू ने मुझ से सुनी
है उन को उस विश्वास और प्रेम के
साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श
बनाकर रख। १४ और पवि
द्वारा जो हम मे बसा हुआ है, इस अच्छी
थाती की रखवाली कर॥

१५ तू जानता है, कि आसियावाले
सब मुझ से फिर गए है, जिन मे फूगिलुस
और हिरमुगिनेस है। १६ उनेसिफुरुस के
घराने पर प्रभु दया करे, क्योकि उस ने
बहुत बार मेरे जी को ठडा किया, और
मेरी जजीरो से लज्जित न हुआ। १७ पर
जब वह रोमा मे आया, तो बडे यत्न से
ढूढकर मुझ से भेट की। १८ (प्रभु करे,
कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)।
और जो जो सेवा उस ने इफिसुस मे
की है उन्हे भी तू भली भाति जानता है॥

२ इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस
अनुग्रह से जो मसीह यीशु मे है,
बलवन्त हो जा। २ और जो बाते तू ने
बहुत गवाहो के साम्हने मुझ से सुनी है,
उन्हे विश्वासी मनुष्यो को सौप दे, जो
औरो को भी सिखाने के योग्य हो।
३ मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाई मेरे
साथ दुख उठा। ४ जब कोई योद्धा
लडाई पर जाता है, तो इसलिये कि
अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे,
अपने आप को ससार के कामो मे नही
फसाता ५ फिर अखाडे मे लडनेवाला यदि
विधि के अनुसार लडे तो मुकुट नही
पाता। ६ जो गृ थ परिश्रम करता है,
फल का अश पहिले उसे मिलना चाहिए।
७ जो मै कहता हू, उस पर ध्यान दे
और प्रभु तुझे सब बातो की समझ देगा।
८ यीशु मसीह, रख, जो
दाऊद के वश
जी उठा,
अनुसार है।
की

कैद भी हू, परन्तु परमेश्वर का वचन
कैद नही। १० इस कारण मे चुने हुए
लोगो के लिये सब कुछ सहता हू, कि वे
भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु मे
है अनन्त महिमा के साथ पाए। ११ यह
बात सच * है, कि यदि हम उसके साथ
मर गए हैं तो उसके साथ जीएंगे भी।
१२ यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो
उसके साथ राज्य भी करेंगे यदि हम
उसका इन्कार करेंगे तो वह भी हमारा
इन्कार करेगा। १३ यदि हम अविश्वासी
भी हो तौभी वह विश्वासयोग्य बना रहता
है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नही
कर सकता॥

१४ इन बातो की सुधि उन्हें दिला,
और प्रभु के साम्हने चिता दे, कि शब्दो
पर तर्क-वितर्क न किया करे, जिन से
कुछ लाभ नही होता, वरन सुननेवाले
बिगड जाते है। १५ अपने आप को
परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम
करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो
लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के
वचन को ठीक रीति से काम मे लाता
हो। १६ पर अशुद्ध बकवाद से बचा
रह, क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में
बढते जाएंगे। १७ और उन का वचन
सडे-घाव की नाई फैलता जाएगा हुमि-
नयुस और फिलेतुस उन्ही में से है।
१८ जो यह कहकर कि पुनरुत्थान † हो
चुका है सत्य से भटक गए है, और
कितनो के विश्वास को उलट पुलट कर
देते हैं। १९ तौभी परमेश्वर की पक्की
नेव बनी रहती है, और उस पर यह
छाप लगी है, कि प्रभु अपनो को पहिचानता
है, और जो कोई प्रभु का नाम लेता
है, वह अधर्म से बचा रहे। २० बडे
घर मे न केवल सोने-चान्दी ही के, पर
काठ और मिट्टी के बरतन भी होते हैं,
कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर
के लिये। २१ यदि कोई अपने आप को
इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का
बरतन, और पवित्र ठहरेगा, और स्वामी
के काम आएगा, और हर भले काम के
लिये तैयार होगा। २२ जवानी की अभि-
लाषाओ से भाग, और जो शुद्ध मन से
प्रभु का नाम लेते है, उन के साथ धर्म,
और विश्वास, और प्रेम, और मेल-
मिलाप का पीछा कर। २३ पर मूर्खता,
और अविद्या के विवादो से अलग रह,
क्योंकि तू जानता है, कि उन से झगडे
होते है। २४ और प्रभु के दास को
झगडालू होना न चाहिए, पर सब के साथ
कोमल और शिक्षा में निपुण, और
सहनशील हो। २५ और विरोधियो को
नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर
उन्हे मन फिराव का मन दे, कि वे भी
सत्य को पहिचाने। २६ और इस के द्वारा
उस की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत
होकर शैतान * के फंदे से छूट जाए॥

३ पर यह जान रख, कि अन्तिम
दिनो में कठिन समय आएंगे।
२ क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींग-
मार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की
आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र।
३ मयारहित, क्षमारहित, दोष लगाने-
वाले, असयमी, कठोर, भले के बैरी।
४ विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और
परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के

* यू० विश्वासयोग्य।
† या मृतकोत्थान।

* यू० इब्लीस।

चाहनेवाले होगे। ५ वे भक्ति का भेष
तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे,
ऐसो से परे रहना। ६ इन्ही मे से वे
लोग है, जो घरो मे दबे पाव घुस आते
है और उन छिछोरी स्त्रियो को वश मे
कर लेते है, जो पापो से दबी और हर
प्रकार की अभिलाषाओ के वश मे है।
७ और सदा सीखती तो रहती है पर
सत्य की पहिचान तक कभी नही पहुचती।
८ और जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का
विरोध किया था वैसे ही ये भी सत्य का
विरोध करते है ये तो ऐसे मनुष्य है,
जिन की वुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे
विश्वास के विषय मे निकम्मे है। ९ पर
वे इस से आगे नही बढ सकते, क्योकि
जैसे उन की अज्ञानता सब मनुष्यो पर
प्रगट हो गई थी, वैसे ही इन की भी हो
जाएगी। १० पर तू ने उपदेश, चाल-
चलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम,
धीरज, और सताए जाने, और दुख
उठाने मे मेरा साथ दिया। ११ और ऐसे
दुखो मे भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम
और लुस्त्रा मे मुझ पर पडे थे और और
दुखो मे भी, जो मैं ने उठाए है, परन्तु
प्रभु ने मुझे उन सब से छुडा लिया।
१२ पर जितने मसीह यीशु मे भक्ति
के साथ जीवन बिताना चाहते है वे सब
सताए जाएगे। १३ और दुष्ट, और
बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा
खाते हुए, बिगडते चले जाएगे। १४ पर
तू इन बातो पर जो तू ने सीखी है और
प्रतीति की थी, यह जानकर दृढ बना
रह, कि तू ने उन्हे किन लोगो से सीखा
था? १५ और बालकपन से पवित्र शास्त्र
तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर
विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के
लिये बुद्धिमान बना सकता है। १६ हर
एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से
रचा गया है और उपदेश, और समझाने,
और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये
लाभदायक है। १७ ताकि परमेश्वर का
जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के
लिये तत्पर हो जाए॥

४ परमेश्वर और मसीह यीशु को
गवाह करके, जो जीवतो और मरे
हुओ का न्याय करेगा, उसे और उसके
प्रगट होने, और राज्य को सुधि दिलाकर
मैं तुझे चिताता हू। २ कि तू वचन को
प्रचार कर, समय और असमय तैयार
रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और
शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डाट,
और समझा। ३ क्योकि ऐसा समय
आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह
सकेंगे पर कानो की खुजली के कारण
अपनी अभिलाषाओ के अनुसार अपने लिये
बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। ४ और
अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियो
पर लगाएगे। ५ पर तू सब बातो मे
सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार
का काम कर और अपनी सेवा को पूरा
कर। ६ क्योकि अब मैं अर्घ की नाई
उडेला जाता हू, और मेरे कूच का समय
आ पहुचा है। ७ मैं अच्छी कुश्ती लड
चुका हू मैं ने अपनी दौड पूरी कर ली
है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।
८ भविष्य मे मेरे लिये धर्म का वह
मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी,
और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और
मुझे ही नही, वरन उन सब को भी,
जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते
है॥

९ मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर।
१० क्योंकि देमास ने इस संसार को
प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और
थिस्सलुनीके को चला गया है, और
क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दल-
मतिया को चला गया है। ११ केवल
लूका मेरे साथ है मरकुस को लेकर
चला आ, क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे
बहुत काम का है। १२ तुखिकुस को
मैं ने इफिसुस को भेजा है। १३ जो
बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहां छोड़
आया हूं, जब तू आए, तो उसे और
पुस्तकें विशेष करके चर्मपत्रों को लेते
आना। १४ सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से
बहुत बुराइयां की हैं प्रभु उसे उसके कामों
के अनुसार बदला देगा। १५ तू भी
उस से सावधान रह, क्योंकि उस ने
हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया।
१६ मेरे पहिले प्रत्युत्तर करने के समय में
किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, वरन
सब ने मुझे छोड़ दिया था भला हो,
कि इस का उनको लेखा देना न पड़े।
१७ परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और
मुझे सामर्थ दी ताकि मेरे द्वारा पूरा
पूरा प्रचार हो, और सब अन्यजाति सुन
लें, और मैं तो सिंह के मुंह में छुड़ाया
गया। १८ और प्रभु मुझे हर एक बुरे
काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय
राज्य में उद्धार करके पहुंचाएगा उसी की
महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

१९ प्रिसका और अक्विला को, और
उनेसिफुरुस के घराने को नमस्कार।
२० इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया, और
त्रुफिमुस को मैं ने मीलेतुस में बीमार
छोड़ा है। २१ जाड़े से पहिले चले आने
का प्रयत्न कर यूबूलुस, और पूदेंस,
और लीनुस और क्लौदिया, और सब
भाइयों का तुझे नमस्कार॥

२२ प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे तुम
पर अनुग्रह होता रहे॥

तीतुस के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर
का दास और यीशु मसीह का प्रेरित
है, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास,
और उस सत्य की पहिचान के अनुसार
जो भक्ति के अनुसार है। २ उस अनन्त
जीवन की आशा पर, जिस की प्रतिज्ञा
परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता
सनातन से की है। ३ पर ठीक समय पर
अपने वचन को उस प्रचार के द्वारा प्रगट
किया, जो हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की
आज्ञा के अनुसार मुझे सौंपा गया।
४ तीतुस के नाम जो विश्वास की सह-
भागिता के विचार में मेरा सच्चा पुत्र है
परमेश्वर पिता और हमारे उद्धारकर्त्ता
मसीह यीशु से अनुग्रह और शान्ति होती
रहे॥

५ मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया
था कि तू शेष रही हुई बातों को सुधार,

और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर
नगर प्राचीनो * को नियुक्त करे। ६ जो
निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हो, जिन
के लड़केबाले विश्वासी हो, और जिन्हे
लुचपन और निरकुशता का दोष नही।
७ क्योकि अध्यक्ष † को परमेश्वर का
भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना
चाहिए, न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड,
न मारपीट करनेवाला, और न नीच
कमाई का लोभी। ८ पर पहुनाई करने-
वाला, भलाई का चाहनेवाला, सयमी,
न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो। ९ और
विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के
अनुसार है, स्थिर रहे, कि खरी शिक्षा से
उपदेश दे सके, और विवादियो का मुह
भी बन्द कर सके ॥

१० क्योकि बहुत से लोग निरकुश,
बकवादी और धोखा देनेवाले है; विशेष
करके खतनावालो में से। ११ इन का
मुह बन्द करना चाहिए ये लोग नीच
कमाई के लिये अनुचित बाते सिखाकर
घर के घर बिगाड देते है। १२ उन्ही
में से एक जन ने जो उन्ही का भविष्यद्-
वक्ता है, कहा है, कि क्रेती लोग सदा
झूठे, दुष्ट पशु और आलसी पेटू होते
हैं। १३ यह गवाही सच है, इसलिये
उन्हें कडाई से चितौनी दिया कर, कि
वे विश्वास मे पक्के हो जाए। १४ और
वे यहूदियो की कथा कहानियो और उन
मनुष्यो की आज्ञाओ पर मन न लगाए,
जो सत्य से भटक जाते है। १५ शुद्ध
लोगो के लिये सब वस्तु शुद्ध है, पर
अशुद्ध और अविश्वासियो के लिये कुछ
भी शुद्ध नही बरन उन की बुद्धि और
विवेक * दोनो अशुद्ध हैं। १६ वे कहते
हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं पर
अपने कामो से उसका इन्कार करते हैं,
क्योकि वे घृणित और आज्ञा न मानने-
वाले है, और किसी अच्छे काम के योग्य
नही ॥

२ पर तू ऐसी बाते कहा कर, जो खरे
उपदेश के योग्य हैं। २ अर्थात् बूढे
पुरुष, सचेत और गम्भीर और सयमी हो,
और उन का विश्वास और प्रेम और
धीरज पक्का हो। ३ इसी प्रकार बूढी
स्त्रियो का चाल चलन पवित्र लोगो सा
हो, दोष लगानेवाली और पियक्कड नही,
पर अच्छी बाते सिखानेवाली हो। ४ ताकि
वे जवान स्त्रियो को चितौनी देती रहे,
कि अपने पतियो और बच्चो से प्रीति
रखे। ५ और सयमी, पतिव्रता, घर का
कारबार करनेवाली, भली और अपने
अपने पति के आधीन रहनेवाली हो,
ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न
होने पाए। ६ ऐसे ही जवान पुरुषो को
भी समझाया कर, कि सयमी हो।
७ सब बातो मे अपने आप को भले
कामो का नमूना बना तेरे उपदेश में
सफाई, गम्भीरता। ८ और ऐसी खराई
पाई जाए, कि कोई उसे बुरा न कह
सके, जिस से विरोधी हम पर कोई
दोष लगाने को गौ न पाकर लज्जित हो।
९ दासो को समझा, कि अपने अपने
स्वामी के आधीन रहें, और सब बातो में
उन्हे प्रसन्न रखे, और उलटकर जवाब
न दें। १० चोरी चालाकी न करें, पर
सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें, कि
वे सब बातो में हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर

* या प्रिसबुतिरों। † या बिशप।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

के उपदेश को शोभा दें। ११ क्योंकि
परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब
मनुष्यों के उद्धार का कारण है। १२ और
हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और
सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर
इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से
जीवन बिताए। १३ और उस धन्य आशा
की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और
उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के
प्रगट होने की बाट जोहते रहें। १४ जिस
ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया,
कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले,
और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी
जाति * बना ले जो भले भले कामों में
सरगर्म हो॥

१५ पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह,
और समझा और सिखाता रह कोई तुझे
तुच्छ न जानने पाए॥

३ लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों
और अधिकारियों के आधीन रहें,
और उन की आज्ञा मानें, और हर एक
अच्छे काम के लिये तैयार रहें। २ किसी
को बदनाम न करें, झगड़ालू न हों
पर कोमल स्वभाव के हों, और सब
मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ
रहें। ३ क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि,
और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में
पड़े हुए, और रंग रंग के अभिलाषाओं
और सुखविलास के दासत्व में थे, और
बैरभाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह
करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से
बैर रखते थे। ४ पर जब हमारे उद्धार-
कर्त्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों
पर उसकी प्रीति प्रगट हुई। ५ तो उस ने

* या लोग।

हमारा उद्धार किया और यह धर्म के
कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप
किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए
जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें
नया बनाने के द्वारा हुआ। ६ जिसे उस ने
हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा
हम पर अधिकाई से उंडेला *। ७ जिस से
हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर,
अनन्त जीवन की आशा के अनुसार
वारिस बनें। ८ यह बात सच † है,
और मैं चाहता हूं, कि तू इन बातों के
विषय में दृढ़ता से बोले इसलिये कि
जिन्हों ने परमेश्वर की प्रतीति की है,
वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान
रखें ये बातें भली, और मनुष्यों के
लाभ की हैं। ९ पर मूर्खता के विवादों,
और वंशावलियों, और बैर विरोध, और
उन झगड़ों से, जो व्यवस्था के विषय में
हों बचा रह, क्योंकि वे निष्फल और
व्यर्थ हैं। १० किसी पाखंडी को एक दो
बार समझा बुझाकर उस से अलग रह।
११ यह जानकर कि ऐसा मनुष्य भटक
गया है, और अपने आप को दोषी ठहराकर
पाप करता रहता है॥

१२ जब मैं तेरे पास अरतिमास या
तुखिकुस को भेजूं, तो मेरे पास नीकुपुलिस
आने का यत्न करना क्योंकि मैं ने वहीं
जाड़ा काटने की ठानी है। १३ जेनास
व्यवस्थापक और अपुल्लोस को यत्न
करके आगे पहुंचा दे, और देख, कि उन्हें
किसी वस्तु की घटी न होने पाए।
१४ और हमारे लोग भी आवश्यकताओं
को पूरा करने के लिये अच्छे कामों

* या बहाया।
† यू० विश्वासयोग्य।

मे लगे रहना सीखे ताकि निष्फल न
रहे ॥
१५ मेरे सब साथियो का तुझे नमस्कार
और जो विश्वास के कारण हम से प्रीति
रखते है, उन को नमस्कार ॥
तुम सब पर अनुग्रह होता रहे ॥

फिलेमोन के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

१ पौलुस की ओर से जो मसीह
यीशु का कैदी है, और भाई तिमु-
थियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी
फिलेमोन। २ और बहिन अफफिया, और
हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और
फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम ॥
३ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति
तुम्हे मिलती रहे ॥
४ मै तेरे उस प्रेम और विश्वास की
चर्चा सुनकर, जो सब पवित्र लोगो के
साथ और प्रभु यीशु पर है। ५ सदा
परमेश्वर का धन्यवाद करता हू, और
अपनी प्रार्थनाओ मे भी तुझे स्मरण करता
हू। ६ कि तेरा विश्वास मे सहभागी
होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान
मे मसीह के लिये प्रभावशाली हो।
७ क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत
आनन्द और शान्ति मिली, इसलिये कि
तेरे द्वारा पवित्र लोगो के मन हरे भरे हो
गए है ॥
८ इसलिये यद्यपि मुझे मसीह में बडा
हियाव तो है, कि जो बात ठीक है,
उस की आज्ञा तुझे दू। ९ तौभी मुझ
बूढे पौलुस को जो अब मसीह यीशु के
लिये कैदी हू, यह और भी भला जान
पडा कि प्रेम से बिनती करू। १० मै
अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये जो मुझ से
मेरी कैद मे जन्मा है तुझ से बिनती
करता हू। ११ वह तो पहिले तेरे कुछ
काम का न था, पर अब तेरे और मेरे
दोनो के बडे काम का है। १२ उसी को
अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकडा है, मै ने
उसे तेरे पास लौटा दिया है। १३ उसे
मै अपने ही पास रखना चाहता था कि
तेरी ओर से इस कैद मे जो सुसमाचार
के कारण है, मेरी सेवा करे। १४ पर
मै ने तेरी इच्छा बिना कुछ भी करना
न चाहा कि तेरी यह कृपा दबाव से नही
पर आनन्द से हो। १५ क्योकि क्या जाने
वह तुझ से कुछ दिन तक के लिये इसी
कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट
रहे। १६ परन्तु अब से दास की नाई
नही, वरन दास से भी उत्तम, अर्थात्
भाई के समान रहे जो शरीर मे भी
और विशेष कर प्रभु मे भी मेरा प्रिय
हो। १७ सो यदि तू मुझे सहभागी
समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर
जैसे मुझे। १८ और यदि उस ने तेरी
कुछ हानि की है, या उस पर तेरा कुछ
आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।
१९ मै पौलुस अपने हाथ से लिखता हू, कि

में आप भर दूगा, और इस के कहने की
कुछ आवश्यकता नहीं, कि मेरा कर्ज जो
तुझ पर है वह तू ही है। २० हे भाई
यह आनन्द मुझे प्रभु में तेरी ओर से
मिले मसीह मे मेरे जी को हरा भरा
कर दे। २१ मै तेरे आज्ञाकारी होने का
भरोसा रखकर, तुझे लिखता हू और यह
जानता हू, कि जो कुछ मैं कहता हू, तू
उस से कही बढकर करेगा। २२ और यह
भी, कि मेरे लिये उतरने की जगह तैयार
रख, मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्राथनाओं
के द्वारा मै तुम्हे दे दिया जाऊगा॥

२३ इपफ्रास जो मसीह यीशु मे मेरे
साथ कैदी है। २४ और मरकुस और
अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो
मेरे सहकर्मी है इन का तुझे नमस्कार॥

२५ हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह
तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन॥

इब्रानियों के नाम पत्री

१ पूर्व युग मे परमेश्वर ने बाप-
दादो से थोडा थोडा करके और भाति
भाति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें
करके। २ इन दिनो के अन्त म हम से
पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी
वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के
द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है। ३ वह
उस की महिमा का प्रकाश, और उसके
तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को
अपनी सामर्थ के वचन से सभालता है
वह पापो को धोकर ऊचे स्थानो पर
महामहिमन के दहिने जा बैठा। ४ और
स्वगदूतो से उतना ही उत्तम ठहरा,
जितना उस ने उन से बडे पद का वारिस
होकर उत्तम नाम पाया। ५ क्योंकि स्वर्ग-
दूतो में से उस ने कब किसी से कहा,
कि तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न
हुआ? और फिर यह, कि म उसका
पिता हूगा, और वह मेरा पुत्र होगा?
६ और जब पहिलौठे को जगत म फिर
लाता है, तो कहता है, कि परमेश्वर के
सब स्वगदूत उसे दण्डवत करे। ७ और
स्वगदूतो के विषय मे यह कहता है, कि
वह अपने दूतो को पवन, और अपने
सेवको को धधकती आग बनाता है।
८ परन्तु पुत्र से कहता है, कि हे परमेश्वर,
तेरा सिहासन युगानुयुग रहेगा तेरे राज्य
का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।
९ तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर
रखा, इस कारण परमेश्वर तेरे परमेश्वर
न तेरे साथियो से बढकर हर्षरूपी तेल से
तुझे अभिषेक किया। १० और यह कि,
हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नेव
डाली, और स्वर्ग तेरे हाथो की कारीगरी
है। ११ वे तो नाश हो जाएगे, परन्तु
तू बना रहेगा और वे सब वस्त्र की
नाई पुराने हो जाएगे। १२ और तू
उन्हे चादर की नाई लपेटेगा और वे
वस्त्र की नाई बदल जाएगे पर तू
वही है और तेरे वर्षो का अन्त न होगा।

१३ और स्वर्गदूतों में से उस ने किस से
कब कहा, कि तू मेरे दहिने बैठ, जब तक
कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे
की पीढ़ी न कर दूं? १४ क्या वे सब
सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं,
जो उद्धार पानेवालों के लिये सेवा करने को
भेजी जाती हैं?

२ इस कारण चाहिए, कि हम उन
बातों पर जो हम ने सुनी हैं, और
भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहकर
उन से दूर चले जाएं। २ क्योंकि जो
वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था
जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध
और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक
बदला मिला। ३ तो हम लोग ऐसे बड़े
उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच
सकते हैं? जिस की चर्चा पहिले पहिल
प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के
द्वारा हमें निश्चय हुआ। ४ और साथ
ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार
चिन्हों, और अद्भुत कामों, और नाना
प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र
आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इस की
गवाही देता रहा॥

५ उस ने उस आनेवाले जगत को
जिस की चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों
के आधीन न किया। ६ बरन किसी ने
कहीं, यह गवाही दी है, कि मनुष्य क्या
है, कि तू उस की सुधि लेता है? या
मनुष्य का पुत्र क्या है, कि तू उस पर
दृष्टि करता है? ७ तू ने उसे स्वर्गदूतों से
कुछ ही कम किया, तू ने उस पर महिमा
और आदर का मुकुट रखा और उसे
अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया।
८ तू ने सब कुछ उसके पांवों के नीचे
कर दिया इसलिये जब कि उस ने
सब कुछ उसके आधीन कर दिया, तो
उस ने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके
आधीन न हो पर हम अब तक सब
कुछ उसके आधीन नहीं देखते। ९ पर
हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही
कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने
के कारण महिमा और आदर का मुकुट
पहिने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के
अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु
का स्वाद चखे। १० क्योंकि जिस के
लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा
सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि
जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में
पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्त्ता को
दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे। ११ क्योंकि
पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए
जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं इसी
कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं
लजाता। १२ पर कहता है, कि मैं तेरा
नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा, सभा
के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।
१३ और फिर यह, कि मैं उस पर
भरोसा रखूंगा, और फिर यह कि देख,
मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने
मुझे दिए। १४ इसलिये जब कि लड़के
मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप
भी उन के समान उन का सहभागी हो
गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे
मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान *
को निकम्मा कर दे। १५ और जितने
मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में
फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले। १६ क्योंकि
वह तो स्वर्गदूतों को नहीं बरन इब्राहीम

* यू० इबलीस।

के वंश को संभालता है। १७ इस कारण
उस को चाहिए था, कि सब बातों में
अपने भाइयों के समान बने, जिस से
वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध
रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य
महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के
लिये प्रायश्चित करे। १८ क्योंकि जब
उस ने परीक्षा की दशा में दुख उठाया,
तो वह उन की भी सहायता कर सकता है,
जिन की परीक्षा होती है॥

३ सो हे पवित्र भाइयो तुम जो
स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस
प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे
हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।
२ जो अपने नियुक्त करनेवाले के लिये
विश्वासयोग्य था, जैसा मूसा भी उसके
सारे घर में था। ३ क्योंकि वह मूसा से
इतना बढ़कर महिमा के योग्य समझा
गया है, जितना कि घर का बनानेवाला
घर से बढ़कर आदर रखता है। ४ क्योंकि
हर एक घर का कोई न कोई बनानेवाला
होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया
वह परमेश्वर है। ५ मूसा तो उसके
सारे घर में सेवक की नाईं विश्वासयोग्य
रहा, कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला
था, उन की गवाही दे। ६ पर मसीह
पुत्र की नाईं उसके घर का अधिकारी
है, और उसका घर हम हैं, यदि हम
साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड
पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। ७ सो
जैसा पवित्र आत्मा कहता है, कि यदि
आज तुम उसका शब्द सुनो। ८ तो अपने
मन को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध
दिलाने के समय और परीक्षा के दिन
जंगल में किया था। ९ जहां तुम्हारे
बापदादों ने मुझे जांचकर परखा और
चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे। १० इस
कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा
रहा, और कहा, कि इन के मन सदा
भटकते रहते हैं, और इन्हों ने मेरे मार्गों
को नहीं पहिचाना। ११ तब मैं ने
क्रोध में आकर शपथ खाई, कि वे मेरे
विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे। १२ हे
भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा
बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो
जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए।
१३ वरन जिस दिन तक आज का दिन
कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को
समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से
कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो
जाए। १४ क्योंकि हम मसीह के * भागी
हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर
अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। १५ जैसा
कहा जाता है, कि यदि आज तुम उसका
शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न
करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया
था। १६ भला किन लोगों ने सुनकर
क्रोध दिलाया? क्या उन सब ने नहीं,
जो मूसा के द्वारा मिसर से निकले थे?
१७ और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों
से रूठा रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्हों ने
पाप किया, और उन की लोथें जंगल में पड़ी
रहीं? १८ और उस ने किन से शपथ
खाई, कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने
न पाओगे केवल उन से जिन्हों ने आज्ञा
न मानी? १९ सो हम देखते हैं, कि वे
अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके॥

४ इसलिये जब कि उसके विश्राम में
प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक

* या सम्मिलित।

है, तो हमें डरना चाहिए, ऐसा न हो,
कि तुम मे से कोई जन उस से रहित
जान पडे। २ क्योकि हमे उन्ही की
नाईं सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने
हुए वचन से उन्हे कुछ लाभ न हुआ,
क्योकि सुननेवालो के मन मे विश्वास के
साथ नही बैठा। ३ और हम जिन्हो ने
विश्वास किया है, उस विश्राम मे प्रवेश
करते है, जैसा उस ने कहा, कि मैं ने
अपने क्रोध मे शपथ खाई, कि वे मेरे
विश्राम मे प्रवेश करने न पाएगे, यद्यपि
जगत की उत्पत्ति के समय से उसके
काम हो चुके थे। ४ क्योकि सातवे दिन
के विषय मे उस ने कही यो कहा है,
कि परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब
कामो को निपटा करके * विश्राम किया।
५ और इस जगह फिर यह कहता है,
कि वे मेरे विश्राम मे प्रवेश न करने
पाएगे। ६ तो जब यह बात बाकी है
कि कितने और है जो उस विश्राम मे
प्रवेश करे, और जिन्हें उसका सुसमाचार
पहिले सुनाया गया, उन्हो ने आज्ञा न
मानने के कारण उस में प्रवेश न किया।
७ तो फिर वह किसी विशेष दिन को
ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की
पुस्तक में उसे आज का दिन कहता है,
जैसे पहिले कहा गया, कि यदि आज तुम
उसका शब्द सुनो, तो अपने मनो को
कठोर न करो। ८ और यदि यहोशू उन्हे
विश्राम मे प्रवेश कर लेता, तो उसके
बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती। ९ सो
जान लो कि परमेश्वर के लोगो के लिये
सब्त का विश्राम बाकी है। १० क्योकि
जिस ने उसके विश्राम में प्रवेश किया

* या कामों से।

है, उस ने भी परमेश्वर की नाईं अपने
कामो को पूरा करके * विश्राम किया
है। ११ सो हम उस विश्राम मे प्रवेश
करने का प्रयत्न करें ऐसा न हो, कि
कोई जन उन की नाई आज्ञा न मानकर †
गिर पडे। १२ क्योकि परमेश्वर का
वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक
दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है,
और जीव, और आत्मा को, और गाठ
गाठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार
पार छेदता है, और मन की भावनाओ
और विचारो को जाचता है। १३ और
सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नही है
बरन जिस से हमे काम है, उस की आखो के
साम्हने सब वस्तुए खुली और बेपरद हैं॥

१४ सो जब हमारा ऐसा बडा महा-
याजक है, जो स्वर्गो से होकर गया है,
अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु, तो
आओ, हम अपने अगीकार को दृढता से
थामे रहे। १५ क्योकि हमारा ऐसा
महायाजक नही, जो हमारी निर्बलताओ मे
हमारे साथ दुखी न हो सके, बरन वह
सब बातो मे हमारी नाई परखा तो गया,
तौभी निष्पाप निकला। १६ इसलिये
आओ, हम अनुग्रह के सिहासन के निकट
हियाव बान्धकर चले, कि हम पर दया
हो, और वह अनुग्रह पाए, जो आवश्यकता
के समय हमारी सहायता करे॥

५ क्योकि हर एक महायाजक मनुष्यो
मे से लिया जाता है, और मनुष्यो
ही के लिये उन बातो के विषय मे जो
परमेश्वर से सम्बन्ध रखती है, ठहराया
जाता है, कि भेंट और पाप बलि चढाया

* या कामों से।
† या अविश्वासी होकर।

करे। २ और वह अज्ञानों, और भूले
भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर
सकता है इसलिये कि वह आप भी
निर्बलता से घिरा है। ३ और इसी लिये
उसे चाहिए, कि जैसे लोगों के लिये,
वैसे ही अपने लिये भी पाप-बलि चढ़ाया
करे। ४ और यह आदर का पद कोई
अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि
हारून की नाईं परमेश्वर की ओर से
ठहराया न जाए। ५ वैसे ही मसीह ने
भी महायाजक बनने की बड़ाई अपने
आप से नहीं ली, पर उस को उसी ने
दी, जिस ने उस से कहा था, कि तू मेरा
पुत्र है, आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।
६ वह दूसरी जगह में भी कहता है, तू
मलिकिसिदक की रीति पर सदा के
लिये याजक है। ७ उस ने अपनी देह में
रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार
पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उस से
जो उस को मृत्यु से बचा * सकता था,
प्रार्थनाएं और बिनती की और भक्ति
के कारण उस की सुनी गई। ८ और
पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठा-
कर आज्ञा माननी सीखी। ९ और सिद्ध
बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों
के लिये सदा काल के उद्धार का कारण
हो गया। १० और उसे परमेश्वर की
ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महा-
याजक का पद मिला॥

११ इस के विषय में हमें बहुत सी
बातें कहनी हैं, जिन का समझाना भी
कठिन है, इसलिये कि तुम ऊंचा सुनने
लगे हो। १२ समय के विचार से तो
तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी क्या
यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर
के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए?
और ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के
बदले अब तक दूध ही चाहिए।
१३ क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो
धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती,
क्योंकि वह बालक है। १४ पर अन्न
सयानों के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय
अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने
के लिये पक्के हो गए हैं॥

६ इसलिये आओ मसीह की शिक्षा
की आरम्भ की बातों को छोड़कर,
हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएं,
और मरे हुए कामों से मन फिराने, और
परमेश्वर पर विश्वास करने। २ और
बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे
हुओं के जी उठने *, और अन्तिम न्याय
की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें।
३ और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही
करेंगे। ४ क्योंकि जिन्हों ने एक बार
ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का
स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के
भागी हो गए हैं। ५ और परमेश्वर के
उत्तम वचन का और आनेवाले युग की
सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं। ६ यदि
वे भटक जाएं, तो उन्हें मन फिराव के
लिये फिर नया बनाना अन्होना है,
क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये
फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस
पर कलंक लगाते हैं। ७ क्योंकि जो
भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार
बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के
लिये वह जोती-बोई जाती है, उन के
काम का साग-पात उपजाती है, वह

* या उद्धार कर।

* या मृतकोत्थान।

परमेश्वर से आशीष पाती है। ८ पर
यदि वह झाडी और ऊटकटारे उगाती
है, तो निकम्मी और स्रापित होने पर है,
और उसका अन्त जलाया जाना है॥

९ पर हे प्रियो यद्यपि हम ये बाते
कहते है तौभी तुम्हारे विषय मे हम इस से
अच्छा और उद्धारवाली बातो का भरोसा
करते है। १० क्योकि परमेश्वर अन्यायी
नही, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को
भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये
इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगो
की सेवा की, और कर भी रहे हो।
११ पर हम बहुत चाहते है, कि तुम मे से
हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के
लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे।
१२ ताकि तुम आलसी न हो जाओ,
बरन उन का अनुकरण करो, जो विश्वास
और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओ के वारिस
होते है॥

१३ और परमेश्वर ने इब्राहीम को
प्रतिज्ञा देते समय जब कि शपथ खाने के
लिये किसी को अपने से बडा न पाया,
तो अपनी ही शपथ खाकर कहा। १४ कि
मै सचमुच तुझे बहुत आशीष दूगा, और
तेरी सन्तान को बढाता जाऊगा। १५ और
इस रीति से उस ने धीरज धरकर प्रतिज्ञा
की हुई बात प्राप्त की। १६ मनुष्य तो
अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते
है और उन के हर एक विवाद का फैसला
शपथ मे पक्का होता है। १७ इसलिये
जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसो पर
और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा,
कि उसकी मनसा बदल नही सकती तो
शपथ को बीच में लाया। १८ ताकि दो
बे-बदल बातो के द्वारा जिन के विषय मे
परमेश्वर का झूठा ठहरना अन्होना है,
हमारा दृढता से ढाढस बन्ध जाए, जो
शरण लेने को इसलिये दौडे है, कि उस
आशा को जो साम्हने रखी हुई है प्राप्त
करे। १९ वह आशा हमारे प्राण के
लिये ऐसा लगर है जो स्थिर और दृढ
है, और परदे के भीतर तक पहुचता है।
२० जहा यीशु मलिकिसिदक की रीति
पर सदा काल का महायाजक बनकर,
हमारे लिये अगुआ की रीति पर प्रवेश
हुआ है॥

७ यह मलिकिसिदक शालेम का
राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का
याजक, सर्वदा याजक बना रहता है
जब इब्राहीम राजाओ को मारकर लौटा
जाता था, तो इसी ने उस से भेट करके
उसे आशीष दी। २ इसी को इब्राहीम ने
सब वस्तुओ का दसवा अश भी दिया
यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार,
धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात्
शान्ति का राजा है। ३ जिस का न
पिता, न माता, न वशावली है, जिस के
न दिनो का आदि है और न जीवन का
अन्त है, परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप
ठहरा॥

४ अब इस पर ध्यान करो कि
यह कैसा महान था जिस को कुलपति
इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे माल की
लूट का दसवा अश दिया। ५ लेवी की
सन्तान मे से जो याजक का पद पाते
है, उन्हे आज्ञा मिली है, कि लोगो,
अर्थात अपने भाइयो मे चाहे, वे इब्राहीम
ही की देह से क्यो न जन्मे हो, व्यवस्था
के अनुसार दसवा अश ले। ६ पर इस ने,
जो उन की वशावली में का भी न था
इब्राहीम से दसवा अश लिया और जिसे

प्रतिज्ञाएं मिली थीं उसे आशीष दी।
७ और इस में संदेह नहीं, कि छोटा
बड़े से आशीष पाता है। ८ और यहां
तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं
पर वहां वही लेता है, जिस की गवाही दी
जाती है, कि वह जीवित है। ९ तो हम
यह भी कह सकते हैं, कि लेवी ने भी,
जो दसवां अंश लेता है, इब्राहीम के
द्वारा दसवां अंश दिया। १० क्योंकि
जिस समय मलिकिसिदक ने उसके पिता से
भेंट की, उस समय यह अपने पिता की
देह में था॥

११ तब यदि लेवीय याजक पद के
द्वारा सिद्धि हो सकती है (जिस के
सहारे से लोगों को व्यवस्था मिली थी)
तो फिर क्या आवश्यकता थी, कि दूसरा
याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा
हो, और हारून की रीति का न कहलाए?
१२ क्योंकि जब याजक का पद बदला
जाता है, तो व्यवस्था का भी बदलना
अवश्य है। १३ क्योंकि जिस के विषय में
ये बातें कही जाती हैं कि वह दूसरे
गोत्र का है, जिस में से किसी ने वेदी
की सेवा नहीं की। १४ तो प्रगट है,
कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से
उदय हुआ है और इस गोत्र के विषय में
मूसा ने याजक पद की कुछ चर्चा नहीं
की। १५ और जब मलिकिसिदक के
समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न
होनेवाला था। १६ जो शारीरिक आज्ञा
की व्यवस्था के अनुसार नहीं, पर अविनाशी
जीवन की सामर्थ के अनुसार नियुक्त
हो तो हमारा दावा और भी स्पष्टता से
प्रगट हो गया। १७ क्योंकि उसके विषय
में यह गवाही दी गई है, कि तू मलिकिसिदक
की रीति पर युगानुयुग याजक है।
१८ निदान, पहिली आज्ञा निर्बल; और
निष्फल होने के कारण लोप हो गई।
१९ (इसलिये कि व्यवस्था ने किसी
बात की सिद्धि नहीं कि) और उसके
स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी
गई है जिस के द्वारा हम परमेश्वर के
समीप जा सकते हैं। २० और इसलिये
कि मसीह की नियुक्ति बिना शपथ
नहीं हुई। २१ (क्योंकि वे तो बिना
शपथ याजक ठहराए गए पर यह शपथ
के साथ उस की ओर से नियुक्त किया
गया जिस ने उसके विषय में कहा, कि
प्रभु ने शपथ खाई, और वह उस से
फिर न पछताएगा, कि तू युगानुयुग
याजक है)। २२ सो यीशु एक उत्तम
वाचा का जामिन ठहरा। २३ वे तो
बहुत से याजक बनते आए, इस का
कारण यह था कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं
देती थी। २४ पर यह युगानुयुग रहता
है, इस कारण उसका याजक पद अटल
है। २५ इसी लिये जो उसके द्वारा
परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा
पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उन के
लिये बिनती करने को सर्वदा जीवित है॥

२६ सो ऐसा ही महायाजक हमारे
योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट
और निर्मल, और पापियों से अलग,
और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो।
२७ और उन महायाजकों की नाईं उसे
आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहिले अपने
पापों और फिर लोगों के पापों के लिये
बलिदान चढ़ाए, क्योंकि उस ने अपने
आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही
बार निपटा दिया। २८ क्योंकि व्यवस्था
तो निर्बल मनुष्यों को महायाजक नियुक्त
करती है, परन्तु उस शपथ का वचन

जो व्यवस्था के बाद खाई गई, उस
पुत्र को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के
लिये सिद्ध किया गया है ।।

८ अब जो बाते हम कह रहे है,
उन मे से सब से बडी बात यह है,
कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग
पर महामहिमन के सिहासन के दहिने
जा बैठा। २ और पवित्र स्थान और
उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे
किसी मनुष्य ने नही, वरन प्रभु ने खडा
किया था। ३ क्योकि हर एक महा-
याजक भेट, और बलिदान चढाने के लिये
ठहराया जाता है, इस कारण अवश्य है,
कि इस के पास भी कुछ चढाने के लिये
हो। ४ और यदि वह पृथ्वी पर होता,
तो कभी याजक न होता, इसलिये कि
व्यवस्था के अनुसार भेट चढानेवाले तो
है। ५ जो स्वर्ग मे की वस्तुओ के
प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते
है, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था,
तो उसे यह चितावनी मिली, कि देख,
जो नमूना तुझे पहाड पर दिखाया गया
था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना।
६ पर उस को उन की सेवकाई से
बढकर मिली, क्योकि वह और भी उत्तम
वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम
प्रतिज्ञाओ के सहारे बान्धी गई है।
७ क्योकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष
होती, तो दूसरी के लिये अवसर न ढूढा
जाता। ८ पर वह उन पर दोष लगाकर
कहता है, कि प्रभु कहता है, देखो, वे
दिन आते है, कि मै इस्राएल के घराने
के साथ, और यहूदा के घराने के साथ,
नई वाचा बान्धूगा। ९ यह उस वाचा के
समान न होगी, जो मै ने उन के बाप-
दादो के साथ उस समय बान्धी थी, जब
मै उन का हाथ पकडकर उन्हे मिसर
देश से निकाल लाया, क्योकि वे मेरी
वाचा पर स्थिर न रहे, और मै ने उन की
सुधि न ली, प्रभु यही कहता है। १० फिर
प्रभु कहता है, कि जो वाचा मै उन दिनो
के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूगा,
वह यह है, कि मै अपनी व्यवस्था को
उन के मनो मे डालूगा, और उसे उन के
हृदय पर लिखूगा, और मै उन का परमेश्वर
ठहरूगा, और वे मेरे लोग ठहरेगे।
११ और हर एक अपने देशवाले को
और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा,
कि तू प्रभु को पहिचान क्योकि छोटे से
बडे तक सब मुझे जान लेगे। १२ क्योकि
मै उन के अधर्म के विषय मे दयावन्त
हूगा, और उन के पापो को फिर स्मरण
न करूगा। १३ नई वाचा के स्थापन से
उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई,
और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती
है उसका मिट जाना अनिवार्य है ।।

९ निदान, उस पहिली वाचा मे भी
सेवा के नियम थे, और ऐसा पवित्र-
स्थान जो इस जगत का था। २ अर्थात्
एक तम्बू बनाया गया, पहिले तम्बू मे
दीवट, और मेज, और भेट की रोटिया
थी, और वह पवित्र स्थान कहलाता है।
३ और दूसरे परदे के पीछे वह तम्बू
था, जो परम पवित्र-स्थान कहलाता है।
४ उस मे सोने की धूपदानी, और चारो
ओर सोने से मढा हुआ वाचा का सदूक
और इस मे मन्ना से भरा हुआ सोने का
मर्तबान और हारून की छडी जिस मे
फूल फल आ गए थे और वाचा की
पटिया थी। ५ और उसके ऊपर दोनो

तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित्त के
ढकने पर छाया किए हुए थे इन्ही का
एक एक करके बखान करने का अभी
अवसर नही है। ६ जब ये वस्तुए इस
रीति से तैयार हो चुकी, तब पहिले
तम्बू में तो याजक हर समय प्रवेश
करके सेवा के काम निबाहते हैं। ७ पर
दूसरे मे केवल महायाजक वर्ष भर में
एक ही बार जाता है, और बिना
लोहू लिए नही जाता, जिसे वह अपने
लिये और लोगो की भूल चूक के लिये
चढावा चढाता है। ८ इस से पवित्र
आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक
पहिला तम्बू खडा है, तब तक पवित्र
स्थान का मार्ग प्रगट नही हुआ। ९ और
यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिये एक
दृष्टान्त है, जिस में ऐसी भेंट और
बलिदान चढाए जाते हैं, जिन से आराधना
करनेवालो के विवेक * सिद्ध नही हो
सकते। १० इसलिये कि वे केवल खाने
पीने की वस्तुओ, और भाति भाति के
स्नान विधि के आधार पर शारीरिक
नियम हैं, जो सुधार के समय तक के लिये
नियुक्त किए गए हैं॥
११ परन्तु जब मसीह आनेवाली †
अच्छी अच्छी वस्तुओ का महायाजक
होकर आया, तो उस ने और भी बडे
और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का
बनाया हुआ नही, अर्थात इस सृष्टि का
नहीं। १२ और बकरो और बछडो के
लोहू के द्वारा नही, पर अपने ही लोहू
के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में
प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त
किया। १३ क्योकि जब बकरो और

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† और पढते है। आई हुई।

बैलो का लोहू और कलोर की राख
अपवित्र लोगो पर छिडके जाने से शरीर
की शुद्धता के लिये पवित्र करती है।
१४ तो मसीह का लोहू जिस नें अपने
आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर
के साम्हने निर्दोष चढाया, तुम्हारे विवेक *
को मरे हुए कामो से क्यो न शुद्ध करेगा,
ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा
करो। १५ और इसी कारण वह नई
वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु
के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के
अपराधो से छुटकारा पाने के लिये हुई
है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार
अनन्त मीरास को प्राप्त करें। १६ क्योकि
जहा वाचा बान्धी गई † है वहा वाचा
बान्धनेवाले ‡ की मृत्यु का समझ लेना
भी अवश्य है। १७ क्योंकि ऐसी वाचा
मरने पर पक्की होती है, और जब तक
वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है,
तब तक वाचा काम की नही होती।
१८ इसी लिये पहिली वाचा भी बिना
लोहू के नही बान्धी गई। १९ क्योकि
जब मूसा सब लोगो को व्यवस्था की
हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उस ने
बछडो और बकरो का लोहू लेकर, पानी
और लाल ऊन, और जूफा के साथ, उस
पुस्तक पर और सब लोगो पर छिडक
दिया। २० और कहा, कि यह उस
वाचा का लोहू है, जिस की आज्ञा परमेश्वर
ने तुम्हारे लिये दी है। २१ और इसी
रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे
सामान पर लोहू छिडका। २२ और
व्यवस्था के अनुसार प्राय: सब वस्तुए

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† या वसीयत या विल की हुई।
‡ या वसीयत या विल लिखनेवाले।

लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और बिना
लोहू बहाए क्षमा नहीं होती ॥

२३ इसलिये अवश्य है, कि स्वर्ग मे
की वस्तुओ के प्रतिरूप इन के द्वारा
शुद्ध किए जाए, पर स्वर्ग मे की वस्तुए
आप इन से उत्तम बलिदानो के द्वारा।
२४ क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए
हुए पवित्र स्थान मे जो सच्चे पवित्र
स्थान का नमूना है, प्रवेश नही किया,
पर स्वर्ग ही मे प्रवेश किया, ताकि हमारे
लिये अब परमेश्वर के साम्हने दिखाई
दे। २५ यह नही कि वह अपने आप को
बार बार चढाए, जैसा कि महायाजक
प्रति वर्ष दूसरे का लोहू लिए पवित्र
स्थान मे प्रवेश किया करता है। २६ नहीं
तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उस को
बार बार दुख उठाना पडता, पर अब
युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ
है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा
पाप को दूर कर दे। २७ और जैसे
मनुष्यो के लिये एक बार मरना और
उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।
२८ वैसे ही मसीह भी बहुतो के पापो को
उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ
और जो लोग उस की बाट जोहते है,
उन के उद्धार के लिये दूसरी बार बिना
पाप के दिखाई देगा ॥

१० क्योंकि व्यवस्था जिस मे आने-
वाली अच्छी वस्तुओ का प्रति-
बिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप
नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के
बलिदानो के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक
चढाए जाते है, पास आनेवालो को कदापि
सिद्ध नही कर सकती। २ नहीं तो
उन का चढाना बन्द क्यो न हो जाता?
इसलिये कि जब सेवा करनेवाले एक
ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उन का
विवेक * उन्हे पापी न ठहराता। ३ परन्तु
उन के द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण
हुआ करता है। ४ क्योंकि अनहोना है,
कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को
दूर करे। ५ इसी कारण वह जगत मे
आते समय कहता है, कि बलिदान और
भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिये एक
देह तैयार किया। ६ होम-बलियों और
पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ।
७ तब मैं ने कहा, देख, मै आ गया हू,
(पवित्र शास्त्र में मेरे विषय मे लिखा
हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा
पूरी करू। ८ ऊपर तो वह कहता है,
कि न तू ने बलिदान और भेंट और
होम-बलियो और पाप-बलियो को चाहा,
और न उन से प्रसन्न हुआ, यद्यपि ये
बलिदान तो व्यवस्था के अनुसार चढाए
जाते है। ९ फिर यह भी कहता है, कि
देख, मै आ गया हू, ताकि तेरी इच्छा
पूरी करू, निदान, वह पहिले को उठा
देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे।
१० उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की
देह के एक ही बार बलिदान चढाए जाने
के द्वारा पवित्र किए गए है। ११ और
हर एक याजक तो खडे होकर प्रति दिन
सेवा करता है, और एक ही प्रकार के
बलिदान को जो पापो को कभी भी दूर
नही कर सकते, बार बार चढाता है।
१२ पर यह व्यक्ति तो पापो के बदले
एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढाकर
परमेश्वर के दहिने जा बैठा। १३ और
उसी समय से इस की बाट जोह रहा

* अर्थात् मन या कानशन्स।

है, कि उसके वैरी उसके पावों के नीचे
की पीढ़ी बनें। १४ क्योंकि उस ने एक
ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए
जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया
है। १५ और पवित्र आत्मा भी हमें यही
गवाही देता है, क्योंकि उस ने पहिले कहा
था। १६ कि प्रभु कहता है, कि जो वाचा
मैं उन दिनों के बाद उन से बान्धूंगा
वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्थाओं
को उन के हृदय पर लिखूंगा और मैं
उन के विवेक में डालूंगा। १७ (फिर
वह यह कहता है, कि) मैं उन के पापों
को, और उन के अधर्म के कामों को
फिर कभी स्मरण न करूंगा। १८ और
जब इन की क्षमा हो गई है, तो फिर
पाप का बलिदान नहीं रहा॥

१९ सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु
के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते
मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का
हियाव हो गया है। २० जो उस ने
परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर,
हमारे लिये अभिषेक किया है, २१ और
इसलिये कि हमारा ऐसा महान याजक
है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है।
२२ तो आओ, हम सच्चे मन, और
पूरे विश्वास के साथ, और विवेक * का
दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव
लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर
परमेश्वर के समीप जाएं। २३ और
अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से
थामे रहें, क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किया
है, वह सच्चा † है। २४ और प्रेम, और
भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे
की चिन्ता किया करें। २५ और एक
दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे
कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे
को समझाते रहें, और ज्यों ज्यों उस
दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और
भी अधिक यह किया करो॥

२६ क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त
करने के बाद यदि हम जान बूझकर
पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर
कोई बलिदान बाकी नहीं। २७ हां, दण्ड
का एक भयानक बाट जोहना और आग
का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को
भस्म कर देगा। २८ जब कि मूसा की
व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन
जनों की गवाही पर, बिना दया के मार
डाला जाता है। २९ तो सोच लो कि
वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य
ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को
पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को
जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया
था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की
आत्मा का अपमान किया। ३० क्योंकि
हम उसे जानते हैं, जिस ने कहा, कि
पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला
दूंगा और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों
का न्याय करेगा। ३१ जीवते परमेश्वर
के हाथों में पड़ना भयानक बात है॥

३२ परन्तु उन पहिले दिनों को
स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर
दुखों के बड़े झमेले में स्थिर रहे।
३३ कुछ तो यों, कि तुम निन्दा, और
क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यों,
कि तुम उन के साझी हुए जिन की
दुर्दशा की जाती थी। ३४ क्योंकि तुम
कैदियों के दुख में भी दुखी हुए, और
अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी
यह जानकर, कि तुम्हारे पास एक और

* अर्थात् मन या कानशन्स।
† यू० विश्वासयोग्य।

भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली संपत्ति
है। ३५ सो अपना हियाव न छोड़ो
क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।
३६ क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है,
ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके
तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ। ३७ क्योंकि
अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है
जब कि आनेवाला आएगा, और देर न
करेगा। ३८ और मेरा धर्मी जन विश्वास
से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे
हट जाए तो मेरा मन उस से प्रसन्न न
होगा। ३९ पर हम हटनेवाले नहीं, कि
नाश हो जाएं पर विश्वास करनेवाले हैं,
कि प्राणों को बचाएं॥

११ अब विश्वास आशा की हुई
वस्तुओं का निश्चय, और अन-
देखी वस्तुओं का प्रमाण है। २ क्योंकि
इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी
गवाही दी गई। ३ विश्वास ही से हम
जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना
परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह
नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है,
वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।
४ विश्वास ही से हाबील ने कैन से
उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया;
और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की
गवाही भी दी गई क्योंकि परमेश्वर ने
उस की भेंटों के विषय में गवाही दी;
और उसी के द्वारा वह मरने पर भी
अब तक बातें करता है। ५ विश्वास ही से
हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को
न देखे, और उसका पता नहीं मिला;
क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया
था, और उसके उठाए जाने से पहिले
उस की यह गवाही दी गई थी, कि
उस ने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।
६ और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना
अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास
आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि
वह है, और अपने खोजनेवालों को
प्रतिफल देता है। ७ विश्वास ही से
नूह ने उन बातों के विषय में जो उस
समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर
भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव
के लिये जहाज बनाया, और उसके द्वारा
उस ने संसार को दोषी ठहराया, और
उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से
होता है। ८ विश्वास ही से इब्राहीम
जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर
ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में
लेनेवाला था, और यह न जानता था,
कि मैं किधर जाता हूं, तौभी निकल
गया। ९ विश्वास ही से उस ने प्रतिज्ञा
किए हुए देश में जैसे पराए देश में पर-
देशी रहकर इसहाक और याकूब समेत,
जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस
थे, तम्बुओं में वास किया। १० क्योंकि
वह उस स्थिर नेववाले * नगर की बाट
जोहता था, जिस का रचनेवाला और
बनानेवाला परमेश्वर है। ११ विश्वास से
सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ
धारण करने की सामर्थ पाई, क्योंकि
उस ने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा †
जाना था। १२ इस कारण एक ही
जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश
के तारों और समुद्र के तीर के बालू की
नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ॥

१३ ये सब विश्वास ही की दशा में
मरे, और उन्हों ने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं

---

* या स्थिर रहनेवाले।
† यू० विश्वासयोग्य।

नही पाई, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित
हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर
परदेशी और वाहरी हैं। १४ जो ऐसी
ऐसी वातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं,
कि स्वदेश की खोज में हैं। १५ और
जिस देश से वे निकल आए थे, यदि
उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने
का अवसर था। १६ पर वे एक उत्तम
अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं,
इसी लिये परमेश्वर उन का परमेश्वर
कहलाने में उन से नही लजाता, सो
उस ने उन के लिये एक नगर तैयार
किया है॥

१७ विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे
जाने के समय में, इसहाक को बलिदान
चढाया, और जिस ने प्रतिज्ञाओं को
सच माना था। १८ और जिस से
यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा
वंश कहलाएगा, वह अपने एकलौते को
चढाने लगा। १९ क्योंकि उस ने विचार
किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे
हुओं में से जिलाए, सो उन्ही में से दृष्टान्त
की रीति पर वह उसे फिर मिला।
२० विश्वास ही से इसहाक ने याकूब
और एसाव को आनेवाली बातों के
विषय में आशीष दी। २१ विश्वास ही से
याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनो
पुत्रों में से एक एक को आशीष दी,
और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा
लेकर दण्डवत किया। २२ विश्वास ही से
यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो
इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की
चर्चा की, और अपनी हड्डियों के विषय में
आज्ञा दी। २३ विश्वास ही से मूसा
के माता पिता ने उस को, उत्पन्न होने
के बाद तीन महीने तक छिपा रखा,
क्योंकि उन्हो ने देखा, कि बालक सुन्दर
है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे।
२४ विश्वास ही से मूसा ने सयाना
होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से
इन्कार किया। २५ इसलिये कि उसे
पाप में थोडे दिन के सुख भोगने से
परमेश्वर के लोगो के साथ दुख भोगना
और उत्तम लगा। २६ और मसीह के
कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से
बडा धन समझा क्योंकि उस की आंखें
फल पाने की ओर लगी थी। २७ विश्वास
ही से राजा के क्रोध से न डरकर उस ने
मिसर को छोड दिया, क्योंकि वह अन-
देखे को मानो देखता हुआ दृढ रहा।
२८ विश्वास ही से उस ने फसह और लोहू
छिडकने की विधि मानी, कि पहिलौठो
का नाश करनेवाला इस्राएलियों * पर
हाथ न डाले। २९ विश्वास ही से वे
लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे
सूखी भूमि पर से, और जब मिस्रियो ने
वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे।
३० विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह,
जब सात दिन तक उसका चक्कर लगा
चुके तो वह गिर पडी। ३१ विश्वास
ही से राहाब वेश्या आज्ञा न मानने-
वालों † के साथ नाश नही हुई, इस-
लिये कि उस ने भेदियो को कुशल से
रखा था। ३२ अब और क्या कहूं?
क्योंकि समय नही रहा, कि गिदोन का,
और बाराक और समसून का, और
यिफतह का, और दाऊद और शामुएल का,
और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूं।
३३ इन्हो ने विश्वास ही के द्वारा राज्य
जीते, धर्म के काम किए, प्रतिज्ञा की

* या उन।
† या अविश्वासियों।

हुई वस्तुए प्राप्त की, सिहो के मुह बन्द किए। ३४ आग की ज्वाला को ठडा किया, तलवार की धार से बच निकले, निर्वलता मे बलवन्त हुए, लडाई मे वीर निकले, विदेशियो की फौजो को मार भगाया। ३५ स्त्रियो ने अपने मरे हुओ को फिर जीवते पाया, कितने तो मार खाते खाते मर गए, और छुटकारा न चाहा, इसलिये कि उत्तम पुनरुत्थान * के भागी हो। ३६ कई एक ठट्ठो मे उडाए जाने, और कोडे खाने, वरन बान्धे जाने, और कैद मे पडने के द्वारा परखे गए। ३७ पत्थरवाह किए गए, आरे से चीरे गए, उन की परीक्षा की गई, तलवार से मारे गए, वे कगाली मे और क्लेश मे और दुख भोगते हुए भेडो और बकरियो की खाले ओढे हुए, इधर उधर मारे मारे फिरे। ३८ और जगलो, और पहाडो, और गुफाओ मे, और पृथ्वी की दरारो मे भटकते फिरे। ३९ ससार उन के योग्य न था और विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय मे अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हे प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। ४० क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहिले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुचे॥

१२ इस कारण जब कि गवाहो का ऐसा बडा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड जिस मे हमे दौडना है, धीरज से दौडे। २ और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहे, जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा, और सिहासन पर परमेश्वर के दहिने जा बैठा। ३ इसलिये उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियो का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड दो। ४ तुम ने पाप से लडते हुए उस से ऐसी मुठभेड नही की, कि तुम्हारा लोहू बहा हो। ५ और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रो की नाईं दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताडना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुडके तो हियाव न छोड। ६ क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताडना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोडे भी लगाता है। ७ तुम दुख को ताडना समझकर सह लो परमेश्वर तुम्हे पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताडना पिता नही करता? ८ यदि वह ताडना जिस के भागी सब होते है, तुम्हारी नही हुई, तो तुम पुत्र नही, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! ९ फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताडना किया करते थे, तो क्या आत्माओ के पिता के और भी आधीन न रहे जिस से जीवित रहे। १० वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोडे दिनो के लिये ताडना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उस की पवित्रता के भागी हो जाए। ११ और वर्तमान मे हर प्रकार की ताडना आनन्द की नही, पर शोक ही की बात दिखाई पडती है तौभी

* या मृतकोत्थान।

जो उस को सहते सहते पक्के हो गए
हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रति-
फल मिलता है। १२ इसलिये ढीले हाथों
और निर्बल घुटनों को सीधे करो।
१३ और अपने पांवों के लिये सीधे
मार्ग बनाओ, कि लंगड़ा भटक न जाए,*
पर भला चंगा हो जाए॥

१४ सब से मेल मिलाप रखने, और
उस पवित्रता के खोजी हो जिस के बिना
कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। १५ और
ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि
कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह
जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट
दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध
हो जाएं। १६ ऐसा न हो, कि कोई
जन व्यभिचारी, या एसाव की नाईं
अधर्मी हो, जिस ने एक बार के भोजन
के बदले अपने पहिलौठे होने का पद
बेच डाला। १७ तुम जानते तो हो,
कि बाद को जब उस ने आशीष पानी
चाही, तो अयोग्य गिना गया, और आंसू
बहा बहाकर खोजने पर भी मन फिराव का
अवसर उसे न मिला॥

१८ तुम तो उस पहाड़ के पास जो
छूआ जा सकता था और आग से प्रज्वलित
था, और काली घटा, और अन्धेरा, और
आन्धी के पास। १९ और तुरही की
ध्वनि, और बोलनेवाले के ऐसे शब्द के
पास नहीं आए, जिस के सुननेवालों ने
बिनती की, कि अब हम से और बातें न
की जाएं। २० क्योंकि वे उस आज्ञा को
न सह सके, कि यदि कोई पशु भी पहाड़
को छूए, तो पत्थरवाह किया जाए।
२१ और वह दर्शन ऐसा डरावना था,
कि मूसा ने कहा, मैं बहुत डरता और
कांपता हूं। २२ पर तुम सिय्योन के
पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर
के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास।
२३ और लाखों स्वर्गदूतों और उन
पहिलौठों की साधारण सभा और
कलीसिया जिन के नाम स्वर्ग में लिखे
हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के
पास और सिद्ध किए हुए धर्मियों की
आत्माओं। २४ और नई वाचा के मध्यस्थ
यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के
पास आए हो, जो हाबील के लोहू से
उत्तम बातें कहता है। २५ सावधान रहो,
और उस कहनेवाले से मुंह न फेरो,
क्योंकि वे लोग जब पृथ्वी पर के चितावनी
देनेवाले से मुंह मोड़कर न बच सके,
तो हम स्वर्ग पर से चितावनी करनेवाले से
मुंह मोड़कर क्योंकर बच सकेंगे? २६ उस
समय तो उसके शब्द ने पृथ्वी को हिला
दिया पर अब उस ने यह प्रतिज्ञा की
है, कि एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को
नहीं, वरन आकाश को भी हिला दूंगा।
२७ और यह वाक्य 'एक बार फिर'
इस बात को प्रगट करता है, कि जो
वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई
वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी,
ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जातीं,
वे अटल बनी रहें। २८ इस कारण
हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का
नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने
दें, जिस के द्वारा हम भक्ति, और भय
सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर
सकते हैं जिस से वह प्रसन्न होता है।
२९ क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने-
वाली आग है॥

* या लंगड़े की हड्डी उखड़ न जाए।

१३ भाईचारे की प्रीति बनी रहे।
२ पहुनाई करना न भूलना, क्योकि
इस के द्वारा कितनो ने अनजाने स्वर्ग-
दूतो की पहुनाई की है। ३ कैदियो की
ऐसी सुधि लो, कि मानो उन के साथ
तुम भी कैद हो, और जिन के साथ
बुरा बर्ताव किया जाता है, उन की भी
यह समझकर सुधि लिया करो, कि
हमारी भी देह है। ४ विवाह सब में
आदर की बात समझी जाए, और बिछौना
निष्कलंक रहे, क्योकि परमेश्वर व्यभि-
चारियो, और परस्त्रीगामियो का न्याय
करेगा। ५ तुम्हारा स्वभाव लोभरहित
हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर
सन्तोष करो, क्योकि उस ने आप ही
कहा है, मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और
न कभी तुझे त्यागूंगा। ६ इसलिये हम
बेधड़क होकर कहते है, कि प्रभु, मेरा
सहायक है, मैं न डरूंगा, मनुष्य मेरा क्या
कर सकता है॥
७ जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्हो ने
तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है,
उन्हें स्मरण रखो, और ध्यान से उन के
चाल-चलन का अन्त देखकर उन के
विश्वास का अनुकरण करो। ८ यीशु
मसीह कल और आज और युगानुयुग
एकसा है। ९ नाना प्रकार के और
ऊपरी उपदेशो से न भरमाए जाओ,
क्योकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला
है, न कि उन खाने की वस्तुओ से जिन से
काम रखनेवालो को कुछ लाभ न हुआ।
१० हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस
पर से खाने का अधिकार उन लोगो को
नहीं, जो तम्बू की सेवा करते है।
११ क्योकि जिन पशुओ का लोहू महा-
याजक पाप-बलि के लिये पवित्र स्थान में
ले जाता है, उन की देह छावनी के
बाहर जलाई जाती है। १२ इसी कारण,
यीशु ने भी लोगो को अपने ही लोहू के
द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के
बाहर दुख उठाया। १३ सो आओ,
उस की निन्दा अपने ऊपर लिए हुए
छावनी के बाहर उसके पास निकल
चले। १४ क्योकि यहा हमारा कोई स्थिर
रहनेवाला नगर नही, वरन हम एक
आनेवाले नगर की खोज में है। १५ इस-
लिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान,
अर्थात् उन होठो का फल जो उसके
नाम का अंगीकार करते है, परमेश्वर
के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। १६ पर
भलाई करना, और उदारता न भूलो,
क्योकि परमेश्वर ऐसे बलिदानो से प्रसन्न
होता है। १७ अपने अगुवो की मानो;
और उन के आधीन रहो, क्योकि वे
उन की नाईं तुम्हारे प्राणो के लिये
जागते रहते, जिन्हे लेखा देना पड़ेगा,
कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि
ठंडी सांस ले लेकर, क्योकि इस दशा में
तुम्हें कुछ लाभ नही॥
१८ हमारे लिये प्रार्थना करते रहो,
क्योकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक *
शुद्ध है, और हम सब बातो मे अच्छी
चाल चलना चाहते है। १९ और इस के
करने के लिये मैं तुम्हें और भी समझाता
हू, कि मै शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ
सकू॥
२० अब शान्तिदाता परमेश्वर जो
हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ो का महान
रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के
गुण से मरे हुओ में से जिलाकर ले आया।

* अर्थात् मन या कानशन्स।

२१ तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध
करे, जिस से तुम उस की इच्छा पूरी
करो, और जो कुछ उस को भाता है,
उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न
करे, जिस की बड़ाई युगानुयुग होती रहे।
आमीन ॥
२२ हे भाइयो मैं तुम से बिनती करता
हूं, कि इन उपदेश की बातों को सह
लो, क्योंकि मैं ने तुम्हें बहुत संक्षेप में
लिखा है। २३ तुम यह जान लो कि
तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है
और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके
साथ तुम से भेंट करूंगा ॥
२४ अपने सब अगुवों और सब पवित्र
लोगों को नमस्कार कहो। इतालियावाले
तुम्हें नमस्कार कहते हैं ॥
२५ तुम सब पर अनुग्रह होता रहे।
आमीन ॥

याकूब की पत्री

१ परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह
के दास याकूब की ओर से उन बारहों
गोत्रों को जो तित्तर बित्तर होकर रहते हैं
नमस्कार पहुंचे ॥
२ हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार
की परीक्षाओं में पड़ो, ३ तो इस को पूरे
आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि
तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज
उत्पन्न होता है। ४ पर धीरज को अपना
पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो
जाओ और तुम में किसी बात की घटी न
रहे ॥
५ पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की
घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना
उलाहना दिए सब को उदारता से देता है,
और उस को दी जाएगी। ६ पर विश्वास
से मांगे, और कुछ सन्देह न करे, क्योंकि
सन्देह करनेवाला समुद्र की लहर के समान
है जो हवा से बहती और उछलती है।
७ ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु
से कुछ मिलेगा। ८ वह व्यक्ति दुचित्ता है,
और अपनी सारी बातों में चंचल है ॥
९ दीन भाई अपने ऊंचे पद पर घमण्ड
करे। १० और धनवान अपनी नीच दशा
पर क्योंकि वह घास के फूल की नाईं
जाता रहेगा। ११ क्योंकि सूर्य उदय होते
ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा
देती है और उसका फूल झड़ जाता है, और
उस की शोभा जाती रहती है, उसी प्रकार
धनवान भी अपने मार्ग पर चलते चलते धूल
में मिल जाएगा ॥
१२ धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में
स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर
जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की
प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी
है। १३ जब किसी की परीक्षा हो, तो वह
यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की
ओर से होती है, क्योंकि न तो बुरी बातों से
परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न
वह किसी की परीक्षा आप करता है।

१४ परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभि-
लाषा से खिंचकर, और फसकर परीक्षा मे
पडता है। १५ फिर अभिलाषा गर्भवती
होकर पाप को जनता है और पाप जब बढ
जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।
१६ हे मेरे प्रिय भाइयो, धोखा न खाओ।
१७ क्योकि हर एक अच्छा वरदान और
हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और
ज्योतियो के पिता की ओर से मिलता है,
जिस मे न तो कोई परिवर्तन हो सकता है,
और न अदल बदल के कारण उस पर छाया
पडती है। १८ उस ने अपनी ही इच्छा से
हमे सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया,
ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओ मे
से एक प्रकार के प्रथम फल हो॥

१९ हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम
जानते हो इसलिये हर एक मनुष्य सुनने
के लिये तत्पर और बोलने में धीरा और
क्रोध मे धीमा हो। २० क्योकि मनुष्य का
क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नही कर
सकता है। २१ इसलिये सारी मलिनता
और बैर भाव की बढती को दूर करके, उस
वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय
मे बोया गया और जो तुम्हारे प्राणो का
उद्धार कर सकता है। २२ परन्तु वचन
पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले
ही नही जो अपने आप को धोखा देते है।
२३ क्योकि जो कोई वचन का सुननेवाला
हो, और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह
उस मनुष्य के समान है जो अपना
स्वाभाविक मुह दर्पण मे देखता है।
२४ इसलिये कि वह अपने आप को देखकर
चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि मै
कैसा था। २५ पर जो व्यक्ति स्वतत्रता
की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है,
वह अपने काम मे इसलिये आशीष पाएगा
कि सुनकर भूलना नही, पर वैसा ही काम
करता है। २६ यदि कोई अपने आप को
भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम
न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उस की
भक्ति व्यर्थ है। २७ हमारे परमेश्वर और
पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह
है, कि अनाथो और विधवाओ के क्लेश में
उन की सुधि ले, और अपने आप को ससार
से निष्कलक रखें॥

२ हे मेरे भाइयो, हमारे महिमायुक्त
प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में
पक्षपात के साथ न हो। २ क्योकि यदि एक
पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने
हुए तुम्हारी सभा मे आए और एक कगाल
भी मैले कुचैले कपडे पहिने हुए आए।
३ और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले का मुह
देखकर कहो कि तू वहा अच्छी जगह बैठ;
और उस कगाल से कहो, कि तू यहा खडा
रह, या मेरे पावो की पीढी के पास बैठ।
४ तो क्या तुम ने आपस मे भेद भाव न
किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न
ठहरे? ५ हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो,
क्या परमेश्वर ने इस जगत के कगालो को
नही चुना कि विश्वास मे धनी, और उस
राज्य के अधिकारी हो, जिस की प्रतिज्ञा उस
ने उन से की है जो उस से प्रेम रखते है?
६ पर तुम ने उस कगाल का अपमान
किया क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार
नही करते और क्या वे ही तुम्हे कचहरियो
में घसीट घसीट कर नही ले जाते? ७ क्या
वे उस उत्तम नाम की निन्दा नही करते
जिस के तुम कहलाए जाते हो? ८ तोभी
यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के
अनुसार, कि तू अपने पडोसी से अपने समान
प्रेम रख, सचमुच उस राज्य व्यवस्था को

पूरी करते हो, तो अच्छा ही करते हो।
९ पर यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप
करते हो, और व्यवस्था तुम्हें अपराधी
ठहराती है। १० क्योंकि जो कोई सारी
व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही
बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी
ठहरा। ११ इसलिये कि जिस ने यह
कहा, कि तू व्यभिचार न करना उसी ने
यह भी कहा, कि तू हत्या न करना इसलिये
यदि तू ने व्यभिचार तो नहीं किया, पर
हत्या की तौभी तू व्यवस्था का उलंघन करने
वाला ठहरा। १२ तुम उन लोगों की नाईं
वचन बोलो, और काम भी करो, जिन का
न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार
होगा। १३ क्योंकि जिस ने दया नहीं की,
उसका न्याय बिना दया के होगा दया
न्याय पर जयवन्त होती * है॥

१४ हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि
मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो,
तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास
कभी उसका उद्धार कर सकता है?
१५ यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े
हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो।
१६ और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल
से जाओ, तुम गर्म रहो और तृप्त रहो,
पर जो वस्तुएं देह के लिये आवश्यक हैं वह
उन्हें न दे, तो क्या लाभ? १७ वैसे ही
विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने
स्वभाव से मरा हुआ है। १८ वरन कोई
कह सकता है कि तुझे विश्वास है, और मैं
कर्म करता हूं तू अपना विश्वास मुझे कर्म
बिना तो दिखा, और मैं अपना विश्वास
अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा।
१९ तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर
है तू अच्छा करता है दुष्टात्मा भी
विश्वास रखते, और थरथराते हैं। २० पर
हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं
जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?
२१ जब हमारे पिता इब्राहीम ने अपने पुत्र
इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह
कर्मों से धार्मिक न ठहरा था। २२ सो तू ने
देख लिया कि विश्वास ने उस के कामों के
साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से
विश्वास सिद्ध हुआ। २३ और पवित्र
शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, कि इब्राहीम
ने परमेश्वर की प्रतीति की, और यह उसके
लिये धर्म गिना गया, और वह परमेश्वर का
मित्र कहलाया। २४ सो तुम ने देख लिया
कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन
कर्मों से भी धर्मी ठहरता है। २५ वैसे ही
राहाब वेश्या भी जब उस ने दूतों को अपने
घर में उतारा, और दूसरे मार्ग से विदा
किया, तो क्या कर्मों से धार्मिक न ठहरी?
२६ निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई
है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा
हुआ है॥

३ हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत
उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो,
कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।
२ इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते
हैं जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो
सिद्ध मनुष्य है, और सारी देह पर भी
लगाम लगा सकता है। ३ जब हम अपने
वश में करने के लिये घोड़ों के मुंह में लगाम
लगाते हैं, तो हम उन की सारी देह को भी
फेर सकते हैं। ४ देखो, जहाज भी, यद्यपि
ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए
जाते हैं, तौभी एक छोटी सी पतवार के द्वारा
मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते

* यू० घमण्ड।

है। ५ वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अग
है और बडी बडी डीगे मारती है देखो,
थोडी सी आग से कितने वडे वन मे आग
लग जाती है। ६ जीभ भी एक आग है;
जीभ हमारे अगो मे अधर्म का एक लोक है,
और सारी देह पर कलक लगाती है, और
भवचक्र मे आग लगा देती है और नरक कुण्ड
की आग से जलती रहती है। ७ क्योकि
हर प्रकार के बन-पशु, पक्षी, और रेंगनेवाले
जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश
मे हो सकते हैं और हो भी गए है। ८ पर
जीभ को मनुष्यो मे से कोई वश मे नही कर
सकता, वह एक ऐसी बला है जो कभी
रुकती ही नही, वह प्राण नाशक विष से
भरी हुई है। ९ इसी से हम प्रभु और पिता
की स्तुति करते है, और इसी से मनुष्यो को
जो परमेश्वर के स्वरूप मे उत्पन्न हुए है स्राप
देते है। १० एक ही मुह से धन्यवाद और
स्राप दोनो निकलते है। ११ हे मेरे
भाइयो, ऐसा नही होना चाहिए। १२ क्या
सोते के एक ही मुह से मीठा और खारा जल
दोनो निकलता है? हे मेरे भाइयो, क्या
अजीर के पेड मे जैतून, या दाख की लता मे
अजीर लग सकते है? वैसे ही खारे सोते से
मीठा पानी नही निकल सकता॥

१३ तुम मे ज्ञानवान और समझदार
कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामो को
अच्छे चालचलन से उस नम्रता सहित प्रगट
करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है। १४ पर
यदि तुम अपने अपने मन मे कडवी डाह
और विरोध रखते हो, तो सत्य के विरोध मे
घमण्ड न करना, और न तो झूठ बोलना।
१५ यह ज्ञान वह नही, जो ऊपर से उतरता
है वरन सासारिक, और शारीरिक, और
शैतानी है। १६ इसलिये कि जहा डाह
और विरोध होता है, वहा बखेडा और हर
प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। १७ पर
जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो
पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और
मृदुभाव और दया, और अच्छे फलो से लदा
हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता
है। १८ और मिलाप करानेवालो के लिये
धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ
बोया जाता है॥

४ तुम में लडाइया और झगडे कहा से
आ गए? क्या उन सुख-विलासो से
नही जो तुम्हारे अगो में लडते-भिडते है?
२ तुम लालसा रखते हो, और तुम्हे मिलता
नही, तुम हत्या और डाह करते हो, और
कुछ प्राप्त नही कर सकते, तुम झगडते
और लडते हो, तुम्हे इसलिये नही मिलता,
कि मागते नही। ३ तुम मागते हो और
पाते नही, इसलिये कि बुरी इच्छा से मागते
हो, ताकि अपने भोग-विलास में उडा दो।
४ हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नही
जानती, कि ससार से मित्रता करनी
परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई
ससार का मित्र होना चाहता है, वह अपने
आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।
५ क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र
शास्त्र व्यर्थ कहता है? जिस आत्मा को
उस ने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह
ऐसी लालसा करता है, जिस का प्रतिफल
डाह हो? ६ वह तो और भी अनुग्रह देता
है, इस कारण यह लिखा है, कि परमेश्वर
अभिमानियो से विरोध करता है, पर दीनो
पर अनुग्रह करता है। ७ इसलिये पर-
मेश्वर के आधीन हो जाओ, और शैतान *
का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से

---

* यू० इब्लीस।

भाग निकलेगा। ८ परमेश्वर के निकट
आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा
हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो, और हे
दुचित्ते लोगो अपने हृदय को पवित्र करो।
९ दुखी होओ, और शोक करो, और
रोओ तुम्हारी हसी शोक से और तुम्हारा
आनन्द उदासी से वदल जाए। १० प्रभु
के साम्हने दीन वनो, तो वह तुम्हे शिरोमणि
वनाएगा ॥

११ हे भाइयो, एक दूसरे की वदनामी
न करो, जो अपने भाई की वदनामी करता
है, या भाई पर दोष लगाता है, वह व्यवस्था
की वदनामी करता है, और व्यवस्था पर
दोष लगाता है, और यदि तू व्यवस्था पर
दोष लगाता है, तो तू व्यवस्था पर चलने-
वाला नही, पर उस पर हाकिम ठहरा।
१२ व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो
एक ही है, जिसे वचाने और नाश करने की
सामर्थ है, तू कौन है, जो अपने पडोसी पर
दोष लगाता है ?

१३ तुम जो यह कहते हो, कि आज या
कल हम किसी और नगर मे जाकर वहा एक
वर्ष विताएगे, और व्योपार करके लाभ
उठाएगे। १४ और यह नही जानते कि
कल क्या होगा सुन तो लो, तुम्हारा जीवन
है ही क्या ? तुम तो मानो भाप समान हो,
जो थोडी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो
जाती है। १५ इस के विपरीत तुम्हे यह
कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम
जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी
करेंगे। १६ पर अव तुम अपनी डीग पर
घमण्ड करते हो, ऐसा सव घमण्ड वुरा
होता है। १७ इसलिये जो कोई भलाई
करना जानता है और नही करता, उसके
लिये यह पाप है ॥

५ हे धनवानो सुन तो लो, तुम अपने
आनेवाले क्लेशो पर चिल्लाकर रोओ।
२ तुम्हारा धन विगड गया और तुम्हारे
वस्त्रों को कीडे खा गए। ३ तुम्हारे सोने-
चान्दी मे काई लग गई है, और वह काई
तुम पर गवाही देगी, और आग की नाईं
तुम्हारा मास खा जाएगी तुम ने अन्तिम
युग में धन वटोरा है। ४ देखो, जिन
मजदूरो ने तुम्हारे खेत काटे, उन की वह
मजदूरी जो तुम ने धोखा देकर रख ली है
चिल्ला रही है, और लवनेवालो की दोहाई,
सेनाओ के प्रभु के कानो तक पहुच गई है।
५ तुम पृथ्वी पर भोग-विलास मे लगे रहे
और वडा ही सुख भोगा, तुम ने इस वध के
दिन के लिये अपने हृदय का पालन-पोषण
करके मोटा ताजा किया। ६ तुम ने धर्मी
को दोषी ठहराकर मार डाला, वह तुम्हारा
साम्हना नही करता ॥

७ सो हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक
धीरज धरो, देखो, गृहस्थ पृथ्वी के वहुमूल्य
फल की आशा रखता हुआ प्रथम और
अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।
८ तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय
को दृढ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन
निकट है। ९ हे भाइयो, एक दूसरे पर
दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो,
देखो, हाकिम द्वार पर खडा है। १० हे
भाइयो, जिन भविष्यद्वक्ताओ ने प्रभु के
नाम से वाते की, उन्हे दुख उठाने और
धीरज धरने का एक आदर्श समझो।
११ देखो, हम धीरज धरनेवालो को धन्य
कहते हैं तुम ने ऐयूव के धीरज के विषय
मे तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो
उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है,
जिस से प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया
प्रगट होती है ॥

१२ पर हे मेरे भाइयो, सब से श्रेष्ठ बात
यह है, कि शपथ न खाना, न स्वर्ग की,
न पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की, पर
तुम्हारी बातचीत हां की हां, और नहीं
की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न
ठहरो॥
१३ यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह
प्रार्थना करे यदि आनन्दित हो, तो वह
स्तुति के भजन गाए। १४ यदि तुम में
कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों *
को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर
तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें।
१५ और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा
रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर
खड़ा करेगा, और यदि उस ने पाप भी किए
हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।

* या प्रिसबुतिरों।

१६ इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के
साम्हने अपने अपने पापों को मान लो;
और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस
से चंगे हो जाओ, धर्मी जन की प्रार्थना
के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।
१७ एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-
सुख भोगी मनुष्य था; और उस ने गिड़गिड़ा
कर प्रार्थना की, कि मेंह न बरसे, और
साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह नहीं बरसा।
१८ फिर उस ने प्रार्थना की, तो आकाश से
वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई॥
१९ हे मेरे भाइयो, यदि तुम में कोई
सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उस
को फेर लाए। २० तो वह यह जान ले,
कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर
लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा,
और अनेक पापों पर परदा डालेगा॥

पतरस की पहिली पत्री

१ पतरस की ओर से जो यीशु मसीह
का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम,
जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पदुकिया, आसिया
और बिथुनिया में तित्तर बित्तर होकर रहते
हैं। २ और परमेश्वर पिता के भविष्य
ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के
द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के
लोहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं॥
तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति मिलती
रहे॥
३ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर
और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु
मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा,
अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के
लिये नया जन्म दिया। ४ अर्थात् एक
अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास
के लिये। ५ जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में
रखी है, जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ
से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये,
जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है,
की जाती है। ६ और इस कारण तुम
मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ
दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के
कारण उदास हो। ७ और यह इसलिये

है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो
आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं
अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट
होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर
का कारण ठहरे। ८ उस से तुम बिन
देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन
देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और
मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और
महिमा से भरा हुआ है। ९ और अपने
विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का
उद्धार प्राप्त करते हो। १० इसी उद्धार
के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत
ढूंढ़-ढांढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्हों ने
उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने
को था, भविष्यद्वाणी की थी। ११ उन्हों
ने इस बात की खोज की कि मसीह का
आत्मा जो उन में था, और पहिले ही से
मसीह के दुखों की और उन के बाद होने-
वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन
से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।
१२ उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे
अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिये ये
बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब
तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्हों ने पवित्र
आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया
तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को
स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा
रखते हैं॥

१३ इस कारण अपनी अपनी बुद्धि की
कमर बान्धकर, और सचेत रहकर उस
अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह
के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है।
१४ और आज्ञाकारी बालकों की नाईं
अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी
अभिलाषाओं के सदृश न बनो। १५ पर
जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही
तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र
बनो। १६ क्योंकि लिखा है, कि पवित्र
बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। १७ और जब
कि तुम, हे पिता, कहकर उस से प्रार्थना
करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम
के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी
होने का समय भय से बिताओ। १८ क्योंकि
तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-
चलन जो बापदादों से चला आता है उस से
तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात्
नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ।
१९ पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात्
मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।
२० उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के
पहिले ही से जाना गया था, पर अब इस
अन्तिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ।
२१ जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर
विश्वास करते हो, जिस ने उसे मरे हुओं में
से जिलाया, और महिमा दी, कि तुम्हारा
विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।
२२ सो जब कि तुम ने भाईचारे की
निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से
अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन
लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।
२३ क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर
अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और
सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म
पाया है। २४ क्योंकि हर एक प्राणी
घास की नाईं है, और उस की सारी शोभा
घास के फूल की नाईं है: घास सूख जाती
है, और फूल झड़ जाता है। २५ परन्तु
प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा:
और यह ही सुसमाचार का वचन है जो
तुम्हें सुनाया गया था॥

२ इसलिये सब प्रकार का बैरभाव
और छल और कपट और डाह और
बदनामी को दूर करके। २ नये जन्मे हुए
बच्चो की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की
लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार
पाने के लिये बढते जाओ। ३ यदि तुम ने
प्रभु की कृपा का स्वाद चख लिया है।
४ उसके पास आकर, जिसे मनुष्यो ने तो
निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर के निकट
चुना हुआ, और बहुमूल्य जीवता पत्थर है।
५ तुम भी आप जीवते पत्थरो की नाईं
आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजको
का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक
बलिदान चढाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा
परमेश्वर को ग्राह्य हैं। ६ इस कारण
पवित्र शास्त्र मे भी आया है, कि देखो,
मैं सिय्योन मे कोने के सिरे का चुना हुआ
और बहुमूल्य पत्थर धरता हू और जो
कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी
रीति से लज्जित नही होगा। ७ सो
तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो, वह तो
बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नही करते
उन के लिये * जिस पत्थर को राजमिस्त्रीयो
ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा
हो गया। ८ और ठेस † लगने का पत्थर
और ठोकर खाने की चटान हो गया है
क्योंकि वे तो वचन को न मानकर ठोकर
खाते हैं और इसी के लिये वे ठहराए भी
गए थे। ९ पर तुम एक चुना हुआ वंश,
और राज-पदधारी, याजको का समाज,
और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की)
निज प्रजा हो, इसलिये कि जिस ने तुम्हे
अन्धकार मे से अपनी अद्भुत ज्योति मे
बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। १० तुम
पहिले तो कुछ भी नही थे, पर अब परमेश्वर
की प्रजा हो तुम पर दया नही हुई थी
पर अब तुम पर दया हुई है॥

११ हे प्रियो मैं तुम से बिनती करता हू,
कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री
जानकर उन सासारिक अभिलाषाओ से
जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।
१२ अन्यजातियो मे तुम्हारा चालचलन
भला हो, इसलिये कि जिन जिन बातो मे
वे तुम्हे कुकर्मी जानकर बदनाम करते है,
वे तुम्हारे भले कामो को देखकर; उन्ही के
कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की
महिमा करे॥

१३ प्रभु के लिये मनुष्यो के ठहराए
हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन मे रहो,
राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है।
१४ और हाकिमो के, क्योंकि वे कुकर्मियो
को दण्ड देने और सुकर्मियो की प्रशसा के
लिये उसके भेजे हुए हैं। १५ क्योंकि
परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले
काम करने से निर्बुद्धि लोगो की अज्ञानता
की बातो को बन्द कर दो। १६ और
अपने आप को स्वतत्र जानो पर अपनी इस
स्वतत्रता को बुराई के लिये आड न बनाओ,
परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास
समझकर चलो। १७ सब का आदर करो,
भाइयो से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो,
राजा का सम्मान करो॥

१८ हे सेवको, हर प्रकार के भय *
के साथ अपने स्वामियो के आधीन रहो,
न केवल भलो और नम्रो के, पर कुटिलो के
भी। १९ क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का
विचार करके † अन्याय से दुख उठाता हुआ
क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है।

* भजन सहिता ११८ २२ को देखो।
† यशायाह ८ १४ को देखो।

* या आदर।
† यू० के विवेक या कानशन्स से।

२० क्योंकि यदि तुम ने अपराध करके घूसे
खाए और धीरज धरा, तो इस में क्या
बडाई की बात है? पर यदि भला काम
करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो,
तो यह परमेश्वर को भाता है। २१ और
तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि
मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हे
एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके
चिन्ह पर चलो। २२ न तो उस ने पाप
किया, और न उसके मुह से छल की कोई
बात निकली। २३ वह गाली सुनकर
गाली नही देता था, और दुख उठाकर किसी
को भी धमकी नही देता था, पर अपने आप
को सच्चे न्यायी के हाथ मे सौपता था।
२४ वह आप ही हमारे पापो को अपनी
देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ गया*,
जिस से हम पापो के लिये मर करके
धार्मिकता के लिये जीवन बिताए उसी के
मार खाने से तुम चगे हुए। २५ क्योंकि
तुम पहिले भटकी हुई भेडो की नाई थे,
पर अब अपने प्राणो के रखवाले और
अध्यक्ष † के पास फिर आ गए हो॥

३ हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के
आधीन रहो। २ इसलिये कि यदि
इन मे से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते
हो, तौभी तुम्हारे भय ‡ सहित पवित्र चाल-
चलन को देखकर बिना वचन के अपनी
अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिच
जाए। ३ और तुम्हारा सिगार दिखावटी
न हो, अर्थात् बाल गूथने, और सोने के गहने,
या भाति भाति के कपडे पहिनना। ४ वरन
तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व,
नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी
सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर
की दृष्टि में इसका मूल्य बडा है। ५ और
पूर्वकाल मे पवित्र स्त्रिया भी, जो परमेश्वर
पर आशा रखती थी, अपने आप को इसी
रीति से सवारती और अपने अपने पति के
आधीन रहती थी। ६ जैसे सारा इब्राहीम
की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती
थी सो तुम भी यदि भलाई करो, और
किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो
उस की बेटिया ठहरोगी॥

७ वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी
से पत्नियो के साथ जीवन निर्वाह करो
और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका
आदर करो, यह समझकर कि हम दोनो
जीवन के वरदान * के वारिस है, जिस से
तुम्हारी प्रार्थनाए रुक न जाए॥

८ निदान, सब के सब एक मन और
कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले,
और करुणामय, और नम्र बनो। ९ बुराई
के बदले बुराई मत करो, और न गाली के
बदले गाली दो, पर इस के विपरीत
आशीष ही दो क्योंकि तुम आशीष के
वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।
१० क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा
रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है,
वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने
होठो को छल की बात करने से रोके रहे।
११ वह बुराई का साथ छोडे, और भलाई
ही करे, वह मेल मिलाप को ढूढे, और उस-
के यत्न मे रहे। १२ क्योंकि प्रभु की आखें
धर्मियो पर लगी रहती है, और उसके कान
उन की बिनती की ओर लगे रहते है, परन्तु
प्रभु बुराई करनेवालो के विमुख रहता है॥

* या उस ने आप क्रूस पर हमारे पापों को अपनी देह पर उठा लिया।
† या बिशप। ‡ या आदर।

* यू० अनुग्रह।

दुख भुगत रहे है। १० अब परमेश्वर जो
सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हे
मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये
बुलाया, तुम्हारे थोडी देर तक दुख उठाने
के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और
बलवन्त करेगा। ११ उसी का समराज्य
युगानुयुग रहे। आमीन॥

१२ मै ने सिलवानस के हाथ, जिसे मै
विश्वासयोग्य भाई समझता हू, सक्षेप मे
लिखकर तुम्हे समझाया है और यह गवाही
दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही
है, इसी मे स्थिर रहो। १३ जो बाबुल में
तुम्हारी नाई चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा
पुत्र मरकुस तुम्हे नमस्कार कहते हैं।
१४ प्रेम से चुम्बन ले लेकर एक दूसरे को
नमस्कार करो॥

तुम सब को जो मसीह मे हो शान्ति
मिलती रहे॥

पतरस की दूसरी पत्री

१ शमौन पतरस की ओर से जो यीशु
मसीह का दास और प्रेरित है, उन
लोगो के नाम जिन्हो ने हमारे परमेश्वर
और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की धार्मिकता
से हमारा सा बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया
है। २ परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु
की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति
तुम में बहुतायत से बढती जाए। ३ क्योकि
उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन
और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमे उसी
की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमे
अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार
बुलाया है। ४ जिन के द्वारा उस ने हमे
बहुमूल्य और बहुत ही बडी प्रतिज्ञाए दी
है ताकि इन के द्वारा तुम उस सडाहट से
छूटकर जो ससार मे बुरी अभिलाषाओ से
होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो
जाओ। ५ और इसी कारण तुम सब
प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर
सद्गुण, और सद्गुण पर समझ। ६ और
समझ पर सयम, और सयम पर धीरज,
और धीरज पर भक्ति। ७ और भक्ति पर
भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की
प्रीति पर प्रेम बढाते जाओ। ८ क्योकि
यदि ये बाते तुम मे वर्तमान रहे, और बढती
जाए, तो तुम्हे हमारे प्रभु यीशु मसीह के
पहचानने मे निकम्मे और निष्फल न होने
देगी। ९ और जिस में ये बाते नही, वह
अन्धा है, और धुन्धला देखता है, और अपने
पूर्वकाली पापो से धुलकर शुद्ध होने को भूल
बैठा है। १० इस कारण हे भाइयो, अपने
बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को सिद्ध
करने का भली भाति यत्न करते जाओ,
क्योकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर
न खाओगे। ११ वरन इस रीति से तुम
हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के
अनन्त राज्य मे बडे आदर के साथ प्रवेश
करने पाओगे॥

१२ इसलिये यद्यपि तुम ये बाते जानते
हो, और जो सत्य वचन तुम्हे मिला है,

उम म बने रहते हो, तौभी म तुम्हे इन बातो
की सुधि दिलाने को सवदा तैयार रहूगा।
१३ और म यह अपने लिये उचित समझता
हू, कि जब तक म इस डेरे मे हू, तब तक
तुम्हे सुधि दिला दिलाकर उभारता रहू।
१४ क्योकि यह जानता हू, कि मसीह के
वचन के अनुसार मेरे डेरे के गिराए जाने
का समय शीघ्र आनेवाला है। १५ इस-
लिये म ऐसा यत्न करूगा, कि मेरे कूच
करने के बाद तुम इन सब बातो को सर्वदा
स्मरण कर सको। १६ क्योकि जब हम ने
तुम्हे अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का,
और आगमन का समाचार दिया था तो
वह चतुराई से गढी हुई कहानियो का
अनुकरण नही किया था वरन हम ने आप
ही उसके प्रताप को देखा था। १७ कि
उस ने परमेश्वर पिता से आदर, और
महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से
यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है,
जिस से में प्रसन्न हू। १८ और जब हम
उसके साथ पवित्र पहाड पर थे, तो स्वर्ग से
यही वाणी आते सुना। १९ और हमारे
पास जो भविष्यद्वक्ताओ का वचन है, वह
इस घटना से दृढ ठहरा और तुम यह अच्छा
करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान
करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे
स्थान मे उस समय तक प्रकाश देता रहता
है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का
तारा तुम्हारे हृदयो में न चमक उठे।
२० पर पहिले यह जान लो कि पवित्र
शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के
अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण
नही होती। २१ क्योकि कोई भी
भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नही
हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा
उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते
थे॥

२ और जिस प्रकार उन लोगो में
झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम
में भी झूठे उपदेशक होगे, जो नाश करने-
वाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर
करेंगे और उस स्वामी का जिस ने उन्हें
मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आप
को शीघ्र विनाश में डाल देगे। २ और
बहुतेरे उन की नाई लुचपन करेंगे, जिन के
कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी।
३ और वे लोभ के लिये बातें गढकर तुम्हें
अपने लाभ का कारण बनाएगे, और जो
दण्ड की आज्ञा उन पर पहिले से हो चुकी
है, उसके आने मे कुछ भी देर नही, और उन
का विनाश ऊघता नही। ४ क्योकि जब
परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतो को जिन्हो ने
पाप किया नही छोडा, पर नरक में भेजकर
अन्धेरे कुण्डो में डाल दिया, ताकि न्याय के
दिन तक बन्दी रहे। ५ और प्रथम युग के
ससार को भी न छोडा, वरन भक्तिहीन
ससार पर महा जल-प्रलय भेजकर धर्म के
प्रचारक नूह समेत आठ व्यक्तियो को बचा
लिया। ६ और सदोम और अमोराह के
नगरो को विनाश का ऐसा दण्ड दिया,
कि उन्हें भस्म करके राख में मिला दिया
ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगो की
शिक्षा के लिये एक दृष्टान्त बनें। ७ और
धर्मी लूत को जो अधर्मियो के अशुद्ध चाल-
चलन से बहुत दुखी था छुटकारा दिया।
८ (क्योकि वह धर्मी उन के बीच में रहते
हुए, और उन के अधर्म के कामो को देख
देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने
सच्चे मन को पीडित करता था)। ९ तो
प्रभु भक्तो को परीक्षा में से निकाल लेना

और अधर्मियो को न्याय के दिन तक दण्ड
की दशा मे रखना भी जानता है। १० निज
करके उन्हे जो अशुद्ध अभिलाषाओ के पीछे
शरीर के अनुसार चलते, और प्रभुता को
तुच्छ जानते है वे ढीठ, और हठी है,
और ऊचे पदवालो को बुरा भला कहने से
नही डरते। ११ तौभी स्वर्गदूत जो शक्ति
और सामर्थ में उन से बडे है, प्रभु के साम्हने
उन्हे बुरा भला कहकर दोष नही लगाते।
१२ पर ये लोग निर्बुद्धि पशुओ ही के तुल्य
है, जो पकडे जाने और नाश होने के लिये
उत्पन्न हुए है, और जिन बातो को जानते
ही नही, उन के विषय मे औरो को बुरा
भला कहते है, वे अपनी सडाहट मे आप ही
सड जाएगे। १३ औरो का बुरा करने के
बदले उन्ही का बुरा होगा उन्हे दिन
दोपहर सुख-विलास करना भला लगता है,
यह कलक और दोष है जब वे तुम्हारे
साथ खाते-पीते है, तो अपनी ओर से
प्रेम भोज करके भोग-विलास करते है।
१४ उन की आखो मे व्यभिचारिणी बसी
हुई है, और वे पाप किए बिना रुक नही
सकते वे चचल मनवालो को फुसला लेते
है, उन के मन को लोभ करने का अभ्यास
हो गया है, वे सन्ताप के सन्तान है। १५ वे
सीधे मार्ग को छोडकर भटक गए है, और
बओर के पुत्र बिलाम के मार्ग पर हो लिए
है, जिस ने अधर्म की मजदूरी को प्रिय
जाना। १६ पर उसके अपराध के विषय
में उलहना दिया गया, यहा तक कि अबोल
गदही ने मनुष्य की बोली से उस
भविष्यद्वक्ता को उसके बावलेपन से रोका।
१७ ये लोग अन्धे कूए, और आन्धी के
उडाए हुए बादल है, उन के लिये अनन्त
अन्धकार ठहराया गया है। १८ वे व्यर्थ
घमण्ड की बातें कर करके लुचपन के कामो
के द्वारा, उन लोगो को शारीरिक अभि-
लाषाओ मे फसा लेते है, जो भटके हुओ मे से
अभी निकल ही रहे है। १९ वे उन्हें
स्वतन्त्र होने की प्रतिज्ञा तो देते है, पर
आप ही सडाहट के दास है, क्योकि जो
व्यक्ति जिस से हार गया है, वह उसका
दास बन जाता है। २० और जब वे प्रभु
और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की पहचान के
द्वारा ससार की नाना प्रकार की अशुद्धता
से बच निकले, और फिर उन में फसकर
हार गए, तो उन की पिछली दशा पहिली
से भी बुरी हो गई है। २१ क्योकि धर्म के
मार्ग का न जानना ही उन के लिये इस से
भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र
आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हे सौंपी गई
थी। उन पर यह कहावत * ठीक बैठती है,
२२ कि कुत्ता अपनी छाट की ओर और
धोई हुई सूअरनी कीचड मे लोटने के लिये
फिर चली जाती है॥

३ हे प्रियो, अब मैं तुम्हे यह दूसरी
पत्री लिखता हू, और दोनो मे सुधि
दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हू।
२ कि तुम उन बातो को, जो पवित्र
भविष्यद्वक्ताओ ने पहिले से कही है और
प्रभु, और उद्धारकर्त्ता की उस आज्ञा को
स्मरण करो, जो तुम्हारे प्रेरितो के द्वारा
दी गई थी। ३ और यह पहिले जान लो,
कि अन्तिम दिनो मे हसी ठट्ठा करनेवाले
आएगे, जो अपनी ही अभिलाषाओ के
अनुसार चलेगे। ४ और कहेगे, उसके आने
की प्रतिज्ञा कहा गई? क्योकि जब से बाप-
दादे सो गए है, सब कुछ वैसा ही है, जैसा
सृष्टि के आरम्भ से था? ५ वे तो जान
बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन

* या दृष्टान्त।

के द्वारा से आकाश प्राचीन काल से वर्तमान
हैं और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में
स्थिर है। ६ इन्ही के द्वारा उस युग का
जगत जल मे डूब कर नाश हो गया।
७ पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी
उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे हैं, कि
जलाए जाए, और वह भक्तिहीन मनुष्यों
के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही
रखे रहेंगे॥

८ हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी
न रहे, कि प्रभु के यहा एक दिन हजार वर्ष
के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के
बराबर हैं। ९ प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के
विषय मे देर नही करता, जैसी देर कितने
लोग समझते हैं, पर तुम्हारे विषय मे
धीरज धरता है, और नही चाहता, कि
कोई नाश हो, वरन यह कि सब को मन
फिराव का अवसर मिले। १० परन्तु प्रभु
का दिन चोर की नाई आ जाएगा, उस दिन
आकाश बडी हडहडाहट के शब्द से जाता
रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल
जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम
जल जाएंगे। ११ तो जब कि ये सब
वस्तुए, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो
तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति मे कैसे
मनुष्य होना चाहिए। १२ और परमेश्वर
के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना
चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा
यत्न करना चाहिए, जिस के कारण
आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश
के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे।
१३ पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम
एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस
देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी॥

१४ इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम
इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो
कि तुम शान्ति से उसके साम्हने निष्कलंक
और निर्दोष ठहरो। १५ और हमारे प्रभु
के धीरज को उद्धार समझो, जैसे हमारे
प्रिय भाई पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार
जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। १६ वैसे
ही उस ने अपनी सब पत्रियो मे भी इन
बातो की चर्चा की है जिन मे कितनी ब
ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, अ
अनपढ और चंचल लोग उन के अर्थो
भी पवित्र शास्त्र की और बातो की न
खींच तानकर अपने ही नाश का कार
बनाते हैं। १७ इसलिये हे प्रियो तु
लोग पहिले ही से इन बातो को जानक
चौकस रहो, ताकि अधर्मियो के भ्रम
फसकर अपनी स्थिरता को हाथ से कहीं
खो न दो। १८ पर हमारे प्रभु, और
उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और
पहचान मे बढते जाओ। १९ उसी की
महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती
रहे। आमीन॥

यूहन्ना की पहिली पत्री

१ उस जीवन के वचन के विषय में
जो आदि से था, जिसे हम ने सुना,
और जिसे अपनी आंखो से देखा, वरन जिसे
हम ने ध्यान से देखा, और हाथो से छूआ।

(यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने
से देखा, और उस की गवाही देते है,
ौर तुम्हे उस अनन्त जीवन का समाचार
ते है, जो पिता के साथ था, और हम पर
गट हुआ)। ३ जो कुछ हम ने देखा
ौर सुना है उसका समाचार तुम्हे भी देते
है, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी
हो, और हमारी यह सहभागिता पिता के
साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ
है। ४ और ये बाते हम इसलिये लिखते
है, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए॥

५ जो समाचार हम ने उस से सुना,
और तुम्हे सुनाते है, वह यह है, कि परमे-
श्वर ज्योति है और उस मे कुछ भी
अन्धकार नही। ६ यदि हम कहे, कि
उसके साथ हमारी सहभागिता है, और
फिर अन्धकार मे चले, तो हम झूठे है
और सत्य पर नही चलते। ७ पर यदि
जैसा वह ज्योति मे है, वैसे ही हम भी ज्योति
मे चले, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते
है, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमे सब
पापो से शुद्ध करता है। ८ यदि हम कहे,
कि हम मे कुछ भी पाप नही, तो अपने आप
को धोखा देते है और हम मे सत्य नही।
९ यदि हम अपने पापो को मान ले, तो
वह हमारे पापो को क्षमा करने, और हमे
सब अधर्म से शुद्ध करने मे विश्वासयोग्य
और धर्मी है। १० यदि कहे कि हम ने
पाप नही किया, तो उसे झूठा ठहराते है,
और उसका वचन हम मे नही है॥

२ हे मेरे बालको, मै ये बाते तुम्हे
इसलिये लिखता हू, कि तुम पाप न
करो, और यदि कोई पाप करे, तो पिता
के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात्
धार्मिक यीशु मसीह। २ और वही हमारे
पापो का प्रायश्चित्त है और केवल हमारे
ही नही, वरन सारे जगत के पापो का भी।
३ यदि हम उस की आज्ञाओ को मानेगे,
तो इस से हम जान लेगे कि हम उसे जान
गए है। ४ जो कोई यह कहता है, कि मै
उसे जान गया हू, और उस की आज्ञाओ को
नही मानता, वह झूठा है, और उस मे
सत्य नही। ५ पर जो कोई उसके वचन
पर चले, उस मे सचमुच परमेश्वर का प्रेम
सिद्ध हुआ है हमे इसी से मालूम होता है,
कि हम उस मे है। ६ जो कोई यह कहता
है, कि मै उस मे बना रहता हू, उसे चाहिए,
कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता
था॥

७ हे प्रियो, मै तुम्हे कोई नई आज्ञा
नही लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो
आरम्भ से तुम्हे मिली है, यह पुरानी आज्ञा
वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है। ८ फिर
मै तुम्हे नई आज्ञा लिखता हू, और यह तो
उस मे और तुम मे सच्ची ठहरती है,
क्योकि अन्धकार मिटता जाता है और
सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है।
९ जो कोई यह कहता है, कि मै ज्योति मे
हू, और अपने भाई से बैर रखता है, वह
अब तक अन्धकार ही मे है। १० जो कोई
अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति मे
रहता है, और ठोकर नही खा सकता।
११ पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता
है, वह अन्धकार मे है, और अन्धकार मे
चलता है, और नही जानता, कि कहा
जाता है, क्योकि अन्धकार ने उस की आखे
अन्धी कर दी है॥

१२ हे बालको, मै तुम्हे इसलिये लिखता
हू, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा
हुए। १३ हे पितरो, मै तुम्हे इसलिये
लिखता हू, कि जो आदि से है, तुम उसे

जानते हो हे जवानो, मैं तुम्हें इसलिये
लिखता हूं, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय
पाई है हे लड़को, मैं ने तुम्हें इसलिये
लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो।
१४ हे पितरो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा
है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए
हो हे जवानो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा
है, कि तुम बलवन्त हो, और परमेश्वर का
वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने
उस दुष्ट पर जय पाई है। १५ तुम न तो
संसार से और न संसार में की वस्तुओं से
प्रेम रखो यदि कोई संसार से प्रेम रखता
है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।
१६ क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात्
शरीर की अभिलाषा, और आंखों की
अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह
पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की
ओर से है। १७ और संसार और उस की
अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो
परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह
सर्वदा बना रहेगा॥

१८ हे लड़को, यह अन्तिम समय है,
और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का
विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब
भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं,
इस से हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय
है। १९ वे निकले तो हम ही में से, पर
हम में के थे नहीं, क्योंकि यदि हम में के
होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल
इसलिये गए कि यह प्रगट हो कि वे सब
हम में के नहीं हैं। २० और तुम्हारा तो
उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम
सब कुछ* जानते हो। २१ मैं ने तुम्हें
इसलिये नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं
जानते, पर इसलिये, कि उसे जानते हो,
और इसलिये कि कोई झूठ, सत्य की ओर
से नहीं। २२ झूठा कौन है? केवल वह,
जो यीशु के मसीह होने से इन्कार करता
है, और मसीह का विरोधी वही है, जो
पिता का और पुत्र का इन्कार करता है।
२३ जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके
पास पिता भी नहीं जो पुत्र को मान लेता
है, उसके पास पिता भी है। २४ जो कुछ
तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना
रहे जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि
वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में,
और पिता में बने रहोगे। २५ और
जिस की उस ने हम से प्रतिज्ञा की वह
अनन्त जीवन है। २६ मैं ने ये बातें तुम्हें
उन के विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते
हैं। २७ और तुम्हारा वह अभिषेक, जो
उस की ओर से किया गया, तुम में बना
रहता है, और तुम्हें इस का प्रयोजन नहीं,
कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन जैसे वह
अभिषेक जो उस की ओर से किया गया
तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा
है, और झूठा नहीं और जैसा उस ने
तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने
रहते हो। २८ निदान, हे बालको, उस में
बने रहो, कि जब वह प्रगट हो, तो हमें
हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके
साम्हने लज्जित न हों। २९ यदि तुम
जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी
जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता
है, वह उस से जन्मा है॥

३ देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम
किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान
कहलाएं, और हम हैं भी इस कारण
संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे

---

* या तुम सब के सब जानते हो।

भी नही जाना। २ हे प्रियो, अभी हम
परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह
प्रगट नही हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे।
इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो
हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को
वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। ३ और जो
कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने
आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह
पवित्र है। ४ जो कोई पाप करता है,
वह व्यवस्था का विरोध करता है, और
पाप तो व्यवस्था का विरोध है। ५ और
तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ,
कि पापों को हर ले जाए, और उसके
स्वभाव में पाप नही। ६ जो कोई उस में
बना रहता है, वह पाप नही करता: जो
कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा
है, और न उस को जाना है। ७ हे बालको,
किसी के भरमाने में न आना, जो धर्म के
काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है।
८ जो कोई पाप करता है, वह शैतान*
की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही
से पाप करता आया है: परमेश्वर का
पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतान के
कामों को नाश करे। ९ जो कोई परमेश्वर
से जन्मा है वह पाप नही करता, क्योंकि
उसका बीज उस में बना रहता है: और
वह पाप कर ही नही सकता, क्योंकि
परमेश्वर से जन्मा है। १० इसी से
परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की
सन्तान जाने जाते हैं, जो कोई धर्म के
काम नही करता, वह परमेश्वर से नही,
और न वह, जो अपने भाई से प्रेम नही
रखता। ११ क्योंकि जो समाचार तुम ने
आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक
दूसरे से प्रेम रखें। १२ और कैन के समान
न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिस ने
अपने भाई को घात किया: और उसे किस
कारण घात किया? इस कारण कि
उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम
धर्म के थे॥

१३ हे भाइयो, यदि संसार तुम से बैर
करता है तो अचम्भा न करना। १४ हम
जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन
में पहुंचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम
रखते हैं: जो प्रेम नही रखता, वह मृत्यु
की दशा में रहता है। १५ जो कोई अपने
भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है,
और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में
अनन्त जीवन नही रहता। १६ हम ने
प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिये
अपने प्राण दे दिए, और हमें भी भाइयों
के लिये प्राण देना चाहिए। १७ पर जिस
किसी के पास संसार की संपत्ति हो और
वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर
तरस खाना न चाहे, तो उस में परमेश्वर
का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?
१८ हे बालको, हम वचन और जीभ ही
से नही, पर काम और सत्य के द्वारा भी
प्रेम करें। १९ इसी से हम जानेंगे, कि
हम सत्य के हैं, और जिस बात में हमारा
मन हमें दोष देगा, उसके विषय में हम
उसके साम्हने अपने अपने मन को ढाढ़स दे
सकेंगे। २० क्योंकि परमेश्वर हमारे मन
से बड़ा है, और सब कुछ जानता है।
२१ हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न
दे, तो हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव
होता है। २२ और जो कुछ हम मांगते
हैं, वह हमें उस से मिलता है, क्योंकि हम
उस की आज्ञाओं को मानते हैं, और जो
उसे भाता है वही करते हैं। २३ और

* यू० इब्लीस।

उस की आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र
यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और
जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार
आपस में प्रेम रखें। २४ और जो उस की
आज्ञाओं को मानता है, वह इस में, और
यह उस में बना रहता है और इसी से,
अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया
है, हम जानते है, कि वह हम में बना
रहता है॥

४ हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति
न करो वरन आत्माओं को परखो,
कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं,
क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में
निकल खड़े हुए हैं। २ परमेश्वर का
आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो,
कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु
मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर
की ओर से है। ३ और जो कोई आत्मा
यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की
ओर से नहीं, और वही तो मसीह के
विरोधी की आत्मा है, जिस की चर्चा तुम
सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है और
अब भी जगत में है। ४ हे बालको, तुम
परमेश्वर के हो और तुम ने उन पर जय
पाई है, क्योंकि जो तुम में है, वह उस से
जो संसार में है, बड़ा है। ५ वे संसार के
हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते
हैं, और संसार उन की सुनता है। ६ हम
परमेश्वर के हैं जो परमेश्वर को जानता
है, वह हमारी सुनता है, जो परमेश्वर को
नहीं जानता वह हमारी नहीं सुनता,
इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम
की आत्मा को पहचान लेते हैं॥

७ हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें,
क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो
कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा
है, और परमेश्वर को जानता है। ८ जो
प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं
जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। ९ जो
प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से
प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते
पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके
द्वारा जीवन पाएं। १० प्रेम इस में नहीं,
कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर
इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया,
और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये
अपने पुत्र को भेजा। ११ हे प्रियो, जब
परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो
हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
१२ परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं
देखा, यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो
परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका
प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। १३ इसी से
हम जानते हैं, कि हम उस में बने रहते हैं,
और वह हम में, क्योंकि उस ने अपने
आत्मा में से हमें दिया है। १४ और हम ने
देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि
पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता करके
भेजा है। १५ जो कोई यह मान लेता है,
कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर
उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर
में। १६ और जो प्रेम परमेश्वर हम से
रखता है, उस को हम जान गए, और हमें
उस की प्रतीति है, परमेश्वर प्रेम है
और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर
में बना रहता है, और परमेश्वर उस में
बना रहता है। १७ इसी से प्रेम हम में
सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो,
क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम
भी हैं। १८ प्रेम में भय नहीं होता, वरन
सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि

भय से कष्ट होता है, और जो भय करता
है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। १९ हम
इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने
हम से प्रेम किया। २० यदि कोई कहे,
कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं, और
अपने भाई से बैर रखे, तो वह झूठा है
क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उस ने
देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर
से भी जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख
सकता। २१ और उस से हमें यह आज्ञा
मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम
रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे॥

५ जिसका यह विश्वास है कि यीशु
ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न
हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से
प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है,
जो उस से उत्पन्न हुआ है। २ जब हम
परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की
आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते
हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते
हैं। ३ और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि
हम उस की आज्ञाओं को मानें, और
उस की आज्ञाएं कठिन नहीं। ४ क्योंकि
जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह
संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह
विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती
है हमारा विश्वास है। ५ संसार पर जय
पानेवाला कौन है? केवल वह जिस का
यह विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का
पुत्र है। ६ यही है वह, जो पानी और
लोहू के द्वारा आया था, अर्थात् यीशु
मसीह वह न केवल पानी के द्वारा, वरन
पानी और लोहू दोनों के द्वारा * आया था।
७ और जो गवाही देता है, वह आत्मा
है, क्योंकि आत्मा सत्य है। ८ और
गवाही देनेवाले तीन हैं, आत्मा, और
पानी, और लोहू, और तीनों एक ही बात
पर सहमत हैं। ९ जब हम मनुष्यों की
गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही
तो उस से बढ़कर है, और परमेश्वर की
गवाही यह है, कि उस ने अपने पुत्र के विषय
में गवाही दी है। १० जो परमेश्वर के
पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में
गवाही रखता है, जिस ने परमेश्वर की
प्रतीति नहीं की, उस ने उसे झूठा ठहराया;
क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास
नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के
विषय में दी है। ११ और वह गवाही
यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन
दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में
है। १२ जिस के पास पुत्र है, उसके पास
जीवन है, और जिस के पास परमेश्वर
का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं
है॥

१३ मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के
नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा
है, कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा
है। १४ और हमें उसके साम्हने जो
हियाव होता है, वह यह है, कि यदि हम
उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं,
तो वह हमारी सुनता है। १५ और जब
हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह
हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं,
कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया
है। १६ यदि कोई अपने भाई को ऐसा
पाप करते देखे, जिस का फल मृत्यु न हो,
तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उन के
लिये, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का
फल मृत्यु न हो, जीवन देगा पाप ऐसा
भी होता है, जिस का फल मृत्यु है इस के

* यू० में।

विषय में मै विनती करने के लिये नही
कहता। १७ सब प्रकार का अधर्म तो पाप
है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिस का फल
मृत्यु नही॥

१८ हम जानते है, कि जो कोई
परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नही
करता, पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ,
उसे वह बचाए रखता है और वह दुष्ट
उसे छूने नही पाता। १९ हम जानते है,
कि हम परमेश्वर से है, और सारा ससार
उस दुष्ट के वश में पडा है। २० और यह
भी जानते है, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया
है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस
सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो
सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में
रहते है सच्चा परमेश्वर और अनन्त
जीवन यही है। २१ हे बालको, अपने आप
को मूरतों से बचाए रखो॥

यूहन्ना की दूसरी पत्री

१ मुझ प्राचीन * की ओर से उस चुनी
हुई श्रीमती और उसके लडकेबालो के
नाम जिन से मैं उस सच्चाई के कारण
सत्य प्रेम रखता हू, जो हम मे स्थिर रहती
है, और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगी।
२ और केवल मैं ही नही, वरन वह सब भी
प्रेम रखते है, जो सच्चाई को जानते है॥

३ परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र
यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, और दया,
और शान्ति, सत्य, और प्रेम सहित हमारे
साथ रहेगे॥

४ मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैं ने
तेरे कितने लडके-बालो को उस आज्ञा के
अनुसार, जो हमे पिता की ओर से मिली
थी सत्य पर चलते हुए पाया। ५ अब हे
श्रीमती, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नही, पर
वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता
हू, और तुझ से विनती करता हू, कि हम
एक दूसरे से प्रेम रखें। ६ और प्रेम यह है,
कि हम उस की आज्ञाओ के अनुसार चलें
यह वही आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से
सुनी है और तुम्हे इस पर चलना भी
चाहिए। ७ क्योकि बहुत से ऐसे भरमाने-
वाले जगत मे निकल आए है, जो यह नही
मानते, कि यीशु मसीह शरीर मे होकर
आया भरमानेवाला और मसीह का
विरोधी यही है। ८ अपने विषय मे
चौकस रहो, कि जो परिश्रम हम ने किया
है, उस को तुम न बिगाडो वरन उसका
पूरा प्रतिफल पाओ। ९ जो कोई आगे
बढ जाता है, और मसीह की शिक्षा मे बना
नही रहता, उसके पास परमेश्वर नही
जो कोई उस की शिक्षा मे स्थिर रहता है,
उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।
१० यदि कोई तुम्हारे पास आए, और
यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो,
और न नमस्कार करो। ११ क्योकि जो
कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह
उस के बुरे कामो में साझी होता है॥

---

* या प्रिसबुतिर।

१२ मुझे बहुत सी बातें तुम्हे लिखनी हैं, पर कागज और सियाही से लिखना नही चाहता, पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और सम्मुख होकर बातचीत करूंगा: जिस से तुम्हारा* आनन्द पूरा हो। १३ तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के-बाले तुझे नमस्कार करते हैं॥

* या हमारा।

यूहन्ना की तीसरी पत्री

१ मुझ प्राचीन* की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा† प्रेम रखता हूं॥

२ हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातो में उन्नति करे, और भला चंगा रहे। ३ क्योंकि जब भाइयो ने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। ४ मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नही, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं॥

५ हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयो के साथ करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाईं करता है। ६ उन्हो ने मण्डली के साम्हने तेरे प्रेम की गवाही दी थी यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगो के लिये उचित है तो अच्छा करेगा। ७ क्योंकि वे उस नाम के लिये निकले हैं, और अन्य-जातियो से कुछ नही लेते। ८ इसलिये ऐसो का स्वागत करना चाहिए, जिस से हम भी सत्य के पक्ष मे उन के सहकर्मी हों॥

९ मैं ने मण्डली को कुछ लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है, हमे ग्रहण नही करता। १० सो जब मैं आऊंगा, तो उसके कामो की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बाते बकता है; और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयो को ग्रहण नही करता, और उन्हे जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है. और मण्डली से निकाल देता है। ११ हे प्रिय, बुराई के नही, पर भलाई के अनुयायी हो, जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है, पर जो बुराई करता है, उस ने परमेश्वर को नही देखा। १२ देमेत्रियुस के विषय में सब ने वरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी: और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है, कि हमारी गवाही सच्ची है॥

१३ मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो था, पर सियाही और कलम से लिखना नही चाहता। १४ पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूंगा तब हम आम्हने

* या प्रिसबुतिर।
† या सत्य में प्रेम।

साम्हने बातचीत करेंगे तुझे शान्ति मिलती
रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते
हैं वहां के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार
कह देना॥

यहूदा की पत्री

१ यहूदा की ओर से जो यीशु
मसीह का दास और याकूब का भाई
है, उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर
पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिये
सुरक्षित हैं॥

२ दया और शान्ति और प्रेम तुम्हें
बहुतायत से प्राप्त होता रहे॥

३ हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार
के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से
प्रयत्न कर रहा था, जिस में हम सब
सहभागी हैं, तो मैं ने तुम्हें यह समझाना
आवश्यक जाना कि उस विश्वास के
लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों
को एक ही बार सौंपा गया था। ४ क्योंकि
कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ
मिले हैं, जिन के इस दण्ड का वर्णन
पुराने समय में पहिले ही से लिखा गया
था ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर
के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं,
और हमारे अद्वैत स्वामी और प्रभु यीशु
मसीह का इन्कार करते हैं॥

५ पर यद्यपि तुम सब बात एक
बार जान चुके हो, तौभी मैं तुम्हें इस
बात की सुधि दिलाना चाहता हूं, कि
प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने
के बाद विश्वास न लानेवालों को नाश
कर दिया। ६ फिर जो स्वर्गदूतों ने
अपने पद को स्थिर न रखा वरन अपने
निज निवास को छोड़ दिया, उस ने
उन को भी उस भीषण दिन के न्याय
के लिये अन्धकार में जो सदा काल के
लिये है बन्धनों में रखा है। ७ जिस
रीति से सदोम और अमोरा और उन के
आस पास के नगर, जो इन की नाईं
व्यभिचारी हो गए थे और पराये शरीर
के पीछे लग गए थे आग के अनन्त
दण्ड में पड़कर दृष्टान्त ठहरे हैं। ८ उसी
रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने अपने
शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को
तुच्छ जानते हैं, और ऊंचे पदवालों को
बुरा भला कहते हैं। ९ परन्तु प्रधान
स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान* से
मूसा की लोथ के विषय में वाद-विवाद
करता था, तो उस को बुरा भला कहके
दोष लगाने का साहस न किया, पर
यह कहा, कि प्रभु तुझे डांटे। १० पर
ये लोग जिन बातों को नहीं जानते,
उन को बुरा भला कहते हैं, पर जिन
बातों को अचेतन पशुओं की नाईं स्वभाव
ही से जानते हैं, उन में अपने आप को
नाश करते हैं। ११ उन पर हाय!

* यू० इब्लीस।

कि वे कैन की सी चाल चले, और
मजदूरी के लिये बिलाम की नाईं भ्रष्ट
हो गए है और कोरह की नाईं विरोध
करके नाश हुए हैं। १२ ये तुम्हारी
प्रेम सभाओ मे तुम्हारे साथ खाते-पीते,
समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं,
और बेधडक अपना ही पेट भरनेवाले
रखवाले है,, वे निर्जल बादल हैं, जिन्हें
हवा उडा ले जाती है, पतझड के निष्फल
पेड है, जो दो बार मर चुके हैं, और
जड से उखड गए हैं। १३ ये समुद्र
के प्रचण्ड हिलकोरे हैं, जो अपनी लज्जा
का फेन उछालते हैं ये डावाडोल तारे
हैं, जिन के-लिये सदा काल तक घोर
अन्धकार रखा गया है। १४ और हनोक
ने भी जो आदम से सातवी पीढी में
था, इन के विषय मे यह भविष्यद्वाणी
की, कि देखो, प्रभु अपने लाखो पवित्रो
के साथ आया। १५ कि सब का न्याय
करे, और सब भक्तिहीनो को उन के
अभक्ति के सब कामो के विषय मे, जो
उन्हो ने भक्तिहीन होकर किए हैं, और
उन सब कठोर बातो के विषय मे जो
भक्तिहीन पापियो ने उसके विरोध में कही
हैं, दोषी ठहराए। १६ ये तो असंतुष्ट,
कुडकुडानेवाले, और अपने अभिलाषाओ
के अनुसार चलनेवाले है, और अपने मुह
से घमण्ड की बाते बोलने हैं, और वे
लाभ के लिये मुह देखी बडाई किया
करते हैं।।

१७ पर हे प्रियो, तुम उन बातो को
स्मरण रखो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह
के प्रेरित पहिले कह चुके हैं। १८ वे
तुम से कहा करते थे, कि पिछले दिनो में
ऐसे ठट्ठा करनेवाले होंगे, जो अपनी
अभक्ति के अभिलाषाओ के अनुसार
चलेंगे। १९ ये तो वे हैं, जो फूट डालते
हैं, ये शारीरिक लोग हैं, जिन में आत्मा
नही। २० पर हे प्रियो, तुम अपने
अति पवित्र विश्वास मे अपनी उन्नति
करते हुए और पवित्र आत्मा मे प्रार्थना
करते हुए। २१ अपने आप को परमेश्वर
के प्रेम में बनाए रखो, और अनन्त
जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह
की दया की आशा देखते रहो। २२ और
उन पर जो शंका में हैं दया करो।
२३ और बहुतों को आग में से झपटकर
निकालो, और बहुतो पर भय के साथ
दया करो, वरन उस वस्त्र से भी घृणा
करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो
गया है।।

२४ अब जो तुम्हें ठोकर खाने से
बचा सकता है, और अपनी महिमा की
भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष
करके खडा कर सकता है। २५ उस
अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता की
महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और
अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के
द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी
हो और युगानुयुग रहे। आमीन।।

यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य

१ यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य
जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया,
कि अपने दासो को वे वाते, जिन का
शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए और
उस ने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके
द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया।
२ जिस ने परमेश्वर के वचन और
यीशु मसीह की गवाही, अर्थात् जो
कुछ उस ने देखा था उस की गवाही
दी। ३ धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी
के वचन को पढता है, और वे जो सुनते
ह और इस मे लिखी हुई वातो को मानते
हैं, क्योकि समय निकट आया है॥

४ यूहन्ना की ओर से आसिया की
सात कलीसियाओ के नाम उस की
ओर से जो है, और जो था, और जो
आनेवाला है, और उन सात आत्माओ
की ओर से, जो उसके सिहासन के
साम्हने ह। ५ और यीशु मसीह की
ओर से, जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे
हुओ मे से जी उठनेवालो मे पहिलौठा,
और पृथ्वी के राजाओ का हाकिम
है, तुम्हे अनुग्रह और शान्ति मिलती
रहे जो हम से प्रेम रखता है, और
जिस ने अपने लोहू के द्वारा हमे पापो
से छुडाया है। ६ और हमे एक राज्य
और अपने पिता परमेश्वर के लिये
याजक भी बना दिया, उसी की महिमा
और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन।
७ देखो, वह बादलो के साथ आनेवाला
है, और हर एक आख उसे देखेगी,
वरन जिन्हो ने उसे बेधा था, वे भी
उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके
कारण छाती पीटेंगे। हा। आमीन॥

८ प्रभु परमेश्वर वह जो है, और
जो था, और जो आनेवाला है, जो
सर्वशक्तिमान है यह कहता है, कि मैं
ही अल्फा और ओमिगा हू॥

९ मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई, और
यीशु के क्लेश, और राज्य, और धीरज
मे तुम्हारा सहभागी हू, परमेश्वर के
वचन, और यीशु की गवाही के कारण
पतमुस नाम टापू मे था। १० कि मैं
प्रभु के दिन आत्मा मे आ गया, और
अपने पीछे तुरही का सा बडा शब्द
यह कहते सुना। ११ कि जो कुछ तू
देखता है, उसे पुस्तक मे लिखकर सातो
कलीसियाओ के पास भेज दे, अर्थात्
इफिसुम और स्मुरना, और पिरगमुन,
और थूआतीरा, और सरदीस, और
फिलदिलफिया, और लौदीकिया में।
१२ और म ने उसे* जो मुझ से बोल
रहा था, देखने के लिये अपना मुह
फेरा, और पीछे घूमकर म ने सोने
की सात दीवटे देखी। १३ और उन
दीवटो के बीच मे मनुष्य के पुत्र सरीखा
एक पुरुष को देखा, जो पावो तक का
वस्त्र पहिने, और छाती पर सुनहला
पटुका बान्धे हुए था। १४ उसके सिर
और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से
उज्ज्वल थे, और उस की आखें आग
की ज्वाला की नाई थी। १५ और

---

* यू० उस शब्द को।

उसके पाव उत्तम पीतल के समान थे
जो मानो भट्टी में तपाए गए हो, और
उसका शब्द वहुत जल के शब्द की नाईं
था। १६ और वह अपने दहिने हाथ में
सात तारे लिए हुए था और उसके
मुख से चोखी दोधारी तलवार निकलती
थी, और उसका मुह ऐसा प्रज्वलित
था, जैसा सूर्य कडी धूप के समय चमकता
है। १७ जब मै ने उसे देखा, तो उसके
पैरो पर मुर्दा सा गिर पडा और उस ने
मुझ पर अपना दहिना हाथ रखकर
यह कहा, कि मत डर, मै प्रथम और
अन्तिम और जीवता हू। १८ मैं मर
गया था, और अव देख, मै युगानुयुग
जीवता हू, और मृत्यु और अधोलोक की
कुजिया मेरे ही पास हैं। १९ इसलिये
जो वाते तू ने देखी है और जो वाते हो
रही हैं, और जो इस के वाद होनेवाली
है, उन सव को लिख ले। २० अर्थात्
उन सात तारो का भेद जिन्हे तू ने मेरे
दहिने हाथ में देखा था, और उन सात
सोने की दीवटो का भेद वे सात तारे
सातो कलीसियाओ के दूत हैं, और वे सात
दीवट सात कलीसियाए हैं॥

२ इफिसुस की कलीसिया के दूत को
यह लिख, कि,
जो सातो तारे अपने दहिने हाथ मे
लिए हुए है, और सोने की सातो दीवटो
के बीच मे फिरता है, वह यह कहता
है कि। २ मै तेरे काम, और परिश्रम,
और तेरा धीरज जानता हू, और यह
भी, कि तू वुरे लोगो को तो देख नही
सकता, और जो अपने आप को प्रेरित
कहते हैं, और हैं नही, उन्हें तू ने परख-
कर झूठा पाया। ३ और तू धीरज
धरता है, और मेरे नाम के लिये दुख
उठाते उठाते थका नही। ४ पर मुझे
तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू ने अपना
पहिला सा प्रेम छोड दिया है। ५ सो
चेत कर, कि तू कहा से गिरा है, और
मन फिरा और पहिले के समान काम
कर, और यदि तू मन न फिराएगा,
तो मै तेरे पास आकर तेरी दीवट को
उस स्थान से हटा दूगा। ६ पर हा
तुझ में यह वात तो है, कि तू नीकुलइयों
के कामो से घृणा करता है, जिन से
मैं भी घृणा करता हू। ७ जिस के कान
हो, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओ
से क्या कहता है जो जय पाए, मै
उसे उस जीवन के पेड में से जो
परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को
दूगा॥

८ और स्मुरना की कलीसिया के
दूत को यह लिख, कि, जो प्रथम और
अन्तिम है, जो मर गया था और अव
जीवित हो गया है, वह यह कहता है
कि। ९ मै तेरे क्लेश और दरिद्रता
को जानता हू, (परन्तु तू धनी है);
और जो लोग अपने आप को यहूदी
कहते हैं और है नही, पर शैतान की
सभा है, उन की निन्दा को भी जानता
हू। १० जो दुख तुझ को झेलने होगे,
उन से मत डर क्योकि देखो, शैतान*
तुम मे से कितनो को जेलखाने मे डालने
पर है ताकि तुम परखे जाओ, और
तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा
प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे
जीवन का मुकुट दूगा। ११ जिस के कान
हो, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओ

---
* यू० इब्लीस।

से क्या कहता है जो जय पाए, उस को
दूसरी मृत्यु से हानि न पहुचेगी ॥

१२ और पिरगमुन की कलीसिया के
दूत को यह लिख, कि,

जिस के पास दोधारी और चोखी
तलवार हैं, वह यह कहता है, कि।
१३ मैं यह तो जानता हू, कि तू वहा
रहता है जहा शैतान का सिहासन है,
और मेरे नाम पर स्थिर रहता है, और
मुझ पर विश्वास करने से उन दिनो
में भी पीछे नही हटा जिन मे मेरा
विश्वासयोग्य साक्षी अन्तिपास, तुम में
उस स्थान पर घात किया गया जहा
शैतान रहता हैं। १४ पर मुझे तेरे
विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योकि तेरे
यहा कितने तो ऐसे है, जो बिलाम की
शिक्षा को मानते है, जिस ने बालाक
को इस्राएलियो के आगे ठोकर का
कारण रखना सिखाया, कि वे मूरतो
के बलिदान खाए, और व्यभिचार करें।
१५ वैसे ही तेरे यहा कितने तो ऐसे
हैं, जो नीकुलइयो की शिक्षा को मानते
हैं। १६ सो मन फिरा, नहीं तो मै
तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख
की तलवार से उन के साथ लड़ूगा।
१७ जिस के कान हो, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओ से क्या कहता है,
जो जय पाए, उस को मै गुप्त मन्ना
में से दूगा, और उसे एक श्वेत पत्थर
भी दूगा, और उस पत्थर पर एक
नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने-
वाले के सिवाय और कोई न जानेगा ॥

१८ और थुआतीरा की कलीसिया के
दूत को यह लिख, कि,

परमेश्वर का पुत्र जिस की आखें
आग की ज्वाला की नाई, और जिस के
पाव उत्तम पीतल के समान हैं, यह
कहता है, कि। १९ मैं तेरे कामो, और
प्रेम, और विश्वास, और सेवा, और
धीरज को जानता हू, और यह भी कि
तेरे पिछले काम पहिलो से बढ़कर हैं।
२० पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है,
कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता
है जो अपने आप को भविष्यद्वक्तिन
कहती है, और मेरे दासो को व्यभिचार
करने, और मूरतो के आगे के बलिदान
खाने को सिखलाकर भरमाती है।
२१ मैं ने उस को मन फिराने के लिये
अवसर दिया, पर वह अपने व्यभिचार से
मन फिराना नही चाहती। २२ देख, मैं
उसे खाट पर डालता हू, और जो उसके
साथ व्यभिचार करते हैं यदि वे भी
उसके से कामो से मन न फिराएगे तो
उन्हें बड़े क्लेश में डालूगा। २३ और
मैं उसके बच्चो को मार डालूगा, और
तब सब कलीसियाए जान लेंगी कि हृदय
और मन का परखनेवाला मैं ही हू
और मैं तुम मे से हर एक को उसके
कामो के अनुसार बदला दूगा। २४ पर
तुम थूआतीरा के बाकी लोगो से, जितने
इस शिक्षा को नही मानते, और उन
बातो को जिन्हें शैतान की गहिरी बातें
कहते ह नही जानते, यह कहता हू, कि
मैं तुम पर और बोझ न डालूगा। २५ पर
हा, जो तुम्हारे पास है उस को मेरे
आने तक थामे रहो। २६ जो जय
पाए, और मेरे कामो के अनुसार अन्त
तक करता रहे, मै उसे जाति जाति
के लोगो पर अधिकार दूगा। २७ और
वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर
राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के

मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते
हैं· जैसे कि मैं ने भी ऐसा ही अधिकार
अपने पिता से पाया है। २८ और मैं उसे
भोर का तारा दूगा। २९ जिस के कान
हो, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओ
से क्या कहता है॥

३ और सरदीस की कलीसिया के
दूत को यह लिख, कि,

जिस के पास परमेश्वर की सात
आत्माए और सात तारे हैं, यह कहता
है, कि मैं तेरे कामो को जानता हू, कि
तू जीवता तो कहलाता है, पर, है मरा
हुआ। २ जागृत रह, और उन वस्तुओ
को जो बाकी रह गई है, और जो मिटने
को थी, उन्हे दृढ कर, क्योकि मैं ने
तेरे किसी काम को अपने परमेश्वर
के निकट पूरा नही पाया। ३ सो चेत
कर, कि तू ने किस रीति से शिक्षा
प्राप्त की और सुनी थी, और उस मे
बना रह, और मन फिरा और यदि
तू जागृत न रहेगा, तो मैं चोर की नाईं
आ जाऊगा और तू कदापि न जान
सकेगा, कि मैं किस घडी तुझ पर आ
पडूगा। ४ पर हा, सरदीस मे तेरे यहा
कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हो ने अपने अपने
वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र
पहिने हुए मेरे साथ घूमेंगे क्योकि वे
इस योग्य हैं। ५ जो जय पाए, उसे
इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा,
और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक
मे से किसी रीति से न काटूगा, पर
उसका नाम अपने पिता और उसके
स्वर्गदूतो के साम्हने मान लूगा।
६ जिस के कान हो, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओ से क्या कहता है॥

७ और फिलेदिलफिया की कलीसिया
के दूत को यह लिख, कि,

जो पवित्र और सत्य है, और जो
दाऊद की कुजी रखता है, जिस के खोले
हुए को कोई बन्द नही कर सकता और
बन्द किए हुए को कोई खोल नही
सकता, वह यह कहता है, कि। ८ मैं
तेरे कामो को जानता हू, (देख, मैं ने
तेरे साम्हने एक द्वार खोल रखा है,
जिसे कोई बन्द नही कर सकता) कि
तेरी सामर्थ थोडी सी है, और तू ने मेरे
वचन का पालन किया है और मेरे नाम
का इन्कार नही किया। ९ देख, मैं
शैतान के उन सभावालो को तेरे वश में
कर दूगा जो यहूदी बन बैठे है, पर हैं
नही, वरन झूठ बोलते है—देख, मैं
ऐसा करूगा, कि वे आकर तेरे चरणो मे
दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे,
कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है। १० तू
ने मेरे धीरज के वचन को थामा है,
इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय
बचा रखूगा, जो पृथ्वी पर रहनेवालो
के परखने के लिये सारे ससार पर आने-
वाला है। ११ मैं शीघ्र ही आनेवाला
हू, जो कुछ तेरे पास है, उसे थामे रह,
कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले। १२ जो
जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के
मन्दिर मे एक खभा बनाऊगा, और
वह फिर कभी बाहर न निकलेगा,
और मैं अपने परमेश्वर का नाम, और
अपने परमेश्वर के नगर, अर्थात् नये
यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर
के पास से स्वर्ग पर से उतरनेवाला है
और अपना नया नाम उस पर लिखूगा।
१३ जिस के कान हो, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओ से क्या कहता है॥

१४ और लौदीकिया की कलीसिया के
दूत को यह लिख, कि,

जो आमीन, और विश्वासयोग्य, और
सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की
सृष्टि का मूल कारण है, वह यह कहता
है। १५ कि मैं तेरे कामों को जानता
हूं कि तू न तो ठंडा है और न गर्म
भला होता कि तू ठंडा या गर्म होता।
१६ सो इसलिये कि तू गुनगुना है,
और न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे
अपने मुंह में से उगलने पर हूं। १७ तू
जो कहता है, कि मैं धनी हूं, और धनवान
हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की
घटी नहीं, और यह नहीं जानता, कि
तू अभागा और तुच्छ और कंगाल और
अन्धा, और नङ्गा है। १८ इसी लिये
मैं तुझे सम्मति देता हूं, कि आग में
ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले, कि
धनी हो जाए, और श्वेत वस्त्र ले ले
कि पहिनकर तुझे अपने नङ्गेपन की
लज्जा न हो, और अपनी आंखों में
लगाने के लिये सुर्मा ले, कि तू देखने
लगे। १९ मैं जिन जिन से प्रीति रखता
हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना
देता हूं, इसलिये सरगर्म हो, और मन
फिरा। २० देख, मैं द्वार पर खड़ा
हुआ खटखटाता हूं, यदि कोई मेरा
शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके
पास भीतर आकर उसके साथ भोजन
करूंगा, और वह मेरे साथ। २१ जो
जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने
सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय
पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन
पर बैठ गया। २२ जिस के कान हों
वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या
कहता है॥

४ इन बातों के बाद जो मैं ने
दृष्टि की, तो क्या देखता हूं कि
स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है, और
जिस को मैं ने पहिले तुरही के से शब्द से
अपने साथ बातें करते सुना था, वही
कहता है, कि यहां ऊपर आ जा और
मैं वे बातें तुझे दिखाऊंगा, जिन का
इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य
है। २ और तुरन्त मैं आत्मा में आ
गया, और क्या देखता हूं, कि एक
सिंहासन स्वर्ग में धरा है, और उस
सिंहासन पर कोई बैठा है। ३ और जो
उस पर बैठा है, वह यशब और मानिक
सा दिखाई पड़ता है, और उस सिंहासन
के चारों ओर मरकत सा एक मेघधनुष
दिखाई देता है। ४ और उस सिंहासन
के चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं,
और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन
श्वेत वस्त्र पहिने हुए बैठे हैं, और उन के
सिरों पर सोने के मुकुट हैं। ५ और
उस सिंहासन में से बिजलियां और
गर्जन निकलते हैं और सिंहासन के
साम्हने आग के सात दीपक जल रहे हैं,
ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं।
६ और उस सिंहासन के साम्हने मानो
बिल्लौर के समान कांच का सा समुद्र
है, और सिंहासन के बीच में और सिंहासन
के चारों ओर चार प्राणी हैं, जिन के
आगे पीछे आंखें ही आंखें हैं। ७ पहिला
प्राणी सिंह के समान है, और दूसरा
प्राणी बछड़े के समान है, तीसरे प्राणी
का मुंह मनुष्य का सा है, और चौथा
प्राणी उड़ते हुए उकाब के समान है।
८ और चारों प्राणियों के छः छः पंख
हैं, और चारों ओर, और भीतर आंखें
ही आंखें हैं, और वे रात दिन बिना

विश्राम लिए यह कहते रहते है, कि
पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर,
सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है,
और जो आनेवाला है। ९ और जब
वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर बैठा
है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा
और आदर और धन्यवाद करेंगे।
१० तब चौबीसो प्राचीन सिंहासन पर
बैठनेवाले के साम्हने गिर पडेगे, और
उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम
करेंगे, और अपने अपने मुकुट सिंहासन
के साम्हने यह कहते हुए डाल देगे।
११ कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर,
तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ
के योग्य है, क्योकि तू ही ने सब वस्तुए
सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थी, और
सृजी गईं॥

५ और जो सिंहासन पर बैठा था,
मैं ने उसके दहिने हाथ मे एक
पुस्तक देखी, जो भीतर और बाहर
लिखी हुई थी, और वह सात मुहर
लगाकर बन्द की गई थी। २ फिर
मैं ने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो
ऊचे शब्द से यह प्रचार करता था कि
इस पुस्तक के खोलने और उस की
मुहरे तोडने के योग्य कौन है? ३ और
न स्वर्ग मे, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के
नीचे कोई उस पुस्तक को खोलने या
उस पर दृष्टि डालने के योग्य निकला।
४ और मैं फूट फूटकर रोने लगा, क्योकि
उस पुस्तक के खोलने, या उस पर दृष्टि
करने के योग्य कोई न मिला। ५ तब
उन प्राचीनो में से एक ने मुझ से कहा,
मत रो, देख, यहूदा के गोत्र का वह
सिंह, जो दाऊद का मूल है, उस पुस्तक
को खोलने और उस की सातो मुहरें
तोडने के लिये जयवन्त हुआ है। ६ और
मैं ने उस सिंहासन और चारो प्राणियो
और उन प्राचीनो के बीच में, मानो
एक वध किया हुआ मेम्ना खडा देखा:
उसके सात सींग और सात आखें थी;
ये परमेश्वर की सातो आत्माए हैं, जो
सारी पृथ्वी पर भेजी गई है। ७ उस ने
आकर उसके दहिने हाथ से जो सिंहासन
पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली। ८ और
जब उस ने पुस्तक ले ली, तो वे चारो
प्राणी और चौबीसो प्राचीन उस मेम्ने
के साम्हने गिर पडे, और हर एक के
हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए
सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगो
की प्रार्थनाए है। ९ और वे यह नया
गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के
लेने, और उस की मुहरें खोलने के योग्य
है, क्योकि तू ने वध होकर अपने लोहू से
हर एक कुल, और भाषा, और लोग,
और जाति मे से परमेश्वर के लिये
लोगो को मोल लिया है। १० और
उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य
और याजक बनाया, और वे पृथ्वी पर
राज्य करते है। ११ और जब मैं ने
देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियो
और उन प्राचीनो की चारो ओर बहुत से
स्वर्गदूतो का शब्द सुना, जिन की गिनती
लाखो और करोडो की थी। १२ और
वे ऊचे शब्द से कहते थे, कि वध किया
हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और
ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और
महिमा, और धन्यवाद के योग्य है।
१३ फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर,
और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब
सृजी हुई वस्तुओ को, और सब कुछ

को जो उन में है, यह कहते सुना, कि
जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और
मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और
महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे।
१४ और चारों प्राणियों ने आमीन कहा,
और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत किया॥

६ फिर मैं ने देखा, कि मेम्ने ने
उन सात मुहरों में से एक को
खोला और उन चारों प्राणियों में से
एक का गर्जन का सा शब्द सुना, कि आ।
२ और मैं ने दृष्टि की, और देखो,
एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार
धनुष लिए हुए है और उसे एक मुकुट
दिया गया, और वह जय करता हुआ
निकला कि और भी जय प्राप्त करे॥
३ और जब उस ने दूसरी मुहर
खोली, तो मैं ने दूसरे प्राणी को यह
कहते सुना, कि आ। ४ फिर एक और
घोड़ा निकला, जो लाल रंग का था,
उसके सवार को यह अधिकार दिया
गया, कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले,
ताकि लोग एक दूसरे को वध करें, और
उसे एक बड़ी तलवार दी गई॥
५ और जब उस ने तीसरी मुहर
खोली, तो मैं ने तीसरे प्राणी को यह
कहते सुना, कि आ और मैं ने दृष्टि
की, और देखो, एक काला घोड़ा है,
और उसके सवार के हाथ में एक तराजू
है। ६ और मैं ने उन चारों प्राणियों
के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना,
कि दीनार* का सेर भर गेहूं, और
दीनार का तीन सेर जव, और तेल, और
दाख-रस की हानि न करना॥
७ और जब उस ने चौथी मुहर
खोली, तो मैं ने चौथे प्राणी का शब्द
यह कहते सुना, कि आ। ८ और मैं ने
दृष्टि की, और देखो, एक पीला सा
घोड़ा है, और उसके सवार का नाम
मृत्यु है और अधोलोक उसके पीछे
पीछे है और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई
पर यह अधिकार दिया गया, कि तलवार,
और अकाल, और मरी, और पृथ्वी के
वनपशुओं के द्वारा लोगों को मार डालें॥
९ और जब उस ने पांचवी मुहर
खोली, तो मैं ने वेदी के नीचे उन के
प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन
के कारण, और उस गवाही के कारण
जो उन्हों ने दी थी, वध किए गए थे।
१० और उन्हों ने बड़े शब्द से पुकार-
कर कहा, हे स्वामी, हे पवित्र, और
सत्य, तू कब तक न्याय न करेगा?
और पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लोहू
का पलटा कब तक न लेगा? ११ और
उन में से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया
गया, और उन से कहा गया, कि और
थोड़ी देर तक विश्राम करो, जब तक
कि तुम्हारे संगी दास, और भाई, जो
तुम्हारी नाईं वध होनेवाले हैं, उन की भी
गिनती पूरी न हो ले॥
१२ और जब उस ने छठवीं मुहर
खोली, तो मैं ने देखा, कि एक बड़ा
भुइंडोल हुआ, और सूर्य कम्मल की
नाईं काला, और पूरा चन्द्रमा लोहू का
सा हो गया। १३ और आकाश के तारे
पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आन्धी
से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे
फल झड़ते हैं। १४ और आकाश ऐसा
सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक
जाता है, और हर एक पहाड़, और
टापू, अपने अपने स्थान से टल गया।

* देखो मत्ती १८ २८।

१५ और पृथ्वी के राजा, और प्रधान,
और सरदार, और धनवान और सामर्थी
लोग, और हर एक दास, और हर एक
स्वतंत्र, पहाडो की खोहो में, और चटानो मे
जा छिपे। १६ और पहाडो, और चटानो
से कहने लगे, कि हम पर गिर पडो;
और हमें उसके मुह से जो सिहासन पर
बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा
लो। १७ क्योंकि उन के प्रकोप का
भयानक दिन आ पहुचा है, अब कौन ठहर
सकता है?

७ इसके बाद मैं ने पृथ्वी के चारो
कोनो पर चार स्वर्गदूत खडे देखे,
वे पृथ्वी की चारो हवाओ को थामे
हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी
पेड पर, हवा न चले। २ फिर मैं ने
एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर
की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की
ओर आते देखा, उस ने उन चारो
स्वर्गदूतो से जिन्हे पृथ्वी और समुद्र की
हानि करने का अधिकार दिया गया था,
ऊचे शब्द से पुकारकर कहा। ३ जब
तक हम अपने परमेश्वर के दासो के
माथे पर मुहर न लगा दे, तब तक पृथ्वी
और समुद्र और पेडो को हानि न
पहुचाना। ४ और जिन पर मुहर दी
गई, मैं ने उन की गिनती सुनी, कि
इस्राएल की सन्तानो के सब गोत्रो मे
से एक लाख चौआलीस हजार पर मुहर
दी गई। ५ यहूदा के गोत्र मे से बारह
हजार पर मुहर दी गई, रूबेन के गोत्र
में से बारह हजार पर, गाद के गोत्र
में से बारह हजार पर। ६ आशेर के
गोत्र में से बारह हजार पर, नपताली
के गोत्र में से बारह हजार पर, मनश्शिह
के गोत्र में से बारह हजार पर। ७ शमौन
के गोत्र मे से बारह हजार पर; लेवी
के गोत्र में से बारह हजार पर, इस्साकार
के गोत्र में से बारह हजार पर। ८ जबूलून
के गोत्र मे से बारह हजार पर; यूसुफ
के गोत्र में से बारह हजार पर और
बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हजार
पर मुहर दी गई। ९ इस के बाद
मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक
जाति, और कुल, और लोग और भाषा
में से एक ऐसी बडी भीड, जिसे कोई
गिन नही सकता था श्वेत वस्त्र पहिने,
और अपने हाथो में खजूर की डालिया
लिए हुए सिहासन के साम्हने और मेम्ने
के साम्हने खडी है। १० और बड़े
शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार
के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिहासन
पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय-कार
हो। ११ और सारे स्वर्गदूत, उस सिहासन
और प्राचीनो और चारो प्राणियो के
चारो ओर खडे है, फिर वे सिहासन
के साम्हने मुह के बल गिर पडे, और
परमेश्वर को दण्डवत करके कहा,
आमीन। १२ हमारे परमेश्वर की स्तुति,
और महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद,
और आदर, और सामर्थ, और शक्ति
युगानुयुग बनी रहे। आमीन। १३ इस
पर प्राचीनो मे से एक ने मुझ से कहा,
ये श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं?
और कहा से आए है? १४ मैं ने उस से
कहा, हे स्वामी, तू ही जानता है:
उस ने मुझ से कहा, ये वे हैं, जो उस
बडे क्लेश में से निकलकर आए हैं,
इन्हो ने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लोहू में
धोकर श्वेत किए है। १५ इसी कारण
वे परमेश्वर के सिहासन के साम्हने हैं,

और उसके मन्दिर * में दिन रात उस की
सेवा करते हैं, और जो सिहासन पर
बैठा है, वह उन के ऊपर अपना तम्बू
तानेगा। १६ वे फिर भूखे और प्यासे न
होगे और न उन पर धूप, न कोई तपन
पडेगी। १७ क्योकि मेम्ना जो सिहासन
के बीच में है, उन की रखवाली करेगा,
और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतो के पास
ले जाया करेगा, और परमेश्वर उन की
आखो से सब आसू पोछ डालेगा॥

८ और जब उस ने सातवी मुहर
खोली, तो स्वर्ग में आध घडी तक
सन्नाटा छा गया। २ और मैं ने उन
सातो स्वर्गदूतो को जो परमेश्वर के
साम्हने खडे रहते हैं, देखा, और उन्हें
सात तुरहिया दी गई॥

३ फिर एक और स्वर्गदूत सोने का
धूपदान लिए हुए आया, और वेदी के
निकट खडा हुआ, और उस को बहुत
धूप दिया गया, कि सब पवित्र लोगो
की प्रार्थनाओ के साथ उस सोनहली
वेदी पर जो सिहासन के साम्हने है
चढाए। ४ और उस धूप का धुआ
पवित्र लोगो की प्रार्थनाओ सहित स्वर्गदूत
के हाथ से परमेश्वर के साम्हने पहुच
गया। ५ और स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर
उस में वेदी की आग भरी, और पृथ्वी
पर डाल दी, और गर्जन और शब्द और
बिजलिया और भूईडोल होने लगा॥

६ और वे सातो स्वर्गदूत जिन के पास
सात तुरहिया थी, फूकने को तैयार हुए॥

७ पहिले स्वर्गदूत ने तुरही फूकी,
और लोहू से मिले हुए ओले और आग
उत्पन्न हुई, और पृथ्वी पर डाली गई,
और पृथ्वी की एक तिहाई जल गई,
और पेडो की एक तिहाई जल गई, और
सब हरी घास भी जल गई॥

८ और दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूकी,
तो मानो आग सा जलता हुआ एक
बडा पहाड समुद्र में डाला गया, और
समुद्र का एक तिहाई लोहू हो गया।
९ और समुद्र की एक तिहाई सृजी हुई
वस्तुए जो सजीव थी मर गई, और एक
तिहाई जहाज नाश हो गया॥

१० और तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही
फूकी, और एक बडा तारा जो मशाल की
नाई जलता था, स्वर्ग से टूटा, और
नदियो की एक तिहाई पर, और पानी
के सोतो पर आ पडा। ११ और उस
तारे का नाम नागदौना कहलाता है,
और एक तिहाई पानी नागदौना सा
कडवा हो गया, और बहुतेरे मनुष्य उस
पानी के कडवे हो जाने से मर गए॥

१२ और चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूकी,
और सूर्य की एक तिहाई, और चान्द की
एक तिहाई और तारो की एक तिहाई
पर आपत्ति आई, यहा तक कि उन का
एक तिहाई अग अन्धेरा हो गया और
दिन की एक तिहाई में उजाला न रहा,
और वैसे ही रात में भी॥

१३ और जब मैं ने फिर देखा, तो
आकाश के बीच में एक उकाब को उडते
और ऊचे शब्द से यह कहते सुना, कि उन
तीन स्वर्गदूतो की तुरही के शब्दो के कारण
जिन का फूकना अभी बाकी है, पृथ्वी के
रहनेवालो पर हाय! हाय! हाय!

९ और जब पाचवें स्वर्गदूत ने
तुरही फूकी, तो मैं ने स्वर्ग से पृथ्वी
पर एक तारा गिरता हुआ देखा, और

* यू० पवित्रस्थान।

उसे अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई।
२ और उस ने अथाह कुण्ड को खोला,
और कुण्ड मे से बडी भट्टी का सा धुआ
उठा, और कुण्ड के धुए से सूर्य और वायु
अन्धयारी हो गई। ३ और उस धुए
में से पृथ्वी पर टिड्डिया निकली, और
उन्हे पृथ्वी के बिच्छुओ की सी शक्ति
दी गई। ४ और उन से कहा गया,
कि न पृथ्वी की घास को, न किसी
हरियाली को, न किसी पेड को हानि
पहुचाओ, केवल उन मनुष्यो को जिन के
माथे पर परमेश्वर की मुहर नही है।
५ और उन्हे मार डालने का तो नही,
पर पाच महीने तक लोगो को पीडा
देने का अधिकार दिया गया और
उन की पीडा ऐसी थी, जैसे बिच्छू के
डक मारने से मनुष्य को होती है।
६ उन दिनो मे मनुष्य मृत्यु को ढूढेंगे,
और न पाएगे, और मरने की लालसा
करेंगे, और मृत्यु उन से भागेगी। ७ और
उन टिड्डियो के आकार लडाई के लिये
तैयार किए हुए घोड़ों के से थे, और
उन के सिरो पर मानो सोने के मुकुट
थे, और उन के मुह मनुष्यो के से थे।
८ और उन के बाल स्त्रियो के से, और
दात सिहो के से थे। ९ और वे लोहे
की सी झिलम पहिने थे, और उन के
पंखो का शब्द ऐसा था जैसा रथो और
बहुत से घोडो का जो लडाई मे दौडते
हो। १० और उन की पूछ बिच्छुओ
की सी थी, और उन में डक थे, और
उन्हें पाच महीने तक मनुष्यो को दुख
पहुचाने की जो सामर्थ थी, वह उन की
पूछो में थी। ११ अथाह कुण्ड का दूत
उन पर राजा था, उसका नाम इब्रानी मे
अबद्दोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है॥

१२ पहिली विपत्ति बीत चुकी, देखो,
अब इस के बाद दो विपत्तिया और
होनेवाली है॥

१३ और जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही
फूकी तो जो सोने की वेदी परमेश्वर
के साम्हने है उसके सीगो में से मैं ने
ऐसा शब्द सुना। १४ मानो कोई छठवें
स्वर्गदूत से जिस के पास तुरही थी,
कह रहा है कि उन चार स्वर्गदूतो को
जो बडी नदी फुरात के पास बन्धे हुए
है, खोल दे। १५ और वे चारो दूत
खोल दिए गए जो उस घडी, और दिन,
और महीने, और वर्ष के लिये मनुष्यो
की एक तिहाई के मार डालने को तैयार
किए गए थे। १६ और फौजो के सवारो
की गिनती बीस करोड थी, मैं ने उन
की गिनती सुनी। १७ और मुझे इस
दर्शन में घोडे और उन के ऐसे सवार
दिखाई दिए, जिन की झिलमें आग, और
धूम्रकान्त, और गन्धक की सी थी, और
उन घोडो के सिर सिहो के सिरो के से
थे और उन के मुह से आग, और
धुआ, और गन्धक निकलती थी। १८ इन
तीनो मरियो, अर्थात आग, और धुए,
और गन्धक से जो उसके मुह से निकलती
थी, मनुष्यो की एक तिहाई मार डाली
गई। १९ क्योकि उन घोडो की सामर्थ
उन के मुह, और उन की पूछो में थी,
इसलिये कि उन की पूछे सापो की सी
थी, और उन पूछो के सिर भी थे, और
इन्ही से वे पीडा पहुचाते थे। २० और
बाकी मनुष्यो ने जो उन मरियो से न
मरे थे, अपने हाथो के कामो से मन
न फिराया, कि दुष्टात्माओ की, और
सोने और चान्दी, और पीतल, और
पत्थर, और काठ की मूरतो की पूजा न

करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती
हैं। १२ और जो खून, और टोना,
और व्यभिचार, और चोरियां, उन्हों ने
की थीं, उन से मन न फिराया॥

१० फिर मैं ने एक और बली
स्वर्गदूत को बादल ओढ़े हुए
स्वर्ग से उतरते देखा, उसके सिर पर
मेघधनुष था और उसका मुंह सूर्य का
सा और उसके पांव आग के खंभे के से
थे। २ और उसके हाथ में एक छोटी
सी खुली हुई पुस्तक थी, उस ने अपना
दहिना पांव समुद्र पर, और बायां पृथ्वी
पर रखा। ३ और ऐसे बड़े शब्द से
चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है, और
जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात
शब्द सुनाई दिए। ४ और जब सातों
गर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं
लिखने पर था, और मैं ने स्वर्ग से यह
शब्द सुना, कि जो बातें गर्जन के उन
सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें गुप्त रख *,
और मत लिख। ५ और जिस स्वर्गदूत
को मैं ने समुद्र और पृथ्वी पर खड़े देखा
था, उस ने अपना दहिना हाथ स्वर्ग
की ओर उठाया। ६ और जो युगानुयुग
जीवता रहेगा, और जिस ने स्वर्ग को
और जो कुछ उस में है, और पृथ्वी को
और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को
और जो कुछ उस में है सृजा उसी की
शपथ खाकर कहा, अब तो और देर
न होगी †। ७ बरन सातवें स्वर्गदूत
के शब्द देने के दिनों में जब वह तुरही
फूंकने पर होगा, तो परमेश्वर का गुप्त
मनोरथ ‡ उस सुसमाचार के अनुसार
जो उस ने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं
को दिया पूरा होगा। ८ और जिस
शब्द करनेवाले को मैं ने स्वर्ग से बोलते
सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने
लगा, कि जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और
पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की
खुली हुई पुस्तक ले ले। ९ और मैं ने
स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, यह छोटी
पुस्तक मुझे दे, और उस ने मुझ से
कहा ले इसे खा जा, और यह तेरा पेट
कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुंह में मधु सी
मीठी लगेगी। १० सो मैं वह छोटी
पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर
खा गया, वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी
तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो
मेरा पेट कड़वा हो गया। ११ तब मुझ से
यह कहा गया, कि तुझे बहुत से लोगों,
और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं
पर, फिर भविष्यद्वाणी करनी होगी॥

११ और मुझे लग्गी के समान
एक सरकंडा दिया गया, और
किसी ने कहा, उठ, परमेश्वर के मन्दिर
और वेदी, और उस में भजन करने-
वालों को नाप ले। २ और मन्दिर के
बाहर का आंगन छोड़ दे, उसे मत
नाप, क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया
गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस
महीने तक रौंदेंगी। ३ और मैं अपने
दो गवाहों को यह अधिकार दूंगा, कि
टाट ओढ़े हुए एक हजार दो सौ साठ
दिन तक भविष्यद्वाणी करें। ४ ये वे
ही जैतून के दो पेड़ और दो दीवट हैं,
जो पृथ्वी के प्रभु के साम्हने खड़े रहते
हैं। ५ और यदि कोई उन को हानि
पहुंचाना चाहता है, तो उन के मुंह से

* यू० उन पर छाप दे।
† या समय न होगा।
‡ यू० भेद।

आग निकलकर उन के वैरियो को भस्म करती है, और यदि कोई उन को हानि पहुचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति से मार डाला जाएगा। ६ इन्हें अधिकार है, कि आकाश को वन्द करें, कि उन की भविष्यद्वाणी के दिनो मे मेंह न बरसे, और उन्हे सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लोहू बनाए, और जब जब चाहें तब तब पृथ्वी पर हर प्रकार की आपत्ति लाए। ७ और जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड मे से निकलेगा, उन से लडकर उन्हे जीतेगा और उन्हे मार डालेगा। ८ और उन की लोथे उस बडे नगर के चौक मे पडी रहेंगी, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिसर कहलाता है, जहा उन का प्रभु भी क्रूस पर चढाया गया था। ९ और सब लोगो, और कुलो, और भाषाओ, और जातियो में से लोग उन की लोथें साढे तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उन की लोथे कब्र में रखने न देंगे। १० और पृथ्वी के रहनेवाले, उन के मरने से आनन्दित और मगन होगे, और एक दूसरे के पास भेट भेजेंगे, क्योकि इन दोनो भविष्यद्वक्ताओ ने पृथ्वी के रहनेवालो को सताया था। ११ और साढे तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उन मे पैठ गई, और वे अपने पावो के बल खडे हो गए, और उन के देखनेवालो पर बडा भय छा गया। १२ और उन्हे स्वर्ग से एक बडा शब्द सुनाई दिया, कि यहा ऊपर आओ; यह सुन वे बादल पर सवार होकर अपने बैरियो के देखते देखते स्वर्ग पर चढ गए। १३ फिर उसी घडी एक बडा भुइडोल हुआ, और नगर का दसवा अंश गिर पडा, और उस भुइडोल से सात हजार मनुष्य मर गए और शेष डर गए, और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की॥

१४ दूसरी विपत्ति बीत चुकी, देखो, तीसरी विपत्ति शीघ्र आनेवाली है॥

१५ और जब सातवें दूत ने तुरही फूकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बडे बडे शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया। १६ और वह युगानुयुग राज्य करेगा, और चौबीसो प्राचीन जो परमेश्वर के साम्हने अपने अपने सिहासन पर बैठे थे, मुह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करके। १७ यह कहने लगे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बडी सामर्थ काम में लाकर राज्य किया है। १८ और अन्य-जातियो ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पडा, और वह समय आ पहुचा है, कि मरे हुओ का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्वक्ताओ और पवित्र लोगो को और उन छोटे बडो को जो तेरे नाम से डरते है, बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाडनेवाले नाश किए जाए॥

१९ और परमेश्वर का जो मन्दिर स्वर्ग मे है, वह खोला गया, और उसके मन्दिर मे उस की वाचा का सन्दूक दिखाई दिया, और बिजलिया और शब्द और गर्जन और भुइडोल हुए, और बडे ओले पडे॥

१२ फिर स्वर्ग पर एक बडा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य्य ओढे हुए थी, और चान्द उसके

पावों तले था, और उसके सिर पर
बारह तारों का मुकुट था। २ और वह
गर्भवती हुई, और चिल्लाती थी, क्योंकि
प्रसव की पीडा उसे लगी थी, और
वह बच्चा जनने की पीडा में थी।
३ और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई
दिया, और देखो, एक बडा लाल अजगर
था जिस के सात सिर और दस सीग
थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट
थे। ४ और उस की पूछ ने आकाश
के तारों की एक तिहाई को खींचकर
पृथ्वी पर डाल दिया, और वह अजगर
उस स्त्री के साम्हने जो जच्चा थी,
खडा हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो
उसके बच्चे को निगल जाए। ५ और
वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए
हुए, सब जातियों पर राज्य करने पर
था, और उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर
के पास, और उसके सिहासन के पास
उठाकर पहुचा दिया गया। ६ और वह
स्त्री उस जगल को भाग गई, जहा
परमेश्वर की ओर से उसके लिये एक
जगह तैयार की गई थी, कि वहा वह
एक हजार दो सौ साठ दिन तक पाली
जाए॥

७ फिर स्वर्ग पर लडाई हुई, मीकाईल
और उसके स्वर्गदूत अजगर से लडने को
निकले, और अजगर और उसके दूत
उस से लडे। ८ परन्तु प्रबल न हुए,
और स्वर्ग में उन के लिये फिर जगह
न रही। ९ और वह बडा अजगर
अर्थात् वही पुराना साप, जो इब्लीस
और शैतान कहलाता है, और सारे
ससार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर
गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके
साथ गिरा दिए गए। १० फिर मैं ने
स्वर्ग पर से यह बडा शब्द आते हुए
सुना, कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार,
और सामर्थ, और राज्य, और उसके
मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है,
क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगाने-
वाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के
साम्हने उन पर दोष लगाया करता था,
गिरा दिया गया। ११ और वे मेम्ने के
लोहू के कारण, और अपनी गवाही के
वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए,
और उन्हों ने अपने प्राणों को प्रिय न
जाना, यहा तक कि मृत्यु भी सह ली।
१२ इस कारण, हे स्वर्गों, और उन मे
के रहनेवालो मगन हो, हे पृथ्वी, और
समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान*
बडे क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर
आया है, क्योंकि जानता है, कि उसका
थोडा ही समय और बाकी है॥

१३ और जब अजगर ने देखा, कि
मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हू, तो
उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया।
१४ और उस स्त्री को बडे उकाब के
दो पख दिए गए, कि साप के साम्हने से
उडकर जगल मे उस जगह पहुच जाए,
जहा वह एक समय, और समयों, और
आधे समय तक पाली जाए। १५ और
साप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुह से
नदी की नाई पानी बहाया, कि उसे
इस नदी से बहा दे। १६ परन्तु पृथ्वी ने
उस स्त्री की सहायता की, और अपना
मुह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने
अपने मुह से बहाई थी, पी लिया।
१७ और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ,
और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर

* यू० इब्लीस।

की आज्ञाओ को मानते, और यीशु की
गवाही देने पर स्थिर है, लडने को गया।
और वह समुद्र के बालू पर जा खडा
हुआ॥

१३ और मै ने एक पशु को समुद्र
मे से निकलते हुए देखा, जिस के
दस सीग और सात सिर थे, और उसके
सीगो पर दस राजमुकुट, और उसके
सिरो पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे।
२ और जो पशु मै ने देखा, वह चीते
की नाई था, और उसके पाव भालू
के से, और मुह सिह का सा था, और
उस अजगर ने अपनी सामर्थ, और अपना
सिहासन, और बडा अधिकार, उसे दे
दिया। ३ और मै ने उसके सिरो मे से
एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा,
मानो वह मरने पर है, फिर उसका
प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और
सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे
पीछे अचभा करते हुए चले। ४ और
उन्हो ने अजगर की पूजा की, क्योकि
उस ने पशु को अपना अधिकार दे दिया
था और यह कहकर पशु की पूजा की,
कि इस पशु के समान कौन है? ५ कौन
उस से लड सकता है? और बडे बोल
बोलने और निन्दा करने के लिये उसे
एक मुह दिया गया, और उसे बयालीस
महीने तक काम करने का अधिकार
दिया गया। ६ और उस ने परमेश्वर की
निन्दा करने के लिये मुह खोला, कि उसके
नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के
रहनेवालो की निन्दा करे। ७ और उसे
यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र
लोगो से लडे, और उन पर जय पाए,
और उसे हर एक कुल, और लोग, और
भाषा, और जाति पर अधिकार दिया
गया। ८ और पृथ्वी के वे सब रहनेवाले
जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की
पुस्तक मे लिखे नही गए, जो जगत की
उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस
पशु की पूजा करेगे। ९ जिस के कान
हो वह सुने। १० जिस को कैद में
पडना है, वह कैद में पडेगा, जो तलवार से
मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से
मारा जाएगा, पवित्र लोगो का धीरज और
विश्वास इसी मे है॥

११ फिर मै ने एक और पशु को
पृथ्वी मे से निकलते हुए देखा, उसके
मेम्ने के से दो सीग थे, और वह अजगर
की नाई बोलता था। १२ और यह उस
पहिले पशु का सारा अधिकार उसके
साम्हने काम मे लाता था, और पृथ्वी
और उसके रहनेवालो से उस पहिले
पशु की जिस का प्राणघातक घाव अच्छा
हो गया था, पूजा कराता था। १३ और
वह बडे बडे चिन्ह दिखाता था, यहा तक
कि मनुष्यो के साम्हने स्वर्ग से पृथ्वी पर
आग बरसा देता था। १४ और उन
चिन्हो के कारण जिन्हे उस पशु के
साम्हने दिखाने का अधिकार उसे दिया
गया था, वह पृथ्वी के रहनेवालो को
इस प्रकार भरमाता था, कि पृथ्वी के
रहनेवालो से कहता था, कि जिस पशु
के तलवार लगी थी, वह जी गया है,
उस की मूरत बनाओ। १५ और उसे
उस पशु की मूरत मे प्राण डालने का
अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत
बोलने लगे, और जितने लोग उस पशु
की मूरत की पूजा न करें, उन्हे मरवा
डाले। १६ और उस ने छोटे, बडे, धनी,
कगाल स्वतत्र, दास सब के दहिने हाथ

या उन के माथे पर एक एक छाप करा
दी। १७ कि उस को छोड जिस पर
छाप अर्थात् उस पशु का नाम, या उसके
नाम का अक हो, और कोई लेन देन न
कर सके। १८ ज्ञान इसी मे है, जिसे
वुद्धि हो, वह इस पशु का अक जोड ले,
क्योकि वह मनुष्य का अक है, और उसका
अक छ सौ छियासठ है॥

१४ फिर मै ने दृष्टि की, और
देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड
पर खडा है, और उसके साथ एक लाख
चौआलीस हजार जन ह, जिन के माथे
पर उसका और उसके पिता का नाम
लिखा हुआ है। २ और स्वग से मुझे
एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की
वहुत धाराओ और वडे गजन का सा
शब्द था, और जो शब्द म ने सुना,
वह ऐसा था, मानो वीणा वजानेवाले
वीणा वजाते हो। ३ और वे सिहासन
के साम्हने और चारो प्राणियो और
प्राचीनो के साम्हने मानो, एक नया
गीत गा रहे थे, और उन एक लाख
चौआलीस हजार जनो को छोड जो
पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई
वह गीत न सीख सकता था। ४ ये वे
है, जो स्त्रियो के साथ अशुद्ध नही हुए,
पर कुवारे ह ये वे ही है, कि जहा
कही मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो
लेते है ये तो परमेश्वर के निमित्त
पहिले फल होने के लिये मनुष्यो में से
मोल लिए गए हैं। ५ और उन के
मुह से कभी झूठ न निकला था, वे
निर्दोष हैं॥

६ फिर मै ने एक और स्वगदूत को
आकाश के वीच मे उडते हुए देखा,
जिस के पास पृथ्वी पर के रहनेवालो
की हर एक जाति, और कुल, और भाषा,
और लोगो को सुनाने के लिये सनातन
सुसमाचार था। ७ और उस ने वडे
शब्द से कहा, परमेश्वर से डरो, और
उस की महिमा करो, क्योकि उसके न्याय
करने का समय आ पहुचा है, और उसका
भजन करो, जिस ने स्वग और पृथ्वी
और समुद्र और जल के सोते वनाए॥

८ फिर इस के वाद एक और दूसरा
स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर
पडा, वह वडा वावुल गिर पडा जिस ने
अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी
जातियो को पिलाई है॥

९ फिर इन के वाद एक और स्वर्ग-
दूत वडे शब्द से यह कहता हुआ आया,
कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत
की पूजा करे, और अपने माथे या अपने
हाथ पर उस की छाप ले। १० तो
वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा
जो उसके क्रोध के कटोरे मे डाली गई
है, पीएगा और पवित्र स्वगदूतो के
साम्हने, और मम्ने के साम्हने आग और
गन्धक की पीडा में पडेगा। ११ और
उन की पीडा का धुआ युगानुयुग उठता
रहगा, और जो उस पशु और उस की
मूरत की पूजा करते ह, और जो उसके
नाम की छाप लते हैं, उन को रात दिन
चैन न मिलेगा। १२ पवित्र लोगो का
धीरज इसी मे है, जो परमेश्वर की
आज्ञाओ को मानते, और यीशु पर विश्वास
रखते हैं॥

१३ और मैं ने स्वग से यह शब्द
सुना, कि लिख, जो मुरदे प्रभु में मरते
ह, वे अब से धन्य ह, आत्मा कहता ह,
हा क्योकि वे अपने परिश्रमो से विश्राम

पाएगे, और उन के कार्य्य उन के साथ हो
लेते है ॥

१४ और मैं ने दृष्टि की, और देखो,
एक उजला बादल है, और उस बादल
पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,
जिस के सिर पर सोने का मुकुट और
हाथ में चोखा हसुआ है। १५ फिर एक
और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकलकर,
उस से जो बादल पर बैठा था, बडे
शब्द से पुकारकर कहा, कि अपना
हसुआ लगाकर लवनी कर, क्योकि लवने
का समय आ पहुचा है, इसलिये कि
पृथ्वी की खेती पक चुकी है। १६ सो जो
बादल पर बैठा था, उस ने पृथ्वी पर
अपना हंसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी
की गई ॥

१७ फिर एक और स्वर्गदूत उस
मन्दिर* में से निकला, जो स्वर्ग मे है,
और उसके पास भी चोखा हसुआ था।
१८ फिर एक और स्वर्गदूत जिसे आग
पर अधिकार था, वेदी मे से निकला,
और जिस के पास चोखा हसुआ था,
उस से ऊचे शब्द से कहा, अपना चोखा
हसुआ लगाकर पृथ्वी की दाख लता के
गुच्छे काट ले, क्योकि उस की दाख
पक चुकी है। १९ और उस स्वर्गदूत ने
पृथ्वी पर अपना हसुआ डाला, और
पृथ्वी की दाख लता का फल काटकर,
अपने परमेश्वर के प्रकोप के बडे रस के
कुण्ड मे डाल दिया। २० और नगर के
बाहर उस रस के कुण्ड मे दाख रौंदे गए,
और रस के कुण्ड में से इतना लोहू निकला
कि घोडो के लगामो तक पहुचा, और
सौ कोस तक बह गया ॥

* यू० पवित्रस्थान।

१५ फिर मैं ने स्वर्ग में एक और
बडा और अद्भुत चिन्ह देखा,
अर्थात् सात स्वर्गदूत जिन के पास सातो
पिछली विपत्तिया थी, क्योकि उन के
हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का
अन्त है ॥

२ और मैं ने आग मे मिले हुए काच
का सा एक समुद्र देखा, और जो उस
पशु पर, और उस की मूरत पर, और
उसके नाम के अक पर जयवन्त हुए थे,
उन्हें उस काच के समुद्र के निकट परमेश्वर
की वीणाओ को लिए हुए खडे देखा।
३ और वे परमेश्वर के दास मूसा का
गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर
कहते थे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
तेरे कार्य्य बडे, और अद्भुत है, हे युग
युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची
है। ४ हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा?
और तेरे नाम की महिमा न करेगा?
क्योकि केवल तू ही पवित्र है, और सारी
जातिया आकर तेरे साम्हने दण्डवत
करेगी, क्योकि तेरे न्याय के काम प्रगट
हो गए है ॥

५ और इस के बाद मैं ने देखा, कि
स्वर्ग मे साक्षी के तम्बू का मन्दिर खोला
गया। ६ और वे सातो स्वर्गदूत जिन के
पास सातो विपत्तिया थी, शुद्ध और
चमकती हुई मणि पहिने हुए छाती पर
सुनहले पटुके बान्धे हुए मन्दिर से निकले।
७ और उन चारो प्राणियो में से एक ने
उन सात स्वर्गदूतो को परमेश्वर के, जो
युगानुयुग जीवता है, प्रकोप से भरे हुए
सात सोने के कटोरे दिए। ८ और
परमेश्वर की महिमा, और उस की
सामर्थ के कारण मन्दिर धुए से भर
गया और जब तक उन सातो स्वर्गदूतो की

सातो बिपत्तिया समाप्त न हुईं, तब तक
कोई मन्दिर में न जा सका ॥

१६ फिर मैं ने मन्दिर में किसी को ऊचे शब्द से उन सातो स्वर्गदूतो से यह कहते सुना कि जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातो कटोरो को पृथ्वी पर उडेल दो ॥

२ सो पहिले ने जाकर अपना कटोरा
पृथ्वी पर उडेल दिया। और उन मनुष्यों
के जिन पर पशु की छाप थी, और जो
उस की मूरत की पूजा करते थे, एक
प्रकार का बुरा और दुखदाई फोडा
निकला ॥

३ और दूसरे ने अपना कटोरा समुद्र
पर उडेल दिया और वह मरे हुए का सा
लोहू बन गया, और समुद्र में का हर एक
जीवधारी मर गया ॥

४ और तीसरे ने अपना कटोरा
नदियो और पानी के सोतो पर उडेल
दिया, और वे लोहू बन गए। ५ और
मैं ने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते
सुना, कि हे पवित्र, जो है, और जो था,
तू न्यायी है और तू ने यह न्याय किया।
६ क्योंकि उन्हो ने पवित्र लोगो, और
भविष्यद्वक्ताओ का लोहू बहाया था,
और तू ने उन्हें लोहू पिलाया, क्योंकि
वे इसी योग्य हैं। ७ फिर मैं ने वेदी से
यह शब्द सुना, कि हा हे सर्व्वशक्तिमान
प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और
सच्चे हैं ॥

८ और चौथे ने अपना कटोरा सूर्य
पर उडेल दिया, और उसे मनुष्यो को
आग से झुलसा देने का अधिकार दिया
गया। ९ और मनुष्य बडी तपन से
झुलस गए, और परमेश्वर के नाम की
जिसे इन विपत्तियो पर अधिकार है,
निन्दा की और उस की महिमा करने के
लिये मन न फिराया ॥

१० और पाचवें ने अपना कटोरा उस
पशु के सिहासन पर उडेल दिया और
उसके राज्य पर अन्धेरा छा गया, और
लोग पीडा के मारे अपनी अपनी जीभ
चबाने लगे। ११ और अपनी पीडाओ
और फोडो के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की
निन्दा की, और अपने अपने कामो से मन
न फिराया ॥

१२ और छठवें न अपना कटोरा बडी
नदी फुरात पर उडेल दिया और उसका
पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओ
के लिये मार्ग तैयार हो जाए। १३ और
मैं ने उस अजगर के मुह से, और उस
पशु के मुह से और उस झूठे भविष्यद्वक्ता
के मुह से तीन अशुद्ध आत्माओ को
मेंढको के रूप में निकलते देखा। १४ ये
चिन्ह दिखानेवाली दुष्टात्मा हैं, जो सारे
ससार के राजाओ के पास निकलकर
इसलिये जाती है, कि उन्हें सर्वशक्तिमान
परमेश्वर के उस बडे दिन की लडाई के
लिये इकट्ठा करें। १५ देख, मै चोर की
नाई आता हू, धन्य वह है, जो जागता
रहता है, और अपने वस्त्र की चौकसी
करता है, कि नङ्गा न फिरे, और लोग
उसका नङ्गापन न देखें। १६ और उन्हो
ने उन को उस जगह इकट्ठा किया, जो
इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है ॥

१७ और सातवें ने अपना कटोरा हवा
पर उडेल दिया, और मन्दिर* के
सिहासन से यह बडा शब्द हुआ, कि
'हो चुका'। १८ फिर बिजलिया, और

* यू० पवित्रस्थान।

शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा
बडा भुइडोल हुआ, कि जब से मनुष्य
की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा
बडा भुइडोल कभी न हुआ था। १९ और
उस बडे नगर के तीन टुकडे हो गए,
और जाति जाति के नगर गिर पडे,
और बडा बाबुल का स्मरण परमेश्वर के
यहा हुआ, कि वह अपने क्रोध की जल-
जलाहट की मदिरा उसे पिलाए। २० और
हर एक टापू अपनी जगह से टल गया,
और पहाडो का पता न लगा। २१ और
आकाश से मनुष्यों पर मन मन भर के
बडे ओले गिरे, और इसलिये कि यह
विपत्ति बहुत ही भारी थी, लोगो ने ओलो
की विपत्ति के कारण परमेश्वर की
निन्दा की ॥

१७ और जिन सात स्वर्गदूतो के
पास वे सात कटोरे थे, उन
मे से एक ने आकर मुझ से यह कहा
कि इधर आ, मैं तुझे उस बडी वेश्या
का दण्ड दिखाऊ, जो बहुत से पानियो
पर बैठी है। २ जिस के साथ पृथ्वी
के राजाओ ने व्यभिचार किया, और
पृथ्वी के रहनेवाले उसके व्यभिचार की
मदिरा से मतवाले हो गए थे। ३ तब
वह मुझे आत्मा मे जगल को ले गया,
और मैं ने किरमिजी रग के पशु पर
जो निन्दा के नामो से छिपा हुआ था
और जिस के सात सिर और दस सीग
थे, एक स्त्री को बैठे हुए देखा। ४ यह
स्त्री बैंजनी, और किरमिजी, कपडे पहिने
थी, और सोने और बहुमोल मणियो
और मोतियो से सजी हुई थी, और
उसके हाथ मे एक सोने का कटोरा था
जो घृणित वस्तुओ से और उसके व्यभिचार
की अशुद्ध वस्तुओ से भरा हुआ था।
५ और उसके माथे पर यह नाम लिखा
था, "भेद बडा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओ
और घृणित वस्तुओ की माता।" ६ और
मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगो के लोहू
और यीशु के गवाहो के लोहू पीने से
मतवाली देखा और उसे देखकर मैं
चकित हो गया। ७ उस स्वर्गदूत ने
मुझ से कहा, तू क्यो चकित हुआ?
मैं इस स्त्री, और उस पशु का, जिस
पर वह सवार है, और जिस के सात
सिर और दस सींग है, तुझे भेद बताया
हू। ८ जो पशु तू ने देखा है, यह पहिले
तो था, पर अब नही है, और अथाह
कुड से निकलकर विनाश मे पडेगा,
और पृथ्वी के रहनेवाले जिन के नाम
जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन
की पुस्तक मे लिखे नही गए, इस पशु
की यह दशा देखकर, कि पहिले था,
और अब नही, और फिर आ जाएगा,
अचभा करेंगे। ९ उस बुद्धि के लिये
जिस में ज्ञान है यही अवसर है, वे सातो
सिर सात पहाड है, जिन पर वह स्त्री
बैठी है। १० और वे सात राजा भी
है, पाच तो हो चुके है, और एक अभी
है, और एक अब तक आया नही, और
जब आएगा, तो कुछ समय तक उसका
रहना भी अवश्य है। ११ और जो
पशु पहिले था, और अब नही, वह आप
आठवा है, और उन सातो मे से उत्पन्न
हुआ, और विनाश मे पडेगा। १२ और
जो दस सीग तू ने देखे वे दस राजा है,
जिन्हो ने अब तक राज्य नही पाया,
पर उस पशु के साथ घडी भर के लिये
राजाओ का सा अधिकार पाएगे।
१३ ये सब एक मन होगे, और वे अपनी

अपनी सामर्थ और अधिकार उस पशु को
देंगे। १४ ये मेम्ने से लडेंगे, और मेम्ना
उन पर जय पाएगा, क्योंकि वह प्रभुओं
का प्रभु, और राजाओं का राजा है
और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, और
विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय
पाएंगे। १५ फिर उस ने मुझ से कहा,
कि जो पानी तू ने देखे, जिन पर वेश्या
बैठी है, वे लोग, और भीड और जातियां,
और भाषा हैं। १६ और जो दस सींग
तू ने देखे, वे और पशु उस वेश्या से
बैर रखेंगे, और उसे लाचार और नङ्गी
कर देंगे, और उसका मांस खा जाएंगे,
और उसे आग में जला देंगे। १७ क्योंकि
परमेश्वर उन के मन में यह डालेगा,
कि वे उस की मनसा पूरी करें, और
जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो
लें, तब तक एक मन होकर अपना अपना
राज्य पशु को दे दें। १८ और वह स्त्री,
जिसे तू ने देखा है वह बडा नगर है,
जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता
है॥

१८ इस के बाद मैं ने एक स्वर्ग-
दूत को स्वर्ग से उतरते देखा,
जिस का बडा अधिकार था, और पृथ्वी
उसके तेज से प्रज्वलित हो गई। २ उस ने
ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, कि गिर
गया बडा बाबुल गिर गया है और
दुष्टात्माओं का निवास, और हर एक
अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और एक अशुद्ध
और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया।
३ क्योंकि उसके व्यभिचार के भयानक
मदिरा के कारण सब जातियां गिर गई
हैं, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके
साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के
व्योपारी उसके सुख-विलास की बहुतायत
के कारण धनवान हुए हैं॥
४ फिर मैं ने स्वर्ग से किसी और
का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगो, उस
में से निकल आओ, कि तुम उसके
पापों में भागी न हो, और उस की
विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न
पडे। ५ क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक
पहुंच गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर
को स्मरण आए हैं। ६ जैसा उस ने
तुम्हें दिया है, वैसा ही उस को भर दो,
और उसके कामों के अनुसार उसे दो-
गुणा बदला दो, जिस कटोरे में उस ने
भर दिया था उसी में उसके लिये दो-
गुणा भर दो। ७ जितनी उस ने अपनी
बडाई की और सुख-विलास किया,
उतनी उस को पीडा, और शोक दो,
क्योंकि वह अपने मन में कहती है, मैं
रानी हो बैठी हूं, विधवा नहीं, और
शोक में कभी न पडूंगी। ८ इस कारण
एक ही दिन में उस पर विपत्तियां आ
पडेंगी, अर्थात् मृत्यु, और शोक, और
अकाल, और वह आग में भस्म कर
दी जाएगी, क्योंकि उसका न्यायी प्रभु
परमेश्वर शक्तिमान है। ९ और पृथ्वी के
राजा जिन्हों ने उसके साथ व्यभिचार,
और सुख-विलास किया, जब उसके
जलने का धुआं देखेंगे, तो उसके लिये
रोएंगे, और छाती पीटेंगे। १० और
उस की पीडा के डर के मारे दूर खडे
होकर कहेंगे, हे बडे नगर, बाबुल!
हे दृढ नगर, हाय! हाय! घडी ही भर में
तुझे दण्ड मिल गया है। ११ और पृथ्वी
के व्योपारी उसके लिये रोएंगे और
कलपेंगे क्योंकि अब कोई उन का माल
मोल न लेगा। १२ अर्थात् सोना, चान्दी,

रत्न, मोती, और मलमल, और बैंजनी,
और रेशमी, और किरमिजी कपडे, और
हर प्रकार का सुगन्धित काठ, और
हाथीदात की हर प्रकार की वस्तुए,
और बहुमोल काठ, और पीतल, और
लोहे, और संगमरमर के सब भाति के
पात्र। १३ और दारचीनी, मसाले, धूप,
इत्र, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा, गेहू,
गाय, बैल, भेड, बकरिया, घोडे, रथ,
और दास, और मनुष्यो के प्राण।
१४ अब तेरे मन भावने फल तेरे पास से
जाते रहे, और स्वादिष्ट और भडकीली
वस्तुए तुझ से दूर हुई हैं, और वे फिर
कदापि न मिलेगी। १५ इन वस्तुओ
के व्योपारी जो उसके द्वारा धनवान
हो गए थे, उस की पीडा के डर के मारे
दूर खडे होगे, और रोते और कलपते
हुए कहेंगे। १६ हाय! हाय! यह वडा
नगर जो मलमल, और बैंजनी, और
किरमिजी कपडे पहिने था, और सोने,
और रत्नो, और मोतियो से सजा था,
१७ घडी ही भर में उसका ऐसा भारी
धन नाश हो गया. और हर एक माझी,
और जलयात्री, और मल्लाह, और जितने
समुद्र से कमाते है, सब दूर खडे हुए।
१८ और उसके जलने का धुआ देखते
हुए पुकारकर कहेगे, कौन सा नगर इस
वडे नगर के समान है? १९ और अपने
अपने सिरो पर धूल डालेंगे, और रोते
हुए और कलपते हुए चिल्ला चिल्लाकर
कहेंगे, कि हाय! हाय! यह वडा नगर
जिस की सम्पत्ति के द्वारा समुद्र के सब
जहाजवाले धनी हो गए थे घडी ही
भर में उजड गया। २० हे स्वर्ग, और
हे पवित्र लोगो, और प्रेरितो, और
भविष्यद्वक्ताओ, उस पर आनन्द करो,
क्योकि परमेश्वर ने न्याय करके उस से
तुम्हारा पलटा लिया है!!
२१ फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत ने
बडी चक्की के पाट के समान एक पत्थर
उठाया, और यह कहकर समुद्र में फेंक
दिया, कि बडा नगर बाबुल ऐसे ही
बडे बल से गिराया जाएगा, और फिर
कभी उसका पता न मिलेगा। २२ और
वीणा बजानेवालो, और बजनियो, और
बसी बजानेवालो, और तुरही फूकनेवालो
का शब्द फिर कभी तुझ मे सुनाई न
देगा, और किसी उद्यम का कोई कारीगर
भी फिर कभी तुझ में न मिलेगा; और
चक्की के चलने का शब्द फिर कभी
तुझ में सुनाई न देगा। २३ और दीया
का उजाला फिर कभी तुझ में न चमकेगा
और दूल्हे और दुल्हिन का शब्द फिर
कभी तुझ मे सुनाई न देगा, क्योकि
तेरे व्योपारी पृथ्वी के प्रधान थे, और
तेरे टोने से सब जातिया भरमाई गई
थी। २४ और भविष्यद्वक्ताओ और पवित्र
लोगो, और पृथ्वी पर सब घात किए
हुओ का लोहू उसी में पाया गया॥

१९ इस के बाद मैं ने स्वर्ग मे
मानो बडी भीड को ऊचे शब्द से
यह कहते सुना, कि हल्लिलूय्याह उद्धार,
और महिमा, और सामर्थ हमारे परमेश्वर
ही की है। २ क्योकि उसके निर्णय
सच्चे और ठीक हैं, इसलिये कि उस ने
उस बडी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से
पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया,
और उस से अपने दासो के लोहू का
पलटा लिया है। ३ फिर दूसरी बार
उन्हो ने हल्लिलूय्याह कहा और उसके
जलने का धुआ युगानुयुग उठता रहेगा।

४ और चौबीसो प्राचीनो और चारो
प्राणियो ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत
किया, जो सिंहासन पर बैठा था, और
कहा, आमीन, हल्लिलूय्याह। ५ और
सिंहासन में से एक शब्द निकला, कि
हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले
दासो, क्या छोटे, क्या बडे, तुम सब
उस की स्तुति करो। ६ फिर मैं ने
बडी भीड का सा, और बहुत जल का सा
शब्द, और गर्जनो का सा बडा शब्द
सुना, कि हल्लिलूय्याह, इसलिये कि
प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य
करता है। ७ आओ, हम आनन्दित और
मगन हो, और उस की स्तुति करें,
क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुचा और
उस की पत्नी ने अपने आप को तैयार
कर लिया है। ८ और उस को शुद्ध
और चमकदार महीन मलमल पहिनने का
अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन
मलमल का अर्थ पवित्र लोगो के धर्म
के काम हैं। ९ और उस ने मुझ से
कहा, यह लिख, कि धन्य वे है, जो
मेम्ने के ब्याह के भोज मे बुलाए गए
है, फिर उस ने मुझ से कहा, ये वचन
परमेश्वर के सत्य वचन हैं। १० और
मैं उस को दण्डवत करने के लिये उसके
पावो पर गिरा, उस ने मुझ से कहा,
देख, ऐसा मत कर, म तेरा और तेरे
भाइयो का सगी दास हू, जो यीशु की
गवाही देने पर स्थिर हैं, परमेश्वर ही
को दण्डवत कर, क्योंकि यीशु की गवाही
भविष्यद्वाणी की आत्मा है॥

११ फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ
देखा, और देखता हू कि एक श्वेत घोडा
है, और उस पर एक सवार है, जो
विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है,
और वह धर्म के साथ न्याय और लडाई
करता है। १२ उस की आखें आग की
ज्वाला हैं और उसके सिर पर बहुत से
राजमुकुट है, और उसका एक नाम
लिखा है, जिसे उस को छोड और कोई
नही जानता। १३ और वह लोहू से
छिडका हुआ वस्त्र पहिने है और उसका
नाम परमेश्वर का वचन है। १४ और
स्वर्ग की सेना श्वेत घोडो पर सवार
और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए
उसके पीछे पीछे है। १५ और जाति
जाति को मारने के लिये उसके मुह से
एक चोखी तलवार निकलती है, और
वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर
राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान
परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जल-
जलाहट की मदिरा के कुड में दाख
रौंदेगा। १६ और उसके वस्त्र और जाघ
पर यह नाम लिखा ह, **राजाओं का
राजा और प्रभुओं का प्रभु**॥

१७ फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को सूर्य
पर खडे हुए देखा, और उस ने बडे शब्द से
पुकारकर आकाश के बीच में मे उडने-
वाले सब पक्षियो से कहा, आओ, परमेश्वर
की बडी बियारी के लिये इकट्ठे हो
जाओ। १८ जिस से तुम राजाओ का
मास, और सरदारो का मास, और
शक्तिमान पुरुषो का मास, और घोडो का,
और उन के सवारो का मास, और क्या
स्वतत्र, क्या दास, क्या छोटे, क्या बडे,
सब लोगो का मास खाओ॥

१९ फिर मे ने उस पशु और पृथ्वी
के राजाओ और उन की सेनाओ को
उस घोडे के सवार, और उस की सेना से
लडने के लिये इकट्ठे देखा। २० और
वह पशु और उसके साथ वह झूठा

भविष्यद्वक्ता पकडा गया, जिस ने उसके
साम्हने ऐसे चिन्ह दिखाए थे, जिन के
द्वारा उस ने उन को भरमाया, जिन्हो ने
उस पशु की छाप ली थी, और जो
उस की मूरत की पूजा करते थे, ये दोनो
जीते जी उस आग की झील मे जो
गन्धक से जलती है, डाले गए। २१ और
शेष लोग उस घोडे के सवार की तलवार से
जो उसके मुह से निकलती थी, मार
डाले गए, और सब पक्षी उन के मास से
तृप्त हो गए॥

२० फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को
स्वर्ग से उतरते देखा, जिस के
हाथ मे अथाह कुड की कुजी, और एक
बडी जजीर थी। २ और उस ने उस
अजगर, अर्थात् पुराने साप को, जो
इब्लीस और शैतान है, पकड के हजार
वर्ष के लिये बान्ध दिया। ३ और उसे
अथाह कुड मे डालकर बन्द कर दिया और
उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार
वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के
लोगो को फिर न भरमाए, इस के बाद
अवश्य है, कि थोडी देर के लिये फिर
खोला जाए॥

४ फिर मैं न सिहासन देखे, और
उन पर लोग बैठ गए, और उन को
न्याय करने का अधिकार दिया गया,
और उन की आत्माओ को भी देखा,
जिन के सिर यीशु की गवाही देने और
परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए
थे, और जिन्हो ने न उस पशु की, और
न उस की मूरत की पूजा की थी, और
न उस की छाप अपने माथे और हाथो
पर ली थी, वे जीवित होकर मसीह के
साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे।
५ और जब तक ये हजार वर्ष पूरे न
हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे;
यह तो पहिला मृतकोत्थान है। ६ धन्य
और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुन-
रुत्थान* का भागी है, ऐसो पर दूसरी
मृत्यु का कुछ भी अधिकार नही, पर
वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे,
और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य
करेंगे॥

७ और जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे,
तो शैतान कैद से छोड दिया जाएगा।
८ और उन जातियो को जो पृथ्वी के
चारो ओर होंगी, अर्थात् याजूज और
माजूज को जिन की गिनती समुद्र की
बालू के बराबर होगी, भरमाकर लडाई
के लिये इकट्ठे करने को निकलेगा।
९ और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएगी,
और पवित्र लोगो की छावनी और प्रिय
नगर को घेर लेगी और आग स्वर्ग से
उतरकर उन्हे भस्म करेगी। १० और
उन का भरमानेवाला शैतान† आग
और गन्धक की उस झील मे, जिस मे
वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी
होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात
दिन युगानुयुग पीडा मे तडपते रहेंगे॥

११ फिर मैं ने एक बडा श्वेत सिहासन
और उस को जो उस पर बैठा हुआ है,
देखा, जिस के साम्हने से पृथ्वी और
आकाश भाग गए, और उन के लिये
जगह न मिली। १२ फिर मै ने छोटे
बडे सब मरे हुओ को सिहासन के साम्हने
खडे हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं,
और फिर एक और पुस्तक खोली गई,
अर्थात् जीवन की पुस्तक, और जैसे

* या मृतकोत्थान।
† या इब्लीस।

उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के
कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय
किया गया। १३ और समुद्र ने उन मरे
हुओं को जो उस में थे दे दिया, और
मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं
को जो उन में थे दे दिया, और उन
में से हर एक के कामों के अनुसार उन का
न्याय किया गया। १४ और मृत्यु और
अधोलोक भी आग की झील में डाले
गए, यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु
है। १५ और जिस किसी का नाम
जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला,
वह आग की झील में डाला गया॥

२१ फिर मैं ने नये आकाश और
नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि
पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती
रही थी, और समुद्र भी न रहा। २ फिर
मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को
स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते
देखा, और वह उस दुल्हिन के समान
थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए
हो। ३ फिर मैं ने सिंहासन में से
किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए
सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों
के बीच में है, वह उन के साथ डेरा
करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और
परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा,
और उन का परमेश्वर होगा। ४ और
वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ
डालेगा, और इस के बाद मृत्यु न रहेगी,
और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी,
पहिली बातें जाती रहीं। ५ और जो
सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा,
कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं
फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि
ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य
हैं। ६ फिर उस ने मुझ से कहा, ये
बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और
ओमिगा, आदि और अन्त हूं मैं प्यासे
को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत
पिलाऊंगा। ७ जो जय पाए, वही इन
वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका
परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र
होगा। ८ पर डरपोकों, और अवि-
श्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों
और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और
मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस
झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक
से जलती रहती है यह दूसरी मृत्यु है॥
९ फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास
सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात
कटोरे थे, उन में से एक मेरे पास आया,
और मेरे साथ बातें करके कहा, इधर
आ मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेम्ने की
पत्नी दिखाऊंगा। १० और वह मुझे
आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़
पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम
को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से
उतरते दिखाया। ११ परमेश्वर की
महिमा उस में थी, और उस की ज्योति *
बहुत ही बहुमोल पत्थर, अर्थात् बिल्लौर
के समान यशब की नाईं स्वच्छ थी।
१२ और उस की शहरपनाह बड़ी ऊंची
थी, और उसके बारह फाटक और
फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे, और उन
पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम
लिखे थे। १३ पूर्व की ओर तीन फाटक,
उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्खिन की
ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर

* या ज्योति देनेवाला।

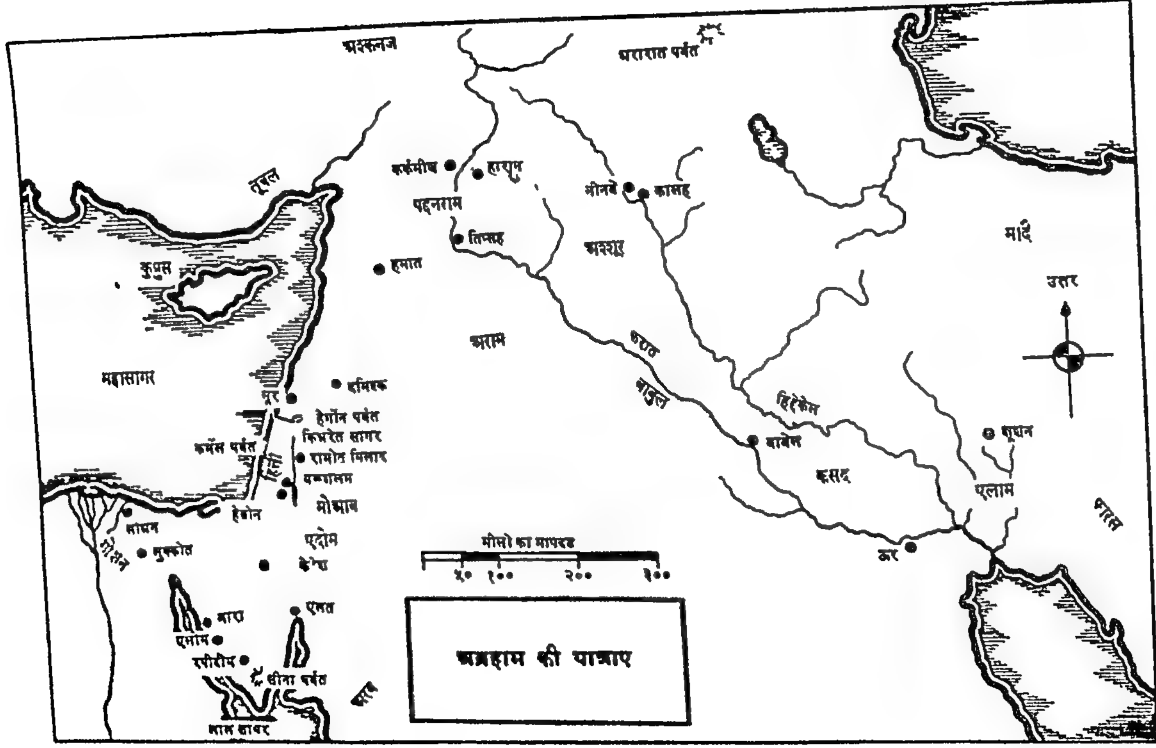
तीन फाटक थे। १४ और नगर की
शहरपनाह की बारह नेवें थी, और उन
पर मेम्ने के बारह प्रेरितो के बारह नाम
लिखे थे। १५ और जो मेरे साथ बाते
कर रहा था, उसके पास नगर, और
उसके फाटको और उस की शहरपनाह
को नापने के लिये एक सोने का गज
था। १६ और वह नगर चौकोर बसा
हुआ था और उस की लम्बाई चौडाई
के बराबर थी, और उस ने उस गज़ से
नगर को नापा, तो साढे सात सौ कोस
का निकला उस की लम्बाई, और
चौडाई, और ऊचाई बराबर थी।
१७ और उस ने उस की शहरपनाह को
मनुष्य के, अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से
नापा, तो एक सौ चौग्रालीस हाथ
निकली। १८ और उस की शहरपनाह
की जुडाई यशब की थी, और नगर ऐसे
चोखे सोने का था, जो स्वच्छ काच
के समान हो। १९ और उस नगर की
नेवें हर प्रकार के बहुमोल पत्थरो से
सवारी हुई थी, पहिली नेव यशब की
थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालडी
की, चौथी मरकत की। २० पाचवी
गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवी
पीतमणि की, आठवी पेरोज की, नवी
पुखराज की, दसवी लहसनिए की,
एग्यारहवी धूम्रकान्त की, बारहवी याकूत
की। २१ और बारहो फाटक, बारह
मोतियो के थे, एक एक फाटक, एक-
एक मोती का बना था, और नगर की
सडक स्वच्छ काच के समान चोखे सोने
की थी। २२ और मैं ने उस में कोई
मन्दिर * न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान
प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर
है। २३ और उस नगर में सूर्य और
चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि
परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो
रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है।
२४ और जाति जाति के लोग उस की
ज्योति मे चले फिरेंगे, और पृथ्वी के
राजा अपने अपने तेज का सामान उस में
लाएगे। २५ और उसके फाटक दिन को
कभी बन्द न होंगे, और रात वहा न
होगी। २६ और लोग जाति जाति के
तेज और विभव का सामान उस में
लाएगे। २७ और उस मे कोई अपवित्र
वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या
झूठ का गढनेवाला, किसी रीति से प्रवेश
न करेगा, पर केवल वे लोग जिन के
नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में
लिखे है॥

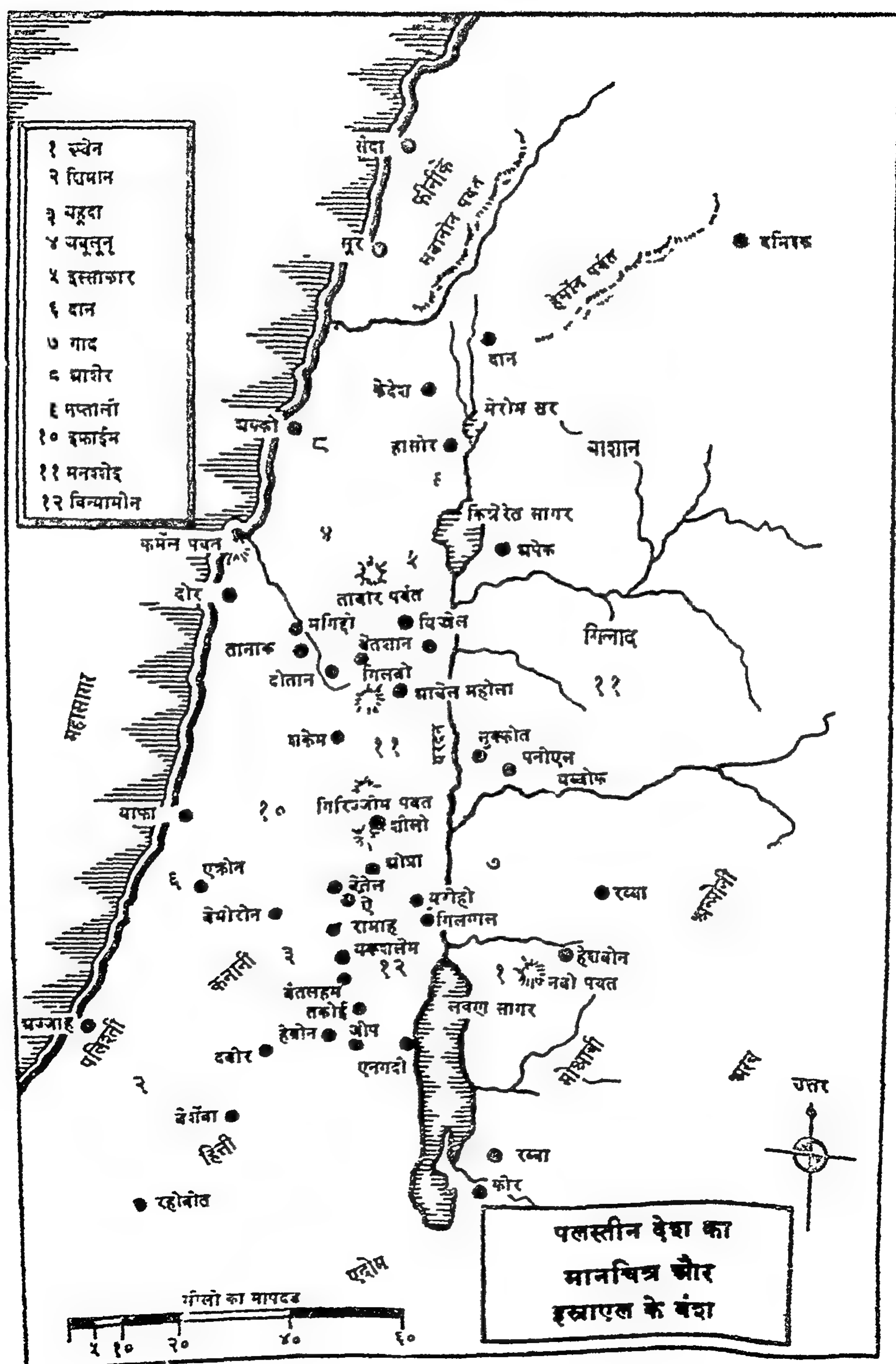
२२ फिर उस ने मुझे बिल्लौर की
सी झलकती हुई, जीवन के
जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर
और मेम्ने के सिहासन से निकलकर
उस नगर की सडक के बीचो बीच बहती
थी। २ और नदी के इस पार, और
उस पार, जीवन का पेड था उस मे
बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह
हर महीने फलता था, और उस पेड
के पत्तो से जाति जाति के लोग चङ्गे
होते थे। ३ और फिर स्राप न होगा
और परमेश्वर और मेम्ने का सिहासन
उस नगर में होगा, और उसके दास
उस की सेवा करेंगे। ४ और उसका
मुह देखेंगे, और उसका नाम उन के
माथो पर लिखा हुआ होगा। ५ और
फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक

* यू० पवित्रस्थान।

और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न
होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला
देगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे॥
६ फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें
विश्वास के योग्य, और सत्य हैं, और
प्रभु ने जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं
का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को इस-
लिये भेजा, कि अपने दासों को वे बातें
जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है
दिखाए। ७ देख, मैं शीघ्र आनेवाला
हूं, धन्य है वह, जो इस पुस्तक की
भविष्यद्वाणी की बातें मानता है॥
८ मैं वही यूहन्ना हूं, जो ये बातें
सुनता, और देखता था, और जब मैं ने
सुना, और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे
ये बातें दिखाता था, मैं उसके पांवों पर
दण्डवत करने के लिये गिर पड़ा।
९ और उस ने मुझ से कहा, देख, ऐसा
मत कर, क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई
भविष्यद्वक्ताओं और इस पुस्तक की बातों
के माननेवालों का संगी दास हूं, परमेश्वर
ही को दण्डवत कर॥
१० फिर उस ने मुझ से कहा, इस
पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातों को
बन्द मत कर*, क्योंकि समय निकट है॥
११ जो अन्याय करता है, वह अन्याय
ही करता रहे, और जो मलिन है, वह
मलिन बना रहे, और जो धर्मी है, वह
धर्मी बना रहे, और जो पवित्र है, वह
पवित्र बना रहे। १२ देख, मैं शीघ्र
आनेवाला हूं, और हर एक के काम के
अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल
मेरे पास है। १३ मैं अलफा और
ओमिगा, पहिला और पिछला, आदि
और अन्त हूं। १४ धन्य वे हैं, जो
अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें
जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार
मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में
प्रवेश करेंगे। १५ पर कुत्ते, और टोन्हें,
और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्ति-
पूजक, और हर एक झूठ का चाहनेवाला,
और गढ़नेवाला बाहर रहेगा॥
१६ मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को
इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कली-
सियाओं के विषय में इन बातों की गवाही
दे मैं दाऊद का मूल, और वंश, और
भोर का चमकता हुआ तारा हूं॥
१७ और आत्मा, और दुल्हिन दोनों
कहती हैं, आ, और सुननेवाला भी कहे,
कि आ, और जो प्यासा हो, वह आए,
और जो कोई चाहे वह जीवन का जल
सेंतमेंत ले॥
१८ मैं हर एक को जो इस पुस्तक
की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है,
गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य
इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर
उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में
लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। १९ और
यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक
की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो
परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र
नगर में से जिस की चरचा इस पुस्तक में
है, उसका भाग निकाल देगा॥
२० जो इन बातों की गवाही देता
है, वह यह कहता है, हां, मैं शीघ्र आने-
वाला हूं। आमीन। हे प्रभु यीशु आ॥
२१ प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों
के साथ रहे। आमीन॥

* या पर छाप न दे।


अब्राहम की यात्राएं
मीलों का मापदण्ड
५० १०० २०० ३००
उत्तर
अश्कनज
अरारात पर्वत
तूबल
कर्कमीश
हारान
पद्दनराम
तिप्सह
नीनवे
कालह
अश्शूर
हमात
कुप्रुस
अराम
फरात
बाबुल
हिद्देकेल
मादै
महासागर
दमिश्क
सूर
हेर्मोन पर्वत
किन्नेरेत सागर
कर्मेल पर्वत
रामोत गिलाद
यरूशलेम
मोआब
हेब्रोन
सोअन
गोशेन
सुक्कोत
एदोम
बाबेल
कसद
शूशन
एलाम
फारस
ऊर
मारा
एलीम
रपीदीम
सीना पर्वत
एलत
लाल सागर


पलस्तीन देश का
मानचित्र और
इस्राएल के वंश
१ रूबेन
२ शिमोन
३ यहूदा
४ जबूलून
५ इस्साकार
६ दान
७ गाद
८ आशेर
९ नप्ताली
१० इफ्राईम
११ मनश्शे
१२ बिन्यामीन
सैदा
फीनीके
सूर
लबानोन पर्वत
हेर्मोन पर्वत
दमिश्क
दान
केदेश
मेरोम सर
हासोर
बाशान
किन्नेरेत सागर
अपेक
अक्को
कर्मेल पर्वत
दोर
ताबोर पर्वत
मगिद्दो
यिज्रेल
तानाक
बेतशान
दोतान
गिलबो
आबेल महोला
गिलाद
शकेम
सुक्कोत
पनीएल
यब्बोक
यरदन
गिरिज्जीम पर्वत
शीलो
याफा
महासागर
एक्रोन
बेतेल
ऐ
यरीहो
गिलगाल
रामाह
रब्बा
अम्मोनी
यरूशलेम
हेशबोन
नबो पर्वत
बेतलहम
तकोई
लवण सागर
अज्जाह
पलिश्ती
कनानी
हेब्रोन
जीप
दबीर
एनगदी
मोआबी
अरब
उत्तर
बेर्शेबा
रहोबोत
फोर
एदोम
मीलों का मापदंड
५ १० २० ४० ६०

और थके मादे विश्राम पाते हैं।
१८ उस में बन्धुए एक संग सुख से रहते
हैं,
और परिश्रम करानेवाले का शब्द
नहीं सुनते।
१९ उस में छोटे बड़े सब रहते हैं, और
दास अपने स्वामी से स्वतन्त्र रहता
है॥
२० दुःखियों को उजियाला,
और उदास मनवालों को जीवन क्यों
दिया जाता है?
२१ वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह
आती नहीं,
और गड़े हुए धन से अधिक उसकी
खोज करते हैं*,
२२ वे कब्र को पहुंचकर आनन्दित और
अत्यन्त मगन होते हैं॥
२३ उजियाला उस पुरुष को क्यों मिलता
है जिसका मार्ग छिपा है,
जिसके चारों ओर ईश्वर ने घेरा
बान्ध दिया है?
२४ मुझे तो रोटी खाने की सन्ती लम्बी
लम्बी सांसें आती हैं,
और मेरा विलाप धारा की नाईं
बहता रहता† है।
२५ क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं
डरता हूं, वही मुझ पर आ पड़ती
है,
और जिस बात से मैं भय खाता
हूं वही मुझ पर आ जाती है।
२६ मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम
मिलता है, परन्तु दुःख ही आता
है॥

* मूल में—उसके लिये खोदते हैं।
† मूल में—मेरे गर्जन जल की नाईं उण्डेले जाते हैं।

४ (एलीपज का वचन)
तब तेमानी एलीपज ने कहा,
२ यदि कोई तुझ से कुछ कहने लगे,
तो क्या तुझे बुरा लगेगा?
परन्तु बोले बिना कौन रह सकता है?
३ सुन, तू ने बहुतों को शिक्षा दी है,
और निर्बल लोगों* को बलवन्त
किया है।
४ गिरते हुओं को तू ने अपनी बातों
से सम्भाल लिया,
और लड़खड़ाते हुए लोगों† को तू
ने बलवन्त किया।
५ परन्तु अब विपत्ति तो तुझी पर आ
पड़ी, और तू निराश हुआ जाता है,
उस ने तुझे छुआ और तू घबरा उठा।
६ क्या परमेश्वर का भय ही तेरा आसरा
नहीं?
और क्या तेरी चालचलन जो खरी
है तेरी आशा नहीं?
७ क्या तुझे मालूम है कि कोई निर्दोष
भी कभी नाश हुआ है? या कहीं
सज्जन भी काट डाले गए?
८ मेरे देखने में तो जो पाप को जोतते
और दुःख बोते हैं, वही उसको
काटते हैं।
९ वे तो ईश्वर की श्वास से नाश होते,
और उसके क्रोध के झोंके से भस्म
होते हैं।
१० सिंह का गरजना और भयंकर हिंसक
सिंह का दहाड़ना बन्द हो जाता
है।
और जवान सिंहों के दांत तोड़े
जाते हैं॥

* मूल में—निर्बल हाथ।
† मूल में—टिकने हुए।

११ शिकार न पाकर बूढा सिंह मर
जाता है,
और सिंहनी के बच्चे तितर बितर
हो जाते हैं ।।
१२ एक बात चुपके से मेरे पास पहुचाई
गई,
और उसकी कुछ भनक मेरे कान
मे पडी।
१३ रात के स्वप्नो की चिन्ताओ के बीच
जब मनुष्य गहरी निद्रा मे रहते हैं,
१४ मुझे ऐसी थरथराहट और कपकपी
लगी कि मेरी सब हड्डिया तक हिल
उठी।
१५ तब एक आत्मा* मेरे साम्हने से
होकर चली,
और मेरी देह के रोए खडे हो
गए।
१६ वह चुपचाप ठहर गई और मैं उसकी
आकृति को पहिचान न सका।
परन्तु मेरी आखो के साम्हने कोई
रूप था,
पहिले सन्नाटा छाया रहा, फिर मुझे
एक शब्द सुन पडा,
१७ क्या नाशमान मनुष्य ईश्वर से अधिक
न्यायी होगा? क्या मनुष्य अपने
सृजनहार से अधिक पवित्र हो
सकता है?
१८ देख, वह अपने सेवको पर भरोसा
नही रखता,
और अपने स्वर्गदूतो को मूर्ख ठहराता
है,
१९ फिर जो मिट्टी के घरो मे रहते है,
और जिनकी नेव मिट्टी मे डाली
गई है,
और जो पतगे की नाई पिस जाते
हैं, उनकी क्या गणना।
२० वे भोर से साझ तक नाश किए
जाते है,
वे सदा के लिये मिट जाते है,
और कोई उनका विचार भी नही
करता।
२१ क्या उनके डेरे की डोरी उनके अन्दर
ही अन्दर नही कट जाती? वे बिना
बुद्धि के ही मर जाते है।

५ पुकार कर देख, क्या कोई है जो
तुझे उत्तर देगा?
और पवित्रो मे से तू किस की ओर
फिरेगा?
२ क्योकि मूढ तो खेद करते करते नाश
हो जाता है,
और भोला जलते जलते मर मिटता
है।
३ मैं ने मूढ को जब पकडते देखा है,
परन्तु अचानक मैं ने उसके वासस्थान
को धिक्कारा।
४ उसके लडकेवाले उद्धार से दूर है,
और वे फाटक मे पीसे जाते है,
और कोई नही है जो उन्हे छुडाए ।।
५ उसके खेत की उपज भूखे लोग खा
लेते है,
वरन कटीली बाड मे से भी निकाल
लेते है,
और प्यासा उनके धन के लिये फन्दा
लगाता है।
६ क्योकि विपत्ति धूल से उत्पन्न नही
होती, और न कष्ट भूमि मे से
उगता है,
७ परन्तु जैसे चिंगारियां ऊपर ही ऊपर
को उड जाती है,

* वा वायु।

वैसे ही मनुष्य कष्ट ही भोगने के लिये
उत्पन्न हुआ है ।।
८ परन्तु मैं तो ईश्वर ही को खोजता
रहूंगा और अपना मुकद्दमा परमेश्वर
पर छोड दूगा ।
९ वह तो एसे वडे काम करता है
जिनकी थाह नही लगती,
और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो
गिने नही जाते ।
१० वही पृथ्वी के ऊपर वर्षा करता,
और खेतो पर जल वरसाता है ।
११ इसी रीति वह नम्र लोगो को ऊचे
स्थान पर विठाता है,
और शोक का पहिरावा पहिने हुए
लोग ऊचे पर पहुचकर वचते है ।
१२ वह तो धूर्त्त लोगो की कल्पनाए
व्यर्थ कर देता है,
और उनके हाथो मे कुछ भी वन
नही पडता ।
१३ वह बुद्धिमानो को उनकी धूर्त्तता ही
में फसाता है,
और कुटिल लोगो की युक्ति दूर
की जाती है ।
१४ उन पर दिन को अन्धेरा छा जाता
है, और दिन दुपहरी मे वे रात की
नाई टटोलते फिरते है ।
१५ परन्तु वह दरिद्रो को उनके वचनरूपी
तलवार मे * और वलवानो के हाथ
से वचाता है ।
१६ इसलिये कगालो को आशा होती है,
और कुटिल मनुष्यो का मुह वन्द
हो जाता है ।।
१७ देख, क्या ही धन्य वह मनुष्य, जिसको
ईश्वर ताडना देता है,

* मूल में—तलवार से उनके मुह मे।

इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताडना
को तुच्छ मत जान ।
१८ क्योकि वही घायल करता, और वही
पट्टी भी वान्धता है,
वही मारता है, और वही अपने
हाथो से चगा भी करता है ।
१९ वह तुझे छ विपत्तियो से छुडाएगा,
वरन सात मे भी तेरी कुछ हानि
न होने पाएगी ।
२० अकाल मे वह तुझे मृत्यु मे, और
युद्ध मे तलवार की धार मे वचा
लेगा ।।
२१ तू वचनरूपी कोडे से वचा रहेगा *
और जब विनाश आए, तव भी
तुझे भय न होगा ।
२२ तू उजाड और अकाल के दिनो मे
हँसमुख रहेगा,
और तुझे वनैले जन्तुओ से डर न
लगेगा ।
२३ वरन मैदान के पत्थर भी तुझ से
वाचा वान्धे रहेगे,
और वनपशु तुझ से मेल रखेगे ।
२४ और तुझे निश्चय होगा, कि तेरा
डेरा कुशल से है,
और जब तू अपने निवास मे देखे
तव कोई वस्तु खोई न होगी ।
२५ तुझे यह भी निश्चित होगा, कि मेरे
वहुत वश होगे ।
और मेरे सन्तान पृथ्वी की घास के
तुल्य वहुत होगे ।
२६ जैसे पूलियो का ढेर समय पर खलिहान
मे रखा जाता है,
वैसे ही तू पूरी अवस्था का होकर
कब्र को पहुचेगा ।

* मूल में—छिपाया जायगा।

२७ देख, हम ने खोज खोजकर ऐसा ही
पाया है,
इसे तू सुन, और अपने लाभ के लिये
ध्यान में रख ॥

(अय्यूब का उत्तर)

६ फिर अय्यूब ने कहा,
२ भला होता कि मेरा खेद तौला
जाता, और मेरी सारी विपत्ति
तुला में धरी जाती।
३ क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी
भारी ठहरती,
इसी कारण मेरी बातें उतावली से
हुई हैं।
४ क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे
अन्दर चुभे हैं,
और उनका विष मेरी आत्मा में
पैठ गया है *,
ईश्वर की भयंकर बात मेरे विरुद्ध
पांति बान्धे हैं।
५ जब बनैले गदहे को घास मिलती,
तब क्या वह रेंकता है?
और बैल चारा पाकर क्या डकारता
है?
६ जो फीका है वह क्या बिना नमक
खाया जाता है?
क्या अण्डे की सफेदी में भी कुछ
स्वाद होता है?
७ जिन वस्तुओं को मैं छूना भी नहीं
चाहता वही मानो मेरे लिये घिनौना
आहार ठहरी हैं ॥
८ भला होता कि मुझे मुंह मांगा वर
मिलता और जिस बात की मैं आशा
करता हूं वह ईश्वर मुझे दे
देता।

* मूल में—मेरी आत्मा को पी लेता है।

९ कि ईश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल
डालता, और हाथ बढ़ाकर मुझे
काट डालता!
१० यही मेरी शान्ति का कारण, वरन
भारी पीड़ा में * भी मैं इस कारण
से उछल पड़ता,
क्योंकि मैं ने उस पवित्र के वचनों
का कभी इनकार नहीं किया।
११ मुझ में बल ही क्या है कि मैं आशा
रखूं? और मेरा अन्त ही क्या
होगा, कि मैं धीरज धरूं?
१२ क्या मेरी दृढ़ता पत्थरों की सी है?
क्या मेरा शरीर पीतल का है?
१३ क्या मैं निराधार नहीं हूं?
क्या काम करने की शक्ति मुझ से
दूर नहीं हो गई?
१४ जो पड़ोसी पर कृपा नहीं करता वह
सर्वशक्तिमान का भय मानना छोड़
देता है।
१५ मेरे भाई नाले के समान विश्वासघाती
हो गए हैं,
वरन उन नालों के समान जिनकी
धार सूख जाती है,
१६ और वे बरफ के कारण काले से
हो जाते हैं,
और उन में हिम छिपा रहता है।
१७ परन्तु जब गरमी होने लगती तब
उनकी धाराएं लोप हो जाती हैं,
और जब कड़ी धूप पड़ती है तब वे
अपनी जगह से उड़ जाते हैं †,
१८ वे घूमते घूमते सूख जातीं, और
सुनसान स्थान में बहकर नाश होती
हैं।

* मूल में—बिना छोड़ने की पीड़ा में।
† मूल में—उनके मार्ग की डगर घूमती
है।

१९ तेमा के बनजारे देखते रहे और
शबा के काफिलेवालो ने उनका
रास्ता देखा।
२० वे लज्जित हुए क्योकि उन्हो ने
भरोसा रखा था और वहा पहुचकर
उनके मुह सूख गए।
२१ उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न
रहे, मेरी विपत्ति देखकर तुम डर
गए हो।
२२ क्या मै ने तुम से कहा था, कि मुझे
कुछ दो? वा अपनी सम्पत्ति में से
मेरे लिये घूस दो?
२३ वा मुझे सतानेवाले के हाथ से
बचाओ? वा उपद्रव करनेवालो के
वश से छुडा लो?
२४ मुझे शिक्षा दो और मै चुप रहूगा,
और मुझे समझाओ, कि मै ने किस
बात में चूक की है।।
२५ सच्चाई के वचनो में कितना प्रभाव
होता है, परन्तु तुम्हारे विवाद से
क्या लाभ होता है?
२६ क्या तुम बातें पकडने * की कल्पना
करते हो?
निराश जन की बातें तो वायु की
सी है।।
२७ तुम अनाथो पर चिट्ठी डालते, और
अपने मित्र को बेचकर लाभ उठाने-
वाले हो।।
२८ इसलिये अब कृपा करके मुझे देखो,
निश्चय मै तुम्हारे साम्हने कदापि
झूठ न बोलूगा।।
२९ फिर कुछ अन्याय न होने पाए, फिर
इस मुकद्दमें में मेरा धर्म ज्यो का
त्यो बना है, मै सत्त पर हू।

* मूल में—छाटने।

३० क्या मेरे वचनो में * कुछ कुटिलता
है?
क्या मै † दुष्टता नही पहचान
सकता?

७ क्या मनुष्य को पृथ्वी पर कठिन
सेवा करनी नही पडती?
क्या उसके दिन मजदूर के से नही
होते?
२ जैसा कोई दास छाया की अभिलाषा
करे, वा मजदूर अपनी मजदूरी की
आशा रखे,
३ वैसा ही मै अनर्थ के महीनो का
स्वामी बनाया गया हू, और मेरे
लिये क्लेश से भरी रातें ठहराई
गई है।।
४ जब मै लेट जाता, तब कहता हू,
मै कब उठूगा? और रात कब
बीतेगी?
और पौ फटने तक छटपटाते छटपटाते
उकता जाता हू।।
५ मेरी देह कीडो और मिट्टी के ढेलो
से ढकी हुई है,
मेरा चमडा सिमट जाता, और फिर
गल जाता है।
६ मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से अधिक
फुर्ती से चलनेवाले है और निराशा
में बीते जाते है।।
७ याद कर कि मेरा जीवन वायु ही है,
और मै अपनी आखो से कल्याण
फिर न देखूगा।।
८ जो मुझे अब देखता है उसे मै फिर
दिखाई न दूगा,

* मूल में—मेरी जीभ पर।
† मूल में—मेरा तालू।

तेरी आखे मेरी ओर होगी परन्तु
मै न मिलूगा ।।
९ जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है,
वैसे ही अधोलोक में उतरनेवाला
फिर वहा से नही लौट सकता,
१० वह अपने घर को फिर लौट न
आएगा, और न अपने स्थान मे फिर
मिलेगा * ।।
११ इसलिये मै अपना मुह बन्द न रखूगा,
अपने मन का खेद खोलकर कहूगा,
और अपने जीव की कड़ुवाहट के
कारण कुडकुडाता रहूगा ।।
१२ क्या मै समुद्र हू, वा मगरमच्छ हू,
कि तू मुझ पर पहरा बैठाता है ?
१३ जब जब मै सोचता हू कि मुझे खाट
पर शान्ति मिलेगी,
और बिछौने पर मेरा खेद कुछ
हलका होगा,
१४ तब तब तू मुझे स्वप्नो से घबरा
देता,
और दर्शनो से भयभीत कर देता है,
१५ यहा तक कि मेरा जी फासी को,
और जीवन से मृत्यु को अधिक
चाहता है ।।
१६ मुझे अपने जीवन से घृणा आती
है, मै सर्वदा जीवित रहना नही
चाहता ।
मेरा जीवनकाल सास सा है, इसलिये
मुझे छोड दे ।।
१७ मनुष्य क्या है, कि तू उसे महत्व दे,
और अपना मन उस पर लगाए,
१८ और प्रति भोर को उसकी सुधि ले,
और प्रति क्षण उसे जाचता रहे ?

* मूल में—उसका स्थान उसे फिर न चीन्हेगा।

१९ तू कब तक मेरी ओर आख लगाए
रहेगा, और इतनी देर के लिये भी
मुझे न छोडेगा कि मै अपना थूक
निगल लू ?
२० हे मनुष्यो के ताकनेवाले, मै ने पाप
तो किया होगा, तो मै ने तेरा
क्या बिगाडा ?
तू ने क्यो मुझ को अपना निशाना
बना लिया है,
यहा तक कि मै अपने ऊपर आपही
बोझ हुआ हू ?
२१ और तू क्यो मेरा अपराध क्षमा नही
करता ?
और मेरा अधर्म क्यो दूर नही करता ?
अब तो मै मिट्टी मे सो जाऊगा,
और तू मुझे यत्न से ढूढेगा पर मेरा
पता नही मिलेगा ।

(बिलदद का वचन)

८ तब शूही बिलदद ने कहा,
२ तू कब तक ऐसी ऐसी बाते करता
रहेगा ? और तेरे मुह की बाते
कब तक प्रचण्ड वायु सी रहेगी ?
३ क्या ईश्वर अन्याय करता है ?
और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को
उलटा करता है ?
४ यदि तेरे लडकेवालो ने उसके विरुद्ध
पाप किया है,
तो उस ने उनको उनके अपराध का
फल भुगताया है * ।।
५ तौभी यदि तू आप ईश्वर को यत्न
से ढूढता,
और सर्वशक्तिमान से गिडगिडाकर
बिनती करता,

* मूल में—उनके अपराध के हाथ मे भेजा है।

६ और यदि तू निर्मल और धर्मी रहता,
तो निश्चय वह तेरे लिये जागता,
और तेरी धार्मिकता का निवास फिर
ज्यो का त्यो कर देता ।।
७ चाहे तेरा भाग पहिले छोटा ही रहा
हो परन्तु अन्त में तेरी बहुत बढती
होती ।।
८ अगली पीढी के लोगो से तो पूछ,
और जो कुछ उनके पुरखाओ ने जाच
पडताल की है उस पर ध्यान दे ।।
९ क्योकि हम तो कल ही के है, और
कुछ नही जानते,
और पृथ्वी पर हमारे दिन छाया की
नाई बीतते जाते है ।।
१० क्या वे लोग तुझ से शिक्षा की बाते
न कहेगे ?
क्या वे अपने मन से बात न निकालेगे ?
११ क्या कछार की घास पानी बिना
बढ सकती है ?
क्या सरकण्डा कीच बिना बढता है ?
१२ चाहे वह हरी हो, और काटी भी
न गई हो,
तौभी वह और सब भाति की घास
से पहिले ही सूख जाती है ।।
१३ ईश्वर के मत्र बिसरानेवालो की गति
ऐसी ही होती है
और भक्तिहीन की आशा टूट जाती
है ।।
१४ उसकी आशा का मूल कट जाता
है,
और जिसका वह भरोसा करता है,
वह मकडी का जाला ठहराता है ।।
१५ चाहे वह अपने घर पर टेक लगाए
परन्तु वह न ठहरेगा,
वह उसे दृढता से थामेगा परन्तु वह
स्थिर न रहेगा ।।
१६ वह धाम पाकर हरा भरा हो जाता है,
और उसकी डालिया बगीचे में चारो
ओर फैलती है ।।
१७ उसकी जड ककरो के ढेर में लिपटी
हुई रहती है,
और वह पत्थर के स्थान को देख
लेता है ।।
१८ परन्तु जब वह अपने स्थान पर से
नाश किया जाए,
तब वह स्थान उस से यह कहकर
मुह मोड लेगा कि मैं ने उसे कभी
देखा ही नही ।
१९ देख, उसकी आनन्द भरी चाल यही है,
फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेगे ।।
२० देख, ईश्वर न तो खरे मनुष्य को
निकम्मा जानकर छोड देता है,
और न बुराई करनेवालो को
सभालता* है ।।
२१ वह तो तुझे हसमुख करेगा,
और तुझ से† जयजयकार कराएगा ।।
२२ तेरे बैरी लज्जा का वस्त्र पहिनेंगे,
और दुष्टो का डेरा कही रहने न
पाएगा ।।

(अय्यूब बिलदद को उत्तर देता)

९ तब अय्यूब ने कहा,
२ मैं निश्चय जानता हू, कि बात ऐसी
ही है,
परन्तु मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में
क्योकर धर्मी ठहर सकता है ?
३ चाहे वह उस से मुकद्दमा लडना भी
चाहे
तौभी मनुष्य हजार बातो में से एक
का भी उत्तर न दे सकेगा ।।

---

* मूल में—का हाथ थाम्भना है।
† मूल में—तेरे होठों से।

४ वह बुद्धिमान और अति सामर्थी है·
उसके विरोध मे हठ करके कौन
कभी प्रबल हुआ है ?
५ वह तो पर्वतो को अचानक हटा देता
है और उन्हे पता भी नही लगता,
वह क्रोध मे आकर उन्हे उलट पुलट
कर देता है।
६ वह पृथ्वी को हिलाकर उसके स्थान
से अलग करता है,
और उसके खम्भे कापने लगते
है ।।
७ उसकी आज्ञा विना सूर्य उदय होता
ही नही,
और वह तारो पर मुहर लगाता है,
८ वह आकाशमण्डल को अकेला ही
फैलाता है,
और समुद्र की ऊची ऊची लहरो पर
चलता है,
९ वह सप्तर्षि, मृगशिरा और कचपचिया
और दक्खिन के नक्षत्रो * का बनाने-
वाला है ।।
१० वह तो ऐसे बडे कर्म करता है,
जिनकी थाह नही लगती,
और इतने आश्चर्यकर्म करता है,
जो गिने नही जा सकते।
११ देखो, वह मेरे साम्हने से होकर तो
चलता है परन्तु मुझको नही
दिखाई पडता,
और आगे को बढ जाता है, परन्तु
मुझे सूझ ही नही पडता है।
१२ देखो, जब वह छीनने लगे, तब उसको
कौन रोकेगा ?
कौन उस से कह सकता है कि तू यह
क्या करता है ?

* मूल में—कोठरियों

१३ ईश्वर अपना क्रोध ठडा नही करता।
अभिमानी * के सहायको को उसके
पाव तले झुकना पडता है ।।
१४ फिर मै क्या हू, जो उसे उत्तर दू,
और बाते छाट छाटकर उस से
विवाद करू ?
१५ चाहे मै निर्दोष भी होता परन्तु उसको
उत्तर न दे सकता,
मै अपने मुद्दई से गिडगिडाकर विनती
करता ।।
१६ चाहे मेरे पुकारने मे वह उत्तर भी
देता,
तौभी मै इस बात की प्रतीति न
करता, कि वह मेरी बात सुनता
है ।।
१७ वह तो आधी चलाकर मुझे तोड
डालता है,
और विना कारण मेरे चोट पर चोट
लगाता है ।।
१८ वह मुझे सास भी लेने नही देता है,
और मुझे कडवाहट से भरता है ।।
१९ जो सामर्थ्य की चर्चा हो, तो देखो,
वह बलवान है
और यदि न्याय की चर्चा हो, तो
वह कहेगा मुझ से कौन मुकद्दमा
लड़ेगा † ?
२० चाहे मै निर्दोष ही क्यो न हू, परन्तु
अपने ही मुह से दोषी ठहरूगा,
खरा होने पर भी वह मुझे कुटिल
ठहराएगा ।।
२१ मै खरा तो हू, परन्तु अपना भेद
नही जानता,
अपने जीवन से मुझे घृणा आती है ।।

* मूल में—रहब।
† मूल में—मेरे लिये कौन समय ठहराएगा।

२२ बात तो एक ही है, इस से मैं यह
कहता हूं
कि ईश्वर खरे और दुष्ट दोनो को
नाश करता है ।।
२३ जब लोग विपत्ति * से अचानक मरने
लगते हैं तब वह निर्दोष लोगो के
जाचे जाने पर हंसता है ।।
२४ देश दुष्टो के हाथ में दिया गया है ।
वह उसके न्यायियो की आंखो को
मून्द देता है †,
इसका करनेवाला वही न हो तो
कौन है ?
२५ मेरे दिन हरकारे से भी अधिक वेग
से चले जाते है,
वे भागे जाते हैं और उनको कल्याण
कुछ भी दिखाई नही देता ।।
२६ वे वेग चाल से नावो की नाई चले
जाते है,
वा अहेर पर झपटते हुए उकाब की
नाईं ।।
२७ जो मैं कहूं, कि विलाप करना भूल
जाऊंगा,
और उदासी ‡ छोडकर अपना मन
प्रफुल्लित कर लूंगा,
२८ तब मै अपने सब दुखो से डरता हूं ।
मैं तो जानता हूं, कि तू मुझे निर्दोष
न ठहराएगा ।।
२९ मैं तो दोषी ठहरूंगा,
फिर व्यर्थ क्यो परिश्रम करूं ?
३० चाहे मैं हिम के जल में स्नान करूं,
और अपने हाथ खार से निर्मल करूं,
३१ तौभी तू मुझे गडहे मे डाल ही देगा,
और मेरे वस्त्र भी मुझ से घिनाएंगे ।।

* मूल में—कोड़े ।
† मूल में—के मुंह ढांपता है ।
‡ मूल में—मुंह ।

३२ क्योकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नही
है कि मैं उस से वादविवाद कर
सकूं,
और हम दोनो एक दूसरे से मुकद्दमा
लड सकें ।।
३३ हम दोनो के बीच कोई बिचवई नही
है,
जो हम दोनो पर अपना हाथ रखे ।।
वह अपना सोटा मुझ पर से दूर करे
३४ और उसकी भय देनेवाली बात मुझे
न घबराए ।
३५ तब मैं उस से निडर होकर कुछ
कह सकूंगा,
क्योकि मैं अपनी दृष्टि में ऐसा नही
हूं ।।

१० मेरा प्राण जीवित रहने से
उकताता है,
मै स्वतन्त्रता पूर्वक कुडकुडाऊंगा *,
और मैं अपने मन की कडवाहट के
मारे बातें करूंगा ।
२ मैं ईश्वर से कहूंगा, मुझे दोषी न
ठहरा,
मुझे बता दे, कि तू किस कारण
मुझ से मुकद्दमा लडता है ?
३ क्या तुझे अन्धेर करना,
और दुष्टो की युक्ति को सुफल
करके †
अपने हाथो के बनाए हुए ‡ को
निकम्मा जानना भला लगता है ?
४ क्या तेरी देहधारियो की सी आंखें
है ?

* मूल में—अपनी कुड़कुड़ाहट अपने ऊपर
छोड़ूंगा ।
† मूल में—युक्ति पर चमक के ।
‡ मूल में—हाथों के परिश्रम ।

और क्या तेरा देखना मनुष्य का
सा है ?
५ क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन के
समान है,
वा तेरे वर्ष पुरुष के समयो के तुल्य है,
६ कि तू मेरा अधर्म ढूढता,
और मेरा पाप पूछता है ?
७ तुझे तो मालूम ही है, कि मै दुष्ट
नही हू,
और तेरे हाथ से कोई छुडानेवाला
नही !
८ तू ने अपने हाथो से मुझे ठीक रचा
है और जोडकर बनाया है,
तौभी मुझे नाश किए डालता है ।।
९ स्मरण कर, कि तू ने मुझ को गून्धी
हुई मिट्टी की नाई बनाया,
क्या तू मुझे फिर धूल मे मिलाएगा ?
१० क्या तू ने मुझे दूध की नाई उडेलकर,
और दही के समान जमाकर नही
बनाया ?
११ फिर तू ने मुझ पर चमडा और मास
चढाया
और हड्डिया और नसे गूथकर मुझे
बनाया है ।
१२ तू ने मुझे जीवन दिया, और मुझ
पर करुणा की है,
और तेरी चौकसी से मेरे प्राण की
रक्षा हुई है ।।
१३ तौभी तू ने ऐसी बातो को अपने मन
मे छिपा रखा,
मै तो जान गया, कि तू ने ऐसा ही
करने को ठाना था ।।
१४ जो मै पाप करू, तो तू उसका लेखा
लेगा,
और अधर्म करने पर मुझे निर्दोष
न ठहराएगा ।।
१५ जो मै दुष्टता करू तो मुझ पर हाय !
और जो मै धर्मी बनू तौभी मै
सिर न उठाऊगा,
क्योकि मै अपमान से भरा हुआ हू
और अपने दु ख पर ध्यान रखता
हू ।।
१६ और चाहे सिर उठाऊ तौभी तू सिंह
की नाई मेरा अहेर करता है,
और फिर मेरे विरुद्ध आश्चर्यकर्म
करता है ।।
१७ तू मेरे साम्हने अपने नये नये साक्षी
ले आता है,
और मुझ पर अपना क्रोध बढाता
है;
और मुझ पर सेना पर सेना चढाई
करती है ।।
१८ तू ने मुझे गर्भ से क्यो निकाला ?
नही तो मै वही प्राण छोडता,
और कोई मुझे देखने भी न
पाता ।
१९ मेरा होना न होने के समान होता,
और पेट ही से कब्र को पहुचाया
जाता ।
२० क्या मेरे दिन थोडे नही ? मुझे
छोड दे,
और मेरी ओर से मुह फेर ले, कि
मेरा मन थोडा शान्त हो जाए
२१ इस से पहिले कि मै वहा जाऊ, जहा
से फिर न लौटूगा, अर्थात् अन्धियारे
और घोर अन्धकार के देश मे, जहा
अन्धकार ही अन्धकार है,
२२ और मृत्यु के अन्धकार का देश जिस
मे सब कुछ गडबड है,
और जहा प्रकाश भी ऐसा है जैसा
अन्धकार ।।

(सोपर का वचन)

११ तब नामाती सोपर ने कहा
२ बहुत सी बातें जो कही गई हैं,
क्या उनका उत्तर देना न चाहिये ?
क्या बकवादी मनुष्य धर्मी ठहराया
जाए ?
३ क्या तेरे बड़े बोल के कारण लोग
चुप रहें ?
और जब तू ठट्ठा करता है, तो क्या
कोई तुझे लज्जित न करे ?
४ तू तो यह कहता है कि मेरा सिद्धान्त
शुद्ध है
और मैं ईश्वर की * दृष्टि मे पवित्र
हू ।।
५ परन्तु भला हो, कि ईश्वर स्वय बातें
करें,
और तेरे विरुद्ध मुह खोले,
६ और तुझ पर बुद्धि की गुप्त बातें
प्रगट करे,
कि उनका मर्म तेरी बुद्धि से बढकर †
है ।
इसलिये जान ले, कि ईश्वर तेरे अधर्म
में से बहुत कुछ भूल जाता
है ।
७ क्या तू ईश्वर का गूढ भेद पा सकता
है ?
और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म
पूरी रीति से जाच सकता है ?
८ वह आकाश सा ऊचा है, तू क्या
कर सकता है ?
वह अधोलोक से गहिरा है, तू कहा
समझ सकता है ?
९ उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है
और समुद्र से चौडी है ।।

* मूल में
† मूल में

१० जब ईश्वर बीच से गुजरकर बन्द
कर दे
और अदालत (कचहरी) में बुलाए,
तो कौन उसको रोक सकता है ।।
११ क्योंकि वह पाखण्डी मनुष्यो का
भेद जानता है,
और अनर्थ काम को बिना सोच
विचार किए भी जान लेता है ।।
१२ परन्तु मनुष्य छूछा और निर्बुद्धि
होता है,
क्योंकि मनुष्य जन्म ही से जगली
गदहे के बच्चे के समान होता है ।।
१३ यदि तू अपना मन शुद्ध करे,
और ईश्वर की ओर अपने हाथ
फैलाए,
१४ और जो कोई अनर्थ काम तुझ से
होता हो उसे दूर करे,
और अपने डेरो में कोई कुटिलता
न रहने दे,
१५ तब तो तू निश्चय अपना मुह निष्कलक
दिखा * सकेगा,
और तू स्थिर होकर कभी न
डरेगा ।।
१६ तब तू अपना दु ख भूल जाएगा, तू
उसे उस पानी के समान स्मरण
करेगा जो बह गया हो ।
१७ और तेरा जीवन दोपहर से भी अधिक
प्रकाशमान होगा,
और चाहे अन्धेरा भी हो तौभी वह
भोर सा हो जाएगा ।।
१८ और तुझे आशा होगी, इस कारण
तू निर्भय रहेगा,
और अपने चारो ओर देख देखकर
तू निर्भय विश्राम कर सकेगा ।।

* मूल में—बिना

१९ और जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे
डराएगा नही,
और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करने का
यत्न करेगे ।।
२० परन्तु दुष्ट लोगो की आंखे रह
जाएगी,
और उन्हे कोई शरण स्थान न मिलेगा
और उनकी आशा यही होगी कि
प्राण निकल जाए ।।

(अय्यूब सोपर को उत्तर देता है)

१२ तब अय्यूब ने कहा,
२ नि सन्देह मनुष्य तो तुम ही हो*
और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी
जाती रहेगी ।।
३ परन्तु तुम्हारी नाई मुझ मे भी
समझ है,
मै तुम लोगो से कुछ नीचा नही हू
कौन ऐसा है जो ऐसी बाते न जानता
हो ?
४ मै ईश्वर से प्रार्थना करता था, और
वह मेरी सुन लिया करता था,
परन्तु अब मेरे पडोसी मुझ पर
हसते है,
जो धर्मी और खरा मनुष्य है, वह
हसी का कारण हो गया है ।
५ दु खी लोग तो सुखियो की समझ
मे तुच्छ जाने जाते है,
और जिनके पाव फिसला चाहते
है उनका अपमान अवश्य ही होता
है ।।
६ डाकुओ के डेरे कुशल क्षेम से रहते
है,
और जो ईश्वर को क्रोध दिलाते है,
वह बहुत ही निडर रहते है,

* मूल में—देश के लोग हो ।

और उनके हाथ मे ईश्वर बहुत
देता है ।।
७ पशुओ से तो पूछ और वे तुझे
दिखाएगे,
और आकाश के पक्षियो से, और वे
तुझे बता देगे ।।
८ पृथ्वी पर ध्यान दे, तब उस मे तुझे
शिक्षा मिलेगी,
और समुद्र की मछलिया भी तुझ
से वर्णन करेगी ।।
९ कौन इन बातो को नही जानता,
कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस
ससार को बनाया है ।।
१० उसके हाथ मे एक एक जीवधारी
का प्राण, और
एक एक देहधारी मनुष्य की आत्मा
भी रहती है ।।
११ जैसे जीभ* से भोजन चखा जाता है,
क्या वैसे ही कान मे वचन नही
परखे जाते ?
१२ बूढो मे बुद्धि पाई जाती है,
और दिनी लोगो मे समझ होती
तो है ।।
१३ ईश्वर मे पूरी बुद्धि और पराक्रम
पाए जाते है,
युक्ति और समझ उसी मे है ।।
१४ देखो, जिसको वह ढा दे, वह फिर
बनाया नही जाता, जिस मनुष्य
को वह बन्द करे, वह फिर खोला
नही जाता ।
१५ देखो, जब वह वर्षा को रोक रखता
है तो जल सूख जाता है,
फिर जब वह जल छोड देता है तब
पृथ्वी उलट जाती है ।।

* मूल मे—तालू ।

१६ उस में सामर्थ्य और खरी बुद्धि पाई
जाती है,
धोखा देनेवाला और धोखा खानेवाला
दोनों उसी के हैं ।।
१७ वह मन्त्रियों को लूटकर बन्धुआई में
ले जाता,
और न्यायियों को मूर्ख बना देता
है ।।
१८ वह राजाओं का अधिकार तोड़ देता
है,
और उनकी कमर पर बन्धन बन्धवाता
है ।।
१९ वह याजकों को लूटकर बन्धुआई में
ले जाता और सामर्थियों को उलट
देता है ।।
२० वह विश्वासयोग्य पुरुषों से बोलने की
शक्ति और पुरनियों से विवेक की
शक्ति * हर लेता है ।।
२१ वह हाकिमों को अपमान से
लादता,
और बलवानों के हाथ ढीले कर देता
है † ।।
२२ वह अन्धियारे की गहरी बात प्रगट
करता,
और मृत्यु की छाया को भी प्रकाश
में ले आता है ।।
२३ वह जातियों को बढ़ाता, और उनको
नाश करता है,
वह उनको फैलाता, और बन्धुआई
में ले जाता है ।।
२४ वह पृथ्वी के मुख्य लोगों की बुद्धि
उड़ा देता,
और उनको निर्जन स्थानों में जहां
रास्ता नहीं है, भटकाता है ।।

* मूल में—होंठ।
† मूल में—फटा ढीला करता है।

२५ वे बिन उजियाले के अन्धेरे में टटोलते
फिरते हैं,
और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि
वे मतवाले की नाईं डगमगाते हुए
चलते हैं ।।

१३ सुनो, मैं यह सब कुछ अपनी
आंख से देख चुका,
और अपने कान से सुन चुका, और
समझ भी चुका हूं ।।
२ जो कुछ तुम जानते हो वह मैं भी
जानता हूं,
मैं तुम लोगों से कुछ कम नहीं हूं ।।
३ मैं तो सर्वशक्तिमान से बातें करूंगा,
और मेरी अभिलाषा ईश्वर से वाद-
विवाद करने की है ।।
४ परन्तु तुम लोग झूठी बात के गढ़ने-
वाले हो,
तुम सबके सब निकम्मे वैद्य हो ।।
५ भला होता, कि तुम बिलकुल चुप
रहते,
और इस से तुम बुद्धिमान ठहरते ।।
६ मेरा विवाद सुनो,
और मेरी बहस की बातों पर कान
लगाओ ।।
७ क्या तुम ईश्वर के निमित्त टेढ़ी बातें
कहोगे,
और उसके पक्ष में कपट से बोलोगे ?
८ क्या तुम उसका पक्षपात करोगे ?
और ईश्वर के लिये मुकद्दमा
चलाओगे ।।
९ क्या यह भला होगा, कि वह तुम को
जांचे ?
क्या जैसा कोई मनुष्य को धोखा
दे, वैसा ही तुम क्या उसको भी
धोखा दोगे ?

१० जो तुम छिपकर पक्षपात करो,
तो वह निश्चय तुम को डाटेगा ।।
११ क्या तुम उसके माहात्म्य से भय
न खाओगे ?
क्या उसका डर तुम्हारे मन मे न
समाएगा ?
१२ तुम्हारे स्मरणयोग्य नीतिवचन राख
के समान है,
तुम्हारे कोट मिट्टी ही के ठहरे है ·
१३ मुझ से वात करना छोडो, कि मै
भी कुछ कहने पाऊ,
फिर मुझ पर जो चाहे वह आ
पडे ।।
१४ मै क्यो अपना मास अपने दातो से
चवाऊ ?
और क्यो अपना प्राण हथेली पर
रखू ?
१५ वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा
नही;
तौभी मै अपनी चाल चलन का पक्ष
लूगा ।
१६ और यह भी मेरे वचाव का कारण
होगा, कि
भक्तिहीन जन उसके साम्हने नही जा
सकता ।।
१७ चित्त लगाकर मेरी वात सुनो,
और मेरी विनती तुम्हारे कान मे
पडे ।।
१८ देखो, मै ने अपने वहस की पूरी तैयारी
की है,
मुझे निश्चय है कि मै निर्दोष ठहरूगा ।
१९ कौन है जो मुझ से मुकद्दमा लड
सकेगा ?
ऐसा कोई पाया जाए, तो मै चुप
होकर प्राण छोडूगा ।।
२० दो ही काम मुझ से न कर,
तव मै तुझ से नही छिपूगा
२१ अपनी ताडना मुझ से दूर कर ले,
और अपने भय से मुझे भयभीत
न कर ।
२२ तव तेरे वुलाने पर मै वोलूगा,
नही तो मै प्रश्न करूगा, और तू मुझे
उत्तर दे ।।
२३ मुझ से कितने अधर्म के काम और
पाप हुए है ?
मेरे अपराध और पाप मुझे जता दे ।।
२४ तू किस कारण अपना मुह फेर
लेता * है,
और मुझे अपना शत्रु गिनता है ?
२५ क्या तू उडते हुए पत्ते को भी
कपाएगा ?
और सूखे डठल के पीछे पडेगा ?
२६ तू मेरे लिये कठिन दु.खो † की आज्ञा
देता है,
और मेरी जवानी के अधर्म का फल
मुझे भुगता देता है ‡ ।
२७ और मेरे पावो को काठ मे ठोकता,
और मेरी सारी चाल चलन देखता
रहता है,
और मेरे पावो की चारो ओर सीमा
वान्ध लेता है ।।
२८ और मै सडी गली वस्तु के तुल्य हू
जो नाश हो जाती है, और कीडा
खाए कपडे के तुल्य हू ।।

१४ मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न
होता है, वह थोडे दिनो का
और दुख से भरा रहता है ।।

---

* मूल में—छिपाता।
† मूल में—कडवी बातों।
‡ मूल में—अधर्म के कर्मों का भागी मुझे करता है।

२ वह फूल की नाईं खिलता, फिर तोड़ा जाता है,
वह छाया की रीति पर ढल* जाता, और कहीं ठहरता नहीं ॥
३ फिर क्या तू ऐसे पर दृष्टि लगाता है?
क्या तू मुझे अपने साथ कचहरी में घसीटता है?
४ अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है? कोई नहीं।
५ मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है,
और तू ने उसके लिये ऐसा सिवाना बान्धा है
जिसे वह पार नहीं कर सकता,
६ इस कारण उस से अपना मुंह फेर ले, कि वह आराम करे,
जब तक कि वह मजदूर की नाईं अपना दिन पूरा न कर ले ॥
७ वृक्ष की तो आशा रहती है,
कि चाहे वह काट डाला भी जाए, तौभी फिर पनपेगा
और उस से नर्म नर्म डालियां निकलती ही रहेंगी ॥
८ चाहे उसकी जड़ भूमि में पुरानी भी हो जाए,
और उसका ठूंठ मिट्टी में सूख भी जाए,
९ तौभी वर्षा† की गन्ध पाकर वह फिर पनपेगा,
और पौधे की नाईं उस से शाखाएं फूटेंगी ॥
१० परन्तु पुरुष मर जाता, और पड़ा रहता है,
जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहां रहा?
११ जैसे नील नदी* का जल घट जाता है,
और जैसे महानद का जल सूखते सूखते सूख जाता है,
१२ वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता,
जब तक आकाश बना रहेगा तब तक वह न जागेगा,
और न उसकी नींद टूटेगी ॥
१३ भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता,
और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता,
और मेरे लिये समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता ॥
१४ यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?
जब तक मेरा छुटकारा न होता†
तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता ॥
१५ तू मुझे बुलाता, और मैं बोलता,
तुझे अपने हाथ के बनाए हुए काम की अभिलाषा होती ॥
१६ परन्तु अब तू मेरे पग पग को गिनता है,
क्या तू मेरे पाप की ताक में लगा नहीं रहता?
१७ मेरे अपराध छाप लगी हुई थैली में है,

* मूल
† मूल

* मूल में—जैसे समुद्र।
† मूल में—मेरा बदला न

और तू ने मेरे अधर्म को भी रखा
है ॥
१८ और निश्चय पहाड भी गिरते गिरते
नाश हो जाता है,
और चट्टान अपने स्थान से हट
जाती है,
१९ और पत्थर जल मे घिस जाते है,
और भूमि की धूलि उसकी बाढ से
बहाई जाती है,
उसी प्रकार तू मनुष्य की आशा को
मिटा देता है ॥
२० तू सदा उस पर प्रबल होता, और
वह जाता रहता है,
तू उसका चिहरा बिगाडकर उसे
निकाल देता है ॥
२१ उसके पुत्रो की बडाई होती है, और
यह उसे नही सूझता,
और उनकी घटी होती है, परन्तु
वह उनका हाल नही जानता ॥
२२ केवल अपने ही कारण उसकी देह
को दु ख होता है,
और अपने ही कारण उसका प्राण
अन्दर ही अन्दर शोकित रहता है ॥

१५

(एलीपज का वचन)

तब तेमानी एलीपज ने कहा,
क्या बुद्धिमान को उचित है कि
२ अज्ञानता * के साथ उत्तर दे,
वा अपने अन्त करण को पूरबी पवन
से भरे ?
३ क्या वह निष्फल वचनो से,
वा व्यर्थ बातो मे वादविवाद करे ?
४ वरन तू भय मानना छोड देता,
और ईश्वर का ध्यान करना औरो
से छुडाता है ॥
५ तू अपने मुह से अपना अधर्म प्रगट
करता है,
और धूर्त्त लोगो के बोलने की रीति
पर बोलता है * ।
६ मै तो नही परन्तु तेरा मुह ही तुझे
दोषी ठहराता है,
और तेरे ही वचन तेरे विरुद्ध साक्षी
देते है ।
७ क्या पहिला मनुष्य तू ही उत्पन्न
हुआ ?
क्या तेरी उत्पत्ति पहाडो से भी
पहिले हुई ?
८ क्या तू ईश्वर की सभा मे बैठा
सुनता था ?
क्या बुद्धि का ठीका तू ही ने ले
रखा है ?
९ तू ऐसा क्या जानता है जिसे हम
नही जानते ?
तुझ मे ऐसी कौन सी समझ है जो
हम मे नही ?
१० हम लोगो मे तो पक्के बालवाले
और अति पुरनिये मनुष्य है,
जो तेरे पिता से भी बहुत आयु के
है ॥
११ ईश्वर की शान्तिदायक बाते,
और जो वचन तेरे लिये कोमल
है, क्या ये तेरी दृष्टि मे तुच्छ है ?
१२ तेरा मन क्यो तुझे खींच ले जाता है ?
और तू आख से क्यो सैन करता
है ?
१३ तू भी अपनी आत्मा ईश्वर के विरुद्ध
करता है,
और अपने मुह से व्यर्थ बाते निकलने
देता है ॥

* मूल में—वायु।

* मूल में—धूर्तों की जीभ चुनता है।

१४ मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो ?
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह
है क्या कि निर्दोष हो सके ?
१५ देख, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास
नहीं करता,
और स्वर्ग * भी उसकी दृष्टि में
निर्मल नहीं है ।।
१६ फिर मनुष्य अधिक घिनौना और
मलीन है जो कुटिलता को पानी
की नाईं पीता है ।।
१७ मैं तुझे समझा दूंगा, इसलिये मेरी
सुन ले,
जो मैं ने देखा है, उसी का वर्णन
मैं करता हूं ।।
१८ (वे ही बातें जो बुद्धिमानों ने अपने
पुरखाओं से सुनकर
बिना छिपाए बताया है ।।
१९ केवल उन्हीं को देश दिया गया था,
और उनके मध्य में कोई विदेशी आता
जाता नहीं था ।।)
२० दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा से तड़पता
है, और
बलात्कारी के वर्षों की गिनती
ठहराई हुई है ।।
२१ उसके कान में डरावना शब्द गूंजता
रहता है,
कुशल के समय भी नाशक उस पर
आ पड़ता है ।।
२२ उसे अन्धियारे में से फिर निकलने
की कुछ आशा नहीं होती,
और तलवार उसकी घात में रहती है ।।
२३ वह रोटी के लिये मारा मारा फिरता
है, कि कहां मिलेगी ।
उसे निश्चय रहता है, कि अन्धकार
का दिन मेरे पास ही है ।।

* वा आकाश ।

२४ संकट और दुर्घटना से उसको डर
लगता रहता है,
ऐसे राजा की नाईं जो युद्ध के लिये
तैयार हो, वे उस पर प्रबल होते
हैं ।।
२५ उस ने तो ईश्वर के विरुद्ध हाथ
बढ़ाया है,
और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध वह ताल
ठोंकता है,
२६ और सिर उठाकर * और अपनी
मोटी मोटी ढालें दिखाता हुआ †,
घमण्ड से
उस पर धावा करता है,
२७ इसलिये कि उसके मुंह पर चिकनाई
छा गई है,
और उसकी कमर में चर्बी जमी है ।।
२८ और वह उजाड़े हुए नगरों में बस
गया है,
और जो घर रहने योग्य नहीं,
और खण्डहर होने को छोड़े गए हैं,
उन में बस गया है ।।
२९ वह धनी न रहेगा, और न उसकी
सम्पत्ति बनी रहेगी,
और ऐसे लोगों के खेत की उपज
भूमि की ओर न झुकने पाएगी ।।
३० वह अन्धियारे से कभी न निकलेगा,
और उसकी डालियां आग की लपट
से झुलस जाएंगी,
और ईश्वर के मुंह की श्वास से
वह उड़ जाएगा ।।
३१ वह अपने को धोखा देकर व्यर्थ बातों
का भरोसा न करे,
क्योंकि उसका बदला धोखा ही
होगा ।।

* मूल में—गर्दन से ।
† मूल में—अपनी ढालों की मोटी पीठों ।

३२ वह उसके नियत दिन से पहिले पूरा
हो जाएगा,
उसकी डालिया हरी न रहेगी ।।
३३ दाख की नाई उसके कच्चे फल झड
जाएगे,
और उसके फूल जलपाई के वृक्ष के
से गिरेगे ।।
३४ क्योकि भक्तिहीन के परिवार से
कुछ वन न पडेगा *,
और जो घूस लेते है, उनके तम्बू
आग से जल जाएगे ।।
३५ उनके उपद्रव का पेट रहता, और
अनर्थ उत्पन्न होता है
और वे अपने अन्त करण मे छल
की बाते गढते है ।।

(अय्यूब का वचन)

१६ तब अय्यूब ने कहा,
२ ऐसी बहुत सी बाते मै सुन चुका हू,
तुम सब के सब निकम्मे शान्तिदाता
हो ।।
क्या व्यर्थ बातो का अन्त कभी होगा ?
३ तू कौन सी बात से भिडककर उत्तर
देता ।।
४ जो तुम्हारी दशा मेरी सी होती,
तो मै भी तुम्हारी सी बाते कर
सकता,
मै भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड सकता,
और तुम्हारे विरुद्ध सिर हिला
सकता ।।
५ वरन मै अपने वचनो से तुम को
हियाव दिलाता, और
बातो † से शान्ति देकर तुम्हारा
शोक घटा देता ।।

* मूल मे—परिवार बाझ होगा।
† मूल मे—होंठों।

६ चाहे मै बोलू तौभी मेरा शोक न
घटेगा, चाहे मै
चुप रहू, तौभी मेरा दु ख कुछ कम
न होगा * ।।
७ परन्तु अब उस ने मुझे उकता दिया
है,
उस ने मेरे सारे परिवार को उजाड
डाला है ।।
८ और उस ने जो मेरे शरीर को सुखा
डाला है, वह मेरे विरुद्ध साक्षी
ठहरा है,
और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खडा
होकर मेरे साम्हने साक्षी देता है ।।
९ उस ने क्रोध मे आकर मुझ को फाडा
और मेरे पीछे पडा है,
वह मेरे विरुद्ध दात पीसता,
और मेरा वैरी मुझ को आखे दिखाता
है ।।
१० अब लोग मुझ पर मुह पसारते है,
और मेरी नामधराई करके मेरे गाल
पर थपेडा मारते,
और मेरे विरुद्ध भीड लगाते है ।।
११ ईश्वर ने मुझे कुटिलो के वश मे
कर दिया,
और दुष्ट लोगो के हाथ मे फेक
दिया है ।।
१२ मै सुख से रहता था, और उस ने
मुझे चूर चूर कर डाला,
उस ने मेरी गर्दन पकडकर मुझे
टुकडे टुकडे कर दिया,
फिर उस ने मुझे अपना निशाना
बनाकर खडा किया है ।।
१३ उसके तीर मेरे चारो ओर उड रहे
है,

* मूल में—मुझ से क्या किया जाएगा।

वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को वेधता है,
और मेरा पित्त भूमि पर वहाता है ॥
१४ वह शूर की नाईं मुझ पर धावा
करके मुझे चोट पर चोट पहुचाकर
घायल करता है ॥
१५ मैं ने अपनी खाल पर टाट को सी
लिया है, और
अपना सीग मिट्टी में मैला कर
दिया है ॥
१६ रोते रोते मेरा मुह सूज गया है,
और मेरी आखो पर घोर अन्धकार
छा गया है,
१७ तौभी मुझ से कोई उपद्रव नही हुआ है,
और मेरी प्रार्थना पवित्र है ॥
१८ हे पृथ्वी, तू मेरे लोहू को न ढापना,
और मेरी दोहाई कही न रुके ॥
१९ अब भी स्वर्ग में मेरा साक्षी है,
और मेरा गवाह ऊपर है ॥
२० मेरे मित्र मुझ से घृणा करते है,
परन्तु मै ईश्वर के साम्हने आसू
बहाता हू,
२१ कि कोई ईश्वर के विरुद्ध सज्जन का,
और आदमी
का मुकद्दमा उसके पडोसी के विरुद्ध
लडे ।
२२ क्योकि थोडे ही वर्षों के बीतने पर
मै उस मार्ग
से चला जाऊगा, जिस से मै
फिर वापिस न लौटूगा ॥

१७ मेरा प्राण नाश हुआ चाहता
है, मेरे दिन पूरे हो चुके * है,
मेरे लिये कब्र तैयार है ॥
२ निश्चय जो मेरे सग है वह ठट्ठा करने-
वाले है,

* मूल में—बुझ गए।

और उनका झगडा रगडा मुझे लगा-
तार दिखाई देता है ॥
३ जमानत दे, अपने और मेरे बीच में
तू ही जामिन हो,
कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे ?
४ तू ने इनका मन समझने से रोका
है,
इस कारण तू इनको प्रबल न करेगा ॥
५ जो अपने मित्रो को चुगली खाकर
लुटा देता,
उसके लडको की आखे रह जाएगी ॥
६ उस ने ऐसा किया कि सब लोग
मेरी उपमा देते है,
और लोग मेरे मुह पर थूकते है ।
७ खेद के मारे मेरी आखो में धुधलापन
छा गया है,
और मेरे सब अग छाया की नाईं
हो गए है ॥
८ इसे देखकर सीधे लोग चकित होते
है,
और जो निर्दोष है, वह भक्तिहीन
के विरुद्ध उभरते है ॥
९ तौभी धर्मी लोग अपना मार्ग पकडे
रहेंगे,
और शुद्ध काम करनेवाले * सामर्थ्य
पर सामर्थ्य पाते जाएगे ॥
१० तुम सब के सब मेरे पास आओ
तो आओ,
परन्तु मुझे तुम लोगो में एक भी
बुद्धिमान न मिलेगा ॥
११ मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरी
मनसाएं मिट गईं,
और जो मेरे मन में था, वह नाश
हुआ है ॥

* मूल में—शुद्ध हाथवाला।

१२ वे रात को दिन ठहराते,
वे कहते हैं, अन्धियारे के निकट उजियाला है ।।
१३ यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा,
यदि मैं ने अन्धियारे मे अपना बिछौना बिछा लिया है,
१४ यदि मैं ने सडाहट से कहा कि तू मेरा पिता है,
और कीडे मे, कि तू मेरी मा, और मेरी बहिन है,
१५ तो मेरी आशा कहा रही ?
और मेरी आशा किस के देखने मे आएगी ?
१६ वह तो अधोलोक मे * उतर जाएगी, और उस
समेत मुझे भी मिट्टी मे विश्राम मिलेगा ।।

(शूही बिल्दद का वचन)

१८ तब शूही बिल्दद ने कहा,
२ तुम कब तक फन्दे लगा लगाकर वचन पकडते रहोगे ?
चित्त लगाओ, तब हम बोलेगे ।।
३ हम लोग तुम्हारी दृष्टि मे क्यो पशु के तुल्य समझे जाते,
और अशुद्ध ठहरे है ।।
४ हे अपने को क्रोध मे फाडनेवाले
क्या तेरे निमित्त पृथ्वी उजड जाएगी,
और चट्टान अपने स्थान से हट जाएगी?
५ तौभी दुष्टो का दीपक बुझ जाएगा,
और उसकी आग की लौ न चमकेगी ।।
६ उसके डेरे मे का उजियाला अन्धेरा हो जाएगा,
और उसके ऊपर का दिया बुझ जाएगा ।।
७ उसके बडे बडे फाल छोटे हो जाएगे,
और वह अपनी ही युक्ति के द्वारा गिरेगा ।।
८ वह अपना ही पाव जाल मे फसाएगा,
वह फन्दो पर चलता है ।।
९ उसकी एडी फन्दे मे फस जाएगी,
और वह जाल मे पकडा जाएगा ।।
१० फन्दे की रस्सिया उसके लिये भूमि मे,
और जाल रास्ते मे छिपा दिया गया है ।
११ चारो ओर से डरावनी वस्तुए उसे डराएगी
और उसके पीछे पडकर उसको भगाएगी ।
१२ उसका बल दुःख से घट जाएगा,
और विपत्ति उसके पास ही तैयार रहेगी ।।
१३ वह उसके अग को खा जाएगी,
वरन काल का पहिलौठा उसके अगो को * खा लेगा ।।
१४ अपने जिस डेरे का भरोसा वह करता है, उस से वह छीन लिया जाएगा,
और वह भयकरता के राजा के पास पहुचाया जाएगा ।।
१५ जो उसके यहा का नही है वह उसके डेरे मे वास करेगा,
और उसके घर पर गन्धक छितराई जाएगी ।।
१६ उसकी जड तो सूख जाएगी,
और डालिया कट जाएगी ।।
१७ पृथ्वी पर से उसका स्मरण मिट जाएगा,

* मूल में—अधोलोक के बेंडों में।

* मूल में—उसके चमड़े के बेंडों को।

और बाजार * में उसका नाम कभी न सुन पड़ेगा ॥

१८ वह उजियाले से अन्धियारे में ढकेल दिया जाएगा,
और जगत में से भी भगाया जाएगा ॥

१९ उसके कुटुम्बियों में उसके कोई पुत्र-पौत्र न रहेगा,
और जहा वह रहता था, वहा कोई बचा न रहेगा ॥

२० उसका दिन देखकर पूरबी लोग चकित होंगे,
और पश्चिम के निवासियों के रोए खड़े हो जाएगे ॥

२१ निःसन्देह कुटिल लोगों के निवास ऐसे हो जाते हैं,
और जिसको ईश्वर का ज्ञान नही रहता उनका स्थान ऐसा ही हो जाता है ॥

(अय्यूब का वचन)

१९ तब अय्यूब ने कहा,

२ तुम कब तक मेरे प्राण को दुःख देते रहोगे,
और बातो से मुझे चूर चूर करोगे ?

३ इन दसो बार तुम लोग मेरी निन्दा ही करते रहे,
तुम्हें लज्जा नही आती, कि तुम मेरे साथ कठोरता का बरताव करते हो ?

४ मान लिया कि मुझ से भूल हुई,
तौभी वह भूल तो मेरे ही सिर पर रहेगी ॥

५ यदि तुम सचमुच मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई करते हो
और प्रमाण देकर मेरी निन्दा करते हो,

६ तो यह जान लो कि ईश्वर ने मुझे गिरा दिया है,
और मुझे अपने जाल में फसा लिया है ॥

७ देखो, मैं उपद्रव! उपद्रव! यो चिल्लाता रहता हू, परन्तु कोई नही सुनता,
मै सहायता के लिये दोहाई देता रहता हू, परन्तु कोई न्याय नही करता ॥

८ उस ने मेरे मार्ग को ऐसा रूधा है कि मै आगे चल नही सकता,
और मेरी डगरें अन्धेरी कर दी है ॥

९ मेरा विभव उस ने हर लिया है,
और मेरे सिर पर से मुकुट उतार दिया है ॥

१० उस ने चारो ओर से मुझे तोड दिया, बस मैं जाता रहा,
और मेरा आसरा उस ने वृक्ष की नाई उखाड डाला है ॥

११ उस ने मुझ पर अपना क्रोध भडकाया है
और अपने शत्रुओ में मुझे गिनता है ॥

१२ उसके दल इकट्ठे होकर मेरे विरुद्ध मोर्चा बान्धते हैं,
और मेरे डेरे के चारो ओर छावनी डालते हैं ॥

१३ उस ने मेरे भाइयो को मुझ से दूर किया है,
और जो मेरी जान पहचान के थे, वे बिलकुल अनजान हो गए हैं ॥

* अथवा जगल।

१४ मेरे कुटुम्बी मुझे छोड गए है,
और जो मुझे जानते थे वह मुझे
भूल गए है ।।
१५ जो मेरे घर मे रहा करते थे, वे,
वरन मेरी दासिया भी मुझे अनजाना
गिनने लगी है,
उनकी दृष्टि मे मै परदेशी हो गया हू।।
१६ जब मै अपने दास को बुलाता हू,
तब वह नही बोलता,
मुझे उस से गिडगिडाना पडता है ।।
१७ मेरी सास मेरी स्त्री को
और मेरी गन्ध मेरे भाइयो* को
दृष्टि मे घिनौनी लगती है ।।
१८ लडके भी मुझे तुच्छ जानते है,
और जब मै उठने लगता, तब वे
मेरे विरुद्ध बोलते है ।।
१९ मेरे सब परम मित्र† मुझ से द्वेष
रखते है,
और जिन से मै ने प्रेम किया सो
पलटकर मेरे विरोधी हो गए है ।
२० मेरी खाल और मास मेरी हड्डियो
से सट गए है,
और मै बाल बाल बच गया हू ।।
२१ हे मेरे मित्रो! मुझ पर दया करो,
दया,
क्योकि ईश्वर ने मुझे मारा है ।।
२२ तुम ईश्वर की नाई क्यो मेरे पीछे
पडे हो ?
और मेरे मास से क्यो तृप्त नही
हुए ?
२३ भला होता, कि मेरी बाते लिखी
जाती,
भला होता, कि वे पुस्तक मे लिखी
जाती,
२४ और लोहे की टाकी और शीशे
से वे सदा के लिये चट्टान पर खोदी
जाती ।।
२५ मुझे तो निश्चय है, कि मेरा
छुडानेवाला जीवित है,
और वह अन्त मे पृथ्वी पर खडा
होगा ।।
२६ और अपनी खाल के इस प्रकार नाश
हो जाने के बाद भी,
मै शरीर मे होकर ईश्वर का दर्शन
पाऊगा ।।
२७ उसका दर्शन मै आप अपनी आखो
से अपने लिये करूगा, और न कोई
दूसरा ।
यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर
चूर चूर भी हो जाए,
तौभी मुझ मे तो धर्म* का मूल
पाया जाता है !
२८ और तुम जो कहते हो हम इसको
क्योकर सताए !
२९ तो तुम तलवार से डरो,
क्योकि जलजलाहट से तलवार का
दण्ड मिलता है,
जिस से तुम जान लो कि न्याय
होता है ।।

(सोपर का वचन)

२० तब नामाती सोपर ने कहा,
२ मेरा जी चाहता है कि उत्तर दू,
और इसलिये बोलने मे फुर्ती करता
हू ।।
३ मै ने ऐसी चितौनी सुनी जिस से
मेरी निन्दा हुई,
और मेरी आत्मा अपनी समझ के
अनुसार तुझे उत्तर देती है ।।

* मूल में—मेरे गर्भ के लडकों।
† मूल में—भेद के मनुष्य।

* मूल में—बात।

४ क्या तू यह नियम नही जानता जो
प्राचीन और उस समय का है,
जब मनुष्य पृथ्वी पर बसाया गया,
५ कि दुष्टो का ताली बजाना जल्दी
बन्द हो जाता
और भक्तिहीनो का आनन्द पल भर
का होता है ?
६ चाहे ऐसे मनुष्य का माहात्म्य आकाश
तक पहुच जाए,
और उसका सिर बादलो तक पहुचे,
७ तौभी वह अपनी विष्ठा की नाई सदा
के लिये नाश हो जाएगा,
और जो उसको देखते थे वे पूछेंगे
कि वह कहा रहा ?
८ वह स्वप्न की नाई लोप हो जाएगा
और किसी को फिर न मिलेगा,
रात में देखे हुए रूप की नाई वह
रहने न पाएगा ।।
९ जिस ने उसको देखा हो फिर उसे
न देखेगा,
और अपने स्थान पर उसका कुछ
पता न रहेगा * ।।
१० उसके लडकेवाले कगालो से भी
बिनती करेगे,
और वह अपना छीना हुआ माल
फेर देगा ।।
११ उसकी हड्डियो में जवानी का बल
भरा हुआ है
परन्तु वह उसी के साथ मिट्टी में
मिल † जाएगा ।।
१२ चाहे बुराई उसको मीठी लगे,
और वह उसे अपनी जीभ के नीचे
छिपा रखे,
१३ और वह उसे बचा रखे और न
छोडे,
वरन उसे अपने तालू के बीच दबा
रखे,
१४ तौभी उसका भोजन उसके पेट में
पलटेगा,
वह उसके अन्दर नाग का सा विष
बन जाएगा ।।
१५ उस ने जो धन निगल लिया है उसे
वह फिर उगल देगा,
ईश्वर उसे उसके पेट मे से निकाल
देगा ।।
१६ वह नागो का विष चूस लेगा,
वह करैत के डसने से मर
जाएगा ।।
१७ वह नदियो अर्थात् मधु और दही
की नदियो को देखने न पाएगा ।।
१८ जिसके लिये उस ने परिश्रम किया,
उसको उसे लौटा देना पडेगा,
और वह उसे निगलने न पाएगा,
उसकी मोल ली हुई वस्तुओ से जितना
आनन्द होना चाहिये, उतना तो
उसे न मिलेगा ।।
१९ क्योकि उस ने कगालो को पीसकर
छोड दिया,
उस ने घर को छीन लिया, उसको
वह बढाने * न पाएगा ।।
२० लालसा † के मारे उसको कभी शान्ति
नही मिलती ‡ थी,
इसलिये वह अपनी कोई मनभावनी
वस्तु बचा न सकेगा ।।
२१ कोई वस्तु उसका कौर बिना हुए
न बचती थी,

* मूल में—उसका स्थान उसे फिर न ताकेगा।
† मूल में—लेट।

* मूल में—बनान।
† मूल में—पेट।
‡ मूल में—जान पड़ती।

इसलिये उसका कुशल बना न
रहेगा ॥
२२ पूरी सम्पत्ति रहते भी वह सकेती
मे पड़ेगा,
तब सब दुःखियो के हाथ उस पर
उठेंगे ॥
२३ ऐसा होगा, कि उसका पेट भरने
के लिये ईश्वर अपना क्रोध उस पर
भड़काएगा,
और रोटी खाने के समय वह उन
पर पड़ेगा † ॥
२४ वह लोहे के हथियार से भागेगा,
और पीतल के धनुष से मारा
जाएगा ॥
२५ वह उस तीर को खीचकर अपने पेट
से निकालेगा,
उसकी चमकीली नोक ‡ उसके पित्ते
से होकर निकलेगी,
भय उस मे समाएगा ॥
२६ उसके गडे हुए धन पर घोर अन्धकार
छा जाएगा §
वह ऐसी आग से भस्म होगा, जो
मनुष्य की फूकी हुई न हो,
और उसी से उसके डेरे मे जो बचा
हो वह भी भस्म हो जाएगा ॥
२७ आकाश उसका अधर्म प्रगट करेगा,
और पृथ्वी उसके विरुद्ध खडी
होगी ॥
२८ उसके घर की बढ़ती जाती रहेगी,
वह उसके क्रोध के दिन बह जाएगी ॥
२९ परमेश्वर की ओर से दुष्ट मनुष्य
का अंश,
और उसके लिये ईश्वर का ठहराया
हुआ भाग यही है ॥

(अय्यूब का वचन)

२१ तब अय्यूब ने कहा,
२ चित्त लगाकर मेरी बात सुनो,
और तुम्हारी शान्ति यही ठहरे ॥
३ मेरी कुछ तो सहो, कि मै भी बातें
करू,
और जब मै बातें कर चुकू, तब पीछे
ठट्ठा करना ॥
४ क्या मै किसी मनुष्य की दोहाई
देता हू ?
फिर मै अधीर क्यो न होऊ ?
५ मेरी ओर चित्त लगाकर चकित हो,
और अपनी अपनी उगली दात
तले दबाओ ॥
६ जब मै स्मरण करता तब मै घबरा
जाता हू,
और मेरी देह मे कपकपी लगती
है ॥
७ क्या कारण है कि दुष्ट लोग जीवित
रहते है,
वरन बूढ़े भी हो जाते, और उनका
धन बढ़ता जाता है ?
८ उनकी सन्तान उनके संग,
और उनके बालबच्चे उनकी आखो
के साम्हने बने रहते है ॥
९ उनके घर मे भयरहित कुशल रहता है,
और ईश्वर की छडी उन पर नही
पडती ॥
१० उनका साड गाभिन करता और
चूकता नही,

* वा उनको रोटी ठहरा कर। वा उसके मास में।
† मूल में—उस पर बरसाएगा।
‡ मूल में—बिजली।
§ मूल में—उसके छिपे हुओं के लिये सब अन्धकार छिपा है।

* मूल में—हाथ मुह पर रक्खोगे।

उनकी गायें वियाती है और बच्चा
कभी नही गिराती ।।
११ वे अपने लडको को झुण्ड के झुण्ड
बाहर जाने देते है,
और उनके बच्चे नाचते है ।।
१२ वे डफ और वीणा बजाते हुए गाते,
और बासुरी के शब्द मे
आनन्दित होते है ।।
१३ वे अपने दिन सुख मे बिताते, और
पल भर ही मे
अधोलोक मे उतर जाते हैं ।।
१४ तौभी वे ईश्वर से कहते थे, कि
हम से दूर हो।
तेरी गति जानने की हम को इच्छा
नही रहती ।।
१५ सर्वशक्तिमान क्या है, कि हम उसकी
सेवा करें ?
और जो हम उस से विनती भी करें
तो हमें क्या लाभ होगा ?
१६ देखो, उनका कुशल उनके हाथ मे
नही रहता,
दुष्ट लोगो का विचार मुझ से दूर
रहे ।।
१७ कितनी बार दुष्टो का दीपक बुझ
जाता है,
और उन पर विपत्ति आ पडती है,
और ईश्वर क्रोध करके उनके बाट
मे शोक देता है,
१८ और वे वायु से उडाए हुए भूसे की,
और बवण्डर से उडाई हुई भूसी
की नाई होते है ।।
१९ ईश्वर उसके अधर्म का दण्ड उसके
लडकेवालो के लिये रख छोडता
है,
वह उसका बदला उसी को दे,
ताकि वह जान ले ।।
२० दुष्ट अपना नाश अपनी ही आखो
से देखे, और
सर्वशक्तिमान की जलजलाहट मे से
आप पी ले ।।
२१ क्योकि जब उसके महीनो की गिनती
कट चुकी,
तो अपने बादवाले घराने मे उसका
क्या काम रहा ।।
२२ क्या ईश्वर को कोई ज्ञान सिखाएगा ?
वह तो ऊचे पद पर रहनेवालो का
भी न्याय करता है ।।
२३ कोई तो अपने पूरे बल मे
बडे चैन और सुख से रहता हुआ
मर जाता है ।।
२४ उसकी दोहनिया दूध से
और उसकी हड्डिया गूदे से भरी
रहती हैं ।।
२५ और कोई अपने जीव मे कुढ * कुढकर
बिना सुख भोगे मर जाता है ।।
२६ वे दोनो बराबर मिट्टी मे मिल †
जाते है,
और कीडे उन्हे ढाक लेते है ।।
२७ देखो, मै तुम्हारी कल्पनाए जानता
हू,
और उन युक्तियो को भी, जो
तुम मेरे विषय मे अन्याय से करते
हो ।।
२८ तुम कहते तो हो कि रईस का घर
कहा रहा ?
दुष्टो के निवास के डेरे कहा रहे ?
२९ परन्तु क्या तुम ने बटोहियो से कभी
नही पूछा ?
क्या तुम उनके इस विषय के प्रमाणो
से अनजान हो,

* मूल मे—कडवाहट।
† मूल मे—लेट।

३० कि विपत्ति के दिन के लिये दुर्जन
रखा जाता है,
और महाप्रलय के समय के लिये
ऐसे लोग बचाए जाते* हैं ?
३१ उसकी चाल उसके मुह पर कौन
कहेगा ?
और उस ने जो किया है, उसका
पलटा कौन देगा ?
३२ तौभी वह कब्र को पहुचाया जाता है,
और लोग उस कब्र की रखवाली
करते रहते हैं† ।।
३३ नाले के ढेले उसको सुखदायक लगते
हैं,
और जैसे पूर्वकाल के लोग अनगिनित
जा चुके,
वैसे ही सब मनुष्य उसके बाद भी
चले जाएगे ।।
३४ तुम्हारे उत्तरो मे तो झूठ ही पाया
जाता है,
इसलिये तुम क्यो मुझे व्यर्थ शान्ति
देते हो ?

(एलीपज का वचन)

२२ तब तेमानी एलीपज ने कहा,
२ क्या पुरुष से ईश्वर को लाभ
पहुच सकता है ?
जो बुद्धिमान है, वह अपने ही लाभ
का कारण होता है ।।
३ क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान
सुख पा सकता है ?
तेरी चाल की खराई से क्या उसे
कुछ लाभ हो सकता है ?
४ वह तो तुझे डाटता है, और तुझ
से मुकद्दमा लडता है,

* मूल में—पहुचाए जाते है।
† वा और कबर पर पहरा देता रहता है।

तो क्या इस दशा मे तेरी भक्ति हो
सकती है ?
५ क्या तेरी बुराई बहुत नही ?
तेरे अधर्म के कामो का कुछ अन्त
नही ।।
६ तू ने तो अपने भाई का बन्धक अकारण
रख लिया है,
और नगे के वस्त्र उतार लिये है ।।
७ थके हुए को तू ने पानी न पिलाया,
और भूखे को रोटी देने से इनकार
किया ।।
८ जो बलवान था उसी को भूमि मिली,
और जिस पुरुष की प्रतिष्ठा हुई
थी, वही उस मे बस गया ।।
९ तू ने विधवाओ को छूछे हाथ लौटा
दिया ।
और अनाथो की बाहे तोड डाली
गई ।।
१० इस कारण तेरे चारो ओर फन्दे
लगे है,
और अचानक डर के मारे तू घबरा
रहा है ।।
११ क्या तू अन्धियारे को नही देखता,
और उस बाढ को जिस मे तू डूब
रहा है ?
१२ क्या ईश्वर स्वर्ग के ऊचे स्थान मे
नही है ?
ऊचे से ऊचे तारो को देख कि वे
कितने ऊचे है ।।
१३ फिर तू कहता है कि ईश्वर क्या
जानता है ?
क्या वह घोर अन्धकार की आड मे
होकर न्याय करेगा ?
१४ काली घटाओ से वह ऐसा छिपा
रहता है कि वह कुछ नही देख
सकता,

वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर
चलता फिरता है ।।
१५ क्या तू उस पुराने रास्ते को पकडे
रहेगा,
जिस पर वे अनर्थ करनेवाले चलते
है ?
१६ वे अपने समय से पहले उठा लिए
गए
और उनके घर की नेव नदी बहा
ले गई ।।
१७ उन्हो ने ईश्वर से कहा था, हम से
दूर हो जा,
और यह कि सर्वशक्तिमान हमारा *
क्या कर सकता है ?
१८ तौभी उस ने उनके घर अच्छे अच्छे
पदार्थों से भर दिए—
परन्तु दुष्ट लोगो का विचार मुझ से
दूर रहे ।।
१९ धर्मी लोग देखकर आनन्दित होते है,
और निर्दोष लोग उनकी हसी
करते है, कि
२० जो हमारे विरुद्ध उठे थे, नि सन्देह
मिट गए
और उनका बडा धन आग का कौर
हो गया है ।।
२१ उस से मेलमिलाप कर तब तुझे
शान्ति मिलेगी,
और इस से तेरी भलाई होगी ।।
२२ उसके मुह से शिक्षा सुन ले,
और उसके वचन अपने मन में रख ।।
२३ यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरके
समीप जाए,
और अपने डेरे से कुटिल काम दूर
करे, तो तू बन जाएगा ।।

* मूल में—उनका।

२४ तू अपनी अनमोल वस्तुओ को* धूलि
पर, वरन
ओपीर का कुन्दन भी नालो के पत्थरो
मे डाल दे,
२५ तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल
वस्तु †
और तेरे लिये चमकीली चान्दी
होगा ।।
२६ तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा,
और ईश्वर की ओर अपना मुह
बेखटके उठा सकेगा ।।
२७ और तू उस से प्रार्थना करेगा,
और वह तेरी सुनेगा,
और तू अपनी मन्नतो को पूरी करेगा ।।
२८ जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी
पडेगी,
और तेरे मार्गो पर प्रकाश रहेगा ।।
२९ चाहे दुर्भाग्य हो ‡ तौभी तू कहेगा
कि सुभाग्य होगा §,
क्योकि वह नम्र मनुष्य को बचाता
है ।।
३० वरन जो निर्दोष न हो उसको भी
वह बचाता है,
तेरे शुद्ध कामो || के कारण तू छुडाया
जाएगा ।।

(अय्यूब का वचन)

२३ तब अय्यूब ने कहा,
२ मेरी कुडकुडाहट अब भी नही रुक
सकती ¶,

* मूल में—खान से निकला हुआ सोना चादी।
† मूल में—तेरा धातु।
‡ मूल में—वे नीचे होए।
§ मूल में—ऊचाई।
|| मूल में—हाथों।
¶ मूल में—ढिठाई है।

मेरी मार * मेरे कराहने से भारी
है ।।
३ भला होता, कि मैं जानता कि वह
कहा मिल सकता है,
तब मै उसके विराजने के स्थान तक
जा सकता !
४ मैं उसके साम्हने अपना मुकद्दमा पेश
करता,
और बहुत से † प्रमाण देता ।।
५ मैं जान लेता कि वह मुझ से उत्तर
मे क्या कह सकता है,
और जो कुछ वह मुझ से कहता वह
मैं समझ लेता ।।
६ क्या वह अपना बडा बल दिखाकर
मुझ से मुकद्दमा लडता ?
नही, वह मुझ पर ध्यान देता ।।
७ सज्जन उस से विवाद कर सकते,
और इस रीति मैं अपने न्यायी के
हाथ से सदा के लिये छूट जाता ।।
८ देखो, मैं आगे जाता हू परन्तु वह
नही मिलता,
मै पीछे हटता हू, परन्तु वह दिखाई
नही पडता,
९ जब वह बाई ओर काम करता है
तब वह मुझे दिखाई नही देता,
वह तो दहिनी ओर ऐसा छिप जाता
है, कि मुझे वह दिखाई ही नही
पडता ।।
१० परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी
चाल चला हू,
और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं
सोने के समान निकलूगा ।।
११ मेरे पैर उसके मार्गों मे स्थिर
रहे,

* मूल में—हाथ।
† मूल में—मुह भर के।

और मैं उसी का मार्ग बिना मुडे
थामे रहा ।।
१२ उसकी * आज्ञा का पालन करने से
मैं न हटा,
और मैं ने उसके † वचन अपनी
इच्छा ‡ से कही अधिक काम के
जानकर सुरक्षित रखे ।।
१३ परन्तु वह एक ही बात पर अडा
रहता है, और कौन उसको उस से
फिरा सकता है ?
जो कुछ उसका जी चाहता है वही
वह करता है ।।
१४ जो कुछ मेरे लिये उस ने ठाना है,
उसी को वह पूरा करता है,
और उसके मन मे ऐसी ऐसी बहुत
सी बाते है ।।
१५ इस कारण मैं उसके सम्मुख घबरा
जाता हू,
जब मैं सोचता हू तब उस से थरथरा
उठता हू ।।
१६ क्योकि मेरा मन ईश्वर ही ने कच्चा
कर दिया,
और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को
असमजस मे डाल दिया है ।।
१७ इसलिये कि मैं इस अन्धयारे से पहिले
काट डाला न गया, और उस ने
घोर अन्धकार को मेरे साम्हने से
न छिपाया ।

२४ सर्वशक्तिमान ने समय क्यो
नही ठहराया,
और जो लोग उसका ज्ञान रखते है
वे उसके दिन क्यो देखने नही पाते ?

* मूल में—उसके होठों की।
† मूल में—उसके मुह को।
‡ मूल में—विधि।

२ कुछ लोग भूमि की सीमा को बढाते,
और भेड बकरिया छीनकर चराते हैं ।।
३ वे अनाथो का गदहा हाक ले जाते,
और विधवा का बैल बन्धक कर
रखते है ।।
४ वे दरिद्र लोगो को मार्ग से हटा
देते,
और देश के दीनो को इकट्ठे छिपना
पडता है ।।
५ देखो, वे जगली गदहो की नाईं
अपने काम को और कुछ भोजन यत्न
से * ढूढने को निकल जाते हैं,
उनके लडकेवालो का भोजन उनको
जगल से मिलता है ।।
६ उनको खेत में चारा काटना,
और दुष्टो की बची बचाई दाख
बटोरना पडता है ।।
७ रात को उन्हें बिना वस्त्र नगे पडे
रहना
और जाडे के समय बिना ओढे पडे
रहना पडता हैं ।।
८ वे पहाडो पर की झडियो से भीगे
रहते,
और शरण न पाकर चट्टान मे लिपट
जाते हैं ।।
९ कुछ लोग अनाथ बालक को मा की
छाती पर से छीन लेते है,
और दीन लोगो से बन्धक लेते हैं ।
१० जिस से वे बिना वस्त्र नगे फिरते
हैं,
और भूख के मारे, पूलिया ढोते हैं ।।
११ वे उनकी भीतो के भीतर तेल पेरते
और उनके कुण्डो में दाख रौदते
हुए भी प्यासे रहते हैं ।।

* मूल में—तडके उठकर।

१२ वे बडे नगर में कराहते हैं,
और घायल किए हुओ का जी दोहाई
देता है,
परन्तु ईश्वर मूर्खता का हिसाब
नही लेता ।।
१३ फिर कुछ लोग उजियाले से बैर
रखते,
वे उसके मार्गों को नही पहचानते,
और न उसके मार्गो में बने रहते
हैं ।।
१४ खूनी, पह फटते ही उठकर
दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता,
और रात को चोर बन जाता
है ।।
१५ व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई
मुझ को देखने न पाए,
दिन डूबने की राह देखता रहता है,
और वह अपना मुह छिपाए भी
रखता है ।।
१६ वे अन्धियारे के समय घरो मे सेंध
मारते और दिन को छिपे रहते
हैं,
वे उजियाले को जानते भी नही ।।
१७ इसलिये उन सभो को भोर का
प्रकाश घोर * अन्धकार सा जान
पडता है,
क्योकि घोर अन्धकार का भय वे
जानते हे ।।
१८ वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के
सरीखे है,
उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले
कोसते हैं,
और वे अपनी दाख की बारियो में
लौटने नही पाते ।।

* मृत्यु की छाया।

१६ जैसे सूखे और घाम से हिम का
जल सूख * जाता है
वैसे ही पापी लोग अधोलोक मे सूख
जाते है ।।
२० माता † भी उसको भूल जाती, और
कीडे उसे चूसते है,
भविष्य मे उसका स्मरण न रहेगा,
इस रीति टेढा काम करनेवाला वृक्ष
की नाईं कट जाता है ।।
२१ वह बाझ स्त्री को जो कभी नही
जनी लूटता,
और विधवा से भलाई करना नही
चाहता है ।।
२२ बलात्कारियो को भी ईश्वर अपनी
शक्ति से खीच लेता है,
जो जीवित रहने की आशा नही
रखता, वह भी फिर उठ बैठता है ।।
२३ उन्हे ऐसे बेखटके कर देता है, कि
वे सम्भले रहते है,
और उसकी कृपादृष्टि उनकी चाल
पर लगी रहती है ।।
२४ वे बढते है, तब थोडी बेर मे जाते
रहते है,
वे दबाए जाते और सभो की नाईं
रख लिये जाते है,
और अनाज की बाल की नाईं काटे
जाते है ।।
२५ क्या यह सब सच नही ! कौन मुझे
झुठलाएगा ?
कौन मेरी बाते निकम्मी ठहराएगा ?

(शूही बिल्दद का वचन)

२५ तब शूही बिल्दद ने कहा,
२ प्रभुता करना और डराना यह
उसी का काम है,
वह अपने ऊचे ऊचे स्थानो मे शान्ति
रखता है ।।
३ क्या उसकी सेनाओ की गिनती हो
सकती ? और
कौन है जिस पर उसका प्रकाश नही
पडता ?
४ फिर मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में
धर्मी क्योकर ठहर सकता है ?
और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है
वह क्योकर निर्मल हो सकता है ?
५ देख, उसकी दृष्टि मे चन्द्रमा भी
अन्धेरा ठहरता,
और तारे भी निर्मल नही ठहरते ।।
६ फिर मनुष्य की क्या गिनती जो
कीडा है, और
आदमी कहा रहा जो केचुआ है !

(अय्यूब का वचन)

२६ तब अय्यूब ने कहा,
२ निर्बल जन की तू ने क्या ही बडी
सहायता की,
और जिसकी बाह मे सामर्थ्य नही,
उसको तू ने कैसे सम्भाला है ?
३ निर्बुद्धि मनुष्य को तू ने क्या ही
अच्छी सम्मति दी,
और अपनी खरी बुद्धि कैसी भली
भाति प्रगट की है ?
४ तू ने किसके हित के लिये बाते कही ?
और किसके मन की बाते तेरे मुह
से निकली * ?
५ बहुत दिन के मरे हुए लोग भी
जलनिधि और उसके निवासियो के
तले तडपते है ।।
६ अधोलोक उसके साम्हने उघडा रहता
है,

* मूल में—छीना।
† मूल में—गर्भ।

* मूल में—किसकी सास तुझ से निकली।

और विनाश का स्थान ढप नही
सकता ॥
७ वह उत्तर दिशा को निराधार फैलाए
रहता है,
और बिना टेक * पृथ्वी को लटकाए
रखता है ॥
८ वह जल को अपनी काली घटाओ
में बान्ध रखता,
और बादल उसके बोझ से नही
फटता ॥
९ वह अपने सिंहासन के साम्हने बादल
फैलाकर
उसको छिपाए रखता है ॥
१० उजियाले और अन्धियारे के बीच
जहा सिवाना बधा है,
वहा तक उस ने जलनिधि का सिवाना
ठहरा रखा है ॥
११ उसकी घुडकी से
आकाश के खम्भे थरथराकर चकित
होते है ॥
१२ वह अपने बल से समुद्र को
उछालता,
और अपनी बुद्धि से घमण्ड को
छेद देता है ॥
१३ उसकी आत्मा से आकाशमण्डल
स्वच्छ हो जाता है,
वह अपने हाथ से वेग भागनेवाले
नाग को मार देता है ॥
१४ देखो, ये तो उसकी गति के किनारे
ही है,
और उसकी आहट फुसफुसाहट ही
सी तो सुन पडती है,
फिर उसके पराक्रम के गरजने का
भेद कौन समझ सकता है ?

* मूल में—नास्ति के ऊपर।

२७ अय्यूब ने और भी अपनी
गूढ बात उठाई और कहा,
२ मै ईश्वर के जीवन की शपथ खाता
हू जिस ने मेरा न्याय बिगाड
दिया,
अर्थात् उस सर्वशक्तिमान के जीवन
की जिस ने मेरा प्राण कडुआ कर
दिया ॥
३ क्योकि अब तक मेरी सास बराबर
आती है,
और ईश्वर का आत्मा * मेरे नथुनो
मे बना है ॥
४ मै यह कहता हू कि मेरे मुह से
कोई कुटिल बात न निकलेगी,
और न मै † कपट की बातें बोलूगा ॥
५ ईश्वर न करे कि मै तुम लोगो को
सच्चा ठहराऊ,
जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक
मै अपनी खराई से न हटूगा ‡ ॥
६ मै अपना धर्म पकडे हुए हू और
उसको हाथ से जाने न दूगा,
क्योकि मेरा मन जीवन भर मुझे
दोषी नही ठहराएगा ॥
७ मेरा शत्रु दुष्टो के समान,
और जो मेरे विरुद्ध उठता है वह
कुटिलो के तुल्य ठहरे ॥
८ जब ईश्वर भक्तिहीन मनुष्य का
प्राण ले ले,
तब यद्यपि उस ने धन भी प्राप्त
किया हो, तौभी उसकी क्या आशा
रहेगी ?
९ जब वह सकट में पडे,
तब क्या ईश्वर उसकी दोहाई सुनेगा ?

* वा ईश्वर का दिया हुआ प्राण।
† मूल में—मेरी जीभ।
‡ मूल में—हटाऊगा।

१० क्या वह सर्वशक्तिमान मे सुख पा सकेगा, और
हर समय ईश्वर को पुकार सकेगा ?
११ मै तुम्हे ईश्वर के काम * के विषय शिक्षा दूगा,
और सर्वशक्तिमान की बात † मै न छिपाऊगा ।।
१२ देखो, तुम लोग सब के सब उसे स्वय देख चुके हो,
फिर तुम व्यर्थ विचार क्यो पकडे रहते हो ?
१३ दुष्ट मनुष्य का भाग ईश्वर की ओर से यह है,
और बलात्कारियो का अश जो वे सर्वशक्तिमान के हाथ से पाते है,
वह यह है, कि
१४ चाहे उसके लडकेबाले गिनती मे बढ भी जाए,
तौभी तलवार ही के लिये बढेगे,
और उसकी सन्तान पेट भर रोटी न खाने पाएगी ।।
१५ उसके जो लोग बच जाए वे मरकर कब्र को पहुचेगे,
और उसके यहा की विधवाए न रोएगी ।।
१६ चाहे वह रुपया धूलि के समान बटोर रखे
और वस्त्र मिट्टी के किनको के तुल्य अनगिनित तैयार कराए,
१७ वह उन्हे तैयार कराए तो सही, परन्तु धर्मी उन्हे पहिन लेगा,
और उसका रुपया निर्दोष लोग आपस मे बाटेगे ।।

* मूल में—ईश्वर के हाथ।
† मूल में—जो सर्वशक्तिमान के सग है।

१८ उस ने अपना घर कीडे का सा बनाया,
और खेत के रखवाले की झोपडी की नाईं बनाया ।।
१९ वह धनी होकर लेट जाए परन्तु वह गाडा न जाएगा;
आख खोलते ही वह जाता रहेगा ।।
२० भय की धाराए उसे वहा ले जाएगी *,
रात को बवण्डर उसको उडा ले जाएगा ।।
२१ पुरवाई उसे ऐसा उडा ले जाएगी, और वह जाता रहेगा
और उसको उसके स्थान से उडा ले जाएगी ।।
२२ क्योकि ईश्वर उस पर विपत्तिया बिना तरस खाए डाल देगा,
उसके हाथ से वह भाग जाने चाहेगा ।।
लोग उस पर ताली बजाएगे,
२३ और उस पर ऐसी सुसकारिया भरेगे कि वह अपने स्थान पर न रह सकेगा ।।

२८ चादी की खानि तो होती है,
और सोने के लिये भी स्थान होता है जहा लोग ताते है ।।
२ लोहा मिट्टी मे से निकाला जाता और पत्थर पिघलाकर पीतल बनाया जाता है ।।
३ मनुष्य अन्धियारे को दूर कर,
दूर दूर तक खोद खोद कर,
अन्धियारे और घोर अन्धकार मे पत्थर ढूढते है ।।

* मूल में—जा लेगी।

४ जहां लोग रहते हैं वहां से दूर वे खानि खोदते हैं
वहां पृथ्वी पर चलनेवालों के भूले बिसरे * हुए वे
मनुष्यों से दूर लटके हुए झूलते रहते हैं ।।
५ यह भूमि जो है, इस में रोटी तो मिलती है, परन्तु
उसके नीचे के स्थान मानो आग से उलट दिए जाते हैं ।।
६ उसके पत्थर नीलमणि का स्थान हैं,
और उसी में सोने की धूलि भी है ।।
७ उसका मार्ग कोई मांसाहारी पक्षी नहीं जानता,
और किसी गिद्ध की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी ।।
८ उस पर अभिमानी पशुओं ने पांव नहीं धरा,
और न उस से होकर कोई सिंह कभी गया है ।।
९ वह चकमक के पत्थर पर हाथ लगाता,
और पहाड़ों को जड़ ही से उलट देता है ।।
१० वह चट्टान खोदकर नालियां बनाता,
और उसकी आंखों को हर एक अनमोल वस्तु दिखाई पड़ती है ।।
११ वह नदियों को ऐसा रोक देता है, कि उन से एक बूंद भी पानी नहीं टपकता †
और जो कुछ छिपा है उसे वह उजियाले में निकालता है ।।

* मूल में—पांव से।
† मूल में—आंसू बहाने से।

१२ परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है?
और समझ का स्थान कहां है?
१३ उसका मोल मनुष्य को मालूम नहीं,
जीवनलोक में वह कहीं नहीं मिलती!
१४ अथाह सागर कहता है, वह मुझ में नहीं है,
और समुद्र भी कहता है, वह मेरे पास नहीं है ।।
१५ चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता।
और न उसके दाम के लिये चान्दी तौली जाती है ।।
१६ न तो उसके साथ ओपीर के कुन्दन की बराबरी हो सकती है,
और न अनमोल सुलैमानी पत्थर वा नीलमणि की ।।
१७ न सोना, न कांच उसके बराबर ठहर सकता है,
कुन्दन के गहने के बदले भी वह नहीं मिलती ।।
१८ मूंगे और स्फटिकमणि की उसके आगे क्या चर्चा!
बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है ।।
१९ कूश देश के पद्मराग उसके तुल्य नहीं ठहर सकते,
और न उस से चोखे कुन्दन की बराबरी हो सकती है ।।
२० फिर बुद्धि कहां मिल सकती है?
और समझ का स्थान कहां?
२१ वह सब प्राणियों की आंखों से छिपी है,
और आकाश के पक्षियों के देखने में नहीं आती ।।
२२ विनाश और मृत्यु कहती हैं,
कि हमने उसकी चर्चा सुनी है ।।

२३ परन्तु परमेश्वर उसका मार्ग समझता है,
और उसका स्थान उसको मालूम है ।।
२४ वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है,
और सारे आकाशमण्डल के तले देखता भालता है ।।
२५ जब उस ने वायु का तौल ठहराया,
और जल को नपुए मे नापा,
२६ और मेह के लिये विधि
और गर्जन और बिजली के लिये मार्ग ठहराया,
२७ तब उस ने बुद्धि को देखकर उसका बखान भी किया,
और उसको सिद्ध करके उसका पूरा भेद बूझ लिया ।।
२८ तब उस ने मनुष्य से कहा,
देख, प्रभु का भय मानना यही बुद्धि है:
और बुराई से दूर रहना यही समझ है ।।

(अय्यूब का वचन)

२६ अय्यूब ने और भी अपनी गूढ बात उठाई और कहा,
२ भला होता, कि मेरी दशा बीते हुए महीनो की सी होती,
जिन दिनो मे ईश्वर मेरी रक्षा करता था,
३ जब उसके दीपक का प्रकाश मेरे सिर पर रहता था,
और उस से उजियाला पाकर मै अन्धेरे मे चलता था ।।
४ वे तो मेरी जवानी* के दिन थे,
जब ईश्वर की मित्रता मेरे डेरे पर प्रगट होती थी ।।
५ उस समय तक तो सर्वशक्तिमान मेरे सग रहता था,
और मेरे लडकेबाले मेरे चारो ओर रहते थे ।।
६ तब मै अपने पगो को मलाई मे धोता था और
मेरे पास की चट्टानो से तेल की धाराए बहा करती थी ।।
७ जब जब मै नगर के फाटक की ओर चलकर खुले स्थान मे
अपने बैठने का स्थान तैयार करता था,
८ तब तब जवान मुझे देखकर छिप जाते,
और पुरनिये उठकर खडे हो जाते थे ।।
९ हाकिम लोग भी बोलने से रुक जाते,
और हाथ से मुह मूदे रहते थे ।।
१० प्रधान लोग चुप रहते थे*
और उनकी जीभ तालू से सट जाती थी ।।
११ क्योकि जब कोई† मेरा समाचार सुनता, तब वह मुझे धन्य कहता था,
और जब कोई मुझे देखता, तब मेरे विषय साक्षी देता था,
१२ क्योकि मै दोहाई देनेवाले दीन जन को,
और असहाय अनाथ को भी छुडाता था ।।

* मूल में—फल पकने के समय।

* मूल में—प्रधानों की वाणी छिप जाती थी।

† मूल में—काम।

१३ जो नाश होने पर था मुझे आशीर्वाद
देता था,
और मेरे कारण विधवा आनन्द के
मारे गाती थी ॥
१४ मैं धर्म को पहिने रहा, और वह मुझे
ढांके रहा,
मेरा न्याय का काम मेरे लिये बागे
और सुन्दर पगडी का काम देता
था ॥
१५ मैं अन्धों के लिये आंखें,
और लंगडों के लिये पांव ठहरता
था ॥
१६ दरिद्र लोगों का मैं पिता ठहरता
था,
और जो मेरी पहिचान का न था
उसके मुकद्दमे का हाल मैं पूछताछ
करके जान लेता था ॥
१७ मैं कुटिल मनुष्यों की डाढें तोड
डालता, और
उनका शिकार उनके मुंह से छीनकर
बचा लेता था ॥
१८ तब मैं सोचता था, कि मेरे दिन
बालू के किनकों के समान अनगिनत
होंगे,
और अपने ही बसेरे में मेरा प्राण
छूटेगा ॥
१९ मेरी जड जल की ओर फैली,*
और मेरी डाली पर ओस रात भर
पडी,
२० मेरी महिमा ज्यों की त्यों† बनी रहेगी,
और मेरा धनुष मेरे हाथ में सदा
नया होता जाएगा ॥
२१ लोग मेरी ही ओर कान लगाकर
ठहरे रहते थे

* मूल में—खुली।
† मूल में—टटकी।

और मेरी सम्मति सुनकर चुप रहते
थे ॥
२२ जब मैं बोल चुकता था, तब वे और
कुछ न बोलते थे,
मेरी बातें उन पर मेंह की नाईं बरसा
करती थीं ॥
२३ जैसे लोग बरसात की वैसे ही मेरी
भी बाट देखते थे,
और जैसे बरसात के अन्त की वर्षा
के लिये वैसे ही वे मुंह पसारे रहते*
थे ॥
२४ जब उनको कुछ आशा न रहती
थी तब मैं हंसकर उनको प्रसन्न
करता था,
और कोई मेरे मुंह को बिगाड न
सकता था ॥
२५ मैं उनका मार्ग चुन लेता, और
उन में मुख्य ठहरकर बैठा करता
था,
और जैसा सेना में राजा वा विलाप
करनेवालों के बीच शान्तिदाता,
वैसा ही मैं रहता था ॥

३० परन्तु अब जिनकी अवस्था
मुझ से कम है, वे मेरी हंसी
करते हैं,
वे जिनके पिताओं को मैं अपनी भेड
बकरियों के कुत्तों के काम के योग्य
भी न जानता था† ॥
२ उनके भुजबल से मुझे क्या लाभ हो
सकता था?
उनका पौरुष तो जाता रहा ॥
३ वे दरिद्रता और काल के मारे दुबले
पडे हुए हैं,

* मूल में—मुंह खोलते।
† मूल में—कुत्तों के साथ ठहरना नकारता
था।

वे अन्धेरे और सुनसान स्थानो मे
सूखी धूल फाकते है ।।
४ वे झाडी के आसपास का लोनिया
साग तोड लेते,
और झाऊ की जडे खाते है ।।
५ वे मनुष्यो के बीच मे से निकाले
जाते है,
उनके पीछे ऐसी पुकार होती है,
जैसी चोर के पीछे ।।
६ डरावने नालो मे, भूमि के बिलो में,
और चट्टानो मे, उन्हे रहना पडता
है ।।
७ वे झाडियों के बीच रेकते,
और बिच्छू पौधो के नीचे इकट्ठे
पडे रहते है ।।
८ वे मूढो और नीच लोगो * के वश है
जो मार मार के इस देश से निकाले
गए थे ।।
९ ऐसे ही लोग अब मुझ पर लगते
गीत गाते,
और मुझ पर ताना मारते है ।।
१० वे मुझ से घिन खाकर दूर रहते,
वा मेरे मुह पर थूकने से भी नही
डरते † ।।
११ ईश्वर ने जो मेरी रस्सी खोलकर
मुझे दु ख दिया है,
इसलिये वे मेरे साम्हने मुह मे लगाम
नही रखते ।।
१२ मेरी दहिनी अलग पर बजारू लोग
उठ खडे होते है, वे मेरे पाव सरका
देते है,
और मेरे नाश के लिये अपने उपाय ‡
बान्धते है ।।

* मूल में—नामरहितों।
† मूल मे—मुह से थूक नही रख छोडते।
‡ मूल में—अपने रास्ते।

१३ जिनके कोई सहायक नही,
वे भी मेरे रास्तो को बिगाडते,
और मेरी विपत्ति को बढाते है * ।।
१४ मानो बडे नाके मे घुसकर वे आ
पडते है,
और उजाड के बीच मे होकर मुझ
पर धावा करते है ।।
१५ मुझ मे घबराहट छा गई है †,
और मेरा रईसपन मानो वायु से
उडाया गया है,
और मेरा कुशल बादल की नाई
जाता रहा ।।
१६ और अब मै शोकसागर मे डूबा
जाता हू ‡,
दु ख के दिनो ने मुझे जकड लिया
है § ।।
१७ रात को मेरी हड्डिया मेरे अन्दर
छिद जाती है ||
और मेरी नसो मे चैन नही
पडती ¶ ।।
१८ मेरी बीमारी की बहुतायत से मेरे
वस्त्र का रूप बदल गया है,
वह मेरे कुर्त्ते के गले की नाई मुझ
से लिपटी हुई है ।।
१९ उस ने मुझ को कीचड मे फेक
दिया है,
और मै मिट्टी और राख के तुल्य
हो गया हू ।।

* मूल में—विपत्ति की सहायता करते है।
† मूल में—मुझ पर घबराहट घुमाई गई।
‡ मूल में—मेरा जीव मेरे ऊपर उण्डेला जाता है।
§ मूल में—दु ख के दिनों ने मुझे पकडा है।
|| मूल में—मुझ पर से छिदती है।
¶ मूल में—मेरी नसें नही सोती।

२० मैं तेरी दोहाई देता हूं, परन्तु तू
नहीं सुनता,
मैं खड़ा होता हूं परन्तु तू मेरी ओर
घूरने लगता है ॥
२१ तू बदलकर मुझ पर कठोर हो गया
है,
और अपने बली हाथ से मुझे सताता
है ॥
२२ तू मुझे वायु पर सवार करके उड़ाता
है,
और आंधी के पानी में मुझे गला
देता है ॥
२३ हां, मुझे निश्चय है, कि तू मुझे
मृत्यु के वश में कर देगा,
और उस घर में पहुंचाएगा,
जो सब जीवित प्राणियों के लिये
ठहराया गया है ।
२४ तौभी क्या कोई गिरते समय हाथ
न बढ़ाएगा ?
और क्या कोई विपत्ति के समय *
दोहाई न देगा ?
२५ क्या मैं उसके लिये रोता नहीं था,
जिसके दुर्दिन आते थे ?
और क्या दरिद्र जन के कारण मैं
प्राण में दुखित न होता था ?
२६ जब मैं कुशल का मार्ग जोहता था,
तब विपत्ति आ पड़ी,
और जब मैं उजियाले का आसरा
लगाए था, तब अन्धकार छा गया ॥
२७ मेरी अन्तड़ियां निरन्तर उबलती
रहती हैं † और आराम नहीं
पातीं,
मेरे दुःख के दिन आ गए हैं ॥

* मूल में—होते इस कारण।
† मूल में—खौलती है और चुप नहीं होती।

२८ मैं शोक का पहिरावा पहिने हुए
मानो बिना सूर्य की गर्मी के काला
हो गया हूं ।
और सभा में खड़ा होकर सहायता
के लिये दोहाई देता हूं ॥
२९ मैं गीदड़ों का भाई,
और शुतुर्मुर्गों का संगी हो गया
हूं ॥
३० मेरा चमड़ा काला होकर मुझ पर
से गिरता जाता है,
और तप के मारे मेरी हड्डियां जल
गई हैं ॥
३१ इस कारण मेरी वीणा से विलाप
और मेरी बांसुरी से रोने की ध्वनि
निकलती है ॥

३१

मैं ने अपनी आंखों के विषय
वाचा बान्धी है,
फिर मैं किसी कुंवारी पर क्योंकर
आंखें लगाऊं ?
२ क्योंकि ईश्वर स्वर्ग से कौन सा अंश
और सर्वशक्तिमान ऊपर से कौन
सी सम्पत्ति बांटता है ?
३ क्या वह कुटिल मनुष्यों के लिये
विपत्ति
और अनर्थ काम करनेवालों के लिये
सत्यानाश का कारण नहीं है ?
४ क्या वह मेरी गति नहीं देखता और
क्या वह मेरे पग पग नहीं गिनता ?
५ यदि मैं व्यर्थ चाल चलता हूं,
वा कपट करने के लिये मेरे पैर
दौड़े हों *,
६ (तो मैं धर्म के तराजू में तौला जाऊं,
ताकि ईश्वर मेरी खराई को जान
ले) ॥

* मूल में—मेरा पांव दौड़ा हो ।

७ यदि मेरे पग मार्ग मे वहक गए हो,
और मेरा मन मेरी आखो की देखी
चाल चला हो,
वा मेरे हाथो को कुछ कलक लगा हो,
८ तो मै बीज बोऊ, परन्तु दूसरा खाए;
वरन मेरे खेत की उपज उखाड
डाली जाए ॥
९ यदि मेरा हृदय किसी स्त्री पर मोहित
हो गया है,
और मै अपने पडोसी के द्वार पर
घात मे बैठा हू,
१० तो मेरी स्त्री दूसरे के लिये पीसे,
और पराए पुरुष उसको भ्रष्ट करे ॥
११ क्योकि वह तो महापाप होता,
और न्यायियो से दण्ड पाने के योग्य
अधर्म का काम होता,
१२ क्योकि वह ऐसी आग है जो जलाकर
भस्म कर देती है,
और वह मेरी सारी उपज को जड
से नाश कर देती है ।
१३ जब मेरे दास वा दासी ने मुझ से
झगडा किया,
तब यदि मै ने उनका हक मार दिया
हो,
१४ तो जब ईश्वर उठ खडा होगा, तब
मै क्या करूगा ?
और जब वह आएगा तब मै क्या
उत्तर दूगा ?
१५ क्या वह उसका बनानेवाला नही
जिस ने मुझे गर्भ मे बनाया ?
क्या एक ही ने हम दोनो की सूरत
गर्भ मे न रची थी ?
१६ यदि मै ने कगालो की इच्छा पूरी
न की हो,
वा मेरे कारण विधवा की आखे कभी
रह गई हो,
१७ वा मै ने अपना टुकडा अकेला खाया
हो,
और उस मे से अनाथ न खाने पाए
हो,
१८ (परन्तु वह मेरे लडकपन ही से मेरे
साथ इस प्रकार पला जिस प्रकार
पिता के साथ,
और मै जन्म ही से विधवा को
पालता आया हू),
१९ यदि मै ने किसी को वस्त्रहीन मरते
हुए देखा,
वा किसी दरिद्र को जिसके पास
ओढने को न था
२० और उसको अपनी भेडो की ऊन
के कपडे न दिए हो,
और उस ने गर्म होकर मुझे आशीर्वाद
न दिया हो *,
२१ वा यदि मै ने फाटक मे अपने सहायक
देखकर
अनाथो के मारने को अपना हाथ
उठाया हो,
२२ तो मेरी बाह पखौडे से उखडकर
गिर पडे,
और मेरी भुजा की हड्डी टूट जाए † ॥
२३ क्योकि ईश्वर के प्रताप के कारण
मै ऐसा नही कर सकता था,
क्योकि उसकी ओर की विपत्ति
के कारण मै भयभीत होकर
थरथराता था ॥
२४ यदि मै ने सोने का भरोसा किया
होता,
वा कुन्दन को अपना आसरा कहा
होता,

---

* मूल में—उसकी कमर ने मुझे आशीर्वाद न दिया हो।

† मूल में—मेरी भुजा नरट से टूट जाए।

२५ वा अपने बहुत से धन
वा अपनी बडी कमाई के कारण
आनन्द किया होता,
२६ वा सूर्य को चमकते
वा चन्द्रमा को महाशोभा से चलते
हुए देखकर
२७ मैं मन ही मन मोहित हो गया
होता,
और अपने मुह से अपना हाथ चूम
लिया होता *,
२८ तो यह भी न्यायियो से दण्ड पाने
के योग्य अधर्म का काम होता,
क्योकि ऐसा करके मैं ने सर्वश्रेष्ठ
ईश्वर का इनकार किया होता ।।
२९ यदि मैं अपने वैरी के नाश से आनन्दित
होता,
वा जब उस पर विपत्ति पडी तब
उस पर हसा होता,
३० (परन्तु मैं ने न तो उसको शाप देते
हुए, और न उसके प्राणदण्ड की
प्रार्थना करते हुए अपने मुह † से
पाप किया है),
३१ यदि मेरे डेरे के रहनेवालो ने यह न
कहा होता,
कि ऐसा कोई कहा मिलेगा, जो इसके
यहा का मास खाकर तृप्त न हुआ
हो ?
३२ (परदेशी को सडक पर टिकना न
पडता था, मैं बटोही ‡ के लिये
अपना द्वार खुला रखता था),
३३ यदि मैं ने आदम की नाईं अपना
अपराध छिपाकर
अपने अधर्म को ढाप लिया हो,

* मूल में—मेरा हाथ मेरे मुह को चूमता।
† मूल में—तालू।
‡ मूल में—बाट।

३४ इस कारण कि मैं बडी भीड से
भय खाता था,
वा कुलीनो * से तुच्छ किए जाने से
डर गया
यहा तक कि मैं द्वार से बाहर न
निकला—
३५ भला होता कि मेरा कोई सुननेवाला
होता !
(सर्वशक्तिमान अभी मेरा न्याय
चुकाए ! देखो मेरा दस्तखत यही
है)।।
भला होता कि जो शिकायतनामा
मेरे मुद्दई ने लिखा है वह मेरे
पास होता !
३६ निश्चय मैं उसको अपने कन्धे पर
उठाए फिरता,
और सुन्दर पगडी जानकर अपने
सिर में बान्धे रहता ।।
३७ मैं उसको अपने पग पग का हिसाब
देता,
मैं उसके निकट प्रधान की नाईं
निडर जाता ।।
३८ यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध दोहाई
देती हो, और
उसकी रेघारिया मिलकर रोती हो,
३९ यदि मैं ने अपनी भूमि की उपज
बिना मजूरी † दिए खाई,
वा उसके मालिक का प्राण लिया हो,
४० तो गेहू के बदले झडबेडी,
और जव के बदले जगली घास
उगें !
अय्यूब के वचन पूरे हुए है ।।

* मूल में—अपनी गोद में।
† मूल में—कुली।
‡ मूल में—रुपये।

(एलीहू का वचन)

३२ तब उन तीनों पुरुषों ने यह
देखकर कि अय्यूब अपनी दृष्टि
में निर्दोष है उसको उत्तर देना छोड
दिया। २ और बूजी बारकेल का पुत्र
एलीहू जो राम के कुल का था, उसका
क्रोध भडक उठा। अय्यूब पर उसका
क्रोध इसलिये भडक उठा, कि उस ने
परमेश्वर को नही, अपने ही को निर्दोष
ठहराया। ३ फिर अय्यूब के तीनो मित्रो
के विरुद्ध भी उसका क्रोध इस कारण
भडका, कि वे अय्यूब को उत्तर न दे
सके, तौभी उसको दोषी ठहराया।
४ एलीहू तो अपने को उन मे छोटा
जानकर अय्यूब की बातो के अन्त की बाट
जोहता रहा। ५ परन्तु जब एलीहू ने
देखा कि ये तीनो पुरुष कुछ उत्तर नही
देते, तब उसका क्रोध भडक उठा॥

६ तब बूजी बारकेल का पुत्र एलीहू
कहने लगा, कि
मैं तो जवान हू, और तुम बहुत
बूढे हो,
इस कारण मैं रुका रहा, और अपना
विचार तुम को बताने मे डरता
था॥
७ मैं सोचता था, कि जो आयु मे बडे
है वे ही बात करे,
और जो बहुत वर्ष के है, वे ही
बुद्धि सिखाए॥
८ परन्तु मनुष्य मे आत्मा तो है ही,
और सर्वशक्तिमान अपनी दी हुई
सांस से उन्हे समझने की शक्ति
देता है॥
९ जो बुद्धिमान है वे बडे बडे लोग ही
नही और न्याय के समझनेवाले
बूढे ही नही होते॥
१० इसलिये मैं कहता हू, कि मेरी भी
सुनो*,
मैं भी अपना विचार बताऊंगा॥
११ मैं तो तुम्हारी बात सुनने को ठहरा
रहा,
मैं तुम्हारे प्रमाण सुनने के लिये
ठहरा रहा,
जब कि तुम कहने के लिये शब्द
ढूढते रहे॥
१२ मैं चित्त लगाकर तुम्हारी सुनता
रहा।
परन्तु किसी ने अय्यूब के पक्ष का
खण्डन नही किया,
और न उसकी बातो का उत्तर
दिया॥
१३ तुम लोग मत समझो कि हम को
ऐसी बुद्धि मिली है,
कि उसका खण्डन मनुष्य नही ईश्वर
ही कर सकता है॥
१४ जो बाते उस ने कही वह मेरे विरुद्ध
तो नही कही,
और न मैं तुम्हारी सी बातो मे
उसको उत्तर दूगा॥
१५ वे विस्मित हुए, और फिर कुछ
उत्तर नही दिया,
उन्हो ने बाते करना छोड दिया†॥
१६ इसलिये कि वे कुछ नही बोलते और
चुपचाप खडे है,
क्या इस कारण मैं ठहरा रहू?
१७ परन्तु अब मैं भी कुछ कहूगा‡,
मैं भी अपना विचार प्रगट
करूगा॥

---

* मूल में—सुन।
† मूल में—बातों ने उन से कूच किया।
‡ मूल में—अपना अंश उत्तर दूंगा।

१८ क्योकि मेरे मन में बातें भरी है,
और मेरी आत्मा मुझे उभार रही है ।।
१९ मेरा मन उस दाखमधु के समान है,
जो खोला न गया हो,
वह नई कुप्पियो की नाई फटा चाहता है ।।
२० शान्ति पाने के लिये मैं बोलूगा,
मैं मुह खोलकर उत्तर दूगा ।।
२१ न मैं किसी आदमी का पक्ष करूगा,
और न मैं किसी मनुष्य को चापलूसी की पदवी दूगा ।।
क्योकि मुझे तो चापलूसी करना आता ही नही
नही तो मेरा सिरजनहार क्षण भर मे मुझे उठा लेता ।।

३३ तौभी हे अय्यूब ! मेरी बात सुन ले, और मेरे सब वचनो पर कान लगा ।।
२ मैं ने तो अपना मुह खोला है,
और मेरी जीभ मुह मे चुलबुला रही है * ।।
३ मेरी बातें मेरे मन की सिधाई प्रगट करेंगी,
जो ज्ञान म रखता हू उसे खराई के साथ कहूगा † ।।
४ मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है,
और सर्वशक्तिमान की सास मे मुझे जीवन मिलता है ।।
५ यदि तू मुझे उत्तर दे सके, तो दे,
मेरे साम्हने अपनी बातें क्रम मे रचकर खडा हो जा ।।

* मूल में—बोली है।
† मूल में—मेरे होंट कहेंगे।

६ देख मैं ईश्वर के सन्मुख तेरे तुल्य हू,
म भी मिट्टी का बना हुआ हू ।।
७ सुन, तुझे मेरे डर के मारे घबराना न पडेगा, और
न तू मेरे बोझ से दबेगा ।।
८ नि सन्देह तेरी ऐसी बात मेरे कानो मे पडी है
और मैं ने तेरे वचन सुने है, कि
९ मैं तो पवित्र और निरपराध और निष्कलक हू, और मुझ मे अधर्म नही है ।।
१० देख, वह मुझ से झगडने के दाव ढूढता है, और मुझे अपना शत्रु समझता है,
११ वह मेरे दोनो पावो का काठ मे ठोक देता है,
और मेरी सारी चाल की देखभाल करता है ।।
१२ देख, मैं तुझे उत्तर देता हू, इस बात मे तू सच्चा नही है ।
क्योकि ईश्वर मनुष्य से बडा है ।।
१३ तू उस से क्यो झगडता है ?
क्योकि वह अपनी किसी बात का लेखा नही देता ।।
१४ क्योकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है,
परन्तु लोग उस पर चित्त नही लगाते ।।
१५ स्वप्न मे, वा रात को दिए हुए दर्शन मे,
जब मनुष्य घोर निद्रा मे पडे रहते है,
वा बिछौने पर सोते समय,

१६ तव वह मनुष्यो के कान खोलता है,
और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है,
१७ जिस से वह मनुष्य को उसके सकल्प से रोके
और गर्व को मनुष्य मे से दूर करे* ।।
१८ वह उसके प्राण को गढहे से वचाता है,
और उसके जीवन को खड्ग की मार से वचाता है ।
१९ उसे ताडना भी होती है, कि
वह अपने विछौने पर पडा पडा तडपता है,
और उसकी हड्डी हड्डी मे लगातार झगडा होता है
२० यहा तक कि उसका प्राण रोटी से,
और उसका मन स्वादिष्ट भोजन से घृणा करने लगता है ।।
२१ उसका मास ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नही देता,
और उसकी हड्डिया जो पहिले दिखाई नही देती थी निकल आती है † ।।
२२ निदान वह कवर के निकट पहुचता है,
और उसका जीवन नाश करनवालो के वश मे हो जाता है ।।
२३ यदि उसके लिये कोई विचवई स्वर्गदूत मिले, जो
हजार मे से एक ही हो, जो भावी कहे ।
और जो मनुष्य को वताए कि उसके लिये क्या ठीक है ।
२४ तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है,
कि उसे गढहे मे जाने से वचा ले,
मुझे छुडौती मिली है ।।
२५ तव उस मनुष्य की देह वालक की देह से अधिक स्वस्थ और कोमल हो जाएगी,
उसकी जवानी के दिन फिर लौट आएगे ।।
२६ वह ईश्वर से विनती करेगा, और वह उस से प्रसन्न होगा,
वह आनन्द से ईश्वर का दर्शन करेगा,
और ईश्वर मनुष्य को ज्यो का त्यो धर्मी कर देगा ।।
२७ वह मनुष्यो के साम्हने गाने और कहने लगता है, कि
मै ने पाप किया, और सच्चाई को उलट पुलट कर दिया,
परन्तु उसका वदला मुझे दिया नही गया ।।
२८ उस ने मेरे प्राण कब्र मे पडने से वचाया है,
मेरा जीवन* उजियाले को देखेगा ।।
२९ देख, ऐसे ऐसे सव काम
ईश्वर पुरुष के साथ दो वार क्या वरन तीन वार भी करता है,
३० जिस से उसको कब्र से वचाए †,
और वह जीवनलोक के उजियाले का प्रकाश पाए ।।
३१ हे अय्यूब ! कान लगाकर मेरी सुन,
चुप रह, मै और वोलूगा ।।
३२ यदि तुझे वात कहनी हो, तो मुझे उत्तर दे,

* मूल में—और पुरुष से गर्व छिपाए।
† मूल में—वा उसके अग सूखते सूखते मानो अनदेखे हो जाते है।

* मूल में—मेरा जीवन।
† मूल में—फेर लाए।

बोल, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराना
चाहता हू ।।
३३ यदि नहीं, तो तू मेरी सुन,
चुप रह, मैं तुझे बुद्धि की बात
सिखाऊंगा ।।

(एलीहू का वचन)

३४ फिर एलीहू यों कहता गया,
२ हे बुद्धिमानो! मेरी बातें सुनो,
और हे ज्ञानियो! मेरी बातों पर
कान लगाओ,
३ क्योंकि जैसे जीभ से * चखा जाता
है,
वैसे ही वचन कान से परखे जाते
हैं ।।
४ जो कुछ ठीक है, हम अपने लिये
चुन लें, जो भला है, हम आपस में
समझ बूझ लें ।।
५ क्योंकि अय्यूब ने कहा है, कि मैं
निर्दोष हू,
और ईश्वर ने मेरा हक मार दिया
है ।।
६ यद्यपि मैं सच्चाई पर हू, तौभी झूठा
ठहरता हू,
मैं निरपराध हू, परन्तु मेरा घाव †
असाध्य है ।।
७ अय्यूब के तुल्य कौन शूरवीर है,
जो ईश्वर की निन्दा पानी की नाईं
पीता है,
८ जो अनर्थ करनेवालों का साथ देता,
और दुष्ट मनुष्यों की संगति रखता
है ?
९ उस ने तो कहा है, कि मनुष्य को
इस से कुछ लाभ नहीं

* मूल में—तालू से।
† मूल में—तेरी।

कि वह आनन्द से परमेश्वर की
संगति रखे ।।
१० इसलिये हे समझवालो! मेरी
सुनो, यह सम्भव नहीं कि ईश्वर
दुष्टता का काम करे,
और सर्वशक्तिमान बुराई करे ।।
११ वह मनुष्य की करनी का फल देता
है,
और प्रत्येक को अपनी अपनी चाल
का फल भुगताता है ।।
१२ निःसन्देह ईश्वर दुष्टता नहीं करता
और न सर्वशक्तिमान अन्याय करता
है ।।
१३ किस ने पृथ्वी को उसके हाथ में
सौंप दिया ?
वा किस ने सारे जगत का प्रबन्ध
किया ?
१४ यदि वह मनुष्य से अपना मन हटाये
और अपना आत्मा और श्वास अपने
ही में समेट ले,
१५ तो सब देहधारी एक संग नाश हो
जाएंगे,
और मनुष्य फिर मिट्टी में मिल
जाएगा ।।
१६ इसलिये इसको सुनकर समझ रख,
और मेरी इन बातों पर कान लगा ।।
१७ जो न्याय का बैरी हो, क्या वह
शासन करे ?
जो पूर्ण धर्मी है, क्या तू उसे दुष्ट
ठहराएगा ?
१८ वह राजा से कहता है कि तू नीच है,
और प्रधानों से, कि तुम दुष्ट हो ।।
१९ ईश्वर तो हाकिमों का पक्ष नहीं करता
और धनी और कंगाल दोनों को
अपने बनाए हुए जानकर
उन में कुछ भेद नहीं करता ।।

२० आधी रात को पल भर मे वे मर
जाते है,
और प्रजा के लोग हिलाए जाते और
जाते रहते हैं,
और प्रतापी लोग विना हाथ लगाए
उठा लिए जाते हैं ।।
२१ क्योकि ईश्वर की आखे मनुष्य की
चालचलन पर लगी रहती है,
और वह उसकी सारी चाल को
देखता रहता है ।।
२२ ऐसा अन्धियारा वा घोर अन्धकार
कही नही है
जिस मे अनर्थ करनेवाले छिप
सके ।।
२३ क्योकि उस ने मनुष्य का कुछ समय
नही ठहराया
ताकि वह ईश्वर के सम्मुख अदालत
मे जाए ।।
२४ वह वडे वडे वलवानो को विना
पूछपाछ के चूर चूर करता है,
और उनके स्थान पर औरो को खडा
कर देता है ।।
२५ इसलिये कि वह उनके कामो को
भली भाँति जानता है,
वह उन्हे रात मे ऐसा उलट देता है
कि वे चूर चूर हो जाते हैं ।।
२६ वह उन्हे दुष्ट जानकर
सभो के देखते मारता है,
२७ क्योकि उन्हो ने उसके पीछे चलना
छोड दिया है,
और उसके किसी मार्ग पर चित्त
न लगाया,
२८ यहा तक कि उनके कारण कगालो
की दोहाई उस तक पहुची
और उस ने दीन लोगो की दोहाई
सुनी ।।
२९ जब वह चैन देता तो उसे कौन दोषी
ठहरा सकता है ?
और जब वह मुह फेर ले, तब कौन
उसका दर्शन पा सकता है ?
जाति भर के साथ और अकेले मनुष्य,
दोनो के साथ उसका वरावर
व्यवहार है
३० ताकि भक्तिहीन राज्य करता न रहे,
और प्रजा फन्दे मे फसाई न जाए ।।
३१ क्या किसी ने कभी ईश्वर से कहा, कि
मै ने दण्ड सहा, अब मै भविष्य
मे वुराई न करूगा,
३२ जो कुछ मुझे नही सूझ पडता, वह
तू मुझे सिखा दे,
और यदि मै ने टेढा काम किया हो,
तो भविष्य मे वैसा न करूगा ?
३३ क्या वह तेरे ही मन के अनुसार वदला
पाए
क्योकि तू उस से अप्रसन्न है ?
क्योकि तुझे निर्णय करना है, न कि
मुझे,
इस कारण जो कुछ तुझे समझ
पडता है, वह कह दे ।।
३४ सब ज्ञानी पुरुष
वरन जितने वुद्धिमान मेरी सुनते है
वे मुझ से कहेगे, कि
३५ अय्यूब ज्ञान की वाते नही कहता,
और न उसके वचन समझ के साथ
होते है ।।
३६ भला होता, कि अय्यूब अन्त तक
परीक्षा मे रहता,
क्योकि उस ने अनर्थियो के से उत्तर
दिए है ।।
३७ और वह अपने पाप मे विरोध वढाता
है,
और हमारे वीच ताली वजाता है,

और ईश्वर के विरुद्ध बहुत सी बातें
बनाता है ॥

(एलीहू की बातें)

३५ फिर एलीहू इस प्रकार और
भी कहता गया,
२ कि क्या तू इसे अपना हक़ समझता है?
क्या तू दावा करता है कि तेरा धर्म
ईश्वर के धर्म से अधिक है?
३ जो तू कहता है कि मुझे इस से
क्या लाभ?
और मुझे पापी होने में और न
होने में कौन सा अधिक अन्तर है?
४ मैं तुझे
और तेरे साथियों को भी एक संग
उत्तर देता हूं ॥
५ आकाश की ओर दृष्टि करके देख,
और आकाशमण्डल को ताक, जो
तुझ से ऊंचा है ॥
६ यदि तू ने पाप किया है तो ईश्वर
का क्या बिगड़ता है?
यदि तेरे अपराध बहुत ही बढ़
जाएं तौभी तू उसके साथ क्या
करता है?
७ यदि तू धर्मी है तो उसको क्या दे
देता है,
वा उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता
है?
८ तेरी दुष्टता का फल तुझ ऐसे ही
पुरुष के लिये है,
और तेरे धर्म का फल भी मनुष्य
मात्र के लिये है ॥
९ बहुत अन्धेर होने के कारण वे
चिल्लाते हैं,
और बलवान के बाहुबल के कारण
वे दोहाई देते हैं ॥
१० तौभी कोई यह नहीं कहता, कि मेरा
सृजनेवाला ईश्वर कहां है,
जो रात में भी गीत गवाता है,
११ और हमें पृथ्वी के पशुओं से अधिक
शिक्षा देता,
और आकाश के पक्षियों से अधिक
बुद्धि देता है?
१२ वे दोहाई देते हैं परन्तु कोई उत्तर
नहीं देता,
यह बुरे लोगों के घमण्ड के कारण
होता है ॥
१३ निश्चय ईश्वर व्यर्थ बातें कभी नहीं
सुनता,
और न सर्वशक्तिमान उन पर चित्त
लगाता है ॥
१४ तो तू क्यों कहता है, कि वह मुझे
दर्शन नहीं देता,
कि यह मुकद्दमा उसके साम्हने है,
और तू उसकी बाट जोहता हुआ
ठहरा है?
१५ परन्तु अभी तो उस ने क्रोध करके
दण्ड नहीं दिया है,
और अभिमान पर चित्त बहुत नहीं
लगाया,
१६ इस कारण अय्यूब व्यर्थ मुंह खोलकर
अज्ञानता की बातें बहुत बनाता
है ॥

३६ फिर एलीहू ने यह भी
कहा,
२ कुछ ठहरा रह, और मैं तुझ को
समझाऊंगा,
क्योंकि ईश्वर के पक्ष में मुझे कुछ
और भी कहना है ॥
३ मैं अपने ज्ञान की बात दूर से ले
आऊंगा,

और अपने सिरजनहार को धर्मी
ठहराऊंगा ।।
४ निश्चय मेरी बातें झूठी न होंगी,
वह जो तेरे संग है वह पूरा ज्ञानी है ।।
५ देख, ईश्वर सामर्थी है, और किसी
को तुच्छ नहीं जानता,
वह समझने की शक्ति में समर्थ है ।।
६ वह दुष्टों को जिलाए नहीं रखता,
और दीनों को उनका हक देता है ।।
७ वह धर्मियों से अपनी आंखें नहीं
फेरता,
वरन उनको राजाओं के संग सदा
के लिये सिंहासन पर बैठाता है,
और वे ऊंचे पद को प्राप्त करते हैं ।।
८ और चाहे वे बेड़ियों में जकड़े जाएं
और दुःख की रस्सियों से बान्धे जाएं,
९ तौभी ईश्वर उन पर उनके काम,
और उनका यह अपराध प्रगट
करता है, कि उन्हों ने गर्व किया है।।
१० वह उनके कान शिक्षा सुनने के लिये
खोलता है,
और आज्ञा देता है कि वे बुराई से
परे रहें ।।
११ यदि वे सुनकर उसकी सेवा करें,
तो वे अपने दिन कल्याण से,
और अपने वर्ष सुख से पूरे करते हैं ।।
१२ परन्तु यदि वे न सुनें, तो वे खड्ग
से नाश हो जाते हैं,
और अज्ञानता में मरते हैं ।।
१३ परन्तु वे जो मन ही मन भक्तिहीन
होकर क्रोध बढ़ाते,
और जब वह उनको बान्धता है, तब
भी दोहाई नहीं देते,
१४ वे जवानी में मर जाते हैं
और उनका जीवन लुच्चों के बीच
में नाश होता है ।।
१५ वह दुखियों को उनके दुःख से छुड़ाता
है,
और उपद्रव में उनका कान खोलता
है ।।
१६ परन्तु वह तुझ को भी क्लेश के
मुंह में से निकालकर
ऐसे चौड़े स्थान में जहां सकेती नहीं है,
पहुंचा देता है,
और चिकना चिकना भोजन तेरी
मेज पर परोसता * है ।।
१७ परन्तु तू ने दुष्टों का सा निर्णय
किया है †
इसलिये निर्णय और न्याय तुझ से
लिपटे रहते हैं ।।
१८ देख, तू जलजलाहट से उभर के ठट्ठा
मत कर, और
न प्रायश्चित्त को अधिक बड़ा जानकर
मार्ग से मुड़ ।।
१९ क्या तेरा रोना वा तेरा बल तुझे
दुःख से छुटकारा देगा ?
२० उस रात की अभिलाषा न कर,
जिस में देश देश के लोग अपने अपने
स्थान से मिटाए जाते हैं ।
२१ चौकस रह, अनर्थ काम की ओर
मत फिर,
तू ने तो दुःख ‡ से अधिक इसी को
चुन लिया है ।।
२२ देख, ईश्वर अपने सामर्थ्य से बड़े बड़े
काम करता है,
उसके समान शिक्षक कौन है ?
२३ किस ने उसके चलने का मार्ग ठहराया
है ?

---

* मूल में—और तेरी मेज की उतराई चिकनाई से भरी ।

† मूल में—दुष्ट के निर्णय से भर गया ।

‡ वा दीनता ।

और कौन उस से कह सकता है,
कि तू ने अनुचित काम किया है ?
२४ उसके कामो की महिमा और प्रशसा
करने को स्मरण रख,
जिसकी प्रशसा का गीत मनुष्य गाते
चले आए है ॥
२५ सब मनुष्य उसको ध्यान से देखते
आए है,
और मनुष्य उसे दूर दूर से देखता
है ॥
२६ देख, ईश्वर महान और हमारे ज्ञान
से कही परे है,
और उसके वर्ष की गिनती अनन्त है ॥
२७ क्योकि वह तो जल की बूदें ऊपर को
खींच लेता है
वे कुहरे से मेंह होकर टपकती है,
२८ वे ऊचे ऊचे बादल उडेलते है
और मनुष्यो के ऊपर बहुतायत से
बरसाते है ॥
२९ फिर क्या कोई बादलो का फैलना
और उसके मण्डल मे का गरजना
समझ सकता है ?
३० देख, वह अपने उजियाले को चहुँओर
फैलाता है,
और समुद्र की थाह को * ढापता है॥
३१ क्योकि वह देश देश के लोगो का
न्याय इन्ही से करता है,
और भोजनवस्तुए बहुतायत से देता
है ॥
३२ वह बिजली को अपने हाथ में लेकर †
उसे आज्ञा देता है कि दुश्मन पर
गिरे ‡ ॥

* मूल में—जड को।
† मूल में—दोनों हाथ उजियाले से ढाप
कर।
‡ मूल में—निशाना मारनेहारे की नाई।

३३ इसकी कडक उसी का समाचार देती
है
पशु भी प्रगट करते है कि अन्धड
चढा आता है ॥

३७ फिर इस बात पर भी मेरा
हृदय कापता है,
और अपने स्थान से उछल पडता है ॥
२ उसके बोलने का शब्द तो सुनो,
और उस शब्द को जो उसके मुह
से निकलता है सुनो ॥
३ वह उसको सारे आकाश के तले,
और अपनी बिजली * को पृथ्वी
की छोर तक भेजता है ॥
४ उसके पीछे गरजने का शब्द होता है,
वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता
है,
और जब उसका शब्द सुनाई देता
है तब बिजली लगातार चमकने
लगती है † ॥
५ ईश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भुत
रीति से सुनाता है,
और बडे बडे काम करता है जिनको
हम नही समझते ॥
६ वह तो हिम से कहता है, पृथ्वी पर
गिर,
और इसी प्रकार मेंह को भी और
मूसलाधार वर्षा को भी
ऐसी ही आज्ञा देता है ॥
७ वह सब मनुष्यो के हाथ पर मुहर ‡
कर देता है,
जिस से उसके बनाए हुए सब मनुष्य
उसको पहचानें ॥

* मूल में—अपने उजियाले।
† मूल में—तब उन्हें नहीं रोकता।
‡ मूल में—हाथ।

८ तब वनपशु गुफाओं में घुस जाते,
और अपनी अपनी मांदों में रहते हैं ॥
९ दक्खिन दिशा से * बवण्डर
और उतरहिया से † जाड़ा आता है ॥
१० ईश्वर की श्वास की फूंक से बरफ पड़ता है,
तब जलाशयों का पाट जम जाता है ॥
११ फिर वह घटाओं को भाफ से लादता,
और अपनी बिजली से भरे हुए उजियाले का बादल दूर तक फैलाता है ॥
१२ वे उसकी बुद्धि की युक्ति से इधर उधर फिराए जाते हैं,
इसलिये कि जो आज्ञा वह उनको दे,
उसी को वे बसाई हुई पृथ्वी के ऊपर पूरी करें ॥
१३ चाहे ताड़ना देने के लिये, चाहे अपनी पृथ्वी की भलाई के लिये
वा मनुष्यों पर करुणा करने के लिये वह उसे भेजे ॥
१४ हे अय्यूब! इस पर कान लगा और सुन ले,
चुपचाप खड़ा रह, और ईश्वर के आश्चर्यकर्मों का विचार कर ॥
१५ क्या तू जानता है, कि ईश्वर क्योंकर अपने बादलों को आज्ञा देता,
और अपने बादल की बिजली को चमकाता है? ॥
१६ क्या तू घटाओं का तौलना,
वा सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है?
१७ जब पृथ्वी पर दक्खिनी हवा ही के कारण से सन्नाटा रहता है ‡,
तब तेरे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं?
१८ फिर क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान सकता है,
जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है?
१९ तू हमें यह सिखा कि उस से क्या कहना चाहिये?
क्योंकि हम अन्धियारे के कारण अपना व्याख्यान ठीक नहीं रच सकते ॥
२० क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूं?
क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है?
२१ अभी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता
जब वायु चलकर उसको शुद्ध करती है ॥
२२ उत्तर दिशा से सुनहली ज्योति आती है
ईश्वर भययोग्य तेज से आभूषित है ॥
२३ सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है,
और जिसका भेद हम पा नहीं सकते,
वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार * नहीं कर सकता ॥
२४ इसी कारण सज्जन उसका भय मानते हैं,
और जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं,
उन पर वह दृष्टि नहीं करता ॥

(यहोवा और अय्यूब का वार्तालाप)

३८ तब यहोवा ने अय्यूब को आंधी में से यूं उत्तर दिया,
२ यह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर

* मूल में—कोठरी में।
† मूल में—बिखेरनेहारों में।
‡ मूल में—जब पृथ्वी दक्खिन ही से चुपचाप होती है।

* मूल में—दबाने।

युक्ति को बिगाड़ना चाहता है * ?
३ पुरुष की नाईं अपनी कमर बान्ध ले,
क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूं,
और तू मुझे उत्तर दे॥
४ जब मैं ने पृथ्वी की नेव डाली, तब
तू कहां था?
यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे॥
५ उसकी नाप किस ने ठहराई, क्या तू
जानता है
उस पर किस ने सूत खींचा?
६ उसकी नेव कौन सी वस्तु पर रखी
गई †,
वा किस ने उसके कोने का पत्थर
बिठाया,
७ जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द
से गाते थे
और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार
करते थे?
८ फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला
मानो वह गर्भ से फूट निकला,
तब किस ने द्वार मूंदकर उसको
रोक दिया,
९ जब कि मैं ने उसको बादल पहिनाया
और घोर अन्धकार में लपेट दिया,
१० और उसके लिये सिवाना बान्धा ‡,
और यह कहकर बेण्डे और किवाड़े
लगा दिए, कि
११ यहीं तक आ, और आगे न बढ़,
और तेरी उमण्डनेवाली लहरें यहीं
थम जाएं?
१२ क्या तू ने जीवन भर में कभी भोर
को आज्ञा दी,
और पौ को उसका स्थान जताया है,
१३ ताकि वह पृथ्वी की छोरों को वश
में करे,
और दुष्ट लोग उस में से झाड़ दिए
जाएं?
१४ वह ऐसा बदलता है जैसा मोहर के
नीचे चिकनी मिट्टी बदलती है,
और सब वस्तुएं मानो वस्त्र पहिने
हुए दिखाई देती हैं * ॥
१५ दुष्टों से उनका उजियाला † रोक
लिया जाता है,
और उनकी बढ़ाई हुई बांह तोड़ी
जाती है॥
१६ क्या तू कभी समुद्र के सोतों तक
पहुंचा है,
वा गहिरे सागर की थाह में कभी
चला फिरा है?
१७ क्या मृत्यु के फाटक तुझ पर प्रगट
हुए,
क्या तू घोर अन्धकार के फाटकों
को कभी देखने पाया है?
१८ क्या तू ने पृथ्वी की चौड़ाई को पूरी
रीति से समझ लिया है?
यदि तू यह सब जानता है, तो
बतला दे॥
१९ उजियाले के निवास का मार्ग कहां है,
और अन्धियारे का स्थान कहां है?
२० क्या तू उसे उसके सिवाने तक हटा
सकता है,
और उसके घर की डगर पहिचान
सकता है?
२१ निःसन्देह तू यह सब कुछ जानता
होगा!
क्योंकि तू तो उस समय उत्पन्न
हुआ था,

* मूल में—अन्धेरा कर देता है।
† मूल में—बैठाई गई।
‡ मूल में—तोड़ा।

* मूल में—खड़ी हो जाती हैं।
† अर्थात् अन्धियारा।

और तू बहुत आयु का है ।।
२२ फिर क्या तू कभी हिम के भण्डार
मे पैठा,
वा कभी ओलो के भण्डार को तू
ने देखा है,
२३ जिसको मैं ने सकट के समय
और युद्ध और लडाई के दिन के
लिये रख छोडा है ?
२४ किस मार्ग से उजियाला फैलाया
जाता है,
और पुरवाई पृथ्वी पर बहाई* जाती
है ?
२५ महावृष्टि के लिये किस ने नाला
काटा,
और कडकनेवाली बिजली के लिये
मार्ग बनाया है,
२६ कि निर्जन देश मे
और जगल मे जहा कोई मनुष्य
नही रहता मेह बरसाकर,
२७ उजाड ही उजाड देश को सीचे,
और हरी घास उगाए ?
२८ क्या मेह का कोई पिता है,
और ओस की बूदे किस ने उत्पन्न
की ?
२९ किस के गर्भ से बर्फ निकला है,
और आकाश से गिरे हुए पाले को
कौन उत्पन्न करता है ?
३० जल पत्थर के समान जम † जाता है,
और गहिरे पानी के ऊपर जमावट
होती है ।।
३१ क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूथ
सकता
वा मृगशिरा के बन्धन खोल सकता
है ?

* मूल में—छिनराई ।
† मूल में—छिप ।

३२ क्या तू राशियो को ठीक ठीक समय
पर उदय कर सकता *,
वा सप्तर्षि को साथियो समेत लिए
चल सकता है ?
३३ क्या तू आकाशमण्डल की विधिया
जानता
और पृथ्वी पर उनका अधिकार ठहरा
सकता है ?
३४ क्या तू बादलो तक अपनी वाणी
पहुचा सकता है †
ताकि बहुत जल बरस कर तुझे
छिपा ले ?
३५ क्या तू बिजली को आज्ञा दे सकता
है ‡, कि वह जाए,
और तुझ से कहे, मैं उपस्थित हू ?
३६ किस ने अन्तकरण मे § बुद्धि
उपजाई,
और मन मे || समझने की शक्ति
किस ने दी है ?
३७ कौन बुद्धि से बादलो को गिन सकता
है ?
और कौन आकाश के कुप्पो को ¶
उण्डेल सकता है,
३८ जब धूलि जम जाती है,
और ढेले एक दूसरे से सट जाते
है ?
३९ क्या तू सिहनी के लिये अहेर पकड
सकता, और
जवान सिहो का पेट भर सकता है,
४० जब वे माद मे बैठे हो

* मूल में—निकाल सकता ।
† मूल में—उठाए ।
‡ मूल में—भेज सकता है ।
§ मूल में—गुर्दों में ।
|| वा कुक्कट में ।
¶ अर्थात् बादलों को ।

और आड मे घात लगाए दबक कर
बैठे हो ?
४१ फिर जब कौवे के बच्चे ईश्वर की
दोहाई देते हुए
निराहार उडते फिरते है,
तब उनको आहार कौन देता है ?

३९ क्या तू जानता है कि पहाड पर
की जगली बकरिया कब बच्चे
देती है ? वा जब हरिणिया
वियाती है, तब क्या तू देखता
रहता है ?
२ क्या तू उनके महीने गिन सकता है,
क्या तू उनके वियाने का समय
जानता है
३ जब वे बैठकर अपने बच्चो को जनती,
वे अपनी पीडो से छूट जाती है ?
४ उनके बच्चे हृष्टपुष्ट होकर मैदान
मे बढ जाते है,
वे निकल जाते और फिर नही
लौटते ।।
५ किस ने बनैले गदहे को स्वाधीन
करके छोड दिया है ?
किस ने उसके बन्धन खोले है ?
६ उसका घर मै ने निर्जल देश को,
और उसका निवास लोनिया भूमि
को ठहराया है ।।
७ वह नगर के कोलाहल पर हसता,
और हाकनेवाले की हाक सुनता भी
नही ।।
८ पहाडो पर जो कुछ मिलता है उसे
वह चरता
वह सब भाति की हरियाली ढूढता
फिरता है ।।
९ क्या जगली साढ तेरा काम करने
को प्रसन्न होगा ?
क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा ?
१० क्या तू जगली साढ को रस्से से
बान्धकर रेघारियो मे चला सकता
है ?
क्या वह नालो मे तेरे पीछे पीछे
हेगा फेरेगा ?
११ क्या तू उसके बडे बल के कारण
उस पर भरोसा करेगा ?
वा जो परिश्रम का काम तेरा हो,
क्या तू उसे उस पर छोडेगा ?
१२ क्या तू उसका विश्वास करेगा, कि
वह तेरा अनाज घर ले आए,
और तेरे खलिहान का अन्न इकट्ठा
करे ?
१३ फिर शुतुरमुर्गी अपने पखो को आनन्द
से फुलाती है,
परन्तु क्या ये पख और पर स्नेह
को प्रगट करते है ?
१४ क्योकि वह तो अपने अण्डे भूमि
पर छोड देती
और धूलि मे उन्हे गर्म करती है,
१५ और इसकी सुधि नही रखती, कि
वे पाव से कुचले जाएगे,
वा कोई वनपशु उनको कुचल
डालेगा ।।
१६ वह अपने बच्चो से ऐसी कठोरता
करती है कि मानो उसके नही है,
यद्यपि उसका कष्ट अकारथ होता
है, तौभी वह निश्चिन्त रहती है,
१७ क्योकि ईश्वर ने उसको बुद्धिरहित
बनाया *,
और उसे समझने की शक्ति नही दी ।।
१८ जिस समय वह सीधी होकर अपने
पख फैलाती है,

* मूल मे—उस मे बुद्धि भुलाई ।

तब घोडे और उसके सवार दोनो को
कुछ नही समझती है ।।
१९ क्या तू ने घोडे को उसका बल
दिया है ?
क्या तू ने उसकी गर्दन मे फहराती
हुई अयाल जमाई है ?
२० क्या उसको टिड्डी की सी उछलने
की शक्ति तू देता है ?
उसके फुक्कारने का शब्द डरावना
होता है ।।
२१ वह तराई मे टाप मारता है और
अपने बल से हर्पित रहता है,
वह हथियारबन्दो का साम्हना करने
को निकल पडता है ।।
२२ वह डर की बात पर हसता, और
नही घबराता,
और तलवार मे पीछे नही हटता ।।
२३ तर्कश और चमकता हुआ साग और
भाला उस पर खडखडाता है ।।
२४ वह रिस और क्रोध के मारे भूमि
को निगलता है,
जब नरसिंगे का शब्द सुनाई देता
है तब वह रुकता नही ।।
२५ जब जब नरसिंगा बजता तब तब
वह हिन हिन करता है,
और लडाई और अफसरो की
ललकार और जय-जयकार को दूर
से सूघ लेता है ।।
२६ क्या तेरे समझाने से बाज उडता
है,
और दक्खिन की ओर उडने को
अपने पख फैलाता है ?
२७ क्या उकाब तेरी आज्ञा से ऊपर चढ
जाता है,
और ऊचे स्थान पर अपना घोसला
बनाता है ?
२८ वह चट्टान पर रहता
और चट्टान की चोटी और दृढस्थान
पर बसेरा करता है ।।
२९ वह अपनी आखो से दूर तक देखता
है,
वहा से वह अपने अहेर को ताक
लेता है ।।
३० उसके बच्चे भी लोहू चूसते है,
और जहा घात किए हुए लोग होते
वहा वह भी होता है ।।

४० फिर यहोवा ने अय्यूब से यह
भी कहा
२ क्या जो बकवास करता है वह
सर्वशक्तिमान से झगडा करे ?
जो ईश्वर से विवाद करता है वह
इसका उत्तर दे ।।
३ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर
दिया
४ देख, मै तो तुच्छ हू, मै तुझे क्या
उत्तर दू ?
मै अपनी अगुली दात तले दबाता
हू * ।।
५ एक बार तो मै कह चुका, परन्तु
और कुछ न कहूगा हा दो बार
भी मै कह चुका, परन्तु अब कुछ
और आगे न बढूगा ।।
६ तब यहोवा ने अय्यूब को आँधी मे
मे यह उत्तर दिया
७ पुरुष की नाई अपनी कमर बान्ध ले,
मै तुझ से प्रश्न करता हू, और तू
मुझे बता ।।
८ क्या तू मेरा न्याय भी व्यर्थ
ठहराएगा ?

* मूल में—अपना हाथ अपने मुह पर
रखूगा ।

[illegible]
[illegible]
९ क्या तेरा बाहुबल ईश्वर के तुल्य है?
क्या तू उसके समान शब्द से गरज
सकता है?
१० अब अपने को महिमा और प्रताप
से संवार
और ऐश्वर्य और तेज के वस्त्र पहिन
ले।।
११ अपने अति क्रोध की बाढ़ को बहा दे,
और एक एक घमण्डी को देखते ही
उसे नीचा कर।।
१२ हर एक घमण्डी को देखकर झुका
दे, और
दुष्ट लोगों को जहां खड़े हों वहां
से गिरा दे।।
१३ उनको एक संग मिट्टी में मिला* दे,
और उस गुप्त स्थान† में उनके
मुंह बान्ध दे।।
१४ तब मैं भी तेरे विषय में मान लूंगा,
कि तेरा ही दहिना हाथ तेरा उद्धार
कर सकता है।।
१५ उस जलगज को देख, जिसको मैं ने
तेरे साथ बनाया है,
वह बैल की नाईं घास खाता है।।
१६ देख उसकी कटि में बल है,
और उसके पेट के पट्ठों में उसकी
सामर्थ्य रहती है।।
१७ वह अपनी पूंछ को देवदार की नाईं
हिलाता है,
उसकी जांघों की नसें एक दूसरे से
मिली हुई हैं।
१८ उसकी हड्डियां मानो पीतल की
नलियां हैं,
उसकी पसुलियां मानो लोहे के बेड़े
हैं।।
१९ वह ईश्वर का मुख्य कार्य* है;
जो उसका सिरजनहार हो उसके
निकट तलवार लेकर आए!
२० निश्चय पहाड़ों पर उसका चारा
मिलता है,
जहां और सब वनपशु कलोल करते
हैं।।
२१ वह छायादार वृक्षों के नीचे
नरकटों की आड़ में और कीच पर
लेटा करता है।।
२२ छायादार वृक्ष उस पर छाया करते हैं,
वह नाले के बेंत के वृक्षों से घिरा
रहता है।।
२३ चाहे नदी की बाढ़ भी हो तौभी वह
न घबराएगा,
चाहे यर्दन भी बढ़कर उसके मुंह
तक आए परन्तु वह निर्भय रहेगा।।
२४ जब वह चौकस हो तब† क्या कोई
उसको पकड़ सकेगा,
वा फन्दे लगाकर उसको नाथ सकेगा?

४१ फिर क्या तू लिव्यातान अथवा
मगर को बंसी के द्वारा खींच
सकता है,
वा डोरी से उसकी जीभ दबा सकता
है?
२ क्या तू उसकी नाक में नकेल लगा
सकता
वा उसका जबड़ा कील से बेध
सकता है?
३ क्या वह तुझ से बहुत गिड़गिड़ाहट
करेगा,

* मूल में—छिपा।
† मूल में—गुप्त।

* मूल में—मार्गों का पहिला है।
† मूल में—उसकी आंखों में।

परन्तु अब मेरी आखे तुझे देखती है,
६ इसलिये मुझे अपने ऊपर घृणा आती
है,
और मै धूलि और राख मे पश्चात्ताप
करता हू ॥

(अय्यूब का घोर परीक्षा से छूटना)

७ और ऐसा हुआ कि जब यहोवा ये
बातें अय्यूब से कह चुका, तब उस ने
तेमानी एलीपज से कहा, मेरा क्रोध तेरे
और तेरे दोनो मित्रो पर भडका है, क्योकि
जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे
विषय कही है, वैसी तुम लोगो ने
नही कही। ८ इसलिये अब तुम सात
बैल और सात मेढे छाटकर मेरे दास
अय्यूब के पास जाकर अपने निमित्त
होमबलि चढाओ, तब मेरा दास अय्यूब
तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा, क्योकि उसी
की मै ग्रहण करूगा, और नही, तो मै
तुम से तुम्हारी मूढता के योग्य वर्ताव
करूगा, क्योकि तुम लोगो ने मेरे विषय
मेरे दास अय्यूब की सी ठीक बात नही
कही। ९ यह सुन तेमानी एलीपज, शूही
बिल्दद और नामाती सोपर ने जाकर यहोवा
की आज्ञा के अनुसार किया, और यहोवा
ने अय्यूब की प्रार्थना ग्रहण की ॥

१० जब अय्यूब ने अपने मित्रो के लिये
प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा
दु:ख दूर किया *, और जितना अय्यूब
का पहिले था, उसका दुगना यहोवा ने
उसे दे दिया। ११ तब उसके सब भाई,
और सब बहिने, और जितने पहिले उसको
जानते पहिचानते थे, उन सभों ने आकर
उसके यहा उसके सग भोजन किया;
और जितनी विपत्ति यहोवा ने उस पर
डाली थी, उस सब के विषय उन्हो ने विलाप
किया, और उसे शान्ति दी, और उसे
एक एक सिक्का और सोने की एक एक
वाली दी। १२ और यहोवा ने अय्यूब के
पिछले दिनो मे उसको अगले दिनो से
अधिक आशीष दी, और उसके चौदह
हजार भेड बकरिया, छ हजार ऊट,
हजार जोडी बैल, और हजार गदहिया
हो गई। १३ और उसके सात बेटे और
तीन बेटिया भी उत्पन्न हुई। १४ इन
मे से उस ने जेठी बेटी का नाम तो यमीमा,
दूसरी का कसीआ और तीसरी का
केरेन्हप्पूक रखा। १५ और उस सारे देश
मे ऐसी स्त्रिया कही न थी, जो अय्यूब
की बेटियो के समान सुन्दर हो, और
उनके पिता ने उनको उनके भाइयो के
सग ही सम्पत्ति दी। १६ इसके बाद
अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा,
और चार पीढी तक अपना वश * देखने
पाया। १७ निदान अय्यूब वृद्धावस्था मे
दीर्घायु † होकर मर गया।

* मूल में—उसको बन्धुआई से लौटा दिया।

* मूल में—बेटे पोते।

† मूल में—पुरनिया और दिनों से तृप्त।

भजन संहिता

पहिला भाग

१ क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टो की युक्ति पर नही चलता,
और न पापियो के मार्ग में खडा होता,
और न ठट्ठा करनेवालो की मण्डली में बैठता है।
२ परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता,
और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
३ वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियो के किनारे लगाया गया है।
और अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नही।
इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है ॥
४ दुष्ट लोग ऐसे नही होते,
वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उडाई जाती है।
५ इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे,
और न पापी धर्मियो की मण्डली में ठहरेंगे,
६ क्योंकि यहोवा धर्मियो का मार्ग जानता है,
परन्तु दुष्टो का मार्ग नाश हो जाएगा ॥

२ जाति जाति के लोग क्यो हुल्लड मचाते हैं,
और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यो सोच रहे हैं?
२ यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर,
और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि
३ आओ, हम उनके बन्धन तोड डालें,
और उनकी रस्सियो को अपने ऊपर से उतार फेंके ॥
४ वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हसेगा,
प्रभु उनको ठट्ठो में उडाएगा।
५ तब वह उन से क्रोध करके बातें करेगा,
और क्रोध मे कहकर उन्हें घबरा देगा, कि
६ मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हू।
७ मैं उस वचन का प्रचार करूगा
जो यहोवा ने मुझ से कहा, तू मेरा पुत्र है,
आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ।
८ मुझ से माग, और मैं जाति जाति के लोगो को तेरी सम्पत्ति होने के लिये,

वा तुझ से मीठी बाते बोलेगा ?
४ क्या वह तुझ से वाचा बान्धेगा
कि वह सदा तेरा दास रहे ?
५ क्या तू उस से ऐसे खेलेगा जैसे चिडिया से, वा
अपनी लडकियो का जी बहलाने को उसे बान्ध रखेगा ?
६ क्या मछुओ के दल उसे बिकाऊ माल समझेंगे ?
क्या वह उसे व्योपारियो मे बाट देंगे ?
७ क्या तू उसका चमडा भाले से,
वा उसका सिर मछुवे के तिरशूलो से भर सकता है ?
८ तू उस पर अपना हाथ ही धरे,
तो लडाई को कभी न भूलेगा *, और भविष्य मे कभी ऐसा न करेगा ।।
९ देख, उसे पकड़ने की आशा निष्फल रहती है,
उसके देखने ही से मन कच्चा पड जाता है ।।
१० कोई ऐसा साहसी † नही, जो उसको भडकाए,
फिर ऐसा कौन है जो मेरे साम्हने ठहर सके ?
११ किस ने मुझे पहिले दिया है, जिसका बदला मुझे देना पडे ।
देख, जो कुछ सारी धरती पर ‡ है सो मेरा है ।।
१२ मैं उसके अंगो के विषय,
और उसके बडे बल और उसकी बनावट की शोभा के विषय चुप न रहूंगा ।।

* मूल में—तू स्मरण रख।
† मूल में—क्रूर।
‡ मूल में—सारे आकाश के नले।

१३ उसके ऊपर के पहिरावे को कौन उतार सकता है ?
उसके दातो की दोनो पातियो * के अर्थात् जबडो के बीच कौन आएगा ?
१४ उसके मुख के दोनो किवाड कौन खोल सकता है ?
उसके दात चारो ओर से डरावने है ।।
१५ उसके छिलको † की रेखाएं घमण्ड का कारण हैं,
वे मानो कडी छाप से बन्द किए हुए हैं ।।
१६ वे एक दूसरे से ऐसे जुडे हुए है,
कि उन मे कुछ वायु भी नही पैठ सकती ।।
१७ वे आपस मे मिले हुए
और ऐसे सटे हुए हैं, कि अलग अलग नही हो सकते ।।
१८ फिर उसके छीकने से उजियाला चमक उठता है,
और उसकी आखे भोर की पलको के समान है ।।
१९ उसके मुह से जलते हुए पलीते निकलते है,
और आग की चिनगारिया छूटती है ।।
२० उसके नथुनो से ऐसा धुआ निकलता है,
जैसा खौलती हुई हाडी और जलते हुए नरकटो से ।।
२१ उसकी सास से कोयले सुलगते,
और उसके मुह से आग की लौ निकलती है ।।

* मूल में—दुहरे बाग।
† मूल में—उसके ढालों के नाले।

२२ उसकी गर्दन में सामर्थ्य बनी रहती है,
और उसके साम्हने डर नाचता रहता है * ॥
२३ उसके मांस पर मांस चढ़ा हुआ है,
और ऐसा आपस में सटा हुआ है जो हिल नहीं सकता ॥
२४ उसका हृदय पत्थर सा दृढ़ है,
वरन चक्की के निचले पाट के समान दृढ़ है ॥
२५ जब वह उठने लगता है, तब सामर्थी भी डर जाते हैं,
और डर के मारे उनकी सुध बुध लोप हो जाती है ॥
२६ यदि कोई उस पर तलवार चलाए, तो उस से कुछ न बन पड़ेगा †,
और न भाले और न बर्छी और न तीर से ॥
२७ वह लोहे को पुआल सा,
और पीतल को सड़ी लकड़ी सा जानता है ॥
२८ वह तीर ‡ से भगाया नहीं जाता,
गोफन के पत्थर उसके लिये भूसे से ठहरते हैं ॥
२९ लाठियां भी भूसे के समान गिनी जाती हैं,
वह बर्छी के चलने पर हंसता है ॥
३० उसके निचले भाग पैने ठीकरे के समान हैं,
कीच पर मानो वह हेंगा फेरता है ॥
३१ वह गहिरे जल को हंडे की नाईं मथता है
उसके कारण नील नदी * मरहम की हांडी के समान होती है ॥
३२ वह अपने पीछे चमकीली लीक छोड़ता जाता है।
गहिरा जल मानो श्वेत दिखाई देने लगता है।
३३ धरती पर उसके तुल्य और कोई नहीं है,
जो ऐसा निर्भय बनाया गया है ॥
३४ जो कुछ ऊंचा है, उसे वह ताकता ही रहता है,
वह सब घमण्डियों के ऊपर राजा है ॥

* मूल में—नाचती है।
† मूल में—खड़ी न होगी।
‡ मूल में—धनु के पुत्र।

(अय्यूब का वचन)

४२ तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया,
२ मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सकता है,
और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती।
३ तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है † ?
परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा,
अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था ॥
४ मैं निवेदन करता हूं सुन, मैं कुछ कहूंगा,
मैं तुझ से प्रश्न करता हूं, तू मुझे बता दे।
५ मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था,

* मूल में—समुद्र।
† मूल में—अन्धेरा कर देता है।

और दूर दूर के देशों को तेरी निज
भूमि बनने के लिये दे दूंगा।
९ तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा,
तू कुम्हार के बर्तन की नाईं उन्हें चकना चूर कर डालेगा॥
१० इसलिये अब, हे राजाओ, बुद्धिमान बनो,
हे पृथ्वी के न्यायियो, यह उपदेश ग्रहण करो।
११ डरते हुए यहोवा की उपासना करो,
और कांपते हुए मगन हो।
१२ पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे,
और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ,
क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है॥
धन्य हैं वे जिनका भरोसा उस पर है॥

(दाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के साम्हने से भागा जाता था)

३ हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ़ गए हैं!
वह जो मेरे विरुद्ध उठते हैं बहुत हैं।
२ बहुत से मेरे प्राण के विषय में कहते हैं,
कि उसका बचाव परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता*। (सेला)
३ परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है,
तू मेरी महिमा और मेरे मस्तिष्क का ऊंचा करनेवाला है।
४ मैं ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूं,

* मूल में—परमेश्वर में नहीं।

और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है। (सेला)
५ मैं लेटकर सो गया;
फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे सम्हालता है।
६ मैं उन दस हजार मनुष्यों से नहीं डरता,
जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बान्धे खड़े हैं॥
७ उठ, हे यहोवा! हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले!
क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है
और तू ने दुष्टों के दांत तोड़ डाले हैं॥
८ उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है;
हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो॥ (सेला)

(प्रधान बजानेवाले के लिये। तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन)

४ हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूं तब तू मुझे उत्तर दे,
जब मैं सकेती में पड़ा तब तू ने मुझे विस्तार दिया।
मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन ले॥
२ हे मनुष्यों के पुत्रो, कब तक मेरी महिमा के बदले अनादर होता रहेगा?
तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे? (सेला)
३ यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है;

जब मैं यहोवा को पुकारूंगा तब वह
सुन लेगा ।।
४ कांपते रहो और पाप मत करो,
अपने अपने बिछौने पर मन ही मन
सोचो और चुपचाप रहो । (सेला)
५ धर्म के बलिदान चढ़ाओ,
और यहोवा पर भरोसा रखो ।।
६ बहुत से हैं जो कहते हैं, कि कौन
हम को कुछ भलाई दिखाएगा ?
हे यहोवा तू अपने मुख का प्रकाश
हम पर चमका !
७ तू ने मेरे मन में उस से कहीं अधिक
आनन्द भर दिया है, जो उनको
अन्न और दाखमधु की बढ़ती से
होती थी ।
८ मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो
जाऊंगा,
क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को
एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है ।।

(प्रधान बजानेवालों के लिये। बांसलियों के साथ, दाऊद का भजन)

५ हे यहोवा, मेरे वचनों पर कान
लगा,
मेरे ध्यान करने की ओर मन लगा ।
२ हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी
दोहाई पर ध्यान दे,
क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं ।
३ हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे
सुनाई देगी,
मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट
जोहूंगा ।
४ क्योंकि तू ऐसा ईश्वर नहीं जो दुष्टता
से प्रसन्न हो,
बुराई तेरे साथ नहीं रह सकती ।
५ घमंडी तेरे सम्मुख खड़े होने न
पाएंगे,
तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा
है ।
६ तू उनको जो झूठ बोलते हैं नाश
करेगा,
यहोवा तो हत्यारे और छली मनुष्य
से घृणा करता है ।
७ परन्तु मैं तो तेरी अपार करुणा के
कारण तेरे भवन में आऊंगा,
मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र
मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा ।
८ हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण
अपने धर्म के मार्ग में मेरी अगुआई
कर,
मेरे आगे आगे अपने सीधे मार्ग को
दिखा ।
९ क्योंकि उनके मुंह में कोई सच्चाई
नहीं,
उनके मन में निरी दुष्टता है ।
उनका गला खुली हुई कब्र है,
वे अपनी जीभ से चिकनी चुपड़ी
बातें करते हैं ।
१० हे परमेश्वर तू उनको दोषी ठहरा,
वे अपनी ही युक्तियों से आप ही
गिर जाएं,
उनको उनके अपराधों की अधिकाई
के कारण निकाल बाहर कर,
क्योंकि उन्हों ने तुझ से बलवा किया
है ।।
११ परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते
हैं वे सब आनन्द करें,
वे सर्वदा ऊंचे स्वर से गाते रहें,
क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है,
और जो तेरे नाम के प्रेमी हैं तुझ
में प्रफुल्लित हों ।

१२ क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा,
हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। तारवाले बाजों के साथ। सप्तक में, दाऊद का भजन)

६ हे यहोवा, तू मुझे अपने क्रोध में न डांट,
और न झुंझलाहट में मुझे ताड़ना दे।
२ हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूं,
हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेचैनी है।
३ मेरा प्राण भी बहुत खेदित है।
और तू, हे यहोवा, कब तक?
४ लौट आ, हे यहोवा, और मेरे प्राण बचा
अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर।
५ क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता;
अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा?
६ मैं कराहते कराहते थक गया;
मैं अपनी खाट आंसुओं से भिगोता हूं;
प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है।
७ मेरी आंखें शोक से बैठी जाती हैं,
और मेरे सब सतानेवालों के कारण वे धुन्धला गई हैं॥
८ हे सब अनर्थकारियो मेरे पास से दूर हो,
क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है।
९ यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है;
यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा।
१० मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत ही घबराएंगे;
वे लौट जाएंगे, और एकाएक लज्जित होंगे॥

(दाऊद का शिग्गायोन नाम भजन जो उस ने बिन्यामीनी कूश की बातों के कारण यहोवा के सामने गाया)

७ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरा भरोसा तुझ पर है;
सब पीछा करनेवालों से मुझे बचा और छुटकारा दे,
२ ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह की नाईं फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर डालें,
और कोई मेरा छुड़ानेवाला न हो॥
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैं ने यह किया हो,
यदि मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो,
४ यदि मैं ने अपने मेल रखनेवालों से भलाई के बदले बुराई की हो,
(वरन मैं ने उसको जो अकारण मेरा बैरी था बचाया है)
५ तो शत्रु मेरे प्राण का पीछा करके मुझे आ पकड़े,
वरन मेरे प्राण को भूमि पर रौंदे,
और मेरी महिमा को मिट्टी में मिला दे॥ (सेला)
६ हे यहोवा क्रोध करके उठ;
मेरे क्रोधभरे सतानेवाले के विरुद्ध तू खड़ा हो जा;
मेरे लिये जाग! तू ने न्याय की आज्ञा तो दे दी है।

७ देश देश के लोगों की मण्डली तेरे
चारों ओर हो,
और तू उनके ऊपर से होकर ऊंचे
स्थानों पर लौट जा।
८ यहोवा समाज समाज का न्याय
करता है,
यहोवा मेरे धर्म और खराई के
अनुसार मेरा न्याय चुका दे॥
९ भला हो कि दुष्टों की बुराई का
अन्त हो जाए, परन्तु धर्म को तू
स्थिर कर,
क्योंकि धर्मी परमेश्वर मन और
मर्म का ज्ञाता है।
१० मेरी ढाल परमेश्वर के हाथ में है,
वह सीधे मनवालों को बचाता
है॥
११ परमेश्वर धर्मी और न्यायी है,
वरन ऐसा ईश्वर है जो प्रति दिन
क्रोध करता है॥
१२ यदि मनुष्य न फिरे तो वह अपनी
तलवार पर सान चढ़ाएगा,
वह अपना धनुष चढ़ाकर तीर सन्धान
चुका है।
१३ और उस मनुष्य के लिये उस ने
मृत्यु के हथियार तैयार कर लिए
हैं
वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाता
है।
१४ देख, दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ाएं
हो रही हैं,
उसको उत्पात का गर्भ है, और उस
से झूठ उत्पन्न हुआ।
उस ने गड़हा खोदकर उसे गहिरा
किया,
१५ और जो खाई उस ने बनाई थी उस
में वह आप ही गिरा।
१६ उसका उत्पात पलट कर उसी के
सिर पर पड़ेगा,
और उसका उपद्रव उसी के माथे
पर पड़ेगा॥
१७ मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका
धन्यवाद करूंगा,
और परमप्रधान यहोवा के नाम
का भजन गाऊंगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। गित्तीत
की राग पर दाऊद का भजन)

८ हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम
सारी पृथ्वी पर क्या ही
प्रतापमय है!
तू ने अपना विभव स्वर्ग पर दिखाया
है।
२ तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों
और दूध पिउवों के द्वारा * सामर्थ्य
की नेव डाली है,
ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों
को रोक रखे।
३ जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों †
का कार्य है,
और चंद्रमा और तारागण को जो
तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं,
४ तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका
स्मरण रखे,
और आदमी क्या है कि तू उसकी
सुधि ले?
५ क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर ‡ से
थोड़ा ही कम बनाया है,
और महिमा और प्रताप का मुकुट
उसके सिर पर रखा है।

* मूल में—मुंह से।
† मूल में—अंगुलियों।
‡ वा स्वर्गदूतों से।

६ तू ने उसे अपने हाथो के कार्यों पर
प्रभुता दी है;
तू ने उसके पाव तले सब कुछ कर
दिया है।
७ सब भेड-बकरी और गाय-बैल
और जितने वनपशु है,
८ आकाश के पक्षी और समुद्र की
मछलिया,
और जितने जीव-जन्तु समुद्रो में
चलते फिरते है।
९ हे यहोवा, हे हमारे प्रभु,
तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही
प्रतापमय है ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये मुतलबेयम की राग पर दाऊद का भजन)

९ हे यहोवा परमेश्वर मैं अपने
पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद
करूगा;
मैं तेरे सब आश्चर्य कर्मों का वर्णन
करूगा।
२ मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफु-
ल्लित होऊगा,
हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन
गाऊगा ॥
३ जब मेरे शत्रु पीछे हटते है,
तो वे तेरे साम्हने से ठोकर खाकर
नाश होते है।
४ क्योकि तू ने मेरा न्याय और मुकद्दमा
चुकाया है;
तू ने सिहासन पर विराजमान होकर
धर्म से न्याय किया।
५ तू ने अन्यजातियो को झिडका और
दुष्ट को नाश किया है,
तू ने उसका नाम अनन्तकाल के
लिये मिटा दिया है।
६ शत्रु जो है, वह मर गए, वे अनन्तकाल
के लिये उजड गए है,
और जिन नगरो को तू ने ढा दिया,
उनका नाम वा निशान भी मिट
गया है ॥
७ परन्तु यहोवा सदैव सिहासन पर
विराजमान है,
उस ने अपना सिहासन न्याय के
लिये सिद्ध किया है,
८ और वह आप ही जगत का न्याय
धर्म से करेगा,
वह देश देश के लोगो का मुकद्दमा
खराई से निपटाएगा ॥
९ यहोवा पिसे हुओ के लिये ऊंचा गढ
ठहरेगा,
वह सकट के समय के लिये भी
ऊचा गढ ठहरेगा।
१० और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ
पर भरोसा रखेंगे,
क्योकि हे यहोवा तू ने अपने खोजियो
को त्याग नही दिया ॥
११ यहोवा जो सिय्योन में विराजमान
है, उसका भजन गाओ!
जाति जाति के लोगो के बीच में
उसके महाकर्मों का प्रचार
करो!
१२ क्योकि खून का पलटा लेनेवाला
उनको स्मरण करता है,
वह दीन लोगो की दोहाई को नहीं
भूलता ॥
१३ हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर।
तू जो मुझे मृत्यु के फाटको के पास
से उठाता है,
मेरे दुःख को देख जो मेरे बैरी मुझे
दे रहे है,

१४ ताकि मैं सिय्योन* के फाटकों के
पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूं,
और तेरे किए हुए उद्धार से मगन
होऊं ॥
१५ अन्य जातिवालों ने जो गड्हा खोदा
था, उसी में वे आप गिर पड़े,
जो जाल उन्हों ने लगाया था, उस
में उन्ही का पांव फंस गया ।
१६ यहोवा ने अपने को प्रगट किया,
उस ने न्याय किया है,
दुष्ट अपने किए हुए कामों में फंस
जाता है ॥

(हिग्गायोन, सेला)

१७ दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे,
तथा वे सब जातियां भी जो परमेश्वर
को भूल जाती हैं ।
१८ क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल तक
बिसरे हुए न रहेंगे,
और न तो नम्र लोगों की आशा
सर्वदा के लिये नाश होगी ।
१९ उठ, हे परमेश्वर, मनुष्य प्रबल न
होने पाए !
जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया
जाए ।
२० हे परमेश्वर, उनको भय दिला !
जातियां अपने को मनुष्यमात्र ही
जानें । (सेला)

१० हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा
रहता है ?
संकट के समय में क्यों छिपा रहता
है ?
२ दुष्टों के अहंकार के कारण दीन
मनुष्य खदेड़े जाते हैं,
वे अपनी ही निकाली हुई युक्तियों
में फंस जाएं ॥
३ क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर
घमण्ड करता है,
और लोभी परमेश्वर को त्याग देता
है और उसका तिरस्कार करता
है ॥
४ दुष्ट अपने अभिमान के कारण
कहता है कि वह लेखा नहीं लेने का,
उसका पूरा विचार यही है कि कोई
परमेश्वर है ही नहीं ॥
५ वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना
रहता है,
तेरे न्याय के विचार ऐसे ऊंचे पर
होते हैं, कि उसकी दृष्टि वहां तक
नहीं पहुंचती,
जितने उसके विरोधी हैं उन पर वह
फुंकारता है ।
६ वह अपने मन में कहता है कि मैं
कभी टलने का नहीं
मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दुःख से बचा
रहूंगा ॥
७ उसका मुंह शाप और छल और
अन्धेर से भरा है,
उत्पात और अनर्थ की बातें उसके
मुंह में हैं ।
८ वह गांवों के घातों में बैठा करता है,
और गुप्त स्थानों में निर्दोष को
घात करता है,
उसकी आंखें लाचार की घात में
लगी रहती हैं ।
९ जैसा सिंह अपनी झाड़ी में बैसा ही
वह भी छिपकर घात में बैठा
करता है,
वह दीन को पकड़ने के लिये घात
लगाए रहता है,

* मूल में—सिय्योन की पुत्री ।

वह दीन को अपने जाल मे फसाकर
घसीट लाता है, तब उसे पकड
लेता है।
१० वह झुक जाता है और वह दबक
कर बैठता है,
और लाचार लोग उसके महाबली
हाथों से पटके जाते हैं।
११ वह अपने मन मे सोचता है, कि
ईश्वर भूल गया,
वह अपना मुह छिपाता * है, वह
कभी नही देखेगा॥
१२ उठ, हे यहोवा, हे ईश्वर, अपना
हाथ बढा, और दीनो को न भूल।
१३ परमेश्वर को दुष्ट क्यो तुच्छ जानता
है, और अपने मन मे कहता है कि
तू लेखा न लेगा ?
१४ तू ने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात
और कलपाने पर दृष्टि रखता
है, ताकि उसका पलटा अपने हाथ
में रखे †,
लाचार अपने को तेरे हाथ मे
सौंपता है,
अनाथो का तू ही सहायक रहा है।
दुष्ट की भुजा को तोड डाल,
१५ और दुर्जन की दुष्टता को ढूढ ढूढ
कर निकाल जब तक कि सब उसमे
से दूर न हो जाए।
१६ यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराज
है,
उसके देश में से अन्यजाति लोग नाश
हो गए हैं॥
१७ हे यहोवा, तू ने नम्र लोगो की
अभिलाषा सुनी है,
तू उनका मन तैयार करेगा, तू कान
लगाकर सुनेगा
१८ कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय
करे,
ताकि मनुष्य जो मिट्टी से बना है
फिर भय दिखाने न पाए॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। दाऊद
का भजन)

११ मेरा भरोसा परमेश्वर पर है;
तुम क्योकर मेरे प्राण से
कहते हो
कि पक्षी की नाई अपने पहाड पर
उड जा ?
२ क्योकि देखो, दुष्ट अपना धनुष
चढाते है,
और अपना तीर धनुष की डोरी पर
रखते है,
कि सीधे मनवालो पर अन्धियारे मे
तीर चलाए।
३ यदि नेवे ढा दी जाए
तो धर्मी क्या कर सकता है ?
४ परमेश्वर अपने पवित्र भवन मे है,
परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में
है,
उसकी आखे मनुष्य की सन्तान को
नित देखती रहती है और उसकी
पलकें उनको जाचती है।
५ यहोवा धर्मी को परखता है,
परन्तु वह उन से जो दुष्ट है और
उपद्रव से प्रीति रखते है अपनी
आत्मा मे घृणा करता है।
६ वह दुष्टो पर फन्दे बरसाएगा,
आग और गन्धक और प्रचण्ड
लूह उनके कटोरो में बाट दी
जाएगी।

* मूल में—छिपाया।
† मूल में—उसे अपने हाथ में रखे।

७ क्योंकि यहोवा धर्मी है, वह धर्म के
ही कामों से प्रसन्न रहता है,
धर्मीजन उसका दर्शन पाएंगे ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये खर्ज की
राग में दाऊद का भजन)

१२ हे परमेश्वर बचा ले, क्योंकि
एक भी भक्त नहीं रहा,
मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग
मर मिटे हैं।
२ उन में से प्रत्येक अपने पड़ोसी से
झूठी बातें कहता है,
वे चापलूसी के ओठों से दो रंगी
बातें करते हैं ॥
३ प्रभु सब चापलूस ओठों को
और उस जीभ को जिस से बड़ा
बोल निकलता है काट डालेगा।
४ वे कहते हैं कि हम अपनी जीभ ही
से * जीतेंगे,
हमारे ओठ हमारे ही वश में है,
हमारा प्रभु कौन है?
५ दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों
के कराहने के कारण,
परमेश्वर कहता है, अब मैं उठूंगा,
जिस पर वे फुकारते हैं उसे मैं चैन
विश्राम दूंगा †।
६ परमेश्वर का वचन पवित्र है,
उस चान्दी के समान जो भट्टी में
मिट्टी पर ताई गई,
और सात बार निर्मल की गई हो ॥
७ तू ही हे परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा,
उनको इस काल के लोगों से सर्वदा
के लिये बचाए रखेगा।
८ जब मनुष्यों में नीचपन का आदर
होता है,
तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते
फिरते हैं ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद
का भजन)

१३ हे परमेश्वर तू कब तक? क्या
सदैव मुझे भूला रहेगा?
तू कब तक अपना मुखड़ा मुझ से
छिपाए रहेगा?
२ मैं कब तक अपने मन ही मन में
युक्तियां करता रहूं,
और दिन भर अपने हृदय में दुखित
रहा करूं,
कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल
रहेगा?
३ हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर
ध्यान दे और मुझे उत्तर दे,
मेरी आंखों में ज्योति आने दे, नहीं
तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी,
४ ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे, कि
मैं उस पर प्रबल हो गया,
और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने
लगूं तो मेरे शत्रु मगन हों ॥
५ परन्तु मैं ने तो तेरी करुणा पर
भरोसा रखा है,
मेरा हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा।
६ मैं परमेश्वर के नाम का भजन गाऊंगा,
क्योंकि उस ने मेरी भलाई की है ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद
का भजन)

१४ मूढ़ ने अपने मन में कहा है, कोई
परमेश्वर है ही नहीं।
वे बिगड़ गए, उन्हों ने घिनौने काम
किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं।

---

* मूल में—अपनी जीभ के द्वारा।
† या जिस पर लोग फुफकार मारते हैं
उसको मैं अभय दान दूंगा।

२ परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर
दृष्टि की है,
कि देखे कि कोई बुद्धिमान,
कोई परमेश्वर का खोजी है या नही।
३ वे सब के सब भटक गए, वे सब
भ्रष्ट हो गए;
कोई सुकर्मी नही, एक भी नही।
४ क्या किसी अनर्थकारी को कुछ भी
ज्ञान नही रहता,
जो मेरे लोगो को ऐसे खा जाते
है जैसे रोटी,
और परमेश्वर का नाम नही लेते?
५ वहा उन पर भय छा गया,
क्योकि परमेश्वर धर्मी लोगो के बीच
में निरन्तर रहता है।
६ तुम तो दीन की युक्ति की हसी
उडाते हो
इसलिये कि यहोवा उसका शरण-
स्थान है।
७ भला हो कि इस्राएल का उद्धार
सिय्योन से प्रगट होता!
जब यहोवा अपनी प्रजा को दासत्व
से लौटा ले आएगा,
तब याकूब मगन और इस्राएल
आनन्दित होगा॥

(दाऊद का भजन)

१५ हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन
रहेगा?
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने
पाएगा?
२ वह जो खराई से चलता और धर्म के
काम करता है,
और हृदय मे सच बोलता है,
३ जो अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता,
और न अपने मित्र की बुराई करता,
और न अपने पडोसी की निन्दा
सुनता है;
४ वह जिसकी दृष्टि मे निकम्मा मनुष्य
तुच्छ है,
और जो यहोवा के डरवैयो का
आदर करता है,
जो शपथ खाकर बदलता नही चाहे
हानि उठाना पड़े,
५ जो अपना रुपया व्याज पर नही देता,
और निर्दोष की हानि करने के लिये
घूस नही लेता है।
जो कोई ऐसी चाल चलता है वह
कभी न डगमगाएगा॥

(दाऊद का मिक्ताम)

१६ हे ईश्वर मेरी रक्षा कर,
क्योकि मै तेरा ही शरणागत
हू।
मै ने परमेश्वर से कहा है, कि तू
ही मेरा प्रभु है,
तेरे सिवाए मेरी भलाई कही नही।
२ पृथ्वी पर जो पवित्र लोग है,
वे ही आदर के योग्य है, और उन्ही
से मै प्रसन्न रहता हू।
३ जो पराए देवता के पीछे भागते है
उनका दुःख बढ जाएगा,
मै उनके लोहूवाले तपावन नही
तपाऊगा
और उनका नाम अपने ओठो से
नही लूगा *॥
४ यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे
का हिस्सा है;
मेरे बाट को तू स्थिर रखता है।
५ मेरे लिये माप की डोरी मनभावने
स्थान में पडी,

* मूल में—अपने होठों पर नहीं लेने का।

और मेरा भाग मनभावना है ।।
६ मैं यहोवा को धन्य कहता हू, क्योंकि
उस ने मुझे सम्मति दी है,
वरन मेरा मन भी रात में मुझे
शिक्षा देता है ।
७ मैं ने यहोवा को निरन्तर अपने
सम्मुख रखा है *
इसलिये कि वह मेरे दहिने हाथ
रहता है मैं कभी न डगमगाऊंगा ।।
८ इस कारण मेरा हृदय आनन्दित
और मेरी आत्मा † मगन हुई,
मेरा शरीर भी चैन से रहेगा ।
९ क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक
में न छोड़ेगा,
न अपने पवित्र भक्त को सड़ने
देगा ।।
१० तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा,
तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है,
तेरे दहिने हाथ मे सुख सर्वदा बना
रहता है ।।

(दाऊद की प्रार्थना)

१७ हे यहोवा परमेश्वर सच्चाई
के वचन सुन, मेरी पुकार
की ओर ध्यान दे !
मेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट
मुह मे निकलती है कान लगा !
२ मेरे मुकद्दमे का निर्णय तेरे सम्मुख
हो !
तेरी आखें न्याय पर लगी रहें !
३ तू ने मेरे हृदय को जाचा है, तू ने
रात को मेरी देखभाल की,
तू ने मुझे परखा परन्तु कुछ भी
खोटापन नही पाया,

* मूल में—रखता ।
† मूल में—महिमा ।

मैं ने ठान लिया है कि मेरे मुह से
अपराध की बात नहीं निकलेगी ।
४ मानवी कामो में—मैं तेरे मुह के
वचन के द्वारा
क्रूरो की सी चाल से अपने को
बचाए रहा ।
५ मेरे पाव तेरे पथो में स्थिर रहे,
फिसले नही ।।
६ हे ईश्वर, मैं ने तुझ से प्रार्थना की
है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा ।
अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी
विनती सुन ले ।
७ तू जो अपने दहिने हाथ के द्वारा अपने
शरणागतो को उनके विरोधियो से
बचाता है,
अपनी अद्भुत करुणा दिखा ।
८ अपने पखो की पुतली की नाईं सुरक्षित
रख,
अपने पखो के तले मुझे छिपा रख,
९ उन दुष्टो से जो मुझ पर अत्याचार
करते हैं,
मेरे प्राण के शत्रुओ से जो मुझे
घेरे हुए हैं ।।
१० उन्हो ने अपने हृदयो को कठोर
किया है,
उनके मुह से घमड की बातें निकलती
हैं ।
११ उन्हो ने पग पग पर हमको घेरा है,
वे हमको भूमि पर पटक देने के
लिये घात लगाए हुए हैं ।
१२ वह उस सिंह की नाईं है जो अपने
शिकार की लालसा करता है,
और जवान सिंह की नाईं घात लगाने
के स्थानो में बैठा रहता है ।।
१३ उठ, हे यहोवा !
उसका सामना कर और उसे पटक दे !

अपनी तलवार के बल से मेरे प्राण
को दुष्ट से बचा ले।
१४ अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे
मनुष्यों से बचा,
अर्थात् ससारी मनुष्यो से जिनका
भाग इसी जीवन मे है,
और जिनका पेट तू अपने भण्डार
से भरता है।
वे बालबच्चो से सन्तुष्ट है,
और शेष सम्पत्ति अपने बच्चो के
लिये छोड जाते है ॥
१५ परन्तु मै तो धर्मी होकर तेरे मुख
का दर्शन करूगा
जब मै जागूगा तब तेरे स्वरूप से
सन्तुष्ट हूगा ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत, जिसके वचन उस ने यहोवा के लिये उस समय गाये जब यहोवा ने उसको उसके सारे शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से बचाया था, उस ने कहा)

१८ हे परमेश्वर, हे मेरे बल, मै
तुझ से प्रेम करता हू।
२ यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ
और मेरा छुडानेवाला है,
मेरा ईश्वर, मेरी चट्टान है, जिसका
मै शरणागत हू,
वह मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का
सीग, और मेरा ऊचा गढ
है।
३ मै यहोवा को जो स्तुति के योग्य
है पुकारूगा,
इस प्रकार मै अपने शत्रुओ से बचाया
जाऊगा ॥
४ मृत्यु की रस्सियो से मै चारो ओर
घिर गया हू,
और अधर्म की बाढ ने मुझ को
भयभीत कर दिया,
५ पाताल की रस्सिया मेरे चारो ओर
थी,
और मृत्यु के फन्दे मुझ पर आए थे।
६ अपने सकट मे मै ने यहोवा परमेश्वर
को पुकारा,
मै ने अपने परमेश्वर की दोहाई
दी।
और उस ने अपने मन्दिर में से
मेरी बातें सुनी।
और मेरी दोहाई उसके पास पहुचकर
उसके कानो मे पडी ॥
७ तब पृथ्वी हिल गई, और काप उठी
और पहाडो की नेवें कपित होकर
हिल गई क्योकि वह अति क्रोधित
हुआ था।
८ उसके नथनों से धूआ निकला,
और उसके मुह से आग निकलकर
भस्म करने लगी,
जिस से कोएले दहक उठे।
९ और वह स्वर्ग को नीचे झुकाकर
उतर आया,
और उसके पावो तले घोर अन्धकार
था।
१० और वह करूब पर सवार होकर
उडा,
वरन पवन के पखो पर सवारी करके
वेग से उडा।
११ उस ने अन्धियारे को अपने छिपने
का स्थान और अपने चारो ओर
मेघो के * अन्धकार और आकाश
की काली घटाओ का मण्डप
बनाया।

* मूल में—जलों का।

१२ उसकी उपस्थिति की झलक से उसकी
काली घटाएं फट गईं,
ओले और अंगारे।
१३ तब यहोवा आकाश में गरजा,
और परमप्रधान ने अपनी वाणी
सुनाई,
ओले और अंगारे॥
१४ उस ने अपने तीर चला चलाकर
उनको तितर बितर किया,
वरन बिजलियां गिरा गिराकर उनको
परास्त किया।
१५ तब जल के नाले देख पड़े,
और जगत की नेवें प्रगट हुईं,
यह तो हे यहोवा तेरी डांट से,
और तेरे नथनों की सांस की झोंक
से हुआ॥
१६ उस ने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे
थाम लिया,
और गहिरे जल में से खींच लिया।
१७ उस ने मेरे बलवन्त शत्रु से,
और उन से जो मुझ से घृणा करते थे
मुझे छुड़ाया, क्योंकि वे अधिक
सामर्थी थे।
१८ मेरी विपत्ति के दिन वे मुझ पर
आ पड़े।
परन्तु यहोवा मेरा आश्रय था।
१९ और उस ने मुझे निकालकर चौड़े
स्थान में पहुंचाया,
उस ने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह
मुझ से प्रसन्न था।
२० यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के अनुसार
व्यवहार किया,
और मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार
उस ने मुझे बदला दिया।
२१ क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता
रहा,
और दुष्टता के कारण अपने परमेश्वर
से दूर न हुआ।
२२ क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख
बने रहे
और मैं ने उसकी विधियों को न
त्यागा।
२३ और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा,
और अधर्म से * अपने को बचाए
रहा।
२४ यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार
बदला दिया,
और मेरे हाथों की उस शुद्धता के
अनुसार जिसे वह देखता था॥
२५ दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त
दिखाता,
और खरे पुरुष के साथ तू अपने को
खरा दिखाता है।
२६ शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध
दिखाता,
और टेढ़े के साथ तू तिर्छा बनता
है।
२७ क्योंकि तू दीन लोगों को तो बचाता
है,
परन्तु घमण्ड भरी आंखों को नीची
करता है।
२८ हां, तू ही मेरे दीपक को जलाता है,
मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अन्धियारे
को उजियाला कर देता है।
२९ क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर
धावा करता हूं,
और अपने परमेश्वर की सहायता
से शहरपनाह को लांघ जाता हूं।
३० ईश्वर का मार्ग सच्चा है,
यहोवा का वचन ताया हुआ है,

* [illegible]

वह अपने सब शरणागतों की ढाल
है ।।
३१ यहोवा को छोड क्या कोई ईश्वर है ?
हमारे परमेश्वर को छोड क्या और
कोई चट्टान है ?
३२ यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से
मेरा कटिवन्ध वान्धता है,
और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है ।
३३ वही मेरे पैरो को हरिणियो के पैरो
के समान वनाता है,
और मुझे मेरे ऊचे स्थानो पर खडा
करता है ।
३४ वह मेरे हाथो को युद्ध करना
सिखाता है,
इसलिये मेरी वाहो से पीतल का
धनुष झुक जाता है ।
३५ तू ने मुझ को अपने वचाव की
ढाल दी है,
तू अपने दहिने हाथ से मुझे सम्भाले
हुए है,
और तेरी नम्रता ने महत्व दिया
है ।
३६ तू ने मेरे पैरो के लिये स्थान चौडा
कर दिया,
और मेरे पैर नही फिसले ।
३७ मैं अपने शत्रुओ का पीछा करके
उन्हे पकड लूगा,
और जव तक उनका अन्त न करू
तव तक न लौटूगा ।
३८ मैं उन्हे ऐसा वेधूगा कि वे उठ न
सकेंगे,
वे मेरे पावो के नीचे गिर पडेगे ।
३९ क्योंकि तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर
में शक्ति का पटुका वान्धा है,
और मेरे विरोधियो को मेरे सम्मुख
नीचा कर दिया ।
४० तू ने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर
फेर दी,
ताकि मैं उनको काट डालू जो मुझ
से द्वेष रखते हैं ।
४१ उन्हों ने दोहाई तो दी परन्तु उन्हें
कोई भी वचानेवाला न मिला,
उन्हो ने यहोवा की भी दोहाई दी,
परन्तु उस ने भी उनको उत्तर न
दिया ।
४२ तव मैं ने उनको कूट कूटकर पवन
मे उडाई हुई धूलि के समान कर
दिया,
मैं ने उनको गली कूचो की कीचड
के समान निकाल फेका ।।
४३ तू ने मुझे प्रजा के झगडो से भी
छुडाया,
तू ने मुझे अन्यजातियो का प्रधान
वनाया है,
जिन लोगो को मैं जानता भी न था
वे मेरे अधीन हो गये ।
४४ मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा
का पालन करेंगे,
परदेशी मेरे वश मे हो जाएगे * ।
४५ परदेशी मुर्झा जाएगे,
और अपने किलो मे से थरथराते
हुए निकलेंगे ।।
४६ यहोवा परमेश्वर जीवित है, मेरी
चट्टान धन्य है,
और मेरे मुक्तिदाता परमेश्वर की
बडाई हो ।
४७ धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला
ईश्वर !
जिस ने देश देश के लोगो को मेरे
वश मे कर दिया है,

* मूल में—परदेशी के लड़के मुझ से झूठ बोलेंगे ।

४८ और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है,
तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊंचा करता,
और उपद्रवी पुरुष से बचाता है ॥
४९ इस कारण मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा,
और तेरे नाम का भजन गाऊंगा ।
५० वह अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है,
वह अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१९ आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है,
और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है ।
२ दिन से दिन बातें करता है,
और रात को रात ज्ञान सिखाती है ।
३ न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां
उनका शब्द सुनाई नहीं देता है ।
४ उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है,
और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं ।
उन में उस ने सूर्य्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है,
५ जो दुल्हे के समान अपने महल से निकलता है ।
वह शूरवीर की नाईं अपनी दौड़ दौड़ने को हर्षित होता है ।
६ वह आकाश की एक छोर से निकलता है,
और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है,
और उसकी गर्मी सबको पहुंचती है ॥
७ यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है,
यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं
८ यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं,
यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है,
९ यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है,
यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं ।
१० वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं,
वे मधु से और टपकनेवाले छत्ते से भी बढ़कर मधुर हैं ।
११ और उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है,
उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है ।
१२ अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है?
मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर ।
१३ तू अपने दास को ढिठाई * के पापों से भी बचाए रख,
वह मुझ पर प्रभुता करने न पाए ।
तब मैं सिद्ध हो जाऊंगा,
और बड़े अपराधों से बचा रहूंगा ॥

* वा ढीठों ।

१४ मेरे मुह के वचन और मेरे हृदय का
ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हो,
हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान
और मेरे उद्धार करनेवाले!

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

२० संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले!
याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे
ऊंचे स्थान पर नियुक्त करे!
२ वह पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे,
और सिय्योन से तुझे सम्भाल ले!
३ वह तेरे सब अन्नबलियों को स्मरण करे,
और तेरे होमबलि को ग्रहण करे*। (सेला)
४ वह तेरे मन की इच्छा पूरी करे,
और तेरी सारी युक्ति को सुफल करे!
५ तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊंचे
स्वर से हर्षित होकर गाएंगे,
और अपने परमेश्वर के नाम से
झण्डे खड़े करेंगे।
यहोवा तुझे मुंह मांगा वरदान दे!
६ अब मैं जान गया कि यहोवा अपने
अभिषिक्त का उद्धार करता है,
वह अपने दहिने हाथ के उद्धार
करनेवाले पराक्रम से अपने पवित्र
स्वर्ग पर से सुनकर उसे उत्तर
देगा।
७ किसी को रथों का, और किसी को
घोड़ों का भरोसा है,
परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा
ही का नाम लेंगे।
८ वे तो झुक गए और गिर पड़े
परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हैं॥
९ हे यहोवा, बचा ले,
जिस दिन हम पुकारें तो महाराजा
हमें उत्तर दे॥

* मूल में—चिकनाई जानकर ग्रहण करे।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

२१ हे यहोवा तेरी सामर्थ्य से राजा
आनन्दित होगा;
और तेरे किए हुए उद्धार से वह
अति मगन होगा।
२ तू ने उसके मनोरथ को पूरा किया है,
और उसके मुंह की बिनती को तू ने
अस्वीकार नहीं किया। (सेला)
३ क्योंकि तू उत्तम आशीषें देता हुआ
उस से मिलता है
और तू उसके सिर पर कुन्दन का
मुकुट पहिनाता है।
४ उस ने तुझ से जीवन मांगा, और
तू ने जीवनदान दिया,
तू ने उसको युगानयुग का जीवन
दिया है।
५ तेरे उद्धार के कारण उसकी महिमा
अधिक है,
तू उसको विभव और ऐश्वर्य से
आभूषित कर देता है।
६ क्योंकि तू ने उसको सर्वदा के लिये
आशीषित किया है,
तू अपने सम्मुख उसको हर्ष और
आनन्द से भर देता है।
७ क्योंकि राजा का भरोसा यहोवा के
ऊपर है,
और परमप्रधान की करुणा से वह
कभी नहीं टलने का॥
८ तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूंढ़
निकालेगा,

तेरा दहिना हाथ तेरे सब बैरियों
का पता लगा लेगा।
९ तू अपने मुख के सम्मुख उन्हें जलते
हुए भट्टे की नाईं जलाएगा *।
यहोवा अपने क्रोध में उन्हें निगल
जाएगा,
और आग उनको भस्म कर डालेगी।
१० तू उनके फलों को पृथ्वी पर से,
और उनके वंश को मनुष्यों में से
नष्ट करेगा।
११ क्योंकि उन्हों ने तेरी हानि ठानी है,
उन्हों ने ऐसी युक्ति निकाली है
जिसे वे पूरी न कर सकेंगे।
१२ क्योंकि तू अपना धनुष उनके विरुद्ध
चढ़ाएगा,
और वे पीठ दिखाकर भागेंगे॥
१३ हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान्
हो।
और हम गा गाकर तेरे पराक्रम का
भजन सुनाएंगे॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये
अय्येलेत्शहर † में दाऊद का
भजन)

२२ हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर,
तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?
तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता
करने से क्यों दूर रहता है? मेरा
उद्धार कहां ‡ है?
२ हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता
हूं परन्तु तू उत्तर नहीं देता,
और रात को भी मैं चुप नहीं रहता।

* मूल में—रक्खेगा।
† अर्थात् भोरवाली हरिणी।
‡ मूल में—मेरे गोहराने का वचन मेरे उद्धार से दूर है।

३ परन्तु हे तू जो इस्राएल की स्तुति
के सिंहासन पर विराजमान है,
तू तो पवित्र है।
४ हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते
थे,
वे भरोसा रखते थे, और तू उन्हें
छुड़ाता था।
५ उन्हों ने तेरी दोहाई दी और तू ने
उनको छुड़ाया
वे तुझी पर भरोसा रखते थे और
कभी लज्जित न हुए॥
६ परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं,
मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और
लोगों में मेरा अपमान होता है।
७ वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा
ठट्ठा करते हैं,
और ओठ बिचकाते और यह कहते
हुए सिर हिलाते हैं,
८ कि अपने को यहोवा के वश में कर
दे वही उसको छुड़ाए,
वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से
प्रसन्न है।
९ परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला,
जब मैं दूधपिउवा बच्चा था, तब
ही से तू ने मुझे भरोसा रखना
सिखलाया *।
१० मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया
गया,
माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है।
११ मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट
निकट है,
और कोई सहायक नहीं।
१२ बहुत से सांढ़ों ने मुझे घेर लिया
है,

* मूल में—भरोसा दिया।

बाशान के बलवन्त साढ़ मेरे चारो
ओर मुझे घेरे हुए है।
१३ वह फाड़ने और गरजनेवाले सिंह की
नाईं
मुझ पर अपना मुह पसारे हुए है॥
१४ मै जल की नाईं बह गया,
और मेरी सब हड्डियो के जोड उखड
गए,
मेरा हृदय मोम हो गया,
वह मेरी देह के भीतर पिघल गया।
१५ मेरा बल टूट गया, मै ठीकरा हो
गया,
और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक
गई,
और तू मुझे मारकर मिट्टी मे मिला
देता है।
१६ क्योकि कुत्तो ने मुझे घेर लिया है,
कुकर्मियो की मण्डली मेरी चारो
ओर मुझे घेरे हुए है,
वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते है।
१७ मै अपनी सब हड्डिया गिन सकता हू,
वे मुझे देखते और निहारते है,
१८ वे मेरे वस्त्र आपस मे बाटते है,
और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते
है॥
१९ परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह!
हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के
लिये फुर्ती कर!
२० मेरे प्राण को तलवार से बचा,
मेरे प्राण को * कुत्ते के पजे से बचा
ले!
२१ मुझे सिंह के मुह मे बचा,
हा, जगली साढो के सीगो मे से तू ने
मुझे बचा लिया है॥

* मूल में—मेरी एकली को।

२२ मै अपने भाइयो के साम्हने तेरे नाम
का प्रचार करूगा,
सभा के बीच मे तेरी प्रशसा करूगा।
२३ हे यहोवा के डरवैयो उसकी स्तुति
करो!
हे याकूब के वंश, तुम सब उसकी
महिमा करो!
और हे इस्राएल के वंश, तुम उसका
भय मानो!
२४ क्योकि उस ने दुखी को तुच्छ नही
जाना और न उस से घृणा करता
है,
और न उस से अपना मुख छिपाता
है,
पर जब उस ने उसकी दोहाई दी,
तब उसकी सुन ली॥
२५ बडी सभा मे मेरा स्तुति करना
तेरी ही ओर से होता है,
मै अपने प्रण को उस से भय
रखनेवालो के साम्हने पूरा करूगा
२६ नम्र लोग भोजन करके तृप्त होगे,
जो यहोवा के खोजी है, वे उसकी
स्तुति करेगे।
तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहे!
२७ पृथ्वी के सब दूर दूर देशो के लोग
उसको स्मरण करेगे और उसकी
ओर फिरेगे,
और जाति जाति के सब कुल तेरे
साम्हने दण्डवत् करेगे।
२८ क्योकि राज्य यहोवा ही का है,
और सब जातियो पर वही प्रभुता
करता है॥
२९ पृथ्वी के सब हृष्टपुष्ट लोग भोजन
करके दण्डवत् करेगे,
वह सब जितने मिट्टी मे मिल जाते है
और अपना अपना प्राण नही बचा

सकते, वे सब उसी के साम्हने
घुटने टेकेंगे।
३० एक वंश उसकी सेवा करेगा,
दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया
जाएगा।
३१ वह आएंगे और उसके धर्म के
कामों को एक वंश पर जो उत्पन्न
होगा यह कहकर प्रगट करेंगे कि
उस ने ऐसे ऐसे अद्भुत काम
किए॥

(दाऊद का भजन)

२३ यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे
कुछ घटी न होगी।
२ वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता
है,
वह मुझे सुखदाई जल के झरने के
पास ले चलता है,
३ वह मेरे जी में जी ले आता है।
धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के
निमित्त मेरी अगुवाई करता
है।
४ चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई
तराई में होकर चलूं,
तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि
तू मेरे साथ रहता है,
तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे
शान्ति मिलती है॥
५ तू मेरे सतानेवालों के साम्हने मेरे
लिये मेज बिछाता है,
तू ने मेरे सिर पर तेल मला है,
मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
६ निश्चय भलाई और करुणा जीवन
भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी,
और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा
वास करूंगा॥

(दाऊद का भजन)

२४ पृथ्वी और जो कुछ उस में है
यहोवा ही का है,
जगत और उस में निवास करनेवाले
भी।
२ क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों
के ऊपर दृढ़ करके रखी,
और महानदों के ऊपर स्थिर किया
है॥
३ यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता
है?
और उसके पवित्रस्थान में कौन खड़ा
हो सकता है?
४ जिसके काम* निर्दोष और हृदय
शुद्ध है,
जिस ने अपने मन को व्यर्थ बात की
ओर नहीं लगाया,
और न कपट से शपथ खाई है।
५ वह यहोवा की ओर से आशीष
पाएगा,
और अपने उद्धार करनेवाले परमेश्वर
की ओर से धर्मी ठहरेगा।
६ ऐसे ही लोग उसके खोजी हैं,
वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी
हैं॥ (सेला)
७ हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो†!
हे सनातन के द्वारो, ऊंचे हो जाओ‡!
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।
८ वह प्रतापी राजा कौन है?
परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी
है,
परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है!
९ हे फाटको, अपने सिर ऊंचे करो†

* मूल में—के हाथ।
† मूल में—अपने सिर उठाओ।
‡ मूल में—अपने को उठाओ।

हे सनातन के द्वारो तुम भी खुल
जाओ * ।
क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा ।
१० वह प्रतापी राजा कौन है ?
सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी
राजा है ।। (सेला)

(दाऊद का भजन)

२५ हे यहोवा मैं अपने मन को
तेरी ओर उठाता हूं ।
२ हे मेरे परमेश्वर, मैं ने तुझी पर
भरोसा रखा है,
मुझे लज्जित होने न दे,
मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने
न पाए ।
३ वरन जितने तेरी बाट जोहते हैं उन
में से कोई लज्जित न होगा,
परन्तु जो अकारण विश्वासघाती हैं
वे ही लज्जित होंगे ।।
४ हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को
दिखला,
अपना पथ मुझे बता दे ।
५ मुझे अपने सत्य पर चला और
शिक्षा दे,
क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला
परमेश्वर है,
मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता
रहता हूं ।
६ हे यहोवा अपनी दया और करुणा
के कामों को स्मरण कर,
क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते
आए हैं ।
७ हे यहोवा अपनी भलाई के कारण
मेरी जवानी के पापों और मेरे
अपराधों को स्मरण न कर,
अपनी करुणा ही के अनुसार तू
मुझे स्मरण कर ।।
८ यहोवा भला और सीधा है,
इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग
दिखलाएगा ।
९ वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा
देगा,
हां वह नम्र लोगों को अपना मार्ग
दिखलाएगा ।
१० जो यहोवा की वाचा और चितौनियों
को मानते हैं,
उनके लिये उसके सब मार्ग करुणा
और सच्चाई हैं ।।
११ हे यहोवा अपने नाम के निमित्त
मेरे अधर्म को जो बहुत है क्षमा
कर ।।
१२ वह कौन है जो यहोवा का भय
मानता है ?
यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस
से वह प्रसन्न होता है चलाएगा ।
१३ वह कुशल से टिका रहेगा,
और उसका वंश पृथ्वी का अधिकारी
होगा ।
१४ यहोवा के भेद को वही जानते हैं
जो उस से डरते हैं,
और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट
करेगा ।
१५ मेरी आंखें सदैव यहोवा पर टकटकी
लगाए रहती हैं,
क्योंकि वही मेरे पांवों को जाल में
से छुड़ाएगा ।।
१६ हे यहोवा मेरी ओर फिरकर मुझ पर
अनुग्रह कर,
क्योंकि मैं अकेला और दीन हूं ।
१७ मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है,
तू मुझ को मेरे दुःखों से छुड़ा ले ।

* मूल में—अपने को उठाओ ।

और उसके मन्दिर मे सब कोई महिमा
ही महिमा बोलता रहता है ।।
१० जलप्रलय के समय यहोवा विराजमान
था,
और यहोवा सर्वदा के लिये राजा
होकर विराजमान रहता है ।
११ यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा,
यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की
आशीष देगा ।।

(भवन की प्रतिष्ठा के लिये
दाऊद का भजन)

३० हे यहोवा मै तुझे सराहूगा,
क्योंकि तू ने मुझे खीचकर
निकाला है,
और मेरे शत्रुओ को मुझ पर आनन्द
करने नही दिया ।
२ हे मेरे परमेश्वर यहोवा,
मै ने तेरी दोहाई दी और तू ने मुझे
चगा किया है ।
३ हे यहोवा, तू ने मेरा प्राण अधोलोक
मे से निकाला है,
तू ने मुझ को जीवित रखा और
कब्र मे पडने से बचाया है ।।
४ हे यहोवा के भक्तो, उसका भजन
गाओ,
और जिस पवित्र नाम से उसका
स्मरण होता है, उसका धन्यवाद
करो ।
५ क्योकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का
होता है,
परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर
की होती है ।
कदाचित् रात को रोना पडे,
परन्तु सवेरे आनन्द पहुचेगा ।।
६ मै ने तो अपने चैन के समय कहा था,
कि मै कभी नही टलने का ।
७ हे यहोवा अपनी प्रसन्नता से तू ने
मेरे पहाड को दृढ और स्थिर
किया था,
जब तू ने अपना मुख फेर लिया * तब
मै घबरा गया ।।
८ हे यहोवा मै ने तुझी को पुकारा,
और यहोवा से गिडगिडाकर यह
बिनती की, कि
९ जब मै कब्र मे चला जाऊगा तब मेरे
लोहू से क्या लाभ होगा ?
क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती
है ? क्या वह तेरी सच्चाई का
प्रचार कर सकती है ?
१० हे यहोवा, सुन, मुझ पर अनुग्रह कर,
हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो ।।
११ तू ने मेरे लिये विलाप को नृत्य मे
बदल डाला;
तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी
कमर मे आनन्द का पटुका बान्धा
है,
१२ ताकि मेरी आत्मा † तेरा भजन गाती
रहे और कभी चुप न हो ।
हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मै सर्वदा
तेरा धन्यवाद करता रहूगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद
का भजन)

३१ हे यहोवा मेरा भरोसा तुझ पर
है,
मुझे कभी लज्जित होना न पडे,
तू अपने धर्मी होने के कारण मुझे
छुडा ले ।
२ अपना कान मेरी ओर लगाकर तुरन्त
मुझे छुडा ले ।

* मूल में—छिपाया।
† मूल [illegible] ।।

३ क्योंकि तू मेरे लिये चट्टान और मेरा
गढ है,
इसलिये अपने नाम के निमित्त मेरी
अगुआई कर, और मुझे आगे ले
चल।
४ जो जाल उन्हो ने मेरे लिये बिछाया
है उस से तू मुझ को छुडा ले,
क्योंकि तू ही मेरा दृढ गढ है।
५ मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ
मे सौप देता हू,
हे यहोवा, हे सत्यवादी ईश्वर, तू ने
मुझे मोल लेकर मुक्त किया है॥
६ जो व्यर्थ वस्तुओ पर मन लगाते है,
उन से मैं घृणा करता हू,
परन्तु मेरा भरोसा यहोवा ही पर
है।
७ मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित
हू,
क्योंकि तू ने मेरे दु ख पर दृष्टि की
है,
मेरे कष्ट के समय तू ने मेरी सुधि
ली है,
८ और तू ने मुझे शत्रु के हाथ में पडने
नही दिया,
तू ने मेरे पावो को चौडे स्थान में
खडा किया है॥
९ हे यहोवा, मुझ पर अनुग्रह कर क्योंकि
मैं संकट में हू,
मेरी आंखें वरन मेरा प्राण और
शरीर सब शोक के मारे घुले
जाते है।
१० मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी
अवस्था कराहते कराहते घट चली
है,
मेरा बल मेरे अधर्म के कारण जाता
रहा, और मेरी हड्डियां घुल गई॥
११ अपने सब विरोधियो के कारण मेरे
पडोसियो में मेरी नामधराई हुई
है,
अपने जानपहिचानवालो के लिये डर
का कारण हू,
जो मुझ को सडक पर देखते है वह
मुझ से दूर भाग जाते है।
१२ मैं मृतक की नाई लोगो के मन से
बिसर गया,
मैं टूटे बासन के समान हो गया
हू।
१३ मैं ने बहुतो के मुह से अपना अपवाद
सुना,
चारो ओर भय ही भय है!
जब उन्हो ने मेरे विरुद्ध आपस में
सम्मति की
तब मेरे प्राण लेने की युक्ति की॥
१४ परन्तु हे यहोवा मैं ने तो तुझी पर
भरोसा रखा है,
मैं ने कहा, तू मेरा परमेश्वर है।
१५ मेरे दिन * तेरे हाथ में है,
तू मुझे मेरे शत्रुओ और मेरे सताने-
वालो के हाथ से छुडा।
१६ अपने दास पर अपने मुह का प्रकाश
चमका,
अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर॥
१७ हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे
क्योंकि मैं ने तुझ को पुकारा है,
दुष्ट लज्जित हो और वे पाताल में
चुपचाप पडे रहें।
१८ जो अहंकार और अपमान से
धर्मी की निन्दा करते है,
उनके झूठ बोलनेवाले मुह बन्द किए
जाए॥

* मूल में—समय।

तौभी मैं न डरूंगा;
चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए,
उस दशा में भी मैं हियाव बान्धे निश्चित रहूंगा ॥
४ एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है,
उसी के यत्न में लगा रहूंगा,
कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं,
जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं,
और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं ॥
५ क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा,
अपने तम्बू के गुप्तस्थान में वह मुझे छिपा लेगा,
और चट्टान पर चढ़ाएगा।
६ अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊंचा होगा,
और मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊंगा,
और उसका भजन गाऊंगा ॥
७ हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूं,
तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे।
८ तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, कि
हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूंगा।
९ अपना मुख मुझ से न छिपा ॥
अपने दास को क्रोध करके न हटा,
तू मेरा सहायक बना है।
हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़ न दे।
१० मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है,
परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा ॥
११ हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर,
और मेरे द्रोहियों के कारण
मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल।
१२ मुझ को मेरे सतानेवालों की इच्छा पर न छोड़,
क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने की धुन में हैं मेरे विरुद्ध उठे हैं ॥
१३ यदि मुझे विश्वास न होता* कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूंगा, तो मैं मूर्च्छित हो जाता।
१४ यहोवा की बाट जोहता रह,
हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे,
हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

(दाऊद का भजन)

२८ हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूंगा,
हे मेरी चट्टान, मेरी सुनी-अनसुनी न कर,
ऐसा न हो कि तेरे चुप रहने से
मैं कब्र में पड़े हुओं के समान हो जाऊं जो पाताल में चले जाते हैं।
२ जब मैं तेरी दोहाई दूं,
और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊं,
तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले।

* मूल में—यदि मैं विश्वास न करता।

३ उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट,
जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की बोलते हैं
परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं।
४ उनके कामों के और उनकी करनी की बुराई के अनुसार उन से बर्ताव कर,
उनके हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे,
उनके कामों का पलटा उन्हें दे।
५ वे यहोवा के कामों पर
और उसके हाथ के कामों पर ध्यान नहीं रखते,
इसलिये वह उन्हें पछाड़ेगा और फिर न उठाएगा॥
६ यहोवा धन्य है,
क्योंकि उस ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है।
७ यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है, उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है,
इसलिये मेरा हृदय प्रफुल्लित है,
और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूंगा॥

(दाऊद का भजन)

२९ हे परमेश्वर के पुत्रो * यहोवा का, हां यहोवा ही का गुणानुवाद करो,
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को सराहो।
२ यहोवा के नाम की महिमा करो,
पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत करो।
३ यहोवा की वाणी मेघों † के ऊपर सुन पड़ती है,
प्रतापी ईश्वर गरजता है,
यहोवा घने मेघों ‡ के ऊपर रहता है।
४ यहोवा की वाणी शक्तिशाली है,
यहोवा की वाणी प्रतापमय है।
५ यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है,
यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है।
६ वह उन्हें बछड़े की नाईं और लबानोन और सिर्योन को जंगली बछड़े के समान उछालता है॥
७ यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है।
८ यहोवा की वाणी वन को हिला देती है
यहोवा कादेश के वन को भी कंपाता

१९ आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी
है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये
रख छोड़ी है,
और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों
के साम्हने प्रगट भी की है!
२० तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में
मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त
रखेगा,
तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-
रगड़े से छिपा रखेगा॥
२१ यहोवा धन्य है,
क्योंकि उस ने मुझे गढ़वाले नगर
में रखकर मुझ पर अद्भुत करुणा
की है।
२२ मैं ने तो घबराकर कहा था कि मैं
यहोवा की दृष्टि से दूर हो गया।
तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दी, तब
तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुन
लिया॥
२३ हे यहोवा के सब भक्तो उस से
प्रेम रखो!
यहोवा सच्चे लोगों की तो रक्षा
करता है,
परन्तु जो अहंकार करता है, उसको
वह भली भांति बदला देता है।
२४ हे यहोवा पर आशा रखनेवालो
हियाव बान्धो और तुम्हारे हृदय
दृढ़ रहे!

(दाऊद का भजन। मश्कील)

३२ क्या ही धन्य है वह जिसका
अपराध क्षमा किया गया, और
जिसका पाप ढांपा गया हो।
२ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके
अधर्म का यहोवा लेखा न ले,
और जिसकी आत्मा में कपट न हो॥
३ जब मैं चुप रहा
तब दिन भर कहरते कहरते मेरी
हड्डियां पिघल गईं।
४ क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के
नीचे दबा रहा,
और मेरी तरावट धूप काल की सी
झुर्राहट बनती गई॥ (सेला)
५ जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट
किया और अपना अधर्म न छिपाया,
और कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने
अपराधों को मान लूंगा,
तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को
क्षमा कर दिया॥ (सेला)
६ इस कारण हर एक भक्त तुझ से
ऐसे समय में प्रार्थना करे जब कि
तू मिल सकता है।
निश्चय जब जल की बड़ी बाढ़
आए तौभी उस भक्त के पास न
पहुंचेगी।
७ तू मेरे छिपने का स्थान है, तू संकट
से मेरी रक्षा करेगा,
तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के
गीतों से घेर लेगा॥ (सेला)
८ मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग
में तुझे चलना होगा उस में तेरी
अगुवाई करूंगा,
मैं तुझ पर कृपादृष्टि* रखूंगा और
सम्मति दिया करूंगा।
९ तुम घोड़े और खच्चर के समान न
बनो जो समझ नहीं रखते,
उनकी उमंग लगाम और बाग से
रोकनी पड़ती है,
नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने
के॥

* मूल में—आंख लगाकर।

१० दुष्ट को तो बहुत पीडा होगी,
परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता
है वह करुणा से घिरा रहेगा ।
११ हे धर्मियो यहोवा के कारण आनन्दित
और मगन हो,
और हे सब सीधे मनवालो आनन्द
से जयजयकार करो !

३३ हे धर्मियो यहोवा के कारण
जयजयकार करो !
क्योंकि धर्मी लोगो को स्तुति करनी
सोहती है ।
२ वीणा बजा बजाकर यहोवा का
धन्यवाद करो,
दस तारवाली सारंगी बजा बजाकर
उसका भजन गाओ ।
३ उसके लिये नया गीत गाओ,
जयजयकार के साथ भली भांति
बजाओ ॥
४ क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है,
और उसका सब काम सच्चाई से
होता है ।
५ वह धर्म और न्याय से प्रीति रखता
है,
यहोवा की करुणा से पृथ्वी भरपूर
है ॥
६ आकाशमण्डल यहोवा के वचन से,
और उसके सारे गण उसके मुह की
श्वास से बने ।
७ वह समुद्र का जल ढेर की नाई
इकट्ठा करता,
वह गहिरे सागर को अपने भण्डार
में रखता है ॥
८ सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरे,
जगत के सब निवासी उसका भय
मानें !
९ क्योंकि जब उस ने कहा, तब हो
गया,
जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव मे
वैसा ही हो गया ॥
१० यहोवा अन्यजातियो की युक्ति को
व्यर्थ कर देता है,
वह देश देश के लोगो की कल्पनाओ
को निष्फल करता है ।
११ यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी,
उसके मन की कल्पनाए पीढी से
पीढी तक बनी रहेंगी ।
१२ क्या ही धन्य है वह जाति जिसका
परमेश्वर यहोवा है,
और वह समाज जिसे उस ने अपना
निज भाग होने के लिये चुन लिया
हो !
१३ यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है,
वह सब मनुष्यो को निहारता है,
१४ अपने निवास के स्थान से
वह पृथ्वी के सब रहनेवालो को
देखता है,
१५ वही जो उन सभो के हृदयो को
गढता,
और उनके सब कामो का विचार
करता है ।
१६ कोई ऐसा राजा नही, जो सेना की
बहुतायत के कारण बच सके,
वीर अपनी बडी शक्ति के कारण
छूट नही जाता ।
१७ बच निकलने के लिये घोडा व्यर्थ है,
वह अपने बडे बल के द्वारा किसी
को नही बचा सकता है ॥
१८ देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयो
पर
और उन पर जो उसकी करुणा की
आशा रखते है बनी रहती है,

१९ कि वह उनके प्राण को मृत्यु से
बचाए,
और अकाल के समय उनको जीवित
रखे ॥
२० हम यहोवा का आसरा देखते आए
हैं,
वह हमारा सहायक और हमारी
ढाल ठहरा है ।
२१ हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित
होगा,
क्योंकि हम ने उसके पवित्र नाम का
भरोसा रखा है ।
२२ हे यहोवा जैसी तुझ पर हमारी आशा
है,
वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर
हो ॥

(दाऊद का भजन जब वह अबीमेलेक
के साम्हने बौरहा बना, और अबीमेलेक
ने उसे निकाल दिया, और वह
चला गया)

३४ मैं हर समय यहोवा को धन्य
कहा करूंगा,
उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से
होती रहेगी ।
२ मैं यहोवा पर घमण्ड करूंगा,
नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित
होंगे ।
३ मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो,
और आओ हम मिलकर उसके नाम
की स्तुति करें ।
४ मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने
मेरी सुन ली,
और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया ।
५ जिन्हों ने उसकी ओर दृष्टि की,
उन्हों ने ज्योति पाई,
और उनका मुंह कभी काला न होने
पाया ।
६ इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा
ने सुन लिया,
और उसको उसके सब कष्टों से
छुड़ा लिया ॥
७ यहोवा के डरवैयों के चारों ओर
उसका दूत छावनी किए हुए उनको
बचाता है ।
८ परखकर * देखो कि यहोवा कैसा
भला है !
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी
शरण लेता है ।
९ हे यहोवा के पवित्र लोगो, उसका
भय मानो,
क्योंकि उसके डरवैयों को किसी बात
की घटी नहीं होती !
१० जवान सिंहों को तो घटी होती और
वे भूखे भी रह जाते हैं,
परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी
भली वस्तु की घटी न होवेगी ॥
११ हे लड़को, आओ, मेरी सुनो,
मैं तुम को यहोवा का भय मानना
सिखाऊंगा ।
१२ वह कौन मनुष्य है जो जीवन की
इच्छा रखता,
और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई
देखे ?
१३ अपनी जीभ को बुराई से रोक रख,
और अपने मुंह की चौकसी कर कि
उस से छल की बात न निकले ।
१४ बुराई को छोड़ और भलाई कर,
मेल को ढूंढ और उसी का पीछा
कर ॥

* मूल में—चखकर ।

१५ यहोवा की आंखे धर्मियो पर लगी
रहती है,
और उसके कान भी उनकी दोहाई
की ओर लगे रहते है।
१६ यहोवा बुराई करनेवालो के विमुख
रहता है,
ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से
मिटा डाले।
१७ धर्मी दोहाई देते हं और यहोवा
सुनता है,
और उनको सब विपत्तियो से छुडाता
है।
१८ यहोवा टूटे मनवालो के समीप रहता
है,
और पिसे हुओ का उद्धार करता है ।।
१९ धर्मी पर बहुत सी विपत्तिया पडती
तो है,
परन्तु यहोवा उसको उन सब से
मुक्त करता है।
२० वह उसकी हड्डी हड्डी की रक्षा करता
है,
और उन मे से एक भी टूटने नही पाती।
२१ दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा
जाएगा,
और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे।
२२ यहोवा अपने दासो का प्राण मोल
लेकर बचा लेता है,
और जितने उसके शरणागत है उन
में से कोई भी दोषी न ठहरेगा ।।

(दाऊद का भजन)

३५ हे यहोवा जो मेरे साथ
मुकद्दमा लडते है,
उनके साथ तू भी मुकद्दमा लड,
जो मुझ से युद्ध करते है, उन से
तू युद्ध कर।
२ ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता
करने को खडा हो।
३ बर्छी को खीच और मेरा पीछा
करनेवालो के साम्हने आकर उनको
रोक,
और मुझ से कह, कि मै तेरा उद्धार
हू ।।
४ जो मेरे प्राण के ग्राहक है वे लज्जित
और निरादर हो!
जो मेरी हानि की कल्पना करते है,
वह पीछे हटाए जाए और उनका
मुह काला हो!
५ वे वायु से उड जानेवाली भूसी के
समान हो,
और यहोवा का दूत उन्हें हाकता
जाए!
६ उनका मार्ग अन्धियारा और फिसलाहा
हो,
और यहोवा का दूत उनको खदेडता
जाए ।।
७ क्योकि अकारण उन्हो ने मेरे लिये
अपना जाल गडहे में बिछाया,
अकारण ही उन्हो ने मेरा प्राण लेने
के लिये गडहा खोदा है।
८ अचानक उन पर विपत्ति आ पडे!
और जो जाल उन्हो ने बिछाया है
उसी में वे आप ही फसें, और
उसी विपत्ति में वे आप ही पडे!
९ परन्तु मै यहोवा के कारण अपने
मन मे मगन होऊगा,
मै उसके किए हुए उद्धार से हर्षित
होऊगा।
१० मेरी हड्डी हड्डी कहेगी, हे यहोवा तेरे
तुल्य कौन है,
जो दीन को बडे बडे बलवन्तो से
बचाता है, और लुटेरो से दीन

दरिद्र लोगों की रक्षा करता है ?
११ झूठे साक्षी खड़े होते हैं,
और जो बात मैं नहीं जानता, वही मुझ से पूछते हैं।
१२ वे मुझ से भलाई के बदले बुराई करते हैं, यहां तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है।
१३ जब वे रोगी थे तब तो मैं टाट पहिने रहा,
और उपवास कर करके दुःख उठाता रहा,
और मेरी प्रार्थना का फल मेरी गोद में लौट आया।
१४ मैं ऐसा भाव रखता था कि मानो वे मेरे संगी वा भाई हैं,
जैसा कोई माता के लिये विलाप करता हो,
वैसा ही मैं ने शोक का पहिरावा पहिने हुए सिर झुकाकर शोक किया॥
१५ परन्तु जब मैं लंगड़ाने लगा तब वे लोग आनन्दित होकर इकट्ठे हुए,
नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न था वे मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए,
वे मुझे लगातार फाड़ते रहे,
१६ उन पाखण्डी भांडों की नाईं जो पेट के लिये उपहास करते हैं,
वे भी मुझ पर दांत पीसते हैं॥
१७ हे प्रभु तू कब तक देखता रहेगा ?
इस विपत्ति से, जिस में उन्हों ने मुझे डाला है मुझ को छुड़ा !
जवान सिंहों से मेरे प्राण* को बचा ले !

* मूल में—मेरी एकली।

१८ मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूंगा;
बहुतेरे लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करूंगा॥
१९ मेरे झूठ बोलनेवाले शत्रु मेरे विरुद्ध आनन्द न करने पाएं,
जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे आपस में नैन से सैन न करने पाएं।
२० क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते,
परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं, उनके विरुद्ध छल की कल्पनाएं करते हैं।
२१ और उन्हों ने मेरे विरुद्ध मुंह पसारके कहा,
आहा, आहा, हम ने अपनी आंखों से देखा है !
२२ हे यहोवा, तू ने तो देखा है, चुप न रह !
हे प्रभु, मुझ से दूर न रह !
२३ उठ, मेरे न्याय के लिये जाग,
हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिये आ !
२४ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अपने धर्म के अनुसार मेरा न्याय चुका,
और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे !
२५ वे मन में न कहने पाएं, कि आहा !
हमारी तो इच्छा पूरी हुई !
वह यह न कहें कि हम उसे निगल गए हैं॥
२६ जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं उनके मुंह लज्जा के मारे एक साथ काले हों !
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं वह लज्जा और अनादर से ढंप जाएं !
२७ जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं, वह जयजयकार और आनन्द करें,

और निरन्तर कहते रहें, यहोवा की
वडाई हो, जो अपने दास के कुशल
से प्रसन्न होता है !
२८ तब मेरे मुह से तेरे धर्म की चर्चा
होगी,
और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये यहोवा के दास दाऊद का भजन)

३६ दुष्ट जन का अपराध मेरे
हृदय के भीतर यह कहता है
कि परमेश्वर का भय उसकी दृष्टि *
में नही है ।
२ वह अपने अधर्म के प्रगट होने और
घृणित ठहरने के विषय
अपने मन में चिकनी चुपडी बातें
विचारता है ।
३ उसकी बातें अनर्थ और छल की हैं,
उस ने बुद्धि और भलाई के काम
करने से हाथ उठाया है ।
४ वह अपने बिछौने पर पडे पडे अनर्थ
की कल्पना करता है,
वह अपने कुमार्ग पर दृढता से बना
रहता है,
बुराई से वह हाथ नहीं उठाता ॥
५ हे यहोवा तेरी करुणा स्वर्ग में है,
तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक
पहुची है ।
६ तेरा धर्म ऊचे पर्वतो के समान है,
तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं,
हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनो
की रक्षा करता है ॥
७ हे परमेश्वर तेरी करुणा कैसी अनमोल
है !
मनुष्य तेरे पखो के तले शरण लेते हैं ।

* मूल में—उसकी आंखों के साम्हने।

८ वे तेरे भवन के चिकने भोजन मे
तृप्त होगे,
और तू अपनी सुख की नदी में से
उन्हें पिलाएगा ।
९ क्योकि जीवन का सोता तेरे ही पास
है,
तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश
पाएगे ॥
१० अपने जाननेवालो पर करुणा करता
रह,
और अपने धर्म के काम सीधे मनवालो
में करता रह !
११ अहकारी मुझ पर लात उठाने न
पाए,
और न दुष्ट अपने हाथ के बल से
मुझे भगाने पाए ।
१२ वहा अनर्थकारी गिर पडे हैं,
वे ढकेल दिए गए, और फिर उठ
न सकेंगे ॥

(दाऊद का भजन)

३७ कुकर्मियो के कारण मत कुढ़,
कुटिल काम करनेवालो के
विषय डाह न कर !
२ क्योकि वे घास की नाईं झट कट
जाएगे,
और हरी घास की नाईं मुर्झा जाएगे ।
३ यहोवा पर भरोसा रख, और भला
कर,
देश में बसा रह, और सच्चाई में मन
लगाए रह ।
४ यहोवा को अपने सुख का मूल जान,
और वह तेरे मनोरथो को पूरा
करेगा ॥
५ अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर
छोड,

और उस पर भरोसा रख, वही पूरा
करेगा।
६ और वह तेरा धर्म ज्योति की
नाईं,
और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले
की नाईं प्रगट करेगा ॥
७ यहोवा के साम्हने चुपचाप रह, और
धीरज से उसका आसरा रख,
उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके
काम सुफल होते हैं,
और वह बुरी युक्तियों को निकालता
है !
८ क्रोध से परे रह, और जलजलाहट
को छोड़ दे !
मत कुढ़, उस से बुराई ही निकलेगी।
९ क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले
जाएंगे,
और जो यहोवा की बाट जोहते हैं,
वही पृथ्वी के अधिकारी होंगे ॥
१० थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा
ही नहीं,
और तू उसके स्थान को भली भांति
देखने पर भी उसको न पाएगा।
११ परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी
होंगे,
और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द
मनाएंगे ॥
१२ दुष्ट धर्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति
निकालता है,
और उस पर दांत पीसता है,
१३ परन्तु प्रभु उस पर हंसेगा,
क्योंकि वह देखता है कि उसका
दिन आनेवाला है ॥
१४ दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष
चढ़ाए हुए हैं,
ताकि दीन दरिद्र को गिरा दें,
और सीधी चाल चलनेवालों को वध
करें।
१५ उनकी तलवारों से उन्हीं के हृदय
छिदेंगे,
और उनके धनुष तोड़े जाएंगे ॥
१६ धर्मी का थोड़ा सा माल
दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।
१७ क्योंकि दुष्टों की भुजाएं तो तोड़ी
जाएंगी,
परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता
है ॥
१८ यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि
रखता है,
और उनका भाग सदैव बना रहेगा।
१९ विपत्ति के समय उनकी आशा न
टूटेगी और न वे लज्जित होंगे,
और अकाल के दिनों में वे तृप्त
रहेंगे ॥
२० दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे,
और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी
घास की नाईं नाश होंगे,
वे धूएं की नाईं विलाय जाएंगे ॥
२१ दुष्ट ऋण लेता है, और भरता नहीं,
परन्तु धर्मी अनुग्रह करके दान देता है,
२२ क्योंकि जो उस से आशीष पाते हैं
वे तो पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
परन्तु जो उस से शापित होते हैं,
वे नाश हो जाएंगे ॥
२३ मनुष्य की गति यहोवा की ओर से
दृढ़ होती है,
और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता
है,
२४ चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह
जाएगा,
क्योंकि यहोवा उसका हाथ थांभे
रहता है ॥

२५ मैं लडकपन से लेकर बुढापे तक
देखता आया हू,
परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ,
और न उसके वंश को टुकडे मांगते
देखा है।
२६ वह तो दिन भर अनुग्रह कर करके
ऋण देता है,
और उसके वंश पर आशीष फलती
रहती है॥
२७ बुराई को छोड और भलाई कर,
और तू सर्वदा बना रहेगा।
२८ क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता,
और अपने भक्तो को न तजेगा।
उनकी तो रक्षा सदा होती है,
परन्तु दुष्टो का वंश काट डाला
जाएगा।
२९ धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,
और उस में सदा बसे रहेंगे॥
३० धर्मी अपने मुह से बुद्धि की बातें
करता,
और न्याय का वचन कहता है।
३१ उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके
हृदय में बनी रहती है,
उसके पैर नही फिसलते॥
३२ दुष्ट धर्मी की ताक में रहता है।
और उसके मार डालने का यत्न करता
है।
३३ यहोवा उसको उसके हाथ में न
छोडेगा,
और जब उसका विचार किया जाए,
तब वह उसे दोषी न ठहराएगा॥
३४ यहोवा की बाट जोहता रह, और
उसके मार्ग पर बना रह,
और वह तुझे बढाकर पृथ्वी का
अधिकारी कर देगा,
जब दुष्ट काट डाले जाएंगे, तब तू
देखेगा॥
३५ मैं ने दुष्ट को बडा पराक्रमी और
ऐसा फैलता हुआ देखा,
जैसा कोई हरा पेड अपने निज भूमि
में फैलता है।
३६ परन्तु जब कोई उधर से गया तो देखा
कि वह वहा है ही नही,
और मैं ने भी उसे ढूढा, परन्तु कही
न पाया॥
३७ खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी
को देख,
क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का
अन्तफल अच्छा है।
३८ परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश
किए जाएंगे,
दुष्टो का अन्तफल सर्वनाश है॥
३९ धर्मियो की मुक्ति यहोवा की ओर
से होती है,
संकट के समय वह उनका दृढ गढ
है।
४० और यहोवा उनकी सहायता करके
उनको बचाता है,
वह उनको दुष्टो से छुडाकर उनका
उद्धार करता है,
इसलिये कि उन्हो ने उस में अपनी
शरण ली है॥

(यादगार के लिये दाऊद का भजन)

३८ हे यहोवा क्रोध में आकर
मुझे झिडक न दे,
और न जलजलाहट में आकर मेरी
ताडना कर!
२ क्योंकि तेरे तीर मुझ में लगे है,
और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा
हू।

३ तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में
कुछ भी आरोग्यता नही;
और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों
में कुछ भी चैन नही।
४ क्योकि मेरे अधर्म के कामो में मेरा
सिर डूब गया,
और वे भारी वोझ की नाई मेरे
सहने से वाहर हो गए हैं॥
५ मेरी मूढता के कारण से
मेरे कोडे खाने के घाव वसाते हैं
और सड गए हैं।
६ मै वहुत दुखी हू और झुक गया हू;
दिन भर मै शोक का पहिरावा पहिने
हुए चलता फिरता हू।
७ क्योकि मेरी कमर मे जलन है,
और मेरे शरीर मे आरोग्यता नही।
८ मै निर्वल और वहुत ही चूर हो
गया हू,
मै अपने मन की घवराहट से कराहता
हू॥
९ हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे
सम्मुख है,
और मेरा कराहना तुझ से छिपा
नही।
१० मेरा हृदय धडकता है, मेरा वल
घटता जाता है,
और मेरी आखो की ज्योति भी मुझ
से जाती रही।
११ मेरे मित्र और मेरे सगी मेरी विपत्ति
में अलग हो गए,
और मेरे कुटुम्वी भी दूर जा खड़े
हुए॥
१२ मेरे प्राण के ग्राहक मेरे लिये जाल
विछाते है,
और मेरी हानि के यत्न करनेवाले
दुष्टता की वातें वोलते,
और दिन भर छल की युक्ति सोचते
है।
१३ परन्तु मै वहिरे की नाईं सुनता ही
नहीं,
और मै गूगे के समान मुह नही
खोलता।
१४ वरन मै ऐसे मनुष्य के तुल्य हू जो
कुछ नही सुनता,
और जिसके मुह से विवाद की कोई
वात नही निकलती॥
१५ परन्तु हे यहोवा, मै ने तुझ ही पर
अपनी आशा लगाई है;
हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ही उत्तर
देगा।
१६ क्योकि मै ने कहा, ऐसा न हो कि
वे मुझ पर आनन्द करें;
जो, जव मेरा पाव फिसल जाता है,
तव मुझ पर अपनी वडाई मारते
है॥
१७ क्योकि मै तो अव गिरने ही पर हू,
और मेरा शोक निरन्तर मेरे साम्हने
है।
१८ इसलिये कि मै तो अपने अधर्म को
प्रगट करूगा,
और अपने पाप के कारण खेदित
रहूगा।
१९ परन्तु मेरे शत्रु फुर्तीले और सामर्थी
है,
और मेरे विरोधी बैरी बहुत हो
गए है।
२० जो भलाई के वदले मे बुराई करते
है,
वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने के
कारण मुझ से विरोध करते है॥
२१ हे यहोवा, मुझे छोड न दे!
हे मेरे परमेश्वर, मुझ से दूर न हो!

२२ हे यहोवा, हे मेरे उद्धारकर्त्ता,
मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

(यदूतून प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

३९ मैं ने कहा, मैं अपनी चालचलन में चौकसी करूंगा,
ताकि मेरी जीभ से पाप न हो,
जब तक दुष्ट मेरे साम्हने है,
तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुंह बन्द किए रहूंगा।
२ मैं मौन धारण कर गूंगा बन गया,
और भलाई की ओर से भी चुप्पी साधे रहा,
और मेरी पीड़ा बढ़ गई,
३ मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर जल रहा था।
सोचते सोचते आग भड़क उठी,
तब मैं अपनी जीभ से बोल उठा
४ हे यहोवा ऐसा कर कि मेरा अन्त मुझे मालूम हो जाए,
और यह भी कि मेरी आयु के दिन कितने हैं,
जिस से मैं जान लूं कि मैं कैसा अनित्य हूं!
५ देख, तू ने मेरे आयु बालिश्त भर की रखी है,
और मेरी अवस्था तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं।
सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिर क्यों न हों तौभी व्यर्थ ठहरे हैं। (सेला)
६ सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है,
सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं,
वह धन का संचय तो करता है परन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा!
७ और अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूं?
मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है।
८ मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले।
मूढ़ मेरी निन्दा न करने पाए।
९ मैं गूंगा बन गया और मुंह न खोला,
क्योंकि यह काम तू ही ने किया है।
१० तू ने जो विपत्ति मुझ पर डाली है उसे मुझ से दूर कर दे,
क्योंकि मैं तो तेरे हाथ की मार से भस्म हुआ जाता हूं।
११ जब तू मनुष्य को अधर्म के कारण डपट डपटकर ताड़ना देता है,
तब तू उसकी सुन्दरता को पतिंगे की नाईं नाश करता है,
सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं॥ (सेला)
१२ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दोहाई पर कान लगा,
मेरा रोना सुनकर शांत न रह!
क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री की नाईं रहता हूं,
और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं।
१३ आह! इस से पहिले कि मैं यहां से चला जाऊं और न रह जाऊं,
मुझे बचा ले जिस से मैं प्रदीप्त जीवन प्राप्त करूं!

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

४० मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा,
और उस ने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी।

२ उस ने मुझे सत्यानाश के गड्हे और
दलदल की कीच में से उबारा,
और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके
मेरे पैरों को दृढ़ किया है।
३ और उस ने मुझे एक नया गीत
सिखाया जो हमारे परमेश्वर की
स्तुति का है।
बहुतेरे यह देखकर डरेंगे,
और यहोवा पर भरोसा रखेंगे॥
४ क्या ही धन्य है वह पुरुष, जो यहोवा
पर भरोसा करता है,
और अभिमानियों और मिथ्या की
ओर मुड़नेवालों की ओर मुंह न
फेरता हो।
५ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने बहुत
से काम किए हैं!
जो आश्चर्यकर्म और कल्पनाएं तू
हमारे लिये करता है वह बहुत सी
हैं,
तेरे तुल्य कोई नहीं!
मैं तो चाहता हूं कि खोलकर उनकी
चर्चा करूं,
परन्तु उनकी गिनती नहीं हो
सकती॥
६ मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न
नहीं होता
तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं।
होमबलि और पापबलि तू ने नहीं
चाहा।
७ तब मैं ने कहा, देख, मैं आया हूं;
क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा
ही लिखा हुआ है।
८ हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी
करने से प्रसन्न हूं,
और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण
में बनी है॥
९ मैं ने बड़ी सभा में धर्म के शुभ
समाचार का प्रचार किया है,
देख, मैं ने अपना मुंह बन्द नहीं किया,
हे यहोवा, तू इसे जानता है।
१० मैं ने तेरा धर्म मन ही में नहीं रखा,
मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे किए
हुए उद्धार की चर्चा की है,
मैं ने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी
सभा से गुप्त नहीं रखी॥
११ हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया
मुझ पर से न हटा ले,
तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तर
मेरी रक्षा होती रहे!
१२ क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा
हुआ हूं,
मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ
पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं उठा
सकता,
वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी
अधिक हैं, इसलिये मेरा हृदय
टूट गया॥
१३ हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा
ले!
हे यहोवा, मेरी सहायता के लिये
फुर्ती कर!
१४ जो मेरे प्राण की खोज में हैं,
वे सब लज्जित हों, और उनके मुंह
काले हों और वे पीछे हटाए और
निरादर किए जाएं
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं।
१५ जो मुझ से आहा, आहा, कहते हैं,
वे अपनी लज्जा के मारे विस्मित
हों॥
१६ परन्तु जितने तुझे ढूंढते हैं, वह सब
तेरे कारण हर्षित और आनन्दित
हों,

जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते
हैं, वे निरन्तर कहते रहें,
यहोवा की बड़ाई हो!
१७ मैं तो दीन और दरिद्र हूं,
तौभी प्रभु मेरी चिन्ता करता है।
तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है,
हे मेरे परमेश्वर विलम्ब न कर॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का
भजन)

४१ क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल
की सुधि रखता है!
विपत्ति के दिन यहोवा उसको
बचाएगा।
२ यहोवा उसकी रक्षा करके उसको
जीवित रखेगा, और वह पृथ्वी
पर भाग्यवान होगा।
तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न
छोड़।
३ जब वह व्याधि के मारे सेज पर
पड़ा हो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा,
तू रोग में उसके पूरे बिछौने को
उलटकर ठीक करेगा॥
४ मैं ने कहा, हे यहोवा, मुझ पर
अनुग्रह कर,
मुझ को चंगा कर, क्योंकि मैं ने तो
तेरे विरुद्ध पाप किया है।
५ मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई
करते हैं
वह कब मरेगा, और उसका नाम
कब मिटेगा?
६ और जब वह मुझ से मिलने को
आता है, तब वह व्यर्थ बातें बकता
है,
जब कि उसका मन अपने अन्दर
अधर्म की बातें संचय करता है,
और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता
है।
७ मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध
कानाफूसी करते हैं,
वे मेरे ही विरुद्ध होकर मेरी हानि
की कल्पना करते हैं॥
८ वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा
रोग लग गया है,
अब जो यह पड़ा है, तो फिर कभी
उठने का नहीं।
९ मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा
रखता था, जो मेरी रोटी खाता था,
उस ने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।
१० परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर अनुग्रह
करके मुझ को उठा ले,
कि मैं उनको बदला दूं!
११ मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं
हो पाता,
इस से मैं ने जान लिया है कि तू मुझ
से प्रसन्न है।
१२ और मुझे तो तू खराई से सम्भालता,
और सर्वदा के लिये अपने सम्मुख
स्थिर करता है॥
१३ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
आदि से अनन्तकाल तक धन्य है
आमीन, फिर आमीन॥

दूसरा भाग

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-
वंशियों का मश्कील)

४२ जैसे हरिणी नदी के जल के
लिये हाफती है,
वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये
हाफता हू।
२ जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं
प्यासा हूं,
मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना
मुह दिखाऊगा ?
३ मेरे आसू दिन और रात मेरा आहार
हुए हैं,
और लोग दिन भर मुझ से कहते
रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहा है ?
४ मैं भीड़ के सग जाया करता था,
मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ
उत्सव करनेवाली भीड के बीच
मे परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे
जाया करता था,
यह स्मरण करके मेरा प्राण *
शोकित हो जाता है।
५ हे मेरे प्राण, तू क्यो गिरा जाता
है ?
और तू अन्दर ही अन्दर क्यो व्याकुल
है ?
परमेश्वर पर आशा लगाए रह,
क्योकि मैं उसके दर्शन से उद्धार
पाकर
फिर उसका धन्यवाद करूगा ।।
६ हे मेरे परमेश्वर; मेरा प्राण मेरे
भीतर गिरा जाता है,
इसलिये मैं यर्दन के पास के देश से
और हर्मोन के पहाड़ो और मिसगार
की पहाड़ी के ऊपर मे तुझे स्मरण
करता हू।
७ तेरी जलधाराओ का शब्द सुनकर
जल, जल को पुकारता है,
तेरी सारी तरगो और लहरो मे मैं
डूब गया हू।
८ तौभी दिन को यहोवा अपनी शक्ति
और करुणा प्रगट करेगा,
और रात को भी मैं उसका गीत
गाऊगा,
और अपने जीवनदाता ईश्वर से
प्रार्थना करूगा ।।
९ मै ईश्वर से जो मेरी चट्टान है
कहूगा, तू मुझे क्यो भूल गया ?
मैं शत्रु के अन्धेर के मारे क्यो शोक
का पहिरावा पहिने हुए चलता
फिरता हू ?
१० मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते
है मानो उस से मेरी हड्डिया चूर
चूर होती है, मानो कटार से छिदी
जाती है,
क्योकि वे दिन भर मुझ से कहते
रहते है, तेरा परमेश्वर कहा है ?
११ हे मेरे प्राण तू क्यो गिरा जाता है ?
तू अन्दर ही अन्दर क्यो व्याकुल
है ?
परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योकि
वह मेरे मुख की चमक * और
मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका
धन्यवाद करूंगा ।।

* मूल में—मैं अपना जीव अपने ऊपर उण्डेलता हूं।

* उद्धार

४३ हे परमेश्वर, मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा मुकद्दमा लड, मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा।
२ क्योंकि हे परमेश्वर, तू ही मेरी शरण है, तू ने क्यों मुझे त्याग दिया है?
मैं शत्रु के अन्धेर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए क्यों फिरता रहूं?
३ अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज, वे मेरी अगुवाई करें,
वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान मे पहुचाए!
४ तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा,
उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुड है,
और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद करूंगा॥
५ हे मेरे प्राण तू क्यो गिरा जाता है?
तू अन्दर ही अन्दर क्यो व्याकुल है?
परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है,
मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-वंशियों का मश्कील)

४४ हे परमेश्वर हम ने अपने कानो से सुना, हमारे बापदादो ने हम से वर्णन किया है,
कि तू ने उनके दिनो में और प्राचीनकाल में क्या क्या काम किए हैं।
२ तू ने अपने हाथ से जातियो को निकाल दिया, और इनको बसाया,
तू ने देश देश के लोगो को दु:ख दिया, और इनको चारो ओर फैला दिया,
३ क्योंकि वे न तो अपनी तलवार के बल से इस देश के अधिकारी हुए,
और न अपने बाहुबल से,
परन्तु तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे प्रसन्न मुख के कारण जयवन्त हुए,
क्योंकि तू उनको चाहता था॥
४ हे परमेश्वर, तू ही हमारा महाराजा है,
तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है।
५ तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियो को ढकेलकर गिरा देंगे,
तेरे नाम के प्रताप से हम अपने विरोधियो को रौंदेंगे।
६ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूंगा,
और न अपनी तलवार के बल से बचूंगा।
७ परन्तु तू ही ने हम को द्रोहियो से बचाया है,
और हमारे बैरियो को निराश और लज्जित किया है।
८ हम परमेश्वर की बड़ाई दिन भर करते रहते हैं,
और सदैव तेरे नाम का धन्यवाद करते रहेंगे॥ (सेला)
९ तौभी तू ने अब हम को त्याग दिया और हमारा अनादर किया है,
और हमारे दलो के साथ आगे नहीं जाता।
१० तू हम को शत्रु के साम्हने से हटा देता है,

और हमारे बैरी मनमाने लूट मार
करते है।
११ तू ने हमे कसाई की भेडो के समान
कर दिया है,
और हम को अन्य जातियो मे तितर-
वितर किया है।
१२ तू अपनी प्रजा को सेंतमेंत बेच
डालता है,
परन्तु उनके मोल से तू धनी नही
होता ॥
१३ तू हमारे पडोसियो से हमारी नाम-
धराई कराता है,
और हमारे चारो ओर के रहनेवाले
हम से हंसी ठट्ठा करते हैं।
१४ तू हम को अन्यजातियो के बीच मे
उपमा ठहराता है,
और देश देश के लोग हमारे कारण
सिर हिलाते है।
दिन भर हमे तिरस्कार सहना पड़ता
है,
१५ और कलक लगाने और निन्दा करने-
वाले के बोल से,
१६ और शत्रु और बदला लेनेवालो के
कारण,
बुरा-भला कहनेवालो और निन्दा
करनेवालो के कारण ॥
१७ यह सब कुछ हम पर बीता तौभी
हम तुझे नही भूले,
न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात
किया है।
१८ हमारे मन न बहके,
न हमारे पैर तेरी बाट से मुडे,
१९ तौभी तू ने हमें गीदडो के स्थान मे
पीस डाला,
और हम को घोर अन्धकार में छिपा
दिया है ॥
२० यदि हम अपने परमेश्वर का नाम
भूल जाते,
वा किसी पराए देवता की ओर अपने
हाथ फैलाते,
२१ तो क्या परमेश्वर इसका विचार न
करता ?
क्योकि वह तो मन की गुप्त बातो
को जानता है।
२२ परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार
डाले जाते है,
और उन भेडो के समान समझे जाते है
जो वध होने पर है ॥
२३ हे प्रभु, जाग! तू क्यो सोता है ?
उठ! हम को सदा के लिये त्याग
न दे!
२४ तू क्यो अपना मुह छिपा लेता है ?
और हमारा दु ख और सताया जाना
भूल जाता है ?
२५ हमारा प्राण मिट्टी से लग गया,
हमारा पेट भूमि से सट गया है।
२६ हमारी सहायता के लिये उठ खडा
हो!
और अपनी करुणा के निमित्त हम
को छुडा ले ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये। शोशन्नीम में कोरहवंशियों का मश्कील। प्रेम प्रीति का गीत)

४५ मेरा हृदय एक सुन्दर विषय
की उमग से उमण्ड रहा है,
जो बात मै ने राजा के विषय रची
है उसको सुनाता हू,
मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी
बनी है ॥
२ तू मनुष्य की सन्तानो मे परम सुन्दर
है,

तेरे ओठो मे अनुग्रह भरा हुआ है,
इसलिये परमेश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीष दी है।
३ हे वीर, तू अपनी तलवार को जो तेरा विभव और प्रताप है अपनी कटि पर बान्ध !
४ सत्यता, नम्रता और धर्म के निमित्त अपने ऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हो,
तेरा दहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखलाए !
५ तेरे तीर तो तेज है,
तेरे साम्हने देश देश के लोग गिरेंगे,
राजा के शत्रुओ के हृदय उन से छिदेंगे ।।
६ हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन * सदा सर्वदा बना रहेगा,
तेरा राजदण्ड न्याय का है ।
७ तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से वैर रखा है ।
इस कारण परमेश्वर ने हा तेरे परमेश्वर ने
तुझ को तेरे साथियो से अधिक हर्ष के तेल से अभिषेक किया है ।
८ तेरे सारे वस्त्र, गन्धरस, अगर, और तेज से सुगन्धित है,
तू हाथीदात के मन्दिरो में तारवाले बाजो के कारण आनन्दित हुआ है ।
९ तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियो में राजकुमारिया भी है,
तेरी दहिनी ओर पटरानी, ओपीर के कुन्दन से विभूषित खडी है ।।
१० हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे,
अपने लोगो और अपने पिता के घर को भूल जा,
११ और राजा तेरे रूप की चाह करेगा ।
क्योकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर ।
१२ सोर की राजकुमारी भी भेट करने के लिये उपस्थित होगी,
प्रजा के धनवान लोग तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेगे ।।
१३ राजकुमारी महल में अति शोभायमान है,
उसके वस्त्र में सुनहले बूटे कढे हुए है,
१४ वह बूटेदार वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुचाई जाएगी ।
जो कुमारिया उसकी सहेलिया है,
वे उसके पीछे पीछे चलती हुई तेरे पास पहुचाई जाएगी ।
१५ वे आनन्दित और मगन होकर पहुचाई जाएगी,
और वे राजा के महल में प्रवेश करेगी ।।
१६ तेरे पितरो के स्थान पर तेरे पुत्र होगे,
जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा ।
१७ मै ऐसा करूगा, कि तेरी नाम की चर्चा पीढी से पीढी तक होती रहेगी,
इस कारण देश देश के लोग सदा सर्वदा तेरा धन्यवाद करते रहेंगे ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये, कोरह वंशियों का, अलामोत की राग पर एक गीत)

४६ परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है,
संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक ।

* वा तेरा सिंहासन परमेश्वर का है ।

२ इस कारण हम को कोई भय नही
चाहे पृथ्वी उलट जाए,
और पहाड समुद्र के बीच में डाल
दिए जाए,
३ चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए,
और पहाड उसकी बाढ से कांप
उठे ॥ (सेला)
४ एक नदी है जिसकी नहरो से परमेश्वर
के नगर मे
अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास
भवन मे आनन्द होता है।
५ परमेश्वर उस नगर के बीच मे है,
वह कभी टलने का नही,
पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता
करता है।
६ जाति जाति के लोग झल्ला उठे,
राज्य राज्य के लोग डगमगाने
लगे;
वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल
गई।
७ सेनाओ का यहोवा हमारे सग है,
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊचा
गढ है ॥ (सेला)
८ आओ, यहोवा के महाकर्म देखो,
कि उस ने पृथ्वी पर कैसा कैसा
उजाड किया है।
९ वह पृथ्वी की छोर तक लडाइयो को
मिटाता है;
वह धनुष को तोडता, और भाले को
दो टुकडे कर डालता है,
और रथों को आग में झोंक देता
है।
१० चुप हो जाओ, और जान लो, कि
मैं ही परमेश्वर हूं।
मैं जातियों में महान् हू,
मैं पृथ्वी भर में महान् हू!
११ सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊचा
गढ है ॥ (सेला)

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-
वंशियों का भजन)

४७ हे देश देश के सब लोगो,
तालिया बजाओ!
ऊंचे शब्द से परमेश्वर के लिये
जयजयकार करो!
२ क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भय-
योग्य है,
वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है।
३ वह देश के लोगो को हमारे सम्मुख
नीचा करता,
और अन्यजातियों को हमारे पांवों के
नीचे कर देता है।
४ वह हमारे लिये उत्तम भाग चुन
लेगा,
जो उसके प्रिय याकूब के घमण्ड
का कारण है ॥ (सेला)
५ परमेश्वर जयजयकार सहित,
यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ
ऊपर गया है।
६ परमेश्वर का भजन गाओ, भजन
गाओ!
हमारे महाराजा का भजन गाओ,
भजन गाओ!
७ क्योकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का
महाराजा है,
समझ बूझकर बुद्धि से भजन
गाओ
८ परमेश्वर जाति जाति पर राज्य
करता है;
परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर
विराजमान है।

९ राज्य राज्य के रईस इब्राहीम के
परमेश्वर की प्रजा होने के लिये
इकट्ठे हुए हैं।
क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर के
वश में हैं,
वह तो शिरोमणि है।

(गीत। भजन। कोरहवंशियों का)

४८ हमारे परमेश्वर के नगर में,
और अपने पवित्र पर्वत पर
यहोवा महान् और अति स्तुति के
योग्य है।
२ सिय्योन पर्वत ऊंचाई में सुन्दर और
सारी पृथ्वी के हर्ष का कारण है,
राजाधिराज का नगर उत्तरीय सिरे
पर है।
३ उसके महलों में परमेश्वर ऊंचा गढ़
माना गया है॥
४ क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्ठे हुए,
वे एक संग आगे बढ़ गए।
५ उन्हों ने आप ही देखा और देखते
ही विस्मित हुए,
वे घबराकर भाग गए।
६ वहां कपकपी ने उनको आ पकड़ा,
और जच्चा की सी पीड़ाएं उन्हें
होने लगीं।
७ तू पूर्वी वायु से
तर्शीश के जहाजों को तोड़ डालता
है।
८ सेनाओं के यहोवा के नगर में,
अपने परमेश्वर के नगर में, जैसा
हम ने सुना था, वैसा देखा भी है,
परमेश्वर उसको सदा दृढ़ और स्थिर
रखेगा॥ (सेला)
९ हे परमेश्वर हम ने तेरे मन्दिर के
भीतर
तेरी करुणा पर ध्यान किया है।
१० हे परमेश्वर तेरे नाम के योग्य
तेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक
होती है।
तेरा दहिना हाथ धर्म से भरा है,
११ तेरे न्याय के कामों के कारण
सिय्योन पर्वत आनन्द करे,
और यहूदा के नगर की पुत्रियां*
मगन हों।
१२ सिय्योन के चारों ओर चलो, और
उसकी परिक्रमा करो,
उसके गुम्मटों को गिन लो,
१३ उसकी शहरपनाह पर दृष्टि लगाओ,
उसके महलों को ध्यान से देखो,
जिस से कि तुम आनेवाली पीढ़ी के
लोगों से इस बात का वर्णन कर
सको।
१४ क्योंकि वह परमेश्वर सदा सर्वदा
हमारा परमेश्वर है,
वह मृत्यु तक हमारी अगुवाई
करेगा॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये कोरह-
वंशियों का भजन)

४९ हे देश देश के सब लोगो,
यह सुनो।
हे संसार के सब निवासियो, कान
लगाओ।
२ क्या ऊंच, क्या नीच
क्या धनी, क्या दरिद्र, कान लगाओ।
३ मेरे मुंह से बुद्धि की बातें निकलेंगी,
और मेरे हृदय की बातें समझ की
होंगी।
४ मैं नीतिवचन की ओर अपना कान
लगाऊंगा,

* मूल में—बेटियां।

इसलिये तू ने समझ लिया कि पर-
मेश्वर बिलकुल मेरे समान है।
परन्तु मै तुझे समझाऊगा, और तेरी
आखो के साम्हने सब कुछ अलग
अलग दिखाऊगा ॥
२२ हे ईश्वर को भूलनेवालो यह बात
भली भाति समझ लो,
कही ऐसा न हो कि मै तुम्हे फाड
डालू, और कोई छुडानेवाला न
हो।
२३ धन्यवाद के बलिदान का चढानेवाला
मेरी महिमा करता है,
और जो अपना चरित्र उत्तम रखता
है
उसको मै परमेश्वर का किया हुआ
उद्धार दिखाऊगा।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके पास इसलिये आया कि वह बतसेबा के पास गया था)

५१ हे परमेश्वर, अपनी करुणा
के अनुसार मुझ पर अनुग्रह
कर,
अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे
अपराधो को मिटा दे।
२ मुझे भली भाति धोकर मेरा अधर्म
दूर कर,
और मेरा पाप छुडाकर मुझे शुद्ध
कर।
३ मै तो अपने अपराधो को जानता हू,
और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि
मे रहता है।
४ मै ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया,
और जो तेरी दृष्टि मे बुरा है, वही
किया है,
ताकि तू बोलने मे धर्मी
और न्याय करने मे निष्कलक ठहरे।
५ देख, मै अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ,
और पाप के साथ अपनी माता के
गर्भ मे पडा ॥
६ देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न
होता है,
और मेरे मन* ही मे ज्ञान सिखाएगा।
७ जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मै पवित्र
हो जाऊगा,
मुझे धो, और मै हिम से भी अधिक
श्वेत बनूगा।
८ मुझे हर्ष और आनन्द की बाते सुना,
जिस से जो हड्डिया तू ने तोड डाली
है वह मगन हो जाए।
९ अपना मुख मेरे पापो की ओर से
फेर ले,
और मेरे सारे अधर्म के कामो को
मिटा डाल ॥
१० हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन
उत्पन्न कर,
और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये
सिरे मे उत्पन्न कर।
११ मुझे अपने साम्हने से निकाल न
दे,
और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से
अलग न कर।
१२ अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे
फिर से दे,
और उदार आत्मा देकर मुझे
सम्भाल ॥
१३ तब मै अपराधियो को तेरा मार्ग
सिखाऊगा,
और पापी तेरी ओर फिरेगे।

१४ हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुडा ले,
तब मैं तेरे धर्म का जयजयकार करने पाऊंगा ॥
१५ हे प्रभु, मेरा मुह खोल दे
तब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूगा।
१६ क्योंकि तू मेलबलि में प्रसन्न नही होता, नही तो मैं देता,
होमबलि से भी तू प्रसन्न नही होता।
१७ टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है,
हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नही जानता ॥
१८ प्रसन्न होकर सिय्योन की भलाई कर,
यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना,
१९ तब तू धर्म के बलिदानो से अर्थात् सर्वांग पशुओ के होमबलि से प्रसन्न होगा,
तब लोग तेरी वेदी पर बैल चढाएगे ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये, मश्कील पर दाऊद का भजन जब दोएग एदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अबीमेलेक के घर गया है)

५२ हे वीर, तू बुराई करने पर क्यो घमण्ड करता है?
ईश्वर की करुणा तो अनन्त है।
२ तेरी जीभ केवल दुष्टता गढती है,
सान धरे हुए अस्तुरे की नाई वह छल का काम करती है।
३ तू भलाई से बढकर बुराई मे,
और धर्म की बात से बढकर झूठ से प्रीति रखता है। (सेला)
४ हे छली जीभ
तू सब विनाश करनेवाली बातों से प्रसन्न रहती है ॥
५ निश्चय ईश्वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा,
वह तुझे पकडकर तेरे डेरे से निकाल देगा,
और जीवतों के लोक से तुझे उखाड डालेगा। (सेला)
६ तब धर्मी लोग इस घटना को देखकर डर जाएगे,
और यह कहकर उस पर हसेंगे, कि
७ देखो, यह वही पुरुष है जिस ने परमेश्वर को अपनी शरण नही माना,
परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था,
और अपने को दुष्टता मे दृढ करता रहा!
८ परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन मे हरे जलपाई के वृक्ष के समान हू।
मैं ने परमेश्वर की करुणा पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा रखा है।
९ मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूगा,
क्योंकि तू ही ने यह काम किया है।
मैं तेरे ही नाम की बाट जोहता रहूगा,
क्योंकि यह तेरे पवित्र भक्तो के साम्हने उत्तम है ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये महलत की राग पर दाऊद का मश्कील)

५३ मूढ ने अपने मन में कहा है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।
वे बिगड गए, उन्हो ने कुटिलता के घिनौने काम किए है,
कोई सुकर्मी नहीं ॥
२ परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यो के ऊपर दृष्टि की

मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त
बात प्रकाशित करूंगा ॥
५ विपत्ति के दिनों में जब मैं अपने अडंगा
मारनेवालों की बुराइयों से घिरूं,
तब मैं क्यों डरूं ?
६ जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते,
और अपने धन की बहुतायत पर
फूलते हैं,
७ उन में से कोई अपने भाई को किसी
भांति छुड़ा नहीं सकता है,
और न परमेश्वर को उसकी सन्ती
प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है,
८ (क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती
भारी है
वह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे) ।
९ कोई ऐसा नहीं जो सदैव जीवित रहे,
और कब्र को न देखे ॥
१० क्योंकि देखने में आता है, कि बुद्धिमान
भी मरते हैं,
और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी
दोनों नाश होते हैं,
और अपनी सम्पत्ति औरों के लिये
छोड़ जाते हैं ।
११ वे मन ही मन यह सोचते हैं, कि
उनका घर सदा स्थिर रहेगा,
और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक
बने रहेंगे,
इसलिये वे अपनी अपनी भूमि का
नाम अपने अपने नाम पर रखते हैं ।
१२ परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी
स्थिर नहीं रहता,
वह पशुओं के समान होता है, जो मर
मिटते हैं ॥
१३ उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है,
तौभी उनके बाद लोग उनकी बातों
से प्रसन्न होते हैं । (सेला)
१४ वे अधोलोक की मानो भेड़-बकरियां
ठहराए गए हैं,
मृत्यु उनका गड़ेरिया ठहरी,
और बिहान को सीधे लोग उन पर
प्रभुता करेंगे,
और उनका सुन्दर रूप अधोलोक
का कौर हो जाएगा और उनका
कोई आधार न रहेगा ।
१५ परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधो-
लोक के वश से छुड़ा लेगा,
क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर
अपनाएगा ॥ (सेला)
१६ जब कोई धनी हो जाए और उसके
घर का विभव बढ़ जाए,
तब तू भय न खाना ।
१७ क्योंकि वह मर कर कुछ भी साथ
न ले जाएगा,
न उसका विभव उसके साथ कब्र में
जाएगा ।
१८ चाहे वह जीते जी अपने आप को
धन्य कहता रहे,
(जब तू अपनी भलाई करता है, तब
वे लोग तेरी प्रशंसा करते हैं)
१९ तौभी वह अपने पुरखाओं के समाज
में मिलाया जाएगा,
जो कभी उजियाला न देखेंगे ।
२० मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हो परन्तु
यदि वे समझ नहीं रखते, तो
वे पशुओं के समान हैं जो मर
मिटते हैं ॥

(आसाप का भजन)

५० ईश्वर परमेश्वर यहोवा ने
कहा है,
और उदयाचल से लेकर अस्ताचल
तक पृथ्वी के लोगों को बुलाया है ।

२ सिय्योन से, जो परम सुन्दर है,
परमेश्वर ने अपना तेज दिखाया है।
३ हमारा परमेश्वर आएगा और चुपचाप
न रहेगा,
आग उसके आगे आगे भस्म करती
जाएगी,
और उसके चारो ओर बडी आंधी
चलेगी।
४ वह अपनी प्रजा का न्याय करने के
लिये
ऊपर के आकाश को और पृथ्वी को
भी पुकारेगा
५ मेरे भक्तो को मेरे पास इकट्ठा करो,
जिन्हो ने बलिदान चढाकर मुझ से
वाचा बान्धी है।
६ और स्वर्ग उसके धर्मी होने का
प्रचार करेगा
क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी
है ॥ (सेला)
७ हे मेरी प्रजा, सुन, मैं बोलता हू,
और हे इस्राएल, मैं तेरे विषय साक्षी
देता हू।
परमेश्वर तेरा परमेश्वर मैं ही हू।
८ मैं तुझ पर तेरे मेलबलियो के विषय
दोष नही लगाता,
तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये
चढते हैं।
९ मैं न तो तेरे घर से बैल
न तेरे पशुशालो से बकरे ले लूगा।
१० क्योंकि वन के सारे जीवजन्तु
और हजारो पहाडो के जानवर मेरे
ही हैं।
११ पहाडो के सब पक्षियो को मैं जानता
हू,
और मैदान पर चलने फिरनेवाले
जानवर मेरे ही हैं॥

१२ यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न
कहता,
क्योंकि जगत् और जो कुछ उस में
है वह मेरा है।
१३ क्या मैं बैल का मास खाऊ,
वा बकरो का लोहू पीऊ?
१४ परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान
चढा,
और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें
पूरी कर,
१५ और सकट के दिन मुझे पुकार,
मैं तुझे छुडाऊगा, और तू मेरी महिमा
करने पाएगा॥
१६ परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता
है
तुझे मेरी विधियो का वर्णन करने से
क्या काम?
तू मेरी वाचा की चर्चा क्यो करता
है?
१७ तू तो शिक्षा से बैर करता,
और मेरे वचनो को तुच्छ जानता
है।
१८ जब तू ने चोर को देखा, तब उसकी
सगति से प्रसन्न हुआ,
और परस्त्रीगामियो के साथ भागी
हुआ॥
१९ तू ने अपना मुह बुराई करने के
लिये खोला,
और तेरी जीभ छल की बातें गढती
है।
२० तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध
बोलता,
और अपने सगे भाई की चुगली
खाता है।
२१ यह काम तू ने किया, और मैं चुप
रहा,

ताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवाला
वा परमेश्वर को पूछनेवाला है कि नही ।।
३ वे सब के सब हट गए, सब एक साथ बिगड़ गए,
कोई सुकर्मी नही, एक भी नही ।।
क्या उन सब अनर्थकारियो को कुछ भी ज्ञान नही
४ जो मेरे लोगो को ऐसे खाते है जैसे रोटी
और परमेश्वर का नाम नही लेते ?
५ वहा उन पर भय छा गया जहा भय का कोई कारण न था ।
क्योकि यहोवा ने उनकी हड्डियो को, जो तेरे विरुद्ध छावनी डाले पडे थे, तितर बितर कर दिया,
तू ने तो उन्हे लज्जित कर दिया इसलिये कि परमेश्वर ने उनको निकम्मा ठहराया है ।।
६ भला होता कि इस्राएल का पूरा उद्धार सिय्योन से निकलता !
जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्धुआई से लौटा ले आएगा
तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये, दाऊद का मश्कील तारवाले बाजों के साथ, जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता ?)

५४ हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर,
और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।
२ हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन ले,
मेरे मुह के वचनो की ओर कान लगा ।।
३ क्योकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे है,
और बलात्कारी मेरे प्राण के ग्राहक हुए है;
उन्हो ने परमेश्वर को अपने सम्मुख नही जाना ।। (सेला)
४ देखो, परमेश्वर मेरा सहायक है,
प्रभु मेरे प्राण के सम्भालनेवालो के संग है ।
५ वह मेरे द्रोहियो की बुराई को उन्ही पर लौटा देगा,
हे परमेश्वर, अपनी सच्चाई के कारण उन्हे विनाश कर ।।
६ मै तुझे स्वेच्छाबलि चढाऊगा,
हे यहोवा, मै तेरे नाम का धन्यवाद करूगा, क्योकि यह उत्तम है ।
७ क्योकि तू ने मुझे सब दुखो से छुड़ाया है,
और मै अपने शत्रुओ पर दृष्टि करके सन्तुष्ट हुआ हू ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ दाऊद का मश्कील)

५५ हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा,
और मेरी गिड़गिड़ाहट से मुह न मोड़ * ।
२ मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे,
मै चिन्ता के मारे छटपटाता हू और व्याकुल रहता हू ।
३ क्योकि शत्रु कोलाहल और दुष्ट उपद्रव कर रहे है,
वे मुझ पर दोषारोपण करते है,
और क्रोध में आकर मुझे सताते है ।।

* मूल में—छिप न जा।

४ मेरा मन भीतर ही भीतर संकट में है,
और मृत्यु का भय मुझ में समा गया
है।
५ भय और कंपकंपी ने मुझे पकड़
लिया है,
और भय के कारण मेरे रोए रोए
खड़े हो गए हैं।
६ और मैं ने कहा, भला होता कि मेरे
कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़
जाता और विश्राम पाता!
७ देखो, फिर तो मैं उड़ते उड़ते दूर
निकल जाता और जंगल में बसेरा
लेता, (सेला)
८ मैं प्रचण्ड बयार और आन्धी के
झोंके से बचकर किसी शरण स्थान
में भाग जाता॥
९ हे प्रभु, उनको सत्यानाश कर, और
उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे,
क्योंकि मैं ने नगर में उपद्रव और
झगड़ा देखा है।
१० रात दिन वे उसकी शहरपनाह पर
चढ़कर चारों ओर घूमते हैं,
और उसके भीतर दुष्टता और उत्पात
होता है।
११ उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला
है,
और अन्धेर, अत्याचार और छल
उसके चौक से दूर नहीं होते॥
१२ जो मेरी नामधराई करता है वह शत्रु
नहीं था,
नहीं तो मैं उसको सह लेता,
जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है वह
मेरा बैरी नहीं है,
नहीं तो मैं उस से छिप जाता।
१३ परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी
बराबरी का मनुष्य
मेरा परममित्र और मेरी जान पहचान
का था।
१४ हम दोनों आपस में कैसी मीठी मीठी
बातें करते थे,
हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन
को जाते थे।
१५ उनको मृत्यु अचानक आ दबाए,
वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाए,
क्योंकि उनके घर और मन दोनों में
बुराइयां और उत्पात भरा है॥
१६ परन्तु मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा,
और यहोवा मुझे बचा लेगा।
१७ सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों
पहर मैं दोहाई दूंगा और कराहता
रहूंगा।
और वह मेरा शब्द सुन लेगा।
१८ जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उस
से उस ने मुझे कुशल के साथ बचा
लिया है।
उन्हों ने तो बहुतों को संग लेकर मेरा
साम्हना किया था।
१९ ईश्वर जो आदि से विराजमान है यह
सुनकर उनको उत्तर देगा।
(सेला)
ये वे हैं जिन में कोई परिवर्तन नहीं,
और उन में परमेश्वर का भय है ही
नहीं॥
२० उस ने अपने मेल रखनेवालों पर भी
हाथ छोड़ा है,
उस ने अपनी वाचा को तोड़ दिया है।
२१ उसके मुंह की बातें तो मक्खन सी
चिकनी थी
परन्तु उसके मन में लड़ाई की बातें
थीं,
उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे
परन्तु नंगी तलवारें थीं॥

२२ अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह
तुझे सम्भालेगा,
वह धर्मी को कभी टलने न
देगा ।।
२३ परन्तु हे परमेश्वर, तू उन लोगो को
विनाश के गड्हे मे गिरा देगा,
हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी
आयु तक भी जीवित न रहेंगे ।
परन्तु मै तुझ पर भरोसा रखे रहूंगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये। योनतेलेसद्दोकीम * में दाऊद का मिक्ताम। जब पलिश्तियों ने उसको गत नगर मे पकड़ा था)

५६ हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह
कर, क्योकि मनुष्य मुझे
निगलना चाहते हैं,
वे दिन भर लडकर मुझे सताते हैं ।
२ मेरे द्रोही दिन भर मुझे निगलना
चाहते है,
क्योकि जो लोग अभिमान करके मुझ
से लडते है वे बहुत है ।
३ जिस समय मुझे डर लगेगा,
मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा ।
४ परमेश्वर की सहायता से मैं उसके
वचन की प्रशंसा करूंगा,
परमेश्वर पर मैं ने भरोसा रखा है,
मै नही डरूंगा ।
कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता
है ?
५ वे दिन भर मेरे वचनो को, उलटा
अर्थ लगा लगाकर मरोडते रहते
हैं,
उनकी सारी कल्पनाए मेरी ही बुराई
करने की होती हैं ।
६ वे सब मिलकर इकट्ठे होते है और
छिपकर बैठते है,
वे मेरे कदमो को देखते भालते है
मानो वे मेरे प्राणो की घात मे ताक
लगाए बैठे हों ।
७ क्या वे बुराई करके भी बच
जाएंगे ?
हे परमेश्वर, अपने क्रोध से देश देश
के लोगो को गिरा दे ।
८ तू मेरे मारे मारे फिरने का हिसाब
रखता है,
तू मेरे आंसुओ को अपनी कुप्पी मे
रख ले ।
क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक मे
नही है ?
९ तब जिस समय मैं पुकारूंगा, उसी
समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे ।
यह मैं जानता हू, कि परमेश्वर
मेरी ओर है ।
१० परमेश्वर की सहायता से मैं उसके
वचन की प्रशंसा करूंगा,
यहोवा की सहायता से मैं उसके
वचन की प्रशंसा करूंगा ।
११ मै ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है,
मैं न डरूंगा ।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है ?
१२ हे परमेश्वर, तेरी मन्नतो का भार
मुझ पर बना है,
मैं तुझ को धन्यवाद बलि चढाऊंगा ।
१३ क्योकि तू ने मुझ को मृत्यु से बचाया
है,
तू ने मेरे पैरो को भी फिसलने से
न बचाया,
ताकि मैं ईश्वर के साम्हने जीवतो
के [illegible] मे चलूं फिरूं ? ।।

* अर्थात् दूर देशवालो की मौनी कबूतरी।

(प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत* मे दाऊद का मिक्ताम, जब वह शाऊल से भागकर गुफा मे छिप गया था)

५७ हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर, मुझ पर अनुग्रह कर,
क्योकि मै तेरा शरणागत हू,
और जब तक ये आपत्तिया निकल न जाए,
तब तक मै तेरे पखो के तले शरण लिए रहूगा।
२ मै परम प्रधान परमेश्वर को पुकारूगा,
ईश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।
३ ईश्वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा,
जब मेरा निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो। (सेला)
परमेश्वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा॥
४ मेरा प्राण सिहो के बीच में है,
मुझे जलते हुओ के बीच में लेटना पडता है, अर्थात्
ऐसे मनुष्यो के बीच में जिन के दात बर्छी और तीर है,
और जिनकी जीभ तेज तलवार है॥
५ हे परमेश्वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोमय है,
तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!
६ उन्हो ने मेरे पैरो के लिये जाल लगाया है,
मेरा प्राण ढला जाता है।
उन्हो ने मेरे आगे गडहा खोदा,
परन्तु आप ही उस मे गिर पडे॥ (सेला)
७ हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है,
मै गाऊगा वरन भजन कीर्तन करूगा।
८ हे मेरी आत्मा* जाग जा! हे सारगी और वीणा जाग जाओ!
मै भी पौ फटते ही जाग उठूगा।
९ हे प्रभु, मै देश के लोगो के बीच तेरा धन्यवाद करूगा,
मै राज्य राज्य के लोगो के बीच में तेरा भजन गाऊगा।
१० क्योकि तेरी करुणा स्वर्ग तक बडी है,
और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुचती है॥
११ हे परमेश्वर, तू स्वर्ग के ऊपर अति महान है!
तेरी महिमा सारी पथ्वी के ऊपर फैल जाए!

(प्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत† मे दाऊद का मिक्ताम)

५८ हे मनुष्यो, क्या तुम सचमुच धर्म की बात बोलते हो?
और हे मनुष्यवंशियो क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो?
२ नही, तुम मन ही मन में कुटिल काम करते हो,
तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो‡॥

* अर्थात् नाश न कर।

* मूल में—हे मेरी महिमा।
† अर्थात् नाश न कर।
‡ मूल में—तुम अपने हाथों का उपद्रव देश में तौल देते हो।

३ दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते
हैं,
वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते
हुए भटक जाते हैं।
४ उन में सर्प का सा विष है,
वे उस नाग के समान हैं, जो सुनना
नही चाहता,
५ और सपेरा कैसी ही निपुणता से
क्यों न मंत्र पढे,
तौभी उसकी नही सुनता ॥
६ हे परमेश्वर, उनके मुह मे से दांतों
को तोड दे,
हे यहोवा उन जवान सिंहो की दाढो
को उखाड डाल !
७ वे घुलकर बहते हुए पानी के समान
हो जाए,
जब वे अपने तीर चढाए, तब तीर
मानो दो टुकडे हो जाए।
८ वे घोघे के समान हो जाए जो घुलकर
नाश हो जाता है,
और स्त्री के गिरे हुए गर्भ के समान
हो जिस ने सूरज को देखा ही
नही।
९ उस से पहिले कि तुम्हारी हाडियो मे
काटो की आच लगे,
हरे व जले, दोनो को वह बवडर
से उडा ले जाएगा ॥
१० धर्मी ऐसा पलटा देखकर आनन्दित
होगा,
वह अपने पाव दुष्ट के लोहू में
धोएगा ॥
११ तब मनुष्य कहने लगेंगे, निश्चय धर्मी
के लिये फल है;
निश्चय परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर
न्याय करता है ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये अल-
तशहेत* दाऊद का मिक्ताम, जब
शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का
पहरा दिया कि उसको मार डालें)

५९ हे मेरे परमेश्वर, मुझ को
शत्रुओं से बचा,
मुझे ऊचे स्थान पर रखकर मेरे
विरोधियो से बचा,
२ मुझ को बुराई करनेवालो के हाथ
से बचा,
और हत्यारो से मेरा उद्धार कर ॥
३ क्योकि देख, वे मेरी घात में लगे हैं;
हे यहोवा, मेरा कोई दोष वा पाप
नही है, तौभी बलवन्त लोग मेरे
विरुद्ध इकट्ठे होते है।
४ वह मुझ निर्दोष पर दौडे दौड़कर
लड़ने को तैयार हो जाते हैं ॥
मुझ से मिलने के लिये जाग उठ,
और यह देख !
५ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
हे इस्राएल के परमेश्वर सब अन्य-
जातिवालो को दण्ड देने के लिये
जाग,
किसी विश्वासघाती अत्याचारी पर
अनुग्रह न कर ॥ (सेला)
६ वे लोग साझ को लौटकर कुत्ते की
नाईं गुर्राते है,
और नगर के चारो ओर घूमते है।
देख वे डकारते है,
७ उनके मुह के भीतर तलवारे है,
क्योकि वे कहते है, कौन सुनता
है ?
८ परन्तु हे यहोवा, तू उन पर हसेगा;
तू सब अन्य जातियो को ठट्ठों में
उड़ाएगा।

* अर्थात् नाश न कर।

९ हे मेरे बल, मुझे तेरी ही आस होगी,
क्योंकि परमेश्वर मेरा ऊचा गढ है ।।
१० परमेश्वर करुणा करता हुआ मुझ से मिलेगा,
परमेश्वर मेरे द्रोहियो के विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा * ।।
११ उन्हें घात न कर, न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए,
हे प्रभु, हे हमारी ढाल !
अपनी शक्ति से उन्हें तितर बितर कर, उन्हें दबा दे ।
१२ वह अपने मुह के पाप, और ओठो के वचन,
और शाप देने, और झूठ बोलने के कारण,
अभिमान में फसे हुए पकडे जाए ।
१३ जलजलाहट में आकर उनका अन्त कर, उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाए
तब लोग जानेंगे कि परमेश्वर याकूब पर,
वरन पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता है ।। (सेला)
१४ वे साझ को लौटकर कुत्ते की नाई गुर्राए,
और नगर के चारो ओर घूमे ।
१५ वे टुकडे के लिये मारे मारे फिरें,
और तृप्त न होने पर रात भर वही ठहरे रहें ।।
१६ परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊगा,
और भोर को तेरी करुणा का जय-जयकार करूगा ।
क्योंकि तू मेरा ऊचा गढ है,
और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है ।
१७ हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊगा,
क्योंकि हे परमेश्वर, तू मेरा ऊचा गढ और मेरा करुणामय परमेश्वर है ।।

* मूल में—मेरे द्रोहियों को मुझे दिखाएगा।

(प्रधान बजानेवाले के लिये। दाऊद का मिक्ताम शूशनेदूत * में। शिक्षादायक। जब वह अरम्नहरैम और अरमसोबा से लड़ता था, और योआब ने लौटकर लोन की तराई में एदूमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये)

६० हे परमेश्वर तू ने हम को त्याग दिया,
और हम को तोड डाला है,
तू क्रोधित हुआ, फिर हम को ज्यो का त्यो कर दे ।
२ तू ने भूमि को कपाया और फाड डाला है,
उसके दरारो को भर दे †, क्योंकि वह डगमगा रही है ।
३ तू ने अपनी प्रजा को कठिन दुःख भुगताया,
तू ने हमें लडखडा देनेवाला दाखमधु पिलाया है ।।
४ तू ने अपने डरवैयो को झण्डा दिया है,
कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए । (सेला)
५ तू अपने दहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन ले
कि तेरे प्रिय छुडाए जाए ।।
६ परमेश्वर पवित्रता के साथ बोला है,
मैं प्रफुल्लित हूगा,

* अर्थात साक्षी के सोसन।
† मूल में—चगा कर।

मैं शकेम को बांट लूंगा, और सुक्कोत
की तराई को नपवाऊंगा ।
७ गिलाद मेरा है, मनश्शे भी मेरा
है,
और एप्रैम मेरे सिर का टोप,
यहूदा मेरा राजदण्ड है ।
८ मोआब मेरे धोने का पात्र है,
मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूंगा,
हे पलिश्तीन मेरे ही कारण जय-
जयकार कर ।।
९ मुझे गढ़वाले नगर में कौन
पहुंचाएगा ?
एदोम तक मेरी अगुवाई किस ने
की है ?
१० हे परमेश्वर, क्या तू ने हम को त्याग
नहीं दिया ?
हे परमेश्वर, तू हमारी सेना के साथ
नहीं जाता ।
११ द्रोही के विरुद्ध हमारी सहायता कर,
क्योंकि मनुष्य का किया हुआ छुटकारा
व्यर्थ होता है ।
१२ परमेश्वर की सहायता से हम वीरता
दिखाएंगे,
क्योंकि हमारे द्रोहियों को वही
रौंदेगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले
बाजे के साथ दाऊद का भजन)

६१ हे परमेश्वर, मेरा चिल्लाना
सुन,
मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे ।
२ मूर्छा खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से
भी तुझे पुकारूंगा,
जो चट्टान मेरे लिये ऊंची है, उस पर
मुझ को ले चल,
३ क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है,
और शत्रु से बचने के लिये ऊंचा
गढ़ है ।।
४ मैं तेरे तम्बू में युगानुयुग बना
रहूंगा ।
मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिए
रहूंगा । (सेला)
५ क्योंकि हे परमेश्वर, तू ने मेरी मन्नतें
सुनीं,
जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा
भाग तू ने मुझे दिया है ।।
६ तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा,
उसके वर्ष पीढ़ी पीढ़ी के बराबर
होंगे ।
७ वह परमेश्वर के सम्मुख सदा बना
रहेगा,
तू अपनी करुणा और सच्चाई को
उसकी रक्षा के लिये ठहरा रख ।
८ और मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन
गा गाकर
अपनी मन्नतें हर दिन पूरी किया
करूंगा ।।

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का
भजन । यदूतून की राग पर)

६२ सचमुच मैं चुपचाप होकर
परमेश्वर की ओर मन लगाए
हूं,
मेरा उद्धार उसी से होता है ।
२ सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा
उद्धार है,
वह मेरा गढ़ है, मैं बहुत न डिगूंगा ।।
३ तुम कब तक एक पुरुष पर धावा
करते रहोगे,
कि सब मिलकर उसका घात करो ?
वह तो झुकी हुई भीत वा गिरते
हुए बाड़े के समान है ।

४ सचमुच वे उसको, उसके ऊंचे पद से
गिराने की सम्मति करते हैं,
वे झूठ से प्रसन्न रहते हैं।
मुंह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन
में कोसते हैं॥ (सेला)
५ हे मेरे मन, परमेश्वर के साम्हने
चुपचाप रह,
क्योंकि मेरी आशा उसी से है।
६ सचमुच वही मेरी चट्टान, और मेरा
उद्धार है,
वह मेरा गढ़ है, इसलिये मैं न
डिगूंगा।
७ मेरा उद्धार और मेरी महिमा का
आधार परमेश्वर है,
मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा शरण-
स्थान परमेश्वर है॥
८ हे लोगो, हर समय उस पर भरोसा
रखो,
उस से * अपने अपने मन की बातें
खोलकर कहो †,
परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।
(सेला)
९ सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और
बड़े लोग मिथ्या ही हैं,
तौल में वे हलके निकलते हैं,
वे सब के सब सांस से भी हलके हैं।
१० अन्धेर करने पर भरोसा मत रखो,
और लूट पाट करने पर मत फूलो,
चाहे धन सम्पत्ति बढ़े, तौभी उस
पर मन न लगाना॥
११ परमेश्वर ने एक बार कहा है,
और दो बार मैं ने यह सुना है
कि सामर्थ्य परमेश्वर का है।
१२ और हे प्रभु, करुणा भी तेरी है।
क्योंकि तू एक एक जन को उसके
काम के अनुसार फल देता है॥

(दाऊद का भजन। जब वह यहूदा
के जंगल में था)

६३ हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है,
मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा,
सूखी और निर्जल ऊसर * भूमि
पर,
मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर
तेरा अति अभिलाषी है।
२ इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में
तुझ पर दृष्टि की,
कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को
देखूं।
३ क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी
उत्तम है,
मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।
४ इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य
कहता रहूंगा,
और तेरा नाम लेकर अपने हाथ
उठाऊंगा॥
५ मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने
भोजन से तृप्त होगा,
और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति
करूंगा।
६ जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण
करूंगा,
तब रात के एक एक पहर में तुझ
पर ध्यान करूंगा,
७ क्योंकि तू मेरा सहायक बना है,
इसलिये मैं तेरे पंखों की छाया में
जयजयकार करूंगा।
८ मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता
है,

* मूल में—उसके साम्हने।
† मूल में—उण्डेल दो।

* मूल में—थकी।

और मुझे तो तू अपने दहिने हाथ
के थाम रखता है ॥
९ परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी है,
वे पृथ्वी के नीचे स्थानो मे जा
पडेंगे,
१० वे तलवार से मारे जाएगे,
और गीदडो का आहार हो जाएगे।
११ परन्तु राजा परमेश्वर के कारण
आनन्दित होगा,
जो कोई ईश्वर की शपथ खाए, वह
बडाई करने पाएगा,
परन्तु झूठ बोलनेवालो का मुह बन्द
किया जाएगा ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का
भजन)

६४ हे परमेश्वर, जब मैं तेरी
दोहाई दू, तब मेरी सुन,
शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे
प्राण की रक्षा कर।
२ कुकर्मियो की गोष्ठी से,
और अनर्थकारियो के हुल्लड से मेरी
आड हो।
३ उन्हो ने अपनी जीभ को तलवार की
नाई तेज़ किया है,
और अपने कडवे वचनो के तीरो को
चढाया है;
४ ताकि छिपकर खरे मनुष्य को मारे,
वे निडर होकर उसको अचानक
मारते भी है।
५ वे बुरे काम करने को हियाव बान्धते
हैं,
वे फन्दे लगने के विषय बातचीत
करते है,
और कहते हैं, कि हम को कौन
देखेगा ?
६ वे कुटिलता की युक्ति निकालते है,
और कहते हैं, कि हम ने पक्की युक्ति
खोजकर निकाली है।
क्योकि मनुष्य का मन और हृदय
अथाह है।
७ परन्तु परमेश्वर उन पर तीर
चलाएगा,
वे अचानक घायल हो जाएगे।
८ वे अपने ही वचनो के कारण ठोकर
खाकर गिर पडेंगे,
जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब
अपने अपने सिर हिलाएगे।
९ तब सारे लोग डर जाएगे,
और परमेश्वर के कामो का बखान
करेंगे,
और उसके कार्यक्रम को भली भाति
समझेंगे ॥
१० धर्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित
होकर उसका शरणागत होगा,
और सब सीधे मनवाले बडाई करेंगे ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का
भजन, गीत)

६५ हे परमेश्वर, सिय्योन मे
स्तुति तेरी बाट जोहती है,
और तेरे लिये मन्नते पूरी की जाएगी।
२ हे प्रार्थना के सुननेवाले !
सब प्राणी तेरे ही पास आएगे।
३ अधर्म के काम मुझ पर प्रबल हुए है;
हमारे अपराधो को तू ढाप देगा।
४ क्या ही धन्य है वह, जिसको तू
चुनकर अपने समीप आने देता है,
कि वह तेरे आगनो मे वास करे।
हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र
मन्दिर के
उत्तम उत्तम पदार्थों से तृप्त होगे ॥

५ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर,
हे पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के
और दूर के समुद्र पर के रहनेवालों के
आधार,
तू धर्म से किए हुए भयानक कामों
के द्वारा हमारा मुंह मांगा वर
देगा,
६ तू जो पराक्रम का फेंटा कसे हुए,
अपनी सामर्थ्य से पर्वतों को स्थिर
करता है,
७ तू जो समुद्र का महाशब्द, उसकी
तरंगों का महाशब्द,
और देश देश के लोगों का कोलाहल
शान्त करता है,
८ इसलिये दूर दूर देशों के रहनेवाले
तेरे चिन्ह देखकर डर गए हैं,
तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों
से जयजयकार कराता है ॥
९ तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता
है,
तू उसको बहुत फलदायक करता
है,
परमेश्वर की नहर जल से भरी
रहती है,
तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के
लिये अन्न को तैयार करता है।
१० तू रेघारियों को भली भांति सींचता
है,
और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता
है,
तू भूमि को मेंह से नरम करता
है,
और उसकी उपज पर आशीष देता
है।
११ अपनी भलाई से भरे हुए वर्ष पर
तू ने मानो मुकुट धर दिया है,
तेरे मार्गों में उत्तम उत्तम पदार्थ
पाए जाते हैं *।
१२ वे जंगल की चराइयों में पाए जाते
हैं,
और पहाड़ियां हर्ष का फेंटा बान्धे
हुए हैं ॥
१३ चराइयां भेड़-बकरियों से भरी हुई
हैं,
और तराइयां अन्न से ढपी हुई हैं,
वे जयजयकार करतीं और गातीं भी
हैं ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये गीत, भजन)

६६ हे सारी पृथ्वी के लोगो,
परमेश्वर के लिये जयजयकार
करो,
२ उसके नाम की महिमा का भजन
गाओ,
उसकी स्तुति करते हुए, उसकी महिमा
करो।
३ परमेश्वर से कहो, कि तेरे काम क्या
ही भयानक हैं!
तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु
तेरी चापलूसी करेंगे।
४ सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत्
करेंगे,
और तेरा भजन गाएंगे,
वे तेरे नाम का भजन गाएंगे ॥
(सेला)
५ आओ परमेश्वर के कामों को देखो,
वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों
को भययोग्य देख पड़ता है।
६ उस ने समुद्र को सूखी भूमि कर
डाला,

* मूल में—चिकनाई टपकती है।

वे महानद मे से पांव पांव पार उतरे।
वहां हम उसके कारण आनन्दित हुए,
७ जो अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है,
और अपनी आंखों से जाति जाति को ताकता है।
हठीले अपने सिर न उठाए॥
(सेला)
८ हे देश देश के लोगो, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो,
और उसकी स्तुति मे राग उठाओ,
९ जो हम को जीवित रखता है,
और हमारे पांव को टलने नहीं देता।
१० क्योंकि हे परमेश्वर तू ने हम को जांचा,
तू ने हमें चान्दी की नाईं ताया था।
११ तू ने हम को जाल मे फंसाया,
और हमारी कटि पर भारी बोझ बान्धा था,
१२ तू ने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया,
हम आग और जल मे होकर गए,
परन्तु तू ने हम को उबार के सुख से भर दिया है॥
१३ मैं होमबलि लेकर तेरे भवन मे आऊंगा,
मैं उन मन्नतों को तेरे लिये पूरी करूंगा,
१४ जो मैं ने मुंह * खोलकर मानीं,
और संकट के समय कही थीं।
१५ मैं तुझे मोटे पशुओं के होमबलि,
मेंढ़ों की चर्बी के धूप समेत चढ़ाऊंगा,
मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊंगा॥
(सेला)

* मूल में—होंठ।

१६ हे परमेश्वर के सब डरवैयो आकर सुनो
मैं बताऊंगा कि उस ने मेरे लिये क्या क्या किया है।
१७ मैं ने उसको पुकारा,
और उसी का गुणानुवाद मुझ से हुआ।
१८ यदि मैं मन मे अनर्थ बात सोचता,
तो प्रभु मेरी न सुनता।
१९ परन्तु परमेश्वर ने तो सुना है,
उस ने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है॥
२० धन्य है परमेश्वर,
जिस ने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की, और
न मुझ से अपनी करुणा दूर कर दी है।

(प्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजों के साथ भजन, गीत)

६७ परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे,
और हम को आशीष दे,
वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए *। (सेला)
२ जिस से तेरी गति पृथ्वी पर,
और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों मे जाना जाए।
३ हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें,
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें॥
४ राज्य राज्य के लोग आनन्द करें,
और जयजयकार करें,

* मूल में—हमारे साथ अपना मुख चमकाए।

क्योंकि तू देश देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा,
और पृथ्वी के राज्य राज्य के लोगों की अगुवाई करेगा ॥ (सेला)
५ हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें,
देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें ॥
६ भूमि ने अपनी उपज दी है,
परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उस ने हमें आशीष दी है।
७ परमेश्वर हम को आशीष देगा,
और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

६८ परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर बितर हों,
और उसके बैरी उसके साम्हने से भाग जाएं।
२ जैसे धुआं उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे,
जैसे मोम आग की आंच से पिघल जाता है,
वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर की उपस्थिति से नाश हों।
३ परन्तु धर्मी आनन्दित हों, वे परमेश्वर के साम्हने प्रफुल्लित हों,
वे आनन्द में मगन हों।
४ परमेश्वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ,
जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है, उसके लिये सड़क बनाओ,
उसका नाम याह है, इसलिये तुम उसके साम्हने प्रफुल्लित हो।
५ परमेश्वर अपने पवित्र धाम में,
अनाथों का पिता और विधवाओं का न्यायी है।
६ परमेश्वर अनाथों का घर बसाता है,
और बन्धुओं को छुड़ाकर भाग्यवान् करता है,
परन्तु हठीलों को सूखी भूमि पर रहना पड़ता है ॥
७ हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे आगे चलता था,
जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चला, (सेला)
८ तब पृथ्वी कांप उठी,
और आकाश भी परमेश्वर के साम्हने टपकने लगा,
उधर सीनै पर्वत परमेश्वर, हां इस्राएल के परमेश्वर के साम्हने कांप उठा।
९ हे परमेश्वर, तू ने बहुत से वरदान बरसाए *,
तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था, परन्तु तू ने उसको हरा भरा † किया है,
१० तेरा झुण्ड उस में बसने लगा,
हे परमेश्वर तू ने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी की है।
११ प्रभु आज्ञा देता है,
तब शुभ समाचार सुनानेवालियों की बड़ी सेना हो जाती है।
१२ अपनी अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं,
और गृहस्थिन लूट को बांट लेती है।

* मूल में—स्वेच्छादानों की वृष्टि हिलाई।
† मूल में—स्थिर।

१३ क्या तुम भेडशालों के बीच लेट जाओगे ?
और ऐसी कबूतरी के समान होगे जिसके पंख चान्दी से
और जिसके पर पीले सोने से मढे हुए हों ?
१४ जब सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओ को तितर बितर किया,
तब मानो सल्मोन पर्वत पर हिम पडा ॥
१५ बाशान का पहाड परमेश्वर का पहाड है,
बाशान का पहाड बहुत शिखरवाला पहाड है ।
१६ परन्तु हे शिखरवाले पहाडो, तुम क्यो उस पर्वत को घूरते हो,
जिसे परमेश्वर ने अपने वास के लिये चाहा है,
और जहा यहोवा सदा वास किए रहेगा ?
१७ परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन हजारो हजार है,
प्रभु उनके बीच में है,
जैसे वह सीनै पवित्रस्थान मे है ।
१८ तू ऊचे पर चढा, तू लोगो को बन्धुआई में ले गया;
तू ने मनुष्यो से, वरन हठीले मनुष्यो से भी भेंटे ली,
जिस मे याह परमेश्वर उन में वास करे ॥
१९ धन्य है प्रभु, जो प्रति दिन हमारा बोझ उठाता है,
वही हमारा उद्धारकर्त्ता ईश्वर है । (सेला)
२० वही हमारे लिये बचानेवाला ईश्वर ठहरा,
यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है* ॥
२१ निश्चय परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर,
और जो अधर्म के मार्ग पर चलता रहता है,
उसके बाल भरे चोडे पर मार मार के उसे चूर करेगा ।
२२ प्रभु ने कहा है, कि मैं उन्हे बाशान से निकाल लाऊगा, मैं उनको गहिरे सागर के तल से भी फेर ले आऊगा,
२३ कि तू अपने पाव को लोहू मे डुबोए,
और तेरे शत्रु तेरे कुत्तों का भाग ठहरे ॥
२४ हे परमेश्वर तेरी गति देखी गई,
मेरे ईश्वर, मेरे राजा की गति पवित्रस्थान में दिखाई दी है,
२५ गानेवाले आगे आगे और तारवाले बाजो के बजानेवाले पीछे पीछे गए,
चारो ओर कुमारिया डफ बजाती थी ।
२६ सभाओ मे परमेश्वर का,
हे इस्राएल के सोते से निकले हुए लोगो, प्रभु का धन्यवाद करो ।
२७ वहा उनका अध्यक्ष छोटा बिन्यामीन है,
वहा यहूदा के हाकिम अपने अनुचरो समेत है,
वहा जबूलून और नप्ताली के भी हाकिम है ॥
२८ तेरे परमेश्वर ने आज्ञा दी, कि तुझे सामर्थ्य मिले,
हे परमेश्वर जो कुछ तू ने हमारे लिये किया है, उसे दृढ कर ।

* मूल में—यहोवा प्रभु के पास मृत्यु से निकास है ।

२९ तेरे मन्दिर के कारण जो यरूशलेम
में है,
राजा तेरे लिये भेंट ले आएंगे।
३० नरकटों में रहनेवाले बनैले पशुओं
को,
सांडों के झुण्ड को और देश देश
के बछड़ों को झिड़क दे।
वे चान्दी के टुकड़े लिए हुए प्रणाम
करेंगे,
जो लोग युद्ध से प्रसन्न रहते हैं,
उनको उस ने तितर बितर किया
है।
३१ मिस्र से रईस आएंगे,
कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की
ओर फुर्ती से फैलाएंगे॥
३२ हे पृथ्वी पर के राज्य राज्य के
लोगो परमेश्वर का गीत गाओ,
प्रभु का भजन गाओ, (सेला)
३३ जो सब से ऊंचे सनातन स्वर्ग में
सवार होकर चलता है,
देखो वह अपनी वाणी सुनाता है,
वह गम्भीर वाणी शक्तिशाली
है।
३४ परमेश्वर की सामर्थ्य की स्तुति
करो,
उसका प्रताप इस्राएल पर छाया
हुआ है,
और उसकी सामर्थ्य आकाशमण्डल
में है।
३५ हे परमेश्वर, तू अपने पवित्रस्थानों में
भययोग्य है,
इस्राएल का ईश्वर ही अपनी प्रजा
को सामर्थ्य और शक्ति का देनेवाला
है।
परमेश्वर धन्य है॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम*
में दाऊद का गीत)

६९ हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर,
मैं जल में डूबा जाता हूं।
२ मैं बड़े दलदल में धसा जाता हूं,
और मेरे पैर कहीं नहीं रुकते,
मैं गहिरे जल में आ गया, और
धारा में डूबा जाता हूं।
३ मैं पुकारते पुकारते थक गया, मेरा
गला सूख गया है,
अपने परमेश्वर की बाट जोहते
जोहते, मेरी आंखें रह गई हैं॥
४ जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे गिनती
में मेरे सिर के बालों से अधिक
हैं,
मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे
शत्रु हैं, वे सामर्थी हैं,
इसलिये जो मैं ने लूटा नहीं वह भी
मुझ को देना पड़ा।
५ हे परमेश्वर, तू तो मेरी मूढ़ता को
जानता है,
और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं
हैं॥
६ हे प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी
बाट जोहते हैं, उनकी आशा मेरे
कारण न टूटे,
हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तुझे
ढूंढते हैं, उनका मुंह मेरे कारण
काला न हो।
७ तेरे ही कारण मेरी निन्दा हुई है,
और मेरा मुंह लज्जा से ढंपा है।
८ मैं अपने भाइयों के साम्हने अजनबी
हुआ,
और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में
परदेशी ठहरा हूं॥

* अर्थात् पुष्प विशेष।

९ क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते
जलते भस्म हुआ,
और जो निन्दा वे तेरी करते हैं,
वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी
है।
१० जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख
उठाता था,
तब उस से भी मेरी नामधराई ही
हुई।
११ और जब मैं टाट का वस्त्र पहिने था,
तब मेरा दृष्टान्त उन में चलता था।
१२ फाटक के पास बैठनेवाले मेरे विषय
बातचीत करते हैं,
और मदिरा पीनेवाले मुझ पर लगता
हुआ गीत गाते हैं॥
१३ परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो
तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है,
हे परमेश्वर अपनी करुणा की बहु-
तायत से,
और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा
के अनुसार * मेरी सुन ले।
१४ मुझ को दलदल में से उबार, कि
मैं धस न जाऊं,
मैं अपने बैरियों से, और गहिरे जल
में से बच जाऊं।
१५ मैं धारा में डूब न जाऊं,
और न मैं गहिरे जल में डूब मरूं,
और न पाताल का मुंह मेरे ऊपर
बन्द हो॥
१६ हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी
करुणा उत्तम है,
अपनी दया की बहुतायत के अनुसार
मेरी ओर ध्यान दे।
१७ अपने दास से अपना मुंह न मोड़,
क्योंकि मैं संकट में हूं, फुर्ती से
मेरी सुन ले।
१८ मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले,
मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे॥
१९ मेरी नामधराई और लज्जा और
अनादर को तू जानता है
मेरे सब द्रोही तेरे साम्हने हैं।
२० मेरा हृदय नामधराई के कारण फट
गया, और मैं बहुत उदास हूं।
मैं ने किसी तरस खानेवाले की आशा
तो की, परन्तु किसी को न
पाया,
और शान्ति देनेवाले ढूंढ़ता तो रहा,
परन्तु कोई न मिला।
२१ और लोगों ने मेरे खाने के लिये
इन्द्रायन दिया,
और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे
सिरका पिलाया॥
२२ उनका भोजन * उनके लिये फन्दा हो
जाए,
और उनके सुख के समय जाल बन
जाए।
२३ उनकी आंखों पर अन्धेरा छा जाए,
ताकि वे देख न सकें,
और तू उनकी कटि को निरन्तर
कंपाता रह।
२४ उनके ऊपर अपना रोष भड़का,
और तेरे क्रोध की आंच उनको लगे।
२५ उनकी छावनी उजड़ जाए,
उनके डेरों में कोई न रहे।
२६ क्योंकि जिसको तू ने मारा, वे उसके
पीछे पड़े हैं,
और जिनको तू ने घायल किया, वे
उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं।

* मूल में—अपने उद्धार की सच्चाई से।

* मूल में— उनकी मेज़।

२७ उनके अधर्म पर अधर्म बढ़ा,
और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें।
२८ उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए,
और धर्मियों के संग लिखा न जाए ॥
२९ परन्तु मैं तो दुःखी और पीड़ित हूं,
इसलिये हे परमेश्वर तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर बैठा।
३० मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूंगा,
और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूंगा।
३१ यह यहोवा को बैल से अधिक,
वरन सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भाएगा।
३२ नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे,
हे परमेश्वर के खोजियो तुम्हारा मन हरा हो जाए।
३३ क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता,
और अपने लोगों को जो बन्धुए हैं तुच्छ नहीं जानता ॥
३४ स्वर्ग और पृथ्वी उसकी स्तुति करें,
और समुद्र अपने सब जीव जन्तुओं समेत उसकी स्तुति करे।
३५ क्योंकि परमेश्वर सिय्योन का उद्धार करेगा, और यहूदा के नगरों को फिर बसाएगा,
और लोग फिर वहां बसकर उसके अधिकारी हो जाएंगे।
३६ उसके दासों का वंश उसको अपने भाग में पाएगा,
और उसके नाम के प्रेमी उस में वास करेंगे ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का स्मरण कराने के लिये)

७० हे परमेश्वर मुझे छुड़ाने के लिये, हे यहोवा मेरी सहायता करने के लिये फुर्ती कर।
२ जो मेरे प्राण के खोजी हैं,
उनकी आशा टूटे, और मुंह काला हो जाए।
जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं,
वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएं।
३ जो कहते हैं आहा, आहा,
वे अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएं ॥
४ जितने तुझे ढूंढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों।
और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, कि परमेश्वर की बड़ाई हो।
५ मैं तो दीन और दरिद्र हूं,
हे परमेश्वर मेरे लिये फुर्ती कर।
तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है,
हे यहोवा विलम्ब न कर।

७१ हे यहोवा मैं तेरा शरणागत हूं,
मेरी आशा कभी टूटने न पाए।
२ तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर,
मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर।
३ मेरे लिये सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिस में मैं नित्य जा सकूं,
तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है,

१६ देश मे पहाडो की चोटियो पर बहुत
सा अन्न होगा,
जिसकी बाले लबानोन के देवदारुओ
की नाई झूमेगी,
और नगर के लोग घास की नाई
लहलहाएगे।
१७ उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा,
जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक
उसका नाम नित्य नया होता
रहेगा,
और लोग अपने को उसके कारण
धन्य गिनेगे,
सारी जातिया उसको भाग्यवान
कहेगी ॥
१८ धन्य है, यहोवा परमेश्वर जो इस्राएल
का परमेश्वर है,
आश्चर्य कर्म केवल वही करता है।
१९ उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य
रहेगा,
और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से
परिपूर्ण होगी।
आमीन फिर आमीन ॥

२० यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाए
समाप्त हुई ॥

तीसरा भाग

(आसाप का भजन)

७३ सचमुच इस्राएल के लिये
अर्थात् शुद्ध मनवालो के
लिये
परमेश्वर भला है।
२ मेरे डग तो उखडना चाहते थे,
मेरे डग फिसलने ही पर थे।
३ क्योकि जब मै दुष्टो का कुशल
देखता था,
तब उन घमण्डियो के विषय डाह
करता था ॥
४ क्योकि उनकी मृत्यु मे वेदनाए नही
होती,
परन्तु उनका बल अटूट रहता है।
५ उनको दूसरे मनुष्यो की नाई कष्ट
नही होता;
और और मनुष्यो के समान उन पर
विपत्ति नही पडती।
६ इस कारण अहकार उनके गले का
हार बना है,
उनका ओढना उपद्रव है।
७ उनकी आखे चर्बी से झलकती है,
उनके मन की भावनाए उमण्डती है।
८ वे ठट्ठा मारते है, और दुष्टता से
अन्धेर की बात बोलते है,
९ वे डीग मारते है *।
वे मानो स्वर्ग मे बैठे हुए बोलते है *,
और वे पृथ्वी मे बोलते फिरते है † ॥
१० तौभी उसकी प्रजा इधर लौट
आएगी,
और उनको भरे हुए प्याले का जल
मिलेगा।
११ फिर वे कहते है, ईश्वर कैसे जानता
है?
क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है?
१२ देखो, ये तो दुष्ट लोग है,
तौभी सदा सुभागी रहकर, धन
सम्पत्ति बटोरते रहते है।

* मूल में—वे ऊचे पर मे बोलते हैं।
† मूल में—उनकी जीभ पृथ्वी में चलती।

१३ निश्चय, मैं ने अपने हृदय को व्यर्थ
शुद्ध किया
और अपने हाथों को निर्दोषता में
धोया है,
१४ क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया
हूं
और प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती
आई है ॥
१५ यदि मैं ने कहा होता कि मैं ऐसा
ही कहूंगा,
तो देख मैं तेरे लड़कों की सन्तान के
साथ क्रूरता का व्यवहार करता,
१६ जब मैं सोचने लगा कि इसे मैं कैसे
समझूं,
तो यह मेरी दृष्टि में अति कठिन
समस्या थी,
१७ जब तक कि मैं ने ईश्वर के पवित्र-
स्थान में जाकर
उन लोगों के परिणाम को न सोचा।
१८ निश्चय तू उन्हें फिसलनेवाले स्थानों
में रखता है,
और गिराकर सत्यानाश कर देता
है।
१९ अहा, वे क्षण भर में कैसे उजड़
गए हैं!
वे मिट गए, वे घबराते घबराते
नाश हो गए हैं।
२० जैसे जागनेहारा स्वप्न को तुच्छ
जानता है,
वैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा, तब
उनको छाया सा समझकर तुच्छ
जानेगा ॥
२१ मेरा मन तो चिड़चिड़ा हो गया,
मेरा अन्तःकरण छिद गया था,
२२ मैं तो पशु सरीखा था, और समझता
न था,
मैं तेरे संग रहकर भी, पशु बन गया
था।
२३ तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही था,
तू ने मेरे दहिने हाथ को पकड़ रखा।
२४ तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुवाई
करेगा,
और तब मेरी महिमा करके मुझ को
अपने पास रखेगा।
२५ स्वर्ग में मेरा और कौन है?
तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और
कुछ नहीं चाहता।
२६ मेरे हृदय और मन दोनों तो हार
गए हैं,
परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा
भाग और मेरे हृदय की चट्टान
बना है ॥
२७ जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश
होंगे,
जो कोई तेरे विरुद्ध व्यभिचार करता
है, उसको तू विनाश करता है।
२८ परन्तु परमेश्वर के समीप रहना,
यही मेरे लिये भला है,
मैं ने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान
माना है,
जिस से मैं तेरे सब कामों का वर्णन
करूं ॥

क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़
ठहरा है॥
४ हे मेरे परमेश्वर दुष्ट के,
और कुटिल और क्रूर मनुष्य के
हाथ से मेरी रक्षा कर।
५ क्योंकि हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही
बाट जोहता आया हूं,
बचपन से मेरा आधार तू है।
६ मैं गर्भ से निकलते ही, तुझ से
सम्भाला गया,
मुझे मां की कोख से तू ही ने
निकाला,
इसलिये मैं नित्य तेरी स्तुति करता
रहूंगा॥
७ मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूं;
परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है।
८ मेरे मुंह से तेरे गुणानुवाद,
और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन
बहुत हुआ करे।
९ बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर
जब मेरा बल घटे तब मुझ को
छोड़ न दे।
१० क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें
करते हैं
और जो मेरे प्राण की ताक में हैं,
वे आपस में यह सम्मति करते हैं, कि
११ परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया है,
[illegible] उसे पकड़ लो,
क्योंकि उसका कोई छुड़ानेवाला
नहीं॥
१२ [illegible]
[illegible]
[illegible]
१३ [illegible]
[illegible]
[illegible]
जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं, वे
नामधराई और अनादर में गड़
जाएं।
१४ मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूंगा,
और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता
जाऊंगा।
१५ मैं अपने मुंह से तेरे धर्म का,
और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन
दिन भर करता रहूंगा,
परन्तु उनका पूरा ब्योरा जाना भी
नहीं जाता।
१६ मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों
का वर्णन करता हुआ आऊंगा,
मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा किया
करूंगा॥
१७ हे परमेश्वर, तू तो मुझ को बचपन
ही से सिखाता आया है,
और अब तक मैं तेरे आश्चर्य कर्मों
का प्रचार करता आया हूं।
१८ इसलिये हे परमेश्वर जब मैं बूढ़ा
हो जाऊं,
और मेरे बाल पक जाएं, तब भी
तू मुझे न छोड़,
जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों
को तेरा बाहुबल और सब उत्पन्न
होनेवालों को तेरा पराक्रम सुनाऊं।
१९ और हे परमेश्वर, तेरा धर्म अति
महान है॥
तू जिस ने महाकार्य किए हैं,
हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है?
२० तू ने तो हम को बहुत से कठिन कष्ट
दिखाए हैं
परन्तु अब तू फिर से हम को
जिलाएगा,
और पृथ्वी के गहिरे स्थानों में से उबार
लेगा।

२१ तू मेरी बड़ाई को बढ़ाएगा,
और फिरकर मुझे शान्ति देगा ॥
२२ हे मेरे परमेश्वर,
मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊंगा,
हे इस्राएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊंगा।
२३ जब मैं तेरा भजन गाऊंगा, तब अपने मुंह से
और अपने प्राण से भी जो तू ने बचा लिया है, जयजयकार करूंगा।
२४ और मैं तेरे धर्म की चर्चा दिन भर करता रहूंगा,
क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे, उनकी आशा टूट गई और मुंह काले हो गए हैं ॥

(सुलैमान का गीत)

७२ हे परमेश्वर, राजा को अपना नियम बता,
राजपुत्र को अपना धर्म सिखला !
२ वह तेरी प्रजा का न्याय धर्म से,
और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक ठीक चुकाएगा।
३ पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये,
धर्म के द्वारा शान्ति मिला करेगी।
४ वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा,
और दरिद्र लोगों को बचाएगा,
और अन्धेर करनेवालों को चूर करेगा ॥
५ जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे
तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे।
६ वह घास की खूंटी पर बरसनेवाले मेंह,
और भूमि सींचनेवाली झड़ियों के समान होगा।
७ उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे,
और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा,
तब तक शान्ति बहुत रहेगी ॥
८ वह समुद्र से समुद्र तक
और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा।
९ उसके साम्हने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे,
और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे।
१० तर्शीश और द्वीप द्वीप के राजा भेंट ले आएंगे,
शेबा और सबा दोनों के राजा द्रव्य पहुंचाएंगे।
११ सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे,
जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएंगे ॥
१२ क्योंकि वह दोहाई देनेवाले दरिद्र को,
और दुःखी और असहाय मनुष्य का उद्धार करेगा।
१३ वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा,
और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा।
१४ वह उनके प्राणों को अन्धेर और उपद्रव से छुड़ा लेगा,
और उनका लोहू उसकी दृष्टि में अनमोल ठहरेगा ॥
१५ वह तो जीवित रहेगा और शेबा के सोने में से उसको दिया जाएगा।
लोग उसके लिये नित्य प्रार्थना करेंगे,
और दिन भर उसको धन्य कहते रहेंगे।

क्योंकि देश के अन्धेरे स्थान अत्याचार के घरों से भरपूर हैं।
२१ पिसे हुए जन को निरादर होकर लौटना न पड़े,
दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएं॥
२२ हे परमेश्वर उठ, अपना मुकद्दमा आप ही लड़,
तेरी जो नामधराई मूढ़ से दिन भर होती रहती है, उसे स्मरण कर।
२३ अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल,
तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता है॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये, अल-तशहेत* आसाप का भजन। गीत)

७५ हे परमेश्वर हम तेरा धन्यवाद करते,
हम तेरा नाम धन्यवाद करते हैं,
क्योंकि तेरा नाम प्रगट† हुआ है,
तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन हो रहा है॥
२ जब ठीक समय आएगा
तब मैं आप ही ठीक ठीक न्याय करूंगा।
३ पृथ्वी अपने सब रहनेवालों समेत गल रही है,
मैं ने उसके खम्भों को स्थिर कर दिया है। (सेला)
४ मैं ने घमण्डियों से कहा, घमण्ड मत करो,
और दुष्टों से, कि सींग ऊंचा मत करो,
५ अपना सींग बहुत ऊंचा मत करो,
न सिर उठाकर* ढिठाई की बात बोलो॥
६ क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पच्छिम से,
और न जंगल की ओर से आती है,
७ परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है,
वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।
८ यहोवा के हाथ में एक कटोरा है,
जिस में का दाखमधु झागवाला है,
उस में मसाला मिला है, और वह उस में से उण्डेलता है,
निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी के सब दुष्ट लोग पी जाएंगे†॥
९ परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता रहूंगा,
मैं याकूब के परमेश्वर का भजन गाऊंगा।
१० दुष्टों के सब सींगों को मैं काट डालूंगा,
परन्तु धर्मी के सींग ऊंचे किए जाएंगे॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ, आसाप का भजन, गीत)

७६ परमेश्वर यहूदा में जाना गया है,
उसका नाम इस्राएल में महान हुआ है।
२ और उसका मण्डप शालेम में,
और उसका धाम सिय्योन में है।
३ वहां उस ने चमचमाते तीरों को,

* अर्थात् नाश न कर।
† मूल में—निकट।

* मूल में—गर्दन से।
† मूल में—निचोड़ निचोड़कर पीएंगे।

और ढाल और तलवार को तोड़कर,
निदान लड़ाई ही को तोड़ डाला
है ॥ (सेला)
४ हे परमेश्वर तू तो ज्योतिमय है
तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक
उत्तम और महान है।
५ दृढ़ मनवाले लुट गए, और भारी
नींद में पड़े हैं,
६ और शूरवीरों में से किसी का हाथ
न चला *।
हे याकूब के परमेश्वर, तेरी घुड़की से,
रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े हैं ॥
७ केवल तू ही भययोग्य है,
और जब तू क्रोध करने लगे, तब
तेरे साम्हने कौन खड़ा रह सकेगा ?
८ तू ने स्वर्ग से निर्णय सुनाया है,
पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई,
और चुप रही,
९ जब परमेश्वर न्याय करने को,
और पृथ्वी के सब नम्र लोगों का
उद्धार करने को उठा ॥ (सेला)
१० निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी
स्तुति का कारण हो जाएगी,
और जो जलजलाहट रह जाए, उसको
तू रोकेगा।
११ अपने परमेश्वर यहोवा की मन्नत
मानो, और पूरी भी करो,
वह जो भय के योग्य है, उसके आस
पास के सब उसके लिये भेंट ले
आए।
१२ वह तो प्रधानों का अभिमान † मिटा
देगा,
वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य
जान पड़ता है ॥

* मूल में—मिला।
† मूल में—आत्मा।

(प्रधान बजानेवाले के लिये यदूतून की
राग पर आसाप का भजन)

७७ मैं परमेश्वर की दोहाई चिल्ला
चिल्लाकर दूंगा,
मैं परमेश्वर की दोहाई दूंगा, और
वह मेरी ओर कान लगाएगा।
२ संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में
लगा रहा,
रात को मेरा हाथ फैला रहा, और
ढीला न हुआ,
मुझ में शान्ति आई ही नहीं।
३ मैं परमेश्वर का स्मरण कर करके
कहरता हूं,
मैं चिन्ता करते करते मूर्छित हो
चला हूं। (सेला)
४ तू मुझे झपकी लगने नहीं देता,
मैं ऐसा घबराया हूं कि मेरे मुंह में
बात नहीं निकलती ॥
५ मैं ने प्राचीनकाल के दिनों को,
और युग युग के वर्षों को सोचा
है।
६ मैं रात के समय अपने गीत को
स्मरण करता,
और मन में ध्यान करता हूं,
और मन में भली भांति विचार
करता हूं
७ क्या प्रभु युग युग के लिये छोड़
देगा,
और फिर कभी प्रसन्न न होगा ?
८ क्या उसकी करुणा सदा के लिये
जाती रही ?
क्या उसका वचन पीढ़ी पीढ़ी के
लिये निष्फल हो गया है ?
९ क्या ईश्वर अनुग्रह करना भूल गया ?
क्या उस ने क्रोध करके अपनी सब
दया को रोक रखा है ? (सेला)

१० मैं ने कहा, यह तो मेरी दुर्बलता ही है,
परन्तु मैं परमप्रधान के दहिने हाथ
के वर्षों को विचारता रहूंगा ॥
११ मैं याह के बड़े कामों की चर्चा करूंगा,
निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत
कामों को स्मरण करूंगा।
१२ मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा,
और तेरे बड़े कामों को सोचूंगा।
१३ हे परमेश्वर तेरी गति पवित्रता की है।
कौन सा देवता परमेश्वर के तुल्य
बड़ा है?
१४ अद्भुत काम करनेवाला ईश्वर तू
ही है,
तू ने देश देश के लोगों पर अपनी
शक्ति प्रगट की है।
१५ तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा,
याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा
लिया है ॥ (सेला)
१६ हे परमेश्वर समुद्र ने तुझे देखा,
समुद्र तुझे देखकर डर गया,
गहिरा सागर भी कांप उठा।
१७ मेघों से बड़ी वर्षा हुई,
आकाश से शब्द हुआ,
फिर तेरे तीर इधर उधर चले।
१८ बवंडर में तेरे गरजने का शब्द सुन
पड़ा था,
जगत बिजली से प्रकाशित हुआ,
पृथ्वी कांपी और हिल गई।
१९ तेरा मार्ग समुद्र में है,
और तेरा रास्ता गहिरे जल में
हुआ,
और तेरे पांवों के चिन्ह मालूम नहीं
होते।
२० तू ने मूसा और हारून के द्वारा,
अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की
सी की ॥

(आसाप का मश्कील)

७८ १ हे मेरे लोगो, मेरी शिक्षा
सुनो,
मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!
२ मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के
लिये खोलूंगा,
मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा,
३ जिन बातों को हम ने सुना, और
जान लिया,
और हमारे बाप दादों ने हम से
वर्णन किया है।
४ उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न
रखेंगे,
परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से,
यहोवा का गुणानुवाद और उसकी
सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का
वर्णन करेंगे ॥
५ उस ने तो याकूब में एक चितौनी
ठहराई,
और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई,
जिसके विषय उस ने हमारे पितरों
को आज्ञा दी
कि तुम इन्हें अपने अपने लड़केबालों
को बताना,
६ कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात
जो लड़केबाले उत्पन्न होनेवाले हैं,
वे इन्हें जानें,
और अपने अपने लड़केबालों से इनका
बखान करने में उद्यत हों,
जिस से वे परमेश्वर का आसरा रखें,
७ और ईश्वर के बड़े कामों को भूल
न जाएं,
परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन
करते रहें,
८ और अपने पितरों के समान न
हों,

क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले
और झगड़ालू थे,
और उन्हों ने अपना मन स्थिर न
किया था,
और न उनकी आत्मा ईश्वर की
ओर सच्ची रही ॥
९ एप्रैमियों ने तो शस्त्रधारी और
धनुर्धारी होने पर भी,
युद्ध के समय पीठ दिखा दी।
१० उन्हों ने परमेश्वर की वाचा पूरी
नहीं की,
और उसकी व्यवस्था पर चलने से
इनकार किया।
११ उन्हों ने उसके बड़े कामों को और
जो आश्चर्यकर्म उस ने उनके
साम्हने किए थे,
उनको भुला दिया।
१२ उस ने तो उनके बापदादों के सम्मुख
मिस्र देश के सोअन के मैदान में
अद्भुत कर्म किए थे।
१३ उस ने समुद्र को दो भाग करके
उन्हें पार कर दिया,
और जल को ढेर की नाईं खड़ा कर
दिया।
१४ और उस ने दिन को तो बादल के
खम्भे से
और रात भर अग्नि के प्रकाश के
द्वारा उनकी अगुवाई की।
१५ वह जंगल में चट्टानें फाड़कर,
उनको मानो गहिरे जलाशयों से
मनमाने पिलाता था।
१६ उस ने चट्टान से भी धाराएं निकालीं
और नदियों का सा जल बहाया ॥
१७ तौभी वे फिर उसके विरुद्ध अधिक
पाप करते गए,
और निर्जल देश में परमप्रधान के
विरुद्ध उठते रहे।
१८ और अपनी चाह के अनुसार * भोजन
मांगकर
मन ही मन ईश्वर की परीक्षा की।
१९ वे परमेश्वर के विरुद्ध बोले,
और कहने लगे, क्या ईश्वर जंगल
में मेज लगा सकता है ?
२० उस ने चट्टान पर मारके जल बहा
तो दिया,
और धाराएं उमण्ड चलीं,
परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है ?
क्या वह अपनी प्रजा के लिये मांस
भी तैयार कर सकता ?
२१ यहोवा सुनकर क्रोध से भर गया,
तब याकूब के बीच आग लगी,
और इस्राएल के विरुद्ध क्रोध भड़का,
२२ इसलिये कि उन्हों ने परमेश्वर पर
विश्वास नहीं रखा था,
न उसकी उद्धार करने की शक्ति पर
भरोसा किया।
२३ तौभी उस ने आकाश को आज्ञा दी,
और स्वर्ग के द्वारों को खोला;
२४ और उनके लिये खाने को मान
बरसाया,
और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया।
२५ उनको शूरवीरों की सी रोटी मिली,
उस ने उनको मनमाना भोजन दिया।
२६ उस ने आकाश में पुरवाई को चलाया,
और अपनी शक्ति से दक्खिनी बहाई,
२७ और उनके लिये मांस धूलि की
नाईं बहुत बरसाया,
और समुद्र के बालू के समान
अनगिनित पक्षी भेजे,

* मूल में—जीव।

२८ और उनकी छावनी के बीच में,
उनके निवासों के चारों ओर गिराए।
२९ और वे खाकर अति तृप्त हुए,
और उस ने उनकी कामना पूरी की।
३० उनकी कामना बनी ही रही *,
उनका भोजन उनके मुह ही में था,
३१ कि परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का,
और उस ने उनके हृष्टपुष्टो को घात किया,
और इस्राएल के जवानों को गिरा दिया ॥
३२ इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए,
और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की प्रतीति न की।
३३ तब उस ने उनके दिनो को व्यर्थ श्रम में,
और उनके वर्षों को घबराहट में कटवाया।
३४ जब जब वह उन्हें घात करने लगता,
तब तब वे उसको पूछते थे,
और फिरकर ईश्वर को यत्न से खोजते थे।
३५ और उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है,
और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुडानेवाला है।
३६ तौभी उन्हो ने उस से चापलूसी की
वे उस से झूठ बोले।
३७ क्योकि उनका हृदय उसकी ओर दृढ न था,
न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे।

* मूल में—वे अपनी तृष्णा से विराने न हुए थे।

३८ परन्तु वह जो दयालु है, वह अधर्म को ढापता, और नाश नही करता,
वह बारबार अपने क्रोध को ठण्डा करता है,
और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नही देता।
३९ उसको स्मरण हुआ कि ये नाशमान * है,
ये वायु के समान है जो चली जाती और लौट नही आती।
४० उन्हो ने कितनी ही बार जगल में उस से बलवा किया,
और निर्जल देश में उसको उदास किया!
४१ वे बारबार ईश्वर की परीक्षा करते थे,
और इस्राएल के पवित्र को खेदित करते थे।
४२ उन्हो ने न तो उसका भुजबल स्मरण किया,
न वह दिन जब उस ने उनको द्रोही के वश से छुडाया था,
४३ कि उस ने क्योकर अपने चिन्ह मिस्र में,
और अपने चमत्कार सोअन के मैदान में किए थे।
४४ उस ने तो मिस्रियो † की नहरो को लोहू बना डाला,
और वे अपनी नदियो का जल पी न सके।
४५ उस ने उनके बीच में डास भेजे जिन्हो ने उन्हें काट खाया,
और मेंढक भी भेजे, जिन्हो ने उनका बिगाड किया।

* मूल में—मास।
† मूल में—उन।

४६ उस ने उनकी भूमि की उपज कीडो
को,
और उनकी खेतीवारी टिड्डियो को
खिला दी थी ।
४७ उस ने उनकी दाखलताओ को ओलो
मे,
और उनके गूलर के पेडो को वडे
वडे पत्थर वरसाकर नाश किया ।
४८ उस ने उनके पशुओ को ओलो मे,
और उनके ढोरो को विजलियो मे
मिटा दिया ।
४९ उस ने उनके ऊपर अपना प्रचण्ड
क्रोध और रोष भडकाया,
और उन्हे सकट मे डाला,
और दुखदाई दूतो का दल भेजा ।
५० उस ने अपने क्रोध का मार्ग खोला *,
और उनके प्राणो को मृत्यु से न
वचाया,
परन्तु उनको मरी के वश मे कर
दिया ।
५१ उस ने मिस्र के सब पहिलौठो को
मारा,
जो हाम के डेरो मे पौरुष के पहिले
फल थे
५२ परन्तु अपनी प्रजा को भेड-वकरियो
की नाई पयान कराया,
और जगल मे उनकी अगुवाई पशुओ
की सी की ।
५३ तब वे उसके चलाने से वेखटके चले
और उनको कुछ भय न हुआ,
परन्तु उनके शत्रु समुद्र मे डूब
गए ।
५४ और उस ने उनको अपने पवित्र
देश के सिवाने तक
इसी पहाडी देश मे पहुचाया, जो
उस ने अपने दहिने हाथ से प्राप्त
किया था ।
५५ उस ने उनके साम्हने से अन्यजातियो
को भगा दिया,
और उनकी भूमि को डोरी से माप
मापकर वाट दिया,
और इस्राएल के गोत्रो को उनके
डेरो मे वसाया ॥
५६ तौभी उन्हो ने परमप्रधान परमेश्वर
की परीक्षा की और उस से वलवा
किया,
और उसकी चितौनियो को न
माना,
५७ और मुडकर अपने पुरखाओ की नाई
विश्वासघात किया,
उन्हो ने निकम्मे * धनुष की नाई
धोखा दिया † ।
५८ क्योकि उन्हो ने ऊचे स्थान वनाकर
उसको रिस दिलाई,
और खुदी हुई मूर्तियो के द्वारा उस मे
जलन उपजाई ।
५९ परमेश्वर सुनकर रोष से भर गया,
और उस ने इस्राएल को विलकुल
तज दिया ।
६० उस ने शीलो के निवास,
अर्थात् उस तम्बू को जो उस ने
मनुष्यो के वीच खडा किया था,
त्याग दिया,
६१ और अपनी सामर्थ को वन्धुआई मे
जाने दिया,
और अपनी शोभा को द्रोही के वश
मे कर दिया ।

* मूल मे—मार्ग वरावर किया ।

* मूल मे—धोखा देनेवाले ।
† मूल मे—मुड गए ।

६२ उस ने अपनी प्रजा को तलवार से
मरवा दिया,
और अपने निज भाग के लोगों पर
रोष से भर गया।
६३ उन के जवान आग से भस्म हुए,
और उनकी कुमारियों के विवाह के
गीत न गाए गए।
६४ उनके याजक तलवार से मारे गए,
और उनकी विधवाएं रोने न
पाईं॥
६५ तब प्रभु मानो नींद से जाग उठा,
और ऐसे वीर के समान उठा जो
दाखमधु पीकर ललकारता हो।
६६ और उस ने अपने द्रोहियों को मारकर
पीछे हटा दिया,
और उनकी सदा की नामधराई
कराई॥
६७ फिर उस ने यूसुफ के तम्बू को तज
दिया,
और एप्रैम के गोत्र को न चुना,
६८ परन्तु यहूदा ही के गोत्र को,
और अपने प्रिय सिय्योन पर्वत को
चुन लिया।
६९ उस ने अपने पवित्रस्थान को बहुत
ऊंचा बना दिया,
और पृथ्वी के समान स्थिर बनाया,
जिसकी नेव उस ने सदा के लिये
डाली है।
७० फिर उस ने अपने दास दाऊद को
चुनकर
भेड़शालाओं में से ले लिया,
७१ वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे
पीछे फिरने से ले आया
कि वह उसकी प्रजा याकूब की
अर्थात् उसके निज भाग इस्राएल की
चरवाही करे।
७२ तब उस ने खरे मन से उनकी
चरवाही की,
और अपने हाथ की कुशलता से
उनकी अगुवाई की॥

(आसाप का भजन)

७९ हे परमेश्वर अन्यजातियां तेरे
निज भाग में घुस आई,
उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध
किया,
और यरूशलेम को खंडहर कर दिया
है।
२ उन्हों ने तेरे दासों की लोथों को
आकाश के पक्षियों का आहार कर
दिया,
और तेरे भक्तों का मांस वनपशुओं
को खिला दिया है।
३ उन्हों ने उनका लोहू यरूशलेम के
चारों ओर जल की नाईं बहाया,
और उनको मिट्टी देनेवाला कोई न था।
४ पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई
हुई,
चारों ओर के रहनेवाले हम पर हंसते,
और ठट्ठा करते हैं॥
५ हे यहोवा, तू कब तक लगातार क्रोध
करता रहेगा?
तुझ में आग की सी जलन कब तक
भड़कती रहेगी?
६ जो जातियां तुझ को नहीं जानतीं,
और जिन राज्यों के लोग तुझ से
प्रार्थना नहीं करते,
उन्हीं पर अपनी सब जलजलाहट
भड़का*।
७ क्योंकि उन्हों ने याकूब को निगल
लिया,

* मूल में—अपनी जलजलाहट उंडेल।

और उसके वासस्थान को उजाड़ दिया है ॥
८ हमारी हानि के लिये हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामों को स्मरण न कर,
तेरी दया हम पर शीघ्र हो,
क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं।
९ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर,
और अपने नाम के निमित्त हम को छुड़ाकर हमारे पापों को ढांप दे।
१० अन्यजातियां क्यों कहने पाएं कि उनका परमेश्वर कहां रहा?
अन्यजातियों के बीच तेरे दासों के खून का पलटा लेना हमारे देखते उन्हें मालूम हो जाए ॥
११ बन्धुओं का कराहना तेरे कान तक पहुंचे;
घात होनेवालों को अपने भुजबल के द्वारा बचा।
१२ और हे प्रभु, हमारे पड़ोसियों ने जो तेरी निन्दा की है,
उसका सातगुणा बदला उनको दे!
१३ तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई की भेड़ें हैं,
तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे,
और पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा गुणानुवाद करते रहेंगे ॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीमेदूत* में आसाप का भजन)

८० हे इस्राएल के चरवाहे,
तू जो यूसुफ की अगुवाई भेड़ों की सी करता है, कान लगा!
तू जो करूबों पर विराजमान है, अपना तेज दिखा!
२ एप्रैम, बिन्यामीन, और मनश्शे के साम्हने अपना पराक्रम दिखाकर,
हमारा उद्धार करने को आ!
३ हे परमेश्वर, हम को ज्यों के त्यों कर दे,
और अपने मुख का प्रकाश चमका,
तब हमारा उद्धार हो जाएगा!
४ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
तू कब तक अपनी प्रजा की प्रार्थना पर क्रोधित रहेगा*?
५ तू ने आंसुओं को उनका आहार कर दिया,
और मटके भर भरके उन्हें आंसू पिलाए हैं।
६ तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ने का कारण कर देता है,
और हमारे शत्रु मनमाने ठट्ठा करते हैं ॥
७ हे सेनाओं के परमेश्वर, हम को ज्यों के त्यों कर दे,
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा ॥
८ तू मिस्र से एक दाखलता ले आया,
और अन्यजातियों को निकालकर उसे लगा दिया।
९ तू ने उसके लिये स्थान तैयार किया है,
और उस ने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को भर दिया।
१० उसकी छाया पहाड़ों पर फैल गई,
और उसकी डालियां ईश्वर के देवदारों के समान हुईं,

* अर्थात् सोसन साक्षी।

* मूल में—धुआं उठाता रहेगा।

११ उसकी शाखाएं समुद्र तक बढ़ गईं,
और उसके अंकुर महानद तक फैल गए।
१२ फिर तू ने उसके बाड़ों को क्यों गिरा दिया,
कि सब बटोही उसके फलों को तोड़ते हैं?
१३ वनसूअर उसको नाश किए डालता है,
और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं॥
१४ हे सेनाओं के परमेश्वर, फिर आ!
स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि ले,
१५ ये पौधा तू ने अपने दहिने हाथ से लगाया,
और जो लता की शाखा * तू ने अपने लिये दृढ़ की है।
१६ वह जल गई, वह कट गई है,
तेरी घुड़की से वे नाश होते हैं।
१७ तेरे दहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रखा रहे,
उस आदमी पर, जिसे तू ने अपने लिये दृढ़ किया है।
१८ तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे
तू हम को जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे।
१९ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हम को ज्यों का त्यों कर दे!
और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा!

* मूल में—बेटा।

(प्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में आसाप का भजन)

८१ परमेश्वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ,
याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो!
२ भजन उठाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा
और सारंगी को ले आओ।
३ नये चांद के दिन,
और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूंको।
४ क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि,
और याकूब के परमेश्वर का ठहराया हुआ नियम है।
५ इसको उस ने यूसुफ में चितानी की रीति पर उस समय चलाया,
जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला॥
वहां मैं ने एक अनजानी भाषा सुनी,
६ मैं ने उनके कन्धों पर से बोझ को उतार दिया
उनका टोकरी ढोना छूट गया।
७ तू ने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैं ने तुझे छुड़ाया,
बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैं ने तेरी सुनी,
और मरीबा नाम सोते के पास तेरी परीक्षा की। (सेला)
८ हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूं!
हे इस्राएल भला हो कि तू मेरी सुने!
९ तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो,
और न तू किसी पराए देवता को दण्डवत करना।

१० तेरा परमेश्वर यहोवा मैं हूं,
जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है।
तू अपना मुंह पसार, मैं उसे भर दूंगा॥
११ परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी,
इस्राएल ने मुझ को न चाहा।
१२ इसलिये मैं ने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया,
कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले।
१३ यदि मेरी प्रजा मेरी सुने,
यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले,
१४ तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊं,
और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊं।
१५ यहोवा के बैरी तो उस * के वश में हो जाते,
और वे सदाकाल बने रहते हैं।
१६ और वह उनको उत्तम से उत्तम गेहूं खिलाता,
और मैं चट्टान में के मधु से उनको तृप्त करूं॥

(आसाप का भजन)

८२ परमेश्वर की सभा में परमेश्वर ही खड़ा है,
वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।
२ तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करते और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे? (सेला)
३ कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ,
दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो।

* मूल में—उस।

४ कंगाल और निर्धन को बचा लो,
दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ॥
५ वे न तो कुछ समझते और न कुछ बूझते हैं,
परन्तु अन्धेरे में चलते फिरते रहते हैं,
पृथ्वी की पूरी नीव हिल जाती है॥
६ मैं ने कहा था कि तुम ईश्वर हो,
और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो,
७ तौभी तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे,
और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे॥
८ हे परमेश्वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर,
क्योंकि तू ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा।

(गीत। आसाप का भजन)

८३ हे परमेश्वर मौन न रह,
हे ईश्वर चुप न रह, और न शान्त रह!
२ क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं,
और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है।
३ वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते,
और तेरे रक्षित * लोगों के विरुद्ध युक्तियां निकालते हैं।
४ उन्हों ने कहा, आओ, हम उनको ऐसा नाश करें कि राज्य † भी मिट जाए,
और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे।

* मूल में—छिपाए।
† मूल में—जाति।

५ उन्हों ने एक मन होकर युक्ति निकाली है,
और तेरे ही विरुद्ध वाचा बान्धी है।
६ ये तो एदोम के तम्बूवाले
और इश्माएली, मोआबी और हग्री,
७ गबाली, अम्मोनी, अमालेकी,
और सोर समेत पलिश्ती हैं।
८ इनके संग अश्शूरी भी मिल गए हैं,
उन से भी लूतवंशियों को सहारा मिला है। (सेला)
९ इन से ऐसा कर जैसा मिद्यानियों से,
और कीशोन नाले में सीसरा और याबीन से किया था,
जो एन्दोर में नाश हुए,
१० और भूमि के लिये खाद बन गए।
११ इनके रईसों को ओरेब और जाएब सरीखे,
और इनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे,
१२ जिन्हों ने कहा था,
कि हम परमेश्वर की चराइयों के अधिकारी आप ही हो जाएं॥
१३ हे मेरे परमेश्वर इनको बवन्डर की धूलि,
वा पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे।
१४ उस आग की नाईं जो वन को भस्म करती है,
और उस लौ की नाईं जो पहाड़ों को जला देती है,
१५ तू इन्हें अपनी आंधी से भगा दे,
और अपने बवन्डर से घबरा दे!
१६ इनके मुंह को अति लज्जित कर,
कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूंढ़ें।
१७ ये सदा के लिये लज्जित और घबराए रहें,
इनके मुंह काले हों, और इनका नाश हो जाए,
१८ जिस से यह जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है,
सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में कोरहवंशियों का भजन)

८४ हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं!
२ मेरा प्राण यहोवा के आंगनों की अभिलाषा करते करते मूर्छित हो चला,
मेरा तन मन दोनों जीवते ईश्वर को पुकार रहे॥
३ हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर, तेरी वेदियों में
गौरैया ने अपना बसेरा
और शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है
जिस में वह अपने बच्चे रखे।
४ क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं,
वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे॥ (सेला)
५ क्या ही धन्य है, वह मनुष्य जो तुझ से शक्ति पाता * है,
और वे जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है।
६ वे रोने की तराई में जाते हुए उसको सोतों का स्थान बनाते हैं,
फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष उपजाती है।
७ वे बल पर बल पाते जाते हैं,

* मूल में—जिसकी शक्ति तुझ में है।

उन मे से हर एक जन सिय्योन
मे परमेश्वर को अपना मुह
दिखाएगा ।।
८ हे सेनाओ के परमेश्वर यहोवा, मेरी
प्रार्थना सुन,
हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा !
(सेला)
९ हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि
कर,
और अपने अभिषिक्त का मुख देख !
१० क्योकि तेरे आगनो मे का एक दिन
और कही के हजार दिन से उत्तम है।
दुष्टो के डेरो मे वास करने से
अपने परमेश्वर के भवन की डेवढी
पर खडा रहना ही मुझे अधिक
भावता है।
११ क्योकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और
ढाल है,
यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा
देगा,
और जो लोग खरी चाल चलते है,
उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख
न छोडेगा।
१२ हे सेनाओ के यहोवा,
क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ
पर भरोसा रखता है !

(प्रधान बजानेवालों के लिये कोरह-
वंशियों का भजन)

८५ हे यहोवा तू अपने देश पर
प्रसन्न हुआ,
याकूब को बन्धुआई मे लौटा ले आया
है।
२ तू ने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा
किया है,
और उसके सब पापो को ढाप दिया
है। (सेला)
३ तू ने अपने रोष को शान्त किया है;
और अपने भडके हुए कोप को दूर
किया है ।।
४ हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर हम को
फेर,
और अपना क्रोध हम पर से दूर कर !
५ क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा ?
क्या तू पीढी से पीढी तक कोप
करता रहेगा ?
६ क्या तू हम को फिर न जिलाएगा,
कि तेरी प्रजा तुझ मे आनन्द करे ?
७ हे यहोवा अपनी करुणा हमे दिखा,
और तू हमारा उद्धार कर * ।।
८ मै कान लगाए रहूगा, कि ईश्वर
यहोवा क्या कहता है,
वह तो अपनी प्रजा से जो उसके
भक्त है, शान्ति की बाते कहेगा,
परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने
लगे।
९ निश्चय उसके डरवैयो के उद्धार का
समय निकट है,
तब हमारे देश मे महिमा का निवास
होगा ।।
१० करुणा और सच्चाई आपस मे मिल
गई है,
धर्म और मेल ने आपस मे चुम्बन
किया है।
११ पृथ्वी मे से सच्चाई उगती
और स्वर्ग से धर्म झुकता है।
१२ फिर यहोवा उत्तम पदार्थ देगा,
और हमारी भूमि अपनी उपज देगी।
१३ धर्म उसके आगे आगे चलेगा,
और उसके पावो के चिन्हो को हमारे
लिये मार्ग बनाएगा ।।

* मूल में—अपना उद्धार हमें दे।

(दाऊद की प्रार्थना)

८६ हे यहोवा कान लगाकर मेरी
सुन ले,
क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं।
२ मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं
भक्त * हूं,
तू मेरा परमेश्वर है, इसलिये अपने
दास का,
जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार
कर।
३ हे प्रभु मुझ पर अनुग्रह कर,
क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता
रहता हूं।
४ अपने दास के मन को आनन्दित कर,
क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी
ही ओर लगाता हूं।
५ क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा
करनेवाला है,
और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों
के लिये तू अति करुणामय है।
६ हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान
लगा,
और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान में
सुन।
७ संकट के दिन मैं तुझ को पुकारूंगा,
क्योंकि तू मेरी सुन लेगा॥
८ हे प्रभु देवताओं में से कोई भी तेरे
तुल्य नहीं,
और न किसी के काम तेरे कामों के
बराबर हैं।
९ हे प्रभु जितनी जातियों को तू ने
बनाया है, सब आकर तेरे साम्हने
दण्डवत् करेंगी,
और तेरे नाम की महिमा करेंगी।

* अर्थात् पवित्र वा जिस को तू चाहता है।

१० क्योंकि तू महान् और आश्चर्यकर्म
करनेवाला है,
केवल तू ही परमेश्वर है।
११ हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा,
तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा,
मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे
नाम का भय मानूं।
१२ हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने
सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद
करूंगा,
और तेरे नाम की महिमा सदा करता
रहूंगा।
१३ क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बड़ी
है,
और तू ने मुझ को अधोलोक की तह
में जाने से बचा लिया है॥
१४ हे परमेश्वर अभिमानी लोग तो मेरे
विरुद्ध उठे हैं,
और बलात्कारियों का समाज मेरे
प्राण का खोजी हुआ है,
और वे तेरा कुछ विचार नहीं
रखते।
१५ परन्तु प्रभु तू दयालु और अनुग्रहकारी
ईश्वर है,
तू विलम्ब से कोप करनेवाला और
अति करुणामय है।
१६ मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह
कर,
अपने दास को तू शक्ति दे,
और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार
कर॥
१७ मुझे भलाई का कोई लक्षण दिखा,
जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों,
क्योंकि हे यहोवा तू ने आप मेरी
सहायता की और मुझे शान्ति दी
है॥

(कोरहवंशियों का भजन। गीत)

८७ उसकी नेव पवित्र पर्वतों में है,
२ और यहोवा सिय्योन के फाटकों को याकूब के सारे निवासों से बढ़कर प्रीति रखता है।
३ हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं*। (सेला)
४ मैं अपने जान-पहचानवालों से रहब और बाबेल की भी चर्चा करूंगा, पलिश्त, सोर और कूश को देखो, यह वहां उत्पन्न हुआ था।
५ और सिय्योन के विषय में यह कहा जाएगा, कि अमुक अमुक मनुष्य उस में उत्पन्न हुआ था, और परमप्रधान आप ही उसको स्थिर रखेगा।
६ यहोवा जब देश-देश के लोगों के नाम लिखकर गिन लेगा, तब यह कहेगा, कि यह वहां उत्पन्न हुआ था॥ (सेला)
७ गवैये और नृतक दोनों कहेंगे कि हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं॥

(गीत कोरहवंशियों का भजन। प्रधान बजानेवाले के लिये महलतलग्नोत में। एज्रावंशी हेमान का मस्कील)

८८ हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर यहोवा, मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता आया हूं।
२ मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुंचे, मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा!

* वा तेरी मगनी महिमा के साथ हुई।

३ क्योंकि मेरा प्राण क्लेश में भरा हुआ है, और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुंचा है।
४ मैं कबर में पड़नेवालों में गिना गया हूं, मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूं।
५ मैं मुर्दों के बीच छोड़ा गया* हूं, और जो घात होकर कब्र में पड़े हैं, जिनको तू फिर स्मरण नहीं करता और वे तेरी सहायता रहित हैं†, उनके समान मैं हो गया हूं।
६ तू ने मुझे गड़हे के तल ही में, अन्धेरे और गहिरे स्थान में रखा है।
७ तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है, और तू ने अपने सब तरंगों से मुझे दुःख दिया है। (सेला)
८ तू ने मेरे पहिचानवालों को मुझ से दूर किया है, और मुझ को उनकी दृष्टि में घिनौना किया है। मैं बन्दी हूं और निकल नहीं सकता,
९ दुःख भोगते भोगते मेरी आंखें धुन्धला गईं। हे यहोवा मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूं।
१० क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत काम करेगा? क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे? (सेला)
११ क्या कबर में तेरी करुणा का, और विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा?

* मूल में—स्वाधीन।
† मूल में—तेरे हाथ से कटे हुए।

१२ क्या तेरे अद्भुत काम अन्धकार में,
वा तेरा धर्म विश्वासघात की दशा *
में जाना जाएगा ?
१३ परन्तु हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई
दी है,
और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ
तक पहुंचेगी।
१४ हे यहोवा, तू मुझ को क्यों छोड़ता
है ?
तू अपना मुख मुझ से क्यों छिपाए
रहता है ?
१५ मैं बचपन ही से दु खी वरन अधमुआ
हूं,
तुझ से भय खाते मैं अति व्याकुल
हो गया हूं।
१६ तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है,
उस भय से मैं मिट गया हूं।
१७ वह दिन भर जल की नाईं मुझे घेरे
रहता है,
वह मेरे चारों ओर दिखाई देता
है।
१८ तू ने मित्र और भाईबन्धु दोनों को
मुझ से दूर किया है,
और मेरे जान-पहिचानवालों को
अन्धकार में डाल दिया है॥

(एतान एज्रावंशी का मश्कील)

८९ मैं यहोवा की सारी करुणा
के विषय सदा गाता रहूंगा,
मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक
जनाता रहूंगा।
२ क्योंकि मैं ने कहा है, तेरी करुणा
सदा बनी रहेगी,
तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर
रखेगा।

* मूल में—देश।

३ मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बान्धी
है,
मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ
खाई है,
४ कि मैं तेरे वंश को सदा स्थिर
रखूंगा,
और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी
तक बनाए रखूंगा। (सेला)
५ हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम
की,
और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई
की प्रशंसा होगी।
६ क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के
तुल्य कौन ठहरेगा ?
बलवन्तों * के पुत्रों में से कौन है
जिसके साथ यहोवा की उपमा दी
जाएगी ?
७ ईश्वर पवित्रों की गोष्ठी में अत्यन्त
प्रतिष्ठा के योग्य,
और अपने चारों ओर सब रहनेवालों
से अधिक भययोग्य है।
८ हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा,
हे याह, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है ?
तेरी सच्चाई तो तेरे चारों ओर है !
९ समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है,
जब उसके तरंग उठते हैं, तब तू
उनको शान्त कर देता है।
१० तू ने रहब को घात किए हुए के समान
कुचल डाला,
और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल
से तितर बितर किया है।
११ आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है,
जगत और जो कुछ उस में है, उसे
तू ही ने स्थिर किया है।

* वा ईश्वर।

१२ उत्तर और दक्खिन को तू ही ने सिरजा,
तावोर और हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं।
१३ तेरी भुजा वलवन्त है,
तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दहिना हाथ प्रवल है।
१४ तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है,
करुणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती है।
१५ क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है,
हे यहोवा वे लोग तेरे मुख के प्रकाश मे चलते है,
१६ वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते है,
और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं।
१७ क्योकि तू उनके वल की शोभा है,
और अपनी प्रसन्नता से हमारे सीग को ऊचा करेगा।
१८ क्योकि हमारी ढाल यहोवा की ओर से है,
हमारा राजा इस्राएल के पवित्र की ओर से है॥
१९ एक समय तू ने अपने भक्त को दर्शन देकर वातें की,
और कहा, मै ने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा है,
और प्रजा मे से एक को चुनकर वढाया है।
२० मैं ने अपने दास दाऊद को लेकर,
अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।
२१ मेरा हाथ उसके साथ वना रहेगा,
और मेरी भुजा उसे दृढ रखेगी।
२२ शत्रु उसको तग करने न पाएगा,
और न कुटिल जन उसको दु:ख देने पाएगा।
२३ मैं उसके द्रोहियो को उसके साम्हने से नाश करूगा,
और उसके वैरियो पर विपत्ति डालूगा।
२४ परन्तु मेरी सच्चाई और करुणा उस पर वनी रहेगी,
और मेरे नाम के द्वारा उसका सीग ऊचा हो जाएगा।
२५ मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे
और महानदो को उसके दहिने हाथ के नीचे कर दूगा।
२६ वह मुझे पुकारके कहेगा, कि तू मेरा पिता है,
मेरा ईश्वर और मेरे वचने की चट्टान है।
२७ फिर मै उसको अपना पहिलौठा,
और पृथ्वी के राजाओ पर प्रधान ठहराऊगा।
२८ मै अपनी करुणा उस पर सदा बनाए रहूगा,
और मेरी वाचा उसके लिये अटल रहेगी।
२९ मै उसके वश को सदा वनाए रखूगा,
और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा वनी रहेगी।
३० यदि उसके वश के लोग मेरी व्यवस्था को छोडे
और मेरे नियमो के अनुसार न चलें,
३१ यदि वे मेरी विधियो का उल्लघन करे,
और मेरी आज्ञाओ को न मानें,

३२ तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से,
और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूगा।
३३ परन्तु मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊंगा,
और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूगा।
३४ मैं अपनी वाचा न तोडूगा,
और जो मेरे मुह से निकल चुका है, उसे न बदलूगा।
३५ एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ खा चुका हू,
मैं दाऊद को कभी धोखा न दूगा।
३६ उसका वंश सर्वदा रहेगा,
और उसकी राजगद्दी सूर्य की नाईं मेरे सम्मुख ठहरी रहेगी।
३७ वह चन्द्रमा की नाईं,
और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी की नाईं सदा बना रहेगा॥ (सेला)
३८ तौभी तू ने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज दिया,
और उस पर अति क्रोध किया है।
३९ तू अपने दास के साथ की वाचा से घिनाया,
और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है।
४० तू ने उसके सब बाड़ों को तोड़ डाला है,
और उसके गढ़ों को उजाड़ दिया है।
४१ सब बटोही उसको लूट लेते है,
और उसके पड़ोसियों से उसकी नामधराई होती है।
४२ तू ने उसके द्रोहियों को प्रबल* किया,
और उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।
४३ फिर तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है,
और युद्ध में उसके पांव जमने नही देता।
४४ तू ने उसका तेज हर लिया † है,
और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है।
४५ तू ने उसकी जवानी को घटाया,
और उसको लज्जा से ढांप दिया है॥ (सेला)
४६ हे यहोवा तू कब तक लगातार मुह फेरे ‡ रहेगा,
तेरी जलजलाहट कब तक आग की नाईं भड़की रहेगी॥
४७ मेरा स्मरण कर, कि मैं कैसा अनित्य हू,
तू ने सब मनुष्यों को क्यों व्यर्थ सिरजा है?
४८ कौन पुरुष सदा अमर रहेगा §?
क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता है? (सेला)
४९ हे प्रभु तेरी प्राचीनकाल की करुणा कहा रही,
जिसके विषय में तू ने अपनी सच्चाई की शपथ दाऊद से खाई थी?
५० हे प्रभु अपने दासों की नामधराई की सुधि कर,

---

* मूल में—द्रोहियों का दहिना हाथ ऊंचा।
† मूल में—बन्द किया।
‡ मूल में—अपने को छिपाए।
§ मूल में—जीता रहेगा मृत्यु न देखेगा।

मैं तो सब सामर्थी जातियों का बोझ
लिए * रहता हूं।
५१ तेरे उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा,
तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर
उसकी * नामधराई की है ॥
५२ यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा।
आमीन फिर आमीन ॥

* मूल में—अपनी गोद में लिए।

* मूल में—तेरे अभिषिक्त के पदचिन्हों की।

चौथा भाग

(परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना)

९० हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक
हमारे लिये धाम बना है।
२ इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए,
वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना
की,
वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक
तू ही ईश्वर है ॥
३ तू मनुष्य को लौटाकर चूर करता है,
और कहता है, कि हे आदमियो,
लौट आओ!
४ क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे
हैं
जैसा कल का दिन जो बीत गया,
वा रात का एक पहर ॥
५ तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है,
वे स्वप्न से ठहरते हैं,
वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान
होते हैं।
६ वह भोर को फूलती और बढ़ती है,
और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती
है ॥
७ क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हुए हैं,
और तेरी जलजलाहट से घबरा गए
हैं।
८ तू ने हमारे अधर्म के कामों को
अपने सम्मुख,
और हमारे छिपे हुए पापों को अपने
मुख की ज्योति में रखा है ॥
९ क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में
बीत जाते हैं,
हम अपने वर्ष शब्द की नाईं बिताते
हैं।
१० हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते
हैं,
और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष
भी हो जाएं,
तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट
और शोक ही शोक है,
क्योंकि वह जल्दी कट * जाती है,
और हम जाते रहते हैं ॥
११ तेरे क्रोध की शक्ति को
और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को
कौन समझता है?
१२ हम को अपने दिन गिनने की समझ दे
कि हम बुद्धिमान हो जाएं † ॥
१३ हे यहोवा लौट आ! कब तक?
और अपने दासों पर तरस खा!
१४ भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त
कर,
कि हम जीवन भर जयजयकार और
आनन्द करते रहें।

* मूल में—उठ।
† मूल में—बुद्धिवाला मन ले आएं।

१५ जितने दिन तू हमें दुःख देता आया,
और जितने वर्ष हम क्लेश भोगते आए हैं
उतने ही वर्ष हम को आनन्द दे।
१६ तेरा काम तेरे दासों को,
और तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर प्रगट हो।
१७ और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो,
तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर,
हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर॥

९१ जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे,
वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
२ मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है,
वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।
३ वह तो मुझे बहेलिये के जाल से,
और महामारी से बचाएगा,
४ वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा,
और तू उसके पैरों के नीचे शरण पाएगा,
उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।
५ तू न रात के भय से डरेगा,
और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,
६ न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है,
और न उस महारोग से जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है॥
७ तेरे निकट हजार,
और तेरी दहिनी ओर दस हजार गिरेंगे,
परन्तु वह तेरे पास न आएगा।
८ परन्तु तू अपनी आंखों से दृष्टि करेगा
और दुष्टों के अन्त को देखेगा॥
९ हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है।
तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,
१० इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी,
न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा॥
११ क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा,
कि जहां कहीं तू जाए * वे तेरी रक्षा करें।
१२ वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे,
ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
१३ तू सिंह और नाग को कुचलेगा,
तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा॥
१४ उस ने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा,
मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उस ने मेरे नाम को जान लिया है।
१५ जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा,
संकट में मैं उसके संग रहूंगा,
मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।

* मूल में—तेरे सब मार्गों में।

१६ मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा,
और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन
दिखाऊंगा ॥

(भजन । विश्राम के दिन के
लिये गीत)

९२ यहोवा का धन्यवाद करना
भला है,
हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन
गाना,
२ प्रातःकाल को तेरी करुणा,
और प्रति रात तेरी सच्चाई का
प्रचार करना,
३ दस तारवाले बाजे और सारंगी पर,
और वीणा पर गम्भीर स्वर से गाना
भला है ।
४ क्योंकि, हे यहोवा, तू ने मुझ को
अपने काम से आनन्दित किया है,
और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण
जयजयकार करूंगा ॥
५ हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े
है !
तेरी कल्पनाएं बहुत गम्भीर है !
६ पशु समान मनुष्य इसको नहीं
समझता,
और मूर्ख इसका विचार नहीं करता :
७ कि दुष्ट जो घास की नाईं फूलते-
फलते हैं,
और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित
होते हैं,
यह इसलिये होता है, कि वे सर्वदा के
लिये नाश हो जाएं,
८ परन्तु हे यहोवा, तू सदा विराजमान
रहेगा ।
९ क्योंकि हे यहोवा, तेरे शत्रु, हां
तेरे शत्रु नाश होंगे,
सब अनर्थकारी तितर बितर
होंगे ॥
१० परन्तु मेरा सींग तू ने जंगली सांढ
का सा ऊंचा किया है;
मैं टटके तेल से चुपड़ा गया हूं ।
११ और मैं अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके,
और उन कुकर्मियों का हाल जो
मेरे विरुद्ध उठे थे, सुनकर सन्तुष्ट
हुआ हूं ॥
१२ धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे,
और लबानोन के देवदार की नाईं
बढ़ते रहेंगे ।
१३ वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर,
हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले
फलेंगे ।
१४ वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे,
और रस भरे और लहलहाते रहेंगे,
१५ जिस से यह प्रगट हो, कि यहोवा
सीधा है,
वह मेरी चट्टान है, और उस में
कुटिलता कुछ भी नहीं ॥

९३ यहोवा राजा है, उस ने
माहात्म्य का पहिरावा पहिना
है;
यहोवा पहिरावा पहिने हुए, और
सामर्थ्य का फेटा बान्धे है ।
इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं
टलने का ।
२ हे यहोवा, तेरी राजगद्दी अनादिकाल
से स्थिर है,
तू सर्वदा से है ॥
३ हे यहोवा, महानदों का कोलाहल हो
रहा है,
महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है,
महानद गरजते हैं ।

४ महासागर के शब्द से,
और समुद्र की महातरंगो मे,
विराजमान यहोवा अधिक महान है ॥
५ तेरी चितौनिया अति विश्वासयोग्य है,
हे यहोवा तेरे भवन को युग युग पवित्रता ही शोभा देती है ॥

९४ हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले ईश्वर,
हे पलटा लेनेवाले ईश्वर, अपना तेज दिखा !
२ हे पृथ्वी के न्यायी उठ,
और घमण्डियो को बदला दे !
३ हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक,
दुष्ट लोग कब तक डीग मारते रहगे ?
४ वे बकते और ढिठाई की बातें बोलते है,
सब अनर्थकारी बडाई मारते है ।
५ हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को पीस डालते है,
वे तेरे निज भाग को दु ख देते है ।
६ वे विधवा और परदेशी का घात करते,
और बपमूओ को मार डालते है,
७ और कहते है, कि याह न देखेगा,
याकूब का परमेश्वर विचार न करेगा ॥
८ तुम जो प्रजा में पशु सरीखे हो, विचार करो,
और हे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान हो जाओगे ?
९ जिस ने कान दिया, क्या वह आप नही सुनता ?
जिस ने आख रची, क्या वह आप नही देखता ?
१० जो जाति जाति को ताडना देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है,
क्या वह न समझाएगा ?
११ यहोवा मनुष्य की कल्पनाओ को तो जानता है कि वे मिथ्या है ॥
१२ हे याह, क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसको तू ताडना देता है,
और अपनी व्यवस्था सिखाता है,
१३ क्योकि तू उसको विपत्ति के दिनो में उस समय तक चैन देता रहता है,
जब तक दुष्टो के लिये गड्हा नही खोदा जाता ।
१४ क्योकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा,
वह अपने निज भाग को न छोडेगा,
१५ परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया जाएगा,
और सारे सीधे मनवाले उसके पीछे पीछे हो लेगें ॥
१६ कुकर्मियो के विरुद्ध मेरी ओर कौन खडा होगा ?
मेरी ओर से अनर्थकारियो का कौन साम्हना करेगा ?
१७ यदि यहोवा मेरा सहायक न होता,
तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पडता ।
१८ जब मैं ने कहा, कि मेरा पाव फिसलने लगा है,
तब हे यहोवा, तेरी करुणा ने मुझे थाम लिया ।
१९ जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताए होती है,
तब हे यहोवा, तेरी दी हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है ।
२० क्या तेरे और दुष्टों के सिंहासन के बीच संधि होगी,

जो कानून की आड़ में उत्पात मचाते
हैं ?
२१ वे धर्मी का प्राण लेने को दल बान्धते
हैं,
और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं।
२२ परन्तु यहोवा मेरा गढ़,
और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की
चट्टान ठहरा है।
२३ और उस ने उनका अनर्थ काम उन्ही
पर लौटाया है,
और वह उन्हें उन्ही की बुराई के
द्वारा सत्यानाश करेगा,
हमारा परमेश्वर यहोवा उनको सत्या-
नाश करेगा ॥

९५ आओ हम यहोवा के लिये
ऊंचे स्वर से गाए,
अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार
करें !
२ हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख
आए,
और भजन गाते हुए उसका जयजय-
कार करें।
३ क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है,
और सब देवताओं के ऊपर महान
राजा है।
४ पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ
में हैं;
और पहाड़ो की चोटियां भी उसी
की हैं।
५ समुद्र उसका है, और उसी ने उसको
बनाया,
और स्थल भी उसी के हाथ का रचा
है ॥
६ आओ हम झुककर दण्डवत्
करें,
और अपने कर्त्ता यहोवा के साम्हने
घुटने टेकें !
७ क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है,
और हम उसकी चराई की प्रजा,
और उसके हाथ की भेड़े हैं ॥
भला होता, कि आज तुम उसकी
बात सुनते !
८ अपना अपना हृदय ऐसा कठोर मत
करो, जैसा मरीबा में,
वा मस्सा के दिन जंगल में हुआ
था,
९ जब तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा,
उन्हो ने मुझ को जांचा और मेरे
काम को भी देखा।
१० चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी के
लोगो से रूठा रहा,
और मैं ने कहा, ये तो भरमनेवाले
मन के हैं,
और इन्हो ने मेरे मार्गों को नहीं
पहिचाना।
११ इस कारण मैं ने क्रोध में आकर शपथ
खाई कि
ये मेरे विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न
करने पाएंगे ॥

९६ यहोवा के लिये एक नया
गीत गाओ,
हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा के
लिये गाओ !
२ यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को
धन्य कहो;
दिन दिन उसके किए हुए उद्धार का
शुभसमाचार सुनाते रहो।
३ अन्य जातियों में उसकी महिमा का,
और देश देश के लोगों में उसके
आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।

४ क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति
के योग्य है,
वह तो सब देवताओं से अधिक
भययोग्य है।
५ क्योंकि देश देश के सब देवता तो
मूरतें ही हैं,
परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया
है।
६ उसके चारो ओर विभव और ऐश्वर्य
है,
उसके पवित्रस्थान में सामर्थ्य और
शोभा है॥
७ हे देश देश के कुलो, यहोवा का
गुणानुवाद करो,
यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को
मानो!
८ यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो
जो उसके योग्य है,
भेंट लेकर उसके आंगनों में आओ!
९ पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा
को दण्डवत् करो,
हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके साम्हने
कांपते रहो!
१० जाति जाति में कहो, यहोवा राजा
हुआ है!
और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह
टलने का नहीं,
वह देश देश के लोगों का न्याय
सीधाई से करेगा॥
११ आकाश आनन्द करे, और पृथ्वी
मगन हो,
समुद्र और उस में की सब वस्तुएं गरज
उठें,
१२ मैदान और जो कुछ उस में है, वह
प्रफुल्लित हो,
उसी समय वन के सारे वृक्ष जय-
जयकार करेंगे।
१३ यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि
वह आनेवाला है।
वह पृथ्वी का न्याय करने को आने-
वाला है,
वह धर्म से जगत का,
और सच्चाई से देश देश के लोगों का
न्याय करेगा॥

९७ यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी
मगन हो,
और द्वीप जो बहुतेरे हैं, वह भी
आनन्द करें!
२ बादल और अन्धकार उसके चारों
ओर हैं,
उसके सिंहासन का मूल धर्म और
न्याय है।
३ उसके आगे आगे आग चलती हुई
उसके द्रोहियों को चारों ओर भस्म
करती है।
४ उसकी बिजलियों से जगत प्रकाशित
हुआ,
पृथ्वी देखकर थरथरा गई है!
५ पहाड़ यहोवा के साम्हने,
मोम की नाईं पिघल गए, अर्थात्
सारी पृथ्वी के परमेश्वर के
साम्हने॥
६ आकाश ने उसके धर्म की साक्षी
दी,
और देश देश के सब लोगों ने उसकी
महिमा देखी है।
७ जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना
करते
और मूरतों पर फूलते हैं, वे लज्जित
हों,

हे सब देवताओ तुम उसी को दण्डवत्
करो।
८ सिय्योन सुनकर आनन्दित हुई,
और यहूदा की बेटियां मगन हुईं,
हे यहोवा, यह तेरे नियमों के कारण
हुआ।
९ क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के
ऊपर परमप्रधान है,
तू सारे देवताओं से अधिक महान
ठहरा है॥
१० हे यहोवा के प्रेमियो, बुराई से घृणा
करो;
वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा
करता,
और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता
है।
११ धर्मी के लिये ज्योति,
और सीधे मनवालों के लिये आनन्द
बोया गया है।
१२ हे धर्मियो यहोवा के कारण आनन्दित
हो,
और जिस पवित्र नाम से उसका
स्मरण होता है, उसका धन्यवाद
करो!

(भजन)

९८ यहोवा के लिये एक नया गीत
गाओ,
क्योंकि उस ने आश्चर्यकर्म किए
है!
उसके दहिने हाथ और पवित्र भुजा
ने उसके लिये उद्धार किया है!
२ यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार
प्रकाशित किया,
उस ने अन्यजातियों की दृष्टि में
अपना धर्म प्रगट किया है।
३ उस ने इस्राएल के घराने पर की
अपनी करुणा और सच्चाई की
सुधि ली,
और पृथ्वी के सब दूर दूर देशों ने
हमारे परमेश्वर का किया हुआ
उद्धार देखा है॥
४ हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा का
जयजयकार करो;
उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, और
भजन गाओ!
५ वीणा बजाकर यहोवा का भजन
गाओ,
वीणा बजाकर भजन का स्वर
सुनाओ।
६ तुरहियां और नरसिंगे फूक फूंककर
यहोवा राजा का जयजयकार करो॥
७ समुद्र और उस में की सब वस्तुए
गरज उठें,
जगत और उसके निवासी महाशब्द
करें!
८ नदियां तालियां बजाएं,
पहाड मिलकर जयजयकार करें।
९ यह यहोवा के साम्हने हो, क्योंकि
वह पृथ्वी का न्याय करने को
आनेवाला है।
वह धर्म से जगत का,
और सीधाई से देश देश के लोगों का
न्याय करेगा॥

९९ यहोवा राजा हुआ है; देश
देश के लोग कांप उठें!
वह करूबों पर विराजमान है, पृथ्वी
डोल उठे!
२ यहोवा सिय्योन में महान है,
और वह देश देश के लोगों के ऊपर
प्रधान है।

३ वे तेरे महान और भययोग्य नाम
का धन्यवाद करें।
वह तो पवित्र है।
४ राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल
रखती है,
तू ही ने सीधाई को स्थापित किया,
न्याय और धर्म को याकूब में तू ही
ने चालू किया है।
५ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो,
और उसके चरणों की चौकी के
साम्हने दण्डवत् करो।
वह पवित्र है।
६ उसके याजकों में मूसा और हारून,
और उसके प्रार्थना करनेवालों में से
शमूएल
यहोवा को पुकारते थे, और वह
उनकी सुन लेता था।
७ वह बादल के खम्भे में होकर उन से
बातें करता था,
और वे उसकी चितौनियों और उसकी
दी हुई विधियों पर चलते थे॥
८ हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू उनकी
सुन लेता था,
तू उनके कामों का पलटा तो लेता था
तौभी उनके लिये क्षमा करनेवाला
ईश्वर था।
९ हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो,
और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत्
करो,
क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र
है।

(धन्यवाद का भजन)

१०० हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा
का जयजयकार करो।
२ आनन्द से यहोवा की आराधना करो।
जयजयकार के साथ उसके सम्मुख
आओ।
३ निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर
है।
उसी ने हम को बनाया, और हम
उसी के हैं*,
हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई
की भेड़ें हैं॥
४ उसके फाटकों से धन्यवाद,
और उसके आंगनों में स्तुति करते
हुए प्रवेश करो,
उसका धन्यवाद करो, और उसके
नाम को धन्य कहो।
५ क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा
सदा के लिये,
और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी
तक बनी रहती है॥

१०१ मैं करुणा और न्याय के विषय
गाऊंगा,
हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊंगा।
२ मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में
चलूंगा।
तू मेरे पास कब आएगा।
मैं अपने घर में मन की खराई के
साथ अपनी चाल चलूंगा,
३ मैं किसी ओछे काम पर चित्त न
लगाऊंगा॥
मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से
घिन रखता हूं,
ऐसे काम में मैं न लगूंगा।
४ टेढ़ा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा,
मैं बुराई को जानूंगा भी नहीं॥
५ जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली
खाए, उसको मैं सत्यानाश करूंगा,

* वा, न कि हम अपने को।

जिसकी आंखें चढी हो और जिसका
मन घमण्डी है, उसकी मैं न
सहूगा ॥
६ मेरी आखें देश के विश्वासयोग्य लोगो
पर लगी रहेंगी कि वे मेरे सग
रहें,
जो खरे मार्ग पर चलता है वही मेरा
टहलुआ होगा ॥
७ जो छल करता है वह मेरे घर के
भीतर न रहने पाएगा,
जो झूठ बोलता है वह मेरे साम्हने
बना न रहेगा ॥
८ भोर ही भोर को मैं देश के सब
दुष्टो को सत्यानाश किया करूगा,
इसलिये कि यहोवा के नगर के सब
अनर्थकारियो को नाश करू ॥

(दीन जन की उस समय की प्रार्थना जब वह दु ख का मारा अपने शोक की बाते यहोवा के साम्हने खोलकर कहता हो*)

१०२ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरी दोहाई तुझ तक पहुचे।
२ मेरे सकट के दिन अपना मुख मुझ
से न छिपा ले,
अपना कान मेरी ओर लगा,
जिस समय मैं पुकारू, उसी समय
फुर्ती से मेरी सुन ले।
३ क्योकि मेरे दिन धुए की नाईं † उडे
जाते है,
और मेरी हड्डिया लुकटी के समान
जल गई हैं।
४ मेरा मन झुलसी हुई घास की नाईं
सूख गया है,
और मैं अपनी रोटी खाना भूल
जाता हू।
५ कहरते कहरते
मेरा चमडा हड्डियो में सट गया है।
६ मैं जगल के धनेश के समान हो
गया हू,
मैं उजडे स्थानो के उल्लू के समान
बन गया हूं।
७ मैं पडा पडा जागता रहता हू और
गौरे के समान हो गया हू
जो छत के ऊपर अकेला बैठता
है।
८ मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई
करते है,
जो मेरे विरोध की धुन मे बावले
हो रहे है, वे मेरा नाम लेकर शपथ
खाते है।
९ क्योकि मैं ने रोटी की नाईं राख
खाई और आसू मिलाकर पानी
पीता हू।
१० यह तेरे क्रोध और कोप के कारण
हुआ है,
क्योकि तू ने मुझे उठाया, और फिर
फेक दिया है।
११ मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान
है,
और मैं आप घास की नाईं सूख
चला हू ॥
१२ परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान
रहेगा,
और जिस नाम से तेरा स्मरण होता
है, वह पीढी से पीढी तक बना
रहेगा।
१३ तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा,
क्योकि उस पर अनुग्रह करने का
ठहराया हुआ समय आ पहुचा है।

---

* मूल में—उण्डेलता हो।
† मूल में—धुए में।

१४ क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरों को
चाहते हैं,
और उसकी धूलि पर तरस खाते हैं।
१५ इसलिये अन्यजातियां यहोवा के नाम
का भय मानेंगी,
और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप
से डरेंगे।
१६ क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को फिर
बसाया है,
और वह अपनी महिमा के साथ
दिखाई देता है,
१७ वह लाचार की प्रार्थना की ओर
मुंह करता है,
और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं
जानता॥
१८ यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये
लिखी जाएगी,
और एक जाति जो सिरजी जाएगी
वही याह की स्तुति करेगी।
१९ क्योंकि यहोवा ने अपने ऊंचे और
पवित्र स्थान से दृष्टि करके
स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देखा है,
२० ताकि बन्धुओं का कराहना सुने,
और घात होनेवालों के बन्धन खोले,
२१ और सिय्योन में यहोवा के नाम का
वर्णन किया जाए,
और यरूशलेम में उसकी स्तुति की
जाए,
२२ यह उस समय होगा जब देश देश,
और राज्य राज्य के लोग
यहोवा की उपासना करने को इकट्ठे
होंगे॥
२३ उस ने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर,
मेरे बल और आयु को घटाया।
२४ मैं ने कहा, हे मेरे ईश्वर, मुझे आधी
आयु में न उठा ले,
तेरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने
रहेंगे।
२५ आदि में तू ने पृथ्वी की नेव डाली,
और आकाश तेरे हाथों का बनाया
हुआ है।
२६ वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना
रहेगा,
और वह सब कपड़े के समान पुराना
हो जाएगा।
तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा,
और वह तो बदल जाएगा,
२७ परन्तु तू वही है,
और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने
का।
२८ तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी,
और उनका वंश तेरे साम्हने स्थिर
रहेगा॥

(दाऊद का भजन)

१०३ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य
कह,
और जो कुछ मुझ में है, वह उसके
पवित्र नाम को धन्य कहे।
२ हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह,
और उसके किसी उपकार को न
भूलना।
३ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा
करता,
और तेरे सब रोगों को चंगा करता
है,
४ वही तो तेरे प्राण को नाश होने
से बचा लेता है,
और तेरे सिर पर करुणा और दया
का मुकुट बान्धता है,
५ वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों
से तृप्त करता है,

जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं
नई हो जाती है ।।
६ यहोवा सब पिसे हुओं के लिये
धर्म और न्याय के काम करता है ।
७ उस ने मूसा को अपनी गति,
और इस्राएलियो पर अपने काम प्रगट किए ।
८ यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी,
विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है ।
९ वह सर्वदा वादविवाद करता न रहेगा,
न उसका क्रोध सदा के लिये भडका रहेगा ।
१० उस ने हमारे पापो के अनुसार हम से व्यवहार नही किया,
और न हमारे अधर्म के कामो के अनुसार हम को बदला दिया है ।
११ जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊचा है,
वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयो के ऊपर प्रवल है ।
१२ उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है,
उस ने हमारे अपराधो को हम से उतनी ही दूर कर दिया है ।
१३ जैसे पिता अपने वालको पर दया करता है,
वैसे ही यहोवा अपने डरवैयो पर दया करता है ।
१४ क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है,
और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है * ।।
१५ मनुष्य की आयु घास के समान होती है,
वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है,
१६ जो पवन लगते ही ठहर नही सकता,
और न वह अपने स्थान मे फिर मिलता है * ।
१७ परन्तु यहोवा की करुणा उसके डरवैयों पर युग युग,
और उसका धर्म उनके नाती-पोतो पर भी प्रगट होता रहता है,
१८ अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते
और उसके उपदेशो को स्मरण करके उन पर चलते हैं ।।
१९ यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग मे स्थिर किया है,
और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है ।
२० हे यहोवा के दूतो, तुम जो बडे वीर हो,
और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो
उसको धन्य कहो !
२१ हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके टहलुओ,
तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो !
२२ हे यहोवा की सारी सृष्टि,
उसके राज्य के सब स्थानो मे उसको धन्य कहो ।
हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह !

१०४ हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह ।
हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अत्यन्त महान है ।
तू विभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहिने हुए है,

* मूल में—हम धूल ही हैं।

* मूल में—न उसका स्थान उसे फिर चीन्हेगा।

२ जो उजियाले को चादर की नाईं
ओढे रहता है,
और आकाश को तम्बू के समान
ताने रहता है,
३ जो अपनी अटारियो की कड़िया जल
में धरता है,
और मेघो को अपना रथ बनाता
है,
और पवन के पखो पर चलता है,
४ जो पवनो को अपने दूत,
और धधकती आग को अपने टहलुए
बनाता है ॥
५ तू ने पृथ्वी को उसकी नीव पर स्थिर
किया है,
ताकि वह कभी न डगमगाए ।
६ तू ने उसको गहिरे सागर से ढाप
दिया है जैसे वस्त्र मे,
जल पहाडो के ऊपर ठहर गया ।
७ तेरी घुडकी से वह भाग गया,
तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह
उतावली करके बह गया ।
८ वह पहाडो पर चढ गया, और
तराइयो के मार्ग से उस स्थान मे
उतर गया
जिसे तू ने उसके लिये तैयार किया
था ।
९ तू ने एक सिवाना ठहराया जिसको
वह नही लाघ सकता है,
और न फिरकर स्थल को ढाप सकता
है ॥
१० तू नालो मे सोतो को बहाता है,
वे पहाडो के बीच से बहते है,
११ उन से मैदान के सब जीव-जन्तु जल
पीते है,
जगली गदहे भी अपनी प्यास बुझा
लेते है ।
१२ उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा
करते, और डालियों के बीच में से
बोलते है ।
१३ तू अपनी अटारियो में से पहाडो को
सीचता है
तेरे कामो के फल से पृथ्वी तृप्त
रहती है ॥
१४ तू पशुओ के लिये घास,
और मनुष्यो के काम के लिये अन्नादि
उपजाता है,
और इस रीति भूमि से वह भोजन-
वस्तुए उत्पन्न करता है,
१५ और दाखमधु जिस से मनुष्य का मन
आनन्दित होता है,
और तेल जिस से उसका मुख चमकता
है,
और अन्न जिस से वह सम्भल जाता
है ।
१६ यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते है,
अर्थात् लबानोन के देवदार जो उसी
के लगाए हुए है ।
१७ उन मे चिडिया अपने घोसले बनाती
है,
लगलग का बसेरा सनौवर के वृक्षो
मे होता है ।
१८ ऊचे पहाड जगली बकरो के लिये है,
और चट्टाने शापानो के शरणस्थान
है ।
१९ उस ने नियत समयो के लिये चन्द्रमा
को बनाया है,
सूर्य अपने अस्त होने का समय
जानता है ।
२० तू अन्धकार करता है,
तब रात हो जाती है,
जिस में वन के सब जीव-जन्तु घूमते
फिरते है ।

२१ जवान सिंह अहेर के लिये गरजते हैं,
और ईश्वर से अपना आहार मांगते हैं।
२२ सूर्य उदय होते ही वे चले जाते हैं
और अपनी मांदों में जा बैठते हैं।
२३ तब मनुष्य अपने काम के लिये
और सन्ध्या तक परिश्रम करने के लिये निकलता है॥
२४ हे यहोवा तेरे काम अनगिनित हैं!
इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है;
पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है।
२५ इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है,
और उस में अनगिनित जलचरी * जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं।
२६ उस में जहाज भी आते जाते हैं,
और लिब्यातान भी जिसे तू ने वहां खेलने के लिये बनाया है॥
२७ इन सब को तेरा ही आसरा है,
कि तू उनका आहार समय पर दिया करे।
२८ तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं;
तू अपनी मुट्ठी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं।
२९ तू मुख फेर लेता † है, और वे घबरा जाते हैं,
तू उनकी सांस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं
और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।
३० फिर तू अपनी ओर से सांस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं;
और तू धरती को नया कर देता है॥
३१ यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे,
यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे!
३२ उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी कांप उठती है, और
उसके छूते ही पहाड़ों से धुआं निकलता है।
३३ मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूंगा;
जब तक मैं बना रहूंगा तब तक अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा।
३४ मेरा ध्यान करना, उसको प्रिय लगे, क्योंकि
मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूंगा।
३५ पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएं,
और दुष्ट लोग आगे को न रहें!
हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह!
याह की स्तुति करो *!

१०५

यहोवा का धन्यवाद करो, उस से प्रार्थना करो,
देश देश के लोगों में उसके कामों का प्रचार करो!
२ उसके लिये गीत गाओ, उसके लिये भजन गाओ,
उसके सब आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करो!
३ उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो;
यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो!

* मूल में—रेंगनेवाले।
† मूल में—छिपाता।

* मूल में—हल्लिलूयाह।

४ यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजो,
उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो!
५ उसके किए हुए आश्चर्यकर्म स्मरण करो,
उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो!
६ हे उसके दास इब्राहीम के वंश,
हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो!
७ वही हमारा परमेश्वर यहोवा है,
पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं।
८ वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है,
यह वही वचन है जो उस ने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है,
९ वही वाचा जो उस ने इब्राहीम के साथ बान्धी,
और उसके विषय में उस ने इसहाक से शपथ खाई,
१० और उसी को उस ने याकूब के लिये विधि करके,
और इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया,
११ कि मैं कनान देश को तुझी को दूंगा,
वह बांट में तुम्हारा निज भाग होगा॥
१२ उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे,
वरन बहुत ही थोड़े, और उस देश में परदेशी थे।
१३ वे एक जाति से दूसरी जाति में,
और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे,
१४ परन्तु उस ने किसी मनुष्य को उन पर अन्धेर करने न दिया,
और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था,
१५ कि मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ,
और न मेरे नबियों की हानि करो!
१६ फिर उस ने उस देश में अकाल भेजा,
और अन्न के सब आधार को दूर कर दिया *।
१७ उस ने यूसुफ नाम एक पुरुष को उन से पहिले भेजा था,
जो दास होने के लिये बेचा गया था।
१८ लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियां डालकर उसे दुःख दिया,
वह लोहे की सांकलों से जकड़ा गया †,
१९ जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई
तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।
२० तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया,
और देश देश के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए,
२१ उस ने उसको अपने भवन का प्रधान
और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया,
२२ कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार कैद करे
और पुरनियों को ज्ञान सिखाए॥
२३ फिर इस्राएल मिस्र में आया,
और याकूब हाम के देश में परदेशी रहा।
२४ तब उस ने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया,
और उसके द्रोहियों से अधिक बलवन्त किया।

---

* मूल में—सारी छड़ी को तोड़ दिया।
† मूल में—उसका जीव लोहे में समाया।

२५ उस ने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया, कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने,
और उसके दासो से छल करने लगे ।।
२६ उस ने अपने दास मूसा को,
और अपने चुने हुए हारून को भेजा ।
२७ उन्हो ने उनके बीच उसकी ओर से भाति भाति के चिन्ह,
और हाम के देश मे चमत्कार दिखाए ।
२८ उस ने अन्धकार कर दिया, और अन्धियारा हो गया,
और उन्हो ने उसकी बातों को न टाला ।
२९ उस ने मिस्रियो के जल को लोहू कर डाला, और मछलियो को मार डाला ।
३० मेढक उनकी भूमि में वरन उनके राजा की कोठरियो मे भी भर गए ।
३१ उस ने आज्ञा दी, तब डास आ गए,
और उनके सारे देश में कुटकिया आ गई ।
३२ उस ने उनके लिये जलवृष्टि की सन्ती ओले,
और उनके देश में धधकती आग बरसाई ।
३३ और उस ने उनकी दाखलताओ और अजीर के वृक्षो को
वरन उनके देश के सब पेडो को तोड डाला ।
३४ उस ने आज्ञा दी तब अनगिनत टिड्डिया,
और कीडे आए,
३५ और उन्हो ने उनके देश के सब अन्नादि को खा डाला,
और उनकी भूमि के सब फलो को चट कर गए ।
३६ उस ने उनके देश के सब पहिलौठो को,
उनके पौरुष के सब पहिले फल को नाश किया ।।
३७ तब वह अपने गोत्रियो को सोना चांदी दिलाकर निकाल लाया,
और उन में से कोई निर्बल न था ।
३८ उनके जाने से मिस्री आनन्दित हुए,
क्योकि उनका डर उन में समा गया था ।
३९ उस ने छाया के लिये बादल फैलाया,
और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट की ।
४० उन्हो ने मागा तब उस ने बटेरें पहुचाई,
और उनको स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया ।
४१ उस ने चट्टान फाडी तब पानी बह निकला,
और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी ।
४२ क्योकि उस ने अपने पवित्र वचन
और अपने दास इब्राहीम को स्मरण किया ।।
४३ वह अपनी प्रजा को हर्षित करके
और अपने चुने हुओ से जयजयकार कराके निकाल लाया ।
४४ और उनको अन्यजातियो के देश दिए;
और वे और लोगो के श्रम के फल के अधिकारी किए गए,
४५ कि वे उसकी विधियो को मानें,
और उसकी व्यवस्था को पूरी करें ।
याह की स्तुति करो * ।

* मूल में—हल्लिलूयाह ।

१०६ याह की स्तुति करो * !
यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है,
और उसकी करुणा सदा की है !
२ यहोवा के पराक्रम के कामों का
वर्णन कौन कर सकता है,
या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना
सकता है ?
३ क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर
चलते,
और हर समय धर्म के काम करते हैं !
४ हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की प्रसन्नता
के अनुसार मुझे स्मरण कर,
मेरे उद्धार के लिये † मेरी सुधि ले,
५ कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण
देखूं,
और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित
हो जाऊं,
और तेरे निज भाग के संग बड़ाई
करने पाऊं ॥
६ हम ने तो अपने पुरखाओं की नाईं ‡
पाप किया है,
हम ने कुटिलता की, हम ने दुष्टता
की है !
७ मिस्र में हमारे पुरखाओं ने तेरे
आश्चर्यकर्मों पर मन नहीं लगाया,
न तेरी अपार करुणा को स्मरण
रखा,
उन्हों ने समुद्र के तीर पर, अर्थात्
लाल समुद्र के तीर पर बलवा
किया ।
८ तौभी उस ने अपने नाम के निमित्त
उनका उद्धार किया,
जिस से वह अपने पराक्रम को प्रगट
करे ।
९ तब उस ने लाल समुद्र को घुड़का और
वह सूख गया,
और वह उन्हें गहिरे जल के बीच से
मानो जंगल में से निकाल ले गया ।
१० उस ने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा,
और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया ।
११ और उनके द्रोही जल में डूब गए,
उन में से एक भी न बचा ।
१२ तब उन्हों ने उसके वचनों का विश्वास
किया,
और उसकी स्तुति गाने लगे ॥
१३ परन्तु वे झट उसके कामों को भूल
गए,
और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे ।
१४ उन्हों ने जंगल में अति लालसा की,
और निर्जल स्थान में ईश्वर की
परीक्षा की ।
१५ तब उस ने उन्हें मुंह मांगा वर तो
दिया,
परन्तु उनके प्राण को सुखा दिया ॥
१६ उन्हों ने छावनी में मूसा के,
और यहोवा के पवित्र जन हारून
के विषय में डाह की,
१७ भूमि फट कर दातान को निगल गई,
और अबीराम के झुण्ड को ग्रस
लिया *
१८ और उनके झुण्ड में आग भड़क उठी,
और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गए ॥
१९ उन्हों ने होरेब में बछड़ा बनाया,
और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत् की ।
२० यों उन्हों ने अपनी महिमा अर्थात्
ईश्वर को

* मूल में—हल्लिलूयाह।
† मूल में—अपना उद्धार लिए हुए।
‡ मूल में—पितरों के साथ।

* मूल में—छिपा लिया।

घास खानेवाले बैल की प्रतिमा से
बदल डाला ।
२१ वे अपने उद्धारकर्त्ता ईश्वर को भूल
गए,
जिस ने मिस्र में बड़े बड़े काम किए
थे ।
२२ उस ने तो हाम के देश में आश्चर्यकर्म
और लाल समुद्र के तीर पर भयङ्कर
काम किए थे ।
२३ इसलिये उस ने कहा, कि मैं इन्हें
सत्यानाश कर डालता
यदि मेरा चुना हुआ मूसा जोखिम
के स्थान में * उनके लिये खड़ा न
होता
ताकि मेरी जलजलाहट को ठण्डा
करे †
कही ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश
कर डालू ॥
२४ उन्हों ने मनभावने देश को निकम्मा
जाना,
और उसके वचन की प्रतीति न की ।
२५ वे अपने तम्बुओ में कुड़कुड़ाए,
और यहोवा का कहा न माना ।
२६ तब उस ने उनके विषय में शपथ
खाई ‡
कि मै इनको जगल में नाश करूगा,
२७ और इनके वश को अन्यजातियों के
सम्मुख गिरा दूगा,
और देश देश मे तितर बितर
करूगा ॥
२८ वे पोरवाले बाल देवता को पूजने लगे
और मुर्दों को चढाए हुए पशुओ का
मास खाने लगे ।

* मूल में—मूसा भीत के नाके में।
† मूल में—फेर दे।
‡ मूल में—हाथ उठाया।

२९ यों उन्हो ने अपने कामों से उसको
क्रोध दिलाया,
और मरी उन में फूट पड़ी ।
३० तब पीनहास ने उठकर न्यायदण्ड
दिया,
जिस से मरी थम गई ।
३१ और यह उसके लेखे पीढ़ी से पीढ़ी तक
सर्वदा के लिये धर्म गिना गया ॥
३२ उन्हो ने मरीबा के सोते के पास भी
यहोवा का क्रोध भड़काया,
और उनके कारण मूसा की हानि
हुई,
३३ क्योंकि उन्हो ने उसकी आत्मा से
बलवा किया,
तब मूसा * बिन सोचे बोल उठा ॥
३४ जिन लोगो के विषय यहोवा ने उन्हें
आज्ञा दी थी,
उनको उन्हो ने सत्यानाश न किया,
३५ वरन उन्ही जातियो से हिलमिल गए
और उनके व्यवहारो को सीख लिया;
३६ और उनकी मूर्त्तियो की पूजा करने
लगे,
और वे उनके लिये फन्दा बन गई ।
३७ वरन उन्हो ने अपने बेटे-बेटियो को
पिशाचो के लिये बलिदान किया,
३८ और अपने निर्दोष बेटे-बेटियो का
लोहू बहाया
जिन्हें उन्हो ने कनान की मूर्त्तियो पर
बलि किया,
इसलिये देश खून से अपवित्र हो गया ।
३९ और वे आप अपने कामो के द्वारा
अशुद्ध हो गए,
और अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी
भी बन गए ॥

* मूल में—वह ।

४० तब यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर
भड़का,
और उसको अपने निज भाग से
घृणा आई,
४१ तब उस ने उनको अन्यजातियों के
वश में कर दिया,
और उनके बैरियों ने उन पर प्रभुता
की।
४२ उनके शत्रुओं ने उन पर अन्धेर किया,
और वे उनके हाथ तले दब गए।
४३ बारम्बार उस ने उन्हें छुड़ाया,
परन्तु वे उसके विरुद्ध युक्ति करते गए,
और अपने अधर्म के कारण दबते
गए।
४४ तौभी जब जब उनका चिल्लाना उसके
कान में पड़ा,
तब तब उस ने उनके संकट पर
दृष्टि की।
४५ और उनके हित अपनी वाचा को
स्मरण करके
अपनी अपार करुणा के अनुसार तरस
खाया,
४६ और जो उन्हें बन्धुए करके ले गए थे
उन सब से उन पर दया
कराई॥
४७ हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारा
उद्धार कर,
और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा
कर ले,
कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद
करें,
और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय
में बड़ाई करें॥
४८ इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य
है।
और सारी प्रजा कहे आमीन।
याह की स्तुति करो *॥

* मूल में—हल्लिलूयाह।

पांचवां भाग

१०७ यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है,
और उसकी करुणा सदा की है।
२ यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें,
जिन्हें उस ने द्रोही के हाथ से दाम
देकर छुड़ा लिया है,
३ और उन्हें देश देश से
पूरब-पश्चिम, उत्तर और दक्खिन
से * इकट्ठा किया है॥
४ वे जंगल में मरभूमि के मार्ग पर
भटकते फिरे,
और कोई बसा हुआ नगर न पाया,
५ भूख और प्यास के मारे,
वे विकल हो गए।
६ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की
दोहाई दी,
और उस ने उनको सकेती से
छुड़ाया,
७ और उनको ठीक मार्ग पर चलाया,
ताकि वे बसने के लिये किसी नगर
को जा पहुंचे।
८ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण

* मूल में—समुद्र से।

जो वह मनुष्यों के लिये करता है,
उसका धन्यवाद करें!
९ क्योंकि वह अभिलाषी जीव को
सन्तुष्ट करता है,
और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त
करता है॥
१० जो अन्धियारे और मृत्यु की छाया
में बैठे,
और दुःख में पड़े और बेड़ियों से
जकड़े हुए थे,
११ इसलिये कि वे ईश्वर के वचनों के
विरुद्ध चले,
और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ
जाना।
१२ तब उस ने उनको कष्ट के द्वारा
दबाया;
वे ठोकर खाकर गिर पड़े, और उनको
कोई सहायक न मिला।
१३ तब उन्हों ने संकट में यहोवा की
दोहाई दी,
और उस ने सकेती से उनका उद्धार
किया;
१४ उस ने उनको अन्धियारे और मृत्यु
की छाया में से निकाल लिया;
और उनके बन्धनों को तोड़ डाला।
१५ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण
जो वह मनुष्यों के लिये करता
है,
उसका धन्यवाद करें!
१६ क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों
को तोड़ा,
और लोहे के बेण्डों को टुकड़े टुकड़े
किया॥
१७ मूढ़ अपनी ...

और अधर्म के कामों के कारण अति
दुःखित होते हैं।
१८ उनका जी सब भांति के भोजन से
मिचलाता है,
और वे मृत्यु के फाटक तक पहुंचते
हैं।
१९ तब वे संकट में यहोवा की दोहाई
देते हैं,
और वह सकेती से उनका उद्धार
करता है;
२० वह अपने वचन के द्वारा* उनको
चंगा करता
और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उस से
निकालता है।
२१ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण
जो वह मनुष्यों के लिये करता है,
उसका धन्यवाद करें!
२२ और वे धन्यवादबलि चढ़ाएं,
और जयजयकार करते हुए, उसके
कामों का वर्णन करें॥
२३ जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते
हैं,
और महासागर पर होकर व्योपार
करते हैं;
२४ वे यहोवा के कामों को,
और उन आश्चर्यकर्मों को जो वह
गहिरे समुद्र में करता है, देखते हैं।
२५ क्योंकि वह आज्ञा देता है, तब प्रचण्ड
बयार उठकर तरंगों को उठाती है।
२६ वे आकाश तक चढ़ ... फिर
...ई में उतर...
...के मा...
...;

२७ वे चक्कर खाते, और मतवाले की नाईं लड़खड़ाते हैं, और उनकी सारी बुद्धि मारी * जाती है।
२८ तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं,
और वह उनको सकेती से निकालता है।
२९ वह आंधी को थाम देता है
और तरंगें बैठ जाती हैं।
३० तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं,
और वह उनको मन चाहे बन्दर स्थान में पहुंचा देता है।
३१ लोग यहोवा की करुणा के कारण,
और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है,
उसका धन्यवाद करें।
३२ और सभा में उसको सराहें,
और पुरनियों के बैठक में उसकी स्तुति करें॥
३३ वह नदियों को जंगल बना डालता है,
और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है।
३४ वह फलवन्त भूमि को नोनी करता है,
यह वहां के रहनेवालों की दुष्टता के कारण होता है।
३५ वह जंगल को जल का ताल,
और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है।
३६ और वहां वह भूखों को बसाता है,
कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें,
३७ और खेती करें, और दाख की बारियां लगाएं,
और भांति भांति के फल उपजा लें।
३८ और वह उनको ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं,
और उनके पशुओं को भी वह घटने नहीं देता॥
३९ फिर अन्धेर, विपत्ति और शोक के कारण,
वे घटते और दब जाते हैं।
४० और वह हाकिमों को अपमान से लादकर मार्ग रहित जंगल में भटकाता है,
४१ वह दरिद्रों को दुःख से छुड़ाकर ऊंचे पर रखता है,
और उनको भेड़ों के झुंड सा परिवार देता है।
४२ सीधे लोग देखकर आनन्दित होते हैं,
और सब कुटिल लोग अपने मुंह बन्द करते हैं।
४३ जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा,
और यहोवा की करुणा के कामों पर ध्यान करेगा॥

(गीत। दाऊद का भजन)

१०८ हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है,
मैं गाऊंगा, मैं अपनी आत्मा * से भी भजन गाऊंगा।
२ हे सारंगी और वीणा जागो!
मैं आप पौ फटते जाग उठूंगा!
३ हे यहोवा, मैं देश देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूंगा,
और राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊंगा।
४ क्योंकि तेरी करुणा आकाश से भी ऊंची है,

* मूल में—निगली।

* मूल में—महिमा।

और परदेशी उसकी कमाई को लूट लें।
१२ कोई न हो जो उस पर करुणा करता रहे,
और उसके अनाथ बालकों पर कोई अनुग्रह न करे।
१३ उसका वंश नाश हो जाए,
दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए।
१४ उसके पितरों का अधर्म यहोवा को स्मरण रहे,
और उसकी माता का पाप न मिटे।
१५ वह निरन्तर यहोवा के सम्मुख रहे,
कि वह उनका नाम पृथ्वी पर से मिटा डाले।
१६ क्योंकि वह दुष्ट, कृपा करना भूल गया
वरन दीन और दरिद्र को सताता था
और मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ा रहता था॥
१७ वह शाप देने में प्रीति रखता था,
और शाप उस पर आ पड़ा,
वह आशीर्वाद देने से प्रसन्न न होता था, सो आशीर्वाद उस से दूर रहा।
१८ वह शाप देना वस्त्र की नाईं पहिनता था,
और वह उसके पेट में जल की नाईं,
और उसकी हड्डियों में तेल की नाईं समा गया।
१९ वह उसके लिये ओढ़ने का काम दे,
और फेंटे की नाईं उसकी कटि में नित्य कसा रहे॥
२० यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को,
और मेरे विरुद्ध बुरा कहनेवालों को यही बदला मिले।
२१ परन्तु मुझ से हे यहोवा प्रभु, तू अपने नाम के निमित्त बर्ताव कर,
तेरी करुणा तो बड़ी* है, सो तू मुझे छुटकारा दे।
२२ क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं,
और मेरा हृदय घायल हुआ है।
२३ मैं ढलती हुई छाया की नाईं जाता रहा हूं,
मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूं।
२४ उपवास करते करते मेरे घुटने निर्बल हो गए,
और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूं।
२५ मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है,
जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलाते हैं॥
२६ हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर!
अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर!
२७ जिस से वे जानें कि यह तेरा काम है,
और हे यहोवा, तू ही ने यह किया है!
२८ वे कोसते तो रहें, परन्तु तू आशीष दे!
वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास आनन्दित हो!
२९ मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहिनाया जाए,
और वे अपनी लज्जा को कम्बल की नाईं ओढ़ें!
३० मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूंगा,
और बहुत लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूंगा।

---

* मूल में—भली।

३१ क्योंकि वह दरिद्र की दाहिनी ओर
खड़ा रहेगा,
कि उसको घात करनेवाले न्यायियों
से बचाए॥

(दाऊद का भजन।)

११० मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी
यह है, कि तू मेरे दाहिने
हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों
की चौकी न कर दूं॥
२ तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा
सिय्योन से बढ़ाएगा।
तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन
कर।
३ तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के
दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं,
तेरे जवान लोग पवित्रता से
शोभायमान,
और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के
समान तेरे पास हैं।
४ यहोवा ने शपथ खाई और न
पछताएगा,
कि तू मेल्कीसेदेक की रीति पर सर्वदा
का याजक है॥
५ प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकर
अपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर
कर देगा।
६ वह जाति जाति में न्याय चुकाएगा,
रणभूमि लोथों से भर जाएगी,
वह लम्बे चौड़े देश के प्रधान को
चूर चूर कर देगा।
७ वह मार्ग में चलता हुआ नदी का
जल पीएगा
इस कारण वह सिर को ऊंचा
करेगा॥

१११ याह की स्तुति करो*।
मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में
और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से
यहोवा का धन्यवाद करूंगा।
२ यहोवा के काम बड़े हैं,
जितने उन से प्रसन्न रहते हैं, वे उन
पर ध्यान लगाते हैं।
३ उसके काम विभवमय और ऐश्वर्य्यमय
होते हैं,
और उसका धर्म सदा तक बना
रहेगा।
४ उस ने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण
कराया है;
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है।
५ उस ने अपने डरवैयों को आहार
दिया है;
वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण
रखेगा।
६ उस ने अपनी प्रजा को अन्यजातियों
का भाग देने के लिये,
अपने कामों का प्रताप दिखाया है।
७ सच्चाई और न्याय उसके हाथों के
काम हैं,
उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं,
८ वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे,
वे सच्चाई और सिधाई से किए
हुए हैं।
९ उस ने अपनी प्रजा का उद्धार किया
है,
उस ने अपनी वाचा को सदा के लिये
ठहराया है।
उसका नाम पवित्र और भययोग्य है।
१० बुद्धि का मूल यहोवा का भय
है,

---

* मूल में—हल्लिलूयाह।

जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं,
उनकी बुद्धि अच्छी होती है।
उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी॥

११२ याह की स्तुति करो *।
क्या ही धन्य है वह पुरुष जो
यहोवा का भय मानता है,
और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न
रहता है!
२ उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा,
सीधे लोगों की सन्तान आशीष
पाएगी।
३ उसके घर में धन सम्पत्ति रहती है,
और उसका धर्म सदा बना रहेगा।
४ सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच
में ज्योति उदय होती है,
वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी
होता है।
५ जो पुरुष अनुग्रह करता और उधार
देता है, उसका कल्याण होता है,
वह न्याय में अपने मुकद्दमे को
जीतेगा।
६ वह तो सदा तक अटल रहेगा,
धर्मी का स्मरण सदा तक बना
रहेगा।
७ वह बुरे समाचार से नहीं डरता
उसका हृदय यहोवा पर भरोसा
रखने से स्थिर रहता है।
८ उसका हृदय सम्भला हुआ है इसलिये
वह न डरेगा,
वरन अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके
सन्तुष्ट होगा।
९ उस ने उदारता से दरिद्रों को दान
दिया,
उसका धर्म सदा बना रहेगा,
और उसका सींग महिमा के साथ
ऊंचा किया जाएगा।
१० दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा,
वह दांत पीस-पीसकर गल जाएगा,
दुष्टों की लालसा पूरी न होगी *॥

११३ याह की स्तुति करो †!
हे यहोवा के दासो स्तुति
करो,
यहोवा के नाम की स्तुति करो!
२ यहोवा का नाम
अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा
जाय!
३ उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक,
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य
है।
४ यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान
है,
और उसकी महिमा आकाश से भी
ऊंची है॥
५ हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य
कौन है?
वह तो ऊंचे पर विराजमान है,
६ और आकाश और पृथ्वी पर भी,
दृष्टि करने के लिये झुकता है।
७ वह कंगाल को मिट्टी पर से,
और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर
ऊंचा करता है,
८ कि उसको प्रधानों के संग,
अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग
बैठाए।
९ वह बांझ को घर में लड़कों की
आनन्द करनेवाली माता बनाता है।
याह की स्तुति करो †!

* मूल में—हल्लिलूयाह।

* मूल में—नाश होगी।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

११४ जब इस्राएल ने मिस्र से,
अर्थात् याकूब के घराने ने
अन्य भाषावालों के बीच में कूच किया,
२ तब यहूदा यहोवा * का पवित्रस्थान
और इस्राएल उसके राज्य के लोग हो गए ॥
३ समुद्र देखकर भागा,
यर्दन नदी उलटी बही।
४ पहाड़ मेढ़ों की नाईं उछलने लगे,
और पहाड़ियां भेड़-बकरियों के बच्चों की नाईं उछलने लगी ॥
५ हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा ?
और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलटी बही ?
६ हे पहाड़ो तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों की नाईं,
और हे पहाड़ियो तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़-बकरियों के बच्चों की नाईं उछली ?
७ हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने,
हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा।
८ वह चट्टान को जल का ताल,
चकमक के पत्थर को जल का सोता बना डालता है ॥

११५ हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन अपने ही नाम की महिमा,
अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर।
२ जाति जाति के लोग क्यों कहने पाए,
कि उनका परमेश्वर कहां रहा ?

* मूल में—उस।

३ हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है,
उस ने जो चाहा वही किया है।
४ उन लोगों की मूरतें सोने चान्दी ही की तो हैं,
वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं।
५ उनके मुंह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकतीं,
उनके आंखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकतीं।
६ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकतीं,
उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सूंघ नहीं सकतीं।
७ उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं,
उनके पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकतीं,
और अपने कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकतीं।
८ जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं,
और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएंगे ॥
९ हे इस्राएल यहोवा पर भरोसा रख !
तेरा * सहायक और ढाल वही है।
१० हे हारून के घराने यहोवा पर भरोसा रख !
तेरा * सहायक और ढाल वही है।
११ हे यहोवा के डरवैयो, यहोवा पर भरोसा रखो !
तुम्हारा * सहायक और ढाल वही है ॥
१२ यहोवा ने हम को स्मरण किया है,
वह आशीष देगा,

* मूल में—उनका।

वह इस्राएल के घराने को आशीष
देगा,
वह हारून के घराने को आशीष
देगा।
१३ क्या छोटे क्या बड़े
जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें
आशीष देगा॥
१४ यहोवा तुम को और तुम्हारे लड़कों
को भी अधिक बढ़ाता जाए!
१५ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का
कर्त्ता है,
उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो॥
१६ स्वर्ग तो यहोवा का है,
परन्तु पृथ्वी उस ने मनुष्यों को दी है।
१७ मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं,
वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते,
१८ परन्तु हम लोग याह को
अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते
रहेंगे।
याह की स्तुति करो*!

११६ मैं प्रेम रखता हूं, इसलिये
कि यहोवा ने
मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।
२ उस ने जो मेरी ओर कान लगाया है,
इसलिये मैं जीवन भर उसको पुकारा
करूंगा।
३ मृत्यु की रस्सियां मेरे चारों ओर
थीं,
मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था,
मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा।
४ तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की,
कि हे यहोवा विनती सुनकर मेरे
प्राण को बचा ले!
५ यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है;
और हमारा परमेश्वर दया करनेवाला
है।
६ यहोवा भोलों की रक्षा करता है,
जब मैं बलहीन हो गया था, उस ने
मेरा उद्धार किया।
७ हे मेरे प्राण तू अपने विश्रामस्थान
में लौट आ,
क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया
है॥
८ तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से,
मेरी आंख को आंसू बहाने से,
और मेरे पांव को ठोकर खाने से
बचाया है।
९ मैं जीवित रहते हुए,
अपने को यहोवा के साम्हने जानकर*
नित चलता रहूंगा।
१० मैं ने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास
की कसौटी पर कस कर कहा है, कि
मैं तो बहुत ही दुःखित हुआ,
११ मैं ने उतावली से कहा,
कि सब मनुष्य झूठे हैं॥
१२ यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए
हैं,
उनका बदला मैं उसको क्या दूं?
१३ मैं उद्धार का कटोरा उठाकर,
यहोवा से प्रार्थना करूंगा,
१४ मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें सभों
की दृष्टि में
प्रगट रूप में उसकी सारी प्रजा के
साम्हने पूरी करूंगा।
१५ यहोवा के भक्तों की मृत्यु
उसकी दृष्टि में अनमोल है।
१६ हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास
हूं,

* मूल में—हल्लिलूयाह।

* मूल में—यहोवा के साम्हने।

मै तेरा दास, और तेरी दासी का
पुत्र हू।
तू ने मेरे बन्धन खोल दिए है।
१७ मै तुझ को धन्यवादबलि चढाऊगा,
और यहोवा से प्रार्थना करूगा।
१८ मै यहोवा के लिये अपनी मन्नते,
प्रगट मे उसकी सारी प्रजा के साम्हने
१९ यहोवा के भवन के आंगनो मे,
हे यरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूगा।
याह की स्तुति करो *।

११७ हे जाति जाति के सब लोगो,
यहोवा की स्तुति करो।
हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी
प्रशसा करो।
२ क्योकि उसकी करुणा हमारे ऊपर
प्रबल हुई है,
और यहोवा की सच्चाई सदा की है।
याह की स्तुति करो *।

११८ यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योकि वह भला है,
और उसकी करुणा सदा की है।
२ इस्राएल कहे,
उसकी करुणा सदा की है।
३ हारून का घराना कहे,
उसकी करुणा सदा की है।
४ यहोवा के डरवैये कहे,
उसकी करुणा सदा की है॥
५ मै ने सकेती मे परमेश्वर को पुकारा,
परमेश्वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौडे
स्थान मे पहुचाया।
६ यहोवा मेरी ओर है, मै न डरूगा।
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?
७ यहोवा मेरी ओर मेरे सहायको मे
है,
मै अपने वैरियो पर दृष्टि कर सन्तुष्ट
हूगा।
८ यहोवा की शरण लेनी,
मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम
है।
९ यहोवा की शरण लेनी,
प्रधानो पर भी भरोसा रखने से
उत्तम है॥
१० सब जातियो ने मुझ को घेर लिया
है,
परन्तु यहोवा के नाम से मै निश्चय
उन्हे नाश कर डालूगा।
११ उन्हो ने मुझ को घेर लिया है,
नि सन्देह घेर लिया है,
परन्तु यहोवा के नाम से मै निश्चय
उन्हे नाश कर डालूगा।
१२ उन्हो ने मुझे मधुमक्खियो की नाई
घेर लिया है,
परन्तु काटो की आग की नाई वे
बुझ गए,
यहोवा के नाम से मै निश्चय उन्हे
नाश कर डालूगा।
१३ तू ने मुझे बडा धक्का दिया तो था,
कि मै गिर पड
परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की।
१४ परमेश्वर मेरा बल और भजन का
विषय है,
वह मेरा उद्धार ठहरा है॥
१५ धर्मियो के तम्बुओ मे जयजयकार
और उद्धार की ध्वनि हो रही है,
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का
काम होता है,
१६ यहोवा का दहिना हाथ महान हुआ
है,
यहोवा के दहिने हाथ से पराक्रम का
काम होता है।

* मूल मे—हल्लिलूयाह।

१७ मैं न मरूंगा वरन जीवित रहूंगा,
और परमेश्वर के कामों का वर्णन करता रहूंगा।
१८ परमेश्वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की है,
परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया॥
१९ मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो,
मैं उन में प्रवेश करके याह का धन्यवाद करूंगा॥
२० यहोवा का द्वार यही है,
इस में धर्मी प्रवेश करने पाएंगे॥
२१ हे यहोवा मैं तेरा धन्यवाद करूंगा,
क्योंकि तू ने मेरी सुन ली है,
और मेरा उद्धार ठहर गया है।
२२ राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था
वही कोने का सिरा हो गया है।
२३ यह तो यहोवा की ओर से हुआ है,
यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।
२४ आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है,
हम इस में मगन और आनन्दित हों।
२५ हे यहोवा, विनती सुन, उद्धार कर!
हे यहोवा, विनती सुन, सफलता दे!
२६ धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है!
हम ने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है।
२७ यहोवा ईश्वर है, और उस ने हम को प्रकाश दिया है।
यज्ञपशु को वेदी के सींगों से रस्सियों से बांधो!
२८ हे यहोवा, तू मेरा ईश्वर है, मैं तेरा धन्यवाद करूंगा,
तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझ को सराहूंगा॥
२९ यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है,
और उसकी करुणा सदा बनी रहेगी!

(आलेफ)

११९ क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं,
और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं!
२ क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं,
और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं!
३ फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते,
वे उसके मार्गों में चलते हैं।
४ तू ने अपने उपदेश इसलिये दिए हैं,
कि वे यत्न से माने जाएं।
५ भला होता कि
तेरी विधियों के मानने के लिये मेरी चालचलन दृढ़ हो जाए!
६ तब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित्त लगाए रहूंगा,
और मेरी आशा न टूटेगी।
७ जब मैं तेरे धर्ममय नियमों को सीखूंगा,
तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूंगा।
८ मैं तेरी विधियों को मानूंगा
मुझे पूरी रीति से न तज!

(बेथ)

९ जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे?
तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।

१० मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूं,
मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे!
११ मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है,
कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।
१२ हे यहोवा, तू धन्य है,
मुझे अपनी विधियां सिखा!
१३ तेरे सब कहे हुए* नियमों का वर्णन,
मैं ने अपने मुंह से किया है।
१४ मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से,
मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूं।
१५ मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा,
और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूंगा।
१६ मैं तेरी विधियों से सुख पाऊंगा,
और तेरे वचन को न भूलूंगा॥

(गिमेल)

१७ अपने दास का उपकार कर, कि मैं जीवित रहूं,
और तेरे वचन पर चलता रहूं।
१८ मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।
१९ मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूं,
अपनी आज्ञाओं को मुझ से छिपाए न रख!
२० मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय खेदित रहता है।
२१ तू ने अभिमानियों को, जो शापित हैं, घुड़का है,
वे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटके हुए हैं।

* मूल में—तेरे मुख के।

२२ मेरी नामधराई और अपमान दूर कर,
क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूं।
२३ हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें करते थे,
परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा।
२४ तेरी चितौनियां मेरा सुखमूल
और मेरे मन्त्री हैं॥

(दाल्थ)

२५ मैं* धूल में पड़ा हूं,
तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!
२६ मैं ने अपनी चालचलन का तुझ से वर्णन किया है और तू ने मेरी बात मान ली है,
तू मुझ को अपनी विधियां सिखा!
२७ अपने उपदेशों का मार्ग मुझे बता,
तब मैं तेरे आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूंगा।
२८ मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है,
तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!
२९ मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर,
और करुणा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे।
३० मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है,
तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाए रहता हूं।
३१ मैं तेरी चितौनियों में लवलीन हूं,
हे यहोवा, मेरी आशा न तोड़!

* मूल में—मेरा जीव।

३२ जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा,
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में
दौड़ूंगा॥

(हे)

३३ हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का
मार्ग दिखा दे,
तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूंगा।
३४ मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था
को पकड़े रहूंगा
और पूर्ण मन से उस पर चलूंगा।
३५ अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को
चला,
क्योंकि मैं उसी में प्रसन्न हूं।
३६ मेरे मन को लोभ की ओर नहीं,
अपनी चितौनियों ही की ओर फेर
दे।
३७ मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं की
ओर से फेर दे,
तू अपने मार्ग में मुझे जिला।
३८ तेरा वचन जो तेरे भय माननेवालों
के लिये है,
उसको अपने दास के निमित्त भी
पूरा कर।
३९ जिस नामधराई से मैं डरता हूं, उसे
दूर कर
क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं।
४० देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी
हूं,
अपने धर्म के कारण मुझ को जिला॥

(वाव)

४१ हे यहोवा, तेरी करुणा और तेरा किया
हुआ उद्धार
तेरे वचन के अनुसार, मुझ को भी
मिले,
४२ तब मैं अपनी नामधराई करनेवालों
को कुछ उत्तर दे सकूंगा,
क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर
है।
४३ मुझे अपने सत्य वचन कहने से न
रोक *
क्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है।
४४ तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार,
सदा सर्वदा चलता रहूंगा,
४५ और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा
करूंगा,
क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों की सुधि
रखी है।
४६ और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा
राजाओं के साम्हने भी करूंगा,
और संकोच न करूंगा,
४७ क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण
सुखी हूं,
और मैं उन में प्रीति रखता हूं।
४८ मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन में
मैं प्रीति रखता हूं, हाथ फैलाऊंगा,
और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा॥

(जैन)

४९ जो वचन तू ने अपने दास को दिया
है, उसे स्मरण कर,
क्योंकि तू ने मुझे आशा दी है।
५० मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से
हुई है,
क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने
जीवन पाया है।
५१ अभिमानियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में
उड़ाया है,
तौभी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।

* मूल में— [illegible]

५२ हे यहोवा, मैं ने तेरे प्राचीन नियमों
को स्मरण करके
शान्ति पाई है।
५३ जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं,
उनके कारण मैं सन्ताप से जलता हूं।
५४ जहां मैं परदेशी होकर रहता हूं, वहां
तेरी विधियां,
मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।
५५ हे यहोवा, मैं ने रात को तेरा नाम
स्मरण किया,
और तेरी व्यवस्था पर चला हूं।
५६ यह मुझ से इस कारण हुआ,
कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था॥

(खेथ)

५७ यहोवा मेरा भाग है,
मैं ने तेरे वचनों के अनुसार चलने
का निश्चय किया है।
५८ मैं ने पूरे मन से तुझे मनाया है,
इसलिये अपने वचन के अनुसार
मुझ पर अनुग्रह कर।
५९ मैं ने अपनी चालचलन को सोचा,
और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।
६० मैं ने तेरी आज्ञाओं के मानने में
विलम्ब नहीं, फुर्ती की है।
६१ मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया हूं,
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।
६२ तेरे धर्ममय नियमों के कारण
मैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने
को उठूंगा।
६३ जितने तेरा भय मानते और तेरे
उपदेशों पर चलते हैं,
उनका मैं संगी हूं।
६४ हे यहोवा, तेरी करुणा पृथ्वी में
भरी हुई है,
तू मुझे अपनी विधियां सिखा।

(टेथ)

६५ हे यहोवा, तू ने अपने वचन के अनुसार
अपने दास के संग भलाई की है।
६६ मुझे भली विवेक-शक्ति और ज्ञान दे,
क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का विश्वास
किया है।
६७ उस से पहिले कि मैं दुःखित हुआ,
मैं भटकता था,
परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूं।
६८ तू भला है, और भला करता भी है,
मुझे अपनी विधियां सिखा।
६९ अभिमानियों ने तो मेरे विरुद्ध झूठ
बात गढ़ी है,
परन्तु मैं तेरे उपदेशों को पूरे मन से
पकड़े रहूंगा।
७० उनका मन मोटा * हो गया है,
परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण
सुखी हूं।
७१ मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये
भला ही हुआ है,
जिस से मैं तेरी विधियों को सीख
सकूं।
७२ तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लिये
हजारों रुपयों और मुहरों से भी
उत्तम है॥

(योध)

७३ तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा
गया हूं,
मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं
को सीखूं।
७४ तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित
होंगे,
क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर आशा
लगाई है।

---

* मूल में—चर्बी के समान मोटा।

७५ हे यहोवा, मैं जान गया कि तेरे नियम
धर्ममय हैं,
और तू ने अपने सच्चाई के अनुसार
मुझे दु:ख दिया है।
७६ मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे,
क्योंकि तू ने अपने दास को ऐसा ही
वचन दिया है।
७७ तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित
रहूंगा,
क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूं।
७८ अभिमानियों की आशा टूटे, क्योंकि
उन्हों ने मुझे झूठ के द्वारा गिरा
दिया है,
परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान
करूंगा।
७९ जो तेरा भय मानते हैं, वह मेरी
ओर फिरें,
तब वे तेरी चितौनियों को समझ
लेंगे।
८० मेरा मन तेरी विधियों के मानने
में सिद्ध हो,
ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना
पड़े॥

(काफ)

८१ मेरा प्राण तेरे उद्धार के लिये बेचैन
है,
परन्तु मुझे तेरे वचन पर आशा
रहती है।
८२ मेरी आंखें तेरे वचन के पूरे होने की
बाट जोहते जोहते रह गई हैं,
और मैं कहता हूं कि तू मुझे कब
शान्ति देगा?
८३ क्योंकि मैं धूएं में की कुप्पी के समान
हो गया हूं,
तौभी तेरी विधियों को नहीं भूला।
८४ तेरे दास के कितने दिन रह गए
हैं?
तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब
देगा?
८५ अभिमानी जो तेरी व्यवस्था के
अनुसार नहीं चलते,
उन्हों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं।
८६ तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं,
वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे
पड़े हैं, तू मेरी सहायता कर!
८७ वे मुझ को पृथ्वी पर से मिटा डालने
ही पर थे,
परन्तु मैं ने तेरे उपदेशों को नहीं
छोड़ा।
८८ अपनी करुणा के अनुसार मुझ को
जिला,
तब मैं तेरी दी हुई* चितौनी को
मानूंगा॥

(लामेध)

८९ हे यहोवा, तेरा वचन,
आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।
९० तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी
रहती है,
तू ने पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिये
वह बनी है।
९१ वे आज के दिन तक तेरे नियमों के
अनुसार ठहरे हैं,
क्योंकि सारी सृष्टि तेरे आधीन है।
९२ यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न
होता,
तो मैं दु:ख के समय नाश हो जाता।
९३ मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा,
क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे
जिलाया है।

---

* मूल में—तेरे मुख की।

९४ मैं तेरा ही हूं, तू मेरा उद्धार कर,
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूं।
९५ दुष्ट मेरा नाश करने के लिये मेरी घात में लगे हैं;
परन्तु मैं तेरी चितौनियों पर ध्यान करता हूं।
९६ जितनी बातें पूरी जान पड़ती हैं, उन सब को तो मैं ने अधूरी पाया है*,
परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार बड़ा है॥

(मीम)

९७ अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं!
दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।
९८ तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है,
क्योंकि वे सदा मेरे मन में रहती हैं।
९९ मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूं,
क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है।
१०० मैं पुरनियों से भी समझदार हूं,
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूं।
१०१ मैं ने अपने पावों को हर एक बुरे रास्ते में रोक रखा है,
जिस में मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं।

* मूल में—सारी पूर्णता का मैं ने अन्त देखा है।

१०२ मैं तेरे नियमों से नहीं हटा,
क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है।
१०३ तेरे वचन मुझ को* कैसे मीठे लगते हैं,
वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!
१०४ तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं,
इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं॥

(नून)

१०५ तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक,
और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।
१०६ मैं ने शपथ खाई, और ठाना भी है,
कि मैं तेरे धर्ममय नियमों के अनुसार चलूंगा।
१०७ मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूं,
हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे जिला।
१०८ हे यहोवा, मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि जानकर ग्रहण कर,
और अपने नियमों को मुझे सिखा।
१०९ मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है,
तौभी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।
११० दुष्टों ने मेरे लिये फन्दा लगाया है,
परन्तु मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका।
१११ मैं ने तेरी चितौनियों को सदा के लिये अपना निज भाग कर लिया है,
क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण हैं।

* मूल में—मेरे तालू को।

११२ मैं ने अपने मन को इस बात पर
लगाया है,
कि अन्त तक तेरी विधियों पर
सदा चलता रहूं ॥

(सामेख)

११३ मैं दुचित्तों से तो बैर रखता हूं,
परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता
हूं।
११४ तू मेरी आड़ और ढाल है,
मेरी आशा तेरे वचन पर है।
११५ हे कुकर्मियो, मुझ से दूर हो जाओ,
कि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं
को पकड़े रहूं!
११६ हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार
मुझे सम्भाल, कि मैं जीवित रहूं,
और मेरी आशा को न तोड़!
११७ मुझे थामे रख, तब मैं बचा रहूंगा,
और निरन्तर तेरी विधियों की
ओर चित्त लगाए रहूंगा!
११८ जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक
जाते हैं, उन सब को तू तुच्छ
जानता है,
क्योंकि उनकी चतुराई झूठ है।
११९ तू ने पृथ्वी के सब दुष्टों को धातु
के मैल के समान दूर किया है,
इस कारण मैं तेरी चितौनियों में
प्रीति रखता हूं।
१२० तेरे भय से मेरा शरीर कांप उठता
है,
और मैं तेरे नियमों से डरता हूं ॥

(ऐन)

१२१ मैं ने तो न्याय और धर्म का काम
किया है,
तू मुझे अन्धेर करनेवालों के हाथ
में न छोड़।
१२२ अपने दास की भलाई के लिये
ज़ामिन हो, ताकि
अभिमानी मुझ पर अन्धेर न करने
पाएं।
१२३ मेरी आंखें तुझ से उद्धार पाने,
और तेरे धर्ममय वचन के पूरे
होने की बाट जोहते जोहते रह
गई हैं।
१२४ अपने दास के संग अपनी करुणा
के अनुसार बर्ताव कर,
और अपनी विधियां मुझे सिखा।
१२५ मैं तेरा दास हूं, तू मुझे समझ दे
कि मैं तेरी चितौनियों को समझूं।
१२६ वह समय आया है, कि यहोवा
काम करे,
क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को
तोड़ दिया है।
१२७ इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को
सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक
प्रिय मानता हूं।
१२८ इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को
सब विषयों में ठीक जानता हूं,
और सब मिथ्या मार्गों से बैर
रखता हूं ॥

(पे)

१२९ तेरी चितौनियां अनूप हैं,
इस कारण मैं उन्हें अपने जी से
पकड़े हुए हूं।
१३० तेरी बातों के खुलने से प्रकाश
होता है,
उस से भोले लोग समझ प्राप्त
करते हैं।
१३१ मैं मुंह खोलकर हांफने लगा,
क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा
था।

१३२ जैसी तेरी रीति अपने नाम की
प्रीति रखनेवालो से है,
वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ
पर अनुग्रह कर।
१३३ मेरे पैरो को अपने वचन के मार्ग
पर स्थिर कर,
और किसी अनर्थ बात को मुझ पर
प्रभुता न करने दे।
१३४ मुझे मनुष्यो के अन्धेर से छुडा
ले,
तब मै तेरे उपदेशो को मानूगा।
१३५ अपने दास पर अपने मुख का
प्रकाश चमका दे,
और अपनी विधिया मुझे सिखा।
१३६ मेरी आखो से जल की धारा बहती
रहती है,
क्योकि लोग तेरी व्यवस्था को नही
मानते ॥

(सादे)

१३७ हे यहोवा तू धर्मी है,
और तेरे नियम सीधे है।
१३८ तू ने अपनी चितौनियो को
धर्म और पूरी सत्यता से कहा है।
१३९ मै तेरी धुन मे भस्म हो रहा हू,
क्योकि मेरे सतानेवाले तेरे वचनो
को भूल गए है।
१४० तेरा वचन पूरी रीति से ताया
हुआ है,
इसलिये तेरा दास उस में प्रीति
रखता है।
१४१ मै छोटा और तुच्छ हू,
तौभी मै तेरे उपदेशो को नही
भूलता।
१४२ तेरा धर्म सदा का धर्म है,
और तेरी व्यवस्था सत्य है।
१४३ मै सकट और सकेती मे फसा हू,
परन्तु मै तेरी आज्ञाओं से सुखी हू।
१४४ तेरी चितौनिया सदा धर्ममय है,
तू मुझ को समझ दे कि मै जीवित
रहू ॥

(क़ाफ़)

१४५ मै ने सारे मन से प्रार्थना की है,
हे यहोवा मेरी सुन लेना।
मै तेरी विधियो को पकडे रहूगा।
१४६ मै ने तुझ से प्रार्थना की है, तू मेरा
उद्धार कर,
और मै तेरी चितौनियो को माना
करूगा।
१४७ मै ने पौ फटने से पहिले दोहाई दी,
मेरी आशा तेरे वचनो पर थी।
१४८ मेरी आखे रात के एक एक पहर से
पहिले खुल गई,
कि मै तेरे वचन पर ध्यान करू।
१४९ अपनी करुणा के अनुसार मेरी
सुन ले,
हे यहोवा, अपनी रीति के अनुसार
मुझे जीवित कर।
१५० जो दुष्टता मे धुन लगाते है, वे
निकट आ गए है,
वे तेरी व्यवस्था से दूर है।
१५१ हे यहोवा, तू निकट है,
और तेरी सब आज्ञाए सत्य है।
१५२ बहुत काल से मै तेरी चितौनियो
को जानता हू,
कि तू ने उनकी नेव सदा के लिये
डाली है ॥

(रेश)

१५३ मेरे दु ख को देखकर मुझे छुडा ले,
क्योकि मै तेरी व्यवस्था को भूल
नही गया।

१५४ मेरा मुकद्दमा लड, और मुझे छुड़ा ले,
अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला।
१५५ दुष्टों को उद्धार मिलना कठिन है *,
क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते।
१५६ हे यहोवा, तेरी दया तो बड़ी है,
इसलिये अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला।
१५७ मेरा पीछा करनेवाले और मेरे सतानेवाले बहुत हैं,
परन्तु मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटता।
१५८ मैं विश्वासघातियों को देखकर उदास हुआ,
क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते।
१५९ देख, मैं तेरे नियमों में कैसी प्रीति रखता हूं!
हे यहोवा, अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला।
१६० तेरा सारा वचन † सत्य ही है,
और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है॥

(शीन)

१६१ हाकिम व्यर्थ मेरे पीछे पड़े हैं,
परन्तु मेरा हृदय तेरे वचनों का भय मानता है।
१६२ जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है,
वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूं।

* मूल में—उद्धार दुष्टों से दूर है।
† मूल में—तेरे वचन का जोड़।

१६३ झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता हूं,
परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं।
१६४ तेरे धर्ममय नियमों के कारण मैं प्रतिदिन सात बेर तेरी स्तुति करता हूं।
१६५ तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है,
और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।
१६६ हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा रखता हूं,
और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूं।
१६७ मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता हूं,
और उन से बहुत प्रीति रखता आया हूं।
१६८ मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता आया हूं,
क्योंकि मेरी सारी चालचलन तेरे सम्मुख प्रगट है॥

(ताव)

१६९ हे यहोवा, मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे,
तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे!
१७० मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुंचे,
तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले।
१७१ मेरे मुंह से स्तुति निकला करे *,
क्योंकि तू मुझे अपनी विधियां सिखाता है।

* मूल में—मेरे होंठ स्तुति बहाएं।

१७२ मै तेरे वचन का गीत गाऊगा,
क्योकि तेरी सब आज्ञाए धर्ममय है।
१७३ तेरा हाथ मेरी सहायना करने को
तैयार रहता है,
क्योकि मै ने तेरे उपदेशो को
अपनाया है।
१७४ हे यहोवा, मै तुझ से उद्धार पाने
की अभिलाषा करता हू,
मै तेरी व्यवस्था से सुखी हू।
१७५ मुझे जिला, और मै तेरी स्तुति
करूगा,
तेरे नियमो मे मेरी सहायता हो।
१७६ मै खोई हुई भेड की नाई भटका
हू, तू अपने दास को ढूढ ले,
क्योकि मै तेरी आज्ञाओ को भूल
नही गया ॥

(यात्रा का गीत)

१२० सकट के समय मै ने यहोवा
को पुकारा,
और उस ने मेरी सुन ली।
२ हे यहोवा, झूठ बोलनेवाले मुह से
और छली जीभ से मेरी रक्षा
कर ॥
३ हे छली जीभ,
तुझ को क्या मिले ? और तेरे साथ
और क्या अधिक किया जाए ?
४ वीर के नोकीले तीर
और झाऊ के अगारे।
५ हाय, हाय, क्योकि मुझे मेशेक मे
परदेशी होकर रहना पडा
और केदार के तम्बुओ मे वसना
पडा है !
६ बहुत काल से मुझ को
मेल के बैरियो के साथ बसना पडा
है।
७ मै तो मेल चाहता हू,
परन्तु मेरे बोलने ही, वे लडना
चाहते है।

(यात्रा का गीत)

१२१ मै अपनी आखे पर्वतो की
ओर लगाऊगा *।
मुझे सहायता कहा से मिलेगी ?
२ मुझे सहायता यहोवा की ओर से
मिलती है,
जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है ॥
३ वह तेरे पाव को टलने न देगा,
तेरा रक्षक कभी न ऊघे।
४ सुन, इस्राएल का रक्षक,
न ऊघेगा और न सोएगा ॥
५ यहोवा तेरा रक्षक है,
यहोवा तेरी दहिनी ओर तेरी आड
है।
६ न तो दिन को धूप से,
और न रात को चांदनी से तेरी कुछ
हानि होगी ॥
७ यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा
करेगा,
वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
८ यहोवा तेरे आने जाने मे
तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक
करता रहेगा ॥

(यात्रा का गीत। दाऊद का)

१२२ जब लोगो ने मुझ से कहा,
कि हम यहोवा के भवन
को चले,
तब मै आनन्दित हुआ।
२ हे यरूशलेम, तेरे फाटको के भीतर,
हम खडे हो गए है !

* मूल में—उठाऊगा।

३ हे यरूशलेम, तू ऐसे नगर के समान बना है,
जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं।
४ वहां याह के गोत्र गोत्र के लोग
यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं,
यह इस्राएल के लिये साक्षी है।
५ वहां तो न्याय के सिंहासन,
दाऊद के घराने के लिये धरे हुए हैं॥
६ यरूशलेम की शान्ति का वरदान मांगो,
तेरे प्रेमी कुशल से रहें!
७ तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति,
और तेरे महलों में कुशल होवे!
८ अपने भाइयों और संगियों के निमित्त,
मैं कहूंगा कि तुझ में शान्ति होवे!
९ अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के निमित्त,
मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा॥

(यात्रा का गीत)

१२३ हे स्वर्ग में विराजमान
मैं अपनी आंखें तेरी ओर लगाता* हूं!
२ देख, जैसे दासों की आंखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर,
और जैसे दासियों की आंखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती हैं,
वैसे ही हमारी आंखें हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी,
जब तक वह हम पर अनुग्रह न करे॥
३ हम पर अनुग्रह कर, हे यहोवा, हम पर अनुग्रह कर,
क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं।
४ हमारा जीव सुखी लोगों के ठट्ठों से,
और अहंकारियों के अपमान से
बहुत ही भर गया है॥

* मूल में—उठाता।

(यात्रा का गीत। दाऊद का)

१२४ इस्राएल यह कहे,
कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता,
२ यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता
जब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की,
३ तो वे हम को उसी समय जीवित निगल जाते,
जब उनका क्रोध हम पर भड़का था,
४ हम उसी समय जल में डूब जाते
और धारा में बह जाते*,
५ उमड़ते† जल में हम उसी समय ही बह जाते॥
६ धन्य है यहोवा,
जिस ने हम को उनके दांतों तले जाने न दिया!
७ हमारा जीव पक्षी की नाईं चिड़ीमार के जाल से छूट गया,
जाल फट गया, हम बच निकले!
८ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है,
हमारी सहायता उसी के नाम से होती है।

(यात्रा का गीत)

१२५ जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं,
वे सिय्योन पर्वत के समान हैं,

* मूल में—नदी हमारे प्राण के ऊपर से जाती।
† मूल में—अभिमानी।

जो टलता नही, वरन सदा बना
रहता है।
२ जिस प्रकार यरूशलेम के चारो ओर
पहाड है,
उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के
चारो ओर अब से लेकर सर्वदा
तक बना रहेगा।
३ क्योंकि दुष्टो का राजदण्ड धर्मियो
के भाग पर बना न रहेगा,
ऐसा न हो कि धर्मी अपने हाथ
कुटिल काम की ओर बढाए॥
४ हे यहोवा, भलो का,
और सीधे मनवालो का भला कर!
५ परन्तु जो मुडकर टेढे मार्गों मे
चलते है,
उनको यहोवा अनर्थकारियो के सग
निकाल देगा!
इस्राएल को शान्ति मिले!

(यात्रा का गीत)

१२६ जब यहोवा सिय्योन से
लौटनेवालो को लौटा ले
आया,
तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए।
२ तब हम आनन्द से हसने
और जयजयकार करने लगे*,
तब जाति जाति के बीच में कहा
जाता था,
कि यहोवा ने, इनके साथ बडे बडे
काम किए है।
३ यहोवा ने हमारे साथ बडे बडे काम
किए है,
और इस से हम आनन्दित है॥
४ हे यहोवा, दक्खिन देश के नालो की
नाई,
हमारे बन्धुओं* को लौटा ले आ!
५ जो आसू बहाते हुए बोते है,
वे जयजयकार करते हुए लवने
पाएगे।
६ चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता
हुआ चला जाए,
परन्तु वह फिर पूलिया लिए जयजय-
कार करता हुआ निश्चय लौट
आएगा॥

(यात्रा का गीत। सुलैमान का)

१२७ यदि घर को यहोवा न
बनाए,
तो उसके बनानेवालो का परिश्रम
व्यर्थ होगा।
यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे,
तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही
होगा।
२ तुम जो सवेरे उठते और देर करके
विश्राम करते
और दु:ख भरी रोटी खाते हो, यह
सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है,
क्योंकि वह अपने प्रियो को योंही
नींद दान करता है॥
३ देखो, लडके यहोवा के दिए हुए
भाग है,
गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल
है।
४ जैसे वीर के हाथ मे तीर,
वैसे ही जवानी के लडके होते है।
५ क्या ही धन्य है वह पुरुष जिस ने
अपने तर्कश को उन से भर लिया
हो!
वह फाटक के पास शत्रुओं से बातें
करते सकोच न करेगा॥

* मूल में—हमारा मुह हसी से और हमारी जीभ ऊचे स्वर के गीत से भर गई।

* मूल में—हमारी बधुआई।

(यात्रा का गीत)

१२८ क्या ही धन्य है हर एक जो
यहोवा का भय मानता है,
और उसके मार्गों पर चलता है!
२ तू अपनी कमाई को निश्चय खाने
पाएगा,
तू धन्य होगा, और तेरा भला ही
होगा॥
३ तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त
दाखलता सी होगी,
तेरी मेज़ के चारों ओर तेरे बालक
जलपाई के पौधे से होंगे।
४ सुन, जो पुरुष यहोवा का भय मानता
हो,
वह ऐसी ही आशीष पाएगा॥
५ यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष देवे,
और तू जीवन भर यरूशलेम का
कुशल देखता रहे!
६ वरन तू अपने नाती-पोतों को भी
देखने पाए!
इस्राएल को शान्ति मिले!

(यात्रा का गीत)

१२९ इस्राएल अब यह कहे,
कि मेरे बचपन से लोग मुझे
बार बार क्लेश देते आए हैं,
२ मेरे बचपन से वे मुझ को बार बार
क्लेश देते तो आए हैं,
परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए।
३ हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल
चलाया,
और लम्बी लम्बी रेखाएं कीं।
४ यहोवा धर्मी है,
उस ने दुष्टों के फन्दों को काट डाला
है।
५ जितने सिय्योन से बैर रखते हैं,
उन सभों की आशा टूटे, और उनको
पीछे हटना पड़े!
६ वे छत पर की घास के समान हों,
जो बढ़ने से पहिले सूख जाती है,
७ जिस से कोई लवैया अपनी मुट्ठी नहीं
भरता,
न पूलियों का कोई बान्धनेवाला
अपनी अकवार भर पाता है,
८ और न आने जानेवाले यह कहते हैं,
कि यहोवा की आशीष तुम पर
होवे!
हम तुम को यहोवा के नाम से
आशीर्वाद देते हैं!

(यात्रा का गीत)

१३० हे यहोवा, मैं ने गहिरे स्थानों
में से तुझ को पुकारा है!
२ हे प्रभु, मेरी सुन!
तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर
ध्यान से लगे रहें!
३ हे याह, यदि तू अधर्म के कामों का
लेखा ले,
तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा?
४ परन्तु तू क्षमा करनेवाला है *,
जिस से तेरा भय माना जाए॥
५ मैं यहोवा की बाट जोहता हूं, मैं जी
से उसकी बाट जोहता हूं,
और मेरी आशा उसके वचन पर
है,
६ पहरुए जितना भोर को चाहते हैं, हां,
पहरुए जितना भोर को चाहते हैं,
उस से भी अधिक मैं यहोवा को अपने
प्राणों से चाहता हूं॥
७ इस्राएल यहोवा पर आशा लगाए
रहे!

---

* मूल में—तेरे पास क्षमा है।

क्योंकि यहोवा करुणा करनेवाला
और पूरा छुटकारा देनेवाला है*।
८ इस्राएल को उसके सारे अधर्म के कामों से
वही छुटकारा देगा॥

(यात्रा का गीत। दाऊद का)

१३१ हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व से और न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है,
और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक कठिन हैं,
उन से मैं काम नहीं रखता।
२ निश्चय मैं ने अपने मन को† शान्त और चुप कर दिया है,
जैसा दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मां की गोद में‡ रहता है,
वैसे ही दूध छुड़ाए हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता है§॥
३ हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर आशा लगाए रह॥

(यात्रा का गीत)

१३२ हे यहोवा, दाऊद के लिये उसकी सारी दुर्दशा को स्मरण कर,
२ उस ने यहोवा से शपथ खाई,
और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी है,
३ कि निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में|| प्रवेश न करूंगा, और
न अपने पलंग पर चढूंगा,

* मूल में—यहोवा के पास करुणा और उसी के पास बहुत छुटकारा है।
† मूल में—जीव को।
‡ मूल में—मां पर।
§ मूल में—मेरे ऊपर रहता।
|| मूल में—अपने घर के डेरे में।

४ न अपनी आंखों में नींद, और
न अपनी पलकों में झपकी आने दूंगा,
५ जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान,
अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास स्थान न पाऊं॥
६ देखो, हम ने एप्राता में इसकी चर्चा सुनी है,
हम ने इसको वन के खेतों में पाया है।
७ आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें,
हम उसके चरणों की चौकी के आगे दण्डवत् करें!
८ हे यहोवा, उठकर अपने विश्राम-स्थान में
अपनी सामर्थ्य के सन्दूक समेत आ।
९ तेरे याजक धर्म के वस्त्र पहिने रहें,
और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें।
१० अपने दास दाऊद के लिये,
अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को अनसुनी न कर*॥
११ यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है
और वह उस से न मुकरेगा
कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊंगा।
१२ यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें
और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा, उस पर चलें,
तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग युग बैठते चले जाएंगे।

* मूल में—अभिषिक्त का मुख न फेर दे।

१३ क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है,
और उसे अपने निवास के लिये चाहा है ॥
१४ यह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है,
यहीं मैं रहूंगा, क्योंकि मैं ने इसको चाहा है।
१५ मैं इस में की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा,
और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।
१६ इसके याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहिनाऊंगा,
और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे।
१७ वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा,
मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है।
१८ मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा,
परन्तु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा ॥

(यात्रा का गीत। दाऊद का)

१३३

देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है
कि भाई लोग आपस में मिले रहें!
२ यह तो उस उत्तम तेल के समान है,
जो हारून के सिर पर डाला गया था,
और उसकी दाढ़ी पर बहकर,
उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया।
३ वा हेर्मोन् की उस ओस के समान है,
जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है!
यहोवा ने तो वहीं
सदा के जीवन की आशीष ठहराई है॥

(यात्रा का गीत)

१३४

हे यहोवा के सब सेवको, सुनो,
तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो,
यहोवा को धन्य कहो!
२ अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर,
यहोवा को धन्य कहो।
३ यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है,
वह सिय्योन में से तुझे आशीष देवे ॥

१३५

याह की स्तुति करो *,
यहोवा के नाम की स्तुति करो,
हे यहोवा के सेवको तुम स्तुति करो,
२ तुम जो यहोवा के भवन में,
अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खड़े रहते हो!
३ याह की स्तुति करो *, क्योंकि यहोवा भला है,
उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि यह मनभाऊ है!
४ याह ने तो याकूब को अपने लिये चुना है,
अर्थात् इस्राएल को अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है ॥
५ मैं तो जानता हूं कि हमारा प्रभु यहोवा सब देवताओं से महान है।
६ जो कुछ यहोवा ने चाहा
उसे उस ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहिरे स्थानों में किया है।
७ वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है,
और वर्षा के लिये बिजली बनाता है,

* मूल में—हल्लिलूयाह।

और पवन को अपने भण्डार में से
निकालता है ॥
८ उस ने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु,
सब के पहिलौठों को मार डाला !
९ हे मिस्र, उस ने तेरे बीच में
फिरौन और उसके सब कर्मचारियों
के बीच चिन्ह और चमत्कार
किए हैं।
१० उस ने बहुत सी जातियां नाश की,
और सामर्थी राजाओं को,
११ अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन को,
और बाशान के राजा ओग को,
और कनान के सब राजाओं को घात
किया,
१२ और उनके देश को बांटकर,
अपनी प्रजा इस्राएल के भाग होने के
लिये दे दिया ॥
१३ हे यहोवा, तेरा नाम सदा स्थिर है,
हे यहोवा जिस नाम से तेरा स्मरण
होता है, वह पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा।
१४ यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय
चुकाएगा,
और अपने दासों की दुर्दशा देखकर
तरस खाएगा ॥
१५ अन्यजातियों की मूरतें सोना-चान्दी
ही हैं,
वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं।
१६ उनके मुंह तो रहता है, परन्तु वे बोल
नहीं सकतीं,
उनके आंखें तो रहती हैं, परन्तु वे
देख नहीं सकतीं,
१७ उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन
नहीं सकतीं,
न उनके कुछ भी सांस चलती है।

* मूल में—मेजे।

१८ जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले
भी हैं,
और उन पर सब भरोसा रखनेवाले
भी वैसे ही हो जाएंगे !
१९ हे इस्राएल के घराने यहोवा को धन्य
कह !
हे हारून के घराने यहोवा को धन्य
कह !
२० हे लेवी के घराने यहोवा को धन्य
कह !
हे यहोवा के डरवैयो यहोवा को धन्य
कहो !
२१ यहोवा जो यरूशलेम में वास करता
है,
उसे सिय्योन में धन्य कहा जावे !
याह की स्तुति करो * !

१३६ यहोवा का धन्यवाद करो,
क्योंकि वह भला है,
और उसकी करुणा सदा की है।
२ जो ईश्वरों का परमेश्वर है, उसका
धन्यवाद करो,
उसकी करुणा सदा की है।
३ जो प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्य-
वाद करो,
उसकी करुणा सदा की है ॥
४ उसको छोड़कर कोई बड़े बड़े आश्चर्य-
कर्म नहीं करता,
उसकी करुणा सदा की है।
५ उस ने अपनी बुद्धि से आकाश
बनाया,
उसकी करुणा सदा की है।
६ उस ने पृथ्वी को जल के ऊपर
फैलाया है,
उसकी करुणा सदा की है।

* मूल में—हल्लिलूयाह।

७ उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियों बनाईं,
उसकी करुणा सदा की है।
८ दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य को बनाया,
उसकी करुणा सदा की है।
९ और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को बनाया,
उसकी करुणा सदा की है।
१० उस ने मिस्रियों के पहिलौठों को मारा,
उसकी करुणा सदा की है।
११ और उनके बीच से इस्राएलियों को निकाला,
उसकी करुणा सदा की है।
१२ बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया,
उसकी करुणा सदा की है।
१३ उस ने लाल समुद्र को खण्ड खण्ड कर दिया,
उसकी करुणा सदा की है।
१४ और इस्राएल को उसके बीच से पार कर दिया,
उसकी करुणा सदा की है।
१५ और फिरौन को सेना समेत लाल समुद्र में डाल दिया,
उसकी करुणा सदा की है।
१६ वह अपनी प्रजा को जंगल में ले चला,
उसकी करुणा सदा की है।
१७ उस ने बड़े बड़े राजा मारे,
उसकी करुणा सदा की है।
१८ उस ने प्रतापी राजाओं को भी मारा,
उसकी करुणा सदा की है,
१९ एमोरियों के राजा सीहोन को,
उसकी करुणा सदा की है,
२० और बाशान के राजा ओग को घात किया,
उसकी करुणा सदा की है।
२१ और उनके देश को भाग होने के लिये,
उसकी करुणा सदा की है,
२२ अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के लिये दे दिया,
उसकी करुणा सदा की है॥
२३ उस ने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि ली,
उसकी करुणा सदा की है,
२४ और हम को द्रोहियों से छुड़ाया है,
उसकी करुणा सदा की है।
२५ वह सब प्राणियों को आहार देता है,
उसकी करुणा सदा की है॥
२६ स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो,
उसकी करुणा सदा की है॥

१३७ बाबुल की नहरों के किनारे हम लोग बैठ गए,
और सिय्योन को स्मरण करके रो पड़े।
२ उसके बीच के मजनू वृक्षों पर
हम ने अपनी वीणाओं को टांग दिया,
३ क्योंकि जो हम को बन्धुए करके ले गए थे, उन्हों ने वहां हम से गीत * गवाना चाहा,
और हमारे रुलानेवालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा,
सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ।
४ हम यहोवा के गीत को,
पराए देश में क्योंकर गाएं?
५ हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं,
तो मेरा दहिना हाथ ठूठा हो जाए †!

* मूल में—गीत के वचन।
† मूल में—भूल जाए।

६ यदि मैं तुझे स्मरण न रखूं,
यदि मैं यरूशलेम को,
अपने सब आनन्द से श्रेष्ठ न जानूं,
तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए!
७ हे यहोवा, यरूशलेम के दिन को एदोमियों के विरुद्ध स्मरण कर,
कि वे क्योंकर कहते थे, ढाओ!
उसको नेव से ढा दो!
८ हे बाबुल* तू जो उजड़नेवाली है,
क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा ही बर्ताव करेगा
जैसा तू ने हम से किया है!
९ क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़कर,
चट्टान पर पटक देगा!

(दाऊद का भजन)

१३८ मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा,
देवताओं के साम्हने भी मैं तेरा भजन गाऊंगा।
२ मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा,
और तेरी करुणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा,
क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने बड़े नाम से अधिक महत्व दिया है।
३ जिस दिन मैं ने पुकारा, उसी दिन तू ने मेरी सुन ली, और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया॥
४ हे यहोवा, पृथ्वी के सब राजा तेरा धन्यवाद करेंगे, क्योंकि उन्होंने तेरे वचन सुने हैं,
५ और वे यहोवा की गति के विषय में गाएंगे,
क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है।
६ यद्यपि यहोवा महान है, तौभी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है,
परन्तु अहंकारी को दूर ही से पहिचानता है॥
७ चाहे मैं संकट के बीच में रहूं* तौभी तू मुझे जिलाएगा,
तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा,
और अपने दहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा।
८ यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा,
हे यहोवा, तेरी करुणा सदा की है।
तू अपने हाथों के कार्यों को त्याग न दे॥

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन)

१३९ हे यहोवा, तू ने मुझे जांचकर जान लिया है॥
२ तू मेरा उठना बैठना जानता है,
और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।
३ मेरे चलने और लेटने की तू भलीभांति छानबीन करता है,
और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।
४ हे यहोवा, मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं
जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।

---

* मूल में—हे बाबुल की बेटी।

* मूल में—चलूं।

५ तू ने मुझे आगे पीछे घेर रखा है,
और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है।
६ यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है,
यह गम्भीर* और मेरी समझ से बाहर है।।
७ मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं?
वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?
८ यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है।
यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है।
९ यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर† समुद्र के पार जा बसूं‡,
१० तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा,
और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।
११ यदि मैं कहूं कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा,
और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा,
१२ तौभी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा,
रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी,
क्योंकि तेरे लिये अन्धियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं।।
१३ मेरे मन का स्वामी तो तू है,
तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा।
१४ मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं।
तेरे काम तो आश्चर्य के हैं,
और मैं इसे भली भांति जानता हूं।
१५ जब मैं गुप्त में बनाया जाता,
और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था,
तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं।
१६ तेरी आंखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा,
और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे
वे रचे जाने से पहिले
तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।
१७ और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं!
उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है!
१८ यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते।
जब मैं जाग उठता हूं, तब भी तेरे संग रहता हूं।।
१९ हे ईश्वर निश्चय तू दुष्ट को घात करेगा!
हे हत्यारो, मुझ से दूर हो जाओ!
२० क्योंकि वे तेरी चर्चा चतुराई से करते हैं,
तेरे द्रोही तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं।
२१ हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूं,
और तेरे विरोधियों से रूठ न जाऊं?
२२ हां, मैं उन से पूर्ण बैर रखता हूं,
मैं उनको अपना शत्रु समझता हूं।
२३ हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान ले!
मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले!

---

* मूल में—ऊंचे पर।
† मूल में—के पंख उठाकर।
‡ मूल में—पिछले भाग में बसूं।

२४ और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल
है कि नहीं,
और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई
कर !

(प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का
भजन)

१४० हे यहोवा, मुझ को बुरे मनुष्य
से बचा ले,
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर,
२ क्योंकि उन्हों ने मन में बुरी कल्पनाएं
की हैं,
वे लगातार लड़ाइयां मचाते हैं।
३ उनका बोलना सांप का काटना सा
है*,
उनके मुंह में† नाग का सा विष
रहता है॥ (सेला)
४ हे यहोवा, मुझे दुष्ट के हाथों से
बचा ले,
उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर,
क्योंकि उन्हों ने मेरे पैरों के उखाड़ने
की युक्ति की है।
५ घमण्डियों ने मेरे लिये फन्दा और
पासे लगाए,
और पथ के किनारे जाल बिछाया है,
उन्हों ने मेरे लिये फन्दे लगा रखे हैं॥
सेला
६ हे यहोवा, मैं ने तुझ से कहा है कि तू
मेरा ईश्वर है,
हे यहोवा, मेरे गिड़गिड़ाने की ओर
कान लगा !
७ हे यहोवा प्रभु, हे मेरे सामर्थी उद्धार-
कर्त्ता‡,

* मूल में—उन्हों ने सांपों की नाई अपनी
जीभ को तेज किया है।
† मूल में—होठों के नीचे।
‡ मूल में—हे मेरे उद्धार के बल।

तू ने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा
की है।
८ हे यहोवा दुष्ट की इच्छा को पूरी न
होने दे,
उसकी बुरी युक्ति को सफल न कर,
नहीं तो वह घमण्ड करेगा॥
सेला
९ मेरे घेरनेवालों के सिर पर
उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात*
पड़े !
१० उन पर अंगारे डाले जाएं !
वे आग में गिरा दिए जाएं !
और ऐसे गड़हों में गिरें, कि वे फिर
उठ न सकें !
११ बकवादी पृथ्वी पर स्थिर नहीं
होने का,
उपद्रवी पुरुष को गिराने के लिये
बुराई उसका पीछा करेगी॥
१२ हे यहोवा, मुझे निश्चय है कि तू दीन
जन का
और दरिद्रों का न्याय चुकाएगा।
१३ निःसन्देह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद
करने पाएंगे,
सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे॥

(दाऊद का भजन)

१४१ हे यहोवा, मैं ने तुझे पुकारा
है, मेरे लिये फुर्ती कर !
जब मैं तुझ को पुकारूं, तब मेरी ओर
कान लगा !
२ मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने सुगन्ध धूप,
और मेरा हाथ फैलाना, सन्ध्याकाल
का अन्नबलि ठहरे !
३ हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा,
मेरे होठों के द्वार की रखवाली कर !

* मूल में—उन्हीं के होठों का उत्पात।

४ मेरा मन किसी बुरी बात की ओर
फिरने न दे,
मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग,
दुष्ट कामों में न लगूं,
और मैं उनके स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं
में से कुछ न खाऊं।
५ धर्मी मुझ को मारे तो यह कृपा
मानी जाएगी,
और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे
सिर पर का तेल ठहरेगा,
मेरा सिर उस से इन्कार न करेगा।
लोगों के बुरे काम करने पर भी मैं
प्रार्थना में लवलीन रहूंगा।
६ जब उनके न्यायी चट्टान के पास
गिराए गए,
तब उन्हों ने मेरे वचन सुन लिए,
क्योंकि वे मधुर हैं।
७ जैसे भूमि में हल चलने से ढेले फूटते हैं,
वैसे ही हमारी हड्डियां अधोलोक के
मुंह पर छितराई हुई हैं॥
८ परन्तु हे यहोवा प्रभु, मेरी आंखें तेरी
ही ओर लगी हैं, मैं तेरा शरणागत
हूं, तू मेरे प्राण जाने न दे।
९ मुझे उस फन्दे से, जो उन्हों ने मेरे
लिये लगाया है,
और अनर्थकारियों के जाल से मेरी
रक्षा कर।
१० दुष्ट लोग अपने जालों में आप ही फंसें,
और मैं बच निकलूं॥

(दाऊद का मश्कील, जब वह गुफा में
था। प्रार्थना)

१४२ मैं यहोवा की दोहाई देता,
मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूं,
२ मैं अपने शोक की बातें उस से
खोलकर कहता *,
मैं अपना संकट उसके आगे प्रगट
करता हूं।
३ जब मेरी आत्मा मेरे भीतर से व्याकुल
हो रही थी, तब तू मेरी दशा * को
जानता था।
जिस रास्ते से मैं जानेवाला था, उसी
में उन्हों ने मेरे लिये फन्दा लगाया।
४ मैं ने दहिनी ओर देखा, परन्तु कोई
मुझे नहीं देखता है।
मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही, न
मुझ को कोई पूछता है॥
५ हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी है,
मैं ने कहा, तू मेरा शरणस्थान है,
मेरे जीते जी तू मेरा भाग है।
६ मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन,
क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है।
जो मेरे पीछे पड़े हैं, उन से मुझे बचा
ले, क्योंकि वे मुझ से अधिक
सामर्थी हैं।
७ मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं
तेरे नाम का धन्यवाद करूं।
धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएंगे,
क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा॥

(दाऊद का भजन)

१४३ हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन,
मेरे गिड़गिड़ाने की ओर
कान लगा।
तू जो सच्चा और धर्मी है, सो †
मेरी सुन ले,
२ और अपने दास से मुकद्दमा न चला।
क्योंकि कोई प्राणी तेरी दृष्टि में
निर्दोष नहीं ठहर सकता॥

---

* मूल में—उसके साम्हने उण्डेलता।

* मूल में—मेरा पथ।
† मूल में—अपनी सच्चाई और धार्मिकता से।

और मैं तेरे बड़े बड़े कामों का वर्णन करूंगा।
७ लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे,
और तेरे धर्म का जयजयकार करेंगे॥
८ यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु,
विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है।
९ यहोवा सभो के लिये भला है,
और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है॥
१० हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी,
और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे।
११ वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे,
और तेरे पराक्रम के विषय मे बाते करेंगे;
१२ कि वे आदमियो पर तेरे पराक्रम के काम
और तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।
१३ तेरा राज्य युग युग का
और तेरी प्रभुता सब पीढ़ियो तक बनी रहेगी॥
१४ यहोवा सब गिरते हुओ को संभालता है,
और सब झुके हुओ को सीधा खड़ा करता है।
१५ सभों की आंखे तेरी ओर लगी रहती हैं,
और तू उनको आहार समय पर देता है।
१६ तू अपनी मुट्ठी खोलकर,
सब प्राणियो को आहार से तृप्त करता है।
१७ यहोवा अपनी सब गति में धर्मी
और अपने सब कामो मे करुणामय है।
१८ जितने यहोवा को पुकारते है, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं,
उन सभो के वह निकट रहता है।
१९ वह अपने डरवैयो की इच्छा पूरी करता है,
और उनकी दोहाई सुनकर उनका उद्धार करता है।
२० यहोवा अपने सब प्रेमियो की तो रक्षा करता,
परन्तु सब दुष्टो को सत्यानाश करता है॥
२१ मैं यहोवा की स्तुति करूंगा,
और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहे॥

१४६ याह की स्तुति करो*।
हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर!
२ मै जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूंगा,
जब तक मै बना रहूंगा, तब तक मै अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा॥
३ तुम प्रधानो पर भरोसा न रखना,
न किसी आदमी पर, क्योकि उस मे उद्धार करने की भी शक्ति नही।
४ उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा,

* मूल में—हल्लिलूयाह।

उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश
हो जाएंगी ॥
५ क्या ही धन्य वह है, जिसका सहायक
याकूब का ईश्वर है,
और जिसका भरोसा अपने परमेश्वर
यहोवा पर है।
६ वह आकाश और पृथ्वी और समुद्र
और उन में जो कुछ है, सब का
कर्त्ता है,
और वह अपना वचन सदा के लिये
पूरा करता रहेगा।
७ वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है,
और भूखों को रोटी देता है ॥
यहोवा बन्धुओं को छुड़ाता है,
८ यहोवा अन्धों को आंखें देता है।
यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा
करता है,
यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है।
९ यहोवा परदेशियों की रक्षा करता
है,
और अनाथों और विधवा को तो
सम्भालता है,
परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा
करता है ॥
१० हे सिय्योन, यहोवा सदा के लिये,
तेरा परमेश्वर पीढ़ी पीढ़ी राज्य करता
रहेगा।
याह की स्तुति करो*।

१४७ याह की स्तुति करो*।
क्योंकि अपने परमेश्वर का
भजन गाना अच्छा है, क्योंकि
वह मनभावना है, उसकी स्तुति करनी
मनभावनी है।

२ यहोवा यरूशलेम को बसा रहा है,
वह निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठा
कर रहा है।
३ वह खेदित मनवालों को चंगा करता
है,
और उनके शोक पर मरहम-पट्टी
बान्धता है।
४ वह तारों को गिनता,
और उन में से एक एक का नाम
रखता है।
५ हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी
है,
उसकी बुद्धि अपरम्पार है।
६ यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता है,
और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता
है ॥
७ धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत
गाओ,
वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का
भजन गाओ।
८ वह आकाश को मेघों से छा देता है,
और पृथ्वी के लिये मेंह की तैयारी
करता है,
और पहाड़ों पर घास उगाता है।
९ वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को
जो पुकारते हैं,
आहार देता है।
१० न तो वह घोड़े के बल को चाहता है,
और न पुरुष के पैरों से प्रसन्न होता है,
११ यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न
होता है,
अर्थात् उन से जो उसकी करुणा की
आशा लगाए रहते हैं ॥
१२ हे यरूशलेम यहोवा की प्रशंसा कर।
हे सिय्योन, अपने परमेश्वर की स्तुति
कर।

* मूल में—हल्लिलूयाह।

उसके दिन ढलती हुई छाया के समान
हैं ॥
५ हे यहोवा, अपने स्वर्ग को नीचा करके
उतर आ!
पहाड़ों को छू, तब उन से धुआं
उठेगा!
६ बिजली कड़काकर उनको तितर
बितर कर दे,
अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे!
७ अपने हाथ ऊपर से बढ़ाकर
मुझे महासागर से उबार,
अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा।
८ उनके मुंह से तो व्यर्थ बातें निकलती
हैं,
और उनके दहिने हाथ से धोखे के
काम होते हैं* ॥
९ हे परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति का नया
गीत गाऊंगा,
मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा
भजन गाऊंगा।
१० तू राजाओं का उद्धार करता है,
और अपने दास दाऊद को तलवार की
मार से बचाता है।
११ तू मुझ को उबार और परदेशियों के
वश से छुड़ा ले, जिन के मुंह से
व्यर्थ बातें निकलती हैं,
और जिनका दहिना हाथ झूठ का
दहिना हाथ है ॥
१२ जब हमारे बेटे जवानी के समय पौधों
की नाईं बढ़े हुए हों,
और हमारी बेटियां उन कोनेवाले
पत्थरों के समान हों, जो मन्दिर के
पत्थरों की नाईं बनाए जाएं

* मूल में—उनका दहिना हाथ झूठ का
दहिना हाथ है।

१३ जब हमारे खत्ते भरे रहें, और उन में
भांति भांति का अन्न धरा जाए,
और हमारी भेड़-बकरियां हमारे
मैदानों में हजारों हजार बच्चे
जनें,
१४ जब हमारे बैल खूब लदे हुए हों,
जब हमें न विघ्न हो और न हमारा
कहीं जाना हो,
और न हमारे चौकों में रोना-पीटना
हो,
१५ तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या
ही धन्य होगा! जिस राज्य का
परमेश्वर यहोवा है, वह क्या ही
धन्य है!

(स्तुति। दाऊद का भजन)

१४५ हे मेरे परमेश्वर, हे राजा,
मैं तुझे सराहूंगा,
और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य
कहता रहूंगा।
२ प्रति दिन मैं तुझ को धन्य कहा
करूंगा,
और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा
करता रहूंगा।
३ यहोवा महान और अति स्तुति के
योग्य है,
और उसकी बड़ाई अगम है ॥
४ तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम
के कामों का वर्णन,
पीढ़ी पीढ़ी होता चला जाएगा।
५ मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप
पर
और तेरे भांति भांति के आश्चर्यकर्मों
कर्मों पर ध्यान करूंगा।
६ लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति
की चर्चा करेंगे,

१३ क्योकि उस ने तेरे फाटको के खम्भो
को दृढ़ किया है,
और तेरे लडके बालो को * आशीष
दी है।
१४ वह तेरे सिवानो मे शान्ति देता है,
और तुझ को उत्तम से उत्तम गेहू से
तृप्त करता है।
१५ वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार
करता है,
उसका वचन अति वेग से दौडता है।
१६ वह ऊन के समान हिम को गिराता है,
और राख की नाईं पाला बिखेरता है।
१७ वह बर्फ के टुकडे गिराता है,
उसकी की हुई ठण्ड को कौन सह
सकता है?
१८ वह आज्ञा देकर उन्हे गलाता है,
वह वायु बहाता है, तब जल बहने
लगता है।
१९ वह याकूब को अपना वचन, और
इस्राएल को अपनी विधिया और
नियम बताता है।
२० किसी और जाति से उस ने ऐसा
बर्ताव नही किया,
और उसके नियमो को औरो ने नही
जाना।।
याह की स्तुति करो † !

१४८ याह की स्तुति करो † !
यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से
करो,
उसकी स्तुति ऊंचे स्थानो में करो!
२ हे उसके सब दूतो, उसकी स्तुति
करो.
हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति कर!

* मूल में—तेरे भीतर तेरे लड़कों को।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

३ हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो,
हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी
स्तुति करो!
४ हे सब से ऊंचे आकाश,
और हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम
दोनो उसकी स्तुति करो!
५ वे यहोवा के नाम की स्तुति करें,
क्योकि उसी ने आज्ञा दी और ये
सिरजे गए।
६ और उस ने उनको सदा सर्वदा के
लिये स्थिर किया है,
और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने
की नही।।
७ पृथ्वी मे से यहोवा की स्तुति करो,
हे मगरमच्छो और गहिरे सागर,
८ हे अग्नि और ओलो, हे हिम और कुहरे,
हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड
बयार!
९ हे पहाडो और सब टीलो,
हे फलदाई वृक्षो और सब देवदारो!
१० हे वन-पशुओ और सब घरेलू पशुओ,
हे रेंगनेवाले जन्तुओ और हे पक्षियो!
११ हे पृथ्वी के राजाओ, और राज्य राज्य
के सब लोगो,
हे हाकिमो और पृथ्वी के सब
न्यायियो!
१२ हे जवानो और कुमारियो,
हे पुरनियो और बालको!
१३ यहोवा के नाम की स्तुति करो *,
क्योकि केवल उसी का नाम महान है,
उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के
ऊपर है।
१४ और उस ने अपनी प्रजा के लिये एक
सीग ऊंचा किया है;

* मूल में—हल्लिलूयाह।

यह उसके सब भक्तों के लिये
अर्थात् इस्राएलियों के * लिये और
उसके समीप रहनेवाली प्रजा के
लिये स्तुति करने का विषय है।
याह की स्तुति करो † !

१४९ याह की स्तुति करो † !
यहोवा के लिये नया गीत
गाओ,
भक्तों की सभा में उसकी स्तुति
गाओ !
२ इस्राएल अपने कर्त्ता के कारण
आनन्दित हो,
सिय्योन के निवासी अपने राजा के
कारण मगन हों !
३ वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति
करें,
और डफ और वीणा बजाते हुए
उसका भजन गाएं !
४ क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न
रहता है,
वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें
शोभायमान करेगा।
५ भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित
हों,
और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े
जयजयकार करें।
६ उनके कण्ठ में ईश्वर की प्रशंसा हो,
और उनके हाथों में दोधारी तलवारें
रहें,
७ कि वे अन्यजातियों से पलटा ले सकें,
और राज्य राज्य के लोगों को
ताड़ना दें,

* मूल में—कर्ई।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

८ और उनके राजाओं को सांकलों से,
और उनके प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे
की बेड़ियों से जकड़ रखें,
९ और उनको ठहराया हुआ * दण्ड दें !
उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा
होगी।
याह की स्तुति करो † !

१५० याह की स्तुति करो † !
ईश्वर के पवित्रस्थान में उसकी
स्तुति करो,
उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाश-
मण्डल में उसी की स्तुति करो !
२ उसके पराक्रम के कामों के कारण
उसकी स्तुति करो,
उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार
उसकी स्तुति करो !
३ नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो,
सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी
स्तुति करो !
४ डफ बजाते और नाचते हुए उसकी
स्तुति करो,
तारवाले बाजे और बांसुली बजाते
हुए उसकी स्तुति करो !
५ ऊंचे शब्दवाली झांझ बजाते हुए
उसकी स्तुति करो,
आनन्द के महाशब्दवाली झांझ बजाते
हुए उसकी स्तुति करो !
६ जितने प्राणी हैं
सब के सब याह की स्तुति करें !
याह की स्तुति करो † !

* मूल में—लिखा हुआ।
† मूल में—हल्लिलूयाह।

नीतिवचन

१ दाऊद के पुत्र इस्राएल के राजा
सुलैमान के नीतिवचन
२ इनके द्वारा पढ़नेवाला बुद्धि और
शिक्षा प्राप्त करे,
और समझ की बाते समझे,
३ और काम करने मे प्रवीणता,
और धर्म, न्याय और सीधाई की शिक्षा
पाए,
४ कि भोलो को चतुराई,
और जवान को ज्ञान और विवेक
मिले,
५ कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या
बढ़ाए,
और समझदार बुद्धि का उपदेश
पाए,
६ जिस से वे नीतिवचन और दृष्टान्त
को,
और बुद्धिमानो के वचन और उनके
रहस्यो को समझे ।।
७ यहोवा का भय मानना बुद्धि का
मूल है,
बुद्धि और शिक्षा को मूढ़ ही लोग
तुच्छ जानते है ।।
८ हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर
कान लगा,
और अपनी माता की शिक्षा को
न तज,
९ क्योकि वे मानो तेरे सिर के लिये
शोभायमान मुकुट,
और तेरे गले के लिये कन्ठ माला
होगी ।
१० हे मेरे पुत्र, यदि पापी लोग तुझे
फुसलाए,
तो उनकी बात न मानना ।
११ यदि वे कहे, हमारे संग चल, कि
हम हत्या करने के लिये घात लगाए,
हम निर्दोषो की ताक * मे रहे;
१२ हम अधोलोक की नाई उनको जीवता,
कबर मे पड़े हुओ के समान समूचा
निगल जाए,
१३ हम को सब प्रकार के अनमोल पदार्थ
मिलेगे,
हम अपने घरो को लूट से भर लेगे;
१४ तू हमारा साझी हो जा,
हम सभो का एक ही बटुआ हो,
१५ तो, हे मेरे पुत्र तू उनके संग मार्ग
मे न चलना,
वरन उनकी डगर मे पाव भी न
धरना,
१६ क्योकि वे बुराई ही करने को दौड़ते
है,
और हत्या करने को फुर्ती करते है ।
१७ क्योकि पक्षी के देखते हुए
जाल फैलाना व्यर्थ होता है,
१८ और ये लोग तो अपनी ही हत्या करने
के लिये घात लगाते है,
और अपने ही प्राणो की घात की
ताक मे रहते है ।
१९ सब लालचियो की चाल ऐसी ही
होती है,

* मूल में—अकारण दुका लगाना ।

उनका प्राण लालच ही के कारण
नाश हो जाता है ।।
२० बुद्धि* सडक में ऊंचे स्वर से बोलती
है,
और चौको मे प्रचार करती है,
२१ वह बाजारो की भीड मे पुकारती
है,
वह फाटको के बीच मे
और नगर के भीतर भी ये बातें
बोलती है
२२ हे भोले लोगो, तुम कब तक भोलेपन
से प्रीति रखोगे?
और हे ठट्ठा करनेवालो, तुम कब तक
ठट्ठा करने मे प्रसन्न रहोगे?
और हे मूर्खो, तुम कब तक ज्ञान से
बैर रखोगे?
२३ तुम मेरी डाट सुनकर मन फिराओ,
सुनो, मैं अपनी आत्मा तुम्हारे लिये
उण्डेल दूगी,
मैं तुम को अपने वचन बताऊगी ।
२४ मैं ने तो पुकारा परन्तु तुम ने इनकार
किया,
और मैं ने हाथ फैलाया, परन्तु किसी
ने ध्यान न दिया,
२५ वरन तुम ने मेरी सारी सम्मति को
अनसुनी किया,
और मेरी ताडना का मूल्य न जाना,
२६ इसलिये मैं भी तुम्हारी विपत्ति के
समय हसूगी,
और जब तुम पर भय आ पडेगा,
२७ वरन आंधी की नाईं तुम पर भय आ
पडेगा,
और विपत्ति बवण्डर के समान आ
पडेगी,

* मूल मे—बुद्धिया ।

और तुम सकट और सकेती मे फसोगे,
तब मै ठट्ठा करूगी ।
२८ उस समय वे मुझे पुकारेंगे, और मैं
न सुनूगी,
वे मुझे यत्न से तो ढूढेंगे, परन्तु न
पाएगे ।
२९ क्योकि उन्हो ने ज्ञान से बैर
किया,
और यहोवा का भय मानना उनको
न भाया ।
३० उन्हो ने मेरी सम्मति न चाही,
वरन मेरी सब ताडनाओ को तुच्छ
जाना ।
३१ इसलिये वे अपनी करनी का फल आप
भोगेंगे,
और अपनी युक्तियो के फल से अघा
जाएगे ।
३२ क्योकि भोले लोगो का भटक जाना,
उनके घात किए जाने का कारण
होगा,
और निश्चिन्त रहने के कारण मूढ
लोग नाश होगे,
३३ परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निडर
बसा रहेगा, और बेखटके सुख से
रहेगा ।।

२ हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे वचन
ग्रहण करे,
और मेरी आज्ञाओ को अपने हृदय
मे रख छोडे,
२ और बुद्धि की बात ध्यान से सुने,
और समझ की बात मन लगाकर
सोचे,
३ और प्रवीणता और समझ के लिये
अति यत्न से पुकारे
४ और उसको चान्दी की नाईं ढूढे,

और गुप्त धन के समान उसकी खोज
मे लगा रहे;
५ तो तू यहोवा के भय को समझेगा,
और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त
होगा।
६ क्योकि बुद्धि यहोवा ही देता है,
ज्ञान और समझ की बाते उसी के मुह
से निकलती है।
७ वह सीधे लोगो के लिये खरी बुद्धि
रख छोडता है,
जो खराई से चलते है, उनके लिये
वह ढाल ठहरता है।
८ वह न्याय के पथो की देख भाल
करता,
और अपने भक्तो के मार्ग की रक्षा
करता है।
९ तब तू धर्म और न्याय,
और सीधाई को, निदान सब भली-
भली चाल समझ सकेगा,
१० क्योकि बुद्धि तो तेरे हृदय मे प्रवेश
करेगी,
और ज्ञान तुझे मनभाऊ लगेगा,
११ विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा,
और समझ तेरी रक्षक होगी,
१२ ताकि तुझे बुराई के मार्ग मे,
और उलट फेर की बातो के कहने-
वालो मे बचाए,
१३ जो सीधाई के मार्ग को छोड देते है,
ताकि अन्धेरे मार्ग मे चले,
१४ जो बुराई करने से आनन्दित होते है,
और दुष्ट जन की उलट फेर की बातो
मे मगन रहते है,
१५ जिनकी चालचलन टेढी मेढी
और जिनके मार्ग बिगडे हुए है।।
१६ तब तू पराई स्त्री से भी बचेगा,
जो चिकनी चुपडी बाते बोलती है,
१७ और अपनी जवानी के साथी को छोड
देती,
और जो अपने परमेश्वर की वाचा
को भूल जाती है।
१८ उसका घर मृत्यु की ढलान पर है,
और उसकी डगरे मरे हुओ के बीच
पहुचाती है,
१९ जो उसके पास जाते है, उन मे से
कोई भी लौटकर नही आता,
और न वे जीवन का मार्ग पाते है।।
२० तू भले मनुष्यो के मार्ग मे चल,
और धर्मियो की बाट को पकडे रह।
२१ क्योकि धर्मी लोग देश मे बसे रहेगे,
और खरे लोग ही उस मे बने रहेगे।
२२ दुष्ट लोग देश मे से नाश होगे,
और विश्वासघाती उस मे से उखाडे
जाएगे।।

३ हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न
भूलना,
अपने हृदय मे मेरी आज्ञाओ को रखे
रहना,
२ क्योकि ऐसा करने से तेरी आयु*
बढेगी,
और तू अधिक कुशल से रहेगा।
३ कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न
होने पाए,
वरन उनको अपने गले का हार
बनाना,
और अपनी हृदयरूपी पटिया पर
लिखना।
४ और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनो
का अनुग्रह पाएगा,
तू अति बुद्धिमान होगा।।

* मूल मे—दिनो की लबाई और जीवन के
बरस।

५ तू अपनी समझ का सहारा न लेना,
वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा
रखना।
६ उसी को स्मरण करके सब काम
करना,
तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग
निकालेगा।
७ अपनी दृष्टि मे बुद्धिमान न होना,
यहोवा का भय मानना, और बुराई
से अलग रहना।
८ ऐसा करने मे तेरा शरीर * भला
चंगा,
और तेरी हड्डिया पुष्ट रहेगी॥
९ अपनी संपत्ति के द्वारा,
और अपनी भूमि की सारी पहिली
उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा
करना,
१० इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे
रहेंगे,
और तेरे रसकुण्डो से नया दाखमधु
उमण्डता रहेगा॥
११ हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुह
न मोडना,
और जब वह तुझे डाटे, तब तू बुरा
न मानना,
१२ क्योकि यहोवा जिस मे प्रेम रखता है
उसको डाटता है,
जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह
अधिक चाहता है॥
१३ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि
पाए,
और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे,
१४ क्योकि बुद्धि की प्राप्ति चान्दी की
प्राप्ति मे बडी,

* मूल में—तेरी नाभि।

और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ
मे भी उत्तम है।
१५ वह मूगे से अधिक अनमोल है,
और जितनी वस्तुओ की तू लालसा
करता है, उन में से कोई भी उसके
तुल्य न ठहरेगी।
१६ उसके दहिने हाथ में दीर्घायु,
और उसके बाएँ हाथ मे धन और
महिमा है।
१७ उसके मार्ग मनभाऊ है,
और उसके सब मार्ग कुशल के हैं।
१८ जो बुद्धि को ग्रहण कर लेते है, उनके
लिये वह जीवन का वृक्ष बनती है,
और जो उसको पकडे रहते है, वह
धन्य है॥
१९ यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से
डाली,
और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर
किया।
२० उसी के ज्ञान के द्वारा गहिरे सागर फूट
निकले,
और आकाशमण्डल से ओस टपकती
है॥
२१ हे मेरे पुत्र, ये बाते तेरी दृष्टि की
ओट न होने पाए,
खरी बुद्धि और विवेक की रक्षा कर,
२२ तब इन से तुझे जीवन मिलेगा,
और ये तेरे गले का हार बनेंगे।
२३ और तू अपने मार्ग पर निडर चलेगा,
और तेरे पाव में ठेस न लगेगी।
२४ जब तू लेटेगा, तब भय न खाएगा,
जब तू लेटेगा, तब सुख की नीद
आएगी।
२५ अचानक आनेवाले भय से न डरना,
और जब दुष्टो पर विपत्ति आ पडे,
तब न घबराना,

२६ क्योकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा,
और तेरे पाव को फन्दे मे फसने न देगा।
२७ जिनका भला करना चाहिये, यदि तुझ मे शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रुकना ।।
२८ यदि तेरे पास देने को कुछ हो,
तो अपने पडोसी से न कहना कि
जा कल फिर आना, कल मै तुझे दूगा।
२९ जब तेरा पडोसी तेरे पास बेखटके रहता है,
तब उसके विरुद्ध बुरी युक्ति न बान्धना।
३० जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो,
उस से अकारण मुकद्दमा खडा न करना।
३१ उपद्रवी पुरुष के विषय मे डाह न करना,
न उसकी सी चाल चलना;
३२ क्योकि यहोवा कुटिल से घृणा करता है,
परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगो पर खोलता है * ।।
३३ दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप
और धर्मियो के वासस्थान पर उसकी आशीष होती है।
३४ ठट्ठा करनेवालो से वह निश्चय ठट्ठा करता है
और दीनो पर अनुग्रह करता है।
३५ बुद्धिमान महिमा को पाएगे,
और मूर्खो की बढती अपमान ही की होगी ।।

* मूल में—उसका भेद सीधे लोगों के पास है।

४ हे मेरे पुत्रो, पिता की शिक्षा सुनो,
और समझ प्राप्त करने मे मन लगाओ।
२ क्योकि मै ने तुम को उत्तम शिक्षा दी है,
मेरी शिक्षा को न छोडो।
३ देखो, मै भी अपने पिता का पुत्र था,
और माता का अकेला दुलारा था,
४ और मेरा पिता मुझे यह कहकर सिखाता था, कि
तेरा मन मेरे वचन पर लगा रहे,
तू मेरी आज्ञाओ का पालन कर, तब जीवित रहेगा।
५ बुद्धि को प्राप्त कर, समझ को भी प्राप्त कर,
उनको भूल न जाना, न मेरी बातो को छोडना।
६ बुद्धि को न छोड, वह तेरी रक्षा करेगी,
उस से प्रीति रख, वह तेरा पहरा देगी।
७ बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिये उसकी प्राप्ति के लिये यत्न कर,
जो कुछ तू प्राप्त करे उसे प्राप्त तो कर
परन्तु समझ की प्राप्ति का यत्न घटने न पाए।
८ उसकी बडाई कर, वह तुझ को बढाएगी,
जब तू उस से लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी।
९ वह तेरे सिर पर शोभायमान भूषण बान्धेगी,
और तुझे सुन्दर मुकुट देगी ।।
१० हे मेरे पुत्र, मेरी बाते सुनकर ग्रहण कर,
तब तू बहुत वर्ष तक जीवित रहेगा।

११ मैं ने तुझे बुद्धि का मार्ग बताया है,
और सीधाई के पथ पर चलाया है।
१२ चलने में तुझे रोक टोक न होगी,
और चाहे तू दौड़े, तौभी ठोकर न खाएगा।
१३ शिक्षा को पकड़े रह, उसे छोड़ न दे,
उसकी रक्षा कर, क्योंकि वही तेरा जीवन है।
१४ दुष्टों की बाट में पांव न धरना,
और न बुरे लोगों के मार्ग पर चलना।
१५ उसे छोड़ दे, उसके पास से भी न चल,
उसके निकट से मुड़कर आगे बढ़ जा।
१६ क्योंकि दुष्ट लोग यदि बुराई न करें,
तो उनको नींद नहीं आती,
और जब तक वे किसी को ठोकर न खिलाएं, तब तक उन्हें नींद नहीं मिलती।
१७ वे तो दुष्टता से कमाई हुई रोटी खाते,
और उपद्रव के द्वारा पाया हुआ दाखमधु पीते हैं।
१८ परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है,
जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।
१९ दुष्टों का मार्ग घोर अन्धकारमय है,
वे नहीं जानते कि वे किस से ठोकर खाते हैं॥
२० हे मेरे पुत्र मेरे वचन ध्यान धरके सुन,
और अपना कान मेरी बातों पर लगा।
२१ इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे,
वरन अपने मन में धारण कर।
२२ क्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं,
वे उनके जीवित रहने का,
और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं।
२३ सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर,
क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।
२४ टेढ़ी बात अपने मुंह से मत बोल,
और चालबाजी की बातें कहना तुझ से दूर रहे।
२५ तेरी आंखें साम्हने ही की ओर लगी रहें,
और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें।
२६ अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर,
और तेरे सब मार्ग ठीक रहें।
२७ न तो दहिनी ओर मुड़ना, और न बाईं ओर,
अपने पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले॥

५ हे मेरे पुत्र, मेरी बुद्धि की बातों पर ध्यान दे,
मेरी समझ की ओर कान लगा,
२ जिस से तेरा विवेक सुरक्षित बना रहे,
और तू ज्ञान के वचनों को थामे रहे।
३ क्योंकि पराई स्त्री के ओठों से मधु टपकता है,
और उसकी बातें तेल से भी अधिक चिकनी होती हैं,
४ परन्तु इसका परिणाम नागदौना सा कड़वा
और दोधारी तलवार सा पैना होता है।

५ उसके पाव मृत्यु की ओर बढते है,
और उसके पग अधोलोक तक
पहुचते है ।।
६ इसलिये उसे जीवन का समथर पथ
नही मिल पाता,
उसके चालचलन मे चचलता है,
परन्तु उसे वह आप नही जानती ।।
७ इसलिये अब हे मेरे पुत्रो, मेरी सुनो,
और मेरी बातो से मुह न मोडो।
८ ऐसी स्त्री से दूर ही रह,
और उसकी डेवढी के पास भी न
जाना,
९ कही ऐसा न हो कि तू अपना यश
औरो के हाथ,
और अपना जीवन क्रूर जन के वश
मे कर दे,
१० या पराए तेरी कमाई से अपना पेट भरे,
और परदेशी मनुष्य तेरे परिश्रम का
फल अपने घर मे रखे,
११ और तू अपने अन्तिम समय मे
जब कि तेरा शरीर क्षीण हो जाए
तब यह कहकर हाय मारने लगे, कि
१२ मै ने शिक्षा से कैसा बैर किया,
और डाटनेवाले का कैसा तिरस्कार
किया!
१३ मै ने अपने गुरुओ की बाते न मानी
और अपने सिखानेवालो की ओर
ध्यान न लगाया।
१४ मै सभा और मण्डली के बीच मे प्राय
सब बुराइयो मे जा पडा ।।
१५ तू अपने ही कुण्ड से पानी,
और अपने ही कूए के सोते का जल
पिया करना।
१६ क्या तेरे सोतो का पानी सडक मे,
और तेरे जल की धारा चौको मे बह
जाने पाए?
१७ यह केवल तेरे ही लिये रहे,
और तेरे सग औरो के लिये न हो।
१८ तेरा सोता धन्य रहे,
और अपनी जवानी की पत्नी के साथ
आनन्दित रह,
१९ प्रिय हरिणी वा सुन्दर साभरनी के
समान उसके स्तन सर्वदा तुझे सतुष्ट
रखे,
और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित
करता रहे।
२० हे मेरे पुत्र, तू अपरिचित स्त्री पर
क्यो मोहित हो,
और पराई को क्यो छाती से लगाए?
२१ क्योकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की
दृष्टि से छिपे नही है,
और वह उसके सब मार्गो पर ध्यान
करता है।
२२ दुष्ट अपने ही अधर्म के कर्मो से
फसेगा,
और अपने ही पाप के बन्धनो मे बन्धा
रहेगा।
२३ वह शिक्षा प्राप्त किए बिना मर
जाएगा,
और अपनी ही मूर्खता के कारण
भटकता रहेगा ।।

६ हे मेरे पुत्र, यदि तू अपने पडोसी
का उत्तरदायी हुआ हो,
अथवा परदेशी के लिये हाथ पर हाथ
मार कर उत्तरदायी हुआ हो,
२ तो तू अपने ही मुह के वचनो से
फसा,
और अपने ही मुह की बातो से पकडा
गया।
३ इसलिये हे मेरे पुत्र, एक काम कर,
अर्थात्

तू जो अपने पडोसी के हाथ में पड चुका है,
तो जा, उसको साष्टांग प्रणाम करके मना ले।
४ तू न तो अपनी आंखो में नींद,
और न अपनी पलको में झपकी आने दे,
५ और अपने आप को हरिणी के समान शिकारी के हाथ से,
और चिड़िया के समान चिडिमार के हाथ से छुडा॥
६ हे आलसी, च्यूटियो के पास जा,
उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो।
७ उनके न तो कोई न्यायी होता है,
न प्रधान, और न प्रभुता करनेवाला,
८ तौभी वे अपना आहार धूपकाल में सचय करती हैं,
और कटनी के समय अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।
९ हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा?
तेरी नींद कब टूटेगी?
१० कुछ और सो लेना,
थोडी सी नींद, एक और झपकी,
थोडा और छाती पर हाथ रखे लेटे रहना,
११ तब तेरा कगालपन बटमार की नाई
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान आ पडेगी॥
१२ ओछे और अनर्थकारी को देखो,
वह टेढी टेढी बाते बकता फिरता है,
१३ वह नैन से सैन और पांव से इशारा,
और अपनी अगुलियो से सकेत करता है,
१४ उसके मन में उलट फेर की बातें रहती,
वह लगातार बुराई गढता है
और झगडा रगडा उत्पन्न करता है।
१५ इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पडेगी,
वह पल भर में ऐसा नाश हो जाएगा,
कि बचने का कोई उपाय न रहेगा॥
१६ छ वस्तुओ से यहोवा बैर रखता है,
वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है
१७ अर्थात् घमण्ड से चढी हुई* आंखें,
झूठ बोलनेवाली जीभ,
और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ,
१८ अनर्थ कल्पना गढनेवाला मन,
बुराई करने को वेग दौडनेवाले पांव,
१९ झूठ बोलनेवाला साक्षी
और भाइयो के बीच में झगडा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।
२० हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान,
और अपनी माता की शिक्षा को न तज।
२१ इन को अपने हृदय में सदा गांठ बान्धे रख,
और अपने गले का हार बना ले।
२२ वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई,
और सोते समय तेरी रक्षा,
और जागते समय तुझ से बातें करेगी।
२३ आज्ञा तो दीपक है और शिक्षा ज्योति,
और सिखानेवाले की डांट जीवन का मार्ग है,
२४ ताकि तुझ को बुरी स्त्री से बचाए
और पराई स्त्री की चिकनी चुपडी बातो से बचाए।
२५ उसकी सुन्दरता देखकर अपने मन में उसकी अभिलाषा न कर,

* मूल में—ऊंची।

वह तुझे अपने कटाक्ष * से फसाने न
पाए,
२६ क्योंकि वेश्यागमन के कारण मनुष्य
टुकडो का भिखारी हो जाता
है,
परन्तु व्यभिचारिणी अनमोल जीवन
का अहेर कर लेती है।
२७ क्या हो सकता है कि कोई अपनी
छाती पर आग रख ले,
और उसके कपडे न जले ?
२८ क्या हो सकता है कि कोई अंगारे पर
चले,
और उसके पाव न झुलसें ?
२९ जो पराई स्त्री के पास जाता है, उसकी
दशा ऐसी है,
वरन जो कोई उसको छूएगा वह दण्ड
से न बचेगा।
३० जो चोर भूख के मारे अपना पेट
भरने के लिये चोरी करे,
उसको तो लोग तुच्छ नही जानते,
३१ तौभी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको
सातगुणा भर देना पडेगा,
वरन अपने घर का सारा घन देना
पडेगा।
३२ पन्रतु जो परस्त्रीगमन करता है वह
निरा निर्बुद्ध है,
जो अपने प्राणो को नाश करना
चाहता है, वही ऐसा करता है।
३३ उसको घायल और अपमानित होना
पडेगा,
और उसकी नामधराई कभी न
मिटेगी।
३४ क्योंकि जलन से पुरुष बहुत ही क्रोधित
हो जाता है,

* मूल में—पलकों।

और पलटा लेने के दिन वह कुछ
कोमलता नही दिखाता।
३५ वह घूस पर दृष्टि न करेगा,
और चाहे तू उसको बहुत कुछ दे,
तौभी वह न मानेगा॥

७ हे मेरे पुत्र, मेरी बातो को माना
कर,
और मेरी आज्ञाओ को अपने मन में
रख छोड।
२ मेरी आज्ञाओ को मान, इस से तू
जीवित रहेगा,
और मेरी शिक्षा को अपनी आंख की
पुतली जान;
३ उनको अपनी उंगलियो मे बान्ध,
और अपने हृदय की पटिया पर
लिख ले।
४ बुद्धि से कह कि, तू मेरी बहिन है,
और समझ को अपनी साथिन
बना,
५ तब तू पराई स्त्री से बचेगा,
जो चिकनी चुपड़ी बाते बोलती
है॥
६ मैं ने एक दिन अपने घर की खिडकी
से, अर्थात्
अपने झरोखे से झाका,
७ तब मैं ने भोले लोगो मे से
एक निर्बुद्धि जवान को देखा,
८ वह उस स्त्री के घर के कोने के पास
की सड़क पर चला जाता था,
और उस ने उसके घर का मार्ग
लिया।
९ उस समय दिन ढल गया, और सध्या-
काल आ गया था,
वरन रात का घोर अन्धकार छा गया
था॥

१० और उस से एक स्त्री मिली,
जिस का भेष वेश्या का सा था, और
वह बड़ी धूर्त्त थी।
११ वह शान्तिरहित और चंचल थी,
और अपने घर में न ठहरती थी,
१२ कभी वह सड़क में, कभी चौक में
पाई जाती थी,
और एक एक कोने पर वह बाट
जोहती थी।
१३ तब उस ने उस जवान को पकड़कर
चूमा,
और निर्लज्जता की चेष्टा करके उस
से कहा,
१४ मुझे मेलबलि चढ़ाने थे,
और मैं ने अपनी मन्नतें आज ही पूरी
की हैं,
१५ इसी कारण मैं तुझ से भेंट करने को
निकली,
मैं तेरे दर्शन की खोजी थी, सो अभी
पाया है।
१६ मैं ने अपने पलंग के बिछौने पर
मिस्र के बेलबूटेवाले कपड़े बिछाए हैं,
१७ मैं ने अपने बिछौने पर
गन्धरस, अगर और दालचीनी छिड़की
है।
१८ इसलिये अब चल हम प्रेम से भोर
तक जी बहलाते रहें,
हम परस्पर की प्रीति से आनन्दित
रहें।
१९ क्योंकि मेरा पति घर में नहीं है,
वह दूर देश को चला गया है,
२० वह चान्दी की थैली ले गया है,
और पूर्णमासी को लौट आएगा॥
२१ ऐसी ही बातें कह कहकर, उस ने
उसको अपनी प्रबल माया में फंसा
लिया,
और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से
उसको अपने वश में कर लिया।
२२ वह तुरन्त उसके पीछे हो लिया,
जैसे बैल कसाई-खाने को,
वा जैसे बेड़ी पहिने हुए कोई मूढ़
ताड़ना पाने को जाता है।
२३ अन्त में उस जवान का कलेजा तीर
से बेधा जाएगा,
वह उस चिड़िया के समान है जो फन्दे
की ओर वेग से उड़े
और न जानती हो कि उस में मेरे
प्राण जाएंगे॥
२४ अब हे मेरे पुत्रो, मेरी सुनो,
और मेरी बातों पर मन लगाओ।
२५ तेरा मन ऐसी स्त्री के मार्ग की ओर
न फिरे,
और उसकी डगरों में भूल कर न
जाना,
२६ क्योंकि बहुत लोग उस से मारे पड़े हैं,
उसके घात किए हुओं की एक बड़ी
संख्या होगी।
२७ उसका घर अधोलोक का मार्ग है,
वह मृत्यु के घर में पहुंचाता है॥

८ क्या बुद्धि नहीं पुकारती है,
क्या समझ ऊंचे शब्द से नहीं
बोलती है?
२ वह तो ऊंचे स्थानों पर मार्ग की एक
ओर
और तिर्मुहानियों में खड़ी होती है,
३ फाटकों के पास नगर के पैठाव में,
और द्वारों ही में वह ऊंचे स्वर से
कहती है,
४ हे मनुष्यो, मैं तुम को पुकारती हूं,
और मेरी बात सब आदमियों के
लिये है।

५ हे भोलो, चतुराई सीखो,
और हे मूर्खो, अपने मन मे समझ लो।
६ सुनो, क्योकि मै उत्तम बाते कहूगी,
और जब मुह खोलूगी, तब उस से सीधी बाते निकलेगी,
७ क्योकि मुझ से सच्चाई की बातो का वर्णन होगा,
दुष्टता की बातो से मुझ को घृणा आती है।।
८ मेरे मुह की सब बाते धर्म की होती है,
उन मे से कोई टेढी वा उलट फेर की बात नही निकलती है।
९ समझवाले के लिये वे सब सहज,
और ज्ञान के प्राप्त करनेवालो के लिये अति सीधी है।
१० चान्दी नही, मेरी शिक्षा ही को लो,
और उत्तम कुन्दन से बढकर ज्ञान को ग्रहण करो।
११ क्योकि बुद्धि, मूगे से भी अच्छी है,
और सारी मनभावनी वस्तुओ मे कोई भी उसके तुल्य नही है।
१२ मै जो बुद्धि हू, सो चतुराई मे बास करती हू,
और ज्ञान और विवेक को प्राप्त करती हू।
१३ यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है।
घमण्ड, अहकार और बुरी चाल से,
और उलट फेर की बात से भी मै बैर रखती हू।
१४ उत्तम युक्ति, और खरी बुद्धि मेरी ही है,
मै तो समझ हू, और पराक्रम भी मेरा है।
१५ मेरे ही द्वारा राजा राज्य करते है,
और अधिकारी धर्म से विचार करते है,
१६ मेरे ही द्वारा राजा हाकिम और रईस,
और पृथ्वी के सब न्यायी शासन करते है।
१७ जो मुझ से प्रेम रखते है, उन से मै भी प्रेम रखती हू,
और जो मुझ को यत्न से तडके उठकर खोजते है, वे मुझे पाते है।
१८ धन और प्रतिष्ठा मेरे पास है,
वरन ठहरनेवाला धन और धर्म भी है।
१९ मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है,
और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है।
२० मै धर्म की बाट मे,
और न्याय की डगरो के बीच मे चलती हू,
२१ जिस से मै अपने प्रेमियो को परमार्थ के भागी करू, और उनके भण्डारो को भर दू।।
२२ यहोवा ने मुझे काम करने के आरम्भ मे,
वरन अपने प्राचीनकाल के कामो से भी पहिले उत्पन्न किया।
२३ मै सदा से वरन आदि ही से
पृथ्वी की सृष्टि के पहिले ही से ठहराई गई हू।
२४ जब न तो गहिरा सागर था,
और न जल के सोते थे तब ही से मै उत्पन्न हुई।
२५ जब पहाड वा पहाडिया स्थिर न की गई थी,

२६ जब यहोवा ने न तो पृथ्वी और न
मैदान,
न जगत की धूलि के परमाणु बनाए
थे,
इन से पहिले मैं उत्पन्न हुई।
२७ जब उस ने आकाश को स्थिर किया,
तब मैं वहां थी,
जब उस ने गहिरे सागर के ऊपर
आकाशमण्डल ठहराया,
२८ जब उस ने आकाशमण्डल को ऊपर
से स्थिर किया,
और गहिरे सागर के सोते फूटने
लगे,
२९ जब उस ने समुद्र का सिवाना ठहराया,
कि जल उसकी आज्ञा का उल्लंघन
न कर सके,
और जब वह पृथ्वी की नेव की डोरी
लगाता था,
३० तब मैं कारीगर सी उसके पास थी,
और प्रति दिन मैं उसकी प्रसन्नता थी,
और हर समय उसके साम्हने आनन्दित
रहती थी।
३१ मैं उसकी बसाई हुई पृथ्वी से प्रसन्न
थी
और मेरा सुख मनुष्यों की संगति से
होता था॥
३२ इसलिये अब हे मेरे पुत्रो, मेरी सुनो,
क्या ही धन्य हैं वे जो मेरे मार्ग को
पकड़े रहते हैं।
३३ शिक्षा को सुनो, और बुद्धिमान हो
जाओ,
उसके विषय में अनसुनी न करो।
३४ क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो मेरी
सुनता,
वरन मेरी डेवढ़ी पर प्रति दिन खड़ा
रहता,
और मेरे द्वारों के खंभों के पास दृष्टि
लगाए रहता है।
३५ क्योंकि जो मुझे पाता है, वह जीवन
को पाता है,
और यहोवा उस से प्रसन्न होता है।
३६ परन्तु जो मेरा अपराध करता * है,
वह अपने ही पर उपद्रव करता
है,
जितने मुझ से बैर रखते वे मृत्यु
से प्रीति रखते हैं॥

९ बुद्धि ने † अपना घर बनाया,
और उसके सातों खंभे गढ़े हुए हैं।
२ उस ने अपने पशु वध करके, अपने
दाखमधु में मसाला मिलाया है,
और अपनी मेज लगाई है।
३ उस ने अपनी सहेलियां, सब को बुलाने
के लिये भेजी हैं, वह नगर के ऊंचे
स्थानों की चोटी पर पुकारती है,
४ जो कोई भोला है वह मुड़कर यहीं
आए!
और जो निर्बुद्धि है, उस से वह कहती
है,
५ आओ, मेरी रोटी खाओ,
और मेरे मसाला मिलाए हुए दाखमधु
को पीओ।
६ भोलों का संग छोड़ो, और जीवित
रहो,
समझ के मार्ग में सीधे चलो॥
७ जो ठट्ठा करनेवाले को शिक्षा देता है,
सो अपमानित होता है, और जो
दुष्ट जन को डांटता है वह कलंकित
होता है॥

* वा जिस की मुझ से भूल के कारण भेंट नहीं होती।
† मूल में—बुद्धियों ने।

८ ठट्ठा करनेवाले को न डाट ऐसा न
हो कि वह तुझ से बैर रखे,
बुद्धिमान को डाट, वह तो तुझ से
प्रेम रखेगा।
९ बुद्धिमान को शिक्षा दे, वह अधिक
बुद्धिमान होगा,
धर्मी को चिता दे, वह अपनी विद्या
बढाएगा।
१० यहोवा का भय मानना बुद्धि का
आरम्भ है,
और परमपवित्र ईश्वर को जानना
ही समझ है।
११ मेरे द्वारा तो तेरी आयु बढेगी,
और तेरे जीवन के वर्ष अधिक होगे।
१२ यदि तू बुद्धिमान हो, तो बुद्धि का
फल तू ही भोगेगा,
और यदि तू ठट्ठा करे, तो दण्ड केवल
तू ही भोगेगा॥
१३ मूर्खतारूपी स्त्री हौरा मचानेवाली
है,
वह तो भोली है, और कुछ नही
जानती।
१४ वह अपने घर के द्वार मे,
और नगर के ऊचे स्थानो मे मचिया
पर बैठी हुई
१५ जो बटोही अपना अपना मार्ग पकडे
हुए सीधे चले जाते है,
उनको यह कह कहकर पुकारती है,
१६ जो कोई भोला है, वह मुडकर यही
आए
जो निर्बुद्धि है, उस से वह कहती है,
१७ चोरी का पानी मीठा होता है,
और लुके छिपे की रोटी अच्छी लगती
है।
१८ और वह नही जानता है, कि वहा मरे
हुए पड़े है,
और उस स्त्री के नेवतहारी अधोलोक
के निचले स्थानो मे पहुचे है॥

१० सुलैमान के नीतिवचन॥
बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित
होता है,
परन्तु मूर्ख पुत्र के कारण माता उदास
रहती है।
२ दुष्टो के रखे हुए धन से लाभ नही
होता,
परन्तु धर्म के कारण मृत्यु से बचाव
होता है।
३ धर्मी को यहोवा भूखो मरने नही देता,
परन्तु दुष्टो की अभिलाषा वह पूरी
होने नही देता।
४ जो काम मे ढिलाई करता है, वह
निर्धन हो जाता है,
परन्तु कामकाजू लोग अपने हाथो के
द्वारा धनी होते है।
५ जो बेटा धूपकाल मे बटोरता है वह
बुद्धि से काम करनेवाला है,
परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी
नीद मे पडा रहता है, वह लज्जा
का कारण होता है।
६ धर्मी * पर बहुत से आशीर्वाद होते
है,
परन्तु उपद्रव दुष्टो का मुह छा
लेता है।
७ धर्मी को स्मरण करके लोग आशीर्वाद
देते है,
परन्तु दुष्टो का नाम मिट जाता है।
८ जो बुद्धिमान है, वह आज्ञाओ को
स्वीकार करता है,
परन्तु जो बकवादी और मूढ है, वह
पछाड खाता है।

* मूल में—धर्मी के सिर।

९ जो खराई से चलता है वह निडर
चलता है,
परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है उसकी
चाल प्रगट हो जाती है।
१० जो नैन से सैन करता है उस से औरो
को दुख मिलता है,
और जो बकवादी और मूढ है, वह
पछाड खाता है।
११ धर्मी का मुह तो जीवन का सोता है,
परन्तु उपद्रव दुष्टो का मुह छा लेता
है।
१२ बैर से तो झगडे उत्पन्न होते है,
परन्तु प्रेम से सब अपराध ढप जाते
है।
१३ समझवालो के वचनो में बुद्धि पाई
जाती है,
परन्तु निर्बुद्धि की पीठ के लिये
कोडा है।
१४ बुद्धिमान लोग ज्ञान को रख छोडते है,
परन्तु मूढ के बोलने से विनाश निकट
आता है।
१५ धनी का धन उसका दृढ नगर है,
परन्तु कगाल लोग निर्धन होने के
कारण विनाश होते है।
१६ धर्मी का परिश्रम जीवन के लिये
होता है,
परन्तु दुष्ट के लाभ से पाप होता है।
१७ जो शिक्षा पर चलता वह जीवन के
मार्ग पर है,
परन्तु जो डाट से मुह मोडता, वह
भटकता है।
१८ जो बैर को छिपा रखता है, वह झूठ
बोलता है,
और जो अपवाद फैलाता है, वह मूर्ख
है।
१९ जहा बहुत बातें होती है, वहा अपराध
भी होता है,
परन्तु जो अपने मुह को बन्द रखता
वह बुद्धि से काम करता है।
२० धर्मी के वचन तो उत्तम चान्दी है,
परन्तु दुष्टो का मन बहुत हलका होता
है।
२१ धर्मी के वचनो से बहुतो का पालन-
पोषण होता है,
परन्तु मूढ लोग निर्बुद्धि होने के कारण
मर जाते है।
२२ धन यहोवा की आशीष ही से मिलता
है,
और वह उसके साथ दुख नही
मिलाता।
२३ मूर्ख को तो महापाप करना हसी की
बात जान पडती है,
परन्तु समझवाले पुरुष में बुद्धि रहती
है।
२४ दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है,
वह उस पर आ पडती है,
परन्तु धर्मियो की लालसा पूरी होती
है।
२५ बवण्डर निकल जाते ही दुष्ट जन
लोप हो जाता है,
परन्तु धर्मी सदा लो स्थिर है।
२६ जैसे दात को सिरका, और आख को
धूआ,
वैसे आलसी उनको लगता है जो
उसको कही भेजते है।
२७ यहोवा के भय मानने से आयु बढती
है,
परन्तु दुष्टो का जीवन थोडे ही दिनो
का होता है।
२८ धर्मियो को आशा रखने में आनन्द
मिलता है,

१६ अनुग्रह करनेवाली स्त्री प्रतिष्ठा नही
खोती है,
और बलात्कारी लोग धन को नही
खोते।
१७ कृपालु मनुष्य अपना ही भला करता
है,
परन्तु जो क्रूर है, वह अपनी ही देह
को दु:ख देता है।
१८ दुष्ट मिथ्या कमाई कमाता है,
परन्तु जो धर्म का बीज बोता, उसको
निश्चय फल मिलता है।
१९ जो धर्म मे दृढ़ रहता, वह जीवन
पाता है,
परन्तु जो बुराई का पीछा करता, वह
मृत्यु का कौर हो जाता है।
२० जो मन के टेढ़े है, उन से यहोवा को
घृणा आती है,
परन्तु वह खरी चालवालो से प्रसन्न

२५ उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है,
और जो औरो की खेती सींचता है,
उसकी भी सींची जाएगी।
२६ जो अपना अनाज रख छोड़ता है,
उसको लोग शाप देते है,
परन्तु जो उसे बेच देता है, उसको
आशीर्वाद दिया जाता है।
२७ जो यत्न से भलाई करता है वह औरो
की प्रसन्नता खोजता है,
परन्तु जो दूसरे की बुराई का खोजी
होता है, उसी पर बुराई आ पड़ती
है।
२८ जो अपने धन पर भरोसा रखता है
वह गिर जाता है,
परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते की नाईं
लहलहाते है।
२९ जो अपने घराने को दु:ख देता, उसका
भाग वायु ही होगा,

२१ धर्मी को हानि नही होती है,
परन्तु दुष्ट लोग सारी विपत्ति में डूब
जाते है*।
२२ झूठो से यहोवा को घृणा आती है,
परन्तु जो विश्वास से काम करते है,
उन से वह प्रसन्न होता है।
२३ चतुर मनुष्य ज्ञान को प्रगट नही
करता है,
परन्तु मूढ अपने मन की मूढता ऊचे
शब्द से प्रचार करता है।
२४ कामकाजी लोग प्रभुता करते है,
परन्तु आलसी बगारी में पकडे जाते
है।
२५ उदास मन दब जाता है,
परन्तु भली बात से वह आनन्दित
होता है।
२६ धर्मी अपने पडोसी की अगुवाई करता
है,
परन्तु दुष्ट लोग अपनी ही चाल के
कारण भटक जाते है।
२७ आलसी अहेर का पीछा नही करता,
परन्तु कामकाजी को अनमोल वस्तु
मिलती है।
२८ धर्म की बाट में जीवन मिलता है,
और उसके पथ में मृत्यु का पता भी
नही॥

१३ बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा
सुनता है,
परन्तु ठट्ठा करनेवाला घुडकी को भी
नही सुनता।
२ सज्जन अपनी बातों के कारण
उत्तम वस्तु खाने पाता है,
परन्तु विश्वासघाती लोगो का पेट†
उपद्रव से भरता है।

* मूल में—विपत्ति से भर जाते है।
† मूल में—प्राण।

३ जो अपने मुह की चौकसी करता है,
वह अपने प्राण की रक्षा करता है,
परन्तु जो गाल बजाता उसका विनाश
हो जाता है।
४ आलसी का प्राण लालसा तो करता
है, और उसको कुछ नही मिलता,
परन्तु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते
है।
५ धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है,
परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और
लज्जित हो जाता है।
६ धर्म खरी चाल चलनेवाले की रक्षा
करता है,
परन्तु पापी अपनी दुष्टता के कारण
उलट जाता है।
७ कोई तो धन बटोरता, परन्तु उसके
पास कुछ नही रहता,
और कोई धन उडा देता, तौभी उसके
पास बहुत रहता है।
८ प्राण की छुडौती मनुष्य का धन है,
परन्तु निर्धन घुडकी को सुनता भी
नही।
९ धर्मियो की ज्योति आनन्द के साथ
रहती है,
परन्तु दुष्टो का दिया बुझ जाता है।
१० झगडे रगडे केवल अहकार ही से
होते है,
परन्तु जो लोग सम्मति मानते है,
उनके पास बुद्धि रहती है।
११ निधन के* पास माल नही रहता,
परन्तु जो अपने परिश्रम से बटोरता,
उसकी बढती होती है।
१२ जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता
है, तो मन शिथिल होता है,

* मूल में—अपने को निर्धन करता।

परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब
जीवन का वृक्ष लगता है।
१३ जो वचन को तुच्छ जानता, वह नाश
हो जाता है,
परन्तु आज्ञा के डरवैये को अच्छा फल
मिलता है।
१४ बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता
है,
और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दो
से बच सकते है।
१५ सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है,
परन्तु विश्वासघातियो का मार्ग कडा
होता है।
१६ सब चतुर तो ज्ञान से काम करते है,
परन्तु मूर्ख अपनी मूढता फैलाता है।
१७ दुष्ट दूत बुराई मे फसता है,
परन्तु विश्वासयोग्य दूत से कुशलक्षेम
होता है।
१८ जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता
वह निर्धन होता और अपमान पाता
है,
परन्तु जो डाट को मानता, उसकी
महिमा होती है।
१९ लालसा का पूरा होना तो प्राण को
मीठा लगता है,
परन्तु बुराई से हटना, मूर्खो के प्राण
को बुरा लगता है।
२० बुद्धिमानो की सगति कर, तब तू भी
बुद्धिमान हो जाएगा,
परन्तु मूर्खो का साथी नाश हो
जाएगा।
२१ बुराई पापियो के पीछे पडती है,
परन्तु धर्मियो को अच्छा फल मिलता
है।
२२ भला मनुष्य अपने नाती-पोतो के लिये
भाग छोड जाता है,
परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिये
रखी जाती है।
२३ निर्बल लोगो को खेती बारी से बहुत
भोजनवस्तु मिलती है,
परन्तु ऐसे लोग भी है जो अन्याय के
कारण मिट जाते है।
२४ जो बेटे पर छडी नही चलाता वह
उसका बैरी है,
परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न
से उसको शिक्षा देता है।
२५ धर्मी पेट भर खाने पाता है,
परन्तु दुष्ट भूखे ही रहते है॥

१४ हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर
को बनाती है,
पर मूढ स्त्री उसको अपने ही हाथो से
ढा देती है।
२ जो सीधाई से चलता वह यहोवा का
भय माननेवाला है,
परन्तु जो टेढी चाल चलता वह उसको
तुच्छ जाननेवाला ठहरता है।
३ मूढ के मुह मे गर्व का अकुर है,
परन्तु बुद्धिमान लोग अपने वचनो के
द्वारा रक्षा पाते है।
४ जहा बैल नही, वहा गौशाला निर्मल
तो रहती है,
परन्तु बैल के बल से अनाज की बढती
होती है।
५ सच्चा साक्षी झूठ नही बोलता,
परन्तु झूठा साक्षी झूठी बाते उडाता
है।
६ ठट्ठा करनेवाला बुद्धि को ढूढता, परन्तु
नही पाता,
परन्तु समझवाले को ज्ञान सहज से
मिलता है।

७ मूर्ख से अलग हो जा,
तू उस से ज्ञान की बात न पाएगा * ।
८ चतुर की बुद्धि अपनी चाल का
जानना है,
परन्तु मूर्खों की मूढता छल करना है ।
९ मूढ लोग दोषी होने को ठट्ठा जानते हैं,
परन्तु सीधे लोगो के बीच अनुग्रह
होता है ।
१० मन अपना ही दु ख जानता है,
और परदेशी उसके आनन्द में हाथ
नही डाल सकता ।
११ दुष्टो का घर विनाश हो जाता है,
परन्तु सीधे लोगो के तम्बू में आबादी
होती है ।
१२ ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख
पडता है,
परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती
है ।
१३ हसी के समय भी मन उदास होता है,
और आनन्द के अन्त में शोक होता
है ।
१४ जिसका मन ईश्वर की ओर से हट
जाता है,
वह अपनी चालचलन का फल भोगता
है,
परन्तु भला मनुष्य आप ही आप
सन्तुष्ट होता है ।
१५ भोला तो हर एक बात को सच
मानता है,
परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर
चलता है ।
१६ बुद्धिमान डरकर बुराई से हटता है,
परन्तु मूर्ख ढीठ होकर निडर रहता
है ।

* मूल में—न जानेगा ।

१७ जो झट क्रोध करे, वह मूढता का काम
भी करेगा,
और जो बुरी युक्तियां निकालता है,
उस से लोग बैर रखते हैं ।
१८ भोलो का भाग मूढता ही होता है,
परन्तु चतुरो को ज्ञानरूपी मुकुट
बान्धा जाता है ।
१९ बुरे लोग भलो के सम्मुख,
और दुष्ट लोग धर्मी के फाटक पर
दण्डवत् करते हैं ।
२० निर्धन का पडोसी भी उस से घृणा
करता है,
परन्तु धनी के बहुतेरे प्रेमी होते हैं ।
२१ जो अपने पडोसी को तुच्छ जानता, वह
पाप करता है,
परन्तु जो दीन लोगो पर अनुग्रह
करता, वह धन्य होता है ।
२२ जो बुरी युक्ति निकालते हैं, क्या वे
भ्रम में नहीं पडते ?
परन्तु भली युक्ति निकालनेवालो से
करुणा और सच्चाई का व्यवहार
किया जाता है ।
२३ परिश्रम से सदा लाभ होता है,
परन्तु बकवाद करने से केवल घटती
होती है ।
२४ बुद्धिमानो का धन उनका मुकुट
ठहरता है,
परन्तु मूर्खों की मूढता निरी मूढता है ।
२५ सच्चा साक्षी बहुतो के प्राण बचाता
है,
परन्तु जो झूठी बाते उडाया करता
है उस से धोखा ही होता है ।
२६ यहोवा के भय मानने से दृढ भरोसा
होता है,
और उसके पुत्रो को शरणस्थान
मिलता है ।

२७ यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है,
और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दो से बच जाते है।
२८ राजा की महिमा प्रजा की बहुतायत से होती है,
परन्तु जहा प्रजा नही, वहा हाकिम नाश हो जाता है।
२९ जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बडा समझवाला है,
परन्तु जो अधीर है, वह मूढता की बढती करता है।
३० शान्त मन, तन का जीवन है,
परन्तु मन के जलने से हड्डिया भी जल * जाती है।
३१ जो कगाल पर अधेर करता, वह उसके कर्त्ता की निन्दा करता है,
परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता, वह उसकी महिमा करता है।
३२ दुष्ट मनुष्य बुराई करता हुआ नाश हो जाता है,
परन्तु धर्मी को मृत्यु के समय भी शरण मिलती है।
३३ समझवाले के मन में बुद्धि वास किए रहती है,
परन्तु मूर्खों के अन्त काल में जो कुछ है वह प्रगट हो जाता है।
३४ जाति की बढती धर्म ही से होती है,
परन्तु पाप से देश के लोगो † का अपमान होता है।

१५ कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है,
परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।
२ बुद्धिमान ज्ञान का ठीक बखान करते है,
परन्तु मूर्खों के मुह से मूढता उबल आती है।
३ यहोवा की आखे सब स्थानो मे लगी रहती है,
वह बुरे भले दोनो को देखती रहती है।
४ शान्ति देनेवाली बात जीवन-वृक्ष है,
परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दु खित होती है।
५ मूढ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है,
परन्तु जो डाट को मानता, वह चतुर हो जाता है।
६ धर्मी के घर मे बहुत धन रहता है,
परन्तु दुष्ट के उपार्जन मे दु ख रहता है।
७ बुद्धिमान लोग बाते करने से ज्ञान को फैलाते है,
परन्तु मूर्खों का मन ठीक नही रहता।
८ दुष्ट लोगो के बलिदान से यहोवा घृणा करता है,
परन्तु वह सीधे लोगो की प्रार्थना से प्रसन्न होता है।
९ दुष्ट के चालचलन से यहोवा को घृणा आती है,
परन्तु जो धर्म का पीछा करता उस से वह प्रेम रखता है।
१० जो मार्ग को छोड देता, उसको बडी मिलती है,

और जो डाट से बैर रखता, वह
अवश्य मर जाता है।
११ जब कि अधोलोक और विनाशलोक
यहोवा के साम्हने खुले रहते है,
तो निश्चय मनुष्यो के मन भी।
१२ ठट्ठा करनेवाला डाटे जाने से प्रसन्न
नही होता,
और न वह बुद्धिमानो के पास जाता
है।
१३ मन आनन्दित होने मे मुख पर भी
प्रसन्नता छा जाती है,
परन्तु मन के दु ख से आत्मा निराश
होती है।
१४ समझनेवाले का मन ज्ञान की खोज
में रहता है,
परन्तु मूर्ख लोग मूढता से पेट भरते
है।
१५ दुखिया के सब दिन दु ख भरे रहते है,
परन्तु जिसका मन प्रसन्न रहता है,
वह मानो नित्य भोज मे जाता है।
१६ घबराहट के साथ बहुत रखे हुए
धन से,
यहोवा के भय के साथ थोडा ही धन
उत्तम है,
१७ प्रेम वाले घर मे सागपात का भोजन,
बैर वाले घर मे पले हुए बैल का
मास खाने से उत्तम है।
१८ क्रोधी पुरुष झगडा मचाता है,
परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला
है, वह मुकद्दमो को दबा देता है।
१९ आलसी का मार्ग काटो मे रून्धा हुआ
होता है,
परन्तु सीधे लोगो का मार्ग राजमार्ग
ठहरता है।
२० बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता
है,
परन्तु मूर्ख अपनी माता को तुच्छ
जानता है।
२१ निर्बुद्धि को मूढता से आनन्द होता है,
परन्तु समझवाला मनुष्य सीधी चाल
चलता है।
२२ बिना सम्मति की कल्पनाए निष्फल
हुआ करती है,
परन्तु बहुत से मन्त्रियो की सम्मति से
बात ठहरती है।
२३ सज्जन उत्तर देने से आनन्दित होता है,
और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या
ही भला होता है!
२४ बुद्धिमान के लिये जीवन का मार्ग
ऊपर की ओर जाता है,
इस रीति से वह अधोलोक मे पडने से
बच जाता है।
२५ यहोवा अहंकारियों के घर को ढा
देता है,
परन्तु विधवा के सिवाने को अटल
रखता है।
२६ बुरी कल्पनाए यहोवा को घिनौनी
लगती है,
परन्तु शुद्ध जन के वचन मनभावने है।
२७ लालची अपने घराने को दु ख देता है,
परन्तु घूस से घृणा करनेवाला जीवित
रहता है।
२८ धर्मी मन मे सोचता है कि क्या
उत्तर दू,
परन्तु दुष्टो के मुह से बुरी बातें उबल
आती है।
२९ यहोवा दुष्टों से दूर रहता है,
परन्तु धर्मियो की प्रार्थना सुनता है।
३० आंखों की चमक से मन को आनन्द
होता है,
और अच्छे समाचार से हड्डिया पुष्ट
होती हैं।

३१ जो जीवनदायी डाट कान लगाकर
सुनता है,
वह बुद्धिमानो के सग ठिकाना
पाता है।
३२ जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता,
वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है,
परन्तु जो डाट को सुनता, वह बुद्धि
प्राप्त करता है।
३३ यहोवा के भय मानने से शिक्षा प्राप्त
होती है,
और महिमा से पहिले नम्रता होती
है॥

१६ मन की युक्ति मनुष्य के वश
मे रहती है,
परन्तु मुह से कहना यहोवा की ओर
से होता है।
२ मनुष्य का सारा चालचलन अपनी
दृष्टि मे पवित्र ठहरता है,
परन्तु यहोवा मन को तौलता है।
३ अपने कामो को यहोवा पर डाल दे,
इस से तेरी कल्पनाए सिद्ध होगी।
४ यहोवा ने सब वस्तुए विशेष उद्देश्य
के लिये बनाई है, वरन दुष्ट को
भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया
है।
५ सब मन के घमण्डियो से यहोवा घृणा
करता है,
मै दृढता से कहता हूं*, ऐसे लोग
निर्दोष न ठहरेगे।
६ अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा, और
सच्चाई से होता है,
और यहोवा के भय मानने के द्वारा
मनुष्य बुराई करने मे बच जाते
है।
७ जब किसी का चालचलन यहोवा को
भावता है,
तब वह उसके शत्रुओ का भी उस से
मेल कराता है।
८ अन्याय के बडे लाभ से,
न्याय से थोडा ही प्राप्त करना
उत्तम है।
९ मनुष्य मन मे अपने मार्ग पर विचार
करता है,
परन्तु यहोवा ही उसके पैरो को
स्थिर करता है।
१० राजा के मुह से दैवीवाणी निकलती है,
न्याय करने मे उस से चूक नही
होती।
११ सच्चा तराजू और पलडे यहोवा की
ओर से होते है,
थैली मे जितने बटखरे है, सब उसी के
बनवाए हुए है।
१२ दुष्टता करना राजाओ के लिये घृणित
काम है,
क्योकि उनकी गद्दी धर्म ही से स्थिर
रहती है।
१३ धर्म की बात बोलनेवालो से राजा
प्रसन्न होता है,
और जो सीधी बाते बोलता है, उस
से वह प्रेम रखता है।
१४ राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान
है,
परन्तु बुद्धिमान मनुष्य उसको ठण्डा
करता है।
१५ राजा के मुख की चमक मे जीवन
रहता है,
और उसकी प्रसन्नता बरसात के
अन्त की घटा के समान होती है।
१६ बुद्धि की प्राप्ति चोखे सोने से क्या
ही उत्तम है!

* मूल मे—हाथ पर हाथ।

और समझ की प्राप्ति चान्दी से अति
योग्य है।
१७ बुराई से हटना सीधे लोगों के लिये
राजमार्ग है,
जो अपने चालचलन की चौकसी
करता, वह अपने प्राण की भी
रक्षा करता है।
१८ विनाश से पहिले गर्व,
और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड
होता है।
१९ घमण्डियों के संग लूट बांट लेने से,
दीन लोगों के संग नम्र भाव से
रहना उत्तम है।
२० जो वचन पर मन लगाता, वह कल्याण
पाता है,
और जो यहोवा पर भरोसा रखता,
वह धन्य होता है।
२१ जिसके हृदय में बुद्धि है, वह समझ-
वाला कहलाता है,
और मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता
है।
२२ जिसके बुद्धि है, उसके लिये वह जीवन
का सोता है,
परन्तु मूढ़ों को शिक्षा देना मूढ़ता ही
होती है।
२३ बुद्धिमान का मन उसके मुंह पर भी
बुद्धिमानी प्रगट करता* है,
और उसके वचन में विद्या रहती
है।
२४ मनभावने वचन मधुभरे छत्ते की
नाईं प्राणों को मीठे लगते,
और हड्डियों को हरी-भरी करते
हैं।

* मूल में—उसके मुंह को बुद्धिमान करता
है।

२५ ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को
सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके
अन्त में मृत्यु ही मिलती है।
२६ परिश्रमी की लालसा उसके लिये
परिश्रम करती है,
उसकी भूख* तो उसको उभारती
रहती है।
२७ अधर्मी मनुष्य बुराई की युक्ति
निकालता है,
और उसके वचनों से आग लग जाती
है।
२८ टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है,
और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों
में भी फूट करा देता है।
२९ उपद्रवी मनुष्य अपने पड़ोसी को
फुसलाकर
कुमार्ग पर चलाता है।
३० आंख मूंदनेवाला छल की कल्पनाएं
करता है,
और ओंठ दबानेवाला बुराई करता है।
३१ पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते
हैं,
वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त
होते हैं।
३२ विलम्ब से क्रोध करना वीरता से,
और अपने मन को वश में रखना,
नगर के जीत लेने से उत्तम है।
३३ चिट्ठी डाली जाती तो है,
परन्तु उसका निकलना यहोवा ही
की ओर से होता है॥

१७ चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस
घर की अपेक्षा उत्तम है
जो मेलबलि-पशुओं से भरा हो, परन्तु
उस में झगड़े रगड़े हों।

* मूल में—उसका मुंह।

२ वुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी
के उस पुत्र पर जो लज्जा का
कारण होता है प्रभुता करेगा,
और उस पुत्र के भाइयों के बीच
भागी होगा।
३ चान्दी के लिये कुठाली, और सोने के
लिये भट्ठी होती है,
परन्तु मनो को यहोवा जांचता है।
४ कुकर्मी अनर्थ वात को ध्यान देकर
सुनता है,
और झूठा मनुष्य दुष्टता की वात की
ओर कान लगाता है।
५ जो निर्धन को ठट्ठो में उड़ाता है, वह
उसके कर्त्ता की निन्दा करता है;
और जो किसी की विपत्ति पर हसता,
वह निर्दोष नही ठहरेगा।
६ वूढो की शोभा उनके नाती पोते है;
और वाल-वच्चो की शोभा उनके
माता-पिता है।
७ मूढ को उत्तम वात फवती नही,
और अधिक करके प्रधान को झूठी
वात नही फवती।
८ देनेवाले के हाथ मे घूस मोह लेनेवाले
मणि का काम देता है,
जिधर ऐसा पुरुष फिरता, उधर ही
उसका काम सुफल होता है।
९ जो दूसरे के अपराध को ढांप देता,
वह प्रेम का खोजी ठहरता है,
परन्तु जो वात की चर्चा वार वार
करता है, वह परम मित्रो में भी
फूट करा देता है।
१० एक घुडकी समझनेवाले के मन मे
जितनी गड जाती है,
उतना सौ वार मार खाना मूर्ख के
मन में नहीं गडता।
११ बुरा मनुष्य दंगे ही का यत्न करता है,
इसलिये उसके पास क्रूर दूत भेजा
जाएगा।
१२ वच्चा-छीनी-हुई-रीछनी से मिलना तो
भला है,
परन्तु मूढता में डूवे हुए मूर्ख से
मिलना भला नही।
१३ जो कोई भलाई के वदले में वुराई करे,
उसके घर से वुराई दूर न होगी।
१४ झगडे का आरम्भ वान्ध के छेद के
समान है,
झगडा वढने से पहिले उसको छोड़
देना उचित है।
१५ जो दोषी को निर्दोष, और जो निर्दोष
को दोषी ठहराता है,
उन दोनो से यहोवा घृणा करता
है।
१६ वुद्धि मोल लेने के लिये मूर्ख अपने
हाथ मे दाम क्यो लिए है?
वह उसे चाहता ही नही।
१७ मित्र सव समयों में प्रेम रखता है,
और विपत्ति के दिन भाई वन जाता
है।
१८ निर्वुद्धि मनुष्य हाथ पर हाथ मारता
है,
और अपने पडोसी के सामने उत्तर-
दायी होता है।
१९ जो झगड़े-रगडे में प्रीति रखता, वह
अपराध करने में भी प्रीति रखता
है,
और जो अपने फाटक को वडा करता,
वह अपने विनाश के लिये यत्न
करता है।
२० जो मन का टेढा है, उसका कल्याण
नही होता,
और उलट-फेर की वात करनेवाला
विपत्ति में पडता है।

२१ जो मूर्ख को जन्माता है वह उस से दु ख
ही पाता है,
और मूढ के पिता को आनन्द नही
होता।
२२ मन का आनन्द अच्छी औषधि है,
परन्तु मन के टूटने से हड्डिया सूख
जाती है।
२३ दुष्ट जन न्याय बिगाडने के लिये,
अपनी गाठ से * घूस निकालता है।
२४ बुद्धि समझनेवाले के साम्हने ही रहती
है,
परन्तु मूर्ख की आखें पृथ्वी के दूर
दूर देशो मे लगी रहती ह।
२५ मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता है,
और जननी को शोक होता है।
२६ फिर धर्मी से दण्ड लेना,
और प्रधानो को सिधाई के कारण
पिटवाना, दोनो काम अच्छे नही
है।
२७ जो सभलकर बोलता है, वही ज्ञानी
ठहरता है,
और जिसकी आत्मा शान्त रहती
है, सोई समझवाला पुरुष ठहरता
है।
२८ मूढ भी जब चुप रहता है, तब बुद्धिमान
गिना जाता है, और जो अपना
मुह बन्द रखता वह समझवाला
गिना जाता है॥

१८ जो औरो से अलग हो जाता है,
वह अपनी ही इच्छा पूरी करने
के लिये ऐसा करता है,
२ और सब प्रकार की खरी बुद्धि से
बैर † करता है।

* मूल में—गोद।
† मूल में—लडाई।

मूर्ख का मन समझ की बातो में नही
लगता,
वह केवल अपने मन की बात प्रगट
करना चाहता है।
३ जहा दुष्ट आता, वहा अपमान भी
आता है,
और निन्दित काम के साथ नामधराई
होती है।
४ मनुष्य के मुह के वचन गहिरा जल,
वा उमण्डनेवाली नदी वा बुद्धि के
सोते है।
५ दुष्ट का पक्ष करना,
और धर्मी का हक मारना, अच्छा नही
है।
६ बात बढाने से मूर्ख मुकद्दमा खडा
करता है,
और अपने को मार खाने के योग्य
दिखाता है *।
७ मूर्ख का विनाश उसकी बातो से होता
है,
और उसके वचन उसके प्राण के
लिये फन्दे होते है।
८ कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट
भोजन की नाई लगते है,
वे पेट मे पच जाते है।
९ जो काम मे आलस करता है,
वह खोनेवाले का भाई ठहरता है।
१० यहोवा का नाम दृढ कोट है,
धर्मी उस में भागकर सब दुर्घटनाओ
से बचता है।
११ धनी का धन उसकी दृष्टि में गढवाला
नगर,
और ऊचे पर बनी हुई शहरपनाह
है।

* मूल में—उसका मुह मार को बुलाता
है।

१२ नाश होने से पहिले मनुष्य के मन मे
घमण्ड,
और महिमा पाने से पहिले नम्रता
होती है।
१३ जो विना वात सुने उत्तर देता है,
वह मूढ ठहरता, और उसका अनादर
होता है।
१४ रोग मे मनुष्य अपनी आत्मा से
सम्भलता है,
परन्तु जव आत्मा हार जाती है तव
इसे कौन सह सकता है?
१५ समझवाले का मन ज्ञान प्राप्त करता
है,
और बुद्धिमान ज्ञान की वात की
खोज मे रहते है।
१६ भेट मनुष्य के लिये मार्ग खोल देती है,
और उसे वडे लोगो के साम्हने
पहुचाती है।
१७ मुकद्दमे मे जो पहिले बोलता, वही
धर्मी जान पडता है,
परन्तु पीछे दूसरा पक्षवाला * आकर
उसे खोज लेता है।
१८ चिट्ठी डालने से झगडे वन्द होते है,
और वलवन्तो की लडाई का अन्त
होता है।
१९ चिढे हुए भाई को मनाना दृढ नगर
के ले लेने से कठिन होता है,
और झगडे राजभवन के वेण्डो के
समान है।
२० मनुष्य का पेट मुह की वातो के फल
से भरता है,
और वोलने से जो कुछ प्राप्त होता
है उस से वह तृप्त होता है।
२१ जीभ के वश मे मृत्यु और जीवन
दोनो होते है,
और जो उसे काम मे लाना जानता
है वह उसका फल भोगेगा।
२२ जिस ने स्त्री व्याह ली, उस ने उत्तम
पदार्थ पाया,
और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ
है।
२३ निर्धन गिडगिडाकर वोलता है,
परन्तु धनी कडा उत्तर देता है।
२४ मित्रो के वढाने से तो नाश होता
है,
परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई
से भी अधिक मिला रहता है।

१९ जो निर्धन खराई से चलता है,
वह उस मूर्ख से उत्तम है जो
टेढी वाते वोलता है।
२ मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा
नही,
और जो उतावली से दौडता है वह
चूक जाता है।
३ मूढता के कारण मनुष्य का मार्ग
टेढा होता है,
और वह मन ही मन यहोवा से
चिढने लगता है।
४ धनी के तो वहुत मित्र हो जाते है,
परन्तु कगाल के मित्र उस से अलग
हो जाते है।
५ झूठा साक्षी निर्दोष नही ठहरता,
और जो झूठ बोला करता है, वह
न वचेगा।
६ उदार मनुष्य को वहुत से लोग मना
लेते है,
और दानी पुरुष का मित्र सब कोई
वनता है।
७ जब निर्धन के सव भाई उस से बैर
रखते है,

* मूल में—उसका बन्धु।

तो निश्चय है कि उसके मित्र उस से
दूर हो जाए।
वह बाते करते हुए उनका पीछा
करता है, परन्तु उनको नही
पाता।
८ जो बुद्धि प्राप्त करता, वह अपने प्राण
का प्रेमी ठहरता है,
और जो समझ को धरे रहता है
उसका कल्याण होता है।
९ झूठा साक्षी निर्दोष नही ठहरता,
और जो झूठ बोला करता है, वह
नाश होता है।
१० जब सुख मे रहना मूर्ख को नही
फबता,
तो हाकिमो पर दास का प्रभुता करना
कैसे फबे!
११ जो मनुष्य बुद्धि मे चलता है वह
विलम्ब से क्रोध करता है,
और अपराध को भुलाना उसको
सोहता है।
१२ राजा का क्रोध सिह की गरजन के
समान है,
परन्तु उसकी प्रसन्नता घास पर की
ओस के तुल्य होती है।
१३ मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति ठहरता
है,
और पत्नी के झगडे-रगडे सदा टपकने
के समान है।
१४ घर और धन पुरखाओ के भाग मे,
परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से
मिलती है।
१५ आलस से भारी नीद आ जाती है,
और जो प्राणी ढिलाई से काम करता,
वह भूखा ही रहता है।
१६ जो आज्ञा को मानता, वह अपने
प्राण की रक्षा करता है,
परन्तु जो अपने चालचलन के विषय
मे निश्चिन्त रहता है, वह मर
जाता है।
१७ जो कगाल पर अनुग्रह करता है, वह
यहोवा को उधार देता है,
और वह अपने इस काम का प्रतिफल
पाएगा।
१८ जबतक आशा है तो अपने पुत्र की
ताडना कर,
जान बूझकर उसको मार न डाल।
१९ जो बडा क्रोधी है, उसे दण्ड उठाने
दे,
क्योकि यदि तू उसे बचाए, तो
बारम्बार बचाना पडेगा।
२० सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को
ग्रहण कर,
कि तू अन्तकाल मे बुद्धिमान ठहरे।
२१ मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाए
होती है,
परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है,
वही स्थिर रहती है।
२२ मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने
योग्य होता है,
और निधन जन झूठ बोलनेवाले से
उत्तम है।
२३ यहोवा का भय मानने से जीवन
बढता है,
और उसका भय माननेवाला ठिकाना
पाकर सुखी रहता है,
उस पर विपत्ति नही पडने की।
२४ आलसी अपना हाथ थाली में डालता
है,
परन्तु अपने मुह तक कौर नही
उठाता।
२५ ठट्ठा करनेवाले को मार, इस से
भोला मनुष्य समझदार हो जाएगा,

और समझवाले को डांट, तब वह
अधिक ज्ञान पाएगा।
२६ जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता,
और अपनी मा को भगा देता है,
वह अपमान और लज्जा का कारण
होगा।
२७ हे मेरे पुत्र, यदि तू भटकना चाहता है,
तो शिक्षा का सुनना छोड़ दे।
२८ अधम साक्षी न्याय को ठट्ठों में
उड़ाता है,
और दुष्ट लोग अनर्थ काम निगल
लेते हैं।
२९ ठट्ठा करनेवालों के लिये दण्ड ठहराया
जाता है,
और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े हैं।

२० दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और
मदिरा हल्ला मचानेवाली है,
जो कोई उसके कारण चूक करता
है, वह बुद्धिमान नहीं।
२ राजा का भय दिखाना, सिंह का
गरजना है,
जो उस पर रोष करता, वह अपने
प्राण का अपराधी होता है।
३ मुकद्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की
महिमा ठहरती है,
परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार
होते हैं।
४ आलसी मनुष्य शीत के कारण हल
नहीं जोतता,
इसलिये कटनी के समय वह भीख
मांगता, और कुछ नहीं पाता।
५ मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो
है,
तौभी समझवाला मनुष्य उसको
निकाल लेता है।
६ बहुत से मनुष्य अपनी कृपा का प्रचार
करते हैं;
परन्तु सच्चा पुरुष कौन पा सकता
है?
७ धर्मी जो खराई से चलता रहता है,
उसके पीछे उसके लड़केबाले धन्य
होते हैं।
८ राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठा
करता है,
वह अपनी दृष्टि ही से सब बुराई को
उड़ा देता है।
९ कौन कह सकता है कि मैं ने अपने
हृदय को पवित्र किया,
अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूं?
१० घटती-बढ़ती बटखरे और घटते-
बढ़ते नपुए*
इन दोनों से यहोवा घृणा करता है।
११ लड़का भी अपने कामों से पहिचाना
जाता है,
कि उसका काम पवित्र और सीधा
है, वा नहीं।
१२ सुनने के लिये कान और देखने के
लिये जो आंखें हैं,
उन दोनों को यहोवा ने बनाया है।
१३ नींद से प्रीति न रख, नहीं तो दरिद्र
हो जाएगा,
आंखें खोल तब तू रोटी से तृप्त होगा।
१४ मोल लेने के समय ग्राहक तुच्छ
तुच्छ कहता है,
परन्तु चले जाने पर बड़ाई करता
है।
१५ सोना और बहुत से मूंगे तो हैं,
परन्तु ज्ञान की बातें अनमोल मणि
ठहरी हैं।

---

* मूल में—एपा।

१६ जो अनजाने* का उत्तरदायी हुआ उसका कपड़ा,
और जो पराए का उत्तरदायी हुआ उस से बंधक की वस्तु ले रख।
१७ चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है,
परन्तु पीछे उसका मुंह कंकड़ से भर जाता है।
१८ सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्थिर होती हैं,
और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये।
१९ जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रगट करता है,
इसलिये बकवादी से मेल जोल न रखना।
२० जो अपने माता-पिता को कोसता,
उसका दिया बुझ जाता, और घोर अन्धकार हो जाता है।
२१ जो भाग पहिले उतावली से मिलता है,
अन्त में उस पर आशीष नहीं होती।
२२ मत कह, कि मैं बुराई का पलटा लूंगा,
वरन यहोवा की बाट जोहता रह, वह तुझ को छुड़ाएगा।
२३ घटती बढ़ती बटखरों से यहोवा घृणा करता है,
और छल का तराजू अच्छा नहीं।
२४ मनुष्य का मार्ग यहोवा की ओर से ठहराया जाता है,
आदमी क्योंकर अपना चलना समझ सके?

* मूल में—पराये।

२५ जो मनुष्य बिना विचारे किसी वस्तु को पवित्र ठहराए*,
और जो मन्नत मानकर पूछपाछ करने लगे, वह फन्दे में फंसेगा।
२६ बुद्धिमान राजा दुष्टों को फटकता है,
और उन पर दांवने का पहिया चलवाता है।
२७ मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है,
वह मन की सब बातों की खोज करता है।
२८ राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है,
और कृपा करने से उसकी गद्दी संभलती है।
२९ जवानों का गौरव उनका बल है,
परन्तु बूढ़ों की शोभा उनके पक्के बाल हैं।
३० चोट लगने से जो घाव होते हैं, वह बुराई दूर करते हैं,
और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है॥

२१ राजा का मन नालियों के जल की नाईं यहोवा के हाथ में रहता है,
जिधर वह चाहता उधर उसको फेर देता है।
२ मनुष्य का सारा चालचलन अपनी दृष्टि में तो ठीक होता है,
परन्तु यहोवा मन को जांचता है।
३ धर्म और न्याय करना,
यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

* मूल में—कहे कि पवित्र वस्तु।

४ चढी आखे, घमण्डी मन,
और दुष्टो की खेती, तीनो पापमय है।
५ कामकाजी की कल्पनाओ से केवल लाभ होता है,
परन्तु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।
६ जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो,
वह वायु से उड जानेवाला कुहरा है,
उसके ढूढनेवाले मृत्यु ही को ढूढते है।
७ जो उपद्रव दुष्ट लोग करते है, उस से उन्ही का नाश होता है,
क्योकि वे न्याय का काम करने से इनकार करते है।
८ पाप से लदे हुए मनुष्य का मार्ग बहुत ही टेढा होता है,
परन्तु जो पवित्र है, उसका कर्म सीधा होता है।
९ लम्बे-चौडे घर मे झगडालू पत्नी के सग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है।
१० दुष्ट जन बुराई की लालसा जी से करता है,
वह अपने पडोसी पर अनुग्रह की दृष्टि नही करता।
११ जब ठट्ठा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है,
और जब बुद्धिमान को उपदेश दिया जाता है, तब वह ज्ञान प्राप्त करता है।
१२ धर्मी जन दुष्टो के घराने पर बुद्धिमानी से विचार करता है, ईश्वर दुष्टो को बुराइयो मे उलट देता है।
१३ जो कगाल की दोहाई पर कान न दे,
वह आप पुकारेगा और उसकी सुनी न जाएगी।
१४ गुप्त मे दी हुई भेट से क्रोध ठण्डा होता है,
और चुपके से दी हुई घूस से बडी जलजलाहट भी थमती है।
१५ न्याय का काम करना धर्मी को तो आनन्द,
परन्तु अनर्थकारियो को विनाश ही का कारण जान पडता है।
१६ जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाए,
उसका ठिकाना मरे हुओ के बीच मे होगा।
१७ जो रागरग * से प्रीति रखता है, वह कगाल होता है,
और जो दाखमधु पीने और तेल लगाने से प्रीति रखता है, वह धनी नही होता।
१८ दुष्ट जन धर्मी की छुडौती ठहरता है,
और विश्वासघाती सीधे लोगो की सन्ती दण्ड भोगते है।
१९ झगडालू और चिढनेवाली पत्नी के सग रहने से जगल मे रहना उत्तम है।
२० बुद्धिमान के घर मे उत्तम धन और तेल पाए जाते है,
परन्तु मूर्ख उनको उडा डालता है।
२१ जो धर्म और कृपा का पीछा पकडता है,
वह जीवन, धर्म और महिमा भी पाता है।

* मूल में—आनन्द।

२२ बुद्धिमान शूरवीरो के नगर पर चढकर,
उनके वल को जिस पर वे भरोसा करते है, नाश करता है।
२३ जो अपने मुह को वश मे रखता है,
वह अपने प्राण को विपत्तियो से बचाता है।
२४ जो अभिमान मे रोष मे आकर काम करता है,
उसका नाम अभिमानी, और अहकारी ठट्ठा करनेवाला पडता है।
२५ आलसी अपनी लालसा ही मे मर जाता है,
क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते है।
२६ कोई ऐसा है, जो दिन भर लालसा ही किया करता है,
परन्तु धर्मी लगातार दान करता रहता है।
२७ दुष्टो का वलिदान घृणित लगता है,
विशेष करके जब वह महापाप के निमित्त चढाता है।
२८ झूठा साक्षी नाश होता है,
जिस ने जो सुना है, वही कहता हुआ स्थिर रहेगा।
२९ दुष्ट मनुष्य कठोर मुख का होता है,
और जो सीधा है, वह अपनी चाल सीधी करता है।
३० यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि,
और न कुछ समझ,
न कोई युक्ति चलती है।
३१ युद्ध के दिन के लिये घोडा तैयार तो होता है,
परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है॥

२२ बडे धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है,
और सोने चान्दी से औरो की प्रसन्नता उत्तम है।
२ धनी और निधन दोनो एक दूसरे से मिलते है,
यहोवा उन दोनो का कर्त्ता है।
३ चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है,
परन्तु भोले लोग आगे बढकर दण्ड भोगते है।
४ नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल
धन, महिमा और जीवन होता है।
५ टेढे मनुष्य के मार्ग में काटे और फन्दे रहते है,
परन्तु जो अपने प्राणो की रक्षा करता, वह उन से दूर रहता है।
६ लडके को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उसको चलना चाहिये,
और वह बुढापे में भी उस से न हटेगा।
७ धनी, निधन लोगो पर प्रभुता करता है,
और उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।
८ जो कुटिलता का बीज बोता है, वह अनर्थ ही काटेगा,
और उसके रोष का सोटा टूटेगा।
९ दया करनेवाले पर आशीष फलती है,
क्योंकि वह कगाल को अपनी रोटी में से देता है।
१० ठट्ठा करनेवाले को निकाल दे, तब झगडा मिट जाएगा,
और वाद-विवाद और अपमान दोनो टूट जाएगे।

११ जो मन की शुद्धता से प्रीति रखता है,
और जिसके वचन मनोहर होते है,
राजा उसका मित्र होता है।
१२ यहोवा ज्ञानी पर दृष्टि करके, उसकी रक्षा करता है,
परन्तु विश्वासघाती की बाते उलट देता है।
१३ आलसी कहता है, बाहर तो सिह होगा!
मै चौक के बीच घात किया जाऊगा!
१४ पराई स्त्रियो का मुह गहिरा गडहा है,
जिस से यहोवा क्रोधित होता, सोई उस मे गिरता है।
१५ लडके के मन मे मूढता बन्धी रहती है,
परन्तु छडी की ताडना के द्वारा वह उस से दूर की जाती है।
१६ जो अपने लाभ के निमित्त कगाल पर अन्धेर करता है,
और जो धनी को भेट देता, वे दोनो केवल हानि ही उठाते है॥
१७ कान लगाकर बुद्धिमानो के वचन सुन,
और मेरी ज्ञान की बातो की ओर मन लगा,
१८ यदि तू उसको अपने मन मे रखे,
और वे सब तेरे मुंह से निकला भी करे, तो यह मनभावनी बात होगी।
१९ मै आज इसलिये ये बाते तुझ को जता देता हू,
कि तेरा भरोसा यहोवा पर हो।
२० मै बहुत दिनो से तेरे हित के उपदेश
और ज्ञान की बाते लिखता आया हू,
२१ कि मै तुझे सत्य वचनो का निश्चय करा दू,
जिस से जो तुझे काम मे लगाए,
उनको सच्चा उत्तर दे सके॥

२२ कगाल पर इस कारण अन्धेर न करना कि वह कगाल है,
और न दीन जन को कचहरी* मे पीसना,
२३ क्योकि यहोवा उनका मुकद्दमा लडेगा,
और जो लोग उनका धन हर लेते है, उनका प्राण भी वह हर लेगा।
२४ क्रोधी मनुष्य का मित्र न होना,
और झट क्रोध करनेवाले के सग न चलना,
२५ कही ऐसा न हो कि तू उसकी चाल सीखे,
और तेरा प्राण फन्दे मे फस जाए।
२६ जो लोग हाथ पर हाथ मारते,
और ऋणियो के उत्तरदायी होते है,
उन मे तू न होना।
२७ यदि भर देने के लिये तेरे पास कुछ न हो,
तो वह क्यो तेरे नीचे से खाट खीच ले जाए?
२८ जो सिवाना तेरे पुरखाओ ने बान्धा हो,
उस पुराने सिवाने को न बढाना।
२९ यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो कामकाज मे निपुण हो,
तो वह राजाओ के सम्मुख खडा होगा, छोटे लोगो के सम्मुख नही॥

२३ जब तू किसी हाकिम के सग भोजन करने को बैठे,
तब इस बात को मन लगाकर सोचना
कि मेरे साम्हने कौन है?
२ और यदि तू खाऊ हो,
तो थोडा खाकर भूखा उठ जाना।

* मूल में—फाटक।

२६ हे मेरे पुत्र, अपना मन मेरी ओर
लगा,
और तेरी दृष्टि मेरे चालचलन पर
लगी रहे।
२७ वेश्या गहिरा गड्हा ठहरती है,
और पराई स्त्री सकेत कुए के समान
है।
२८ वह डाकू की नाईं घात लगाती है,
और बहुत से मनुष्यो को विश्वासघाती
कर देती है ।।
२९ कौन कहता है, हाय ? कौन कहता
है, हाय हाय ? कौन झगडे रगडे
मे फसता है ?
कौन बक बक करता है ? किसके
अकारण घाव होते हैं ?
किसकी आखे लाल हो जाती है ?
३० उनकी जो दाखमधु देर तक पीते है,
और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु
ढूढने को जाते है।
३१ जब दाखमधु लाल दिखाई देता है,
और कटोरे में उसका सुन्दर रग
होता है,
और जब वह धार के साथ उण्डेला
जाता है, तब उसको न देखना।
३२ क्योकि अन्त मे वह सर्प की नाईं
डसता है,
और करैत के समान काटता है।
३३ तू विचित्र वस्तुए देखेगा,
और उल्टी-सीधी बातें बकता रहेगा।
३४ और तू समुद्र के बीच लेटनेवाले
वा मस्तूल के सिरे पर सोनेवाले
के समान रहेगा।
३५ तू कहेगा कि मैं ने मार तो खाई,
परन्तु दु:खित न हुआ,
मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ
सुधि न थी।
मैं होश मे कब आऊ ? मैं तो फिर
मदिरा ढूढूगा ।।

२४ बुरे लोगो के विषय में डाह न
करना,
और न उनकी संगति की चाह
रखना;
२ क्योंकि वे उपद्रव सोचते रहते है,
और उनके मुह से दुष्टता की बात
निकलती है।
३ घर बुद्धि से बनता है,
और समझ के द्वारा स्थिर होता
है।
४ ज्ञान के द्वारा कोठरिया
सब प्रकार की बहुमूल्य और मनभाऊ
वस्तुओ से भर जाती हैं।
५ बुद्धिमान पुरुष बलवान् भी होता है,
और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान्
होता है।
६ इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति
के साथ करना,
विजय बहुत से मन्त्रियों के द्वारा
प्राप्त होती है।
७ बुद्धि इतने ऊचे पर है कि मूढ उसे
पा नही सकता,
वह सभा * में अपना मुंह खोल नही
सकता ।।
८ जो सोच विचार के बुराई करता है,
उसको लोग दुष्ट कहते हैं।
९ मूर्खता का विचार भी पाप है,
और ठट्ठा करनेवाले से मनुष्य घृणा
करते हैं ।।
१० यदि तू विपत्ति के समय साहस
छोड दे,
तो तेरी शक्ति बहुत कम है।

---

* मूल में—फाटक।

११ जो मार डाले जाने के लिये घसीटे
जाते हैं उनको छुड़ा,
और जो घात किए जाने को हैं
उन्हें मत पकड़ा।
१२ यदि तू कहे, कि देख मैं इसको
जानता न था,
तो क्या मन का जांचनेवाला इसे
नहीं समझता ?
और क्या तेरे प्राणों का रक्षक इसे
नहीं जानता ?
और क्या वह हर एक मनुष्य के
काम का फल उसे न देगा ?
१३ हे मेरे पुत्र तू मधु खा, क्योंकि वह
अच्छा है,
और मधु का छत्ता भी, क्योंकि वह
तेरे मुंह में मीठा लगेगा।
१४ इसी रीति बुद्धि भी तुझे वैसी ही
मीठी लगेगी,
यदि तू उसे पा जाए तो अन्त में
उसका फल भी मिलेगा,
और तेरी आशा न टूटेगी॥
१५ हे दुष्ट, तू धर्मी के निवास को नाश
करने के लिये घात को न बैठ,
और उसके विश्रामस्थान को मत
उजाड़,
१६ क्योंकि धर्मी चाहे सात बार गिरे
तौभी उठ खड़ा होता है,
परन्तु दुष्ट लोग विपत्ति में गिरकर
पड़े ही रहते हैं॥
१७ जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू
आनन्दित न हो,
और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा
मन मगन न हो।
१८ कहीं ऐसा न हो कि यहोवा यह
देखकर अप्रसन्न हो
और अपना क्रोध उस पर से हटा ले॥
१९ कुकर्मियों के कारण मत कुढ़,
दुष्ट लोगों के कारण डाह न कर,
२० क्योंकि बुरे मनुष्य को अन्त में कुछ
फल न मिलेगा,
दुष्टों का दिया बुझा दिया जाएगा॥
२१ हे मेरे पुत्र, यहोवा और राजा दोनों
का भय मानना,
और बलवा करनेवालों के साथ न
मिलना,
२२ क्योंकि उन पर विपत्ति अचानक आ
पड़ेगी,
और दोनों की ओर से आनेवाली
आपत्ति को कौन जानता है ?
२३ बुद्धिमानो के वचन यह भी हैं॥
न्याय में पक्षपात करना, किसी रीति
भी अच्छा नहीं।
२४ जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है,
उसको तो हर समाज के लोग शाप
देते और जाति जाति के लोग धमकी
देते हैं,
२५ परन्तु जो लोग दुष्ट को डाटते हैं
उनका भला होता है,
और उत्तम से उत्तम आशीर्वाद उन
पर आता है।
२६ जो सीधा उत्तर देता है,
वह होठों को चूमता है॥
२७ अपना बाहर का कामकाज ठीक
करना,
और खेत में उसे तैयार कर लेना,
उसके बाद अपना घर बनाना॥
२८ व्यर्थ अपने पड़ोसी के विरुद्ध साक्षी
न देना,
और न उसको फुसलाना।
२९ मत कह, कि जैसा उस ने मेरे साथ
किया वैसा ही मैं भी उसके साथ
करूंगा,

और उसको उसके काम के अनुसार
पलटा दूगा ।।
३० मै आलसी के खेत के पास से
और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की
बारी के पास होकर जाता था,
३१ तो क्या देखा, कि वहा सब कही
कटीले पेड भर गए है,
और वह बिच्छू पेडो से ढप गई है,
और उसके पत्थर का बाडा गिर
गया है ।
३२ तब मै ने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक
विचार किया,
हा मै ने देखकर शिक्षा प्राप्त की ।
३३ छोटी सी नीद,
एक और झपकी,
थोडी देर हाथ पर हाथ रख के*
और लेटे रहना,
३४ तब तेरा कगालपन डाकू की नाई,
और तेरी घटी हथियारबन्द के समान
आ पडेगी ।।

२५ सुलैमान के नीतिवचन ये भी है,
जिन्हे यहूदा के राजा हिजकिय्याह
के जनो ने नकल की थी ।।
२ परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने मे
है
परन्तु राजाओ की महिमा गुप्त बात
के पता लगाने से होती है ।
३ स्वर्ग की ऊचाई और पृथ्वी की
गहराई
और राजाओ का मन, इन तीनो का
अन्त नही मिलता ।
४ चान्दी मे से मैल दूर करने पर
सुनार के लिये एक पात्र हो जाता
है ।

* मूल मे—दोनों हाथ मिलाए।

५ राजा के साम्हने मे दुष्ट को निकाल
देने पर
उसकी गद्दी धर्म के कारण स्थिर
होगी ।
६ राजा के साम्हने अपनी बडाई न
करना
और बडे लोगो के स्थान मे खडा न
होना,
७ क्योकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन
किया हो
उसके साम्हने तेरा अपमान न हो,
वरन तुझ मे यह कहा जाए, आगे
बढकर विराज* ।।
८ झगडा करने मे जल्दी न करना
नही तो अन्त मे जब तेरा पडोसी
तेरा मुह काला करे
तब तू क्या कर सकेगा ?
९ अपने पडोसी के साथ वादविवाद
एकान्त मे करना,
और पराये का भेद न खोलना,
१० ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी भी
निन्दा करे,
और तेरा अपवाद बना रहे ।।
११ जैसे चान्दी की टोकरियो मे सोनहले
सेब हो
वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ
वचन होता है ।
१२ जैसे सोने का नत्थ और कुन्दन का
जेवर अच्छा लगता है,
वैसे ही माननेवाले के कान मे
बुद्धिमान की डाट भी अच्छी लगती
है ।
१३ जैसे कटनी के समय बर्फ की ठण्ड
से,

* मूल मे—इधर चढ आ।

वैसे ही विश्वासयोग्य दूत से भी,
भेजनेवालों का जी ठण्डा होता है।
१४ जैसे बादल और पवन बिना वृष्टि
निर्लाभ होते हैं,
वैसे ही झूठ-मूठ दान देनेवाले का
बड़ाई मारना होता है॥
१५ धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता
है,
और कोमल वचन हड्डी को भी
तोड़ डालता है।
१६ क्या तू ने मधु पाया? तो जितना
तेरे लिये ठीक हो* उतना ही
खाना,
ऐसा न हो कि अधिक खाकर† उसे
उगल दे।
१७ अपने पड़ोसी के घर में बारम्बार
जाने से अपने पांव को रोक‡,
ऐसा न हो कि वह खिन्न होकर
घृणा करने लगे।
१८ जो किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी देता
है,
वह मानो हथौड़ा और तलवार और
पैना तीर है।
१९ विपत्ति के समय विश्वासघाती का
भरोसा
टूटे हुए दांत वा उखड़े पांव के
समान है।
२० जैसा जाड़े के दिनों में किसी का
वस्त्र उतारना वा सज्जी पर सिरका
डालना होता है,
वैसा ही उदास मनवाले के साम्हने
गीत गाना होता है।

* मूल में—जितनी चाहिये।
† मूल में—अघाकर।
‡ मूल में—घर से अपना पांव बहुमूल्य करना।

२१ यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसको
रोटी खिलाना,
और यदि वह प्यासा हो तो उसे
पानी पिलाना,
२२ क्योंकि इस रीति तू उसके सिर पर
अंगारे डालेगा,
और यहोवा तुझे इसका फल देगा।
२३ जैसे उत्तरीय वायु वर्षा को लाती है,
वैसे ही चुगली करने* से मुख पर
क्रोध छा जाता है।
२४ लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी के
संग रहने से
छत के कोने पर रहना उत्तम है।
२५ जैसा थके मान्दे के प्राणों के लिये
ठण्डा पानी होता है,
वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ
समाचार भी होता है।
२६ जो धर्मी दुष्ट के कहने में आता है,
वह गदले सोते और बिगड़े हुए
कुण्ड के समान है।
२७ बहुत मधु खाना अच्छा नहीं,
परन्तु कठिन बातों की पूछपाछ
महिमा का कारण होता है।
२८ जिसकी आत्मा वश में नहीं
वह ऐसे नगर के समान है जिसकी
शहरपनाह नाका करके तोड़ दी
गई हो॥

२६ जैसा धूपकाल में हिम का,
और कटनी के समय जल का
पड़ना,
वैसा ही मूर्ख की महिमा भी ठीक
नहीं होती।
२ जैसे गौरिया घूमते घूमते और सूपाबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती,

* मूल में—छिपी जीभ।

वैसे ही व्यर्थ शाप नही पडता।
३ घोडे के लिये कोडा, गदहे के लिये
बाग,
और मूर्खों की पीठ के लिये छडी है।
४ मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार
उत्तर न देना
ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य
ठहरे।
५ मूर्ख को उसकी मूढता के अनुसार
उत्तर देना,
ऐसा न हो कि वह अपने लेखे
बुद्धिमान ठहरे।
६ जो मूर्ख के हाथ से सदेशा भेजता है,
वह मानो अपने पाव मे कुल्हाडा
मारता और विष * पीता है।
७ जैसे लगडे के पाव लडखडाते है,
वैसे ही मूर्खों के मुह मे नीतिवचन
होता है।
८ जैसे पत्थरो के ढेर मे मणियो की
थैली,
वैसे ही मूर्ख को महिमा देनी होती है।
९ जैसे मतवाले के हाथ मे काटा गडता
है,
वैसे ही मूर्खों का कहा हुआ नीतिवचन
भी दु खदाई होता है।
१० जैसा कोई तीरन्दाज जो अकारण
सब को मारता हो,
वैसा ही मूर्खों वा बटोहियो का
मजदूरी मे लगानेवाला भी होता
है।
११ जैसे कुत्ता अपनी छाँट को चाटता †
है,
वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता को
दुहराता है।

* मूल में—उपद्रव।
† मूल में—छाँट की ओर फिरता।

१२ यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी
दृष्टि मे बुद्धिमान बनता हो,
तो उस से अधिक आशा मूर्ख ही से
है।
१३ आलसी कहता है, कि मार्ग में सिंह है,
चौक में सिंह है।
१४ जैसे किवाड अपनी चूल पर घूमता
है,
वैसे ही आलसी अपनी खाट पर
करवटें लेता है।
१५ आलसी अपना हाथ थाली में तो
डालता है,
परन्तु आलस्य के कारण कौर मुह
तक नही उठाता।
१६ आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले
सात मनुष्यो से भी अधिक बुद्धिमान
समझता है।
१७ जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगडे
में विघ्न डालता है,
सो वह उसके समान है, जो कुत्ते
को कानो से पकडता है।
१८ जैसा एक पागल जो जलती लकडिया
और मृत्यु के तीर फेकता है,
१९ वैसा ही वह भी होता है जो अपने
पडोसी को धोखा देकर
कहता है, कि मै तो ठट्ठा कर रहा
था।
२० जैसे लकडी न होने से आग बुझती
है,
उसी प्रकार जहा कानाफूसी करने-
वाला नही वहा झगडा मिट जाता
है।
२१ जैसा अगारो मे कोयला और आग
मे लकडी होती है,
वैसा ही झगडे के बढाने के लिये
झगडालू होता है।

२२ कानाफूसी करनेवाले के वचन,
स्वादिष्ट भोजन के समान भीतर उतर जाते हैं।
२३ जैसा कोई चान्दी का पानी चढाया हुआ मिट्टी का बर्तन हो,
वैसा ही बुरे मनवाले के प्रेम भरे वचन * होते हैं।
२४ जो बैरी बात से तो अपने को भोला बनाता है,
परन्तु अपने भीतर छल रखता है,
२५ उसकी मीठी-मीठी बात प्रतीति न करना,
क्योंकि उसके मन में सात घिनौनी वस्तुएं रहती हैं,
२६ चाहे उसका बैर छल के कारण छिप भी जाए,
तौभी उसकी बुराई सभा के बीच प्रगट हो जाएगी।
२७ जो गड़हा खोदे, वही उसी में गिरेगा,
और जो पत्थर लुढ़काए, वह उलटकर उसी पर लुढ़क आएगा।
२८ जिस ने किसी को झूठी बातों से घायल किया हो वह उस से बैर रखता है,
और चिकनी चुपडी बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है॥

२७ कल के दिन के विषय में मत फूल,
क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा।
२ तेरी प्रशंसा और लोग करें तो करें,
परन्तु तू आप न करना,
दूसरा तुझे सराहे तो सराहे, परन्तु तू अपनी सराहना न करना।

* मूल में—जले हुए होंठ।

३ पत्थर तो भारी है और बालू में बोझ है,
परन्तु मूढ़ का क्रोध उन दोनों से भी भारी है।
४ क्रोध तो क्रूर, और प्रकोप धारा के समान होता है,
परन्तु जब कोई जल उठता है, तब कौन ठहर सकता है?
५ खुली हुई डांट
गुप्त प्रेम से उत्तम है।
६ जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वास योग्य है
परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है।
७ सन्तुष्ट होने पर मधु का छत्ता भी फीका लगता है *,
परन्तु भूखे को सब कड़वी वस्तुएं भी मीठी जान पड़ती हैं।
८ स्थान छोड़कर घूमनेवाला मनुष्य उस चिड़िया के समान है,
जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है।
९ जैसे तेल और सुगन्ध से,
वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।
१० जो तेरा और तेरे पिता का भी मित्र हो उसे न छोड़ना,
और अपनी विपत्ति के दिन अपने भाई के घर न जाना।
प्रेम करनेवाला पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है।
११ हे मेरे पुत्र, बुद्धिमान होकर मेरा मन आनन्दित कर,
तब मैं अपने निन्दा करनेवाले को उत्तर दे सकूंगा।

* मूल में—तृप्त जीव छत्ता रौंदता है।

१२ बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती
देखकर छिप जाता है,
परन्तु भोले लोग आगे बढ़े चले
जाते और हानि उठाते हैं।
१३ जो पराए का उत्तरदायी हो उसका
कपड़ा,
और जो अनजान का उत्तरदायी
हो उस से बन्धक की वस्तु ले ले।
१४ जो भोर को उठकर अपने पड़ोसी को
ऊंचे शब्द से आशीर्वाद देता है,
उसके लिये यह शाप गिना जाता है।
१५ झड़ी के दिन पानी का लगातार
टपकना,
और झगड़ालू पत्नी दोनों एक से
हैं,
१६ जो उसको रोक रखे, वह वायु को
भी रोक रखेगा
और दहिने हाथ से वह तेल पकड़ेगा।
१७ जैसे लोहा लोहे को चमका देता है,
वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र
की संगति से चमकदार हो जाता
है।
१८ जो अंजीर के पेड़ की रक्षा करता
है वह उसका फल खाता है,
इसी रीति से जो अपने स्वामी की
सेवा करता उसकी महिमा होती
है।
१९ जैसे जल में मुख की परछाई मुख
से मिलती है,
वैसे ही एक मनुष्य का मन दूसरे मनुष्य
के मन से मिलता है।
२० जैसे अधोलोक और विनाशलोक,
वैसे ही मनुष्य की आंखें भी तृप्त
नहीं होतीं।
२१ जैसे चान्दी के लिये कुठाई और
सोने के लिये भट्टी है,
वैसे ही मनुष्य के लिये उसकी प्रशंसा
है।
२२ चाहे तू मूर्ख को अनाज के बीच
ओखली में डालकर मूसल से कूटे,
तौभी उसकी मूर्खता नहीं जाने की।
२३ अपनी भेड़-बकरियों की दशा भली-
भांति मन लगाकर जान ले,
और अपने सब पशुओं के झुण्डों की
देखभाल उचित रीति से कर,
२४ क्योंकि सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती,
और क्या राजमुकुट पीढ़ी-पीढ़ी चला
जाता है?
२५ कटी हुई घास उठ गई, नई घास
दिखाई देती है,
पहाड़ों की हरियाली काटकर इकट्ठी
की गई है,
२६ भेड़ों के बच्चे तेरे वस्त्र के लिये हैं,
और बकरों के द्वारा खेत का मूल्य
दिया जाएगा,
२७ और बकरियों का इतना दूध होगा
कि तू अपने घराने समेत पेट भरके
पिया करेगा,
और तेरी लौण्डियों का भी जीवन-
निर्वाह होता रहेगा॥

२८ दुष्ट लोग जब कोई पीछा
नहीं करता तब भी भागते हैं,
परन्तु धर्मी लोग जवान सिंहों के
समान निडर रहते हैं।
२ देश में पाप होने के कारण उसके
हाकिम बदलते जाते हैं,
परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य
के द्वारा सुप्रबन्ध बहुत दिन के
लिये बना रहेगा।
३ जो निर्धन पुरुष कंगालों पर अन्धेर
करता है,

वह ऐसी भारी वर्षा के समान है
जो कुछ भोजनवस्तु नही छोड़ती।
४ जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते हैं,
वे दुष्ट की प्रशसा करते हैं,
परन्तु व्यवस्था पर चलनेवाले उन
से लड़ते हैं।
५ बुरे लोग न्याय को नही समझ सकते,
परन्तु यहोवा को ढूढनेवाले सब कुछ
समझते हैं।
६ टेढ़ी चाल चलनेवाले धनी मनुष्य से
खराई से चलनेवाला निर्धन पुरुष
ही उत्तम है।
७ जो व्यवस्था का पालन करता वह
समझदार सुपूत होता है,
परन्तु उड़ाऊ का सगी अपने पिता
का मुह काला करता है।
८ जो अपना धन ब्याज आदि बढ़ती
से बढ़ाता है,
वह उसके लिये बटोरता है जो
कगालो पर अनुग्रह करता है।
९ जो अपना कान व्यवस्था सुनने से
फेर लेता है,
उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है।
१० जो सीधे लोगो को भटकाकर कुमार्ग
मे ले जाता है,
वह अपने खोदे हुए गड़हे मे आप ही
गिरता है,
परन्तु खरे लोग कल्याण के भागी
होते है।
११ धनी पुरुष अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
होता है,
परन्तु समझदार कगाल उसका मर्म
बूझ लेता है।
१२ जब धर्मी लोग जयवन्त होते है,
तब बड़ी शोभा होती है,
परन्तु जब दुष्ट लोग प्रबल होते है,
तब मनुष्य अपने आप को छिपाता
है*।
१३ जो अपने अपराध छिपा रखता है,
उसका कार्य सुफल नही होता,
परन्तु जो उनको मान लेता और
छोड़ भी देता है, उस पर दया
की जायेगी।
१४ जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय
मानता रहता है वह धन्य है,
परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता
है वह विपत्ति मे पड़ता है।
१५ कगाल प्रजा पर प्रभुता करनेवाला
दुष्ट
गरजनेवाले सिंह और घूमनेवाले रीछ
के समान है।
१६ जो प्रधान मन्दबुद्धि का होता है,
वही बहुत अन्धेर करता है,
और जो लालच का बैरी होता है
वह दीर्घायु होता है।
१७ जो किसी प्राणी की हत्या का अपराधी
हो,
वह भागकर गड़हे मे गिरेगा, कोई
उसको न रोकेगा।
१८ जो सीधाई से चलता है वह बचाया
जाता है,
परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता है वह
अचानक गिर पड़ता है।
१९ जो अपनी भूमि को जोता-बोया
करता है, उसका तो पेट भरता है,
परन्तु जो निकम्मे लोगो की सगति
करता है वह कगालपन से घिरा
रहता है†।
२० सच्चे मनुष्य पर बहुत आशीर्वाद
होते रहते हैं,

* मूल में—मनुष्य ढूढे जाते।
† मूल में—अघाता।

परन्तु जो धनी होने मे उतावली करता
है, वह निर्दोष नही ठहरता ।
२१ पक्षपात करना अच्छा नही,
और यह भी अच्छा नही कि पुरुष
एक टुकडे रोटी के लिये अपराध
करे ।
२२ लोभी जन धन प्राप्त करने मे
उतावली करता है,
और नही जानता कि वह घटी मे
पडेगा ।
२३ जो किसी मनुष्य को डाटता है वह
अन्त मे
चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा
हो जाता है ।
२४ जो अपने मा-बाप को लूटकर कहता
है कि कुछ अपराध नही,
वह नाश करनेवाले का सगी ठहरता
है ।
२५ लालची मनुष्य झगडा मचाता है,
और जो यहोवा पर भरोसा रखता
है वह हृष्टपुष्ट हो जाता है ।
२६ जो अपने ऊपर भरोसा रखता है,
वह मूर्ख है,
और जो बुद्धि से चलता है, वह
बचता है ।
२७ जो निर्धन को दान देता है उसे
घटी नही होती,
परन्तु जो उस से दृष्टि फेर लेता
है वह शाप पर शाप पाता * है ।
२८ जब दुष्ट लोग प्रबल † होते है तब
तो मनुष्य ढूढे नही मिलते,
परन्तु जब वे नाश हो जाते है, तब
धर्मी उन्नति करते हैं ॥

* मूल में—छिपाता ।
† मूल में—उठे ।

२९ जो बार बार डाटे जाने पर
भी हठ करता है,
वह अचानक नाश हो जाएगा और
उसका कोई भी उपाय काम न
आएगा ।
२ जब धर्मी लोग शिरोमणि होते है,
तब प्रजा आनन्दित होती है,
परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है
तब प्रजा हाय मारती है ।
३ जो पुरुष बुद्धि से प्रीति रखता है,
अपने पिता को आनन्दित करता
है,
परन्तु वेश्याओ की सगति करनेवाला
धन को उडा देता है ।
४ राजा न्याय से देश को स्थिर करता
है,
परन्तु जो बहुत घूस लेता है उसको
उलट देता है ।
५ जो पुरुष किसी से चिकनी चुपडी
बाते करता है,
वह उसके पैरो के लिये जाल लगाता
है ।
६ बुरे मनुष्य का अपराध फन्दा होता
है,
परन्तु धर्मी आनन्दित होकर जय-
जयकार करता है ।
७ धर्मी पुरुष कगालो के मुकद्दमे मे मन
लगाता है,
परन्तु दुष्ट जन उसे जानने की समझ
नही रखता ।
८ ठट्ठा करनेवाले लोग नगर को फूक
देते है,
परन्तु बुद्धिमान लोग क्रोध को ठण्डा
करते है ।
९ जब बुद्धिमान मूढ के साथ वादविवाद
करता है,

तब वह मूढ क्रोधित होता और
ठट्ठा करता है, और वहा शान्ति
नही रहती।
१० हत्यारे लोग खरे पुरुष से बैर रखते
है,
और सीधे लोगों के प्राण की खोज
करते है॥
११ मूर्ख अपने सारे मन की बात खोल
देता है,
परन्तु बुद्धिमान अपने मन को रोकता,
और शान्त कर देता है।
१२ जब हाकिम झूठी बात की ओर कान
लगाता है,
तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते
है।
१३ निधन और अन्धेर करनेवाला पुरुष
एक समान है,
और यहोवा दोनो की आखो में
ज्योति देता है।
१४ जो राजा कगालो का न्याय सच्चाई
से चुकाता है,
उसकी गद्दी सदैव स्थिर रहती है।
१५ छडी और डाट से बुद्धि प्राप्त होती
है,
परन्तु जो लडका योंही छोडा जाता
है वह अपनी माता की लज्जा का
कारण होता है।
१६ दुष्टों के बढने से अपराध भी बढता
है,
परन्तु अन्त में धर्मी लोग उनका
गिरना देख लेते है।
१७ अपने बेटे की ताडना कर, तब उस से
तुझे चैन मिलेगा,
और तेरा मन सुखी हो जाएगा।
१८ जहा दर्शन की बात नही होती, वहा
लोग निरकुश हो जाते है,
और जो व्यवस्था को मानता है,
वह धन्य होता है।
१९ दास बातो ही के द्वारा सुधारा नहीं
जाता,
क्योंकि वह समझकर भी नहीं
मानता।
२० क्या तू बातें करने में उतावली
करनेवाले मनुष्य को देखता है?
उस से अधिक तो मूर्ख ही से आशा
है।
२१ जो अपने दास को उसके लडकपन
से सुकुमारपन में पालता है,
वह दास अन्त में उसका बेटा बन
बैठता है।
२२ क्रोध करनेवाला मनुष्य झगडा मचाता
है
और अत्यन्त क्रोध करनेवाला अपराधी
भी होता है।
२३ मनुष्य गर्व के कारण नीचा खाता है,
परन्तु नम्र आत्मावाला महिमा का
अधिकारी होता है।
२४ जो चोर की सगति करता है वह
अपने प्राण का बैरी होता है,
शपथ खाने पर भी वह बात को प्रगट
नही करता।
२५ मनुष्य का भय खाना फन्दा हो
जाता * है,
परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता
है वह ऊचे स्थान पर चढाया जाता
है।
२६ हाकिम से भेंट करना बहुत लोग
चाहते है,
परन्तु मनुष्य का न्याय यहोवा ही
करता है।

* मूल में—देता।

२७ धर्मी लोग कुटिल मनुष्य से घृणा करते हैं,
और दुष्ट जन भी सीधी चाल चलनेवाले से घृणा करता है॥

३०

याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन॥

उस पुरुष ने ईतीएल और उकाल से यह कहा,
२ निश्चय मैं पशु सरीखा हूं, वरन मनुष्य कहलाने के योग्य भी नहीं,
और मनुष्य की समझ मुझ में नहीं है।
३ न मैं ने बुद्धि प्राप्त की है,
और न परमपवित्र का ज्ञान मुझे मिला है।
४ कौन स्वर्ग में चढ़कर फिर उतर आया?
किस ने वायु को अपनी मुट्ठी में बटोर रखा है?
किस ने महासागर को अपने वस्त्र में बान्ध लिया है?
किस ने पृथ्वी के सिवानों को ठहराया है?
उसका नाम क्या है? और उसके पुत्र का नाम क्या है? यदि तू जानता हो तो बता!
५ ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है,
वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है।
६ उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा,
ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे॥
७ मैं ने तुझ से दो वर मांगे हैं,
इसलिये मेरे मरने से पहिले उन्हें मुझे देने से मुंह न मोड़
८ व्यर्थ और झूठी बात मुझ से दूर रख,
मुझे न तो निर्धन कर और न धनी बना,
प्रतिदिन की * रोटी मुझे खिलाया कर।
९ ऐसा न हो, कि जब मेरा पेट भर जाए, तब मैं इन्कार करके कहूं कि यहोवा कौन है?
वा अपना भाग खोकर चोरी करूं,
और अपने परमेश्वर का नाम अनुचित रीति से लूं॥
१० किसी दास की, उसके स्वामी से चुगली न करना,
ऐसा न हो कि वह तुझे श्राप दे,
और तू दोषी ठहराया जाए॥
११ ऐसे लोग हैं, जो अपने पिता को शाप देते
और अपनी माता को धन्य नहीं कहते।
१२ ऐसे लोग हैं जो अपनी दृष्टि में शुद्ध हैं,
तौभी उनका मैल धोया नहीं गया।
१३ एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं—उनकी दृष्टि क्या ही घमण्ड से भरी रहती है,
और उनकी आंखें कैसी चढ़ी हुई रहती हैं।
१४ एक पीढ़ी के लोग ऐसे हैं, जिनके दांत तलवार और उनकी दाढ़ें छुरियां हैं,
जिन से वे दीन लोगों को पृथ्वी पर से, और दरिद्रों को मनुष्यों में से मिटा डालें॥

* मूल में—मेरे भाग की।

१५ जैसे जोंक की दो बेटियां होती हैं,
जो कहती हैं दे, दे,
वैसे ही तीन वस्तुएं हैं, जो तृप्त
नहीं होतीं,
वरन चार हैं, जो कभी नहीं कहतीं,
बस।
१६ अधोलोक और बांझ की कोख,
भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं
होती,
और आग जो कभी नहीं कहती,
बस॥
१७ जिस आंख से कोई अपने पिता पर
अनादर की दृष्टि करे,
और अपमान के साथ अपनी माता
की आज्ञा न माने,
उस आंख को तराई के कौवे खोद
खोदकर निकालेंगे,
और उकाब के बच्चे खा डालेंगे॥
१८ तीन बातें मेरे लिये अधिक कठिन हैं,
वरन चार हैं, जो मेरी समझ से
परे हैं
१९ आकाश में उकाब पक्षी का मार्ग,
चट्टान पर सर्प की चाल,
समुद्र में जहाज़ की चाल,
और कन्या के संग पुरुष की चाल॥
२० व्यभिचारिणी की चाल भी वैसी
ही है,
वह भोजन करके मुंह पोंछती,
और कहती है, मैं ने कोई अनर्थ
काम नहीं किया॥
२१ तीन बातों के कारण पृथ्वी कांपती
है,
वरन चार हैं, जो उस से सही नहीं
जातीं
२२ दास का राजा हो जाना,
मूढ़ का पेट भरना,
२३ घिनौनी स्त्री का ब्याहा जाना,
और दासी का अपनी स्वामिन
वारिस होना॥
२४ पृथ्वी पर चार छोटे जन्तु हैं
जो अत्यन्त बुद्धिमान हैं
२५ च्यूंटियां निर्बल जाति तो हैं,
परन्तु धूपकाल में अपनी भोजनव
बटोरती हैं,
२६ शापान बली जाति नहीं,
तौभी उनकी मान्दें पहाड़ों पर हो
हैं,
२७ टिड्डियों के राजा तो नहीं होता,
तौभी वे सब की सब दल वा
बान्धकर पयान करती हैं,
२८ और छिपकली हाथ से पकड़ी
जाती है,
तौभी राजभवनों में रहती है॥
२९ तीन सुन्दर चलनेवाले प्राणी हैं,
वरन चार हैं, जिन की चाल सुन्दर है
३० सिंह जो सब पशुओं में पराक्रमी
और किसी के डर से नहीं हटता,
३१ शिकारी कुत्ता और बकरा,
और अपनी सेना समेत राजा॥
३२ यदि तू ने अपनी बड़ाई करने क
मूढ़ता की,
वा कोई बुरी युक्ति बान्धी हो,
तो अपने मुंह पर हाथ धर।
३३ क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्ख
और नाक के मरोड़ने से ला
निकलता है
वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़
उत्पन्न होता है॥

३१ लमूएल राजा के प्रभावशाल
वचन,
जो उसकी माता ने उसे सिखाए

२ हे मेरे पुत्र, हे मेरे निज पुत्र !
हे मेरी मन्नतो के पुत्र !
३ अपना बल स्त्रियो को न देना,
न अपना जीवन उनके वश कर देना
जो राजाओ का पौरुष खो देती है।
४ हे लमूएल, राजाओ का दाखमधु पीना उनको शोभा नही देता,
और मदिरा चाहना, रईसो को नही फबता,
५ ऐसा न हो कि वे पीकर व्यवस्था को भूल जाए
और किसी दु खी के हक को मारे।
६ मदिरा उसको पिलाओ जो मरने पर है,
और दाखमधु उदास मनवालो को ही देना,
७ जिस से वे पीकर अपनी दरिद्रता को भूल जाए
और अपने कठिन श्रम फिर स्मरण न करे।
८ गूगे के लिये अपना मुह खोल,
और सब अनाथो का न्याय उचित रीति से किया कर।
९ अपना मुह खोल और धर्म से न्याय कर,
और दीन दरिद्रो का न्याय कर ॥
१० भली पत्नी कौन पा सकता है ?
क्योकि उसका मूल्य मूगो से भी बहुत अधिक है।
उसके पति के मन मे उसके प्रति विश्वास है,
११ और उसे लाभ की घटी नही होती।
१२ वह अपने जीवन के सारे दिनो मे उस से बुरा नही, वरन भला ही व्यवहार करती है।
१३ वह ऊन और सन ढूढ ढूढकर,
अपने हाथो मे प्रसन्नता के साथ काम करती है।
१४ वह व्योपार के जहाजो की नाई,
अपनी भोजनवस्तुए दूर से मगवाती है।
१५ वह रात ही को उठ बैठती है,
और अपने घराने को भोजन खिलाती है
और अपनी लौण्डियो को अलग अलग काम देती है।
१६ वह किसी खेत के विषय मे सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है,
और अपने परिश्रम के फल मे दाख की बारी लगाती है।
१७ वह अपनी कटि को बल के फेंटे से कसती है,
और अपनी बाहो को दृढ बनाती है।
१८ वह परख लेती है कि मेरा व्योपार लाभदायक है।
रात को उसका दिया नही बुझता।
१९ वह अटेरन मे हाथ लगाती है,
और चरखा पकडती है।
२० वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती है,
और दरिद्र के सभालने को हाथ बढाती है।
२१ वह अपने घराने के लिये हिम से नही डरती,
क्योकि उसके घर के सब लोग लाल कपडे पहिनते है।
२२ वह तकिये बना लेती है,
उसके वस्त्र सूक्ष्म सन और बैजनी रग के होते है।

२३ जब उसका पति सभा* मे देश के
पुरनियो के सग बैठता है,
तब उसका सन्मान होता है।
२४ वह सन के वस्त्र बनाकर बेचती
है,
और व्योपारी को कमरबन्द देती
है।
२५ वह बल और प्रताप का पहिरावा
पहिने रहती है,
और आनेवाले काल के विषय पर
हसती है।
२६ वह बुद्धि की बात बोलती है,
और उसके वचन कृपा की शिक्षा
के अनुसार होते है।
२७ वह अपने घराने के चालचलन को
ध्यान मे देखती है,
और अपनी रोटी बिना परिश्रम
नही खाती।

* मूल में—फाटकों।

२८ उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य
कहते है,
उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी
प्रशसा करता है
२९ बहुत सी स्त्रियो ने अच्छे अच्छे काम
तो किए है परन्तु तू उन सभो में
श्रेष्ठ है।
३० शोभा तो झूठी और सुन्दरता व्यर्थ*
है,
परन्तु जो स्त्री यहोवा का भय
मानती है, उसकी प्रशसा की
जाएगी।
३१ उसके हाथो के परिश्रम का फल उसे
दो,
और उसके कार्यों से सभा में उसकी
प्रशसा होगी† ॥

* मूल में—सास।
† मूल में—उसके काम फाटकों में उसकी स्तुति करें।

सभोपदेशक

१ यरूशलेम के राजा, दाऊद के
पुत्र और उपदेशक के वचन।
२ उपदेशक का यह वचन है, कि व्यर्थ
ही व्यर्थ, व्यर्थ ही व्यर्थ। सब कुछ व्यर्थ
है। ३ उस सब परिश्रम से जिसे मनुष्य
धरती पर* करता है, उसको क्या लाभ
प्राप्त होता है? ४ एक पीढी जाती है,
और दूसरी पीढी आती है, परन्तु पृथ्वी
सर्वदा बनी रहती है। ५ सूर्य उदय
होकर अस्त भी होता है, और अपने
उदय की दिशा को वेग से चला जाता है।
६ वायु दक्खिन की ओर बहती है, और
उत्तर की ओर घूमती जाती है, वह
घूमती और बहती रहती है, और अपने
चक्करो में लौट आती है। ७ सब नदिया

* मूल में—सूरज के नीचे।

समुद्र में जा मिलती हैं, तौभी समुद्र भर
नहीं जाता, जिस स्थान में नदियां निकलती
हैं, उधर ही को वे फिर जाती हैं। ८ सब
बातें परिश्रम से भरी हैं, मनुष्य इसका
वर्णन नहीं कर सकता, न तो आंखें देखने
से तृप्त होती हैं, और न कान सुनने से
भरते हैं। ९ जो कुछ हुआ था, वही
फिर होगा, और जो कुछ बन चुका है
वही फिर बनाया जाएगा, और सूर्य के
नीचे कोई बात नई नहीं है। १० क्या
ऐसी कोई बात है जिसके विषय में लोग
कह सकें कि देख यह नई है? यह तो
प्राचीन युगों में वर्तमान थी। ११ प्राचीन
बातों का कुछ स्मरण नहीं रहा, और
होनेवाली बातों का भी स्मरण उनके
बाद होनेवालों को न रहेगा॥

१२ मैं उपदेशक यरूशलेम में इस्राएल
का राजा था। १३ और मैं ने अपना
मन लगाया कि जो कुछ सूर्य के नीचे
किया जाता है, उसका भेद बुद्धि से सोच
सोचकर मालूम करूं, यह बड़े दुःख का
काम है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये
ठहराया है कि वे उस में लगें। १४ मैं ने
उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे
किए जाते हैं, देखो वे सब व्यर्थ और
मानो वायु को पकड़ना है। १५ जो टेढ़ा
है, वह सीधा नहीं हो सकता, और जितनी
वस्तुओं में घटी है, वे गिनी नहीं जातीं॥
१६ मैं ने मन में कहा, देख, जितने
यरूशलेम में मुझ से पहिले थे, उन सभों
से मैं ने बहुत अधिक बुद्धि प्राप्त की है,
और मुझ को बहुत बुद्धि और ज्ञान मिल
गया है। १७ और मैं ने अपना मन
लगाया कि बुद्धि का भेद लूं और बावलेपन
और मूर्खता को भी जान लूं। मुझे जान
पड़ा कि यह भी वायु को पकड़ना है॥
१८ क्योंकि बहुत बुद्धि के साथ बहुत
खेद भी होता है,
और जो अपना ज्ञान बढ़ाता है वह
अपना दुःख भी बढ़ाता है॥

२ मैं ने अपने मन से कहा, चल,
मैं तुझ को आनन्द के द्वारा जांचूंगा,
इसलिये आनन्दित और मगन हो। परन्तु
देखो, यह भी व्यर्थ है। २ मैं ने हंसी के
विषय में कहा, यह तो बावलापन है,
और आनन्द के विषय में, उस से क्या
प्राप्त होता है? ३ मैं ने मन में सोचा
कि किस प्रकार से मेरी बुद्धि बनी रहे
और मैं अपने प्राण को दाखमधु पीने से
क्योंकर बहलाऊं और क्योंकर मूर्खता को
थामे रहूं, जब तक मालूम न करूं कि वह
अच्छा काम कौन सा है जिसे मनुष्य अपने
जीवन भर करता रहे। ४ मैं ने बड़े
बड़े काम किए, मैं ने अपने लिये घर
बनवा लिए और अपने लिये दाख की
बारियां लगवाईं, ५ मैं ने अपने लिये
बारियां और बाग लगवा लिए, और
उन में भांति भांति के फलदाई वृक्ष
लगाए। ६ मैं ने अपने लिये कुण्ड खुदवा
लिए कि उन से वह वन सींचा जाए
जिस में पौधे लगाए जाते थे। ७ मैं ने
दास और दासियां मोल लीं, और मेरे
घर में दास भी उत्पन्न हुए, और जितने
मुझ से पहिले यरूशलेम में थे उन से
कहीं अधिक गाय-बैल और भेड़-बकरियों
का मैं स्वामी था। ८ मैं ने चान्दी और
सोना और राजाओं और प्रान्तों के बहुमूल्य
पदार्थों का भी संग्रह किया, मैं ने अपने
लिये गवैयों और गानेवालियों को रखा,
और बहुत सी कामिनियां भी, जिन से
मनुष्य सुख पाते हैं, अपनी कर लीं॥

९ इस प्रकार, मैं अपने से पहिले के सब यरूशलेमवासियों से अधिक महान और धनाढ्य हो गया, तौभी मेरी बुद्धि ठिकाने रही। १० और जितनी वस्तुओं के देखने की मैं ने लालसा की, उन सभों को देखने से मैं न रुका, मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका क्योंकि मेरा मन मेरे सब परिश्रम के कारण आनन्दित हुआ, और मेरे सब परिश्रम से मुझे यही भाग मिला। ११ तब मैं ने फिर से अपने हाथों के सब कामों को, और अपने सब परिश्रम को देखा, तो क्या देखा कि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है, और संसार में * कोई लाभ नहीं॥

१२ फिर मैं ने अपने मन को फेरा कि बुद्धि और बावलेपन और मूर्खता के कार्यों को देखूं, क्योंकि जो मनुष्य राजा के पीछे आएगा, वह क्या करेगा? केवल वही जो होता चला आया है। १३ तब मैं ने देखा कि उजियाला अंधियारे से जितना उत्तम है, उतना बुद्धि भी मूर्खता से उत्तम है। १४ जो बुद्धिमान है, उसके सिर में आंखें रहती हैं, परन्तु मूर्ख अंधियारे में चलता है, तौभी मैं ने जान लिया कि दोनों की दशा एक सी होती है। १५ तब मैं ने मन में कहा, जैसी मूर्ख की दशा होगी, वैसी ही मेरी भी होगी, फिर मैं क्यों अधिक बुद्धिमान हुआ? और मैं ने मन में कहा, यह भी व्यर्थ ही है। १६ क्योंकि न तो बुद्धिमान का और न मूर्ख का स्मरण सर्वदा बना रहेगा, परन्तु भविष्य में सब कुछ बिसर जाएगा। १७ बुद्धिमान क्योंकर मूर्ख के समान मरता है! इसलिये मैं ने अपने जीवन से घृणा की, क्योंकि जो काम संसार में किया जाता है मुझे बुरा मालूम हुआ, क्योंकि सब कुछ व्यर्थ और वायु को पकड़ना है॥

१८ मैं ने अपने सारे परिश्रम के प्रतिफल से जिसे मैं ने धरती पर किया था घृणा की, क्योंकि अवश्य है कि मैं उसका फल उस मनुष्य के लिये छोड़ जाऊं जो मेरे बाद आएगा। १९ यह कौन जानता है कि वह मनुष्य बुद्धिमान होगा वा मूर्ख? तौभी धरती पर जितना परिश्रम मैं ने किया, और उसके लिये बुद्धि प्रयोग की उस सब का वही अधिकारी होगा। यह भी व्यर्थ ही है। २० तब मैं अपने मन में उस सारे परिश्रम के विषय जो मैं ने धरती पर * किया था निराश हुआ, २१ क्योंकि ऐसा मनुष्य भी है, जिसका कार्य परिश्रम और बुद्धि और ज्ञान से होता है और सफल भी होता है, तौभी उसको ऐसे मनुष्य के लिये छोड़ जाना पड़ता है, जिस ने उस में कुछ भी परिश्रम न किया हो। यह भी व्यर्थ और बहुत ही बुरा है। २२ मनुष्य जो धरती पर * मन लगा लगाकर परिश्रम करता है उस से उसको क्या लाभ होता है? २३ उसके सब दिन तो दु:खों से भरे रहते हैं, और उसका काम खेद के साथ होता है, रात को भी उसका मन चैन नहीं पाता। यह भी व्यर्थ ही है॥

२४ मनुष्य के लिये खाने-पीने और परिश्रम करते हुए अपने जीव को सुखी रखने के सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं। मैं ने देखा कि यह भी परमेश्वर की ओर से मिलता है। २५ क्योंकि खाने-पीने

* मूल में—सूरज के नीचे।

* मूल में—सूरज के नीचे।

और सुख भोगने में मुझ से अधिक
समर्थ कौन है? २६ जो मनुष्य परमेश्वर
की दृष्टि में अच्छा है, उसको वह बुद्धि
और ज्ञान और आनन्द देता है; परन्तु
पापी को वह दुःखभरा काम ही देता है
कि वह उसको देने के लिये संचय करके
ढेर लगाए जो परमेश्वर की दृष्टि में
अच्छा हो। यह भी व्यर्थ और वायु को
पकड़ना है॥

३ हर एक बात का एक अवसर
और प्रत्येक काम का, जो आकाश
के नीचे * होता है, एक समय है। २ जन्म
का समय, और मरन का भी समय,
बोने का समय, और बोए हुए को उखाड़ने
का भी समय है; ३ घात करने का समय,
और चंगा करने का भी समय; ढा देने
का समय, और बनाने का भी समय है;
४ रोने का समय, और हंसने का भी
समय; छाती पीटने का समय, और
नाचने का भी समय है; ५ पत्थर फेंकने
का समय, और पत्थर बटोरने का भी
समय; गले लगाने का समय, और गले
लगाने से रुकने का भी समय है;
६ ढूंढ़ने का समय, और खो देने का भी
समय; बचा रखने का समय, और फेंक
देने का भी समय है; ७ फाड़ने का समय,
और सीने का भी समय; चुप रहने का
समय, और बोलने का भी समय है;
८ प्रेम करने का समय, और बैर करने
का भी समय; लड़ाई का समय, और
मेल का भी समय है। ९ काम करनेवाले
को अपने परिश्रम में क्या लाभ होता है?
१० मैं ने उस दुःखभरे काम को
देखा है जो परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये
ठहराया है कि वे उस में लगे रहें। ११ उस
ने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने
समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उस ने
मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल
का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम
परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त
तक मनुष्य बूझ नहीं सकता। १२ मैं ने
जान लिया है कि मनुष्यों के लिये आनन्द
करने और जीवन भर भलाई करने के
सिवाय, और कुछ भी अच्छा नहीं;
१३ और यह भी परमेश्वर का दान है
कि मनुष्य खाए-पीए और अपने सब
परिश्रम में सुखी रहे। १४ मैं जानता
हूं कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह
सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ
बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया
जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये
करता है कि लोग उसका भय मानें।
१५ जो कुछ हुआ वह इस से पहिले भी
हो चुका; जो होनेवाला है, वह हो भी
चुका है; और परमेश्वर बीती * हुई बात
को फिर पूछता है॥

१६ फिर मैं ने संसार में † क्या देखा
कि न्याय के स्थान में दुष्टता होती है,
और धर्म के स्थान में भी दुष्टता होती
है। १७ मैं ने मन में कहा, परमेश्वर
धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा,
क्योंकि उसके यहां एक एक विषय और
एक एक काम का समय है। १८ मैं ने
मन में कहा कि यह इसलिये होता है कि
परमेश्वर मनुष्यों को जांचे और कि वे
देख सकें कि वे पशु-समान हैं। १९ क्योंकि
जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी

* मूल में—सूरज के नीचे।

* मूल में—हांक दी।
† मूल में—सूरज के नीचे।

दशा होती है, दोनो की वही दशा होती
है, जैसे एक मरता वैसे ही दूसरा भी
मरता है। सभों की स्वास एक सी है, और
मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं, सब
कुछ व्यर्थ ही है। २० सब एक स्थान
में जाते हैं, सब मिट्टी से बने हैं, और
सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। २१ क्या
मनुष्यों का प्राण ऊपर की ओर चढ़ता
है और पशुओं का प्राण नीचे की ओर
जाकर मिट्टी में मिल जाता है? यह कौन
जानता है? २२ सो मैं ने यह देखा कि
इस से अधिक कुछ अच्छा नहीं कि मनुष्य
अपने कामो में आनन्दित रहे, क्योंकि
उसका भाग यही है, कौन उसके पीछे
होनेवाली बातो को देखने के लिये उसको
लौटा लाएगा?

४ तब मैं ने वह सब अन्धेर देखा
जो संसार में * होता है। और क्या
देखा, कि अन्धेर सहनेवालो के आंसू बह
रहे हैं, और उनको कोई शान्ति देनेवाला
नहीं! अन्धेर करनेवालो के हाथ में
शक्ति थी, परन्तु उनको कोई शान्ति
देनेवाला नहीं था। २ इसलिये मैं ने मरे
हुओ को जो मर चुके हैं, उन जीवतो
से जो अब तक जीवित है- अधिक सराहा,
३ वरन उन दोनो से अधिक सुभागी
वह है जो अब तक हुआ ही नहीं, न
मे बुरे काम देखे जो संसार में * होते
हैं॥

४ तब मैं ने सब परिश्रम के काम
और सब सफल कामो को देखा जो लोग
अपने पड़ोसी से जलन के कारण करते
हैं। यह भी व्यर्थ और मन का कुढ़ना
है॥

* मूल में—सूरज के नीचे।

५ मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता *,
और अपना मांस खाता है॥

६ चैन के साथ एक मुट्ठी उन दो
मुट्ठियों से अच्छा है, जिनके साथ परिश्रम
और मन का कुढ़ना हो॥

७ फिर मैं ने धरती पर † यह भी
व्यर्थ बात देखी। ८ कोई अकेला रहता
और उसका कोई नहीं है, न उसके बेटा
है, न भाई है, तौभी उसके परिश्रम का
अन्त नहीं होता, न उसकी आंखें धन से
सन्तुष्ट होती है, और न वह कहता है,
मैं किस के लिये परिश्रम करता और अपने
जीवन को सुखरहित रखता हूं? यह भी
व्यर्थ और निरा दुःखभरा काम है॥

९ एक से दो अच्छे है, क्योंकि उनके
परिश्रम का अच्छा फल मिलता है।
१० क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो
दूसरा उसको उठाएगा, परन्तु हाय उस पर
जो अकेला होकर गिरे और उसका कोई
उठानेवाला न हो। ११ फिर यदि दो
जन एक संग सोएं तो वे गर्म रहेंगे, परन्तु
कोई अकेला क्योंकर गर्म हो सकता है?
१२ यदि कोई अकेले पर प्रबल हो तो
हो, परन्तु दो उसका साम्हना कर सकेंगे।
जो डोरी तीन तागे से बटी हो वह जल्दी
नहीं टूटती॥

१३ बुद्धिमान लड़का दरिद्र होने पर
भी ऐसे बूढ़े और मूर्ख राजा से अधिक
उत्तम है जो फिर सम्मति ग्रहण न
करे, १४ चाहे वह उसके राज्य में धनहीन
उत्पन्न हुआ या बन्दीगृह से निकलकर
राजा हुआ हो। १५ मैं ने सब जीवतो
को जो धरती पर † चलते फिरते हैं देखा

* मूल में—दोनों हाथ मिलाना।
† मूल में—सूरज के नीचे।

कि वे उस दूसरे लडके के सग हो लिये है
जो उनका स्थान लेने के लिये खड़ा
हुआ। १६ वे सब लोग अनगिनित थे
जिन पर वह प्रधान हुआ था। तौभी
भविष्य मे होनेवाले लोग उसके कारण
आनन्दित न होगे। नि सन्देह यह भी
व्यर्थ और मन का कुढना है ।।

५ जब तू परमेश्वर के भवन मे
जाए, तब सावधानी से चलना*,
सुनने के लिये समीप जाना मूर्खों के बलिदान
चढाने मे अच्छा है, क्योकि वे नही जानते
कि बुरा करते है। २ बाते करने मे
उतावली न करना, और न अपने मन मे
कोई बात उतावली से परमेश्वर के साम्हने
निकालना, क्योकि परमेश्वर स्वर्ग मे है
और तू पृथ्वी पर है, इसलिये तेरे वचन
थोडे ही हों ।।

३ क्योकि जैसे कार्य की अधिकता के
कारण स्वप्न देखा जाता है, वैसे ही बहुत
सी बातो का बोलनेवाला मूर्ख ठहरता है ।।

४ जब तू परमेश्वर के लिये मन्नत
माने, तब उसके पूरा करने मे विलम्ब
न करना, क्योकि वह मूर्खों मे प्रसन्न
नही होता। जो मन्नत तू ने मानी हो
उसे पूरी करना। ५ मन्नत मानकर पूरी
न करने मे मन्नत का न मानना ही अच्छा
है। ६ कोई वचन कहकर अपने को पाप
मे न फसाना, और न ईश्वर के दूत के
साम्हने कहना कि यह भूल मे हुआ,
परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर अप्रसन्न
हो, और तेरे हाथ के कार्यों को नष्ट करे?

७ क्योंकि स्वप्नो की अधिकता मे
व्यर्थ बातो की बहुतायत होती है परन्तु
तू परमेश्वर का भय मानना ।।

* मूल मे—अपने पैर की रक्षा करना।

८ यदि तू किसी प्रान्त मे निर्धनो
पर अन्धेर और न्याय और धर्म को
बिगडता देखे, तो इस से चकित न होना,
क्योकि एक अधिकारी से बडा दूसरा रहता
है जिसे इन बातो की सुधि रहती है, और
उन मे भी और अधिक बडे रहते है।
९ भूमि की उपज सब के लिये है, वरन
खेती से राजा का भी काम निकलता है ।।

१० जो रुपये मे प्रीति रखता है वह
रुपये से तृप्त न होगा, और न जो बहुत
धन मे प्रीति रखता है, लाभ से यह
भी व्यर्थ है ।।

११ जब सम्पत्ति बढती है, तो उसके
खानेवाले भी बढते है, तब उसके स्वामी
को इसे छोड और क्या लाभ होता है
कि उस सम्पत्ति को अपनी आंखो से देखे?

१२ परिश्रम करनेवाला चाहे थोडा
खाए, या बहुत, तौभी उसकी नीद सुखदाई
होती है, परन्तु धनी के धन के बढने
के कारण उसको नीद नही आती ।।

१३ मै ने धरती पर* एक बडी बुरी
बला देखी है, अर्थात् वह धन जिसे उसके
मालिक ने अपनी ही हानि के लिये रखा
हो, १४ और वह किसी बुरे काम मे उड
जाता है, और उसके घर मे बेटा उत्पन्न
होता है परन्तु उसके हाथ मे कुछ नही
रहता। १५ जैसा वह मा के पेट से
निकला वैसा ही लौट जाएगा, नगा ही,
जैसा आया था, और अपने परिश्रम के
बदले कुछ भी न पाएगा जिसे वह
अपने हाथ मे ले जा सके। १६ यह भी
एक बडी बला है कि जैसा वह आया,
ठीक वैसा ही वह जाएगा उसे उस
व्यर्थ परिश्रम मे और क्या लाभ है?

* मूल मे—सूरज के नीचे।

१७ केवल इसके कि उस ने जीवन भर
बेचैनी मे भोजन किया, और बहुत ही
दुःखित और रोगी रहा और क्रोध भी
करता रहा ?

१८ सुन, जो भली बात मैं ने देखी
है वरन जो उचित है, वह यह कि मनुष्य
खाए और पीए और अपने परिश्रम मे
जो वह धरती पर करता है अपनी सारी
आयु भर जो परमेश्वर ने उसे दी है
सुखी रहे क्योंकि उसका भाग यही है।
१९ वरन हर एक मनुष्य जिसे परमेश्वर
ने धन सम्पत्ति दी हो, और उन से आनन्द
भोगने और उस म से अपना भाग लेने
और परिश्रम करते हुए आनन्द करने
की शक्ति भी दी हो—यह परमेश्वर
का वरदान है। २० इस जीवन के दिन
उसे बहुत स्मरण न रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर
उसको सुन सुनकर उसके मन को आनन्दमय
रखता है॥

६ एक बुराई जो म ने धरती पर
देखी है वह मनुष्यो को बहुत भारी
लगती है २ किसी मनुष्य को परमेश्वर
धन सम्पत्ति और प्रतिष्ठा यहा तक देता
है कि जो कुछ उसका मन चाहता है
उस उसकी कुछ भी घटी नही होती
तौभी परमेश्वर उसको उस मे स खाने
नही देता कोई दूसरा ही उसे खाता है,
यह व्यर्थ और भयानक दुःख है। ३ यदि
किसी पुरुष के सौ पुत्र हो और वह बहुत
वर्ष जीवित रहे और उसकी आयु बढ
जाए परन्तु न उसका प्राण प्रसन्न रहे
और न उसकी अन्तिम क्रिया की जाए
तो म कहता हूं कि ऐसे मनुष्य से अधूरे
समय का जन्मा हुआ बच्चा उत्तम है।

* मूल म—सूरज के नीचे।

४ क्योंकि वह व्यर्थ ही आया और अन्धेरे
मे चला गया, और उसका नाम भी
अन्धेरे मे छिप गया, ५ और न सूर्य
को देखा न किसी चीज को जानने पाया,
तौभी इसको उस मनुष्य से अधिक चैन
मिला। ६ हा चाहे वह दो हजार वर्ष
जीवित रहे और कुछ सुख भोगने न
पाए तो उसे क्या ? क्या सब के सब
एक ही स्थान मे नही जाते ?

७ मनुष्य का सारा परिश्रम उसके पेट
के लिये होता है तौभी उसका मन नही
भरता। ८ जो बुद्धिमान है वह मूर्ख से
किस बात मे बढकर है ? और कगाल
जो यह जानता है कि इस जीवन म किस
प्रकार से चलना चाहिये वह भी उस
से किस बात मे बढकर है ? ९ आखो
से देखना मन की चचलता से उत्तम
है यह भी व्यर्थ और मन का कुढना है॥

१० जो कुछ हुआ है उसका नाम
युग के आरम्भ मे रखा गया है और यह
प्रगट है कि वह आदमी* है, कि वह
उस से जो उस से अधिक शक्तिमान है
झगडा नहीं कर सकता है। ११ बहुत
सी ऐसी बाते है जिनके कारण जीवन
और भी व्यर्थ होता है तो फिर मनुष्य
को क्या लाभ ? १२ क्योंकि मनुष्य के
क्षणिक व्यर्थ जीवन म जो वह परछाई
की नाई बिताता है कौन जानता है कि
उसके लिये अच्छा क्या है ? क्योंकि
मनुष्य को कौन बता सकता है कि उसके
बाद दुनिया म क्या होगा ?

७ अच्छा नाम अनमोल इत्र से और
मृत्यु का दिन जन्म के दिन से उत्तम
है। २ जेवनार के घर जाने से शोक

* अर्थात मिट्टी का बना हुआ।

ही के घर जाना उत्तम है, क्योंकि सब
मनुष्यों का अन्त यही है, और जो जीवित
हैं वह मन लगाकर इस पर सोचेगा।
३ हंसी से खेद उत्तम है, क्योंकि मुह
पर के शोक से मन सुधरता है। ४ बुद्धि-
मानों का मन शोक करनेवालो के घर की
ओर लगा रहता है परन्तु मूर्खों का मन
आनन्द करनेवालो के घर लगा रहता
है। ५ मूर्खों के गीत सुनने से बुद्धिमान
की घुडकी सुनना उत्तम है। ६ क्योंकि
मूर्ख की हंसी हाडी के नीचे जलते हुए
कांटों की चरचराहट के समान होती है,
यह भी व्यर्थ है। ७ निश्चय अन्धेर
से बुद्धिमान बावला हो जाता है, और
घूस से बुद्धि नाश होती है। ८ किसी
काम के आरम्भ से उसका अन्त उत्तम
है, और धीरजवन्त पुरुष गर्वी से उत्तम
है। ९ अपने मन में उतावली से क्रोधित
न हो, क्योंकि क्रोध मूर्खों ही के हृदय में
रहता है। १० यह न कहना, बीते दिन
इन से क्यो उत्तम थे? क्योंकि यह तू
बुद्धिमानी से नही पूछता। ११ बुद्धि
बपौती के साथ अच्छी होती है, वरन
जीवित * रहनेवालो के लिये लाभकारी है।
१२ क्योंकि बुद्धि की आड रुपये की आड
का काम देता है; परन्तु ज्ञान की श्रेष्ठता
यह है कि बुद्धि से उसके रखनेवालो के
प्राण की रक्षा होती है। १३ परमेश्वर
के काम पर दृष्टि कर, जिस वस्तु को
उस ने टेढा किया हो उसे कौन सीधा
कर सकता है?

१४ सुख के दिन सुख मान, और
दुःख के दिन सोच, क्योंकि परमेश्वर ने
दोनो को एक ही सग रखा है, जिस से
मनुष्य अपने बाद होनेवाली किसी बात
को न बूझ सके॥

१५ अपने व्यर्थ जीवन में मैं ने यह
सब कुछ देखा है; कोई धर्मी अपने धर्म
का काम करते हुए नाश हो जाता है,
और दुष्ट बुराई करते हुए दीर्घायु होता
है। १६ अपने को बहुत धर्मी न बना,
और न अपने को अधिक बुद्धिमान बना,
तू क्यो अपने ही नाश का कारण हो?
१७ अत्यन्त दुष्ट भी न बन, और न
मूर्ख हो; तू क्यो अपने समय से पहले
मरे? १८ यह अच्छा है कि तू इस
बात को पकडे रहे, और उस बात पर
से भी हाथ न उठाए, क्योंकि जो परमेश्वर
का भय मानता है वह इन सब कठिनाइयो
से पार हो जाएगा॥

१९ बुद्धि ही से नगर के दस हाकिमो
की अपेक्षा बुद्धिमान को अधिक सामर्थ
प्राप्त होती है। २० निःसन्देह पृथ्वी पर
कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नही जो भलाई
ही करे और जिस से पाप न हुआ
हो॥

२१ जितनी बाते कही जाए सब पर
कान न लगाना, ऐसा न हो कि तू सुने
कि तेरा दास तुझी को शाप देता है,
२२ क्योंकि तू आप जानता है कि तू ने
भी बहुत बेर औरो को शाप दिया है॥

२३ यह सब मैं ने बुद्धि से जांच लिया
है, मैं ने कहा, मैं बुद्धिमान हो जाऊंगा,
परन्तु यह मुझ से दूर रहा। २४ वह
जो दूर और अत्यन्त गहिरा है, उसका
भेद कौन पा सकता है? २५ मैं ने अपना
मन लगाया कि बुद्धि के विषय मे जान
लूं, कि खोज निकालूं और उसका भेद
जानूं, और कि दुष्टता की मूर्खता और
मूर्खता जो निरा बावलापन है जानूं।

* मूल में—सूर्य के देखनेहारों।

२६ और मैं ने मृत्यु से भी अधिक दुःखदाई
एक वस्तु पाई, अर्थात् वह स्त्री जिसका
मन फन्दा और जाल है और जिसके हाथ
हथकड़ियां है, (जिस पुरुष से परमेश्वर
प्रसन्न है वही उस से बचेगा, परन्तु पापी
उसका शिकार होगा)। २७ देख, उप-
देशक कहता है, मैं ने ज्ञान के लिये अलग
अलग बातें मिलाकर जांची, और यह
बात निकाली, २८ जिसे मेरा मन अब
तक ढूंढ़ रहा है, परन्तु नहीं पाया। हजार
में से मैं ने एक पुरुष को पाया, परन्तु
उन में एक भी स्त्री नहीं पाई। २९ देखो,
मैं ने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर
ने मनुष्य को सीधा बनाया, परन्तु उन्हों
ने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं॥

८ बुद्धिमान के तुल्य कौन है?
और किसी बात का अर्थ कौन लगा
सकता है? मनुष्य की बुद्धि के कारण
उसका मुख चमकता, और उसके मुख
की कठोरता दूर हो जाती है।
२ मैं तुझे सम्मति देता हूं कि परमेश्वर
की शपथ के कारण राजा की आज्ञा
मान। ३ राजा के साम्हने से उतावली
के साथ न लौटना और न बुरी बात पर
हठ करना, क्योंकि वह जो कुछ चाहता
है करता है। ४ क्योंकि राजा के वचन
में तो सामर्थ्य रहती है, और कौन उस से
कह सकता है कि तू क्या करता है?
५ जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम
से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय
और न्याय का भेद जानता है। ६ क्योंकि
हर एक विषय का समय और नियम
होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके
लिये* बहुत भारी होता है। ७ वह नहीं
जानता कि क्या होनेवाला है, और कब
होगा? यह उसको कौन बता सकता है?
८ ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसका वश
प्राण पर चले कि वह उसे निकलते समय
रोक ले, और न कोई मृत्यु के दिन पर
अधिकारी होता है, और न उसे लड़ाई
से छुट्टी मिल सकती है, और न दुष्ट लोग
अपनी दुष्टता के कारण बच सकते हैं।
९ जितने काम धरती पर* किए जाते
हैं उन सब को ध्यानपूर्वक देखने में यह
सब कुछ मैं ने देखा, और यह भी देखा
कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अधिकारी
होकर अपने ऊपर हानि लाता है॥

१० तब मैं ने दुष्टों को गाड़े जाते
देखा, अर्थात् उनकी तो कब्र बनी, परन्तु
जिन्हों ने ठीक काम किया था वे पवित्रस्थान
से निकल गए और उनका स्मरण भी
नगर में न रहा, यह भी व्यर्थ ही है।
११ बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती
से नहीं दी जाती, इस कारण मनुष्यों
का मन बुरा काम करने की इच्छा से
भरा रहता है। १२ चाहे पापी सौ बार
पाप करे और अपने दिन भी बढ़ाए,
तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर
से डरते हैं और अपने तईं उसको सम्मुख
जानकर भय से चलते हैं, उनका भला
ही होगा, १३ परन्तु दुष्ट का भला
नहीं होने का, और न उसकी जीवनरूपी
छाया लम्बी होने पाएगी, क्योंकि वह
परमेश्वर का भय नहीं मानता॥

१४ एक व्यर्थ बात पृथ्वी पर होती
है, अर्थात् ऐसे धर्मी हैं जिनकी वह दशा
होती है जो दुष्टों की होनी चाहिये, और
ऐसे दुष्ट हैं जिनकी वह दशा होती है

* मूल में—ऊपर।

* मूल में—सूरज के नीचे।

जो धर्मियो की होनी चाहिये । मै ने
कहा कि यह भी व्यर्थ ही है । १५ तब
मै ने आनन्द को सराहा, क्योकि सूर्य के
नीचे मनुष्य के लिये खाने-पीने और
आनन्द करने को छोड और कुछ भी
अच्छा नही, क्योकि यही उसके जीवन
भर जो परमेश्वर उसके लिये धरती पर *
ठहराए, उसके परिश्रम मे उसके सग
बना रहेगा ॥

१६ जब मै ने बुद्धि प्राप्त करने और
सब काम देखने के लिये जो पृथ्वी पर
किए जाते है अपना मन लगाया, कि
कैसे मनुष्य रात-दिन जागते रहते है,
१७ तब मै ने परमेश्वर का सारा काम देखा
जो सूर्य के नीचे किया जाता है, उसकी
थाह मनुष्य नही पा सकता । चाहे मनुष्य
उसकी खोज मे कितना भी परिश्रम
करे, तौभी उसको न जान पाएगा, और
यद्यपि बुद्धिमान कहे भी कि मै उसे
समझूगा, तौभी वह उसे न पा सकेगा ॥

९ यह सब कुछ मै ने मन लगाकर
विचारा कि इन सब बातो का भेद
पाऊ, कि किस प्रकार धर्मी और बुद्धिमान
लोग और उनके काम परमेश्वर के हाथ
मे है, मनुष्य के आगे सब प्रकार की
बाते है परन्तु वह नही जानता कि वह
प्रेम है व बैर । २ सब बाते सभो को
एक समान होती है, धर्मी हो या दुष्ट,
भले, शुद्ध या अशुद्ध, यज्ञ करने और न
करनेवाले, सभो की दशा एक ही सी
होती है । जैसी भले मनुष्य की दशा,
वैसी ही पापी की दशा, जैसी शपथ
खानेवाले की दशा, वैसी ही उसकी जो
शपथ खाने मे डरता है । ३ जो कुछ
सूर्य के नीचे किया जाता है उस मे यह
एक दोष है कि सब लोगो की एक सी
दशा होती है, और मनुष्यो के मनो मे
बुराई भरी हुई है, और जब तक वे
जीवित रहते है उनके मन मे बावलापन
रहता है, और उसके बाद वे मरे हुओ मे
जा मिलते है । ४ उसको परन्तु जो सब
जीवितो मे है, उसे आशा है, क्योकि
जीवता कुत्ता मरे हुए सिह से बढकर
है । ५ क्योकि जीवते तो इतना जानते
है कि वे मरेगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी
नही जानते, और न उनको कुछ और
बदला मिल सकता है, क्योकि उनका
स्मरण मिट गया है । ६ उनका प्रेम
और उनका बैर और उनकी डाह नाश
हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे
किया जाता है उस मे सदा के लिये उनका
और कोई भाग न होगा ॥

७ अपने मार्ग पर चला जा, अपनी
रोटी आनन्द से खाया कर, और मन मे
सुख मानकर अपना दाखमधु पिया कर,
क्योकि परमेश्वर तेरे कामो से प्रसन्न
हो चुका है ॥

८ तेरे वस्त्र सदा उजले रहे, और
तेरे सिर पर तेल की घटी न हो ॥

९ अपने व्यर्थ जीवन के सारे दिन
जो उस ने सूर्य के नीचे तेरे लिये ठहराए
है अपनी प्यारी पत्नी के सग मे बिताना,
क्योकि तेरे जीवन और तेरे परिश्रम मे
जो तू सूर्य के नीचे करता है तेरा यही
भाग है । १० जो काम तुझे * मिले उसे
अपनी शक्ति भर करना, क्योकि अधोलोक
मे जहां तू जानेवाला है, न काम न युक्ति
न ज्ञान और न बुद्धि है ॥

* मूल में—सूरज के नीचे ।

* मूल में—तेरे हाथ को करने के लिये ।

११ फिर मैं ने धरती पर * देखा कि न तो दौड़ में वेग दौड़नेवाले और न युद्ध में शूरवीर जीतते, न बुद्धिमान लोग रोटी पाते न समझवाले धन, और न प्रवीणों पर अनुग्रह होता है, वे सब समय और संयोग के वश में है। १२ क्योंकि मनुष्य अपना समय नहीं जानता। जैसे मछलियां दुखदाई जाल में बझती और चिड़ियें फन्दे में फंसती हैं, वैसे ही मनुष्य दुखदाई समय में जो उन पर अचानक आ पड़ता है, फंस जाते हैं ॥

१३ मैं ने सूर्य के नीचे इस प्रकार की बुद्धि की बात भी देखी है, जो मुझे बड़ी जान पड़ी। १४ एक छोटा सा नगर था, जिस में थोड़े ही लोग थे, और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध बड़े बड़े धुस बनवाए। १५ परन्तु उस में एक दरिद्र बुद्धिमान पुरुष पाया गया, और उस ने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया। तौभी किसी ने उस दरिद्र पुरुष का स्मरण न रखा। १६ तब मैं ने कहा, यद्यपि दरिद्र की बुद्धि तुच्छ समझी जाती है और उसका वचन कोई नहीं सुनता तौभी पराक्रम से बुद्धि उत्तम है ॥

१७ बुद्धिमानों के वचन जो धीमे धीमे कहे जाते हैं वे मूर्खों के बीच प्रभुता करनेवाले के चिल्ला चिल्लाकर कहने से अधिक सुने जाते हैं। १८ लड़ाई के हथियारों से बुद्धि उत्तम है, परन्तु एक पापी बहुत भलाई नाश करता है ॥

१० मरी हुई मक्खियों के कारण गन्धी का तेल सड़ने और बसाने लगता है, और थोड़ी सी मूर्खता बुद्धि और प्रतिष्ठा को घटा देती है। २ बुद्धिमान का मन उचित बात की ओर रहता है परन्तु मूर्ख का मन उसके विपरीत रहता है। ३ वरन जब मूर्ख मार्ग पर चलता है, तब उसकी समझ काम नहीं देती, और वह सब से कहता है, मैं मूर्ख हूं ॥

४ यदि हाकिम का क्रोध तुझ पर भड़के, तो अपना स्थान न छोड़ना, क्योंकि धीरज धरने से बड़े बड़े पाप रुकते हैं ॥

५ एक बुराई है जो मैं ने सूर्य के नीचे देखी, वह हाकिम की भूल से होती है ६ अर्थात् मूर्ख बड़ी प्रतिष्ठा के स्थानों में ठहराए जाते हैं, और धनवान लोग नीचे बैठते हैं। ७ मैं ने दासों को घोड़ों पर चढ़े, और रईसों को दासों की नाईं भूमि पर चलते हुए देखा है ॥

८ जो गड़हा खोदे वह उस में गिरेगा और जो बाड़ा तोड़े उसको सर्प डसेगा। ९ जो पत्थर फोड़े, वह उन से घायल होगा, और जो लकड़ी काटे, उसे उसी से डर होगा। १० यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना पड़ेगा, परन्तु सफल होने के लिये बुद्धि से लाभ होता है। ११ यदि मन्त्र से पहिले सर्प डसे, तो मन्त्र पढ़नेवाले को कुछ भी लाभ नहीं ॥

१२ बुद्धिमान के वचनों के कारण अनुग्रह होता है, परन्तु मूर्ख अपने वचनों के द्वारा नाश होते हैं। १३ उसकी बात का आरम्भ मूर्खता का, और उनका अन्त दुखदाई बावलापन होता है। १४ मूर्ख बहुत बातें बढ़ाकर बोलता है, तौभी कोई मनुष्य नहीं जानता कि क्या होगा, और कौन बता सकता है कि उसके बाद क्या होनेवाला है? १५ मूर्ख को

* मूल में—सूरज के नीचे।

परिश्रम से थकावट ही होती है, यहा तक
कि वह नही जानता कि नगर को कैसे
जाए ।।

१६ हे देश, तुझ पर हाय जब तेरा
राजा लड़का है और तेरे हाकिम प्रात काल
भोज करते है। १७ हे देश, तू धन्य है
जब तेरा राजा कुलीन है; और तेरे हाकिम
समय पर भोज करते है, और वह भी
मतवाले होने को नही, वरन बल बढाने
के लिये। १८ आलस्य के कारण छत
की कडिया दब जाती है, और हाथो
की सुस्ती से घर चूता है। १९ भोज
हसी खुशी के लिये किया जाता है, और
दाखमधु से जीवन को आनन्द मिलता है,
और रुपयो से सब कुछ प्राप्त होता है।
२० राजा को मन मे भी शाप न देना,
न धनवान को अपने शयन की कोठरी
में शाप देना, क्योंकि कोई आकाश का
पक्षी तेरी वाणी को ले जाएगा, और
कोई उडानेवाला जन्तु उस बात को प्रगट
कर देगा ।।

११ अपनी रोटी जल के ऊपर डाल
दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू
उसे फिर पाएगा। २ सात वरन आठ
जनों को भी भाग दे, क्योंकि तू नही जानता
कि पृथ्वी पर क्या विपत्ति आ पडेगी।
३ यदि बादल जल भरे है, तब उसको
भूमि पर उण्डेल देते है; और वृक्ष चाहे
दक्खिन की ओर गिरे या उत्तर की ओर,
तौभी जिस स्थान पर वृक्ष गिरेगा, वही
पडा रहेगा। ४ जो वायु को ताकता
रहेगा वह बीज बोने न पाएगा, और जो
बादलों को देखता रहेगा वह लवने न
पाएगा। ५ जैसे तू वायु के चलने का
मार्ग नही जानता और किस रीति से
गर्भवती के पेट में हड्डियां बढती है, वैसे
ही तू परमेश्वर का काम नही जानता
जो सब कुछ करता है ।।

६ भोर को अपना बीज बो, और
सांझ को भी अपना हाथ न रोक, क्योंकि
तू नही जानता कि कौन सुफल होगा, यह
या वह, वा दोनो के दोनों अच्छे निकलेंगे ।।

७ उजियाला मनभावना होता है, और
धूप के देखने मे आंखो को सुख होता है ।।

८ यदि मनुष्य बहुत वर्ष जीवित रहे,
तो उन सभो मे आनन्दित रहे, परन्तु
यह स्मरण रखे कि अन्धियारे के दिन
भी बहुत होगे। जो कुछ होता है वह
व्यर्थ है ।।

९ हे जवान, अपनी जवानी मे आनन्द
कर, और अपनी जवानी के दिनो मे मगन
रह, अपनी मनमानी कर और अपनी
आंखो की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु
यह जान रख कि इन सब बातो के विषय
परमेश्वर तेरा न्याय करेगा ।।

१० अपने मन से खेद और अपनी
देह से दु:ख दूर कर, क्योंकि लडकपन और
१२ जवानी दोनो व्यर्थ है। १ अपनी
जवानी के दिनो में अपने सृजनहार
को स्मरण रख, इस से पहिले कि विपत्ति
के दिन और वे वर्ष आए, जिन मे
तू कहे कि मेरा मन इन मे नही लगता।
२ इस से पहिले कि सूर्य और प्रकाश
और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो
जाए, और वर्षा होने के बाद बादल फिर
घिर आए, ३ उस समय घर के पहरुये
कांपेंगे, और बलवन्त झुक जायेंगे, और
पिसनहारिया थोडी रहने के कारण काम
छोड देंगी, और झरोखो में से देखनेवालिया
अन्धी हो जाएंगी, ४ और सडक की ओर
के किवाड बन्द होगे, और चक्की पीसने

का शब्द धीमा होगा, और तडके चिडिया
बोलते ही एक उठ जाएगा*, और सब
गानेवालियो का शब्द धीमा हो जाएगा†।
५ फिर जो ऊचा हो उस से भय खाया
जाएगा, और मार्ग में डरावनी वस्तुए
मानी जाएगी, और बादाम का पेड
फूलेगा, और टिड्डी भी भारी लगेगी,
और भूख बढानेवाला फल फिर काम न
देगा, क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर
को जायेगा, और रोने पीटनेवाले सडक-
सडक फिरेंगे। ६ उस समय चान्दी का
तार दो टुकडे हो जाएगा और सोने का
कटोरा टूटेगा, और सोते के पास घडा
फूटेगा, और कुण्ड के पास रहट टूट
जाएगा, ७ तब मिट्टी ज्यो की त्यो मिट्टी
में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर
के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी।
८ उपदेशक कहता है, सब व्यर्थ ही व्यर्थ,
सब कुछ व्यर्थ है।।

* मूल में—नींद से उठ जायेगा।
† मूल में—गाने बजाने की सब बेटिया नीची की जाएगी।

९ उपदेशक जो बुद्धिमान था, वह
प्रजा को ज्ञान भी सिखाता रहा, और
ध्यान लगाकर और पूछपाछ करके बहुत
से नीतिवचन क्रम से रखता था।
१० उपदेशक ने मनभावने शब्द खोजे
और सीधाई से ये सच्ची बातें लिख
दीं।।

११ बुद्धिमानो के वचन पैनो के समान
होते हैं, और सभाओं के प्रधानो के वचन
गाडी हुई कीलो के समान हैं, क्योंकि
एक ही चरवाहे की ओर से मिलते हैं।
१२ हे मेरे पुत्र, इन्ही से चौकसी सीख।
बहुत पुस्तको की रचना का अन्त नहीं
होता, और बहुत पढना देह को थका
देता है।।

१३ सब कुछ सुना गया, अन्त की
बात यह है कि परमेश्वर का भय मान और
उसकी आज्ञाओ का पालन कर, क्योंकि
मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है।
१४ क्योंकि परमेश्वर सब कामों और
सब गुप्त बातो का, चाहे वे भली हों या
बुरी, न्याय करेगा।।

श्रेष्ठगीत

१ श्रेष्ठगीत जो सुलैमान का है।।
२ वह अपने मुह के चुम्बनो से मुझे
चूमे।
क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है,
३ तेरे भाति भाति के इत्रों का सुगन्ध
उत्तम है,
तेरा नाम उडेले हुए इत्र के तुल्य है,
इसीलिये कुमारिया तुझ से प्रेम
रखती है।
४ मुझे खीच ले, हम तेरे पीछे दौडेंगे।
राजा मुझे अपने महल में ले आया
है।

२ और सड़कों और चौकों मे घूमकर
अपने प्राणप्रिय को ढूढूगी।
मै उसे ढूढती तो रही, परन्तु उसे
न पाया।
३ जो पहरुए नगर मे घूमते थे, वे
मुझे मिले,
मै ने उन से पूछा, क्या तुम ने मेरे
प्राणप्रिय को देखा है?
४ मुझ को उनके पास से आगे बढे
थोड़े ही देर हुई थी
कि मेरा प्राणप्रिय मुझे मिल गया।
मैं ने उसको पकड लिया, और उसको
जाने न दिया
जब तक उसे अपनी माता के घर,
अर्थात् अपनी जननी की कोठरी मे
न ले आई॥
५ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम से
चिकारियों और मैदान की हरिणियो
की शपथ धराकर कहती हू,
कि जब तक प्रेम आप से न उठे,
तब तक उसको न उसकाओ और
न जगाओ॥
६ यह क्या है जो धूए के खम्भे के
समान,
गन्धरस और लोबान से सुगन्धित,
और व्योपारी की सब भांति की
बुकनी लगाए हुए
जंगल से निकला आता है?
७ देखो, यह सुलैमान की पालकी है!
उसके चारो ओर इस्राएल के शूरवीरो
में के साठ वीर चल रहे है॥
८ वे सब के सब तलवार बान्धनेवाले
और युद्ध विद्या में निपुण हैं।
प्रत्येक पुरुष रात के डर मे
जांघ पर तलवार लटकाए रहता
है।
९ सुलैमान राजा ने अपने लिये लबानोन
के काठ की एक बड़ी पालकी
बनवा ली।
१० उस ने उसके खम्भे चान्दी के,
उसका सिरहाना सोने का, और गद्दी
अर्गवानी रग की बनवाई है;
और उसके बीच का स्थान
यरूशलेम की पुत्रियो की ओर से
बड़े प्रेम से जड़ा गया है।
११ हे सिय्योन की पुत्रियो निकलकर
सुलैमान राजा पर दृष्टि डालो,
देखो, वह वही मुकुट पहिने हुए है
जिसे उसकी माता ने उसके विवाह
के दिन
और उसके मन के आनन्द के दिन,
उसके सिर पर रखा था॥

४ हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तू सुन्दर
है!
तेरी आंखें तेरी लटों के बीच मे
कबूतरो की सी दिखाई देती है।
तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के
समान है
जो गिलाद पहाड के ढाल पर लेटी
हुई हो।
२ तेरे दान्त उन ऊन कतरी हुई भेडो
के झुण्ड के समान है,
जो नहाकर ऊपर आई हों, उन मे हर
एक के दो दो जुडवा बच्चे होते हैं।
और उन मे से किसी का साथी
नही मरा।
३ तेरे होठ लाल रग की डोरी के समान
हैं,
और तेरा मुह मनोहर है,
तेरे कपोल तेरी लटों के नीचे
अनार की फांक से देख पडते है।

४ तेरा गला दाऊद के गुम्मट के समान
है, जो अस्त्र-शस्त्र के लिये बना हो,
और जिस पर हजार ढालें टंगी हुई
हों,
वे सब ढालें शूरवीरों की हैं।
५ तेरी दोनों छातियां मृग के दो जुड़वे
बच्चों के तुल्य हैं,
जो सोसन फूलों के बीच में चरते हों।
६ जब तक दिन ठण्डा न हो, और
छाया लम्बी होते होते मिट न
जाए,
तब तक मैं शीघ्रता से गन्धरस के
पहाड़
और लोबान की पहाड़ी पर चला
जाऊंगा।
७ हे मेरी प्रिय तू सर्वाङ्ग सुन्दरी है,
तुझ में कोई दोष नहीं।
८ हे मेरी दुल्हिन, तू मेरे संग लबानोन
से,
मेरे संग लबानोन से चली आ।
तू अमाना की चोटी पर से,
शनीर और हेर्मोन की चोटी पर से,
सिंहों की गुफाओं से,
चितों के पहाड़ों पर से दृष्टि कर।
९ हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, तू ने
मेरा मन मोह लिया है,
तू ने अपनी आंखों की एक ही
चितवन से,
और अपने गले के एक ही हीरे से
मेरा हृदय मोह लिया है,
१० हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन, तेरा
प्रेम क्या ही मनोहर है!
तेरा प्रेम दाखमधु से क्या ही उत्तम
है,
और तेरे इत्रों का सुगन्ध सब प्रकार
के मसालों के सुगन्ध से!
११ हे मेरी दुल्हिन, तेरे होंठों से मधु
टपकता है,
तेरी जीभ के नीचे मधु और दूध
रहता है,
तेरे वस्त्रों का सुगन्ध लबानोन का
सा है।
१२ मेरी बहिन, मेरी दुल्हिन, किवाड़
लगाई हुई बारी के समान,
किवाड़ बन्द किया हुआ सोता, और
छाप लगाया हुआ झरना है।
१३ तेरे अंकुर उत्तम फलवाली अनार
की बारी के तुल्य हैं,
जिस में मेंहदी और सुम्बुल,
१४ जटामासी और केसर,
लोबान के सब भांति के पेड़, मुश्क
और दालचीनी,
गन्धरस, अगर, आदि सब मुख्य
मुख्य सुगन्धद्रव्य होते हैं।
१५ तू बारियों का सोता है,
फूटते हुए जल का कुआं,
और लबानोन से बहती हुई धाराएं
हैं॥
१६ हे उत्तर वायु जाग, और हे दक्खिनी
वायु चली आ!
मेरी बारी पर बह, जिस से उसका
सुगन्ध फैले।
मेरा प्रेमी अपनी बारी में आये,
और उसके उत्तम उत्तम फल खाए॥

५ हे मेरी बहिन, हे मेरी दुल्हिन,
मैं अपनी बारी में आया हूं,
मैं ने अपना गन्धरस और बलसान
चुन लिया,
मैं ने मधु समेत छत्ता खा लिया,
मैं ने दूध और दाखमधु पी
लिया॥

हम तुझ में मगन और आनन्दित होंगे,
हम दाखमधु से अधिक तेरे प्रेम की चर्चा करेंगे,
वे ठीक ही तुझ से प्रेम रखती हैं ॥
५ हे यरूशलेम की पुत्रियो,
मैं काली तो हूं परन्तु सुन्दर हूं,
केदार के तम्बुओं के
और सुलैमान के पर्दों के तुल्य हूं।
६ मुझे इसलिये न घूर कि मैं सांवली हूं,
क्योंकि मैं धूप से झुलस गई*।
मेरी माता के पुत्र मुझ से अप्रसन्न थे,
उन्हों ने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन बनाया,
परन्तु मैं ने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की!
हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता,
तू अपनी भेड़-बकरियां कहां चराता है, दोपहर को तू उन्हें कहां बैठाता है,
मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़-बकरियों के पास
घूंघट काढ़े हुए भटकती फिरूं?
८ हे स्त्रियों में सुन्दरी, यदि तू यह न जानती हो
तो भेड़-बकरियों के खुरों के चिन्हों पर चल,
और चरवाहों के तम्बुओं के पास अपनी बकरियों के बच्चों को चरा ॥
९ हे मेरी प्रिय मैं ने तेरी तुलना
फिरौन के रथों में जुती हुई घोड़ी से की है।
१० तेरे गाल केशों की लटों के बीच क्या ही सुन्दर हैं, और
तेरा कण्ठ हीरों की लड़ों के बीच।
११ हम तेरे लिये चान्दी के फूलदार सोने के आभूषण बनाएंगे ॥
१२ जब राजा अपनी मेज़ के पास बैठा था
मेरी जटामासी की सुगन्ध फैल रही थी।
१३ मेरा प्रेमी मेरे लिये लोबान की थैली के समान है
जो मेरी छातियों के बीच में पड़ी रहती है ॥
१४ मेरा प्रेमी मेरे लिये मेंहदी के फूलों के गुच्छे के समान है,
जो एनगदी की दाख की बारियों में होता है ॥
१५ तू सुन्दरी है, हे मेरी प्रिय, तू सुन्दरी है,
तेरी आंखें कबूतरी की सी हैं।
१६ हे मेरी प्रिय तू सुन्दर और मनभावनी है।
और हमारा बिछौना भी हरा है,
१७ हमारे धर के बरगे देवदार हैं
और हमारी छत की कड़ियां सनोवर हैं ॥

२ मैं शारोन देश का गुलाब
और तराइयों में का सोसन फूल हूं ॥
२ जैसे सोसन फूल कटीले पेड़ों के बीच
वैसे ही मेरी प्रिय युवतियों के बीच में है ॥
३ जैसे सेब का वृक्ष जंगल के वृक्षों के बीच में,

* मूल में—सूर्य ने मुझे झलसाया।

वैसे ही मेरा प्रेमी जवानों के बीच
 में है।
मैं उसकी छाया में हर्षित होकर बैठ
 गई,
और उसका फल मुझे खाने में मीठा
 लगा।
४ वह मुझे भोज के घर में ले आया,
और उसका जो झण्डा मेरे ऊपर
 फहराता था वह प्रेम था।
५ मुझे सूखी दाखों से सम्भालो, सेब
 खिलाकर बल दो
क्योंकि मैं प्रेम में रोगी हूं।
६ काश, उसका बायां हाथ मेरे सिर
 के नीचे होता,
और अपने दहिने हाथ से वह मेरा
 आलिंगन करता!
७ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम से
 चिकारियों और मैदान की हरिणियों
 की शपथ धराकर कहती हूं,
कि जब तक प्रेम आप से न उठे,
तब तक उसको न उसकाओ न
 जगाओ॥
८ मेरे प्रेमी का शब्द सुन पड़ता है!
देखो, वह पहाड़ों पर कूदता और
 पहाड़ियों को फान्दता हुआ आता
 है।
९ मेरा प्रेमी चिकारे वा जवान हरिण
 के समान है।
देखो, वह हमारी भीत के पीछे
 खड़ा है
और खिड़कियों की ओर ताक रहा है,
और झंझरी में से देख रहा है।
१० मेरा प्रेमी मुझ से कह रहा है
हे मेरी प्रिय हे मेरी सुन्दरी उठकर
 चली आ
११ क्योंकि देख जाड़ा जाता रहा
वर्षा भी हो चुकी और जाती रही है।
१२ पृथ्वी पर फूल दिखाई देते हैं,
चिड़ियों के गाने का समय आ पहुंचा है,
और हमारे देश में पिण्डुक का शब्द
 सुनाई देता है।
१३ अंजीर पकने लगे हैं,
और दाखलताएं फूल रही हैं,
वे सुगन्ध दे रही हैं।
हे मेरी प्रिय हे मेरी सुन्दरी, उठकर
 चली आ।
१४ हे मेरी कबूतरी, पहाड़ की दरारों में
और टीलों के कुञ्ज में
तेरा मुख मुझे देखने दे,
तेरा बोल मुझे सुनने दे,
क्योंकि तेरा बोल मीठा, और तेरा
 मुख अति सुन्दर है।
१५ जो छोटी लोमड़ियां* दाख की बारियों
 को बिगाड़ती हैं, उन्हें पकड़ ले,
क्योंकि हमारी दाख की बारियों
 में फूल लगे हैं॥
१६ मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूं,
वह अपनी भेड़-बकरियां सोसन फूलों
 के बीच में चराता है।
१७ जब तक दिन ठण्डा न हो और
 छाया लम्बी होते होते मिट न जाए,
तब तक हे मेरे प्रेमी उस चिकारे
 वा जवान हरिण के समान बन
जो बेतेर† के पहाड़ों पर फिरता है॥

३ रात के समय मैं अपने पलंग पर
अपने प्राणप्रिय को ढूंढती रही
मैं उसे ढूंढती तो रही परन्तु उसे न
 पाया
मैं ने कहा मैं अब उठकर नगर में,

* मूल में—लोमड़ियां, छोटी लोमड़ियां।
† अर्थात् अलगाव।

हे मित्रो, तुम भी खाओ,
हे प्यारो, पियो, मनमाना पियो !
२ मैं सोती थी, परन्तु मेरा मन जागता था।
सुन ! मेरा प्रेमी खटखटाता है, और कहता है,
हे मेरी बहिन, हे मेरी प्रिय, हे मेरी कबूतरी हे मेरी निर्मल, मेरे लिये द्वार खोल,
क्योंकि मेरा सिर ओस से भरा है,
और मेरी लटें रात में गिरी हुई बून्दों से भीगी है।
३ मैं अपना वस्त्र उतार चुकी थी मैं उसे फिर कैसे पहिनूं ?
मैं तो अपने पांव धो चुकी थी अब उनको कैसे मैला करूं ?
४ मेरे प्रेमी ने अपना हाथ किवाड के छेद से भीतर डाल दिया,
तब मेरा हृदय उसके लिये उभर उठा।
५ मैं अपने प्रेमी के लिये द्वार खोलने को उठी,
और मेरे हाथो से गन्धरस टपका,
और मेरी अंगुलियों पर से टपकता हुआ गन्धरस
बेण्डे की मूठो पर पडा।
६ मैं ने अपने प्रेमी के लिये द्वार तो खोला,
परन्तु मेरा प्रेमी मुडकर चला गया था।
जब वह बोल रहा था, तब मेरा प्राण घबरा गया था।
मैं ने उसको ढूंढा, परन्तु न पाया,
मैं ने उसको पुकारा, परन्तु उस ने कुछ उत्तर न दिया।
७ पहरेवाले जो नगर में घूमते थे, मुझे मिले,
उन्हों ने मुझे मारा और घायल किया,
शहरपनाह के पहरुओं ने मेरी चद्दर मुझ से छीन ली।
८ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम को शपथ धराकर कहती हूं, यदि मेरा प्रेमी तुमको मिल जाए,
तो उस से कह देना कि मैं प्रेम में रोगी हूं॥
९ हे स्त्रियों में परम सुन्दरी
तेरा प्रेमी और प्रेमियों से किस बात में उत्तम है ?
तू क्यों हम को ऐसी शपथ धराती है ?
१० मेरा प्रेमी गोरा और लाल सा है,
वह दस हजार में उत्तम है।
११ उसका सिर चोखा कुन्दन है,
उसकी लटकती हुई लटें कौवो की नाई काली हैं।
१२ उसकी आंखें उन कबूतरो के समान है जो दूध में नहाकर नदी के किनारे
अपने झुण्ड में एक कतार से बैठे हुए हों।
१३ उसके गाल फूलों की फुलवारी और बलसान की उभरी हुई क्यारियां है।
उसके होठ सोसन फूल है जिन से पिघला हुआ गन्धरस टपकता है॥
१४ उसके हाथ फीरोजा जडे हुए सोने के किवाड है।
उसका शरीर नीलम के फूलों से जडे हुए हाथीदांत का काम है।
१५ उसके पांव कुन्दन पर बैठाये हुए संगमर्मर के खम्भे है।

वह देखने मे लबानोन और सुन्दरता
मे देवदार के वृक्षो के समान
मनोहर है ।
१६ उसकी वाणी * अति मधुर है, हा
वह परम सुन्दर है ।
हे यरूशलेम की पुत्रियो,
यही मेरा प्रेमी और यही मेरा मित्र
है ।।

६ हे स्त्रियो मे परम सुन्दरी,
तेरा प्रेमी कहा गया ?
तेरा प्रेमी कहा चला गया
कि हम तेरे सग उसको ढूढने निकलें ?
२ मेरा प्रेमी अपनी बारी मे अर्थात्
बलसान की क्यारियो की ओर गया
है,
कि बारी मे अपनी भेड-बकरिया
चराए और सोसन फूल बटोरे ।
३ मै अपने प्रेमी की हू और मेरा प्रेमी
मेरा है,
वह अपनी भेड-बकरिया सोसन फूलो
के बीच चराता है ।।
४ हे मेरी प्रिय, तू तिर्सा की नाई
सुन्दरी है
तू यरूशलेम के समान रूपवान है,
और पताका फहराती हुई सेना के
तुल्य भयकर है ।।
५ अपनी आख मेरी ओर से फेर ले,
क्योकि मै उन से घबराता हू,
तेरे बाल ऐसी बकरियो के झुण्ड
के समान हैं,
जो गिलाद की ढलान पर लेटी हुई
देख पडती हो ।
६ तेरे दात ऐसी भेडो के झुण्ड के
समान है
जिन्हें स्नान कराया गया हो,
उन मे प्रत्येक दो दो जुडवा बच्चे
देती है,
जिन में से किसी का साथी नही मरा ।
७ तेरे कपोल तेरी लटो के नीचे
अनार की फाँक से देख पडते हैं ।
८ वहा साठ रानिया और अस्सी
रखेलिया,
और असख्य कुमारिया भी है ।
९ परन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल,
अद्वैत है,
अपनी माता की एकलौती,
अपनी जननी की दुलारी है ।
पुत्रियो ने उसे देखा और धन्य कहा,
रानियो और रखेलियो ने देखकर
उसकी प्रशसा की ।
१० यह कौन है जिसकी शोभा भोर के
तुल्य है,
जो सुन्दरता मे चन्द्रमा,
और निर्मलता मे सूर्य,
और पताका फहराती हुई सेना के
तुल्य भयकर दिखाई पडती है ?
११ मै अखरोट की बारी मे उतर गई,
कि तराई के फूल देखू,
और देखू कि दाखलता मे कलियें
लगी,
और अनारो के फूल खिले कि नही ।
१२ मुझे पता भी न था कि मेरी कल्पना
ने
मुझे अपने राजकुमार के रथ पर
चढा दिया ।।
१३ लौट आ, लौट आ, हे शूलेम्मिन *,
लौट आ, लौट आ, कि हम तुझ
पर दृष्टि करें ।।

* मूल में—तालू ।

* अर्थात् शान्तिवाली ।

क्या तुम शूलेम्मिन * को इस प्रकार
देखोगे जैसा महनैम के नृत्य को
देखते है ?

७ हे कुलीन की पुत्री, तेरे पाव जूतियो
मे क्या ही सुन्दर है !
तेरी जाघो की गोलाई ऐसे गहनो
के समान है,
जिसको किसी निपुण कारीगर ने
रचा हो।
२ तेरी नाभि गोल कटोरा है,
जो मसाला मिले हुए दाखमधु से
पूर्ण हो।
तेरा पेट गेहू के ढेर के समान है
जिसके चहुँओर सोसन फूल हो।
३ तेरी दोनो छातिया
मृगनी के दो जुडवे बच्चो के समान
हैं।
४ तेरा गला हाथीदात का गुम्मट है।
तेरी आखे हेशवोन के उन कुन्डो
के समान है,
जो बत्रब्बीम के फाटक के पास है।
तेरी नाक लबानोन के गुम्मट के
तुल्य है,
जिसका मुख दमिश्क की ओर है।
५ तेरा सिर तुझ पर कर्मेल के समान
शोभायमान है,
और तेरे सर के लटे अर्गवानी रङ्ग
के वस्त्र के तुल्य है,
राजा उन लटाओ मे बधुआ हो
गया है ।।
६ हे प्रिय † और मनभावनी कुमारी,
तू कैसी सुन्दरी और कैसी मनोहर
है !

* अर्थात् शान्तिवाली।
† मूल में—हे प्रेम।

७ तेरा डील डौल खजूर के समान
शानदार है
और तेरी छातिया अगूर के गुच्छो
के समान है ।।
८ मै ने कहा, मै इस खजूर पर चढकर
उसकी डालियो को पकडूगा।
तेरी छातिया अगूर के गुच्छे हो,
और तेरी श्वास का सुगन्ध सेबो
के समान हो,
९ और तेरे चुम्बन * उत्तम दाखमधु के
समान है
जो सरलता से
ओठो पर से धीरे धीरे बह जाती
है † ।।
१० मै अपने प्रेमी की हू।
और उसकी लालसा मेरी ओर नित
बनी रहती है।
११ हे मेरे प्रेमी, आ, हम खेतो मे निकल
जाए,
और गावो मे रहे,
१२ फिर सवेरे उठकर दाख की बारियो
मे चले,
और देखे कि दाखलता में कलियें
लगी है कि नही, कि दाख के फूल
खिले है या नही,
और अनार फूले है वा नही।
वहा मै तुझ को अपना प्रेम
दिखाऊगी ‡।
१३ दोदाफलो § से सुगन्ध आ रही है,
और हमारे द्वारो पर सब भाति के
उत्तम फल है, नये और पुराने
भी,
जो, हे मेरे प्रेमी, मै ने तेरे लिये
इकट्ठे कर रखे है ।।

* मूल में—तालू। † मूल में—चले।
‡ मूल में—दूगी। § जहरीला पौधा।

८ भला होता कि तू मेरे भाई के
समान होता, जिस ने मेरी माता
की छातियो से दूध पिया !
तब मैं तुझे बाहर पाकर तेरा चुम्बन
लेती,
और कोई मेरी निन्दा न करता।
२ मैं तुझ को अपनी माता के घर
ले चलती,
और वह मुझ को सिखाती,
और मैं तुझे मसाला मिला हुआ
दाखमधु,
और अपने अनारो का रस पिलाती।
३ काश, उसका बाया हाथ मेरे सिर
के नीचे होता,
और अपने दहिने हाथ से वह मेरा
आलिगन करता !
४ हे यरूशलेम की पुत्रियो, मैं तुम को
शपथ धराती हू,
कि तुम मेरे प्रेमी को न जगाना
जब तक वह स्वय न उठना
चाहे ।।
५ यह कौन है जो अपने प्रेमी पर टेक
लगाये हुए
जगल से चली आती है ?
सेब के पेड के नीचे मैं ने तुझे
जगाया।
वहा तेरी माता ने तुझे जन्म दिया
वहा तेरी माता को पीडाए उठी ।।
६ मुझे नगीने की नाईं अपने हृदय
पर लगा रख,
और तावीज़ की नाईं अपनी बाह
पर रख,
क्योकि प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी
है,
और ईर्षा कब्र के समान निर्दयी
है।
उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है
वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है।
७ पानी की बाढ से भी प्रेम नही बुझ
सकता,
और न महानदो से डूब सकता है।
यदि कोई अपने घर की सारी सम्पत्ति
प्रेम की सन्ती दे दे
तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी ।।
८ हमारी एक छोटी बहिन है,
जिसकी छातिया अभी नही उभरी।
जिस दिन हमारी बहिन के व्याह
की बात लगे,
उस दिन हम उसके लिये क्या करें ?
९ यदि वह शहरपनाह हो
तो हम उस पर चान्दी का कगूरा
बनाएगे,
और यदि वह फाटक का किवाड हो,
तो हम उस पर देवदारु की लकडी
के पटरे लगाएगे ।।
१० मैं शहरपनाह थी और मेरी छातिया
उसके गुम्मट,
तब मैं अपने प्रेमी की दृष्टि में
शान्ति लानेवाले के नाईं थी ।।
११ बाल्हामोन में सुलैमान की एक दाख
की बारी थी,
उस ने वह दाख की बारी रखवालो
को सौंप दी,
हर एक रखवाले को उसके फलो
के लिये
चान्दी के हजार हजार टुकडे देने
थे।
१२ मेरी निज दाख की बारी मेरे ही
लिये है,
हे सुलैमान, हजार तुझी को
और फल के रखवालो को दो सौ
मिलें ।।

१३ तू जो बारियो मे रहती है,
मेरे मित्र तेरा वोल सुनना चाहते
है,
उसे मुझे भी सुनने दे ।।

१४ हे मेरे प्रेमी, शीघ्रता कर,
और सुगन्धद्रव्यो के पहाडो पर
चिकारे वा जवान हरिण के नाई
बन जा ।।

यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक

१ आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन,
जिसको उस ने यहूदा और यरूशलेम
के विषय मे उज्जिय्याह, योताम, आहाज,
और हिजकिय्याह नाम यहूदा के राजाओ
के दिनो मे पाया ।।
२ हे स्वर्ग सुन, और हे पृथ्वी कान
लगा, क्योकि यहोवा कहता है मै ने
बालबच्चो का पालन पोषण किया, और
उनको बढाया भी, परन्तु उन्हो ने मुझ मे
बलवा किया । ३ बैल तो अपने मालिक
को और गदहा अपने स्वामी की चरनी
को पहिचानता है, परन्तु इस्राएल मुझे
नही जानता, मेरी प्रजा विचार नही
करती ।।
४ हाय, यह जाति पाप से कैसी भरी
है! यह समाज अधर्म मे कैसा
लदा हुआ है! इस वंश के लोग कैसे
कुकर्मी है, ये लडकेवाले कैसे बिगडे हुए
है! उन्हो ने यहोवा को छोड दिया,
उन्हो ने इस्राएल के पवित्र को तुच्छ
जाना है! वे पराए बनकर दूर हो गए
है ।।
५ तुम बलवा कर करके क्यो अधिक
मार खाना चाहते हो? तुम्हारा सिर
घावो मे भर गया, और तुम्हारा हृदय
दुःख मे भरा है । ६ नख से सिर तक
कही भी कुछ आरोग्यता नही, केवल चोट
और कोडे की मार के चिन्ह और सडे
हुए घाव है जो न दबाये गए, न बान्धे
गए, न तेल लगाकर नरमाये गए है ।।
७ तुम्हारा देश उजडा पडा है, तुम्हारे
नगर भस्म हो गए है, तुम्हारे खेतो को
परदेशी लोग तुम्हारे देखते ही निगल रहे
है, वह परदेशियो से नाश किए हुए देश
के समान उजाड है । ८ और सिय्योन
की बेटी दाख की बारी मे की झोपडी
की नाई छोड दी गई है, वा ककडी के
खेत मे की छपरिया या घिरे हुए नगर के
समान अकेली खडी है ।।
९ यदि सेनाओ का यहोवा हमारे
थोडे से लोगो को न बचा रखता, तो हम
सदोम के समान हो जाते, और अमोरा
के समान ठहरते ।।
१० हे सदोम के न्याइयो, यहोवा का
वचन सुनो! हे अमोरा की प्रजा, हमारे
परमेश्वर की शिक्षा पर कान लगा!
११ यहोवा यह कहता है, तुम्हारे बहुत
से मेलबलि मेरे किस काम के है? मै

तो मेढों के होमबलियों से और पाले हुए
पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं, १२ मैं
बछड़ों वा भेड़ के बच्चों वा बकरों के
लोहू से प्रसन्न नहीं होता ॥
तुम जब अपने मुंह मुझे दिखाने के
लिये आते हो, तब यह कौन चाहता है कि
तुम मेरे आंगनों को पांव से रौंदो?
१३ व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ,
धूप से मुझे घृणा है। नये चांद और
विश्रामदिन का मानना, और सभाओं का
प्रचार करना, यह मुझे बुरा लगता है।
महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम
करना मुझ से सहा नहीं जाता।
१४ तुम्हारे नये चांदों और नियत पर्वों
के मानने से मैं जी से बैर रखता हूं, वे
सब मुझे बोझ जान पड़ते हैं, मैं उनको
सहते सहते उकता गया हूं। १५ जब
तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं
तुम से मुख फेर* लूंगा, तुम कितनी
ही प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी
न सुनूंगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से
भरे हैं। १६ अपने को धोकर पवित्र
करो, मेरी आंखों के साम्हने से अपने
बुरे कामों को दूर करो, भविष्य में बुराई
करना छोड़ दो, १७ भलाई करना सीखो,
यत्न से न्याय करो †, उपद्रवी को सुधारो,
अनाथ का न्याय चुकाओ, विधवा का
मुकद्दमा लड़ो ॥
१८ यहोवा कहता है, आओ, हम
आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप
चाहे लाल रङ्ग के हों, तौभी वे हिम की
नाईं उजले हो जाएंगे, और चाहे अर्गवानी
रङ्ग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत
हो जाएंगे। १६ यदि तुम आज्ञाकारी
होकर मेरी मानो, २० तो इस देश के
उत्तम उत्तम पदार्थ खाओगे, और यदि
तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार
से मारे जाओगे, यहोवा का यही वचन
है ॥
२१ जो नगरी सती थी सो क्योंकर
व्यभिचारिन हो गई! वह न्याय से भरी
थी और उस में धर्म पाया जाता था,
परन्तु अब उस में हत्यारे ही पाए जाते
हैं। तेरी चान्दी धातु का मैल हो गई,
२२ तेरे दाखमधु में पानी मिल गया है।
२३ तेरे हाकिम हठीले और चोरों से
मिले हैं। वे सब के सब घूस खानेवाले
और भेंट के लालची हैं। वे अनाथ का
न्याय नहीं करते, और न विधवा का
मुकद्दमा अपने पास आने देते हैं ॥
२४ इस कारण प्रभु सेनाओं के यहोवा,
इस्राएल के शक्तिमान की यह वाणी है
सुनो, मैं अपने शत्रुओं को दूर करके शान्ति
पाऊंगा, और अपने बैरियों से पलटा लूंगा।
२५ और मैं तुम पर हाथ बढ़ाकर तुम्हारा
धातु का मैल पूरी रीति से * भस्म करूंगा,
और तुम्हारा राग पूरी रीति से दूर
करूंगा। २६ और मैं तुम में पहिले की
नाईं न्यायी और आदि काल के समान
मन्त्री फिर नियुक्त करूंगा। उसके बाद
तू धर्मपुरी और सती नगरी कहलाएगी ॥
२७ सिय्योन न्याय के द्वारा, और जो
उस में फिरेंगे वे धर्म के द्वारा छुड़ा लिए
जाएंगे। २८ परन्तु बलवाइयों और
पापियों का एक संग नाश होगा, और
जिन्हों ने यहोवा को त्यागा है, उनका
अन्त हो जाएगा। २६ क्योंकि जिन बांज-
वृक्षों से तुम प्रीति रखते थे, उन से वे

* मूल में—छिपा।
† मूल में—न्याय पूछो।

* मूल में—मानो खार डालकर।

लज्जित होगे, और जिन वारियो से तुम
प्रसन्न रहते थे, उनके कारण तुम्हारे मुह
काले होगे। ३० क्योकि तुम पत्ते मुर्झाए
हुए वाजवृक्ष के, और विना जल की वारी
के समान हो जाओगे। ३१ और वलवान
तो सन और उसका काम चिंगारी वनेगा,
और दोनो एक साथ जलेंगे, और कोई
वुझानेवाला न होगा ।।

२ आमोस के पुत्र यशायाह का वचन,
जो उस ने यहूदा और यरूशलेम
के विषय दर्शन मे पाया ।।

२ अन्त के दिनो में ऐसा होगा कि
यहोवा के भवन का पर्वत सव पहाडो पर
दृढ किया जाएगा, और सव पहाडियो
से अधिक ऊचा किया जाएगा, और हर
जाति के लोग धारा की नाई उसकी
ओर चलेगे। ३ और वहुत देशो के लोग
आएगे, और आपस मे कहेंगे आओ,
हम यहोवा के पर्वत पर चढकर, याकूव
के परमेश्वर के भवन मे जाए, तव वह
हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम
उसके पथो पर चलेंगे। क्योकि यहोवा
की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका
वचन यरूशलेम से निकलेगा। ४ वह
जाति जाति का न्याय करेगा, और देश
देश के लोगो के झगडो को मिटाएगा,
और वे अपनी तलवारे पीटकर हल के
फाल और अपने भालो को हसिया वनाएगे,
तव एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध
फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य
मे युद्ध की विद्या सीखेंगे ।।

५ हे याकूव के घराने, आ, हम यहोवा
के प्रकाश मे चले ।।

६ तू ने अपनी प्रजा याकूव के घराने
को त्याग दिया है, क्योकि वे पूर्वियो के
व्यवहार पर तन मन से चलते* और
पलिश्तियो की नाई टोना करते है, और
परदेशियो के साथ हाथ मिलाते है।
७ उनका देश चान्दी और सोने से भरपूर
है, और उनके रखे हुए धन की सीमा
नही, उनका देश घोडों से भरपूर है,
और उनके रथ अनगिनित है। ८ उनका
देश मूरतो से भरा है, वे अपने हाथो की
वनाई हुई वस्तुओ को जिन्हे उन्हो ने
अपनी उगलियो से सवारा है, दण्डवत्
करते है। ९ इस से मनुष्य झुकते, और
वडे मनुष्य प्रणाम करते है, इस कारण
उनको क्षमा न कर। १० यहोवा के
भय के कारण और उसके प्रताप के मारे
चट्टान मे घुस जा, और मिट्टी में छिप
जा। ११ क्योकि आदमियो की घमण्ड-
भरी आखे नीची की जाएगी और मनुष्यो
का घमण्ड दूर किया जाएगा, और उस
दिन केवल यहोवा ही ऊचे पर विराजमान
रहेगा ।।

१२ क्योकि सेनाओ के यहोवा का
दिन सव घमण्डियो और ऊची गर्दन-
वालो पर और उन्नति से फूलनेवालो पर
आएगा, और वे झुकाए जाएगे,
१३ और लवानोन के सव देवदारो पर
जो ऊचे और वडे है, १४ वासान के
सव वाजवृक्षो पर, और सव ऊचे पहाडो
और सव ऊची पहाडियो पर, १५ सव
ऊचे गुम्मटो और सव दृढ शहरपनाहो
पर, १६ तर्शीश के सव जहाजो और सव
सुन्दर चित्रकारी पर वह दिन आता है।
१७ और मनुष्य का गर्व मिटाया जाएगा,
और मनुष्यो का घमण्ड नीचा किया
जाएगा, और उस दिन केवल यहोवा

* मूल में—पूरब से भर गए।

ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा। १८ और
मूरतें सब की सब नष्ट हो जाएंगी।
१९ और जब यहोवा पृथ्वी के कम्पित करने
के लिये उठेगा, तब उसके भय के कारण
और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानो की
गुफाओ और भूमि के बिलो में जा घुसेंगे॥
२० उस दिन लोग अपनी चान्दी-सोने
की मूरतो को जिन्हे उन्हो ने दण्डवत्
करने के लिये बनाया था, छछूंदरों और
चमगीदडो के आगे फेंकेंगे, २१ और जब
यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये
उठेगा तब वे उसके भय के कारण
और उसके प्रताप के मारे चट्टानो की
दरारो और पहाडियो के छेदो में घुसेंगे।
२२ सो तुम मनुष्य से परे रहो जिसकी
श्वासा उसके नथनो में है, क्योंकि उसका
मूल्य है ही क्या ?

३ सुनो, प्रभु सेनाओ का यहोवा
यरूशलेम और यहूदा का सब प्रकार
का सहारा और सिरहाना * अर्थात् अन्न
का सारा आधार, और जल का सारा
आधार दूर कर देगा, २ और वीर और
योद्धा को, न्यायी और नबी को, भावी
वक्ता और वृद्ध को, पचास सिपाहियो
के सरदार और प्रतिष्ठित पुरुष को,
३ मन्त्री और चतुर कारीगर को, और
निपुण टोन्हे को भी दूर कर देगा।
४ और मैं लडको को उनके हाकिम
कर दूंगा, और बच्चे उन पर प्रभुता
करेंगे। ५ और प्रजा के लोग आपस में
एक दूसरे पर, और हर एक अपने पडोसी
पर अंधेर करेंगे, और जवान वृद्ध जनो से
और नीच जन माननीय लोगो से असभ्यता
का व्यवहार करेंगे॥

* मूल में—लाठा और लाठी।

६ उस समय जब कोई पुरुष अपने
पिता के घर में अपने भाई को पकडकर
कहेगा कि तेरे पास तो वस्त्र है, आ हमारा
न्यायी हो जा और इस उजडे देश को
अपने वश में कर ले, ७ तब वह शपथ
खाकर कहेगा, मैं चंगा करनेहारा न हूंगा,
क्योंकि मेरे घर में न तो रोटी है और न
कपडे, इसलिये तुम मुझे प्रजा का न्यायी
नही नियुक्त कर सकोगे। ८ यरूशलेम
तो डगमगाया और यहूदा गिर गया है,
क्योंकि उनके वचन और उनके काम
यहोवा के विरुद्ध है, जो उसकी तेजोमय
आंखों के साम्हने बलवा करनेवाले ठहरे
है॥
९ उनका चिहरा भी उनके विरुद्ध
साक्षी देता है, वे सदोमियो की नाईं
अपने पाप को आप ही बखानते और
नही छिपाते है। उन * पर हाय! क्योंकि
उन्हो ने अपनी हानि आप ही की है।
१० धर्मियो से कहो कि उनका भला
होगा, क्योंकि वे अपने कामो का फल
प्राप्त करेंगे। ११ दुष्ट पर हाय! उसका
बुरा होगा, क्योंकि उसके कामो का फल
उसको मिलेगा। १२ मेरी प्रजा पर बच्चे
अंधेर करते और स्त्रिया उन पर प्रभुता
करती है। हे मेरी प्रजा, तेरे अगुवे तुझे
भटकाते है, और तेरे चलने का मार्ग
भुला देते है † ॥
१३ यहोवा देश देश के लोगो से
मुकद्दमा लडने और उनका न्याय करने
के लिये खडा है। १४ यहोवा अपनी
प्रजा के वृद्ध और हाकिमो के साथ यह
विवाद करता है, तुम ही ने बारी की
दाख खा डाली है, और दीन लोगो का

* मूल में—उनके प्राण।
† मूल में—निगल लेते हैं।

धन लूटकर तुम ने अपने घरों में रखा है।
१५ सेनाओं के प्रभु यहोवा की यह वाणी
है, तुम क्यों मेरी प्रजा को दलते, और
दीन लोगों को* पीस डालते हो।

१६ यहोवा ने यह भी कहा है, क्योंकि
सिय्योन की स्त्रियां घमण्ड करतीं और
सिर ऊंचे किये आंखें मटकातीं और
घुंघुरुओं को छमछमाती हुई ठुमुक ठुमुक
चलती हैं, १७ इसलिये प्रभु यहोवा उनके
सिर को गंजा करेगा, और उनके तन को
उघरवाएगा॥

१८ उस समय प्रभु घुंघुरुओं, जालियों,
१९ चन्द्रहारों, झुमकों, कड़ों, घूंघटों,
२० पगड़ियों, पैकरियों, पटुकों, सुगन्ध-
पात्रों, गण्डों, २१ अंगूठियों, नत्थों,
२२ सुन्दर वस्त्रों, कुर्त्तियों, चद्दरों,
बटुओं, २३ दर्पणों, मलमल के वस्त्रों,
बुन्दियों, दुपट्टों इन सभों की शोभा
को दूर करेगा। २४ और सुगन्ध की
सन्ती सड़ाहट, सुन्दर करधनी की सन्ती
बन्धन की रस्सी, गुथे हुए बालों की सन्ती
गंजापन, सुन्दर पटुके की सन्ती टाट की
पेटी, और सुन्दरता की सन्ती दाग होंगे।
२५ तेरे पुरुष तलवार से, और शूरवीर
युद्ध में मारे जाएंगे। २६ और उसके
फाटकों में सांस भरना और विलाप करना
होगा†, और वह भूमि पर अकेली बैठी

४ रहेगी‡। उस समय सात स्त्रियां
एक पुरुष को पकड़कर कहेंगी कि
रोटी तो हम अपनी ही खाएंगी, और
वस्त्र अपने ही पहिनेंगी, केवल हम तेरी
कहलाएं, हमारी नामधराई दूर कर॥

* मूल में—दीन लोगों के मुंह को।
† मूल में—उसके फाटक ठण्ढी सांस भरेंगे और विलाप करेंगे।
‡ मूल में—यह शून्य होकर भूमि पर बैठेगी।

२ उसी समय इस्राएल के बचे हुओं
के लिये यहोवा का पल्लव, भूषण और
महिमा ठहरेगा, और भूमि की उपज,
बड़ाई और शोभा ठहरेगी। ३ और जो
कोई सिय्योन में बचा रहे, और यरूशलेम
में रहे, अर्थात् यरूशलेम में जितनों के
नाम जीवनपत्र में* लिखे हों, वे पवित्र
कहलाएंगे। ४ यह तब होगा, जब प्रभु
न्याय करनेवाली और भस्म करनेवाली
आत्मा के द्वारा सिय्योन की स्त्रियों के
मल को धो चुकेगा और यरूशलेम के
खून को दूर कर चुकेगा। ५ तब
यहोवा सिय्योन पर्वत के एक एक घर
के ऊपर, और उसके सभास्थानों के ऊपर,
दिन को तो धूएं का बादल, और रात
को धधकती आग का प्रकाश सिरजेगा,
और समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप
छाया रहेगा। ६ वह दिन को घाम
से बचाने के लिये और आंधी-पानी और
झड़ी में एक शरण और आड़ होगा॥

५ अब मैं अपने प्रिय के लिये और
उसकी दाख की बारी के विषय में
गीत गाऊंगा एक अति उपजाऊ टीले
पर† मेरे प्रिय की एक दाख की बारी
थी। २ उस ने उसकी मिट्टी खोदी और
उसके पत्थर बीनकर उस में उत्तम जाति
की एक दाखलता लगाई; उसके बीच
में उस ने एक गुम्मट बनाया, और दाखरस
के लिये एक कुण्ड भी खोदा; तब
उस ने दाख की आशा की, परन्तु उस में
निकम्मी दाखें ही लगीं॥

३ अब हे यरूशलेम के निवासियो और
हे यहूदा के मनुष्यो, मेरे और मेरी दाख

* मूल में—जीवन के लिये।
† मूल में—एक तेल के बेटे सींग पर।

की बारी के बीच न्याय करो। ४ मेरी
दाख की बारी के लिये और क्या करना
रह गया जो मैं ने उसके लिये न किया हो?
फिर क्या कारण है कि जब मैं ने दाख की
आशा की तब उस में निकम्मी दाखें लगी?

५ अब मैं तुम को जताता हू कि
अपनी दाख की बारी से क्या करूगा।
मैं उसके कांटेवाले बाड़े को उखाड़ दूगा
कि वह चट की जाए, और उसकी भीत
को ढा दूगा कि वह रौंदी जाए। ६ मैं
उसे उजाड़ दूगा, वह न तो फिर छांटी
और न खोदी जाएगी और उस में भांति
भांति के कटीले पेड़ उगेंगे, मैं मेघों को
भी आज्ञा दूगा कि उस पर जल न
बरसाए॥

७ क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख
की बारी इस्राएल का घराना, और उसका
मनभाऊ पौधा यहूदा के लोग हैं, और
उस ने उन में न्याय की आशा की परन्तु
अन्याय देख पड़ा, उस ने धर्म की आशा
की, परन्तु उसे चिल्लाहट ही सुन पड़ी!

८ हाय उन पर जो घर से घर, और
खेत से खेत यहां तक मिलाते जाते हैं
कि कुछ स्थान नहीं बचता, कि तुम देश
के बीच अकेले रह जाओ। ९ सेनाओं
के यहोवा ने मेरे सुनते कहा है निश्चय
बहुत से घर सुनसान हो जाएंगे, और
बड़े बड़े और सुन्दर घर निर्जन हो जाएंगे।
१० क्योंकि दस बीघे की दाख की बारी
से एक ही बत दाखमधु मिलेगा, और
होमेर भर के बीज से एक ही एपा अन्न
उत्पन्न होगा॥

११ हाय उन पर जो बड़े तड़के
उठकर मदिरा पीने लगते हैं और बड़ी
रात तक दाखमधु पीते रहते हैं जब तक
उनको गर्मी न चढ़ जाए! १२ उनकी
जेवनारों में वीणा, सारंगी, डफ, बांसली
और दाखमधु, ये सब पाये जाते हैं, परन्तु
वे यहोवा के कार्य की ओर दृष्टि नहीं
करते, और उसके हाथों के काम को नहीं
देखते॥

१३ इसलिये अज्ञानता के कारण
मेरी प्रजा बंधुआई में जाती है, उसके
प्रतिष्ठित पुरुष भूखों मरते और साधारण
लोग प्यास से व्याकुल होते हैं।
१४ इसलिये अधोलोक ने अत्यन्त
लालसा करके अपना मुंह बेपरिमाण
पसारा है, और उनका विभव और भीड़-
भाड़ और आनन्द करनेवाले सब के सब
उसके मुंह में जा पड़ते हैं। १५ साधारण
मनुष्य दबाए जाते और बड़े मनुष्य नीचे
किए जाते हैं, और अभिमानियों की आंखें
नीची की जाती हैं। १६ परन्तु सेनाओं
का यहोवा न्याय करने के कारण महान
ठहरता, और पवित्र परमेश्वर धर्मी होने
के कारण पवित्र ठहरता है! १७ तब
भेड़ों के बच्चे मानो अपने खेत में
चरेंगे, परन्तु हृष्टपुष्टों के उजड़े स्थान
परदेशियों को चराई के लिये मिलेंगे॥

१८ हाय उन पर जो अधर्म को अनर्थ
की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी
के रस्से से खींच ले आते हैं, १९ जो
कहते हैं, वह फुर्ती करे और अपने काम को
शीघ्र करे कि हम उसको देखें, और
इस्राएल के पवित्र की युक्ति प्रगट
हो, वह निकट आए कि हम उसको
समझें!

२० हाय उन पर जो बुरे को भला
और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को
उजियाला और उजियाले को अंधियारा
ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे
को कड़वा करके मानते हैं!